Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112577

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R 10670

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

सुधा

पौष १९९५

January 1939

(S. S. L.)

112577

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! प्रकाशित हो गया !!

बालक-बालिकाओं का प्यारा पत्र

बाल-विनोद

जिसके

छठे वर्ष का प्रथम अंक वसंतांक के रूप में निकला है।

इसमें क्या है ?

१. रावराजा डॉ० श्यामबिहारी मिश्र, रायबहादुर श्रीशुकदेवबिहारी मिश्र, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, श्रीसोहनलाल द्विवेदी, प्रो० व्रजमोहन तिवारी आदि हिंदी के धुरंधर विद्वानों के लेख और कविताएँ।

२. मुख-पृष्ठ पर बाल-कृष्ण की नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति।

३. प्रथम पृष्ठ पर श्रीहकीमजी द्वारा बनाया हुआ बाल-वसंत का तिरंगा चित्र।

४. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४८ पृष्ठ।

५. मज़ेदार चुलबुलाती हुई बालकों की कहानियाँ।

६. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन।

७. भीषण 'ख़ैबर के दर्रे' तथा वहाँ के निवासियों का हाल।

८. ४० इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप फड़क उठेंगे।

९. प्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित तथा उसके प्रतिभाशाली अध्यक्ष सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव द्वारा प्रकाशित इस पत्र को देखकर आप लोट-पोट हो जायँगे।

आज ही ग्राहक बनें !

इसका वार्षिक मूल्य केवल २॥)

पर सुधा के ग्राहकों से २)

।) के टिकट भेजकर नमूना मँगाकर जाँच कर लें। नमूना पसंद आने पर ।) मुजरा दिए जायँगे।

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

संपादक 'बाल-विनोद'

कवि कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112522

HL

SUDHA

1939

G.K.V.

Lib.

HARDWAR

शुभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले !

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी
बनाई, उजड़ी बसाई, ... टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब
हुई; मगर आज तक ... सका है। जब अंधाधुंध
बेहिसाब, अनगिनत ... से आप ही वंचित रहें।

मँगाइए। इसके ... पंडितों ने की है।
इसके गुण-गान में अट्ठा ... शास्त्र की है, इस पर
किसी प्रकार की नुक़्ता ... या शास्त्रविधि
पर विश्वास नहीं करता ... भगवान् ने ख़ुद
कहा है (देखो ... कार्य पूर्ण
१४।२३)। यह नवग्रह-यं... गे, हर सवाल
ग्रहों को शांत कर ... में देगा,
में लाभ, इम्तिहान में ... बताएगा व
मुक़द्दमे में जीत, शत्रु प... का ध्यान
राजदरबार में ... ही यंत्र में
इच्छानुसार नौकरी मि... रेंट की तरह
संतान-लाभ, हरएक बी... उसी काम को
से छुटकारा, ख़राब ... हर आदमी
का नाश, दिलपसंद ... दिखाते हैं कि
होना, अचानक आ... हुआ पैसा
से बचना, वशीकरण, ... नहीं जाता।
लाटरी में धन की ... मँगा लेता है,
इसके लाभ को देखकर ... छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-
यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो,
तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥≡)॥, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)॥, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत लिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनदास बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) लिखते—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे रेस में लाभ दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम बन गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ | प्रत्ये… | …भ

कि यह…
मनुष्य…
है, …

बसाई, उजड़ी बसाई, … …क़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक … । अब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत ल… …आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी नवग्रह …

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुण-गान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजाइश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति

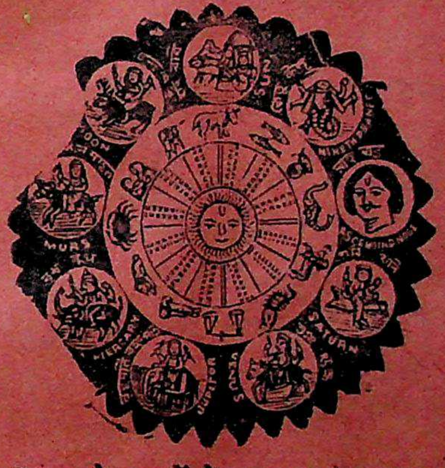

वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ४॥=)। चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥=)। यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ४ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत लिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाई, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनप्रसाद बी० ए० क्लास, वेलिंगटन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे रेस में लाभ दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.) बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात सेर दूध प्रतिदिन हज़म कर लो—

न कोई दवाई खाओ, न व्यायाम करो

कई जीर्ण रोगी और दुबले-पतले आदमी मोटे-ताज़े, बलवान् और नीरोग होने की इच्छा में इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। उनको उचित है कि भाँति-भाँति की विषैली औषधियाँ खाकर अपने शरीर का सत्यानास करने से पहले एक बार दुग्ध-चिकित्सा का अनुभव करके देखें। 'दुग्ध-गुण-विधान' इस विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है, जिससे न्यूयार्क (अमेरिका)-निवासी मि० फ्रील्ड ने साढ़े सात सेर दूध प्रतिदिन हज़म करके ३३ सेर वज़न बढ़ा लिया था। दुग्ध में सर्व-रोग-नाशक शक्ति है, तभी तो शास्त्रों में इसे भूलोक का अमृत कहा गया है। किंतु खेद है कि दुग्ध-प्रधान भारतवासियों को उसका उपयोग करना नहीं आता। यदि आप चाहते हैं कि बिना किसी वैद्य-डॉक्टर को फ़ीस दिए घर में ही सर्वरोगों का सरलता-पूर्वक इलाज कर लिया जाय, तो 'दुग्ध-गुण-विधान' पुस्तक अवश्य मँगाकर पढ़ें। संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) दुग्ध की रासायनिक जाँच, (२), दुग्ध क्या है ?, (३) दुग्ध-परीक्षा, (४) कच्चे दूध को रखने की विधि, (५) दुग्ध-पान की विधि, (६) हम जिस प्रकार दूध पीते हैं, वह बिलकुल ही ग़लत और हानिकारक है। (७) दुग्ध-चिकित्सा (एक ऐसी विधि, जिससे प्रत्येक असाध्य रोगी का रोग तीन-चार सप्ताह में जड़-मूल से नष्ट हो जाता है।), (८) सेरों दूध पचाने की विधि, (९) शरीर का वज़न बढ़ाना, (१०) प्रतिदिन कितने और किसी प्रकार का व्यायाम किए और बिना दवा खाए सात सेर दूध पान करके पचाने की विधि और (११) पुरानी कोष्ठबद्धता मिटाने की विधि।

इसके अतिरिक्त केवल दूध से ही सिर से पैर तक के सब रोगों का इलाज करना बताया है, जिनमें मस्तिष्क की निर्बलता, उन्माद, पागलपन, अपस्मार (मृगी), संग्रहणी, मधुमेह, बवासीर, राजयक्ष्मा (तपेदिक) आदि रोगों तथा स्त्री और बालकों के होनेवाले सब रोगों का इलाज, यहाँ तक कि दुग्ध से अनेक भस्मों के बनाने की विधियाँ लिखी गई हैं। सारांश, पुस्तक में भारतीय और पश्चिमीय डॉक्टरों के क्रियात्मक अनुभव और संन्यासियों के गुप्त भेद बंद कर दिए हैं। पुस्तक मोतियों के साथ तोलने योग्य है। मूल्य केवल १), पोस्टेज।-)

केवल ५० दिन में अँगरेज़ी बोलना सीखो

यह हमारा दावा है, जिसे आज तक कोई झूठा नहीं कर सका। जिस प्रकार अँगरेज़ माताएँ अपने बालकों को अँगरेज़ी बोलना सिखाती हैं, और तीन-चार वर्ष का बालक अँगरेज़ी में भले प्रकार बातें करने लगता है (हालाँकि उसने अँगरेज़ी का एक शब्द भी स्कूल में जाकर नहीं सीखा), ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार हम यह २५० पृष्ठ की पुस्तक तैयार करने में सफल हो सके हैं। पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गई है कि ५० दिन में भले प्रकार याद हो जाती है। इस पुस्तक की सहायता से अनेक स्त्री-पुरुष तथा लड़के-लड़कियाँ केवल ५० दिन में ही अँगरेज़ी में धड़ाधड़, धारा-प्रवाह-रूप से वार्तालाप करने योग्य हो गए हैं। मूल्य १॥), पोस्टेज।=)

पता—रसायन-कार्यालय, (सु०) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. वसंत (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल	२६७
२. नीराजना (कविता)—[लेखिका, कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए० ...	२६८
३. लोक-लोचन (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	२६६
४. कर्मवीर कमाल (सचित्र, जीवनी)—[लेखक, श्रीपं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट ...	२७०
५. अधूरा मंदिर (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२७६
६. दौलतपुर की यात्रा (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी	२८३

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध । सिर-दर्द, बदन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है ।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉक्स नं० ६८२५

पे लि के न
हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

Pelican

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता । इसमें रबर की थैली नहीं है ।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी पक्की बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं ।

यह सरलता से खोली जा [illegible]

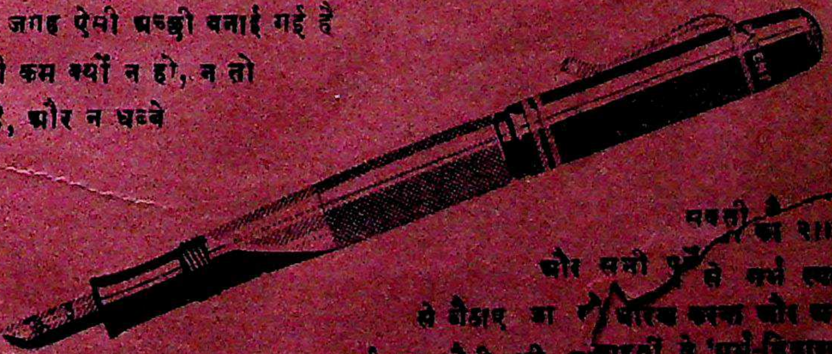

[illegible] बनती है [illegible] का २॥)

और सभी [illegible] से सर्व व्यापित से बैठाए जा [illegible] वारिक बनाना और [illegible] का ख़र्च एक कौड़ी भी [illegible] वाइहकों, वे 'सर्व-[illegible]' है [illegible] नहीं होगी । मूल्य की कौड़ी इसकी बनावट बिलकुल [illegible] कोई भी बिन खुद सकता [illegible] बिन निकालकर काम का [illegible] दिखा—(चित्र नं० १) इसकी [illegible] लाइक को सिर्फ़ एक ही [illegible] मुक़ता फ़ायदे भी [illegible] हो जाता है । [illegible] स्याही की लापरवाही [illegible] आदि [illegible] दूर करके [illegible] स्वच्छता प्रदान करता है । [illegible] कार्यशीलता है । मूल्य [illegible]

Pelican

[illegible]० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, [illegible] अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. खेल (कविता)—[लेखक, श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह ६०३

८. आजकल की सुंदरियाँ—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... ... ६०४

९. परिणाम (कविता)—[लेखक, श्रीयुत आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव ६०८

१०. भारतीय साहित्य के दो महाकवि (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत ब्योहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए० ... ६०९

११. हम और तुम—[लेखक, श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा ६१४

१२. गुलाब के फूल (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत रामशरण शर्मा ६१७

१३. मेरी अनुराधा! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न ६२०

१४. भारतमाता! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त ... ६२३

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

शेख़ ...... अली—मुहल्ला...... अमृतसर।

ले०—कविराज हरनाम दास बी. ए., लाहौर।

छप गई! छप गई!! छप गई!!!

अरब में सात साल

अर्थात्

अरब में वैदिक धर्म का प्रचार

यह हमारा
बालकों को अँगरेज़ी बे... रुचिरामजी वैदिक मिशनरी ने अरब, मिस्र, तुर्की, शाम, फिलस्तीन
लगता है (हालाँकि उस... भ्रमण और प्रचार के हालात लिखे हैं। मोटा काग़ज़, सुंदर
नियमानुसार हम यह ३५० पृ... ...ल्य सवा रुपया, डाक-व्यय माफ़। नमूना मुफ़्त मँगाइए।
गई है कि ५० दिन में भले प्रकार या...
लड़के-लड़कियाँ केवल ५० दिन में ही अँ...ना है।
हो गए हैं। मूल्य १॥), पोस्टेज।=)

...हित्य-सदन

पता—रसायन-कार्यालय, (मु०) पोस्ट-...डवर्ड-स्केयर, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१५. ज़मींदार और किसान—[लेखक, श्रीयुत महेशचंद्र बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद ६२६

१६. विक्रम-शिला-विहार—[लेखक, श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी० ६३०

१७. स्त्री का समाजवाद या पति की विपत्ति (व्यंग्य-चित्र) ६३४

१८. चयन—[लेखकगण, श्रीशांति गुप्ता 'प्रभाकर', श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिश्री 'रमा', श्रीमती इंदिरादेवी गुप्ता, श्रीयुत रामअधार जायसवाल, श्रीयुत रणवीरविहारी सेठ और श्रीयुत ताराप्रसाद वर्मा ड्राइंग-मास्टर ... ६३५

* श्वेत कुष्ठ से दुखी क्यों *

महर्षि-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी, चरक) सबको ३ दिन में पूरा लाभ। यदि अनेक दवा लगाकर निराश हो चुके हों, तो एक बार इसे लगाकर नीरोग होवें। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस। जिन्हें विश्वास न हो, -) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य १॥)

❀ गर्भ-निरोधक (बर्थ-कंट्रोल) ❀

इसको प्रति मास ३ बार के सेवन से उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। यदि आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो दवा का सेवन कराना बंद करा दें। गर्भ धारण हो जायगा। इससे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य १ वर्ष का १॥); दूसरी दवा, जो सर्वदा के लिये वंध्या बना देती है, मूल्य २); पता—राजवैद्य परमेश्वर-दयालजी, नं० १०२ पो० कतरीसराय (गया)

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह ओषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली २), डाक-महसूल ।=)

कामिनीवशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २॥)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मीओषधालय, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१९. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत गया-प्रसाद शास्त्री वैद्य, श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, बी० ए० (ऑनर्स), श्रीयुत श्री० और श्रीयुत 'उमेश' ... ६४६

२०. सुधा-चित्रावली ६५१

२१. कुसुम ६५५

२२. धारा (संपादकीय विचार) ... ६५६

❋ख़िज़ाब को छोड़ो❋

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो ॥) ; इससे अधिक पका हो, तो ४) या कुल पका हो, तो ६) का तेल मँगवा लें।

पता—बाल काला डिपो नं० १०१

पो० कतरीसराय (गया)

योगेंद्र कवच

(शास्त्रोक्त)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी शक्तिसंपन्न सिद्ध वशीकरण-यंत्र के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन काम भी सिद्ध होता है। यंत्र के चमत्कारी प्रभाव से कोई स्त्री या पुरुष कैसा ही कठोर-हृदय, अभिमानी क्यों न हो, आपसे मिलकर शादी (प्रेम) के लिये इच्छा प्रकट करेगी। इसके द्वारा आपका दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, तरक़्क़ी, मुक़द्दमे, जुआ, लाटरी में जीत, नवग्रहों की शांति तथा कठिन-से-कठिन रोगों का नाश होकर भाग्योदय होता है। शास्त्रोक्त नहीं है, ऐसा साबित करने पर १००) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २) रु०, चाँदी का ३।), असली सोने का ६) रु०

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम, पो० परवलपुर (पटना)

श्वेतकुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी-बूटी

इस अद्भुत शक्तिशाली जड़ी-बूटी के केवल तीन ही दिन के लेप से कठिन-से-कठिन और पुराना-से-पुराना श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) या चरक-सा महारोग जड़ से आराम होता है। अगर आप इनामी विज्ञापनों के धोखे में पड़कर ठगे जा चुके हैं, तो एक बार इस वनौषधि को इस्तेमाल कर आरोग्य होवें। विश्वास न हो, तो एक आने का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मू० १।।) रु०

पता—श्रीवीरेंद्रप्रसाद, नं० ५१, पो० परवलपुर (पटना)

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी [illegible] सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो २) ; चौथाई से अधिक पका है तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा एंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. किसान का धन ... ५६७

(ख) दुरंगे

२. कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए० ६१६

३. प्रो० सत्यकेतुजी विद्यालंकार और श्रीमती सुशीलादेवी शास्त्री ... ६१७

(ग) व्यंग्य

४. स्त्री का समाजवाद या पति की विपत्ति—[चित्रकार, श्रीयुत सिद्धार्थी ६३४

धातुपौष्टिक व शक्ति-वर्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कब्जियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य बढ़ाकर मस्त बनाती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का रु० १)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ—निगम-मेडिकल हाल, अमीनाबाद रोड

बनारस एजेंट—राधेलाल एंड संस, चौक

कानपुर—गंगाप्रसाद-शिवशंकर बाजपेयी, नयागंज

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

आयु घट गई!

आरोग्यता चलती बनी—

बुद्धि मंद हो गई! क्यों?

यदि आप जानना चाहते हैं, तो 'जीवन - सुधार'-नामक पुस्तक केवल एक कार्ड लिखकर मुफ़्त शीघ्र मँगाइए। आज ही लिखें।

पता—रामकृष्ण-औषधालय, जबलपुर (सी० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

(घ) सादे

५-८. कर्मवीर कमाल-संबंधी ४ चित्र ५७०, ५७३, ५७५ और ५७६

९-१९. दौलतपुर की यात्रा-संबंधी ११ चित्र ५९४-६०१

२०. श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न ६२०

पृष्ठ

२१. श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी० ... ... ६३०

२२. बैडमिंटन-विजयिनी महिलाएँ ... ६५१

२३. श्रीमती कलावतीदेवी 'बच्ची' ... ६५२

२४. श्रीयुत कमलाशंकरसिंह ... ६५२

२५. कुमारी कमलादेवी ६५३

२६. नव-दंपति ६५४

२७. एक हिंदी-नाटक का दृश्य ... ६५४

शर्त विज्ञापन के अनुसार हमारी पुस्तकें न होंगी, तो मूल्य वापस देंगे !

१॥) में दस पुस्तकें

१. कोकशास्त्र—स्त्री-पुरुषों के भेद, ८४ चित्रोंवाला शकुनादि — मूल्य १॥)
२. प्रेत-सिद्धि—भूतों को वश कर रोगी को अच्छा करना आदि — ।।)
३. टेलीग्राफ़—तार का लेना-देना सिखाने की अपूर्व पुस्तक — ।।)
४. गर्भ-परीक्षा—गर्भ में पुत्र-पुत्री पहचान पहले ही करना — ।।)
५. आरोग्य जीवन—गुप्त रोगों का इलाज स्वयं करना सीखो — ।।)
६. सच्चा जादू—हाथ-सफ़ाई के आश्चर्य-जनक खेल सीखो — ।।)
७. इँगलिश—अँगरेज़ी पढ़ना-लिखना सीखने की रीति — १)
८. आत्मविद्या—मृतक आत्माओं से बातचीत करना — ।)
९. वशीकरण—सिद्ध करके मनमाना काज करा लो — ।।)
१०. शर्बत—शर्बत बनाने के सरल नुस्खे व सरल रीति — ।।)

ऊपर लिखी ५०० पृष्ठ की अनमोल दस पुस्तकों का सेट मूल्य १॥), डाक-व्यय-पैकिंग आठ आना अलग।

ठाली बैठों को हज़ारों रुपया पैदा करानेवाली एक पुस्तक ?

खज़ाने की कुंजी

इससे अनेकों प्रकार के हुनर बिना उस्ताद के घर बैठे सीख लो, जैसे लकड़ी व चमड़े की वारनिश, कई प्रकार के साबुन, रोशनाई, खुशबूदार तैल व इत्र, शर्बत-अचार-मुरब्बा-पान का मसाला, आतिशबाज़ी, बैटरी से गिलट करना, चाँदी का पानी बनाना, दियासलाई बनाना, पारे का गिलास-कटोरा बनाना, नक़ली केसर-कस्तूरी बनाना, सींग के खिलौना, खिज़ाब, मंजन, अगर की बत्ती, मोम, बर्फ़ की कुल्फ़ी जमाना, सान के [illegible] पत्थर की माला, काँच जोड़ने का मसाला, साँप काटे की दवा, सिर-दर्द की दवा, अर्क कपूर, बाल उड़ाने का पाउडर, पत्थर जोड़ने का मसाला, नमक सुलेमानी, पिपरमेंट की मिठाई, रबड़ की मुहर आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीब इस ग्रंथ में लिखी है, कहाँ तक लिखें, इसका एक-एक हुनर पाँच-पाँच रुपए को भी सस्ता है। मूल्य भी सबके लाभार्थ सिर्फ़ १।), डाक-व्यय-पैकिंग ।=)

पूरा पता—मैनेजर, दी बजरंग ऐंड कंपनी, आगरा-रोड, अलीगढ़ सिटी (SU)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[बदस्त अवाम क़रोक़्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत

बइजलास मिस्टर ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकेंड ग्रेड जौनपुर

मुकद्दमा नं० ११० सन् १९३६

ता० मुक़र्रा २३—२—१९३९

हरगाह १—उमाशंकरसिंह वल्द अजोध्यासिंह २—उदयवीरसिंह पेसर नाबालिग़ उमाशंकरसिंह साकिनान मौज़ा तरावँ परगना केराकत ज़िला जौनपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायक़ान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ियत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर में दफ़्तर साहब कलेक्टर में दर्ज है।	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत पर मौजूदा मालगुज़ारी
१	जौनपुर	ज़मीदारी	४ पा० मौ० हरिहरपुर प० केराकत	मय सीर व सायर व कुल्हुम हक़ूक़ व हक़ूक़ ज़मीदारी	४ पाई	
२	,,	,,	४ पा० मौ० बेलवा बिरली प० केराकत	,,	,,	
३	,,	,,	१॥ पा० मौ० अमोरा प० केराकत	,,	१॥ पाई	
४	,,	,,	४ पा० मौ० इटोरा प० केराकत	,,	४ पाई	
५	,,	,,	४ पा० मौ० रायर प० केराकत	,,	,,	
६	,,	,,	४ पा० मौज़ा करहाहुना प० केराकत	,,	,,	
७	,,	,,	८ पा० मौ० [illegible] प० केराकत	,,	८ पाई	
८	,,	,,	=) मौज़ा सोनबरसा प० केराकत	,,	=)	
९	,,	,,	४ पा० मौ० करहुआँ [illegible] प० केराकत	,,	४ पाई	
१०	,,	,,	=) मौ० [illegible]पुर प० केराकत	,,	=)–	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११	,,	,,	४ पा० मौ० परसूपुर प० केराकत	,,	४ पाई	
१२	,,	,,	४ पा० मौ० चकनाहर प० केराकत	,,	,,	
१३	,,	,,	४ पा० मौ० बसपुरवा प० केराकत	,,	,,	
१४	,,	,,	४ पा० मौ० फरीदपुर प० केराकत	,,	,,	
१५	,,	,,	४ पा० मौ० पटखौली प० केराकत	,,	,,	
१६	,,	,,	४ पा० मौ० कटहरपुर प० केराकत	,,	,,	
१७	,,	,,	४ पा० मौ० कोपकलाँ प० केराकत	,,	,,	
१८	,,	,,	६ पा० मौ० कुसमी प० केराकत	,,	६ पाई	बहुस्तस्नाय सीर २ गाटा
१९	,,	,,	४ पा० मौ० तरावँ पं० केराकत	,,	४ पाई	१-७८ मौजा तरावँ । बहुस्तस्नाय ३॥ बीघा सीर मौजा कुसमी जो मुसम्मी इंदरसिंह के यहाँ बय हो गयाहै बकिया मय सीर सायर कुल्हुम हकूक व हबूब जमींदारी ।

मुंसरिम

اطلاعنامہ واسطے اظہار وجہہ اس امر کے کہ ڈگری کیوں نہ جاری کی جاے
(آرڈر ۲۴-قاعدہ ۲۲)

باجلاس بابو مہاراجہ بہادرلعل صاحب منصف شاہجہانپور

بعدالت منصفی شاہجہانپور مقام و ضلع شاہجہانپور

مقدمہ دیوانی نمبر ۲۳ بابت سنہ ۱۹۳۳ ع

لچھمی نراین ولد نانک چند قوم کھتری ساکن شاہجہانپور محلہ جدگام ڈگریدار

بنام

مسماۃ شیودلاری بیوہ رامچندر دختر بابو بانکےلال قوم کھتری ساکن سکونہ مکان دوالی چند وید محلہ سوناری تال ہردوئی ضلع ہردوئی

ہرگاہ لچھمی نراین ڈگریدار نے درخواست عدالت ھذا میں واسطے قائمی نام وارثان رامچندر مدیون متوفی اجرایڈگری عدالت دیوانی مقدمہ نمبر ۲۳ سنہ ۱۹۳۳ ع کے گذرانی ھے لہذا تم کو اطلاع دی جاتی ھے کہ تم اس عدالت میں بتاریخ ۳۱ ماہ جنوری سنہ ۱۹۳۹ ع اصالتاً یا وکالتاً یا بذریعہ مختار مجاز حسب ضابطہ اور واقف حال مقدمہ کے حاضر ہوکر اگر کوئی عذر واسطے نہ جاری کئے جانے ڈگری کے رکھتے ھو تو پیش کرو—

آج بتاریخ ۵ ماہ جنوری سنہ ۱۹۳۹ ع میرے دستخط اور عدالت کی مہر سے جاری کیا گیا—

منصرم

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अत्युत्तम सामाजिक उपन्यास

विजया

[अनुवादक, 'माधुरी'-संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय कविरत्न]

पांडेयजी बँगला के कैसे सिद्धहस्त अनुवादक हैं, यह हिंदी-संसार पर भली भाँति विदित है। आपका अनुवाद मौलिकता से मंडित और स्वाभाविकता से सुसज्जित होता है। इस उपन्यास में सामाजिक चरित्र-चित्रण इतनी बारीकी और सुंदरता से किया गया है कि कहीं पढ़ते-पढ़ते करुणा और सहानुभूति से हृदय पिघल जाता है, और कहीं घटना की वास्तविकता से प्रभावान्वित होकर आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते हैं। वर्णन का क्रम बड़ा मधुर और चित्ताकर्षक है। भाषा ललित और ओजस्विनी है। ६-७ रंगीन और सादे चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

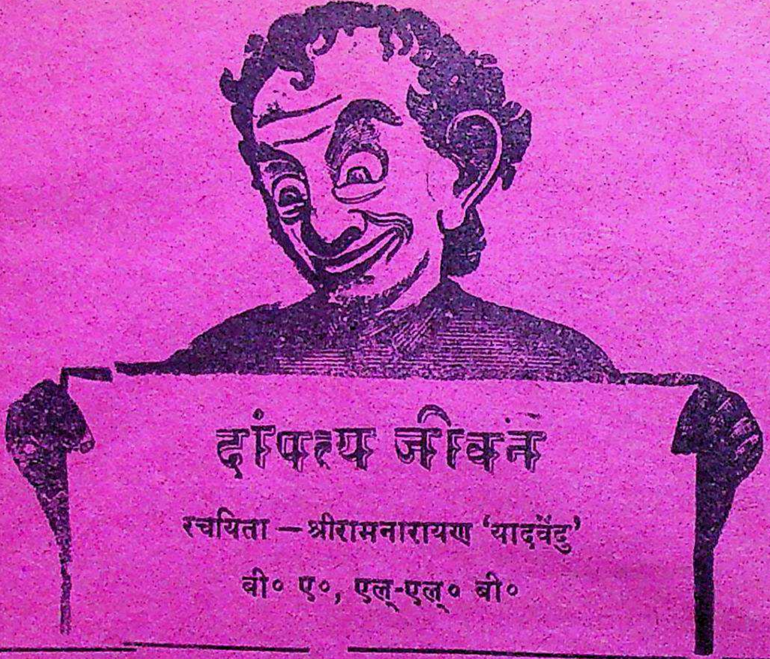

यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों और नवयुवतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	[illegible]	[illegible]
साधारण संस्करण	[illegible]	[illegible]
सस्ता संस्करण	[illegible]	[illegible]

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

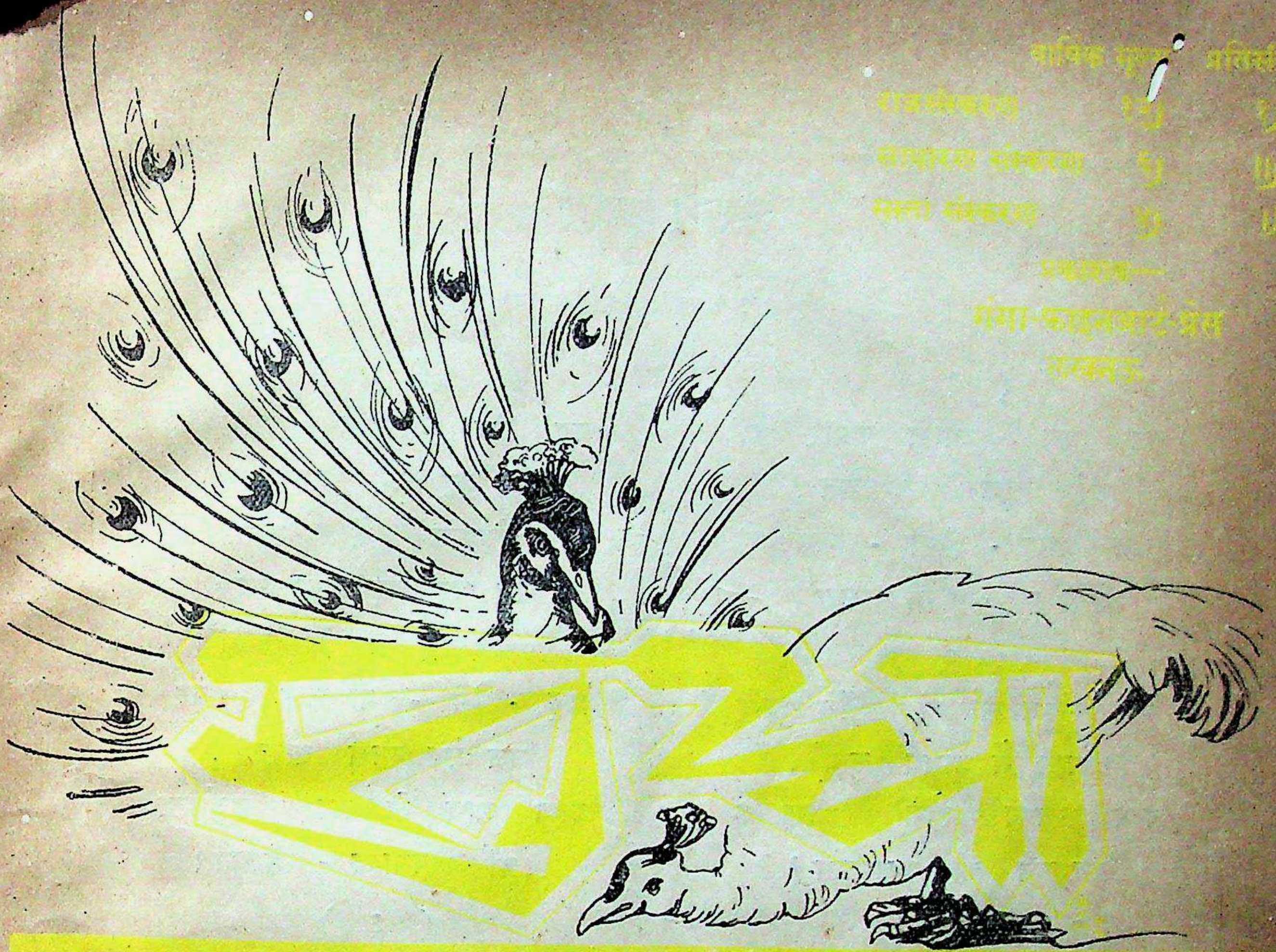

वर्ष १२	पौष, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)—	संख्या ६
खंड १	जनवरी, १९३९	पूर्ण संख्या १५०

वसंत*

[श्रीदुलारेलाल]

ह्वैहै कब वसंत वर प्रात ?
छाई ललित, अखिल, अग जग में कुल तममय ही रात ;
कलित कुसुम रस-हीन बिहाए मिलन-खिलन की बात।
ह्वैहै कब०...?
प्रिय वसंत, हिय-रस प्रपात करि, हंस-करनि अवदात—
करि पाँखुरि-कर-गहन लीजिए, खिलै कुसुम-जलजात।
ह्वैहै कब०...?

---

* लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से १५ ता० को पठित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीराजना

[कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए०]

(१)

वह प्रेम - ज्योति अपार हैं,
कैसे करूँ नीराजना ?
निज प्राण - दीपक - दीप्ति से
क्या कर सकूँगी साधना ?

(२)

निज स्नेह से ही सींच यदि
दीपाभ मैं जाग्रत करूँ,
क्या साध्य होगी प्राणप्रिय
आराध्य की आराधना ?

(३)

यदि प्रेम के उन्माद में
उर - तंत्रिका मम बज उठे,
क्या सुन सकेंगे प्रेम - धन
मम प्यार का झंकारना ?

(४)

वह प्रेम - मूर्ति महान हैं,
अति क्षुद्र मेरे प्राण हैं;
पर प्रेममय में लीन हो
मम मूल्य बढ़ जाता घना।

(५)

प्रभु - प्रेम - पारावार पर
निज प्रेम सारा वारकर,
अति साध से बन साधिका
की दीपमाला - साजना।

(६)

क्रमशः रुकी नीराजना,
मन की मिटी मम मूर्च्छना,
तज्ज्योति ने प्राणाभ का
पूरा किया जब बाँधना।

(७)

एकात्मता तब हो गई,
किसकी करूँ नीराजना ?
प्रभु - प्रेम - प्राणित प्राण तो
गति - हीन भूले नाचना।

बाल-विनोद

अपने ५ से २० वर्ष तक के बच्चों के लिये यह पत्र अवश्य मँगाइए। वार्षिक मूल्य २॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-लोचन

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

(चौपदे)

बिलसी हैं नभ-मंडल में
आभामय दो धाराएँ ;
गत होते तम में प्रकटीं
या रवि-रथ-पथ रेखाएँ ?

अनुराग-रागमय प्राची
कमनीय प्रकृति-कर पाली ;
है राह देखती किसकी
रख मंजुल मुख की लाली ?

सिंदूर माँग में भरकर,
पाकर लालिमा निराली
क्यों लोहित-वसना आई
ले जन - रंजनता-ताली ?

क्यों हुईं दिशाएँ उज्ज्वल,
क्यों कांति मनोरम पाई ;
उनकी मन-मोहक आभा
क्यों मंद-मंद मुसकाई ?

अति रुचिकर चमर हिलाता
वन सुरभित सरस सवाया
क्यों मंद-मंद पद रखता
शीतल समीर है आया ?

क्यों गूँज रहा है नभ-तल,
क्यों उसमें स्वर भर पाया;
बहु उमग-उमग विहगों ने
क्यों राग मनोहर गाया ?

क्यों हैं फूली न समाती
उनकी निखरी हरियाली ;
क्यों खड़े हुए हैं तरुवर
लेकर फूलों की डाली ?

विकसित होती हैं पल-पल
किसलिये कलित कलिकाएँ;
धारण कर मुक्ता-माला
क्यों ललित बनीं लतिकाएँ ?

अलि किसका गुण गाते हैं
रच-रचकर निज कविताएँ;
क्यों हैं कलकल रव करती
सित-भूत सकल सरिताएँ ?

जगती - जीवन - अवलंबन,
वसुधातल - ताप - विमोचन
उदयाचल पर आता है
क्या सकल लोक का लोचन ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

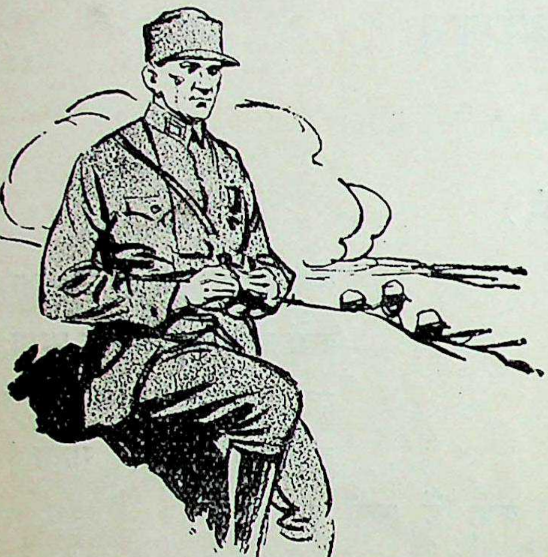

मुस्तफ़ा कमाल

(तुर्की सेना के कमांडर-इन-चीफ़)

कर्मवीर कमाल

[श्रीपं० ज्योतिलाल भार्गव

बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट]

"यह सारी बेहूदगी जल्दी ही मिटानी होगी। हरम, घूँघट, परदेवाली खिड़कियों और पीछे ले जानेवाले सारे विचारों का समय बीत चुका, इसलिये अब उन्हें भी मिटाना होगा। आधी जनता को अंधकार और गुलामी में रखकर प्रजातंत्र क़ायम नहीं किया जा सकता। दो वर्ष में हर स्त्री को अपने मुँह पर से घूँघट हटा लेना होगा, और मनुष्यों की बराबरी में खड़े होकर सारे काम करने होंगे। मनुष्यों को हैट पहनना होगा। वह समय गुज़र गया, जब कपड़े धर्म का चिह्न माने जाते थे। फ़ेज़, जो धर्म का चिह्न है, हमें ज़रूर त्यागनी होगी।

"मैं इन गिरजाघरों, मंदिरों और मस्जिदों से सख़्त नफ़रत करता हूँ। हे सत्य की पवित्र भावना, मनुष्य को मनुष्य से दूर करनेवाली इन संकुचित दीवारों को तू गिरा दे।

"मैं किसी भी धर्म को नहीं मानता, और कभी-कभी तो मैं यह चाहता हूँ कि सभी धर्मों को गहरे समुद्र में डुबो दिया जाय।" —कमाल अतातुर्क

उपर्युक्त वाक्य आधुनिक टर्की के पिता, उसकी प्रगति के मसीहा, शुभेच्छु प्रेसिडेंट, कर्मवीर कमाल के हैं। इन शब्दों के पीछे कमाल अतातुर्क का मनोभाव और पुराने ढकोसलों तथा कुरीतियों के प्रति प्रबल विरोध छिपा है। कमाल अतातुर्क को समझने के लिये उसकी पूर्ण जीवनी अध्ययन करना आवश्यक है, परंतु यहाँ हम उसके जीवन की विशेष घटनाओं का ही संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

बाल्यकाल

सन् १८८१ में, सालोनिका-शहर में, मुस्तफ़ा कमाल के माता-पिता, ज़ुबेदा और अलीरज़ा, ग़रीबी की ज़िंदगी बसर करते थे। घर में ज़ुबेदा का शासन बड़ा कठोर था, परंतु मुस्तफ़ा कमाल कमज़ोर, होते हुए भी आत्माभिमानी बालक था। वह अपनी माता से लड़ने के लिये सर्वदा कटिबद्ध रहता था। किसी तरह मुस्तफ़ा कमाल को एक मस्जिद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़ुरान पढ़ने बैठाया गया। परंतु उसी समय उसके पिता की मृत्यु हो गई, और मुश्किल से, ज़ुबेदा की एक बहन की सहायता से, उसे स्कूल भेजा जा सका। मुस्तफ़ा कमाल अत्यंत कठोर, बाग़ी और ऊधमी लड़का था। अध्यापकों से लड़ना तो उसके बाएँ हाथ का खेल था। एक दिन पीटे जाने पर वह स्कूल छोड़कर भाग गया।

फ़ौजी स्कूल

किसी तरह समझा-बुझाकर ज़ुबेदा ने मुस्तफ़ा कमाल को स्थानीय फ़ौजी स्कूल में भरती करा दिया। उसे अपने मन का काम मिला। फ़ौजी स्कूल में वह चमक गया, और शीघ्र ही उस स्कूल से ससम्मान पास होकर मानेस्टीर के फ़ौजी कॉलेज में भरती हुआ। इस समय उसकी अवस्था १७ वर्ष की थी।

यह वह समय था, जब ऑटोमन-साम्राज्य अपनी मृत्यु-शय्या पर पड़ा कराह रहा था। ग्रीक लोगों ने उससे क्रीट टापू जीत लिया था, और योरप की सब ईसाई-जातियाँ टर्की-साम्राज्य को चीड़-फाड़कर खा जाने के लिये तैयार थीं। तुर्क लोगों में बग़ावत की आग सुलग रही थी। इस क्रांति की चिनगारी ने मुस्तफ़ा कमाल के दिल पर भी असर किया, और वह अभी से टर्की का विधाता और एकमात्र स्वामी बनने के स्वप्न देखने लगा। मानेस्टीर में भी वह सम्मान के साथ पास हुआ। अब उसे क़ुस्तुनतुनिया के 'जेनरल स्टाफ़ कॉलेज' के लिये शिक्षक चुना गया, और सब-लेफ़्टिनेंट का पद दिया गया।

राजनीतिक जीवन का आरंभ

क़ुस्तुनतुनिया इस समय, योरप की अन्य राजधानियों की तरह, भोग-विलास तथा राजनीतिक उथल-पुथल का घर था। मुस्तफ़ा कमाल यहाँ आकर शराब, जुआ और वेश्याओं में बुरी तरह फँस गया। परंतु शीघ्र ही अपने को इस गढ़े से निकालकर वह अपने साथी अफ़सरों के साथ षड्यंत्र की दीवार खड़ी करने लगा। कॉलेज से ससम्मान पास होने पर उसे, १६०५ में, कप्तान का पद दिया गया। साथी अफ़सर उसे अपना नेता-सा मानने लगे। ये सब क्रांतिकारी थे, और वतन नाम की एक संस्था इन्होंने बना रक्खी थी। इसका पता शीघ्र ही सुल्तान को लग गया। यह सभा नष्ट कर दी गई, और उसके सभासद् जेल भेज दिए गए। मुस्तफ़ा कमाल का भी इसमें काफ़ी हाथ समझा गया, और वह इस्तंबोल के कारागृह में डाल दिया गया। परंतु सेनापति इस्माइल हाकी पाशा के कहने से समझा-बुझाकर छोड़ दिया गया, उसे यहाँ दर्वेशों के विरुद्ध सर्वप्रथम युद्ध में शामिल होना पड़ा। उन्हें कुचलकर वह वापस आ गया।

क्रांति

एकाएक टर्की में क्रांति की आग भड़क उठी। नियाज़ी-नामक एक युवक ने बग़ैर सोचे-समझे मैसिडोनिया की पहाड़ियों में सरकार के विरुद्ध बग़ावत कर दी। उस समय इस विद्रोह के लिये देश तैयार न था, न उसका कोई पक्का संगठन था। 'यूनियन ऐंड प्रोग्रेस कमिटी' में भी तीन सौ से अधिक सदस्य न थे। मुस्तफ़ा कमाल इन सबसे अलग रहा। परंतु यह आंदोलन सफल हो गया। सुल्तान ने इसके नेताओं—नियाज़ी और अनवर—से सुलह कर ली। परंतु सुल्तान ने चाल चली। बड़े-बड़े पुराने नेता, जो वर्षों से निर्वासित थे, टर्की वापस आ गए, और उन्होंने सब जगहों पर अधिकार कर लिया। नियाज़ी आल्बेनिया में मार डाला गया। अनवर बर्लिन भेज दिया गया, और कमाल उत्तरी आफ़्रिका (त्रिपोली) में। क्रांति के नेता इस नए बल का ठीक उपयोग न कर सके। आस्ट्रिया ने बॉसनिया और हर्ज़ेगोवीना पर क़ब्ज़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया, और ग्रीस ने क्रीट पर। बल्गेरिया ने रूस की सहायता से अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। ईसाई और मुसलमान आपस में लड़ने लगे। देश की स्वतंत्रता की सारी आशाएँ समाप्त हो गईं।

सुल्तान ने इस अवस्था से लाभ उठाकर 'कमिटी ऑफ़् यूनियन ऐंड प्रोग्रेस' को कुचलना चाहा। मुस्तफ़ा कमाल ने दिन-रात एक करके फ़ौजी अफ़सरों को मिलाया। सुल्तान अब्दुल हमीद क़ैद कर लिया गया, और उसका भतीजा नाम-मात्र को गद्दी पर बैठाया गया। अनवर को बहुत मान मिला, और वह कमेटी तथा देश का संरक्षक माना गया। कमाल को किसी ने भी न पूछा।

सैनिक मुस्तफ़ा कमाल

मुस्तफ़ा कमाल की अवस्था इस समय तीस वर्ष की थी। वह मैसिडोनिया की तीसरी फ़ौज का अध्यक्ष था। सन् १९१० में वह सोलकिया के फ़ौजी स्कूल का प्रधान बनाया गया। कमाल ने स्कूल का संगठन पाश्चात्य ढंग पर किया। देश की बागडोर इस समय अनवर तलात और जमाल के हाथ में थी। कमाल इन सबको क्षुद्र समझता था।

त्रिपोली का युद्ध

इसी समय, १९११ में, इटली ने एकाएक, बग़ैर सूचना दिए, त्रिपोली पर चढ़ाई कर दी। कमाल ने राजनीति को अलग करके देश की विपत्ति के समय युद्ध में लड़ने के लिये ऑफ़्रिका जाना निश्चित किया। इटलीवालों ने जहाज़ों की सहायता से समुद्री तट पर क़ब्ज़ा कर लिया। अनवर प्रधान सेनापति था, और बड़े ठाठ से सेनापतित्व का दरबार किया करता था। मुस्तफ़ा कमाल इससे चिढ़ता था। ऑक्टोबर, १९१२ में मांटीनीग्रो ने भी टर्की से युद्ध छेड़ दिया। टर्की ने घबराकर इटली से संधि कर ली। मुस्तफ़ा कमाल टर्की लौट आया। यहाँ हज़ारों घायल सैनिक पड़े थे। मांटीनीग्रो सर पर खड़ा था, पर अनवर ने ऐड्रियानोपिल पर उसे खदेड़ दिया। अनवर की जय के नारे फिर लगने लगे। त्रिपोली की पराजय सब भूल गए। इस विजय में कमाल का बहुत हाथ था, पर उसे किसी ने न पूछा।

योरपीय महायुद्ध

इसी समय योरपीय महायुद्ध छिड़ गया। जर्मनी की ओर से टर्की ने लड़ना निश्चय किया, यद्यपि मुस्तफ़ा कमाल इसके घोर विरुद्ध था। जर्मन-सेनापति वॉन सांडर्स ने तुर्की-सेना का नेतृत्व ग्रहण किया। वॉन सांडर्स बहुत ही योग्य अफ़सर था। तुर्की-फ़ौज और अफ़सरों के लिये उसकी धारणा अच्छी न थी, परंतु उसने कमाल के लिये लिखा है—"वह तो बहुत योग्य अफ़सर है, सच्चा सेनानी है। कमाल सर्वथा मेरा विश्वास-पात्र है।" उसने कमाल को गैलीपोली के मोर्चे पर भेज दिया।

गैलीपोली

गैलीपोली का युद्ध मुस्तफ़ा कमाल के लिये वही महत्त्व रखता है, जो हल्दीघाटी महाराणा प्रतापसिंह के लिये, अथवा वाटरलू विलिंगटन के लिये। गैलीपोली पेनिनसुला बावन मील लंबा है। इस किनारे पर कहीं भी अँगरेज़ उतर सकते थे। इधर तुर्कों के पास केवल साठ हज़ार चुने हुए जवान थे। वॉन सांडर्स ने इन्हें तीन टुकड़ियों में विभक्त करके मुख्य सेनापतित्व कमाल को दिया। परंतु अनवर पाशा के रूस से लौटने पर कमाल से यह पद छीन लिया गया। फिर भी वॉन सांडर्स ने उसे बीस हज़ार की एक टुकड़ी का चार्ज दिया। मुस्तफ़ा कमाल नाराज़ तो बहुत हुआ, पर कर्तव्य से हटा नहीं। २५ एप्रिल, १९१५ को अँगरेज़ी फ़ौज ने, मय अपने जंगी जहाज़ों के, एक साधारण जगह पर हमला कर दिया। वॉन सांडर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखा खा गया। उधर क़ुस्तुनतुनिया के मुख्य द्वार, चोनक बेयर दर्रे पर, जहाँ मुस्तफ़ा कमाल के सैनिक चाँदमारी कर रहे थे, अँगरेज़ों ने गुप्त रूप से हमला किया। मुस्तफ़ा कमाल को फ़ौरन् निश्चय करना पड़ा कि चोनक बेयर को बचाना चाहिए, अन्यथा क़ुस्तुनतुनिया और समस्त टर्की पर दुश्मन का क़ब्ज़ा हो जायगा। उसने स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी पर हुक्म दिया—"एकदम बंदूक़ें सीधी करो, और घूम पड़ो।" "कारतूस ख़ाली हैं या भरे हुए?" उसने पूछा। पास खड़े हुए एक मेजर ने जवाब दिया—"भरे हुए।" मुस्तफ़ा कमाल ने ऑर्डर दिया—"तब बढ़े चलो मेरे शेरो! और जितनी जल्दी हो सके, बढ़कर चोनक बेयर पर क़ब्ज़ा कर लो।"

कोई दो सौ घुड़सवार लेकर वह सीधा स्वयं भागा। पहाड़ी पर पहुँचते-पहुँचते उसके साथ केवल बीस सवार रह गए। फिर भी उसने दुश्मनों पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। घमासान युद्ध शुरू हो गया। नीचे से चढ़नेवाली दुश्मन की फ़ौज पर ऊँचे टीले पर डटी हुई फ़ौज ने मुसीबत ढा दी। शत्रु-सेना, जो दो तिहाई चढ़ आई थी, बीच ही में रह गई। दुश्मन की फ़ौज के मुक़ाबले उसके पास बहुत कम सैनिक थे। रात होती, फ़ौजें सोतीं, पर मुतस्फ़ा कमाल एक मिनट के लिये भी दम न लेता। नीचे आस्ट्रेलियन सेना खाईं खोदे आगे बढ़ने को तैयार थी, उधर कमाल और उसकी वीरवाहिनी प्राणों पर खेलकर मोरचा जमाए खड़ी थी। कमाल तो सितम ढा रहा था। जहाँ सबसे अधिक ख़तरा होता, वहीं वह स्वयं उपस्थित होता। सबसे आगे वही बढ़ता था। वह लापरवाही से सिगार जलाकर गोला-बारी के बीच, मृत्यु को चुनौती दिए, घूम रहा था। एक गोला उसके पास फटा, गोली कानों के पास से निकल गई, पर वह निर्भय था।

मुस्तफ़ा कमाल
गैलीपोली की चढ़ाई के समय

७ अगस्त तक मुस्तफ़ा कमाल की सब फ़ौज नष्ट हो गई। अगर अँगरेज़ चाहते, तो आसानी से चोनक बेयर ले सकते थे; पर ऊपर सदैव की भाँति मुस्तफ़ा कमाल डटा हुआ था। उधर अँगरेज़ों के पास न्यूज़ीलैंड तथा भारतीय फ़ौज भी आ गई। टर्की को एक-एक आदमी की आवश्यकता थी। धीरे-धीरे कुछ फ़ौज मुस्तफ़ा कमाल के पास वॉन सांडर्स ने भेजी। महीनों युद्ध होता रहा। अंत में, दिसंबर १९१५ में, अँगरेज़ों ने मोरचा उठा लिया। मुस्तफ़ा कमाल क़ुस्तुनतुनिया लौट गया। वह अब पाशा (सेनानी) बना दिया गया था।

जर्मनी की यात्रा

कमाल की ख्याति इस समय बहुत बढ़ चुकी थी। क़ुस्तुनतुनिया में उसने अनवर पाशा और जर्मनी के सहयोग का घोर विरोध करना शुरू किया। अनवर इस समय जर्मन-राजदूत के हाथ की कठपुतली था, और टर्की-साम्राज्य का प्रधान कार्यकर्ता तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वज़ीर आज़म भी था। सुल्तान अब्दुलहमीद नाम-मात्र का बादशाह था। राजकुमार वहीदुद्दीन गद्दी का वारिस था। वह चतुर था, परंतु अनवर के डर से अफ़ीमची बना रहता था। अनवर पाशा ने मुस्तफ़ा कमाल को टालने के लिये राजकुमार वहीदुद्दीन के साथ जर्मनी भेज दिया। वहीदुद्दीन कमाल का मित्र हो गया, परंतु वह कमाल के उग्र विचारों से डरने लगा। जर्मनी में कमाल ने हेडक्वार्टर देखकर फ़ौरन् बता दिया कि जर्मनी हारेगा। जर्मनी में क़ैसर ने एक भोज दिया, जिसमें मार्शल हिंडेनबर्ग (जर्मनी के प्रधान सेनापति) भी मौजूद थे। मुस्तफ़ा कमाल ने कटुता से कहा—"महाशय ! सीरिया के विषय में जो कुछ आपने राजकुमार को बताया, वह ग़लत है।" इसी प्रकार हर समय वह अपने प्रश्नों से वहीदुद्दीन को समझाना चाहता था कि जर्मनी हारेगा।

शीघ्र ही, मुस्तफ़ा कमाल के विरोध करने पर भी, युद्ध समाप्त कर दिया गया। टर्की की पूर्ण पराजय हुई, क़ुस्तुनतुनिया में अँगरेज़ों का अधिकार हो गया, और टर्की की सरकार में इज़्ज़त पाशा प्रधान मंत्री बने। पर कमाल की शक्ति बहुत बढ़ गई। वह टर्की की सारी फ़ौज का प्रधान सेनापति था।

टर्की की अवस्था

प्रसिद्ध, प्राचीन ऑटोमन-साम्राज्य के टुकड़े-टुकड़े हो गए थे। मिस्र, सीरिया, फ़िलस्तीन और अरब अलग हो चुके थे। गवर्नमेंट की सत्ता टूट चुकी थी, और सब जगह शत्रुओं का क़ब्ज़ा था। इज़्ज़त पाशा निकाल दिया गया था। शीघ्र ही सुल्तान अब्दुलहमीद गद्दी से उतार दिए गए, और वहीदुद्दीन ने बागडोर स्वयं सँभाली। मुस्तफ़ा कमाल ने इज़्ज़त पाशा के साथ अपनी पार्टी बनाई। वहीदुद्दीन ने अपनी सरकार में मुस्तफ़ा कमाल पाशा को कोई स्थान न दिया।

भाग्य से मुस्तफ़ा कमाल को फिर एक मौक़ा मिला। अनातोलिया में गड़बड़ थी। अँगरेज़ों के विरोध करने पर भी मुस्तफ़ा कमाल साल-भर के लिये वहाँ का गवर्नर बना दिया गया। समसुन में अँगरेज़ी फ़ौजें पड़ी थीं। यहाँ से उसने टर्की का संगठन करना शुरू किया, और फ़ौजों को अपने साथ करके अँगरेज़ों को हथियार सौंपने से इनकार कर दिया। काज़िमकारा बेकर और उसकी विशाल सेना के साथ मिलकर उसने विद्युत्-गति से काम करना शुरू किया। एक-एक रोज़ में २०-२० सभाओं में भाषण देता। सुल्तान के बुलाने पर उसने टर्की के सब अफ़सरों को बुलाकर अपने को नेता चुनवा लिया, और सबने मिलकर सुल्तान को अँगरेज़ों के अधिकार से निकालने की क़सम खाई। साथ ही उसने सिवास में कांग्रेस बुलाई, जहाँ पूरे टर्की के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। वे आए भी थे किसी तरह लुक-छिपकर। सुल्तान उन्हें पकड़कर क़ैद कर लेते थे। काज़िमकारा की सहायता से मुस्तफ़ा कांग्रेस का सभापति और मुख्य कार्यकर्ता नियुक्त किया गया। सारा टर्की उसके सहारे था।

स्वतंत्रता के लिये युद्ध

सुल्तान और मुस्तफ़ा कमाल में खुले तौर पर लड़ाई शुरू हो गई। सुल्तान ने क़ुस्तुनतुनिया में कांग्रेस बुलाई, पर अँगरेज़ों ने उसे बंद कर दिया। कमाल ने संदेश दिया—"जीतो या मिट जाओ, स्वाधीनता की ज़िंदगी बसर करो, और अगर ग़ुलामी ही पसंद है, तो उससे तो यही अच्छा है कि दुनिया से मुँह काला करो।" इसी समय पेरिस-संधि कान्फ्रेंस में टर्की को काट-छाँटकर उसके भाग्य का निपटारा कर दिया गया। इसने विद्रोह की आग और भड़का दी। मुस्तफ़ा कमाल ने पूरे राष्ट्र पर क़ब्ज़ा कर लिया। केवल क़ुस्तुनतुनिया में सुल्तान अँगरेज़ों के वश में था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीक-युद्ध

प्रेसीडेंट विल्सन लॉयड जॉर्ज क्लीमेनकाऊ-कान्फ़्रेंस की मेज़ के चारो ओर आश्चर्य से टर्की की ख़बरें सुनते थे। वह टर्की को मृत समझते थे। आपस के झगड़ों के कारण वह कुछ न कर सकते थे। ग्रीस के अधिनायक ने शान के साथ युद्ध-सामग्री और टर्की से लड़ने की आज्ञा माँगी। वह स्वीकृत हुई। ग्रीस की फ़ौज सभी तरह सुसज्जित थी। सकेरिया में घमासान लड़ाई हुई, मुस्तफ़ा कमाल के

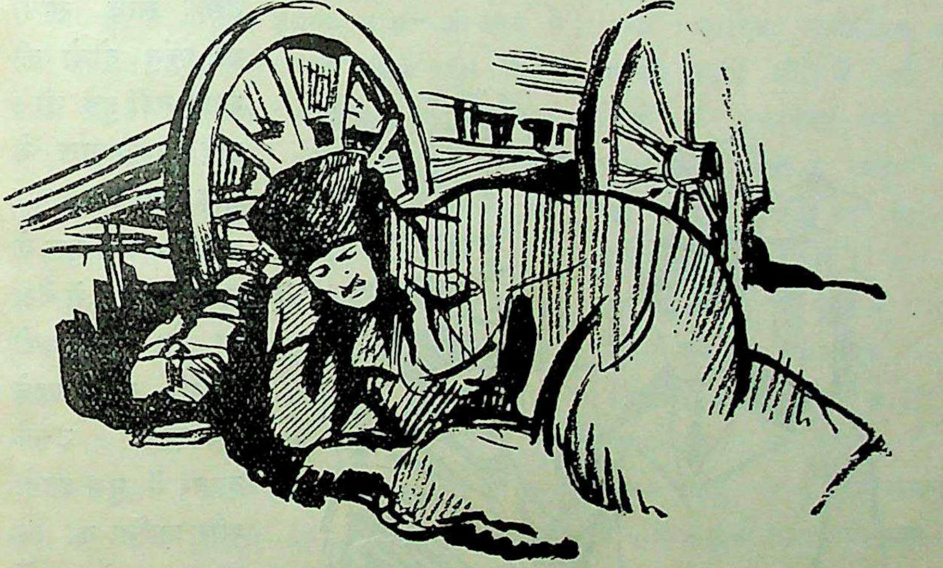

मुस्तफ़ा कमाल
(सकेरिया की चढ़ाई में)

अदम्य उत्साह से तुर्की फ़ौज ने उसे खदेड़कर टर्की के बाहर निकाल दिया। मित्र राष्ट्र तटस्थ रहे। इस युद्ध में मुस्तफ़ा कमाल चौबीसो घंटे वर्दी पहने काम करता। सारे इस्लामी मुल्कों ने बधाई के तार भेजे, और संसार-भर में विजय-दिवस मनाए गए। मुस्तफ़ा कमाल ने घोषणा की—"मैं टर्की को एक जीताजागता राष्ट्र बनाऊँगा। मैं टर्की को योरप के अन्यान्य सभ्य देशों की पंक्ति में बिठाऊँगा।"

टर्की-सुल्तान का अंत

टर्की में कांग्रेस हुई। लोग सुल्तान को तख़्त देना और मुस्तफ़ा कमाल को प्रधान मंत्री बनाना चाहते थे। परंतु कमाल गरजा—"बादशाहत ख़िलाफ़त से जुदा होकर रहेगी, और सदा के लिये मेट दी जायगी।" बाध्य होकर, रिवाल्वर के भय से, कांग्रेस को उसका प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। पाँच दिन के अंदर रफ़त पाशा ने क़स्तुनतुनिया पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान की सरकार ग़ैर क़ानूनी क़रार दी गई। दो दिन बाद अँगरेज़ों की ऐंबुलेंस-कार सुल्तान के महल के दरवाज़े पर पहुँची, और सुल्तान वहीदुद्दीन अपने बेटे, एक हिजड़े और एक थैले के साथ ब्रिटिश जहाज़ के लिये टर्की से निकल गए।

डिक्टेटर कमाल

मुस्तफ़ा कमाल इस समय टर्की का सर्वेसर्वा था। वह अस्थायी सरकार का सभापति तथा फ़ौज का प्रधान सेनापति था। उसने प्यूपिल्ज़-पार्टी नाम की एक संस्था का संगठन किया, जिसकी शाखाएँ और उपशाखाएँ देश के कोने-कोने में शीघ्र ही फैल गईं। यह एक प्रकार का सैनिक-संगठन था, और उसका प्रधान स्वयं मुस्तफ़ा कमाल था। इस्मत पाशा पेरिस-कान्फ़्रेंस में गया हुआ था। वहाँ एक बार असफल होने पर, देश में विरोध होने पर भी वह पुनः वहाँ भेजा गया। उस बार टर्की की सभी शर्तें मंज़ूर कर ली गईं। टर्की स्वतंत्र होकर रहा। कमाल इस समय डिक्टे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर बनना चाहता था। रहनी, अदनान, काज़िम-कारा बेकर, रफ़त, अलीफ़ऊद और नूरुद्दीन-से साथी, जो कंधे से कंधा भिड़ाकर लड़े थे, कमाल के विरुद्ध हो गए। पर उसने एक-एक का चुनकर अंत कर दिया। टर्की प्रजातंत्र घोषित हुआ।

ख़िलाफ़त का अंत

परंतु कमाल पाशा का कहना था—"जब तक टर्की से मज़हब, धर्म और क़ुरान का लोप न होगा, तब तक टर्की हरगिज़-हरगिज़ उन्नतिशील योरपियन राष्ट्रों की पंक्ति में न बैठ सकेगा।" कमाल ने टर्की की सुंदरियों को परदे से बाहर निकालने का प्रयत्न किया। ख़िलाफ़त के बारे में उसके उग्र विचार उसके साथी पाशाओं को विदित थे। उन्होंने घोर विरोध किया, और ख़लीफ़ा अब्दुल-मजीद ने उनका साथ दिया। इसी समय सर आग़ाख़ाँ ने टर्की-निवासियों को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने ख़िलाफ़त क़ायम रखने पर ज़ोर दिया। कमाल ने आग़ाख़ाँ को अँगरेज़ों का गुप्तचर घोषित किया, और धारा-सभा में एकाएक ख़िलाफ़त का अंत कर देने का बिल रक्खा। अपने विपक्षी दो सदस्यों को रातोरात क़त्ल करवा दिया, और दो घंटे के अंदर ख़िलाफ़त टर्की से विदा हो गई। इस कार्य से सारा मुसलिम-संसार विक्षुब्ध हो उठा। कुछ ने कमाल पाशा से स्वयं ख़लीफ़ा बनने को कहा, पर उसने घृणा से मुँह फेर लिया।

कमाल का विवाह

कमाल का स्वभाव चिड़चिड़ा था। लगातार लोगों के विरोध के कारण वह और भी उग्र हो गया था। यदा-कदा वह शराब और वेश्याओं के बीच में पड़ा रहता था। शुरू में फ़िक्रिया हानुम उसके साथ रहती थी, परंतु दोनो की शादी नहीं हुई थी। बाद में कमाल ने छोड़ दिया। एक बार कमाल ग्रीस-युद्ध के समय दफ़्तर में बैठा था कि एक लड़की विदेशी वस्त्र पहने ज़बरदस्ती उसके दफ़्तर में घुस आई, और प्रार्थना की कि कमाल उसके घर में रहे। उस लड़की का नाम लतीफ़ा था। वह बड़े रईस पिता की पुत्री थी, और योरप में रह चुकी थी। कहते हैं, सारे टर्की में उस समय वैसी सुंदरी न थी। कमाल उसके प्रेम-पाश में फँस गया। उसे उसने अपनाना चाहा, लेकिन बग़ैर शादी के वह तैयार न होती थी। इधर कमाल किसी भी प्रकार की शादी से नफ़रत करता था। अंत में कमाल को हार माननी पड़ी, और एक बार तैश में वह कोई तीन सौ मील रातोरात चलकर उसके मकान आया, और सबेरा होते ही उसे ज़बरदस्ती

मुस्तफ़ा कमाल और लतीफ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़कर बाहर ले आया, और जो पहला क़ाज़ी सड़क पर मिला, उसे वहीं सड़क पर शादी करा देने का हुक्म दिया। इस शादी से मुस्तफ़ा कमाल का काम बहुत आसान हो गया, क्योंकि लतीफ़ा ने टर्की की औरतों का उद्धार किया। उन्हें आधुनिक बनाया, और उनमें आज़ादी तथा समता के भाव भरे। परंतु दोनो ही एक दूसरे से दबनेवाले न थे, अतः कुछ वर्षों बाद कमाल ने उसे तलाक़ दे दिया, और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

सुधार

अब ग़ाज़ी मुस्तफ़ा कमाल पाशा जी-जान से टर्की को आधुनिक राष्ट्र बनाने में लग गया। सबसे पहले उसने तुर्की लाल टोपी पर धावा किया, और जब लोग न माने, तो क़ानूनन् उसे नाजायज़ कर दिया। विरोध करने पर हज़ारों लोग जेल भेज दिए गए। मैंने शत्रु पर विजय प्राप्त की है, देश को जीता है, पर क्या मैं जनता को जीत सकता हूँ।" इस भावना से प्रेरित होकर उसने उनके पुराने रिवाज, आदतें, पहनावा, सभ्यता आदि सब बदल दिए। टर्की पूर्ण रूप से योरपीय ढंग से चलने लगा। उसने टर्की-भ· में स्वदेशी की धूम मचा दी, और विदेशी का बहिष्कार कर दिया। विदेशी लोगों को बुलाकर टर्की की कला-कौशल बढ़ाने के लिये बड़ी-बड़ी फ़ैक्टरियाँ खोलीं, परंतु रुपया और प्रबंध तुर्कों के ही हाथ में रहा। विदेश से बहुत रुपया उधार लिया गया, परंतु बग़ैर तुर्कों के उनका संचालन नहीं हो सकता था। विदेशी अरबी-ज़बान को निकाल बाहर कर दिया, और उसकी जगह तुर्की ने ली। अक्षर रोमन कर दिए गए। इसके लिये स्वयं कमाल ने टर्की-भर का दौरा किया, और हाथ में खरिया लेकर स्वयं लोगों को पढ़ाना शुरू किया। अफ़सरों को आज्ञा हुई कि रोमन सीखें, वर्ना निकाल दिए जायँगे। हज़ारों मसजिदें ख़त्म करके स्कूल बना दिए गए; उनकी जायदादें छीनकर ज़ब्त कर ली गईं। क़ाज़ी और मुल्ला सड़कों पर काम करने के लिये भेज दिए गए। प्रत्येक तुर्क के लिये काम करना अनिवार्य कर दिया गया, और भिक्षा दंडनीय कर दी गई। उसने विदेशी नाम भी, जैसे मुस्तफ़ा आदि, उड़ा दिए, और स्वयं अपना नाम बदलकर कमाल अता तुर्क (तुर्कों का पिता) रक्खा। सचमुच वह प्रत्येक अर्थ में तुर्कों का पिता था। कमाल पाशा के शासन-काल में टर्की की चतुर्मुखी उन्नति हुई। टर्की का पुनर्निर्माण हो गया। आर्थिक, सामाजिक, कला-कौशल, ग्राम-सुधार आदि सभी में टर्की इस समय योरपीय देशों से मुक़ाबला कर रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्र उसकी मैत्री के इच्छुक हैं। इस समय उसके पास अपना जहाज़ी बेड़ा है, और अपने समुद्रों पर उसका अधिकार। ५,००० किलोमीटर से अधिक सड़कें बन चुकी हैं। गाँव नए तरीक़े से बसाए गए हैं। रेल प्रत्येक प्रांत में दौड़ रही है, और देश-वासी खदानों से पूरा लाभ उठा रहे हैं। समाचार-पत्रों का संगठन हो गया है, और इस समय कोई १५० अच्छे समाचार-पत्र निकल रहे हैं। आज तुर्की का बच्चा-बच्चा पढ़ रहा है - अपने पिता का गुण-गान।

मृत्यु

खेद है, गत १० नवंबर को कमाल अतातुर्क का निधन हो गया। समस्त टर्की उसके शोक में पागल हो गया। लाखों स्त्री-पुरुष उसके शव के साथ आँसू बहाते जा रहे थे। उसके एक बहन के सिवा कोई न था। उसकी पूरी संपत्ति राष्ट्र की संपत्ति है। विदेश के सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि शोक प्रकाश करने के लिये सम्मिलित हुए। कमाल अता तुर्क आज मर गया है, पर वह एक ज़िंदादिल आदमी था, कठोर शासक था, और अपने देश के लिये अपार श्रद्धा, विश्वास तथा प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखता था। वह तानाशाह था, पर था देश के हित के लिये। वह भी केवल इसलिये कि टर्की में फिर कभी तानाशाह न हो सके। आज वहाँ की सरकार उसी के कारण प्रजातंत्र है, और उसी के बताए मार्ग पर आगे बढ़ेगी। स्वयं उसी का दाहना हाथ इश्मत इनान् (इनू-युद्ध का विजेता) सभापति है। कमाल अता तुर्क शिवाजी, नेपोलियन की तरह युद्ध में अमर है, और ग्लैडस्टन तथा वाशिंगटन की तरह देश की स्वतंत्रता तथा निर्माण के लिये अमर है। वह तुर्क था, और तुर्क होकर ही मरा। उसका यह वाक्य भी अमर रहेगा—

"मैंने प्रत्येक राष्ट्र को पहचाना है, मैंने युद्ध में, विपत्ति में तथा मृत्यु-शय्या पर, जब कि मनुष्य के गुणों की परख होती है, उनका अध्ययन किया है। ऐ प्यारे देशवासियों ! मैं शपथ लेकर कह सकता हूँ कि हमारी आत्मशक्ति संसार-भर के राष्ट्रों में अन्यतम है।"

दुर्घटना कहकर नहीं आती, पहले से सचेत रहिए !

हील-एक मरहम

(Regd.)

कटे, जले, चोट आदि पर लगाने का विख्यात मरहम

कटे, जले, चोट आदि स्थान में लगाते ही दर्द और जलन को शांत कर शीघ्र आराम करता है। चूहे, बिल्ली, मकड़ी, बर्रे, बिच्छू आदि के काटे हुए स्थान का विष दूर करके शीघ्र अच्छा करता है।
इसे प्रत्येक घर में रखना आवश्यक है।

अपने स्थानीय हमारे एजेंट से खरीदिए।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰

विभाग-नं॰ ४६, पोस्ट-बक्स नं॰ ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधूरा मंदिर

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

[एक]

प्रतिमा अभी तक मुस्किराई न थी!

माधव सोचने लगा, क्या कमी रह गई? फिर क्षण-भर बाद उसने अपनी हथौड़ी और टाँकी उठाकर स्फटिक की उस प्रतिमा की आँखों के नीचे कुछ भाव-रेखाएँ गहरी कर दीं—अधरोष्ठ और चिबुक के बीच में एक चिह्न-सा बना दिया, कपोलों पर छाया की रूपक कुछ रेखाएँ बनाईं - सचमुच फिर तो वह प्रतिमा मुस्किरा उठी।

माधव ने देखा, प्रतिमा की आँखों में मुस्कान! होठों पर मुस्कान! शरीर के प्रत्येक अवयव में मुस्कान! उसके रोम-रोम में प्रसन्नता और संतोष की हिलोरें दौड़ने लगीं। उसने थोड़ा पीछे हटकर पार्श्व से उस प्रतिमा को देखा। फिर पास से देखा—सजीवता का कैसा अनुरूप सामंजस्य था।

अपनी सफलता पर वह शिल्पी फूला न समाया। प्रतिमा की रूप-राशि ने उसे मुग्ध कर लिया। उसने कहा—'मैंने तुम्हें बनाया है प्रतिमे! तुम मेरी हो न?"

प्रतिमा मौन थी, शिल्पी उसे देख रहा था।

प्रातःकाल का उजाला धीरे-धीरे उसकी कोठरी में आ रहा था। रात-भर जला हुआ दीपक मलिन हो चला था। उसने उसे बुझा दिया, और खड़े होकर एक बार अँगड़ाई ली। कोई उसके पास आकर चुपचाप खड़ा हो गया।

माधव ने देखते ही कहा—"अरे, तुम आ गईं मीरा! देखो, मेरी प्रतिमा—वही, जो मैं इतने दिनों से बना रहा था, आज नैयार हो गई। कैसी—अच्छी है न?"

मीरा ने देखा प्रतिमा को—फिर पति के उल्लास-भरे हुए मुख को। वह बोली—"बहुत सुंदर है।"

माधव हर्ष से उछल पड़ा। बोला—"सचमुच, यह तुम्हें बहुत सुंदर लगती है मीरा?"

"हाँ-हाँ, क्या सौगंद खिलाकर पूछना चाहते हो?"

माधव कुछ लजाकर चुप हो गया। मीरा समझ गई। वह बोली—"लेकिन इसे बेच भी सकोगे?"

माधव आतुरता से कह उठा—"क्यों नहीं, यह तो राजा-महाराजाओं के हाथ बिकेगी, बहुत-सा धन मिलेगा मीरा! ढेर-सा धन—उतना, जितना पहले कभी नहीं मिला!"

"आशा है, पर विश्वास?"

"विश्वास भी है। सब दिन एक-से नहीं जाते मीरा!"

मीरा ने एक ठंडी साँस ली। ग़रीबी के दिन उसे भूले न थे, और अचानक ही उसका भाग्य पलट सकेगा, इस पर उसे विश्वास न होता था। समय की विषम गति ने उसे सब कुछ सिखा दिया था। उसने माधव की ओर देखकर कहा—"ईश्वर तुम्हें सफलता दे, और क्या कहूँ।"

वह घर के भीतर चली गई। माधव क्षण-भर सोचता रहा, फिर प्रतिमा के सामने जाकर बोला—"प्रतिमे! क्या तुम मेरे भाग्य को बदल सकोगी?"

प्रतिमा चुप थी। माधव उसकी ओर देख रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[दो]

सम्राट् के वसंतोत्सव की तैयारियाँ हो चुकी थीं। एक विराट् प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। दूर-दूर से कलाकार अपनी वस्तुएँ लेकर आए हुए थे और, निमंत्रित राजे-महाराजे पूरी भीड़-भाड़ के साथ उत्सव में सम्मिलित हुए। उस समारोह में समय बीतते देर न लगी। अंतिम दिन सम्राट् अपने मेहमानों के साथ प्रदर्शनी देखने आए।

एक कोने में शिल्पी माधव अपनी प्रतिमा के पास बैठा हुआ आने-जानेवालों को बड़ी उत्कंठा से देख रहा था।

इतने दिनों में सहस्रों व्यक्तियों ने उसकी प्रतिमा को देखा था। उसकी कला की प्रशंसा की थी। परंतु मूल्य पूछ-पूछकर चले गए थे। ग्राहकों के अभाव से माधव का हृदय बैठा जाता था।

वह अंतिम दिन था, जब बड़ी आशा से वह सम्राट् के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

चित्रों और मूर्तियों की ओर देखते हुए सम्राट् उसके पास खड़े हो गए, और प्रतिमा को देखने लगे।

माधव साँस रोककर उनके कुछ बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

सम्राट् ने पास ही खड़े हुए कांबोज-नरेश की ओर देखकर कहा—"कैसी लगी यह प्रतिमा आपको?"

सम्राट् घूमकर देखने लगे। माधव ने सामने आकर अभिवादन किया।

कांबोज-नरेश बोले—"सुंदर है, कलामय है।"

सम्राट् ने माधव की ओर संकेत करके कहा—"मेरे राज्य के सबसे कुशल शिल्पी की यह कलाकृति है महाराज!"

माधव का हृदय खिल उठा।

कांबोज-नरेश ने मुस्किराकर कहा—"सम्राट् के राज्य में ही कलाकारों का अभाव नहीं है, परंतु हमारे यहाँ—अच्छा, शिल्पी! तुम यह प्रतिमा बेचोगे?"

माधव क्या उत्तर देता, वह सम्राट् की ओर देखने लगा। सम्राट् बोले—"तुम्हारा सौभाग्य है, जो कांबोज-नरेश तुम्हारी प्रतिमा मोल ले रहे हैं।"

माधव बोला—"सम्राट् की कृपा।"

कांबोज-नरेश व्यग्रता से बोले—"शिल्पी, तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया?"

माधव सकपका गया। फिर कहने लगा—"हाँ महाराज, मैं समझा, आप इस प्रतिमा को लेना चाहते हैं?"

"हाँ, क्या मूल्य माँगते हो?"

"जो महाराज देने की कृपा करें।"

"तुम न बताओगे?"

"नहीं, महाराज! मैं आपकी प्रजा होकर..."

"सम्राट् हँस पड़े। बोले—"कांबोज-नरेश! मेरी प्रजा ऐसी ही है।"

कांबोज-नरेश ने अपने अनुचरों को संकेत किया। एक सहस्र स्वर्ण-मुद्राएँ माधव के आगे बिखेर दी गईं।

प्रतिमा को अनुचरों ने उठा लिया।

माधव ने एक बार सतृष्ण नेत्रों से बिदा होती हुई—सदा के लिये बिछुड़ती हुई—प्रतिमा को देखा, एक ठंडी साँस ली, फिर कांबोज-नरेश को अभिवादन किया।

वह स्वर्ण-मुद्राओं को कंधे की चादर के छोर में बाँधने लगा। सम्राट् और उनके साथी महाराज सब आगे बढ़ गए थे। पास के अन्य व्यवसायी माधव को बधाइयाँ दे रहे थे। माधव चुप था।

[तीन]

राजप्रासाद के एक कक्ष में कांबोज-नरेश कुछ चिंतित-से बैठे थे, सामने थी ख़रीदी हुई प्रतिमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राट् ने प्रवेश किया । कांबोज-नरेश की गंभीर मुद्रा देखा, और देखा उस प्रतिमा को । वह मुस्किराए, और बोले—"क्या सोच रहे हैं आप ?"

कांबोज-नरेश ने सिर उठाकर देखा । सम्राट् की अभ्यर्थना के लिये उठते हुए उन्होंने कहा—"कुछ नहीं महाराज !"

"कुछ तो ?"

"मेरा विचार है, इस बार देश लौटने पर एक...एक मंदिर बनवाऊँ ।"

"हाँ, मंदिर । किस तरह का ?"

"यही सोच रहा हूँ । आप कुछ सहायता..."

"क्यों नहीं आप अपने ही हैं, जो सहायता चाहें, मिलेगी ।"

"सच कहते हैं आप—क्या वचन देते हैं ?"

"वचन देता हूँ ।"

कांबोज-नरेश का मुख-मंडल उल्लास से चमक उठा । उन्होंने थोड़ा ठहरकर कहा—"महाराज ! आपका इतना कहना ही मेरे लिये सब कुछ है । बस, इतनी सहायता कीजिए कि अपने राज्य के सर्वोत्कृष्ट कलाकार और शिल्पी मेरे राज्य में भेज दीजिए ।"

"वाह ! यह कौन-सी बड़ी बात है ।"

"मैं उन्हें उचित पारिश्रमिक दूँगा, और मंदिर का कार्य समाप्त होने पर वे लोग पुनः आपकी सेवा में वापस आने को स्वतंत्र होंगे ।"

"जैसा आप चाहें ।"

"और, उस शिल्पी को मैं इन सब कलाकारों का मुखिया बनाऊँगा ।"

कांबोज-नरेश की आँखें प्रतिमा की ओर उठ गईं, और वह धीरे-धीरे कहते गए—"जिसने—जिसने यह प्रतिमा बनाई—क्या नाम है महाराज ! उसका ?"

"नाम ? उसका नाम है माधव ।"

"माधव ?"

"हाँ"

"तो सम्राट् की आज्ञा मिलने पर इन सब लोगों को सूचना हो जानी चाहिए—कल तक ।"

"कल तक ।"

सम्राट् मुस्किरा रहे थे । कुछ सोचकर उन्होंने कहा—"महाराज ! एक बात पूछूँ ?"

"आज्ञा ?"

"आपके मंदिर की विशेषता क्या होगी ?"

"कैसे कहूँ, अभी आपके सम्मुख—आप-जैसे एकच्छत्र सम्राट् के वैभव के आगे मेरे साधन, संपदा और प्रयास सभी तुच्छ हैं । फिर भी आपका आशीर्वाद और सहयोग मिलने पर..."

"उसकी चिंता आप न करें—किंचित् भी न करें महाराज !"

"तो फिर मेरा प्रयास अवश्य ही सफल होगा ।"

"मैं हृदय से आपकी सफलता चाहता हूँ ।"

सम्राट् ने आगे बढ़कर कांबोज-नरेश को हृदय से लगा लिया ।

दूसरे कक्ष में सितार के तारों की झंकार के साथ-साथ एक कोमल स्वर संगीत की ध्वनि में बिखर रहा था !

दोनो उसी ओर चल दिए ।

मूक प्रतिमा उस शांत कक्ष में एकाकी प्रहरी की भाँति स्थित थी ।

[चार]

और फिर—

माधव अपने घर आकर यात्रा की तैयारी कर रहा था । सामान बाँधते हुए बोला—"मेरे सौभाग्य पर तुम्हें रूठना अच्छा लगता है मीरा ?"

एक कोने में आँसू पोंछती हुई मीरा ने सिर उठाकर कहा—"नहीं, रूठूँगी क्यों ? और, रूठने से होता ही क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधव ठहर गया, पास आकर बोला—"हमारे दिन अब अच्छे आ गए हैं मीरा ! तुम यह नहीं जानतीं क्या ? इतने दिनों की निर्धनता दूर होने का जब समय आया, तब तुम रोती हो !"

मीरा के आँसू न रुक सके। उसने आँचल से मुँह छिपाकर कहा—"यदि तुम स्त्री के हृदय को जान सकते ?"

"क्यों ? मेरे सुख में ही तो तुम्हारा सुख है मीरा ?"

"फिर भी—एक बार सोचो तो—मुझे छोड़कर चले जाओगे, इस दुख की तुलना में संसार का सुख भी मैं नहीं चाहती, समझे।"

"पर—मीरा ! मैं सदा के लिये तो तुम्हें छोड़कर नहीं जा रहा हूँ ?"

"भविष्य किसने देखा है। और हाँ, मेरी बात छोड़ दो, क्या तुम्हें उस अभागी संतान की ममता भी नहीं, जो शीघ्र ही ..."

मीरा बोल न सकी, उसका गला भर आया।

माधव ने देखा—आँसुओं में डूबती हुई वियोग की वेदना की एक छाया।

उसने एक ठंडी साँस लेकर कहा—"मीरा ! मत सोचो इतना सब, जीविका की समस्या हमें सुलझाना है। मैं पुरुष हूँ। मेरा उत्तरदायित्व समझती हो ? धीरज रखने के सिवा और मैं क्या कह सकता हूँ तुमसे ?"

"धीरज ? मीरा के लिये इस समय वह समझ से बाहर की बात है। माता के कर्तव्य में छिपी हुई ममता का आकर्षण मेरे लिये है, और तुम—तुम क्या जानो ?"

माधव खड़ा-खड़ा सोचता रहा। फिर बोला—"सब कुछ समझता हूँ मीरा ! परंतु लाचारी .."

"ऐसा ही सही, पर क्या तुम्हें विश्वास है कि जिस कार्य के लिये तुम जा रहे हो, उसमें तुम्हें सफलता होगी ?"

"सफलता ? मैं कार्य में विश्वास रखता हूँ मीरा ! परिणाम में नहीं।"

मीरा चुप हो गई।

माधव फिर अपनी तैयारी करने लगा। कुछ याद आया, लकड़ी का संदूक खोला, और एक थैली निकाली। मीरा के पास आकर उसके हाथों में देते हुए कहा—"इसे रख लो।"

मीरा ने माधव के मुख की ओर देखा, फिर बोली—"इसी सोने के बदले मेरा वियोग ख़रीद रहे हो ?"

"नहीं—भाग्य !"

"फिर इसकी आवश्यकता मुझे नहीं रहेगी तुम्हारे चले जाने पर।"

"क्यों ?"

"ईश्वर ने मुझे भी हाथ-पाँव दिए हैं, साँझ तक मेहनत-मजूरी करके पेट भर लूँगी।"

"पर मेरे जीते-जी तुम्हें ऐसा करने की आवश्यकता ?"

मीरा चुप हो गई। माधव के आँसू न रुके, वह रोते-रोते बोला—"प्यारी मीरा ! मुझे क्षमा करो। तुम बहुत दुखी हो गई ?"

"नहीं, नहीं, तुम न रो—छिः-छिः !"

मीरा ने अपने आँचल से पति के आँसू पोंछे।

द्वार पर रथ के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी।

माधव चौंककर कपड़े पहनने लगा।

मीरा ने पूछा—"कांबोज यहाँ से कितनी दूर है ?"

माधव बोला—"बहुत दूर—दो सहस्र कोस !"

"दो सहस्र कोस ? सचमुच, तुम इतनी दूर चले जाओगे माधव ?"

मीरा माधव के पास आकर खड़ी हो गई।

कांबोज-नरेश का अनुचर द्वार पर खड़ा हो गया आकर।

माधव ने पूछा—"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचर ने उत्तर दिया—"रथ तैयार है। चलिए।"

माधव ने मीरा की ओर देखकर कहा—"तुम्हें ईश्वर को सौंपकर जा रहा हूँ मीरा!"

मीरा ने अपने मन का आवेग छिपाकर कहा—"पर शीघ्र आना, मेरे लिये न सही, पर अपनी संतान के लिये—"

"समझता हूँ मीरा। मैं शीघ्र ही आऊँगा। लेकिन मुझे शुभ समाचार कब तक मिलेगा?"

मीरा ने लजाकर सिर नीचा कर लिया। माधव बिदा माँग रहा था।

[पाँच]

बहुत दिनों बाद कांबोज-देश की राजधानी में कलाकारों की एक सेना-सी बाहर से आकर ठहर गई। उनका नेता, मुखिया, संचालक था—माधव।

राजप्रासाद की अट्टालिका से कांबोज-नरेश और उनकी महारानी, दोनो देख रहे थे।

महारानी बोलीं—"इतने लोगों को आमंत्रित किया है आपने?"

महाराज गर्व से बोले—"हाँ।"

"क्यों?"

"गरुड़ध्वज का मंदिर क्या यों ही बनवाना चाहती हो इला?"

"पर इतनी भीड़-भाड़! इसकी आवश्यकता?"

"इला, यह मंदिर मेरे जीवन-काल की एक अमर स्मृति बनकर संसार में रह सके, इसीलिये इतने शिल्पियों और कलाकारों को मैंने एकत्र किया है।"

"और, इसका व्यय?"

"चिंता नहीं, मेरे राजकोष की अंतिम मुद्रा तक इस कार्य में लग जाय, तो भी मैं पीछे न हटूँगा। इला! प्रभु के नाम पर मुझे यह अनुष्ठान करना ही है।"

"अवश्य महाराज! परंतु..."

"परंतु क्या इला?"

"आपकी इच्छा के अनुकूल कार्य करने की क्षमता, इतने शिल्पियों के नियंत्रण का भार और उसकी व्यवस्था? कौन कर सकेगा?"

कांबोज-नरेश हँस पड़े। बोले—"इधर आओ इला!"

इला का हाथ पकड़कर महाराज भीतर कक्ष में चले गए। एक सुंदर चौकी पर माधव की बनाई हुई प्रतिमा रक्खी थी, उसकी ओर संकेत करके उन्होंने कहा—'देखो, यह प्रतिमा जिसने बनाई है, उसी को मैंने अपने मंदिर के निर्माण का सारा भार सौंपा है, सारे शिल्पी उसी की देख-रेख में कार्य करेंगे।"

महारानी उस प्रतिमा का सौंदर्य निहारती हुई एकटक खड़ी रह गईं। महाराज ने पूछा—"क्यों इला?"

"बहुत सुंदर है यह प्रतिमा। इसके निर्माता का नाम?"

"माधव है उसका नाम इला! देखती हो, कितनी सजीवता है उसकी कला में!"

"सचमुच महाराज! अब मुझे विश्वास होता है कि मंदिर ठीक वैसा ही बनेगा, जैसा तुमने स्वप्न में देखकर मुझसे कहा था।"

इला मुस्किरा दी।

कांबोज-नरेश ने उसके दोनो हाथ अपने हाथों में लेकर पूछा—"क्यों इला! भला, हमारे जीवन-काल में ही हमारी यह इच्छा पूरी हो सकेगी?"

इला उनकी ओर देखती रह गई। फिर बोली—"ऐसा सोचने का कारण?"

"कारण? कुछ भी नहीं इला! मानव-कर्म का नियंत्रण किसके हाथ में है—जानती हो?"

"नहीं महाराज! आप—आप तो भगवान् गरुड़ध्वज की सेवा कर रहे हैं, फिर शंका और भ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा ? जिनके प्रयोजन से मंदिर बन रहा है, वही हमें उसकी पूर्णता में सफलता देंगे ।"

"इला ! देखो, मैंने अपने मन की बात कह दी। मुझे यों ही कुछ—"

"नहीं महाराज ! प्रभु मंगल करेंगे आपका। आप शतायु हों ।"

"तो शिलान्यास का समारोह शीघ्र ही आरंभ होना चाहिए इला !"

"हाँ, शुभ कार्य में विलंब कैसा ।"

महाराज कुछ सोचने लगे। इला ने प्रकाश की ओर देखकर एक ठंडी साँस ली।

[छ]

मंदिर का शिलान्यास-कार्य समाप्त होने पर कांबोज-नरेश ने माधव को साथ लेकर राजप्रासाद में प्रवेश किया, महामात्य ने आकर सूचना दी— "श्रीमन् ! गांधार-देश से एक प्रख्यात ज्योतिषी का आगमन हुआ है। महाराज से भेंट..."

"हाँ-हाँ, अभी उसे ले आओ।" महाराज ने उत्तर दिया, और भीतर अपने मंत्रणा-गृह में पहुँच विराजमान हो गए।

कुछ देर सोचने के बाद कांबोज-नरेश ने कहा— "माधव !"

"आज्ञा महाराज ?"

"अब आज से मेरा उत्तरदायित्व समाप्त होता है, और..."

"...मेरा आरंभ होता है महाराज ! विश्वास रखिए, देव-कार्य और आपकी सेवा, दोनो का लाभ मुझे मिलना है। अतएव मैं प्राण-पण से चेष्टा करके आपके आदेशानुसार मंदिर का कार्य संचालन करूँगा ।"

"सम्राट् की जय हो !" कहते हुए ज्योतिषी ने प्रवेश किया, और अभिवादन के पश्चात् महाराज के संकेत से आसन ग्रहण किया, महाराज ने पूछा—"आपका नाम ?"

"हाँ श्रीमन् ! दास का नाम है—विशाख। मैं गांधार-नरेश का राजज्योतिषी हूँ ।"

"अच्छे समय पर आपका आगमन हुआ है। भला, मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर आप गणना द्वारा बता सकेंगे ?"

"क्यों नहीं श्रीमन् ! मुझसे जो सेवा हो सकेगी, कभी मुँह न मोड़ूँगा। आज्ञा कीजिए ।"

"अच्छी बात है ।"

कांबोज-नरेश के मुख-मंडल पर गंभीरता की एक लहर छिपते-छिपते प्रकट हो गई। वह कुछ ठहरकर बोले—"मैं भगवान् गरुड़ध्वज का एक विशाल मंदिर बनवा रहा हूँ। वह इतना विशाल और भव्य होगा, जिसकी तुलना का कोई भी देवालय भारत में अभी तक नहीं बन सका है, और उसकी रचना मेरी महारानी को स्वप्न में दिखाई दिए हुए एक मंदिर के अनुरूप होगी ।"

"बहुत सुंदर श्रीमन् !" ज्योतिषी बोला।

"लेकिन—मुझे आरंभ कर देने के बाद—अब ऐसा जान पड़ता है, मेरी यह इच्छा मेरे जीवन-काल में पूरी न हो सकेगी !"

ज्योतिषी बड़े ध्यान से महाराज की बातें सुन रहा था। महाराज कहते गए—"तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या मेरी आशंका ठीक है, अथवा यह कार्य मेरे हाथों से निर्विघ्न समाप्त हो सकेगा ? आप इसका विचार करें ।"

"जैसी आज्ञा ।"

ज्योतिषी विशाख ने अपने थैले से पंचांग, भोज-पत्र, लेखनी, मसि-पात्र आदि निकालकर सामने रक्खे, और महाराज की जन्म-तिथि पूछने के बाद गणना-कार्य आरंभ किया।

माधव बड़े कौतूहल और उत्सुकता से यह सब देख रहा था।

उसने पिछले कई दिनों से कांबोज-नरेश को चिंतित देखा था, परंतु कारण पूछने का उसे साहस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न होता था। आज अनायास ही सारी बात खुल गई। वह विशाख के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

थोड़ी देर बाद विशाख ने कहा—"महाराज! आप चिरजीवी हों। मेरी गणना से जो कुछ स्पष्ट होता है, क्या निवेदन करने की आज्ञा है मुझे?"

महाराज ने उत्तर दिया—"निस्संदेह, आप सत्य-सत्य मुझे सारी बातें बताते जायँ।"

"सत्य ही कहूँगा श्रीमन्! देखिए—आपने देव-कार्य का आरंभ बड़े ही शुभ अवसर पर किया है, और आप बड़े उत्साह से उसे संपन्न करने का प्रयत्न भी करेंगे। है न ठीक श्रीमन्?"

"हाँ, ठीक है—आगे?"

"आगे—श्रीमन्! आज से ठीक सोलह वर्ष बाद..."

"सोलह वर्ष बाद? उहुँ, उसकी चिंता न कीजिए। तब तक तो मंदिर बनकर तैयार भी हो चुकेगा।"

"श्रीमन्! ऐसा नहीं होगा, जो आप सोचते हैं। मैं कह रहा था—आज से सोलह वर्ष बाद—एक निरपराध युवक की इसी मंदिर में अचानक हत्या होगी, और उसका परिणाम बड़ा ही भयंकर होगा महाराज!"

"क्या होगा?"

"उस हत्या के ठीक दूसरे दिन मंगल-ग्रह से टक्कर खाकर एक दूसरा ग्रह टूटेगा, और उल्का-पात के सदृश वह विध्वंसक ग्रह आपके कांबोज-देश पर सीधा आ गिरेगा, जिससे आपके राज्य का सर्वनाश हो जायगा। आप और आपकी प्रजा, कुटुंब, राजप्रासाद आदि सब कुछ धूल में मिल जायँगे। केवल यही आपका मंदिर—अधूरा मंदिर—भारतवर्ष में उस सर्वनाश की कथा कहने के लिये जैसे-का-तैसा खड़ा रह जायगा।"

ज्योतिषी विशाख चुप हो गया।

महाराज माथे पर हाथ रखकर कुछ सोचने लगे।

विशाख ने कहा—"श्रीमन्! यही ज्योतिष-शास्त्र का कथन है। और, कदापि झूठा न होगा।"

महाराज बोले—"इसका उपाय?"

"उपाय? केवल एक ही—आज से सोलह वर्ष बाद—आप एक निरपराध युवक की प्राण-रक्षा का प्रबंध कर सकें, तो—परंतु महाराज! भावी अटल है।"

महाराज ने थोड़ा ठहरकर उत्तर दिया—"परंतु मैं जो निश्चय कर चुका, सो कर चुका, अब तो यह मंदिर बनकर ही रहेगा, चाहे जो भी परिणाम हो।"

माधव ने सब कुछ सुनने के बाद एक ठंडी साँस ली।

कैसा भयानक चित्र था, जो भविष्य की छाया लेकर ज्योतिषी के शब्दों में सजीव हो उठा था।

वह सोच रहा था—सोलह वर्ष बाद!...फिर?

[सात]

सोलह वर्ष बाद—

कांबोज-देश से दो सहस्र कोस की दूरी पर—अपने जीर्ण-शीर्ण घर में—देवता के पूजन में निरत मीरा ने सुना—कोई पुकार रहा था। "मा, अरी मा, द्वार खोल?"

मीरा ने उठकर द्वार खोला। अँगौछे में बहुत-से फल लिए हुए मन्नू आया था।

मीरा ने पूछा—"बड़ी देर हुई बेटा, अभी भोजन भी नहीं किया तूने?"

मन्नू ने हँसकर उत्तर दिया—"तू तो सदा ऐसे ही कहा करती है। अच्छा, चल खिला मुझे।"

मा ने थाली परोसी, बेटा खाने बैठा। सुख की उन दो घड़ियों में—अचानक—मीरा की आँखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आँसू भर आए। जिनको आँचल से पोंछते हुए मन्नू ने देख लिया। हाथ का ग्रास हाथ में ही रहा। वह बोला—"क्या हुआ मा? तू रोती है?"

"नहीं, नहीं बेटा।"

मन्नू ने खाने से हाथ खींच लिया, और कहा—"ऐसे नहीं बताएगी, ले, जाता हूँ।"

पानी का घूँट पीकर मन्नू उठ खड़ा हुआ। मा की ममता विकल हो उठी। मीरा ने कहा—"क्या बताऊँ बेटा!"

"तू आज रोई क्यों? देख, सच-सच बताना होगा।"

मीरा ने उसके मुख-मंडल पर दृष्टि डाली। मन्नू के हृदय की व्याकुलता चमक उठी। मीरा ने कहा—"बेटा, आज मुझे तेरे पिता की याद आई। वह कहाँ होंगे? कैसे होंगे? इतने वर्षों से उनके कुछ समाचार नहीं मिले। तुझे ही देख-देखकर जीती हुई मैं जब उनकी बात सोचती हूँ, तो—तो बेटा..."

मीरा का कंठ रुद्ध हो गया, वह कुछ कह न सकी। मौन आँखें आँसू बरसाने लगीं।

मा का दुःख देखकर मन्नू भी रो पड़ा। वह बोला—"नहीं मा, ऐसी दुखी होकर तो तू जी भी न सकेगी। प्रभु की दया से पिताजी अच्छे होंगे, कुशल से होंगे, और—और मा, वह बहुत जल्द हमारे पास लौट आएँगे।"

"तू क्या जाने मन्नू! वह बहुत दूर चले गए हैं। यहाँ से दो सहस्र कोस पर है कांबोज-देश, यह भी पता है तुझे?"

"दो सहस्र कोस पर है कांबोज-देश!"

मंत्र-मुग्ध-सा मन्नू ऊपर का वाक्य दुहरा गया—कुछ सोचता रहा, फिर बोला—"मा, तुझे पिताजी की सचमुच याद आई है?"

"हाँ मन्नू।"

"और—मैंने अब तक—इतने वर्षों तक देखा भी नहीं उन्हें एक बार, क्यों मा?"

"तेरा दुर्भाग्य, मेरे लाल!"

"तो मा! मैंने एक बात सोची है—कहूँ?"

"हाँ।"

"मैं जो कुछ कहूँ, वह मानेगी तू?"

"क्या?"

"पहले 'हाँ' कर।"

"हाँ बेटा, मानूँगी।"

"मेरी सौगंद खाकर कहती है?"

"हाँ, बता तो?"

"मुझे जाने दे पिताजी के पास, उनको—उनको ज़रूर-ज़रूर वापस लाऊँगा।"

"नहीं बेटे। उतनी दूर अकेला तुझे कैसे जाने दूँ?"

"याद कर मेरी सौगंद। नहीं मानेगी तू?"

मीरा चुप हो गई। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने कहा—"बेटा, भोजन तो कर ले।"

"लेकिन मा, मुझे यह भी वचन दे कि आज से तू न रोएगी।"

"नहीं रोऊँगी मेरे लाल!"

"ला, तो फिर अपने हाथ से मुझे आज भरपेट खिला दे। बड़ी अच्छी है मेरी मा!"

मीरा अपने हाथों मन्नू को खाना खिलाने लगी।

उसी दिन—संध्या-समय—मन्नू अपनी मा से बिदा माँगकर कांबोज-देश की यात्रा के लिये चल पड़ा।

[आठ]

गरुड़ध्वज का विशाल मंदिर तीन चौथाई के लगभग बनकर तैयार हो चुका था।

मुख्याधिकारी माधव ने अपने जीवन के सोलह बहुमूल्य वर्षों के उस यशस्वी प्रयास को आँखें भरकर देखा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस गगनचुंबी मंदिर की कलामय रचना पर अनायास ही उसका मस्तक ऊँचा हो उठा।

पास खड़े हुए एक सहकारी शिल्पी से उसने कहा—"चारुदत्त! अब तो बहुत जल्द यहाँ से छुट्टी मिल जायगी। घर की याद क्या तुम्हें भी आती है?"

चारुदत्त ने मंदिर की ओर देखा, फिर बोला—"श्रीमन्! आप-जैसे सुदक्ष कलाकार के अनवरत परिश्रम का फल सचमुच मूर्तिमान् हो चला है! आपके सहयोग और सहानुभूति में हम सब अपने को भूलकर काम करते रहे। अब आपकी कृपा होने पर—अनुमति मिलने पर—बाल-बच्चों के पास हम लोग पुनः लौट सकेंगे, ऐसा विश्वास तो अवश्य होता है।"

माधव मुस्किराया, फिर कहने लगा—"भाई! मैं तो तुममें से ही एक हूँ, तुम्हारे सुख-दुख का सदैव साथी रहा हूँ। मेरी कीर्ति भी तो तुम्हारी ही है। हम लोग अपने कर्तव्य का पालन कर सके हैं, और उसका पुरस्कार .."

"पुरस्कार—आपकी दयादृष्टि-मात्र! और हमें कुछ न चाहिए श्रीमन्!

"पर चारुदत्त, उस ज्योतिषी की भविष्य-वाणी सोचकर मेरा हृदय काँप उठता है। कभी-कभी सोचता हूँ कि......"

माधव सामने देखने लगा।

एक युवक धीरे-धीरे उसी ओर चला आ रहा था। पास आने पर उसने पूछा—"मुख्याधिकारी कहाँ मिलेंगे? मैं उनसे भेंट करना चाहता हूँ।"

चारुदत्त ने पूछा—"किसलिये? नौकरी चाहिए?"

"नहीं।"

"कोई समाचार लाए हो?"

"हाँ। मगर उन्हीं से मुझे मिलना है। वह कहाँ होंगे, बताने की कृपा करें?"

माधव से न रहा गया, युवक की बातें सुनते-सुनते उसका हृदय किसी अज्ञात प्रेरणा से आकुल हो उठा था, उसके मन में बहुत-से विचारों की सृष्टि हो चुकी थी, वह आगे बढ़ा, और बोला—"युवक! तुम्हारा नाम?"

"मन्नू। मैं मुख्याधिकारी माधव शिल्पी का..."

बात काटकर माधव ज़ोर से बोला—"बेटा।"

उसने आगे बढ़कर मन्नू को छाती से लगा लिया। उसकी आँखों से आँसू बह चले।

मन्नू ने कहा—"पिता, रो मत। किसी अज्ञात देवता की भाँति मैंने तुम्हें पा लिया है। अब तुम्हें मेरे साथ घर वापस चलना होगा। मा की दशा..."

माधव घबराकर बोला—"मा की दशा—वह अच्छी तो है न बेटा?"

"हाँ, शरीर से ही, मन से नहीं। पूरे सोलह वर्षों की लंबी अवधि के बाद उसकी आत्मा का दुख साकार रूप में तुम्हारे सम्मुख आया है पिता! अब तुम्हें घर चलना होगा—शीघ्र चलना होगा।"

माधव चुप था।

मन्नू ने आतुरता से कहा—"बोलते क्यों नहीं पिता?"

"तू नहीं समझता बेटा!"

"क्यों? क्या घर न लौटेंगे?"

"लौटूँगा। परंतु"

"परंतु?"

माधव ने एक बार मंदिर की उँचाई की ओर दृष्टि डालकर ठंडी साँस ली, फिर कहा—"गरुड़ध्वज का मंदिर पूरा हो जाने पर ही मैं घर वापस लौटूँगा।"

मन्नू व्यग्रता से बोला—"कितने दिनों में पूरा होगा मंदिर, पिता?"

"थोड़ा कार्य अवशेष है। उसे शीघ्र ही हम लोग पूरा करेंगे।"

"तो मैं भी साथ रहूँगा, और तुम्हारा काम करूँगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता। मैं वापस लौट जाने के लिये नहीं आया हूँ। जाऊँगा, तो तुम्हें साथ लेकर। मुझे अपने पास रक्खोगे?"

माधव ने मन्नू को छाती से लगाकर कहा—"क्यों नहीं, बेटा! मेरे लाल!"

[नौ]

कुछ दिनों बाद—

जब नियति माधव के जीवन के इतिहास का एक नया पृष्ठ लिख रही थी, तब—रात्रि के समय—शिव-मंदिर में ध्यानस्थ बैठे हुए युवक मन्नू की आँखें अंतरात्मा के दिव्य रूप का दर्शन पा रही थीं।

वह बड़ी देर से उसी प्रकार एक आसन से, एक ही मुद्रा से, बैठा हुआ था।

अचानक मंदिर का टिमटिमाता हुआ दीपक एक बार ज़ोर से जल उठा, फिर दूसरे ही क्षण बुझ गया। चारो ओर अंधकार छा गया। परंतु मन्नू निश्चल था।

इतने में उसने सुनी अपनी आत्मा की पुकार। कोई उससे कह रहा था—"जा, तेरा उद्देश्य पूर्ण होगा।"

मन्नू ने विश्वास न किया। वह फिर ध्यानस्थ हो गया।

किसी ने फिर कहा—"जा, जो कुछ तू चाहता था, तुझे मिल गया।"

इस बार मन्नू ने साहस कर पूछा—"क्या सचमुच मुझे वह शक्ति मिल गई? देवाधिदेव! क्या मेरी प्रार्थना आपने स्वीकार कर ली? क्या मेरे हाथों में कलाकार की क्षमता आ गई? बोलो देव! एक बार कहो।"

शिव-मूर्ति मौन थी।

मन्नू ने सिर नवाया, नीर आँखों से लगाया, और उठ खड़ा हुआ।

प्रतिदिन की भाँति वह गरुड़ध्वज के बनते हुए मंदिर की ओर चल दिया, और उसकी सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ पूरी उँचाई पर जा पहुँचा। उसकी हथौड़ी, छेनी, जुड़ाई का सामान, सब कुछ यथास्थान रक्खा था। उसने काम आरंभ कर दिया। रात्रि की उस शून्यता में आज उसके हाथों में असाधारण लाघवता और स्फूर्ति आ गई थी।

ईंट पर ईंट जोड़ते-जोड़ते सवेरे तक उसने बहुत-सा कार्य समाप्त कर दिया! आकाश में तारों के दीपक धीरे-धीरे बुझ चले थे। नीलिमा को श्वेतता बिदा दे रही थी। सारी रात के परिश्रम से आज तो मन्नू को थकावट भी नहीं, नींद भी नहीं। मंदिर से नीचे आकर उसने देखा सचमुच एक कौतुक!

उसने पिछली रात में इतना कार्य अकेले कर डाला था, जिसे सैकड़ों शिल्पी महीनों में भी न कर सके थे।

मन्नू ने सोचा, देवाधिदेव महादेव ने उसकी प्रार्थना सुन ली थी। वह हर्ष से फूला न समाया—अब तो शीघ्र ही वह अपने पिता को साथ लेकर घर वापस लौट सकेगा! आँसुओं से भीगा हुआ माता का मुख-मंडल उसकी आँखों के सामने घूम गया। उसने शिव-मंदिर की ओर सिर झुकाकर प्रणाम किया, फिर चल दिया। शिविर में धीरे से परदा उठाकर मन्नू भीतर घुसा।

माधव यथावत् सो रहा था, जैसा मन्नू ने उसे सोता छोड़ा था।

मन्नू भी चुपचाप बिछौने पर जाकर लेट गया। उसकी आँखें झिप गईं।

वह एक स्वप्न देखने लगा। उसने देखा—एक बड़ा सुंदर सरोवर है, जिसमें बहुत-से लाल कमल खिले हुए हैं, बीच में एक बड़ा भारी कमल है। वह उसे तोड़ने के लिये तालाब में उतरा है। पानी अधिक गहरा होता जाता है, परंतु वह बराबर आगे बढ़ता हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल के बिलकुल पास पहुँच गया है। उसने हाथ बढ़ाकर कमल तोड़ना चाहा, परंतु वह और भी दूर हो गया। वह और आगे बढ़ा, पानी उसके गले तक आ गया, लेकिन कमल को अब उसने छू लिया। वह उसे तोड़ने लगा। इतने में उसे एक चीत्कार—बड़ा ही करुण चीत्कार—सुनाई दिया। वह शब्द किसी परिचित कंठ का था—उसने पहचान लिया—उसकी मा की पुकार! वह अचानक पीछे लौटा, लेकिन उसका पैर फिसल गया। वह सरोवर में डूबने लगा। बरबस उसके मुँह से एक कातरता-भरी हुई चीख़ निकल गई।

मन्नू ज़ोर से चिल्लाकर जाग पड़ा।

सबेरे का उजाला शिविर में प्रवेश कर रहा था। माधव स्नान-पूजा से निवृत्ति पाकर, कपड़े पहनकर तैयार हो रहा था।

मन्नू की आवाज़ सुनकर उसने कहा—"क्या हुआ बेटा?"

मन्नू सकपकाकर उठ बैठा। उसका सारा शरीर पसीने से लथपथ हो रहा था। उसने सकपकाते हुए उत्तर दिया—"कुछ नहीं पिता! मैं—मैंने एक बड़ा बुरा सपना देखा आज।"

"भगवान् गरुड़ध्वज मंगल करेंगे, बेटा! चल, आज तू बहुत सोया।"

आगे-आगे माधव, पीछे-पीछे मन्नू शिविर से बाहर आए।

मन्नू की दृष्टि में एक नया संसार था।

और माधव—वह किसी चिंता में खोया हुआ-सा कुछ सोच रहा था।

फिर?

[दस]

कांबोज-नरेश ने छत्र और ध्वजा माधव को सौंपते हुए कहा—"माधव! भगवान् गरुड़ध्वज का मंदिर अब तो तैयारी के निकट ही है न? लो, इन वस्तुओं को तुम सँभालो।"

माधव ने सिर झुकाकर सम्राट् को अभिवादन किया, और छत्र तथा ध्वजा लेकर मंदिर की ओर चला।

वहाँ उसने देखा, रंग कुछ बदला हुआ था। कोई भी शिल्पी और मज़दूर काम नहीं कर रहा था। सब-के-सब दस-दस पंद्रह-पंद्रह की टुकड़ियों में इधर-उधर बैठे हुए कुछ उत्तेजित-से आपस में बातें कर रहे थे।

माधव के निकट आते ही सब चुप हो गए!

माधव ने पुकारा—"चारुदत्त!"

चारुदत्त ने पास आकर अभिवादन करते हुए कहा—"आज्ञा मुख्याधिकारी!"

"यह क्या मामला है आज? काम क्यों नहीं आरंभ किया गया?"

चारुदत्त ने चुपचाप मंदिर के शिखर की ओर संकेत करते हुए कहा—"उधर देखिए।"

माधव ने देखा—यह क्या! कल संध्या तक जो काम करके शिल्पियों ने विश्राम लिया था, आज सबेरे उससे कहीं ज़्यादा भाग मंदिर का तैयार था!

वह आश्चर्य-चकित हो गया। चारुदत्त ने कहा—"सब लोग कहते हैं कि हम लोगों में संभवतः कुछ लोग षड्यंत्र करके गुप्त रीति से रात में काम करते हैं, नहीं तो मंदिर क्या अपने आप इतना बन जाता?"

माधव की समझ में कुछ न आया, यह बात क्या हुई? वह बड़ी चिंता में पड़ गया। बोला—"चारुदत्त! सब लोगों से कहो, कार्य आरंभ करें। मैं इसका पता लगाऊँगा कि कौन लोग ऐसा षड्यंत्र कर रहे हैं।"

चारुदत्त ने उत्तर दिया—"नहीं मुख्याधिकारी! जब तक आप स्वयं सबको आश्वासन न देंगे, तब तक ये लोग कदापि काम न करेंगे। आप ही कहिए इनसे।" चारुदत्त पीछे हट गया।

माधव ने आगे बढ़कर ज़ोर से कहा—"भाइयो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे इस घटना को जानकर बड़ा दुःख है। मैं इसका पता लगाऊँगा कि दोषी कौन है। लेकिन आप अपना कार्य आरंभ करें।"

सब लोग आकर माधव के चारो ओर एकत्र हो गए। एक बोला—"कभी नहीं, आपको इस षड्यंत्र का पता लगाना होगा। पहले दोषी को दंड देना होगा, तभी हम लोग कार्य आरंभ करेंगे।"

दूसरा बोला—"हम सबसे पहले यही जानना चाहते हैं कि हमारी जीविका पर छुरी चलानेवाला वह कौन व्यक्ति है, जिसने हमारे कार्य की गति में बाधा डाली है, और हम उसे कभी जीता न छोड़ेंगे।"

माधव ने कहा—"भाइयो! मैं स्वयं नहीं जानता कि किसनें ऐसी नीचता का काम किया है। जान लेने पर मैं ही उसे उचित दंड दूँगा।"

एक व्यक्ति ने कहा—"प्रतिज्ञा कीजिए।"

आवाज़ आई—"शपथ लीजिए!"

किसी ने कहा—"मुख्याधिकारी, जितना कार्य प्रतिदिन करते हुए हम लोग आगे बढ़ रहे हैं, उससे सौगुना कार्य एक रात में ही किसी ने कर डाला है। यदि महाराज तक यह बात पहुँच गई, तो हम लोगों की कितनी बदनामी होगी, क्या आप नहीं सोचते?"

माधव ने उत्तर दिया—"आप ठीक कहते हैं। परंतु मंदिर पूर्ण करने का उद्देश्य हमारा भी है, अतएव जो कुछ हुआ, अच्छा ही हुआ।"

चारुदत्त गरजकर बोला—"अच्छा ही हुआ? यह कैसे आप कहते हैं मुख्याधिकारी? हमारी जीविका पर कुठाराघात करनेवाले व्यक्तियों का यह पक्ष-पात? आपका यह विद्रोह?"

माधव ने डाँटकर कहा—"सावधान! चारुदत्त, सीमा से आगे न बढ़ो। मैं मुख्याधिकारी हूँ।"

किसी ने कहा "लेकिन हमारे बनाए हुए।"

आवाज़ें आने लगीं "हमारे परिश्रम और सहयोग पर।"

"हमारी एकता पर।"

"हमारे संकेत पर।"

चारुदत्त ने फिर कहा—"मुख्याधिकारी, मत भूलिए कि हमारे बीच में रहकर हमसे अलग आपका अपना कुछ भी अस्तित्व नहीं। आपके अपने विचारों का कोई मूल्य नहीं। आपका अपना अधिकार कुछ भी नहीं। आपका सब कुछ—हमारा है।"

सारे शिल्पी चिल्ला उठे—"हमारा है! हमारा है!"

माधव व्यग्र हो उठा। वह मंत्र-मुग्ध-सा कहता गया—"भाइयो! आप सच कहते हैं। मैं आपका हूँ, आप मेरे हैं। जो आप चाहते हैं, वही होगा।"

मंदिर का प्रांगण गूँज उठा—"मुख्याधिकारी की जय हो! हमारे नेता की जय हो!"

देखते-देखते सैकड़ों मस्तक माधव के चरणों पर झुक रहे थे।

उल्लास से भरे हुए शिल्पी-समुदाय की जय-ध्वनि आते हुए मन्नू के कानों तक पहुँची। वह इसका कारण कुछ न समझ सका। वह स्वयं रात्रि के स्वप्न का प्रतिफल सोचने में लगा था। पिता के निकट जाकर वह चुपचाप खड़ा हो गया। सब शिल्पी और मज़दूर अपना काम कर रहे थे।

माधव दूर से उन्हें देख रहा था। उसकी आँखों में आँसू थे, और मन में कुछ और। लेकिन वह इस दुनिया की बात न थी।

माधव ने एक ठंडी साँस लेकर कहा—"मन्नू!"

मन्नू बोला—"हाँ पिता!"

बाप ने बेटे को छाती से लगा लिया, और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

मन्नू ने कहा--"पिता! मंदिर तो अब पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहा है । छत्र और ध्वजा भी आप ले आए हैं। अब तो हम लोग शीघ्र ही घर वापस लौटेंगे ?"

माधव ने अवरुद्ध कंठ से उत्तर दिया—"ईश्वर ने चाहा, तो ।"

"नहीं पिता, मा एक-एक दिन गिन रही होगी ।"

"समझता हूँ बेटा ! जा, तू भी काम कर ।"

मन्नू चल दिया ।

एकाकी माधव किसी विचित्र विचार-धारा में गोते खा रहा था ।

[ग्यारह]

एक पहर रात बीत चुकी थी । अमावस्या के स्वागत में नीलाकाश को बादलों ने ढक रक्खा था । बीच-बीच में बिजली चमक उठती थी । माधव दिन-भर का थका-माँदा शिविर में सो रहा था । किसी ने धीरे से उसे छू दिया । वह जाग पड़ा । बोला—"कौन ?"

काले आवरण से अपना मुँह खोलते हुए वह छाया बोल उठी—"आपका सेवक चारुदत्त । उठिए मुख्याधिकारी, आज रात को हम लोग मंदिर का पहरा देंगे, ऐसा ही निश्चय किया गया है ।"

माधव उठ खड़ा हुआ । एक पतला-सा उत्तरीय कंधे पर डालकर वह चलने लगा । दीपक के धुँधले प्रकाश में उसने मन्नू के बिछौने की ओर दृष्टि डाली । कुछ स्पष्ट न दिखाई दिया । हाँ, ऐसा ज्ञात हुआ, मन्नू सो रहा है ।

वह चारुदत्त के साथ बाहर आया । उसकी बाईं आँख फड़कने लगी ।

वह क्षण-भर ठहर गया ।

चारुदत्त ने कहा—"चलिए, ठहर क्यों गए ?"

माधव चल दिया ।

मंदिर की सीढ़ियों पर बड़ी सतर्कता से दबे पाँव चढ़ते हुए वे दोनो शिखर पर जा पहुँचे ।

रात्रि के सन्नाटे में कुछ शब्द सुनाई दे रहा था ।

चारुदत्त ने माधव की ओर देखा, और सतर्क रहने का संकेत किया ।

माधव पैर दबाता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ा, और एक भीत की आड़ में छिपकर देखने लगा—सचमुच एक मनुष्य बैठा हुआ बड़ी तत्परता से पत्थर की ईंटें जोड़ रहा था । अँधेरे में माधव कुछ न जान सका कि है कौन ?

इतने में फिर उसकी बाईं आँख फड़की ! वह पीछे हटकर चारुदत्त के पास आ गया ।

चारुदत्त ने पूछा—"क्या देखा ? कोई है ?"

माधव ने धीरे से सिर हिलाकर कहा—"हाँ ।"

चारुदत्त ने हाथ पीछे करके संकेत किया । पत्थर की उन भीतों की आड़ से लगभग बीस मज़दूर और शिल्पी निकल आए ।

माधव ने देखा—काली-काली अनेक मूर्तियाँ !

चारुदत्त ने कहा—"मुख्याधिकारी, अपना वचन पूरा कीजिए । यह अपराधी व्यक्ति कोई भी हो, इसे दंड मिलना ही चाहिए ।"

माधव ने गंभीरता से कहा—"अवश्य ।"

"फिर, अब देर कैसी ? इसे चुपचाप पीछे से जाकर ढकेल दीजिए । सैकड़ों गज़ नीचे गिरने पर इसकी अस्थियों का भी पता न मिलेगा । बढ़िए आगे ।"

माधव ने कुछ सोचकर कहा—"परंतु यह हत्या ? यह पाप ?"

चारुदत्त क्रोध से बोला—"मुख्याधिकारी, हत्या और पाप की व्याख्या करने का समय नहीं । यह है प्रतिशोध—बदला ।"

"लेकिन चारुदत्त ! यह भयंकर पाप होगा ?"

"मुख्याधिकारी, हम दो सहस्र व्यक्तियों की जीविका पर छुरी चलाना क्या पाप नहीं ? बोलिए, एक के प्राण अधिक मूल्यवान् हैं, या दो सहस्र के?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधव चुप हो गया।

चारुदत्त ने कहा—"मुख्याधिकारी, आगे बढ़िए, फेंक दीजिए इस नारकी कीट को नीचे।"

मंत्र-मुग्ध-सा माधव आगे बढ़ा। उसकी गति पर कार्यकर्ता का लक्ष्य न था। वह अपने काम में निरत था। माधव के हाथों ने उसे आगे को धक्का दे दिया—पर धीरे से।

वह उठ खड़ा हुआ, और घूम पड़ा।

अकस्मात् बिजली चमकी। दोनो ने एक दूसरे को देखा। फिर माधव ने पीछे देखा—बीस मूर्तियाँ विद्रोही बनकर उसे घूर रही थीं।

चारुदत्त अपनी कटि से एक चमचमाता हुआ छुरा निकाल रहा था! उसकी आवाज़ गूँज उठी—"मुख्याधिकारी!"

माधव ने आगे बढ़कर दोनो हाथों से सामने खड़े व्यक्ति को मंदिर के शिखर से नीचे ढकेल दिया।

गिरते-गिरते उसने कहा—"पिता, तुम?"

माधव मूर्च्छित होकर गिर पड़ा!

इतने में आकाश में बड़े ज़ोर से सहस्रों उल्कापात-सदृश उजाला फैल गया, और एक घोर शब्द के साथ सारा मंदिर हिल उठा।

माधव की मूर्च्छित देह को उठाकर चारुदत्त अपने साथियों-सहित नीचे ला रहा था। और एक प्रलय-कारिणी आँधी कांबोज-देश को निगलने के लिये गरजती हुई चली आ रही थी। ज्योतिषी की भविष्य-वाणी पूरी होने को थी।

* * *

कांबोज-देश के खँडहरों में वह 'अधूरा मंदिर' एकाकी खड़ा हुआ अपनी कथा कहा करता है। उसके पास ही एक चबूतरा है, जिसके किनारे तुलसी का एक बड़ा घना वृक्ष लगा है।

प्रत्येक अमावस्या को, जाने कहाँ से आकर, एक श्वेत-वसना स्त्री उस तुलसी-वृक्ष के नीचे चबूतरे पर दो छोटे-छोटे दीपक जला जाती है।

लोगों ने उसे देखा है, लेकिन उसके जीवन को नहीं।

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र
जगत्-विख्यात

Registered. रजिस्टर्ड

'कौनटैक्स'

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ-धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं।

कौनटैक्स नं० १—जब तक इसका सेवन रहेगा, गर्भ स्थापित नहीं होगा। सेवन बंद करने पर गर्भ स्थापित हो सकता है। क़ीमत १।), डाक-ख़र्च ।=)

कौनटैक्स नं० २—मासिक धर्म पर दवा सेवन करने से चार वर्ष तक गर्भ स्थापित नहीं होगा। क़ीमत ५), डाक-ख़र्च ॥=)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १॥), सजिल्द २)

राजमुकुट

(सचित्र, मौलिक नाटक)

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया गया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठा संस्करण। मूल्य ।॥), सजिल्द १।)

वरमाला

(सचित्र, मौलिक नाटक)

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तैलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइजो'-नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १॥।), सजिल्द २।)

प्रतिमा

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। मूल्य सादी १।), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

(कहानियाँ)

पंतजी की ये मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित, सरल भाषा में लिखी गई हैं कि अत्यंत रोचक हो गई हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।॥=), सजिल्द १।=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहा—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथोंहाथ बिक रहा है !

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दवाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा क्रांतिकारी उपन्यास

प्रश्न

कर्ता
श्रीसर्वदानंद वर्मा

—:०:—

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १।।), सजिल्द २)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु-पालन

[लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार]

भारतवर्ष में आजदिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी बिरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था में ही काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है, और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता-रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

यदि किसी देश की माताएँ चतुर होंगी, गर्भाधान के समय से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करेंगी, और जन्म के बाद बालक का यथोचित लालन-पालन करेंगी, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके विपरीत यदि हम अपने बच्चों की ओर से लापरवाही करेंगे, तो हमारे अधःपतन में कोई भी संदेह नहीं रहेगा। जब हम माताओं और बालकों को अच्छा बनाने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करते, तो हमें सभ्य कहलाने का भी कोई अधिकार नहीं। ऐसी दशा में हमें अन्य सभ्य देशों की बराबरी करने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !   नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक
हिंदी के क्रांतिकारी लेखक
श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उनके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहख़र्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन की मौज

[राष्ट्रीयता से भरा काव्य]

लेखक, पींजरे कौ पंछी। प्रस्तुत पुस्तिका लेखक ने पटना-जेल में लिखी थी। रचना ब्रजभाषा में की गई है। कालिदासजी ने मेघ को संबोधन कर अपना काव्य लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। काव्य-प्रेमियों को यह पुस्तिका अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।)

इस पुस्तक के संबंध में विद्वद्वर कन्हैयालालजी पोद्दार लिखते हैं—

चतुर्वेदीजी की 'मन की मौज' पाठकों के भी मन की मौज बढ़ानेवाली है। 'रेलदूत'-शीर्षक कविता में सत्याग्रह के समय का स्वदेश-भक्त युवकों का बड़ा ही हृदयग्राही, भाव-पूर्ण, किंतु यथार्थ चित्र अंकित किया गया है। भारतमाता का पूर्वकालीन आदर्श, पूर्ण गौरव एवं विदेशी शासकों के क्रूर शासन का ऐतिहासिक दिग्दर्शन बहुत ही चित्ताकर्षक किया गया है। अंत के वर्णन में रेल द्वारा कारुणिक संदेश-प्रेषण में 'रेलदूत' के नाम की सार्थकता का जो निर्वाह किया गया है, वह भी अत्यंत उपयुक्त है। काव्य की दृष्टि से भी देखा जाय, तो प्रायः बहुत-से वर्णन बड़े विचित्र और चामत्कारिक हैं, जैसे—

"करुण कहानी सुनि उठी तेरे हिय में हूक ;
गरम उसाँसैं लेति का ताई सों तू कूक !"

इसमें नवीन उत्प्रेक्षा का चमत्कार बड़ा सुंदर है। भाषा की दृष्टि से भी ब्रजभाषा पर लेखक का अधिकार प्रमाणित होता है। पुस्तक बहुत ही सुंदर, समयोपयोगी है। नवयुवकों के स्वदेश-प्रेम के उत्साह-वर्धन के लिये ऐसी पुस्तकों की इस समय परमावश्यकता है। मैं इसकी रचना के लिये पं० श्रीरमावल्लभ चतुर्वेदी को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

—कन्हैयालाल पोद्दार

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान का एक अद्भुत उपन्यास

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक डॉस्टॉय विस्की का एक उपन्यास

पृष्ठ-संख्या ५०० ; मूल्य केवल ३), सजिल्द ३॥)

डॉस्टॉय विस्की रूस के एक क्रांतिकारी उपन्यास-लेखक हैं। आप प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टॉल्स्टॉय के समकक्ष हैं। सन् १८४६ ई० में आप पर यह अपराध लगाया गया कि तुम साम्यवाद के प्रवर्तकों में हो। वह पकड़े गए, और अन्य २१ अपराधियों के साथ उन्हें फाँसी की सज़ा का हुक्म दिया गया। यह ज़ार-शाही के ज़माने की बात है। अस्तु। फाँसी के लिये वह चौक में खड़े करा दिए गए थे। उनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोली चलाने की आज्ञा भी दी ही जा चुकी थी कि इतने में एक अफ़सर ने आकर कहा कि तुम्हें साइबेरिया में देश-निकाले का दंड दिया गया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य-मात्र के हृदय में क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया, और वही का इसमें वही अंकित किया है। पाठक जिस प्रसंग को पढ़ता है, उसी का एक पात्र अपने को समझने लगता है। रंगीन और सादे चित्र तो सोने में सुगंध का काम करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता —संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्की

का

मुस्तफ़ा कमाल पाशा

अनुवादक

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक

श्रीयुत शिवनारायण टंडन

पुस्तक में क्या है ?

(१) शाहों और सुलतानों के राजत्व-काल में टर्की की क्या दुर्दशा थी, इसका ऐसा दुःखद वर्णन है कि आप पढ़कर रो उठेंगे !

(२) गत योरपीय महायुद्ध में टर्की को जर्मनी का साथ क्यों देना पड़ा, क्या-क्या मुसीबत झेलनी पड़ीं, और फिर किस तरह खुदा-खुदा करके छुटकारा मिला, इसका रोमांचकारी वर्णन है ।

(३) कमाल पाशा ने अपनी मातृभूमि टर्की को घर और बाहर के शत्रुओं से कैसे बचाया, इसका पूरा अहवाल है ।

(४) कमाल पाशा का पूरा जीवन-चरित्र है, जिसमें उसके ग़रीब माता-पिता से लेकर उसके क्रांतिकारी साथियों और उसकी रूपवती, गुणवती पत्नी का पूरा परिचय है । कमाल के अजीबोग़रीब वैवाहिक जीवन की कहानी पढ़ते-पढ़ते आप कभी रोने लगेंगे, कभी हँसने लगेंगे, और कभी ग़ुस्से से सुर्ख़ हो जायँगे ।

(५) कमाल पाशा डिक्टेटर कैसे बना, उसने अकेले टर्की-से टूटे-फूटे साम्राज्य को किस तरह उठाकर एक उन्नतिशील, बलवान् राष्ट्र बना दिया, इसका पूरा वर्णन पढ़कर पाठकों का जी बाग़बाग़ हो जायगा ।

(६) पुनर्निर्माण के परिच्छेद में वर्तमान उन्नतिशील टर्की का जीता-जागता चित्र देखने को मिलता है । राष्ट्रीय भावना, आर्थिक उन्नति, सामाजिक क्रांति, पर्दे का दूर होना, शिक्षा का प्रचार होना, स्त्रियों को समानता के अधिकार मिलना वग़ैरह सभी बातों का रोचक और शिक्षाप्रद हाल सविस्तर लिखा गया है ।

इस पुस्तक को पढ़कर आप घर बैठे कमालपाशा और टर्की के बारे में सारी ज्ञातव्य बातें जान सकते हैं । पुस्तक को पढ़ने में बिलकुल उपन्यास का मज़ा आता है । अँगरेज़ी में छ मास के अंदर इस पुस्तक के चार संस्करण निकल चुके हैं, हिंदी में भी इस पुस्तक की बहुत बड़ी संख्या बिक चुकी है । जल्दी कीजिए, ऑर्डर अभी से लिख दीजिए, वरना पछताना पड़ेगा, दूसरे संस्करण के लिये इंतज़ार करना होगा । बढ़िया काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य १॥), सजिल्द २)

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलतपुर की यात्रा

(गतांक से आगे)

[अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी]

अंत में, बहुत आग्रह करने पर, बारंबार कमलाकिशोरजी को त्रुटि न होने देने के लिये ताकीद करते हुए द्विवेदीजी आराम करने के लिये घर के भीतर गए। हम लोगों को बराबर आशंका बनी थी कि कहीं वह फिर न आ जायँ, पर वह कब माननेवाले थे। हम लोगों तक तो नहीं, पर कमलाकिशोरजी को ताकीद करने के लिये वह कई बार उठ-उठकर आए। अंत में उन्हें रात-भर नींद नहीं आई। हम लोगों ने भोजन करके द्विवेदीजी की अतिथिशाला में आराम करने का विचार किया, तो बर्रें ने मेरे हाथ पर डंक मार दिया। पर द्विवेदीजी को कानोंकान ख़बर न हो, इसकी विशेष सावधानी रखनी पड़ी।

प्रातःकाल हम लोग तो शौचादि से निवृत्त होते रहे, पर गुप्तजी पहले ही निवृत्त होकर द्विवेदीजी के पुस्तकालय में जा डटे। हम लोग भी किसी प्रकार जल्दी-जल्दी करके पहुँचे। केडियाजी ने अपने संग्रहालय के लिये द्विवेदीजी से कोई वस्तु माँगी थी। उन्होंने अपना डंडा देना स्वीकार किया था। इसकी चर्चा चली। हम लोगों ने द्विवेदीजी का वह डंडा लेना स्वीकार किया, जिसका इस्तेमाल वह गाँव में घूमने के लिये किया करते हैं। द्विवेदीजी ने व्यंग्य किया—"धाखौ तौ, इनकेरि मति बौराइ गै है, लकरी-काठे क्यार संग्रह करति फिरति हैं।" अंत में कई अमूल्य वस्तुएँ केडियाजी के हाथ लग गईं—एक जोड़ी खड़ाऊँ और एक डंडा। साथ में द्विवेदीजी की उस समय की नोटबुक भी मिली, जब वह स्टेशन पर काम करते थे—उनकी युवावस्था की नोटबुक, जिसमें प्राचीन कवियों की रसीली उक्तियों का संग्रह भी है। यह वह नोटबुक है, जो बतलाती है कि हिंदी के क्षेत्र में कितनी बड़ी तपश्चर्या करके द्विवेदीजी ने भाषा की व्यवस्था की है, जो बतलाती है कि द्विवेदीजी कैसे संग्रही व्यक्ति हैं, जो बतलाती है कि द्विवेदीजी ने खेलवाड़ में ही इतना बड़ा कार्य नहीं कर डाला, उसके लिये परिश्रम किया है, अपना ख़ून पसीना करके पानी की तरह बहाया है। ऐसे कर्मठ महारथी के हटने का परिणाम है कि किसी को क़लम पकड़ने का—बल्कि फ़ाउंटेन पकड़ने का कहिए—सलीक़ा आया नहीं कि वह संपादक पहले बन बैठता है। डंडा देते समय उन्होंने पूछा—"इसे क्या करोगे?" केडियाजी ने उत्तर दिया—"इसे संग्रहालय में रक्खेंगे, जिससे आपका डंडा देखकर कच्चे आदमी डरते रहें, अपने को सँभालें।" एक जोड़ खड़ाऊँ राय साहब ने भी अपने कला-भवन के लिये ली। केडियाजी ने अपने पुस्तकालय की 'सम्मति-पुस्तक' पर आशीर्वचन लिखने की प्रार्थना की। द्विवेदीजी ने कहा—"भाई, अब हम क्या लिखेंगे। गद्य में कहो, लिख दें कि इसकी उन्नति हो।" केडियाजी ने इसे भी स्वीकार कर लिया। पर उनके टहलने का समय हो गया था, इसलिये उन्होंने पुस्तक नहीं मँगवाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

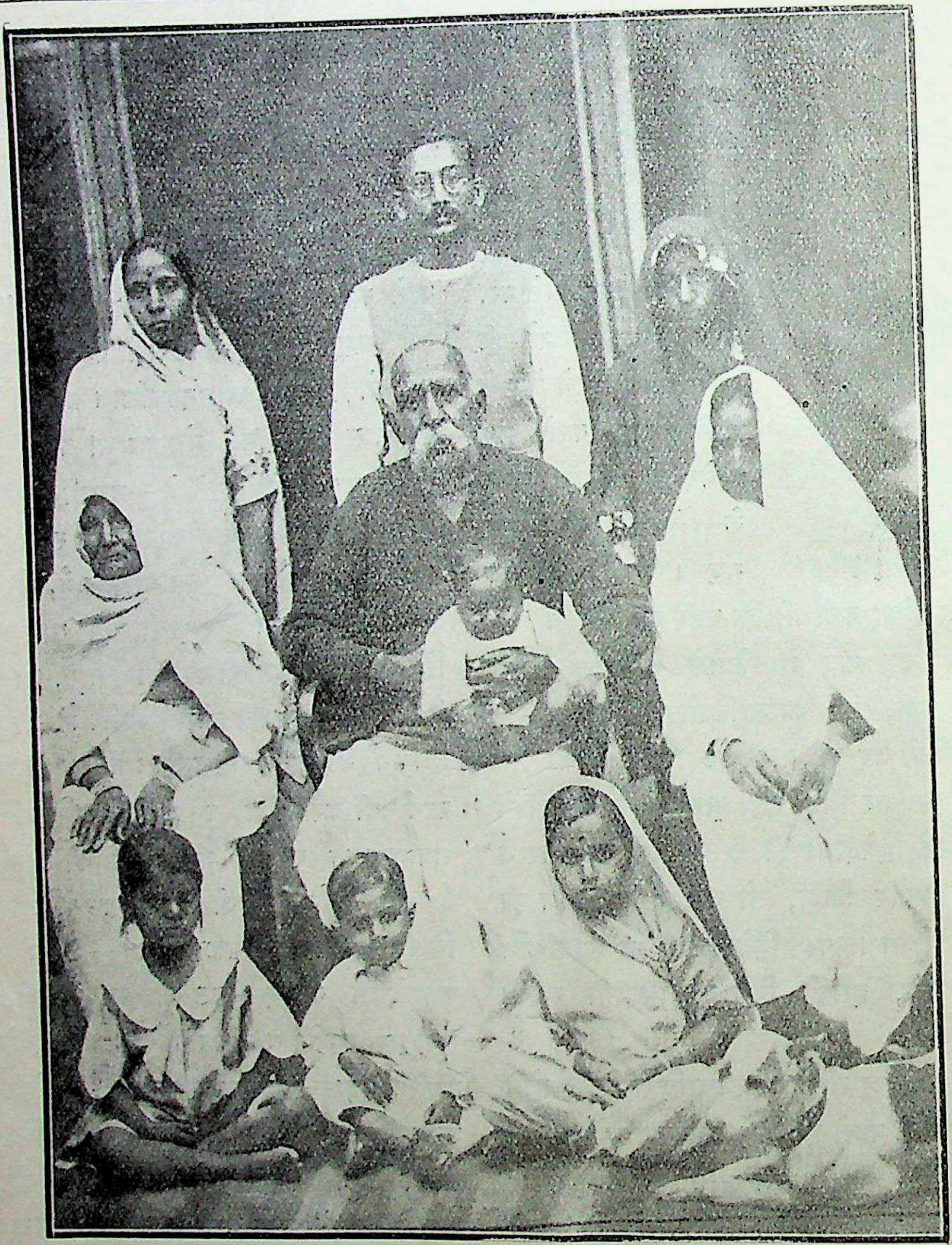

आचार्य द्विवेदीजी का परिवार (१)

[बाईं ओर से—[पिछली पंक्ति में खड़े] द्विवेदीजी की भांजी श्रीमती विद्यावतीदेवी, द्विवेदीजी के भांजे श्रीकमलाकिशोर त्रिपाठी और श्रीकमलाकिशोरजी की पत्नी श्रीमती राधादेवी। [बीच की पंक्ति में, कुर्सी पर बैठे] द्विवेदीजी की चचेरी बहन लक्ष्मीदेवी, आचार्य द्विवेदीजी, उनकी गोद में श्रीमती विद्यावतीदेवी का पुत्र इंद्रदत्त, और लक्ष्मीदेवी की नवासी (लड़की की लड़की) दुलारीदेवी। [नीचे की पंक्ति में, बैठे हुए] श्रीकमलाकिशोर के साले की लड़की रानीदेवी, श्रीमती विद्यावतीदेवी का लड़का [illegible]त्त और श्रीकमलाकिशोर की लड़की मनोरमा।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब द्विवेदीजी टहलने चले गए, तो हम लोगों ने उनके स्थानों का अवलोकन करना आरंभ किया। उन सती-साध्वी ने गंगा में डूब जाने से जल-समाधि ले ली थी। उनके मस्तिष्क में मृत्यु के कुछ समय

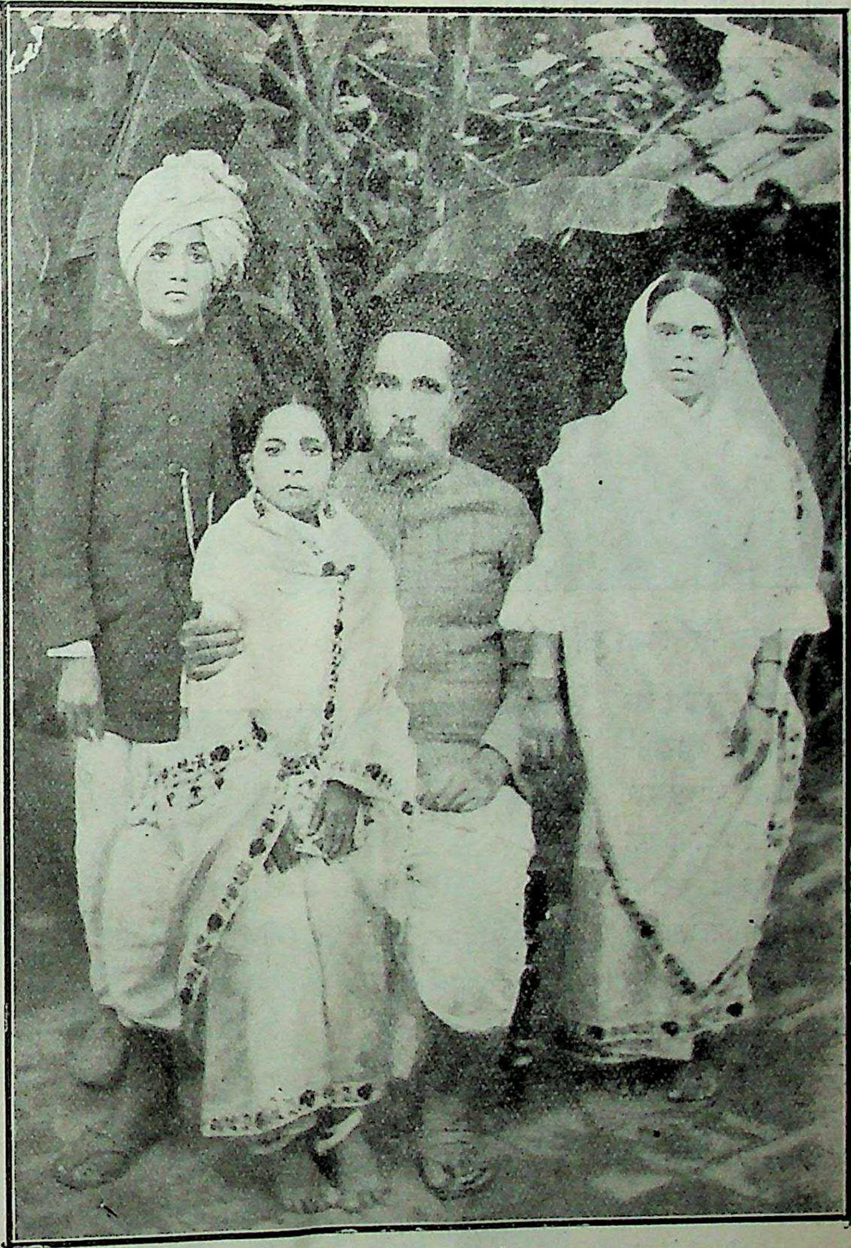

आचार्य द्विवेदीजी का परिवार (२)

[बाईं ओर से—श्रीकमलाकिशोर (द्विवेदीजी के भांजे), बीच में कुर्सी पर बैठे द्विवेदीजी की गोद में उनकी छोटी भांजी कु० विद्यावती तथा बग़ल में उनकी बड़ी भांजी कमलावती (स्वर्गीया)]

स्मृति-मंदिर देखा, जिसमें उनकी पत्नी की प्रस्तर-मूर्ति, लक्ष्मी और सरस्वती के बीच, सुशोभित है। पूर्व से विकार हो गया था, जिसके परिणाम-स्वरूप वह नहाते समय डूब गईं, किसी को पुकारा तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। स्मृति-मंदिर पर भागवत और मनुस्मृति के श्लोक लिखे हैं। भीतर संस्कृत के शिला-लेख में उसके निर्माण का प्रयोजन, निर्माण का समय और

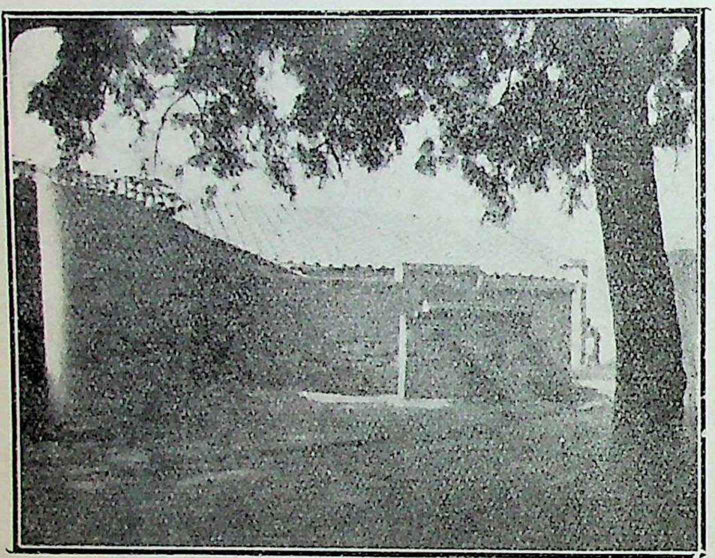

आचार्य द्विवेदीजी की अतिथिशाला

निर्माणकर्ता के नाम आदि का उल्लेख है। बग़ल में मारुति-मंदिर है, जिसका जीर्णोद्धार द्विवेदीजी की पत्नी ने किसी दूसरी स्त्री से, सहायता देकर, कराया था। उस पर भी श्लोकबद्ध शिला-लेख लगा है। पास ही छोटा-सा बग़ीचा है, जिसमें कुछ फूल, कुछ पेड़ और कुछ ओषधियाँ लगी हैं। उसी से सटा एक कुआँ है, उसी के बाहर पशुशाला है, जिसमें गाएँ-भैंसें रहती हैं। द्विवेदीजी का मकान दो खंडों में है। ऊपर के खंड में द्विवेदीजी सोते हैं। वहीं मल-मूत्र के चीनी मिट्टी के पात्र भी रक्खे थे—शायद बीमारी के समय के। मकान से सटी अतिथिशाला है। उन्हीं के घर में दूसरी ओर डाकख़ाना भी है। अतिथिशाला से ही सटा उनका पुस्तकालय है। जितने पत्र या पुस्तकें आती हैं, उन पर नित्य तिथि पड़ जाती है। पत्रों का उत्तर तुरंत दिया जाता है। उन पर सम्मतियाँ अगर दी जाती हैं, तो यह भी लिखा रहता है कि सम्मति दी गई। तिथि लिखकर वह अपना हस्ताक्षर कर देते हैं। कहीं-कहीं पुस्तकों पर नोट भी लिखे रहते हैं। पुस्तक यदि अपने स्थान से हट जाय, तो द्विवेदीजी तुरंत उसकी खोज करने लगते हैं। पुस्तकें देखकर शीघ्र-से-शीघ्र प्राप्ति-स्वीकार या सम्मति भेज देने में वह इतने मुस्तैद हैं कि आश्चर्य होता है। मैं काशी लौटकर अपनी पहुँच नहीं लिख

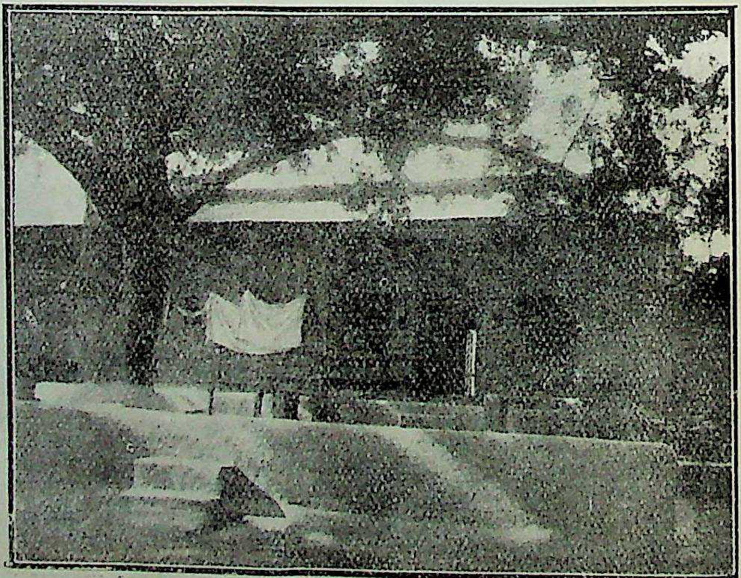

आचार्य द्विवेदीजी का बैठका और पुस्तकालय

सका। पर मेरे पहुँचने के दूसरे दिन ही उनकी सम्मति पहुँच गई। वह उन पुस्तकों को बाँच भी गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टहलकर द्विवेदीजी लौटे, तो फिर गोष्ठी-सुख का आनंद लूटा गया। थोड़ी ही देर बाद उन्होंने

केडियानामधेयस्य दिव्योऽयं संग्रहालयः;
प्रभूतामुन्नति यातु भगवत्कृपयानिशम्।

आचार्य द्विवेदीजी की दिवंगता धर्मपत्नी
[जिनकी शुभ्र प्रस्तर-प्रतिमा स्मृति-मंदिर में प्रतिष्ठित है।]

केडियाजी की 'सम्मति-पुस्तक' मँगवाई, और उस पर निम्न-लिखित श्लोक तुरंत बनाकर लिख दिया—

उन्होंने श्रीदुलारेलालजी की प्रशंसा की कि "जब कोई इनकी निंदा करता है, तो मुझे क्लेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है, क्योंकि जब कोई कुछ नहीं कर रहा है, तो यह इतनी पुस्तकें प्रकाशित करके हिंदी का

आचार्य-पत्नी की संगमरमर की मूर्ति

[स्मृति-मंदिर के गर्भगृह के भीतर बीच में यह प्रधान मूर्ति स्थापित है ।]

उद्धार तो कर रहे हैं । न करनेवालों से भार्गवजी की क्या तुलना ?"

इसी समय मैंने और केडियाजी ने अपने लौटने के लिये आज्ञा देने की प्रार्थना की । उन्होंने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया । हम लोगों को भय होने लगा कि कहीं वह रोक न दें । मेरी तो कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात नहीं थी। मैं दो-चार दिन रह सकता था, पर केडियाजी धनतेरस को पहुँच जाना चाहते थे। रास्ते में अकेले उन्हें तकलीफ़ होती, अतः वह मुझे भी साथ लाना चाहते थे। अनेक प्रकार की बहानेबाज़ियाँ करने पर किसी प्रकार आज्ञा मिली। भोजन के उपरांत जब हम दोनो व्यक्ति चलने लगे, और चरण छुए, तो उनके नेत्र आँसुओं से भर आए। वह शकुंतला नाटक का यह श्लोक पढ़ने लगे—

उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
वाष्पं कुरुस्थिरतया विहतानुबन्धम् ;
अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे
मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति।

लक्ष्मी की मूर्ति

[यह आचार्य-पत्नी की प्रस्तर-प्रतिमा के दक्षिण भाग में स्थापित है।]

इतना कहते-कहते वह रो पड़े। हम लोगों का मार्ग सचमुच विषम हो गया। सीधे लहँगी-घाट से होकर कंसपुर-गुगौली में तीन बजे की गाड़ी पकड़ लेना चाहते थे, पर रास्ता पार न कर सके।

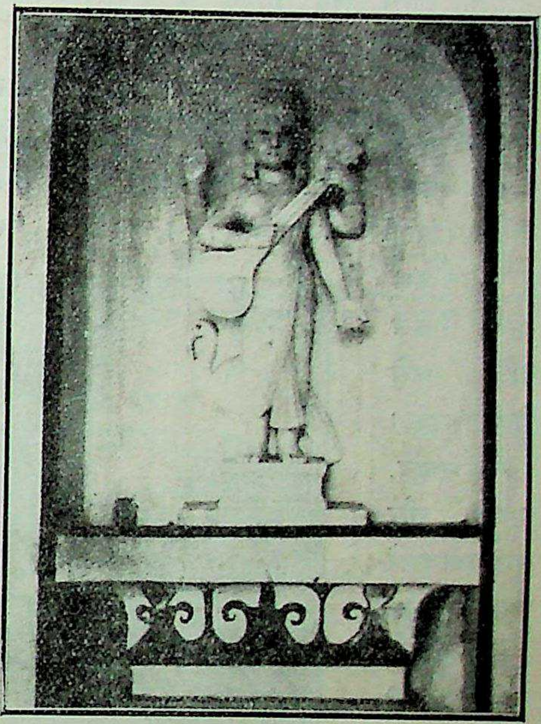

सरस्वती की मूर्ति

[यह स्मृति-मंदिर में आचार्य-पत्नी की प्रधान मूर्ति के वाम भाग में स्थापित है।]

जूतों को बाधक समझकर, गट्ठर में बाँधकर मज़दूर के हवाले किया, पर रास्ता समय से न तय हो सका, न तय हो सका। द्विवेदीजी के स्वभाव और हृदय के कोमल प्रभाव से हम लोगों के हृदय और बुद्धि ऐसे अभिभूत थे कि चाहे दौड़कर भी चलते, तो रास्ता न समाप्त कर पाते।

रास्ते में मुरारी बाबू को बाजरे की बालें लेने की इच्छा हुई। एक स्त्री बालें काट रही थी। मैंने बालें माँगीं, तो उसने कहा—"आप स्वयं बीछकर ले लें।" हम लोगों ने यह समझकर कि आख़िर पैसे तो देने ही हैं, अच्छी-अच्छी बालों का एक मज़े का मुट्ठा बाँध लिया। पैसा देने पर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लिया, न बाल ही लौटाई। मुझे तुलसीदासजी की चौपाई याद आ गई—

"देहिं लोग बहु मोल, न लेहीं;
फेरत राम - दोहाई देहीं।"

क्या करता, उसके हृदय की प्रशंसा करता और नागरिक की कठोरता से पत्थर बने अपने हृदय को कोसता स्टेशन पहुँचा, पर देर हो गई थी। जिस गाड़ी पर चढ़कर जाना चाहते थे, वह छाती पर से धक्-धक् करती निकल गई। उसे रोक न सके।

राय साहब, गुप्तजी और भार्गवजी दूसरे दिन सुबह रवाना हुए।

द्विवेदीजी का वह चेहरा, उनकी वे भौंहें चित्त में बस गईं, जीवन - पर्यंत बसी रहेंगी। द्विवेदीजी की भौंहें, 'हरिऔध'जी की दाढ़ी, पं० रामचंद्रजी शुक्ल की मूछें और श्रीसुमित्रानंदनजी पंत के केश हिंदी-साहित्यिकों में अनोखे हैं। द्विवेदीजी की लंबी-लंबी भौंहें बतलाती हैं कि हिंदी की दुर्दशा करनेवालों पर तनते-तनते, दुराग्रहियों पर टेढ़ी होते-होते वे इतनी लंबी हो गई हैं। 'हरिऔध'जी की दाढ़ी बतलाती है कि उसने ज़माना और हिंदी की दशा का उतार-चढ़ाव देखा है, वह काव्य-चिंता में पकी है। शुक्लजी की मूछें बतलाती हैं कि गंभीर लोगों की हँसी कहाँ छिप सकती है। पंतजी के केश बतलाते हैं कि नवीन कवि अपना रहस्य किस प्रकार छिपाए रहते हैं।

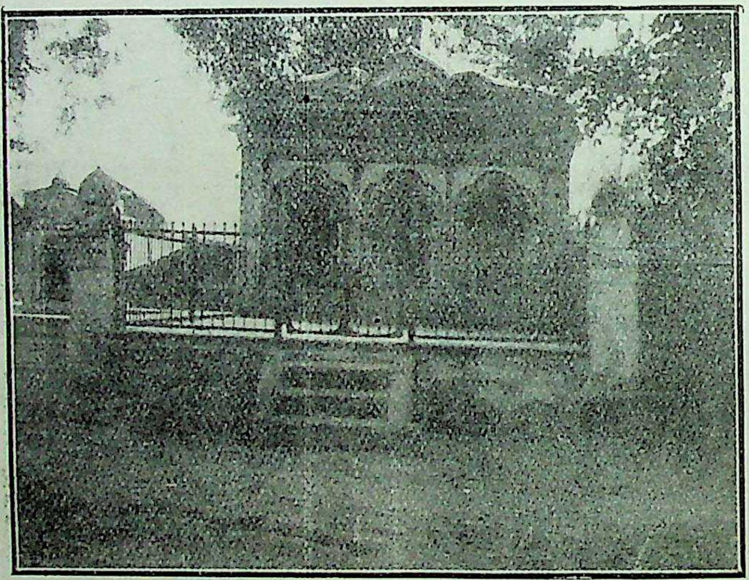

स्मृति-मंदिर

[आचार्य द्विवेदीजी ने अपनी दिवंगता धर्मपत्नी की स्मृति में इसे बनवाया था। इसके मध्य में आचार्य-पत्नी की प्रस्तर-प्रतिमा प्रतिष्ठित है।]

द्विवेदीजी का यह वानप्रस्थ या संन्यास—साहित्य - क्षेत्र से संन्यास कहिए—एकदम कर्म-विरोधी संन्यास नहीं। सबसे मुख्य बात द्विवेदीजी के जीवन में उनकी मुस्तैदी है। समय पर सब काम कर डालना ही उनका सिद्धांत है। वह केवल साहित्यिकों के पत्रों का उत्तर ही नहीं देते, वह केवल साहित्यिक पुस्तकें ही नहीं पढ़ते, वह केवल समाचार-पत्र ही नहीं बाँचते—वह घर की एक-एक बात की फ़िक्र रखते हैं, वह गाँव की एक-एक बात की चिंता रखते हैं, वह मुक़दमे सुनते हैं, उनका फ़ैसला करते हैं। नियमानुसार दंड देकर भी वह कोमल हृदय की पुकार पर दंड के रुपए अपने पास से दे देते हैं। रुपए-पैसे का बराबर हिसाब रखते हैं। इंडियन-प्रेस से जो रुपए मिलते हैं, उनका कच्चा चिट्ठा (बजट) वह हर महीने बना लेते हैं। उसमें भी बचत अवश्य होनी चाहिए। आमदनी और ख़र्च के बाद यदि बचत न हुई, तो हिसाब रखने से ही क्या! वह कोरे संपादक नहीं। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
——हरएक घर में रहना चाहिए——

सच्ची शक्ति का संग्रह के लिये

झंडु की सुवर्णमिश्रित

मकरध्वजगुटी

शक्ति की सर्वोत्तम दवा
फ़ौरन् व्यवहार कीजिए

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बं० १४

यू० पी० के साल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ के ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल विवाहित पुरुषों को भेजी जाती है।

...प केवल कूपन भेज दीजिए, जिसमें लिख दीजिए कि ...पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा" आप हिंदी ...चाहते हैं या उर्दू-अँगरेजी में। आपके पास एक सुप्र-...द्ध चिकित्सक की लिखी हुई मनोरंजक पुस्तक पहुँच ...यगी। उसमें एक पूर्ण-यौवन पुरुष के लक्षण तथा उन सभी ...ठिनाइयों को दूर करने के साधन दिए गए हैं, जो आमतौर ...एक विवाहित पुरुष के रास्ते में रुकावट डालती हैं।

कूपन डाक द्वारा भेजिए

सेवा में, मैनेजर अमृतधारा फ़ारमेसी, लाहौर (१३)

...ा 'पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा'-नामक पुस्तक की एक प्रति मुफ़्त भेजकर कृतार्थ करें। मैं हिंदी, अँगरेजी, बंगाली में चाहता हूँ।

नाम ....

पूरा पता ....

डाक व तार का पता—अमृतधारा फ़ारमेसी, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायाधीश भी हैं, गृहस्थ भी हैं, तपस्वी भी हैं,

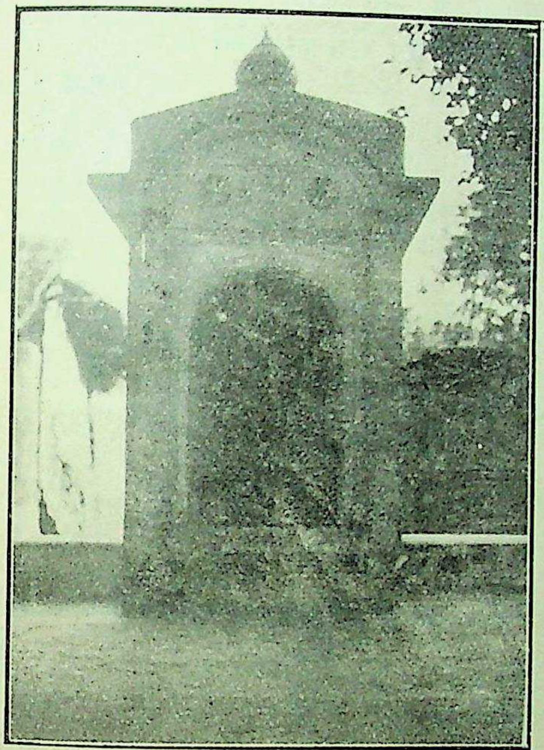

स्मृति-मंदिर के पास की मढ़िया

[इस मंदिर में महावीरजी की मूर्ति स्थापित है। इसे आचार्य द्विवेदीजी की पत्नी ने अपने ख़र्च से बनवाया था।]

सिद्धांत के पक्के, सिद्धांत के समक्ष लोक की परवा न करनेवालों में से हैं। स्मृति-मंदिर की स्थापना से गाँव के कुछ और आस-पास के बहुत-से लोग तरह-तरह की बातें करते हैं, पर उस नर-केसरी को इसकी चिंता नहीं। यही दृढ़ता उनके जीवन का मूल-मंत्र है, जिसने उन्हें हिंदी के उत्थान में निर्द्वंद्व सहयोग देने में सहायता पहुँचाई, जिसने उन्हें कभी पैर पीछे नहीं रखने दिया।

उस दिन, जब हम लोगों की मंडली इस तीर्थ-यात्रा के लिये चली जा रही थी, मैंने हिंदी के भविष्य की न-जाने कितनी सुंदर कल्पनाएँ कीं। धर्म के लिये लोग न-जाने कितनी यात्राएँ किया करते हैं, पर साहित्य के नाम पर हिंदी के ऋषि-कल्प द्विवेदी-जी के आश्रम की इस यात्रा ने हमें विश्वास दिलाया कि भविष्य उज्ज्वल है, हिंदी में वह दिन आनेवाला है, जब लोग इन महर्षि का मूल्य समझेंगे; वह दिन आनेवाला है, जब इनके चरित के आदर्श पर लोग अपना मार्ग बनाएँगे। हमें तो द्विवेदीजी की मूर्ति में साक्षात् महावीरजी के दर्शन ही हुए, हमने उनके आश्रम को महावीरजी का ही आश्रम समझा। त्रेता में उन्होंने सीता की खोज की थी, संस्कृत-वाक् में बोलनेवाली सीता का पता-ठिकाना जान लिया था, इस युग में पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने हिंदी की खोज-ख़बर ली, उसके संस्कृत - स्वरूप का ठीक पता दिया।

'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' ठीक ही

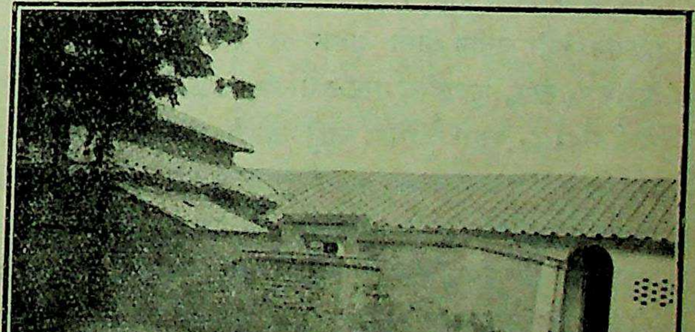

आचार्य द्विवेदीजी का गोदाम

[इसमें गौओं का चारा इत्यादि रक्खा जाता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया है। संपादक के रूप में जो वज्र से भी कठोर थे, आज उनका हृदय कुसुम से भी कोमल है, स्पर्श-मात्र से मसल उठता है। वह बात-बात में भाव-मग्न होकर अपनी डबडबाई आँखों से लोगों के हृदयों को भिगो देते हैं। महावीरजी चिरायु थे, अमर हैं, द्विवेदीजी भी चिरायु हों, अमर रहें। अखिलेश के समक्ष हमारी यही प्रार्थना है। वह साहित्य में कुछ भी न करते हुए हमारी आत्माओं में ऐसी स्फूर्ति भरते रहेंगे कि हम सत्साहस के साथ काम कर सकेंगे *।

(समाप्त)

* अत्यंत शोक के साथ लिखना पड़ता है कि इस लेख का यह उत्तरार्द्ध छपने के पूर्व ही द्विवेदीजी का स्वर्गवास हो गया।—संपादक

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये "संगीत-सागर"-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गा, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़्शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≡) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर "संगीत", हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र "संगीत" का इस वर्ष ३०० पृष्ठ का "भातखंडे-अंक" [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए! गाना बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल

[श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह]

मैं कितने ही खेल
　　जगत में खेल चुका हूँ ;
अवनी के सुख - दुःख
　　बहुत - से झेल चुका हूँ।
एक बूँद के लिये
　　आज मैं तरस रहा हूँ ;
भर - भरकर मधु - पात्र
　　अनेक उड़ेल चुका हूँ।
होकर गरिमागार
　　इसे तुम भूल न जाना ;
निज कंधों से कभी
　　तुम्हें मैं ठेल चुका हूँ।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूरी-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।

दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-)
२५ ,, ,, ,, ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल की सुंदरियाँ

[श्रीयुत संतराम बी० ए०]

आजकल शारीरिक मनोहरता-वाली स्त्रियाँ भारत में बहुत उत्पन्न हो रही हैं। लाहौर के अनारकली और बंबई के कालबादेवी - बाजार की दूकानों पर आपको उनके झुरमुट खड़े मिलते हैं, हमारे कॉलेजों की क्लासें उनसे शोभायमान रहती हैं, हमारी प्रदर्शनियों में वस्तुओं का प्रदर्शन उतना सुंदर नहीं होता, जितना इन कलियुगी रंभाओं का। इन सुदर्शना युवतियों की इतनी बहुतायत होते हुए भी, मेरी राय में, उनमें ऐसी लड़कियों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत थोड़ी है, जिन्हें सच्चे अर्थों में सुंदरी कहा जा सके।

कारण यह कि वास्तविक सौंदर्य शरीर के ऊपरी दिखावे से अनंतगुना अधिक है। बहुत प्राचीन काल से हम लोगों ने स्त्री को आध्यात्मिक सौंदर्य की मूर्ति के रूप में ग्रहण किया है, और उसके पदों पर सौंदर्य, आकांक्षा एवं काम-वासना-संबंधी भावनाओं का ढेर लगा दिया है। हमारे लिये स्त्री सचमुच रहस्यों की रक्षिका और एकाधिक क्षुधाओं को तृप्त करने-वाली है। जब हम स्त्री में सौंदर्य देखते हैं, तो ये भावनाएँ हमारे भीतर प्रबल रूप से भड़क उठती हैं। परंतु यदि स्त्रियाँ सौंदर्य से शून्य हों, तो जाति भूखी रह जाती है, उसका पोषण नहीं होता।

भारत में आज सच्चे सौंदर्य का अभाव-सा होता जा रहा है। वह प्रकृत रूप-लावण्य, जो उत्तम स्वास्थ्य और सद्विचार का फल होता है, आज बहुत कम दिखाई देता है। देहात में स्त्रियाँ काम करती हैं, इससे उनमें सौंदर्य होना चाहिए। परंतु दरिद्रता और निरक्षरता उन्हें सदा दबाए रहती है। जिन्हें स्वास्थ्यकर भोजन, पर्याप्त वस्त्र और आरोग्य-वर्धक आवास प्राप्त नहीं, उन बेचारियों का स्वास्थ्य और सौंदर्य क्या निखर सकता है? इसके विपरीत बड़े नगरों और धन-कुबेरों की स्त्रियाँ बेकार रहने से स्वास्थ्य खो बैठती हैं? आँखों में जो चमक, गालों पर जो चारुता, मुख-मंडल पर जो कांति, शरीर में जो लचक, होठों एवं नाखूनों पर जो लाली उत्तम स्वास्थ्य और शुद्ध रक्त से अपने आप आनी चाहिए, उस ये पाउडर, पोमेड, पेंट, कोटेक्स और लिपस्टिक की सहायता से लाने का यत्न करती हैं। जो व्यक्ति नित्य उचित व्यायाम करता है, सोच-समझकर खाता-पीता और अपने मन तथा शरीर को पवित्र रखता है, उसके शरीर में दुर्गंध नहीं उत्पन्न होती। परंतु आजकल के सौंदर्योपासक युवक और युवतियाँ उपर्युक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार-विचार की उपेक्षा करके इत्र, फुलेल और एसंस द्वारा ही शरीर की दुर्गंध दबाने की व्यर्थ चेष्टा करती हैं। मैं नए फ़ैशन के अनेक पुरुषों को ही नहीं, वरन स्त्रियों को भी देखता हूँ, जो बाहर से बड़ी सजी-धजी रहती हैं, रोज़ धोबी के धुले कपड़े बदलती हैं, घर से बाहर निकलते समय नाना प्रकार के बढ़िया विलायती इत्र लगाती हैं, परंतु फिर भी जब वे पास से होकर निकलती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो शव पर शृंगार किया हुआ है। कोई-कोई स्त्री तो पाउडर और लिपस्टिक का इतना अधिक उपयोग किए देख पड़ती हैं कि अनायास हँसी छूट पड़ती है। सारांश यह कि आज भारत के नारी-समाज में सच्ची कांति का भारी अभाव हो रहा है। आज बन-ठनकर प्रदर्शनियों, क्लबों और पार्टियों में जानेवाली, बैडमिंटन एवं टेनिस खेलनेवाली, जियोग्राफ़िकल सोसाइटियों में सम्मिलित होकर देश-विदेश घूमनेवाली और तैरने तथा दौड़ने की स्पर्धा में भाग लेनेवाली लड़कियों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ रही है। परंतु थोड़े-से अपवादों को छोड़कर ये सौंदर्य-व्यवसायी देवियाँ—जो लाखों दूसरी स्त्रियों को आदर्श का काम देती हैं—छिछली, छिछोरी, भाव की दृष्टि से दुर्बल और बुद्धि की दृष्टि से अधकच्ची हैं। बिलकुल रूखे और असभ्य शब्दों में कहा जाय, तो कहना पड़ेगा कि हमारी स्त्रियों ने सौंदर्य का जो आदर्श अपने सामने रक्खा है, वह बालकोचित, चरित्र-हीन, ऊपरी और उतना ही सत्त्व-हीन है, जितना सिनेमा का परदा, जिस पर यह बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाता है। अपनी रूप की रानियाँ चुनने में हमने आत्मा के भीतरी प्रकाश का स्थान स्वाँग भरने के चेहरों और नक़ली सजावट को दे दिया है। हमारे चल-चित्रों की इन कथित अप्सराओं के जीवन, वचन और आदर्श नितांत गौरव-रहित हैं; बाहर से ख़ूब सजी होने पर भी भीतर से वे निरानंद एवं निष्फल—शून्य हैं।

योरप और अमेरिका के अंधे अनुकरण में अब भारत में भी सौंदर्य-प्रतियोगिताएँ होने लगी हैं। एक अमेरिकन कलाकार के शब्द इस संबंध में सुनने योग्य हैं। वह कहता है—

"सौंदर्य-प्रतियोगिता आज हमारे जीवन की अतीव स्पष्ट रूप से असंगत घटना है। इन विक्रेय एवं अशिष्ट रँगरलियों में से कई एक में, मुख्यतः उन्हें देखकर व्यंग्य-पूर्ण हँसी आने के कारण, मैं निर्णायक बनना स्वीकार करता रहा हूँ। मैंने इसमें पारितोषिक पानेवाली लड़कियाँ देखी हैं। इन्हें अनेक कारणों से चुना जाता है। इन कारणों में सौंदर्य का कोई स्थान नहीं होता। यह बात प्रत्यक्ष है, कि सचमुच सुंदर लड़कियाँ ऐसी प्रतियोगिता में भाग लेना पसंद नहीं करतीं, क्योंकि जो स्त्री सचमुच सुंदर है, वह इतनी अवर्णनीय रूप से अशिष्ट नहीं हो सकती।"

मेरा आशय यह नहीं कि भारतीय स्त्रियाँ सौंदर्य से शून्य ही हो गई हैं—भारत में कोई सुंदर स्त्री रही ही नहीं। अब भी यहाँ अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी चटकोली-मटकीली, रूप-लावण्यमयी रमणियाँ हैं, जिन्हें देख देवबालाएँ भी लज्जित होती हैं। इन देवियों की आत्मा भी इनके शरीर के समान ही मनोहर है। इन्हें देखकर उन सब स्वर्गीय सुंदरियों की याद हो आती है, जिनका वर्णन हमें अपने प्राचीन इतिहास में मिलता है। यह सच है कि प्रत्येक युग में शारीरिक सौंदर्य के ढंग बदलते रहते हैं, और एक युग की सुंदरी का हार-सिंगार दूसरे युग की सुंदरी के बनाव-चुनाव से भिन्न प्रकार का होता है; सीता का सौंदर्य द्रौपदी के सौंदर्य से भिन्न था, तो भी सौंदर्य का एक ऐसा रहस्यमय तत्त्व है, जो स्त्रियों में एकरूप रहता है। इस तत्त्व के करुणा-जनक अभाव की ही आज मुझे शिकायत है।

मैंने सैकड़ों-सहस्रों सुंदरियों के चित्र देखे हैं, इसलिये मैं शारीरिक सौंदर्य के गौरव को कम नहीं समझता; परंतु आत्मा के विशेष आधारभूत गुणों के बिना ऐसा सौंदर्य कौड़ी मोल का नहीं। वे गुण क्रमशः ये हैं—शांति, दयालुता, साहस, रसिकता और अनुराग। अनुराग से मेरा तात्पर्य प्रणय-कामना-मात्र नहीं; 'स्त्री-सुलभ जीवट' इसके लिये अधिक उपयुक्त नाम होगा। इस जीवनी शक्ति से संपन्न स्त्रियाँ आत्मा की दीप्ति से दमक उठती हैं। यह दीप्ति यदि वस्तुतः देखी नहीं जा सकती, तो अनुभव तो अवश्य की जा सकती है। यह स्पर्शगोचर गुण सहस्रों सामाजिक एवं वैयक्तिक रीतियों से अपने को प्रत्यक्ष करता है। यह नारी को समतुलित अवस्था या शांति—जो भी आपकी इच्छा हो, उसका नाम रखिए—प्रदान करता है। यह स्त्री को पूरे ज़ोर से घूमते हुए मनोहर लट्टू की तरह संतुलित रखता है। यदि स्त्री में यह गुण है, तो फिर मुझे परवा नहीं कि उसकी कलाई बहुत मोटी है या उसका मुँह बहुत बड़ा। परंतु इस गुण के अभाव में, स्त्री के अंग-प्रत्यंग चाहे कितने ही सुडौल क्यों न हों, मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती।

विशुद्ध शारीरिक गुणों की दृष्टि से मेरा भारतीय सुंदरी का आदर्श यह है—वह लंबी हो; कंधे चौड़े हों; मुख-मंडल पूर्ण-रूप से सौष्ठव-संपन्न हो; भौंरे-से काले एवं घने, लहराते केश हों; घनी, लंबी बरौनी; लंबी, सीधी नाक, जो सिरे पर तोते की चोंच की तरह थोड़ी-सी मुड़ी हुई हो; चौड़ा, हलकी लहरों एवं पूरे होठोंवाला मुँह; समतल, सफ़ेद दाँत; आँखें स्त्री-सुलभ मोहिनी से इतनी भरी हुई कि जब आप उनसे अपनी आँखें मिलाएँ, तो आप का हृदय उछल पड़े; भरी और ऊपर को उठी हुई छातियाँ, जो एक दूसरी से दूर-दूर हों; नितंब इतने पतले न हों कि उसके स्त्री होने में हो संदेह होने लगे, और हरिणी के समान लंबी-लंबी, सुंदर टाँगें हों। ऐसी ही स्त्री सुंदर कहलाने योग्य है।

परंतु ऐसी स्त्री भी भारी भूल करेगी, यदि वह केवल अपनी शारीरिक मनोहरता के ही भरोसे रहेगी। यदि उसे इन्हीं गुणों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतोष हो जायगा, तो यह उससे भी बड़ी भूल होगी। हमारी अनेक लड़कियाँ समझे हुए हैं कि चूँकि हमारे शरीर में किसी प्रकार का दोष या कमी नहीं, इसलिये हमें अपनी भीतरी शक्तियों को विकसित करने की कोई आवश्यकता नहीं। इसलिये वे बाहरी सजावट और नरगस के समान आत्मप्रशंसा पर ही सारा ज़ोर देती हैं। वे अपने बाहरी अंगों को लिपस्टिक, चिकने पेंट और नाख़ून-पॉलिश से पोतती हैं। मैं बनाव-चुनाव के विरुद्ध नहीं, यदि इसका कला-पूर्ण रीति से प्रयोग किया जाय। परंतु और सब बातों को छोड़कर केवल बाहरी रंग-रोग़न पर ही पिल पड़ने से स्त्रियाँ सौंदर्य के सच्चे मार्ग से बहुत दूर, परे भटक जाती हैं। इससे उनकी कांति नष्ट होकर चेहरा बे-रौनक़ हो जाता है, और अंत को घोर निराशा होती है। कारण यह कि जिस मांस में आत्मा निवास नहीं करती, वह भीषण वेग से ख़राब होने लगता है।

भारत में इस दुरवस्था का क्या कारण है? पश्चिम की बुरी बातों का अंधानुकरण। हमारी दादियाँ और परदादियाँ भी सुंदर दिखाई देने का प्रयत्न करती थीं। वे भी हार-सिंगार करती थीं। परंतु उनके सुंदर दिखाई देने के उपायों और हार-सिंगार की रीतियों में और हमारी आजकल की बहू-बेटियों के उपायों तथा रीतियों में आकाश-पाताल का अंतर है।: हमारी स्त्री-शिक्षा की पद्धति में ही भारी दोष है। यह सारा बल सौंदर्य के प्रदर्शन पर देती है, स्वयं सौंदर्य पर कुछ भी नहीं। जो लड़की लिपस्टिक और पेंट के बल पर जगत्-सुंदरी बनना चाहती है, वह पथ-भ्रष्ट है, और उसे पथ-भ्रष्ट करनेवाला वह व्यक्ति है, जिस पर उसकी शिक्षा का उत्तर-दायित्व है। हो सकता है, उसकी यह आकांक्षा पूरी भी हो जाय, परंतु जब तक वह एक जीती-जागती रंभा और सौंदर्य के जातीय आदर्श की रक्षिका के रूप में अपने में उत्तर-दायित्व का भाव विकसित नहीं करती, वह परि-पक्व अवस्था के पुरुष की रुचि अपने में बनाए न रख सकेगी। और, न कोई सच्चा कलाविद् उसके सौंदर्य की प्रशंसा ही करेगा।

श्रीमती डॉक्टर मेरी स्टोप्स अपनी 'चेंज ऑफ़् लाइफ़ इन मेन ऐंड विमेन' में लिखती हैं—"सोलह वर्ष की अवस्था में जब किसी के मेरी प्रशंसा करने पर मुझमें अभिमान आ गया, तो मेरे पिता ने मुझसे कहा—वह केवल तुम्हारे यौवन की प्रशंसा कर रहे हैं। सोलह वर्ष की आयु में तुम्हें सौंदर्य का कोई श्रेय नहीं मिल सकता। परंतु यदि तुम साठ वर्ष की आयु में सुंदर होगी, तो वह तुम्हारी अपनी आत्मा का कार्य होगा। तब तुम इसके लिये अभिमान कर सकती और प्यारी लग सकती हो।"

जिन लोगों को परमेश्वर ने सुंदर शरीर नहीं दिया, उन्हें भी हताश और दुखी होने की आवश्यकता नहीं। उनकी इस कमी को प्रकृति माता दूसरे ढंग से पूरा कर देती है। लंदन में एक अत्यंत मनोहर अजायबघर है, उसका नाम है—'नैशनल पोर्टरेट गैलरी'। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको उन सब लोगों के चित्र मिलेंगे, जिन्होंने इँगलैंड में गत चार सौ वर्षों में किसी व्यवसाय में प्रसिद्धि प्राप्त की है। उनकी कुरूपता देखकर आपको आश्चर्य होगा—बड़े-बड़े लाट पादरी, प्रख्यात विद्वान्, राजनीतिज्ञ और व्यापारी। हमारे यहाँ भी वेदव्यास, अष्टावक्र और चाणक्य प्रभृति विद्वान् महाकुरूप थे।

कुरूपता का निश्चित नैतिक मूल्य है। पहले तो यह कि जिस मनुष्य में कुरूपता का रोग होता है, उसे प्रणय-कार्य में आसानी से सफलता प्राप्त नहीं होती। इसलिये वह विजय पाने के लिये विशेष यत्न करता है—दूसरे को मोहित करने के लिये उसके पास सद्गुणों की ही चमक होती है। वह अपने गुणों को खूब बढ़ाता है।

इसके अतिरिक्त यदि कुरूप पुरुष में बल भी हो, तो लोग प्रायः सदा ही उसके पक्ष में हो जाते हैं। एक सचमुच कुरूप मनुष्य के प्रति उससे ऊपरवालों के मन में कभी स्पर्धा का भाव पैदा नहीं होता; न वे उसके प्रति उदासीनता का भाव रखते हैं। सुंदर, परंतु साधारण सिर की अपेक्षा असामान्य आकृति अधिक याद रहती है। इसलिये कुरूपता में मनुष्य को अपनी आत्मा के गुणों को बढ़ाने का अधिक अवसर मिलता है। इसे ईश्वर का अभिशाप समझकर विषाद और नैराश्य में डूब नहीं जाना चाहिए। मैं अधिक निश्चय के साथ और एक नियम के रूप में तो नहीं कह सकता, परंतु मेरा अनुभव है कि मूर्खों की संख्या जितनी अधिक सुंदर स्त्रियों और सुंदर पुरुषों में पाई जाती है, उतनी कुरूपों में नहीं। दूसरे, आत्मा का सौंदर्य शरीर के सौंदर्य से अधिक अच्छा एवं टिकाऊ होता है।

परिणाम

[श्रीयुत आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव]

यौवन-मद में फूल के जिसे चुभाए शूल,
उसी भ्रमर की आह से जलकर बिखरा फूल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाड़ा मेल-ट्रेन की तेज़ी से जा रहा है !

देर करोगे, तो सदा पछताओगे !

बचपन में ग़लतियाँ करके काया नष्ट करनेवाले के लिये
नीचे-लिखी दवाएँ अमृत या आबे-हयात हैं—

नवधातुरोगांतक

यह हमारी बीस साल की खोज का नतीजा है। हमारी सभी दवाएँ पब्लिक ने पसंद करके उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पर हमने मध्य-स्थितिवालों के लिये इसे सबसे अच्छा समझा, इसी-लिये गत कई सालों से इसका ही काफ़ी प्रचार है। हमें ग़रीबों का एक पैसा भी हराम में खाने से जंगल में वृक्ष के नीचे रहकर भूखों मर जाना अच्छा लगता है।

इस दवा से धातु के सारे विकार, धातु की कमी, धातु का सूख जाना, पतली हो जाना, उसमें गर्भोत्पादक कीट न होना, शीघ्र-पतन होना, कामेच्छा न होना, ढीलापन जल्दी होना, पेशाब के आगे-पीछे वीर्य जाना वग़ैरह सारी ही शिकायतें इस चूर्ण से उस तरह भागती हैं, जिस तरह हवा से बादल भागते हैं। आप इसे जाड़े में सेवन करें, अपूर्व लाभ होगा। जरूरत होने से अनु-पान बदलकर गरमी में भी खाकर जीवन का आनंद उठा सकेंगे। ६० दिन खाना ज़रूरी है। जिन्हें ज़रा भी शक हो, वे ४५ दिन खाकर परीक्षा कर लें। क़ीमत ४५ दिन की दवा का १२।।), पर अभी ग़रीबों के हितार्थ ६।) है।

संसार का अपूर्व, जादू का काम करनेवाला

तिला नं० १

विश्वास करो, हमारा एक पैर क़ब्र में है, एक बाहर है, ऐसे समय में हमें झूठ लिखकर धन कमाने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं। हमने अपनी ७० साल की उम्र में ५० साल तक सैकड़ों तिले बनाए, पर इस तिले से बढ़कर दूसरा तिला नहीं पाया। यह तिला सौ में सौ को मर्द बनाता है, इसने हज़ारों उजड़ती गृहस्थियाँ बना दीं। जिन घरों में रात-दिन देवासुर-संग्राम-सा मचा रहता था, कलह के मारे शांति नहीं मिलती थी, आज उन घरों में इसी तिले की बदौलत शांति का राज्य है।

इसके लगाने से बचपन की ग़लतकारियों के कारण पैदा हुई नसों की कमज़ोरी जाती रहती है। इंद्रिय में काफ़ी सख़्ती और तेज़ी आती है। देखते ही उत्तेजना होती है। आगे का मोटापन, जड़ का पतलापन, नसों का उभरा रहना सारी शिकायतें काफ़ूर हो जाती हैं।

आप वृथा इधर-उधर न ठगाकर, इस तिले को काम में लाकर सुखी हों। इस कंपनी की-सी सचाई कहीं नहीं है। इसे भारत के करोड़ों आदमी जानते हैं। क़ीमत फ़ी शीशी १५), पर ग़रीबों के लिये इस मौसम-भर आधा मूल्य ७।।) है। महसूल ।।)

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर काव्य का आनंद लूटिए !

(सुधा के ग्राहकों से पौना मूल्य)

(१)
नल नरेश

(२)
पंछी

नल नरेश

कविवर पुरोहित प्रतापनारायणजी कविरत्न-रचित एक महाकाव्य। इसमें नल-दमयंती की पवित्र एवं शिक्षा-प्रद कथा का छंदोबद्ध वर्णन है। इसकी प्रत्येक पंक्ति हृदय को स्पर्श करनेवाली और काव्य की दृष्टि से सुंदर है। साहित्य में महाकाव्य की सृष्टि एक बहुत बड़े सौभाग्य की बात होती है। ४ रंगीन तथा ९ सादे चित्रों-सहित, सुंदर रूप में छपी पुस्तक का मूल्य २॥), सजिल्द ३)

पंछी

(सचित्र)

लेखक, कविवर श्रीगोपालसिंह नैपाली। नैपाली-जी की कविताएँ सुधा, चित्रपट, सरस्वती आदि पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। उनकी काव्य-शक्ति, प्रवाह, सौंदर्य-बोध तथा चारुचित्रण आदि विशेषताएँ हैं। इस काव्य को देखकर हिंदी-साहित्य के कई प्रमुख विद्वानों ने इसके रचना-चातुर्य की बड़ी प्रशंसा की है। पढ़ने ही लायक़ चीज़ है। कविवर निरालाजी ने भूमिका में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मूल्य सादी ।≈), सजिल्द ।||)

गंगा-ग्रंथागार
३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय साहित्य के दो महाकवि

[श्रीयुत व्योहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए०]

संस्कृत-साहित्य में कवि-कुल-गुरु कालिदास का बहुत ऊँचा स्थान है। वह संस्कृत-साहित्य के पूर्ण चंद्र कहे जा सकते हैं। तुलसीदास भी हिंदी-साहित्य के कलंक-रहित पूर्ण चंद्र हैं।

आज संसार इन कवियों की रचनाओं पर जो इतना मुग्ध है, उसका कारण यही है कि ये विश्व-कवि थे। इसी कारण इनकी प्रतिभा ने सारे विश्व पर अपना अधिकार जमाया। इनकी कल्पना ने देश-विशेष या जाति-विशेष की संकीर्णता छोड़कर सारे विश्व को आलिंगन किया, और इसीलिये विश्व भी इनके चरण पूजने को लालायित हो उठा। सभी देशों में मानव-हृदय एक-सा ही है, अतः उसकी एकता से परिचय रखनेवाला किसी भी देश का कवि सार्वदेशिक या सार्वभौम कवि हो सकता है। कालिदास संस्कृत-साहित्य के रत्न होते हुए भी विश्व-साहित्य के भूषण हैं। उसी प्रकार तुलसीदास हिंदी के मुकुट-मणि होकर भी विश्व-भारती के अमूल्य रत्न हैं। उनकी कवित्व-भागीरथी भारत ही को नहीं, प्रत्युत सारे संसार को पवित्र करती है। वह सच्चे विश्व-कवि हैं, समस्त भू-मंडल के महाकवि हैं। उनकी व्यापकता अद्वितीय है।

कवि-श्रेष्ठ श्रीरवींद्रनाथ के मतानुसार कवि दो प्रकार के होते हैं—एक तो वे, जो केवल व्यक्ति-विशेष की कथा में अपनी कविता का उपयोग करते हैं, और दूसरे वे, जो सारे समाज अथवा संप्रदाय की कथा कहते हैं। कालिदास प्रथम प्रकार के कवि थे। उन्होंने व्यक्ति-विशेष का ही वर्णन किया है। तुलसीदास ने दोनो प्रकार के कवियों का काम किया है। उन्होंने व्यक्ति और समाज, दोनो का ही वर्णन किया है। व्यक्ति समाज का अंग है, और व्यक्तियों से ही समाज का संगठन हुआ है। व्यक्तियों को ही समष्टि रूप से समाज की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंध का सच्चा आदर्श बताना ही तुलसीदास का उद्देश्य था। आदर्श व्यक्तियों से ही आदर्श समाज की सृष्टि होती है। इसी को ध्यान में रख, गुसाईंजी ने आदर्श व्यक्तियों की सृष्टि कर आदर्श समाज का रूप दिखला दिया है। व्यक्ति का समाज के साथ और समाज का व्यक्ति के साथ क्या संबंध है, यह रामचरित-मानस में अच्छी तरह अंकित है। उन्होंने आदर्श व्यक्तियों की इतनी अधिक अवतारणा की है कि सारा समाज आदर्श समाज हो उठा है। कालिदास और तुलसीदास, दोनो ने ही व्यक्तियों के चरित्रों को चित्रित किया है, पर तुलसी में विशेषता यह है कि उन्होंने व्यक्ति को समाज के साथ मिला दिया है।

कुछ कवि केवल उच्च आदर्शों की सृष्टि करते हैं, और कुछ आदर्श व्यक्तियों की। कालिदास ने व्यक्तियों की भी सृष्टि की है, और आदर्श की भी। श्रीराजेंद्रनाथ विद्याभूषण महोदय की सम्मति है—"कालिदास ने केवल आदर्शों की ही सृष्टि की है।" हम देखते हैं, कालिदास ने अपने रघुवंश-काव्य में प्रधान रूप से आदर्शों की ही सृष्टि की है तथा अन्य काव्यों और नाटकों में व्यक्तियों की। रघुवंश में उन्होंने आदर्श व्यक्तियों की सृष्टि की है, किंतु उसमें बहुत-से आदर्श ऐसे हैं, जो केवल आदर्श-मात्र ही रक्खे गए हैं, वे व्यक्तियों के चरित्रों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणत नहीं हुए। उदाहरणार्थ ऐसे अनेकों राज-नीतिक गुणों का वर्णन किया गया है, जिनका राजाओं के चरित्रों से कुछ भी संबंध नहीं—वे किसी भी आदर्श राजा पर घटित किए जा सकते हैं।

गुसाईंजी ने भी व्यक्तियों और आदर्शों, दोनो की ही सृष्टि की है, पर उसमें विशेषता यह है कि उन्होंने अपने अधिकांश आदर्शों को अपने पात्रों के चरित्र में प्रदर्शित करके बतला दिया है। आदर्श सिद्धांतात्मक (Theoritical) है और व्यक्ति क्रियात्मक (Practical)। तुलसीदास ने सिद्धांतों को कार्य-रूप में परिणत कर दिया है। रामायण में जितने भी आदर्शों का वर्णन है, वे सब उसके पात्रों के चरित्रों में पाए जाते हैं।

कालिदास में अद्भुत भावोद्बोधक शक्ति थी। उन्होंने अपनी कविता में कुछ ऐसे सिद्धांतों तथा भावों का प्रचार किया, जिनका प्रभाव उनके बाद के साहित्य-जगत् पर बराबर पड़ता रहा। उनकी शैली की छाया भी उनके बाद के संस्कृत-साहित्य पर बराबर पड़ती रही।

तुलसीदास की लेखनी में भी ऐसी ही अद्भुत भावोद्बोधन-शक्ति थी, जिसकी छाया उनके परवर्ती समाज और साहित्य पर बराबर पड़ती चली आ रही है। विधर्माक्रांत भारतवर्ष में राम-भक्ति की सरिता बहाने का श्रेय इन्हीं को प्राप्त है। हिंदी-भाषा में दोहे और चौपाइयों द्वारा कथा कहने की प्रणाली इन्हीं की प्रचलित की हुई है, जो परवर्ती साहित्य में बराबर प्रचलित रही। मानस के आदर्श पर अनेक रामायणों और कृष्णायनों का उदय हुआ है। जिस तरह कालिदास ने प्राचीन काव्य-रचना की शब्दाडंबरमयी, क्लिष्ट शैली छोड़कर सरलता का अनुसरण किया, उसी प्रकार तुलसी ने भी प्रचलित भाषा पर ज़ोर देकर 'सरल कवित' को आश्रय दिया। इन शैलियों और नवीन भावों का प्रभाव उनके बाद से बराबर चला आ रहा है।

कवि समाज का प्रतिबिंब भी है और उसका नेता भी। किंतु केवल समाज में प्रचलित भावों का प्रतिबिंब न बनकर अपने आदर्शों के अनुसार चलनेवाला कवि ही समाज का नेता बनता है।

जिस समय कालिदास का आविर्भाव हुआ, उस समय समाज में और विशेषकर राजसमाज में अत्यंत विलासिता फैली हुई थी। सांसारिक सुख-प्राप्ति ही उस समय लोगों का जीवनोद्देश्य हो रहा था। इस विलासिता का प्रभाव कालिदास के ग्रंथों पर पड़े बिना न रहा। पर उन्होंने रघु, दिलीप आदि द्वारा प्राचीन आदर्शों की अवतारणा कर समाज को पवित्र करने का प्रयत्न किया। उस समय के विलासी राजसमाज को ही कर्तव्य सिखाने की अधिक आवश्यकता थी। इसीलिये कालिदास ने राजकीय सिद्धांतों का ही आदर्श उपस्थित किया। दिलीप, रघु, राम आदि आदर्श नृपतियों का चित्र उपस्थित कर उन्होंने तत्साम-यिक राजसमाज के लिये आदर्श स्थापित कर दिए।

तुलसीदास के समय में धार्मिक शिथिलता अधिक हो रही थी। उसी को दूर कर समाज के लिये एक मार्ग-प्रदर्शक की आवश्यकता थी। समाज का प्रतिबिंब उनके काव्य में दिखाई अवश्य देता है, किंतु वह स्वयं उससे प्रभावित न होकर समाज ही को अपने आदर्शों द्वारा प्रभावित करना चाहते हैं। उन्हें साधारण जन-समाज के सामने एक उच्चादर्श के स्थापन तथा धार्मिक शिथिलता दूर करने के लिये एक सीधे-सादे, सर्वोपयोगी मार्ग दर्शाने की आवश्यकता जान पड़ी।

इसी दृष्टि से उन्होंने सर्व-सुलभ भक्ति-मार्ग की सरिता बहाकर समाज का नैतिक आदर्श ऊँचा किया, तथा प्राचीन भारत के आदर्श पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज को ले जाने के उद्देश्य से आदर्श समाज के नेता राम आदि आदर्शों की सृष्टि की। कालिदास राजकवि थे और तुलसी जन-समाज के कविराज।

प्राचीन आदर्श को सामयिक रूप देना गुसाईंजी का ही काम था। गुसाईंजी ने अपना आदर्श तो एक प्राचीन कथानक ही चुना, किंतु इसे अपने समय के समाजोपयोगी बनाने के लिये उसमें सामयिक आवश्यकताओं का समावेश किया, तथा आवश्यकतानुसार पूर्व कथानक में जहाँ-तहाँ परिवर्तन करके उसे पूर्ण सामयिक रूप दे दिया। शैवों और वैष्णवों का भेद-भाव मिटाना इसी प्रकार की एक सामयिक आवश्यकता थी, जिसे उन्होंने मानस में प्रधान स्थान दिया, तथा अपने चरित-नायक द्वारा उसका प्रतिपादन कराया।

सौंदर्य ही कविता का राज्य है। सौंदर्य दो प्रकार के होते हैं—अंतर्जगत् का सौंदर्य और बहिर्जगत् का प्रकृति-छटा-दर्शन, ऋतु-वर्णन तथा शृंगार-वर्णन आदि। जिस प्रकार आत्मा के विना शरीर निर्जीव है, उसी प्रकार अंतर्जगत् के सौंदर्य की ओर दृष्टि रक्खे विना बहिर्जगत् का सौंदर्य निरर्थक हो जाता है। हृदय का सौंदर्य ही मनुष्य-समाज का सच्चा कल्याण कर सकता है, और इसीलिये समाजोद्धारक सत्कवि इसी ओर अपनी दृष्टि रखते हैं। और, केवल बाह्य सौंदर्य को देख सकनेवाले कवि बाह्य जगत् में ही लिप्त रहते हैं। यदि अंतर्जगत् और बाह्य जगत् दोनो के सौंदर्य का मेल कर दिया जाय, तब तो सोने में सुगंध मिल जाती है।

कालिदास ने अपनी दृष्टि अंतर्जगत् और बाह्य जगत्, दोनो ही के सौंदर्य पर रक्खी है, किंतु उनका विशेष लक्ष्य बाह्य सौंदर्य पर ही रहा है। इसके विरुद्ध तुलसीदास ने बाह्य सौंदर्य पर दृष्टि रखते हुए भी अपना लक्ष्य अंतर्जगत् के सौंदर्य पर ही रक्खा है। उन्होंने बाह्य सौंदर्य की बिलकुल उपेक्षा नहीं की, किंतु उसे अंतर्जगत् के सौंदर्य के बाद स्थान दिया, और जहाँ उसे अंतःसौंदर्य का सहायक पाया, वहीं प्रशंसा की।

सौंदर्य का क्षेत्र अपरिमित है। हर जगह सौंदर्य की प्राप्ति हो सकती है। जिस कवि में सौंदर्य की दृष्टि है, वह अपने कौशल से हर जगह सौंदर्य की सृष्टि कर देता है। किंतु आत्मदृष्टि-संपन्न कवि बाह्य सौंदर्य की तुच्छता समझ अंतःसौंदर्य के रहस्यों का ही उद्‌घाटन करते हैं। मानव-हृदय में ही यह सौंदर्य निहित है, और इसलिये महाकवि हृदय के सौंदर्य को ही यथार्थ सौंदर्य समझते तथा उसी का चित्र खींचते हैं।

कालिदास ने भी हृदय के सौंदर्य को पहचाना था, किंतु उनकी दृष्टि बाह्य सौंदर्य की ही ओर अधिक रही। और, तुलसीदास की दृष्टि आत्म-सौंदर्य तथा हार्दिक भावों की मनोहरता की ओर लगी होने के कारण बाह्य वस्तुओं की उपेक्षा कर देती थी। वह बाह्य सौंदर्य को आंतरिक सौंदर्य का सहायक-मात्र समझते हैं। कालिदास के समान वह उसे प्रधान आसन नहीं देते। वह अपनी बाह्य सौंदर्य-प्रियता को भी अपने इष्टदेव के रूप-वर्णन में ही प्रदर्शित करते हैं। तुलसी के राम बाह्य सौंदर्य और अंतःसौंदर्य, दोनो ही के मूर्तिमान् अवतार हैं। गुसाईंजी ने राम में स्वर्ग और मर्त्य, आत्मा और शरीर तथा बाह्य और अंतर् दोनो जगतों का सामंजस्य स्थापन किया है। उन्होंने जटा-मुकुटधारी राम-रूप का भी वर्णन किया, और उनकी शांतिमयी उच्च आत्मा के रहस्यों का भी उद्‌घाटन किया है। राम के जटा-मुकुट उनकी अंतस्तपस्या के ही बाह्य चिह्न हैं।

इस सौंदर्य-प्रियता के कारण ही कालिदास प्रकृति-देवी के अनन्य उपासक थे। गिरि-निर्झरों,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल पर्वतों, अनंत समुद्रों, सुंदर वन-उपवनों तथा कोकिल-कूजित, मनोमोहक निकुंजों आदि में वह अपनी आत्मा तन्मय कर देते थे। जड़ प्रकृति का सजीव चित्र कालिदास ने ही खींचा है। शकुंतला-नाटक में तो पेड़-पौदों से सजीवों-सा स्नेह करने का वर्णन किया गया है। आश्रम, पादपों तथा लताओं पर सखा-सखियों का-सा प्रेम कर उनके वियोग में शकुंतला का विलाप करना कालिदास के प्रकृति-प्रेम का सर्वोत्कृष्ट चित्र है। कालिदास के समान प्रकृति में सजीवता उत्पन्न कर देनेवाले कवि संसार-साहित्य में बहुत कम मिलेंगे।

तुलसी बाह्य सौंदर्य, दर्शन की दृष्टि रखते हुए भी अपने इष्टदेव के सौंदर्य में ही इतने लीन थे कि प्रकृति-छटा आदि बाह्य वस्तुओं को भी उसी का साधन बना देते थे।

कालिदास की यह बाह्य रूप-प्रियता दूसरी दिशा में थी। उनकी दृष्टि स्त्री-सौंदर्य की ओर खिंच ही गई, जिसे उन्होंने यथार्थ सौंदर्य मानकर उपभोग की वस्तु समझ लिया। तुलसीदास ने जिस सौंदर्य को अत्यंत तुच्छ समझकर उस ओर दृष्टि डालना भी पाप समझा, उसी सौंदर्य में कालिदास ने पूर्ण रूप से निःसंकोच रमण किया। प्राकृतिक तथा मानवीय (स्त्री), दोनो प्रकार के सौंदर्य कालिदास के लिये विलास की सामग्री थे। अतः हम रवींद्रनाथ के शब्दों में कालिदास को 'भोगविरचित तथा सौंदर्य-संयोग के कवि' कह सकते हैं। उसके विरुद्ध तुलसीदास को 'भोग' की जगह 'योगविरचित' तथा 'बाह्य सौंदर्य-संयोग' की जगह 'अंतःसौंदर्य-संयोग' के अथवा वैराग्य-निर्मित तपस्या के कवि कह सकते हैं।

तुलसीदास ने कहा है—

कबि न होउँ, नहिं चतुर कहाऊँ ;
मति - अनुरूप राम - गुन गाऊँ।

इससे ज्ञात होता है कि उनका उद्देश्य केवल कविता करना नहीं, प्रत्युत भक्ति का प्रचार करना था। इसी कारण वह प्रकृति-वर्णन या किसी भी घटना से सदा नीति या भक्ति की शिक्षा निकालने का प्रयत्न करते हैं। गीतावली में चित्रकूट की प्राकृतिक शोभा वर्णन करते-करते वह तुरंत अपने उद्देश्य पर पहुँच जाते हैं—

मंदाकिनिहिं मिलत झरना झरि-
झरि भरि - भरि जल आछे ;
तुलसी सकल सुकृत लागे जग
जैसे राम-भगति के पाछे।

सचमुच उनकी कविता 'राम-भगति के पाछे' लगी रहती है—वह पहले भक्त हैं, फिर कवि। उनकी सरस्वती-भक्ति भी प्रेरणा से ही मानस छोड़कर मुख-पंकज में आ विराजती है, और उनकी मूक वाणी सहसा मुखर हो उठती है—

भगति-हेतु बिधि-भवन बिहाई—
सुमिरत सारद आवत धाई।

और कालिदास? वह आरंभ में कवि हैं, और अंत में भी कवि हैं। कला ही उनका मुख्य ध्येय है—वह शुद्ध कवि हैं। नम्रता के कारण वह अपने को चाहे 'मंद' और 'वामन' भले ही कहें, किंतु 'कवियशःप्रार्थी' अवश्य हैं। वैसे "साधु-समाज भनित सनमानू" के इच्छुक तुलसीदास भी हैं, किंतु 'साधु-समाज' शब्द से ही यह प्रकट है कि उनके आराध्य कौन हैं।

इन कवियों के उद्देश्य से ही यह प्रकट हो जाता है। तुलसीदास ने 'स्वान्तःसुखाय' ही कविता लिखी है, यद्यपि उस 'स्वांतःसुख' में "सुरसरि-सम सबकर हित होई" की भावना भी अंतर्गत है। कालिदास के सामने ऐसा कोई महान् उद्देश्य नहीं था। किसी उद्देश्य को लेकर कविता करना और बार-बार उसे मौक़े-बेमौक़े दुहराते रहना कुछ लोगों की दृष्टि में दोष माना जाता है। ऐसा करने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि उनकी समझ में अपना कवि-कर्म छोड़कर उपदेशक बन जाता है। किंतु इस बात में मतभेद है कि ऐसा करने से वह अपने पद से गिर जाता है। केवल 'कविता ही के लिये कविता' करने से चाहे कवि काव्य के लक्षणों में पूरा उतरकर महाकवि के पद पर पहुँच जाय, किंतु लोक-कल्याण की दृष्टि से वह उतना हितकारी सिद्ध नहीं हो सकता। मेरी समझ में शुद्धि कवि या महाकवि की अपेक्षा संत-कवि का दर्जा लोक-हित की दृष्टि से ऊँचा है। और, यदि संतत्व की उच्चता के साथ कवित्व की भी पूर्णता प्राप्त हो जाय, तो फिर तो वह मानव के चरम उत्कर्ष की सीमा है।

इसी दृष्टि से, मेरी तुच्छ मति में, महाकवि कालिदास की अपेक्षा संत-कवि तुलसीदास का दर्जा उच्च है, क्योंकि जहाँ कालिदास में हमें मनोमुग्धकारी कवित्व का पूर्ण विकास मिलता है, वहाँ तुलसीदास में मनोमुग्धकारी कवित्व के साथ आत्म-कल्याणकारी संतत्व का अद्भुत सामंजस्य प्राप्त होता है। अगर कालिदास केवल वाणी के वर पुत्र हैं, तो तुलसीदास आत्मवाणी के अवतार।

गुलाबों की ठंढी क्रीम

भद्दी त्वचा और फटे हुए हाथों के लिये

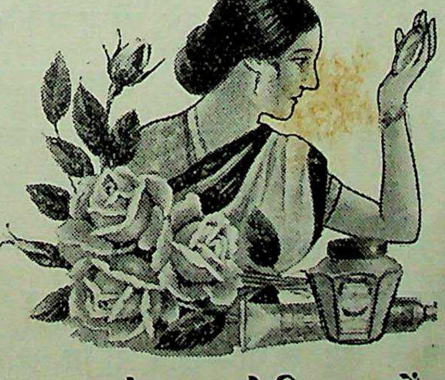

शारीरिक और मुख की सुंदरता की कुंजी

छोटे-छोटे ट्यूबों में प्राप्त

बंगाल केमिकल ऐंड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड

कलकत्ता बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम और तुम

[श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा]

तुम कौन हो, क्या हो, यह मैं क्या जानूँ। मैंने अपने में कौन-सी विशेषता देखी है कि तुमसे पूछ सकूँ कि तुम कौन हो? तुमने जिस तरह अपने को नहीं पहचाना, उसी तरह मैं भी अपने से अपरिचित हूँ। इसी बड़ी-सी दिखाई पड़नेवाली दुनिया में, जिसमें जानने के लिये बहुत ही जरा-सी बात है, हम कितने अज्ञानी, कितने अपरिचित और आपस में एक दूसरे से कितनी दूर हैं। क्यों जी, क्या कोई ऐसा तरीक़ा नहीं कि हम-तुम मिलकर, एक दूसरे को जान और समझकर, एक हो जायँ?

मैं अपने मन में कितना निराश और हताश हूँ, फिर भी मुख पर हँसी दौड़ रही है। मैंने तुम्हें दुखी देखा, और कलपते पाया—इसी में मुझे कितना संतोष होता है। तुम दुखी हो, अकेला मैं ही नहीं, यह मेरे लिये कितने सुख की बात है। तुम्हारा चेहरा उदास और मुरझाया है, इसीलिये न कि तुमने मुझे अधिक सुखी, वैभव-युक्त और पनपता पाया। मान लो, हम-तुम दोनो समान रूप से पीड़ित हैं, तब—तब हम-तुम क्यों नहीं मिल जाते? यही तो हमें सहन नहीं होता। बराबरी हमें मंजूर नहीं। हम भगवान् के यहाँ भी बराबरी नहीं चाहते। हममें-तुममें कुछ कमी-बेशी तो होनी ही चाहिए। हमारा-तुम्हारा दुःख बराबर है, यह तो बड़ी ख़राब बात है; तुम अधिक दुखी क्यों नहीं होते। मैं इसकी चेष्टा करूँगा। अपने दुःख को दूर करने की दवा न कर, यही करूँगा कि तुम्हारा बचा-खुचा सुख लूट लूँ, या लुटा दूँ। और, तुम भी तो यही करते हो। परिणाम यह होता है कि न तुम सुखी, न मैं। डूबते हैं हम दोनो एक ही धारा में, चाहे मैं हूँ या तुम।

मैं चेष्टा करता हूँ कि तुमसे अधिक विद्वान् बनूँ। मेरी यह चेष्टा नहीं है कि अधिक-से-अधिक विद्या-प्राप्ति के लिये विद्वान् बनूँ—मेरी इच्छा तुमसे अधिक विद्वान् बनने की है। जब तक कोई मुझसे नीचा न रहे, नीचा बनने-वाला न रहे, मुझे ऊपर उठने की अभिलाषा ही नहीं होती। तुम चाहे ऐसा विषय पढ़ो, जिसका जानकार मैं न होऊँ। मुझे धन का लोभ है, इसलिये नहीं कि संसार का सुख धन के हाथ में है, बल्कि इसलिये कि संसार का सुख मैं अपने धन से लूट लूँगा—छीन लूँगा, और तुम्हें मेरे सामने झुककर चलना पड़ेगा। अगर संसार में सभी धनी हों, तो मेरे धन का मूल्य ही क्या है। मैं तुम्हें गिराना चाहता हूँ, तुम मुझे, हमारे-तुम्हारे विचार कितने मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम प्यार करते हो, और मैं भी। तुम्हारे दिल में दर्द है, मेरा दिल भी मचलना जानता है। ठेस तुम्हें भी लगती है, मुझे भी। मानसिक संतोष तुम्हें भी चाहिए, मुझे भी। फिर भी तुम हरएक फूल की खुशबू लेना चाहते हो, मैं एक का—या तुम हरएक फूल पर मँडराना पुण्य समझते हो, और मैं पाप! हम-तुम एक काम कर ही नहीं सकते। जो मैं करता हूँ, उसके विपरीत करने में शायद तुम्हें सुख मिलता, और यही दशा मेरी भी है। हम दोनों के मन में बात एक है, करते हैं दो तरीक़े से।

देश का दर्द हम दोनों के दिलों में है। तुम भी सोचते हो कि उसका सुख हमारा सुख है, और मैं भी। फिर भी, तुम साम्यवादी हो, तो मैं पूँजीवादी। तुम कांग्रेसी हो, तो मैं वर्गवादी; तुम्हारा-हमारा रास्ता मिल ही नहीं सकता। मैं पूँजीवादी हूँ—तुम मुझे ज़ालिम समझो! तुम वर्गवादी हो—मैं तुम्हें लफंगा समझूँगा। कोई बूढ़ा है, तो ज़रूर खूसट है। कोई जवान है, तो ज़रूर उग्र और अधकचरा है। पूरा कोई नहीं। ऐब सबमें है। पर हम उस ऐब को नैतिक चरित्र के तराज़ू पर नापेंगे। इसीलिये हम एक दूसरे को गाली देते हैं, एक दूसरे से घृणा करते हैं, एक दूसरे के प्रति हमारे हृदय में अविश्वास का भाव है। हम लड़ते-झगड़ते, मरते-मारते अपने चमड़े से भी नफ़रत करने लगते हैं। नफ़रत में भी क्या मज़ा है?

पढ़ते जाइए, पढ़ाई ख़त्म न होगी। लिखते जाइए, सामान कम न होगा। धन ही कमाना है, खूब कमाइए, न रुपया कम होगा, न कमाना कम होगा, न कमाने का साधन कम होगा। सब ज्यों-का-त्यों बना रहेगा। आपको जो चाहिए, ले लीजिए, संपत्ति, वैभव, विलास, सुंदरी, मदिरा—आप तैरिए न सुख और कामवासना की नदी में। इस अग्नि में आहुति देने के लिये धन का हविष्य कभी न समाप्त होगा। इसका सुख अनंत है—कितना भोगिएगा।

आप ज़ुल्म करना चाहते हैं, शौक़ से कीजिए। अपने नौकर को ज़रा-सी बात पर निकाल दीजिए। अपने बच्चे को ज़रा-सी बात पर पीट डालिए। अपनी स्त्री पर ज़रा-से अपराध पर बिगड़ लीजिए। किसी का पेट काटिए, किसी का शरीर काटिए—जो चाहे, सो कीजिए। जब कोई न मिले, कीट-पतंग भी मसलकर मार डालने के लिये न मिलें, तो खुद ही अपने मुँह को पीटिए। कोई नहीं रोक सकेगा। जी भर लीजिए।

मुझे पाप ही करना है—कौन-सा ऐसा तरीक़ा है, जो किसी को पाप करने से रोक सके। झूठ बोलना कितना सहल है। दग़ा देना कितना आसान है। जाल-फ़रेब रचने में क्या देर लगती है। कमीनापन बेइंतिहा होता है। मक्कारी का कोई इलाज नहीं। ज़बान डुला देना, मुकर जाना, झूठा वादा करना, मामूली पैसे की पेंसिल से लेकर जूता-टोपी तक चुरा लेना—भला, इस प्रकार की लत कौन रोक सकता है? जब आदमी अपना सत्यानास ही करना चाहता है, तो उसे कौन ताक़त रोकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दुःख की बात! खाने को नहीं है, बच्चे कलप रहे हैं, औरत उनकी दर्द-भरी आवाज़ देखकर रो रही है, मन चाहता है कि जान दे दें—और जिस मालिक की जान लड़ाकर मिहनत से सेवा की, उससे अपने पिछले चार महीने की बाक़ी तनख्वाह माँगने गए, तो उसने जवाब दिया—"तुम्हें इतनी जल्दी रुपया माँगना हुआ करे, तो काम छोड़ दो। मुझे नहीं चाहिए ऐसा आदमी।" यह कहकर वह अपने बाल-बच्चों को खिलाने-कुदाने चला गया। उसने क्या सोचा कि इस नौकर ने भी पिता का बाना पहना है? कौन जाने, कल यही नौकर मालिक हो जाय, और मालिक नौकर!

दुनिया ऐसे ही चलती है। यदि यह इतनी लापरवाह न होती, तो आज जीवन इतना संकटमय क्यों होता? मनुष्य के पास है ही क्या—उस अभागे के पास द्वेष और दुःख की जो झोली है, उसी में मर-खपने के लिये वह आया है, और चला जायगा। जो सोचता है, वह कर नहीं सकता; जो कर सकता है, वह कभी सोचता नहीं। यही न है मनुष्य के जीवन की पहेली। न वह अपने को पहचानता है, न वह अपने कुटुंब को पहचानता है, न वह अपने हृदय के भीतर की धधकती ज्वाला से परिचित है। वह मूर्ख न-जाने किस घमंड में—न-जाने किस मद में मतवाला चला जा रहा है।

हम-तुम क्या करेंगे इतना उलझकर! इस दुनिया में पढ़ने और जानने लायक़ केवल एक बात है—मर मिटना। हम-तुम मर मिटना जानते नहीं—मरना जानते हैं। धनी अपना धन लेकर, दरिद्र अपनी दरिद्रता लेकर, पंडित अपनी विद्या लेकर, साधु अपनी साधुता लेकर—सब एक ही तरह, एक ही के द्वारा, एक ही तरीक़े से मर जाते हैं। हम-तुम जीवन-भर एक दूसरे से अलग रहे। सदैव आपस में झगड़ते रहे, एक दूसरे का गला काटने के लिये पागल हो रहे थे, पर आख़िर में हमको हाथ मिलाना ही पड़ा। हमारी-तुम्हारी चिता की लपटों में बराबर आँच थी, हमें-तुम्हें जलनेवाले, हड्डियों को बटोरकर, नदी में फेंककर एक-समान हँसते चले गए। हमारे-तुम्हारे धन और दारिद्र्य पर दूसरे गिद्ध टूट पड़े, और शून्य अनंत में हम-तुम एक ही मार्ग से चले। पहले तो हम-तुम एक दूसरे को देखकर झिझके, फिर मुस्किरा दिए, और हाथ में हाथ मिलाकर चलते-चलते हमारी-तुम्हारी आत्मा एक हो गई। न हम रहे, न तुम! हम-तुम एक हैं।

निठल्लू की राम-कहानी
(हास्य-रस की अनुपम पुस्तक)
लेखक, श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा; मूल्य सादी ।।), सजिल्द १)
मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

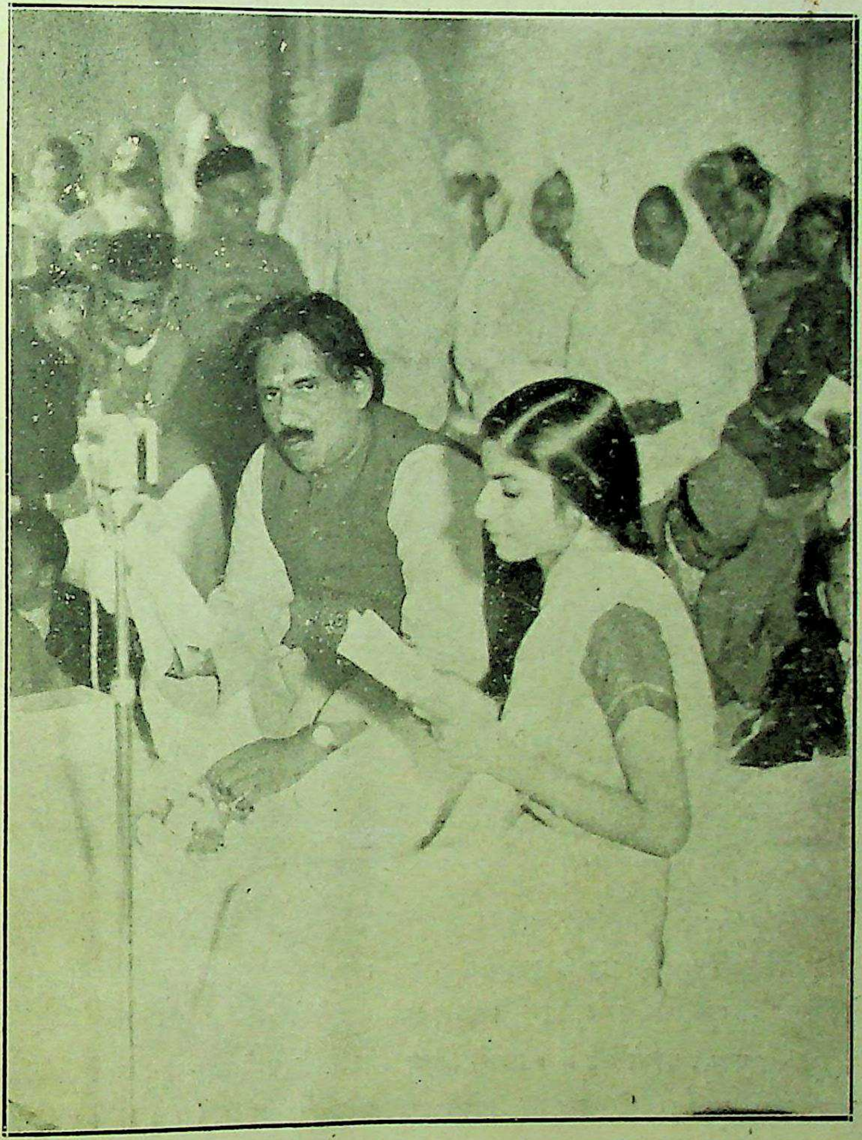

हिंदी की उदीयमान कवयित्री
कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए०

[आपकी कविताएँ सुधा में, समय-समय पर, निकलती रहती हैं। आपकी रचनाएँ सरस, सरल और भाव-पूर्ण होती हैं। आपकी 'नीराजना'-शीर्षक सुंदर कविता सुधा के इस अंक में अन्यत्र दी जा रही है। आप युक्त प्रांत के असिस्टेंट एक्साइज़ कमिश्नर श्रीयुत एम्० बी० सिंह की सुयोग्य पुत्री हैं। श्रीयुत सिंहजी उदार विचारों के, सहृदय, काव्य-प्रेमी सज्जन हैं। कुमारी सरस्वती लखनऊ-विश्वविद्यालय में एम्० ए० (संस्कृत) की विद्यार्थिनी हैं, और वहाँ की हिंदी-पत्रिका की संपादिका भी। युक्त प्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय बाबू संपूर्णानंदजी के सभापतित्व में जो कवि-सम्मेलन अभी दिसंबर में लखनऊ में हुआ था, उसी में आपने अपनी 'नीराजना' कविता पढ़ी थी। यह चित्र उसी समय लिया गया था। ईश्वर करें, चिरंजीविनी 'सुधा' की कवित्व-शक्ति का दिन-दिन विकास हो।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

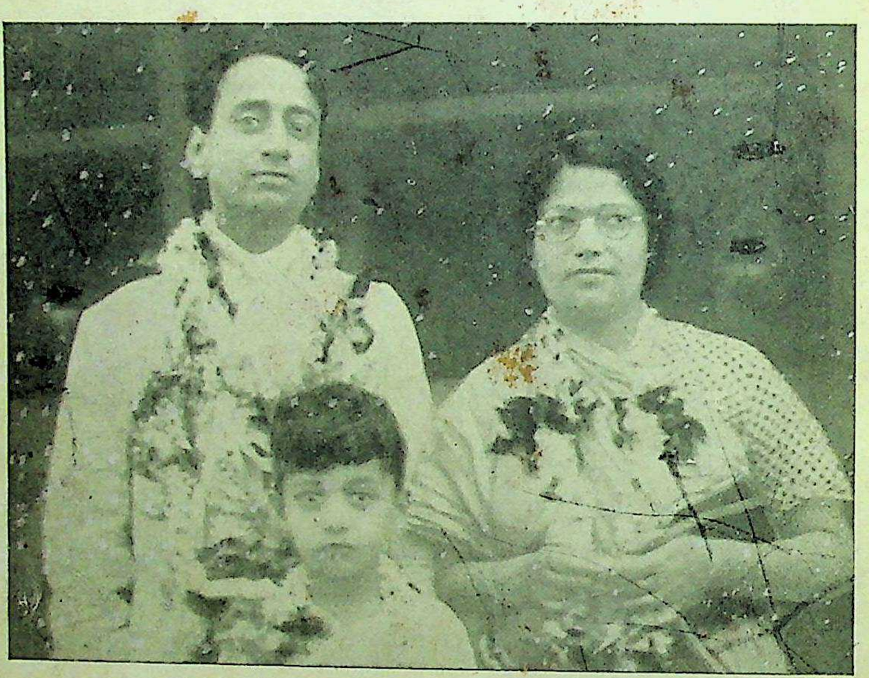

डॉ० सत्यकेतुजी विद्यालंकार और श्रीमती सुशीलादेवीजी शास्त्री

[सत्यकेतुजी सुधा-मंडल के पुराने लेखक हैं। आपने अग्रवाल-जाति के इतिहास के विषय में एक निबंध लिखा है। उसी पर आपने पेरिस-विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की पदवी प्राप्त की है। इसके सिवा आपने योरप के विभिन्न प्रदेशों में परि-भ्रमण करके वहाँ की शिक्षा-प्रणालियों का भी अनुशीलन और निरीक्षण किया है। आपकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलादेवीजी शास्त्री आपके साथ ही योरप गई थीं, और फ्रेंच-भाषा तथा फ्रेंच-साहित्य का अध्ययन करके लौटी हैं। अपनी ज्ञानोपासना समाप्त कर भारत लौटने पर सुधा आपका स्वागत करती है।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाब के फूल

[श्रीयुत रामशरण शर्मा]

(१)

इला चौंक पड़ी।

देखा, गाल से टकराकर गुलाब का एक फूल सामने डेस्क पर गिर पड़ा।

इला का मुँह शर्म से लाल हो उठा। जल्दी से देखा, प्रोफ़ेसर क्लास की ओर पीठ किए एकाग्र मन से बोर्ड पर लिख रहे हैं।

उड़ती निगाह पीछे घुमाई। क्लास गुम-सुम लिखने में लीन।

इला ने जल्दी से फूल पर रूमाल डाला, और फूल ग़ायब!

साथ की छात्राएँ भी लिखने में लीन थीं। किसी ने भी न देखा।

इला ने संतोष की साँस ली। पर गोरे गाल का वह स्थान, जहाँ फूल लगा था, अब भी लाल था।

इला का चित्त नोट्स लिखने में नहीं लग रहा था।

क्यों?

इला अभी-अभी तो थर्ड इयर में आई थी। क्लास के एक ओर, सबसे आगे, क्लास की छात्राओं की जगहें थीं।

और तब—पहले ही दिन से इसी घंटे में इसी तरह रोज़ एक गुलाब का फूल! चुपचाप बिना चूके हुए वह लगता था, और बस।

इला ने क्लास के हर लड़के को ग़ौर से देखा, हरएक के विषय में सोचा, पर वह यह न समझ सकी कि कौन है, जो फूल फेंकता है।

अक्सर सारा घंटा उसने कनखियों से पीछे की ओर देखते हुए बिता दिया, पर फिर भी—वही चुपके से फूल और सन्नाटा।

इला—कॉलेज का चिराग़ इला अपने धनी बैरिस्टर पिता की इकलौती पुत्री थी। धन, यौवन, सौंदर्य की देवी। उसके निकलने के समय कॉलेज के बरांडे में भीड़ हो जाती थी। उसकी साड़ी का रंग और जंपर का कट होस्टल में घंटों विवाद का विषय रहता था।

बीसियों फ़िल्म ख़राब हुए थे, झाड़ी के पीछे से, खंभे की आड़ से उस रूप-राशि की झलक पकड़ने में।

इला सब जानती थी, सब समझती थी।

कई बार क्लास के फ़ोटो खिंचने के प्रस्ताव हुए, पर इला कभी न आई।

निष्ठुर, पत्थर, संगदिल······न-जाने क्या-क्या कहलाती थी वह।

ऐसी थी इला।

पर इन लगातार गुलाब के फूलों ने उसे परेशान कर दिया था।

इतनी सफ़ाई से निशाना लगता था कि बस—न हाथ हिलने की आहट, न कभी निशाने में फ़र्क़।

इला मन-ही-मन नाराज़ भी होती थी, पर साथ ही इस सफ़ाई की दाद दिए बिना भी न रह सकती थी।

इला ने एक दिन सोचा, एक ख़ास घंटे में ही तो फूल आता है न?

तब?

कॉलेज के दफ़्तर में जाकर उस घंटे में जो नए लड़के थे, उनकी फ़ेहरिस्त चुपके से देखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्जनों थे।

यह भी बात न बनी।

फिर ? किसका निशाना इतना साफ़ हो सकता था ? टेनिस-खेलाड़ी का ? क्रिकेट के गेंद फेकने-वाले का ?

इन दोनो का एक भी बढ़िया खेलाड़ी उस क्लास में न था।

अब ?

खीझकर इला रुआसी हो जाती थी।

अब उस क्लास में वह डरती-सी, सहमी-सी, उत्सुक-सी भी रहती थी।

निगाह मानो कभी-कभी किसी को खोजती।

वह देखती दीन-याचना, भिक्षा, प्रेम, पर कभी वह ... वह शरारत नहीं। उसे, फूल फेकनेवाले को, न पहचान पाती थी।

किंतु फूल ... वही लाल-लाल गुलाब का ... फक से हमेशा ही ठीक निशाने पर लगता था।

(२)

शहर में आया हुआ था कार्निवल। इला भी गई थी। कॉलेज के विद्यार्थी भी।

इला अनमनी-सी इधर-उधर देख रही थी।

सहसा— !

एक जगह भीड़, उत्सुक सन्नाटा और कोलाहल। वह भी आगे आई।

देखा, एक नवयुवक, कॉलेज का ही, खेल रहा है, और लगातार जीत रहा है।

गेहुँआँ, सुंदर, लंबा-सा युवक।

एक बार भी उसने इला की ओर न देखा।

दत्तचित्त खेल में।

इला की आँखें चमक रही थीं। हृदय में धड़कन, माथे पर पसीना।

खेल ख़त्म हुआ।

खेलाड़ी ने अपनी हँसती हुई आँखें चारो ओर घुमाईं—बड़ी-बड़ी, चाय के-से रंग की—पर वह इला को न देख सका। वह पीछे हट गई थी।

नवयुवक भीड़ से निकला।

अँधेरे में सहसा आगे बढ़कर इला ने कहा—"मुबारक हो मि० राजीव ! आप ख़ूब खेलते हैं।"

राजीव सहसा अकचका गया। फिर अँधेरे में निगाह गड़ाकर कहा—"ओह ! मिस इला।"

और कुछ भी नहीं।

क्यों नहीं ?

शायद कुछ घबरा-से गए हों। या कुछ कहना ही न हो।

"मि० राजीव," इला कहती गई—"मैं कई दिन से एक शख़्स की तलाश में थी।"

"जी......ई।"

"आज अचानक ही वह मिल गया है।"

राजीव चुप।

फिर तेज़ी से बोला—"ओह ! अच्छी बात है। वास्तव में बेहद ख़ुशी की।" यह कहते-कहते वह मुड़ने लगा।

सहसा इला ने कहा—"देखिए, कल से मुझे गुलाब के फूलों की ज़रूरत न पड़ेगी।"

राजीव हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया।

इला तेज़ी से चली गई।

प्रसन्नता से चमकती हुई इला मोटर में जा बैठी, आँखों में विजय का उल्लास लिए।

राजीव ने माथे पर हाथ फेरा। हैरान, परेशान।

(३)

दूसरे दिन इला क्लास में बैठी थी।

पूरा घंटा बीत गया। इला ने महसूस किया, आज गुलाब का फूल नहीं आया।

और देखा—आज एक लफ़्ज़ भी कापी में न लिखा था।

शर्म से लाल होकर इला ने झप से कापी बंद कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लास से निकलते हुए देखा, राजीव क्लास में न था।

ख़ाली घंटे में इला बाग़ में टहला करती थी—नर्म-नर्म घास, सुंदर फूल, पेड़ों की छाया।

आज भी टहल रही थी कुछ अनमनी-सी, उदास-सी, आँखें फीकी-सी।

सहसा वह खड़ी हो गई।

सामने राजीव।

एक ही दिन में आँखों में गढ़े, मुँह पर हवाइयाँ-सी।

मानो भारी सदमा पड़ा हो।

इला हिचकिचाकर खड़ी हो गई। चारो ओर देखा, कोई न था। पेड़ों की ओट।

"क्यों," उसने सन्नाटे को भंग करते हुए कहा—"आज आप क्लास......"

"नहीं मिस इला," उसने धीरे से कहा—"अब मैं क्लास में न आऊँगा। मैंने कॉलेज छोड़ दिया है।"

इला धक से रह गई। सायँ-सायँ करके मानो ज़मीन तेज़ी से दौड़ने लगी हो।

"सुनिए तो," राजीव तेज़ी से बोला—"सिर्फ़ यह बतला दीजिए। माना कि मैं बड़ा बुरा, बेहूदा आदमी हूँ, पर यह बतलाइए कि आपने कैसे जाना कि मैं ही ....."

"ओह!" इला हँसकर बोली—"कल कार्निवल में देखा था आपको तीर फेंकते हुए। इतना सच्चा निशाना, मैंने देखते ही समझ लिया था कि...हाँ, पर आपने कॉलेज क्यों छोड़ दिया?"

राजीव उसकी ओर देखता रहा।

"और आपको" इला बोली—"हो क्या गया है?"

राजीव ने धीरे से जेब से एक गुलाब का फूल निकाला।

"यह आपकी भेंट," उसने टूटी आवाज़ से कहा—"क्योंकि आपने मना कर दिया है, वैसे तो..."

सहसा इला गंभीर हो गई, एकदम—जैसे बारिश से पहले बादल।

राजीव सहम गया।

"अभी नहीं।" इला ने कहा—"शाम को घर लेकर आइएगा चाय पीने।"

और वह चली गई।

राजीव खड़ा रह गया। फिर ... फिर मुस्किराने लगा।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी।

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। विना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आनंद-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अनुराधा !

[श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न]

(१)

स्वयं दीप-सी जगी हुई है युग-युग से मेरी अनुराधा ;
कण-कण में दीपाली-सी है दमक रही मेरी अनुराधा ।
अश्रु-आर्द्र पलकों में लिपटी भग्न स्वप्न की छिन्न लता-सी ;
कोलाहलमय जग में बैठी तपोभूमि की निर्जनता-सी ।

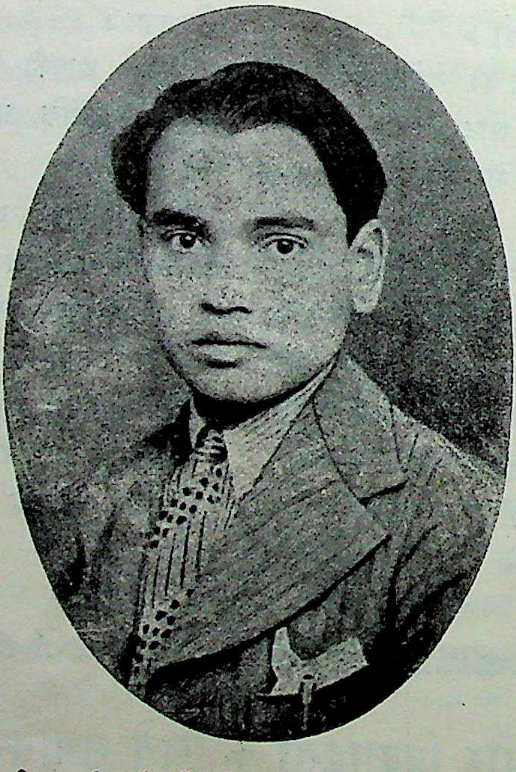

श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न

अपने उजड़े मधु-वन में वह तपा अपर्णा-सी अवतारी—
विरहोच्छ्वासों के काँटों पर तड़प रही मृदु कुसुम-कुमारी ।
मूक प्रतीक्षा के खँडहर में उर के निर्जनतम प्रांतर में—
क्षितिज-हीन दृग के अंबर में महाशून्यता के अंतर में—
आँसू के एकाकी संध्या-तारक की लघु ज्योति जगाए—
स्वयं दीप-सी जगी हुई वह युग-युग से लघु दीप जलाए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

यौवन-पृष्ठों पर सहसा ही अंकित हुआ प्रेम का लेखा;
तमसा-सलिल-सिंधु में जैसे तिरती भ्रांत किरण की रेखा।
प्राणों की वह शुचितम सुरसरि हिम-घूँघट भी खोल न पाई;
बड़े-बड़े नयनों की जोड़ी अपने से भी बोल न पाई।
अभी नहीं थी मुसका पाई उर-उपवन की कुंकुम-क्यारी;
बरस पड़ी हा! नियति-गगन से शिशिर-मेघ की प्रलय-खुमारी।
भग्न-समाधि प्राण की तेरी सोई धवल हिमालय बनकर;
मुरझी कलियों-सी कितनी ही अलकाएँ हैं बिखरीं उस पर?
बाल-प्रणय के भस्मसात् उस लाक्षागृह में अलख जगाए—
बैठी उर की दग्ध भस्म को अपने से ही वह लिपटाए।

(३)

जग के कलुषित दृग में यौवन संशय का घर है बन जाता;
नैतिकता की वृद्ध दृष्टि में बनता पाप प्रणय का नाता।
अडिग प्रेम की गंगा-यमुना नहीं रोकने पर रुकती है;
प्रेम-पिपासा, कड़ुए आँसू, पी मधु-मीठी हो बढ़ती है।
कहीं प्रेम भी बंदी होता, करें लाख दृग पहरेदारी!
बंधन के तहखानों में क्या बंदी प्रेम-पवन संचारी?
घृणित वासना है अँधियारी, जो अँधियारे में छिप जाती;
प्रेम-किरण तो तम के घूँघट खोल, निडर होकर इठलाती।
डूबी संध्या-सी पलकों में तंद्रिल निशि का बोझ उठाए;
रवि की अंतिम म्लान किरण-सी बैठी है वह आस लगाए।

(४)

अनुभव करता तेरी आहों को क्षत तितली-सी कटु तड़पन;
देख रहा हूँ तेरे दृग में डूबे कितने नभ औ' सावन।
घोर निशा के मरु-नभ में ज्यों भ्रांत खगी के पर की फड़कन;
वैसे ही क्या सिहर-सिहर रह जाते तेरे उर के कण-कण?
अधर-प्रांत में अंतःनिःसृत शिशिर-साँस सिसकारी भरती;
शून्य वृंत-सी जीवन की कटु घड़ियाँ सिहर-सिहर हैं उठती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि-परीक्षित हो तू निखरी अग्नि-परी-सी प्रवाल-प्रतिमा ;
हिय-मंदिर में आज अधिष्ठित करता तेरी स्वर्गिक तनिमा।
क्षितिज-पार हैं प्रेम-सरित-तट विरह-निशा ने पर फैलाए ;
चकवा-चकई-से बिछुड़े हैं हम दो पीड़ा-भार उठाए।

❀ ❀ ❀

नवल-वधू-सी कुछ सकुचाती प्रणय-ज्योति तब धीरे-धीरे—
प्राण-सदन के बुझे दीप में जाग रही अब धीरे-धीरे।
विद्यापति के कलित काव्य की ओ अनुभूति ललित अनुराधा !
तन्मय पीड़ा में हम इतने हों कि हटे पीड़ा की बाधा।

ग़दर के पत्र तथा कहानियाँ

मूल-लेखक, ख्वाजा हसन निज़ामी ; अनुवादक, हिंदी के प्रौढ़, प्रतिभाशाली लेखक श्रीचतुरसेनजी शास्त्री। लेखक की रचनाएँ उर्दू-साहित्य में अनमोल रत्न हैं, और साहित्य-सागर में सांप्रदायिक भाव, ऊँच-नीच और जाति-पाँति-रूपी रोड़े सब विलीयमान हो जाते हैं। इस पुस्तक में ख्वाजा हसन निज़ामी की पैनी लेखन-शैली, भाषा के माधुर्य और भावों की उच्चता का पूर्ण समावेश है। दिल्ली के ग़दर के समय में लोगों को कैसी यातनाएँ भोगनी पड़ीं, लोग हथेलियों पर जान लेकर कैसे भाग रहे थे, यह उसी समय के पत्र-व्यवहारों और कहानियों का संग्रह है। कहना न होगा, प्रत्येक पत्र सचाई से भरा हुआ। इसका अनुभव पाठकों को पढ़ने से ही होगा। मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमाता !

[श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त]

हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता !
तेरे सुपुत्र हों अखिल जगत के त्राता।
तुझको विधि ने सब विध संपूर्ण बनाया ;
गंगा - सा सुंदर हार तुझे पहनाया।
फिर अमल, धवल हिम-गिरि-सा छत्र लगाया ;
रत्नाकर तेरे पद पखारने आया।
शुक-पिक-द्विरेफ-दल तेरा ही गुण गाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! १ ॥

फल, फूल, खनिज, सब रत्नों का आकर तू ;
जल, दुग्ध, सुधा, रस-राजों का निर्झर तू।
नाना ओषधि से सबको चिंता-हर तू ;
मधुकर, नभचर, जलचर, थलचर का घर तू।
तन अजब अजायबघर-सा है दिखलाता ;
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! २ ॥

सब ऋतुएँ सज शृंगार यहाँ आती हैं ;
अपना-अपना नवनृत्य दिखा जाती हैं।
निज-निज स्वर में तेरे गुण-गण गाती हैं ;
तेरे आँगन में नाटक दिखलाती हैं।
सब ओर प्रकृति ने भर दी है सुखसाता ;
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! ३ ॥

हैं राम-कृष्ण-से तूने पुत्र खिलाए ;
जिन, वीर बुद्ध-से तेरी गोदी आए।
तेरे पुत्रों ने ऐसे कार्य दिखाए ;
भगवान सत्य के परम दूत कहलाए।
तेरा सुपुत्र करुणा का पुत्र कहाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता, सावित्री तूने बहुत खिलाईं;
काली - समान भी शक्ति देवियाँ पाईं।
विधि ने विभूतियाँ गिन-गिनकर पहुँचाईं;
सब दिव्य शक्तियाँ तुझे रिझाने आईं।
तेरी महिमा से कौन नहीं झुक जाता?
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता! ५॥

अध्यात्म यहाँ तेरे आँगन में खेला;
नाना वादों के खिले चमेली - बेला।
फुलवाड़ी में लग गया सुमन का मेला;
तेरे सुमनों का बना विश्व - भर चेला।
था कर्मयोग योगेश सुरस बरसाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता! ६॥

करती रहती नाना पट - परिवर्तन तू;
तुझको न क्रांति का डर है, निर्भय - मन तू।
सब धर्म, जाति के जन का पैत्रिक धन तू;
है सकल सभ्यताओं का परम मिलन तू।
सब ओर समन्वय छाया जीवन-दाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता! ७॥

कोई हिंदू या मुसलमान हो भाई;
जरथुस्त-भक्त, या सिक्ख, जैन, ईसाई।
या धर्म-हीन हो, नास्तिकता हो छाई;
सब तेरे सुत, तू बनी सभी की माई।
सबस है तेरा एक-सरीखा नाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता! ८॥

तेरी सेवा में सारी शक्ति लगाऊँ;
तेरे कण - कण पर जीवन-दीप जगाऊँ।
तेरी वेदी पर मन का सुमन चढ़ाऊँ;
मानवता का संगीत मनोहर गाऊँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे गुण गाते सुरगुरु भी न अघाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! ६ ॥

अपनी झाँकी फिर एक बार दिखला दे;
दुनिया पर जीवित शांति-चंद्रिका छा दे।
सच्ची स्वतंत्रता का संदेश सुना दे;
घर-घर में प्रेमामृत की धार बहा दे।
सब वैर नष्ट हो, प्रेम रहे मन भाता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! १० ॥

मानवता के सिर पर दानव न खड़ा हो;
अन्यायी सत्पथ में आड़े न अड़ा हो।
मन प्रेम-पूर्ण हो, पापों का न घड़ा हो;
साम्राज्यवाद के चक्कर में न पड़ा हो।
मानव का मानव रहे सर्वदा भ्राता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! ११ ॥

सदसद्विवेक का सूर्य तपे तमहारी;
भगवान सत्य के दर्शन हों सुखकारी।
बन जायँ स्वार्थ-त्यागी सब ही नर-नारी,
भगवती - अहिंसा - सेवक, प्रेम-पुजारी।
वैकुंठ दिखाई दे भूतल पर आता।
हे भुवन-मोहनी, प्यारी भारतमाता ! १२ ॥

हो सर्व-धर्म-समभाव सभी के मन में;
यह जाति-पाँति का रोग न हो जीवन में।
मानवता महँके तेरे श्वास - पवन में;
सत्प्रेम फले - फूले तेरे आँगन में।
गुलजार चमन बन जाय सकल सुखदाता।
हे भुवन - मोहनी, प्यारी भारतमाता ! १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़मींदार और किसान

[श्रीयुत महेशचंद्र बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद]

स्थायी बंदोबस्त

सन् १८०० के लगभग बंगाल के गवर्नर लॉर्ड कार्नवालिस ने सरकार की ओर से ज़मींदारों से वसूल की जानेवाली मालगुज़ारी (ख़याल रखिए, मालगुज़ारी और लगान में फ़र्क़ है) की रक़म हमेशा के लिये निश्चित कर दी। यह सुनकर किसी को आश्चर्य न होना चाहिए कि उस समय सरकारी ख़ज़ाने में जानेवाली इस मालगुज़ारी की रक़म किसानों से वसूल किए जानेवाले लगान का नब्बे फ़ी सैकड़ा थी। इस बंदोबस्त से सरकार को बँधी हुई रक़म मिलने लगी, और फिर हर साल किए जानेवाले झंझट से छुट्टी हो गई। इसके अलावा सोचा गया कि हमेशा के लिये बंदोबस्त हो जाने पर ज़मींदार किसान की पढ़ाई-लिखाई, तंदुरुस्ती, सफ़ाई आदि का इंतज़ाम करेंगे। लेकिन स्थायी बंदोबस्त हो जाने की वजह से एक तो खेती में उन्नति होने पर सरकार की आमदनी नहीं बढ़ सकती थी। सन् १८०० से ज़मीन की पैदावार बहुत बढ़ गई है, तथा ज़मींदार लगान के रूप में किसानों से उस समय की अपेक्षा अब कईगुना रुपया वसूल कर रहे हैं। लेकिन सरकार को एक पाई ज़्यादा नहीं मिल सकती। हालाँकि आजकल देश की उन्नति तथा भलाई करने के लिये रुपए की बड़ी ज़रूरत है। दूसरे, कुछ ज़मींदार तो दयालु और परोपकारी अवश्य हैं, लेकिन जो आशा की गई थी कि ऊपर बताए बंदोबस्त के बाद वे लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की उन्नति करेंगे, वह बिलकुल पूरी नहीं हुई। अस्तु। स्थायी बंदोबस्त बंगाल, बिहार, आसाम और यू० पी० के बनारस-डिवीज़न में चालू है।

अस्थायी बंदोबस्त

भारत की अन्य जगहों में अस्थायी बंदोबस्त है, अर्थात् वहाँ पचीस या तीस साल के लिये मालगुज़ारी निश्चित की जाती है। इसके बाद फिर से ज़मीन की देख-भाल तथा उपज की जाँच करके मालगुज़ारी ठीक की जाती है। ज़्यादातर यह देखा गया है कि हर नए बंदोबस्त के साथ मालगुज़ारी का भार बढ़ता ही रहता है। ये अस्थायी बंदोबस्त कई तरह के हैं। बंबई, मदरास, सिंध आदि प्रांतों में रैयतवारी रिवाज चालू है। इसमें सरकार सीधे किसान से लगान वसूल करती है। किसान और सरकार के बीच में कोई ज़मींदार नहीं होता। बंबई, मदरास में तीस साल में बंदोबस्त होता है। रैयतवारी के अलावा महालवारी-प्रथा होती है। यह मध्यप्रांत के कुछ भाग में प्रचलित है। इसमें कुल गाँव मिलकर लगान चुकाने का ज़िम्मेवार रहता है। संयुक्त प्रांत, पंजाब और मध्यप्रांत के कुछ भागों में ज़मींदारी-प्रथा चालू है। इसमें ज़मींदार या ताल्लुक़ेदार अपने हिस्से की मालगुज़ारी देने के ज़िम्मेदार रहते हैं। ज़मीन के लगान की दर सरकार की ओर से तय कर दी जाती है। ज़मींदार उस लगान की दर से किसानों को खेती करने के लिये ज़मीन देते हैं। इस तरह ज़मीन से जो लगान आ सकता है, उसका एक निश्चित हिस्सा सरकार ले लेती है। मान लो, ज़मींदार सौ रुपए वसूल कर सकता है, तो पहले सरकार सत्तर-अस्सी रुपए ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती थी। अब तो घटते-घटते यह रक़म चालीस-पचास फ़ी सैकड़ा के क़रीब रह गई है।

आगामी मालगुज़ारी की दर

सरकारी मालगुज़ारी नक़द रुपयों में ली जाती है, अनाज वग़ैरह में नहीं। जिस साल पानी कम बरसता है, या अन्य किसी कारण से फ़सल ख़राब हो जाती है, मालगुज़ारी का एक हिस्सा माफ़ कर दिया जाता है। लोगों की शिकायत है कि छूट नुक़सान के हिसाब से कम होती है। मालगुज़ारी के साथ लगान में भी कमी करनी पड़ती है। लगान मालगुज़ारी से भिन्न है। लगान किसान देता है, और मालगुज़ारी ज़मींदार। लगान ज़मींदार को मिलता है, और मालगुज़ारी सरकार को। जहाँ ज़मींदार नहीं हैं, जैसे उन प्रांतों में, जहाँ रैयतवारी-प्रथा है, वहाँ मालगुज़ारी नहीं होती, केवल लगान दिया जाता है, और वह भी सरकार को। सरकार लगान की दर और मालगुज़ारी दोनो को निश्चय करती है। संयुक्त प्रांत में लगान उस लगान के आधार पर निश्चित होता है, जो किसान पिछले बंदोबस्त के समय ज़मींदार को देते थे। मध्यप्रांत में सरकारी अफ़सर ज़मीन के गुणों और स्थिति की जाँच करते हैं, और उसी हिसाब से लगान ठीक किया जाता है। अगर किसी ज़मीन की मिट्टी अच्छी है, तथा वह बाज़ार से बहुत पास है, ऐसी हालत में ज़मीन का लगान ज़्यादा रक्खा जाता है। लेकिन लगान की दर ठीक करने की जो रीति बबई में चालू है, वह सबसे अच्छी कही जाती है। वहाँ यह जानने की कोशिश की जाती है कि पिछले बंदोबस्त के समय जो उपज हुई थी, उसकी क़ीमत क्या थी, और उस उपज को पैदा करने के लिये क्या ख़र्च बैठा था। उपज की क़ीमत से ख़र्च निकालकर जो बचता है, उसका लगभग आधा भाग आगामी बंदोबस्त तक के लिये मालगुज़ारी निश्चित की जाती है। लेकिन किसानों को शिकायत यह रहती है कि उपज की क़ीमत बढ़ाकर और लागत-ख़र्च घटाकर हिसाब लगाया जाता है। कहा जाता है, इससे किसानों को पूरी मज़दूरी नहीं मिल पाती। और, किसानों के कई महीने भूखे रहने का एक कारण यह भी है।

ज़मींदार और किसान

सरकार की ओर से लगान की जो दर ठीक की जाती है, ज़मींदार उसी दर से वसूल करते हैं या कम-बेशी। इस संबंध में यह जानना चाहिए कि किसान दो तरह के होते हैं—एक मौरूसी, दूसरे ग़ैर-मौरूसी। मौरूसी किसान वे होते हैं, जिन्हें यह हक़ मिल जाता है कि वे जब तक चाहें, लगान देते रहें, और खेती किए जायँ। ज़मींदार उनके खेत छीनकर दूसरों को नहीं दे सकता। ग़ैर-मौरूसी वे होते हैं, जो थोड़े दिनों के लिये खेत लगान पर लेते हैं, और जिन्हें मौरूसी हक़ प्राप्त नहीं होते। चाहे स्थायी बंदोबस्त हो चाहे अस्थायी, मौरूसी किसानों की हालत अच्छी कही जाती है, लेकिन ग़ैर-मौरूसी किसानों की हालत देश के प्रत्येक कोने में शोचनीय है। ज़मींदार लोग हमेशा यही सोचते हैं कि क़ानून के अंदर रहते हुए किसानों से जितना अधिक लगान वसूल किया जाय, उतना ही अच्छा। अतएव बिना किसी सिद्धांत या उसूल के ही किसान पर ज़्यादा-से-ज़्यादा लगान लगाया जाता है।

फिर यह लगान वसूल कैसे किया जाता है। बेचारा किसान अगर अपने आप समय पर लगान का रुपया ज़मींदार को दे आवे, तब तो ठीक, वरना ज़मींदार को लगान की फ़िक्र नहीं रहती। उन्हें आरामतलबी और विलासिता का जीवन बिताने से छुट्टी कहाँ। बहुत-से रईस ज़मींदार गाँव में रहना पसंद नहीं करते। वे गाँव छोड़कर शहरों में जा बसते हैं। वे गाँवों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रहना क्यों पसंद नहीं करते ? कारण, हमारे हिंदोस्तान के गाँवों का रहन-सहन बहुत नीचे दर्जे का है। वहाँ स्वास्थ्य और दवा-दारू का कोई प्रबंध नहीं। अगर कहीं कोई अस्पताल रहता भी है, तो गाँव से कई कोस दूर। फिर गाँवों में मनोरंजन और खेल-कूद का कोई इंतज़ाम नहीं रहता। लेकिन हमारे ज़मींदार के गाँव छोड़ने का कारण अस्पताल नहीं होना चाहिए। असली कारण तो गाँवों में भोग-विलास की सामग्री, ऐशो आराम और नाच-रंग का ठीक-ठाक न होना है। वहाँ थिएटर, बायस्कोप या जुए खेलने के लिये कार्निवल कहाँ मिल सकते हैं। ज़मींदारों की ग़ैरहाज़िरी में उनके कारिंदे और नौकर ही लगान वसूल करने का काम करते हैं।' कहावत है—'घोड़े चले गए, गधों का राज है। अथवा 'बिल्ली गई, चूहों का राज्य।' ज़मींदारों के चले जाने पर ये कारिंदे ख़ूब ऊधम मचाते और मनमाना करते हैं। बेचारे ग़रीब किसानों पर बुरी तरह से अत्याचार किया जाता है। वक़्त पर ही नहीं, बल्कि कहा जा सकता है कि आएदिन लगान वसूल किया जाता है। बेचारे किसानों को दूध-दही, फल-फूल आदि चीज़ें कारिंदों को चढ़ानी पड़ती हैं, जिसमें कारिंदा-देवता ग़ुस्सा न हो जायँ। तिस पर भी उनका मुँह सीधा नहीं होता।

बेगार और नज़राना

लेकिन जब ज़मींदार गाँव में रहता है, तभी कौन-सा अच्छा इंतज़ाम होता है ? तब भी किसानों को मार-कूटकर कारिंदे लगान और अपना कमीशन वसूल करते हैं। जहाँ किसी ने कुछ ना-नू की कि उस पर जूते बरसने शुरू हुए। इसके अलावा किसानों से रसद और बेगार ख़ूब ली जाती है। हरएक किसान की पारी बँधी रहती है। जब कोई ख़ास काम पड़ गया, तब पारी हो या न हो, किसान बेचारे बेगार के वास्ते पकड़ लिए जाते हैं। उस समय वे भूखे हों या नंगे, खाना खा रहे या सो रहे हों, ग़रज़ चाहे जिस हालत में हों, ज़मींदार के आदमी उसे घसीटकर ले जाते और बेगार कराते हैं। जब कोई त्योहार आता है, तो नज़राना और भेट ली जाती है। अगर कोई किसान ज़मींदार साहब को चीज़ें भेट देने में चूक जाय, तो फिर उसकी बुरी तरह ख़बर ली जाती है। नज़र के अलावा देश के बहुत-से हिस्सों में त्योहारों पर तरह-तरह के टैक्स वसूल किए जाते हैं। यह तो सबको मालूम ही है कि रोज़ एक-न-एक त्योहार बना ही रहता है। आज दशहरा है, तो कल दिवाली, परसों होली आदि। भला बताइए तो, जिनके पास स्वयं पेट भरने के लिये काफ़ी सामग्री नहीं, वे कैसे आएदिन ज़मींदार साहब की मनपसंद भेट तैयार कर सकते हैं। क्या आप सोचते हैं कि यह भेट ज़मींदार के घर रहती है ? यह तो उसी समय ज़मींदार महाराज के नौकरों और ख़ुशामदियों के पेट में पहुँच जाती है। हाँ, कोई माल हुआ, तो वह अवश्य ज़मींदार के घर रह जाता है। यह तो हम पहले ही कह आए हैं कि ज़मींदार के नौकर किसानों पर अत्याचार करते हैं, और किसानों की शिकायत पर ध्यान नहीं दिया जाता।

एक बात और। ग़ैर-मौरूसी काश्तकार कुछ दिनों के लिये ही लगान पर जोतने को खेत लेते हैं। जब अवधि ख़त्म होने के क़रीब आती है, तो उन बेचारों को यह धमकी दी जाती है कि उनके खेत छीन लिए जायँगे, अर्थात् वे बेदख़ल कर दिए जायँगे।

ज़मींदारों के कर्तव्य

हमारे ज़मींदार अपने इन कामों के बुरे परिणाम नहीं समझते। आप ही सोचिए, जहाँ किसानों को बेदख़ली का डर लगा रहता है, वे क्या कभी काफ़ी रक़म लगाकर अच्छी तरह खेती कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं ? कभी नहीं। यह धमकी मौरूसी और ग़ैर-मौरूसी किसानों के बीच बड़ा भारी फ़र्क़ डाल देती है। मौरूसी किसान अच्छी तरह खेती कर सकते हैं, लेकिन ग़ैर-मौरूसी किसान को यह विश्वास नहीं रहता कि खेत उसके पास रहेंगे, अतएव वह खेत में काफ़ी रुपया लगाना नहीं चाहता। हालाँकि ऐसा करने से देश की उपज काफ़ी नहीं बढ़ती, और किसानों की हालत दिन-पर-दिन गिरती ही चली जाती है। ज़मींदार के कारण ही गाँवों और किसानों की हालत ख़राब है। यदि वे चाहें, तो ग्राम-जीवन को सुधारने में बहुत भाग ले सकते हैं। ज़मींदारों का यह कर्तव्य है कि वे परोपकारी बनें, तथा हमेशा ऐसे काम करें, जिनसे गाँव की भलाई और उन्नति हो। सेवा और परोपकार का भाव छोड़ दिया जाय, तब भी, अपने स्वार्थ के विचार से भी, ज़मींदारों को खेती की उन्नति करनी चाहिए, क्योंकि किसानों की आय बढ़ने से ज़मींदारों की भी आय बढ़ सकेगी। इसके विपरीत ज़मींदार किसानों को दुख देकर थोड़ा ही फ़ायदा उठाते हैं। वे यह नहीं समझते कि ऐसा करने से वे स्वयं अपनी जड़ काटते हैं; क्योंकि यदि देखा जाय, तो किसानों की भलाई में ही ज़मींदार की भलाई है। अगर किसान भूखों मरने लगेंगे, तो ज़मींदारों को लगान कहाँ से मिलेगा। और, यदि लगान न मिलेगा, तो उनकी आय नहीं के बराबर हो जायगी, और वे भी भूखों मरने लगेंगे। चूँकि ज़मींदार इन बातों पर ध्यान नहीं देते, अतएव कहा जाता है, ज़मींदारी-प्रथा को ही तोड़ देना चाहिए। लेकिन ऐसा करने में बहुत झगड़े हैं। हर तरह की ज़मींदारी के संबंध में अलग-अलग स्थिति और समय के अनुसार विचार करना पड़ेगा। फिर सवाल उठेगा कि ज़मींदार को उसका हक़ छीनने के बदले कुछ दिया जाय या नहीं ? यदि दिया जाय, तो कितना ? इत्यादि।

हर्ष की बात है, जब से प्रांतों में कांग्रेस-मंत्रिमंडल आए हैं, तब से ज़मींदारों की आँखें खुलती जाती हैं। वे धीरे-धीरे समझते जा रहे हैं कि किसमें उनकी भलाई है और किसमें बुराई। यदि ईश्वर ने चाहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब हम आजकल के ज़मींदारों की कायापलट करके, उन्हें अपने किसान और रैयतों के साथ घुल-मिलकर उनकी तकलीफ़ों को दूर करते हुए देखेंगे *।

* एक अप्रकाशित पुस्तक से। —लेखक

जब सूर्योदय होगा

(द्वितीयावृत्ति)

मूल-लेखक, श्रीपं० भास्करविष्णु फड़के बी० ए०। अनुवादक, पं० गोपीवल्लभ-शालग्राम उपाध्याय। अपने ढंग का यह अनोखा और शिक्षा-प्रद, सामाजिक उपन्यास है। इस पुस्तक का विषय एकदम नया है। लेखकों के कर्तव्य क्या हैं, वे किस प्रकार पूर्ण किए जाने चाहिए, इस मुख्य विषय को लेकर ग्रंथ-कर्ताओं की आधुनिक स्थिति का हृदय-द्रावक वर्णन बड़ी उत्तमता से इसमें किया गया है। पुस्तक में तीन सुंदर चित्र भी हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रम-शिला-विहार

[श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल० टी०]

बौद्ध ग्रंथों में कई विहारों का वर्णन है। इनमें से कई में बड़े-बड़े विश्वविद्यालय भी थे। नालंद-विहार और विश्वविद्यालय के नाम से पाठक परिचित हैं। परंतु ऐतिहासिक अन्वेषणों द्वारा एक और बड़े विहार तथा विश्वविद्यालय का पता लगा है, और वह है विक्रम-शिलाविहार।

विक्रम-शिला-विहार मगध-प्रांत में, गंगा-नदी के तट पर, एक पहाड़ी पर था। इसमें छ फाटक लगे थे, और इसके अंतर्गत एक बहुत विस्तृत प्रांगण था, जिसमें ८,००० मनुष्य सुविधा-पूर्वक बैठ सकते थे। पहाड़ी पर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ थीं, जिससे यात्रियों को ऊपर पहुँचने में बड़ी सुविधा होती थी। यात्री कभी-कभी रात्रि के समय विहार में नहीं जा पाते थे। फाटक बंद कर दिए जाते थे। लेकिन धर्मशालाओं का समुचित प्रबंध होने के कारण उन्हें रात्रि के समय ठहरने का आश्रय मिल जाया करता था।

विक्रम-शिला-विहार की इमारत बड़ी सुंदर तथा विशाल थी। धार्मिक एवं शिक्षा-संबंधी कार्यों के लिये यह उपयुक्त स्थान था। इसी कारण तिब्बत-निवासियों ने इसे अपना आदर्श मान रक्खा था, और अपने विहारों का निर्माण इसी शैली के अनुसार किया।

श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी०

प्रत्येक श्रेणी में विज्ञान-संबंधी शिक्षा का उचित प्रबंध था। आयुर्वेद-चिकित्सा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस कार्य के लिये विहार में सदैव योग्य वैद्य रहा करते थे।

विक्रम-शिला-विहार, के अंतर्गत छ बड़े-बड़े विद्यालय थे। विद्यालय का कार्य-संपादन करने के लिये एक सौ आठ अध्यापक थे। विद्यालय के द्वारपाल तक अपने अपने विषय के बड़े विद्वान् हुआ करते थे। विद्यालय में प्रवेश पाने के लिये प्रत्येक नए छात्र को पहले इन द्वारपालों से ही मुठभेड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी पड़ती थी। आधुनिक समय की भाँति उस समय भी एक प्रकार की प्रारंभिक परीक्षा (टेस्ट) हुआ करती थी, जो द्वारपालों द्वारा ही ली जाती थी। द्वारपालों द्वारा ली गई इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही विद्यार्थी विद्यालय में भरती हो पाते थे, अन्यथा नहीं। विद्या-ग्रहण में अरुचि रखनेवाले या समय नष्ट करनेवाले विद्यार्थियों को विद्यालय में स्थान नहीं दिया जाता था। ह्वान्सांग ने इसी प्रकार की, द्वारपाल द्वारा ली जानेवाली, परीक्षा की चर्चा नालंद-विश्वविद्यालय का वर्णन करते हुए की है। विदित होता है, इस प्रकार की परीक्षाएँ और भी स्थानों में हुआ करती थीं।

विक्रम-शिला-विहार की स्थापना आठवीं शताब्दी के मध्य में हुई थी। ह्वान्सांग तथा इत्सिंग ने इस प्रकार के किसी भी विश्वविद्यालय तथा विहार का वर्णन नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि ये विश्वविद्यालय और विहार सातवीं शताब्दी के बाद स्थापित हुए थे, नहीं तो सातवीं शताब्दी में आए हुए यात्री इसका अवश्य वर्णन करते। अनुमान किया जाता है, विक्रम-शिला-विहार की स्थापना धर्मपाल के समय में हुई थी।

यद्यपि हमें धर्मपाल के समय का ठीक ज्ञान नहीं, तथापि गौड़ के निकट, खलीमपुर-नामक स्थान पर जो शिला-लेख मिलता है, उससे ज्ञात होता है कि धर्मपाल ने लगभग बत्तीस वर्ष राज्य किया। जनरल कनिंघम ने जो समय गोपाल-नामक राजा का निर्धारित किया है, उससे पता चलता है कि उसका पुत्र आठवीं शताब्दी के मध्य में राजगद्दी का मालिक था।

विहार का सर्व-प्रथम अधिनायक श्रीबुद्ध-ज्ञानपाद था। न्यायपाल ने दीपंकर श्रिज्ञान को विहार का प्रधान पुजारी नियत किया था। तिब्बत के राजा उसे सम्मान की दृष्टि से देखते और उसी को उस जगह के लिये उपयुक्त पात्र समझते थे। बारहवीं शताब्दी के अंत में जब विहार-प्रांत को बख्तियार खिलजी ने जीता, तो विक्रम-शिला-विहार को मुसलमानों ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

परंतु विक्रम-शिला-संघाराम कहाँ स्थित था, यह एक विचारणीय समस्या है। कई इतिहासवेत्ताओं ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार ठीक स्थान का पता लगाने का प्रयत्न किया है, परंतु इस संबंध में अभी तक निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता।

जनरल कनिंघम की धारणा है कि बड़ा गाँव (पुरातन नालंद) से तीन मील दक्षिण की ओर सिलाओ-नामक ग्राम पुरातन विक्रम-शिला-विहार था। परंतु यह धारणा बहुत अंशं में ठीक नहीं, क्योंकि विक्रम-शिला-विहार एक पहाड़ी पर, गंगा-नदी के दाहनी ओर, स्थित था। गंगा-नदी सिलाओ ग्राम के निकट न बहती है, और न कभी बहती थी। इसके अतिरिक्त नालंद-विश्वविद्यालय इस स्थान से तीन ही मील दूर था, यह ठीक नहीं जान पड़ता। तीन मील के आस-पास दो विश्वविद्यालयों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति साधारणतया समझ में नहीं आती। इसके अतिरिक्त आठवीं शताब्दी में नालंद-विश्वविद्यालय काफ़ी उन्नतिशील अवस्था में था। इसलिये विक्रम-शिला-विहार इतने निकट स्थित न होगा।

इस संबंध में श्रीविद्याभूषणजी की सम्मति भी विचारणीय है। उन्होंने विक्रम-शिला-संघाराम की समता भागलपुर-ज़िले में सुल्तान-गंज-नामक स्थान से दी है।

परंतु यह भी ठीक नहीं। क्योंकि विक्रम-शिला-संघाराम एक बौद्ध-विहार था, जो गंगा-नदी के दाहने किनारे पर स्थित था, और उसमें सहस्रों व्यक्तियों के बैठने के लिये समुचित स्थान था। चूँकि यह बात यहाँ नहीं पाई जाती, इसलिये यह स्थान भी विक्रम-शिला-विहार नहीं हो सकता।

सुल्तानगंज के समीप कुछ नीचे चलने पर एक स्थान मिलता है, जो पाथर-घाट नाम से प्रसिद्ध है। यह गंगा-नदी के दाहने किनारे एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। इस स्थान को प्राचीन विक्रम-शिला कहा जा सकता है। इसके निकट दो और स्थान हैं, जो अंतिचक और बुद्धासन नाम से संबोधित किए जाते थे। यहाँ अब भी बहुत-से प्राचीन स्मारक हैं, जो उस समय पाथर-घाट के धार्मिक स्थान होने का आभास देते हैं। यहाँ अब भी सात गुफाओं के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्ध की मूर्तियाँ, कुछ स्तूप और अवलोकितेश्वर की एक विशाल मूर्ति भी पाई जाती है।

इन सब मूर्तियों तथा स्तूपों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि पाथर-घाट में बुद्ध-विहार अवश्य था।

ह्वान्सांग ने, जब वह सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष आया था, पाथर-घाट देखा था, और उसे ब्राह्मणों का पूज्य स्थान पाया था। उसने बुद्ध-विहार का कोई ज़िक्र नहीं किया। इससे मालूम होता है कि बुद्ध-विहार की स्थापना बाद में हुई।

पाथर-घाट में एक बड़ा विशाल मंदिर था, जिसमें सहस्रों ब्राह्मण देव-पूजनार्थ जाया करते थे। बुद्ध-विहार होने के कारण ब्राह्मण तथा बौद्ध-धर्म-मतावलंबी, दोनो इस स्थान को आदर की दृष्टि से देखते थे।

पाथर-घाट को पुराने समय में क्या कहते थे, कुछ पता नहीं चलता। मेजर फ्रैंकलिन का कहना है कि पाथर-घाट संस्कृत में 'शिला-संगम' है, जिसका अर्थ शिलाओं का मिलना है। यह अर्थ शिलाओं के निकटस्थ होने से लगाया गया। परंतु यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो पता चलेगा कि शिला-संगम का अर्थ इससे भिन्न हो सकता है, और वह अर्थ 'संगम'-शब्द पर दृष्टि डालने से लगाया जा सकता है। संगम-शब्द 'संघाराम' का अपभ्रंश कहा जा सकता है, और समासित शब्द शिला-संघाराम विक्रम-शिला-संघाराम का लघु रूप कहा जा सकता है। समय बीतने के बाद इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

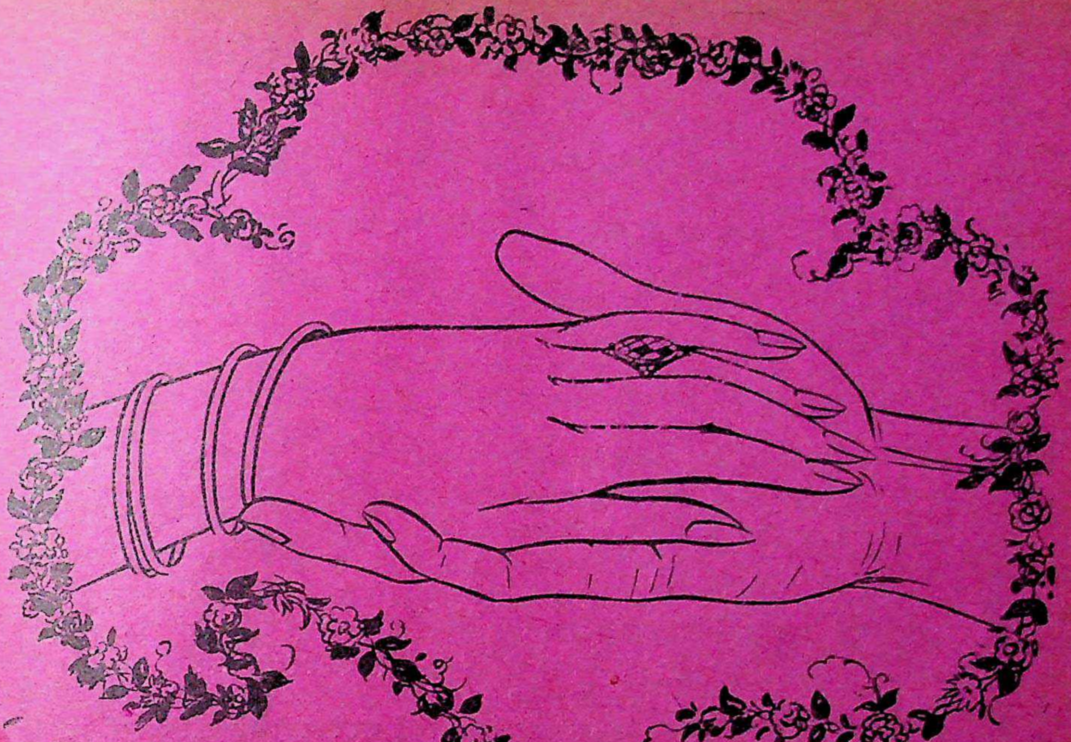

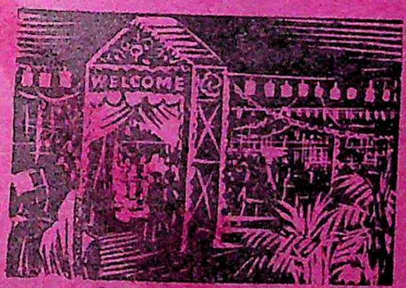

ब्याह-शादी के अवसरों पर

आज उनके जीवन का सबसे ज्यादा महत्त्व-पूर्ण दिन है—थकावट पैदा करनेवाली मुसाफिरी से उसे नष्ट न कीजिये, इसकी कोई जरूरत भी तो नहीं है। रेल से यात्रा करने पर बारात थकेगी नहीं, वरन् आनंदमग्न हो जायगी। ज़रा सोचिए तो, दूर-दूर से नाते-रिश्तेवाले आयेंगे - न कोई तकलीफ न कोई झंझट, भाड़ा भी सस्ता ही है—और अंत में वे इस जोड़े की शुभकामना करते हुए अपने-अपने घर जायेंगे, लेकिन यह भावना सबके दिल में रहेगी ही कि आज का दिन सचमुच कितना सुखद तथा महत्त्व-पूर्ण है!

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नपुंसकता के लिए जर्मनी क्रीम

यह उन पुरुषों के लये है जो किसी वजह से अपना यौवन खो चुके हों और अपने विवाहित जीवन का जी भर कर आनन्द उठाना चाहते हों, तो वे इस क्रीम का सेवन करें। इसके सेवन से आवश्यक समय पर भी शरमिन्दा होने का समय नहीं आयेगा। एक बार अवश्य प्रयोग में लाएँ। मूल्य केवल २) दो रुपया।

स्त्रियों के लिए जर्मनी क्रीम—यह क्रीम उन स्त्रियों के लिये आवश्यक है जो किसी भयानक बीमारी की वजह से अपने विवाहित जीवन को आनन्दित न बना सकती हों, जिनके लिये गृहस्थ का जीवन दुखमय हो, जिनके अपने स्वामी के साथ सदैव लड़ाई झगड़े होते हों। बस इस क्रीम को एक सप्ताह सेवन करें। इसके सेवन से बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री भी युवती के समान मालूम होगी। मूल्य १)

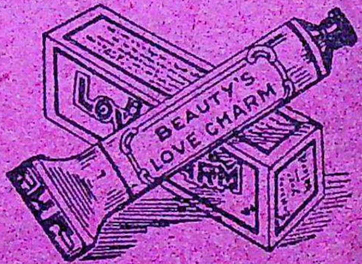

गर्भ निरोधक रबड़ की थैली—अधिक संतान से बचें, अपनी प्यारी स्त्री को शीघ्र ही कुरूप और बृद्ध न होने के लिये इन थैलियों का सेवन करें। आतशक और सुजाक आदि भयानक बीमारियों से आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगी।

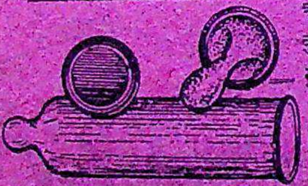

पतली रबड़ की थैली—जो केवल एक बार ही सेवन हो सके मूल्य १) रु० प्रति दर्जन।

मोटी रबड़ की थैली—जो कई बार सेवन हो सके और भारतवर्ष की गर्मी में पाँच वर्ष तक खराब न हो। मूल्य केवल २।) प्रति दर्जन।

कामा कं०, : : : लाहौर रोड : : : अमृतसर।

दिवाली-सेल

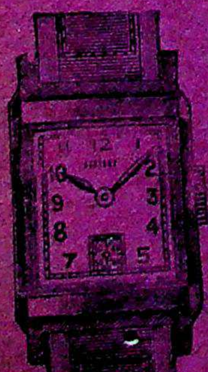

यह आला दरजे के फ़ैशनेबुल, सच्ची और ठीक समय देनेवाली लीवर मशीनरी, निहायत ख़ूबसूरत घड़ियाँ जो एक बार ख़रीद लेता है, उसको ज़िंदगी भर दूसरी घड़ी ख़रीदने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ६ साल तक घड़ी का एक पुर्ज़ा भी ख़राब नहीं हो सकता। गोल, चमाचम चमकती हाथ की घड़ी चमड़े या रेशम के फ़ीते के साथ २॥=)। सेकेंड की सुईवाली सुपीरियर रिस्टवाच ३॥); सोने के-से रंगवाली मनोहर हाथ-घड़ी ४॥); रोडयम ५॥); रेक्टेंगुलर ६॥); रेक्टेंगुलर और सुनहली ७॥); १० जेवेल लगी हुई रेक्टेंगुलर क्रोमियम ८) में ही मिलेगी। लीवर पाकेट-वाच २।); बी० टाइमपीस १॥=)

एम्० एल्० वॉच कं० (एस० एल्०), १०८, काटन-स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी और हिंदोस्तान का अद्वितीय पत्र

सचित्र दरबार

(देशी राज्य-संबंधी स्वतंत्र साप्ताहिक)

संपादक—श्रीचंद्रधर

'सचित्र दरबार' की नीति तीक्ष्ण और स्वतंत्र है। मानव अधिकारों की रक्षा और अन्याय का विरोध 'सचित्र दरबार' का मुख्य लक्ष्य है। व्यापक दृष्टि से इस नीति का भारतीय कांग्रेस की नीति से सामंजस्य है, लेकिन वहाँ भी जहाँ कहीं निर्बलता, गुरुडम, पाखंड या अनाचार की बू आती है, वहाँ 'सचित्र दरबार' निर्भीक होकर पर्दा-फ़ाश करना अपना धर्म समझता है। देशी राज्यों के संबंध में भी 'सचित्र दरबार' की यही नीति लागू है ; पिछड़े हुए, अनाचार-पूर्ण राज्यों के देशी नरेशों की कटु-से-कटु आलोचना करने और उनके सुधार के लिये कठोर-से-कठोर परीक्षा की अग्नि में तपने के लिये 'सचित्र दरबार' सदैव प्रस्तुत है। देशी राज्यों की आठ करोड़ मूक और दुखी प्रजा के मानवोचित अधिकारों की ज़ोरदार वकालत और देशी राज्यों को प्रजातंत्रा-त्मक शासन-व्यव ा की ओर अग्रसर करना 'सचित्र दरबार' का उद्देश्य है। सामा-जिक समस्याओं में 'सचित्र दरबार' अत्यंत उग्र, तप्त और असहनशील है, और सामाजिक अधःप प्रत्येक कारण को जड़-मूल से उखाड़ फेकने के लिये तत्पर है।

सचित्र दरबार

का प्रत्येक अंक फड़कते हुए समाचारों, निष्पक्ष आलोचनाओं, सजीव कहानियों महिलोपयोगी सामग्रियों, लेखनी के धनी विद्वानों की रचनाओं, राजनीतिक तथा सामाजिक लेखों और अनेक चित्रों से भरा रहता है।

यदि आपने अभी तक नहीं देखा है, तो आज ही नमूने के लिये

दो आने के टिकटों के साथ पत्र लिखिए

संचालक—

'सचित्र दरबार', दरियागंज, दिल्ली

टेलीफोन—६४८२

तार का पता—'दरबार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काया-पलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा-इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदख़ाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। टंढा होने पर दुबारा एक तोला हरताल वर्क़ी शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रवधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस, अपूर्व शक्तिदाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामविहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आएगा। २९ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नजला, जुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन-संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च-सहित ५॥) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपभ्रंश रूप ही प्रचलित रूप हो गया, ऐसा जान पड़ता है।

मालूम होता है, पाथर-घाट ही विक्रम-शिला-संघाराम था। विहार की स्थिति के कारण विक्रम-शिला-विहार नाम पड़ गया, जिसे विक्रम-शिला-संघाराम भी कह सकते हैं। ह्वान्सांग ने पाथर-घाट का कोई दूसरा नाम सातवीं शताब्दी में नहीं पाया।

सन् १८१२ में पाथर-घाट का पुरातन नाम 'शिला-संगम' ज्ञात हुआ था, मगर वह भी अब प्रचलित नहीं। अब लोग इस स्थान को भूल-सा गए हैं, क्योंकि बहुत कम ग्रंथ इस विहार तथा विश्वविद्यालय का नाम लेते हैं; यद्यपि यह विहार पुरातन काल में सहस्रों विद्यार्थियों के शिक्षा-ग्रहण का प्रसिद्ध स्थान था।

यदि पाथर-घाट-नामक स्थान के निकट खुदाई की जाय, तो आशा की जाती है, बहुत-से ऐसे स्मारक मिलेंगे, जिनसे इस स्थान में विक्रम-शिला-विहार की स्थिति पूर्णतः सिद्ध हो जायगी।

क्रांतिकारी राजकुमार

अर्थात्

क्रोपाटकिन की आत्मकहानी

अनुवादक—श्रीप्यारेमोहन चतुर्वेदी

यह प्रिंस क्रोपाटकिन की आत्मकहानी, उनके समय के रूस और मजदूर-आंदोलन का इतिहास है। इसमें रूस के सत्ताधारियों और अत्याचार-पीड़ित साधारण जनता की दशा का विशाल चित्रण मिलेगा। निरंकुश ज़ारशाही के नीचे पिसे हुए अपने ग़रीब देश-वासियों के उत्थान के लिये उन्होंने अपने वैभव-पूर्ण जीवन को तिलांजलि दे दी। वह क्रांतिकारी थे, किंतु थे बड़े दयालु और शांत। उन्हें दो बार जेल की कठोर यातनाएँ भी सहनी पड़ीं, किंतु अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहे। ऐसे महापुरुष के जीवन-चरित्र से भारत-जैसे परतंत्र देश के लोग अनेक शिक्षाएँ ग्रहण कर सकते हैं। मूल्य १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री का समाजवाद या पति की विपत्ति

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

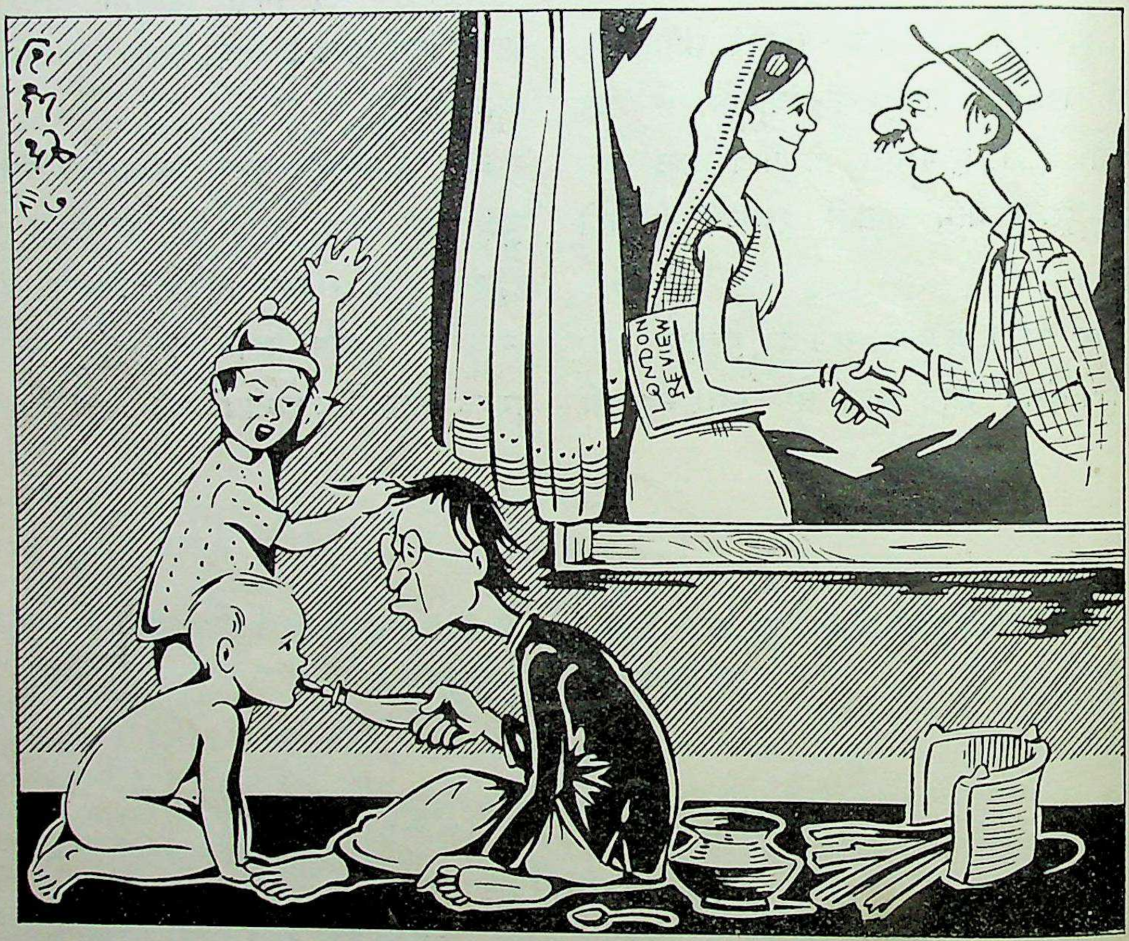

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

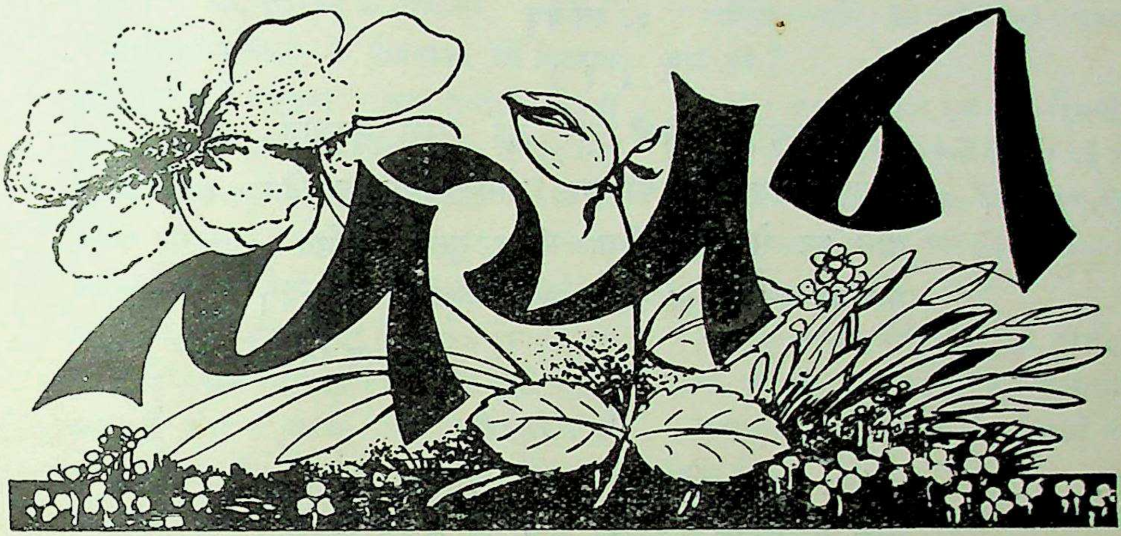

१. मूक वेदना की रानी

(१)

मैं मूक वेदना की रानी, जग मेरी पीड़ा क्या जाने ?
मेरी महाशून्यता लेकर मेघ क्षितिज के पार चले ;
मेरी दाह लिए मरुथल को लपटों के संसार चले ।
मेरी विरह-तपिश ले बड़वा सागर-तले सिसकती है ;
मेरी अश्रु-पुरी में वर्षा अलख जगाए फिरती है ।
मेरे सावन-सने हास्य की तड़ित-वेदना जग क्या जाने ?
मैं मूक वेदना की रानी, जग मेरी पीड़ा क्या जाने ?

(२)

अपने उर के रंध्रों से मैं जग को नव संगीत सुनाती ;
दुख के काँटे छिपा हृदय में अधरों पर मुस्काहट लाती ।
भीतर रोती, ऊपर हँसती घाव हृदय के सदा छिपाती ;
इसीलिये नादान जगत में पाहन-प्रतिमा मैं कहलाती ।
आँखें जग की उथली, मेरे गहरे आँसू वह क्या जाने ?
मैं मूक वेदना की रानी, जग मेरी पीड़ा क्या जाने ?

शांति गुप्ता 'प्रभाकर'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. नव-वधू

(१)

सुंदर नव-वधू नवेली आ गई सुरस सरसाने,
नवयुवक नाथ के मन का कल, कोमल कुसुम खिलाने।
झीने पट से आच्छादित, मंजुल मुस्काहट-मंडित—
मुख-चंद्र-अधर-आभा से मधुमय मधुमास सजाने।
सुंदर नव-वधू०

(२)

संचित उमंग-परिपूरित अपना उर-कंज खिलाते,
निज शुभागमन से सबको सुख का पीयूष पिलाने।
सुरभित, पल्लवित लता-सी नव, हरित वस्त्र वर धारे,
तज पिता-भवन आई है पति-तरुवर को अपनाने।
सुंदर नव-वधू०

(३)

मन में आशा-मोती भर, तन में भूषण धारण कर,
गज-गामिनि सास-सदन में आई युग हृदय मिलाने।
साकार प्रेम की प्रतिमा, लज्जा की मूर्ति मनोहर,
निज प्रियतम-हृदय-दुलारी नवस्नेह-सुधा बरसाने।
सुंदर नव-वधू०

(४)

पुनि स्नेहमयी सकुचाती, विद्युत-सी दमक दिखाती,
शुभ शील-गुणों के द्वारा दुख-द्वंद्व, दरिद्र हटाने।
आलोकित उज्ज्वल-वदना नेत्रों को शीतल करती—
गृह-मंदिर-दीप-शिखा-सी आई प्रकाश फैलाने।
सुंदर नव-वधू०

बुद्धिसागर वर्मा (विशारद, बी० ए०, एल्० टी०)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. पद्माकर के प्रश्नोत्तर

उन्नीसवीं शताब्दी में पद्माकरजी बड़े विख्यात कवि हो गए हैं। इनका जीवन राजाओं की ही सभा में व्यतीत हुआ। इन्होंने कई ऐसे भी छंद रचे, जिनमें नायक-नायिका एवं सखी और नायिका का परस्पर वार्तालाप प्रश्नोत्तर के ढंग पर है। प्रायः कवित्त तथा सवैयों में इस तरह का वार्तालाप करना बहुत कठिन काम है। विरले ही कवि इस तरह की रचना कर सकते हैं। पद्माकरजी के इस प्रकार के छंदों से उनकी गंभीर कवित्व-शक्ति का पता लगता है। मैं इनके काव्योद्यान से ऐसे चार छंद चुनकर अपने प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ। पाठक देखें, उनमें कैसा चमत्कार है —

ए अलि ! हमें तो बात गात की न जान परै ?
बूझत न काहे, या में कौन कठिनाई है;
कहै 'पदमाकर' क्यों अंग न समात आँगी ?
लागी कहा तोहि, जागी उर में उँचाई है।
तज मम पाँयन चली है चंचलाई कित ?
बावरी, बिलोके क्यों न, आँखिन में आई है;
मेरी कटि मेरी भटू ! कौन धौं चुराई ? तेरे
कुचन चुराई सु-नितंबन चुराई है।

उपर्युक्त छंद में अज्ञातयौवना नायिका और सखी का परस्पर वार्तालाप है—

नायिका—हे सखी, मुझे अपने गात (शरीर) का हाल कुछ जान नहीं पड़ता ?

सखी—मुझसे क्यों नहीं पूछती, इसमें कौन कठिनता है ?

नायिका—मेरे अंग में कंचुकी (चोली) क्यों नहीं समाती ? वह दिन-प्रतिदिन तंग क्यों होती जाती है ?

सखी—अरी पगली ! क्या तुझे नहीं जान पड़ता कि तेरे उर में उँचाई बढ़ रही है, अर्थात् उरोज निकल रहे हैं, तरुणाई आ रही है।

नायिका—और मेरे पाँवों की चपलता कहाँ चली गई ?

सखी—बावरी ! क्या तुझे नहीं दिखाई देता कि तेरे पाँवों की चंचलता आँखों में आ गई है। पहले तेरे दृग इतने चंचल नहीं थे, जितने अब हो गए हैं। तेरी गति मंद होने से पदों की चपलता नयनों में आ गई है।

नायिका—और सखी, मेरी कटि को किसने चुरा लिया, जो यह पतली पड़ गई है ? बतलाओ तो।

सखी—इसे तेरे उरोजों और नितंबों ने ही चुरा लिया है।

उक्त छंद में कोई अज्ञातयौवना सखी से पूछती है कि सखी ! हमें अपने शरीर की दशा नहीं जान पड़ती कि यह दिन-ब-दिन क्या हाल हो रहा है ? तब उसकी सखी उसे समझाती है कि तेरी तरुणाई आने से उरोजों में उँचाई बढ़ रही है, इसी से तेरी चोली तंग होने लगी है, और पाँवों की चंचलता आँखों में चली गई है, जिससे गति मंद और दृग चंचल हो गए हैं। और, जो तेरी कमर क्षीण हुई है, इससे तेरे नितंब भर गए हैं, और यौवन उभर उठे हैं, परिवर्तन हुआ है।

ए बलि ! कहा हो किन का कहत कंत ? अरी,
रोष तज, दोष कै कियो मैं का अचाहे को;
कहै 'पदमाकर' यहै तो दुख दूर करो,
दोष न कछू है तुम्हैं नेह निरबाहे को।
तौ पै इत रोवति कहा हौ ? कहौ, कौन आगे ?
मरेई जु आगे किए आँसुन उमाहे को;
को हौं मैं तिहारी ? तू तो मेरी प्राणप्यारी, अजौं
होती जो पियारी, तब रोती कहो काहे को ?

इस छंद में रूप्याधीरा नायिका अपने प्रियतम के अंग में अन्य स्त्री-रति-सूचक चिह्न देखकर रुदन और रोष प्रकाशित करती है, तब उससे नायक पूछता है—

नायक—हे प्रिये !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायिका—कहो, क्या कहते हो कंत ?

नायक—प्रियंवदे ! यह रोष (क्रोध) परित्याग करो ।

नायिका—नाथ ! मैंने रोष करके आपका कौन-सा अकाज किया है ?

नायक—मुझे दुःख पहुँचाया है ।

नायिका--नाथ, आपने तो मेरा कोई अपराध ही नहीं किया, सब अपराध मेरे ही हैं। जो अपराधी होता है, उसे दुःख होता है ।

नायक—फिर तुम क्यों रोती हो ?

नायिका—किसके आगे रोती हूँ ?

नायक—मेरे ही आगे । सम्मुख तो रो रही हो, और कहती हो, किसके आगे रोती हूँ ।

नायिका—मैं तुम्हारी कौन हूँ ?

नायक—तुम तो मेरी प्राणप्यारी हो ।

नायिका—प्राणप्यारी नहीं हूँ, इसी से तो रोती हूँ; यदि प्राणप्यारी होती, तो रोती ही क्यों ?

पद्माकरजी ने इस छंद में कमाल कर दिया है । मध्याधीरा नायिका और नायक का यह वार्तालाप बड़ा ही मनोहर है ।

बोलति न काहे ? ए री पूछे बिन बोलौं कहा,
पूछति हौं, कहो, भई स्वेद - अधिकाई है ?
कहै 'पद्माकर' सो मारग के गए - आए,
साँची कह मोसों आज कहाँ गई-आई है ?
गई-आई हौं तो पास साँवरे के, कौन काज ?
तेरे लिये ल्यावन सु तेरिए दुहाई है;
काहे तैं न ल्याई फिर मोहन बिहारी जू को ?
कैसे वाहि ल्याऊँ ? जैसे वाको मन लाई है ।

इस छंद में अन्यसुरति-दुःखिता नायिका और उसकी सखी का वार्तालाप है—

नायिका—सखी, तू बोलती क्यों नहीं ?

सखी—ए री सखी, बिना पूछे कैसे बोलूँ, क्या कहूँ ।

नायिका—पूछती हूँ, बतला, तू पसीने में तर-बतर क्यों है ?

सखी—रास्ता चलने के कारण ।

नायिका—सच बतला, आज तू कहाँ गई-आई थी ?

सखी—आज साँवरे (श्रीकृष्ण) के पास गई थी, और वहीं से आई हूँ ।

नायिका—तेरा वहाँ क्या काम था ?

सखी—उन्हें तेरे ही लिये बुलाने गई थी । मुझे तेरी क़सम है, मैं सच कहती हूँ ।

नायिका—फिर तू उन्हें क्यों नहीं लिवाकर लाई ?

सखी—मैं उन्हें कैसे लाऊँ ?

नायिका—जैसे तू उनका मन लाई है, वैसे उन्हें भी लाती ।

किसी नायिका ने नायक कृष्णजी को बुलाने के लिये अपनी सखी को भेजा था । सखी अपना मतलब गाँठकर कोरी आ गई है । उसका बिगड़ा हुआ शृंगार और रति-सूचक चिह्न देख नायिका क्रोधित होकर सखी से पूछ रही है । उपर्युक्त छंद इसी आशय का है ।

कौन है तू ? कित जात चली ? बलि !
बीती निसा अधरात प्रमानैं;
हौं 'पद्माकर' भावती हौं,
निज भावते पै अब हीं मुहिं जानैं ।
तौ अलबेली अकेली डरै किन ?
क्यों डरौं—मेरी सहाय के लानैं
है सखि, संग मनोभव-सो भट
कान लौं बान - सरासन तानैं ।

इस छंद में किसी नई स्वैरिणी (कुलटा) और कृष्णाभिसारिका का वार्तालाप है—

स्वैरिणी—हे सुंदरी, तू कौन है ? और इस अर्धरात्रि के समय कहाँ जाती है ?

अभिसारिका—मैं भावती (प्रेमिका) हूँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे अपने भावते (प्रेमिक) के पास जाना है।

स्वैरिणी—हे अलबेली, तू अकेली डरती क्यों नहीं ?

अभिसारिका—मैं क्यों डरूँ ? मेरी सहायता के लिये जो साथ में सखी के समान कामदेव-सा भट (वीर) कानों तक बाण-कमान ताने हुए आगे-आगे जा रहा है।

पद्माकरजी की इस प्रकार की कुछ और भी सूक्तियाँ हैं, जो कभी अवसर पाकर पाठकों की सेवा में उपस्थित की जायँगी।

लक्ष्मीप्रसाद मिश्रो 'रमा'

× × ×

४. पथ-दर्शक

घिरी घटाएँ चारो ओर;
बरस रहा तम था अति घोर।
खड़ी अकेली पथ पर मौन;
मार्ग बता देता तब कौन?
जलते नयनों के दो दीप
लेकर आए हृदय-प्रदीप।
पकड़ा कोमल कर से हाथ;
चले तुरत छाया-से साथ।
ज्ञात हुई जब मुझे थकान,
गा-गाकर तब मीठी तान
भर दी प्रिय ने नई उमंग;
पुनः चली मैं उनके संग।
बैठ गई जब मग में हार,
मृदु अंचल से करी बयार।
दिया दिलासा मुझको मौन—
"दूर नहीं अब तेरा भौन।"
जब-जब आई पथ पर रात,
कहा उन्होंने—"पास प्रभात।"
मुझे जलाता जब था ताप,
कर की छाया करते आप।
अनुभव-फल चख हुई मलीन;
कहा उन्होंने—"है क्यों दीन ?"
दो दिन खा ले इनको मौन;
अमृत फल हैं तेरे भौन।
चुभे पदों में जब भी शूल,
किए उन्होंने वे उन्मूल।
करती रही सदा मैं भूल,
हुए नहीं पर प्रिय प्रतिकूल।
मुझे बताकर मेरी चूक,
हँसकर वे होते थे मूक।
देते नहीं अगर वह साथ,
पाती कैसे मैं गृह पाथ।
इस जीवन के वे शृंगार;
सदा करूँगी उनसे प्यार।

इंदिरादेवी गुप्ता

× × ×

५. कवि

(१)

विश्व के एक निर्जन तथा नीरव प्रदेश में, संसार के कोलाहल से दूर, झर-झर करती हुई निर्झरिणी के कूल पर, एक छोटी-सी झोपड़ी में, कवि अपनी कल्पना के सुंदर तारों को बुनते हुए दिन काट रहा था। प्रभात के मनोहर काल में, जब बाल सूर्य की शीतल किरणें निर्झरिणी की हलकी लहरों में पड़कर थिरकती रहतीं, पक्षियों का मधुर कलरव जब उस निस्तब्धता को भंग करता हुआ अनंत आकाश में विलीन हो जाता, शीतल, मंद पवन अपने शांत प्रवाह से वृक्षों में कंपन-उत्पन्न करता हुआ जब एक ओर से दूसरी ओर निकल जाता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी संसार की दृष्टि में ओझल, अपने कल्पना-रूप साम्राज्य का वह निरंकुश शासक एक स्फटिक शिला पर प्रकृति-सुंदरी की अद्भुत छटा अवलोकन करने को आ बैठता।

क्रमशः संध्या भी आती। अस्त होते हुए दिनकर की निस्तेज प्रभा विस्तृत, सुनील गगन को अपने आलोक से आलोकित करती हुई जब तिमिर के गर्भ में समा जाती, और छोटे-छोटे असंख्य तारे जब अपने क्षीण आलोक से घोर अंधकार को विदीर्ण करने का निष्फल प्रयास करने लगते, तभी वह कल्पना का साक्षात् स्वरूप कवि उठ खड़ा होता, और अपनी छोटी-सी सूनी झोपड़ी में चला जाता।

(२)

कवि की झोपड़ी से थोड़ी ही दूर पर एक बालिका अपने वृद्ध तथा रोगी पिता के साथ अपने दरिद्रता के दिन काट रही थी। उसका नाम था सरला। यही सरला थी कवि की मनोहर कल्पनाओं में स्वच्छंद विहार करनेवाली, कवि के सूने जीवन में अपनी चुलबुलाहट से आनंद का स्रोत बहानेवाली। कवि रीझ गया था सरला के सौंदर्य पर, और सरला जान देती थी कवि की मनोहर कल्पना पर।

वृद्ध की दशा आज अत्यंत शोचनीय थी। पलँग पर पड़े-पड़े वह मृत्यु की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा था। सरला सिरहाने बैठी आँसू बहा रही थी। वृद्ध क्षीण शब्दों में बोला—"सरला, ज़रा कवि को तो बुलाना।"

सरला सीधी कवि की झोपड़ी में जा पहुँची। पर वहाँ कवि न था। कवि तो किसी की कल्पना में मस्त निर्झरिणी के तट पर बैठा था।

सरला जानती थी। वहीं जा पहुँची। उसने पुकारा—"कवि!"

उसकी सुरीली आवाज़ अपनी कल्पना में डूबे हुए कवि के कानों तक न पहुँच सकी, वायु में अंतर्हित हो गई।

सरला कुछ और आगे बढ़ी। उसने पुनः पुकारा—"कवि!"

उसकी आवाज़ कुछ काँप रही थी।

कवि चौंक पड़ा। उसकी कल्पना के सुंदर तार टूट गए। उसने घूमकर देखा, साक्षात् उसकी कल्पना खड़ी आँसू की बूँदें गिरा रही थी।

कवि का हृदय व्यथा से मानो फट गया। वह बोला—"क्या है सरले? रो क्यों रही हो?"

"पिताजी ने तुम्हें याद किया है, कवि!" सरला बिलख उठी।

कवि की समझ में सारा रहस्य आ गया। वह सरला के साथ उसकी झोपड़ी में आ उपस्थित हुआ।

उसे देखते ही वृद्ध रोता हुआ बोला—"कवि, तुम्हें देखने के लिये ही मेरा प्राण अब तक रुका था। अब मैं सुख से मर सकूँगा कवि!" वृद्ध खाँसने लगा। कुछ देर पश्चात् फिर बोला—"बेटा, मैं जा रहा हूँ। मेरे पास सरला के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। इस निर्जन स्थान में इसे असहाय जानकर तुम्हारे सुपुर्द कर रहा हूँ। तुम इसकी रक्षा करना। बस, अंतिम बार तुम दोनों को मेरा आशीर्वाद।"

वृद्ध ने एक बार पुनः खाँसकर दम तोड़ दिया। सरला के करुण रुदन से सारा वन-प्रदेश गूँज उठा। कवि भी खड़ा आँसू बहा रहा था।

(३)

सरला अब कवि की ही झोपड़ी में रहने लगी। कवि सरला के सौंदर्य को प्यार करता था। पर उसका प्यार था वासना से बिलकुल परे, स्वार्थ से एकदम रहित। वह चाहता था उसके सौंदर्य की बाँकी झलक को निर्निमेष दृष्टि से देखते हुए, उसकी रूप-माधुरी को नेत्रों द्वारा पान करते हुए, अपने जीवन के अवशेष दिनों को काट देना। वह जानता था, सुंदरता केवल अवलोकन की वस्तु है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112577

कर से स्पर्श करने की नहीं। सौंदर्य स्पर्श करने से नष्ट हो जाता है, धूल में मिल जाता है।

सरला थी नवयौवना। यौवन की आँधी उसे उड़ाए लिए जा रही थी। मदन के तीक्ष्ण पुष्प-शर उसके कोमल शरीर में चुभ-चुभकर उसे विकल कर रहे थे। पर उसकी अतृप्त वासना शांत करनेवाला वहाँ कोई न था। मीठे-मीठे चुंबनों के लिये, मधुर प्रेमालिंगन के लिये उसका हृदय तरस रहा था। पर ये सब वस्तुएँ उसके लिये दुर्लभ थीं, अप्राप्य थीं। कवि के पास केवल स्वच्छ प्रेम था, और था भावुक हृदय। दोनो ही सरला पर न्योछावर थे। वह भोला-भाला था। अपने स्वच्छ प्रेम को वासना से दूषित करना न चाहता था। वह चाहता था केवल वायु में लहराती हुई उसकी काली अलकों को अपनी कल्पना के साज द्वारा सजाना। सरला कवि की इन भावनाओं को न समझ सकती थी। उसका हर्षित हृदय तो किसी दूसरी वस्तु की आकांक्षा में तड़प रहा था। उसके हृदय में सहसा आशंका का प्रादुर्भाव हुआ, कदाचित् कवि उसे प्यार नहीं करता!

(४)

ग्रीष्म की तप्त दोपहरी थी। आकाश से मानो अग्नि-वर्षा हो रही थी। कवि पास ही के पर्वत की एक निर्जन उपत्यका में अपनी कल्पना में डूबा बैठा था, और सरला उसकी छोटी-सी झोपड़ी में बैठी अपने भविष्य का चिंतन कर रही थी।

सहसा एक घोड़ा उसकी झोपड़ी के सम्मुख आकर रुका, और किसी ने झोपड़ी का द्वार खटखटाया। सरला ने कपाट खोल दिए। सामने एक सुंदर, युवा राजकुमार खड़ा था।

"थोड़ा जल।" पसीने से लथपथ राजकुमार ने मधुर शब्दों में कहा।

"अंदर चले आइए, थोड़ा शांत हो लीजिए।" विनम्र शब्दों में सरला बोली।

राजकुमार मंत्र-मुग्ध-सा अंदर चला गया, और सरला जल लाने चली गई। राजकुमार अपनी विचार-धारा में प्रवाहित होने लगा—"कैसा अनुपम सौंदर्य है, मैं क्या जानता था कि रज-कणों में अपनी कांति छिपाए एक रत्न बैठा है। मैंने अपने जीवन में ऐसे सौंदर्य का अनुमान तक न किया था। मैंने एक-से-एक सुंदरियों का रस-पान किया, पर किसी की भी कांति इसके सम्मुख उसी भाँति नहीं ठहर सकती, जिस भाँति हीरे के सम्मुख काँच की कांति। आह! ऐसे छलकते हुए यौवन को देखकर किसके मुख में पानी न भर आएगा। अच्छा, अब तो आ ही गया हूँ, देखा जायगा।"

सहसा युवती ने उसकी विचारा-धारा का प्रवाह रोक दिया। जल पीने के पश्चात् राजकुमार बोला—"सुंदरी, तुम वनदेवी तो नहीं हो! रति के सौंदर्य को भी लज्जित करनेवाली देवि, अपने रूप तथा यौवन को एक टूटी-फूटी झोपड़ी में छिपाने का कारण क्या मुझे बतला सकती हो? ऐसा सुंदर पुष्प तो किसी राजमुकुट की ही शोभा बढ़ा सकता है।"

"मेरी दरिद्रता का ऐसा विकट परिहास न करो राजकुमार! मेरा भाग्य ऐसा कहाँ?"

पर भीतर-ही-भीतर दरिद्रता की वह प्रतिमा राजसुख का मनोहर दृश्य अपने हृदय-पटल पर अंकित करने लगी।

"ऐसा न कहो सुंदरी! तुम्हारे ज़रा-से संकेत पर मेरा सारा राज्य तुम्हारे चरणों पर लोट सकता है।"

राजकुमार का हृदय अपनी विजय की आशा में फूला न समाता था।

सरला का तृषित हृदय राजकुमार के कपट-जाल में फँसने से अपने को न रोक सका। निर्धनता की निम्न श्रेणी से सहसा ऊँची उठकर राजरानी बनने की उत्कट अभिलाषा से उसका मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाच उठा। कुआँ जब स्वयं प्यासे के पास आ गया, तो प्यासा अपने को भला कहाँ तक रोक सकता है।

"क्या सच कह रहे हो राजकुमार, या मैं स्वप्न देख रही हूँ।"

सरला पागल हो उठी। उसे राजकुमार की बात पर सहसा विश्वास न हुआ।

"नहीं मेरी रानी! सब सत्य है। मैं कभी झूठ नहीं बोल सकता।"

सरला मस्त हो झूमने लगी। जीवन के क्षणिक आवेश में, जवानी के ज़रा-से जोश में, वासना के भीषण प्रवाह में पड़कर कवि की वह सुंदर कल्पना उसे निर्दयता से ठुकराकर दूसरे की हो गई।

(५)

दिवाकर के अस्त होने के साथ ही कवि की तंद्रा भी भंग हुई। अँगड़ाइयाँ लेता हुआ, शून्य गगन की ओर दृष्टि किए वह उठा। सहसा उसकी बाईं आँख फड़क उठी। भविष्य में होनेवाली किसी भीषण घटना की आशंका से उसका कोमल हृदय काँप उठा। अपने पैरों को शीघ्रता-पूर्वक बढ़ाता हुआ वह अपनी झोपड़ी के सम्मुख आ उपस्थित हुआ। पर एं! आज झोपड़ी में अंधकार क्यों? भय-विह्वल होकर वह चिल्ला उठा—"सरला! सरला!"

उसके करुणा-पूर्ण शब्द उस निर्जन तथा अँधेरी रात्रि में प्रतिध्वनित हो उठे। पर उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसके शब्दों का किसी ने उत्तर न दिया। धड़ाके के साथ कपाट खोलकर वह भीतर घुसा। दिया जलाकर देखा, झोपड़ी सूनी पड़ी थी। अब उसकी विकलता और भी बढ़ गई। 'सरला, सरला' चिल्लाता हुआ वह पागलों की भाँति झोपड़ी से निकलकर उस भयावने जंगल में एक ओर भागा। रात्रि की कालिमामयी मूर्ति ने उसे अपने आँचल में छिपा लिया। शून्य आकाश में असंख्य तारे कवि के दुःख से सहानुभूति प्रकट करने लगे।

(६)

सरला ने सोचा था, राजकुमार की अर्धांगिनी बनकर वह सुख तथा ऐश्वर्य-पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेगी, पर थोड़े ही दिनों पश्चात् उसका हृदय अनेक लांछनाओं तथा व्यंग्यों द्वारा विदीर्ण किया जाने लगा। उसने यहाँ आकर देखा, उसी की भाँति अनेक अभागिनियाँ, दुराचारी राजकुमार के कपट-जाल में फँसकर, अपने दुर्भाग्य पर बैठी आँसू बहा रही थीं। कुछ दिनों तक तो उसे इसका आभास तक न हुआ, पर धीरे-धीरे उसने सभी बातों का पता लगा लिया कि किस भाँति वह पापी उच्च कुल की बेटियों पर हाथ साफ़ करके उनका सतीत्व नष्ट करता है और तत्पश्चात् उन्हें दासियों के रूप में अपने यहाँ रख लेता है।

सरला को यहाँ आए लगभग दो-तीन महीने हो गए। एक दिन वह अपने शयन-गृह में बैठी इन्हीं चिंताओं में डूबी हुई थी कि एक सुंदरी युवती ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"यहाँ क्या कर रही है? चल, ज़रा मेरे बाल तो बैठी गूँथ दे।"

राजरानी के ही गृह में राजरानी का ऐसा अपमान! सरला की सहन-शक्ति के बाहर की बात थी। वह क्रोध से तिलमिला उठी। कड़े स्वर में बोली—"तू कौन है रे! पहले यह तो बतला?"

"ठहर, अभी बतलाती हूँ। मैं हूँ राजरानी। समझी?"

इतना कहती हुई वह सुंदरी सरला पर टूट पड़ी, और तड़ातड़ हंटरों की चोट से उसके कोमल शरीर को लाल कर दिया। भूत-पूर्व राजरानी पृथ्वी पर लोटकर असह्य पीड़ा से तड़पने लगी।

(७)

प्रभात की मनोहर वेला में शून्य वन-पथ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रता-पूर्वक तय करती हुई एक विक्षिप्त-हृदया युवती कवि की झोपड़ी की ओर चली जा रही थी। उसने दूर ही से देखा, कवि की झोपड़ी किसी के विरह में व्याकुल होकर अस्त-व्यस्त खड़ी थी। वह दौड़ती हुई उसके अंदर घुस गई। सामने ही उसने देखा, कवि की निर्जीव देह पड़ी थी। उसकी कल्पना के सुंदर तार टूट-टूटकर शब्दों के रूप में इधर-उधर बिखर रहे थे। एक काग़ज़ का टुकड़ा अब भी निर्जीव कवि की छाती से चिपका हुआ पड़ा था। युवती ने उसे उठा लिया। सुंदर अक्षरों में लिखा था—

प्रियतमे !

मेरे इस उजड़े उपवन में
कभी भूल यदि आ जाना,
निर्मल नयन-नीर के कुछ कण
मुझ पर तुम बिखरा जाना।

सरला उस निर्जीव काया पर गिर पड़ी।

रामअधार जायसवाल

× × ×

६. तड़ित्-प्रकाश

[१]

काले मेघों के बीच नेत्रों को चकाचौंध करनेवाली सौदामिनी क्षण-भर कौंधकर, स्वर्ण-वर्ण के-से, टेढ़े-मेढ़े, अदृष्ट अक्षरों में न-जाने क्या लिखकर, पल-भर में ही जाने कहाँ लोप हो जाती है ?

मानव चौंककर, ठिठककर इस क्षण-भर की चमक को देखता रह जाता है—कितने ही क्षण यों ही देखता हुआ। वह देखना चाहता है, उस विद्युत्-रेखा को एक बार फिर से देखना चाहता है—एक बार जी भरकर देखना चाहता है। देखने से, इस क्षण-भर के बार-बार भी देखने से, उसे तृप्ति नहीं मिलती। इसी से वह देखना चाहता है—फिर से। एक बार—बस, केवल एक बार और। उसका उत्सुक हृदय अपनी धुक-धुक की प्रत्येक धड़कन में बार-बार यही कह उठता है।

उस तड़ित्-प्रकाश को—चमकती हुई तीव्र ज्योति की चपल रेखा को—वह देखना चाहता है, उसे भयंकरता का अंग जानकर भी। मानो वह बच्चों का-सा एक खिलवाड़ हो। पर उस अनंत खिलाड़ी का तो वह एक खिलवाड़ ही है।

घनघोर अँधियारी, स्तब्ध निशि में सघन वन-घटाओं के बीच जब कभी दामिनी दमककर प्रकाश की एक लहर-सी दौड़ा देती है, तो मानव सिहर उठता है। चौंककर, काँपकर, ठिठककर, यों ही-का-यों ही रह जाता है—उसका धड़ाका सुनने के लिये—

कड़ड़ड़ड़ड़—कड़ाम् !

[२]

पर्वत के उत्तुंग शिखर पर तथा प्रशांत, निर्मल, नील गगन के अनंत वक्ष के नीचे मैं हूँ, और मेरे हृदय की—उच्छृंखल हृदय की—सारी भावुक भावनाएँ। सामने से, सुदूर क्षितिज से, मेघ-मालाएँ—प्रलय-घनों की-सी घनघोर घटाएँ—उमड़-घुमड़कर एक-दूसरे से टकराती, मृदुल मारुत को चीरती, वेग-पूर्वक उठती हुई आएँ। मेघों के इन कठोर कशाघातों से सुकोमल समीरण तड़प उठे - कुचले हुए फणींद्र की भाँति फुफकार मारने लगे। उग्र रूप धारण कर, झंझावात बन, झायँ-झायँ कर झकोर उठे। उस समय उस शांत, नीलाकाश के तथा स्तब्ध पर्वत-शिखर के बीच हाहाकार मच जाय, और मैं अपने हृदय के चिर हाहाकार को सदा के लिये उसमें खो दूँ।

चतुर्दिक् निविड़तम अंधकार छा जाय। मेघों की गंभीर गर्जन आरंभ हो जाय। पवन अशांत होकर झकझोर उठे, और मैं निश्चल, नीरव उसी उत्तुंग शिखर पर खड़ा प्रकृति के इस रौद्र रूप की भीषण विभीषिका को भय-मिश्रित उन्माद तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद से अपनी आँखें खोले देखता रहूँ। मेरे केश तथा लोम खड़े होकर मेघों की ओर भागने लगें, मानो वे अपनी कालिमा मेघों की कालिमा में विनिमज्जित कर दिया चाहते हों।

उसी समय—ठीक उसी समय सारे मेघों की संपूर्ण विद्युत् एकत्र होकर एक बार—एक साथ कौंध जाय। मेरे नेत्रों के सम्मुख एक लीक-सी—तीव्रतम ज्योति की सघन लकीर-सी खिंच जाय, और उसी में मेरे नेत्रों की ज्योति विलीन हो जाय। एक महाघनघोर घन-नाद हो, और संसार का कोलाहल—तू-तू, मैं-मैं की आवाज़—उस गंभीर नाद में लीन हो जाय। मैं अपने आपको ही भूल जाऊँ। अपने सारे भावों तथा अनुभूतियों को मैं उस समय विस्मरण कर दूँ। केवल उस महान् ज्योति तथा भीषण नाद की अनुभूति रहे—सत्य के अपूर्व प्रकाश तथा अनहद-नाद के रूप में, और मैं उसी में खो जाऊँ, डूब जाऊँ, मिट जाऊँ, रम जाऊँ और उसके बाद......

रणवीरविहारी सेठ

× × ×

७. परिवर्तन

मेरे इस नीरस जीवन में—
आशा का अभिसार नहीं है,
सुख-सुषमा का सार नहीं है,
सोने का संसार नहीं है,
क्या होगा जाकर मधुवन में !
निष्ठुर, दुसह विरह व्याकुलता का कारण है परिवर्तन में ॥ १ ॥

मम सुख के आगार नहीं हैं,
प्राणों के आधार नहीं हैं,
नौका के पतवार नहीं हैं,
मेरे इस प्रक्षुब्ध पवन में !
कितना कुटिल हास विनिहित है नीरवता के नव-नर्तन में ॥ २ ॥

जीने का अरमान नहीं है,
अहो ! निकलता प्राण नहीं है,
प्रेमी का सम्मान नहीं है,
इस वियोग के दुखमय क्षण में !
कहो ! कौन-सी कला प्रकट है इस विरला के मूक रुदन में ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन से प्राण चला जब जाता,
कौन नहीं है अश्रु बहाता ?
किसका चित्त नहीं घबराता ?
सुलग रही है ज्वाला तन में !
सिवा शोक के बचा नहीं कुछ भी मेरे इस सूनेपन में ॥ ४ ॥
प्रिय 'पति' का शुभ संग नहीं है,
मन में बची उमंग नहीं है,
पिंजर बीच विहंग नहीं है,
सोऊँ अब किस स्वप्न-सदन में !
निष्ठुर, विरह दुसह बन बैठा मेरे इस पापी यौवन में ॥ ५ ॥

ताराप्रसाद वर्मा (ड्राइंग-मास्टर)

ख़वास का ब्याह

लेखक, श्रीचतुरसेन शास्त्री। शास्त्रीजी की लेखनी का समस्त हिंदी-संसार क़ायल है। पृथ्वीराजरासो के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। क़न्नौज के राजा जयचंद ने जब संयोगिता का स्वयंवर किया था, तब सभी राजों को आमंत्रित किया गया था। पारस्परिक वैमनस्य क कारण पृथ्वीराज को नहीं बुलाया था। और, उसका अपमान करके सोने की एक मूर्ति बनाकर, ख़वास के रूप में, द्वार पर रख दी थी। जब यह बात पृथ्वीराज को मालूम हुई, तो वह अपने थोड़े-से चुने हुए सामंतों को लेकर क़न्नौज में भेष बदलकर आ गया, और स्वयंवर के वक़्त संयोगिता को उठा, घोड़े पर बैठाकर दिल्ली ले आया। संयोगिता भी पृथ्वीराज के गुणों पर मुग्ध थी। दोनों का विवाह हो गया। इसी कथानक के आधार पर, बड़ी सुंदर भाषा में, यह उपन्यास लिखा गया है। एक रंगीन चित्र भी। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

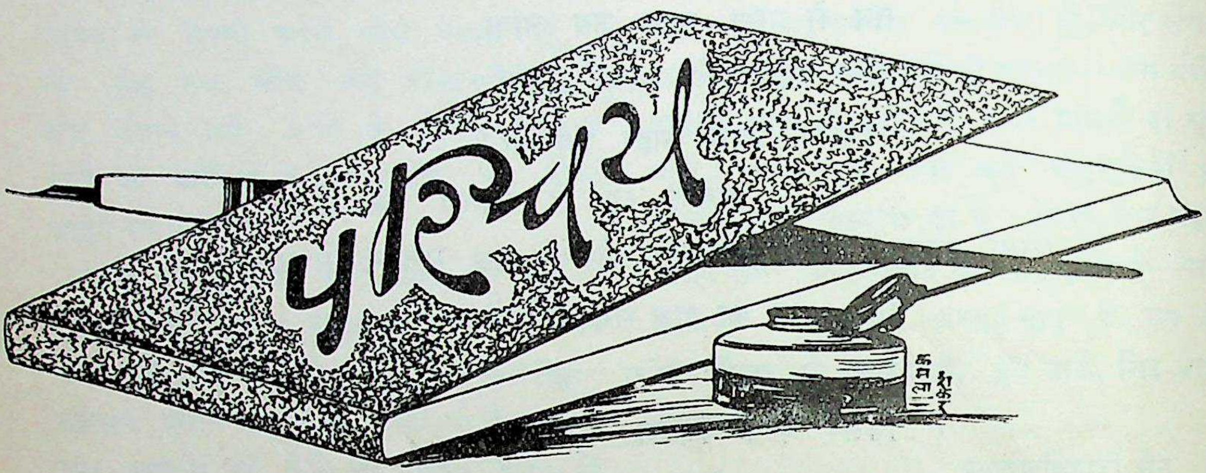

अनुभूत योग (प्रथम भाग)—लेखक, स्व० श्रीश्यामसुंदराचार्यजी वैश्य रसायन-शास्त्री; प्रकाशक, श्रीउमेदीलाल वैश्य श्रीश्यामसुंदर-रसायनशाला, गायघाट, बनारस; पृष्ठ-संख्या ८८; साइज़ डबल क्राउन १६पेजी; अजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥≈); पुस्तक प्रकाशक से प्राप्त हो सकती है।

अधिकांश आयुर्वेद-प्रेमी स्व० श्रीश्यामसुंदराचार्यजी वैश्य रसायन-शास्त्री के शुभ नाम और उनके सद्ग्रंथ 'रसायनसार' से अवश्य परिचित होंगे। उन्हीं महानुभाव के अनुभूत योग इस पुस्तक में प्रकाशित किए गए हैं। कहना न होगा कि संसार के साथ-साथ मानवीय प्रकृति, रुचि और विज्ञान किस तेज़ी के साथ एक परिवर्तित, विचित्र रूप-रंग में आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। दुनिया के वैज्ञानिकों में अपने-अपने विज्ञान की चमत्कार-पूर्ण सफलता के निमित्त नित्य नए आविष्कारों द्वारा भीषण प्रतिस्पर्द्धा चल रही है। उन्हें अपने अध्यवसाय में कहाँ तक सफलता मिली है, इसका प्रमाण या साक्षी हम सबके हृदय अथवा आज का संसार ही हो सकता है। चिकित्सा-विज्ञान भी इस होड़ से ख़ाली नहीं। भारत को छोड़कर संसार के चिकित्सा-विज्ञान में भी प्रतिक्षण क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। किंतु भारतीय आयुर्वेद-विज्ञान और उसके उपासक (वैद्य-समाज) शताब्दियों पहले जिस स्थान पर खड़े थे, वहीं आज भी, प्रस्तर-मूर्ति के समान, खड़े हैं। उनमें देश, काल और परिस्थिति के अनुसार कोई भी नई चेतना एवं जागृति नहीं दिखलाई पड़ती। सर्वत्र 'मक्षिकास्थाने मक्षिकापातः'वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। ऐसी दशा में हम स्व० श्रीश्यामसुंदराचार्यजी को आदर के साथ स्मरण किए विना नहीं रह सकते; जिन्होंने अपना तन, मन, धन और सर्वस्व आयुर्वेद-संबंधिनी रसायन-क्रियाओं की नई खोजों में लगाया। उनके 'अनुभूत योग' प्रायः सभी अच्छे हैं। जनता तथा वैद्य, दोनो ही इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं। पुस्तक का मूल्य कुछ कम होता, तो ठीक था।

× × ×

अनुपान-विधि—लेखक, स्व० श्रीश्यामसुंदराचार्यजी वैश्य रसायन-शास्त्री; प्रकाशक, श्रीउमेदीलाल वैश्य श्रीश्यामसुंदर-रसायनशाला, गायघाट, बनारस; पृष्ठ-संख्या ५५; साइज़ डबल क्राउन १६पेजी; छपाई-काग़ज़ उत्तम; मूल्य अजिल्द पुस्तक का ।=); पुस्तक प्रकाशक से प्राप्य।

आयुर्वेद-विज्ञान में अनुपानों को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। एक ही औषध अनुपान-भेद से भिन्न-भिन्न रोगों को दूर करने में अपना अपूर्व चमत्कार दिखाती है। मूल प्रयोगों में जो अनुपान-विधि लिखी है, उसके अतिरिक्त भी वैद्य लोग गुप्त परंपरा अथवा अपने अनुभव के आधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर नए-नए अनुपानों की कल्पना करके कठिन-से-कठिन रोगों की सफल चिकित्सा किया करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं शास्त्रीय तथा गुप्तपरंपरागत अनुपानों का उल्लेख है। उल्लिखित अनुपान प्रायः अत्यंत प्रसिद्ध कुछ रसोपरसों के ही संबंध में दिए गए हैं। फिर भी पुस्तक अच्छी और उपादेय है।

× × ×

नीम के उपयोग—लेखक, श्रीकेदारनाथ पाठक 'रासायनिक', प्रकाशक, श्रीउमेदीलाल वैश्य श्रीश्यामसुंदर-रसायनशाला गायघाट, बनारस; पृष्ठ-संख्या १०८; साइज़ डबल क्राउन १६पेजी; काग़ज़-छपाई उत्तम; अजिल्द पुस्तक का मूल्य ।।); पुस्तक प्रकाशक से प्राप्य।

नीम, तुलसी तथा गुर्च आदि कुछ ऐसे प्रसिद्ध, उपयोगी वृक्ष और वनस्पतियाँ हैं, जो भारत के नगर-नगर, गाँव-गाँव तथा घर-घर में पाई जाती हैं। कोई भी भारतीय ऐसा न होगा, जो नीम के जादू-भरे गुणों से परिचित न हो। कठिन-से-कठिन रोगों को दूर करने में नीम की अपूर्व शक्ति है। नीम के मद और पंचांग के उपयोग के हज़ारों घरेलू योग तथा टोटके हैं। ग्राम-प्रधान भारत के सुदूर गाँवों में रहनेवाले ग्राम्य जनों के लिये तो नीम कल्पवृक्ष के समान है। वे अपनी परंपरागत जानकारी के अनुसार अनेक कष्टों तथा रोगों में नीम का प्रयोग करके आशातीत लाभ उठाते हैं। आयुर्वेद में एक-दो नहीं, हज़ारों नीम के प्रयोग विद्यमान हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उसी नीम के उपयोग का सरल हिंदी-भाषा में निरूपण किया गया है। कुछ प्रसिद्ध, किंतु साधारण योग भी दिए गए हैं। फिर भी पुस्तक के दूसरे संस्करण में संशोधन तथा परिवर्धन की बहुत बड़ी आवश्यकता है। नीम के बहुत-से ऐसे शास्त्रीय तथा वैद्य-परंपरागत प्रयोग हैं, जो इस पुस्तक में नहीं दिए गए हैं, उनका होना आवश्यक है। इन सब बातों के होते हुए भी पुस्तक उपादेय तथा अच्छी है। मूल्य ।।) अधिक है।

× × ×

आसव-विज्ञान—लेखक, स्वामी श्रीहरिशरणानंदजी वैद्य; प्रकाशक, पंजाब-आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, अमृतसर; पृष्ठ-संख्या १४८; साइज़ डबल क्राउन १६पेजी; काग़ज़, छपाई-सफ़ाई आदि उत्तम; सजिल्द पुस्तक का मूल्य १), पुस्तक प्रकाशक से प्राप्य।

'आसव-विज्ञान' आयुर्वेद-ग्रंथ-माला के प्रथम पुष्प का दूसरा संस्करण है। आयुर्वेद-चिकित्सा का आसवारिष्टों के साथ बहुत प्राचीन संबंध है। आयुर्वेदिक आसवों तथा अरिष्टों में न केवल तन-मन को हरा-भरा रखने की शक्ति है, प्रत्युत उनमें कठिन-से-कठिन रोगों के निर्मूल करने की भी अपूर्व शक्ति है। वैद्य-समुदाय केवल रोगों के शमनार्थ ही शास्त्र-विहित आसवों तथा अरिष्टों का प्रयोग करता है। आसवारिष्टों के सुस्वादु, सुपेय तथा चिर-संग्राह्य होने के कारण इधर कुछ शताब्दियों से इनका प्रयोग बहुतायत से होने लगा है, और वे आयुर्वेदीय चिकित्सा की सफलता तथा उपयोगिता में प्रधान अंग बन गए हैं। किंतु प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में सूत्र-रूप से आसवारिष्टों के निर्माण की जो विधियाँ दी गई हैं, वे ऐसी हैं, जिन्हें क्रियात्मक अनुभव के बिना समझ सकना अत्यंत कठिन है। यही कारण है कि प्राचीन पुस्तकों के आधार पर जो वैद्य महानुभाव तथा फ़ार्मेसियाँ आसवारिष्ट बनाती हैं, उनके वे आसव तथा अरिष्ट अत्यंत खट्टे, दुर्गंधित, निःस्वाद तथा अपेय हो जाते हैं। इसी कमी को अनुभव करके श्रीस्वामीजी ने अपने चिरंतन अध्यवसाय तथा खोज के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक 'आसव-विज्ञान' की रचना की है। साधारणतया पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध के रूप में पुस्तक दो भागों में विभक्त की गई है। पूर्वार्ध के ६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठों में आसवारिष्टों के साथ संबंध रखनेवाली प्रत्येक छोटी - से - छोटी बात पर वैज्ञानिक विवेचना के साथ-साथ विस्तार-पूर्वक प्रकाश डाला गया है। इस भाग में आसव-संबंधी कोई भी ज्ञातव्य विषय अवशिष्ट नहीं रह जाता। इसी पुस्तक के उत्तरार्ध के ५४ पृष्ठों में आसवों के प्रयोगों का संग्रह निदर्शन-मात्र के लिये किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक दो भागों में पूर्ण होती है। मेरे विचार में पुस्तक का पूर्वार्ध मूल-ग्रंथ की विस्तृत भूमिका ही है, जो अत्यंत खोज-पूर्ण तथा उपयोगी है। पुस्तक सभी दृष्टियों से उपादेय तथा महत्त्व-पूर्ण है। आयुर्वेद-प्रेमियों तथा वैद्यों को इस पुस्तक से लाभ उठाना चाहिए।

गयाप्रसाद शास्त्री (वैद्य)

× × ×

इतिहास प्रवेश—लेखक, श्रीजयचंद्र विद्यालंकार; संपादक, स्वर्गीय डॉक्टर काशीप्रसाद जायसवाल; प्रकाशक, सरस्वती-पब्लिशिंग-हाउस, इलाहाबाद; पृष्ठ-संख्या ४६५; मूल्य २)

इसके प्रथम संस्करण की प्रति मेरे सामने है। भारतीय इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते से मैंने पुस्तक आद्योपांत पढ़ी। पुस्तक बड़ी खोज से लिखी गई है। लेखक का परिश्रम सराहनीय है। पुस्तक में दिए हुए चित्रों के संकलन में लेखक को जो कठिनाइयाँ हुई होंगी, उनका अनुमान वही कर सकता है, जो उन पर क्षण-मात्र मनन करे। चित्र पुस्तक की उपादेयता को और बढ़ा देते हैं।

बीते हुए युग का इतिहास जो कुछ हमें आजकल मिलता है, वह किसी प्रकार पूरा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि लेखकगण एक तो पुरानी इतिहास की पुस्तकों को देखकर पुरानी लीक पर चलते हैं, और इस बात का प्रयत्न भी नहीं करते कि आजकल ऐतिहासिक क्षेत्र में क्या उलट-पुलट हो रहा है, और आज से १५ वर्ष का लिखा हुआ इतिहास वैसा ही वर्तमान है, अथवा संशोधित हो गया है। दूसरे, वे अन्यान्य भाषाओं से अनभिज्ञ हैं। उनकी तीनो काल (हिंदू, मुसलिम, ब्रिटिश)-संबंधी भाषाओं की अनभिज्ञता भारतीय इतिहास को एक सूत्र में पिरो देने के कार्य में कृतकार्य नहीं हो पाती। कोई इतिहासकार तो केवल हिंदू-जगत् का सच्चा चित्र हम लोगों के सम्मुख रखता है, और कोई उस पर एक सरसरी निगाह डालकर मुसलिम अथवा ब्रिटिश जगत् का जीता-जागता चित्र सम्मुख रखता है। प्रस्तुत पुस्तक, जहाँ तक मेरा अनुमान है, बीते हुए युग को जैसे का-तैसा दर्शाने में बहुत सफल हुई है।

पुस्तक में यत्र-तत्र भाषा-संबंधी त्रुटियाँ अवश्य मिल जाती हैं। कुछ स्थानों पर इतिहासकार ने अधिक प्रकाश नहीं डाला है। उदाहरणार्थ नंद-वंश, शुंग-वंश आदि।

लेखक ने अर्वाचीन अन्वेषणों के पुरातत्त्वों को जैसे-का-तैसा लिख दिया है। उन स्थलों पर कोई सम्मति न देना लेखक ने ठीक समझा है। किंतु इतिहासकार ने यदि आर्यों के मूल निवास-स्थान तथा उनके भारत-आगमन की तिथि पर विशेष ध्यान दिया होता, तो हम लोगों की इस जटिल समस्या पर पाठकों को बहुत काफ़ी ज्ञान उपलब्ध हो सकता।

इतिहासकार ने रामायण में दिए हुए स्थानों को आधुनिक अन्वेषणों के प्रकाश में उनका शुद्ध, प्रचलित रूप भले प्रकार रख दिया है, और सिद्ध कर दिया है कि रामायण कोई काव्यमय कल्पित ग्रंथ नहीं, वरन् एक सच्ची इतिहास-संबंधी घटना है।

हर्ष का विषय है कि कुछ स्थलों पर इतिहासकार ने बड़े परिश्रम एवं अध्यवसाय से काम लिया है, और बहुत-सी अप्रकाशित ऐतिहासिक सामग्री से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ उठाया है, जिसके फल-स्वरूप हमें बहुत-से विषयों पर काफ़ी प्रमाणित प्रकाश मिलता है।

कुछ स्थलों पर इतिहासकार ने पर्याप्त संख्या में समकालीन सामग्री होने पर भी विस्तार-पूर्वक नहीं लिखा। 'समाज'-शब्द की व्युत्पत्ति जो इतिहासकार ने की है, वह आजकल उसका प्रचलित अर्थ नहीं समझा सकता। समाज शब्द 'समज्या' (पाली शब्द) का अपभ्रंश है, जिससे अशोक का संबंध उन त्योहारों अथवा जलसों से था, जिनमें पशु-हत्या होती है, अथवा पशु-हत्या-संबंधी बातें होती थीं, इसीलिये वह उनके विरुद्ध था।

अशोक का धर्म-विजय-क्षेत्र बहुत सुंदर मानचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। मौर्य-शासन-विधान का हाल विस्तार-पूर्वक होना चाहिए था। मेगास्थनीज़ द्वारा दिए हुए अथवा कौटिल्य के अर्थशास्त्र से उपलब्ध वृत्तांत पर लेखक ने बहुत कम प्रकाश डाला है। यद्यपि ये इतिहासकारों के बड़े काम की सामग्री हैं, किंतु लेखक ने इनसे कम लाभ उठाया है।

इतिहासकार की उर्दू, हिंदी तथा संस्कृत आदि भाषाओं में काफ़ी अभिरुचि मालूम होती है, क्योंकि मुसलिम जगत् का जो वर्णन दिया गया है, वह भी बहुत अंश में सजीव है। शेरशाह और अकबर का शासन-प्रबंध तथा मुग़लकालीन साहित्य और कला-संबंधी उन्नति के बारे में लेखक ने जो लिखा है, वह उतना ही सुंदर लिखा गया है, जितना एक मुसलिम इतिहासकार लिख सकता था। ब्रिटिश भारत का इतिहास अपूर्ण है, मगर जहाँ तक इतिहासकार ने हाथ लगाया है, ख़ूब निभाया है।

मैं पुस्तक को आद्योपांत पढ़ जाने पर यह न समझ सका कि यह पुस्तक किसके लिये लिखी गई है। दसवीं कक्षा तक के विद्यार्थी तो इससे अधिक लाभ नहीं उठा सकते, क्योंकि जो सामग्री इसमें दी गई है, वह बालक स्मरण नहीं कर सकते। हाँ, यदि अध्यापक इससे लाभ उठाना चाहें, तो उठा सकते हैं, क्योंकि वे लकीर के फ़क़ीर बने हैं, और उन्हें अपनी ज्ञान-वृद्धि करना आवश्यक है।

अंत में यह कहना अत्युक्ति न होगा कि यह पुस्तक पढ़ने से हमें दिव्य अतीत की एक झलक मिल जाती है। हम क्या थे, इसका हमें आभास मिल जाता है।

पुस्तक की छपाई सुंदर है। मूल्य अधिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पुस्तक वास्तव में उपादेय है।

सत्यप्रकाश श्रीवास्तव
(एम्० ए०, बी० ए० ऑनर्स)

× × ×

हिंदी-संकेत-लिपि—आविष्कर्ता, श्रीयुत ऋषिलालजी अग्रवाल; प्रकाशक, विष्णु-आर्टप्रेस, प्रयाग; मूल्य सजिल्द ३॥)

त्वरा-लेखन (शार्टहैंड) बहुत उपयोगी लिपि है। आजकल इसका पर्याप्त प्रचलन है। इसके द्वारा व्याख्याताओं के व्याख्यान आदि अक्षरशः लिखे जा सकते हैं। इसके उपयोग से पाठक भली भाँति परिचित हैं। अस्तु।

प्रस्तुत पुस्तक ऋषिलालजी के दीर्घकालीन परिश्रम का फल है। आपने अँगरेज़ी-संकेतकार पिटमैन का आधार ग्रहण किया है। अँगरेज़ी में पिटमैन की ही प्रणाली अधिक सरल है। अध्यापक और विद्यार्थी इसी को अपनाते हैं। हिंदी में ऋषिलालजी की ही प्रणाली का प्रचार हो रहा है। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने भी आपकी प्रणाली स्वीकृत की है। विद्यार्थियों के बड़े काम की है। यदि विद्यार्थी मनन-पूर्वक छ मास तक इस प्रणाली का अनुसरण करे, तो चतुर त्वरा-लिपि-लेखक बन सकता है। इस पुस्तक द्वारा विद्यार्थी विना अध्यापक की सहायता के अभ्यास कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छपाई-सफ़ाई सुंदर; किंतु मूल्य ३॥) अधिक प्रतीत होता है।

श्री०

× × ×

कुमाऊँ का साह-वंश—लेखक, डॉ० नंदलाल साह; एम्० डी०; मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक में साह-वंश के विषय में एक युक्ति-पूर्ण, गंभीर एवं गवेषणा-पूर्ण निबंध है। अभी तक साह-वंश के बारे में कोई तर्क-पूर्ण ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध न थी। साह-वंश' किस वर्ण में है, इसका भी साह लोगों को ठीक-ठीक पता न था। उनका इतिहास अंधकार में था। परस्पर अनर्गल मिथ्या प्रलापों एवं मन-गढ़ंत अनेकों किंवदंतियों के प्रचलित होने के कारण साह-जाति अपने मूल-स्वरूप को भूल बैठी थी। यद्यपि उनमें क्षत्रियत्व के प्रधान गुण सप्रमाण पाए जाते हैं, फिर भी वे अपने सत्य स्वरूप को, किसी प्रकार की ऐतिहासिक खोज न होने के कारण, क़रीब-क़रीब भूल गए थे। सिंह होते हुए भी वे अपने को कोई अन्य पशु की श्रेणी में समझ रहे थे। यह पुस्तक लिखकर डॉ० नंदलाल साह ने केवल साह-वंश की ही नहीं, वरन् कुमाऊँ के समस्त क्षत्रिय-वंश की विशुद्धता की रक्षा की है। उन्होंने अपने अकाट्य प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया है कि साह-वंश एक उच्च क्षत्रिय-वंश की ही एक प्रतिष्ठित शाखा है। जीविका के लिये वे कोई भी वृत्ति करते रहे हों, परंतु इससे उनके क्षत्रियत्व में कोई विशेष अंतर नहीं दिखलाई पड़ता। 'जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै।' इस नीति के अनुसार यदि साह लोगों ने खड्ग-वृत्ति के अतिरिक्त कोई अन्य वृत्ति भी ग्रहण की, तो इससे उनकी मूल-जाति के संबंध में शंका करना नितांत भूल है। साह लोगों की संस्कार-विधियाँ जैसी विधि-पूर्ण आज तक चली आ रही हैं, उनमें कोई अन्य जाति-संबंधी परिवर्तन नहीं हुआ। यदि उनका वर्ण कुछ और होता, तो कुमाऊँ के धुरंधर पंडितों ने अब तक उनका अवश्य विरोध किया होता, और उन्हें उनकी यथार्थता से सतर्क कर दिया होता। पुस्तक में ऐसे ही अनेकों प्रमाण दिए गए हैं। आशा है, विद्वान् पाठक इसे अवश्य पसंद करेंगे। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह पुस्तक अत्यंत महत्त्व की है। यह ज़्यादा अच्छा होता, यदि लेखक ने इस पुस्तक को अधिक विस्तृत रूप से लिखा होता। पुस्तक में कहीं-कहीं छापे की ग़लतियाँ रह गई हैं, और कहीं-कहीं कुछ बातें मेरे विचार से संशयात्मक यों ही छोड़ दी गई हैं। फिर भी लेखक का प्रयास स्तुत्य एवं विषय विचारणीय है।

'उमेश'

तूलिका

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, हिंदी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्रीयुत विनोदशंकर व्यास। आपकी कहानियों में कुछ ऐसी जान डालनेवाली शक्ति है कि पढ़नेवालों के दिल और दिमाग़, दोनो पर असर हो जाता है। तूलिका आपकी ही प्रतिभा-पूर्ण १८ कहानियों का संग्रह है। ८ सादे तथा २ रंगीन चित्र। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

बैडमिंटन-विजयिनी महिलाएँ

[गत नवंबर में, लाहौर में, जो बैडमिंटन-खेल का मैच हुआ था, उसमें इन्होंने विजय प्राप्त की थी। चित्र में मिसेज़ लूइस, मिस यू० ड्यूक, मिसेज़ हर्डन, मिस ई० ब्राउन, मिस एस्० कौल, मिस के० कौल, मिस शीला सूद, मिस ओजायक आदि हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

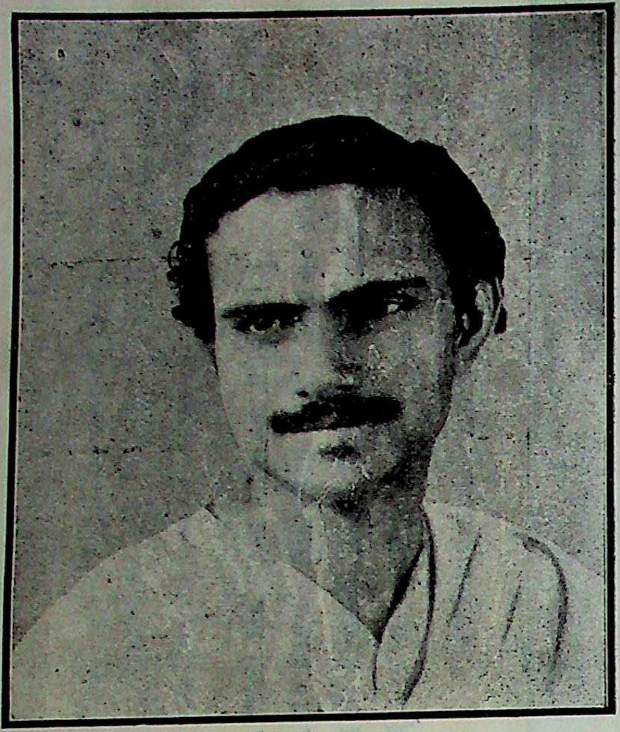

श्रीयुत कमलाशंकरसिंह

आप कृतविद्य कला-कामिनी-कांत हैं। आपके चित्र सुधा में निकलते रहते हैं।]

श्रीमती कलावती देवी 'लक्ष्मी'

[आप श्रीयुत कमलाशंकरसिंह की गृह-लक्ष्मी हैं। आप भी चित्रकारी और सिलाई के कार्य में निपुण हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी कमलादेवी

[आप सुप्रसिद्ध चित्रकार रायबहादुर बाबू ईश्वरीप्रसादजी की दौहित्री तथा बाबू शिवप्रसादज की कन्या हैं। प्रसिद्ध चित्रकार स्वर्गीय बाबू रामेश्वरप्रसादजी वर्मा आपके मामा थे। आपकी अवस्था १५ वर्ष की है। आप अखिल भारतीय संगीत-सम्मेलन, प्रयाग के सीनियर ग्रूप में हारमोनियम में सर्व-प्रथम आई हैं। इसके लिये सम्मेलन की ओर से आपको एक रजत-कप तथा सार्टिफ़िकेट प्राप्त हुआ है। आपने सुप्रसिद्ध हारमोनियम-मास्टर बाबू भुवनेश्वरदयालजी बी० ए०, बी० एल्० तथा तबला-मास्टर बाबू राजेश्वरप्रसादजी के द्वारा संगीत-कला में निपुणता प्राप्त की है। इस समय आप कलकत्ते के विद्यासागर-कॉलेज में, इंटरमीजिएट में, पढ़ती हैं। आप अलीगढ़ के अखिल भारतवर्षीय विद्वत्सम्मेलन से हिंदी-साहित्य-भूषण में प्रथम श्रेणी में, उत्तीर्ण हुई हैं। इतने अल्प समय में ही आपने अपनी जिस सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है, उससे हम आपके उज्ज्वल भविष्य की सुंदर कल्पना करते हैं। ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान करें।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

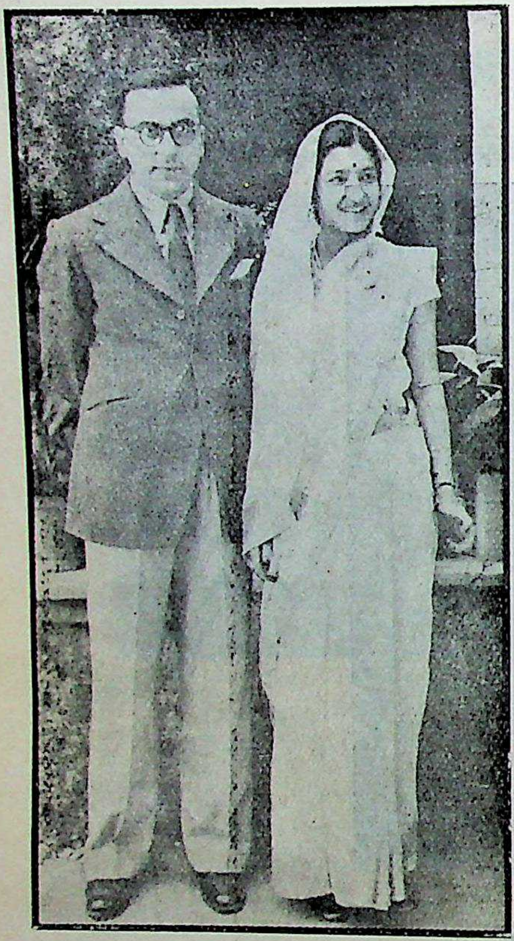

नव-दंपति

[कुमारी राजकुँअरु और श्रीराजनाथ सुवाई। कुमारीजी टेनिस की प्रसिद्ध खिलाड़िन हैं। आप श्री टी० एन्० कुँअरु आई० एस्० ई० की पुत्री हैं। आपका शुभ विवाह अभी हाल ही में, लाहौर में, हुआ है।]

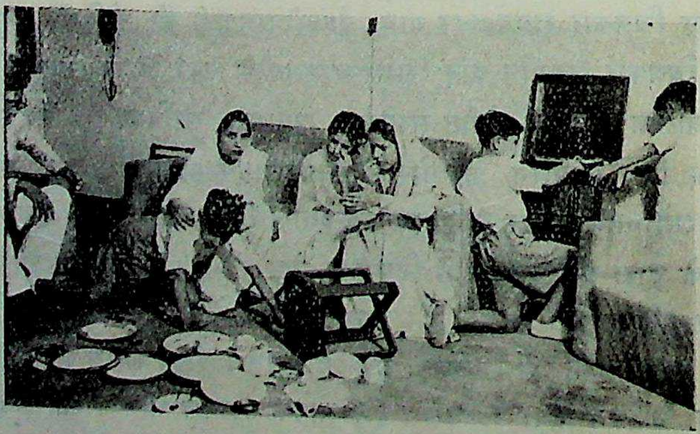

एक हिंदी-नाटक का दृश्य

[यह अभी हाल ही में आल इंडिया रेडियो, लाहौर से ब्राडकॉस्ट किया गया है। मिरज़ा साहब (बाईंओर), जो अपनी पत्नी के अत्यंत आज्ञाकारी सेवक (!) हैं, अपनी पत्नी द्वारा आमंत्रित किए गए कुछ मेहमानों का स्वागत कर रहे हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'कहानी-कला' (समालोचना)—लेखक, श्रीविनोदशंकर व्यास ; मूल्य ।।।=)

(२) 'मुक्त संगीत' (काव्य)—लेखक, श्रीअभिराम शर्मा और श्रीप्रणयेश शर्मा ; मूल्य १)

(३) 'जीवन का सपना' (काव्य)—लेखिका, स्व० श्रीरामेश्वरीदेवी गोयल एम्० ए० ; मूल्य ।।।)

(४) 'प्रेम-मिलन' (काव्य)—लेखक, श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्' ; मूल्य १)

(५) 'नरेंद्र बी० ए०' (उपन्यास)—लेखक, श्रीपुरुषोत्तम-महादेव वैद्य ; मूल्य ।।।)

(६) 'भोजन-शिक्षक' (स्वास्थ्य)—लेखक, कविराज श्रीहरनामदास बी० ए०; मूल्य ।)

(७) 'यौवन-रक्षा' (स्वास्थ्य)—लेखक, कविराज श्रीहरनामदास बी० ए० ; मूल्य ~)

(८) 'गर्भवती, प्रसूता और बच्चा'(स्वास्थ्य)—लेखक, कविराज श्रीहरनामदास बी० ए०; मूल्य १)

(९) 'झोपड़ी का रुदन' (उपन्यास)—लेखक, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ; मूल्य ॥)

(१०) 'यरवदा का क़ैदी' (ऐतिहासिक)—लेखक, श्रीजयरामदास-दौलतराम ; मूल्य ≡)

(११) 'आविष्कार की बातें' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीचंद्रशेखर विद्यालंकार ; मूल्य ॥)

(१२) 'क्या ?' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीजगपति चतुर्वेदी ; मूल्य ॥)

(१३) 'अग्नि-पूजक तथा अन्य कहानियाँ'—लेखक, श्रीकेशवदेव शर्मा ; मूल्य १)

(१४) 'सोने का जाल' (कहानी)—लेखक, श्रीराजेश्वरप्रसादसिंह ; मूल्य १।)

(१५) 'समाज के स्तंभ' (नाटक)—लेखक, श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र ; मूल्य १)

(१६) 'तुलसी-संदर्भ' (समालोचना)—लेखक, श्रीमाताप्रसाद गुप्त ; मूल्य १।।)

(१७) 'निशा-निमंत्रण' (काव्य)—लेखक, श्रीबच्चन ; मूल्य १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. अपने लेखकों से

हम माधुरी, सुधा और गंगा-पुस्तक-माला में जहाँ प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, वयोवृद्ध लेखकों की चीज़ें छापते रहे हैं, वहाँ नवीन-से-नवीन, पर होनहार लेखकों को खोज-कर उनकी रचनाएँ भी, यथा-संभव ठीक करके, प्रकाशित करते रहे हैं। हमारे कुछ साहित्यिक मित्रों की राय है कि हम कभी-कभी ऐसे लेख, कविताएँ और पुस्तकें प्रकाशित कर देते हैं, जिन्हें हमें अपनी प्रतिष्ठा का ख़याल रखकर नहीं छापना चाहिए। पर हमारे ये मित्र हमारे ऊपर यह आरोप करते समय यह भूल जाते हैं कि हम तो प्रतिभा की खोज में रहते हैं। जहाँ हमें आज प्रतिभा की चिनगारी देख पड़ती है, वहाँ समय पाकर आग भी दिखलाई दे सकती है। जहाँ आज अधखिली कली दृष्टिगोचर हो रही है, वहाँ सुगंधमय कुसुम भी विकसित हो सकता है। इस समय ऐसे बहुतेरे कवि और कवयित्रियाँ, लेखक और लेखिकाएँ हिंदी-मंच पर प्रतिष्ठित आसनों पर सुशोभित हैं, जिनकी प्रारंभिक कविताएँ, लेख और पुस्तकें छापने का सौभाग्य हमें मिला था। अस्तु।

नवीन लेखकों को चाहिए कि वे 'सुधा' में अपनी रचनाएँ भेजते रहें। यदि वे प्रकाशित करने योग्य होंगी, तो हम उन्हें सहर्ष छापेंगे। परंतु इस संबंध में हम उनसे यह निवेदन अवश्य कर देना चाहते हैं कि लेख अथवा कहानियाँ यथासंभव छोटी और सीधी-सादी भाषा में लिखी हों। बड़ी चीज़ लोग कम पढ़ते हैं, और संस्कृत-मयी, अप्राकृतिक भाषा का अब ज़माना नहीं रहा। बात जितने थोड़े में कही जाय, उतना ही वह पाठक के मन पर अपना प्रभाव डालती है। आज-कल के पाठकों को इतना ज़्यादा पढ़ना पड़ता है कि व्यर्थ की बात उन्हें याद नहीं रहती। जो घटना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कहानी, जो कविता सीधे उनके मन पर असर करती है, वही उन्हें याद रहती है, और उसी से वे प्रभावित होते हैं।

हमारे नवीन लेखकों को अधिक, बेमतलब की बात लिखने का रोग-सा है। वे एक छोटी-सी बात बहुत घुमा-फिराकर कहते हैं। सुंदर साहित्य-सृष्टि के लिये यह सदैव घातक है। अमीनाबाद-चौराहे के मकान में आग लग गई। यदि उन्हें यह कहना है, तो वे कहेंगे—'अमीनाबाद के जनाकीर्ण स्थान पर, जहाँ पूर्व-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से चार सड़कें आकर परस्पर भेंट करती हैं, कल रात के निर्जन सन्नाटे में भयानक अग्नि-कांड घटित हो गया, जिसमें एक विशाल भवन भस्मीभूत हो गया।' यह हिंदी हो सकती है, परंतु भाषा नहीं। यह कहानी हो सकती है, किंतु साहित्य नहीं। इस प्रकार का वाग्जाल सदैव भाषा के वास्तविक प्रभाव को नष्ट करता है। व्यर्थ के शब्द-जाल से भाषा का सौंदर्य बढ़ता नहीं, वरन् घटता है। हिंदी-लेखक अब भी इसका ध्यान नहीं रखते। जैसे हमारे जीवन के अन्य कार्यों में संयम का अभाव दिखाई पड़ता है, वैसे ही साहित्य के मामले में भी हम बड़े असंयमी हैं। यही कारण है कि हमारी भाषा में अनेक शब्दों को अभी तक कोई रूप नहीं मिला।

भाषा में संयम से ही सौंदर्य आता है। हमारा विश्वास है, संयम से ही उसमें सहज और सरल का गुण जन्मता है। सहज और सरल कोई जंतु नहीं, जो हमें काटता हो। वह साहित्य की आवश्यक माँग है। उसके विना साहित्य टिक नहीं सकता। जब कभी भाषा को सहज बनाने की बात कही जाती है, तब हमारे अनेक कवि और लेखक उसका विरोध करने लगते हैं, और कहते हैं, उच्च साहित्य कभी सहज नहीं होता। परंतु वे भूल करते हैं। उनसे जब कभी सहज की माँग की जाती है, तब उसका अर्थ यही होता है कि वे अपने वक्तव्य को कम-से-कम शब्दों में प्रकट करने की कृपा करें—अधिक सीधे, अधिक सरल, अधिक डाइरेक्ट शब्दों में, थोड़ा संयम के साथ। क्योंकि उनकी दृष्टि से भी जहाँ एक बार ही सब कुछ देने की प्रवृत्ति मौजूद रहती है, वहाँ लेखक कुछ कहने में प्रायः समर्थ नहीं हो सकता। अपने अभिप्राय के लिये चित्रकार जब आवश्यकता से अधिक रंगों का व्यवहार करता है, तब चित्र बहुधा भद्दा हो जाता है। एक साधारण चित्रकार इसे जानता है। वह जानता है, जो व्यर्थ है, वह कला के लिये घातक है। व्यर्थ को दूर करने, उसे खोजकर निकालने और अलग कर देने में ही कला का रहस्य निहित है। संपादन-कला के एक विद्यार्थी ने जब संपादन-कला के आचार्य स्वर्गीय डब्ल्यू० डब्ल्यू० स्टेड से पूछा कि मुझे लेखक बनने की तरकीब बताइए, तो उन्होंने तुरंत जवाब दिया—"Kill your darlings." अर्थात् जो शब्द आपको अधिक प्यारे लगते हों, जिन शब्दों के प्रति आपको अधिक मोह हो, उन पर क़लम का आघात कीजिए। हिंदी के अनेक लेखक ऐसे हैं, जिन्हें स्टेड के इस उपदेश के अनुसरण की आवश्यकता है। यदि वे अपने लिखे का मोह छोड़कर अपने लेखों और कहानियों को आवश्यकता के अनुसार संक्षिप्त करने का अभ्यास डालें, तो, हमारा विश्वास है, वे और भी अधिक अच्छे, लोकप्रिय लेखक बनने में समर्थ होंगे।

× × ×

२. हिंदी में वर्तमान कहानियाँ

हिंदी-कहानियों के संबंध में हमें सबसे बड़ी शिकायत यह है कि उनमें विभिन्नता नहीं होती। वे प्रायः सब एक प्रकार की होती हैं। यदि शैली और विषय-निर्वाह की दृष्टि से हम उनका श्रेणी-विभाजन करने बैठें, तो उन्हें हम तीन-चार श्रेणी से अधिक में विभक्त नहीं कर सकते। इसका सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा और मुख्य कारण हमारी समझ में यह आ रहा है कि हिंदी-लेखकों के जीवन में अनुभव की बड़ी कमी है। सबकी ज़िंदगी प्रायः एक ही ढर्रे पर चल रही है। कॉलेज से निकले, अख़बार पढ़े, उपन्यास पढ़े, नौकरी तलाश की, और जब कोई ज़्यादा आसान काम नज़र न आया, तो कविता करने लगे, अथवा कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं। जिस विद्यार्थी का अभी विवाह नहीं हुआ, जिसने प्रेम का अभी मार्ग नहीं देखा, जिसे प्रेम नाम की चीज़ का कोई अनुभव नहीं, वह प्रेम की कहानियाँ लिखता है। जिसने कभी घर से बाहर पैर नहीं रक्खा, जिसे अपने गाँव के भूगोल का ज्ञान नहीं, जो छुटपन से स्कूल या कॉलेज के होस्टल की चहारदीवारी में बंद रहा, वह अपनी कहानियों में हिमालय और तिब्बत की बातें करता है। जिसे जीवन का कोई अनुभव नहीं, जिसके जीवन के चौदह-पंद्रह वर्ष केवल सहपाठियों के साथ रहते और ग़प लड़ाते बीते, जो जीवन के संघर्ष से अभी दूर है, जो किताबों को ही अपनी दुनिया समझता रहा है, और इस जगत् की विशाल पोथी से जिसका किंचित् परिचय नहीं, वह अपनी कहानियों में मनुष्य-चरित्र की जटिल समस्याओं को सुलझाता और मानवीय हृदय के गहरे, अंधकारमय स्थलों पर प्रकाश डालता नज़र आता है। ऐसी अवस्था में यदि हिंदी-कहानियों में विभिन्नता का अभाव हो, और उनमें एकसाँपन नज़र आवे, तो यह स्वाभाविक ही है। क्योंकि हमारे हिंदी-लेखकों का जीवन प्रायः एक-सा ही है। उसमें कोई संघर्ष नहीं। संघर्ष से ही अनुभव की प्राप्ति होती है। और, दो व्यक्तियों के अनुभव कभी एक नहीं होते। जीवन का जो हमारा अनुभव है, वह आपका अनुभव नहीं हो सकता; आपका अनुभव हमारे अनुभव से सदैव नया होगा। अनुभव की इस विचित्रता से ही साहित्य में विचित्रता की सृष्टि होती है।

योरप का कहानी-साहित्य जो इतना विचित्र और रस-पूर्ण है, उसका एकमात्र कारण यही है कि वहाँ के लेखकों का जीवन सदैव संघर्षमय रहा है। कॉलेज से निकलते ही वहाँ कोई लेखक नहीं बना, और न इस प्रकार साहित्य-जगत् में कोई वहाँ सफलता ही प्राप्त कर सकता है। वहाँ किताबी ज्ञान की ज़रूरत नहीं। उसकी वहाँ कद्र नहीं। वहाँ तो जीवन का अनुभव चाहिए। एक-एक शब्द ऐसा हो, जिसमें संसार में जीवन के कठिन संघर्ष की चिनगारियाँ चमकती हों। एक-एक शब्द आपके जीवन के अनुभव से लिखा गया हो। तभी आपको सफलता मिल सकती है।

हिंदी में यह बात नहीं। यहाँ लेखक सस्ते हैं। जिसने एक कहानी भी लिखी, वही अपने को कहानी-लेखक समझने लगता है। और, चूँकि हम भी उसे ऐसा ही समझने लगते हैं, उसके विकास का मार्ग प्रायः रुक जाता है। प्रारंभ से ही वह एक दिशा में, एक ही प्रकार से सोचने-समझने का आदी हो जाता है, और अंत तक वैसा ही बना रहता है।

प्रेम की कहानियाँ हिंदी में अब भी वैसे ही पुराने ढंग पर लिखी जाती हैं। परंतु ईर्ष्या, द्वेष और प्रेम की गुत्थियाँ सुलझाने के बजाय और भी चीज़ें इस दुनिया में हैं, जो सदैव इस बात की बाट जोहा करती हैं कि कोई जादूगर लेखक अपनी लेखनी से उन्हें मूर्तिमान् करे, और अँधेरे कोने से उन्हें अलग उठाकर, दुनिया के सामने लाकर रक्खे। परंतु कहानी-लेखक अपनी कहानियों के लिये सदैव बड़े विषय की तलाश में रहते हैं। उनका ख़याल है कि विषय बड़ा होने से ही कहानी बड़ी हो सकती है। यह ग़लत है। जो कहानी-लेखक अपनी कहानी के लिये विषय अथवा प्लाट की अपेक्षा करता है, हमारी समझ के अनुसार वह कभी अच्छी कहानी लिखने में समर्थ नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय कोई चीज़ नहीं, उसका निर्वाह ही असली वस्तु है। कोई भी विषय इतना तिरस्करणीय नहीं कि उसका साहित्य-सृष्टि के लिये उपयोग न किया जा सके।

हिंदी-लेखक प्रायः बड़े विषय के ही फेर में रहते हैं, और देखने के लिये नेत्र और सुनने के लिये कान उनके पास कम होते हैं, इसीलिये उनकी रचनाओं में विभिन्नता नहीं आ पाती, क्योंकि दुनिया के बड़े विषय तो आख़िर थोड़े ही हैं। जितने बड़े विषय हम खोजेंगे, उतना ही हम उस सबसे बड़े विषय की ओर बढ़ते जाते हैं, जहाँ सब चीज़ें उस महान् एक में विलीन हो जाती हैं।

हिंदी-कहानी-साहित्य में रस-वैचित्र्य की कमी का एक और कारण यह भी है कि हमारे लेखकों में, हमारा तात्पर्य नवीन लेखकों से है, अनुकरण की प्रवृत्ति कुछ अधिक मात्रा में है। जहाँ किसी भी लेखक को थोड़ी भी सफलता मिली, वहीं उसके चतुर्दिक् नवीन लेखकों का एक ऐसा समुदाय एकत्र होने लगता है, जो उस सफल लेखक को ही साहित्य-क्षेत्र में अपना गुरु, अपना मसीहा, अपना पथ-प्रदर्शक समझने लगता है। हिंदी में जहाँ लेखक बनने के संबंध में आत्मविश्वास की इतनी प्रचुरता दृष्टिगोचर हो रही है, वहीं दूसरों का अनुकरण करके इतनी आत्मविश्वास-हीनता क्यों प्रकट की जा रही है, यह हमारी समझ में नहीं आता। इस प्रकार के लेखक बहुधा ख़ुद तो डूबते ही हैं, साथ में अपने गुरु को भी ले डूबते हैं, क्योंकि दूसरे का अनुकरण करके अपनी गाँठ की संपत्ति तो वे खोते ही हैं, साथ ही जिसका वे अनुकरण करते हैं, उसके मन में गुरुडम का झूठा भाव उत्पन्न करके उसके सम्यक् विकास के मार्ग में बाधा डालते हैं।

प्रेम-संबंधी कहानियाँ यदि कम लिखी जा रही हैं, तो भी उसका अर्थ यह है कि जिसे देखो, वही वर्तमान राजनीति और समाज की गुत्थियों को कहानियों के ज़रिए सुलझाने का दावा कर रहा है। कहानियों से मानो एकदम देशोद्धार हो जायगा, जब कि कहानियों का उद्देश्य कुछ और भी है। और, वही उद्देश्य मुख्य भी है। समाज और राजनीति की समस्याओं को लेकर लिखी गई कहानियाँ कभी चिरस्थायी नहीं होतीं। जब तक वे समस्याएँ मौजूद हैं, तभी तक वे कहानियाँ भी जीवित रहेंगी। उसके बाद उनका मूल्य साहित्य की दृष्टि से अपने आप कम हो जाता है। कहानी का ध्येय कहानी ही है, अथवा कहानी का ध्येय कहानी ही होना चाहिए। मन को थोड़ा-सा विश्राम, थोड़ा-सा आनंद, थोड़ा-सा स्फुरण, थोड़ी-सी गुदगुदी—कहानी का यही ध्येय है। मनोरंजन को कदाचित् हम महत्त्व नहीं देते। उसका कारण यह है कि मनोरंजन हमारे जीवन में रहा नहीं। सात्त्विक मनोरंजन से आत्मशुद्धि होती है, मन निर्मल होता है, चित्त-वृत्तियों को एक प्रकार की शांति मिलती है। कहानी का यह सबसे बड़ा धर्म है। और, यदि वह अपने इस धर्म-पालन में समर्थ होती है, तो इससे अधिक की कुछ और माँग हमें उससे करनी नहीं चाहिए।

परंतु हम ऐसा नहीं करते। जानते हुए, हम वारंवार कहानी से शिक्षक का कार्य लेना चाहते हैं। इसका फल यह होता है कि जो कहानी-लेखक प्रारंभ में केवल कहानी के लिये कहानी कहता है, वह अंत में उपदेशक और फ़िलॉसफ़र बनकर अपने को कहानी-लेखक के कर्तव्य से च्युत करता है, और इस प्रकार अनजान में ही अपनी कला का ह्रास करता है।

हम पूछते हैं, हिंदी में जासूसी कहानियों का अभाव क्यों है? क्या साहित्य में उनका कोई स्थान नहीं? क्या उनकी कोई उपयोगिता नहीं? इँगलैंड के प्रसिद्ध अर्थ-शास्त्री जी० डी० कोल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो प्रतिवर्ष दो-एक राजनीति और समाज-शास्त्र-संबंधी विषयों की बड़ी रूखी और गंभीर किताबें लिखते हैं, जासूसी कहानियाँ लिखकर अपने थके-माँदे दिमाग़ को विश्राम देने के अभ्यासी हैं। किसलिये ? इसीलिये कि दुनिया में जो लोग हलुआ-पूड़ी खाकर अपना हाज़मा ख़राब कर लेते हैं, उनके लिये कभी-कभी मूँग की दाल और चावल की व्यवस्था हानिकारक न होकर कुछ लाभप्रद ही हो सकती है। मस्तिष्क के भोजन के लिये कहानी भी वैसी ही चीज़ है। वह यदि पौष्टिक नहीं, तो न सही, किंतु उसका सुपाच्य होना अत्यंत आवश्यक है। और, डॉक्टर इस बात से सहमत हैं कि सुपाच्य भोजन ही पौष्टिक भोजन का दूसरा नाम है।

आशा है, हिंदी-कहानी-लेखकों से हमारा यह निवेदन अन्यथा न समझा जायगा। हम अपने नवीन लेखकों से विशेष रूप से आग्रह करेंगे कि किसी के भाव, भाषा और शैली का अनुकरण न करके विधाता के इस जगत् में स्वयं अपनी पैनी दृष्टि से कहानी के लिये नए-नए विषयों का आविष्कार करें। बालू के एक कण में युगों की कहानी छिपी है। दूब की एक पत्ती में प्रकृति का अतुल रहस्य मौन होकर सो रहा है। कुसुम की प्रत्येक पंखड़ी में जीवनदायिनी सुगंध भरी हुई है। साहित्य-सुधा का सोता संसार में सर्वत्र है। आप उसे जाग्रत् कीजिए। उसे वाणी दीजिए। और, आप स्वयं अपने इस प्रयत्न से संतुष्ट होंगे। आत्म-संतोष ही सबसे बड़ा पुरस्कार है। दूसरे उससे प्रसन्न न हों, तो चिंता न कीजिए।

× × ×

३. दक्षिण-भारत-हिंदी-प्रचार-सभा, मदरास के परीक्षा-विभाग की संक्षिप्त रिपोर्ट

हिंदी-प्रचार-कार्य को स्थायी बनाने और क्रम-बद्ध हिंदी-शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिये दक्षिण-भारत की हिंदी-प्रचार-सभा सन् १९२२ से हिंदी-परीक्षाएँ चला रही है। प्राथमिक, मध्यमा और राष्ट्र-भाषा नाम की तीन प्रारंभिक परीक्षाएँ हैं। इस वर्ष १०,४४३ परीक्षार्थी प्राथमिक में, ५,०७४ मध्यमा में और १,६३२ राष्ट्र-भाषा में, इस प्रकार कुल १७,१५५ परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में शामिल हुए। यह संख्या पिछले साल की संख्या से दुगुनी है। इससे परीक्षाओं की लोक-प्रियता सिद्ध होती है।

हम सभा के कार्य की हृदय से उन्नति चाहते हैं।

× × ×

४. भारतवर्ष में सैनिक शिक्षा

वर्तमान समय में संसार के प्रत्येक राष्ट्र के लिये सैन्य-शक्ति अत्यंत आवश्यक हो गई है। पर्याप्त सैन्य-शक्ति के विना एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के आक्रमण से अपनी रक्षा करना कठिन हो गया है। और, आजकल, जब सभी देश एक दूसरे को हड़प जाने पर तुले हुए हैं, यह अत्यंत स्वाभाविक है कि सर्वत्र सैनिक शक्ति बढ़ाने के प्रयत्न जारी हों।

सैनिक शक्ति के तीन आवश्यक उपादान हैं— (१) स्थल-सेना, (२) जल-सेना और (३) वायु-सेना। स्थल-सेना में पैदल, घुड़सवार तथा भारी तोपों आदि की गणना होती है। यह स्थल-सेना वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों से पूर्ण सुसज्जित होनी चाहिए, अन्यथा आजकल के युग में उसका कोई मूल्य नहीं। उदाहरण के लिये आधुनिक प्रकार के वैज्ञानिक हथियारों एवं उपकरणों के अभाव के कारण ही अबीसीनिया एवं चीन को इटली और जापान के सामने हार खानी पड़ी है, यद्यपि पहले दो देशों के पास जन-शक्ति की कमी नहीं रही। जल-सेना में जंगी जहाज़, पन-डुब्बियाँ आदि शामिल हैं, एवं वायु-सेना के प्रमुख उपकरण आधुनिक तोपों एवं बम फेंकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मशीनों आदि से सुसज्जित जंगी हवाई जहाज़ हैं। संसार के भावी युद्ध में इन जंगी हवाई जहाज़ों का एक महत्त्व-पूर्ण स्थान है, क्योंकि आगे अब जो लड़ाई होगी, वह हवाई लड़ाई ही होगी।

इन तीन प्रकार की सेनाओं में भारतवर्ष के पास स्थल-सेना नाम-मात्र के लिये ही है। इसमें ६०,००० जो गोरी सेना शामिल है, वह यदि निकाल दी जाय, तो, ज़रूरत पड़ने पर, भारतवर्ष अपने पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान-जैसे छोटे देश का भी मुक़ाबला नहीं कर सकता, क्योंकि युद्ध के पूरे हथियार तो गोरी सेना के क़ब्ज़े में ही रहते हैं। जल-सेना और वायु-सेना का नाम लेना व्यर्थ है। वह समुद्र में जल-बिंदु के बराबर भी नहीं।

मान लीजिए, भारतवर्ष को आज स्वराज्य मिल जाय, तब क्या होगा? हम रूस, जापान या अफ़ग़ानिस्तान से क्या अपनी रक्षा कर सकेंगे? अँगरेज़ लोग भी यही कहते हैं कि यदि कोई देश हमारी ग़ैरहाज़िरी में भारत पर आक्रमण कर बैठे, तो भारतवासी क्या करेंगे? वे ठीक कहते हैं। घर की चाबी और माल-मता तो उनके पास ही है। जब देखेंगे कि यहाँ गुज़र नहीं, तभी अपना बोरिया-बसना बाँधकर चलते बनेंगे, और चाबी रक्खेंगे अपने पास ही। तब तो हम मजबूर होकर ही कहेंगे—"हे सरकार! हमें इस प्रकार अरक्षित अवस्था में छोड़कर यहाँ से मत जाइए। आपके जाने पर हमारी रक्षा कौन करेगा? एक ओर रूस का भालू है, दूसरी ओर जापान का चीता, तीसरी ओर अफ़ग़ानिस्तान का भेड़िया।" इसलिये सुभाष बाबू ने यदि यह कहा है कि इस समय हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न आज़ादी हासिल करने का नहीं, वरन् हासिल करने के बाद उसे बनाए रखने का है, तो उन्होंने बहुत ठीक कहा है। यह एक ऐसा गंभीर प्रश्न है, जिस पर हमारे देश के सभी कांग्रेसी नेताओं एवं अन्य देश-प्रेमियों को गंभीरता-पूर्वक विचार करना चाहिए। जब तक हमारी अपनी सेना न होगी, अपने जंगी जहाज़ और वायुयान न होंगे, तब तक संसार के राष्ट्रों के समक्ष हम ठहर नहीं सकते।

इस संबंध में केंद्रीय सरकार से किसी प्रकार की सहायता की आशा करना व्यर्थ है। श्रीकृष्णकांतजी मालवीय की वायुयान-संबंधी जो स्कीम है, केंद्रीय सरकार उसमें कोई दिलचस्पी नहीं ले रही है। आवश्यक है कि प्रांतीय सरकारें इस ओर उचित ध्यान दें। उन्हें चाहिए कि अपने-अपने प्रांत में प्रारंभिक शिक्षा के साथ सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दें, एवं नवयुवकों के लिये ऐसे सैनिक स्कूल खोलें, जहाँ वे निशाने-बाज़ी तथा सैनिक शिक्षा के प्रारंभिक नियमों का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसके लिये प्रांतीय सरकारों को अगले बजट में एक ख़ासी रक़म विशेष रूप से अलग रखनी चाहिए।

× × ×

५. युक्त प्रांत में गाँव-पंचायतें

युक्तप्रांतीय सरकार ने जो स्थानीय स्वशासन-कमेटी क़ायम की थी, और जो लोगों में खरे-कमेटी के नाम से मशहूर थी, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। खरे साहब प्रतिष्ठित कांग्रेस-नेता और लगन के व्यक्ति हैं। स्थानीय स्वशासन के संबंध में आपको यथेष्ट ज्ञान है। अस्तु। उनकी कमेटी ने जो रिपोर्ट तैयार की है, वह उनकी प्रसिद्धि के अनुरूप ही है। कमेटी की योजना के अनुसार क़रीब तीस हज़ार पंचायतें सारे प्रांत में क़ायम की जायँगी। विश्वास किया जाता है, उनमें से हरएक को औसतन् क़रीब ६००) की आमदनी की दरकार होगी। उनकी आमदनी के ज़रिए ये होंगे—लगान और ख़ालिस आमदनी पर कर तथा सरकार एवं ज़िला-बोर्डों से सहायता और कुछ दूसरे ज़रिए।

तीन हज़ार से अधिक और दस हज़ार से कम आबादीवाले क़स्बों में टाउन-एरिया-कमेटियाँ होंगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनके मेंबर जन-संख्या के अनुसार ग्यारह से सत्रह तक होंगे ।

गाँव-पंचायतों के साथ ही अदालती पंचायतें भी होंगी, जिनका संगठन प्रस्तावित क़ानूनों की धाराओं द्वारा निर्धारित मनुष्यों से होगा । छोटे-छोटे फ़ौजदारी और दीवानी मुक़द्दमों का फ़ैसला करने का अधिकार उन्हें होगा ।

सिफ़ारिशों के अनुसार और जो एक ख़ास बात है, वह यह कि क़ानून बनने पर गाँव-पंचायतों की तरह ज़िला और म्युनिसिपल बोर्डों का चुनाव बालिग़-मताधिकार के आधार पर होगा, और सामूहिक मत-प्रदान की प्रथा काम में लाई जायगी ।

कमेटी की एक और महत्त्व-पूर्ण सलाह यह है कि प्रबंध की सहायता के लिये ज़िला-कौंसिलें क़ायम की जायँ ।

कमेटी की इस योजना का हम हृदय से स्वागत करते हैं । हमें आशा है, इस योजना के अनुसार कार्य होने पर ग्राम-निवासियों में नागरिकता के भाव जाग्रत् होंगे, और वे अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को समझने में समर्थ होंगे ।

× × ×

६. पेरिस-विश्वविद्यालय द्वारा पं० अवध उपाध्याय का सम्मान

पेरिस-विश्वविद्यालय ने पं० अवध उपाध्याय को उनके गणित-संबंधी अन्वेषणों के लिये हाल ही में डॉक्टर ऑफ़् साइंस की डिग्री प्रदान की है । पं० अवध उपाध्याय हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं । आप कई वर्ष लखनऊ में रहे हैं, और हमारे मित्रों में हैं । आप अक्सर कवि-कुटीर और गंगा-पुस्तक-माला-कार्यालय में आते रहते थे । तब आप गणित-शास्त्र का, लखनऊ में, अध्ययन करते थे । उन दिनों प्रेमचंदजी भी गंगा-पुस्तकमाला में थे । वह अपने सर्वश्रेष्ठ उपन्यास रंगभूमि की रचना कर रहे थे । वह उपन्यास छप भी रहा था । प्रेमचंदजी से तभी उपाध्यायजी की जान-पहचान हुई । बाद में उपाध्यायजी ने रंगभूमि की आलोचना लिखी, जो बहुत दिलचस्पी से पढ़ी गई, और उपाध्यायजी समालोचक के रूप में हिंदी में आए । परंतु बहुत कम पाठकों को यह बात मालूम होगी कि उपाध्यायजी बहुत ही ऊँचे दरजे के गणितज्ञ भी हैं । आप अंडर-ग्रेजुएट हैं । फिर भी गणित-संबंधी अपने नवीन अन्वेषणों से आपने योरप के प्रसिद्ध गणितज्ञों में स्थान प्राप्त कर लिया है । युक्त-प्रांत की सरकार तथा लखनऊ और कलकत्ता की युनिवर्सिटियों ने गणित का अध्ययन करने के लिये आपको विशेष रूप से छात्र-वृत्ति प्रदान की । गणित के संबंध में आपने कई महत्त्व-पूर्ण निबंध योरप के पत्रों में प्रकाशित किए हैं । आपकी गणित-संबंधी प्रतिभा के संबंध में एक अँगरेज़ विद्वान् ने लिखा है कि पं० अवध उपाध्याय जिस ढंग से अपने विषय का प्रतिपादन करते हैं, वह साधारण कोटि के गणितज्ञों की समझ में आसानी से नहीं आ सकता ।

उपाध्यायजी आजकल पन्ना-स्टेट में नियुक्त हैं, और शीघ्र ही स्वदेश लौट रहे हैं ।

हम उपाध्यायजी को उनकी इस सम्मान-प्राप्ति पर हार्दिक बधाई देते हैं !

× × ×

७. तानाशाहों के विरुद्ध षड्यंत्र और उनका भविष्य

लोकतंत्र और अधिनायक-तंत्र-शासन-पद्धति में सबसे बड़ा अंतर यह है कि लोकतंत्र में शासन-सूत्र उस दल के हाथ में होता है, जो प्रजा के बहुमत द्वारा आम निर्वाचन में विजय प्राप्त कर लेता है । पर उसके साथ ही अल्पमत-वाले दल को भी अपना विरोध प्रकट करने की वैधानिक सुविधा होती है, और सरकारी पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा विरोधी पक्ष, दोनो ही देश की प्रचलित व्यवस्था के ज़िम्मेदार समझे जाते हैं। विरोधी पक्ष को व्यवस्थापिका सभा के अंदर और बाहर सार्वजनिक रूप से अपना आंदोलन और विकास करने का अधिकार होता है। सभा (House) के अंदर बाक़ायदा अल्पमत के दलों को विरोधी पक्ष के नाम से अलग-अलग स्थान दिए जाते हैं। सरकार के निर्णय पर उनकी बहस और राय का प्रभाव पड़ता है। विरोधी दल के नेता को सरकारी ख़ज़ाने से वेतन दिए जाने की भी व्यवस्था कहीं-कहीं है, किंतु अधिनायक-तंत्र में इन सब बातों का लोप हो जाता है। वहाँ केवल एक ही दल शासक दल कहलाता है। अंदर और बाहर केवल एक ही दल की तूती बोलती है। किसी ने उसकी व्यवस्था का

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

[रजिस्टर्ड]

GONO KILLER
REGD
ORIGINAL
TRADE MARK

नक़ली से सावधान ! ख़रीदने से पहले दवा का नाम 'गोनोकिलर' और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज-हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध किया, तो वह राज्य (State) का दुश्मन समझा जाता है, और उसका दंड भी कठोर होता है। आज जिन देशों में तानाशाहों का राज्य है, वहाँ ऐसा ही हाल हो रहा है। शासन करनेवाले दल के अतिरिक्त अपना राजनीतिक सिद्धांत, नीति और कार्य-क्रम मानकर चलनेवाले दलों को वहाँ पैदा होते ही दफ़ना दिया जाता है। किंतु यह बात तो असंभव ही है कि किसी देश के समस्त लोगों को किसी एक ही प्रकार की शासन-व्यवस्था में विश्वास हो जाय। तब होता यह है कि जहाँ स्वतंत्रता-पूर्वक लोगों को अपना मत प्रकट नहीं करने दिया जाता, वहाँ वह

शीत-ऋतु के लिये चाय एक उपयोगी पदार्थ है। इसके प्रचार के लिये हिंदुस्थान के टी-मार्केट-एक्सपेंसन-बोर्ड ने ठेला-गाड़ियों का प्रबंध किया है, जिनमें चाय बनाने का सारा सामान रहता है।

एक ऐसी ही गाड़ी का चित्र ऊपर दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य गुप्त रूप से होता है। ऐसी समितियाँ क़ायम हो जाती हैं, जो प्रचलित राज्य-व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिये छिपे-छिपे अपना संगठन और आंदोलन करती हैं।

× × ×

८. रूस में षड्यंत्रों के मामले

पिछले दिनों रूस में षड्यंत्रों के जितने मामले चले, उनसे यह पता लग जाता है कि वहाँ की सोवियट सरकार के विरुद्ध कितने ही प्रकार के गुट्ट गुप्त रूप से षड्यंत्र करते रहे। इनमें फ़ैसिस्ट लोगों से लेकर बड़े-बड़े कम्युनिस्ट-नेता भी शामिल थे। राजतंत्रवादी, सुधार-वादी (Reformist), अराजकतावादी (Anarchist), उग्रवादी, वामपक्षी (Left extremist) और जो लोग कम्युनिज़्म में दीक्षित नहीं हुए, वे अलग-अलग अपनी गुप्त समितियाँ बनाकर बोलशेविक सत्ता को नष्ट करने का प्रयत्न करते रहे। पर इन लोगों को अपने प्रयत्न में सफलता नहीं मिली। जो लोग पुरानी शासन-पद्धति को फिर क़ायम करने का प्रयत्न करते थे, उन्हें तो प्रारंभ में ही नष्ट कर दिया गया, इसलिये वे लोग आगे अपना सिर नहीं उठा सके। पर कुछ दल ऐसे थे, जो रूस की क्रांति में बोलशेविकों के साथ-साथ लड़े, पर पीछे उन्होंने बोलशेविक सत्ता के सामने सिर नहीं झुकाया। इनमें वाम पक्ष के उग्रवादियों ने गुप्त रूप से कोशिश करके अपना प्रभाव क़ायम करना चाहा। इन लोगों ने मज़दूरों में अपने भाव फैलाए, पर मज़दूरी बढ़ाने, श्रम के घंटे कम करने तथा हड़ताल करने के साधन, जिनसे मज़दूर-आंदोलन ज़ोर पकड़ता है, रूस में ख़त्म हो चुके थे। वहाँ हड़ताल करने की गुंजाइश नहीं रह गई थी, इसलिये इन लोगों को अपने प्रयत्न में सफलता नहीं मिली।

रूस के इन षड्यंत्रों में एक ख़ास बात थी, जो इटली और जर्मनी की सरकार के विरुद्ध चलनेवाले षड्यंत्रों में नहीं है। वह यह कि रूस के षड्यंत्रों में जो लोग शामिल हुए, उनके राजनीतिक सिद्धांतों और उद्देश्यों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ था। इटली और जर्मनी की वर्तमान सरकारों के ख़िलाफ़ जितने संगठित दल हैं, वे अपने अलग-अलग सिद्धांतों के अनुसार अपना संगठन करके फ़ैसिज़्म की जड़ उखाड़ना चाहते हैं। पर रूस में सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करने में फ़ैसिस्ट और कम्युनिस्ट मिलकर एक हो रहे थे। इनका तात्कालिक उद्देश्य स्टैलिन की शक्ति नष्ट करना था। उनमें ट्राटस्की, जिनोवीव, बुखारिन-जैसे दिग्गज कम्युनिस्ट और उनके साथ फ़ैसिस्ट और वे असंतुष्ट लोग, जिनका 'प्रोलेटेरियन डिक्टेटरशिप' के कारण आर्थिक दर्जा बहुत नीचा हो गया था, मिल गए थे। यहाँ तक कि पुरानी ज़ारशाही को फिर बहाल करने का स्वप्न देखनेवाले लोग भी इनके साथ थे। इन षड्यंत्रकारियों का भविष्य अंधकारमय था। इन्होंने इस बात को सोचा भी न होगा कि स्टैलिन की शक्ति नष्ट हो जाने पर फिर क्या होगा? जिन लोगों का केवल स्टैलिन से द्वेष था, वे षड्यंत्र के सफल होने पर शासन-सत्ता कम्युनिस्ट लोगों के अलावा और किन्हीं को देने के लिये हरगिज़ तैयार नहीं थे। तब जो अन्य प्रकार की सरकार क़ायम करने के उद्देश्य से इन षड्यंत्रों में शामिल हुए, वे क्या करते? निश्चय ही अगर रूस के षड्यंत्र सफल हुए होते, तो वहाँ की भूमि सन् १९१७-१८ की तरह एक बार फिर रक्त में स्नान करती, और तब जितनी जन-हत्या वहाँ होती, उसके मुक़ाबिले वह हत्या कुछ भी नहीं है, जो इन षड्यंत्रों के भंडाफोड़ होने पर षड्यंत्रकारियों को मृत्यु-दंड देने में हुई, यद्यपि मृत्यु-दंड की सज़ाओं का हम सर्वथा समर्थन भी नहीं करते।

कहा यह जाता है कि रूस के अंदर अब कोई

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठित षड्यंत्रकारी दल नहीं रह गया है। यह ठीक हो, लेकिन रूस की सरकार को अब भी यह भय बना हुआ है कि उसके घर के दुश्मनों का अभी सर्वथा लोप नहीं हुआ। वे संगठित नहीं, पर इधर-उधर बिखरे हुए ज़रूर हैं। सेना आदि विभागों में अभी ऐसे ही आदमियों की सफ़ाई हुई है। फिर भी कोई भी सरकार कभी यह तो उम्मेद कर ही नहीं सकती कि उसके ख़िलाफ़ देश में दुश्मन पैदा न होंगे।

× × ×

६. हरिजन और मंत्रिपद

हरिजनों की सभी प्रांतों में काफ़ी संख्या है। आबादी के लिहाज़ से ये २० से लेकर ३० प्रतिशत तक हैं। इतना ही नहीं, इनकी संख्या मुसलमानों के अल्पमतवाले प्रांतों में मुसलमानों से कहीं अधिक है। ऐसी दशा में यह खेद की बात है कि मुसलमान मंत्री तो लगभग सभी प्रांतों में हैं, परंतु हरिजन मंत्री मदरास, आसाम और बिहार को छोड़कर और किसी प्रांत में नहीं! मध्य प्रांत में भी, जहाँ मुसलमान केवल ४½ प्रतिशत हैं, डॉ० खरे के मंत्रित्व-काल में एक मुसलमान मंत्री था। और, आज भी, शुक्कजी के ज़माने में भी, उसकी खोज हो रही है। परंतु जिन प्रांतों में हरिजनों की संख्या मुसलमानों से कहीं अधिक है, वहाँ अब तक हरिजन मंत्रियों का अभाव बड़ा खटकता है। बंबई में, डॉ० अंबेदकर के नेतृत्व में, हरिजनों ने एक अलग पार्टी बना रक्खी है। इसलिये वहाँ के प्रधान मंत्री माननीय खेर साहब को यह कहने का अवसर मिल गया कि हमारी कांग्रेस-पार्टी में योग्य हरिजन का अभाव है, इसलिये हम किसी को मंत्री नहीं बना पाते। इसके उत्तर में डॉक्टर अंबेदकर ने कहा था कि वह अपनी पार्टी के एक सदस्य को अलग करके कांग्रेस में शामिल कर देने के लिये तैयार हैं, बशर्ते उसे मंत्रित्व-पद दिया जाय। परंतु वह बात वहीं ख़त्म हो गई।

इधर मध्य प्रांत में माननीय पं० रविशंकर शुक्क ने अपनी नई कांग्रेसी सरकार बनाते समय भी इस ओर ध्यान नहीं दिया, और न कांग्रेसी सरकार के प्रधान संचालकों ने ही इस पर कुछ विचार किया। नतीजा यह हुआ कि वहाँ अब तक किसी हरिजन को मंत्रिपद नहीं दिया गया। इस संबंध में हरिजनों ने जब महात्माजी की कुटी वर्धा में सत्याग्रह किया, तब महात्माजी ने उनकी माँग पूर्ण होने के संबंध में उन्हें पूर्ण आश्वासन दिया, और 'हरिजन' में लेख भी लिखा। कहा यहाँ तक जाता है कि उन्होंने प्रधान मंत्रियों को एक हरिजन मंत्री ले लेने की सलाह भी दी। पर ऐसा हुआ नहीं।

युक्त प्रांत में मुसलमानों की संख्या केवल १४ प्रतिशत है। फिर भी उनके दो मंत्री हैं। परंतु हरिजनों की संख्या २६ प्रतिशत होते हुए भी एक भी हरिजन मंत्री यहाँ नहीं। यह वास्तव में खेद का विषय है! कहने के लिये तो दो हरिजन पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी हैं। पर वह भी १३ सेक्रेटरियों में २, जब कि २ मुसलमान भी इनमें शामिल हैं। हरिजनों के साथ यह अन्याय क्यों? क्या इसलिये कि वे ज़्यादा उछल-कूद नहीं मचाते। क्या हम माननीय पंतजी से आशा करें कि वह इस संबंध में हरिजनों की हक़तलफ़ी न होने देंगे। हमारी समझ में मंत्रिपद के योग्य हरिजन विद्वान् की कमी नहीं। इसके अतिरिक्त जब अन्य प्रांतों में दस-दस तक मंत्री हैं, तब हमारे प्रांत में क्या एक हरिजन मंत्री के लिये गुंजाइश नहीं हो सकती, जहाँ केवल ६ मंत्री हैं, और उनके पास जब काम भी काफ़ी है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०. मुसोलिनी का भविष्य

जो लोग ऐसा ख़याल करते हैं कि इटली में फ़ैसिज़्म का पौदा ख़ूब फल-फूल रहा है, वे साथ ही यह नहीं सोचते कि पौदे की जड़ में कीड़े भी लग गए हैं। मुसोलिनी ने जिन ताक़तों को लेकर रोम पर चढ़ाई की थी, उनमें से कई ताक़तों को उसने विजय प्राप्त करने के साथ ही दमन के हथौड़े से कूट डाला। लेकिन वे शक्तियाँ नष्ट नहीं हुईं। इनमें कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट दल सबसे बड़े थे। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी ग़ैरक़ानूनी होने पर भी क्या यहाँ कम्युनिस्टों का दल नहीं? दमन से किसी चीज़ का अस्तित्व मिट जाना असंभव है। इटली की फ़ैसिस्ट सरकार के दमन से वहाँ की कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट पार्टियाँ प्रकट रूप में अपना कोई आंदोलन नहीं कर सकीं, पर उस काम को अब वे छिपे हुए रूप में करती हैं। पहले इटली के इन दोनो दलों में परस्पर भी ख़ूब तनातनी थी। सोशलिस्ट लोग रूस-सरकार की वैदेशिक नीति के कटु आलोचक थे, और कम्युनिस्ट लोग रूस-सरकार की प्रत्येक नीति को अपने दल की नीति मानते थे। केवल रूस में ही नहीं, योरप के अन्य देशों में भी यही हाल था। सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, मार्क्सवादी और कितने ही प्रकार के समाजवादी दल बन गए। इनके आपस के मतभेदों का नतीजा यह हुआ कि रूस में सोवियट शासन-पद्धति क़ायम हो जाने के बाद जर्मनी और दूसरे देशों के संबंध में भी जो यह उम्मेद की गई थी कि ये देश शीघ्र ही समाजवादी शासन-व्यवस्था के अंदर आ जायँगे, वह बात हवा हो गई। उसके स्थान पर फ़ैसिज़्म नाम की एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया। सन् १९३४ में, जर्मनी में हिटलर की शक्ति का उदय होने पर, विश्व-भर के कम्युनिस्ट-संघ (थर्ड इंटरनेशनल) की आँखें खुलीं, और उसने अपनी नई नीति स्वीकार की। इसके अनुसार फ़ैसिज़्म और साम्राज्यवाद का मुक़ाबिला करने के लिये सब देशों के कम्युनिस्टों को संयुक्त मोर्चा (United Front) बनाने का आदेश हुआ। भारत में तभी से राष्ट्रीय महासभा को कोसनेवाले कम्युनिस्ट कांग्रेस से सहयोग की बातें करने लगे। तभी से इटली में भी कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट दलों में एक कार्य-क्रम पर एकता हो गई है। इस कार्य-क्रम के अनुसार फ़ैसिज़्म के मुक़ाबिले दोनो दलों का संयुक्त मोर्चा क़ायम हो गया है, और फ़ैसिज़्म के स्थान पर एक ऐसी जनतंत्रात्मक (Democratic Republican) सरकार क़ायम करनी है, जिसमें सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट, दोनो का बहुमत हो। सन् १९३७ में जब से इटली और जर्मनी का मेल बढ़ा, और इटली तथा रूस में तनातनी बढ़ी, तब से ये दोनो पार्टियाँ आपस में मिलकर फ़ैसिज़्म के विरुद्ध ख़ूब प्रचार कर रही हैं, यद्यपि प्रकट रूप से उन्हें इटली-सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन आदि करने का अधिकार नहीं। उनकी कार्यवाहियाँ अप्रकट रूप से (Underground) होती हैं। यदि निकट भविष्य में फ़ैसिस्ट शक्तियों और रूस में युद्ध छिड़ा, जैसा आजकल की परिस्थिति बतला रही है, तो इटली की ये पार्टियाँ फ़ैसिज़्म को उलटकर इटली में नए ढंग की सरकार क़ायम करने का प्रयत्न करेंगी, और उस वक़्त इटली की फ़ैसिस्ट सरकार को बाहर और अंदर दो दुश्मनों से मुक़ाबिला करना पड़ेगा।

इनके अतिरिक्त इटली में और भी दल हैं, जो फ़ैसिस्ट सत्ता के विरोधी हैं। इनमें एक अराजकवादियों का दल है, पर इसका प्रभाव आजकल बहुत कम रह गया है। योरप के अन्य देशों में अराजकवादियों की जो दशा है, वही इटली में है। एक 'न्याय और स्वतंत्रता' (Justice and Liberty) नाम की संस्था का और भी अभ्युदय हो चुका है। इसके संचालक

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्लो रसल नाम के एक व्यक्ति थे, जिनका इटली के स्वनामधन्य नेता मैजिनी के ख़ानदान से संबंध था। इसीलिये इस दल का इटली के मध्यम वर्ग और पढ़े-लिखे लोगों पर प्रभाव है। इस दल की नीति प्रजातांत्रिक उदार समाजवाद (Democratic liberal socialism) क़ायम करना है। ऐसी-ऐसी अनोखी व्यवस्था और नामों को लेकर चलनेवाली पार्टियों का भविष्य क्या होगा, इसे कोई नहीं बतला सकता, पर इसमें शक नहीं कि मुसोलिनी की सत्ता को इस प्रकार के दलों से खटका है। सन् १९३७ की गर्मियों में, पेरिस के निकट, उक्त संस्था के संचालक कार्लो रसल और उनके भाई की हत्या की गई, और इसमें लोग मुसोलिनी का हाथ बतलाते हैं। पेरिस से ये लोग अपने दल की नीति के समर्थन में एक अख़बार निकालते थे, और उसकी बहुत-सी कापियाँ इटली में खपती थीं। इन षड्यंत्रों को देखकर कोई नहीं कह सकता कि मुसोलिनी का भविष्य क्या होगा ?

× × ×

११. युक्त प्रांत में साक्षरता-दिवस

गत रविवार १५ जनवरी को युक्त प्रांत के सभी शहरों, क़सबों और बड़े गाँवों में भी साक्षरता-दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रांत-भर में क़रीब ५ लाख आदमियों ने साक्षरता-प्रचार के महायज्ञ में अपना भाग अर्पण करने के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किए। हस्ताक्षर करनेवालों में प्रांत के सभी मंत्री और एसेंबली के अध्यक्ष माननीय टंडनजी भी थे। साक्षरता-दिवस के इस आयोजन का सारा श्रेय शिक्षा-मंत्री माननीय बाबू संपूर्णानंदजी को है। उन्हीं के प्रयत्न से सारे प्रांत में साक्षरता-दिवस अत्यंत सफलता-पूर्वक मनाया गया। कई स्थानों पर योग्य व्यक्तियों के निरक्षरता-निवारण के संबंध में व्याख्यान हुए, एवं प्रांत के प्रमुख व्यक्तियों ने अपने संदेश भेजे।

प्रांत में साक्षरता-प्रचार के इस सुंदर श्रीगणेश का हम हार्दिक स्वागत करते और नवयुवकों तथा अन्य देश-प्रेमी व्यक्तियों से प्रार्थना करते हैं कि साक्षरता-निवारण के इस पुण्य कार्य में भरसक कुछ-न-कुछ भाग लें। यदि प्रत्येक व्यक्ति साल-भर में कम-से-कम चार व्यक्तियों को ही साक्षर बनाने का बीड़ा उठा ले, तो बारह महीने के अंदर इसी प्रांत में साक्षरता का चौगुना प्रचार हो जायगा।

× × ×

१२. हिंदी में भाषणों की कमी

सभा-समाजों और भिन्न-भिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक कान्फ्रेंसों में व्याख्यानदाताओं की ओर से जो भाषा बोली जाती है, उसके नमूने यदि कोई हिंदी में देखना चाहे, तो उसे निराश ही होना पड़ेगा। कहानी, उपन्यास आदि में हमें साहित्यिक हिंदी अवश्य पढ़ने को मिलती है, किंतु उसे चलित भाषा नहीं कहा जा सकता। सभा-समाजों में जो हिंदी बोली जाती है, हमारा विश्वास है, वह अधिकतर हिंदुस्थानी के नज़दीक होगी। लिखित भाषणों में संस्कृतमयी शैली, अरबी-फ़ारसी के शब्द अधिक हो सकते हैं, परंतु बोलते समय हम बहुधा सीधी-सादी भाषा ही बोलते हैं। जो भाषण पहले से ही लिखकर तैयार किए जाते हैं, उन्हें व्याख्यान या वक्तृता का नाम नहीं दिया जा सकता। उन्हें तो निबंध या लेख की श्रेणी में ही डालना चाहिए। जो वस्तु लिखकर तैयार होती है, उसके संबंध में लेखक भाव और भाषा के विषय में आवश्यकता से अधिक सतर्क हो जाता है। इस प्रकार भाषा अपनी स्वाभाविकता नष्ट कर देती है। उसमें बोल-चाल की भाषा का माधुर्य नहीं रहता। भाषा सदैव समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निम्न स्तर से तैयार होती है। वह देहातों में गढ़ी जाती है। वहीं से उसका विकास और उत्थान होता है। ऐसी भाषा के नमूने हमें लिखित निबंधों में नहीं, वरन् समय-स्फूर्ति से दिए गए मौखिक भाषणों में ही मिल सकते हैं।

इस प्रकार के भाषणों का एक भी संग्रह हिंदी में नहीं, यह सचमुच खेद की बात है! समय-समय पर राजनीतिक व्यक्तियों के जो भाषण होते हैं, उनका सारांश ही बहुधा दैनिक पत्रों में देखने को मिलता है। शब्दशः रिपोर्ट लेने और उसे जैसे-का-तैसा प्रकाशित करने की ओर पत्रों का ध्यान नहीं। इस संबंध में काका कालेलकर का एक पत्र हमें मिला है, जिसमें वह ऊपर के शब्दों में हिंदी में भाषणों की कमी का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि कुछ दिन हुए, सभा-समाजों में दिए गए व्याख्यानों का एक संग्रह करने की दृष्टि से, उनकी 'समिति' ने हिंदी के व्याख्यानों की रिपोर्ट अनेक सज्जनों से मँगवाने की चेष्टा की थी। परंतु वह बड़े दुःख के साथ लिखते हैं कि बहुतों ने उन्हें निराश ही किया। और, कहते हैं, हिंदीवाले— जिन्हें हिंदी-जैसी राष्ट्र-भाषा को स्वभाषा कहने का गौरव प्राप्त है—अगर इतनी भी सहायता न करें, तो सचमुच बड़े आश्चर्य की बात है।

हिंदीवालों से काका कालेलकर को इस प्रकार की शिकायत का मौक़ा मिले, यह सचमुच हमारे लिये शर्म की बात है।

× × ×

१३. हिटलरशाही के विरुद्ध तैयारियाँ

जर्मनी में आजकल नाज़ी-पार्टी का बोलबाला है, और ज़ाहिरा तौर पर यह मालूम होता है कि हिटलर ने अपने विरोधी दलों की जड़ खोद डाली, पर वास्तव में स्थिति ऐसी नहीं। यह कहना चाहिए कि जर्मनी में नाज़ी-सत्ता की विरोधिनी जितनी पार्टियाँ हैं, उतनी शायद ही और किसी देश में वहाँ की सरकार के ख़िलाफ़ मिलेंगी। पर इन दलों में परस्पर विरोध भी इतना है कि वे आपस में मिलकर फ़ैसिज़्म के ख़िलाफ़ एक संयुक्त मोर्चा क़ायम नहीं कर सकीं, जैसा कि इटली में है। समाजवादी और कम्युनिस्ट लोगों में भी वहाँ परस्पर अनेक भेद हैं। सोशलिस्ट वर्कर्स नाम की वहाँ एक ज़ोरदार पार्टी है। जब रूस की क्रांति के सफल होने के बाद जर्मनी में समाजवाद क़ायम रहने की चेष्टा की गई, तो क्रांतिकारी दल में ही फूट पड़ गई, और समाजवाद की जगह वहाँ फ़ैसिज़्म क़ायम हो गया। सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट लोगों की शक्तियाँ बिखर गईं। सोशलिस्ट लोगों में जो उग्र नीति को पसंद करते थे, उनका मेल कम्युनिस्ट-दल के दक्षिण पक्ष-वालों से हो गया, और इन दोनो ने मिलकर उक्त नाम का एक दल तैयार किया। पता नहीं, कोई राजनीतिक अर्थ-शास्त्री अपना क्या हिसाब लगाएगा, पर यह वाम पक्ष के सोशलिस्ट और दक्षिण पक्ष के कम्युनिस्ट लोगों का संयुक्त दल मूल कम्युनिस्ट-दल से, जिसका संबंध रूस से है, अधिक उग्र हो जाता है। मूल कम्युनिस्ट-दल की नीति जर्मनी में इनसे नरम है। इसका कारण यह है कि जर्मनी और जापान की संयुक्त शक्ति से रूस का मुक़ाबिला होने पर रूस-सरकार की नीति पर चलनेवाले कम्युनिस्ट पश्चिमी योरप के देशों से सहयोग की नीति रखना चाहते हैं। दूसरा दल, जिसका उक्त दलों से थोड़ा-सा सैद्धांतिक मतभेद है, 'अंतरराष्ट्रीय सोशलिस्ट लीग' है। नेशनल सोशलिस्ट पार्टी का, जो नाज़ी-पार्टी का प्रथम संस्करण है, अब एक भाग हिटलर-विरोधी दल में शामिल हो गया है। यह मतभेद सन् १९३४ से शुरू हुआ। इस दल का नेता ओट्टोस्टरेसर ज़ेकोस्लोवेकिया से अपने दल की नीति के समर्थन में समाचार-पत्र निकालता है।

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दल का उद्देश्य है—न फ़ैसिज़्म, न बोल्शेविज़्म। एक अजीब तरह के जर्मन प्रजातांत्रिक समाजवाद की कल्पना इन लोगों ने की है। इन लोगों के अलग रेडियो हैं, और उनसे जर्मनी-भर में छिपे-छिपे प्रचार किया जाता है। हिटलर को इनका पता लग गया, और इस दल के कितने ही लोगों को मौत के घाट उतारा गया। अन्य विरोधी दलों के लोगों के साथ भी कई बार यही सलूक किया जा चुका है।

इन दलों के अलग-अलग कार्य-क्रम, नीति और नारे (Slogans) हैं। अलग-अलग जमातों पर उनका असर है। सोशलिस्ट दल का मध्यम श्रेणी के लोगों पर और वर्तमान सरकार से असंतुष्ट व्यक्तियों तथा कुछ सरकारी कर्मचारियों पर असर है। ये दल अपना साहित्य प्रकाशित करते हैं, बाहर से साहित्य मँगाकर जनता में वितरण करते हैं। मास्को के रेडियो से इन्हें ख़बरें मिलती हैं। कड़ा 'सेंसर' होने पर भी इन्हें सब तरह की ख़बरें और साहित्य मिलता रहता है। हिटलर-जैसे तानाशाह की हुकूमत में जब ये लोग अपना काम करते जाते हैं, तब जर्मनी किसी महायुद्ध में फँसा, तो इनका षड्यंत्र कैसा रूप धारण करेगा, इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इस प्रकार हिटलरशाही की जड़ में घुन लगा हुआ है, पर यह वृक्ष गिरा, तो उसके फल कौन तोड़ेगा, यह अनिश्चित है।

× × ×

१४. काशी-विद्यापीठ तथा जामिया-मिलिया की डिग्रियाँ मंज़ूर

यू० पी०-सरकार द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति से पता चलता है कि काशी-विद्यापीठ तथा दिल्ली की जामिया-मिलिया द्वारा जो डिग्रियाँ दी जायँगी, उन्हें अब इस प्रांत के चार्टर्ड विश्व-विद्यालयों की बी० ए० की डिग्री के बराबर माना जायगा।

इस निर्णय के लिये हम यू० पी०-सरकार और विशेषकर शिक्षा-मंत्री की प्रशंसा करते हैं।

गढ़-कुंडार

(द्वितीयावृत्ति)

इस सर्वोत्तम उपन्यास के लेखक हैं हिंदी के सर वाल्टर स्कॉट श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०—झाँसी के गण्य-मान्य ऐडवोकेट। यह सम्राट् हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, पड़िहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्य-कालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ, आल्हा ऊदल की जन्म-भूमि बुंदेलखंड का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है। इस प्रकार का रोमांटिक—प्रेम-गाथा-पूर्ण—वीरत्वमय, दिल दहला देनेवाला, मनोरंजक, मौलिक उपन्यास अब तक हिंदी-साहित्य में एक भी नहीं है। इसमें बुंदेलखंड के वीरों का इतिहास, छत्रसाल की इतिहास-प्रसिद्ध जन्मभूमि की मनोमोहक सीनरी तथा सरल चंदेल और खंगार-युवतियों की प्रेम-लीला, देश-प्रेम, वीरता—सब आदि से अंत तक नया-ही-नया है। लेखक को इसी पुस्तक पर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से २००) का पुरस्कार भी मिल चुका है। चार-पाँच रंगीन और सादे चित्र भी। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता— गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

छप गया ! छप गया !!

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निस्संकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतपानारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('विदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।
(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।
(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।
(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।
(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

आजकल छपाई में खर्च अधिक आने के कारण थोड़ी ही प्रतियाँ छपाई हैं, इसलिये फ़ौरन् एक कापी मँगाकर यह सर्वोत्तम उपन्यास पौने मूल्य में ही लीजिए। सजीव, परिमार्जित भाषा। इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखनी आवश्यक है। मूल्य दोनो भाग ४), सजिल्द ५)

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का एकमात्र
मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार लखनऊ

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्लभ ग्रंथ-रत्न

आरोग्य-शास्त्र

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक
आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

निम्न-लिखित ३१ अध्याय, १५० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×३० = ८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती, मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला!

यदि आप

अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

अध्याय-सूची

१. स्वास्थ्य-विज्ञान
२. शरीर-विज्ञान
३. शरीर-यंत्र
४. गर्भाधान और प्रसव
५. शिशु-पालन
६. स्नान
७. भोजन
८. फलाहार
९. मक्खी, मच्छर, खटमल और रोग-कीटाणु
१०. जड़ी-बूटी
११. मुष्टि-योग
१२. प्रसिद्ध नुसख़े
१३. ख़ास नुसख़े
१४. धातुओं की भस्म
१५. आकस्मिक उपचार
१६. रोगी की सेवा
१७. पथ्यापथ्य
१८. तपेदिक़
१९. हैज़ा
२०. प्लेग
२१. कुछ महत्त्व-पूर्ण रोग
२२. स्वाभाविक चिकित्साएँ
२३. यौवन-रक्षा
२४. व्यभिचार
२५. स्त्रियों का स्वास्थ्य
२६. व्यायाम
२७. आयु बढ़ाने की रीति
२८. सुंदरता बढ़ाने की रीति
२९. गृह-निर्माण-कला
३०. उपयोगी विद्याएँ
३१. आत्मविज्ञान

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वरलहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १।।)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के ग्राहकों को पौने मूल्य में

प्रसूति-तंत्र

लेखक—
डॉ० रामदयाल कपूर
एम्० बी० बी० एस्०

मूल्य २।), सजिल्द ३)

"प्रसूति-तंत्र—हिंदी में अपने ढंग की यह निराली पुस्तक है। जच्चा-बच्चा, जननेंद्रिय-क्रिया-विज्ञान, गर्भ-विज्ञान, प्रसव-विधि, गर्भावस्था के विकार तथा डॉक्टरी क्रियाओं द्वारा बाँझपन दूर करने के उपचार तथा गर्भ से बालक निकालने की चीड़-फाड़ आदि के विषय में अभी तक इतनी विशद पुस्तक हिंदी में कोई भी नहीं थी। यद्यपि यह पुस्तक साधारण गृहस्थ को ज्ञान-मात्र ही दे सकेगी, किंतु अज्ञानता-वश मूर्ख दाइयों द्वारा अक्सर हानि उठानेवालों को सचेत अवश्य करा सकेगी, और सही बात समझने के योग्य बना सकेगी। मैंने अंतिम अध्याय (प्रसूति का शल्य-कर्म) पढ़कर यह जान लिया है कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ अपनी बात समझाने की चेष्टा की है। समझदार गृहिणियों को इस पुस्तक का एक बार मनन अवश्य करना चाहिए।"

(वर्तमान, कानपुर)

प्रसूति-तंत्र
आचार्य
द्वि
वे
दी
जी
का
क
थ
न
है—
"प्रत्येक गृहस्थ
के
लिये
अनमोल है।"

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

नटखट पाँड़े (द्वितीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० । एक नटखट लड़के की आत्म-कथा । एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है । नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर महोदय की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग जाना, गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे समाप्त किए विना नहीं रह सकते । कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे ।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

मूल्य १), सजिल्द १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा !

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई।

बाल-विलास

इस सुंदर पुस्तक के लिये छोटे-छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से उलझ रहा है।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ।।।≈)

अम्मा, अम्मा, ला दो

जल्दी से—

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है। इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं।

मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की महत्ता, तज्जनित द्वेष और दाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं— आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये

'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ

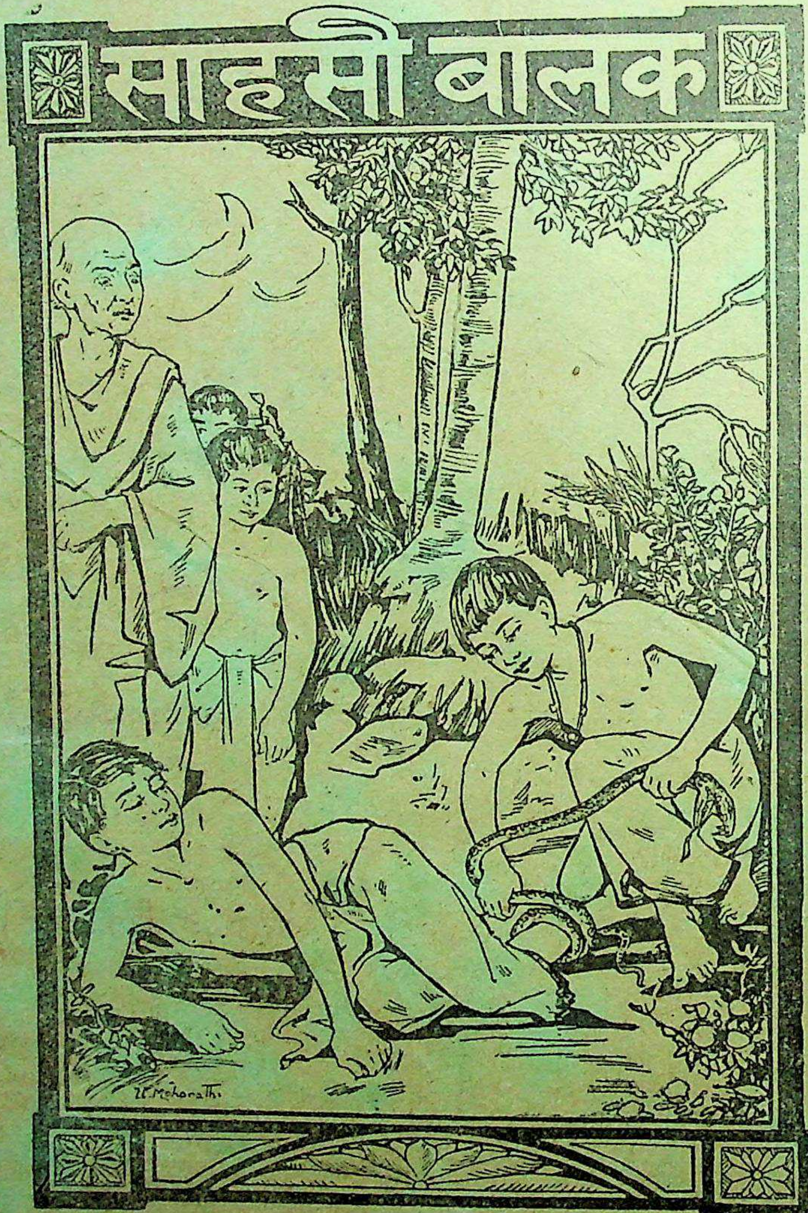

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन तीनो बातों में

१ ख़र्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर

बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है ।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है ।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी

पर

आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी ।

क्यों ?

इसलिये कि १—इसका ख़र्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है ।

२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है ।

३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है ।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए ।

स्वदेशी की एक नई योजना
घातक दुर्घटना-पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए !

एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है ।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद डोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712

दोपहर का स्फूर्तिदायक

श्रमिक स्त्रियों के लिये दोपहर के आराम के समय एक प्याला चाय पी लेना जीवन को सुखकर बना देता है। यह उन्हें खेत या कारख़ाने में अधिक काम करने और मर्दों के मुकाबले काम करने की शक्ति देती है। अब यह चाय हर एक श्रेणी की भारतीय स्त्रियों की प्रिय सामग्री बनती जा रही है। इसे अपने जीवन की एक चिर-संगिनी बना लीजिये।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

चाय तैयार करनेका तरीका

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...Chennai and eGangotri

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

26-2-39

सुधा

माघ १९९५

February 1939

CC-0...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया !　　　　　　प्रकाशित हो गया !!

बालक-बालिकाओं का प्यारा पत्र

बाल-विनोद

जिसके

छठे वर्ष का प्रथम अंक वसंतांक के रूप में निकला है।

इसमें क्या है ?

१. रावराजा डॉ० श्यामविहारी मिश्र, रायबहादुर श्रीशुकदेवविहारी मिश्र, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, श्रीमोहनलाल द्विवेदी, प्रो० व्रजमोहन तिवारी आदि हिंदी के धुरंधर विद्वानों के लेख और कविताएँ।

२. मुख-पृष्ठ पर बाल-कृष्ण की नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति।

३. प्रथम पृष्ठ पर श्रीहकीमजी द्वारा बनाया हुआ बाल-वसंत का तिरंगा चित्र।

४. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४८ पृष्ठ।

५. मज़ेदार चुलबुलाती हुई बालकों की कहानियाँ।

६. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन।

७. भीषण 'ख़ैबर के दर्रे' तथा वहाँ के निवासियों का हाल।

८. ४० इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप फड़क उठेंगे।

९. प्रसिद्ध गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित तथा उसके प्रतिभाशाली अध्यक्ष सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव द्वारा प्रकाशित इस पत्र को देखकर आप लोट-पोट हो जायँगे।

आज ही ग्राहक बनें !

इसका वार्षिक मूल्य केवल २॥)

पर सुधा के ग्राहकों से २)

।) के टिकट भेजकर नमूना मँगाकर जाँच कर लें। नमूना पसंद आने पर ।) मुजरा दिए जायँगे।

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

संपादक 'बाल-विनोद'

कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ — लाभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात को गाँठ बाँध ले !

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुण-गान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती, ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेस-लाटरी में धन की प्राप्ति वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है,

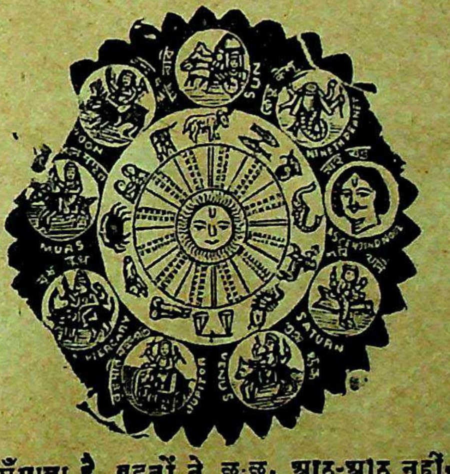

इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य २॥=)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ३॥=)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से २ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत लिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनवार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे रेस में [illegible] असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस० एडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, [illegible] गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात सेर दूध प्रतिदिन हज़म कर लो—

न कोई दवाई खाओ, न व्यायाम करो

कई जीर्ण रोगी और दुबले-पतले आदमी मोटे-ताज़े, बलवान् और नीरोग होने की इच्छा में इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। उनको उचित है कि भाँति-भाँति की विषैली ओषधियाँ खाकर अपने शरीर का सत्यानास करने से पहले एक बार दुग्ध-चिकित्सा का अनुभव करके देखें। 'दुग्ध-गुण-विधान' इस विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है, जिससे न्यूयार्क (अमेरिका)-निवासी मि० फ़ील्ड ने साढ़े सात सेर दूध प्रतिदिन हज़म करके ३३ सेर वज़न बढ़ा लिया था। दुग्ध में सर्व-रोग-नाशक शक्ति है, तभी तो शास्त्रों में इसे भूलोक का अमृत कहा गया है। किंतु खेद है कि दुग्ध-प्रधान भारतवासियों को उसका उपयोग करना नहीं आता। यदि आप चाहते हैं कि बिना किसी वैद्य-डॉक्टर को फ़ीस दिए घर में ही सर्वरोगों का सरलता-पूर्वक इलाज कर लिया जाय, तो 'दुग्ध-गुण-विधान' पुस्तक अवश्य मँगाकर पढ़ें। संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) दुग्ध की रासायनिक जाँच, (२) दुग्ध क्या है?, (३) दुग्ध-परीक्षा, (४) कच्चे दूध को रखने की विधि, (५) दुग्ध-पान की विधि, (६) हम जिस प्रकार दूध पीते हैं, वह बिलकुल ही ग़लत और हानिकारक है, (७) दुग्ध-चिकित्सा (एक ऐसी विधि, जिससे प्रत्येक असाध्य रोगी का रोग तीन-चार सप्ताह में जड़-मूल से नष्ट हो जाता है), (८) सेरों दूध पचाने की विधि, (९) शरीर का वज़न बढ़ाना, (१०) प्रतिदिन किसी प्रकार का व्यायाम किए और बिना दवा खाए सात सेर दूध पान करके पचाने की विधि और (११) पुरानी कोष्ठबद्धता मिटाने की विधि।

इसके अतिरिक्त केवल दूध से ही सिर से पैर तक के सब रोगों का इलाज करना बताया है, जिनमें मस्तिष्क की निर्बलता, उन्माद, पागलपन, अपस्मार (मृगी), संग्रहणी, मधुमेह, बवासीर, राजयक्ष्मा (तपेदिक़) आदि रोगों तथा स्त्री और बालकों के होनेवाले सर्व रोगों का इलाज, यहाँ तक कि दुग्ध से अनेक भस्मों के बनाने की विधियाँ लिखी गई हैं। सारांश, पुस्तक में भारतीय और पश्चिमीय डॉक्टरों के क्रियात्मक अनुभव और संन्यासियों के गुप्त भेद बंद कर दिए हैं। पुस्तक मोतियों के साथ तोलने योग्य है। मूल्य केवल १), पोस्टेज ।-)

केवल ५० दिन में अँगरेज़ी बोलना सीखो

यह हमारा दावा है, जिसे आज तक कोई झूठा नहीं कर सका। जिस प्रकार अँगरेज़-माताएँ अपने बालकों को अँगरेज़ी बोलना सिखाती हैं, और तीन-चार वर्ष का बालक अँगरेज़ी में भले प्रकार बातें करने लगता है (हालाँकि उसने अँगरेज़ी का एक शब्द भी स्कूल में जाकर नहीं सीखा), ठीक उसी प्राकृतिक नियमानुसार हम यह ३५० पृष्ठ की पुस्तक तैयार करने में सफल हो सके हैं। पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गई है कि ५० दिन में भले प्रकार याद हो जाती है। इस पुस्तक की सहायता से अनेक स्त्री-पुरुष तथा लड़के-लड़कियाँ केवल ५० दिन में ही अँगरेज़ी में धड़ाधड़, धारा-प्रवाह-रूप से वार्तालाप करने योग्य हो गए हैं। मूल्य १॥), पोस्टेज ।=)

पता—रसायन-कार्यालय, (सु०) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. ऊषा (कविता)—[लेखक, महाकवि श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ... १

२. राष्ट्र-भाषा (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव २

३. हिंदी बनाम उर्दू—[लेखक, श्री-वेंकटेशनारायण तिवारी ३

४. भारत के सार्वजनिक कार्य और उनके निर्वाह के साधन—[लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए० ... १२

५. प्रेम का आदर्श—[लेखक, श्रीयुत गौरीशंकर ओझा २६

६. श्रीवृंदावनलाल वर्मा—[लेखक, उनसे एक परिचित ३४

धातुपौष्टिक व शक्ति-वर्धक

मदनमंजरी

ये गोलियाँ स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कब्जियत आदि रोगों को नष्ट करके बल व वीर्य बढ़ाकर मस्त बनाती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० का रु० १)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ—निगम मेडिकल हाल, अमीनाबाद-रोड

बनारस एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

कानपुर—गंगाप्रसाद-शिवशंकर वाजपेयी, नयागंज

पे लि के न

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

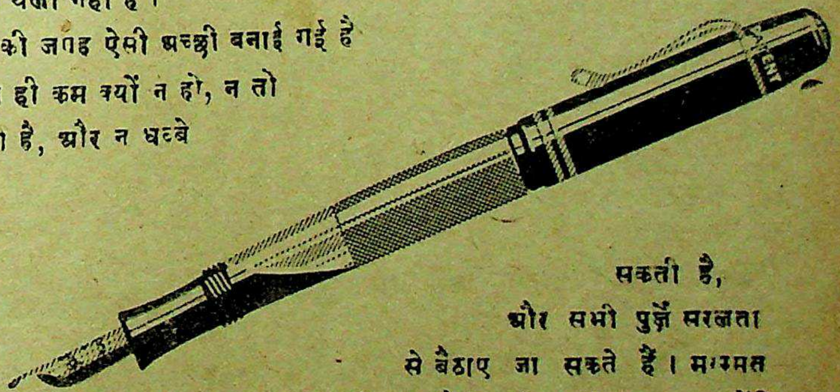

यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल दुरुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।

साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

गौथेर वागनेर हानोवर

पारदर्शक

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशल जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
७. तुम (कविता)—[लेखक, श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह	३८
८. छुट्टी (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत सियारामशरण गुप्त	३९
९. बिहार के उत्तुंग शैल-शिखर पर (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत ऋतलालप्रसाद वर्मा	४३
१०. दोनों के बीच में (व्यंग्य-चित्र) ...	४७
११. नेत्रों की मानसिक सौर चिकित्सा (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत डॉ० आर० एस्० अग्रवाल नेत्र-चिकित्सक, दिल्ली ...	४८
१२. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह	५२
१३. गीत (कविता)—[लेखक, ज्योतिषार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ...	५२
१४. चंदा मामा (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	५३

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी औषधियाँ

एक लाख रोगियों पर अनुभूत दवा

ब्राह्मी रसायन

धातुक्षीणता, प्रमेह, स्वप्नदोष, निर्बलता व नपुंसकता की परीक्षित दवा

इसके सेवन से बीस प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष, वीर्य का पतला होना, मूत्र के आगे या पीछे वीर्य-बिंदु का टपकना, धातुक्षीणता, पाख़ाने के वक्त वीर्य निकलना, नपुंसकता, लाल-पीला या गरम पेशाब होना, प्रसंग की सामर्थ्य न रहना, वर्षों की कमज़ोरी, शरीर की दुर्बलता आदि रोग तत्काल नाश होते हैं।

यह औषधि मस्तिष्क की तमाम कमज़ोरियों को दूर कर देती है। यह ब्राह्मी बूटी के रस की सहस्रों भावनाएँ देकर सिद्ध की जाती है। खोई हुई याददाश्त को पुनः लौटाती और पहले से भी अधिक बढ़ा देती है। ब्राह्मी रसायन रंग को निखारती और चेहरे पर सुर्ख़ी लाती है। मूल्य १६ दिन के योग्य ३२ गोली ~~ डाक-महसूल ।=)

कामिनीवशीकरण

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है। जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खायँगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है। जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मूल्य ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५), ८ गोली का २।।।)

गर्भ-निवारक—इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता। जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं, वे 'गर्भ-निवारक' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होंगी। मूल्य फ़ी शीशी १॥), डाक-ख़र्च ।=)

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मूल्य छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

मँगाने का पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मीऔषधालय, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१५. राष्ट्रपति सुभासचंद्र बोस का चुनाव—[लेखक, श्रीपं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, एडवोकेट ... ६३

१६. दो पहलू (व्यंग्य-चित्र) ६८

१७. सुधा-चित्रावली... ... ... ६६

१८. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' एम्० ए०, साहित्याचार्य, श्रीयुत उदयशंकर भट्ट, श्रीमती शांतिदेवी वैश्य 'शांति' साहित्यरत्न, श्रीयुत अवध उपाध्याय और श्रीयुत संतराम बी० ए० ७३

१९. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत 'उमेश' एम्० ए०, श्रीयुतब्रजमोहन तिवारी एम्०ए०, एल्० टी० और एक इतिहास-प्रेमी... ... ८१

२०. कुसुम ८५

२१. धारा (संपादकीय विचार) ... ८६

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

शेख······अली—मुहल्ला······अमृतसर।

ले०-कविराज हरनाम दास बी. ए., लाहौर।

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेक़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

दिवाली-सेल

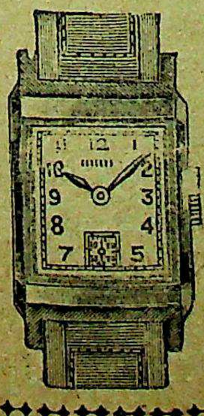

ये आला दरजे की, फ़ैशनेबुल, सच्चा और ठीक समय देनेवाली, लीवर मशीनरी, निहायत ख़ूबसूरत घड़ियाँ जो एक बार ख़रीद लेता है, उसको ज़िंदगी भर दूसरी घड़ी ख़रीदने की ज़रूरत नहीं पड़ती। ३ साल तक घड़ी का एक पुर्ज़ा भी ख़राब नहीं हो सकता। गोल, चमाचम चमकती हाथ की घड़ी चमड़े या रेशम के फ़ीते के साथ २।॥≡); सेकेंड की सुईवाली सुपीरियर रिस्टवाच ३॥); सोने के-से रंगवाली मनोहर हाथ-घड़ी ४॥); रेडियम ४॥); रेक्टैंगुलर ६॥); रेक्टैंगुलर और सुनहली ७॥); १० ज्वेल की हुई रेक्टैंगुलर क्रोमियम ८) में ही मिलेगी। लीवर पाकेट-वाच २।); बी० टाइम-पीस १।॥≡)

एम्० एल्० वॉच कं० (एस्० एल्०), १०८, काटन-स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. रुक्मिणी-संदेश १

(ख) दुरंगे

२. आचार्य श्रीनरेंद्रदेवजी एम्० एल्० ए० ४२

३. पं० श्रीरत्नजी शुक्ल एम्० एल्० ए० ४३

(ग) व्यंग्य

४. दोनो के बीच में—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंहजी ४७

५. दो पहलू—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ६८

सिद्ध मंत्र १००) इनाम

जो काम लाखों रुपए ख़र्च करके नहीं कर सकते, इस मंत्र के ५ बार के जप से कर सकते हैं। कष्ट या साधन की ज़रूरत नहीं। यह मंत्र सिद्ध वशीकरण है। आप जिसे चाहते हैं, चाहे वह पत्थर-दिल क्यों न हो, आपके पास चला आवेगा। इससे भाग्योदय हो नौकरी मिलती है। नौकरी में तरक़्क़ी, मुक़दमों में जीत, व्यापार में लाभ और परीक्षा में पास होता है। दक्षिणा १॥), डाक-महसूल ।=) झूठा साबित करने पर १००) इनाम।

पता—योगी-आश्रम नं० २१

पो०—कतरी सराय (गया)

नपुंसकता के लिए जर्मनी क्रीम

यह उन पुरुषों के लये है जो किसी वजह से अपना यौवन खो चुके हों और अपने विवाहित जीवन का जी भर कर आनन्द उठाना चाहते हों, तो वे इस क्रीम का सेवन करें। इसके सेवन से आवश्यक समय पर भी शरमिन्दा होने का समय नहीं आयेगा। एक बार अवश्य प्रयोग में लाएं। मूल्य केवल २) दो रुपया।

स्त्रियों के लिए जर्मनी क्रीम—यह क्रीम उन स्त्रियों के लिये आवश्यक है जो किसी भयानक बीमारी की वजह से अपने विवाहित जीवन को आनन्दित न बना सकती हों, जिनके लिये गृहस्थ का जीवन दुखमय हो, जिनके अपने स्वामी के साथ सदैव लड़ाई झगड़े होते हों। बस इस क्रीम को एक सप्ताह सेवन करें। इसके सेवन से बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री भी युवती के समान मालूम होगी। मूल्य १)

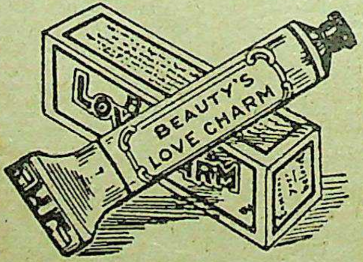

गर्भ निरोधक रबड़ की थैली—अधिक संतान से बचे, आपनी प्यारी स्त्री को शीघ्र ही कुरूप और वृद्ध न होने के लिये इन थैलियों का सेवन करें। आतशक और सुजाक आदि भयानक बीमारियों से आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगी।

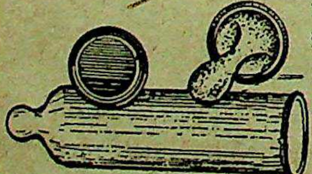

पतली रबड़ की थैली—जो केवल एक बार ही सेवन हो सके मूल्य १) रु० प्रति दर्जन।

मोटी रबड़ की थैली—जो कई बार सेवन हो सके और भारतवर्ष की गर्मी में पांच वर्ष तक खराब न हो। मूल्य केवल २॥) प्रति दर्जन।

कामा को०, : : : लाहौर रोड. : : : अमृतसर।

खिज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५); चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) सादे

	पृष्ठ
६. पारसनाथ-मंदिर	४४
७. डॉ० आर० एस्० अग्रवाल	४८
८-९. नेत्रों की मानसिक और चिकित्सा-संबंधी २ चित्र	५० और ५१
१०. दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की कुछ प्रतिनिधि महिलाएँ ...	६९
११. लेडी इरविन-कॉलेज, दिल्ली की कुछ छात्राएँ	७०
१२. श्रीमती गाडोदिया	७१
१३. कुमारी हीरा बोस	७१
१४. दिल्ली के अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की बाहरी बैठक का एक दृश्य	७२
१५. श्रीमती शांतिदेवी वैश्य 'शांति' साहित्यरत्न	७७
१६. स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'	९५

श्वेतकुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी-बूटी

इस अद्भुत शक्तिशाली जड़ी-बूटी के केवल तीन ही दिन के लेप से कठिन-से-कठिन और पुराना-से-पुराना श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) या चरक-सा महारोग जड़ से आराम होता है। अगर आप इनामी विज्ञापनों के धोखे में पड़कर ठगे जा चुके हैं, तो एक बार इस वनौषधि को इस्तेमाल कर आरोग्य होवें। विश्वास न हो, तो एक आने का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मू० १॥) रु०

पता—श्रीवीरेंद्रप्रसाद, नं० ५१, पो० परवलपुर (पटना)

योगेंद्र कवच

(शास्त्रोक्त)

इस अद्भुत शक्तिशाली तथा दैवी शक्तिसंपन्न सिद्ध वशीकरण-यंत्र के केवल धारण करने-मात्र से ही कठिन-से-कठिन काम भी सिद्ध होता है। यंत्र के चमत्कारी प्रभाव से कोई स्त्री या पुरुष कैसा ही कठोर-हृदय, अभिमानी क्यों न हो, आपसे मिलकर शादी (प्रेम) के लिये इच्छा प्रकट करेगी। इसके द्वारा आपका दुर्भाग्य और शत्रु का नाश, नौकरी, संतान, धन की प्राप्ति, व्यापार में लाभ, परीक्षा में पास, तरक्क़ी, मुक़द्दमे, जुआ, लाटरी में जीत, नवग्रहों की शांति तथा कठिन-से-कठिन रोगों का नाश होकर भाग्योदय होता है। शास्त्रोक्त नहीं है, ऐसा साबित करने पर १००) रु० इनाम। मूल्य ताम्र २) रु०, चाँदी का ३।), असली सोने का ६) रु०

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम, पो० परवलपुर (पटना)

आयु घट गई !

आरोग्यता चलती बनी—

बुद्धि मंद हो गई ! क्यों ?

यदि आप जानना चाहते हैं, तो 'जीवन - सुधार'-नामक पुस्तक केवल एक कार्ड लिखकर मुफ़्त शीघ्र मँगाइए। आज ही लिखें।

पता—रामकृष्ण-औषधालय, जबलपुर (सी० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेत कुष्ठ की असली फ़क़ीरी जड़ी

इस जड़ी के एक रोज़ के तीन ही बार के लेप से सफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दाम वापिस। इतमीनान न हो, तो एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। क़ीमत ३)

दमा-रोग की दवा—दाम ५)

स्वप्न-दोष की फ़क़ीरी जड़ी—दाम २)

गलित कुष्ठ या सुनबहरी—क़ीमत ७)

पता—वैद्यराज पंडित मथुरा पाठक
पो० मिथिला-मेडिकल हाल, नं० ५५५
दरभंगा

शर्त—विज्ञापन के अनुसार हमारी पुस्तकें न होंगी, तो मूल्य वापस देंगे !

१॥) में दस पुस्तकें

१. कोकशास्त्र—स्त्री-पुरुषों के भेद, ८४ चित्रोंवाला शकुनादि	मूल्य १।)
२. प्रेत-सिद्धि—भूतों को वश कर रोगी को अच्छा करना आदि	।)
३. टेलीग्राफ़—तार का लेना-देना सिखाने की अपूर्व पुस्तक	।)
४. गर्भ-परीक्षा—गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहचान पहले ही करना	।)
५. आरोग्य जीवन—गुप्त रोगों का इलाज स्वयं करना सीखो	।)
६. सच्चा जादू—हाथ-सफ़ाई के आश्चर्य-जनक खेल सीखो	।)
७. इँगलिश—अँगरेज़ी पढ़ना-लिखना सीखने की रीति	१)
८. आत्मविद्या—मृतक आत्माओं से बातचीत करना	)
९. वशीकरण—सिद्ध करके मनमाना काज करा लो	।)
१०. शर्बत—शर्बत बनाने के सरल नुस्खे व सरल रीति	।)

ऊपर लिखी ५०० पृष्ठ की अनमोल दस पुस्तकों का सेट मूल्य १॥), डाक-व्यय-पैकिंग आठ आना अलग।

ठाली बैठों को हज़ारों रुपया पैदा करानेवाली एक पुस्तक ?

ख़ज़ाने की कुंजी

इससे अनेकों प्रकार के हुनर विना उस्ताद के घर बैठे सीख लो, जैसे लकड़ी व चमड़े की वारनिश, कई प्रकार के साबुन, रोशनाई, ख़ुशबूदार तैल व इत्र, शर्बत-अचार-मुरब्बा-पान का मसाला, आतिशबाज़ी, बैटरी से गिलट करना, चाँदी का पानी बनाना, दियासलाई बनाना, पारे का गिलास-कटोरा बनाना, नक़ली केसर-कस्तूरी बनाना, सींग के खिलौना, खिजाब, मंजन, अगर की बत्ती, मोम, बर्फ़ की कुलफ़ी जमाना, सोने के वर्क़, कपूर की माला, काँच जोड़ने का मसाला, साँप काटे की दवा, सिर-दर्द की दवा, अर्क़ कपूर, बाल उड़ाने का पाउडर, पत्थर जोड़ने का मसाला, नमक सुलेमानी, पिपरमेंट की मिठाई, रबड़ की मुहर आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीब इस ग्रंथ में लिखी है। कहाँ तक लिखें, इसका एक-एक हुनर पाँच-पाँच रुपए को भी सस्ता है। मूल्य भी सबके लाभार्थ सिर्फ़ १), डाक-व्यय-पैकिंग ।=)

पूरा पता—मैनेजर, दी बजरंग ऐंड कंपनी, आगरा-रोड, अलीगढ़ सिटी (SU)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १२
खंड २

माघ, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)—
फ़रवरी, १९३९

संख्या १
पूर्ण संख्या १५१

ऊषा

[महाकवि श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

है लालायित नेत्र-प्रीति-जननी, है लालिमा से लसी,
है लीला-सरि की ललाम लहरी प्रातः-प्रभा-रंजिनी ;
है प्राची-कर-पालिता प्रिय सुता, है मूर्ति माधुर्य की,
ऊषा है अनुराग-राग-वलिता आलोक - मालामयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-भाषा

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

(१)

भाषा-जागृति तें जगत निद्रित राष्ट्र-समाज ;
साहित-जागृति में बसति भारत-मुकति—स्वराज ।

(२)

हित सौं साहित-प्रगति कै, लै भाषा-अवलंब—
काटौ भारत-अंब के दृढ़ बंधन अविलंब ।

(३)

प्रेम, संगठन, एकता भाषा ही सों होय ;
जागृति बिन भाषा-प्रगति करत न जग में कोय ।

(४)

राखन चाहति जनम-भू भेद न हममें रंच ;
सहज सुलभ आदरस यह भाषा ही के मंच ।

(५)

इकै जाति, भाषा इकै, इकै जु लिपि-बिसतार—
भारत-भू मैं होय, तौ टूटैं बंधन-तार ।

(६)

पसु-पंछी हू प्रेम सौं निज भाषा बतराहिं ;
सो नर सूकर सों बुरो, जा मुख निकसत नाहिं ।

(७)

जगत जगत नवग्याँन तें, ग्याँन बसत भाषान ;
बिन भाषा-रस-पान के नर-नारी पाषान ।

नोट—साहित = साहित्य । मुकति = मुक्ति । जनम-भू = जन्मभूमि । आदरस = आदर्श । बिसतार = विस्तार । पसु-पंछी = पशु-पक्षी । नवग्याँन = नवज्ञान । पाषान = पाषाण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी बनाम उर्दू

[श्रीवेंकटेशनारायण तिवारी]

(१)

इस सूबे में, ग़दर के बाद से, हिंदी-उर्दू का झगड़ा चला आता है। नवाबी अमलदारी के ज़माने में सूबे की सरकारी ज़बान उर्दू थी। दरबार में उर्दू का बोलबाला था। दरबार के मुसाहिब उर्दू पर कमाल हासिल कर नवाबों के कृपा-पात्र बनने की उम्मीद करते थे। हिंदी का हाल बुरा था। उसका कोई पुरसाहाल न था। देहातों में, ग़रीबों के घरों में, व्यापारियों के बहीखातों में, पंडितों के पोथी-पत्रों या जन्म-कुंडलियों में हिंदी को जगह मिल जाती थी, क्योंकि बहुत ज़माने से इस सूबे की ज़बान संस्कृत से प्राकृत और प्राकृत से हिंदी में बदलकर इसी रूप में प्रचलित है। इसी हिंदी-भाषा को उर्दू और फ़ारसी के नए और पुराने भक्त तिरस्कार की दृष्टि से सदा देखते आए हैं। नवाबी या ब्रिटिश अदालतों या सरकारी दफ़्तरों में चूँकि उर्दू रायज़ थी, इसलिये, नौकरी पाने की ग़रज़ से, लोग उर्दू-भाषा ही सीखते थे। इस तरह हिंदू और मुसलमान मुलाज़िम और वकला उर्दू लिखने और बोलने लगे। जिस ज़बान में ये लोग आपस में—किंतु अपने घरवालों के साथ नहीं—बातचीत करने के आदी थे, उसी को ये सूबे की ज़बान समझ बैठे। अगर कभी कोई इनके इन ख़याल को ग़लत बताता, उर्दू के साथ-साथ हिंदी को सरकारी दफ़्तरों और अदालतों में समान रुतबा देने के पक्ष में आवाज़ उठाता, तो उसे तरह-तरह से बदनाम कर उसकी ज़बान पर ताला लगाने की कोशिशें की जाती थीं। जो हाल पहले था, वही आज भी है, यद्यपि अब उर्दू के अनुरक्तों की तादाद दिन-प्रति-दिन घटती और हिंदी के हिमायतियों की संख्या दिन-दूनी और रात-चौगुनी बढ़ती जा रही है। हालाँकि उर्दू बोलने और लिखनेवालों में मुसलमानों और हिंदुओं की कमोबेश तादाद मिलती है; लेकिन इसके होते हुए भी इस सूबे के मुसलमानों ने उर्दू को मुसलमानों की ज़बान क़रार देकर इस मसले को सांप्रदायिक हार-जीत का एक सवाल बना दिया है। इधर जब से कांग्रेस के हाथ में सूबे के शासन की बागडोर आई, तब से उर्दूवालों के शोर-ग़ुल का कुछ ठिकाना नहीं। हमारे मुसलमान भाई हिंदी-उर्दू के सवाल पर कांग्रेसी सरकार की कड़ी-से-कड़ी समालोचना करने लगे हैं। अगर इन दोस्तों से कोई पूछे कि कांग्रेसी सरकारों ने क्या किया, तो वे जवाब में कोई साफ़ बात नहीं बताते। मेरे लाख पूछने पर भी कि कांग्रेसी सरकार ने कौन-सी ऐसी बात की, जिसकी वजह से उर्दू-ज़बान या लिपि को धक्का पहुँचा, महज़ उत्तर में ख़ामोशी आ खड़ी हो जाती है। कहने को जब कुछ हो, तब कुछ कहा भी जाय। अगर कुछ शिकायतें सुनाई दीं, तो केवल इस बात की कि फ़लाँ मंत्री ने अपनी तक़रीर में संस्कृत के ज़्यादा लफ़्ज़ों का इस्तेमाल किया या फ़लाँ कांग्रेसी नेता ने ख़त उर्दू में न लिखकर हिंदी में लिखा। जो लोग एसेंबली को 'एवान' और माननीय स्पीकर को 'जनाबे-सद्र' या 'जनाबे-आली' कहते हुए भी दावा करते हैं कि वे सूबे की आम-फ़हम ज़बान बोल रहे हैं, वे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सभापति महोदय' और 'धारा-सभा' सुनते ही चिल्लाने लगते हैं कि ये शब्द ग़ैरमानूस हैं। अज्ञानी में एक ख़ूबी होती है। उसे अपनी कमज़ोरियों या ख़ामियों का पता नहीं रहता, और 'सभापति' या 'धारा-सभा' के समान जन-साधारण में प्रचलित, किंतु इनके-से चंद सज्जनों की जमात के लिये अपरिचित, शब्दों के इस्तेमाल पर नाक-भौं चढ़ाने लगता है। इसी तरह हमारे दोस्त भी भाषा-संबंधी अपने अज्ञान को माप-दंड बनाते हैं दूसरों के शब्द-ज्ञान को नापने के लिये! इनके भांडार में थोड़े-से लफ़्ज़ हैं। उनके अलावा अगर कोई दूसरे लफ़्ज़ इस्तेमाल करे, तो ये फ़ौरन् बिगड़ उठते हैं कि बोलनेवाले को सही ज़बान का इल्म नहीं।

इन्हीं लोगों में हमें अपने एक प्रसिद्ध और सम्मानित विद्वान् का नाम भी लेना पड़ता है। आपने हिंदी-उर्दू के बारे में जो दिलचस्प बातें इधर थोड़े दिनों से लिखी या कही हैं, उनकी जितनी तारीफ़ की जाय, वह थोड़ी है। उनके विचारों और उनसे भी बढ़कर उन विचारों के प्रकट करने के उनके ढंग को देखकर मेरा तो काफ़ी मनोरंजन हुआ। लेकिन मेरी बेअदबी मुआफ़ की जाय, अगर मैं यह कहने का दुस्साहस करूँ कि इस मसले पर जिस सरगर्मी के साथ इधर कुछ दिनों से वह बोल या लिख रहे हैं, उसे देखकर हम यह कहने के लिये मजबूर हो जाते हैं कि उनके ख़यालात में गर्मी की मात्रा अधिक और विशुद्ध विवेक की शोचनीय कमी है। वह कुछ सम्मानित मौलानाओं की हाँ में हाँ मिलाते हुए संस्कृत और अरबी-ज़बान के कठिन शब्दों को उर्दू या हिंदी के दायरे से भगाने के हामी हो गए हैं। आपको शिकायत है कि हिंदी-वाले संस्कृत शब्दों को ज़बान में ज़बरदस्ती ठूँसने की चेष्टा कर रहे हैं। आपकी सम्मति है कि ज़बान सहल हो, जिसमें कठोर या ग़ैरमानूस शब्दों का इस्तेमाल न हो। मुझे नहीं मालूम कि आपकी राय में कौन-सी ज़बान सहल है या कठिन। बदक़िस्मती से मैंने उनकी क़लम से हिंदी में न आज तक कोई लेख देखा, और न कोई ख़त पढ़ा। इसलिये मैं नहीं जानता कि आप किस तरह की हिंदी को सहल हिंदी कहेंगे। लेकिन अगर वह अपनी तक़रीरों को हिंदी-उर्दू में अनुवादित करके छपवा दें, तो इस सूबे के बदनसीब अख़बारनवीसों को इस बात की इसलाह मिल जायगी कि सूबे की जनता को कैसी ज़बान लिखना और बोलना चाहिए। आप ही के हमख़याल एक आदरणीय मौलाना साहब हैं। उनकी बहुत-सी स्पीचें मैंने सुनी हैं। उनके कई लेख भी मैंने देखे हैं। उन लेखों को, देहातों की कौन कहे, शहरों में भी पाँच फ़ीसदी से ज़्यादा आदमी आसानी से नहीं समझ सकते। एक दूसरे ऐसे ही आदरणीय मौलाना के भी कुछ लेख मैंने पढ़े हैं। वह जिस तरह की उर्दू ज़बान लिखते हैं, अगर वही सहल ज़बान है, तो मैं यही कहूँगा कि इन लोगों के कोषों में 'सहल' के वह मानी नहीं हैं, जो आमतौर से लोग लगाया करते हैं। सर तेज, सर रज़ाअली, चौधरी ख़लीक़ुज़्ज़मा, मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना, मिस्टर फ़ज़्लुलहक़ आदि जितने लोग इस वक़्त उर्दू के हिमायती हैं, उन्होंने हिंदी के समर्थकों पर बेसिर-पैर के बहुत से लांछन लगाए हैं। उनसे मैं बहुत विनम्रता से यह पूछने की धृष्टता करता हूँ कि उनमें से कितनों ने इस बात के समझने की कोशिश की है कि हिंदी है क्या, हिंदी और संस्कृत का इस मुल्क के दूसरे सूबों की ज़बानों से क्या संबंध है, और इस मुल्क की जो आम ज़बान होगी, उसमें अरबी और फ़ारसी के लफ़्ज़ों और इस्तलाहों—पारिभाषिक शब्दों—का कितना हिस्सा हो सकता है? किसी उर्दूदाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने आज तक इन सवालों का जवाब नहीं दिया। शायद इसीलिये नहीं दिया कि इसका कोई ऐसा जवाब हो ही नहीं सकता, जिससे उन्हीं के पक्ष की व्यापक कमज़ोरी न खुल जाय। क्या वजह है कि अगर इस सूबे की ज़बान उर्दू है, तो यहाँ ग़ालिब, हाली और अकबर के दीवानों के मुक़ाबिले में तुलसीदास की रामायण का हज़ारहा गुना अधिक प्रचार हो? अगर इस सूबे की ज़बान वह ज़बान है, जिसमें ग़ालिब ने अपनी शेरें कहीं या हाली ने अपनी मुसद्दस लिखी, तो फिर गाँव-गाँव में उनकी-शेरों या इनकी मुसद्दस का उतना ही प्रचार क्यों नहीं, जितना आजदिन रामायण का है? मैं जब सन् १९२२ ई० में ब्रिटिश गायना गया था, तब मैंने वहाँ हिंदोस्तान के कुलियों को रात में तुलसीदास की रामायण का पाठ करते हुए महीनों सुना। जहाँ तुलसीदास की रामायण हिंदोस्तान से १३,००० मील दूर ब्रिटिश गायना में चालू है, वहाँ इस सूबे से गए हुए सर तेज के भाई-बंद तुलसीदास के स्थान में ग़ालिब, हाली या अकबर को क्यों नहीं पढ़ा करते? क्या इसकी वजह यह नहीं हो सकती या है कि तुलसीदास की रामायण उस ज़बान में लिखी गई है, जो इस सूबे के रहनेवालों की ज़बान है; और जिस ज़बान में ग़ालिब, हाली या अकबर ने लिखा है, वह ज़बान यहाँ के मुट्ठी-भर पढ़े-लिखे बाबू लोगों की ज़बान भले ही हो, लेकिन वह इस सूबे की ज़बान न थी, न है, और न हो सकती है। इसलिये यह देखकर हमें बेहद तकलीफ़ होती है कि फ़िरक़ावाराना तअस्सुब की वजह से इस मसले पर आजकल ज़रूरत से ज़्यादा सरगर्मी दिखाई जा रही है, उछल-कूद भी बेतरह हो रही है; हालाँकि इसके लिये न कोई अवसर है, और न कोई ज़रूरत ही मालूम होती है।

कांग्रेस को बदनाम करने के लिये जहाँ और बहुत-सी बातें ईजाद की गई हैं, वहाँ उस पर एक यह भी मनगढ़ंत इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह उर्दू के स्थान में हिंदी को बैठाकर मुसलिम संस्कृति या इस्लामी कलचर की जड़ पर कुल्हाड़ी चलाना चाहती है। हमारे एक मुसलिम दोस्त ने, जिन्होंने बहुत ही संजीदा तबियत पाई है, एक बार मुझसे फ़रमाया कि उर्दू को निकालकर इस सूबेवाले इस्लामिक प्रभावों पर हमला करना चाहते हैं।

मैंने उनसे बड़े अदब के साथ पूछा कि यदि आप 'सभापति' को 'जनाबे-सद्र' कहना चाहते हैं, तो मेहरबानी करके बताइए कि मैंने या मेरे और किसी दोस्त ने आपको 'जनाबे-सद्र' कहने से कब रोका या उस पर एतराज़ किया। लेकिन अगर मैं 'जनाबे-सद्र' के स्थान पर 'सभापति महोदय' कहना चाहता हूँ, तो आप क्यों मेरी ज़बान पकड़ना चाहते हैं। आपको आज़ादी है कि यदि आप चाहें, तो 'अहिंसा' न कहकर उसकी जगह 'अदम तशद्दुद' कहें, 'सत्याग्रह' न कहकर 'सिविल नाफ़रमानी' का इस्तेमाल करें; लेकिन जिस तरह मैं आपको इन अलफ़ाज़ के इस्तेमाल से नहीं रोकता, जिस तरह मैं आपको लफ़्ज़ों के इस्तेमाल में आज़ादी देता हूँ, तो हमारा क्या क़ुसूर है, और आप हमसे क्यों बिगड़ते हैं, अगर वही आज़ादी हम अपने लिये चाहते हैं?

उन्होंने जवाब में कहा—"वाह जी वाह, ख़ूब रही। अरबी और फ़ारसी लफ़्ज़ों ही के साथ इस्लामी जज़बात और असरात के क़ायम रहने की इस मुल्क में उम्मीद है। आप लोग अरबी और फ़ारसी के लफ़्ज़ों का इस्तेमाल छोड़ देंगे, तो इस सूबे से ख़ासकर और इस मुल्क से आम तौर पर इस्लामी जज़बात और कलचर का नामोनिशान मिट जायगा।"

मैंने डरते हुए जवाब दिया—"मैं इस्लामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जज़बात और असरात का, जैसा आप पर रोशन है, मुख़ालिफ़ नहीं। मैंने जेल में उर्दू पढ़ी, और पढ़ी सिर्फ़ इसलिये कि ग़ालिब, अकबर और उर्दू के अन्य बड़े-बड़े शायरों के कलामों को उन्हीं की ज़बान में पढ़ सकूँ। मैंने अपने बच्चों को भी उर्दू पढ़ाई है। उन्हें उर्दू इसलिये पढ़ाई है कि मेरी यह क़तई राय है कि यह सूबा द्विभाषी है, और इसके रहनेवालों का यह फ़र्ज़ है कि दोनो ज़बानों से वे इक-साँ वाक़िफ़ हों। मैं हिंदू हूँ, मगर पैदायश से। इसमें मेरा क़ुसूर नहीं। लेकिन मुसलमानों के मज़हब, मुसलिम तहज़ीब, मुसलिम ग्रंथों की इज़्ज़त करना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। मैंने तो ग़ालिब को पढ़ा। क्या आपने कभी तुलसीदास को पढ़ने का कष्ट उठाया? क्या वजह है कि अकबर तो आपको प्यारे हों, लेकिन सूरदास और रसखान से आपको कुछ भी मुहब्बत न हो। जिस सूबे में आप पैदा हुए हैं, उसी सूबे में ये लोग भी पैदा हुए थे, और उन्होंने अपने-अपने दायरे में कमाल कर दिखाया है। उन्होंने इतने ऊँचे दर्जे की शायरी की है कि इस मुल्क के बाहर भी लोग उनकी तारीफ़ करते हुए नहीं थकते। अगर आपने सूरदास या तुलसीदास को नहीं पढ़ा, तो इसमें नुक़सान किसका हुआ—आपका या मेरा? मुझे तो ग़ालिब और अकबर पर उतना ही नाज़ है, जितना तुलसीदास और सूरदास पर। क्या आप भी अपने लिये यह दावा कर सकते हैं? लेकिन यह सब होते हुए भी अगर मैं 'जनाबे-सद्र' के स्थान में 'सभापति' कहता हूँ, तो आपको कोई शिकायत न होनी चाहिए। इस्लामी जज़बात और असरात किसी के गले के नीचे ज़बरदस्ती नहीं ठूँसे जा सकते। किसी हिंदी बोलनेवाले ने आज तक कभी कहीं पर यह एतराज़ नहीं किया कि फ़लाँ मुसलमान साहब अरबी और फ़ारसी के लफ़्ज़ों को क्यों इतना ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं। लफ़्ज़ों के इस्तेमाल में हर-एक को आज़ादी होनी चाहिए। कुछ लफ़्ज़ ज़िंदा रहेंगे, कुछ मिट जायँगे। यह न मेरे हाथ में है, और न जनाब के हाथ में। इसका फ़ैसला न मैं कर सकता हूँ और न आप। इसका फ़ैसला जनता करेगी। लफ़्ज़ों के जिलाने और मारने की ताक़त जनता में है। कौन लफ़्ज़ ज़िंदा रहेंगे और कौन मर जायँगे, यह आम लोगों की रुचि पर निर्भर है। रिवाज और बोल-चाल ही लफ़्ज़ों के भाग्य को बनाता और बिगाड़ता है। आप जिन लफ़्ज़ों को चाहें, इस्तेमाल करें, और हमें भी आज़ाद कर दें कि जिन लफ़्ज़ों को हम चाहें, इस्तेमाल करें। जनता इस बात को तय करेगी कि मेरे इस्तेमाल किए हुए लफ़्ज़ों को वह पसंद और रायज करेगी या आपके इस्तेमाल किए हुए लफ़्ज़ों को। पंडितों और मौलवियों की मरज़ी के ऊपर यह मुनहसर नहीं कि कौन लफ़्ज़ ज़िंदा रहें और कौन मर जायँ। सरकारी फ़रमानों और पार्लियामेंट के क़ानूनों के बल पर हम न किसी ज़बान को बदल सकते और न बना सकते हैं। यह तो समाज की ज़रूरत और उस ज़रूरत को व्यक्त करने के लिये शब्दों की शक्ति पर मुनहसर है कि कौन शब्द जनता की ज़बान पर रह जायँगे और किनको समाज भूल जायगा।"

मेरे दोस्त ने फ़रमाया—"बात तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन हिंदुओं की तादाद इस मुल्क में बहुत ज़्यादा है। वे जिन अलफ़ाज़ को चाहेंगे, वे रायज हो जायँगे, और जिन्हें न चाहेंगे, वे रायज न हो सकेंगे। इसलिये इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि सरकारी दफ़्तरों और अदालतों में अरबी और फ़ारसी के लफ़्ज़ों को प्रधानता दी जाय। इसी तरह इस सूबे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ास तौर से और दूसरे सूबों में आम तौर से अरबी और फ़ारसी के अल्फ़ाज़ रायज़ रह सकते हैं। अगर ऐसा न होगा, तो इस्लामी असरात का इस मुल्क में ख़ात्मा हो जायगा।"

ऊपर की बातचीत काल्पनिक नहीं। यह मेरे एक बड़े हमदर्द दोस्त के असली ख़यालात का सही उल्लेख है। वह हिंदी के विरोधी नहीं, सिर्फ़ उर्दू के हामी हैं, और मुसलिम असरात को इस मुल्क में ज़िंदा रखना चाहते हैं। ऐसी ही एक बात मि० फ़ज़्लुलहक़ ने, कुछ दिन हुए, पटने में मुसलिम-शिक्षा-कान्फ्रेंस के सभापति के आसन से व्याख्यान देते हुए फ़रमाई थी। उनकी दलील थी कि मुसलमानों के लिये उर्दू पढ़ना इसलिये ज़रूरी है कि उनकी मज़हबी किताबें उर्दू-ज़बान और उर्दू-लिपि में लिखी जाती हैं। जो मुसलमान उर्दू से नावाक़िफ़ है, उसे अपने मज़हब का सही ज्ञान नहीं हो सकता। मुसलमानों के लिये तो उर्दू पढ़ना एक मज़हबी फ़र्ज़ है। मियाँ फ़ज़्लुलहक़ ने मज़हब की दोहाई दी, और मेरे मुसलिम कांग्रेसी दोस्त ने इस्लामी जज़बात को क़ायम रखने के लिये उर्दू की ज़रूरत बताई।

ऐसी दशा में अगर उर्दू के हिमायती चाहते हैं कि हिंदू भी उर्दू पढ़ें, और उनकी इस नीति के विषय में अगर हिंदुओं को संदेह हो, तो कौन-सी अचरज की बात होगी? मैं मानता हूँ, भाषा और संस्कृति में अटूट संबंध है। मैं यह भी मानता हूँ कि भाषा को मिटा देने से किसी जाति या संप्रदाय की आत्मा का समूल नाश हो सकता है। साथ ही, मैं यह भी मानता हूँ कि किसी जीती-जागती भाषा को लाख कोशिश करने पर भी कोई आज तक न मार सका, और न मारने में समर्थ हो सकता है। मैं उर्दू का विरोधी नहीं। उर्दू से मुझे सदैव प्रेम रहा है। मुझे बड़ा अभिमान है कि हमारे सूबे में उर्दू के बड़े-बड़े साहित्यिक पैदा हुए हैं। उनकी कृतियाँ मेरी सांस्कृतिक बपौती की अटूट अंग हैं, लेकिन मैं यह भी मानने को तैयार नहीं कि सिर्फ़ वे ही हमारी सांस्कृतिक निधियाँ हैं या उनके अलावा हमारे पास और कुछ है ही नहीं। मैं कालिदास के देश का वासी हूँ। वाल्मीकि और व्यास उसी मुल्क में पैदा हुए हैं, जिसमें मैंने जन्म पाया है। तुलसीदास, सूरदास और विद्यापति उसी मुल्क के रत्नों में से हैं, जहाँ की राख से मैं बना और जहाँ के आबोदाना से मेरी परवरिश हुई। यह महज़ कोरी लफ़्फ़ाज़ी नहीं। मुझे सचमुच जितना प्रेम तुलसीदास से है, उतना ही ग़ालिब और अकबर से, लेकिन साहित्यिक असहिष्णुता और सांस्कृतिक संकीर्णता को देखकर मेरी तबियत घबराने लगती है। इधर पाँच-छ महीने से मैंने हिंदी-उर्दू के मसले पर उर्दूवालों की जो तक़रीरें पढ़ीं, या गर्मागर्म ख़ुतूत अख़बारों में देखे, उनको पढ़ और देखकर मुझे शर्म आई, और पीड़ा भी हुई। कितने दुर्भाग्य की बात है कि इस सूबे में जो लोग पैदा हुए और पले, वे ही तुलसीदास के प्रति कृतघ्नता प्रकट करें; या जिस ज़बान में इस महापुरुष ने लिखा, उस ज़बान की इन लोगों की निगाह में कोई इज़्ज़त न हो, और उसने जो अनमोल ग्रंथ रचा, उसकी इनकी नज़रों मे कोई वक़त न हो! इसमें तुलसीदास का क़ुसूर नहीं। दुर्भाग्य तो है तुलसीदास के इन हमवतनों का, जो पढ़े-लिखे होते हुए भी अनपढ़ हैं, जो आँखें रहते भी देख नहीं सकते, कान होते हुए भी जो सुन नहीं पाते, सचाई के पास से जो गुज़र जाते हैं, लेकिन सच को पहचान नहीं पाते! ऐसे अर्द्ध-दग्ध जीवों की तंग-ख़याली पर कुछ कहना अनावश्यक है। उनकी मानसिक अपूर्णता ही उनकी कृतघ्नता का दंड है। ऐसे लोग जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-उर्दू के मसले पर रायज़नी करते हैं, तब तो मैं यह दावा करने के लिये तैयार हूँ कि उनकी राय की न कोई वक़त है, और न उन्हें इस मसले पर राय देने का कोई अधिकार ही है। जो सूबे की ज़बान को ख़ुद नहीं जानता, उसके लिये यह दुस्साहस की बात होगी कि वह इसका फ़ैसला दे कि सूबे की ज़बान कैसी होनी चाहिए। इन कूप-मंडूकों को बाहरी दुनिया का न पता है, न इसकी कुछ जानकारी। फिर यह कैसे हमारे पथ-प्रदर्शक बन सकते हैं? कुएँ के मेंढक अगर कुएँ ही को समुद्र समझ बैठ, और समझे बैठे रहना चाहें, तो हमें उनसे झगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन अगर उन्हें हमारे रहनुमा बनने की लालसा सताती है, तो यह ज़रूरी है कि वे बाहरी दुनिया की थोड़ी-बहुत वाक़फ़ियत हासिल कर लें। जो बार एसोशियनों ही को सूबा समझ बैठे हैं, वे सूबे की ज़बान के मसले पर कैसे सही राय क़ायम कर सकते हैं? जिन्हें सार्वजनिक कामों से सूबे के मुख़्तलिफ़ ज़िलों में जाने और वहाँ के देहातियों से बातचीत करने का अवसर मिलता रहता है, वे ही इस बात को बता सकते हैं कि सूबे की असली ज़बान कौन है, और उसमें किस ओर उन्नति की गुंजाइश है। न उर्दूदाँ वकीलों की ओर न सरकारी मुलाज़िमों की ज़बान को हमें सूबे की ज़बान मान लेना चाहिए। इनकी ज़बान तो एक मुट्ठी-भर आदमियों की जमात की ज़बान है। सूबे की ज़बान जो आज है, या जो कल होगी, वह हज़ारों-लाखों किसानों के उन जलसों में सुनाई देती है, जो आजकल कांग्रेस की बदौलत ज़िले-ज़िले में हो रहे हैं। वहाँ शहर से गए हुए बाबू लोग अपनी ज़िंदगी में पहली बार सूबे की ज़बान को अब सीखने लगे हैं। वहीं उस नई ज़बान की नींव पड़ रही है, जो न वह हिंदी होगी, जिसे काशी के कुछ शास्त्री लिखते हैं, और न वह लखनऊ या दिल्ली के मुल्लाओं की ज़बान होगी। वह ज़बान होगी इस देश के खेतिहरों की, हमारे देश के तेली-तमोलियों की। बँगलों में बैठकर लोग चाहे जो कुछ कहें, लेकिन उनके कहने का असर क्या? बहुतों ने उस ख़ब्ती बादशाह की कहानी पढ़ी होगी, जिसने समुद्र की लहरों को आगे न बढ़ने का हुक्म दिया था। शायद उन्हें वह कहानी अब तक याद हो। मैं तो भाषा के डिक्टेटर बनने के आकांक्षियों से विनम्र शब्दों में प्रार्थना करूँगा कि इस कहानी को वे न भूलें, और जब कभी वे हिंदी-उर्दू के मसले पर बोलना या लिखना ज़रूरी समझें, तब उस नासमझ बादशाह की कहानी को एक बार फिर से याद कर लिया करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो यह कहना नामुनासिब न होगा कि कम-से-कम फ़तवा देते वक्त वह उस नादान बादशाह की ग़लती को दोहराने के ख़तरे से ज़रूर ही बच जायँगे।

(२)

हिंदी-उर्दू के मसले के कई पहलू हैं। पहले पहलू का संबंध लिपि से है। इस सूबे में सिर्फ़ उर्दू-लिपि सरकारी दफ़्तरों और अदालतों में रायज़ रहे, या हिंदी को भी स्थान मिले? बच्चों को इस लिपि में तालीम दी जाय या उस लिपि में? इसी पहलू का एक दूसरा अंग है। वह यह है कि क्या हमारे विद्यार्थियों के लिये दोनो लिपियों का सीखना अनिवार्य कर दिया जाय, या सिर्फ़ छोटे ही दर्जों में? क्या सिर्फ़ ऊँचे दर्जों में एक ही लिपि उनके लिये आवश्यक मानी जाय या शुरू ही से सब लड़कों को एक ही लिपि सिखाई जाय? अगर एक ही लिपि में शिक्षा हो, तो वह कौन-सी लिपि हो? हिंदी या उर्दू? या लिपि के मामले में लड़कों के माता-पिताओं को इस बात की आज़ादी दे दी जाय कि वे जिस लिपि में चाहें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके बच्चों को उसी लिपि द्वारा शिक्षा दी जाय? सरकारी दफ़्तरों और अदालतों में आजकल उर्दू-लिपि रायज़ है। क्या यही दस्तूर क़ायम रहे, या इसमें रद्दोबदल करने की ज़रूरत है? अगर तब्दीली होना है, तो क्या उर्दू-लिपि निकाल दी जाय, और उसकी जगह पर हिंदी-लिपि का चलन होने लगे? या हिंदी और उर्दू दोनो को सरकारी लिपियाँ मान लें?

इस समस्या का दूसरा पहलू ज़बान के विषय में है। लिपि चाहे जो रहे, मगर सरकारी दफ़्तरों और अदालतों की ज़बान कौन हो? उर्दू हो या हिंदी? या न हिंदी हो और न उर्दू, बल्कि एक नई ज़बान ईजाद की जाय, जो खिचड़ी ज़बान हो, और जो संस्कृत, फ़ारसी तथा अरबी-शब्दों की कीमिया निकालकर गढ़ी जाय? अगर खिचड़ी ज़बान ईजाद करना है, तो किन उसूलों पर, किन सिद्धांतों पर उस नई भाषा के गढ़ने का काम किया जाय? कितने तोला संस्कृत और कितने रत्ती अरबी और फ़ारसी के लफ़्ज़ इस नई ज़बान में रक्खे जायँ? भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिये क्या सिर्फ़ संस्कृत ही से शब्द लिए जायँ, या सिर्फ़ अरबी और फ़ारसी ही से? ये गंभीर और विवाद-ग्रस्त मसले हैं। ऐसी दशा में हिंदी-उर्दू के मसले का सुलझना आसान नहीं, असंभव-सा प्रतीत होता है। मुझे ख़ुद इस बात में संदेह है कि कोई नौ-ईजाद ज़बान हिंदी-उर्दू के झगड़े को ख़त्म कर सकती है। हाँ, यह बात संभव है कि सैकड़ों ज़बानें बोलनेवाले इस मुल्क को एक और नई ज़बान सिखाने की ज़हमत उठानी पड़े, अगर हमारे चंद दोस्तों की कोशिशें कामयाब साबित हुईं। इस कोशिश का क्या नतीजा होगा? अगर आप इसका अंदाज़ा लगाना चाहते हैं, तो मदरास-प्रांत के लिये जो हिंदी-पोथी तैयार हुई है, उसे मेहरबानी करके देख लीजिए। वहाँ आप यह पढ़ेंगे कि हिंदू लड़के अपने घरों में 'दीदी बी नमस्ते' कहते और अमृत को 'इमरत' लिखते और पढ़ते हैं। साथ ही, इस किताब को देखने से आपको यह भी पता लगेगा कि इस सूबे की आम जनता अरबी और फ़ारसी के उन लफ़्ज़ों को बहुतायत से इस्तेमाल करती है, जिनको कम-से-कम मैं और मेरे बहुत-से साथियों ने न इस्तेमाल किया और न उनसे हमारा परिचय ही है। लेकिन इस मामले में मेरा ज़बान खोलना बेअदबी होगी। मैं तो दहक़ानी हूँ, और पोथी के रचयिता बहुश्रुत हैं। आम ज़बान के तो वे स्वयंभू होने के नाते ख़ुद ही माप-दंड हैं। जिन शब्दों की बाबत वे यह कह दें कि वे रायज़ हैं, उन्हीं शब्दों को हमें आम जनता के शब्द मान लेना चाहिए। किसी तरह का शक करना उनके दावे के ख़िलाफ़ कुफ़्र होगा। लेकिन कुफ़्र हो या न हो, मैं यह कहने का दुस्साहस करता हूँ कि इस तरह की कोशिशें नाकामयाब साबित होंगी, क्योंकि वे असामयिक हैं। असामयिक इसलिये कि वे क़ब्ल-अज़-वक़्त हैं। अभी थोड़े ही दिनों से हिंदू और मुसलिम कार्यकर्ता वोटरों के पास जाने और जाकर उन्हें समझाने के लिये मजबूर हुए हैं। वोटरों तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिये उन्हें झख मारकर उनकी ज़बान सीखने की ज़रूरत महसूस होने लगी है। वे हमारी ज़बान से धीरे-धीरे परिचित हो रहे हैं; हम भी धीरे-धीरे उनकी बोली सीखने लगे हैं। पढ़े-लिखों और अनपढ़ों की इस मुठभेड़ की बदौलत शब्द भी रिवाज की कसौटी पर कसे जाने लगे हैं। आजकल भाषा के सोधने की जो यह प्रवृत्ति जारी है, वह अभी चंद दिनों से ही काम करने लगी है। उसे सफल होने के लिये समय चाहिए। जल्दबाज़ी से काम न बनेगा, उलटे एक आम ज़बान के बनने में बाधा अवश्य पहुँचेगी। इसलिये एक कृत्रिम भाषा बनाने के जो प्रयत्न हो रहे हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका हमें स्वागत न करना चाहिए। मेरी यह निश्चित धारणा है कि यदि हम हिंदी-उर्दू की समस्या को हल करना चाहते हैं, तो दोनो ही के पृथक् अस्तित्व को हमें स्वीकार कर लेना चाहिए। यह आम जनता खुद ही तय कर लेगी कि किस तरह और कैसे दोनो भाषाएँ गंगा-जमुना-सी मिलकर एक हो सकती हैं। दोनो ही कभी-न-कभी एक होकर रहेंगी। लेकिन कब और किस रूप में वे एक होंगी, यह न मैं कह सकता हूँ और न इसके कहने की मुझे कोई ज़रूरत ही मालूम होती है।

(३)

लेकिन इसके पहले कि मैं हिंदी-उर्दू की समस्या पर विचार करूँ, यह आवश्यक मालूम होता है कि मैं एक बात का ज़िक्र कर दूँ, और वह बात यह है कि शुरू से उर्दूवाले यह कहते चले आए हैं कि हिंदी कोई ज़बान नहीं। तिरस्कार से वह उसे 'भाषा' भी कहने से गुरेज़ करते आए हैं। उसके प्रति अपनी नफ़रत का इज़हार उसे 'भाखा' कहकर किया करते थे, और करते हैं। उर्दू के एक बड़े आलिम ने तो यहाँ तक कह डाला कि हिंदी में कुछ है ही नहीं, उसमें तो मज़हबी तर्ज़ की कुछ चंद नज़्में लिखी गई हैं। उर्दूवाले अब तक कहते हैं कि हिंदी के हिमायती संस्कृत के शब्दों को ठूँस-ठाँसकर एक बनावटी ज़बान ईजाद करने की कोशिश में लगे हैं। उर्दूदाँ संस्कृत-लफ़्ज़ों से कितना चिढ़ते हैं, इसका अगर आपको सही अंदाज़ा न हो, तो हाल ही में 'लीडर' में प्रकाशित श्रीरघुपतिसहायजी के पत्र को पढ़ लीजिए, जिससे आपको इस बात का पता लग जायगा कि इलाहाबाद में उर्दू-दिवस मनाए जानेवाले जलसे में सर तेजबहादुर सप्रू ने उनके साथ कितनी सख़्ती का व्यवहार किया। इस पत्र से आपको मालूम हो जायगा कि सर तेज को हिंदी या संस्कृत के शब्दों से कितनी नफ़रत है, और उर्दू-दिवस मनानेवालों की असली नीयत क्या है। हिंदोस्तान में जो पैदा हुए, वे संस्कृत के शब्दों या उन शब्दों से बने हुए शब्दों से इतना परहेज़ करें, यह क्या कम अचरज की बात है? लेकिन उनकी इस नफ़रत से इस बात का सही अंदाज़ा हम लगा सकते हैं कि वह हिंदोस्तानी को क्यों कृत्रिम भाषा कहते हैं, और क्यों अरबी और फ़ारसी के शब्दों के स्थान में संस्कृत-पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से उन्हें इतनी बेचैनी पैदा होती है। उनके लिये अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना, केशवदास, सूरदास, तुलसीदास, बिहारी, रसखान, जायसी, कबीर, टोडरमल, बीरबल, गंग, मतिराम और देव आदि सब कृत्रिम भाषा लिखने के दोषी थे। मध्यकालीन युग में व्रजभाषा का बोलबाला था। चंडीदास, विद्यापति, सूरदास, नरसीदास मेहता, मीरा और नरोत्तमदास, कबीर, नानक तथा सिक्खों के अन्य गुरुओं ने जिस ज़बान में लिखा, वह सर तेजबहादुर सप्रू और उनके हिमायतियों की नज़रों में कृत्रिम भाषा थी। क्या इन पढ़े-अनपढ़ों को यह नहीं मालूम कि अगर पं० मदनमोहन मालवीय की ज़बान को देहाती-से-देहाती आदमी आसानी से समझ लेता है, तो केवल इसलिये कि मालवीयजी उसी ज़बान में उसके सामने बोलते हैं, जिस जबान में सूरदास ने सूरसागर लिखा, और अगर वही देहाती सर तेजबहादुर सप्रू की ज़बान को नहीं समझ पाता, तो इसका कारण महज़ यही है कि सर तेज उस ज़बान को नहीं बोल सकते, जो देहातियों की ज़बान है, और जिसमें सूरदास और तुलसीदास ने अपने-अपने महाग्रंथों की रचना की। लेकिन सर तेज को देहातियों की क्या परवा? देहाती समझें या न समझें, उनकी बला से। उनका संसार तो उन फ़ारसीदाँ या अँगरेज़ीदाँ साहबों के महलों तक सीमित है, जहाँ इस मुल्क की आम रियाया की आवाज़ पहुँच भी नहीं पाती। इंद्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदन-कानन में सैर करनेवाले सर तेज और मुसीबत के सताए हुए कंगाल किसानों में ज़मीन-आसमान का अंतर है। दोनों की दुनिया जुदा-जुदा हैं। और, इसलिये सर रज़ाअली या सर तेजबहादुर सप्रू अगर यह कहें कि हिंदी कोई ज़बान नहीं, और शम्सुलउलमा अपने मकतबों में बैठकर यह पढ़ाएँ कि हिंदी का कोई साहित्य नहीं, तो इसमें अचरज की क्या बात? अँगरेज़ी सरकार के हिमायतियों और जनता के दृष्टि-कोण में, जैसे और बातों में वैसे ही इस ज़बान के मसले में, अगर व्यापक भेद है, तो इसमें ताज्जुब की क्या बात? उनके ख़यालात हमारे ख़यालात नहीं, उनकी तमन्नाएँ हमारी तमन्नाएँ नहीं, उनका लोक हमारा लोक नहीं, उनका परलोक हमारा परलोक नहीं। हम ग़रीबों के सेवक हैं, वे सरमाएदारी के पूज्य। उनकी ज़बान और हमारी भाषा में अगर मेल नहीं खाता, तो ऐसा होना स्वाभाविक है। हमें अफ़सोस इस बात का है कि जिस मसले को वे नहीं समझते, उस पर रायज़नी करने के लिये हमेशा व्याकुल रहते हैं। फ़तवे निकालने का तो उन्हें मर्ज़-सा हो गया है। इससे किसी का कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। लेकिन क्या उनसे अदब के साथ हमारा यह कहना मुनासिब न होगा कि जब ये लोग हिंदी की बाबत लिखने बैठें या बोलने के लिये खड़े हों, तब इन्हें कम-से-कम हिंदी पढ़ने और उसके साहित्य से अपने को परिचित करने के लिये थोड़ा-बहुत कष्ट उठाना उचित है। अगर ये सब हिंदी-साहित्य के इतिहास को पढ़ें, और उस साहित्य के महारथियों की कृतियों का मुताला करें, तो उन्हें इस बात का पता लग जायगा कि हिंदी कोई नौईजाद चंदरोज़ा ज़बान नहीं, इसकी तो जड़ें हमारे भूतकाल में धँसी पड़ी हैं। मध्यकालीन भारत में इसका साहित्य इतना बढ़ा और बढ़ते-बढ़ते इतना ऊँचा उठ गया कि इसे दुनिया की अन्य ज़बानों के मुक़ाबिले में बराबरी का दावा करने का हक़ हासिल है। ग़ालिब की क़लम ने सचमुच कमाल किया है, लेकिन सूर और तुलसी के मुक़ाबिले में ग़ालिब का क्या स्थान है। जिस क्षेत्र को सूरदास ने अपनाया, उस क्षेत्र में, मैं यह दावे के साथ कहता हूँ, संसार के किसी दूसरे कवि ने वह सफलता नहीं पाई, जो सूर को सहज ही में प्राप्त है। अपने क्षेत्र में सूर अछूता है। जिस विषय पर उसने लिखा है, उस विषय पर लिखने में आज तक कोई समर्थ नहीं हुआ। इसीलिये अधिकारी समालोचकों की यह सम्मति है कि सूर ने जो कुछ कहा, उसी की जूठन दूसरे कवियों ने पाई। लेकिन इस सूबे में पैदा होनेवाले जो लोग इस बात का नाज़ करते हैं कि वे इँगलैंड के शेक्सपियर की तो कृतियों को पढ़कर आनंदोल्लास से एक अँगरेज़ की तरह विह्वल हो सकते हैं, वे ही लोग, कितने लज्जा की बात है, न तो सूर को पढ़ सकते हैं, और न तुलसीदास की रामायण का रस चख सकते हैं। कार्लाइल ने एक जगह कहा है कि अगर कोई मुझसे पूछे कि शेक्सपियर को रक्खोगे या इँगलैंड के साम्राज्य को, तो मैं निःसंकोच इँगलैंड के साम्राज्य को ठुकरा दूँगा, और शेक्सपियर के ग्रंथों को अपना लूँगा। इन ग्रंथों के मुक़ाबिले में साम्राज्य नगण्य चीज़ है, क्योंकि वह नश्वर है, और इँगलैंड की अंतरात्मा का अमर स्वरूप शेक्सपियर की कृतियों में व्यक्त है। कहाँ कार्लाइल की यह उक्ति और कहाँ हमारे पढ़े-लिखे चंद बाबू लोगों का यह हाल कि अगर उन्हें मौक़ा मिले, तो वे न सिर्फ़ सूर और तुलसी को ठुकरा ही दें, बल्कि उनकी कृतियों में आग लगा देने पर भी उतारू हो जायँ! उनकी दृष्टि में सूर और तुलसी का कोई महत्त्व नहीं। मध्यकालीन युग के उत्तरी भारत में सूर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी के समान कोई दूसरा आदमी नहीं पैदा हुआ। अकबर, टोडरमल, अबुलफ़ज़ल और बीरबल, सब इन दो साहित्यिक महारथियों के मुक़ाबिले में तुच्छ हैं। ताजमहल या दिल्ली का क़िला इनकी तुलना में नगण्य है। इनकी कृतियाँ हमारे जातीय जीवन की अमर कहानियाँ हैं। कौन फ़िरदौसी को महमूद ग़ज़नवी के मुक़ाबिले नीची गद्दी देता है? फ़िरदौसी अमर है। उसने साहित्यिक जगत् में जो काम कर दिखाया, उसके मुक़ाबिले में महमूद के हिंदोस्तान पर २१ हमलों का इतिहास की गति पर उतना ही स्थायी चिह्न है, जितना पानी पर खिंची हुई लकीर का। लेकिन हमारे उर्दूदाँ भाई सूरदास और तुलसीदास को अपनी सांस्कृतिक बपौती का अंग मानने के लिये तैयार नहीं। कम-से-कम श्रीरघुपतिसहाय-जी का यह कटु अनुभव है। इन विद्वानों का यह कहना है कि हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण, महावीर-प्रसाद द्विवेदी, सदल मिश्र और लल्लूलाल ने अगर हिंदी में लिखा, तो ऐसी ज़बान में जिसका कोई अस्तित्व नहीं, जिसका कहीं प्रचार नहीं, और जो जन्म ही से बनावटी एवं कृत्रिम थी।

नहीं, यह कहना सरासर ग़लत है कि हिंदी कोई बनावटी ज़बान है। यह ग़लत है कि हिंदी-वाले उर्दू के विद्वेष से प्रेरित या मुसलिम विरोध से प्रभावित होकर संस्कृत के शब्दों को ठूँस-ठूँस-कर एक नई ज़बान ईजाद करने में लगे हुए हैं। हरिश्चंद्र, राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, शिवसिंह, महावीरप्रसाद और बालमुकुंद गुप्त ने संस्कृत-अलफ़ाज़ को जहाँ अपने लेखों और किताबों में इस्तेमाल किया है, वहाँ वे बहुत काफ़ी तादाद में अरबी और फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग करने से भी नहीं हिचके। द्विवेदीजी तो अपने ग्रंथों में अपनी भाषा के प्रवाह की परवा न कर स्थान-स्थान पर संस्कृत के शब्दों के साथ-साथ फ़ारसी और अरबी के पर्यायवाची शब्दों को स्थान देते गए हैं। उन्होंने उस ज़बान में लिखना मुनासिब समझा, जिसे सूबे की दोनों ज़बानों के बोलने-वाले आसानी से समझ लें। इस ज़बान के लिये संस्कृत के शब्द अपने शब्द हैं। वह तो ख़ुद संस्कृत की कोख से पैदा हुई है। वास्तव में संस्कृत की वह रूपांतर है। फ़ारसी और अरबी के शब्द उसके लिये विदेशी शब्द हैं। इसीलिये यदि द्विवेदी, हरिश्चंद्र या तुलसीदास और सूरदास ने अपनी किताबों में संस्कृत-शब्दों को अपनाया, तो उन्होंने एक स्वाभाविक बात की। उनका ऐसा न करना अस्वाभाविक होता। सवाल यह नहीं है कि हिंदी में संस्कृत-शब्द आएँ या न आएँ। सवाल तो यह है कि उसमें बाहरी ज़बानों से शब्द लिए जायँ या नहीं? हर शब्द के लेने के पहले हमारे लिये यह सोचना अनिवार्य है कि क्या ग़ैर-ज़बान के किसी शब्द-विशेष को लिए विना हमारा काम नहीं चल सकता? अगर चल सकता है, तो कोई ज़रूरत नहीं कि हम एकदम बाहरी ग़ैर-ज़बान के शब्दों को लेकर अपनी ज़बान बिगाड़ें। लेकिन जो लोग अरबी और फ़ारसी के न केवल शब्द लेते हैं, बल्कि अरबी और फ़ारसी के व्याकरण-संबंधी नियमों तक का खुलेआम दिन-दहाड़े, विना संकोच, इस्तेमाल करते हैं, वे स्वयं नाक-भौं सिकोड़ते हैं संस्कृत-शब्दों के इस्तेमाल पर।

ग़ाज़ी कमाल अता तुर्क की प्रशंसा में हिंदू-मुसलमानों ने हाल ही में बड़े लंबे-चौड़े व्याख्यान दे डाले, या अख़बारों में अपनी श्रद्धांजलियाँ प्रकाशित कराईं। कमाल अता तुर्क की यह बात क्या उन्हें नहीं मालूम कि उसने तुर्की ज़बान से उन तमाम अरबी-शब्दों को निकाल बाहर कर दिया है, जो वहाँ मुल्लाओं की कोशिशों के फल-स्वरूप तुर्की-ज़बान में जगह पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए थे। लेकिन कमाल पाशा के ये ही भारतीय भक्तों ने हिंदोस्तान के रहनेवालों के लिये यह मुनादी करा दी है कि वे संस्कृत के लफ़्ज़ों को इस्तेमाल न करें, उन्हें तो ग़ैर-ज़बान के लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करना चाहिए। और, अगर वे ऐसा नहीं करते, तो वे जाति-द्रोही तथा सांप्रदायिक मनोमालिन्य फैलाने के दोषी हैं।

हम यह नहीं कहते, हमारी यह धारणा भी नहीं कि जो सज्जन संस्कृत के पर्यायवाची शब्दों का बदले अरबी या फ़ारसी-शब्दों को इस्तेमाल करना चाहते हैं, वे न करें। उन्हें इस मामले में पूर्ण आज़ादी होनी चाहिए। लेकिन जो आज़ादी हम उन्हें देते हैं, वही हम अपने लिये भी चाहते हैं। जैसे उन्हें संस्कृत-शब्दों का प्रयोग करने के लिये, अनिच्छा होने पर, कोई मजबूर नहीं कर सकता, और अगर कोई उन्हें मजबूर करे, तो मैं उसका घोर विरोध करूँगा, वैसे ही किसी दूसरे को यह हक़ नहीं हासिल है कि वह मुझे संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करने से रोके, यदि मैं ऐसा करना ठीक समझूँ। हिंदी-उर्दू के मसले के पीछे मानसिक आज़ादी के उसूल उठते हैं। हम किसी की आज़ादी पर आघात नहीं करना चाहते; लेकिन साथ ही हम अपनी आज़ादी का अपहरण भी नहीं होने देना चाहते। उर्दूदाँ अपने लिये तो भाषा के मामले में आज़ादी चाहते हैं; लेकिन उसी हद तक वे दूसरों को आज़ादी देने के लिये तैयार नहीं। हिटलरी विष केवल जर्मनी तक ही सीमित नहीं। ज़बान के मामले में इस तरह की ताना-शाही या धींगाधींगी बरसों से इस सूबे में मच रही है। लेकिन अब इसका अंत हो जाना चाहिए। इसका अंत तभी होगा, जब हम नेक-नीयती के साथ काम करें, और हिंदी के ख़िलाफ़ झूठे प्रोपेगेंडा का अंत कर दें। हिंदी इस सूबे की जनता के एक भाग की मानसिक और आध्यात्मिक ज़रूरियातों को पूरा करने की उसी तरह साधक है, जैसे जनता के दूसरे भाग की ज़रूरियातों की पूर्ति की साधन उर्दू। इस सत्य को स्वीकार करने में किसी को संकोच न होना चाहिए। इसी वास्तविक घटना को मानकर हिंदी-उर्दू की समस्या का निपटारा सहूलियत के साथ हो सकता है। हिंदी होती या न होती, उर्दू रहती या न रहती—ये सवाल तो हमारे सामने अब हैं नहीं। उर्दू है, उसके अस्तित्व से जो इनकार करे, वह या तो मूर्ख है या पाखंडी। इसी तरह हिंदी है। हमें मानना पड़ेगा कि वह मौजूद है; और उसके अस्तित्व से जो इनकार करता है, वह या तो मूर्ख है या धूर्त। इसलिये हम शुद्ध हृदय से मानते हैं कि हमारे सूबे में उर्दू एक जीती-जागती ज़बान है, उसी तरह, जैसे इस सूबे की दूसरी ज़बान हिंदी है। दोनो ही ज़बानें रोज़मर्रा की ज़रूरियातों और मानसिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं को अपने-अपने क्षेत्रों में पूर्ण करने में सहायता पहुँचाती हैं।

मेरी यह व्यक्तिगत राय है कि सूबे की मौजूदा हालत में हमें यह मुक्त कंठ से स्वीकार करना चाहिए कि यह द्विभाषी सूबा है। मैं इस दावे को नहीं स्वीकार करता कि हमारे सूबे में आज-दिन एक ही भाषा रायज़ है। मुझे मालूम है, बहुत-से मेरे सम्मानित नेता और मित्र मेरे इस विचार से सहमत न होंगे। उनके कथनों में, मैं स्वीकार करता हूँ, सत्य का अंश है। हमारी बोली में समानता अवश्य है, लेकिन बोली भाषा नहीं, और भाषा को बोली का पर्यायवाची बनाने की ज़रूरत नहीं। सूबे की बोलियों में भी अधिकांश शब्दों की समानता है। उन शब्दों के अर्थों में समानता है और उनके प्रयोग-संबंधी नियमों में भी। इस दृष्टि से उच्चारण-संबंधी स्थानिक भेदों को यदि हम नज़र-अंदाज़ कर दें, तो यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना ग़लत न होगा कि इस सूबे की बोली एक है। उस बोली में जहाँ तक हिंदी या उर्दू के शब्द व्यवहृत होते हैं, वहाँ तक दोनो भाषाओं में समानता है। लेकिन, जैसा मैं ऊपर कह चुका हूँ, 'बोली' 'भाषा' नहीं और 'भाषा' 'बोली' नहीं। 'बोली' 'भाषा' का स्थान नहीं ले सकती। 'बोली' में सब तरह के भावों और विचारों को व्यक्त करने के लिये उपयुक्त शब्द नहीं मिल सकते। बहुत ही साधारण बातों को 'बोली' के शब्दों में हम व्यक्त कर सकते हैं। भावों और विचारों की सूक्ष्मता एवं जटिलता को अथवा वैज्ञानिक, पारिभाषिक, दार्शनिक और जीवन-विषयक गहन-गंभीर समस्याओं को जब हम शब्दों में प्रकट करने की कोशिश करेंगे, तब या तो हमें नए शब्द गढ़ने की ज़रूरत होगी, या प्रचलित भाषाओं से शब्द उधार लेने पड़ेंगे। उर्दू वाले फ़ारसी और अरबी के शब्दों को व्यवहृत करने के लिये इसीलिये विवश हैं कि वे देशी भाषाओं की तुलना में इन दो परदेशी ज़बानों को कई कारणों से अधिक महत्त्व देते और उनके प्रति अधिक अपनपौ दिखाते हैं। परदेशी को अपनाना और स्वदेशी से मुँह मोड़ना पराधीनता का प्रधान लक्षण है। यह प्रवृत्ति ठीक हो या ग़लत, इससे मुझे यहाँ कोई सरोकार नहीं, सरोकार सिर्फ़ इस बात को मान लेने से है कि यह प्रवृत्ति हमारे यहाँ मौजूद है, और इसी के कारण हमारे सूबे में दो भाषाओं की उत्पत्ति हुई और उनका प्रचार है। ऐसी दशा में हमें हिंदी और उर्दू के जुदा-जुदा अस्तित्व को स्वीकार कर लेना चाहिए। दोनो इस सूबे की दो भाषाएँ हैं, दो बोलियाँ नहीं। दो भाषाएँ यदि न होतीं, तो अच्छा होता। लेकिन हम अपनी इच्छाओं से वास्तविकता पर हरताल नहीं फेर सकते। जो है वह है; उसे आँख-मिचौनी से हम मिटा नहीं सकते। और, यदि हम मिटाने की चेष्टा करेंगे, तो हमें घटना की पथरीली चट्टान पर सिर पटकना पड़ेगा। यह मानकर ही कि हमारा प्रांत द्विभाषी है, हमें हिंदी-उर्दू के झगड़े का ऐसा निपटारा करना चाहिए, जिससे दोनो जमातों को तसल्ली हो सके। इसी बुनियाद को सही मानकर हम आगे बढ़ें और इस बात की धीरे-धीरे कोशिश भी कर सकते हैं कि आगे फिर दोनो भाषाएँ मिलकर एक हो जायँ। लेकिन इस समय, जब भाषाएँ दो हैं, उन्हें एक भाषा कहकर फ़ैसला देना झगड़े को मिटाना नहीं, उसे बढ़ाना होगा।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। विना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के सार्वजनिक कार्य और उनके निर्वाह के साधन

[श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०]

तिलक-स्वराज्य-फ़ंड

लोकमान्य तिलक के नाम से 'तिलक-स्वराज्य-फ़ंड' को स्थापित हुए काफ़ी समय हो चुका है। उसमें लाखों की तादाद में धन इकट्ठा हुआ था। इसे इकट्ठा करने के लिये कांग्रेस की ओर से ज़बरदस्त प्रयत्न किया गया था, उसके कार्यकर्ता गाँव-गाँव घूमे थे। संभवतः इसके बाद अभी तक कांग्रेस ने इतना व्यापक कोई कार्य धन एकत्र करने को नहीं उठाया। और, न इतनी बड़ी धन-राशि, जो एक करोड़ से ऊपर पहुँच गई थी, इकट्ठी हुई है। इस रुपए से जो कार्य हुए, और जहाँ-जहाँ जितना-जितना ख़र्च हुआ, उस सबका हिसाब-किताब कई बार ब्योरेवार प्रकाशित हो चुका है। कांग्रेस के दफ़्तर में वह अब भी देखा जा सकता है। फिर भी इसके संबंध में कभी-कभी कुछ-न-कुछ चर्चा सुनाई पड़ ही जाती है। अभी थोड़े ही दिन हुए कुछ पत्रों ने यह कहना आरंभ किया था कि उसका हिसाब ठीक नहीं मिलता, वह ठीक तरीक़े से ख़र्च नहीं हुआ। बहुतेरे लोग उसे खा-पी गए, आदि। कांग्रेस के सभापति ने उन्हें करारा उत्तर दिया कि हिसाब देखा जा सकता है, और गड़े हुए मुर्दों को बार-बार उखाड़ना नेकनीयती नहीं, आदि। भविष्य में इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठानेवालों पर मुक़दमा चलाने की धमकी भी दी थी। मामला शांत हो गया।

चंदा

इस फ़ंड का संबंध समस्त भारत से था। बड़े-बड़े नेताओं का इसमें हाथ था। इसी कारण इसके संबंध में फैलनेवाली अफ़वाहों का प्रभाव समस्त देश पर पड़ा। इसके अतिरिक्त देश में न-मालूम कितने छोटे-छोटे फ़ंड क़ायम हैं। उनके लिये न-मालूम कितना चंदा एकदम किया जाता है, और न-मालूम कितने आदमी जुटे हुए दिन-रात यही काम करते हैं। यह धन विभिन्न कामों के लिये संग्रह किया जाता है। इनके ख़िलाफ़ भी प्रायः आवाज़ उठती है कि वह ठीक-ठीक ख़र्च नहीं होता, बुरी तरह से उठाया जाता है, वास्तविक मतलब में व्यय नहीं होता, हिसाब जनता के सामने उपस्थित नहीं किया जाता, और चंदा इकट्ठा करनेवाले स्वयं ख़ूब खाते हैं। बहुतेरे झूठ-मूठ के लिये ही चंदा एकत्र करते हैं। वे इसी से अपनी गुज़र-बसर करते हैं, यही उनका व्यवसाय होता है। चंदा देनेवाली जनता में भारी अविश्वास उत्पन्न हो गया है। चंदे का नाम सुनते ही वह चौकन्नी हो जाती है। चंदा देने में उसका विश्वास उठ-सा रहा है। चंदा लेनेवालों को संदेह की निगाह से देखा जाता है। इस परिस्थिति से चंदा देने और लेनेवाले, दोनो पर बुरा प्रभाव पड़ा है। बहुतेरे कार्यकर्ता चंदे से दूर रहते हैं, इस झगड़े में कभी पड़ना नहीं चाहते।

सार्वजनिक वस्तुएँ और जनता

सार्वजनिक धन, संस्था या कोई भी वस्तु क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हो, सब पर जनता का अधिकार होता है; क्योंकि उसी के पसीने की गाढ़ी कमाई उनमें लगी होती है। उसका कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक हित की वस्तुओं पर निगाह रक्खे, और ऐसा करना उसके लिये भला ही है। जनता को बराबर देखते रहना चाहिए कि सार्वजनिक वस्तुओं का ठीक-ठीक इस्तेमाल हो रहा है या नहीं। यदि न होता हो, तो उसे कड़ी आलोचना करने का अधिकार है। किसी भी संस्था को ठीक से चलाने की ज़िम्मेदारी जनता पर है। यदि ठीक कार्य हो रहा है, तो जनता उसे प्रोत्साहन दे, ताकि वह देश-वासियों की अधिकाधिक सेवा कर सके। प्रायः जनता अपने इस कर्तव्य में चूकती नहीं। प्रोत्साहन पाने योग्य वस्तु को प्रोत्साहन देती और ख़राब चीज़ की कड़ी आलोचना आदि करके उसे ठीक कराने का प्रयत्न करती है। कभी-कभी जनता के कुछ आदमी किन्हीं कारणों से अपने हक़ का दुरुपयोग भी करते हैं, अच्छी चीज़ को बुरी और बुरी को भली कहने लगते हैं। ऐसे लोगों का समुदाय समाज में सदा से रहा है, और रहेगा। भारतवर्ष में ही नहीं, ऐसे व्यक्ति प्रत्येक देश में मिलेंगे। हाँ, उनकी संख्या में कमी-बेशी या उनके आलोचना के ढंग में फ़र्क़ हो सकता है। परंतु संतोष की बात यही है कि इसी प्रकार की दूषित मनोवृत्तिवालों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम रहती है, और उनकी टायँ-टायँ फ़िस का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। थोड़े समय बाद अंदरूनी बातें जनता पर प्रकट हो जाती हैं, उनका जादू जनता पर नहीं चलता, और उनकी पोज़ीशन स्वयं ख़राब हो जाती है—वे कहीं के नहीं रहते।

यदि इस प्रकार के व्यक्तियों की संख्या बढ़ती ही जाय, और उसमें कमी न हो, तो इस बात की आवश्यकता है कि संस्था के सदस्य और अधिकारी उन्हें संस्था से दूर करके पुनः जनता के कृपा-पात्र बनने का प्रयत्न करें। तभी उनकी सार्वजनिक हित की चीज़ें क़ायम रह सकती हैं, और उनकी तरक़्क़ी होती रह सकती है। जनता की आलोचना की उपेक्षा करके वे आगे नहीं बढ़ सकते और न अपने प्रभुत्व को अधिक दिनों तक क़ायम रख सकते हैं। उनका कर्तव्य यही है कि वे जनता की कटु आलोचना का बुरा-भला न मानें।

स्थानीय छोटे-छोटे कार्य

बड़े पैमाने पर होनेवाले देशव्यापी सार्वजनिक कार्यों की अपेक्षा छोटे-छोटे कामों पर जनता की निगाह अधिक रहती है, क्योंकि उनका संबंध उससे अधिक रहता है। उसकी जानकारी उनके बारे में अधिक होती है। सार्वजनिक जीवन से संबंध रखनेवाले कार्य देश-भर में फैले हुए हैं। किसी-न-किसी रूप में हम उन्हें देश के कोने-कोने में पा सकते हैं, गाँवों तक में उनका अस्तित्व होता है, और वहाँ की जनता उनमें सहर्ष सहयोग देती है। ऐसी जगह सार्वजनिक कार्यों की ख़ूब आलोचनाएँ—अच्छी-बुरी दोनो प्रकार की—होती हैं। जो चीज़ जहाँ की है, उसके वास्तविक रूप को हम वहीं पा सकते हैं—उसके गुण-दोष हमें वहीं मालूम हो सकते हैं। दूर बैठकर हम किसी चीज़ को नहीं जान सकते। वहाँ तो 'दूर के ढोल सुहावने' वाली कहावत चरितार्थ होती है। विना नज़दीक से देखे हम ठीक-ठीक धारणा बना ही नहीं सकते।

प्रत्येक जगह स्थानीय संस्थाओं और सार्वजनिक व्यक्तियों के विरुद्ध कुछ-न-कुछ बातें कही जाती हैं। यदि इन बातों की जाँच की जाय, तो इनमें प्रायः कुछ-न-कुछ सत्यता अवश्य मिलेगी, चाहे वह हो किसी भी मात्रा में। अनेक प्रकार की उड़नेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ़वाहें अक्सर किसी-न-किसी आधार पर ही स्थित होती हैं; बिलकुल झूठ हों, ऐसी बात कभी-कभी ही होती है।

कार्यकर्ताओं के विरुद्ध आरोप

समय की परिस्थितियों के कारण आजकल के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के विरुद्ध जो बातें कही जाती हैं, उनमें अधिकतर काफ़ी मात्रा में सत्यता होती है। उनके ख़िलाफ़ कही जानेवाली बातें अनेक तरह की होती और हो सकती हैं। जो शिकायत प्रायः सुनने में आती है, वह होती है उनके रुपए-पैसे के संबंध में। सार्वजनिक संस्थाओं के बदनाम होने का कारण भी ये ही सार्वजनिक कार्यकर्ता होते हैं। इनमें जो गुण-दोष होते हैं, वे संस्था के नाम मढ़ दिए जाते हैं। प्रसिद्ध-से-प्रसिद्ध और मज़बूत-से-मज़बूत संस्था को दोष-युक्त कार्यकर्ता आगे बढ़ाने के प्रश्न को तो समझ ही नहीं सकते, वरन् उसे उलटा गिरावेंगे, थोड़े दिन में उसका कार्य-गौरव, जो उसने वर्षों में अनेक ईमानदार, सच्चे, परिश्रमी और स्वार्थ-त्यागी कार्यकर्ताओं के प्रयत्न-स्वरूप प्राप्त किया है, नष्ट-भ्रष्ट कर सकते हैं।

धन-संबंधी आरोप

हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में धन के संबंध में जो बुराई बताई जाती है कि वे इसका ठीक-ठीक प्रबंध नहीं कर सकते, व्यर्थ में बहुत-सा धन बरबाद हो जाता है, बहुतेरा वे लोग स्वयं खा-पी डालते हैं, इसके ज़िम्मेदार अकेले वे ही नहीं, वरन् देश भी है। कुछ उनकी ज़्यादती होती है, और कुछ जनता की; दोष दोनो का है, एक का नहीं। सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के बारे में, जिनमें हमारे बड़े-से-बड़े नेता से लेकर छोटे-से-छोटा कुपढ़ ग्रामीण वालंटियर भी शामिल है, कहा जाता है, वे प्रायः सार्वजनिक धन अपने प्राइवेट कामों में ख़र्च कर डालते हैं। अपने कार्य से यदि वे थर्ड क्लास में चलते हैं, तो सार्वजनिक कार्य के लिये इंटर में। और, विना ताँगा-मोटर के दस क़दम भी पैदल चलने का कष्ट गवारा नहीं करते। यदि चंदा करने का काम उनके सुपुर्द कर दिया गया, तो वे जितना रुपया इकट्ठा करेंगे, उसका एक भाग अपने लिये भी रख लेंगे। ख़ज़ांची बना दिए जाने पर इस धन को अपने काम में व्यय कर देंगे, और समय पर न दे सकेंगे। यही नहीं, मौक़ा लगा, तो और लोगों को मिलाकर कुछ हिस्सा उड़ा लेंगे, और आपस में बाँट लेंगे। ये तथा इनसे मिलती-जुलती बातें झूठ नहीं होतीं, वे होती हैं। केवल प्रश्न यह है कि कौन करता है, और कहाँ होती हैं? और यह कि इसकी पोल खुलती भी है या नहीं? जब खुलती है, तब क्या वह सत्य होती है?

सार्वजनिक धन का दुरुपयोग

ऐसा करने के भी अनेक कारण हैं। प्रत्येक के साथ बातें भी अलग-अलग हैं। कुछ को ऐसा करने में मज़ा आता है, हालाँकि उनके पास स्वयं काफ़ी धन होता है। यदि वे ऐसा न करें, तो भी काम चल सकता है, और उसी तरह से। कुछ लोगों के पास इतना धन नहीं होता, जो अपनी शान-शौकत क़ायम रख सकें। अपनी शान-शौकत क़ायम रखने के लिये वे सार्वजनिक पैसे का उपयोग कर लेते हैं। कुछ लोगों के पास खाने के लिये भी पैसा नहीं होता, तब वे इससे अपना निर्वाह करते हैं। ऐसे भी कुछ लोग होते हैं, जो सार्वजनिक कार्यों में अपना सर्वस्व स्वाहा कर देने के कारण अपना पेट पालने के लिये इस प्रकार के कार्य करते हैं। इस प्रकार के लोग प्रायः यह दलील देते हैं कि उन्होंने जब अपना सर्वस्व देश के काम में लगा दिया, सारा समय इसी में ख़र्च करते हैं, तो खाने के लिये लाएँ कहाँ से। न कमाने का उन्हें अवकाश मिलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, न वह इतना सरल कार्य ही है, और न वे इसे तब कर ही सकते हैं। सार्वजनिक कार्यों में वे इतने तन्मय हो जाते हैं कि फिर अन्य किसी काम को सोच ही नहीं सकते। कमाने की बात तो दूर रही, इस प्रकार के भी लोग पाए गए हैं, जिन्होंने सार्वजनिक रुपए को मार-काटकर, चुराकर या अन्य किसी प्रकार से प्राप्त करके अपनी हैसियत बढ़ाई। उनकी माली हालत सार्वजनिक धन से बढ़ी, उनके स्वयं कमाए हुए धन से नहीं।

कौन बुरा है ?

सार्वजनिक धन का दुरुपयोग करनेवाले इस प्रकार के सभी व्यक्तियों को हम बुरा नहीं कह सकते। बुरा कहने के पहले हम उनकी स्थिति की भी जाँच कर लेना चाहते हैं। उनकी दलीलों और नीयत तथा नीति को हमें उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखनी चाहिए। जब हम उनकी आलोचना करने बैठें, तब हमें उनकी बात समझने की कोशिश करनी चाहिए। साथ ही उनके लिये जनता ने क्या किया है, उस पर भी विना विचार किए एकतरफ़ा डिग्री देने के हम पक्षपाती नहीं। जब इन कार्यकर्ताओं ने अपने समय, शक्ति और धन तक को देश-हित के कार्य में लगा डाला है, तब उन्हें दोषी साबित करने से पूर्व दोनो पक्षों पर ध्यान देना होगा—उनका आचरण सार्वजनिक धन के संबंध में तथा जनता का व्यवहार उनके त्याग के संबंध में एवं उनके हितैषियों के प्रति देखना होगा।

स्वार्थी और ग़ैरस्वार्थी कार्यकर्ता

इन बातों पर विचार करने से पूर्व इस जमात से हमें ऐसे व्यक्तियों को छाँटकर अलग कर देना होगा, जो सार्वजनिक कार्यों में इसी आशय को लेकर आए हैं कि ख़ूब रुपया मारकर अपना उल्लू सीधा करें। उन्हें अपने स्वार्थ के अतिरिक्त कुछ मतलब नहीं। वे सब बातें इसी दृष्टि से करते हैं। नेकनीयती उनमें छू तक नहीं गई। इस कसौटी पर कसते समय हमें अप्रिय अनुभव होंगे, और ऐसी अनेक बातें मालूम होंगी, जिन्हें खोलना हम स्वयं पसंद न करेंगे—बृहत्तर हित के ख़याल से। वास्तव में यह कसौटी बड़ी तेज़ और कठिन है। इस पर सच्चे उतरनेवालों की संख्या थोड़ी ही होगी। हमारा तो ख़याल है कि हमारे वर्तमान सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में एक बड़ी संख्या उनकी है, जो मतलब से सार्वजनिक कार्य करने के लिये आगे आए हैं। उनका प्रत्येक कार्य स्वार्थमय होता है। वे तभी तक इसमें टिकते हैं, जब तक उनकी स्वार्थ-सिद्धि होती है, या जब तक मन-चाहा मतलब नहीं निकाल लेते। इसके बाद उनका रुख़ बदल जाता है। देश में इस प्रकार के दो-चार उदाहरण हर वर्ष पाए जाते हैं, जो इस स्वार्थमयी प्रवृत्ति का ज़ोर-शोर से भंडाफोड़ कर देते हैं। परंतु उन्हें हरएक नहीं समझ पाता। वे ही, जिनकी निगाह तीव्र है, जो परिस्थितियों से परिचित हैं, जो स्थिति को समझते हैं, और जिन्होंने उनके सार्वजनिक जीवन को प्रारंभ से ही ग़ौर से देखा है, उसे जान और समझ पाते हैं। इनसे भी अधिक संख्या उनकी है, जो अपने कार्यों को इस प्रकार चतुराई से चलाते हैं कि वे सार्वजनिक जीवन के विपरीत नहीं पड़ते और न उनकी पोल खुलने पाती है। दोनो काम साथ-साथ होते रहते हैं, परंतु वे इससे अलग नहीं होते। इस प्रकार के आदमियों को हम बुरा नहीं कह सकते। बारीकी से देखने से हमें पता लग जायगा कि सार्वजनिक कार्य प्रायः कार्यकर्ताओं को लाभदायक होते हैं। इसका फल यह होता है कि सार्वजनिक कार्य करने को अधिक आदमी आगे रहते हैं। सार्वजनिक जीवन में पड़ जाने से उनकी आमदनी घटती नहीं, वरन् बढ़ती है। ये लोग सदैव कार्यकर्ता बने रहते और सार्वजनिक बातों में जज़्ब हो जाते हैं। कुछ समय बाद उनके सार्वजनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के अतिरिक्त उनका धनोपार्जन करनेवाला पेशा भी सार्वजनिक हित के अनुकूल मालूम पड़ने लगता है। प्रायः हो भी जाता है। इससे दोनो काम बन जाते हैं। वे कार्यकर्ता बने रहते हैं, उन्हें सार्वजनिक जीवन से अलग करना असंभव है। वे हो ही नहीं सकते। विना इनके सार्वजनिक कार्यों को धक्का लग सकता है। परंतु सार्वजनिक जीवन को हानि पहुँचानेवाले और उसके सामने एक बुरा आदर्श रखनेवाले वे ही होते हैं, जो अपना मतलब सीधा करके इससे अलग हो जाते हैं, और वे, जो बराबर अपने मतलब में ही लगे रहते हैं, जिनके सामने पहला प्रश्न सदैव स्वार्थ का होता है। दूसरे प्रकार के आदमियों को हम बुरा नहीं कह सकते, क्योंकि इनके सामने दोनो काम होते हैं। निजी भी और सार्वजनिक भी। इनमें कभी निजी आगे आ जाता है, कभी सार्वजनिक। जब कभी उनमें ग़लती होती है, तभी जनता उनकी ख़बर लेती है। वास्तव में जनता की निगाह से कोई बच नहीं सकता। जनता को जहाँ बहुतों ने धोखा दिया है, वहाँ उसने भी अनेक बड़े-बड़े नामी लीडरों की मिट्टी पलीद की है, उनकी सारी सेवाओं को तनिक देर में भुला दिया है। वास्तव में सार्वजनिक जीवन में सफलता-पूर्वक कार्य करना कोई खिलवाड़ नहीं। इस जीवन में उतार-चढ़ाव आया करते हैं। अपनी ज़िंदगी में ही अनेक नेकनीयती और ईमानदारी से काम करनेवाले नेता अपने सार्वजनिक जीवन में अंतर देखते हैं। एक समय उनकी तूती बोलती है। सब उनकी बात ध्यान से सुनते हैं। दूसरे समय जनता उनकी सुनना नहीं चाहती, पर बाद में उन्हीं के क़ब्ज़े में आ जाती है।

सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा व्यापारिक कार्य

सभी देशों में सार्वजनिक जीवन में भाग लेनेवालों में वकालत का पेशा करनेवालों की संख्या सदा से ज़्यादा रही है। भारत में अधिकतर नेता वकील ही हैं। कांग्रेस के मंत्रिमंडलों में आधे के क़रीब या आधे से अधिक वकालत करनेवाले मंत्री हैं। इसका कारण यह है कि उनके पेशे का संबंध जनता से है। वकील लोगों को अपना कार्य सफलता-पूर्वक चलाने के लिये जनता के संपर्क में अधिकाधिक आने की आवश्यकता पड़ती है। भाषण देने का भी उन्हें अच्छा अभ्यास रहता है। क़ानून की बारीकियों से भिड़ते रहने के कारण उन्हें ख़ूब समझने लगते हैं। ऐसे ही कितने कारणों से अन्य पेशेवालों की अपेक्षा उनके लिये सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करना और उसमें डटे रहना अधिक आसान है। वे अपना कार्य भी करते रह सकते हैं, और सार्वजनिक जीवन की ज़िम्मेदारियों को भी पूरा करना उनके लिये कठिन नहीं होता। और भी ऐसे पेशे हैं, जिनमें वे लोग दोनो काम कर सकते हैं, पर उन सबमें वकालत का पेशा सबसे अधिक उपयुक्त होता है। अन्य पेशों में हम डॉक्टरों, पत्रकारों तथा अन्य स्वतंत्र व्यवसायवालों को ले सकते हैं। बहुत-से ऐसे भी पेशे हैं कि उनमें लगे हुए व्यक्ति सार्वजनिक जीवन में बड़ी मुश्किल से भाग ले सकते हैं। न तो उनकी शिक्षा और न व्यावसायिक जीवन ही उन्हें कार्य के उपयुक्त बनाता है, न उन्हें वे सहूलियतें दे सकता है, जो वकालत, डॉक्टरी और पत्रकारी आदि दे सकते हैं। उदाहरणार्थ सरकारी कर्मचारी प्रायः सभी प्रजासत्तात्मक देशों में सार्वजनिक जीवन से दूर रहते हैं। किसी प्रकार की पार्टीबंदी में, जो इस प्रणाली का आवश्यक अंग है, पड़ना उनके लिये अच्छा नहीं होता, क्योंकि इससे शासन-प्रबंध के मामलों में दिक़्क़तें पड़ने का डर रहता है। सरकार भी इन्हें ऐसा करने की इजाज़त नहीं देती। सार्वजनिक कार्य करने के लिये उन्हें अपनी नौकरी से त्याग-पत्र देना ज़रूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। नौकर रहते हुए भी वे सार्वजनिक हित के कार्य को सफलता-पूर्वक नहीं कर सकते।

सार्वजनिक कार्य से लाभ

उपर्युक्त पेशेवालों का सार्वजनिक कार्य करने से परिचय बढ़ता है, जानकारी बढ़ती है, जनता में उनके प्रति विश्वास, श्रद्धा आदि के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। इसका फल यह होता है कि उनका काम बढ़ने लगता है। जिन्हें उनका नाम मालूम हुआ, जिन्हें उनके कामों में विश्वास है, वे उनके पास आकर अपना कार्य कराना अधिक पसंद करते हैं। इससे उनकी आय भी बढ़ जाती है। उनके सफल कार्यों की विज्ञप्ति अपने आप ज़ोर से हो जाती है, और जनता उनकी कार्यपरता में विश्वास करने लगती है। ऐसे बहुतेरे आदमी मिलेंगे, जो सार्वजनिक जीवन में इसी दृष्टि से प्रवेश करते हैं कि वे लोकप्रिय (Popular) हो जायँगे, और इससे उनका पेशा चमक उठेगा। प्रायः उन्हें सफलता भी मिलती है। जनता के हित के कार्य करने में उनका कुछ समय भी लगता है। परंतु इस समय उन्हें पहले से, जब जनता उन्हें जानती न थी, अधिक आय होने लगती है। यदि वे त्याग का दावा करते हैं, तो कोरा बहाना करते हैं। जितना समय वे सार्वजनिक कामों को देते हैं, उसके कारण वे अपने समय के मूल्य से ज़्यादा पा जाते हैं। यदि वे अपना पेशा छोड़ दें, और सार्वजनिक जीवन में सारा समय व्यतीत करें, तो हम त्याग भले ही कहें। केवल सार्वजनिक कार्य में कुछ समय या कुछ चंदा देना या इसके कारण कभी-कभी नुक़सान उठाना त्याग नहीं कहा जा सकता। इसका बदला तो उन्हें किसी-न-किसी रूप में मिल ही जाता है। यदि इसका बदला न मिले, और उनका समय, कार्य आदि उनको किसी रूप में लाभदायक न हो, तो हम भले ही त्याग कह सकते हैं। वास्तव में यह बात तय करना अत्यंत कठिन है कि क्या त्याग है, और क्या त्याग नहीं। परंतु इसमें संदेह नहीं कि त्याग शब्द अत्यंत महत्त्वपूर्ण और संकुचित है। अनेक सार्वजनिक कार्यकर्ता त्याग करने का दावा करते हैं, पर जिस कर्म को वे प्राय त्याग के नाम से पुकारते हैं, हम उसे त्याग मानने के योग्य नहीं पाते। वास्तव में हम सार्वजनिक कार्य को बिना किसी प्रकार के त्याग का दावा किए सफलता-पूर्वक जारी रख सकते हैं। हमारा ख़याल है, सार्वजनिक कार्यकर्ता को जनता उसकी सेवाओं का पुरस्कार पर्याप्त रूप में दे देती है, जिसे हम बारीकी से देखने पर स्पष्ट मालूम कर सकते हैं। बहुतेरे मामलों में जनता का बदला बहुत ही साफ़ दिखलाई पड़ता है, जिसे प्रत्येक समझदार व्यक्ति समझ सकता है। इस संबंध में हम विस्तार-पूर्वक फिर कभी लिखेंगे।

त्याग तथा बेईमानी

भारत का सार्वजनिक जीवन अभी बहुत आगे नहीं बढ़ा। यहाँ की जनता बहुत पिछड़ी हुई है, इसी कारण सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की सेवाओं का यथेष्ट बदला नहीं चुका पाती। परंतु इसके माने यह न समझने चाहिए कि वह सब मामलों में असमर्थ रहती है। ऐसा नहीं, ज़्यादातर मामलों में वह कार्यकर्ताओं की सेवा का बदला देती है। पिछड़ी हुई परिस्थिति के कारण हम त्याग को भी एक स्थान दिए देते हैं, अन्यथा आगे बढ़े देशों में त्याग नाम की कोई भी वस्तु नहीं होती। इस त्याग के साथ हमें बेईमानी, दग़ा, फ़रेब आदि अनेक बातों को भी स्थान देना होगा। आगे बढ़े हुए देशों में जहाँ बदला मिलता है, इन बातों की कमी होती है। जहाँ बदला नहीं या कम मिलता है, वहाँ इसकी ज़्यादती है। भारतवर्ष में त्याग और ये हरकतें साथ-साथ चल रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ नेताओं ने त्याग किया है, तो कुछ ने बेईमानी भी की है।

कार्यकर्ताओं की आय का प्रबंध

हिंदोस्तान की जनता अपने सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की आय के लिये पर्याप्त प्रबंध नहीं कर सकी है। कुछ लोगों को जनता उनकी आय बढ़ाकर बदला दे देती और उन्हें सार्वजनिक कार्यों में लगाए रहती है, पर कुछ ऐसे कार्यकर्ता भी हैं, दुर्भाग्य से उनकी संख्या अधिक है, जिनकी आय का कोई साधन नहीं। वे सारा या कुछ समय जनता के हितों में व्यय करते हैं, पर अपने ख़र्च और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये साधारण तरीक़े से भी उनकी आय पर्याप्त नहीं होती। शान-शौकत से रहने की बात यहाँ नहीं उठती। धनाभाव में उन्हें सार्वजनिक धन का उपयोग करना पड़ता है। और, इसके लिये प्रत्येक कार्यकर्ता अपने अनुकूल उपाय ढूँढ़ता है—कोई चुराता है, तो कोई कुछ करता है।

दो प्रकार के कार्यकर्ता

हमारी राय में जनता की सेवा करनेवालों को इतना रुपया मिलना चाहिए कि वे अपना निर्वाह कर सकें। जनता की सेवा करनेवाले दो ही प्रकार के व्यक्ति हुआ करते हैं—एक सरकार द्वारा नियुक्त और दूसरे जनता द्वारा। सरकार अपने नौकरों को मासिक तनख़्वाह देती है, जनता अपने सेवकों को अन्य तरीक़ों से पुरस्कार देती है, जो उनकी आय बढ़ाते या आय का साधन होते हैं। एक समुदाय राजनीति में भाग नहीं ले सकता, और दूसरे का काम प्रधानतया राजनीतिक आदि कार्य करना ही है।

स्वतंत्र पेशों का अभाव

इसका एक प्रमुख कारण यह है कि भारत में ऐसे पेशों का अभाव-सा है, जिन्हें हम स्वतंत्र पेशे के नाम से पुकारा करते हैं, इनके द्वारा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की आमदनी होती रहती है, जिससे वे अपना तथा अपने परिवार के भरण-पोषण का प्रबंध करते रहते और साथ ही जनता के सेवक भी बने रहते हैं। विदेशों में इस प्रकार के पेशे बहुत बढ़े हुए हैं। भारत में नवयुवक सरकारी नौकरियों को अधिक पसंद करते हैं, क्योंकि उन्हें उनमें बँधी हुई तनख़्वाह मिलती है, मान भी ख़ूब होता है। विदेशों के तीव्र-बुद्धियुवक स्वतंत्र पेशों आदि में पड़ते हैं, और अपने देश के सार्वजनिक जीवन में काम करके देश के उत्थान में जुटते हैं। पर भारत के तीव्र-बुद्धि युवक सरकारी नौकरियों में पिसकर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं, और थर्ड क्लास के युवक अन्य कार्यों में मजबूरन् आते हैं। इससे भारत के राष्ट्रीय जीवन को भारी नुक़सान हुआ है। हम उन्हें सरकारी नौकरियों के लालच से नहीं रोक सकते, यह हमारे लिये दुर्भाग्य की बात है *।

परिस्थिति में कुछ परिवर्तन

इधर परिस्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ है, और कुछ ऐसे पेशों का जन्म हो गया है। परंतु उनकी संख्या नाकाफ़ी है। इन पेशों में हम इंशोरेंस कंपनियों की एजेंसी और पत्रकारीय जीवन आदि ले सकते हैं। इन कंपनियों के एजेंट होकर हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ता काफ़ी काम दे सकते और काफ़ी रुपया कमा सकते हैं। सार्वजनिक कार्यों के कारण उनका परिचय और प्रभाव तो होता ही है। हमारे कुछ कार्यकर्ताओं ने इधर ध्यान भी दिया है। कांग्रेस के अनेक कार्यकर्ता अब इनके द्वारा अपनी जीविका

---

* इस विषय में अधिक जानने के लिये पाठक हमारा 'भारतीय युवक तथा सरकारी नौकरियाँ'-शीर्षक लेख जून १९३७ की 'माधुरी' में पढ़ सकते हैं।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपार्जन कर रहे हैं। हम ऐसे केस भी जानते हैं, जिनमें जनता ने अपने कार्यकर्ताओं को कार्य देकर उनके धनाभाव को दूर करने में सहायता पहुँचाई है। पत्रकार-कला का विदेशों में बड़ा ज़ोर है। अनेक कार्यकर्ता अख़बारों में लेख लिखकर, किताबें लिखकर लाखों रुपया कमाते हैं। नेताओं को इनसे ख़ूब रुपया मिलता है। जो जितना बड़ा (मशहूर) नेता होगा, उसे उतना ही अधिक रुपया लेख की लिखाई में मिलेगा। साधारण तौर पर अनेक अख़बार मामूली-मामूली आदमियों को ४०) कालम तक देते हैं। वहाँ ऐसे अख़बार उँगलियों पर ही गिनने को मिलेंगे, जो अपने लेखकों को पारिश्रमिक नहीं देते। भारतवर्ष में हालत ठीक विपरीत है। यहाँ ऐसे पत्र उँगलियों पर गिनने लायक़ हैं, जो अपने लेखकों को कुछ देते हैं, बाक़ी सब मुफ़्त में लिखाते हैं। जो देते हैं, वे इतना कम कि उससे साधारण-से-साधारण रूप से रहनेवाले का काम नहीं चल सकता। भारत में कोई भी कार्यकर्ता अख़बार में लिखकर या किताबों द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह नहीं कर सकता, जब विदेशों में लोग लाखों रुपया मृत्यु के बाद छोड़ जाते हैं। वे इतना तक लेते हैं कि उससे पार्लियामेंट-चुनाव तक लड़ते हैं, केवल निर्वाह की बात कौन कहे!

विदेशों में इसी प्रकार के कितने ही पेशे हैं, जिनके द्वारा कार्यकर्ता पर्याप्त धन कमा सकते और कमाते हैं। पर भारत में पहले तो इनका अभाव है, और जो हैं भी, वे नहीं के बराबर। उनकी सृष्टि हाल ही में हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उन्हें ख़ूब परिपुष्ट करें, ताकि भविष्य में इस भारी कमी को पूरा कर सकें।

संस्थाओं का अभाव

यही नहीं, भारत में ऐसी संस्थाओं की भी कमी है, जो सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को अपने यहाँ नौकर रखकर उनका कार्य जारी रखवाएँ, या उन्हें कुछ आर्थिक सहायता दिया करें, ताकि वे धन कमाने की चिंताओं से मुक्त रहकर सामाजिक सेवा में अपना सारा समय और शक्ति लगा सकें। इस प्रकार की संस्थाएँ केवल निर्वाह-मात्र के लिये धन देकर ऐसे अनेक युवक प्राप्त कर सकती हैं, जो अपना समस्त समय जनता की सेवा में बिताने के लिये तैयार हों। प्रत्येक देश में ऐसे युवक सदा मिलते हैं, जिन्हें सार्वजनिक कार्यों से प्रेम होता है, और वे जिसे विना अधिक धन की परवा किए पसंद कर सकते हैं। निर्वाह के लिये तो धन ज़रूरी है। उतना ही उनके लिये काफ़ी है। भारत में इस समय भयानक बेकारी फैल रही है। अतएव यहाँ ऐसे युवकों का मिलना कुछ भी कठिन काम नहीं। जिन्हें सार्वजनिक कार्यों से प्रेम भी नहीं, वे भी कार्य मिलने की वजह से आसानी से कर सकते हैं, और मामूली वेतन पर ही। क्योंकि इस समय उन्हें अपना पेट भरना ही मुश्किल है। ऐसी हालत में उन्हें रूखा-सूखा भोजन ही पसंद आ जायगा। यदि इस प्रकार की संस्थाएँ भारत में हों, तो वे युवक भी, जो सरकारी नौकरियों में जाकर अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हैं, उनमें सम्मिलित होकर देश का राष्ट्रीय जीवन आगे बढ़ाने के कार्य करने के लिये आने लगें। इस समय भारत में ऐसी दो संस्थाएँ हैं—पूना की 'सर्वेंट्स ऑफ़् इंडिया सोसायटी' और लाहौर की 'सर्वेंट्स ऑफ़् पिपुल सोसायटी'। इन्हें श्रीयुत गोखले तथा लाला लाजपतराय ने स्थापित किया था। इनमें कार्यकर्ताओं को निर्वाह के लिये धन मिलता है। वे अपना सारा समय जनता की सेवा में लगाते और उसका वार्षिक कार्य-विवरण भी छापते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक कार्य तथा वर्तमान कार्यकर्ता

देश का पिछड़ापन तथा युवकों की बेकारी देखकर देश के कितने ही नेताओं ने उन्हें आदेश दिया, और प्रायः दिया करते हैं कि वे गाँवों में जाकर कार्य करें। बात तो बहुत ठीक है दोनो के लिये, पर विना पेट-भर भोजन का प्रबंध हुए उनका वहाँ जाना ठीक नहीं। बहुतेरों को वहाँ जाने का साहस नहीं होता, और जो जाते हैं, उनके निर्वाह का प्रबंध न होने से वे अन्य-अन्य उपायों का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें सार्वजनिक धन का दुरुपयोग तथा जनता की श्रद्धा का अनुचित लाभ भी सम्मिलित होते हैं। इसका फल यह होता है कि जनता का विश्वास सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से उठता जा रहा है। इन नवयुवकों को जज़्ब करना तो दूर की बात है, वर्तमान सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में से कितने ऐसे हैं, जिनकी आय का कोई प्रबंध नहीं। अपना पेट भरने के लिये वे ऐसी हरकतें करते हैं, जिनसे उनके दल बदनाम होते हैं, और जनता का विश्वास भी उठता जाता है। वास्तव में, भारत में, धन के संबंध में कार्यकर्ताओं की जो बदनामी फैल रही है, वह बहुत अंशों में सत्य है। और, उसे करने के लिये मजबूर वे ही होते हैं, जिन्हें भर-पेट खाने को नहीं मिलता। अपनी शान-शौकत बनाने या अपनी हैसियत बढ़ाने के लिये जनता के धन का इस्तेमाल करनेवालों की संख्या कम ही है। इस धन को उड़ानेवाले अधिकांश में वे ही हैं, जो अपने लिये पर्याप्त भोजन इकट्ठा नहीं कर पाते। इस प्रकार की आदतें धीरे-धीरे बढ़ रही हैं। उनका व्यापक रूप होना स्वाभाविक है। भारत के वर्तमान राष्ट्रीय जीवन को हानि पहुँचाने के लिये यह काफ़ी है। कार्यकर्ताओं का अविश्वास हमारे सार्वजनिक जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। इस प्रश्न पर गंभीर दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति को रोके विना जनता की कटु आलोचना की उपेक्षा करते रहने से कोई लाभ न होगा। हम भले ही अभी अपने कार्यकर्ताओं की नेकनीयती में विश्वास करते रहें, पर अधिक समय तक यह नहीं हो सकता। एक दिन सत्यता खुलकर ही रहेगी। जनता को भी अपने कर्तव्य से सचेत होना चाहिए। कार्यकर्ताओं के निर्वाह का इंतज़ाम किए विना इस प्रकार के सच्चे इलज़ाम भी अंत में हानिप्रद होते हैं। अच्छा इसी में है कि जनता और देश के नेता, दोनो ही इस परिस्थिति की गंभीरता को महसूस करके इसके निवारण का उपाय करें।

कार्यकर्ताओं की आवश्यकता

हमने नेताओं के मुख से कई बार सुना है कि देश को इस समय कार्यकर्ताओं की अधिक आवश्यकता है, और अनुगामियों की नहीं, क्योंकि ये तो बहुत हो सकते हैं। शिक्षा-प्रचार की कमी के कारण समझदार, परिश्रमी कार्यकर्ताओं का अभाव है। जनता का ठीक-ठीक नेतृत्व करने के लिये ऐसे ही आदमियों की आवश्यकता है। विना पढ़े-लिखे, अयोग्य व्यक्तियों से अच्छे कार्यकर्ता नहीं बन सकते। न तो ये किसी प्रकार की ज़िम्मेदारी महसूस करते हैं, और न गड़बड़ी के समय परिस्थिति को ही क़ाबू में रख सकते हैं। इसके विपरीत वे बहुत ग़ैर-ज़िम्मेदारी से प्रायः परिस्थिति बिगाड़ ही देते हैं। सीधा-सादा काम भी वे तभी कर सकते हैं, जब उन्हें ऐसा करने का आदेश एक समझदार तथा योग्य व्यक्ति देता है। अपनी अक़्ल से कुछ भी करना उनकी शक्ति के बाहर की बात होती है। परिश्रम, लगन में ये किसी से कम नहीं होते, और इन बातों में अपने नेताओं से बाज़ी मार ले जाया करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। पर ये सब काम सँभाल नहीं सकते, उन्हें एक नेता की आवश्यकता होती है, जो उनके मार्ग-प्रदर्शक का काम करे। युक्त प्रांत में १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार एक सौ आदमियों में आठ पढ़े हुए हैं, और एक सौ स्त्रियों में एक कोई भारतीय भाषा जानती है। इसमें वे भी शामिल हैं, जो केवल नाम लिखना ही जानते हैं। उन लोगों की संख्या और भी कम है, जो अँगरेज़ी पढ़े हुए हैं। ऐसे आदमी सौ में एक हैं, और स्त्रियों में हज़ार में एक। यदि ये सब पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष सार्वजनिक कार्य में जुट जायँ, तो संभवतः नेताओं की कमी दूर हो सकती है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति सार्वजनिक कार्य में आसानी से लगाए भी जा सकते हैं, क्योंकि उनमें बेकारी ज़ोरों से फैल रही है। पर प्रश्न यही उठता है कि उनके निर्वाह के लिये जनता क्या कर सकेगी? विना इसका प्रबंध किए उन्हें जनता की सेवा करने के लिये बुलाना हमारे ख़याल से वर्तमान परिस्थिति में कोई विद्वत्ता-पूर्ण कार्य न होगा। इस परिस्थिति को समझे-बूझे विना नेतागण जो इन युवकों को आमंत्रित करते हैं, वह ठीक नहीं कहा जा सकता। और, जो युवक इसमें शामिल होते हैं, वे भी, हमारे ख़याल से, ग़लती ही करते हैं। हमें तो शक है कि वे देश के लिये उतने उपयोगी सिद्ध होंगे, जितने वे तब होते, जब उनके निर्वाह के लिये प्रबंध हो चुका होता, या स्वयं वे इसका प्रबंध कर चुके होते। जनता की सेवा करने के लिये आगे आनेवालों को हम तो यही राय देंगे कि वे तब आएँ, जब स्वयं अपने पैरों खड़े हो सकें, अन्यथा यहाँ आकर वे उतना कार्य न कर सकेंगे, जितना ईमानदारी से देश के लाभ के लिये करने को तैयार हैं। उन्हें तब तक ठहरना चाहिए, अपने उत्साह पर लगाम लगानी चाहिए। अगर उन्हें लीडर बनने की धुन सवार है, तब भी सोचकर आवें। हमारे वर्तमान लीडरों की स्थिति भी इसी निर्वाह के प्रश्न के कारण अत्यंत बेढब बनी हुई है, बहुत डावाँडोल है। वे पहले अपने वर्तमान लीडरों के कार्यों को छानें-बीनें, तो मालूम पड़ जायगा कि इसके कारण वे कितने परेशान रहते हैं। रुपए की चिंता के कारण उनकी लीडरी के कार्य में धक्का लगता है, दूसरे के आदेश के अनुसार चलना पड़ता है। और, ऐसा करने में उन्हें अपने सिद्धांतों, आदेशों से हटना पड़ता है, उनकी हत्या भी करनी पड़ती है।

कार्यकर्ताओं का विचार-स्वातंत्र्य

नेताओं के लिये सबसे आवश्यक वस्तु है स्वतंत्रता। अर्थात् वे अपने विचार, कार्य आदि के मामलों में पूर्ण स्वतंत्र हों, जो उचित और समयानुकूल समझें, उसे करें, प्रत्येक बात के संबंध में अपनी स्पष्ट राय प्रकट कर सकें, और उन्हें ऐसा करने में कोई डर न हो। यह बात परतंत्र देशों में शासक लोगों के हितों के ख़िलाफ़ अवश्य पड़ेगी। इसके लिये वे इनकी एक प्रकार की स्वतंत्रता छीनना चाहते और छीनते हैं। उनके नियमों को भंग करने के अपराध में इन्हें सज़ाएँ भुगतना पड़ती हैं। परतंत्र देशों में देश-भक्ति का यह ज़रूरी और अनिवार्य पुरस्कार है। नेताओं को इसकी चिंता नहीं होती। पर प्रायः धन के कारण उन्हें अपने स्वतंत्र विचारों और कार्यों पर लगाम लगानी पड़ती है। यह बहुत-से स्वतंत्रता-प्रिय नेताओं के लिये असहनीय है। फिर भी उन्हें सहना पड़ता है। ऐसा करने से कभी-कभी उनके नेतृत्व में दाग़ लग जाता है, और फिर कभी नहीं छूटता। जनता पर उनकी क़लई एक-न-एक दिन खुल ही जाती है। यहाँ हम कुछ सत्य और कड़ी बातें लिखने के लिये मजबूर हैं, जो हमने अपने देश के लीडरों में पाई हैं। विदेशों के नेताओं में भी ये अक्सर पाई गई हैं। उनका पाया जाना स्वाभाविक है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि धन की आवश्यकता किसी अन्य प्रकार पूर्ण नहीं की जा सकती । धन-पूर्ति के कार्य में प्रायः उन्हें अपने मन के ख़िलाफ़ भी करना पड़ता है। इन बातों को पाठक भी मालूम कर सकते हैं। मालूम करने के लिये केवल ध्यान-पूर्वक नेताओं के कार्यों पर निगाह रखने की आवश्यकता है। किसी-न-किसी में कोई-न-कोई बात निकल ही आएगी।

कार्यकताओं के ख़र्चे और धनी पुरुष

आपने कितने ही नेताओं के बारे में सुना है कि अपने लंबे-चौड़े ख़र्चे वे स्वयं नहीं करते, कर ही नहीं सकते । उन्हें कोई-न-कोई देश का धनी-मानी देता है। इन नेताओं के ख़र्च का सारा भार उनके ऊपर नहीं, वरन् अन्य लोगों पर रहता है। हमने तो यहाँ तक सुना है कि कुछ नेताओं के पास अमीर धन देनेवालों के दस्तख़त किए हुए चेक रहते हैं, जब जितनी आवश्यकता पड़ी, लिखकर बैंक से मँगवा लिया। नेताओं को धन देनेवाले प्रायः उनके कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते, फिर भी नेताओं को उनका ख़याल रखना ही पड़ता है। जहाँ तक संभव होता है, वे कोई ऐसा कार्य नहीं करते, जो उनके या उनके हितों के ख़िलाफ़ पड़े, परंतु इतना ख़याल रखना भी देश के हित की दृष्टि से कभी-कभी अनुचित होता है। कभी-कभी धन देनेवाले अपने मतलब की बातों पर ख़याल रखने के लिये उनसे कह भी देते हैं। अगर ये लोग इन नेताओं को पूर्ण स्वतंत्रता भी दें, तब भी उनके लिये उनके हृदय में कुछ-न-कुछ रियायत स्वभावतः रहेगी, इसे वे निकाल नहीं सकते। सार्वजनिक जीवन में कार्य करते समय उनकी यह निगाह जनता से छिपी नहीं रहती, और उनके कार्यों से स्पष्ट भी हो जाता है कि इस समय उन्होंने अपने भरण-पोषण करनेवालों के लिये अमुक रियायतें की हैं, या उनके कार्यों की उपेक्षा की है।

धनिकों का स्वार्थ

नेताओं को धन से सहायता देने में इन सेठों का भी लाभ है। उनके कार्य कैसे भी हों, वे स्वयं देश-भक्त समझे जायँगे। जनता उन्हें भले ही न जाने, पर नेता लोग उनकी उदारता से परिचित होते हैं। बहुतेरे सरकारी पिट्ठू, जो खुल्लमखुल्ला सार्वजनिक कार्यों में भाग नहीं ले सकते, छिपे-छिपे धन आदि से नेताओं की सहायता करते रहते हैं। ऐसा करने से वे सरकार के पिट्ठू बने रहने के साथ-साथ जनता के नेताओं के भी कृपा-पात्र बने रहते हैं। यह नहीं होता कि एक पार्टी के सहायक बने रहें। इस तरीक़े से वे दोनो को साधकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। अगर जनता का ज़ोर हुआ, तो उनकी नेता प्रशंसा करते हैं, और जनता के प्रति उनकी उदारता प्रकट करके उनके प्रति श्रद्धा के भाव उत्पन्न करा देते हैं। सरकार का ज़ोर हुआ, तो वे उसके आदमी तो होते ही हैं। बाद में यदि वे नेतागिरी ही करने की बात सोचें, तो आसानी से बड़े नेता बन सकते हैं। उनके पास धन तो होता ही है, झट से वे जनता के कितने ही सच्चे सेवकों का नंबर मारकर उनसे अधिक ज़िम्मेदार पदों पर सुशोभित कर दिए जाते हैं। पिछले चुनाव में ऐसे कितने ही व्यक्ति कांग्रेस की ओर से खड़े कर दिए गए, और उनके सामने उनके हक़ कुछ भी न समझे गए, जिन्होंने खुल्लमखुल्ला देश-सेवा की, उसके लिये कष्ट सहे। उन लोगों ने प्रायः यही नीति इस्तेमाल की थी कि अपना संबंध नेताओं से रक्खा, और उनकी रुपए-पैसे से सहायता करते गए। जनता उनको कांग्रेसमैन के रूप में पहली बार उसी समय जान सकी, जब वे कांग्रेस के उम्मेदवार बनकर उससे वोट माँगने गए। इससे पहले वह उन्हें किसी पार्टी का नहीं समझती थी, वरन् उनका झुकाव सरकार की ओर ही अधिक था। न तो वे कभी जेल ही गए, और न कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता की किसी अन्य प्रकार से सेवा की, परंतु कांग्रेस के बड़े नेताओं ने उन्हें कांग्रेस की ओर से नामज़द कर दिया। जनता को उन्हें वोट इसलिये देने पड़े कि वे कांग्रेस को प्यार करते हैं।

जनता तथा कार्यकर्ताओं पर प्रभाव

जनता ने उन्हें वोट देकर चुन भी लिया, पर इसका क्या प्रभाव उस पर पड़ा, यह बात भी देश-हित की दृष्टि से विचारणीय है। जनता को अपने कांग्रेसी नेताओं पर संदेह होने लगा कि आख़िर उन्होंने ऐसा क्यों किया। अन्य कार्यकर्ता, जो बहुत समय से जनता की सेवा करते आए हैं, उनके मुक़ाबले में फीके पड़ गए, उनकी सेवाओं की परवा न की गई। इससे सार्वजनिक कार्यकर्ता कितने हतोत्साह हो जाते हैं, इस बात की कल्पना पाठक कर सकते हैं। एक ने किसी जगह के लिये कार्य किया, उसे अपने बलिदान से सींचा, जब पुरस्कार का समय आया, तब उसे हड़प लिया किसी दूसरे ने। यह कितनी ज़्यादती है, कितनी विडंबना है। क्या इस प्रकार की बातों से कार्यकर्ताओं के मन खिन्न नहीं हो जाते?

कम्युनिस्टों का आरोप

भारत के कम्युनिस्ट-दल के कार्यकर्ताओं के दिलों में कांग्रेस के बहुतेरे नेताओं के प्रति श्रद्धा के भाव नहीं। वे इनकी मक्कारियों को जानते हैं, और यह भी कि किस प्रकार अपने स्वार्थों के लिये समय-समय पर उन्होंने देश के हितों की बलि दी है। ये स्वयं कमाकर अपने ख़र्च नहीं सँभाल सकते और पूँजीपतियों के आश्रित रहते हैं। कितने ही नेता तो उनके हाथ बिक-से गए हैं, बाक़ी उनके कहे में चलते हैं। पूँजीपति उन्हें जितना रुपया ख़र्च करने को देते हैं, उससे अधिक उनके ज़रिए देश के हितों को कुचलकर वसूल कर लेते हैं, और देश-सेवा का यश मुफ़्त में ही प्राप्त कर लेते हैं। कम्युनिस्टों का कहना है कि विगत सत्याग्रह-आंदोलन के समय भारत के मिल-मालिकों ने कांग्रेस को रुपया दिया, जिससे विदेशी वस्त्र-व्यवहार के संबंध में कांग्रेस की नीति उस समय बहुत कुछ पूँजीपतियों द्वारा निर्धारित की जाती रही, ताकि उनका अधिकाधिक लाभ हो। इससे उन्होंने जितना एक हाथ से कांग्रेस को दिया, दूसरे हाथ से उससे अधिक रक़म पैदा कर ली। वे तो यह भी कहते हैं कि कांग्रेस एक प्रकार से पूँजीपतियों की कठपुतली है। जैसा वे कहते हैं, जैसा वे चाहते हैं, इससे करा लेते हैं। यदि सब कामों पर उनका प्रभाव न होता, तो कम-से-कम ऐसे मामलों को तो वे अवश्य अपने अधिकार में रखते हैं, जिनका संबंध उनके हितों से होता है। उनका प्रभाव कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं पर भी है। कांग्रेस की नीति निर्धारित करने में उनका भी हाथ रहता है। कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के पूँजीपति भी सदस्य रहे हैं, और उन्होंने उसके निर्णयों को भी प्रभावित किया है। कम्युनिस्ट और भी अनेक प्रकार के दोष कांग्रेस के नेताओं के सिर मढ़ते हैं। दोनो की नीति में फ़र्क़ है। संभव है, इस कारण वे कांग्रेस के कार्यों की कड़ी आलोचना करते हों। पर हमारी राय में उनकी बातें झूठ नहीं कही जा सकतीं, उनमें बहुत अंश तक सत्यता भी है।

स्वयं कमानेवाले कार्यकर्ता

यह तो बात रही कांग्रेस की। इसी प्रकार अन्य प्रकार के सार्वजनिक कार्यों पर भी पूँजीपतियों का अधिकार है। उनकी तूती हर जगह बोलती है। इसका ख़ास कारण यह है कि हमारे नेता स्वयं अपने ख़र्च के लिये उन पर निर्भर रहते हैं। यदि वे स्वयं कमाकर स्वतंत्र रहें, तो उनका इतना व्यापक प्रभाव नहीं हो सकता। देश के कार्यों में जो धन वे दें, वह सहर्ष लिया जा सकता है। पर इस सहायता का प्रभाव नेताओं पर नहीं पड़ सकता, जो उनकी सीधी सहायता से पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतएव आवश्यकता इस बात की है कि हमारे नेता वे हों, जो स्वयं कमा सकें, और दोनो काम जारी रक्खें—कमाएँ भी, और देश का कार्य भी करें। उनके लिये अपना स्वतंत्र अस्तित्व क़ायम रखना ज़रूरी है। देश के हित की दृष्टि से हम तो उन नेताओं को अच्छा समझते हैं, जिन्होंने पहले ख़ूब रुपया कमा लिया, और बाद में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया—अपने पहले कमाए हुए धन से अपने सब ख़र्च चलाते रहे। वास्तव में स्वतंत्र अस्तित्व के नेता न केवल अपना नाम ही अधिक कर सकते हैं, बल्कि देश की सेवा भी अधिक कर सकते हैं। वे जो कुछ सोचेंगे, सभी देश का ख़याल करके। उनके सामने अन्य किसी के हितों का प्रश्न नहीं आ सकता। इसके अतिरिक्त उनका मान भी अधिक होता है। जनता भी उनकी अधिक इज़्ज़त करती है। उस पर उनका प्रभाव अधिक रहता है। सरकारी कार्यकर्ता भी उनसे डरते रहते हैं। वे जानते हैं, वे साफ़ बात कह सकते हैं। उन पर किसी का प्रभाव नहीं। उन लोगों को सदैव उनकी बातों पर ग़ौर से विचार करना होगा।

स्वयं कमानेवाले कार्यकर्ताओं का प्रभाव

जो लोग, चाहे वे छोटे कार्यकर्ता हों या बड़े, अपना स्वतंत्र अस्तित्व क़ायम रखते हैं, वे वास्तव में जनता के अधिक नज़दीक होते है। उसके दिल पर उनका सिक्का जमा रहता है। धीरे-धीरे लोगों में उनके प्रति अंध-विश्वास हो जाता है। जनता की सहानुभूति के अतिरिक्त वे अन्य कितने ही उपायों से अपना प्रभुत्व जमा सकते हैं। अपने विचार फैलाने के लिये वे अनेक कार्यकर्ताओं को नौकर रख सकते हैं, जो उनके कार्य में विशेष रूप से सहायक हों, या अन्य कार्यकर्ताओं को थोड़ी-बहुत आर्थिक सहायता पहुँचाकर उन्हें देश की सेवा करने के लिये प्रेरित कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि वे पूँजीपतियों की भाँति अन्य कार्यकर्ताओं को रुपया आदि देकर अपनी ओर अधिक आकर्षित कर सकते हैं। ऐसे नेताओं तथा पूँजीपतियों के बर्ताव में अंतर रहेगा। वे अपने मतलब की बात सोच ही न सकेंगे। उनका अस्तित्व बिलकुल स्वतंत्र होगा। अतएव अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं से वे बातें न चाहेंगे, या करवाएँगे, जो साधारणतया पूँजीपति लोग उनसे करवा लेते हैं। भारत में भी इस प्रकार के नेता हुए हैं, जिन्होंने अपनी पूँजी से अपने नेतृत्व को अधिक चमकाया है। अपनी पार्टी खड़ी करके अपने कार्य-क्रम को कार्य-रूप में परिणत किया है। ये वास्तव में एक ज़बरदस्त शक्ति के नेता हुए हैं। उनमें स्वयं असाधारण प्रतिभा थी, जिसके बल पर उन्होंने इतना रुपया कमाया, और बाद में सार्वजनिक जीवन में थोड़े-से ही समय में इतना नाम पाया।

कार्यकर्ता और सार्वजनिक जीवन

प्रत्येक देश का सार्वजनिक जीवन वैसा ही होगा, जैसे वहाँ के कार्यकर्ता होंगे। कार्यकर्ताओं पर भारी ज़िम्मेदारी होती है। भारत का सार्वजनिक जीवन इस समय कुछ नहीं के बराबर है। उसे सबसे बड़ी आवश्यकता है स्वतंत्र बनने की। सभी नेताओं का यही सार्वजनिक जीवन है कि वे भारत को स्वतंत्र करने में सहयोग दें। स्वतंत्र होने के बाद अन्य अनेक बातें पैदा होंगी, उन्हें फिर सुलझाने की आवश्यकता होगी और भारत के राष्ट्रीय जीवन को अन्य देशों के मुक़ाबिले में आगे बढ़ाने की। परंतु इस समय सबसे बड़ा प्रश्न यही है।

कार्यकर्ताओं का विशेष उत्तरदायित्व

दासता में रहने के कारण भारतीयों की मनोवृत्ति भी परतंत्र हो गई है। उनमें अनेक बुराइयाँ आ गई हैं। अच्छा-बुरा सोचने की शक्ति जाती रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul K...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे समय में सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की विशेष ज़िम्मेदारी है। स्वतंत्र भारत में जागृति के समय जनता अपने कार्यकर्ताओं के पेशों को ठीक कर सकती है। उनसे उसका अधिक नुक़सान भी नहीं हो सकता। पर इस समय हमारे कार्यकर्ताओं में कुछ बुराई है, कोई कमी है, तो उसे हम ठीक करने के क़ाबिल नहीं। और, इससे हमारे राष्ट्रीय जीवन को नुक़सान ही होगा, स्वतंत्रता-प्राप्ति में उतनी ही देर लगेगी। अतएव इस समय इसी बात की आवश्यकता है कि हमारे नेता ईमानदार, नेकनीयत और सच्चे कार्यकर्ता हों। देश के बड़े-बड़े नेता, जिनका देश-व्यापी प्रभाव है, और जो इन बातों को समझते हैं, हमारे कार्यकर्ताओं के प्रति विशेष रूप से उत्तरदायी हैं। वे अपने प्रभाव को इस ओर लगाकर उनकी इस समस्या को हल कर सकते हैं। जब वे लाखों रुपया अन्य अनेक कार्यों के लिये एकत्र करते हैं, तब इसका भी कुछ प्रबंध कर सकते हैं। पर वे शायद इस प्रश्न की गंभीरता को इतना महसूस नहीं करते, यह भारत का दुर्भाग्य ही है।

सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के लिये सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण वस्तु है स्वतंत्रता। इसके विना वे देश के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकते। अपनी स्वतंत्रता खोकर भारत की परतंत्रता की ज़ंजीरों को वे किसी तरह भी नहीं काट सकते। जब धन के लोभ से वे अपने विचार-स्वातंत्र्य तथा कार्यों आदि को बेच सकते हैं, तब वे देश के हितों के अनुकूल क्या कर सकते हैं? जो कार्यकर्ता अपनी स्वतंत्रता क़ायम रख सकते हैं, वे भारत को भी स्वतंत्रता का संदेश देने में सफल हो सकते हैं। उनकी व्यक्तिगत आय के साधन उनकी स्वतंत्रता के अस्तित्व को क़ायम रख सकते हैं। अतएव इस प्रश्न पर गंभीर दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ।

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।

दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।/, डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।।-/
२५ ,, ,, ,, ५=)

} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम का आदर्श

[श्रीयुत गौरीशंकर ओझा]

प्रेम वह ज्वाला है, जिसे सातो समुद्रों का जल भी नहीं बुझा सकता। प्रेम वह प्रबल नदी है, जिसकी धारा कई हिमालय भी नहीं रोक सकते। प्रेम बहुत व्यापक है, अविनाशी है, उसका विकास अमरत्व में होता है। उसमें त्याग है, आत्मबलिदान है, विनय है, आत्म-विस्मृति है। वह पवित्र है, सुंदर है, उच्च है, निस्स्वार्थ है। वह नित्य और सनातन है। ध्रुव नक्षत्र की भाँति स्थिर है। वह स्वार्थ, वासना और काम से परे है। जब वह प्रस्फुटित होता है, तो प्रियतम को केंद्र बनाकर सारी सृष्टि में व्याप्त हो जाता है। त्याग में, विरह में, आनंद में उसी की अमर प्यास है। वह कला का उद्गम है।

रामचंद्रजी सीता-हरण के पश्चात् वृक्षों से, नदी से, पर्वतों और पशु-पक्षियों से क्यों सीता का पता पूछते हैं? क्या उन्होंने उत्तर दिया होगा? विरहिणी राधा और व्रजांगनाओं का समस्त जीवन क्यों वेदना में बीता? विश्व के प्रत्येक पदार्थ की गति में उन्हें शोक की ध्वनि क्यों सुनाई पड़ी? ज़ेबुन्निसा को यह कल्पना क्यों हुई थी कि उसकी दर्द-भरी आहों से आसमान का रंग नीला हो गया है? शकुंतला को क्यों शाप-ग्रस्त होना पड़ा? मीरा ने क्यों राजसी सुख परित्यागकर विष का प्याला पिया? बड़े-बड़े महाकाव्य, कविताएँ तथा ताजमहल-जैसे स्मारक क्यों इतने आकर्षक हैं?

उनमें हम मानव-हृदय के निगूढ़ भावों का आविष्कार पाते हैं। वे हमारे जीवन, आत्मा और हृदय की उत्कंठा को सौंदर्य तथा आनंद में डुबो देते हैं। उनमें हम प्रेम का ही अस्तित्व पाते हैं। करुणा, विरह, शोक आदि उसी की साधना के रूप हैं। हम उनमें वह रस पाते हैं, जिसके हम चिर-तृषित हैं, और जिसे खोजते रहे हैं। किंतु उसका बार-बार पान करने से भी तृप्ति नहीं होती, और यही अतृप्ति वह अमरता है कि उन्हें प्राचीन होने पर भी नित्य नवीन देखते हैं। रवींद्रनाथ ठाकुर अपनी 'शाहजहाँ'-शीर्षक कविता में लिखते हैं—

एक बिंदु नयनेर जल
कालेर कपोल - तले शुभ्र, समुज्ज्वल
ए ताजमहल।

"काल के कपोल तले यह सुंदर और उज्ज्वल ताजमहल आँखों का एक अश्रु-बिंदु है।"

* * *

तोमार सौंदर्य - दूत युग - युग धरि
एड़ाइया कालेर प्रहरी
चलियाछे वाक्यहारा एइ वार्ता निया—
"भुलि नाइ, भुलि नाइ, भुलि नाइ प्रिया!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा सौंदर्य-दूत युग-युगांतर तक जय पाकर यह वाक्य-विहीन वार्ता लेकर चला है— "मैं भूला नहीं हूँ, भूला नहीं हूँ, भूला नहीं हूँ प्रिया !"

शाहजहाँ के इस प्रेम-स्मारक 'ताजमहल' को देखकर उसके पत्नी-प्रेम की महत्ता का जैसा परिचय मिलता है, वह विश्व-विख्यात है।

विद्यापति के एक पद में प्रेम में अतृप्ति का कैसा सुंदर उल्लेख है—

सखि, कि पूछसि अनुभव मोय।
सेहो पिरिति, अनुराग बखानइत,
तिले - तिले नूतन होय।
जनम - अवधि हम रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल ;
सेहो मधुर बोल श्रवणहि सूनल,
श्रुति - पथे परस न गेल।
कत मधु - जामिनि रभ से गमाओल,
न बूझन कैसन केल ;
लाख-लाख युग हिय हिय राखल,
तइयो न हिया जुड़न गेल।
कत बिदगध जन रस अनुगमन,
अनुभव काहु न पेख ;
बिद्यापति कह प्राण जुड़ाइत
लाखवे न मिलल एक।

"हे सखि ! तू मेरा अनुभव क्या पूछती है ? मैं जब उस प्रीति और अनुराग का वर्णन करती हूँ, तो उसका छोटे-से-छोटा अंश फिर नवीन-सा जान पड़ता है। जीवन-भर उस रूप को निहारा, पर आँखों की प्यास न बुझी। उनकी वाणी कानों से सुनी, पर ऐसा जान पड़ता है कि उनके शब्दों ने कभी कानों का स्पर्श भी न किया। कितनी बसंत की रातें विलास में ही बीतीं, पर मुझे यह मालूम नहीं कि केलि क्या वस्तु है। लाख-लाख युग हृदय से हृदय मिलाकर रक्खा, पर हृदय शीतल न हुआ। कितने ही रसिकों ने रस का अनुसरण किया, पर यथार्थ अनुभव किसी को नहीं। (विद्यापति कहते हैं) ऐसा लाखों में एक भी न मिला, जिसका हृदय इस रस के अनुभव से शीतल हुआ हो।"

प्रेम का कैसा मधुर उच्छ्वास है। प्रेम का लोकोत्तर आनंद चरम सीमा तक पहुँच गया है। रवींद्रनाथ कहते हैं—

तबे प्राणे भालोबासा केनो गो दीले,
रूप न दीले जदि बिधि हे।

"हे परमात्मा ! यदि मुझे रूप न दिया था, तो मन में प्रेम क्यों दिया ?"

प्रेम एक गुण है, जो अरूप को रूपमय और असुंदर को सुंदर बना देता है। प्रेम वह कुसुम है, जिसके चारों ओर कुल काँटे-ही-काँटे हैं। यह वह प्रकाश है, जिसे अंधा भी देखता है। यह वह संगीत है, जिसे मूक गाता और बहरा सुनता है। यह वह सुख है, जा दुख में है। यह वह आनंद है, जो वेदना में है। और, यह वह अमृत है, जो हलाहल में है। मीरा कहती है—

मेरे राणाजी मैं गोविंद गुण गाना।
राजा रूठे नगरी रक्खे अपनी मैं हरि रूठ्या कहाँ जाना;
राणा भेजा जहर-पियाला मैं अमृत कह पी जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डबिया में काला नाग भेजा, मैं शालग्राम कर जाना;
मीराबाई प्रेम-दिवानी, मैं साँवलिया वर पाना।

प्रेमिका अपने प्रेम को सुरक्षित रखने के लिये कष्टों का कष्ट नहीं समझती, दुख में भी अपने को सुखी अनुभव करती है।

अँगरेज़ी का प्रसिद्ध कवि बायरन कहता है—

Man's love is of man's life a thing apart·
Tis woman's whole existance.

"पुरुष का प्रेम उसके जीवन से पृथक् रहता है, किंतु स्त्री का जीवन ही प्रेम होता है। प्रेम ही जीवन होता है।"

मानो उक्त पद को ही चरितार्थ करने के लिये जब रामचंद्रजी प्रजा-रंजनार्थ सीता-परित्याग-रूप कर्तव्य के वशीभूत होते हैं, तब उनसे सीता की सखी वासंती भवभूति का निम्न-लिखित पद कहकर मूर्च्छित हो जाती है। कितना प्रभावोत्पादक है—

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्गे;
इत्यादिभिः प्रियशतैरनुरुध्य मुग्धां
तामेव शान्तमथवा किमतःपरेण।

"तुम मेरा जीवन हो, मेरा द्वितीय हृदय हो, मेरी आँखों के लिये चाँदनी और शरीर के लिये अमृत हो, इसी प्रकार की सैकड़ों चाटूक्तियों से तुमने उस मुग्धा को वशीभूत किया, किंतु शोक! इसी को इस समय—अथवा आगे कहने से क्या?"

भारतीय नारियाँ अपने प्रियतम के लिये क्या त्याग नहीं कर सकतीं। उनका प्रेम आदर्श है, वह जितना ही गंभीर है उतना ही स्थायी। रवींद्रनाथ ठाकुर-रचित 'मायार खेला' (गीति-नाटिका) में शांता अपने प्रियतम के प्रति निम्न-लिखित भाव प्रकट करती है—

आमार परान जाहा चाय,
तुमि ताई, तुमि ताई गो।
तोमा छाड़ा आर ए जगते
मोर केह नाई, किछु नाइगो।
तुमि सुख यदि नाहिं पाओ,
जाओ, सुखेर संधाने जाओ।
आमि तोमारे पेएछि हृदय माझे,
आर किछु नाहिं चाइगो।
आमि तोमारे विरहे रहिब विलीन,
तोमाते करिब वास।

"मेरे प्राण जिसे चाहते हैं, तुम वही हो—वही हो! तुम्हें छोड़कर इस संसार में मेरा कोई नहीं, कुछ नहीं। यदि तुम सुख नहीं पाते, ता जाओ, उसे खोजने जाओ। मैंने तुम्हें अपने हृदय में पा लिया, अब कुछ नहीं चाहिए। मैं तुम्हारे विरह में विलीन रहूँगी, और तुम्हीं में वास करूँगी।"

इस पद में शांता द्वारा कितना महान् त्याग व्यक्त किया गया है। प्रेम की परा काष्ठा त्याग में ही है। वह अपने प्रियतम के सुख के लिये उसका त्याग कर सकती है, किंतु उसका प्रेम इससे और भी अधिक स्थायी एवं गंभीर हो जायगा। वह प्रियतम का त्याग कर सकती है, पर उसके प्रेम का किसी भी प्रकार नहीं। वह

CC-0. In Public Domain. Guru...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके विरह में विलीन रहेगी, और उसी में वास करेगी।

'देह दो एक प्राण'

(पंत)

का कैसा सुंदर निदर्शन है। यह है भारतीय नारी के पातिव्रत्य तथा प्रेम का विश्व-दुर्लभ आदर्श। प्रेम-पथ बहुत विकट है। एक गुजराती-कवि कहता है—

प्रेम-पंथ पावक नी ज्वाला,
खांडा नी धारे चलवुँ छे।

"प्रेम-मार्ग अग्नि की ज्वाला है, उस पर चलना तलवार की धार पर चलना है।"

प्रेम वह प्यास है, जो कभी बुझती नहीं।

भूले-भटके ढाल गए जो
तप्त हृदय-प्याली में तुम ;
आह, तुम्हारी एक बूँद में
मेरा जीवन प्यास बना।

(मिलिंद)

पर यह वह बूँद है, जिसमें प्रेमी के विरह, वेदना और दुखों का सागर लहराता है। इसके लिये महान-से-महान् त्याग भी क्षुद्र-से-क्षुद्र है। सरोजिनी नायडू इसी प्रेमामृत को पीकर गा उठती हैं—

"Take my flesh and feed your dogs, if you choose.

Water your garden trees with my blood, if you like.

"मेरे मांस से तुझे अपने कुत्तों का पेट भरना स्वीकार हो, तो ऐसा ही सही। मेरे रक्त से अपने उपवन के वृक्षों को सींचना चाहे, तो तेरी इच्छा।"

स्त्री प्रेम को अपने प्रियतम से भी अधिक चाहती है, प्रेम की अवहेलना करना उसे आता ही नहीं।

प्रेम कहाँ रहता है। सरोजिनी नायडू अपनी एक कविता में कहती हैं--

"जिस प्रकार साँप बाँसुरी की आकर्षक ध्वनि सुन उस ओर आकर्षित हो जाता है, उसी प्रकार हे मेरे प्रेम! मेरा हृदय तुम्हारी उँगलियों में फिसल जाता है। जिस प्रकार गुलाब की पंखुड़ी में सुगंध छिपी रहती है। उसी प्रकार मेरे प्रेम! तुम्हारा हृदय मेरी छाती में छिपता है।"

अँगरेज़ी की प्रसिद्ध बंगाली कवयित्री कुमारी तोरुदत्त भी अपनी कविता में कहती हैं—

"तेरा द्वार अब तक बंद है। प्राची दिशा चमक रही है। प्रभात-वायु ताज़गी के साथ, स्वतंत्रता-पूर्वक बह रही है। जो घड़ी गुलाब को जगा देती है, क्या वह तुझे नहीं जगावेगी? प्रेम, ज्योति और संगीत, सभी तेरी राह देख रहे हैं; ज्योति अनंत लोहित आकाश में, संगीत 'लार्क' पक्षी में और विशुद्ध प्रेम मेरे मन-मंदिर में।"

उक्त दोनो कविताओं में प्रेम को अंतःकरण में माना है। अर्थात अंतःकरण ही प्रेम का जन्मदाता है, किंतु महाकवि शेक्सपियर इस विषय में कुछ और ही लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नया प्रकाशन

छप गया ! छप गया !!

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में निस्संकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

लेखक

हिंदी के युगांतरकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('विदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।

(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।

(३) कुली-प्रथा की आह और कराह।

(४) पूर्वजन्म के प्रेम की पीड़ा।

(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजना और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

आजकल छपाई में खर्च अधिक आने के कारण थोड़ी ही प्रतियाँ छपाई हैं, इसलिये फ़ौरन् एक कापी मँगाकर यह सर्वोत्तम उपन्यास पौने मूल्य में ही लीजिए। सजीव, परिमार्जित भाषा। इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखनी आवश्यक है। मूल्य दोनो भाग ४), सजिल्द ५)

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों का एकमात्र

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्लभ ग्रंथ-रत्न

आरोग्य-शास्त्र

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक
आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

निम्न-लिखित ३१ अध्याय, १२० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×३० = ८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती, मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला!

यदि आप

अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

अध्याय-सूची

१. स्वास्थ्य-विज्ञान
२. शरीर-विज्ञान
३. शरीर-यंत्र
४. गर्भाधान और प्रसव
५. शिशु-पालन
६. स्नान
७. भोजन
८. फलाहार
९. मक्खी, मच्छर, खटमल और रोग-कीटाणु
१०. जड़ी-बूटी
११. मुष्टि-योग
१२. प्रसिद्ध नुसख़े
१३. ख़ास नुसख़े
१४. धातुओं की भस्म
१५. आकस्मिक उपचार
१६. रोगी की सेवा
१७. पथ्यापथ्य
१८. तपेदिक़
१९. हैज़ा
२०. प्लेग
२१. कुछ महत्व-पूर्ण रोग
२२. स्वाभाविक चिकित्साएँ
२३. यौवन-रक्षा
२४. व्यभिचार
२५. स्त्रियों का स्वास्थ्य
२६. व्यायाम
२७. आयु बढ़ाने की रीति
२८. सुंदरता बढ़ाने की रीति
२९. गृह-निर्माण-कला
३०. उपयोगी विद्याएँ
३१. आत्मविज्ञान

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

गिरीशजी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वरलहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के ग्राहकों को पौने मूल्य में

लेखक—
डॉ० रामदयाल कपूर
एम्० बी० बी० एस्०

प्रसूति-तंत्र

मूल्य २।।), सजिल्द ३)

"प्रसूति-तंत्र—हिंदी में अपने ढंग की यह निराली पुस्तक है। जच्चा-बच्चा, जननेंद्रिय-क्रिया-विज्ञान, गर्भ-विज्ञान, प्रसव-विधि, गर्भावस्था के विकार तथा डॉक्टरी क्रियाओं द्वारा बाँझपन दूर करने के उपचार तथा गर्भ से बालक निकालने की चीड़-फाड़ आदि के विषय में अभी तक इतनी विशद पुस्तक हिंदी में कोई भी नहीं थी। यद्यपि यह पुस्तक साधारण गृहस्थ को ज्ञान-मात्र ही दे सकेगी, किंतु अज्ञानता-वश मूर्ख दाइयों द्वारा अक्सर हानि उठानेवालों को सचेत अवश्य करा सकेगी, और सही बात समझने के योग्य बना सकेगी। मैंने अंतिम अध्याय (प्रसूति का शल्य-कर्म) पढ़कर यह जान लिया है कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ अपनी बात समझाने की चेष्टा की है। समझदार गृहिणियों को इस पुस्तक का एक बार मनन अवश्य करना चाहिए।"

(वर्तमान, कानपुर)

प्रसूति-तंत्र
आचार्य द्विवेदी जी का कथन है—
"प्रत्येक गृहस्थ के लिये अनमोल है।"

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

नटखट पाँड़े (द्वितीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० । एक नटखट लड़के की [illegible] कथा । एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है । नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर [illegible] की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को [illegible] गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे [illegible] बिना नहीं रह सकते । कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ [illegible]

मिलने का पता—[illegible]

मूल्य १), सजिल्द १॥)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा।

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा, रंगीन छपाई।

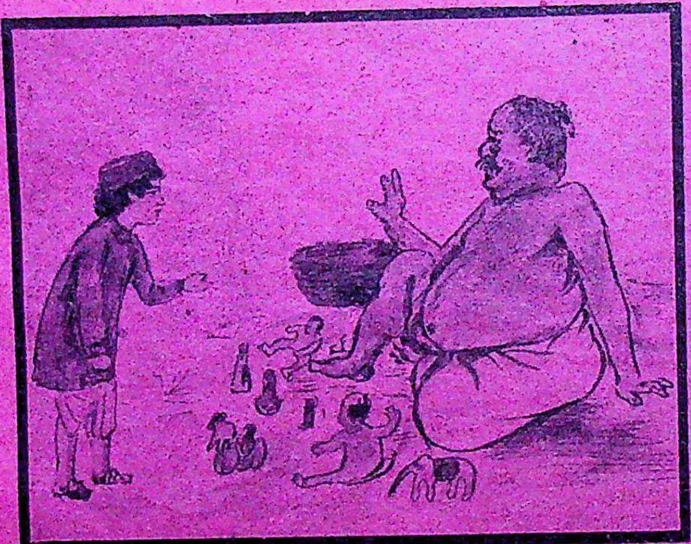

बाल-विलास

इस सुंदर पुस्तक के लिये छोटे-छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से उलझ रहा है।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ।।≈)

अम्मा, अम्मा, ला दो

जल्दी से—

हँसी-खेल

दद्दा ने मेरे ही लिये तो इसे मँगवाया है। इसके भीतर बहुत-सी रंग-बिरंगी तस्वीरें और मज़ेदार कहानियाँ हैं।

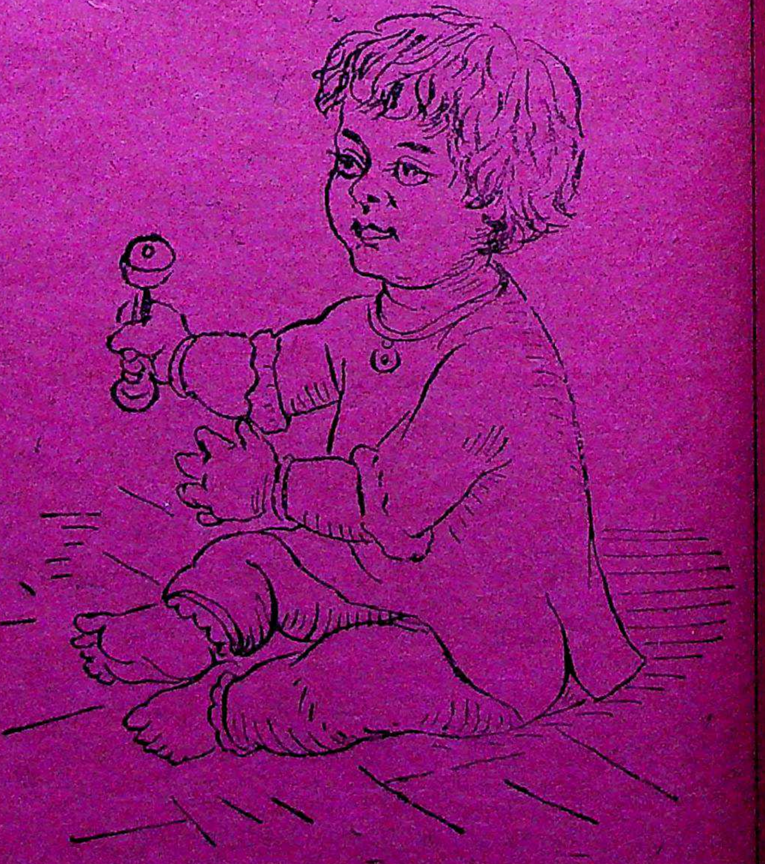

मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के कायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की व्यापकता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों इसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर [illegible] की कोठी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं— आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी खूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी खूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और इसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सरलता और कुलटा की कामुकता तो तड़पा डालती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public D

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्यारे बच्चों को साहसी और वीर बनाने के लिये

'साहसी बालक' अवश्य पढ़ाएँ

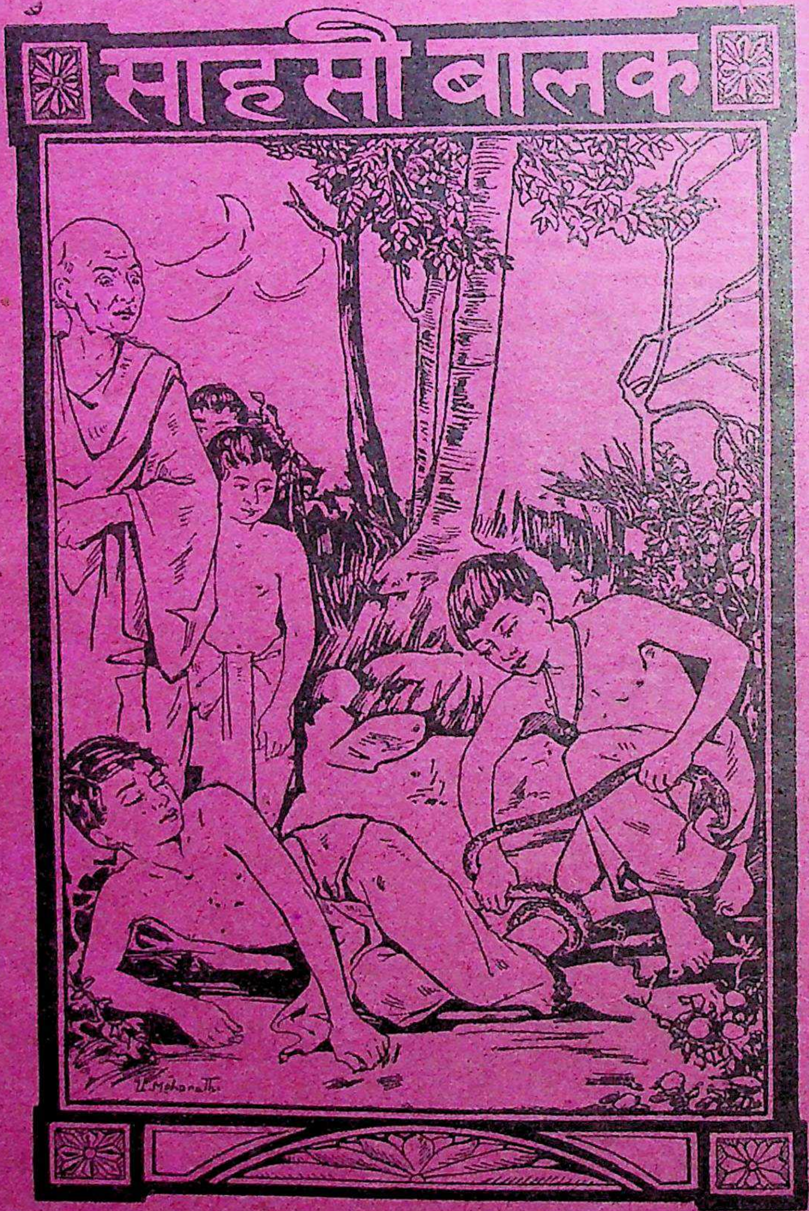

साहसी बालक (द्वितीयावृत्ति)

यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। बालक ही आगे चलकर मनुष्य और देश के कर्णधार होते हैं, इसलिये अपने बालकों को साहसी बनाइए। साहस के बल पर ही कल्याण हो सकता है। अपने बच्चों को मनोरंजन देने के साथ ही साहसी बनाइए, जिसमें वे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार रहें। मूल्य ।), जिल्ददार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love is too young to know what conscience is, yet who knows not conscience is born of love.

"प्रेम तो समझ ही नहीं सकता कि अंतःकरण क्या वस्तु है। परंतु इस बात को कौन नहीं जानता कि प्रेम से ही अंतःकरण की सृष्टि होती है ?"

इस पद्य में यह बताया गया है कि प्रेम से अंतःकरण का निर्माण होता है।

प्रेम अनुभव करने की वस्तु है, तर्क करने की नहीं। मनोविज्ञान के अनुसार भी सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति शब्दों में नहीं हो सकती। जिस किसी ने भी प्रेम का यथार्थ अनुभव किया होगा, वह इस सत्य से भली भाँति परिचित होगा कि लाख प्रयत्न करने पर भी अपने प्रेम-पात्र के सम्मुख यह कहते नहीं बनता कि "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब प्रेमी और प्रेमिका अभिन्न-हृदय होते हुए भी एक दूसरे की ओर देख नहीं सकते। बिहारी कहते हैं—

इन दुखिया अँखियान को सुख सिरजो ही नाहिं ;
देखत बनै न देखिबो, बिनु देखे अकुलाहिं।

प्रेम वह जादू है, जिसके प्रभाव से पशु-पक्षी भी वंचित नहीं। शकुंतला जब बिदा होती है, वन के पशु-पक्षी, लता-वृक्षादि, सभी उसके बिछोह के कारण कातर हो उठते हैं, अपने-अपने व्यापार को भूलकर शकुंतलामय हो जाते हैं—

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः ;
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रुणीव लताः।

"मृगियों ने मुख में रक्खी हुई घास उगल दी है, मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है, लताओं से पीले-पीले पत्त गिरते हैं, तो ऐसा मालूम होता है, मानो वे आँसू बहा रही हैं।"

विरह-वेदना द्वारा ही प्रेम-प्रदर्शन करना कवियों ने अपनी कविताओं में अधिक व्यक्त किया है।

प्रेम क्या है ? इसके विषय में बहुत मतभेद है। यह वह गंभीरता है, जो नापी नहीं जा सकती। यह वह पथ है, जिसका अंत नहीं, यह वह रस है, जिसे जितना ही पिया जाय, उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है। विना अनुभव किए उसका वास्तविक रूप व्यक्त नहीं किया जा सकता।

निठल्लू की राम-कहानी
(हास्य-रस की अनुपम पुस्तक)
लेखक, श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा; द्वितीयावृत्ति छपकर तैयार है। मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १)
मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीवृंदावनलाल वर्मा

[उनसे एक परिचित]

पाठकों को 'गढ़-कुंडार' और 'बिराटा की पद्मिनी' के यशस्वी लेखक बाबू वृंदावनलाल वर्मा का परिचय देने की आवश्यकता नहीं। अपनी इन रचनाओं द्वारा वर्माजी हिंदी-जगत् में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इतना ही नहीं, हमारा तो विश्वास है कि यदि दुनिया के झंझट उनके सिर न हों और थोड़ी-सी निश्चिंतता उन्हें मिलती होती, तो वह महान् लेखक होते। यह हिंदी का दुर्भाग्य है कि उन-जैसे प्रतिभा-शाली लेखकों को निर्वाह की समस्याएँ हल करने के लिये मजबूर होकर ऐसी वृत्तियों का आश्रय लेना पड़ता है, जो उनके मन के अनुकूल नहीं होतीं, और जिनके कारण अपनी प्रतिभा का पूरा चमत्कार वे नहीं दिखा पाते। वर्माजी वकील हैं, परंतु उनका वश चले, तो वह किसान बनना ज़्यादा पसंद करते हैं। वह शहर में रहते हैं, परंतु उनका वश चले, तो वह बेतवा के बीहड़ भरकों में, वहाँ के एकांत वातावरण में, एक कुटी बनाकर रहना आनंदप्रद मानते हैं। उन्हें अपने कुटुंबियों और आत्मीय जनों के प्रति कर्तव्यशील रहना पड़ता हो, सो बात नहीं, दूसरों के प्रति भी उन्हें अपनी ज़िम्मेवारियों का ख़याल रखना पड़ता है। इसलिये ताज्जुब नहीं, जो वह हमेशा अपने को थका हुआ पाते हैं। और, उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह वास्तव में अपनी इसी थकान को दूर करने के लिये, नित्यप्रति के कार्य से थके और क्लांत मस्तिष्क को विश्राम देने के लिये। 'गढ़-कुंडार' और 'बिराटा की पद्मिनी' आदि मन की ऐसी अवस्था में लिखी गई चीज़ें हैं, जब आदमी दुनिया के कामों से ऊबकर मन-बहलाव की ज़रूरत महसूस करता है। हममें से बहुत-से दिन-भर के अनवरत परिश्रम से जब थक जाते हैं, तब सिनेमा जाते हैं, ताश खेलते हैं, या मित्र-मंडली में बैठकर गप लड़ाते हैं। वर्माजी जब काम से ऊबते और अपने को अत्यंत थका हुआ पाते हैं, तब या तो शिकार खेलने जाते या बैठकर कुछ लिखने लगते हैं। इधर उन्होंने बहुत दिन से कुछ लिखा नहीं। परंतु 'गढ़-कुंडार' के पन्ने-के-पन्ने उन्होंने कचहरी के बार-रूम में, शिकारगाह में और अपने प्रेस में लिखे हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यासों के यत्र-तत्र स्थल सूक्ष्मदर्शी पाठकों को एकदम समतल जान पड़ते हैं। फिर भी ऐसे स्थलों को हम वास्तविक सुंदर एवं उपन्यास के आवश्यक अंगों के परिपूर्ण विकास एवं शृंगार का पोषक-मात्र मान सकते हैं। कचहरी से सीधे घर आकर, कहानी के छोड़े हुए सूत्र को पुनः हाथ में लेकर, आस-पास के कोलाहल एवं अन्य अनावश्यक व्यक्तियों की उपस्थिति के बीच एकचित्त होकर लिखने बैठ जाना और पन्ने-के-पन्ने धारावाहिक रूप से लिखते रहना उनके लिये साधारण बात है। और, वे पन्ने साधारण नहीं होते। उन पन्नों की प्रत्येक पंक्ति से लेखक की अद्भुत क्षमता प्रकट होती है। कैसी सहज और सुंदर, कैसी प्रवाहमयी, कैसी ज़ोरदार और अनायास भाषा वह लिखते हैं। और, जब हम देखते हैं कि हिंदी के इस बड़े लेखक का निजी जीवन कैसा व्यस्त और संघर्षमय है, तब उसकी लेखन-शक्ति हमारे लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी अधिक मूल्यवान् एवं सराहनीय हो जाती है।

जैसा मैंने कहा है, उपन्यास-रचना वर्माजी के लिये मनोविनोद का साधन-मात्र है। लिखने के लिये लिखना या एकमात्र अपनी मनस्तुष्टि के लिये लिखना, हिंदी में किसी के विषय में यदि यह चरितार्थ हो सकता है, तो एकमात्र वर्माजी के विषय में। उपन्यास-लेखक के रूप में उन्होंने कभी ख्याति नहीं चाही, धन नहीं चाहा, सम्मान नहीं चाहा। दुनिया के कोलाहल से दूर, साहित्यिक दलबंदी से अलग, लेखक नाम के जीवों से सदैव घबराते हुए, हिंदी के अनेक योग्य एवं अयोग्य, सच्चे एवं स्वयंभू लेखकों के नाम-धाम से बिलकुल ही अपरिचित एवं कभी-कभी उनके प्रति मन में एक प्रकार की अरुचि लिए हुए वह जो कुछ लिखते हैं, चुपचाप ही लिखते हैं। प्रोपेगेंडा नाम की चीज़ से उनका परिचय नहीं। 'गढ़-कुंडार' एवं 'बिराटा की पद्मिनी'-नामक उपन्यास गंगा-पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित होकर प्रसिद्ध हुए। परंतु मन में जो कई वर्षों के भाव संचित थे, और उन्हें व्यक्त करने की जो स्वाभाविक प्रेरणा एवं व्यग्रता उनके हृदय में थी, वह उसके पूर्व ही 'कुंडली-चक्र'*, 'लगन'†, 'प्रत्यागत'‡ आदि उपन्यासों के रूप में प्रकट हो चुकी थी। ये उपन्यास उन्होंने किसी प्रकाशक को नहीं दिए। चिट्ठी लिखने की उन्हें आदत नहीं। आग्रह और अनुरोध के वह अभ्यासी नहीं। अत्यंत सरल, अत्यंत संकोचशील, अत्यंत निरभिमान। ऐसा आदमी कुछ लिखे, यह बात तो समझ में आती है, परंतु अपने उस लिखे हुए को किसी अच्छे प्रकाशक को न देकर अपने घर के साधारण प्रेस में ही छपवाने और उन छपी हुई प्रतियों को एक अनिश्चित काल तक के लिये दीमकों की ख़ूराक बनने के वास्ते अलमारियों में बंद करके रखवा दे, यह यदि हमारी समझ में न आवे, तो कुछ आश्चर्य नहीं। परंतु बात ठीक है। 'कुंडली-चक्र' एवं 'प्रत्यागत' का लेखक किसी संपादक के पास अपनी वे रचनाएँ लेकर नहीं गया, मित्र-मंडली में अपनी उन किताबों के पन्ने पढ़कर नहीं सुनाए, लेखक एवं आलोचक कहे जानेवाले जीवों से कभी उसने उन किताबों की चर्चा नहीं की। यह भी आश्चर्य-जनक है, परंतु उतना ही ठीक भी। किताबें छपीं, और अत्यंत निकट के मित्रों में ही वितरित हुईं, मानो इतने से ही उन पुस्तकों का उद्देश्य पूरा हो गया, और समाप्त हो गया उनका जीवन-कार्य। लिखे जाने के दो वर्ष तक भी लेखक को किसी ने जाना नहीं। और, कोई उसे जाने, लेखक ने कभी इसकी परवा नहीं की। यह एक अजीब बात है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हिंदी के इस पुराने लेखक को हम नया करके जानते हैं। एक ऐसे प्रौढ़ लेखक को, जिसने उस वक्त अनेक अच्छी चीज़ें लिखी और जला डाली हैं—ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार बच्चे मनोविनोद में बालू के घरौंदे बनाते और मिटा डालते हैं—जिस वक्त हिंदी के अनेक उदीयमान लेखक अपने स्थानीय मदरसे में हिंदी-वर्णमाला का परिचय-मात्र प्राप्त कर रहे थे, हमने अभी-अभी जाना है। क्योंकि कोई उसे जाने, इस ओर से वह सदैव निर्मोह रहा। यह हमारे लिये शर्म की बात है, परंतु आश्चर्य की नहीं। हिंदी-जगत् विक्टर ह्यूगो के एक उपन्यास में वर्णित आश्चर्य-जनक वस्तुओं का वह स्थल है, जहाँ आपको अंधे

* इसका शायद पहला संस्करण ही, १९८६ में, गंगा-पुस्तकमाला से निकला है।—सुधा-संपादक

† इसका द्वितीय संस्करण गंगा-पुस्तकमाला से निकला है।—सुधा-संपादक

‡ इसका और संगम का द्वितीय संस्करण गंगा-पुस्तकमाला से निकल रहा है। वर्माजी के सब उपन्यास और नाटक प्रत्येक पुस्तकालय में रहने चाहिए।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँख से देखते और अपाहिज घुड़दौड़ की तरह दौड़ लगाते हुए नज़र आएँगे। अतएव हममें से अनेकों को यदि यह नहीं मालूम या जानते हुए भी यदि हम भूल जाते हैं कि आज से बीस वर्ष पूर्व वर्माजी ने सरस्वती में कुछ सुंदर कहानियाँ लिखी हैं, तो यह स्वाभाविक है। उस पाठक, उस साहित्यिक के लिये नहीं, जो समझता है कि साहित्य से उसका कुछ परिचय है। सन् १९१५ और १९३० के बीच का व्यवधान इतना दीर्घ है कि सहसा हम सोच नहीं सकते कि 'सफ़ेजिस्ट की पत्नी' और 'ठाकुर साहब की दादी' आदि के लेखक जो वृंदावनलाल वर्मा हैं, अथवा थे, वही 'गढ़-कुंडार' के लेखक हैं। वास्तव में साधारण पाठक की तर्क-बुद्धि वृंदावनलाल वर्मा-नामधारी इन दो व्यक्तियों के मध्य किसी प्रकार का सामंजस्य और समानता का कोई सूत्र न देख पावे, तो यह स्वाभाविक है। उन पाठकों को जानना चाहिए कि 'गढ़-कुंडार' की रचना अनायास नहीं हुई। वह किसी अपरिपक्व-बुद्धि का उद्गार नहीं, और न किसी अधकचरी लेखनी का गर्द-गुबार ही। वह एक मँजी हुई लेखनी की सृष्टि है। बुद्धि-बल और अनुभव में परिपक्वता को प्राप्त हुए व्यक्ति की रचना है।

उपन्यासों के बजाय नाटक लिखने की ओर उनकी प्रवृत्ति अधिक है। मूलतः वह नाटककार हैं। शुरू में उन्होंने नाटक ही लिखे। आज से ३० वर्ष पूर्व उन्होंने नवलकिशोर-प्रेस एवं इंडियन प्रेस को कुछ नाटक प्रकाशनार्थ दिए थे। उनमें से नवल-किशोर-प्रेस द्वारा प्रकाशित 'सेनापति ऊदल'-नामक नाटक प्रकाशित होते ही ज़ब्त हो गया। इंडियन प्रेस को दिए गए नाटक प्रकाशित नहीं हो सके। वे ऑफ़िस से कहीं ग़ायब हो गए!

इसके बाद उन्होंने सन् १६ और १७ में दो नाटक लिखे। यदि वे नाटक प्रकाशित होते, तो, मेरा ख़याल है, आज वर्माजी उपन्यासकार के बजाय नाटककार के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध होते।

हाल ही में उन्होंने एक नाटक लिखा है। नाम है 'धीरे-धीरे'। इन पंक्तियों के लेखक को उसकी मूल कापी पढ़ने को मिली। उसके बाद लेखक से भेंट हो गई। मिलते ही मैंने कहा—"बड़ी मज़ेदार चीज़ है। परंतु नाटक के ख़याल से उसमें मुझे Unity of Action की बड़ी कमी नज़र आई।"

मुझे तुरंत जवाब मिला—"मैंने जान-बूझकर ऐसा किया है। वह नाटक नहीं, सेटायर (Satire) है।"

मुझे हँसी आ गई। वर्तमान शासन-विधान एवं उसके संचालकों की आलोचना एक ऐसे नाटक के ज़रिए, जिसमें ख़ुद भी Unity of Action का एकदम अभाव हो! यह शरारत नहीं, तो और क्या! एकदम Shavian शॉ के ढंग की, जिसके लिये, मेरा विश्वास है, उनके अनेक पाठक उन पर दाँत पीसेंगे। इसके बाद उनसे और भी बहुत बातें हुई—स्काट, ह्यूगो, बालज़क, अनातोले फ़्रान्स, नट हैमसन के बारे में। स्काट के वह परम भक्त हैं। उपन्यास के क्षेत्र में वह उनका गुरु है। स्काट के सिवा और किसी से उनकी इतनी घनिष्ठता नहीं। और, आधुनिक लेखकों के संबंध में शायद वह अनातोले फ़्रान्स के अनुयायी हैं, जब कि वह कहता है—"I do not read my contemporaries, as they have nothing new to say." फिर भी वर्माजी के पास उन सभी के संबंध में कुछ-न-कुछ नई बातें कहने को हैं। सभी से मानो उन्होंने इतना रस पाया है कि थोड़ा पढ़ने पर भी वह आपको अधिक प्रदान कर सकते हैं। इसलिये उनका वार्तालाप सदैव रस-पूर्ण होता है। हिंदी में ऐसे लेखकों की कमी नहीं, जो अपनी विद्वत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की लंबी लाठी से आपको अपने से सदैव सौ गज़ दूर रखते हैं। वर्माजी इनसे विपरीत हैं। वह कम बोलते हैं, कम पढ़ते हैं, कम लिखते हैं; क्योंकि वह जानते हैं कि इस दुनिया में पढ़ने के लिये बहुत हैं, और जो कुछ उन्होंने लिखा है, दूसरों के ज़रिए उससे अधिक अच्छा लिखा जाने की चिर काल तक गुंजाइश है। वह गुंजाइश सदैव रहेगी, जब तक यह दुनिया है। अपने अंतर के अंतर में वर्माजी इसे जानते और अनुभव करते हैं। हिंदी-लेखकों की बढ़ती हुई लंबी पंक्ति में यही उनकी विशेषता है, और यही उनकी महत्ता। हमारे इस कलाकार को आगे की पीढ़ी जब एक मनुष्य के रूप में समझेगी, तब वह उनको हम सबसे बहुत ऊँचा पाएगी।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

[रजिस्टर्ड]

GONO KILLER
ORIGINAL
REGD
TRADE MARK

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम 'गोनोकिलर'
और मुर्ग़ी-छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के
लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका
इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता।
डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट
दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा
'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में
मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना,
स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर'
जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी०एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम

[श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह]

हो तुम सुखमय स्वप्न
वेदना की जागृति के;
हो करुणामय सुधा-
स्रोत तुम निठुर नियति के।

क्षेम-पूर्ण हो प्रेम,
प्रेम की मूर्ति प्रकृति के;
हो तुम अंतिम ध्येय
विश्व की अतुल सुकृति के।

संगीत-सम्मेलन में

वाहवाही लेकर स्वर्ण-पदक लेने की इच्छा रखते हों, तो आपको कुछ संगीत-कला का भीतरी ज्ञान प्राप्त करना होगा। इसके लिये ''संगीत-सागर''-नामक विशाल ग्रंथ तैयार हुआ है। इसमें प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार का संगीत भरा हुआ है। स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, पल्टा, अलंकार, तान, कूटतान, ठाठ-व्याख्या, वर्ण, राग-रागिनी, राग-परिवार, ४८४ राग-रागिनियों के आरोहावरोह, रागों के भेद, पक्की चीज़ों की स्वरलिपियाँ, फ़िल्मी गीतों के नोटेशन बिलकुल उसी तर्ज़ में हैं। ताल-व्याख्या, लय-विवरण, टुकड़ा-परन, तिहाई, ठेका, मोहरा, लग्गा, प्रचलित तालों के ठेके, गूढ़ और गुप्त तालों के ठेके नक़शे देकर बताए गए हैं, तथा सितार, बाँसुरी, बेला, जलतरंग, दिलरुबा, बीन इत्यादि साज़ों को बजाने की विधि चित्रों-सहित दी गई है। नाच के तोड़े, बोल, नृत्य-कला के भाव-चित्र और नाच की गतें देखकर आप प्रसन्न हो जायँगे। संगीत-कला के ऐसे विशाल और उपयोगी ग्रंथ का मूल्य केवल ४) है, किंतु कुछ समय तक प्रचारार्थ ३), डा० ।≈) में दिया जा रहा है। शीघ्रता करिए।

पता—मैनेजर ''संगीत'', हाथरस (यू० पी०)

नोट—मासिक पत्र ''संगीत'' का इस वर्ष २०० पृष्ठ का ''भातखंडे-अंक'' [विशेषांक] निकला है। वार्षिक मूल्य केवल २) है, नमूना मुफ़्त मँगा देखिए! गाना-बजाना सीखने का बड़ा अच्छा साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टी

[श्रीयुत सियारामशरण गुप्त]

सामने एक पत्र आ गया है। इसमें बच्चे ने अपने अध्यापक से छुट्टी चाही थी कि उसे ज्वर हो आया है। इस पत्र को लिखे बहुत समय नहीं बीता, कुछ ही पहले की बात है। उस समय बच्चा नहीं जानता था कि वह सदा के लिये छुट्टी ले रहा है; अध्यापक भी नहीं जानता था कि वह ऐसी छुट्टी दे रहा है, जो कभी पूरी न होगी।

फिर भी जो सोचा नहीं जाता, जिसकी कल्पना नहीं की जाती, वही हो जाता है। बच्चा लगभग दो महीने तक ज्वर और ज्वर-मुक्ति का कष्ट भोगकर चला गया है। अध्यापक को अपने रजिस्टर से उसका नाम हटा देना पड़ा है।

अध्यापक और कर ही क्या सकता है। उसे अवकाश नहीं कि प्रतिदिन उस छुट्टी की नई स्वीकृति देता रहे। उसका रजिस्टर छोटा है। उसमें इतनी गुंजाइश कहाँ कि वह ऐसी बड़ी छुट्टी उसमें दर्ज किए रह सके।

और, जान पड़ता है, हमारा यह संसार भी ऐसा ही है। इसमें भी जैसे स्थान की, अवकाश की अधिकता नहीं। यह अपनी सीमा के भीतर बहुत छोटा है। इसे छोटा कह रहे हैं, इससे इसके कर्ता की निंदा नहीं होती। उसकी छोटी कृति भी ऐसी है, जिसे मनुष्य की तराज़ू तौल नहीं सकी, जिसे मनुष्य के डग माप नहीं सके। पृथ्वी की माप-तौल के लिये ज्ञान का सहारा लेना पड़ा है, और ज्ञान स्वयं ईश्वर है। फिर उसकी कृति यह संसार इतना छोटा क्यों है? मनुष्य के लिये इतना विपुल, इतना विस्तीर्ण होकर भी यह इतना छोटा क्यों है? एक बच्चा तक इसकी सीमा लाँघकर इसके दूसरे पार उतर जाता है। इसके नद, नदी, समुद्र और वन-पर्वत उसे रोककर नहीं रख सकते। इसे भी एक अध्यापक की भाँति अपने रजिस्टर से उसका नाम हटा देना पड़ता है।

कहा जाता है, इसका रूप विराट् है। पता नहीं, कब से यह चल रहा है। पता नहीं, कब तक यह चला जायगा। युग, युगांतर और मन्वंतर इसके एक-एक दिन हैं। समुद्र में एक डुबकी लेकर अपनी पृथ्वी के साथ जिस दिन यह ऊपर उछल पड़ा था, वह इसके लिये पुरानी बात नहीं। जब फिर इसके निमज्जन की बारी आ पहुँचेगी, वह समय भी इसके लिये दूर का न होगा। वह ऐसे होगा, जैसे गरमी की ऋतु में हमारा दुबारा का स्नान। इसकी इस उन्मत्त क्रीड़ा का पार नहीं मिलता। यह दौड़ा चला जा रहा है। बीच में कहीं साँस लेने के लिये इसे रुकना नहीं, कहीं किसी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना-सुनना नहीं, शून्य में, सपाट में जैसे किसी ने बड़े ज़ोर के साथ इसे फेंक दिया हो। इस दौड़ में इसी से जैसे अपना बल इसे नहीं लगाना पड़ता। सब कुछ इसे सहज है, अनायास है। तूफ़ानों के तूफ़ान पर सवार होकर यह जा रहा है। इसके मार्ग में कोई बाधा नहीं, कोई रोक नहीं। बीच में जो कुछ आ पड़ेगा, कुचल जायगा, टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा; चूर-चूर होकर धूल में मिले बिना न रहेगा।

काँप उठता हूँ इसका यह विराट् रूप सोचकर। "भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।" इसे मैं देख नहीं सकता, इसकी कल्पना नहीं कर सकता। मुझे अर्जुन की भाँति दिव्य दृष्टि नहीं मिल सकी। मिलती, तो उसे झेल नहीं सकता था। अंधे के हाथ में वह किसी असहनीय दूरबीन का बोझ होती। उसे लेकर मैं करूँगा क्या? जो कुछ मुझे मिला है, वही कम नहीं। मैं छोटा हूँ, छोटे रूप में ही संसार को मैंने देखा है। इसकी ट्रेन के जिस डिब्बे में मैं हूँ, वहाँ इसकी भयंकर गति का अनुमान नहीं होता। जान पड़ता है, जैसे यह चल ही न रहा हो। इसका यह शांत रूप इसका नहीं है, यह नहीं कहा जा सकता। यह इसी का है। इस छोटे रूप में ही यह मुझे उपलब्ध हुआ है। मैं इसी को प्यार करता हूँ।

प्यार तो करता हूँ, पर असंतोष भी कम नहीं। यह इतना छोटा हुआ ही किसलिये। क्यों यह एक बालक को अपने स्मृति-पट से पोंछ देना चाहता है? एक दिन जिसे इसने अपने अंक में लिपटाया था, अपने आँगन में ऊधम मचाने दिया था, अपने दधि-माखन को लुटने देकर परिपुष्ट किया था, उसी को यह एक क्षण में भुला देना चाहता है। कहता है, मुझे अवकाश कहाँ? मुझे दूसरे बहुत-से काम करने को हैं। अनंत अक्षौहिणी सेनाओं से मुझे निबटना है। मेरा कार-बार उस छोटे वृंदावन में नहीं चल सकता।

क्या वह वृंदावन छोटा-सा है? हाँ, छोटा-सा ही हो। छोटा होकर भी वह ओछा नहीं। उसमें स्थान है, उसमें अवकाश है। वह याद रखना जानता है। देखते हो वहाँ उस यशोदा माता को? उसका गोपाल उसे छोड़कर चला गया है। कहाँ गया, कितनी दूर गया है? कुछ ठीक नहीं। ठीक इतना है कि अब वह लौटकर नहीं आएगा। वह नहीं आएगा, इसलिये माता उसे भुला न देगी। उसके छोटे-से हृदय में विराट् हाहाकार उठ खड़ा हुआ है। सारी पृथ्वी उसके लिये जैसे सूनी पड़ गई है। सारी पृथ्वी में जैसे उसने अपने ही गोपाल को फैला रक्खा था। उसके बिना वह जी नहीं सकती। परंतु नहीं, वह जिएगी। उसके भीतर में, उसके बाहर में उसका गोपाल जो है। उसी के लिये वह जिएगा। क्रूर विधाता ने उसकी गोद से उसे बिलग कर दिया है। उसके हृदय से वह भी उसे बिलग न कर सकेगा। वह चिल्ला रही है—गोपाल! गोपाल!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल ! चिल्लाना कहाँ, यह बोलना भी नहीं । उसका गला बैठा हुआ है। स्वर उसका साथ नहीं दे पाता। फिर भी वह चिल्लाती है, बार-बार चिल्लाती है, पुकारती है—गोपाल ! गोपाल ! पुकारते-पुकारते वह बेहोश हो गई है । अपनी बेहोशी में भी अपना गोपाल उसे नहीं भूला ! उसका चेतन, उसका अचेतन, सब कुछ गोपालमय है । उसकी इस क्षीण गिरा से पास की गोप-गोपियाँ तक अपनी पीड़ा भूल बैठी हैं । सब-के-सब लुटे-से खड़े हैं, स्तंभित हैं, मूक हैं । उस पुकार के बोझ से जैसे हवा का दम घुट गया है, अंधकार घनीभूत हो उठा है, यमुना अपनी गति खो बैठी है। वह पुकार माता की पुकार है । पृथ्वीमंडल को पार कर वह जैसे नक्षत्र-लोक तक पहुँच गई है ।

गोपाल इतना निर्मम है कि इतने पर भी लौटकर नहीं आता। वह इतना बहरा है कि माता की यह गिरा भी उस तक नहीं पहुँच पाती । इस पुकार को अनंत काल ने अपने हृदय पर धारण कर रक्खा है। कितने ही महाभारतों की रण-हुंकार में यह डूबी नहीं। डूब भी नहीं सकती । यह चिरंतन हो गई है। चिरंतन होने के कारण ही पुरानी नहीं पड़ती, यह सदा-सर्वदा नई बनी रहती है।

इसी से आज तक प्रत्येक माता के हृदय में वह बसी हुई है। आज तक प्रत्येक माता का हृदय उसी पीड़ा के भार से काँपता रहता है। माता बेचारी नहीं जानती कि उसका जाति यशोदा की है । उसका आज का गोपाल भी छली है, उसे माता की पीर नहीं। वह किसी दूसरी की संतान है। इस माता को छलने के लिये ही वह यहाँ आया था। पर, जान पड़ता है, इस गोद को छोड़कर गोपाल ही छला गया है, उसकी माता नहीं। माता का हृदय अध्यापक के रजिस्टर की भाँति छोटा नहीं। उसमें से, इतना सब होने पर भी, वह अपने गोपाल को हटने न देगी।

इस तरह माता क्या अपने गोपाल को पालेगी ? उसे वह पा नहीं सकती, उसकी वाणी नहीं सुन सकती, खेलते हुए अपने आँगन में उसे नहीं देख सकती। उसकी छाती में स्नेह का कितना ही दूध क्यों न उमड उठे, क्यों न कितनी ही दुर्वह वेदना से वह दब जाय। पूर्व का सूरज पश्चिम में उगने लगे, तब भी माता का गोपाल लौटने का नहीं। यह संसार ऐसा ही है। इसे इसी रूप में सहन करना होगा। पर बेचारी माता करे क्या ? संसार जिसे भुलाने के लिये तुला बैठा है, उसे वह नहीं भुला सकती। शोक ही उसका सहारा है। संसार जिसे नहीं रखना चाहता, उसे बचाए रखने के लिये शोक ही अमृत है। उसका अशोक आज इस शोक में आ बैठा है। स्मृति में ही गए हुए का जीवन रक्षित है। मृत्यु की पराजय यहीं है। माता की आँख के आँसू सूख जायँगे, कंठ का हाहाकार उसका साथ छोड़ देगा, पर अपने भीतर जहाँ उसने अपने गोपाल को पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्खा है, वहाँ से वह उसे न जाने देगी। उसकी हठ के आगे विधाता को भी झुकना पड़ेगा।

वह गायों के लौटने का स्वर सुनाई पड़ता है। संध्या हो आई है। थनों में दूध भरकर बच्छों की माताएँ दौड़ी आ रही हैं। मार्ग में गोधूलि फैल गई है। अँधेरा छाने लगा है। बच्चे मदरसे से लौटकर आ गए हैं। घर-घर में संध्या के दीपक जाग उठे। सब कुछ हुआ, वही एक बच्चा लौटकर नहीं आया। घर पर उसकी पोथियों का बस्ता बँधा पड़ा है। मदरसे में किसी ने उसकी सुधि नहीं ली। अध्यापक उसे भूल गया है। भूली नहीं है बच्चे की बेचारी माता। उसके हृदय-पट में वह अब भी अंकित रहेगा। वहाँ स्थान है। वहाँ से उसे छुट्टी नहीं मिल सकती।

थोड़े परिश्रम से — ज़रा दिमाग़ से

अवश्य जीतिए

२५०) नक़द २५०) इनाम २५०)

निम्न-लिखित प्रश्न हलकर के !

प्रश्न—एक बनिया एक सेर से लेकर चालीस सेर तक माल केवल चार बाँटों से तौल लेता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उन बाँटों को तराज़ू के आगे-पीछे भी रख लिया करता है। उसका एक बाँट नौ सेर का है। बताइए, शेष तीनो बाँट किस-किस वज़न के हैं ?

नियम—(१) उपर्युक्त प्रश्न के शुद्ध उत्तर पर २५०) का पुरस्कार दिया जायगा।

(२) प्रत्येक उत्तर की प्रवेश-फ़ीस १) है। फ़ीस मनीआॅर्डर अथवा पोस्टल आॅर्डर द्वारा भेजनी चाहिए।

(३) सब उत्तर २२ मार्च तक आ जाने चाहिए। देर से मिलनेवाले जवाब बेकार समझे जायँगे। २८ फ़रवरी तक आए हुए उत्तरों पर उपर्युक्त इनाम के अलावा २५) का विशेष पुरस्कार और दिया जायगा। अतः फ़ौरन् जवाब भेजना लाभदायक है।

(४) मैनेजर का निर्णय सर्व प्रकार से मान्य होगा।

(५) परिणाम सभी प्रतियोगियों के पास मुफ़्त २७ मार्च को रवाना कर दिया जायगा।

(६) समस्त पत्र-व्यवहार तथा डाक को निम्न-लिखित पते पर भेजना चाहिए—

मैनेजर कपूर-पज़ल्स, पिहानी, हरदोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के उत्तुंग शैल-शिखर पर

[श्रीयुत अनन्तलालप्रसाद वर्मा]

"गृहस्थी-भार-शृंखला से जकड़े और चिंता-चिता पर जलते व्यक्ति को, किसी प्रकार, वर्ष में दो-चार दिन मन-बहलाव और प्रकृति-दर्शन के लिये मिल जायँ—और उन दिनों वह घर को भूल सके—तो उसे भाग्यशाली समझना चाहिए।"

ये शब्द हैं प्रसिद्ध शिकारी और हिंदी के विद्वान् लेखक श्रीराम शर्मा के। शर्माजी के उपर्युक्त शब्दों पर जब हम ग़ौर करते हैं, तब प्राचीन काल के राजों की आखेट-प्रथा का उपयोगिता, हमारी समझ में आ जाती है।

सांसारिक झंझटों को लात मारकर जब हम कुछ दिन के लिये प्रकृति-माता की गोद में स्वतंत्रता-पूर्वक विचरण करते हैं, तब, उतने दिनों के लिये, सारे दुख-द्वंद्वों को भूल जाते हैं। और, फिर जब हम अपने काम में आ जुटते हैं, तब अपने में अधिक ताजगी और स्फूर्ति का अनुभव करते हैं। अँगरेजी के प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ ने ठीक ही कहा है कि प्रकृति दुखी व्यक्तियों के लिये एक उत्तम टॉनिक है।

लेकिन एक बात है। वन-पर्वतों की यात्रा में प्रथम कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जब हम उन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेने में समर्थ हो जाते हैं, तब हमारे हृदय में एक अभूतपूर्व आनंद का संचार होता है। लेकिन हम भारतीयों में अभी ऐडवेंचर्स स्पिरिट की बहुत कमी है। दुख और कष्टों से भरी यात्रा को हम अपने सिर लेना और अपने परिवार से अलग होना नहीं चाहते। भारत ही में कुछ ऐसे स्थल हैं, जिनसे हम अभी तक सर्वथा अनभिज्ञ हैं। प्रत्येक वर्ष योरप के यात्री आते और उन स्थलों की छान-बीन कर चले जाते हैं। सफल या असफल होना दूसरी बात है।

❀ ❀ ❀

पर साल अगस्त-मास में जब मुझसे एक शिक्षा-संबंधी यात्रा (Educational trip) में शामिल होने के लिये कहा गया, तब मैं कुछ विशेष आनंदित नहीं हुआ। लेकिन बाद में, जब मालूम हुआ, इस यात्रा में पारसनाथ-पहाड़ की चढ़ाई भी शामिल है, मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी।

देवघर का गोबर्द्धन-महाविद्यालय और गुरुकुल तथा आसनसोल (E. I. R.)-स्थित उषा-ग्राम * आदि स्थान देखते हुए

* उषा-ग्राम एक मिशन द्वारा संचालित संस्था है। यहाँ की शिक्षा-प्रणाली पर किसी स्वतंत्र लेख में प्रकाश डालने की चेष्टा करूँगा।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोग १२ अगस्त को पारसनाथ-रेलवे-स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ से वृक्षों से आच्छादित पारसनाथ बहुत ही सुंदर प्रतीत होता था। उसके शिखर पर काले-काले बादल लोट रहे थे।

पारसनाथ-रेलवे-स्टेशन पारसनाथ-पहाड़ की तलहटी से लगभग १६ मील है। अतः हम लोग तलहटी तक लारी से गए। तलहटी में मधुवन-नामक एक छोटा-सा ग्राम है। यहीं से पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती है। मधुवन-ग्राम में जैनों के कई सुंदर और विशाल मंदिर हैं। इन मंदिरों का वैभव देखकर आश्चर्य-चकित रह जाना पडता है। दरिद्र देश में धन की इतनी विषमता!

पारसनाथ-मंदिर
(प्रतिच्छविकार—अध्यापक बख़्शी अगमप्रसादसिंह एम्०एस्-सी०)

बूढ़े और अशक्त आदमियों के लिये सवारी की क़िस्म में एक छोटी-सी पालकी मिलती है, जिस पर आराम से बैठा भी नहीं जा सकता। यह दो आदमियों द्वारा ढोई जाती है। मज़ेदार बात तो यह कि किराया आदमी के वज़न पर लिया जाता है। मोटे आदमी के लिये ५ मन और साधारण आदमी के लिये ३ मन।

मधुवन से पारसनाथ-मंदिर ७-८ मील है। हम लोग अपना-अपना पाथेय और दो-एक कपड़े कंधे पर डाल रवाना हुए। आसमान बादलों से घिरा था। गरमी काफ़ी थी। लेकिन इससे हमारे उत्साह में ज़रा भी कमी न हुई। मधुवन से पहाड़ की चोटी तक जैन धनिकों ने एक सुंदर सड़क बनवा दी है, जिससे यात्रियों को विशेष कष्ट नहीं होता।

पहाड़ कुछ अधिक ऊँचा नहीं, केवल ४,४०१ फ़ीट है; लेकिन सघन वृक्षों से आच्छादित और हरा-भरा था। जहाँ-तहाँ जंगली फूल खिले थे। अध्यापक बख़्शी अगमप्रसादसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हमारे दो-चार साथी कुछ ही दूर चलने में परेशान हो गए; लेकिन हिम्मत नहीं हारे, और आगे बढ़ते गए। बख़्शीजी यहाँ भी उन्हें प्रकृति का अध्ययन कराते जाते थे, जिससे अच्छा मनोरंजन हो जाता था; नहीं तो शिखर तक जाते-जाते बेचारों की बुरी हालत हो जाती।

दो मील चलने पर टी-इस्टेट की घाटी मिली। घाटी में तो नहीं, लेकिन वहाँ से थोड़ी दूर पर चाय की खेती होती है। यहाँ एक बहुत ही कर्ण-कटु आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। मालूम हुआ, थोड़ी ही दूर पर सीता-नाला है। घाटी से फिर चढ़ाई शुरू हुई।

थोड़ी ही दूर पर सीता-नाला मिला। यह बरसाती पहाड़ी नाला था, जो बहुत वेग से बह रहा था। इसकी स्वच्छंद और निर्बाध गति देखकर हमें ईर्षा होने लगी। एक ही राग अलापता, उछलता-कूदता भागा जा रहा था। इसका पानी बहुत स्वच्छ था। यहीं एक छोटी-सी विश्रामशाला बनी हुई थी। हम लोगों ने नाश्ता किया, और फिर आगे को रवाना हो गए। कुछ दूर जाने पर इस रास्ते से एक दूसरा रास्ता निकल गया था। हम लोगों ने पथ-प्रदर्शक के कहे अनुसार दाहनी ओरवाले रास्ते का अनुसरण किया। अब मार्ग अजीब घुमघुमाए का था। पहाड़ों पर जिस प्रकार रेलवे-लाइन सर्पाकार होती है, उसी प्रकार यह मार्ग भी था। आगे सघन बनस्थली थी। अब वर्षा भी होने लगी, और साथ ही कुछ हवा भी चलने लगी। तबियत कुछ ठिकाने हुई; नहीं तो गरमी के मारे परेशान था। हम लोग लगभग ३,००० फ़ीट की उँचाई पर थे। बादलों ने पर्वत-पथ को अंधकारमय बना रक्खा था। चारो तरफ़ कुहासा-सा मालूम पड़ता था। हम बादलों को चीरते हुए आगे बढ़ रहे थे। प्रकृति के इस स्टेज पर बहुत ही आनंद आ रहा था।

इसी दशा में हम लोग डाक-बँगले पहुँचे। डाक-बँगला बहुत सुंदर था। आराम की सभी चीज़ें—कुर्सी, टेबुल, चारपाई आदि—रक्खी हुई थीं। सामने अमरूद का एक पेड़ फलों से लदा था। लोगों ने उस पर ख़ूब हाथ साफ़ किए। डाक-बँगले में कुछ देर आराम करने के बाद मंदिर की ओर रवाना हुए। मंदिर में शीश नवाने के बाद जल-मंदिर की तरफ़ बढ़े। यहाँ ठंडे जल का एक झरना है। जल-मंदिर का बहुत हिस्सा अभी बनने को बाक़ी है। झरने में स्नान किया, और खाना खाकर दो-तीन घंटे आराम करने के बाद लौटती यात्रा शुरू की। अब की बार एक दूसरे ही पथ का अनुसरण किया। इस पथ से आवागमन कम था। शायद इसलिये कि यह रास्ता पहलेवाले से अधिक ख़तरनाक था। ढालू और फिर अंदाज़ से ज्यादा फिसलन। चढ़ाई से ज्यादा तो उतराई अखरने लगी। सड़क के एक ओर भयंकर खड्ड, जहाँ फ़िसलने पर हड्डी-पसली का भी पता न चले, और दूसरी ओर पर्वत की खड़ी दीवार। हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथियों में से लगभग सभी दो-चार बार गिरे या गिरते-गिरते बचे। फिसलन के मारे पैर ही न टिकते थे, बहुत गड़ा-गड़ाकर चलना पड़ता था। बड़ी मिहनत मालूम पड़ती थी। बंदरभेल * की उतराई भी शायद इसी तरह की हो। इस पथ के लिये प्रो० मनोरंजन के निम्न-लिखित पद्य पूर्ण रूप से लागू होते हैं—

पर्वत-पथ है, सँभल-सँभल चलना यहाँ ;
सावधान, ठोकर मत लग जाए कहीं।
ध्यान रहे अपने पथ पर ही सर्वदा,
और कहीं ये चंचल दृग जाएँ नहीं।
आस-पास के दृश्य परम रमणीक हैं,
आँखें जातीं जहाँ, अटक रहतीं वहीं।
किंतु कठिन है पंथ, बड़े रोड़े पड़े,
पास खड़ी पर्वत - माला धमका रहीं।
और, दूसरी ओर भयंकर गर्त है,
यदि फिसले, तो सीधे जाओगे वहीं।
पर जी चाहे अगर ठहरकर देख लो,
फिर निज पथ पर पथिक सजग चलते चलो।

* * *

रास्ते में सीता-नाला के समान ही एक नाला और मिला। चार बजे हम लोग पहाड़ की तलहटी में पहुँच गए। लॉरीवाला हम लोगों का इंतज़ार कर रहा था। वहाँ से हम लोग स्टेशन आए। दूसरे दिन गया होते हुए पटना के लिये रवाना हो गए।

* बदरी-केदारनाथ के मार्ग में बंदरभेल की कठिन उतराई मशहूर है।—लेखक

कोल्ड क्रीम ऑफ़ रोज़ेज़

गुलाब-गंध-प्रसाधन प्रलेप

शीत के आक्रमण से हाथ, पाँव, मुँह और ओठों की सुंदरता को बचाता है।

सुंदर ट्यूब में मिलता है।

बेंगाल-केमिकल ऐंड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०

कलकत्ता : : बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनो के बीच में

[श्रीयुत कमलाशंकर सिंह]

राजेंद्र बाबू

बंगाल　　बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रों की मानसिक सौर चिकित्सा

[डॉ० आर० एस० अग्रवाल, नेत्र-चिकित्सक, दिल्ली]

हम देखते हैं, छोटे स्कूलों की अपेक्षा हाईस्कूलों और हाई-स्कूलों की अपेक्षा कॉलेजों में चश्मा लगानेवालों की संख्या अधिक है। लड़के और लड़कियाँ ज्यों-ज्यों ऊँची श्रेणियों में पहुँचते हैं, त्यों-त्यों उन्हें चश्मे की आवश्यकता भी अधिक होती जाती है, या वे नेत्र-रोगों से अधिक आक्रांत होते जाते हैं। नेत्र-रोगों की क्रमशः होनेवाली यह वृद्धि किसी विशेष भूल को सूचित करती है। जनता का एक बड़ा भाग नेत्र-रक्षण-विषयक ज्ञान से अपरिचित है, और लगातार बहुत समय तक नेत्रों का असम्यक् योग (दुरुपयोग) करता रहता है। मैं चाहता हूँ, जन-समाज के सम्मुख नेत्रों के सम्यक् और असम्यक् उपयोग की व्याख्या करूँ।

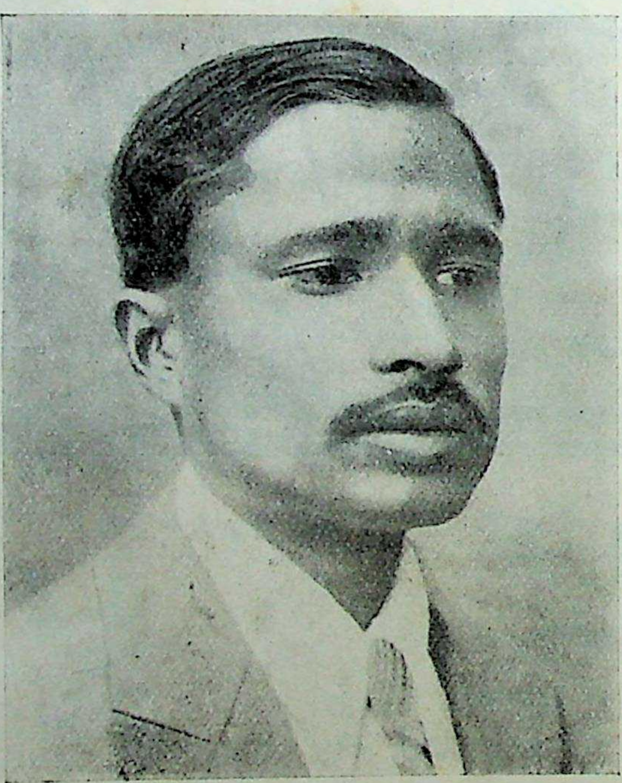

लेखक

पलक—देखने में आँखों की पलकें मुख्य भाग लेती हैं। साधारणतः ऊपर की पलकें सदैव कुछ झुकी और नेत्र आधे खुले रखने चाहिए। ऊपर या सामने की ओर देखने के समय पलकें ऊपर न उठानी चाहिए, बल्कि ठोड़ी को ऊँचा करना चाहिए। ऊपर की पलकें तो हर हालत में कुछ नीचे झुकी ही रहनी चाहिए।

पलक मारना (Blinking)—प्रायः महत्त्व-पूर्ण बातें साधारण हुआ करती हैं। पलकों का साधारण-से-साधारण, परंतु सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण और प्रथम कार्य पलक मारना है। पलक मारने में ऊपर की पलक को कुछ नीचे गिराना चाहिए, जिससे वह आँख की पुतली को ढक ले, और फिर ऊपर उठाना चाहिए। झटका देकर या अनियमित गति से पलक मारना एक भूल है। पलक मारना-मात्र पलक को ऊपर उठाने का द्रुतगति में होने-वाला कार्य है, जिसे मनुष्य को हर समय स्वभावतः ही करते रहना चाहिए, चाहे वह कुछ ही कार्य क्यों न कर रहा हो।

किसी अक्षर को विना पलक मारे देखना शुरू कीजिए। आप देखेंगे, उसकी स्याही फीकी पड़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी है। अब आप पलक मारिए, और देखिए, वह फिर ज्यों-का-त्यों दिखाई देने लगेगा।

किसी छोटे बच्चे को, जो अपनी स्वाभाविक क्रियाओं को नहीं भूला है, और जिसमें कृत्रिम अभ्यासों का प्रवेश नहीं हो पाया है, पलक मारते हुए देखिए, और ध्यान दीजिए कि उसकी पलक किस प्रकार कार्य करती है। एक मिनट में कम-से-कम दो बार अवश्य पलक मारनी चाहिए।

पढ़ना—पुस्तकें ठोड़ी से कुछ नीचे रखिए, जिससे पढ़ते समय पलकें ऊँची न उठानी पड़ें। एक पंक्ति पढ़ने में कम-से-कम दो बार पलक अवश्य मारनी चाहिए। धूप में न पढ़ना चाहिए। लेटे हुए भी बड़ी आसानी से पढ़ा जा सकता है। परंतु सिर ऊँचा रखना और बार-बार पलक मारना आवश्यक है। पढ़ते समय पलक न मारना एक भारी भूल है।

लिखना—लिखते समय दृष्टि सदैव क़लम की नोक पर रहनी चाहिए, और उसे क़लम की नोक के साथ-साथ चलाना चाहिए। साथ ही बार-बार पलक भी मारते रहना चाहिए। लिखते समय प्रायः लोग यह भूल करते हैं कि अगले अक्षर लिखने के समय ही पिछले अक्षर भी देखते जाते हैं।

सीना—बहुत-सी स्त्रियों के सिर में थोड़े समय भी सीने-पिरोने का काम करने से दर्द होने लगता है, और आँखें खींचनी पड़ती हैं। उनकी एक बड़ी भूल यह होती है कि वे पलक बहुत देर में मारती हैं, और अपने काम की ओर टकटकी लगाकर देखती रहती हैं। उन्हें जल्दी-जल्दी पलक मारते और सुई की गति के साथ ही दृष्टि भी घुमाते रहना चाहिए। जब सुई ऊपर जाय, तो दृष्टि भी ऊपर जानी चाहिए, और जब कपड़े के नीचे जाय, तो दृष्टि भी उसके नीचे जानी चाहिए। इस प्रकार सुई के साथ-साथ दृष्टि घुमाने से आँखों को खींचना न पड़ेगा, और उन पर ज़ोर भी कम पड़ेगा।

सिनेमा—साधारणतः सिनेमा को नेत्रों के लिये अत्यंत हानिकारक समझा जाता है। और, वास्तव में उससे आँखों को बहुत हानि पहुँचती, एवं दृष्टि भी मंद हो जाती है। परंतु सिनेमा को दृष्टि-शक्ति-वर्द्धन का एक साधन बनाया जा सकता है। सिनेमा देखने से हानि पहुँचने का मुख्य कारण यह होता है कि देखने के समय दर्शक आँखों पर ज़ोर डालते और उन्हें खींचा करते हैं। यदि यह आदत छोड़ दी जाय, तो दृष्टि सदैव उन्नत होगी। और, इस प्रकार सिनेमा देखने का अभ्यास अधिक समय तक जारी रक्खा जाय, तो बहुत-से नेत्र-विकार दूर हो सकते हैं।

सिनेमा किस प्रकार देखना चाहिए—आराम से सीधे (बिना झुके हुए) बैठिए, और ऊपर की पलकों को कुछ झुका हुआ तथा ठोड़ी ऊपर उठी हुई रखिए। साथ ही बार-बार पलकें भी मारते रहना चाहिए। सिनेमा देखने में साधारणतः जो भूल की जाती है, वह यह कि दर्शक ऊपर की पलकें ऊँचे उठाए रखते हैं, और पलक नहीं मारते।

सूर्य-चिकित्सा—हर प्रकार के नेत्र-विकार दूर करने के लिये सूर्य हमारा परम सहायक है। उसकी सहायता से कभी-कभी आश्चर्य-जनक परिणाम उत्पन्न होते हैं।

सूर्य-चिकित्सा-विधि—आँखें बंद कर, आराम से सूर्य की ओर मुँह करके बैठ जाइए। धीरे-धीरे शरीर को एक ओर से दूसरी ओर हिलाइए। यह क्रिया १० से ३० मिनट तक करते रहिए। इसके लिये प्रातः या सायंकाल अच्छा है, क्योंकि उस समय सूर्य की किरणों में तेज़ी नहीं होती। जब धूप की तेज़ी से तकलीफ़ मालूम हो, तो इस चिकित्सा को तुरंत बंद कर देना चाहिए। धूप से उठकर छाया में आना चाहिए, और ठंडे पानी से आँखें धो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालनी चाहिए। इसमें १० से २० बूँद तक आप-थैलयो-नामक दवा भी मिलाई जा सकती है।

नेत्र-प्रक्षालन—चक्षु-स्नान आँखों के लिये बहुत ही लाभदायक है। इसके लिये आँखों पर धीरे-धीरे ठंडा पानी डाला जाता है। पानी ज़ोर से न डालना चाहिए। अथवा आँख धोने की प्याली, जो दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलती है, लेकर किनारों तक पानी से भर लें, और उसे आँख के पास ले जाकर आँखों को नीचे झुकाकर उस पानी में बार-बार खोले और बंद करे। इस प्रकार एक-एक आँख को दो-दो मिनट तक धोना चाहिए। प्याली बहुत देर तक आँख के आगे न रखना चाहिए। २०-२० या ३०-३० सेकंड बाद उसे बार-बार आँख के पास ले जाकर यह क्रिया करनी चाहिए। नेत्र-प्रक्षालन के बाद करतलाच्छादन-क्रिया करनी चाहिए।

करतलाच्छादन – प्रत्येक व्यक्ति को इस बात का अनुभव होगा कि आँखें थक जाने पर थोड़ी देर के लिये उन्हें बंद कर लेने से दृष्टि स्वच्छ हो जाती और आँखों को आराम मिलता है। परंतु उन्हें बंद कर लेने पर भी पलकों से छनकर कुछ प्रकाश आँखों में जाता ही है। यदि इसे भी भीतर जाने से रोक दिया जाय, तो आँख को और भी आराम मिल सकता है। यह कार्य बंद आँखों को हथेली से ढक लेने से हो सकता है। परंतु हथेली से आँखें इस प्रकार ढकनी चाहिए कि पुतली पर तनिक भी दबाव न पड़े। इस क्रिया को करतलाच्छादन (Palming) कहते हैं।

बंद आँखों को हथेली से ढककर किसी बिलकुल काली या आनंदवर्धक वस्तु का ध्यान करना चाहिए, मानो वह वस्तु आपके सामने हो। कुछ लोग उस समय अपनी विशेष परिचित या प्रिय वस्तु का ध्यान करना अधिक पसंद करते हैं, यथा डॉक्टर एक नश्तर का, लड़की गुड़िया का और माता अपने बच्चे का।

करतलाच्छादन

[यह बालक जन्म से ही एक आँख का अंधा था। एक मास में ही अच्छा हो गया।]

करतलाच्छादन की क्रिया २ से ५ मिनट या इससे भी अधिक समय तक की जा सकती है। हाथ की कोहनियों को सामने रक्खी हुई टेबुल आदि पर रख लिया जाय, तो कोई हानि नहीं।

यदि आपको दूर-दृष्टि का विकार है, अर्थात् दूर के पदार्थ भली भाँति दिखलाई नहीं देते, तो करतलाच्छादन-क्रिया के पश्चात् दस-बारह फ़ीट की दूरी पर नेत्र-परीक्षक यंत्र (चार्ट) लगाकर उसे पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए (यह चार्ट डॉक्टर अग्रवाल इंस्टीट्यूट, दरियागंज, दिल्ली से आठ आने में मिल सकता है)। और, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकट-दृष्टि का विकार हो, अर्थात् पास की चीज़ें देखने या पढ़ने में दिक़्क़त होती हो, तो रीडिंग-टेस्ट-टाइप पर अभ्यास करना चाहिए। इस उपाय से ९० प्रतिशत रोगियों को पहली बार में ही लाभ होता है। स्थायी लाभ के लिये यह उपाय कुछ दिनों तक लगातार करना चाहिए। इसके द्वारा कई जन्म के अंधे मरीज़ अच्छे हो गए हैं।

एक विद्यार्थी, जो दाईं आँख से जन्म से अंधा

सत्यवान

["गुरुकुल कांगड़ी के इस बालक को अपना रास्ता अच्छी तरह नहीं दिखलाई देता था, किंतु दो सप्ताह बाद मुझे इसकी दृष्टि अच्छी मिली।"— कैप्टेन रामचंद्र रिटायर्ड सिविल सर्जन]

था, दो घंटे में अच्छा हो गया। गुरुकुल कांगड़ी का विद्यार्थी सत्यवान दोनो आँखों से क़रीब-क़रीब अंधा हो गया था, किंतु दस दिन में उसके नेत्र खुलकर बिलकुल स्वस्थ हो गए।

पाठशालाओं के विद्यार्थियों के दृष्टि-दोष दूर करने का उपाय—सभी पाठशालाओं के विद्यार्थियों में प्रायः दृष्टि-दोष पाया जाता है। यहाँ हम एक बहुत सादा, परंतु प्रभावशाली उपाय बतलाते हैं, जिससे समस्त दृष्टि-दोष दूर हो सकते हैं, और स्वस्थ आँखें उससे बची रह सकती हैं। इस उपाय से एक मास में ही अच्छा और उत्साहवर्धक परिणाम निकलता है। इसे थोड़े विद्यार्थियों पर उपयोग करने से ही इसकी उपयोगिता प्रकट हो जायगी।

स्नेलेन-टेस्ट-बोर्ड का अभ्यास—प्रत्येक श्रेणी के कमरे में दीवार पर स्नेलेन-टेस्ट-बोर्ड लगा दीजिए। प्रतिदिन विद्यार्थियों को चुपचाप अपनी जगह पर बैठकर इसके बारीक-से-बारीक अक्षर, जो वे पढ़ सकते हैं, दोनो आँखों से पढ़ने चाहिए, और फिर एक आँख को हथेली से इस प्रकार बंद करके कि पुतली पर दबाव न पड़े, दूसरी आँख से वे अक्षर पढ़ने चाहिए। इसके बाद उस आँख को उसी प्रकार बंद करके पहली आँख (जो बंद थी) से पढ़ने चाहिए। शिक्षण-कार्य प्रारंभ होने से पूर्व इस अभ्यास के लिये पाँच मिनट का समय नियत कर देना चाहिए। अध्यापकों को ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी परीक्षण-पत्र (टेस्ट-बोर्ड) पलक मार-मारकर पढ़ते हैं या नहीं। नित्यप्रति केवल पाँच मिनट अभ्यास करने से एक सप्ताह में ही बालकों की दृष्टि में सुधार मालूम होगा, और इसके कुछ दिनों बाद दृष्टि-दोष दूर हो जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

[श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह]

आज विश्व के शिशिर-शून्य पट
पर यह काल-चितेरा
प्रिये ! स्वर्ण - लिपि में लिखता है
फिर वसंत का फेरा।
विकस रही मंजरी आम्र-कानन में
गाती कोयल ;
त्रिविध कामनाओं में मनसिज
जगा रहा उर प्रतिपल।

कितना मादक फुल्ल गुलाबों
के दल की रंगीनी ;
उलझो पड़ती है कलियों से
पुरवाई रस-भीनी !
यही समय है, यही समय है,
सार्थक कर लो यौवन ;
चिर अतृप्ति, फिर चिर अतृप्ति की
शान्ति सहेगा जीवन।

गीत

[ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

सखे ! अमर-वल्ली बनकर मैं जीवन-वन में आया ;
भीषण काल-वायु से झूमें उन शाखों पर छाया।
कभी चूमता जगती-तल मैं, कभी नभोमंडल मैं—
आशा और निराशाओं के झोंके खा पल-पल मैं !
झूल रहा हूँ मैं त्रिशंकु-सा, द्रुम-दल-शाख सहारा !
कौन बताए पूरब-पश्चिम, मेरा कहाँ किनारा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा

आचार्य श्रीनरेंद्रदेवजी एम्० एल्० ए०

[आप युक्त प्रांत के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस-कार्यकारिणी समिति के सदस्य और प्रांतीय कांग्रेस के सभापति रह चुके हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस-समाजवादी दल की स्थापना में आपका प्रमुख हाथ रहा है। आप काशी-विद्यापीठ के आचार्य हैं। इस समय प्रांतीय ऐसेंबली के सदस्य हैं, और प्रगतिशील साप्ताहिक 'संघर्ष' का संचालन कर रहे हैं।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

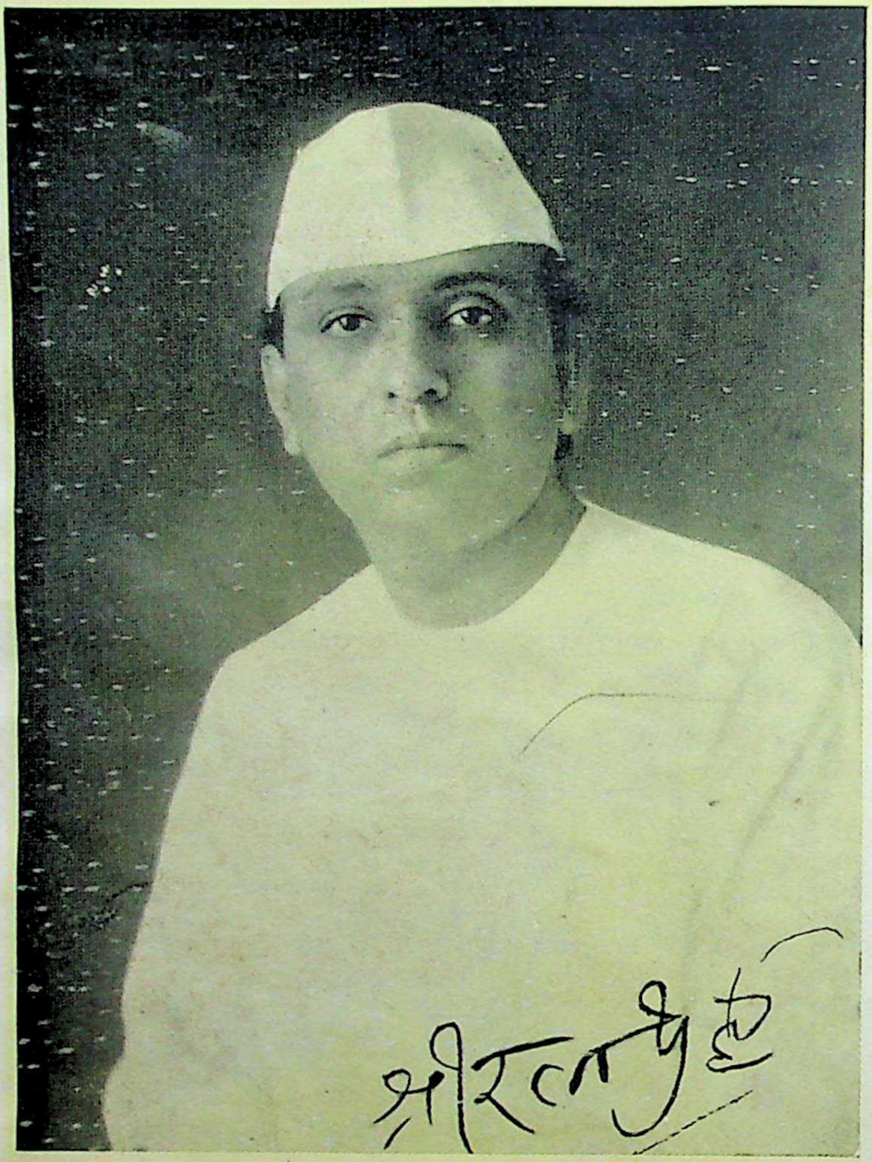

पं० श्रीरत्नजी शुक्ल एम्० एल्० ए०

[आप कानपुर के प्रसिद्ध वकील, हिंदी के प्रतिष्ठित कवि और लेखक हैं। आपकी रचनाएँ 'सुधा' और 'माधुरी' में बराबर छपती रहती हैं। आप युक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के प्रमुख सदस्य हैं। आपने कांग्रेस-क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किया है। साहित्य में भी आपने अच्छा-ख़ासा स्थान बना लिया है। कानपुर-म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डों की शिक्षा-कमेटियों के आप कई साल तक चेयरमैन रहे हैं, और कानपुर में शिक्षा की उन्नति में भी आपका विशेष हाथ रहा है। अभी कुछ महीने पूर्व माननीया महारानी अयोध्या के देहावसान से युक्त प्रांत की धारा-सभा में जो स्थान रिक्त हुआ था, उसके लिये आप चुन लिए गए हैं। आप जौनपुर-राज्य के दीवान भी रह चुके हैं, किंतु कांग्रेस का कार्य करने के लिये आपने यह पद छोड़ दिया है। हम आपकी उन्नति के हृदय से इच्छुक हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंदा मामा

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(१)

सात बरस की सेवा के बाद भी मोहिनी मंगू के लिये वैसी ही नन्ही, भोली, चंचल और शिशु-जैसी थी।

मोहिनी पूछती—"अच्छा, चंदा मामा का घर कहाँ है ?"

मंगू आसमान की ओर उँगली उठाकर कहता—"वहाँ।"

मोहिनी फिर पूछती—"वहाँ कहाँ ?"

मंगू उत्तर देता—"दूर, बड़ी दूर, बादलों के बीच में—"

"उसके घर में और कौन-कौन है ?"

मंगू बतलाता—"उसके घर में बूढ़ी मा है, जो सारी रात चरखा कातती है। सबेरे चंदा मामा घर जाता है, अपनी मा के पास जाकर चुपचाप सो जाता है। दिन-भर सोता है, और......और रात को उजाला करने के लिये फिर आ जाता है।"

मोहिनी पूछती—"भला, चंदा मामा दिन में क्यों सोता है ?"

"क्योंकि सारी रात जागता है।"

"क्यों जागता है ? हम लोग तो रात में सो जाते हैं, तुम भी सो जाते हो काका ! फिर चंदा मामा क्यों जागा करता है—बताओ ?"

"बता दिया न, उजाला करने के लिये।"

"तो काका ! चंदा मामा को रात में नींद नहीं आती ?"

"उहुँः।"

"क्यों नहीं आती ?"

मंगू को इसका जवाब न सूझता, वह बोलता—"बड़ी नटखट हो, हर बात में क्यों-क्यों लगा रक्खी है। जाओ, नहीं बतलाता।"

मंगू की बात सुनकर मोहिनी चुप हो जाती, कुछ उदास होकर कहती—"काका !"

मंगू अन्यमनस्क-सा उत्तर देता—"हाँ।"

"तुमने चंदा मामा का घर देखा है ? गए हो उसके यहाँ ?"

मंगू एक शीतल निःश्वास लेकर कहता—"नहीं देखा है उसका घर, बूढ़ा होने पर जाऊँगा उसके यहाँ। वहीं तो तुम्हारी काकी चली गई है बेटी।"

"काकी वहीं गई है ? लो, मुझसे कहते थे, काकी मर गई, अब नहीं आएगी।"

"हाँ, चंदा मामा के घर जाकर कोई लौटता नहीं, मैं भी एक दिन चला जाऊँगा।"

"तो तुम भी नहीं लौटोगे काका ?"

"उहुँः।"

"तुम मत जाना काका, चंदा मामा के घर। यहीं रहना हमारे घर में, अच्छा।"

"अच्छा।"

"जाओगे तो नहीं ?"

"नहीं।"

"बड़े अच्छे हो काका, चंदा मामा बड़े ख़राब हैं !"

"बड़े ख़राब हैं।"

"अच्छा काका, कहानी कहो।"

मंगू कहानी शुरू करता, मोहिनी पास बैठी घंटों हूँ-हूँ करती रहती। इसी तरह उनके दिन बीतते गए। लेकिन चंदा मामा की कहानी उसे सबसे अच्छी लगती थी, इसलिये मंगू की नाक में दम रहता था। रोज़ चंदा मामा की बातचीत से वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान हो गया। उसने खीझकर मोहिनी का ही नाम 'चंदा मामा' रख दिया !

(२)

कई बरस बीत गए। मोहिनी सयानी हो चुकी थी। अब वह मंगू के पास बैठकर कहानी नहीं सुनती, फिर भी मंगू उसे 'चंदा मामा' ही कहता है।

दिवाली का दिन था। मोहिनी रसोई में बैठी पकवान बना रही थी। मंगू कुछ सौदा लेकर आया, बोला—"चंदा मामा !"

मोहिनी बोली—"रहने दो काका ! मुझे तुम्हारा यह नाम अच्छा नहीं लगता।"

मंगू हँसने लगा। उसने कहा—"लेकिन मजबूरी है, तुम जब छोटी थीं, तभी तो यह नाम रक्खा था मैंने, तब तो बड़ा पसंद था, और अब ? क्यों चंदा मामा ?"

"नहीं मानोगे काका ? मैं बाबूजी से शिकायत कर दूँगी।"

वह उठकर पास आ गई, और कहने लगी—"और फिर...ख़ूब...ख़ूब पिटोगे काका ! मैं बचाने भी नहीं आऊँगी।"

मंगू ने कहा—"अच्छा है, पिटूँगा, तो रो-धोकर छुट्टी मिलेगी, तब कल-परसों जाना स्कूल अकेले, मेरा क्या ?"

"नहीं-नहीं काका ! गुस्सा हो गए तुम ? अपने काका को भला मैं पिटवाऊँगी ! लाओ, क्या लाए हो बाज़ार से ?"

मंगू ने सौदे की गठरी उसके हाथ में देकर कहा—"लो, मेवा है, और कुछ पूजा का सामान है, बाबूजी ने मँगाया था।"

मोहिनी सौदा उठाकर रखने लगी।

मंगू ने कहा—"बेटी, जब तुम ससुराल चली जाओगी, तब चंदा मामा किसे कहूँगा—यही सोचकर कुछ दिन और कह लेने दो।"

मोहिनी बोली—"मैं ससुराल जाऊँगी ही नहीं।"

"कहीं ऐसा भी हो सकता है, पगली कहीं की !"

"नहीं काका ! मैं तुम्हें और बाबूजी को छोड़कर कहीं न जाऊँगी।"

"जाना पड़ेगा बेटी, सभी लड़कियाँ पराए घर के लिये होती हैं।"

"वाह ! कोई ज़बरदस्ती है काका ?"

"और क्या, जहाँ एक बार ससुराल गईं, फिर काका और बाबूजी, किसी की भी याद न आएगी।"

"अजी, रहने भी दो काका ! यहाँ ससुराल जाता ही ....."

मोहिनी के मुँह की बात मुँह में ही रह गई, पिता बाहर से चुपचाप आकर बरामदे में खड़े उसकी बातें सुन रहे थे। उन्होंने कहा—"क्यों मंगू, क्या सलाह हो रही है बिटिया से ?"

मंगू कुछ सकुचाकर, पीछे हटकर खड़ा हो गया, बोला—"कुछ नहीं मालिक ! चंदा मामा कहते हैं कि ससुराल न जायँगे !"

बाबूजी हँस पड़े, बोले—"मंगू, अभी से परेशान न करो उसे। जब तक खेलने-खाने के दिन हैं, ऐसे ही रहने दो।"

वह मोहिनी के पास जा खड़े हुए, बोले—"बिटिया, मंगू तुझे बहुत खिझाता है, क्यों ?"

मोहिनी ने उत्तर दिया—"नहीं बाबूजी, मंगू काका कहते थे—ससुराल जाना पड़ेगा। मैंने कहा, बाबूजी को छोड़कर कहीं न जाऊँगी। बस, इतनी-सी बात थी, और......"

"क्या ? बता तो ?"

"मेरा नाम रक्खा है चंदा मामा ! देखो बाबूजी, क्या मैं चंदा मामा हूँ ?"

बाबूजी ने उसकी ओर देखा। स्वर्गीया पत्नी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिच्छवि—वह सजीव वरदान—सचमुच मोहिनी सयानी हो गई थी। उन्होंने कहा—"बिटिया, हँसी करता है मंगू। देख मंगू, अब बिटिया से ऐसी बातें न कहा कर।"

मंगू बोला—"नहीं कहूँगा मालिक! अब इसे चंदा मामा।"

मोहिनी तिनककर बोली—"लीजिए, अभी फिर कह दिया। सुना बाबूजी, आपने?"

बाबूजी कृत्रिम क्रोध से बोले—"ठहर तो मंगू के बच्चे!"

वह मंगू की तरफ़ लपके। मंगू बाहर भाग गया।

मोहिनी हँस रही थी!

(३)

एक दिन शाम को मंगू जब घर आया, तब बहुत सुस्त-सा दिखाई देता था। बाबूजी ने उसे बुलाया। मंगू सामने जा खड़ा हुआ। बाबूजी ने पूछा—"मनीऑर्डर कर दिया?"

मंगू ने धीमे स्वर में कहा—"जी हाँ।"

"रसीद कहाँ है?"

मंगू ने अपने फटे हुए कुर्ते की जेब से रसीद निकालकर दी। बाबूजी ने रसीद देखी। वह ग़ुस्से में भर गए, बोले—"यह क्या बात है रे? दिए पचास रुपए और रसीद लाया चालीस की? दस रुपए कहाँ चले गए?"

मंगू हाथ जोड़कर बोला—"मालिक! माफ़ी दीजिए, मुझसे दस का नोट कहीं गिर गया। बहुत खोजा, मगर मिला नहीं।"

बाबूजी आग-बबूला हो गए, कहने लगे—"चाल चलता है मुझसे? झूठ बोलता है, क्यों रे? यह क्यों नहीं कहता कि रुपए खा गया।"

मंगू गिड़गिड़ाकर बोला—"मालिक, गंगा माई की सौगंद, नोट गिर गया मुझसे। क़सूर माफ़ कीजिए।"

"बेईमान कहीं का! फिर वही बात कहे जायगा—गिर गया नोट? तू दूध-पीता बच्चा तो नहीं है। बोल, सच-सच बता, क्या किए दस रुपए?"

मंगू की आँखों में आँसू भर आए। उसने कहा—"सचमुच बाबूजी, नोट गिर गया कहीं, मुझे लेना होता, तो ...."

उसकी बात काटकर बाबूजी बोले—"बदमाश! अपनी ही सफ़ाई देगा, और झूठ बोलेगा, क्यों बे?"

"सरकार, आज इतने दिनों से आपका नमक खा रहा हूँ, कभी मेरी नीयत ख़राब हुई हो, तो मेरे तन में कीड़े पड़ें। ईश्वर जानता है, नोट गिर गया।"

बाबूजी उठ खड़े हुए। बोले—"यों नहीं क़बूलेगा। ठहर तो नमकहराम!"

उन्होंने कोने में रखी हुई छड़ी उठाकर मंगू की पीठ पर एक-दो-तीन-चार—कई जड़ दीं। मंगू सिसक-सिसककर रोने लगा। बोला—"मालिक, चाहे मार डालो, मगर मैंने नोट नहीं लिया—नहीं लिया। मुझसे क़सूर हुआ, माफ़ कीजिए।"

बाबूजी ने कड़ककर कहा—"साले, तेरे बुज़ुर्गों की कमाई थी, जो फेंक आया? मेरा ख़ून-पसीना एक हो जाता है दफ़्तर में काम करते-करते, तब यह पैसा देखने को नसीब होता है!"

"सरकार! ग़लती हुई, माफ़ कीजिए।"

बाबूजी ने फिर छड़ी उठाई, और दो-तीन हाथ भरपूर मार दिए। पीड़ा से मंगू तिलमिला उठा। उसने रोते-रोते बाबूजी के पैर पकड़ लिए। उन्होंने कसके एक ठोकर जमा दी। मंगू के पेट में चोट लगी, वह गिर पड़ा।

बाबूजी चिल्लाते गए—"बदज़ात कहीं का! साला मुझी से बातें बनाता है, निकल मेरे घर से, तेरी ज़रूरत नहीं मुझे। निकल इसी दम।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने हाथ पकड़कर मंगू को उठाया, और खींचते हुए दरवाज़े के बाहर ले जाकर ढकेल दिया। मंगू सीढ़ी के नीचे पत्थरों पर जा गिरा। उसके सिर और घुटनों में बड़ी चोट लगी, जगह-जगह से ख़ून निकलने लगा, मगर वह गिड़गिड़ाकर यही कहता रहा—"मालिक, ग़लती हुई, माफ़ कीजिए। अब कभी ऐसा क़सूर न करूँगा।"

बाबूजी ने एक न सुनी, और बड़बड़ाते हुए दरवाज़ा बंद करके, कमरे में आकर अख़बार पढ़ने लगे।

लगभग आध घंटे बाद, साढ़े पाँच बजे, मोहिनी घर में आई, पड़ोस में किसी के यहाँ उत्सव में गई थी। आतेही उसने पुकारा—"मंगू! मंगू! कहाँ मर गए मंगू काका?" कोई न बोला, मंगू कहाँ!

बाबूजी ने उत्तर दिया—"बिटिया, मंगू को मैंने नौकरी से अलग कर दिया है।"

मोहिनी के हृदय में धक् से हुआ। वह दुखी हो गई। आँखों में आँसू भर आए। अपने पिता से बोली—"क्यों? ऐसा क्यों किया बाबूजी?"

"उसकी नीयत ख़राब हो गई थी।"

"क्या किया था उसने बाबूजी?"

बाबूजी फिर ग़ुस्से से बोले—"हर बात की कैफ़ियत पूछकर क्या करेगी तू? जा यहाँ से, मंगू नहीं है, न सही। दूसरा नौकर कल आ जायगा। अपने हाथों काम करते क्या शर्म आती है तुझे?"

"मगर बाबूजी, मंगू काका तो......"

बात काटकर बाबूजी ने कहा -"ख़ामोश। जाती है यहाँ से या तू भी कुछ पूजा लेगी?"

डर से काँपती हुई मोहिनी वहाँ से जाकर, अपने कमरे में सिसक-सिसककर रोने लगी। अब उसे 'चंदा मामा' कहकर कौन चिढ़ाएगा? मा के न रहने पर जिस मंगू ने उसे अपनी गोद में खिलाकर इतना बड़ा किया था, उसका स्नेह क्या छूटने की वस्तु थी? अब उसका मंगू काका क्या घर न लौटेगा? यही सब सोच-सोचकर मोहिनी का कलेजा मुँह को आ रहा था। वह ख़ूब रोई, जी भरकर आँसू गिराए। बाबूजी का क्रोध वह जानती थी कि बड़ा भीषण होता है। क्या करे वह? विवशता में उसका क्या बस चलता।

(४)

तीन महीने बीत गए। उस दिन मोहिनी की हाईस्कूल-परीक्षा का फल अख़बार में निकला। मोहिनी स्टेशन पर अख़बार में अपना नाम देखकर फूली न समाती थी। वह ख़ुशी-ख़ुशी घर लौटी। रास्ते में किसी ने पुकारा—"चंदा मामा!"

मोहिनी ने घूमकर देखा—अरे मंगू!

"मंगू काका!" वह हर्ष से चिल्ला उठी।

मंगू ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"चंदा मामा! अच्छे हो तुम?"

मोहिनी की आँखों में आँसू भर आए। वह मंगू की छाती पर अपना सिर रक्खे हुए रोते-रोते बोली—"काका! तुम कहाँ चले गए थे इतने दिनों से? घर आए ही नहीं। जानते हो, मैं कितना रोती हूँ तुम्हारी याद करके? लेकिन काका, तुम्हें मेरी याद नहीं आती शायद?"

मंगू बोला—"याद नहीं आती? बेटी! इन्हीं हाथों ने तुम्हें पाल-पोसकर इतना बड़ा किया, तुम्हारी सेवा की, लेकिन बाबूजी ने—आह! उन्होंने ग़रीब मंगू के दिल की बात न समझी, और अब......"

मंगू का गला भर आया। वह चुप हो गया। मोहिनी ने कहा—"मंगू काका, अब तुम घर चलो।"

मंगू ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं चंदा मामा, बाबूजी मुझ पर ग़ुस्सा होंगे।"

"नहीं ग़ुस्सा होंगे। मैं कह दूँगी कि मैं तुम्हें बुला लाई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके लिये

शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ठ

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये

तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की

अक्सीर दवा

झंडु-अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला

—हरएक घर में रहना चाहिए—

सच्ची शक्ति का संग्रह के लिये

झंडु की सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

शक्ति की सर्वोत्तम दवा

फ़ौरन् व्यवहार कीजिए

झंडु-फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।

लखनऊ के ,, ,,—मातावदल पंसारी, अमीनाबाद।

इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।

लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

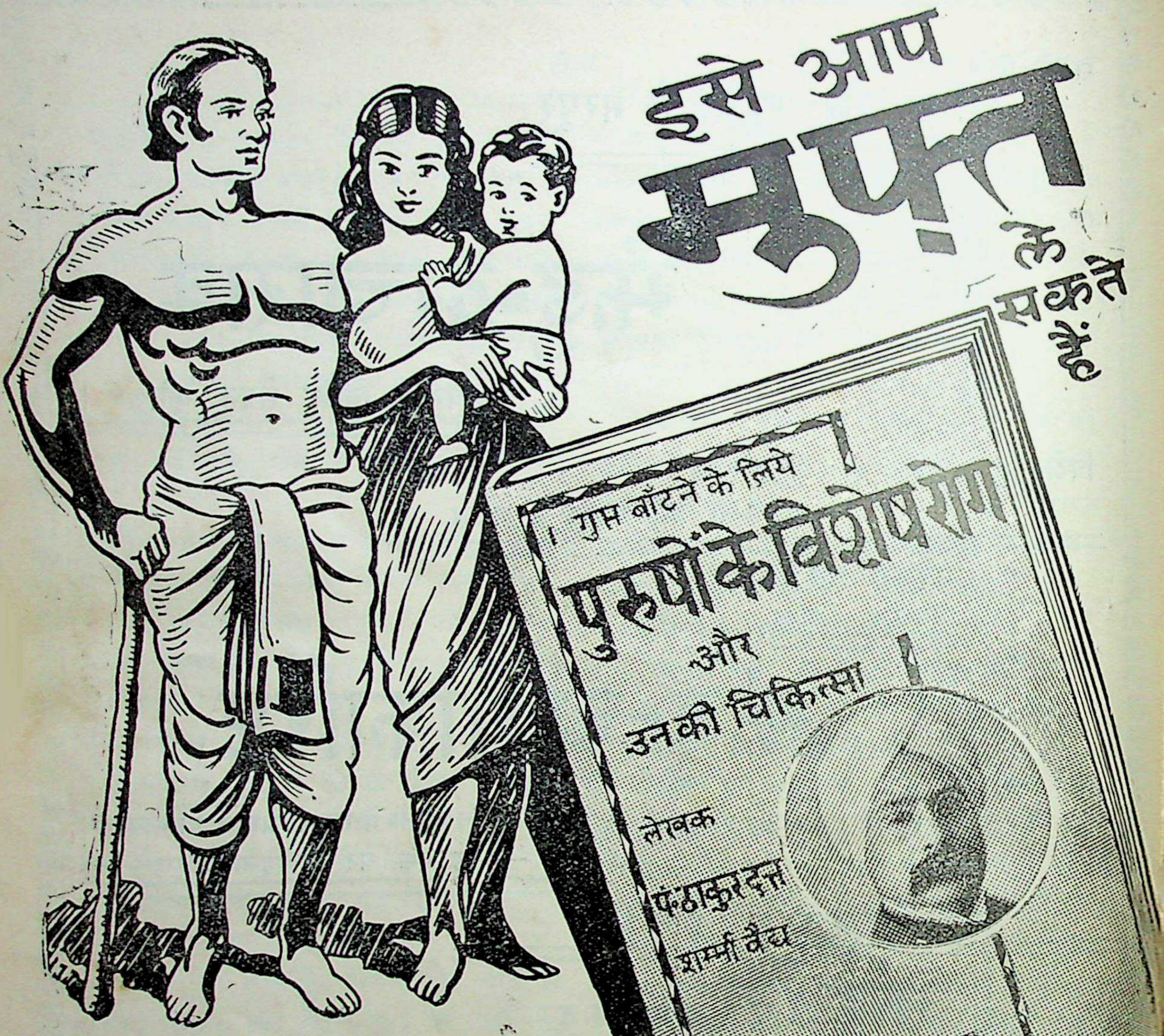

आप केवल कूपन भेज दीजिए, जिसमें लिख दीजिए कि "पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा"। आप हिंदी में चाहते हैं या उर्दू-अँगरेज़ी में। आपके पास एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक की लिखी हुई मनोरंजक पुस्तक पहुँच जायगी। उसमें एक पूर्ण-यौवन पुरुष के लक्षण तथा उन सभी कठिनाइयों को दूर करने के साधन दिए गए हैं, जो आम तौर पर एक विवाहित पुरुष के रास्ते में रुकावट डालती हैं।

केवल विवाहित पुरुषों को भेजी जाती है।

कूपन डाक द्वारा भेजिए

सेवा में, मैनेजर अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर (१३)

कृपया 'पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा'-नामक पुस्तक की एक प्रति मुफ़्त भेजकर कृतार्थ करें। मैं हि[ंदी]
उर्दू, अँगरेज़ी, बंगाली में चाहता हूँ।

नाम ....

पूरा पता ....

डाक व तार का पता—**अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाड़ा मेल-ट्रेन की तेज़ी से जा रहा है !

देर करोगे, तो सदा पछताओगे !

बचपन में ग़लतियाँ करके काया नष्ट करनेवाले के लिये
नीचे-लिखी दवाएँ अमृत या आबे-हयात हैं—

नवधातुरोगांतक

यह हमारी बीस साल की खोज का नतीजा है। हमारी सभी दवाएँ पब्लिक ने पसंद करके उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पर हमने मध्य-स्थितिवालों के लिये इसे सबसे अच्छा समझा, इसीलिये गत कई सालों से इसका ही काफ़ी प्रचार है। हमें ग़रीबों का एक पैसा भी हराम में खाने से जंगल में वृक्ष के नीचे रहकर भूखों मर जाना अच्छा लगता है।

इस दवा से धातु के सारे विकार, धातु की कमी, धातु का सूख जाना, पतली हो जाना, उसमें गर्भोत्पादक कीट न होना, शीघ्र-पतन होना, कामेच्छा न होना, ढीलापन जल्दी होना, पेशाब के आगे-पीछे वीर्य जाना वग़ैरह सारी ही शिकायतें इस चूर्ण से उस तरह भागती हैं, जिस तरह हवा से बादल भागते हैं। आप इसे जाड़े में सेवन करें, अपूर्व लाभ होगा। ज़रूरत होने से अनुपान बदलकर गरमी में भी खाकर जीवन का आनंद उठा सकेंगे। ६० दिन खाना ज़रूरी है। जिन्हें ज़रा भी शक हो, वे ४५ दिन खाकर परीक्षा कर लें। क़ीमत ४५ दिन की दवा का १२॥), पर अभी ग़रीबों के हितार्थ ६।) है।

संसार का अपूर्व, जादू का काम करनेवाला

तिला नं० १

विश्वास करो, हमारा एक पैर क़ब्र में है, एक बाहर है, ऐसे समय में हमें झूठ लिखकर धन कमाने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं। हमने अपनी ७० साल की उम्र में ५० साल तक सैकड़ों तिले बनाए, पर इस तिले से बढ़कर दूसरा तिला नहीं पाया। यह तिला सौ में सौ को मर्द बनाता है, इसने हज़ारों उजड़ती गृहस्थियाँ बना दीं। जिन घरों में रात-दिन देवासुर-संग्राम-सा मचा रहता था, कलह के मारे शांति नहीं मिलती थी, आज उन घरों में इसी तिले की बदौलत शांति का राज्य है।

इसके लगाने से बचपन की ग़लतकारियों के कारण पैदा हुई नसों की कमज़ोरी जाती रहती है। इंद्रिय में काफ़ी सख़्ती और तेज़ी आती है। देखते ही उत्तेजना होती है। आगे का मोटापन, जड़ का पतलापन, नसों का उभरा रहना सारी शिकायतें काफ़ूर हो जाती हैं।

आप वृथा इधर-उधर न ठगाकर, इस तिले को काम में लाकर सुखी हों। इस कंपनी की-सी सचाई कहीं नहीं है। इसे भारत के करोड़ों आदमी जानते हैं। क़ीमत फ़ी शीशी १५), पर ग़रीबों के लिये इस मौसम-भर आधा मूल्य ७॥) है। महसूल ॥)

पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि और चित्रकार का मधुर मिलन

१५ बढ़िया

रमेश-चित्रावली

रंगीन चित्र

चित्रकार

बाबू रामेश्वरप्रसाद वर्मा

यह चित्रावली हर तरह से उपादेय बना दी गई है। चित्रों की प्रशंसा करना व्यर्थ है। इसके ललिता, रंभा-शुक-संवाद, निराश रंभा, कमल-कुमारी तथा दीपक आदि चित्र चित्र-कला के आदर्श उदाहरण हैं। साथ में चित्रों का परिचय सरस, ओज-मयी, भावपूर्ण तथा प्रसाद-गुण-विशिष्ट कविताओं में दिया है, जो सोने में सुगंध का काम करता है। सभी चित्र सुंदर आर्ट-पेपर पर छपे हैं। मूल्य २)

कुछ अन्य चित्र-ग्रंथ

चित्रमय जापान (८४ चित्र)	१)	सती-चित्रावली	२।।)
चित्रमय बर्मा...	।।)	व्यंग्य-चित्रावली	१।।)
चित्रमय रामायण	३।।)	प्रेम-चित्रावली	२)
चित्रमय हरिश्चंद्र	।।।=)	तिलक-चित्रावली	१)
चित्रमय कृष्ण	४)	भार्गव-चित्रावली (दो भाग)	४), ५।।)
चित्र-विहारी	१।।)	राजा रवि वर्मा के प्रसिद्ध चित्र	१)
चित्रावली (दो खंड) ...	३)	चौक पूरने की पुस्तक ...	१)
चित्रमाला (४ खंड) ...	३।।)	आदर्श चित्रावली	४)
चित्र-काव्य	२।।), ३)	राष्ट्रीय चित्रावली	२)
मनोहर चित्रावली	५)		

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगू ने एक ठंडी साँस लेकर कहा—"उहुँः, तुम नहीं जानतीं कुछ।"

"तो तुम घर न जाओगे काका ?"

"नहीं बेटी !"

"और काका, आज मेरे इम्तिहान का नतीजा निकला है, मैं पास हो गई हूँ। तुम्हारा चंदा मामा हाईस्कूल पास ! क्यों काका ! तुम्हें ख़ुशी हुई ?"

मंगू का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। वह बोला—"सच कहते हो चंदा मामा ?"

"सच। अरे, देखो न यह अख़बार और यह मेरा रोल-नंबर।"

मोहिनी—भोली मोहिनी ने अख़बार मंगू के सामने करके, अपने नंबर पर उँगली रखकर बतलाया ! वह भूल गई कि मंगू बेचारा अँगरेज़ी पढ़ना नहीं जानता। ख़ुशी से उसका रोम-रोम जाग रहा था।

मंगू ने कहा—"बड़ी उमर हो मेरे चंदा मामा की। अच्छा-सा दूलहा मिले, जल्दी से ब्याह हो जाय।"

मोहिनी कुछ खीझकर कहने लगी—"काका, तुम्हारी यही बात तो मुझे पसंद नहीं। ऐसा आशीर्वाद रहने दो।"

मंगू हँस पड़ा। मोहिनी बोली—"और काका, देखो, मेरी बात मान लो। घर चलो, मैं बाबूजी से कहकर फिर तुम्हें नौकरी दिला दूँगी।"

मंगू कुछ उद्विग्न होकर बोला—"नहीं बेटी, अब मैं घर न जाऊँगा तुम्हारे। तुम अच्छी रहो, फलो-फूलो, आते-जाते देख लिया करूँगा आँखों का सुख, यही बहुत है।"

"तो तुम गए कहाँ थे इतने दिनों से काका ?"

"गाँव गया था।"

"अब तो न जाओगे ? यहीं रहो काका।"

"यहीं रहूँगा।"

"सच कहते हो ?"

"सचमुच चंदा मामा, मुझे गाँव में अच्छा नहीं लगता था। तुम्हारी याद आती थी। अब न जाऊँगा कहीं।"

"फिर ?"

"तुम जाओ बेटी, अपने घर, देर होने से बाबूजी नाराज़ होंगे।"

मोहिनी चलने लगी। उसने कहा—"काका, मिलोगे न फिर ?"

"मिलूँगा।"

मोहिनी चल पड़ी। मंगू थोड़ी देर खड़ा देखता रहा, फिर सड़क के किनारे ताड़ी की दूकान में पहुँचकर उसने कहा—"अधसेरा देना एक।"

(५)

मोहिनी का घर छोड़ने के बाद से मंगू बहुत उदास रहने लगा था। कुछ दिनों तक उसकी बड़ी बुरी हालत रही, फिर उसने ताड़ी पीना शुरू कर दिया था। उसका जी किसी काम में न लगता था। उसने कहीं भी नौकरी न की, सिर्फ़ चौक के दो-चार दूकानदारों का माल, बिल्टी वग़ैरा ले आता, और इसी में रुपया-धेली उसे मिल जाता। चौक के चौरस्ते पर मुक्ता पानवाले की दूकान थी। कुछ काम न होने पर वह रोज़ वहीं दूकान पर जा बैठता। घंटों उसे दूकान पर बैठे बीत जाते। वह जाने क्या-क्या सोचा करता। फिर शाम होती, और वह ताड़ी की दूकान की तरफ़ चल देता। रात को बारह बजे लौटकर, उसी पानवाले की दूकान के तख़्ते पर पड़कर सो रहता। मंगू का जीवन एक नई धारा में बह रहा था। मोहिनी जब रोज़ साइकिल पर उधर से निकलती, तब मंगू उसे 'चंदा मामा' कहकर पुकार लिया करता। दो-चार बातें करता, और थोड़ी दूर तक साथ-साथ जाकर उसे कॉलेज के रास्ते तक पहुँचा आता। यह उसका नित्य-क्रम था।

मोहिनी और मंगू की आत्मा का यह संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छंद रूप से चला जा रहा था, और मंगू को इसी में बड़ा सुख मिलता।

होते-होते वसंत-पंचमी का त्योहार आया। मंगू ने अपना गाढ़े का लंबा कुर्ता, मलमल का साफ़ा और नागपुरी धोती बसंती रंग में रँगवाकर पहनी, सिर में तेल लगाया, आँखों में काजल और लंबी लाठी लेकर मुक्ता पानवाले की दूकान पर जा बैठा। मुक्ता ने कहा—"आज तो बड़े जोबन हैं चौधरी?"

मंगू ने अपनी अधपकी मूछों पर ताव देते हुए कहा—"भैया, दिल ही तो है। चार दिन की ज़िंदगी, आँख मुँदे पीछे फिर क्या?"

सामने से मोती कहार आ निकला, उसने भी मंगू की ओर देखा, उसे हँसी आ गई। पान की दूकान पर आकर धीरे से बोला—"चौधरी, यह मारू साफ़ा और झलकदार कुर्ता! बात क्या है?"

मंगू बोला—"क्यों? हुआ क्या, तुम्हें नसीब नहीं, इसलिये हाथ मलते रहो। मैं किसी साले का नौकर तो नहीं। जो मेहनत-मजूरी से मिलता है, फूँक डालता हूँ। खाना-पीना, चैन करना, यही ज़िंदगी है!"

सामने के कोठे से एक तवायफ़ ने हारमोनियम के सुर से सुर मिलाकर गाया—

"मतवारे तोरे नैनवाँ, जुलुम करें।"

मोती बोला—"लो चौधरी, सुनो, आज तो बीबी तुम्हारे ऊपर ही रीझी हैं!"

मंगू कड़ककर बोला—"चुप रे मोती के बच्चे, कभी बीबी की ओर आँख उठाकर भी ताकता हूँ? तेरे-जैसे भड़ुए ही इन बेड़िनों के गुलाम बने रहते हैं!"

मोती को ज़ोर की हँसी आ गई। चलते-चलते बोला—"कह लो यार! मैं बेड़िनों का गुलाम हूँ, तो तुम कॉलेजवाली के! बात एक ही है।"

मंगू पलक मारते ही दूकान पर से कूदा, और घुमाकर एक भरपूर लाठी का हाथ मोती की कमर पर दिया। मोती हाय करके वहीं गिर पड़ा। मंगू गरजकर बोला—"सुअर का बच्चा! बदनाम करता है भले घर की लड़की को? मार ही डालूँगा तुझे आज।"

मंगू ने फिर लाठी उठाई। तब तक दूकानदारों की भीड़ जमा हो गई थी। लोगों ने मंगू को रोकते हुए कहा—"जाने दो चौधरी, क्यों इस कमीने के मुँह लगते हो।"

मंगू पलटकर बोला—"दूसरों को बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है साले ने। उस दिन अपनी सेठानी को ही, जिसका नमक खाता है, बदनाम कर रहा था कि वह मेरी रखैल है। इतनी हिम्मत इसकी?"

फिर मोती की ओर देखकर कहने लगा—"मेरा नाम मंगू नहीं, जो तुझे सीधा न कर दिया, कमीना कहीं का।"

लोगों ने समझा-बुझाकर मंगू को शांत किया। कुछ ने मोती को उठाया। मोती लँगड़ाता हुआ घर की ओर चल दिया।

मंगू फिर आकर दूकान के पटरे पर लाठी सीधी करके बैठ गया। मुक्ता ने पान के दो बीड़े लगाकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"लो चौधरी, पान खाओ। आज त्योहार का दिन है!"

मंगू ने पान लेकर खा लिए, और टेंट से पैसा निकालकर मुक्ता के आगे फेक दिया। मुक्ता ने कहा—"पैसा रहने दो आज के दिन।"

मंगू ने कहा—"भैया, यह रोज़गार है, ख़ैरात करने तो बैठे नहीं हो?"

मुक्ता बोला—"चौधरी, तुम्हारे खाने से मेरा घट क्या जायगा। यों तुम्हारी मर्ज़ी।"

मुक्ता ने पैसा उठाकर गल्ले में डाल लिया। वह मंगू को ख़ुश करना चाहता था। डर गया था। वह थोड़ा ठहरकर बोला—"अच्छा परसाद मिला साले को, बड़े दिमाग़ थे!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगू चुप होकर कुछ सोचने लगा। बाज़ारवाले उस दिन से मंगू से डरने लगे।

(६)

इतवार का दिन था। मोहिनी के घर पर, बैठक में, उसके पिता अपने एक मित्र मोहनलाल से बातें कर रहे थे। मोहनलाल ने कहा—"बाबूजी, है यह बड़ी बदनामी की बात। सयानी लड़की ग़ैर मर्द से बातें करती रहे, उसके साथ-साथ चले-फिरे, क्या ये अच्छे लक्षण हैं?"

बाबूजी कुछ गंभीरता से बोले—"आपने अपनी आँखों देखा है?"

मोहनलाल ने उत्तर दिया—"हज़ारों मर्तबा—देखा है आँखों से, तभी आपसे कहने आया।"

बाबूजी चुप हो गए। मोहनलाल कहते गए—"माना कि किसी वक्त वह आपका नौकर था, लेकिन अब तो वह एक गुंडा ही कहलाता है। शहर में ताड़ी वह पिए, मार-पीट में वह सबसे आगे, और भी जाने क्या-क्या कुकर्म करता हो। मुझे तो मोहिनी की और उसकी बोलचाल ज़रा भी पसंद नहीं।"

बाबूजी ने कहा—"ठीक कहते हैं आप।"

"और देखिए, यह आपकी आबरू का सवाल है। शहर में हज़ारहा आदमी आपसे वाक़िफ़ हैं, वे इस तमाशे को देखकर क्या कहते होंगे मन में कि लड़की को अच्छी आज़ादी दे रक्खी है, जो गुंडों की दोस्ती करती फिरती है।"

बाबूजी विचलित हो उठे। वह कमरे में टहलते-टहलते बोले—"बाबू मोहनलालजी, आपकी इस हमदर्दी के लिये शुक्रिया, मैं मोहिनी से आज ही दरियाफ़्त करूँगा।"

मोहनलाल बोले—"दूसरी बात यह है कि आप जल्द ही मोहिनी का ब्याह कर डालिए।"

"हूँ।"

बाबूजी चुप थे। मोहनलाल थोड़ी देर बाद चलने लगे, बोले—"आज्ञा है अब, फिर भेंट होगी। नमस्ते!"

बाबूजी ने कहा—"नमस्ते। कभी-कभी दर्शन देते रहिएगा।"

मोहनलाल चले गए। बाबूजी क्षुब्ध होकर फिर कुर्सी पर बैठ गए। मोहिनी और मंगू की यह हालत। उन्हें बड़ा क्रोध आ रहा था। इतने में ऊपर के कमरे से चाय की ट्रे लेकर मोहिनी आई। उसने मेज़ पर चाय रख दी। बाबूजी फिर गंभीर होकर बोले—"बैठो।"

उनकी आवाज़ से ही मोहिनी डर-सी गई। किसी आशंका से उसका हृदय धड़कने लगा। बात क्या थी, उसकी समझ में न आई। वह धीरे से बोली—"बाबू मोहनलाल चले गए? चाय नहीं पी?"

बाबूजी ने उत्तर दिया—"नहीं।"

मोहिनी प्यालों में चाय तैयार करने लगी। बाबूजी ने रोक दिया, कहा—"ठहरो।"

मोहिनी ने देखा, उनकी आँखें गुस्से से लाल हो रही थीं। वह थरथर काँपने लगी।

बाबूजी ने कहा—"बिटिया, तुमसे जो कुछ पूछूँ, सच-सच बताओगी?"

मोहिनी क्षण-भर ठहरकर बोली—"क्यों न बताऊँगी बाबूजी।"

"तुम कॉलेज जाते और आते वक्त मंगू से मिलती हो? उससे बातें करती हो?"

"हाँ बाबूजी।"

"वह भी तुम्हारे साथ-साथ जाता है कॉलेज तक?"

"जी हाँ, कभी-कभी चले जाते हैं।"

"क्यों?"

"बाबूजी, मंगू काका मुझे बहुत चाहते हैं, इसीलिये उनसे बोल लेती हूँ। क्या हर्ज है इसमें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"कैसा, मैं नहीं समझी ?"

"सयानी लड़कियों का किसी भी ग़ैर मर्द से बोलना बुरा समझा जाता है समाज में।"

"आप भी बुरा समझते हैं ?"

"हाँ।"

"लेकिन बाबूजी, मंगू काका तो अपने यहाँ नौकर थे। थे कि नहीं ?"

"हाँ, मगर वह अब बड़ा बदमाश हो गया है। गुंडा है वह, तुम उससे बोल-चाल रखती हो, इसमें मेरी बदनामी है।"

"अब नहीं बोला करूँगी बाबूजी।"

"तुमको मेरी ही क़सम है बिटिया, मेरा मरा मुँह देखो, जो मंगू से बातचीत की तुमने कभी। उस रास्ते से कॉलेज मत जाया करो।"

"नहीं जाऊँगी।"

मोहिनी ने चाय का प्याला तैयार कर बाबूजी को दिया। वह चाय पीने लगे। मोहिनी की आँखें डबडबा आई थीं। क्या कहे वह, पिता की इच्छा।

(७)

एक महीने बाद—

चार बजे कॉलेज से छुट्टी मिलने पर मोहिनी ने अपनी साइकिल निकाली, और फाटक पर आई। मंगू सामने खड़ा था। मोहिनी को देखते ही बोला—"चंदा मामा !"

मोहिनी ने मुँह फेर लिया, और साइकिल लेकर आगे बढ़ी। मंगू ने दौड़कर उसकी साइकिल पकड़ ली, बोला—"चंदा मामा, क्या हो गया है तुम्हें ? बोलते भी नहीं ? एक महीने से पता ही नहीं तुम्हारा। राह देखते-देखते आँखें पथरा गईं, सोचा, तुम बीमार हो गईं, कॉलेज छोड़ दिया, क्या बात हो गई थी ?"

मोहिनी मुँह फेरे खड़ी थी। मंगू ने पूछा—"बोलते क्यों नहीं चंदा मामा ? मंगू से—अपने काका से रूठ गए हो ?"

मंगू की आँखों के आँसू न रुके, वह रोते-रोते बोला—"बेटी, क्यों नहीं बोलतीं तुम ?"

मोहिनी रो रही थी, मगर चुप। पिता की सौगंद याद थी उसे। मंगू ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"चंदा मामा, बोलो कुछ। क्या मुझसे नाराज़ हो ?"

मोहिनी सब कुछ सुनते हुए भी अनसुनी हो रही थी।

मंगू ने कहा—"न जाने दूँगा घर तुमको आज, अगर न बोलोगी।"

वह साइकिल का पहिया पकड़कर बैठ गया। लाचार होकर मोहिनी बोली—"काका, मुझे जाने दो, नहीं तो देर होने से बाबूजी मार ही डालेंगे।"

मंगू ने पहिया छोड़ दिया। उठते-उठते वह बोला—"चंदा मामा, बात क्या है ? अब तक चुप क्यों साधी थी ?"

मोहिनी रास्ते के किनारे फ़ुटपाथ पर आ गई। मंगू पीछे-पीछे चला। मोहिनी ने कहा—"काका, मेरे साथ न चलो, मैं अकेली जाऊँगी।"

"क्यों ?"

"बाबूजी ने मना किया है, क़सम दिलाई है।"

"किस बात की ?"

"मंगू काका से मत बोला करो। उनके साथ न चला करो।"

मंगू कुछ सोचने लगा, वह सब समझ गया। किसी ने उसके बारे में झूठ-सच लगा दी होगी बाबूजी से, फिर उनका क्रोध।

उसके हृदय में एक शीतल निःश्वास का झोंका आया, जिसने उसका रोम-रोम कँपा दिया।

उसने कहा—"चंदा मामा, मैंने तुम्हारे बाबूजी का नमक खाया है बीस बरस, नमकहरामी करूँगा ! क्या उन्हें इसका भी भरोसा नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या जानूँ काका ?"

"अच्छी बात है बेटी, तुम जाओ। कभी-न-कभी मंगू......"

उसका कंठ रुद्ध हो रहा था। पूरी बात उसके मुँह से न निकली। वह रोने लगा।

मोहिनी दुखी होकर बोली—"क्यों रोते हो काका ?"

मंगू ने साफ़े के छोर से आँखें पोंछते हुए कहा—"मेरा नसीब है बेटी, मेरी ज़िंदगी में तुम्हारे सिवा और कोई......"

बात काटकर मोहिनी ने कहा—"काका, तुम यहीं मुझे देख जाया करो। मैं तुम्हें देख लिया करूँगी। बाबूजी की इच्छा है, तो नहीं बोला करूँगी तुमसे। आया करोगे?"

मंगू कुछ न बोला। कॉलेज के घंटाघर से साढ़े चार का घंटा बजा—मोहिनी साइकिल पर बैठकर बोली—"जाती हूँ काका, देर हो गई बहुत।"

मोहिनी चली गई। मंगू उसकी ओर रास्ते पर देखता रहा, जब तक भीड़ में वह दृष्टि से ओझल न हो गई। फिर—

फिर वह भी एक तरफ़ चल दिया।

(८)

बकरीद का दिन क़रीब था। शहर में उत्तेजना फैल रही थी। दंगे का बड़ा अंदेशा था। सिर्फ़ एक दिन पहले मंगू पानवाले की दूकान पर बैठा था। मुक्ता कहीं काम से गया था मंगू को दूकान पर बिठाकर। इतने में लोग भागने लगे। "चल गई, चल गई!" चारो तरफ़ शोर मच गया। पटापट चौक की दूकानें बंद होने लगीं।

मंगू घबराया, इधर-उधर देखा। सामने से मुक्ता बेतहाशा भागता हुआ आकर बोला—"चौधरी, ख़ूब कसके बज रही है चौरहे पर। भागो, मैं भी दूकान बढ़ाता हूँ।"

सारे शहर में हलचल मच गई।

मंगू को ध्यान आया—अरे, चंदा मामा! उसने पूछा—"मुक्ता, बजा क्या है?"

मुक्ता ने घड़ी की ओर देखकर कहा—"चार बजकर पाँच मिनट।"

मंगू चिल्ला उठा—"ग़ज़ब हो गया!"

पलक मारते ही उसने लाठी उठाई, और सड़क पर आ गया। सामने से एक इक्का जा रहा था भागता हुआ। मंगू ने सामने जाकर कहा—"रोक दे। कॉलेज चल, पीछे लौट।" वह कूदकर इक्के पर बैठ गया।

इक्केवाला बोला—"क्या मेरी जान फ़ालतू है, जो जाऊँ उधर। उतरो नीचे।"

मंगू ने इक्केवाले को कसकर धक्का दिया। इक्केवाला नीचे जा गिरा।

मंगू ने रास हाथ में लेकर इक्का घुमा दिया। पीछे, और कॉलेज की तरफ़ चला। दो-चार हाथ घोड़े के रसीद किए। घोड़ा भाग चला। रास्ते में मार-पीट हो रही थी, मगर मंगू इक्का भगाता हुआ चला जा रहा था बेतहाशा। उसका ध्यान लगा था—मोहिनी को बचाना।

कॉलेज से बीस क़दम आगे किसी ने पुकारा—"काका, बचाओ।"

उसने देखा, वही थी मोहिनी। लोग उसे पास खड़े हुए एक परदेदार ताँगे पर खींचकर बिठा रहे थे। मंगू चिल्लाया—"मैं आ गया बेटी!"

मंगू का ख़ून खौल उठा। उसने इक्का रोका, और लाठी लेकर भीड़ में पिल पड़ा। एक-दो-चार-आठ—भीड़ के सँभलते-सँभलते उसने दस-बारह को वहीं ढेर कर दिया, और मोहिनी को ताँगे से उतारकर ले चला। कुछ लोग पीछे दौड़े। शोर मचा—"मारो-मारो।"

एक आदमी ने मंगू के ऊपर लाठी चलाई। मंगू ने कुछ परवा न की। वह भागता जा रहा था मोहिनी को पीछे खींचता हुआ। इतने में बग़ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गली से एक आदमी ने पीछे से आकर उसकी कोख में क़रौली भोंक दी। मंगू के मुँह से एक चीख़ निकली। आँतें निकलकर बाहर लटक रही थीं। उसने मोहिनी का हाथ छोड़कर एक ही वार में उस दुष्ट को लाठी से गिरा दिया। फिर अपना साफ़ा खोलकर, अपना पेट कसकर बाँधा, और मोहिनी को लेकर इक्के पर बैठ गया। घोड़े के दो हाथ दिए, घोड़ा भाग चला। रास्ते में लोगों ने ढेले फेंके। मंगू के सिर पर एक भरपूर बैठा। रक्त बह चला, मगर वह इक्का भगाए चला जा रहा था। मोहिनी रो रही थी।

मोहिनी के घर पर पहुँचकर ही मंगू ने इक्का रोका, और आवाज़ दी—"बाबूजी !"

कोठे पर से झाँककर बाबूजी ने देखा—मोहिनी !

वह जल्दी से नीचे उतरे, द्वार खोला, और मोहिनी को गले से लगा लिया।

ख़ून से लथपथ मंगू इक्के से उतरा, और बाबूजी के पैरों पर गिर पड़ा।

बाबूजी बोले—"कौन, मंगू ?"

मोहिनी ने कहा—"बाबूजी ! मंगू काका ने मेरे प्राण बचाए हैं आज।"

बाबूजी ने मंगू को उठाना चाहा, लेकिन यह क्या ? मंगू दम तोड़ रहा था, उसने धीरे से पुकारा—"चंदा मामा !"

मोहिनी उसके पास पहुँचकर बोली—"काका, क्या कहते हो ?"

मंगू ने बड़े कष्ट से सिर घुमाकर उधर देखा, फिर बोला—"चंदा मा - अ - आ मा !"

उसकी आँखें उलट गईं।

बाबूजी रो पड़े। मोहिनी मंगू के सिरहाने बैठी बिलख रही थी।

अब उसे कौन कहेगा—"चंदा मामा ?"

* हिंदी-उपन्यासों का शिरोमणि *

द्वितीय **बहता हुआ फूल** आवृत्ति

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

वंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र वंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उच्च श्रेणी के उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के 'स्रोतेर फूल' नाम के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोलचाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्वसाधारण इसे बिना कष्ट के समझ सकते हैं। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, सोने में सुगंध का काम हो गया है। इसका पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। अनेक तिरंगे चित्रों से सुसज्जित लगभग ५०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति सुभासचंद्र बोस का चुनाव

[श्रीपं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट]

भारतीय राजनीति में इस समय सबसे गंभीर समस्या राष्ट्रपति श्रीसुभासचंद्र बोस का पुनर्निर्वाचन है। आरंभ से ही हमारे राष्ट्रपति का निर्वाचन—जब से महात्मा गांधी ने भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम की बागडोर अपने हाथ में ली है—सर्व-सम्मति से होता आया है। गत वर्ष भी स्वयं राष्ट्रपति बोस सर्व-सम्मति से चुने गए थे। राष्ट्रीय महासभा (Congress) की कार्य-समिति (Working Committee) आपस में कांग्रेस-अधिवेशन के कुछ काल पूर्व निश्चय कर लेती है कि अगले वर्ष राष्ट्रपति कौन चुना जाय, और वही नेता राष्ट्रपति चुन भी लिया जाता था। इसी परिपाटी का पालन करते हुए इस वर्ष भी कार्य-समिति के सात प्रमुख सदस्यों ने निश्चय किया कि अग्रिम वर्ष के लिये डॉक्टर पट्टाभि सीतारमैया, जो स्वयं कार्य-समिति के सदस्य हैं, राष्ट्रपति चुने जायँ। तदनुसार श्रद्धेय सरदार पटेल, डॉ० राजेंद्र-प्रसाद, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद आदि ने, महात्मा गांधी की सम्मति से, डॉ० पट्टाभि का नाम कांग्रेस-डेलीगेटों के सम्मुख रक्खा। परंतु राष्ट्रपति बोस ने इस परंपरा को न मानकर स्वयं चुनाव लड़ना निश्चित किया। परिणाम यह हुआ कि चुनाव बहुत गंभीर परिस्थिति में हुआ। दोनो तरफ़ से काफ़ी घोषणाएँ निकाली गईं, और दोनो दलों ने एक दूसरे के ऊपर छींटे कसे। सुभास बाबू तो इन प्रमुख नेताओं पर यह भी लांछन लगाने से न हिचके कि ये लोग संघ-योजना को स्वीकार करना चाहते हैं, यद्यपि ये कह कुछ और रहे हैं। सरदार पटेल ने इसका घोर प्रतिवाद किया, और साफ़ तौर से घोषणा की कि कार्य-समिति का एक भी सदस्य ब्रिटिश सरकार से संघ-योजना पर सुलह करने को तैयार नहीं।

ख़ैर, चुनाव हुआ, और सुभास बाबू जीते। परंतु बहुत ही थोड़े अर्थात् १६३ वोटों से। पर क्या यह जीत उनकी निजी विजय थी, अथवा गांधीजी और उनकी नीति की हार? वोटों को देखने से पता चलता है कि सुभास बाबू को केवल बंगाल में, जहाँ सदैव घोर प्रांतीयता रही है और रहेगी, ३२५ और युक्त प्रांत में लगभग ७५ वोट अधिक मिले। पंजाब, कनाटक और तामिलनाद भी उनके पक्ष में गया। क्यों? तामिलनाद और आंध्र में प्रांत और भाषा के प्रश्न पर मतभेद चला आता है। अतः तामिलनाद के डेलीगेट डॉ० पट्टाभि के विपक्षी थे। उधर महाराष्ट्र में डॉ० खरे का मामला लोगों के मस्तिष्कों में ताज़ा था, और वह सरदार पटेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उक्त अत्याचार (?) को न भूले थे। महाशय नारीमैन को भी सरदार पटेल के पिछले सलूक का बदला चुकाना था। युक्त प्रांत में रफ़ी साहब ने, समाजवादी न होते हुए भी, सुभास बाबू की ओर से काफ़ी प्रयत्न किया, और उनकी तथा आचार्य नरेंद्रदेव की सम्मिलित शक्ति ने डॉ० पट्टाभि को हराया। इस चुनाव में महात्मा गांधी के अहिंसात्मक असहयोग की नीति अथवा सिद्धांत का कोई प्रश्न न था। परंतु सरदार पटेल के विरुद्ध लोगों ने, समाजवादी नेताओं ने तथा संघ-योजना पर सुलह की भ्रांतिमय धारणा ने डेलीगेटों से डॉ० पट्टाभि के विरुद्ध तथा सुभास बाबू के पक्ष में वोट दिलवाए। जैसा कि एक प्रमुख प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी के सदस्य तथा एम्० एल्० ए० ने लेखक से कहा कि वह केवल संघ-योजना पर सुलह-वाली चीज़ से, घोर गांधीवाद में विश्वास करते हुए भी, विपक्ष में गए। महात्मा गांधी का कथन है कि जीत सुभास बाबू तथा समाजवादी सिद्धांतों की और हार स्वयं उनकी तथा उनके सिद्धांतों की है। परंतु लेखक का विचार इसके विपरीत है।

इधर कई वर्षों से कार्य-समिति के पाँच-सात सदस्य मिलकर देश-भर में कांग्रेस-संगठन द्वारा कठोर शासन कर रहे थे। वे सभी घोर गांधीवादी, सत्याग्रही वीर, त्यागी महापुरुष और राजनीति-शास्त्र-पारंगत हैं। उनमें से प्रत्येक ने देश की कठिन परिस्थिति में अपने को खरा साबित किया है। पर इधर उनके कठोर नियंत्रण को—डॉ० खरे और नारीमैन के फ़ैसले को देश के कुछ भाग में नापसंद किया गया। समाजवादी समझने लगे थे कि ये लोग कांग्रेस की शक्ति को अपने तेज और बल से छीन रहे हैं, और यह नाजायज़ है। लोग अब भी पिछले हरिपुरा-कांग्रेस-अधिवेशन में सरदार पटेल की गर्जना नहीं भूले हैं, जिसमें उन्होंने समाज-वादियों को लक्ष्य करके कहा था—"हमने आपको बहुत तरह दी, पर अब हम आपको अवसर न देंगे।"

दूसरी बात, जो कार्य-समिति के विपक्ष में देश-भर में जड़ पकड़ रही है, संघ-योजना पर सुलह की बातचीत है। देश के लाखों कांग्रेसी यह संदेह करते हैं कि कार्य-समिति के सदस्य महात्माजी द्वारा संघ-योजना पर सुलह की बातचीत कर रहे हैं। महात्माजी का श्रीमान् वाइसराय से मिलना तथा हिज़ हाइनेस आग़ाख़ाँ के साथ बातचीत इस संदेह की पुष्टि ही करते हैं। उधर श्रीसत्यमूर्ति की बार-बार की गई घोषणा कि संघ-योजना कुछ परिवर्तनों के साथ स्वीकार कर ली जाय, लोगों के दिमाग़ों को इसी परिणाम पर पहुँचाती है। यद्यपि कार्य-समिति के इन सदस्यों ने लगातार संघ-योजना से टक्कर लेने की घोषणा पुस्तकों और भाषणों द्वारा बार-बार की है, फिर भी माननीय श्रीरफ़ी अहमद क़िदवाई के शब्दों में जनता इस पर एकदम विश्वास नहीं करती।

श्रीक़िदवाई साहब ने कहा—"हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, और उनकी बातों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ सकते हैं। हम सुनते हैं, वे गवर्नमेंट ऑफ़् इंडिया-ऐक्ट को नष्ट-भ्रष्ट करना चाहते हैं। पर हम देख रहे हैं, उनकी यह नाश-योजना किस प्रकार कार्य-रूप में परिणत हो रही है। इससे हम नतीजा निकाल सकते हैं कि उनकी संघ-योजना का बहिष्कार क्या माने रखता है।"

समाजवादियों के इस प्रकार कार्य-समिति के सदस्यों के विरुद्ध प्रचार ने डेलीगेटों पर यह असर किया कि यदि डॉ० पट्टाभि सीतारमैया चुने जाते हैं, तो संघ-योजना स्वीकृत होगी, और यदि सुभास बाबू, तो अस्वीकृत।

आज हम जान गए हैं कि ये सब बातें कोरी बकवाद थीं और व्यर्थ ही चुनाव में आईं। पं० जवाहरलाल के शब्दों में इस चुनाव में कोई भी सिद्धांत की बात न थी, और न सिद्धांत के ऊपर चुनाव लड़ा ही गया। सिद्धांत तो केवल कांग्रेस ही निश्चित कर सकती है। सत्य तो यह है कि हमारी राष्ट्रीय महासभा का शक्ति-स्थान यही कार्य-समिति सदैव रही है, और रहेगी, चाहे इसमें गांधीवादी रहें, चाहे वामपक्षी (समाजवादी)। परंतु अब भी अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा-समिति में समाजवादी अल्प संख्या में हैं, यद्यपि सुभास बाबू उनके अपने सभापति हैं। किंतु जैसा पं० जवाहरलाल ने कहा है—"सभापति एक अजीब परिस्थिति में रहता है। वह स्वयं कांग्रेस के सिद्धांत निश्चय नहीं कर सकता। इसका श्रेय केवल कार्य-समिति को है।"

इसे चाहे हम पं० जवाहरलाल और श्रीसुभासचंद्र बोस की कमज़ोरी कहें कि वे समाजवादी होते हुए भी इस कार्य-समिति में कभी अपनी समाजवादी पार्टी के सदस्यों को न ले सके। वही पुराने गांधीवादी दक्षिणपक्षी नेता इसमें बने रहे। क्या इस वर्ष सुभास बाबू इस शक्ति-स्थान को, अपनी पार्टी के नेताओं को रखकर, स्वयं हथियाने का साहस करेंगे? क्या महात्माजी की सलाह के अनुसार सरदार पटेल, राजेंद्र बाबू, मौलाना आज़ाद, आचार्य कृपलानी, सेठ बजाज आदि इससे अलग हो जायँगे? सिद्धांत तो साफ़ है। सुभास बाबू यदि अपनी जीत भारत में समाजवाद अथवा उग्र विचारवाले वामपक्ष की जीत समझते हैं, और गांधीवाद की हार, तो उन्हें इस शक्ति-स्थान—कार्य-समिति—में अपने ही आदमी रखने चाहिए।

यही इस समय कांग्रेस और देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न है। गांधीवादियों ने और स्वयं महात्माजी ने तो कह दिया है कि वे लोग सुभास बाबू के मार्ग में रोड़े न अटकाएँगे, और उन्हें अपनी नीति कार्य-रूप में परिणत करने का अवसर देंगे। यही नहीं, बल्कि राजेंद्र बाबू के शब्दों में 'अपने सिद्धांतों के विरुद्ध न होने पर उनसे सहयोग भी करेंगे।' इस विषय में सुभास बाबू की घोषणा भ्रामक है। आप कहते हैं—"मुझे खेद है, महात्माजी ने मेरे चुनाव को अपनी निजी हार मानी है। ..... यदि हम यह मान भी लें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह समाजवादियों की जीत है, तो हमको सोचना है कि समाजवादियों का प्रोग्राम क्या है। वे सब राष्ट्रीय महासभा में मेल चाहते हैं, न कि संघर्ष। वे कांग्रेस में फूट नहीं चाहते। परंतु यदि फूट हो जाय, तो उनके कारण न होगी, प्रत्युत उनकी इच्छा के विरुद्ध होगी। मैं स्वयं इस फूट को न होने दूँगा, और न कोई अवसर दूँगा कि अल्प संख्यावाले बहुमत पार्टी से असहयोग करें।......बहुत-से लोगों को मेरी भावी नीति के विषय में शंका है। हम अपने पूर्व-निश्चित धारा-सभा-प्रोग्राम पर ही डटे रहेंगे, परंतु अपने चुनाव के समय दिए हुए वचनों का शीघ्रता से पालन करने पर कटिबद्ध होंगे।......और, हम राष्ट्रीय महासभा की नीति ही पर चलेंगे। यहाँ मैं यह कह देना अनुचित नहीं समझता कि मैं कुछ अवसरों पर महात्माजी से सहमत न हो सका। परंतु उन पर मेरी श्रद्धा किसी से भी कम नहीं। मुझे नहीं मालूम, महात्माजी मेरे लिये क्या विचार रखते हैं, परंतु मेरा सर्वदा यही ध्येय होगा कि मैं भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष का विश्वासपात्र हो सकूँ।"

सुभास बाबू के शब्दों से आत्मगौरव टपकता है। वह आत्मगौरव, जो एक विजयी सेनानी के हृदय से निकलता है। सुभास बाबू हमारे देश की अमूल्य निधि हैं, और उनका त्याग, देश-भक्ति तथा राजनीतिक योग्यता किसी से कम नहीं। पर उन्हें इस समय दृढ़ता से सोच-विचारकर क़दम रखना चाहिए। अभी हम यह मानने को तैयार नहीं कि दक्षिण-पक्ष वाले अल्प संख्या में हैं। इसके विपरीत अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के सदस्यों का जो चुनाव हुआ है, उसमें उनका घोर बहुमत ही है। वे किसी भी आदर्शवादी, सत्य से परे समाजवादी कार्य-क्रम को चलने न देंगे। और, यदि महात्माजी के उपदेशानुसार कहीं दक्षिणपक्षी नेतागण अड़ गए, और त्रिपुरी-कांग्रेस में कांग्रेस से अलग हो गए, तो एक विकट परिस्थिति पैदा हो जायगी। उस अखिल भारतीय कार्य-समिति का क्या महत्त्व होगा, जो कोरी वामपक्षवालों की हो, और जिसमें डॉक्टर राजेंद्रप्रसाद, मौलाना आज़ाद, सरदार पटेल, सेठ जमनालाल बजाज, आचार्य कृपलानी, डॉ० पट्टाभि और श्रीजयरामदास-दौलतराम आदि नेतागण न हों, अथवा जिस पर महात्मा गांधी का अप्रत्यक्ष आशीर्वाद अथवा पथ-प्रदर्शन और सुयोग्य संचालन न हो। क्या ऐसी कार्य-समिति में पं० जवाहरलाल जाना पसंद करेंगे? कदापि नहीं। इसके अलावा यह नवीन कार्य-समिति कोई भी वामपक्षी प्रस्ताव खुले अधिवेशन अथवा अखिल भारतीय समिति में पास न करा सकेगी।

इस समय हमारा स्वाधीनता-आंदोलन बहुत आगे बढ़ चुका है, और स्वयं श्रीसुभास बाबू और पं० जवाहरलाल के शब्दों में हमारी स्वतंत्रता हमको अदूर भविष्य में दिखलाई पड़ रही है। ऐसे समय में एक भी ग़लत क़दम भीषण परिणाम ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। केवल एक ही महापुरुष हमें पार लगा सकता है, और वह हैं महात्मा गांधी। उन्होंने हमेशा विपत्ति में देश का उद्धार किया है, और वही आज भी अपनी सहज बुद्धि, स्वभाव-सुलभ चातुरी से देश की इस विकट परिस्थिति में हमारी रक्षा कर सकते हैं। सुभास बाबू को भी उसी महापुरुष के सामने घुटने टेककर पथ-प्रदर्शन की भिक्षा माँगनी चाहिए, न कि बंगाली-पत्रों की व्यर्थ की अकड़ पर अपना निजी कार्य क्रम निश्चित करना।

दुर्घटनाएँ

(एक्सिडैंट)

अचानक हो जाती है,

काम में, आराम में, पढ़ाई या खेल-कूद में, मन-बहलाव या अन्य चेष्टाओं में साधारण चोटों का आ जाना, चाक़ू से घाव लग जाना, कील-शीशा लग जाना इत्यादि कष्ट प्रायः हो जाते हैं। यही नहीं, आजकल की मशीनों, रेल, मोटरों के प्रताप से टक्कर लग जाना या अन्य दुर्घटनाओं का भी दुर्भाग्यवश हो जाना असंभव नहीं। परंतु एक छोटी शीशी।

अ मृ त धा रा

का पास रखना सब अवस्थाओं में अपनी रक्षा के लिये एक सच्चे मित्र और अग-रक्षक को पास रखना है। यह न केवल ख़ून रोकती, दर्द बंद करती, जख़म भरती, सूजन दूर करती और जख़म को विषैला होने से रोकती है, प्रत्युत मूर्च्छा और दिल डूबने की अवस्था में इसको सुँघाना और खिलाना शरीर में शक्ति का संचार कर देता है।

एक शीशी सदा पास रक्खो

मूल्य पूरी शीशी २॥), अर्द्ध १।), नमूना ॥)

लखनऊ-एजेंट—एच्० बी० काम, हिंदू-तंबाकू कं०

पता—अमृतधारा-फ़ार्मेसी, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पहलू

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

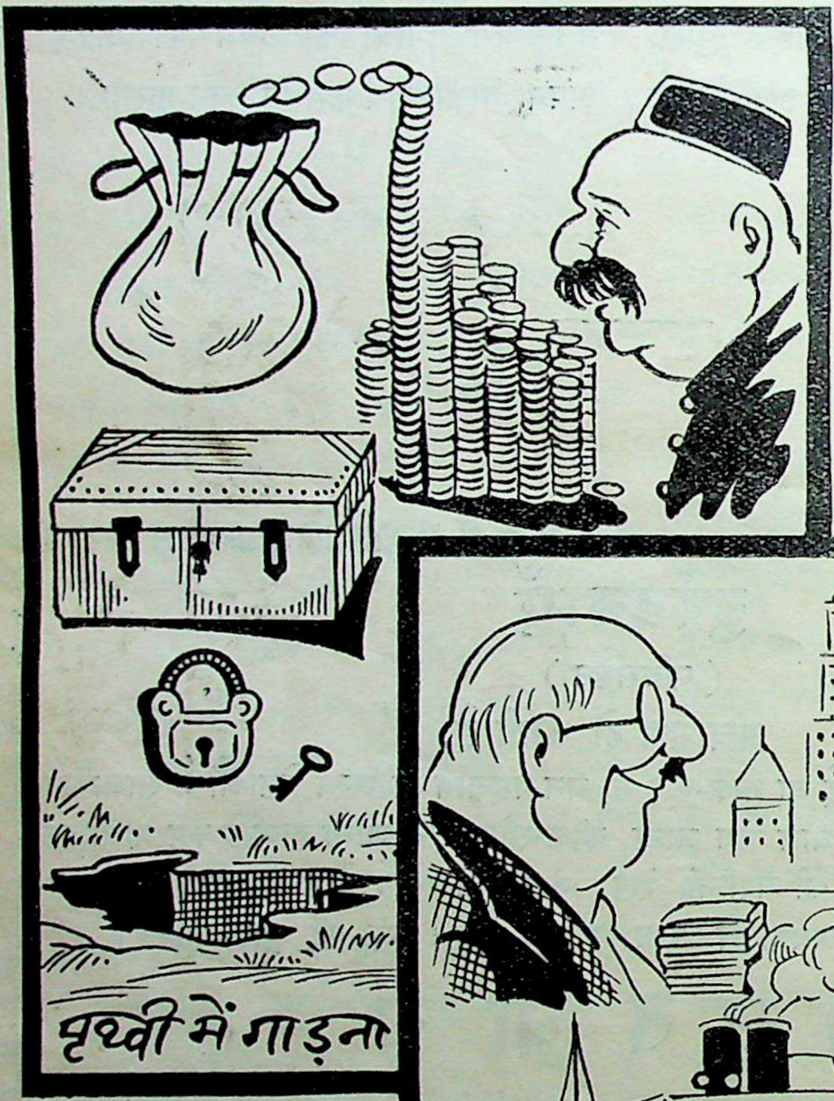

हमारे पूँजीपति
धन को
क़ैद रखते हैं,
जब कि—

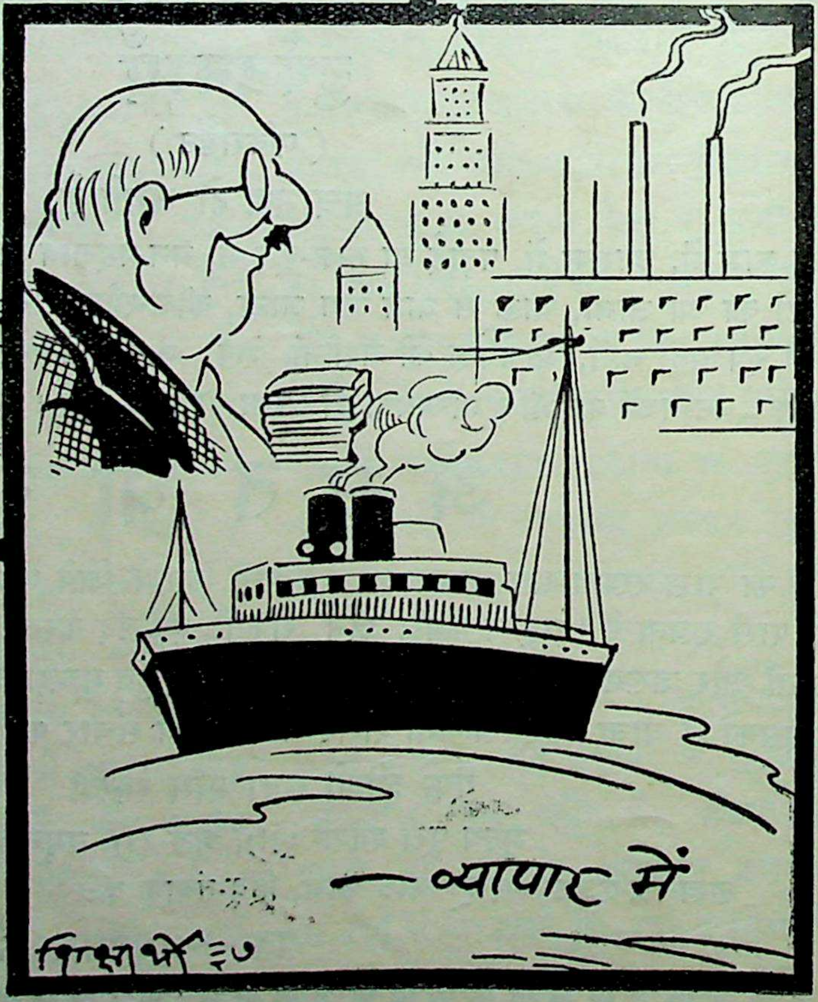

विदेशी
पूँजीपति का
धन
अपने देश के लिये
बहुत कुछ
करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

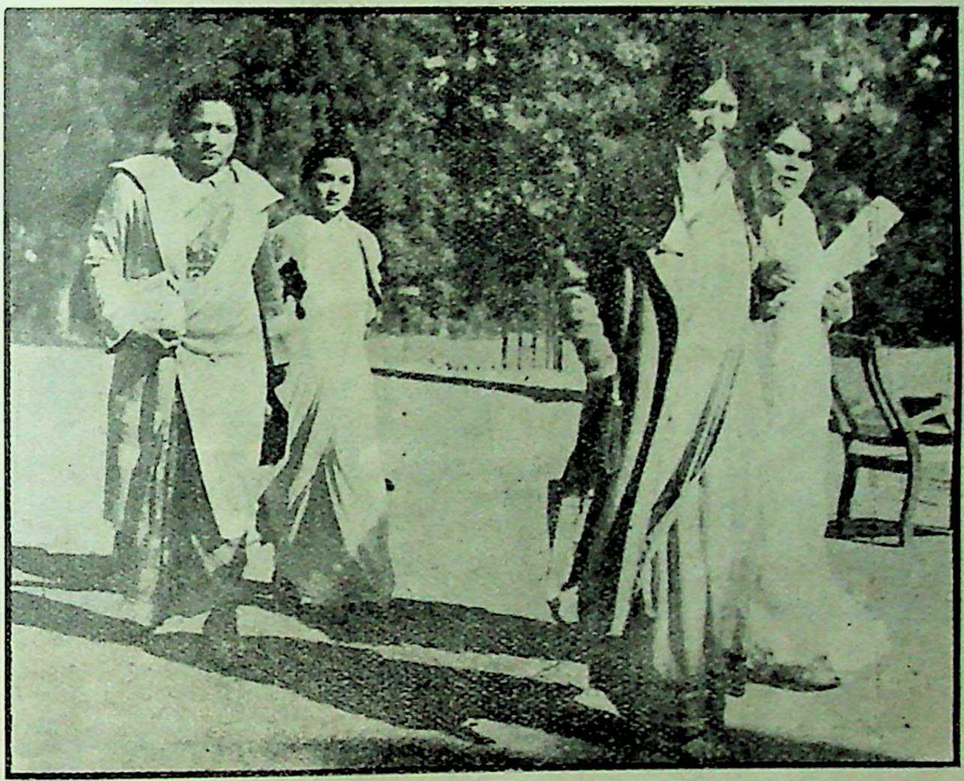

दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की कुछ प्रतिनिधि महिलाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

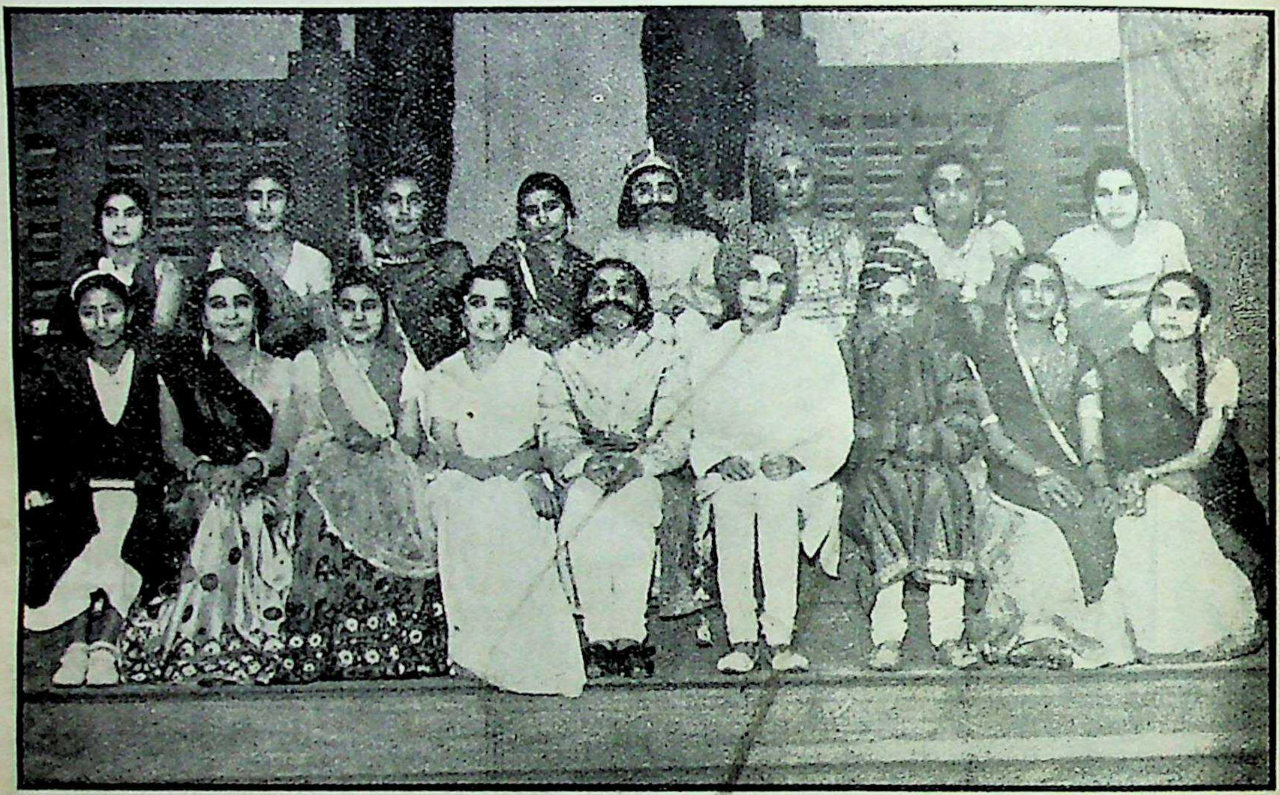

लेडी इरविन-कॉलेज, दिल्ली की कुछ छात्राएँ

[इन्होंने अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर 'बाँसुरीवाला राजकुमार'-नामक नाटक बड़ी सफलता के साथ खेला ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती गाडोदिया
[दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति की उप-सभानेत्री]

कुमारी हीरा बोस
[अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर दिल्ली में आपने 'किन्नरी-नृत्य' का प्रदर्शन किया, और प्रतियोगिता में अनेक पदक प्राप्त किए ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की बाहरी बैठक का एक दृश्य

[महिलाएँ सभापति का भाषण सुन रही हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[क़ाबिल प्रोग्रस

इत्तिलानामा बग़रज़ एलान व इशाअत हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब स्पेशल जज साहब बहादुर दरजा दोयम मुक़ाम सुलतानपुर
मुक़द्दमा नंबरी नंबर २२६ सन् १९३७ ई०
पेशी ७—२—१९३९

१—अब्दुलरज़्ज़ाकख़ाँ वल्द फ़ैज़ूख़ाँ
२—अब्दुलवहाबख़ाँ वल्द अब्दुलरहीमख़ाँ
} साकिनान मौजा फैज़ूख़ाँ का पुरवा मजरा डोमनपुर ज़िला सुलतानपुर

क़र्ज़दार सायलान

बनाम

शिवबालक वग़ैरा

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

चूँकि १—अब्दुलरज़्ज़ाकख़ाँ वल्द फैजूख़ाँ २—अब्दुलवहाबख़ाँ वल्द अब्दुलरहीमख़ाँ साकिन पुरवा फैज़ूख़ाँ मजरा डोमनपुर, ज़िला सुलतानपुर ने एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश की है, लिहाजा हस्ब दफ़ा ११ ज़िमन (१) ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को, जिसकी तफ़सील फ़ेहरिस्तहाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्तदेहंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है। जो गज़ट मुवर्रिख़ा १६ एप्रिल १९३८ में शाया होने से रह गया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर के मुतालिक़ कोई दावा रखता हो, तो इस इश्तिहार के संयुक्तप्रांतीय गज़ट में छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर अपने इस्तिहक़ाक़ के बारे में अदालत हाज़ा में अपनी दरख़्वास्त पेश करे।

फ़ेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त डिग्रिहा की मुस्तक़िल काबिल विरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	तादाद हक़ीयत दरख़्वास्त डिग्रिहा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्त डिग्रिहा की हक़ीयत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	सुलतानपुर	ग़ैर-मनक़ूला	मनयारी मुहाल मनयारपुर	काश्तकारी	रक़बा ११—१—० } १—११—१० }	लगान ४१)	
२	,,	,,	डोमनपुर मुहाल विश्वनाथसिंह		१६७/२ , ३८३/०-११-० , ४१४/२ , आबादी १-४- १-६-० १८९/८-२-० , ६६२/४-१-० मय १ पाई मुक्ता		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८	,,	,,	,,	मुरतहनी	४६५/०-८-०, ४६६/०-३-०, ४६७/०-६-०, ४६८/०-४-०, ४६९/०-४-०, ६६५/३ (०-७८-०), ६९५/४ (०-२-०), ५०३/०-७-०, ५२३/०-७-०, ५३४/३ (०-७-१०), ५४७/०-७-०, ५४९/०-६-०, ५५०/०-६-० ५५३/०-५-० ५१४/०-५-०, ५४८/०-३-०, ५०६/०-११-०, ५२२/०-७-०, ५४५/०-१३-०, ५५२/०-५-०, ५४४/१ (०-३-१५), ५१४/२ (०-३-१५), ४८६/०-१७-०, ४८८/०-४-०, ५१०/०-८-०, ५७४/०-५-०, ५७५/०-८-०
९	,,	,,	,,	बाग़ात	४८२/१-१०-०, ४८३/२-१५-०, ४८४/३-१०-०, ४८५/२-१३-०, ६८६/१-०-०
				तालाब	६६२/१-१९-० मय दरख़्तान वग़ैरह
				फुलवारी	५५७/०-७४-०
				जंगल	६६७/४-१०-०
१०	,,	,,	कोदवार	बाग़ात	३४५७/२-४-०, ५४५९/२ (०-५-०), ४४४/२-१०-० गाटे कोदवा
११	,,	,,	उत्तरगाँव	बाग़ात	८०५/०-८-०, ८०६/०-८-०, ८०७/०-६-०, ८०८/०-४-०, ८०९/०-५-०, ८७९/२-६-०, ९००/६-०-०
१२	,,	,,	नरही	बाग़ात	१५६४/२-०-०
१३	,,	,,	बहमरपुर	बाग़ात	८६०/३-७-०, ८६७/७-१०-०, ८९१/०-१२-०, ८६३/१-१३-०
१४	,,	,,	खमया पश्चिम	बाग़ात	१५४४/०-१५-०, १५५७/२-०-०, १५९६/२-०-० ताला
१५	,,	,,	पूरा फैजूखाँ मज़रा सोमनपुर मकान दो किता मय अस्तबल व मवेशीख़ाना		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ेहरिस्त (बे)

क़र्ज़दार की जायदाद जो बहस्तिसनाय हुक़ूक़ मालिकाना मुताल्लिक़ अराज़ी हस्ब दफ़ा ६ ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० क़ुर्क़ और नीलाम हो सकती है

नंबर सिल-सिलेवार	क़िस्म जायदाद	बसाअत हक़ीक़त दरख़्वास्त दिहिंदा		कैफ़ियत
१	मनक़ूला	गाय	२० रास	
२	,,	भैंस मय बच्चा	२ रास	
३	,,	घोड़ी	२ रास	
४	,,	इक्का	२ अदद	
५	,,	पलँग व चारपाई	३०	
६	,,	देग	४	
७	,,	ज़रूफ़ दीगर	१०० कीमती २००)	
८	,,	तख़त चौकी	४	
९	,,	बकस	१५	
१०	,,	कुरसी	२०	
११	,,	मेज़	४	
१२	,,	बाग़ात	१२	
१३	,,	चाह पुख़्ता	१२	
१४	,,	तालाब	१	
१५	,,	मकान ख़ाम	१	

मेरे दस्तख़त और अदालत की मुहर से आज बतारीख़ ३ दिसंबर सन् १९३८ ई० जारी हुआ।

स्पेशल जज

[क़ाबिल फ़रोख़्त

इत्तिलानामा बनाम अशख़ास दरबारेह पेश करने अपने दावे के हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत (ऐक्ट २५ सन् १९३४ ई०)

बअदालत जनाब मिस्टर कामतानाथ गुप्ता स्पेशल जज साहब बहादुर गोंडा दर्जा दोयम मुक़ाम गोंडा

मुक़द्दमा नंबरी नंबर ३२४ सन् १९३६ ई०

पेशी २३ मार्च सन् १९३९

संतप्रसाद वल्द उमादत्त कौम ब्राह्मण पांडे साकिन मौज़ा रमवाँपुर गोविंदापुर परगना गोंडा, ज़िला गोंडा

क़र्ज़दार सायल

बनाम

क़र्ज़ख़्वाह फ़रीक़सानी

गयाप्रसाद वग़ैरह

चूँकि संतप्रसाद वल्द उमादत्त साकिन मौज़ा रमवाँपुर गोविंदापुर ज़िला गोंडा की जानिब से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है और चूँकि जायदाद, जिसकी तफ़सील फ़िहरिस्त हाय मुंसलिका में दर्ज है, दरख़्वास्त दिहिंदा ने हस्ब दफ़ा ८ या फ़रीक़सानी ने हस्ब दफ़ा १० सायल मज़कूर की जायदाद बताया है।

लिहाज़ा हस्ब दफ़ा ११ (१) ऐक्ट मज़कूर तुमको इत्तिला दी जाती है कि अगर जायदाद मज़कूर पर तुम कोई दावा रखते हो, तो संयुक्त प्रांतीय गज़ट में इस इश्तिहार के छपने की तारीख़ से ३ मास के अंदर एक दरख़्वास्त अदालत हाज़ा में असालतन या बज़रिए मुख़्तार मजाज़ पेश करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेहरिस्तहाय जायदाद पेशकरदा क़र्ज़दार हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा ८ व पेशकरदह क़र्ज़दार क़र्ज़ख़्वाह हस्ब तफ़सील मुंदर्जा दफ़ा १० ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत

फेहरिस्त (अलिफ़)

क़र्ज़दार के हक़ूक़ मालिकाना मुतालिक़ आराज़ी

नं० सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मुहाल	दरख़्वास्त हिंदा की मुतअल्लिक़ क़ाबिल बिरासत व क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत की तसरीह	वसअत हक़ीयत दरख़्वास्त हिंदा मुंदर्जे रजिस्टर दफ़्तर साहब कलेक्टर ज़िला	दरख़्वास्त हिंदा की हक़ीयत पर मौजूदा सालाना मालगुज़ारी	कैफ़ियत
१	गोंडा	ज़मींदारी	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी हरद्वार	हक़ीयत मुतफ़र्रिका हक़ आला	३—४१ का निस्फ़	४)॥	में निस्फ़
२	,,	,,	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी उत्तरी मोहाल रामधन	हक़ीयत हक़ आला	९ पाई २$\frac{1}{2}$ किरांट का निस्फ़	२१॥)≡	,,
३	,,	,,	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी बैजनाथ मोहाल रामधन	,,	४ पाई का निस्फ़	१३-)।	,,
४	,,	,,	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी शिवशंकर मोहाल रामधन	हक़ हक़ीयत मुतफ़र्रिका हक़ आला	३ पाई ८० डि० का निस्फ़	४।॥≈)॥	में निस्फ़
५	,,	,,	रमवांपुरगोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़ि० गोंडा पट्टी लक्ष्मीनारायण मोहाल रामधन	हक़ीयत हक़ आला हक़ मुतफ़र्रिका	ए० डि० ४—५० का निस्फ़	९॥-)	में निस्फ़
६	,,	,,	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी उमादत्त मोहाल रामधन	हक़ीयत हक़ आला	आ० पा० कि० १—१—१२$\frac{1}{4}$ का नि०	३२॥≈) में नि०	
७	,,	,,	रमवांपुरगोविंदापुर परगना गोंडा पट्टी शिवसहाय मोहाल रामधन	हक़ीयत हक़ आला	१ पाई २$\frac{1}{6}\frac{1}{6}$ किरांट का निस्फ़	१॥≡)॥ में नि०	
८	,,	,,	रमवांपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व ज़िला गोंडा पट्टी हरद्वार मोहाल रामधन	हक़ीयत हक़ आला	९ पाई २$\frac{1}{2}$ कि० का नि०	१२॥≈) में नि०	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९	"	"	रमवाँपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व जिला गोंडा पट्टी बैजनाथ मोहाल रामधन	हकीयत हक आला	७ बिस्वा आराजी पोख्ता साबिक १०$\frac{१}{४}$ का नि०
१०	"	"	रमवाँपुर गोविंदापुर परगना गोंडा तहसील व जिला गोंडा मोहाल महादेई	हकीयत हक आला	हाल १३८८ ४≡)४ में ८ पाई का नि० नि०
११	"	"	मेईपाइकं परगना गोंडा तहसील व जिला गोंडा मोहाल रामधन	हकीयत हक आला	१—६$\frac{१}{३}$ ॥≡) कि० नि० में नि०
१२	"	"	सोनापार परगना गोंडा तहसील व मोहाल राजेसरीसह	हकीयत मुतफ़र्रिका हक आला	ए० डि० ७०॥) ४३—८ में नि० का नि०
१३	"	"	डोमाकलपी परगना गवारिछ तहसील तरबगंज जिला गोंडा मोहाल कलपी	हकीयत हक आला	७ पाई ३ कि० ५≡)८,$\frac{१}{३}$ कसर जायद में नि०
१४	"	हक मुरतहनी	रेहननामा व कब्जा नविश्तेमुलू बहक संतप्रसाद व सीतलप्रसाद तादादी १०००) मौ० डोमाकलपी परगना गवारिछ तहसील तरबगंज जि० गोंडा	हक मुरतहनी	६ पाई ८ कि० ४≡)१,$\frac{६}{७}$ कसर जायद में बकदर का बकदर नि० नि०
१५	"	रेहन	रेहननामा बिला कब्जा नविश्ते परमेशर दत्त बहक संतप्रसाद व सीतलप्रसाद मुवर्रिखे ६ अगस्त मुसदिके ३ नवंबर १९२८ ई० मौका मौ० ग्यानपुर परगना गवारिछ तहसील तरबगंज जिला गोंडा तादादी १३००) रुपया	हकरेहन	४ पाई १६,$\frac{६}{२५}$ कि० का बकदर निस्फ
१६	गोंडा	रेहन	रेहननामा बिला कब्जा नविश्ते परमेश्वरदत्त बहक संतप्रसाद व सीतलप्रसाद मुवर्रिखे २६ सितंबर १९२७ ई० मुसदिके २० सितंबर १९२७ ई० तादादी १६००) रुपया मौजा ग्यानपुर परगना गवारिछ तहसील तरबगंज जिला गोंडा	हक रेहन	६ पाई १$\frac{१}{३}$$\frac{३}{५}$ किरांट का बकदर निस्फ

फेहरिस्त (बे)

कर्जदार की जायदाद जो बहुस्तिसनाय हुकूक मालिकाना मुताल्लिक आराजी हस्ब दफ़ा ६० ऐक्ट दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है—

नंबर सिल-सिलेवार	किस्म जायदाद
१	बैल जोतू २ रास

(दस्तख़त)
स्पेशल जज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायापलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहो मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा-इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। टंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल बर्क़ी शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रबधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रबधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस, अपूर्व शक्तिदाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्र गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामविहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आएगा। २६ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नजला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन-संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च-सहित ५॥) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी और हिंदोस्तान का अद्वितीय पत्र

सचित्र दरबार

(देशी राज्य-संबंधी स्वतंत्र साप्ताहिक)

संपादक—श्री चंद्रधर

'सचित्र दरबार' की नीति तीक्ष्ण और स्वतंत्र है। मानव-अधिकारों की रक्षा और अन्याय का विरोध 'सचित्र दरबार' का मुख्य लक्ष्य है। व्यापक दृष्टि से इस नीति का भारतीय कांग्रेस की नीति से सामंजस्य है, लेकिन वहाँ भी जहाँ कहीं निर्बलता, गुरुडम, पाखंड या अनाचार की बू आती है, वहाँ 'सचित्र दरबार' निर्भीक होकर पर्दा-फ़ाश करना अपना धर्म समझता है। देशी राज्यों के संबंध में भी 'सचित्र दरबार' की यही नीति लागू है ; पिछड़े हुए, अनाचार-पूर्ण राज्यों के देशी नरेशों की कटु-से-कटु आलोचना करने और उनके सुधार के लिये कठोर-से-कठोर परीक्षा की अग्नि में तपने के लिये 'सचित्र दरबार' सदैव प्रस्तुत है। देशी राज्यों की आठ करोड़ मूक और दुखी प्रजा के मानवोचित अधिकारों की ज़ोरदार वकालत और देशी राज्यों को प्रजासत्तात्मक शासन-व्यवस्था की ओर अग्रसर करना 'सचित्र दरबार' का उद्देश्य है। सामाजिक समस्याओं के संबंध में 'सचित्र दरबार' अत्यंत उग्र, तर्क और असहनशील है, और सामाजिक अधःपतन के प्रत्येक कारण को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिये तत्पर है।

सचित्र दरबार

का प्रत्येक अंक फड़कते हुए समाचारों, निष्पक्ष आलोचनाओं, सजीव कहानियों, महिलोपयोगी सामग्रियों, लेखनी के धनी विद्वानों की रचनाओं, राजनीतिक तथा सामाजिक लेखों और अनेक चित्रों से भरा रहता है।

यदि आपने अभी तक नहीं देखा है, तो आज ही नमूने के लिये

दो आने के टिकटों के साथ पत्र लिखिए

संचालक—

'सचित्र दरबार', दरियागंज, दिल्ली

तार का पता—'दरबार'

टेलीफ़ोन—६४५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

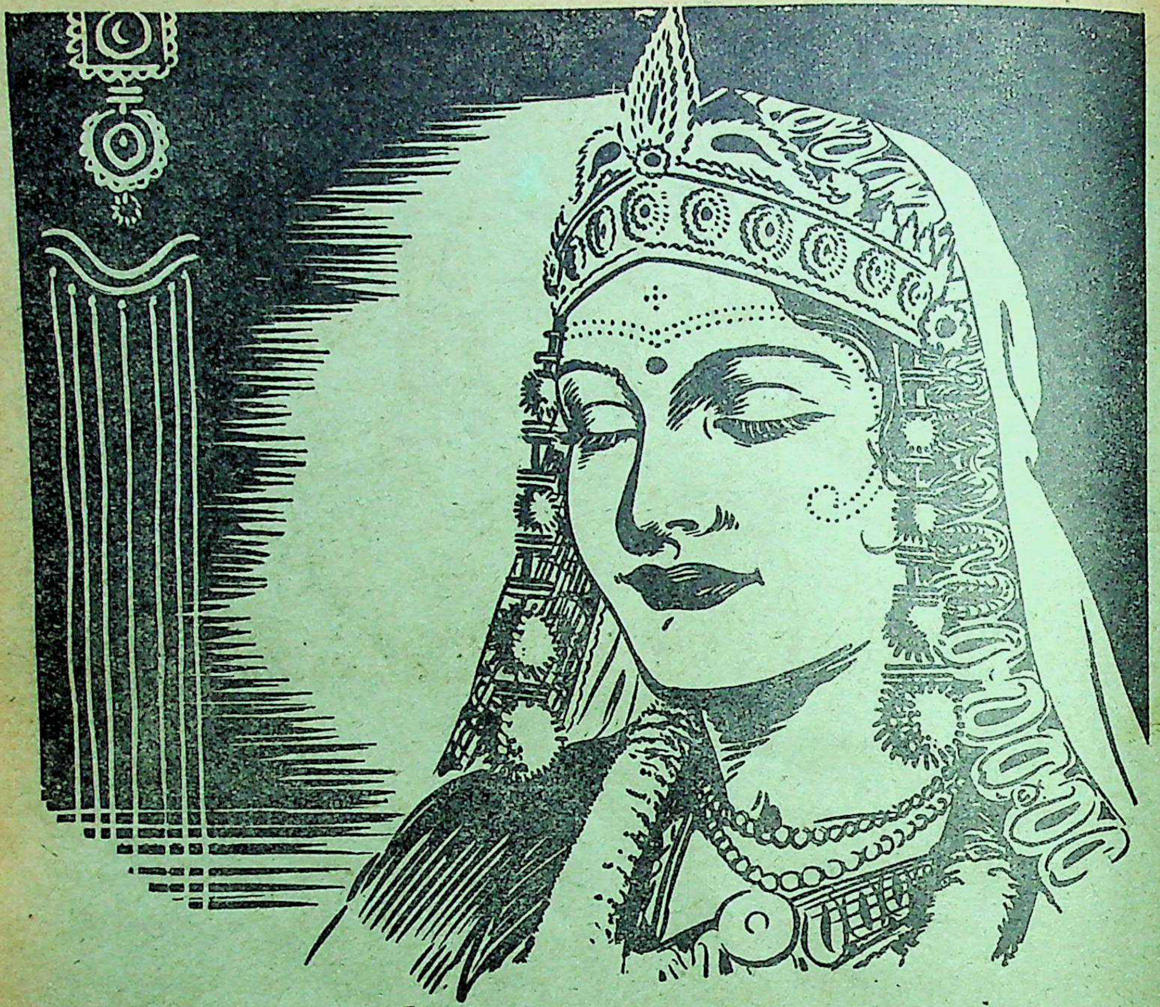

शुभ अवसरों पर जल्दी और आरामके लिये रेलवेका सफ़र कीजिये

शंख बज रहे हैं, सहनाई की मीठी आवाज़ आ रही है, स्त्रियाँ मंगल गान कर रही हैं, चारों ओर चहल-पहल मची हुई है। इस प्रकार दो तरुण-जीवन, एक करने की विधि शुरू होती है। कोई भी सगा-संबंधी या प्यारा मित्र विवाहोत्सव के इस आनंद तथा उत्साह से अगर छूट जाय, तो कितना बुरा लगता है। कोई परवाह नहीं, विवाह कहीं भी हो, रेलवे आपको तुरंत पहुँचा देगी, साथ-ही-साथ यह सस्ती भी है!

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK, 12.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. एक कविता

अयि लघु - लघु स्पंदनवाली !
नव-नव, मृदु-मृदु, कोमल-कोमल
मेरे सुख-दुख की प्याली !
नीरव-नीरव छवि-रजनी-सी,
अलका की अनुपम सजनी-सी,
मेरे वृंतों में खिली स्वर्ण-
सुंदरी स्नेह की पाली।
अपनी सुषमा की चाह-भरी,
लघु, अंतिम रेखा आह-भरी,
युग के अंचल में लिखी हुई
अनमिल किरणों की लाली।
लेकर वसंत की मधुर हँसी,
नभ-निःश्वासों के बीच बसी,
किस स्वर्ग-लोक से उतर परी
बुनती सपनों की जाली।
वरदानों की मुस्काहट-सी,
प्रिय-पग की पावन आहट-सी
बिखरीं वन-वन मन-मन मधुरे !
तुम बनकर मृदुल मृणाली।
अक्षर-अक्षर की धड़कन से,
पग-नूपुर के अल्हड़पन से,
ले - लेकर स्वर, स्वर्गीय सुधा
बरसाता है वनमाली।
जग की पलकों में उमड़ मुखर
जीवन की बनो कला अक्षर,
फूलो प्राणों की प्राण आज
कोयल - सी डाली - डाली।
अयि लघु - लघु स्पंदनवाली !

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'
(एम्० ए०, साहित्याचार्य)

× × ×

२. सद्गुरुशरण—एक कहानी-लेखक

हिंदी-साहित्य में अवस्थीजी आलोचक के रूप में जितने प्रसिद्ध हैं, उतने कहानी-लेखक के रूप में नहीं। इसका कारण उनकी निबंध-ज्ञान-प्रौढ़ता है। आलोचक में जितने और जैसे गुण होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए, वे सब उनमें मौजूद हैं। उनमें भाषा, शैली और भाव-निबंधना की क्षमता के साथ एक अपनी विवेचन-शैली है। वह वस्तु को पास से अपने विवेचन की शैली से कसते हैं, उनका ध्यान उसकी अभिव्याप्ति और प्रभाव की तरफ़ रहता है। जिन परिस्थितियों में गुँथकर लेखक एक चीज़ लिखता है, उन परिस्थितियों में अपने आपको बाँधकर, एक बाह्य दृष्टिकोण रखते हुए, जो आलोचक वस्तु परखता है, वही लेखक के साथ न्याय कर सकता है। अवस्थीजी का दृष्टिकोण विवेचना के संबंध में ऐसा ही कुछ है। आलोचक में एक विश्लेषक दार्शनिकता रहना भी आवश्यक है। उसे अंतरंग और बहिरंग की उपपत्तियों का साधारण और विशेष ज्ञान होना भी बहुत ज़रूरी है। शास्त्र के साथ कला की अभिव्यंजना और अनुभूति होना भी उसमें अपेक्षित है। इन सब तत्त्वों को लेकर अवस्थीजी ने आलोचना को अपना क्षेत्र बनाया है, और इसमें पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

कहा जाता है, आलोचक न तो कवि बन सकता है, और न कहानी या उपन्यास-लेखक। 'इमोशन' उसकी विवेचना से दब जाता है, और तथ्य की प्रबलता उसे कल्पना-लोक से नीचे उतार लाती है। वह बहाव से, जिसे कलाकार का प्राण कहा जाता है, बहुत दूर भाग जाता है। गंभीरता, गहराई के साहचर्य से उसमें कला के समझने की क्षमता तो उद्बुद्ध होती है, पर सृजन की नहीं। वह खुरदरी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए साँप की तरह केंचुल पीछे छोड़ता चलता है, और केंद्र की ओर गतिमान् होता है। भावों का वेग न तो उसे भाषा की ओर सोचने का अवसर देता है, और न सुंदर अभिव्यक्ति का। मैं समझता हूँ, यह बात उतनी सही नहीं। जिस प्रबुद्ध चेतनावाद या तर्कवाद के सहारे ये बातें कही गई हैं, वे सिद्धांत नहीं, विचार हैं। मेरा विचार है, प्रत्येक कलाकार में स्वाभाविकता और 'रेलवेन्स' होना अपेक्षित है। देश, काल, प्रकृति, परिस्थिति लेखक की सहज बुद्धि के परिचायक हैं। जो लेखक मरुभूमि में कस्तूरी-मृग और हिमालय में ऊँटों की कल्पना करता है, जो पंजाब में चिरापूँजी-जैसी वर्षा लिखता है, जो बैल या गधे को साहित्य-निष्णात कहता है, उसमें रेलवेन्स का अभाव होता है, और उसकी रचना स्वाभाविकता-विरुद्ध ही कहलाएगी। कलाकार का स्वाभाविकता या तर्क के साथ इतना ही संबंध है, इससे अधिक होना उसकी सृजन-कला-क्षमता का बाधक है। परंतु इसका यह आशय नहीं कि वह जीवन की उपपत्तियों को केवल कल्पना के सहारे चलाता है। इसी चेतनावाद को काव्य और साहित्य में अनुभूति के नाम से पुकारा जाता है। यह अनुभूति दार्शनिक चेतनावाद से एक तरह भिन्न भी है।

अनुभूति सूक्ष्म और स्थूल जीवन के संघर्ष से उठनेवाला बौद्धिक फेन है, जिसे हम परंपरा तथा अपनी क्रियात्मक चेतना में प्राप्त करते हैं। वह हमें जीवन-शक्ति और संघर्ष की क्षमता प्रदान करती है। वही जब कलाकार का अपना रूप बन जाती है, तब कला को ज्योतिष्मान्, अभिव्यक्ति को प्रबल और भावना को सतेज बना देती है। वह विवेचना के दबाने पर भी नहीं दबती, और उन्मुख होकर एकरस एक धार में बहने लगती है। कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती। शर्त यही है कि वह अनुभूति हो प्रबल। संस्कृत-साहित्य के प्रकांड आलोचक, काव्य-मीमांसाकार राजशेखर और रस-गंगाधर के रचयिता जगन्नाथ पंडित इसी तरह के कवि थे।

अवस्थीजी की कहानियों में हमें इसी तरह की वेगमयी भावानुभूति के दर्शन मिलते हैं। उन्होंने अपने आलोचक को कहानी के जीवन-पात्रों के साथ मिला दिया है। कहानी की भित्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठते ही उनकी दार्शनिकता बढ़ती है, और वह एक छोर से दूसरे छोर तक उस चरित्र को प्रकाशित कर देती है। उनकी अनुभूति समस्याएँ रखती और सुलझाती चलती है। जहाँ वह केवल कहानीकार के रूप में संकेत करते हैं, वहाँ वह जीवन सुलझाते हैं। मालूम होता है, वहाँ वह आलोचक—शुद्ध आलोचक रह गए हैं, परंतु ऐसा बहुत कम हुआ है। उनकी कहानियों के दो संग्रह अब तक निकल चुके हैं—एक का नाम है 'फूटा शीशा' और दूसरे का 'एकादशी'। दोनो में ही अवस्थीजी का अपनापन है। 'फूटा शीशा'-नामक कहानी-संग्रह में दस कहानियाँ हैं, और दसो फूटे शीशे पर लिखी गई हैं। प्रत्येक कहानी में भाषा के उतार-चढ़ाव, असाधारण भाव-व्यंजना और नए-नए आलंकारिक ढंग से कहानी का घटना-पट तैयार किया है। भारतीय जीवन के प्रत्येक दृष्टिकोण से इनकी कहानियों का विकास हुआ है। स्वर्गीय प्रेमचंद ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है।

"पहली कहानी हमें डाकू-जीवन के दृश्य दिखाती है, जब सामाजिक संस्कृति केवल जनेऊ में सिमटकर रह गई थी", "जब बादल के प्राण उसके शरीर की तरी पर चढ़कर, प्रेम का डाँड़ लगा-कर, कई बार उस पार उससे मिलने गए थे।" दूसरी कहानी में लेखक ने आज के पचास साल बाद आनेवाली राजनीतिक अवस्था का सुंदर और संभावी चित्रण किया है, और बड़ी ही मार्मिक शैली में सेनाधिपति बीरू की जीवन-कथा उसके मुँह से कहलवाई है। तीसरी कहानी में राजपूत-जीवन का मनोरंजक चित्र है। चौथी कहानी में इस सत्य का चित्रण किया गया है कि "जिस काम में एक प्राणी का सुधार हो, वह पाप कैसे हो सकता है।" पाँचवीं कहानी में प्रेम-स्मृति का बड़ा रोमांचकारी चित्रण है और नगरों की गंदी कोठरियों में बसनेवालों का करुणा-जनक दृश्य। छठी कहानी में एक युवती अपनी प्यारी बहन के मार्ग से अपने को हटाकर अपना प्राण त्याग देती है। मानव-जीवन के अध्ययन की दृष्टि से नवीं कहानी कदाचित् सभी कहानियों से श्रेष्ठ है। इसी प्रकार दसवीं कहानी ग़रीबी, निःसहायता, पराधीनता, तिरस्कार की विषम पगडंडियों से चलकर स्वावलंबन-सौभाग्य के शिखर पर अपने चरित्रों को आरूढ़ करती है।

दूसरी कहानी-पुस्तक है एकादशी। एकादशी में ग्यारह कहानियाँ हैं। 'फिर क्या यही ठीक है?'-नामक कहानी में जीवन से संबंध रखनेवाले विचारों, पाप-पुण्यों और बाह्य एवं आभ्यंतर रूपों का विवेचन है। कोई भी प्राणी न तो शुद्ध रूप से पुण्यात्मा है, न सर्वथा पापी। पापी में भी पुण्य का कुछ योग है, और पुण्यात्मा में भी पापांश। जैसे शुद्ध जल, जिसमें ताँबा, लोहा, चूना और गंधक का कुछ भी अंश नहीं, निःस्वाद होता है, इसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी शांति-अशांति की धूप-छाँह का संगम होता है। दूसरी कहानी 'दीनबंधु का हाथ' एक प्रमुख जीवनोद्देश्य को लेकर लिखी गई है। ईश्वर की सहायता स्पष्ट और अस्पष्ट रूप से किस तरह प्राप्त होती है, इसका विवेचन इस कहानी में हुआ है। 'ठाकुरों की होली में' प्राचीन क्षत्रियत्व, जातीय अभिमान, छोटी-सी भूल से कितना बड़ा अनर्थ होता है, इसका दिग्दर्शन कराया गया है। इसी प्रकार 'एक सच्ची कहानी' में वास्तविक प्रेम का मार्मिक संदेश है। 'मंगला अहीर' में रूढ़ि-पूजन का स्पष्ट चित्र है। 'केसरिया झंडा'-शीर्षक कहानी में दो बालिकाओं के देश-प्रेम की भावना का चित्र खींचा गया है। 'कनस्टरवाला' पुराने ज़माने के हिंदू-मुसलिम जीवन का शुद्ध चित्र है। यह कहानी पुराने समय के हिंदू-मुसलिम-प्रेम का आदर्श एवं यथार्थ चित्र है। 'कल्लो महाराजिन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कल्पनात्मक, कुछ यथार्थ का अद्भुत मिश्रण है। 'भूत का टीका', 'मिथ्या विश्वास', 'कौवों की जोड़ी' तथा 'वह कल कभी नहीं आया' भिन्न-भिन्न मानव-चरित्र, आत्मविश्वास एवं साम्यवाद के आधार पर हैं।

चरित्र-विश्लेषण कहानी का जीवन है, परंतु यह नहीं कहा जा सकता कि चरित्र ही सब कुछ है। कहानी इसके अतिरिक्त भी कुछ और है। अवस्थीजी की कहानियों में विश्लेषण प्रायः अंगी होकर आया है, इसलिये, जैसा मैंने ऊपर कहा, दार्शनिकता के कारण वे भारी हो गई हैं। परंतु इतना तो स्पष्ट है कि वे कहानियाँ अपनी शैली और अपने ढंग की एक ही चीज़ हैं। इनके पढ़नेवाले सब न होकर कुछ तो अवश्य हो सकते हैं। मेरा विचार है, कहानी में जीवन के गंभीर विवेचन एवं गुथे हुए वातावरण को यथाशक्ति सुलझाने और ढूँढ़नेवाले इन्हें अवश्य पसंद करेंगे। वह पाठक को मनोरंजन के साथ-साथ एक विचार देते हैं, जिसकी क्रियात्मकता पाठक को बहुत देर तक नहीं, तो कुछ समय तक तो अवश्य अभिभूत किए रहती है। इसके अतिरिक्त इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता जीवन में कला-दर्शन है। इन्होंने अपने पात्रों को स्वाभाविक गति से बढ़ाकर उनको कलात्मक जीवन से पूर्ण कर दिया है। 'फिर क्या यही ठीक है?' कहानी का मोहन कितने स्वाभाविक ढंग से जीवन का विश्लेषण करता है। 'ठाकुरों की होली' के मनोहर और शिवरानी एक दूसरे को प्यार करते हुए भी धूप-छाया की तरह दो रूपों के हैं। कल्पना के सुमधुर प्रासाद पर खड़े होकर भी अवस्थीजी के पात्र स्वाभाविकता को नहीं भूलते, यही उनके पात्रों की सफलता का रहस्य है।

दोनो कहानी-संग्रह अपनी सर्वथा भिन्न शैलियाँ लिए हुए हैं, जिनमें न केवल कथानक, प्रत्युत भाषा की अभिव्यंजना भी उनकी अपनी है। वह गहराई से देखते और सरलता से भावों को अंकित करते हैं। इन दोनो को मिलाने पर यथार्थ दार्शनिक कहानीकार समझ पड़ते हैं। इनकी कहानियों में रस है, जीवन है, कला है, और है इन सबका संबंध।

उदयशंकर भट्ट

× × ×

३. ओ शशि!

आओ, शशि! कर लें दो बातें,
कट जावें ऐसे ही रातें।

(१)

पास जा रहे हो तुम अपनी
नलिनी के, नलिनी के ताज!
देख-देख क्या हँसते हो अब
मेरा मिटा हुआ सुख-साज?

कभी तुम्हारे ही समान थी
बजती मेरी सुख की बीन;
मैं थी रानी प्रेम-राज्य की,
स्वर्गोपम था मेरा राज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हैं ये एकाकी रातें,
आओ, शशि ! कर लें दो बातें।

(२)

थे कैसे शीतल शशि ! तुम तो,
अमृत की बहती थी धार;
चिटिक चंद्रिका चपल चित्त को
चारु शांति देती उपहार।

किंतु वही संजीवनि - धारा
हुई मुझे है विषमय आज;
करते हो क्यों अरे, शीतकर !
मेरे साथ निठुर व्यवहार ?

अब तुम भी करते हो घातें,
आओ, शशि ! कर लें दो बातें।

श्रीमती शांतिदेवी वैश्य 'शांति' साहित्यरत्न

(३)

सच है, जब संकट पड़ता है,
होते सहचर भी प्रतिकूल;
रुष्ट हुए मुझसे भी यदि तुम,
नहीं तुम्हारी इसमें भूल।

जल में होने पर करता है
मित्र कमल का पुलकित गात;
किंतु वही जल सूख जाय, तो
कर देता उसको निर्मूल।

सुख के ही सबके हैं नाते,
आओ, शशि ! कर लें दो बातें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४)

करो न यों अभिमान कलाधर,
क्षण-भर का है सब आनंद;
दीन जानकर मुझे इस समय
करो निरादर मत मतिमंद!
तनिक देर में आ जावेंगे
जब प्राची में फिर कमलेश,
भागोगे, फिर हो जावेगी
प्रेममयी वीणा भी बंद।
देर न लगती सुख को जाते,
आओ, शशि! कर लें दो बातें।

(५)

कभी-न-कभी भाग्य चमकेगा,
सुख की फिर आवेगी रैन;
सुनने को फिर वही मिलेंगे
प्रियतम के मधु-वर्षक बैन।
तब तुम प्रकट करोगे आकर
अरे, सुहृद्‌ता कपटी चंद्र!
दो हृदयों के छोटे जग में
होगा जब स्वर्गिक सुख-चैन।
तब कह दूँगी—"अब क्यों आते?"
आओ, शशि! कर लें दो बातें।

(श्रीमती) शांतिदेवी वैश्य 'शांति' (साहित्यरत्न)

× × ×

४. पाश्चात्त्य देशों में स्वर्गीय प्रेमचंद

कई वर्ष पहले जब मैंने श्रीप्रेमचंदजी की 'रंग-भूमि' पर 'सरस्वती' में समालोचना लिखनी प्रारंभ की, तो मेरे कुछ मित्रों ने उसे द्वेष-पूर्ण समझा, और उसे बंद करने का आग्रह किया। स्वयं प्रेमचंद एक दिन मेरे यहाँ आए, और उसे बंद कर देने के लिये कहा; क्योंकि उस समय उस समालोचना से बड़ी ग़लतफ़हमी फैल रही थी। परंतु मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि मेरी समालोचना का जितना अंश 'सरस्वती' में निकल सका था, उसमें प्रेमचंद के दोषों और उनकी कमज़ोरियों का ही उल्लेख हो पाया था। उनकी रचनाओं की विशेषताओं और कला की विशिष्टता पर प्रकाश डालने की इच्छा पूरी भी न कर सका कि अपने मित्र की अकाल मृत्यु का समाचार यहाँ मिला। मैं उसी के प्रायश्चित्त-स्वरूप यहाँ पेरिस में रहते हुए अपने स्वर्गीय मित्र के बारे में अपने मित्रों से प्रायः चर्चा तथा उनकी प्रशंसा किया करता हूँ। पाश्चात्त्य देशों में कुछ लोग संस्कृत और कुछ-कुछ हिंदी भी जानते हैं। जब-जब मुझे इनसे मिलने का अवसर मिलता है, मैं प्रेमचंद की प्रशंसा अवश्य करता हूँ। पेरिस में हिंदी जाननेवाले दो-एक व्यक्ति हैं। पेरिस-विश्वविद्यालय में हिंदी जाननेवाले मिस्टर जूल ब्लाक हैं। जो भारत से हिंदी की उपाधि के लिये पेरिस आते हैं, वे प्रायः इन्हीं की अध्यक्षता में काम करते हैं। मुझे इनसे मिलने का कई बार अवसर प्राप्त हुआ है। मैंने इनसे सदा प्रेमचंद की प्रशंसा की है, और कई बार कहा है कि पुराने विषयों पर थीसिस लिखवाने की अपेक्षा यदि आप अपने विद्यार्थियों से प्रेमचंद पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीसिस लिखवाते, तो कहीं अच्छा होता ; क्योंकि प्रेमचंद बड़े प्रतिभाशाली, कुशल लेखक एवं कलाकार थे, और उन्होंने कई महत्त्व-पूर्ण उपन्यास तथा कहानी-ग्रंथों की रचना की है। उन पर एक बहुत ही सुंदर थीसिस लिखी जा सकती है। इसका प्रभाव यह हुआ कि वह प्रायः प्रेमचंद पर थीसिस लिखने के लिये अपने विद्यार्थियों से कहते हैं, और अब प्रेमचंद पर थीसिस लिखी जा रही है, जो दो-एक वर्षों में अवश्य प्रकाशित होगी। इस प्रकार फ्रेंच-भाषा में प्रेमचंद पर एक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ लिखा जायगा।

स्विटज़रलैंड के एक सज्जन कुछ हिंदी-कहानियों का अपनी भाषा में अनुवाद करना चाहते थे। मैंने प्रेमचंद की दस कहानियों का अनुवाद करने की उन्हें सम्मति दी। आशा है, यह अनुवाद भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

हिंदी के लेखक श्रीपं० दुर्गाप्रसाद पांडेय आजकल हॉलैंड में हैं। इन्होंने सप्तसरोज का अनुवाद हॉलैंड की भाषा में कर लिया है। यह अनुवाद भी शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

मेरे एक मित्र पोलैंड-देश के हैं। वह अपनी भाषा में किसी उपन्यास का अनुवाद करना चाहते थे। मैंने उन्हें 'सेवा-सदन' का अनुवाद करने की सम्मति दी, क्योंकि मेरा विचार है कि 'सेवा-सदन' प्रेमचंद के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। मेरा दृढ़ विश्वास तथा धारणा है कि यदि प्रेमचंद ने 'सेवा-सदन' के मार्ग का ही अवलंबन किया होता, तो उनके पिछले उपन्यास कहीं अधिक श्रेष्ठ होते। परंतु अब उसके बारे में विचार करना व्यर्थ है। अब तो मैं प्रेमचंद की कला का पक्का समर्थक हूँ, और उनकी प्रशंसा का पुल बाँधता रहता हूँ। जहाँ तक मुझसे बन पड़ा है, मैंने उनके ग्रंथों का पाश्चात्य देशों में प्रचार किया है, और करता रहूँगा।

अवध उपाध्याय (पेरिस)

× × ×

५. नागपुर में जाति-पाँति-तोड़क सम्मेलन

जाति-पाँति-तोड़क मंडल, लाहौर के प्रबंध से नागपुर में, हिंदू-महासभा के विशाल पंडाल में, एक जाति-पाँति तोड़क सम्मेलन ३१ दिसंबर को हुआ। सम्मेलन के प्रधान थे मध्य प्रदेश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री डॉक्टर एन्० बी० खरे। दस हज़ार से भी अधिक श्रोता उपस्थित थे। पंडाल खचाखच भरा था। कार्यवाही आरंभ होने के पहले जाति-पाँति-तोड़क मंडल के श्रीहरभगवान ने मंडल और उसके कार्यों का इतिहास संक्षेप में सुनाया, और श्रोताओं से अपील की कि मंडल ने जो १९४१ की मनुष्य-गणना में जाति के कोष्ठ में कुछ नहीं लिखाने का आंदोलन जारी किया है, उसमें पूरे बल से मंडल की सहायता करें। उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिंदू-महासभा को बाधित करना चाहिए कि वह हिंदुओं की जाति-पाँति की मनोवृत्ति को नष्ट करने का काम अपने हाथ में ले, क्योंकि इसके विना हिंदू-संगठन असंभव है, विशेषतः जब बैरिस्टर विनायक-दामोदर सावरकर एवं दूसरे हिंदू-नेता हिंदू-समाज के लिये जाति-भेद इतना हानिकारक समझते हैं!

डॉक्टर खरे ने अपने अभिभाषण में हिंदू-समाज से जाति-भेद को मिटाने पर ज़ोर दिया, जिससे शुद्धि और हिंदू-संगठन के आंदोलन शीघ्रता से उन्नति कर सकें, और हिंदू एक संयुक्त राष्ट्र बन जायँ। उन्होंने खेद से कहा कि जाति-भेद ने हिंदुओं को फोड़कर पृथक्-पृथक् टुकड़ियों में बाँट रक्खा है।

तत्पश्चात् दो प्रस्ताव, प्रायः सर्व-सम्मति से, स्वीकृत हुए। पहले प्रस्ताव में जाति-भेद को सर्वथा मिटा देने की आवश्यकता बताई गई, और हिंदुओं से अनुरोध किया गया कि वे एक दूसरे के साथ खुल्लमखुल्ला रोटी-बेटी-व्यवहार करें। इस प्रस्ताव में हिंदू-महासभा पर भी ज़ोर दिया गया कि वह ऐसे उपायों को काम में लाए, जिनसे समाज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार की गति तीव्र हो, और जाति-भेद का अंत हो जाय।

दूसरे प्रस्ताव में लाहौर के जाति-पाँति-तोड़क मंडल की सेवाओं की ओर इसने जो ठीक समय पर काम आरंभ किया है, उसकी प्रशंसा की गई। सन् १९४१ की मनुष्य-गणना के समय जाति के कोष्ठ में 'कुछ नहीं' लिखाकर हिंदुओं की जाति-पाँति की मनोवृत्ति के विरुद्ध जेहाद खड़ा करने को कहा गया, और जनता से अनुरोध किया गया कि मंडल के चलाए हुए अखिल भारतीय जाति-पाँति-तोड़क मनुष्य-गणना-संघ को पूरी-पूरी सहायता दे। इस प्रस्ताव को पेश करते हुए बैरिस्टर सावरकर ने मराठी-भाषा में एक बड़ा ज़ोरदार भाषण दिया। आपने कहा—'जाति कुछ नहीं' का आंदोलन ही सरकार के सांप्रदायिक बँटवारे का उपयुक्त उत्तर हो सकता है। इसके लिये यदि ज़ोर से काम किया जायगा, तो सरकार सब हिंदुओं को, मुसलमानों की भाँति, एक कंस्टीट्यूएंसी मानने पर मजबूर हो जायगी। इस समय तो उसने मुसलमानों को एक विशेष कंस्टीट्यूएंसी और हिंदुओं को सामान्य कंस्टीट्यूएंसी स्वीकार करके हिंदुओं को सामान्य कंस्टीट्यूएंसी में डाल दिया है।

कोल्हापुर के क्षात्र जगद्गुरु ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए हिंदुओं से जाति-भेद मिटा देने को कहा, क्योंकि इसी ने हमारा नाश किया है, और हमारे काटकर अलग-अलग टुकड़े कर दिए हैं।

संतराम (बी० ए०)

स्मरण रखिए—

असमय में बालों को पकने और झड़ने से बचाने के लिये

रेरीना

Regd.

रेड़ी का सुगंधित केश-तेल

इसके व्यवहार से असमय में बालों का पकना तथा गिरना बंद होता है, माथे की गर्मी कम पड़ती और आँखों में तरावट आती है, तथा बाल चिकने और चमकीले बने रहते हैं।

अपने स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्टबक्स ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

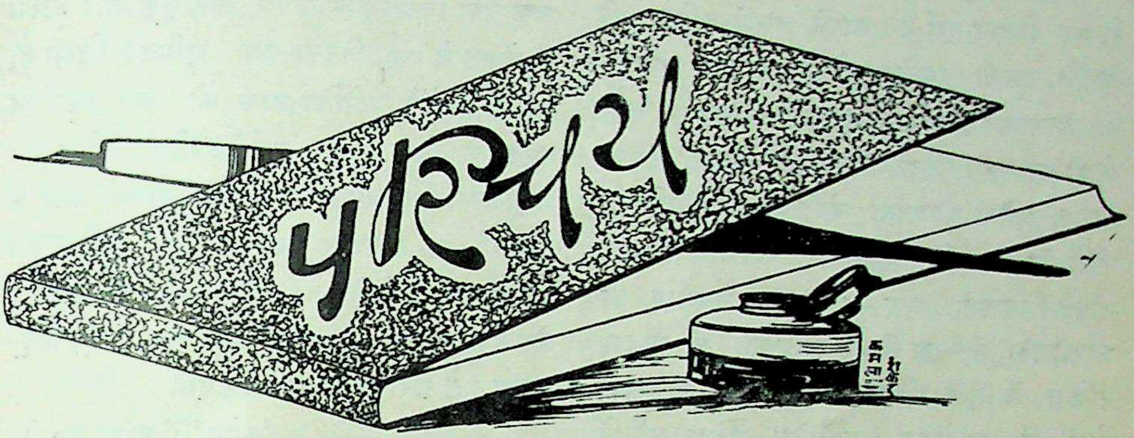

दहेज़—लेखक, श्रीदेवनारायण द्विवेदी ; प्रकाशक, काशी-पुस्तक-भंडार, चौक, बनारस सिटी; मूल्य २); सादी।

हमारे हिंदू-समाज में प्रचलित दहेज़-प्रथा और उसके विनाशकारी परिणामों का दिग्दर्शन करानेवाली बहुत-सी पुस्तकें निकल चुकी हैं, और बड़ी-बड़ी सभा-सोसाइटियों में तद्विषयक अनेकों प्रस्ताव आएदिन पास होते रहते हैं, परंतु फिर भी इस प्रथा का अंत नहीं होता। प्रस्तुत-पुस्तक उपन्यास के रूप में लिखी गई है, जिसमें दहेज़ की कुप्रथा पर बलिदान होनेवाले एक हिंदू-परिवार की कन्याओं की जीवन-कथा बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से लिखी गई है। पुस्तक की लेखन-शैली यद्यपि बहुत साधारण है, और विचारों का श्रृंखला-बद्ध निर्वाह लेखक नहीं कर सका है, फिर भी उसने दहेज़ के विषय पर यथेष्ट प्रकाश डाला है। सामाजिक उपन्यास होने के कारण पुस्तक पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

× × ×

श्रीमद्भागवत—अनुवादक, श्रीयुत पं० भगवानदास अवस्थी एम्० ए०; प्रकाशक, ज्ञानलोक, दारागंज, प्रयाग ; मिलने का पता—आदर्श साहित्य-मंडल, हुसैनगंज, लखनऊ ; मूल्य १।॥≋)

श्रीमद्भागवत के बहुत-से अनुवाद हिंदी-भाषा में निकल चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी उनमें से एक है। इसमें संपूर्ण भागवत की कथा, अध्यायों में विभाजित, बड़ी ही सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई है, जिसमें साधारण हिंदी जाननेवाले भी भागवत की कथा का पूरा-पूरा आनंद ले सकते हैं। अनुवादक ने इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रक्खा है कि ग्रंथ का कथा-भाग असली रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके, और वह अपने कार्य में सफल हुआ है। पुस्तक में कथानक से संबद्ध बहुत-से तिरंगे चित्र दिए गए हैं, जिनसे उसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। श्रीमद्भागवत का ऐसा सुंदर संस्करण निकालने के लिये प्रकाशक भी धन्यवाद का पात्र है। जिस धार्मिक भावना से प्रेरित होकर उसने इस पुस्तक को निकाला है, उसका अधिक-से-अधिक प्रचार हो सके, यही हमारी भी भावना है। आशा है, धार्मिक विचारों की हिंदू-जनता इस पुस्तक को अपनाकर अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय देगी।

'अरुण' (बी० ए०)

× × ×

बिहार-प्रांतीय कवि-सम्मेलन के सभापति श्रीललितकुमारसिंह 'नटवर' का भाषण—सोलहवाँ बिहार-प्रादेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, राँची।

बिहार-प्रांतीय कवि-सम्मेलन के सभापति की हैसियत से जो भाषण श्रीयुत 'नटवर'जी ने दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह विचार-पूर्ण है। आपने इसमें कविता की उत्पत्ति, उसकी सामयिक गति, व्रजभाषा के अध्ययन की आवश्यकता, कविता का प्रारंभिक विकास, खड़ी बोली का उद्गम, हिंदी-भाषा की प्राचीनता, उसका स्वरूप, कविता की भाषा, लंबी कविता के अतिरिक्त गीतों में चमत्कृति, कवि का सार्वभौम स्वरूप, कवि की व्याख्या, शुद्ध शृंगार-रस के स्थान पर अश्लीलता, वीर-रस में भी चाटुकता की झलक, कविता में ऐतिहासिक तथ्य का ह्रास, खड़ी बोली का आंदोलन, आधुनिक प्रसिद्ध कवियों का प्रादुर्भाव, उनकी शैलियों का अंधानुकरण, कविता की प्रगतिशीलता, कवियों की आधुनिक प्रवृत्ति, उनके विभिन्न रूप तथा कवि-सम्मेलन आदि विषयों पर बड़े सुंदर, युक्ति-पूर्ण विचार प्रकट किए गए हैं। हो सकता है, 'नटवर'जी के सब विचारों से हिंदी के विद्वान् पूर्णतः सहमत न हों, परंतु उनका भाषण अत्यंत रोचक तथा उपादेय है। मैं 'नटवर'जी के भाषण की भाषा तथा भावों की संस्कृति से प्रभावित हूँ।

× × ×

जन्म-पत्री—लेखक तथा प्रकाशक, जदला-लैंसडौन-गढ़वाल-बदरिकाश्रम-निवासी तथा मेमियो (वर्मा)-प्रवासी श्रीपं० केशवानंद जदली; प्रकाशक से प्राप्य; मूल्य १॥)

पं० केशवानंदजी शर्मा गढ़वाल के एक विद्वान् ज्योतिषी जान पड़ते हैं। जन्म-पत्री नाम की इस १०८ पेज की पुस्तक में उन्होंने कुंडली बनाने की विविध बातें सुचारु रूप से लिखी हैं। हमारे पुराने ढंग के ज्योतिषियों का जन्म-पत्र बनाने में काग़ज़ काट-काटकर जोड़ने, फिर उनमें रूल खींचकर कोष्ठक आदि बनाने में अधिक समय लगता है। प्रस्तुत पुस्तक में इस असुविधा को हटाने का सफल प्रयत्न किया गया है। एक ही पुस्तक में जन्म-पत्री के सब आवश्यकीय कोष्ठक, चक्र तथा विचारणीय विषय दिए हुए हैं। प्रारंभ में लेखक ने एक विद्वत्ता-पूर्ण भूमिका लिखी है, जिसमें उन्होंने ज्योतिष-शास्त्र को सत्य प्रमाणित करने के लिये सुंदर तर्क उपस्थित किए हैं। अधिकतर हिंदू-जनता अब भी जन्म-कुंडली के विचारों पर विश्वास करती है। ऐसी उत्तम पुस्तक प्रत्येक ज्योतिष-प्रेमी के पास होनी चाहिए। लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है। आशा है, हिंदू-जनता इसे ख़रीदकर लाभ उठाएगी।

'उमेश' (एम्० ए०)

× × ×

मीरा की प्रेम-साधना—लेखक, श्रीभुवनेश्वर मिश्र 'माधव' एम्० ए०; प्रकाशक, श्रीमंगलप्रसादसिंह, वाणी-मंदिर, छपरा; पृष्ठ-संख्या १०५+५१; छपाई-सफ़ाई अच्छी; मूल्य कपड़े की जिल्द-सहित १॥)

मैं एक रात को लेफ़्टिनेंट-जेनरल सर जॉर्ज मैकमन के० सी० बी०, के० सी० एस्० आई०, डी० एस्० ओ०-लिखित 'दी अंडर वर्ल्ड ऑफ़् इंडिया'-नामक पुस्तक पढ़ रहा था। मैंने कदाचित् मिस मेयो-लिखित 'मदर इंडिया' के अतिरिक्त ऐसी दूषित तथा भ्रांति-पूर्ण दूसरी पुस्तक नहीं पढ़ी। ऊँचे ओहदे पर स्थित एक फ़ौजी अफ़सर ऐसी गंदी पुस्तक लिख सकता है, और 'डेली मेल', 'संडे टाइम्स', 'डेली टेलीग्राफ़', 'लिवरपुल-पोस्ट' और 'सैटरडे रिव्यू'-जैसे 'सभ्य' पत्र उसकी तारीफ़ के पुल बाँध सकते हैं, इसे हम पश्चिम की दुस्साहस-पूर्ण नग्नता के अतिरिक्त और क्या समझें। Hutchinson's Pocket Library (Non-fiction Series) के 35th Thousand edition के ६७वें पृष्ठ पर मैकमन साहब फ़र्माते हैं—

"In the same century flourished Mira Bai in Rajputana, a Vishnuvite votary of venery and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Shakti, an ardent preacher of the glories of Krishna, the world's joyous lover, the 'Gopi-nath' (Lord of the Milkmaids), and a preacher of the mysteries of Lingam-yoni. She is looked on as the patroness of Courtesans, who frequently bear this name, which Miss Slade should not have been allowed to adopt when joining the Gandhi household."

मैं इस उद्धरण को अपनी मातृभाषा में अनुवाद करने का दुस्साहस नहीं करूँगा। जो व्यक्ति केवल गंदगी की खोज में निकला हो, यदि वह श्रीकृष्ण-प्रेम-विह्वला मीरा के चरित्र पर भी छींटे डालने की अनधिकार चेष्टा करे, तो कोई आश्चर्य न करना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक लिखकर 'माधव'जी ने हिंदी-जगत् का बहुत उपकार किया है। यद्यपि मीरा के पद आत्मतत्त्व से परिपूर्ण होने के कारण केवल भक्त-जनों द्वारा ही अनुभवगम्य हैं, तथापि जिस प्रकार मीरा की भक्ति—आत्मलीनता उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होती गई है, उसका विश्लेषण संभाव्य है। 'माधव'जी अपने प्रयास में बहुत कुछ सफल हुए हैं। आशा है, भक्त पाठक तथा साहित्य-सेवी इस पुस्तक के परिशीलन से मीरा के पदों का अधिक सुंदर विश्लेषण करने के लिये पर्याप्त प्रेरणा पाएँगे।

× × ×

प्रेमचंद की उपन्यास कला—लेखक, श्रीजनार्दनप्रसाद झा 'द्विज'; प्रकाशक, श्रीमंगलप्रसादसिंह, वाणी-मंदिर, छपरा; पृष्ठ-संख्या २८६; सुंदर छपी हुई सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥)

मुंशी प्रेमचंदजी हिंदी के सर्वप्रथम, सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार हैं। उनके 'सेवा-सदन' ने जो धूम मचाई थी, और पाठकों को आह्लाद-परिपूर्ण कर दिया था, उसे भूलना कृतघ्नता होगी। उसके पीछे उनके अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए—सभी मुंशीजी के व्यक्तित्व की छाप लिए हुए तथा पठनीय। प्रस्तुत पुस्तक में कदाचित् प्रेमचंदजी के उपन्यासों की पहली बार ही समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। प्रयास स्तुत्य हुआ है। कुल आठ प्रकरणों में पुस्तक समाप्त हुई है। 'देश-काल का प्रतिबिंब' तथा 'भाषा-शैली और भाव-व्यंजना'-प्रकरण मुझे विशेष रुचिकर प्रतीत हुए। 'उपसंहार' में प्रेमचंदजी तथा अन्य देशी-विदेशी औपन्यासिकों की तुलनात्मक स्टडी स्केची होते हुए भी काम की है।

साहित्य-प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य अपनानी चाहिए।

ब्रजमोहन तिवारी (एम्० ए०, एल्० टी०)

× × ×

जयपुर का इतिहास—लेखक, श्रीहनुमान शर्मा; प्रकाशक, श्रीकृष्ण-कार्यालय, चौमूँ (जयपुर); कागज़ ग्लेज़; आकार बड़ा, पृष्ठ-संख्या ८००; चित्र ४८; मूल्य ६), ४)

इसमें भगवान् रामचंद्र के बड़े पुत्र कुश के 'कुशवंशी' कछवाहों का कुशावती छोड़कर इधर लाहर, लाहोर, नरवर, रोहतास और ग्वालियर आदि में आने का, आरंभ में, पूरा वर्णन है। उसके आगे आमेर और जयपुर के संपूर्ण राजों, रानियों, कुमारों, उनके परिवारों, भाई-बेटों, 'बारह कोटड़ी' और उनके सरदारों आदि का सप्रमाण विस्तृत वर्णन दिया गया है। साथ में जयपुर-राजवंश की ४२ शाखाओं का जो निकट भविष्य में इतिहास बनेगा, उसके प्रथम सोपान (पहली सीढ़ी) में नाथावतों का इतिहास मिश्रित किया गया है, जिसमें चौमूँ, सामोद आदि के सभी सरदारों का सपरिवार पूरा परिचय है। इसके सिवा पृथ्वीराज चौहान-जैसे सम्राटों, गोरी, अकबर, औरंगज़ेब और शिवाजी-जैसे बादशाहों, मीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुज़फ़्फ़र और मल्हार-जैसे पिंडारियों या दक्षिणी मरहठों और नीतिज्ञ अँगरेज़ अफ़सरों आदि का इतिहास भी यथाप्रसंग बहुत कुछ आ गया है। उसी के साथ जयपुर, जोधपुर, उदैपुर, जैसलमेर और बीकानेर आदि के युद्धों, चित्तौड़, रणथंभोर, तूंगा, फ़तहपुर, पानीपत, पंजाब, बंगाल, बिहार, उड़ीसा और काबुल आदि की लड़ाइयों और उनके अद्भुत आयोजनों, मीणा, बनजारे और खारीवाल आदि विभिन्न जातियों, बोलानंदजी, पयहारीजी, बिहारी कवि, मंडन कवि और मीरा-जैसे भक्त-महात्मा एवं कवियों तथा इतिहास-रसिकों या हिंदी-हितैषियों के उपयोग में आनेवाली दुर्लभ एवं ज्ञातव्य बातों का मूल और टिप्पणी में बड़ी विधि से संकलन किया गया है। इसके सिवा तेरह सौ वर्ष पूर्व की आमेर, उसके तत्कालीन वस्त्र, शस्त्र, व्यापार, व्यवसाय, कला, सौंदर्य, मीणों के क़िले, भारतीय अकाल-सुकाल, बाज़ार-भाव, रुक्के, पट्टे, मुहरें, लेखन-कला, रहस्य-पूर्ण गढ़, क़िले, परकोटे, गुप्त मकान, नहरें और जल-कल ; ऐतिहासिक व्यक्ति और राजाओं के जन्म-पत्र तथा हालात, ढूँढ़ाड़, मारवाड़, कछवाहा और माही मुरातिब आदि के नामों की मीमांसा ; पृथ्वीराजजी के १६ पुत्रों, बारह कोटड़ियों और राजवंश की पीढ़ियों के विवेचन, चौमूँ, सामोद और जयपुर के नगर-निर्माण की विधि और आमेर का आदू सफ़ेद एवं वर्तमान पँचरंग का सप्रमाण वर्णन आदि अनेकों बातें ऐसी हैं, जिनके जानने की जनता को ज़्यादा ज़रूरत है। यह सब कुछ देखकर ही इतिहास-जगत् के प्रकाशमान नक्षत्र रायबहादुर डी० लिट्० पं० गौरीशंकरजी ओझा अजमेर, विश्वेश्वरनाथजी रेऊ जोधपुर, झाबरमलजी शर्मा जसरापुर, दयाशंकरजी दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग और पु० हरिनारायणजी बी० ए०, जयपुर आदि बड़े-बड़े विद्वानों ने इसे उत्तम, उपयोगी और आवश्यक बतलाया है। सुधा के इतिहास-लेखकों, विद्यार्थियों और पुस्तकालयों को सिर्फ़ २॥) मय महसूल मनीऑर्डर से भेजने में ही मिल सकेगा। पुस्तक द्रष्टव्य, संग्राह्य और आवश्यक है।

एक इतिहास-प्रेमी

तूलिका

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, हिंदी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्रीयुत विनोदशंकर व्यास। आपकी कहानियों में कुछ ऐसी जान डालनेवाली शक्ति है कि पढ़नेवालों के दिल और दिमाग़, दोनों पर असर हो जाता है। तूलिका आपकी ही प्रतिभा-पूर्ण १८ कहानियों का संग्रह है। ८ सादे तथा २ रंगीन चित्र। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'मयख़ाना' (कहानी)—लेखक, श्रीऋषभचरण जैन ; मूल्य १)

(२) 'अरब में सात साल' (भ्रमण)—लेखक, श्रीपं० रुचिराम ; वैदिक मिशनरी मूल्य १।)

(३) 'महाभारत के पात्र' (पहला भाग, उपन्यास)—लेखक, आचार्य श्रीनृसिंहप्रसाद-कालिकाप्रसाद भट्ट ; मूल्य ॥)

(४) 'अँगरेज़ी राज्य में हमारी आर्थिक दशा' (राजनीति)—लेखक, डॉ० जैनुलअहमद ; मूल्य ॥)

(५) 'लोकजीवन' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीदत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर ; मूल्य ॥)

(६) 'हमारे गाँव का सुधार और संगठन' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, स्व० श्रीरामदास गौड़ एम्० ए० ; मूल्य १)

(७) 'संत-वाणी' (काव्य)—लेखक, श्रीवियोगीहरि ; मूल्य ॥)

(८) 'जीवन-तप' (उपन्यास)—लेखक, श्रीचंद्रसेन ; मूल्य १॥)

(९) 'चार कहानियाँ'—लेखक, श्रीसुदर्शन ; मूल्य २)

(१०) 'प्रस्तुत प्रश्न' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीजैनेंद्रकुमार ; मूल्य २)

(११) 'हिलोर' (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्रीभगवतीप्रसाद वाजपेयी ; मूल्य १), १॥)

(१२) 'दांपत्य जीवन' (काम-शास्त्र)—लेखक, श्रीरामनारायण यादवेंदु बी० ए० ; मूल्य १), १॥)

(१३) 'शिशु-पालन' (स्वास्थ्य)—लेखक, श्रीअत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ; मूल्य २), २॥)

(१४) 'विकास' (दो भाग, उपन्यास)—लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य ४), ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

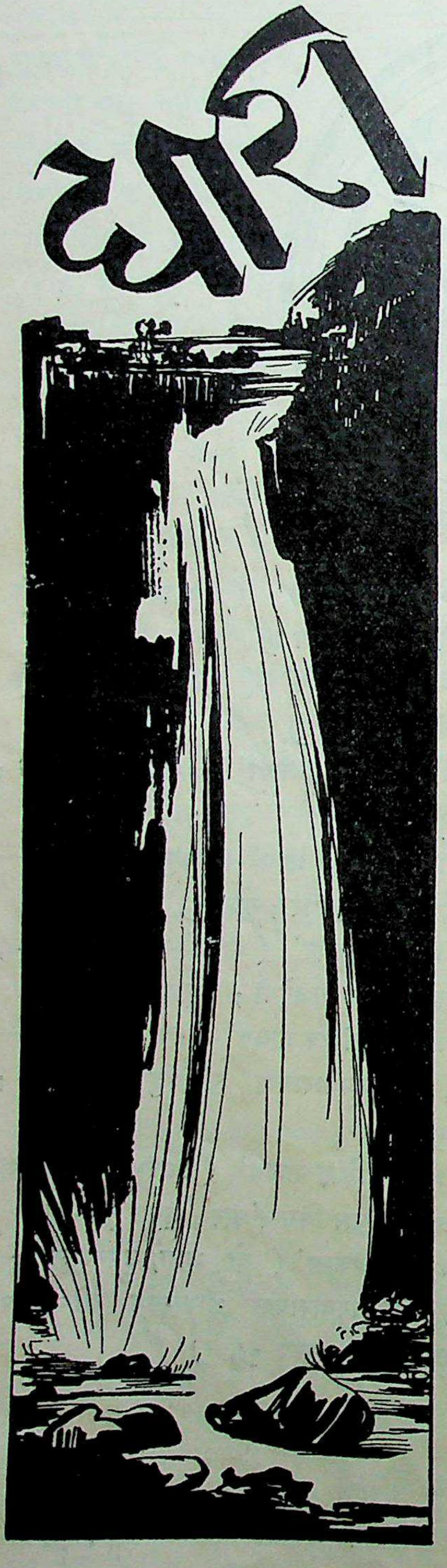

१. बंगालियों द्वारा हिंदोस्तानी-शिक्षा का विरोध

यू० पी० की एक प्रमुख संस्था बंगाली-एसोसिएशन का एक प्रतिनिधि-मंडल प्रांत के शिक्षा-मंत्री श्रीयुत संपूर्णानंद से मिला, और उन्हें बतलाया कि यदि यू० पी० में हिंदी और उर्दू को शिक्षा का अनिवार्य माध्यम बना दिया जायगा, तो कम-से-कम बंगाली-समाज को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। प्रतिनिधियों ने इसका कारण बतलाते हुए कहा कि ऐसी शिक्षा के कारण यू० पी० में रहनेवाली बंगाली लड़कियाँ अपनी मातृभाषा (बँगला) भूल जायँगी, और बंगाली नवयुवकों से उनका विवाह होना अत्यंत कठिन हो जायगा, इसलिये प्रांत के बंगाली बच्चों के हितों की रक्षा की जाय।

हम नहीं समझते कि बंगालियों की इस आपत्ति का कारण किसी अंश में भी मानने योग्य है। सभी प्रांतों में अन्य प्रांतों के लोग आकर बस जाते हैं, और वहाँ की भाषा क्रमशः सीख लेते हैं, क्योंकि दैनिक व्यवहार और पारस्परिक रहन-सहन की दृष्टि से स्वभावतः उन्हें ऐसा करना ही पड़ता है। परंतु ऐसा तो बहुत कम देखा गया है कि वे अपनी मातृभाषा भूल जायँ। सुदूर प्रांतों में प्रचलित भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि किसी प्रांत का निवासी अपनी मातृ-भाषा भूल जाय। हमारा अपना अनुभव है कि दूर दक्षिण में, मदरास, कोलंबो, रामेश्वरम् तक में, पंजाबी, बंगाली और मारवाड़ी पाए जाते हैं। और, प्रतिदिन के व्यवहार में वे तामिल, तेलगू, मलया-लम, कनाड़ी आदि प्रचलित भाषाओं का व्यवहार करते हुए भी जब कभी आपस में, अपने प्रांतवाले से, बातचीत करते हैं, तब बंगाली अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, पंजाबी अपनी भाषा बोलते हैं, और मारवाड़ी अपने प्रांत की भाषा का व्यवहार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि किसी प्रांत-वाला किसी भी दूर-से-दूर प्रांत में चला जाय, अपनी मातृभाषा कदापि नहीं भूल सकता। क्योंकि दूर-से-दूर प्रांत में भी उसे अपने प्रांतवाला कोई-न-कोई अवश्य मिल जायगा, जिससे वह अपनी मातृभाषा में ही वार्तालाप कर सकता है।

दूसरी बात यह भी ध्यान देने की है कि हमारी प्रांतीय सरकार ने हिंदोस्तानी की शिक्षा को अनिवार्य माध्यम बनाकर भी किसी अन्य भाषा की शिक्षा को रोका नहीं। प्रत्येक नागरिक कोई भी भाषा सीखने के लिये स्वतंत्र है, और वह इसके लिये अपना प्रबंध आप कर सकता है। बंगाली भाई यदि हिंदोस्तानी-भाषा की शिक्षा से अपने बच्चों के भविष्य का अहित होते देखते हैं, तो हमारी समझ में निजी तरीक़े से वे अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा (बँगला) की शिक्षा देने के लिये अवश्य प्रबंध कर सकते हैं। हिंदोस्तानी का ज्ञान प्राप्त करने से उनका कोई अहित न होगा, वरन् युक्त प्रांत के निवासियों से पारस्परिक व्यवहार में भाषा-ज्ञान द्वारा उन्हें अधिक सुविधाएँ रहेंगी। जिस प्रकार दक्षिण में जाकर बसनेवालों को मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू आदि भाषाएँ सीखनी पड़ती हैं, पंजाब में पंजाबी, बंगाल में बँगला और मारवाड़ में मारवाड़ी, इसी प्रकार यू० पी० में आकर बसने-वाले अन्य प्रांत-निवासियों को यदि हिंदोस्तानी सीखनी पड़ती है, तो इसमें उन्हें आपत्ति न होनी चाहिए। हम नहीं समझते कि हमारे बंगाली भाइयों की ऐसी मनोवृत्ति का कारण क्या है, और वे क्या चाहते हैं। आशा है, हमारी प्रांतीय सरकार इस विषय पर उचित विचार करेगी।

× × ×

२. हिज़ हाइनेस महाराजा बड़ौदा-नरेश की असामयिक मृत्यु !

बंबई का गत ६ फ़रवरी का समाचार है कि हिज़ हाइनेस महाराज गायकवाड़ बड़ौदा-नरेश का पौने नौ बजे रात्रि को अचानक देहावसान हो गया ! श्रीमान् बड़ौदा-नरेश अपनी पिछली योरप-यात्रा से वापस आने के बाद से ही अस्वस्थ थे। गत ६ फ़रवरी के प्रातःकाल से ही उनकी हालत बिगड़ने लगी। वह बंबई में अपनी कोठी पर ही ठहरे हुए थे। संध्या-समय उनकी दशा और भी बिगड़ गई, वह संज्ञा-शून्य हो गए। हर हाइनेस श्रीमती महारानी साहबा, हर हाइनेस महारानी कूच बिहार (बड़ौदा-नरेश की पुत्री), हिज़ हाइनेस श्रीमान् कूच विहार-नरेश, श्रीमान् महाराज और श्रीमती महारानी देवास (जूनियर), महाराज कुमार बड़ौदा तथा श्रीमान् बड़ौदा-नरेश के परिवार के अन्य व्यक्ति भी सबेरे से ही उनकी शय्या के निकट उपस्थित थे। श्रीमान् बड़ौदा-नरेश की मृत्यु 'थ्रांबोसिस'-नामक रोग से हुई।

श्रीमान् बड़ौदा-नरेश गत ३१ ऑक्टोबर को योरप-यात्रा से वापस आए थे, और तभी से उनकी अस्वस्थता बढ़ रही थी। नवंबर के प्रथम सप्ताह में उनकी दशा और भी ख़राब होने पर श्रीमती महारानी साहबा तथा परिवार के अन्य व्यक्ति यह समाचार पाकर, एक ख़ास वायुयान द्वारा लंदन से वापस आकर उनकी सेवा में उपस्थित हुए। लंदन के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टर जेफ़री इवान्स, जो एलोपैथिक चिकित्सा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, वहाँ से बुलाए गए। उन्होंने महाराज का इलाज आरंभ किया, जिससे उनकी दशा सुधरने लगी। पिछले सप्ताह में अचानक उनका रोग पुनः बढ़ गया। और, ऐसा सुना गया कि बृहस्पतिवार से वह प्रायः मूर्च्छित अवस्था में रहे। महाराज की मृत्यु बड़ी शांति से हुई। ६ फ़रवरी की आधी रात को महाराज का शव स्पेशल ट्रेन द्वारा बड़ौदा ले जाया गया, और उनके लक्ष्मी-विलास-महल में दूसरे दिन ९ बजे तक रहा, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी अंत्येष्टि क्रिया समाप्त की गई। उनके शव के साथ लाखों की तादाद में बड़ौदा की प्रजा थी, और दूर-दूर रियासतों से बड़े-बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति, भारतीय और अँगरेज़ सम्मिलित हुए तथा शोक प्रकट किया। उनके संतप्त परिवार के लिये दूर-दूर से धैर्य-प्रदायक संदेश आए और आ रहे हैं। श्रीमान् बड़ौदा-नरेश की मृत्यु पर डॉक्टर अंबेदकर ने अपने शोकोद्गार प्रकट करते हुए कहा कि महाराज बड़ौदा-नरेश की असामयिक मृत्यु से हमारे भारतवर्ष की एक बहुत बड़ी आत्मा उठ गई। उनका-सा सुयोग्य शासक और राजनीतिज्ञ आजदिन दूसरा नहीं। बड़ौदा से एक महान् शासक उठ गया, महाराष्ट्र का एक रत्न खो गया, और सुधारकों का एक ज़बरदस्त समर्थक, पृष्ठ-पोषक और नेता संसार से चला गया, अछूतों का सबसे बड़ा मित्र और सहायक उनसे छिन गया, और देशी नरेशों का एक सुयोग्य पथ-प्रदर्शक उनसे सदा के लिये बिछुड़ गया। शासन-प्रबंध में कोई दूसरा नरेश श्रीमान् की योग्यता को न पहुँचता था। महाराष्ट्र होते हुए भी वह किसी भी प्रांतवाले को अपने से भिन्न न समझते थे, तथा छोटे-बड़े, ग़रीब-अमीर, सबके लिये उनके हृदय में स्थान था। प्रजा-पालक, हिंदू-धर्म-हितैषी और परोपकारी होते हुए भी आप बड़े ही निरभिमान तथा सरल व्यक्ति थे। कला-कौशल, साहित्य, विज्ञान और शिक्षा के प्रचार एवं प्रोत्साहन में उन्होंने बड़ा परिश्रम किया, और सब प्रकार से अपना सहयोग दिया। अनेकों धार्मिक, सामाजिक तथा शिक्षा-संबंधी संस्थाओं को लाखों रुपए का दान देकर भी वह प्रतिवर्ष उनकी यथासाध्य सहायता करते रहते थे। महाराज बड़ौदा-नरेश-जैसा महापुरुष भारत में दूसरा नहीं।

प्रयाग के सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र 'लीडर' ने अपने संपादकीय लेख में स्वर्गीय महाराज की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए लिखा है कि हिज़ हाइनेस महाराज गायकवाड़ बड़ौदा-नरेश के विषय में हमें यही आशा थी कि वह अपनी बीमारी से शीघ्र ही आरोग्य लाभ करेंगे, किंतु दैव-दुर्विपाक से हमारी आशा अचानक सांघातिक निराशा में परिवर्तित हो गई। श्रीमान् बड़ौदा-नरेश की असामयिक मृत्यु से हमारे देश को एक भारी आघात लगा है, और उनके रिक्त स्थान की पूर्ति निकट भविष्य में हो सकेगी या नहीं, इसमें हमें संदेह है। स्वर्गीय महाराज सर सयाजी राव गायकवाड़ देशी नरेशों में अग्रगण्य और माननीय समझे जाते थे, परंतु वास्तव में उनका स्थान और भी ऊँचा था। वह एक समर्थ सुधारक थे। सन् १९०४ के ऑक्टोबर-मास में, प्रयाग के मेयो-हॉल में, भाषण देते हुए स्वर्गीय महाराज ने एक बार कहा था—"शासकों के लिये उत्साही बनना अत्यंत कठिन है।" उनके कहने का तात्पर्य यह था कि शासकों का उत्साह दिखावटी भले ही हो, परंतु हमारे वर्तमान शासकों में उसे कार्य-रूप में परिणत करने की सामर्थ्य और चेष्टा का बड़ा अभाव था। परंतु इसके विपरीत स्वर्गीय महाराज का अपना स्वयं का उत्साह, अपने राज्य एवं देश की उन्नति तथा सुधार के विषय में, अदम्य और सफल प्रमाणित हुआ। अपने शासन-काल के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने अपने उत्साह को यथेष्ट क्रियात्मक रूप दिया। बड़ौदा-राज्य में सामाजिक, राजनीतिक तथा शासन-संबंधी अनेकों नए-नए सुधार करने के पश्चात् नवीन योजनाओं द्वारा उन्होंने राजा और प्रजा के संबंध को दृढ़ एवं सुसंबद्ध रूप दिया। उन्होंने अपने राज्य में शासक और शासित का भेद एक प्रकार से मिटा देने की पूर्ण चेष्टा की, तथा प्रजा के अधिकारों की पूर्ण रक्षा करके उसे उन्नति करने का पर्याप्त अवसर दिया। बड़ौदा-राज्य में चालीस वर्ष पूर्व जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार हो चुके हैं, उन्हें हमारी राष्ट्रीय सरकार आज डेढ़ वर्ष के सुसंगठित शासन द्वारा भी सात प्रांतों में नहीं ला सकी। स्वर्गीय महाराज ने अपने राज्य में प्रतिनिधि-शासन की व्यवस्था करके शिक्षा-कार्य को बहुत आगे बढ़ाया, और स्थान-स्थान पर पुस्तकालय खुलवाकर प्रजा का उपकार किया। बड़ौदा में कला-भवन की स्थापना द्वारा स्वर्गीय महाराज ने अपने राज्य में कला-कौशल की भी उन्नति के लिये उद्योग किया। इसी कला-भवन में सुविख्यात विद्वान् प्रोफ़ेसर टी० के० गज्जर ने कार्य करके इतना नाम और यश कमाया। स्वर्गीय महाराज सर सयाजी राव गायकवाड़ ने सामाजिक सुधारों तथा कला-कौशल की उन्नति पर दो स्मरणीय भाषण दिए—एक तो 'भारतीय सामाजिक सभा' के अवसर पर सन् १९०४ में बंबई में, तथा दूसरा 'द्वितीय भारतीय कला-कौशल-सभा', कलकत्ता के उद्घाटन-समारोह में सन् १९०६ ई० में—जिनके द्वारा लोगों ने बड़ा लाभ उठाया, और वे एक नियमित प्रणाली पर कार्य करने की योजना को समझ सके।

देश की आर्थिक उन्नति के विचार से स्वर्गीय महाराज ने अपने राज्य में 'बड़ौदा-बैंक' तथा अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना की, जो उनकी दूरदर्शिता तथा लोकप्रियता का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में स्वर्गीय महाराज ने बनारस-हिंदू-विश्वविद्यालय के कार्यों में विशेष भाग लिया, जिसके वह चैंसलर भी नियुक्त हो गए थे। हिंदू-विश्वविद्यालय की 'सयाजी राव-लाइब्रेरी' की इमारत देखकर स्वर्गीय महाराज की दानशीलता तथा राष्ट्र-प्रेम का पता चलता है। इसके द्वारा उन्होंने अपने देश की शिक्षा-संबंधी संस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने की व्यवस्था में बहुत बड़ा भाग लिया, एवं अपना सहयोग दिया। सन् १९११ के देहली-दरबार की दुःखद घटना ने स्वर्गीय महाराज के हृदय पर ऐसा आघात पहुँचाया कि उसके बाद वह एक बदले हुए व्यक्ति बन गए; फिर भी उनके विचारों में कोई परिवर्तन न आया। सुधारों के लिये वह पहले-जैसे उत्साह से ही आगे बढ़े, परंतु उनके मन में शांति न थी, और वह सार्वजनिक कार्यों से कुछ तटस्थ-से हो गए। इतना ही नहीं, प्रतिवर्ष वह अपना अधिक समय विदेशों में रहकर बिताने लगे, क्योंकि उनकी उदासीनता बहुत बढ़ गई थी। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में ही वह फिर पूरे उत्साह के साथ सार्वजनिक कार्यों में दिलचस्पी लेने लगे।

लंदन की गोलमेज़-परिषद् में स्वर्गीय महाराज ने जाकर जो कार्य किया, वह सर्व-विदित है। उन्होंने एक सच्चे सुधारक और राजनीतिज्ञ की भाँति अपने देश की कठिनाइयों को दूर करने तथा अपने देश के नेताओं की दृष्टि में सदा ऊँचे और सम्माननीय बनने का प्रयत्न किया। स्वभावतः उचित रूप और बुद्धिमत्ता से उन्होंने देश के किसी भी क्रांतिकारी आंदोलन में भाग नहीं लिया, और न अपना सहयोग दिया। वह क़ानून तथा शांति के नियंत्रण के पक्ष में थे। परंतु ये सब बातें होते हुए भी वह राष्ट्रीय उन्नति के लिये लड़नेवाले सिपाहियों में सबसे आगे रहते थे। और, यदि वह नरेश न होते, तो निस्संदेह हमारे देश के एक प्रबल राष्ट्रीय नेता हो सकते थे।

अंत में हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि स्वर्गीय महाराज सर सयाजी राव गायकवाड़ हमारे वर्तमान भारत के प्रमुख व्यक्तियों में से थे, और भारत-माता के एक सच्चे सुपुत्र थे, जिनके न रहने से आजदिन हमारे देश की बड़ी हानि हुई है। हम हर हाइनेस श्रीमती महारानी साहबा, स्वर्गीय महाराज के परिवार के अन्य व्यक्तियों तथा उनके राजभक्त अधिकारियों एवं प्रजा-मंडल के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह स्वर्गीय महाराज की दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर देश के प्रत्येक व्यक्ति को उनका असामयिक बिछोह सहन करने की शक्ति तथा साहस दें।

× × ×

३. रेल-दुर्घटनाएँ

अपने देश में रेल-दुर्घटनाओं ने एक गंभीर स्थिति पैदा कर दी है। ये दुर्घटनाएँ थोड़े-थोड़े समय के अंतर से लगातार हुई हैं। गत दो वर्षों में ही आठ या नौ बार ऐसी घटनाएँ हुईं, और उनसे सर्व-साधारण के ऊपर एक तरह का आतंक छा गया है। लोग समझने लगे हैं कि रेलवे-यात्रा जोखों की चीज़ है। बिहटा-दुर्घटना की याद भी नहीं भूली थी कि हज़ारीबाग़ के पास, ई० आई० आर० की लाइन पर, एक और दुर्घटना हो गई। इस प्रकार लगातार ऐसी घटनाएँ होने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि रेलवे के प्रबंध में कोई ख़राबी ज़रूर है। कभी किसी भूल से अथवा ऐसे कारण उपस्थित हो जाने पर कोई दुर्घटना हो जाय, वह और बात है। लेकिन जब ऐसी घटनाएँ लगातार हों, और उनके कारण बताने में लोगों में विभिन्न मत हों, तो इस बात की आवश्यकता होती है कि एक जाँच-कमेटी द्वारा सारी स्थिति की जाँच कराई जाय। आख़िर जिस बात का असर इतना व्यापक हो, जहाँ लोगों की जान जाने और माल नष्ट होने के लगातार कारण उपस्थित होते हों, उनकी जाँच होनी आवश्यक है। हम समझते हैं, जितनी रेलवे-दुर्घटनाएँ इन दिनों हुई हैं, उनकी ज़िम्मेदारी रेलवे-विभाग से बाहर और किसी पर नहीं हो सकती। ऐसा भी प्रतीत नहीं होता कि इनमें से किसी भी दुर्घटना का कारण कोई बाहरी षड्यंत्र हो। तब रेलवे-लाइन की ख़राबी, एंजिन की गति, ड्राइवरों की असावधानी, उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की दशा, सिगनल का ठीक उपयोग करने में असावधानी आदि ये ही कारण हो सकते हैं, जो ऐसी दुर्घटनाएँ पैदा करते हैं। फिर दुर्घटना के बाद उसके उपचार के सिलसिले में भी काफ़ी शिकायतें हैं। बिहटा-रेलवे-दुर्घटना की जाँच के बाद भी रोग का इलाज नहीं हुआ, और मरीज़ उसी प्रकार रोग-शय्या पर पड़ा रहा। हम समझते हैं, वह तब तक चंगा नहीं हो सकता, जब तक उन सामान्य कारणों को दूर करने की चेष्टा न की जायगी, जिनके कारण ऐसी दुर्घटनाएँ होती हैं। संतोष की बात है, अब की बार भारत-सरकार की ओर से केंद्रीय एसेंबली में यह घोषित किया गया कि सरकार एक अदालती ट्रब्यूनल द्वारा दुर्घटनाओं की परिस्थितियों की जाँच कराएगी। लेकिन यह जाँच जितनी शीघ्र हो, उतना ही अच्छा। साथ ही जाँच की रिपोर्ट में दुर्घटनाओं के जो-जो कारण बताए जाएँ और उनके दूर करने के लिये जिन बातों की सिफ़ारिश की जाय, वे तुरंत अमल में आनी चाहिए। हमारी सरकार के संबंध में यह आम शिकायत है कि उसकी बहुधा जाँच-कमेटियाँ केवल चिह्न-पूजा के लिये होती हैं। उनकी रिपोर्ट और सिफ़ारिशों पर कभी बहुत कम और कभी कुछ भी अमल नहीं होता। यही शिकायत हमें रेलवे-दुर्घटनाओं की जाँच के संबंध में है। क्या सरकार और उसका रेलवे-बोर्ड अपनी इन ग़लतियों का परिमार्जन करेगा?

× × ×

४. जयपुर-सत्याग्रह और सेठ जमनालाल बजाज

जयपुर-राज्य के अधिकारियों ने सेठ जमनालाल बज़ाज़ के राज्य में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगाकर अच्छा काम नहीं किया। एक साधारण व्यक्ति के लिये भी इस तरह की आज्ञा को हम अनुचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा उसे मानवीय और नागरिक अधिकारों के विपरीत समझते हैं। फिर सेठ जमनालाल बज़ाज़-जैसे उच्च व्यक्ति के संबंध में इस तरह की निषेधाज्ञा का घोर विरोध करना पड़ता है। सेठजी कांग्रेस के उच्च नेता और कांग्रेस-कार्य-समिति के सदस्य हैं। वह जयपुर-राज्य के नागरिक हैं। आज जयपुर-राज्य को सेठ जमनालाल बज़ाज़ पर गर्व करना चाहिए—केवल इसीलिये नहीं कि वह कांग्रेस के उच्च नेता और परम प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्य-कर्ता हैं, बल्कि जयपुर-राज्य के अब तक बड़े हितैषी और सेवक रहे हैं। कई बड़े अवसरों पर जोख़ों के वक्त सेठजी ने जयपुर-दरबार की प्रतिष्ठा और उसकी शान के लिये बड़े-बड़े कार्य किए हैं। जो हवा आजकल बहुधा देशी राज्यों में फैली हुई है, उसका बहुत पहले सूत्रपात जयपुर-राज्य में हो चुका था। सेठजी ने राज्य और प्रजा के बीच में पड़कर दोनो को संतुष्ट किया, और राज्य में क्षोभ तथा असंतोष नहीं बढ़ने दिया। अभी-अभी सीकर के मामले में भी सेठजी की बदौलत ही जयपुर-दरबार की शान क़ायम रही। फिर भी जयपुर के सत्ताधारियों ने उन्हें राज्य के लिये ख़तरनाक व्यक्ति समझा, और उन्हें राज्य में प्रवेश करने देना जयपुर-दरबार की कृतघ्नता प्रदर्शित करना है। जयपुर के सीकर-ठिकाने में सेठजी का घर है, वह उनकी जन्मभूमि है। वहाँ उन्हें जाने का सब तरह पूर्ण अधिकार है, और इस अधिकार को अक्षुण्ण रखने के लिये आज वह राज्याधिकारियों के लगाए गए प्रतिबंध को तोड़कर राज्य में प्रवेश करते हैं। इससे न केवल जयपुर-राज्य में, बल्कि देश-भर में एक आंदोलन पैदा हो गया है, और हर जगह जयपुर-सत्याग्रह की चर्चा है।

हमारी समझ से जयपुर-दरबार ने 'आ बैल, मुझे मार' की कहावत के अनुसार अपने आप एक आंदोलन का संकट अपने ऊपर लिया है। जयपुर के अधिकारियों को अन्य त्रावनकोर, हैदराबाद, राजकोट और उड़ीसा-प्रांत की रियासतों के आंदोलनों का पता है। यह बीमारी अब उनके यहाँ भी पैदा हो गई। इसमें प्रजा अपने उत्तरदायी शासन की माँग के लिये सत्याग्रह की लड़ाई लड़ेगी, और राज्य-अधिकारियों को प्रजा को संतुष्ट करना पड़ेगा।

हम यह जानते हैं कि रियासतों में इस तरह के आंदोलन पैदा करने की ज़िम्मेदारी राज-दरबार के ऊपर न होकर मुख्यतया राज्यों के अंदर काम करने-वाले अँगरेज़ दीवान या उनके ऊपर शासन करनेवाले अँगरेज़ रेज़ीडेंट के ऊपर होती है। इस प्रकार रियासतों के आंदोलन में भी अँगरेज़ी सरकार की ही ताक़त काम कर रही है। तभी महात्मा गांधी तक यह महसूस करने लगे हैं कि अब देशी राज्यों के आंदोलन में कांग्रेस के भाग लेने का समय आ गया है। जयपुर-दरबार को स्वयं इस स्थिति पर विचार करके विवेक और समझदारी से काम लेना चाहिए।

× × ×

५. स्पेन-प्रजातंत्र का अंत

आख़िर स्पेन की प्रजातंत्र-सरकार का पराभव हो गया, और जनरल फ़्रैंको के सिर विजय का सेहरा बँध गया। इस परिणाम की कल्पना बहुत दिन पहले से की जा रही थी। इस हार-जीत का बहुत बड़ा नतीजा योरप में फ़ैसिस्ट शक्ति की वृद्धि और प्रजा-तंत्र का ह्रास समझा जाना चाहिए। यह भी स्पष्ट है कि विद्रोही फ़्रैंको को यह विजय अपनी शक्ति से प्राप्त नहीं हुई, न इससे यही समझना चाहिए कि स्पेन की जनता जनरल फ़्रैंको के साथ है, और उसका वहाँ की प्रजा-तंत्र सरकार में विश्वास नहीं रहा। फ़्रैंको को यह विजय मुसोलिनी और हिटलर की अटूट सहायता तथा ब्रिटिश प्रधान मंत्री चैंबरलेन की विश्वासघातिनी नीति के बल पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हुई है। मि० चैंबरलेन ने एक बार म्यूनिक-समझौते में ज़ेकोस्लोवेकिया का अंत किया, और इसी बार रोम में जाकर मुसोलिनी के साथ समझौते में स्पेन-प्रजातंत्र का अंत कर दिया। यह कोई नहीं कह सकता कि मि० चैंबरलेन कब तक ब्रिटिश प्रधान मंत्री के पद पर आसीन रहेंगे। पर अपने अल्प काल के बहुमत में आपने ये दो कार्य ऐसे किए हैं, जिनसे संसार-भर के प्रजातंत्र-वाद से प्रेम रखनेवाली जातियों में आपका नाम बदनाम रहेगा। आपने न केवल ब्रिटिश प्रजाजन की इच्छा की अवहेलना की, बल्कि संसार की प्रजा-तंत्रवादी जातियों के साथ भी विश्वासघात किया है। एक तरफ़ तटस्थता की नीति पर चलने का बहाना करके स्पेन की प्रजातंत्र सरकार को धोका दिया गया, दूसरी तरफ़ मुसोलिनी और हिटलर फ़्रैंको को जिस क़दर लगातार सहायता देते रहे, उसमें आँखें मीची गईं। परिणाम यह हुआ कि स्पेन के प्रजातंत्रवादी अकेले रह गए। उनकी बाहर की सहायता पर प्रतिबंध लग गया, और उधर विद्रोहियों को लगातार मदद मिलती गई। फिर भी इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि स्पेन की प्रजातंत्र सरकार ने इस दशा में भी लगातार तीन साल तक फ़ैसिस्ट शक्तियों का जिस साहस के साथ मुक़ाबिला किया, वह इतिहास में चिरस्मरणीय घटना है। आज स्पेन-सरकार की शक्तियाँ बिखर गई हैं। उसके अधिकारी और प्रजा-तंत्रवादियों के समर्थक तथा सहायक फ़्रांस की सीमा में चले गए हैं। पर फ़्रांस से अधिक आशा नहीं की जा सकती। फ़्रांस-सरकार एक मुद्दत से मि० चैंबरलेन के हाथ का खिलौना हो रही है। स्पेन-प्रजातंत्रवादियों ने अब भी अपना यह इरादा प्रकट किया है कि उनकी लड़ाई का अभी अंत नहीं हुआ। भले ही आज देखने में जनरल फ़्रैंको विजयी मालूम होता हो, पर प्रजातंत्रवादी अपनी शक्ति संगठित करने में लगे हुए हैं। उधर फ़्रैंको ज़ोर से प्रजा का दमन कर रहा है। इस दशा में स्पेन में जो आग लगी हुई है, वह बुझने नहीं पाई है। अनुकूल अवसर पाकर वह फिर भड़केगी। यह समझना ग़लत होगा कि फ़्रैंको स्पेन में अपनी व्यवस्थित सरकार क़ायम कर सकेगा।

× × ×

६. राष्ट्रपति का चुनाव और कांग्रेस की एकता

श्रीयुत सुभासचंद्र बोस फिर राष्ट्रपति चुने गए। अब की बार उन्होंने चुनाव लड़कर यह पद प्राप्त किया है, अतः हरिपुरा-कांग्रेस के राष्ट्रपति सुभास बाबू से त्रिपुरा-कांग्रेस के राष्ट्रपति सुभास बाबू का पद विशेष गौरव-पूर्ण हो गया है। अब की बार उन्हें यह पद कांग्रेस-हाईकमांड या महात्मा गांधी की कृपा-विशेष के कारण नहीं मिला है, जैसा इस चुनाव के अवसर पर कुछ लोगों की तरफ़ से कहा गया, बल्कि कांग्रेस के बहुसंख्यक प्रतिनिधियों का विश्वास प्राप्त कर और कांग्रेस के दिग्गज नेताओं के विरोध का मुक़ाबिला करके उन्होंने प्राप्त किया है। कांग्रेस के इतिहास में इस चुनाव का बहुत बड़ा महत्त्व है। पिछले बीस वर्षों से हमारी राष्ट्रीय महासभा एक ही नीति, सिद्धांत और कार्य-प्रणाली का अनुसरण करती हुई स्वतंत्रता के मार्ग की ओर बढ़ती रही है। कांग्रेस की नीति और उसके सिद्धांत अब तक महात्मा गांधी की भावना और उनके आदर्श के अनुकूल रहे हैं। पर राष्ट्रपति के इस चुनाव से महात्माजी ने जो अर्थ निकाला है, उसमें आप कहते हैं कि अब कांग्रेस का बहुमत उनके सिद्धांतों का अनुयायी नहीं रहा। इसीलिये आप डॉ० पट्टाभि की हार को अपनी हार अर्थात् अपने सिद्धांतों के प्रति कांग्रेस के बहुमत का अविश्वास प्रकट करते हैं। और, इस कारण आपने अपने अनुयायियों के लिये यह भी स्वतंत्रता दे दी है कि वे चाहें, तो अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कांग्रेस से अलग कर सकते हैं। हम इनमें से एक भी बात स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। राष्ट्रपति के इस चुनाव से कांग्रेस के मूल-भूत सिद्धांतों में कोई अंतर नहीं आता, और न यह चुनाव कांग्रेस की नीति में भारी परिवर्तन करने का ही संकेत देता है। सुभास बाबू की इस विजय के कई कारण हैं, जिनमें एक तो श्रीयुत पट्टाभि के मुक़ाबिले उनकी बढ़ी हुई लोक-प्रियता है। दूसरे, सुभास बाबू और पं० जवाहर-लाल नेहरू, इन दो नेताओं की तरफ़ देश के नौजवानों का स्वाभाविक आकर्षण है। तीसरे, फ़ेडरेशन के मामले में श्रीयुत सुभास बोस ने अपने वर्ष-भर के कार्य-काल में जैसा रुख़ प्रकट किया, उसे राष्ट्र ने बहुत पसंद किया। कांग्रेस के बड़े नेता भी अब तक फ़ेडरेशन का विरोध करते रहे हैं, पर कुछ बातें ऐसी ज़रूर हुई हैं, जिनसे लोगों का ऐसा ख़याल हो गया कि हमारे अन्य नेता और ख़ासकर हाईकमांड इस हद तक फ़ेडरेशन का विरोध नहीं करते, जैसा सुभास बाबू करते हैं। यह सत्य है कि देश फ़ेडरेशन को स्वीकार करने के लिये किसी प्रकार तैयार नहीं। श्रीयुत सत्यमूर्ति के अब तक के वक्तव्यों से लोगों का यह शक ही बढ़ा है कि कांग्रेस के बुज़ुर्ग नेता किन्हीं शर्तों पर फ़ेडरेशन को स्वीकार कर लेंगे। इस दशा में लोग ऐसा राष्ट्रपति चुनना चाहते थे, जो फ़ेडरेशन के संबंध में किसी भी समझौते को स्वीकार करने के लिये तैयार न हो। सुभास बाबू की विजय का चौथा कारण यह है कि कांग्रेस का एक दल प्रांतीय कांग्रेस-सरकारों के कार्य को इतना प्रगतिशील नहीं मानता, जितना वह होना चाहिए। इसलिये उग्र विचारों के लोग वर्तमान कांग्रेस-मंत्रिमंडलों के कार्यों से सर्वथा संतुष्ट नहीं। और, चूँकि मंत्रिमंडल कांग्रेस-हाईकमांड द्वारा निर्धारित नीति पर चलते हैं, अतः कांग्रेस-हाईकमांड द्वारा समर्थन किए जानेवाले डॉ० पट्टाभि का उन्होंने विरोध किया। इसके अतिरिक्त गत हरिपुरा-कांग्रेस में सरदार वल्लभभाई पटेल ने कांग्रेस-समाजवादियों को जो फटकार बतलाई, उससे भी वे लोग क्षुब्ध थे। मि० एम्० एन्० राय के दल के लोग भी सरदार पटेल से असंतुष्ट हैं, तथा श्रीयुत नरीमेन और डॉ० खरे के साथ की गई अनुशासन की कार्यवाहियों का असर भी इस चुनाव पर हुआ। इन सब कारणों से श्रीयुत सुभास बोस को डॉ० पट्टाभि पर विजय प्राप्त हुई।

इसमें हम महात्मा गांधी के सिद्धांतों की कहीं भी हार नहीं पाते। यह स्वयं राष्ट्रपति सुभास बोस ने अपने वक्तव्यों में कहा है कि इस चुनाव का असर कांग्रेस की प्रणाली में कोई नया परिवर्तन न करेगा। कांग्रेस में अब तक जैसी एकता रही है, वैसी ही आगे रहेगी। इस दशा में कांग्रेस के अंदर से उसके एक दल का अलग हो जाना किसी भी दशा में हम राष्ट्र के लिये हितकर नहीं समझते। बल्कि इस समय, जब अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति दिनों-दिन गंभीर होती जा रही है, कांग्रेस की इस दल-बंदी को हम देश के सर्व-मान्य हित के लिये घोर अनिष्टकर समझते हैं। आशा है, हमारे नेतागण इस चुनाव-परिणाम को आवश्यकता से अधिक महत्त्व न देकर कांग्रेस की एकता को अक्षुण्ण बनाए रक्खेंगे।

× × ×

७. साक्षरता-आंदोलन

यू० पी० की कांग्रेस-सरकार को हम उसके लोक-हितकारी कामों के लिये कई बार धन्यवाद दे चुके हैं। उसका साक्षरता-आंदोलन इस देश के इतिहास में एक नवीन चीज़ है। कई स्वतंत्र देशों में इस तरह के आंदोलन हुए हैं, जहाँ की अशिक्षित जनता को शिक्षित बनाया गया है। पर हमारे देश में इस तरह के आंदोलन की इससे पहले कभी आवश्यकता नहीं समझी गई। जहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सरकार लोकमत का ठीक प्रतिनिधित्व करनेवाली हो, उसका यह पहला कर्तव्य होता है कि वह आम जनता की निरक्षरता दूर करे। भारत-जैसे देश में इसकी और भी आवश्यकता है, क्योंकि संसार के सभी सभ्य देशों की अपेक्षा यहाँ अशिक्षा अधिक है। यह निरक्षरता केवल सरकारी शिक्षालयों द्वारा दूर नहीं की जा सकती। क्योंकि सरकार के पास इतना कोष नहीं, जिससे वह प्रत्येक गाँव में पाठशाला खुलवा सके। प्रांतीय सरकारों को रुपए में दो आने से भी कम आर्थिक अधिकार प्राप्त हैं। इससे अन्य लोकोपयोगी कार्य करते हुए वह शिक्षा के लिये बहुत ही थोड़ी रक़म बचा सकती है। ऐसी दशा में यदि सर्व-साधारण को शिक्षित बनाना है, तो उसके लिये सार्वजनिक आंदोलन ही लाभकारी सिद्ध हो सकता है। जिसमें प्रत्येक शिक्षित आदमी अपना यह कर्तव्य समझे कि उसे अपने अशिक्षित भाइयों को लिखाना-पढ़ाना है। सब कामों को केवल सरकार के भरोसे पर ही छोड़ देना ठीक नहीं। जनता को स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना ज़रूरी है। यू० पी० की सरकार ने इस साक्षरता-आंदोलन की महत्ता को स्वीकार किया, और उसने यह चीज़ महसूस किया कि लोगों की निरक्षरता दूर करने का इससे सुलभ एवं उपयोगी और कोई साधन नहीं हो सकता कि जनता में इसका प्रचार किया जाय। अस्तु।

प्रत्येक शिक्षा-संस्था, अध्यापक और छात्रवर्ग ने साक्षरता-आंदोलन में भाग लेकर सर्व-साधारण की निरक्षरता दूर करने की प्रतिज्ञाएँ कीं। इससे दूसरे शिक्षित लोगों को भी प्रेरणा मिली, और जो काम लाखों रुपए ख़र्च करने से न होता, वह इस आंदोलन की बदौलत होने लगा। लोगों को शिक्षा देने की प्रतिज्ञा करनेवालों की संख्या हज़ारों तक पहुँची है। ये लोग केवल जन-हित और परोपकार-वृत्ति से अपने ग़रीब भाइयों को निःशुल्क शिक्षा देंगे। इस साक्षरता-आंदोलन से प्रौढ़-शिक्षा की प्रगति बहुत बढ़ गई है। यू० पी० के शिक्षा-सचिव बाबू संपूर्णानंदजी ने प्रांत में शिक्षा-सुधार के लिये जो क्रांतिकारी ढंग अख़्त्यार किया है, उससे वह अपने उद्देश्य में सफल होंगे, ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

× × ×

८. स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'

हिंदी-काव्य-कानन की यह अर्ध-विकसित कलिका असमय ही मुरझा गई! काल की कराल गति ने इसे सदा के लिये संसार से छीन लिया, और छीन लिया कविता का वह अनुपम भांडार, जो साहित्य-जगत् को इस प्रतिभामयी कवयित्री के जीवन की अभिलाषारूप में मिलनेवाला था। इस विदुषी लेखिका के जीवन का प्रत्येक पृष्ठ कवितामय था, और जब कि इसकी साहित्यिक प्रगति आश्चर्य-जनक रूप में इसे उन्नति की ओर ले जा रही थी, तब अचानक ही इसका स्वर्गवास हो गया!

श्रीमती रामेश्वरीदेवी का जन्म सन् १९१६ ई० में, उन्नाव-ज़िला-अंतर्गत बेथर-ग्राम में, श्रीमान् पं० उमाचरणजी शुक्ल के यहाँ, हुआ था। इनके पिता (पं० उमाचरणजी शुक्ल) तहसीलदार के पद पर कार्य करते थे। वह बड़े ही परोपकारी एवं धर्मात्मा व्यक्ति थे। उनकी रुचि काव्य की ओर विशेष थी, और उन्होंने स्वयं कई धार्मिक काव्य-पुस्तकें लिखीं। पिता की काव्य-प्रतिभा ने पुत्री के हृदय में भी काव्य-धारा प्रवाहित की। किंतु जब श्रीमती रामेश्वरीदेवी केवल ढाई वर्ष की थीं, तभी उनके पिता का देहावसान हो गया। पिता की मृत्यु के बाद माता की देख-रेख में उनकी शिक्षा-दीक्षा होने लगी, और थोड़े ही समय में हिंदी की प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर उन्होंने लखनऊ (नरही पर अपने ननिहाल में) आकर घर पर अध्यापकों से पढ़ना आरंभ किया। पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष की अवस्था में स्थानीय महिला-विद्यालय में नाम लिखाया, और चार-पाँच वर्ष तक वहीं पढ़ती रहीं।

बचपन से ही बालिका की काव्य-रुचि देखकर उनके मामा (पं० जनार्दनजी मिश्र) और उनकी बड़ी बहन श्रीमती इंद्रेश्वरीदेवी ने उन्हें बड़ा प्रोत्साहन दिया, और वह शीघ्र ही अपनी रचनाएँ 'माधुरी', 'सरोज', 'सुकवि' आदि पत्र-पत्रिकाओं में भेजने लगीं। इस उदयोन्मुखी कवयित्री की रचनाओं को प्रायः हिंदी के सभी पत्रों ने अच्छा स्थान दिया, और उन्हें उत्साहित किया।

कुछ समय बाद उन्नाव के सुप्रसिद्ध वकील स्वर्गीय पं० बालकृष्णजी शुक्ल ने, जो श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी' के चाचा लगते थे, उन्हें अपने यहाँ बुला लिया, और वह अपनी माता के साथ वहीं रहने लगीं। उन्नाव में उनके चाचाजी ने और भी प्रोत्साहन देकर कई कवि-सम्मेलनों में उनकी रचनाएँ भिजवाईं, जहाँ वह स्वर्ण-पदक तथा उपहारों द्वारा पुरस्कृत की गईं।

इसके उपरांत 'सुधा' में उन्होंने स्थायी रूप से अपनी रचनाएँ भेजना आरंभ कीं, और शीघ्र ही उनका उत्थान हुआ। वह प्रथम श्रेणी की महिला-कवयित्रियों में गिनी जाने लगीं, और कई बार 'विशाल भारत', 'विश्वमित्र' आदि पत्रों ने उन्हें यथेष्ट पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'

सन् १९२९ ई० के जून-मास में श्रीमती रामेश्वरीदेवी का विवाह लखनऊ में पं० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' के साथ हुआ। श्रीयुत 'अरुण' अपनी रचनाओं और भाव-पूर्ण कहानियों द्वारा हिंदी-जगत् में यथेष्ट प्रसिद्ध हैं। हमारी प्रतिभा शालिनी कवयित्री को सहचर भी कवि ही मिला, जो विरली ही किसी सौभाग्यशालिनी कवयित्री को मिलता है, और इस विवाह के उपरांत हमारी इस कवयित्री ने असाधारण रूप में उन्नति की। प्रतिभा, रचना-सौष्ठव, कल्पना-प्रवाह और प्रसाद-गुण उनकी रचनाओं की विशेषताएँ थीं, जिन्होंने अल्प काल में ही उन्हें उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया।

विवाह के बाद से ही श्रीमती रामेश्वरीदेवी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, और डॉक्टरों ने उन्हें 'प्लूरिसी'-नामक रोग से आक्रांत बतलाया। इलाज होने लगा, और वह मंसूरी-पहाड़ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली गईं; किंतु कविता लिखना उन्होंने यथावत् जारी रक्खा। रोग ने फिर भी उनका पीछा न छोड़ा, और लखनऊ वापस आने पर उनकी दशा और भी ख़राब हो चली। लखनऊ के प्रायः सभी प्रसिद्ध डॉक्टर, हकीम, वैद्य और चिकित्सकों ने उनका इलाज किया, परंतु उनकी दशा दिनोंदिन गिरती गई।

सन् १९३५ के सितंबर-मास की २१ तारीख़ को इस प्रतिभामयी कवयित्री ने अपनी माता, पति और परिवार को रोता छोड़कर स्वर्ग-यात्रा की! उसका शोक सारे साहित्य-जगत् का शोक है, और उसकी अनुपस्थिति की हानि हमारे हिंदी-जगत् की हानि है। परमात्मा उस दिवंगत आत्मा को शांति दें, यही हमारी प्रार्थना है।

ग्रामोपयोगी साहित्य

उद्यान
लेखक, श्रीशंकरराव जोशी, मूल्य १=), १॥=)

किसानों का क़र्ज़
लेखक, श्रीशीतलासहाय बी० ए०, मूल्य ~)

ग्राम-सुधार
लेखक, श्रीपं० अश्विनीकुमार शुक्ल बी० ए०, एल्-एल्० बी० मूल्य ॥=), १=)

गेहूँ की खेती
लेखक, श्री बी० एस्० निगम, मूल्य १), १॥)

हल्दी की खेती
लेखक, श्रीरामप्रसाद, मूल्य ।=), ॥)

खरबूज़े तथा तरबूज़ की खेती
लेखक, श्रीचारुचंद्र सान्याल, मूल्य ।), ।=)

किसानों की कामधेनु
लेखक, श्रीगंगाप्रसाद अग्निहोत्री, मूल्य ।=)

किसान कैसे उठें ?
लेखक, श्रीशीतलासहाय बी० ए०, मूल्य)॥

गाँव-सुधार कैसे हो ?
लेखक, श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी, मूल्य ॥), १)

आलू की खेती
लेखक, श्रीरामप्रसाद, मूल्य ॥), ॥=)

बैल (कहानी)
लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त, मूल्य ~)॥

हल्दी तथा अदरक की खेती
लेखक, श्रीचारुचंद्र सान्याल, मूल्य ।), ।=)

मिलने का पता — **गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीः

सुधा

सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक

मासिक पत्रिका

वर्ष १२, खंड १

श्रावण-पौष, ३१६ तुलसी-संवत (१९९५ वि०)

अगस्त-जनवरी, १९३८-३९ ई०

संपादक

सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(संपादक गंगा-पुस्तकमाला)

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

राजसंस्करण		साधारण संस्करण		सस्ता संस्करण	
वार्षिक मूल्य	१२)	वार्षिक मूल्य	६)	वार्षिक मूल्य	४)
एक प्रति का मूल्य	१)	एक प्रति का मूल्य	॥)	एक प्रति का मूल्य	।)
विदेश के लिये वार्षिक	१२)	विदेश के लिये वार्षिक	६)	विदेश के लिये वार्षिक	४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-
कार्यालय और गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या लेख	लेखक	पृष्ठ
१. अर्पण	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)	८२
२. आज सुखी मैं कितनी, प्यारे !	श्रीयुत 'बच्चन'जी	४२
३. आया-न आया	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	३२६
४. आह	श्रीदुलारेलाल भार्गव	१७१
५. उद्यान	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	५६८
६. एक जाति, एक भाषा, एक लिपि	श्रीदुलारेलाल भार्गव	५४
७. खेल	श्रीयुत ठाकुर गोपालशरणसिंह	६०३
८. गीत	श्रीयुत 'वचनेश'	४३४
९. चयन	श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त	२
१०. जाति-पाँति की जोंक ...	श्रीदुलारेलाल भार्गव	११२
११. देवि ! विदा दो	श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा	२१४
१२. दो गीत	श्रीयुत श्रीनिधि द्विवेदी	४६०
१३. नीराजना	कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए०	५६८
१४. परदेशी प्रियतम	कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक'	८३
१५. परिणाम	श्रीयुत आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव	६०८
१६. पावन प्रेमासव	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	५२१
१७. प्रपात	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	१०२
१८. प्रपात	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	३६६
१९. प्रियतम की स्मृति	श्रीदुलारेलाल भार्गव	१
२०. प्रेम-कहानी	श्रीयुत कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'	२३४
२१. भाग्य जागे	श्रीयुत पद्मकांत मालवीय	४६७
२२. भारतमाता !	श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त	६२३
२३. भिक्षुकी	श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' एम्० ए० (ऑनर्स)...	२७०
२४. मेरी अनुराधा !	श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न ...	६२०
२५. मोतियों का व्यापार	श्रीदुलारेलाल भार्गव	२६६
२६. युग-शासन	श्रीदुलारेलाल भार्गव	५६
२७. राष्ट्र-गीत	श्रीयुत 'रसिकेंद्र'	४००
२८. लोक-लोचन	श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	५६६
२९. वसंत	श्रीदुलारेलाल भार्गव	५६७
३०. विरह-वेदना	पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न	११३
३१. विष्णु-कांत !	श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०	६६
३२. वीतराग	श्रीआरसीप्रसादसिंह	३०१
३३. साक़ी से	साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी ...	४१६
३४. स्मृति	श्रीस्नेहलता बी० ए०	१७२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—गद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अधूरा मंदिर (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	५७६
२.	अध्यापक का सुधार	श्रीयुत कृष्णविनायक फड़के एम्० ए०	४७८
३.	अन्वेषण (गद्य-काव्य)	कुमारी सुशीला विद्यालंकृता	२७०
४.	अभिशाप (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	२१५
५.	अरे बाप रे ! (व्यंग्य-चित्र)	श्रीयुत शिक्षार्थी	४८६
६.	आजकल की सुंदरियाँ	श्रीयुत संतराम बी० ए०	६०४
७.	आयुर्भोग (कहानी)	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	२६
८.	इँगलिस्तानी या खिचड़ी बोली	डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी०	९८
९.	उपमा और असम	श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी	७८
१०.	एक बूँद आँसू (कहानी)	श्रीयुत कालीचरण चटर्जी एम्० ए०	४३०
११.	एडिटर कितना सच बोलता है ?	मिस्टर जंगबहादुरसिंह	६७
१२.	अंतःकरण-चिकित्सा	डॉ० दुर्गाशंकर नागर	८७
१३.	कर्मवीर कमाल (सचित्र-जीवनी)	पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट	५७०
१४.	कवि की खोपड़ी (व्यंग्य-चित्र)	श्रीयुत शिक्षार्थी	७२
१५.	किसानों की दिक़्क़तें	माननीय डॉ० सैयद महमूद	२७१
१६.	कुसुम		१३७, २५०, ३५४, ४५०, ५५२ और ६५५
१७.	कुंभ के अवसर पर हरद्वार में नागे साधु (सचित्र)	श्रीयुत एम्० पी० केदार	६६३
१८.	'कौंटे-रोंसों' में दशहरा (सचित्र)	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	५०३
१९.	गाँव	श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी	१६७, २६५ और ४४३
२०.	गुलाब के फूल (कहानी)	श्रीयुत रामशरण शर्मा	६१७
२१	गोमती-प्रपात (मसूरी) (सचित्र, भ्रमण)	प्रो० श्रीधर्मदेव शास्त्री	३८७
२२.	घसियारा (कहानी)	श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह	११४
२३.	चयन (सचित्र)	श्रीयुत वसंतकुमार, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी, श्रीयुत कुँवर सोमेश्वरसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत शिवदत्त चतुर्वेदी बी० ए०, श्रीयुत ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु', श्रीमती विद्या ठाकुर, श्रीचंद्रभूषणदेव, श्रीयुत रमेश वर्मा, कुमारी व्रजकुमारी, श्रीयुत गिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश', श्रीयुत श्रीनारायण श्रीवास्तव 'विभु', कुमारी विद्याकुमारी भार्गव, श्रीयुत श्यामलाल वर्मा 'जिगीषु', श्रीयुत चंद्रशेखर त्रिपाठी विशारद, कुमारी शांतिदेवी अरोड़ा विशारद, विदुषी, श्रीयुत रणवीरविहारी सेठ, श्रीयुत देवदत्त शास्त्री, साहित्याचार्य, एम्० ए०, श्रीयुत राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', श्रीयुत मंगलप्रसाद पांडेय, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद मिश्र, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
		सिनहा एम्० ए०, श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा', श्रीयुत महेंद्र, श्रीयुत मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट', श्रीयुत उमाशंकर तिवारी साहित्यालंकार, श्रीयुत दिलीपनारायणसिंह एम्० ए०, श्रीयुत ज्योतींद्रनाथ, कुमारी सुमित्रा पसरीचा, कुमारी नरेंद्रिनी राठौर, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', कुमारी कंचनलता सब्बरवाल 'सरिता' प्रभाकर, विदुषी, श्रीयुत चंद्रकुँवर वर्तवाल, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०, श्रीमती लज्जावती जैन, श्रीमती कमलादेवी जैन, श्रीयुत उमाशंकरसिंह, श्रीयुत सुरेंद्रदेव मिश्र 'कुसुम', श्रीयुत 'किशोर', श्रीयुत हरिमोहनलाल वर्मा 'मोहन', शांति गुप्ता 'प्रभाकर', श्रीमती इंदिरादेवी गुप्ता, श्रीयुत रामअधार जायसवाल और श्रीयुत ताराप्रसाद वर्मा ...	११६, २३५, ३४१, ४३५, ५३६ और ६३५
२४.	चातुर्वर्ण्य वेद-मूलक नहीं ...	श्रीयुत संतराम बी० ए०	१०३
२५.	छंदोगति की रूप-रेखा ...	श्रीयुत वचनेशजी	१७३ और ३२७
२६.	जमींदार और किसान ...	श्रीयुत महेशचंद्र बी० एस्-सी० (ऑनर्स), विशारद ...	६२६
२७.	जमींदारी-प्रथा की प्राचीनता और शुक्लजी	श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	४०६
२८.	जमींदारी-प्रथा की प्राचीनता के नाम पर	श्रीपं० रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	१६०
२९.	जवाब (कहानी)	श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०	४६६
३०.	जापान के किसान (सचित्र) ...	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, बी० ए०, एल्-एल्० बी०	२६७
३१.	जीवन के खेल (कहानी) ...	श्रीलतीफ़ुद्दीन अहमद	४०१
३२.	जो मैं ऐसा जानती (कहानी)	श्रीपं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५३०
३३.	तुलसीदास का पुनर्युग और उसके कुछ गुण-दोष ...	श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	३५ और २१६
३४.	दुराशा ! (व्यंग्य-चित्र) ...	श्रीयुत शिक्षार्थी	४१
३५.	दौलतपुर की यात्रा (सचित्र, भ्रमण)	अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए० ...	४६१ और ५६३
३६.	धारा (सचित्र, संपादकीय विचार)	... ...	१३८, २५१, ३५५, ४५१, ५५३ और ६५६
३७.	परिचय	श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल्० बी, श्रीयुत 'श्री०', श्रीयुत 'उमेश', श्रीयुत सी० एल्० मालवीय, श्रीयुत प्रेमनारायण टंडन, श्रीयुत कविराज मुरारीलाल प्राज्ञ, प्रजावैद्य, भिषग्भूषण, श्रीयुत विपिनविहारी वर्मा, श्रीयुत श्रीधरसिंह एम्० ए०, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत गयाप्रसाद शास्त्री, वैद्य और श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, बी० ए० (ऑनर्स) ...	१३१, २०६, ३५१, ४४६, ५४६ और ६४६
३८.	पशु-पालन	श्रीयुत श्रीराम शर्मा	५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या लेख	लेखक	पृष्ठ
३९. पूज्यपाद श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी (सचित्र, जीवनी)	श्रीयुत विद्यानंद	४१७
४०. बदला	श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा	७३
४१. बस, एकदम धावा बोल दो ! (कहानी)	श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए० ...	३१२
४२. भामती (कहानी)	अध्यापक श्रीशंकरदेव विद्यालंकार	८४
४३. भारतीय साहित्य के दो महाकवि (आलोचना)	श्रीयुत ब्योहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए० ...	६०९
४४. महाप्रलय की ओर	श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०	२२७
४५. मिस्टर जिन्ना (व्यंग्य-चित्र) ...	श्रीयुत शिक्षार्थी	२७६
४६. मीराबाई तथा गो० तुलसीदास का पत्र-व्यवहार	श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२७७
४७. मेरा मकान (सचित्र, हास्य) ...	श्रीगुलाबराय एम्० ए०	३६३
४८. योरप का आधुनिक वातावरण ..	पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट	४२६
४९. योरप में भारतीय	डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०	४३
५०. लीडर (कहानी)	श्रीयुत शिवशंकर याज्ञिक	१९५
५१. लुगानो (स्विट्ज़रलैंड) (सचित्र, भ्रमण)	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	६०
५२. विक्रम-शिला-विहार	श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी० ...	६३०
५३. विजय-तिलक (कहानी) ...	श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल० बी०	४७
५४. विद्यापति का विरह-वर्णन ...	श्रीयुत व्रजकिशोर मिश्र एम्० ए०	३८१
५५. विवाह और आधुनिक भावना	श्रीयुत ललिताप्रसादजी सुकुल एम्० ए०	३०९
५६. व्याख्यान-वाचस्पति (प्रहसन)	श्रीपं० ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'	२८१
५७. श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा (सचित्र, जीवनी)	श्रीयुत भुवनेश्वरप्रसाद झा बी० ए०, बी० एल्० ...	५२३
५८. श्रीरामकुमारजी वर्मा के एकांकी नाटक (आलोचना) ...	श्रीयुत सत्यप्रसाद थपलियाल	५०७
५९. सभापति का अभिभाषण ...	श्रीयुत पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर ... ३७१ और	४८१
६०. साधनाकार (आलोचना) ...	श्रीयुत आत्मानंद मिश्र एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, विशारद	२०४
६१. सुधा-चित्रावली	... ... १६३, २६१, ३३७ और	६५१
६२. सृष्टि-रचना में प्रयोजन ...	श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० १८१, ३१७, ४१० और	५१४
६३. संघ-शासन-योजना (व्यंग्य-चित्र)	श्रीयुत शिक्षार्थी	२२९
६४. स्वर्गीय पंडित मयाशंकर याज्ञिक (जीवनी)	प्रोफ़ेसर दीनदयाल गुप्त एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	३०३
६५. स्त्री का समाजवाद या पति की विपत्ति (व्यंग्य-चित्र) ...	श्रीयुत शिक्षार्थी	६३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या लेख		लेखक		पृष्ठ
६६. हम और तुम	...	श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा ...	...	६१४
६७. हम ग़ुलाम क्यों हैं ?	...	श्रीयुत जयचंद्र विद्यालंकार	...	३
६८. हिम-हास (गद्य काव्य)	...	श्रीप्रो॰ रामकुमार वर्मा एम्॰ ए॰	...	५०
६९. हिंदुस्थानी (व्यंग्य-चित्र)	...	श्रीयुत शिक्षार्थी	...	३६६
७०. हिंदोस्तानी एकेडेमी. संयुक्तप्रांत (प्रयाग) (सचित्र)	...	श्रीभारतीय एम्॰ ए॰	...	८१

चित्र-सूची

क—रंगीन

(आर्ट पेपर पर)

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	किसान का धन (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत मनोरथप्रसाद जोशी ...	५६७
२.	कुमारी निवेदिता मित्रा 'कनक' (दुरंगा)	७५
३.	कुमारी लज्जा महाजन (दुरंगा) ...	५२२
४.	कुमारी व्रजकुमारीजी (दुरंगा) ...	१३०
५.	कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी॰ ए॰ (दुरंगा)	६१६
६.	कुँवर सरदारीलाल चोपड़ा (नववधू-सहित) (दुरंगा)	६६
७.	खेत की ओर (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह	३६६
८.	ग्राम-सुधार-संबंधी एक सभा में (दुरंगा)	४६१
९.	तांडव-नृत्य (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह	२६६
१०.	देशरत्न ऑनरेबुल डॉ॰ कैलासनाथ काटजू (दुरंगा)	४६०
११.	नव-दंपति (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह	४६७
१२.	पुष्प (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह	१७१
१३.	प्रांत-पति श्रीमोहनलालजी सक्सेना (दुरंगा)	४१६
१४.	प्रियतम की स्मृति (तिरंगा)—[चित्रकार, श्रीयुत कमलाशंकरसिंह ...	१
१५.	प्रो॰ गनपतराय एम्॰ ए॰ तथा श्रीमती गोपालदेवी (दुरंगा) ...	६७
१६.	प्रो॰ सत्यकेतुजी विद्यालंकार और श्रीमती सुशीलादेवी शास्त्री (दुरंगा) ...	६१७
१७.	बालक ईसामसीह और उनकी माता (दुरंगा)	६०
१८.	राष्ट्र-गौरव माननीय डॉ॰ सैयद महमूद (दुरंगा)	३५
१९.	लखनऊ - ज़नाना - पार्क की कुछ सदस्याएँ (दुरंगा)	५२३
२०.	विद्वद्वर पं॰ गिरीशजी तिवारी (दुरंगा)	३४
२१.	विद्वद्वर पं॰ प्रजापतिजी मिश्र (दुरंगा)	३४
२२.	श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता (दुरंगा)	६१
२३.	श्रीयुत कर्णसिंहजी केन (दुरंगा) ...	७४
२४.	श्रीयुत कैलासचंद्रजी बी॰ एस्-सी॰ और श्रीमती कौशल्यादेवी (दुरंगा)	१३१
२५.	श्रीयुत बाबूरावजी विष्णु पराड़कर (दुरंगा)	४१७
२६.	श्रीशशिभूषणजी गुप्त (दुरंगा)	२०३
२७.	सेठ लक्ष्मीपतिजी सिंहानिया और सेठ रामरत्नजी गुप्त (दुरंगा) ...	३००
२८.	स्व॰ मयाशंकरजी याज्ञिक (दुरंगा)	३०१
२९.	स्वर्गीय रायबहादुर श्रीमुकुंदलालजी गुप्त 'लाल' (दुरंगा)	२०२
३०.	स्वीस-स्वर्ग लुगानो (तिरंगा) ...	५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख—व्यंग्य

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	अरे बाप रे !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	४८६
२.	कवि की खोपड़ी—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	७२
३.	दुराशा—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	४१
४.	मिस्टर जिन्ना—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	२७६
५.	संघ-शासन-योजना—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	२२६
६.	स्त्री का समाजवाद या पति की विपत्ति—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	६३४
७.	हिंदुस्थानी—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी	३९९

ग—सादे

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	अध्यापक विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०	४९२
२.	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ...	३०
३.	आलइंडिया रेडियो (लाहौर) में 'इनेरा' खेल	१६३
४.	एक हिंदी-नाटक का दृश्य	६५४
५-८.	कर्मवीर कमाल-संबंधी ४ चित्र ५७०, ५७३, ...: ५७५ और	५७६
९.	करसियांग	३६६
१०.	कलाकार	२९८
११.	कालिंपोंग	३६३
१२.	किसान	२९८
१३.	कुमारी कमलादेवी	६५३
१४.	कुमारी कंचनलता सब्बरवाल प्रभाकर, विदुषी	४४०
१५.	कुमारी विद्याकुमारी भार्गव ...	२३५
१६.	कुमारी विमलादेवी	१६६
१७.	कुमारी शांतिदेवी अरोड़ा विशारद, विदुषी	२४२
१८.	कुमारी श्यामा जुत्शी बी० ए० ...	२६१
१९-२३.	कुंभ के अवसर पर हरद्वार में .. नागे साधु-संबंधी ५ चित्र ...	२९३-२९५
२४-२६.	'कौंटे-रोसो' में दशहरा-संबंधी ३ चित्र	५०४-५०६
२७.	गोमती-प्रपात (मसूरी)	३९०
२८.	जाति-पाँति-तोड़क दंपति	१६५
२९.	डॉ० एम्० डी० 'तासीर' द्वारा प्रस्तुत 'कशीदए-अव्वल'-नामक नाटक का एक दृश्य	२६४
३०.	डॉ० दुर्गाशंकर नागर	८७
३१.	डॉ० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्०	४२
३२.	डॉ० सत्यप्रकाश डी० एस्-सी० ...	१८
३३.	तीस्टा का पुल	३६७
३४.	'दूर के ढोल' और 'अंतिम युद्ध' ...	३३८
३५-४५.	दौलतपुर की यात्रा-संबंधी ११ चित्र	५९४-६०१
४६.	नव-दंपति	६५४
४७.	पं० ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु'	१२६
४८.	प्रपात के कुछ यात्री साथी	३८८
४९.	प्रो० हंसराज के 'देहात की शादी'-नामक नाटक का एक दृश्य	२६३
५०.	बैडमिंटन-विजयिनी महिलाएँ ...	६५१
५१.	मकान का अग्रभाग	३९४
५२.	मकान का पृष्ठभाग	३९५
५३.	महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...	४९३
५४.	महात्मा हंसराज	५५८
५५.	महामहोपाध्याय रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा	९५
५६.	मिस्टर जंगबहादुरसिंह	९७
५७.	रावराजा रायबहादुर डॉ० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० ...	९९
५८.	राष्ट्र-गौरव, माननीय डॉ० सैयद महमूद	२७१
५९.	लाइब्रेरी-बाज़ार (मसूरी) ..	३९२
६०.	लाहौर की 'संगीत और नाट्य-समिति' के उद्घाटन-दिवस पर खेले गए नाटक का एक दृश्य	२६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
६१-६६.	लुगानो (स्विट्ज़रलैंड)-संबंधी ६ चित्र	६१-६४
६७.	लेफ्टिनेंट श्रीरत्ननारायण मुल्ला (लखनऊ) तथा श्रीमती लीलादेवी हूण (कानपुर)	१६५
६८.	व्यापारी	२६६
६९.	श्रीकपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद्' ...	१२८
७०.	श्रीके० के० बाटलीवाला एम्० आई० एस्० ई०, ए० आई० एन्० ए० ...	४६६
७१.	श्रीचंद्रभूषणदेव	१२७
७२.	श्रीडॉक्टर राय राजेश्वरबली ...	९२
७३.	श्रीदरबारीलाल 'सत्यभक्त'	१२६
७४.	श्रीनीलकंठ-बापूराव और कुमारी कमला-पति वर्धन	३३९
७५.	श्रीपृथ्वीपालसिंह एम्० ए०, जे० डी०, बी० ए०, एल्-एल्० बी० ...	२६७
७६.	श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी ...	७८
७७.	श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी	२६६ और ४४४
७८.	श्रीप्रो० रामकुमार वर्मा एम्० ए० ...	६०
७९.	श्रीभूतनाथजी सरकार	३६५
८०.	श्रीमती कमलादेवी जैन	५४०
८१.	श्रीमती कलावतीदेवी 'बच्ची' ...	६२२
८२.	श्रीमती कृष्णा तथा श्रीहठीसिंह बैरिस्टर	३४०
८३.	श्रीमती लज्जावती जैन	५३९
८४-८६.	श्रीमान् आर० एस्० नारायण स्वामी (३ चित्र) ... ४१६, ४२१ और	४२३
८७.	श्रीमान् रामेश्वरदयालजी मंत्री तथा श्रीमती धर्मदारानी मंत्री हिंदीरत्न ...	१६४
८८.	श्रीमान् स्वामी रामतीर्थजी	४१८
८९.	श्रीमुरारीलाल केडिया	४६४
९०.	श्रीयुत कमलाशंकरसिंह	६२२
९१.	श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०	१८२
९२.	श्रीयुत ठाकुर श्रीनाथसिंह	११४
९३.	श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०	३१३
९४.	श्रीयुत नीलकंठ तिवारी बी० ए०, साहित्यरत्न	६२०
९५.	श्रीयुत परिपूर्णानंदजी वर्मा	७४
९६.	श्रीयुत प्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०	४८
९७.	श्रीयुत 'बच्चन'जी	४२
९८.	श्रीयुत बाबू मैथिलीशरण गुप्त ...	१८२
९९.	श्रीयुत बाबू शिवप्रसादजी गुप्त ...	१५२
१००.	श्रीयुत राजगोपाल नायडू तथा श्रीमती नलिनी कैकिनी	३३९
१०१.	श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०	६६
१०२.	श्रीयुत राय कृष्णदासजी	१०५
१०३.	श्रीयुत विपिनविहारीजी वर्मा ...	५१४
१०४.	श्रीयुत सत्यपाल विद्यालंकार और उनकी धर्मपत्नी	२६२
१०५.	श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी०	६३०
१०६.	श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास ...	६३
१०७.	श्रीयुत संतराम बी० ए० ..	१०३
१०८.	श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	४०६
१०९.	सर तेजबहादुर सप्रू	६६
११०.	सरस्वती-संपादक स्व० आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ...	४९५-५०१
१११.	साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न	३३०
११२.	सुप्रसिद्ध कलाविद् राय कृष्णदासजी	४९३
११३.	स्व० चाँदरानीजी	१२८
११४.	स्व० बाबू भैरवप्रसादजी	१६०
११५.	स्व० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ...	५९५
११६.	स्व० सर विश्वेश्वरनाथ श्रीवास्तव ...	१५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० गोविंदवल्लभ पंत

के रत्न

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १॥), सजिल्द २)

राजमुकुट

(सचित्र, मौलिक नाटक)

इसकी विशेषता है इसका मनोवैज्ञानिक विकास। हिंदी-नाटकों में यह पहला अवसर है, जब रसावेश को स्थायी रखते हुए कथानक की मर्यादा को नष्ट नहीं होने दिया गया है। मेवाड़ की वीरांगना पन्ना का कथानक। अनेक जगह सफलता-पूर्वक खेला जा चुका है। छठा संस्करण। मूल्य ॥|), सजिल्द १।)

वरमाला

(सचित्र, मौलिक नाटक)

यही प्रथम हिंदी-नाटक है, जिसे रेडियो में ब्रॉडकास्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका अनुवाद गुजराती और तेलगू में भी हो चुका है। चारु चित्रों से सुसज्जित। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मदारी

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

प्रस्तुत पुस्तक में पहाड़ियों के जीवन की छटा और पर्वतराज हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का पूरा आभास मिलेगा। इस उपन्यास का नायक एक पहाड़ी किसान का बेटा 'नवाब' और नायिका लोहार-किसान-कन्या कुमारी तितली। नवाब धन की प्राप्ति के लिये मदारी बनता है, फिर दवाफ़रोश होकर 'ताइचो'-नामक चाक़ूवाली के चक्कर में फँसकर हवालात की हवा खाता है। वह अपने जीवन के स्वप्न को सच्चा करता है। मूल्य १॥|), सजिल्द २।)

प्रतिमा

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी की लेखन-शैली ने हिंदी-संसार में धाक-सी जमा ली है। उन्हीं की शुभ लेखनी का यह एक ज्वलंत उदाहरण, उपन्यास के रूप में, पाठकों के सामने पेश है। पंतजी कुशल कलाकार हैं। आपकी लेखनी ने इस उपन्यास को बहुत सुंदर बनाया है—सभी अंगों से मनोहर, शिक्षा से परिपूर्ण। मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

संध्या-प्रदीप

(कहानियाँ)

पंतजी की ये मौलिक कहानियाँ ऐसी परिमार्जित, सरल भाषा में लिखी गई हैं कि अत्यंत रोचक हो गई हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

अंगूर की बेटी

प्रस्तुत पुस्तक रोचक और सामाजिक नाटक है। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथोंहाथ बिक रहा है !

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निधूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा क्रांतिकारी उपन्यास

प्रश्न

कर्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

—— :o: ——

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं । हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए । मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता——

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु-पालन

[लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार]

भारतवर्ष में आजदिन बच्चों की दशा कितनी शोचनीय है, यह किसी भी शिक्षित मनुष्य से छिपा नहीं। आपको किसी बिरली ही सौभाग्यवती माता की ऐसी गोद मिलेगी, जिसके दो-एक अमूल्य लाल बाल-अवस्था में ही काल-कवलित न हो गए हों। जब हम दूसरे देशों से अपने देश की तुलना करते हैं, तो हमें भले प्रकार ज्ञात हो जाता है कि हमारे ही देश में सबसे अधिक बच्चों की मृत्यु होती है, और जो जीते भी हैं, उनमें अधिकांश रोगी, निर्बल और कम आयुवाले होते हैं। इस शोचनीय स्थिति में भारत के जातीयता-रूपी महल को सुदृढ़ बनाने के लिये यह परमावश्यक है कि उसकी नींव को सुदृढ़ बनाया जाय। प्रत्येक जाति की नींव उसके बच्चे हैं, और उन्हीं पर देश तथा समाज का भविष्य निर्भर है।

यदि किसी देश की माताएँ चतुर होंगी, गर्भाधान के समय से अपने स्वास्थ्य की रक्षा करेंगी, और जन्म के बाद बालक का यथोचित लालन-पालन करेंगी, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उस देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। इसके विपरीत यदि हम अपने बच्चों की ओर से लापरवाही करेंगे, तो हमारे अधःपतन में कोई भी संदेह नहीं रहेगा। जब हम माताओं और बालकों को अच्छा बनाने का बिलकुल प्रयत्न नहीं करते, तो हमें सभ्य कहलाने का भी कोई अधिकार नहीं। ऐसी दशा में हमें अन्य सभ्य देशों की बराबरी करने की आशा छोड़ देनी चाहिए।

इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !   नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक

हिंदी के क्रांतिकारी लेखक

श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उनके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहख़र्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन की मौज

[राष्ट्रीयता से भरा काव्य]

लेखक, पींजरे कौ पंछी। प्रस्तुत पुस्तिका लेखक ने पटना-जेल में लिखी थी। रचना ब्रजभाषा में की गई है। कालिदासजी ने मेघ को संबोधन कर अपना काव्य लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। काव्य-प्रेमियों को यह पुस्तिका अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।)

इस पुस्तक के संबंध में विद्वद्वर कन्हैयालालजी पोद्दार लिखते हैं—

चतुर्वेदीजी की 'मन की मौज' पाठकों के भी मन की मौज बढ़ानेवाली है। 'रेलदूत' शीर्षक कविता में सत्याग्रह के समय का स्वदेश-भक्त युवकों का बड़ा ही हृदयग्राही, भाव-पूर्ण, किंतु यथार्थ चित्र अंकित किया गया है। भारतमाता का पूर्वकालीन आदर्श, पूर्ण गौरव एवं विदेशी शासकों के क्रूर शासन का ऐतिहासिक दिग्दर्शन बहुत ही चित्ताकर्षक किया गया है। अंत के वर्णन में रेल द्वारा कारुणिक संदेश-प्रेषण में 'रेलदूत' के नाम की सार्थकता का जो निर्वाह किया गया है, वह भी अत्यंत उपयुक्त है। काव्य की दृष्टि से भी देखा जाय, तो प्रायः बहुत-से वर्णन बड़े विचित्र और चामत्कारिक हैं, जैसे—

"करुण कहानी सुनि उठी तेरे हिय में हूक ;
गरम उसाँसें लेति का ताई सों तू कूक ?"

इसमें नवीन उत्प्रेक्षा का चमत्कार बड़ा सुंदर है। भाषा की दृष्टि से भी ब्रजभाषा पर लेखक का अधिकार प्रमाणित होता है। पुस्तक बहुत ही सुंदर, समयोपयोगी है। नवयुवकों के स्वदेश-प्रेम के उत्साह-वर्धन के लिये ऐसी पुस्तकों की इस समय परमावश्यकता है। मैं इसकी रचना के लिये पं० श्रीरमावल्लभ चतुर्वेदी को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

—कन्हैयालाल पोद्दार

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान का एक अद्भुत उपन्यास

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक डॉस्टॉयविस्की का एक उपन्यास

अनुवादक श्रीपं० छबिकृष्ण गुट्टू और कविराज विद्याधर विद्यालंकार

पृष्ठ-संख्या ५०० ; मूल्य केवल ३), सजिल्द ३।।)

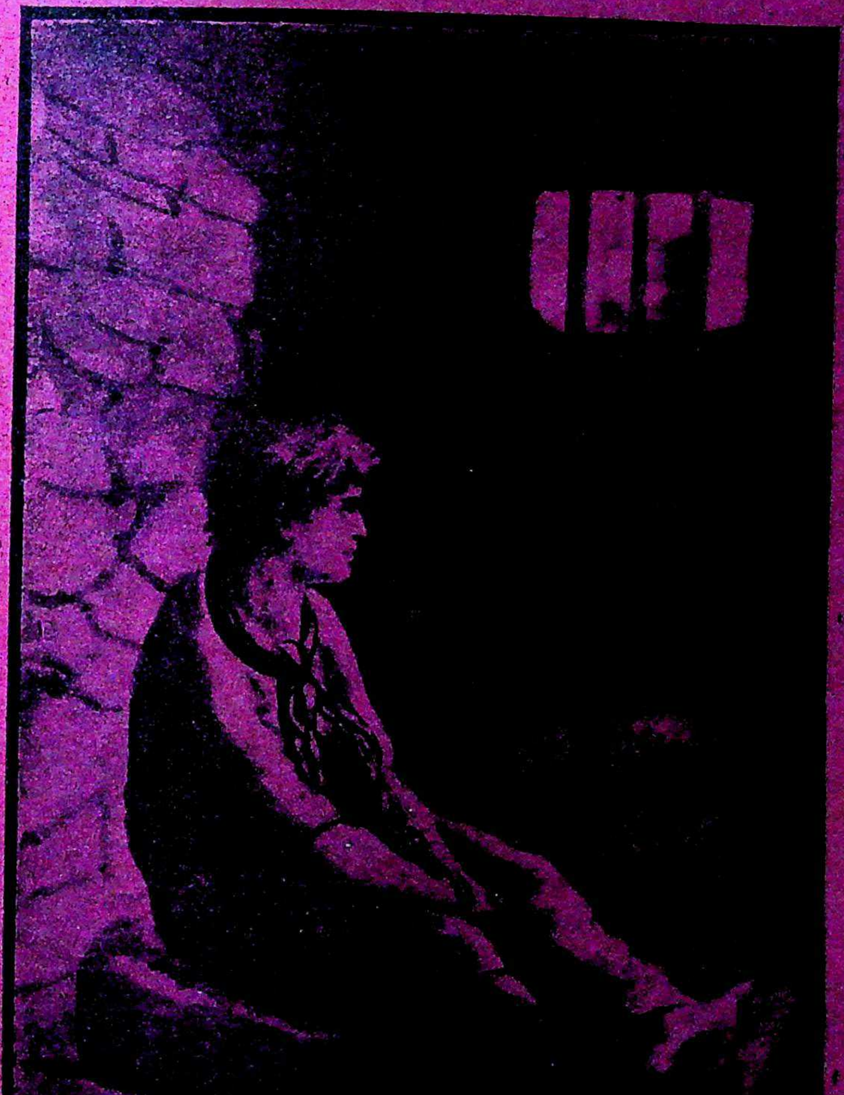

डॉस्टॉयविस्की रूस के एक क्रांतिकारी उपन्यास-लेखक हैं। आप प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक टॉल्स्टॉय के समकालीन हैं। सन् १८४९ ई० में आप पर यह अपराध लगाया गया कि तुम षड्यन्त्रकारियों के प्रवर्तकों में हो। यह पकड़े गए, और अन्य २१ अपराधियों के साथ इन्हें फाँसी की सज़ा का हुक्म दिया गया। यह ज़ारशाही के ज़माने की बात है। अस्तु। फाँसी के लिये यह चौक में लाये गए। लिए गए थे। इनकी आँखें बंद कर दी गईं, और गोली चलाने की आज्ञा भी दी जा चुकी थी कि इतने में एक घुड़सवार ने आकर कहा कि तुम्हें साइबेरिया में देश-निकाले का दंड दिया गया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य के हृदय में क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उनका उन्होंने स्वयं अनुभव किया, और लेखक ने इसमें वही अंकित किया है। पाठक जिस प्रसंग को पढ़ता है, वहीं का एक पात्र अपने को समझने लगता है। रंगीन और सादे चित्र तो सोने में सुगंध का काम करते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टर्की

का

मुस्तफ़ा कमाल पाशा

अनुवादक

हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक

श्रीयुत शिवनारायण टंडन

पुस्तक में क्या है ?

(१) शाहों और सुलतानों के राजत्व-काल में टर्की की क्या दुर्दशा थी, इसका ऐसा दुःखद वर्णन है कि आप पढ़कर रो उठेंगे !

(२) गत योरपीय महायुद्ध में टर्की को जर्मनी का साथ क्यों देना पड़ा, क्या-क्या मुसीबत झेलनी पड़ी और फिर किस तरह ख़ुदा-ख़ुदा करके छुटकारा मिला, इसका रोमांचकारी वर्णन है ।

(३) कमाल पाशा ने अपनी मातृभूमि टर्की को घर और बाहर के शत्रुओं से कैसे बचाया, इसका पूरा अहवाल है ।

(४) कमाल पाशा का पूरा जीवन-चरित्र है, जिसमें उसके ग़रीब माता-पिता से लेकर उसके क्रांतिकारी साथियों और उसकी रूपवती, गुणवती पत्नी का पूरा परिचय है । कमाल के अजीबोग़रीब वैवाहिक जीवन की कहानी पढ़ते-पढ़ते आप कभी रोने लगेंगे, कभी हँसने लगेंगे, और कभी ग़ुस्से से सुर्ख़ हो जायँगे ।

(५) कमाल पाशा डिक्टेटर कैसे बना, उसने अकेले टर्की-से टूटे-फूटे साम्राज्य को किस तरह उठाकर एक उन्नतिशील, बलवान् राष्ट्र बना दिया, इसका पूरा वर्णन पढ़कर पाठकों का जी बाग़बाग़ हो जायगा ।

(६) पुनर्निर्माण के परिच्छेद में वर्तमान उन्नतिशील टर्की का जीता-जागता चित्र देखने को मिलता है । राष्ट्रीय भावना, आर्थिक उन्नति, सामाजिक क्रांति, पर्दे का दूर होना, शिक्षा का प्रचार होना, स्त्रियों को समानता के अधिकार मिलना वग़ैरह सभी बातों का रोचक और शिक्षाप्रद हाल सविस्तर लिखा गया है ।

इस पुस्तक को पढ़कर आप घर बैठे कमाल पाशा और टर्की के बारे में सारी ज्ञातव्य बातें जान सकते हैं । पुस्तक को पढ़ने में बिलकुल उपन्यास का मज़ा आता है । अँगरेज़ी में छ मास के अंदर इस पुस्तक के चार संस्करण निकल चुके हैं, हिंदी में भी इस पुस्तक की बहुत बड़ी संख्या बिक चुकी है । जल्दी कीजिए, ऑर्डर अभी से लिखा दीजिए, वरना पछताना पड़ेगा, दूसरे संस्करण के लिये इंतज़ार करना होगा । बढ़िया काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य १।।), सजिल्द २)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन तीनो बातों में

१ ख़र्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर

बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी

पर

आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी।

क्यों ?

इसलिये कि १—इसका ख़र्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है।
२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है।
३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए।

स्वदेशी की एक नई योजना
घातक दुर्घटना-पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए!

एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712

स्त्रियाँ जब जागती हैं

तो ध्यान आकर्षित हो जाता है। आज भारत की प्रत्येक श्रेणी और समाज की स्त्रियाँ चाय को अत्यंत उपयुक्त पारिवारिक पेय मानती हैं। किफ़ायत, आनंद और उपयोगिता—यह सब तरह से गृहस्थी के लिये आदर्श चीज़ है। अपने परिवार-भर को चाय में सम्मिलित होना सिखाइए।

एकमात्र पारिवारिक पेय

भारतीय चाय

चाय तैयार करनेका तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइए। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिए। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिए। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिए। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिए। इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइए।

इंडियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

शुभ

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बे हिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने खुद कहा है (देखो गीता, १६।२३) यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

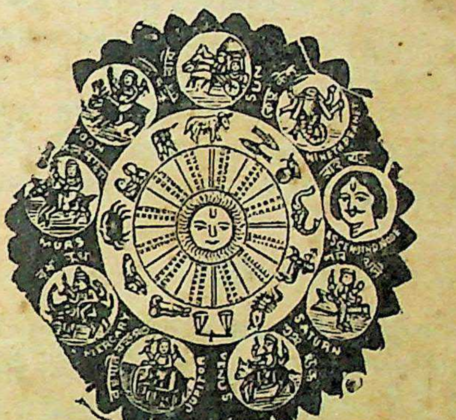

वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥=)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥=)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया! असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार भारी इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायापलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा-इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-सुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। टंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल बर्क़ी शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रबधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रबधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस, अपूर्व शक्तिदाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्रगुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामविहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आएगा। २८ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नजला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन-संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च-सहित ५॥) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल ९७
२. सूनी कुटी (कविता)—[लेखिका, कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए० ... ९८
३. विवाह—[लेखक, श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०... ९९
४. कालिदास (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... १०५
५. अंतर ! (व्यंग्य-चित्र) १०६
६. प्रेम का बलिदान (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद एम्० ए० ... ११०

हज़ारों निकम्मों को जवाँमर्द बनानेवाला
मदनमस्त-तिला (रजिस्टर्ड)
युवावस्था की भूलों के कारण उत्पन्न होनेवाली गुप्तेंद्रिय की सुस्ती, ढीलापन, नसों की हीनता तथा बाँकापन को दूर कर इंद्रिय को दृढ़ बनाता है। परीक्षा अवश्य कीजिए। मूल्य बड़ी शीशी २), छोटी शीशी १); डाक-खर्च अलग। 'जीवन-सुधार'-नामक पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।
पता—गो० पं० रामलाल वैद्यशास्त्री
जबलपुर (सी० पी०)

पे लि के न
Pelican
हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन
इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।
इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।
यह सरलता से खोली जा सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

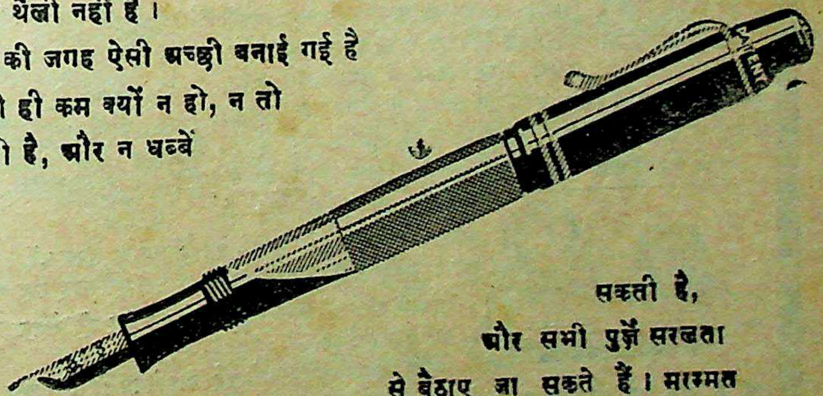

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है।
साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।
स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—
पारदर्शक
गौथेर वागनेर हानोवर
Pelican
सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।
लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. ठाकुर गोपालशरणसिंह की कविता (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत रामचंद्र टंडन एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ११५

८. पनिहारिन (गद्य काव्य)—[लेखक, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... १२०

९. आधुनिक हिंदी के निर्माता—[लेखक, श्रीआत्मानंद मिश्र एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, विशारद ... १२१

१०. राजा-रानी (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' ... १३०

आपका भविष्य

संवत् १९९६ का भविष्य-फल, व्यापार की तेज़ी-मंदी, लाभ-ख़र्च, विवाह, उपनयन के मुहूर्त तथा अन्य ज्योतिष-विषयों से भरपूर

पंचांग—बिलकुल मुफ़्त !

अपने गाँव के सिर्फ़ पाँच सज्जनों के पूरे पते भेजकर मुफ़्त मँगवाइए।

मदनमंजरी फ़ार्मेसी, जामनगर

नपुंसकता के लिए जर्मनी क्रीम

यह उन पुरुषों के लये है जो किसी वजह से अपना यौवन खो चुके हों और अपने विवाहित जीवन का जी भर कर आनन्द उठाना चाहते हों, तो वे इस क्रीम का सेवन करें। इसके सेवन से आवश्यक समय पर भी शरमिन्दा होने का समय नहीं आयेगा। एक बार अवश्य प्रयोग में लाऐं। मूल्य केवल २) दो रुपया।

स्त्रियों के लिए जर्मनी क्रीम—यह क्रीम उन स्त्रियों के लिये आवश्यक है जो किसी भयानक बीमारी की वजह से अपने विवाहित जीवन को आनन्दित न बना सकती हों, जिनके लिये गृहस्थ का जीवन दुखमय हो, जिनके अपने स्वामी के साथ सदैव लड़ाई झगड़े होते हों। बस इस क्रीम को एक सप्ताह सेवन करें। इसके सेवन से बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री भी युवती के समान मालूम होगी। मूल्य १)

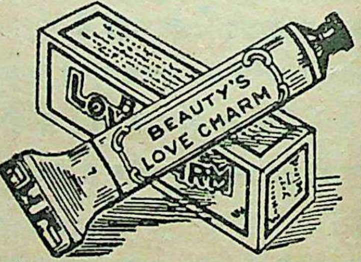

गर्भ निरोधक रबड़ की थैली—अधिक संतान से बचें, आपनी प्यारी स्त्री को शीघ्र ही कुरूप और बृद्ध न होने के लिये इन थैलियों का सेवन करें। आतशक और सुजाक आदि भयानक बीमारियों से आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगी।

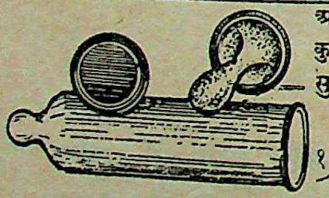

पतली रबड़ की थैली—जो केवल एक बार ही सेवन हो सके मूल्य १) रु० प्रति दर्जन।

मोटी रबड़ की थैली—जो कई बार सेवन हो सके और भारतवर्ष की गर्मी में पांच वर्ष तक खराब न हो। मूल्य केवल २॥) प्रति दर्जन।

कामा को०, : : : लाहौर रोड़. : : : अमृतसर।

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त। इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है। बाल कम पका है, तो ५); चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

११. भारतीय सैनिक विभाग में जाति-मूलक भेद-भाव—[लेखक, श्रीयुत एस्० पी० केदार १३१
१२. रजपतिया (कहानी)—[लेखिका, कुमारी सरोजिनी तिवारी 'सरोज' १३७
१३. महात्मा केशवचंद्र सेन—[लेखक, श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा १४५
१४. प्यारा हिंदुस्थान (कविता)—[लेखक, श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त १५१
१५. राष्ट्र-भाषा के ख़िलाफ़ एक बवंडर—[लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण भारतीय साहित्य-रत्न १५३
१६. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत करुणकुमार, श्रीयुत मंगलाप्रसाद पांडेय, कुमारी 'अज्ञेय' बी० ए०, श्रीमती राजरानी चौहान, श्रीयुत रामेश्वरप्रसाद दुबे 'मंजु', कुमारी सुशीला विद्यालंकृता, कुमारी विद्याकुमारी भार्गव, कुमारी

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध । सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है ।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉक्स नं० ६८२५

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ास्फ़ोरस क्रीम

गुह्यांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख़्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है । ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है । न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का खयाल । अधिक प्रशंसा व्यर्थ । यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी । मूल्य केवल २); डाक-महसूल ।=)

पता——मैनेजर ग्लोब फ़ार्मेसी, ग्लोब बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

स्वरूपकुमारी काक 'करुणा' और श्रीमती प्रभावती भटनागर ... १६३

१७. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत श्यामकृष्ण कोहली ऐडवोकेट, श्रीयुत पृथ्वीपालसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० और 'श्री' १७२

पृष्ठ

१८. कुसुम १७७

१९. धारा १७८

२०. सुधा-चित्रावली १८६

श्वेत कुष्ठ की असली फ़क़ीरी जड़ी

इस जड़ी के एक रोज़ के तीन ही बार के लेप से सफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दाम वापस। इतमीनान न हो, तो एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। क़ीमत ३)

दमा-रोग की दवा—दाम ५)

स्वप्न-दोष की फ़क़ीरी जड़ी—दाम २)

गलित कुष्ठ या सुनबहरी—क़ीमत ७)

पता—वैद्यराज पंडित मथुरा पाठक

पो० मिथिला-मेडिकल हाल, नं० ५५५

दरभंगा

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. शंखासुर-वध—[मियाँ वसंतसिंह जागीरदार की कृपा से प्राप्त ... ६७

(ख) दुरंगे

२. डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्० ... ... १३६

३. श्रीयुत सेठ गोविंददासजी ... १३७

(ग) व्यंग्य

४. अंतर !—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी १०९

(घ) सादे

५. श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... १००

६. कुमारी विद्याकुमारी भार्गव १६८

७. रानी लक्ष्मीबाई तथा सी० एफ़्० ऐंड्रयूज़ १८६

८. श्रीमती सुल्तानसिंह १९०

९. अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन, दिल्ली १९०

१०. श्रीमती हामिदअली १९१

११. दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की बाहरी बैठक का एक दृश्य १९२

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

शेख ...... अली—मुहल्ला ...... अमृतसर।

ले०—कविराज हरनाम दास बी. ए., लाहौर।

श्रीचपलादेवी वैद्या का तिलिस्मी हीरा

वंध्याकारक दवा

अगर आपकी स्त्री, पुत्री, बहन, पड़ोसिन या किसी भी स्त्री को संतान हर साल होती हो, वह कमज़ोर हो, बच्चा जनने के कष्ट को बर्दाश्त न कर सकती हो, गर्भ गिराने के महापाप से बचना चाहती हो, तो आप उसे "श्रीचपलादेवी वैद्या" की "वंध्याकारक दवा" केवल ५ दिन सेवन कराएँ। इस दवा से गर्भ न रहेगा। स्त्री गर्भ गिराने के पाप से बचेगी, और आप पुण्य के भागी होंगे। मूल्य मय डाक-खर्च ४॥)

औरत ही औरतों के मर्ज़ को ठीक-ठीक समझ सकती है

स्त्री के गुप्त रोग का इलाज कराना हो, तो रोग का पूरा हाल साफ़ हिंदी में लिखकर भेजें। जवाब के लिये -) का टिकट भेजें।

पता—श्रीचपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बवासीर शर्तिया जड़ से आराम

महात्मा से प्राप्त एक अलभ्य और आश्चर्यजनक दवा

अर्श-अरि

खूनी या बादी, नई या पुरानी-से-पुरानी तथा अंदरूनी-बाहरी चाहे जैसी बवासीर क्यों न हो, जादू-असर 'अर्श-अरि' के एक बार के इस्तेमाल से दर्द, खुजली, टीस, सूजन, जलन, मवाद आना, खून का गिरना फ़ौरन् आराम होता है। ८ दिन में खराब-से-खराब बवासीर, नासूर, भगंदर बिना आपरेशन जड़ से शर्तिया आराम होता है। हज़ारों निराश रोगी अच्छे होकर अन्य रोगियों से इसके इस्तेमाल की सिफ़ारिश करते हैं। आराम न हो, तो दाम वापस। मूल्य २)

बहिरे भी सुनने लगे

विज्ञान का एक नया और आश्चर्यजनक ईजाद

बधिरतामारन

कान का बहना, जलन, भयानक दर्द, खुजली, फोड़ा-फुंसी, मवाद आना, नासूर, पर्दा खराब होना, कान में सायँ-सायँ, सीं-सीं, सीटी की तरह आवाज़ें आना, कम सुनना या एकदम न सुनना अथवा ज्वर के बाद या सर्दी से या कुनैन के दुर्व्यवहार से पैदा हुआ कैसा ही नया, पुराने-से-पुराना बहिरापन क्यों न हो, चमत्कारी 'बधिरता-मारन' के इस्तेमाल से शर्तिया आराम होता है। हज़ारों बहिरे इससे ठीक-ठीक और साफ़-साफ़ सुनने लगे। आराम न हो, तो दाम वापस। मूल्य २)

दुनिया के चार कोहनूर हीरे

स्तंभक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अपूर्व गुण को देखें। दो घंटे तक रुकावट पैदा करके ग़ज़ब ढा देती है। यह अनुभूत ओषधि है। क़ीमत ५१ गोली की शीशी की १) मात्र

महात्मा-प्रदत्त श्वेत कुष्ठ (सफ़ेदी) की अद्भुत बनौषधि, तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि आप सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों और विज्ञापनदाताओं की दवा कर निराश हो चुके हैं, तो इसे लगाकर आरोग्य हों, बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम। विश्वास न हो, तो -) का टिकट लगाकर शर्त लिखा लें। मूल्य २)

संतति-निग्रह (बर्थकंट्रोल)

ओषधि को प्रति माह दो-तीन बार व्यवहार करने से ही उस मास में गर्भ नहीं रह सकता। आपकी इच्छा हो कि गर्भ धारण कराया जाय, तो ओषधि व्यवहार करना बंद कर दें। गर्भ-धारण हो जायगा। ओषधि के व्यवहार करने से स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि नहीं होती। मूल्य एक वर्ष के सेवन योग्य की २), दूसरी ओषधि, जो सर्वदा के लिये बंध्या बना देती है, मूल्य २)

वैद्यराज अखिलकिशोरराम

नं ४१, पो० कतरीसराय (गया)

खिज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकआध बाल पका हो, तो २), इससे अधिक पका हो, तो ३।।) या कुल पका हो, तो ५) का तेल मँगवा लें।

पता—मृत्युंजय सुधा-औषधालय, पो० कतरीसराय, गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

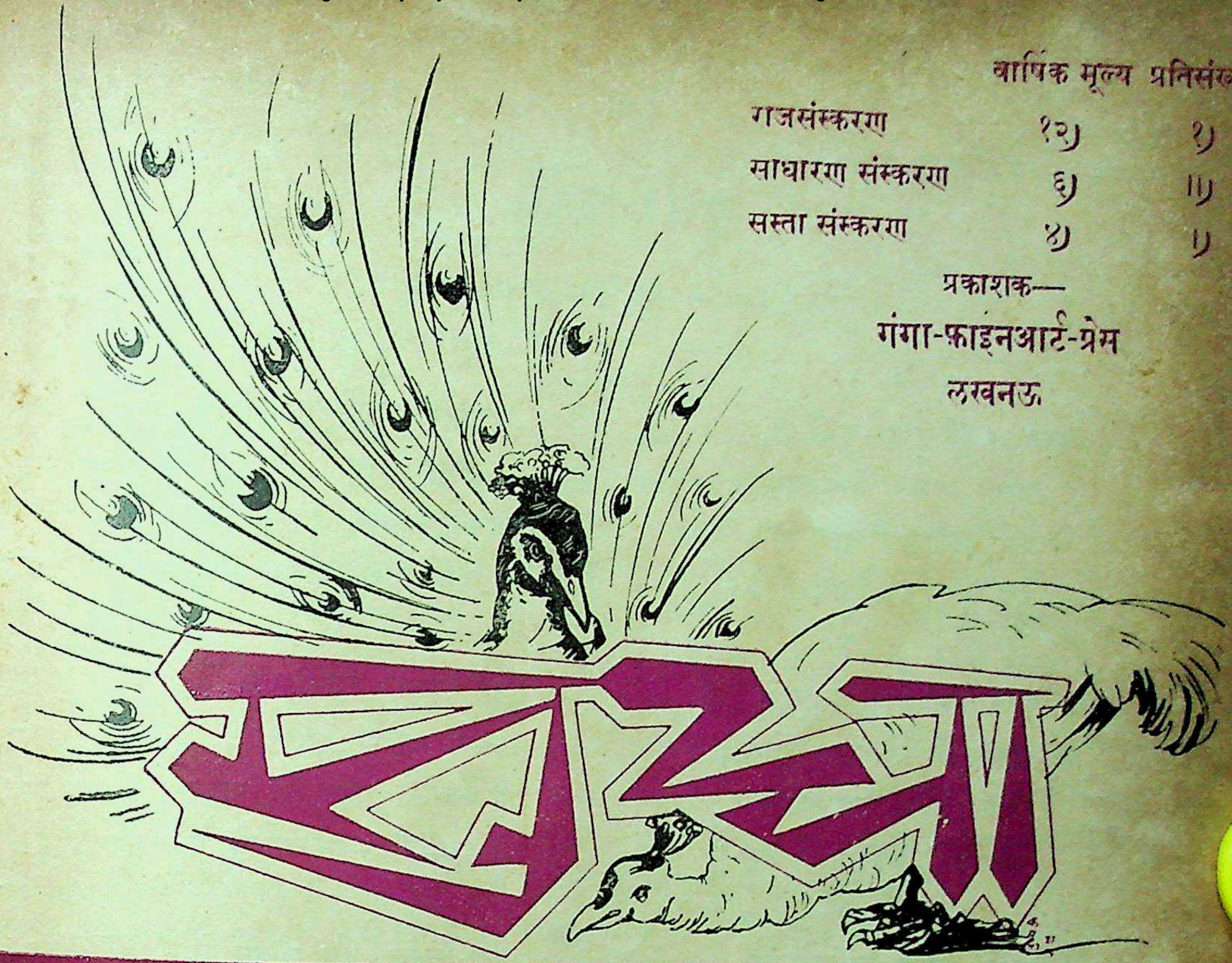

वर्ष १२ } फाल्गुन, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९५ वि०)— { संख्या २
खंड २ } मार्च, १९३९ { पूर्ण संख्या १५२

गीत

[श्रीदुलारेलाल भार्गव]

न आयौ बर बसंत मनभावन—
कोमल कुसुम-सुमन - सरसावन करि स्रावन रस पावन।
कानन मैं वा धुनि की गुंजनि सुनि नहिं परति सुहावन;
बिसरायौ वा तन धावन-गुनि प्रान-समीरन-धावन।
मधुकर कंठ न गावन भावतु मंगल-गान लुभावन;
अजहुँ ललित, बिरहिनि अँखियन मैं छाय रह्यौ जनु सावन।
न आयौ बर बसंत०

वसंत-पंचमी }
१९९५

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूनी कुटी

[कुमारी सरस्वती 'सुधा' बी० ए०]

(१)

सूनी - सी पर्ण - कुटी है,
सूनी है रहनेवाली ;
वेदना समझता था जो,
वह किधर गया प्रिय माली ?

(२)

निष्ठुर, मम आशा - मग में
छाया है निपट अँधेरा ;
है ज्ञात नहीं, कब मुझको
सत्संग मिलेगा तेरा !

(३)

नैराश्य - निशा - घड़ियों का
क्या अब अवसान न होगा ?
कुल तममय जीवन - वन में
क्या प्रेम - बिहान न होगा ?

(४)

सुकुमार कुसुम-सा जीवन
लेकर जगती में आई ;
अपने स्वर्णिम स्वप्नों की
दुनिया थी अलग बसाई ।

(५)

पर बसते उजड़ रही है
यों बस्ती अरमानों की,
है ध्वनित चतुर्दिक पीड़ा
अवसाद - भरे प्राणों की ।

(६)

इस विरह - तप्त जीवन से
तन-तरु यों मत झुलसाओ ;
देकर दर्शन - रस शीतल
कुसुमित अब इसे बनाओ ।

(७)

प्यारा वसंत छाया है
प्रत्येक तरुण डाली पर ;
सखि, स्नेह - लता - सिंचन को
आया न इधर माली पर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह *

[श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

शांतिकुंज, आगरा
१ मार्च, १६३६

प्रिय बहन शांता,

आज मुझे तुम्हारे शुभ विवाह का निमंत्रण मिला। यह मैं जानती थी कि तुम्हारा विवाह इसी वर्ष होगा। जब पिछली बार मैं प्रयाग गई थी, तब चाची ने मुझसे कहा था—"शांता विवाह-योग्य हो गई है; सगाई तो हो ही चुकी है, मार्च में, परीक्षा के बाद, उसका विवाह कर देंगे।" मैंने भी धीरे से कह दिया—"हाँ, ठीक है चाचीजी, सयानी होते ही मा-बाप को विवाह की चिंता सताने लगती है!"

मैं तुम्हारे स्वभाव से भली भाँति परिचित हूँ। विद्यार्थिजीवन में तुम मेरी सबसे प्यारी सहेली रही हो। हम दोनो की मैत्री कितनी घनिष्ठ, समुज्ज्वल और शैशव की भाँति निर्दोष रही है। मैं आज उसी पवित्र मैत्री-भाव की प्रेरणा से तुम्हारे भावी जीवन के लिये अधिक चिंतित हूँ। मैंने अपनी पाठशाला में तुम-जैसी सुशीला, मृदुभाषिणी और सरला लड़की नहीं देखी। सहपाठिनी तुम पर ऐसी श्रद्धा रखती थीं, मानो तुम उनकी इष्ट देवी हो। जब वे 'विवाह'-संबंधी किसी प्रसंग पर वार्तालाप करतीं, विनोद या अट्टहास करतीं तथा तुम्हारी ओर संकेत करके तुम्हारे 'उनके' विषय में कुछ कहतीं, तो तुम अबोध बालिका की भाँति उनकी बातें हँसी में उड़ा देती थीं।

शांता, तुममें लज्जा-भाव अत्यधिक है। वैसे तो लज्जा स्त्री-जाति का भूषण है, स्त्री में लज्जा-भाव स्वाभाविक ही है, परंतु उसकी भी सीमा होती है।

तुम कुल-वधू का पद प्राप्त करने जा रही हो। अब तुम्हें भूगोल, गणित और इतिहास से ध्यान हटाकर गृहस्थाश्रम की शिक्षा भी लेनी चाहिए, जिसमें सफल हुए बिना जीवन सार-हीन प्रतीत होने लगता है। गृहस्थ-जीवन की परीक्षा सब परीक्षाओं में कठिनतम है। जो स्त्री इसमें पास हो गई, उसे सौभाग्यवती समझना चाहिए।

शांता, तुम्हें याद है, एक दिन तुमने अपनी मा से कहा था—"माताजी, मैं बी० ए० पास करूँगी। मेरा विवाह मत करना। मैं विद्यालय में अध्यापिका बनकर धन कमाऊँगी, कमा-कमाकर तुम्हें और पिताजी को खिलाऊँगी। मा, कितना आनंद आएगा?" तुम अबोध बालिका की भाँति, पंद्रह वर्ष की अवस्था में, यह सब एक साँस में कह जाती थीं, और जब चाची यह कह देतीं—"शांता, अपनी ससुराल में सास-ससुर को कमाकर खिलाना।", तो तुम 'धत्' कहकर भाग जाती थीं। उस समय तुम यह न जानती थीं कि नारी को अपना जीवन सफल बनाने के लिये एक 'जीवन-सहचर' की आवश्यकता होती है। एकाकी जीवन पर्वतों की कंदराओं में विचरण करनेवाले योगियों और संन्यासियों के लिये है।

विश्व-नियंता ने इस विश्व में प्राणी-मात्र में नर-नारी का भेद पैदा कर इस सृष्टि को निरंतर

* 'आदर्श पत्नी' से। लेखक ने 'दांपत्य जीवन'-नामक पुस्तक जैसे पुरुषों के लिये लिखी है, वैसे ही 'आदर्श पत्नी'-नामक पुस्तक स्त्रियों के लिये। दोनो अपने ढंग की सुंदर पुस्तकें हैं। आदर्श पत्नी महिला-माला में छप रही है। १ मास में प्रकाशित हो जायगी।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराग रखने का जो साधन स्थिर किया है, वही तो सृष्टि का मूल है। नर-नारी दोनो ही अपूर्ण हैं। दोनो में ऐसी अपूर्णता है, जो पारस्परिक सहयोग और आदान-प्रदान के बिना दूर नहीं हो सकती। यही कारण है कि आदि-काल से नर नारी और नारी नर के सहयोग और साहचर्य के लिये इच्छुक रहा है, या रही है। पुरुष और स्त्री के बीच जो स्वाभाविक आकर्षण है, वह भी इसीलिये कि ये दोनो सर्वदा एक दूसरे के संसर्ग की आकांक्षा करते रहें। विवाह एक ऐसा साधन है, जो पुरुष-स्त्री का विधिवत् संयोग स्थापित करता है। विवाह स्त्री-पुरुष के शरीर, मन और आत्मा में अभिन्नता की प्रतिष्ठा कर जीवन में स्वर्ग की सृष्टि करता है।

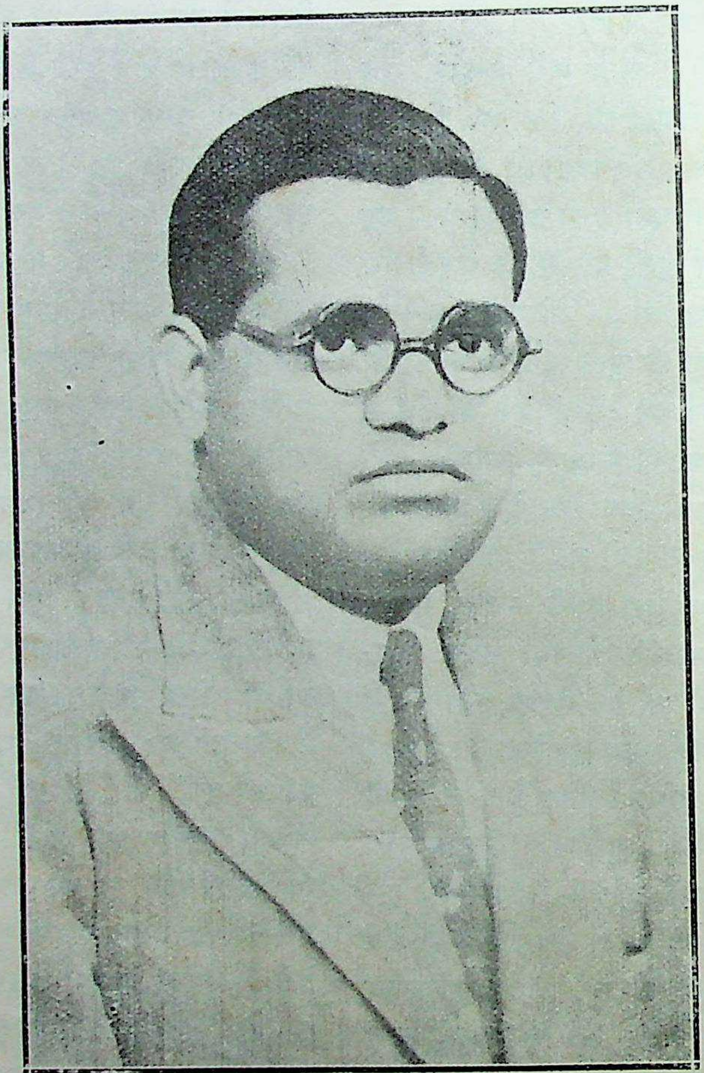

श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०

यदि स्त्री या पुरुष को कोई ऐसा साथी मिल जाय, जो जीवन-पर्यंत उनके हृदय में प्रेम-रस का संचार कर सकता हो, और उनमें शरीर-भेद के सिवा और किसी प्रकार का भेद-भाव न रहे, तो ऐसे व्यक्तियों को विवाह की आवश्यकता नहीं।

परंतु संसार का अनुभव तो यही है कि ऐसा अभिन्न-हृदय, सच्चा साथी प्रत्येक स्त्री-पुरुष को नहीं मिल सकता। विवाह जीवन में एक सच्चा साथी ही नहीं देता, प्रत्युत वह संतानोत्पत्ति का भी आयोजन करता है। संसार में भाई-बहन, माता-पुत्र के पवित्र संबंध विद्यमान हैं, जो मानसिक और आध्यात्मिक आधार पर स्थिर हैं। संभव हो सकता है, उक्त संबंध इतने उच्च कोटि के हों, जिनके विषय में 'दो शरीरों में एक आत्मा' की लोकोक्ति चरितार्थ हो। पर इन संबंधों में शारीरिक संबंध नहीं होता। इसलिये जिस उद्देश्य से विवाह किया जाता है, वह भाई-बहन, पिता-पुत्री और माता-पुत्र के संबंधों से पूरा नहीं होता।

आर्य-संस्कृति के अनुसार विवाह दो आत्माओं, दो हृदयों और दो शरीरों का ऐसा संयोग है, जो जीवन-पर्यंत चिरस्थायी रहता है। विवाह एक धार्मिक संस्था है, जो पति-पत्नी को त्याग, बलिदान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-संग्रह और परोपकार की शिक्षा देती है। इससे तुमने विवाह का महत्त्व समझ लिया होगा।

ऐसे स्थायी संबंध की स्थापना के लिये अत्यंत विवेक और दूरदर्शिता की आवश्यकता है। मैं यह जानती हूँ, तुम्हारे पिताजी आर्य-सामाजिक विचारों के हैं। वैदिक सिद्धांतों के प्रति उनकी प्रगाढ़ श्रद्धा है। मैं यह जानती हूँ, तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारे लिये वर की खोज करने में बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया है। उन्होंने धन-संपत्तिशाली बड़े कुल और जाति-पाँति को शिक्षा, सदाचार और स्वास्थ्य के सामने—गुण, कर्म, स्वभाव के सामने बिलकुल नगण्य समझा है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम्हारा वर तुम्हारे अनुकूल, योग्य, शिक्षित और सदाचारी मिला है। वास्तव में तुम बड़ी भाग्यवती हो, जो तुम्हें ऐसा वर मिला।

मा-बाप की ग़लती या अंध-विश्वास से प्रतिवर्ष लाखों बहनें बाल-विवाह की भट्टी में झोंककर स्वाहा कर दी जाती हैं; यदि जीवन की कुछ घड़ियाँ अवशेष रह जाती हैं, तो वे वैधव्य-जीवन के आँसू बहाने में बीतती हैं। अनेक ऐसी बहनें हैं, जिन्हें सुंदर, स्वस्थ और मनोनुकूल पति न मिलने के कारण नानाविध वैवाहिक यंत्रणाएँ और अत्याचार सहने पड़ते हैं। इन कारणों से उनका दांपत्य जीवन उनके दुःखों की लंबी कहानी बन जाता है। इलाहाबाद से प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका 'चाँद' में दांपत्य जीवन से दुखी बहनों के पत्र प्रतिमास छपते रहते हैं। उन्हें पढ़ने से यह सहज ही ज्ञात हो जाता है कि भारत में आर्य-ललनाएँ वैवाहिक अत्याचारों से अत्यंत दुखी हैं।

मैंने ऊपर बतला दिया है कि हमारे यहाँ विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना गया है। हमारी विवाह-संस्था और पाश्चात्य विवाह-प्रणाली में मौलिक भेद है। योरप और अमेरिका में विवाह को एक लौकिक इक़रारनामा (Contract) माना जाता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति इक़रारनामे को तोड़ सकता है, उसी प्रकार वहाँ पति-पत्नी भी अपने विवाह-बंधन को स्वेच्छानुसार तोड़ सकते हैं। भारत के मुसलिम-समाज में भी विवाह को एक सामाजिक इक़रारनामा ही माना जाता है, धार्मिक संस्कार नहीं। दूसरी बात यह कि योरप और अमेरिका में विवाह तीस से चालीस वर्ष की अवस्था में होते हैं, और इन अवस्थाओं तक युवक और युवती विवाह से पूर्व ही विवाह के आनंद भोग लेते हैं *।

परंतु अपने यहाँ विवाह से पूर्व वर-कन्या का शारीरिक संयोग अधर्म माना जाता है। प्राचीन काल में कन्या को वर-निर्वाचन की स्वतंत्रता प्राप्त थी। आजकल की भाँति दुधमुँही बच्चियों का अबोध दशा में विवाह नहीं किया जाता था। प्राचीन समय में 'स्वयंवर' की प्रथा प्रमाणित करती है कि कन्याओं का विवाह वय प्राप्त होने पर किया जाता था। सीता और द्रौपदी आदि के स्वयंवरों से यह स्पष्ट हो जाता है। प्राचीन समय

* योरप और अमेरिका में विवाह से पूर्व प्रेमाचार (Courtship) का प्रचार अधिकता से है। विवाहेच्छुक युवक-युवतियाँ स्वच्छंदता-पूर्वक सिनेमा-गृहों, उपवनों, वाटिकाओं, होटलों, आमोद-गृहों (Clubs), बाज़ारों आदि में मिलते-जुलते हैं, और परस्पर चुंबन, आलिंगन और संभोग करते हैं। अमेरिका में 'ट्रायल मैरिज' और 'कंपेशनेट विवाह' के रिवाज प्रचलित हैं। वहाँ कुछ समय तक (एक साल या इससे अधिक) युवक-युवती पति-पत्नी की भाँति व्यवहार करते हैं, और इस समय में वे पारस्परिक गुण-दोषों की भली भाँति परीक्षा कर लेते हैं। यदि उनके चरित्र और गुणों में साम्य होता है, तो वे विवाह कर लेते हैं, अन्यथा इस अस्थायी संबंध का विच्छेद हो जाता है। ये विवाह परीक्षणात्मक होते हैं। अमेरिका के जज लिंडसे ने 'युवकों का विद्रोह' (Revolt of Modern Youth)-नामक अँगरेज़ी-पुस्तक में अमेरिका के स्कूलों और कालेजों की कुमारियों तथा अविवाहित युवकों की व्यभिचार-लीला का खूब भंडाफोड़ किया है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वर-निर्वाचन के समय वर-कन्या के सदाचार और सतीत्व की रक्षा का पूरा ध्यान रक्खा जाता था। स्वयंवर की प्रथा से यह भी ज्ञात होता है कि कन्याएँ आजकल की 'कॉलेज-कन्याओं' की भाँति, रूप के मोह में फँसकर या काम-भाव से प्रेरित होकर वर का चुनाव नहीं करती थीं *। वे अपने पति—भावी पति की योग्यता, प्रतिष्ठा, बल-पराक्रम, वीरता, सदाचार, ब्रह्मचर्य आदि गुणों की परीक्षा करती थीं।

आजकल भारत के शिक्षित-वर्ग में भी योरप के 'प्रेम-विवाहों' का अनुकरण हो रहा है। उच्च शिक्षित नवयुवक अपनी भावी पत्नी का चुनाव अपने आप करना अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझने लगे हैं। मैं यह मानती हूँ कि युवकों को इस दिशा में पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए, पर देखा यह जाता है कि वे स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता का लास्य नृत्य करते हैं। हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक

* आजकल विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की सहशिक्षा (Co-education) की प्रणाली लोकप्रिय होती जा रही है। जो लड़कियाँ कॉलेजों और युनिवर्सिटियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं, वे बहुधा अपने किसी सहपाठी के प्रेम में अनुरक्त हो जाती हैं। यदि मा-बाप जाति-बंधनों में विश्वास करनेवाले नहीं होते, और अधिक उदार होते हैं, तो उनका 'प्रेम' विवाह का रूप धारण कर लेता है, और यदि मा-बाप जाति-पाँति के कट्टर अनुयायी हुए, तो व बेचारे बड़ी उलझन में पड़ जाते हैं। यदि प्रेमी-प्रेमिका साहसी हुए, तो समाज के बंधनों को तोड़कर अपना विवाह कर लेते हैं, अन्यथा उन्हें अपनी मनोकामना के प्रतिकूल मा-बाप की इच्छा से किसी और स्त्री या पुरुष से 'प्रेम' करना पड़ता है। कहना न होगा, ऐसे व्यक्तियों का दांपत्य जीवन दुःखांत होता है।—लेखक

शिक्षित माता-पिताओं को चाहिए कि जब अपने लड़के-लड़कियों को वे स्नेह और सहृदयता के साथ उच्च शिक्षा दिलाते हैं, तो, अपने मनोनुकूल, अपने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप जीवन-साथी चुनने का भी उन्हें अधिकार दें। इसी में कल्याण है।—सुधा-संपादक

श्रीयुत सुदर्शनजी ने 'कलयुग नहीं, करयुग है यह'*-नामक कहानी में नवयुवकों की वर्तमान प्रवृत्ति पर अच्छा प्रकाश डाला है। मैं नीचे कहानी का सारांश देती हूँ—

लाला सूरजमल के उषादेवी नाम की एक लड़की थी। उन्होंने उसे एक अँगरेज़-महिला द्वारा शिक्षा दिलाई। उषा संगीत में निपुण थी। लाला सूरजमल ने अपने एक मित्र के पुत्र से उसका विवाह पक्का किया। जब संबंध पक्का हुआ, तब वर महाशय विलायत में थे, और आई० सी० एस्० की तैयारी कर रहे थे। उषा को वर के पिता एवं घरवालों ने देख लिया, और उसे पसंद कर लिया था।

लाला सूरजमल के यहाँ बारात आ गई। रात के तीन बजे वर महाशय कन्या के पिता के द्वार पर आ खड़े हुए। लाला सूरजमल के पास अपने नाम का 'विज़िटिंग कार्ड' घर में पहुँचा दिया। अब कन्या के मा-बाप व्याकुल होने लगे। कन्या के पिता द्वार पर आए, तो देखते हैं कि भावी दामाद खड़े हैं। लाला सूरजमल बड़े संकट में पड़ गए। इतनी रात में यहाँ उपस्थित होने का कारण पूछा गया, तब वर ने कहा—"मैं लड़की देखने आया हूँ। मैंने वैसे लड़की की बहुत प्रशंसा सुनी है; भाभी का कहना है, ऐसी बहू हमारे कुल में कभी नहीं आई, बाबूजी उनकी तारीफ़ करते नहीं थकते। परंतु फिर भी आप जानते हैं, अपनी-अपनी आँखें हैं, अपनी-अपनी पसंद। कल को अगर न बने, तो दोनो का जीवन नष्ट हो जाय। और, इसमें कोई हर्ज भी तो नहीं। हर्ज तब था, जब परदे का रिवाज था, और अब तो परवा नहीं है।"

लाला सूरजमल पुराने विचार के पुरुष थे। उनके लिये रिवाज अटल नियम थे। उन्हें समाज

* श्रीसुदर्शनजी की यह कहानी पंजाब की एक सत्य घटना के आधार पर लिखी गई है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भय था। इसलिये उन्होंने पहले तो इनकार कर दिया, और कहा—"मान लो, मैंने तुम्हें लड़की दिखा दी, और तुमने उसे पसंद न किया, तो क्या विवाह रुक जायगा? तुम कहोगे, इसमें हर्ज ही क्या है। तुम्हारे लिये न होगा, हमारी तो नाक कट जायगी।" इन बातों का वर पर कोई प्रभाव न पड़ा। वर ने कहा—"बिना देखे मैं लड़की से विवाह न करूँगा।" अब सूरजमल बड़ी आपत्ति में पड़ गए। घर बारात आ गई थी, प्रातः आठ बजे विवाह-संस्कार होना था। पाँच घंटे का अंतर था। आख़िर पिता ने उषा को कमरे में बुला लिया। वर ने देखा, वह वास्तव में वैसी ही सुंदर है, जैसी उसकी तारीफ़ सुनी थी। वर ने पूछा—"आपने अँगरेज़ी पढ़ी है?" उषा ने संकोच से कहा—"पढ़ी है।" उसके हाथ में एक अँगरेज़ी का अख़बार देकर पढ़वाया। वह उषा के उच्चारण और मधुर कंठ पर मुग्ध हो गया। उषा ने संगीत में भी परीक्षा दी, और उसमें भी पास हो गई।

वर ने कहा—"मुझे लड़की पसंद है।"

उषा ने निश्चयात्मक भाव से कहा—"मगर तुम मुझे पसंद नहीं।"

उषा ने अपनी इस उक्ति के समर्थन में जो कहा, वह एक सुशीला महिला के उपयुक्त है—

"अगर तुम लड़कों को यह अधिकार है कि विवाह से पहले लड़की को देखो, उसकी परीक्षा करो, और इसके बाद अपना फ़ैसला सुनाओ, तो हम लड़कियों को भी यह अधिकार है कि तुम्हें देखें, तुम्हें परखें और तुम्हें अपना फ़ैसला सुनावें। मेरा फ़ैसला यह है कि मैं तुम्हारे साथ कदापि ब्याह नहीं कर सकती।......मैं सोलहो आने हिंदोस्तानी हूँ, और तुम सोलहो आने विदेशी। मैं ब्याह को आत्मिक संबंध मानती हूँ, जो मृत्यु के बाद भी नहीं टूटता। तुम्हारे समीप मेरा सबसे बड़ा गुण है कि मेरा रंग साफ़ है, और मेरे कंठ में लोच है। लेकिन कल यदि मेरे चेचक निकल आए या किसी अन्य रोग से मेरा रूप ख़राब हो जाय, तो तुम्हारी आँखें मुझे देखना भी पसंद न करेंगी। जिसकी पसंद ऐसी ओछी और कच्ची बुनियादों पर हो, उसका क्या विश्वास? तुममें किताबी योग्यता होगी, परंतु मनुष्यत्व नहीं।"

प्यारी शांता, इस घटना के वर्णन करने से मेरा उद्देश्य यही है कि विवाह केवल रूप-सौंदर्य का व्यापार नहीं। रूप अपदार्थ—नाचीज़ तो नहीं। रूप और सौंदर्य स्त्री में वांछनीय हैं, परंतु ये अस्थायी तत्त्व विवाह-जैसे स्थायी संबंध के आधार नहीं बन सकते। केवल रूप के मोह में पड़कर विवाह करना मूर्खता से कम बात नहीं।

रूप-सौंदर्य का यौवन से धूप-छाया-सा घनिष्ठ संपर्क है; इसलिये यह अटल सत्य है कि जब स्त्री का यौवन ढल जायगा, तब रूप में भी स्वाभाविकतया अंतर आ जायगा। अतः जो व्यक्ति केवल इसी आधार पर यह संबंध स्थिर करते हैं, वे यौवन के ढल जाने पर, रूप-माधुरी के हतप्रभ हो जाने पर संबंध-विच्छेद भी कर सकते हैं।

बहन, मैं यह जानती हूँ कि आर्य-नारियाँ गुणों की क़द्र करना जानती हैं। वे अपने जीवन-सहचर में विद्वत्ता, बुद्धि, साहस, दया, लगन, प्रेम, वीरता, कर्मण्यता, सहानुभूति, सहयोगिता आदि मानवीय उदात्त गुणों को देखना चाहती हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम भी एक आर्य-ललना के आदर्श को सदैव अपने सामने रक्खोगी, और विवाह को आध्यात्मिक संबंध में परिणत करने का प्रयत्न करोगी।

मैं अपने अनुभव से यह जानती हूँ कि विवाह से पूर्व कुमारियों के कोमल हृदय में अपने भावी जीवन के संबंध में नानाविध कल्पनाएँ अपना घर बना लेती हैं। अपनी कल्पना-शक्ति के सहारे वे ऐसे सुंदर भवन खड़े कर लेती हैं कि उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर 'विवाह' को एक मनोविनोद या खिलवाड़ समझने लगती और अपने वैवाहिक कर्तव्यों को भुला देती हैं। शांता, तुम यह विचार कदापि न करना कि ससुराल में तुम्हें वैसा ही सुख-आनंद मिलेगा, जैसा मा की गोद में मिला है।

अब तक तुम अपने माता-पिता के गृह में बड़े लाड़-प्यार से रहीं। मा ने तुम्हें कोई कष्ट अनुभव करने का अवसर नहीं दिया। तुम जानती हो, तुम्हारे सुख के लिये तुम्हारे माता-पिता ने अपने कितने सुख और आनंद का बलिदान किया है। तुम कष्ट-सहन का जीवन जानती नहीं। पर अपनी प्रिय मा के जीवन से तुम्हें शिक्षा लेनी चाहिए। अब तुम इस योग्य हुई हो कि निज गृह का निर्माण कर सको। तुम्हें अपने घर को बनाने के लिये वैसी ही तपस्या और वैसा ही त्याग करना पड़ेगा, जैसा तुम्हारी मा ने किया है। अब तुम्हारे लड़कपन और स्वतंत्र जीवन का अंत हो जायगा, और उनके स्थान पर सहनशीलता, कष्ट, तप, व्रत और सेवा का जीवन भोगना पड़ेगा।

ससुराल में जाकर तुम्हें अपने सुख का चिंतन न करना होगा। तुम्हारे सुख, तुम्हारे आनंद और तुम्हारी प्रसन्नता का दायित्व तो तुम्हारे पति के कंधों पर है। तुम्हें तो यावज्जीवन इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि मैं अपने प्राणेश्वर और परिजनों को कैसे संतुष्ट और सुखी रक्खूँ। तुम्हारा आचरण सबों को प्रिय और तुम्हारे वचन सबों को मधुर लगें, ऐसा यत्न करना चाहिए। तुम्हें एक विद्वान् लेखक के निम्न-लिखित शब्दों को अपने हृदय-पट पर लिख लेना चाहिए—

"एक विवाहित स्त्री उस कुसुम-कली के समान है, जो देवता के चरणों पर चढ़ चुकी है, और अपने हृदय की सारी सुगंध देवता के मंदिर में बिखराती है।"

शांता, मैं तुम्हारे विवाह के निमंत्रण को स्वीकार करती हूँ, और ऐसा करते समय मेरे हृदय में कितना उल्लास होता है, उसे यह मूक लेखनी इस काग़ज़ पर कैसे उतार सकती है। अब संध्या के पाँच बज गए, तुम्हारे जीजाजी कोर्ट से आते होंगे; मुझे उनके स्वागत की तैयारी करनी है, और फिर भोजन भी तैयार करना पड़ेगा। आज इतना ही।

तुम्हारी बहन
इंदिरा

दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीद-कर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १।)

मिलने का पता — गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कालिदास

(आलोचना)

[श्रीयुत वासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

विशाल संस्कृत-वाङ्मय के महाकवियों में कालिदास एक स्वर से सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। आदि-कवि वाल्मीकि की कविता गंगा की धारा के समान सरस और सरल है। महर्षि वेदव्यास की प्रतिभा महारण्य के समान अथाह है। उनकी गहराई का पार पाना कठिन है। कालिदास की कविता में वाल्मीकि की-सी लोक-सुलभता है, और वेद-व्यास की-सी बहुमुखी प्रतिभा को गंभीरता। यह कहा जा सकता है कि शुद्ध काव्य-रस की सृष्टि करने में कालिदास अपनी समता नहीं रखते। काव्य द्वारा सौंदर्य की सृष्टि करने में जो सफलता कालिदास को मिली है, वह संसार के अन्य किसी कवि को नहीं प्राप्त हुई। कालिदास के काव्यों में यह बात प्रायः देखने में आती है कि भावगत सौंदर्य के पूर्णतम विकास के लिये जिन सुकुमार उपकरणों की आवश्यकता है, उन पर मानो उन्होंने जन्म-सिद्ध एकाधिकार प्राप्त किया हो। इंदुमती के स्वयंवर में, पार्वती की तपश्चर्या में, उमा के रूप-मंडन में एवं कण्व के आश्रम में अतिथि-सत्कार में नियुक्त शकुंतला के चित्रण में कवि ने जिस अपरिमित सौंदर्य के साथ हमारा परिचय कराया है, उसकी स्मृति एक बार मानव-हृदय में आकर फिर कभी नहीं मिटती। ऋषियों के आश्रमों और राजाओं के विलास-पूर्ण अंतःपुरों में कवि की प्रतिभा समान भाव से अकुंठित रहती है।

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष के मर्मज्ञ साहित्यिकों ने कालिदास का मूल्य आँकने में कभी भूल नहीं की। छठी शताब्दी के महाकवि दंडी से लेकर बीसवीं शताब्दी के कविवर रवींद्रनाथ तक अनेक उच्च कोटि के मर्मज्ञों ने समान भाव से कालिदास के लिये अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। कालिदास की काव्य-शक्ति के लिये जहाँ एक ओर इस प्रकार का देशव्यापी, पूज्य भाव पाया जाता है, वहाँ दूसरी ओर उनके व्यक्तिगत जीवन के संबंध में हमारी जानकारी नहीं के बराबर है। उनकी कविता के संबंध में इतना अधिक जानते हुए भी स्वयं कवि के साथ हमारा परिचय अत्यंत स्वल्प है। 'मन्दः कवियशःप्रार्थी' कहनेवाले चतुर वाग्मी ने हमारे कुतूहल की निवृत्ति के मार्ग में आकर अटूट वाक्संयम से काम लिया है। परंतु मानवीय जिज्ञासा को सदा के लिये कौन दबाकर रख सका है। सत्य-पूर्ण ऐति-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिक सामग्री के अभाव में मानुषिक कल्पना ने अनेक श्रुति-रमणीय उपाख्यानों की रचना कर डाली। लगभग डेढ़ हज़ार वर्षों तक ये उपाख्यान ही भित्ति-चित्रों के दृश्य की भाँति कालिदास की चरित्र-कथा हमारे सम्मुख प्रकट करते रहे हैं। आज नवीन आलोचना-पद्धति एवं विमर्श-शैली की सहायता से हमारे और कवि के बीच का व्यवधान कुछ-कुछ दूर होता दिखाई पड़ रहा है। इस दिशा में अब तक कितने ही साहित्यिक प्रयत्न कर चुके हैं। भारतीय और पाश्चात्त्य, दोनो ही देशों के विद्वानों ने कालिदास-विषयक निबंधों के रचने में प्रमुख भाग लिया है। उनके प्रयत्न से कवि के समय, जन्म-स्थान आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है।

आज इसी विषय की एक सुंदर पुस्तक का परिचय हम पाठकों को कराना चाहते हैं। पुस्तक का नाम है 'कालिदास'। इसके लेखक हैं श्रीयुत वासुदेवविष्णु भिराशि एम० ए०, जो इस समय नागपुर-विश्वविद्यालय में संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष हैं। भिराशिजी ने इस ग्रंथ को उतने ही परिश्रम और अध्ययन के बाद लिखा है, जितना प्रायः अँगरेज़ी-विश्वविद्यालयों के विद्वान् अँगरेज़ी-ग्रंथों के लिखने में किया करते हैं। इस बात से ग्रंथ की प्रामाणिकता और श्रेष्ठता का अनुमान किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक नागपुर की प्रसिद्ध नव-भारत-ग्रंथमाला में प्रकाशित मराठी-पुस्तक का अनुवाद है। फिर भी हिंदी-भाषा जाननेवाले विद्वानों के लिये यह ग्रंथ बड़ा महत्त्व-पूर्ण है। कालिदास के संबंध में भारत-वर्ष और पश्चिम के विद्वानों ने जो कुछ लिखा है, उसका एक ही स्थान पर प्रामाणिक विवेचन पाठकों को इस पुस्तक में मिल सकता है। कालिदास-संबंधी सभी प्रश्नों पर व्यापक रूप से सर्वांगीण विवेचन करनेवाले ग्रंथ का अभी तक हिंदी-साहित्य में ही नहीं, प्रत्युत अन्य भारतीय और विदेशी साहित्य में भी अभाव ही है। इस कारण उक्त ग्रंथ बहुत ही सामयिक और हमारे साहित्य-गौरव की वृद्धि करनेवाला है।

पहले परिच्छेद में लगभग ४३ पृष्ठों में लेखक ने कालिदास के काल-निर्णय पर विचार किया है। कोई विद्वान् कालिदास को ईसवी-पूर्व प्रथम शताब्दी में रखते हैं, और कुछ लोग छठी शताब्दी में भी। भिराशिजी ने इन दोनो मतों की सूक्ष्म विवेचना करके दोनो को ही अमान्य ठहराया है। आपके मत से चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ही कालिदास के आश्रयदाता थे। इन्हीं चंद्रगुप्त ने, ईसवी सन् ३९५ के लगभग, काठियावाड़ के शकवंशीय क्षत्रियों का समूल उच्छेद कर उस प्रांत को अपने राज्य में मिला लिया था, जिसके कारण उन्हें शकारि कह सकते हैं। लेखक ने प्राचीन श्लोकों से यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने कालिदास को कुंतलेश्वर के यहाँ अपना दूत बनाकर भेजा था। इतिहास-प्रसिद्ध है कि चंद्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्ता का विवाह वाकाटक-घराने के राजा द्वितीय रुद्रसेन के साथ किया था। रुद्रसेन की मृत्यु शीघ्र ही हो गई, और उनके बाद उनका ज्येष्ठ राजकुमार प्रवरसेन द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा। उसके शासन-प्रबंध में गुप्तों का बहुत हाथ था। उसके शासन का हाल-चाल जानने के लिये सम्राट् चंद्रगुप्त ने कालिदास को ही संभवतः विदर्भ-देश में भेजा था। उसी समय कालिदास का परिचय रामगिरि-पर्वत से हुआ, जिसे आजकल रामटेक कहते हैं। वाकाटक राजा यात्रा के निमित्त रामटेक जाया करते थे, यह बात ऋद्धपुर के प्रभावती गुप्ता के ताम्र-पत्र से मालूम हुई है। अजंता के एक शिला-लेख से मालूम होता है कि प्रवरसेन द्वितीय के पितामह पृथ्वीषेण प्रथम ने कुंतलदेश (दक्षिण-महाराष्ट्र तथा मैसूर के उत्तर भाग) को जीतकर अपने देश में मिला लिया था। तब से वाकाटक राजा कुंतलेश के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्हीं कुंतलेश्वर वाकाटक प्रवरसेन द्वितीय के यहाँ, जो चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नाती थे, कालिदास का दूत बनकर जाना युक्ति-संगत जान पड़ता है। इस सबका निष्कर्ष लेखक के शब्दों में यह है कि कालिदास चौथी शताब्दी के अंत या पाँचवीं शताब्दी के आरंभ में हुए होंगे। प्रथम परिच्छेद के ४३वें पृष्ठ पर लेखक ने जो यह लिखा है कि रघुवंश में रघु के दिग्विजय के वर्णन में कवि का अभिप्राय द्वितीय चंद्रगुप्त के दिग्विजय करने का रहा होगा, सो इस पर कुछ युक्ति-युक्त प्रकाश डालना आवश्यक था। प्रायः रघु की दिग्विजय में समुद्रगुप्त की दिग्विजय का प्रतिबिंब देखा जाता रहा है। दूसरे परिच्छेद में कालिदास-कालीन राजनीतिक परिस्थिति का अच्छा चित्रण किया गया है। कालिदास के राजनीतिक आदर्श का सार रघुवंश के आधे श्लोक में दिया हुआ है—

महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नमृद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः।

अर्थात् सब ऋद्धियों से संपन्न राज्य साक्षात् इंद्र-पद के तुल्य है। भेद केवल इतना ही है कि राजा का राज्य पृथ्वी पर होता है, और इंद्र का स्वर्ग में।

तीसरे परिच्छेद में कालिदास के जन्म-स्थान की समस्या पर विचार किया गया है। कालिदास बंगाली थे या कश्मीरी, इन दोनो मतों का निराकरण करके लेखक ने यह सिद्ध किया है कि कालिदास के बाल्यकाल का संबंध उज्जयिनी नगरी से था। पाँचवें और छठे परिच्छेदों में, लगभग १५० पृष्ठों में, कालिदास के काव्य और नाटकों का परिचय दिया गया है, जो मनोरंजक और सुपाठ्य है। ग्रंथ के अंत में लेखक ने कालिदास-स्तुति-कुसुमांजलि के नाम से उन वचनों का संग्रह किया है, जो इस महाकवि के लिये अन्य कवियों ने कहे हैं। जर्मन देश के महाकवि गेटे ने एक श्लोक में कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतल की प्रशंसा की थी, उसका संस्कृतानुवाद भिराशिजी ने दिया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्;
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो-
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे शाकुन्तलं सेव्यताम्।

अर्थात् वसंत-ऋतु के समस्त पुष्प और फल तथा ग्रीष्म-काल के भी समस्त कुसुम और फल अथवा और जो कुछ भी मन को रसायन की तरह संतृप्त और मोहन करनेवाला है, तथा स्वर्गलोक और भूलोक दोनो के अभूतपूर्व एकत्र-स्थित ऐश्वर्य को, हे प्रिय सखे, यदि तुम देखना चाहते हो, तो 'शाकुंतल' का सेवन करो।

अंतिम दो पृष्ठों में 'कालिदासं प्रति'-शीर्षक से कविवर रवींद्र की कालिदास-विषयक कविता का संस्कृत में अनुवाद दिया हुआ है, जो अत्यंत ही सरस है, और जिसका श्रेय श्रीयुत पुरुषोत्तम-नारायण वीरकर को है। उसकी कछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कवितावनिताविलास !
सम्प्रति कविः केवलं नान्यस्त्वम्;
क्वासौ राज्ञो विदग्धपरिषद् ?
क्व च भवनं भवतो यातम्।
क्व गतः सम्प्रति कालिदास !
ननु महान् स नृपतिः स्वामी ते ?
क्व च सावन्ती ? हन्त ! न लेश:
कस्याप्यधुना विलोक्यते।
शश्वद्दिव्यानन्दस्यन्दिनि,
कुबेरनगरे कविनृपते !
वसतिं सततं त्वं कृतवानिति
लोकः सम्प्रति मन्त्रयते।

अर्थात् हे कविता-कामिनी के साथ विलास करनेवाले कवि ! इस समय उस प्राचीन वैभव में से केवल तुम्हीं बचे हो, अन्य कुछ नहीं। सम्राट् की वह विदग्ध-परिषद् अब कहाँ है ? कहाँ है अब वह भवन, जिसके तुम अलंकार थे ? और हे कवे ! कहाँ चले गए वे नृपतिवर, जो तुम्हारे आश्रयदाता थे ? वह अवंतीपुरी भी अब कहाँ है ? हा ! किसी बात का लेश-मात्र भी अब नहीं रहा ! हे कवि-सम्राट् ! शाश्वत, दिव्य आनंद का वर्षण करनेवाली अलकापुरी में तुमने अपना निवास बनाया है, यही इस समय के लोग कल्पना करते हैं।

अंतिम पंक्तियाँ ये हैं—

नैवापत्तिर्न चापि शोकः परमदारुणा न वा व्यथा;
नैताभिस्ते समवलोक्यते कविता क्वचिदपि कलंकिता।
जीवितसिन्धुं प्रमथ्य गरलं प्राणहरं त्वं प्राशितवान्;
उदीर्णाश्च ये सुधातुषाराः समन्ततस्तान् विकीर्णवान्।

अर्थात् हे कविवर, तुम्हारे जीवन पर भी सुख-दुःख, आशा-निराशा के प्रबल द्वंद्वों ने आक्रमण किया होगा, परंतु उन आपत्ति, शोक और व्यथाओं की कालिमा का प्रतिबिंब तुमने अपनी कविता पर कहीं भी पड़ने नहीं दिया। मालूम होता है, जीवन-रूपी समुद्र का मथन करके उसमें से निकले हुए विष का पान तुमने स्वयं कर लिया, और हमारे लिये सुधा-कणों को चारो ओर बखेरकर छोड़ गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर !

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

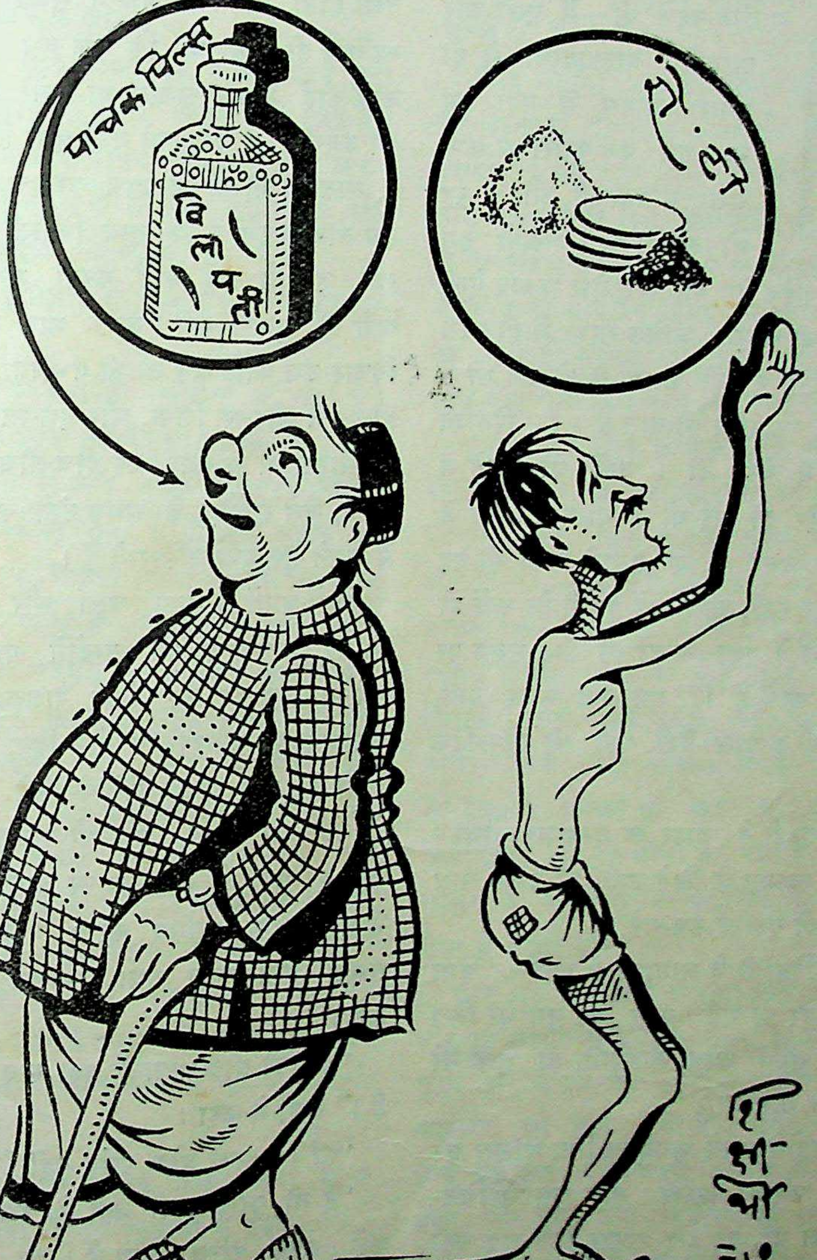

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रेम का बलिदान

[श्रीयुत प्रेमचंद एम्० ए०]

हम तीन बहनें थीं—मैं, ऐली और आइवी। बाल्यावस्था से ही हमारा आपस में बड़ा प्रेम था। हम एक दूसरी से कभी अलग न रही थीं, और न रह ही सकती थीं। वैसे तो हम तीनो में पारस्परिक प्रेम था, परंतु मेरा झुकाव ऐली की ओर आइवी से कुछ अधिक मात्रा में ही था। वह और मैं मानो एक ही आत्मा के दो रूप थीं।

१६०५ की एक रात्रि की बात है। हम पिताजी की प्रतीक्षा में बैठी थीं। उन्हें घर आने में असाधारण देर हो गई थी। माताजी चिंता में डूबी थीं, और उनके कारण हमारी चिंता भी बढ़ रही थी। "पता नहीं, आज उन्हें इतनी देर क्यों हो गई?" आइवी ने कहा—"वह तो ठीक समय पर घर आ जाया करते हैं।" हम क्या उत्तर देतीं, चुपचाप अँगीठी के पास बैठी घड़ी की टिक-टिक सुनती रहीं।

नौ बजे पिताजी ने बाहर का दरवाज़ा खोला। आइवी उनके स्वागत के लिये उठी, पर उनके साथ एक नवयुवक को देखकर रुक गई।

"माथो," पिताजी ने माताजी से कहा—"क्षमा करना, आज देर हो गई। परंतु जब तुम मेरे मित्र मूर को भली भाँति जान जाओगी, तो तुम्हें मेरे विलंब का खेद न होगा।"

इस पर उन्होंने अपने नवयुवक मित्र थॉमस मूर का हम सबसे परिचय कराया। नाम कुछ परिचित-सा जान पड़ता था, पर उस समय ठीक याद नहीं आया कि कब और कहाँ उनके विषय में सुना था। इतना निश्चित था कि उन्हें पहले कहीं नहीं देखा; देखा होता, तो कभी भूल न सकती थी। उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था कि एक बार देख लेने पर उन्हें कोई भूल न सकता था। मेरे हृदय में अब भी उनकी उस दिनवाली मूर्ति बसी है।

माताजी भोजन का प्रबंध करने चली गईं, और हम तीनो बहनें उनके तथा पिताजी के पास बैठी रहीं। हम तो क्या बातें करतीं, मुग्ध हो उनकी बातें ही सुनती रहीं। उनके भाव शुद्ध थे, और विचार उच्च कोटि के। उनकी गंभीरता ने हमें थोड़ी ही देर में मोह-सा लिया, और एक-आध बात करने का साहस भी हो गया। वह बीच-बीच में मुस्किराते भी थे, जैसे सूर्योदय के समय ठंडी पवन के झोंकों में झूमते हुए पुष्प मुस्किराते हैं।

बातों-बातों में पता चला, और पूरी याद भी आ गई कि पिछले वर्ष उन्होंने पार्लियामेंट में सर्व-साधारण का पक्ष लेकर राजकुमारी मारगट के विवाह पर अतिव्यय न होने दिया था। नरपति हेनरी ने इसका बदला लेने के लिये उनके पिता को बंदी कर दिया, और सौ पाउंड का अर्थ-दंड लेकर ही मुक्त किया। इस पर उन्हें पार्लियामेंट में भाग लेना स्थगित करना पड़ा, और सारा समय विद्याध्ययन तथा वकालत में लगाने लगे।

"आपकी ग्रीक-भाषा में बड़ी रुचि जान पड़ती है।" ऐली ने कहा।

"हाँ। आपको ग्रीक पसंद नहीं?"

"है तो, परंतु इतनी नहीं कि उसका अध्ययन करूँ। बहुत कठिन भाषा है। जब पिताजी उसे पढ़ते हैं, तो मैं कान बंद करने लगती हूँ। मैं तो उसे कभी न सीख सकूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर वह हँसने लगे, और उनकी हँसी सदा के लिये मेरे हृदय में समा गई।

"कठिन है, तो क्या हुआ।" उन्होंने कहा—"परिश्रम करने से आ ही जायगी।"

"ऐसे परिश्रम से लाभ?"

"अंधकार छोड़ प्रकाश की प्राप्ति। आप नहीं जानतीं कि ग्रीक-साहित्य में कितने रत्न छिपे हैं। यदि आज हम ग्रीक-पुस्तकों का अध्ययन आरंभ कर दें, तो कुछ ही दिनों में हमारे सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांतों की काया पलट जाय।"

"हमारे अंदर बुराई ही क्या है?" मैंने सकुचाते हुए पूछा।

"यह तो अपने-अपने दृष्टिकोण की बात है। जिन बातों को आप अपने सामाजिक जीवन की नींव समझती हैं, मैं उन्हें उसकी बुराइयाँ मानता हूँ। आप समझती हैं, सामाजिक जीवन की सफलता के लिये अमीरों और निर्धनों का होना आवश्यक है। परंतु मेरे विचार में यह केवल अमीर लोगों का षड्यंत्र है। वे अपने सुबीते और आराम के लिये लाखों मज़दूरों—कठिन परिश्रम करनेवाले मज़दूरों—को निर्धन बनाए रखते हैं, और उनके पैसे स्वयं बटोरकर आलसी बने रहते हैं, फिर अपना आलस्य छिपाए रखने के लिये कई प्रकार के ढोंग रचते हैं। जब और कोई उपाय नहीं सूझ पड़ता, तो राज्याधिकारियों को अन्य देशों के साथ युद्ध ठान लेने के लिये विवश करते हैं, जिसमें उनकी अपनी ही नहीं, वरन् दोनो पक्षों के पद-दलित निर्धनों की भी आहुति दी जाती है।"

"तो आपका मत है कि ग्रीक लोगों में ये सब बुराइयाँ नहीं थीं?" पिताजी ने पूछा।

"नहीं, मैं यह नहीं कहता। मैं तो केवल ग्रीक-साहित्य का अध्ययन करने को कहता हूँ, जिससे हमारी आँखें खुल सकें। यदि हम एक बार भी प्लैटो की 'प्रजातंत्र राज्य'-नामक पुस्तक पढ़ लें, तो अज्ञान के समुद्र से निकल सकेंगे।"

"यह काम तो आप पुरुषों को ही फबता है।" ऐमी ने कहा—"हमें तो घर के काम-धंधे ही शोभा देते हैं।"

"यह आपकी भूल है। विद्याध्ययन पुरुष और स्त्री, दोनो के लिये है। आपको यह न भूलना चाहिए कि गिरे हुए राष्ट्र को ऊँचा उठाने और समाज-सुधार में हमें स्त्री-जाति की सहायता से ही वास्तविक सफलता प्राप्त हो सकती है। संसार में शांति का साम्राज्य होने पर ही मानव-समाज का उद्धार हो सकेगा, और इस कार्य के लिये स्त्री-पुरुष दोनो को साथ-साथ आगे बढ़ना होगा।"

इसी प्रकार बहुत देर बातें होती रहीं, और वह रात को बारह बजे तक हमारे घर रहे।

शनैः-शनैः उनका आना-जाना बढ़ता गया, और उसके साथ ही मेरे हृदय की हलचल भी बढ़ती गई। मैं सदा उनके आने की राह देखने लगी। उनके आने पर एक कोने में बैठी उन्हें निहारा करती, और उनके चले जाने पर अपने कमरे में जाकर घंटों रोती। उनकी एक-एक बात मेरे हृदय में अंकित हो रही थी, और साथ ही यह विचार भी पुष्ट होता जा रहा था कि संसार-सागर के पार पहुँचने के लिये मुझे उन्हीं की नैया में बैठना होगा।

परंतु एक दिन अनायास ही मेरी आशाओं का तार टूट गया। मुझे पता लगा कि वह ऐमी को हृदय से चाहते हैं, और वह भी उन्हें अपना आराध्य देव बना चुकी है। इसके पश्चात् मैंने उन्हें कई बार घंटों अपने उद्यान में बातें करते देखा, और देखा उन्हें सूर्योदय की शीतल समीर में उद्यान के पक्षियों का मधुर गायन सुनते, तथा उस गायन में आत्मगायन की प्रतिध्वनि मिला-कर आनंद-सागर में हिलोरें लेते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी यह सब देखकर प्रसन्न थीं। वह उनका बड़ा आदर करतीं, और ऐली के भाग्य की सराहना करतीं। परंतु मेरे हृदय में ईर्ष्या और द्वेष की आग भड़क उठी। जिस बहन के बिना मैं कभी जीना भी गवारा न कर सकती थी, वही आज मेरी घृणा का पात्र थी। मुझे उसके साथ बात करनी भी अखरती थी। मैं सदा यही प्रयत्न करती कि कभी अकेले में उसके सम्मुख न जाऊँ। मुझे उससे, नहीं-नहीं, उसके सामने अपने से, भय लगता था।

धीरे-धीरे ऐली को मेरे इस व्यवहार का कारण भासित हो गया।

एक दिन वह कमरे से बाहर नहीं आई। सायंकाल को उनके आने पर आइवी द्वारा कहला भेजा कि सिर-दर्द के कारण वह उनसे न मिल सकेगी। वह निराश होकर चले गए। हम सबने समझा, किसी कारण आपस में झगड़ा हो गया है, जैसा प्रेमियों में सदा से होता आया है। थोड़ी देर पश्चात् ऐली ने मुझे अपने कमरे में बुला भेजा, किंतु मुझे अपनी शय्या पर बिठाकर स्वयं किसी अज्ञात विचार में डूब गई।

"क्या बात है ऐली?" मैंने रूखेपन से पूछा—"स्वास्थ्य तो अच्छा है?"

"हाँ।" उसने अलसाई हुई आँखों से मेरी ओर देखते हुए कहा।

"फिर मुझे किसलिये बुलाया है?" मैंने तीखे स्वर में पूछा।

"मुझे ठीक पता नहीं, मैं नहीं जानती।" उसने धीरे से कहा।

"जानतीं नहीं, या कहना नहीं चाहतीं?"

वह एकटक मेरी ओर देखती हुई चुप रही। मैं कुछ देर बैठी, परंतु कोई उत्तर न पाकर जाने लगी। वह मानो निद्रा से जागी हो, दरवाज़े के पास आकर मुझे रोक लिया। "अभी न जाओ, जेन, मैं प्रार्थना करती हूँ, अकेली छोड़कर न जाओ, मुझे डर लगता है।"

मैं अवाक् हो उसकी ओर देखने लगी। उसकी वाणी में पीड़ा थी, और नेत्रों में अश्रु। मेरा दिल पसीज गया, पुरानी बातों की याद आ गई।

"ऐली!"

उसने कोई उत्तर न दिया, चुप हो रोती रही।

"ऐली, मेरी बहन, क्या बात है? इतनी उदास क्यों है?"

"पता नहीं, जेन, मेरा मन क्यों इतना अशांत है।" उसने रोते हुए कहा—"मेरे अंदर एक तूफ़ान उठ रहा है, जिसे मैं सँभाल नहीं सकती।"

"चल, शय्या पर लेट जा, तेरा जी अच्छा नहीं।"

वह लेटी नहीं, शय्या पर मेरा हाथ पकड़कर बैठ गई। कितनी ही देर हम दोनो चुप बैठी रहीं। कई बार वह कुछ कहने लगती, पर किसी कारण रुक जाती। फिर बहुत परिश्रम करके उसने धीरे से कहा—"मुझे क्षमा करना, जेन, मुझे पता न था।"

मेरी समझ में कुछ न आया, क्या उत्तर देती इस पहेली का? एक बार विचार आया कि शायद मेरे प्यार के विषय में कह रही हो, पर विश्वास न होता था। मैं चुप रही। उसने फिर कहा निद्रा की अवस्था में—

"जेन, मुझे पहले पता न था कि तुम उन्हें प्यार करती हो, नहीं तो कभी तुम्हारे रास्ते में अड़चन न डालती। मुझे क्षमा कर देना।" उसने सिसकते हुए कहा—"मैं अब उन्हें प्यार न करूँगी, वह मेरे कुछ नहीं लगते।"

यह सब सुनकर मैं अपने को सँभाल न सकी। उसका सिर अपने कंधे पर रखकर स्वयं भी रोने लगी। उसके भोलेपन और उदार हृदय ने मुझे परास्त कर दिया।

"ऐली, मेरी प्यारी, इसमें तेरा कोई अपराध नहीं। पापिन तो मैं हूँ कि तेरे सुख में बाधा डाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हूँ। वह तुम्हें प्यार करते हैं, तुम दोनो सुखी रहो, मैं अपने लिये तुम दोनों का हृदय न टूटने दूँगी।"

"नहीं, जेन, अब मैं उनकी कुछ नहीं लगती।" उसने आँसू पोंछते हुए कहा—"वह अब तुम्हारे होंगे।"

"ऐसा क्यों कहती है, पगली, इतने दिन उन्हें प्यार किसलिये किया था?"

"मैं अपना प्रेम करुणा में बदल दूँगी, और उसे दीन-दुखियों में लुटा दूँगी। मुझे आशीर्वाद देती रहना कि उनकी ही सेवा में जीवन अर्पण कर सकूँ।"

यह कहकर वह बाहर चली गई। मैं कमरे में बैठी विचार-धारा में डूब गई। कितना प्यार पाया मैंने अपने प्रति उसके कोमल हृदय में! वह मेरे लिये अपने पवित्र प्रेम का बलिदान तक करने को तैयार हो रही थी। मुझे अपने द्वेष और ईर्ष्या पर ग्लानि होने लगी, और अपने गत दो मास के व्यवहार का ध्यान आते ही मैं पागल-सी हो गई। खड़ी होकर कमरे में घूमने लगी। पता नहीं, क्या-क्या विचार मन में आए। आख़िर इसी निर्णय पर पहुँची कि इन दोनो के सुख को अपना सुख समझूँ। वह ऐली को इतना प्यार करते हैं, उसके स्थान पर मुझे पाकर उनके मन को दुःख न होगा? क्या वह मेरे स्वार्थ की बात जानकर मेरे साथ प्रेम कर सकेंगे? क्या ऐली का बलिदान उसे उनकी दृष्टि में और भी उच्च बनाकर उन्हें मेरी ओर झुकने देगा?

रात्रि को सोते समय भी इन्हीं प्रश्नों ने मुझे संशयित-सा रक्खा।

दूसरे दिन मैंने स्थिर निश्चय कर लिया कि माताजी से कहकर शीघ्र ही इन दोनो का विवाह करवा दूँ, जिससे ऐली को इस भारी बलिदान का अवसर ही न मिले। परंतु इसके तीसरे दिन मैं अपने कमरे में बैठी इसी समस्या पर विचार कर रही थी। आइवी ने आकर उनका संदेश दिया, वह मुझे उद्यान में बुला रहे थे। मेरी समझ में न आया कि क्या बात है, और मैं न गई। आइवी ने फिर आकर कहा कि एक आवश्यक काम है। मुझे जाना पड़ा।

वह पुष्पों की ओर दृष्टि जमाए कुछ सोच रहे थे, मेरे आने की आहट पा, गंभीर हो, मुझे देखते रहे। फिर धीरे से बोले—"जेन, मैं जानता हूँ, तुम मुझे बहुत प्यार करती हो। कहो, मेरे साथ विवाह कर सकोगी?"

मैं अचंभे में आ गई, मुझे अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

"मुझे अपना बना सकोगी?" उन्होंने फिर पूछा।

मैंने उत्तर देना चाहा, परंतु दे न सकी। मैं उन्हें समझाना चाहती थी कि उन्हें ऐली के साथ विवाह करना ही उचित होगा। पर पता नहीं, क्यों शब्द मुँह से न निकलते थे। हृदय धड़क रहा था, मैं उसे वश में न कर सकी।

सहसा विचार आया कि इसी घड़ी के लिये ही तो कई रातें रोते बिताई हैं, ऐसे सुअवसर को क्यों हाथ से जाने दूँ? क्यों न 'हाँ' कहकर सदा के लिये उनकी हो जाऊँ?

फिर भय-सा होने लगा। वह तो अब तक ऐली को प्यार करते आए हैं, फिर आज मेरे साथ क्यों विवाह करना चाहते हैं? इसमें अवश्य ऐली का हाथ है, वह मेरे लिये अपना प्रेम लुटा रही है। मैं काँप उठी, उसके मन की व्यथा का ध्यान आते ही।

"नहीं।" मैंने एक पुष्प की पँखुड़ियों को मसलते हुए कहा—"आपका विवाह ऐली से ही होना चाहिए।"

वह कुछ देर मेरी ओर देखते रहे, फिर मेरे कंधे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हाथ रखते हुए बोले—"मैं तुम्हारे साथ ही विवाह करूँगा, जेन ! कहो, स्वीकार है ?"

उनकी वाणी में दृढ़ता थी, शब्दों में संकल्प। मैंने उनका हाथ कंधे से हटा दिया, और विचारों में मग्न हो गई। ऐली का ध्यान बार-बार आ रहा था, मानो वह अपना हृदय खोले मुझे अपनी पीड़ा दिखा रही हो। मेरे अपने हृदय में उसके लिये वेदना होने लगी।

परंतु फिर मन में एक हूक-सी उठी, और मैं अस्थिर होने लगी, अपने प्रेम का ध्यान आने पर। स्वार्थ अपने पंख फैलाए सामने से आता दिखाई दिया। मैंने नेत्र बंद कर लिए, और मुँह ढाँपकर रोने लगी।

"जेन," उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा—"वह मेरे साथ विवाह न करेगी, और कर भी नहीं सकती। तुम बड़ी हो, वह तुमसे पहले विवाह न करेगी।"

"मैं उसकी राह में न आऊँगी। मैं शीघ्र ही किसी अन्य के साथ विवाह कर लेती हूँ, फिर आप उसे अपनी बना सकेंगे।" मैंने कहा।

हाँ, कहने को तो कह दिया, परंतु मन डरने लगा कि कहीं सचमुच ही वह यह बात न मान जायँ। स्वार्थ ने मेरे हृदय को अपने वश में कर लिया था। जब उन्होंने उत्तर दिया कि वह अब मेरे सिवा और किसी के साथ विवाह न करेंगे, तो मेरे मन से मानो एक भारी बोझ उठ गया। मैंने उनसे कह दिया कि दूसरे दिन सोच-विचारकर उत्तर दूँगी।

उन्होंने एक बार मेरी ओर देखा, धन्यवाद देते हुए, फिर प्रथम बार मुझे प्यार किया। मैं अपने को भूल गई स्वर्ग-सुख का अनुभव करते हुए, और खो बैठी अपनी प्यारी ऐली के सुख के विचार को। उसी क्षण मैंने सदा के लिये ऐली की राह का काँटा बन जाने का निर्णय कर लिया।

दूसरे दिन सायंकाल को उद्यान से लौटकर उन्होंने घर में सूचना दी कि हम दोनो का संबंध निश्चित हो गया है। ऐली ने यह सुना और आँख बचाकर अपने कमरे की ओर चली गई। आइची ने मेरे गले से लिपटते हुए मुझे बधाई दी। पिताजी भी अत्यंत प्रसन्न थे, वह यह न चाहते थे कि मेरे रहते ऐली का विवाह पहले हो जाय। माताजी उस समय बाहर गई हुई थीं।

अवसर पाकर मैं ऐली के कमरे में गई। वह उनका एक पत्र हाथ में लिए शय्या पर लेटी थी। मेरे आने की आहट पाकर उठ बैठी, और दौड़कर मुझसे लिपट गई। आँसुओं को छिपाते हुए उसने एक बार बधाई दी, फिर हँसने का प्रयत्न करते ही रोने लगी। मैं भी रोई, अपनी स्वार्थता पर नहीं, उसके बलिदान पर दो अश्रु-पुष्प चढ़ाने के लिये।

"जेन," उसने अश्रु-भरे नेत्रों से मुझे देखते हुए कहा—"उनके साथ अच्छा व्यवहार करना *।"

---

* इस कहानी का प्लॉट सर थॉमस मूर के जीवन की एक घटना से लिया गया है, और समाज-सुधार-संबंधी विचार उनकी पुस्तक 'यूटोपिया' (Utopia) से लिए गए हैं। उपर्युक्त घटना यह है—

"...he made the acquaintance with the family of John Cult of New Hall, in Essex. 'The honest and sweet conversation' of the three daughters attracted him, and though his inclination led him to prefer the second he married the eldest, Jane, in 1505, not liking to put the affront upon her of passing her over in favour of her younger sister."

कहानी की अन्य कई बातें काल्पनिक हैं। भारतवर्ष में भी ऐसी बहनों की कमी नहीं, जो अपनी भगिनी के प्रेम-पथ में कंटक न बनकर सहृदयता का व्यवहार करती हैं।

—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर गोपालशरणसिंह की कविता

[श्रीयुत रामचंद्र टंडन एम्० ए०, एल्‌एल्० बी०]

'ज्योतिष्मती' (१९३९) ठाकुर गोपालशरणसिंह की कविताओं का एक नया संग्रह है। इसका प्रकाशन इस बात का अवसर प्रस्तुत करता है कि उनकी रचनाओं पर समग्र रूप से विचार किया जाय। इससे पहले ठाकुर साहब की कविताओं के तीन और संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं—'माधवी' (१९२५), 'कादंबिनी' (१९३७) और 'मानवी' (१९३८)। कवि की अन्य रचनाएँ, जो पुस्तक-रूप में नहीं आईं, परंतु हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं, इतनी हैं कि उनसे प्रकाशित संग्रहों के आकार की कम-से-कम दो पुस्तकें और तैयार हो सकती हैं। ये सब कृतियाँ ठाकुर साहब ने लगभग चौथाई सदी के भीतर प्रस्तुत की हैं। इससे स्पष्ट है कि काय में ठाकुर साहब का रचनात्मक कार्य बृहद् नहीं, फिर भी उनकी काव्य-रचना के प्रति लगन पुरानी है, और जो कुछ उन्होंने प्रस्तुत किया है, उसमें संयम, संस्कृति और सुव्यवस्थित तथा परिष्कृत भाषा के गुण हैं। हम इस बात का सदा भरोसा रख सकते हैं कि उनकी रचनाएँ एक विशेष कोटि की अवश्य रहेंगी। कवि का जीवन सुसंस्कृत अवकाश का जीवन रहा है, जिसमें उन्होंने बहुत कुछ मनन किया है। यदि वह एक साधारण और रूढ़ विषय भी उठा लेंगे, तो अपने वर्णन-कौशल द्वारा उसमें जान डाल देंगे।

ठाकुर गोपालशरणसिंह खड़ी बोली हिंदी के हमारे ज्येष्ठ कवियों में हैं। आधुनिक हिंदी-कविता के विकास में उनका ख़ासा हाथ रहा है। सरस्वती पत्रिका के प्रारंभिक दिनों में, जब स्वर्गीय आचार्य द्विवेदीजी हिंदी-कविता की धारा व्रजभाषा से फेरकर खड़ी बोली की ओर लाने का अथक प्रयत्न कर रहे थे, कवि गोपालशरण इस पत्रिका के पृष्ठों में बहुधा अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराया करते थे। उस समय के नए हिंदी-कवि पुरानी कविता से भाषा का संबंध ही नहीं तोड़ रहे थे, वरन् समयोपयुक्त नए विषय भी ग्रहण कर रहे थे। प्रकृति-चित्रण, स्वदेश तथा ग्राम-प्रेम, साधारण जीवन के चर्चे, पुराने या नए कथानक, ये ही उस समय कविता के विषय हो रहे थे। इस नए प्रयोग में, अन्य कवियों के साथ-साथ, ठाकुर गोपालशरणसिंह ने भी उत्साह के साथ भाग लिया। कवि ने जो रचनाएँ इस काल में प्रस्तुत कीं, उनमें भाषा की सुघरता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णन की सादगी की झलक हमें मिल चुकी थी। लेकिन उन रचनाओं की स्मृतियाँ इस समय धूमिल होने लगी हैं। इन रचनाओं के संग्रह की आवश्यकता न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से है, बल्कि, मुझे विश्वास है, वे स्वयं भी संरक्षणीय हैं।

प्रयोग की अवस्था उस समय समाप्त हो चुकी थी, जब ठाकुर साहब का पहला कविता-संग्रह 'माधवी' नाम से प्रकाशित हुआ। इसका परिचय, ग्रंथ के आरंभ में, महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा महोदय ने अँगरेजी में लिखा है। डॉक्टर झा स्वयं ब्रजभाषा के माधुर्य से प्रभावित तथा उस बोली के पक्षपाती रहे हैं। इस बात को स्वीकार करते हुए भी उन्होंने कवि की खड़ी बोली की भाषा-शैली के विषय में यह लिखा है—"यह इतनी शुद्ध और मीठी है, जितनी इस बोली के लिये होना संभव है।"

कविताओं के विषय के संबंध में डॉक्टर झा लिखते हैं—"ये तीन सौ कई पद्य, जैसा इनके संबंध में कहा गया है, लघु चित्रपटों की भाँति हैं, जो भाव तथा रूप दोनो ही दृष्टियों से अतीव सुंदर हैं।" एक प्रकांड पंडित और काव्य-पारखी की ऐसी ऊँची एवं यथार्थ सम्मति पाकर कवि का गर्वान्वित होना उचित ही जान पड़ेगा। इस संग्रह के अधिकांश छंद घनाक्षरी हैं और कुछ सवैए। ये छंद ऐसे हैं, जिन्हें ब्रजभाषा के अनेकानेक कवियों ने माँजकर चमकाया है। ठाकुर साहब के पक्ष में यह बड़े श्रेय की बात है कि उन्होंने इन छंदों के साँचे में खड़ी बोली-कविता के ढाले जाने की संभावना सफलता-पूर्वक सिद्ध की है। बहुत-सी कविताओं के विषय कृष्ण के जीवन से ग्रहण किए गए हैं। 'ब्रज-वर्णन', 'ब्रजराज' और 'नंदलाल' इस प्रकार की कविताओं में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कवि की रचनाओं ने न केवल पुरानी कविता का कलेवर अपनाया है, वरन् वे मध्यकालीन भक्ति तथा शृंगार-प्रधान कविताओं के सुवास को भी अधिकृत कर सकी हैं। एक दूसरा विषय, जिस पर इस संग्रह की कई कविताएँ लिखी गई हैं, शैशव का है। इनमें कवि ने शिशु-मनोवृत्ति के ज्ञान से अपना घना परिचय प्रकट किया है। अन्य विविध विषयों पर भी कविताएँ हैं। इनमें हमें कहीं कल्पना की उड़ान और काव्य-छटा भी मिलेगी, और कहीं वस्तु-जगत् के आधार पर निर्मित सीधे-सादे वर्णन। कवि का देश-प्रेम 'भारत-नारद-सम्मिलन'-शीर्षक कविता में प्रदर्शित होता है। इस कविता में भारत अपनी ग़रीबी और सामाजिक तथा नैतिक दुरवस्था पर पश्चात्ताप प्रकट करता है। परंतु अंत में भविष्य के लिये नारद के मुख से आशा-जनक वाक्य कहलाए गए हैं, जिससे कवि की देश के आनेवाले दिनों के प्रति आशावादिता प्रकट होती है। फिर भी इस संग्रह में जिन रसों की प्रधानता है, वे हैं भक्ति और शृंगार। इनका उद्गार सहज-सरल भाषा में हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन की दृष्टि से तीसरा, परंतु अधिकांश संगृहीत कविताओं की रचना-तिथि की दृष्टि से दूसरा संग्रह 'मानवी' है। सब मिलाकर इसमें सत्रह कविताएँ हैं। ये सभी कविताएँ किसी-न-किसी रूप से नारी-जीवन से संबंध रखती हैं, अतएव संग्रह का नामकरण पूर्ण रूप से सार्थक है। नारी कवियों के लिये सदा से कविता का विषय रही है। नारी-रूप की यथार्थ कल्पना करने में कविगण पराभूत होते रहे हैं, फिर भी उसके प्रति उनका निरंतर आकर्षण बना रहा है। इस प्रकार के रचनात्मक प्रयासों का अंत नहीं हो सकता। 'मानवी' की कविताएँ नारी-रूप के समझने की दिशा में ठाकुर गोपालशरणसिंह का अपना अंश-दान है। इस संग्रह में हमें सीता और शकुंतला-जैसी प्राचीन कथा-पात्रियों के अध्ययन भी मिलेंगे, और कवि चंडीदास की प्रेमिका रामी और विख्यात अनारकली-जैसी पात्रियों के भी। इसके अतिरिक्त स्त्री-जीवन की विभिन्न अवस्थाओं, कौमार्य, वधूत्व, मातृत्व, वैधव्य आदि के भी मार्मिक वर्णन मिलेंगे। 'व्रजबाला' और 'देवदासी'-नामक कविताओं में, जो इस संग्रह की सर्वोत्कृष्ट कविताओं में हैं, हमें कवि की सहृदयता-पूर्ण पैठ उसकी कोमल कल्पना की पात्रियों के मनोभावों में दिखाई पड़ेगी। कवि के नारी के प्रति दृष्टिकोण का भेद-पूर्ण परिचय कदाचित् हमें उस सुंदर कविता की एक कड़ी में मिलेगा, जिससे पुस्तक का आरंभ होता है, और जिसके नाम पर ही पुस्तक का नामकरण हुआ है। वह कड़ी है —

"युग-युग के अगणित क्लेशों की
तू है करुण कहानी।"

कवि नारी के जीवन में अंतर्व्याप्त करुणा की एक पुट देखते हैं; वह यह भी अनुभव करते हैं कि नारी अपने नियत भार का सहनशीलता और दृढ़ता-पूर्वक वहन कर रही है। त्रस्त नारीत्व की इस प्रकार की कल्पना, संभव है, हमें वस्तुस्थिति का केवल आंशिक प्रदर्शन कराती हो; संभव है, यह पुरुष-मात्र के प्रति आनुषंगिक रूप से उचित भी न हो, परंतु इन कविताओं के पाठकों के मन में ठाकुर गोपालशरणसिंह की वास्तविक सहृदयता के प्रति संशय न उपजेगा। वह सफलता-पूर्वक करुण-रस जाग्रत करने में समर्थ हुए हैं।

ठाकुर गोपालशरणसिंह की जो कविताएँ 'कादंबिनी' में एकत्र की गई हैं, उनमें से बहुत-सी ऐसी हैं, जिन्हें देखकर पाठकों को किंचित् विस्मय हुआ होगा। हमारे समकालीन कवियों के विषय में, जो द्विवेदी-स्कूल के हैं, यह कहा जाता है कि वे 'क्लासिकल' शैली का अनुसरण करते हैं। उनके अतिरिक्त वे नए अथवा छायावादी स्कूल के कवि हैं, जिन्हें 'रोमांटिक' कहा गया। 'क्लासिकल' तथा 'रोमांटिक' वर्गों के हमारे कवियों का विभाजन विशेष रूप से उपयुक्त नहीं। फिर भी दोनो वर्गों में भेद स्पष्ट है, यह बात तो स्वीकार ही की जायगी। द्विवेदी-स्कूल के कवियों ने ह्रासो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्मुख ब्रजभाषा की कविता-शैली का परित्याग कर साहस तथा मार्ग-प्रदर्शन का जो अमूल्य कार्य किया था, उसके लिये उनकी सराहना तो होनी चाहिए, परंतु वे स्वयं रूढ़ियों के शिकार हुए। उनकी रचनाओं के विषय बहुत सीमित और संकुचित हो रहे थे। वे एक प्रकार से लीक के गर्त में पड़ गए थे। तथाकथित 'रोमांटिक' अथवा 'छायावादी' कवियों ने, श्रीसुमित्रानंदन पंत के नेतृत्व में, हिंदी-कविता को इस लीक से उबारा, और उसे एक नई कल्पना प्रदान की। कम-से-कम एक नई कल्पना की संभावना प्रदर्शित की। हमारी कविता में उनके द्वारा नए रक्त का संचार हुआ। एक अवरुद्ध वातावरण में ताज़ी हवा का संचार हुआ। फिर तो ज्येष्ठ कवि भी प्रभावित हुए बिना न रहे। बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने जिस रूप में यह प्रभाव ग्रहण किया, उसे हम उनके 'झंकार'-नामक संग्रह में देखते हैं। उन्होंने नई कविता की लाक्षणिकता पर आस्था दिखाई। 'कादंबिनी' में हम ठाकुर गोपालशरणसिंह द्वारा ग्रहण किए प्रभाव का रूप पावेंगे। उन्होंने नई कविता की ध्वनि और संगीत को अपनाया। 'छायावादियों' ने अपनी कल्पना की उड़ान में दुःसाहस तक दिखाया था, जिसके कारण उनकी रचनाएँ अक्सर अस्पष्ट हो गई हैं। इस प्रकार का आरोप 'झंकार' और 'कादंबिनी' के कवियों पर नहीं हो सकता। नए प्रभावों को ग्रहण करने के प्रति संकोच न दिखाते हुए भी इन कवियों ने एक स्वस्थ रूढ़िप्रियता का परिचय दिया। 'कादंबिनी' की 'अनंत छवि', 'अमर गान', 'अनंत यौवन', 'अनंत जीवन', 'अनंत उल्लास' आदि कविताएं ठाकुर गोपालशरणसिंह के नए रुख़ की परिचायिका हैं। प्रसंग-वश यह भी कहा जा सकता है कि इनमें से अधिकांश में हम आशावादिता और उल्लास का प्रदर्शन पाते हैं, पहले की कविताओं की भाँति शोकोच्छ्वास और करुणा का नहीं।

'ज्योतिष्मती' ठाकुर साहब का यद्यपि नवीनतम संग्रह है, इसकी सभी कविताएँ प्रकाशन-काल की रचनाएँ नहीं, दो-एक रचनाएँ तो 'माधवी' से पूर्व की भी हैं; फिर भी सभी कविताएँ एक वर्ग-विशेष की हैं। इनमें हम एक सायास प्रस्तुत आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पाते हैं। इस प्रकार की रचनाएँ करने में सदा एक भय रहता है; वह यह कि वास्तविक आध्यात्मिक प्रेरणा कहीं रूढ़ि वाक्यों में न विलीन हो जाय। मुझे आशा है, 'ज्योतिष्मती' के पाठक इस बात का अनुभव करेंगे कि ठाकुर साहब की प्रेरणा सजग रही है। सब मिलाकर इस संग्रह में ४६ गीत और कविताएँ हैं, जिनका प्रधान रस शांत है। इन कविताओं का कवि के पिता की स्मृति में समर्पित होना समीचीन है।

ठाकुर गोपालशरणसिंह की अवस्था अभी केवल ४७ वर्ष की है। उनके सामने रचनात्मक जीवन के अनेक वर्ष हैं। उनकी प्रेरणा आगे चलकर क्या रूप अपनाएगी, इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य-वाणी नहीं की जा सकती। उनकी मानसिक और साहित्यिक योग्यता ऐसी है कि वह सहज में एक बड़े काव्य की रचना का कार्य उठा सकते हैं। अभी तक उनकी रचनाएँ गीतों और मुक्तकों तक सीमित रही हैं। क्या हम उनसे भविष्य में किसी खंड काव्य अथवा महाकाव्य की अपेक्षा करें? सन् १९२४ में ठाकुर साहब की कविता के संबंध में लिखते हुए स्वयं आचार्य महावीर-प्रसादजी द्विवेदी ने इसी प्रकार की आशा की थी। उसकी पूर्ति के लिये हमें कितनी प्रतीक्षा करनी होगी, कैसे कहा जा सकता है? परंतु ठाकुर साहब ने कविता के क्षेत्र में हिंदी-साहित्य को जो चीजें दी हैं, उनके आधार पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि भविष्य में भी जो कुछ वह देंगे, वह भाषा की दृष्टि से परिमार्जित और विषय की दृष्टि से पुष्टिकर वस्तु होगी।

केशों के सौंदर्य को बढ़ाने का उत्तम साधन!

केश-राज
Regd.

केश - तेलों का राजा

इसकी सुगंध मनोहर तथा स्थायी है। इसके लगाने से चित्त प्रसन्न तथा उत्साहित रहता है, बाल लंबे, काले, चमकीले और घुँघराले होकर सौंदर्य-पूर्ण हो जाते हैं। आज ही एक शीशी ख़रीदकर इसके गुणों की परीक्षा कीजिए।

अपने स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग-नं० ४६, पोस्टबक्स नं० ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनिहारिन

(गद्य काव्य)

[श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

पनघट पर भीड़ लगी है। नई-नवेली पनिहारिनें हँसती और खेलती हैं, भूत और भविष्य को भूली हुई, एक सत्य और नित्य वर्तमान में लय होकर।

"हे पनिहारिन! मैं प्यासा हूँ। दूर-देश से चलकर आ रहा हूँ, क्या तुम मेरी प्यास बुझा सकोगी?" आनेवाले एक सुंदर युवक ने पूछा।

"मेरे घर में भी एक प्यासा देवता बैठा है, मुझ पर अवलंबित। तुम अपने घर में शीतल जल छोड़कर रास्ते-रास्ते भटक रहे हो, पर मेरा देवता मुझ पर अवलंबित मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। उसकी प्यास बुझाना मेरा धर्म है।" मुस्किराते हुए पनिहारिन ने उत्तर दिया।

अपने सुंदर मस्तक को तनिक और ऊँचा करके अतिथि हँस पड़ा। उसके हास्य में संगीत था, माधुर्य था। उसने कहा—"जिस प्रकार जल का गुण है रिक्त को पूर्ण करना, उसी प्रकार प्यास का गुण है भरे की ओर दौड़ना। सीमा में जल को बाँधनेवाली तुम हे सुंदरी, और सीमा में प्यास को बाँधनेवाला तुम्हारा सुंदर देवता, ये दोनो ही मृत्यु का सौंदर्य लिए हैं। जीवन का सौंदर्य असीमता की ओर अग्रसर होने में है!"

पनिहारिन इस उत्तर से चौंक उठी। बहुत दिनों से वह अपने हृदय में एक पीड़ा का अनुभव करती थी; अपने देवता से उसे अरुचि-सी हो रही थी। आज उसने अनायास ही उस सबका उत्तर पा लिया।

उसने पात्र बढ़ाया—"लो युवक! अपनी प्यास बुझाओ।"

लेकिन युवक गंभीर था। उसने कहा—"नहीं पनिहारिन! अतिथि से 'ना' कहना सबसे बड़ा अपराध है—वह एक ऐसा अपराध है, जो अक्षम्य है। अनादि काल से मैं प्यासा चल रहा हूँ—केवल सहृदयता का जल पाने के लिये! तुम भी परीक्षा में असफल रहीं! नमस्कार!"

और युवक चल पड़ा! पनिहारिन तब तक उस युवक की ओर देखती रही, जब तक उसकी आँखों के अश्रुओं ने उसकी दृष्टि को धुँधला नहीं कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आधुनिक हिंदी के निर्माता

[श्रीआत्मानंद मिश्र एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, विशारद]

अक्टोबर सन् १९०४ की बात है। 'सरस्वती' में नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा हस्त-लिखित पुस्तकों की 'खोज की रिपोर्ट' की तीव्र आलोचना निकली थी। सभा ने इसका विरोध करते हुए पत्रिका के संचालक को एक पत्र प्रेषित किया। दो मास पश्चात् 'सभा और सरस्वती' लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रतिवादी पत्र पर कटाक्ष तथा रिपोर्ट की और भी कड़ी समालोचना की गई थी। यह लेख निकलते ही सभा के शुभ-चिंतकों में बड़ी हलचल मच गई। विवाद ने इतना उग्र स्वरूप धारण कर लिया कि सभा ने शीघ्र ही समिति की बैठक कर इंडियन प्रेस को सूचना दी कि आगामी जनवरी से सभा 'सरस्वती' के ऊपर से अपना रक्षा का हाथ उठाना चाहती है। तब संचालक ने संपादक का हाथ पकड़ा तथा संपादक ने सरस्वती का और तीनो ही विना किसी की सहायता की इच्छा किए विरोधी तरंगों के बीच साहित्य-सागर में अवतीर्ण हुए। जनवरी की 'सरस्वती' के लिये छपे हुए मुखपृष्ठ नष्ट कर दिए गए, और उनके स्थान पर नागरी-प्रचारिणी सभा के अनुमोदन से संस्थित दूसरे मुखपृष्ठ छपवाकर पत्रिका निकाली गई। इसमें 'अनुमोदन का अंत' लेख लिखकर संपादक ने बड़ी शिष्टता, मार्मिकता एवं सहृदयता के साथ सभा को अंतिम नमस्कार किया था।

इस विवाद से क्रुद्ध होकर सभा के एक सदस्य महोदय सरस्वती-संपादक से मिलने गए। घर के द्वार पर ही उन्होंने गौर-वर्ण, उन्नत-ललाट, असाधारण बड़ी भौंहों के बीच मर्मभेदी दृष्टि तथा सिंह-सदृश बिखरी हुई बड़ी-बड़ी मूछोंवाले एक व्यक्ति को बैठे देखा। पूर्व-परिचय होने के कारण आगंतुक ने आवेग में आकर आते-ही-आते पहला प्रश्न किया—"सभा के कार्यों की इतनी कड़ी आलोचना का हमें किस रूप में प्रतिवाद करना होगा? क्या 'विषस्य विषमौषधम्' की नीति का अवलंबन करना पड़ेगा?"

परंतु संपादकजी ने हँसते हुए, मधुर वाणी में कहा—"देवता, ठहर जाओ, मैं आता हूँ।" इतना कहकर वह घर के भीतर घुस गए, और तुरंत ही एक हाथ में गिलास, जिस पर सुंदर मिष्टान्न-युक्त एक तश्तरी विराजती थी, दूसरे हाथ में जल-भरा लोटा लिए बाहर आए, और लाकर उन्हें अतिथि के सम्मुख रख दिया। फिर कमरे से एक मोटा सोंटा लाकर उनके सामने रखते हुए मुस्किरा-कर बोले---"सुदूर प्रवास से थके-माँदे आ रहे हैं। पहले हाथ-मुँह धोकर, जल-पान करके सबल हो जाओ, तब यह लाठी और यह मेरा मस्तक।" इतना कहकर उन्होंने अपना मस्तक नत कर दिया।

उग्र प्रश्न और उद्दंड व्यवहार के प्रति ऐसा विनम्र उत्तर और सज्जनोचित सद्व्यवहार देखकर सदस्य महाशय का क्रोध काफ़ूर हो गया, और उनके हृदय में ऐसे भद्र पुरुष के प्रति श्रद्धा और भक्ति का भाव उमड़ पड़ा।

प्रतिद्वंद्वी के प्रति आत्मीयता-पूर्ण सद्व्यवहार बर्तने की उदार नीति के पालक, शिष्टता एवं सहृदयता की सन्मूर्ति, संपादक-सम्राट् यह आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदी थे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनी

इनका जन्म वैशाख, संवत् १९२१ विक्रमाब्द में, भागीरथी-तटस्थित ग्राम दौलतपुर (ज़िला रायबरेली) में, एक उच्च कान्यकुब्ज-परिवार में, हुआ था। इनके जन्म-दिवस ही एक ज्योतिषी ने, जो अनायास ही उधर निकल पड़ा था, बालक-जन्म का समाचार सुन इनकी जिह्वा पर सरस्वती का बीज-मंत्र अंकित कर दिया। संभवतः इसी कारण यह सरस्वती के विख्यात तथा अनन्य भक्त हुए। इनके पिता बंबई में नौकर थे। प्रचलित परिपाटी के अनुसार बालक महावीर की शिक्षा का श्रीगणेश 'सारस्वत', 'अमर-कोषादि' से हुआ। परंतु कुछ समय बाद संस्कृत छोड़कर उन्होंने ग्राम की पाठशाला में उर्दू पढ़ना आरंभ किया। तेरह वर्ष की आयु में अँगरेज़ी पढ़ने के लिये आप रायबरेली गए। यहाँ संस्कृत का तिरस्कार होने के कारण आपने अँगरेज़ी के साथ फ़ारसी पढ़ी। आपको प्रतिसप्ताह आटे-दाल की गठरी लादकर बत्तीस मील पैदल रायबरेली जाना पड़ता था। अधिक दूर होने के कारण एक वर्ष बाद आपने रायबरेली छोड़ दी, और पुरवा के अँगरेज़ी-स्कूल में भरती हुए। परंतु इस स्कूल के शीघ्र ही बंद हो जाने से आपको पढ़ने के लिये उन्नाव और फ़तेहपुर जाना पड़ा।

चार वर्ष तक स्थान-स्थान पर घूमने के कारण पढ़ने की अव्यवस्था देखकर महावीरप्रसाद के पिता ने उन्हें अपने पास बंबई बुला लिया। यहाँ रहकर उन्होंने अँगरेज़ी पढ़ी, और साथ ही मराठी तथा गुजराती भाषाओं का भी अभ्यास किया। एक वर्ष अजमेर में पंद्रह रुपए की नौकरी करने के पश्चात् आपने बंबई में तार का काम सीखा, और जी० आई० पी० रेलवे में तार-बाबू हो गए। हरदा, खड़वा, इटारसी, नागपुर आदि स्थानों में आपकी पदोन्नति होती रही। जब झाँसी में नया रेलवे-दफ़्तर खुला, तब यह अपनी प्रवीणता के कारण टेलीग्राफ़-इंस्पेक्टर बनाकर वहाँ नियुक्त किए गए। आपका काम इतना नियमित एवं सुव्यवस्थित होता था कि आपसे छोटे-बड़े सभी अफ़सर अति प्रसन्न रहा करते थे। यहाँ इन्होंने एक प्रकार के नवीन लाइन-क्लीयर का आविष्कार करके तथा टेलीग्राफ़ी पर एक अँगरेज़ी में पुस्तक लिखकर अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। आप कानपुर से इटारसी और आगरा से मानिकपुर तक के रेलवे-कार्य का निरीक्षण किया करते थे। इस यात्रा में बहुधा बंगाली बाबुओं से मिलना होता था, अतएव उनके संपर्क में रहकर आपने बँगला भी सीख ली। एक गौरांग साहब ने, जिसे आपने कुछ दिन काम सिखाया था, अफ़सर होने पर यह चाहा कि द्विवेदीजी कुछ कर्मचारियों से अतिरिक्त कार्य किया करें। इसे अनुचित समझकर द्विवेदीजी ने अस्वीकार किया, तब गौरांग अफ़सर ने कुछ रोब जमाना चाहा। आत्मसम्मान-रक्षार्थ दूसरे दिन सबेरे द्विवेदीजी ने नौकरी छोड़ दी, और इंडियन-प्रेस के स्वामी श्रीचिंतामणि घोष के 'सरस्वती'-संपादन-कार्य सँभालने के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। द्विवेदीजी-ऐसे त्यागी ब्राह्मण थे कि उन्होंने आत्मगौरव के लिये २००) की नौकरी पर लात मार दी, और आत्मसंयम द्वारा उसके दशांश पर ही अपना निर्वाह करने लगे।

द्विवेदीजी के ग्राम (दौलतपुर) में, अठारहवीं शताब्दी में, एक विख्यात कवि पं० सुखदेव मिश्र हुए थे। उन्होंने ग्राम-वासियों की रुचि कविता की ओर अधिक कर दी थी। तभी से गाँव में थोड़ा-बहुत साहित्यिक वातावरण चला आता था। इस प्रकार अपने बाल-काल में द्विवेदीजी की अभिरुचि कविता की ओर हुई। बचपन में ही आपको तुलसी-कृत रामायण और व्रजविलास से बड़ा प्रेम था। अठारह वर्ष की आयु में आपने 'गंगा-लहरी', 'विनय-विनोद' तथा 'देवी-शक्ति' आदि कविताएँ लिखीं, जिनका संग्रह बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'काव्य-मंजूषा' में निकला। अन्य भाषाओं के साहित्य की उन्नति देखकर द्विवेदीजी को हिंदी की हीन दशा पर बड़ा दुःख होने लगा। उन्हें हिंदी-साहित्य को हरा-भरा देखने की उत्कट आकांक्षा हुई। अतएव आपने नौकरी की दशा में ही साहित्य-सेवा करना प्रारंभ कर दिया था। होशंगाबाद में रहते हुए भारतेंदु की 'कवि-वचन-सुधा' से आपके हिंदी-अनुराग की वृद्धि हुई। वहाँ आपने संस्कृत-काव्य तथा पिंगल-शास्त्र का अध्ययन किया। झाँसी आने पर आपने गद्य लिखने की ओर अधिक ध्यान दिया। इसी समय आपने इंडियन-प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुई एक रीडर की समालोचना की, जिससे आपका उक्त प्रेस से परिचय हुआ। श्रीयुत चिंतामणि घोष इनकी विद्वत्ता से इतने प्रभावित हुए कि सन् १९०३ में उन्होंने द्विवेदीजी को संपादक-मंडल के स्थान पर एकमात्र संपादक बनाकर 'सरस्वती' का समस्त भार सौंप दिया। यद्यपि इसके पूर्व द्विवेदीजी नितांत असाहित्यिक वातवरण में ही रहे हैं, परंतु उनकी स्वभाव-जन्य साहित्यिक प्रतिभा ने तात्कालिक निर्दिष्ट जीवन में ही उन्हें सीमित न रहने दिया।

निर्माता का कार्य

जिस समय द्विवेदीजी साहित्य-प्रांगण में आए, व्याकरण की शिथिलता तथा भाषा की रूप-हानि हिंदी की उन्नति में रोड़े अटका रही थी। विभक्तियों तथा विराम-चिह्नों की कोई निश्चित व्यवस्था न थी। नौकरी के पीछे दीवाने अँगरेज़ी और उर्दूदाँ लोग हिंदी को तुच्छ दृष्टि से देखते थे। अच्छे लेखकों का सर्वथा अभाव ही था। अतएव साहित्यिक क्षेत्र में अवतीर्ण होते ही द्विवेदीजी भाषा की अपंगुता, स्थूलता तथा अव्यवस्था का परिहार करने में लग गए। व्याकरणीय नियमों की अवहेलना तथा भाषा-शैथिल्य के विरुद्ध 'सरस्वती' में एक प्रबल आंदोलन चलाया गया। वाक्यों में विराम-चिह्नों का समुचित स्थान तथा विभक्तियों को पदों से अलग रखने का आदेश हुआ। शब्दों के सरल हिज्जे सिखाए गए। स्पष्ट कथन की आवश्यकता दिखाते हुए लोगों को वाग्आडंबर के स्थान पर वस्तु-व्यंजना की ओर अधिक ध्यान देने को कहा गया। द्विवेदीजी के इस प्रकार के प्रयत्न से खड़ी बोली की एक ऐसी शैली चल पड़ी, जो विशुद्ध, सरल, सुबोध तथा लाइन-क्लीयर-सी स्वच्छ, सपाट थी।

भाषा के पश्चात् विषय की बारी आई। उन दिनों हिंदी-पत्रों की भाषा तथा विषय संपादक महोदय की स्वच्छंद इच्छा पर निर्भर थे। द्विवेदीजी ने सरस्वती का सुचारु संगठन करके उसे बहुविध-विषयक पत्रिका बनाया। उसमें संस्कृत-साहित्य, हिंदी का प्रचार, प्राचीन अनुसंधान, इतिहास, जीवन-चरित्र, यात्रा-विवरण, विज्ञान, शासन-पद्धति तथा नवीन अभ्युत्थान आदि अनेक विषयों पर लेख निकालना आरंभ कर दिया। भारतवर्ष की मुख्य भाषाओं के पत्रों से 'सरस्वती' में टिप्पणियाँ उद्धृत की जाने लगीं। पुस्तक-परिचय का तो आपने स्थायी स्तंभ ही खोल दिया। इसमें नवप्रकाशित पुस्तकों की बहुधा मोल लेकर या माँगकर आलोचना लिखी जाती थी, जिसमें साधारण गुण-दोष-विवेचन के साथ प्रमुख रूप से भाषा तथा व्याकरण की अशुद्धियाँ दिखाई जाती थीं।

गद्य के साथ-साथ आपने पद्य पर भी ध्यान दिया। आपने लोगों को खड़ी बोली में कविता करने के लिये प्रोत्साहित किया। हृदयस्थित अनुभूतियों को रसादि-बंधन-मुक्त होकर निष्कपट रूप से सरल एवं स्पष्ट भाषा में व्यक्त करने पर आपने बहुत ज़ोर दिया। 'प्राचीन कवियों की दोषोद्भावना' लेख लिखकर आपने स्पष्ट कथन की आवश्यकता दिखाई, और उसके प्रमाण-स्वरूप ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रवींद्रनाथ ठाकुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपलूणकर आदि के उदाहरण उपस्थित किए। इस प्रकार आपने हिंदी-कविता को शृंगारिता के जाल से बचाया, और 'सरस्वती' में केवल खड़ी बोली की कविता छापने की धुन ठानकर व्रजभाषा के कवियों को नए मार्ग पर प्रशस्त किया।

द्विवेदीजी ने जिस कार्य को हाथ में लिया था, उसकी सफलता के लिये नए कवियों और लेखकों की आवश्यकता थी। संपादकाचार्य स्वर्गीय पं० रुद्रदत्त शर्मा ने 'सरस्वती' को देखकर कहा था—"हिंदी में इतने उच्च कोटि के लेखक कहाँ मिलेंगे। पत्र का चलना कठिन है।" परंतु संभवतः उन्हें यह स्मरण न रहा कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। द्विवेदीजी ने प्रथम वर्ष की 'सरस्वती' में एकाध लेख छोड़कर लगभग समस्त लेख स्वयं ही लिखे। धीरे-धीरे आपने अपने प्रोत्साहन, व्यंग्य-पूर्ण चुटकियों, सहायता तथा परिश्रम द्वारा बहुत लोगों से हिंदी में लेख लिखवाना आरंभ किया। वह सिद्धांतवादी संपादक थे। यद्यपि लोक-मत तथा लोक-रुचि का उन्हें ध्यान था, परंतु अपने सिद्धांतों का उनसे अधिक। अतएव बहुधा आपको लेख आद्योपांत संशोधित करना पड़ते थे। आप लेखकों के विशेषत्व और भावों की रक्षा करते हुए लेख को प्रकाशित करने योग्य बनाकर केवल अपनी विद्वत्ता का ही नहीं, वरन् धैर्य, परिश्रमशीलता, गुणग्राहकता तथा सहानुभूति का परिचय देते थे। एक बार डाक से आए हुए एक निकृष्ट लेख को बड़ी सावधानी से रखते हुए देख द्विवेदीजी के एक मित्र ने कहा—"ऐसे रद्दी लेख को लौटाल क्यों न दीजिए।" द्विवेदीजी मुस्किराकर बोले—"द्वार पर आनेवाले का स्वागत करना हिंदू-मात्र का धर्म है।" बहुधा अपने संशोधित लेखों को देखकर लेखक अप्रसन्न हो जाते थे, तो द्विवेदीजी लिख भेजते—"आख़िर आपको सर्वज्ञता का दावा तो है ही नहीं। हम सभी भूल कर सकते हैं। मैं भूल करूँ, आप बता दें, तो मैं कृतज्ञता-पूर्वक स्वीकार करूँगा।" वह 'सरस्वती' में एक-एक शब्द नाप-तोलकर लिखते थे, और दूसरों को लिखना भी सिखाते थे। इस प्रकार हिंदी की 'अनस्थिरता' को स्थिरता प्रदान कर उसे विचार-विनिमय का संतोष-जनक साधन बनाने में द्विवेदीजी ने साहित्य-निर्माता का कार्य किया है।

गद्य और पद्य की भाषा एक कर जनता को खड़ी बोली के बल खड़ा करने में आपको अनेक झगड़ों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। परंतु निर्भय तथा निष्पक्ष होकर सत्य एवं खरी बात कहनेवाले आचार्य ने इन वाद-विवादों के कीचड़ से मातृभाषा सुशोभित करने के लिये पंकज ही ढूँढ़ निकाले हैं। नागरी-प्रचारिणी सभा के विवाद के ठीक एक वर्ष बाद आपने 'सरस्वती' में 'भाषा और व्याकरण'-शीर्षक एक लेख लिखा। उसमें हिंदी के उच्च साहित्यिकों की रचनाओं से व्याकरण-संबंधी दोष उद्धृत किए गए थे, जिसमें तत्कालीन 'भारत-मित्र' के संपादक मीरमुंशी बालमुकुंद गुप्त की रचना से भी एक उदाहरण था। अतएव गुप्तजी ने आत्माराम के कल्पित नाम से उसका तीव्र भाषा में खंडन किया। बस, 'सरस्वती-भारत-मित्र' झगड़ा चल पड़ा। द्विवेदीजी पहले सब सहन करते रहे, परंतु जब आत्माराम ने 'हम पंचन के ट्वाला माँ'-शीर्षक लेख लिखकर व्यक्तिगत कटाक्ष किया, तो वह क्षुब्ध हो उठे, और उन्होंने 'कल्लू अल्हइत' के नाम से 'सरगौ नरक ठिकाना नाहिं' बड़ा रोचक आल्हा लिख मारा। इस झगड़े ने हिंदी-संसार में बड़ी खलबली मचा दी थी। आत्माराम की टें-टें का अंत तभी हुआ, जब धर्मभीरु गुप्तजी ने द्विवेदीजी के चरणों पर अपना मस्तक टेक दिया। तत्पश्चात् द्विवेदीजी गुप्तजी की उदारता की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अनस्थिरता' के विवाद ने भी शब्दों के प्रयोग पर बहुत कुछ प्रकाश डाला है।

समालोचना

द्विवेदीजी की आलोचनाओं में दो विशेषताएँ हुआ करती थीं—प्रथम वह निष्पक्ष एवं निर्भय होकर आलोचना करते थे, द्वितीय वह आलोच्य विषय लेखक की रचना को समझते थे, लेखक को नहीं। उनमें सत्यासत्य, सदसत् तथा सुंदर-असुंदर का विवेक प्रचुर मात्रा में था। वह नौकरी की अवस्था में ही 'छत्तीसगढ़-मित्र' आदि पत्रिकाओं में पुस्तकों की समालोचना दिया करते थे। सन् १८९८ ई० में उन्होंने 'श्रीवेंकटेश्वर-समाचार' तथा कालाकाँकर के 'हिंदोस्तान' में अवध-निवासी लाला सीताराम के अनुवादों पर 'हिंदी-कालिदास की आलोचना' निकाली थी, जिसमें भाषा-व्याकरण-संबंधी दोषों के अतिरिक्त इस बात का भी विचार किया गया था कि टीकाकार ने मूल-लेखक के भावों का अनुवाद करने में कहाँ तक सफलता पाई है। फिर द्विवेदीजी ने स्वयं ही 'विक्रमांकदेव-चरित्र-चर्चा' तथा 'नैषध-चरित्र-चर्चा' मौलिक आलोचनात्मक निबंध लिखे। इनमें संस्कृत-काव्यों के प्रचलित श्लोकों की विशेषताएँ तथा उनके विषय में विभिन्न पंडितों के मत संग्रह किए गए थे, जिससे संस्कृत से अनभिज्ञ पाठक संस्कृत-कवि और कविता के विषय में पर्याप्त जानकारी कर सकें। तीसरी पुस्तक 'कालिदास की निरंकुशता' निकली, जिसमें संस्कृत-महाकवि की उपमा-हीनता, उद्वेगजनक उक्ति, व्याकरण तथा इतिहास-संबंधी व्यतिक्रम दिखाए गए हैं। इसमें अधिकांश पंडित-मंडली में प्रचलित कालिदास के दोषों का वर्णन है। स्वतंत्र समालोचना बहुत कम है। सन् १९२० में 'कालिदास'-नामक एक दूसरी पुस्तक लिखकर आपने उसके ग्रंथों की सूक्ष्म आलोचना, उसकी कविता तथा चित्रांकित करनेवाले श्लोक, मेघदूत का रहस्य तथा तत्कालीन भारत-दशा के विषयों पर छान-बीन की है।

संस्कृत-समालोचना में द्विवेदीजी ने दोष-विवेचन अथवा भाषा का छिद्रान्वेषण ही अपना ध्येय रक्खा है। परंतु हिंदी में उनका उद्देश्य दूसरा ही था। वह हिंदी को उच्चासीन देखना चाहते थे, अतएव उन्होंने तत्कालीन साहित्यिक दशा का निदर्शन कराने में व्यंग्य-पूर्ण आलोचनाएँ 'सरस्वती' में निकालीं। उदाहरणार्थ कुछ लेखों के शीर्षक थे—'साहित्य-सभा', 'सूर-समालोचक', 'कला-सर्वज्ञ', 'रीडर-लेखक', 'हिंदी-चाट की चरम सीमा' आदि। इन कटाक्ष-पूर्ण, खंडनात्मक, परंतु सत्य समीक्षाओं ने लोगों के मर्मस्थल पर घाव किया और चारों ओर त्राहि-त्राहि मचने लगी। दयालु ब्राह्मण का हृदय पसीजा, और उसने ऐसी आलोचनाएँ बंद कर दीं। तत्पश्चात् द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' में पुस्तक-परिचय का स्तंभ खोला, जिसमें आलोचना करते हुए वह रचना की भाषा, शैली तथा व्याकरण पर अधिक ध्यान देते थे। विषय की उपयोगिता, मातृभाषा-उन्नति तथा आर्य-संस्कृति की रक्षा का भी उन्हें विचार रहता था। मिश्रबंधुओं के 'हिंदी-नवरत्न' की आलोचना करते हुए आपने यह दिखाया कि कवियों में उत्कर्ष-अपकर्ष के निर्णय की एक व्यवस्था, एक क्रम होना चाहिए। तुलसी, सूर आदि को एक कोटि में और देव-समाज को दूसरी कोटि में रखना उचित है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रति आपने श्रद्धा प्रकट की, और उन्हें अधिकतर उच्च पद का अधिकारी बताया।

सन् १९०३ में आपने 'नाट्य-शास्त्र' आलोचनात्मक पुस्तक लिखी। यह भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा मराठी-लेखक बलवंत कमलाकर राव के इस विषय पर लिखे निबंधों के आधार पर तथा अन्यान्य अँगरेज़ी और संस्कृत-विद्वानों का अध्ययन करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी गई थी। इसमें बहुत-सी खोज-पूर्ण नई बातें भी सम्मिलित हैं। रूपक, उपरूपक, पात्र-कल्पना, जवनिका, भाषा, अलंकार तथा रचना-चातुर्य आदि विषयों पर बड़े सुंदर तथा उपयोगी निबंध हैं। इसकी भाषा कुछ संस्कृत की ओर झुकती हुई जान पड़ती है।

इसके चार वर्ष बाद आपके 'हिंदी-साहित्य' की उत्पत्ति हुई। इसमें वर्तमान हिंदी-संबंधी बातों की अपेक्षा उसकी पूर्ववर्तिनी भाषाओं से संबंध रखनेवाली बातें अधिक हैं। आप हिंदी की उत्पत्ति ढूँढ़ने के लिये ठेठ गंगोत्तरी तक पहुँच गए हैं। आपने आदिम आर्यों की अति प्राचीन भाषाओं का उल्लेख करके उसके क्रम-विकास का हाल लिखा है। इसमें हिंदी की जननी संस्कृत नहीं, वरन् अपभ्रंश भाषाएँ बताई गई हैं, और अपभ्रंश की उत्पत्ति प्राकृत से बताई गई है।

अनुवाद

आरंभ में द्विवेदीजी ने कई अँगरेज़ी-ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया। आपकी 'बेकन-विचार-रत्नावली' (प्रसिद्ध अँगरेज़ी-लेखक लॉर्ड बेकन के ३६ निबंधों का अनुवाद) सन् १९०१ में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक अपने ढंग की अनोखी थी। इसमें अँगरेज़ी-शब्दों का रूपांतर-मात्र न देकर मूल-लेखक के भावों को अपने मनमाने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। इसमें आए हुए ऐतिहासिक नामों का संक्षिप्त विवरण फ़ुट-नोट में लिखकर उनकी सूची भी पुस्तक के अंत में दी गई है। प्रत्येक निबंध के शिरोभाग में प्राचीन संस्कृत-ग्रंथों से एक-एक और कहीं-कहीं दो-दो श्लोक उद्धृत करके निबंध और श्लोकों की एकवाक्यता दिखाई गई है।

आपने प्रसिद्ध दार्शनिक स्टुअर्ट मिल की 'लिबर्टी'-नामक ग्रंथ का 'स्वाधीनता' में तथा विख्यात तत्त्ववेत्ता हर्बर्ट स्पेंसर के 'एजुकेशन' का 'शिक्षा' में भाषांतर किया है। क्लिष्ट तथा विवेचनात्मक विषयों को आपने सुंदर, सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है। इन पुस्तकों के लिखने में द्विवेदीजी का ध्येय अन्य लेखकों को ऐसी पुस्तकें लिखने के लिये प्रोत्साहित करने का था।

आपकी सचित्र हिंदी 'महाभारत' श्रीयुत सुरेंद्रनाथ ठाकुर-लिखित बँगला 'आरकान' का स्वच्छ अनुवाद है, जिसमें महाभारत के महत्त्व-पूर्ण अंशों का ध्यान रखते हुए काफ़ी काट-छाँट की गई है। भाषा बोलचाल की है, परंतु यदा-कदा क्लिष्ट संस्कृत-शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

कुछ लोगों को कालिदास के ग्रंथों का अनधिकार-पूर्ण अनुवाद करते देखकर द्विवेदीजी को चिंता हुई कि उनके पढ़ने से लोगों में कहीं महाकवि के प्रति भ्रम तथा निरादर न फैल जाय। अतएव इन निकृष्ट अनुवादों की आलोचना करने के साथ ही आपने स्वयं भी उनके दो-तीन ग्रंथों का अनुवाद किया। 'रघुवंश' गद्यानुवाद है, जिसमें हरएक पद का आशय विस्तार-पूर्वक समझाकर लिखा गया है। सारा 'रघुवंश' कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें प्रत्येक सर्ग की कथा अलग-अलग रक्खी गई है। पुस्तकारंभ में तेंतालीस पृष्ठ की भूमिका लिखकर आपने कालिदास की अन्य कवियों से तुलना की है। इसी प्रकार आपने 'मेघदूत' का भी अनुवाद किया है। 'कुमारसंभव' के प्रथम पाँच सर्गों का आपने पद्यानुवाद किया है। मूल-भावों का पूर्ण ध्यान रखते हुए सरल संस्कृत-पदावली-युक्त हिंदी के प्रचलित छंदों में यह अनुवाद बहुत उत्तम हुआ है। इसकी भूमिका से जान पड़ता है कि द्विवेदीजी हिंदी को शृंगारिता से बचाने का सतत प्रयत्न कर रहे थे।

आपने क्लिष्ट संस्कृत-कवि भारवि-प्रणीत 'किरातार्जुनीय'-काव्य का भावार्थबोधक हिंदी-गद्य में अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद किया है। दुर्गम स्थलों पर आपने अपनी ओर से घटा-बढ़ाकर लिखा है। इसकी लंबी-चौड़ी भूमिका में भारवि के जन्म-काल तथा स्थान का निरूपण और उसके पूर्व-टीकाकारों का वर्णन तथा काव्य के गुण-दोष का विवेचन किया गया है। उपर्युक्त संस्कृत-ग्रंथों के अनुवाद में मूल-लेखकों की उन उक्तियों का, जिनमें शृंगार-रस की मात्रा बहुत अधिक थी, भाषांतर या तो छोड़ दिया गया है, या हेर-फेर से किया गया है, जिससे आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष उन्हें पढ़ने में संकुचित न हों।

इन अनुवादों में द्विवेदीजी की भाषा-शैली क्रमशः विकसित होकर परिमार्जित हो रही है। पुस्तक के दूसरे-तीसरे संस्करण में भाषा का संशोधन भी किया गया है। इसमें दिवेदीजी का व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता, वरन् भाषा-संस्कार के इतिहास की प्रचुर सामग्री मिलती है।

कविता

'काव्य-मंजूषा' नाम से आपकी कविताओं का प्रथम संग्रह निकला था, जो अब अप्राप्य है। उनकी प्रारंभ की कविताएँ अधिकांश में काव्य-कला के वास्तविक जीवन-स्पंदन-रहित, स्वच्छ वसन धारण किए सत्वगुण की संन्यासिनी की प्रतिमा हैं। इन प्रारंभिक कविताओं में द्विवेदीजी कहीं-कहीं खड़ी बोली का शैथिल्य भी सहन करते दिखाई देते हैं। अन्य कवियों की रचनाओं के साथ सचित्र 'कविता-कलाप' में प्रकाशित उनकी कविताओं का संग्रह पढ़ने से जान पड़ता है कि आपको आदि में मुक्तक पद्यों की अपेक्षा छोटे-छोटे कथानकों में अधिक सफलता मिली है। उन्होंने कविता की अंतरंग शोभा का अधिक ध्यान न रखकर भाव-विन्यास-चमत्कार दिखाने का ही प्रयत्न किया है। आपको स्वयं ही अपनी कविता पसंद न थी, और बहुधा कहा करते थे कि वह 'कविता' नहीं है। इसी कारण जब श्रीमैथिलीशरण गुप्त ने आपका कविता-संग्रह छापना चाहा, तो आपने लिखा—"मुझे अपने कोई पद्य पसंद नहीं। आपकी सलाह है, इससे चुनकर कुछ भेजता हूँ। नाम पुस्तक का आप ही रख दीजिए। नाम में पद्य हो काव्य या कविता नहीं। नाम बिलकुल महत्त्व-हीनता सूचक होना चाहिए। एक छोटी-सी भूमिका आप ही लिख दीजिए, पद्यों की तारीफ़ में कुछ भी न कहिए।" इस प्रकार 'सुमन' खिला, जिसमें उनकी संस्कृत तथा हिंदी, दोनो प्रकार की कविताएँ संगृहीत हैं। इसमें 'हास्य-काव्य', 'काककूजितम्' तथा द्वितीय साहित्य-सम्मेलन के लिये लिखित 'संदेश' भी सम्मिलित है।

द्विवेदीजी का मराठी-साहित्य से संपर्क रहा था, जिसका उन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। मराठी-कविता में संस्कृत-वृत्तों का व्यवहार तथा गद्य-सा पद-विन्यास होता है। इसी मराठी के आधार पर द्विवेदीजी ने अपनी पद-रचना की। वर्ड्सवर्थ के इस सिद्धांत के भी कि 'गद्य और पद्य का शब्द-विन्यास एक ही प्रकार का होना चाहिए।' द्विवेदीजी क़ायल थे। परंतु उन्हें इसका पालन करना कठिन हो गया, जैसा कि उनकी 'कविते, तू कहाँ गई', 'देशोपालंभ' तथा 'आर्यभूमि' की सानुप्रासित, कोमलकांत पदावली से स्पष्ट है। गद्य की व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करने के कारण विशेषकर 'यथा', 'तथा', 'सर्वथा' के आने से पद्य की भाषा भी गद्यवत् हो गई है। आपकी कविताएँ अधिकांश इतिवृत्तात्मक हैं। उनमें चित्ताकर्षक, रस-संचार-वर्द्धक तथा सजीवता-जनक गुणों का न्यूनतम मात्रा में समावेश है। आपने संस्कृत-वृत्तों के साथ हिंदी के प्रचलित छंदों का भी प्रयोग किया है।

निबंध

द्विवेदीजी के निबंधों के कई संग्रह निकल चुके हैं। सन् १९१८ में 'प्राचीन पंडित और कवि' प्रकाशित हुआ था, जिसमें पुराने संस्कृत-कवियों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी गई थी। इसमें बहुत-सी खोज-पूर्ण नई बातें भी सम्मिलित हैं। रूपक, उपरूपक, पात्र-कल्पना, जवनिका, भाषा, अलंकार तथा रचना-चातुर्य आदि विषयों पर बड़े सुंदर तथा उपयोगी निबंध हैं। इसकी भाषा कुछ संस्कृत की ओर झुकती हुई जान पड़ती है।

इसके चार वर्ष बाद आपके 'हिंदी-साहित्य' की उत्पत्ति हुई। इसमें वर्तमान हिंदी-संबंधी बातों की अपेक्षा उसकी पूर्ववर्तिनी भाषाओं से संबंध रखनेवाली बातें अधिक हैं। आप हिंदी की उत्पत्ति ढूँढ़ने के लिये ठेठ गंगोत्तरी तक पहुँच गए हैं। आपने आदिम आर्यों की अति प्राचीन भाषाओं का उल्लेख करके उसके क्रम-विकास का हाल लिखा है। इसमें हिंदी की जननी संस्कृत नहीं, वरन् अपभ्रंश भाषाएँ बताई गई हैं, और अपभ्रंश की उत्पत्ति प्राकृत से बताई गई है।

अनुवाद

आरंभ में द्विवेदीजी ने कई अँगरेज़ी-ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया। आपकी 'बेकन-विचार-रत्नावली' (प्रसिद्ध अँगरेज़ी-लेखक लॉर्ड बेकन के ३६ निबंधों का अनुवाद) सन् १९०१ में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक अपने ढंग की अनोखी थी। इसमें अँगरेज़ी-शब्दों का रूपांतर-मात्र न देकर मूल-लेखक के भावों को अपने मनमाने शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। इसमें आए हुए ऐतिहासिक नामों का संक्षिप्त विवरण फ़ुट-नोट में लिखकर उनकी सूची भी पुस्तक के अंत में दी गई है। प्रत्येक निबंध के शिरोभाग में प्राचीन संस्कृत-ग्रंथों से एक-एक और कहीं-कहीं दो-दो श्लोक उद्धृत करके निबंध और श्लोकों की एकवाक्यता दिखाई गई है।

आपने प्रसिद्ध दार्शनिक स्टुअर्ट मिल की 'लिबर्टी'-नामक ग्रंथ का 'स्वाधीनता' में तथा विख्यात तत्त्ववेत्ता हर्बर्ट स्पेंसर के 'एजुकेशन' का 'शिक्षा' में भाषांतर किया है। क्लिष्ट तथा विवेचनात्मक विषयों को आपने सुंदर, सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है। इन पुस्तकों के लिखने में द्विवेदीजी का ध्येय अन्य लेखकों को ऐसी पुस्तकें लिखने के लिये प्रोत्साहित करने का था।

आपकी सचित्र हिंदी 'महाभारत' श्रीयुत सुरेंद्रनाथ ठाकुर-लिखित बँगला 'आरकान' का स्वच्छ अनुवाद है, जिसमें महाभारत के महत्त्व-पूर्ण अंशों का ध्यान रखते हुए काफ़ी काट-छाँट की गई है। भाषा बोलचाल की है, परंतु यदा-कदा क्लिष्ट संस्कृत-शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

कुछ लोगों को कालिदास के ग्रंथों का अनधिकार-पूर्ण अनुवाद करते देखकर द्विवेदीजी को चिंता हुई कि उनके पढ़ने से लोगों में कहीं महाकवि के प्रति भ्रम तथा निरादर न फैल जाय। अतएव इन निकृष्ट अनुवादों की आलोचना करने के साथ ही आपने स्वयं भी उनके दो-तीन ग्रंथों का अनुवाद किया। 'रघुवंश' गद्यानुवाद है, जिसमें हरएक पद का आशय विस्तार-पूर्वक समझाकर लिखा गया है। सारा 'रघुवंश' कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें प्रत्येक सर्ग की कथा अलग-अलग रक्खी गई है। पुस्तकारंभ में तेंतालीस पृष्ठ की भूमिका लिखकर आपने कालिदास की अन्य कवियों से तुलना की है। इसी प्रकार आपने 'मेघदूत' का भी अनुवाद किया है। 'कुमारसंभव' के प्रथम पाँच सर्गों का आपने पद्यानुवाद किया है। मूल-भावों का पूर्ण ध्यान रखते हुए सरल संस्कृत-पदावली-युक्त हिंदी के प्रचलित छंदों में यह अनुवाद बहुत उत्तम हुआ है। इसकी भूमिका से जान पड़ता है कि द्विवेदीजी हिंदी को श्रृंगारिता से बचाने का सतत प्रयत्न कर रहे थे।

आपने क्लिष्ट संस्कृत-कवि भारवि-प्रणीत 'किराता-र्जुनीय'-काव्य का भावार्थबोधक हिंदी-गद्य में अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद किया है। दुर्गम स्थलों पर आपने अपनी ओर से घटा-बढ़ाकर लिखा है। इसकी लंबी-चौड़ी भूमिका में भारवि के जन्म-काल तथा स्थान का निरूपण और उसके पूर्व-टीकाकारों का वर्णन तथा काव्य के गुण-दोष का विवेचन किया गया है। उपर्युक्त संस्कृत-ग्रंथों के अनुवाद में मूल-लेखकों की उन उक्तियों का, जिनमें शृंगार-रस की मात्रा बहुत अधिक थी, भाषांतर या तो छोड़ दिया गया है, या हेर-फेर से किया गया है, जिससे आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष उन्हें पढ़ने में संकुचित न हों।

इन अनुवादों में द्विवेदीजी की भाषा-शैली क्रमशः विकसित होकर परिमार्जित हो रही है। पुस्तक के दूसरे-तीसरे संस्करण में भाषा का संशोधन भी किया गया है। इसमें दिवेदीजी का व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता, वरन् भाषा-संस्कार के इतिहास की प्रचुर सामग्री मिलती है।

कविता

'काव्य-मंजूषा' नाम से आपकी कविताओं का प्रथम संग्रह निकला था, जो अब अप्राप्य है। उनकी प्रारंभ की कविताएँ अधिकांश में काव्य-कला के वास्तविक जीवन-स्पंदन-रहित, स्वच्छ वसन धारण किए सत्त्वगुण की संन्यासिनी की प्रतिमा हैं। इन प्रारंभिक कविताओं में द्विवेदीजी कहीं-कहीं खड़ी बोली का शैथिल्य भी सहन करते दिखाई देते हैं। अन्य कवियों की रचनाओं के साथ सचित्र 'कविता-कलाप' में प्रकाशित उनकी कविताओं का संग्रह पढ़ने से जान पड़ता है कि आपको आदि में मुक्तक पद्यों की अपेक्षा छोटे-छोटे कथानकों में अधिक सफलता मिली है। उन्होंने कविता की अंतरंग शोभा का अधिक ध्यान न रखकर भाव-विन्यास-चमत्कार दिखाने का ही प्रयत्न किया है। आपको स्वयं ही अपनी कविता पसंद न थी, और बहुधा कहा करते थे कि वह 'कविता' नहीं है। इसी कारण जब श्रीमैथिलीशरण गुप्त ने आपका कविता-संग्रह छापना चाहा, तो आपने लिखा—"मुझे अपने कोई पद्य पसंद नहीं। आपकी सलाह है, इससे चुनकर कुछ भेजता हूँ। नाम पुस्तक का आप ही रख दीजिए। नाम में पद्य हो काव्य या कविता नहीं। नाम बिलकुल महत्त्व-हीनता सूचक होना चाहिए। एक छोटी-सी भूमिका आप ही लिख दीजिए, पद्यों की तारीफ़ में कुछ भी न कहिए।" इस प्रकार 'सुमन' खिला, जिसमें उनकी संस्कृत तथा हिंदी, दोनो प्रकार की कविताएँ संगृहीत हैं। इसमें 'हास्य-काव्य', 'काककूजितम्' तथा द्वितीय साहित्य-सम्मेलन के लिये लिखित 'संदेश' भी सम्मिलित है।

द्विवेदीजी का मराठी-साहित्य से संपर्क रहा था, जिसका उन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। मराठी-कविता में संस्कृत-वृत्तों का व्यवहार तथा गद्य-सा पद-विन्यास होता है। इसी मराठी के आधार पर द्विवेदीजी ने अपनी पद-रचना की। वर्ड्सवर्थ के इस सिद्धांत के भी कि 'गद्य और पद्य का शब्द-विन्यास एक ही प्रकार का होना चाहिए।' द्विवेदीजी क़ायल थे। परंतु उन्हें इसका पालन करना कठिन हो गया, जैसा कि उनकी 'कविते, तू कहाँ गई', 'देशोपालंभ' तथा 'आर्यभूमि' की सानुप्रासित, कोमलकांत पदावली से स्पष्ट है। गद्य की व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करने के कारण विशेषकर 'यथा', 'तथा', 'सर्वथा' के आने से पद्य की भाषा भी गद्यवत् हो गई है। आपकी कविताएँ अधिकांश इतिवृत्तात्मक हैं। उनमें चित्ताकर्षक, रस-संचार-वर्द्धक तथा सजीवता-जनक गुणों का न्यूनतम मात्रा में समावेश है। आपने संस्कृत-वृत्तों के साथ हिंदी के प्रचलित छंदों का भी प्रयोग किया है।

निबंध

द्विवेदीजी के निबंधों के कई संग्रह निकल चुके हैं। सन् १९१८ में 'प्राचीन पंडित और कवि' प्रकाशित हुआ था, जिसमें पुराने संस्कृत-कवियों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ारसी-कवि हाफ़िज़ तथा दौलतपुर के कवि सुखदेव मिश्र की उत्कृष्ट रचनाओं की खोज कर उन पर प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ लिखी गई हैं। इससे लेखक की विभिन्न भाषाओं के ज्ञान तथा गुण-ग्राहकता का पता लगता है।

'वनिता-विलास' में सात स्वदेशी तथा तीन विदेशी नारियों की शिक्षा-प्रद, मनोरंजक जीवनियों का संग्रह है। 'औद्योगिकी' में उद्योग-धंधे-संबंधी लेख हैं।

रसज्ञ-रंजन' में नौ निबंधों का संग्रह है, जिनमें प्रथम पाँच कविता और कवि-कर्तव्य से संबंध रखते हैं। सातवें लेख में ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ कवियों की हंस-संबंधिनी समय-सिद्ध बातों पर विचार किया गया है। अवशिष्ट तीन लेखों में से एक में एक नवीन तथा दो में दो प्राचीन कवियों की रसवती कविता का हृदयग्राही वर्णन है। यह संग्रह द्विवेदीजी की श्रेष्ठ रचनाओं में गिना जाता है।

'सुकवि-संकीर्तन' में सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं पर लिखे गए परिचयात्मक लेख हैं। इसमें वर्णित बातें कभी पुरानी नहीं हो सकतीं। इसे पढ़ने से एक उपदेश-प्रद उपन्यास का-सा आनंद आता है। कहीं साहित्य-लालित्य है, तो कहीं अगाध पांडित्य, और कहीं कवि की कमनीय छटा।

'अद्भुत आलाप' में बड़ा ही आश्चर्य-जनक और कौतूहल-पूर्ण प्रलाप है, जिसे एक बार उठाकर फिर समाप्त ही करते बनता है। आपकी ओजस्विनी शैली ने 'विद्वान् घोड़े', 'हिसाबी कुत्ते', 'परलोक के पत्र' तथा 'साप्ताहिक समाधि' को इतना रोचक बना दिया है कि उपदेश के साथ पर्याप्त मनोरंजन भी होता चलता है।

सन् १९२४ में प्रकाशित 'साहित्य-संदर्भ' के बीस निबंधों में से अर्द्धाधिक समालोचनात्मक हैं। अवशिष्ट लेखों में दो-तीन को छोड़कर, जो ज्ञातव्य बातों तथा मनोरंजन से रिक्त नहीं, लेखक ने संस्कृत-भाषा में निबद्ध प्राचीन काव्यादि के महत्त्व-पूर्ण अंशों की सानुवाद विवेचना की है। इस पुस्तक के प्रायः सभी लेखों का उद्देश्य पुरातन पुस्तकों तथा विषयों को विस्मृति के गर्त से निकाल-कर स्मृति-पथ पर लाना है।

'साहित्य-सीकर' में ऐसे लेखों का समावेश है, जिनका संबंध साहित्य से है। वह साहित्य चाहे हिंदी का हो, चाहे प्राकृत का अथवा लौकिक या वैदिक संस्कृत का। इन लेखों में लेखक ने यदि दो बातें अपने ज्ञान से कही हैं, तो चार दूसरों द्वारा वितरित ज्ञान के आधार पर। इसी से आपने संग्रह के नाम में सीकर-शब्द का प्रयोग किया है। सीकर कहते हैं छींटे को। अतएव साहित्य या उससे संबद्ध जिन विषयों की इसमें चर्चा हुई है, वे अपने-अपने विषय-ज्ञान के छींटे-मात्र हैं। आपकी शैली की विशेषताएँ इसमें पूर्ण रूप से पाई जाती हैं।

इन ग्रंथों का अवलोकन करने से स्पष्ट हो जायगा कि इनके अधिकांश निबंध बातों के संग्रह के रूप में हैं। भाषा के नूतन शक्ति-चमत्कार के साथ नवीन विचारों की उद्भावनावाले निबंध बहुत कम हैं। स्थायी श्रेणी में गण्य 'कविता', 'प्रतिभा', 'कवि और कविता', 'मौलिकता का मूल्य' आदि दो-चार गंभीर लेखों के अतिरिक्त 'प्राकृत भाषा', 'संस्कृत-साहित्य का महत्त्व', 'वैदिक देवता', 'दमयंती का चंद्रोपालंभ' आदि निबंध बहुत सुंदर हैं। आपके निबंधों में भावों के साथ विचारों का बाहुल्य तथा तथ्यातथ्य-विवेचन का आधिक्य है। अतएव वे विचारात्मक श्रेणी के कहे जाते हैं। उनके वाक्यों में न ऐसे ठसाठस भाव भरे हैं, और न विचारों में वह गूढ़-गुंफित परंपरा पाई जाती है, जिससे पाठक को कल्पना द्वारा गूढ़ाशय निकालने में मस्तिष्क का काम पड़े। इन लेखों में एक-एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधी बात शब्दाडंबर द्वारा किंचित् परिवर्तन कर तीन-चार भाँति से व्यक्त की गई है, जिससे प्रतीत होता है कि लेखक का आशय नितांत साधारण पाठकों को समझाने का प्रयत्न करना है। खोज-पूर्ण एवं विवेचनात्मक लेख आपके असाधारण अध्यवसाय तथा विरली विवेचन-शक्ति के परिचायक हैं। विषय-भिन्नता से आपकी बहुविज्ञता प्रत्यक्ष होती है। कोई-कोई लेख अँगरेज़ी, मराठी या बँगला की पत्रिकाओं और पुस्तकों के आधार पर लिखे गए हैं। उपर्युक्त दो-एक पुस्तकों के एकआध लेख औरों के होने पर भी उन्हें अभिन्नात्मा समझे जाने के कारण संगृहीत कर लिए गए हैं। विषय के साथ भाषा-स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। विषय-गूढ़ता के साथ भाषा-दुरूहता आ गई है। परंतु अधिकांश लेख सरल, सुबोध भाषा में लिखे गए हैं, जिसमें संस्कृत, हिंदी, उर्दू आदि शब्दों का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है।

अन्य ग्रंथ

अँगरेज़ी की अर्थ-शास्त्र-संबंधी अनेक पुस्तकें पढ़कर आपने 'संपत्ति-शास्त्र' की रचना की थी। उस समय ऐसी पुस्तकें बहुत कम लिखी जाती थीं। इसे लिखकर आपने एक नया मार्ग प्रशस्त करने के अतिरिक्त अर्थ-विद्या के अनेक हिंदी-शब्दों का प्रयोग बताया। इसके कुछ सिद्धांतों को आपने अपने जीवन में कार्यान्वित करके दिखाया।

कानपुर में होनेवाले तेरहवें हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष-आसन से दिया हुआ द्विवेदीजी का भाषण 'वक्तृत्व कला' के नाम से प्रकाशित हुआ है। इससे आपकी बहुविषय-विज्ञता तथा हिंदी के अकथ अनुराग का पता लगता है। भाषण-कला के ध्यान से भी उन दिनों यह अपूर्व ग्रंथ था।

'वेणी-संहार' नाटक पढ़ने से महाभारत-युद्ध की मुख्य-मुख्य घटनाओं का स्मरण हो आता है। पांडवों के साथ वन-गमन करती हुई द्रौपदी ने अपनी वेणी खोल दी थी, और पुनः राज्य प्राप्त कर लेने पर ही उसे बाँधने की प्रतिज्ञा की थी। भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन की जंघा तोड़कर अपने रक्त-रंजित हाथों से द्रौपदी के केश बाँधने का निश्चय किया था। अंत में ऐसा हुआ भी। इस नाटक में इसी घटना का आख्यायिका रूप में बड़ा सरल तथा रोचक वर्णन किया गया है।

(आगामी अंक में समाप्य)

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। विना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा-रानी

[श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र']

अपनी छोटी-सी दुनिया है, मैं राजा हूँ, तुम रानी हो !

(१)

हम तोड़ चुके जग के बंधन, ममता के नाते जोड़ चुके ;
मुँह मोड़ चुके हम अपनों से, फिर लोक-लाज सब छोड़ चुके ।
पहले न कभी देखा तुमको, इतने पर भी पहचान गया ;
होनी होकर ही रही, और मैं तुमको अपना मान गया ।
परिचय की भला ज़रूरत क्या ? तुम मेरी चिर-पहचानी हो ;
अपनी छोटी-सी दुनिया है, मैं राजा हूँ, तुम रानी हो !

(२)

संयम-साधन प्रिय हैं न मुझे, मैं साधु नहीं, संसारी हूँ ;
हो वीतराग मेरा दुश्मन, मैं तो बस, प्रेम-पुजारी हूँ ।
मैंने तो केवल यह जाना—है सच्चा प्यार गुनाह नहीं ;
जग के विरोध की, सच मानो, किंचित मुझको परवाह नहीं ।
हम असर आँख में वह रखते, पत्थर भी पानी-पानी हो ;
अपनी छोटी-सी दुनिया है, मैं राजा हूँ, तुम रानी हो !

(३)

क्या सुख बहार के आने में—पूछो कोकिल के गानों से ;
क्या सुख है तुमको पाने में—पूछो मेरे अरमानों से ।
मैं चित्रकार, तुम छवि सजीव, मैं गायक, तुम हो स्वर-लहरी ;
मैं हूँ रस का सागर अनंत, तुम हो रस की सरिता गहरी ।
मैं यौवन का उन्माद और तुम यौवन की नादानी हो ;
अपनी छोटी-सी दुनिया है, मैं राजा हूँ, तुम रानी हो !

(४)

अपनी छोटी-सी दुनिया में इन दिनों बड़ी है धूमधाम ;
क्रीड़ाएँ हैं, कोलाहल है, हैं रंग-बिरंगे सुबह-शाम ।
प्रतिपल नव आशा, नव उमंग, प्रतिपल तुम होती हो नवीन ;
प्रतिपल नूतन अनुराग लिए मैं तुममें हो जाता विलीन ।
मैं मजनूँ हूँ—सौदाई हूँ, तुम लैला हो—दीवानी हो ;
अपनी छोटी-सी दुनिया है, मैं राजा हूँ, तुम रानी हो !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सैनिक विभाग में जाति-मूलक भेद-भाव

[श्रीयुत एम्० पी० केदार]

संसार के किसी भी देश में ऐसा नियम नहीं कि वहाँ के सैनिक विभाग में किसी प्रकार का जाति-मूलक भेद-भाव पाया जाय। कहीं भी कोई व्यक्ति केवल इसलिये ही सेना में भरती होने के अयोग्य नहीं समझा जाता कि वह देश के किसी विशेष भाग में रहता अथवा किसी जाति-विशेष से संबंध रखता है। सब देशों में प्रत्येक युवक के लिये न केवल सैनिकवि भाग के सब द्वार ही खुले रक्खे जाते हैं, अपितु उसे योग्य और उत्तम सैनिक बनाने के लिये बाल्यावस्था से ही उचित शिक्षा और सब प्रकार की सहूलियतें दी जाती हैं। कई देशों में तो वहाँ के सब रहनेवालों के लिये मिलेट्री-ट्रेनिंग अनिवार्य समझी जाती है। उन्नत देशों की सरकारें राजनीति की दृष्टि से प्रायः अपना कर्तव्य समझती हैं कि उनके राज्य के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति ऐसा न रहने पावे, जो आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्र की रक्षा के लिये काम न आ सके। पुरुष तो एक तरफ़, अब तो अनेक देशों में स्त्रियों को भी युद्ध-संबंधी शिक्षा देने की व्यवस्था हो रही है।

परंतु भारतवर्ष की सरकार का मानो बाबा आदम ही निराला है। और, बहुत-सी बातों में तो यहाँ सांप्रदायिक भेद-भाव विद्यमान है ही, परंतु सेना में भरती होने के संबंध में भी यह सिद्धांत बराबर लागू होता है। एक व्यक्ति चाहे वह कितना ही हृष्ट-पुष्ट और योग्य क्यों न हो, परंतु किसी सामरिक (martial) जाति से संबंध न रखने के कारण वह सेना में भरती नहीं हो सकता। उसके हृदय में अपने देश की रक्षा के लिये भले ही बड़ी भारी तड़प मौजूद हो, और वह इस कार्य में अपना जीवन तक देने को तैयार हो, परंतु उसके माथे पर 'नॉन-मार्शल'-जाति से संबंध रखने का जो लेबुल चिपका है, वह उसे सैनिक विभाग के निकट तक फटकने नहीं दे सकता।

यह तो समझ में आता है कि सैनिक बनने तथा सेना के किसी विशेष भाग में काम करने के लिये सुदृढ़ शरीर, उत्तम स्वास्थ्य और पर्याप्त योग्यता की जो कसौटी है, उस पर किसी व्यक्ति के पूरा उतरने पर ही उसे भरती किया जाना चाहिए। परंतु यह कसौटी तो विना किसी जाति-मूलक भेद-भाव के भी समुचित रूप से काम दे सकती है, और उत्तम सैनिकों की परख की दृष्टि से भी अपने तौर पर सब प्रकार से संतोष-प्रद सिद्ध हो सकती है। यह धारणा कि किसी विशेष प्रांत अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति में पैदा हुआ व्यक्ति ही अच्छा सैनिक बन सकता है, कोरी विडंबना है।

जहाँ तक इतिहास का संबंध है, भारतवर्ष में अनेक जातियाँ, जिनमें 'नॉन-मार्शल' कही जानेवाली जातियाँ भी शामिल हैं, समय-समय पर अपने शौर्य और सैनिक बल का प्रदर्शन करती रही हैं। जिन हिंदुओं में से अधिकतर को आज सेना में भरती होने के बिलकुल अयोग्य समझा जाता है, उनके पूर्वज हज़ारों वर्ष तक भारतवर्ष में अपनी राजसत्ता स्थिर रखने में सफल रहे। तदुपरांत समय-समय पर हिंदुओं और मुसलमानों में अनेक जातियाँ इस देश के न्यूनाधिक अंशों में अपनी विजय-पताका फहराती रही हैं। यह कहना कि कोई एक जाति शूरवीरता और युद्ध-संबंधी कुशलता का स्थायी पट्टा प्राप्त किए है, ऐतिहासिक सत्य का मानो गला घोटना है।

पंजाब के प्रधान मंत्री सर सिकंदर आज पूरी शक्ति से यह दावा पेश कर रहे हैं कि पंजाब की कुछ एक मार्शल जातियाँ ही सेना-विभाग में भरती होने योग्य हैं। और, इस आधार पर वह भारतवर्ष की सेना में पंजाबियों का और उनमें भी केवल इनी-गिनी 'मार्शल'-जातियों से संबंध रखनेवाले व्यक्तियों का बाहुल्य चाहते हैं। वैसे तो भारतीय सेना का प्रश्न केंद्रीय सरकार के अधीन होने से किसी भी प्रांतीय सरकार अथवा उसके उच्च-से-उच्च अधिकारी की पहुँच से बाहर की बात है, परंतु इस संबंध में जो माँग सर सिकंदर ने पेश की है, वह सचाई और सिद्धांत की दृष्टि से भी किसी प्रकार युक्ति-संगत नहीं। सर सिकंदर ने देहली-मुसलिम-लीग के अधिवेशन में भाषण देते हुए अपने पक्ष में जो कुछ कहा, उसका खंडन करने के लिये सर चमनलाल-सीतलवाद-जैसे नर्म दल के नेता को भी बाध्य होना पड़ा है। सर चमनलाल अपने एक वक्तव्य में कहते हैं—

"वह इस बात पर आश्चर्य-चकित हैं कि सर सिकंदर-जैसी ऊँची पोज़ीशनवाला व्यक्ति सैनिक क्षमता और शूरवीरता को केवल पंजाब का एकाधिकार होने का दावा करता है, और शेष प्रांत-वासियों को उससे बिलकुल रहित समझता है।"

सर चमनलाल-सीतलवाद अपने वक्तव्य में सर सिकंदर का ध्यान पंजाब से बाहर रहनेवाले हिंदुओं और मुसलमानों के उज्ज्वल सैनिक रेकर्ड की ओर खींचते हुए कहते हैं—

"राजपूताने और मध्य भारत के राजपूत तथा काठियावार के राजपूत, काठी, मकरानी और म्याने शूरवीरता में किसी भी 'मार्शल' कहलानेवाली जाति के व्यक्तियों से कम नहीं। इसी प्रकार मरहट्टे भी, जिनके पुरखाओं ने किसी समय समस्त भारतवर्ष पर आधिपत्य जमा लिया था, इस संबंध में किसी से पीछे नहीं समझे जा सकते।"

वस्तुतः 'मार्शल' और 'नॉन-मार्शल' का भेद-भाव ब्रिटिश सरकार का आविष्कार है, और इसकी सहायता से वह अपना स्वार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध करती है। कुछ थोड़ी-सी जातियों को प्रोत्साहन देकर उसका यह प्रयत्न रहा है कि शेष सारी जनता को सैनिक शिक्षा से वंचित रक्खा जाय। जहाँ और देशों की सरकारें सारी प्रजा को युद्ध-संबंधी शिक्षा देना आवश्यक और अपना कर्तव्य समझती हैं, वहाँ भारतवर्ष की विदेशी सरकार को अपना हित इसी में दिखलाई देता है कि वह यहाँ के अधिक-से-अधिक लोगों को शत्रु से लड़ने और अपनी रक्षा करने में असमर्थ बनाए रक्खे। उसी का यह दुष्परिणाम है कि आज भारतवासी अन्य देशवासियों के मुक़ाबिले में आधुनिक ढंग के युद्ध-विज्ञान में बहुत पिछड़े हुए हैं। साधारणतया ग़ैर जाति के शासकों की तो सदा से ऐसी नीति रहती ही है, परंतु आश्चर्य तो इस बात पर है कि सर सिकंदर-जैसे अपने आपको देश-हितैषी कहनेवाले भारतीय भी इस घातक नीति का समर्थन कर रहे हैं।

यह भी कितनी विचित्र बात है कि एक तरफ़ तो सेना-विभाग के द्वार नॉन-मार्शल जातियों के लिये बंद रक्खे जाते हैं; दूसरे शब्दों में उन्हें सेना-संबंधी किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर ही नहीं दिया जाता, और उसके साथ ही कहा जाता है कि वे अच्छे सैनिक बनने योग्य नहीं। जब किसी के लिये योग्य बनने का अवसर ही उपलब्ध नहीं, तो वह भला योग्य क्योंकर बन सकता है? सर सीतलवाद ने ठीक कहा है—"कुछ जाति के लोगों पर नॉन-मार्शल का लेबुल लगाकर पहले तो सेना में भरती होने के लिये निरुत्साहित किया जाता है, जिससे सैनिक शिक्षा और सुअवसर के अभाव में उनका युद्ध-प्रेम एवं युद्ध-कौशल सब नष्टप्राय हो जाता है। और, तब कहा जाता है कि वे अच्छे सैनिक बनने योग्य नहीं।"

सर सिकंदर के मुख से भी यह सत्य अनायास फूट पड़ा है। आपने अपने व्याख्यान में कहा—"यदि 'नॉन-मार्शल' जातियों के व्यक्ति भी ऐसा कर सकते हैं, अर्थात् युद्ध-क्षेत्र में पंजाबियों की तरह ही अपनी योग्यता का प्रमाण दे सकते हैं, तो मैं सेना-विभाग में उन्हें उचित भाग दिए जाने का विरोध नहीं करूँगा।"

साफ़-सीधे शब्दों में सर सिकंदर यह स्वीकार करते हैं कि वह वर्तमान समय में नॉन-मार्शल जातियों से संबंध रखनेवाले व्यक्तियों को उनका उचित भाग नहीं दे रहे। परंतु भाग न देने की जो युक्ति सर सिकंदर देते हैं, वह हँसी पैदा किए बिना नहीं रहती। युद्ध-क्षेत्र में अपनी योग्यता और वीरता का परिचय भला कोई खाक दे सकता है, जब उसके लिये साधारण सैनिक बनने और युद्ध में जाने का ही अवसर उपलब्ध नहीं है। सर सिकंदर की इस युक्ति के अनुसार तो सैनिक विभाग में भरती का यह नियम होना चाहिए कि मार्शल और नॉन-मार्शल सब जातियों के लोगों को किसी युद्ध-क्षेत्र में भेजकर उनकी योग्यता और वीरता की परीक्षा ली जाय। इन दिनों इसके लिये विशेष अवसर भी उपलब्ध हैं। स्पेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चीन में सब व्यक्तियों को भेजकर परीक्षा ली जा सकती है। इससे पीड़ितों और निर्बलों की सहायता भी हो जायगी।

सर सिकंदर और उन-जैसे विचार रखनेवाले व्यक्ति कदाचित् यह भी भूल जाते हैं कि वे आज बीसवीं शताब्दी में रह रहे हैं। युद्ध के जो उपाय और अस्त्र-शस्त्र आज से सौ-दो सौ वर्ष पूर्व उपयोग में आते थे, आज उनका कुछ भी उपयोग नहीं रहा। वर्तमान काल में शारीरिक बल और लंबी-चौड़ी देहों से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। सचाई यह है कि पश्चिमीय और पूर्वीय सब देशों में सेना-विभाग के कर्णधार शारीरिक बल की अपेक्षा अधिक चातुर्य, बुद्धि और दिमाग़ी योग्यता रखनेवाले व्यक्ति ही देखने में आते हैं। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में युद्ध के अवसर पर शरीर की अपेक्षा मस्तिष्क से अधिक काम पड़ता है। संसार के सब देशों के सैनिक विभाग की जो वर्तमान व्यवस्था है, उसमें शारीरिक बल की अपेक्षा मस्तिष्क-संबंधी योग्यता और क्षमता का अधिक महत्त्व समझा जाता है। आज हवाई जहाज़ से गिराया हुआ एक बम अथवा तोप द्वारा फेंका हुआ गोला पल-भर में हज़ारों हृष्ट-पुष्ट उत्साही सैनिकों को, रक्षा के वैज्ञानिक साधनों के अभाव में, नष्ट कर देने की सामर्थ्य रखता है। क्या कोई कहने का साहस कर सकता है कि आधुनिक ढंग पर शत्रु से लड़ने और अपनी रक्षा करने के लिये केवल मार्शल जाति के व्यक्तियों का मस्तिष्क ही अधिक अच्छा कार्य करता है?

थोड़ी देर के लिये यदि मान भी लिया जाय कि पंजाब की मार्शल जातियों के व्यक्ति अधिक बलवान् होते हैं, तो साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि अन्य कई एक प्रांतों में रहनेवाले, जहाँ तक मस्तिष्क का संबंध है, पंजाबियों और विशेषकर पंजाब की मार्शल जाति के लोगों की अपेक्षा अधिक योग्य, चतुर और फुर्तीले होते हैं। छत्रपति शिवाजी की देह छोटी और शारीरिक शक्ति परिमित थी, परंतु अक्षम वीरता, साहस, चतुरता और फुर्ती आदि गुण होने के कारण भीमकाय और बलिष्ठ शरीरों-वाले मुग़लों की असंख्य सेना के निरंतर और भरसक प्रयत्न करने पर भी वह पराजित नहीं हो पाए। आज कितने पंजाबी शिवाजी की उस वीरता, चतुरता और फुर्ती आदि की बराबरी का दम भर सकते हैं? वर्तमान युग में तो इन गुणों का शारीरिक बल की अपेक्षा और भी अधिक महत्त्व हो गया है। यहाँ तक कि बारबरदारी (Transportation) के मैकेनाइज़्ड हो जाने से अब घोड़े की सवारी करने और पैदल दौड़ने-भागने की भी अधिक आवश्यकता नहीं रही।

हाल में ही सर चमनलाल-सीतलवाद के आक्षेपों का उत्तर देते हुए सर सिकंदर ने अपने पक्ष में एक और युक्ति दी है, परंतु वह भी किसी प्रकार से संतोषप्रद नहीं। सर सिकंदर ने रेनाला ख़ुर्द के स्थान पर भाषण देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा है—"सेना-विभाग में पंजाब का भाग किसी प्रकार भी कम नहीं होना चाहिए, क्योंकि पंजाब ने पिछले महायुद्ध के अवसर पर अपने बलिदान से यह पोज़ीशन प्राप्त की है।" सर सिकंदर प्रश्न करते हैं कि युद्ध के दिनों में अन्य प्रांतों में से कितने लोगों ने अपने आपको पेश किया ? परंतु वह भूल जाते हैं कि अन्य प्रांतवालों का ऐसे अवसरों पर अपने आपको पेश न करना और वर्तमान काल में सेना में भरती होने की रुचि न रखना ही इस बात की आवश्यकता को प्रकट करता है कि सेना-विभाग में भरती होने के लिये ऐसे व्यक्तियों को विशेष उत्साह मिलना चाहिए।

वस्तुतः सर सिकंदर की हाल की युक्ति स्वयं उन्हीं के सिद्धांत का विरोध करती है। सर सिकंदर इस नीति के जबरदस्त पोषक हैं कि पिछड़ी हुई जातियों को उन्नत जातियों के साथ मिलाने के लिये विशेष प्रतिनिधित्व और अधिकार मिलने चाहिए। इसी नीति के अनुसार पंजाब में मुसलमानों को शिक्षा-विभाग और सरकारी नौकरियों में निश्चित स्थान प्राप्त है। पंजाब-सरकार की यह नीति है कि अधिक संख्या में और अधिक योग्य हिंदू मिलने पर भी निश्चित संख्या में मुसलमानों को, चाहे वे अयोग्य ही क्यों न हों, लिया जाय। परंतु सर सिकंदर इस सिद्धांत को सेना-विभाग के संबंध में न-जाने क्यों भूल जाते हैं, अथवा जान-बूझकर भुला देते हैं। उनके ही प्रचालित सिद्धांत के अनुसार अन्य प्रांत-वासियों और नॉन-मार्शल जातियों को सेना में भरती होकर योग्य और उत्तम सैनिक बनने के लिये विशेष प्रोत्साहन तथा सहूलियतें मिलनी चाहिए।

परंतु यहाँ तो ऐसे किसी असामान्य अधिकार (Special privilege) की माँग नहीं की जा रही है। न्याय इस बात का तक़ाज़ा करता है कि सैनिक विभाग के द्वार बिना किसी भेद-भाव के सब भारतीयों के लिये समान रूप से खोल दिए जायँ। वर्तमान अवस्था में सेना-विभाग में पंजाब और पंजाब की मार्शल जातियों को जो मुख्य स्थान मिला हुआ है, वह एक अन्याय-पूर्वक सिद्धांत का सहारा लेने तथा सरकारी रक्षा का विशेष रूप से मोहताज होने के कारण कोई गौरव का बात नहीं समझी जा सकती। हाँ, दूसरों को भी अवसर देकर और उनके साथ एक ही स्थान से एक ही समय में चलकर पंजाबी अथवा मार्शल जाति के व्यक्ति प्रतियोगिता में सबसे आगे निकल जायँ, तो वह सराहनीय होगा, और प्रतिद्वंद्वी भी मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा करेंगे। यह भी विचारने योग्य बात है कि मार्शल जाति के पंजाबियों की योग्यता और बाहु-बल पर सर सिकंदर को यदि इतना ही भरोसा और नाज़ है, तो वह औरों को उनके मुक़ाबले में आकर ज़ोर-आज़माई क्यों नहीं करने देते। खुली परीक्षा (Competition) होने में इनकी अपेक्षा तो औरों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय होना चाहिए। क्या सर सिकंदर इतनी भी उदारता के लिये तयार न होंगे कि वह सेना में भरती होने के लिये परीक्षा में बैठने का समान रूप से सबको अधिकार दे दें ?

सारे भारतवर्ष को एक राष्ट्र बनाने और उसे शत्रुओं से सुरक्षित रखने की दृष्टि से भी सैनिक विभाग में किसी प्रकार का जाति-मूलक भेद-भाव उचित नहीं। दूसरे देशों के मुक़ाबले में भारतवर्ष में सेना की संख्या पहले ही बहुत थोड़ी है। विदेशी सैनिकों के रहते हम न तो स्वतंत्र हो सकते, और न उनके सहारे अपनी स्वतंत्रता ही स्थिर रख सकते हैं। भारतवर्ष को स्वतंत्र बनाने और स्वतंत्र रखने के लिये सब प्रांतों एवं सब जातियों के सहयोग तथा सहायता की परम आवश्यकता है। यथार्थ में हम समस्त भारतवासियों के सामूहिक और संगठित प्रयत्नों से ही यह देश स्वाधीन हो सकता एवं शत्रुओं से सुरक्षित रह सकता है। किसी एक प्रांत अथवा जाति-विशेष को सैनिक बनने का अधिकार देना और दूसरे प्रांतों अथवा जातियों को उस अधिकार से वंचित रखना एक ऐसा विष है, जो राष्ट्रवाद के कोमल पौदे को कभी पनपने नहीं दे सकता।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाजमा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।
दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।।-)
२५ ,, ,, ,, ५=)

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

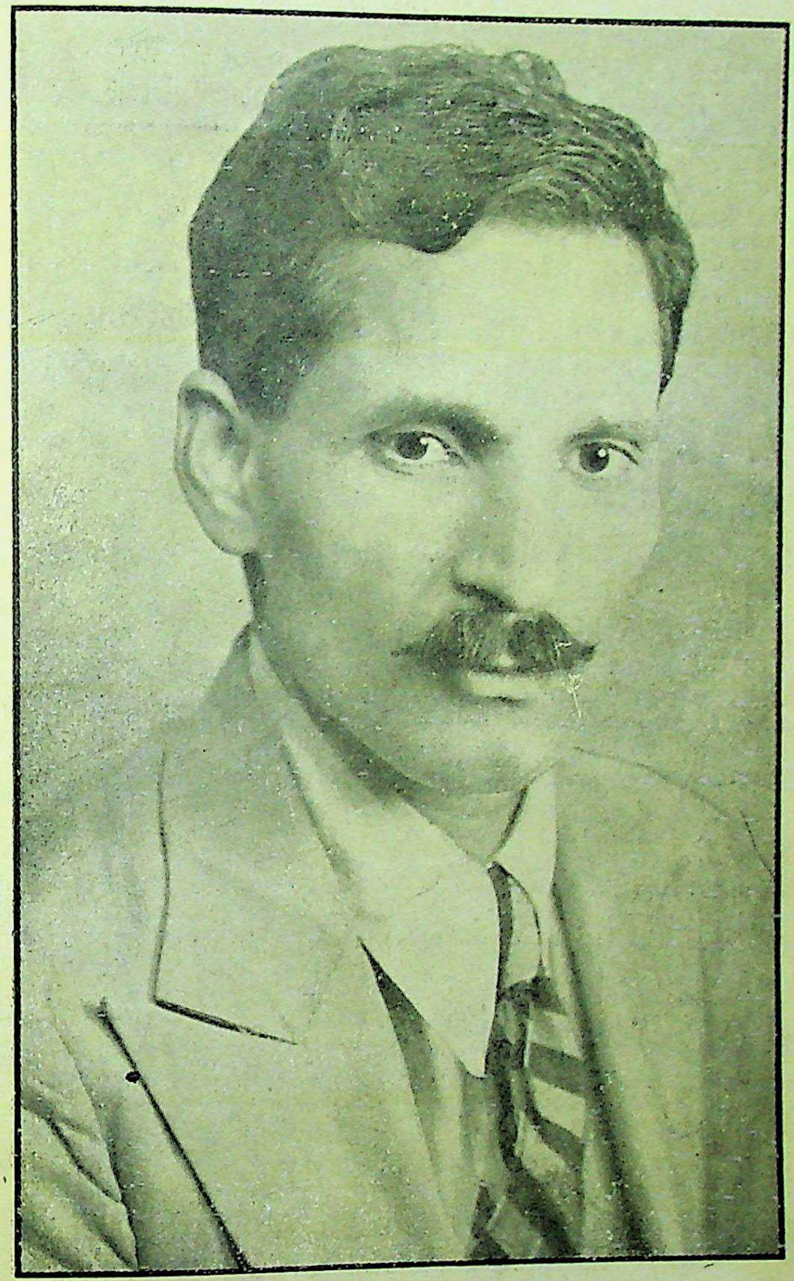

डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्०

['रसाल'जी सुधा-मंडल के प्रतिष्ठित लेखक और कवि हैं, और काव्य-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता । व्रजभाषा के अनन्य प्रेमी हैं । आपको अभी हाल ही में इलाहाबाद-युनिवर्सिटी ने डी० लिट्० की उपाधि से, अलंकार-विषय पर थीसिस लिखने के लिये, विभूषित किया है । आपने अनेक विषयों पर श्रेष्ठ पुस्तकों का निर्माण किया है ।]

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी के स्वामी और सरस्वती के सेवक

सेठ गोविंददासजी

[सी० पी० के सार्वजनिक जीवन के प्राण, हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और कवि, त्रिपुरी की राष्ट्रीय महासभा के स्वागताध्यक्ष सेठ गोविंददासजी बहुत ही सहृदय, सरल-स्वभाव और सज्जन हैं। आपकी विस्तृत जीवनी अभी हाल में आपकी सुयोग्य पुत्री श्रीमती रत्नकुमारीदेवी ने लिखकर प्रकाशित कराई है। सेठ गोविंददासजी का जीवन-चरित लक्ष्मी के लाड़ले लालों के लिये अनुकरणीय है। ऐसे ही त्यागी-तपस्वी कर्मवीरों की देश को आवश्यकता है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजपतिया

[कुमारी सरोजिनी तिवारी 'सरोज', हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी]

(१)

आज रजपतिया बहुत खुश थी। आज उसके लिये भी कुसुम-जैसा सुंदर लहँगा आवेगा। वह कल उसी को पहनकर अपनी सहेलियों के समीप इठलाती हुई जायगी। सबसे कहेगी, देखो, मेरा बाबा मुझे कितना चाहता है, जब मैं कोई चीज़ माँगती हूँ, तुरंत मिल जाती है।

उस दिन जब उसने अपनी दूसरी सहेली प्रभा के कान में चाँदी के झुमके देखे थे, तब उसकी भी इच्छा हुई कि वैसे ही झुमके पहने। घर आकर अपने बाबा से कहा। बस, कहने की देर थी कि झुमके उसके सामने हाज़िर हो गए। इसी प्रकार न-मालूम वह कितनी चीज़ों के लिये कह चुकी थी, और वे उसे मिल भी गईं। वह यह न जानती थी कि कैसे ये चीज़ें आती हैं। अभी इन बातों को सोचने की उसकी अवस्था ही न थी, अभी तो वह वन की चिड़िया के समान फुदकनेवाली बालिका थी। उसकी अवस्था अभी खेलने और खाने की थी। खाना बनाने और घर के काम करने का बोझ ही उसके लिये पर्याप्त था।

आज बड़े उत्साह से उसने रोटी बनाई थी—भाँति-भाँति के पदार्थ। उसने सोचा था, जब उसका बाबा आवेगा, तो वह उसके सामने ये सब चीज़ें रक्खेगी; फिर... फिर वह हर्ष से उसे छाती से लगाकर प्यार करेगा, और कहेगा, ले रज्जो, इसके इनाम में यह लहँगा। दूसरे दिन सवेरे वह नहा-धोकर उसे पहनेगी, क्योंकि कल तीज है। फिर सब सखियों के साथ झूला झूलेगी, सबके सम्मुख गर्व से मस्तक ऊँचा किए रहेगी, नई-नई सहेलियाँ आवेंगी, उनसे मित्रता जोड़ेगी। यही सब सोचते न-मालूम वह कब सो गई।

(२)

इधर बुड्ढे की दशा सवेरे से कुछ और ही हो रही थी। उसे आज अपनी रजपतिया के लिये एक लहँगा लेना है, नहीं तो उसका प्रण टूट जायगा; साथ ही टूट जायगी उसकी प्राणप्यारी रजपतिया की कोमल आत्मा। पर उसके पास एक पैसा भी नहीं, वह कैसे लहँगा लाएगा। सवेरे तो उसे पूर्ण आशा थी कि उसका पूर्व-परिचित महाजन माँगने पर उसे अवश्य ही रुपए उधार दे देगा, और वह अपनी रज्जो की इच्छा पूर्ण कर देगा। उसे यह ध्यान ही न रहा—'सबै दिन जात न एक-समान।' किसी तरह उसने अपना काम आरंभ किया। ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता जाता था, उसके हृदय में एक आशंका-सी उठती जाती थी, जिसके भय से वह काँप उठता था। मन न रहते हुए भी वह काम करता रहा। शाम हुई। घड़ी ने चार बजाए। वह चौंक पड़ा। उसे आज घड़ी पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसे मालूम पड़ा कि आज समय से पहले ही चार बज गए। एक बार घड़ी की ओर देख उसने ठंडी साँस ली, और एक हाथ में लालटेन और एक में लाठी लेकर वह महाजन के घर की ओर चल पड़ा। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों उसके हृदय का वेग भी बढ़ता जा रहा था।

महाजन का घर उसके दफ़्तर से डेढ़ मील था। वहाँ पहुँचते-पहुँचते उसे संध्या हो गई। सूर्य भगवान् अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके थे, पर एक-आध किरणें अब भी बाक़ी रह गई थीं, जो कमलिनी को पति-बिछोह पर सांत्वना दे रही थीं। बुड्ढे ने दूर से अपने महाजन का घर देखा। देखते ही न-जाने क्यों उसे घृणा हुई, वह शीघ्रता से पग रखने लगा। थोड़ी ही देर में वह उसके बरामदे में आ खड़ा हुआ, और खाँसते-खाँसते महाजन को आवाज़ दी। उसकी आवाज़ सुनते ही महाजन बाहर आया, और कुशल-क्षेम के बाद पूछा—"कहो रामदीन, कैसे आए?"

"सरकार, ऐसे हे चले आयन।" कहकर रामदीन ने लालटेन और लाठी एक ओर रख दी, और दीवार के सहारे बैठ गया।

"कुछ काम तो अवश्य ही होगा।" कुर्सी खिसकाते हुए महाजन बोला।

"हाँ सरकार, वहै पुरान काम। हमका...... हमका कुछ रुपैया चही। हमार नातिन तीन-चार दिनन ते एक लहँगा लावै क कहि रही है। हमरे पल्ले एक्कौ रुपैया नहिंन, औ हम ओहका हिरदय नाहीं दुखावा चहित, यहि ते सरकार, आप जो दै सकौ, तौ छ रुपैया दै देव, हम ओहका लहँगा लेत जाई। कालिह तीज है। न लै जाव, तो ओहिकी आसा टूटि जाई।"

सिर खुजलाते हुए महाजन बोला—"यह तो सब कुछ है, पर तुम्हारे ऊपर अभी १५०) क़र्ज़ है। डेढ़ साल हो गए, वह तो चुका नहीं पा रहे हो, फिर भी नित्य रुपया माँगने आ जाते हो। जब तक वह नहीं चुका दोगे, मैं तुम्हें एक पैसा भी न दूँगा। पहले वही चुका लो।"

रामदीन—"दोहाई सरकार की! जितनी जल्दी होई, हम आपका सब रुपैया लौटाय देब। बस, आज और दै देव, फिर कब्बौ न माँगब। सरकार, गरीब मनइन पर दया करौ।"

महाजन—"मैंने जब एक बार मना कर दिया, तब बार-बार क्यों तू मुझे परेशान कर रहा है। जब तक तू पिछला रुपया न दे देगा, तब तक मैं एक पैसा भी देने में असमर्थ हूँ। एक बार तो कह चुका।"

रामदीन—"सरकार, बस आजै......"

महाजन—(कड़ककर) "नहीं, बस एक बार मना कर दिया, अब ज़बान बंद करेगा या नहीं। जा, अपना रास्ता नाप। तुझ-जैसे आदमी को मैंने इतना ही रुपया न-जाने क्या सोचकर दे दिया, यही बहुत समझ।"

रामदीन—"सरकार, आपै लोग न चाहौ, तौ हमार और कौन बैठ है, जो देई। आपै माई-बाप......"

महाजन—(बात काटकर) "अबे, माई-बाप के बच्चे, आया है रुपया माँगने, मरा जाता है उसी छोकरी के पीछे।"

रामदीन—(काँपते हुए) "सरकार, काहे रिसहे होत हौ, भगवान आपका भला करै। लेव, हम जाइत है। हमैं चाहे जो कुछ कहिहू लेव, मुदा हमरी नातिन का जो......"

महाजन—"भगवान्-भगवान् लगा रक्खा है, बड़ा आया है भगवान् का नाती बनकर। जायगा या नहीं। जब देखो, तब नातिन-नातिन लगाए रहता है। मर भी तो नहीं जाती ऐसा ना......"

रामदीन ने ग़ुस्से से काँपते हुए कहा—"बस, अब आपौ अपन जबान बंद करौ। हमका चाहे कुछ कहिहू लेव, मुदा नातिन का कुछ न कह्यो, नाहीं तो भल न होई। जो जेहिका जैस बिचारत है, तेहिका वैसै फल मिलत है। हम जाइत है, भगवान सबनका भला करै।"

इतना कह रामदीन ने लालटेन और लाठी उठा ली, और उठ खड़ा हुआ, तथा अनमना हो, सलाम कर, एक कड़ी निगाह से महाजन को देखता हुआ वहाँ से चल दिया। उसके शरीर से ग्लानि की अग्नि निकल रही थी, नेत्रों से ख़ून के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँसू बह चले। उसकी प्राणप्यारी रजपतिया के लिये एक महाजन ने इतना कह डाला, वह यह किस प्रकार सह सकता है। अब चाहे जो कुछ हो, वह इस महाजन का मुँह न देखेगा। महाजन क्या जाने इस बुड्ढे की पीर। वह रास्ते में फूट-फूटकर रोने लगा।

बस, मानव-हृदय की दुर्बलता इसी समय दिखलाई पड़ती है। वह भारी-से-भारी आघात सहन कर सकता है, पर अपने बच्चों के प्रति किया गया आघात नहीं सह सकता।

बुड्ढा उस निर्जन पथ पर अकेला रोता चला जा रहा था। उसका साथ देने के लिये कोई मनुष्य न था। हाँ, कभी-कभी कोई जंगली जानवर चिल्ला उठते थे, मानो उसके इस दुःख पर अपनी अनुकंपा प्रकट कर रहे हों। मंद समीर के झोंकों से पेड़ की पत्तियाँ हिल उठती थीं, मानो उसे सांत्वना देना चाहती हों। चंद्रमा भी उसकी दशा देखकर दुःख प्रकट करता मालूम हो रहा था।

इस समय रामदीन की जो दशा हो रही थी, वह वही जान रहा था। आज उसकी रजपतिया कितनी निराश होगी, इसका अनुमान करते ही उसके नेत्रों से आँसू गिर पड़ते थे। मन-ही-मन सोचता जाता था, अब क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, किससे रुपया लाकर रज्जो की माँग पूरी करूँ। वह कितने आनंद से मेरी राह देखती होगी। मुझे देखते ही उछल पड़ेगी। वह क्या जाने कि उसका भाग्य आज उसे धोखा देगा। इन्हीं बातों को सोचते हुए वह पाँव बढ़ाए चला जा रहा था।

(३)

रजपतिया दशवर्षीया, मातृपितृहीना एक कोमल बालिका थी। पतली नाक, बड़ी-बड़ी आँखें, घुँघराले बाल, गोल मुँह, पतले होंठ, गुलाबी गाल, चौड़ा माथा, लंबा क़द, गोरा रंग उसकी शोभा बढ़ाते थे। वह जितनी ही सुंदर थी, उतनी ही गुणवती भी। इतनी कम अवस्था में घर का सारा काम इतनी चतुराई से करना सराहने योग्य था। आख़िर हो क्यों न, उसकी मा भी तो चतुर थी। वह डेढ़ वर्ष क्षय-रोग से पीड़ित रहने के पश्चात् एक दिन छ वर्ष की रज्जो को छोड़कर इस संसार से बिदा हो गई, और उसका बाप उसे आठ वर्ष का छोड़ असामयिक मोटर-दुर्घटना से मर गया। अब वह मातृपितृहीना कन्या कहलाने लगी थी। यदि संसार में अब उसका कोई था, तो यही बुड्ढा बाबा रामदीन। वह अपनी सब सखियों से सुंदरतथा गुणवती थी।

चाँदनी रात थी। बुड्ढा एक हाथ में लाठी और दूसरे में लालटेन तथा हृदय में दुख लिए द्रुत गति से चला जा रहा था। उसका मुख उदास हो रहा था, पर कभी-कभी क्रोध से तमतमा उठता था। उसे इस समय केवल एक चिंता थी कि वह कौन-सा मुँह लेकर रजपतिया के उल्लास-भरे मुँह का सामना करेगा। अपने टूटे हुए घर को सामने देखकर उसका ध्यान टूट गया। घर की दीवार में एक सूराख़ था। उसने देखा, ठीक उसी के सामने एक दिया जल रहा है। वह सोचने लगा, क्या रज्जो अभी तक नहीं सोई। वह द्वार पर खड़ा होकर रोने लगा। आह! क्या रजपतिया अभी तक नहीं सोई? यही प्रश्न उसके मन में बार-बार उठ रहा था। कुछ देर बाद उसने ठंडी साँस लेते हुए पुकारा—"अरी रज्जो, ओ रज्जो!"

सकपकाकर, शीघ्रता से उठ दरवाज़ा खोलते हुए रज्जो बोली—"बाबा, आय गयो? हमका नींद लागि रहै, सो हम सोचा, लाओ तनि बेर सोय रही।" तुरंत हाथ पकड़कर अंदर ले गई, और पूछने लगी—"का बाबा बहुतै देर ते ठाढ़ हौ? लाओ लालटेन और लाठी हमका दै देव, तुम तनिक आराम करौ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुड्ढा उसकी एक-एक बात देख रहा था। यद्यपि वह नित्य इसी प्रकार लाठी और लालटेन ले लिया करती थी, पर आज उसमें कुछ उत्सुकता थी और कुछ ख़ुशामद भी। बुड्ढा आँखें बचाकर रोने लगा, पर रज्जो को इसका बिलकुल पता न चला।

सब काम समाप्त कर रज्जो भी अपने बाबा के पास जा बैठी, और घंटों इसी आशा में बातें करती रही कि अब वह नया लहँगा निकालकर देगा। पर जब वह कुछ न बोला, तब उससे न रहा गया। बोली—"बाबा, लाव देव न हमार लहँगा, हम राखि लेई। कालिह सबेरे पहिरि के हम अपनी सहेलियन के साथ झुलवा झूलै जाब। देखौ बाबा, कालिह तीज है न, एहिके मारे हम हाँथन माँ मेहँदी लगावा है।"

बुड्ढा बड़ी देर तक चुप रहा। पर उसके दोनो हाथ देखकर उससे न रहा गया। उसने दोनो हाथों को चूम लिया। रज्जो का मुँह प्रसन्नता से खिल उठा। बुड्ढा फिर चुप हो गया। पर रज्जो से न रहा गया, वह फिर बोल उठी—"काहे बाबा, हमार लहँगा कहाँ है? लाव देव न।"

अब बुड्ढा अपने को न सँभाल सका। उसने रज्जो को छाती से लगा लिया, और आँसू-भरी आँखों से उसकी ओर देखने लगा। रज्जो कुछ न समझ फिर वही प्रश्न कर बैठी। बुड्ढा न समझ सका, कैसे और क्या उत्तर दे। वह रोने लगा, और रज्जो के मुँह की ओर देखकर बोला—"बिटिया, हमरे पास एक्कौ रुपैया न रहा, तेहिके मारे हम लहँगा नहीं लाय सकेन। एक-दुइ दिन माँ हमार तनखा मिली, तब लाय देब।"

रज्जो यह सुनकर हिली-डुली तक नहीं। उसके हृदय में आँधी चल रही थी। चुपचाप पड़ी-पड़ी न-जाने कब तक जागती रही, और कब सो गई, इसका अनुमान बुड्ढा न कर सका।

(४)

सबेरा हुआ। बुड्ढे ने नहाया-धोया, और चुपचाप अपने काम पर चला गया। पर रज्जो उदास-चित्त, बिना नहाए-धोए एक कोने में बैठी रही। वह वहाँ बैठे न-मालूम क्या-क्या और कब तक सोचती रही। उसे पता भी न चला कि इतना दिन चढ़ गया है। सहसा द्वार की खटखटाहट और अपना नाम सुनकर चौंक पड़ी। उसे कौन पुकार रहा है, यह सोच ही रही थी कि कुसुम की फिर पुकार सुनाई पड़ी। आवाज़ पहचानकर खड़ी हो गई। द्वार की ओर बढ़कर झटके से खोल दिया।

अंदर आकर कुसुम ने कहा—"अरे रज्जो, आज तीज के दिन तू उदास और अकेले क्यों बैठी है? अभी तक तूने नहाया नहीं? तुझे क्या हुआ? क्या तेरे बाबा की तबियत ख़राब है?"

इस कोलाहल को सुनकर वह ज़रा घबराई, पर अपनी घबराहट और उदासी छिपा उसने प्रश्नों का उत्तर केवल 'नहीं' में दिया, और उन लोगों से क्षमा माँगने लगी।

कुसुम बोली—"पगली, आज तीज है, क्या आज नहीं चलेगी? देख, उस आम के पेड़ के नीचे झूला डाला है। क्या वहाँ चलकर झूलेगी नहीं? और फिर, आज यह एक नई लड़की भी आई है। अब रोज़ यह हम लोगों की टोली में आया करेगी।"

रजपतिया ने मालती की ओर और मालती ने रजपतिया की ओर देखा। रजपतिया ने मेहँदी लगे हाथों से नमस्ते किया। उसका हाथ देख कुसुम से न रहा गया, उसने चूम लिया। उसकी देखा-देखी सभी चूमने लगीं, और उसकी तारीफ़ करने लगीं। रज्जो चुपचाप सुनती और देखती रही।

कुसुम ने मालती को जब यह बतलाया कि उसके बाबा का नाम रामदीन कहार है, और वह एक दफ़्तर में १०) महीने की नौकरी करता है, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सहसा चौंक पड़ी। उसने कई बार तो अपने हृदय में और कई बार ज़ोर से उसका नाम दोहराया। मन में सोचती, क्या यह वही रामदीन है, जो मेरे पिता से हमेशा अपनी नातिन के लिये चीज़ें लाने को रुपया माँगता है। रजपतिया की ओर से उसे घृणा हो गई।

थोड़ी देर पश्चात् रज्जो नहा-धोकर, एक सादी रँगी धोती पहनकर सबके सम्मुख आ खड़ी हुई। सब सखियाँ उससे आकर मिलीं, और उसके सौंदर्य की सराहना करने लगीं। वह चुपचाप अपना गर्व छिपाए सब सुनती रही। सभी एकत्र हो झूले की ओर चलीं। प्रभा ने कुसुम के चुटकी काटते हुए उसके कान में कुछ कहा, जिसे सुनकर कुसुम चौंक पड़ी, और बोली—"अरे, मैं तो भूल ही गई। अरी रज्जो, तूने कहा था कि आज तू मेरा-जैसा लहँगा पहनकर आएगी, फिर आज यह सफ़ेदी कैसी?"

रजपतिया का हृदय क्षुब्ध हो गया, मुँह फीका पड़ गया। मालती इस समय उसका सौंदर्य देखकर ईर्ष्या कर रही थी, पर उपर्युक्त शब्द सुनते ही बोली—"वाह! भला यह क्या पहनेगी। इसके बाबा के पास रुपया भी है। जो कुछ यह पहने है, सब हमारे पिता से रुपया क़र्ज़ लेकर इसका बाबा लाया है।"

यह सुनकर सब लड़कियों ने मालती की ओर देखकर कहा—"क्या सच?"

मालती ने बड़े गर्व से सिर हिलाते हुए कहा—'हाँ-हाँ, कल शाम को भी तो गया था। बाबूजी ने कह दिया, जब तक पहला नहीं अदा कर दोगे, नहीं दूँगा। है भी तो पूरा १९०)।"

यह सुनते ही रजपतिया चौंक पड़ी। उसका मुँह क्रोध और लज्जा से लाल हो रहा था। जीवन में आज पहली बार उसे अपने और अपने बाबा से घृणा हुई। उसके सामने अँधेरा छा रहा था। वह न कुछ सुन सकती थी, न बोल सकती। कुसुम उसके हृदय को समझ रही थी, और उसकी व्यथा का अनुभव कर रही थी।

(४)

रजपतिया की हालत विचित्र थी। वह घर गई, पर उसका किसी काम में मन न लगा। वह समझ गई कि उसका बाबा किसी से १९०) उधार लाया है, वह भी मेरे लिये। उसका हृदय वेदना से फट रहा था। उसी के लिये उसके बाबा को इतनी तकलीफ़ सहनी पड़ी वह व्याकुलता के बोझ से दबी जा रही थी। वह क्या करे, जिससे उसके बाबा का क़र्ज़ चुक जाय। बड़ी देर तक सोचने पर उसने एक विचार स्थिर किया, और निरंतर उसी विषय पर सोचती रही। बहुत आगा-पीछा किया, पर जब एक बात स्थिर हो गई, तो उसका उदास मुँह एक बार देदीप्यमान हो उठा।

भावी कार्य-क्रम को अपने हृदय में छिपाए वह घर से निकल पड़ी। आज पहली बार उसने कुछ मैली धोती पहनी थी। सहसा वह एक घर के सामने रुकी। उसने देखा, एक ग़रीब औरत रो रही है। पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि वह भी कहारिन है। मालिक के घर चोरी करने के अपराध में निकाल दी गई है। सारी बातें सुनकर पहले तो उसे वेदना हुई, पर कुछ ही देर बाद उसका वेदना से आच्छादित मुँह प्रसन्नता से खिल उठा। मन में सोचने लगी, क्यों न मैं इसी के मालिक की नौकरी कर लूँ। कहारिन से उसने मालिक के घर का पता पूछा, और सीधे उसी ओर चल पड़ी। उसे देखकर घर के सभी लोग चकित हो गए। एकटक उसके सौंदर्य को निहारने लगे। रज्जो अपने संपूर्ण साहस को बटोरकर बोली—"का आपका कौनों कहारिन की जरूरत है?"

मालकिन बोलीं—"हाँ, क्या तुम किसी को ला सकती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरे या जिए, चाहे किसी का घर लुटता हो, पर अपना रुपया वसूल हो जाय।

महाजन से न रहा गया। कड़ककर बोला—"रामदीन, एक बार फिर कहता हूँ, या तो रुपए दो, या सब चीज़ों से हाथ धो बैठो।"

महाजन का गर्जन सुनकर सोती हुई रज्जो चौंक उठी। बोली—"बाबा, को आय ?"

"कोऊ नाहीं।" कहकर रामदीन उसे ठीक से कंबल ओढ़ाने लगा। वह फिर बोली—"बाबा, का महाजन हैं ?"

अब की बार रामदीन बहुत आश्चर्य-चकित हुआ, पर अपने को सँभालते हुए बोला—"हाँ।"

"काहे आए हैं ? का रुपैया चही ?" हरएक शब्द के अंत में उसकी बोली क्षीण होती जाती थी। अपने बाबा से विना उत्तर पाए ही बोली—"बाबा, सुना रहै, हमरे बदे तुम १२५) उधार लाए रहौ इनहिंन ते, मय बियाज १५०) होत हैं। (चाबी देते हुए) लेव, बकस माँ ते निकासिकै इनका १५०) दै देव।" फिर डूबते हुए स्वर में महाजन से बोली—"सरकार, हमरे पीछे हमरे बाबा का बहुत कुछ कहेव। लेव अपन १५०), अब इनका कुछ न कहेव।"

रामदीन रुपए निकाल रज्जो के पास गया, पर अपने बाबा का भाव देख उसने उसे इशारे से कुछ भी पूछने को मना कर दिया। फिर बोली—"बाबा, हमरे पीछे तुमका बहुत दुख मिली, हमका माफ कीन्हेव, अब हम जाइत है। (इसी बीच में १५०) रामदीन ने महाजन की ओर बढ़ाए) आज से सब कर्ज अ...दा...हो...इ...गा।"

महाजन ने रुपए ले लिए। रामदीन घबराकर रज्जो के पास गया। देखा, पत्ती पिंजड़े से उड़ चुका था। रज्जो का शरीर बर्फ़ के समान सर्द पड़ गया था। रामदीन पछाड़ खाकर गिर पड़ा, पर सबने देखा, रज्जो का मुँह अब भी एक दिव्य ज्योति से जगमगा रहा था।

ESTD 1899

TELEPHONES:—2 & 2A

MUNICIPAL AND DISTRICT BOARDS AND STATES
CAN GET THEIR REQUIREMENTS
IN
STATIONERY & PAPER
FROM
BHOLA NATH & CO.
30. AMINABAD PARK. LUCKNOW

Enquiries Solicited *Satisfaction Guaranteed*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा केशवचंद्र सेन *

[श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा]

च की एक महत्त्व-पूर्ण उक्ति है—

"Only the waters which in perfect stillness lie can give back an undistorted image of the sky."

अर्थात् पूर्णतः स्थिर जल में ही आकाश की असली छाया पड़ सकती है। अतएव किसी महात्मा के चरित्र का वास्तविक वर्णन करने के लिये यह आवश्यक है कि वर्णन करनेवाला पुरुष स्वयं भी उच्च आत्मावाला हो। पर वह कमी मुझमें कितनी अधिक है, मैं कितने दुर्बल हृदय का हूँ, और किसी भी महात्मा के चरणों की धूलि में भी बैठने योग्य नहीं—इसका जो ज्ञान मुझे है, वह किसी और को नहीं हो सकता। अतएव मुझसे यह तो आशा करनी ही न चाहिए कि मैं किसी प्रकार उनके—महात्मा केशवचंद्र सेन के—गुणों का वर्णन या उनकी व्याख्या कर सकूँगा। फिर भी हममें से अनेक एक अजीब आत्मप्रवंचना के शिकार होते रहते हैं, और शायद यह उसी प्रवंचना का परिणाम है कि मैं केशवचंद्र सेन-ऐसी विभूति पर कुछ कहना चाहता हूँ।

एक वर्ष के ऊपर हो गया, जब मैंने 'कल्याण' में एक लेख लिखा था—'महापुरुष कौन है'। उस लेख को पढ़कर एक बड़े राज्य के दीवान ने मुझे पत्र लिखा था—"जो ऐसा लेख लिख सकता है, वह स्वयं महापुरुष होगा। अतएव मैं आपका दर्शन करना चाहता हूँ।" मुझे इसका बड़ा दुःख हुआ, और मैंने 'कल्याण' में ही 'दुर्जन कौन है'-शीर्षक लेख लिखा। उसमें यह लिख दिया कि चूँकि मैं स्वयं दुर्जन हूँ, अतएव उस पर अधिकार-पूर्वक प्रकाश डाल सकता हूँ। मुझे खेद यही है कि उस लेख को पढ़कर किसी ने मुझे यह न लिखा कि मैं ऐसे दुर्जन का दर्शन करना चाहता हूँ। बहरहाल ऐसी ही धोखाधड़ी की ज़िंदगी में महात्मा केशवचंद्र सेन पर यदि मैं प्रकाश डालूँ, तो आप कुछ आश्चर्य न करें।

प्रांतीयता का विष

पुराने और नए भारत में सबसे बड़ा अंतर यही है कि उसमें प्रांतीयता नहीं थी, इसमें हर कोने में प्रांतीयता का ज़हर भरा हुआ है। राम या कृष्ण, शंकर या कपिल, कणाद या गौतम बंगाली, गुजराती, मरहठी, युक्त प्रांतीय—क्या थे? यह न तो उस समय के लोगों के लिये महत्त्व की वस्तु थी, और न अब है। केरल की ललनाएँ, पंजाब की युवतियाँ, बंगाल की कुमारियाँ और मैंने देखा है कि नैपाल की स्त्रियाँ समान प्रेम से कृष्ण की रास-लीला का नाच करती हैं। दूर की बात जाने दीजिए, चंद्रगुप्त मौर्य या शिवाजी का नाम लेते समय बिहारी या मराठी झगड़ा हमारे सामने नहीं आता। तब फिर यह बात केवल आजकल पाई जाती है। शायद हमारी पराधीनता की यह पहली प्रसादी है, और इसी के कारण हमारे राष्ट्र की शक्ति चूर्ण होती चली जा रही है। और, शायद यही कारण है कि हम युक्त प्रांतवाले बंगाल के उन महापुरुषों को भूल गए, जिन्होंने हमारे राष्ट्र की रचना में ख़ून

* दिसंबर, १९३८ में महात्मा केशवचंद्र सेन की जन्म-शताब्दि मनाई गई है। सन् १८३८ में यह विभूति उत्पन्न हुई थी।—संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पसीना बना दिया, या बंगाली हमारे सूबे के उन शहीदों को भूल गए, जो सन् १८५७ से स्वाधीनता-देवी के सामने अपना गला चढ़ाते चले आ रहे हैं। केशवचंद्र सेन ने अपने ब्राह्म धर्म-प्रचार, सामाजिक सेवा और समाज की कुरीतियाँ दूर करने के लिये समूचे भारत का दौरा किया था, समूचे भारत के लिये प्रयत्न किया था, पर बंगाल ने उनकी ज़्यादा सुनी, हमने कम। वह बंगाली थे—हम उन्हें अपने हृदय में स्थान न दे पाए।

आज़ादी की लड़ाई

आज आज़ादी की लड़ाई में हम स्वाधीनता के पुजारी की तलाश में रहते हैं, और दूसरी ओर ग़ौर करने का हमें मौक़ा ही नहीं मिलता। पर भारतीयों को यह स्मरण रखना चाहिए कि केशवचंद्र सेन का वह ज़माना (सन् १८८० तक) वैसा न था, जैसा आज है। उस वक्त आज़ादी का नाम लेनेवाला टीपू क़ब्र में करवटें बदल रहा था, लक्ष्मीबाई की राख गोखले और तिलक को जगा रही थी, सिराजुद्दौला और मीर क़ासिम ख़ुदा की पनाह माँग रहे थे, तांत्या टोपी और नाना फड़नवीस की तलवारें दर्द-भरी साँस ले रही थीं, और हमारे युवक अँगरेज़ी पढ़ना सबसे बड़ा गौरव, अँगरेज़ी बोलना सबसे बड़ी सभ्यता और ईसाई बनने में सबसे बड़ी शान समझते थे। लॉर्ड लॉरेंस के शासन-काल में भारतीय नेटिव चमरेशियन बनना चाहता था। और, यह समय की गति का ही प्रभाव है कि हमारी गीता और कालिदास के ग्रंथ के रहते हुए भी केशवचंद्र सेन-ऐसे महापुरुष भी कहते थे—"हाथ में बाइबिल और शेक्सपियर के रहते हुए आदमी दुनिया के ऊपर हो जाता है।" उस समय नए ईसाई बने हुए हिंदू गोमांस खाने में इतना गौरव समझते थे कि प्रतापचंद्र मजूमदार ने एक रोचक कहानी में बतलाया है कि किस प्रकार कुछ नए ईसाई हिंदू बाज़ार से गोमांस ख़रीद लाए, मि० मुकर्जी के यहाँ बैठकर उसे ख़ूब उड़ाया, और फिर पड़ोस के ब्राह्मण के यहाँ फेंक दिया। जब उस ब्राह्मण ने इन नवयुवकों को ख़ूब पीटा, तब जाकर धर्म-जोश ठंडा हुआ। मैं ईसा मसीह का स्वयं भक्त हूँ। ग्रेजुएट लोगों को बाइबिल-सोसायटी से जो पुस्तक भेंट मिलती है, उससे मैंने काफ़ी लाभ उठाया है। अमेरिकन पादरी रेवरेंड जोंस का मेरा साथ रहा है। पर मैं उस धर्म पर श्रद्धा करना जानता हूँ—अपने धर्म पर मेरी उसी के कारण और भी आस्था हो गई है। अस्तु।

उस बिगड़े हुए ज़माने में भी केशवचंद्र सेन की आज़ादी की पुकार सुनिए। वह कहते हैं—"अधीनता ही संसार में विष फैलानेवाली और अनेक अपवित्र कष्टों की जन्मदात्री है। नहीं कह सकता कि प्रारंभ से ही मैं अधीनता से इतना विरक्त क्यों रहता हूँ। स्वाधीनता ही मेरा सबसे पहला मंत्र है।" और, आज आप इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पाए हैं। १८७० में वह इँगलैंड गए थे। न्यूहंगटन में भारत के प्रति इँगलैंड के कर्तव्य पर उनकी प्रसिद्ध वक्तृता हुई थी, जिसमें ऐंग्लो-इंडियनों के प्रति कड़ी फटकार थी, उनकी कड़ी आलोचना थी और शराब-बिक्री में सरकारी नीति की कड़ुई टीका। उस भाषण को ज्यों-का-त्यों अपने 'इंडियन मिरर'-नामक पत्र में छापने के अपराध में पत्र को सभी अँगरेज़-ग्राहकों से हाथ धोना पड़ा। एक अँगरेज़ बहादुर तो इतना बिगड़े कि उन्होंने कहा—"मेरे हाथ में जब घोड़े का कोड़ा हो, तब जो यह वक्तृता पढ़े, उसे मैं ५००) इनाम दूँ।" और, उसी तरह अगर वह अँगरेज़ मेरे सामने आज ज़िंदा होता, तो मैं उससे कहता कि यही शर्त मेरे सामने अगर दुहरा दो, तो कुछ इनाम दूँ—हाँ, कोड़े के बजाय मेरे पैर में जूता होना ही काफ़ी है। सारांश यह कि स्वाधीनता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना उनमें कम न थी – बहुत काफ़ी थी, पर समय के कारण लाचार थे।

वह महापुरुष थे

मैं कहता हूँ, वह महापुरुष थे। महान् थे। पूज्य थे। मैं तो महापुरुष उसे मानता हूँ, जो बुल्ला साहब के मुताबिक़ यह कहे—

इट्ट खड़कै, लक्कड़ वज्जै, तत्ता होवे चुल्हा;
आवे फ़क़ीराँ, खा-खा जावें, राज़ी होवे बुल्ला।

या कबीर साहब के समान कहे—

कबिरा खड़ा बजार में लिए लुकाठी हाथ;
जो घर फूँकै आपना, चलै हमारे साथ।

अथवा संस्कृत-कवि भर्तृहरि के शब्दों में—

क्वचिद्भूमौ शय्या, क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनं
क्वचिच्छाकाहारी, क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः;
क्वचित्कन्थाधारी, क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्।

महात्मा सेन में ये सभी बातें वर्तमान थीं। अपनी थोड़ी-सी पूँजी सदा दरिद्रों की झोली के लिये खोल रक्खी थी। धर्म के कारण, समाज-सेवा के कारण १८६२ में घर से निकलना और कष्ट झेलना पड़ा। १८५९ में २५) की नौकरी उस बैंक में की, जहाँ इनके दादा २,०००) मासिक पर दीवान थे। धार्मिक विचारों में नवीनता के कारण, १८६६ में, अपने परम हितैषी और गुरु महात्मा देवेंद्रनाथ ठाकुर (मैं उन्हें महर्षि नहीं कहता, क्योंकि 'ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः' ही होता है) का साथ छोड़ना पड़ा। ख़ुद तो नौकरी-चाकरी पर लात मारकर फ़ाक़ेमस्त रहते ही थे, प्रतापचंद्र मजूमदार-ऐसे मित्रों को भी फ़ाक़ेमस्त रहने की नसीहत देकर उन्हें प्रचारक बनाया। महात्मा सेन देश-भर में ब्राह्म-धर्म का—सब धर्मों के समान आदर और एक-ईश्वरता का उपदेश देते घूमते थे।

बुरी सोहबत का बुरा नतीजा होता है। कहा है—

भला संग रहना, खाना बीड़ा-पान;
बुरे संग रहना, कटाना दोनो कान।

शायद इसी कारण, १८५९ में, परीक्षा में हिसाब की कॉपी एक लड़के के साथ नक़ल करने के अपराध में पकड़े गए, और परीक्षा से निकाले गए। उनके जीवन में दुराचार का यह उदाहरण छोड़कर और कोई नहीं मिलता। बहुत ही स्वरूपवान्, अच्छा कपड़ा पहने, देवता-स्वरूप आदमी थे, और चाल-चलन दूध-जैसा सफ़ेद। बुरी सोहबतवालों से इतना डरते थे कि बयान नहीं किया जा सकता। महापुरुषों का जीवन समझना कठिन होता है। इसीलिये शंकराचार्य का यह कहना था कि महात्मा जो कहते हैं, वह करो, जो करते हैं, वह मत करो—

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः।

इसी प्रकार इस महापुरुष के जीवन की पहेली समझते समय हमें कूच-बिहार में उनकी कन्या के विवाह की कहानी इत्यादि पर ध्यान देकर छिद्रान्वेषी नहीं बनना चाहिए।

स्त्री-सुधार-कार्य

आज हम जिस शिक्षा-प्रणाली को बुरी समझते हैं, उसके विषय में ७० वर्ष पहले से महात्मा केशवचंद्र सेन ने आवाज़ उठाई थी। आज हम नारी-जाति के समानाधिकार स्त्री-शिक्षा और उनको समाज का अर्द्धांग समझना—इन बातों पर जितना ज़ोर देते हैं, ७० वर्ष पहले महात्मा सेन ने उन्हीं के लिये युद्ध किया था, और ब्राह्म-समाज में आचार्य-पद पर जब वह अधिष्ठित किए जानेवाले थे, अपनी स्त्री को दीक्षा में शामिल कराने के अपराध में घर से निकाल दिए गए थे। विधवा-विवाह के इतने पक्षपाती थे कि १८५९ में विधवा-विवाह-नाटक किया, और उसमें स्वयं भाग लिया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर उसमें दर्शक थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह नाटक देखकर रो पड़े थे। इस नाटक से कुलीन समाज बड़ा नाराज़ था।

मद्य-मांस

मैं एक मिसाल जानता हूँ। एक वैद्यराज ने अपने एक रोगी का रोग पहचान लेने पर भी उसे बीस दिन बाद दवा देने के लिये बुलाया, और अंत में उससे कहा कि तुम गुड़ छोड़ दो। उसने कहा, महाराज, यह बात आप बीस दिन पहले कह सकते थे। उन्होंने कहा, मैं स्वयं उसका सेवन करता था, अतः तुमसे कहने पर उसका असर न होता। ठीक यही दशा मेरी है। मांस के विषय में, स्वयं पूर्णतः निरामिष न होने के कारण, मैं कुछ नहीं कह सकता। पर मद्य के विषय में कह सकता हूँ। केशवचंद्र सेनजी इन दोनो के कट्टर शत्रु थे। अपनी बीमारी में जब उन्हें कॉडलिवर ऑयल और पोर्ट वाइन का सेवन करना पड़ा था, तो वह बड़े दुःखी हुए थे। उनका कहना था, ये वस्तुएँ शरीर को घुन की तरह चाट जाती और मन मैला कर देती हैं। बात तो बिलकुल सच है। नशा कैसा भी हो, बुरा होता है। एक कवि ने धन को भी नशा ही बतलाया है—

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय ;
वह खाए बौरात है, यह पाए बौराय।

मनुष्य स्वयं पैसा बरबाद कर क्यों पागल होना चाहता है, इसका कारण मैं नहीं बतला सकता। अत्यधिक दुःख भी इसका कारण हो सकता है। पर यह तो दुःख को और बढ़ाना है। केशवचंद्र सेन कहते थे कि शराब ज़हर है, और सरकार शराब की बिक्री से आमदनी कर ज़हर का रोज़गार कर रही है। वह बंगाली ही नहीं, देश-भर के नवयुवकों को शराब से बचने की सलाह देते थे। मैं समझता हूँ, शराब की बुराइयों, उससे देश को बचाने के कारण और उससे देश को छुटकारा दिलाने का कार्य जितना कांग्रेसमैन जानता है, करता है, उतना और कोई नहीं। अरे, अगर पीना ही है, तो आत्मरस पी लो; फूलों का सौंदर्य, प्रकृति का अनोखापन, आत्मा की मस्ती आँखों में भर लो। एक कवि का कथन है—

लाना - लाना, देना साक़ी,
तेरी मादक है यह हाला ;
प्यासे के होंठों से सागर,
तू लगा बना दे मतवाला।
दल बाँध दौड़ते आए हैं,
कितने ही तेरी मधुशाला ;
अरमान - भरे दिल लाए हैं,
आए हैं पीने को हाला।
देना, मुझको ऐसी देना,
सब भूलूँ अग जग के नाते ;
दुनियावालों को भूल सकूँ,
जो रहे तड़पते - तड़पाते।

या—

इश्रीक मय मरा शिकस्ती रब्बी ;
बरमन हरे ऐश बेबस्ती रब्बी।
बरख़ाक रेख़्ती मए-नाब मरा ;
ख़ाक़त बदहन वगर तु मस्ती रब्बी।
नाकरदए-गुनाह दर जहाँन कीस्त बेगो ;
आँकस कि गुनह न कर्द चुँ ज़ीस्त बेगो।
मनबद कुनम ओ तू बद मकाफ़ात दिही ;
पस फ़र्क़ेन मियाने या ओ तू चीस्त बेगो।

मुँह में ख़ाक मल लो, और देखो, क्या मस्ती हो जाती है।

जीवन का सारांश

महात्मा केशवचंद्र सेन के घटनामय जीवन का सारांश देना भी असंभव है। वह जीवन इतना महान् है कि उसे क़लम या ज़बान भी लघु नहीं बना सकती। १८५६ में १० वर्ष की लड़की से इनका विवाह हुआ, पर यह इतने एकांत-प्रिय, साधु और भगवद्भजन में लीन थे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी स्त्री का नव-जीवन बड़ा दुःखमय बीता। वही सेन साहब, जो २० वर्ष में परम एकांत-सेवी साधु थे, भगवन्मार्ग देखने के बाद सच्चे गृहस्थ बन गए, और ४० वर्ष की उम्र में कई बाल-बच्चे हो गए। १८६२ में यह घर से अलग हुए। १८६२ में ही बीमार पड़े, और गंडमाला निकली। इसी वर्ष इनका पहला लड़का पैदा हुआ। १८५५ में कोलूटोला ईवनिंग-स्कूल खोला था, जहाँ कई मित्रों के साथ पढ़ाया करते थे। इसी साल रेवरेंड लॅंग और वर्न्स की सहायता से साहित्य एवं विज्ञान की उन्नति के लिये एक सभा खोली। १८५७ में सद्भाव-भ्रातृ-समाज (Goodwill Fraternity) की रचना की। इसी साल ब्राह्म-समाज में प्रवेश किया, और महात्मा देवेंद्रनाथ ठाकुर के दर्शन प्राप्त किए, तथा उनके उपासक हो गए। १८६० में यह धर्म-प्रचारार्थ सर्व-प्रथम कलकत्ते से कृष्णनगर गए, जहाँ इनका बड़ा स्वागत-सत्कार हुआ। यहीं एक पादरी से वाद-विवाद में भिड़ंत हो गई, पर केशव के सामने कौन ठहर सकता था। १८६० में उत्तर-भारत में अकाल पड़ा, और आपने उसमें बड़ी सेवा की। गली-गली कपड़ा, रुपया और ग़ल्ला माँगते घूमे। इसी साल धार्मिक विषयों पर विचार करने के लिये संगत-सभा की स्थापना की, और अपने पक्ष के प्रचार के लिये 'इंडियन मिरर'-नामक पत्र निकाला, जो बंगाल का दूसरा भारतीय पत्र था। १८६२ में कलकत्ता-कॉलेज की स्थापना की, पर कुछ समय बाद यह बंद हो गया। १८७२ में अलबर्ट-कॉलेज के संस्थापकों में भी आप थे। ईसाइयों के हाथ से निकलकर एक अच्छा भारतीय कॉलेज खोलने का इन्हें बड़ा शौक़ था। इनकी ब्राह्म-बंधु-सभा स्त्रियों में शिक्षा तथा धर्म का प्रचार करती थी। घर से निकाले जाने पर यह दो वर्ष तक देवेंद्रनाथ ठाकुर के यहाँ रहे। १८६४ में मदरास तथा बंबई-प्रांत की यात्रा की। १८६८ में हमारे सूबे में धर्म-प्रचारार्थ आए।

१८६६ में देवेंद्रनाथ ठाकुर ने अपना ब्राह्म-समाज अलग कर लिया, और उसका नाम आदि-ब्राह्म-समाज रक्खा। इसका कारण गुरु-शिष्य में सैद्धांतिक मतभेद था। केशवचंद्र सेन यज्ञोपवीत आदि में विश्वास नहीं करते थे। देवेंद्रजी वैदिक सभ्यता के पुजारी थे। १८६६ में केशवचंद्रजी ने 'ईसा मसीह' पर दो व्याख्यान दिए थे, जो बहुत ही सुंदर थे, और कुछ लोगों का विश्वास था कि वह हिंदू-धर्म से नफ़रत करने लगे हैं। इसी के परिणाम-स्वरूप उन्होंने एक दूसरा व्याख्यान दिया, जिसमें जगद्धात्री—जगदंबा आदि का उल्लेख किया।

१८६८ में ब्राह्म-मंदिर स्थापित किया, जहाँ ईश्वर की निराकार उपासना हो सके। १८७२ में इन्हीं के प्रयत्न से 'असवर्ण-विवाह'-बिल पास हुआ, क्योंकि केशवचंद्रजी उसके बड़े पक्षपाती थे। शिल्प-विद्यालय, स्त्री-विद्यालय, नाइट-स्कूल आदि अनेक संस्था अब तक यह खोल चुके थे। १८७० में विलायत गए। इसके पहले देवेंद्रनाथजी के साथ सीलोन की यात्रा कर आए थे, और समुद्र-यात्रा पाप समझी जाने के कारण घर से चुपके से भागे थे। १८७० में विलायत जाकर अपनी प्रतिभा से सबको मुग्ध कर लिया था।

जीवन बड़ा सादा था। १८७५ से दो वर्ष तक अपना भोजन अपने हाथों बनाया।

८ जनवरी, १८८४ में, लंबी बीमारी के बाद, इस शरीर की लीला समाप्त की, और अंतिम समय इन्हें देखने आए थे देवेंद्रनाथ ठाकुर, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद। धन्य है!

धर्म

धर्म के विषय में आपका कहना था—"सारा विस्तृत विश्व ही परमात्मा का मंदिर है, बुद्धि ही पवित्र तीर्थ-स्थान है, सत्य ही अनंत शास्त्र है, विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही संपूर्ण धर्म का मूल है। प्रेम ही सच्ची आध्यात्मिक शिक्षा है। स्वार्थ-त्याग ही सच्चा वैराग्य है।"

सच है, एक साधु का वचन है—

साईं साचा है हुजूर हरदम तेरे ऐ बावला,
काशी, रामेश्वर, द्वारका क्या घूमता तू उतावला।
क़ाबए-दिल छोड़के मक्का-मदीना क्या चला;
दिल अर्श है अल्लाह का, कर दरस घट में करबला।

यदि मनुष्य अंधा है, और फिर भी झगड़ता है, तो उसी के लिये ही कहा है—

ईसा और मूसा पैगंबर, देव, इष्ट कोऊ
मानत न राम नातो सुत को अहीर के;
करत मनमानी है, न माने बात काहू की,
ऐंठ सीधी बातन पै, मानो बड़े बीर के।
क्रूर, मतिमंद, नीच, कुटिल, कठोर-चित्त,
कादर हूँ से डेरात हाँके रणधीर के;
गृह के, कलत्र के, कुटुंब के, न बंधुन के,
बाजे-बाजे दगाबाज गुरु के, न पीर के।

इसलिये, अंत में, महात्मा केशवचंद्र सेन की जीवनी से यही उपदेश लेते हुए मैं लेख समाप्त करता हूँ—

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत;
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।

दुर्घटनाएँ

(एक्सिडेंट)

अचानक हो जाती हैं,

काम में, आराम में, पढ़ाई या खेल-कूद में, मन-बहलाव या अन्य चेष्टाओं में साधारण चोटों का आ जाना, चाकू से घाव लग जाना, कील-शीशा लग जाना इत्यादि कष्ट प्रायः हो जाते हैं। यही नहीं, आजकल की मशीनों, रेल, मोटरों के प्रताप से टक्कर लग जाना या अन्य दुर्घटनाओं का भी दुर्भाग्यवश हो जाना असंभव नहीं। परंतु एक छोटी शीशी

अ मृ त धा रा

का पास रखना सब अवस्थाओं में अपनी रक्षा के लिये एक सच्चे मित्र और अंग-रक्षक को पास रखना है। यह न केवल खून रोकती, दर्द बंद करती, जख्म भरती, सूजन दूर करती और जख्म को विषैला होने से रोकती है, प्रत्युत मूर्च्छा और दिल डूबने की अवस्था में इसको सुँघाना और खिलाना शरीर में शक्ति का संचार कर देता है।

एक शीशी सदा पास रक्खो

मूल्य पूरी शीशी २॥), अर्द्ध १।), नमूना ॥)

लखनऊ-एजेंट—एच० बी० काम, हिंदू-तंबाकू कं०

पता—अमृतधारा-फ़ार्मेसी, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारा हिंदुस्थान

[श्रीयुत दरबारीलाल सत्यभक्त]

प्यारा हिंदुस्थान हमारा ;
सेवा - शक्ति - प्रेम की धारा ।

यहाँ प्रकृति की छटा निराली,
सब ऋतुओं की है हरियाली,
फूल खिले हैं डाली - डाली,
कण-कण जिसका लगता प्यारा;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ १ ॥

दिग्विजयी गिरिराज हिमालय,
गंगा के निर्मल जल की जय,
प्रकृति - नटी नचती है निर्भय,
है विस्तीर्ण समुद्र - किनारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ २ ॥

सब ऋतु के अनुकूल फूल हैं,
अन्न, शाक, फल, कंद, मूल हैं,
मन चाहे फल रहे तूल हैं,
ईश्वर का है परम दुलारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ३ ॥

राम - कृष्ण - से वीर यहाँ थे,
वीर बुद्ध-से धीर यहाँ थे,
व्यास ज्ञान-गंभीर यहाँ थे,
अनुपम है सौभाग्य-सितारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ४ ॥

नानक और कबीर यहाँ थे,
एक-एक से पीर यहाँ थे,
सच्चे संत फ़क़ीर यहाँ थे,
मक़सद एक रूप था न्यारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ५ ॥

जैमिनि, कपिल, बृहस्पति धी-धन,
गौतम, शुक्र, कणाद' तर्कमन,
सबने दिया ज्ञान में जीवन,
वही विविध दर्शन की धारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ६ ॥

महासती सीता-सी पाई,
सरस्वती विदुषी बन आई,
लक्ष्मी रणरंगिणी दिखाई,
अद्भुत नारी - रत्न - पिटारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ७ ॥

भूपति त्याग-प्रेम के आकर,
सारा विश्व जिन्हें अपना घर,
थे अशोक-से नृपति यहाँ पर,
जिनका धर्म देख जग हारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ८ ॥

विक्रम-से रणधीर यहाँ थे,
अकबर - आलमगीर यहाँ थे,
और शिवाजी वीर यहाँ थे,
मात किया था यह जग सारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध कला-विज्ञान यहाँ पर,
फूले - फले फिरे भूतल - भर,
संयम और सभ्यता का वर,
बना सदा सुख-शांति-किनारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥१०॥

हिंदू - मुसलमान हैं भाई,
बौद्ध, सिक्ख, जैनी, ईसाई
प्रेम नाम की महिमा गाई,
रहा सभी में भाईचारा ;
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥११॥

अब उन्नति-गिरि पर चढ़ जाए,
जग का परम मित्र कहलाए,
सबको प्रेम-पाठ सिखलाए,
मानवता का हो ध्रुवतारा—
प्यारा हिंदुस्थान हमारा ॥१२॥

कैंथरडाइन

केश-तैल

अत्युत्तम केश-शृंगार तथा ओषधि

खारिश, बाल के गिरने,
समय के पहले बाल सफ़ेद होने तथा
बालों व मग़ज़ की अन्य सभी बीमारियों में
लाभदायक है।

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबके लिये
शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर

स्वादिष्ट

झंडु-द्राक्षासव

विना विलंब सेवन कीजिए।

विशेषकर स्त्रियों के लिये
तंदुरुस्ती और ताक़त से भरपूर

प्रदरादि रोगों की
अक्सीर दवा

झंडु अशोकारिष्ट

स्त्रियों की निर्बलता में स्थायी प्रभाव डालनेवाला
——हरएक घर में रहना चाहिए——

सच्ची शक्ति का संग्रह के लिये

झंडु की सुवर्ण-मिश्रित

मकरध्वज गुटी

शक्ति की सर्वोत्तम दवा
फौरन् व्यवहार कीजिए

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ के ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल० एम० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप केवल कूपन भेज दीजिए, जिसमें लिख दीजिए कि "पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा"। आप हिंदी में चाहते हैं या उर्दू-अँगरेज़ी में। आपके पास एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक की लिखी हुई मनोरंजक पुस्तक पहुँच जायगी। उसमें एक पूर्ण-यौवन पुरुष के लक्षण तथा उन सभी कठिनाइयों को दूर करने के साधन दिए गए हैं, जो आम तौर पर एक विवाहित पुरुष के रास्ते में रुकावट डालती हैं।

केवल विवाहित पुरुषों को भेजी जाती है।

कूपन डाक द्वारा भेजिए

सेवा में, मैनेजर अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर (१३)

कृपया 'पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा'-नामक पुस्तक की एक प्रति मुफ़्त भेजकर कृतार्थ करें। मैं हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी, बंगाली में चाहता हूँ।

नाम ....

पूरा पता ....

डाक व तार का पता—**अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाड़ा मेल-ट्रेन की तेज़ी से जा रहा है !

देर करोगे, तो सदा पछताओगे !

बचपन में ग़लतियाँ करके काया नष्ट करनेवाले के लिये नीचे-लिखी दवाएँ अमृत या आबे-हयात हैं—

नवधातुरोगांतक

यह हमारी बीस साल की खोज का नतीजा है। हमारी सभी दवाएँ पब्लिक ने पसंद करके उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, पर हमने मध्य-स्थितिवालों के लिये इसे सबसे अच्छा समझा, इसीलिये गत कई सालों से इसका ही काफ़ी प्रचार है। हमें ग़रीबों का एक पैसा भी हराम में खाने से जंगल में वृक्ष के नीचे रहकर भूखों मर जाना अच्छा लगता है।

इस दवा से धातु के सारे विकार, धातु की कमी, धातु का सूख जाना, पतली हो जाना, उसमें गर्भोत्पादक कीट न होना, शीघ्र-पतन होना, कामेच्छा न होना, ढीलापन जल्दी होना, पेशाब के आगे-पीछे वीर्य जाना वग़ैरह सारी ही शिकायतें इस चूर्ण से उस तरह भागती हैं, जिस तरह हवा से बादल भागते हैं। आप इसे जाड़े में सेवन करें, अपूर्व लाभ होगा। ज़रूरत होने से अनुपान बदलकर गरमी में भी खाकर जीवन का आनंद उठा सकेंगे। ६० दिन खाना ज़रूरी है। जिन्हें ज़रा भी शक हो, वे ४५ दिन खाकर परीक्षा कर लें। क़ीमत ४५ दिन की दवा रु० १२॥), पर अभी ग़रीबों के हितार्थ ६।) है।

संसार का अपूर्व, जादू का काम करनेवाला

तिला नं० १

विश्वास करो, हमारा एक पैर क़ब्र में है, एक बाहर है, ऐसे समय में हमें झूठ लिखकर धन कमाने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं। हमने अपनी ७० साल की उम्र में ५० साल तक सैकड़ों तिले बनाए, पर इस तिले से बढ़कर दूसरा तिला नहीं पाया। यह तिला सौ में सौ को मर्द बनाता है, इसने हज़ारों उजड़ती गृहस्थियाँ बना दीं। जिन घरों में रात-दिन देवासुर-संग्राम-सा मचा रहता था, कलह के मारे शांति नहीं मिलती थी, आज उन घरों में इसी तिले की बदौलत शांति का राज्य है।

इसके लगाने से बचपन की ग़लतकारियों के कारण पैदा हुई नसों की कमज़ोरी जाती रहती है। इंद्रिय में काफ़ी सख़्ती और तेज़ी आती है। देखते ही उत्तेजना होती है। आगे का मोटापन, जड़ का पतलापन, नसों का उभरा रहना सारी शिकायतें काफ़ूर हो जाती हैं।

आप वृथा इधर-उधर न ठगाकर, इस तिले को काम में लाकर सुखी हों। इस कंपनी की-सी सचाई कहीं नहीं है। इसे भारत के करोड़ों आदमी जानते हैं। क़ीमत फ़ी शीशी १५), पर ग़रीबों के लिये इस मौसम-भर आधा मूल्य ७॥) है। महसूल ॥)

पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटपीस के स्पेशल बंडल

कटपीस के व्यापारियों के लिये अलभ्य अवसर

कटपीस के शौकीनों के लिये सुनहरा अवसर

केवल एक मास के लिये बिलकुल

थोड़े भावों पर

हम आपको ईमान और धर्म की सौगंध देते हुए निवेदन करते हैं कि अगर यह बंडल बड़ाई (यानी तारीफ़) के योग्य और लाभ के देनेवाले हों, तो आप का पहला नियम है कि अपने इष्ट-मित्रों से हमारे इन स्पेशल बंडलों की सिफ़ारिश करें। अगर ये सब बातें न हों, तो ख़ुशी से वापस करके अपनी क़ीमत मँगवा लें। इससे विशेष लिखना फ़िज़ूल है, क्योंकि इस मास में कटपीस के भाव बहुत कम हो गए हैं। इसीलिये आपके वास्ते यह बहुत सुंदर समय है। बंडल घरेलू आवश्यकता और हर ग़रीब-अमीर विशेषतः व्यापार करनेवाले मनुष्यों के वास्ते लाभदायक हैं। जिस स्थान पर ये बंडल जाते हैं, बार-बार ऑर्डर आते हैं; विशेषकर स्त्रियों में बेचकर काफ़ी लाभ पैदा कर सकते हैं। सुंदर वस्तु है।

एक्स्ट्रा बंडल

दरजा १ इस बंडल में तमाम ख़ास क्वालिटी का सुंदर रेशमी विलायती कटपीस मोरोकेन जॉरजट, वाईल, करेप, बोसकी इत्यादि के अलावा नए-नए डिज़ायन की रेशमी साड़ियाँ इत्यादि बहुत सुंदर क्वालिटी का माल है। इसमें विवाह-शादियों की वस्तुएँ होती हैं, लंबाई १॥ गज़ से १० गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड १०८) रु०, २० पौंड ५५) रु०, १० पौंड २८) रु०।

फ़ैमिली स्पेशल बंडल

इसमें भी ऊपर का माल है क्वालिटी में थोड़ा ही भेद होगा। लंबाई १॥ गज़ से ८ गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड ८८) रु०, २० पौंड ४५) रु०, १० पौंड २३) रु०।

तिजारती स्पेशल बंडल

इसमें भी ऊपर की तरह मोरोकेन पैलस, करेप, जॉरजट, मलाई साटन, पापलेन, जंपर, छींट इत्यादि नए-नए डिज़ायन के कई प्रकार के कपड़े होंगे। लंबाई १॥ गज़ से ८ गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड ६५) रु०, २० पौंड ३३) रु०, १० पौंड १७) रु०।

नए साल की ख़ुशी में एक १९३६ की ख़ास वस्तु हर एक बंडल के साथ मुफ़्त भेजी जायगी।

ज़रूरी नोट—ऑर्डर के साथ चौथाई हिस्से की क़ीमत पहले आनी ज़रूरी है।

पता—मैनेजर अमरीकन कटपीस इंपोर्ट कंपनी न्यू क्लाथ मारकेट, कराची सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-भाषा के ख़िलाफ़ एक बवंडर

[श्रीयुत लक्ष्मीनारायण भारतीय साहित्यरत्न]

इन दिनों राष्ट्र-भाषा के ख़िलाफ़ एक ज़ोरदार बवंडर-सा उठा हुआ दिखाई दे रहा है। यद्यपि यह अकालिक है, तथापि इसका लय भी नज़दीक ही है। ऐसे कई बवंडरों को राष्ट्र-भाषा हज़म कर लेगी, और फिर अपनी महत्ता से अपना सिर ऊँचा उठाए रक्खेगी। कहीं उसके प्रचार को लेकर, कहीं उसके स्वरूप को लेकर, तो कहीं उसकी कमज़ोरियों और सुधारों को लेकर उस पर बेहद टीका-टिप्पणी होने लगी है। वैसे तो यह प्रवाह बहुत दिनों से बह रहा है, लेकिन इन दिनों कुछ बढ़ गया है। यह स्वाभाविक है। क्योंकि इसकी आड़ में कइयों के स्वार्थ-साधन का रास्ता खुल पड़ा है। प्रतिगामी लोग इस अवसर से लाभ उठाने के लिये ताक लगाए ही हुए थे। इन दिनों यह विरोध एक नया पहलू लेकर सामने आया है। वैसे तो इसका राजनीति से ताल्लुक़ था ही, परंतु वह उतना बड़ा और अधिकार-पूर्ण नहीं था। कांग्रेस के शासनारूढ़ होने के पहले राष्ट्र-भाषा के प्रचार पर इतना ज़्यादा आघात नहीं था। लेकिन परिस्थिति बदलते ही जहाँ राष्ट्र-भाषा को वास्तविक रूप से अखिल भारतीय बनाने की कोशिश की जाने लगी, वहाँ इसके विरुद्ध आंदोलन भी शुरू हो गया। इसका इतना प्रचार होते देखकर कइयों के दिल जैसे खौल-से गए हैं। दूसरी बात, अपने राजनीतिक क्षेत्र की आकांक्षाएँ तहस-नहस होकर अस्तित्व भी ख़तरे में पड़ गया है। यह देखकर और किसी उपाय के अभाव में यह पक्ष राष्ट्र-भाषा के विरोध का दामन पकड़े हुए है। जिनके प्रामाणिक मतभेद हैं, और जो रचनात्मक दृष्टिकोण से देखने के आदी हैं, उनका कोई सवाल नहीं। उनके लिये सदा समझौते का रास्ता खुला है। लेकिन वास्तव में जो ऐसे नहीं, वे किसी भी हालत में हठधर्मी छोड़ें ही कैसे?

हम देखें कि यह बवंडर उठाने में कहाँ की और कौन-सी हवाएँ ज़िम्मेवार हैं?

हिंदी-विरोधियों के—जिसके अंतर्गत अन्य विरोध भी आ जाते हैं, जो हिंदी-प्रांत की ओर से उठाए जाते हैं (यहाँ 'हिंदी-विरोधी' नाम से संबोधित करने में ही सुविधा होगी। केवल इसी शब्द से भड़कने की ज़रूरत नहीं। विस्तृत विवरण में जाने पर कोई अपनी राय बना सकता है।)—दो दल माने जा सकते हैं—एक ग़ैर-हिंदी-प्रांत का और दूसरा हिंदी-प्रांत का। शुरू में पहले पर विचार कर लेना ठीक होगा।

ग़ैर-हिंदी-प्रांतों में से विरोध की सबसे ज़्यादा आवाज़ कहीं की है, तो बंगाल और मदरास की। इनके बाद महाराष्ट्र आदि प्रांत भी हैं, लेकिन वहाँ अभी इतनी ज़्यादती नहीं की जा रही है। महाराष्ट्र के विरोध के कारण कुछ तो भिन्न हैं, जिन पर आगे चलकर विचार होगा।

देश की राजनीतिक स्थिति आजकल संक्रमणशील होती जा रही है। साथ ही उसका प्रभाव अन्य बातों पर भी पड़ना स्वाभाविक है। चूँकि सबसे बड़ी संस्था कांग्रेस द्वारा हिंदोस्तानी को राष्ट्र-भाषा क़रार दिया गया है, अतः उस पर भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से असर होना नामुमकिन नहीं। हिंदोस्तानी को राष्ट्र-वाणी बनाने की कोशिशें बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले से होती आ रही हैं। अभी तक—याने कांग्रेस द्वारा सात प्रांतों के शासन-सूत्र हाथ में लिए जाने तक—इसका इतना तीव्र विरोध नहीं हुआ है। लोग बहुत पहले से यह सुनते आ रहे हैं कि हिंदी ही एक ऐसी ज़बान है, जो राष्ट्र-भाषा के लायक़ है। ऋषि दयानंद, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी-जैसे अहिंदी-भाषा-भाषी हमें यह संदेश देते आ रहे हैं कि हिंदोस्तानी को ही राष्ट्रीय भाषा बनाओ। राष्ट्र-भाषा और हिंदी, इन दोनो पर बहुत दिनों से बहसें होती आ रही हैं, और पक्ष-विपक्ष का खंडन-मंडन होता आ रहा है। यह सब विधि होने पर अधिकृत रूप से फिर कहीं हिंदी या हिंदोस्तानी राष्ट्र-भाषा मानी गई। 'हिंदोस्तान के लिये राष्ट्र-भाषा हो', इसमें तो बहुत ही कम लोगों का विरोध दिखाई देता था। या हम यह कहें कि इस बात का विरोध करनेवाले नहीं के बराबर थे; क्योंकि जो थे, उनकी आवाज़ कुछ फ़िरक़ेवाराना लोगों की थी। इसके बाद 'राष्ट्र-भाषा-पद पर किसे आसीन किया जाय?' यह सवाल लेकर देश के अधिकांश ने हिंदी या हिंदोस्तानी के लिये मंज़ूरी दी। उस वक्त कुछ प्रांतों के लोगों का विरोध था, जिसके मूल में ज़्यादातर प्रांतीयता थी। लेकिन इस समय भी हिंदी के ख़िलाफ़ बहुत ज़्यादा आंदोलन नहीं उठा। शायद तब की प्रतिक्रिया अब होने लगी है। आज तो यह हालत है कि देश के दोनो कोनों के बीच इसके ख़िलाफ़ आवाज़ें कसी जाने लगी हैं। प्रायः निष्प्राण पहलू कि भारत के लिये राष्ट्र-भाषा ही न हो, अब और ज़ोरों से सामने आने लगा है। इसके बाद 'अगर हो, तब भी हिंदी नहीं', यह बात कही जाने लगी है। अगर हम कुछ तह में घुसकर देखें, तो साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि हिंदी का विरोध ही वास्तव में राष्ट्र-भाषा के विरोध के मूल में है। हिंदी से स्वाभाविक या अस्वाभाविक द्वेष, ईर्षा होने की वजह से ही उन लोगों ने अब राष्ट्र-भाषा के अस्तित्व में भी मुख़ालिफ़त करना शुरू की है। जब वे कहते हैं कि हिंदोस्तान के लिये राष्ट्र-भाषा की ज़रूरत ही नहीं, तब यह साफ़ समझिए कि वे राष्ट्र-भाषा होने के उतने विरोधी नहीं, जितने हिंदी के। यहाँ उनका प्रांताभिमान दुरभिमान में परिणत होने लगा है। शायद हिंदी को इतने ऊँचे आसन पर विराजमान होते देखकर वे ईर्षा के क़ाबू में आ गए हों। मुमकिन है, हमारा यह ख़याल सिर्फ़ ख़याल-मात्र ही हो। राजनीतिक वातावरण में इस विरोध का बड़ा रूप क्यों हुआ, यह जानना कोई कठिन नहीं।

चाहे कुछ लोगों द्वारा ही क्यों न हो, मदरास-प्रांत में हिंदी की बड़ी विकृति की गई। हिंदी के साथ प्रांत के नेता श्रीराजगोपालाचार्य की भी प्रतिमा बनाकर उनका अप्रत्यक्ष रूप से अपमान किया गया। वजह सिर्फ़ यही बताई गई कि मातृभाषा का ज़बरदस्त नुक़सान होने की संभावना है। यह कैसे हुआ? जिस प्रांत में और प्रांतों के पहले बड़े उत्साह के साथ हिंदी का स्वागत किया गया, जिस प्रांत में और प्रांतों से ज़्यादा तरक़्क़ी की गई, जिस प्रांत में राष्ट्र-भाषा-सेवकों का अदम्य उत्साह से स्वागत किया गया, वहाँ ऐसी विपरीत हालत क्यों हुई? यह एकाएक परिवर्तन कैसे हुआ? और, यह तब, जब प्रांत का शासन कांग्रेस-नेताओं के हाथ में आवे? कहा जाता है, 'इसी शासन-काल में वह अनिवार्य कर दी गई, इसलिये यह विरोध जाग्रत् हुआ है!' इस कथन में कहाँ तक सचाई है, यह वहाँ के प्रधान मंत्री के दिए हुए वक्तव्य से साफ़ ज़ाहिर हो जाता है। हिंदी को कुछ क्लासों में अनिवार्य करने से तमिल आदि भाषाओं या विद्यार्थियों की कुछ भी हानि नहीं होती, यह उस वक्तव्य से मालूम हो जाता है। उस रोज़ मदरास में प्रधान मंत्रीजी ने जो भाषण हिंदोस्तानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संबंध में दिया था, उससे भी विषय पर प्रकाश पड़ जाता है। अब एक दूसरे वक्तव्य की ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, जो मदरास के न्याय-मंत्री श्रीमेनन द्वारा दिया गया है। वह कहते हैं—"हिंदी-विरोधी आंदोलन हिंदी का विरोध करने के लिये नहीं, बल्कि कांग्रेसी मंत्रि-मंडल का विरोध करने के लिये शुरू किया गया है। यदि आप समाचार-पत्र पढ़ें, तो आपको मालूम होगा कि हिंदी-विरोधी इन आंदोलनकारियों में मुस्लिम लीगवालों, आत्माभिमानियों, भूतपूर्व मंत्रियों, बिगड़े दिमाग़ के राजनीतिज्ञों, निराश व्यक्तियों आदि का अजीब मिश्रण है।"

इस वक्तव्य से मुख्य बातों पर प्रकाश पड़ जाता है। हिंदी-विरोधियों के विरोध की पार्श्व-भूमि पर भी प्रकाश पड़ा हुआ है। जिस प्रकार कांग्रेस के सभी प्रांतों में विरोधी दलवाले किसी-न-किसी बहाने कांग्रेस को बदनाम करने के लिये हर तरह की जालसाज़ियाँ रचते आ रहे हैं, उन्हीं में से यह भी एक है। शुरू में जहाँ से प्रचंड स्वागत किया गया, अब वहीं से उसकी प्रतिक्रिया होना कुछ कम रहस्यमय नहीं। जहाँ तक हमें ज्ञात हुआ है, कुछ प्रामाणिक मतभेद रखने-वाले सज्जनों को छोड़कर, जो प्रायः चुप हैं, सभी विरोधी एक निश्चित भूमिका लेकर आगे उठे हैं, जिनका उद्देश्य प्रांतीय भाषा को बचाने का नहीं। प्रामाणिक मतभेद रखनेवालों की बातों में ज़रूर कुछ तथ्य है। कुछ उत्साही जन हिंदी-प्रांतों में हिंदी-अध्ययन के लिये जाते आए हैं। उन्होंने मातृभाषा की सेवा की ओर ध्यान नहीं दिया। मातृभाषा का अध्ययन किए बिना ही वे राष्ट्र-भाषा को अधिक महत्त्व देने लगे। फलतः उनका यह आचरण देखकर मातृभाषा-प्रेमियों के दिल में रंज होना स्वाभाविक है। और, तारीफ़ की बात तो यह कि वे विद्यार्थी अब मातृभाषा की ओर ज़ोरों से आकृष्ट होने लगे हैं, यह ख़याल करके कि मातृभाषा के प्रति हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो रहा है। एक बात और भी है कि अधिकांश अहिंदी-भाषा-भाषियों को—जो ज़्यादातर द्रविड़-प्रांत के हैं—हिंदी-प्रांतवालों की ओर से ज़्यादातर उपेक्षा ही मिली। साफ़ कहा जाय, तो हिंदी-प्रांत के कुछ सज्जनों की—जो ज़िम्मेवार हैं—यह राय रही है कि 'ये लोग तो ग़रज़वाले हैं, और हमारी कृपा के अपेक्षित हैं।' यह कड़ुई बात है, मगर सच्ची है, और हिंदीवालों के लिये क़तई गौरवास्पद नहीं। आगे बढ़कर मैं कहूँगा कि लज्जास्पद है!

इसके बाद हम बंगालियों की ओर निगाह फेरते हैं, तो कुछ और ही गुल खिलता हुआ प्रतीत होता है। तमिल आदि भाषावाले विरो-धियों से बँगला-भाषा-भाषी विरोधियों की मनो-भूमिका अलग है। दोनो का सामंजस्य करने लगें, तो काफ़ी दिक़्क़त उठानी पड़ेगी। दोनो के विरोध के कारण स्वतंत्र हैं। ज़्यादातर राजनीतिक और कुछ हद तक अन्य बातों से तमिलवाले विरोधी की भूमिका का पार्ट खेल रहे हैं। द्रविड़-प्रांत की अधिकांश जनता कांग्रेस के ख़िलाफ़ नहीं, अतः उतना सोचने की ज़रूरत नहीं। सब तो किसी भी क्षेत्र में सहमत नहीं हो सकते। कुछ विरोधी रहेंगे ही, और यह विरोध कार्य के लिये उतना नुक़सानदेह नहीं। अतः सिर्फ़ इस हद तक अगर उपाय-योजना की जाय, तो इतनी ही कि इस बात पर कड़ी दृष्टि रखनी होगी कि कहीं भी जाने-अन-जाने प्रांतीय भाषा को ज़रा भी धक्का न पहुँचे। राजनीतिज्ञ अपने क्षेत्र के लिये समर्थ हैं ही।

अपने प्रांत के लिये, मातृभाषा के लिये, अपने साहित्य के लिये आदर और स्वाभिमान रहना-रखना वाजिब और आवश्यक है। परंतु जब यह अभिमान दुरभिमान और हठधर्मी में परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तित हो जाता है, तब अपने आदर्श से च्युत हो जाता है। यह परिवर्तन कदापि सराहने योग्य नहीं रहता। और, यह दुरभिमान या हठधर्मी जब अन्य सार्वजनिक, लोकोपयोगी और राष्ट्रीय हित के आड़े आती है, तब एक तरह की पतित अवस्था-सी हो जाती है, और उनके वास्तविक गौरव, श्रेष्ठता, महत्ता के लिये कलंक-स्वरूप बन जाती है। न्यूनाधिक परिमाण में सारे प्रांतों में अपने प्रति अभिमान है। सीमा के बाहर किनका चला गया है, यह कहना ज़रा टेढ़ी खीर है। और, उसके निर्णय की यहाँ न आवश्यकता है, न स्थान। हमारे विषय से जहाँ तक संबंधित है, वहीं तक हमें अपनी निगाह डालनी होगी। हम देख रहे हैं कि राष्ट्र-भाषा के प्रति बंगाली सज्जनों का जो रुख़ है, वह उनके लिये गौरवास्पद नहीं। वे हिंदी का विरोध करते हैं इसलिये कि हिंदी-भाषा, हिंदी-साहित्य को वे हेय समझते हैं। उन्हें अपनी भाषा और अपने साहित्य का गर्व होना स्वाभाविक है, और गर्व के योग्य वह है भी। मगर इसका यह अर्थ नहीं होता कि इस गर्व की वजह से वे दूसरों को नीच समझें! यह उनके साहित्य या भाषा के लिये प्रतिष्ठा-स्थापक है, ऐसा कोई भी भलामानुस न कह सकेगा। तो क्या वे अपने राष्ट्र को अपने प्रांत की अपेक्षा हीन या उपेक्षणीय समझते हैं? कुछ-कुछ तो ऐसा ही प्रतीत होता है। हो सकता है, हिंदी का साहित्य अभी बंगाली से कुछ अंश में न्यून हो। हम यह भी मानते हैं कि एक बार अगर बंगाली भाई भारत की सारी प्रांतीय भाषाओं एवं साहित्य से अपनी भाषा और साहित्य को उच्चतम मानते हों—हालाँकि यह शंकास्पद है—तब भी उसका यह मतलब नहीं कि राष्ट्र-भाषा का विरोध करें। राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता ही नहीं, ऐसा कहनेवालों से हमारा कोई झगड़ा नहीं। क्योंकि हम जानते हैं कि उनका यह ख़याल बेबुनियाद है, और यह ठोस विचार नहीं, बल्कि विक्षिप्त दिमाग़ की एक ऐसी लहर है, जिसे विरोध करना ही चाहिए। फिर कोई कारण हो या न हो, इसलिये वह उठी है, अर्थात् उसके लिये सोचने में वक़्त ख़र्च करना फ़िज़ूल है। और, अगर राष्ट्र-भाषा हो, तो अँगरेज़ी ही, ऐसा कहनेवालों से भी हमें कुछ नहीं कहना। ये लोग भारत और वास्तविक दुनिया के प्राणी नहीं। इनके विचार सिर्फ़ मग़ज़-पच्ची हैं। उनमें कोई तथ्य नहीं, अतः उन पर भी सोचना व्यर्थ परेशान होना है। हिंदोस्तान के लिये राष्ट्र-भाषा चाहिए ही, और वह हिंदी ही हो सकती है, यह प्रकट सत्य है। अगर बंगाली लोग बंगाली को, हम मराठी को, द्राविड़ तमिल को राष्ट्र-भाषा बनाने की इच्छा रखते हैं, तो अच्छा है। किसी भी अवस्था में हिंदी ही राष्ट्र-भाषा हो, यह बात क़तई नहीं। दूसरी प्रांतीय भाषाएँ भी यह सम्मानित पद प्राप्त करने के लिये पूरी हक़दार हैं। सिर्फ़ आवश्यकता इस बात की है कि वे अपने में राष्ट्र-भाषा के योग्य गुण प्राप्त कर लें। वे अगर १००-५० वर्षों में हिंदी से बढ़कर अपनी भाषा के बोलनेवाले बढ़ाकर बताएँगी, और अन्य विशेषताओं से परिपूर्ण होंगी, तो ज़रूर वे राष्ट्र-वाणी कहलाने की हक़दार होंगी। यों तो प्रांतीय होते हुए भी वे भारत की ही होने से भारत को उन पर, उनके साहित्य पर गर्व है, अभिमान है। मगर आज तो यह स्थिति नहीं कि राष्ट्र-भाषा के गुण हिंदी के बराबर अन्य किसी भाषा में हों। अन्य गुणों में प्रांतीय भाषाएँ अगर हिंदी से श्रेष्ठ हैं, तो भी राष्ट्र-भाषा का गुण अकेली हिंदी में ही मौजूद है, यह संपूर्ण सत्य है। और, ज़रा दिमाग़ ठिकाने रखकर सोचें, तो हिंदी में भी प्रेमचंद हैं, जैनेंद्र हैं, गुप्तजी हैं, जिन पर हमें गर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना चाहिए। तब यह झगड़ा नाहक़ क्यों मचाया जाता है कि हिंदी राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती? हम निस्संदेह कहेंगे कि यहाँ हमारे बंगाली भाई सर्वथा दुरभिमान और हठधर्मी के क़ाबू में हैं। वे भीतर से यह मानते हुए भी कि राष्ट्र-भाषा होनी चाहिए, और मौजूदा हालत में हिंदी ही हो सकती है, सिर्फ़ उसके साहित्य में कमी देखकर और तुलना में अपने साहित्य को उच्च पाकर ही वे हिंदी के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने लगे हैं। हमारी राष्ट्र-भाषा के साहित्य का वे अपमान कर रहे हैं, जो असह्य है। यह उनकी असहिष्णुता है। हम आगे बढ़कर यह कहेंगे कि वे राष्ट्र-भाषा का नहीं, भारत का, भारत के हित का, भारत की भलाई का विरोध कर रहे हैं। उनके साहित्य को धक्का लगने की यहाँ कोई बात नहीं। बँगला-भाषा की न्यूनता दिखाने का भी यहाँ कोई उद्देश्य नहीं। हम लोग बँगला-भाषा और बँगला-साहित्य पर अपनी ही भाषा और साहित्य के समान गर्व और अभिमान करते हैं, क्योंकि हम मानते हैं कि यद्यपि वह राष्ट्र-भाषा का परिवार नहीं, तथापि भारत का, हमारे एक प्रांत-बंधु का परिवार है। हमारी एक भाषा-भगिनी का शृंगार है। उसे 'नोबुल-प्राइज़' मिलने पर हम भी गर्व ही करते हैं, और दिल में ईर्षा को क़तई स्थान न देते हुए आकांक्षा करते हैं कि हमारी भाषा की भी ऐसी ही तरक़्क़ी हो। हम इस आनंद की मस्ती में अनुकरण तक करने में सकुचाते-शरमाते नहीं।

'सर्वोदय' मासिक पत्र के पहले अंक के संपादकीय स्तंभों में काका साहब ने 'माता का अमर वैतालिक'-शीर्षक में बँगला के संबंध में भी कितना सुंदर और उचित लिखा है, यह सबों के लिये और ख़ासकर बंगाल-वासियों के लिये सोचने योग्य है। वह लिखते हैं —"हिंदी हमारी राष्ट्र-भाषा है, तो बँगला हमारे राष्ट्र-गीत की भाषा है। दोनो के प्रति हम विशेष आदर-भाव से देखेंगे।" इसके पहले के वाक्य में उन्होंने लिखा है—"'वंदे मातरम्' गीत बंगाली-भाषा में है, इसलिये उसे पराया समझने की अपेक्षा हमारा राष्ट्र-गीत जिस भाषा में है, उसे हम अपनी बना लेंगे।" इन मननीय विचारों को पढ़ने के बाद भी क्या हमारे बंगाली भाई कोई शक बनाए रक्खेंगे? उस रोज़ वर्धा में राष्ट्रपतिजी से काका साहब ने उपर्युक्त वाक्य कहे, तो उन्होंने मुस्कराकर आदर की दृष्टि से काका साहब की ओर देखा। स्वयं राष्ट्रपतिजी—जो बंगाल-प्रांत के कहे जाते हैं—हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाने के प्रबल पक्षपाती हैं। मदरास के हिंदी-विरोधी प्रकरण पर उनका वक्तव्य भी उनके प्रांतवासी ज़रा आँखें खोलकर देखें, तो विरोध करने की दुर्बुद्धि न हो। बंगाल-वासियों से हम विनीत भाव से कहेंगे कि आप एक निष्पक्ष दृष्टिकोण से सोचिए और विचार कीजिए कि भारत के लिये राष्ट्र-भाषा की क्यों आवश्यकता है, और राष्ट्र-भाषा के लिये हिंदी की क्यों ज़रूरत है। निस्संदेह देश-हित से बढ़कर प्रांत-हित नहीं, हालाँकि यहाँ प्रांत-हित का कोई सवाल नहीं। राष्ट्र-भाषा हिंदी से जिस तरह भारत को लाभ है, उसी तरह प्रत्येक प्रांत को है।

यह लिखते-लिखते हमें मालूम हुआ था कि हिंदी-प्राचार-सभा, मदरास के मंत्री श्रीसत्यनारायणजी हिंदी-विरोधियों पर पूरा प्रकाश डालनेवाले हैं। उनका वह लेख हमने 'कर्मवीर' (ता० ६-८-३८) में देखा। इस लेख से सारी हालत साफ़ हो जाती है। मदरास में यह बवंडर क्यों उठा, और विरोधियों की क्या भूमिका है, यह अब अंधकार में नहीं रहा। इस आंदोलन पर ग़ौर करने की अब ज़रा भी ज़रूरत न रही।

मुझे अब महाराष्ट्र के विरोध के विषय में ज़्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कहना है। सौभाग्य से अभी यहाँ विरोध का उतना तीव्र रूप नहीं, और उत्साह के साथ हिंदी का स्वागत किया जा रहा है। निश्चय ही कुछ विरोध है, परंतु उसके कारण इतने गहरे नहीं। प्रांतीय भाषा नष्ट होने का भय रखनेवाले यहाँ ज़रूर हैं, लेकिन उनके पास कोई ख़ास दलीलें नहीं। कहीं तो दुरभिमान की भी प्रक्रिया मौजूद है। यह तो चलता रहेगा। राष्ट्र-भाषा के लिये हिंदी की स्वीकृति लोकमान्य तिलक के वक्त से महाराष्ट्र देता आ रहा है। आज के हिंदू-महा-सभा के सभापति सावरकर भी हिंदी के समर्थक हैं। चलतक मत भेद रहना स्वाभाविक है। उनकी दृष्टि सांप्रदायिक है। वह हिंदूज़्म के प्रथम समर्थक हैं, अतः यह स्वाभाविक है कि वह संपूर्ण 'संस्कृत-प्रधान' हिंदी का समर्थन करें। हिंदी-उर्दू के क्या संबंध हैं, इस पर उनका ख़याल नहीं। और, यहाँ वह अप्रस्तुत भी है। कुछ सज्जन मराठी को राष्ट्र-भाषा-पद पर आसीन करना चाहते हैं, लेकिन हृदय में वे अपने विचार की निःसारता जानते हैं। यों तो प्रांताभिमान के आवेश में हिंदी को क़तई न माननेवाले विरोधक हैं भी, परंतु इनका कोई महत्त्व नहीं। ऐसे कीट तो सार्वजनिक क्षेत्र में रहते ही हैं!

एक बात ऐसी है, जिसका उल्लेख किए बिना महाराष्ट्र-विषय पूर्ण नहीं हो सकता। महाराष्ट्र में जो ग़ैर मराठी-भाषा-भाषी बसे हुए हैं, वे मराठी के प्रति अपने जो कर्तव्य हैं, उस पर क़तई ग़ौर नहीं करते। ख़ासकर यह दिक़्क़त मध्यप्रांत-जैसी जगह पर, जहाँ दो भाषाओं का बेजोड़ गठ-बंधन किया गया है, हमें बहुत परेशान करती है। मराठी सी० पी० के हिंदी-भाषा-भाषी प्रांत-भाषा के संबंध में उपेक्षा-पूर्ण व्यवहार करते हैं। जिस प्रांत में अब वे स्थायी हो चुके हैं, वहाँ के सब व्यवहारों में समरस न होना कृतघ्नता है। इसी वजह से मराठी-भाषा-भाषी यह कहते हैं कि 'जब हिंदीवाले ही हमें उपेक्षा की निगाह से देखते हैं, तो हमें क्या ज़रूरत पड़ी, जो हम हिंदी सीखें', तो वे कुछ अनुचित करते हैं, ऐसा नहीं कह सकते। इधर कुछ प्रतिगामी लोगों द्वारा इस प्रांत में हिंदी-मराठी-वाद बुरे ढंग से उठाया गया है। कुछ महाराष्ट्रीय निश्चय ही यहाँ तीव्र एवं विषैली प्रांतीयता का परिचय दे रहे हैं, और वह राजनीतिक दृष्टिकोण से। अगर परस्पर के सहयोग पर हमारे व्यवहार न चलें, तो फिर किसी ध्येय की प्राप्ति असंभव है। हिंदी-प्रांतों में बसे हुए मराठी-भाषा-भाषियों पर अगर एक निगाह डालें, तो साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि वे अपने कर्तव्य में—कम-से-कम भाषा और साहित्य के क्षेत्र तक—क़तई चूक नहीं करते। राष्ट्र-भाषा के लिये महाराष्ट्र ने अपने कई विद्वान् दिए हैं, जिन्होंने राष्ट्र-भाषा की अनमोल सेवा की है, और कर रहे हैं। अगर महाराष्ट्र में हिंदी का विरोध है, तो उसका ऊपर लिखा हुआ भी एक बड़ा कारण है। दक्षिण-भारत में हिंदी का जितना प्रचार हुआ, उतना महाराष्ट्र में नहीं, यह एक आक्षेप उठ सकता है। यद्यपि यह सच है, तथापि उसके कारण हैं। अभी महाराष्ट्र में प्रचार और प्रचारकों की काफ़ी ज़रूरत है। राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता का विचार उतने ज़ोरों से नहीं प्रचलित हुआ। टूटी-फूटी हिंदी तो लोग जान लेते हैं, अतः यह आवश्यकता अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सकी। तरक़्क़ी की बहुत कुछ आशा है।

हिंदीवालों की ओर से जो आजकल विरोध का नया रूप खड़ा हुआ है, उस पर अब विचार करना ज़रूरी है। इस विषय पर मैंने पहले भी एक बार लिखा है *। मैं समझ नहीं पाया कि

* साप्ताहिक 'प्रताप' ता० २२-५-३८। भू० सुधार ता० २६-६-३८।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन लोगों की आख़िर क्या मंशा है ? हिंदी राष्ट्र-भाषा बन रही है, ग़ैर-हिंदी-प्रांतवाले हिंदी की यह महत्ता स्वीकार कर चुके हैं, इसका यह अर्थ तो नहीं लिया जा रहा है कि हिंदीवाले मानो उन पर कोई बहुत बड़ा एहसान लाद रहे हैं। अगर किसी का यह ख़याल हो, तो यह साफ़ कह देना ज़रूरी है कि हिंदीवाले यहाँ गर्वोन्मत्त आचरण का परिचय दे रहे हैं। ग़ैर-हिंदी-प्रांत राजकीय दृष्टिकोण से हिंदी को राष्ट्र-भाषा मानते हैं। भारत की एकता और उसकी आज़ादी प्राप्त करने के उपकरणों में राष्ट्र-भाषा का प्रमुख स्थान है, इसलिये राष्ट्र-भाषा की महत्ता स्थापन हुई। और, सब भाषाओं से ज़्यादा प्रचार, सरलता के गुण और 'राष्ट्र-भाषा' के लिये आवश्यक विशेषताएँ, बस इन्हीं की वजह से हिंदी इस पद पर आसीन हुई। इससे बढ़कर जो बातें हिंदी में नहीं हैं, अगर श्रीरामनाथजी 'सुमन' वे भी बनाना चाहें, तो यह आत्मश्लाघा है, वास्तव से ज़्यादा अभिमान है, और है अपनी प्रांतीय बहनों का अपमान। आज तो यह भी कटु सत्य स्वीकार करना पड़ेगा कि ग़ैर-हिंदी-प्रांत हिंदी के साहित्य को देखकर ही हिंदी की ओर आकृष्ट नहीं हुए हैं, जैसे बँगला-साहित्य को देखकर हम उसकी ओर आकृष्ट होते हैं। राजनीतिक परिस्थितियाँ, व्यापारी-वर्ग, सब प्रांतों में नौकरी में लगे हुए भैया लोग, मुसलमान आदि की वजह से हिंदी का इतना प्रचार हुआ है। बहुत बड़ी सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्ता लादने का प्रयत्न कुछ बड़ा कौर है। अभी उसके लिये समय है। भविष्य से आप ज़रूर ऐसी आशा रख सकते हैं। राष्ट्र-भाषा पर आपका दुगना हक़ हो सकता है। मातृभाषा, राष्ट्र-भाषा, इन दोनो स्नेह-संबंध से आप हिंदी को अपने अधिकार में रखने की बात कर सकते हैं, लेकिन राष्ट्र-भाषा पर प्रांत-विशेष के ही अधिकार की बात करना निरी मूर्खता मानी जायगी। अक्सर यही देखा जाता है कि सार्वजनिक व्यक्ति का जीवन जितना घरवालों के लिये नहीं होता, उतना देश और समाज की सेवा के लिये होता है। राष्ट्र-भाषा के लिये भी यह सिद्धांत कुछ-कुछ लागू करना कोई बहुत बड़ी अपेक्षा नहीं। अगर दोनो का हठ जारी रहा, और दोनो अपनी ही भूमिका पर डटे रहे, तो इसमें शक नहीं कि दोनो इतने अलग हो जायँगे कि फिर मिलना मुश्किल हो जायगा। 'राष्ट्र-भाषा' अपना रूप विस्तृत रक्खेगी ही, और फिर प्रांत-भाषा उससे अलग पड़ जायगी। "हिंदी पर साढ़ेसाती", "हिंदी पर आघात", "हिंदी-भाषा और लिपि की नष्ट-भ्रष्टता"- जैसी कितनी ही आवाज़ें यह भय पैदा कर रही हैं कि ऐसा कहनेवाले स्वयं तो अपने पैरों पर अपने हाथों पत्थर नहीं गिरा रहे हैं ? 'हिंदी' हिंदी-प्रांतों के लिये मातृभाषा है, तो रहे ; लेकिन वह राष्ट्र के लिये 'राष्ट्र-भाषा' है, अतः उसमें सारे राष्ट्र की प्रवृत्तियाँ, सहूलियतें, सुविधाएँ आवश्यक हैं, और इसलिये

"मद्रास चलो, मदरास चलो,
हिंदी का करने ह्रास चलो,
लिपि का करने उपहास चलो,
व्याकरण का करने नाश चलो।"

ऐसा कहना राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपि का अपमान है। हिंदी और नागरी परदे की रानी नहीं, जो किसी एक के ही लिये बँधी हुई रहें। हम उसमें ज़रूरत के अनुसार—राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार—लिपि-सुधार करेंगे। भाषा की सरलता पैदा करेंगे। व्याकरण की अड़चनें दूर करेंगे। सुधार नाम से ही चिढ़नेवाले भले ही अपने को एक कुएँ तक मर्यादित रक्खें, और अपने तई पुरानी भूमिका पर ही डटे रहें। परिवर्तन का चक्र अपना मार्ग क्रमशः करता ही रहेगा। पीछे रहनेवालों की वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति होगी, जो इतिहास चिल्ला-चिल्लाकर कहता है। हिल-मिलकर और परस्पर के मत को सहिष्णुता से मान देकर विचार-विमर्ष करने बैठिए, और परस्पर की दिक़्क़तों को ख़याल में लाकर दूर करने की योजना कीजिए। कांग्रेस सारे राष्ट्र की प्रातिनिधिक संस्था होते हुए यदि यह कहेगी कि "मेरे ज़्यादातर सदस्य हिंदू हैं, अतः मैं उन्हीं की सुविधा का ख़याल करूँगी", तो उसकी क्या स्थिति होगी? अगर राष्ट्र-भाषा पर यह मिसाल कम-ज़्यादा फेर के साथ हम लागू करें, तो? अर्थात् उसके मूल मालिकों की ओर दुर्लक्ष्य नहीं किया जायगा। मगर आज की स्थिति तो हमें यह बता रही है कि हम धीरे-धीरे अलग होते जा रहे हैं। इस हालत में हिंदीवालों का पशोपेश में पड़ना और सात्त्विक रोष ज़ाहिर करना स्वाभाविक है। तब हिंदीवाले क्या करें? कुछ समय हुआ 'स्वराज्य' में एक तमिलियन का श्रीसावरकर के नाम जो पत्र प्रकाशित हुआ है, उसे पढ़ने की प्रार्थना मैं हिंदी-समाज से करता हूँ। भाषा के विषय को लेकर हमारे बिहार के एक विद्वान् और प्रतिष्ठित मित्र अक्सर कहते हैं कि हिंदी के तीन रूप नए ढंग से ज़रूर रहेंगे। एक राष्ट्र-भाषा का रूप, जिसमें अखिल भारतीय दृष्टिकोण रहेगा, और सबों की सुविधाएँ देखी जायँगी, जिसमें क़रीब सब शैलियाँ प्रचलित रहेंगी। दूसरा प्रांतीय रूप और तीसरा साहित्यिक। क्या यह स्थिति अनिवार्य है? देख पड़ता है कि दो रूप रहने की तो बहुत संभावना नज़र आती है—एक 'राष्ट्र-भाषा'—कॉमन लैंग्वेज—का रूप, दूसरा साहित्यिक रूप। दोनो के ताल्लुक़ कैसे रहेंगे, और समानता-विभिन्नता कितनी रहेगी, इसका निर्णय तो भविष्य के हाथ में है। दोनो में स्थायित्व से कौन रहेगी, इसका निश्चय इतिहास से हो सकता है। जन-भाषा और साहित्य-भाषा का मूल प्राकृत-काल, संस्कृत-काल, प्राकृत-काल, अपभ्रंश-काल का इतिहास प्रत्येक के सामने है, और है उसे देखने का प्रत्येक का अपना-अपना दृष्टिकोण। परिवर्तनशील जगत् का चक्र कब, किधर और कैसे घूमेगा, इसका कोई तय नहीं। वह इतिहास पर टिक भी सकता और इतिहास का विच्छेद भी कर सकता है।

"हिंदी को राष्ट्र-भाषा-पद देने के बाद उसे तहस-नहस करके सुधार करना हमें क़तई स्वीकार नहीं।" यह आवाज़ आजकल ज़ोरों से उठने लगी है। मैं सोचता हूँ, ये सज्जन सरासर ग़लत-फ़हमी के शिकार हैं। राष्ट्र-भाषा कोई नई नहीं गढ़ी जा रही है। मौजूदा भाषा के क्षेत्र को सिर्फ़ विशाल किया जा रहा है। संस्कृत में एक एक शब्द के अनेक पर्याय हैं। कुछ संस्कृत-शब्दों की व्युत्पत्ति पर ग़ौर करें, तो उनमें कई शुद्ध 'आर्य-रक्त' के नहीं मालूम होंगे। अगर हम भाषा को बहती नदी-स्वरूप मानते हैं, तो उसमें इधर-उधर की शाखाओं का आकर समा जाना स्वाभाविक है। फिर भी यह नदी ही कहलाएगी। हिंदी के एक प्रतिष्ठित विद्वान् ने हमसे कहा—"आप अहिंदी-भाषा-भाषियों की वजह से ही हमारी भाषा जटिल होती जा रही है। आप लोगों की भाषा का संबंध ज़्यादातर संस्कृत से ही है, और हिंदी का तो दोनो से—फ़ारसी और संस्कृत से है, परंतु आप लोगों की वजह से हमें संस्कृत-शब्द ज़्यादे भरने पड़ते हैं।" काका साहब एवं दादा धर्माधिकारी की भाषा को लेकर प्रयाग की एक उच्च संस्था के अधिकारी ने कहा—"ये लोग बहुत संस्कृत-पूर्ण भाषा लिखते हैं।" मैंने सिर्फ़ इतना ही कहा—"आप लोगों का ही आरोप है कि काका साहब हिंदी को उर्दू बना रहे हैं।" जीवित भाषा में परिवर्तन, शब्दों का आवागमन, जन्म-मृत्यु आदि चालू रहते ही हैं। उसका जितना विस्तृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र होगा, उतना ही विस्तृत रूप भी। फिर व्यर्थ की चिल्लाहट से क्या फ़ायदा? भाषा की मूल प्रकृति और तत्त्वों को धक्का नहीं लगना चाहिए। बस, इतनी सावधानी रखना काफ़ी है। जहाँ कृत्रिमता का आश्रय लिया जायगा, वहाँ उसकी मृत्यु भी अनिवार्य है। यही बात क्या व्याकरण और क्या लिपि, दोनों के संबंध में कही जा सकती है। ग़ैर-हिंदी-प्रांत यह नहीं कहेंगे कि हमारे लिये आप अपनी भाषा, लिपि, व्याकरण को नष्ट-भ्रष्ट कर दो। उन सुधारों से, जिनसे आपकी भी कोई क्षति न होती हो, नफ़रत करना और प्राचीनता की दुहाई देना अनुचित है। "हम बोला कि हाथी जाती है।" ऐसा कहना कदापि न साहित्य-भाषा का रूप हो सकता है, न राष्ट्र-भाषा का। हिंदी-प्रचारक संस्थाएँ ऐसा कहीं अधिकृत रूप से स्वीकार करती हों, तो कोई बता दे। लेकिन जो ज़रूरी एवं बड़ी दिक़्क़तें हैं, उन्हें दूर करने में हिचकिचाहट न होनी चाहिए। सर्वांग-पूर्ण तो कोई वस्तु नहीं, किसी भाषा या लिपि में क़तई सुधार की ज़रूरत नहीं, ऐसा कहना क्या बिगड़े दिमाग़ की सूझ न कही जायगी? अगर आज योरप सिर-मौर है, तो इसके ये मानी नहीं कि वह सर्वथा त्रुटि-हीन है। और, फिर सबके अलग-अलग वातावरण रहते हैं। ग़ैर-हिंदी-प्रांतों की हिंदी-प्रचारक संस्थाएँ सदा यही कोशिश करती हैं, और इस बात पर ज़ोर देती हैं कि हमें हिंदी का शुद्ध रूप सीखना और व्यवहार करना चाहिए। हिंदी-भाषा और साहित्य के विषय में वे आदर ही प्रसृत करती हैं, न कि हीनता। ये सारी बातें ऐसी हैं, जिन पर हिंदीवाले ग़ौर नहीं करते, और ज़रा-से सुधारों की सूचना-मात्र से बौखला उठते हैं। आप भी मानते हैं, एवं हम भी मानते हैं कि हिंदी सीखना राष्ट्रीय दृष्टि से ग़ैर-हिंदी-प्रांतों को अनिवार्य है। यहाँ हिंदीवालों की ज़बरदस्ती नहीं है। तब हिंदीवाले ख़ुद-ब-ख़ुद कोई आरोप पैदा करके उसी में अपने को क्यों उलझा लेते हैं? फिर विरोध करने की एक लहर-सी पैदा हो जाती है, और उस लहर में बेबुनियादी या क्षुद्र बातें कही जाती हैं। लिपि-सुधार को ही लेकर व्यर्थ की माथा-पच्ची होने लगती है। नागरी-लिपि न तो अकेली हिंदी की है, न अकेली मराठी की। सुधार करने की बातें सिर्फ़ हिंदी में ही नहीं होतीं, बल्कि सुधारों को प्रत्यक्ष आचरण में लाने की बातें मराठी में होती हैं। मराठी के 'सह्याद्री', 'विहंगम', 'केसरी'-जैसे प्रतिष्ठित और उच्च मासिक पत्रों ने तथा साप्ताहिकों ने पहले से ही 'अ आ इ ई' की बारहखड़ी शुरू कर दी है, और हिंदीवाले यही चिल्ला रहे हैं कि लिपि नष्ट हुई जा रही है, 'बंबइया टाइप' लादे जा रहे हैं। अगर दो-चार अक्षरों के हेर-फेर से एकीकरण होता है, तो क्या बिगड़ जाता है। उस हेर-फेर करने में हिंदी-प्रचार को लेकर भी कई कहने लगे हैं कि "हम हिंदी-भाषा-भाषियों को ग़ैर-हिंदी-प्रांतों में प्रचार का कार्य छोड़ देना चाहिए।" ठीक फ़र्माया गया है, मगर जाननेवालों का आप पर आरोप है कि आपकी यह दोग़ली चाल है। यह धोखाधड़ी है। एक तरफ़ तो आपमें से ही ज़िम्मेवार और पदाधिकारी सज्जन कहते हैं—"अगर सम्मेलन प्रचार-कार्य छोड़ दें, तो पूज्य बापूजी, बड़ौदा-नरेश, जमनालालजी-जैसे सभापति कैसे मिल सकते हैं?" दूसरी तरफ़ आप चिल्लाते हैं कि इन लोगों ने आकर हमारी भाषा और लिपि नष्ट कर दी! यह आपकी नीति है! सभ्य और सच्ची वाणी है! कई ग़ैर-हिंदी-भाषा-भाषियों ने, जिनमें मराठी-भाषा-भाषियों की संख्या ज़्यादा होगी, हिंदी के उत्थान में सहयोग दिया है, उच्च साहित्य का निर्माण किया है, हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ाई है, और बढ़ा रहे हैं, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आप कहते हैं—"... उन्हें हिंदी-भाषा और साहित्य के संबंध में न वैसी चिंता हो सकती है, और न वैसी योग्यता ही उनमें आ सकती है।" ('सरस्वती'—श्रीधीरेंद्रजी) यानी एक तरह से आप ग़ैर-हिंदी-भाषा-भाषियों का अपमान करते हैं! हिंदी के प्रति ऐसी नीति किसी राष्ट्रीय संस्था में बरती जाती हो, तो कोई बता दे। ग़ैर-हिंदी-प्रांत की प्रायः सारी राष्ट्रीय संस्थाएँ अपने नियमों में यह नियम अनिवार्य रूप से रखती हैं कि उसके सदस्य को "हिंदोस्तानी का ज्ञान अनिवार्य है।" लेकिन ग़ैर-हिंदी-भाषा-भाषी अपनी सारी सेवाएँ मातृभाषा को न देकर राष्ट्र-भाषा को देंगे, यह सर्वथा भ्रम है। यहाँ हम श्रीधीरेंद्रजी के साथ पूर्ण सहमत हैं। हम यह कह चुके हैं कि ग़ैर-हिंदी-भाषा-भाषी आम तौर पर अभी तो सिर्फ़ राष्ट्रीय दृष्टि से हिंदी सीखते हैं। राष्ट्र की आवश्यकता एवं परिस्थिति देखते हुए हिंदी-प्रचार ज़्यादा-से-ज़्यादा प्रमाण में आवश्यक है, और इसलिये अगर उसमें कुछ ज़रूरी और हिंदी के अनुकूल सुधार करने पड़ें, तो इतनी चिल्लाहट क्यों होती है, यह हमारे ख़याल में नहीं आता। अगर स्वतंत्र राष्ट्रों का उदाहरण सामने रक्खें, और ग़ुलाम राष्ट्र भी उसी का अनुकरण करें, तो विकट स्थिति पैदा होगी। अनुकरण तो अच्छी बातों का और परिस्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है। इन बातों से यह ख़याल करना कि ग़ैर-हिंदी-भाषा-भाषी जैसा नचाएँगे, और जो ज़बरदस्ती से सुधार कराएँगे, उनके अनुसार नाचना और सुधार करना अनिवार्य है, निश्चय ही मूर्खता होगी। हम लोग तो आपसे इतनी ही प्रार्थना करते हैं कि हमारे सामने ये कुछ दिक़्क़तें हैं। आप उदार और विस्तृत दृष्टि से इनको दूर करने में सहायक होइए, क्योंकि हिंदी आपकी मातृभाषा है। आपका उस पर ज़्यादा अधिकार है। आप अपनी भाषा-प्रकृति को धक्का न लगने दीजिए। अगर आप न मानें, तो हम सब करने में समर्थ हैं, और फिर हिंदी कोई परदे की रानी नहीं। आपके हठ और संकीर्णता को ठुकराकर अपना मार्ग तय करने में हम समर्थ हैं। फिर हमें आपकी परवा करने की ज़रूरत नहीं।*

* खेद है, और भी बहुत-से आवश्यक लेख आ जाने के कारण यह लेख सुधा में कुछ महीने देर से छप रहा है।
—सुधा-संपादक

संयुक्त-प्रांतीय शिक्षा-विभाग की ओर से प्रचलित

हिंदी-विशेष योग्यता-परीक्षा

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, महिला-विद्यापीठ (इलाहाबाद), तथा पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

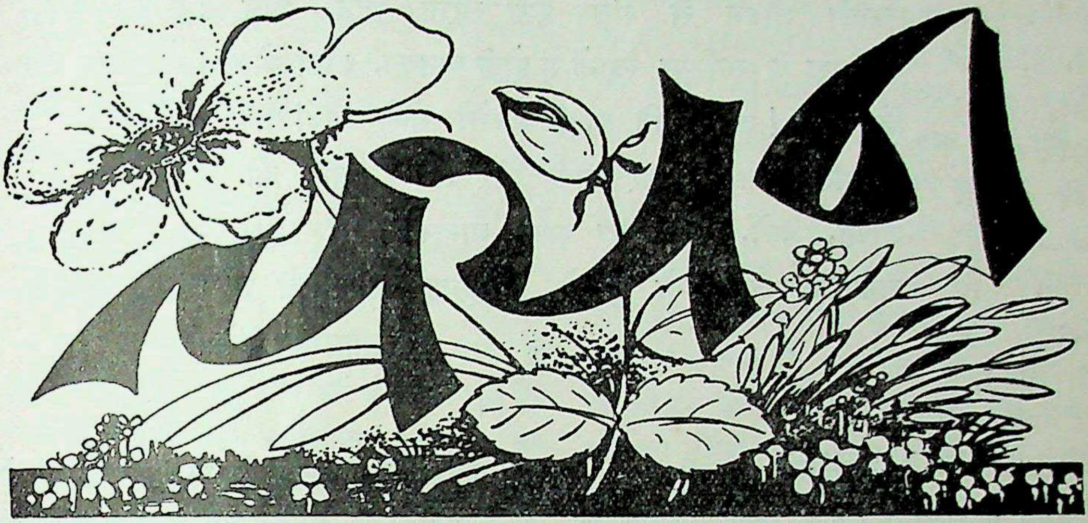

१. गीत

कौन जाने पीर मेरी ?
मैं न जानूँ प्यार क्या है ?
प्रणय का व्यापार क्या है ?
शून्य में रोती रही है
आज तक तक़दीर मेरी।
कौन जाने पीर मेरी ?
अब नहीं है शक्ति उर में,
अब नहीं अनुरक्ति उर में,
प्राण हैं असमर्थ, आकुल,
श्वास-श्वास अधीर मेरी।
कौन जाने पीर मेरी ?
रो रहे अब छंद मेरे,
हो रहे स्वर मंद मेरे,
पंक्तियों में वेदना बन
सिसकती तसवीर मेरी।
कौन जाने पीर मेरी ?

करुणकुमार

×

२. संतोष

अंधकारमय जीवन में मैं दृग-हीनों-सा डोल रहा ;
तड़प - तड़पकर एकाकी हूँ उन्मत्तों-सा बोल रहा ।
क्रंदन करता है अंतस्तल अस्त - व्यस्त भावों से भर ;
शून्य दृगों से बहता रहता अविरल मानस का निर्भर ।
श्यामा के मुक्ताओं की हैं टूट-टूट गिरती लड़ियाँ ;
नेत्रों में जब खिंच आती हैं दूरागत सुखमय घड़ियाँ ।
किंतु हाय ! उनको पहचाने, मूल्य चुकावे कौन यहाँ ?
नहीं पारखी अन्य जगत में, किंतु एक, पर हाय कहाँ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकी जीवन से संयत बैठा करता रहता खेल ;
दुख-सुख के स्वर्णिम स्वप्नों में होती अनबन, होता मेल ।
किंतु हाय ! जब स्मृति आती है तेरे भोले भावों की ,
हरी-भरी पीड़ा कर जाती मेरे सद्यः घावों की ।
जाओ, खेलो, शांति भरो अपने मानस की झोली में ,
शनैः-शनैः जलने दो मुझको विरहानल की होली में ।

मंगलाप्रसाद पांडेय

× × ×

३. रजनीकांत

रात्रि का समय है। नील गगन तारागणों से पूर्णतया आच्छादित हो रहा है, मानो निशा-रानी सितारों से जड़ी चादर ओढ़े खड़ी है ।

निर्जन स्थान है। पुष्पों से भीनी-भीनी महक निकलकर समस्त कानन को सुवासित कर रही है। तालाब कुमुदिनी के सुंदर सुमनों से वैसे ही आच्छादित है, जैसे निशा-रानी की ओढ़नी सितारों से। चंद्रमा अपनी शांतिमय एवं शीतल ज्योत्स्ना को साथ लिए गगन में विचरण कर रहा है। रजनीकांत की मंद-मंद मुसकान देख कुमुदिनी भी खिल पड़ी, वह भी प्रेम-पूर्ण हृदय से अपने हृदय-देव का गुण-गान कर रही है। रजनीकांत, तुम भी तो उसे देख प्रेम से उल्लसित हो रहे हो ! तुमने तो अपनी सहचरी का साथ नहीं छोड़ा। क्या तुम भी पुरुष-हृदय रखते हो, और पुरुष-हृदय रखते हुए इतने सरस और प्रेममय हो ? क्या तुम्हारे हृदय में अपनी सहचरी के लिये इतना स्थान है ? क्या तुम उसे हँसता देखकर हँसते और रोता देखकर रोते हो ?

हैं ! यह क्या ? यह व्यंग्य-पूर्ण हास्य क्यों ? क्या मेरा प्रसंग असंगत जान पड़ा ? बोलो। फिर भला, क्यों हँसे ? मैं ठीक ही तो कह रही हूँ, तो फिर क्यों हँसे ? मैं ठीक ही तो कह रही हूँ—जितनी प्रीति तुम आज अपनी प्रेयसी को दिखा रहे हो, क्या कल भी उसी भाव से उससे प्रेम करोगे ? जो आज चकोर की भाँति तुम्हारे मुख-चंद्र को निहार रही है, जिसने अपनी जीवन-वसुधा तुम्हारे पवित्र, कोमल पद-पंकज पर अर्पण कर दी है, क्या तुम उस अमूल्य थाती की जीवन-भर, नहीं सृष्टि रहते तक रक्षा कर पाओगे ? ऐसा होने में तो संदेह है। हैं ! यह क्या ? तुम डरकर भागे क्यों ? तुम क्या विचारकर एक श्वेत एवं श्याम-वरण आवरण की ओट में जा छिपे। अरे वाह ! तुम तो बड़े भीरु निकले। भाग ही तो पड़े। बस, क्या इतना भी नहीं सुन सकते ? ज़रा देखो तो, तुम्हारे इस प्रकार घबराने से, डरकर भाग जाने से कुमुदिनी कैसे मुरझा जाती है, उसके गुलाबी गालों पर श्वेत बूँदें चमकने लगती हैं। ज़रा सुनो, ध्यान देकर सुनो। मैं क्या सुनाने के लिये तुमको प्रेरित कर रही हूँ। वाह ! निकलो तो। यह तो सर्वसाधारण पुरुष की-सी प्रकृति है। भला, मैं तुम्हारा क्या बिगाड़ सकती थी ? पर कहूँगी अवश्य, जो कहने का निश्चय किया है। चाहे बुरा हो या भला। भले ही बुरा मान बैठो।

हाँ, निकलो, निकलो। एक वीर पुरुष की भाँति सम्मुख आओ। ठीक। पर नहीं, इस प्रकार आधा मुख निकालकर झाँकने-मात्र से ही काम न चलेगा। देखो, तुम्हारी हृदय-देवी तो इतनी भीरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। स्त्री-जाति को तो पुरुष-जाति सदा कायर, भीरु, निर्बला, अबला बता अपने को वीर, कर्तव्य-शील, भय-हीन और रण-क्षेत्र ही क्या, प्रत्येक क्षेत्र में डटकर खड़ा रहनेवाला कह डींगें हाँकती है। फिर भला, तुम क्यों इस प्रकार चोरों की भाँति झाँक रहे हो? देखो, तुम्हारी सहचरी, जीवन-निधि, सर्वस्व तो उसी प्रकार उन्नत मुख किए खड़ी है। वह इस दीन अवस्था में भी दुखिया के हृदय को दुखी और सुखिया के हृदय को सुखी कर रही है। फिर भला, तुम्हीं कहो, कायर और भीरु कौन, तुम या तुम्हारी सर्वस्व? कर्तव्य-परायण तुम या तुम्हारी सर्वस्व? समाज को देख तुम भाग खड़े हुए या तुम्हारी जीवन-ज्योति?

निकलो, हाँ, निकलो रजनीकांत, बस, तभी सब कुछ कहूँगी, ठीक, निकलो। हाँ, तो क्या कह रही थी? तुम आज जो प्रीति, जो अटूट प्रेम अपनी प्रियतमा को दिखा रहे हो, क्या कल भी ठीक यही प्रेम उससे कर सकोगे? बोलो, बोलो, रजनीकांत, क्या कल भी इसी अखंड रूप से अपनी मधुरिमामयी सहचरी के साथ विहार करोगे? क्या कल भी तुम अपनी मलिंद-मंजुल कुमुद-रानी की गोद में सिकुड़कर प्रेम-पुजारी बन इसी प्रेम एवं रूप-सुधा-रस का पान करोगे? नहीं, नहीं, झूठे, छली, मुझे तो संदेह है। तुम्हारी जाति इतनी विचारशील, धीर, वीर, गंभीर, साहसी एवं दृढ़ कहाँ? तुम्हारी जाति में इतना धैर्य कहाँ? तुममें इतनी सहन-शक्ति कहाँ? तुम इतने कर्तव्य-परायण कहाँ? आज ही, इतने थोड़े-से समय में, तुम कितनी बार डर, क्षेत्र छोड़कर भाग, अपने आवरण में छिप व्यंग्य-पूर्ण अट्टहास करने लगे। फिर भला, तुम्हारा कौन ठिकाना कि कल भी कुमुदिनी के साथ यही प्रेम-पूर्ण व्यवहार रक्खोगे? नहीं, नहीं, तुम बाल्यावस्था से ही उस वातावरण में नहीं पले, जिसमें विचारों की दृढ़ता, निश्चय की दृढ़ता, भावों की दृढ़ता, हृदय की दृढ़ता एवं कर्तव्य की दृढ़ता हो। इसी से तुम तनिक ही में क्षेत्र छोड़ भाग खड़े होते हो, समाज से डर जाते हो, भीरु बन जाते हो, हृदय-हीन हो जाते हो, प्रेम-मार्ग छोड़ भाग खड़े होते हो, कर्तव्याकर्तव्य को भूल जाते हो, निष्ठुर बन जाते हो, क्रूर बन जाते हो, और क्या नहीं हो जाते हो? प्रथम तो सब प्रकार से प्रेमिका को रिझाते हो, और समय आने पर सब भूल समाज का भय दिखाते हो, वातावरण को दोष लगाते हो, कर्तव्य-हीन हो गर्व को चूर-चूर कर गिराते हो, दिनों का फेर बताते हो, और पता नहीं, क्या-क्या झूठ बोल जाते हो।

बस, रजनीकांत, इसी से तो कहती हूँ कि क्या तुम निर्भय स्वर्गीय और विशुद्ध प्रेम करना जानते हो? देखो, अपनी हृदयासीन देवी को धोखा मत देना। उसे मँझधार में मत छोड़ना। पर नहीं, उसे, उस कोमल कुसुम को तो इसकी परवा भी नहीं। वह तो सच्चा और स्वर्गीय प्रेम ही करेगी। वह तो आत्मोत्सर्ग कर दिखाएगी, सच्चा ही आत्म-समर्पण करेगी, प्रेमांजलि के साथ-ही-साथ आत्मांजलि भी तुम्हारे चरणों पर समर्पित कर देगी। एक ही बार आत्मबलिदान कर प्रेम-बलिदान का पूरा-पूरा उत्सर्ग कर दिखाएगी। प्रेम-अभिनय के साथ-ही-साथ जीवन-अभिनय भी पूरा करती जायगी। हृदय के सच्चे उद्गारों का प्रदर्शन इस रूप से करेगी, जहाँ बनावट का अंश-मात्र भी न होगा। कर्तव्य पर जीवन-आकांक्षा और संसार के समस्त ऐश्वर्यों को ठुकराएगी। एक ही दिन के लिये नहीं, वरन् जन्म-जन्मांतर जगत्-पिता, जगत्-संरक्षक को भूल, तेरी ही स्मृति में विभोर हो तेरा ही गुण गाएगी, और तू, तू उसे क्या देगा? जीवन-भर प्रेम भी तो नहीं दे सकेगा। छिः! क्या इसी को तू स्वर्गीय प्रेम कहेगा? पर यह तेरा दोष नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे वातावरण ही का दोष है, जिसमें तेरा लालन-पालन हुआ है।

(कुमारी) 'अज्ञेय' (बी० ए०)

× × ×

४. मुस्कान

तेरे मादक, मधुर हास की
वह अनुपम झिलमिल रेखा !
हृदय-कमल की नव कलियों पर
जीवन-सा अंकित देखा !!
अवलोकन करते ही सहसा
मुकुलित कलियाँ विकस उठीं ;
प्रेम-मुग्ध भ्रमरावलि-सी हो
आँखें पुलकित बिहँस उठीं।
स्नेह-वारि से सिंचित करते
मौन नेत्र उर का उपवन ;
आशा-कोकिल कुहुक-कुहुककर
गुंजित करती थी तन-मन।
प्राणों में अनुराग बरसता,
नेत्र देखते स्वर्ण-विहान ;
झूला करती पलक-पालनों
में तेरी मंजुल मुस्कान।

(श्रीमती) राजरानी चौहान

× × ×

५. पूज्य डॉ० दुर्गाशंकरजी नागर के उपदेश

मनुष्य का स्वभाव आत्मिक है। मनुष्य की परीक्षा स्वभाव से होती है। आत्मा ही हमारा ईश्वर है। वही हमें मोक्ष दिला सकता है। मनुष्य का आत्मतेज, उसका स्वभाव, उसकी रहन-सहन, उसकी महत्त्वाकांक्षा, आत्मचिंतन और उसकी असलियत उसके सदाचरण से प्रकट होती है। इसी को आध्यात्मिक प्रकृति कहते हैं। मनुष्य को आत्मा में ऐसा विश्वास करना चाहिए कि मेरी प्रकृति आध्यात्मिक है, वही प्रकट हो रही है।

आधुनिक जगत् में परमात्मा है, जो कभी हमें दर्शन दे सकता है। इस समय मनुष्य भौतिक उन्नति से चकाचौंधमय हो रहा है, और यही कारण है कि वह उस अदृश्य शक्ति के दर्शन से वंचित है। मनुष्य नए-नए वैज्ञानिक आविष्कारों से अपने आपको तृप्त करना चाहता है, परंतु इस भौतिकवाद के माया-जाल में फँसकर वह न तो आत्मिक उन्नति कर सकता है, और न उसे सुख ही प्राप्त हो सकता है। इस समय उसका ध्यान आध्यात्मिक प्रकृति से दूर हटता जा रहा है। यदि हम अपना ध्यान इस भौतिकवाद से परे हटा लें, तो हमें शांति अवश्य मिलेगी। हमें उस परमात्मा का ज्ञान होगा। हम अपने आपको लीन कर सकेंगे।

बाहरी ठाट-बाट से आनंद नहीं मिलता। स्थूल और ख़राब दशा को इस देह से बिदा करने का उद्योग करना चाहिए। अपनी मनोवृत्ति को, अपने लक्ष्य को आध्यात्मिक बनाना चाहिए, यही सच्ची हारमनी (Harmony) है। इसी से शांति प्राप्त होती है। अपना लक्ष्य अपनी तरफ़ करना चाहिए।

मनुष्य अपने आप बुराई का शिकार हो जाता है। वह अपने को पशु-वृत्ति की ओर झुकाता है, इससे उसके वे घृणित विचार उसकी आत्मा के विरोध में अपना अधिकार जमा लेते हैं। यदि हम आत्मचिंतन करें, तो सहज ही हम संयम और नियम से अपने आपको बलशाली बना सकते हैं।

दया, शांति का अवलंबन करना चाहिए। कारण, अध्यात्मतत्त्व-वाणी से हमें सुख प्राप्त होता है। क्लेश और दुःख शांति भंग कर देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें इस विषैले बाहरी वातावरण से दुःखित नहीं होना चाहिए ! महात्मा टेनिसन ने कहा है—

"आत्मसम्मान, आत्मसंयम और आत्मज्ञान ही दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शक्तियाँ हैं।"

उपर्युक्त तीनो सिद्धांतों से मनुष्य को शांति प्राप्त होती है, और वह उनसे अपनी मनोवृत्ति का विकास कर सकता है। जब-जब समय मिले, तब-तब अपना ध्यान आध्यात्मिक उन्नति की ओर लगाओ। कारण, यह शरीर अस्थायी है, पंच भूतों में मिल जानेवाला है। आत्मतत्त्व परमात्मा की एक चिनगारी है, एक झलक है, एक झाँकी है। इसलिये आत्मचिंतन हमारा प्रथम ध्येय होना चाहिए।

"क्षमा, दया, शांति तेथे देवा ची प्राप्ति।"

विद्वानों ने कहा है, जहाँ जिस मनुष्य में क्षमा, दया और शांति होती है, वहीं उस मनुष्य को आत्मज्ञान हो जाता है। जहाँ दया है, वहीं परमात्मा है। जब मनुष्य अपनी प्रकृति आध्यात्मिक बना लेता है, तब उसकी आत्मा बलिष्ठ हो जाती है। वह महात्मा के नाम से पूजा जाता है। उसकी कष्ट सहने की शक्ति दृढ़ हो जाती है।

मेरा आज का दिन नए चिंतन के लिये है। आज मेरे हृदय में नए भावों का संचार होगा। मैं नई आशाओं का दिग्दर्शन करूँगा। मेरे मन में नए भाव जाग्रत् होंगे, और मैं उसी जाग्रत् अवस्था में उस सर्वशक्तिमान परमात्मा के दर्शन करूँगा।

आज का दिन मेरे जीवन में एक नए परिवर्तन के लिये है। मैं आत्मानुबोध में रत हो अपने आपको पवित्र करूँगा। मेरे दूषित विचार नष्ट होंगे। बदले की भावना मृतप्राय हो जायगी। दूसरों का हित करने में मैं अपने आपको धन्य मानूँगा। निरर्थक बातें हृदय से एकदम निकाल देनी चाहिए, और बीती हुई बातों को फिर से नहीं दुहराना चाहिए। महात्मा कृष्ण ने कहा है—

"गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।"

"बीती, ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेहु।"

कारण, पुरानी बातों की पुनरावृत्ति करने से शरीर की हानि होती है। हमें आवश्यकता इस बात की है कि हम नवीन विचारों को संचित करते रहें, इससे हम अपने आपको नवीन जगत् में देखेंगे। यदि हम नए दृष्टि-बिंदु से आगे बढ़ेंगे, तो आंतरिक शक्ति का विकास तुरंत ही होगा। नवीन विचारों का चिंतन दार्शनिक, आत्मज्ञानी, कवि, योगी और विद्वान् करते रहते हैं। उनके मन में नई-नई सूझ, नई-नई युक्तियाँ और नए-नए भाव पैदा होते रहते हैं।

इसलिये आज के सुअवसर से अवश्य लाभ उठाना चाहिए। 'सादा जीवन और ऊँचा लक्ष्य' अपना लक्ष्य बना लेना चाहिए। सर्वत्र शांति और आनंद की लहरों से सारा शरीर पवित्र हो जायगा।

रामेश्वरप्रसाद दुबे 'मंजु'

× × ×

६. परिचय

हाँ, उस दिन रजनी के निविड़ अंधकार * में तुम आए—पहले-ही-पहले। तुम्हारा वह चमकता हुआ चेहरा देखकर मैं घबरा गई। मैं तो तुम्हें भी अपने ही सदृश समझा करती थी।

तुम्हारी गौराकृति ने मुझे अजब उलझन में डाल दिया। सोचा, शायद कोई गौरांग महाप्रभु

* रजनी का निविड़ अंधकार=अज्ञान। अज्ञानी को जब पहलेपहल ज्ञान का आभास मिलता है, तब उसकी दशा ऐसी ही हो जाया करती है। वह घबरा-सा जाता है। अंततः सत्य की झाँकी मिलने पर ही उसकी अंतस्तुष्टि हुआ करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो । उनके अत्याचार की दारुण कथा अनेकों बार सुन चुकी थी, इसलिये सहसा ही सहम गई । सिर थामकर बैठ गई । इधर-उधर किसी को सहायता के लिये पुकारने का प्रयास किया, पर भय के समय यह निगोड़ी जिह्वा भी मूक हो जाया करती है, यही दशा मेरी हुई ।

मैं काँप-सी रही थी कि तुम्हारा वीणा-विनिंदित कंठ-रव सुन पड़ा—प्रिये ! मैं तब भी न समझ पाई कि क्या मामला है । अचिर भविष्य में ही यहाँ कौन-सा नाटक खेला जानेवाला है । मेरा आत्म-रक्षा की भावना से आकुल हृदय उद्भ्रांत-सा हो उठा । सूझ न पड़ा, क्या किया जाय ! इतने में ही मेरी सहचरी कल्पना, जिसके हाथों में मेरे ही द्वारा भावावेश में चित्रित किया हुआ तुम्हारा बिंब था, आई । मुझे तुम्हारी आकृति उस बिंब से कुछ मिलती-सी जान पड़ी । इधर तुमने भी अपना परिचय देना प्रारंभ किया । मैं खिल उठी । मेरी साधना को सफलता का दर्शन मिला । अधूरी साध पूर्ण हुई । मैं आत्मविस्मृत-सी हो, उछलकर तुमसे लिपट गई । बस, यहीं से मेरा-तुम्हारा परिचय हुआ । उसी दिन से तुम मेरे हो गए, और मैं तुम्हारी ।

(कुमारी) सुशीला विद्यालंकृता

× × ×

७. गद्य गीत

तुम्हारी मुस्कान में एक विशेष आकर्षण है, तृण-तृण में तुम्हारे सौंदर्य की विशेषता है ।

तुम खिलो, इसलिये प्रातः होता है, तुम सो जाओ, इसलिये रात होती है, और तुम्हारा मुक्त कंठ से गुण-गान हो, इसीलिये संगीतज्ञ और कवियों का जन्म हुआ है ।

परंतु तुम साकार नहीं, निराकार हो; बोलते हो, संकेत करते हो, स्पर्श करते हो, पर आँखों से ओझल हो ।

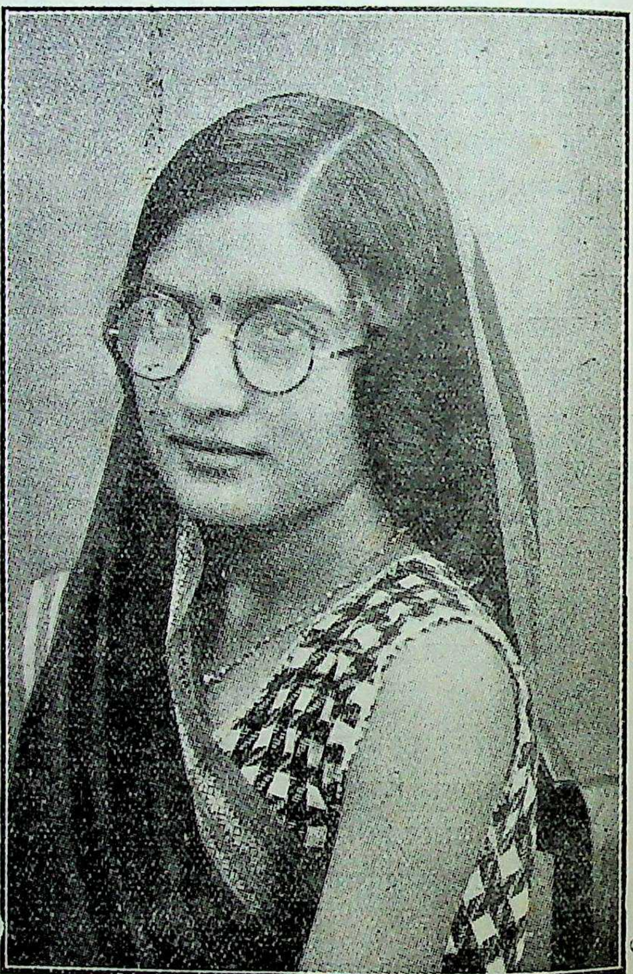

कुमारी विद्याकुमारी भार्गव

तुम सृष्टि के सभी पदार्थों में दूध-पानी-से घुल-मिल गए हो ।

तुम्हारे कार्यों में दिखावट नहीं, तुम्हारे वैभव में ठसक नहीं, तुम्हारे यौवन में चंचलता नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुम्हारे जीवन में अखिलेश्वर के पद का गर्व नहीं।

उज्ज्वल नक्षत्र! तुम्हारे लिये तृण-तृण में अपनाव है।

(कुमारी) विद्याकुमारी भार्गव

× × ×

८. मेरा स्वप्न

मैंने देखा, चारो ओर घना अंधकार छाया हुआ है। मैं एक छोटी-सी नैया पर बैठी अथाह समुद्र में बही चली जा रही हूँ। न अंधकार का अंत है, न अथाह जल का। घोर अंधकार में कभी-कभी उज्ज्वल नक्षत्र दिखाई पड़ते हैं; मैं आह्लादित हो उठती हूँ; किंतु शीघ्र ही वे बादलों में छिप जाते हैं, और मेरी आशाओं पर पानी फिर जाता है। मेरी नौका सागर की अनंत तरंगों पर फिर बहने लगती है। आँखें फाड़-फाड़कर तीर खोजती हूँ, किंतु कहीं पता नहीं लगता। जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ अंधकार-ही-अंधकार दिखाई देता है। सहसा बहुत दूर—क्षितिज पर एक जगमगाता हुआ ज्योति-स्तंभ दिखाई पड़ा। वही तो मेरा गम्य स्थान है। वही—जहाँ शाश्वत प्रकाश की प्रचंड किरणों के प्रभाव से अंधकार का नाम तक नहीं रहता। मैंने कंपित करों से पुनः डाँड़ उठा लिए, और उसी ओर चल पड़ी।

इतने में ही मौन, निस्तब्ध निशा न-जाने क्यों हँस पड़ी। उसका वह भयंकर हास सुनकर मेरा कलेजा काँप उठा। मैंने चारो ओर दृष्टि दौड़ाई। यह क्या? फिर वही अंधकार! मेरे हाथ-पैर शिथिल पड़ गए। दम फूल गया। टूटी-फूटी तरी का पाल फट गया। आशा निराशा में परिणत हो गई। अरे! वह सामने अभी क्या दिखाई दिया। वही तो तीर है। क्या सचमुच मेरी नैया किनारे आ गई? अच्छा, इस बार समस्त शक्ति लगाकर आगे बढ़ूँ। अब तो तीर समीप ही है। पर यह क्या? यह कैसी विडंबना है? कहाँ गया वह तीर? अभी तो यहाँ था। यह नौका क्यों डगमगाने लगी? यह कैसा चक्कर है? कहीं इसे ही तो भ्रमर नहीं कहते हैं? हाय, तब तो डूबी। हे अशरण-शरण, दीन-जन-रक्षक, दयालु प्रभो! अब तो केवल तुम्हारा ही सहारा शेष है। बही चली जा रही हूँ नाथ! किस ओर? कुछ पता नहीं। नैया खेते-खेते मेरे हाथों में जान नहीं रही। पाल बिलकुल चिथड़े-चिथड़े हो गया है। मैंने सारी आशाएँ त्याग दी हैं। केवल तुम्हारा ही सहारा है, प्रभो! चाहो, तो पार लगा देना।

यह क्या? सामने, दूर—अंधकार का काला पर्दा हटाकर यह किस ज्योति ने झाँका? चारो ओर यह कैसा सुंदर प्रकाश फैलता नज़र आ रहा है? पवन, जो अभी बँधा हुआ-सा मालूम होता था, अब स्वच्छंदता से बहने लगा। प्रकृति-सुंदरी मुसकरा उठी। अरुणोदय की-सी लाली चारो ओर छिटक गई। वह दिव्य ज्योति समीप आने लगी। उसके उज्ज्वल आलोक से मेरी आँखें चौंधिया गईं। मैंने विवश होकर अपनी आँखें मूँद लीं। किंतु जब आँखें खोलीं, तो मेरी नैया तीर पर लग चुकी थी।

(कुमारी) स्वरूपकुमारी काक 'करुणा'

× × ×

९. सोशल सर्विस लीग, लखनऊ

नवंबर, १९३८ की 'सुधा' में मैंने लीग के भवन-निर्माण के लिये ८०,०००) की एक अपील छपवाई थी। दिसंबर-अंक में भाई उमाशंकरसिंह साहब के लीग के बारे में विचार पढ़कर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ।

आपने १९३७ में अपनी एक स्कीम श्रीमती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्ता के सामने पेश की थी, और उसे लीग ने कुछ शर्तों पर स्वीकार भी कर लिया था। लीग की शर्तें बिलकुल स्वाभाविक थीं। यदि उनके कला-मंदिर का सारा कार्य लीग करेगी, तो लीग का उस पर पूरा अधिकार भी होना चाहिए। कहने का मतलब यह नहीं कि स्कीम अच्छी नहीं थी, लेकिन स्कीम का अच्छा होना ही उसे एकदम कार्य-रूप में परिणत कर देने के लिये काफ़ी नहीं। १९२७ में लीग बिलकुल बच्चा थी, और उसके पास हर-एक स्कीम के लिये रुपया भी पर्याप्त न था। उस समय भी वह एक स्कूल का संचालन कर रही थी। हमारा इरादा व्यक्तिगत आक्षेप करने का ज़रा भी नहीं, परंतु जिन महोदय ने एक स्कीम बनाने में इतनी तत्परता दिखाई थी, क्या वह दौड़-धूप करने में सहायता भी नहीं दे सकते थे? स्कीम तो हममें से हरएक बहुत अच्छी और बहुत-सी बना सकता है, किंतु प्रश्न तो हमेशा उसे चालू करने और चलाने का ही है।

मालूम होता है, आप यह भूल गए हैं कि उन्हें अपनी स्कीम पेश किए दो साल हो चुके हैं। इतने समय में लीग आशातीत उन्नति कर चुकी है। आश्चर्य तो इस बात का है कि लेखक महोदय ने लीग के उद्देश्य भी ठीक से पढ़ने की कोशिश नहीं की। नं० ३ और ४ तो उन्हें पसंद आए, इसके लिये उन्हें धन्यवाद! किंतु नं० २ में जहाँ निर्धन और निराश्रय स्त्रियों को जीवन-निर्वाह के लिये साधन सिखाने का उद्देश्य रक्खा गया है, उसे उन्होंने पढ़कर भी नहीं समझा, समझने की कोशिश भी न की। जीवन-निर्वाह कला इत्यादि सीखकर ही तो हो सकता है। यदि इन महोदय को अपनी स्कीम से अब भी (२ वर्ष बाद, जिस अरसे में उन्होंने एक बार भी लीग से इस बारे में बातचीत नहीं की) उतना ही प्रेम है, तो वह अपनी स्कीम फिर भेज सकते हैं। उस पर विचार किया जायगा, परंतु हमारी पुरानी शर्त अब भी रहेगी। लीग तो 'कला'-पत्रिका का संचालन भी अपने ऊपर लेना चाहती है। वह न सिर्फ़ कला-संबंधी पत्रिका ही होगी, बल्कि लीग का मुखपत्र भी। वह स्त्रियों में जागृति फैलाने में सफल होगी। यह समझ में नहीं आता कि यह महोदय लीग की अपील के, जिसमें उनके प्रस्ताव का स्थान नं० २ है, इस क़दर ख़िलाफ़ क्यों हैं। इन्हीं सब बातों के लिये हम रुपया चाहते हैं। यह उन्हें अच्छा नहीं लगता। वह तो यह चाहते हैं कि लीग सिर्फ़ एक 'कला-मंदिर' खोले, और उसे चलाने में ही अपना सारा समय और परिश्रम लगा दे, और बाक़ी सब कार्य रुके पड़े रहें। पाठक ख़ुद ही सोच सकते हैं कि 'सोशल सर्विस लीग' का क्षेत्र इतना संकुचित नहीं हो सकता--वह तो स्त्रियों की सामाजिक सेवा का केंद्र है, और स्थानाभाव के कारण ही अपील में कुल ७ उद्देश्य गिनाए गए थे।

यहाँ तक तो ग़नीमत है। उसके आगे जो कुछ उन महोदय ने लिखा है, उसे पढ़कर दुःख होता है। लीग एक भारतीय संस्था है, उसे योरपियन बनाने की न कभी कोई कोशिश की गई है, न की जायगी। हाँ, हिंदोस्तानी दिमाग़ रखनेवालों को हम अब भी नहीं समझ पाए। विचारों को एक-देशीय बनाना या उन्हें सर्वाधिकार सुरक्षित करना संकीर्णता की हद है। लीग की हफ़्ते में एक मीटिंग और वह भी शाम को होती है। और, किसी भी स्त्री के लिये, जो घर का सब काम करती है, दो घंटे निकालना कठिन नहीं। लीग अमीरों की संस्था नहीं। इसकी लगभग सभी मेंबर मामूली घरों की, और यदि यह महोदय इसी तरह समझना चाहते हैं, हिंदोस्तानी दिमाग़वाली स्त्रियाँ हैं। माना, स्त्रियों का मनोरंजन भी अपने पति और बच्चों से काफ़ी हो जाता है, तो मैं पूछती हूँ, पुरुषों को सभा-सोसायटी में घर से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने की क्या आवश्यकता है? हमें गुलाम बनाकर रक्खा गया है, और हिंदोस्तानी-शब्द के भी यही माने निकाले जाते हैं कि हम हमेशा गुलाम बनी रहें। भाग्य-वश हममें काफ़ी जागृति हो चुकी है। यह महोदय फिर भी कहते हैं कि स्त्रियाँ चाहती हैं जीवन-निर्माण के साधन, आत्मबल और स्वतंत्रता-संग्राम के लिये शिक्षा। मैं उनका ध्यान फिर लीग के उद्देश्यों की ओर दिलाती हूँ। इसके बाद भी

"उन्हें नहीं मालूम कि वह यदि अपने को पहचान लें, तो उनके लिये संसार स्वर्ग हो सकता है। मगर यह तभी हो सकता है, जब वह अपने पैरों आप खड़ी हों। निर्बल की सहायता भगवान् भी नहीं करते। संसार कर्मशील है—देश की स्वतंत्रता बहुत कुछ स्त्रियों पर ही निर्भर है। हमारी कुछ पढ़ी-लिखी और समाज-सेविका स्त्रियाँ इस कार्य के लिये तैयार हैं। इस भवन में इन्हीं सब बातों का प्रबंध रहेगा।" (अपील से)

पता नहीं, इन महाशय ने किस झोंक में यह लेख लिखा। हम भी तो यही कहते हैं कि लीग यही सब कर रही है, और करने का प्रयत्न करेगी। आप न-जाने कैसे उन भूखी बहनों के वकील बन गए, और आपका इरादा अब भी हमें न-जाने क्यों अंधकार में रखने का है। यह स्त्रियों से देश की स्वतंत्रता में तो मदद चाहते हैं, लेकिन नागरिकता के विचार समझाने के लिये उन्हें किसी सभा वग़ैरह में भेजना ज़रूरी नहीं समझते, न घर पर उन्हें ख़ुद ही सिखाना चाहते हैं। और, स्त्रियों को स्वतंत्रता देने के नाम पर तो वह 'हिंदोस्तानी' बन जाते हैं। 'हिंदोस्तानी'-शब्द का यह प्रयोग लज्जाजनक है।

इस लेख में स्त्रियों के पहनाव-उढ़ाव के बारे में उनके विचार सबसे अधिक लज्जाजनक हैं। पता नहीं, कभी उन्होंने स्त्री के भेष में लीग की मीटिंग देखी है, या किसी थिएटर का ज़िक्र कर रहे हैं। मुझे फिर कहना पड़ रहा है कि हमारी लीग की अधिकांश सदस्याएँ मामूली घरानों की हैं। न उनके पास इस अजीब तरह के बनाव-शृंगार के लिये धन है, न समय, और न यह उनके लिये स्वाभाविक ही है। न हमने लीग को ऐसा बनाने का कभी इरादा ही किया।

आशा है, पाठक इस तरह के बहकावे में न आएँगे, और लीग की यथाशक्ति मदद कर स्त्रियों की जागृति में हाथ बटाएँगे।

प्रभावती भटनागर
(सेक्रेटरी)

निठल्लू की राम-कहानी

(हास्य-रस की अनुपम पुस्तक)

लेखक, श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा; द्वितीयावृत्ति छपकर तैयार है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

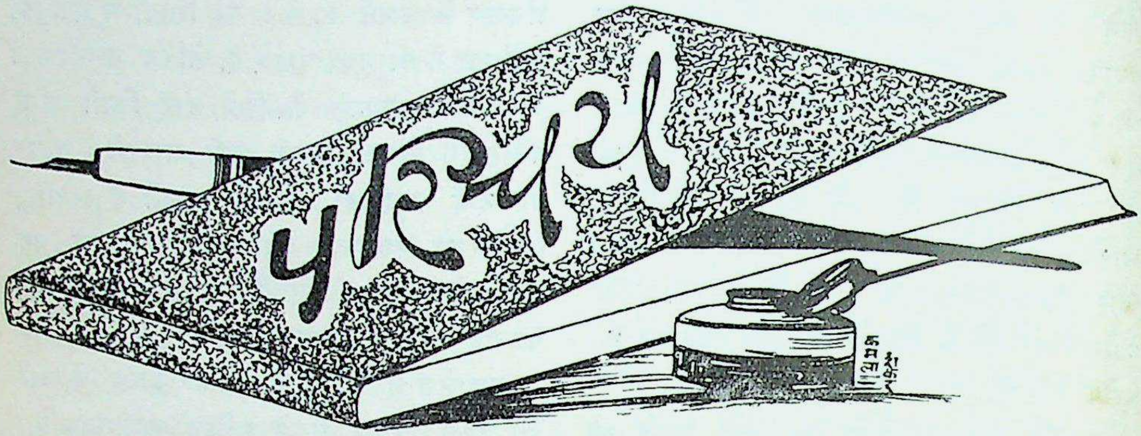

भारतयि कला-कौशल—लेखक, श्रीडी० बी० बर्वे बी० ए०; प्रकाशक, हिंदुस्तान टाइम्स-प्रेस, नई दिल्ली; मूल्य ?)

पुस्तक के लेखक आज दस-बारह वर्षों से यू० पी०-गवर्नमेंट आर्ट्स ऐंड क्रफ़्ट्स एंपोरियम, लखनऊ के बिज़िनेस-मैनेजर हैं। पुस्तक की सुंदर तथा विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना डॉक्टर एन्० एन्० गोड बोले ने लिखी है, जो बनारस-हिंदू-युनिवर्सिटी में एप्लाइड केमेस्ट्री के सुयोग्य प्रोफ़ेसर हैं। लेखक को मैं उस समय से जानता हूँ, जब से वह लखनऊ पधारे हैं। उनसे मेरा परिचय ही नहीं, घनिष्ठ संबंध रहा है।

बर्वे महोदय महाराष्ट्र-प्रांत के नर-रत्न हैं। उन्होंने अपना स्वार्थ-रहित जीवन भारतीय कला-कौशल के लिये अर्पित कर रक्खा है। उन्हें मैंने जितना स्वदेश-प्रिय पाया है, उसका वर्णन करना मेरे लिये संभव नहीं। स्वदेशी वस्तुओं के लिये, स्वदेशी कला-कौशल की उन्नति के लिये जितना वह लालायित रहते हैं, जितना उत्कंठित रहते हैं, जितना जी-तोड़ परिश्रम करते हैं, उतना अगर अधिक नहीं, सौ-दो सौ भी भारतीय जन करें, तो भारतवर्ष से बेकारी दूर हो जाय।

जिस प्रकार विदेशी अपने माल को भारत में बेचने का हर तरह से प्रयत्न करते हैं, उसी तरह बर्वे महोदय की प्रबल आकांक्षा रहती है कि उनके देश का भी माल विदेशों में जाकर अच्छे मूल्य पर बिके। विदेशों में भ्रमण और काम करके उन्होंने इसका पूर्ण अनुभव प्राप्त किया है कि विदेशों में अगर किसी भी चीज़ की खपत हो सकती है, तो वह भारतीय कला-कौशल की। इस संदेश को वह हरएक पढ़े-लिखे नवयुवक के सम्मुख रखते हैं, उसे उत्साहित करते और हर तरह से सहायता देने पर तत्पर रहते हैं। इस पवित्र संदेश को वह देश के कोने-कोने में पहुँचाना चाहते हैं। इसी उद्देश की पूर्ति के लिये उन्होंने 'भारतीय कला-कौशल'-नामक पुस्तक लिखी है, जिसे पढ़कर नवयुवक-समाज अपनी आँखें खोले, और इस पुस्तक में बतलाए हुए किसी भी पथ का अनुगामी होकर अपना जीवन सफल करे।

मैंने पुस्तक आद्योपांत पढ़ी, और ख़ूब दत्त-चित्त होकर पढ़ी। पुस्तक देवनागरी-लिपि में लिखी गई है, लेकिन भाषा शिथिल है। जगह-जगह ऐसी अशुद्धियाँ रह गई हैं। जिससे प्रतीत होता है कि पुस्तक पहले किसी और भाषा में लिखी गई है, उसके बाद इसका अनुवाद हिंदी में किया गया है। यह पुस्तक यदि किसी सुयोग्य संपादक के हाथ पड़ जाती, तो भाषा की अशुद्धियाँ दूर होकर इसका साहित्यिक मूल्य कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुना बढ़ जाता। परंतु जिस उद्देश्य से पुस्तक लिखी गई है, इसके पढ़ने से उसके पूर्ण होने में लेश-मात्र भी संशय नहीं रहता।

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में, किस-किस नगर में, कौन-कौन-सा कला-कौशल है, किस प्रकार भारतीय कारीगर उसे जीवित रक्खे हुए है, किस प्रकार उसकी उन्नति हो सकती है, कहाँ-कहाँ उसकी क़द्र है, उसके बिकने के लिये विदेशों में कहाँ-कहाँ अब भी विस्तृत क्षेत्र हैं, और किस तरह उसका प्रचार बढ़ाया जा सकता है, इनका पूर्ण विवरण आपको इस छोटी-सी पुस्तक में मिलेगा।

पुस्तक में जो अमूल्य अनुभव लेखक ने विस्तार-पूर्वक लिखे हैं, उनकी सत्यता तो वे ही ठीक-ठीक बतला सकते हैं, जिनका थोड़ा-सा भी संबंध भारतीय कला-कौशल के प्रेमी विदेशी ग्राहकों से रहा है।

आजकल के ग्रैजुएट, जो बी० ए०, एम्० ए० पास करने के बाद पच्चीस-तीस रुपए की नौकरी के वास्ते दर-दर मारे-मारे घूमते हैं, इस पुस्तक को पढ़कर यदि ज़रा-सी भी रुचि भारतीय कला-कौशल की ओर पैदा कर लें, तो, मुझे विश्वास है, वे ख़ुद दस नौकर रख सकते हैं, जिससे उनका, देश का और सभी का उपकार हो।

शिक्षा-विभाग को चाहिए कि 'कॉमर्स' के विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक कोर्स में स्वीकृत कर दे, जिससे विद्यार्थी-जीवन समाप्त करने के बाद वे लोग किसी भारतीय उद्योग-धंधे को अपनावें।

श्यामकृष्ण कोहली (ऐडवोकेट)

× × ×

सावनी समाँ—लेखक, राजा राधिकारमणप्रसाद-सिंह; प्रकाशक, श्रीराजराजेश्वरी-साहित्य-मंदिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार); पृष्ठ-संख्या १६३; मूल्य २)

यह पुस्तक 'सावनी समाँ', 'बाप की रोटी' और 'माँ'-शीर्षक तीन कहानियों का संग्रह है। कहानियाँ सामाजिक तथा शिक्षाप्रद हैं, रोचक भी। लेखन-शैली में एक अद्भुत मादकता है, तथा भाषा बड़ी मीठी और मँजी हुई।

'सावनी समाँ' में बुरी संगत के कीड़े, एक दुर्व्यसनी व्यक्ति का चरित्र-चित्रण है। रँगीले गोपाल बाबू अपनी आदतों और संगत से मजबूर, कितनी मुसीबतों और कैसी यंत्रणाओं के शिकार होते हैं; उनकी आँखें खुलती हैं, और उनकी पुरानी आदतों और बदचलन दोस्तों का प्रभाव उन्हें विनाश के पथ पर फिर ढकेल देता है, और वह लुढ़कते-पुढ़कते आँखों के सामने से सदा के लिये विलुप्त हो जाते हैं। हाँ, गोपाल बाबू समाज के लिये एक 'सँदेसा' ज़रूर छोड़ जाते हैं,

'सावनी समाँ' तीनो कहानियों में सबसे लंबी कहानी है—लगभग १०० पृष्ठों की। शेष दोनो कहानियाँ छोटी-छोटी हैं, लेकिन उनमे भी बड़ा सार है।

हमें विश्वास है, पाठकों को ये कहानियाँ पसंद आएँगी, और ख़ास तौर से पसंद आएगी लेखक की रस-भरी लेखन-शैली।

× × ×

गांधी-टोपी—लेखक, राजा राधिकारमणप्रसादसिंह; प्रकाशक, श्रीराजराजेश्वरी-साहित्य-मंदिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार); पृष्ठ-संख्या १४३; मूल्य १)

छ कहानियों का संग्रह है यह। ये कहानियाँ भी 'सावनी समाँ' के लेखक की जादू-भरी लेखनी की विभूतियाँ हैं। कहानियों में जान है, भाषा में सरसता है, और लेखन-शैली में वही पुराना जादू। कहानियाँ पढ़नेवाली हैं, मज़ेदार हैं।

पाठक पढ़ते-पढ़ते यदि कहीं बयान की पेचीद-गियों में उलझने लगें, तो मुझे न कोसें, दस-बीस पंक्तियाँ छोड़ दें, और आगे बढ़कर कहानी के साथ हो लें। इन कहानियों के लेखक अच्छे-ख़ासे कवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, कवि। कवि अपनी कल्पना के उड़ान में बह उठता है, और अपना अस्तित्व ही भूल जाता है। बस, इसी मजबूरी के कारण कहीं-कहीं बयान में सकता पड़ जाता है। यों तो कहानियाँ बड़ी सुंदर हैं, लिखी गई हैं गद्य में, लेकिन हर पंक्ति में मज़ा आता है पद्य का। पाठक इन कहानियों को पढ़ें, और मेरे कथन की परीक्षा कर देखें। हाथ कंगन को आरसी क्या?

× × ×

चीन का स्वाधीनता-युद्ध—लेखक, श्रीकृष्णचंद्र विद्यालंकार; प्रकाशक, विजय पुस्तक-भंडार, अर्जुन-प्रेस, देहली; पृष्ठ-संख्या २१२; मूल्य १)

चीन क्या था, क्या हो गया। चीन के अधः-पतन की करुण कहानी पढ़नी हो, तो पाठक यह पुस्तक पढ़ें। चीन के अतीत का इतिहास निहित है इस पुस्तक में, और उसकी मौजूदा मुसीबतों की गाथा भी अंकित है।

साम्राज्य-लोलुप राष्ट्रों ने किस जाल-प्रपंच से भोले-भाले चीन को अपने चंगुलों में फाँसा, और सबने मिलकर इस निस्सहाय राष्ट्र को किस प्रकार लूटा, तथा कैसे आज भी लूट रहे हैं, इन सभी विषयों पर इस पुस्तक में ख़ासा प्रकाश डाला गया है।

२१२ पृष्ठों का यह बहुमूल्य ग्रंथ और मूल्य केवल १); हम प्रकाशक को ऐसी सुंदर पुस्तक और इतने कम दामों में प्रकाशित करने के लिये बधाई देते हैं! लेखक के तो हम आभारी हैं ही।

पृथ्वीपालसिंह (बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

निरतिवाद—लेखक, श्रीदरबारीलाल सत्यभक्त, संस्थापक सत्य-समाज; प्रकाशक, सूरजचंद डाँगी, सत्याश्रम, वर्धा (सी० पी०); मूल्य ।=)

श्रीदरबारीलाल सत्यभक्त धर्म, समाज और राजनीति आदि सभी विषयों पर अपने मौलिक विचार रखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने साम्यवाद और पूँजीवाद के द्वंद्वों पर गंभीर विचार करके एक नए वाद का निर्माण किया है। आपका कहना है कि साम्यवाद और पूँजीवाद दोनो ही अतिवाद हैं। निरतिवाद इन दोनो अतिवादों को दूर कर एक मध्यम मार्ग का प्रतिपादन करता है, और उसके लिये एक व्यावहारिक योजना बतलाता है, जिसमें बेकारों का प्रबंध, धन-संग्रह पर रोक, व्याज का नाजायज़पन, कारख़ानों आदि की व्यवस्था, ज़मीन, मकान आदि की मालिकी, सरकारी नौकरों की वेतन-व्यवस्था और नारियों के अधिकार आदि के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इस विषय में लक्ष्य क्या होना चाहिए, और आज क्या और कितना कर्तव्य है, वह सब इसमें स्पष्ट निर्दिष्ट किया गया है।

निरतिवाद साम्यवाद को आदर्श, पूज्य और श्रेष्ठ मानकर भी उसे अव्यवहार्य समझता है, और उसमें सात दोष बतलाता है—(१) व्यक्तित्व के विकास का विरोध, (२) दासता, (३) कर्तव्य में आनंद की कमी, (४) सरकार की निरंकुशता रोकने की अक्षमता, (५) रुचि की अतृप्ति का कष्ट, (६) छोटे कार्यकर्ताओं के चुनाव में बाधा और (७) सरकार पर असह्य बोझ। उक्त दोषों पर मनोवैज्ञानिक ढंग से युक्ति-पूर्ण विवेचन किया गया है।

पूँजीवाद को वह पाप-रूप मानता है, पर पूँजी-पतित्व को वह पाप नहीं समझता अथवा क्षंतव्य मानता है। दोनो के भेद को स्पष्ट किया गया है। पूँजीवाद में जो-जो दोष हैं, उन्हें भी पूरे तौर से प्रकट किया गया है। हरएक धर्म ने परिग्रह को जो पाप कहा है, उसकी उपपत्ति इसमें अच्छी बतलाई गई है। निरतिवाद का आर्थिक रूप समझने के लिये ये चार बातें उपयोगी होंगी—

(१) निरतिवाद साम्यवाद को काल्पनिक आदर्श समझता है, पर अव्यवहार्य होने से हानिकारक मानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) पूँजीवाद को वह पाप समझता है, इसलिये उसे मृतप्राय या नष्ट कर देना चाहता है।

(३) वह पूँजीपतियों को विशेष पापी नहीं समझता, परंतु उनका पूँजीपतित्व बढ़ने न पाए, बल्कि घटकर बेकारों या ग़रीबों के काम आवे, ऐसी योजना करना चाहता है।

(४) वह पूँजीपतियों को एकदम कंगाल नहीं करना चाहता, परंतु धीरे-धीरे उनके पूँजीपतित्व को सीमित करना चाहता है।

देशी रियासतों के विषय में भी इसमें एक योजना है।

विद्वान् लेखक ने निरतिवाद लिखते समय संपूर्ण विश्व की समस्याओं को सामने रक्खा है, फिर भी भारत की परिस्थिति उनके विशेष ध्यान में रही।

निरतिवाद के आर्थिक रूप में मतभेद की गुंजाइश हो सकती है, और जब यह योजना कार्य-रूप में परिणत की जायगी, तब इसमें कुछ परिवर्तन भी करने पड़ेंगे। परंतु प्रत्येक विचार को कार्य में लाते समय यही हाल होता है। निरतिवाद विचारणीय ही नहीं, व्यवहार्य योजना प्रतीत होती है।

निरतिवाद के आर्थिक दृष्टिकोण को विस्तार से स्पष्ट करके श्रीसत्यभक्तजी ने उसके सामाजिक और धार्मिक पहलू पर अपने इक्कीस संदेशों का भाष्य करके अत्यंत प्रभावशाली प्रकाश डाला है।

लेखक ने अपने इक्कीस संदेश देश के मुख्य नेताओं के पास भेजे थे। उन पर जो मत आए, उन सब पर गंभीर विचार करके, अंत में, विस्तृत ख़ुलासा किया है। संसार—ख़ासकर हिंदुस्थान—धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से एक कैसे बने, इस समस्या पर निरतिवाद की दृष्टि से अत्यंत सुंदर और एकदम मौलिक विचार प्रकट किए गए हैं।

धार्मिक झगड़े हटाना, चुनाव के झगड़े दूर करना, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों का विरोध मिटाना, धारा-सभा और म्युनिसिपैलिटी में समभावी नीति का प्रवेश करना, जिससे सच्चे सेवक मिल सकें, और ये संस्थाएँ लाभ की अपेक्षा हानि अधिक न पहुँचाएँ, साधु-संस्था में सुधार, नैतिकता के प्रचार के लिये व्यवहार में अपने दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता आदि विषयों पर अतिवाद से रहित मार्ग क्या हो सकता है, और वह व्यवहार में कैसे आ सकता है? इन प्रश्नों को ख़ूब निष्पक्षता से हल किया गया है।

पुस्तक पढ़ने से साफ़ मालूम पड़ता है कि लेखक के सामने जहाँ उच्च आदर्श और जन-हित था, वहाँ इस बात का भी पूरा ध्यान था कि योजना व्यवहार में आ सकती है या नहीं, और आ सकती है, तो किस प्रकार? इस प्रकार यह 'निरतिवाद' केवल पठनीय और विचारणीय ही नहीं, किंतु आचारणीय भी है। इसमें देश-काल के अनुसार परिवर्तन की भी गुंजाइश रक्खी गई है। निरतिवाद अति को मिटाकर बीच का व्यवहार्य मार्ग बतलाता है। इसलिये, हो सकता है, आज जो निरति है, कल वही अति बन जाय, इसलिये निरतिवाद के ही सिद्धांतानुसार वह त्याज्य हो जाय।

निरतिवाद में यह ख़ूबी है कि वह किसी एक बात पर ज़ोर नहीं डालता, वह तो देश-काल के अनुसार लोक-हित पर ही ज़ोर डालता है। इसीलिये पुस्तक में जो विवेचन किया गया है, या निरतिवाद का जो रूप बतलाया गया है, उसे कल थोड़ा-बहुत बदलना पड़े, तो निरतिवाद उसका समर्थन ही करेगा। इस वाद की संपूर्ण मानव-समाज को—ख़ासकर भारतवर्ष को बड़ी आवश्यकता है।

हरएक व्यक्ति इसकी सब बातों से सहमत हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संभव नहीं, और न निरतिवाद भी ऐसी अति-सहमति के समर्थन पर ज़ोर डालता है। इसलिये, थोड़ा-बहुत मत-भेद रहने पर भी, निरतिवाद का विशुद्ध दृष्टिकोण सबके लिये आदरणीय, विचारणीय और आचरणीय है।

'श्री'

विराट् आयोजन ! विराट् आयोजन !!

राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन के लिये

प्रशंसनीय प्रयास

हिंदी-भाषा के भांडार में अभी राष्ट्रीय पुस्तकों की कितनी कमी है, यह सभी स्वदेश-प्रेमी सज्जनों को विदित है। इस अभाव की पूर्ति के लिये हमने प्रयत्न कर दिया है, और २५ पुस्तकें प्रति व निकालने का संकल्प किया है। नीचे अपनी कुछ किताबों के नाम हम दे रहे हैं—

देहात-साहित्यमाला

१—गाँव-सुधार कैसे हो ? ।), १)
२—गाँव के उद्योग-धंधे ।।।), १=)
३—देहात की बातें ३), ३।।)
४—देश-विदेश के गाँव ।।।)
५—वोट का सवाल ।।)
६—देहात की विभूतियाँ ।।)
७—हिंदू-मुस्लिम-समस्या ।।)

प्रौढ़-साहित्यमाला

१—हिंदोस्तानी पोथी ।।)
२—हिंदोस्ताँ हमारा (नाटक) ।।)
३—नेता या रहनुमा ।।)
४—देश की बात ।।)
५—जाहिल कैसे पंडित बना ? ।।)
६—साक्षरता का प्रचार कैसे हो ? ।।)
७—खेती ... ... ।।)

राष्ट्रीय पुस्तकमाला

१—देश-रत्न डॉ० राजेंद्रप्रसाद ।)
२—विकास (२ भाग, सामाजिक उपन्यास) ४), ५)
३—मन की मौज (राष्ट्रीय कविताएँ) ।।),।।=)
४—रानी भवानी (राजनीतिक नाटक) ।=), १=)
५—सुदामा (राजनीतिक नाटक) ।।), १)
६—रजकण (राष्ट्रीय काव्य) ।।), १)
७—तुम क्या हो ? (सामाजिक और राष्ट्रीय) ।।), १।)
८—हमारे नेता ... ... १)
९—नाज़ी हिटलर ... ... ।।)
१०—फ़ासिस्ट मुसोलिनी ... ।।)
११—समाजवादी स्टेलिन ... ।।)
१२—समाजवाद ... ... १)

स्थायी ग्राहकों को सब पौने मूल्य में ! शीघ्र ही ग्राहक बनकर २-४ पुस्तकें मँगाइए !! भला आप इन पुस्तकों की उपेक्षा कैसे करेंगे ? शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें इनसे मँगाइए—

पटना-पब्लिशर्स
(व्यवस्थापक राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल)
बाँकीपुर, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में कांग्रेस क्यों आंदोलन कर रही है ?

यह जानना हो, तो

श्रीनाथसिंह लिखित

जागरण उपन्यास पढ़िए

देशी राज्यों में अधिकारी कैसी मनमानी करते हैं ?
स्त्रियों का सतीत्व तक अपहरण करने
के लिये क्या-क्या चेष्टाएँ की जाती हैं ?
राष्ट्रीय आंदोलन को किस तरह
कुचला जाता है ?
और अंत में संगठित प्रजा की
किस तरह जीत हो सकती है ?
आदि-आदि बातों पर प्रकाश
डालनेवाला यह हिंदी का
एकमात्र उपन्यास है ।

मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो श्रेष्ठ ग्रंथरत्न

राम-रहीम

राजा राधिकारमणजी हिंदी के सिद्धहस्त लेखक हैं। राम-रहीम उन्हीं की लेखनी का प्रसाद है। सामाजिक बंधनों की मजबूती से एक विधवा का जीवन कैसा दुःखद बन जाता है, एवं एक नवीन सभ्यता की पुजारिन किस प्रकार स्वतंत्र पत्ती की नाईं समाज में विचरण करती है, अत्यंत रोमांचकारी ढंग से इन सबका वर्णन इस उपन्यास में हुआ है।

इस उपन्यास की मुख्य पात्र परिस्थितियों द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत दो स्त्रियाँ हैं। एक समाज की प्राचीन रूढ़ियों एवं विचारों के अंतर्गत पली है, दूसरी अनुचित स्वतंत्रता एवं वासनामयी परिस्थितियों के वातावरण में सयानी हुई अप-टु-डेट रमणी है।

इन दोनों की जीवन-कथा जानने के लिये राम-रहीम की मर्मस्पर्शी कहानी पढ़ें। भाषा का क्या पूछना। इतनी चलती हुई, सरल, सीधी और भाव-पूर्ण कि पद-पद पर आप लेखक की प्रशंसा किए विना न रहेंगे।

पुस्तक में समाज की वर्तमान समस्याओं का अत्यंत सुंदर विवेचन किया गया है, और कथा इतनी रोचक है कि एक बार पढ़ना प्रारंभ कर देने पर आप उसे समाप्त करके ही उठेंगे। मूल्य ३)

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

आरोग्य-शास्त्र

३१ अध्याय, १५० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×२६=८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती मजबूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की, सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में क़ीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला।

यदि आप अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी प्रचारित कुछ श्रेष्ठ पुस्तकें

वज्राघात

लेखक, श्रीहरिनारायण आपटे। इस उपन्यास से आपको पता लगेगा कि किस तरह दक्षिण का विशाल हिंदू-साम्राज्य विजयनगर, जो शताब्दियों से हिंदू-सभ्यता और वैभव का महान् केंद्र था, राजा की विलासिता और अपने ही मुसलमान सरदारों के विश्वासघात के कारण तथा आस-पास के मुसलमानी राज्यों के षड्यंत्र से नष्ट-भ्रष्ट हो गया। मूल्य २॥)

कृष्णार्जुन-युद्ध-नाटक

लेखक, श्रीपं० माखनलाल चतुर्वेदी। नाटक बहुत शिक्षा-प्रद और प्रभावोत्पादक है, और अब तक अनेक रंगमंचों पर खेला जा चुका है। मूल्य ॥=)

सम्राट् अशोक

लेखक, शिक्षा-मंत्री श्रीसंपूर्णानंद वर्मा। इस इतिहास-ग्रंथ से आप जान सकेंगे कि सवा दो हज़ार वर्ष-पूर्व हमारा चक्रवर्ती राज्य कैसा था। हम दूसरों पर किस प्रकार राज्य किया करते थे। उस समय के भारत की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दशा क्या थी। मूल्य १)

चीन की राज्य-क्रांति

लेखक, शिक्षा-मंत्री श्रीसंपूर्णानंद वर्मा। चीन की क्या दशा थी। उसे हड़प जाने के लिये बड़े-बड़े देशों ने कैसी तैयारियाँ की थीं। चीन में जाग्रत् युग कैसे आया। राजसत्ता की जड़ें कैसे हिलीं। और, अंत में प्रजा-सत्ता की कैसे स्थापना हुई? मूल्य १॥)

राष्ट्रीय वीणा

यह पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई है। प्रताप में प्रकाशित देश-भक्ति-पूर्ण, सुललित कविताओं का समूह है। इसकी प्रत्येक लाइन देश-भक्ति के रस में पगी हुई है। टाइटिल पर भारत-माता का सुंदर चित्र है। मूल्य दोनो भागों का १=)

क्रांतिकारी राजकुमार
अर्थात्
क्रोपाटकिन की आत्मकहानी

अनुवादक, श्रीप्यारेमोहन चतुर्वेदी। यह प्रिंस क्रोपाटकिन की आत्मकहानी, उनके समय के रूस और मज़दूर-आंदोलन का इतिहास है। इसमें रूस के सत्ताधारियों और अत्याचार-पीड़ित साधारण जनता की दशा का विशाल चित्रण मिलेगा। निरंकुश ज़ारशाही के नीचे पिसे हुए अपने ग़रीब देश-वासियों के उत्थान के लिये उन्होंने अपने वैभव-पूर्ण जीवन को तिलांजलि दे दी। वह क्रांतिकारी थे, किंतु थे बड़े दयालु और शांत। उन्हें दो बार जेल की कठोर यातनाएँ भी सहनी पड़ीं, किंतु अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहे। ऐसे महापुरुष के जीवन-चरित्र से भारत-जैसे परतंत्र देश के लोग अनेक शिक्षाएँ ग्रहण कर सकते हैं। मूल्य १)

गीता-गौरव

श्रीमद्भगवद्गीता का सरल और सुबोध छंदों में भाव-पूर्ण अनुवाद। मूल-श्लोक, भूमिका और महाभारत के संक्षिप्त विवरण-सहित प्रायः ३०० पृष्ठ। सुंदर गेट-अप। कितने ही तिरंगे और रंगीन चित्र। फिर भी जन-साधारण के हितार्थ सुंदर कपड़े की जिल्द-सहित का मूल्य १॥)

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को बहुत पसंद आवेंगी

सुघड़ चमेली

लेखक, पंडित रामजीदास भार्गव। हिंदी एवं उर्दू-संसार भली भाँति जानता है कि आप बालोपयोगी पुस्तकें लिखने में कैसे पटु हैं। आप इस सचित्र पुस्तक को अपनी लड़कियों को पढ़ाइए और फिर देखिए कि वे चमेली की तरह कैसी सुघड़ हो जाती हैं! मूल्य -)

भगिनी-भूषण

लेखक, स्व० गोपालनारायणसेन-सिंह बी० ए०। यह पुस्तक बच्चों को पढ़ाने लायक़ है। इसमें छोटी-छोटी कहानियों के बहाने बच्चों को बहुत-सी शिक्षाएँ दी गई हैं। मूल्य -)

खेल-पचीसी

लेखक, श्रीप्रतिपालसिंहजी। इस सचित्र पुस्तक में उन २५ खेलों का संग्रह किया गया है, जो लड़के साधारणतः शौक़ से खेलते थे। अँगरेज़ी-शिक्षा के फैलने से हमारे पुराने खेल दिन-दिन मिटते चले जा रहे हैं। शायद कुछ दिनों बाद उन खेलों के जानकार भी न रहेंगे। इनके साथ लड़कों की कुछ कसरत भी हो जाती है। मूल्य ।)

लड़कियों का खेल

लेखक, श्रीगिरिजाकुमार घोष। पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। इस पुस्तक की रचना विशेषकर लड़कियों के लिये ही हुई है। वे इसे बड़े चाव से पढ़ेंगी, और इससे बहुत कुछ सीखेंगी। हिंदी में ऐसी बहुत कम पुस्तकें निकली हैं। मूल्य ।-), ।≡)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ

१. हिटलर महान् अथवा जर्मनी का पुनर्निर्माण

इसमें जर्मनी के पूर्ण इतिहास के साथ-साथ हिटलर की जीवनी और जर्मनी की राजनीति का अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से विवेचन किया गया है। मूल्य ३)

२. आत्मनिर्माण अथवा विश्व-बंधुत्व और बुद्धिवाद

इसमें सभी प्रकार की विद्याओं के अध्ययन के दृष्टिकोण का वर्णन बुद्धिवाद की दृष्टि से करते हुए अंतरराष्ट्रीय जगत् के विश्व-बंधुत्व के आंदोलन का वर्णन किया गया है। मूल्य ३)

३. चरित्र-निर्माण अथवा भावी विश्व-राज्य और उसकी नागरिकता

इसमें राजनीतिक दृष्टि से मनुष्य के आचरण का वर्णन करते हुए अंतरराष्ट्रीय जगत् के भावी विश्व-राज्य के आंदोलन तथा उक्त विश्व-राज्य के नागरिकों के आचरण का वर्णन किया गया है। मूल्य ३)

४. शरीर-विज्ञान

इसमें शरीर के प्रत्येक अंग की रचना का वर्णन करते हुए उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के उपाय बतलाए गए हैं। मूल्य ३)

५. राष्ट्र-निर्माता मुसोलिनी

इसमें इटली के संपूर्ण इतिहास के साथ-साथ मुसोलिनी का दिसंबर, १९३७ तक का जीवन-चरित्र और इटली की वर्तमान राजनीति का अंतरराष्ट्रीय विवेचन किया गया है, और एबीसीनिया का इतिहास, एबीसीनिया-युद्ध, परतंत्र एबीसीनिया की तड़प तथा स्पेन-युद्ध आदि सभी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का १ दिसंबर, १९३७ तक का इतिहास दिया हुआ है। ऐसा ग्रंथ हिंदी में तो क्या, संसार की किसी भाषा में अभी तक नहीं लिखा गया। मूल्य ३)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदीजी का चमत्कार

उनकी पुस्तकों का पाठ करके देखिए

संसार-चक्र—द्वादश हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति हास्यरसावतार पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी का लिखा यह वही उपन्यास है, जो अपनी मनोरंजनता के कारण बात-की-बात में तीन-तीन बार छपकर बिक गया है। मूल्य १।)

मधुर मिलन—चतुर्वेदीजी का लिखा यह सामाजिक और मौलिक नाटक है। ऐसा उत्तम कि दार्शनिक-प्रवर बाबू भगवानदासजी एम्० ए० तक इसका अभिनय देखकर मुग्ध हो गए थे। आज ही मँगाइए। मूल्य सिर्फ़ ।।)

अनुप्रास का अन्वेषण—श्रीयुत चतुर्वेदीजी का लिखा हुआ यह भी बड़ा ही मनोरंजक निबंध है। ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ दिल में एक अजीब गुदगुदी पैदा करता है। मूल्य ।)

स्वदेशी-आंदोलन—चतुर्वेदीजी हास्यरस-लेखक और कवि तो हैं ही; पर इस निबंध-पुस्तक को पढ़कर आप मुग्ध हो जायँगे। आज से लगभग २० वर्षों पहले उन्होंने 'स्वदेशी-आंदोलन' के संबंध में कितने अच्छे विचार व्यक्त किए थे, वे आज भी बिलकुल ताज़ा और देश के प्रत्येक व्यक्ति के मनन करने योग्य हैं। मूल्य सिर्फ़ ≋)

तूफ़ान—यह शेक्सपीयर के टेंपेस्ट का सरल अनुवाद है। मूल्य केवल –)

निरंकुशता-निदर्शन—स्व० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता'-शीर्षक जो निबंध 'सरस्वती' में लिखा था; उसका मुँहतोड़ जवाब चतुर्वेदीजी ने मनसाराम के नाम से 'भारत-मित्र' में दिया था। यह उन्हीं दोनो लेखों का संग्रह है। दो साहित्यिक महारथियों की पैंतरेबाज़ी इसमें देखते ही बनती है। पुस्तक पढ़ने के साथ मनोरंजन भी होता है। मूल्य ।।।), सजिल्द १।)

निबंध-निचय—साहित्य-सेवियों में ऐसा विरला ही कोई होगा, जो चतुर्वेदीजी की लेखनी से अपरिचित हो। समय-समय पर आपके लिखे ललित लेखों और भाव-पूर्ण भाषणों का ही यह संग्रह है। पुस्तक निबंध लिखने के लिये पथ-प्रदर्शक है। यू० पी० की विशेष योग्यता-परीक्षा में पाठ्य ग्रंथ। मूल्य १।), सजिल्द १॥।)

विचित्र वीर—हास्य-रसावतार चतुर्वेदीजी द्वारा किया हुआ संसार-प्रसिद्ध अँगरेज़ी-उपन्यास 'Don Quixote' का हिंदी-अनुवाद। इसकी रोचकता के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं—पढ़ते जाइए, और हँसते-हँसते लोटते जाइए। यू० पी० के ऐंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूल में पाठ्य पुस्तक है। सचित्र। मूल्य ।।), सजिल्द १)

तुलसीदास—चतुर्वेदीजी का यह नाटक क्या है, भक्ति-रस का ख़ज़ाना है। इसमें प्रातःस्मरणीय राम-भक्त गोस्वामी तुलसीदासजी का नाटक-रूप में जिस ख़ूबी से चित्रण किया गया है, वह देखते ही बनता है। भाषा की भव्यता, काव्य की कमनीयता आदि में यह किसी भी नाटक से कम नहीं। कलकत्ता-विश्वविद्यालय में कोर्स-बुक है। मूल्य ।।), सजिल्द १)

मँगाने का पता—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'मनोहर कहानियाँ' (बालकोपयोगी)—लेखक, श्रीमक्खनलाल दम्माणी ; मूल्य ॥)

(२) 'उर्दू' (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्रीयुत श्रीपतराय ; मूल्य ॥)

(३) 'पिकनिक' (कहानी-संग्रह)—लेखिका, श्रीकमलादेवी चौधरी ; मूल्य १॥)

(४) 'कुछ विचार' (निबंध-संग्रह)—लेखक, स्व० श्रीप्रेमचंद ; मूल्य २)

(५) 'समाज के स्तंभ' (नाटक)—अनुवादक, श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र बी० ए० ; मूल्य १)

(६) 'क्रांति-चक्र' (उपन्यास)—अनुवादक, श्रीराधेश्याम शर्मा एम्० ए० ; मूल्य १)

(७) 'गुड़िया का घर' (नाटक)—अनुवादक, श्रीलक्ष्मीनारायण मिश्र बी० ए० ; मूल्य १)

(८) 'अनामिका' (काव्य)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; मूल्य २)

(९) 'तुलसीदास' (काव्य)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ; मूल्य १)

(१०) 'मैसूर में' (भ्रमण)—लेखक, श्रीगुरुनाथ शर्मा ; मूल्य ॥)

(११) 'प्रताप-विजय' (संस्कृत-काव्य)—लेखक, श्रीईशदत्त शास्त्री 'श्रीशः' ; मूल्य ॥), १)

(१२) 'विजया-विहार' (कविता)—लेखक, श्रीप्रणयेश शुक्ल ; मूल्य ।)

(१३) 'प्रयास' (कविता)—लेखक, श्रीगोविंदवल्लभ त्रिपाठी ; मूल्य ।)

(१४) 'हमारे देश में सामाजिक संगठन' (लेख)—लेखक, श्रीडॉक्टर अशरफ़ ; मूल्य =)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१. त्रिपुरी-कांग्रेस

कांग्रेस का ५२वाँ वार्षिक अधिवेशन त्रिपुरी में असाधारण परिस्थितियों में हुआ। कांग्रेस-अधिवेशन से कुछ ही दिनों पहले उसकी कार्य-समिति के अधिकांश सदस्यों का अपने पद से इस्तीफ़ा दे देना, कांग्रेस के सामने कार्य-समिति द्वारा तैयार किए गए ऑफ़िसियल प्रस्तावों का पेश न होना, राष्ट्रपति का बीमारी की अवस्था में अधिवेशन की कार्यवाही में भाग न ले सकना और अधिवेशन की कार्यवाही का स्थानापन्न सभापति द्वारा चलाया जाना आदि सब असाधारण बातें त्रिपुरी में हुईं। वहाँ जैसा शोर-गुल और हंगामा हुआ, वह भी एक असाधारण घटना है। जैसा एक बड़े कांग्रेस-नेता ने किसी प्रेस-प्रतिनिधि से बातचीत करते हुए कहा है, त्रिपुरी में गरमागरमी के सिवा और कुछ नहीं हुआ। राष्ट्रपति बोस के राष्ट्रपति चुने जाने से जो हालत पैदा हो गई थी, उसमें ऐसी ही उम्मेद की गई थी। फिर भी अधिवेशन शांति से होता, यदि कांग्रेस के खुले अधिवेशन में बंगाल के प्रतिनिधिगण अधिक उत्तेजित न हुए होते। माननीय पं० गोविंदवल्लभ पंत के प्रस्ताव से लोग असहमत हो सकते हैं। ऐसे लोग भी कांग्रेस में हैं, जो महात्मा गांधीजी के मार्ग और उनकी नीति से सहमत नहीं। पर यह सिद्धांत का भेद है, और कांग्रेस-अधिवेशन में सबको अपनी-अपनी बात सचाई के साथ सामने रखने का अधिकार है। पर माननीय पंतजी के प्रस्ताव में ऐसी कोई बात न थी, जिससे सिद्धांत के अलावा और किसी चीज़ का आभास मिलता हो। उदाहरण के लिये यह बार-बार कहा गया कि इससे राष्ट्रपति में अविश्वास प्रकट होता है। पर प्रस्ताव में यह बात नहीं, क्योंकि राष्ट्रपति ने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट कर दिया था कि उन्होंने कभी कांग्रेस-कार्य-समिति के पुराने मेंबरों की सचाई पर संदेह नहीं किया। फिर आरोपवाली बात उन पर लागू कहाँ होती है? माननीय पंतजी ने अपने भाषण में इसे और स्पष्ट कर दिया कि उनके प्रस्ताव का किसी भी अर्थ में यह मतलब नहीं, और न वह इस आशय से पेश ही किया गया है कि प्रतिनिधियों के बहुमत द्वारा निर्वाचित राष्ट्रपति के प्रति किसी तरह का, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, अविश्वास प्रकट किया जाय। इसलिये राष्ट्रपति के इस्तीफ़ा देने का सवाल पैदा ही नहीं होता।

पर कांग्रेस का सारा वक्त केवल इसी प्रस्ताव पर ख़र्च हो गया, और इस प्रस्ताव ने जो रूप धारण किया, उससे अन्य प्रस्तावों का महत्त्व ही न रहा, यद्यपि उसने जो और प्रस्ताव पास किए हैं, वे कम महत्त्व के नहीं। हरिपुरा-कांग्रेस के प्रस्तावों के मुक़ाबिले त्रिपुरी के प्रस्ताव कांग्रेस को स्वतंत्रता के मार्ग की ओर अधिक अग्रसर करते हैं। देशी राज्योंवाले प्रस्ताव में कांग्रेस को अब से देशी राज्यों के आंदोलन का पथ-प्रदर्शन करने का अधिकार मिल गया है। राष्ट्रीय माँग का प्रस्ताव भी पहले प्रस्तावों से अधिक बढ़ा-चढ़ा है। हाँ, उसमें राष्ट्रपति और अन्य कई गरम नेताओं के इरादे के अनुसार ब्रिटिश सरकार को अल्टीमेटम देनेवाली बात नहीं। और, हमारी समझ में अधिकांश प्रतिनिधियों की एकता बनाए रखने के लिये इस शर्त का न रक्खा जाना ही ठीक है। अन्य प्रस्तावों में अँगरेज़ी सरकार की वैदेशिक नीति से भारत के पृथक् रहने की घोषणा की गई। आजकल ब्रिटिश सरकार जिस प्रकार फ़ैसिस्ट राष्ट्रों के हाथ का खिलौना बनी हुई है, उसे देखते भारत को उसके प्रति अपने रुख़ का परिचय देना ही चाहिए था। इस बार के अधिवेशन में मिस्र से आए हुए प्रतिनिधि-मंडल की उपस्थिति ख़ास चीज़ थी, जिसका भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इन प्रतिनिधियों के स्वागत का प्रस्ताव पास करके कांग्रेस ने मिस्र देश के मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त की, जिसका भारत की आजकल की राजनीति में बहुत बड़ा मूल्य है। इस प्रकार कांग्रेस की सारी कार्यवाही और उसके प्रस्ताव हर साल की तरह ही सामयिक और महत्त्वपूर्ण रहे। राष्ट्रपति का बावन हाथियों का जुलूस तो कांग्रेस के इतिहास में अभूतपूर्व चीज़ थी, पर दुर्भाग्य से राष्ट्रपति अस्वस्थ होने के कारण अपने असाधारण व्यक्तित्व से इस सारे समारोह को प्रभावित न कर सके। फिर भी, इस दशा में, जब कि आपको १०४-५ डिग्री तक बुख़ार रहा, आपका त्रिपुरी में उपस्थित रहना और डॉक्टरों की सलाह न मानकर राष्ट्र और कांग्रेस के लिये मौत से खेलना बोस-जैसे कर्मठ, कर्मवीर और सरफ़रोश व्यक्ति का ही काम है। एक साल और राष्ट्र आपके सुझाए हुए मार्ग पर चलेगा, पर कांग्रेस ने आपको अपना मंतव्य दिया है कि आप महात्मा गांधी के सुझाए हुए मार्ग का अनुसरण करें। आशा है, भारत के इन दो महान् व्यक्तियों के परस्पर सहयोग से देश को अपने लक्ष तक पहुँचने में आसानी होगी।

× × ×

२. राष्ट्र-संघ और भारतवर्ष

अब की बार केंद्रीय एसेंबली में इस आशय का प्रस्ताव पेश हुआ कि भारत का संबंध राष्ट्र-संघ के साथ न रहे, और जो रक़म भारत से राष्ट्र-संघ को दी जाती है, वह बंद कर दी जाय। इस प्रस्ताव और इसके संशोधनों पर दिलचस्प बहस हुई। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के अधिकांश सदस्यों की इस पर एक राय थी। उनकी राय में राष्ट्र-संघ के साथ भारत का संबंध रखने में कोई भी लाभ नहीं। पर इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय का मूल्य तब तक हो ही क्या सकता है, जब तक भारत को स्वयं अपने संबंध में राय स्थिर करने का अधिकार न हो। यहाँ तो वाइसराय की क़लम की एक नोक से सारा मामला ख़त्म हो जाता है। केंद्रीय एसेंबली में इस विषय की चर्चा का यह पहला ही अवसर नहीं, इससे पहले भी इस संबंध में काफ़ी चर्चा हो चुकी है, पर उसका परिणाम कुछ नहीं हुआ।

आज परिस्थितियाँ पहले से बदली हुई हैं। अंतरराष्ट्रीय स्थिति ऐसी नाज़ुक हो गई है कि प्रत्येक देश अपने भाग्य का फ़ैसला अपने ही बल करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं करने

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'

GONO REGD ORIGINAL TRADE MARK KILLER

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान ! ख़रीदने से पहले दवा का नाम 'गोनोकिलर' और मुर्गा-छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा है, बल्कि मौजूदा स्थिति में सबके लिये यह अनिवार्य हो गया है कि किसी बाहरी शक्ति का आश्रय छोड़कर अपनी शक्ति का संगठन किया जाय। अबीसीनिया, चीन और स्पेन की ताज़ा मिसालें इस बात की पुष्टि करती हैं कि राष्ट्र-संघ एक निर्जीव संस्था है, उसका न किसी राष्ट्र पर प्रभाव है, और न उसके निर्णय ही सर्वमान्य होते हैं। इटली, जर्मनी, फ्रांस और इँगलैंड के प्रतिनिधि-गण एक जगह बैठकर एक राष्ट्र के भाग्य का फ़ैसला कर डालते हैं, उस अवसर पर राष्ट्र-संघ की राय लेने की कुछ भी आवश्यकता नहीं समझी जाती। छोटे-छोटे राष्ट्रों पर बड़े राष्ट्रों का आतंक और आधिपत्य क़ायम रखने के अतिरिक्त राष्ट्र-संघ की और राजनीतिक उपयोगिता ही क्या है। फिर भारत-जैसे देश के लिये, जहाँ का प्रतिनिधि राष्ट्र-संघ में इँगलैंड-सरकार का नामज़द व्यक्ति होता है, राष्ट्र-संघ की कोई उपयोगिता नहीं। यहाँ से प्रतिवर्ष एक बड़ी रक़म राष्ट्र-संघ को व्यय के लिये दी जाती है। वह भी भारत के लिये भार-स्वरूप है। जब तक भारत ग़ुलाम है, तब तक नाम-मात्र के लिये उसका राष्ट्र-संघ का सदस्य बना रहना कोई मूल्य नहीं रखता। जब वह आज़ाद होकर स्वतंत्र देशों के समान पद प्राप्त कर लेगा, तभी किसी विश्व-राष्ट्र-संघ में समानता की हैसियत से शामिल होना उसके लिये गौरव की चीज़ हो सकती है। आज की स्थिति में उसके ऊपर राष्ट्र-संघ का बोझ लादना वांछनीय नहीं।

× × ×

३. मुसलमानों की कट्टरता और हिंदू-महासभा की नीति

मुसलमानों का कठमुल्लापन दिन-दिन उग्र रूप धारण करता जा रहा है। लखनऊ में मि० ज़फ़रअली की स्पीच में हमें यह देखने को मिला कि धार्मिक कट्टरता के आवेश में मनुष्य कितना पागल हो जाता है! आपने मुसलमानों को इस बात के लिये भड़काया कि वे अपनी रक्षा के लिये बिना लाइसेंस हथियार रखने का आंदोलन करें, और सरकार से अपनी इस माँग को मंज़ूर करावें। आपकी इस बात का स्पष्ट अर्थ यही है कि आप खुलेआम मुसलमानों को ख़ून-ख़राबी के लिये उत्तेजित करते हैं। इस तरह के भाषणों का विषैला असर जगह-जगह फैल रहा है। जगह-जगह से सांप्रदायिक झगड़ों की जैसी ख़बरें आती हैं, उनके पीछे यही नीति काम कर रही है। सी० पी० में, विद्या-मंदिर-योजना के संबंध में, मुसलमानों ने सत्याग्रह किया। उधर हैदराबाद में हिंदुओं के ऊपर जो कुछ बीत रही है, उससे यह ज़ाहिर होता है कि धार्मिक कट्टरता केवल भारत के स्वार्थी मुसलमान नेताओं तक ही सीमित नहीं, बल्कि मुसलमान रियासतों में भी यह विष व्याप रहा है। एक राज्याधिकारी को, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, अपनी समस्त प्रजा समान भाव से देखनी चाहिए। जो नागरिक अधिकार एक क़ौम के लोगों को प्राप्त हों, वे ही सब क़ौमों के लोगों को होने चाहिए। पर हैदराबाद-राज्य के संबंध में मुद्दत से ऐसी शिकायतें सुनी जा रही हैं कि वहाँ हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता पर कुठाराघात होता है। आर्य-समाजियों पर तो वहाँ घोर दमन हो रहा है, और इसीलिये आर्य-सार्वदेशिक सभा को वहाँ सत्याग्रह करना पड़ा। इस सत्याग्रह में नारायण स्वामी-जैसे आर्य-समाज के परम प्रसिद्ध नेता और संन्यासी को गिरफ़्तार करके उनके पाँवों में बेड़ियाँ डाली गईं, तथा उनके साथ बड़ा ही भद्दा व्यवहार किया गया। इससे न केवल आर्य-समाजी जनता, बल्कि समस्त हिंदू-जनता में बड़ा क्षोभ और रोष पैदा हुआ है। हिंदू-महासभा के अध्यक्ष वीरवर सावरकरजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-समाज के नाम अपील प्रकाशित कर हैदराबाद के सत्याग्रह में हिंदू-जनता को सब प्रकार से सहायता देने के लिये कहा है। हम आपकी इस अपील का समर्थन करते हैं।

किंतु दूसरी तरफ़ हिंदू-महासभा आजकल जिस नीति का अवलंबन कर रही है, उससे हम चिंतित हो उठे हैं। आजकल रियासतों के आंदोलन में हिंदू-महासभा स्वेच्छाचारी देशी राजों का साथ दे रही है, और विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि राजों या उनके दीवानों को हिंदू-सभा की ओर से यह आश्वासन दिया गया है कि हिंदू-महासभा की सहानुभूति उनके साथ है। इस बात को मान लेने के कारण भी मौजूद हैं। जिस फ़ेडरेशन के विरुद्ध आज सारा देश है, और कांग्रेस जिसका ज़ोरों से विरोध कर रही है, हिंदू-महासभा उसका समर्थन करती है। उसके नेताओं का ध्यान केवल इस बात की ओर है कि फ़ेडरेल-सरकार में हिंदू-राजों के प्रतिनिधियों के शामिल होने से हिंदुओं का वहाँ बहुमत रहेगा। वे इस तरफ़ से बिलकुल आँख मीच लेते हैं कि संघ-सरकार में देशी राजों की ओर से नामज़द होकर जो प्रतिनिधि जायँगे, वे वहाँ बिना अँगरेज़-सरकार की इच्छा के अपनी स्वतंत्र बुद्धि से कुछ भी न कर सकेंगे। वे वहाँ जाकर न हिंदुओं के भले की बात कह सकते हैं, न देश-हित के कार्यों में पूरा साथ दे सकते हैं; तब

सिर्फ़ दो रुपए बारह आने में ६ घड़ियाँ

चार डमी रिस्ट वॉच, एक डमी पॉकिट वॉच,

एक असली जर्मनी टाइम-पीस

गारंटी बारह साल

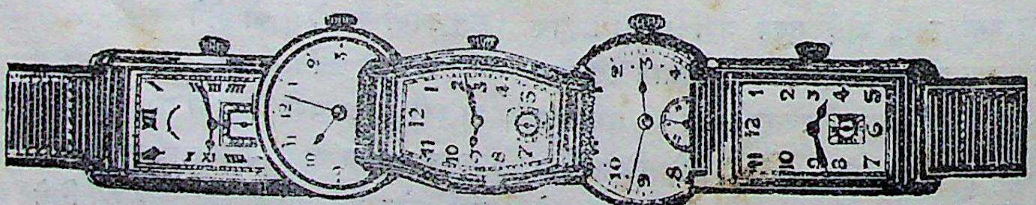

ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर विलायत से भारी तादाद में मँगाई हैं। सिर्फ़ १० हज़ार घड़ियाँ हर रिआयती मूल्य पर बेचने का निर्णय किया है। इसलिये जल्दी ऑर्डर देकर रिआयत का फ़ायदा उठाएँ, वर्ना मौक़ा हाथ न आएगा। घड़ियों के साथ एक असली फ़ाउंटेनपेन १० कैरिट की गोल्ड निब के सहित, एक ठंडी ऐनक, एक ख़ूबसूरत मोतियों का हार बिलकुल मुफ़्त दिया जायगा। डाक-महसूल तथा पैकिंग अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस होगी।

दि जर्मन नॉवेल्टी स्टोर, B. D. कराची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल हिंदू-प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ी रहने से लाभ क्या ? खेद है, हिंदू-सभा के नेता इस संबंध में देश के सर्वमान्य हित का ख़याल नहीं कर रहे। इस दशा में उन पर भी सांप्रदायिक दलदल में फँस जाने का दोष लगाया जा सकता है। यही नहीं, बल्कि मुस्लिम लीग की तरफ़ से कांग्रेस का जैसा विरोध हो रहा है, अब हिंदू-महासभा ने भी उसी ढंग पर उसका विरोध शुरू कर दिया है। इससे कांग्रेस को तो कोई क्षति न पहुँचेगी, और उसके प्रति लोगों का यह विश्वास और दृढ़ होगा कि कांग्रेस सांप्रदायिकता से बिलकुल परे है, पर हिंदू-महासभा देश-हित-चिंतकों की नज़रों में गिर जायगी। उसके लिये यह नीति शोभा की चीज़ नहीं। मुसलमानों की कट्टरता मिटाने का कांग्रेस प्रयत्न कर रही है, इसलिये हिंदू-महासभा को चाहिए कि उसके मार्ग में एक और वैसी ही कठिनाई उपस्थित न करे। दोनो ओर से सांप्रदायिक द्वेष बढ़ने से कांग्रेस का कार्य और कठिन होता है। आशा है, हिंदू-महासभा के नेता गंभीरता-पूर्वक इस मामले पर विचार करेंगे।

× × ×

४. हिंदी और उर्दू की प्रगति

संयुक्त प्रांतीय एसेंबली में एक सदस्य के प्रश्न के उत्तर में सरकार की तरफ़ से जो कहा गया, उससे युक्त प्रांत में हिंदी और उर्दू की प्रगति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है, और हिंदी-भाषा-भाषी लोगों के लिये वह एक सबक़ है। सरकार की ओर से बतलाया गया है कि सन् १६२१ ई० में यहाँ के हिंदी-पत्रों की ग्राहक-संख्या २,३२,६४६ और उर्दू-पत्रों की ग्राहक-संख्या १,४२,३०८ थी। अर्थात् जिस प्रांत में हिंदुओं की आबादी ८३ प्रतिशत और मुसलमानों की केवल १४ प्रतिशत है, वहाँ हिंदी-पत्रों के प्रेमी उर्दू-पत्रों के पाठकों से केवल डेढ़गुना अधिक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हिंदुओं में उनकी जन-संख्या का बहुत बड़ा भाग केवल उर्दू के अख़बारों से ही प्रेम करता है, हिंदी को उन्होंने नहीं अपनाया। सन् १६२१ के पश्चात् इस दिशा में जो प्रगति हुई है, उसका अनुपात भी वही रहता है, जो सन् १६२१ का है। इन वर्षों में जहाँ हिंदी-अख़बारों के पाठकों की संख्या में वृद्धि हुई, वहाँ उर्दू के पाठक भी उसी अनुपात से बढ़े। सन् १६३६ में हिंदी-पत्रों की ग्राहक-संख्या ३,६०,४३५ हो गई, और उर्दू-पत्रों की २,४३,४१५। इसका अर्थ यह हुआ कि अख़बार पढ़नेवालों की वृद्धि हुई, पर वह वृद्धि जितनी उर्दू-अख़बार पढ़नेवालों की हुई, उसी हिसाब से हिंदी-अख़बार पढ़नेवालों की। हिंदी की प्रगति में उर्दू की प्रगति से कोई आधिक्य नहीं रहा, और जो परिवार पहले से उर्दू लिखने-पढ़ने के अभ्यासी थे, उन्होंने हिंदी को नहीं अपनाया। यदि ऐसा होता, तो हिंदी-पाठकों की वृद्धि ड्योढ़े से अधिक होती। इसका सबूत दूसरी तरफ़ से भी मिल जाता है। इन्हीं प्रश्नों के सिलसिले में यह भी बतलाया गया कि सन् १६३० में, इस प्रांत में, पुस्तकों का प्रकाशन क्रमशः हिंदी और उर्दू का १५,६३४ और १०,१८० था। अर्थात् वर्ष-भर में उर्दू-पुस्तकों से हिंदी-पुस्तकें केवल डेढ़गुनी अधिक छपीं। सन् १६३६ में हिंदी-पुस्तकों का प्रकाशन बढ़कर २०,१८८ हो गया, और उर्दू का १४,२८८ तक बढ़ गया। ये आँकड़े सिद्ध करते हैं कि उर्दू का प्रचलन जैसा बढ़ रहा है, हिंदी भी उसी गति से अपनी तरक़्क़ी कर रही है। यह माना कि पहले हिंदी की अवस्था बहुत शोचनीय थी। सन् १८६० में तो यहाँ का हिंदी-प्रकाशन केवल ६२७ था, जब कि उस साल उर्दू की ३,२१५ पुस्तकें छपीं। इसके बाद सन् १६२० में — तीस वर्षों के अंदर — हिंदी की पुस्तकों का प्रकाशन सातगुना बढ़ गया, जब कि उर्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इन वर्षों में केवल डेढ़गुना ही बढ़ा। पर उसके पश्चात् अर्थात् गत बीस वर्षों से हिंदी और उर्दू के पत्र तथा पुस्तक-प्रकाशन में समान गति से वृद्धि हो रही है। इस प्रांत में हिंदी-भाषा-भाषी लोगों की संख्या उर्दूवालों की अपेक्षा छगुनी अधिक है, अतः स्वभावतः यहाँ हिंदी-अख़बारों के ग्राहक और पुस्तकों का प्रकाशन उर्दू की अपेक्षा छगुना होना चाहिए। हिंदीवाले इससे यह सबक़ ले सकते हैं कि उनकी हिंदी की प्रगति संतोष-जनक नहीं, और एक बहुत बड़ी संख्या के लोगों को, जो अभी तक सिर्फ़ उर्दू की ही तरफ़ झुके हुए हैं, हिंदी-प्रेमी बनाना है *। साथ ही जो भाई हिंदी-प्रचार को उर्दू के लिये बाधक बतलाते हैं, उन्हें भी इससे यह सीखना चाहिए कि हिंदी की उन्नति के साथ-साथ उनकी उर्दू की भी उन्नति हो रही है, और उनका उक्त आक्षेप निर्मूल है।

× × ×

* इस संबंध में हिंदी-पुस्तक-प्रकाशकों का भी कुछ कर्तव्य है। उन्हें अपना एक संघ बनाना चाहिए, और आपस में मिलकर १०,०००) चंदा इकट्ठा करके हर वर्ष हिंदी-प्रचार में व्यय कर देना चाहिए। ऐसा करने से उनके पत्र और प्रकाशन तो अधिक संख्या में बिकेंगे ही, हिंदी की भी द्रुत गति से उन्नति होगी।

लाइसंस लेने की ज़रूरत नहीं
अमरीकन अलार्म पिस्तौल
नया नमूना सन १९३९ ई०

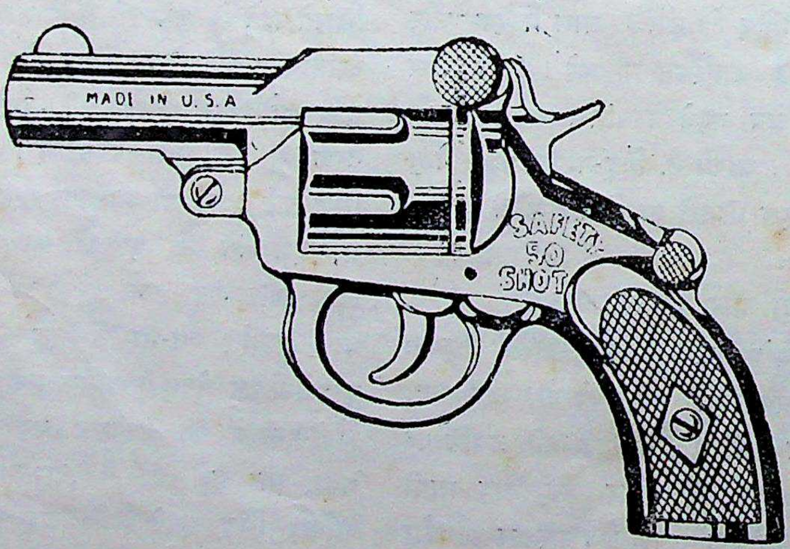

हिंदोस्तान में पहली दफ़ा आया है। बिलकुल ऊपर दी हुई तस्वीर के मुताबिक़ है। लंबाई ७ इंच है, वज़न १५ औंस है। इसके देखते ही मनुष्य डर जाता है। पचास फ़ायर बहुत ज़बर-दस्त भयानक आवाज़ से एक के बाद दूसरे सिलसिलेवार होते हैं। ख़तरा के वक्त, अपनी जान बचाने के लिये बड़ी सुंदर चीज़ है। हर मनुष्य विना लाइसंस रख सकता है। हिंदोस्तान में सिर्फ़ हमारे पास ही अलार्म पिस्तौल मिलता है। क़ीमत रियायती २५० शाट के साथ ४॥) रुपए, फ़ालतू १००० शाट क़ीमत २) रुपए। महसूल डाक अलग। झूठ साबित हो, तो क़ीमत वापस।

मिलने का पता—अमरीकन इंपोर्ट कंपनी, नं० ११८, कराची (सिटी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. हैदराबाद का सत्याग्रह

हैदराबाद-राज्य में आर्य-समाज और हिंदू-महासभा की ओर से जो सत्याग्रह हो रहा है, उसकी तरफ़ से हम अपनी आँखें बंद नहीं रख सकते। कांग्रेस की तरफ़ से वहाँ जो सत्याग्रह चला था, वह बंद कर दिया गया, और महात्मा गांधी तथा पं० जवाहरलाल नेहरू ने इसका स्पष्टीकरण यह किया कि जिस रूप में यह सत्याग्रह आजकल चल रहा है, उस पर सांप्रदायिक रंग चढ़ता जाता है, ऐसी दशा में कांग्रेस का उत्तरदायी शासन के लिये चलाया गया आंदोलन सांप्रदायिक रंग में रँग जायगा। पर हम इसे सर्वथा ठीक नहीं समझते, क्योंकि हर उत्तरदायी शासन में समस्त प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता रहती है। सब जानते हैं कि निज़ाम-राज्य में हिंदुओं की धार्मिक स्वतंत्रता पर एक समय से आघात किया जा रहा है, और आर्य-समाजियों का तो घोर दमन हो रहा है। ऐसी दशा में धार्मिक स्वतंत्रता के लिये आंदोलन करना भी उत्तरदायी शासन की ओर क़दम बढ़ाना है। जयपुर का सत्याग्रह भी तो आजकल नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये लड़ा जा रहा है, यद्यपि प्रजा की अंतिम माँग उत्तरदायी शासन की स्थापना ही है। हैदराबाद के संबंध में भी यही कहा जा सकता है। फिर भी हम इतना मानते हैं कि हैदराबाद मुसलमान रियासत है, और वहाँ की प्रजा अधिकांश हिंदू, इसलिये

साहित्य-संसार में क्रांति लानेवाली बिलकुल निराले ढंग की पुस्तक

'प्रिया या प्रजा'

इसकी सर्वोत्तमता का सबसे बड़ा यही प्रमाण है कि एक ही वर्ष में दूसरे संस्करण की तैयारी हो गई। साहित्य-प्रेमियों ने किस उत्कंठा से इसे गले लगाया है, इसे बिना पढ़े आप नहीं समझ सकते।

हम सिर्फ़ इतना ही कहेंगे कि—

यह पुस्तक राजनीति, देश-प्रेम, भक्ति, वैराग्य, वीरता आदि का सार है। साहित्य की गंभीरता समझने के लिये ही इसको एक बार पढ़ना चाहिए।

हिंदी की उच्च कोटि की परीक्षाएँ देनेवालों के लिये तो यह प्राण है। इसीलिये इसकी इकट्ठी प्रतियाँ कितनी ही साहित्यिक संस्थाओं ने ख़रीद ली हैं। इस पर भी इस अमूल्य रत्न का मूल्य केवल आठ आना है।

सोल ऐजेंट्स

१—गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ
२—रत्नाश्रम, आगरा
३—गुप्ता ब्रादर्स, धनौरा मंडी
४—विनीत-ग्रंथ-माला, तालबेहट (झाँसी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोगों को, ख़ासकर मुस्लिम लीग को कांग्रेस के ऊपर यह आक्षेप करने का मौक़ा मिल जाता है कि कांग्रेस हिंदुओं का पक्ष कर रही और आर्य-समाज तथा हिंदू-महासभा का साथ दे रही है। यही सोचकर कांग्रेस ने अपना सत्याग्रह स्थगित कर दिया। पर इसका अर्थ यह नहीं कि धार्मिक और सामाजिक स्वाधीनता के लिये चलाए गए इस सत्याग्रह के साथ किसी भी राष्ट्र-प्रेमी की सहानुभूति न हो। इस सत्याग्रह ने समस्त हिंदू-समाज में हलचल पैदा कर दी है, और देश के सभी भागों से जत्थे हैदराबाद-सत्याग्रह में भाग लेने पहुँच रहे हैं। जिस तरह का दमन निज़ाम-राज्य की ओर से हो रहा है, वह सर्वथा निंदनीय है। दमन से कोई भी आंदोलन अब तक दबाया नहीं जा सका, और यही हैदराबाद के संबंध में भी होगा। निज़ाम-सरकार को अपनी समस्त प्रजा को समान रूप से धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अधिकार देने होंगे।

× × ×

६. कानपुर का झगड़ा

कानपुर को एक बार फिर नरमेध का दृश्य देखना पड़ा, यह हमारे लिये कितने शोक की बात है! अमर शहीद गणेशजी के बलिदान के बाद इस तरह के सांप्रदायिक दंगे होना कानपुर के लिये ही नहीं, समस्त भारत और ख़ासकर युक्त प्रांत के लोगों के लिये सचमुच कलंक की बात है। मुसलमानों का मसजिद के आगे बाजा न बजाने देने का हठ बच्चों का-सा खिलवाड़ है। अब तक इसी खिलवाड़ के पीछे कितनी जानें जा चुकी हैं। कुछ गुंडों द्वारा ऐसी हरकतें शुरू होती हैं, और निरपराध व्यक्तियों के प्राण हनन किए जाते हैं। पर अब की बार के कानपुर के दंगे का मुख्य कारण तो मुस्लिम लीग की वह विषैली नीति है, जिसकी हवा चारो ओर फैल रही है, और देश में जगह-जगह हिंदू-मुसलमानों के झगड़े करा रही है। इसका उद्देश्य कांग्रेस-सरकार को बदनाम कराकर लोगों की निगाह में कांग्रेस की लोक-प्रियता को गिराना है। पर इन प्रयोगों से उसका अभीष्ट सिद्ध न होगा, क्योंकि प्रत्येक समझदार व्यक्ति, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, इन बातों को अच्छी तरह समझता है। पुलिस और स्थानीय अधिकारी भी अपने इस उत्तरदायित्व से बरी नहीं हो सकते। कानपुर के संबंध में लोगों को ऐसी शिकायत करने का अवसर मिला कि पुलिस ने गुंडों के दमन करने में काफ़ी कड़ाई से काम नहीं लिया। जब मुसलमान सांप्रदायिक लीडर अपना विष फैला रहे थे, और दंगे के आसार नज़र आ रहे थे, तो पहले से ही उसका प्रबंध करना चाहिए था। ऐसे लोगों के साथ अधिक उदारता की नीति काम में लाना सांप्रदायिकता के ज़हर को और भी बढ़ाना है। हम तो प्रांतीय सरकार से भी यह निवेदन करेंगे कि मौलाना ज़फ़रअली-जैसे सांप्रदायिक लीडरों को भाषण-स्वातंत्र्य की पूरी स्वतंत्रता देकर वह अपने लिये कठिनाई मोल ले लेती है। एक बार ऐसे लोग बुराई के बीज बो जाते हैं, और उसके कटु फल जनता को चखने पड़ते हैं।

× × ×

७. हिंदुस्तानी-तालीमी संघ की रिपोर्ट

वर्धा-शिक्षा-योजना के आधार पर अब तक देश में कितनी प्रगति हुई है, इसका पता हिंदुस्तानी-तालीमी संघ की पिछले छ महीने की रिपोर्ट से चलता है। उक्त संघ की स्थापना इसी उद्देश्य को लेकर की गई थी कि वह देश में राष्ट्रीय, उपयोग में आनेवाली, उद्योग-प्रधान शिक्षा का प्रचार और प्रसार करे, जैसा कि वर्धा-शिक्षा-योजना में उल्लेख किया गया है। इस संघ ने देश में कई संस्थाएँ चालू की हैं, और कुछ पुरानी शिक्षा-संस्थाओं में उक्त ढंग की तालीम शुरू कर दी है। इनमें दिल्ली का जामिया मिलिलिया स्कूल, आंध्र में मरूलीपट्टम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आंध्र-जातीय कला-शाला तथा पटना, मैसूर के एक तगदुर गाँव, शेगाँव और वर्धा में भी शिक्षणालय स्थापित हुए हैं। इनमें कताई, बाग़बानी, लकड़ी का काम, बुनाई, कार्डबोर्ड आदि उद्योग-धंधों का कार्य सिखाया जाता है। शिक्षा-संबंधी उपयोगी साहित्य पढ़ाया जाता है। इसी पद्धति को प्रांतीय शिक्षा-विभाग में शामिल करने के लिये प्रांतीय सरकारों के साथ लिखा-पढ़ी हो रही है। कई प्रांत की सरकारें इस ढंग से कार्य शुरू करने की आयोजना तैयार कर रही हैं, और जहाँ-जहाँ कांग्रेसी सरकारें हैं, उन सभी की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। कुछ दिनों में वहाँ भी सरकारी स्कूलों में यही पद्धति जारी कर दी जायगी।

संघ की रिपोर्ट में बतलाया गया है कि लोगों की दिलचस्पी इस दिशा में बढ़ रही है, और संघ की ओर से इस योजना पर पूरा अमल कराने के लिये हर प्रांत में प्रचार-कार्य हो रहा है। इससे शिक्षा के रुख़ में भारी परिवर्तन हो जायगा, और आधुनिक शिक्षा-पद्धति के बहुत-से दोष दूर हो जायँगे। मध्य प्रांत में मुसलमानों की तरफ़ से जो अड़ंगा खड़ा किया गया था, उसका भी वहाँ की सरकार ने निराकरण कर दिया है। इस तरह हम कुछ वर्षों में देखेंगे कि हमारे देश की शिक्षा-पद्धति में काया-पलट हो गई है।

× × ×

८. महात्मा गांधी का अनशन और राजकोट

यह संतोष और सौभाग्य की बात है कि राजकोट के मामले को लेकर महात्मा गांधी ने जो अनशन किया था, वह वाइसराय महोदय के आश्वासन-पूर्ण वक्तव्य के साथ समाप्त हो गया, और देश-विदेश में इस अनशन से जो हलचल पैदा हुई थी, वह शांत हो गई। यह गांधीवाद की विजय है। हम समझते हैं, राजकोट का यह मामला केवल राजकोट की ही समस्या को नहीं सुलझावेगा, वरन् उससे समस्त देशी राज्यों के मामले सुलझाने की कोई बुनियादी योजना तैयार होगी। गांधी-लिनलिथगो-भेंट के बाद सारा देश इस बात को उत्सुकता-पूर्वक देख रहा है कि देशी राज्यों की समस्या का निराकरण किस तरह होता है। केवल ये ही दो व्यक्ति हैं, जो इस उलझन को ऐसे ढंग से सुलझा सकते हैं, जिससे देशी राज्य, उनकी प्रजा और सारे देश में संतोष तथा शांति का वातावरण पैदा हो सकता है।

× × ×

९. होली और मुहर्रम के झगड़े

इस वर्ष होली और मुहर्रम के त्योहारों को कई जगह ख़ून की होली खेलकर मनाया गया। ख़ासकर संयुक्त प्रांत में कानपुर, बनारस और एटा-ज़िले में ख़ून-ख़च्चर हुआ। कितने ही हिंदू और मुसलमान मारे गए। कानपुर में इतनी जन-हत्या के बाद भी लोगों के दिलों में ग़ुबार बाक़ी रह गया। बनारस ने तो अब की बार हद कर दी। जहाँ झगड़े की संभावना नहीं की जा सकती थी, वहाँ कानपुर की तरह ही फाग खेला गया। इन सांप्रदायिक झगड़ों की तरफ़ पहले भी हम ध्यान दिला चुके हैं। उनकी तह में केवल एक ही बात छिपी है—एक अर्से से और ख़ासकर जब से प्रांत में कांग्रेसी सरकार क़ायम हुई है, तब से उसे बदनाम करने और पंत-सरकार के रास्ते में काँटे बोने के लिये निरंतर चेष्टाएँ करना। मुस्लिम लीग के मुसलमानों ने जैसा ज़हर बोया है, आख़िर उसके फल लोगों को चखने ही पड़ेंगे। सरकार की उदार नीति और प्रधान मंत्री पं० गोविंदवल्लभ पंत की सौम्य, शांति-पूर्ण और प्रत्येक जाति तथा वर्ग के लिये समान हितकारी योजनाओं का निरादर करके यह सब कुछ यह बतलाने के लिये किया जा रहा है कि कांग्रेस के लोगों के शासन-काल में ऐसे कांड होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ! पर हर समझदार व्यक्ति जानता है कि इस तरह की कुचेष्टाओं से उस अभीष्ट की सिद्धि न होगी। अगर सरकार की शांति-स्थापन की चेष्टाओं से इस तरह नाजायज़ फ़ायदा उठाया गया, तो कांग्रेस-सरकार शीघ्र ही उन उपायों का अवलंबन करेगी, जिनसे बल-पूर्वक ऐसी हरकतें रोकी जा सकें। जब तक सरकार ऐसा करने के लिये तैयार न होगी, तब तक रोज़ के इन झगड़ों से पीछा न छूटेगा।

शर्त—विज्ञापन के अनुसार हमारी पुस्तकें न होंगी, तो मूल्य वापस देंगे !

१॥) में दस पुस्तकें

१. कोकशास्त्र—स्त्री-पुरुषों के भेद, ८४ चित्रों माला शकुनादि मूल्य १॥)
२. प्रेत-सिद्धि—भूतों को वश कर रोगी को अच्छा करना आदि ॥)
३. टेलीग्राफ़—तार का लेना-देना सिखाने की अपूर्व पुस्तक ॥)
४. गर्भ-परीक्षा—गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहचान पहले ही करना ॥)
५. आरोग्य जीवन—गुप्त रोगों का इलाज स्वयं करना सीखो ॥)
६. सच्चा जादू—हाथ-सफ़ाई के आश्चर्य-जनक खेल सीखो ॥)
७. इँगलिश—अँगरेज़ी पढ़ना-लिखना सीखने की रीति १)
८. आत्मविद्या—मृतक आत्माओं से बातचीत करना ।)
९. वशीकरण—सिद्ध करके मनमाना काज करा लो ॥)
१०. शर्बत—शर्बत बनाने के सरल नुस्ख़े व सरल रीति ॥)

ऊपर लिखी ५०० पृष्ठ की अनमोल दस पुस्तकों का सेट मूल्य १॥), डाक-व्यय-पैकिंग आठ आना अलग।

ठाली बैठों को हजारों रुपया पैदा करानेवाली एक पुस्तक !

ख़ज़ाने की कुंजी

इससे अनेकों प्रकार के हुनर विना उस्ताद के घर बैठे सीख लो, जैसे लकड़ी व चमड़े की वारनिश, कई प्रकार के साबुन, रोशनाई, खुशबूदार तैल व इत्र, शर्बत-अचार-मुरब्बा-पान का मसाला, आतिशबाज़ी, बैटरी से गिलट करना, चाँदी का पानी बनाना, दियासलाई बनाना, पारे का गिलास-कटोरा बनाना, नक़ली केशर-कस्तूरी बनाना, सींग के खिलौना, खिजाब, मंजन, अगर की बत्ती, मोम, बर्फ़ की कुलफ़ी जमाना, सोने के वर्क़, कपूर की माला, काँच जोड़ने का मसाला, साँप काटे की दवा, सिर-दर्द की दवा, अर्क़ कपूर, बाल उड़ाने का पाउडर, पत्थर जोड़ने का मसाला, नमक सुलेमानी, पिपरमेंट की मिठाई, रबड़ की मुहर आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीब इस ग्रंथ में लिखी है। कहाँ तक लिखें, इसका एक-एक हुनर पाँच-पाँच रुपए को भी सस्ता है। मूल्य भी सबके लाभार्थ सिर्फ़ १), डाक-व्यय-पैकिंग ।=)

पूरा पता—मैनेजर, दी बजरंग ऐंड कंपनी, आगरा-रोड, अलीगढ़ सिटी (SU)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

रानी लक्ष्मीबाई तथा सी० एफ़्० ऐंड्र्यूज़

[दिल्ली के अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर लिया गया चित्र । प्रतिच्छविकार—श्रीललितगोपाल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती सुल्तानसिंह
[अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन, दिल्ली की स्वागतकारिणी समिति की सभानेत्री ।]

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन, दिल्ली
[महिला-प्रतिनिधियों के साथ श्रीयुत सी० एफ़० एँड्र्यूज़ ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

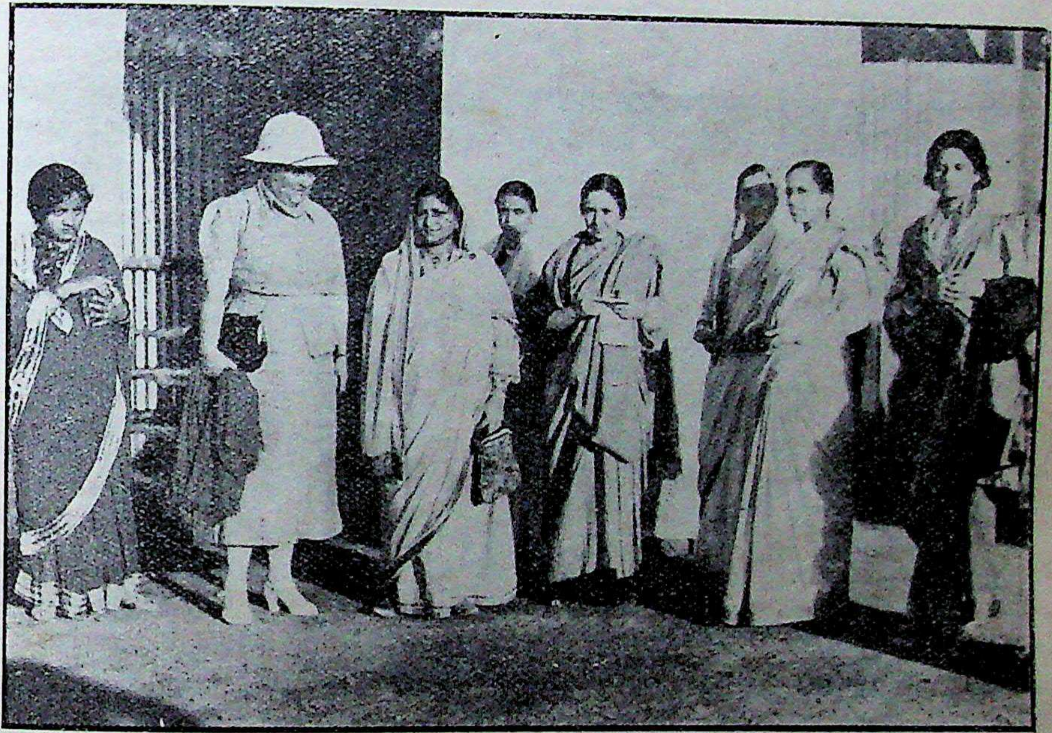

श्रीमती हामिदअली (बाईं ओर से तीसरी)

[आप स्वर्गीय तैयबजी की सुपुत्री हैं। दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर आप ही ने स्वदेशी-प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

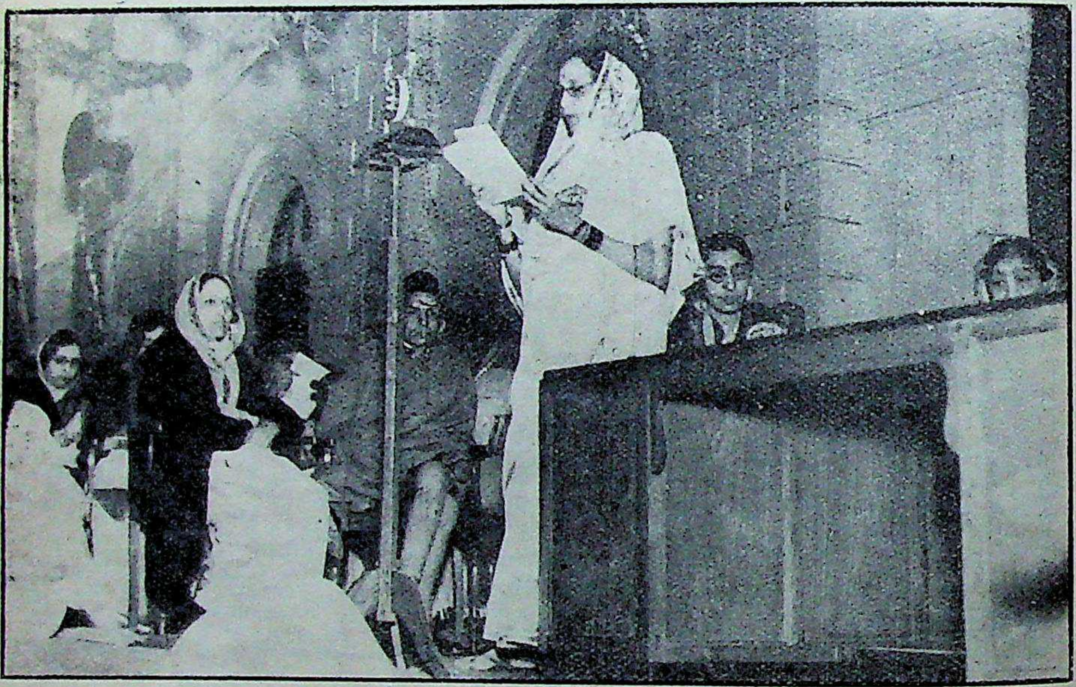

दिल्ली के अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन की बाहरी बैठक का एक दृश्य

[सम्मेलन की सभानेत्री रानी लक्ष्मीबाई अपना भाषण पढ़ रही हैं। चित्र में लाला श्रीराम, श्रीमती आसना (संयोजक) और श्रीमती सरोजिनी नायडू भी हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५४२५) रुपए के संन्यासी प्रयोग

आजकल अनुभूत प्रयोगों के नाम से कई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, किंतु खेद है कि उन पुस्तकों को देखकर "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा" वाली कहावत याद आ जाती है। अर्थात् वे अनुभूत प्रयोग दो किसी पुस्तक के और तीन किसी पुस्तक के दृष्टिगोचर होते हैं। सच्ची बात तो यह है कि कोई भी अपने अनुभूत योगों को प्रकाशित नहीं करना चाहता और न कोई ऐसे प्रयोगों के संग्रह का भगीरथ प्रयत्न करता है, किंतु "अनुभूत योग चिंतामणी" के लेखक को ही ईश्वर ने वह उदार हृदय प्रदान किया है कि जिसने वर्षों तक संन्यासियों की कठिनतम सेवा और भ्रमण में ५४२५) रुपये व्यय करके जो नुसखे प्राप्त किए थे, वे निष्कपट भाव से इस पुस्तक में प्रकाशित कर दिए हैं, जिसके प्रताप से आज सैकड़ों वैद्य और हकीम अपने औषधालयों को सफलतापूर्वक चला रहे हैं। इस पुस्तक में वे ही प्रयोग लिखे गए हैं, जो अनेक बार अनुभव की कसौटी पर परखे जा चुके हैं। इस पुस्तक में एक भी ऐसा प्रयोग नहीं है जो किसी पुस्तक से लिया गया हो, अपितु सब-के-सब संन्यासियों के हृदय के खास गुप्त प्रयोग हैं, जो तत्कालीन चमत्कारी प्रभाव दिखाते हैं। इस पुस्तक के सभी प्रयोगों की भारतवर्ष के वैद्यों और हकीमों द्वारा परीक्षा हो चुकी है और सभी ने एक स्वर से प्रयोगों की सत्यता को मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। किस-किस वैद्य और हकीम ने किस-किस प्रयोग की परीक्षा करके उसके विषय में अपनी सम्मति दी है—वह सब उत्तरार्द्ध के अंत में परिशिष्ट रूप में प्रकाशित कर दी गई है। जिससे सिद्ध हो गया कि इस पुस्तक में एक भी ऐसा प्रयोग नहीं, जो अनुभूत सिद्ध न हो। जिस वैद्य या हकीम के औषधालय में यह पुस्तक नहीं, निस्संदेह उसकी चिकित्सा और औषधालय अधूरा है। इस पुस्तक के उन प्रयोगों के कुछेक नाम लिखे जाते हैं, जिनसे लोग अपनी चिकित्सा का चमत्कार दिखाकर लोगों को अपना श्रद्धालु बना लेते हैं। यथा—(१) घड़ी पास रखकर मिनटों में ज्वर दूर करनेवाले नुसखे, (२) उँगली पर दवा बाँधकर ज्वर उतारना, (३) आँखों में अंजन लगाकर ज्वर उतारना, (४) नाड़ी पर बूटी बाँधने से ज्वर न चढ़ेगा (५) केवल नस्य सुँघाकर सर्प विष दूर करना, (६) अक्सीर सूजाक, जो एक पैसे की लागत में तैयार होती है और ४ दिन में सुजाक की जड़ काट देती है (७) पाँवों पर दवा मर्दन करने से पुराने-से-पुराना उपदंश (आतशक) समूल नष्ट हो जाय, (८) अर्श (बवासीर) के मस्सों को जड़ से उड़ा देनेवाले नुसखे जो हजारों रुपए खर्च करने पर भी मिलने दुस्तर हैं, इत्यादि। इसके अतिरिक्त रोग-परीक्षा और निदान के सरल उपाय, पथ्य और रोगों के नाम प्रत्येक [illegible] गए हैं। सारांश सागर को गागर में बंद कर दिया गया है। यदि पुस्तक पसंद न [illegible] सप्ताह के अंदर-अंदर वापस कर सकते हैं, इससे ऊपर और क्या शर्त हो सकती है [illegible] भी ३५० पृष्ठ की इतनी बड़ी उपयोगी पुस्तक का मूल्य ३।), पोस्टेज [illegible]

पता—**रसायन फ़ार्मेसी (सु)**

पोस्ट-बक्स नं० [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

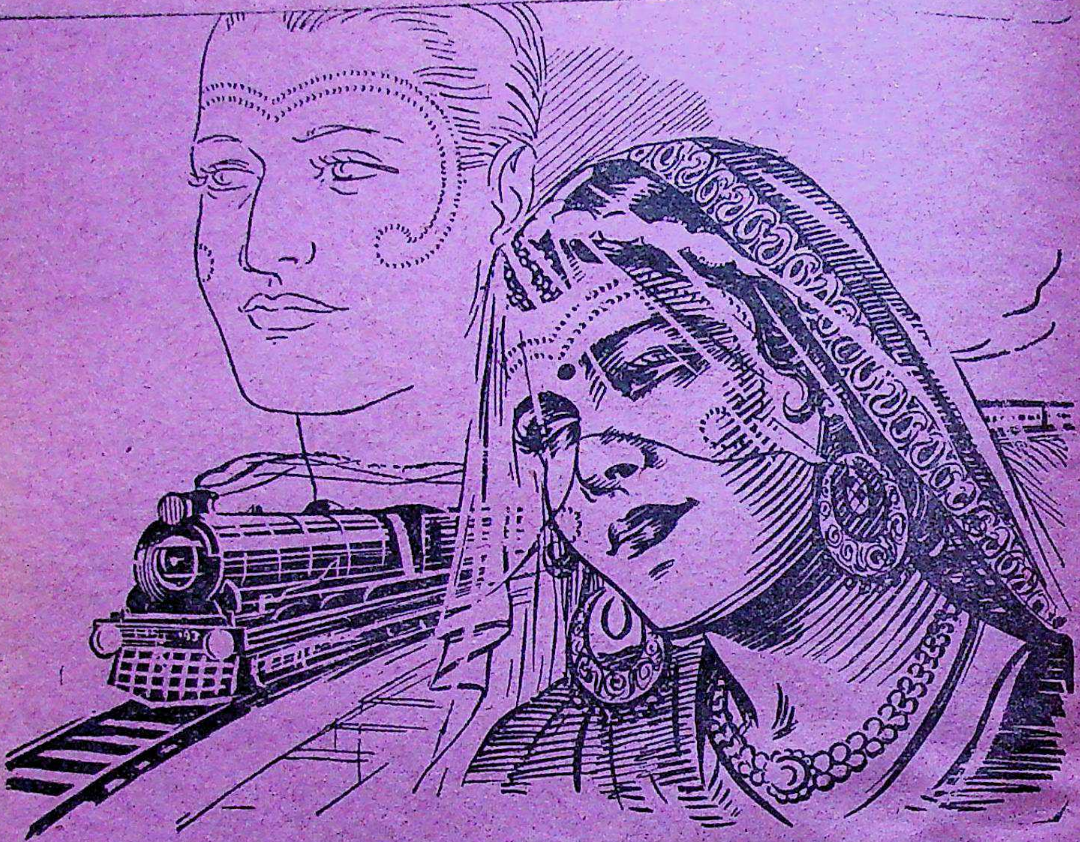

शुभ कामों में

रेलवे का सफ़र सस्ता और तेज़ है

जब विवाह पक्का हो जानेका शुभ-समाचार चारों ओर फैलता है, तब उस सुखी जोड़े के सगे संबंधी तथा मित्रवर्ग का हृदय उस विवाह के हँसी-मज़ाक़ और खाने-पीने में शामिल होने के लिये उछलने लगता है, जो कि ब्याह-शादी के मौक़े पर अनिवार्य है। रेलवेज आने-जाने का आदर्श मार्ग है—सस्ता, निर्भर योग्य और आराम दायक।

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK. 9

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुधा, मार्च, १९३९—फाल्गुन, १९९५, पूर्ण संख्या १५२"

नोटिस हस्ब दफ़ा ९ ऐक्ट २५ ऑफ़ १९३४

बअदालत जनाब ठाकुर सुरेंद्रविक्रमसिंह साहब बहादुर स्पेशल जज दर्जा अव्वल, लखनऊ
नंबर मुक़द्दमा इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट १ ऑफ़ १९३८
पेशी १५ एप्रिल, १९३९

पं० कैलासनरायन बख़शी वल्द पं० सूरजनरायन बख़शी
साकिन कटरा बिज़नबेग शहर लखनऊ वग़ैरह } सायलान मुद्दइयान

बनाम

अजोध्या बैंक वग़ैरह

क़र्ज़ख्वाहान मुद्दाअलेह

बनाम—१—दी अजोध्या बैंक लिमिटेड फ़ैज़ाबाद ज़रिए दी मैनेजर ऑफ़ दी सेंड बैंक
२—बाबू हरकिशनलाल मनोया
३—बाबू नंदलाल मनोया } वल्द बाबू गोपाललाल वकील मरहूम खत्री ज़मींदार, डाइरेक्टर ऑफ़ दी अजोध्या बैंक लिमिटेड फ़ैज़ाबाद साकिन मोहल्ला देवकली रोड शहर फ़ैज़ाबाद परगना हवाली तहसील व ज़िला फ़ैज़ाबाद क़र्ज़ख्वाहान

हरगाह यह कि सायलान ने मुक़द्दमा मुंदर्जा उनवान में दरख्वास्त बमोजिब दफ़ा ४ यू० पी० इनकमबर्ड स्टेट्स ऐक्ट २५ ऑफ़ १९३४ ज़रिए साहब डिप्टी-कमिश्नर साहब बहादुर लखनऊ गुज़रानी है, और अदालत हाज़ा में अपना बयान तहरीरी दाखिल किया है। लिहाज़ा जुमला क़र्ज़ख्वाहान को, जिनका क़र्ज़ा डिगरीशुदा या बग़ैर डिगरीशुदा खिलाफ़ ज़ात-जायदाद सायलान मज़कूर है, ज़रिए नोटिस हाज़ा मुत्तिला किया जाता है कि वह तारीख इशाअत नोटिस हाज़ा से तीन माह के अंदर अदालत हाज़ा में अपना बयान तहरीरी मय जुमला दस्तावेज़ात बाबत क़र्ज़ा मज़कूर दाखिल करें। मुक़द्दमा रूबरू अदालत बतारीख १५ एप्रिल १९३९ पेश होगा।

दरसूरत अदम पैरवी दरख्वास्त मज़कूर एकतरफ़ा समाअत की जायगी, और कोई दावा बाद इनक़िज़ाय मीयाद मज़कूर मसमू न होगा।

आज बतारीख २६ जनवरी सन् १९३९ ई० मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया।

मुंसरिम

अपने ग्राम-पुस्तकालयों के लिये इसकी ६०० प्रतियाँ प्रतिमास खरीदकर अपनी उदार-हृदयता और सुधा की सफलता का परिचय दिया है। इस सरकार से प्राप्त रुपए से हम सुधा को और भी उन्नत करना चाहते हैं। आप हमारे पुराने ग्राहक हैं, और आप ही की कृपा से सुधा सर्वदा

...वाजपेयी, श्रीयुत सुदर्शन, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, श्रीभगवतीचरण वर्मा, श्री-जैनेंद्रकुमार, श्री'उग्र', श्रीरामकुमार वर्मा, पं० गोविंदवल्लभ पंत आदि-जैसे सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की सुंदर गल्पें।

५. श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय, बाबू मैथिली-शरण गुप्त, बाबू सियारामशरणजी गुप्त, पं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

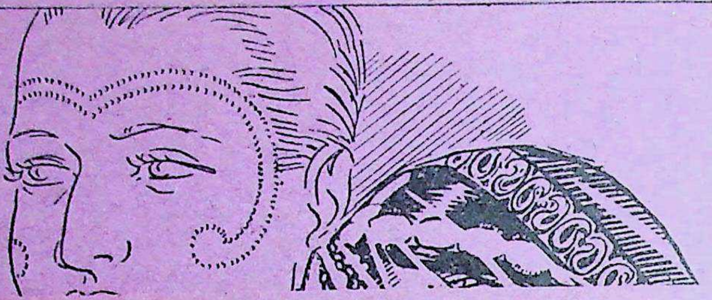

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK. 9

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा में युगांतर

आज सुधा अपने १३वें वर्ष में पदार्पण कर रही है। उसका अगला वर्ष नववर्षांक होगा। सुधा ने अभी तक हिंदी की जो सेवा की है, उससे आप भली भाँति परिचित हैं। अपनी सुंदर कविताओं, कहानियों, सचित्र यात्रा-विवरणों, गूढ़ ऐतिहासिक विवेचनों, स्त्रियोपयोगी लेखों, मनोमोहक गाथाओं तथा क्रांतिकारी, सामाजिक, सुंदर, साहित्यिक और रुचिर राष्ट्रीय नोटों द्वारा उसने अपने लिये हिंदी-प्रेमी हृदयों में एक विशेष स्थान बना लिया है। भारत के प्रत्येक प्रांत में और सुदूरवर्ती जर्मनी और अमेरिका तक उसके प्रेमियों की एक बड़ी संख्या उत्पन्न हो गई है। किंतु 'सुधा' को अपनी इस सफलता पर हर्ष नहीं। उसे अपनी बहुत-सी त्रुटियों का पूरा ज्ञान है। अतएव वह प्रतिवर्ष उन्हें दूर करने का प्रयत्न करती रही है।

हर्ष की बात है, इधर यू० पी०-गवर्नमेंट ने अपने ग्राम-पुस्तकालयों के लिये इसकी ६०० प्रतियाँ प्रतिमास खरीदकर अपनी उदार-हृदयता और सुधा की सफलता का परिचय दिया है। इस सरकार से प्राप्त रुपए से हम सुधा को और भी उन्नत करना चाहते हैं। आप हमारे पुराने ग्राहक हैं, और आप ही की कृपा से सुधा सर्वदा फूली-फली है। हमें अपार प्रसन्नता होगी, यदि आप यह लिखकर भेजने की कृपा करेंगे कि आपने अपनी सुधा से क्यों मुख मोड़ लिया और आप उसमें क्या उन्नति चाहते हैं। आज हम अपने पुराने-नए १०,००० ग्राहकों को यह अपील भेज रहे हैं, और आशा करते हैं कि उनकी सम्मति से लाभ उठाकर हम पुनः उनकी सेवा करने का अवसर पाएँगे।

इस समय सुधा में निम्न-लिखित विशेषताएँ हैं—

१. प्रतिमास १०० पृष्ठ। हिंदी-संसार में इस मूल्य —४॥) वार्षिक—की किसी भी पत्रिका में इतने पृष्ठ नहीं रहते।

२. प्रतिमास ५-६ दुरंगे और तिरंगे चित्र।

३. भारतवर्ष के प्रसिद्ध नर-नारी-रत्नों के फ़ोटो।

४. प्रतिमास प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री, पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्रीयुत सुदर्शन, बाबू वृंदावनलाल वर्मा, श्रीभगवतीचरण वर्मा, श्री-जैनेंद्रकुमार, श्री'उग्र', श्रीरामकुमार वर्मा, पं० गोविंदवल्लभ पंत आदि-जैसे सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की सुंदर गल्पें।

५. श्रीअयोध्यासिंह उपाध्याय, बाबू मैथिली-शरण गुप्त, बाबू सियारामशरणजी गुप्त, पं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित्रानंदन पंत, निरालाजी आदि की प्रतिमास सुंदर कविताएँ।

६. इनके अतिरिक्त हिंदी के अन्यान्य प्रायः सभी प्रसिद्ध विद्वानों के लेखों का विशेष प्रबंध किया गया है।

७. प्रतिमास लगभग १४ पृष्ठ सुंदर, विचार-पूर्ण संपादकीय नोट। विविध विषयों पर इतने नोट अन्य किसी भी हिंदी-पत्रिका में नहीं रहते।

८. काग़ज़ बढ़िया, टाइप नए और छपाई-सफ़ाई सुंदर।

क्या लेखों के चुनाव में, क्या भाषा-संशोधन में, क्या प्रूफ़-रीडिंग में और क्या संपादकीय टिप्पणियों में सुधा अब हिंदी-संसार में अपना सानी नहीं रखती! इसीलिये विज्ञापन-पृष्ठ भी इसमें हिंदी की सभी पत्रिकाओं से ज़्यादा रहते हैं।

हमें पूर्ण आशा है, अब आप अवश्य ही 'सुधा' के अनन्य भक्त हो जायँगे, तथा अपने इष्ट-मित्रों में भी उसकी अनवरत चर्चा करके उन्हें उसका ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करेंगे। पुराने ग्राहकों को यदि सुधा की कोई पुरानी संख्याएँ न मिली हों, तो वे अब फिर ग्राहक बनकर हमसे मँगा लें। हम मुफ़्त ही भेज देंगे।

सम्मतियाँ

साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथजी रेउ—"सुधा के अन्य विशेषांकों की तरह ही उसका नवीन विशेषांक भी भिन्न-भिन्न विषयों के उपयोगी लेखों और सुंदर चित्रों से विभूषित है। सस्ते मूल्य में साल-भर तक ऐसी सुंदर और सुचारु सामग्री हिंदी-संसार के सामने उपस्थित करने में सुधा अपनी सब सहेलियों से आगे रहने का प्रयत्न करती प्रतीत होती है।"

प्रो० सत्यकेतुजी विद्यालंकार (मंगलाप्रसाद-पारितोषिक के विजेता)—लेखों का संग्रह बहुत बढ़िया है। 'सुधा' ही ऐसी पत्रिका है, जिस पर बँगला या अन्य भाषाओं की छाया दृष्टिगोचर नहीं होती। हमारी अन्य अनेक पत्रिकाओं में अन्य भाषा के अनूदित लेख भरने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। उन्हें हिंदी की मौलिक पत्रिका नहीं कहा जा सकता। 'सुधा' इस दोष से पूर्णतया बची हुई है। मैं इसे एक महत्त्व-पूर्ण विशेषता समझता हूँ। ऐसे साहित्यिक और ऐतिहासिक विषयों की चर्चा, जिन्हें विशुद्ध रूप से हिंदी के साथ संबद्ध समझा जा सकता है, 'सुधा' में ही देखने को मिलती है।"

श्री चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०—लेखों में मौलिकता है। पाठ्य तथा ज्ञातव्य विषय की प्रचुरता है। कविताओं में रस है। चुनाव तथा क्रम में मनोविज्ञान की झलक है। चित्रों में हृदय-ग्राहिता है। छपाई आदि में स्वच्छता है। इसको यदि हिंदी-पत्रिकाओं का शिरोमणि कहा जाय, तो अनुचित न होगा।"

कविवर निरालाजी—"सुधा का विशेषांक मिला। अंतरंग-बहिरंग दोनो अनुपम हैं।........ निस्संदेह आप और आपकी सुधा हिंदी के संपादकों तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ है। विचार-विषयों की गहनता, वैचित्र्य तथा बाहुल्य और संपादन की चारुता तथा निर्दोषिता में आपकी पत्रिका तथा आप बेजोड़ हैं, मैं निर्भय कहूँगा।"

श्रीमोहनलालजी महतो गयावाल 'वियोगी'—"सुधा का विशेषांक मिला। यह अंक भी सर्वथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर ही है। हिंदी-संसार में आपकी कर्मवीरता अपना सानी नहीं रखती। माधुरी के बाद ही सुधा की झाँकी मेरी इस धारणा का मूर्तिमान् प्रमाण है। आपकी 'सुधा' का यह विशेषांक भी आपकी कर्मवीरता का ही द्योतक है।"

श्रीजंगबहादुरसिंहजी बी० ए० (सहकारी संपादक 'ट्रिब्यून')--"मैंने इतने दुःख नहीं देखे हैं, जितने विशेषांक देखे हैं। मेरी यह पक्की-पोढ़ी सम्मति है कि सुधा का यह मोटा-ताज़ा पीत-वस्त्रधारी विशेषांक एक बढ़िया चीज़ है। मानसिक भूख बुझाने के लिये इसमें छप्पन प्रकार के पदार्थ मिल सकते हैं। 'बनारसी एक्का' पढ़कर बड़ा मज़ा आया। 'बेढब' की बनाई हुई यह चटनी ऐसी चटपटी है कि जी करता है, बार-बार चखूँ। पैरगाड़ी पर आरूढ़ होकर, पैदल और मोटरगाड़ी में बैठकर तो बहुत-से लोग संसार की परिक्रमा कर आते हैं। मैं तो उसकी तारीफ़ करूँगा, जो बेढबजी के बनारसी घड़घड़े पर चढ़कर भूमंडल का कोना-कोना छान डाले, और फिर सही-सलामत काशी वापस आ जाय। श्रीमैथिलीशरणजी ने कार्लमार्क्स की फ़िलासफ़ी ख़ूब ओज-पूर्ण स्वर में सुनाई है।......जब विशेषांक मिला, तो उसमें मैं अपना लेख ढूँढ़ने लगा। ऐसे सुंदर विशेषांक में मेरा लेख ज़रूर होना चाहिए, ऐसी धारणा बन गई। कैसी विचित्र धारणा थी!"

साहित्य-भूषण पं० नाथूराम शुक्ल बी० ए०—"लेखों का चुनाव अच्छा हुआ है।......मैं सुधा को हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका समझता हूँ।"

साहित्य-भूषण डॉक्टर रविप्रतापसिंहजी श्रीनेत--"सुधा का नूतन विशेषांक देखा। अति प्रसन्नता हुई। इतनी जल्दी होने पर भी प्रस्तुत अंक काफ़ी महत्त्व-पूर्ण है। लेख तथा कविताएँ ज्ञानवर्द्धक और सजीव हैं। चित्रों का चयन हृदयग्राही तथा नयन-मनोहर है। सफल विशेषांक के लिये बधाई।"

श्रीशिवरत्नजी शुक्ल, काशी—"सुधा के साधारण अंक ही एक-न-एक नवीन युक्ति-युक्त रहते हैं, फिर विशेषांक के लिये क्या कहना है। उसमें तो आपकी प्रतिभा का प्रकाश विशेष रूप से देख पड़ता है। मुझे आश्चर्य है कि काव्य में तो आप आधुनिक बिहारी हैं, और अन्य कार्यों के लिये भी आपकी प्रतिभा सर्वतोन्मुखी है। आपको एक-न-एक बात नई सूझती है। इसी नवनवोन्मेषिका शक्तिशाली बुद्धि की कविता में प्रशंसा की गई है।"

श्रीहरिप्रसाद द्विवेदी 'श्रीहरि'—"विशेषांक की अभूतपूर्व सफलता, सर्वोत्तमता, विषय-निर्वाचन, गंभीरता, अद्वितीयता तथा संपादकीय कुशलता के निमित्त उत्साही संपादक एवं संचालक महोदय पं० दुलारेलाल भार्गव को अनेक बधाइयाँ।"

श्रीकालीचरण चटर्जी एम्० ए०, हेडमास्टर ए० बी० पी० हाईस्कूल, कासगंज—"सुधा का नयनाभिराम विशेषांक यथासमय मिला। अनिर्वचनीय प्रसन्नता से चित्त पूर्ण हो गया। निस्संकोच लेखों तथा कविताओं का निर्वाचन, चित्रों का संयोजन संपादन की चारुता प्रकट करता है। इस सफलता के कारण मुझे सबसे अधिक गौरव है, क्योंकि योग्य शिष्य की सफलता से गौरवान्वित होना गुरु के लिये स्वाभाविक है।"

श्रीपं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—"सुधा के विशेषांक की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूँ। यह सांगोपांग सुंदर है। एक-से-एक उत्तम चित्र तो उसमें हैं ही, लेखों और कविताओं का संग्रह भी उल्लेखनीय है। आपकी विशेषता आपके विशेषांकों में विशेषतया विकसित होती है, यह बड़े हर्ष की बात है। मैं आपको ऐसा प्रशंसनीय विशेषांक निकालने के लिये बधाई देता हूँ।"

श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी—'अंक सुसंपादित था, लेख-सामग्री रोचक थी।.........विशेषांक की उत्तमता के लिये बधाई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीबाबू परिपूर्णानंदजी वर्मा—"अभी तक हिंदी में जितने विशेषांक मैंने देखे हैं, उनमें यह सबसे आगे है। लेखों और चित्रों की सजावट तथा गेट-अप आदि में भी सबसे अधिक आकर्षक है। मेरी सम्मति में सुधा ही ऐसी पत्रिका है, जो नवीन विचार-प्रवाह को लेकर नवीन समय की प्रगति के साथ आगे बढ़ती है।"

श्रीमती गोपालदेवी हिंदी-प्रभाकर—"इस अल्पकाल में 'सुधा' ने प्रौढ़ा हिंदी-जननी के जीवन में वीर-रस की कविताओं और लेखों से, युक्तप्रांतीय चटक-मटक को तिलांजलि देकर पंजाबिन का-सा धीर तथा स्वस्थ कलेवर दे दिया है।

"वस्तुतः 'सुधा' ने जब से पंजाबी-हाव-भाव को अपनाया है, तभी से प्रत्येक विशेषांक विशेष सज-धज से निकलकर हिंदी-जगत् का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। यह मनोमोहक विलक्षणता दूसरी मासिक पत्रिकाओं में बहुत कम दृष्टिगोचर होती है।"

श्रीयुत धर्मेंद्रनाथ शास्त्री एम्० ए०, तर्कशिरोमणि—"हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में सुधा सर्वोच्च स्थान ग्रहण करेगी। यह पत्रिका न केवल पुरुषों तक, प्रत्युत प्रत्येक गृहदेवी के हाथों में पहुँचने योग्य है।"

पं० ज्वालादत्तजी शर्मा (भूतपूर्व 'प्रतिभा'-संपादक)—"'सुधा' को इतने थोड़े समय में ही इस स्थिति पर पहुँचा देना आपका ही हिस्सा है। लेख सुंदर, छपाई उत्तम और चित्र बढ़िया, सभी बातें अच्छी हैं। एक निवेदन है, इसे 'माधुरी' की तरह मोटी न होने दीजिए, छोटी और बिचैत बनाइएगा।"

स्व० प्रोफ़ेसर रामदास गौड़ एम्० ए०—"सुधा के रूप-रंग के लिये, उसकी विषयावली के लिये, उसकी कला-रसिकता के लिये, उसके लेख-लालित्य के लिये, उसकी अनुपम छपाई-सफ़ाई के लिये और सबमें मुख्य आपकी सुरुचि और प्रतिभा के लिये आपको कितनी बधाइयाँ दूँ! हिंदी-मैगज़ीन निकालने में आपकी मौलिकता तो माधुरी में ही थी, परंतु सुधा में तो सुधार की आपने गुंजाइश ही नहीं छोड़ी। इस सुधा में केवल माधुरी ही नहीं है, लावण्य भी है, प्रभा भी है, स्वाद है, और तोष भी है।"

रायबहादुर पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०—"यह आपकी बड़ी हिम्मत और बहादुरी का काम है कि इतनी शीघ्रता से ऐसी बढ़िया पत्रिका, इस ख़ूबी के साथ, अपने ही प्रेस से अथच अपने ही व्यय से निकाल दी। हम इस तत्परता के लिये आपको बधाई देते हैं। पत्रिका बहुत बढ़िया पाई गई।"

पं० रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०—"सुधा का सौंदर्य, उसकी काट-छाँट और सज-धज, सब कुछ निराले ही हैं।"

श्रीमुरारीशरण मांगलिक बी० ए०—"आपका प्रयास कई प्रकार से विलक्षण ही है। हिंदी की उन्नति के इतिहास में आपका और आपकी सुधा का स्थान बहुत ही असाधारण रहेगा।"

श्रीयुत के० ए० सुब्रह्मण्य अय्यर, लखनऊ-युनिवर्सिटी—

"I am glad to find that Hindi Journalism is making such rapid progress. It is a matter for congratulation for Lucknow that some of the leading Hindi monthlies like the SUDHA are published here."

पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'—"'सुधा' सब प्रकार से उत्तम है। संपादन के संबंध में कुछ कहना व्यर्थ है।"

प्रो० धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, डी० लिट्० (हिंदी-अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय)—"जैसी आशा थी, 'सुधा' वैसी ही है—लेख छँटे हुए, कविताएँ चुनी हुई, चित्र सुंदर तथा छपाई सुथरी। 'सुधा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पान करके साधारण माधुरी से तृप्त होना कठिन है।"

प्रोफ़ेसर श्रीरामकुमार वर्मा एम्० ए०—"सुधा के शृंगार में आपका चातुर्य स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित है। साहित्य की अलभ्य सामग्री की पूर्ति सुधा की विशेषता है। विश्वास है, यह सुधा-धारा हिंदी का कल्याण करेगी।"

पं० भूपनारायण दीक्षित एम्० ए०, एल० टी०—"क्या चित्र, क्या लेख, क्या कविताएँ—सभी कुछ सुंदर हैं। आपने हिंदी-संसार में जो काम किया है, वह और किसी ने नहीं किया।"

श्रीयुत सुदर्शन—"हिंदी की जो अच्छी-से-अच्छी पत्रिकाएँ हैं, सुधा उनसे भी अच्छी है।"

डॉक्टर बाबूराम सक्सेना एम्० ए० (संस्कृत-प्रोफ़ेसर, प्रयाग-विश्वविद्यालय)—"लेखों और कविताओं का चुनाव अच्छा हुआ है। उसे पढ़कर मुझे संस्कृत-कवि का यह श्लोक स्मरण हो आया—

कान्त्यच्छामः सुराः स्वर्गे निवसामो वयं भुवि ;
किंवा काव्यरसः स्वादुः किंवा स्वादीयसी सुधा।"

बाबू अवधकिशोरसहाय वर्मा 'बाण' एम्० ए०, बी० एड्०—

"सरसता सुषमा सरसावती,
मधुरिमामय मानसमोदिनी ;
बिबिधता बिधि से बिसतारती,
सकल साख्न-सार-सिरोमनी ॥ १ ॥
मथन साहित-सागर से मिली,
अखिल लोकन प्रानपसारिनी ;
जनम नूतन साहित को मिला,
लखनऊ-बीच जो प्रकटी 'सुधा' ॥ २ ॥"

पं० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए० (संस्कृताध्यापक, लखनऊ-विश्वविद्यालय)—"इसमें संदेह नहीं कि इस दिव्य साहित्य-सुधा से सहृदय रसिक असीम आनंद का अनुभव करेंगे। छपाई-सफ़ाई और चित्र तो मनोमोहक हैं ही, लेख-माला भी उच्च कोटि की है। संपादन में भी आपने अपना अच्छा कौशल दिखाया है। यह सर्वथा आपके अनुरूप है। वास्तव में इस पत्रिका से हिंदी का गौरव और बढ़ेगा। हिंदी में तो उच्च कोटि की पत्रिकाएँ अंगुल-परिच्छेद्य ही हैं, बँगला, मराठी और गुजराती-पत्रिकाएँ भी इसे देखकर लज्जावनत हो सकेंगी। इतनी सर्वांग-सुंदर सुधा का प्रकाशन करके आपने यथार्थ में हिंदी-संसार का बड़ा उपकार किया है। इसके लिये हम आपका हृदय से अभिनंदन करते हैं। हमें आशा है, हिंदी-संसार इसे सादर ग्रहण करेगा, और इस सर्वोच्च मासिक पत्रिका का प्रचार भी शीघ्र ही सब पत्रिकाओं से अधिक हो जायगा।"

बाबू शिवनंदनसहायजी—"आप लोगों ने 'सुधा' प्रकट करके हिंदी-साहित्य-वसुधा में सचमुच सुधा सुलभ कर दिखलाई। लेख और चित्रादि, सभी ललित और मनोरम हैं।"

स्व० पं० नाथूरामशंकर शर्मा 'शंकर'—

"अभिमान-महोदधि से कढ़िए,
उठ गौरव के गिरि पै चढ़िए ;
प्रिय पाठ समुन्नति के पढ़िए,
बन सेवक शंकर के बढ़िए।
समझे न सुधा जनता अबुधा ;
बरसे बसुधा पर सिद्धि-सुधा।"

पं० लक्ष्मीधरजी वाजपेयी—"'सुधा' शीघ्र ही बहुत उन्नति कर जायगी, और अन्य सब मासिक पत्रों को पीछे छोड़ती हुई आगे निकल जायगी।"

बाबू संतराम बी० ए०—"आपको बड़े-बड़े विद्वानों से लेख लिखवाने का ढंग ख़ूब आता है।....जो ख़ूबियाँ दूसरी पत्रिकाओं में रहती हैं, वे सब तो इसमें हैं ही, परंतु 'चित्रकला' और 'समाज-सुधार'-नामक स्तंभ बिलकुल नए हैं।"

श्रीयुत राजेश्वरीप्रसादसिंह—"Both in matter and form, your magazine excells all its contemporaries."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० डॉक्टर श्यामाचरण एम्० ए०, एम्० एस्-सी० (लंदन)—"I am sure the *Sudha* will occupy premier position in the realm of literary periodicals."

श्रीवियोगी हरि—"स्वर्गीय सुधा पान करनेवाले तो, सुना है, तृप्त हो जाते हैं, पर आपकी इस साहित्य-सुधा से चिरंतन परितृप्ति न हुई, न होगी। विश्वास है, सुधा हिंदी-वाटिका की परिम्लान लताओं को जीवन प्रदान करेगी।"

प्रो० महेंद्रप्रताप शास्त्री एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०, एम्० आर० ए० एस्०—"आपकी पत्रिका हिंदी में अपने ढंग की अद्वितीय है।"

पं० लज्जाराम मेहता—"वास्तव में श्रीयुत दुलारेलालजी भार्गव ने हिंदी-संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है। इनके सफल उद्योग से गंगा-पुस्तकमाला ने उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित करके ख़ूब वाहवाही लूटी है। 'सुधा' का रूप-रंग अच्छा, काग़ज़-छपाई अच्छी और चित्रों की योजना अच्छी है। लेखों का संकलन भी बहुत अच्छा है।"

श्रीयुत जहूरबख़्श हिंदी-कोविद—"इसमें रत्ती-भर भी संदेह नहीं कि 'सुधा' एक बार फिर हिंदी-संसार में खलबली मचा देगी. और उसके जीवन को अमरता प्रदान करेगी। (पुनः)...इसमें संदेह नहीं कि आपका प्रयास प्रशंसनीय है, और आप हिंदी-संसार में क्रांति उपस्थित कर रहे हैं। आशा है, सरस, मुहाविरेदार और तत्त्व-पूर्ण गद्य के अच्छे नमूने 'सुधा' पेश कर सकेगी...। आपने तो ग़ज़ब ही कर दिया। क्या सजावट, क्या चित्र, क्या छपाई-सफ़ाई, क्या लेखों का चयन, सभी दृष्टियों से 'सुधा' को आपने अद्वितीय रूप दे दिया है; और ऊपर से इतना कम मूल्य! सस्तेपन की हद हो गई!! जो 'सुधा' को देखता है, वही उसकी प्रशंसा करता है!!!"

एक सुधा-प्रेमी—

"नव्य कलेवर, नूतन भाव,
नवीनता के सँग डोलन लागी;
ज्ञानिन के हिय ज्ञान-भँडार
प्रवीनता के पट खोलन लागी।
रूप दुलार सयानप सौगुनो
तोल अतोल सुतोलन लागी;
जीवन-मूरि 'सुधा' प्रगटी
मधुरे कस माधुरी बोलन लागी।"

श्रीसोहनलाल द्विवेदी—

"स्रोत सुधा को बह्यो उमड्यो
सो सुधा ही सुधा बसुधा पै सुहावै;
जानि परै सिगरे जग को
दइवे की सुधा या सुधा धुकि धावै।
नैनन पायो सुधा अरु नैनन
मानस हू त्यों सुधा में नहावै;
पै अब या मन होत बिथा
न कहूँ तृसनाहू सुधा गहि लावै।
'सुधा' भली यह सुधा तैं, या लीन्ह्यौ निरधारि;
तेहि सतजुग अमरन लह्यौ, यहि कलिजुग नर-नारि।"

हास्यरसावतार श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०—"...विचार-पूर्ण लेख-रूपी बात सुनकर दिमाग़ दंग हो गया। भाव-पूर्ण दिल की कहानियाँ सुनीं, तो लोट-पोट हो गया। संगीत की झनकार सुनकर मस्ती छा गई। विज्ञान की बातें पूछीं, तो दाँतों के नीचे उँगली दबाकर रह गया।"

श्रीयुत जी० एस्० पथिक—"यशस्वी संपादक पं० दुलारेलालजी भार्गव ने सुधा को प्रकाशित कर हिंदी-साहित्य में आश्चर्यजनक जागृति पैदा कर दी है।...सुधा के प्रकाशन से अन्य मासिक पत्रिकाओं को उन्नति करने का अवसर मिलेगा।...समाज, राजनीति और साहित्य के स्तंभों ने अन्य पत्रिकाओं से इसे आगे बढ़ा दिया है। छपाई-सफ़ाई और चित्रों का चुनाव अत्युत्तम है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० गोकुलचंद्र शर्मा—

"रंग-बिरंगी सज-धजवाली सुधा सामने आई ;
सुभग मोहिनी-मंडित मुख पर पाई अति रुचिराई।
देखे लेख सुधा-रस-भीने, रोचक, ललित छपाई ;
गंगा-गृह से वह वसुधा पर सुलभ सुधा सरसाई।
चित्र चारु, संपादन सुंदर, व्यंग्य-विनोद निहारे ;
गल्प, गँभीर लेख, कविता त्यों सब ही 'रूप-दुलारे'।
नित साहित्य-सुधा सरसावे, हिंदी के गुण गावे ;
एकभावता की जननी बन 'सुधा' श्रेष्ठ पद पावे।"

श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र'—

"प्रथम मधुर मुसकान माधुरी में प्रकटाई ;
सत्साहित्य - विधान, ज्ञान की छटा दिखाई।
मोहित हुए सुजान, शान हिंदी ने पाई ;
पाए दूना मान, सुधा की धार बहाई।
'रूप-दुलारे' की कला भरती है आह्लाद को ;
कौन न चाहेगा भला, सुखद सुधा के स्वाद को ?"

डॉक्टर राय राजेश्वरबली—"It contains a good many illustrations some of which are beautifully coloured. The articles cover a very wide range of subjects and cater for different tastes."

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी—(संपादक 'विशाल भारत'—"हिंदी के वर्तमान मासिक पत्रों की उन्नति में श्रीदुलारेलालजी भार्गव का बड़ा हाथ है। उन्होंने हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में अपने ऊँचे स्टैंडर्ड द्वारा एक अच्छी स्पर्द्धा उत्पन्न कर दी है, और यह उसी स्पर्द्धा का परिणाम है कि हम लोगों को पहले से उत्तमोत्तम लेख पढ़ने के लिये मिलते हैं। ......'सुधा' बहुत अच्छी निकली है। आशा है, हिंदी-जनता इसे ख़ूब अपनावेगी, और शीघ्र ही इसकी ग्राहक-संख्या सहस्रों पर पहुँच जायगी।"

रायबहादुर सर सीताराम बी० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, प्रेसिडेंट लेजिस्लेटिव-कौंसिल, यू० पी०—"The printing and the general get-up are excellent."

श्रीयुत 'बिसमिल' इलाहाबादी—

"लाजवाब और ख़ुशनुमा निकली,
हर तरफ़ शोर है, बला निकली !
ख़ूब सज-धज के साथ ऐ 'बिसमिल'
लखनऊ से नई 'सुधा' निकली।"

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०—"एक शब्द में 'सुधा' हिंदी-जगत् की रानी है। जितना उसका बाह्य कलेवर चित्ताकर्षक है, उतना ही उसका अंतरंग भी उत्कृष्ट विचारों से, मनोहर भावों से और उत्तुंग उमंगों से मनोरम रहता है। सबसे गौरव की बात जो 'सुधा' के अतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं में बहुत कम मिलती है, वह है मौलिकता।"

प्रोफ़ेसर रामप्रताप शास्त्री (नागपुर-विश्वविद्यालय)—"The pages of *Sudha* are steeped in the waters flowing from the fountain of intellectual youth."

श्रीयुत डॉक्टर अवध उपाध्याय—"'सुधा' में कुशल संपादक की मँजी हुई कूँची का प्रयोग प्रत्येक पृष्ठ में पाया जाता है। 'सुधा' से हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि हुई है और हो रही है। आशा है, 'सुधा' इसी प्रकार अपने सुंदर चित्रों, मनोहर और पांडित्य-पूर्ण लेखों तथा सजधज से हिंदी की सेवा करती रहेगी।"

श्रीभवानीदयाल संन्यासी (दक्षिण-आफ्रिका-प्रवासी)—"विविध विषय-विभूषित 'सुधा' वास्तव में हिंदी-साहित्य की मुकुट-मणि है। 'सुधा' वह अद्वितीय आदरणीय वस्तु है, जिस पर राष्ट्रभाषा यथेष्ट अभिमान कर सकती है। वास्तव में 'सुधा' का पवित्र, पुण्यमय और पावन रूप निहारकर हृदय-वल्लरियाँ फड़क उठीं, और मुँह से सहसा यह उद्गार निकल पड़ा कि हिंदी-संसार में कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा प्राणी होगा, जो 'सुधा' की विलक्षण प्रतिभा को स्वीकार न करेगा। प्रत्येक विषय पर चुभती हुई और मर्मस्पर्शी विवेचना। महत्त्व-पूर्ण विचारों का संकलन। गंभीर और गवेषणा-पूर्ण टिप्पणियाँ। मनोमोहक और चित्ताकर्षक अनेक चित्र। छपाई-सफ़ाई में अँगरेज़ी-पत्रिकाओं की टक्कर।"

रायबहादुर पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा—"साहित्य की दृष्टि से सुधा का विशेषांक सर्वोत्तम है।"

रायबहादुर डॉक्टर जी० एन्० चक्रवर्ती डी० एस्-सी०, डी० लिट०, एल्-एल्० बी०, आई० एस्० ओ०—"A cursory glance has impressed me very favourably alike with regard to the reading matter and to the get-up of the journal. Some of the pictures given are excellent both in conception and in execution."

श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा बी० ए०, एल् एल्० बी०—"इतने उच्च कोटि के लेखों को देखकर यह आशा हो रही है कि निकट भविष्य में हिंदी के पत्र भी उच्च कोटि के अंतरराष्ट्रीय पत्रों का मुक़ाबला कर सकेंगे।"

श्रीमती महादेवी वर्मा एम्० ए०—"किसी का नाम चुरा लेना तो सरल है, किंतु किसी के गुण चुरा लेना अतीव कठिन। आपकी 'सुधा' ने सुधा का नाम ही नहीं, गुण भी अपना लिए हैं। उसका जैसा नाम है, वैसा ही भव्य वेश है, और वैसा ही मधुर स्वाद है। मैं सदैव हृदय से उसकी उन्नति चाहती रहती हूँ।"

पं० सूर्यनारायण चतुर्वेदी 'इंदु'—

"माधुरी की माधुरी अधूरी वह चातुरी भी,
वसुधा सुधा की सदा सदा रट लायो है;
सर्वदा तथैव कथा प्रमदा पुरुष बीच,
नवधा सुभक्ति सुधा हृदय सुछायो है।
वंशीधर गदाधर कृष्ण की अनूप छवि,
मुख-पृष्ठ छाई सुख-शांति बरसायो है;
सर्वथा अपूर्व पत्र-पत्रिका में आज सुधा
'इंदु' वसुधा में सर्वश्रेष्ठ पद पायो है।"

श्रीयुत सियारामशरण गुप्त—"आपका अध्यवसाय, आपका साहस और आपकी प्रवीणता बार-बार बड़ाई करने योग्य है। छपाई-सफ़ाई ऐसी उत्तम है कि जिसके लिये आप ही नहीं, हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र गर्व कर सकते हैं।.........आपने 'सुधा' को सुलभ करने के साथ-साथ और भी मनोरम कर दिया है। हिंदी के वर्तमान मासिक साहित्य में आपने एक नवीन क्रांति उपस्थित की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन तीनो बातों में

१ खर्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर

बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी

पर

आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी।

क्यों ?

इसलिये कि १—इसका खर्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है।
२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है।
३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए।

स्वदेशी की एक नई योजना
घातक दुर्घटना-पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए !

एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712.

वह राह दिखाती है

मसल मशहूर है कि स्त्री ही गृहस्थी को बनाती है। चाय पीकर राह दिखाना तो उसका स्वाभाविक महत् कार्य है, क्योंकि चाय तो वास्तव में स्त्री के अधिकार की ही चीज़ है। वही इसे बनाती और पिलाती है। स्त्री का हाथ लगकर इस पारिवारिक पेय में और भी ज्यादा मज़ा आ जाता है।

चाय तैयार करनेका तरीक़ा

ताज़ा पानी खौलाइये। साफ़ बर्तन ज़रा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येक के लिये एक और एक चम्मच अधिक बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर ढाल दीजिये। पाँच मिनिटों तक चाय को सीझने दीजिये, इसके बाद प्यालों में ढालकर दूध और चीनी मिलाइये।

एकमात्र पारिवारिक पेय—भारतीय चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित IK 94

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

चैत्र १९९६

सुधा

April 1939

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का मनोरंजन करनेवाला

बाल-विनोद

[छठे वर्ष का प्रथम अंक वसंतांक के रूप में निकला है ।]

मार्च का अंक होलिकांक है !

ग्राहक बनकर दोनो विशेषांक लें !!

इसमें क्या है ?—सुनिए—

१. मुख-पृष्ठ पर बाल-कृष्ण की नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति ।
२. प्रथम पृष्ठ पर होलीगान-नामक बढ़िया, तिरंगा चित्र ।
३. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४८ पृष्ठों का मैटर ।
४. मजेदार बालकोपयोगी कहानियाँ और शिक्षाप्रद हास्यरस की कविताएँ ।
५. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन ।
६. महात्मा गांधीजी की अनोखी बातें ।
७. ३० इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो उठेंगे ।

वार्षिक मूल्य २॥)

आप अपने बच्चों के लिये इसे अवश्य मँगाइए !

हमारा दावा है कि बच्चों के लिये ऐसा सुंदर और अनूठा पत्र और कोई नहीं है ।

इसके संपादक हैं

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

ऑर्डर भेजने में देर मत कीजिए !

पता—मैनेजर, बाल-विनोद, कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ लाभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अर्बों-खर्बों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बे हिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्टासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३). यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

बग़ैर हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका, नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायापलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा-इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-शुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूंके। टंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल बर्क़ी शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर शुद्ध १ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रवधू जलकर खाक हो जाय, तो हवा देकर रख दें। बस, अपूर्व शक्तिदाता महावाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्रगुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामबिहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आएगा। २६ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन-संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च-सहित ५।) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. बिछुरन (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल	१६३
२. दो गीत (कविता)—[लेखक, श्रीबचनेश	१६४
३. हमारा रास्ता—[लेखक, श्रीयुत शचींद्रनाथ सान्याल	१६५
४. जेकोस्लोवेकिया (सचित्र, भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत एम्० पी० केदार ...	२०१
५. दीदी का मंदिर (कहानी)—[लेखिका, स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी' ...	२१२
६. प्रकृति-पुरुष (कविता)—[लेखक, श्रीलक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' बी० ए०, साहित्य-रत्न	२२२

हज़ारों निकम्मों को जवाँमर्द बनानेवाला

मदनमस्त-तिला (रजिस्टर्ड)

युवावस्था की भूलों के कारण उत्पन्न होनेवाली गुप्तेंद्रिय की सुस्ती, ढीलापन, नसों की हीनता तथा बाँकापन को दूर कर इंद्रिय को दृढ़ बनाता है। परीक्षा अवश्य कीजिए। मूल्य बड़ी शीशी २), छोटी शीशी १); डाक-ख़र्च अलग। 'जीवन-सुधार'-नामक पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

पता—गो० पं० रामलाल वैद्यशास्त्री
जबलपुर (सी० पी०)

पें लि के न **Pelican**

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोली जा

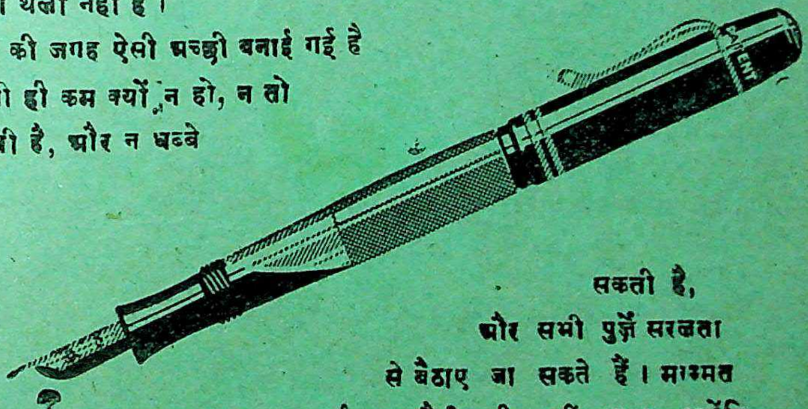

सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है। कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है। साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है। स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—**पा र द र्श क**

गौथेर वागनेर हानोवर

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. आधुनिक हिंदी के निर्माता—[लेखक, श्रीआत्मानंद मिश्र एम्० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०, विशारद २२५

८. बिहार की एक विभूति (सचित्र, जीवन-चरित)—[लेखक, श्रीरामचंद्र त्रिवेदी २३२

९. प्रेम का सपना (कहानी)—[लेखक, कॉम० लतीफ़ुद्दीनअहमद साहब अकबराबादी २३७

१०. कामना (कविता)—[लेखक, श्रीयुत बालकृष्ण राव आई० सी० एस्० ... २४३

आपका भविष्य

संवत् १९९६ का भविष्य-फल, व्यापार की तेज़ी-मंदी, लाभ-ख़र्च, विवाह, उपनयन के मुहूर्त तथा अन्य ज्योतिष-विषयों से भरपूर

पंचांग—बिलकुल मुफ़्त !

अपने गाँव के सिर्फ़ पाँच सज्जनों के पूरे पते भेजकर मुफ़्त मँगवाइए ।

मदनमंजरी फ़ार्मेसी, जामनगर

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ासफ़ोरस क्रीम

गुह्यांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख़्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है । ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है । न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का ख़याल । अधिक प्रशंसा व्यर्थ । यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी । मूल्य केवल २); डाक-महसूल ।=)

पता—मैनेजर ग्लोब-फ़ार्मेसी, ग्लोब-बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

ख़िज़ाब छोड़ो

इस तेल से पका बाल जड़ से काला पैदा होकर यदि स्थायी काला न रहे, तो दूना दाम वापस की शर्त । इसकी सत्यता सैकड़ों प्रशंसा-पत्रों से प्रमाणित हो चुकी है । बाल कम पका है, तो ५) ; चौथाई से अधिक पका है, तो ७) रु० का तेल मँगा लें ।

पता—हजरा ऐंड को०, पो० बिहार नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

११. महात्मा गांधी और वर्ण-व्यवस्था—[मंत्री, भारतवर्षीय जाति-पाँति-तोड़क मनुष्य-गणना-संघ, लाहौर २४३
१२. हमारी शिक्षा का मूल्य—[लेखिका, श्रीमती कुमुद्वती झा बी० ए० ... २४४
१३. शिक्षा (व्यंग्य-चित्र) २४८
१४. कला (व्यंग्य-चित्र) २४९
१५. राजा, रानी, संतान और........! (कहानी)—[लेखक, चकल्लस-संपादक श्रीयुत अमृतलाल नागर ... २५०
१६. साहित्य-समीक्षा में नवीन आदर्श (आलोचना)—[लेखक, श्रीउत्तमचंद्र श्रीवास्तव एम्० ए० ... ... २५४
१७. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत पं० जगन्नाथ-प्रसाद चतुर्वेदी, श्रीयुत मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट', श्रीयुत राजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०,

अमृतांजन
सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड
बंबई, कलकत्ता, मदरास
पो० बॉक्स नं० ६८२५

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।
एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।
किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।
नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।
मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

५५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिदायक सिद्ध यंत्र जिस सुंदरी को आप चाहते हैं, वह पत्थरहृदया क्यों न हो, इस शक्तिशाली यंत्र द्वारा एक क्षण में आपके पास आ जायगी। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबा २)
लक्ष्मी-यंत्र यह व्यवसाय में उन्नति, मुक़दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में पास, नवग्रहों की शांति और सौभाग्यवान् बनाता है। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबे का २)। झूठा साबित करने पर ५००) इनाम!
श्रीमहामुनि-आश्रम नं० २१० पोस्ट कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०, कुमारी स्नेहलता अष्ठाना 'मधु', श्रीयुत विद्याधरजी चतुर्वेदी बी० ए०, प्रधान मंत्री, श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी', श्रीउमा सिनहा, श्रीयुत स्वर्णकुमार, श्रीयुत मैनेजर कृष्ण-कार्यालय, चौमूँ, जयपुर, श्रीयुत गुलाबराय एम्० ए० और मि० जे० पी० मिश्र एम्० ए० ... ... २५८

१८. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत व्रजमोहन तिवारी एम्० ए०, श्रीयुत 'ग०' और श्रीयुत 'उमेश' २७१

१९. कुसुम २७५

२०. धारा २७६

क्षमा प्रार्थना

"बिना देखे, बिना पढ़े, यूं ही अब तक 'बेकार, इश्तहारी' कह कर आप की पुस्तक की हँसी उड़ाता रहा। इसके लिए मैं बहुत ही लज्जित हूँ। मैं समझता था कि 'विवाहित आनन्द' में कोकशास्त्रों की व्यर्थ बातों और गन्दी तस्वीरों के सिवाय क्या होगा। परन्तु इसे पढ़कर मुझे इतना लाभ हुआ कि कह नहीं सकता। ईश्वर के लिए मुझे क्षमा करदें। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ कि मैंने चांद पर थूका।"

शेख ...... अली—मुहल्ला ...... अमृतसर।

ले०—कविराज हरनाम दास बी. ए., लाहौर।

नपुंसकता के लिए जर्मनी क्रीम

यह उन पुरुषों के लये है जो किसी वजह से अपना यौवन खो चुके हों और अपने विवाहित जीवन का जी भर कर आनन्द उठाना चाहते हों, तो वे इस क्रीम का सेवन करें। इसके सेवन से आवश्यक समय पर भी शरमिन्दा होने का समय नहीं आयेगा। एक बार अवश्य प्रयोग में लाएं। मूल्य केवल २) दो रुपया।

स्त्रियों के लिए जर्मनी क्रीम—यह क्रीम उन स्त्रियों के लिये आवश्यक है जो किसी भयानक बीमारी की वजह से अपने विवाहित जीवन को आनन्दित न बना सकती हों, जिनके लिये गृहस्थ का जीवन दुखमय हो, जिनके अपने स्वामी के साथ सदैव लड़ाई झगड़े होते हों। बस इस क्रीम को एक सप्ताह सेवन करें। इसके सेवन से बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री भी युवती के समान मालूम होगी। मूल्य १)

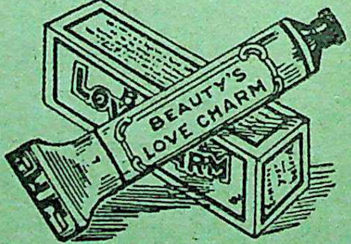

गर्भ निरोधक रबड़ की थैली—अधिक संतान से बचें, आपनी प्यारी स्त्री को शीघ्र ही कुरूप और वृद्ध न होने के लिये इन थैलियों का सेवन करें। आतशक और सुजाक आदि भयानक बीमारियों से आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगी।

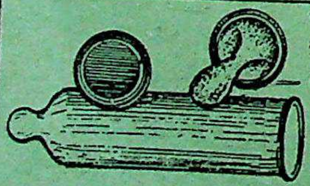

पतली रबड़ की थैली—जो केवल एक बार ही सेवन हो सके मूल्य १) रु० प्रति दर्जन।

मोटी रबड़ की थैली—जो कई बार सेवन हो सके और भारतवर्ष की गर्मी में पांच वर्ष तक खराब न हो। मूल्य केवल २॥) प्रति दर्जन।

कामा को०, : : : लाहौर रोड. : : : अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. शैल-पुत्री—[चित्रकार, श्रीयुत एम्० एन्० ठकरू १६३

२. शकुंतला की विदा—[श्रीदुलारेलाल भार्गव की चित्रशाला से २४४

(ख) दुरंगे

३. मैनपुरी-कवि-सम्मेलन २६४

४. राजमित्र, राजरत्न स्व० श्रीआत्मारामजी २६५

(ग) व्यंग्य

५. शिक्षा—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव २४८

६. कला—[चित्रकार, श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव २४६

(घ) सादे

७-१८. ज़ेकोस्लोवेकिया-संबंधी १२ चित्र २०२-२१०

पागलपन

तथा मूर्च्छा-रोग की दवा

यह दवा नहीं, जंगली जड़ी है। यदि आप अनेकों दवा कराकर निराश हो चुके हैं, तो भी इसकी परीक्षा करें। ८-१० ख़ूराक से पूरा लाभ मालूम होगा। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस।

४० ख़ूराक पूरी मात्रा मूल्य ५) रु०, २० मात्रा ३) रु०, १० मात्रा २) रु०। पो० पै० माफ़।

प्राप्ति-स्थान—

बिहार-एजेंसी ऐंड ट्रेडिंग हाउस

कदमकुआँ, पटना

१० घड़ियाँ सिर्फ़ ३॥≈) में

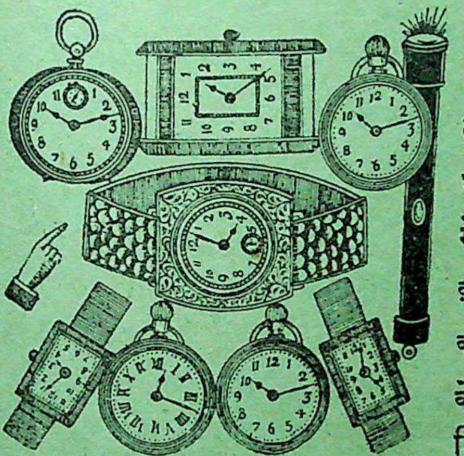

सात डमी रिस्टवाच, दो डमी पाकिट वाच और एक अदद मजबूत मशीनरी का सच्चा वक्त देनेवाला जर्मनी टाइमपीस चाबी ३० घंटा, गारंटी १२ साल, ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर विलायत से बड़ी भारी संख्या में मँगवाई हैं। सिर्फ़ दस हज़ार घड़ियाँ इस रियायती क़ीमत पर बेचने का फ़ैसला किया है। इसलिये जल्दी करें, वरना यह मौक़ा हाथ से निकल जायगा। घड़ियों के साथ एक फ़ौंटेनपेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब, एक असली ठंडी ऐनक, एक ख़ूबसूरत मोतियों का हार मुफ़्त दिया जायगा। महसूल डाक व पैकिंग अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस।

मिलने का पता—

जर्मन वाच कंपनी, पोस्ट-बक्स नं० २७, (S. M. L.) अमृतसर

AMRITSAR (India.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ		पृष्ठ
१९. स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी' ...	२१२	२३. श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०	२६२
२०. पं० गिरीशजी तिवारी	२३३	२४. श्रीमहावीरप्रसादसिंहजी	२८१
२१. श्रीमती कुमुद्वती झा बी० ए० ...	२४४	२५. स्व० श्रीयुत आत्मारामजी राज्यरत्न ...	२८२
२२. स्व० आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी	२५६	२६. श्रीआनंदप्रियजी	२८३
		२७. श्रीशांतिप्रियजी	२८४

श्वेत कुष्ठ की असली फ़क़ीरी जड़ी

इस जड़ी के एक रोज़ के तीन ही बार के लेप से सफ़ेदी जड़ से आराम न हो, तो दाम वापस। इतमीनान न हो, तो एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। क़ीमत ३)

दमा-रोग की दवा—दाम ५)

स्वप्न-दोष की फ़क़ीरी जड़ी—दाम २)

गलित कुष्ठ या सुनबहरी—क़ीमत ७)

पता—वैद्यराज पंडित मथुरा पाठक

पो० मिथिला-मेडिकल हाल, नं० ५५५

दरभंगा

जीवन, जागृति तथा कर्मण्यता की संदेश-वाहिका उच्च कोटि की सचित्र मासिक

संचालक
जे० एल्० फड़ीकर

"महिला"

संपादिका
सीतादेवी

वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति का ।=)

विचार-पूर्ण गंभीर लेख, प्राण-संचारकारी कविताएँ, निर्भीक अग्र लेख और टिप्पणियाँ, मनोरंजक कहानियाँ, राष्ट्रीय विषयों की चर्चा, घरेलू नुस्ख़े, हास-परिहास की बातें, तिरंगा कवर, बढ़िया काग़ज़, उत्तम छपाई, आकर्षक गेट-अप तथा चित्ताकर्षक आकर्षण।

हमारी बातों पर विश्वास मत कीजिए, देखिए ट्रिब्यून क्या कहता है?—"महिला भारत की विद्रोही महिलाओं की मुख-पत्रिका है। इसके प्रकाशन का उद्देश्य ही है पुरुष द्वारा नारी पर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध बग़ावत करना, यह अधिकारों की समानता तथा महिलाओं को × × × अधिकार दिलाने की कट्टर समर्थिका है। × × × महिलाओं से संबंध रखनेवाली बातों के अतिरिक्त 'महिला' में सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा स्वास्थ्य-संबंधी विषयों पर दिलचस्प लेख रहते हैं।"

यदि आप मातृ-जाति की उन्नति के समर्थक हैं, तो आज ही ४) भेजकर ग्राहक बन जाइए; 'महिला' आपको नवीन युग का नया संदेश सुनाएगी।

नोट—नमूने के लिये ।=) का टिकट भेजना आवश्यक है। मुफ़्त नहीं भेजा जाता।

१३२।१, हरिसन रोड
कलकत्ता

जनरल मैनेजर
"महिला"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

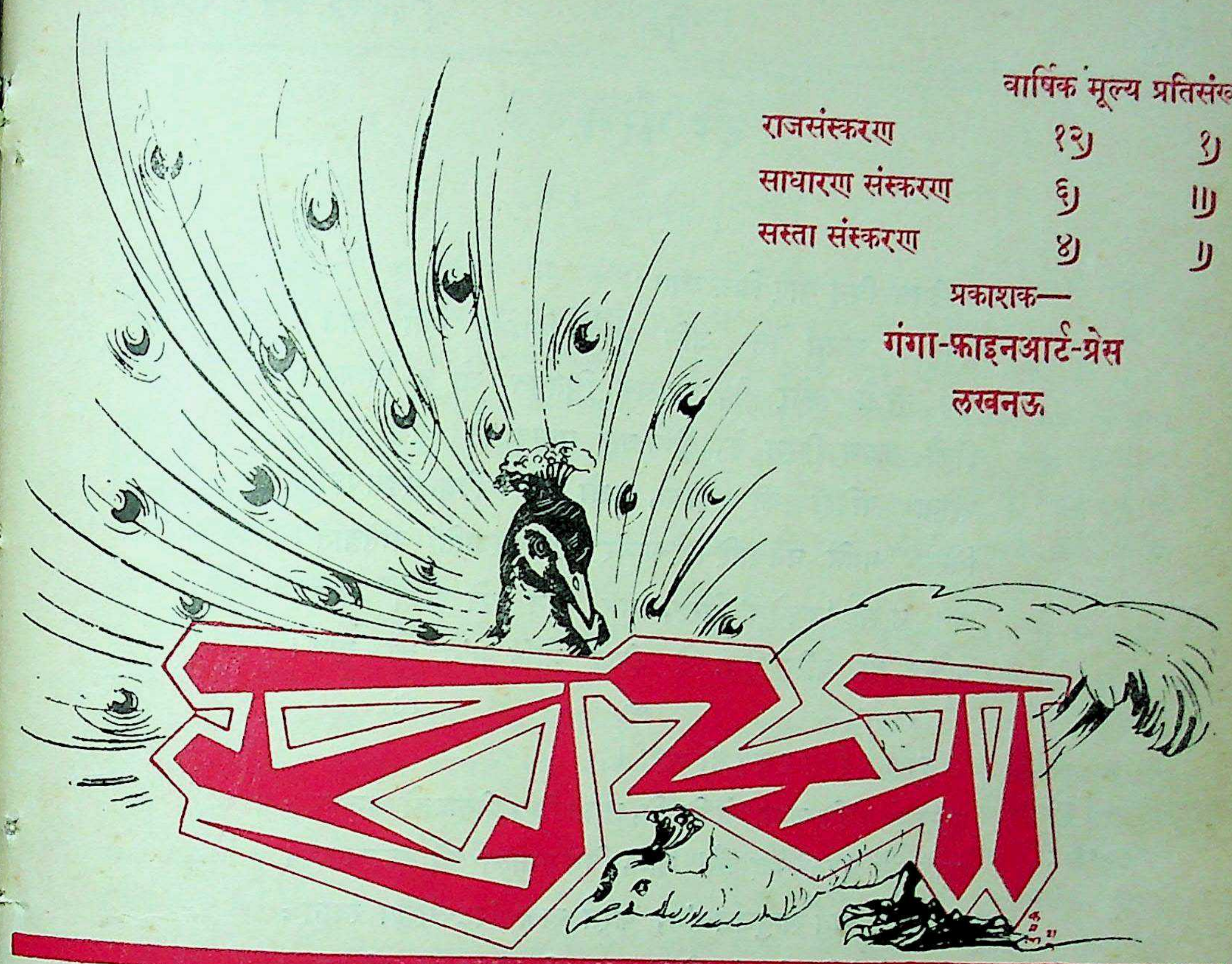

वर्ष १२ } चैत्र, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)— { संख्या ३
खंड २ } एप्रिल, १९३९ { पूर्ण संख्या १५३

बिछुरन

[श्रीदुलारेलाल]

संदेसन-पठवन, लिखन, मिलन कहा मम प्रान,
मन दोउन के इक जवै, बिछुरन मिलन समान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो गीत

[श्रीवचनेश]

प्रीतम बिनु पाए जिय जात ;
अब की जनम देत जनि भूलौ विधना, एती बात।
चख दीजौ चकोर के, अपलक चितवत जो न अघात ;
दीजौ स्रवन हिरन के, जिन-बस प्रानहु की सुधि जात।
रसना पपिहा की दीजौ, जो रटै पिया दिन-रात ;
निरस मानि घन-सरि-सर-सागर एक स्वाति पतियात।
छन न सहै 'बचनेस' बिरह, मन मीन को दीजौ तात ;
पावत ही बलि होय, सो दीजौ मोहिं पतंग को गात।

❀ ❀ ❀

दुःख है मिलत बड़े ही भाग ।
दुःख सों होति जगत सों बिरति, जगत जिय प्रीतम को अनुराग ;
दुःख सों छूटत मद औ' मान, विषय-माला को टूटत ताग।
दुःख में होत साधुजन-संग, करत खल-लंपट-लोलुप त्याग ;
दुःख सों देखि दीन 'बचनेस' गहत हरि जीवन-रथ की बाग।

शबरी

[व्रजभाषा-काव्य]

लेखक, श्रीवचनेश । तपस्विनी शबरी श्रीरामचंद्रजी की अनन्य उपासिका थी। श्रीरामचंद्रजी ने उसका आतिथ्य स्वीकृत किया, और उसे मुक्ति दी। इसी रोचक कथा का काव्य-रूप में वर्णन किया गया है। व्रजभाषा-प्रेमियों को तो यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥), १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रास्ता

[श्रीयुत शचींद्रनाथ सान्याल]

आज हम लोगों का परम सौभाग्य है कि हमने एक ऐसे महायुगसंधि के माहेंद्रक्षण में जन्म ग्रहण किया है, जब संसार-भर में विप्लव के प्रचंड संहार से समग्र मानव-समाज विपर्यस्त और विध्वस्त हो रहा है। नव-जन्म की पूर्व-सूचना-स्वरूप मर्म-व्यथा से आज समग्र मानव-संसार पीड़ित है। श्रेणी-संघर्ष, राष्ट्र-संघर्ष और आदर्शों के संघर्ष से आज जो आर्तनाद की, हृदय-विदारक, मर्मभेदी चीत्कार की, प्रचंड ध्वनि चारो दिशाओं में गुंजरित हो उठी है, उसके आघात ने भारतवर्ष के युवकों को कितना चंचल किया है!

लगभग हज़ार साल पहले भारतवर्ष ने पराधीनता के पिच्छल पथ से स्खलित होकर द्रुत वेग से लुढ़कना प्रारंभ किया था; आज भारतवासी अधःपतन की चरम सीमा पर आ पहुँचे हैं। शक और हूण आदि की बात तो हम छोड़ ही देते हैं। इनके बाद आए पठान और मुग़ल एवं परिशेष में आए अँगरेज़। आज अँगरेज़ों की हुकूमत ने भी क्रमशः शिथिल होना प्रारंभ किया है। अंतरराष्ट्रीय मामलों में अँगरेज़-सरकार की इज़्ज़त गिरने लग गई है। उधर जापान-सरकार का प्रभुत्व क्रमशः बढ़ने लगा है। आज जापान चीन महाप्रदेश को क़रीब-क़रीब हड़प ही लेना चाहता है। अँगरेज़ी सरकार की तरह शक्तिशाली राष्ट्र अस्त्रादि देकर चीन को सहायता दे रहे हैं। पहलेपहल जर्मनी से बड़े-बड़े सेनापति आकर चीनी पल्टन का नियंत्रण कर रहे थे। आज वे हट गए हैं। जापानी नीति के कारण चीन-प्रदेश से योरपियनों को हटना ही पड़ेगा। इसके बाद आएगी भारत की बारी। भारतवर्ष मानो वेश्यालय है, जहाँ जब जो चाहे, मौक़ा पाते ही, अनायास ही, चला आता है। भारतवर्ष मानो अनाथ युवती है, जिसे जब जो चाहे, अपनी ओर घसीटकर, अपने भोग में ला सकता है।

हम भारतवासी संभवतः आज भी अपने देश को स्वाधीन करने के लिये कटिबद्ध नहीं हुए हैं। हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के कर्णधार स्वाधीनता की स्पृहा से अनुप्राणित होकर अपनी कार्य-प्रणाली का निर्माण नहीं करते। सत्याग्रह के आदर्श मार्ग को छोड़कर कांग्रेस-नेताओं के सम्मुख मानो और कोई रास्ता है ही नहीं। महात्मा गांधी जन-मन-अधि-नायक होकर सर्वेसर्वा-रूप में कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे हैं। आपके नेतृत्व से इतना तो अवश्य हुआ कि सुखासन पर बैठकर राजनीति के बारे में वृथा आस्फालन करना संभव नहीं। त्याग, दुःख एवं लांछना आदि के भीतर से गुज़रते हुए ही आज कांग्रेस-जन को देश की सेवा में व्रती होना पड़ेगा। महात्माजी की कार्य-प्रणाली के परिणाम में भारतवासियों को त्याग के मार्ग पर आगे अवश्य बढ़ना पड़ेगा। लेकिन आज प्रश्न यह है कि आधुनिक समस्याओं की मीमांसा क्या इसी रास्ते पर चलकर हो सकेगी?

कम्युनिज़्म और सोशलिज़्म की भी कार्य-प्रणाली आज हमारे सामने उपस्थित है। आज प्रश्न यह उठा है कि स्वाधीनता का स्वरूप कैसा होगा? इसकी मीमांसा हमें सबसे पहले करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और, इस स्वरूप के प्रति दृष्टि रखकर ही हमें अपनी कार्य-प्रणाली की सृष्टि करनी पड़ेगी।

क़रीब सौ साल पहले मार्क्स और ऐंगिल्स ने जिस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की थी, कम्युनिस्ट लोग इतने दिन बाद भी उसी सिद्धांत के अनुगामी होकर काम कर रहे हैं। उनकी धारणा है, मार्क्स, ऐंगिल्स, लेनिन और स्टेलिन के मार्फ़त जो विचार-धारा आज तक प्रवाहित होकर चली आई है, और जिस कार्य-प्रणाली का ये सब सफल-काम विप्लवी-गण अवलंबन करते आए हैं, उसके अतिरिक्त और कुछ कहने या करने का दावा करना फ़ैसिस्ट मनोवृत्ति का परिचय देना है। मार्क्स, ऐंगिल्स, लेनिन और स्टेलिन द्वारा प्रदर्शित सिद्धांत और मार्ग को छोड़कर यदि कोई और सिद्धांत या मार्ग बताने का साहस करता है, तो वह अवश्य फ़ैसिस्ट अर्थात् परपीड़कों का अनुचर है, स्वार्थांध साम्राज्यवादियों का जान या अनजान में दास है, चाहे वह ट्राट्स्की हो या रोम्याँ रोलाँ, ऐंड्रिगीड हो या रवींद्रनाथ। मानो मार्क्सवाद को पूरे तौर पर यदि कोई ग्रहण न कर सके, तो उसे फ़ैसिस्ट अवश्य ही होना पड़ेगा; अर्थात् जो फ़ैसिस्ट नहीं है, उसे भी फ़ैसिस्ट बनना पड़ेगा, चाहे वह इसे पसंद करे या न करे। पूरे तौर पर मार्क्सवाद को ग्रहण करने का अर्थ है इतिहास की आर्थिक व्याख्या को स्वीकार करना, गतिमूलक द्वंद्वात्मक जड़वाद में विश्वास करना, श्रेणी-संघर्ष ही इतिहास का यथार्थ रूप है, इस बात पर पूर्ण आस्था रखना, सर्वहारा मज़दूर-वर्ग के परिपूर्ण आधिपत्य में रहकर ही भविष्य-समाज का निर्माण होगा, अन्यथा ऐसा नहीं हो सकता, इस सिद्धांत पर अटल श्रद्धा रखना एवं धनोत्पादन के समस्त साधन व्यक्ति के हाथ में न रखकर समाज के हाथ में रखने की व्यवस्था करना; इन सब सिद्धांतों पर अविचलित श्रद्धा रखना ही समूचे मार्क्सवाद को स्वीकार करना है, अन्यथा नहीं। यदि इन सब सिद्धांतों में से किसी एक को भी ग्रहण नहीं कर सकते, तो तुम्हें अपांक्तेय होना पड़ेगा, अर्थात् तुम फिर प्रच्छन्न फ़ैसिस्ट हो।

हम सबका स्थिर विश्वास है कि कम्युनिज़्म की मूल-प्रेरणा के साथ किसी भी सच्चे आदमी का कुछ भी विरोध रहना संभव नहीं। वह मूल-प्रेरणा यह है कि हमें समाज-व्यवस्था का इस प्रकार पुनर्निर्माण करना पड़ेगा कि समाज में कोई भी व्यक्ति अन्य व्यक्ति पर कुछ भी अन्याय-पीड़न न कर सके, एवं प्रत्येक समाज में हरएक व्यक्ति का प्राथमिक अभाव पूर्ण रूप से निवारित हो सके।

प्रत्येक मनुष्य अपनी स्वाधीनता के लिये लालायित है। प्रत्येक मनुष्य सुख की स्पृहा करता है। सुख की परिभाषा भारतवर्ष ने जैसी की है, उसकी तुलना मिलना मुश्किल है। भारतवर्ष में यह कहा गया है—"सर्वमात्मवशं सुखम्, सर्वं परवशं दुःखम्।" समाज-व्यवस्था भी ऐसी ही होनी चाहिए, जिससे प्रत्येक व्यक्ति सुखी हो सके। सबके लिये खाने, पहनने और रहने का पर्याप्त सुयोग और अवसर रहना परम आवश्यक है, एवं मनुष्य की स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप करने का किसी को भी अधिकार न रहे। इस मूल-नीति को स्मरण रखने पर ही भविष्य-समाज-व्यवस्था का उत्तरदायित्व ग्रहण करना संभव है। इस हिसाब से धनोत्पादन के साधन व्यक्ति के हाथ में न रहकर समाज के ही हाथ में रहना वांछनीय है।

लेकिन इस स्थान पर एक और बात का भी स्मरण रहना नितांत आवश्यक है। वर्तमान रूस की तरह यदि प्रत्येक व्यक्ति को ही राष्ट्र के अधीन नौकरी करनी पड़े, तो भी व्यक्ति का स्वातंत्र्य स्थिर नहीं रह सकता। इसके अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस की बात याद आने पर, कभी-कभी मन में आतंक की भी सृष्टि होती है। आज उस देश में एच्० जी० वेल्स-लिखित 'Outline History of the World' की तरह की किताबें पढ़ना निषिद्ध है। अभी उस दिन श्रद्धेय श्रीराहुल सांकृतायन के मुख से सुना कि किस प्रकार रूस-देश के एक कवि ने उनके पास आकर अपना दुःख व्यक्त किया था। उस कवि ने ज्योत्स्ना पर एक कविता लिखी थी। इस कविता को रूस की नौकरशाही ने छपने नहीं दिया। कारण, उनकी राय में उस कविता में अतींद्रिय-वाद का कुछ आभास था, वेदांत-प्रतिपाद्य ऐक्यानुभूति की ओर इंगित था। वर्तमान रूस में मुद्रण-यंत्र राष्ट्र की मुट्ठी में है। छापेख़ाने के परिचालक अपने इच्छानुसार कोई भी लेख छापने से इनकार कर सकते हैं। वहाँ साहित्य, कला, विज्ञान, दर्शन, समाज-तत्त्व इत्यादि के बारे में तमाम चर्चा राष्ट्र के तत्त्वावधान में होती है। रूस-राष्ट्र का एक विशिष्ट दार्शनिक पक्ष है। उस पक्ष के विरोध में किसी भी मतवाद की चर्चा होना वहाँ संभव नहीं। रूस-राष्ट्र के दार्शनिक आदर्श का अनुयायी बनकर ही वहाँ सबको साहित्य, कला, विज्ञान इत्यादि की चर्चा करनी पड़ती है। इस अवस्था में विचार-स्वातंत्र्य का यथार्थ सुयोग एवं अवसर वहाँ नहीं, और रहना संभव भी नहीं। जितने दिन वहाँ Dictatorship of the Proletariat अथवा तदनुरूप कोई राष्ट्र-व्यवस्था रहेगी, उतने दिन व्यक्ति का स्वातंत्र्य स्थिर नहीं रह सकता। जड़वाद के विरोधी मत को व्यक्त करना वहाँ संभव नहीं। वहाँ की शिक्षा-पद्धति के आवेष्टन में रहकर किसी युवक के लिये भी यह संभव नहीं कि आत्मवाद के पक्ष में किसी युक्ति अथवा दार्शनिक भावना के संस्पर्श में आ सके। जिस समाज-व्यवस्था के घेरे में, जिस दार्शनिक प्रभाव में, श्रीरामकृष्ण, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ अथवा श्रीअरविंद और ऋषि दयानंद-जैसे महापुरुषों को जीवन-विकास का अवसर नहीं मिल सकता, उस दार्शनिक आदर्श अथवा समाज-व्यवस्था की उपयोगिता पर हमारा विश्वास नहीं। आज भी रूस में कितने ही साहित्यिक, शिल्पी एवं वैज्ञानिकों को या तो गोली मार दी जाती है, या वे जेलों में रखकर सड़ाए जाते हैं, केवल इसीलिये कि वे आधुनिक रूस के अधिनायकों के दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक मत में विश्वास नहीं रखते। न्यूयार्क-विश्वविद्यालय के दर्शन के अध्यापक महोदय ने Science and the New Obscurantism-नामक एक लेख में अभी कहा है कि आधुनिक रूस के कार्यकर्ता ऐसे वैज्ञानिकों को प्रश्रय दे रहे हैं, जिनकी विचार-धारा और जिनके वैज्ञानिक दावे नितांत अवैज्ञानिक एवं अत्यंत अयौक्तिक हैं, एवं ततोधिक वे करुण-रस के संचारक भी हैं। पाठक यह बात भी स्मरण रक्खेंगे कि सिड्नेहुक् महोदय कम्युनिस्टों के परिपंथी नहीं। उनके लिखे हुए 'Towards the Understanding of Karl Marx 'From Hegel to Marx' इत्यादि ग्रंथ पढ़ने से सभी को स्वीकार करना पड़ेगा कि हुक् साहब कम्युनिस्ट-सिद्धांतों के प्रति कितनी सहानुभूति रखते हैं! ऊपर लिखी बातें अमेरिका के 'रेडिकल' अर्थात् उग्रपंथी पत्रिकादि में ही प्रकाशित हो रही हैं। श्रीवी० एफ़० कैल्वर्टन साहब भी आधुनिक प्रगतिशील, विख्यात लेखकों में से अन्यतम हैं। उनकी लिखी 'Passing of the Gods' एवं 'Bankruptcy of Marriage' इत्यादि किताबें पढ़ने से सभी समझ सकेंगे कि कैल्वर्टन साहब कम्युनिस्ट-सिद्धांतों का कैसा अच्छा प्रचार कर रहे हैं। लेकिन इन्हीं कैल्वर्टन साहब ने ही जनवरी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने के 'Current History' पत्र में ऊपर बताई बातें लिखी हैं। अमेरिका के 'Modern Monthly', 'Workers, Age' इत्यादि उग्रपंथी मासिक पत्रादि में आधुनिक रूस के संकीर्ण एकदेशदर्शिता के बीभत्स, नग्न चित्र अंकित हो रहे हैं। प्रत्येक स्वाधीन एवं प्रगतिशील विचार-नायक समस्वर एवं अविचलित कंठ से इस बात की घोषणा कर रहे हैं कि आज रूस में स्वतंत्र-विचारवान् पुरुषों का ज़िंदा रहना संभव नहीं। इसलिये यह प्रश्न मन में बार-बार उठ रहा है कि क्यों ऐसी विचार-असहिष्णुता का उदय होता है?

भारतवर्ष की समाज-व्यवस्था में अनेक दोष आ गए हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। हमारा यह परम कर्तव्य है कि आधुनिक, प्रगतिशील विचार-धाराओं से युक्त होकर हम अपने समाज को पुनरुज्जीवित करें। समाज-व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जिसमें एक को खाने-पीने, रहने-सहने चिकित्सा कराने अथवा शिक्षा प्राप्त करने के लिये दूसरे के अनुग्रह पर निर्भर न रहना पड़े। यह आर्थिक व्यवस्था की बात सीखने के लिये आज हमें कम्युनिज़्म की आदर्श समाज-परिकल्पना का आश्रय लेना पड़ेगा। लेकिन इस आर्थिक प्रश्न की लपेट में पड़कर ऐसा न हो कि हम आत्म-विस्मृत हो जायँ—हम यह भूल जायँ कि अपने देश में विचार-स्वातंत्र्य का इतना आदर था कि जैसे एक तरफ़ हम लोग व्यक्तित्व के श्रीचरणों में श्रद्धांजलि अर्पण करते आए हैं, एवं ऐसा करते समय हम व्यक्ति को चरम सीमा पर उठाकर उसे ईश्वर का अवतार कहने में भी संकुचित नहीं हुए हैं, वैसे ही दूसरी तरफ़ स्वाधीन विचार के प्रति हम इतने श्रद्धावान् थे कि कल जिसे ईश्वर का अवतार कहने में संकुचित नहीं हुए थे, आज उसे भ्रांत कहने के साहस का अभाव भी हममें नहीं हुआ। हम शंकराचार्य को शंकर का अवतार कहने में किसी प्रकार भी कुंठित नहीं हुए; फिर रामानुजाचार्य आकर उसी शंकर को भ्रांत कहने में भी पीछे नहीं हटे। मेरे पिता शाक्त और मेरे भ्राता वैष्णव हो सकते हैं। मेरे एक भ्राता वेदपंथी और दूसरे वेदवाद में त्रुटि दिखलाकर बौद्ध हो सकते हैं। हमारे यहाँ आस्तिक, नास्तिक, हिंदू, ईसाई, पारसी, मुसलमान इत्यादि सभी के लिये उपयुक्त स्थान है। कारण, हम लोग विश्वास करते हैं कि अनंत की तरफ़ चलने के मार्ग पर विभिन्न पर्याय में विभिन्न अवस्था की अनुभूति होती है, एवं विभिन्न अवस्था की अंतिम परिणति जब तक ऐक्यानुभूति के रूप में आकर पर्यवसित नहीं होती, तब तक चलने का भी विराम नहीं हो सकता, एवं इसलिये विभिन्न अवस्था की अनुभूति का भी अंत नहीं होता। अतएव किसी के साथ भी हम लोगों का अंत तक विरोध नहीं। हम लोगों का विरोध उनके साथ है, जो हमारे चलने के मार्ग पर अड़ेंगे, हमारे विचार-पथ में आकर बाधा देंगे, हम लोगों को टिकने देना तक नहीं चाहेंगे। मैं अपनी ही तरह होकर दूसरों के अधिकार पर हस्तक्षेप न करके ही जीना चाहता हूँ। मेरे अपनेपन को लेकर जो मुझे जीने देना नहीं चाहता, उससे मेरा संघर्ष है। हम तो इस प्रकार समधर्मी हैं, अपने समाज को इस प्रकार नवप्रेरणा से अनुप्राणित करना चाहते हैं, समाज का इस प्रकार पुनः संगठन करना चाहते हैं, जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिये परिपूर्ण सुयोग एवं अवसर प्राप्त कर सके। आधुनिक समाज में वह अवसर मनुष्य को प्राप्त नहीं है। कारण, दारिद्र्य के निष्पेषण से हमारा व्यक्तित्व आज मुमूर्षु हो रहा है। पराधीनता की लांछना और ताड़ना से हमारी सभ्यता आज विपर्यस्त और विध्वस्त हो रही है। आज हम दिशा-हीन होकर भटक रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन दिशा-हीन होने से आज काम नहीं चलेगा। परानुकरण से भी कल्याण नहीं हो सकता। आज हमारा यह कहना है कि प्राचीन और नवीन के समन्वय से ही संसार का कल्याण है। उस समन्वय की वार्ता भारतवर्ष ही वहन करेगा। कारण, सर्वतोन्मुखी प्रतिभा की आभा से आज भी भारत की विचार-धारा प्रदीप्त—जाज्वल्यमान है। हम संसार पर प्रभुत्व करना नहीं चाहते, हम संसार की सेवा करना चाहते हैं। (स्वाधीन भारत ही उस सेवा का भार ग्रहण कर सकता है, पराधीन भारत नहीं।) इसलिये आज हमारा परम कर्तव्य है भारत को स्वाधीनता के मार्ग पर आगे ले चलना।

लेकिन यह भी तो प्रश्न है कि स्वाधीन भारत में राष्ट्र-शक्ति किसके हाथ में न्यस्त हो? इस बात का भी निर्णय हमें आज ही कर लेना है। कारण, संभव है, बाद को हमें सोचने का अवसर भी न मिले। संसार के इतिहास में प्रायः देखा गया है कि एक दल मरण-प्रण करके परिश्रम करता है, लेकिन अंत में राष्ट्र-शक्ति दूसरे दल के हाथ में चली जाती है। 'मेट्सीनी' ने आजीवन प्रजातंत्रात्मक शासन के प्रवर्तन के लिये प्राण-पात परिश्रम किया, लेकिन अंत में 'विक्टर इमानुएल' इटली का राजा बन बैठा। जर्मनी में विद्रोह हुआ; 'रोज़ालक्शेमवर्ग' एवं 'लायव नेक्ट' मार डाले गए; राष्ट्र-शक्ति इनके विरोधी दल के हाथ में जा गिरी। रूस में भी राष्ट्र-विप्लव हुआ, 'मेन्शेविक' एवं 'सोशल रिव्युलुशनरीयों' ने 'ज़ारडम' का ध्वंस किया, लेकिन अंत में राष्ट्र-शक्ति 'कैरेन्सकियों' के हाथ से लेनिन इत्यादि के हाथ में चली गई। इन सब बातों पर गंभीर रूप से विचार करने का समय आज आया है। सुचिंतित कार्य-प्रणाली और सुसंगठित दल को छोड़कर आजकल राजनीति के क्षेत्र में कुछ भी करना संभव नहीं।

हम लोग चाहते हैं, आदर्शगत द्वंद्व की बात को सबसे पहले स्पष्ट शब्दों में खोलकर समाज के सामने रख दें, और बाद को शिक्षित युवक-मंडलियों में अपने जीवनादर्श का ख़ूब प्रचार करें। कारण, इन शिक्षित युवकों द्वारा ही हमारा भविष्य बनेगा। हमारा लक्ष होगा प्राचीन भारतीय आत्म-वाद के साथ आधुनिक विचारा-धारा का एक महान् समन्वय साधन करना। आधुनिक समाज-विज्ञान, जिसमें 'मार्क्सवाद' भी शामिल है, आधुनिक पदार्थ-विज्ञान, जीव-विज्ञान, वंशानुक्रम-विज्ञान, मनोविज्ञान इत्यादि की सहायता से अपनी समाज-व्यवस्था का पुनः संगठन करना होगा।

जड़वाद में हमारा विश्वास नहीं। इतिहास की आर्थिक व्याख्या सर्वांश एवं सर्वकाल में सत्य है, ऐसा हम नहीं समझते। श्रेणी-संघर्ष के ज़रिए ही राजनीतिक जागरण संभव है, ऐसे किसी बँधे हुए नियम के अनुवर्ती होकर हम चलना नहीं चाहते। ज़मींदारी-प्रथा की कुछ सार्थकता है, ऐसा हम नहीं समझते। जिन कारोबारों के लिये एक बड़ी पूँजी की आवश्यकता है, एवं जिन्हें चलाने के लिये विराट् संगठन करना अनिवार्य है, उनका नियंत्रण एवं उनकी व्यवस्था राष्ट्र के हाथ में रहनी चाहिए; कोई व्यक्ति-विशेष भविष्य-समाज में उनका मालिक नहीं रह सकता। हम कुटीर-शिल्प के पक्षपाती हैं, इसलिये कुटीर-शिल्प की प्रतियोगिता में बड़े-बड़े कारख़ानों को हम प्रश्रय नहीं देंगे। इसके परिणाम में यदि किंचित् परिमाण में पूँजीवाद प्रश्रय पाता है, तो कोई हर्ज नहीं। प्रजातंत्रात्मक शासन-प्रणाली में आज भी हम श्रद्धावान् हैं। इसलिये किसी प्रकार की भी 'तानाशाही' (Dictatorship) के हम पक्षपाती नहीं। समवाय-प्रणाली से व्यापार चलाने में बीच के नफ़ा खानेवाले छोटे-छोटे पूँजीपति अपने आप ही लुप्त हो जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अंतरराष्ट्रीय संसार में न्याय की मर्यादा को अव्याहत रखकर ही हम शांति के पक्षपाती हैं। साम्राज्य-वाद का समर्थन हम किसी भी सूरत में और किसी भी अवस्था में नहीं कर सकते। भविष्य-समाज-व्यवस्था और राष्ट्रीय व्यवस्था में हमें ऐसे उपायों का अवलंबन करना पड़ेगा कि मज़दूर-वर्ग और किसान-वर्ग के स्वार्थ की रक्षा यथार्थ रूप में हो सके। राष्ट्र-शक्ति की सार्थकता इसी में है कि उससे जन-साधारण के स्वार्थ की रक्षा हो सके। जिस व्यवस्था के लिये विराट् संगठन की आव-श्यकता होगी, उस का भार केंद्रीय सरकार (केंद्रीय परिषद्) के हाथ में रहना वांछनीय है। दूसरी सब व्यवस्थाएँ यथासंभव केंद्रीभूत करनी पड़ेंगी। जितनी भूमि पर किसान अपने परिवार की सहायता से खेती कर सकता है, उतनी भूमि किसान को देनी होगी, लेकिन भूमि का स्वत्व राष्ट्र का रहेगा, एवं उत्तराधिकार सूत्र से वह भूमि विभाजित न होने पाएगी। एक निर्दिष्ट सीमा के अतिरिक्त आमदनी किसी को नहीं रहेगी ; कारण, वह आमदनी राष्ट्र की हो जायगी।

इस प्रकार न-जाने कितनी बातें कही जा सकती हैं, लेकिन ज़्यादा कहने से कोई लाभ नहीं। महात्माजी बात बहुत थोड़ी करते हैं, लेकिन अवसर आने पर कहीं अधिक काम करके दिखला देते हैं। भारत का इतिहास आज भीषण संकट के भीतर से होकर गुज़र रहा है। भविष्य के प्रति दृष्टि रखकर भारत के नौजवानों को, जिनके विचार हमारे विचारों से मिलते हैं—हमारे समधर्मियों को उचित है, और वृथा समय नष्ट न करके सुचिंतित सिद्धांतों के आधार पर संगठन के कार्य में कमर कसकर जुट जायँ। स्पेन, एबीसीनिया, चीन, ज़ेकोस्लोवेकिया आदि का दृष्टांत हमारे सामने है। अब भी समय है। क्या पता, जो अवसर अब है, आगे चलकर यह भी रहेगा या नहीं।

श्रीशचींद्रनाथ सान्याल-लिखित दो अमूल्य पुस्तकें—

बंदी-जीवन (दो भाग)

प्रस्तुत पुस्तक में योरपीय महायुद्ध के समय भारत में क्रांति की कैसी तैयारी की गई थी, और युद्ध के पहले भारतीय विप्लववादियों की क्या दशा थी, एवं उनके मन की गति ने किस-किस प्रकार आघात लगने से कैसा और क्या भाव धारण किया था, आदि बातों का वर्णन है। मूल्य २।)

विचार-विनिमय अथवा एक भारतीय क्रांतिकारी के आधुनिक विचार

पुस्तक के नाम से ही विषय स्पष्ट है। श्रीसान्यालजी ने समाज का प्रश्न, राजनीतिक बंदी, हिंदू-मुस्लिम-समस्या, क्रांतिकारी और उनके सिद्धांत, भारत में क्रांतिकारी आंदोलन आदि बीसों प्रश्न पर अपने विचार प्रकट किए हैं। साम्यवादियों के पढ़ने योग्य है। मूल्य १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेकोस्लोवेकिया

[श्रीयुत एम्०. पी० केदार]

२८ ऑक्टोबर, १९१८ के दिन, पेरिस की शांति-परिषद् (Peace Conference) में, आस्ट्रिया और हंग्री के साम्राज्यों के खँडहरों पर, जेकोस्लोवेकिया की प्रजातंत्र रियासत का निर्माण हुआ था। बूहिमिया, मूरेविया, स्लोवेकिया और सिलेशिया का कुछ भाग इस नई रियासत में सम्मिलित किया गया। १० दिसंबर, १९१९ की संधि के अनुसार मित्र राष्ट्रों और संसार की अन्य शक्तियों ने जेकोस्लोवेकिया में प्रजातंत्र-सत्ता को स्वीकार किया।

कई विचारकों की सम्मति में जेकोस्लोवेकिया की नई रियासत का निर्माण एक बड़ी भारी राजनीतिक भूल थी, और कुछ समय तक इसे तोड़ दिए जाने या इसके स्वरूप में परिवर्तन करने का परामर्श भी दिया जाता रहा। परंतु मित्र राष्ट्रों के विशेषज्ञों को उस समय की परिस्थितियों में ऐसा करने के सिवा कोई चारा न दिखाई दिया। इसलिये सबने, जिनमें अमेरिका भी शामिल था, इस नवीन रियासत के निर्माण को आवश्यक समझते हुए उसकी स्वतंत्र सत्ता की रक्षा करना सहर्ष स्वीकार किया।

जेकोस्लोवेकिया की कुल जन-संख्या १,४०,००,००० से कुछ ऊपर है। इनमें अधिक संख्या जेक और स्लोवेक लोगों की है। ये दोनो स्लेव-जाति के वंशज हैं। रूस और बलगारिया के निवासी भी इसी जाति से संबंध रखते हैं। इनके अतिरिक्त जर्मन, पोल और हंग्रियन आदि अल्पमतों के लोग भी इस जन-संख्या में सम्मिलित हैं। इनकी संख्या इस प्रकार है—

जर्मन	३५,००,०००
पोल	८२,०००
हंग्रियन	७,००,०००

जेकोस्लोवेकिया की सीमा पर, सूडेटन के इलाक़े में, अधिक संख्या जर्मन लोगों की है। इस सीमा के दूसरी पार जर्मनी देश है। इससे जर्मनों की दृष्टि स्वभावतः सूडेटन के इलाक़े पर गड़ी रही है। कई बार नियम-पूर्वक प्रयत्न भी हुए कि इस इलाके को जर्मनी में मिला दिया जाय, परंतु इस समस्या का कार्य-रूप में हल होना इतना सुगम न था, जितना समझा जाता था। जेकोस्लोवेकिया के लिये सूडेटन का पर्वतीय प्रदेश प्राकृतिक सीमा का काम देता था। युद्ध की दृष्टि से भी इस इलाके का बड़ा भारी महत्त्व था। इन्हीं कारणों से जेक रियासत इसे देने के लिये कभी तैयार न हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः सूडेटन का पर्वतीय प्रदेश दो देशों के बीच में कई शताब्दियों से प्राकृतिक सीमा के रूप में चला आ रहा है। तेरहवीं शताब्दी से इस इलाक़े में ज़ेक और जर्मन लोग परस्पर रहने लगी थीं कि आस्ट्रिया के सम्राटों का उन्हें अलग करने का प्रयत्न सदा असफल रहा।

समय पाकर जर्मन लोगों में भीतर-ही-

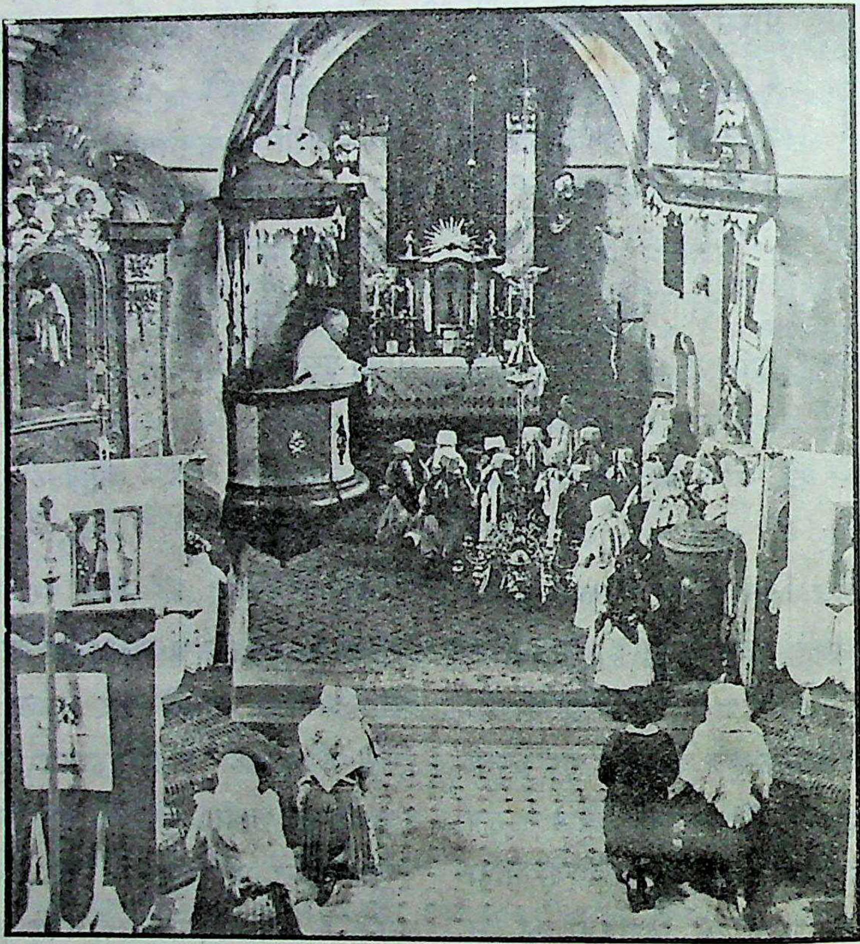

गिरजाघर

[ज़ेकोस्लोवेकिया के ग्रामों में भी गिरजाघर मौजूद हैं, और ज़ेक-कृषक अपनी विचित्र वेश-भूषा में वहाँ प्रार्थना के लिये एकत्र होते हैं।]

मिल-जुलकर रह रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि पिछली तीन शताब्दियों में जर्मन-जाति के लोगों की संख्या अधिक रही। परंतु ये दोनो जातियाँ परस्पर इस प्रकार घुल-मिलकर

भीतर असंतोष की आग सुलगने लगी, जो कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप में भी प्रकट हो जाती। नई ज़ेक-सरकार ने प्रारंभ में सूडेटन में जर्मन-अल्पमत को संतुष्ट रखने के लिये बहुत कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रियायतें दीं। परंतु उसे अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से कभी सफलता नहीं मिली। जर्मन-

जेक-कृषक

[ये परिश्रमी होने के अतिरिक्त स्वस्थ और प्रसन्न रहना भी जानते हैं।]

जेक-कृषक-महिला

[पुरुषों की तरह ये भी परिश्रमी होती हैं, और सदा प्रसन्न रहती हैं।]

अल्पमतावलंबियों ने चिर काल तक जेक-सरकार के साथ असहयोग का व्यवहार रक्खा। इसका परिणाम यह हुआ कि जेकोस्लोवेकिया के शासन में जर्मन-अल्पमत के प्रतिनिधित्व का बिलकुल अभाव रहा। सन् १९२५ तक बराबर यही अवस्था रही। सन् १९२६ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन-अल्पमत ने 'ऐक्टिविस्ट' के रूप में एक नवीन दल की स्थापना की, और उस दल की ओर से दो व्यक्तियों ने ज़ेक-मंत्रिमंडल में प्रवेश किया। यह कार्य ज़ेक-

ज़ेक-निवासी ग्रामीण युवक
[विचित्र टोपी पहने हुए ।]

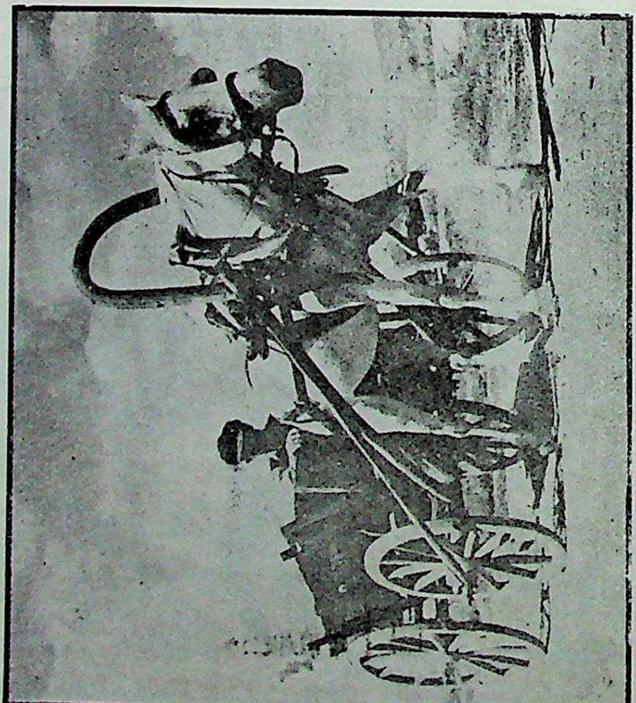

ज़ेकोस्लोवेकिया की मुख्य सवारी
[इसका ग्रामों में आम रवाज है ।]

सरकार और जर्मन-अल्पमत, दोनो के लिये ही शुभ था। और, शीघ्र ही इसके फल की भी आशा की जाने लगी थी। परंतु दुर्भाग्य-वश इस बीच में ही मंदी (World Depression)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण सूडेटन-निवासियों को बड़ी हानि पहुँची। इस इलाक़े के लोग अधिकतर उद्योग-धंधों पर अपना जीवन-निर्वाह करते थे, इसलिये बाक़ी देशवासियों की अपेक्षा इन्हें विशेष तौर पर संकट का सामना करना पड़ा। उधर जर्मनी में नाज़ीज़्म की आग ज़ोर-शोर से फैल चुकी थी। समय पाकर उसकी चिनगारियाँ

प्रसिद्धि से 'ऐक्टिविस्ट'-पार्टी का महत्त्व बहुत कम हो गया। परस्पर कई-एक टक्करों में 'ऐक्टिविस्ट'-पार्टी को बुरी तरह पराजित होना पड़ा। यदि जेक-सरकार ने उस समय की नाज़ुक स्थिति को समझकर उचित उपाय किया होता, तो कदाचित् जर्मन-अल्पमत असंतुष्ट होकर अपना पृथक् अस्तित्व बनाने की आवश्यकता अनुभव

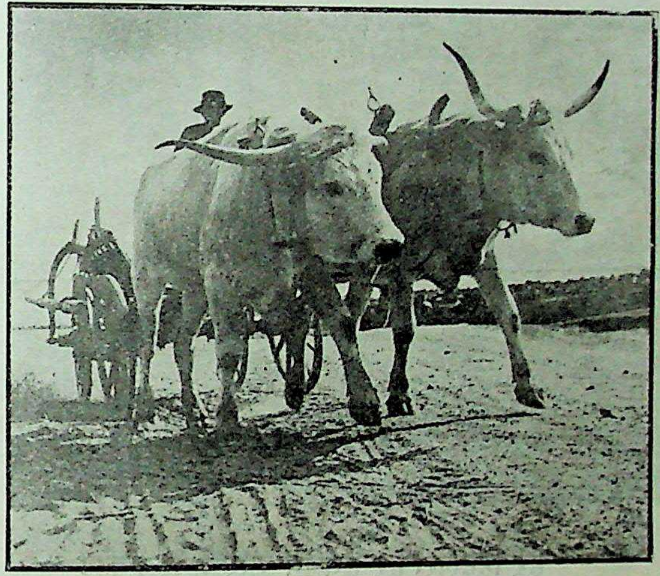

जेकोस्लोवेकिया में ग्रामीण दृश्य
[खेती और गाड़ियों के लिये वहाँ बैलों का उपयोग भी किया जाता है।]

सीमा पार के जर्मन लोगों में भी पहुँच गईं। उसके परिणाम-स्वरूप सूडेटन के इलाक़े में भारी असंतोष फैल गया।

यह असंतोष बढ़ते-बढ़ते, सन् १९३५ में, मिस्टर हेनलेन के नेतृत्व में, नवीन जर्मन-पार्टी के रूप में प्रकट हुआ। थोड़े ही समय में यह नई पार्टी लोकप्रिय हो गई। इस पार्टी की

न करता। परंतु जेक-सरकार ने हेनलेन-दल के साथ मेल-मिलाप करने के बजाय पुरानी 'ऐक्टिविस्ट'-पार्टी के साथ ही कुछ मामूली रियायतें देकर संधि करने की कोशिश की। हेनलेन की पार्टी को इससे और भी ज़ोर पकड़ने का अवसर मिल गया। मिस्टर हेनलेन ने अपनी शक्ति बढ़ने पर जर्मन-अल्पमत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमात्र प्रतिनिधि होने का दावा किया। इन्हीं दिनों हर हिटलर संसार के रंगमंच पर पूरे दल-बल-सहित, एक महान् शक्ति के रूप में, प्रकट हो रहा था। सबके देखते-देखते आस्ट्रिया पर धावा बोलकर वह उसे समूचा निगल गया।

इधर हिटलर तो ऐसे अवसर की ताक में था ही। उसने हेनलेन की माँग को उचित बतलाते हुए न केवल उसे सहायता देने का वचन दिया, वरन् उसे अपनी माँग के रूप में, युद्ध की धमकियों के साथ, संसार के सामने

हर हिटलर, हर हेनलेन और जेनरल कीट

[हिटलर और उसकी सेना ऐसर के मुख्य प्रदेश में प्रवेश कर रही है, और हिटलर अपने ऑफ़िसरों के साथ खुली हवा में भोजन कर रहा है।]

हेनलेन ने अवसर को ग़नीमत जान सूडेटन के लिये पूर्ण स्वराज्य की माँग पेश कर दी। हेनलेन के इस साहस-पूर्ण पग उठाने से 'ऐक्टिविस्ट'-पार्टी को बड़ा भारी धक्का लगा। उसके बहुत-से सदस्य हेनलेन की पार्टी में आ मिले, जिससे हेनलेन का उत्साह और भी बढ़ गया, और वह दृढ़ता के साथ सूडेटन के लिये स्वतंत्र शासन का दावा करने लगा।

रक्खा। ज़ेक-सरकार जर्मन-अल्पमत को संतुष्ट करने का अवसर खो चुकी थी। इधर हिटलर की गर्जना से भयभीत होकर मित्र राष्ट्रों ने ज़ेकोस्लोवेकिया का साथ छोड़ दिया। इन हालात में ज़ेक-सरकार को सूडेटन के इलाक़े से अपना हाथ खींचते ही बना।

सूडेटन-निवासी जर्मनों के साथ हिटलर की सहानुभूति का कारण उनके साथ ज़ेक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार का दुर्व्यवहार न था। वस्तुतः हिटलर योरप में अपनी शक्ति बढ़ाकर युद्ध से पहलेवाली पोज़ीशन क़ायम करने के लिये उत्सुक है। यदि अल्पमत के साथ सहानुभूति का ही प्रश्न होता, तो हिटलर स्वयं अपने देश में यहूदियों के साथ बुरा व्यवहार क्यों करता? सच तो यह है कि जिन्होंने हिटलर के जीवन का अध्ययन किया है, वे इस बात को भली भाँति समझते हैं कि वह इस समय शक्ति जुटाने और अपना विस्तार करने

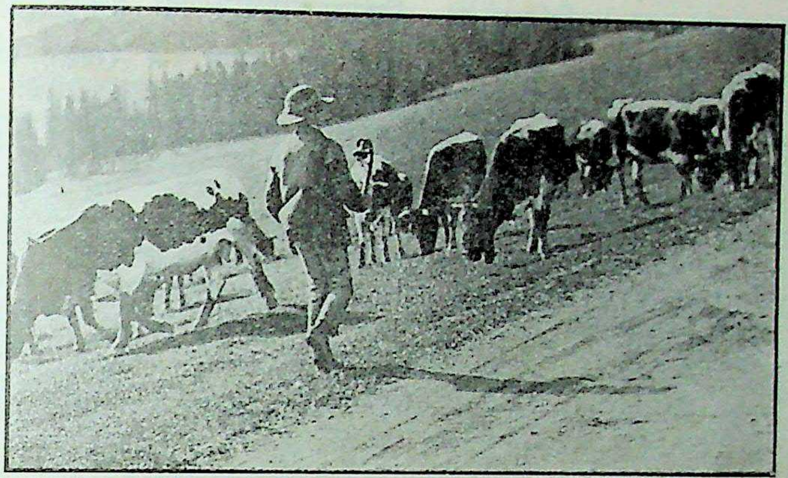

जेक-कृषक पशुओं के साथ

[अपनी गोचर भूमि में पशु-पालन वहाँ के कृषकों का मुख्य धंधा है।]

जेक-निवासियों के घर

[ये साधारण, किंतु बहुत साफ़-सुथरे होते हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लगा हुआ है। सूडेटन का पर्वतीय प्रदेश मिलिट्री दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। विस्मार्क ने एक बार कहा था – "बूहिमिया का मालिक सारे योरप का मालिक होगा।" के कारण इस प्रदेश का अपना एक विशेष स्थान है। स्कोडा और 'विकटोविटज़' के विशाल कारख़ाने यहीं बने हुए हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखकर यह अनुमान

ज़ेक-माता

[इनमें भी संसार की अन्य स्त्रियों की तरह वात्सल्य भरा रहता है।]

लगाना कठिन नहीं कि सूडेटन के महत्त्व-पूर्ण विभाग पर क़ब्ज़ा कर लेने के बाद हर हिटलर की शक्ति में अपार वृद्धि हो गई है। अपनी इस बढ़ी हुई शक्ति के कारण ही वह आज

हिटलर भी इस महत्त्व-पूर्ण इलाक़े पर आधिपत्य जमाकर अपनी चिरकालीन आकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहता था। वस्तुतः कृषि और बहुमूल्य खनिज पदार्थों की उपज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के लिये सचमुच एक 'हौवे' का रूप धारण कर चुका है।

इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि जेकोस्लोवेकिया का अपना प्रमुख स्थान और विशेष महत्त्व है। रूस सदा से उसके साथ मैत्री करने की कोशिश करता रहा है। इधर फ्रांस और इँगलैंड

फूलों से सुसज्जित जेक-रमणियाँ

[ज़ेक-निवासिनी स्त्रियाँ फूलों से बहुत प्रेम करती हैं।]

का स्वतंत्र अस्तित्व योरप की शक्तियों में समतुलन (Balance) का काम देता था। आज भी राजनीतिक दृष्टि से जेकोस्लोवेकिया भी आज तक उसकी मित्रता का दम भरते रहे हैं। जर्मनी अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये कई वर्षों से उस पर नज़र जमाए बैठा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इटली को भी उसकी शक्ति से बड़ी भारी स्पर्धा हो रही थी। हिटलर और मुसोलिनी के षड्यंत्र और धमकियों तथा फ्रांस और इँगलैंड की अदूरदर्शिता एवं विश्वासघात ने जेकोस्लोवेकिया का अंग-भंग करते हुए उसके बल को थोड़े-बहुत अंशों में क्षीण अवश्य कर दिया है। परंतु ऐसा होने पर भी उसके अंतरराष्ट्रीय महत्त्व में कोई अंतर नहीं आया। इसके साथ ही वहाँ के लोगों में साहस और दृढ़ता की कमी का भी किसी तौर से आभास नहीं हो पाता।

जेक-निवासी वस्तुतः वीर और साहसी हैं। यह बात इसी से भली भाँति जानी जा सकती है कि अंत तक जेक-सरकार अपने सिद्धांत पर डटी रही, और अपने स्वत्व की रक्षा के लिये एक महान् शक्ति के साथ टक्कर तक लेने को तैयार हो गई। यदि फ्रांस और इँगलैंड ने अपने वचनों का पालन करते हुए थोड़ी-बहुत नैतिक सहायता के लिये ही हाथ बढ़ाया होता, तो न-जाने आज योरप का इतिहास क्या होता? जेक-निवासियों की समझ में एक बात बड़ी अच्छी तरह आ गई है कि किसी भी दूसरी सत्ता या शक्ति पर निर्भर रहना तथा विश्वास करना निरी मूर्खता है। यह समझकर ही जर्मनी के साथ पैदा हुई उलझन को पीछे आकर जेक-सरकार ने स्वतंत्र रूप से निपटाना प्रारंभ कर दिया।

जेक-नवदंपति

[अपनी प्राचीन वेश-भूषा में आनंदोल्लास मना रहे हैं।]

यह भी जानने योग्य है कि सूडेटन के प्रदेश को अलग कर देने या जर्मनी से मिला देने पर भी सारी समस्या हल नहीं हो गई। सूडेटन को छोड़कर लगभग ४०,००० जेक जर्मन-इलाक़े में और ८०,००० जर्मन जेक-इलाक़े में रहते हैं। उन्हें पृथक् करना आसान नहीं। जर्मन लोगों में कुछ नहीं, तो आठ प्रकार के लोग हैं, जिन्हें एक स्थान पर इकट्ठा करना कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणतया जेक लोग बड़े शांत स्वभाव के हैं। वे अपने हाल में ही मस्त रहना चाहते हैं। उनका व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन अत्यंत सुखी और संतोष-प्रद है। यद्यपि उन लोगों का रहन-सहन और पहनना आदि सादा तथा बहुत कुछ प्राचीनता की झलक लिए हुए होता है, परंतु वे लोग परिश्रम करना और पीछे परिश्रम के फल का भोग करना भली भाँति जानते हैं, यहाँ तक कि साधारण कृषक भी अपने जीवन को भार न समझ सुख और आनंद का साधन समझते हैं। चित्रों में जेक-निवासियों के जीवन के ही कई दृश्य दिखाए गए हैं।

दुर्घटनाएँ

(एक्सिडेंट)

अचानक हो जाती हैं,

काम में, आराम में, पढ़ाई या खेल-कूद में, मन-बहलाव या अन्य चेष्टाओं में साधारण चोटों का आ जाना, चाक़ू से घाव लग जाना, कील-शीशा लग जाना इत्यादि कष्ट प्रायः हो जाते हैं। यही नहीं, आजकल की मशीनों, रेल, मोटरों के प्रताप से टक्कर लग जाना या अन्य दुर्घटनाओं का भी दुर्भाग्यवश हो जाना असंभव नहीं। परंतु एक छोटी शीशी

अ मृ त धा रा

का पास रखना सब अवस्थाओं में अपनी रक्षा के लिये एक सच्चे मित्र और अंग-रक्षक को पास रखना है। यह न केवल खून रोकती, दर्द बंद करती, ज़ख्म भरती, सूजन दूर करती और ज़ख्म को विषैला होने से रोकती है, प्रत्युत मूर्च्छा और दिल डूबने की अवस्था में इसको सुँघाना और खिलाना शरीर में शक्ति का संचार कर देता है।

एक शीशी सदा पास रक्खो

मूल्य पूरी शीशी २॥), अर्द्ध १।), नमूना ॥)

लखनऊ-एजेंट—एच्० बी० काम, हिंदू-तंबाकू कं०

पता—अमृतधारा-फ़ार्मेसी, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी का मंदिर

[स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी']

उसने कहा—"सतीश ! क्या तुम्हारे पास भाई का दिल नहीं, जो अपनी एक ग़रीब बहन को दे सको ?"

सतीश पर मानो बिजली गिर पड़ी । कुछ सँभलकर उसने कहा—"कमल ! तुम कह क्या रही हो ? आज, मेरी इतने दिनों की तपस्या..."

बात काटकर कमल ने कहा—"नहीं सतीश ! मैं जो कुछ माँगती हूँ, अपने और तुम्हारे दोनो के भले के लिये माँगती हूँ, और वह तुम्हें देना ही पड़ेगा ।"

"क्यों ? अगर मैं इनकार करूँ ?"

"तो मैं समझूँगी, तुम्हारा प्रेम झूठा था, और वह थी केवल एक वासना ।"

"समझ गया, तुम मेरी परीक्षा लेती हो ।"

"बेशक, भाई बनकर अपनी कमल को चिर-स्नेह का अमर दान दे सको, इसीलिये—सतीश !"

"टूटा हुआ दिल, अरमानों की राख और बुझती हुई आत्मा का एक अभिशाप ! फिर भी—परीक्षा ? क्यों कमल ?"

"एक नए जीवन की तैयारी कर सको, इसलिये ।"

"लेकिन मैं सुखी न हो सकूँगा इस जीवन में, कमल !"

स्व० श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'

"भूलते हो सतीश ! समय की गति कैसी होती है—सोचा है कभी ? आँसू जब हँसी में बदल जायँगे एक दिन ?"

"कौन जाने !"

"भैया सतीश!"

"बहन !"

"आज का दिन कितना अच्छा है ? मैंने—मैंने तुम्हें अपना बना लिया भैया !"

"लेकिन कमल ! हमारा कर्तव्य-मार्ग ?"

"पृथक् होगा भाई ! पर हम-तुम आज के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मिलेंगे—संभवतः कितनी ही बार मिलेंगे। एक दिन ऐसा भी आएगा, जब..."

"जब ?"

"जब तुम्हें भाई का कर्तव्य थोड़ी दृढ़ता के साथ पालन करना होगा—बहन कहा है जिसे, उसकी लाज रखनी होगी।"

"मैं कुछ नहीं समझा कमल !"

"नहीं समझे ? अच्छा हुआ। भाई ! अब देर होगी, ट्रेन का समय......"

"पर, जाओगी कहाँ, कुछ बताओ तो ?"

"कैसे बताऊँ सतीश ! मौत से हर समय खेलनेवालों का ठिकाना कैसे बता सकती हूँ तुम्हें।"

"क्या ?"

"ऐसी ही बात है भैया ! देखो, तुम उसी सत्ता के ग़ुलाम हो, जिसे हम लोग मिटाना चाहते हैं। अच्छा, नमस्ते !"

पास खड़ी हुई मोटर पर बैठकर कमला चल दी। सतीश आश्चर्य से देखता रहा। दो बरस बाद कमला कितनी बदल गई थी। और फिर, वह कितनी रहस्यमयी ! परंतु—

सतीश ने जीती बाज़ी हार दी थी।

भाई और बहन कर्तव्य-पथ पर चल सकेंगे या नहीं—यह नाता निभाना है। सतीश के आगे यही प्रश्न था।

❀ ❀ ❀

रात को एक बजे पंजाब-एक्सप्रेस पूरी रफ़्तार से चली जा रही थी। सेकेंड क्लास के एक डब्बे में सिर्फ़ दो ही यात्री थे—बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर मिस्टर चोपड़ा और एक अप-टु-डेट फ़ैशनेबिल युवती। दोनो एक दूसरे से अपरिचित—आमने-सामने बर्थ पर बैठे थे।

मिस्टर चोपड़ा को कुछ ठंड मालूम हुई। उन्होंने अपने हाथ का अख़बार रख दिया। वह सिरहाने से कंबल निकालने लगे।

युवती ने अँगरेज़ी में पूछा—"महाशय ! क्या मैं आपका अख़बार ज़रा देख सकती हूँ ?"

सहज ही मुस्किराकर मिस्टर चोपड़ा ने उत्तर दिया—"ज़रूर, ज़रूर, शौक़ से देखिए।"

उन्होंने अख़बार उसकी ओर बढ़ाया। युवती ने अख़बार लेते हुए मुस्किराकर कहा—"धन्यवाद !"

"कोई बात नहीं।" कहकर मिस्टर चोपड़ा कंबल ओढ़कर लेट रहे। युवती अख़बार पढ़ने लगी। दो ही मिनट बाद गाड़ी की रफ़्तार कुछ कम होने लगी। युवती ने अख़बार रख दिया, और खिड़की के बाहर झाँक कर देखा, मुग़लसराय का स्टेशन आनेवाला था। पलक मारते ही उसने अपना हैंड-बैग खोला, कोई चीज़ उसके हाथ में चमक उठी। डब्बे की बिजली की बत्ती धीरे से उसने बुझा दी। खट से स्विच गिरने का शब्द हुआ। मिस्टर चोपड़ा चौंककर उठने लगे। युवती ने भरा हुआ रिवाल्वर उनके सिर से सटाते हुए कहा—"ख़बरदार, जो ज़बान से एक भी लफ़्ज़ निकला। उठकर अपना अटैची केस खोलिए।"

मिस्टर चोपड़ा ने चुपचाप उठकर अटैची केस खोला। युवती ने कड़ककर कहा—"आपके पास पचास हज़ार के नोट हैं, वे सब मुझे दे दीजिए।"

मिस्टर चोपड़ा कुछ हिचकिचाए। युवती ने कहा—"मेरी तरफ़ देखते हैं या नहीं ? जल्दी कीजिए, वरना मुझे मजबूरन् आपकी जान......"

मिस्टर चोपड़ा ने नोटों का बंडल धीरे से उसके हाथ में दे दिया। युवती ने कहा—"अब चुपचाप कंबल ओढ़कर लेट जाइए। ख़बरदार, जो आपने शोर मचाने का इरादा भी किया !"

मिस्टर चोपड़ा ने उसके हाथ की उँगलियाँ रिवाल्वर से खेलती हुई देखकर, कंबल ओढ़कर लेटना ही स्वीकार किया। ट्रेन पटरियाँ बदल रही थी। युवती तुरंत ही पेशाब-घर में घुस गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर चोपड़ा सिर्फ़ उसकी आवाज़ सुन सके—"याद रखिए, आपने शोर मचाया, और यह रिवाल्वर की गोली आपको अपना निशाना बना चुकी !"

दो मिनट बाद मुग़लसराय के स्टेशन पर गाड़ी रुकी।

मिस्टर चोपड़ा घबराकर उठे। शोर मचाया, भीड़ जमा हुई, पुलिस आई, जाँच-पड़ताल शुरू हुई। युवती का कहीं पता न था।

कुछ दिनों बाद अख़बारों में इस डकैती का हाल छपा। पता लगानेवाले के लिये लंबे-चौड़े इनाम की घोषणा की गई, परंतु व्यर्थ !

पुलिस और सी० आई० डी० ज़ोरों के साथ पता लगाती रही, लेकिन उस डकैत युवती का कुछ भी पता न चला।

❀ ❀ ❀

एक टूटे-फूटे मकान के बाहर पाँच-छ वर्ष का छोटा-सा लड़का अचानक ख़ुशी से फूलकर चिल्ला उठा—"दीदी आईं, दीदी आईं, अम्मा ! अरी अम्मा ! जल्दी आ, दीदी आ गईं !"

मकान के भीतर से एक दुबली-पतली स्त्री निकली। उसके तन पर फटे हुए, मैले वस्त्र थे। उसने कहा—"क्यों रे मन्नू ! कहाँ आईं दीदी ? झूठ ही "

मन्नू दौड़कर आगे पहुँचा। सामने से खद्दर की साड़ी पहने, छाता लगाए एक युवती आ रही थी। मन्नू उसकी उँगली पकड़कर उसे खींचता हुआ ले आया, और बोला—"ये देखो, दीदी आईं। मगर मेरी दीदी हैं, तेरी नहीं। हाँ अम्मा !"

उस युवती ने हँसकर कहा—"हाँ रे मन्नू, मैं तेरी ही दीदी हूँ।"

फिर वह उस स्त्री की ओर देखकर बोली—"नन्हे का क्या हाल है अब ?"

उसने जवाब दिया—"वैसा ही।"

"दवा दी थी ?"

"हाँ, कुछ फ़ायदा नहीं।"

"मैं देखती हूँ।" कहकर युवती ने ठंडी साँस ली। सब लोग भीतर गए। ज़मीन पर, चीथड़ों के बीच में, एक दुबला, रुग्ण शिशु सो रहा था। युवती ने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा, फिर बोली—"घबराना नहीं, दवा देती जाओ। ईश्वर चाहेगा, दो-एक दिन में फ़ायदा हो जायगा।"

युवती के हाथ में कपड़े की एक पोटली थी। उसने मन्नू को बुलाकर देते हुए कहा—"मन्नू ! ये हैं तेरे कपड़े, मिठाई और खिलौने ! ले जा, अब तो मेरी-तेरी खुट्टी नहीं रही। ले, मिट्टी हो गई ! बोल ?"

"मिट्टी हो गई ! दीदी से मिट्टी हो गई !"

सब चीज़ें पाकर मन्नू ख़ुशी से कूदने लगा।

मन्नू की मा बोली—"बेटी ! इस बार बहुत दिन......"

बात काटकर युवती ने कहा—"हाँ, मैं बाहर चली गई थी—बहुत दूर। तुम्हारे ख़र्च के रुपए ख़त्म हो गए होंगे अब तो ?"

युवती ने अपने हैंड-बैग से आठ रुपए निकालकर देते हुए कहा—"रक्खो इन्हें।"

मन्नू की मा ने रुपए लेकर माथे से लगाए, और अपनी धोती के छोर से बाँधते हुए बोली—"बेटी ! परमात्मा तुम्हें सदा सुखी रक्खे !"

"सुखी ?"

युवती हँस पड़ी। फिर क्षण-भर में ही उसका चेहरा गंभीर हो गया। वह बोली—"तुम लोग सुखी रहो, इसी में मेरा सुख है।"

"बड़ी उमर हो बेटी, तुम्हारी।"

युवती कुछ खीझकर बोली—"बस, यही आशीर्वाद तो तुम्हारा मुझे अच्छा नहीं लगता।"

मन्नू की मा कुछ सकुचाती हुई बोली—"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों की बात क्या करोगी जानकर ? अच्छा, लाओ थोड़ा-सा गुड़, वही, जो तुमने घर में बनाया था।"

मन्नू की मा भीतर से गुड़ की एक डली और लोटे में पानी ले आई। युवती गुड़ खाते हुए बोली "कितना मीठा है यह गुड़ !"

मन्नू की मा उसकी ओर देख रही थी। मन्नू नए कपड़े पहनकर खिलौने की मोटर-गाड़ी में मग्न हो रहा था।

❁　❁　❁

शाम को ड्यूटी से लौटकर सतीश अपना यूनी-फ़ार्म उतार रहा था। उसकी बूढ़ी मा ने आकर कहा—"भैया !"

सतीश चौंक-सा गया। उसने कहा—"क्या है मा !"

"कुछ नहीं, यही कह रही थी कि मुँह-अँधियारे का गया-गया तू अब लौटा है चिराग़ जले—सारे दिन कुछ खाया भी नहीं !"

सतीश कुछ सोचते हुए बोला—"हाँ।"

"आइने में मुँह तो देख बेटा ! कैसा सूख रहा है तू। जब से नौकरी की, दिन-रात किसी घड़ी चैन नहीं।"

सतीश बोला—"क्या करूँ मा ! नौकरी तो आख़िर नौकरी ही है।"

"मुझे तो तेरी यह नौकरी पसंद नहीं।"

"हाँ, मा ! सच कहती हो तुम। किसी और ने भी कहा था यही एक दिन।"

"किसने ?"

"मा ! मेरी एक बहन है, तुमने तो देखा है उसे ?"

"किसे ? कमल को ?"

"हाँ मा !"

"तो सच तो कहती है। लेकिन वह है कहाँ बेटा ! कई बरसों से उसे नहीं देखा।"

सतीश ने एक ठंडी साँस ली। वह क्या उत्तर देता। मा को क्या बता देता—क्रांतिकारी दल की सदस्या। कमल !

वह था सब-इंस्पेक्टर-पुलिस !

कपड़े बदलकर वह खाना खाने बैठा। मा पंखा हाँकने लगी। सतीश ने कहा—"मा ! सचमुच तुम्हें मेरी नौकरी पसंद नहीं ?"

मा ने बेटे की ओर देखा। सतीश के पूछने का ढंग देखकर वह कुछ समझ गई। बोली—"पसंद न होने की बात यही है कि तेरी तंदुरुस्ती दिनोंदिन गिरती जाती है।"

"अरे मा ! सब ठीक ही है, आजकल के ज़माने में रोज़ी का सवाल बड़ा टेढ़ा है। शाम तक रोटियाँ मिलती रहें जिससे, वही रोज़ी सबसे अच्छी !"

सतीश खाना खाने लगा। कुछ ठहरकर मा ने फिर पूछा—"भैया ! तू ब्याह कब करेगा ?"

पानी का गिलास रखते हुए सतीश ने उत्तर दिया—"ब्याह ? हो जायगा कभी। जल्दी काहे की ?"

"वाह रे ! जल्दी काहे की। क्या मैं अमर-फल खाकर बैठी हूँ, जो हमेशा जीती रहूँगी ? ब्याह कर तू, सुंदर-सी बहू घर में आए, मैं भी आँखों का सुख देख लूँ कुछ दिन।"

"लेकिन मा ! कमल ने तो ब्याह नहीं किया, अभी तक नहीं किया ?"

"छोड़ रे उसकी बात। आजकल पढ़ी-लिखी लड़कियाँ ऐसे ही फिरने में अपनी शान समझती हैं।"

"पर, जब लड़की होकर उसे ब्याह की जल्दी नहीं, तो मुझसे ही क्यों ब्याह करने को कहती हो ? मैं कौन बूढ़ा हो गया हूँ ?"

किसी ने द्वार की साँकल खटकाई। रामू ने आकर कहा—"चौकी पर से सिपाही आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कहता है, सुपरिंटेंडेंट साहब का टेलीफ़ोन आया था। आपको जल्दी बँगले पर बुलाया है, ज़रूरी काम है।"

सतीश ने कहा—"जाकर कह दे, मैं अभी आया।"

रामू चला गया। सतीश ने जल्दी से खाना समाप्त किया, और कपड़े पहनने लगा। बूढ़ी मा ने धीरे से कह ही डाला—"कैसे सुख की नौकरी है तेरी, क्यों रे सतीश ?"

सतीश कपड़े पहनकर चल दिया।

❀ ❀ ❀

बंबई में जेनरल एक्सपोर्ट कंपनी के मालिक मगनलाल-मानिकचंद अपनी दूकान बंद कराकर घर जाने की तैयारी में थे। उन्होंने ख़ज़ांची से कहा—"आज की रोकड़ ?"

ख़ज़ांची ने थैली उठाकर उनके हाथ में देते हुए कहा—"उंतालीस हज़ार, पौने पाँच आने।"

सेठ मानिकचंद ने थैली सँभाली, और द्वार तक आए, इतने में एक मोटर बड़ी तेज़ी के साथ आकर सामने रुकी।

किसी ग्राहक को आता जानकर वह पीछे हटे। दस बजकर बीस मिनट आए थे, और रात का वक्त दूकान बंद करने का था, फिर भी वह ठहर गए कि शायद कोई ज़रूरी काम से ग्राहक आया हो।

मोटर से एक पारसी रमणी उतरकर उनके सामने आई। उसने कहा—"सेठजी ! मुझे आपसे बहुत ज़रूरी प्राइवेट बात कहनी है, ज़रा भीतर तो चलिए।"

"हाँ-हाँ, चलिए।" कहकर सेठ मानिकचंद उसे दूकान के भीतर अपने प्राइवेट कमरे में ले गए।

कमरे में पहुँचने के साथ ही उस पारसी रमणी ने कहा—"आपने बिहार-भूकंप-पीड़ितों के लिये कितना चंदा दिया है ?"

सेठजी थोड़ा चकराए, फिर कुछ सकपकाकर बोले—"ज़रूरत ? मैंने तो चंदा नहीं दिया।"

रमणी ने एक भरा हुआ पिस्तौल उनके सामने करते हुए कहा—"तो आज की बिक्री का सारा रुपया इधर लाइए। जो लोग ख़ुशी से नहीं दे सकते, उनका यही इलाज है।"

सेठजी ने रुपयों की थैलीवाला हाथ पीछे हटाने की चेष्टा की। पारसी रमणी ने उनकी इच्छा समझकर ज़ोर से कहा—"बस, ठहरिए, रुपया इधर लाइए, वरना आपकी ज़िंदगी..."

सेठजी ने चुपचाप थैली उसके हवाले कर दी। रमणी ने कहा—"बस, आप यहीं ठहरिए, सिर्फ़ दो मिनट तक।"

पलक मारते ही वह रमणी रुपयों की थैली लिए हुए बाहर निकली, और मुनीमजी तथा ख़ज़ांची से कहा—"दौड़ो, जाओ, सेठजी शायद बेहोश हो गए हैं। मैं डॉक्टर को बुलाती हूँ।" सब लोग भागकर भीतर गए।

रमणी ने जेब से चाक़ू निकालकर टेलीफ़ोन का तार काट दिया, और पलक मारते ही मोटर में जा बैठी। मोटर हवा से बातें करने लगी।

जब सेठ मानिकचंद और उनके कर्मचारी बाहर आए, तब पारसी रमणी का कहीं पता न था। दौड़ो, पकड़ो, डाका पड़ गया, सब कुछ शोर मचा। टेलीफ़ोन करके पुलिस को बुलाना चाहा, मगर तार ही कटा हुआ !

सेठ मानिकचंद सिर पकड़कर जहाँ के तहाँ बैठ गए।

"हाय रे उंतालीस हज़ार रुपए !"

उन्हें अपनी लाचारी पर क्रोध आ रहा था। एक मामूली औरत के हाथों लुट जाने का यह पहला ही अवसर था।

ख़ज़ांची ने कहा—"सेठजी ! अब क्या होगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठजी चौंककर बोले—"वही, जो रोज़ हुआ करता है।"

"मगर रोकड़ की थैली ?"

"अरे, रोकड़ गई और थैली भी गई, मगर..."

"मगर—अब क्या करें ?"

"कुछ नहीं, मैं तुम्हारा मुँह देखूँ और तुम मेरा।"

बेचारा ख़ज़ांची चुपचाप जाकर गद्दी पर बैठ गया। सेठजी की छाती धक्-धक् कर रही थी।

❀ ❀ ❀

पुलिस-सुपरिंटेंडेंट मिस्टर एकमैन ने अपने हाथ का सिगार ट्रे में रखते हुए कहा—"वेल, सब-इन्स्पेक्टर ! तुम बहुत तेज़ आदमी है, होशियार है।"

सतीश ने उत्तर दिया—"फिर आपका हुक्म ?"

"इसीलिये तुम जाकर फूलपुर में इनक्वायरी कर सकता है। वह लेडी फूलपुर जाया करता है। समझा, मेरा रिपोर्ट सच्चा है। तुम कब जायगा ?"

"कल ही शाम की ट्रेन से।"

"मगर होशियार रहने का है। वह लेडी बड़ा खतरनाक है।"

"जी, सुना ऐसा ही है।"

"देखो मिस्टर सतीश ! तुम उसको पकरेगा, तो तुम्हारा तरक्की हो जायगा—ग्रेड बढ़ जायगा। तुम अच्छा आदमी है।"

सतीश ने कुछ गंभीरता से कहा—"आपकी मेहरबानी।"

साहब ने अपनी मेज़ की दराज़ से दो फ़ोटो निकालकर सतीश को देते हुए कहा—"यह फ़ोटो उसी का है, देखता है तुम ? मगर दूर से ज़्यादा लाइट का है, इसलिये साफ़ नहीं !"

सतीश फ़ोटो देखकर चौंक पड़ा। शायद उसने इसे पहले भी कहीं देखा है। क्रांतिकारिणी डकैत रमणी। कितनी सुंदर थी वह तस्वीर !

सतीश ने कहा—"समझ गया।"

साहब ने कहा—"कल शाम को तुम जायगा जरूर, और फूलपुर के ठाने का जितना कान्सटेब्ल चाहेगा, तुमको मिलेगा। मेरा ऑर्डर भेजा है, वहाँ जाओ।"

सतीश सलाम करके चल दिया। बँगले के बाहर आते ही एक ताँगेवाले ने पूछा—"हुज़ूर, ताँगा लाऊँ ?"

सतीश ने इशारा किया, ताँगा पास आया, सतीश बैठ गया, ताँगेवाले ने पूछा—"किधर चलूँ हुज़ूर ?"

सतीश ने उत्तर दिया—"कूचा दौलतराम।"

ताँगा चल दिया।

रास्ते में सन्नाटा था। दो-चार लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। ताँगेवाला बोला—"हुज़ूर, आज बड़ी रात हो गई। क्या बजा होगा ?"

सतीश ने अपनी रिस्टवाच की ओर देखा। कहा—"साढ़े बारह।"

ताँगेवाले ने कहा—"ओफ़् ! बड़ी ही देर हो गई आज तो।"

लगभग दस मिनट बाद ताँगा कूचा दौलतराम के मोड़ पर घूम रहा था। सामने से साइकिल पर एक आदमी बेतहाशा भागता हुआ आया, और ताँगे के अंदर एक बंद लिफ़ाफ़ा फेंकता हुआ चला गया।

सतीश ने लिफ़ाफ़ा उठाकर खोल डाला। अँगरेज़ी में टाइप किया हुआ एक छोटा-सा पत्र था। सतीश पढ़ने लगा। पत्र का मज़मून था—"कुएँ में कूदने के पहले उसकी गहराई और अपनी सामर्थ्य का अंदाज़ा लगा लेना हरएक समझदार इन्सान का काम होता है। आप जिस काम में हाथ डालने जा रहे हैं, उसमें ख़तरा है। अच्छा होगा, आप इनकार कर दें। याद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखिए, यह आपका देश-द्रोह है, जिसकी सज़ा आपको तुरंत ही दी जायगी, अगर आपने अपना इरादा न बदला।

सिर्फ़ आपका एक हितैषी"

पत्र का मज़मून पढ़कर सतीश कुछ मुस्किराया। उसका घर आ गया था।

ताँगेवाले ने पूछा--"हुज़ूर ! जाऊँ या ठहरूँ ?"

सतीश ने कहा—"जाओ।"

पैसे लेकर ताँगेवाला चल दिया।

❀ ❀ ❀

वही गाँव, वही टूटा हुआ मकान।

मन्नू की मा एक कोने में पड़ी हुई भीषण ज्वर में कराह रही थी। उसका छोटा-सा शिशु उसकी छाती से चिपका हुआ सूखे स्तनों को मुँह में लगाए व्याकुल-सा हो रहा था।

आठ दिन से जिसे भोजन न मिला हो, उस माता के स्तनों में दूध कहाँ से आएगा। बेचारा अबोध शिशु क्या जाने इस बात को !

मन्नू लकड़ी के एक घोड़े पर लकड़ी के सवार को बिठाने की कोशिश कर रहा था, मगर सवार बार-बार गिर पड़ता था। खीझकर उसने घोड़ा और सवार, दोनो को एक तरफ़ फेंक दिया, और मा के पास आकर बोला—"मा ! दीदी कब आएँगी ?"

मा ने क्षीण स्वर में कहा—"क्या जानूँ बेटा ?"

मन्नू उठकर द्वार तक गया। इधर-उधर देखा, फिर लौटकर मा के पास आ बैठा, और बोला—"अभी तक नहीं आईं दीदी ?"

मा ने ज्वर के ताप से व्याकुल होकर कहा—"हे भगवान् !"

मन्नू ने सहज ही दुहराया—"हे भगवान् !"

फिर उसने किंचित् जिज्ञासा से पूछा—"मा ! भगवान् कौन हैं ?"

मा ने उत्तर दिया—"परम पिता हैं वह। मेरे, तेरे, सारी दुनिया के रखवाले वही हैं बेटा !"

"तूने उन्हें देखा है मा ? कैसे हैं वह ?"

मन्नू की मा को बड़े ज़ोर की खाँसी आई। मुँह से थोड़ा रक्त मिला हुआ कफ निकला।

कुछ ठहरकर उसने कहा—"मन्नू ! पानी दे।"

मन्नू ने मिट्टी के एक कुज्जे में पानी पिला दिया। पानी पीकर वह कुछ स्वस्थ हुई। बोली—"वह किसी को दिखाई नहीं देते, पर वह सबको देखते होंगे बेटा !"

मन्नू के मन में यह बात न जम सकी। उसने पूछा—"दिखाई नहीं देते ? कैसे भगवान् हैं वह ?"

"बड़े सुंदर, बड़े अच्छे बेटा ! वह घट-घट की जानते हैं, तू भी उनका नाम लिया कर।"

मन्नू थोड़ा खीझकर बोला—"मैं तो उनका नाम न लूँगा। तुझे मा कहता हूँ, तो तू बोलती है, कहती है हाँ बेटा। और, भगवान् बोलते तक नहीं !"

मा चुप हो गई। मन्नू थोड़ी देर उसकी ओर देखता रहा। मा की आँखों में आँसू भर आए थे। मन्नू बोला—"तू रोती क्यों है मा ? मैंने भगवान का नाम नहीं लिया इसीलिये ? अच्छा मा ! रोना मत। मैं उनका नाम लूँगा। कैसे ?"

रोगिणी ने क्षीण स्वर में कहा—"हे भगवान् !"

मन्नू के कंठ से निकला—"हे भगवान् !"

द्वार खोलकर पड़ोसी हरखू ग्वाला हाथ में लोटा लिए भीतर आया। मन्नू की मा के पास पहुँचकर बोला—"कैसा जी है काकी ?"

"कैसा बताऊँ। अब तो......"

वह कुछ न कह सकी। हरखू ने कहा—"काकी ! यह दूध लाया हूँ। दो सेर है, बच्चों को पिला दो, थोड़ा तुम भी पी लो। गरम किया हुआ है।"

हरखू ने लोटा उसके पास रख दिया, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला—"तुम घबराना नहीं। कोई तकलीफ़ हो, मुझे कहला देना खेत पर। देखो, दीदी कह गई थीं कि मन्नू की मा को कोई तकलीफ़ न होने पाए।"

"भगवान् तुम्हारा भला करें।" मन्नू की मा ने धीरे से कहा। हरखू चला गया।

❀ ❀ ❀

धीरज गाँव के इलाक़े में ठाकुरों ने गाँव के चौधरी हीरा के घर क़ुर्की भेजी। गाय, भैंसें, हल, बैल, सब खोलकर बाहर खड़े किए गए। हीरा सतृष्ण नेत्रों से उनकी ओर देख रहा था। आँखों में आँसू भरे हुए वह चुप खड़ा था। कारिंदे घर के भीतर जाने लगे। अब हीरा से न रहा गया। वह बोला—"भाई! औरतों में क्यों घुसे जाते हो? यहीं ठहर जाओ। लोटा-थाली जो कुछ है, मैं ख़ुद ही लाए देता हूँ।"

एक कारिंदे ने डाँटकर कहा—"ख़ामोश। हम अपना काम करते हैं। तू कौन होता है रोकनेवाला?"

हीरा को क्रोध आ गया। वह लपककर घर के द्वार पर जा खड़ा हुआ। उसने कहा—"मेरे जीते-जी औरतों को बे-आबरू नहीं कर सकते तुम।"

कारिंदे ने पलटकर एक भरपूर तमाचा हीरा के गाल पर दिया। पाँचो उँगलियाँ उछल आईं। बूढ़ा हीरा ख़ून का घूँट पीकर रह गया। कारिंदे ने आवाज़ दी—"माधोसिंह, लल्लू महाराज, देखते क्या हो? दो-एक लट्ठ सीधा हो जाय।"

दोनो कारिंदे लाठी उठाकर हीरा की ओर लपके।

गाँववालों की भीड़ खड़ी देख रही थी। एक जवान बाहर कूदकर आया, और उसने पलक मारते ही दोनो कारिंदों की लाठियाँ पकड़ लीं। लल्लू महाराज गरजकर बोले—"तू कौन है रे! बड़े बाप का बेटा! बड़ी हमदर्दी है, निकाल टेंट से साढ़े तीन सौ रुपए।"

जवान ने उत्तर दिया—"कोइ भी हूँ, मगर नवाबी नहीं है यहाँ। सरकारी अमलदारी में घरजानी-मनमानी नहीं चलेगी तुम लोगों की। देखूँ, किसका दम है, जो घर में घुसे।"

वह जवान हीरा के पास जाकर खड़ा हो गया।

तीनो कारिंदों ने लाठियाँ ऊँची कीं। इतने में, जाने कहाँ से, एक औरत दौड़ती हुई आ खड़ी हुई। बोली—"ठहरो।"

सबने देखा, खद्दर की साड़ी पहने हुए एक सुंदर स्त्री सामने खड़ी थी। उसने कारिंदों की ओर घूमकर कहा—"क्यों इतना ज़ुल्म करते हो?"

माधोसिंह ने उत्तर दिया—"ज़ुल्म? लगान का रुपया अदा नहीं होता, तो क्या हमारी सख़्ती को ज़ुल्म कहोगी?"

लल्लू महाराज ने त्योरी चढ़ाकर कहा—"बड़ी हिमायतिन बनी हो, तो रुपया दो। हमें ज़ुल्म-उल्म कुछ नहीं मालूम।"

उस स्त्री ने हीरा की ओर देखा, फिर बोली—"चौधरी! कितना रुपया देना है तुम्हें?"

हीरा ने उत्तर दिया—"साढ़े तीन सौ। मगर..."

उस स्त्री ने अपना हैंड-बैग खोलकर नोटों की एक बड़ी-सी गड्डी निकाली। साढ़े तीन सौ गिनकर कारिंदों के हाथ पर रक्खे, फिर बोली—"जाओ, अगर फिर कभी ऐसी हरकत की, तो याद रखना।"

माधोसिंह बोला—"क्या फाँसी दिला दोगी?"

स्त्री ने थोड़ा ठहरकर कहा—"फाँसी? वह सज़ा भी तुम लोगों के लिये कम है। जाओ, चलते हो यहाँ से।"

कारिंदे चले गए।

हीरा आगे बढ़कर उस स्त्री के पैरों पर गिर पड़ा। रोते-रोते बोला—"माजी! आपने आज मेरी आबरू बचा ली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ने कहा—'चौधरी ! उसी ईश्वर पर भरोसा रक्खो। इन्सान कुछ नहीं कर सकता। सब उसी की इच्छा से होता है।"

गाँववाले उसकी ओर बड़ी श्रद्धा से देख रहे थे!

❀ ❀ ❀

दीपक का तेल समाप्त हो चुका था। मन्नू ने कहा—"दीदी! मा का जी कैसा है?"

उसने एक ठंडी साँस ली। फिर बोली—"बेटे! क्या बताऊँ। तेरी मा..."

उसके आँसू न रुके। मन्नू बोला—"दीदी! मा क्या सो गई है?"

उसने उत्तर दिया—"सो गई है। सदा के लिये सो गई है बेटा!"

उसने मन्नू को अपनी छाती से लगा लिया, फिर बिछौने पर मृत मा के पास ही बिलखते हुए शिशु की ओर देखकर कहा—"मन्नू! दूध का लोटा उठा ला।"

उसने एक दूध पिलाने की शीशी में थोड़ा दूध भर शिशु के मुँह से लगाया। शिशु दूध पीने लगा। दीपक एकाएक ज़ोर से जल उठा। किसी के आने की आहट पाकर दीदी ने पीछे मुड़कर देखा। किसी ने एकाएक हाथ बढ़ाकर उसका हैंड-बैग खूँटी पर से उतार लिया था। वह चौंकी। साथ ही पाँच पुलिसवाले उस घर में घुस आए। उनके हाथ में बंदूकें थीं। दीदी का हृदय धड़कने लगा। सामने सतीश। सब-इंस्पेक्टर-पुलिस हाथ में पिस्तौल लिए उसकी ओर क्रोध से देख रहा था!

सतीश ने कहा—"उठो, हमारे साथ चलो, कमल!"

मन्नू ने घबराकर पूछा—"दीदी! ये कौन हैं? सिपाही क्यों आए हैं? तुम क्या इनके साथ जाओगी?"

कमल ने कुछ न कहकर मन्नू को छाती से लगा लिया।

सतीश बोला—"कमल! उठो, हमें देर होती है।"

कमल ने कहा—"भैया!"

सतीश की आत्मा हिल उठी। कमल कहने लगी—"भैया! ये देखो, एक अनाथा ग़रीबिनी की लाश पड़ी है। ये दोनो बच्चे हैं इसी के!"

सतीश कुछ न बोला। शिशु को दूध पिलाते हुए कमल ने फिर कहा—"भैया! चलती हूँ मैं अभी। इस बच्चे को दूध पिला दूँ। बहुत भूखा है यह!"

सतीश का हृदय धड़क रहा था। उसने बड़े धीरज से कहा—"कमल! दया से भरे हुए इस हृदय में इतनी कठोरता कैसे आ जाती है? मालूम है, तुमने कितना ग़ज़ब ढा रक्खा है, जिसकी वजह से हम लोगों को यहाँ आना पड़ा है।"

कमल ने उत्तर दिया—"क्या कहूँ सतीश! अब भी मेरे मन की उमंगें पूरी नहीं हो सकी हैं, और बीच ही में तुम आ गए।"

घर का दीपक बुझ गया। चारो ओर अँधेरा छा गया। कमल उठ खड़ी हुई। सिपाही पीछे हट गए। वह सतीश के पास आ खड़ी हुई। उसने धीरे से कहा—"भैया! याद है अपना वायदा?"

सतीश मंत्र-मुग्ध-सा कह गया—"याद है, मगर मैं अपना कर्तव्य......"

बात काटकर कमल ने कहा—"सब-इंस्पेक्टर-पुलिस का कर्तव्य क्या भाई के कर्तव्य से बढ़कर है?"

सतीश कुछ सोचने लगा, फिर बोला—"बहन! भाई का कर्तव्य भी पालन करूँगा, और नौकरी का भी।"

सतीश का दाहना हाथ कमल के हाथ से छू गया, कमल समझ गई। उसने सतीश के हाथ से पिस्तौल लेकर, अपने माथे से लगाकर घोड़ा दबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया ! ठायँ ! एक आवाज़ हुई । कमल का निश्चेष्ट शरीर धरती पर गिर पड़ा ।

सतीश ने रूमाल से अपने आँसू पोंछते हुए पीठ फेर ली, फिर सिपाहियों से कहा—"उठाओ इसकी लाश, ले चलो ।"

सिपाही लाश उठाकर चलने लगे । मन्नू रोकर सतीश के पैरों से चिपट गया, और रोते-रोते बोला—"दीदी को मत ले जाओ, मत ले जाओ ।"

सतीश ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"भैया ! दीदी तो गईं—हमेशा के लिये चली गईं ।"

मन्नू सोचने लगा । वह कुछ न समझा ।

सतीश जल्दी से घर से बाहर निकल गया ।

❀ ❀ ❀

शहर में, अपने घर पहुँचकर सतीश ने कहा—"मा !"

बूढ़ी मा ने कहा—"क्या है बेटा !"

"कमल मर गई, और मैंने नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया । तुमने कहा था न कि यह नौकरी तुम्हें पसंद नहीं ?"

बुढ़िया ने कुछ न कहा ।

❀ ❀ ❀

धीरज गाँव और फूलपुर की सरहद पर गाँववालों ने एक छोटा-सा मंदिर बनवा दिया । उसको वे लोग 'दीदी का मंदिर' अब तक कहते हैं । सतीश ने उसे देखा है ।

वह भाई है उस बहन का, जिसने उसकी आत्मा को एक नया जीवन दे दिया था, और मन्नू ? वह 'दीदी' को याद कर बहुत रोता है ।

सिर्फ़ दो रुपए बारह आने में ६ घड़ियाँ

चार डमी रिस्ट वॉच, एक डमी पॉकिट वॉच, एक असली जर्मनी टाइम-पीस

गारंटी बारह साल

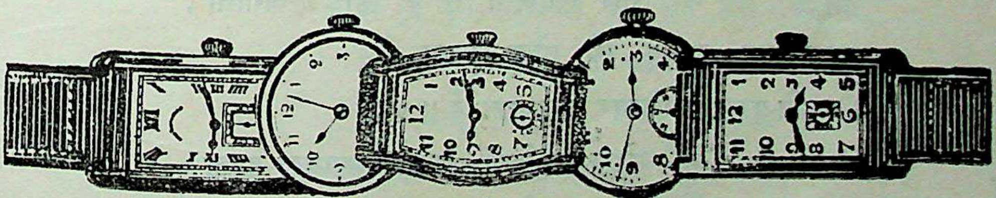

ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर विलायत से भारी तादाद में मँगाई हैं । सिर्फ़ १० हज़ार घड़ियाँ हर रियायती मूल्य पर बेचने का निर्णय किया है । इसलिये जल्दी ऑर्डर देकर रियायत का फ़ायदा उठाएँ, वर्ना मौक़ा हाथ न आएगा । घड़ियों के साथ एक असली फ़ाउंटेनपेन १० कैरिट की गोल्ड निब के सहित, एक ठंडी ऐनक, एक ख़ूबसूरत मोतियों का हार बिलकुल मुफ़्त दिया जायगा । डाक-महसूल तथा पैकिंग अलग । नापसंद होने पर क़ीमत वापस होगी ।

दि जमन नॉवेल्टी स्टोर, B. D. कराची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति-पुरुष

[श्रीलक्ष्मीनारायण टंडन 'प्रेमी' बी० ए०, साहित्य-रत्न]

मैं ही निर्मित हूँ, मैं ही निर्माता हूँ,
मैं प्रकृति - पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ १ ॥
मैं निशानाथ, मैं ही तारक - मंडल हूँ,
मैं मलयानिल, मैं अचर बवंडर-दल हूँ,
मैं प्रकृति-नटी का शुभ्र सुहाग अचल हूँ,
मैं बड़वानल - अविरुद्ध - रूप पाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ २ ॥
मैं हूँ बिजली की कड़क, घोर घन-गर्जन,
मैं हूँ जल-कण का नभ में आत्मविसर्जन,
मैं तिमिराच्छन्न प्रदेश - वक्ष का तर्जन,
घन - प्रलय - युद्ध में असि मैं चमकाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ३ ॥
मैं दिवानाथ - दर्शन ही से खिल जाता,
फिर नश्वरता को देख स्वतः मुरझाता,
मैं लोल लहरियों से हूँ होड़ लगाता,
आतप - तप - वारण को ग़ोता खाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ४ ॥
मैं सरस कुमुद्विनी - वदन - म्लानता हरता,
मैं सुधा वनस्पति-संकुल में हूँ भरता,
मैं सरिता - वक्षःस्थल पर खेला करता,
मैं क्रीड़ामय, वर विरत बना जाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ५ ॥
मैं ही हाला हूँ, मैं ही स्वर्गिक प्याला,
मैं ही पीनेवाला, मैं साक़ी-बाला,
मैं ही मधु-घट हूँ, मैं ही हूँ मधु-शाला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ही मस्ती का संदेशा लाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ६ ॥

शाखा-स्थिर हो मैं पंचम स्वर से बोला—
'पी कहाँ ?' बोलकर निज अंतस्तल खोला,
मैं विहग-वर्ग का प्रतिनिधित्व ले डोला,
नीरव निशीथिनी को मैं अपनाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ७ ॥

मैं केकी-गण का सौम्य-सुरंजित नर्तन,
जलधर ही के अनुरूप विशद परिवर्तन,
विविधा प्रतिमाओं का मैं ही संघर्षण,
मैं अस्थिर को थिर, थिर को विचलाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ८ ॥

मैं ही श्रोता, मैं ही हूँ कहनेवाला,
मैं यौवन-मत्त, अधीर, विदग्धा बाला,
अनुभव-सशक्त, बल-त्यक्त, वृद्ध गुण-माला,
मैं ही भिक्षुक-निर्धन, मैं ही दाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ९ ॥

मैं हूँ युग - युग की असफल प्रेम - कहानी,
मैं हूँ निःश्वास, निपात, आर्ततर बानी,
मैं नमित, विसूरित, गहन अश्रु का पानी,
मैं चिर वियोग के रँग में रँगराता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ १० ॥

मैं मत - मतादि की दुखमय ठेलाठेली,
आकार - रहित भी, भी हूँ नवल नवेली,
बेबूझी जग की अब तक एक पहेली,
मैं पाप - पुण्य - यावज्जीवन - नाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं मंदिर, मसजिद, गिरजे में, घर-बाहर,
मैं अवनी-पति, प्रोहित, मंत्री, चर-परिकर,
मैं जीवन-मरण-रहस्य, हास्य, दुख दुखकर।
उत्थान - पतन का दृश्य न! सरसाता हूँ?
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ॥ १२॥

मैं ही साधन हूँ, मैं ही हूँ शुभ योगी,
मैं ही हूँ राजस भोग, स्वयं मैं भोगी,
मैं रोग, निदान सुऔषधि, मैं ही रोगी,
मैं ही सुर-गायन और स्वयं गाता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ॥ १३॥

मुझको क्यों व्यर्थ पुकार रहे क्रंदन में?
'प्रेमी' क्यों विस्मृति कर बैठे स्पंदन में?
मैं सर्व ठौर, मैं सर्वकाल, बंदन में?
मैं धरकर नाना रूप यहाँ आता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ॥ १४॥

ओ पंच - तत्त्व - मिश्रण! न नाश मम होता,
मैं केवल प्रस्तुत जीर्ण रूप निज खोता,
प्रत्यावर्तन का मंत्र - बीज नित बोता,
मैं आदि, मध्य, अवसान, पिता, माता हूँ,
मैं प्रकृति-पुरुष परमेश्वर कहलाता हूँ॥ १५॥

निठल्लू की राम-कहानी

(हास्य-रस की अनुपम पुस्तक)

लेखक, श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा; द्वितीयावृत्ति छपकर तैयार है। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित
झंडु

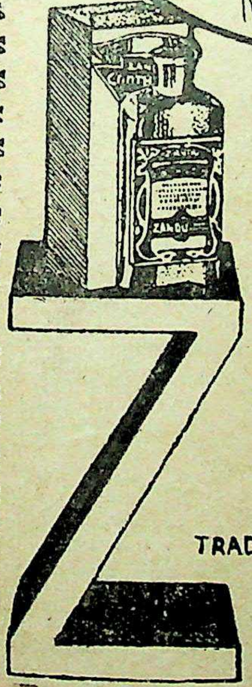

कथारिडीन आइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं,
मस्तिष्क को शीतलता और ताज़गी मिलती है।
आज ही से आजमायश के लिये ख़ास सिफ़ारिश है।

TRADE MARK

झंडु-फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, पोस्टबॉक्स नं० ५५१३, बं० १४
यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ के „ „—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

*** सात भाग ***

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं, क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है। उनके रोग दूर भागते हैं, इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद रोज़ों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है!

	पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय १ ला भाग	३)	१।।)
,, २ रा भाग	५)	२।।)
,, ३ रा भाग	४।)	२=)
,, ४ था भाग	४।)	२=)
,, ५ वाँ भाग	५)	२।।)
,, ६ ठा भाग	३।।)	१।।)
,, ७ वाँ भाग	१०।।)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा १२ वाँ संस्करण	३)	१।।)

दो हज़ार वर्षों में नई बात!

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

	मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक सचित्र	४।।)	२।)
वैराग्य ,,	५)	२।।)
श्रृंगार ,,	३)	१।।)
	१२।।)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास एंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटपीस के व्यापारियों के लिये अलभ्य अवसर

कटपीस के स्पेशल बंडल

कटपीस के शौक़ीनों के लिये सुनहरा अवसर

केवल एक मास के लिये बिलकुल

थोड़े भावों पर

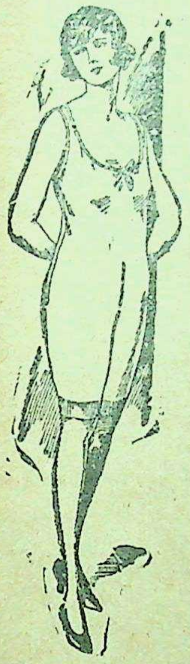

हम आपको ईमान और धर्म की सौगंद देते हुए निवेदन करते हैं कि अगर ये बंडल बड़ाई (यानी तारीफ़) के योग्य और लाभ के देनेवाले हों, तो आप का पहला नियम है कि अपने इष्ट-मित्रों से हमारे इन स्पेशल बंडलों की सिफ़ारिश करें। अगर ये सब बातें न हों, तो ख़ुशी से वापस करके अपनी क़ीमत मँगवा लें। इससे विशेष लिखना फ़िज़ूल है, क्योंकि इस मास में कटपीस के भाव बहुत कम हो गए हैं। इसीलिये आपके वास्ते यह बहुत सुंदर समय है। बंडल घरेलू आवश्यकता और हर ग़रीब-अमीर, विशेषतः व्यापार करनेवाले मनुष्यों के वास्ते लाभदायक हैं। जिस स्थान पर ये बंडल जाते हैं, बार-बार ऑर्डर आते हैं; विशेषकर स्त्रियों में बेचकर काफ़ी लाभ पैदा कर सकते हैं। सुंदर वस्तु है।

एक्स्ट्रा बंडल

दरजा १ इस बंडल में तमाम ख़ास क्वालिटी का सुंदर रेशमी विलायती कटपीस मोरोकेन जॉरजट, वाईल, करेप, बोसकी इत्यादि के अलावा नए-नए डिज़ायन की रेशमी साड़ियाँ इत्यादि बहुत सुंदर क्वालिटी का माल है। इसमें विवाह-शादियों की वस्तुएँ होती हैं, लंबाई १॥ गज़ से १० गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड १०८), २० पौंड ५५), १० पौंड २८)

फ़ैमिली स्पेशल बंडल

इसमें भी ऊपर का माल है। क्वालिटी में थोड़ा ही भेद होगा। लंबाई १॥ गज़ से ८ गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड ८८), २० पौंड ४५), १० पौंड २३)

तिजारती स्पेशल बंडल

इसमें भी ऊपर की तरह मोरोकेन पैलस, करेप, जॉरजट, मलाई साटन, पापलेन, जंपर, छींट इत्यादि नए-नए डिज़ायन के कई प्रकार के कपड़े होंगे। लंबाई १॥ गज़ से ८ गज़ तक होगी। क़ीमत ४० पौंड ६५), २० पौंड ३३), १० पौंड १७)

नए साल की ख़ुशी में एक १६३६ की ख़ास वस्तु हरएक बंडल के साथ मुफ़्त भेजी जायगी।

ज़रूरी नोट—ऑर्डर के साथ चौथाई हिस्से की क़ीमत पहले आनी ज़रूरी है।

पता—मैनेजर अमरीकन कटपीस इंपोर्ट कंपनी, न्यू क्लाथ-मारकेट, कराची सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप केवल कूपन भेज दीजिए, जिसमें लिख दीजिए के "पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा" आप हिंदी ं चाहते हैं या उर्दू-अँगरेज़ी में। आपके पास एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक की लिखी हुई मनोरंजक पुस्तक पहुँच ायगी। उसमें एक पूर्ण-यौवन पुरुष के लक्षण तथा उन सभी कठिनाइयों को दूर करने के साधन दिए गए हैं, जो आम तौर र एक विवाहित पुरुष के रास्ते में रुकावट डालती हैं।

केवल विवाहित पुरुषों को भेजी जाती है।

कूपन डाक द्वारा भेजिए

सेवा में, मैनेजर अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर (१३)

ृपया 'पुरुषों के विशेष रोग और उनकी चिकित्सा'-नामक पुस्तक की एक प्रति मुफ़्त भेजकर कृतार्थ करें। मैं हिंदी, र्दू, अँगरेज़ी, बंगाली में चाहता हूँ।

नाम ....

पूरा पता ....

डाक व तार का पता—**अमृतधारा-फ़ारमेसी, लाहौर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिंदी के निर्माता

[श्रीआत्मानंद मिश्र एम्० ए०, बी० एस-सी०, एल्-एल्० बी०, विशारद]

(गतांक से आगे)

भाषा और शैली

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, अनुवादों में द्विवेदीजी की भाषा-शैली का विकास तथा परिष्कार होता हुआ दिखाई देता है, और आजकल की दृष्टि से उसमें और भी परिवर्तन किए जा सकते हैं। उन्होंने क्रमशः एक नया मार्ग प्रशस्त करना चाहा, परंतु उस मार्ग में एक व्यवस्था थी। वह हिंदी का संस्कृत से व्यावहारिक संबंध रखना चाहते थे। वह हिंदी में अपनाया हुआ संस्कृत से एक श्रेणी नीचे का अपभ्रंश अपने प्रयोग में लाते थे, परंतु इससे आगे बढ़ना उन्हें वांछित न था। वह ग्रामीण शब्दों का प्रयोग, जहाँ तक हो सकता था, बचा जाते थे। कारण, उन्हें भाषा-संस्कृत-रक्षा का बड़ा ध्यान था। शुद्ध संस्कृत-वाक्य-विन्यास के बीच कभी-कभी वह लाल टोपीवाले उर्दू-मुहावरे भी बैठाल देते थे। उनका शब्द-चयन मध्य-मार्ग पर ही चलता था। यह द्विवेदीजी की आदि एवं मध्यकालीन गद्य-शैली थी। उनके प्रौढ़ काल के गद्य में उसी मिश्रित शैली, टकसाली हिंदी, न संस्कृत, न उर्दू—जिसे भारतेंदु की शैली का परिमार्जित रूप कह सकते हैं, और जो 'महावीरी हिंदी' के नाम से विख्यात है—का ही प्रयोग हुआ है। इसका शब्द-चयन सरल, विशुद्ध तथा सार्थक है। द्विवेदीजी का भाषा पर इतना अधिकार था कि उनके संकेत-मात्र से ही शब्द अपने उपयुक्त स्थान पर सुचारु रूप से सज जाते थे।

अभी तक विशेष विषयों की विशेष शैली स्थिर न हो पाई थी। द्विवेदीजी ने आदर्श के लिये उनका निश्चित स्वरूप निर्धारित करके हिंदी को एक स्थायी संपत्ति सौंप दी है। आपकी रचनाओं में तीन प्रकार की भाव-प्रकाशन-शैली पाई जाती है, जो एक दूसरे का परिष्कृत स्वरूप होने पर भी भिन्न-भिन्न जान पड़ती है। प्रथम व्यंग्यात्मक शैली है, जिसमें साधारण जनता के प्रयोग में आनेवाली भाषा का प्रयोग हुआ है। इसमें शब्दों की चुलबुलाहट तथा वाक्यों के चुटीलेपन में मार्मिक व्यंग्य इतनी कुशलता से भरा गया है कि वह अपने निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँचने में सर्वथा सफल होता है। इसका एक-एक शब्द बहुत ही उपयुक्त प्रयुक्त है, तथा कटाक्ष और बढ़ाने के ध्यान से ब्रेकेट्स में दिए वाक्य बहुत सुंदर हैं। वाक्यों की सरलता तथा लघुता ने मसख़रेपन की ऐसी पुट दे दी है कि ऐसे लेख पढ़ते समय हमारे सम्मुख व्यंग्य-मूर्ति, विनोद-प्रिय लेखक का चित्र झलकने लगता है। इसका एक बहुत प्रचलित उदाहरण देखिए--

"इस म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन (जिसे अब कुछ लोग कुर्सीमैन भी कहने लगे हैं) श्रीमान् बूचाशाह हैं। बाप-दादे की कमाई का लाखों रुपया आपके घर भरा है। पढ़े-लिखे आप राम का नाम ही हैं। चेयरमैन आप सिर्फ़ इसलिये हुए हैं कि अपनी कारगुज़ारी गवर्नमेंट को दिखाकर आप राय-बहादुर बन जायँ, और ख़ुशामदियों से आठ पहर चौंसठ घरी घिरे रहें। म्युनिसिपैलिटी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम चाहे चले, चाहे न चले, आपकी बला से।"

आपकी दूसरी शैली आलोचनात्मक कही जा सकती है। यह व्यंग्यात्मक शैली का एक नवीन रूप है, परंतु सर्वांग-नवीन स्वरूप। इसमें प्रथम शैली का मसख़रापन त्यागकर गांभीर्य, संयम और ओज का अधिक सामंजस्य कर दिया गया है। इसमें तत्कालीन अन्य उन्नतिशील भाषाओं के मध्य हिंदी की हीनता देखकर उत्पन्न क्षोभ तथा क्रोध का भी आभास मिलता है। इसमें भारतेंदु की उपदेशात्मक वृत्ति, रस्किन की-सी ओजस्विता तथा ठाकुर जगमोहनसिंह का-सा प्रलाप मिलता है। यह यथार्थ ही कहा गया है कि द्विवेदीजी की भाषा-शैली बहुत कुछ उनकी परिस्थितियों की उपज है। उनकी इस शैली में उर्दू तथा संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे वाक्यों में एक अनोखा, बल खाता हुआ प्रवाह उत्पन्न हो गया है। उदाहरणार्थ नीचे एक अवतरण उद्धृत किया जाता है—

"कितनी लज्जा, कितने दुःख, कितने परिताप की बात है कि विदेशी लोग इतना कष्ट उठाकर, इतना धन ख़र्च करके संस्कृत सीखें, और संस्कृत-साहित्य के जन्मदाता भारतीयों के वंशज फ़ारसी और अँगरेज़ी की शिक्षा के मद में यह भी न जानें कि संस्कृत किस चिड़िया का नाम है! संस्कृत जानना तो दूर है, हम लोग अपनी मातृभाषा भी तो बहुधा नहीं जानते। और, जो लोग जानते हैं, उन्हें हिंदी लिखते शरम आती है।"

द्विवेदीजी की तीसरी गवेषणात्मक या वर्णनात्मक शैली है। भावागम्यता के साथ भाषा-क्लिष्टता भी आ गई है। परंतु इसमें भी भाव-व्यंजना बहुत ही सुलझी हुई स्वच्छ है। इसमें न पहली शैली की व्यावहारिकता है, और न दूसरी की स्वाभाविकता, वरन् कभी-कभी इसमें कृत्रिमता की झलक मिल जाती है। शब्द-चयन का झुकाव संस्कृत की ओर है। उर्दू-शब्द तो शायद ही कभी भूला-भटका आ गया हो—

"जीवन और मृत्यु के संबंध की पूर्वोक्त बातें जड़ विज्ञानियों ही की कही हुई हैं। माता-पिता से जन्म लेकर आहार आदि के द्वारा शरीर को पुष्ट करता और अंत में अपने जीवन का प्रवाह अपनी संतान की देह में डालकर मर जाना उद्भिद् और अन्यान्य प्राणियों के जीवन का लक्ष्य हो सकता है, पर मनुष्य-जीवन का लक्ष्य नहीं। मनुष्य बहुत बड़ी बुद्धि का अधिकारी होकर जन्म लेता है।"

जैसा अभिनंदन-ग्रंथ के प्रस्तावकों ने लिखा है—"द्विवेदीजी की शैली का व्यक्तित्व यही है कि वह हस्त-अलंकृत और रूक्ष है। उनकी भाषा में कोई संगीत नहीं, केवल उच्चारण का ओज है, जो भाषण-कला से उधार लिया गया है। विषय का स्पष्टीकरण करने के आशय से द्विवेदीजी जो पुनरुक्तियाँ करते हैं, वे कभी-कभी ख़ाली चली जाती हैं—असर नहीं करतीं। परंतु वे फिर आती हैं, और असर करती हैं। लघुता उनकी विभूति है। वाक्य पर वाक्य आते हैं, और विचार की पुष्टि करते हैं।"

छोटे-छोटे वाक्यों के निम्नांकित समूह में कितनी कांति, चमत्कार, सजीवता और सरलता दिखाई देती है—

"अच्छी बात है। शुभ लक्षण हैं। जागृति के चिह्न हैं। अंधविश्वास का पटल हट रहा है। विवेक-सूर्य की किरणें फैलने लगी हैं। पाश्चात्य सभ्यता के अभिमानी और अँगरेज़ी-भाषा के ज्ञानी भी अब जागे हैं। अपनी भाषा के द्वारा शिक्षा देने के लाभ अब उनकी समझ में आने लगे हैं।"

स्वभाव और चरित्र

इस प्रकार अठारह वर्ष तक सरस्वती-संपादक-पद से आपने अपने अनवरत परिश्रम द्वारा हिंदी को उन्नत शिखर पर चढ़ाया, और इस योग्य बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पढ़ाई जाय। परंतु यदि कोई आपके प्रशंसनीय कार्यों की चर्चा करता, तो आप बड़ी विनम्रता से कहते थे—"जो कुछ भी मैंने किया, वह यह कि सदा सरस्वती की कापी मैंने समय पर भेजी। इसमें एक बार भी त्रुटि नहीं हुई।" अस्वस्थ रहने के कारण, सन् १९२० में द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' से अवकाश ग्रहण कर लिया। तदनंतर आप गुरदे के भयंकर रोग से बीमार हुए, परंतु बहुत चिकित्सा करने पर ठीक हो गए। सन् १९२८ तक आप बराबर पत्र-पत्रिकाओं के लिये लिखते रहे। जब स्वास्थ्य अधिक बिगड़ गया, तो आपने साहित्यिक श्रम करना त्याग दिया, और अपने ग्राम दौलतपुर में जाकर, एक साधारण गृहस्थ की भाँति, स्वल्पसाध्य जीवन व्यतीत करने लगे।

द्विवेदीजी के कोई संतान नहीं। उनका चिरस्मरणीय यश ही उनकी सच्ची संतति है। छियालीस वर्ष की आयु में आपकी स्त्री का स्वर्गवास हो गया था। लोगों ने दूसरा ब्याह करने का आग्रह किया, परंतु हिंदी-सेवा-लीन द्विवेदीजी ने इसे अस्वीकार किया। वह स्त्रियों के प्रति आदर-भाव रखते थे। अपनी पत्नी की स्मृति में उन्होंने अपने गाँव में एक मंदिर बनवाया है, जिसमें सरस्वती और लक्ष्मी की मूर्तियों के मध्य अपनी पत्नी की प्रस्तर-प्रतिमा प्रतिष्ठित की है।

द्विवेदीजी का कौटुंबिक शासन अत्यंत सुव्यवस्थित था, और वह अपनी नियम-निष्ठा और मितव्ययता के लिये प्रसिद्ध थे। समाचार-पत्रों के रैपर्स वह सँभालकर रख लेते थे, और उन पर लेखादि लिखा करते थे। वह अपनी पाई-पाई का हिसाब रखते थे। 'सरस्वती' से अवकाश लेते समय अपने उत्तराधिकारी को बीसों ऐसे लेख दिए थे, जो उन्होंने अपने पूर्व-संपादक से पाए थे। उनकी दिनचर्या निश्चित थी। प्रातःकाल तथा संध्या को खेतों और बग़ीचों में घूमने जाते थे, और किसानों को बड़े प्रेम से बैसवाड़ी भाषा में उनके हित की बातें समझाते थे। कोई बीमार पड़ता, तो बड़ी सतर्कता-पूर्वक आप उसकी देख-भाल करते थे। आप अपने गाँव की सरकारी पंचायत के सरपंच और ऑनरेरी मुंसिफ़ भी थे। तीसरे पहर आप अभियोगों को सुनते और उन्हें अपने हाथ से हिंदी में लिखते थे। आप पत्रोत्तर देने में बड़ी शीघ्रता करते थे। आप कभी पूजा-पाठ के चक्कर में नहीं पड़े, परंतु राम-नाम अवश्य स्मरण करते थे। अपने नौकरों के प्रति आप दया-भाव रखते थे, और प्रसन्न होने पर उन्हें पुरस्कार भी देते थे। साहित्यिक तीर्थ-यात्रा करनेवाले अतिथियों का वह समुचित आदर करते थे। सांसारिक शिष्टाचार तथा कृत्रिमता उन्हें छू तक न गई थी। सहृदयता, सहानुभूति, उदारता, अध्यवसाय, निर्भीकता, विनोद तथा निष्कपटता की वह सम्मूर्ति ही थे। उनका स्वभाव इतना सरस एवं सरल था कि मार्मिक छंद सुनते ही उन्हें रोमांच हो जाता था, और कभी-कभी भावावेग में सजल-नयन भी हो जाते थे।

द्विवेदीजी स्वाभिमानी ब्राह्मण थे। उन्हें आत्म-गौरव-रक्षा का बड़ा ध्यान था। वह किसी से दबकर रहना न जानते थे। इसी कारण उन्होंने रेलवे की बाईस वर्ष की नौकरी छोड़ी थी। साहित्यिक वाद-विवाद में भी वह अपना मस्तक ऊँचा किए रहते थे। एक पी-एच्० डी० महाशय ने—पी-एच्० डी० हिंदी-लेखक उन दिनों एक अप्राप्य वस्तु थी—अपना एक लेख भेजते हुए लिखा—"इसके संशोधन में आप कृपया कोई उर्दू-शब्द न डालें।" द्विवेदीजी ने यह पढ़ते ही उनका लेख लौटाल दिया, और लिख भेजा कि "संपादन के संबंध में मैं किसी की कोई शर्त स्वीकार नहीं करता।" 'आर्य-मित्र' के एक लेखक ने द्विवेदीजी को 'ऐंग्लो-वर्नाक्युलर-पंडित' लिख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारा, तथा 'हिंदी-कोविद-रत्नमाला' ने आचार्यजी को उग्र स्वभाव का ठहराया। द्विवेदीजी ने इनको नोटिस भेजकर अदालती कार्रवाई करने की इच्छा प्रकट की। लेखक, संपादक, संचालक, सभी ने क्षमा-याचना का पत्र भेजा, और सार्वजनिक माफ़ी भी माँगी। पुस्तक के छपे-छपाए पृष्ठ भी जलाए गए, और उनके स्थान पर उन अपमान-सूचक शब्दों को हटाकर दूसरे पृष्ठ छापे गए। एक बार द्विवेदीजी के एक मित्र उन्हें कुछ शक्कर की थैलियाँ दे गए, और चाहा कि स्वदेशी शक्कर के विषय में 'सरस्वती' कुछ टिप्पणी निकाले। दुबारा फिर मिलने पर जब उन्होंने इस विषय में स्मरण दिलाया, तो द्विवेदीजी बोले—"तुम्हारी थैलियाँ जैसी-की-तैसी रक्खी हैं। 'सरस्वती' इस तरह किसी व्यापार का साधन नहीं बन सकती।" इँगलैंड में निवास करने-वाले एक शिवचरणदास ने एक बार सरस्वती की प्रति लौटालते हुए लिखा कि अमुक लेख के अंत में जो चार-पाँच शब्द और जोड़ दिए गए हैं, वे नितांत अनावश्यक थे, और यह दिखाते हैं कि दास्य-भाव अभी हम भारतवासियों के मन में पूरी तरह बस रहा है। इस अवसर पर दिया हुआ द्विवेदीजी का कटाक्ष-पूर्ण उत्तर स्मरणीय है। आपने लिखा—"आश्चर्य तो इस बात का है कि जिस दास-भाव से आपको इतनी घृणा है, उसे आपने सदा के लिये अपने नाम के साथ बाँध रक्खा है। अस्तु।"

द्विवेदीजी ने हिंदी की उन्नति के लिये यह अथक परिश्रम निःस्पृह एवं निष्प्रयोजन होकर किया है। वह संपत्ति और सम्मान के भूखे न थे। सार्वजनिक प्रतिष्ठात्मक और लोक-प्रसिद्ध कार्यों से वह घबराते थे। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने उन्हें सभापति बनाने का कई बार प्रयत्न किया, परंतु अस्वस्थता के कारण आप अस्वीकार करते रहे। इस वर्ष सम्मेलन ने उन्हें साहित्य-वाचस्पति की उपाधि देकर स्वयं अपने को सम्मानित किया है। विश्व-विद्यालयों से 'डॉक्टर ऑफ़् लिटरेचर' की उपाधि दिलाने की चर्चा सुनकर आपने बड़े विनम्र भाव से पत्रों में अपनी अस्वीकृति निकाल दी थी। 'सार्टीफ़िकेट ऑफ़् ऑनर' दिलाने के लिये नाम पूछे जाने पर आपने लिखा था—"बदलू चमार की जब जूड़ी उतर जाती है, तो मैं समझता हूँ कि मुझे क़ैसेर-हिंद का तमग़ा मिल गया।" जिसने स्वयं मातृभाषा हिंदी को गौरवान्वित किया, उसे अपने गौरव की लेशमात्र भी चिंता न थी। आपकी सत्तरइवीं वर्ष-गाँठ के उपलक्ष में नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा अभिनंदन-ग्रंथ भेंट करने तथा प्रयाग में द्विवेदी-मेला लगाने के प्रस्ताव को आपने बड़ी कठिनाई से स्वीकार किया था।

उनकी जोड़ का दानी हिंदी-संसार में आया ही नहीं। अपनी चिर-संचित सहस्रों पुस्तकें तथा श्रम-अर्जित सहस्रों रुपया नागरी-प्रचारिणी सभा, हिंदू-विश्वविद्यालय तथा अन्य हिंदी-हितैषिणी संस्थाओं को समर्पण कर दिया है, और अपनी प्रतिभा तथा अर्जित शक्ति द्वारा प्राप्त ज्ञान आपने करोड़ों हिंदी-प्रेमियों को भेंट किया है। आचार्य द्विवेदीजी हिंदी के डॉक्टर जॉनसन थे। उनकी साहित्य-सेवा तथा व्यक्तित्व आंग्ल पंडित से कम न था। दोनो में सबसे बड़ा साम्य यह है कि दोनो ही अपनी रचनाओं से कहीं अधिक बड़े थे, तथा दोनो ही एक साहित्यिक संस्था के रूप में आए थे। अनन्य शासक की भाँति उन्होंने अखंड शासन किया। उनका नाम अपने-अपने साहित्य से ऐसा संबद्ध हो गया है कि जब तक उनका साहित्य जीवित रहेगा, वे अजर-अमर रहेंगे।

युग-प्रवर्तक

आचार्य द्विवेदीजी ने बीसवीं शताब्दी के प्रथम चौथाई में लगभग दस करोड़ हिंदी-भाषी जनता पर अनन्यता से अनुशासन किया है। आज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल का अधिकांश हिंदी-समाज उनका शिष्य है। कवि-शिरोमणि श्रीमैथिलीशरण गुप्त, समालोचकाचार्य पं० रामचंद्र शुक्ल, उपन्यासकार-सम्राट् मुंशी प्रेमचंद, श्रेष्ठ संपादक श्रद्धेय गणेशशंकर विद्यार्थी, प्रसिद्ध कहानीकार पं० विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' तथा अन्य अगणित लेखक, कवि और पत्रकार द्विवेदीजी की हिंदी-साहित्य को देन हैं। श्रीपदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी ने सत्य ही कहा है—"यदि कोई मुझसे पूछे कि द्विवेदीजी ने क्या किया, तो मैं उसे समग्र आधुनिक हिंदी-साहित्य दिखाकर कह सकता हूँ कि यह सब उन्हीं की सेवा का फल है।" आचार्य तथा उनके अनुयायियों का ध्येय समाज में सात्त्विक जागृति करना रहा है। दरिद्रता तथा अनक्षरता के प्रति सहानुभूति प्रकट करके शृंगार के विलास-वैभव का अंत करते हुए तत्कालीन प्रगति के साथ डग उठाना और इस प्रकार समाज के अंधकार को दूर करने के लिये ज्ञान-ज्योति की व्यवस्था करना ही द्विवेदी-युग का आदर्श कहा जा सकता है। आधुनिक हिंदी के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली को साहित्योपयोगी सिद्ध कर वर्तमान साहित्य का शिला-न्यास किया था, परंतु उसी आधार-शिला पर सर्वप्रथम साहित्यिक भवन निर्माण करने का श्रेय इस निस्संपन्न, कर्मनिष्ठ, महाप्राण ब्राह्मण को ही है। युग-प्रवर्तक, साहित्य-वाचस्पति, आचार्य-प्रवर पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अपनी विशुद्ध प्रेरणा द्वारा भाषा-मार्जन कर हिंदी-साहित्य-भंडार को अनुपम, बहुमूल्य रत्नों से परिपूर्ण कर दिया है, जिसके लिये हिंदी, हिंदू, हिंदोस्तान उनके चिर-ऋणी रहेंगे।

द्विवेदीजी के ग्रंथों की तालिका

क्रम-संख्या	पुस्तक का नाम	पृष्ठ-संख्या	प्रकाशन-तिथि	प्रकाशक	मूल्य	विशेष विवरण
*१	नैषध-चरित-चर्चा	११६	१९००	हरिदास एंड कंपनी कलकत्ता	।।)	
२	विक्रमांकदेव-चरित-चर्चा				।=)	
३	हिंदी-कालिदास की आलोचना	१२८	१९०१	मर्चेंट-प्रेस, कानपुर	१)	
४	बेकन-विचार-रत्नावली	३६ निबंध	१९०१	श्रीवेंकटेश्वर-स्टीम यंत्रालय, बंबई	१)	अनुवाद
५	नाट्यशास्त्र		१९०३		।)	
६	शिक्षा		१९०६		३।।)	हर्बर्ट स्पेंसर के एजुकेशन का अनुवाद
७	काव्य-मंजूषा					प्रारंभिक कविता का संग्रह
८	हिंदी-भाषा की उत्पत्ति	९६	१९०७	इंडियन-प्रेस, प्रयाग	।=)	साहित्य-इतिहास

* दूसरा संस्करण गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय से छपा है, वहीं से प्राप्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-संख्या	पुस्तक का नाम	पृष्ठ-संख्या	प्रकाशन-तिथि	प्रकाशक	मूल्य	विशेष विवरण
६	स्वाधीनता	२२५	१६०७	हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, जबलपुर	२) २)	मिल की लिबर्टी का अनुवाद
१०	महाभारत	४६४	१६०८	इंडियन-प्रेस, प्रयाग	४)	सचित्र
११	कविता-कलाप	७४	१६०६	,,	३)	पाँच कवियों का सचित्र संग्रह
१२	रघुवंश		१६१२	,,	३)	गद्यानुवाद
१३	मेघदूत			,,	१)	,,
१४	कुमारसंभव					प्रथम पाँच सर्गों का पद्यानुवाद
१५	किरातार्जुनीय		१६१६	,,	२)	भारवि-कृति का भावार्थ-बोधक अनुवाद
१६	प्राचीन पंडित और कवि	१३६	१६१८	गंगा-ग्रंथागार लखनऊ	।।।=)	सचित्र निबंध
१७	वनिता-विलास	८३	१६१६	,, ,,	।=)	जीवनी
१८	कालिदास	२३५	१६२०	राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर जबलपुर	१)	जीवनी तथा आलोचना
१६	कालिदास की निरंकुशता			इंडियन प्रेस	।=)	आलोचना
*२०	रसज्ञ-रंजन	११६	१६२०	राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर जबलपुर	॥)	आलोचनात्मक निबंध
२१	औद्योगिकी	१२ निबंध	१६२०	,, ,,	॥)	उद्योग-धंधे-संबंधी निबंध
२२	सुकवि-संकीर्तन	१६६	१६२२	गंगा-ग्रंथागार लखनऊ	॥)	सचित्र निबंध
२३	सुमन	१३५	१६२३	साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी	१)	कविता-संग्रह
२४	अद्भुत आलाप	१२६	१६२४	गंगा-ग्रंथागार लखनऊ	॥)	निबंध
२५	वक्तृत्व-कला		१६२३			हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, कानपुर में दिया हुआ वक्तव्य

* अब साहित्य-रत्न-भंडार से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-संख्या	पुस्तक का नाम	पृष्ठ-संख्या	प्रकाशन-तिथि	प्रकाशक	मूल्य	विशेष विवरण
२६	साहित्य-संदर्भ	२७४	१९२४	गंगा-ग्रंथागार लखनऊ	१॥)	निबंध
२७	साहित्य-सीकर	१४१	१९२९	तरुण-भारत-ग्रंथावली, प्रयाग	१)	निबंध
२८	जल-चिकित्सा			इंडियन प्रेस	।)	वैद्यक
२९	वेणी-संहार			गंगा-ग्रंथागार लखनऊ	॥=)	नाटक
३०	संपत्ति-शास्त्र			प्रकाश-पुस्तकालय	४)	
३१	टेलीग्राफ़ी					अँगरेज़ी में

साहित्य-संसार में क्रांति लानेवाली बिलकुल निराले ढंग की पुस्तक

'प्रिया या प्रजा'

इसकी सर्वोत्तमता का सबसे बड़ा यही प्रमाण है कि एक ही वर्ष में दूसरे संस्करण की तैयारी हो गई। साहित्य-प्रेमियों ने किस उत्कंठा से इसे गले लगाया है, इसे बिना पढ़े आप नहीं समझ सकते।

हम सिर्फ़ इतना ही कहेंगे कि—

यह पुस्तक राजनीति, देश-प्रेम, भक्ति, वैराग्य, वीरता आदि का सार है। साहित्य की गंभीरता समझने के लिये ही इसको एक बार पढ़ना चाहिए।

हिंदी की उच्च कोटि की परीक्षाएँ देनेवालों के लिये तो यह प्राण है। इसीलिये इसकी इकट्ठी प्रतियाँ कितनी ही साहित्यिक संस्थाओं ने ख़रीद ली हैं। इस पर भी इस अमूल्य रत्न का मूल्य केवल आठ आना है।

सोल एजेंट्स

१—गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ ३—गुप्ता ब्रादर्स, धनौरा मंडी

२—रत्नाश्रम, आगरा ४—विनीत-ग्रंथ-माला, तालबेहट (झाँसी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार की एक विभूति

[श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी]

सन् १९३७ की बात है। कांग्रेस ने मंत्रिपद ग्रहण करने का ऐतिहासिक निर्णय अभी नहीं किया था। हर सूबे में 'इंटेरिम मिनिस्टरियाँ' क़ायम हो चुकी थीं। बिहार की गद्दी ख़ुश-क़िस्मत यूनुस साहब को मिली थी। बड़ा जशन था, बड़ा जोश।

इसी दरम्यान सारन-ज़िले की बाढ़-पीड़ित जनता की पुकार बिहार-सूबे के पहले प्रधान मंत्री के कानों तक पहुँची। सारन भूकंप से तबाह हो चुका था, अभी सँभलने भी न पाया था कि सैलाब की बारी आई। सैलाब क्या आया, तबाही आई। चारों तरफ़ चीख़, पुकार, कराह की आवाज़ें थीं। बाढ़ रोकने का सवाल एक अहम मसला बन गया। बहुत सोच-विचार के बाद प्रधान मंत्री ने सरयू का टूटा बाँध बनवाना तय किया।

एक दिन प्रधान मंत्री बड़े समारोह के साथ तशरीफ़ लाए। चाँदी की करनियों से बाँध की नींव डाली। अख़बारों ने लेख लिखे। ख़ुशामदियों ने यश गाया। भोली जनता ने समझा, हमारे भय और दुःख के दिनों का अंत हुआ।

इसके बाद—इसके बाद सरकार की मशीन पूर्ववत् चलने लगी। इतनी बड़ी सरकार एक छोटे ज़िले की भय-त्रस्त, दुखी जनता के लिये आख़िर अपनी नींद तो हराम न करती। बाँध का काम ज्यों-का-त्यों रहा। जनता ने समझा, भगवान् रूठे हैं। निराशा आई, और निराशा के साथ उदासीनता तथा अकर्मण्यता। लोग मन मारकर चुप हो रहे। जब इतनी बड़ी सरकार चुप हो गई, तो भला वे तीन हाथ के पुतले क्या करते!

एक दिन सुबह टूटे बाँध के निकट के एक गाँव में एक आदमी आया। गौर-वर्ण, भरा-पूरा बदन, चेहरे पर हँसी खेलती हुई, पहनावा मामूली—एक धोती, एक चादर, एक चप्पल, बस।

लोगों में उत्साह की एक लहर दौड़ गई। मँगरू, बुधई, अकलू, रामखेलावन, सभी का तो परिचय है उससे। सभी जुटे। सुख-दुःख की बातें हुई। फिर बाँध की बात आई। लोगों ने कहा, सरकार की चाल बहुत धीमी है, इस रफ़्तार से तो बाँध कभी न बन पाएगा। फिर घंटों बातें हुई। न-जाने उस आदमी ने इनमें कौन-सा जीवन डाल दिया, कौन-सी प्रेरणा-शक्ति भर दी कि सभी एक नई स्फूर्ति से भर गए। 'इस बाँध को तो बग़ैर सरकार की मदद के भी वे बना सकते हैं।' यह बात उन्हें आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक न सूझी थी। और, अगर सूझी भी, तो उन्होंने यक़ीन न किया था। अब वे ही सुबह से शाम तक फावड़े चलाते हैं, मिट्टी ढोते हैं—चने चबाकर, अपने घर से खाकर। और, वही आदमी बदन पर गमछा डाले धूप और गर्मी का तिरस्कार करता हुआ उनके बीच घुला-मिला व्यस्त है। वह अपने ज़िले के हर गाँव में इसी तरह घूमा है।

यही आदमी जनता का आदमी है—उसी के बीच से आया है। वह किताबी ज्ञान, लेक्चर और विज्ञापन के सहारे जनता तक नहीं पहुँचता। जनता उसके दिल में है, और वह जनता के दिलों में। वही, एक शब्द में, जनता का सच्चा नेता है।

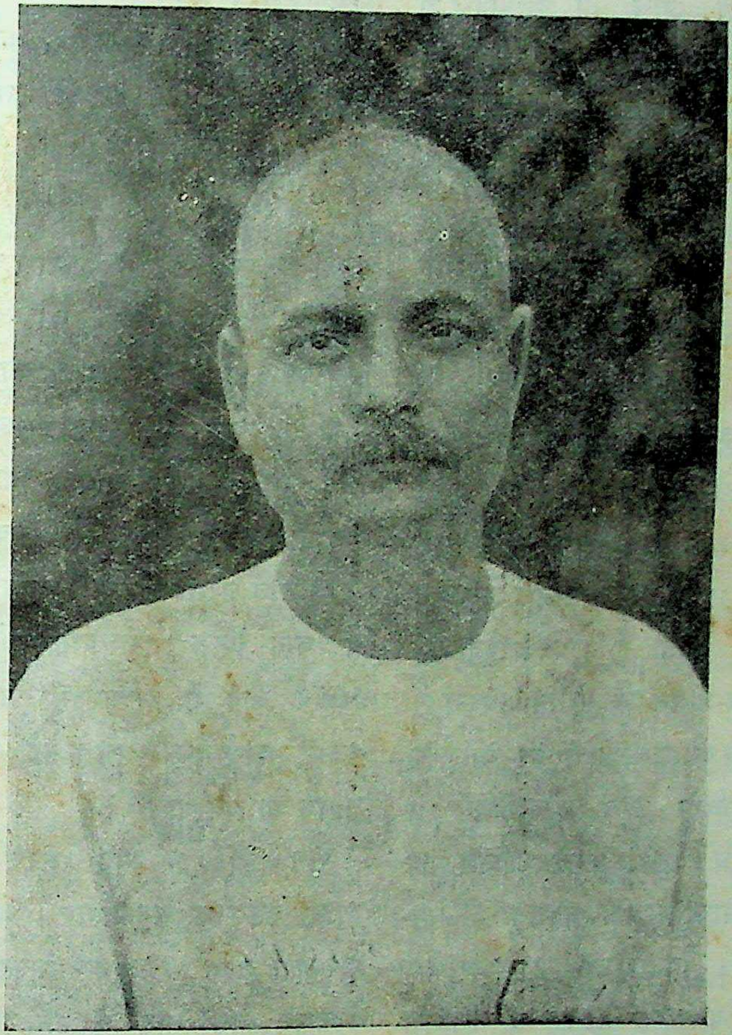

पं० गिरीशजी तिवारी

ऊपर जिन महापुरुष के कर्मशील जीवन की झाँकी दी गई है, उनका नाम पंडित गिरीशजी तिवारी है। आजकल वह बिहार-सरकार के ग्राम-सुधार-अफ़सर हैं। उनके पिता श्री पंडित भुवनेश्वरजी तिवारी हिंदी के अच्छे कवि हैं, मगर उन्होंने अपनी कोई कृति प्रकाशनार्थ कभी नहीं भेजी। ख्याति से उन्हें चिढ़ है। कहा करते हैं, ख्याति की खोज और आदर्श की तलाश,—दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। आत्म-विज्ञापन के इस ज़माने में जब हम पंडित गिरीशजी तिवारी को देखते हैं, तो हमारी नज़र उनके पिता की तरफ़ जाती है। यह उन्हीं की विरासत का नतीजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि पंडितजी शोहरत से इस क़दर दूर भागते हैं।

बिहार के सारन-ज़िले की भूमि अगर नेता-प्रसविनी कही जाय, तो अत्युक्ति न होगी। महामहोपाध्याय स्वर्गीय पंडित रामावतार शर्मा, देशरत्न श्रीराजेंद्रप्रसाद, पूज्य जयप्रकाशनारायणजी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन इसी ज़िले के गौरव हैं।

तिवारीजी का जन्म इसी ज़िले के बरेगा-गाँव में, सन् १८६६ ई० की वसंत-ऋतु में, हुआ था। आप बड़े ज़हीन और मेधावी छात्र थे। १६२० में आपने राजपूत हाई-इँगलिश-स्कूल, छपरा से इन्ट्रेंस की परीक्षा पास की। विश्वविद्यालय की शिक्षण-प्रणाली बिलकुल निकम्मी ही क्यों न हो, पर हर युवक ललचाई नज़रों से उधर देखता है। तिवारीजी का हृदय भी कॉलेज-जीवन के रंगीन स्वप्नों से भरा रहता। देश की समस्याओं पर भी ग़ौर करते। इसी द्विविधा और कश-मकश में दिन बीत रहे थे। भावी कॉलेज-जीवन का प्रारंभ भी न हो पाया था कि स्वतंत्रता की रण-भेरी बज उठी। तिवारीजी का हृदय देश की पुकार पर बलिदान होने के निमित्त काँप उठा, और देश-सेवा का व्रत ले आप सत्याग्रह-संग्राम में कूद पड़े।

उस समय सारन-ज़िले में योग्य संगठन-कर्ताओं की बड़ी कमी थी। ज़िले के बड़े नेता मौलाना मज़हरुलहक़, श्रीराजेंद्रप्रसाद, डॉक्टर सैयद महमूद सारे देश के भाग्य-विधायक बन रहे थे, और उन्हें अपने ज़िले की तरफ़ नज़र करने की फ़ुर्सत न थी। इस समय पंडितजी ने जो कुछ किया, वह उन्हीं से हो सकता था। पाँव-पियादे गाँव-गाँव का सफ़र, न धूप की परवा, न बारिश का डर, न दिन-रात का कोई ख़याल और न थकावट की चिंता। बस, एक ही धुन थी—ज़िले के कोने-कोने में जीवन का संचार हो, ज़िले का हर प्राणी आज़ादी के लिये कोशिश करने और उस कोशिश में मरने-मिटने को तैयार हो। दिल दिल को छूता है। उत्साह भी कायरता की तरह संक्रामक होता है। आपने सचमुच ज़िले में जान डाल दी। गाँव-गाँव में कार्य-कर्ताओं की एक सुसंगठित सभा तैयार कर ली, और अपने गाँव बरेगा को तो बिहार का बारडोली ही बना दिया। सत्याग्रह-आंदोलन स्थगित होने के बाद भी आप उसी उत्साह से देश-सेवा के कार्य में लगे रहे। यह तो अब आपके जीवन का व्रत था।

सन् १६२२ में आप सारन-ज़िला-बोर्ड के वाइस-चेयरमैन बनाए गए। बोर्ड अभी-अभी सरकारी ज़ब्ती से वापस मिला था। सरकारी अफ़सर बात-बात में टाँग अड़ाते। हालत डावाँडोल थी। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर आपने जिस शासन-कुशलता का परिचय दिया, वह बहुतों के लिये अनुकरणीय होगी। उसी समय लोगों ने समझा, आपके सरल हास्य और कोमल हृदय के भीतर मज़बूत शासक का दिल है। आपकी आँखों में धूल झोंकना कठिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं, असंभव था। एक बार एकाउंटेंट-संबंधी कुछ बातें आपकी समझ में साफ़-साफ़ न आईं। बस, आप एकाउंटेंसी की कोड़ियों किताबें पढ़ गए। फिर तो अच्छे-अच्छे एकाउंटेंट आपके आगे हिसाब रखते समय हिचकते।

तत्कालीन चेयरमैन बाबू श्रीनंदनसिंह आपके अभिन्न-हृदय मित्र थे। श्रीनंदन बाबू बड़े दयालु थे। कई बार ऐसा हुआ कि पंडितजी द्वारा दंडित आदमियों के रोने-कलपने पर पसीजकर श्रीनंदन बाबू ने उन्हें क्षमा कर दिया। पंडितजी ने ऑर्डर देना ही बंदकर दिया, और सारी फ़ाइलें श्रीनंदन बाबू के पास ही भेजवाने लगे। श्रीनंदन बाबू को तब अपनी ग़लती मालूम हुई, और उन्होंने फिर कभी पंडितजी के ऑर्डर में हस्तक्षेप न किया। पंडितजी का कहना है, शासन के मामलों में व्यक्तिगत रिश्ते, दया और भावुकता का अंश न्यूनतम होना चाहिए। आपकी सचाई और ईमानदारी के आपके दुश्मन भी क़ायल हैं। आपको सफ़र-ख़र्च के लिये क़ानून की रू से जब ६०), ७०) और १००) मिलते, तब आप १०), ११) लेकर ही संतुष्ट हो जाते। आप कहते, टी० ए० के बहाने वास्तविक ख़र्च से अधिक रुपए लेना जनता के साथ विश्वासघात है।

१६३० का ज़माना आया। गांधी ने फिर रण-भेरी बजाई। तिवारीजी ने एक बड़ा सुंदर प्लैन रचा। सोनपुर का मेला आ पहुँचा था। उन्होंने मेले में ही विदेशी-वस्त्र-बहिष्कार का आंदोलन करना तय किया। इसके लिये वह बहुत कुछ तैयारी भी कर चुके थे, पर सरकार भी बाख़बर थी। गुप्तचरों से उसे सारे समाचार मिल चुके थे। सोनपुर-स्टेशन पर उतरते ही आप गिरफ़्तार कर लिए गए।

आप अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के प्राण हैं। आपमें संगठन और शासन की अद्भुत-क्षमता तथा दूसरों के दुख पर कातर हो उठनेवाला दिल है। श्रीनंदन बाबू की मृत्यु के बाद से आपको बराबर यही फ़िक्र है कि उनकी स्मृति चिरस्थायी हो जाय। इसी उद्देश्य से आपने श्रीनंदन-पुस्तकालय की स्थापना की है। पुस्तकालय के संस्थापकों में देशरत्न डॉ० राजेंद्रप्रसाद-जैसे व्यक्ति हैं। वह दिन दूर नहीं, जब श्रीनंदन-पुस्तकालय प्रांत के लिये एक गौरव की चीज़ होगा।

सन् ३४ के भूकंप में आपने राजेंद्र बाबू की जो सहायता की, उससे विहार-निवासी भली भाँति परिचित हैं। आपका व्यक्तिगत जीवन बड़ा ही आकर्षक है। निष्कपट व्यवहार, सरल हास्य, उदार प्रकृति। आपके जीवन से आपके कितने नज़दीकी मनुष्यों का जीवन प्रभावित हुआ है। जैसा हम लिख आए हैं, आप यश और ख्याति से दूर ही रहने की कोशिश करते आए हैं। हाल में, एसेंबली-चुनाव के समय, जब सारन-ज़िले में व्यवस्थापिका सभा की सदस्यता के लिये कांग्रेसजनों में जूती-पैज़ार हो रहा था, आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुपचाप अलग थे। राजेंद्र बाबू के पूछने पर कि आप कांग्रेस से टिकट मिलने पर भी मेंबरी के लिये खड़े क्यों न हुए, आपने मुस्किराते हुए कहा—"मैं कभी वक्ता नहीं रहा। मुझे लेक्चरों की हलचल में न घसीटिए। मैं बाहर रहकर ही अधिक काम कर सकूँगा। व्यवस्थापिका सभा के लिये और भी बहुत-से लोग हैं।"

पंडितजी का अपना एक सपना है। वह कहते हैं, समाजवादी सिद्धांतों में विश्वास रखनेवाले रूस की काया-पलट कर रहे हैं, एक कृषि-प्रधान देश पर मशीन की सभ्यता लाद रहे हैं। उनके सामने एक 'चीज़' है, जिसकी ओर वे बार-बार इशारा करते हैं। वही 'चीज़' दूसरे मुल्कों के समाजवादियों के दिलों में स्फूर्ति और लगन पैदा करती है।

हम भी क्यों न अपने सिद्धांत के अनुसार एक आदर्श नगर बना दें। लगभग सौ बीघे ज़मीन हो। कुछ चुने परिवार वहाँ बसें। चर्खा, कर्घा, खेती का इंतज़ाम बिलकुल नए तरीक़े पर हो। ग्राम-उद्योग-धंधों का भी वह केंद्र बने। हाथ का बना काग़ज़, स्याही, बटन और ऐसी-ऐसी अनेक चीज़ें बनें। वहाँ के लोगों के जीवन का स्टैंडर्ड ऊँचा हो। भौतिक सहूलियतों के साथ आध्यात्मिकता का कुछ ऐसा सामंजस्य हो कि जीवन सचमुच सत्य, शिव और सुंदर हो जाय।

हम जानते हैं, उनका यह सपना उन्हें चैन न लेने देगा। सुना है, हथुआ के पास कुछ बीघे ज़मीन लेना तय-सा हो गया है। ईश्वर करें, तिवारीजी का यह सपना सत्य हो, और हमारे देश के सामने एक नई मिसाल पेश हो।

गाँव-सुधार कैसे हो ?

[लेखक, ग्राम-सुधार के प्रसिद्ध लेखक श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी]

इसकी एक-एक कापी प्रत्येक घर में होनी चाहिए। आपको इस पुस्तक में अनेक ऐसी बातें मिलेंगी, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। दो संस्करण तीन-चार महीने में ही बिक गए। तीसरे संस्करण की अब थोड़ी ही प्रतियाँ बची हैं। अपनी कापी के लिये आज ही ऑर्डर दीजिए। मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १)

मिलने का पता--

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम का सपना

[कॉम० लतीफ़ुद्दीन अहमद साहब अकबराबादी]

[एक]

कमलादेवी मजूमदार भरी जवानी में जीवन के अन्याय का शिकार होकर संसार में अकेली रह गई। बाप को मरे मुद्दत गुज़र चुकी थी, और मा उस वक़्त मर गई, जब कमला और उसके भाई विनोद साथ-साथ इंटर कॉलेज में पढ़ रहे थे। बाप ने अपनी लंबी बीमारी के ज़माने में एक धनी और प्रतिष्ठित मित्र को अपने स्त्री-बच्चों का वली मुक़र्रर कर दिया था। मगर जब कमला पर विपत् पड़ी, और भाई के नदी में डूब जाने के बाद वह घर पहुँची, तो उसके वली ने उसके सामने यह माया-जाल बिछाया कि वह उसके लड़के के साथ विवाह कर ले, और इस प्रकार संरक्षक महाशय अपने मित्र की जायदाद सहज ही हड़प जायँ। किंतु बंधु-वियोग की मारी कमला को विवाह की बात सोचना तो दर-किनार, उसे अपना जीवन ही नीरस और सूना दिखाई पड़ रहा था। उसने देखा, संसार में अब उसका कोई नहीं, इसलिये वह अपने वली को इत्तिला दिए बग़ैर मैमनसिंह से कलकत्ते चली आई।

कमला की तबियत बुझ चुकी थी, किंतु उसकी मनोवृत्ति को यह गवारा न हो सका कि वह अपना नीरस जीवन रो-रोकर और भी सूना बना ले। अपनी मनःशांति के लिये उसने तय किया कि वह भाग्य की मारी और दुःख की सताई मानवता की सेवा करेगी। ऐसा निश्चय करते समय उसे बड़ी आत्मशांति मिली। उसे अनुभव होने लगा, मानो वह स्वयं आप-बीती का निराकरण करने जा रही है। उसने एक विधवाश्रम की मैनेजरी के लिये दरख़्वास्त दी, लेकिन आश्रम के ट्रस्टियों की दृष्टि में उसकी चढ़ती उमर और आश्रम का दायित्व, दो परस्पर विरोधिनी अवस्थाएँ थीं। इसका कारण कुछ यह भी था कि कमला ने अपने आवेदन-पत्र के साथ किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की सिफ़ारिश नहीं भेजी थी। कमला-जैसी सांसारिक बाह्याचार के अनुभव से शून्य, सुशिक्षिता युवती के लिये समाज में स्थान पाना दूभर था, किंतु उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने उसे सहारा दिया। उसने ट्रस्टियों को बताया कि उसके बाप की बहुत बड़ी जायदाद उनका संरक्षक किस प्रकार हड़प जाने के फ़िराक़ में है। उसने जायदाद आश्रम के अर्पण कर देने का वचन भी ट्रस्टियों को दे दिया। साथ ही अपना जीवन भी आश्रम की बहनों की सेवा के लिये दे डाला।

अब तो कमला का व्यक्तित्व ही, ट्रस्टियों की दृष्टि में, दूसरा हो गया। उन्होंने अपनी कुर्सियाँ ख़ाली कर दीं, और वह हाथोंहाथ ली जाने लगी। आश्रम के ट्रस्टी-बोर्ड ने वली महाशय से पाई-पाई वसूल कर ली। कमला आश्रम की मैनेजर तो थी ही, साथ ही बोर्ड की प्रेसीडेंट भी, और आश्रम का नाम भी कमला-विधवाश्रम पड़ गया था।

कमला प्रौढ़ा महिला न थी। उसका तीसवाँ साल था, फिर भी उसकी जादू-भरी आँखों में विपत् की उदासी ने घर कर लिया था, और उसके काजल-काले केशों में सफ़ेद तार मिल गए थे। हवाख़ोरी की पुरानी आदत और मेहनत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशक़्क़त को अभ्यस्त होने के कारण उसके मुख-मंडल पर अब भी यौवन की ज्योति थी।

[दो]

आज जन्माष्टमी की रात थी, और कमला, चालीस-पचास विधवाओं की माता, प्रसन्नता-पूर्वक उन सबके साथ कृष्ण जन्मोत्सव से निवृत्त होकर जब अपने कमरे की तरफ़ जा रही थी, तो बीते दिनों की याद आकर उसके दिल को तड़पा गई। उसके दिल में एक हूक-सी उठी। उसे अनुभव हुआ, मानो उसका दिल बैठा जा रहा है।

ठीक दस साल पहले, कॉलेज खुलने पर, वह और उसका भाई विनोदविहारी मजूमदार दोनो बी० ए० में दाख़िल हुए थे। उनके साथ नए दाख़िल होनेवालों में मेहरुन्निसा और प्रेमशंकर भी थे। ये दोनो एक ही कॉलेज से आए थे। कमला और विनोद की इन दोनो से पहले ही रोज़ मुलाक़ात हो गई, और थोड़े ही दिनों में ये चारो परस्पर गहरे मित्र बन गए। कॉलेज में अभी एक साल भी पूरा न हो पाया था कि प्रेम और कमला के नेतृत्व में कॉलेज के अन्य विद्यार्थियों का एक छोटा-सा संगठन बन गया। इस संस्था के सदस्यों का एकमात्र उद्देश्य भारत के समस्त संप्रदायों में भ्रातृत्व और स्नेह-संबंध स्थापित करना था। इस संस्था में वैसे तो पचीस-तीस लड़के-लड़कियाँ शामिल थीं, मगर इन चारो की मैत्री अभूतपूर्व थी, और फिर स्वाभाविक रूप से कमला का प्रेम के साथ और विनोद का महरुन् के साथ स्नेह हो गया था।

प्रेमशंकर लंबा, छरेरे बदन का जवान था। रंग बहुत खुलता हुआ न था, लेकिन उसकी आँखों में एक तेज था, जिसके जादू ने कमला को हठात् नज़रबंद कर लिया था। कमला की आँखों में दिन-रात उसकी प्रेम-ज्योति झलका करती थी। कमला और प्रेमशंकर अपने प्रेम-रस में मग्न थे; प्रेम-वीथियों में विचरा करते थे। उनकी हृत्तंत्री प्रेम के मृदुल और कोमल स्वरों से झंकरित हुआ करती थी—वही पुरातन स्वर-लहरी, जो प्रत्येक प्रेमी को नवीन अनुभव होती है, और हृदय की वह भाषा, जो उसकी जीवन-चर्या का एक आवश्यक अंग बन जाती है। ये दोनो अपने सुनहले संसार में विचरते और अपने दोनो साथियों, विनोद और महरुन्, को भी अपना-जैसा देख-देखकर मन-ही-मन फूले न समाते।

ये चारो प्रेम-पुजारी जिस जगह जाते थे, साथ-साथ जाते थे। वे पारस्परिक मनोभावों का ख़ूब अनुभव करते थे, लेकिन वैवाहिक संबंध की कोई चर्चा कभी उनमें नहीं हुई। वह तो मानो एक निश्चित तथ्य था। वे चारो आदर्श विद्यार्थी थे और आदर्श प्रेमी भी। अपने विद्यार्थिजीवन में वे चारो, अपने अन्य अनुयायियों के समक्ष, आदर्श से पतित न होना चाहते थे। उनकी शिक्षा के अख़ीरी महीने तेज़ी के साथ समाप्त हो रहे थे। यहाँ तक कि परीक्षा का समय बिलकुल निकट आ गया, और परीक्षा का अंतिम दिन तो कमला की आपत्तियों का पहला दिन सिद्ध हुआ। कमला और विनोद का संसार सीमित था। माता-पिता का पहले ही देहांत हो चुका था। संसार में प्रेमशंकर और मेहरुन् के सिवा उनका कोई सगा अब शेष न था।

इन चारो का प्रेम-संबंध कुछ ऐसा प्रगाढ़ होता गया कि अपने आदर्श की दुनिया में ये चारो एक गंभीर विचारक की भाँति अपने चारो ओर के संसार से बिलग हो गए। सिनेमा और थिएटर जाने का शौक़ कम होकर एकदम छुट गया, और उनका स्थान रम्य उपवनों, निर्जन मैदानों और सरिता-तटों के पर्यटन ने ले लिया। इन सैर-सपाटों में कमला के लिये प्रेम का संग एक अद्भुत देन होती थी। कमला प्रेम को अपनी कौटुंबिक आपत्तियों का दुखड़ा सुनाती और उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-भरे बोल सुन-सुनकर प्रसन्न हुआ करती। प्रेमशंकर वह सब कुछ था, जिसकी एक औरत को आरज़ू हो सकती है। वह सुंदर और आकर्षक युवक था और साथ ही प्रतिभा-संपन्न सहयोगी भी। वह मनुष्य और ईश्वर दोनो का विश्वासी था, और कमला के लिये उसकी प्रतिभा नव-जीवन का एक नूतन उद्गम थी। उसकी बातें सुनकर कमला का हृत्-कमल खिल जाता था। प्रेमशंकर की तुलना में संसार-भर के युवक कमला की दृष्टि में हेय थे।

प्रेमशंकर अपने प्रेम को बहुत कम प्रकाशित करता, किंतु अगर कभी उसके मुँह से प्रेम के दो अटपटे बोल निकल भी जाते, तो कमला अनुभव करती कि प्रेम अपने मनोभाव को दमन कर रहा है। वह अगर कभी उससे कहता कि किसी दिन अपनी जीवन-नौका को वह कमला-रूपी प्रेम-मंदाकिनी में, एक अबोध की भाँति, छोड़ देगा, तो कमला को उसके स्वर में निहित एक कोमल कंपन सुनाई देने लगता था। प्रेमशंकर की गंभीरता में कमला को एक कठोर मनोभाव झलकता नज़र आता, और वह इस कठोरता में अपनी आँखों के सामने के एक युवक सहपाठी की भावी महत्ता को छिपी हुई देखती। यह अनुभव करके कमला दिल-ही-दिल बेचैन होती कि प्रेमशंकर की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में वह किस प्रकार सम्यक् रूप से सहयोगिनी हो सकती है। प्रेमशंकर एक ज़बरदस्त जूट-मिल का मालिक और व्यापारी बनना चाहता था, और यही उसकी महत्त्वाकांक्षा थी।

[तीन]

इम्तहान का अंतिम दिन था। ये चारो भी अपने-अपने पर्चे करके इस हार्दिक प्रसन्नता में मस्त थे कि उनकी शिक्षा समाप्त हो रही है, और वे अब जीवन-संग्राम के कर्तव्य-क्षेत्र में उतर रहे हैं। इसलिये कि दो-एक दिन में अस्थायी तौर पर उन चारो का संग बिछुड़ जायगा, हर्ष-विषाद की इस अवस्था में नवीनता और ताज़गी लाने के विचार से वे लोग बोसुटेनिकल गार्डिंस की सैर को गए। ये सैर वे अक्सर किया करते थे। बाग़ में पहुँचकर कभी किसी कुंज के अंदर वायोलिन के ऊपर कोमल, मंद स्वर में गीत गाते, कभी हुगली के किनारे बैठकर प्रेम-गंगा की शब्दा-वलियों में डूबते-उतराते जब छिप जाते, तो सांध्यदिन-संयोग से अपना संयोग मिलाकर, अपने जीवन की समस्त भावी निराशाओं को अस्तंगत सूर्य की भेंट चढ़ाकर, स्नेह-दीपकों के प्रकाश में अपने होस्टलों को लौट आते।

उस रोज़ जब ये चारो बाग़ में पहुँचे, तो एक डोंगी इन्हें मिल गई। जल-विहार किए काफ़ी समय बीत चुका था, तय हुआ कि डोंगी में हुगली की सैर की जाय। थोड़ी देर दरिया की सैर करते और गाते-बजाते रहे, फिर विचार हुआ कि हुगली के उस पार जाकर गार्डिन रीच की सैर की जाय, इसलिये बूढ़े मल्लाह ने डोंगी को थोड़ी दूर ऊपर ले जाकर उसका रुख़ फेरा, और धार को काटना चाहा, लेकिन पानी के ज़ोर ने उसकी एक न चलने दी। ठीक इसी वक़्त एक और स्टीमर इनकी किश्ती के पास होकर गुज़रा, और उसने पानी में बड़ी-बड़ी हिलोरें पैदा कर दीं, जिससे इनकी डोंगी धार के बीच में उलट गई।

तैरना इन चारो को आता था, किंतु तमाम कपड़ों के साथ आंदोलित, विशाल जल-राशि से पार पाना असाध्य था। इन चारो ने तैरने और साथ रहने का विकट प्रयत्न किया, बहुत कुछ हाथ-पैर मारे, लेकिन धारा के भँवरों से बच निकलना दुस्साध्य सिद्ध हुआ। चारो का साथ रहना तो एकदम असंभव हो गया। इस डूबने-उतराने की विषम परिस्थिति में जो क्षण उन्हें प्राप्त हुए, उनमें उन्होंने अपने भविष्य का निर्णय किया। मानव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में ऐसे क्षण अनादि होते हैं, और मनस्वी तथा साधारण दोनो प्राणियों के लिये एक विशेष महत्ता के द्योतक। इन मनस्वियों ने जीवन के अनादि तत्त्व को पहले ही अनुभव कर लिया था, आज तो उसे कार्य-रूप में परिणत करने की वेला थी। इन इने गिने क्षणों में हृदयों के सांसारिक नैसर्गिक आदान-प्रदान ने शाश्वत रूप धारण किया। केवल एक-एक, दो-दो प्रेम-शब्दों का आदान-प्रदान हुआ। पानी की एक ज़बरदस्त हिलोर ने विनोद और मेहरुन् को सदैव के लिये अपनी गोद में छिपा लिया। कमला ने अंतिम बार डूबकर उतराते हुए जैसे ही आँख खोली, तो प्रेमशंकर भी उसे न दिखाई दिया। एक मिनट के लिये कमला ज्यों ही पानी की लहर के ऊपर आई, त्यों ही उसने प्रेमशंकर के बोल सुनने के लिये आँख खोली। उसे न देखकर वह समझी कि अब की हिलोर में प्रेमशंकर लहर के ऊपर आ जायगा, और उन शब्दों के आधार पर, जो प्रेमशंकर ने अब तक उससे कहे थे, वह अपने हृदय में बल अनुभव करती और लहरों से लड़ती रही। प्रेमशंकर का यह स्पष्ट वाक्य कि "रूपसि, मेरे साथ प्रार्थना करो कि संसार की सेवा और भलाई के लिये ईश्वर तुम्हें बचा ले," वह स्मरण करती, और यह भी स्मरण करती कि "एक दूसरे के लिये हम जीवित न रहें, हमारा प्रेम अनादि और अनंत है। हम फिर भी मिलेंगे।"

कमला एक चीख़ मारना चाहती थी, लेकिन प्रेमशंकर की प्रतीक्षा ने उसे रोक दिया।

[चार]

गार्डिन रीच के किनारे-किनारे एक छोटा स्टीमर घूम रहा था। इसके अफ़सर ने डोंगी को उलटते देखा था। मेट को कुछ हिदायत देकर वह हुगली में कूद पड़ा, और निहायत तेज़ी से इनकी तरफ़ बढ़ा। अंततोगत्वा उसने कमला को पकड़ लिया। लेकिन कमला ने अपने जीवनोद्धार की उपेक्षा प्रदर्शित की। जहाज़ी अफ़सर ज़ोर से बोला—"मूर्खता का समय नहीं है, मैं दूसरों को भी अभी निकालना हूँ।" इतने में स्टीमर से एक डोंगी उतारी जा चुकी थी, और वह इनकी ओर तेज़ी से आ रही थी। अफ़सर ने कमला को डोंगीवालों के सुपुर्द किया, और प्रेमशंकर की तरफ़ लपका, जो इस वक़्त लहरों से लड़ रहा था। यह उसके क़रीब पहुँचा ही था कि प्रेम ने ग़ोता खाया। अफ़सर ने ख़तरे को समझा, और लहरों का रुख़ पहचानकर एक तरफ़ बढ़ा, जहाँ डूबनेवाले को उतराना चाहिए था। ऐसा ही हुआ, और उसने बेहोश प्रेम को जा पकड़ा। वज़न भारी था, वह प्रेम को लेकर जल की विपरीत दिशा में तैर न सकता था, अतएव उसने अपनी दिशा बदल दी। इतने ही में डोंगी आ गई, और वह बेहोश प्रेम को लेकर उस पर चढ़ गया।

कमला को अभी होश न आया था। इसके लिये अफ़सर जो कुछ कर सकता था, कर रहा था। डोंगी तेज़ी से चलकर जहाज़ से जा लगी। जहाज़ के डॉक्टर ने प्रेम के पेट से पानी निकाला, और मालिश वग़ैरह कराई। प्रेम ने एक लंबी साँस ली। कमला को अब होश आ चुका था। प्रेम को साँस लेते देख उसने अफ़सर का हाथ इस ज़ोर से दबाया कि वह हैरान रह गया। लेकिन यह प्रेम की आख़ीरी साँस थी। शायद उसने इस साँस से उन्हीं शब्दों से जद्दो-जहद की थी, जो उसने लहरों की गोद में कमला से कहे थे।

कमला का हृदय इस समय पत्थर हो गया था। वह अपनी हृदय-हिलोर मन-ही-मन पी चुकी थी, और जहाज़ के लोग देख रहे थे कि उसकी आँखें भी इस समय बिलकुल सूखी थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पाँच]

इस जहाज़ी अफ़सर का नाम कबीर जमाली था। यह बंगाल के एक प्रतिष्ठित परिवार का व्यक्ति था, साथ ही बँगला का कवि भी। कमला अब चलने-फिरने लगी थी, मगर वैसे ही, जैसे सिनेमा की तसवीरें चलती और बोलती हैं। जमाली के प्रति अपने हृदय का आभार प्रकट करने तक की ताब उसमें न थी। ज़रा कुछ चंगी होते ही उसने जमाली को नज़र भर देखा। इस दृष्टि में कृतज्ञता और आदर की एक ऐसी गंभीर झलक थी, जिससे जमाली प्रभावित हुए बिना न रहा। और, जब उसने कमला के ज़रिए इनकी तमाम कहानी सुनी, तो जमाली से न रहा गया। वह कह उठा— "बहन, क्या तुम एक भाई को खोकर दूसरे भाई की सेवा स्वीकार न करोगी?"

कमला के हृदय का भार जैसे कुछ कम हो गया। उसे ऐसा भासित होने लगा, मानो विनोद ही उसकी जान बचाकर उससे बैठा बातें कर रहा है।

कबीर ने उसी समय कॉलेज को टेलीफ़ोन किया, और वहाँ के विद्यार्थी आकर प्रेम की लाश और कमला को साथ ले गए। कबीर भी उनके साथ गया, और प्रेमशंकर के क्रिया-कर्म में शरीक हुआ। प्रेम पटने का रहनेवाला था, और मेहरुन् का बाप कलकत्ते में ही रहता था। कॉलेज की ओर से इनको बुला भेजा गया।

कमला ने अपने दूसरे साथियों की लाशों की तलाश किए जाने की इच्छा जमाली से प्रकट की, और उसने इसकी कोशिश की। दूसरे दिन जमाली एक मोटर लांच लेकर तलाश के लिये रवाना हुआ। और, मेहरुन् तथा प्रेम की लाशें भी डाइमंड हारबर के किनारे, जहाँ समुद्र गंगा को आत्मसात् कर लेता है, मिल गईं।

[छ]

कमला कबीर को लेकर मेहरुन् के पिता के पास गई। उसने भरे हुए जी से सारी कहानी कह सुनाई, और मेहरुन् के पिता से प्रार्थना की कि वह इन दोनो लाशों को एक साथ ही बिजली से फूँके जाने की अनुमति दे दें, और फिर इनके फूलों को एक ही क़ब्र में दफ़न करने का प्रबंध कर दें।

मेहरुन्निसा के पिता को इससे कब इनकार था। उसने सहर्ष अनुमति दे दी। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो वह अपनी मेहरुन् की ख़ुशी और संतोष के लिये किसी बात की हामी भर रहा है। अपनी स्वीकृति देते हुए उसने मेहरुन् की आत्मशांति में अपनी आत्मतृप्ति का सुख अनुभव किया। उसने प्रेम और मेहरुन् के एक साथ फूँके जाने की अनुमति ही नहीं दी, बल्कि इसका ख़र्चा भी ख़ुद ही दिया। और, जब उनके फूलों पर सुंदर मक़बरा तैयार हुआ, तो उस पर प्रेम-मंदिर क़ौमियत हिंद की यादगार का लिखित पत्थर जड़वा दिया। उसने कमला को विश्वास दिलाया कि उसका घर कमला का घर है, और मेहरुन् की भाँति ही कमला का उसके पिता पर हक़ है।

[सात]

कबीर और कमला सच्चे भाई-बहन हैं। दुनिया के पास अपनी एक ऐनक है, और उसी से वह प्रत्येक चीज़ को देखने की अभ्यस्त-सी हो गई है। शुरू-शुरू में जब कबीर और कमला एक दूसरे से बिला दरेग़ मिलने-जुलने लगे, तो इन ऐनकवालों ने उनके सम्मेलन के न-मालूम क्या-क्या अर्थ लगाए। लेकिन इसी दुनिया का वह अंग भी है, जो इन चश्मावालों से ओझल रहता है, और जिसे इनकी बहुत कम चिंता होती है। जब अखंड सत्य प्रकट हो जाता है, तब भी दुनिया-वालों को अपने गरेबान की चिंता नहीं होती। पर कबीर और कमला के प्रेम को वे लोग आज सराहते सुनाई पड़ते थे।

कबीर जमाली ने 'प्रेमयोग'-नामक एक काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा, जिसने उसकी कविता को अमर कर दिया। जमाली की शायरी का आज अपना एक दर्जा था। अब जब कभी वह अपने दूर-दराज़ सफ़र से कलकत्ते आ जाता है, तो कमला का वक़्त इस तरह गुज़रता है कि वह अपनी विपत्ति को भूल जाती है। इन दिनों की इन दोनो की बातचीत काफ़ी लंबी होती है, जो या तो दार्शनिक होती है, या देशोद्धार की युक्तियों से संबंधित।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये
एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद! याने
सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—
'गोनोकिलर'

GONO ORIGINAL KILLER REGD TRADE MARK

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान! ख़रीदने से पहले दवा का नाम 'गोनोकिलर' और मुर्ग़ा-छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ५० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी०एन्० जसानी, (S. L.) विठ्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामना

[श्रीयुत बालकृष्ण राव आई० सी० एस०]

पथ हो असीम, आशा अनंत ;
यह नव निसर्ग हो चिर वसंत ;
यत्नों में ही हो प्राप्ति निहित ,
फिर तृप्ति स्वयं चिर तृषा बने ।

श्रम में विराम, क्षय में विकास ;
हो अश्रु-कणों में अमिट हास ;
कवि के नयनों की छाया में
प्रति दिवस मिलन की निशा बने ।

स्वर हो स्वतंत्र, लय-ताल-हीन ;
हो शक्ति विफलता से नवीन ;
जिस ओर बढ़ें पथ-भ्रांत चरण ,
प्रियतम के घर की दिशा बने ।

महात्मा गांधी और वर्ण-व्यवस्था

गांधी-सेवा-संघ के अध्यक्ष श्रीमशरूवाला ने १९४१ की मनुष्य-गणना में 'जाति कुछ नहीं' आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित वक्तव्य भेजा है—

"गांधी-सेवा-संघ का कोई सदस्य जातियों में उच्च-नीच का भेद नहीं मानता। संघ में शायद ही कोई ऐसा सदस्य होगा, जो यह आग्रह रखता है कि जाति के अंदर ही शादी होनी चाहिए । इसलिये मेरा ख़याल है कि अधिकतर सदस्यों को अपनी जाति 'कुछ नहीं' दर्ज करने में कोई मुश्किल न होगी ।

"गांधीजी रोटी-बेटी-व्यवहार के बंधनों से बने हुए वर्ण-व्यवस्था के स्वरूप को ठीक नहीं समझते । उनकी वर्ण-व्यवस्था की बुनियाद समाज में चलनेवाले भिन्न-भिन्न पेशों में प्रकट होनेवाले मानव-स्वभाव के विविध पहलू हैं । जन्म, शिक्षा और कर्म, तीनो के विचार से निश्चय किया जा सकता है कि कौन-सा शख़्स किस पेशे के लिये योग्य है। इनमें से अगर शिक्षा और कर्म को जन्म के संस्कारों के अनुकूल करने की कोशिश रहे, तो समाज और उस व्यक्ति के जीवन में एक प्रकार की निश्चितता आ जाना मुमकिन है । यही गांधीजी की ख़्वाहिश और कोशिश है ।"

मंत्री, भारतवर्षीय जाति-पाँति-तोड़क मनुष्य-गणना-संघ, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी शिक्षा का मूल्य

[श्रीमती कुमुद्वती झा बी० ए०]

हमारे देश में जब शुरू-शुरू अँगरेज़ी-शिक्षा का प्रचार हम लोगों में हुआ, तो एक हलचल-सी मच गई। हमारी बहनें, जो शिक्षा पाकर बी० ए०, एम्० ए० होती थीं, अपनी चाल-ढाल, रहन-सहन, सभी पाश्चात्त्य ढंग की बना लेती थीं। उन्हें भारतीय संस्कृति, समाज, शिक्षा, रहन-सहन इत्यादि से घृणा-सी हो गई, वे अपने को भारतीय संस्कृति और समाज से परे समझने लगीं। ऐसा होना स्वाभाविक था, क्योंकि मनुष्य जब कोई नई चीज़ देखता है, तो उसे एकदम अपना लेना चाहता है। इस तरह इस नई शिक्षा की तरफ़ लड़कियाँ बेतहाशा दौड़ीं, और चाहा कि हम सोलहो आने पाश्चात्त्य ढंग की हो जायँ।

शिक्षा की आरंभिक स्थिति में लड़कियों का मन अत्यधिक चंचल हो उठा, यहाँ तक कि उन्होंने योरपीय स्त्रियों की तरह अविवाहित रहना भी शुरू कर दिया (पर अब उसकी असफलता देखकर शादियाँ करने लगी हैं)। हमारे स्त्री-समाज में स्वयं दोष आ गया, या जो कुछ भी हुआ, उसमें हमारा अपना भी पूरा हाथ था।

श्रीमती कुमुद्वती झा बी० ए०

लड़कियाँ यद्यपि भारतीय सभ्यता की सीमा के बिलकुल बाहर नहीं गई थीं, पर उनमें जो कुछ भी परिवर्तन हुआ, उसका नतीजा यह हुआ कि उनके अवगुणों में नमक-मिर्च लगाकर भद्दे-से-भद्दे कार्टून बनाए गए, और कविताएँ लिखी गईं। यदि पति की आज्ञा न मानी—जो स्वाभाविक है—या पति से, पढ़ने-पढ़ाने आने की जल्दी में, बच्चा देखने को कहा, या पति ही बच्चा खिलाने और उसकी सेवा करने लगा, तो उनकी बुरी तरह भद्द उड़ाई जाने लगी। आजकल पढ़े-लिखे कितने ही जोड़े ऐसे हैं, जिनमें पत्नी ही कमाती है। फिर यदि पत्नी की ग़ैरहाज़िरी में पति बच्चे को देखता है, तो इसमें पत्नी का क्या अन्याय? उसकी क्या उद्दंडता? यह तो आपस का सहयोग है, जिसके बल पति-पत्नी अपना समस्त जीवन सरलतापूर्वक यापन करते हैं। पर न-जाने क्यों इतने सीधे-सादे प्रश्न भी हमारे समाज के छिद्रान्वेषियों के सामने बुरे रूप में ही प्रकट हुए, और वे उनका अंट-संट अर्थ लगाने लगे। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह हमारी शिक्षा की ऐसी-ऐसी धज्जियाँ उड़ाई गईं कि हम भी यह देखकर दंग रह गईं कि क्या वास्तव में आधुनिक शिक्षा-प्राप्त हमारी बहनों की यही दशा है ?

एक तरफ़ हिंदू-समाज के युवक, जो योरपियन वातावरण में पले थे, यह चाहते थे कि उनकी बहनें और पत्नियाँ योरप की लड़कियों की तरह हों, और कट्टरपंथी युवक यह चाहते थे कि सदियों से परदे में बंद लड़कियाँ वैसी ही बंद रहें—वे योरपियन ढंग के अनुयायियों में तरह-तरह के बुरे आदर्शों का समावेश देखते थे। इस प्रकार हमारे समाज में दो दल हो गए—एक अनुकूल और दूसरा प्रतिकूल। अनुकूल दल बहुत थोड़ी तादाद में था, इसलिये प्रतिकूल दलवाले ख़ूब मनमानी करने लगे।

पर यदि हम न्याय-दृष्टि से देखें, तो अनुकूल दलवालों के समान व्यवहार में कोई भी त्रुटि न थी। यदि एक साधारण श्रेणी के दंपति, जिनके बच्चे भी हैं, कॉलेज के छात्र हैं, तब तो हमें सम व्यवहार की अत्यंत आवश्यकता पड़ जाती है। यदि कोई लड़की पढ़ने-पढ़ाने का काम शुरू करती है, तो उसकी दिन-चर्या में एक काम की वृद्धि होती है (लड़कों के लिये यह बात नहीं)। जिस लड़की को समय से कॉलेज जाना है, वह यदि अपनी ग़ैरहाज़िरी में परिवार की देख-रेख पति पर छोड़ देती है, तो यह कुछ भी बुरा नहीं। जब लड़कियों को शिक्षा मिलेगी, तो पुरुषों को कुछ त्याग अवश्य करना पड़ेगा। जो त्याग अपढ़ लड़कियों के साथ है—सभी त्याग-तपस्या वही करे—सो पढ़ी-लिखी के साथ नहीं हो सकता, त्याग और तपस्या में पुरुषों को भी हाथ बटाना ही पड़ेगा।

इस तरह सहयोग के आवश्यकतानुसार हम जो अपने घर और बाल-बच्चों का काम पति के हाथ सौंपती हैं, उसके माने यह थोड़े ही हैं कि पत्नी कॉलेज की छात्रा और मेम साहब है, इसलिये पति से काम कराती है। सिर्फ़ इसीलिये ऐसा किया जाता है कि हम अपने सहयोग से गृहस्थी की गाड़ी सुचारु रूप से चलाएँ। बड़े दुःख की बात है, हमारा समाज हरएक बात भिन्न दृष्टिकोण से देखता है, तब उसका अर्थ भी दूसरा ही निकालता है। फल-स्वरूप कोई भी काम, जो अच्छी तरह जाँचने पर उन्नतिशील होगा, हमारे समाज की दृष्टि में उन्नति का बाधक हो जाता है। अब भी स्त्रियाँ चाहे जितनी शिक्षिता हों, उनका आदर्श भारतीय ही है। भारतीय नारियों का उतना अधःपतन नहीं हुआ है, जितना वास्तव में हम कहते या सुनते हैं। यदि एकाध कोई अनुचित घटना हो गई, तो समूचे शिक्षित स्त्री-समाज को लांछित करना अपने आप अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना है। यदि हम ख़ुद जाँच करें, तो पता चलेगा कि वास्तविक बात क्या है, अफ़वाहों में तो नमक-मिर्च मिला रहता है।

जिस लड़की को पढ़ाई-लिखाई के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर का काम-काज करना पड़ता है, उसके स्वास्थ्य और सुंदरता पर कितना असर पड़ता है, इसका तो हम ख़याल नहीं करते, और उलटे ज़रा-ज़रा-सी बात पर व्यंग्य बोलते और दोष निकालते हैं। यही कारण है, उन साधारण श्रेणी की लड़कियों का, जो कॉलेज और स्कूल की छात्राएँ हैं, स्वास्थ्य ख़राब हो जाता है, और बड़ी उम्र की जान पड़ती हैं। पढ़ाई ज़रूरी है, क्योंकि सभी पुरुष पढ़ी-लिखी लड़कियाँ खोजते हैं। वे घर का काम-काज करेंगी ही। पढ़ती हैं, तो इसके माने यह नहीं कि मेम साहब की तरह बैठी ही रहेंगी।

जब इस तरह के विचार चारो तरफ़ फैलने लगे, तो लड़कियों ने सोचा कि कुछ ऐसा काम किया जाय, जिससे हमारी शिक्षा की इस प्रकार खिल्ली न उड़ाई जाय! अब ऐसे रहा जाय, जिससे हम हँसी, अनादर और घृणा की पात्र न हों। इसलिये उन्होंने अपने को बिलकुल भारतीय ही बनाए रक्खा, चाहे कितनी ही उच्च शिक्षा उन्होंने प्राप्त की।

संसार का नियम है कि स्त्रियाँ पुरुषों की पसंद का काम करें, और पुरुष स्त्रियों की पसंद का। शिक्षित युवक की बात जाने दीजिए, अधूरे—इंट्रेंस तक—पढ़े युवक भी पढ़ी-लिखी लड़कियों से ही शादी करना चाहते हैं। यदि लड़की कम पढ़ी है, तो व्यंग्य बोलेंगे, और यदि ग्रेजुएट पत्नी कॉलेज और होस्टल की शान दिखावे, तो उलटी चपत जड़ना चाहते हैं। वाह! क्या कहने हैं! आख़िर एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं। कुछ तो उनकी शिक्षा का मूल्य होना चाहिए। लड़कियाँ कितनी ही पढ़ी-लिखी क्यों न हों, घर का थोड़ा-बहुत काम-काज अवश्य करती हैं; किंतु लड़के तो, कितनी ही आवश्यकता क्यों न पड़े, प्रायः घरेलू काम-काज नहीं करते। यह कैसे हो सकता है कि लड़कियाँ पढ़ी-लिखी, फ़ैशनेबुल भी हों, और देहातियों की तरह घर का काम-काज भी करें?

पर हमारे स्त्री-समाज ने इसे समझा, और पढ़ाई-लिखाई के साथ घरेलू काम-काज भी ज़्यादा दिलचस्पी और लगन से करने लगा। पर पुरुष-समाज न-जाने क्या चाहता है! कुछ भी करो, चैन नहीं देता। सदा दोष निकालने और हँसी उड़ाने पर तैयार रहता है। आजकल लड़कियाँ यदि पढ़ाई-लिखाई के साथ घरेलू काम-काज भी करती हैं, तो उनकी खिल्ली उड़ाई जाती है!

यदि एक उच्च शिक्षा-प्राप्त लड़की लगन और सुघराई के साथ घरेलू काम-काज करती है, तो लोग यह कहते हैं कि अरे, इस पढ़ी-लिखी लड़की में और एक अपढ़ में भेद क्या है? अपढ़ लड़कियाँ यदि घरेलू काम करती हैं, तो अच्छा भी लगता है, पर इनका करना तो कितना हास्यास्पद है! आख़िर चाहिए क्या? मेम साहब की तरह जाकर ज़रा चौके पर या और किसी भी काम-काज के संबंध में गिटपिट-गिटपिट कर दें। फिर—फिर तो क्या पूछने? वे ही कार्टून इत्यादि निकलेंगे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि ज़रा-सा बच्चा देखने को कहा, तो उसका सारा काम पति से कराती हैं। पति ज़मीन पर बैठा है, और आप कुर्सी पर बैठी उपन्यास पढ़ रही हैं।

इस समय अधिकांश पढ़ी-लिखी लड़कियाँ खाना पकाने, बच्चों तथा अन्य घरेलू कामों के देखने में ज्यादा कुशल होती हैं। पति के प्रति उनका व्यवहार सभ्यता-पूर्ण होता है। हाँ, उनमें यह भाव कि हम पुरुषों की क्रीत दासी या उनके ही इशारों पर चलनेवाली हैं, बहुत कम या ज़रा भी नहीं रहता। इसके अतिरिक्त उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा होता है। जितने उद्दंड या लज्जाजनक व्यवहार की बात लोग करते हैं, वास्तव में वैसा नहीं। पति की सेवा के प्रति उनका ध्यान रहता है, क्योंकि शिक्षा पाकर सारी बातें समझ में आ जाती हैं। एक पढ़ी-लिखी लड़की पति की कठिनाइयों या दुःखों को जितना समझ सकती या जितनी पति की सहायता कर सकती है, एक अपढ़ लड़की नहीं। इस प्रकार हम उनके मन का काम करती हैं, तो भी हमारी हँसी उड़ाई जाती है। कुछ इधर-उधर हुआ, तो फिर क्या पूछना।

मा-बाप लड़कियों को बाध्य होकर पढ़ाते हैं, क्योंकि नवयुवकों को पढ़ी-लिखी लड़की ही चाहिए। अरे भाई, जब लड़कियों की शिक्षा की भद्द उड़ाते हो, तो फिर पढ़ी-लिखी लड़की शादी के लिये क्यों खोजते हो?

यदि समाज-सुधार में कोई बुराई हो, और उसे व्यंग्य एवं कार्टून के अलावा सरल तथा प्रेममय ढंग से ही समाज के सामने लाया जाय, तो क्या हानि? शिक्षा पाने पर कुछ स्त्रियों की दूसरी प्रवृत्ति हो जाती है। और, यदि वे कुछ बुराई कर ही बैठती हैं, तो हमारा क्या यही धर्म है कि उसकी हँसी उड़ाएँ? कदापि नहीं। हमें चाहिए, बुराइयों को अच्छे ढंग से समझाकर उन्हें ऐसा मार्ग बताएँ, जिससे वे सहज ही रास्ते पर आ जायँ।

अँगरेज़ी-शिक्षा की प्रारंभिक स्थिति में समाज इनके समूल नाश के पीछे पड़ गया था। ऐसा मालूम होता था कि कार्टूनिस्ट उनके व्यंग्यात्मक तथा झूठे कार्टून बनाने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं। कविगण अपनी सारी प्रतिभा उनकी बुराइयों को ही प्रत्यक्ष, वह भी एकदम असंगत-रूप में, करने में लगा रहे थे। अब ऐसा मालूम पड़ता है कि हमारी शिक्षा के सुधार में भी वे उसी प्रकार व्यंग्य करेंगे, जैसे हमारी छोटी-मोटी भूलों पर उन्होंने किया था।

हमें चाहिए, किस तरह सुधार होना चाहिए, इसे उनके सामने पेश करें, जिसमें हमारी बहनें अपनी भलाई कर सकें, और साथ ही एक उन्नत, सुधरे हुए समाज का निर्माण करने में सहायक हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिक्षा

[चित्रकार—श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव]

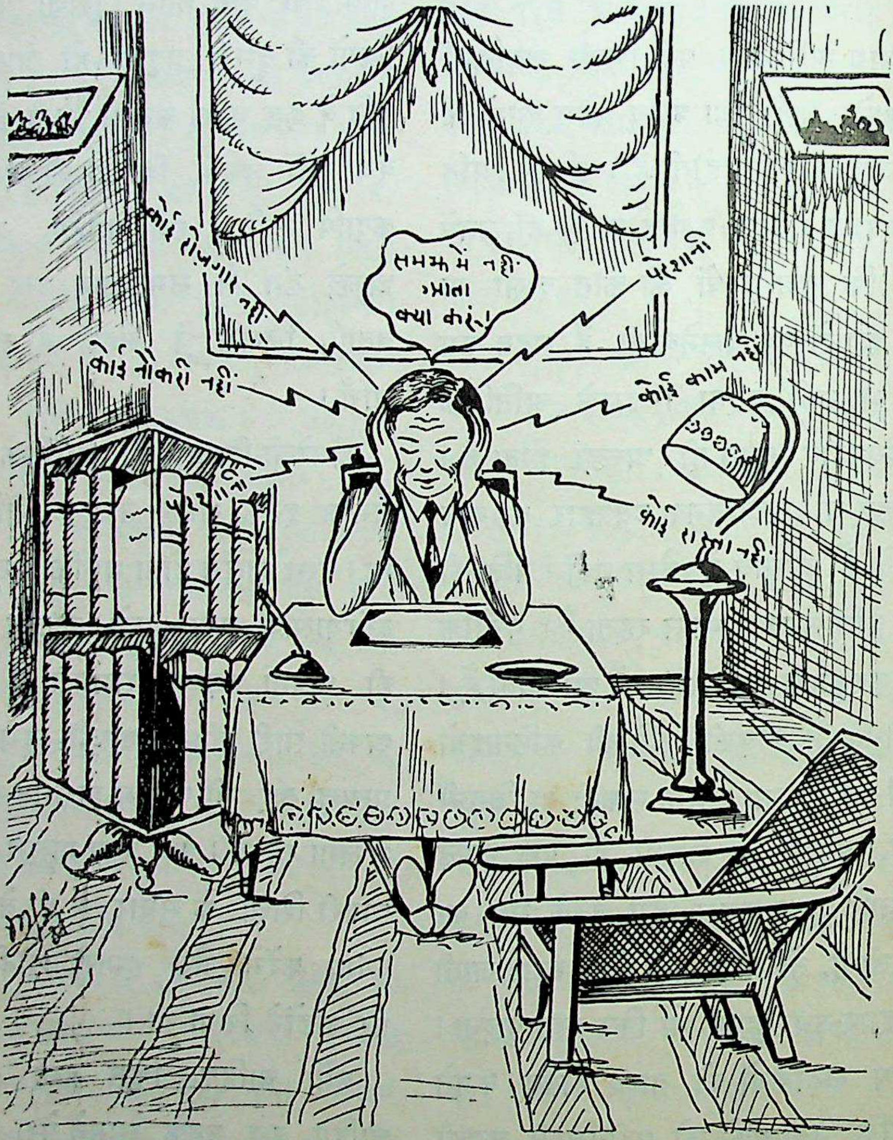

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला

[चित्रकार—श्रीमुरारीलाल श्रीवास्तव]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजा, रानी, संतान और........!

[चकल्लस-संपादक श्रीयुत अमृतलाल नागर]

(१)

क़रीब-क़रीब रोज़ ही ऐसा होता है कि मैं रात के आठ-नौ बजे अपने बिस्तर पर आराम से लेटकर पढ़ता हूँ, और मेरे चिरंजीव आकर उसमें बाधा डालते हुए मुझसे कहानी सुनाने का आग्रह करते हैं। अक्सर मैं इस बात पर ग़ौर करता हूँ, लेकिन समझ में कुछ नहीं आता।

बेबी की उम्र इस समय केवल चार वर्ष की है। बड़ा होने पर यदि वह इस प्रकार का आग्रह करेगा, तब तो मैं निश्चय-पूर्वक ही यह कह सकूँगा कि वह अपने परमपूज्य पिता के कहानीकार होने की विशेषता से परिचित है। लेकिन इस समय तो ऐसा सोचना भी शायद उसके लिये संभव नहीं।

कहानी सुनाने के लिये वह मुझसे ही आग्रह करता हो, यह भी नहीं। उसका यह पेशा है, कभी दादी के रसोईघर में घुसकर उनकी पीठ पर लदे हुए कहानी सुनाने की ज़िद करना, अथवा कभी अंधी परदादी के हाथ पर पड़ी हुई झुर्रियों को मिटाने की चेष्टा करते हुए उनसे कहानी सुनाने का हठ करना।

बहरहाल कोई-न-कोई उसे कहानी सुना ही देता है—'एक राजा था, एक रानी थी; लेकिन उसके कोई संतान न थी।"

राजा, रानी अथवा संतान की विशेषता को कुछ न समझता हुआ भी बेबी गंभीरता-पूर्वक सिर हिलाकर कहता है—"हूँ।"

कहानी मंथर गति से क्रमशः आगे बढ़ जाती है। तब वह एक क्षण तक उनकी फूटी आँखों की तरफ़ ग़ौर से देखने के बाद उनका हाथ हिलाकर कहता है—"हाँ, अम्माजी, और?"

अम्माजी एकाएक जागकर कहने लगती हैं—"एक राजा था, एक रानी थी, और ....."

बेबी जैसे ऊब उठता। यह तो उसे भी मालूम हो चुका कि एक राजा था। वह उसके बाद की कथा जानना चाहता है।

मेरी दादी अपने छोटे-से श्रोता को कहानी सुनाते समय शायद बहुत समझदार ख़याल कर लेती हैं। वह बतलाती हैं—"राजा बड़े दुखी रहा करते थे। एक दिन उन्होंने अपने वज़ीर को बुला, उसे सारा राज-पाट सौंपते हुए कहा, मैं किसी जंगल में जाकर तप करूँगा।

"राजा राज-पाट और रानी को छोड़कर चले। आगे था एक घना जंगल। बड़े-बड़े शेर, चीते, भालू—"

बेबी बीच ही में उन्हें टोककर हाथ का घेरा बना बतलाता है—"और बड़े-बड़े बंदर। इतने-इतने बड़े। क्यों अम्माजी?"

अम्माजी को अपनी कथा में उसी समय हिंदी-पत्र के संपादकों की तरह क्षमा-याचना के साथ भूल-सुधार करनी पड़ती है।

बेबी पूछता है—"पहले बंदर क्यों नहीं बताया था?"

यहाँ यह बता देना बहुत आवश्यक है कि बेबी को बंदरों से बड़ा प्रेम है। गोस्वामी तुलसीदासजी के कथनानुसार 'बिनु भय होत न प्रीति' के आधार पर ही उसे बंदरों से प्रेम हो गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी फिर आरंभ होती – "भालू थे, शेर थे, बंदर थे –"

बेबी गंभीर मुद्रा के साथ कहता—"अम्माजी, छरत बंदर है—बाबूजी कहते हैं, छरत बड़ा बंदर है।"

अम्माजी कहतीं—"नहीं, शरत बड़ा राजा बेटा है।"

"नहीं, बाबूजी कहते हैं, छरत बंदर है। अम्माजी, छरत हमें मारता है; उसे कहानी मत सुनाइएगा, और मोटर भी नहीं, और ई-फक-फक भी नहीं।"

इसी बीच में यदि कभी मैं अथवा मेरे दोनो भाई संयोग-वश कवि-सम्मेलन में जानेवाले बेबुलाए तुक्कड़ों की तरह वहाँ पहुँच गए, तो बेबी को नागवार ख़ातिर होने लगता है। वैसे तो चाहे वह हमारे आ जाने का बुरा न माने, परंतु हम लोगों की टीका-टिप्पणियाँ उसे अक्सर खटक जाती हैं। और, ख़ासकर उस समय तो बहुत, जब कि वह अपनी अम्माजी को बताता है कि बाबूजी शरत को बंदर कहते हैं, और ख़ुद बाबूजी कह देते हैं—"शरत बड़ा राजा बेटा है, अम्माजी, मैं शरत को बंबई ले जाऊँगा, और शिमला भी, और कलकत्ते भी।"

बेबी अनखनाकर शिकायत करता है—"देखो, अम्माजी, बाबूजी कहते हैं कि छरत को बंबई ले जायँगे।"

अम्माजी कहतीं– "तो ले जाने दो शरत को। शरत तुम्हारा मुन्ना-सा भाई है न!"

एक क्षण तक मौन रहकर बेबी मानो शरत के बड़े भाई होने के गौरव की महत्ता का अनुभव करता है।

अम्माजी तब कहानी कहना भूलकर शाम के भोजन के लिये कौन-कौन-सी तरकारियाँ बनें, इस पर सलाह करने लगतीं।

भूली बात याद आ जाने पर जैसे कोई चौंक उठता है, बेबी भी ऐसे ही मौक़ों पर उसी तरह अम्माजी का हाथ हिलाकर कहता—"हाँ, अम्माजी, कहानी –"

अम्माजी सब बातें भूलकर तीसरी बार कहानी कहना शुरू करती हैं—"एक राजा था, उसके सात रानियाँ थीं। सबसे बड़ी रानी का नाम 'कौवा-हँकनी' था। राजा अपनी छोटी रानी को बहुत चाहता था। एक बार राजा जहाज़ पर सामान लादकर बाहर चला—"

बेबी को फिर जैसे कुछ याद आ जाता। वह पूछता—"अम्माजी, उनके कोई छंतान नहीं थी?"

पोपले मुँह से हँसते हुए अम्माजी अपने छोटे-से श्रोता को उत्तर देती हैं—"अरे हाँ रे, यह तो मैं भूल ही गई थी।"

अम्माजी के इस भूल जाने और हँस देने पर बेबी को इतनी प्रसन्नता होती है, जितनी शायद हाईस्कूल के विद्यार्थियों को 'लीडर', 'पायोनियर' और सरकारी गज़ट में अपना नाम छपा हुआ देखने पर भी न हो। वह झटपट पलँग से कूद उछलता और हँसता हुआ रसोईघर में जाकर अपनी दादी से कहता है—"भाभी, अम्माजी भूल गई थीं—लाजा के छंतान नहीं थी।"

बेबी की दादी भी जैसे अपनी सास की हार और पोते की जीत से बड़ी प्रसन्न हो उठतीं, और उसका मुँह चूमते हुए हँसकर कहतीं—"अरे, बेबी जीत गया। वाह भई वाह, बेबी ने तो अम्माजी को हरा दिया।"

अपनी इस जीत पर बेबी तालियाँ बजाता हुआ दौड़ता फिरता है। घर-भर में हरएक को यह ख़ुश-ख़बरी सुनाता है; और कहानी फिर आगे नहीं बढ़ पाती।

(२)

कहानी सुनाने का आग्रह वह मुझसे भी करता है। मैं अपने को पढ़ा-लिखा और समझदार समझता हूँ; और ख़ासकर जब से मेरी चार-पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताबें छप चुकी हैं, तब से तो मैं अपने को दुनिया की तीन हिस्सा बुद्धि में आधे का हक़दार मान हर-एक 'जूनियर' लेखक को चेख़व और डोस्टावेस्की से लेकर चार्ल्स-डिकेंस और मार्कट्वेन तक का पूरा साहित्य पढ़ जाने की हिदायत देता रहता हूँ। अक्सर वे लोग जब मुझसे उनकी रचनाओं के नाम भी पूछ बैठते हैं, तब ज़रा दिक़्क़त मालूम होती है। फिर भी चार-पाँच किताबों के नाम गिना देने के बाद यह कह देने से—"इतनी अधिक किताबें मैं अब तक पढ़ चुका हूँ कि अब तो नाम भी याद नहीं रहते।"—धाक जमी रहती है। इस तरह औरों पर तो मैं अच्छी तरह रोब गाँठ लेता हूँ, परंतु बेबी से वश नहीं चलता। न उसे टॉल्सटॉय और तुर्गनेव से ही मतलब है, और न रवि ठाकुर या 'निराला' की रचनाओं ही से। 'निराला'जी से तो उसका अच्छा-ख़ासा परिचय भी हो चुका है; क्योंकि अक्सर ऐसे भी मौक़े आए हैं, जब वह मुझसे मिलने आए, और दुर्भाग्य-वश मैं घर पर न रहा, तब उसने ही उन्हें मेरे न होने की सूचना दी है। अक्सर तौलिया से ले मा की मैली धोती और दुशाला तक लपेटकर उसने मुझसे हँसते हुए कहा है—"बाबूजी, देखो, मैं 'निराला'जी बन गया।" सिर के बाल उसके बड़े-बड़े हैं ही। वेष-परिवर्तन के बाद जब वह बहुधा कमरे में टहलता हुआ कहता फिरता है—

"घंटाघर में चार घड़ी—
तब वह घंटा बजता था;
थका मुसाफ़िर जगता था।"

तब दिल में यह ख़याल होने लगता है कि सोलह वर्ष की उम्र में बेबी भी शायद जुही की कली के सुप्त सौंदर्य का पारखी बन बैठे। लेकिन अभी तो उसका झुकाव मुझे गद्य की तरफ़ ही मालूम पड़ता है। और गद्य भी बीसवीं सदी का अलंकार-उपमा-विहीन। सीधी-सादी भाषा में परियों से लेकर बीबी फ़ातिमा तक की कहानियाँ उसे पसंद हैं। पशु-पक्षियों की कहानियाँ भी वह चाव से सुनता है, परंतु हरएक कहानी के साथ यह शर्त भी रहती है कि उसका आरंभ राजा-रानी से अवश्य हो।

जब वह मुझसे कहानी सुनाने का आग्रह करता है, तब मैं ऐसी कहानियाँ गढ़ने की कोशिश करता हूँ, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ उसे कुछ शिक्षा भी मिलती चले। कहानी शुरू होती है—"एक राजा था, एक रानी थी। उसके पास एक कैट थी।"

यहाँ एक क्षण के लिये रुककर मैं उससे प्यार के साथ पूछता हूँ—"बेबी, कैट माने?"

बेबी बतलाता है—"सी ए टी कैट—कैट माने बिल्ली।"

हॉर्स से लेकर मंकी और डंकी तक के 'हिज्जे और माने' बतलाते-बतलाते वह ऊब-सा उठता है। इसके पहले कि मैं राजा-रानी को एलीफ़ेन्ट माने हाथी पर सवार कराऊँ, वह अपना पेटेन्ट प्रश्न कर बैठता है—"बाबूजी, उसके कोई संतान नहीं थी?"

तब वहाँ मुझे एक संतान भी पैदा करनी पड़ती है।

कहानी फिर यों शुरू हुई—"एक राजा था, एक रानी थी, उसके एक संतान भी थी—"

उस समय कहानी द्वारा मैं उसे कुछ शिक्षा देना चाहता हूँ, परंतु वह कलकत्ता, बंबई और शिमला की बातें करने लगता है।

मैं उससे कहता हूँ—"अच्छा, मुझे एपिल माने बता दो, तो तुम्हें कलकत्ते ले चलूँ।"

वह झटपट बतलाता है—"ए पी पी एल ई एपिल—एपिल माने सेब; बाबूजी, छोटी मुन्नी को भी कलकत्ते ले चलिएगा न?"

छोटी मुन्नी से उसकी गहरी दोस्ती है। छोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्नी के बाप से मेरी भी गहरी दोस्ती है; और इतना ही नहीं, बेबी और छोटी मुन्नी की माताएँ भी, सुना है, एक दूसरे के गले में बाहें डाल बड़े प्रेम से, हँस-हँसकर अपने पति-देवों की बुराइयों का विवेचन करती हैं। दोनो सखियों के मिलने के बाद ही जब रात में मसहरी के अंदर अदालत बैठती है, तो न्यायाधीशों के 'क्रॉस-इग्ज़ामिनेशन' से दोनो मुजरिमों को यह भी मालूम हो जाता है कि उस दिन रात से, सेकेंड शो में, बाइसकोप देखने का मतलब अपने वास्तविक अर्थ में ही अदालत द्वारा लिया गया है, अथवा उसे बहाने का रूप मिल चुका है। बहरहाल यहाँ यह सब कहने का उद्देश्य केवल यही है कि अकेले बेबी और छोटी मुन्नी में ही नहीं, बल्कि दोनो के ख़ानदानों में यह मैत्री-संबंध लगभग तीन पीढ़ियों से चला आ रहा है।

बेबी फिर कहता है—"बाबूजी, छोटी मुन्नी ज़रूर-ज़रूर कलकत्ते जायगी।"

मैं उसे आगे की कहानी सुनाकर सौ तक गिनती गिनवाना चाहता हूँ, परंतु जैसे वह उसके आगे और कुछ सुनना पसंद नहीं करता। राजा, रानी और उनकी संतान के आगे अगर संतान के संतान भी पैदा हो जाय, तो उसे कोई आपत्ति न होगी; परंतु उसके बाद संतान से सौ तक गिनती गिनवाने पर उसे छोटी मुन्नी के साथ कलकत्ता-भ्रमण की सूझने लगती है।

❀ ❀ ❀

एक दिन जब मैं दिन में किसी काम से, अकस्मात् ही, ज़नानख़ाने में गया, तो देखा, बेबी छोटी मुन्नी से कह रहा था—"हम लाजा, तुम लानी और छरन छंतान।"

इसके बाद वह रेलगाड़ी में चाभी भरकर कलकत्ते जाने की तैयारी करने लगा, तभी शरत ने मुझे देख लिया, और 'बा-बा' करता हुआ घुटनों के बल मेरे पास दौड़ आया; राजा और रानी भी मुझे देख हँसते हुए आकर मेरी पीठ पर लद गए, और कहानी सुनाने की ज़िद शुरू कर दी।

अक्सर ऐसे ही मौक़ों पर तीनो बच्चों से घिरा हुआ मैं कहानी सुनाता हूँ—"एक राजा था, एक रानी थी—"

तब मुझे कहानी की आड़ में शिक्षा देने की नहीं सूझती।

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES: 2 & 21

BHOLA NATH & CO.

30, AMINABAD PARK, LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS & METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS & IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS, MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES EMBOSSING MACHINES, INKS Etc Etc

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समीक्षा में नवीन आदर्श

(प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा-लिखित आलोचनात्मक इतिहास)

[श्रीउत्तमचंद्र श्रीवास्तव एम्० ए०]

आधुनिक साहित्यिक गवेषणाओं के फल-स्वरूप हिंदी के प्राचीन साहित्य के विषय में नवीन, युगांतरकारी उद्भावनाएँ हुई हैं। हिंदी-साहित्य केवल काव्य-रचनाओं का संग्रह-मात्र न होकर तत्कालीन भारत-व्यापी आंदोलनों की सशक्त, कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है। उसमें हिंदी-राष्ट्र की आत्मा का सौंदर्य और आनंद है, उसमें भारत के युग-जीवन का स्पंदन है। इसमें संदेह नहीं कि प्राचीन युग में मध्यदेश भारत की सांस्कृतिक चेतना का अग्रदूत था। यही कारण है कि मिथिला से राजस्थान और हिमालय से सतपुड़ा तक फैले हुए इस विशाल प्रदेश के धर्म, भाषा, कला और तत्त्वज्ञान का प्रभाव सारे महादेश पर परिलक्षित होता है।

बहुत प्राचीन काल से ही मध्यदेश में धार्मिक और राजनीतिक केंद्र रहे हैं, जहाँ से उसने भारत को अपना सांस्कृतिक संदेश दिया है। मध्ययुग में, जब देश गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था, हिंदी-राष्ट्र ने भक्ति-भावना द्वारा भारत के आत्म-वैभव की रक्षा की। इसी दिव्य साधना के दर्शन हमें हिंदी के प्राचीन साहित्य में होते हैं।

श्रीरामकुमारजी वर्मा के नवीन इतिहास-ग्रंथ * में इसी मध्यकालीन सांस्कृतिक अभ्युदय की साहित्यिक रूप-रेखा निर्धारित की गई है। इसमें संवत् ७५० से १७०० तक फैले हुए चारण और धार्मिक कालों की लगभग एक हज़ार वर्षों की साहित्यिक चेतना का अनुशीलन अभीष्ट है। चारण-युग में रण-वाद्यों के उद्घोष के बीच महाचंडी का शोणित-पर्व है, तो धार्मिक युग में भक्ति-वीणा की कोमल स्वर-लहरी से गुंजित मंगल-पूजा का अनुष्ठान है। प्रेम और शौर्य की इन दो मूल-भावनाओं से ही विश्व का महान् काव्य-साहित्य अनुप्राणित है।

साहित्य युग-जीवन की कलात्मक प्रतिकृति है। उसका संबंध राष्ट्रीय इतिहास और जातीय संस्कृति से अविकल रूप से है। इनकी पीठिका में हमारे साहित्य की अंतर्धाराओं के प्रकाशन करने की बड़ी आवश्यकता है।

यद्यपि वर्माजी ने यह ग्रंथ प्रधान रूप से आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखा है, पर इसमें ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भावनाओं का भी समावेश है। इसमें साहित्य की बिखरी हुई सामग्री का संकलन कर अंतःप्रवृत्तियों का विवेचन वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। साथ ही अधिकांश कवियों की विस्तृत आलोचना भी की गई है।

हिंदी के अधिकांश प्राचीन कवियों के समय और जीवन के संबंध में हमारा ज्ञान सीमित है। अभी तक इतिहास-लेखक बिना किसी विवेचन के प्रचलित तिथियों का उल्लेख कर देना ठीक समझते थे। वर्माजी ने सर्वप्रथम कवियों का समय-

* हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास। लेखक, श्रीरामकुमारजी वर्मा एम्० ए०। प्रकाशक, रामनारायण-लाल पब्लिशर इलाहाबाद। पृष्ठ-संख्या ७६६। क़ीमत साढ़े चार रुपया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धारण और जीवन-लेखन प्रमाणों के साथ किया है। इस प्रकार की वैज्ञानिक विवेचन-पद्धति साहित्य की आलोचना के लिये आवश्यक है।

तुलसी और सूर की जीवनियाँ अंतःसाक्ष्य, बहिःसाक्ष्य और जनश्रुति से उपलब्ध सामग्री का विस्तृत विवेचन कर लिखी गई हैं। कबीर के जीवन पर प्रकाश डालनेवाले कुछ नवीन प्रमाणों का संग्रह वर्माजी ने किया है। इसी प्रकार अन्य साहित्यिकों की जीवन-संबंधी समस्याओं पर भी विचार किया गया है। साहित्य के विवादास्पद स्थलों पर भी अपना मत सप्रमाण उपस्थित किया गया है। 'पृथ्वीराज-रासो' की समस्या पर वर्माजी ने सभी प्रचलित मतों का विवेचन कर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया है। आपके अनुसार 'पृथ्वीराज-रासो' अपने वर्तमान स्वरूप में बिलकुल अप्रामाणिक और जाली ग्रंथ है। इसके दो मुख्य कारण माने गए हैं—एक तो इतिहास-विरुद्ध घटनाओं का समावेश, दूसरे भाषा का विकृत आधुनिक स्वरूप।

हमारे मत में भारतीय पूर्वमध्य-काल के इतिहास के कई स्थल संदिग्ध हैं, क्योंकि उनका आधार मुसलमानों द्वारा लिखित फ़ारसी के ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त एक नाम के कई व्यक्तियों का होना भी संभव है। भाषा के प्रश्न पर हम यही कहेंगे कि उस युग की अवस्था देखते हुए भाषा में विकृति संभव है, जो हमारे कई परवर्ती कवियों की रचनाओं में भी पाई जाती है। विद्यापति के पद बंगाल में प्रचलित होकर आधुनिक स्वरूप ग्रहण कर चुके हैं। इसी प्रकार गुजरात में गाए जाने के कारण मीरा के कई पद उस भाषा की निधि बन गए। उनका कोई भी प्रामाणिक स्वरूप निश्चित न होने पर भी उनका साहित्यिक महत्त्व कम नहीं गिना जाता। 'रासो' चारणों द्वारा गाया जानेवाला वीर-काव्य था। समय के साथ उसकी भाषा में परिवर्तन और प्रक्षिप्त अंशों का समावेश संभव है, पर इस कारण 'रासो' के काव्य-सौंदर्य की उपेक्षा करना आवश्यक नहीं। 'रासो' समग्र जाति का काव्य है। इस दृष्टि से उसका साहित्यिक तथा राष्ट्रीय महत्त्व है। अभी 'रासो' की अधिक आलोचना की आवश्यकता है।

वर्माजी ने अधिकांश कवियों की समीक्षा उनके ग्रंथों के पूर्ण अध्ययन तथा विवेचन के पश्चात् लिखी है। इसलिये उनके निष्कर्ष सार-गर्भित और प्रामाणिक हैं। काव्यालोचन का क्रम इस प्रकार है—

१—काव्य का स्वरूप और विषय
२—काव्य में रस और ध्वनि
३—काव्य में अलंकार, भाषा, छंद आदि
४—काव्य में युग-जीवन
५—कवि की मानसिक प्रतिभा का विकास

इस प्रकार भारतीय काव्यालोचन के सिद्धांतों की रक्षा करते हुए पश्चिमी आदर्शों से भी पूरा लाभ उठाया गया है। कवियों की रचनाओं को काल-क्रमानुसार निश्चित कर उनकी विशिष्ट काव्य-क्षमता के प्रकाशन में वर्माजी ने अच्छी सफलता पाई है। इसी संबंध में कवियों पर युग के प्रभावों का विश्लेषण भी मौलिक ढंग से किया गया है।

इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि तुलसी-काव्य की विस्तृत, वैज्ञानिक आलोचना की गई है। गोस्वामी तुलसीदासजी के प्रत्येक ग्रंथ का संक्षिप्त परिचय देकर उसका साहित्यिक महत्त्व निर्धारित किया गया है। साथ ही राजनीति, समाज, धर्म और दर्शन के क्षेत्रों में तुलसीदासजी के व्यक्तित्व की महत्ता का अनुसंधान भी महत्त्व-पूर्ण है।

कृष्ण-काव्य के अंतर्गत पुष्टि-मार्ग के साहित्यिक महत्त्व की सांगोपांग व्याख्या की गई है। पुष्टि-मार्ग के सिद्धांतों का उल्लेख तथा सूरदास और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंददासजी पर सांप्रदायिक प्रभावों का विश्लेषण भी सुंदर है। पुष्टि-मार्ग हिंदी-राष्ट्र और गुजरात की महत्त्व-पूर्ण सांस्कृतिक संस्था थी। काव्य, संगीत, नृत्य और शृंगार-कला की अभिवृद्धि में उसने बहुत सहयोग दिया। सूरदासजी हमारे प्रदेश के उत्कृष्ट कवि, महान् भक्त और विख्यात संगीतज्ञ थे। इन दृष्टिकोणों से उनके व्यक्तित्व के संपूर्ण अध्ययन की आवश्यकता है।

भक्ति-काव्य की समीक्षा के अंतर्गत वर्माजी ने तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है। साहित्य-इतिहास-लेखक के लिये यह बड़ी आवश्यक होती है। इस ओर अभी तक भारतीय विद्वानों का ध्यान नहीं गया था। वर्माजी ने सबसे पहले इस क्षेत्र में तुलनात्मक समीक्षा की पद्धति अपनाई है। धार्मिक युग का साहित्य भारत की प्रत्येक जीवित भाषा में मिलता है। उसका यथार्थ अध्ययन तुलनात्मक ही हो सकता है, जिसमें पारस्परिक प्रभावों तथा जातीय चरित्र के अनुरूप मूल धार्मिक भावना के अनेक स्वरूपों का अभिज्ञान अभीष्ट होता है। वर्माजी बंगाली, गुजराती आदि के ज्ञाता हैं। अतएव वह अन्य भाषाओं के सामयिक काव्य-साहित्य के बीच हिंदी-कवियों का स्थान निर्धारित करने में सफल हुए हैं। भारत के मध्य-युग की सांस्कृतिक संस्थाओं और समस्याओं पर तुलनात्मक ढंग से विचार करने की ज़रूरत है। इस दृष्टि से ग्रंथ में महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर, तुकाराम और गुजरात के नरसी मेहता की चर्चा महत्त्व-पूर्ण है। साथ ही उत्तर-भारत के विभिन्न संप्रदायों और उनके सिद्धांतों, केंद्रों तथा साहित्यिक क्रिया-कलापों का दिग्दर्शन रोचक है।

वैष्णव भक्ति-भावना के धार्मिक विकास का वर्णन भक्ति-काल की अनुक्रमणिका के अंतर्गत है। कृष्ण-काव्य की भूमिका में जयदेव के 'गीत-गोविंद' के महत्त्व पर वर्माजी ने विचार किया है। 'गीत-गोविंद' का प्रभाव उत्तरी भारत के प्रायः सभी भाषा-साहित्यों पर पड़ा था। इस कारण साहित्य के इतिहास-ग्रंथ में मूल-प्रभावों के अध्ययन की योजना कर वर्माजी ने आलोचना-क्षेत्र में एक नवीन दिशा की ओर संकेत किया है। इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी हिंदी-काव्य पर संस्कृत के धार्मिक, साहित्यिक और दार्शनिक प्रभावों का विवेचन किया गया है।

भारत के मध्ययुग के साहित्य में एक विशेषता है। वह जन-साधारण की आत्मा की वाणी है। वह उच्चवर्गीय साहित्य नहीं। उसके रचयिता सब जातियों के थे, यहाँ तक कि उनमें से कुछ मुसलमान भक्त भी थे। उस युग में हिंदी को राज्याश्रय प्राप्त न था। इसका प्रभाव इसके लिये लाभदायक सिद्ध हुआ। वह आत्मरक्षा के हेतु नवीन भक्ति-संप्रदायों का आश्रय लेकर एक विशाल रचनात्मक शक्ति के रूप में विकसित हुआ। उसका प्रभाव भी जनता पर ख़ूब पड़ा। काव्य-धारा कुछ उच्चवर्गीय जीवों के सुख-विलास की निर्झरिणी न होकर व्याकुल, संतप्त जनता को आनंद और शांति देनेवाली मंदाकिनी के रूप में प्रवाहित हुई। सारे उत्तर-भारत में भक्ति और राधा-कृष्ण-प्रेम के पद गूँज उठे। उस युग के लोक-गीतों और काव्यों के प्रवाह मिलकर एक हो गए।

इस प्रकार जनता के संपर्क में जाकर हमारे साहित्य ने अक्षय संजीवनी शक्ति का संचय किया, और अपनी माधुर्य-लहरी से भक्ति का संदेश देकर हमारी भाषा को समादृत और गौरवान्वित किया। हिंदी-राष्ट्र की प्रत्येक बोली भक्ति-भावना से मुखरित हो उठी; प्रेम, सौंदर्य और आनंद की उन्मुक्त धारा प्रवाहित हो गई। रहस्यात्मक प्रेम की कथाएँ लिखी गईं, और दैनिक जीवन के रूपकों के भीतर मानव-जीवन के गंभीर सिद्धांतों की भावमय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्मस्पर्शी व्याख्या की गई। उस युग का साहित्य महाप्राण साहित्य है।

इस दृष्टि से साहित्य के इतिहास में लोक-साहित्य की अंतर्धारा का अनुशीलन करना आवश्यक है। अब समय आ गया है कि लोक जीवन तथा जनता के आत्मप्रकाशन के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन साहित्य के अंतर्गत हो। कबीर की अभिव्यक्ति लोक-साहित्य के रूप में है, पर उसकी महत्ता विश्व-वंद्य है। हर्ष का विषय है कि वर्माजी ने ऐतिहासिक क्रमानुसार लोक-साहित्य पर भी प्रकाश डाला है।

संक्षेप में हिंदी-साहित्य की वैज्ञानिक आलोचना के विचार से यह एक युगांतरकारी रचना है। सरल, भाव-पूर्ण शैली होने के कारण ग्रंथ साधारण पाठक के लिये भी सुबोध और रोचक है। वर्माजी की आलोचना-पद्धति में पूर्व और पश्चिम की समीक्षा-शैलियों का सुंदर समन्वय है। प्रत्येक कवि की आलोचना पांडित्य-पूर्ण, संयत और निष्पक्ष है, और मानस-विश्लेषण उच्च कोटि का है। अच्छे आलोचक के लिये आवश्यक गुण, सहृदयता और सूक्ष्म अंतर्दृष्टि वर्माजी में है।

आपके दाँतों के लिये

दंत-मुक्ता (Regd.)

(दंत-रोग-नाशक सुगंधित मंजन)

इसके व्यवहार से

दाँत मोती के समान सफ़ेद और चमकीले होते हैं।

स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्ट बक्स ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. हा द्विवेदीजी !

माननीय पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी के पुंडरीकाक्षपुर-गमन से हिंदी-संसार की जो हानि हुई, वह वर्णनातीत है ; जो स्थान रिक्त हुआ है, उसका पूर्ण होना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। द्विवेदीजी अपने ढंग के एक ही थे। वह बड़े परिश्रमी, अध्यवसायी और उद्योगी थे। केवल निज उद्योग से उन्नति किस तरह की जाती है, इसके वह आदर्श थे। नवयुवकों को उनके चरित से शिक्षा लेनी चाहिए।

उन्होंने हिंदी की ख़ूब सेवा की, और शिक्षित युवकों को भी इसके लिये उत्साहित ही नहीं किया, उन्हें सुलेखक और सुकवि भी बनाया। उनके अनुयायियों की संख्या यथेष्ट है। द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' में युवकों की रचनाएँ छापकर उन्हें उत्साहित और सुप्रसिद्ध किया, इसमें संदेह नहीं।

* जिस तरह द्विवेदीजी ने युवकों को उत्साहित और सुप्रसिद्ध किया, उसी तरह स्वर्गवासी बाबू बालमुकुंद गुप्त ने द्विवेदीजी की रचनाएँ 'हिंदी-वंगवासी' और 'भारत-मित्र' में छापकर उन्हें प्रोत्साहित किया है। गुप्तजी जब 'हिंदी-वंगवासी' और 'भारत-मित्र' के संपादक थे, तब द्विवेदीजी की आरंभिक रचनाएँ इन दोनो में छपा करती थीं। गुप्तजी शुद्ध, सरस, सरल और छोटे-छोटे वाक्य लिखा करते थे। द्विवेदीजी इसके विपरीत लिखते थे। पीछे वह गुप्तजी का अनुसरण करने लगे। जिन्हें विश्वास न हो, वे द्विवेदीजी-लिखित 'बेकन-विचार-रत्नावली', 'संपत्ति-शास्त्र' और 'सरस्वती' के पिछले अंक पढ़कर देख लें। इन तीनो की शैली में आकाश-पाताल का अंतर मालूम

* 'सरस्वती'-संपादक के अनुरोध से यह लेख 'द्विवेदी-स्मृति-अंक के लिये भेजा गया था। यह 'सरस्वती' में छपा ज़रूर है, पर यह अंश छोड़कर। लेख की नक़ल मेरे पास नहीं, इसलिये स्मरण-शक्ति से ही काम लेना पड़ा है। शब्द चाहे ये न हों, पर भाव यही है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। वर्तमान शैली के निर्माता गुप्तजी ही हैं। 'भारत-मित्र' की छेड़-छाड़ और तीखी आलोचना से द्विवेदीजी की शैली बहुत कुछ सुधरी और सँभली है। द्विदेदीजी की शैली पर गुप्तजी की छाप है, इसमें संदेह नहीं *।

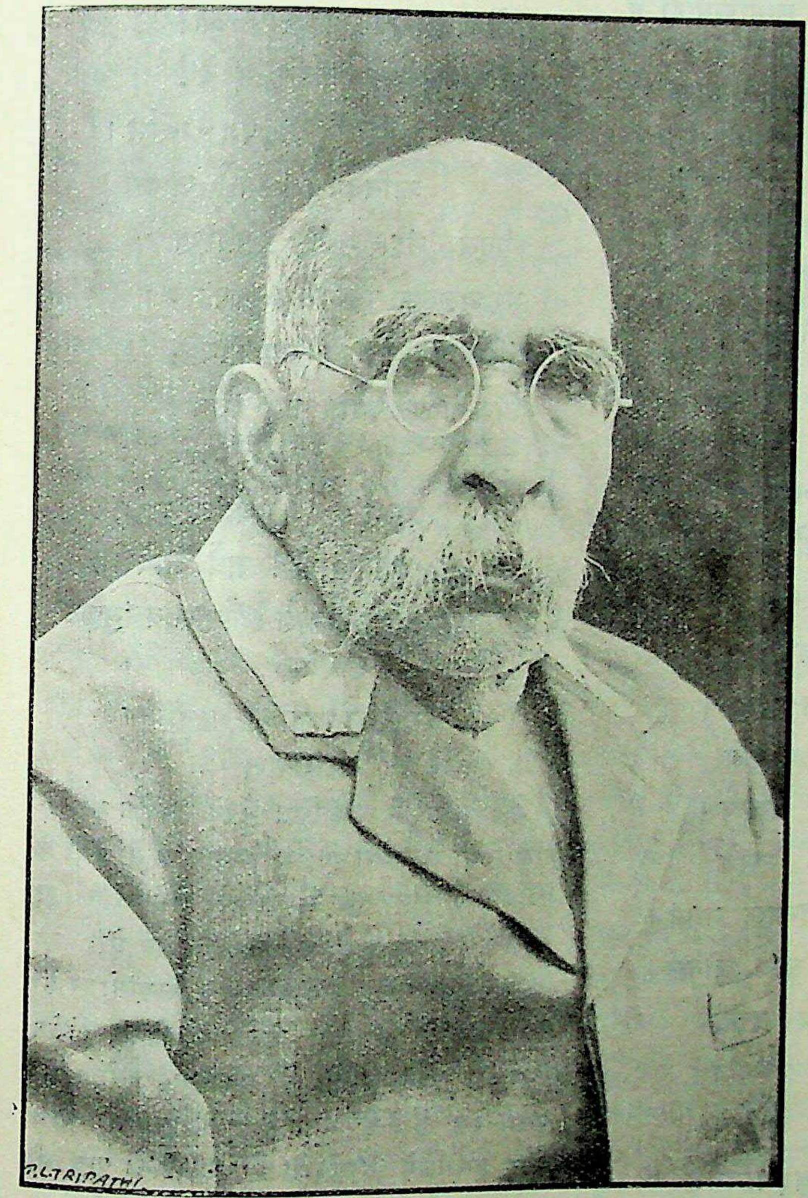

स्व० आचार्य पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी

रायबहादुर श्रीश्यामसुंदरदासजी के बाद द्विवेदीजी 'सरस्वती' के संपादक होकर उसे सर्वांग-सुंदर बनाने के लिये विविध विषयों के लेख लिखते और लिखवाते थे। कलकत्ते के 'भारत-मित्र' में प्रतिमास 'सरस्वती' की समालोचना हुआ करती थी। भाषा की 'अनस्थिरता' आदि इसके प्रमाण हैं।

मेरी और द्विवेदीजी की भी खूब छेड़-छाड़ चलती थी। मैं 'भारत-मित्र' में लिखता और वह 'सरस्वती' में। उनकी 'कालिदास की निरंकुशता' और मेरा 'निरंकुशता-निदर्शन' इसका प्रमाण है। इसके सिवा और भी लिखा-पढ़ी हुई थी, जिसकी चर्चा फिर कभी की जायगी। यह सब होने पर भी मेरे-उनके मित्र-भाव में कभी अंतर नहीं पड़ा। मैं जब कानपुर जाता, तब उनके दर्शन अवश्य करता, और वह भी बड़े सद्भाव से मिलते थे। घंटों बातचीत होती थी। ये सब बातें याद कर सचमुच दुःख होता है। उनसे छेड़-छाड़ करने में भी मज़ा आता था, क्योंकि वह भी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिए बिना नहीं रहते थे। अब न वह समय है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न वह मनुष्य ही हैं, जिनसे छेड़-छाड़ की जाय।

अस्वस्थ और निर्बल होने के कारण और अधिक न लिख सका। द्विवेदीजी के सम्मानार्थ ही ये कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं।

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

× × ×

२. क्रांति

क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।
पतझड़ के पहले पीत पात
हैं कहाँ आज, है किसे ज्ञात?
सूखी डालों के भी भीतर
बह रहा क्रांति का तप्त रुधिर।
प्रगति-हीन कर नष्ट-भ्रष्ट—
विकसा नव-कोपल-यौवन।
क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।
यह खड़ा सामने वृक्ष बड़ा
था कभी बीज-बंधन-जकड़ा।
दासत्व-भाव से हो आकुल
निर्बल बंदी हो गया सबल।
तोड़ कठिन कारा उसने
देखा तब उन्मुक्त गगन।
क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।
सीमा-विहीन—वह चिर प्रशांत
है पड़ा महासागर, अक्लांत।
उस महाशांत उर में प्रतिपल
जलती रहती है बड़वानल।
और—ज्वार के रूप-क्रांति
करती वक्ष पर गुरु गर्जन।
क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।
ये श्याम, सजल पावक-बादल,
संसृति-जीवन-दाता कोमल;
पर-सेवा-रत, अति साधु, सरल,
क्यों अनल धधकती उर प्रतिपल?
शांति का उर क्रांति है रे!
इससे ये तड़पन - तर्जन।
क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।
शीतल - मंद - सुगंध समीरण
भर अलसित तन-मन में पुलकन,
तंद्रित जग को दे नव-जीवन,
प्रिय-पालित करता जड़-चेतन।
उसमें तप्त विध्वंस - रूप
बरिबंड बवंडर-नर्तन।
क्रांति ही रे! सार्थ जीवन।

मुकुटविहारीलाल श्रीवास्तव 'मुकुट'

× × ×

३. ज़मींदारी-प्रथा की प्राचीनता
(परिशिष्टांश)

मैंने 'सुधा' में प्रकाशित अपने उपर्युक्त शीर्षक-वाले लेखों में लिखा था कि मनुस्मृति में वेदों के समय के राष्ट्रीय तथा सामाजिक विधानों का ही उल्लेख है। उन लेखों के लिखते समय मेरी यह धारणा केवल ऐतिहासिक कल्पना के सिद्धांतों पर ही निर्भर थी। मैं उन लेखों में किसी विशेष पुस्तक का प्रमाण नहीं दे सका था, क्योंकि मेरे पास इस छोटे-से नगर में पर्याप्त पुस्तकें न थीं। और, इसीलिये श्रीशुक्लजी के कटाक्षों का पात्र भी मुझे बनना पड़ा था।

सौभाग्य-वश मुझे अब ऐसा प्रमाण मिल गया है, जिसमें किसी शंका की गुंजाइश ही न रहेगी। श्रीपुरोहित रामप्रतापजी ने अपनी 'श्रीकृष्ण-विज्ञान'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक पुस्तक के 'प्रथमावृत्ति का वक्तव्य' में लिखा है कि महाभारत के भीष्म पर्व के ४३वें अध्याय के प्रारंभ में "जनमेजय से गीता की उत्पत्ति के विषय में वैशंपायन यों कहते हैं"—

सर्वशास्त्रमयी गीता, सर्वदेवमयो हरिः;
सर्वतीर्थमयी गङ्गा, सर्ववेदमयो मनुः।

इससे स्पष्ट प्रकट है कि व्यासजी मानव-धर्म-शास्त्र को सर्ववेदमय ही मानते थे। और, वेदव्यास से अधिक इस विषय का ज्ञाता कोई हो नहीं सकता, क्योंकि उन्हीं ने वेदों का संपादन भी किया था। अब तो इसमें कोई संदेह रह नहीं जाता कि ग्रामपति (ज़मींदार = ठाकुर) का व्यक्तित्व वेदोक्त तथा वेदकालीन है।

क्योंकि मैं मौलिक ग्रामीण समस्याओं पर एक बृहत् लेख लिखकर पाठकों की भेंट करनेवाला हूँ, अतः यहाँ बहुत अधिक लिखना नहीं चाहता। हाँ, प्रसंग-वश केवल एक विचार और प्रस्तुत कर देना चाहता हूँ। आचार्य रामदेवजी ने शुक्रनीति में वर्णित 'धनिक' को भी कृषक ही माना है, और, जैसा मैं पहले लिख चुका हूँ, शुक्रनीति में वर्णित प्रथा को भी ज़मींदारी-प्रथा क़रार दिया है। हाँ, 'धनिक'-शब्द से शंका अवश्य उत्पन्न होती है, जिसके आधार पर शुक्रजी-सरीखे विद्वान् रुष्ट हो गए। परंतु जब मैं इस शब्द पर शुक्राचार्य की उस चेतावनी के साथ विचार करता हूँ, जिसमें उन्होंने कहा है—राजा को 'धनिक' से अपना अंश ऐसी कोमलता से लेना चाहिए, जैसे माली वृक्ष से फल-फूल तोड़ता है कि वृक्ष को हानि न पहुँचे, तो मेरी ऐतिहासिक कल्पना-शक्ति एक और ही रहस्य का उद्घाटन करती है, जो इस समय के लिये बड़ा ही शिक्षाप्रद है। मनुस्मृति में किसी चेतावनी का वर्णन नहीं। इससे साफ़ प्रकट होता है कि सामाजिक व्यवस्था में कुछ ऐसा परिवर्तन हो रहा था, जिसके हेतु चेतावनी की आवश्यकता थी। इस दृष्टिकोण से देखने पर साफ़ जान पड़ता है कि ग्रामपति के अधिकार में कुछ कमी हो रही थी, और उसका नाम केवल 'धनिक' रह गया था। इसीलिये राजनीतिज्ञ, आचार्य शुक्राचार्य ने डंके की चोट चेतावनी दी थी कि ग्रामपति के अधिकारों को मिटाना वैसा ही होगा, जैसे कोयले के सौदागर का काम, जो अपने लाभ के निमित्त वृक्ष को ही जला डालता है। इस चेतावनी का प्रभाव बड़ा ही अच्छा पड़ा। हम पहले ही दिखा चुके हैं कि मुग़ल-शासन-काल तक इसी चेतावनी पर काम होता रहा। और, हम यह भी बता चुके हैं कि ब्रिटिश सरकार ने लगान-मालगुज़ारी के विधान को मुग़ल-शासकों से ही परंपरानुकूल पाया है।

अब हमें इस बात का कारण साफ़ मालूम होने लगता है कि महात्मा गांधी भी यही कहते हैं कि हमारा ध्येय ज़मींदारी-प्रथा को मिटाना नहीं होना चाहिए, अपितु उसे इस तरह सुधार देना कि ज़मींदार ही किसानों के स्वत्व-रक्षक बन जायँ। जो लोग ज़मींदारों को केवल ताँगेवाला कहते हैं, उन्हें इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, और सारी ऐतिहासिक शिक्षा को एकदम भूल न जाना चाहिए। भाई! ताँगेवाले को भी अपने और घोड़े के पेट के लिये तथा ताँगे को ठीक रखने के लिये कुछ तो चाहिए ही। यदि उसे इतनी मज़दूरी भी न मिली, तो वह काहे को ताँगे का रोज़गार करेगा? कांग्रेस-सरकार को भी अभी गत जल-बाढ़ के समय उन्हीं ज़मींदारों और महाजनों के सामने सहायतार्थ हाथ फैलाना पड़ा था। सच है; जब किसी के पास कुछ बचेगा ही नहीं, और सभी एक-से आर्थिक संकट में होंगे, तो फिर अवसर पड़ने पर कौन किसके काम आएगा? मुझे तो फिर वही वैदिक सिद्धांत याद आता है कि एक सौ हाथों से धनोपार्जन करना सिखाया जाय, और दूसरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार हाथों से उसे दान करना, तभी समाज का कल्याण हो सकता है।

राजबहादुर लमगोड़ा (एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

४. यात्री

(गद्य काव्य)

दिन-भर का थका हुआ पथिक संध्या-समय मार्ग के एक वृक्ष के नीचे बैठकर सुस्ता रहा था।

"कितना रास्ता पार कर आया, फिर भी इस यात्रा का अंत ही नहीं होता! उस पर यह चढ़ाई तो और भी मारे डालती है! मुझसे तो अब एक पग भी आगे नहीं चला जा सकता।" यह कहकर बड़े इतमीनान से उसने अपनी धूल-भरी गठरी सिर के नीचे दबा ली, और लाठी बग़ल में रखकर, टाँगें फैलाकर वहीं लेट गया।

श्रीयुत तेजनारायण काक 'क्रांति' एम्० ए०

मार्ग के निकट ही—पर्वत के अंतराल में बहता हुआ एक छोटा-सा पहाड़ी नाला यह दृश्य देखकर अपनी हँसी न रोक सका। धारा के बीच में पड़े हुए पत्थर के ढोकों पर उछलता हुआ, ख़ुशी से तालियाँ बजाता हुआ बोला—

"अह्-ह्-ह्! अभी से थक गए, पथिक! मुझे भी तो देखो! बरसों से इसी तरह बहता चला जा रहा हूँ। आज तक एक क्षण-भर के लिये भी विश्राम नहीं लिया, और तुम्हें एक दिन की यात्रा में ही टाँगें पसारकर सोने की नौबत आ गई! अह्-ह्-ह्!"

पथिक ने कोई उत्तर नहीं दिया। चिढ़कर उसने दूसरी ओर करवट बदल ली।

थोड़ी ही देर बाद वायु का एक तेज़ झोंका आया। पथिक को देखकर वह भी वृक्ष की डालों को हिला-हिलाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसता हुआ कहने लगा—

"क्यों मित्र! इतनी ही दूर चलकर थक गए! मैं तो अनंत काल से जंगलों और पहाड़ों की ख़ाक छानता फिर रहा हूँ। आज तक कहीं ठहरने का नाम भी नहीं लिया, और तुम अभी से विश्राम लेने लगे! अह्-ह्-ह्!"—और तुरत ही पथिक के वस्त्रों को खींचता हुआ, मार्ग की धूल उड़ाता हुआ वह बहुत दूर निकल गया।

पथिक ने कोई उत्तर नहीं दिया। और अधिक चिढ़कर उसने आकाश की ओर मुँह फेर लिया।

अब तक कई तारे आकाश में निकल आए थे। पथिक को देखकर वे भी लुकझुक-लुकझुक करते हुए हँस ही तो पड़े।

"अह्-ह्-ह्! अभी से थक गए, यात्री! हमें भी तो देखो! सृष्टि के आरंभ से ही अपने-अपने अंतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ज्वाला लिए आकाश के अंत-हीन पथ पर कैसे चलते चले जा रहे हैं! कभी रुकने का नाम भी नहीं लेते। और तुम इतनी ही दूर चलकर थक गए! अह्-ह्-ह्!"—और लुकझुक-लुकझुक करते हुए वे बड़ी देर तक हँसते ही चले गए।

पथिक अब अधिक देर तक नहीं सुन सका। झुँझलाकर, कपड़ों की धूल झाड़ता हुआ, वह उठ ही तो बैठा। अपनी गठरी कंधे पर रक्खी, और एक हाथ में लाठी उठाकर दूसरे से माथे का पसीना पोंछता हुआ सघन होते हुए अंधकार में ही वह आगे बढ़ चला।

तेजनारायण काक 'क्रांति' (एम्० ए०)

× × ×

५. कहानी

ऊषा में अरुणिमा जाग चुकी थी। बाल-अरुण की स्वर्ण-रश्मियाँ गगन के वक्ष पर थिरक रही थीं। श्वेत वस्त्रधारी वह युवक अपनी धुन में मस्त चला जा रहा था।

वायु में वीणा की मधुर झंकार झंकृत हो रही थी—

"जहाँ में काश पैदा ही न होते।"

"कहाँ जाते हो युवक!"

सरसरी दृष्टि से ऊपर से नीचे तक उसे देखकर वह बोला—"शांति की खोज में।" और तीव्रता से आगे बढ़ गया।

"लौट आओ, अनंत पथ के पथिक! वह न मिलेगी। उसके मिलने का निश्चित स्थल है मृत्यु।"

युवती ने मादकता से मुस्किरा दिया। युवक चला गया। वाटिका गुंजरित होने लगी—

"जहाँ में काश पैदा ही न होते।"

❀ ❀ ❀

मध्याह्न का समय था। तिग्मांशु की खरतर किरणों ने ब्रह्मांड को तपा रक्खा था। जंगल की झाड़ियों में उलझकर उसके वस्त्र तार-तार हो चुके थे। मुख पर स्वेद-बिंदु झलक रहे थे।

वायु की उष्णता में टूटी वीणा का कंपित स्वर भी मिश्रित था—

"जहाँ में काश पैदा ही न होते।"

विशाल वट-विटप के तले वह श्रांत-सी खड़ी थी।

पथिक मुस्किराया।

"कहो, कितना मार्ग तय किया?"

उत्तर में थी केवल एक निराशा-युक्त मुस्कान।

"अच्छा, जाओ।"

प्रकृति की नीरवता भंग हो गई।

"न बन पड़ती है हँसते और न रोते।"

❀ ❀ ❀

भगवान् मरीचिमाली अपनी मरीचियाँ समेटकर अस्ताचल को पहुँच चुके थे। प्रतीची दिशा रक्त-रंजित हो उठी थी। उसके आतंक से प्रकृति शांत थी। विटप कल की प्रतीक्षा में मौन खड़े थे। समस्त विश्व नीरवता के अंक में लीन था।

शांति-पूर्ण मंद स्वर था—

"जहाँ में काश पैदा ही न होते।"

वसुधा के अंक में वह स्थिर पड़ा था। पथ की क्लांति उसकी अनंतता में लीन हो चुकी थी। टूटी वीणा का कंपित स्वर उसकी अंतिम श्वास में लीन हो गया। और ....

उसके मुख पर खेल रही थी चिर शांति।

(कुमारी) स्नेहलता अष्ठाना 'मधु'

× × ×

६. श्रीमाथुर-चतुर्वेदी-पुस्तकालय

श्रीमाथुर-चतुर्वेदी-पुस्तकालय का २०वाँ वार्षिकोत्सव, सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता श्रीमान् पं० दुलारेलालजी भार्गव के सभापतित्व में, बड़े समारोह से मनाया गया। यह पुस्तकालय मैनपुरी की रजिस्टर्ड संस्था है, तथा सम्मेलन से संबंधित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। पुस्तकालय का निजी भवन है। इसमें ३,५५६ पुस्तकें हैं। इस वर्ष इसकी आय ७३०॥।≡) ५ पाई हुई, और व्यय भी इसी के अनुसार हुआ। १०,००० मनुष्यों ने आकर पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ीं। पुस्तकालय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन तथा प्रयाग-महिला-विद्यापीठ की परीक्षाओं का केंद्र है। इसमें इन परीक्षाओं की शिक्षा का भी प्रबंध है। और, सब प्रकार की सुविधा, जो उपलब्ध हो सकती है, दी जाती है। इस वर्ष कुछ साहित्यिक सार्वजनिक अधिवेशन भी हुए, जैसे तुलसी-जयंती, भारतेंदु-जयंती, प्रेमचंद-दिवस आदि। पुस्तकालय इस ज़िले में हिंदी-प्रचार का ठोस कार्य कर रहा है। ऐसी महोपकारिणी संस्था की हम हृदय से उन्नति चाहते हैं। तथास्तु।

विद्याधरजी चतुर्वेदी (बी० ए०, प्रधान मंत्री)

× × ×

७. आह्वान *

मा की धूलि-धूसरित अलकें बीता सपना कहती हैं;
खुली हुई हैं जाने कब से, क्यों बिखरी-सी रहती हैं।
कोमल कर में ज़ंजीरें हैं, ज़ंजीरों में तड़पन है;
आँखों में पीड़ा रोती है, पीड़ा में भी कंपन है।
रोते-रोते बीत गए युग जाने कब से रोती है;
कर में पड़े फफोले फूटे, उनसे आँचल धोती है।
इस पर भी संतानें उसकी 'मधुशाला' में हँसती हैं;
प्याला की हाला ही तक झूठी मस्ती में फँसती हैं।
'पियो-पियो' की बोली से सारी मधुशाला गूँज रही;
विलख-विलख रोती मा, फिर भी हाला इनको सूझ रही।
लौह-सीकचों में बंदी मा, मा में बंदी उलझी श्वास,
श्वासों में भीगी सिहरन है, सिहरन में भूला इतिहास।
'पियो-पियो' की बोली में अब 'चलो-चलो' की बोली हो;
जहाँ बरसती मादक मदिरा, वहाँ लहू की होली हो।
जिन कंठों से हाला लिपटी, उनसे उलझें तलवारें;
हों हारों में उलझी जीतें, जीतों पर मिटतीं हारें।
अंगूरी सारी में लिपटी झूम रही जो 'मधुबाला';
मरदानी बन खडग उठाए भरती हो शोणित-प्याला।

* गत फ़रवरी मास में आगरा-नागरी-प्रचारिणी सभा ने नागरी-सप्ताह मनाया था। उस अवसर पर जो कवि-सम्मेलन सुधा-संपादक के सभापतित्व में हुआ था, उसमें यह कविता पढ़ी गई और प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत हुई थी।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनपुरी-कवि-सम्मेलन

खड़े हुए [बाईं ओर से]—(१) श्रीबादशाहजी गुप्त बी० ए०, एल-एल्० बी० (मंत्री), (२) पं० बनवारीलालजी चतुर्वेदी (आय-व्यय-निरीक्षक), (३) पं० श्याममनोहरजी चतुर्वेदी बी० कॉम०, एल्-एल्० बी० (भूतपूर्व प्रधान मंत्री), (४) श्रीपं० मोतीलालजी चतुर्वेदी मुख्तार, (५) आचार्य कुँवर लालसिंह (मानसिंह-आश्रम), (६) श्रीजगदीशप्रसादजी बी० ए०, एल्-एल्० बी० (भूतपूर्व आय-व्यय-निरीक्षक) और (७) श्रीपं० विद्याधरजी चतुर्वेदी विद्यालंकार, बी० ए० (प्रधान मंत्री)

बैठे हुए—(१) श्रीपं० उमरावसिंहजी पांडेय विशारद (कार्यकारिणी समिति के सदस्य), (२) श्रीबाबू प्रेमविहारीलालजी बी० ए०, एल-एल० बी० (कार्यकारिणी समिति के सदस्य), (३) श्रीपं० दीनानाथजी चतुर्वेदी रिटायर्ड नाज़िर (कार्यकारिणी समिति के सदस्य), (४) श्रीपं० दुलारेलालजी भार्गव (सभापति), (५) श्रीपं० खड्गजीतजी मिश्र रिटायर्ड इंजीनियर (कार्यकारिणी समिति के सदस्य), (६) श्रीपं० भैरवप्रसादजी मिश्र रईस और (७) श्रीबाबू हरिश्चंद्रजी एम्० एस्-सी०, एल्-एल्० बी० (मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

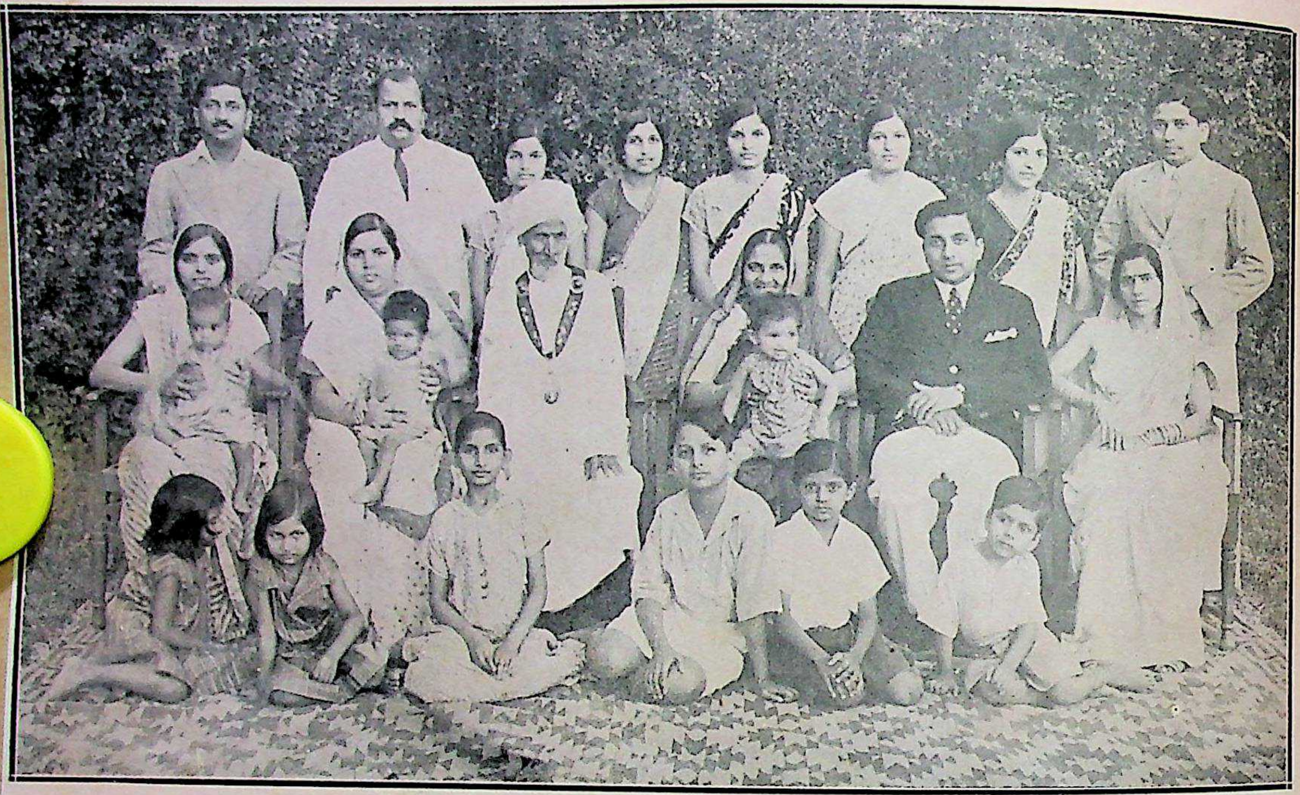

राजमित्र, राजरत्न स्व० श्रीआत्मारामजी
(परिवार-सहित)

कुर्सियों पर बीच में—[बाईं ओर से] श्रीमती स्नेहलताजी (धर्मपत्नी श्रीआनंदप्रियजी), गोद में योगेंद्रकुमार (पौत्र), श्रीमती रत्नकुमारीदेवीजी (धर्मपत्नी श्रीशांतिप्रियजी), गोद में सुदेवी (पौत्री), स्व० श्रीआत्मारामजी, श्रीमती यशोदादेवीजी (धर्मपत्नी श्रीआत्मारामजी), गोद में सुधा चाँदकरण (पौत्री), श्रीप्रतापचंदजी और श्रीमती सरलादेवीजी (धर्मपत्नी श्रीप्रतापचंदजी)

पीछे खड़े—[बाईं ओर से] श्रीपं० आनंदप्रियजी बी० ए०, एल्-एल्० बी, श्रीशांतिप्रियजी, कुमारी लीला चाँदकरणजी (पौत्री), कुमारी सुशीलाजी, कुमारी सरला चाँदकरणजी (पौत्री), कुमारी सरस्वती शांतिप्रियजी (पौत्री), कुमारी शकुंतला शांतिप्रियजी (पौत्री) और श्रीमहेशचंदजी बी० ए०

आगे बैठे हुए—[बाईं ओर से] प्रमिला (पुत्री श्रीआनंदप्रियजी), ऊषा (पुत्री कुँवर चाँदकरणजी), सुमित्रा (पुत्री कुँवर चाँदकरणजी), राजेंद्रकुमार (पुत्र श्रीशांतिप्रियजी), प्रतिभा (पुत्री श्रीआनंदप्रियजी) और विनोदकुमार (पुत्र श्रीशांतिप्रियजी)

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखियारी मा की कन्याओ, तुम भी छोड़ वधू का वेश—
कर शृंगार समर का आओ, मुक्त करो यह बंदी देश।
प्रतिहिंसा की आग लगी है, प्राणों में उठता तूफ़ान;
तूफ़ानों में भारी हलचल, हलचल में भीषण अवसान।
आओ साथी, अब तो आओ भरकर प्राणों में आवेश,
मा का लुटा सुहाग बचा लो, क्या न रहा कुछ भी बल शेष?
रण-भेरी का नाद गुँजाकर अपनी नग्न जटाएँ खोल—
प्रलय काल-सी धूम मचा दो, उखड़े वैरी जाएँ डोल।
मरते-मरते सबके मुँह से निकले बोल यही सावेश—
"जय-जय मेरी भारत-माता! जय-जय मेरा भारत-देश।"

चिरंजीलाल 'एकाकी'

× × ×

८. पतझड़ की है शाम सखी!

हाँ, आज पतझड़ की शाम है। एक-एक कर पत्ते झड़ते जाते हैं, मानो जीवन के एक-एक क्षण हों।

रह क्या जाते हैं—ठूँठ पेड़। बस, पेड़ों की डाल। अपने सौंदर्य को खोकर, अपने जीवन को खोकर, अपने मदमाते नृत्य को छोड़ रह जाती है—बस, पेड़ों की डाल।

वायु इठलाता हुआ आता है, पर वृक्षों की सूखी डालों को देख मुँह फेर लेता है। क्यों—? क्योंकि उसमें अब वह सौंदर्य नहीं, वह सुकुमारता नहीं, जिसके संग वह इठला-इठलाकर, हँस-हँसकर नृत्य कर सके!

सखी! अब जीवन की साँझ हो गई है! जल्दी करो, रजनी की सवारी आ रही है, हमें तैयार होना है।

सखी! सखी! अब जीवन की साँझ हो गई है!

उमा सिनहा

× × ×

९. "किसी" को

यदि आ जाते वह एक बार।
जल रहे हृदय की प्यास बुझा
शीतल करती यह नैन-द्वार।
यदि आ जाते वह एक बार।
संचित दृग-जल के सरल स्नेह
से धोती उनके थकित चरण;
चिर-व्यथा और चिर-प्यास-भरी
उनका करती उर आलिंगन।
छुट जाती युग-युग की पीड़ा,
आँखें होतीं झर-झर निहार।
यदि आ जाते वह एक बार।
उनके दर्शन से छा जाता
मेरे जीवन में चिर-सुहाग;
विह्वल उर-बंधन में कसकर
गा देती उर का भग्न राग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशि में तारकदल बिखरे हैं,
हँस रही चाँदनी चंद्रहार;
दृग में चिर आकुल खोज लिए
निशि कटती तारों को निहार।
सारे अनुताप भूल प्रियतम,
पहना देती मैं हृदय हार।
यदि आ जाते वह एक बार।

अनुरागमयी संध्या आई
अंचल में भर-भरकर गुलाल;
है फेंक रही प्राची-तट पर
नभ-तल में कुमकुम लाल-लाल।
है डूब गया आलिंगन में
रवि, रजनी में हो एकप्राण;
लखकर भरती हूँ जब उसाँस,
पूरब में हो जाता विहान।
पलकों में आती नींद नहीं,
कितने दिन से हैं मलिन प्राण;
पथ में आकुल इन नैनों में
यदि आ जाते तुम आज प्राण!
मधु-रसमय हो जाता जीवन,
जग जाते मेरे आज भाग;
सारी उर-पीड़ा भूल प्रिये,
रचती तेरे सँग करुण फाग।
उर में कस लेती बस तुमको,
तब खोल हृदय का बंद द्वार।
यदि आ जाते तुम एक बार।

स्वर्णकुमार

× × ×

१०. आवश्यक सूचना

फ़रवरी, १९३९ की सुधा में 'जयपुर का इतिहास' की आलोचना छपी है। उसे देखकर बहुत-से हिंदी-हितैषियों ने उसे विना डाक-महसूल भेजे ही प्राप्त होने को लिखा है। किंतु ४०० पृष्ठ के अति सुंदर चित्रोंवाले भारी ग्रंथ को हम अपना डाक-महसूल लगाकर आधे मूल्य में भेजने में असमर्थ हैं। अतएव 'सुधा' के ग्राहक इसका आधा मूल्य २) और डाक-महसूल ।॥) मनीऑर्डर से भेजकर मँगा लें। इसके अलावा दो आना अधिक भेजें, तो उनको चारु चयन, पत्र-पुष्प, भारत में भूत और गणेश्वर-माहात्म्य, ये पुस्तकें भी विना मूल्य मिल सकती हैं। इतिहास कितना उत्तम, आवश्यक और प्रयोजनीय बातों से पूर्ण है, यह जानने के लिये 'सुधा' के पृष्ठ ८३ को फिर पढ़ लें।

निवेदक
मैनेजर कृष्ण-कार्यालय
चौमूँ (जयपुर)

× × ×

११. आचार्य द्विवेदीजी और मेरा प्रारंभिक लेखक-जीवन

सन् १९१४ में योरप का महासंग्राम छिड़ा था। चारो ओर अशांति थी। मैं तीर, तुपक या तलवार तो धारण नहीं कर सकता था। ऐसे संस्कार ही न थे। उन दिनों यू० टी० सी० भी न थी। यदि संस्कार भी होते, तो क्या करता? "संस्कारात्प्रबला जातिः।" "बणिक-पुत्र जाने कहा गढ़ लैबे की बात?" बचपन में क़लम और तलवार की प्रतिद्वंद्विता के ऐसे वाद-विवाद सुने थे, जिनमें क़लम की जीत रही थी। "क़लम गोयद कि मन शाहे-जहानम" इस बैत को मौलवी साहब के यहाँ तख़्ती पर ख़ुशख़ती या बदख़ती में अनेक बार लिखा था। अस्तु। मैंने क़लम-रूपी शाहे-जहान की शरण ली, और लेख-वीर बनने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प किया। अशांति के दिनों में शांति-धर्म लिखकर अपने लेखक-जीवन का श्रीगणेश किया।

सन् १६१३ में मैंने दर्शन-शास्त्र में एम्० ए० पास किया था। मेरा मस्तिष्क पाश्चात्य दर्शनों की विचार-धारा से परिप्लावित हो रहा था। जिस प्रकार लीलामय भगवान् मुरलीमनोहर की मुरली-ध्वनि सुनकर गोकुल की कुलवधुएँ घर और कुल-कानि छोड़कर शारदीय चंद्र-ज्योत्स्ना से आलोकित यमुना-पुलिन पर नृत्य करने को उत्सुक हो रही थीं, उसी प्रकार मेरे विचार भी राष्ट्र-भाषा की पुकार सुनकर साहित्य-क्षेत्र में अवतरित होने को छटपटा रहे थे। उन दिनों ख्याति पाना अधिक कठिन न था। कीर्तिकुमारी सदा जयमाल लिए वरने को उद्यत खड़ी रहती थी। केवल थोड़े-से विचारों की आवश्यकता थी। ब्रह्मा-विष्णु-स्वरूप परम दैवत गुरुदेव प्रोफ़ेसर राजू की कृपा से मेरा विचार-कोष अक्षय नहीं, तो कौने-कौने पूर्ण अवश्य था। भावों की कमी न थी। भाषा के संबंध में यही कह सकता हूँ कि एक साल संस्कृत में फ़ेल होकर मैंने बी० ए० पास किया था। संस्कृत पढ़ने के कारण तत्सम शब्दों का भंडार मामूली तौर से अच्छा था। कुछ शब्द-गढ़ंत में भी दख़ल था। हिंदी-साहित्य में तुलसी-कृत रामायण के नवाह्निक पारायण तो पूज्य पिताजी के आदेश से (और शायद परीक्षा में पास हो जाने के लिये भगवान् को प्रसन्न करने की शुभ लालसा से भी) अवश्य किए थे, किंतु अर्थ ग्राउस साहब के अँगरेज़ी अनुवाद से पढ़े थे। आलस्य-भक्त होने के कारण मूल और अनुवाद को मिलाकर समझने का उद्योग नहीं किया था। कभी-कभी वैश्य-बोर्डिंगहाउस के देश-भक्त छात्रों की गोष्ठी में बैठकर राष्ट्र-भाषा के महत्त्व पर वार्तालाप अवश्य सुना था।

इतने साज़-सामान से सुसज्जित या कुसज्जित होकर मैं साहित्य-क्षेत्र में कूद पड़ा था। मेरी-सी बहुतों की दशा होगी, क्योंकि उन दिनों हिंदी-साहित्य के अध्ययन के कुछ साधन ही न थे। 'मिश्रबंधु-विनोद' अवश्य निकल चुका था, किंतु उसे हम लोग पढ़ते नहीं थे। वेद या श्रीमद्भागवत की भाँति श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

कवि-कुल-गुरु कालिदास के शब्दों में उडुप (घन्नई) द्वारा सागर पार करने का मैंने दुःसाहस अवश्य किया था, किंतु मेरी घन्नई किसी प्रकार तैरने लगी। शायद उस समय हिंदी-साहित्य-सागर आजकल-सा उद्वेलित नहीं था (आजकल तो लिखने की हिम्मत ही नहीं पड़ती। जब पत्र-पत्रिकाओं पर निगाह डालता हूँ, तब मैं अपने को कोसों पिछड़ा हुआ पाता हूँ। इसीलिये साहित्यिक विषयों पर क़लम उठाने का कम साहस करता हूँ, और इसीलिये पूज्य द्विवेदीजी की साहित्यिक सेवाओं के विषय में न लिखकर अपनी रामकहानी लिख डाली, पाठक क्षमा करें)। पत्र-पत्रिकाओं से लेखों की माँग आने लगी, मेरी भी पूछ हुई। मैं भी अपने को पाँचवें सवारों में समझने लगा। मेरा हृदय गर्व से फूल उठा।

पत्र-पत्रिकाओं में लेख छपे, किंतु पूरा संतोष न हुआ। जिस प्रकार अँगरेज़ी लिखनेवाले हिंदोस्तानी लेखकों की महत्त्वाकांक्षा रहती थी कि उनके लेख लीडर, पायोनियर अथवा माडर्न रिव्यू में निकलें, उसी प्रकार हिंदी-लेखकों की अभिलाषाओं की चरम सीमा यह रहती थी कि उनके लेख 'सरस्वती' में छपें। मैंने भी इसी लालसा से प्रेरित होकर दो लेख 'सरस्वती' में छपने को भेजे। एक तो भारतीय चित्रकला पर था, जो हेवेल के किसी लेख के आधार पर था, और दूसरा मनोविज्ञान-वेत्ता विलियम जेम्स के दार्शनिक विचारों पर था, क्योंकि उन दिनों मैं उन्हीं की दुहाई दिया करता था। लेखों की स्वीकृति के लिये शबरी की भाँति गोस्वामीजी के शब्दों में 'भू पर पानि' होकर मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोस्टमैन की प्रतीक्षा किया करता था। आख़िर एक बड़ा लिफ़ाफ़ा मिला, कुछ माथा ठनका। शायद लेख लौटा दिए गए। कंपित करों से लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें विलियम जेम्सवाले लेख के साथ द्विवेदीजी के छोटे-छोटे अक्षरों में लिखी हुई एक चिट्ठी थी (उन दिनों वह आजकल-से बड़े-बड़े अक्षर नहीं लिखते थे)। मुझमें संग्रह-बुद्धि कम है। खेद है, वह चिट्ठी मेरे पास नहीं। उसमें पहले लेख की स्वीकृति थी और दूसरे लेख की भाषा की तीव्र आलोचना। पूज्य द्विवेदीजी की यह कृपा थी कि मेरा मन रखने के लिये पहला लेख स्वीकार कर लिया, शायद इसलिये कि हिंदू-शिष्टाचार के अनुसार पहली भिक्षा अवश्य स्वीकार करनी चाहिए। इस पर भी दूसरे लेख की अस्वीकृति से मैं कुछ मर्माहत हुआ, क्योंकि विलियम जेम्स मेरा पेट या पट्ट (पटरानी की भाँति) विषय था। पत्र में लिखा था कि उपर्युक्त संशोधनों के पश्चात् लेख स्वीकार कर लिया जायगा। उसमें अँगरेज़ी-शब्दों का बाहुल्य था, इस पर तथा अन्य कुछ बातों पर द्विवेदीजी को आपत्ति थी। उसमें छोटे-छोटे वाक्य लिखने तथा लेखन-कला-संबंधी अन्य हिदायतें भी थीं।

हिदायतों का महत्त्व तो स्वीकार किया, क्योंकि अँगरेज़ी-रचना के गुरुओं ने भी मुझे वैसी ही कुछ हिदायतें दी थीं। कुछ ऐसी भी बातें थीं, जो अँगरेज़ी-गुरुओं ने नहीं सिखाई थीं। दो-चार लेखन-संबंधी अशुद्धियों की ओर भी मेरा ध्यान आकर्षित किया गया था। मेरा नेत्रोन्मीलन भी हुआ था। संपादकीय कार्य का गौरव भी कुछ मन में आया था (मैं तो यही समझता था कि संपादक लोग सिवा लेख माँगने के कुछ नहीं जानते। मैं उनका अनुगृहीत अवश्य हूँ, क्योंकि उनकी निरंतर माँग ने ही मुझे ठोक-पीटकर लेखक बना दिया है), किंतु मुझ अज्ञान-तिमिरांध में नेत्रोन्मीलन हो जाने पर भी शिष्य-बुद्धि न जाग्रत् हुई। मैंने द्विवेदीजी के संपादन-काल में और लेख 'सरस्वती' में न भेजे। यह मेरा दुर्भाग्य था। यदि भेजता रहता, तो शायद मेरा लेखन कुछ नियमित हो जाता, और मैं लेखन-संबंधी भूलें कम करता। मेरे ऊपर एक लेख के संशोधन का भी अच्छा प्रभाव पड़ा। मैं उसके लिये पूज्य द्विवेदीजी का अनुगृहीत हूँ।

पूज्य द्विवेदीजी के व्यंग्य-बाणों का भी मैं शिकार बन चुका हूँ। मैंने 'फिर निराशा क्यों ?' के आरंभ में आशा नाम की उनकी किसी एक प्रारंभिक कविता को उद्धृत कर दिया था। मैं कविता करना नहीं जानता। मुझे वह निर्दोष लगती थी, और फिर आचार्य का नाम निर्दोषिता की गारंटी-स्वरूप था, और इसके अतिरिक्त उन दिनों आशावाद की कविताएँ भी कम मिलती थीं। उक्त पुस्तक की समालोचना में उस कविता के उद्धृत करने के लिये मैं आड़े हाथों लिया गया। द्विवेदीजी ने मेरे प्रकाशक स्वर्गीय देवेंद्रप्रसाद जैन को भी कड़ी चिट्ठी लिखी थी। उससे मुझे उनकी रुचि का ज्ञान हो गया। वह जब दूसरों के लेखों की भूलों को सहन नहीं कर सकते, तब अपनी भूल दुहराना क्यों पसंद करते। उस समालोचना में उन्होंने मुझे छतरपुर के दार्शनिक लेखक करके संबोधन किया था।

द्विवेदी-मेले में जब मैं उनसे मिला, और उन्हें अपना परिचय दिया, तब उन्होंने मुझे बड़े वात्सल्य-भाव से आशीर्वाद दिया। स्वर्गीय राजर्षि छतरपुर-नरेश महाराज सर विश्वनाथसिंहजू देव उनका बड़ा आदर करते थे। वह राजनीतिक मामलों में भी उनसे सलाह लेते थे, और दीवान के चुनाव में तो वह उनसे अवश्य परामर्श लेते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि संपादक की हैसियत से वह योग्यतम व्यक्तियों के संपर्क में आते होंगे। द्विवेदी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेले के अवसर पर उन्होंने स्वर्गीय महाराज के संबंध में भी बड़े प्रेम-भाव से पूछा था। उनके प्रश्नों में सौजन्य-पूर्ण उत्सुकता थी और संसार की अनित्यता पर दार्शनिक संवेदना। आज वह भी स्वर्गीय महाराजा की भाँति स्मृति के विषय बन गए हैं।

गुलाबराय (एम्० ए०)

× × ×

१२. संयुक्त प्रांत में पैदावार की सम्मिलित बिक्री-एक पंचवर्षीय योजना

आज कई वर्षों से सरकार और जनता, दोनो ही का ध्यान किसान की पैदावार-बिक्री-संबंधी प्रश्न की ओर आकर्षित होता जा रहा है। कारण यह कि लोग अब अच्छी तरह समझने लगे हैं कि किसान की उन्नति केवल ज़्यादा पैदावार के ऊपर नहीं, बल्कि पैदावार की उचित बिक्री के ऊपर भी निर्भर है। किसान को अपनी पैदावार गाँव या बाज़ार में बेचने के समय जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वे किसी से छिपी नहीं। बस, इतना ही कहना काफ़ी होगा कि उसे अपनी फ़सल के आख़िरी ख़रीदार के मूल्य का रुपए में लगभग आठ आना मिलता है, और बाक़ी सब बानगी, डाँड़ी, बट्टा, चंदा, दलाली, भरावन और महसूल आदि में चला जाता है। हाय! कितने दुःख की बात है कि जो किसान ख़ुद ही अपने ग़ल्ले का पूरा मालिक हो, उसे रुपए में आठ ही आने मिलें!

सहयोग-संगठन की आवश्यकता

अब प्रश्न यह है कि किसान को उसके ग़ल्ले का वाजिब दाम किस प्रकार मिले। निश्चय ही ग़ल्ले को अलग-अलग बेचने से कम दाम मिलेंगे, लेकिन अगर किसान भाई आपस में मिलकर सहयोग-सोसाइटी के ज़रिए अपना ग़ल्ला बेचें, तो जो दाम उन्हें इस समय मिलते हैं, उससे कहीं अधिक मिलेंगे। अमेरिका और कनाडा आदि देशों में देश-भर के ग़ल्ले का कम-से-कम चौथाई हिस्सा सहयोग बिक्री-समितियों द्वारा बेचा जाता है, जिसकी वजह से किसानों को ग़ल्ले का ज़्यादा-से-ज़्यादा दाम मिलता है, और वे बराबर ख़ुशहाल रहते हैं। यही हाल डेन्मार्क, आयर्लैंड और इँगलैंड आदि देशों का भी है, जहाँ किसानों को केवल अपने ग़ल्ले का ज़्यादा दाम ही नहीं मिलता, बल्कि उन्हें यह भी पता रहता है कि कौन-सी फ़सल और कितनी बोने से फ़ायदा होगा।

पंचवर्षीय योजना

संयुक्त प्रांत में सहयोग-विभाग पिछले कई वर्षों से अपनी वार्षिक रिपोर्ट में इस बात के ऊपर ज़ोर देता आ रहा है कि जब तक किसान की पैदावार बेचने का उचित प्रबंध न किया जाय, तब तक सहयोगी बैंकों से उसे यथोचित फ़ायदा होना संभव नहीं। इसमें संदेह नहीं कि इधर-उधर मेंबरों की पैदावार बेचने का प्रबंध किया तो गया, लेकिन आवश्यक आर्थिक सहायता न होने की वजह से यह काम एक बड़े पैमाने में न हो सका। हर्ष की बात है, अब सहयोग-विभाग ने सरकार की सलाह और आर्थिक सहायता से सहयोग-बिक्री का काम एक पंज-साला स्कीम के मुताबिक़ सूबे के अड़तालीस ज़िलों में शुरू कर दिया है। इस साल सिर्फ़ गेहूँ और तिलहन सहयोग-संगठन द्वारा बेचने का प्रबंध किया जा रहा है। जिन ग्राम-सुधार-केंद्रों में ज़रायत बीज-भंडार हैं, वहाँ आम तौर से स्कीम जारी की गई है, लेकिन ऐसी जगहों में भी, जो ग्राम-सुधार-केंद्रों के अंदर नहीं आते, स्कीम जारी की जा सकती है।

सब कामों के लिये एक ही सोसाइटी

इस स्कीम के अनुसार गाँव में भिन्न-भिन्न काम के लिये अलग-अलग सोसाइटी न होकर गाँव-संबंधी सब कामों के लिये एक ही सोसाइटी (multi-purpose society) होगी, जिसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रिए मेंबरों के ग़ल्ले की बिक्री, खेती की उन्नति और जीवन-सुधार आदि सब काम किए जायँगे। आम तौर से एक गाँव में एक ही सोसाइटी होगी। मौजूदा बैंकें स्थानीय परिस्थितियों को सामने रखते हुए सब-कामवाली एक सोसाइटी में परिवर्तित कर दी जायँगी, और जहाँ किसी प्रकार की सोसाइटी नहीं, वहाँ सब-कामवाली सोसाइटियों का संगठन किया जायगा।

बीज-भंडार

सहयोगी बीज-भंडार सब - कामवाली सोसाइटियों को खाद, बीज और खेती के औज़ार आदि मेंबरों को बाँटने के लिये मुहैया करेंगे। ज़रायत और ग्राम-सुधार मुहकमे के बीज-भंडार के बारे में भी तय हो गया है कि गाँव के ८० या ६० प्रति सैकड़ा काश्तकार सब-कामवाली सोसाइटियों के मेंबर बन जायँ, और काम अच्छी तरह चलने लगे, तो ये बीज-भंडार केवल इन्हीं सोसाइटियों से अपना कारोबार करें। और, अगर संभव हो, तो अच्छे और ख़राब बीज का अदल-बदल बाज़ार-भाव की बनिस्बत कुछ माक़ूल दाम पर करें।

बिक्री का तरीक़ा

मेंबरों की पैदावार बेचने के कई तरीक़े हैं। पहला तरीक़ा सम्मिलित बिक्री का है, जिसके अनुसार मेंबरों का ग़ल्ला एक जगह इकट्ठा होगा, और फिर सोसाइटी, भाव तय करने के बाद, उसे ख़रीदार के हाथ बेंच देगी। दूसरे, अढ़तिया-तरीक़े के अनुसार मेंबर अपना ग़ल्ला सोसाइटी के पक्के किए गए अढ़तिए के यहाँ जमा करेंगे। तीसरे, कमीशन-शाप बिक्री का तरीक़ा है, जिसके अनुसार मेंबरों को अपना ग़ल्ला दूकान में जमा करने के बाद ग़ल्ले की क़ीमत का क़रीब ७० फ़ी सैकड़ा पेशगी मिल जाया करेगा। चौथे, सोसाइटी अपने क़ायदे के मुताबिक़ मेंबरों को गाँववाले व्यापारी से अलग-अलग बातें करने की मुमानियत करके ख़ुद ही महँगे-से-महँगे भाव से ग़ल्ला बेचेगी। और, अंत में पाँचवाँ तरीक़ा है, जिसके अनुसार सोसाइटी मेंबरों का सब-का-सब ग़ल्ला ख़रीदकर उसे अच्छे भाव से बाज़ार में बेचेगी। हरएक हल्क़े के असिस्टेंट रजिस्ट्रार स्थानीय परिस्थितियों को मद्दे-नज़र रखते हुए ख़ुद ही सोचकर तय करेंगे कि उनके हल्क़े में कौन-से तरीक़े से काम किया जाय।

३५,००० गाँवों में सहयोग की गूँज

यह पंजसाला स्कीम प्रांत के १००० ग्राम-सुधार-केंद्रों में, जिनके अंतर्गत हरएक केंद्र में ३५ गाँव हैं, जारी की जा रही है। हरसाल २०० सुपरवाइज़र पाँच साल तक भर्ती किए जायँगे, और हर साल के बैच के ज़रिए पाँच साल के अंदर ७००० गाँवों में सब-कामवाली सोसाइटियाँ खुल जायँगी। इस तरह १० साल बाद सूबे के १,०५,६४० गाँवों में से ३५,००० गाँवों में ये सोसाइटियाँ किसानों के हरएक पहलू की तरक़्क़ी करती दिखाई पड़ेंगी।

प्रांतीय सरकार ने पहले ही इस साल (१६३८-३६) के लिये १७,०००) की मंज़ूरी दे दी है। क़रीब २५० सुपरवाइज़र भर्ती कर लिए गए हैं, जिनकी ट्रेनिंग प्रतापगढ़, बुलंदशहर और गोरखपुर में हो रही है। लेकिन फ़िलहाल काम चलाने के लिये मौजूदा सुपरवाइज़रान में से लगभग ८० को ट्रेनिंग देकर भिन्न-भिन्न केंद्रों में तैनात कर दिया गया है। ये सब-कामवाली सोसाइटियों के खुलने के लिये आवश्यक प्रचार और संगठन कर रहे हैं; ताकि आगामी रबी की फ़सल हाथ में आ जाय। हमें पूर्ण आशा है कि हमारे कार्यकर्ताओं को गाँववालों का पूरा सहयोग मिलेगा, और वे इन सोसाइटियों से काफ़ी फ़ायदा उठाएँगे।

मि० जे० पी० मिश्र (एम्० ए०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

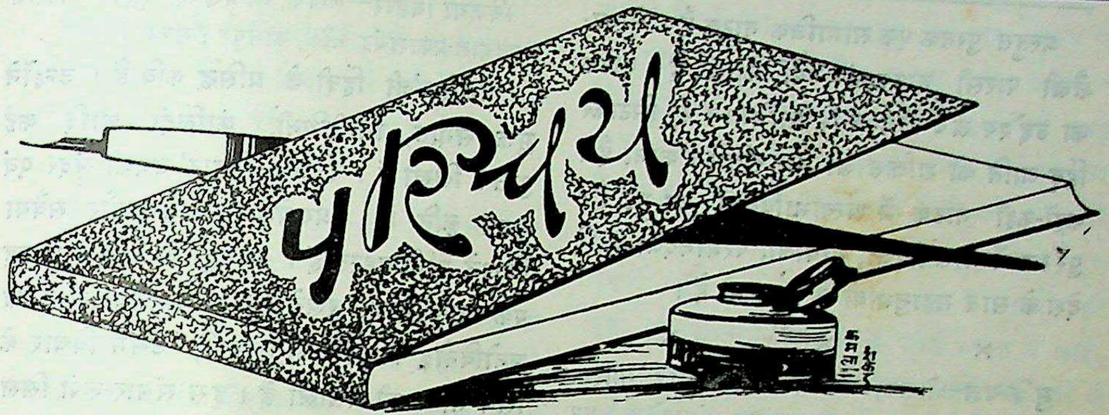

संस्कृत-साहित्य का इतिहास (दो भाग)—लेखक, श्रीयुत सेठ कन्हैयालाल पोद्दार; प्रकाशक, श्रीयुत जवाहिरलाल जैन एम्० ए०, विशारद, मंत्री श्रीरामविलास पोद्दार-स्मारक ग्रंथमाला-समिति, नवलगढ़ ; छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम। दोनो भागों का मूल्य २॥) पृष्ठ-संख्या प्रथम भाग ३३४, द्वितीय भाग २१४।

प्रथम भाग में काव्य-शास्त्र के सुप्रसिद्ध रीति-ग्रंथों एवं उनके प्रणेताओं के परिचय तथा काल-निर्णय के संबंध में ऐतिहासिक निरूपण किया गया है। द्वितीय भाग में काव्य-ग्रंथों के विषय, काव्य के प्रयोजन, काव्य के हेतु एवं काव्य के लक्षण आदि पर विभिन्न आचार्यों के मतों का विश्लेषण और काव्य के पंचसिद्धांतों—रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि—का स्पष्टीकरण तथा इनके पाँचो संप्रदायों का विवेचन किया गया है।

पोद्दारजी हिंदी के ख्यातनामा लेखक हैं। आपके रचे हुए ग्रंथ हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा तथा आगरा एवं कलकत्ता-विश्वविद्यालयों की एम्० ए०-परीक्षाओं में निर्वाचित हैं। संस्कृत-भाषा के भी आप विद्वान् हैं। आप कैसे विद्वान् हैं, यह आपके संस्कृत-साहित्य के इतिहास के परिशीलन से पता लगता है। आपका इतिहास हिंदी-भाषा-भाषियों के लिये यदि एक देन कहा जाय, तो अनुचित न होगा। ऐसा इतिहास बहुत वर्षों पहले लिखा जाना चाहिए था। एक इतिहास नहीं, प्रत्युत अनेक। संस्कृत के प्रभाव में हम हिंदी की कल्पना नहीं कर सकते। हिंदी-साहित्य की श्री-वृद्धि का बहुत कुछ श्रेय संस्कृत के विद्वानों को ही है, और आज भी रहेगा। प्रस्तुत इतिहास वैज्ञानिक ढंग से लिखा गया है, और सेठजी के पांडित्य का पिटारा है। हिंदी-प्रेमियों को यह सुंदर, सस्ता इतिहास अवश्य अपनाना चाहिए। ऐतिहासिक नामानुक्रमणिकाओं से पुस्तक अधिक उपादेय बना दी गई है।

ब्रजमोहन तिवारी (एम्० ए०)

× × ×

निर्झरिणी—लेखिका, श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित 'उषा'; प्रकाशक, श्रीरविशंकर दीक्षित, डिप्टी का पड़ाव, कानपुर; पृष्ठ-संख्या १६० ; मूल्य १) सजिल्द।

हिंदी की कवयित्रियों में लेखिका का विशेष स्थान है। आपकी ६० कविताएँ निर्झरिणी में संगृहीत हैं। कविताएँ सरल, सरस और सुंदर भावों से परिपूर्ण हैं। छपाई-सफ़ाई भी उत्तम है। कविता के रसिकों को अवश्य संग्रह करनी चाहिए।

× × ×

भयंकर पतन—लेखक का नाम छपा नहीं ; भूमिका-लेखक, देशभक्त कुँ० चाँदकरणजी शारदा ; प्रकाशक, प्रियतम-पुस्तक-भंडार, पिलानी (राजस्थान) ; डबल क्राउन सोलहपेजी ; पृष्ठ-संख्या ११०+८ ; मूल्य १) ; रंगीन चित्र युक्त आवरण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक एक सामाजिक नाटक है। लेखन-शैली पारसी नाटक-कंपनियों की-सी है। नाटक का उद्देश्य ऊँच-नीच के मिथ्याभिमान को मिटाकर हिंदू-जाति को शक्तिशाली और संगठित करना है। कहीं-कहीं नाटक में अस्वाभाविकता आ गई है। पुस्तक में मालवीयजी, गांधीजी, परमानंदजी आदि देश के सात महानुभावों के चित्र भी हैं।

× × ×

मुक्ति-यज्ञ—लेखक, प्रो० सत्येंद्र ; प्रकाशक, साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा ; डबल क्राउन सोलहपेजी ; पृष्ठ-संख्या १३७ ; मूल्य १) सजिल्द।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसके नायक वीर-केसरी छत्रसाल हैं। विषय है बुंदेलखंड की स्वतंत्रता। नाटक में बुराई और भलाई का संघर्ष ख़ूबी के साथ अंकित किया गया है। साहित्यिक होने के साथ-साथ सुबोध भी है। नाटक-प्रेमियों के अपनाने की चीज़ है, अभिनय-योग्य है।

'ग०'

× × ×

भेंट—रचयिता तथा प्रकाशक, श्रीरामचरणलाल हयारण 'मित्र', झाँसी ; मूल्य ।≈)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की सुंदर कविताओं का संग्रह है। भूमिका हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री-वियोगी हरिजी ने लिखी है। 'मित्र'जी की कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना का स्रोत बहता हुआ दिखाई पड़ता है। कविताएँ सब-की-सब अत्यंत मनोरम हैं। इसमें देश-प्रेम का सुंदर चित्र कवि ने अपनी लेखनी द्वारा अंकित करने का श्लाघ्य प्रयत्न किया है।

ऐसी सुंदर पुस्तक पढ़कर ऐसा कौन व्यक्ति है, जिसका हृदय प्रफुल्लित न हो उठे। मेरा विश्वास है, 'मित्र'जी की इस छोटी-सी पुस्तक से साहित्य की वृद्धि होगी।

× × ×

विजया विहार—लेखक, श्री 'प्रणयेश' शुक्ल ; प्रकाशक, रामदयाल-प्रकाशचंद्र चौक, कानपुर ; मूल्य ।)

'प्रणयेश'जी हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं। उन्होंने मुक्त संगीत, निशीथिनी, कालिंदी आदि कई पुस्तकें लिखी हैं। 'विजया-विहार' उनकी सुंदर एवं नूतन कृति है। 'प्रणयेश'जी कवित्त और सवैया लिखने में सिद्धहस्त हैं। कानपुर के कवियों में वह एक प्रमुख स्थान रखते हैं। 'विजया-विहार' केवल मनोविनोद की ही वस्तु नहीं, उसमें विचार के लिये भी काफ़ी मसाला है। इस संसार-रूपी सिल पर मनुष्य की जीवन-बूटी जितनी अधिक पिसेगी, उतनी ही अधिक वह परीक्षा में शुद्ध छनकर निकलेगी, और उसमें एक विचित्र परमानंद की मस्ती मिलेगी। इसी भाव की पुष्टि का संकेत कवि के इस छंद में है—

दैहिक, दैविक, भौतिक ताप,
इन्हें तुम चाहते हो जो मिटाना,
तो 'प्रणयेश' के संग चलो
सदा गाते हुए विजया का तराना।
मार्ग में कोई मिले, उसको
यह 'बात-की-बात' में बात बताना ;
और असंभव है भव में,
पर संभव है क्षण में छन जाना।

इस विजया-विहार के लिये प्रकृति ने भी कितनी उत्सुकता प्रकट की है, देखिए—

ऊषा की तरुण अरुणाई छाई अंबर में,
तारे हुए म्लान ;
रजनी का हुआ अवसान।
मलय-समीर लहरों से इठलाती चली,
फुल्ल जलजात हुए,
गाते मधुकर गान।
'प्रणयेश' विजया-विहार करने के लिये
रंगिनि प्रकृति ने
सँभाला नव परिधान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलक रहा है पात्र—ललक रहा है रस—
झलक रहा है रंग—ललक रहे हैं प्रान !

इस प्रकार 'विजया-विहार' में अनेकों भाव-पूर्ण सुंदर छंद हैं। पाठक इसे पढ़कर अवश्य देखें।

× × ×

समाधि-दीप—लेखक, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र'; प्रकाशक, प्रमोद-पुस्तकमाला, कटरा (प्रयाग)।

यह संकलन श्रीचंद्रप्रकाशजी 'चंद्र' की फुटकर कविताओं का एक सुंदर नमूना है। इसके बारे में लिखते हुए पं० श्रीरमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, डी० लिट्० आरंभ के 'दो शब्द' में कहते हैं—"वर्माजी मेरे प्रिय विद्यार्थी हैं, मुझे तो इनमें तथा इनकी रचना में कुछ अन्यथा दीखता ही नहीं। यद्यपि मैं निष्पक्ष आलोचकों की ही दृष्टि से देखता हूँ, और विश्वास करता हूँ कि मेरी दृष्टि दूसरी नहीं हो सकती। साथ ही मेरा विचार तो यह है कि हमें सर्वत्र गुणों की ही सृष्टि पर दृष्टि डालनी चाहिए, और उन्हीं पर प्रोत्साहक तथा प्रशंसात्मक वाग्वृष्टि भी करनी चाहिए। दोनो की ओर चाहे उनका कहीं भी कोई भी अनुपात क्यों न हो, दृष्टिपात न करना चाहिए।"

खेद है, हम इससे सहमत होने से अपने को असमर्थ पाते हैं। यह तो ठीक है कि आलोचक का भाव कृतिकार के प्रति सौजन्य-पूर्ण तथा सहृदयता-युक्त होना चाहिए, किंतु उसे यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उसकी निःस्पृह तथा स्पष्ट आलोचना पर ही लेखक का भविष्य अवलंबित है; चाहे वह उसका शिष्य हो या मित्र। आलोचक का कर्तव्य केवल प्रशंसा करना ही नहीं, अपितु आगे के लिये सीधा और सच्चा मार्ग बतलाना भी है। अस्तु।

श्री'चंद्र'जी सुप्रसिद्ध कवि, प्रोफ़ेसर रामकुमार-जी के भ्रातृज हैं, अतः सहज ही में आपकी भावनाएँ साहित्यिक कोमलता से ओत-प्रोत हैं। आपने दिव्य प्रेम की अनुभूति एक नए प्रकार से दिखलाने की चेष्टा की है। आपके भाव नवीन न होते हुए भी हिंदी-जगत् के लिये एक नई वस्तु हैं। समाधि पर दीप जलाने की चाल हिंदू-सभ्यता में भी है। किंतु ये समाधियाँ प्रेमी जनों की नहीं हुआ करतीं, वरन् पहुँचे हुए तथा बैरागी हुए पुरुषों को ही यह सम्मान प्राप्त है। क़ब्रों की पूजा मुसलमानी संस्कृति के साथ भारत में आई, तथा न-जाने अब तक कितना क़ब्रों के बारे में उर्दू-साहित्य में लिखा जा चुका है, फिर भी हिंदी में इस प्रकार की रचनाओं का यह आरंभ कुछ समय से दिखाई पड़ता है। अच्छा होता, यदि मज़ारों को छोड़कर लेखक ने हिंदू-संस्कृति के उपयुक्त किसी और वस्तु को अपना लक्ष्य बनाया होता। फिर भी होनहार लेखक ने सीधे तथा स्पष्ट शब्दों में जो कुछ कहा है, वह सर्वथा स्तुत्य है।

मधु-पान न उसको मिल सकता,
जिसकी क़िस्मत में गरल-पान;
मैं साक़ी का न उपासक हूँ,
मैं क़ातिल का कर रहा ध्यान।

—के अंदर जो सत्य है, वह—

इस दुनिया के मयख़ाने में
पल-भर की मन की मस्ती है।

पल-भर के साक़ी के शृंगार की निःसारता भली भाँति प्रकट कर रहा है। क़ब्रों की तारीफ़ में एक दीवाना कहता है—

यह लैला है, यह मजनू है,
यह शीरीं यह फ़रहाद यहाँ;
देखो, सोते हैं साथ-साथ
नव-जीवन के उन्माद यहाँ।

क्योंकि—

भावुक जीवों के दुनिया में
अरमान न पूरे हो पाते।

ठीक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे क्या ही अच्छा कहा है—

क़ब्रों पर रोने से अच्छा
है, यदि कर तू जग का निरोध।

कोकिल से कवि कहता है—

तू कूक-भरी, मैं हूक-भरा,
इससे यह ममता पाली है;
तू बाग़ भूल, मैं बन भूलूँ,
ऐसा जादू भर गाने में।

क्योंकि—

कुछ दिन के बाद न होगी तू,
मैं भी न रहूँगा भूतल पर;
फिर भी नीचे पृथ्वी होगी,
फिर भी ऊपर होगा अंबर।

इसलिये—

तू अपना नश्वर लोक छोड़
आ इस चिर नीड़ पुराने में;
मधुवन-मधुवन में बोल न अब,
आ बोल यहाँ वीराने में।

कैसे सुंदर भाव हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नश्वरता सजीव होकर आँखों के सम्मुख आ खड़ी हुई है। यह नश्वरता ही है, जो प्रेम के दीवाने को अमर पद पर पहुँचा देती है। क्योंकि—

अरे, प्रेम के दीवानों की है इतनी पहचान;
आँखों में मस्ती, मस्ती में मिटने का अरमान।

और ये मिटेंगे भी कैसे—

अरे, प्रेम के दीवानों की शय्या पर है शूल;
इनके कंकालों पर उड़ती असफलता की धूल।

क्या ख़ूब—

यही है कसक, यही है आह,
निकलती जो क़बरों की राह।
विश्व झूठा, झूठी यह चाह।

इन शब्दों में जो दार्शनिकता अथवा जीवन की फ़िलासफ़ी का अंतिम ध्येय बताया है, वह हिंदू-संस्कृति के अनुकूल ही है।

सच बातें बतलाते हुए भावुक कवि कहता है—

देखो, यहाँ भटक मत जाना,
यह है माया की बस्ती;
महँगी यहाँ मिलेगी मस्ती,
व्यथा यहाँ की है सस्ती।"

क्या कोई इस तथ्य की उपेक्षा कर सकने में समर्थ है। इस जगत् में जिस नारी ने इतना कोलाहल मचा रक्खा है, इसके बारे में कहता है—

मंत्र-मुग्ध-से बना सभी जड़-चेतन प्रतिपल
चीर रहीं तुम चितवन से जग का अंतस्तल।
तुम रहस्य की गाँठ, न जा सकती जो खोली;
जहाँ गईं, बस वहाँ जला दी तुमने होली।
अतः घृणा सह्य पर असहनीय है प्यार तुम्हारा;
तुम मलीन ही रहो, न शुभ शृंगार तुम्हारा।
क्योंकि प्यास जगा देती हो; पर कब नीर बनीं तुम,
झुलसाती हो, किंतु न मलय-समीर बनीं तुम।

❀ ❀ ❀

फूल! फूल!! कह शूल चुभा देती हो तन में;
नीर! नीर!! कह आग लगा देती हो तन में।

नारी का इससे सुंदर विश्लेषण और क्या हो सकता है।

भाषा पर लेखक का वैसा ही अधिकार है, जैसी भावों को सुलझाते हुए समझाने में अभिरुचि है। इस कृति को हिंदुस्तानी खड़ी बोली की कविता का आदर्श बनाया जा सकता है। शब्दावली सरस होते हुए भी सरल है। छपाई तथा आकार-प्रकार सुंदर बन पड़ा है। इस कवि की कविता वासनामय प्रेम की ज्वालामयी लपटों में झुलसते हुए विरही पथिकों की आत्मा को समुज्ज्वल करती है।

'उमेश'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'भारतीय ईश्वरवाद' (आध्यात्मिक)— लेखक, पांडेय श्रीरामावतार शर्मा एम्० ए० ; मूल्य ३)

(२) 'हिंदुस्तानी कोष'—लेखक, श्रीपं० रामदहिनजी मिश्र ; मूल्य १।)

(३) 'हृदय की ओर' (उपन्यास) – लेखक, महाराज कुमार बाबू दुर्गाप्रसादसिंह ; मूल्य २)

(४) 'मज़दूरों की छाती पर' (उपन्यास)— लेखक, श्रीकांतीप्रसाद झा सिविल इंजीनियर ; मूल्य २)

(५) 'लाल चीन' (इतिहास)—लेखक, श्रीरामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी ; मूल्य २)

(६) 'हमारा राष्ट्रपति' (जीवन-चरित)— लेखक, श्रीदेवकुमार मिश्र ; मूल्य ।–)

(७) 'स्टालिन' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीरामकइबालसिंह 'राकेश' ; मूल्य २)

(८) 'साहित्यकी' (निबंध) – लेखक, श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी ; मूल्य १॥)

(९) 'जीवन-यात्रा' (निबंध)—लेखक, श्रीशांतिप्रिय द्विवेदी ; मूल्य ॥।=)

(१०) 'पौराणिक भारत' (बालोपयोगी)— लेखक, प्रो० डॉ० श्रीविमानविहारी मजूमदार ; मूल्य १)

(११) 'रामायण' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीप्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त' ; मूल्य १)

(१२) 'वैदिक भारत' (बालोपयोगी)— लेखक, रा० ब० डॉ० दिनेशचंद्र सेन डी० लिट्० ; मूल्य १)

(१३) 'कलापी' (काव्य)—लेखक, श्रीआरसीप्रसादसिंह ; मूल्य २)

(१४) 'आज की बात' (नाटक)—लेखक, श्रीशिवरामदास गुप्त ; मूल्य १)

(१५) 'अछूत कन्या' (नाटक)—लेखक, श्रीयुत मुंशी 'आरज़ू' बदायूँनी ; मूल्य ॥)

(१६) 'तूफ़ानमेल' (नाटक)—लेखक, श्रीयुत मुंशी अब्बासअली ; मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. भारतीय रियासतें

शुभ हो या अशुभ, भारतीय भारत अर्थात् भारतीय रियासतों के भाग्य का निपटारा होने का समय आ गया है। जब-जब ब्रिटिश भारत राजनीति में आगे क़दम बढ़ाता रहा, ये रियासतें कूप-मंडूक ही बनी रहीं। इनके फ़ैसले का श्रीगणेश तो गोलमेज़-सम्मेलन ही में हो गया था। परंतु कांग्रेस ने अपनी चतुरता से इस प्रश्न को, लोगों की आशा के पहले ही, भारतीय राजनीति में प्रकट रूप से उपस्थित कर दिया है। ब्रिटिश भारत के ११ प्रांतों में कोई ३० करोड़ मनुष्य रहते हैं। ये प्रांत इस समय अपना शासन अपने आप ही कर रहे हैं। क़ानून का यहाँ एकच्छत्र राज्य है।

भारतीय रियासतों की संख्या लगभग ६३० है, और आबादी आठ करोड़। इनमें से अधिकतर रियासतें बहुत ही छोटी हैं, पर वे सब, ब्रिटिश सरकार के मातहत, स्वतंत्र हैं, और वहाँ महाराजों के एकच्छत्र राज्य हैं। इनमें से अधिकतर रियासतों की अवस्था बहुत ही ख़राब है, और निकृष्ट-से-निकृष्ट बातें वहाँ होना साधारण बात है। सैकड़ों वर्षों के आधिपत्य ने राजे-महाराजों का दिमाग़ आसमान पर चढ़ा दिया है, और वे अपनी प्रजा को पशु से निकृष्ट समझते हैं। तथापि इनमें मैसूर, बड़ौदा और ट्रावनकोर-जैसी रियासतें भी हैं, जिनके शासक आधुनिक हैं। ये रियासतें भारतीय प्रांतों के बराबर हैं, पर हैं बहुत थोड़ी।

जब से भारतीय प्रांतों में शासन-सूत्र प्रजा के हाथ में आया है, कांग्रेसी सरकारों ने प्रजा को एक नए प्रकार का आत्मबल दिया है, जो भारत में सैकड़ों वर्ष से न था। इसका असर और इस नई रोशनी की ज्योति भारतीय रियासतों की प्रजा में भी पहुँच गई है। आज़ादी की लहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और स्वतंत्रता की भावना जाग्रत् हो चुकी है। महात्माजी ने स्वयं इस कार्य को अपने हाथों में ले लिया है, और अपने विश्वास-पात्र, योग्य सहकारी नेताओं के साथ सत्याग्रह-संग्राम शुरू कर दिया है। सेठ जमनालालजी बजाज़ ने जयपुर में तथा सरदार पटेल ने राजकोट में भीषण युद्ध किया है। माता कस्तूरबा गांधी अपनी अस्वस्थता में भी राजकोट में सत्याग्रह शुरू करके जेल गईं।

यह साफ़ है कि यह लड़ाई रियासतों और उनकी प्रजा में न होकर अब ब्रिटिश सरकार और कांग्रेस में है। महात्माजी ने इससे साफ़ तौर पर लिख दिया, और सरकार को चुनौती दी कि श्रीमान् वायसराय या तो इस प्रश्न को हल करें, नहीं तो इस संघर्ष में खुले तौर पर सामने आएँ। उन्होंने राजकोट में ब्रिटिश रेज़िडेंट की बेईमानी तथा जयपुर के प्रधान मंत्री के गुंडेपन का विरोध किया, और अनशन कर डाला!

पहले ब्रिटिश सरकार का विचार था कि इन रियासतों में किसी प्रकार का भी जनतंत्र-शासन आरंभ किया जाय। इस समय ब्रिटिश सरकार की अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति बहुत नाज़ुक है। ऐसे समय संगठित भारत उसकी बहुत सहायता कर सकता है। अगर वह कांग्रेस-ऐसी देशमान्य संस्था से झगड़ा मोल लेगी, तो उसके लिये हानिकारक होगा। यही समय है, जब वायसराय महोदय को एक निष्पक्ष कमेटी बैठानी चाहिए, जिसमें कांग्रेस, ब्रिटिश सरकार तथा नरेशों के प्रतिनिधि उपस्थित हों, और वे इस बात का फ़ैसला करें कि भारत में कौन रियासतें रहें, और किन्हें ख़त्म कर दिया जाय। छोटी-मोटी रियासतों का इस बीसवीं शताब्दी में रहना तो भारत तथा ब्रिटेन, दोनो के लिये कलंक की बात है। और, बड़ी रियासतों में नरेशों को पेंशन देकर शासन-सूत्र प्रजा के हाथ में दे देना चाहिए। महाराजा स्वयं ब्रिटिश नरेश की तरह अपने स्थान पर रहें।

भारतीय नरेशों को भी याद रखना चाहिए कि प्रजा-राजा-संघर्ष में हानि सदा नरेश की ही होती है। उन्हें इस नई जागृति से लाभ उठाकर स्वयं अपने को सुव्यवस्थित कर लेना चाहिए, नहीं तो निकट भविष्य में उनकी स्थिति ही का पता न रहेगा। पुण्य कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए, और ब्रिटिश भारत से सबक़ लेकर जन-तंत्रात्मक शासन उन्हें फ़ौरन् आरंभ करना चाहिए।

× × ×

२. रेलवे की उन्नति

रेलवे-विभाग की ओर से सन् १९३७-३८ की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उससे पता चलता है कि रेलवे ने अपने प्रत्येक विभाग में उन्नति की है। इससे प्रकट होता है कि रेलवे की लोक-प्रियता दिन-दिन बढ़ रही है।

किसी भी देश की उन्नति और समृद्धि के लिये उस देश के यातायात के साधनों में विशेष वृद्धि होना आवश्यक है। भारतीय रेलवे-विभाग ने गत वर्ष की अपेक्षा इस दिशा में संतोष-जनक रूप से उन्नति की है। रेलवे द्वारा यात्रा करनेवाले मुसाफ़िरों की संख्या में गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष तीन करोड़ बीस लाख की वृद्धि हुई। गत वर्ष की कुल आय ९१·७९ करोड़ थी, वहाँ इस वर्ष की आय ९५·०१ करोड़ रही। मुसाफ़िरों द्वारा होनेवाली आमदनी में २९·२७ करोड़ से ३१·०८ करोड़ की वृद्धि हुई। माल की ढुलाई पहले वर्ष ८,२४,००,००० टन और उसके भाड़े से हुई आमदनी ६७·३३ करोड़ रुपए थी। इस वर्ष माल की तादाद ८७,३०,००,००० टन हो गई, और उससे आमदनी ६८·६८ करोड़ रुपए की हुई। रेलवे-कर्मचारियों की संख्या गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ६,८१,२६० थी, सन् १९३७-३८ में वह ६,९२,१९८ हो गई। इस प्रकार स्टाफ़ का ख़र्च इस साल ३५.३८ करोड़ अर्थात् गत वर्ष से ९.०५ लाख रुपए बढ़ गया। इस प्रकार रेलवे-पूँजी के सूद और काम में आनेवाले माल के व्यय (घिसाई) की रक़म काटकर भी रेलवे ने इस साल २७६ लाख रुपए बचाकर सरकार के ख़ज़ाने में जमा कर दिए।

इन अंकों से यह पता लग जाता है कि रेलवे-विभाग अब भारत-सरकार के ऊपर अधिक भार-रूप नहीं रहा; वह अपने पैरों खड़ा होने में समर्थ हो गया है। पर इस उन्नति से आम जनता को क्या लाभ हुआ? रेलवे-यात्रियों की सुविधाएँ कितनी बढ़ गईं? तीसरे दर्जे का किराया क्या कम हुआ? इन बातों का उत्तर नकारात्मक है। यात्रियों की संख्या में वृद्धि होना तो स्वाभाविक है। उसका कारण इस वर्ष हरिद्वार-कुंभ आदि बड़े-बड़े मेलों का होना तथा अधिक तादाद में ज़ोन टिकटों की बिक्री है। उसका कारण रेलवे-यात्रा की बढ़ी हुई सहूलियतों की तरफ़ लोगों का आकर्षण नहीं। रिपोर्ट में बतलाया गया है कि पानी और प्लेट-फ़ार्म की व्यवस्था में सुधार किया गया है, और शिकायतें सुनने तथा बुकिंग के प्रबंध में अधिक सुविधा की गई है। गाड़ियों की चाल बढ़ा देने की ओर भी संकेत है, पर यह केवल जलते तवे पर दो बूँद पानी डालने के समान है। तीसरे दर्जे के यात्रियों की जितनी शिकायतें हैं, उन पर अपनी ओर से कुछ संतोष दिलाने का बहाना-मात्र किया गया है। किराया घटाने के संबंध में कहीं ज़िक्र नहीं, और न उसकी कोई उम्मेद है। तीसरे दर्जे के डिब्बों में पंखे लगाने की आवश्यकता भी महसूस नहीं की गई। यात्रियों को भीड़ की असुविधा से बचाने के लिये गाड़ियों की संख्या में वृद्धि करना तथा प्लेट-फ़ार्म पर बिकनेवाली खाद्य सामग्री में विशेष सुधार होना आदि ज़रूरी बातें हैं। रेलवे की ऊँचे दर्जे की नौकरियों में योरपियन और भारतीय लोगों की भरती का अनुपात अब भी क्रमशः ८५.०१ और १४.०९ है। इस दशा में रेलवे की इस प्रगति पर हम किस प्रकार संतोष के भाव प्रकट करें!

× × ×

३. पं० ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु' का स्वर्गवास !

देवबंद का समाचार है, गत ८ फ़रवरी को, दिन के ११ बजे, हिंदी के प्रसिद्ध कवि और लेखक पं० ब्रह्मदत्त शर्मा 'शिशु' का अचानक देहांत हो गया! पं० ब्रह्मदत्तजी 'सुधा' के सुपरिचित कवि थे, और आपकी रचनाएँ समय-समय पर अन्य मासिक और साप्ताहिक पत्रों में भी निकलती रहती थीं। आपसे हमारा परिचय मेरठ के एक विराट् कवि-सम्मेलन में हुआ था। वहाँ आपकी कविता पर प्रथम पुरस्कार हमने दिया था। लगभग ५ वर्ष से आप क्षय-रोग से पीड़ित थे। मृत्यु के समय आपकी अवस्था केवल ४० वर्ष की थी। आप देवबंद के एच्० ए० वी० हाईस्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे। आपकी मृत्यु का समाचार पाते ही ९ फ़रवरी को स्कूल बिलकुल बंद रहा, और समस्त विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने शोक मनाया। वास्तव में पंडितजी बड़े ही लोक-प्रिय और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। राष्ट्र, धर्म और समाज-सेवा में आप सदा आगे रहते थे। देवबंद मुसलमानी बस्ती है, किंतु पंडितजी के उच्च विचारों के संसर्ग में आने से अनेक धर्मांध मुसलमानों की कट्टरता प्रेम, सहिष्णुता और सौजन्य में बदल गई थी। आपसे जो एक बार मिल लेता था, वह आप ही का हो जाता था। पंडितजी अत्यंत मिलनसार, समाज-प्रिय, कष्ट-सहिष्णु तथा अतिथि-पूजक थे। अतिथि-सेवा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण ही आप फ़िज़ूलख़र्च के नाम से प्रसिद्ध थे। परंतु आपने अपना नियम बना रक्खा था कि अपने किसी भी परिचित को कष्ट में सुनकर उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। पंडितजी जीवन-भर भगवद्भक्त रहे, और अंतिम समय भी भगवान् का ध्यान करते-करते परलोक सिधारे।

आपकी साहित्य-सेवा भी भूलने की वस्तु नहीं। हिंदू-धर्म, हिंदू-जाति और हिंदी-भाषा की सेवा का व्रत आपने आजन्म निवाहा, और अपनी कृतियों में अपने सिद्धांतों की छाप छोड़ गए। आपके परिवार में दो विवाह-योग्य लड़कियाँ, एक ढाई वर्ष का लड़का तथा धर्म-पत्नी आपके असामयिक वियोग का आघात सहन कर रही हैं। इस परिवार की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय है।

अंत में हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह पंडितजी की दिवंगत आत्मा को शांति तथा उनके परिवार को यह शोक सहन करने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें।

× × ×

४. बिहार-साइक्लोपीडिया

बिहार-प्रांतीय धारा-सभा-पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष श्रीमहावीरप्रसादसिंहजी कई वर्षों से साइक्लोपीडिया-नामक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ तैयार करने में व्यस्त हैं। उसकी सामग्री बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा, अत्यंत प्रामाणिक आधार पर, तैयार की जा रही है।

उक्त साइक्लोपीडिया में बिहार से मतलब देश के उस हिस्से से है, जिसमें बिहारी-भाषा बोली जाती है। ऐसे बिहार का साफ़ ख़ाका गवर्नमेंट द्वारा छपे इंपीरियल गज़ेटियर एटलस के बारहवें नक़्शे में दिया हुआ है। इस साइक्लोपीडिया में यह दिखलाया जा रहा है कि बिहार देवताओं की भूमि है। इस भूमि में अनेक ऋषि, मुनि,

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

यें गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी।

दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।।-)
२५ ,, ,, ,, ५≡)

मिलने का पता—

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि, दार्शनिक, कवि, पंडित, प्रोफ़ेसर, पैग़ंबर आदि हो चुके हैं, और आज भी हो रहे हैं। भारतीय इतिहास का प्रत्येक विद्यार्थी बिहार को आदर और प्रेम की दृष्टि से देखता है।

इस युग के सबसे बड़े महापुरुष महात्मा गांधी को बिहार बहुत प्रिय है। पुराने ज़माने में बिहार हिंदोस्तान का गौरव था। गौतम बुद्ध, विश्वामित्र, मोरध्वज, चंद्रगुप्त, अशोक, हर्षवर्द्धन आदि अनेक महापुरुष इसी भूमि में पैदा हुए थे। बाहर के भी ऋषि-मुनियों की यह तपोभूमि थी। उत्तर-बिहार में अब भी आपको तपोवन देखने को मिलेगा। नागपुर-छोटा डिवीज़न का प्राकृतिक सौंदर्य और यहाँ के खनिज द्रव्य इस देश में अपना सानी नहीं रखते। हरिहर-क्षेत्र का नाम हिंदोस्तान में कौन नहीं जानता, जहाँ दुनिया का सबसे बड़ा मेला लगता है। गया सारे हिंदोस्तान को आध्यात्मिक मुक्ति देने का केंद्र माना जाता है। नालंद-विश्वविद्यालय ने देश-विदेशों में शिक्षा का जो प्रचार किया, उससे कौन अवगत नहीं? पाटलिपुत्र बिहार की राजधानी थी, जिसका रूपांतर पटना आज भी मौजूद है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी और स्वायत्त शासन का विकास हुआ था। यही हिंदोस्तान के सबसे पहले बादशाह की राजधानी थी। बौद्ध-धर्म और जैन-धर्म का जन्म बिहार में ही हुआ। राजा जनक और जगन्माता सीता की जन्मभूमि बिहार ही है। धनुर्धर द्रोण, दानी दधीचि और बेजोड़ गणितज्ञा लीलावती का जन्म भी यहीं हुआ था। महाकवि विद्यापति यहीं के थे। शेरशाह

कैंथरडाइन

केश-तैल

अत्युत्तम केश-शृंगार तथा ओषधि

ख़ारिश, बाल के गिरने, समय के पहले बाल सफ़ेद होने तथा बालों व मग़ज़ की अन्य सभी बीमारियों में लाभदायक है।

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं के थे, जिन्होंने ग्रैंड ट्रंक रोड बनवाई थी। बिहार की ख़ुदाबख़्श-लाइब्रेरी आज भी अपनी समता नहीं रखती। गुरु गोविंदसिंह की जन्मदात्री भूमि यही है, और यहाँ की मैथिली-लिपि आज भी बंगाली-जाति की लिपि बनी हुई है। निरक्षरता - निवारण का आंदोलन सबसे पहले यहीं शुरू हुआ है। यथार्थ में बिहार का गौरव और अतीत हमारे लिये गर्व की चीज़ है। विद्वान् लेखक को हम ऐसा उपयोगी ग्रंथ लिखने के लिये धन्यवाद देते और आशा करते हैं कि इस महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ के तैयार कराने में बिहार-सरकार लेखक का हाथ बटा साहित्य का भांडार भरेगी।

× × ×

५. श्रीयुत आत्मारामजी राज्यरत्न

जन्म

राज्य रत्न पं० आत्मारामजी का जन्म सं० १६२४ विक्रमी आषाढ़-बदी १ को अमृतसर में, सुप्रसिद्ध दानशील विद्वान्, लुधियाने के तहसीलदार श्रीयुत राधाकृष्णजी माहेश्वरी के ख़ानदान में, हुआ था। आपके पिता, अमृतसर की अपनी बिरादरी में, सबके सच्चे मित्र, हितैषी और निरभिमान व्यक्ति थे, जिनके द्वार पर सौ-दो सौ अनाथ, निर्धन व्यक्ति सदा भोजन - वस्त्र पाया करते थे। ग़रीब-मात्र इन्हें 'दानी तहसीलदार' के शुभ नाम और भक्ति-भाव से याद किया करते थे। आप साधु-संतों और विद्वान् ब्राह्मणों को भोजन-वस्त्र के अतिरिक्त यथासाध्य धन से भी सहायता पहुँचाते रहते थे। आपका वैभव और ऐश्वर्य राजा-महाराजाओं के सदृश

श्रीमहावीरप्रसादसिंहजी

[आप बिहार-प्रांतीय धारा-सभा-पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष हैं। बड़े योग्य विद्वान् हैं, और आजकल बिहार-साइक्लोपीडिया के निर्माण में व्यस्त हैं। आपने १६३४ के भूकंप के अवसर पर अनेक भूकंप-संबंधी लेख लिखकर इस प्रांत की यथेष्ट महत्त्व-पूर्ण सेवा की। आप मुंगेर-ज़िले के सुप्रसिद्ध, प्राचीन फरकिया-राजवंश के वंशज हैं। आपकी योग्यता तथा लोक-प्रियता पर कौन मुग्ध नहीं होता ?]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, और अपनी कार्य-दक्षता, सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार, सत्यता तथा परोपकार के कारण आपने सर्वप्रियता प्राप्त कर ली थी।

पं० आत्मारामजी की आयु केवल पाँच ही वर्ष की थी, जब उनके सिर पर से अचानक ही उनके पिताजी की छत्र-छाया उठ गई, और उनका निश्चिंतता का जीवन एक उत्तरदायित्व में बदल गया। आठ वर्ष की आयु में आप सरकारी उर्दू-स्कूल में भरती हुए, और चार वर्ष बाद ही हाईस्कूल की परीक्षा पास की। आप श्रीयुत बाबू मुरलीधरजी की प्रेरणा से अमृतसर-आर्य-समाज के सभासद् बने, और कुछ समय बाद धर्मवीर पं० लेखरामजी ने आपमें वाचा-शक्ति का विकास अनुभव करके आपको 'आर्य-वाक् - वर्द्धिनी सभा', अमृतसर का मंत्री बनाया। आर्य-समाज की ओर आपकी रुचि बढ़ने लगी, आपको रात-दिन आर्य-समाज के प्रचार की लगन लगी, तथा उपदेश देने की धुन सवार हो गई। सार्वजनिक कार्य करते हुए भी आप मैट्रिक पास करने के बाद गवर्नमेंट-कॉलेज, लाहौर में दाख़िल हुए, और जब एफ़० ए० की परीक्षा का समय आया, तब अचानक आपकी पूज्य माताजी भीषण रूप से बीमार पड़ीं। उनके इलाज में सहस्रों रुपए व्यय करने पर भी कोई लाभ न हुआ, वह शीघ्र ही परलोक सिधार गईं! धीरे-धीरे वह दिन भी आया, जब श्रीयुत पं० आत्मारामजी को छात्रावस्था से निकलकर आर्य-समाज के कार्य-क्षेत्र में मुख्य रूप से पदार्पण करना पड़ा।

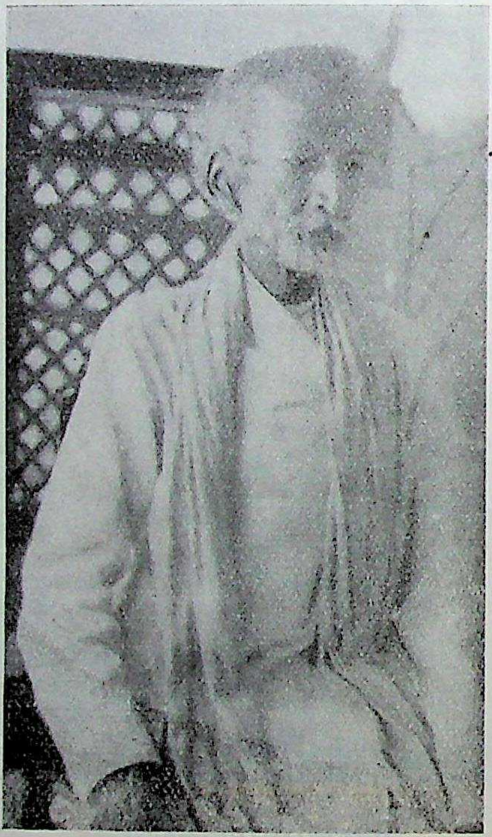

स्व० श्रीयुत आत्मारामजी राज्यरत्न

इस घटना के पीछे अमृतसर के डिप्टी-कमिश्नर मि० लैंगस से आपकी भेंट हुई। उन्होंने आपको नायब तहसील-दारी के लिये भेज दिया। किंतु आपने कुछ ही दिन बाद उस कार्य को भी छोड़ दिया, और सार्वजनिक सेवा को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाकर आर्य-समाज का कार्य करने लगे।

पंजाब में कार्य

इन दिनों लाहौर के दयानंद-मिडिल-स्कूल में एक शिक्षक की जगह ख़ाली थी। आप पं० गुरुदत्तजी के सत्संग का लाभ उठाने के लिये उस पर काम करने लगे। इस प्रकार लाहौर में जब तक पं० गुरुदत्तजी जीते रहे, तब तक उनसे अष्टाध्यायी और धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करके आपने संस्कृत का अच्छा अभ्यास कर लिया। इन्हीं दिनों लाहौर-चीफ़-कोर्ट में एक अच्छी जगह मिल जाने पर आप वहाँ चले आए। परंतु उसे भी छोड़कर पं० गुरुदत्तजी के सत्संग से अमेरिका जाने की इच्छा प्रकट की। पं० गुरुदत्तजी अपने साथ आर्य-समाज के दस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य कार्यकर्ताओं की मंडली लेकर प्रचार-कार्य के लिये अमेरिका जाना चाहते थे, परंतु उनका अचानक देहांत हो गया। इन्हीं दिनों पंजाब में मांस-भक्षण की चर्चा ज़ोर पर होने के कारण श्रीमहात्मा दुर्गाप्रसादजी ने आपको वेजीटेरियन (शाकाहारी)-सोसायटी का मंत्री बनाया। आपने बड़ी कुशलता और तत्परता से अपनी ज़िम्मेदारी निभाई। इसके बाद आपने अमृतसर में पंजाबी हाई-स्कूल की नींव डाली। यह स्कूल ख़ूब चल निकला। दो वर्ष बाद आपने स्कूल का कार्य लाला दुनीचंद को सौंप दिया। आज भी यह स्कूल हिंदू-सभा-हाईस्कूल के नाम से अमृतसर में चल रहा है, और इसकी एक भव्य इमारत हिंदू-सभा-कॉलेज के नाम से सुप्रसिद्ध है। पं० आत्मारामजी अब पूर्णतया उपदेशक हो गए, और आपने आर्य-प्रतिनिधि-सभा, पंजाब के मंत्रिपद को सुशोभित किया। इस समय आप वेद-प्रचार के लिये विशेष भाषण दिया करते थे। श्रीमहात्मा दुर्गाप्रसादजी, महात्मा मुंशीरामजी, राय ठाकुरदत्तजी धवन और बाबू रलारामजी आपके समकालीन सहयोगी थे।

श्रीआनंदप्रियजी बी० ए०, एल्-एल० बी० (पुत्र)

जब पंजाब में अछूत रहतियों की शुद्धि आरंभ हुई, तो आप ही ने सबसे पहले भरी सभा में खड़े होकर भाषण दिया, और अछूतों के हाथ से जल-पान किया। इसका फल यह हुआ कि अमृतसर की माहेश्वरी पौराणिक बिरादरी ने आपको १२ वर्ष तक बिरादरी के बाहर रक्खा। इतना ही नहीं, प्रत्युत जब घर में किसी संतान का जन्म या कोई मंगल-कार्य होता, तो भी बिरादरी की कोई भी महिला आपके घर न आती थी।

पंजाब के नवयुवक पाश्चात्य शिक्षा से चकाचौंध होकर हज़ारों की संख्या में ईसाई बन रहे थे। मुसलमान भी लुके-छिपे अपना कार्य कर रहे थे। हिंदू-समाज शिथिल होने के कारण अस्त-व्यस्त होने लगा था। उस समय आर्य-समाज के उच्च सिद्धांतों का ख़ून होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर पं० आत्मारामजी ने 'हितकारी'-नामक एक पत्र का संपादन करना आरंभ कर दिया। आपने इस पत्र द्वारा समाज और जाति की अच्छी सेवा की। अपने उग्र विचारों का प्रचार करके हिंदू-जनता में नवजीवन का संचार किया, तथा हिंदुत्व के सिद्धांतों की रक्षा करके ईसाइयों और मुसलमानों के आक्रमणों को रोका। आपने आर्य-समाज को एक सर्वप्रिय संस्था बनाकर हिंदू-संगठन के कार्य को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाया, और चारो ओर दौरा करके प्रचार-कार्य द्वारा जनता को उत्साहित किया। इसके अतिरिक्त पं० आत्मारामजी ने संस्कार-चंद्रिका, सृष्टि-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, ब्रह्मयज्ञ, आत्म स्थान-विज्ञान, वैदिक विवाहादर्श, तुलनात्मक धर्म-विचार, बल-प्राप्ति, दिग्-विज्ञान आदि पचासों छोटे-बड़े ग्रंथ रचकर समाज का बड़ा उपकार किया है। हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी, गुजराती आदि भाषाओं के पत्रों में समय-समय पर आपके विद्वत्ता-पूर्ण लेख छपते रहे हैं। सुधा पर भी आप कृपा करते रहते थे। गुरुकुल, वृंदावन, गुरुकुल, काँगड़ी, ब्रह्म-महाविद्यालय, लाहौर, महाविद्यालय, ज्वालापुर, गुरुकुल, सोनगढ़ (काठियावाड़) तथा अनेक गुरुकुलों और आर्य-कन्या-महाविद्यालय, बड़ौदा में आपकी सोलह संस्कारों पर धार्मिक व्याख्या करनेवाली एवं प्रत्येक मनुष्य को उन्नत तथा भावी संतान को आदर्श मानवीय संतान बनानेवाली 'संस्कार-चंद्रिका'-नामक पुस्तक पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढ़ाई जाती है। पंडित आत्मारामजी ने बहुत-सी देशी रियासतों का दौरा करके, भारतीय नरेशों में धर्म और साहित्य-संबंधी विचारों की प्रेरणा जाग्रत् करके उनके द्वारा अपने प्रचार-कार्य को आगे बढ़ाया, और रियासतों में बड़ा सम्मान प्राप्त किया। स्त्री-समाज तथा आर्य-कुमारों की उन्नति के लिये भी आपने अनेकों कार्य किए, और स्थान-स्थान पर उनकी उचित शिक्षा के लिये पाठशालाएँ तथा उपयोगी संस्थाएँ खुलवाने का प्रयत्न किया।

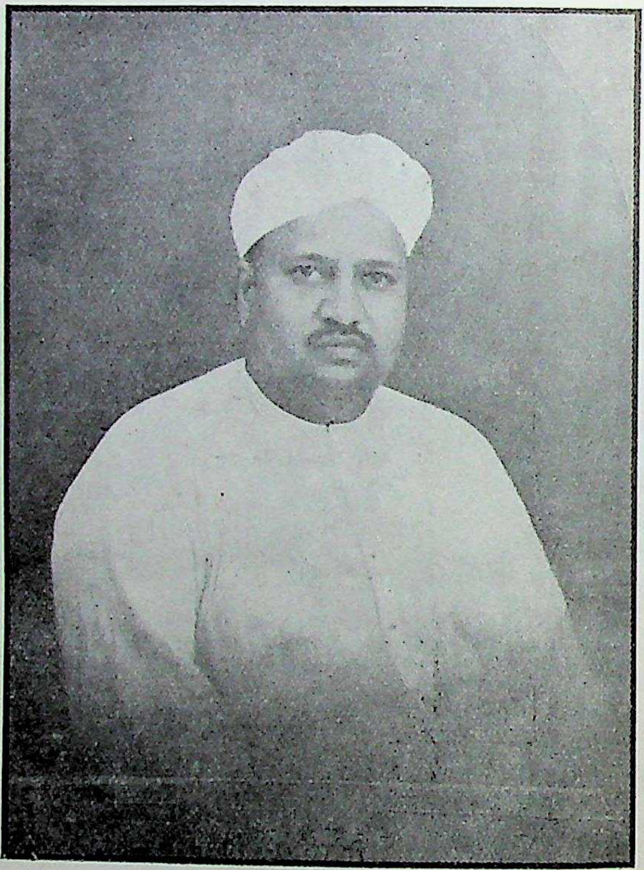

श्रीशांतिप्रियजी
(पुत्र)

बड़ौदा में कार्य

पूरे २० वर्षों तक पंजाब-आर्य-समाज तथा उत्तर-भारत में आर्य-समाज की अनेक प्रकार की सेवाएँ करने के बाद पं० आत्मारामजी राज्य-उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशक श्रीस्वामी नित्यानंदजी सरस्वती तथा श्रीस्वामी विश्वेश्वरानंदजी की प्रेरणा से, सन् १९०८ की पहली अगस्त को, उपदेशक से इंस्पेक्टर बनकर बड़ौदा-राज्य में श्रीमान् हिज़ हाइनेस बड़ौदा-नरेश की सेवा में गए, और अपनी आयु का अधिकतर भाग शिक्षा-प्रचार एवं आर्य-समाज की सेवा में लगा दिया। अछूत जातियों के उद्धारार्थ जो कार्य आपने किया, वह प्रशंसनीय है। आपकी निरंतर जन-सेवा से प्रभावित होकर श्रीमान् बड़ौदा-नरेश ने आपको राज्यरत्न की माननीय उपाधि से भूषित किया, तथा भरे दरबार में स्वर्णपदक देकर आपकी कीर्ति को चार चाँद लगा दिए। होलियों की छुट्टियों में बहुधा आप महाविद्यालय, ज्वालापुर के निमंत्रण पर आर्य-समाज के मार्मिक विषयों पर भाषण देने जाया करते थे। आपको आपकी विद्वत्ता पर श्रीमज्जगद्गुरु-शारदा-पीठाधीश शंकराचार्य, आर्य-धर्म-महोपदेशक पंडितवर श्रीस्वामी भारती-कृष्णतीर्थजी ने 'व्याख्यान-वाचस्पति' की उच्च उपाधि से सुभूषित किया।

लाइसंस लेने की ज़रूरत नहीं

अमरीकन अलार्म पिस्तौल

नया नमूना सन् १९३९ ई०

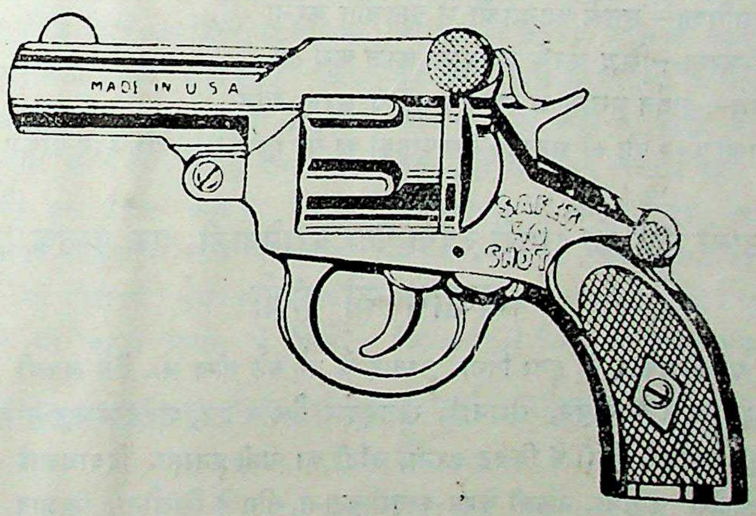

हिंदोस्तान में पहली दफ़ा आया है। बिलकुल ऊपर दी हुई तस्वीर के मुताबिक़ है। लंबाई ७ इंच है, वज़न १५ औंस है। इसके देखते ही मनुष्य डर जाता है। पचास फ़ायर बहुत ज़बरदस्त भयानक आवाज़ से एक के बाद दूसरे सिलसिलेवार होते हैं। ख़तरा के वक़्त अपनी जान बचाने के लिये बड़ी सुंदर चीज़ है। हर मनुष्य विना लाइसंस रख सकता है। हिंदोस्तान में सिर्फ़ हमारे पास ही अलार्म पिस्तौल मिलता है। क़ीमत रियायती २५० शाट के साथ ४॥) रुपए, फ़ालतू १००० शाट क़ीमत २) रुपए। महसूल डाक अलग। झूठ साबित हो, तो क़ीमत वापस।

मिलने का पता—अमरीकन इंपोर्ट कंपनी, नं० ११८, कराची (सिटी)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल, वृंदावन में कार्य

इंस्पेक्टरी से निवृत्त होने पर पं० आत्मारामजी ने अपनी असूल्य सेवाओं का लाभ गुरुकुल, वृंदावन-जैसी पुण्य भूमि में जाकर अपने क्रियात्मक, सादे, पवित्र, उच्च जीवन और अमृतमय उपदेशों द्वारा जन-साधारण को दिया । आप जब-जब भारत की

शर्त—विज्ञापन के अनुसार हमारी पुस्तकें न होंगी, तो मूल्य वापस देंगे !

१॥) में दस पुस्तकें

१. कोकशास्त्र—स्त्री-पुरुषों के भेद, ८४ चित्रोंवाला शकुनादि मूल्य १॥)
२. प्रेत-सिद्धि—भूतों को वश कर रोगी को अच्छा करना आदि ॥)
३. टेलीग्राफ—तार का लेना-देना सिखाने की अपूर्व पुस्तक ॥)
४. गर्भ-परीक्षा—गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहचान पहले ही करना ॥)
५. आरोग्य जीवन—गुप्त रोगों का इलाज स्वयं करना सीखो ॥)
६. सच्चा जादू—हाथ-सफ़ाई के आश्चर्य-जनक खेल सीखो ॥)
७. इँगलिश—अँगरेज़ी पढ़ना-लिखना सीखने की रीति १)
८. आत्मविद्या—मृतक आत्माओं से बातचीत करना ।)
९. वशीकरण—सिद्ध करके मनमाना काज करा लो ॥)
१०. शर्बत—शर्बत बनाने के सरल नुस्ख़े व सरल रीति ॥)

ऊपर लिखी ५०० पृष्ठ की अनमोल दस पुस्तकों का सेट मूल्य १॥), डाक-व्यय-पैकिंग आठ आना अलग।

ठाली बैठों को हज़ारों रुपया पैदा करानेवाली एक पुस्तक !

खज़ाने की कुंजी

इससे अनेकों प्रकार के हुनर बिना उस्ताद के घर बठे सीख लो, जैसे लकड़ी व चमड़े की वारनिश, कई प्रकार के साबुन, रोशनाई, ख़ुशबूदार तैल व इत्र, शर्बत-अचार-मुरब्बा-पान का मसाला, आतिशबाज़ी, बैटरी से गिलट करना, चाँदी का पानी बनाना, दियासलाई बनाना, पारे का गिलास-कटोरा बनाना, नक़ली केशर-कस्तूरी बनाना, सींग के खिलौना, खिज़ाब, मंजन, अगर की बत्ती, मोम, बर्फ़ की कुल्फ़ी ज़माना, सोने के वर्क़, कपूर की माला, काँच जोड़ने का मसाला, साँप काटे की दवा, सिर-दर्द की दवा, अर्क़ कपूर, बाल उड़ाने का पाउडर, पत्थर जोड़ने का मसाला, नमक सुलेमानी, पिपरमेंट की मिठाई, रबड़ की मुहर आदि सैकड़ों प्रकार की दस्तकारी सिखाने की तरकीब इस ग्रंथ में लिखी है। कहाँ तक लिखें, इसका एक-एक हुनर पाँच-पाँच रुपए को भी सस्ता है। मूल्य भी सबके लाभार्थ सिर्फ़ १), डाक-व्यय-पैकिंग ।=)

पूरा पता—मैनेजर, दी बजरंग ऐंड कंपनी, आगरा-रोड, अलीगढ़ सिटी (S U)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन सभ्यता पर और वैदिक धर्म के मार्मिक विषयों पर विवेचन करते थे, तो श्रोताओं को बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी। आज सब लोग मुक्त कंठ से आपकी तत्त्वज्ञान-संबंधी प्रशंसा करते हैं। गुरुकुल, वृंदावन-सी पवित्र आर्य-संस्था की डगमगाती नौका के कर्णधार बनकर आपने जो उपकार किया है, वह संयुक्तप्रांतीय समाजों, विशेषतया छात्र-जगत् को चिरकाल तक स्मरण रहेगा।

स्वदेशी वस्तु-प्रचार

पं० आत्मारामजी सदा से स्वदेशी वस्तु-प्रचार के परम पोषक रहे। पाजामा, कुर्ता, अँगरखा और लुधियानी रूमाल के अतिरिक्त अधिकतर आपने अन्य वस्त्रों का व्यवहार नहीं किया, और अपना रहन-सहन अत्यंत सादा तथा सरल रक्खा। अमृतसर के सब पुराने आर्य-समाजियों को मालूम है कि पं० आत्मारामजी सर्वदा देशी शकर, देशी बत्ती, देशी शमादान तथा देशी वस्तुओं का ही अपने घर में उपयोग करते रहे। आपने जनता को सस्ते और स्वदेशी वस्त्र धारण करने का उपदेश दिया, और आजीवन स्वावलंबी बनने की भावना का प्रचार करते रहे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदादेवीजी ने भी आपके प्रयास में अपना सहयोग दिया, और महिलाओं में स्वदेशी के व्यवहार का ही बराबर उपदेश दिया। पर्दा, बाल-विवाह आदि सामाजिक हानिकारक रूढ़ियों के विरुद्ध भी श्रीमती यशोदादेवी ने पर्याप्त आंदोलन और उनके दूर करने का बड़ा प्रयत्न किया।

सदाचार और सेवा-कार्य

पं० आत्मारामजी ने मांस, मछली, अंडा, शराब तथा बीड़ी-सिगरेट आदि का कभी सेवन नहीं किया। आपने २० वर्ष की आयु से लेकर आज तक बरफ़ का पानी, शर्बत, कुल्फ़ी आदि किसी वस्तु का व्यवहार नहीं किया। देशी नरेशों के अतिथि रहकर भी आपने कभी सोडा, लेमोनेड आदि पदार्थों का राजभोज में सम्मिलित होकर भी सेवन नहीं किया, यहाँ तक कि भीषण ज्वर की अवस्था में भी कुनैन के व्यवहार से इनकार कर दिया, और केवल देशी ओषधियाँ लेते रहे। आप बड़े सबेरे उठने के आदी थे। सदा घर का बना देशी दंत-मंजन व्यवहार करते थे। वृद्धावस्था आ जाने पर भी आपने ऐनक नहीं लगाई। घर में सदा मिट्टी का दीपक जलाते रहे, तथा अपनी रहन-सहन बिलकुल सादी रक्खी। प्लेग, महामारी, हैज़ा आदि के फैलने पर आपने पीड़ित जन-समुदाय

हमारे यहाँ से मँगाइए।

क्या?

हिंदुस्थान-भर की राष्ट्र-निर्माणकारी तथा उत्कृष्ट पुस्तकें।

नोट कर लें—बिहार में नवयुग-निर्माणकारी पुस्तकों के प्रकाशक और विक्रेता एक-मात्र हमी हैं।

राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल

पटना पब्लिशर्स

सोल एजेंट्स—गंगा-पुस्तकमाला, हिंदी-मंदिर आदि, नवलकिशोर रोड, बाँकीपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अनवरत सेवा की, और ओषधि तथा शुश्रूषा से उनको लाभ पहुँचाया।

धर्म-कार्यों में तथा धार्मिक एवं सार्वजनिक संस्थाओं के लिये आपने अपूर्व त्याग करके सहस्रों रुपए की संपत्ति प्रदान की, और गिरती हुई अनेक संस्थाओं को सहायता दिलाकर उनका पुनरुत्थान किया। आपकी देख-रेख में बहुत-सी संस्थाएँ सुचारु रूप से चलती रहीं।

दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीद-कर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १।)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। बिना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब विद्यालय बंद होते हैं-

एक

बहुत बढ़िया अवसर मिलता है

छुट्टी के सदुपयोग का एकमात्र तरीका भ्रमण करना है। भ्रमण करने से विद्यार्थियों को विभिन्न रस्म, विभिन्न मनुष्य, विभिन्न प्रकृतिच्छटा, विभिन्न शिल्प देखने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनका ज्ञान-भांडार बढ़ता है; बुद्धि प्रखर होती है तथा जीवन में निरंतर लाभ पहुँचा करता है। रेलगाड़ी सबसे सस्ता, सबसे तेज़ तथा सबसे ज़्यादा आरामदेह यातायात साधन है।

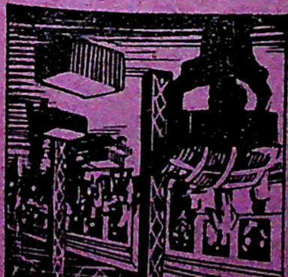

रेलवेज

भारतका सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK, 12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयावृत्ति

अब कोई बेकार न रहेगा

छप गई !!

जिसके पास हुनर-प्रचारक पुस्तक है, वह एक बड़ी भारी संपत्ति का मालिक है।

(१) यदि आप धनवान् हैं, किंतु आपके सामने कोई लाभदायक व्यापार नहीं है। (२) यदि आप मध्यम श्रेणी के व्यक्ति हैं, और थोड़ी पूँजी से किसी काम को शुरू करने की स्कीम नहीं जानते। (३) यदि आपके पास पूँजी बिलकुल नहीं है और सर्वथा बेकार हैं, तो भी हमारी इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इससे उपर्युक्त तीनो श्रेणी के आदमी अपनी बेकारी मिटा सकते हैं। यह गारंटी है। पुस्तक की संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) अमेरिका के बेकार आदमी केवल एक क़लम-दवात लेकर व्यापार द्वारा केवल डाक की सहायता से किस प्रकार मालामाल बन जाते हैं, उनके क्रियात्मक अनुभव एवं सुगम उपाय, (२) अपनी वस्तु बेचने का अनुपम उपाय, (३) ग्राहकों को अपनी तरफ़ खींचने का रहस्य, (४) अत्यधिक नफ़े के व्यापार, (५) डाक द्वारा व्यापार करने के गुप्त रहस्य (६) योरप की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (७) अमेरिका की प्रसिद्ध फ़र्म का पता, जो केवल टिकट भेजने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (८) ५०) से ५००) तक की पूँजी तक के कारख़ाने लगाने का विवरण, जिनसे ६०) से ५००) मासिक तक कमाया जा सकता है। (९) फ़्रांस की नई-नई चीज़ें प्राप्त करने और उनकी एजेंसी लेने के लिये वहाँ की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते (१०) जर्मनी, जापान और अमेरिका की ताज़ी मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के तरीक़े इस पुस्तक में सविस्तर छापे गए हैं। इसके अतिरिक्त छ पैसे सेर साबुन बनाना, जादू का रंग, कास्ट्रायल, बर्फ़ का पौडर, हर प्रकार के जर्मनी ख़िज़ाब, जादू का साँप, बूट-पालिश, मुख देखने के दर्पण बनाना, कानपुरवाले जैसा पान का मसाला, ख़िज़ाब साबुन, फ़ोटोग्राफ़ी के प्लेट और पेपर बनाना। ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'फ़िनसीन' पैदा करना। नक़ली शहद, हींग, कपूर, पिपरमैंट क्रिस्टल, फ़िनायल, भाँति-भाँति के सुगंधित तेल और शर्बत बनाना, भारतवर्ष के कच्चे माल से रुपया कमाना, तैल सफ़ेद करना, क्लोरीन गैस बनाना, जिससे कपड़े बगले के पर के समान सफ़ेद निकल आते हैं, नक़ली रबर, अचार, मुरब्बे और चटनियाँ, वनस्पति-घृत बनाना, एक सेर दूध से पाव-भर मक्खन निकालना। इनके अतिरिक्त अनेक विलायती चीज़ों को स्वदेशी तैयार करना, इस पुस्तक में सिखाया गया है, और ऐसे-ऐसे प्रयोग लिखे गए हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आए। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १1), डाक-व्यय 1-)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा के नुस्ख़े से लाखों रुपया कमाया है! विलायती फ़र्में एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय, प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुस्ख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही "पेटेंट ओषधियाँ और भारतवर्ष"-नामक पुस्तक की एक प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें। संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ॥1), पोस्टेज 1-)

पता—रसायन-कार्यालय (३) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत शक्तिशाली ६ रत्नें

[किसी भी ओषधि को बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम ! जिन्हें विश्वास न हो, ‑) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें]

[१] श्वेत कुष्ठ की वनौषधि

महात्मा प्रदत्त इस सफ़ेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा कर निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आराम होवें। मू० २)

[२] संतति-निग्रह

संतान-निग्रह की यह अचूक दवा है। दवा का व्यवहार बंद कर दें, गर्भ धारण हो जायगा। प्रति-मास तीन-चार दिन व्यवहार करना पड़ता है। वर्ष-भर की दवा का मू० २)। दूसरी दवा, जो जीवन-भर के लिये वंध्या बनाती है, मू० २); दोनो में किसी दवा का व्यवहार स्वास्थ्य में हानि नहीं करता है।

[३] स्तंभक वटी

एक गोली शाम को खा लें, तो इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घंटे तक स्तंभन कर ग़ज़ब ढा देगी। मू० १६ गोलियाँ १)

[४] बहरापन नाशक

यह कर्ण-रोग की अद्भुत दवा है, जो नया व पुराना-से-पुराना बहरापन, आवाज़ की कमी, पीब आना, कान का सनसन आवाज़ आदि सदा के लिये आराम करता है। बहरा आदमी भी साफ़-साफ़ सुनने लगता है। मू० २)

[५] अर्श-नाशक

इस दवा से अंदरुनी, बाहरी, ख़ूनी, बादी, नई व पुरानी बवासीर जल्द आराम होता है। ख़ून गिरना, दर्द, जलन, खुजली, टीस, सूजन, जल्द आराम कर पाख़ाना साफ़ लाती है। मू० खाने की दवा ३), लगाने की १)

[६] उपदंश-नाशक

इस ओषधि से गुप्त इंद्रिय, बदन का ज़ख़्म फुलना, जलन, पीब बहना, ख़ून आना, बदन के चकत्ते, धब्बे, गठिया को आराम कर नवजीवन प्रदान करता है। खाने की दवा मू० २) लगाने की १)

[७] सूज़ाक की दवा

यह अधमरे को नया जीवन प्रदान कर नई या पुरानी सूज़ाक (गनोरिया) कबक, जलन, पीब बहना, फुलना, बूँद-बूँद पेशाब आना, दर्द को एक दिन में फ़ायदा करता है। मू० २)

[८] महासुगंधित

काया-कल्प तेल। इस तेल के मालिश से बदन का बदबू दूर हो जाता है। इससे ७० वर्ष का बूढ़ा नौजवान, बलशाली, वीर्यवान्, स्त्रियों का प्यारा हो जाता है। बाँझ स्त्री को गर्भ रहता है। कोढ़ को नाशता है। कुरूप, कुढंगा भी सुंदर, सुडौल हो जाता है। १०० वर्ष की उम्र हो जाती है। मू० ३)

[९] विष-नाशक जड़ी

सिर्फ़ इसे दिखाने से ही भयानक-से-भयानक बिच्छू, बिरनी (हड्डा), मधुमक्खी का विष तुरंत आराम हो जाता है, न सुँघाना, न लगाना, न छुलाना, न खिलाना पड़ता, लाखों को आराम कीजिए। सैकड़ों वर्ष पड़ा रहे, गुण में ज़रा कमी नहीं आता। मू० १), जब तक इसके गुण को न देखा जाय, विश्वास नहीं होता।

[१०] ख़िज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। एकाध बाल पका हो, तो २); इससे अधिक पका हो, तो ३॥) या कुल पका हो, तो ४) का तेल मँगा लें।

वैद्यराज अखिलकिशोर राम नं० ४६ पो० कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़च्चा

(द्वितीयावृत्ति)

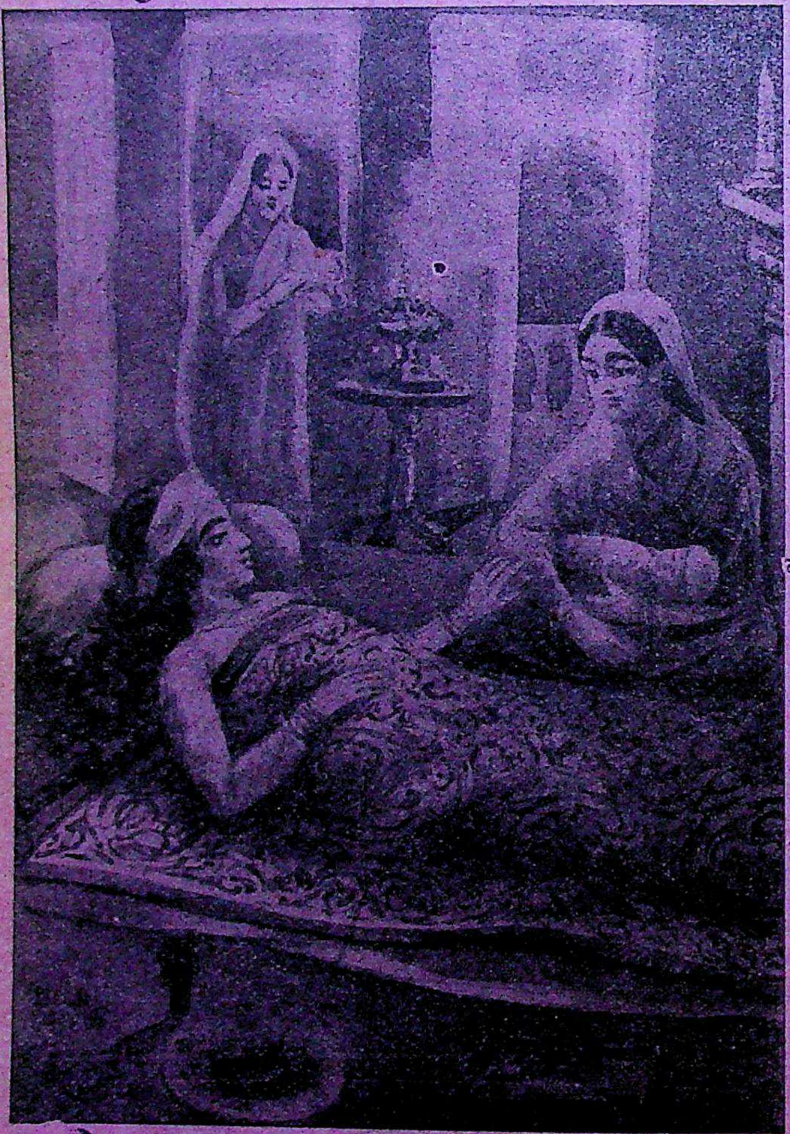

लेखक, कविराज श्रीप्रतापसिंह वैद्य। संतानोत्पत्ति चाहनेवाली स्त्रियों के उपयोग की प्रायः सभी बातें इसमें दी गई हैं। छोटी-छोटी बालिकाओं को सँभालने का भी उपदेश दिया गया है। प्रसूतिका स्त्रियों के जानने योग्य बातें, गर्भ-रक्षा के उपाय, संतानोत्पत्ति के बाद के कर्तव्य बड़ी सरल भाषा में समझाए गए हैं। प्रत्येक गृहिणी को इसे पढ़कर अपनी तथा अपनी कन्याओं की, जो भावी माताएँ हैं, इस विषय के अज्ञान से उत्पन्न होनेवाली व्याधियों से रक्षा करनी चाहिए। ३००० का प्रथम संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। दूसरे संस्करण में मैटर अधिक बढ़ा देने से इसकी उपयोगिता अधिक हो गई। महिला-विद्यापीठ में पाठ्य पुस्तक है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों की सेज

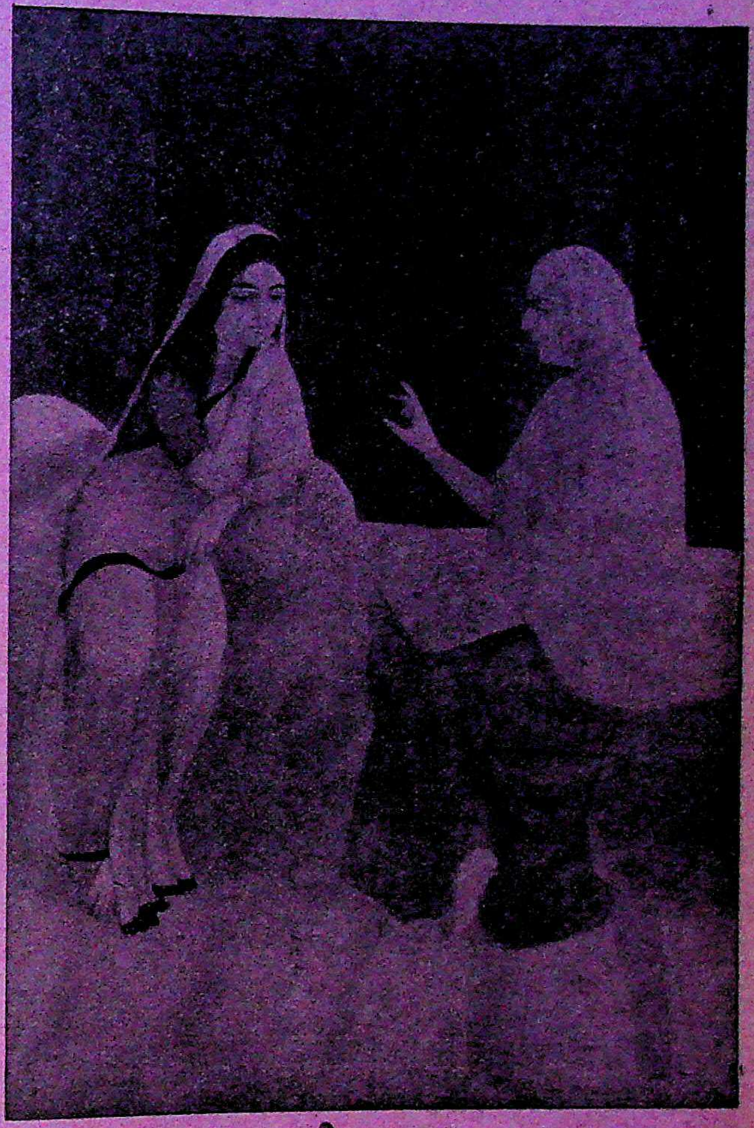

लेखक, श्रीविजय-बहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। वर्णन दो स्त्रियों के परस्पर वार्तालाप के रूप में है। गार्हस्थ्य सुख की पूर्ण अभिज्ञता रखनेवाली एक शिक्षिता, प्रौढ़ा रमणी एक नव-विवाहिता युवती को उपदेश देती है। और, वह उपदेश आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुकूल अर्थात् अप-टु-डेट है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं - यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतुबाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है, और प्रत्येक स्त्री के लिये आवश्यक ज्ञान की वस्तु। भाषा बड़ी ही सरल और सुंदर है। वर्णन ऐसी उत्तमता से हुआ है कि इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं है, और इसे शिक्षित माता-पिता निस्संकोच भाव से अपने पुत्र-पुत्रियों और वधुओं के हाथों में दे सकते हैं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप रहा है ! शीघ्र प्रकाशित होगा !! छप रहा है !!!

ला-मज़हब

हिंदी के कहानी-साहित्य में क्रांतिकारी प्रकाशन !

श्रीबलभद्रजी दीक्षित के उपनाम 'पढ़ीस' से हिंदी-पाठक भली भाँति परिचित हैं। उनकी देहाती बोली में लिखी कविताओं ने शिक्षित-अशिक्षित श्रोताओं और पाठकों को समान रूप से मुग्ध किया है। इसका कारण उनके अनुभव की सचाई है। वह सचाई इस संग्रह की कहानियों की भी जान है। उन्हें देहाती जीवन का बहुत सूक्ष्म ज्ञान है, जिसका इन कहानियों में उन्होंने बहुत कला-पूर्ण ढंग से प्रयोग किया है। ख़ासकर ग़रीबों और समाज से ठुकराए हुओं का ऐसा सजीव चित्रण अभी तक हिंदी में नहीं हुआ। उनका पतन देखकर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। लेकिन जब लेखक के साथ उनकी परिस्थितियों की ओर ध्यान देंगे, तो आपका हृदय सहानुभूति से पसीज उठेगा।

देहात के कटु वर्ग-संघर्ष का चित्र आपको यहाँ देखने को मिलेगा। ग़रीबी और पतन के बीच उच्च मनुष्यता की झाँकी देख आप मुग्ध हो जायँगे। इन कहानियों में एक नई संस्कृति की ओर इंगित है, जहाँ मनुष्यता से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं माना गया। 'ला-मज़हब' ने छोटे मज़हबों को तोड़ दुनिया के सामने एक और बड़े मज़हब को लाकर रक्खा है। भाषा जोरदार और सीधी, चरित्र-चित्रण सजीव और कथानक रोचक तथा कुतूहल उत्पन्न करनेवाले हैं। निश्चय यह हमारे कहानी-साहित्य में एक नया क़दम है। सभी साहित्य-प्रेमियों को एक बार इस पुस्तक को ध्यान-पूर्वक पढ़ना चाहिए। मूल्य लगभग सादी १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के अवसर पर

नव-दंपतियों को उपहार देने योग्य कुछ अमूल्य पुस्तकें

काम-विज्ञान

रचयिता, हिंदी के उदीयमान लेखक पंडित दीनानाथ व्यास विशारद। यह नव-विवाहित नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस विषय पर हिंदीभाषा में इने-गिने ग्रंथ हैं, किंतु उनमें वैवाहिक समस्याओं को समझाने की चेष्टा तक नहीं की गई। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक शिक्षण, विषय का नैतिक धरातल, वैषयिक उत्कंठा, दांपतिक साम्य, सच्चा वैवाहिक जीवन आदि इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस विषय की पचासों बिकनेवाली पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर केवल एक बार इस पुस्तक को खरीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

दांपत्य जीवन

लेखक, हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। जो लोग ठगों के कारण काम-शास्त्र को एक अश्लील एवं गंदी पुस्तक बताकर सदैव उसकी निंदा किया करते हैं, नाम सुनकर घृणा करते हैं, वे ही इसे पढ़कर सहर्ष राष्ट्र के भावी कर्णधारों के हाथ में देने को तैयार हो जायँगे। मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

किशोरावस्था

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, स्व० श्रीगोपालनारायणसेन-सिंह बी० ए०। पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। जिन बुराइयों में पड़कर नवयुवक अपने यौवन-काल का सर्वनाश करते हैं, उन्हीं का इसमें बड़ी मार्मिक भाषा में वर्णन किया गया है। बचपन से जवानी, यौवन-काल का शारीरिक परिवर्तन, शिक्षा और संयम, स्वप्न-दोष और उसका निवारण, युवकों का स्वास्थ्य, युवकों का धार्मिक विचार, बड़ों का कर्तव्य आदि विषयों पर वैज्ञानिक ढंग से लिखा गया है। विषय को सुगम करने के लिये स्थान-स्थान पर चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के व्यायाम

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, श्रीगणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र'। हमारी माताओं और बहनों का स्वास्थ्य किस प्रकार क्षीण होता जा रहा है! तमाम राष्ट्र जिस स्त्री-समाज पर ही अवलंबित है, यदि उसकी ही शक्ति क्षीण हो जायगी, तो राष्ट्र को एक बड़ा भारी धक्का ही न लगेगा, अपितु उसका अस्तित्व ही मिट जायगा। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में 'स्त्रियों के व्यायाम' से संबंध रखनेवाली अनेक क्रियाओं का उल्लेख किया है। व्यायाम की आवश्यकता, घरेलू व्यायाम, प्राणायम, व्यायाम कितने प्रकार का होता है, डंबेल का कार्य, विविध व्यायाम—चर्खा, चक्की—आदि बातों पर भले प्रकार प्रकाश डाला गया है।

सुंदर, आकर्षक चित्रों द्वारा लगभग ४० व्यायामों का यह सुंदर विवरण अपने ढंग का अनोखा ही है। स्त्रियों के स्वास्थ्य की कितनी आवश्यकता है, इन सब बातों का अच्छी तरह विवेचन किया गया है। पुस्तक बढ़िया कागज़ पर छपी है। मूल्य १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में कांग्रेस क्यों आंदोलन कर रही है ?

यह जानना हो, तो

श्रीनाथसिंह-लिखित

जागरण उपन्यास पढ़िए !

देशी राज्यों में अधिकारी कैसी मनमानी करते हैं ?
स्त्रियों का सतीत्व तक अपहरण करने
के लिये क्या-क्या चेष्टाएँ की जाती हैं ?
राष्ट्रीय आंदोलन को किस तरह
कुचला जाता है ?
और अंत में संगठित प्रजा की
किस तरह जीत हो सकती है ?
आदि-आदि बातों पर प्रकाश
डालनेवाला यह हिंदी का
एकमात्र उपन्यास है ।
मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो श्रेष्ठ ग्रंथरत्न

राम-रहीम

राजा राधिकारमणजी हिंदी के सिद्धहस्त लेखक हैं। राम-रहीम उन्हीं की लेखनी का प्रसाद है। सामाजिक बंधनों की मज़बूती से एक विधवा का जीवन कैसा दुःखद बन जाता है, एवं एक नवीन सभ्यता की पुजारिन किस प्रकार स्वतंत्र पक्षी की नाईं समाज में विचरण करती है, अत्यंत रोमांचकारी ढंग से इन सबका वर्णन इस उपन्यास में हुआ है।

इस उपन्यास की मुख्य पात्र परिस्थितियों द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत दो स्त्रियाँ हैं। एक समाज की प्राचीन रूढ़ियों एवं विचारों के अंतर्गत पली है, दूसरी अनुचित स्वतंत्रता एवं वासनामयी परिस्थितियों के वातावरण में सयानी हुई अप-टु-डेट रमणी है।

इन दोनों की जीवन-कथा जानने के लिये राम-रहीम की मर्मस्पर्शी कहानी पढ़ें। भाषा का क्या पूछना। इतनी चलती हुई, सरल, सीधी और भाव-पूर्ण कि पद-पद पर आप लेखक की प्रशंसा किए बिना न रहेंगे।

पुस्तक में समाज की वर्तमान समस्याओं का अत्यंत सुंदर विवेचन किया गया है, और कथा इतनी रोचक है कि एक बार पढ़ना प्रारंभ कर देने पर आप उसे समाप्त करके ही उठेंगे। मूल्य ३)

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

आरोग्य-शास्त्र

३१ अध्याय, १५० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२०×२६=८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना काग़ज़, पक्की, सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस काग़ज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला।

यदि आप अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा के ग्राहकों को पौने मूल्य में

प्रसूति-तंत्र

लेखक—
डॉ० रामदयाल कपूर
एम्० बी० बी० एस्०

मूल्य २॥), सजिल्द ३)

"प्रसूति-तंत्र—हिंदी में अपने ढंग की यह निराली पुस्तक है। जच्चा-बच्चा, जननेंद्रिय-क्रिया-विज्ञान, गर्भ-विज्ञान, प्रसव-विधि, गर्भावस्था के विकार तथा डॉक्टरी क्रियाओं द्वारा बाँझपन दूर करने के उपचार तथा गर्भ से बालक निकालने की चीड़-फाड़ आदि के विषय में अभी तक इतनी विशद पुस्तक हिंदी में कोई भी नहीं थी। यद्यपि यह पुस्तक साधारण गृहस्थ को ज्ञान-मात्र ही दे सकेगी, किंतु अज्ञानता-वश मूर्ख दाइयों द्वारा अक्सर हानि उठानेवालों को सचेत अवश्य करा सकेगी, और सही बात समझने के योग्य बना सकेगी। मैंने अंतिम अध्याय (प्रसूति का शल्य-कर्म) पढ़कर यह जान लिया है कि लेखक ने बड़े परिश्रम के साथ अपनी बात समझाने की चेष्टा की है। समझदार गृहिणियों को इस पुस्तक का एक बार मनन अवश्य करना चाहिए।"

(वर्तमान, कानपुर)

प्रसूति-तंत्र
आचार्य
द्विवेदीजी का कथन
है—
"प्रत्येक गृहस्थ के लिये अनमोल है।"

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए ! मँगाइए !!

मदारी

[उपन्यास]

लेखक

पं० गोविंदवल्लभ पंत

मूल्य १।।।), सजिल्द २)

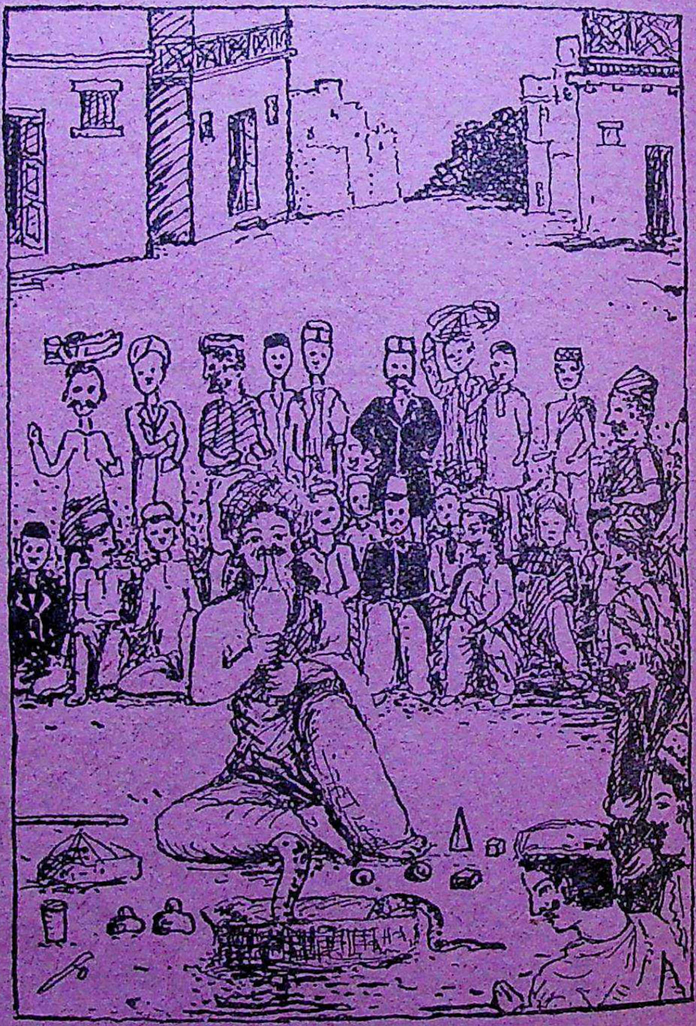

मदारी-उपन्यास का एक दृश्य

नवीन कथानक, निराले चरित्र, चटपटी भाषा, गुदगुदी पैदा करनेवाली स्थितियाँ, बीच-बीच में गीत और चित्र। शीघ्र मँगा लें।

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला-माला की सर्वोत्तम पुस्तक

गुप्त संदेश

(भारतीय ललनाओं को)

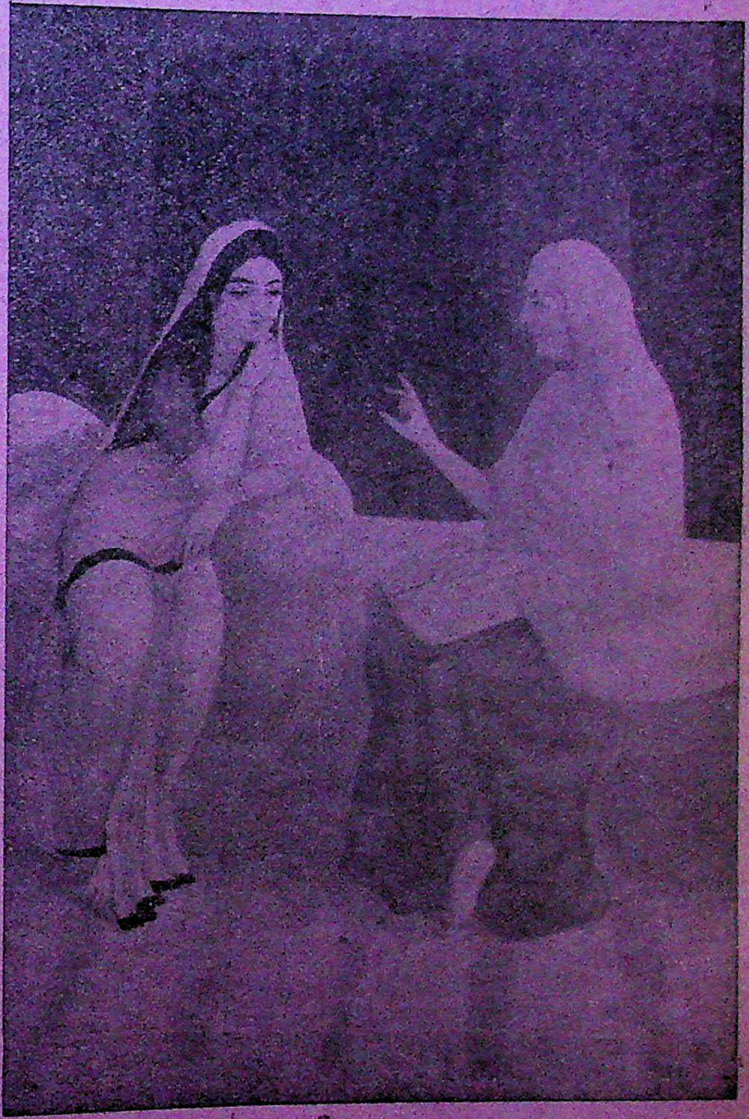

लेखक, डॉ० युद्धवीरसिंह। यह पुस्तक भारतीय ललनाओं के लिये लिखी गई है, झूठी लज्जा के वश होकर न वे जननेंद्रिय-संबंधी रोगों का पूरा हाल ही जान सकती हैं, और न उनका कुछ उपाय ही कर सकती हैं, जिसके कारण संसार के अलौकिक आनंद का अनुभव करना तो दूर रहा, वे अकाल ही मृत्यु का शिकार बन जाती हैं। इस अनोखी पुस्तक में डॉक्टर साहब ने बड़ी सरल भाषा में जननेंद्रिय-संबंधी सभी ज्ञातव्य विषय लिखे हैं। पुस्तक अपने ढंग की निराली है। प्रत्येक घर में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। युवतियों, भारत की भावी माताओं, को इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठाना चाहिए। २ भाग। मूल्य प्रत्येक भाग ॥=), जिल्ददार प्रति ।||)

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गया ! निकल गया !! निकल गया !!!

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा—क्रांतिकारी उपन्यास

'प्रश्न'

।

कर्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

—:o:—

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गई ! प्रकाशित हो गई !! शीघ्र मँगाइए !!!

लबड़ धोंधों

[लेखक, स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट]

भट्टजी हास्य-रस के अद्वितीय लेखक हैं। हास्य-रस के इनके लेख अपनी विशेषता रखते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे कैसी सभ्य, सुंदर, सरल, सरस और चुटीली भाषा में लिखे होते हैं, मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा-प्रद भी; इतने कि छोटे-बड़े सभी उन्हें पढ़कर लाभ और आनंद उठा सकते हैं। जिसने हँसने और पढ़ने की क़सम ले ली हो, वह भी इस पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किए बिना नहीं छोड़ेगा, और क्या मजाल कि जो वह हँसते-हँसते लोटन-कबूतर न हो जाय। कई रंगीन और सादे चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य ।।।), जिल्ददार १।)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

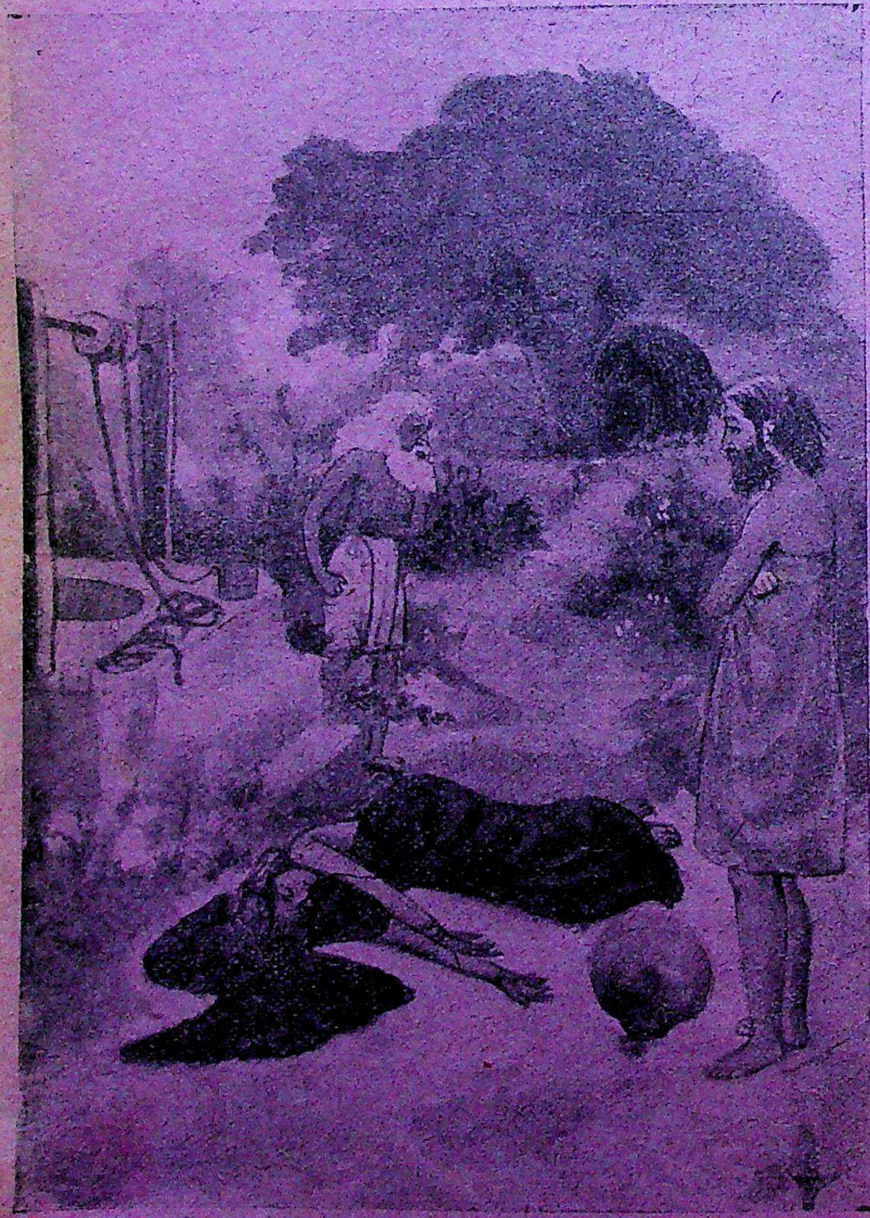

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के कायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की प्रबलता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया !

छप गया !!

कुली भाट

कवर-डिज़ाइन उल्टा पेड़

लेखक—श्रीनिराला

मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

१. हास्यरस की अभूतपूर्व छटा ।
२. जीवनी, कथा, स्केच एक साथ ।
३. आदर्श गद्य अलंकृत और सरल ।
४. साधारण जीवन का असाधारण रूप ।
५. कल तक जो नहीं था ।
६. बीसवीं सदी की मेख ।
७. उल्टी गंगा ।
८. आठवाँ चमत्कार ।

मिलने का पता—

अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिक रही है !! शीघ्र मँगाइए !!!

हिंदी के सुविख्यात कहानी-लेखक और उपन्यासकार

श्रीयुत भगवतीप्रसाद बाजपेयी

की रहस्यमयी लेखनी का अनूठा चमत्कार

हिलोर

एक से एक बढ़कर सरस, सुरुचि-पूर्ण, मनोवैज्ञानिक, कलामय और मर्मस्पर्शिनी कहानियाँ, जिनको एक बार पढ़कर आप आजीवन न भूल सकेंगे।

मूल्य सादी १) सजिल्द १।।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

साहित्य-जगत् में अब तक जिसकी प्रतीक्षा थी, वही ग्रंथ तैयार है !!

बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा हुआ

हिंदी-साहित्य का इतिहास

(लेखक—'मिश्रबंधु')

याद रखिए ! साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा, 'मिश्रबंधु' ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं, हिंदी-भाषा में ऐसी प्रामाणिक पुस्तक आपको सुलभ है।

शीघ्र मँगाइए।

पृष्ठ-संख्या लगभग ४००

मूल्य १।।) सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार तो फिर नए रूप में !

हाँ – यह तो – यह तो है –

संगम

गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम से भी अनूठा !
"सं भावनाओं के संगम का विचित्र चित्र !
मानव-हृदय की दुर्बलताओं का प्रतिबिंब !
सरस, सुरुचि-पूर्ण, मौलिक, रोमांचकारी उपन्यास
ग
म"

संगम

हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कलाकार
श्रीयुत वृंदावनलाल वर्मा
जिनके 'गढ़-कुंडार' और 'कुंडलीचक्र'
आदि उपन्यास साहित्य-जगत् में
एक असाधारण हलचल मचा चुके हैं,
उन्हीं की यह सबसे नई, भावमयी, अनूठी कृति
'संगम' आज छपकर तैयार है ! आज ही मँगाएँ !

मूल्य २)   सजिल्द २।।)

कविता !

हाँ—जीवन का वह सत्य, जिसे जड़-चेतन की अनुभूति से व्यापकता मिली !

आपका जीवन भी एक कविता है !

हृदय के कोमल तारों से प्रतिध्वनित संगीत !
आत्मानुभूति का सजीव चित्रण !
कल्पना की गति का शब्द-चित्र !

आज ही पढ़िए !   अभी मँगाइए !!   प्रकाशित हो गया !!!

इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ सरस सामयिक भावमय काव्य-संग्रह

* म क रं द *

[लेखिका—स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी']

सर्वथा नवीन ! हृदय-स्पर्शी ! सजीव ! सुबोध ! लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ !
हिंदी-साहित्य में स्वर्गीया श्रीमती 'चकोरी' की कविताओं को कितना ऊँचा स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह भी 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोकप्रिय बनेगा, खड़ी बोली में ऐसी सुंदर कविता-पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित ही नहीं हुई, अवश्य मँगाइए !

सादी ॥=)   सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी पार्वती

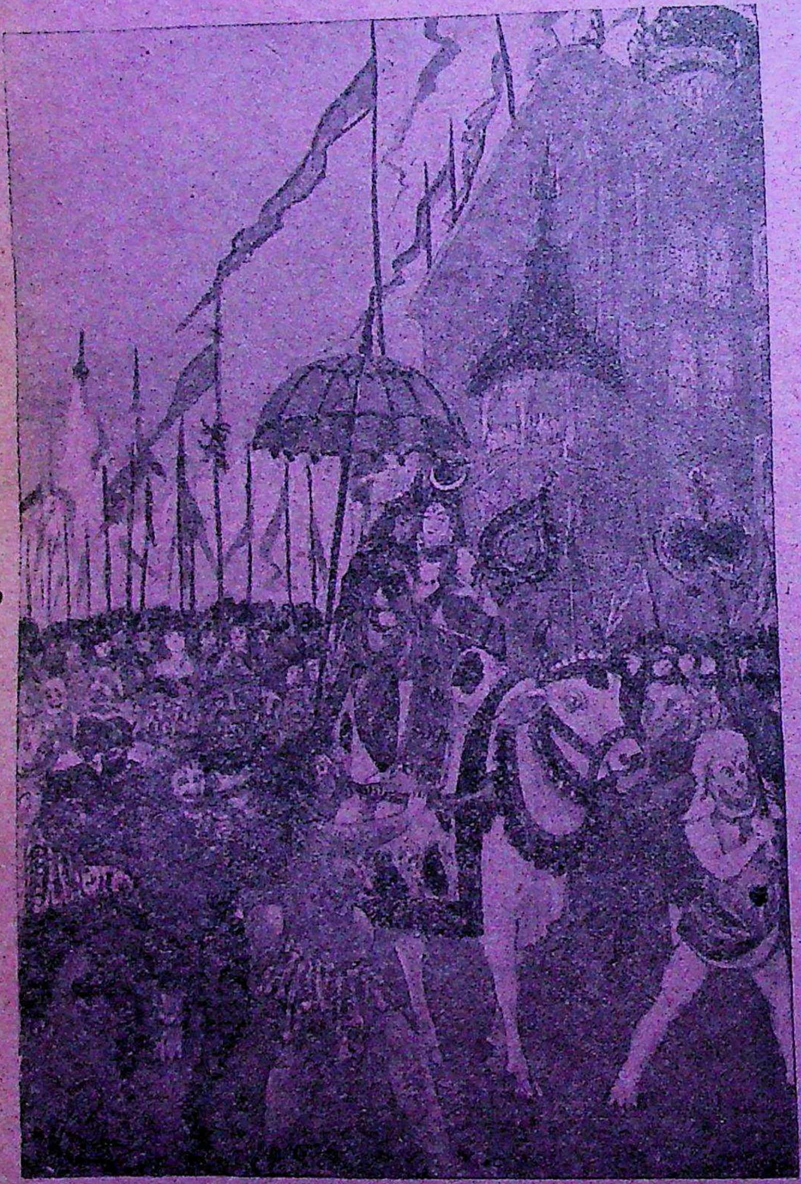

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी जहूरबख़्श हिंदी-कोविद। इसमें जगज्जननी देवी पार्वती का जन्म, विवाह-संबंधी नारद की भविष्य-वाणी, पार्वतीजी की तपस्या, शिवजी की आराधना, शिवजी का प्रसन्न होना, उनका विवाह, पार्वतीजी का हठात् अपने मैके जाना, वहाँ उनका अनादर, स्वामिकार्त्तिक का जन्म, ताड़कासुर-वध आदि सभी एक-से-एक रोचक, ज्ञातव्य और मनोरंजक बातें बड़ी सुंदर, सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई हैं। अनेक रंगीन और सादे चित्रों ने तो इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है। पृष्ठ-संख्या १५०; मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रांजलि

(चतुर्थावृत्ति)

स्त्री-पाठ्य पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक श्रीसतीशचंद्र चक्रवर्ती के बँगला 'स्वामी-स्त्रीर पत्र' का हिंदी-रूपांतर। इसकी रचना पंडित कात्यायनीदत्त त्रिवेदी ने की है। वंगभाषा में इसके कई संस्करण हो चुके हैं। हमारी राय है कि प्रत्येक पढ़ी-लिखी, नव-विवाहिता स्त्री इस पुस्तक को अवश्य पढ़े, और इसके अमृतमय उपदेशों से लाभ उठावे। पति-पत्नी को पत्र लिखने के लिये पथ-प्रदर्शक। बहू-बेटियों को विवाह के अवसर पर उपहार देने योग्य। पृष्ठ-संख्या ६०। मूल्य ।-), जिल्ददार ।≥)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* हिंदी-उपन्यासों का शिरोमणि *

द्वितीय आवृत्ति

बहता हुआ फूल

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

बंग-भाषा के लेखकों में श्रीयुत बाबू चारुचंद्र बंद्योपाध्याय बी० ए० का नाम ख़ूब प्रसिद्ध है। आपने बँगला में कई उच्च श्रेणी के उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास उन्हीं के 'स्रोतेर फूल' नाम के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का हिंदी-अनुवाद है। चरित्र-चित्रण जिस सुंदरता के साथ किया गया है, उसे देखकर आप मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकेंगे। अनुवाद साधारण बोलचाल की भाषा में किया गया है, अतः सर्व-साधारण इसे बिना कष्ट के समझ सकते हैं। बँगला-मुहाविरों को शुद्ध हिंदी-भावों में परिणत करने में जो कमाल दिखलाया गया है, सोने में सुगंध का काम हो गया है। इसका पहला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। अनेक तिरंगे चित्रों से सुसज्जित लगभग ४०० पृष्ठ के बड़े पोथे का मूल्य केवल २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता--गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[बदस्त अवाम फरोख्त के लिये

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रान्त

ब अदालत पं० ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकंड ग्रेड जौनपुर

मु० नं० ३६ सन् ३७ तारीख़ मुक़र्र: १७-५-३९

हरगाह जगन्नाथसिंह खुद व वली रामप्रसादसिंह नाबालिग़ बादर साकिन हक़ीक़ी व केदारनाथसिंह साकियान मौ० अमोध प० उगली जौनपुर सायलान की ओर से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूजा पेश की हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्यौरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या हक़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो तो से जो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रान्त के गज़ट में छपने की तारीख़ से तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

कर्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर वर्दो॰ बस्त व मोहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तकिल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ीयत का ब्यारा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवालेकी हक़ियत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर प० गडवारा	ज़मींदारी	-)४ मौ० अमोध	मय सीर व सायर वग़ैरह कुलहुम हक़ूक़ ज़मींदारी	-)४ पाई	कुल मालगुज़ारी १६ आना पर २७५) है

ज़मीमा (ख)

कर्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १९०८ ई० कुर्क और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की किस्म	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ियत की वसीअत (विस्तार)
	रेहननामा भोग बंधक नविश्ता बल्देवसिंह तादादी ५००) मौसूमा जगन्नाथसिंह मोवीरख़ा ९-२-११में निस्फ़ हिस्सा सायलान	१०६/-४ १२१/-६० १२२/-३२ १२३/-३२ ४ गाटा/१-२८ में निस्फ़; १०७/-२६ ११०/-३७ २ गाटा/-९६ में १ख़रह/४ मुश्तहपत } मौज़ा शाहपुर प० मुंगरा ज़ि० जौनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२	असल रेहननामा भोग बंधक नविश्ता हरनरायनसिंह मौसूमा जगन्नाथसिंह तादादी २००) मुवीरखा २७-६-१६११ में निस्फ हिस्सा	५४६/-४४ ४५१/३५१४ ३३०३/-१ ३३०८/-१६ ३३१६/-२२ ३३७६/-७५ ३३८०/--२ ३३९०/१२ ३३६१/२/—३ ३४१८/१६ ३४२८/११ ३४३०/—६ ३४३१/२४ ३४३५/२३ १४ गाटा/२-७४ में १/४ हिस्सा शरह मुअइयन १६६०/-८६ २००५/-८२ २००६/-६७ २००८/७ ४ गाटा/२-४२ में १/४ हिस्सा खाता न० १८ १२२/-८ ३१७/-१ १२ गाटा/३--१६ में १/१२ हिस्सा १७१३/-५७ में १/१२ हिस्सा शरह मुअयन खाता न० २४ १०११/-४८ १२ गाटा/५--४ में १/१२ हिस्सा शरह मुअइयन खाता न० २५ -७ गाटा/२--१५ में १/१२ हिस्सा खाता नं० २६ ४ गाटा/—५८ में १/१२ हिस्सा खाता नं० २७ १२४/-१३ में १/१२ हि० खाता नं० २६ २ गाटा/—८७ में १/४ हिस्सा खाता नं० ३२ २३ गाटा/३-६८ में १/१२ हिस्सा खाता नं० ३४ ६ गाटा/२—३७ में १/४ हिस्सा खाता नं० ५० ३ गाटा/—६८ में १/४ हिस्सा खाता नं० ५२ १६९२/२१ में १/४ हिस्सा खाता नं० २२६ ३ गाटा/१—२७ में १/१२ हिस्सा बाग़ खाता नं० २ गाटा/—४६ में १/४ हिस्सा खाता नं० १४ ४ गाटा/१—४ में १/४ हिस्सा खाता नं० ८ बशदिरा २१ गाटा/४—७७ में १/१२ हिस्सा खाता नं० १० ७४६/२/२३ ७४८/५० १५६१/१/-५० ३ गाटा/१—२३ में १/४ हिस्सा खाता न० १२ २ गाटा/१-१८ में १/४ हिस्सा खाता न० १७ ४ गाटा/—८५ में १/४ हिस्सा खाता न० १८ २ गाटा/—७६ में १/४ हिस्सा खाता न० १६ १० गाटा/१—८८ में १/१२ हिस्सा खाता न० ६४ १ गाटा/—१५ बाग़ खाता न० १८ ७ गाटा/३—३५ में १/४ हिस्सा शरह मुअइयन मौज़ा रामनाथपुर परगना मुगरा ज़िला जौनपुर ।

मु'सरिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन तीनो बातों में

१ खर्च की औसत
२ मृत्यु-संख्या
३ ब्याज की दर

जिन पर
बीमा-कंपनियों की उन्नति निर्भर है।

स्वदेशी भारत की सभी कंपनियों से आगे है।

कहने को तो सभी कंपनियाँ यही बात कहेंगी
पर
आँकड़ों का मुक़ाबिला करने पर स्वदेशी ही आगे मिलेगी।
क्यों ?

इसलिये कि १—इसका खर्च का औसत दिन-पर-दिन घट रहा है।
२—मृत्यु-संख्या बहुत कम है।
३—ब्याज की औसत सबसे ज़्यादा है।

अतएव आप अपना बीमा स्वदेशी में ही कराइए।

स्वदेशी की एक नई योजना
घातक दुर्घटना-पालिसी

एक बार क़रीब २५) देकर १०००) का आजीवन बीमा कराइए !

एक व्यक्ति पाँच हज़ार रुपए तक का बीमा करा सकता है।

विशेष विवरण के लिये लिखिए—

श्रीचंद दोनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा-कंपनी लिमिटेड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. A. 1712
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं !

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

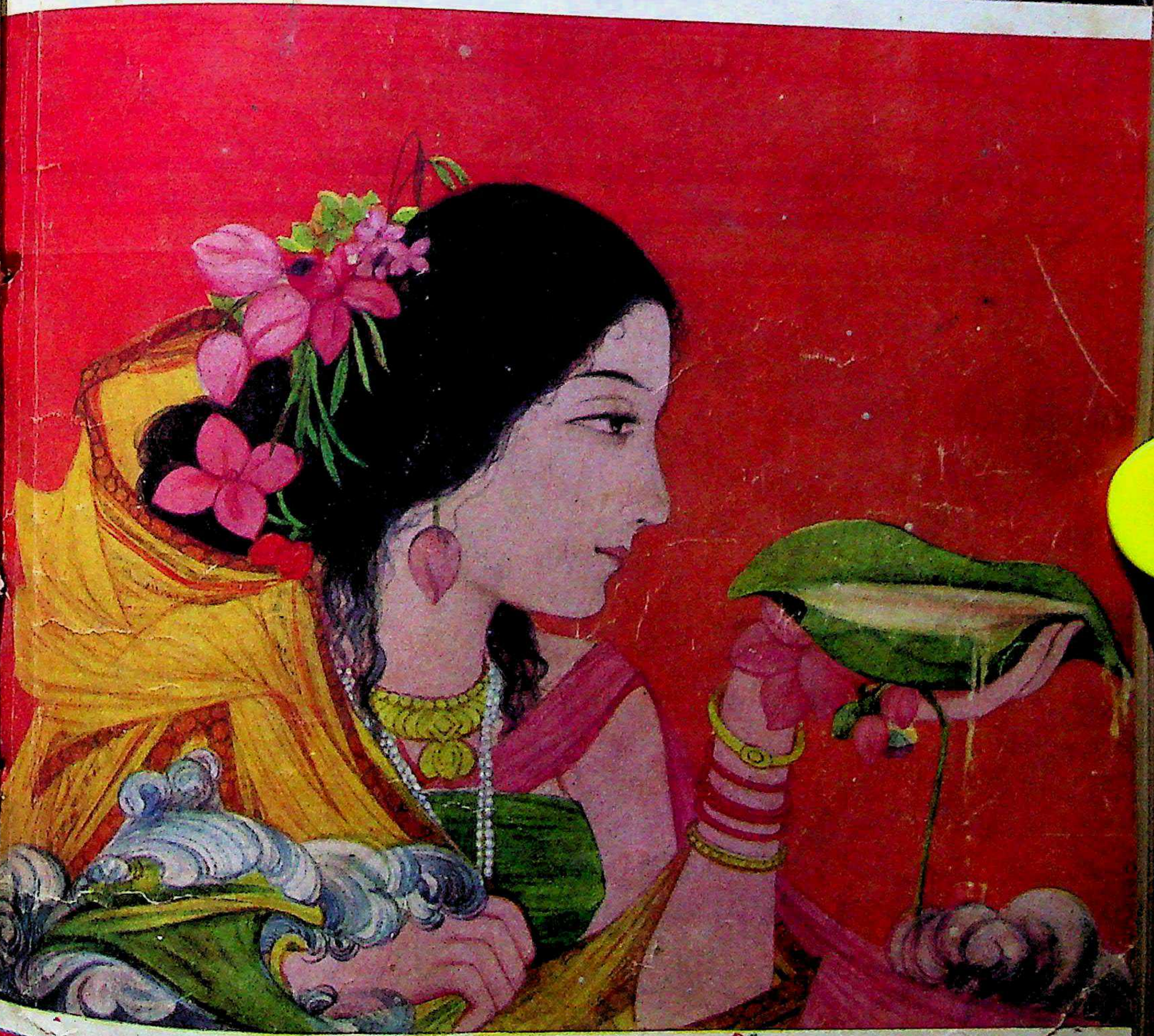

भागती करामातें देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें ।
वी० अर्जुनवार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया । कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें ।
मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में असंभव सम्भव कर दिखाया । एक यंत्र और देने की कृपा करें । इस बार आपको इनाम दूँगा
मि० ए० डी० एस० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे गया । कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें ।
मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

ज्येष्ठ १९९६

JUNE 1939

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का मनोजरंन करनेवाला

बाल-विनोद

जनवरी का अंक वसंतांक है !

मार्च का अंक होलिकांक है !!

अगस्त का अंक कविता-अंक होगा !!!

ग्राहक बनकर कोई एक विशेषांक मुफ़्त लें

इसमें क्या है ?—सुनिए—

१. मुख-पृष्ठ पर प्रतिमास नई नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति ।
२. प्रथम पृष्ठ पर २ दुरंगे तथा १ तिरंगा चित्र ।
३. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४० पृष्ठों का मैटर ।
४. मज़ेदार बालकोपयोगी कहानियाँ और शिक्षाप्रद हास्यरस की कविताएँ ।
५. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन ।
६. देश-विदेश की अनोखी बातें ।
७. २५ इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो उठेंगे ।

वार्षिक मूल्य २॥)

आप अपने बच्चों के लिये इसे अवश्य मँगाइए !

हमारा दावा है कि बच्चों के लिये ऐसा सुंदर और अनूठा पत्र और कोई नहीं है ।

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

द्वारा मुद्रित और प्रका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने का युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरबों-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, खुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजाइश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में खुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने खुद कहा है (देखो गीता, १६ २३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

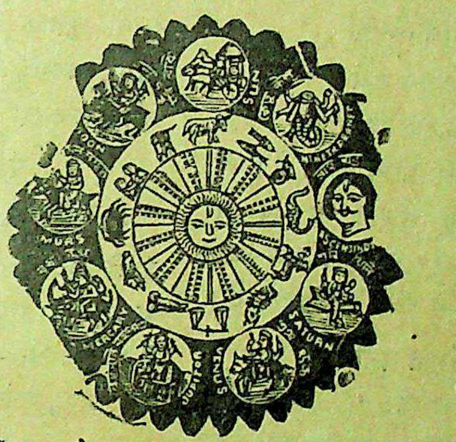

वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा व आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो –) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥–); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ को मँगावें, मूल्य ५॥=)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ३॥=)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत लिखा, इश्तहारबाज़ी में तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

बी० अर्जुनबार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इब्राहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत शक्तिशाली ६ रत्नें

[किसी भी ओषधि को बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम ! जिन्हें विश्वास न हो, ~) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें]

[१] श्वेत कुष्ठ की वनौषधि

महात्मा प्रदत्त इस सफ़ेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा । यदि सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा कर निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आराम होवें । मू० २)

[२] संतति-निग्रह

संतान-निग्रह की यह अचूक दवा है । दवा का व्यवहार बंद कर दें, गर्भ धारण हो जायगा । प्रति-मास तीन-चार दिन व्यवहार करना पड़ता है । वर्ष-भर की दवा का मू० २) । दूसरी दवा, जो जीवन-भर के लिये वंध्या बनाती है, मू० २) ; दोनो में किसी दवा का व्यवहार स्वास्थ्य में हानि नहीं करता है ।

[३] स्तंभक बटी

एक गोली शाम को खा लें, तो इसके अद्भुत चमत्कार को देखें । एक घंटे तक स्तंभन कर ग़ज़ब ढा देगी । मू० १६ गोलियाँ १)

[४] बहरापन-नाशक

यह कर्ण-रोग की अद्भुत दवा है, जो नया व पुराना-से-पुराना बहरापन, आवाज़ की कमी, पीब आना, कान का सन-सन आवाज़ आदि सदा के लिये आराम करता है । बहरा आदमी भी साफ़-साफ़ सुनने लगता है । मू० २)

[५] अर्श-नाशक

इस दवा से अंदरूनी, बाहरी, ख़ूनी, बादी, नई व पुरानी बवासीर जल्द आराम होती है । ख़ून गिरना, दर्द, जलन, खुजली, टीस, सूजन, जल्द आराम कर पाख़ाना साफ़ लाती है । मू० खाने की दवा ३), लगाने की १)

[६] उपदंश-नाशक

इस ओषधि से गुप्त इंद्रिय, बदन का ज़ख़्म, फुलना, जलन, पीब बहना, ख़ून आना, बदन के चकत्ते, धब्बे, गठिया को आराम कर नवजीवन प्रदान करता है । खाने की दवा मू० २), लगाने की १)

[७] सूज़ाक की दवा

यह अधमरे को नया जीवन प्रदान कर नई या पुरानी सूज़ाक (गनोरिया), कड़क, जलन, पीब बहना, फुलना, बूँद-बूँद पेशाब आना, दर्द को एक दिन में फ़ायदा करता है । मू० २)

[८] महासुगंधित काया-कल्प तेल

इस तेल के मालिश से बदन की बदबू दूर हो जाती है । इससे ७० वर्ष का बूढ़ा नौजवान, बलशाली, वीर्यवान्, स्त्रियों का प्यारा हो जाता है । बाँझ स्त्री को गर्भ रहता है । कोढ़ को नाशता है । कुरूप, कुढंगा भी सुंदर, सुडौल हो जाता है । १०० वर्ष की उम्र हो जाती है । मू० ३)

[९] विष-नाशक जड़ी

सिर्फ़ इसे दिखाने से ही भयानक-से-भयानक बिच्छू, बिरनी (हड्डा), मधुमक्खी का विष तुरंत आराम हो जाता है, न सुँघाना, न लगाना, न छुलाना, न खिलाना पड़ता, लाखों को आराम कीजिए । सैकड़ों वर्ष पड़ा रहे, गुण में ज़रा कमी नहीं आती । मू० १), जब तक इसके गुण को न देखा जाय, विश्वास नहीं होता ।

[१०] ख़िज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त्त लिखा लें । एकाध बाल पका हो, तो २); इससे अधिक पका हो, तो ३॥) या कुल पका हो, तो ५) का तेल मँगा लें ।

वैद्यराज अखिलकिशोर राम, नं० ४६, पों० कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह ३८७

२. विपिन-वैभव (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३८८

३. भट्टाधिपति रामसिंह बघेला (इतिहास)—[लेखक, श्रीयुत ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ३८९

४. अमर गीत (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए० ... ... ३९९

५. वनस्थली (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र 'माधव' एम्० ए० ४०६

६. नामों से उत्पन्न शब्द—[लेखक, श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह, भूतपूर्व मंत्री युक्तप्रांत ४१७

बल व वीर्य बढ़ानेवाली

मदनमंजरी

ये गोलियाँ पाचन-शक्ति को सुधारकर दस्त साफ़ लाती हैं, रक्त को शुद्ध करके बढ़ाती हैं, और धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, अशक्ति, शिथिलता वग़ैरह को नष्ट करके बरबाद जीवन को पुनः हरा-भरा बना देती हैं। क़ी डि० १) एक रुपया

राजवैद्य नारायणजी-केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

नऊ—निगम-मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-रोड फ़तेहगंज

बनारस—राधेलाल एंड संस, चौक

पे लि के न **Pelican**

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थैली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोली जा

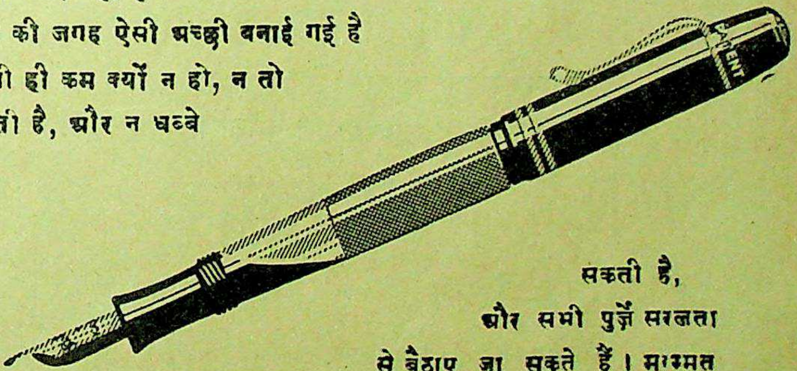

सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है। कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है। साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है। स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है—

गौथेर वागनेर हानोवर

Pelican सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है। पारदर्शक

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. क्षोभ (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'हृदय' एम्० ए० ... ... पृष्ठ ४२६
८. देशी राज्यों में राजनीतिक आंदोलन—[लेखक, श्रीपं० रामविलासजी शर्मा एम्० ए० ... ... ४२७
९. महादेवी वर्मा की काव्य-साधना (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत श्याम-नारायण बैजल एम्० ए० ... ... ४३३
१०. सरला की भूल (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत रामशरण शर्मा ४४०
११. चीन के विद्यार्थी और उनकी राष्ट्र-सेवा—[लेखिका, कुमारी कपिला खांड-वाला एम्० ए० ... ... ४४३
१२. कृषक-बालिके! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ... ४४६
१३. नम्र निषेध (कविता)—[लेखक, पुरोहित श्रीप्रतापनारायण कविरत्न ... ४५०

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

*** वैद्यों का सच्चा सहायक ***

सुप्रसिद्ध चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक मथुरा के—

बाबू हरिदासजी वैद्य

द्वारा संपादित; वात-रोगों से दुःखी जनता को जीवन-दान देनेवाला—

वात-रोगांक

पृष्ठ-संख्या ३२०, सजिल्द मूल्य २)

'धन्वंतरि' आयुर्वेद का सबसे सस्ता, सबसे बढ़िया, सचित्र मासिक पत्र है। इस वर्ष हज़ारों रुपया व्यय कर यह 'वात-रोगांक' विशेषांक निकाला है। इसमें वात-रोगों पर भारत के प्रसिद्ध २६७ वैद्य-डॉक्टरों की कभी बेकार न जानेवाली चिकित्सा और हज़ारों नुसख़े दिए हैं। बाबू हरिदासजी का एक लंबा और अनुभव-पूर्ण लेख है। चित्रों की तो भरमार है।

३≡) मनीऑर्डर

द्वारा धन्वंतरि का वार्षिक चंदा भेजने से 'वात-रोगांक' मुफ़्त मिलेगा, और साल-भर तक प्रति मास ७२-७२ पृष्ठ का सचित्र धन्वंतरि भेजा जायगा। नमूना मुफ़्त मँगावें।

पता—'धन्वंतरि', विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१४. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत अंबिकेश शर्मा 'कुंतल' बी० ए०, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीयुत वेदांताचार्य महेशानंद, कुँवर हरिश्चंद्रदेव 'चातक' कविरत्न और श्रीयुत परमेश्वरलाल जैन 'सुमन' ... ४५१

१५. गाँव—[लेखक, श्रीयुत कैलासनारायण माथुर एम्० ए० ... ... ४५६

१६. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०, श्रीयुत 'उमेश', और श्रीयुत 'ग' ४६१

१७. परिवर्तन (कविता) —[लेखक, श्रीयुत कविवर आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव ... ४६४

१८. कुसुम ४६५

१९. धारा ४६६

पागलपन

तथा मूर्छा-रोग की दवा

यह दवा नहीं; जंगली जड़ी है। यदि आप अनेकों दवा कराकर निराश हो चुके हैं, तो भी इसकी परीक्षा करें। ८-१० खूराक से पूरा लाभ मालूम होगा। बेफायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस।

खूराक पूरी मात्रा मू० ५) रु०, २० मात्रा ३) रु०, १० मात्रा २) रु०। पो० पै० माफ़।

प्राप्ति-स्थान—

बिहार-एजेंसी ऐंड ट्रेडिंग हाउस

कदमकुआँ, पटना

१० घड़ियाँ सिर्फ़ ३॥ ≈) में

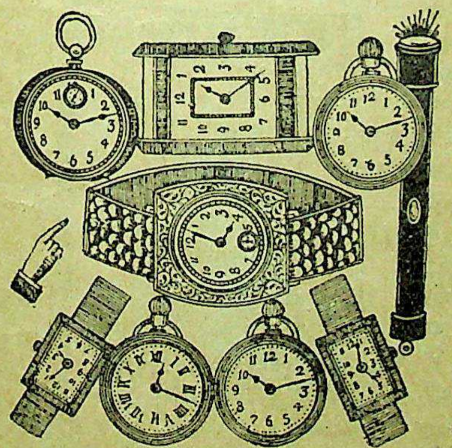

सात डमी रिस्टवाच, दो डमी पाकिट वाच और एक अदद मजबूत मशीनरी का सच्चा वक्त देनेवाला जर्मनी टाइमपीस चाबी ३० घंटा, गारंटी १० साल, ये घड़ियाँ हमने खास तौर पर विलायत से बड़ी भारी संख्या में मँगवाई हैं। सिर्फ़ दस हज़ार घड़ियाँ इस रियायती क़ीमत पर बेचने का फ़ैसला किया है। इसलिये जल्दी करें, वरना यह मौक़ा हाथ से निकल जायगा। घड़ियों के साथ एक फ़ौंटेनपेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब, एक असली ठंडी ऐनक, एक खूबसूरत मोतियों का हार मुफ़्त दिया जायगा। महसूल-डाक व पैकिंग अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस।

मिलने का पता—

जर्मन वाच कंपनी, पोस्ट-बक्स नं० २७, (S. M. L.) अमृतसर

AMRITSAR (India)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. सरस्वती और लक्ष्मी ... ३८७

२. वीर बाला ... ४२६

(ख) सादे

३.-११. वनस्थली-संबंधी ९ चित्र ... ४०८-४१६

१२. महात्मा गांधी ४७१

१३. स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ... ४७६

बच्चेवालो !

बालकों को दाँत निकलने के समय हर कष्ट से बचाकर आरोग्य रखने के लिये

बालदंत (रजिस्टर्ड)

का सेवन कराओ। १६ वर्ष का परीक्षित है।

मूल्य बड़ी शीशी १) —छोटी शीशी ॥)

डाक-महसूल—तीन शीशी तक ॥)

डॉक्टर आर० एस० गुप्त

विष्णुपुरी (२), अलीगढ़

आवश्यकता है—स्त्री और पुरुष दोनो मिलाकर ८० उम्मेदवारों की। उन्हें फ़िल्म-लाइन में २ वर्ष तक की ट्रेनिंग अच्छे वेतन पर कंपनी के फ़िल्म कॉलेज में दी जायगी। होस्टल में रहने के लिये स्थान मुफ़्त तथा और सभी सुविधाएँ दी जायँगी। सचित्र, सुंदर नियमावली।-) के टिकिट भेजकर फ़ौरन् मँगाइए।

प्रभात-मोविटन-कॉलेज, बंबई ११.

नपुंसकता के लिए जर्मनी क्रीम

यह उन पुरुषों के लये है जो किसी वजह से अपना यौवन खो चुके हों और अपने विवाहित जीवन का जी भर कर आनन्द उठाना चाहते हों, तो वे इस क्रीम का सेवन करें। इसके सेवन से आवश्यक समय पर भी शरमिन्दा होने का समय नहीं आयेगा। एक बार अवश्य प्रयोग में लाऐं। मूल्य केवल २) दो रुपया।

स्त्रियों के लिए जर्मनी क्रीम—यह क्रीम उन स्त्रियों के लिये आवश्यक है जो किसी भयानक बीमारी की वजह से अपने विवाहित जीवन को आनन्दित न बना सकती हों, जिनके लिये गृहस्थ का जीवन दुखमय हो, जिनके अपने स्वामी के साथ सदैव लड़ाई झगड़े होते हों। बस इस क्रीम को एक सप्ताह सेवन करें। इसके सेवन से बूढ़ी से बूढ़ी स्त्री भी युवती के समान मालूम होगी। मूल्य १)

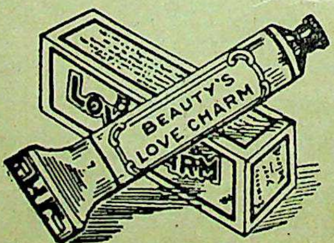

गर्भ निरोधक रबड़ की थैली—अधिक संतान से बचें, आपनी प्यारी स्त्री को शीघ्र ही कुरूप और वृद्ध न होने के लिये इन थैलियों का सेवन करें। आतशक और सुजाक आदि भयानक बीमारियों से आपकी पूरी तरह रक्षा करेंगी।

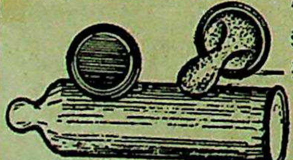

पतली रबड़ की थैली—जो केवल एक बार ही सेवन हो सके मूल्य १) रु० प्रति दर्जन।

मोटी रबड़ की थैली—जो कई बार सेवन हो सके और भारतवर्ष की गर्मी में पांच वर्ष तक खराब न हो। मूल्य केवल २॥) प्रति दर्जन।

कामा को०, : : : लाहौर रोड. : : : अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिदायक सिद्ध यंत्र—जिस सुंदरी को आप चाहते हैं, वह पत्थरहृदया क्यों न हो, इस शक्तिशाली यंत्र द्वारा एक क्षण में आपके पास आ जायगी। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबा २)

लक्ष्मी-यंत्र—यह व्यवसाय में उन्नति, मुक़दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में पास, नवग्रहों की शांति और सौभाग्यवान् बनाता है। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबे का २)। झूठा साबित करने पर ५५०) इनाम!

श्रीमहामुनि-आश्रम नं० २१०, पोस्ट कतरीसराय (गया)

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ासफ़ोरस क्रीम

गुह्यांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख़्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है। ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है। न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का ख़याल। अधिक प्रशंसा व्यर्थ। यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी। मूल्य केवल २); डाक-महसूल ।=)

पता——मैनेजर ग्लोब-फ़ार्मेसी, ग्लोब-बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों-सहित

द्वितीय बार छपकर तैयार है

यदि आप बिना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है, यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा-लाटरी वग़ैरह से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों, तो आज ही एक प्रति हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान बिना किसी गुरु की मदद के आपको भले प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य, देशीय समग्र सामुद्रिक शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में, रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित, भले प्रकार वर्णित है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी न छपी होने से धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करो, पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रही हैं, फिर हाथ न आवेंगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करना पड़ेगा; मूल्य सिर्फ़ ४।) रुपए हैं। डाक-महसूल ॥)। अलग है।

पता —मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी-प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम [सी० आई०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारककम्पनीमथुराकी
दवाइयां
सुधासिन्धु
कफ,खांसी,हैज़ा,दमा,शूल,संग्रहणी
अतिसार आदि की स्वादिष्ट सुगंधित दवा
की० ॥)
दद्रुगजकेसरी
दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)
बालसुधा
दुबले,और कमजोर बच्चोंको ताक़त
वर बनानेवाली मीठी दवा. की० ॥)
सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

हज़ारों निकम्मों को जवाँमर्द बनानेवाला
मदनमस्त-तिला (रजिस्टर्ड)
युवावस्था की भूलों के कारण उत्पन्न होनेवाली गुप्तेंद्रिय की सुस्ती, ढीलापन, नसों की हीनता तथा बाँकापन को दूर कर इंद्रिय को दृढ़ बनाता है। परीक्षा अवश्य कीजिए। मूल्य बड़ी शीशी २), छोटी शीशी १); डाक-खर्च अलग। 'जीवन-सुधार'-नामक पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।
पता—गो० पं० रामलाल वैद्यशास्त्री
जबलपुर (सी० पी०)

जर्मन पिस्तौल
इसकी सूरत बड़ी भयानक है और इसकी गरजती हुई आवाज़ से बड़े-से-बड़ा बदमाश भाग जाता है।
लाइसेंस की जरूरत नहीं
असली के मानिंद आवाज़ करता है। १० शाट्स सिलसिलेवार जल्दी-जल्दी होते हैं। क़ीमत मय-शाट्स के ३) सिर्फ़, डाक-ख़र्च अलग, अतिरिक्त शाट्स १) में १००
सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स—
मार्शल ब्रादर्स
बच्छोवाली लाहौर

आपका भाग्य
आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको ११) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।
एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।
किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर ११) में। डाक-व्यय पृथक।
नोट—हमारे पास सहस्त्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेक़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।
मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य

राजसंस्करण १२)
साधारण संस्करण ६)
सस्ता संस्करण ४)

प्रकाशक—
गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १२ खंड २ | ज्येष्ठ, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)— जून, १९३९ | संख्या ५ पूर्ण संख्या १५५

गीत

[श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह]

हरो मेरी अमा !
हँसो जीवन-गगन की
सुखद चंद्रमा !
मैं विरह में तिमिर - लीन अहरह रहा,
दूर तुम दूर, सब व्यर्थ यौवन बहा,
अब न यह निठुर उर-ताप जाता सहा,
खुलो, प्रिय, खुलो, दुख-दोष कर दो क्षमा !

स्वप्न में ज्योति की किरण शुचि जो मिली,
पा उसे हृदय की कुमुद-कलिका खुली,
नित्य नव तव प्रणय के अमृत से धुली—
किरण-धन, अब करो मिलन की पूर्णिमा !
हरो मेरी अमा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिन-वैभव

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

है कौन विलसता सब दिन
परिधान हरिततम पहने ?
हैं सबसे सुंदर किसके
कमनीय कुसुम के गहने ?१॥

हरिताभ मंजुतम अनुपम
है किसका अंक निराला ?
है पड़ी कंठ में किसके
मरकत - मणि - मंजुल माला ?२॥

इतना अनुरंजित ऊषा
कब किसको है कर पाती ?
इतनी मुक्ता - मालाएँ
रजनी है किसे पिन्हाती ?३॥

बहु प्रभावान प्रतिवासर
है किसे प्रभात बनाता ?
किसको दिनमणि निज कर से
है स्वर्ण - मुकुट पहनाता ?४॥

हैं किसे ललिततम करतीं
हिल-हिल अनंत लतिकाएँ ?
किसमें विलसित रहती हैं
खिल-खिल अगणित कलिकाएँ ?५॥

लेकर विहंगमों का दल
है गीत मनोहर गाता ;
निज कोटि - कोटि कंठों से
है कलरव कौन सुनाता ?६॥

वारिधि - समान संचालित
किसको समीर है करता ?
किसके सौरभ को ले - ले
वह है दिगंत में भरता ?७॥

कर लाभ सुमनता किसकी
हैं सरस सुमन से भरते ?
लेकर असंख्य तरु फल-दल
किसका पूजन हैं करते ?८॥

नित प्रकृति की छटा किसमें
नर्तन करती मिलती है ?
मधु की मधुता किसको पा
छगुनी छवि से खिलती है ?९॥

नयनाभिराम बहु मोहक,
आमोदक , परम मनोरम,
वसुधा में कौन दिखाया
वन के समान मंजुलतम ?१०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भट्टाधिपति रामसिंह बघेला

[श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

रीवाँ-नरेश महाराज रघुराजसिंह ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'आनंदांबुनिधि' में अपने वंश का परिचय एक कवित्त तथा तीन दोहों में इस प्रकार दिया है—

वीरध्वज, व्याघ्रदेव, करन, सोहागदेव,
संगरामसिंह औ' विलासदेव जानिए ;
भीमल, अनीकदेव, बलदेव, दलकेंद्र,
मलकेश, बुल्लार, बरियार भानिए।
सिंहदेव, भैरोदेव, नरहरि, भयददेव ,
त्यों शालिवाहन, वीरसिंहदेव गानिए ;
वीरभानु, रामसिंह, वीरभद्र, विक्रमजू ,
अमर, अनूप, भावसिंह को बखानिए।
भावसिंह महराज के अनिरुधसिंह सुजान ;
श्रीअनिरुध महराज के श्रीअवधूत महान।
महाराज अवधूत के श्रीअजीत बलवान ;
श्रीअजीत महराज के श्रीजयसिंह सुजान।
महाराज जयसिंह के धर्म-ज्ञान-यश-धाम ;
महाराज नृप-मुकुटमणि विश्वनाथ प्रदकाम।

गुजरात के अग्निवंशांतर्गत सुविख्यात चालुक्य अर्थात् सोलंकी-वंश की एक शाखा अलग होकर उत्तर-भारत चली आई, और जेजक भुक्ति के एक दुर्ग मुरफागढ़ पर अधिकार कर वहीं बस गई थी। इस वंश के प्राचीन शिला-लेखों तथा ताम्र-पत्रों में इन्हें चंद्र या सोमवंशी लिखा है, पर इस वंशवाले अपने को अग्निवंशीय बतलाते हैं। 'पृथ्वीराज-रायसा' तथा अन्य कई ग्रंथों में एक आख्यान है कि आबू-पर्वत पर यज्ञ करते समय अग्नि से चार वीर उत्पन्न हुए, जिनसे प्रमार (पँवार), प्रतीहार (परिहार), चाहुमान (चौहान) तथा चालुक्य (सोलंकी) शाखाएँ फैलीं। इसी कारण ये अग्नि-कुल के माने गए *। इस आख्यान से यह अवश्य ज्ञात होता है कि इन चारो शाखाओं में संबंध है, और इनका आरंभ राजस्थान ही से है। मि० क्रुक लिखते हैं—"दक्षिण-राजपूताने में अग्नि से ये शुद्ध किए गए, जिससे इन विदेशियों की अशुद्धता परिमार्जित हो गई, और ये हिंदू-वर्ण-व्यवस्था के अंतर्गत आने योग्य हो गए †।

तात्पर्य यह कि अभी इस विषय में मतभेद है, पर इतना अवश्य निश्चय है कि इस वंशवाले गुजरात से आए, और यहाँ आकर बघेला कहलाए। इस नामकरण के भी दो कारण बतलाए जाते हैं— पहला यह कि यह शाखा बघेला-ग्राम से इस प्रांत में आई थी, इस कारण बघेला कहलाई, और दूसरा यह कि व्याघ्रदेव के वंश में होने से ये व्याघ्रेला या बघेला कहलाए। पर इन दो में से पहला ही शुद्ध ज्ञात होता है, क्योंकि पाटण के सोलंकी भी बघेला कहलाते थे, अर्थात् जेजक भुक्ति में आने के पहले भी ये इस नाम से पुकारे जाते थे। नैणसी ने निम्न-लिखित एक प्राचीन छप्पय अपनी ख्यात में उद्धृत की है—

गूजर धर भोगवी, बरस बीसल अठ्ठारह ;
अजैदेव इकतीस कोट पाटण उद्धारह।
बीरमदे तेंतीस संब बाघेला मंडण ;
बीस बरस लहुकयन बिढ़े बैरियाँ विहंडण।

* सोलंकियों का प्राचीन इतिहास—गौरीशंकर हीराचंद ओझा-कृत, भाग १, पृष्ठ ३—१३ और मूतानैणसी की ख्यात भाग २, प्रकरण तीसरा।

† जर्नल रॉयल एथ्नोलॉजी इंस्टीट्यूट १६११ ई०, पृष्ठ ४२ 'राजपूत तथा मराठा'-शीर्षक लेख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवराज प्रतापियो चत्रबरस वदां साख बंसावली;
बाघेलराज अणहल नगर बरस सत्तछव आगली।

इससे ज्ञात होता है कि अणहिल पाटण में बीसलदेव ने १८, अजयदेव ने ३१, बीरमदेव ने ३३, कर्ण ने २० और देवराज ने ४ वर्ष राज्य किया, अर्थात् एक सौ छ वर्ष बघेलों का वहाँ राज्य रहा। इसके अनंतर, सन् १३४० में, मुसलमानों का राज्य हो गया। इसी समय बहुत-से बघेले क्षत्रिय वहाँ से भागकर जुझौती में चले आए, जहाँ इनके भाई-बंद पहले ही आ बसे थे।

जिस समय राजा वीरध्वज के पुत्र व्याघ्रदेव इस प्रांत में आए, उस समय जेजक भुक्ति में चंदेलों की प्रमुखता थी, और चेदि-प्रांत में कलचुरि या हैहयों के दो राज्य स्थापित हो चुके थे। इन्होंने कालिंजर-दुर्ग से नौ कोस पूर्व-उत्तर मुरफा-दुर्ग पर अधिकार कर लिया, और वहीं बस गए। इस घटना का समय बघेले सं० ६३७ वि० बतलाते और वीरध्वज को सिद्धराज सोलंकी का पुत्र मानते हैं। पर वह संवत् अशुद्ध है। पाटण गुजरात पर मूलराज सोलंकी का अधिकार सं० १०१७ में हुआ था। इसकी छठी पीढ़ी में सिद्धराज हुआ, जिसने उंचास वर्ष राज्य किया। इसके पौत्र भीमदेव की मृत्यु पर सं० १२३३ के लगभग बघेलों का वहाँ अधिकार हो गया था।

चेदि के हैहय या कलचुरि-वंश के नरेशों का इतिहास देखने से ज्ञात होता है कि ग्यारहवीं विक्रम-शताब्दि के पूर्वार्द्ध में राजा कर्ण ने कालिंजर के राजा कीर्तिवर्मा चंदेला को परास्त कर उस राज्य पर अधिकार कर लिया, पर बाद को वह राज्य उसके हाथ से निकल गया। यही कर्ण डाहरिया कहलाता था, क्योंकि वह चेदि-प्रांत के पश्चिमीय भाग अर्थात् डाहलमंडल का राजा था। कर्ण के प्रपौत्र, जयसिंहदेव के पौत्र अजयसिंहदेव तक के शिलालेख आदि मिलते हैं, पर इसके बाद के नहीं मिलते। सं० १२६८ में या इसी के बाद बघेलों ने डाहल में अपना आधिपत्य जमा लिया, और उसका नाम बघेलखंड पड़ गया।

व्याघ्रदेव ने सं० १२५७ के आस-पास मुरफागढ़ पर अधिकार किया होगा, जो कालिंजर से नौ कोस पूर्व और उत्तर की ओर है। यहीं इन्होंने पिरहवन के राजा की पुत्री से विवाह किया, और धीरे-धीरे अपना राज्य बढ़ाते रहे। इनके पुत्र कर्णदेव हुए, जिनका विवाह मंडल के हैहयवंशी राजा की पुत्री से हुआ, और बांधवगढ़ इन्हें दहेज़ में मिला। दास सुलतान क़ुतुबुद्दीन ऐबक ने, सं० १२६० में, कालिंजर पर अधिकार कर लिया था, जिससे चंदेलों ने पूर्व की ओर बढ़कर बघेलों से मुरफागढ़ आदि छीन लिया। बघेले भी इस पर पूर्व की ओर बढ़े, और हैहयों के राज्य में आ बसे, जो निर्बल हो रहे थे। कर्ण ने बांधवगढ़ मिलने पर उसे अपनी राजधानी बनाया, और सोहागपुर आदि स्थानों पर अधिकार कर बघेलखंड राज्य स्थापित किया।

इसके अनंतर प्रायः दो शताब्दि तक इस वंशवाले इसी बघेलखंड में, जो फ़ारसी तवारीख़ों में विशेषतः भट्टा*-प्रांत ही के नाम से लिखा मिलता है, अपना राज्य दृढ़ करने में लगे रहे। वे इस योग्य न थे कि उत्तरापथ के इतिहास में अपना नाम करते तथा दिल्ली आदि के मुसलमान शासकों के राज्य-विस्तार में किसी प्रकार बाधक होते। साथ ही दिल्ली का मुसलमानी राज्य भी इतना दृढ़ न था कि दूरस्थित पर्वतीय प्रांत के इन राज्यों पर

* फ़ारसी-लिपि में लिखा होने के कारण अँगरेज़ इतिहासकारों ने इसके पढ़ने में बड़ी भूल की है। ठीक रूप छोड़कर इसे पट्टा, पन्ना, ठट्टा, पटना आदि पढ़कर भट्टा के नरेशों तथा उस प्रांत के स्थानों के नाम, सभी को अस्पष्ट कर दिया है। इस पर मेरा लेख हिंदुस्तानी पत्रिका (जुलाई, सन् १९३९) में देखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार करने का प्रयास करता। यही कारण है कि इस वंश की तेरह पीढ़ियों का, अर्थात् कर्ण के उत्तराधिकारी सोहागदेव से भयददेव के पूर्व के नरेश नरहरि तक का, कोई इतिवृत्त नहीं प्राप्त होता। भयददेव के समय दिल्ली के लोदी-वंश से और जौनपुर के शर्क़ी सुलतानों से युद्ध छिड़ा और तब से इस वंश का इतिहास शृंखलित रूप में मिलने लगा।

मुहम्मद तुग़लक़ ने, सं० १४४१ में, अपने वज़ीर ख़्वाजा जहाँ को मलिकुश्शर्क की पदवी देकर जौनपुर का प्रांताध्यक्ष नियत किया था। तैमूरलंग की चढ़ाई के बाद इसका धर्मपुत्र मुबारकशाह की पदवी से स्वतंत्र बन बैठा। एक वर्ष बाद ही, सं० १४५७ में, इसका भाई इब्राहीमशाह गद्दी पर बैठा, जिसने चालीस वर्ष राज्य किया। इसके अनंतर इसका पुत्र महमूदशाह जौनपुर का सुलतान हुआ। अब तक तैमूर के प्रतिनिधि बनकर सैयद ख़िज्र ख़ाँ तथा उसके वंशज दिल्ली में नाम-मात्र की सल्तनत जमाए हुए थे, और उनकी इतनी शक्ति थी कि वे दिल्ली के प्रभुत्व को आगे बढ़ावें। सं० १५०७ में अंतिम सैयद सुलतान अलाउद्दीन को हटाकर बहलोल लोदी दिल्ली का सुलतान बन गया, और उसने जौनपुर से युद्ध छेड़ा, तथा उसका अंत ही कर डाला। सं० १५३६ में दो युद्धों में परास्त होकर हुसेनशाह ग्वालियर के राजा की सहायता पाकर कालपी आया। यहाँ भी युद्ध होता रहा, पर अंत में दूसरे वर्ष यह भागकर भट्टा चला आया, जहाँ के राजा भयददेव ने धन तथा सेना से इसकी सहायता कर इसे पुनः सुरक्षित रूप से जौनपुर पहुँचा दिया। बहलोल यहाँ भी पहुँचा, और हुसेनशाह को परास्त कर जौनपुर पर अधिकार कर लिया। इसके बाद मुबारकख़ाँ लोहानी को यहाँ का सूबेदार नियत कर वह बदायूँ लौट गया। यह अवसर पाकर हुसेनशाह एक बार पुनः जौनपुर पर चढ़ आया; पर बहलोल द्वारा फिर परास्त होकर बिहार चला गया। बहलोल अपने पुत्र बर्बकशाह को जौनपुर की स्वतंत्र गद्दी देकर लौट गया, तथा सं० १५४५ में मर गया।

बहलोल का पुत्र निज़ामख़ाँ अमीरों की राय से सुलतान सिकंदर की पदवी से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इसने पहले ही वर्ष जौनपुर पर चढ़ाई की। क़न्नौज में बर्बकशाह परास्त होकर बदायूँ-दुर्ग में जा बैठा, पर उसे भी जब सिकंदर ने घेर लिया, तब यह उसकी शरण में चला गया। सिकंदर बर्बकशाह को साथ लेकर जौनपुर गया, और उसे वहाँ की गद्दी पर बिठाया। परंतु इसने वहाँ के कुल परगने अपने अमीरों को दे दिए, और अपने विश्वस्त आदमियों को बर्बकशाह के पास रखकर दिल्ली लौट गया। संवत् १५४६ (सन् ८६७ हि०) में जौनपुर के ज़मींदारों ने बछगोती राजपूत जुग्गा की अधीनता में विद्रोह कर दिया, और लगभग एक लाख सेना एकत्र कर मुबारकख़ाँ लोहानी को भगा दिया। इसका भाई शेरख़ाँ मारा गया, और यह भी झूसी पार करते समय मल्लूख़ाँ द्वारा पकड़ा गया, पर भट्टा-नरेश राय भयददेव ने उसे अपने अधिकार में ले लिया। बर्बकशाह भागकर मुहम्मदख़ाँ फ़र्माली (काला पहाड़) के पास दरियाबाद चला गया। सुलतान सिकंदर ने यह समाचार सुनकर, सं० १५५०-१ में फुर्ती से पहुँचकर विद्रोह शांत किया। विद्रोही हुसेनशाह शर्की की शरण में गए, पर वह भी परास्त होकर बिहार चला गया। इसी समय राजा भयददेव ने सशंकित होकर मुबारकख़ाँ को सिकंदर के पास भेज दिया। सिकंदर बर्बक को जौनपुर में छोड़कर अवध की ओर अहेर खेलने चला गया। इधर विद्रोहियों ने अवसर देखकर पुनः उपद्रव मचाया। इस पर सिकंदर ने अयोग्य बर्बक को बुलाकर क़ैद कर दिया, और विद्रोह दमन करते हुए कंतित की ओर बढ़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा भयददेव ने आकर इससे भेंट की, और अधीनता स्वीकार कर ली। पर फिर किसी आशंका के कारण वह एकाएक अपना कुल सामान छोड़कर, विना कहे-सुने, अपने राज्य में चले गए। सिकंदर ने इनका कुल सामान लुटवा दिया।

इसके अनंतर, सं० १५५१ में, सिकंदर ने राजा भयददेव को दंड देने के लिये उनके राज्य पर चढ़ाई की। खानघाटी के पास राजा के पुत्र वीरसिंहदेव ने इसका मार्ग रोका, पर घोर युद्ध के अनंतर परास्त होकर वह भट्टा की ओर भागा। सिकंदर भी पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा, और राजा भयददेव युद्ध करते हुए सरगूजा की ओर हट गए। वहीं मार्ग में उनकी मृत्यु हो गई। यद्यपि सिकंदर विजयी होता फफूँद तक पहुँचा, पर अंत में उसे सामान तथा घोड़ों की कमी के कारण लौट जाना पड़ा। यह कंतित से गंगा उतरकर चुनार होता हुआ बनारस चला आया। राजा भयददेव के पुत्र लक्ष्मीचंद तथा अन्य ज़मींदारों ने सुलतानहुसेन शर्की को लिख भेजा कि इस समय सिकंदर लोदी की अवस्था ठीक नहीं, यदि ऐसे अवसर पर वह आक्रमण करे, तो अवश्य विजयी होगा। यह समाचार पाकर वह एक सौ हाथी तथा भारी सेना एकत्र कर बिहार से रवाना हो गया, और बनारस से तेरह कोस पर आ पहुँचा। सिकंदर ने अपनी दुरवस्था और शत्रु के आने का समाचार सुनकर अपने प्रधान सरदार ख़ानख़ाना लोहानी को राजा शालिवाहन के पास भेजा कि उसे समझाकर अपनी ओर मिला ले, तथा सहायक सेना के साथ लिवा लावे। शालिवाहन ने यह स्वीकार कर लिया, और अपनी सेना लेकर सहायता को आ पहुँचा। इसकी सहायता से सिकंदर लोदी ने हुसेनशाह को परास्त कर दिया, जो बिहार की ओर भागा। सिकंदर ने उसका पीछा किया, पर जब वह बंगाल के सुलतान अलाउद्दीन के यहाँ चला गया, तब बिहार पर अधिकार कर तथा कुछ सरदारों को वहाँ नियुक्त कर जौनपुर लौट आया, और यहाँ छ मास तक रहा।

इस प्रकार राजा भयददेव का मृत्यु-सं० १५५२ निश्चय हो जाता है, और उनके तीन पुत्रों का भी उल्लेख मिलता है, जिनमें सबसे बड़ा तथा उनका उत्तराधिकारी शालिवाहन था। अन्य दो वीरसिंहदेव तथा लक्ष्मीचंद थे।

सं० १५५५ के लगभग सिकंदर लोदी ने भट्टा-प्रांत पर पुनः चढ़ाई की। इसने राजा शालिवाहन से उसकी पुत्री विवाह के लिये माँगी थी, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था। इसी पर सिकंदर ने क्रुद्ध होकर यह चढ़ाई की, और इस बार भट्टा के प्रसिद्ध दुर्ग बांधवगढ़ तक पहुँचकर उसे घेर लिया। यद्यपि इसने बहुत प्रयत्न किया, और इसके कई अच्छे सरदार मारे गए, पर यह उसे ले न सका, तथा आस-पास के प्रांतों को लूटता-पाटता जौनपुर लौट गया। इसके अनंतर दिल्ली के लोदी सुलतानों ने भट्टा-नरेशों से फिर कुछ छेड़छाड़ नहीं की।

राजा शालिवाहन के बाद वीरसिंहदेव भट्टा के राजा हुए। इन्होंने अपने नाम पर वीरसिंहपुर बसाया था, जो इस समय पन्ना-राज्य के अंतर्गत है। यह वीरसिंहदेव राजा शालिवाहन के छोटे भाई थे, या उसके पुत्र का भी यही नाम था, यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। वीरसिंहदेव के अनंतर उनके पुत्र वीरभानु भट्टा के राजा हुए। सिकंदर लोदी सं० १५५५ में यहाँ से असफल लौट जाने पर बीस वर्ष तक जीवित रहा, और उसका पुत्र सं० १५८३ में बाबर द्वारा परास्त होकर मारा गया। इस बीच भट्टा-नरेशगण बाहरी आक्रमणों के अभाव में अपने राज्य की उन्नति में बराबर लगे रहे। उनका प्रभाव तथा ऐश्वर्य इतना बढ़ गया था कि बाबर ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मचरित में भारत के तीन बड़े नरेशों में इसका भी नाम दिया है। बाबर भारत में आने के केवल चार वर्ष बाद ही मर गया। और, दिल्ली के आस-पास युद्ध में व्यस्त रहने से उसे इन बघेला राजाओं से युद्ध करने का अवसर ही नहीं मिला। सं० १५८७ में हुमायूँ गद्दी पर बैठा। पर जो साम्राज्य उसे मिला था, उसकी जड़ जमी हुई न थी, और यह स्वयं आलस्य-प्रिय था। उच्चाकांक्षा रखने के कारण प्राप्त साम्राज्य की दृढ़ता की ओर दृष्टि न रखकर पहले दूरस्थित गुजरात-विजय करने गया, जिसे दो वर्ष बाद खो दिया। इसके बाद बंगाल-विजय करने गया, जहाँ से इसे परास्त होकर भागना पड़ा।

शेरख़ाँ ने अफ़ग़ानों की सारी शक्ति एकत्र कर हुमायूँ का मार्ग रोका। २७ जून सन् १५३९ ई० को गंगा-सोन के संगम के पास चौपट घाट पर चौसा-युद्ध हुआ, जिसमें हुमायूँ पूर्णतया परास्त हुआ। गुलबदन बेगम स्व-कृत हुमायूँनामा में लिखती है—

"अंत में ईश्वर की इच्छा ही ऐसी थी कि जब ये लोग निःशंक ठहरे हुए थे, शेरख़ाँ ने पहुँचकर आक्रमण कर दिया। सेना परास्त * हुई, और बहुत संबंधी तथा मनुष्य पकड़े गए। बादशाह के हाथ में भी घाव लगा। चुनार में तीन दिन ठहरकर वह आरेल आए। जब नदी-किनारे पहुँचे, तब चकित हुए कि नाव विना कैसे पार उतरें। इसी समय राजा ने पाँच-छ सवारों के साथ आकर इन्हें एक उतार से पार किया। चार-पाँच दिन से सैनिकगण विना भोजन और मदिरा के थे। अंत में राजा ने बाज़ार लगवा दिया, जिससे सेनावालों के कुछ दिन आराम से बीत गए, और घोड़े भी ताज़े हो गए। जो पैदल हो गए थे, उन्होंने नया घोड़ा ख़रीद लिया, अर्थात् राजा ने अच्छी और योग्य सेवा की। दूसरे दिन बादशाह उसे विदा कर स्वयं जमुनाजी के किनारे आराम से दोपहर के नमाज़ के समय पहुँच गए।"

यद्यपि बेगम ने राजा का नाम नहीं लिखा, पर वह भट्टाधिपति वीरभानु थे, जिनका उल्लेख जौहर आफ़ताबची ने अपने तज़किरतुल वाक़ियात में दिया है, और यह भी लिखा है कि उक्त राजा ने हुमायूँ का पीछा करनेवाले मीरफ़रीद गोर को युद्ध कर भगा दिया था। तात्पर्य यह कि सं० १५९६ में भट्टा का राज्य वीरभानु के अधीन था।

सं० १५९७ में हुमायूँ को दूसरी बार परास्त कर शेरशाह भारत का बादशाह बन बैठा, और हुमायूँ भटकता-घूमता, सं० १५९९ में, फ़ारस चला गया। शेरशाह अपना राज्य दृढ़ करने में लगा था कि सं० १६०२ में, कालिंजर के घेरे में, उसकी मृत्यु हो गई। शेरशाह के कई पुत्र थे, पर सबसे बड़ा आदिलख़ाँ उस समय रंतभवर में था, और सबसे छोटा जलालख़ाँ भट्टा के अंतर्गत रीवाँ-नगर में, जो कालिंजर से बहुत पास था। इस कारण सूरी सरदारों ने जलालख़ाँ को ही बुलाकर इसलामशाह की पदवी से शीघ्र गद्दी पर बैठा दिया। कालिंजर के राजा का नाम कीर्तिसिंह दिया गया है, इसलिये यह स्पष्ट है कि कालिंजर उस समय बघेलों के अधीन न था। ऐसी अवस्था में रीवाँ में जलालख़ाँ की उपस्थिति से यही माना जा सकता है कि वह रक्षा के निमित्त वहाँ भेज दिया गया था, और वहाँ का राजा उस समय शेरशाह का सहायक बन चुका था। परंतु यह भी संभव है कि शेरशाह ने उक्त राज्य पर जलालख़ाँ के अधीन सेना भेजी हो, पर तारीख़ दाऊदी में जिस प्रकार यह वृत्तांत लिखा

* गुलबदन बेगम ने यहाँ स्वभावतः बहुत ही संक्षेप में वृत्तांत दिया है। गंगाजी और सोन-नदी के संगम के पास चौपट-घाट पर २७ जून सन् १५३९ ई० (९ सफ़र सन् ९४६ हि०) को चौसा-युद्ध हुआ था। हुमायूँ यहाँ से सीधा आगरे को गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है, उससे प्रथम ही ठीक ज्ञात होता है। उस समय रीवाँ में कौन राज्य करता था, उसका नाम उक्त इतिहास में नहीं दिया गया है।

इसलामशाह ने सात वर्ष दिल्ली में राज्य किया। पहले वर्ष दोनो भाइयों में राज्य के लिये युद्ध हुआ, जिसमें परास्त होकर आदिलख़ाँ भट्टा की ओर भाग गया। इसलामशाह निरंतर अपने ही सरदारों से लड़ने तथा उन्हें नष्ट करने में लगा रहा। इसकी मृत्यु पर इसका पुत्र गद्दी पर बैठा, पर तीन दिन बाद ही इसे मारकर इसका मामा मुबारिजख़ाँ सूर मुहम्मद आदिलशाह अदली की पदवी से गद्दी पर बैठा। सूरी-वंश के अन्य कई लोग यत्र-तत्र स्वतंत्र सुलतान बन बैठे, और बराबर आपस में लड़ते रहे।

"अदली प्रथम बार इब्राहीम सूर से हारकर भट्टा की ओर गया। पर बाद को इब्राहीमख़ाँ सूर कई बार हेमू से परास्त होकर स्वयं भागा, और भट्टा की ओर चला गया। इसके परिवार-वाले सब बिआना में मारे गए। पर इसकी प्रसिद्धि काफ़ी हो चुकी थी, इसलिये इसके पास बहुत सेना इकट्ठी हो गई। भट्टा-नरेश राजा रामचंद्र से इसने युद्ध किया, और परास्त होकर भागने का प्रयत्न करने पर पकड़ा गया। राजा ने इसे बड़े आदर से अपने यहाँ रक्खा, पर मालवा के विद्रोही अफ़ग़ानों के बुलाने पर यह वहाँ चला गया। वहाँ से असफल होने से उड़ीसा लौटने पर सुलेमान किर्रानी ने इसे धोखे से बुलाकर मार डाला।"

बदाऊनी के उक्त उद्धरण से यह निश्चित रूप से ज्ञात हो जाता है कि राजा रामचंद्र सन् ९६२ हि० में भट्टा का अधिपति अवश्य था, और इसके कुछ वर्ष पहले ही राजगद्दी पर बैठ चुका होगा।

सं० १६१६ में अकबर ने जलालख़ाँ कोरची को भट्टा-नरेश राजा रामचंद्र के यहाँ भेजा कि वह मियाँ तानसेन ग्वालियरी गायक को दरबार लिवा लावे। यह गान-विद्या का प्रसिद्ध ज्ञाता था। इसकी आवाज़ बहुत मीठी थी, तथा गायन में अत्यंत कुशल था। यह रामचंद्र का बहुत दिनों से आश्रित था। उसके यहाँ इसका बड़ा सम्मान भी था। "यह राजा इतना उदार था कि इसका जोड़ अब तक कोई नहीं हुआ। इसे अन्य पुरस्कारों के सिवा एक दिन एक करोड़ ज़र राजा ने दिया था। वह उस राजदरबार को छोड़ना नहीं चाहता था।" राजा ने अकारण प्रबल सम्राट् से युद्ध करना अनुचित समझकर तानसेन को पूरे साज व सामान के साथ बादशाह के लिये भेंट देकर बिदा कर दिया। जब यह दरबार पहुँचा, तब बादशाह ने पहले ही दिन इसे दो करोड़ दाम अर्थात् पाँच लाख रुपए पुरस्कार में दिए, और अपने यहाँ रख लिया *। शाही गायकों की सूची में अबुलफ़ज़ल ने आईन-अकबरी में इसी तानसेन का प्रथम नाम दिया है †।

इसके दूसरे ही वर्ष राजा रामचंद्र ने ग़ाज़ीख़ाँ तन्नोज तातारी को, जो दरबार से भागकर चला आया था, अपनी शरण में रख लिया। अकबर के लिखने पर कि उसे वह भेज दे, राजा ने शरणागत को देना अस्वीकार कर दिया। इस पर ख़्वाजा अब्दुलमजीद आसफ़ख़ाँ इस पर भेजा गया। घोर युद्ध में ग़ाज़ीख़ाँ मारा गया, और राजा परास्त होकर बांधवगढ़ में जा बैठे, जो अत्यंत दृढ़ दुर्ग था। दुर्ग पर अधिकार न हो सका, और अन्य राजाओं के मध्यस्थ होने पर इन्होंने अधीनता स्वीकार कर ली, तथा शाही सेना लौट गई ‡।

राजा रामचंद्र ने सूरी-वंश की अवनत अवस्था

* मआसिरुल उमरा हिंदी, भाग १, पृष्ठ ३३०। इलिअट डाउसन जिल्द ५, पृष्ठ ५३८। तारीख़े-बदाऊनी फ़ारसी, भाग २, पृष्ठ ३३५। स्मिथ, अकबर पृष्ठ ६२।

† आईन अकबरी ब्लाकमैन भाग १, पृष्ठ ६१२।

‡ इलिअट डाउ० जिल्द ६, पृष्ठ ११८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहाड़ख़ाँ के पोष्य पुत्र बिजलीख़ाँ को कुछ धन देकर कालिंजर-दुर्ग पर अधिकार कर लिया था, और उस पर वह अधिकृत था। अकबर ने, सं० १६२७ में, मानिकपुर के फ़ौजदार मजनूख़ाँ, काकशाल तथा अन्य सरदारों को इस दुर्ग को विजय करने के लिये भेजा, और यह दुर्ग घेर लिया गया। कुछ दिन युद्ध होता रहा, पर अंत में दुर्ग देकर संधि कर लेना ही समयानुकूल समझकर रामचंद्र ने दुर्ग ख़ाली कर दिया, और उसकी कुंजी भेंट के साथ दरबार भेज दी *।

इसके अनंतर जब सं० १६४० में अकबर इलाहाबाद (तत्कालीन इलाहाबाद) आया, और वहाँ चार महीने तक रहा, तब उसने भट्टा पर चढ़ाई करने का इस कारण विचार किया कि वहाँ के राजा रामचंद्र स्वयं दरबार नहीं आए, केवल अपने पुत्र वीरभद्र को दरबार भेजकर अधीनता स्वीकार कर ली थी। वीरभद्र ने अन्य दरबारियों द्वारा प्रार्थना कराई कि यदि बादशाह कृपा कर किसी सरदार को लिवा लाने को भेजें, तो उसके पिता राजा रामचंद्र अवश्य दरबार में उपस्थित हो जायँगे। इस पर अकबर ने जैनख़ाँ कोका तथा राजा बीरबल को, जो पहले राजा रामचंद्र के यहाँ नौकर थे, भट्टा भेज दिया। रामचंद्र ने अधीनता स्वीकार कर ली, और दोनो सरदारों का ख़ूब आतिथ्य किया। इसके अनंतर जैनख़ाँ को रोक रक्खा; और उसके साथ फ़तेहपुर आकर सेवा में उपस्थित हुआ। १२० लाल तथा अन्य रत्न भेंट में दिए, जिनमें से एक लाल पचास सहस्र रुपए का था *। अकबर ने राजा को १०१ घोड़े पुरस्कार में दिए, और बिदा कर दिया।

सं० १६४२ में राजा रामचंद्र की मृत्यु हो गई। तब अकबर बादशाह ने उसके पुत्र वीरभद्र को, जो दरबार में उपस्थित था, शोक का ख़िलअत तथा राजा की पदवी देकर अपने राज्य को जाने की छुट्टी दे दी †।

* मआसिरुल् उमरा हिंदी, भाग १, पृष्ठ ३३२। प्रॉविंशिअल गज़ेटियर, नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेज़ ऑफ़ इंडिया, भाग १, पृष्ठ ४५४, एडविन टी० एटकिंसन। स्मिथ, अकबर, पृष्ठ १००-२।

* तारीख़े-बदाऊनी फ़ारसी, भाग २, पृष्ठ ३३५।

† मआसिरुल् उमरा हिंदी, भाग १, पृष्ठ ३३२।

Telegrams:—"BHOLANATH Coy" Telephones 2 & 2 A

THUMB IMPRESSION SET

CONSISTING OF

TIN BOX, TIN PAD, ROLLER & INK

Price Re. 1-4-0

MANUFACTURED BY

BHOLA NATH & CO.

Stationers, Paper Merchants & Rubber Stamp Makers,

30, Aminabad Park, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर गीत

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

(१)

नदी-किनारे पत्थर के ढोकों पर बैठे हुए जीवन के गले से एक दर्द-भरी रागिनी निकलकर उस सूने संसार में गूँज उठी। पेड़ों के सूखे पत्ते हवा के झोंकों से उड़कर गिरते-गिरते कह उठे—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

रुक-रुककर बहती हुई नदी की लहरें हरियाली की चादर से ढँकी हुई किनारे की मिट्टी को चूम-चूमकर कहने लगीं—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

जीवन के दुबले-पतले हाथों की लंबी-लंबी उँगलियाँ उसके पुराने सहचर सितार के तारों पर फिरती हुई, प्रत्येक मींड़ में चेतना का स्वर भरती हुई सिहर-सिहरकर कहती थीं—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

आकाश सुन रहा था, मगर कुछ कहता न था। उसके असीम में व्याप्ति-गुण की सजीवता का परिणाम सब कुछ छिपा लेने को तैयार था ! जीवन का गला भर आया--जाने क्यों ? उसकी ज्योति-हीन आँखों में दो आँसू छलक आए, और सूखे हुए कपोलों पर ढुलक चले ; परंतु वह गा रहा था, फिर भी गा रहा था। हृदय की रागिनी में साम्य की सृष्टि हो चुकी थी, और जीवन अपने को भूला हुआ-सा, एक प्रतिमा की भाँति, गा रहा था।

अचानक पीछे खेत के पौधों में कुछ चेतना आई—कोई आ रहा था। जीवन के कान उस आहट को सुन न सके। कोई उसके पीछे आ खड़ा हुआ, फिर भी उसने नहीं जाना। किसी ने उसे पुकारा—"सूरदास ?"

जीवन ने नहीं सुना। पुकारनेवाले ने उसके कंधे पर हाथ रक्खा, और कान के पास मुँह ले जाकर पुकारा—"अरे ओ सूरदास !"

"प्रेम की यह . .. ..." गीत अधूरा ही रह गया। जीवन ने गाना बंद कर दिया, और कहा—"आ गई तू मुझे सताने, क्यों री लता ?"

लता ने उसके दोनो कंधों पर हाथ रखकर धीरे-से ढकेलते हुए कहा—"हाँ-हाँ-हाँ, गाने की धुन में सुनते ही नहीं ; कब से खड़ी चीख़ रही हूँ !"

जीवन ने सितार एक ओर रख दिया, और कहा—"सचमुच मैंने नहीं सुना।"

जीवन ने मुँह घुमाया, लता ने देखा—जीवन के गालों पर सूखे हुए आँसुओं के चिह्न—क्यों ? क्या जीवन रो रहा था ? रो रहा था किसलिये ? लता ने धीरे से कहा—"सूरदास !"

"लता !"

"तुम रो रहे थे ?"

जीवन घड़ी-भर चुप रहकर बोला—"कौन कहता है ?"

"लता कहती है—तुम ज़रूर रो रहे थे !"

"नहीं, मैं तो गा रहा था, और—"

"और ?"

"और हँस रहा था—हाः ! हाः ! हाः ! हाः !"

एक माँगी-सी हँसी की रेखा जीवन के होठों पर बिजली की तरह आई, और चली गई। लता ने एक ठंडी साँस लेकर जीवन की ओर देखा, फिर सितार उठा लिया, और जीवन का हाथ पकड़कर बोली—"चलो घर, अब रात होने आई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रात ?"

"हाँ-हाँ रात—चलो।"

विना कुछ कहे जीवन ने टटोलकर अपनी लाठी उठा ली, और चल दिया। लता उसका हाथ पकड़कर आगे-आगे चल रही थी। खेतों के बीच से जानेवाली उस टेढ़ी-टेढ़ी पगडंडी का सूनापन जीवन और लता के पैरों की आहट सुन रहा था।

(२)

कच्ची मिट्टी के उस टूटे-फूटे मकान के आँगन में बाजरे की मोटी-मोटी दो रोटियाँ और मुट्ठी-भर बथुए का साग एक पीतल की थाली में लाकर जीवन के आगे रखते हुए लता बोली—"लो खाओ, सूरदास!"

जीवन ने हाथों से थाली को टटोला, फिर उसने कहा—"गुड़ भी लाई है ?"

"लाई हूँ। मैं जानती थी, गुड़ के विना तुम्हें खाना अच्छा ही नहीं लगता। लो।"

अपनी ओढ़नी के आँचल के छोर पर बँधी हुई गाँठ खोलकर लता ने गुड़ का एक बड़ा-सा डला जीवन की थाली में रख दिया और बोली—"खाओ अब, सूरदास!"

जीवन खाने लगा। लता खड़ी-खड़ी देखती रही। खाते-खाते जीवन ने थाली के आस-पास, फिर इधर-उधर हाथ से टटोलना शुरू किया। लता ने पूछा—"क्या चाहिए सूरदास ?"

जीवन हँस पड़ा, बोला—"तू भी आधा काम करती है री, और पूछती है, क्या चाहिए ?"

"अ-र- र-र-र—पानी तो लाई ही नहीं, मेरी अक़्ल भी क्या है!"

लता उठ खड़ी हुई। जीवन ने कहा—"अक़्ल है ही तुझे कब ? परमात्मा ने तेरे हिस्से में लिखी ही नहीं थी।"

लता बोली—"तुमसे बचने पाती, तभी तो मुझे मिलती न सूरदास ?"

वह भागकर घर के भीतर गई, कुएँ से डोल भरा, और एक लोटे में पानी लाकर जीवन के पास रखते हुए बोली—"पानी रक्खा है।"

जीवन मुस्किराते हुए बोला—"क्या तू नाराज़ हो गई, जो इतना काम करना पड़ा ?"

लता कुछ खीझकर कह उठी—"बातें बहुत बना लेते हो सूरदास! नाराज़ हो गई—काम करना पड़ा—हुँः!"

जीवन का चेहरा कुछ गंभीर हो गया। वह चुपचाप खाने लगा। लता बैठी उसे देख रही थी। थोड़ी देर तक दोनो चुप रहे, फिर जीवन ने कहा—"जा घर, तू भी खाना खा ले, मैया राह देखती होगी।"

"चली जाऊँगी, तुम खा लो।"

"यही तो मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"अच्छा क्या लगता है तुम्हें, मैं आज तक न जान सकी।"

जीवन ने एक ठंडी साँस ली। लता की बात का उसने कुछ उत्तर न दिया। दोनो फिर चुप रहे। दो रोटियाँ खाने के बाद जीवन ने थाली एक ओर सरका दी, और पानी पीने को लोटा उठाया। लता ने कहा—"बस ? खा चुके ?"

पानी पीकर जीवन ने उत्तर दिया—"खा चुका।"

लता झुककर उसकी थाली देखती हुई बोली—"खाया ही क्या तुमने—रोटियाँ, साग, ढेर-सा तो बच गया है खाना।"

एक डकार लेकर जीवन ने कहा—"अफर गया अब तो—ला, हाथ धुला।"

लता ने पानी लाकर जीवन के हाथ धुला दिए, कंधे पर पड़ी हुई चादर के छोर से हाथ पोंछते हुए जीवन बोला—"लता!"

"हाँ।"

"एक बात कहूँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहो ?"

"सोचता हूँ, तू न होती, तो तेरे सूरदास की ज़िंदगी ...."

लता झुँझलाकर बात काटती हुई बोली—"रहने दो ऐसी बातें—जब देखो, तब ऐसा ही कहा करते हो। बड़े वैसे हो तुम सूरदास!"

जीवन ने हँसते-हँसते कहा—"कैसा हूँ, भला, बतला तो सही ? अंधे की हँसी उड़ाती है, क्यों री ?"

लता ने थाली और लोटा उठाते हुए उत्तर दिया—"कह लो बाबा, जो मन में आए। अच्छा, जाऊँ मैं ?"

"जा, मगर तमाखू ?"

"तमाखू—तुम्हारे बिछौने के सिरहाने तमाखू और चूने की डिबिया रख दी है, बनाओ और फाँको; मैं घर जाती हूँ।"

"मैं बनाऊँ ? तेरे हाथ से तमाखू बड़ी अच्छी बनती है लता !"

"बनती होगी, आज तो अपने हाथ से बनाओ।"

लता चली गई। जीवन ने पास रक्खी हुई लाठी उठाई, और धीरे-धीरे चबूतरे पर बिछे हुए बिछौने की ओर बढ़ा। सिरहाने से तमाखू और चूने की डिबिया निकाल वह तमाखू मीजते-मीजते गाने लगा—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह।"

रात के सन्नाटे में सन्-सन् करती हुई हवा उसके गीत को अपने साथ उड़ाए लिए जा रही थी।

(३)

होली का त्योहार था। सारा गाँव रंग और अबीर के रंग में रँगा जा रहा था। जगह-जगह फाग गाया जा रहा था। डफ, मृदंग, झाँझ, ढोलक और मँजीरे घर-घर बज रहे थे। जीवन अपने घर के आगे नीम के पेड़ के नीचे बैठा हुआ सन की एक रस्सी बट रहा था। जाने कहाँ से दौड़ती-दौड़ती लता आ गई। उसने पास आकर कहा—"सुनते हो ?"

"क्या है लता ?"

"आज होली है।"

"होली ?"

"हाँ-हाँ होली—तुम घर से बाहर ही नहीं निकले। डरते हो, कहीं रंग न पड़ जाय।"

"यह कैसे तूने समझ लिया ?"

अपने आँचल से दो मुट्ठी अबीर लेकर जीवन के मुँह में, बालों में, गले में मलते-मलते लता बोली—"ऐसे—यहाँ लुके बैठे थे ! यह नहीं मालूम था कि लता से कैसे बचूँगा ?"

जब लता अबीर लगा चुकी, तब जीवन ने कहा—"बस लता ? हो गई तेरी होली ?"

"हो गई, मगर चलो मेरे साथ चौधरी के घर, वहाँ गाना होगा तुम्हारा—ले आऊँ सितार ?"

"सितार ? अरे नहीं लता ! मैं न गाऊँगा। और, ले कहाँ जायगी मुझे ? गाँव के छोकरे मेरी दुर्गत बना देंगे, तू तो समझती है नहीं कुछ।"

"नहीं सूरदास ! तुम्हें चलना पड़ेगा। मैं खींचकर ले चलूँगी। उठो, उठो।"

बाँह पकड़कर, उसने जीवन को उठाकर खड़ा कर दिया, लाठी हाथ में पकड़ा दी, और बोली—"ले आती हूँ सितार।"

"अरे सुन तो।"

लता ठहर गई, बोली—"क्या कहते हो ?"

"ना-समझी क्यों करती है, मैं गाऊँगा नहीं, चला चलूँगा तेरे साथ, जहाँ भी ले चलेगी।"

कुछ दुखी होकर लता ने कहा—"तो फिर क्या करोगे जाकर ? बैठो यहीं, मैं जाती हूँ।"

"नहीं-नहीं, जाना मत।"

लता चुपचाप खड़ी देखती रही, कुछ न बोली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी व्यग्रता से जीवन ने पुकारा —"लता ! लता ! क्या चली गई ?"

लता ने कुछ उत्तर न दिया। जीवन लाठी के सहारे जल्दी-जल्दी बाहर की तरफ़ चला, और पुकारने लगा—"लता ! लता ! ठहर तो सही, मैं चलता हूँ।"

चुपके-चुपके पास जाकर, जीवन के कान के पास मुँह करके लता ने धीरे से कहा—"ठहर गई।"

जीवन ने उसका हाथ पकड़ लिया, और बोला—"रूठ गई थी तू ? बड़ी पागल है, कुछ समझती नहीं। देख, मैं सिर्फ़ तेरे आगे गाता हूँ या अकेले में। किसी के घर जाकर गाना मैं अच्छा नहीं समझता।"

"क्यों ? उसमें क्या।"

"यह पेशेवर लोगों का काम समझा जाता है।"

"पेशेवर क्या ?"

"पेशेवर यानी पैसा लेकर गानेवाले।"

"मगर तुम तो किसी से पैसा नहीं लेते ? न माँगते ही हो, फिर तुम्हारे गाने में हर्ज ही क्या है ?"

"नहीं समझती तू दुनिया की बातें।"

इस बार बड़े निराशा-भरे स्वर में लता ने पूछा—"न गाओगे तुम क्या सूरदास ?"

जीवन मानो उसके मन की भावना समझ गया। वह बोला—"गाऊँगा। जा, सितार ले आ।"

"बड़े अच्छे हो तुम सूरदास ! अभी आई मैं—ठहरना आँ !"

लता दौड़कर भीतर से सितार ले आई, और जीवन से बोली—"चलो, जल्दी चलें।"

दोनो पैर बढ़ाते हुए चल दिए।

(४)

दूसरे दिन दोपहर में खेत की मेड़ पर बैठी हुई लता बैलों को चारा खिला रही थी। अचानक सितार के तारों की झनकार उसके कानों में पड़ी, वह उठ खड़ी हुई, और इधर-उधर देखने लगी। कहीं कुछ न दिखाई दिया। अपना भ्रम समझकर वह फिर बैठ गई। इस बार फिर उसने सुना—सूरदास का गाना—वही स्वर ! उठकर वह फिर देखने लगी।

एक ऊँचे टीले की आड़ से निकलकर जीवन खेत की ओर लाठी टेकना हुआ आ रहा था। कंधे के सहारे टिका हुआ दूसरे हाथ में सितार था, और वह गा भी रहा था वही गाना—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

लता धीरे-धीरे जीवन के पास पहुँच गई। उसने जीवन के कंधे पर हाथ रक्खा। दोनो एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठ गए। कब और कैसे, इसे दोनो में से एक भी न समझ सका। गाने की गति में भूला हुआ जीवन और कानों से उसकी मधुरता का अनुभव करनेवाली लता, दोनो ही बेसुध थे।

गाना समाप्त हो गया। जीवन ने सितार रख दिया। उसने पुकारा—"लता ?"

मानो तंद्रा से जागकर कुछ देर में लता ने उत्तर दिया—"हाँ।"

जीवन ने पूछा—"मैं यह कह रहा था कि तू मेरा गीत सुन भी रही थी ?"

"हाँ-हाँ, सुन रही थी। ख़ूब गाते हो तुम सूरदास !"

"पत्थर गाता हूँ—सो रही थी तू बैठी-बैठी, मुझे बेवक़ूफ़ बनाती है ?"

"नहीं सूरदास, मैं सुन रही थी—सब कुछ सुन रही थी, और बड़ा अच्छा लग रहा था जाने क्यों।"

"अच्छा लगता था तुझे—सचमुच अच्छा लग रहा था लता ?"

"हाँ-हाँ-हाँ—कितनी बार कहलाओगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं-नहीं, मैं यह पूछ रहा था, तुझे गीत अच्छा लगता था या सितार ?"

कुछ सोचकर लता बोली—"तुम जो कुछ गाते थे, वही !"

"यानी गीत अच्छा लगता था, क्यों लता ? भला, मैं क्या गाता था, याद है तुझे ?"

"हाँ-हाँ। लता ने बड़ी सुरीली आवाज़ में दुहराया—"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह ! मिट न पाई—और जाने मिलन की यह चाह ! यही न ?"

"वाह वा ! अरे, तू भी गा लेती है ?"

"तुम्हारी तरह नहीं गाना आता मुझे। तुम्हारे मुँह से सुनना अच्छा लगता है।"

"सुनना अच्छा लगता है तुझे ?"

"हाँ, लेकिन तुम यही गीत हर वक्त क्यों गाते रहते हो, और इसका मतलब क्या होता है सूरदास ?"

"मतलब ? हुँः"

जीवन कुछ सोचने लगा। लता ने फिर पूछा—"बताओ न ?"

जीवन ने एक शीतल निःश्वास लेकर अपनी बुझी हुई आँखें मीच लीं ! वह मौन था।

लता ने पुकारा—"सूरदास ! न बताओगे इसका मतलब ?"

जीवन ने उत्तर दिया—"बताऊँगा।"

"फिर बताओ न ?"

जीवन की आँखों से टप-टप आँसू बह चले। लता ने देखा, वह बोली —"तुम रोते हो सूरदास? उस दिन भी—नदी के किनारे जब गा रहे थे, तब रोते थे, और मुझे झूठमूठ बहका दिया कि रोता नहीं, क्यों सूरदास ?"

अपनी चादर के छोर से आँसू पोंछते हुए जीवन ने कहा—"नहीं, मैं रोता नहीं। सुनो लता, एक बात याद आ गई।"

"क्या ?"

"बहुत पुरानी—बहुत-बहुत पुरानी समझीं ?"

"हाँ—बहुत पुरानी—इस जामुन के पेड़-जैसी क्यों सूरदास ?"

जीवन ने जल्दी से उत्तर दिया—"कितना पुराना है जामुन का पेड़ ?"

"पुराना ? मैया कहती थी—यह सौ बरस का पुराना है।"

"तो इतनी पुरानी नहीं है मेरी बात। सुनो लता—"

जीवन कहते-कहते फिर ठहर गया। लता बोली—"क्या सुनूँ, कुछ कहो भी ?"

जीवन बोला—"सुनो, मैं इस गाँव में कब आया था, याद है ?"

"हाँ, दो-तीन बरस हुए होंगे, क्यों ?"

"तो फिर तीन बरस समझ लो, इतनी ही पुरानी बात है वह।"

"फिर क्या हुआ ?"

"हुआ कुछ नहीं। बात यह थी कि तीन बरस पहले मैं भी किसी का अपना था, और कोई मेरा भी अपना था।"

"मैं भी किसी का अपना था, और कोई मेरा भी अपना था—यह क्या ? मैं नहीं समझी सूरदास !"

"मैं उससे बहुत प्रेम करता था।"

"प्रेम क्या होता है सूरदास ?"

"प्रेम ? क्या बतलाऊँ तुझे, तू कुछ जानती ही नहीं !"

"जानती नहीं, इसीलिये तो कहती हूँ बतलाओ।"

"ऐसी बात बताई नहीं जाती—अच्छा, अभी सुन तो सही—"

"सुन रही हूँ, कहे जाओ।"

"हाँ, तो फिर पाँच बरस तक हम दोनो साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे। हँसते-बोलते, खेलते और दुनिया के सुख में भूले हुए—वह बड़ी अच्छी थी लता !"

"कौन ?"

"मेरी वह।"

"वह कौन ?"

"अरे, कौन बताऊँ तुझे, तू इतना भी नहीं समझती ?"

"समझती होती, तो पूछती काहे को।"

"अच्छा सुन—तो फिर क्या हुआ कि एक दिन परमात्मा ने उसे मुझसे छीन लिया। वह चली गई—मुझे अकेला। छोड़कर चली गई !"

"कहाँ चली गई ?"

जीवन ने फिर एक ठंडी साँस लेकर धीरे से कहा—"परमात्मा के यहाँ।"

लता सहज ही कह उठी—"वह मर गई, क्यों न सूरदास ? मैया कहती थी कि मरकर ही परमात्मा के यहाँ जाते हैं। बप्पा भी तो वहीं चले गए हमको छोड़कर। क्यों सूरदास ! लोग परमात्मा के यहाँ क्यों चले जाते हैं ?"

जीवन मौन था, उसकी आँखें फिर आँसू बरसा रही थीं ! आश्चर्य-चकित लता उसको ओर बड़ी जिज्ञासा से देख रही थी। जीवन ने सितार उठाया, लाठी सँभाली, और उठ खड़ा हुआ। वह बोला—"अब घर चलूँगा, जी घबराता है यहाँ।"

लता ने कहा—"और क्या कह रहे थे तुम अभी ? कहानी ?"

"फिर सुनाऊँगा तुझे।"

जीवन चलने लगा, लता उसकी ओर देख रही थी।

(४)

संध्या समय घर के आँगन में मूँज की एक टूटी चटाई पर बैठा हुआ जीवन मन-ही-मन कुछ गुनगुना रहा था। लोटे में रक्खा हुआ पानी उसने एक घूँट पिया, फिर सोचने लगा—आज बात क्या है, जो लता नहीं आई ?

धीरे-धीरे रात हुई, आकाश में दो-चार तारे भी निकल आए। जीवन जहाँ-का-तहाँ बैठा था। उसके कान किसी के पैरों की आहट सुनने के लिये व्याकुल हो रहे थे। सारे दिन लता नहीं आई।

जीवन धीरे से चटाई पर करवट के बल लेट रहा। आज उसके मन में बड़ी अशांति थी।

किसी ने पुकारा—"सूरदास !"

चौंककर जीवन बोल उठा—"कौन ? लता ?"

आनेवाले ने पास आते हुए उत्तर दिया—"सूरदास ! मैं हूँ। लता की ससुरालवाले आए हैं, इसलिये वह नहीं आ सकी आज।"

"ससुरालवाले आए हैं ? कब आए मैया ?"

"सबेरे-सबेरे—लता को बिदा कराने आए हैं।"

"बिदा ?"

"हाँ सूरदास ! अब वह सयानी हुई, कब तक घर बिठा रक्खूँगी। लड़कियाँ तो पराई धरोहर होती हैं।"

जीवन का दिल धड़क रहा था। लता अब ससुराल चली जायगी। क्या सचमुच चली जायगी ? फिर—फिर जीवन क्या करेगा। वह मौन होकर कुछ सोचने लगा। लता की मा ने कपड़े की एक पोटली जीवन के आगे रखते हुए कहा—"सूरदास ! आज तुम्हारे लिये थोड़ा-सा पकवान लाई हूँ।"

जीवन कुछ न बोला।

लता की मा ने कुछ ठहरकर फिर कहा—"तो तुम खा लेना, भला, मैं जाती हूँ। पाहुन आए हैं घर में, अभी उनको खिलाना-पिलाना है।"

जीवन ने धीरे से कहा—"अच्छा मैया ! जाओ। लेकिन..........."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन कुछ कहते-कहते ठहर गया। लता की मा अकचकाकर उसका मुँह देखने लगी। जीवन ने कहा—'मैं यह कह रहा था मैया, लता कब जायगी ससुराल?"

"परसों सबेरे जाने को कहते हैं वे लोग।"

"परसों सबेरे?"

"हाँ सूरदास! परसों से मेरा घर सूना हो जायगा, कैसे रहूँगी अकेले?"

"अ-के-ले? हाँ मैया! लता ससुराल चली जायगी—चली जायगी परसों?"

लता की मा ने कुछ जवाब न दिया। वह चली गई।

जीवन ने एक बार ऊँची साँस खींची। कोई उसके कलेजे को मसल रहा था! उसके होठ एक बार हिले, मगर वह कुछ कह न सका। वह उठ खड़ा हुआ, और धीरे-धीरे पैर उठाता हुआ अपनी कोठरी की ओर चला।

भीतर बैठी हुई बिल्ली बोली—"म्याऊँ!"

जीवन ने कहा—"तू बैठी है यहीं श्यामा?"

बिल्ली फिर बोली—"म्याऊँ! म्याऊँ!"

वह दौड़कर जीवन के पैरों से अपनी देह रगड़ती हुई आ खड़ी हुई। जीवन वहीं बैठकर उसकी पीठ सहलाते-सहलाते बोला—"श्यामा! तू ने सुना—नहीं सुना? देख, परसों लता ससुराल चली जायगी, फिर तुझे दूध-रोटी कौन खाने को देगा, यह भी जानती है?"

श्यामा ने कहा—"म्याऊँ!"

जीवन बोला—"तू नहीं समझती—कुछ नहीं समझती श्यामा! चल बाहर।"

बिल्ली को गोद में उठाए हुए जीवन फिर बाहर आ गया।

जीवन की आँखों में इस बार आँसू छलक रहे थे। बाहर आकर उसने श्यामा को गोद से उतार दिया। श्यामा भाग गई। जीवन के पैर के नीचे कोई बड़ी कोमल वस्तु आ पड़ी। उसने झुककर उठा लिया। हाथ से छूकर उसने जान लिया—गेंदे का एक फूल था। जीवन को याद आया—कल लता ने यह फूल तोड़कर उसे दिया था, मगर वह यहीं पड़ा रह गया। पैरों-तले कुचल गया! जीवन ने अपने दूसरे हाथ से उसकी पँखुड़ियों को टटोलकर धीरे-धीरे उसकी धूल पोंछ डाली, और उसे अपनी चादर के छोर में बाँध लिया। वह लता की स्मृति थी।

(६)

परसों का दिन दूर न था—आ ही गया। परंतु जीवन के लिये दो दिन की प्रतीक्षा मानो दो युग की प्रतीक्षा थी। लता आई—जीवन के घर आई। नया लहँगा, नई चोली, नई चूनर, हाथों-पाँवों में कड़े, झूमक, नाक में नथ—नख से शिख तक सजी हुई! वह ससुराल जाने की पोशाक थी।

जीवन अपने सितार के तारों को बजा-बजाकर खींचतान कर रहा था। किसी के आने की आहट पाकर उसने पूछा—"कौन?"

लता चुपचाप आकर उसके पास बैठ गई, और बोली—"मैं हूँ, सूरदास!"

जीवन ने सुना - लता का कंठ-स्वर कुछ बदला हुआ-सा था। उसकी वाणी में एक कंपन, एक वेदना-सी थी। जीवन ने अपना सितार एक ओर रखते हुए कहा—"लता!"

लता कुछ न बोली। उसकी आँखों की कोरों पर दो मोती-से आँसू थे। जीवन ने कहा—"लता! आज तू—आज तू ससुराल चली जायगी?"

लता ने धीरे से कहा—"हाँ, मैया भेज रही हैं मुझे। मैंने कहा था, नहीं जाऊँगी, पर—"

"पर?"

"पर वह कहती हैं, बदनामी होगी, जो मैं न जाऊँगी—जाना ही होगा सूरदास! लेकिन सूरदास! बदनामी क्या होती है, बताओगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के शुष्क अधर एक हलकी मुस्कान का स्वागत कर फिर बंद हो गए।

लता ने फिर पूछा—"नहीं बताओगे सूरदास ?"

जीवन ने धीरे से कहा—"लता ! मैया का कहना तुझे मानना चाहिए—तू ससुराल चली जा।"

लता खीझकर बोली—"तुम भी ऐसा ही कहने लगे ? मैं चली जाऊँ-चली जाऊँ तुम्हें छोड़कर ? कैसे चली जाऊँ सूरदास ? मेरा जी नहीं करता कहीं जाने को।"

"पगली ! तू कुछ नहीं समझती।"

"बस, जब देखो, यही बात कह देते हो। जाओ, अब तुमसे कभी नहीं बोलूँगी।"

जीवन का हाथ धीरे-धीरे ऊपर उठकर लता के सिर पर गया। जीवन ने कहा—"भगवान् तुझे अच्छा रक्खें, फिर आ जायगी लौटकर।"

लता की आँखों में रुकी हुई आँसुओं की सरिता बह निकली। वह रोते-रोते बोली—"अब मैं नहीं आऊँगी सूरदास !"

"अरे ! ऐसी बात मुँह से क्यों निकालती है तू ?"

"मैं सच कहती हूँ सूरदास ! मेरा मन कहता है, अब—अब कभी न आऊँगी लौटकर।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुम भी मुझे जाने को कहने लगे। मैं चली जाऊँगी, तो तुम—तुम्हें लता कहाँ मिलेगी ? जब पुकारोगे, तब कौन तुम्हारे पास आया करेगा, सूरदास ! यह भी सोचा है ?"

जीवन के मन में एक हलचल—एक तूफ़ान-सा उठ रहा था, जिसे वह बरबस रोक रहा था। उसका गला भर आया। उसने बड़े साहस से कहा—"तू ठीक कहती है लता ! लेकिन मेरी बात मत सोचा कर। मेरे लिये क्यों दुखी होती है तू ?"

"मैं नहीं जानती। दो दिन से तुम्हारे यहाँ नहीं आने दिया मैया ने। जानते हो, मैंने अब तक कुछ नहीं खाया है। सारे दिन रोया करती थी। और तुम—तुम भी मुझसे कहते हो कि चली जा।"

जीवन के हृदय के तारों को मानो किसी ने छू दिया। वह एक बालक की भाँति सिसक-सिसककर रोने लगा। लता ने अपनी चूनर के आँचल से उसके आँसू पोंछते हुए कहा—"नहीं सूरदास ! तुम मत रो। मैं चली जाऊँगी !"

जीवन बड़ी अधीरता से बोला—"लता ! मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरी जलती हुई ज़िंदगी में, बस, आँसुओं की बरसात के सिवा और कुछ नहीं मिलेगा तुझे—तेरी ममता कहाँ छिपा लूँ लता ?"

लता कुछ समझ न सकी, वह जीवन का मुँह देख-देखकर सिसक रही थी।

जीवन ने अपने को सँभालते हुए कहा—"लता ! एक बात कहूँ, मानेगी ?"

"मानूँगी, कहो।"

अपनी उँगली से चाँदी की अँगूठी उतारकर लता की ओर बढ़ाते हुए जीवन बोला—"इसे पहन ले।"

लता ने जीवन के हाथ से अँगूठी लेकर अपने हाथ की उँगली में डालते हुए कहा—"ढीली है, गिर जायगी।"

"पहन भी ले, थोड़ा तागा लपेट लेना ऊपर, समझी।"

"अच्छा।"

लता ने अँगूठी अपने आँचल के छोर से कसकर बाँध ली।

जीवन ने पूछा—"साँझ को जायगी तू ?"

"हाँ सूरदास।"

जीवन चुप होकर कुछ विचार करने लगा। कुछ ठहरकर लता बोली—"सूरदास ! एक बार अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही गाना सुना दो—आज और सुन लूँ, फिर तो .."

लता अपनी बात पूरी न कर सकी, सिर नीचा करके उसने आँचल में अपना मुँह छिपा लिया।

जीवन ने कहा—"गाना सुना दूँ ? कैसे गाऊँ लता ?"

लता ने दुख-भरे स्वर में कहा—"वैसे ही, जैसे रोज़ गाते थे।"

"रोज़ की बात और थी लता ! और आज—"

"आज क्या हुआ ?"

"आज मुझसे गाया न जायगा।"

"क्यों ? मेरे कहने से सही। गाओ सूरदास ! आज और सुन लूँ।"

जीवन ने सितार उठा लिया। उँगलियाँ एक बार तारों पर ऊपर से नीचे तक दौड़ गईं। एक बड़ी ही मर्मस्पर्शी झंकार हवा में गूँज उठी। जीवन ने कहा—"दिल रोता है, तब मुँह से गाना कैसे निकलेगा। लेकिन तू क्या जाने, अच्छा सुन।"

जीवन सुरीले कंठ से बड़े दर्द-भरे स्वर में निकला—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !
मिट न पाई, अमिट कैसी मिलन की यह चाह !
री सखी ! मिलन की यह चाह !"

जीवन गाते-गाते रुक गया, उसने सितार धरती पर रख दिया। लता ने देखा—वह रो रहा था। वह भी रो पड़ी !

दोपहर के तपते हुए सूरज को बादल के एक टुकड़े ने आकर ढाँक लिया, क्योंकि उन दोनो के आँसुओं को सुखाने का साहस उसे न होता था।

उसी दिन की संध्या ने भी लता और जीवन को एक दूसरे से अलग कर दिया।

(७)

लता को ससुराल गए पंद्रह दिन बीत चुके थे। जीवन के खाने-पीने का प्रबंध और उसकी देख-भाल अब लता की मा किया करती थी। जीवन को किसी बात की तकलीफ़ न थी, लेकिन उसके मन की अशांति न मिटती थी। लता के चले जाने के बाद उसका जीवन ही सूना हो गया था। एक उदासी, एक निराशा, एक बेबसी-सी उसे हर समय घेरे रहती थी। वह घर से बाहर बहुत कम निकलता था। गाँव में भी नहीं जाता था। उसे अब गाते भी किसी ने इतने दिनों से नहीं सुना था। लता के चले जाने के बाद जीवन का अकेला जीवन मृत्यु से भी बढ़कर था। उसका शरीर सूखता चला जाता था।

उस दिन गोधूलि-वेला में बैठे-बैठे जाने क्या उसके मन में आया, वह उठकर भीतर कोठरी में गया—टटोलते-टटोलते। कोने में रक्खा हुआ सितार उसने उठा लिया। उस पर ढेरों धूल जम गई थी। चादर से उसे पोंछकर जीवन बाहर ले आया। उसके तारों को छूकर देखा—यह क्या ? वे तो निर्जीव-से हो चुके थे। अब तो उनमें से निकलनेवाली मधुर झंकार भी जाने कहाँ चली गई थी। जीवन का हृदय धड़कने लगा। उसने सितार की खूँटियों को घुमा-घुमाकर तारों को तरतीब से बिठाया। सितार कुछ ठीक हुआ।

जीवन सितार लेकर लाठी के सहारे चलता-चलता अंदाज़ से नदी-किनारे जा पहुँचा। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। जीवन ने एक बार जी भरकर साँस ली। बहुत दिनों बाद उसके चेहरे पर मुस्किराहट खेल रही थी।

नदी-किनारे पहुँचकर वह एक पत्थर पर बैठ गया। पैर पानी में लटका दिए। कितना ठंडा था वह जल !

जीवन ने सितार के तारों को छेड़ा। वह गा उठा—बेबस होकर गाने लगा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

गाने की धारा बह चली। जीवन तन्मय हो उठा। लेकिन उसे जाने कैसा ताप-सा चढ़ रहा था। गाते-गाते वह उठ खड़ा हुआ, और पानी में उतर पड़ा। पानी की वह शीतलता उसे भली मालूम हो रही थी। गाते-गाते वह आगे बढ़ने लगा। कमर तक पानी में पहुँच गया। सितार के तारों पर उसकी पतली-पतली उँगलियाँ बड़ी तेज़ी के साथ फिर रही थीं। अपने को भूलकर वह और आगे बढ़ा—गाने का स्वर ऊँचा उठ रहा था। जीवन को ऐसा जान पड़ा कि सितार का स्वर उसके गले का साथ नहीं दे रहा है। वह और आगे बढ़ा। गाना रोककर उसने सितार की खूँटियों को फिर घुमाया। और भी घुमाया—चटाख़-चटाख़ करके सितार के सभी तार टूट गए। अरे, सितार उसके हाथ से छूट चुका था। जीवन सँभलने लगा, मगर अथाह जल में बह चला! दो-एक ग़ोते खाने के बाद नदी की तरंगों ने उसे अपनी गोद में छिपा लिया!

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन लता जब अपने पति के लिये भोजन लेकर आई, तब उसने कहा—"सुनती हो ?"

"क्या ?"

उसने आँगन के कोने की ओर संकेत करते हुए कहा—"आज सबेरे मैंने नदी में बहते पाया था यह सितार—देखो।"

लता ने पास जाकर देखा—पहचाना। झन-न-न-न करती हुई भोजन की थाली लता के हाथ से छूटकर गिर गई! लता ने सितार उठा लिया।

सब तार टूटे हुए थे। उसने उँगलियों से उन्हें छूकर देखा। उसके हृदय में कोई गा उठा—वही अमर गीत—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

उसके मुँह से एक चीख़ निकल गई। बेहोश होकर वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ी। सितार उसके हाथों से छूटकर अनाथ की भाँति दूर जा गिरा था। लेकिन उसके टूटे हुए तार दुनिया को सुना-सुनाकर कह रहे थे—

"प्रेम की यह राह री सखि ! प्रेम की यह राह !"

दांपत्य जीवन

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा बरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीद-कर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्थली

[श्री भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र माधव एम्० ए०]

एक म्हाँको फूल प्यारो,
अधखिल्यो कुमला गयो;
सोक बीत्यो, हरस छायो,
फल बाग लगा गयो।

क्रिसमस के दिन प्रातःकाल नींद खुली, तो अपने को मैंने जयपुर की एक धर्मशाला में पाया। पाठक कहीं इसे 'अरेबियन नाइट'वाले अलाउद्दीन के चिराग़ का चमत्कार न समझ बैठें, इसलिये यह बतला देना आवश्यक है कि अनावृष्टि के कारण राजपूताने (हिसार) में जो भयानक दुर्भिक्ष फैला था, उसके कारण हज़ारों की संख्या में गाएँ मर चुकी और मरर ही थीं। 'राजपूताना-अकाल-सेवा-समिति' की ओर से विभिन्न स्थानों पर सेवा-केंद्र खुले और सेवा-कार्य हुआ। उसी के संगठन, संचालन और निरीक्षण के लिये 'कल्याण'-संपादक श्री-हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा समिति के मंत्री श्री-भागीरथजी का नोडिया अकाल-ग्रस्त केंद्रों में दौरा कर रहे थे। मैं भी साथ था। संयोग-वश क्रिसमस के दिन जयपुर में ही ठहरना हुआ था। वहाँ ठहरना था कुछ घंटे ही, इसलिये शीघ्र ही स्नान-संध्या से निश्चिंत होकर हम लोग शहर देखने निकले। राजपूताने में एक देहाती कहावत है कि मनुष्य का जन्म लेकर जिसने जयपुर नहीं देखा, उसका जीवन अकारथ ही गया। जयपुर की कला जगत् में सुविख्यात है। वहाँ की मूर्तियाँ, मकान और चित्र, जो 'राजपूत-आर्ट' के नाम से प्रसिद्ध हैं, सौंदर्य एवं सुकुमारता की दृष्टि से संसार में अद्वितीय हैं। राजपूत-आर्ट में स्त्रियों का व्रज-सा पहनावा, लहँगा, अँगिया, ओढ़नी, चौड़ी पाटियाँ, बड़ी-बड़ी आँखें और सुंदर शृंगार की एक ऐसी विशेषता है, जिसका बंगाल-आर्ट में, जिसे कुछ लोग इंडियन आर्ट भी कहने लगे हैं, सर्वथा अभाव है। रियलिस्टिक आर्ट में सौंदर्य का जो कल्पना-प्रसूत चित्रण होता है, वह हमारे जीवन के इतने निकट होता है कि उसके संस्पर्श को, उसकी अपील को हमारा हृदय बहुत गहराई में पकड़ता है, और उसमें एक ऐसा अपनापन बोध होता है, जो बंगाल-आर्ट में कम है। अपनी-अपनी रुचि, अपनी-अपनी इच्छा! अब तो जयपुर आदि शहरों में भी बंगाली अध्यापकों के कारण बंगाल-आर्ट का ही बोलबाला है। और, बहुत ही दुःख के साथ कहना पड़ता है कि राजपूत-आर्ट धीरे-धीरे मिटता जा रहा है; न उसे स्टेट की ओर से कोई प्रश्रय-पोषण मिल रहा है, न कलाकारों की ओर से ही। आधुनिकता के आवेश में हम सब कुछ अपना पुराना खोते जा रहे हैं। आजकल जयपुर-आर्ट-कॉलेज में श्रीशैलेंद्र-नाथ दे प्रिंसिपल हैं, और उन्हीं के प्रभाव में वहाँ के छात्र तैनार हो रहे हैं, जो राजपूत-आर्ट से सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि राजस्थान अपनी प्राचीन कला की रक्षा में ही दत्तचित्त रहे; क्योंकि उसका एक अपना 'इतिहास' है, जिस पर हम सभी गर्व करते हैं।

जयपुर में कुछ ही घंटे ठहरना था, इसलिये मुख्य सड़क, बाज़ार, चौराहे से होकर हम लोग पुरोहित श्रीहरिनारायणजी के दर्शनों के लिये उनके घर पहुँचे। प्रातःकाल आठ बज रहे थे। राजपूताने का कँपा देनेवाला, कड़ाके का जाड़ा जग-जाहिर है। अभी सर्दी के कारण हम लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायः सिकुड़े हुए ही थे कि गाड़ीवाले ने कहा, पुरोहितजी की यही हवेली है। हम उतरे, और पुरोहितजी को आने की ख़बर की।

पुरोहितजी को हिंदी-संसार बहुत कम जानता है। जो लोग प्राचीन साहित्य के प्रेमी हैं, और संत-साहित्य से कुछ परिचय रखते हैं, वे ही पुरोहितजी को थोड़ा-बहुत जानते हैं। पुरोहितजी की अवस्था इस समय सत्तर के ऊपर होगी। संत-साहित्य पर उन्होंने जितना परिश्रम किया है, संसार में शायद ही किसी ने उतना किया हो। विश्व-भारती के आचार्य क्षितिमोहन सेन की सेवाएँ इस क्षेत्र में अवश्य अनमोल हैं, परंतु सच तो यह है कि पुरोहितजी के कार्य के सामने क्षिति बाबू की सेवाएँ पासंग में भी नहीं आतीं। प्रकाशन में न आने का कारण यह है कि पुरोहितजी विज्ञापन से ऊपर उठे हुए स्वयं संत पुरुष हैं। अभी हाल में ही उन्होंने 'सुंदर-ग्रंथावली' दो भागों में प्रकाशित कराई है। और, हिंदी-संसार के लिये यह परम हर्ष का संवाद है कि पुरोहितजी के संपादकत्व में लगभग डेढ़ सौ संतों के चरित्र, उनकी वाणियाँ और उन पर विस्तृत आलोचनाएँ शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली हैं! पुरोहितजी ने मीरा के लगभग २५० पदों का संग्रह किया है, और इनमें से अधिकांश को हिंदी-संसार अभी नहीं जानता। साथ ही मीरा का एक बहुत ही प्रामाणिक और ऐतिहासिक जीवन-चरित्र भी लिखा है, जो शीघ्र ही गीता-प्रेस से छपनेवाला है।

विद्या और विनय की मूर्ति, ऋषि-कल्प श्रीपुरोहितजी के परम पावन दर्शन कर हमने अपने को धन्य माना, और सचमुच क्रिसमिस मेरे लिये 'बड़ा दिन' सिद्ध हुआ।

जयपुर से लगभग पचास मील मोटर से चलकर, राजपूताने की टेढ़ी-मेढ़ी टेकरियाँ तय करते हुए, हम लोग 'वनस्थली' पहुँचे। वनस्थली एक छोटा-सा गाँव है, जो जयपुर-स्टेट-रेलवे के निवाई-स्टेशन से क़रीब पाँच मील दूर है। यह वही क्षेत्र है, जहाँ लगातार आठ साल तक 'जीवन-कुटीर' के फक्कड़ ग्राम-सेवकों ने जी-जान लड़ाकर अनेक प्रकार से ग्राम-सेवा का कार्य किया था। इन लोगों के त्याग और तप का असर आज भी वनस्थली में जादू का काम कर रहा है। इसी वनस्थली में तेजस्विनी और होनहार शांताबाई का देहावसान हुआ, जिनके अदृश्य प्राण-बल के अमर प्रभाव से श्रीराजस्थान-बालिका-विद्यालय अपने स्वच्छ और सादे वातावरण में फल-फूल रहा है।

हम लोग लगभग छ घंटे वनस्थली में रहे। इसी बीच में वहाँ के प्रायः सभी आवश्यक अंगों का दिग्दर्शन किया। 'वीर बाला' का आदर्श सामने रखकर वहाँ कन्याओं की शिक्षा का क्रम ऐसे ढंग पर चल रहा है, जो वीरता की उपासना के साथ-साथ कला की उपासना को भी प्रोत्साहित करता है। किताबी पढ़ाई तो जो कुछ है, है ही; वहाँ की कन्याएँ स्वस्थ, परिश्रमी और साहसी तैयार हो रही हैं, और सत्य, निर्भयता, विनय आदि गुणों का उनमें सुंदर, सुरुचि-पूर्ण विकास हो रहा है। राजस्थान की यह अनूठी संस्था भारतवर्ष में अपने ढंग की अकेली है। वातावरण ऐसा बन गया है कि छात्राएँ छोटा या हल्का समझकर किसी काम से नफ़रत नहीं करतीं। चाहे झाड़ू-बुहारी करना हो, चाहे चक्की पीसना हो, चाहे मिठाई बनाना हो, चाहे परोसना हो—छात्राएँ प्रसन्न-मस्त और निर्भय-निःशंक होकर मनोयोग-पूर्वक सब काम करती हैं। कइयों ने बरतनों पर क़लई करने और कपड़े धोने का साबुन बनाने में विशेष दक्षता प्राप्त कर ली है। अपने स्नान अथवा कपड़े धोने के लिये छात्राएँ अपने आप कुएँ से पानी खींच लेती हैं। यह जान लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए कि राजस्थान में कुएँ इतने गहरे होते हैं कि उनसे पानी निकालना खिलवाड़ नहीं। मारवाड़ी-भाषा में राष्ट्रीय गीत गाते हुए इन बहनों का चक्की पीसना देखकर हृदय में हिलोरें उठने लगीं कि कब हमारे देश में पढ़ी-लिखी बहनें इस आदर्श को पूर्णतः अपनाएँगी।

चित्रकला और संगीत की शिक्षा भी यहाँ शुरू हो गई है। अभी प्रारंभिक दशा में है। इन विषयों में योग्य तथा अनुभवी अध्यापक द्वारा ही विशेष प्रेरणा तथा उत्साह मिल सकता है। उद्योग-विभाग में स्याही बनाने, जिल्दसाज़ी, दरी और क़ालीन बुनने, सिलाई, क़सीदा और क्रूशिए के काम में छात्राओं की विशेष कुशलता देखी गई। इसके अतिरिक्त आयुर्वेदिक दवाएँ बनाने में भी अच्छी सफलता मिल रही है, और इनमें छात्राओं का काफ़ी शौक़ बढ़ रहा है।

बहुत-सी छात्राओं की घुड़सवारी देखकर दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ती है। रकब, तेज़, सरपट भागते हुए घोड़ों पर दस-दस, बारह-बारह वर्ष की बहनों को देखकर किसे गर्व और उल्लास न होगा? साइकिल चलाने में भी कई छात्राओं ने आश्चर्य-जनक कुशलता प्राप्त कर ली है। लाठी, क्लब, गदका, लेज़िम आदि खेल भी बहुत ही रोचक ढंग से खेले जाते हैं, और इनमें छात्राएँ ख़ूब हौसले से भाग लेती हैं। तैरना सिखाने के लिये एक बड़ा हौज़ तैयार हो चुका है। लड़कियों का यूनीफ़ार्म भी बहुत ही स्मार्ट है--पूरा पाजामा, हॉफ़ शर्ट और जवाहर-बंडी। खादी सबके लिये, शिक्षक हो या विद्यार्थी, सर्वथा अनिवार्य है। गरबा-नृत्य पर या चक्की पीसते समय राष्ट्रीय गीत ही गाए जाते हैं। हर बात में हर पहलू पर राष्ट्रीयता का पूरा ध्यान रक्खा जाता है। और, इन छात्राओं से यह आशा की जाती है कि ये शिक्षा पाकर सच्चे अर्थ में राष्ट्र की सेविका बनें। राष्ट्रीयता

स्व० शांताबाई

[वनस्थली का वह फूल, जो असमय ही में कुम्हला गया! इनका अचानक देहावसान हो जाने से वनस्थली में बालिका-विद्यालय स्थापित करने की आयोजना हुई थी।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भाव भरने की सर्वतोमुखी चेष्टा की जा रही है।

छात्रावास, जो विद्यालय से सटा हुआ गाँव में ही है, बहुत ही सुंदर, सादा और स्वस्थ वातावरण में है। वहाँ प्रातः-सायं सामूहिक प्रार्थना होती है। गीता, उपनिषत् तथा संत-वाणी द्वारा उन्हें

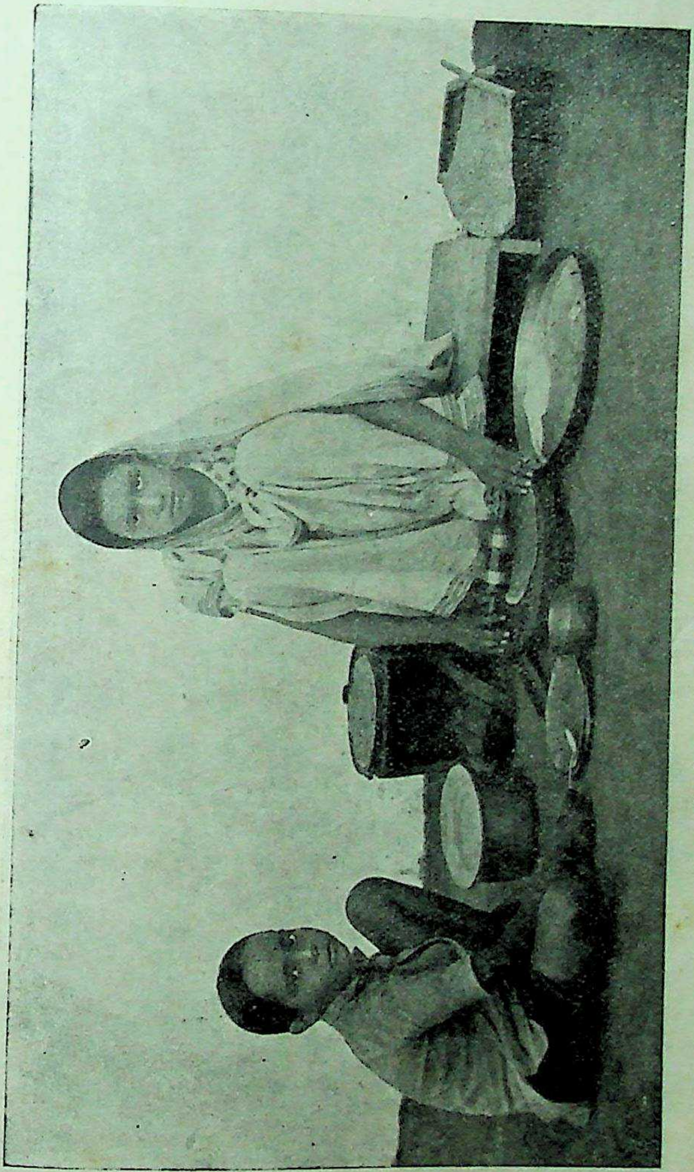

छात्राएँ भोजन बनाने का अभ्यास कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्य नवीन प्रेरणाएँ दी जाती हैं। छात्राओं में सचाई, निर्भयता, विनय, सेवा-भाव आदि सद्गुणों का सुंदर विकास हो रहा है। स्टाफ़ में स्त्री-पुरुष दोनो ही हैं, और उनमें से अधिकांश सेवा का व्रत लेकर त्याग-परायण जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इस समय छात्राओं की संख्या १०० है, परंतु

छात्राओं को संगीत का अभ्यास कराया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है। इनमें से अधिकांश छात्राएँ राजस्थान की हैं, परंतु कुछ पंजाब, संयुक्त प्रांत, बिहार, गुजरात और मदरास की भी हैं। इनका स्वास्थ्य बहुत

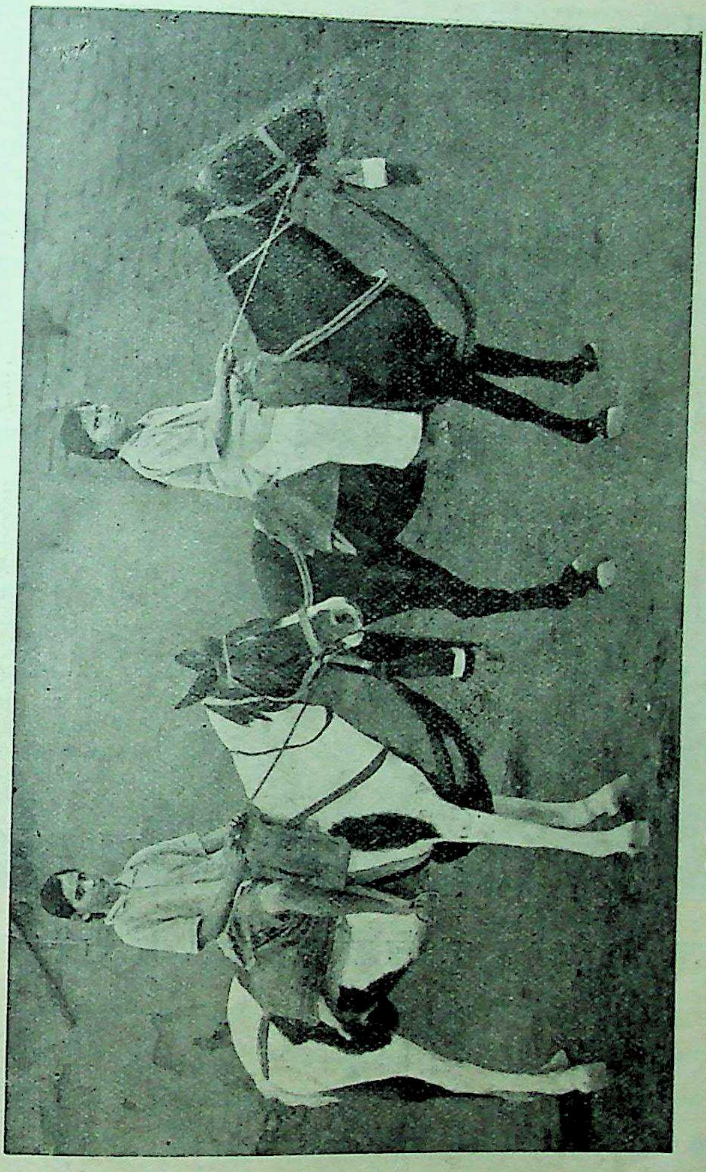

दोनों छात्राएँ घुड़दौड़ के लिये तैयार खड़ी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर है। ये सदा प्रसन्न रहती हैं। उन्हें देखकर कोई यह नहीं सोच सकता कि ये अपने घर से अलग रह रही हैं। परस्पर प्रेम-भाव भी ख़ूब है। संपूर्ण वनस्थली एक सुंदर, विशाल परिवार

एक छात्रा साइकिल पर पाँच छात्राओं को लिए जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के समान जान पड़ती है, जिसमें बड़ी बहनें छोटी बहनों की सँभाल रखती हैं। छात्रावास का मासिक शुल्क ८) है, जिसमें छात्रा के भोजन, वस्त्र, पाठ्य-सामग्री, तेल, साबुन आदि का ख़र्च भी शामिल

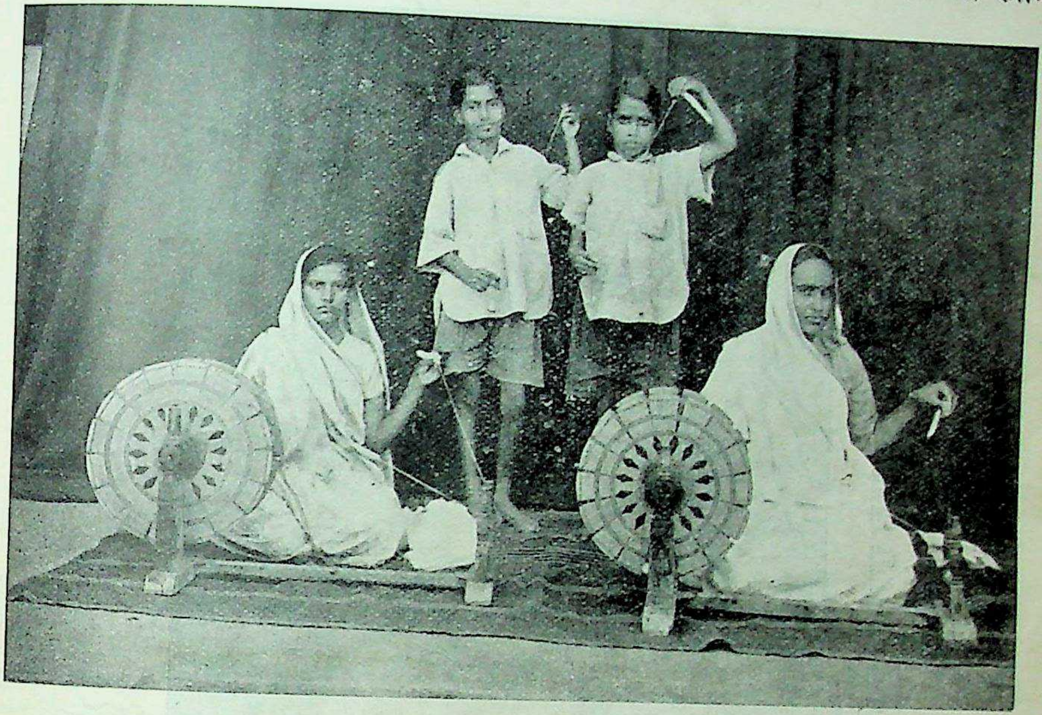

छात्राएँ तकली और चर्खे से कताई का अभ्यास कर रही हैं।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।/), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।।-) }
२५ " " " ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हिंदी, हिसाब, इतिहास, भूगोल, संस्कृत, अँगरेज़ी, गृह-शास्त्र, स्वास्थ्य-रक्षा, ड्राइंग, पदार्थ-विज्ञान, नागरिक शिक्षा तथा राजनीति-शास्त्र के अध्ययन की सुंदर और समुचित व्यवस्था है।

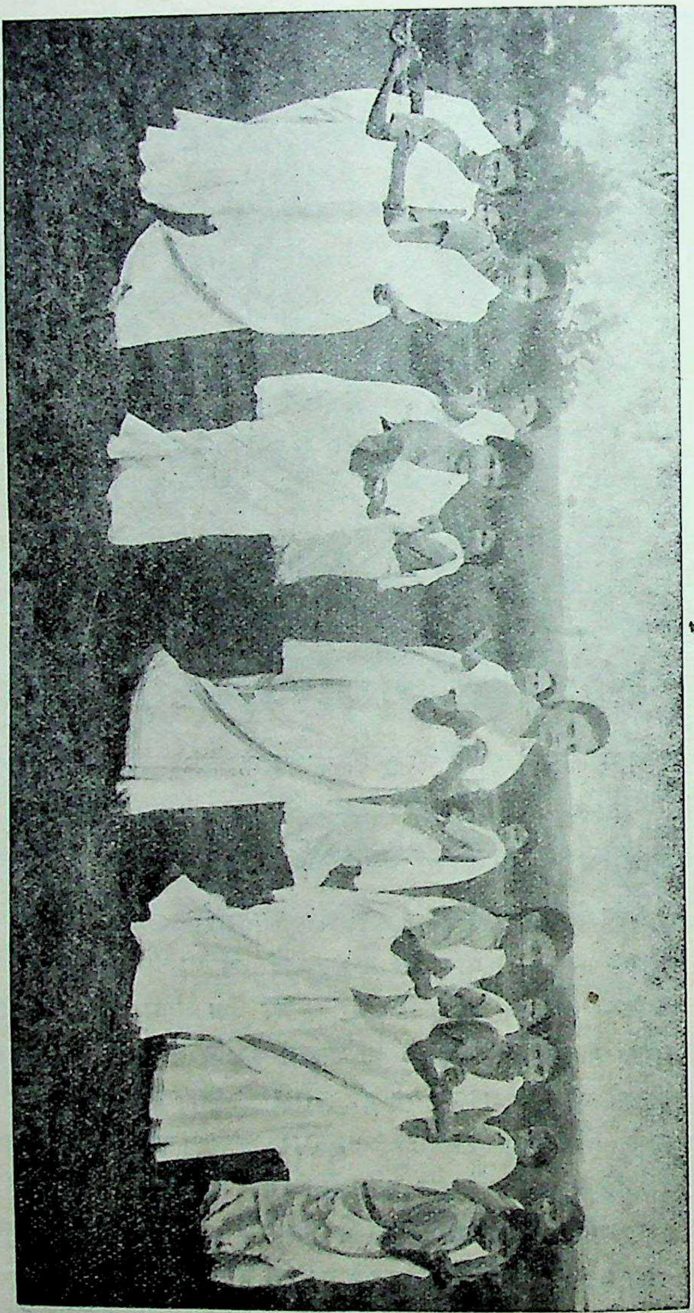

छात्राएँ भारतमाता का गुण-गान करती हुई गरबा-नृत्य कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ी-समाज के परमोज्ज्वल रत्न, शिष्टता की मूर्ति श्रीभागीरथजी कानोडिया इस संस्था के अध्यक्ष हैं, और श्रीमती रतनदेवीजी शास्त्री मंत्री। जयपुर के त्यागी युवक श्रीहीरालालजी शास्त्री की अनमोल

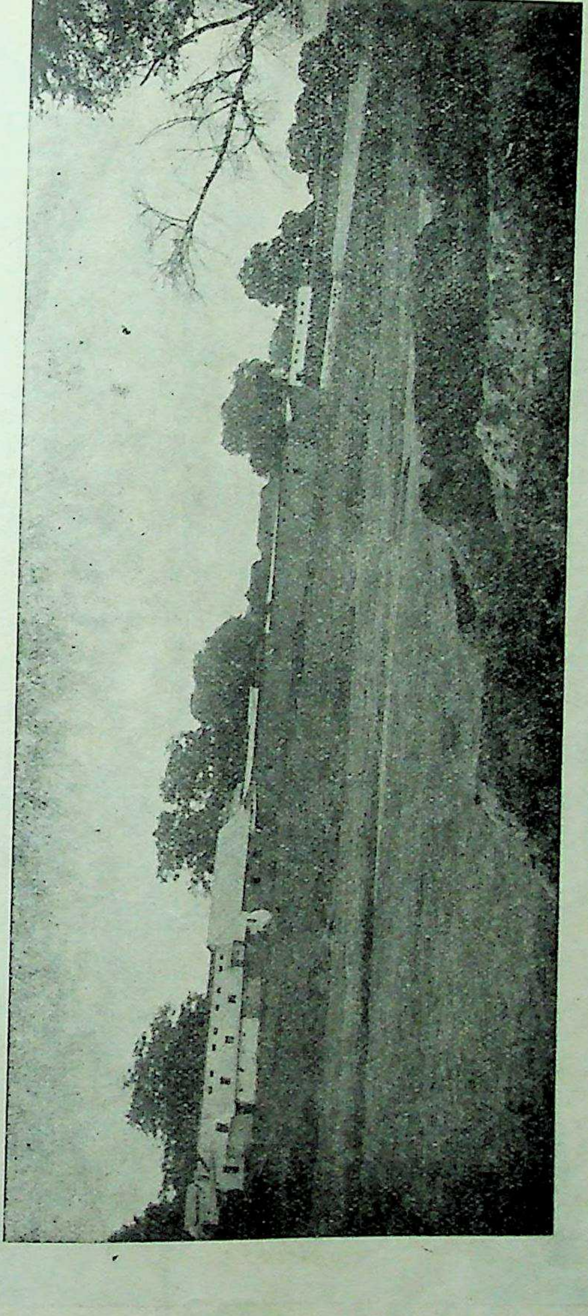

श्रीशांताबाई-शिक्षा-कुटीर (छात्रावास) का एक दृश्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवाएँ इस संस्था को प्राप्त हैं। आशा है, ऐसे सुयोग्य और अनुभवी कर्णधारों द्वारा संस्था की किश्ती अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुँच जायगी।

ऐसी सुंदर संस्था देखकर मेरे हृदय में अपने देश और राष्ट्र के गौरव का बोध हुआ। यह संस्था खूब फले-फूले, यही प्रभु से मेरी विनीत प्रार्थना है।

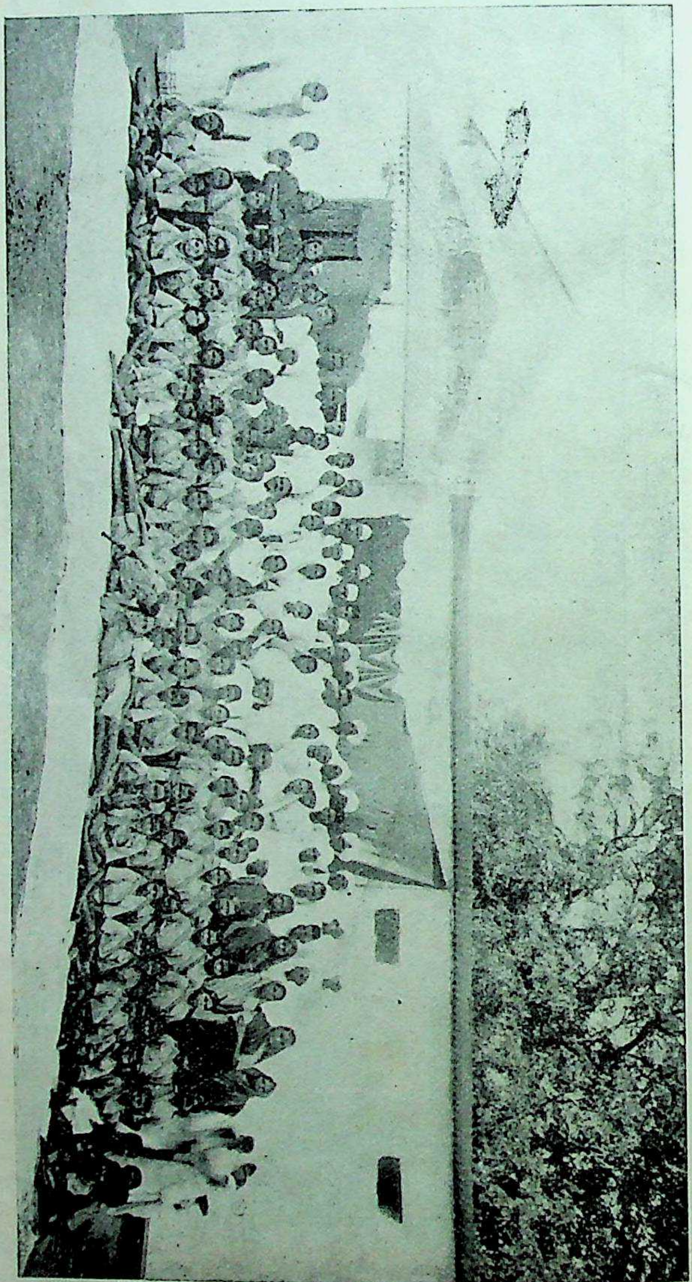

विद्यालय और छात्रावास का स्टाफ़ एवं छात्राएँ तथा कुछ मेहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामों से उत्पन्न शब्द

[कुँवर राजेंद्रसिंह, भूतपूर्व मंत्री युक्त प्रांत]

डॉक्टर जॉन्सन भाषा को विचारों का आभरण कहा करते थे। ख़ूब कहा है। यह स्वतःसिद्ध यथार्थता है। हरएक को अपनी परिस्थिति प्रतिकूल मालूम होती है, और यह मालूम होता है कि दूसरे बड़े मज़े में हैं। लेकिन अगर उनसे पूछा जाय, तो वे कहेंगे, भाई, तुम्हीं सुखी हो। यही हाल भाषा का है। जहाँ कोई भाव प्रकट करने में ज़रा भी कठिनता हुई, तो पहला ख़याल यही होता है कि अपनी भाषा में शब्दों की कमी है। शब्दों के भार, सामर्थ्य और व्यापकता का पता तभी चलता है, जब उनका प्रयोग किया जाय। परंतु जब पहले से ही यह समझ लिया जायगा कि हम अपनी भाषा में अपने भाव प्रकट ही नहीं कर सकते, तो बस, फिर क्या कहने को रह जाता है।

कुछ दिन हुए, एक महाशय ने अँगरेज़ी-भाषा की प्रशंसा करते हुए कहा था कि कोई भी भाषा जाननेवाला अगर अँगरेज़ी नहीं जानता, तो मूर्ख है। आप अपनी भाषा को उतना ही जानते हैं, जैसा एक बार स्व० डॉक्टर रासविहारी घोष ने कहा था—"अल्प ज्ञान भयोत्पादक होता है।" हरएक देश का हरएक बड़ा आदमी यही उपदेश देता है कि अपनी भाषा का प्रयोग करो, प्रयोग से ही भाषा भावों की प्रणाली बन सकती है। एक सार्वजनिक सभा हो रही थी। व्याख्यानदाता की ओर अच्छी तरह देखने के लिये कुछ लोग खड़े हो गए। पीछे से आवाज़ आई—"कृपया बैठ जाइए।" पुकारनेवाले के साथी ने कहा—"यह न कहो, कहना चाहिए—प्लीज़ सिट् डाउन।" इन दोनो वाक्यों के अर्थों में कोई भी अंतर नहीं; अंतर केवल यह है कि प्रथम कथित वाक्य के सुनने के लिये कान आदी नहीं। यहीं शब्दों की व्यापकता का पता चलता है।

जीवित भाषा का सबसे बड़ा चिह्न यह है कि और भाषाओं से लेन-देन जारी रहे। संसार की कोई भी भाषा ऐसी नहीं, जिसने और भाषाओं के शब्द लेकर अपना भांडार न भरा हो। जब मनुष्य के ख़ून में कमी हो जाती है, किसी तरह से उसकी पूर्ति नहीं दिखलाई देती, और जीवन-रक्षा का और कोई उपाय समझ में नहीं आता, तब दूसरे का ख़ून यंत्र द्वारा रोगी के शरीर में पहुँचाया जाता है। इसे अँगरेज़ी में Transfusion कहते हैं। इसी प्रकार भाषा को भी जीवित रखने के लिये यह आवश्यक है कि उसे दूसरी भाषाओं से सहायता मिले। परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि इस सहायता से किसी भाषा का व्यक्तित्व ही न जाता रहे। मुझे बड़ी ख़ुशी होती है, जब लोग यह कहते हैं कि अमुक भाव हिंदोस्तानी ढंग से प्रकट किया गया है।

अँगरेज़ी-भाषा में, जिसकी प्रशंसा करने में लोग नहीं थकते, हज़ारों शब्द दूसरी भाषाओं के हैं, यहाँ तक कि नाम भी मामूली शब्दों की तरह व्यवहृत होते हैं। यही हाल सभी भाषाओं का है। कुछ ऐसे ही शब्दों की सूची नीचे दी जाती है। आशा है, पाठकों का इससे लाभ और मनोरंजन होगा—

(१) ऐफ्रोडाइटी (Aphrodite)—यह ग्रीस की एक देवी का नाम है। यह सौंदर्य, प्रेम और उत्पादन की अधिष्ठात्री कहलाती है; उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे मनुष्यों का हो, चाहे जानवरों का, चाहे वनस्पतियों का। रोम-देश में इसकी पूजा शुक्र के नाम से होती है। और, कहा जाता है, कामदेव इसका पुत्र है। रोम-देशवालों ने जब ग्रीस-देश पर विजय प्राप्त की, तब वहाँ की देवी और देवताओं के नाम अपने मुल्क के रखकर उन्हें पूजने लगे। ऐफ्रोडाइटी का अर्थ रोमन-भाषा में शुक्र है। विवाह के पहले लोग इस देवी के मंदिर में पूजन करते और भेंट चढ़ाते थे, ताकि उनका दांपत्य जीवन प्रेम-पूर्ण हो। इस देवी की निगाह में वे जानवर पवित्र हैं, जिनमें उत्पादन-शक्ति अधिक होती है, जैसे बकरे, ख़रगोश, कबूतर और गौरैया। पौदों में मेहँदी और फूलों में गुलाब। मेहँदी का महत्त्व जितना इस देश में है, शायद ही और कहीं हो। इसके बिना शृंगार अधूरा समझा जाता है। एक कवि कहता है—"खौंरि लसै उत केसरी, त्यों मेहँदीन के रंग रँगी नखियाँ हैं।" युवतियों की कौन कहे, मनचले युवा भी श्रावण में अपने हाथों के सब नाख़ून नहीं, तो कम-से-कम एक रँग लेते हैं। गुलाब तो अपनी कविता का आधार-सा है। देवजी ने इसकी कितनी प्रशंसा की है—"मदन-महीपजू को बालक बसंत, ताहि प्रात ही जगावत गुलाब चटकारी दै।"

जैसे हम लोग सरस्वती को विद्या-बुद्धि की अधिष्ठात्री मानते हैं, वैसे ही रोम-देशवाले मिनर्वा (Minerva) देवी का पूजन करते हैं। उनके यहाँ लक्ष्मी का नाम जूनो (Juno) है। वीनस (Venus) को वे लोग कामदेव की माता मानते हैं। यह देवी 'रति' के ढंग की है। फ़र्क़ इतना है कि वे लोग इसे कामदेव की माता और हम लोग कामदेव की स्त्री मानते हैं। "काम जारि रति कहँ बर दीन्हा।" बेनीप्रबीन ने एक नई बात कही है—"मन नीच निदान त निंदिबे जोग मनोज जरे के जराए जरे।"

ऐफ्रोडाइटी से ऐफ्रोडीज़ियक (Aphrodisiac) शब्द बना। यह संज्ञा है। यह उन औषधियों के लिये प्रयुक्त होता है, जो उत्तेजक होती हैं।

(२) अरोरा (Aurora)—यह रोम-देश की ऊषाकाल की देवी कहलाती है। इस नाम का अँगरेज़ी-भाषा में अर्थ है कि आकाश का वह रंग, जो सूर्योदय के पहले होता है। उसी से विशेषण अरोरल (Auroral)-शब्द बना, जिसके अर्थ चमकते हुए के हैं।

(३) आर्गो (Argo)—यह एक जहाज़ का नाम था। उसका संक्षिप्त इतिहास यह है—ग्रीस की एक पौराणिक कहानी है कि जेसन ने आर्गस (Argus) से कहा कि एक जहाज़ बनाओ, जिसमें पचास मल्लाहों के बैठने की जगह हो। उसने जहाज़ बनाया, और अपने नाम पर उसका नाम 'आर्गो' रक्खा। एक भेड़े ने जेसन के पूर्वजों की जान बचाई थी, और वह परदेश में जाकर मर गया। उसकी खाल, जो सोने की तरह चमकती थी, लोगों ने दरख़्त पर टाँग दी थी। उसकी रक्षा सर्प करते थे। जेसन ने कहा, यह बड़ी अकृतज्ञता है कि उसकी खाल परदेश में पड़ी रहे, जिसने हमारे पूर्वजों की रक्षा की थी। यह ग्रीस-देश के अग्रगण्य वीरों को साथ लेकर, रास्ते की अकथ मुसीबतों का सामना करते हुए, वहाँ गया, और खाल ले आया। वहाँ इसकी मीडिया (Medea) से मुलाक़ात हुई। यह जादूगरनी थी। इसके मंत्रों से खाल पर के सर्प हट गए। मीडिया शब्द से मीडियन (Medean) अँगरेज़ी का शब्द बना, जो विशेषण है। Medean Decoction का अर्थ काढ़ा और Spell का अर्थ मंत्र है, जिसके पीने और मंत्रों के प्रभाव से बूढ़े आदमी जवान हो जाते थे। आर्गस से आर्गो और आर्गो से आर्गोनाटिक (Argonautic) बना, जिसके अर्थ बहादुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल्लाह के हैं। यह कहानी अपने यहाँ के जटायु के ढंग की-सी है।

(४) ऐटलस (Atlas)—इसकी कथा ग्रीस के पुराण में है। इसने दैत्यों की तरफ़ होकर ज्यूज़ से, जिसे ग्रीसवाले परमेश्वर मानते थे, लड़ाई की, और हार जाने पर उसे यह सज़ा दी गई कि हमेशा खड़ा रहे, तथा पृथ्वी का समस्त भार अपने कंधों पर लिए रहे। इसके संबंध में यह भी लिखा मिलता है कि इसने एक वीर पुरुष को आश्रय देने से इनकार किया था। उसने इसे पहाड़ बना दिया, और इसका नाम माउन्टेन ऐटलस (Mountain Atlas) हुआ। यह पहाड़ अफ़्रिका में है। पहले नक़्शा गोलाकार बनाया जाता था, क्योंकि पृथ्वी गोलाकार है। अब प्रचलित भाषा में ऐटलस-शब्द के अर्थ नक़्शे के हो गए हैं।

पृथ्वी को उठाने के क़िस्से अपनी भाषा में भी हैं। केशवदास ने बाणासुर के मुँह से कहलाया है—"लै अपने भुजदंड अखंड कियो छितमंडल छत्र-प्रभा सी, जाने को 'केसव' केतिक बार मैं संत के सीसन दीनी उसासी।" शायद सभी देशों की पौराणिक कथाओं में सुरों और असुरों के युद्ध का वर्णन मिलेगा। जिस तरह अपने देश में रावण चित्रित किया जाता है, उसे देखकर यही ख़याल आता है कि संसार के समस्त दैत्यों का यह सरदार होगा।

(५) आर्केडिया (Arcadia)—यह ग्रीस-देश के एक ज़िले का नाम है। वहाँ के लोग भोले-भाले, सुखी, संतुष्ट थे। उससे अँगरेज़ी शब्द आर्केडियन (Arcadian) बना, जो विशेषण है। इसके अर्थ हैं दिहाती, सादगी, सरलता और निरपराधता।

(६) बैकस (Bacchus)—यह ग्रीस देश के शराब के देवता माने जाते हैं। इनके उत्सव में ख़ूब शराब पी जाती थी, और फलतः अश्लीलता की कमी नहीं होती थी। इससे शब्द बना बैकानल्स (Bacchanals); संज्ञा। जब इसके साथ उत्सव शब्द जुड़ जाता है, तब अर्थ होता है, अश्लीलता से आनंद मनाना। विदेशी हमारे यहाँ की होली को इसी सूची में रखते हैं। एक और शब्द बना बैंकंटीज़ (Bacchantes), यह उन स्त्रियों के लिये प्रयोग होता था, जो शराब पीकर और वस्त्र-विहीन होकर 'बैकस' देवता के चारो तरफ़ नाचती थीं।

(७) बाउड्लर (Bowdler)—यह महाशय इँगलैंड के रहनेवाले थे। इनकी गणना विद्वानों में थी। इन्होंने शेक्सपियर के नाटकों का संपादन किया था, और उन सब पदों एवं वाक्यों को निकाल दिया था, जिनमें स्नेहातिशय या अश्लीलता थी। इनका उद्देश्य था कि मेरी शोधित आवृत्ति घर में सबके सामने पढ़ी जा सके। पाठकों को यह आवृत्ति नहीं पसंद आई, और उन्होंने आपके नाम से बाउड्लराइज़ (Bowdlerize) (क्रिया) शब्द का निर्माण किया, जिसके अर्थ अब हो गए हैं किसी पुस्तक की वह आवृत्ति, जो अधिक काटने-छाटने से स्वादु-रहित हो गई हो।

(८) ब्वॉयकॉट (Boycott)—आप आयर्लैंड देश के रहनेवाले थे। और, फ़ौज में कप्तान थे। वहाँ के एक 'लॉर्ड' की ज़मीन का लगान वग़ैरा भी वसूल करते थे। आपकी सख़्तियों की वजह से रिआया बिगड़ गई। उसने यह निश्चय किया कि आपसे किसी तरह का मेल-जोल और सरोकार न रक्खा जाय। नौबत यहाँ तक पहुँची कि नाई और धोबी इत्यादि भी आपका काम न करते थे। आपको भूखों रहना पड़ा—कोई खाना नहीं बना देता था। इस शब्द का-सा प्रयोग शायद ही किसी और शब्द का होता हो। केवल अँगरेज़ी-भाषा में ही नहीं, वरन् फ़्रांस और जर्मनी-भाषाओं में भी इसका प्रयोग होता है। हिंदोस्तान ने इसे घिस-घिसाकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग का बना लिया है। हम लोग 'बायकाट' कहते हैं। तीस-पैंतीस वर्ष पहले एक हिंदी-कवि ने लिखा था—"अधर्मीन की बायकाटै भली है, सदा सों यही रीति आई चली है।" किसी नाम से बना हुआ शब्द इतनी जल्दी इतनी भाषाओं में नहीं प्रवेश कर पाया है।

(९) बर्क (Burke)—यह रूस-देश के एक बदमाश का नाम था, जो लोगों का गला घोटकर मार डालता और लाशों को चीड़-फाड़कर डॉक्टरों के हाथ बेचता था। अँगरेज़ी-भाषा में यह क्रिया की तरह प्रयुक्त होता है, जिसके अर्थ होते हैं किसी बहस को रोक देना या बचा जाना। फ़ाइलों के संबंध में यह बहुधा प्रयोग में लाया जाता है।

(१०) सीरीज़ (Ceres)—यह ग्रीस-देश की देवी का रोमन नाम है। यह खेती की अधिष्ठात्री कहलाती है। उसी से अँगरेज़ी-शब्द सीरियल (Cereal) बना, जिसके अर्थ अनाज के हैं।

(११) काईमीरा (Chimera)—यह ग्रीस-देश के एक जानवर का नाम है, जिसका सिर शेर की तरह, बदन बकरे की तरह और दुम साँप की-सी होती थी। इसका भावार्थ यह है कि कोई वह इच्छा, भावना या कामना, जो सिद्ध न हो सके। यह तिरस्कार के भाव में प्रयुक्त होता है। इससे अँगरेज़ी-शब्द किमेरिकल (Chimerical) बना, जो विशेषण है।

(१२) एको (Echo)—यह ग्रीस-देश के पुराण की एक वनदेवी का नाम है। यह बहुत बातें करनेवाली थी, और स्वभावतः 'ज़बान में लगाम' नहीं थी। जूनो ने, जो जुपीटर की स्त्री थी, इसे सज़ा दी कि जब तक कोई न बोले, यह बोल न पाएगी, और जहाँ कोई बोला, वह चुप न रह सकेगी। इसी वजह से 'एको' शब्द के अर्थ प्रतिध्वनि के हैं। इस दंड के बाद इसका प्रेम एक सुंदर युवक नारसीसस से हो गया, जिसने इसके प्रेम को स्वीकार नहीं किया, परंतु यह उसका नाम रटते-रटते स्वयं एक आवाज़ रह गई। 'एको' शब्द अँगरेज़ी में प्रयोग होता है।

(१३) इपीक्योरस (Epicurus)—यह एक ग्रीक तत्त्वज्ञानी था। इसका उपदेश यह होता था कि आनंद जीवन का मुख्य उद्देश्य है। बाद को लोगों ने अपने इच्छानुसार उनके शब्दों के यह अर्थ लगाए कि खाओ, पियो और ख़ुशी मनाओ, जीवन के दिन थोड़े हैं। अँगरेज़ी में इससे इपीक्योर (Epicure) संज्ञा और इपीक्योरियन (Epicurean) विशेषण बना। संज्ञा के अर्थ हैं खाने-पीने का शौक़ीन, जिसे हम सब तिरस्कार के भाव में कहते हैं 'चटोहरा'।

(१४) इरॉस (Eros)—यह कामदेव का ग्रीक-भाषा का नाम है। लैटिन में क्यूपिड (Cupid) कहते हैं। यह प्रेम का देवता समझा जाता है। इसके चित्र में इसकी आँखें बंद हैं, और हाथ में धनुर्बाण है। इसका चित्र बहुत-कुछ अपने यहाँ के चित्र से मिलता-जुलता है। हाथ में धनुर्बाण और उस पर आँखें बंद—मतवाले के हाथ में हथियार! ग्रीस-देश के पुराण में लिखा है कि यह वहाँ के देवताओं से छेड़छाड़ किया करता था। वहाँ के देवता होंगे बेचारे सीधे। यहाँ इसने वही शिवजी के साथ किया। तीसरा नेत्र खुला, और जलानेवाला ख़ुद जल गया। 'इरॉस' शब्द से इरॉटिक (Erotic) विशेषण बना, जिसके अर्थ हैं प्रेम-पूर्ण, और जब संज्ञा है, तब अर्थ होते हैं 'प्रेम के गीत', 'कविता या पत्र'। क्यूपिड से क्यूपिडिटी (Cupidity) शब्द (संज्ञा) बना, जिसके अर्थ लालच के हैं।

(१५) गार्गंस (Gorgons)-यह भी ग्रीस-देश की पौराणिक कथा है कि ये तीन बहनें थीं। तीनो का काम एक आँख और एक दाँत से चलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, और सिर में बजाय बालों के साँप लिपटे थे। जिसकी तरफ़ वे देखती थीं, वह पत्थर हो जाता था। इस शब्द की क्रिया बनी गॉर्गनाइज़ (Gorgonize), जिसके अर्थ हैं डर से पत्थर हो जाना।

(१६) हरक्यूलीज़ (Hercules)—ग्रीस-देश के पुराणानुसार यह शारीरिक शक्ति के आदर्श समझे जाते थे। आपके बारह असाधारण वीरता के काम मशहूर हैं—जैसे शेरों, साँपों, कुत्तों, चिड़ियों, सुअरों और घोड़ों से युद्ध और उन्हें पराजित करना। ये सब गाँव में आकर बहुत द्वंद्व मचाते थे। बारह कामों में से इनके तीन काम बहुत विख्यात हैं, जिनका अँगरेज़ी-साहित्य में प्रायः संकेत होता है। पहला काम यह है कि इसने एक सर्प को मारा था, जिसके नौ सिर थे। उसे यह वरदान था कि अगर एक सिर कटेगा, तो उसकी जगह दो सिर निकल आएँगे। यह हाल था आठ सिरों का और नवाँ अमर था। इसने अपने नौकर की सहायता से आठ सिरों को जला दिया कि ख़ून न निकले, क्योंकि ख़ून निकलने से ही एक की जगह दो सिर पैदा होते थे। और, नवें सिर को एक दरख़्त के नीचे गाड़ दिया, तथा अपने तीरों को इसी के पित्त में डिबोकर सर्प को मार डाला। यह क़िस्सा अपने यहाँ रक्त-बीज के ढंग का है। दूसरा काम आजिअस बादशाह के अस्तबलों का साफ़ करना है। बादशाह के तीन हज़ार बैल थे, और तीस साल से उनके रहने की जगह साफ़ नहीं की गई थी। हरक्यूलीज़ ने एक ही दिन में दो नदियों को खोदकर उनको उधर से बहा दिया, और अस्तबल धुलकर साफ़ हो गए। तीसरा काम सोने के सेब हेस्पीराइडिज़ (Hesperides) के बाग़ से लाना था। 'हेस्पीराइडिज़' एक देवी थी, जिसकी रक्षा एक सर्प करता था। हरक्यूलीज़ से हरक्यूलियन (Herculean)-विशेषण शब्द बना, जिसके अर्थ असाधारण शक्ति, साहस और उद्योग हैं।

(१७) जोव (Jove)—यह ज़्यूज़ का रोमन नाम है। जैसे हम लोग विष्णु का पूजन करते हैं, वैसे वे लोग 'जोव' का पूजन करते थे। उनके देवताओं की सूची में इनका सर्वोच्च स्थान है। 'जोव' से अँगरेज़ी का शब्द जोवियल (Jovial) बना, जिसके अर्थ हैं प्रसन्न-चित्त। बाई जोव (By Jove) के अँगरेज़ी में अर्थ हैं ईश्वर की क़सम। इसका बहुधा प्रयोग होता है, जैसे अपने यहाँ बात-बात में गंगा की क़सम खाई जाती है। मालूम होता है, भगीरथजी इसी काम के लिये गंगाजी को पृथ्वी पर लाए थे। यह कहावत विख्यात है कि किसी ने गंगा की क़सम खाई थी कि मैं जुआ न खेलूँगा। बुरी आदत कब किसकी छूटी है—फिर जुआ खेला। लोगों ने कहा, तुमने तो क़सम खाई थी। उसने जवाब दिया—"क़सम खाने के पहले मैंने आँखों से इशारा कर दिया था कि मजबूरी से क़सम खा रहा हूँ।" इसी वजह से कहा जाता है कि चोरों, जुआरियों और चरित्र-भ्रष्टों से गंगाजी ने भी हार मान ली है।

(१८) लिंच (Lynch)—यह अमेरिका के मजिस्ट्रेट थे। इन्होंने अपना तरीक़ा यह रक्खा था कि प्राण-दंड की सज़ा बिना मुक़दमा किए दे देते थे। 'लिंच'-शब्द के अर्थ अब अँगरेज़ी में यह हो गए हैं कि जन-समूह अप्रसन्न होकर जिसे तुरंत मार डाले। जब यह शब्द संज्ञा होता है, तब लिंचिंग (Lynching) कहलाता है। क्रिया में इंग (ing) निकल जाता है।

इस शब्द का इतिहास यह है कि अमेरिका की जब किसी औरत से श्याम वर्ण के लोग अनुचित व्यवहार करते थे, तब जन-समूह फ़ौरन् उसे मार डालता, जला देता या दरख़्त पर टाँग देता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, और वहाँ की गवर्नमेंट इसमें हस्तक्षेप नहीं करती थी।

(१९) मैकाडम (Macadam)—इनका पूरा नाम जॉन लाउडन मैकाडम था। यह आप ही का आविष्कार है कि पत्थर के टुकड़ों को सड़क पर बिछाकर उसे पक्का करना। 'मैकाडम'-शब्द विशेषण भी है, और जब क्रिया के ढंग से प्रयुक्त होता है, तब मैकाडमाइज़ (Macadamize) हो जाता है।

(२०) मैलाप्रॉप (Malaprop)—इनका पूरा नाम मिसेस मैलाप्रॉप है। यह सुविख्यात शेरीडन के 'रायवल'-नाटक की एक पात्री हैं। जब बोलती थीं, तब शब्दों में ऐसा हेर-फेर कर देती थीं कि अर्थ बिलकुल उलट जाते थे। आपके नाम से मैलाप्रॉपिज़्म (Malapropism)-शब्द बना, जिसका अर्थ है शब्दों का हेर-फेर।

(२१) मर्सर (Mercer)—यह फ़्रांस-देश का एक कपड़ा बीननेवाला था। इसने एक तरह के मसाले का आविष्कार किया था, जिसमें कपड़ा भिगो देने से उस पर रेशमी कपड़े की-सी चमक आ जाती थी। 'मर्सर'-शब्द क्रिया की तरह प्रयोग होता है, और जब विशेषण होता है, तब मर्सराइज़्ड (Mercerized) हो जाता है। यह बहुत प्रचलित शब्द है, जो अँगरेज़ी न जाननेवाले भी बोलते हैं।

(२२) नार्सीसस (Narcissus)—ग्रीस-देश की एक पौराणिक कथा यह है कि नार्सीसस एक जल-देवता का लड़का था। उसका सौंदर्य अनुपम था। 'एको' के तो प्रेम को इसने स्वीकार नहीं किया; परंतु एक रोज़ नहाते समय अपना प्रतिबिंब पानी में देखा, और उसी पर इतना मुग्ध हुए कि पानी में कूद पड़े, और डूबकर मर गए। यह भाव कुछ इससे मिलता-जुलता है, "बार-बार पिय, आरसी मत देखहु चित लाय; सुंदर, कोमल रूप पै दीठि न कहुँ लगि जाय।" मृत्यु हो जाने पर यह एक फूल हो गए, और उसका नाम आपके नाम पर हुआ, जिसे अपनी भाषा में हम सब नर्गिस कहते हैं। गानों में कभी-कभी नर्गिस का ज़िक्र आता है। इस शब्द से अँगरेज़ी-शब्द नार्सीसिज़्म (Narcissism) (संज्ञा) बना, जिसके अर्थ हैं, अपने सौंदर्य पर मुग्ध होना।

(२३) पास्तूर (Pasteur)—यह फ़्रांस-देश के वैज्ञानिक थे। आप ही की निकाली हुई पागल कुत्ते के काटने की दवा है। और, आप ही की निकाली हुई यह तरकीब भी है कि दूध और द्रव पदार्थ बहुत दिनों तक रखने पर भी न ख़राब हों। आपका भी नाम अँगरेज़ी में क्रिया के ढंग से प्रयुक्त होता है। उसका स्वरूप थोड़ा बदल जाता और उच्चारण यों होता है पास्टराइज़ (Pasteurize)। अर्थ, दूध इत्यादि से कीटाणु का निकाल देना, और संज्ञा होती है पास्टराइज़्म (Pasteurism)। इसके अर्थ हैं आपकी निकाली हुई तरकीब से सुई द्वारा शरीर में दवा पहुँचाकर बीमारी का नाश करना।

(२४) स्पूनर (Spooner)—यह इँगलैंड के पादरी थे और एक कॉलेज के सुपरिंटेंडेंट। आप बहुत हास्य-प्रिय थे, और मिसेस मैलाप्रॉप की तरह आप भी शब्दों को उलट-पुलट देते थे। एक जगह बनाई गई थी, जहाँ विधवाओं को दाइयों का काम सिखाए जाने का प्रबंध था। आप उसका उद्घाटन करने के लिये बुलाए गए थे। आपने स्पीच देने में बजाय यह कहने के कि यह आश्रम विधवाओं को दाइयों का काम सिखाने के लिये है, यह कहा था कि यहाँ दाइयाँ विधवा बनाई जायँगी। आपके नाम से स्पूनरिज़्म (Spoonerism)-शब्द बना, जिसका अर्थ है शब्दों का हेर-फेर।

(२५) स्टेंटर (Stentor)—जब ग्रीस और ट्रवाय से लड़ाई हुई, तब ग्रीस की तरफ़ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप घोषक होकर आए थे, और आप इस ज़ोर से बोलते थे, जैसे पचास आदमी एक साथ बोल रहे हों। उससे अँगरेज़ी-शब्द स्टेनटोरियन (Stentorian) (विशेषण) बना, जिसका अर्थ है बहुत तेज़ आवाज़।

(२६) सैंडविच (Sandwich)—यह एक जगह का नाम है। यहाँ के चतुर्थ लॉर्ड जॉन मांटेग्यू थे। आपको जुआ खेलने का इतना शौक़ था कि खाना खाने की भी फ़ुर्सत न थी। इस वजह से डबल रोटी के टुकड़ों के बीच में मांस, अंडे और तरकारी इत्यादि रख दिए जाते थे। वह खाते और खेलते जाते थे। इस तरह के खाने का नाम सैंडविच हो गया है। और, इतना प्रचलित हो गया है कि स्टेशनों पर ख़ानसामा चाय के साथ इसका नाम पुकारा करते हैं। जब यह शब्द क्रिया होता है, तब इसका अर्थ होता है दो के बीच में दब जाना।

(२७) टैंटलस (Tantlus)—यह एक पौराणिक कथा है कि यह लीडिया-देश के बड़े धनी राजा थे। आपको ज्यूज़ ने बहुत-से गुप्त उपदेश दिए थे, और मना कर दिया था कि किसी पर इन्हें प्रकट न करें। परंतु आपने नहीं माना, और लोगों से कह दिया। आपको दंड दिया गया कि एक ऐसी जगह पर खड़ा कर दिया जाय, जहाँ आपके सिर पर फलों के गुच्छे लटक रहे हों, और ठुड्डी के पास तक पानी हो। जब भूख लगती थी, और आप हाथ ऊपर बढ़ाते थे, तो फल और ऊपर चढ़ते जाते थे, और जब पानी पीने के लिये सिर झुकाते थे, तो पानी नीचे उतरता जाता था। इससे अँगरेज़ी का शब्द टैंटालाइज़ (Tantalise) (क्रिया) बना, जिसके अर्थ हैं सताना या झूठी उम्मीदें दिलाकर तकलीफ़ देना।

(२८) टायटंस (Titans)—यह ग्रीस-देश के पुराण का एक दैत्य है, जिसके पिता का नाम आकाश और माता का नाम पृथ्वी है। यह भीमाकार थे। यह देवताओं से लड़े, और पराजित होने पर इन्हें दंड भी दिया गया। इससे अँगरेज़ी-शब्द टायटानिक (Titanic) (विशेषण) बना, जिसके अर्थ महान् बल, शक्ति और बृहत् आकार के हैं।

(२९) वैलनटाइन (Valentine)—यह योरप के महात्मा थे। १४ फ़रवरी आपका दिन माना जाता था, उस रोज़ दावतें होतीं और ख़ुशी मनाई जाती थी। उस देश के लोगों के विश्वासानुसार उस रोज़ चिड़ियाँ अपना जोड़ा बाँधती थीं। इसी वजह से प्रेमी और प्रेमिकाएँ इस दिन को शुभ समझते थे। अब इस शब्द के अर्थ प्रेमी और प्रेमिका हो गए हैं। शब्द की व्यापकता बढ़ी, और वह प्रेम-पत्र के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा।

(३०) वल्कन (Vulcan)—यह रोम-देश के अग्निदेव का नाम है। कहा जाता है, यह लोहार का काम करते थे। इससे वल्कनाइज़ (Vulcanize) (क्रिया) शब्द बना, जिसका अर्थ है रबर को गंधक से जोड़ना, और जो जुड़कर तैयार होगा, उसे वल्कनाइट (Vulcanite) कहते हैं। इसका मोटर के टायरों के संबंध में प्रायः प्रयोग होता है। जब 'वल्कन' के साथ पाउडर (Powder) जुड़ जायगा, तब उसके अर्थ बारूद के हो जायँगे।

उपर्युक्त शब्द वे ही हैं, जो प्रायः अँगरेज़ी लिखने या बोलने में आते हैं। इन्होंने अँगरेज़ी-भाषा में स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है।

हमारी भाषा में न-मालूम कितने शब्द अँगरेज़ी के आ गए हैं, जैसे अलमारी और कार्निस इत्यादि। वरांडा अँगरेज़ी-शब्द है, उससे उर्दू का बरआम्दा-शब्द बना, जिसका अब अपने साहित्य में स्थान सुरक्षित है। देहात के वे अशिक्षित पुरुष,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो यह दिखलाना चाहते हैं कि उन्हें अँगरेज़ी का ज्ञान है, इस शब्द का वरंडा उच्चारण करते हैं। 'रिपोर्ट' का देहाती उच्चारण रिपोट या रपट है। पोर्टिको (Portico) अँगरेज़ी-शब्द है। इसके अर्थ हैं किसी मकान के अंदर जाने का पटा हुआ रास्ता। यह लैटिन शब्द पोर्टिकस (Porticus) और फ़्रांस की भाषा के शब्द पोर्टा (Porta) से बना है। अंत-कथित शब्द के अर्थ फाटक के हैं। इन सब झगड़ों को छोड़-कर हम सब लोग इसे बरसाती कहते हैं। इससे अच्छे शब्द का आविष्कार किया नहीं जा सकता था। नेपाली-भाषा में इसे पोटिको कहते हैं। वहाँ का रंग ही कुछ और है। वे लोग कुर्सी को मेज़ और मेज़ को 'टिबिल' कहते हैं। यह बेचारा टिबिल टेबुल से बना है। अब यह मालूम ही नहीं होता कि इन शब्दों के बाप-दादे कौन थे। यह अँगरेज़ी का हाल है, जिसकी प्रशंसा में यह ठीक कहा जाता है कि इसके जानने-वाले संसार के हरएक देश में हैं। भाषा का व्यास तभी विस्तीर्ण होगा, जब तक हम 'दरवाज़ाबंद पॉलिसी' से काम न लें। परंतु दरवाज़ा इतना खुला भी न हो कि विदेशी शब्दों की बहिया आ जाय। यह ठीक है कि अँगरेज़ी हरएक देश में बोली जाती है। परंतु विगत जर्मन-युद्ध के बाद जो संधि-सभा स्थापित हुई थी, उसका उद्घाटन फ़्रांस के प्रेसीडेंट या प्रधान मंत्री ने किया था। उस सभा में संसार की सभी बड़ी शक्तियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे, परंतु उद्घाटन करनेवाले ने अपनी फ़्रांस की भाषा में भाषण दिया था। हम अपने ही देश में अपना भाषण 'लेडीज़ ऐंड जेंटिलमेन' से शुरू करते हैं! चाहे उसके बाद 'झिटकेदार' अँगरेज़ी बोलना पड़े, और व्याकरण व्याकुल हो जाय। अगर यह कहा जाय कि भारत-वर्ष में एक प्रांतवाले दूसरे प्रांत की भाषा नहीं समझते, तो ठीक है; परंतु जब उसी प्रांत का रहने-वाला उसी प्रांत में भाषण दे रहा हो, और अँगरेज़ी बोले, तो कहाँ तक ठीक है। अस्तु।

हमारी ही भाषा में, जिसे हमीं बोलने में शरमाते हैं, कुछ शब्द अँगरेज़ी के आ गए हैं। स्वराज शब्द का स्थान अँगरेजी-भाषा में निश्चित है, वैसे ही निश्चित स्थान इज़्ज़त का भी है, यद्यपि कहा यह जाता है कि हम अपने देश की महिलाओं की इज़्ज़त करना नहीं जानते। ऐसे अवसरों पर एक कहावत याद आ जाती है—किसी ने एक चित्र चित्रित किया, जिसमें दिखलाया गया कि एक निहत्थे आदमी और शेर से कुश्ती हुई। वह आदमी उसे परास्त कर उसके सीने पर बैठा हुआ था। चित्रकार ने यह चित्र शेर को दिखलाया और राय पूछी। शेर ने जवाब दिया, अगर क़लम मेरे हाथ में होती, तो परिणाम और तरह से चित्रित होता। हम लोगों के लिये जो जिसका जी चाहे, कह ले। 'त्रिशूल' की कविता का एक पद याद आ जाता है—"न हममें कोई वहशी न डैमफ़ूल होता, होते हम और ही कुछ, जो होमरूल होता।" अस्तु। 'सवार' शब्द भी अँगरेज़ी में बोला जाता है। अभी थोड़े ही दिन हुए, जब मैं अँगरेज़ी-भाषा का एक प्रमाणित कोष देख रहा था। उसमें 'नैनसुख' शब्द देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अँगरेज़ी ने इस शब्द को अपना लिया, और हम लोगों को इसके बोलने में शर्म मालूम होती है। एक किं-वदंती है कि एक मुंशीजी कपड़ा ख़रीदने बाज़ार गए। फ़ारसी के अच्छे विद्वान् थे, और हिंदी का एक शब्द भी बोलना ग्रामीणता का परिचय देना समझते थे। बेचारे नैनसुख में तो हिंदी के दो शब्द हैं। आपने बज़ाज़ से कहा—दो गज़ 'चश्म-आराम' दे दो। वह आपका मुँह ताकने लगा।

अपनी भाषा में भी बहुत-से ऐसे शब्द हैं, जिनकी उत्पत्ति नाम से हुई है, जैसे युधिष्ठिर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम से ही सत्यता का बोध होता है। कहावत हो गई है, 'बड़े युधिष्ठिर हो।' वैसे ही हरिश्चंद्र, दान में कर्ण, इधर की बात उधर लगाने में 'नारद'। 'वह तो नारद बन गए हैं।' ज़्यादा सोनेवाले को 'कुंभकर्ण' कहते हैं। देश या कुलद्रोही को 'विभीषण' कहते हैं। दासजी ने रामचंद्र की वंदना करते हुए कहा है—"गढ़ लंक विभीषण को जो दियो, तो निशंक ह्वै भेद बताइबे को।" मतलब कवि का यह था कि यदि मेरे ऊपर दया करो, जिससे तुम्हारा कोई काम नहीं बना है, तो दानी कहलाओगे। जयचंद, नवाब नकी और मीर जाफ़र ने अमर अकीर्ति कमाई, परंतु नाम प्रथम-कथित ही का ज़्यादा हुआ। "सदी बीसवीं के जयचंदो! फिर पीछे पछिताओगे; जरा स्वार्थ-बस फाँसे में आ जो विरोध फैलाओगे।" जिन्हें इसका कुछ भी ज्ञान नहीं कि नादिरशाह कौन थे, कहाँ के थे, और क्या किया था, वे भी वाक्यों में 'नादिरशाही' प्रयोग करते हैं। देहात तक में यह कहा जाता है कि "का नादिरसाही मचाए हौ?" 'नवाबी' शब्द भी बहुत प्रचलित है। इसके अर्थ हैं कि कोई पूछ-जाँच न हो, जिसका जो जी चाहे, सो करे।

ऐसे सैकड़ों शब्द अपनी भाषा में हैं। यही हाल क़रीब-क़रीब हरएक भाषा का होगा।

पं० चंद्रशेखर वैद्य शास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

गर्भ-निवारक

अगर आप अधिक औलाद पैदा करना नहीं चाहते, तो हमारी सरकार से रजिस्टर्ड 'गर्भ - निवारक' ओषधि का अपनी धर्मपत्नी को सेवन कराइए। ध्यान रखिए, इसके बाद फिर कभी गर्भ नहीं रहेगा, यह हमारी २५ साल की अनुभूत है, इससे तंदुरुस्ती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता, मासिक धर्म भी बंद नहीं होता। किंतु फिर आजन्म गर्भ की आशा न करें। मूल्य २॥), डा० म० ।≡) पता—पं० चंद्रशेखर वैद्य शास्त्री, ब्राह्मी औषधालय (नं० १) अलीगढ़।

कामिनी-वशीकरण

सरकार से रजिस्टर्ड

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता, या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है, जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खावेंगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है, जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे खुद तारीफ़ करेंगे। मू० ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५॥), ८ गोली का २॥), नमूना दो गोली ॥) ; मात्रा आधी गोली से एक गोली तक।

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मू० छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्षोभ

[श्रीयुत 'हृदय' एम्० ए०]

नहीं ये राग-रँगीले गीत !
विषमता है इनमें स्वर की,
विकलता है इनमें उर की,
भाव सूने-सूने-से हैं,
कसक है बस जीवन-भर की,
आँसुओं से हैं गीले गीत !

❀ ❀ ❀

नहीं ये मधु मतवाले गीत !
न है इनमें उन्माद भरा,
न रस है या कि प्रसाद-भरा,
रुदन है—केवल मूक रुदन,
और है अमित विषाद भरा,
किंतु हैं उर के पाले गीत !
कहूँ कैसे ये मेरे गीत !

कहाँ मुझमें वह प्यार भरा ?
कहाँ है सुख-शृंगार भरा ?
झलक भी कभी देखने दी ?
कहो तो मेरे प्राण, ज़रा ?
निराशा के ये घेरे गीत !
कहूँ कैसे ये मेरे गीत !

साहित्य-संसार में क्रांति लानेवाली बिलकुल निराले ढंग की पुस्तक

'प्रिया या प्रजा'

इसकी सर्वोत्तमता का सबसे बड़ा यही प्रमाण है कि एक ही वर्ष में दूसरे संस्करण की तैयारी हो गई। साहित्य-प्रेमियों ने किस उत्कंठा से इसे गले लगाया है, इसे विना पढ़े आप नहीं समझ सकते।

हम सिर्फ़ इतना ही कहेंगे कि—

यह पुस्तक राजनीति, देश-प्रेम, भक्ति, वैराग्य, वीरता आदि का सार है। साहित्य की गंभीरता समझने के लिये ही इसको एक बार पढ़ना चाहिए।

हिंदी की उच्च कोटि की परीक्षाएँ देनेवालों के लिये तो यह प्राण है। इसीलिये इसकी इकट्ठी प्रतियाँ कितनी ही साहित्यिक संस्थाओं ने ख़रीद ली हैं। इस पर भी इस अमूल्य रत्न का मूल्य केवल आठ आना है।

सोल एजेंट्स

१—गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ
२—रत्नाश्रम, आगरा
३—गुप्ता ब्रादर्स, धनौरा मंडी
४—विनीत-ग्रंथ-माला, तालबेहट (झाँसी)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में राजनीतिक आंदोलन

[श्रीपं० रामविलासजी शर्मा एम्० ए०]

(गतांक से आगे)

(३)

उस जेनरल से क्या आशा की जा सकती है, जो लड़ाई के बीच अपने सिपाहियों से कहे—"ठहरो, कुछ देर के लिये लड़ाई बंद कर दो ; मुझे पहले सोच लेने दो कि दुश्मन पर किस तरफ़ से हमला करना चाहिए। और, अगर तुम लड़ते ही रहोगे, तो मैं ठंडे दिमाग़ से सोच ही न पाऊँगा कि क्या करूँ।" सिवा इसके कि अपनी ढील से दुश्मन को आगाह कर दे, और उसे पहले से भी ज़्यादा तैयारी कर लेने का मौक़ा दे, वह अपनी सेना का बहुत ज़्यादा भला नहीं कर सकता। ऐसी ही बात महात्मा गांधी ने सब राज्यों में फ़िलहाल सत्याग्रह बंद करने के लिये कहकर की है। देशी राज्यों में जो अत्याचार हुआ है, उससे वह महसूस करते हैं कि अब एक दूसरी नीति बरतने की ज़रूरत है। स्पष्ट शब्दों में उनकी पहले की नीति असफल रही है, और उन्होंने कोई नया रास्ता खोज निकालने की ज़रूरत समझी है। वह कहते हैं —"हो सकता है, मुझे सफलता न मिले, परंतु यदि कभी वह मिल सकती है, तो ज़रूरी है कि मुझे शांति मिले, और वह तभी मिल सकती है, जब सविनय आज्ञा-भंग का आंदोलन रोक दिया जाय, जहाँ कहीं भी मैं उसका परिचालन कर रहा हूँ।" उनके अनुसार इस प्रकार आंदोलन रोकने से लोग लड़ाई के लिये पहले से अधिक संगठित हो जाते हैं। यहाँ वह यह भूल जाते हैं कि तब तक जनता से कहीं अधिक जनता के दुश्मन संगठित हो जाते हैं। देश में जो स्वतंत्रता के आंदोलन चले हैं, उनमें दमन की बर्बरता और उसकी संगठित अमानुषिकता में उत्तरोत्तर विकास हुआ है।

महात्मा गांधी कहते हैं, सत्याग्रही को इसकी परवा न करनी चाहिए कि लड़ाई के बीच से वह और क्या करने के लिये बुला लिया जाता है। उसे विश्वास रखना चाहिए कि सब कुछ भले के लिये हो रहा है। परंतु वह यह विश्वास कैसे रख सकता है, यदि परमेश्वर ने उसे दो आँखें दी हों। क्या वह अपने शासकों की दमन-नीति को पहचानता नहीं कि एक बार ढीले पड़ने पर जब दूसरी बार वह उभरेगा, तो सिर पर और भी ज़ोर से वज्र-प्रहार होगा?

महात्मा गांधी की नीति स्पष्ट हो जाती है, जब हम उनके इस कथन पर ध्यान देते हैं कि राजाओं को वायसराय के संदेश को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये समय देना चाहिए। गांधीजी की नीति एक सुधारक की है; राजाओं से सुधार माँगना प्रजा का हक़ है, वैसे ही, जैसे राजा का प्रजा पर शासन करना हक़ है। महात्मा गांधी के स्वराज्य में देशी नरेशों को भी स्थान मिल सकता है। देशी राज्यों के संबंध में महात्मा गांधी के इन रूढ़िवादी विचारों की श्रीजवाहरलाल नेहरू ने, अपनी आत्मकथा में, कई पन्नों में, आलोचना की है। गांधीजी नरेशों का खुलकर विरोध करने के विपक्ष में रहे हैं। जब कांग्रेस से उन्होंने इस्तीफ़ा दिया था, तो उसका एक कारण उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस के और अपने देशी राज्यों-संबंधी विचारों में मतभेद भी बताया था। वह मतभेद न तब स्पष्ट हुआ था, न अब। कांग्रेस की देशी राज्यों के मामले में आज भी वही नीति है, जो महात्मा गांधी की है। या यों कह सकते हैं कि कांग्रेस की नीति में परिवर्तन अवश्यंभावी देख उन्होंने अपनी नीति में भी थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर दिया है। राजकोट में किए गए व्रत से इस नीति पर विशेष प्रकाश पड़ता है।

पिछले साल राजकोट में सुधारों के लिये प्रजा ने आंदोलन शुरू किया था। दिसंबर में श्रीवल्लभ-भाई पटेल और राजकोट के ठाकुर की कौंसिल ने एक समझौता किया। निश्चय हुआ कि दस आदमियों की कमेटी बनाई जाय, जो एक सुधारों की स्कीम तैयार करे। इसमें तीन सदस्य राज्य के होते और बाक़ी सात श्रीपटेल द्वारा अनुमोदित और राजा द्वारा नियुक्त (nominated)। यह शर्त ही फ़साद की जड़ थी; यदि ये सदस्य श्रीपटेल के इच्छानुसार लिए जाते, तो उनमें राजा के नियुक्त करने का सवाल ही न उठता। जब शर्त में केवल श्रीपटेल के अनुमोदन (recommendation) का ज़िक्र है, तो यह स्पष्ट है कि इसे मानना-न मानना शासक के अधिकार में था, क्योंकि अंत में सदस्यों की नियुक्ति उसी के द्वारा होती। इस साल जनवरी में श्री-पटेल ने अपने सात आदमियों के नाम भेज दिए, परंतु उनमें से राजा ने केवल तीन को ही स्वीकृत किया; बाक़ी चार की जगह उसने अपनी ओर से नाम रक्खे। यही वह प्रतिज्ञा-भंग था, जिसे लेकर महात्मा गांधी ने व्रत किया।

सोचने की बात है, क्या यह ऐसी देश-व्यापक समस्या थी, जिसके लिये महात्मा गांधी का आमरण अनशन-व्रत लेना उचित था? उनकी माँग में सिवा इसके और कौन बात थी कि सुधार-कमेटी में श्रीवल्लभ भाई पटेल के आदमियों की संख्या ज़्यादा हो? फिर महात्मा गांधी ने अपने व्रत के आगे कोई राजनीतिक समस्या नहीं रक्खी। उनका ज़ोर इसी बात पर था कि राजा ने अपनी बात क्यों नहीं रक्खी। अपने पत्र में उन्होंने कहा कि वह उसे बेटे की तरह मानते थे; उसके विश्वासघात से उन्हें हार्दिक यंत्रणा हुई थी। उसे राह पर लाने के लिये वह व्रत कर रहे थे। इस तरह उन्होंने राज-कोट की समस्या को एक व्यक्तिगत समस्या बना दिया था। जयपुर, मैसूर, धेनकानल, कश्मीर, हैदराबाद में विकट परिस्थितियों की कमी थी? क्या एक देश के नेता को यह न चाहिए कि जहाँ परिस्थिति सबसे अधिक गंभीर हो, वहीं वह अपनी शक्तियों को अधिक लगाए? यदि राजकोट में चार सुधार मिल गए, तो इससे क्या सत्याग्रह की नीति अन्य राज्यों के लिये भी उपयुक्त सिद्ध हो जायगी? और, समझौता क्या हुआ है? यही कि मामला हिंदो-स्तान के चीफ़ जस्टिस के सामने उनके फ़ैसले के लिये रक्खा जाय। महात्मा गांधी के अनुसार जो कुछ उन्होंने व्रत करने से पाया, वह उनकी आशा से अधिक था। यदि महात्मा गांधी की आशा का यही परिमाण है, तो देशी राज्यों की प्रजा को अपने आंदोलन में उनसे क्या आशा हो सकती है?

राजकोट के मामले में अनेक कांग्रेस के नेताओं ने वायसराय के दख़ल देने से उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। महात्मा गांधी के जीवन से संबंध रखने के कारण यह कृतज्ञता कुछ माने रख सकती है, परंतु देश की राजनीति में इसका अर्थ ग़ुलामी है। देशी राज्यों में प्रजा के आंदोलन को हम अपने हाथ में न लेकर वायसराय के इंगितों को परखते हैं कि वह सुधार करे। वायसराय से हस्तक्षेप करने की अपील करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही ग़लत था। इसका अर्थ था कि देशी राज्यों पर ही नहीं, बल्कि अपने ऊपर भी उसके शासन को हम स्वीकार करते हैं। महात्मा गांधी की इस नीति के साथ सारी कांग्रेस भी लिपटी हुई थी, और इस तरह वह अपनी उन तय की हुई मंज़िलों की तरफ़ लौट रही थी—या लौट रही है—जब वह ब्रिटिश सम्राट् के शासन में रहकर ही चार सुधारों की माँग पेश करना अपना चरम लक्ष्य समझती थी।

जब कांग्रेस ने अँगरेज़ी हुकूमत में पूर्ण स्वतंत्रता के ध्येय की घोषणा की है, तब क्या कारण है, वह देशी राज्यों में राजाओं से ही नहीं, वरन् उनके सिर पर बैठी एक विदेशी शक्ति से भी समझौता करने पर आमादा है?

राजकोट के मामले से गांधी-नीति का सुधारवादी पहलू सामने आता है। साथ ही हम यह भी समझते हैं कि महात्मा गांधी अपनी शक्ति उतनी वहाँ नहीं लगाते, जहाँ असंतोष बढ़कर विद्रोह का रूप धारण कर लेने को होता है, जितनी वहाँ, जहाँ सुधारों की गुंजाइश सबसे ज़्यादा होती है।

महात्मा गांधी से प्रभावित देशी राज्यों के संबंध में कांग्रेस की नीति तटस्थता की रही है। यद्यपि एक बार अँगरेज़ी हुकूमत से लड़ाई मोल लेने पर तटस्थ रहना असंभव हो जाता है। इन रियासतों की भौगोलिक या सांस्कृतिक सीमाएँ ऐसी नहीं, जो इन्हें अँगरेज़ी सूबों से अलग रक्खें। और, जहाँ ऐसी सीमाएँ मिल भी सकती हैं, वहाँ वे इतनी बड़ी या महत्त्व की नहीं कि देश की सीमाओं के भीतर समा न सकती हों। उदाहरण के लिये कश्मीर भौगोलिक दृष्टि से एक अलग सूबा कहा जा सकता है, परंतु वह समग्र राष्ट्र का एक सूबा ही कहा जा सकता है, एक स्वतंत्र राज्य नहीं। कश्मीर के तमाम रहनेवाले सारे हिंदोस्तान में फैले हैं; वे कश्मीरी होते हुए भी बाक़ी के हिंदोस्तान से जुदा नहीं किए जा सकते। सूबों-सूबों में लोगों का यहाँ से वहाँ जाकर बसना और कमाना-खाना जारी है; उसी तरह देशी राज्यों में भी। इन देशी राज्यों और बाक़ी देश का, कुछ दिनों को छोड़कर, इतिहास एक ही है। अँगरेज़ों के आने के पहले देशी राज्यों की तरह बाक़ी देश भी देशी था। और, आज भी आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए देशी राज्यों और अँगरेज़ी हुकूमत की प्रजा की समस्याएँ बहुत कुछ एक ही हैं। दो-चार बड़ी रियासतों को छोड़कर अधिकांश रियासतें वे हैं, जो अँगरेज़ी सूबों के भीतर हैं, जैसे गुजरात या उड़ीसा की रियासतें। यहाँ अँगरेज़ी हुकूमत और देशी राज्यों की प्रजा में कोई अंतर नहीं; दोनो एक दूसरे में गुँथी हुई हैं। जहाँ ऐसा नहीं, वहाँ भी देशी राज्य अँगरेज़ी सूबों से इतना निकट से घिरे हैं कि उनकी विभिन्नता कोई चाहे भी, तो क़ायम नहीं रक्खी जा सकती। फिर संस्कृति को लेकर तो ये राज्य अपना स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध ही नहीं कर सकते। तब राष्ट्र के विकास में इन राज्यों का अलगाव कहाँ तक सही हो सकता है?

जिस देश की आर्थिक समस्याएँ एक हैं, आज के ज़माने में वही एक राष्ट्र है। भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं का अब उतना महत्त्व नहीं रह गया। यातायात के साधनों ने भौगोलिक सीमाओं को खंडित कर दिया है। उसी प्रकार लोगों के पारस्परिक मिलन से एक आम संस्कृति का विकास हो रहा है, जिसका किसी जाति या धर्म से विशेष संबंध नहीं। देशी राज्य की प्रजा के कष्ट अँगरेज़ी हुकूमत की प्रजा के कष्टों के समान हैं; अंतर केवल शोषण के साधनों में है। अँगरेज़ी राज्य के लोग सीधे-सीधे विदेशी साम्राज्य के संपर्क में हैं, जब कि राज्यों की प्रजा एक मध्ययुग के उच्छिष्ट शासन-तंत्र के नीचे है; परंतु वह शासन तंत्र, जो आज वास्तव में उस विदेशी साम्राज्यवाद के ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण टिका हुआ है। अंत में संपर्क दोनो का अँगरेज़ों की हुकूमत से ही है।

ब्रिटिश हिंदोस्तान और देशी राज्यों के इस संबंध को देखते हुए कांग्रेस की तटस्थता की नीति कहाँ तक उचित हो सकती है? फिर अँगरेज़ सरकार इन राज्यों से पारस्परिक सहायता की संधि किए बैठी है, तब तो अपने आप कांग्रेस इस सरकार का विरोध कर देशी नरेशों का विरोध मोल लेती है। यदि ये नरेश देश के बाहर होते, तो सोचा जाता कि उनसे युद्ध किया जाय या नहीं, परंतु जब वे देश में हैं, और उनका अस्तित्व राष्ट्र के विकास में बाधा डाल रहा है, तब उनका विरोध करने में दुविधा की कोई बात नहीं रहती। यदि कांग्रेस उनसे लड़ाई मोल नहीं लेती, तो इसलिये कि वह कमज़ोर है।

इसके प्रमाण-स्वरूप एक घटना याद आती है। सन् ३४ की लखनऊ-कांग्रेस में एक सरदार साहब राज्यों में अत्याचार की कहानी सुना रहे थे। इस अत्याचार का संबंध स्त्रियों से भी था, और उसके प्रतिकार का उन्हें कोई साधन न मिल रहा था। वह चाहते थे, कांग्रेस ऐसे मामले में हस्तक्षेप करे। श्रीवल्लभभाई पटेल ने उत्तर देते हुए कहा कि कांग्रेस उतना ही कहती है, जितना कर सकती है। जब स्त्रियों पर अत्याचार होता था, तब सरदारजी कृपाण बाँधे क्यों बैठे रहे? कांग्रेस यह कभी नहीं कहती कि स्त्रियों की रक्षा न की जाय। निश्चय श्रीपटेल ने कांग्रेस से सरदारजी की कृपाण को ज़्यादा ताक़तवर समझा, जो वह राज्यों में होनेवाले अत्याचार का मुक़ाबला करती, और कांग्रेस की अहिंसात्मक नीति भी भंग न करती। परंतु उनकी तरह औरों ने भी स्पष्ट रूप से कांग्रेस की इस कमज़ोरी को स्वीकार नहीं किया। यह कमज़ोरी ही है, जिस पर हमें लज्जा भले हो आए, अभिमान कभी नहीं हो सकता।

फिर भी त्रिपुरी के देशी राज्यों-संबंधी प्रस्ताव में इस बात का गर्व के साथ उल्लेख किया गया है—"The Haripura policy was conceived in the best interests of the people in order to enable them to develop self-reliance and strength."

कांग्रेस की तटस्थता कि नीति देशी राज्यों की प्रजा में आत्मनिर्भरता और शक्ति उत्पन्न करने के लिये अपनाई गई थी। यह उतना ही उचित है, जितना प्रत्येक सूबे के लिये अलग से तैयारी करके अँगरेज़ी हुकूमत से मोर्चा लेना होता। कांग्रेस के नेता सभी मोर्चों पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति एक संयुक्त शक्ति चाहते हैं; परंतु देशी राज्यों को वे आत्मनिर्भरता का विकास करने के लिये छोड़ देते हैं। नहीं सोचते कि इनकी कमज़ोरी हमारी ही कमज़ोरी है, और इनके बिना स्वराज्य पाना तो दूर रहा, हमारा आंदोलन भी पूरी मात्रा में प्रगतिशील नहीं हो सकता।

संगठन के नाम पर कांग्रेस को स्वयं अभी बहुत कुछ सीखने की ज़रूरत है, फिर भी वह अपना राजनीतिक अनुभव देशी राज्य के लोगों के लिये रख सकती थी। एक नहीं, पचासों जगह आंदोलन शुरू हुआ, परंतु असंगठित होने से वह कुचल ही नहीं डाला गया, वरन् लोगों को उसके बाबत इतनी जानकारी भी न हुई कि वे महसूस करते कि देश में एक भारी आंदोलन का जन्म हो चुका है, और वह धीरे-धीरे दबाया जा रहा है। अपना घर-बार छोड़ने से गोली खाने तक की जो क़ुरबानी हो सकती है, उसके उदाहरण इस आंदोलन में पाए गए। लेकिन नतीजा? संगठन के अभाव में इस आंदोलन ने एक झटके से हमें अपने राजनीति के विकास-पथ पर बीस क़दम पीछे डाल दिया। शक्ति तितर-बितर होकर यों ही सर्फ़ हो गई। कांग्रेस अभी इतना ही कह देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अपने कर्तव्य की इति समझती है कि यदि राज्यों में ऐसा ही जागरण रहा, तो भविष्य में वह अपनी तटस्थता की नीति ढीली करके अंत में उसे छोड़ भी सकती है। कांग्रेस भूल जाती है कि उसका धर्म जनता का प्रतिनिधित्व करना ही नहीं, वरन् उसमें जागृति फैलाना भी है, और देशी राज्यों में जागृति फैलाना उतना ही ज़रूरी है, जितना अँगरेज़ी सूबों में।

महात्मा गांधी देशी राज्यों के लिये एक नई नीति सोच रहे हैं। जब तक वह प्रकाशित न हो, तब तक नहीं कहा जा सकता कि वह परिस्थिति पर कितनी लागू होगी। कम-से-कम उसमें आंदोलन को संगठित करने के आइटेम का एक महत्त्व-पूर्ण स्थान होना चाहिए। महात्मा गांधी अभी तक अनेक रियासतों में सत्याग्रह के संबंध में सलाह देते रहे हैं। हम उसका अंत भी देख चुके हैं। वह आंदोलन, जिसके प्रोग्राम में जय बोलकर जेल चले जाने से अधिक सक्रियता नहीं, मुश्किल से ही सफल हो सकता है। थोड़े ही समय बाद प्रजा के विद्रोही भाग त्रस्त कर दिए जाते हैं। कश्मीर में न केवल आंदोलन को कुचला गया, बल्कि कान्फ्रेंस ने विना बुलाए सुधारों के अनुकूल नई प्रजा-सभा के चुनाव में भाग भी लिया। एक सत्याग्रही के लिये यह ठीक हो सकता है कि वह लड़ाई छोड़कर और कुछ भी करने लगे, और अंत में सब भले के ही लिये हो, परंतु यह साधारण प्रजा के लिये भला नहीं होता। वह एक बार बड़ी-बड़ी आशाएँ लेकर आंदोलन में भाग लेती है, परंतु जब उसे बुरी तरह कुचल दिया जाता है, और वह अपने नेताओं को अन्य-अन्य मार्गों का अनुसरण करती देखती है, तब उसकी आत्म-निर्भरता बजाय बढ़ने के और घट जाती है। विना एक आमूल परिवर्तन किए गांधीजी की सत्याग्रह-प्रणाली देशी राज्यों के आंदोलन को किसी ठीक हद तक नहीं पहुँचा सकती। एक बड़ी क़ीमत देकर थोड़े-से सुधार भले ही मिल जायँ, परंतु शक्ति हाथ में नहीं आ सकती; और इन सुधारों का क्या भरोसा? राष्ट्र-के-राष्ट्र आज साम्राज्यवादियों द्वारा जीते जा रहे हैं; तब शासकों को मौक़े पर अपने सुधार वापस लेते क्या देर लग सकती है। यदि असहयोग और आज्ञा-भंग-आंदोलन से कांग्रेस कई सूबों में मंत्रित्व पा गई है, तो यह उसके आंदोलन के मूल्य को बहुत ऊँचा आँकने का कोई कारण नहीं। यदि अनशन कर महात्मा गांधी ने राजकोट में कुछ सुधार ले लिए, तो इससे यह मतलब नहीं निकलता कि वह उपाय भी उचित था। हमारे विरोधी हमारे ग़लत अस्त्रों से एक बार हार मानकर हमें धोके में भी डाल सकते हैं। इसीलिये गांधीजी जो भी नई नीति निकालें, उसे बहुत समझ-बूझकर काम में लाने की ज़रूरत है। जनता से एक उत्तेजना के वातावरण में कुछ भी कराया जा सकता है; परंतु उस समय उसे निरुत्साह कर आंदोलन की कमर तोड़ देने से विकास का पथ वर्षों के लिये रुक भी जाता है।

देशी राज्यों के बढ़ते असंतोष को संगठित कर कांग्रेस अपने आपको भी शक्तिशाली बना सकती है। साथ ही विदेशी साम्राज्यवाद को जो धक्का वह देगी, वह पहले से अधिक सबल होगा। अपने स्वतंत्रता-संग्राम में हम देश की एक चौथाई जनता को छोड़कर चल रहे थे। सबसे पहले संगठन की ज़रूरत है; और उसके बाद भी—संगठन की—ज़रूरत है। एक संगठित आंदोलन अपने नेताओं को एक दिशा में चलने के लिये बाध्य कर सकता है। इसका समय अभी है। एक बार अंतरराष्ट्रीय संकट निकल जाने पर ब्रिटेन बेफ़िक्र हो जायगा, और तब उसके शासन की शृंखलाएँ देश को और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मज़बूती से जकड़ लेंगी। जैसा कि गर्म दल के नेता कहते हैं, उन्हें त्रिपुरी के प्रस्ताव का विशद-से-विशद अर्थ लगाते देशी राज्यों से ख़ूब घनिष्ठ संपर्क स्थापित करना चाहिए। फिर से नया आंदोलन छिड़ने पर हम सारी जनता को अपने साथ ले सकेंगे, और वह सचमुच एक राष्ट्रीय आंदोलन कहला सकेगा।

(समाप्त)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्य-जनक ईजाद ! याने

सूज़ाक (गनोरिया) की हुकमी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात—

'गोनोकिलर'

GONO ORIGINAL KILLER REGD TRADE MARK

[रजिस्टर्ड]

नक़ली से सावधान ! ख़रीदने से पहले दवा का नाम 'गोनोकिलर और मुर्गा-छाप सीलबंद' पैकेट देख लीजिए।

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने और निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर ही एक ऐसी आश्चर्य-जनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश नहीं होना पड़ता। डॉक्टरों की दवा इंजेक्शन (टीका) लेकर आप परेशान हो गए हों, अँगरेज़ी और अमेरिकन पेटेंट दवाओं में पैसा फ़िज़ूल बरबाद करके बिलकुल नाउम्मेद हो गए हों, तब आख़िरी इलाज हमारा 'गोनोकिलर' बेखटके इस्तेमाल कीजिए। चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक क्यों न हो, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूज़न होना, स्वप्नदोष और धातु-क्षीणता, औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को 'गोनोकिलर' जड़ से नष्ट कर देता है। मूल्य ४० गोली की शीशी ३) रुपया। डाक-ख़र्च आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी०एन्० जसानी, (S. L.) विट्ठलभाई पटेल-रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ-एजेंट—किंग मेडिकल हॉल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेवी वर्मा की काव्य-साधना

[श्रीयुत श्यामनारायण बैजल एम्० ए०]

(गतांक से आगे)

नीहार में कवयित्रीजी इस स्वप्न का पूर्ण चित्रण करने के बाद एक निराशा-पूर्ण आह लेती हैं। स्वप्न में जो अज्ञात झंकारें इन्होंने अनहद-नाद की भाँति सुनी हैं, उन्हें वह जाग्रदवस्था में नहीं सुन पातीं। स्वप्न-मिलन की क्षण-भंगुरता इनके विरह को उद्दीप्त कर उन्हें नैराश्य की गोद में आह छोड़ने के लिये छोड़ देती है। वह स्वप्न का वर्णन कर लेने के बाद कहती हैं—

वे मूक हुईं झंकारें,
वह चूर हो गया प्याला;
हो गईं कहाँ अंतर्हित
सपने लेकर वे रातें।
(नीहार—पृष्ठ ४१)

आध्यात्मिक मिलन स्वप्न-तुल्य ही होता है। अतः इस क्षण-भंगुर स्वप्न के बाद स्मृति का आविर्भाव स्वयं ही हो जाता है। देवीजी ने स्वप्न संचारी के साथ-ही-साथ इस संचारी का ख़ूब दिग्दर्शन कराया है। इस क्षणिक स्मृति-भाव में उत्कट वेदना छिपी हुई है। सांध्य गीत में एक स्थल पर इन्होंने इस स्मृति को बड़ी चमत्कार-पूर्ण भाषा में प्रकट किया है। इतना ध्यान रहे कि यह चमत्कार भाव-प्रेरित है, उक्ति-मात्र नहीं।

सजनि ! अंतर्हित हुआ है
'आज' में धुँधला विकल 'कल';
हो गया है मिलन एका-
कार मेरे विरह में मिल।
राह मेरी देखती स्मृति
अब निराश पुजारिनी-सी।
(पृष्ठ २४)

स्मृति-जैसी अमूर्त चीज़ में मानवता का आरोप कल्पना की एक सुंदर उड़ान का उदाहरण है। और, फिर एक निराश पुजारिन के समान उसके राह देखने ने तो गीत के वातावरण में एक अजीब उदासीनता-सी लाकर खड़ी कर दी है। स्मृति की उपमा देवीजी एक विरहोत्कंठिता नायिका या किसी और नायिका से दे सकती थीं, पर इन्होंने ऐसा न कर 'पुजारिन' से उपमा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि इनके गीत में एक आध्यात्मिक वातावरण विद्यमान हो गया। धुँधले, विकल कल की याद आज में अंतर्हित हो गई है। कल का मिलन का रूप आज विरह के रूप में होते हुए भी (स्मृति करते-करते) मिलन का रूप ही धारण कर बैठा है। कितनी मनोवैज्ञानिकता-पूर्ण बात है। श्याम का पत्र पढ़ते-पढ़ते राधिका अपने अश्रुओं से पत्र ही को श्याम रंग का नहीं कर देतीं वरन् स्वयं श्याममय हो जाती हैं। यहाँ देवीजी भी इसी मनोवैज्ञानिक बैसाखी का सहारा ले, अतीत मिलन की याद करते-करते स्वयं मिलन का आवरण ओढ़ लेती हैं। सांध्य गीत में विरहिणी की 'आकुलता' प्रकट करते हुए भी इन्होंने इसी मनोवैज्ञानिक ग्रंथि को सुलझाया है। यह लिखती हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकुलता ही आज हो गई तन्मय राधा ;
विरह बना आराध्य द्वैत क्या कैसी बाधा !

(पृष्ठ १८)

यद्यपि विरह की स्टेज द्वैत स्टेज है, पर देवीजी की नायिका 'राधा' की भाँति विरह में ही इतनी तन्मय हो जाती है कि उसका आराध्य विरह ही हो जाता है। विरह के आराध्य होते ही द्वैत भावना नष्ट हो जाती है, और रह जाती है केवल "एक विरह की भावना", जो अपने एकांत रूप में अद्वैत ही कही जायगी।

इनकी नायिका अतीत-सुधि से विह्वल हो उठती है। वह कहती है—

कसक-कसक उठती सुधि किसकी ?
रुकती-सी गति क्यों जीवन की ?

(रश्मि—पृष्ठ ६९)

इसी 'सुधि' का सहारा लिए यह उस स्थिति पर पहुँच जाती हैं, जहाँ अतीत अद्वैतवाद का याद हमें दार्शनिक आँधियों के झूलों पर आंदोलित कर हमारे मानसिक संसार में एक बवंडर पैदा कर देती है। पर उसे क्या प्राप्त होता है। वही, जो आज तक संसार पा चुका है। यही न कि जीवन एक न सुलझनेवाली पहेली है। इसीलिये देवीजी की विरहिणी 'सुधि' में डूबने के बाद इसी निर्णय पर पहुँचती है—

जीवन क्या है मिला कहाँ ;
सुधि भूली आज समूल !

(रश्मि—पृष्ठ ७०)

विरहिणी की निरवलंबता और दीनता अंतिम पंक्ति से प्रकट है।

इनकी नायिका के मन में वे स्मृति बनकर क्यों खटकते हैं ? ज़रा इसका तो कारण देखिए—

वे स्मृति बनकर मानस में
खटका करते हैं निशि-दिन ;
उनकी इस निष्ठुरता को
जिससे मैं भूल न पाऊँ।

(रश्मि—पृष्ठ ७३)

कितना गहरा और तीक्ष्ण कटाक्ष है। उपालंभ कितनी सादगी के साथ निबाहा गया है।

उनकी नायिका के लिये "स्मृति का आना" वसंत के आगमन से कम महत्त्व नहीं रखता। "शुष्क हृदय में भूले हुए स्नेह की स्मृतियाँ, निष्ठुर हृदय में भूले हुए दुःख की स्मृतियाँ, सभी जीवन को सरस और उर्वर बनाने में समर्थ होती हैं।" 'रश्मि' की सुधि-शीर्षक रचना में इसी भाव की छाया है। 'नीहार' में देवीजी ने मूर्त और अमूर्त पदार्थों से इस 'स्मृति' के अमूर्त रूप का दिग्दर्शन कराया है। देवीजी मानव-हृदय की इस स्थिति को समझने में बड़ी कामयाब हुई हैं। और, 'नीहार' में आए इस विश्लेषण ने तो कवयित्रीजी की वर्णनात्मक सशक्तता में चार चाँद लगा दिए हैं। वह स्मृति के अमूर्त रूप का विश्लेषण करती हुई लिखती हैं —

विस्मृति-तिमिर में दीप हो,
भवितव्य का उपहार हो ;
बीते हुए का स्वप्न हो,
मानव-हृदय का सार हो।
दुर्दैव ने उर पर हमारे
चित्र जो अंकित किए ;
देकर सजीला रंग तुमने
सर्वदा रंजित किए।

(नीहार—पृष्ठ ९४)

'स्मृति' संचारी रूप में हमें सांध्य गीत और नीरजा में मिलती है, पर यहाँ स्थानाभाव के कारण उदाहरण देना असंभव प्रतीत होता है।

देवीजी की विरहिणी स्वप्न और स्मृति ही में संतोष नहीं प्राप्त करती, वह तो अज्ञात के प्रति प्रेम रखते हुए भी इसी व्यक्त संसार की है। उसे वैसा ही दिल मिला है, जैसा हमारे पास है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिये उसके "मोम-से उर में" "वेदना का अग्नि-कण" जो बन गया है (सांध्य गीत—पृष्ठ १०), वह उसे दिन-रात साधारण स्त्री की भाँति चित्रित रखता है। अंत में वह विषाद की अपरंपार माया का अनुभव करती है। इस अनुभव के बाद ही उसे एक अनमनी-सी तृप्ति प्राप्त होती है। वह संतोष के साथ कहती है—

यह दुख का राज्य अनंत
रहेगा निश्चल - सा।
(नीरजा—पृष्ठ ३६)

इस संतोष में चिंता और विषाद की जो भावना छिपी हुई है, वह साहित्यिकों से छिपी न होगी। इस चिंता और विषाद की भावना 'नीहार' में हमें अपने चरम रूप पर पहुँची प्रतीत होती है। महादेवी की नायिका अपनी अनिर्वचनीया पीड़ा ही में अपने नायक को ढूँढ़ने लगती है। "तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा; तुममें ढूँढ़ूँगी पीड़ा।" "पीड़ा की सार्थकता इसी में है कि अखिलानंददायिनी क्रीड़ा के रूप में परिणत होकर अपने आपमें परिपूर्णता प्राप्त करे।"

यद्यपि पीड़ा का यह अन्यतम रूप हमें इनके काव्य में उपलब्ध होता है, तथापि इसके अंतर्गत निराशावाद की वह झलक नहीं, जिसमें स्फूर्ति और नई जवानी का एकदम अभाव होता है। निस्संदेह दुःख संचारी के जितने भी चित्र इनके काव्य में मिलते हैं, वे सब-के-सब बाह्य रूप से हमें अपने निराशात्मक आवरण से ही परिचित कराते हैं। परंतु वास्तव में उनमें शेली की 'ओड टू वेस्ट विंड'-जैसी भावना अंतर्हित है। शेली की दुःखित पश्चिमी वायु के पास मंगलात्मक संदेश थे। ऐसी ही मंगलाशा देवीजी के दुःख-पूर्ण गीतों से छलकती है। इनका तो विश्वास है—

है पीड़ा की सीमा यह
दुख का चिर सुख हो जाना।
(रश्मि—पृष्ठ १८)

या नीरजा में—

चिर वसंत है मेरे इस
पतझर की डाली-डाली।
(पृष्ठ ४६)

या एक स्थल पर यह लिखती हैं—

छिपाकर उर में विकट प्रभात
गहनतम होती पिछली रात।
(रश्मि—पृष्ठ २५)

रहस्यवादी कवि मंगलाशी होते हैं। यदि वे ऐसे न हों, तो उनके रोने का मूल्य क्या?

सांध्य गीत में देवीजी के दुःख-संबंधी विचार काफ़ी स्पष्ट हो गए हैं। इनके पिछले काव्यों में तो हमें दुःख और सुख की दो धाराएँ अलग-अलग बहती प्रतीत होती हैं। इनकी विरहिणी अपनी जीवन-गंगा के दुःखवाले तट पर खड़ी होकर अपनी पीड़ा का विकट रूप ही 'रश्मि' और 'नीहार' में देखती है। इसी दुःख में वह अपने सुख-स्वप्नों को ढूँढ़ती है। पर उसे क्या प्राप्त होता है। सुख की एक अस्पष्ट झलक! जिसे वह जीवन से दूर समझती और अपनी जीवन-गंगा का दूसरा तट मानती है। पर नहीं-नहीं, देवीजी की विरहिणी 'सांध्य गीत' में अपनी ग़लती का अनुभव करती है। वह पंत की विरहिणी हो जाती है। उसे पता चलता है कि दुःख-सुख गंगा के दो तट नहीं, वरन् एक धारा के, एक ही लहर के दो रूप हैं। उसे पता चलता है कि दुःख-सुख का ताना-बाना ही जीवन को पूर्ण रूप देता है। उसकी दार्शनिकता की अस्वाभाविकता, जो 'रश्मि' और 'नीहार' में मिलती है, सांध्य गीत में दूर हो जाती है, क्योंकि इनकी विरहिणी कह उठती है—

नियति वन कुशली चितेरा
रंग पाई सुख दुःख रंगों से
मृदुल जीवन - पात्र मेरा।
(पृष्ठ ३५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीजी की फ़िलासफ़ी पर जो दुःख से लदी होने का दोषारोपण किया जाता है, वह आलोचकगण उनको ठीक-ठीक न समझने के कारण ही करते हैं। निस्संदेह अपनी पिछली पुस्तकों में कवयित्रीजी इस संबंध में अस्पष्ट भी हैं, पर हर्ष की बात है कि यह सांध्य गीत में अधिक स्पष्ट होने के कारण इस दोष से वंचित हैं। किंतु इतना ध्यान रहे कि दुःख और सुख से जीवन-पात्र को भरा हुआ मानते हुए भी इन्होंने सांध्य गीत में दुःख को प्रथम स्थान दिया है।

संचारी भावों के संबंध में इतना ही यथेष्ट होगा। कहने का प्रयोजन यह कि अपने स्थायी भाव रति को सुस्पष्ट करने के लिये जितने भी संचारी भावों का प्रयोग इन्होंने किया है, उसमें यह सफल रही हैं। यह अपनी विरहिणी के जीवन में आनेवाले मर्मस्पर्शी भावों को पहचान सकी हैं। ऊपर लिखे हुए संचारियों के अलावा आशा (नीरजा—पृष्ठ १०५), आकांक्षा (नीरजा—पृष्ठ १०१), उपालंभ, दैन्य, प्रतीक्षा आदि भावों को भी स्पष्ट करने में यह फलीभूत हुई हैं।

'रति' स्थायी के अलावा इन्होंने अपने गीतों के विषयों को संसार के और दृश्यों से भी चुना है। इस प्रकार के गीतों की संख्या कम ही है। स्थानाभाव के कारण उनकी इस लेख में आलोचना नहीं हो सकती, पर इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि उस क्षेत्र में भी यह सफल उतरी हैं। इन विषयों को इन्होंने पृथ्वी के दुःख-पूर्ण कोने ही से चुना है, और जहाँ ऐसा नहीं भी हुआ है, वहाँ इन्होंने उस विषय को अपने अंतःकरण से प्रकट होनेवाली दुःख-धारा का अंग बना दिया है। इस प्रकार के विषय संसार, मृत्यु, समाधि, समाधि के दीप से, जीवन, अलि से इत्यादि हैं।

विप्रलंभ के क्षेत्र से बाहर निकलकर हमें इनकी कल्पना और भावुकता के दर्शन प्रकृति के क्षेत्र में होते हैं। शुद्ध प्राकृतिक वर्णन इनके काव्य में कम मिलता है। जहाँ कहीं भी इन्होंने प्रकृति का रम्य अंकन करना चाहा है, वहाँ यह अपनी विरहिणी नायिका के हृदय को नहीं भूल सकी हैं। इनका प्रकृति-वर्णन भी इनके विरह-वर्णन का अंग हो गया है। इनके प्राकृतिक चित्र इनकी नायिका के हृदय को सादृश्य और वैषम्य भावना का निकेतन बनाते चलते हैं। जैसे—

नव मेघों से रोता था
जब चातक का बालक मन;
इन आँखों में करुणा के
घिर-घिर आते थे सावन।

(सादृश्य भावना, रश्मि—पृष्ठ २७)

अपनी विरहिणी के जीवन से प्रकृति का इतना घनिष्ट संबंध स्थापित करने से देवीजी के काव्य में एक दोष आ गया है। यह प्रकृति का शुद्ध वर्णन करने से वंचित रही हैं। संस्कृत-कवियों-जैसा आनंद हमें इनके प्रकृति-वर्णन में नहीं प्राप्त होता। वर्षा का वर्णन वर्षा के लिये, शरद् का शरद् के लिये हमें नहीं मिलता। पर देवीजी ने इस दोष को अपनी कला से प्रकट नहीं होने दिया है। देवीजी ने अपनी विरहिणी के जीवन से प्रकृति का इतना घनिष्ट संबंध स्थापित किया है कि पाठक का दिल शुद्ध प्राकृतिक चित्रों के अभाव को महसूस नहीं करता। वह विरहिणी के जीवन से एकीकरण स्थापित करने के पश्चात् विरहिणी की तरह प्रकृति के साथ तादात्म्य अनुभव करता है। अंतर इन दोनो वर्णनों में इतना ही रहता है कि शुद्ध वर्णन प्रत्यक्ष रूप से पाठक के पास पहुँचता है, पर यह वर्णन किसी चरित्र के सहारे। प्रथम प्रकार का वर्णन दूसरे प्रकार के वर्णन से कहीं अधिक तादात्म्य अपने में छिपाए होता है। किंतु दूसरे प्रकार के वर्णन में तादात्म्य की कमज़ोरी होते हुए भी एक लाभ है, जो हमें शुद्ध वर्णन से नहीं प्राप्त होता। दूसरे प्रकार का वर्णन किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे चरित्र का अंग बनकर आता है, जिसे हमारे ही भाँति का दिल मिला है, अतः वह सहज में समझ में आ जाता है। महादेवी का प्रकृति-वर्णन ऐसा ही है। विरहिणी के हृदय को समझ लेने के बाद वह पाठक के लिये गंगा की धारा की भाँति स्पष्ट और पठनीय हो जाता है। निस्संदेह इसमें शुद्ध वर्णन-जैसे अनमोल मोती नहीं, पर इसके नक़ली मोतियों का मूल्य आँकना सहज है।

इतना ही नहीं, विरहिणी के जीवन से मेल स्थापित करती-करती एक क़दम और आगे बढ़ जाती है। इन्हें प्रकृति के हर पदार्थ में मानवता के दर्शन होने लगते हैं। "वह प्राकृतिक पदार्थों में मानवता का आरोप करके उन्हें हमारे जीवन के अधिक निकट लाने का उद्योग करती हैं। काव्य में अपूर्व माधुर्य संचार करने का यह एक मूल्यवान् साधन है।" नीरजा में यह वसंत-रजनी पर मानवता का आरोप करती हुई लिखती हैं—

धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ वसंत-रजनी!
तारकमय नव वेणीबंधन;
शीशफूल कर शशि का नूतन;
रश्मि-वलय सितधन अवगुंठन;
मुक्ताहल अविराम बिछा दे
चितवन से अपनी!
पुलकती आ वसंत-रजनी! (पृष्ठ ३)

इस प्रकार के वर्णन इनके काव्य में बहुत आए हैं। अपनी सशक्त लेखनी के कारण इस प्रकार के चित्रों में इन्होंने काफ़ी सफलता पाई है। मानव-आरोपण करते समय यह प्राकृतिक चित्रों को पुरुष-रूप में ही देखने लगती हैं। ऐसे चित्र हमारे हृदय को बहुत जल्द आकर्षित करते हैं।

कई गीतों में कवयित्रीजी ने प्रकृति का शुद्ध वर्णन करना चाहा है, पर पंत की भाँति ऐसे वर्णनों को अंत तक नहीं निबाह सकीं। मानवता का प्रेम इनके प्राकृतिक दृश्यों में मानवता-आरोप करने-भर में ही संतोष नहीं ग्रहण करता। यह मानवीय समस्याओं को भी प्राकृतिक वर्णनों के साथ सुलझाने लगती हैं। इस कारण शुद्ध वर्णन क्रीड़ास्थल के रूप में झूलने लगता है। 'रश्मि' का प्रथम गीत प्रकृति की प्रातःकालीन शोभा का पूर्णरूपेण दिग्दर्शन कराता प्रतीत होता है, पर अंत में आकर उस गीत में भी यह कह उठती हैं—

अधखुले दृगों के कंज-कोष
पर छाया विस्मृति का भार।
(पृष्ठ २)

प्रकृति के बहुधा दुःख-पूर्ण चित्रों ही से इनका मन बहलता है। 'मुरझाया फूल'-शीर्षक गीत इस दृष्टि से अत्युत्तम है। इस गीत में यह प्रकृति से अँगरेज़ी कवि वर्ड्स्वर्थ की भाँति उपदेश भी ग्रहण करती हैं। 'मुरझाया फूल' का कितना सुंदर चित्र अंकित किया है। यह लिखती हैं—

सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क, बिखराया हुआ;
गंध - कोमलता नहीं
मुख मंजु मुरझाया हुआ।
जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया,
तीव्र झोंकों से सुला
उसने तुझे भू पर दिया।
जब न तेरी दशा पर
दुख हुआ संसार को;
कौन रोएगा सुमन,
हम-से मनुज निःसार को।
(पृष्ठ ५४)

अंतिम पंक्तियाँ उपदेशप्रद हैं। यह उपदेश उपदेशक-जैसा नहीं, कवि जैसा है। इस प्रकार के उपदेशप्रद प्राकृतिक वर्णन इनके काव्य में अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। 'संसार'-शीर्षक गीत इसी प्रकार के उपदेशों से भरा है।

प्राकृतिक दृश्यों में इन्हें अज्ञात शक्ति दिखाई पड़ती है। इस प्रकार के वर्णन क़रीब-क़रीब इनके सभी ग्रंथों में मिलते हैं। पंत की भाँति वह प्राकृतिक पदार्थों से ही प्रवाहित होकर अपनी रहस्य-भावना को जाग्रत् करती हैं। प्रातःकालीन और सायंकालीन सौंदर्य को प्रतिदिन देख लेने के बाद यह सोचती हैं—

कनक-से दिन, मोती-सी रात,
सुनहली साँझ, गुलाबी प्रात;
मिटाता, रँगता वारंवार,
कौन जग का यह चित्राधार ?
(रश्मि—पृष्ठ ६)

प्रकृति के संबंध में इतना ही यथेष्ट होगा।

अपनी भावुकता एवं अपने प्राकृतिक वर्णनों में जान डालने के लिये देवीजी ने कहीं-कहीं बड़ी चमत्कार-पूर्ण सूक्तियाँ लिखी हैं। इन सूक्तियों या चमत्कार-पूर्ण उक्तियों का काव्य-क्षेत्र में बड़ा मूल्य है। यह कवि को आकाशी कुलाबे मिलानेवाला ही सिद्ध करके नहीं रह जातीं वरन् भाव-प्रेरित होने पर उतनी ही सरस ज्ञात होती हैं, जितने उसके काव्य में आए हुए अन्य स्थायी और संचारी भाव। "यह चमत्कार चित्त को आकर्षित करता है—उसी रूप में, जिस रूप में कोई तमाशा आकर्षित करता है", और अपने तथ्य प्रकाश द्वारा हमारे अंतस्तल प्रदेश में प्रवेश कर हफ़्तों खटका करता है। देवीजी के काव्य-ग्रंथों में इस प्रकार की उक्तियाँ काफ़ी मात्रा में मिलती हैं। इनकी उक्तियाँ कोरी कौतूहल-वर्द्धक नहीं, वरन् उनकी तह में भाव निहित रहते हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ हम दो-चार ही उदाहरण देंगे—

(१) बिछाती हूँ पथ में करुणेश,
छलकती आँखें, हँसते ओठ।
(नीहार—पृष्ठ ६९)

(२) जो वे सपना बन आवें,
तुम चिर-निद्रा बन जाना।
(नीहार—पृष्ठ ७९)

(३) वह कौन-सा 'पी' हा पपीहा तेरा,
जिसे बाँध हृदय में बसाता नहीं।
(रश्मि—पृष्ठ ८२)

(४) एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूँ।
(सांध्य गीत—पृष्ठ २६)

अंत में हमें यही कहना है कि भाव-पक्ष की दृष्टि से इनकी कविता अत्यंत उच्च कोटि की है। अब हम कला-पक्ष के संबंध में एक-दो बातें लिख इस लेख को समाप्त करते हैं।

अपने भाव-पक्ष को व्यंजित करने के लिये जिस कला-पक्ष का इन्होंने अवतरण किया है, वह हिंदी-साहित्य की प्राचीन चली आई हुई काव्य-परंपरा को न मानता हुआ भी सुंदर और अनुपम है। उसका अंग नए प्रकार के प्रतीकों से बना है। ऐसे प्रतीकों और अलंकारों का इन्होंने प्रयोग किया है, जिसका हम हरिश्चंद्र-काल में अभाव पाते हैं, जिनको हम सूर और तुलसी में नहीं पाते। तुलसी के चातक और पपीहे को यह नहीं भूली हैं, पर साथ ही "कामना के पलकों में झूलना," "स्मृति, आशा, आकांक्षा, आँसू, विषाद आदि का करवटें आदि बदलना और इनके द्वारा अपने भावों को अलंकारों की माला पहनाना," ये इनकी या आधुनिक कविता की अपनी उपज हैं। तभी तो वह "मैं और तू" में अपनी और अज्ञात शक्ति की उपमा आँसू और विषाद से देती हैं—"मैं आँसू हूँ, तू है विषाद" ये प्रतीक कैसे हैं ? यह विवाद-ग्रस्त प्रश्न है। पर मेरी अपनी राय है कि देवीजी के काव्य-ग्रंथों में आए नवीन प्रतीक, एकदम नए होने के कारण, हमारे मानसिक संसार के लिये कौतूहलप्रद अवश्य मालूम होते हैं, पर यदि हम विचार करें, तो पता चले कि उनमें रस-संपादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की उतनी ही सामग्री अंतर्हित है, जितनी प्राचीन काल से चले आए हुए प्रतीकों में। इन प्रतीकों को समय की गोद में खेलना है। हमारे जाग्रत् होते ही वे जाग्रत् हो जायँगे। इन प्रतीकों को व्यर्थ में रहस्यवादी चिल्लाकर मज़ाक़ उड़ाना ठीक नहीं।

महादेवी के गीत राग-रागिनियों में नहीं हैं। इन्होंने सवैया, कवित्त आदि छंदों को अपनाया है। कहीं-कहीं इन्होंने मात्रिक छंदों का प्रयोग किया है, और ज़्यादातर तो यह इस क्षेत्र में स्वच्छंद ही रही हैं। इन स्वच्छंद छंदों के संबंध में काफ़ी लिखा जा सकता है, पर यहाँ स्थानाभाव के कारण अधिक नहीं लिखा जा सकता। हमें तो अपना सवैया और कवित्त ही पसंद है। पर इस प्रकार के स्वच्छंद छंदों से हम बनारसी समालोचकों की तरह चिढ़ते भी नहीं। हमें तो इन स्वच्छंदों में संगीत की भाषा ही देखना चाहिए। इस संबंध में अधिक न लिखकर मैं यही कहूँगा कि देवीजी के गीत जितने संगीत पूर्ण हैं, उतने आधुनिक काल के किसी अन्य कवि के नहीं। वे संगीत के घर हैं। मुझे तो उनके पढ़ने में संगीत का आनंद मिलता है। और, जिन्हें उनमें संगीत नहीं मिलता या जो उन्हें तरन्नुम के साथ नहीं पढ़ सकते, उनके विषय में यही कहना ठीक होगा कि वे नाच तो जानते नहीं, पर आँगन टेढ़ा बतलाते हैं।

इनकी भाषा खड़ी बोली है। "देवीजी की भाषा संस्कृत-गर्भित है, किंतु काव्य स्निग्ध, सुसंस्कृत है, जिसके कारण वह सहज संगीतमय होकर रुचिकर जान पड़ती है।"

देवीजी सचमुच आधुनिक काल की सर्वोत्तम कवयित्री हैं। इनके गीत हिंदी-साहित्य के अनूठे रत्न हैं। विश्व-साहित्य में उनका क्या मूल्य है? इस प्रश्न का उत्तर हमारा ग़ुलाम मस्तिष्क शायद अभी ठीक-ठीक न दे सके।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। बिना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरला की भूल

[श्रीयुत रामशरण शर्मा]

(१)

कॉलेज की, सिक्स्थ ईयर की विद्यार्थिनी। सरला—बड़े बाप की बेटी। विलायत के पास इंजीनियर, बिलकुल अप-टु-डेट, ऐसे थे उसके पिता मि० रमाप्रसाद।

सरला उनकी आँखों का तारा, वे मा की बच्ची थी।

और सरला—जाड़ों की धूप के समान सुंदर और सावन की घटा के समान गंभीर।

कॉलेज के लड़कों ने नाम दिया था—सुलोचना।

हाँ, सरला बड़े चक्कर में थी।

श्यामसुंदर और रामसिंह, दोनो ही उसके साथी। दोनो ही को उससे मुहब्बत, दोनो ही बड़े अच्छे।

श्यामसुंदर धनी पिता का पुत्र। रामसिंह ग़रीब, गाँव का लड़का।

सरला के प्रेम में एक रोज़ सूट बदलता, हीरे की टाई-पिन लगाता। दूसरा केवल आँखों से प्रेम की भिक्षा माँगता था।

एक जीतना चाहता था; दूसरा हारना—अपने आपको।

और सरला—मोटर में बैठकर कॉलेज आनेवाली सरला—को श्यामसुंदर तो ख़ैर जँचता भी था, पर रामसिंह—ओह! बिलकुल नहीं।

उस दिन क्लास में रामसिंह ने केवल एक बार सरला को देखा। सरला ने एक बार अपनी बड़ी-बड़ी आँखें उस पर डालकर हटा लीं।

रामसिंह का हृदय मसोस उठा।

उड़ती निगाह डाली उसने श्यामसुंदर पर, सुंदर सिल्क का सूट, टाई में हीरे की पिन, झलमलाती हुई।

मुँह पर जीत की हँसी, रामसिंह की ओर देखकर। और, हाँ, सरला की ओर भी।

सरला के बड़े-बड़े नेत्र झुक गए।

रामसिंह का हृदय धड़क रहा था। प्रोफ़ेसर क्या पढ़ा रहे थे, सो वह कुछ भी न समझ सकता था।

सचमुच ही—कल सरला ने श्यामसुंदर के साथ चाय पी थी, अपने ही घर।

विद्वान् प्रोफ़ेसर एक मन से नैपोलियन की पॉलिसी बता रहे थे।

सरला सोच रही थी। रामसिंह दुखी तो जान पड़ता था। पर वह क्या करे? ऊँह, नहीं जी, ऐसे गँवार से ......न-न, असंभव।

श्यामसुंदर, हवा के घोड़े पर सवार, भविष्य के मधुर स्वप्न देख रहा था। धनवान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर सरला ने उसकी ओर......सचमुच ही वह भाग्यवान् था। बेचारा रामसिंह!

और रामसिंह—सोच ही नहीं सकता था। मानो मस्तिष्क छुट्टी पर हो।

उसी दिन छुट्टी के घंटे में रामसिंह अपना दुखी हृदय लेकर कॉलेज के बाग़ के एक सुनसान कोने में जा रहा था—बैठकर आकाश-पाताल की सोचने।

सहसा वह रुक गया।

पेड़ों की आड़ में सरला और श्यामसुंदर!

दो बात—केवल दो। शाम को घर फिर आने का निमंत्रण।

वे दोनो चले गए।

रामसिंह बेदम होकर बेंच पर बैठ गया।

❀ ❀ ❀

दिन बीतते गए।

रामसिंह की पढ़ाई-लिखाई मिट्टी हुई जा रही थी। दिल में आग लगने पर दिमाग़ भी हड़ताल कर दिया करता है।

सरला और श्यामसुंदर अधिक पास-पास आ गए थे।

सरला के लिये रामसिंह एक अस्पष्ट, धुँधली-सी छाया था, जिसे वह दूर छोड़ चुकी थी।

(२)

ईद से पहली रात को सरला और श्यामसुंदर सिनेमा में थे।

था तो रामसिंह भी पर दोनो से दूर, एक कोने में चुपचाप।

वैसे ही चला आया था, अनमने मन को लगाने के लिये।

सहसा—फ़िल्म बंद हो गई। हॉल में कोलाहल मचा—शहर में दंगा हो गया।

भीड़ में घर पहुँचने के लिये उतावली हो उठी।

सरला और श्यामसुंदर भी उठे। श्यामसुंदर चुप। सरला ने देखा, बाहर आते-आते दूर से शोर सुना—अल्लाहो अकबर!

भीड़ में उत्तेजना बढ़ रही थी।

हिंदू और मुसलमान दस मिनट पहले साथ-साथ तमाशा देख रहे थे, और अब—एक दूसरे की ओर घृणा से।

सिनेमा के दरवाज़े पर बड़ी भीड़ थी।

इतने में किसी ने—एक मोटे-ताज़े गुंडे ने—सरला का हाथ पकड़ लिया।

नशे में चूर, लाल-लाल आँखें।

सरला ने झटककर हाथ छुड़ा लिया। और—और देखा, श्यामसुंदर के मुँह पर हवाइयाँ, पीलापन।

सरला धक् से रह गई।

डरपोक!

झपटकर वह मोटर की ओर चली।

धीरे-धीरे, पीछे श्यामसुंदर भी।

सरला ने मोटर स्टार्ट की, पर चारो ओर से भीड़ ने उसे घेर लिया।

सरला के हाथ-पैर फूल गए।

किसी ने हाथ मारकर खिड़की का शीशा तोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज़ें आने लगीं—

"पकड़ लो, जाने न पाए।"

'परी है, जनाब, परी।"

"खींचकर निकाल लो।"

सरला के कानों में सनसनाहट होने लगी।

"सुनती हो," श्यामसुंदर ने तेज़ी से कहा—"मैं पुलिस लिए आता हूँ।"

विना जवाब सुने श्यामसुंदर जल्दी से उतर गए।

सरला डर से अधमरी हो गई। वह अब बिलकुल अकेली थी।

न जाने ये गुंडे ......?

एक आदमी ने हाथ अंदर डाला।

एकाएक उसने चीख़ मारकर हाथ खींच लिया।

सरला ने चौंककर देखा—रामसिंह!

हाथ में डंडा, जिसे दो बार चलाकर उसने भीड़ ज़रा विचलित की, और फिर सरला से कहा—"ज़ोर से चलाओ मोटर।"

सरला के हाथों में मानो जान आ गई।

तीर की भाँति चलती मोटर के आगे से भीड़ फट गई।

❀ ❀ ❀

एक घंटे बाद।

सरला, रामसिंह और इंजीनियर साहब।

"पापा," सरला कह रही थी—"मेरे दोस्त मि० रामसिंह। आप ही ने मुझे बचाया, नहीं तो......"

इंजीनियर साहब मुस्किराए। एकलौती बेटी का मामला था।

"तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ?" उन्होंने कहा।

सरला ने देखा, रामसिंह का मुख लज्जा से झुका हुआ। उसकी आँखें चमकीं।

"यह बड़े अच्छे हैं पापा!" उसने दमकते हुए कहा—"मुझे इन्होंने ही बचाया है। मुझे तो बड़े अच्छे......"

सहसा वह अटककर चुप हो गई।

इंजीनियर साहब ने देखा उसका चमकता, सुर्ख़ मुँह।

"ओह!" उन्होंने कहा—"यह बात है। अब समझा। पर बेटी एम्० ए० के इम्तिहान से पहले नहीं। तब तक......"

रामसिंह ने धीरे से सिर उठाया।

सचमुच!

सचमुच इंजीनियर साहब मुस्किरा रहे थे।

सरला कनखियों से उसकी ओर ताक रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन के विद्यार्थी और उनकी राष्ट्र-सेवा

[कुमारी कपिला खांडवाला एम्० ए०]

अपने आंदोलनों को सरकार के संरक्षण से वंचित पाकर चीन के विद्यार्थियों ने अपनी सारी शक्तियाँ राष्ट्रीय स्वतंत्रता-आंदोलन में लगाने का निश्चय कर लिया, और सामाजिक क्षेत्रों के प्रभाव से आगे बढ़कर वे सामूहिक रूप में राष्ट्रीय कार्यकर्ता बनने लगे। उन्होंने इस आंदोलन-कार्य को भिन्न-भिन्न प्रकार के विरोधी प्रदर्शनों और योजनाओं से अधिक महत्त्व-पूर्ण समझा, और वे राष्ट्रीय क्षेत्र में आगे बढ़े। उन्होंने दो वर्ष की योजना तैयार करके अपने कुछ प्रतिनिधियों को गाँवों की सुधार-सेवा का भार सौंपा। इसी योजना के अंतर्गत यह नियम बन गया कि प्रत्येक विद्यार्थी सदस्य को अपने अध्ययन-काल के दो वर्ष ग्राम-सुधार के कार्य में लगाना अनिवार्य होगा। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की टोलियाँ अपने निवास-स्थान के आस-पास के ग्रामों में जाकर कार्य करने लगीं। उन्हें निम्न-लिखित तीन सिद्धांतों पर चलना पड़ता था—

(१) राजनीतिक परिस्थिति की जानकारी, जापान का विरोधी प्रचार, भाषण, फ़िल्मों द्वारा प्रदर्शन, नाटक, कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं द्वारा आंदोलन करके संगठन को लोक-प्रिय बनाना।

(२) जापान के विरुद्ध लड़ने का अवसर आने पर 'गुरिल्ला-युद्ध'(छिपकर चाल से शत्रु को हराना)-प्रणाली और घायलों की सेवा-शुश्रूषा की शिक्षा देना।

(३) ग्रामवासियों को पढ़ना - लिखना सिखाना, जिससे उनकी हालत सुधर सके, और उनमें शिक्षा का अभाव दूर हो सके।

उन्होंने बच्चों के लिये सवेरे और दिन में तथा सयानों के लिये रात्रि में लिखना-पढ़ना सिखाने की व्यवस्था करके कक्षाएँ खोल दीं। अपने ही ग्रामों से आरंभ करके पास-पड़ोस के ग्रामों तक उन्होंने प्रचार-कार्य को बड़ी सफलता से चलाया।

ग्रामीणों को सैनिक शिक्षा देना अनिवार्य हो गया था, क्योंकि उत्तर-चीन के प्रांत प्रायः जापान के चंगुल में थे, और युक्ति से ही शत्रुओं को पराजित करने के अतिरिक्त सम्मुख युद्ध के लिये चीनियों की शक्ति बहुत कम थी। जापानी राष्ट्र की प्रगति केवल चीनियों को चिरदासत्व की बेड़ियों में जकड़ने की थी, और वे बड़ी सरलता से ग्रामों पर अपना अधिकार करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

विद्यार्थियों ने जापानियों के विरुद्ध घोर आंदोलन किया, ग्रामवासियों को उनसे लड़ने की शिक्षा और शक्ति प्रदान करने का प्रयत्न किया, लेकिन समयाभाव के कारण उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छित सफलता न मिली। दूसरा कारण यह भी था कि चीन के ग्रामवासियों की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। इतना ही नहीं, अपनी राष्ट्रीय सरकार की नीति से उनको बड़ी हानि हुई, क्योंकि उत्तर-चीन धीरे-धीरे जापान के हाथों में जा रहा था, जिसके फल-स्वरूप ग्रामीण आंदोलन दबने लगा।

हमने बहुत-से ग्रामों में स्वयं जाकर वहाँ की स्थिति का अध्ययन किया। हमारे साथ कुछ चीनी विद्यार्थी थे, जो हमें भारतवर्ष से आया हुआ जानकर हमसे भारत के विषय में कुछ पूछने आए थे। हम लोग एक ग्रामीण पाठशाला देखने गए, और कुछ मिनटों के लिये वहाँ के दफ़्तर में ठहरे, तो हमारा दम घुटने लगा! वह दफ़्तर एक बिलकुल छोटे-से कमरे में था, जहाँ मक्खियाँ भरी हुई थीं, और छोटी-छोटी, नाम-मात्र की, खिड़कियों से बच्चे झाँक रहे थे। रात के समय जब पाठशाला का कार्य समाप्त हो जाता था, तब बेंचों को इकट्ठा कर, शिक्षक लोग उन्हीं पर अपने बिस्तर बिछाकर सो जाते थे। उन गाँवों में मच्छड़ों की भरमार थी, लेकिन शायद ही किसी शिक्षक के पास मसहरी रही हो। वे लोग गाँव के बाज़ार में जो कुछ मिलता, ख़रीद लाते, और अपने हाथों उसी को पकाकर खाते और संतोष करते थे। ग्रामीणों के साथ कार्य करने के कारण उन्हें अपनी रहन-सहन और खान-पान उसी तरह का रखना पड़ता था। उनका जीवन कठिन और साहस-पूर्ण था, वे बाधाओं से घबराते न थे। वे लोग सच्चे, उत्साही और उद्यमी कार्य-कर्ता जान पड़े, और अधिकांश युवक होते हुए भी उनका व्यवहार सदाचार एवं शिष्टता-पूर्ण था। उनमें से अधिकांश को प्रतिदिन गरमी के दिनों में, भरी दोपहर में, अपने स्थानों से मीलों की दूरी पर गाँवों में शिक्षा-कार्य के लिये पैदल चलकर जाना-आना पड़ता था, परंतु उनके मुख पर सर्वदा शांति की मुस्किराहट और हृदय में साहस का आभास वर्तमान रहता था। सेवा-भाव उनके जीवन का मूल-मंत्र था।

हम लोग जिन गाँवों में गए थे, वे टीन्टसिन और पेपिंग-नामक बड़े शहरों के निकट थे, और शहरी प्रभाव का कुछ-कुछ आभास उन गाँवों में इसी कारण जान पड़ता था। फिर भी गाँव के निवासी अधिकांश कृषक ही थे। छोटे-छोटे उद्योग-धंधों में कुछ मज़दूर भी काम करते दिखाई दिए, परंतु उन सबकी दशा बड़ी शोचनीय थी। वे निर्धन और फटे कपड़ों में अपना गुज़र करते थे। किसी किसान के पास २० मॉ (एक चीनी नाप) से ज़्यादा भूमि न थी, और कोई ऐसा बच्चा न दिखाई दिया, जिसके पहनने के कपड़ों में कई पेवंद न लगे हों। इन किसानों में से अधिकांश अशिक्षित थे, जब तक विद्यार्थियों ने शिक्षा-कार्य आरंभ न किया था।

हमने बच्चों की पाठशालाएँ देखीं। उन लोगों ने जापान के विरुद्ध भावनाओं के प्रचारार्थ एक छोटा-सा नाटक खेलने की तैयारी की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन लोगों ने स्वयं नाटक लिखा था, और उसे बड़ी सफलता के साथ खेला। हमें वह नाटक बहुत पसंद आया, यद्यपि हम उनकी भाषा न समझते थे। उनके राष्ट्रीय गीत तो बड़े ही मधुर और प्रभावोत्पादक थे। उनके यहाँ गायन सिखाने की कक्षाएँ खुल गई थीं, जहाँ पाश्चात्य वाद्यों के साथ गाने की शिक्षा दी जाती थी; क्योंकि चीनी वाद्यों पर सैनिक गायनों का बजाना असंभव था। सम्मिलित गायन की शिक्षा उन बच्चों को अधिक प्रिय थी। हमने देखा, वे बच्चे अपने माता-पिता को बड़े मनोरंजक ढंग से गाना सिखाते थे, और वे लोग खेतों में काम करते हुए उन्हीं गानों को गाते थे। रोज़ सायंकाल गाँव के सब लोग एकत्रित होकर कुछ विशेष प्रोग्राम किया करते थे—कभी सम्मिलित गायन, नाटक, तमाशा या व्याख्यान हुआ करता था, अथवा किसी शिक्षक से उनके प्रश्नोत्तर होते थे। हम पर इन सब बातों का बड़ा प्रभाव पड़ा।

हमने कुछ विद्यार्थी कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों से बातचीत की, और जैसा हमने देखा था, उनमें और विद्यार्थियों में पारस्परिक भ्रातृभाव और स्नेह की कमी न थी। वे विद्यार्थियों का स्वागत करते, और अपने दुःख-सुख की कहानी सुनाकर उनकी सहानुभूति प्राप्त करते थे। हमने उनसे उनकी शिक्षा, सोवियट चीन के विषय में उनके विचार और संगठन आदि के बारे में पूछा। उन्होंने बड़ी तत्परता से बातें कीं, और स्पष्ट वक्ता ज्ञात हुए। उन्होंने पूरी दृढ़ता से कहा, जापान के विरोध के लिये वे सामूहिक और संगठित रूप में कटिबद्ध हो चुके हैं, और 'लालसेना' से उन्हें ज़रा भी भय नहीं लगता। 'लालसेना' के सैनिकों को वे आदर की दृष्टि से देखते हैं, क्योंकि उन्होंने कृषकों और ग्रामवासियों को कोई हानि नहीं पहुँचाई, न उनका अन्न और भूमि ही कभी छीनने की चेष्टा की। यहाँ तक कि सैनिकों ने उनकी पर्याप्त सहायता की, और दोनो में साहचर्य-भाव उत्पन्न हो गया। इन्हीं किसानों ने 'लालसेना' के सैनिकों के लिये नाज और वस्त्र बचा-बचाकर जमा कर रक्खे थे, इस विचार से कि अंतयुद्ध कहीं आरंभ हो गया, तो वे सैनिकों की सहायता कर सकेंगे। राजनीतिक क्षेत्र में थोड़ा-बहुत दख़ल रखनेवाले कुछ किसान विद्यार्थियों को शिक्षा-प्रचार के कार्य में सहायता भी देते थे, और हर तरह की सुविधाएँ पहुँचाते थे। आपस में भेद-भाव और कलह रखना, भाई-भाई का लड़ना उनकी दृष्टि में राष्ट्र की उन्नति के लिये अत्यंत हानिकर था। वे इसी बात का प्रचार करते थे कि सारे देशवासी, छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, एकमत और संगठित होकर जापान का मुक़ाबला करें।

इसी विद्यार्थी-संघ ने दूसरा कार्य अपने हाथों में यह लिया कि नए प्रकार से आधुनिक शिक्षा का प्रचार जनता में किया जा सके, और वह शिक्षा उनके देश की आवश्यकताओं के अनुकूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। विद्यार्थियों की एक सभा में, जिसमें हम लोग भी सम्मिलित थे, एक ऐसी योजना बनाई गई, जिसके अनुसार आगामी बृहत् अधिवेशन में वे कार्यकर्ताओं और प्रतिनिधियों का चुनाव करके गाँवों में प्रचार-कार्य को अधिक विस्तृत एवं व्यापक रूप दे सकें। उन्होंने पाठशालाओं और विद्यालयों की नीति के परिवर्तन और सुधार के विषय में कई बड़े महत्त्व-पूर्ण प्रस्ताव पास किए। प्रतिवर्ष इसी प्रकार उनकी सभाएँ होती रहती हैं, और उन्हीं में वे अपना कार्य-क्रम निर्धारित करते हैं। उन्हें अपने कार्य से कभी संतोष नहीं होता। वे सदैव देश-वासियों की उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों के लिये कुछ नए विषयों की शिक्षा की माँग पेश की है, जिनमें सरकारी उत्पीड़न, अत्याचार और अनधिकार क़ानूनों का विवेचन, कॉलोनीज़ (दूसरे देशों में स्थित चीनी बस्तियों के भू-भागों) की माँग, जापान के वर्तमान अत्याचारों का मूल-कारण और उसकी जाँच, चीन के सोवियट संघ और राज-तंत्र के संघर्ष का इतिहास आदि विषय हैं। उन्होंने युद्ध में अस्पताल और सेवा-संबंधी शिक्षा की माँग विशेषतया लड़कियों के लिये अनिवार्य रूप में पेश की। नए साहित्य, शिक्षा और संगीत के विषय में भी उन्होंने अपने आंदोलनों का श्रीगणेश किया। इनके अतिरिक्त उन्होंने अधिक वैज्ञानिक ढंग पर अनिवार्य सैनिक शिक्षा—विद्यार्थियों और जनता के लिये—सुलभ बनाए जाने का प्रस्ताव पास किया।

पिछले वर्षों में इसी के अनुसार कार्य किया गया, और अब विद्यार्थी-संघ ने अधिकारियों को पूर्ण रूप से अपनी सभी माँग को स्वीकार करने के लिये दबाना आरंभ किया है। यदि उन्हें ऐसा अवसर मिल जाता, तो इसमें संदेह नहीं कि चीनवासियों में एक अभूतपूर्व जागृति पैदा हो जाती, और उनका संगठन अद्भुत रूप में हो जाता।

शिक्षा-संबंधी योजना का रूप जापानी राज-तंत्र के विरुद्ध सामाजिक बचाव करना भी है। विद्यार्थी जापानियों के सिद्धांतों पर अपने मस्तिष्क को नहीं चलाना चाहते, यद्यपि जापान इस पर कटिबद्ध होकर भरसक प्रयत्न कर रहा है। विजित प्रांतों में आरंभिक शिक्षा-संबंधी जो पुस्तक पढ़ाई जाती हैं, इसी उद्देश्य से लिखाई गई हैं, तथा उनमें जनता में अफ़ीम का प्रचार रोकने का पूरा ध्यान रक्खा गया है। अफ़ीम से चीन को कितनी हानि हो चुकी है, इसका अंदाज़ा लगाना कल्पना से बाहर की बात है।

विद्यार्थियों में सैनिक शिक्षा का प्रचार हो जाने के कारण बड़ी जागृति हुई, वे अपना कर्तव्य समझकर देश की रक्षा के लिये प्राण-पण से तैयार हो गए। इसी बीच में उत्तर-चीन में जापानियों के आक्रमण के कारण बड़ी अशांति फैल गई, और जापान ने चीनी जनता पर बड़े-बड़े लोमहर्षक अत्याचार किए। उसी अवसर पर किसी स्थान से विद्यार्थी-सैनिकों का एक जत्था लौट रहा था। उन्होंने देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानीय एवं केंद्रीय सरकार के अधिकारी-वर्ग जापानी आक्रमणकारियों से लड़ने में हिचकिचा रहे थे, और बीसवीं राष्ट्र-सेना की सहायता के लिये कुछ भी प्रबंध न था, जिसका सेनापति सैनिकों को आपन्नावस्था में छोड़कर भाग गया था। टीन्टसिन का मेयर, जो जापान से मिला हुआ था, अपने देशवासियों के साथ विश्वासघात करके, उन्हें मृत्यु के मुख में छोड़कर एकाएक ग़ायब हो गया था। फिर भी वे सैनिक बड़ी धीरता से आक्रमणकारियों का सामना कर रहे थे। चीन की प्राचीन राजधानी के शहर-फाटक खुल चुके थे, और जापानी सेना पूरे वेग से शहर पर बर्बरता-पूर्ण अत्याचार कर रही थी। विद्यार्थी-सैनिकों ने आगे बढ़कर शहर की रक्षा करने की ठान ली। उन्होंने केंद्रीय सरकार से इजाज़त माँगी कि वे उपलब्ध जनता की सहायता से शत्रुओं से मोरचा ले सकें, और कुछ युद्ध सामग्री भी माँगी, परंतु उनकी प्रार्थना अस्वीकार की गई। परिणामतः विद्यार्थी-सैनिकों ने अपने कर्तव्य का पालन मुख्य समझकर किसी भी बात की परवा न की, और ७०० सैनिकों ने शहर की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। जापानी सेना से उनका घोर युद्ध होने पर वे एक-एक कर सब मार डाले गए, क्योंकि जापानियों की संख्या कई गुनी अधिक थी! सरकार ने उनका बलिदान अपनी आँखों देखते हुए भी उनकी सहायता का कुछ भी प्रयत्न न किया।

परंतु इसका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा, और वे शक्तियाँ जो अब तक पृथक् एवं विभाजित थीं, एक होकर शत्रुओं का सामना करने को तैयार हो गईं।

ऐसी ही एक घटना जापान में भी हो गई। जापान के विद्यार्थियों को किसी प्रकार की पृथक् संस्था-निर्माण का अधिकार न था, फिर भी एक अवसर पर उन्होंने बड़ी युक्ति से काम लिया। लगभग हज़ार-डेढ़ हज़ार जापानी विद्यार्थियों ने खुले तौर से उत्तर-चीन में किए गए जापानी अत्याचारों का विरोध किया, और अपने चीनी भाइयों को लिखा—"हमें दुःख है, हम शक्ति-हीन कर दिए गए हैं, और अपनी सरकार का मुक़ाबला करने में असमर्थ हैं, जो हम उत्तर-चीन में होनेवाले अत्याचारों को रोक सकने में आपकी सहायता कर सकें। परंतु हम सभी घटनाओं से अच्छी तरह परिचित हैं, और आपके साथ समवेदना प्रकट करते हुए यही कहना चाहते हैं कि हमें आप अपने से अलग न समझें, समय आने पर हम आपका साथ देने में कभी पीछे न हटेंगे। हम आपकी राष्ट्रीय भावनाओं को अपने हृदय से प्रोत्साहन देते हैं, और ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि वह आपको स्वातंत्र्य-संग्राम में विजय प्रदान करे।"

ऐसा भी सुना गया कि जापानी विद्यार्थियों ने अपने हस्ताक्षरों से अपनी सरकार के पास एक विरोधी प्रस्ताव भेजा, जिसके फलस्वरूप सरकार ने उन्हें हुक्म दे दिया कि सीमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांत पर वे लोग चीनियों से लड़ने के लिये भेज दिए जायँ। ऐसा विश्वसनीय सूत्र से मालूम होता है कि सीमा-प्रांत पर पहुँचने के पहले ही उन विद्यार्थियों का नामोनिशान मिट गया!

इन सब आंदोलनों का इतिहास देखकर हम जान सकते हैं कि विद्यार्थियों की योजनाएँ कितनी दृढ़ सफलता प्राप्त कर चुकी हैं, जो उनकी वर्तमान परिस्थिति को एक उदाहरण बनाकर संसार के सामने उपस्थित कर रही हैं। उनकी प्रगति से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक पहलू को वे कितना अधिक समझ चुके हैं, और उन्हें इस बात का पूर्ण अनुभव एवं ज्ञान हो चुका है कि चीन में किस बात का अभाव है, और देशवासियों को किस बात की आवश्यकता है। उनकी शक्ति में किस बात की कमी है, और किन उपायों से वे उन्नति कर-सकते हैं। उनकी योजनाएँ एक नई क्रांति को जन्म दे रही हैं, जिसमें एक-न-एक दिन समस्त चीनी राष्ट्र निश्चय ही सहयोग देगा। उनकी यह इच्छा कि सारे चीन को एकता के सूत्र में बाँधकर जनता को उसके अधिकारों और कर्तव्य से परिचित कराया जा सके, उनकी योजना की सफलता की द्योतक कही जा सकती है। आंदोलनों की सफलता के उपायों को उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया है, और विरोधी परिस्थितियों का सामना करते हुए वे एक निश्चित मार्ग पर अविलंब आगे बढ़ रहे हैं।

राजनीतिक दृष्टि से राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये विद्यार्थियों का आंदोलन बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है, यदि उनमें संगठन और एकता का अभाव न हो। चीन के विद्यार्थी इसी का प्रत्यक्ष और ज्वलंत उदाहरण हैं। चीन के लिये यह एक बहुत बड़ी आशा का चिह्न है कि उसका संग्राम उन नवयुवकों के सहयोग पर छिड़ा है, जो अपने तन, मन, धन और प्राणों को स्वदेश-रक्षा के निमित्त बलिदान करना जानते हैं।

हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद टानिक क़ब्ज़ को दूर कर बदहज़मी को हटा देगा, आँख की रोशनी तेज़ कर बाल का पकना रोक देगा, पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी काला रक्खेगा। नई ज़िंदगी, नई ताक़त पैदा कर जवानी को फिर लौटा देगा। कमज़ोरी, झुर्रियाँ नष्ट कर बूढ़े से जवान-सा बना देगा। फ़ी शीशी ४) ; झूठा साबित करनेवाले को १००) इनाम।

जड़ी-बूटी-दवाखाना, हज़ारा ऐंड को०, पोस्ट बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषक-बालिके !

[श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

(१)

म्लानमना - सी, अवनत - वदना
कृषक - बालिके ! तू श्री - हीन ;
लता - कुंज में कुमुद - कला - सी
वसन - विभूषण - वंचित, दीन !
जीवन्मृत - सी, मुक्त - कुंतला ,
धवल धूलि से कर अनुराग
कंज - कली - सी बिखराती क्या
तन्वी ! अपना प्रेम - पराग ?
मौन, मलिन - सी तन्मय होकर
लखती हो क्या तुम अवदात ;
प्रात - समीरण की सिहरन से
कंपित, मुकुलित नव जलजात ?
बाल - भानु की स्वर्ण रश्मियाँ
गगन - सौध से समुद सहास
उतर रहीं परिरंभण करने
पांडु पँखुरियों से सोल्लास ।
तीव्र ज्योति में मृदुल पँखुरियाँ
उच्छ्वासों के नीरव गीत
गातीं और किलकतीं प्रमुदित
आँख - मिचौनी खेल पुनीत ।

(२)

किंतु प्रखर आतप में बाले,
छिन्न - भिन्न कर स्वप्न - विहार ;
कुमुद - कली - सी कभी किलकती
तेरी कलिका भी सुकुमार ?
नहीं - नहीं री ! इस आतप से
करने जग - हित युद्ध कराल
तेरे कोपानल के उड़ते
हैं स्फुलिंग रक्तिम, विकराल !
तेरा अंतर्यंत्र सदा ही
जगती का करने कल्याण
चलता रहता अविरल बाले,
आंदोलित कर अपने प्राण ।
इंद्र - धनुष की रूप - राशि लख
होते प्रमुदित तेरे प्राण ;
शस्य - श्यामला भू - हित करते
नीरद वर्षा का आह्वान ।
जीवन का राहित्य जहाँ है
कृषक - बालिके ! वहीं सहास
जगती का साहित्य छलकता
बनकर तेरा हास - विलास ।
जगती के अणु - अणु में बाले,
भर दे अपना यह अनुराग ;
अपना और बिराना तन्वी,
एक पुष्प का बने पराग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्र निवेदन

[पु० श्रीप्रतापनारायण कविरत्न]

(१)

जाने दो, क्यों रोक रहे हो तुम इन जानेवालों को ?
बुरे-भले को पहचानो, दो आने आनेवालों को।

(२)

देश-विदेश चले जाने पर घर ही सबको भाता है;
बालकपन का खेल-तमाशा यौवन को तरसाता है।
गुज़रा हुआ ज़माना ही तो याद सभी को आता है;
स्वर्ण नहीं, संसार सुनहरा कोरा रंग दिखाता है।
फिर क्यों फाँस रहे रोने में तुम इन गानेवालों को।
जाने दो, क्यों रोक रहे हो तुम इन जानेवालों को ?

(३)

नाम कमाया, धाम बनाया, पर प्रेमामृत नहीं पिया;
मान बढ़ाने, यश पाने को सबके सम्मुख दान दिया।
बड़े आदमी भी कहलाए, किंतु बड़प्पन नहीं लिया;
कभी न सोचा, यहाँ-वहाँ के लिये कौन-सा काम किया।
लात लगाते हो क्यों अब तुम मुँह की खानेवालों को।
जाने दो, क्यों रोक रहे हो तुम इन जानेवालों को ?

(४)

चलते पंछी हैं ये, या यह टोली है दीवानों की;
मस्ती की दुनिया में जाती यह महफ़िल मस्तानों की।
वहाँ बसेंगे, जहाँ गूँज है इकतारे के गानों की;
धूमधाम पड़ती रहती है प्रेम-सुधा-पैमानों की।
माया-मोह-दुर्ग को अब दो ढाने ढानेवालों को।
जाने दो, क्यों रोक रहे हो तुम इन जानेवालों को ?

(५)

मिट्टी होकर सारी दुनिया बस धोखे की टट्टी है;
मुट्ठी-भरी हड्डियाँ रखती होकर हट्टी-कट्टी है।
हरियाली की चट्टी बनकर बस यह जलती भट्टी है;
इसको अपनी समझ रहे जो, उनके आँखों पट्टी है।
क्या फल प्राप्त हुआ है इससे फल के पानेवालों को ?
जाने दो, क्यों रोक रहे हो तुम इन जानेवालों को ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! छप गया !! छप गया !!!

क्या ?

धीरे-धीरे

(हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम व्यंग्य !)

इसके लेखक हैं हिंदी-साहित्य के सर्वोत्तम उपन्यासकार श्रीवृंदावनलालजी वर्मा एडवोकेट।

इसमें मौजूदा राजनीतिक हलचल का खाका जितनी खूबसूरती के साथ खींचा गया है, उस पर आश्चर्य होता है।

इस मीठी चुटकी के लेनेवाले हिंदी-साहित्य के सिद्धहस्त कलाकार हैं। चुटकी से आप को आनंद की गुदगुदी का एकबारगी अनुभव होगा।

क्या लिबरल क्या जमींदार और क्या कांग्रेसी—गांधी आईट अथवा सोशलिस्ट और क्या कम्यूनिस्ट—सभी इसे पढ़कर एक बार आनंदित हो उठेंगे।

इससे आपको वास्तविक मानसिक भोजन मिलेगा। यह पूर्णतया मौलिक है। इस अनोखी कृति की एक प्रति शीघ्र ही मँगाइए। सादी ।।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी दुर्गावती

[काव्य]

लेखक, पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

वीर-प्रसूता भारत माता ने अनेक ऐसी वीरांगनाओं को जन्म दिया है, जिनके शौर्य और बलिदान की पावन गाथाओं से इतिहास के अध्याय स्वर्णाक्षरों से अंकित किए गए हैं। महा-कोशल की अमर विभूति महारानी दुर्गावती भी ऐसी ही वीरांगनाओं में अपना सम्मान-स्थान रखती है, किंतु हिंदी में उनके पावन चरित्र की काव्यमय गुण-गाथा का एकांत अभाव रहा है, उसी की पूर्ति कवि ने सुंदर, वीर-रस-पूर्ण कविताओं में किया है। पुस्तक का काव्य इतना रोचक एवं हृदयग्राही हुआ है कि ग्रामोफ़ोन-कंपनी ने इसका रिकार्ड तक बना डाला। पुस्तक शुरू करने पर विना समाप्त किए तबियत न मानेगी। मूल्य ।-), सजिल्द ।≡)

रजकरण

[काव्य]

लेखिका, श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव

हिंदी-काव्य-जगत् में शकुंतलाजी अपना विशेष स्थान रखती हैं। आपकी कविताएँ सरस, सरल एवं भाव-पूर्ण होती हैं। इस पुस्तक में एक-से-एक उत्तमोत्तम खड़ी बोली की कविताएँ हैं, जिन्हें पढ़कर न-केवल कविता-मर्मज्ञ, अपितु सर्व-साधारणजन भी मुग्ध हुए विना न रहेंगे। इसकी जोड़ की कविता-पुस्तकें इनी-गिनी ही होंगी। हमारा अनुरोध है, अपनी प्रति आज ही मँगा लें, अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गो कि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं. वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ।ǀ), जिल्ददार १)

अन्यान्य नाटकों के मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यागत

प्रकाशित हो रहा है ! छप रहा है !! ऑर्डर बुक कराएँ !!!

अधिक प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं ।

इस सामाजिक उपन्यास के निर्माता हिंदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार श्रीवृंदावनलालजी वर्मा हैं। इतना रोचक, इतना करुणा-पूर्ण और इतना 'गतिमय' सामाजिक उपन्यास दूसरा न होगा। बुंदेलखंडी वातावरण की बैक-ग्राउंड में सजाया गया यह चित्र किसी भी वातावरण में उपयुक्त हो सकता है।

मा का जितना सुंदर, सजीव, ज्वलंत और उज्ज्वल एवं स्वाभाविक चरित्र-चित्रण इस उपन्यास में श्रीवर्माजी ने किया है, अन्यत्र दुर्लभ है। लेखक की यह कृति उसकी सर्वोत्तम रचनाओं में से तो एक है ही; इस उपन्यास की मा का चरित्र-चित्रण संसार के सर्व-श्रेष्ठ उपन्यासकारों द्वारा निर्णीत 'मा' से टक्कर ले सकती है। भारतीय साहित्य की छोड़िए, पश्चिमीय साहित्य के ज्वलंत औपन्यासिक भी एक बार इस 'मा' के लिये नवेंगे-तरसेंगे।

यदि एक बार रशियन लेखक गोर्की की 'मा' इटैलियन लेखक ग्रेज़िया हैलेडा की 'मा' और अन्यतम भारतीय वा पश्चिमीय लेखकों की 'मा' से आप किसी की मा की होड़ लगा सकते हैं, तो वर्माजी की लेखनी द्वारा चित्रित 'प्रत्यागत' की 'मा' की हमारे भविष्य के साहित्यिक, हमारे पाठक इतनी सुंदर कृति के लिये वर्माजी के कृतज्ञ होंगे।

प्रतीक्षा कीजिए। अधिक नहीं। बहुत थोड़ी। तब आप हमारे कथन की सार्थकता पर विश्वास खुले-खज़ाने करेंगे। मूल्य लगभग २)

वर्मा जी के समस्त उपन्यासों के मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूहों की राजकुमारी

(बच्चों का सचित्र, जासूसी उपन्यास)

लेखक—कुमार बुद्धिभद्र

एक ज़माना वह था, जब चूहों के भी क़िले थे, सल्तनत थी, फ़ौजें थीं, राजा, सेनापति, सामंत, सभी कुछ।

उसी जमाने में, जब चूहों के राजा महाराज मार्तंड राज्य करते थे, उनके ताक़तवर सेनापति छल्ला ने उन्हें मरवाकर उनकी लड़की से शादी करनी चाही; और सामंत अंबर-नामक एक चूहे ने उनके इस काम में बाधा डाली। फिर किस तरह इन दो बुद्धिमान् चूहों ने आपस में दाँव-पेंच लड़े, बिल्लियों और चीलों ने क्या उपद्रव मचाया, और मेंढकों के राजा कोली ने कैसे कर्तब दिखाए, यह जानने के लिये चूहों की राजकुमारी पढ़िए।

एक बार उसे पाकर बच्चे छोड़ने का नाम न लेंगे। मनोरंजन के साथ ही उन्हें अच्छी शिक्षाएँ भी मिलेंगी। आज ही आर्डर दीजिए।

मूल्य लगभग ।॥)

बाल-साहित्य मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो श्रेष्ठ ग्रंथरत्न

राम-रहीम

राजा राधिकारमणजी हिंदी के सिद्धहस्त लेखक हैं। राम-रहीम उन्हीं की लेखनी का प्रसाद है। सामाजिक बंधनों की मज़बूती से एक विधवा का जीवन कैसा दुःखद बन जाता है, एवं एक नवीन सभ्यता की पुजारिन किस प्रकार स्वतंत्र पत्ती की नाईं समाज में विचरण करती है, अत्यंत रोमांचकारी ढंग से इन सबका वर्णन इस उपन्यास में हुआ है।

इस उपन्यास की मुख्य पात्र परिस्थितियों द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत दो स्त्रियाँ हैं। एक समाज की प्राचीन रूढ़ियों एवं विचारों के अंतर्गत पत्ती है, दूसरी अनुचित स्वतंत्रता एवं वासनामयी परिस्थितियों के वातावरण में सयानी हुई अप-टु-डेट रमणी है।

इन दोनो की जीवन-कथा जानने के लिये राम-रहीम की मर्मस्पर्शी कहानी पढ़ें। भाषा का क्या पूछना। इतनी चलती हुई, सरल, सीधी और भाव-पूर्ण कि पद-पद पर आप लेखक की प्रशंसा किए विना न रहेंगे।

पुस्तक में समाज की वर्तमान समस्याओं का अत्यंत सुंदर विवेचन किया गया है, और कथा इतनी रोचक है कि एक बार पढ़ना प्रारंभ कर देने पर आप उसे समाप्त करके ही उठेंगे। ६६० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ३)

उत्तर-भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुरंधर लेखक आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री-प्रणीत

आरोग्य-शास्त्र

३१ अध्याय, १५० प्रकरण। ७०० से अधिक विषय, ३०० के लगभग एकरंगे और बहुरंगे मूल्यवान् चित्र और ६०० के लगभग बड़े (२० × २६ = ८) पृष्ठ, उत्कृष्ट छपाई और क़ीमती मज़बूत देशी आइवरी फ़िनिश चिकना कागज़, पक्की, सुनहरी कारीगरी की बढ़िया जिल्द। पचासों वर्ष तक ग्रंथ नष्ट नहीं हो सकेगा, न इस कागज़ में कीड़ा लग सकेगा।

ग्रंथ का प्रत्येक अक्षर

प्रत्येक सद्‌गृहस्थ के लिये प्राणों से बढ़कर क़ीमती है। एक-एक बात हज़ारों बार हज़ारों रुपयों का काम देगी। सैकड़ों बार पढ़ने पर भी यह ग्रंथ सदैव आपको पढ़ते रहना पड़ेगा। ग्रंथ की भाषा बहुत सरल रक्खी गई है।

गत १०० वर्षों में

इसकी टक्कर का ग्रंथ हिंदोस्तान की किसी भाषा में नहीं निकला।

यदि आप अधिक व्यय और समय बरबाद न करके वैद्यक के हर विषय के पंडित बनना चाहें, तो आरोग्य-शास्त्र मँगाकर पढ़ें। मूल्य १२)

मिलने का पता—

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में कांग्रेस क्यों आंदोलन कर रही है ?

यह जानना हो, तो

श्रीनाथसिंह-लिखित

जागरण-उपन्यास पढ़िए !

देशी राज्यों में अधिकारी कैसी मनमानी करते हैं ?
स्त्रियों का सतीत्व तक अपहरण करने
के लिये क्या-क्या चेष्टाएँ की जाती हैं ?
राष्ट्रीय आंदोलन को किस तरह
कुचला जाता है ?
और अंत में संगठित प्रजा की
किस तरह जीत हो सकती है ?
आदि-आदि बातों पर प्रकाश
डालनेवाला यह हिंदी का
एक-मात्र उपन्यास है ।

मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के कायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की प्रबलता, तज्जनित द्वेष और दाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ने ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी खूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी खूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और इसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए, और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. उस पार

मैं खड़ा इस पार हूँ, औ' तू खड़ी उस पार ;
दो शरीरों पर बसे हैं दो बड़े संसार।
एक से वह दूसरा है दूर—कितनी दूर ;
बीच में बहता हुआ पानी भरा भरपूर।
लोल लहरों को लिए जंगम-जलधि की चाल
हो रही द्रुत वेग से कितनी प्रबल, उत्ताल।
एक नाविक है प्रिये, पर दो पड़ीं पतवार ;
मैं खड़ा इस पार हूँ, औ' तू खड़ी उस पार।
एक पर भूगोल है, औ' दूसरे पर सौर ;
एक शाश्वत शून्य है, औ' दूसरा कुछ और।
एक से है दूसरा कितना विभिन्न, विराट ;
तू वहाँ की राजमहिषी, मैं यहाँ सम्राट।
एक हैं दोनो प्रिये, पर भिन्न हैं अधिकार ;
मैं खड़ा इस पार हूँ, औ' तू खड़ी उस पार।
मैं हृदय का क्रोध हूँ, औ' तू हृदय की स्फूर्ति ;
मैं सतत संग्राम हूँ, पर तू सदय सन्मूर्ति।
एक से बढ़कर कहीं है दूसरा अभिराम ;
एक क्रंदन का नमूना, दूसरा स्मित-धाम।
एक ही आधार पर हैं दो विशिष्ट प्रकार ;
मैं खड़ा इस पार हूँ, औ' तू खड़ी उस पार।

अंबिकेश शर्मा 'कुंतल' (बी० ए०)

× × ×

२. गीत

संसृति का है प्यार निराला।
मंजुल शशि-बाला को निशि में
भ्रमर चूमता है मतवाला।
सहज सरसता ले पल-भर में
उड़ जाता हँसता अंबर में ;
दुखी कुमुदिनी उसे बुलाती,
पर वह है कब सुननेवाला ?
इधर पद्मिनी पद्माकर में
मादकता-प्याला ले कर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी हुई है विकसित-वदना,
नवयौवना, मनोरम बाला।
भ्रमर देखकर है ललचाता,
गुन-गुन मिस कुछ विनय सुनाता,
नहीं पद्मिनी ने जाना वह
होता है मन का भी काला।
अपना हा! सर्वस्व लुटाया,
दुख में भी वह पास न आया,
यौवन गया, गया मधुकर भी,
क्या आदर्श प्यार है पाला!

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

३. निरक्षरता-निवारण के उपाय

यों तो भारतवर्ष की पराधीनता के सैकड़ों कारण बताए जा सकते हैं, किंतु भारतवासियों की निरक्षरता इसका प्रधान कारण है। जापान-जैसा छोटा राष्ट्र आज अगणित चीनियों के स्वत्वों को हड़प रहा है, इटली ने अबीसीनिया पर विजय प्राप्त की, इसमें मुख्य कारण जापान और इटली-वालों का अधिक-से-अधिक संख्या में साक्षर होना ही है।

इतिहास से पता चलता है कि किसी ज़माने में हमारा देश ही सब देशों से अधिक साक्षर एवं सुबोध था। तभी तो यहाँ के द्विजन्माओं से बाहरवाले आ-आकर, आचार आदि की शिक्षा लेकर अपने देश लौटते थे। कतिपय चीनी यात्रियों के यात्रा-प्रसंगों के वर्णनों से यही बात जानी जाती है कि यहाँ के लोग अधिक-से-अधिक ज्ञानी, ध्यानी, सुपठित एवं सुसंस्कृत थे। साधारण शिक्षित को यहाँ शिक्षित होने का प्रमाण-पत्र ही नहीं मिलता था।

छांदोग्य उपनिषत् के एक प्रसंग में कहा गया है कि एक समय नारद मुनि ने सनत्कुमार ऋषि के पास जाकर प्रार्थना की—"हे भगवन्! मुझे शिक्षा दीजिए।" तब सनत्कुमार बोले—"पहले जो विद्याएँ तुमने पढ़ी हैं, उन सबको मुझे सुना दो, तत्पश्चात् मैं तुम्हें शिक्षा दूँगा।" सनत्कुमार के पूछने पर नारद ने कहा—"ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास, पुराण, गणित, ज्योतिष, भूगर्भ-शास्त्र, नीति-शास्त्र, व्याकरण, कल्प, धनुर्विद्या, भूत-विद्या इत्यादि सब विद्याएँ मुझे भली भाँति आती हैं।" इस पर सनत्कुमार ने कहा—"यत्त्वं वेद, तदल्पमेव वेद—अर्थात् जो तू जानता है, वह अल्प ही है।" इसी प्रकार उद्दालक और श्वेतकेतु के प्रसंगों से भी जाना जाता है कि यहाँ लौकिक विद्याओं में निष्णात को भी अज्ञ ही जाना जाता था, उसकी कोई क़द्र न होती थी।

जो माता-पिता संतान को साक्षर नहीं बना सकते थे, उन्हें संतान की दृष्टि में हमारे नीति-शास्त्रकारों ने शत्रु तक कह डाला है। "पिता न स स्याज्जननी न सा स्यात्" —वह माता नहीं, वह पिता नहीं, जो संतति को पढ़ा-लिखा न सके। इस प्रकार के आदर्शों के रहते हुए भी इतिहास के परिपाकानुसार आज भारत में करोड़ों मनुष्य अक्षर-शून्य हैं।

यह बहुत दिनों से भारत के लिये एक अभिशाप है। आज तक की गवर्नमेंटों ने भी इस भूत को भगाने का प्रयत्न नहीं किया। करतीं भी क्यों? उन्हें तो साक्षरों से डर लगता होगा। यदि सभी भारतवासी साक्षर हो जायँ, तो विदेशी सरकार अपना उल्लू सीधा करने में क्योंकर सफल होगी? विजेता जाति का यह उसूल हमेशा से रहा है कि वह अधीनस्थों की संस्कृति, सभ्यता, साहित्य और भाषा का समूलोन्मूलन करके ही चैन की नींद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवे। इसी नीच सिद्धांत का पालन अँगरेज़-जाति ने भी भारतवासियों के संबंध में किया, जिसके फल-स्वरूप आज भारत में निरक्षरों की कमी नहीं।

अब यह परम सौभाग्य का सुअवसर आया है, जो कांग्रेस-गवर्नमेंट अपने इलाक़ों से निरक्षरता दूर करने के लिये कटिबद्ध हो गई है। यदि उसका उद्यम सफल हुआ, तो निःसंदेह भारत की उन्नति होगी, और निकट भविष्य में उसके पैरों में पड़ी हुई पराधीनता की बेड़ियाँ टूटकर डालनेवालों के सिर पड़ेंगी। यदि हम वस्तुतः "पराधीन सुख सपनेहु नाहीं।" समझकर पराधीनता से छुटकारा पाने के लिये छटपटा रहे हैं, तो सर्व-प्रथम हमें इस निरक्षरता-पिशाचिनी को जबरन् बाहर करना होगा। बिना इसे भगाए हम किसी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकते। कांग्रेस का वरदान प्राप्त करके इस शाप से मुक्त होना ही पड़ेगा। इसके रहते स्वराज्य भी स्वप्न-मात्र है। स्वराज्य प्राप्त करने के पहले प्रत्येक को इसके माने समझ लेना आवश्यक है, और यह तभी हो सकता है, जब प्रत्येक नर-नारी थोड़ा-बहुत साक्षरता-रूपी दीपक को अपनाए हो। साक्षर मनुष्य अपने कर्तव्य का कुछ-न-कुछ तो ख़याल करता ही है। तदनुसार उसे समझानेवाले सरलता से भी समझा सकते हैं। मनुष्य की रुचि ही कुछ ऐसी है कि वह किसी बात को उपदेश द्वारा उतनी आसानी से नहीं समझ सकता, जितनी आसानी से स्वयं पढ़ने से समझता है। बच्चों को कहानी सुनने में उतना आनंद नहीं आता, जितना स्वयं कहानी पढ़ने में।

यह बीसवीं सदी है। इसमें रहते हुए प्रत्येक आदमी का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक बात पहले अच्छी तरह समझ ले, फिर कोई कार्य करे; बिना ऐसा किए उसका किया हुआ कोई भी काम महत्त्व-शाली नहीं माना जा सकता। इसलिये इस समय सभी उन्नति चाहनेवालों का यह प्रधान लक्ष्य होना चाहिए कि अपने देश से निरक्षरता दूर कर दें। इसे दूर कर लेने के पश्चात् हमारा पूर्ण विश्वास है कि उन्नति की कई एक सीढ़ियों पर हम स्वतः पहुँच जायँगे।

संस्कृत में एक कहावत है—"सर्वं पदं हस्तिपदे निमग्नम्।" अर्थात् सबके पद हाथी के पद में समा जाते हैं। इसके अनुसार साक्षर होने पर हम उन्नत माने ही जायँगे। प्रजातंत्र राज्यों के लिये तो यह अनिवार्य है कि वहाँ की जनता साक्षर हो। वोट देते समय साक्षरों के रहते बहुत-सी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाती हैं। गत वर्ष वोट लेते समय हमारे ग्रामीण भाइयों के कारण जितनी कठिनाई हुई थी, वह विदित ही है। बहुतों को तो समझाते-समझाते हैरान होना पड़ा था। यदि भाग्य ने साथ दिया, तो अब भारत में प्रजातंत्र राज्य होकर ही रहेगा, इसलिये आवश्यक है कि हम साक्षर हो जायँ, जैसा आज प्रत्येक भारतीय की आत्मा महसूस कर रही है।

यू० पी० - गवर्नमेंट का स्तुत्य कार्य ज़ोरों से चल पड़ा है, यदि यही रफ़्तार रही, तो बहुत जल्द निरक्षरता भारत से दूर होगी। किंतु भारत की जनता ९० प्रतिशत गाँवों में रहती है। उसे साक्षर बनाने की योजना एक जटिल प्रश्न है। गाँवों के कई एक बूढ़े तो कहते हैं—"आखर सीखे हम का राजा होइएँ?" वे इसी तरह के अनेक ख़यालों के कारण लड़कों को भी अक्षर-बोध नहीं होने देते। इसलिये कुछ ऐसी योजनाएँ बनाई जायँ, जिनसे प्रत्येक मनुष्य सरलता से साक्षर बन सके। इन्हीं योजनाओं को पाठक महानुभावों की सेवा में उपस्थित करना इस तुच्छ लेखक का उद्देश्य है—

१—सरकार को सहायता देने के साथ ही लिखे-पढ़े आदमी भी अपना यह पुनीत कर्तव्य समझें कि निरक्षरों को साक्षर बनाना ही चाहिए। इसके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें अपनी कठिनाइयों पर ध्यान नहीं देना चाहिए यह बहुत बड़ी देश-सेवा है। विद्यार्थी या विद्यार्थिनी द्वारा यह काम बड़ी उमंगों के साथ, अवकाश के दिनों में, हो सकता है। विद्यार्थियों को स्कूलों और कॉलेजों के अधिकारियों से प्रोत्साहन मिलना चाहिए। गाँवों में भेजने, खाने-पीने और रहने की सब समस्याएँ स्थानीय संस्थाएँ या गवर्नमेंट पूरी करे। गाँवों में अधिक-से-अधिक साक्षर बनानेवाले का रिकार्ड देखकर उसे सम्मानकारक पारितोषिक दिया जाय। किसानों को पढ़ाने का समय रात को चौपालों में हुआ करे। पढ़ानेवाले की कार्य-तत्परता का निरीक्षण वहाँ के प्रधान आदि करते रहें, और उसकी मदद करने में हर तरह का सहयोग प्रदान करें। लंबे अवकाश के दिनों में विद्यार्थियों की टोली-की-टोली गाँवों में जाकर शिक्षा दे। ऐसा करने से उनकी भी आशातीत उन्नति होगी, और साथ ही उन्हें ग्रामीण जीवन की शिक्षा भी मिलती जायगी। यदि उनके अध्यापक भी साथ में रहें, तो उनका यह कार्य सोने में सुगंध-तुल्य होगा।

२—मनुष्य स्वभावतः मनोरंजन के साथ-ही-साथ काम करने की प्रवृत्तिवाला प्राणी है, इसलिये गाँवों में शिक्षा का सूत्रपात करते हुए उनके मनोरंजन की सामग्री भी शिक्षकों के पास पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए। यह सामग्री उनके हितों को मद्दे नज़र रखकर बनानी चाहिए।

कृषि से संबंध रखनेवाले साधन प्रस्तुत किए जायँ, जिनसे फ़सल पैदा करने के उपाय बताए जा सकें। रेडियो और चल-चित्रों से मनोरंजन अधिक सुगमता से हो सकता है। रेडियो की भाषा उनकी बोली से मिलती-जुलती हो। चल-चित्रों में सफ़ाई आदि का पाठ हो। शिक्षकों के पास ग्रामीण जनता के लिये ओषधियाँ हों, जिनसे उसकी बीमारियाँ कम हों। ऐसा करने से उसे शिक्षा के प्रति प्रेम और विश्वास होने लगेगा, जो साक्षर बनाने में महान् गुणकारी होगा।

गाँवों में बहुधा ऐसे धनिक रहते हैं, जिनके संतान नहीं होती। वे संतान के लिये हर समय तड़पते रहते और अंत में काल के ग्रास हो जाते हैं। उनकी चल-अचल सब संपत्ति बुरे आदमियों के पल्ले पड़ जाती है। गवर्नमेंट उस संपत्ति द्वारा वहाँ के बालकों को अधिक-से-अधिक साक्षर बनावे। संपत्तिशालियों के रहते ही उनका रुपया इस सत्कार्य में लगने की प्रेरणा होनी चाहिए।

राज्यों में ऐसों का धन राजा हड़प लेते हैं। उन्हें स्वार्थ में यह धन न लगाकर विद्या-प्रसार एवं प्रचार में व्यय करना उचित है। कहने का तात्पर्य यह कि इस प्रकार का धन शिक्षा-क्षेत्र में लगाना गवर्नमेंट का काम होना चाहिए।

वर्तमान काल के शिक्षित युवक अपनी अशिक्षित स्त्रियों पर हमेशा बिगड़े रहते हैं, किंतु उन्हें पढ़ाते नहीं। उन्हें उचित है, समय निकालकर अपनी स्त्रियों ही को नहीं, बहनों और माताओं तक को शिक्षित करें। स्त्रियों में फैली हुई निरक्षरता और अज्ञान दूर करना नितांत आवश्यक है, क्योंकि स्त्रियों द्वारा भावी संतान सरलता से साक्षर हो सकती है। घर की मालकिन वे ही होती हैं, यदि वे अज्ञानांधकार में ही पड़ी रहीं, तो निःसंदेह भारत का गार्हस्थ्य जीवन कभी सुधर न सकेगा, प्रत्युत विषैला ही होता जायगा, जैसा हो रहा है। वर्तमान दंपति में कलह की बहुत बड़ी भित्ति स्त्रियों की निरक्षरता और अज्ञान पर निर्मित है। इसलिये जिस किसी ने भी शिक्षा का प्रकाश प्राप्त किया है, वह इस प्रकाश की किरणें स्वयं तक ही सीमित न रक्खे, बल्कि अधिक-से-अधिक फैलाने का प्रबंध करे, जिसमें ग़रीब-से-ग़रीब का घर, चाहे वह ब्राह्मण हो, चाहे क्षत्रिय, चाहे हरिजन, शिक्षा के आलोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आलोकित हो जाय। इसका प्रबंध करना प्रत्येक भारतीय नर-नारी का कर्तव्य है। इससे हमारा चिर-सुप्त देश जाग उठेगा, और शिक्षा देनेवालों को कल्याण-पद की प्राप्ति होगी, क्योंकि "सर्वेषामेव दानानां विद्यादानं विशिष्यते।" यह मनु महाराज की उक्ति है, जिसका अर्थ है, सब दानों में विद्या-दान ही श्रेष्ठ है। यह काम सरकार के ही आसरे न छोड़ देना चाहिए। सरकार का नियंत्रण और व्यवस्था ज़रूर हो, बाक़ी कार्य हरएक करे। इस निरक्षरता के दूर होते ही हमारी सब प्रकार की उन्नति होगी। अतः इसे प्रत्येक शहर, गाँव और पहाड़ से बाहर करना ही पड़ेगा।

(वेदांताचार्य) महेशानंद

× × ×

४. ताज

विकसित सित सुमनों की शोभा हो जाए साकार कहीं,
और चाँदनी की पड़ती हो उस पर मधुर फुहार कहीं,
तो फिर कहीं ताज की थोड़ी सुंदरता वह व्यक्त करे;
ऐसा है जब ताज, हृदय को क्यों न कहो, अनुरक्त करे?

शरत्काल के कल हंसों-सा, मंदाकिनी-झाग-सा सित,
भू पर यह पूर्णेंदु बनाया ब्रह्मा ने है दोष-रहित।
धन्य! धन्य! तुम शाहजहाँ हो, विधि की भी त्रुटि पूरी की;
यह सकलंक, सघट शशि रचकर रचना नहीं अधूरी की।

विश्व-विरह का अश्रु-बूँद ही मानो यह जम गया बड़ा;
सुर-तरु-सुमन यहाँ भव-भय से आते-आते हुआ कड़ा।
किंवा बिछुड़ी हुई प्रियतमा का फिर से पाने को प्यार—
पर फैलाए शाह-हृदय की इच्छा उड़ने को तैयार।

नहीं, धूल में शाहजहाँ की प्रेम-लता जो कभी मिली,
आँसू-सिंचित, विश्व-विमोहन उसमें ही यह कली खिली।
शाहजहाँ की प्रेम-भावना-सा ऊँचा उठकर यह ताज—
रह-रहकर लज्जित करता है स्वर्गस्थित सब शोभा-साज।

यमुना इसके पाद-प्रांत में कल-कल कर बहती दिन-रात,
मानो उन बिछुड़े हृदयों की पूछ रही भूली-सी बात।
किंवा कल-कल कर कलिंदजा कहती है कुछ यही विकल—
"आज नहीं, तो काल-गाल में सबको ही जाना है कल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे जाने के पहले प्रिय ! कर जाओ कुछ ऐसा काम,
जिससे अमर रहे जगती में एक तुम्हारा नाम ललाम।"
पर मेरा कवि-हृदय काँपता, यह यमुना की कल-कल धार—
कहीं जगा दे हाय ! न दंपति की सोई पीड़ा सुकुमार ?

(कुँ०) हरिश्चंद्रदेव 'चातक' (कविरत्न)

× × ×

५. अगर जापान फ़िलिपाइन पर अधिकार जमा ले ?

फ़िलिपाइन की समस्या बहुत कठिन है। द्वीप के निवासी ख़ुद नहीं जानते कि (१) वे स्वतंत्र होना चाहते हैं, या (२) अपने महादेश की ओर झुकना चाहते हैं, या (३) ब्रिटिश साम्राज्य में मिलना चाहते हैं। इसी समय जापान अपनी वाणिज्य-मूलक शोषण-विधि से धीरे-धीरे उस देश के लोगों के हृदय में घर कर रहा है।

सुधा के जो पाठक 'उत्तर-चीन पर जापान के हथकंडे'-नामक लेख पढ़ चुके होंगे, उन्हें ज्ञात होगा कि मैंने, जापान किस प्रकार अपनी सैनिक अधिकार-स्थापना तथा वाणिज्य-मूलक शोषण-विधि से उत्तर-चीन पर अधिकार जमा रहा है, उनके सामने रखने का प्रयत्न किया था। अब मैं उन्हें 'अगर जापान फ़िलिपाइन पर अधिकार जमा ले ?'-नामक लेख भेंट कर रहा हूँ।

फ़िलिपाइन-द्वीप-समूह, जो बोर्नियो के उत्तर-पूर्व में है, आज संयुक्त-राज्य अमेरिका के अधिकार में है। वह ग्रीष्म-कटिबंध के उत्तर में है, और वहाँ मानसून से वर्षा होती है। द्वीपों में प्रायः एक करोड़ की आबादी है। विशेषकर फ़िलिपाइयन हैं और प्रायः सब क्रिश्चियन। भूमि का प्रायः $\frac{1}{8}$ भाग जोता जाता है, और उसमें ख़ूब पैदावार होती है। वहाँ की प्रसिद्ध उपज चावल, मैनीला, सन, नारियल, मकई, ईख, कॉफ़ी, तंबाकू और केला आदि हैं। फ़िलिपाइन-द्वीप-समूह का नारियल तथा नारियल का तेल पैदा करने में संसार में सबसे ऊँचा स्थान है। चीनी, सन तथा तंबाकू बाहर भेजी जाती है।

द्वीपों में चावल की पैदावार विशेष न होने के कारण चावल दूसरे देशों से मँगाना पड़ता है। द्वीपों में जो आबादी है, उसमें से प्रायः आधी लीउजन-द्वीप में रहती है। यह सबसे बड़ा और प्रसिद्ध द्वीप है। मनीला वहाँ की राजधानी है और प्रसिद्ध बंदरगाह भी। वहाँ से प्रायः सब चीज़ें बाहर भेजी जाती हैं।

इस प्रकार फ़िलिपाइन-द्वीप-समूह व्यापार तथा वाणिज्य के लिये बहुत प्रसिद्ध स्थान है। पर अब आप पूछिएगा, अमेरिका ने उसकी उन्नति क्यों न की, जब कि वह उसके हाथ में है ? इसका सीधा उत्तर यही है कि वह अभी तक यह निश्चय नहीं कर पाया है कि वह वहाँ रहेगा या नहीं।

अमेरिका का इस ओर प्रबल झुकाव है कि वह पश्चिमीय प्रशांत महासागर से अपनी सत्ता हटा ले। चीन में उसका अधिकार ग्रेट ब्रिटेन से $\frac{1}{8}$ है, और युद्ध उसके लिये लाभप्रद नहीं। वह ग्रेट ब्रिटेन के सदृश वैदेशिक व्यापार पर भी एकदम निर्भर नहीं।

अगर वह अपना अधिकार हटाकर यहाँ से अपने स्थान चला जाय, तो भी उसका राज्य इतना फैला हुआ है कि कई शताब्दियों तक ख़ुद ही वह अपना काम चला सकता है। साथ ही यह बात भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि जापान के बढ़ने से अमेरिका को कोई हानि नहीं।

ग्रेट ब्रिटेन की हालत इससे बिलकुल भिन्न है। वह पश्चिमीय प्रशांत महासागर से अपना हाथ नहीं खींच सकता। ऐसा करने पर आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, दी फ़ेडरेटेड मालाय स्टेट्स, चीन में ब्रिटिश-अधिकार और ख़ूब विस्तृत ग्रेट ब्रिटेन के अधिकारी राज्य, इन सबको बचाना ब्रिटेन के लिये बहुत कठिन हो जायगा। इस प्रकार का एकाएक हटना भारत के लिये, जिस पर ब्रिटेन का पूर्ण रूप से शासन है, हानिकारक होगा। इससे भारत के शासन को भी बहुत भारी धक्का लगेगा।

गत महायुद्ध के बाद से जापान बहुत शक्तिशाली साम्राज्य हो गया है। उसने दक्षिणीय और पश्चिमीय एशिया पर भारी प्रभाव डाला है, इसलिये जापान जो अपनी वाणिज्य-मूलक शोषण-विधि फ़िलिपाइन में चला रहा है, वह बेकार नहीं।

चेरोमाइट-नामक एक उत्तम लोहा, जिससे उत्तम शस्त्रास्त्र बन सकते हैं, हाल में यहाँ बड़ी तादाद में मिला है। इसकी जापान को बड़ी भारी आवश्यकता है, इसलिये जापान इससे सर्वदा घनिष्ठ संबंध रखना चाहता है। यह चेरोमाइट-द्रव्य का सारे संसार में सबसे बड़ा केंद्र होने जा रहा है। लोहा भी अत्यंत पूर्व में सबसे अच्छा मिलता है। इसकी भी जापान को बड़ी आवश्यकता है।

जापान तथा फ़िलिपाइन में व्यापारिक संबंध बड़ा घनिष्ठ है। जापान, कल-कारख़ानों का देश होने के कारण, कच्चा माल चाहता है। फ़िलिपाइन उसकी आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है। इनका संबंध हाथ तथा दस्ताने का है। जापानी हाथ फ़िलिपाइन दस्ताने में घुस जायगा, और उसे ज़ोर से पकड़ लेगा, यह प्रतिज्ञा करते हुए कि वह उसमें एक नया जीवन फूँक देगा, और साथ ही उसे अपने अधिकार में कर लेगा। हज़ारों की तादाद में मिलों की बनी हुई चीज़ें, आवश्यक वस्तुएँ, विलास की सामग्रियाँ, दवा आदि जापान उसे बहुत कम दाम में दे सकेगा। वे ही चीज़ें आधे तथा चौथाई मूल्य पर जापान फ़िलिपाइन-निवासियों को दे सकता है, जिनके पूरे दाम उन्हें अमेरिका को देने होते हैं। वे चीज़ें, जिनसे ये तैयार होती हैं, फ़िलिपाइन से जापान जायँगी। पास ही में रहने के कारण एक दूसरे की वे ख़ूब सहायता कर सकते हैं। सनफ़्रांसिस्को से फ़िलिपाइन आने के लिये जहाज़ों को तीन सप्ताह लगते हैं, जब कि सबसे निकट जापानी सीमा से एक दिन तथा जापान से एक सप्ताह से कम समय लगता है। हवाई जहाज़ से तो ८ या १० घंटे में ही आ-जा सकेंगे। जापान से मनीला तक जो हवाई संबंध क़ायम किया जा रहा है, उससे बहुत कम समय लगने की संभावना है। लगभग ६ घंटे का रास्ता है।

सनफ़्रांसिस्को से फ़िलिपाइन ८ हज़ार और हवाई द्वीप से ५ हज़ार मील है। परंतु सबसे पास-वाली जापानी सीमा से केवल ८ मील निकट रहने के कारण जापान का व्यापारिक संबंध फ़िलिपाइन से स्वाभाविक है।

जो कुछ भी वहाँ के निवासी खाते, पहनते, पढ़ते, अपने घर में रखते हैं, अधिकतर जापान से आता है। प्रथम फ़िलिपाइन का व्यापार चीन के हाथों में था, पर जापान ने अपने दाम बहुत घटा दिए, और चीन का व्यापार इनके हाथों में आ गया।

अमेरिका की सरकारी रिपोर्ट से पता चलता है कि फ़िलिपाइन का व्यापार इस साल ४० प्रतिशत जापान के हाथों में रहा, और एक जापानी भविष्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेत्ता की यह भविष्यवाणी कभी झूठ मानने योग्य नहीं कि १६४० में यह ८० प्रतिशत हो जायगा, क्योंकि जिस प्रकार जापान का व्यापार वहाँ बढ़ता जाता है, उससे सभी चक्कर में हैं।

मैं तो आज सभी फ़िलिपाइन-निवासियों को अनिश्चयता के चक्कर में पड़ा हुआ पाता हूँ। एक तो उनका झुकाव स्वतंत्रता की ओर हो सकता है। पर यह विचार बहुत कम आदमियों का है।

उनका दूसरा झुकाव जापान की ओर हो सकता है, और यह बहुत कुछ ठीक भी है। वहाँ बहुत-से इस विचार-धारा के लोग हैं कि "एशिया एशिया-वालों के लिये है", जिसमें जापान का प्रतिनिधित्व अत्यावश्यक है।

परंतु इस विचार-धारा के साथ ही एक और विचार-धारा है। वह है अमेरिका का प्रतिनिधित्व स्वीकार करना। सचमुच इसकी धारा भी वेगवती नदी के सदृश है। सचाई तो इसमें है कि फ़िलिपाइन का सवाल हल होना टेढ़ी खीर है। यह प्रायः ३८ वर्षों से निश्चय है कि वहाँ के निवासी संसार में सबसे अधिक स्वतंत्रता को महत्त्व देते हैं। वक्ताओं ने अपने भाषणों में कहा है कि वे अपने लोगों द्वारा नरक के समान भी शासित होने को तैयार हैं, पर अमेरिका द्वारा स्वर्ग के समान भी नहीं। परंतु इस विचार में भी विशेष तथ्य नहीं, क्योंकि यह कुछ लोगों का ही व्यक्तिगत विचार है। वे अपने सम्मुख रुपए का कठिन सवाल देखते हैं, अंतःप्रतिद्वंद्विता दिन-दिन बढ़ती देखते हैं, और सबसे बड़ी बात, जो वे देखते हैं, जापान की उन पर छत्रच्छाया है।

पर यहाँ कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो ग्रेट ब्रिटेन की ओर देखते हैं। यह चौथी विचार-धारा है, जो केवल मृगतृष्णा के सदृश ही है। इसमें तथ्य का नामोनिशान नहीं, और अभी तक ग्रेट ब्रिटेन की ओर से सहायता की कोई संभावना नहीं। पर यह विश्वास किया जाता है कि ग्रेट ब्रिटेन निमंत्रण पाने पर नए जोश से तैयार हो जायगा, अगर उसने इसमें ज़रा भी स्वार्थ पाया।

ये सब बातें गत १० वर्षों से स्वतंत्रता के लिये लड़नेवाले फ़िलिपाइन-द्वीप-समूह पर प्रकाश डालती हैं। बहुत संभव है, अमेरिका कभी इसकी अवस्था सुधारने के लिये तैयार हो जाय, और फिर इस पर अच्छी तरह शासन करने लगे। पर यह भी द्वीप-समूह के लिये दुर्भाग्य ही होगा। तब तक तो हालत में आमूल परिवर्तन हो जायगा; क्योंकि जापान दिन-प्रतिदिन अपनी वाणिज्य-मूलक शोषण-विधि से द्वीप-समूह के लोगों के हृदय में घर कर रहा है—अमेरिका द्वारा जो कुछ दिनों के लिये जगह ख़ाली हो गई, उसे भर रहा है। जापान ही एक ऐसी शक्ति है, जिसे फ़िलिपाइन से सबसे अधिक लाभ है।

जापानी विजय अमेरिकन विजय के समान एका-एक न होगी। यह तो व्यापारियों तथा खान-वालों द्वारा होगी, क्योंकि जापान का लाभ इसमें अधिक होता जाता है। बीस जातियाँ जो ७०८३ द्वीपों में फैली हुई हैं, और जो ६० प्रकार की भाषाएँ बोलती हैं, एक साथ मिलकर सुख और शांति से रहें, यह एक बड़ी कठिन समस्या मालूम होती है। वहाँ शांति-भंग होने की शंका बराबर बनी ही रहेगी। पर जापानी लोग शांति-भंग को ज़रा भी पसंद नहीं करते, और उनकी आंतरिक इच्छा यही रहती है कि जहाँ भी वे अपना सिक्का जमाएँ, वहाँ पूर्ण शांति रक्खें, और उसे सदा किसी-न-किसी प्रकार से अच्छी तरह निभाते रहें। जापानी साम्राज्य का साधारण उद्देश्य सदा यही रहता है। यही उसके आधुनिक इतिहासों को पढ़ने से मालूम होता है।

जो हो, फ़िलिपाइन-द्वीप-समूह का भविष्य इस समय बिलकुल अनिश्चित है।

परमेश्वरलाल जैन 'सुमन'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे गाँवों का दूध

संयुक्त प्रांत में बहुत कम ऐसे गाँव होंगे, जिनमें गाय-भैंसें न हों। पश्चिम के ज़िलों में तो इनकी बहुत ज़्यादती है। ऐसा होने पर भी बहुधा देखा जाता है कि गाँव के बहुत कम लोग दूध का उपयोग करते हैं। जानवरों की दशा भी अच्छी नहीं दिखाई देती। शोचनीय बात तो यह है कि गाय-भैंस पालने पर भी गाँववाले न तो उनसे पूरा आर्थिक लाभ उठा पाते हैं, और न स्वास्थ्य-संबंधी। कारण, उनका दूध औने-पौने दामों में और बढ़ी-चढ़ी तौल से शहर या दिहात के हलवाई ख़रीद लेते हैं। ऐसा ही हाल दिहात के खोए का भी है। गाँववालों को इससे भी कुछ लाभ नहीं होता।

यदि हमारे दिहाती भाई, जिनके पास गाय-भैंसें हैं, मिल-जुलकर काम करें, तो अवश्य लाभ होने की संभावना है। वे अपना दूध तथा खोया एक स्थान पर एकत्र कर, उसे ठीक तौल से तुलवाकर यदि संयुक्त रूप में शहरों में भेजें, तो उन्हें अच्छे दाम मिल सकते हैं, जिनसे वे अपनी और अपने जानवरों की स्थिति उन्नतिशील बना सकते हैं। जब सब एक साथ एक ही नाव पर बहेंगे, तो उन्हें अवश्य एक दूसरे के हित का ध्यान रहेगा। जानवरों की नस्ल की तरक़्क़ी भी सहज में हो सकेगी, क्योंकि सब लोग मिलकर एक अच्छा साँड़ मँगवा सकेंगे, जिससे सबको लाभ हो सकेगा।

लखनऊ के आस-पास के गाँवों में दूध बेचने की को-ऑपरेटिव सोसाइटियाँ क़ायम की गई हैं। गाँववाले, जिनके पास गाय-भैंसें हैं, मेंबर हो सकते हैं। ऐसा प्रबंध किया गया है कि सोसाइटी के सब मेंबर एक ही स्थान पर सफ़ाई के साथ अपने जानवरों को दुहें। ऐसी सब दूध की सोसाइटियों के ऊपर एक मिल्क-यूनियन है, जो अपना कर्मचारी भेजकर प्रत्येक गाँव से दूध एक स्थान पर इकट्ठा कराती है। लखनऊ के आस-पास लगभग पचीस दूध की सोसाइटियाँ बनी हैं, जिनमें से कुछ की रजिस्ट्री हो गई है। प्रत्येक मेंबर के पास औसतन् दो जानवर हैं। दिन-भर में लगभग पचीस मन दूध इकट्ठा होकर लखनऊ भेजा जाता है।

ध्यान देनेवाली दो बातें हैं—पहली यह कि मेंबर अपना दूध एक नियमित नपने से नापते हैं। इसमें यह झगड़ा नहीं कि आज एक लुटिया, तो कल दूसरी—जैसा अभी तक होता चला आया है, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे हलवाई लोग गाँववालों से पूरा लाभ उठाते हैं। दूसरी यह कि लखनऊ की मिल्क-यूनियन दूध-वाली सोसाइटियों से बारहो महीने एक ही भाव से दूध ख़रीदती है। भाव बारह सेर का नियत कर दिया गया है। हलवाई वर्षा-ऋतु में बीस सेर तक का दूध ख़रीदते हैं। अधिकतर पंद्रह से सोलह सेर तक का तो अवश्य ख़रीदते हैं। जैसा ऊपर कहा गया है, इससे गाँववालों को कुछ भी नहीं बचता। जानवर रखकर वे अपनी आय किसी प्रकार भी नहीं बढ़ा सकते, क्योंकि दूध के दाम से तो वे जानवरों की देख-रेख भी मुश्किल से कर पाते हैं।

सब दूध की सोसाइटियों का दूध तालाबबख़्शी के डिपो में जमा किया जाता है। यह स्थान लखनऊ से दस मील दूर है। यहाँ दूध वैज्ञानिक रीति से भाप द्वारा गरम किया जाता है, जिससे विटामिन भी कम नहीं होते, और दूध भी शुद्ध हो जाता है। फिर ठंडा करके बहुत स्वच्छ तथा इन्स्यूलेटेड कैनों में भरकर लखनऊ भेजा जाता है। एक मोटर बस इसी काम के लिये बनवाई गई है, जिसमें अंदर ऐस्बेस्टस लगा है, जिससे गरमी असर नहीं करती, और ऊपर चमकदार धातु मढ़ी है, जिससे सूर्य की किरणें लौट जाती हैं। इसके अंदर एक बरफ़ रखने का ख़ाना है, जिसके ऊपर बिजली का पंखा चलता है, जो उसके अंदर की वायु ठंडा कर देता है। लखनऊ पहुँचकर दूध शहर-भर में ७½ सेर के हिसाब से बेचा जाता है। स्कूल तथा पाठशालाएँ इस सुविधा से लाभ उठा सकती हैं, क्योंकि ऐसा अच्छा और सस्ता दूध सुगमता से दूसरी जगह मिलना मुश्किल है। स्कूलों के लिये ख़ास रियायत हो जाने की संभावना है।

लखनऊ की यूनियन में मक्खन, क्रीम तथा घी बनाने का भी प्रबंध है। इन सब वस्तुओं की शुद्धता की गारंटी है, क्योंकि सारा काम सरकारी को-ऑपरेटिव विभाग की निगरानी में होता है। जिन सज्जनों को विश्वास न हो, वे आकर स्वयं देख सकते हैं।

गाँवों के खोए का दूसरा प्रबंध है। लखनऊ से लगभग बीस मील पर रामपुर गढ़उँआ एक स्थान है, जहाँ खोया-यूनियन क़ायम की गई है, जो लखनऊ-मिल्क-यूनियन से संबंधित है। यह यूनियन सब खोया-सोसाइटियों का खोया इकट्ठा करती और बाहर बिक्री के लिये भेज देती है। जो दाम मिलते हैं, वे सोसाइटियों को पहुँचा दिए जाते हैं। खोया बनवाने का काम प्रत्येक गाँव में यूनियन की देख-रेख में होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शहरों से दूर के गाँव, जिनमें दूध की बहुतायत है, खोया बनवाकर दूर-दूर भेज सकते हैं। जो गाँव शहरों के पास हैं, वे अपना दूध अच्छे दामों बेचकर अच्छी आमदनी कर सकते हैं।

सरकार की ओर से पंजाब से अच्छी नस्ल की गाय-भैंसें तथा साँड़ मँगवाने का प्रबंध कर दिया गया है। बहुत जानवर तो गाँवों में आ भी गए हैं, और बाक़ी भेजे जा रहे हैं। दूधवाली सोसाइटियों के मेंबर इन जानवरों के दाम दूध की बिक्री के दामों से सुगमता से चुका सकेंगे। गाँव के जानवरों की नस्ल सदा के लिये अच्छी हो जायगी, और दूध भी अधिक-से-अधिक होने की संभावना है।

जैसा लखनऊ के पास के गाँवों में प्रयोग हो रहा है, यदि वैसा ही और जगह भी हो जाय, तो शहरों और गाँवों, दोनो स्थानों में दूध, दही, घी आदि की बहुतायत शीघ्र ही हो जायगी। हम अपने पुरातन आदर्श की ओर जाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जब गोरक्षा धर्म था, और दूध, दही, घी मुख्य खाद्य पदार्थ थे। हमारे बालक श्रीकृष्ण की भाँति अपने सुंदर, बलिष्ठ शरीर की ज्योति से भारत-देश को प्रफुल्लित कर देंगे। हमारे गाँव जाग उठेंगे, और आर्थिक दुखों से सदा के लिये छुटकारा पा जायँगे।

कैलासनारायण माथुर (एम्० ए०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

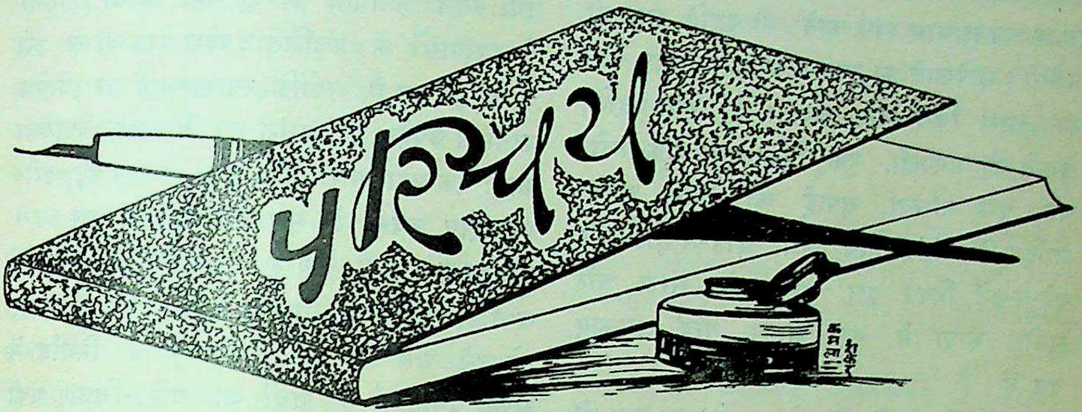

मुद्रण-प्रवेश अर्थात् कंपोज़-कला – मूल-लेखक, मुद्रक और प्रकाशक, श्रीयुत शंकर-रामचंद्र दाते बी० ए०, लोक-संग्रह छापाख़ाना ६२४, सदाशिवपेठ, पूना २; अनुवादक, श्रीयुत गोपविल्लभ उपाध्याय ; पृष्ठ-संख्या लगभग २५० ; मूल्य २) सजिल्द ।

छापेख़ाने या प्रेस-व्यवसाय-विषयक पुस्तकों का हिंदी-साहित्य में अभाव-सा है । प्रस्तुत पुस्तक अपने विषय की अनूठी और बेजोड़ जान पड़ती है । इसमें छपाई की तैयारी, प्रेस की पूर्णता की आवश्यकता एवं उसके लिये व्यावहारिक सामग्री, मुद्रण-कला तथा प्रेस-संबंधी प्रायः सभी जानने-योग्य विषयों की उचित विवेचना की गई है । वर्तमान समय में, जब हमारी सरकार देश की औद्योगिक उन्नति के लिये बड़ी तत्परता से प्रयत्न कर रही है, इस प्रकार की पुस्तकों द्वारा प्रेस-संबंधी ज्ञान एवं उसका प्रचार बड़ी सरलता से हो सकता है ।

इस पुस्तक में साधारण पढ़े-लिखे युवकों को प्रेस की कला (कंपोज़िंग) सीखने के लिये छोटी-से-छोटी बात भी इस ढंग से समझाई गई है कि केवल इसी पुस्तक के सहारे वे विना किसी सहायता के कंपोज़ करना बड़ी सरलता से सीख सकते और कुछ दिनों में होशियार कंपोज़ीटर बनकर अपनी रोज़ी कमा सकते हैं । आजदिन प्रेस की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है, और बढ़ती ही जा रही है । अतएव तत्संबंधी ज्ञान, प्रारंभिक, व्यावहारिक और व्यावसायिक, सभी दृष्टियों से लाभदायक होकर जन-साधारण के लिये भी उपयोगी प्रमाणित होगा ।

देश में नित्य ही नए-नए प्रेस खुलते जा रहे हैं, परंतु प्रेस का काम सिखानेवाली संस्थाओं का एकदम अभाव है । यह पुस्तक इस कमी को भी बहुत अंशों में पूरा करती है । इस पुस्तक के मूल-लेखक, श्रीयुत शंकर-रामचंद्र दाते बी० ए०, मुद्रण-कला के माने हुए विशेषज्ञ हैं । उन्होंने अपने लोक-संग्रह-प्रेस में ही नहीं, वरन् जर्मनी, इँगलैंड आदि देशों में जाकर भी मुद्रण-कला का अध्ययन किया है । इतना ही नहीं, उन्होंने 'देवनागरी-मोनोटाइप' का निर्माण कर प्रेस-जगत् में अद्भुत क्रांति कर दिखाई है । इसी प्रकार जो लोग नया-नया प्रेस का काम करना या प्रेस खोलना चाहते हैं, उनके लिये भी यह पुस्तक उपयोगी प्रमाणित होगी, क्योंकि पारस्परिक व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता के कारण दूसरे प्रेसवाले तत्संबंधी बातें एक दूसरे को कभी नहीं बताते कि प्रेस के लिये क्या-क्या साधन आवश्यक होते हैं, क्या सामान ज़रूरी होता है, और किस प्रकार प्रेस चलाना चाहिए । ऐसे नए व्यवसायियों के लिये भी यह पुस्तक एक सच्चे पथ-प्रदर्शक का काम देगी, और उन्हें किसी के सहारे न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहकर अपना काम स्वयं करने की पद्धति ज्ञात हो सकेगी। छापेख़ाने का स्वरूप, उसका विस्तार, प्रेस का काम किस तरह चलता है, रेखा-पद्धति, छापने की प्रणाली, प्रूफ़ निकालना, प्रूफ़-संशोधन, पृष्ठ बाँधना, छपाई की तैयारी आदि-आदि। प्रेस-संबंधी प्रायः सभी छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े विषय इस पुस्तक में, सरल और सुबोध भाषा में, बड़ी अच्छी तरह समझाए गए हैं।

इसमें संदेह नहीं कि लेखक ने यह बड़ा ही प्रशंसनीय प्रयास किया है, और विषय-निर्वाह में वह असाधारण रूप में सफल हुआ है। पुस्तक में अनेकों चित्र भी दिए गए हैं, जिनसे उसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। आशा है, हिंदी-संसार इसे अपनाकर लेखक की उत्साह-वृद्धि करेगा।

× × ×

चिनगारी—लेखक, श्रीयुत देवीप्रसाद धवन 'विकल'; प्रकाशक, नवरत्न-साहित्य-मंडल, कानपुर; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक सामाजिक उपन्यास के रूप में लिखी गई लेखक की मौलिक कृति है। कहना न होगा कि मनोवैज्ञानिक ढंग से पुस्तक के कथा-विषय का इतना सुंदर निर्वाह बहुत कम लेखकों की कृतियों में दिखाई देता है। घटनाओं का सामंजस्य एक रोचक और श्रृंखलित रूप में उपस्थित करते हुए रस-निर्वाह एवं अनुभव-चित्रण की कला का विकास क्रमागत और सरल रूप में प्रस्तुत करना उपन्यासकार का प्रथम कर्तव्य होता है। हमारे हिंदी के उपन्यासों में शायद ही कोई इस कसौटी पर खरा उतरता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक अपने कार्य और उद्देश्य में मुक्त गति से चलता हुआ विषय-निर्वाह में पूर्ण सफल हुआ है। इस उपन्यास की दूसरी विशेषता है इसके पात्रों के संवाद, जो बड़े ही स्वभावानुकूल और हृदय-स्पर्शी हैं, तथा उनमें कृत्रिमता की बू नहीं आती। हिंदी के उपन्यासों में प्रचलित उपदेश-प्रणाली से भी लेखक दूर रहा है, क्योंकि स्थान-स्थान पर प्रत्येक घटना में उपदेश या सारांश-रूप में उसकी व्याख्या करना एक बड़ा भारी दोष हुआ करता है, और यह दोष रचना के मूल-तत्त्व को नष्ट कर उसे कुछ-का-कुछ बना देता है। लेखक की शैली में जान है, साहित्यिक विकास और प्रसाद-गुण है, जो उसे अंत तक अपने कथानक के निर्वाह में सफल बनाता है। पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ी ख़ूबी के साथ किया गया है, तथा जिस वातावरण में वे कार्य करते हैं, उसका निर्माण करने में भी लेखक ने बड़ी चतुराई और धीरज से काम लिया है। भाषा की परिपक्वता और गंभीरता के कारण उपन्यास की गति भी गंभीर है। आशा है, हमारा हिंदी-साहित्य-जगत् लेखक की इस कृति का समुचित आदर कर इसे अपनाएगा। पुस्तक उपन्यास-प्रेमियों के लिये सर्वथा नई और सुंदर भेंट प्रमाणित होगी।

'अरुण' (बी० ए०)

× × ×

चित्र-कथा—लेखक, श्रीकन्हैयाप्रसादसिंह एम्० ए०; प्रकाशक, वाणी-मंदिर, छपरा।

पुस्तक, जैसा नाम से विदित है, कथाओं के रूप में विशिष्ट-विशिष्ट व्यक्तियों के चरित्र-रूपी चित्र की झाँकी है। कथाएँ कहानी-रूप में छोटी, किंतु सार-गर्भित तथा समयोपयोगी हैं। कुल मिलाकर ग्यारह कहानियाँ लिखी गई हैं, जिनमें से कुछ तो बहुत ही अच्छी बन पड़ी हैं।

'माता का प्यार', 'बेगार', 'नेत्रांजन'—ये कहानियाँ ऐसी हैं, जो समाज की दुरवस्था का सजीव चित्र आँखों के सम्मुख ला उपस्थित करती हैं। आजकल, जब कि सासुओं की निंदा का बाज़ार गर्म है, हम 'बुढ़िया' को, जो सुखिया की मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सासु है, अत्यंत सहिष्णु तथा पुत्र के मंगलार्थ सब कुछ त्याग करनेवाली मा के रूप में पाते हैं। वह अशिक्षित तथा नीच कुल की होते हुए भी जिस अत्यंत धैर्य का परिचय देती है, वह प्रत्येक अवस्था में अनुकरणीय है।

'बेगार' देहाती जीवन की करुण कहानी है। ऐसी कितनी ही घटनाएँ नित्यप्रति होती रहती हैं, और न-जाने कितने 'सोनू' ज़मींदारों द्वारा पीड़ित किए जाते हैं। यह कहानी करुण-रस से ओत-प्रोत है, तथा हठात् इस प्रकार के निम्न श्रेणी के व्यक्तियों का दुःख देखकर आँसू बहाने को जी भर आता है।

'नेत्रांजन' तथा 'बाल-विधवा की आत्म-कथा' रमणी-समाज की दुरवस्था के सजीव चित्र हैं।

शेष कहानियों में कुछ मनोवैज्ञानिक हैं, बाक़ी प्रेम-संबंधी ; किंतु संग्रह-भर में 'चोरी का अपराध' एक ऐसी कहानी है, जो अपने पाठकों पर स्थायी प्रभाव डाले विना न रहेगी। ऊधो-जैसे स्वामि-भक्त सेवक द्वारा एक ज़मींदार-परिवार नष्ट होने से किस प्रकार बचाया जाता है, यह दिखलाने में लेखक ने कमाल कर दिया है।

पुस्तक की भाषा बोल-चाल की तथा सरल है, छपाई तथा आकार-प्रकार सुंदर। किंतु दो-एक जगह छापे की कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं, यथा पृष्ठ ८१ पर पहली लाइन में मरनेवाला के स्थान में मारनेवाला हो गया है, एवं दूसरी लाइन निरर्थक प्रतीत होती है। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी कुछ अशुद्धियाँ मिलेंगी।

लेखक के कथनानुसार यह पुस्तक उनका प्रथम प्रयास है, किंतु मासिक पत्रिकाओं में इसकी लगभग सभी कहानियाँ पाठकों के आगे आ चुकी हैं। फिर भी हम यही कहेंगे कि अवकाश के समय बैठकर देखने के लिये इसमें बहुत कुछ सामग्री है, जिससे मानसिक बल तथा दुर्बलताओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

'उमेश'

× × ×

श्रीकाशी-ज्ञानमंडल सौर पंचांग (१९९६ वि०)—संपादक, ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषतीर्थ, विद्याभूषण पं० रामव्यास पांडेय; प्रकाशक और मुद्रक, मा० वि० पराड़कर, ज्ञानमंडल-यंत्रालय, काशी; मूल्य ।)

पंचांग की उपादेयता सर्व-विदित है। इसका काम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सबको पड़ता है। न-केवल हिंदू-मात्र, बल्कि अन्य जातियों—जैसे मुसलमान, सिख, पारसी आदि—का काम भी इसके विना नहीं चलता। इस विषय में अधिक कहना व्यर्थ है।

एतद्देश में कई पंचांग प्रचलित हैं, जैसे पं० रामप्रसादजी सिद्धांती का पंचांग, चंडू-पंचांग आदि। कुछ पंचांग ऐसे हैं, जिनसे ज्योतिर्विदों के अतिरिक्त साधारण जन लाभ नहीं उठा सकते। किंतु उपर्युक्त पंचांग से ज्योतिष-संबंधी सभी विषय सरलता-पूर्वक जाने जा सकते हैं। अनेकों प्रकार के मुहूर्तों और बहुत-सी ज्ञान-वर्द्धक सामग्री का समावेश इस पंचांग में सुचारु रूप से किया गया है। विशेषता यह कि इसमें कैलेंडर भी दिया गया है, अतः यह पंचांग अँगरेज़ीदाँ और हिंदी-दाँ, सबके लिये परमोपयोगी है, ऐसी मेरी सम्मति है। उपयोगिता देखते हुए ।) मूल्य अधिक नहीं। आशा है, सर्व-साधारण इससे लाभ उठावेंगे।

× × ×

लकड़ी की चित्रकारी की उपयोगिता—लेखक, श्रीआर० के० भार्गव, अहियागंज, लखनऊ ; मिलने का पता—एजुकेशनल बुकडिपो, ४७ अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ ; मूल्य ।)॥

आठ पन्नों की छोटी-सी पुस्तिका में लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोदय ने यह बतलाया है कि अगर हमारे देश के लड़के तथा लड़कियाँ फ्रेटवर्क अर्थात् लकड़ी पर चित्रकारी के काम को मनोरंजन के तौर पर अपनावें, तो इससे उनका मनोरंजन होने के साथ ही बहुत कुछ फ़ायदा भी हो सकता है। लकड़ी पर चित्रकारी का काम वास्तव में एक आदर्श मनोरंजन है। निर्दोष होने के अतिरिक्त यह बच्चों को दस्त-कारी की शिक्षा भी देता है। परिश्रम करने पर इस मनोरंजक कार्य में खेल-ही-खेल थोड़े-बहुत पैसे भी कमाए जा सकते हैं। हम चाहते हैं, इस मनोरंजन का देश में, विशेषकर स्त्री-समाज में प्रचार हो, और इस दृष्टि से हम इस पुस्तक का प्रचार चाहते हैं।

× × ×

'धन्वंतरि' का बात-रोगांक—प्रधान संपादक, श्रीयुत बाबू हरिदासजी वैद्य; प्रकाशक, श्रीधन्वंतरि विजयगढ़ (अलीगढ़); पृष्ठ-संख्या ३१८; साइज़ २०-३०; अठपेजी, मूल्य २); प्रकाशक से प्राप्त।

यह विशेषांक बहुत ही सुंदर, सचित्र प्रकाशित हुआ है। आयुर्वेदीय पत्रों में उपयोगी सामग्री देने में 'धन्वंतरि' ने अपना विशेष स्थान बना लिया है। और, समय-समय पर इसके कई विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत विशेषांक में भी आयुर्वेद के बड़े-बड़े विद्वानों ने वात-रोग के कारण, लक्षण और उसकी चिकित्सा विस्तार से वर्णन की है। इसके संपादक महोदय सुंदर विशेषांक निकालने के लिये बधाई के पात्र हैं! चिकित्सकों के लिये यह विशेषांक विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

'ग'

परिवर्तन

[श्रीयुत कविवर आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव]

कल तक जो अनुकूल था,
आज न वह प्रतिकूल,
वायु वही, बदला समय,
सूखा, बिखरा फूल।

मोतियाबिंद

कौन कहता है कि बग़ैर चीर-फाड़ के अच्छा नहीं होता? डिजन्स "आइ-क्योर" Degon's "Eye Cure" के कुछ ही दिनों के लगाने से नया या पुराना मोतियाबिंद तथा और भी आँख की बीमारियाँ शर्तिया आरोग्य होती हैं। मूल्य २), डाकख़र्च ॥=)

कमला-वर्क्स (S/I) पाँचपोटा, बंगाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'राजनीति-प्रवेशिका' (राजनीति)—अनुवादक, श्रीगोपीकृष्ण विजयवर्गीय; मूल्य ॥)

(२) 'स्वदेशी और ग्रामोद्योग' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, महात्मा गांधी ; मूल्य ।।)

(३) 'गांधीवाद—समाजवाद' (राष्ट्रीय)—लेखक, श्रीयुत काका कालेलकर ; मूल्य ।।।)

(४) 'देश-देश के लोग' (इतिहास)—लेखक, श्रीविट्ठलराव दत्तात्रेय घाटे; मूल्य १।)

(५) 'हर हाइनेस' (उपन्यास)—लेखक, श्रीऋषभचरण जैन; मूल्य १।।)

(६) 'मेरी आत्मकहानी' (राजनीति)—अनुवादक, श्रीराजाराम अग्रवाल बी० एस्-सी०; मूल्य १)

(७) 'भारतीय आतंकवाद का इतिहास' (इतिहास)—लेखक, श्रीआचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ; मूल्य ५)

(८) 'भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास' (इतिहास)—लेखक, श्रीमन्मथनाथ गुप्त; मूल्य २॥)

(९) 'क्रांति की झलक' (उपन्यास)—अनुवादक, श्रीविजयबहादुरसिंह; मूल्य २)

(१०) 'क्रांति - चक्र' (उपन्यास)—अनुवादक, श्रीराधेश्याम शर्मा एम्० ए ; मूल्य १।)

(११) 'सोयाबीन' (कृषि)—लेखक, श्रीगयादत्त त्रिपाठी बी० ए० ; मूल्य =)

(१२) 'तुलसीदास' (काव्य)—लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला' ; मूल्य १)

(१३) 'नवप्रसून' (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्रीयशपाल जैन; मूल्य १)

(१४) 'दृग-जल' (काव्य)—लेखक, कुमार श्रीसोमेश्वरसिंह ; मूल्य ।।।)

(१५) 'क़ुरान-सार' (धार्मिक) लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन; मूल्य १।)

(१६) 'फ़ैसिज़्म की आत्मा' (राजनीति)—लेखक, श्रीटी० एन्० कुचुन्नी; मूल्य १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

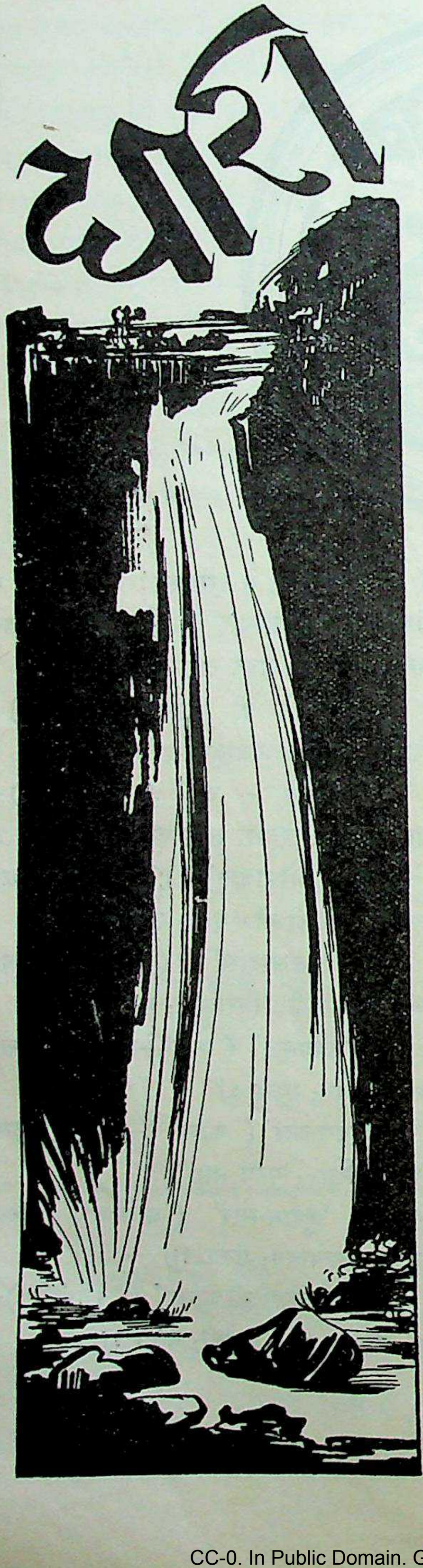

१. राष्ट्रीय योजना

राजनीतिक और आर्थिक दासता का अर्थ आजकल के युग में एक ही है। वह ज़माना चला गया, जब केवल प्रभुता बढ़ाने और अपना चक्रवर्तित्व क़ायम करने के उद्देश से ही दूसरे देश विजय किए जाते थे। आजकल एक राष्ट्र का दूसरे देश को विजय करने का अर्थ है उसका आर्थिक शोषण करना। इटली को ज़रूरत थी कि वह अपने देश के लोगों को अबीसीनिया की पैदावार से लाभ पहुँचावे, इसलिये उसने धन और जन की क़ुरबानी करके एथोपिया की भूमि अपने अधिकार में कर ली। जापान भी चीन से अपना यही मतलब हल करना चाहता है। तब जो देश किसी दूसरे राष्ट्र के चंगुल में पहले से ही फँसे हुए हैं, वे अपना गुलामी का बंधन तोड़ने की जितनी ही कोशिश करेंगे, विजयी राष्ट्र उन्हें उतना ही गुलामी के बंधन में और कसने के लिये कटिबद्ध होंगे। भारत और इँगलैंड आजकल इस अवस्था से गुज़र रहे हैं। भारतीय राष्ट्रीय महासभा ने अपने सतत उद्योग से देश की गुलामी का बंधन ढीला कर दिया है, तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद फ़ेडरेशन की योजना से उसे फिर एक बंधन में कसने की चेष्टा कर रहा है। इसमें ब्रिटेन का सबसे बड़ा उद्देश यह है कि भारत से उसे जितना आर्थिक लाभ होता है, वह किसी प्रकार कम न हो। प्रांतीय स्वाधीनता में जितने राजनीतिक अधिकार भारतीयों को दिए गए हैं, उनसे ब्रिटेन के आर्थिक हितों पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर फ़ेडरेशन की योजना जैसी बनकर तैयार है, उसी रूप में स्वीकार कर ली जाय, तो इसका अर्थ यह होगा कि देखने में भारतीयों को केंद्रीय शासन में कुछ विशेष राजनीतिक अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो जायँगे, लेकिन उनकी आर्थिक ग़ुलामी जैसी-की-तैसी बनी रहेगी। भारत के लिये राजनीतिक स्वाधीनता का अर्थ है राजनीतिक और आर्थिक दोनो प्रकार की स्वाधीनता। अतः उसे कोई भी योजना तब तक स्वीकार न होगी, जब तक उसमें इन दोनो बातों की गारंटी नहीं दी जाती।

इधर राजनीतिक अधिकारों की माँग और उसके लिये किए जानेवाले आंदोलनों एवं उनकी आंशिक सफलताओं के साथ देश के लोगों का ध्यान आर्थिक मामलों की ओर भी गया है। लोग सोचने लगे हैं, भारत की स्वाधीनता का आर्थिक स्वरूप कैसा होगा। कराँची-कांग्रेस में जनता के मौलिक अधिकारों के संबंध में जो प्रस्ताव राष्ट्रीय महासभा ने पास किया था, उसमें कहा गया था—"सरकार तमाम मुख्य उद्योग-धंधों, सर्विसों, खनिज पदार्थों, रेलों, जल-मार्गों तथा अन्य सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओं को अपने अधिकार में रक्खेगी, या उनके ऊपर अपना नियंत्रण करेगी।"

इसका अर्थ यह है कि अब तक इस प्रकार के उद्योग-धंधों से जितना लाभ होता है, उसका वितरण एक संकुचित सीमा के अंदर ही न रहकर समूचे राष्ट्र को उससे लाभ पहुँचेगा। देश के बड़े-बड़े उद्योग-धंधे और आय के स्रोत राष्ट्र की संपत्ति हैं, अतः उनका लाभ पूरे राष्ट्र को ही उठाना चाहिए। अब तक अँगरेज़ों की कंपनियों और चंद पूँजीपतियों का इन पर अधिकार है, और सरकार का जितना नियंत्रण है, उसका लाभ भी राष्ट्र को नहीं पहुँचता। अगर विदेशी सरकार के स्थान में राष्ट्रीय सरकार हो, तो राष्ट्र उससे लाभ उठा सकता है, किंतु वह लाभ उतना ही होगा, जितना सरकार का नियंत्रण इन उद्योग-धंधों पर है। उनसे पूरा लाभ उठाने के लिये तो सरकार को इन सभी मुख्य उद्योग-धंधों पर अपना अधिकार रखना होगा। इसलिये यह आवश्यक है कि भारत की भावी आर्थिक नीति की एक रूप-रेखा निश्चित की जाय। चूँकि इस वक्त राज्य-शासन में कांग्रेस के ऊपर भी कुछ ज़िम्मेदारी आ गई है, इसलिये इसके निर्णय की भी विशेष आवश्यकता है। इसके लिये कांग्रेसी प्रांतों के उद्योग-मंत्रियों की एक कान्फ़्रेंस हो चुकी है, और उसमें समस्या के कितने ही पहलुओं पर विचार किया गया था। किंतु समस्त देश के लिये एक निश्चित योजना बनाने का कार्य किसी केंद्रीय शक्ति द्वारा ही होना चाहिए, अतः राष्ट्रीय महासभा की ओर से, पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में, एक समिति इस कार्य को पूरा करने के लिये बनाई गई, और उसने हाल ही में अपनी बंबई की बैठक में एक रूप-रेखा तैयार की है। यह हर्ष की बात है, जो आर्थिक ढाँचा इस कमेटी द्वारा तैयार किया गया है, उसमें समस्त देश के विभिन्न आर्थिक संगठनों के विचारों का भी समावेश है। उक्त समिति ने एक लंबी प्रश्नावली तैयार करके प्रांतीय सरकारों, विश्वविद्यालयों, ट्रेड-यूनियनों, व्यापार-मंडलों, कंपनियों तथा अन्यान्य संस्थाओं के पास भेजी थी, और उन सबके उत्तर प्राप्त हुए हैं। उनके आधार पर विचार करके उक्त कमेटी एक निश्चय पर पहुँचती है। कमेटी के चेयरमैन पं० जवाहरलाल नेहरू ने, उसी निश्चय के आधार पर, अपना वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें कहा गया है कि राष्ट्रीय योजना का आधार कांग्रेस का कराँची-अधिवेशन में पास हुआ प्रस्ताव रक्खा गया है। पं० जवाहरलाल नेहरू इस संबंध में कहते हैं—

"हमें ऐसी एक पूर्ण योजना तैयार करनी है, जो स्वाधीन भारत पर लागू होगी, और इसके साथ-साथ यह भी सुझानेवाली होगी कि विभिन्न राष्ट्रीय विभागों में इस समय और वर्तमान परिस्थिति में क्या किया जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराँची-कांग्रेस के प्रस्ताव का उल्लेख करते हुए आपने आगे कहा है—"मुख्य उद्योग-धंधों और सार्वजनिक उपयोग के साधनों पर सरकार का अधिकार रहना चाहिए। और, अगर सरकार ने उन्हें अपने क़ब्ज़े में नहीं लिया, तो कम-से-कम उन्हें सार्वजनिक लाभ की दृष्टि से नियमित और नियंत्रित अवश्य करेगी।"

इन बातों का अर्थ यह होगा कि जिन देशों में राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर लेने पर फिर आर्थिक स्वाधीनता के लिये जैसे गृह-युद्ध हुए, उससे हमारा देश बच जायगा। किसी देश के आर्थिक साधनों से जब वहाँ की आम जनता पूरा फ़ायदा नहीं उठा सकती, और वे चंद आदमियों की पूँजी-वृद्धि का ही साधन बने रहते हैं, तो उससे देश में अशांति और असंतोष पैदा होता तथा गृह-कलह और वर्ग-युद्ध शुरू हो जाता है। इसलिये भारत में इस तरह की समस्या को असंभव बना देने के लिये यह ज़रूरी है कि जो शक्ति स्वाधीन भारत का नियंत्रण करेगी, वह अभी से अपनी उस नीति को स्पष्ट कर दे, और उसके अनुसार जहाँ तक संभव हो, कार्य भी शुरू हो जाय।

अंत में पं॰ जवाहरलाल नेहरू के ही शब्दों में हम भी इस बात पर ज़ोर देंगे कि कांग्रेस का ध्येय भारत में स्वतंत्र और जनतंत्र शासन क़ायम करना है। ऐसे प्रजातंत्रात्मक शासन में प्रत्येक व्यक्ति को आत्म प्रकाशन, स्वावलंबन और सभ्य जीवन की सुविधाएँ प्राप्त करने के समान अवसर मिलने चाहिए। राष्ट्रीय योजना की पृष्ठ-भूमि और उसका आधार यही होना चाहिए।

× × ×

२. इन अंकों की कहानी

अँगरेज़-राजनीतिज्ञों को जब कभी मौक़ा लगता है, तभी वे यह राग अलापने लगते हैं कि डेढ़ सौ वर्ष के ब्रिटिश राज्य में भारत को अपरिमित लाभ हुआ है। उनके इस प्रलाप का जवाब भी उन्हें मिलता रहा है। हाल में लंदन में एक युवक-सम्मेलन हुआ, जिसमें इँगलैंड के सभी दलों की युवक-संस्थाओं ने भाग लिया। उसमें भारतीय युवक-संघ ने भारत की स्वतंत्रता का प्रस्ताव पेश किया, और उसके समर्थन में वहाँ कुछ आँकड़े पेश किए गए, जो इस प्रकार हैं—

डेढ़ सौ वर्षों के अँगरेज़ी शासन-काल में भारत की कुल जन-संख्या का केवल ८.१ भाग साक्षर हो पाया है। ७ लाख गाँवों में कोई बड़ा स्कूल नहीं, जब कि ७० फ़ीसदी से भी ज़्यादा आबादी गाँवों में रहती है। भारत का मुख्य धंधा खेती है, फिर भी वहाँ कृषि-कॉलेजों की संख्या, इतने बड़े मुल्क में, सिर्फ़ २१ है, जिनमें कुल १,४६८ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

स्वास्थ्य की हालत भी देखिए—भारतीयों की ज़िंदगी का औसत २३ साल है, जब कि इँगलैंड में ५५ साल है। मौत का औसत भारत में फ़ीहज़ार २४ है, और इँगलैंड में इसका आधा, यानी फ़ीहज़ार १२। भारत में पैदा होनेवाले बच्चे फ़ीहज़ार २०० से २५० तक मर जाते हैं, और इँगलैंड में फ़ीहज़ार ५१। प्रसव-काल में भारत में फ़ीहज़ार २४.५ औरतें मर जाती हैं, और इँगलैंड में इस प्रकार की मौत का औसत ४.०६ है। ऐसा क्यों है? इसका पता नीचे के आर्थिक आँकड़ों से चल जायगा। इनमें यह देखना चाहिए कि लोगों के जीवन के लिये उपयोगी कार्यों में सरकार कितना ख़र्च करती है, और अन्य मदों में, जिनसे जनता का कुछ लाभ न होकर ब्रिटिश साम्राज्य का स्वार्थ सिद्ध होता है, कितना धन बहाती है—

मद	प्रतिशत व्यय (१९३५-३६)	मद	प्रतिशत व्यय (१९३५-३६)
शिक्षा	५.७	स्वास्थ्य	२.६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि-धंधे	२.६	शासन	८.७
पुलिस-जेल	६.६	सरकारी क़र्ज़	
फ़ौज	२३.६	का व्याज	२०.५

इससे प्रकट है कि भारत की आय का सबसे बड़ा भाग ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिये फ़ौज के ख़र्च या सरकारी क़र्ज़ के व्याज में जाता है। यह क़र्ज़ भी युद्ध की मद में ही लिया गया है, और वह भी ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के ही लिये। शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग-धंधों की उन्नति के लिये सरकार बहुत ही कम व्यय करती है। यही कारण है कि भारतीयों की ज़िंदगी का औसत इतना गिरा हुआ है। जहाँ ४४ फ़ीसदी लोग सिर्फ़ मलेरिया की बीमारी से काल-कवलित हो जाते हों, जहाँ बीमारों की चिकित्सा के लिये १३३ वर्गमील स्थान में केवल एक अस्पताल हो, जहाँ ३४ फ़ीसदी लोगों को ऐसा आहार प्राप्त न हो, जो जीवन-यापन के लिये ज़रूरी है, वहाँ की शासन-व्यवस्था और वहाँ के लोगों का पता अपने आप चल जाता है। इन अंकों की कहानी कितनी हृदय-विदारक है, इस पर अधिक क्या कहा जाय।

× × ×

३. शिक्षा में क्रांतिकारी सुधार

यू० पी०-सरकार ने अपने यहाँ की शिक्षा-पद्धति में सुधार करने के उद्देश से एक कमेटी, आचार्य नरेंद्रदेव की अध्यक्षता में, क़ायम की थी, उसकी योजना प्रकाशित हो गई, और सरकार ने उसके अनुसार कार्य-संचालन भी शुरू कर दिया। इस योजना में शिक्षा के वर्तमान स्वरूप को बिलकुल बदल दिया गया है। शिक्षा का दायरा दो मुख्य भागों में विभक्त है—(१) प्रारंभिक शिक्षा, जो बुनियादी तालीम कहलाएगी, उसका कोर्स ७ वर्ष का तथा (२) माध्यमिक शिक्षा, जो कॉलेज-शिक्षा होगी, उसका कोर्स ६ वर्ष का होगा। प्रारंभिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है, ५ वर्ष के बालक को पाठशाला जाना पड़ेगा। इस प्रकार १२ वर्ष की अवस्था तक वह प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर लेगा, और १८ वर्ष का होने पर कॉलेज-शिक्षा की डिगरी प्राप्त कर लेगा। प्रारंभिक शिक्षा का दर्जा आजकल की मिडिल कक्षा के बराबर और कॉलेज-शिक्षा का दर्जा इंटरमीजिएट तालीम से कुछ ऊँचा होगा। प्रारंभिक शिक्षा में दस्तकारी, गणित, इतिहास, नागरिक ज्ञान, भूगोल, स्वास्थ्य, विज्ञान और स्वास्थ्य-संबंधी विषयों की जानकारी और ज्ञान हासिल करना होगा। यह चतुर्थ श्रेणी तक की तालीम होगी, इससे आगे पाँचवीं से सातवीं श्रेणी तक इन्हीं विषयों की उच्च तालीम, ज्यॉमेट्री, दूसरी भाषा, अलजबरा, विज्ञान, कला, सामाजिक विज्ञान और स्वास्थ्य-संबंधी बातों की तालीम दी जायगी। परीक्षा का वर्तमान तरीक़ा बदल जायगा, विद्यार्थी की योग्यता तथा दक्षता का ख़याल करके ही उसे ऊँची श्रेणी में दाख़िल कर दिया जायगा। अगर कोई विद्यार्थी प्रारंभिक स्कूल में पाँच साल तक तालीम हासिल करके कॉलेज में भरती होना चाहेगा, तो वह वहाँ की प्रथम श्रेणी में भरती हो जायगा, और जिसने प्रारंभिक शिक्षा के पूरे सात साल ख़त्म कर लिए हैं, वह तीसरी श्रेणी में भरती होगा। इसका अर्थ यह है कि प्रारंभिक शिक्षा के अंत के और कॉलेज-शिक्षा के शुरू के दो वर्षों की तालीम का स्वरूप मिलता-जुलता होगा।

कॉलेज-शिक्षा में शिक्षा का माध्यम देशी ज़बान होगी। यह इस शिक्षा-पद्धति की ख़ास ख़ूबी है। साथ ही अँगरेज़ी का ज्ञान प्राप्त करना भी अनिवार्य होगा। इस तालीम में विद्यार्थी को भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, गणित, कला, व्यवसाय तथा अन्य शिल्प और पेशेवर विषयों की तालीम दी जायगी। लड़कियों को गृह-विज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाया जायगा। इस प्रकार आजकल के हाईस्कूल और इंटरमीजिएट कॉलेज ख़त्म हो जायँगे। इस शिक्षा-पद्धति में इस बात पर ख़ास तौर से ज़ोर दिया गया है कि शिक्षा मनुष्य-जीवन के लिये, उसकी वर्तमान अवस्था में, अधिक-से-अधिक उपयोगी साबित हो। इस तालीम को हासिल करने के बाद जो लोग सांसारिक जीवन में प्रवेश करें, वे नौकरियों के लिये ही न भटके फिरा करें। कृषि, व्यापार, उद्योग-धंधे और अन्य कला-संबंधी विषयों की जानकारी के साथ-साथ वे अपने जीवन में उन प्रयोगों को सफल बनावें, जिनका ज्ञान उन्होंने पुस्तकों द्वारा प्राप्त किया है। इस प्रकार मि० मैकाले की उस अँगरेज़ी शिक्षा-पद्धति का, जिसने एक शताब्दी से अधिक समय तक भारत में अँगरेज़ी राज्य के लिये उपयोगी क्लर्क पैदा करने में आशातीत सफलता प्राप्त की, और जिसे देशवासियों की मानसिक दासता का श्रेय प्राप्त हुआ, इस नई पद्धति द्वारा अंत हो जायगा। अभी यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह शिक्षा-पद्धति सर्वथा पूर्ण और दोष-रहित होगी, ख़ासकर इसे सफल बनाने में जितना समय लगेगा, इसका परिणाम मालूम करने में उससे बहुत अधिक समय की आवश्यकता है। पर देश की वर्तमान स्थिति में यह पद्धति बहुत ही उपयोगी साबित होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

× × ×

४. राजकोट और हैदराबाद

राजकोट के मामले का निबटारा जिस ढंग से हुआ, उस पर लोगों की भिन्न-भिन्न राएँ हैं। महात्मा गांधी के कट्टर अनुयायियों को छोड़कर और लोगों ने राजकोट के फ़ैसले की सख़्त आलोचना की है। पं० जवाहरलाल नेहरू का भी यह कहना है कि उन्हें राजकोट का फ़ैसला जिस ढंग से हुआ, वह पसंद नहीं। महात्माजी के कार्यों में निष्ठा रखते हुए भी वह इस तरह के फ़ैसले को ग़लत मार्ग बतलाते हैं। देशी राज्यों के संबंध में आपने जो वक्तव्य हाल ही में दिया है, उसमें आप कहते हैं, राज्याधिकारियों की स्वेच्छाचारिता और राज्यों में होनेवाले दमन को आगे सहन नहीं किया जा सकता। अवश्य ही ऐसा वक्तव्य देते हुए आपके दिमाग़ में हैदराबाद के आंदोलन का ख़याल मुख्य रहा होगा, क्योंकि आप पहले भी अपने वक्तव्य में हैदराबाद के आंदोलन को सांप्रदायिकता से परे बतला चुके हैं, और उसे आप नागरिक अधिकारों की लड़ाई बतलाते हैं। इधर यह चर्चा भी है कि हैदराबाद की समस्या पर महात्मा गांधी भी विचार कर रहे हैं। और, समाचार-पत्रों में यह ख़बर भी प्रकाशित हो चुकी है कि महात्मा गांधी की राय है कि आंदोलन बंद कर दिया जाय, और समझौते का वातावरण पैदा किया जाय। महात्माजी ने देशी राज्यों के मामले में जो नया ढंग अख़्तियार किया है, उससे भी इस बात की पुष्टि होती है। आपने इस संबंध में अपने नवीन 'आत्मप्रकाश' के आधार पर निम्न-लिखित सुझाव पेश किए हैं—

(१) सत्याग्रह अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित कर दिया जाय, (२) जेल गए हुए अथवा नए सत्याग्रहियों के संबंध में कोई चिंता न की जाय, (३) जो माँगें देशी राज्यों के सामने पेश की जा रही हैं, उनकी सीमा घटा दी जाय, और (४) जनता का ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर लगाया जाय।

इस नई सूझ का अर्थ, जहाँ तक हम समझते हैं, यही है कि महात्माजी देशी राज्यों के साथ सीधी लड़ाई पसंद नहीं करते। वह राज्याधिकारियों से सुलहनामे के साथ उनका हृदय-परिवर्तन करके सुधारों की आशा रखते हैं। त्रावनकोर आदि राज्यों के आंदोलन इसी कारण आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तो यह आंदोलन मुसलमानों के ही दो फ़िरक़ों की आपस में तनातनी है, पर इससे यू० पी० की कांग्रेसी सरकार की चिंता बढ़ गई है। मुसलिम लीग का यह काम था कि वह मुसलमानों में आपस में ही उठे हुए इस फ़साद को रोकती और मुसलिम इत्तिहाद के नारे को सार्थक करके दिखलाती। लेकिन इस मामले में वह बिलकुल नाकामयाब रही, जिसकी एक वजह और भी है—अपनी आँख भले फूट जाय, लेकिन पड़ोसी का अशकुन होना चाहिए। मुसलिम लीग मुसलमानों की आपस की कलह को चुपचाप बरदाश्त कर रही है, क्योंकि इससे कांग्रेसी सरकार की परेशानी बढ़ती है। यदि सुन्नी लखनऊ के एसेंबली-भवन पर धावा बोलकर वहाँ की व्यवस्था को गड़बड़ करने की हिम्मत करते हैं, तो बनारस-जेल में शिया-क़ैदी कांग्रेसी एम्० एल्० ए० और पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी के ऊपर हमला बोलते और 'कांग्रेस मुर्दाबाद' के नारे लगाते हैं। मुसलिम लीग के आक़ाओं को तो इसी से फ़ख़्र हासिल होता है। इसके लिये वे शिया-सुन्नियों का द्वंद्व, सिर-फुटौवल और उनकी जान-जोखों की वारदातों को चुपचाप सहन कर लेते हैं। अगर कांग्रेस-सरकार शांति और व्यवस्था के लिये शिया तथा सुन्नी मुसलमानों को गिरफ़्तार करती है, तो उन्हें सरकार के ख़िलाफ़ प्रचार करने का मौक़ा मिलता है। इस तरह मुसलिम लीग की यह दुरंगी चाल एक ओर मुसलमानों के ख़ून

केश-राज (Regd.)

स्नान का आनंद

केश तेलों का राजा

केशों का शृंगार

स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का फाग खेल रही है, दूसरी ओर अमन-चैन क़ायम नहीं रहने देती। सरकार ने अब तक काफ़ी सहन-शक्ति एवं उदारता से और कुछ हद तक बदनामी सिर लेकर भी इन हरकतों को बरदाश्त किया है। इन मामलों का संबंध ख़ास मुसलमानों से ही है, इसलिये वे आपस में ही मिलकर इन बातों का निबटारा कर लें, सरकार ने अपनी इस उदार नीति का अब तक परिचय दिया है। वह जिस तरह हिंदू-मुसलमानों के झगड़े को बुरा समझती है, उसी प्रकार मुसलमानों के आपस के झगड़े को भी हानिकारक ख़याल करती है। पर मुसलिम लीग की नीति और उसके नेताओं की नीयत ठीक इसके विपरीत है। इस दशा में सहन-शक्ति की भी एक हद होती है। सरकार के ऊपर जनता में अमन-चैन क़ायम रखने की ज़िम्मेदारी है, इसलिये जो शक्ति या जन-समूह उस अमन-चैन में दख़ल देता है, उसके ख़िलाफ़ कार्यवाही करने के लिये सरकार भी बाध्य है। अब तक सरकार ने अपनी उदारता से इन मामलों में जितनी ढील दी, उससे फ़ायदा न उठाकर कट्टर सांप्रदायिक लोगों ने धर्मांधता का ज़हर और भी फैलाया, और इसे सरकार की कमज़ोरी बतलाया। इसलिये अब सरकार का भी यह फ़र्ज़ है कि अपनी यह कमज़ोरी दूर कर दे। खेद है, सांप्रदायिकता का ज़हर फैलाने और जगह-जगह झगड़े होने का वातावरण पैदा करने का जब पुरस्कार दिया जायगा, तो ये ही लोग सरकार द्वारा दमन किए जाने का राग अलापेंगे। पर आज वे कब अपनी इस हरकत से बाज़ आ रहे हैं। सरकार को चाहिए, वह अपना कारवाँ ठीक गति और सही मार्ग पर चलावे, कुछ जानवर भूँकते रहें, तो इसकी उसे परवा न करनी चाहिए।

× × ×

६. गाँवों के लिये उपयोगी साहित्य

आजकल सर्वत्र गाँव-सुधार की धूम है। सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाओं में विशेष रूप से गाँव-सुधार की ही चर्चा सुनी जाती है। वे किसी-न-किसी रूप में गाँव की सेवा करने के लिये उत्सुक एवं प्रयत्नशील भी हैं। यह हमारे राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है। हमारे देश में देहातों की ही प्रधानता है, इसलिये उसका उत्थान या पतन हमारे गाँवों की उन्नति या अवनति पर निर्भर है। गाँव-सुधार के कितने ही अंग हैं, जिनमें शिक्षा-प्रचार एक मुख्य अंग है। सरकार के साक्षरता-आंदोलन, प्रौढ़ शिक्षा-पद्धति और पुस्तकालय तथा वाचनालयों की वृद्धि के कारण देहाती जनता में नवीन जागरण हो रहा है। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि इस जागृति से पूरा फ़ायदा उठाया जाय, और पढ़े-लिखे ग्रामीणों को उपयोगी साहित्य भेंट किया जाय, इसीलिये इन दिनों गाँव-सुधार पर कितनी ही पुस्तकें निकली हैं। पर जितनी भी पुस्तकें हमारे देखने में आईं, उनमें विषयों के अनुसार क्रमबद्धता का अभाव देखा गया। भिन्न-भिन्न लेखकों द्वारा प्रायः एक-से ही विचार प्रकट किए गए हैं, और पुस्तकें भिन्न-भिन्न होने पर भी उनमें एक-सी ही बातों का समावेश है। ज़रूरत इस बात की है कि गाँव-सुधार-संबंधी जितने विषय हैं, उन पर क्रम से अलग-अलग पुस्तकें लिखी जायँ। यह कार्य कोई पुस्तक-प्रकाशन-समिति ही कर सकती है। पहले विषय छाँट लिए जायँ, और एक-एक विषय के समस्त अंगों पर प्रकाश डालते हुए पुस्तक लिखी जाय। लेखक अलग-अलग हों, लेकिन उनके विषय बँटे हुए हों, ताकि जो पुस्तकें निकलें, एक सिलसिले की हों, उनमें अनेक बातों का क्रम हो, और अधिक मात्रा में पिष्टपेषण न हो। इसका मतलब यह नहीं कि एक ही विषय पर अलग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग ढंग से लेखनी चलानेवाले लेखकों की स्वतंत्रता छीन ली जाय, बल्कि इसका अर्थ यह है कि जहाँ चार लेखक एक ही विषय—'पशुओं की नस्ल'—पर चार पुस्तकें एक-सी लिखें, वहाँ ज़रूरत इस बात की है कि उनमें से एक लेखक 'पशुओं की नस्ल' पर एक पुस्तक लिखे, दूसरा 'खाद और उसकी उपयोगिता' पर लेखनी चलावे, तीसरा 'फ़सल और उसके रोगों' पर खोज-पूर्ण निबंधों का संग्रह करे, और चौथा 'ग्रामीण स्वास्थ्य' पर किताब तैयार करे। इस तरह गाँववालों के लिये हम बहुत उपयोगी पाठ्य-सामग्री दे सकेंगे। यदि पशु-चिकित्सा पर दस जगह से दस पुस्तकें प्रकाशित हुईं, तो उससे विशेष लाभ न होगा। इसके स्थान में अभी तक ग्रामीण जीवन-संबंधी कितने ही विषय अछूते पड़े हैं, जिनके लिये अभी तक किसी लेखक ने अपनी लेखनी को कष्ट नहीं दिया। अगर अब तक इसकी आवश्यकता और माँग न थी, तो अब तो समय आ गया है कि हम साहित्य के इस अंग की वृद्धि करें। कितना विस्तृत क्षेत्र है लेखकों के लिये इस दिशा में अपनी लेखनी को गति देने के लिये! निम्न-लिखित विषयों में से कितने विषयों पर अच्छी, प्रामाणिक और खोज-पूर्ण पुस्तकें लिखी गई हैं, इसका पता हमारे लेखकों को अपनी कृतियों पर एक नज़र डालने से ही चल जायगा —

१. ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था
२. ग्रामीण उद्योग-धंधे
३. ग्रामीण स्वास्थ्य
४. देहातियों के क़ानूनी और नागरिक अधिकार
५. किसान की पड़ोसी जातियाँ और उनका रहन-सहन
६. खेती के सहायक धंधे
७. गाँवों में प्रचलित रूढ़ियाँ, उनका असर और सुधार के उपाय
८. खाद और खेतों की जुताई
९. फ़सल के रोग और उनका उपाय
१०. देहातियों का सामाजिक जीवन
११. किसान-सहयोग-समितियाँ
१२. वर्तमान अवस्था में किसान सुखी रह सकता है?
१३. ग्रामीण प्रजातंत्र
१४. देहात के लोग और उनके धार्मिक विश्वास
१५. आधुनिक प्रगतियाँ और किसान
१६. क़र्ज़ और लगान की समस्या
१७. किसान को राजनीति की तालीम
१८. देहात का पशु-धन
१९. देहाती पक्षी और उनके काम
२०. अदालत, पुलिस, पटवारी, नहर और बैंक आदि के साथ किसान का संबंध

और भी ऐसे बीसों विषय हैं, जिन पर अलग-अलग अच्छी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं, और वे सब देहात के लोगों के बड़े काम की होंगी। इसका मतलब यह भी नहीं कि कहानी, कविता, उपन्यास आदि साहित्यिक पुस्तकें देहातियों के पढ़ने की चीज़ नहीं, या पढ़े-लिखे देहातियों में अपनी भाषा और साहित्य के प्रति रुचि न पैदा की जाय। पर अभी तो उनमें पुस्तक-पठन की रुचि ही जाग्रत् करनी है, और इसके लिये उनके हाथों में ऐसी पुस्तकें पहुँचें, जिनसे उनके दैनिक जीवन के कार्यों का अधिक संबंध हो।

हमारे लेखक जब तक स्वयं गाँवों में पैठकर वहाँ की बातों का निरीक्षण और खोज-बीन के साथ पुस्तक-प्रणयन न करेंगे, तब तक उन्हें सफलता न मिलेगी। गंभीर राजनीतिक विषयों पर पुस्तक लिखना आसान है। इसके लिये हज़ारों पुस्तकों से सहायता ली जा सकती है। पर अगर ग्रामीण जीवन-संबंधी एक ही अच्छी, खोज-पूर्ण पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखनी होगी, तो उसके लिये लेखक को घोर परिश्रम करना होगा। मान लीजिए, 'खेतों की जुताई' पर एक पुस्तक लिखनी है। उसके लिये भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमि—रेतीली, पथरीली, दूमट, पीली मिट्टी, काली मिट्टी, सहराई आदि बीसों प्रकार की भूमि—उसकी प्रकृति, वर्षा और सूखा का उस पर असर, हलों की क़िस्म, किस भूमि के लिये किस तरह के हल काम में आते हैं आदि बातें मालूम करनी होंगी। फिर किस भूमि में कौन-सा पौदा अधिक लग सकता है, उसके लिये कैसी जुताई की जाय, इस बात का निर्णय करना होगा। ये बातें घर बैठकर या पुस्तकों के आधार पर कभी नहीं लिखी जा सकतीं। हम चाहते हैं, हमारे लेखक इस ओर विशेष रूप से ध्यान दें, और उपयोगी ग्रामीण साहित्य लिखकर साहित्य-वृद्धि के साथ ग्रामीण जनों का भी हित-साधन करें।

हर्ष की बात है कि विहार के प्रसिद्ध राष्ट्र-सेवक और लेखक श्रीरामचंद्रजी त्रिवेदी का ध्यान इस महत्त्व-पूर्ण विषय की तरफ़ गया है। और, उन्होंने एक ऐसी योजना तैयार की है, जिसके अनुसार उपयुक्त विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा उपयोगी साहित्य तैयार कराया जायगा।

त्रिवेदीजी, इस विषय के विशेषज्ञ माने जा चुके हैं। उनकी पुस्तक 'गाँव-सुधार कैसे हो?' हिंदोस्तान के सभी बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं द्वारा प्रशंसित हो चुकी है। यथार्थ में उनकी यह पुस्तिका गाँव-सुधार करने की एक स्कीम-मात्र है। प्रत्येक विषय पर अलग-अलग अनेक पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। आशा है, उपर्युक्त विषयों के विशेषज्ञ त्रिवेदीजी के इस पवित्र अनुष्ठान में सहयोग देकर देश के एक बहुत बड़े मसले को हल करने में सहायक होंगे, तथा भिन्न-भिन्न प्रांतों की सरकार त्रिवेदीजी को सहायता देकर उन्हें उत्साहित करेगी, जिससे वह शीघ्रातिशीघ्र इस महत्त्व-पूर्ण कार्य को निर्विघ्न समाप्त कर देहात-साहित्य का भांडार भर सकें।

× × ×

७. जर्मनी और रूस

जर्मनी का फ़ैसिज़्म और रूस का कम्युनिज़्म, इन दोनो में से हम एक को भी पसंद नहीं करते, लेकिन जहाँ लोहे और पत्थर का मुक़ाबला आ पड़ता है, वहाँ लोहे से पत्थर मुलायम समझा जाता है। फ़ैसिज़्म आज अपनी बर्बरता और क्रूरता-पूर्ण कामों के कारण दुनिया-भर में बदनाम हो रहा है। जब से इटली ने अबीसीनिया की स्वतंत्रता का अपहरण किया, और जर्मनी ने ज़ेकोस्लोवेकिया, बोहेमिया आदि प्रदेशों की आज़ादी छीन ली, तब से फ़ैसिज़्म का और भी नंगा रूप संसार के सामने आ गया। लेकिन मामला यहीं तक बस नहीं। फ़ैसिज़्म का सबसे बड़ा अभिशाप यह है कि उसने सैनिक-वाद के कठोर अस्त्र से सांस्कृतिक विकास को पद-दलित कर दिया है। यहूदी-सभ्यता के ऊपर हिटलर के कोप की कृपाण चलती रही है, पर स्वयं जर्मनी में शिक्षित और पठित समाज की जो दुर्गति हो रही है, वह भी लोगों की निगाह से छिपी नहीं। फ़ैसिज़्म का यह नारा प्रसिद्ध हो रहा है—'हमें पढ़े-लिखे नामर्द लोग नहीं चाहिए, हमें सैनिकों की ज़रूरत है।' इस नारे का असर जर्मनी के शिक्षित-वर्ग (Intelligentsia Class) पर यह हुआ कि बहुतों ने जर्मनी-देश को परित्याग कर दिया, और बहुतों ने आत्महत्याएँ भी कर लीं। जिस वक्त हिटलर ने आस्ट्रिया को विजय किया, तो वहाँ भी यही दशा हुई। वहाँ के कितने ही उच्च-शिक्षित, अनुभवी और भिन्न-भिन्न विषयों के विशेषज्ञ फ़ैसिज़्म के कठोर बंधन से ऊबकर आत्महत्या के शिकार बन गए। इसकी वजह है। 'ज्ञान ही शक्ति है (Knowledge

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

is power)।' यह कहावत बहुत पुरानी है। बुद्धिजीवी समुदाय अपने ज्ञान के प्रसार से विचार-क्रांति को जन्म देता है, जो फ़ैसिस्ट सत्ता के लिये ख़तरनाक चीज़ है। फ़ैसिज़्म आतंक और सैनिक शक्ति से फूलता-फलता है, इसलिये वहाँ विचार-स्वातंत्र्य को स्थान नहीं, वहाँ फ़्यूरर और ड्यूस की आज्ञा क़ानून है। इसीलिये फ़ैसिज़्म की ऊसर भूमि में शिक्षा और उच्च संस्कृति का पौदा फूलने-फलने नहीं पाता।

इसके विपरीत रूस-देश है, जहाँ पूरा विचार-स्वातंत्र्य तो नहीं, पर लोगों को उच्च शिक्षा और सांस्कृतिक योग्यता संपादन करने का पूरा अवसर दिया जाता है। जर्मनी के नौजवान जहाँ राइफ़ल चलाने, मशीनगनों का अभ्यास करने और अधिक-से-अधिक नर-संहार किस प्रकार हो, इन कार्यों की दक्षता प्राप्त करने में अपनी शक्तियाँ लगाते हैं, वहाँ रूस की सरकार किसान और मज़दूर-श्रेणी के अधिक-से-अधिक नौजवानों को इंजीनियरिंग, डॉक्टरी, उद्योग, कला, संगीत आदि विषयों की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये अग्रसर करती है। आजकल रूस में स्टैलिन की तृतीय पंचवार्षिक योजना चल रही है। उसके लिये शहर के सवा करोड़ और देहात के क़रीब तीन करोड़ किसान और मज़दूर नौजवानों को सरकार की तरफ़ से शिक्षित किया जा रहा है। साढ़े छ लाख विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। १९२९ ई० में, जब पंचवर्षीय योजना चालू की गई थी, रूस में इंजीनियर और शिल्प-विशारदों की संख्या केवल ६२,००० थी, सन् १९३७ में ५,७८,००० हो गई। ये सब लोग साधारण जनता से निकले हुए हैं। कम्युनिस्ट पार्टी की अठारहवीं कांग्रेस के अवसर पर मि० मोलोटोव ने घोषणा करते हुए यह कहा है कि सोवियट नौजवानों की एक विशाल सेना ऐसी तैयार हो रही है, जो देश की कला और व्यवसाय को समृद्धि की सीमा तक पहुँचा देगी, जिसमें साधारण श्रमजीवी लोगों का दर्जा भी अच्छे दस्तकार और इंजीनियरों के समकक्ष हो जायगा।

इस प्रकार रूस और जर्मनी में दो एक दूसरे के विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं। दोनो दो प्रकार के आदर्श संसार के सामने रख रहे हैं। एक का आदर्श रचनात्मक और दूसरे का विध्वंसात्मक है। कम्युनिज़्म और फ़ैसिज़्म के मसले पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार करते हुए हमें इन प्रामाणिक आधारों (Hard Facts) को नहीं भूलना चाहिए।

× × ×

८. प्रवासी भाइयों का सवाल

भारत के कितने ही लाल दूसरे देशों में रहते हैं। समय-समय पर हम उनकी करुण कहानी सुना करते हैं। दक्षिण-आफ़्रिका, फ़िज़ी, मलाया-द्वीप और लंका आदि में भारतीयों की एक बड़ी तादाद है, जो यहाँ से शर्त-बंद क़ुली-प्रथा का शिकार बनकर या स्वेच्छा से खाने-कमाने की ग़रज़ से चली गई है। ये लोग वहाँ दूसरी सरकारों के मातहत रहते हैं, और जिस प्रकार के क़ानून वहाँ की सरकारें बनाती हैं, उनका पालन बग़ैर अपनी आवाज़ उठाए इन्हें करना पड़ता है। दुर्भाग्य से भारत में भी अपनी सरकार नहीं, इसलिये जब इन भाइयों की ऐसी शिकायतें यहाँ पहुँचती हैं कि वे विदेशी सरकारों के कड़े क़ानूनों के शिकंजे में पिसे जा रहे हैं, तो यहाँ के लोग अपनी मजबूरी हालत पर आँसू बहाकर चुप हो जाते हैं। कुछ करें भी, तो अधिक-से-अधिक यही कर सकते हैं कि यहाँ की जो विदेशी सरकार है, उसके कानों में अपने दुखी भाइयों की आवाज़ डाल दें, फिर वह जैसा चाहे, करे। अभी हाल में नेटाल-इंडियन-कांग्रेस के अध्यक्ष स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ने भारत के वाइसराय के नाम एक लंबी चिट्ठी लिखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जिसमें आपने दक्षिण-आफ्रिका-स्थित भारतीयों की दुर्दशा का वर्णन किया है। वहाँ हाल ही में यूनियन-सरकार भारतीयों के विरुद्ध नए क़ानून बना रही है, जिससे वहाँ के भारतीय अपनी अलग बस्तियाँ बसाकर रह सकेंगे। उनके राजनीतिक अधिकार पहले से ही छीन लिए गए हैं, और अब उन्हें अछूत-जैसा समझकर सबसे अलग रहने की इजाज़त दी जा रही है। पूर्वी आफ्रिका के भारतीयों के ऊपर भी ऐसे ही बंधन हैं। केनिया के भारतीयों को वहाँ के उच्च स्थानों पर रहने की इजाज़त नहीं। और, जहाँ योरप की अन्य जातियाँ बस सकती हैं, वहाँ भारतीय नहीं बस सकते। जब ब्रिटिश साम्राज्यांतर्गत भारतीयों की यह दशा है, तो दूसरे राज्यों के अंदर उनका क्या हाल हो सकता है, इसका पता सहज ही लग सकता है। अँगरेज़ों की देखादेखी बेलजियम-कांग्रेस की सरकार ने भी भारतीयों के साथ सख़्ती आरंभ कर दी है, और वहाँ के भारतीय व्यापारी बुरी तरह तंग किए जा रहे हैं। उधर इथोपिया में इटली की सरकार ने भी दक्षिण-आफ्रिका की यूनियन-सरकार से सबक़ सीखकर भारतीयों को असभ्य जातियों की श्रेणी में पटक दिया है, और उन्हें सिनेमा, थिएटर, होटल आदि में समान जगह नहीं दी जाती।

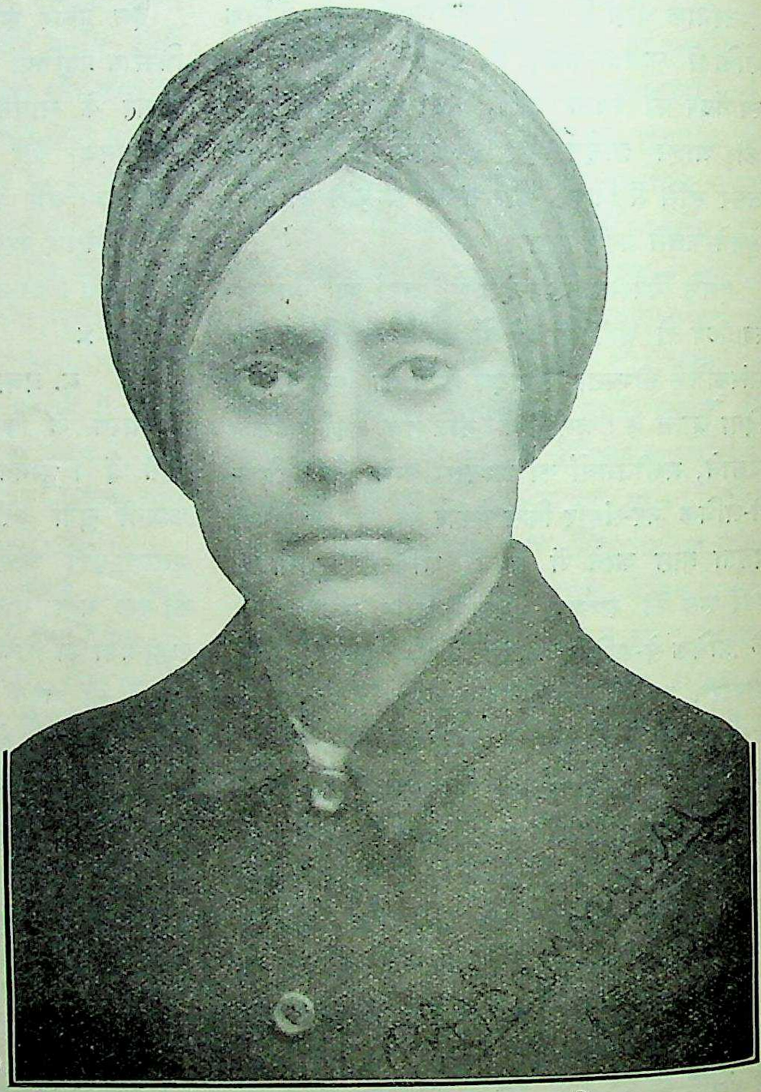

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी
(सभापति नेटाल-इंडियन-कांग्रेस)

आदिसअबाबा से भारतीयों को बाहर खदेड़ा जा रहा है। यह तो दूर देशों की बात रही, भारत के पड़ोस में ही लंका और बर्मा-प्रांत में भारतीयों के लिये सख़्त हिदायतें जारी हुई हैं। सीलोन-सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ़ आठ वर्ष की उम्र में

एक सुंदर बालक अपनी माता को रोती हुई छोड़कर देश भ्रमण करने, अध्ययन करने की इच्छा से निकल पड़ा, और एक विख्यात आदमी बना। वह श्रीशंकराचार्य थे — जिनका स्थान संसार के महाप्रभुओं में है। उन दिनों भ्रमण करना बहुत ही कष्टसाध्य था, परंतु आजकल तो रेलवे आपको इस विशाल भारतवर्ष के कोने-कोने में पहुँचा देती है; साथ ही यह निरापद्, तेज़, आरामदायक और सस्ती भी है। भ्रमण कीजिए, तथा अपने देश, धर्म और ईश्वर के बारे में और ज़्यादा जानिए।

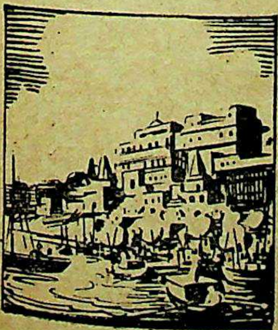

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

RBK 4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मलीन परमहंस श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के लेख व उपदेश

हिंदी में

स्वामी रामतीर्थ के लेख और उपदेश ६ जिल्दों में (जिनमें पूर्व प्रकाशित ग्रंथावली के १८ भाग आ गए हैं) अब संशोधित होकर बड़ी सुंदरता-पूर्वक प्रकाशित हुए हैं, पृष्ठ-संख्या क्रमशः ३५०, ३५०, ४५०, ५५०, ४२० और ४५० है, प्रत्येक पुस्तक सजिल्द है, मूल्य प्रत्येक का साधारण संस्करण १), विशेष संस्करण १॥)

रामतीर्थ-ग्रंथावली पूर्व प्रकाशित भाग १९ से २८ तक, प्रत्येक भाग साधारण संस्करण ॥), विशेष संस्करण ॥।)

नोट—संपूर्ण सेट् साधारण संस्करण १०), विशेष संस्करण १५)

स्वामी राम के दश आदेश पृष्ठ ३५०, सजिल्द, १)

स्वामी राम का बृहत् जीवन-चरित पृष्ठ ६७२, सजिल्द, २॥), विशेष संस्करण ३)

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमन्नारायण स्वामीजीकृत टीका) दो जिल्दों में, प्रत्येक जिल्द २), विशेष संस्करण ३)

वेदानुवचन (आत्म-दर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी) पृष्ठ ७१२; मूल्य २॥), विशेष संस्करण ३)

आत्म-साक्षात्कार की कसौटी (,,) पृष्ठ १७६; मूल्य ॥), विशेष संस्करण ॥।)

भगवत्-ज्ञान के विचित्र रहस्य (,,) पृष्ठ १६०; मूल्य ॥), विशेष संस्करण ॥।)

अँगरेज़ी में

The complete works of Swami Ram in 8 volumes of about 300 pages each, new published edition, price popular edition, cloth bound; per volume Re. 1/-/- Royal edition Rs. 2/-/-

The Rama's (11) Note Books in 2 volumes; cloth bound Rs. 2/-/- Royal Rs. 4/-/-

The Parables of Rama, pages 500, Rs. 2/-/- Royal Rs. 3/-/-

Heart of Rama, pocket edition, pages 250, As. -/4/- Royal As. -/8/-

Poems of Rama, Pages 300, As. -/4/- Royal -/8/-

The Story of Rama (By Sardar Puran Singh) Rs. 2/8/- Royal 3/8/-

Swami Ram: His Life and Legacy (By B. N. ~harga) Rs. 3/-/- Royal Rs. 3/8/-

A brief sketch of Rama's life Pages 100, As. -/6/-

Practical Gita (By B. Narayan Swarup) Pages 200, As. /4/-

Adi Bhagawad Gita both Hindi and English Translations -/2/6 each.

Swami Rama Text ward Several aspects of his life As. -/8/-

उर्दू में

खुम ख़ाना-ए-राम (तीन जिल्दों में) प्रत्येक में ५००	पृष्ठ;	मूल्य १॥),	विशेष संस्करण २)
रामवर्षा दोनो भाग १ जिल्द में,	पृष्ठ ३००;	मूल्य १),	विशेष १॥)
ख़ुतूते-राम (राम के पत्र गुरुजी के नाम)	पृष्ठ २०८,	मूल्य ।),	विशेष ।॥)
सवानेह उमरी-ए-राम (संक्षिप्त जीवनी)	पृष्ठ ३३०;	मूल्य ।॥),	विशेष १)
वेदानुवचन (आत्म-दर्शी बाबा नगीनासिंह)	पृष्ठ ५२०,	मूल्य १॥),	विशेष २)
मयारुल मुकाशफ़ा (,,)	पृष्ठ १७०;	मूल्य ॥),	,, १)
रिसाला अजायबुल इल्म (,,)	पृष्ठ १२०;	मूल्य ।=),	,, ॥)
जगजीत-प्रज्ञा (,,)	पृष्ठ १००;	मूल्य ।=),	,, ।॥)

चित्र

स्वामी राम का चित्र तिरंगा ८॥×१०॥ =), केबिनट साइज़ ~), विविध चित्र एकरंगे)॥, श्रीनारायण स्वामी)॥, भगत धन्नाराम)॥, झंडूमल हलवाई)॥

मैनेजर, श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, २५ मारवाड़ी गली, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

* सात भाग *

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं, क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है। उनके रोग दूर भागते हैं, इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद रोज़ों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है!

	पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय १ ला भाग	३)	१॥)
,, २ रा भाग	५)	२॥)
,, ३ रा भाग	४।)	२=)
,, ४ था भाग	४।)	२=)
,, ५ वाँ भाग	५)	२॥)
,, ६ ठा भाग	३॥)	१।॥)
,, ७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा १२ वाँ संस्करण	३)	१॥)

दो हज़ार वर्षों में नई बात!

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

	मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक सचित्र	४।)	२।)
वैराग्य ,,	५)	२॥)
शृंगार ,,	३)	१॥)
	१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित

झंडु

केन्थार्डीन हेअर ओइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताजगी मिलती है।
आज ही से आजमायश के लिये खास सिफ़ारिश है।

TRADE MARK

झंडु
फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड,
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ „ „ „—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अपने यहाँ से भारतीय मज़दूरों को भारत वापस भेजे जाने की आज्ञा दे दी है, और वे सरकारी नौकरियों से भी हटाए जा रहे हैं। यह सब किया इसलिये जा रहा है कि इससे भी सीलोन-वासियों की बेकारी दूर हो जायगी। भारत और सीलोन का अभी तक बहुत निकट का संबंध है, और बर्मा तो अब तक भारत का ही एक प्रांत रहा है। वहाँ भी भारतीयों के लिये ऐसे सख़्त क़ानून बन रहे हैं। भारत-सरकार जिस उपेक्षा के साथ इन मामलों पर दृष्टि डाल रही है, उससे पता चलता है कि वह प्रवासी भारतीयों के मामले में कोई भी प्रभावोत्पादक कार्यवाही करने में असमर्थ है। तब पं० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में हमें यही कहना पड़ता है कि भारत आज कमज़ोर है, वह विदेशों में रहनेवाले अपने लोगों के लिये कुछ नहीं कर सकता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह उन्हें भूल गया है। एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा, जब अपनी लंबी बाँहों से वह उन्हें आश्रय देकर उनका संरक्षण करेगा, और अपनी शक्ति से दूसरे देशों को उनके साथ न्याय करने के लिये बाध्य करेगा।

× × ×

९. रेडियो से हमारा हानि-लाभ

हिंदी के साथ अन्याय हो रहा है, हमारी भाषा बरबाद की जा रही है इत्यादि चीख़ते-कराहते कितने ही महानुभाव दिखाई देते हैं, लेकिन इसका प्रतिकार कैसे हो, ठंडे दिल से सोचते हुए कोई नहीं दिखाई देता, जब कि इस समय प्रत्येक भाषा-भाषी अपनी-अपनी भाषा की उन्नति में लगा हुआ है, और हिंदी के पचासों पन्ने व्यर्थ, आपस की तू-तू मैं-मैं में, ख़र्च किए जा रहे हैं!

आएदिन कोई समझदार इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि रेडियो में हिंदी और हिंदुस्तानी के नाम पर जिस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, वह हिंदी के लिये बड़ी घातक है। भाषा के अंदर इस तरह का इंजेक्शन चीनियों में अफ़ीम का-सा काम कर रहा है। हिंदी-भाषा-भाषियों के समाज की विशृंखलता उस भाषा को ग़ारत होते चुपके देख रही है, जो—अगर न्याय से काम लिया जाय, तो—एक दिन हिंदुस्थान की प्रतिनिधि भाषा बन सकती है। जिस तरह बहुत-से अहिंदुओं को अब हिंदुस्थान से निकाला नहीं जा सकता, उसी तरह कुछ अहिंदी भाषाएँ भी रहकर ही रहेंगी, लेकिन हिंदी के नाम पर असंस्कृत ज़बान में इसके शब्द तोड़ने-मरोड़ने से किसी और ज़बान का फ़ायदा भी तो नहीं हो सकता।

हमें बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि हिंदुस्थानी रेडियो की भाषा और भावना बनाने में जिन लोगों का हाथ है, उन्हें हिंदी और जिन लोगों की वह भाषा है, उनकी प्रकृति का ज्ञान बिलकुल नहीं। हिंदुस्थान में इस समय १३ रेडियो-स्टेशन हैं, आप कहीं के भी पात्र-परिचायक (Ancuncer) को बोलते सुन लीजिए, वह हिंदी-भाषा के कोसों दूर है। यह एक बच्चे को भी मालूम है कि यू० पी०, सी० पी०, बिहार, राजपूताना, सी० आई० की मुख्य भाषा हिंदी है, और सुननेवाले भी अधिक-से-अधिक हिंदी-संस्कारों के हैं। लेकिन आप किसी दिन भी इन स्टेशनों को सुनिए, अनाउंसर साहब पाँचवें सवारों में अपना नाम लिखाने के लिये सुंदर-सुंदर शब्दों का बलिदान कर रहे होंगे, अथवा किसी फ़ीचर या ड्रामे की रानी साहबा गले में तिरपन भचकले देकर फ़र्मा रही होंगी—"मैं शिरी महाराज की आगिया सर पर धारन करने के जोग अपने में परतीत पा रही हूँ।" इस समय हिंदी-संस्कारों की दुर्दशा जो कुछ रेडियो द्वारा की जा रही है, उसका कहना ही व्यर्थ है! रेडियो की राधा, पार्वती अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती को आप किसी दिन भी माइक्रोफ़ोन पर बाज़ारू औरतों के रूप में, कुतियों की तरह, लड़ते देख सकते हैं।

आख़िर इन सब बातों की वजह क्या है? इन सब बातों में हमारा असंगठन बोल रहा है। दो-एक साल अगर रेडियो को इसी तरह रहने दिया गया, तो हिंदी को बहुत बड़ा धक्का लगेगा। हिंदी-भाषियों के लड़के-बच्चे जिस तरह हुकूमत के धक्के खाने के आदी हो गए हैं, उसी तरह रेडियो पर 'माहातिमा तुलशीदास का कलाम' सुनकर यह मालूम भी न कर सकेंगे कि इसमें अशुद्धि क्या हुई।

हिंदी इतनी उदार है कि वह हर भाषा के शब्दों को अपनी लिपि में लिख सकती है, लेकिन हिंदी-अक्षरों में लिख देने से ही हर बात हिंदी की नहीं हो सकती। प्रत्येक भाषा में अपना संस्कार और प्राण होता है, शब्द किसी भी भाषा के हो सकते हैं। हिंदी ने अब तक ऐसा ही किया है। आज जिस धरातल पर हिंदी खड़ी हुई है (संस्कृत अथवा प्राकृत), उससे उसे हटना नहीं चाहिए, अन्यथा वह कुछ की बनने के लोभ में बहुतों की नहीं भी रह सकती।

जो हो, यदि आप चाहें, तो थोड़े ही दिन की सतर्कता से रेडियो की भाषा बदलवा भी सकते हैं। रेडियो का काम केवल व्यावसायिक दृष्टि से हो रहा है। रेडियो-स्टेशन अपने सुननेवालों की ही आवाज़ सुनने की कोशिश करते हैं। एक तरह वे रेडियो ख़रीदकर लाइसेंस लेनेवालों के नौकर हैं। आप कहेंगे, जिस भाषा का बाहुल्य रेडियो में है, उसके सुननेवालों से हिंदी ही के सुननेवाले अधिक हैं। इसका उत्तर लेख के आरंभ ही में दिया जा चुका है कि हम बहुत होते हुए भी रेडियो के ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाते, और अगर उठावें, तो जल्द-से-जल्द रेडियो को अपनी पॉलिसी बदलनी पड़े। दूसरी भाषा के सुननेवाले थोड़े होते हुए भी एक-मत होकर बात करते हैं, जिससे रेडियो-स्टेशन को मजबूर होकर उनका मत मानना पड़ता है।

अपने अगले किसी नोट में हम यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे कि रेडियो-स्टेशनों से कितना रुपया हर महीने हिंदी और हिंदुस्तानी के नाम पर ख़र्च होता है, और यथार्थ में कितना हिंदीवालों को मिलता है, और यह भी कि किस तरह हिंदी सुननेवाले सामूहिक आंदोलन उठावें।

× × ×

१०. हबड़ा-बंबई का सस्ता किराया

ईस्ट-इंडियन-रेलवे ने हवड़ा और बंबई के बीच किराए में रियायत की है। दर इस प्रकार है—

दर्जा औवल २०३॥)॥
,, दोम १०१॥।–)॥
,, ड्योढ़ा ६१॥)॥

ख़रीदने की तारीख़ से ३० दिन तक इन टिकटों से यात्रा पूरी कर लेना आवश्यक होगा।

जी० आई० पी० लाइन के किसी हिस्से में इन टिकटों द्वारा यात्रा करनेवाले मुसाफ़िर बीच में न उतर सकेंगे। इन टिकटों को वापस करने का नियम नहीं।

कलकत्ता और बंबई का सफ़र करनेवाले मुसाफ़िर दूर के सफ़र के लिये इन रियायती टिकटों की उपयोगिता जानकर अवश्य प्रसन्न होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं

का

सबसे प्यारा, सबसे सुंदर

सचित्र और मासिक पत्र

संपादक—
पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल-एल० बी०

वार्षिक मूल्य २।।)
एक प्रति ।)

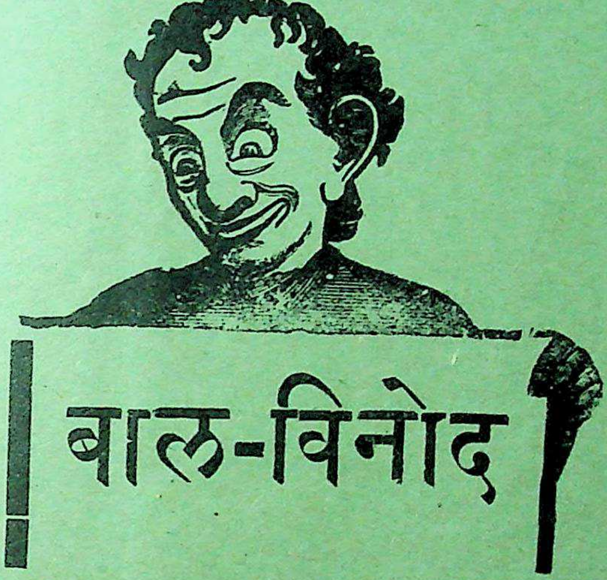

बाल-विनोद कैसा है ?

देखने में मनोहर ! पढ़ने में मनोहर !!

सैकड़ों रुपए खर्च ने पर भी जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा बालकों को नहीं मिलती, वह शिक्षा यह पत्र बालकों को सहज ही में देता है।

।) का टिकट भेजकर नमूना मँगा देखिए।

मैनेजर 'बाल-विनोद', लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दी कीजिए !

ये पुस्तकें छपकर बिकने लगीं !!

सुनहरी नदी का राजा

इसमें ऐसी मनभावनी तथा बालक-बालिकाओं का मारे ख़ुशी के पेट फुला देनेवाली कहानी है कि बच्चे हाथ से सोते समय भी न छोड़ेंगे, क्योंकि इसके पढ़ने में मन लगता है। रंगीन स्याही में, कई सुंदर चित्रों-सहित, नए गेट-अप और डिज़ाइन के साथ बड़ी सुंदरता से छपी है। मूल्य ।≈), सजिल्द ॥≈)

क्यों और कैसे ?

पानी नीचे की ओर क्यों बहता है, भूकंप क्यों आता है, पेड़ से फल नीचे क्यों गिरता है ? आदि बीसों बातों का वर्णन लेखक ने बड़ी ख़ूबी के साथ किया है। इस ढंग की पुस्तक अभी तक बालकों के लिये न थी। उसी अभाव की पूर्ति करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेंगे। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ।=)

काग़ज़ी करतब

लेखक का दिमाग़ क्या है, अजीब सूझ है। रेखागणित की उलझी हुई पहेलियों को उसने हँसाते-हँसाते सुलझा डाला। गणित-जैसे नीरस विषय से बालक-बालिकाएँ प्राय: उदासीन हो जाते हैं। मगर क्या मजाल कि इस पुस्तक के पढ़ने में जी ऊबे। और लुत्फ़ यह कि स्कूल छोड़ने के बाद भी आप इसे पढ़कर अपनी कमाई का रास्ता भी निकाल सकते हैं। छोटे-बड़े तथा बैठे-ठालों, सबके काम की चीज़ है। मूल्य १।), २।)

खिलवाड़

बालकों के पढ़ने योग्य सरल कहानियों और कविताओं का अनूठा संग्रह। २० चित्र भी दिए गए हैं। पुस्तक रंग-बिरंगी और बहुत बढ़िया है।

इसको कभी भुला मत देना,
चीर-फाड़कर फेंक न देना;
चित्र देखना, क़िस्से पढ़ना,
पढ़कर अपना दिल ख़ुश करना।

मूल्य सादी ≈), सजिल्द ।)

बनरा बनकर ऊँट जा रहा है अपनी ससुराल;
देखो, मटक-मटककर चलता जनवासे की चाल।

आज ही ऑर्डर भेज दीजिए—बाल-विनोद-वाटिका, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोमड़ी रानी

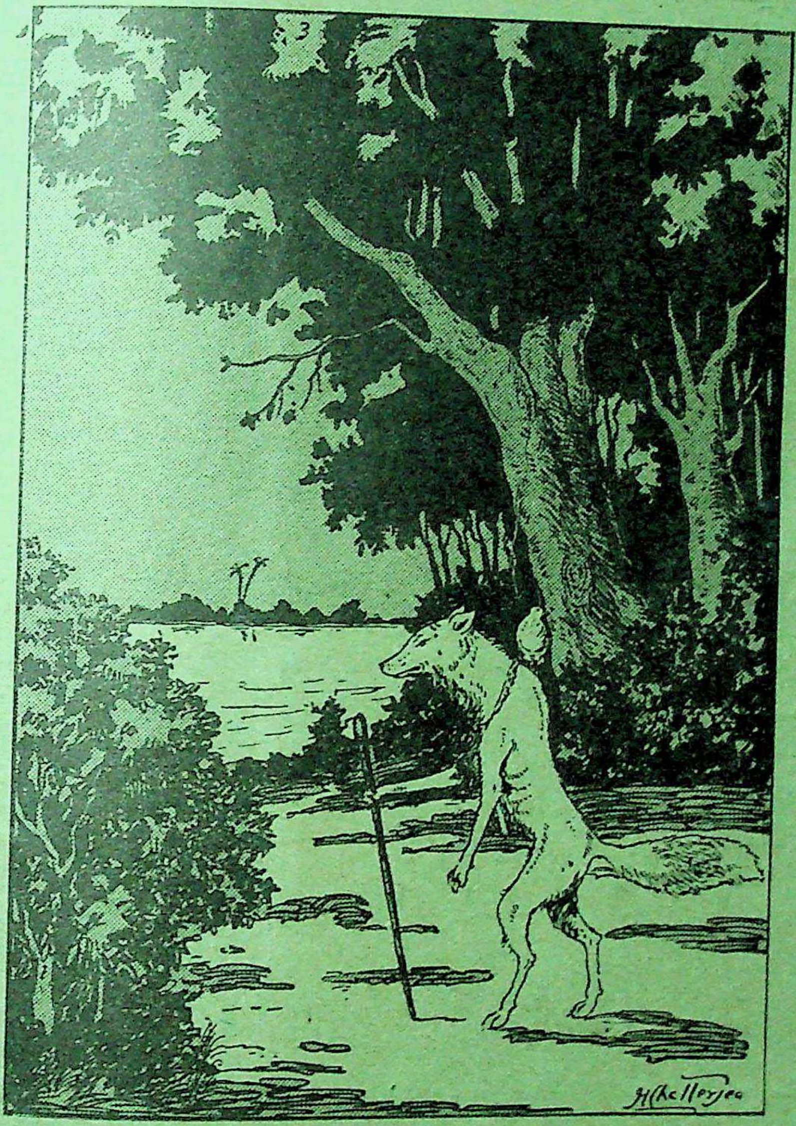

लेखक, श्रीबाबूलाल भार्गव साहित्यरत्न, बी० ए०, बी० टी०। लोमड़ी-शब्द के जादू से बच्चे आनंद-विभोर हो उठते हैं, और उसकी कहानियों का तो पूछना ही क्या। इस पुस्तक में बालकों की उसी प्यारी लोमड़ी रानी की १५ मनोहर और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं। बालक उन्हें बार-बार पढ़ेंगे और आनंद से प्रफुल्लित हो उठेंगे। भाषा अत्यंत सरल और रोचक। कवर पर तिरंगा चित्र। मूल्य सादी ।=), जिल्ददार ॥)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापानी बाल-कहानियाँ

(द्वितीयावृत्ति)

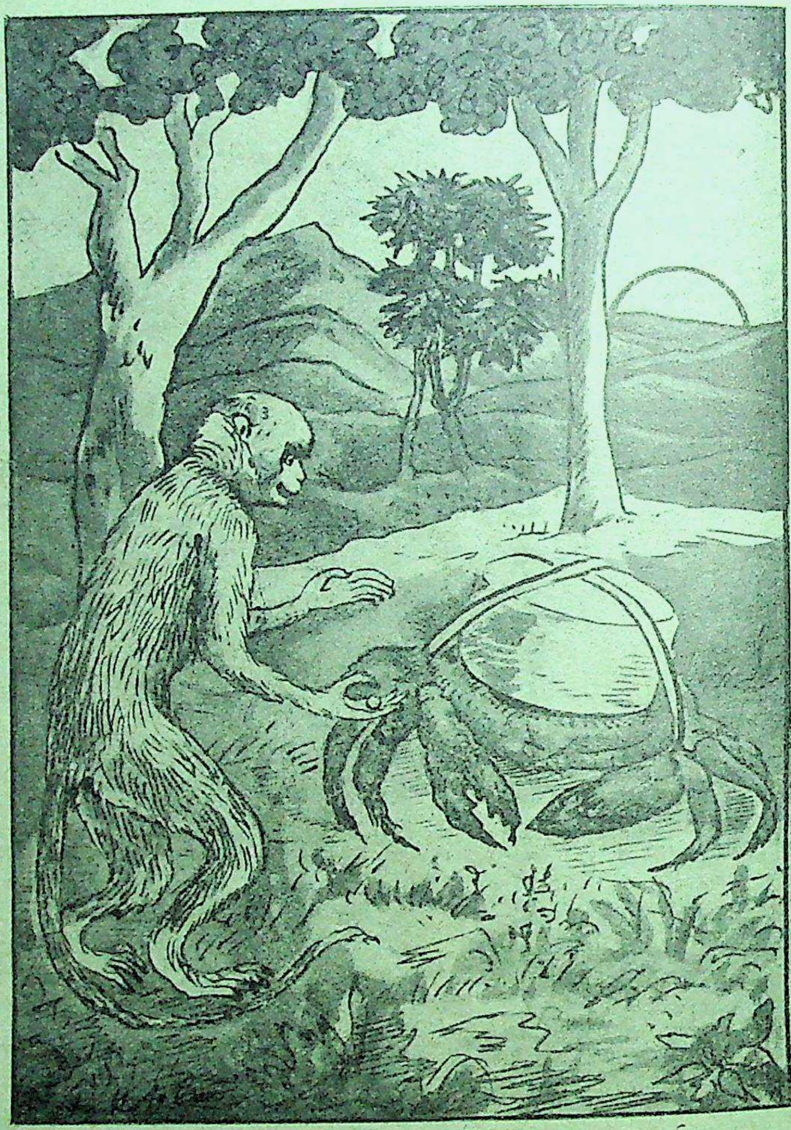

लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। जापान में बालकों को शिक्षाप्रद कहानियों द्वारा शिक्षा दी जाती है। उन्हीं कहानियों का अनुवाद लेखक ने हिंदी में किया है। यदि आप अपने देश के बालकों को उच्च आदर्श सिखाना चाहते हैं, तो इन कहानियों को उन्हें सुनाइए। देखिए, फिर उनमें कितनी जल्दी व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि होती है। आज ही पुस्तक मँगवाइए। मोटे, सुंदर, कई रंग के टाइप में छपी इन सचित्र कहानियों को पाकर आपके बच्चे निहाल हो जायँगे। मूल्य ||), जिल्ददार ||=)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप अपने प्रिय बच्चों को हँसी से लोट-पोट होते देखना चाहते हैं ?
यदि हाँ, तो आज ही 'नटखट पाँड़े' की एक प्रति अवश्य मँगा लें !

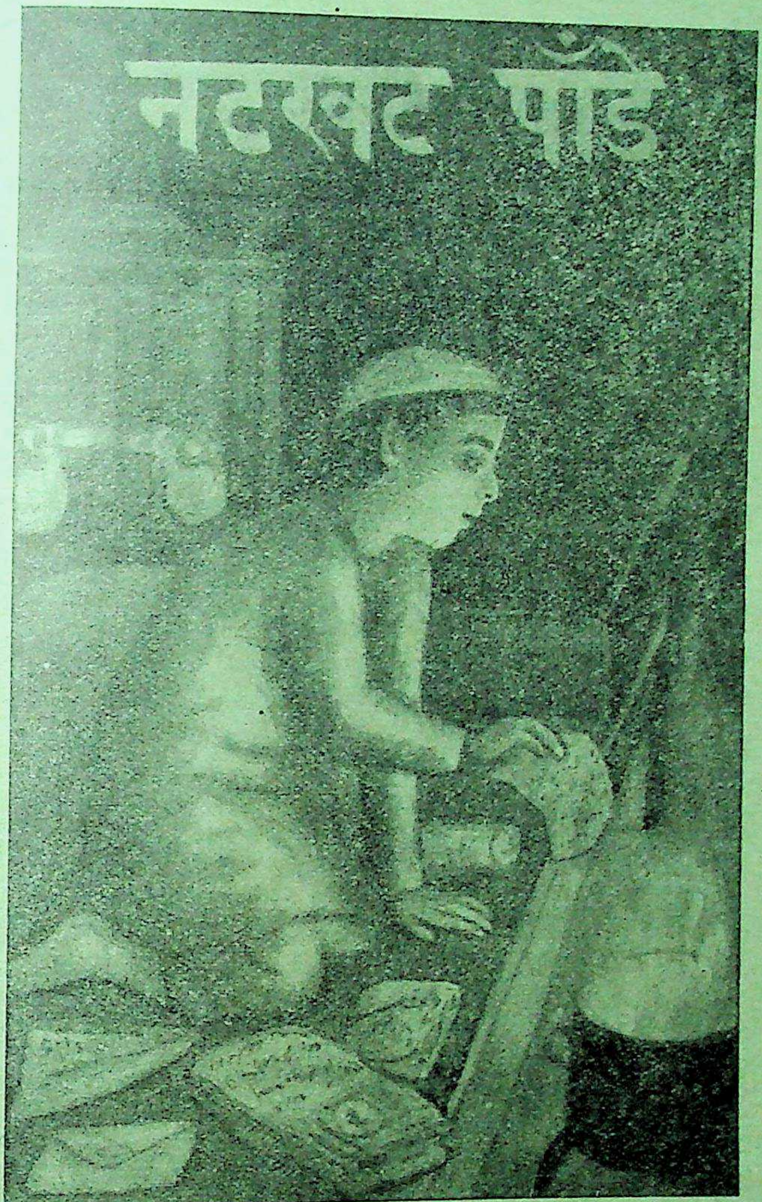

नटखट पाँड़े (तृतीयावृत्ति)

लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित एम्० ए०, एल्० टी० । एक नटखट लड़के की आत्म-कथा । एक-एक शब्द में हास्य-रस भरा हुआ है । नटखट पाँड़े का विद्यारंभ, डॉक्टर महोदय की दुर्दशा, बोर्डिंगहाउस के अध्यक्ष महोदय की दुर्गति, नटखट पाँड़े का रात को भाग जाना, गाने की मजलिस, सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि लड़के इसे समाप्त किए बिना नहीं रह सकते । कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे ।

मूल्य १), सजिल्द १।) मिलने का पता—बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलकुमारी

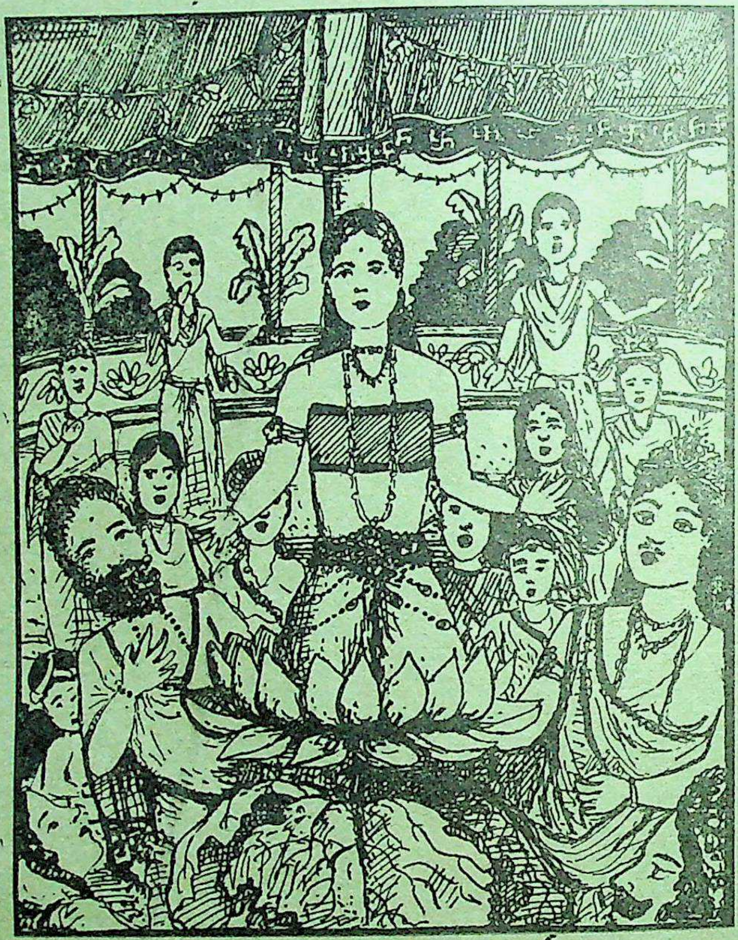

लेखक, स्व० श्रीश्यामाचरणदत्त पंत। यह कहानी लिखकर लेखक ने बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। यदि आप अपने बालकों को उच्च आदर्श सिखाना चाहते हैं, तो यह पुस्तक उन्हें अवश्य पढ़ाइए। देखिए, फिर उनमें कितनी जल्दी व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि होती है। भाषा इतनी सरल है कि बालक उसे बड़ी आसानी से समझ लेंगे। मूल्य ॥।), सजिल्द १)

मिलने का पता—

मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मँगाइए तो सही, फिर बच्चों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जायगा।

बाल-विलास

छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक और विनोद-पूर्ण कविताओं की यह अच्छी पुस्तक है। ४० से भी अधिक चित्र, काग़ज़ मोटा, टाइप बड़ा रंगीन छपाई।

बाल-विलास

इस सुंदर पुस्तक के लिये छोटे-छोटे बालक ऐसे मचल जाते हैं, जैसे चित्र में खिलौने लेने के लिये एक बच्चा तोंदूमलजी से उलझ रहा है।

मूल्य केवल ।≈), राजसंस्करण ।।।)

मिलने का पता—मैनेजर बाल-विनोद-वाटिका, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

अभिमान

यह एक सामाजिक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। पति-पत्नी एक दूसरे के दिल की बात विना समझे एक दूसरे से रूठकर अपना जीवन किस प्रकार दुःखमय बना लेते हैं, यह बात इस उपन्यास में बड़ी ख़ूबी के साथ समझाई गई है। जिन स्त्री-पुरुषों की आपस में नहीं बनती, वे इस उपन्यास को पढ़कर तुरंत जान जायँगे कि इसका असली कारण क्या है? सच पूछो, तो इस उपन्यास में प्रेम की गंगा बहा देने की शक्ति है। पढ़ी-लिखी बहनें भी अपना दांपत्य जीवन सुखमय बनाने का उपाय आप-ही-आप सोच लेंगी। उपन्यास की भाषा बड़ी सरल है और कथा इतनी रोचक है कि पढ़ना आरंभ कर देने पर बिना पूरी किताब ख़त्म किए रखने को जी नहीं चाहता। मूल्य १)

लक्ष्मी बहू

यह आपने कहते सुना होगा कि अमुक स्त्री 'साक्षात् लक्ष्मी' है। इस पुस्तक को पढ़कर 'लक्ष्मी बहू' कैसी होती है, यह मालूम हो जाता है। बहू-बेटियों को जरूर पढ़ाइए। मूल्य ॥=)

क्षमा

यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें बड़ी ख़ूबी के साथ दिखाया गया है कि संसार में ऐसा कोई अपराध नहीं है, जो क्षमा न किया जा सके। और पति अपनी स्त्री को कहाँ तक क्षमा कर सकता है। इसके अलावा भी इस उपन्यास में एक विचित्रता है। वह है—मुसलमान गुंडों द्वारा हिंदू स्त्रियों के बहकाये जाने का दिग्दर्शन। इससे आप जान जायँगे कि किस प्रकार हिंदू स्त्रियाँ अपने पारिवारिक असंतोष के कारण मुसलमान गुंडों की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर अपना सर्वनाश उपस्थित कर लेती हैं। इस विपत्ति से बचने की क्या दवा है, इस पुस्तक में मिलेगी। मूल्य ।।।)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहलक्ष्मी-ग्रंथमाला की

निम्न-लिखित पुस्तकें 'बाल-विनोद' के ग्राहकों को दो महीने तक चौथाई मूल्य में दी जायँगी। जल्दी मँगाइए, क्योंकि पुस्तकें थोड़ी ही बची हैं। फिर किसी दाम में मिलना कठिन होगा।

सदाचारिणी

यह भी स्त्रियों के पढ़ने और मनन करने योग्य शिक्षा-पूर्ण सामाजिक अपूर्व उपन्यास है। वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में भी एक विधवा स्त्री अपने दुखमय जीवन को कैसे सुखमय बना सकती है, अपनी योग्यता से कुटुंब और समाज की कैसी सेवा कर सकती है, और किस प्रकार अपना लोक और परलोक सुधार सकती है, यदि इस विषय की शिक्षा देनी हो, तो सदाचारिणी को अवश्य पढ़िए और पढ़ाइये। मूल्य १।-)

दिव्य देवियाँ

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, शैव्या, दमयंती, सती, सुनीति, प्रमीला, उत्तरा और गांधारी इन नव आदर्श देवियों का चरित्र बड़ी सरल और रोचक भाषा में अंकित किया है।

प्राचीन काल में और भी कितनी ही सुविख्यात पतिभक्त नारियाँ हो गई हैं। पर इन देवियों की पतिभक्ति में एक विशेषता है। ये देवियाँ पति की सच्ची संगिनी प्रमाणित हुई हैं। विपत्तियों का सामना करने में इन्होंने अपने पतियों की एक निर्भीक सिपाही की भाँति सहायता की है। इस पुस्तक को पढ़कर बहनें जान सकती हैं कि वे सुख-दुःख में अपने पति की किस प्रकार साथिनी बन सकती हैं। यही नहीं, इस पुस्तक को पढ़कर स्त्रियाँ अपना वास्तविक धर्म और उसके पालन की विधि समझ लेंगी। बहू-बेटियों को ख़ास तौर से यह पुस्तक उपहार में देनी चाहिए। मूल्य १॥=)

कुल-ललना

इस पुस्तक में निम्न-लिखित विषय बड़ी सरल और सरस कविता में समझाए गए हैं—

(१) अनुक्रमणिका, (२) विवाह, (३) ससुराल, (४) पतिपत्नी-प्रेम, (५) परिजनों के प्रति कर्तव्य, (६) चरित्र-दृढ़ता, जिसमें सतीत्व, लज्जा, गंभीरता, सलाप, सद्व्यवहार, विनय और सहनशीलता, धैर्य और सत्यभाषण पर बड़ी सुंदर-सुंदर, कविताएँ हैं, (७) आभूषण, (८) संगीत, (९) स्वच्छता और शरीर-रक्षा, (१०) गृह-प्रबंध, (११) रसोई, (१२) सीना-पिरोना, (१३) गर्भावस्था, (१४) शिशु-पालन इत्यादि-इत्यादि।

गृहस्थी के अनेकानेक विषयों पर ऐसी सुललित कविताएँ आपको कहीं न मिलेंगी। इन कविताओं के लेखक ने चारु चयन-शीर्षक अंतिम भाग में स्त्रियोपयोगी अन्य कवियों की भी कविताएँ इकट्ठी कर दी हैं और सबसे अंत में स्त्रियों के काम के वेद-पुराण आदि से तथा संसार के बड़े विद्वानों की वाणी से लेकर मनोहर और उपदेशप्रद वाक्य उद्धृत किए हैं। मूल्य ॥=)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों का सखा

आलोचना-प्रधान

हिंदी में अपने ढंग का अनूठा मासिक पत्र

साहित्य-संदेश

संपादक—(१) श्रीगुलाबराय एम्० ए०, (२) श्रीमहेंद्रजी

साहित्य-संदेश की विशेषताएँ

१—इस पत्र में साहित्य-संबंधी केवल आलोचना-विषयक लेख छपते हैं।

२—हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की जल्दी-से-जल्दी निष्पक्ष आलोचना करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

३—लेखकों को प्रोत्साहन देना, उनकी कृतियों को लोकप्रिय बनाना इसका ध्येय है।

४—"अधिक पुस्तकें पढ़िए" (Read more books) का आंदोलन करना इसका मोटो है।

५—इस पत्र में दवा-दारू, विदेशी वस्तु, प्रतियोगिता आदि के तथा अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। साहित्य-संबंधी विज्ञापन छापना ही इसे अधिक अभीष्ट है।

६—हिंदी में यह पत्र सबसे सस्ता है और उपयोगिता की दृष्टि से सबसे अधिक मान्य है।

७—हिंदी-साहित्य के विद्यार्थियों, शिक्षा-संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिये यह पत्र अत्यंत उपयोगी और नितांत आवश्यक है। विभिन्न प्रांतीय सरकारों और देशी राज्यों द्वारा स्वीकृत है।

मूल्य सर्व-साधारण से २), वार्षिक और शिक्षा-संस्थाओं, पुस्तकालयों तथा विद्यार्थियों से १) मात्र।

नमूना मुफ़्त मँगाइए!

कुछ विख्यात विद्वानों की सम्मतियाँ

श्रीमान् हरिभाऊजी उपाध्याय—"आपने गागर में सागर भरने की कोशिश की है।"

श्रीराधाकृष्णजी—"इस पत्र की आलोचनाओं की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वे निष्पक्ष हैं।"

सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार—"आपने साहित्य-संदेश का प्रकाशन करके हिंदी की बड़ी सेवा की है।"

श्रीमहावीरप्रसाद अग्रवाल एम्० ए०—"ऐसे सुंदर पत्र का १), चंदा सुनकर मेरे पुस्तकालयाध्यक्ष मित्र आश्चर्य करते थे।"

श्रीशंकरदेव विद्यालंकार, गुरुकुल-विद्या-मंदिर, सूपा—'साहित्य-संदेश पत्र हिंदी के मासिक पत्रों में अपना विशेष स्थान रखता है। हिंदी-साहित्य के प्रवाह से जनता को परिचित कराने का बहुत सुंदर प्रयास कर रहा है।"

प्रो० गुरुप्रसादजी टंडन एम्० ए०—"इसकी गंभीर, पर तुली हुई आलोचनात्मक पद्धति को देखकर बड़ा संतोष हुआ।"

डॉ० बेनीप्रसादजी प्रयाग-विश्वविद्यालय—"संपादकों ने इसे उच्च श्रेणी का साहित्यिक पत्र बनाने का प्रयत्न किया है और सफलता प्राप्त की है।"

श्रीपं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी—"पत्र में निस्संदेह हिंदी पाठकों के लिये विशेषतः उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये – उपयोगी मसाला इकट्ठा रहता है।"

पं० किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री—"...... आलोचना के क्षेत्र में व्यक्तिगत राग-द्वेष से बचना अत्यंत आवश्यक, परंतु दुष्कर काम है। लेकिन इस पत्र की आलोचनाएँ इस कसौटी पर भी खरी उतर रही हैं।"

पता—साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा।

तार का पता—'पंच', आगरा। टेलीफ़ोन-नं० १७१, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ॐ ❀

असली अष्टवर्ग भावप्रकाशोक्त

(१) जीवक कूर्चिकाकारो मधुरः (२) ऋषभो वृष शृङ्गवत् (३) शुष्कार्द्रक सन्निभः कन्दोलताजातः सपाण्डुरः (४) मेदा महामेदा का लक्षण।

प्रसिद्ध महानुभावो तथा वैद्य बंधुओ! यह किसी से छिपा नहीं कि निर्बलता, दमा, पुरानी खाँसी, कफ की व्याधियां, श्वास-यंत्र-संबंधी रोग तथा यक्ष्मा-जैसी रोगराट् बीमारियों को मर्दन करनेवाली "च्यवन प्राश" रसायन में हिमालय पर्वत के अंचल में लहरानेवाली बहुपयोगी किंतु दुर्लभ इन "अष्टवर्ग" की ओषधियों का ही विशेष भाग है। अतः इनको हम बड़ी कठिनता से प्राप्त करते हैं। अपनी इच्छानुसार मँगा लें। मूल्य १६) रु० सेर, डाक-व्यय अलग।

नव-अमृत-धारा (Regd.)

अनेक रोगों पर रामबाण ओषधि

यह अकेली दवा अजीर्ण, दस्त, उल्टी, हैज़ा, अरुचि, श्वास, खाँसी, ज्वर, हिचकी, आधाशीशी, उदर-शूल, कमर का दर्द, सूजाक आदि, जहरीले जानवरों का दंश इत्यादि अनेक रोगों में अपूर्व गुणकारी है। हर एक को सफ़र में और घर में हर समय जेब में रखनी चाहिए। सफ़र में या रात के वक्त, तथा छोटे गाँवों में, जहाँ समय पर वैद्य या डॉक्टर और हकीम का मिलना मुश्किल होता है, बड़ा काम देती है। प्रसिद्ध महानुभावों तथा चिकित्सक-समुदाय ने भी इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। एक बार आज़माकर परीक्षा कीजिए।

छोटी शीशी का मूल्य ।)॥, बड़ी शीशी का मूल्य ।=)।, डाक-व्यय अलग।

भीमसेनी काजल (Regd.)

आँख के तमाम रोगों पर अचूक ओषधि

मोतियों और भीमसेनी कर्पूर आदि बहुमूल्य खनिज पदार्थों और अत्यंत लाभकारी वन-ओषधियों और जड़ी-बूटियों इत्यादि के योग से हम इस काजल को बड़े परिश्रम से बनाते हैं। पुराने मोतियाबिंद के सिवा आँखों का कोई ऐसा रोग नहीं है, जो कि इसके सेवन करने से अच्छा न हो जाय। फूली, माड़ा, कुकरे, आँखों से पानी बहना, खुजली, नज़र की कमज़ोरी आदि आँखों की समस्त बीमारियों के लिये अद्वितीय है। आँख के रोगों से पीड़ित महानुभावों से हमारा अनुरोध है कि वह हमारे "भीमसेनी काजल" का व्यवहार कर लाभ उठावें।

मूल्य ४) रु० तोला, डाक-व्यय अलग।

श्वास-गज-केसरी (Regd.)

श्वास-यंत्र-संबंधी रोगों पर अमूल्य ओषधि

यह अत्यंत लाभकारी भस्म है। इसको हम बहुमूल्य, किंतु कठिन द्रव्यों को प्राप्त कर, बड़े परिश्रम के साथ फूँककर सिद्ध करते हैं। इसके सेवन करने से समस्त श्वास-यंत्र-संबंधी रोग समूल नष्ट होते हैं। श्वास-रोग से पीड़ित भाइयों से हम अनुरोध करते हैं कि वे हमारे "श्वास-गज-केसरी" का सेवन कर लाभ उठावें। मूल्य ३) रु० तोला, डाक-व्यय अलग।

मैनेजर अष्टवर्ग प्रयोगशाला (Regd.) श्रीहनुमत-निवास, चित्रकूट (बाँदा) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायापलट

बूढ़े ने तीन विवाह किए

नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा लेने से जब उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई, और योगिराज रत्नागिरि के परिश्रम-पूर्वक दवा-इलाज करने पर भी उस बूढ़े को तीन विवाह करने पड़े, तथा जो दशा हुई, उसे लिखने को सभ्यता मना करती है, तो बड़े-बड़े रसिक रईस, राजा, नवाब बाबाजी से इस महान् परोपकारी, महान् योग को पूछने के लिये लालायित हुए। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयातमोहम्मदखाँ साहब ने तो बाबाजी की बहुत सेवा-शुश्रूषा करके इसे प्राप्त भी कर लिया। उन्होंने इसे लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्माजी ने इस योग को प्रथम तथा दो अन्य योग लिखकर इन तीन से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को १०००) नक़द इनाम देने की घोषणा कर दी, जैसा कि अनेक समाचार-पत्रों से मालूम हुआ है। इसे आज १६ साल के लगभग बीता, और इस पुरस्कार को कोई प्राप्त न कर सका। फिर मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चंद्रोदय में छपवा दिया। हमने भी इस योग को स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बलता, नपुंसकता, वीर्य-विकार-ग्रस्त रोगियों पर बरता और तत्काल गुण, चमत्कार देखकर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपा दिया। पाठक भी बनाकर लाभ उठावें।

योग

शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १।। माशा को १ घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कूजे में मज़बूत बंद कर ५ सेर कंडों में फूँके। ठंडा होने पर दुबारा एक तोला हरताल बर्क़ी शुद्ध, १।। माशा कपूर शुद्ध में; तीसरी बार गंधक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर शुद्ध १ माशा में; चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद एक तोला, कपूर १।। माशा को ऊपर की भाँति आँच दें। इसी क्रम से १६ आँच भस्म करें, फिर इसको कड़ाही में डालकर बराबर इंद्रवधू डाल दें, और नीचे आग जलावें। जब इंद्रवधू जलकर खाक हो जायँ, तो हवा देकर रख दें। बस, अपूर्व शक्तिदाता महाबाजीकरण तैयार है।

इसी योग की प्रशंसा में मथुरा के बा० हरिदासजी लिखते हैं कि इसके सेवन से एक ही हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, और दूसरे का चेहरा लाल-सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने इसे ३५० रोगियों पर बरता, और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर के संपादक श्रीछोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा-पथ-प्रदर्शक में छापा है कि हमने इतना प्रचंड, शीघ्रगुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। मित्र के संपादक श्रीश्यामबिहारीलाल वैद्य-भूषण ने कहा है कि प्रतिवर्ष केवल ४० दिन ही इसका सेवन कर लिया जाय, तो ८० वर्ष बुढ़ापा पास न आए।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आएगा। २६ दिन में चेहरा लाल, कश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा, और ४० दिन में तो कैसा ही नपुंसक क्यों न हो, निर्बलता रुक नहीं सकती। इससे स्त्रियों का हर प्रकार का प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। पाचन-क्रिया ठीक होती है। कफ़, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नज़ला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, कभी-कभी चिनगारी-सी उड़ती देखना, गले की खसखसाहट, बार-बार थूक गिरना, बवासीर, दमा तथा हर प्रकार की कमज़ोरी तुरंत दूर कर नव-जीवन-संचार करता है। भाइयो, विश्वास करो और इसे बनाकर अवश्य सेवन करो। ऊपर का योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें, तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च-सहित ५।) में हम भेज देंगे। यदि कोई बात समझ में न आवे, तो जवाबी कार्ड डालकर उत्तर मँगा लें।

पता—वैद्यरत्न सत्यदेवजी, रूप-विलास कंपनी (रसायनशाला)

नं० ३, कंचौसी, इटावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयावृत्ति

अब कोई बेकार न रहेगा

छप गई !!

जिसके पास हुनर-प्रचारक पुस्तक है, वह एक बड़ी भारी संपत्ति का मालिक है।

(१) यदि आप धनवान् हैं, किंतु आपके सामने कोई लाभदायक व्यापार नहीं है। (२) यदि आप मध्यम श्रेणी के व्यक्ति हैं, और थोड़ी पूँजी से किसी काम को शुरू करने की स्कीम नहीं जानते। (३) यदि आपके पास पूँजी बिलकुल नहीं है और सर्वथा बेकार हैं, तो भी हमारी इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इससे उपर्युक्त तीनो श्रेणी के आदमी अपनी बेकारी मिटा सकते हैं। यह गारंटी है। पुस्तक की संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) अमेरिका के बेकार आदमी केवल एक क़लम-दवात लेकर व्यापार द्वारा केवल डाक की सहायता से किस प्रकार मालामाल बन जाते हैं, उनके क्रियात्मक अनुभव एवं सुगम उपाय, (२) अपनी वस्तु बेचने का अनुपम उपाय, (३) ग्राहकों को अपनी तरफ़ खींचने का रहस्य, (४) अत्यधिक नफ़े के व्यापार, (५) डाक द्वारा व्यापार करने के गुप्त रहस्य, (६) योरप की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (७) अमेरिका की प्रसिद्ध फ़र्म का पता, जो केवल टिकट भेजने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (८) ५०) से ५००) तक की पूँजी के कारख़ाने चलाने का विवरण, जिनसे ६०) से ५००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (९) फ़्रांस की नई-नई चीज़ें प्राप्त करने और उनकी एजेंसी लेने के लिये वहाँ की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, (१०) जर्मनी, जापान और अमेरिका की ताज़ी मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के तरीक़े इस पुस्तक में सविस्तार छापे गए हैं। इसके अतिरिक्त छ पैसे सेर साबुन बनाना, जादू का रंग, कास्ट्रायल, बर्फ़ का पौडर, हर प्रकार के जर्मनी ख़िज़ाब, जादू का साँप, बूट-पालिश, मुख देखने के दर्पण बनाना, कानपुरवाले-जैसा पान का मसाला, ख़िज़ाब साबुन, फ़ोटोग्राफ़ी के प्लेट और पेपर बनाना, ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'फ़िनसीन' पैदा करना, नक़ली शहद, हींग, कपूर, पिपरमेंट, क्रिस्टल, फ़िनायल, भाँति-भाँति के सुगंधित तेल और शर्बत बनाना, भारतवर्ष के कच्चे माल से रुपया कमाना, तैल सफ़ेद करना, क्लोरीन गैस बनाना, जिससे कपड़े बगले के पर के समान सफ़ेद निकल आते हैं, नक़ली रबर, अचार, मुरब्बे और चटनियाँ, वनस्पति-घृत बनाना, एक सेर दूध से पाव-भर मक्खन निकालना। इनके अतिरिक्त अनेक विलायती चीज़ों को स्वदेशी तैयार करना, इस पुस्तक में सिखाया गया है, और ऐसे-ऐसे प्रयोग लिखे गए हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आए। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १।), डाक-व्यय ।=)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा के नुसख़े से लाखों रुपया कमाया है! विलायती फ़र्में एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय, प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुसख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही "पेटेंट ओषधियाँ और भारतवर्ष"-नामक पुस्तक की एक प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें, संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ॥।), पोस्टेज ।=)

पता—रसायन-कार्यालय (३) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र | **सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई**

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम
हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं !

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712.

'सितारों' का अनुसरण कीजिये

आपकी प्रिय अभिनेत्री लीला देसाई कहती हैं:"खोई हुई स्फूर्तिकी पुनः प्राप्ति के लिये भारतीय चायके समान कुछ भी नहीं है"। आपने लक्ष्य किया होगा, चायकी स्फूर्तिदायिनी शक्ति पर ही वे जोर देती हैं। छाया-चित्रमें जिन्हें देखकर आप मुग्ध हो जाते हैं, उनका काम कुछ सहज नहीं है— न उनके काम करनेका समय ही बंधा हुआ है और न उन्हें समय पर विश्राम ही मिलता है। इतना कड़ा काम करते हुए, यदि वे चायका आश्रय न लें तो उनका शरीर तथा मन तरोताजा हो ही नहीं सकता।

भारतीय चाय सब 'सितारों' को प्रिय है

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

I K 12[illegible]

गंगा-फ़ाइनआर्ट प्रेस, लखनऊ में [illegible] (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

सम्पादक — दुलारेलाल भार्गव

आषाढ़ १९९६

सुधा

JULY 1939

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का मनोरंजन करनेवाला

बाल-विनोद

जनवरी का अंक वसंतांक है !

मार्च का अंक होलिकांक है !!

अगस्त का अंक कविता-अंक होगा !!!

ग्राहक बनकर कोई एक विशेषांक मुफ़्त लें

इसमें क्या है ?—सुनिए—

१. मुख-पृष्ठ पर प्रतिमास नई नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति ।
२. प्रथम पृष्ठ पर २ दुरंगे तथा १ तिरंगा चित्र ।
३. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४० पृष्ठों का मैटर ।
४. मज़ेदार बालकोपयोगी कहानियाँ और शिक्षाप्रद हास्यरस की कविताएँ ।
५. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन ।
६. देश-विदेश की अनोखी बातें ।
७. २५ इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो उठेंगे ।

वार्षिक मूल्य २॥)

आप अपने बच्चों के लिये इसे अवश्य मँगाइए !

हमारा दावा है कि बच्चों के लिये ऐसा सुंदर और अनूठा पत्र और कोई नहीं है ।

इसके संपादक हैं

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

ऑर्डर भेजने में देर मत कीजिए !

पता—मैनेजर, बाल-विनोद, कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

शुभ | लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरब-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, खुशक़िस्मती नसीब हुई; मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में खुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने खुद कहा है (देखो गीता, १६ २३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु पर हार, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

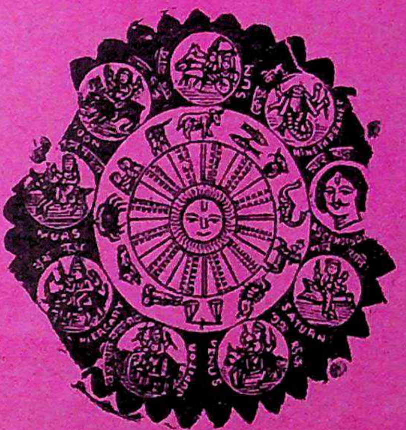

वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा तथा आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ मँगावें, मूल्य ५॥≡)। चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ३॥≡)। यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिला, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनबाद बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्‌भुत शक्तिशाली ६ रत्नें

[किसी भी ओशधि को बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम ! जिन्हें विश्वास न हो, ~) का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें]

[१] श्वेत कुष्ठ की वनौषधि

महात्मा प्रदत्त इस सफ़ेदी की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा । यदि सैकड़ों हकीमों, डॉक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा कर निराश हो चुके हों, तो इसे लगाकर आराम होवें । मू० २)

[२] संतति-निग्रह

संतान-निग्रह की यह अचूक दवा है । दवा का व्यवहार बंद कर दें, गर्भ-धारण हो जायगा । प्रति-मास तीन-चार दिन व्यवहार करना पड़ता है । वर्ष-भर की दवा का मू० २) ; दूसरी दवा, जो जीवन-भर के लिये वंध्या बनाती है, मू० २) ; दोनो में किसी दवा का व्यवहार स्वास्थ्य में हानि नहीं करता है ।

[३] स्तंभक वटी

एक गोली शाम को खा लें, तो इसके अद्भुत चमत्कार को देखें । एक घंटे तक स्तंभन कर ग़ज़ब ढा देगी । मू० १६ गोलियाँ १)

[४] बहरापन-नाशक

यह कर्ण-रोग की अद्भुत दवा है, जो नया व पुराना-से-पुराना बहरापन, आवाज़ की कमी, पीब आना, कान की सन-सन आवाज़ आदि सदा के लिये आराम करता है । बहरा आदमी भी साफ़-साफ़ सुनने लगता है । मू० २)

[५] अर्श-नाशक

इस दवा से अंदरूनी, बाहरी, ख़ूनी, बादी, नई व पुरानी बवासीर जल्द आराम होती है । ख़ून गिरना, दर्द, जलन, खुजली, टीस, सूजन जल्द आराम कर पाख़ाना साफ़ लाती है । मू० खाने की दवा २), लगाने की १)

[६] उपदंश-नाशक

इस ओषधि से गुप्त इंद्रिय, बदन का ज़ख़्म, फुलना, जलन, पीब बहना, ख़ून आना, बदन के चकत्ते, धब्बे, गठिया को आराम कर नवजीवन प्रदान करता है । खाने की दवा मू० २), लगाने की १)

[७] सूज़ाक की दवा

यह अधमरे को नया जीवन प्रदान कर नई या पुरानी सूज़ाक (गनोरिया), कड़क, जलन, पीब बहना, फुलना, बूँद-बूँद पेशाब आना, दर्द को एक दिन में फ़ायदा करता है । मू० २)

[८] महासुगंधित काया-कल्प तेल

इस तेल के मालिश से बदन की बदबू दूर हो जाती है । इससे ७० वर्ष का बूढ़ा नौजवान, बलशाली, वीर्यवान्, स्त्रियों का प्यारा हो जाता है । बाँझ स्त्री को गर्भ रहता है । कोढ़ को नाशता है । कुरूप, कुढंगा भी सुंदर, सुडौल हो जाता है । १०० वर्ष की उम्र हो जाती है । मू० ३)

[९] विष-नाशक जड़ी

सिर्फ़ इसे दिखाने से ही भयानक-से-भयानक बिच्छू, बिरनी (हड्डा), मधुमक्खी का विष तुरंत आराम हो जाता है, न सुँघाना, न लगाना, न छुलाना, न खिलाना पड़ता, लाखों को आराम कीजिए । सैकड़ों वर्ष पड़ा रहे, गुण में ज़रा कमी नहीं आती । जब तक इसके गुण को न देखा जाय, विश्वास नहीं होता । मू० १)

[१०] ख़िज़ाब को छोड़ो

इस तेल से बाल का पकना रुककर और बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे, तो दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें । एकाध बाल पका हो, तो ~); इससे अधिक पका हो, तो ३॥) या कुल पका हो, तो ५) का तेल मँगा लें ।

वैद्यराज अखिलकिशोरराम, नं० ४६, पो० कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. अश्रुमाला (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल	४८१
२. विपिन-विभूति (कविता)—[लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४८२
३. ग्राम-उद्योग-धंधे और हमारी ग़रीबी—[लेखक, श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी	४८४
४. आख़िर धर्म है क्या ?—[लेखक, श्रीकिशोरीदास वाजपेयी	४८८
५. पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता (आलोचना)—[लेखक, श्रीविश्वमित्र बी० ए०	४९३

बल व वीर्य बढ़ानेवाली

मदनमंजरी

ये गोलियाँ पाचन-शक्ति को सुधारकर दस्त साफ़ लाती हैं, रक्त को शुद्ध करके बढ़ाती हैं, और धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, अशक्ति, शिथिलता वग़ैरह को नष्ट करके बरबाद जीवन को पुनः हरा-भरा बना देती हैं। फ़ी डि० १) एक रुपया

राजवैद्य नारायणजी-केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ—निगम मेडिकल-हॉल, अमीनाबाद-रोड
फ़तेहगंज

बनारस—राधेलाल ऍंड संस, चौक

पे लि के न

Pelican

हरदिलपसंद फ़ौंटेन पेन

इसमें एक ठोस वॅलकेनाइट पंप लगाया गया है, जो कभी ख़राब नहीं होता। इसमें रबर की थली नहीं है।

इसमें स्याही भरने की जगह ऐसी अच्छी बनाई गई है कि स्याही चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, न तो इसमें से स्याही टपकती है, और न धब्बे ही पड़ते हैं।

यह सरलता से खोली जा

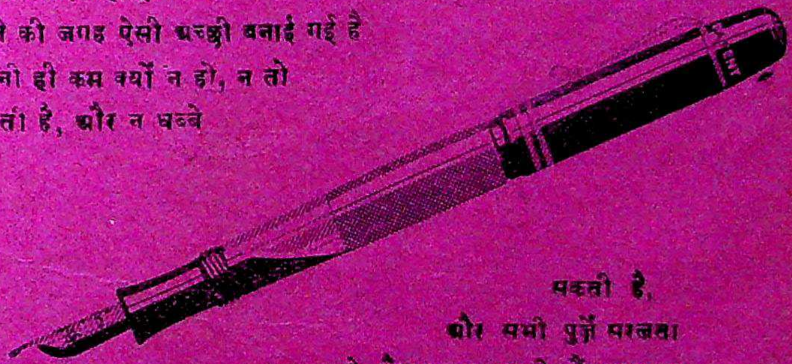

सकती है, और सभी पुर्ज़े सरलता से बैठाए जा सकते हैं। मरम्मत का ख़र्च एक कौड़ी भी नहीं पड़ता, क्योंकि इसकी बनावट बिलकुल चुस्त रक्खी गई है।

कोई भी निब लग सकता है। इससे निकम्मा या ग़ैर-पसंद निब निकालकर काम का और अच्छा निब लगाया जा सकता है। साइज़ तो सिर्फ़ एक ही है, फिर भी मनचाहा निब लग सकता है।

स्याही की सावधानी रक्खी जा सकती है, क्योंकि इसमें स्याही का कोठा है— पारदर्शक

गौथेर वागनेर हानोवर

Pelican

सभी स्टेशनर्स की दूकानों पर मिलती है।

लोकल स्टॉकिस्ट—कौशला जेनरल ट्रेडिंग कंपनी, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. बोर्नियो का दैनिक जीवन (सचित्र)— पृष्ठ
[लेखिका, श्रीमती प्रभावतीदेवी ... ५०३
७. उपहार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०... ... ... ५०७
८. झुकि आए बदरवा...(कहानी)—[लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीचंद्र वाजपेयी 'चंद्र' ५१०
९. आगामी महायुद्ध—[लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए० ... ५१५
१०. शमा-परवाने (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' ... ५२०
११. हिंदी-साहित्य की कजलियाँ—[लेखक, श्रीदिनेशनारायण उपाध्याय साहित्यरत्न ५२१
१२. हिरण्यका (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत विजयबहादुर श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी० ... ... ५२६
१३. न्याय और न्याय-पद्धति—[लेखक, श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ५३४

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

*** वैद्यों का सच्चा सहायक ***

सुप्रसिद्ध चिकित्सा-चंद्रोदय के लेखक मथुरा के—

बाबू हरिदासजी वैद्य

द्वारा संपादित; वात-रोगों से दुःखी जनता को जीवन-दान देनेवाला—

वात-रोगांक

पृष्ठ-संख्या ३२०, सजिल्द मूल्य २)

'धन्वंतरि' आयुर्वेद का सबसे सस्ता, सबसे बढ़िया, सचित्र मासिक पत्र है। इस वर्ष हज़ारों रुपया व्यय कर यह 'वात-रोगांक' विशेषांक निकाला है। इसमें वात-रोगों पर भारत के प्रसिद्ध २६७ वैद्य-डॉक्टरों की कभी बेकार न जानेवाली चिकित्सा और हज़ारों नुसखे दिए हैं। बाबू हरिदासजी का एक लंबा और अनुभव-पूर्ण लेख है। चित्रों की तो भरमार है।

३≡) मनीआर्डर

द्वारा धन्वंतरि का वार्षिक चंदा भेजने से 'वात-रोगांक' मुफ़्त मिलेगा, और साल-भर तक प्रतिमास ७२-७२ पृष्ठ का सचित्र धन्वंतरि भेजा जायगा। नमूना मुफ़्त मँगावें।

पता—'धन्वंतरि', विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ
१४. श्रोव्हरा—लेखिका, श्रीमती विमल लेले ... ५४०
१५. रजत-रजनि (कविता)—[लेखक, श्रीयुत ब्योहार राजेंद्रसिंह ५४६
१६. सुधा-चित्रावली ५४७
१७. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत लक्ष्मी-नारायण-दीनदयाल अवस्थी, श्रीमती लक्ष्मीदेवी शुक्ल, श्रीयुत सीताराम चतुर्वेदी एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, बी० टी०, साहित्याचार्य, प्रो० विश्वनाथप्रसाद एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, श्रीयुत केदार, कुमारी नीता मित्रा 'कनक', श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० और श्रीयुत विद्याधर पाठक बी० ए० ... ... ५५१
१८. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'उमेश', श्रीयुत 'स्मृति', श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा और श्रीयुत 'अरुण' ५६३
१९. कुसुम ५६६
२०. धारा ५६७

पागलपन

तथा मूर्छा-रोग की दवा

यह दवा नहीं, जंगली जड़ी है। यदि आप अनेकों दवा कराकर निराश हो चुके हैं, तो भी इसकी परीक्षा करें। ८-१० खूराक से पूरा लाभ मालूम होगा। बेफ़ायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस।

खूराक पूरी मात्रा मू० ५) रु०, २० मात्रा ३) रु०, १० मात्रा २) रु०। पो० पै० माफ़।

प्राप्ति-स्थान—

विहार-एजेंसी ऐंड ट्रेडिंग हाउस
कदमकुआँ, पटना

१० घड़ियाँ सिर्फ़ ३॥=) में

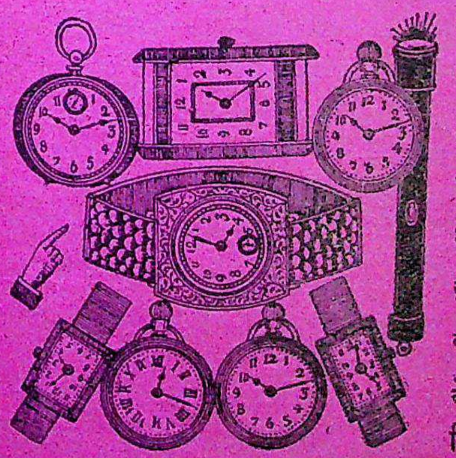

सात डमी रिस्ट-वाच, दो डमी पाकिट-वाच और एक अदद मजबूत मशीनरी का सच्चा वक्त देनेवाला जर्मनी टाइमपीस चाबी ३० घंटा, गारंटी १२ साल, ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर विलायत से बड़ी भारी संख्या में मँगवाई हैं। सिर्फ़ दस हज़ार घड़ियाँ इस रियायती क़ीमत पर बेचने का फ़ैसला किया है। इसलिये जल्दी करें, वरना यह मौक़ा हाथ से निकल जायगा। घड़ियों के साथ एक फ़ौंटेनपेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब, एक असली ठंडी ऐनक, एक खूबसूरत मोतियों का हार मुफ़्त दिया जायगा। महसूल-डाक व पैकिंग अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस।

मिलने का पता—

जर्मन वाच कंपनी, पोस्ट-बक्स नं० २७, (S. M. L.) अमृतसर
AMRITSAR (India)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. प्रतीक्षा—[चित्रकार, श्रीयुत पी० आर० राय ४८१

(ख) दुरंगे

२. श्रीविपिनविहारीजी वर्मा ४२०
३. लखनऊ-रेडियो-स्टेशन पर कवि-सम्मेलन ४२१

(ग) सादे

४. श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी ४८४
५. डयाक-दल की स्वस्थ युवती... ... ५०३
६. बोर्नियो का 'क्लेमेंटन' ५०४
७. केन्या-दल की नर्तकी का नाच ... ५०५
८. गोदना गोदाए बोर्नियो-निवासी ... ५०६
९. मिस बी० संजीवी बालिगा बी० ए०... ५४७
१०. मिस मीरा बेन ५४७
११. पुरस्कृत छात्राएँ ५४८
१२. 'मिस हू वाज़ ए पाइपर'-नाटक का एक दृश्य ५४८
१३. पं० जवाहरलाल नेहरू ५४९
१४. सेठ जमनालालजी बजाज़ ५४९
१५. कलकत्ते की हॉकी-टीम की खिलाड़िनें ... ५५०
१६. डॉक्टर कैलाशनाथजी काटजू ... ५७६

हज़ारों निकम्मों को जवाँमर्द बनानेवाला

मदनमस्त-तिला (रजिस्टर्ड)

युवावस्था की भूलों के कारण उत्पन्न होनेवाली गुप्तेंद्रिय की सुस्ती, ढीलापन, नसों की हीनता तथा बाँकापन को दूर कर इंद्रिय को दृढ़ बनाता है। परीक्षा अवश्य कीजिए। मूल्य बड़ी शीशी २), छोटी शीशी १); डाक-ख़र्च अलग। 'जीवन-सुधार'-नामक पुस्तक मुफ़्त मँगाइए।

पता—गो० पं० रामलाल वैद्यशास्त्री

जबलपुर (सी० पी०)

बच्चेवालो!

बालकों को दाँत निकलने के समय हर कष्ट से बचाकर आरोग्य रखने के लिये

बालदंत (रजिस्टर्ड)

का सेवन कराओ। १६ वर्ष का परीक्षित है।

मूल्य बड़ी शीशी १)—छोटी शीशी ।)

डाक-महसूल—तीन शीशी तक ।)

डॉक्टर आर० एस० गुप्त

विष्णुपुरी (२), अलीगढ़

जर्मन पिस्तौल

इसकी सूरत बड़ी भयानक है, और इसकी गरजती हुई आवाज़ से बड़े-से-बड़ा बदमाश भाग जाता है।

लाइसेंस की जरूरत नहीं

असली के मानिंद आवाज़ करता है। १० शाट्स सिलसिलेवार जल्दी-जल्दी होते हैं। क़ीमत मय शाट्स के ३) सिर्फ़, डाक-ख़र्च अलग, अतिरिक्त शाट्स १) में १००

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स—

मार्शल ब्रादर्स

बच्छोवाली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारककम्पनी मथुरा की दवाइयां

सुधासिन्धु

कफ़ खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि की स्वादिष्ट सुगंधित दवा की० ।।)

दद्रुगजकेसरी

दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)

बालसुधा

दुबले, और कमज़ोर बच्चों को ताकतवर बनानेवाली मीठी दवा. की० ।।।)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आगे आने-वाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियां इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर ॥) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

वक़्त की चीज़ !

वक़्त की चीज़ !!

अछूतोद्धार

या

समाज

(नाटक)

सामाजिक अत्याचार की करुण कथा। अछूतों की दर्दनाक दशा और उन पर किए जाने वाले असहनीय व्यवहार। यदि यह सब आप जानना चाहते हैं, तो इस नाटक को पढ़िए, और मँगाकर अपने नगर और क़सबे में खेलिए। यदि आप सच्चे समाज-सुधारक हैं, अछूतों के उद्धारक हैं, तो इस पुस्तक की एक प्रति अपने पास अवश्य रखिए। हिंदी-संसार के लिये बिलकुल नई चीज़। मूल्य ।।।=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिदायक सिद्ध यंत्र—जिस सुंदरी को आप चाहते हैं, वह पत्थरहृदया क्यों न हो, इस शक्तिशाली यंत्र द्वारा एक क्षण में आपके पास आ जायगी। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबा २)

लक्ष्मी-यंत्र—यह व्यवसाय में उन्नति, मुक़द्दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में पास, नवग्रहों की शांति और सौभाग्यवान् बनाता है। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबे का २)। झूठा साबित करने पर ५५०) इनाम!

श्रीमहामुनि-आश्रम नं० २१०, पोस्ट कतरीसराय (गया)

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ास्फ़ोरस क्रीम

गुह्यांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख़्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है। ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है। न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का ख़याल। अधिक प्रशंसा व्यर्थ। यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी। मूल्य केवल २); डाक-महसूल ।=)

पता——मैनेजर ग्लोब-फ़ार्मेसी, ग्लोब-बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों-सहित

द्वितीय बार छपकर तैयार है

यदि आप बिना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है, यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा-लाटरी वग़ैरह से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों, तो आज ही एक प्रति हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान बिना किसी गुरु की मदद के आपको भले प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य, देशीय समग्र सामुद्रिक शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में, रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित भले प्रकार वर्णित है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी न छपी होने से धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करो, पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रह गई हैं, फिर हाथ न आवेंगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी; मूल्य सिर्फ़ ४) रुपए हैं। डाक-महसूल ।।)। अलग है।

पता —मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी-प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम [सी० आई०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रति संख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १२	आषाढ़, ३१६ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)—	संख्या ६
खंड २	जुलाई, १९३९	पूर्ण संख्या १५६

अश्रु-माला

[श्रीदुलारेलाल]

आँसु - माल तुव पहिरिहै
किमि तन विरहा - ऐन ?
पीर - सिंधु उर उठत लखि
नीर - बिंदु तुव नैन !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिन-विभूति

[श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

कहाँ हरित पट प्रकृति-गात का है बहु कांत दिखाता,
कहाँ थिरकती हरियाली का घूँघट है खुल पाता ?
कहाँ उठा शिर विटपावलि है नभ से बातें करती ;
कहाँ माँग अपनी लतिकाएँ मोती से हैं भरती ? १ ॥

कोटि-कोटि कीचक हैं अपनी मुरली कहाँ बजाते ;
कहाँ विविध गायक तरु गा-गा हैं बहु गीत सुनाते ?
ले बहु सूखे फल समीर है कहाँ सुवाद्य बजाता ;
मोरों का दल कहाँ मंजुतम नर्तन है कर पाता ? २ ॥

ऐसी कुंजें कहाँ, जहाँ दृग कुंठित हैं हो जाते,
जिसकी छाया को सहस्रकर कभी नहीं छू पाते ?
कहाँ विलसती हरियाली में कुसुमावलि है वैसी,
नभ-नीलिमा तारकावलि में छवि मिलती है जैसी ? ३ ॥

कहाँ उठे हैं विपुल महातरु श्यामल महि में ऐसे,
उठती हैं उत्ताल तरंगें तोयधि-तन में जैसे ?
धानी साड़ी धरा-सुंदरी को है कौन पिन्हाती ;
कोसों तक तृण-राजि कहाँ पर है राजती दिखाती ? ४ ॥

विपुल कुसुम-कुल के गुच्छों से जो मंजुल हैं बनते,
कहाँ बेलियों के विभवों से हैं वितान बहु तनते ?
कहाँ वन-श्री की लेती हैं पुलकित बनी बलाएँ—
नीली-लाल-हरित दलवाली लाखों ललित लताएँ ? ५ ॥

रंजित बनती हैं रजनी की जिनसे तामस घड़ियाँ,
दीपक-जैसी कहाँ जगमगाती मिलती हैं जड़ियाँ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लता - बेलि - तरु - चय पत्तों में हैं प्रसून से खिलते,
पावस में अनंत जुगुनू हैं कहाँ चमकते मिलते ? ६ ॥

श्याम रंग में रँगे, भूमते, बहु क्रीड़ाएँ करते,
कहाँ करोड़ों भौंरे हैं सब ओर भाँवरें भरते ?
रंग-बिरंगी, बड़ी छबीली, कुसुम - मंजु - रस - माती
कहाँ असंख्य तितलियाँ फिरती हैं रंगतें दिखाती ? ७ ॥

चित्र-विचित्र परों से अपने विचित्रता फैलाते,
कभी मेदिनी, कभी डालियों पर बैठे दिखलाते,
हो कलोल - रत कलित कंठ से गीत मनोहर गाते,
झुंड बाँधकर कहाँ करोड़ों खग हैं आते - जाते ? ८ ॥

कभी अति चपल, मृदुलकाय शावक - समूह से घिरते,
कभी चौंकते, कभी उछलते, कभी कूदते फिरते,
भोले-भाले भाव दृगों में भर, कोमल तृण चरते,
कहाँ यूथ-के-यूथ मिले मृग भूरि छलाँगें भरते ? ६ ॥

उठती हैं मानव-मानस में विविध विनोद-तरंगें ;
तृप्ति लाभ करती हैं कितनी उर में उठी उमंगें ।
दृष्टि मिले का फल पाते हैं बहु विमुग्ध-दृग होके ;
बनती है अनुभूति सहचरी विपिन-विभूति विलोके ॥ १० ॥

कल्पलता

लेखक, श्रीपं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'। प्रस्तुत पुस्तक खड़ी बोली में लिखी गई है। यह मुक्तक रचनाओं का सुंदर संग्रह है। मुहाविरेदार, चलती हुई खड़ी बोली का उपयुक्त उपयोग काव्य-क्षेत्र में किस प्रकार हो सकता है, यह इस पुस्तक से ज्ञात हो जाता है। छंद भी बड़े ही सुंदर, सरल और सुगेय चुने गए हैं। ये हृदय-हारिणी, मनोहर कविताएँ अवश्य पढ़िए।

मूल्य १॥), सजिल्द २) गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-उद्योग-धंधे और हमारी ग़रीबी

[श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी]

आजकल दुनिया में रोटी का सवाल हल करना कितना कठिन हो रहा है ! जिस देश पर नज़र दौड़ाइए, वही इस मसले को हल करने में बेहद परेशान है। जिस देश में कल-कारख़ानों की तादाद ज़रूरत से ज़्यादा है, जहाँ वैज्ञानिक ढंग से खेती होती है, वहाँ भी हज़ारों नौजवान बेकारों के गिरोह में नाम लिखाकर अपनी तक़दीर पर आँसू बहा रहे हैं ! अमेरिका, इँगलैंड, इटली, जर्मनी, जापान आदि सभी रोज़गारी मुल्क इस पिशाचिनी के पीछे बेतरह हैरान हैं। जिन देशों में लाखों मन ग़ल्ला महँगी लाने के लिये हर साल जला दिया जाता है, जहाँ हज़ारों मन दूध, मक्खन और मेवा नदियों में डुबो दी जाती है, वहाँ भी मनुष्यों की एक बहुत बड़ी तादाद भूख की ज्वाला से तड़पती नज़र आती है ! ग़रीबी और बेकारी आम जनता में ग़रीब की संतान के समान बढ़ती ही जा रही है। ग़रीबी का मसला अब तो एक तरह से पहेली हो रहा है।

श्रीयुत रामचंद्र त्रिवेदी

हमारे देश की दरिद्रता पर अर्थ-शास्त्रियों ने बहुत खोज की, एड़ी से चोटी तक का पसीना एक कर डाला, पर किसी नतीजे पर न पहुँच सके। कुछ लोगों का कहना है, दरिद्रता का कारण भारत की बढ़ती हुई आबादी है। परंतु यह तो हमें सत्यानास की ओर ले जानेवालों की एक दलील है। जब से इस देश में अँगरेज़ों का पैर आया, तब से हमारी आबादी में कोई बहुत बड़ी तरक़्क़ी नहीं हुई। अर्थ-शास्त्रियों ने क़बूल किया है कि फ़्रांस एक ऐसा देश है, जिसकी आबादी ठहर गई है ; परंतु हिंदोस्तान की आबादी में जो बढ़ती पचास वर्षों में हुई है, वह फ़्रांस की बढ़ती से ज़्यादा नहीं, बल्कि बहुत कम है। कुमार अप्पा ने फ़्रांस, इँगलिस्तान और हिंदोस्तान का मुक़ाबला करते हुए बताया है कि पचास वर्षों में भारत की आबादी जहाँ ५·१ बढ़ी, वहाँ फ़्रांस की ५·७ और इँगलिस्तान तथा वेल्स की ६·८, अर्थात् भारत की आबादी की बढ़ती फ़्रांस के बराबर भी न हो सकी। फिर आबादी की बढ़ती दरिद्रता का कारण कैसे मानी जाय ?

दूसरी तरह के लोगों का कहना है कि सारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़मीन सरकार की हो जाय, सारे कल-कारख़ानों पर सरकार का अधिकार रहे, अर्थात् उत्पादन पर सरकार का अधिकार रहे। देश की जनता अपने योग्यतानुसार काम करे, और वेतन पावे। बच्चे, बुड्ढे और काम न करने लायक़ लोगों को सरकार की तरफ़ से पेंशन का बंदोबस्त रहे, कल-कारख़ानों की ख़ूब तरक़्क़ी हो, खेती वैज्ञानिक ढंग से हो। ख़ास-ख़ास वजूहात छोड़कर ग्राम जनता को एक नागरिक का पूर्ण अधिकार रहे। जनता की ग़रीबी और बेकारी आप-ही-आप दूर हो जायगी। उनका कहना है, ग़रीबी के एकमात्र कारण पूँजीवादी ही हैं। एक तरफ़ लाखों-करोड़ों रुपए मिल-मालिकों की संदूक़ या बैंकों की शोभा बढ़ा रहे हैं, दूसरी तरफ़ हज़ारों ग़रीब एक टुकड़ा रोटी के लिये तरसते नज़र आ रहे हैं। सारे किसानों के ख़ून की कमाई मिल-मालिकों, ज़मींदारों और साहूकारों के हवाले कर दी जाती है। उनका कहना है, जब तक उत्पादन की चीज़ों की खपत नहीं होती, तब तक औद्योगिक उन्नति हो ही नहीं सकती। जब तक उद्योगवाद अपने यौवन पर नहीं आ जाता, तब तक ग़रीबी का मसला हल नहीं हो सकता। पूँजीवादी ही औद्योगिक उन्नति के रास्ते में रोड़े हैं, उन्हें मिटा दिया जाय। मज़दूरों को उचित रुपए मिलने लगें, तो उनमें से सभी बाज़ार से उतनी ही चीज़ें ख़रीदने लगें, जितनी एक नागरिक के परिवार के लिये ज़रूरी हैं। बाज़ार में चीज़ों की माँग काफ़ी हो जाय, ग़रीबी का मसला आप-ही-आप हल हो जाय। एक तरफ़ लाखों मन ग़ल्ला जला दिया जाता है, हज़ारों मन दूध, मक्खन और मेवा नदियों में डुबो दी जाती है। इसके जवाबदेह भी पूँजीवादी, साम्राज्यवादी, नात्सी या फ़ासिस्ट ही हैं। जिस मज़दूर को दस रुपए मज़दूरी मिलनी चाहिए, उसे एक रुपया देकर बाक़ी सब रुपए पूँजीवादी अपने ही पास रखते हैं। बेचारे मज़दूरों को पेट-भर खाने के लिये भी रुपए नहीं मिलते, तो वे बाज़ार की चीज़ें कैसे ख़रीदें ? इधर मेवा और नाज आदि न बिकने के कारण जला दिए जाते हैं, अतः पूँजीवाद मिटा देने से इन सबों की माँग भी कई-गुना बढ़ जाय, जलाने के बदले अधिक परिमाण में तैयार करने की ज़रूरत पड़ जाय।

तीसरी तरह के लोगों का कहना है कि समाजवाद से ग़रीबी तो दूर हो सकती है, पर समाजवाद के सिद्धांत व्यावहारिक नहीं। इतनी पुरानी कल्पना अभी तक किसी भी देश में कार्य-रूप में न आ सकी। बहुत दिन पहले यूनान के तत्त्ववेत्ताओं ने आदर्श राज्य की योजनाएँ बनाईं। उसके बाद आरंभ-काल के ईसाई लोगों ने साम्यवादी समूह स्थापित किए। सैकड़ों वर्ष पीछे जब योरप में सुधार-आंदोलन शुरू हुआ, तो बड़े-बड़े साम्यवादी मंडल क़ायम हुए। इँगलैंड और फ़्रांस की राज्य-क्रांतियों के समय इन्हीं आदर्शों का पुनरुद्धार हुआ। अंत में, १८८४ में, फ़्रांसीसी विप्लव हुआ। उसके प्रेरक भी बहुत कुछ वे ही समाजवादी आदर्श थे। फिर भी उनकी योजनाएँ पूरी होने में कितनी कसर रही! वे कहते हैं, मानव-स्वभाव और उनके ज्ञान में अवश्य कोई मौलिक दोष है। उनका कहना है, रूस का साम्यवादी राज्य भी समाजवाद नहीं। समाजवादियों का कहना है, जब तक बड़े-बड़े साम्राज्य और पूँजीवाद क़ायम हैं, जब तक अधिकांश भू-मंडल पूँजीवाद और सेनावाद के अत्याचारों से पीड़ित है, तब तक पूर्ण समाजवाद कहीं व्यवहार में नहीं आ सकता। रूस के साम्यवाद को तो अधिक-से-अधिक राजकीय समाजवाद (State Socialism) ही कह सकते हैं। फिर भी समाज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादियों का यह कहना है कि समाजवाद कल्पना नहीं, पूर्णतः व्यवहार-योग्य है। समय आ रहा है, जब संसार-भर में व्यक्तिगत पूँजीवाद और उसके साथी सेनावाद तथा साम्राज्यवाद न रहेंगे, सर्वत्र समाजवाद ही होगा। वे हमें आज के फ़ासिस्ट इटली, नाज़ीवादी जर्मनी और फ्रांस की ओर संकेत करते हुए समाजवाद से निराश हो जाने को कहते हैं। ग़रीबी के संबंध में उनका कहना है, गाँव-गाँव में गाँव-उद्योग-धंधों का प्रचार कर दिया जाय, हमारी ग़रीबी बहुत हद तक दूर हो जायगी। कल-कारख़ानों के संबंध में उनका कहना है, किसी भी बड़े-से-बड़े देश में इतनी ताक़त नहीं कि औद्योगिक उन्नति कर चुकने पर अपने यहाँ की बनी सारी चीज़ें ख़रीद सके। इँगलैंड-ऐसे छोटे मुल्क को अपनी चीज़ों की खपत के लिये हिंदोस्तान, आफ्रिका, मिस्र आदि देशों को ग़ुलाम बनाए रखने की ज़रूरत पड़ती है, क्योंकि जितना माल वह मशीनों से पैदा करता है, अपने देश में खपा नहीं सकता। यही हालत हम इटली, जर्मनी और जापान की भी पाते हैं। औद्योगिक मुल्क होने ही के कारण, या यों कहें कि अपनी चीज़ों की खपत के लिये ही, उन्हें आज मनुष्यता को तिलांजलि देनी पड़ रही है। आज हम जो योरप में अशांति के बादल देख रहे हैं, उसके पीछे चीज़ों की खपत की ज़बरदस्त भूख ही तो है। उद्योगीकरण के विरुद्ध उन लोगों की एक दूसरी बहुत बड़ी दलील है कि जिस काम को २०० आदमी एक घंटे में करते हैं, उसे आधुनिक मशीन की सहायता से एक ही आदमी कर लेता है। इस तरह उद्योगवाद एक को काम देकर १९९ को बेकार बना देता है।

साफ़ शब्दों में उनका कहना है कि उद्योग-धंधे ग़रीबी और बेकारी दूर तो करेंगे, पर बड़े पैमाने के उद्योग-धंधे नहीं, ग्राम-उद्योग-धंधे। और, ग्राम-उद्योग-धंधों की उन्नति होने पर न तो किसी देश को उसे ग़ुलाम बनाए रखने की ज़रूरत पड़ेगी, और न आबादी की एक बहुत बड़ी तादाद के लोगों को बेकार रहना पड़ेगा।

समाजवादी राष्ट्र क़ायम होना कल्पना-जगत् की बात हो या व्यावहारिक संसार की, इस मुबाहसे से हमें कोई मतलब नहीं। यह एक स्वतंत्र विषय है। हाँ, इस बात से कि उद्योग-धंधे के विकास से ही देश की ग़रीबी दूर हो सकती है, शायद किसी भी दल को मतभेद नहीं। मतभेद इस बात पर है कि ग्राम-उद्योग-धंधे की तरक़्क़ी से हमारी ग़रीबी दूर होगी या बड़े पैमाने के उद्योग-धंधे से। यहाँ हमें यह बात क़बूल करनी पड़ेगी कि हमारे देश की परिस्थिति का मुक़ाबला योरप और अमेरिका के देशों से नहीं किया जा सकता। हमारे देश में शहरों में रहनेवाले केवल छ करोड़ हैं, और देहात में तीस करोड़। यह तीस करोड़ जनता यदि अन्न न पैदा करे, रुई न उपजाए, तो अकड़कर चलनेवाले शहरी बाबुओं की हवा बंद हो जाय। शहर की जनता अन्न और कपड़े तक के लिये अनादर की निगाह से देखे जानेवाले देहातियों की मुहताज है। आधुनिक कल-कारख़ाने बारीक-से-बारीक कपड़े और बढ़िया-से-बढ़िया पकवान-मिठाइयाँ तैयार कर सकते हैं, पर तभी तक, जब तक हिंदोस्तान के देहाती रुई और ग़ल्ला पैदा कर उनके पास भेजते हैं। पर देहात की जनता की हालत वैसी नहीं, वह शहर की सहायता के बिना भी अपना जीवन सुखमय, इतना सुखमय, जितना एक मनुष्य के लिये ज़रूरी है, बना सकती है। हमें देखना है कि हम अपने देहातियों का जीवन, उन्हीं की सहायता से, बिना बड़े पैमाने के उद्योग-धंधे के, अमेरिका, डेन्मार्क और रूस के किसानों के समान, सुखी कर सकते हैं या नहीं। हमें उनके भोजन की समस्या हल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिये रोटी, दाल, घी और दूध की, शरीर ढकने के लिये कपड़े की, रहने के लिये साफ़-सुथरे, हवादार घर की, सभ्यता के लिये शिक्षा की, उनके पढ़ने या ज्ञान-वृद्धि के लिये कुछ सुंदर, शिक्षा-प्रद और मनबहलाऊ पुस्तकों तथा साधारण पत्रों की, उनके मनोरंजन के लिये रेडियो आदि की और दुर्घटना से उनके परिवार की सहायता के लिये जीवन-बीमा की ज़रूरत है।

ग़ौर करने से मालूम होता है कि यदि हम ग्राम-उद्योग-धंधे का अच्छी तरह संगठन करें, तो उसकी आमदनी से हमारे देहाती भाई ऊपर के पैमाने पर आनंद के साथ ज़िंदगी बिता सकते हैं, जिससे बेहतर जीवन संसार के किसी भी देश के किसान का नहीं। और, साथ ही उन्हें किसी भी ज़रूरी चीज़ के लिये दूसरे देश का मुहताज नहीं रहना पड़ेगा। उदाहरण के लिये किसी एक हलक़े को ले लीजिए, जिसमें ४० गाँव हों। प्रत्येक गाँव में ४०० आदमी हों, तो कुल सोलह हज़ार आदमी हुए। यदि प्रत्येक आदमी के लिये ८ रुपए साल कपड़े में ख़र्च किया जाय, तो एक लाख अट्ठाईस हज़ार के कपड़े ख़र्च होते हैं *। यदि रोज़ ३५५॥) के कपड़े तैयार हों, तो ३६० दिन में १२ लाख सात हज़ार नौ सौ अस्सी के होंगे। और, यदि एक आदमी को ८ छटाक दूध, १ छटाक घी, ½ छटाक तेल, १ सेर आटा, ४ छटाक दाल और ८ छटाक फल दिया जाय, तो उस हलक़े में ५० मन घी, २०० मन तरकारी, २५ मन तेल, २०० मन दूध, ४०० मन आटा, १०० मन दाल और २०० मन फल की ज़रूरत पड़ेगी। इस तरह आप नीचे दिए हुए कोष्ठक में देखेंगे कि केवल १६ हज़ार आदमियों के लिये उचित भोजन और खाने के प्रबंध में १२,१३६ आदमियों की ज़रूरत पड़ेगी। परंतु इन्हीं चीज़ों को यदि हम मशीन द्वारा तैयार करें, तो १०० आदमी से अधिक की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इस तरह ग्राम-उद्योग-धंधा कम मज़दूरी तो देता है, परंतु बहुत काफ़ी लोगों की परवरिश करता है।

नाम पैदावार	दाम	कितने मज़दूर लगे?
दूध	१,०००)	२,०००
घी	२,०००)	४,०००
तरकारी	३००)	६००
आटा	१,६००)	३,२००
दाल	४००)	८००
तेल	६२॥)	१२५
हल्दी, मसाला वग़ैरह	१००)	२००
कपड़ा	३५५॥)	७११
फल	१,०००)	५००

इस कोष्ठक से विदित होगा कि यदि सरकार द्वारा बाज़ार पर नियंत्रण कर दिया जाय, तो केवल भोजन और कपड़े के प्रबंध में बहुत थोड़ी पूँजी से १२,१३१ आदमियों की परवरिश हो जायगी। बाक़ी चार हज़ार आदमियों में जितने काम करने योग्य हों, वे सामूहिक खेती करके, चर्ख़ा-कर्घा चलाकर, फल बोकर, बाग़बानी करके, स्याही-साबुन बनाकर, दरी, कंबल बीनकर, चूड़ी बनाकर, लाख की खेती करके, गुलूबंद, मोज़े, स्वेटर बनाकर, लोहार, बढ़ई आदि का काम करके, पशु, मधु-मक्खी तथा रेशम के कीड़े पालकर या और तरह-तरह के गाँव-उद्योग-धंधों का, जिनका छोटे पैमाने पर होना संभव हो, संगठन करके अपना जीवन सुखी बना सकते हैं।

* २ कुरता १), ४ धोती ४), तौलिया ।), २ टोपी ।), अन्य कपड़े २) = ८) । यह आँकड़ा एक अनुमान है, विशेष व्यक्ति पर घट-बढ़ सकता है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो इँगलैंड, अमेरिका, जापान और जर्मनी भी ग्राम-उद्योग-धंधों को तरजीह देने लगे हैं। उनका कहना है, बड़े-बड़े शहरों में बड़े पैमाने के उद्योग-धंधे अब सुरक्षित नहीं। गोली, बम और बारूद का यह युग यदि चाहे, तो किसी देश के उद्योग-धंधों को बात-की-बात में उड़ाकर बरबाद कर सकता है। यदि फ्रांस इँगलैंड से गोली-बारूद की शक्ति में बढ़ा-चढ़ा है, तो वह लंकाशायर के बड़े-बड़े उद्योग-धंधों को जब चाहेगा, बात-की-बात में मिटा देगा। पर गाँवों में फैले, छोटे पैमाने के उद्योग-धंधों को मिटाने में उसके बमों का दिवाला निकल जायगा!

हमारे देश में गाँव-उद्योग-धंधे के सभी साधन मौजूद हैं। यदि हम चाहें, तो थोड़ी-सी मेहनत से, दो-चार वर्ष के अंदर-अंदर, गाँव-उद्योग-धंधे का सुंदर संगठन कर आदर्श देहात की रचना कर सकते हैं। दूसरी तरफ़ यदि हम बड़े-बड़े उद्योग-धंधों का संगठन करना चाहें, तो हमें फ़िलहाल करोड़ों रुपए की ज़रूरत पड़ेगी। विदेशी सरकार के ज़माने में कोई मनुष्य, जिसे वर्तमान राजनीति से थोड़ा-सा भी परिचय है, इस मसले के हल होने की बात सोच भी नहीं सकता।

बड़े-बड़े उद्योग-धंधों के संबंध में यह स्पष्ट कह देना मेरे लिये उचित होगा कि मैं उसका विरोधी नहीं। विज्ञान के इस युग में उसका विरोध कर हम जी ही नहीं सकते। पर हमें यह देखना है कि किस उद्योग-धंधे को बड़े पैमाने पर करने की ज़रूरत है, और किसे छोटे पैमाने पर। रेल, तार, जहाज़, मोटर, ऐरोप्लेन, घड़ी, सेफ़्टीरेज़र का ब्लेड, छपाई की मशीन, रेडियो आदि हम ग्राम-उद्योग-धंधे से करना चाहें, तो दुनिया हमें बेवक़ूफ़ समझेगी। हाँ, जिन चीज़ों को छोटे पैमाने पर हम नहीं कर सकते, उनके लिये बड़े-बड़े उद्योग-धंधों की शरण लेनी पड़ेगी। और, सभी चीज़ें हम गाँव-उद्योग-धंधे की सहायता से उत्पन्न करेंगे।

सभी बातों पर ग़ौर करते हुए हमें यह मानना पड़ेगा कि केवल भीषण ग़रीबी और बेतरह फैली हुई बेकारी को ही दूर भगाने के लिये नहीं, वरन् मानव-जाति के कल्याण के लिये हमें गाँव के उद्योग-धंधों का पूर्णोद्धार करना पड़ेगा। जब तक हम ऐसा नहीं करते, तब तक हमारी ही नहीं, मनुष्य-जाति की सुख-शांति और जीवन ख़तरे में है।

गाँव-सुधार कैसे हो ?

लेखक, ग्राम-सुधार के प्रसिद्ध लेखक श्रीपं० रामचंद्र त्रिवेदी। इसकी एक-एक कॉपी प्रत्येक घर में होनी चाहिए, क्योंकि बिहार का प्रसिद्ध अँगरेज़ी दैनिक पत्र 'इंडियन नेशन' लिखता है—

"This little book intends to acquaint the ignorant and half-educated public with chief plans of a comprehensive rural reconstruction programme. The book has been written in simple Hindustani and may be easily understood by those for whom it is primarily meant. Its utility in preparing a very healthy background in the minds of our village folk is undoudtedly immense and indeed to a large extent will, on this fundamental factor, depend the success of any rural uplift scheme."

४ संस्करण साल-भर में ही बिक गए। अपनी कॉपी के लिये आज ही ऑर्डर दीजिए। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

मैनेजर राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल, पो० कदमकुआँ, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता

[श्रीविश्वमित्र बी० ए०]

"All the subtle influences which are brought to bear upon a life, bear also, more or less directly, upon its literary produce ; and although this connection between the Work and the Life is not always apparent we may be sure that it does exist. Hence it is that the life of an author forms a context to his writings, and in many cases a key to their interpretation."

—L. Rossi.

अर्थात् लेखक के जीवन पर जिन घटनाओं का प्रभाव पड़ता है, उन्हीं की छाया उसकी कृति में भी देख पड़ती है। बालकृष्णजी भी इससे सहमत हैं। 'नवीन'जी आजकल के कवियों की वेदना को उन्हीं की वेदना नहीं समझते, बल्कि उसे वह संसार के समस्त प्राणियों की वेदना समझते हैं। ठीक भी है। जिस वेदना से केवल एक ही व्यक्ति का संबंध हो, वह सबके हृदयों को रुचिकर नहीं हो सकती। आप कहते हैं—"आज यदि सामाजिक बंधनों के कारण एक नौजवान या नवयुवती अपने स्नेह-पात्र को प्राप्त नहीं कर सकती, और यदि वे वियोग और बिछोह के हृदयग्राही गीत गा उठते हैं, तो यह न समझिए कि यह केवल उन्हीं की वेदना है, जो यों फैल पड़ी है—यह वेदना तो समूचे संस्कृत हृदयों का चीत्कार है, यह वेदना संक्रांति-काल के जन-समूह की पिपासार्ति है, और इस वेदना का सीधा संबंध जगद्वंद्या विरहिणी राधा और नागर कृष्ण की हृदय-वेदना से है। आज के कवियों का, प्रत्यक्ष में केवल आधिभौतिक दिखाई देनेवाला, दुःखवाद वास्तव में आध्यात्मिक है। आज के कविगण उसी रेखा को और आगे खींच रहे हैं, जिसे सूर, कबीर, मीरा, विद्यापति, चंडीदास, नंददास आदि खींच गए हैं। आज की कविता में रोदन और गायन का समन्वय हो रहा है।" वस्तुतः समन्वय की भावना ही भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है। बाबू श्यामसुंदरदासजी कहते हैं—"उसकी (भारतीय साहित्य) यह विशेषता इतनी प्रमुख तथा मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर संसार के अन्य साहित्यों के सामने वह अपनी मौलिकता की पताका फहरा सकता है, और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की सार्थकता प्रमाणित कर सकता है।"

वर्तमान कविता में वेदना प्रकट होने के 'नवीन'-जी दो कारण बतलाते हैं—एक तो यह कि हम लोग संक्रांति-काल के प्राणी होने के नाते अपनी अतृप्त अभिलाषाओं के कारण दुखी हैं—

हम संक्रांति-काल के प्राणी, बदा नहीं सुख-भोग;
हमें क्या पता, क्या होता है स्निग्ध, सुखद संयोग?

दूसरा और शाश्वत कारण यह है कि मानव-स्वभाव में एक अतृप्ति का सम्मिश्रण है, और इस कारण हम सदा क्वासि? क्वासि? का चीत्कार किया करते हैं।

इन कारणों को ध्यान में रखते हुए अब हमें उनकी कविता के विषय में कोई भ्रम नहीं होना चाहिए।

बालकृष्णजी का जितना परिचय होना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, उतना नहीं है। इसका कारण यह है कि वह अपनी कृतियों के संकलन के छपाने की ओर से उदासीन हैं। कवियों में अहम्मन्यता होती ही है, पर हमारे 'नवीन'जी इसका अपवाद हैं। आप बड़े ही भावुक और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपसे एक बार मिल लेने पर बार-बार मिलने की इच्छा होती है। दूसरों का काम करने के लिये आप सदा ही प्रस्तुत रहते हैं। स्वयं अपने विषय में आप कहते हैं—"..........मैं कलाकार नहीं, कवि नहीं, मैं तो एक ऐसा जंतु हूँ, जो कुछ यों ही सा, कुछ अटपटा-सा, कुछ उलझा-सा, एक फ़ालतू अदद-सा है।"

'नवीन'जी की कविताओं का मनन करने से हमें यह मालूम होगा कि आप इस संक्रांति-युग के सच्चे प्रतिनिधि हैं। आपने संसार का थोड़ा-बहुत अनुभव भी किया है। जीवन-संग्राम में सुख और दुख भी झेला है। निराशा के कड़ुए और आशा के मधुर फल चख चुके हैं। यही कारण है कि आपकी कविता में ओज के साथ गंभीर विचार भी निहित रहते हैं। वह निराशावादी कवि प्रतीत होते हैं। उनकी कविता में Personal element है। पर जो वेदना हमें उनकी कविताओं में दिखाई देती है, वह केवल उन्हीं की नहीं है—वह तो समस्त विश्व की वेदना है। देखिए, इन पंक्तियों में कैसी वेदना, निराशा, बेबसी और पीड़ा है—

बुझ चली हाय ! बुझ चली सखे,
चिर प्रेमी की प्रज्वलित चिता;
सूरज भी यह ढल चुका, और
हो गईं दिशाएँ भी असिता।
ये "हुआ-हुआ" कर उठे स्यार,
लो, यह सब खेल तमाम हुआ;
यह अरमानों का पुंज जला,
हो गईं भस्म आहें त्रसिता।

जीवन निराशा-ही-निराशा में व्यतीत होता जाता है। समय तीव्र गति से चला जा रहा है। सहसा कवि को जीवन की लघुता का आभास मिलता है, और वह कह उठता है—

"कुछ छिन, कुछ दिन, कुछ मास और
कुछ बरस, यहा क्या है जीवन ?
इस छोटी काल - सुराही में
क्या है जीवन - गति सुसंचिता ?

कैसा पश्चात्ताप है ! सोचा था, जीवन कोई अनंत पदार्थ होगा। पर सत्य—कठोर सत्य तो अंत में प्रकट हो ही जाता है।

फूल फूलते हैं दो दिन तक
यों ही मुरझाने को अंत;
मोह-मुग्ध मैं समझ रही थी
मानो यौवन - काल अनंत।

'नवीन'जी की निराशावादिता का और उदाहरण देखिए—

प्रिय ! धीमी पड़ रही आज
मेरे प्रदीप की बाती;
शायद लुट जाए यह मेरी
मुसाफ़िरों की थाती।
पथ सुनसान, कँटीला,
टेढ़ा, पथरीला, अज्ञात;
मंज़िल लंबी, भ्रमित पथिक,
मग में छाई चिर रात।
शिथिल गात, हो रहे अनेकों
विकट घात - प्रतिघात;
किससे कहे मुसाफ़िर अपने
मन की आकुल बात ?

सुनसान, कँटीले, टेढ़े-मेढ़े पथ में, अंधकारमय रात्रि में मुसाफ़िर चला जा रहा था; कोई न था, जिससे वह अपने मन की बात कहता। ऐसे समय उसे उसके 'पीतम' जीवन-डगर में मिल गए। वह ख़ुशी के मारे नाच उठा; उसके मुख से बरबस निकल पड़ा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज बरसों बाद पीतम
मिल गए जीवन-डगर में;
मृत मनोरथ के सुमन ये
खिल गए जीवन-डगर में।
वे धुएँ के तूल-से छाए हुए थे सजल बादल;
झर रहा था गगन के हिय
से सगन यौवन-लगन-जल।
उन दुखद रिम-झिम क्षणों में,
शून्य, पंकिल पथ-कणों में,
हार-से, मनुहार-से पिय
मिल गए जीवन-डगर में।
भर गया आकंठ हिय-तल,
ललक उमड़ा नयन का जल;
कर उठा नर्तन हृदय का
कमल विकसित मुदित पल-पल।
उस सिहरते नीम-नीचे
झुक दृगों ने चरण सींचे,
नेह-रस-वश अधर उनके
हिल गए जीवन-डगर में।
आज बरसों बाद पीतम
मिल गए जीवन-डगर में।

कवि अपनी दीनता और आश्रय-हीनता का भी वर्णन करता है। वह अपनी अनुभूति का भी वर्णन करता है। 'नवीन'जी की अनुभूति मनुष्य-मात्र की अनुभूति से अलग कोई अन्य वस्तु नहीं। उन्होंने जिस व्याकुलता, जिस याचना, जिस विरह, जिस दीनता और जिस विवशता का वर्णन किया है, वे केवल उन्हीं की नहीं, वे तो इस लोक के समस्त प्राणियों की हैं। छायावादी कवि होते हुए भी आपकी कविताओं में हमें अतिरंजित तथा अस्पष्ट भाव नहीं मिलते। वह अपने यथार्थ भावों का ही वर्णन करते हैं। जैसा वह अनुभव करते हैं, वैसा ही उसे व्यक्त करते हैं। अतः वह Realistic हैं, Exaggerative नहीं। हम अपनी अनुभूति को कवि की अनुभूति में सन्निहित पाते हैं। यही कारण है कि बालकृष्णजी की कविताएँ बहुत ही हृदयग्राहिणी होती हैं।

भावों की स्पष्टता आपकी एक बड़ी भारी विशेषता है। आप कहीं भी बुद्धि से परे नहीं जाते। स्पष्टता अच्छी कविता का एक विशेष गुण है। इसके विना कविता किसी काम की नहीं। अस्पष्ट कविता को तो कवि का व्यर्थ का परिश्रम ही समझना चाहिए। वर्तमान कवियों में बहुत कम ऐसे हैं, जो अपने भाव स्पष्टता से व्यक्त करते हैं। अस्पष्ट कविताओं के कारण ही बहुत-से लोग आजकल की कविता से ऊब गए हैं।

कवि को अपनी लघुता का ज्ञान है—

वहुत ही लघु हूँ, परम अणु हूँ,
ससीमित, संकुचित हूँ,
विवश हूँ, गुणबद्ध हूँ, गति रुद्ध हूँ,
विस्मित, विजित हूँ,
किंतु आशा निखिल संसृति की
लिये चिरव्यथित हूँ।
रुचिर, पूर्ण रहस्य-उद्घाटनमयी
क्रीड़ा करो तो;
आज मम हिय-अजिर में
मनभावनी क्रीड़ा करो तो।

अपनी लघुता का ज्ञान होने पर हताश होने की बात नहीं। अपने आराध्य देव से प्रार्थना करना कौन छोड़ता है। गोस्वामी तुलसीदासजी भी राम के सम्मुख अपने को अत्यंत दीन समझते थे—

राम-सों बड़ो है कौन, मो-सों कौन छोटो?
राम-सों खरो है कौन, मो-सों कौन खोटो?

पर क्या तुलसीदासजी ने राम से विनय करना छोड़ दिया था? कभी नहीं। वह कहते हैं—

प्रन करिहौं हठि आजु तें राम-द्वार पर्यो हौं।
'तू मेरो' यह बिनु कहे उठिहौं न जनम भरि,
प्रभु की सौं करि निबर्यो हौं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे 'नवीन'जी कहते हैं—

क्यों उलहना दे रहे हो कि यह है संकुचित आँगन ;
गगन-सम विस्तीर्ण कर देंगे इसे तव मृदु पदांकन।
आज सीमा ने दिया है
तुम असीमित को निमंत्रण,
ढुल पड़ो, प्रेमेश, सीमित,
संकुचित व्रीड़ा हरो तो ;
आज मम हिय-अजिर में
मनभावनी क्रीड़ा करो तो।

मालूम होता है, कवि के 'प्रेमेश' बहाना बनाने लगे कि तुम सीमित में असीमित—फिर भला, मैं कैसे आऊँ ? पर कवि को जितना ज्ञान अपनी लघुता एवं सीमा का है, उतना ही ज्ञान उसे अपने 'प्रेमेश' की अनंतता का है। वह कहता है, हम मानते हैं, हमारा 'हिय-अजिर' अत्यंत संकुचित है। पर इससे क्या ? तुम्हारे चरणों में तो वह शक्ति है कि वे हमारे सीमित 'हिय-अजिर' को गगन के समान विस्तीर्ण कर देंगे। इसलिये लाख बहाने बनाने पर भी तुम्हें आना ही पड़ेगा, हमारे 'हिय-अजिर' में 'मनभावनी क्रीड़ा' करनी ही पड़ेगी।

यह दिवाली की अमावस,
घुल रहा नभ में तिमिर-रस,
साँझ तक रुक दीप बनने
से कहो, शरमा गए क्यों ?
द्वार मेरे आ गए क्यों ?
इस अमावस के तिमिर में
बुझ गए सब दीप मेरे ;
निविड़ घन तम में हृदय को
हृदय से बिलगा गए क्यों ?
द्वार मेरे आ गए क्यों ?

भावों की उत्कर्षता देखते ही बनती है। दिवाली की अमावस्या है। आकाश में घोर अंधकार फैला हुआ है। सब लोग अपने-अपने घरों में दीप जलाकर दीपावली का उत्सव मना रहे हैं, और यहाँ क्या हो रहा है ? दीपक सब बुझ गए हैं। 'तुम' कुछ देर के लिये आए थे, और चले गए। यदि 'तुम' न जाते, तो मेरा अंधकाराच्छादित गेह भी तुम्हारे अलौकिक आलोक से आलोकित हो उठता। पर 'तुम' न रुके, चले गए। अब कैसी दीपावली और कैसा उत्सव !

विरह-दशा दुख-दशा है। इसमें कष्टदायक वस्तुएँ तो कष्टदायक होती ही हैं, पर सुखदायक वस्तुएँ भी दुख को बढ़ाती हैं। कविवर जायसी ने इसे बड़े भाव-पूर्ण शब्दों में व्यक्त किया है—

कातिक सरद-चंद्र उजियारी ;
जग सीतल हौं बिरहै जारी।
चौदह करा चाँद परगासा ;
जनहुँ जरै सब धरति-अकासा।
तन-मन सेज करै अगदाहू ;
सब कहँ चंद, भयउ मोहि राहू।

सचमुच वियोगियों के लिये तो चंद्रमा राहु ही है।

जब अपने चारो ओर आनंद मनाया जा रहा हो, और अपने को कोई दुख हो, तो वह दुख और भी बढ़ जाता है—

करहिं वनस्पति हिये हुलासू ;
मो कहँ भा जग दून उदासू।
फाग करहिं सब चाँचरि जोरी ;
मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।
(जायसी)

कवि वर्ड्सवर्थ को भी एक बार नहीं, कई बार ऐसा अवसर पड़ा था, जब लोग 'May Day' मना रहे थे, उस समय वर्ड्सवर्थ का हृदय रो रहा था।

कवि का जीवन आरंभ से ही कष्टमय रहा है। जब उसमें वह कुछ सूनेपन का अनुभव करता है। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय को कोई ठेस लगती है, तभी वास्तविक कविता का प्रादुर्भाव होता है। 'नवीन'जी के जीवन में सुख-दुख का चढ़ाव-उतार बराबर रहा है। दुख कुछ अधिक उठाए हैं। वस्तुतः अधिकांश लोगों को आजकल कुछ ऐसा ही अनुभव होता है। सुख की अपेक्षा दुख की मात्रा अधिक रहती है। इसी को 'नवीन'जी ने बड़ी सुंदरता से व्यक्त किया है। देखिए, सामने दो मिलते हुए प्रेमियों की तस्वीर-सी खिंच जाती है—

शून्य जीवन कुछ छिनों को
हो गया था कुछ सफल-सा;
कुछ छिनों का मधु मिलन अब
बन गया है स्मर-विकल-सा।
और कब होगी कृपा ? याँ
उठ रहा है कुछ अनल-सा।
फिर पधारो तो ज़रा, ओ स्वप्न-
देश - विहारिणी तुम।
बंधनों की स्वामिनी तुम।

यदि किसी के अंधकारमय जीवन में कभी एक बार विद्युत् की प्रकाशमय रेखा खिंच जाय, तो उसे क्या प्रसन्नता होगी—यह तो वे ही जान सकते हैं, जिन्होंने कभी इसे अनुभव किया है। यदि इस आभा-पूर्ण रेखा के बाद फिर अंधकार हो जाय, तो उस मनुष्य को उस प्रकाश का, उस आनंद का, स्मरण करके और भी अधिक वेदना होगी। कवि विगत स्मृति का कैसा सजीव चित्र हमारे सामने रखता है—

वक्ष पर सखि, शिर रखे जब
तुम खड़ी थीं चुप अकेली,
क्या न तब तुमने सुनी थी
यह हृदय - धड़कन नवेली।
लो, वही अब द्रुत ध्रुपद की
ताल बन, खुल खेल खेली;
हाँ, ज़रा तो दो सहारा
ताल गति-रति रागिणी तुम।
बंधनों की स्वामिनी तुम।
सजनि, मेरा निखिल जीवन
एक प्रहरी का प्रहर है;
चिर सजगता, नित्य अन्वे-
षण यही गति निरंतर है।
भग्न आशा - दुर्ग; प्रहरी
की थकी-सी अब नज़र है;
दो समाश्रय अंक में बन
मिलन मधुमय यामिनी तुम।
बंधनों की स्वामिनी तुम।

उपमा ढूँढ़ने में तो 'नवीन'जी बड़े सिद्धहस्त हैं। देखिए, प्रेमी की उपमा प्रहरी से देकर आपने कैसा सजीव चित्र हमारे सम्मुख उपस्थित कर दिया है। वास्तव में वर्णन ऐसा ही सजीव होना चाहिए। ऐसे वर्णनों का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर बहुत समय तक बना रहता है। और, प्रभाव को चिरस्थायी बनाए रखने में ही तो कवि की सार्थकता है। हम जितना ही इन पंक्तियों को पढ़ते हैं, उतनी ही हमें अधिक प्रिय लगती हैं। वेदना का तो स्वरूप सामने आ जाता है।

बालकृष्णजी किसी भी आदरणीय व्यक्ति के लिये श्रद्धांजलि अर्पित करने को सदैव प्रस्तुत रहते हैं। भक्ति-प्रदर्शन के समय आपकी भाषा बड़ी भावमय हो जाती है। प्रत्येक शब्द मानो श्रद्धा के फूल बिखेरे देता है। उस समय भाषा में जो शक्ति आ जाती है, वह देखते ही बनती है। महात्माजी के आप अनन्य भक्त हैं। आपकी 'हे क्षुरस्यधारापथगामी'-शीर्षक कविता की पंक्तियाँ दी जाती हैं—

हे विशुद्ध, हे पूर्ण बुद्ध,
सनिरुद्ध तृष्ण, हे संन्यासी,
हे ज्वलंत, हे संत, शांत हे,
हे अनंत के अभ्यासी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवता की तुम प्रहेलिका,
जगती के तुम अचरज हे,
हे विकास की विकट समस्ये,
श्रेष्ठज हे, जय अंत्यज हे!
योग-युक्त हे, शोक-मुक्त हे,
यज्ञ-भुक्त, हे बलिदानी,
हे अपमानित, हे सम्मानित,
श्रीगुरुदेव परम ज्ञानी!

❀ ❀ ❀

धन्य हुई यह वसुधा वृद्धा,
मानवता यह धन्य हुई;
तव विप्लवकारी प्रसाद से
भय-भावना नगण्य हुई।
ये मिट्टी के पुतले भी बढ़-
बढ़ लड़ गढ़ चढ़ने दौड़े;
क्या ही फूँके प्राण कि इनने
सदियों के बंधन तोड़े।

'कमला नेहरू की स्मृति में'-शीर्षक कविता का कुछ अंश दिया जाता है—

देवि, इतने ही दिनों का
क्या यहाँ आवास था यह?
कौन जल्दी थी? अभी तो
शेष कुछ मधुमास था यह।
तोड़कर उस शृंखला को,
जो पड़ी थी मृदुल पग में—
राजहंसिन, उड़ चलीं
इतनी सुबह अज्ञेय मग में?
हो गए संपूर्ण क्या तव
काज सब इस अनित जग में?
चिर महा अभिनिष्क्रमणिका
कौन-सा उल्लास था वह?
आत्मआहुति के ज्वलित ये
खेल तुमने ख़ूब खेले;
हंत! शुचि आदर्श के हित
कौन दुख तुमने न झेले?
लो, तुम्हारे स्वप्न-द्रष्टा
प्राणप्रिय अब हैं अकेले;
सुमुखि, इतने ही दिनों का
क्या तुम्हें अवकाश था यह?

❀ ❀ ❀

निराशा-सिकता-कुपथ में
अश्रु-रेखा-सी सुअंकित;
वायु-झंपन में धवल-से
हिम-शिखर-सी तुम अशंकित।
निपट अँधियारे गगन में
ज्योति-रेखा-सी अकंपित;
आज प्राणायाम का क्या
आख़िरी निःश्वास था यह?

भाषा का अत्यंत स्निग्ध, सरल, मृदुल एवं अकृत्रिम प्रवाह देखने योग्य है।

अपने इष्ट की चरण-आराधना के लिये कवि कैसी दीनता से प्रार्थना करता है। भोले और निष्कपट हृदय से निकली हुई प्रार्थना किसे न हिला देगी—

ओ सलोने, हो गया है
कौन-सा अपराध भारी,
जो चरण-आराधना
यों तड़पती है यह बिचारी?
हो गया है विश्व सूना
देखकर यह हठ तुम्हारी;
कल्पना सूनी हुई है,
भाव हैं सुनसान मेरे।
मान कैसा प्राण मेरे।

कवि समस्त जग को अपने दुख में दुखी पाता है। सारा संसार उसे सूना दिखाई देता है।

बरजते हो क्यों दृगों से
चरण-रत आराधना को?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलवती होने न दोगे
क्या निरंतर साधना को ?
निठुर, ठुकराओ न मेरी
इस अदीना याचना को ;
पद-परस से खिल उठेंगे
निपट मुरझे गान मेरे।
मान कैसा प्राण मेरे।

भला, कौन ऐसा कठोर-हृदय होगा, जो इस छोटी-सी याचना को ठुकरा दे।

राजनीति के कठोर एवं शुष्क प्रांगण में विचरण करते-करते बालकृष्णजी का हृदय नीरस नहीं हुआ। उसमें स्निग्ध सलिल-धारा सदा ही प्रवाहित हुआ करती है, जो बहुत-से तप्त हृदयों की प्यास को शांत किया करती है। राष्ट्रीय कविताओं में आपका 'पराजय-गीत' अत्यंत सुंदर है। वस्तुतः पराजय में जो वेदना और ग्लानि कवि अनुभव करता है, वह केवल उसी की वेदना और ग्लानि नहीं, वह तो समस्त पराजित राष्ट्र की है। उसमें जो वेदना, जो ग्लानि, जो कोमलता, जो सरलता और गंभीरता है, वह अन्यत्र मुश्किल से मिलेगी। परतंत्रता आपको कितनी असह्य है, उसका आभास तो आपके जीवन की प्रत्येक घटना से प्रकट होता है। नीचे-लिखी पंक्तियों में आपने अपना हृदय उन्मुक्त कर दिया है। जो चाहे, उसे पढ़ सकता है—

वर्दी फटी, हृदय घायल,
कारिख मुख पर, क्या वेश बना !
आँखें सकुच रहीं, कायरता
के पंकिल से देश सना !
अरे पराजित, ओ ! रणचंडी
के कपूत हट जा, हट जा !
अभी समय है, कह दे, मा,
मेदिनी, ज़रा फट जा, फट जा !
हंत ! पराजय-गीत आज क्या
द्रुपद-सुता का चीर हुआ ;
खिंचता ही आता है, जब से
ख़ाली यह तूणीर हुआ।

कैसी ज़बरदस्त ग्लानि है। कवि पृथ्वी में विलीन हो जाना चाहता है। पर यह संभव नहीं। मनुष्य की आकांक्षाएँ कब पूर्ण होती हैं। पराजित अपना 'कारिख'-लगा मुख किसे दिखाए। ऐसे कायरों को सचमुच कहीं ठौर भी नहीं मिलता ! कवि फिर मा के अंचल में मुख छिपाना चाहता है। आख़िर मा ही ठहरी न ! कितनी ही वह कठोर हो, पर पुत्र का संताप उसे सह्य नहीं होता। इसी आशा से कवि उसके फटे अंचल में अपना मुख छिपा लेना चाहता है।

विजय-सूर्य ढल चुका, अँधेरा
आया है रखने को लाज ;
कहीं पराजित का न देख ले मुख
यह विजयी कुटिल समाज।
अंचल कहाँ ? फटा अंचल वह—
मा का प्यारा वस्त्र कहाँ ?
अर्द्ध-नग्न, रुग्णा, कपूत की
मा का लज्जा-अस्त्र कहाँ ?
कहाँ छिपाऊँ यह मुख अपना ?
खोकर विजय फ़क़ीर हुआ ;
आज खड्ग की धार कुंठिता,
ख़ाली यह तूणीर हुआ।

इतना ही नहीं ; यह ग्लानि, यह पश्चात्ताप, यह चोट साधारण नहीं, जो यहीं समाप्त हो जाय। आगे वह और भी मर्मांतक हो जाती है—ऐसी मर्मांतक कि कवि प्रलय का आह्वान करता है, और उसी में सबको नष्ट करके स्वयं भी उसमें भस्मसात् हो जाता है। सच्चा पश्चात्ताप और सच्ची ग्लानि यही है—

आग, सुलग ऐसी कि कहीं
भी लौ का ओर न छोर रहे री ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदधि - सलिल - सी लहराती
लपटों का पुंज-प्रकाश बहे री।
हँस-हँसकर तू अरी हँसाती,
अंत अनंत सृष्टि का कर दे।

कभी-कभी हमारा हृदय विगत दिनों की याद करके रो उठता है; पर हम यह नहीं जान पाते कि वास्तव में बात क्या है। इस एकाएक उत्पन्न हो उठनेवाली वेदना का संभवतः सभी ने अनुभव किया होगा—

ये अनजान प्राण पावस में
ना जानूँ क्यों तड़प उठे ?
जाने क्या हो गया कि आँखों
के मोती बेमोल लुटे।
जल - धाराएँ तो बहती थीं,
अलि, ये आँखें भी बरसीं;
अलि, हो गईं निगोड़ी आँखें
जल - विप्लावित अंबर-सी।

टेनिसन भी विगत दिनों का स्मरण करके रो उठता है, पर उसे पता नहीं कि इन अनायास बहनेवाले आँसुओं का क्या अर्थ है—

Tears, idle tears I know not what
they mean,
Tears from the depth of some
divine dispair,
Rise in the heart, and gather to the
eyes,
In looking on the happy autumn
fields,
And thinking of the days that are
no more.

'नवीन'जी ने बड़ा ही कोमल और भावुक हृदय पाया है। उनकी हृदय-वीणा के तार कोमल-तम स्पर्श से भी सिहर उठनेवाले हैं। संसार की कोई भी साधारण-से-साधारण घटना भी उनके कोमल हृदय को स्पर्श कर सकती है। जेल में बैठे हैं। श्रावण की पूर्णिमा आई। कवि के हृदय में वेदना होने लगी। किसी बात का अभाव उसे खटकने लगा। सोचा, यदि घर में होते, तो बहन राखी बाँधती। इसी मृदुल सुख का अभाव कवि को खटक रहा है—

बिटिया, मेरी गुड़िया रानी, कहाँ तुम्हारा तार ?
कहाँ तुम्हारी स्नेहमयी, मंजुल राखी सुकुमार ?
ओ तुम कच्चे धागेवाली, बिहँस हुलसती बाल,
ओ तुम कुंकुम-अक्षतवाली, लघु रक्षिका विशाल,
यह श्रावणी पूर्णिमा कारागृह में आई आज;
संग लिए सावन की मोहकता का हरित समाज।

❀ ❀ ❀

बहिना, यहाँ तुम्हारा भैया निपट अरक्षित, मूक;
साधन-हीन, छीन-तन, बैठा किए हृदय दो टूक।
आज तुम्हारे कुंकुम-रोचन की स्मृति से ये प्राण
ऐसे तड़प रहे, जैसे घायल हिरना अज्ञान।
बनकर याद, लहरता है तव अंगुलियों का तार;
बहन, आज सुध आती है राखी की वारंवार।

कैसा रसात्मक वर्णन है। विषय के अनुरूप भाषा का अत्यंत स्निग्ध, सरल, मृदुल और अकृत्रिम प्रवाह देखते ही बनता है। यहाँ भाषा बड़ी प्रांजल और स्नेहमय हो उठी है। ऐसा प्रतीत होता है, स्वयं कवि का हृदय ही बोल रहा है। राखी—इस शब्द में ही कितनी स्निग्ध, सुखद भावना निहित है। आगे की पंक्तियाँ तो और भी अधिक मर्मस्पर्शी हैं—

हम संक्रांति-काल के प्राणी, बदा नहीं सुख-भोग;
हमें क्या पता, क्या होता है स्निग्ध सुखद, संयोग ?
हम बिछोह के पले, ख़ूब जाने हैं पूर्ण वियोग;
घर उजाड़कर जेल बसाने का है हमको रोग।
फिर भी, हाँ-हाँ फिर भी, दिल ही तो है यह अनजान;
बरबस तड़प-तड़प उठा करता है यह नादान।

हृदय की इस व्यापक दशा का वर्णन कवि ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी ही स्वाभाविक रीति से किया है। 'बिछोह के पले' होते हुए भी दिल का 'बरबस' तड़प उठना बड़ी ही स्वाभाविक उक्ति है। इसी स्वाभाविक वृत्ति के बल पर कवि के वाक्य छोटे-बड़े, सबके हृदयों को समान रूप से स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं।

कवि ने कहीं-कहीं उर्दू-शब्दों का प्रयोग भी स्वतंत्रता-पूर्वक किया है। इसका कारण यह है कि भावावेश में कवि ने शब्दों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। उसका ध्यान भावों की ओर ही रहा है। इसलिये जो कुछ भी लिखा गया है, उसमें कृत्रिमता नाम-मात्र को भी नहीं आई। जो भाव कवि के हृदय में उदय हुए हैं, उन्हें वह पॉलिश करके कृत्रिम बनाने का पाप नहीं करता। सीधे हृदय से निकले हुए वाक्य ही हृदय पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं।

आजकल का युग नवीन युग है। हमारे आजकल के और प्राचीन समय के जीवन में आकाश-पाताल का अंतर है। आज हममें फिर नया जीवन, नया जोश पैदा हो गया है। आज फिर हमारी धमनियों में उष्ण रक्त वेग से प्रवाहित होने लगा है। आजकल की सामाजिक अवस्था पहले से भिन्न है। जैसी हमारी सामाजिक अवस्था होगी, वैसे ही साहित्य का निर्माण होगा। अस्तु। आजकल के और पहले के कवियों में भेद होना स्वाभाविक है—भेद न होना ही अस्वाभाविक है। पहले के कवि किन्हीं विशेष विषयों पर कविता लिखा करते थे। पर आजकल के कवियों की प्रणाली इससे सर्वथा भिन्न है। आज तो उन्हें साधारण-से-साधारण पदार्थ में भी कविता का विषय मिल जायगा। पहले कोयल की 'कुहू-कुहू' में ही कवि को inspiration मिलता था, कौए से तो वे लोग चिढ़ते थे। पर आज कागा के 'काँव-काँव' में भी कवि को inspiration मिलता है—

काँव-काँव करो न, कागा!
सजन के सूने हृदय में कौन-सा अनुराग जागा?
काँव-काँव करो न, कागा!
तुम पुरातन-ज्ञान-संचय,
तुम अतीत-स्वरूप-निश्चय,
आज दो न भविष्य-परिचय।
हाँ, कहो तो कब, किधर को चल पड़ूँगा मैं अभागा?
काँव-काँव करो न, कागा!
विरति-कुज्झटिका उठी यह,
स्मरण-अंबर में जुटी यह,
लगन खोई-सी लुटी यह,
दीख पड़ता ही नहीं है अब सुरति का धवल धागा।
काँव-काँव करो न, कागा!
कँप रहा है हिय इधर यह,
उठ रहा है एक स्वर यह,
कह रही आशा सिहर यह—
मुझ अयाचित ने कहो तो, कब मिलन-वरदान माँगा?
काँव-काँव करो न, कागा!

न आज हमारे हृदय में कोई नवीन अनुराग उदय हुआ है, और न हमने 'मिलन-वरदान' ही माँगा, फिर हे कागा! तुम पहले ही से काँव-काँव करके मुझे किस अमंगल की सूचना दे रहे हो?

'नवीन'जी ने दांपत्य सुख का बड़ा ही अनूठा एवं आकर्षक वर्णन हमारे सम्मुख रक्खा है—

सखी, सँजोती हूँ जब दीपक,
तब होती गुदगुदी हिए में;
बाँह झटक देते हैं वे, जब
भरती हूँ मैं तैल दिए में।
हटो दूर, जब कहती हूँ, तो
और पास वे आ जाते हैं;
मुझे खीझती देख हुलसते,
वे नयनों से मुसकाते हैं।
उस झुटपुटे समय में साजन
प्यार-भरे आँखों आते हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब वे मेरे मन में आली,
एक गज़ब-सा ढा जाते हैं।
बाँहें थाम गाड़कर मेरे
लोचन में अपने लोचन वे
कहते हैं, देखो तो कितने
सुंदर हैं अति नीरव क्षण ये।
तब मैं खोई-खोई-सी सखि,
उन्हें देखती रह जाती हूँ;
उनकी अपनी नेह-धार में
मैं बरबस ही बह जाती हूँ।

मैं-वे दो ही रह जाते हैं
उस कुछ-कुछ अँधियारे क्षण में;
सुनती हूँ उनकी छाती पर
शिर धर द्रुतगति हिय-धड़कन मैं।
करती हूँ संध्यार्ति सजन की
कर में नेह-प्रदीप लिए मैं,
सखी, सँजोती हूँ जब दीपक,
तब होती गुदगुदी हिए में।

यह कविता पढ़कर सचमुच पढ़नेवाले के 'हिए' में गुदगुदी होने लगती है।

पं० चंद्रशेखर वैद्य शास्त्री की तीस साल की अनुभूत चमत्कारी ओषधियाँ

गर्भ-निवारक

अगर आप अधिक औलाद पैदा करना नहीं चाहते, तो हमारी सरकार से रजिस्टर्ड 'गर्भ-निवारक' ओषधि का अपनी धर्मपत्नी को सेवन कराइए। ध्यान रखिए, इसके बाद फिर कभी गर्भ नहीं रहेगा, यह हमारी २५ साल की अनुभूत है, इससे तंदुरुस्ती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता, मासिक धर्म भी बंद नहीं होता। किंतु फिर आजन्म गर्भ की आशा न करें। मूल्य २॥), डा० म० ।≡) पता—पं० चंद्रशेखर वैद्य शास्त्री, ब्राह्मी औषधालय (नं० १) अलीगढ़।

कामिनी-वशीकरण

सरकार से रजिस्टर्ड

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता, या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है, जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खावेंगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है, जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे खुद तारीफ़ करेंगे। मू० ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५॥), ८ गोली का २॥), नमूना दो गोली ॥) ; मात्रा आधी गोली से एक गोली तक।

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मू० छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोर्नियो का दैनिक जीवन

[श्रीमती प्रभावतीदेवी]

बोर्नियो का द्वीप पूर्वीय संसार का एक सुहावना देश है। यह ब्रिटिश, डच और सरावक के स्वतंत्र राज्य में विभाजित है। गौरांग इसे जंगलियों का देश कहते हैं। परंतु यहाँ के निवासी युद्ध-प्रिय, प्रसन्न-चित्त, मिलनसार, परिश्रमी और ज़िंदा-दिल होते हैं। उन चीनी और भारतवासियों को छोड़कर, जो वहाँ बस गए हैं, यहाँ के आदिम निवासी दो मुख्य भागों में बाँटे जा सकते हैं—एक तो वे, जिन्होंने इसलाम धर्म ग्रहण किया है, तथा सभ्य हैं; दूसरे वे, जो अपने पुराने पथ पर आरूढ़ हैं।

श्रेणिक दल

यहाँ के निवासी छ दलों में बाँटे जा सकते हैं। प्रत्येक दल का एक निर्दिष्ट संगठन (Tribal Organization) है। इन दलों में ड्याक-दल अधिक उन्नत और प्रसिद्ध है। दूसरा दल कियान बहुत परिश्रमी और अन्य दलों से जन-संख्या में अधिक है। ईवन लोग दुःखदायी होते हैं। इन लोगों का मुख्य काम आखेट करना है। इनके अतिरिक्त केन्या, क्लिमेंटैंस और मूरत-दल हैं। पूनन को छोड़कर अन्य श्रेणी के लोग अनोखे ढंग का मकान बनाते हैं, जिसमें चालीस-पचास परिवार आराम से रह सकें। हरएक गाँव का एक मुखिया होता है। गाँव का प्रत्येक व्यक्ति उसके साथ संबंध तथा भक्ति के बंधनों से जकड़ा रहता है।

ड्याक-दल की स्वस्थ युवती

खेती-बारी के कामों में स्त्रियाँ पुरुषों को सहयोग देती हैं। बोर्नियो-निवासी बाज़ पक्षी को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रत्येक महत्त्वपूर्ण विषय में इस पक्षी का संकेत ईश्वर की इच्छा समझी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोर्नियो का 'क्लेमेंटन'
[जादू-टोने से बचने के लिये हाथ में लकड़ी का तावीज़ लिए है ।]

दैनिक जीवन

बोर्नियो के प्रत्येक दल के लोगों के दैनिक जीवन में समानता को मात्रा अधिक है । अरुणोदय होने के पहले ही स्त्रियाँ अपने-अपने कमरों में आग जलाकर स्नान के लिये नदी पर चली जाती हैं । वहाँ से बाँस के बने डोल में पानी लाकर नाश्ते के लिये चावल उबाल लेती हैं । अब, इस समय, मर्द जगते हैं । कुछ स्नानादि करने चले जाते और कुछ सिगरेट् पीने लगते हैं । तदुपरांत दिन का भोजन कर चुकने के बाद कुछ लोग खेतों पर चले जाते और कुछ निपुण व्यक्ति पत्थर की खुदाई के काम में भिड़ जाते हैं । खेती-बारी की ऋतु छोड़कर अन्य दिनों में स्त्रियाँ केवल घर ही पर काम करती हैं । घरेलू कामों में सबसे कठिन काम भात बनाना है ।

पुरुष दिन-भर आखेट करने के उपरांत संध्या-समय शिकार लिए वापस आते हैं । इसके बाद भोजन तैयार हो जाने पर पुरुष और स्त्री साथ-साथ खाते हैं । फिर जलते हुए अग्नि-कुंड के चारो ओर बैठकर आपस में गप्पें लड़ाते हैं । दिन-भर की घटनाओं पर आलोचनाएँ होती और कहानियाँ कही-सुनी जाती हैं । कुछ रात बीते युवक-युवतियाँ आराम करने चली जाती और बूढ़े देर तक धूम्र-पान करते रहते हैं ।

प्रेम-प्रार्थी युवक

जब कोई युवक किसी युवती के प्रति आकृष्ट होता है, तो उसे अपने मित्रों के यहाँ जाने का अवसर दिया जाता है । तब उसके घरवाले कहते हैं कि वह 'तंबाकू लाने' गया है । इसका अर्थ लोग ख़ूब समझते हैं कि वह अपनी प्रेयसी की खोज में गया है । उन लोगों में विवाह का कुछ निर्दिष्ट नियम नहीं ।

वस्त्र

स्त्रियाँ यद्यपि बहुत कम वस्त्र पहनती हैं, फिर भी अपने व्यक्तित्व तथा शृंगार में स्वच्छ रहती हैं । किसी किशोरी की सामाजिक स्थिति उसके कान की लुरलुरी (lobe) की लंबाई से निश्चित की जाती है । लड़कियाँ बचपन ही से नाचना सीखती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

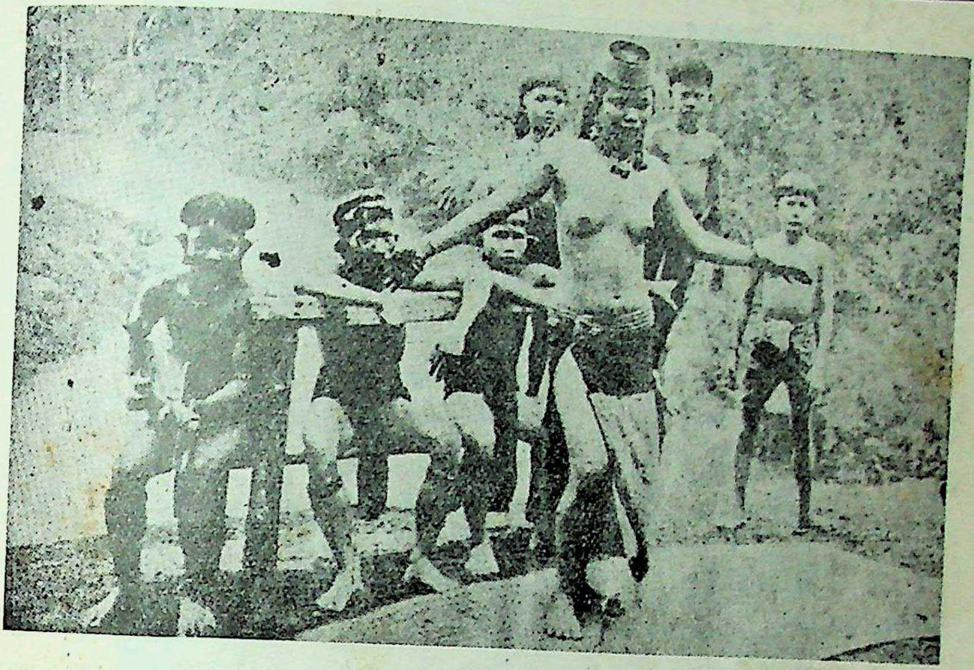

केन्या-दल की नर्तकी का नाच

हैं। स्त्रियाँ अपने घर ही के बने मोटे तथा रंगीन वस्त्र पहनती हैं। ये वस्त्र उनकी जाँघों से स्तन तक के अंगों को आच्छादित करते हैं।

षोड़शी हो जाने पर लड़कियों के गोदना गोदा दिया जाता है। अधिकतर स्त्रियाँ ही पुरुषों से विवाह का प्रस्ताव करती हैं। नियमानुसार विवाह का कोई बंधन नहीं होता, और स्त्री-पुरुष इच्छानुकूल रहते हैं। प्रेम के विषय में मुखिया का निर्णय ही माननीय होता है।

शिरश्छेद की प्रथा

कुछ वर्ष पहले शिरश्छेद करना बोर्नियो-निवासियों का एक आमोद था। शत्रुओं का शिरश्छेद करना एक पुरानी प्रथा थी। ऐसे अवसरों पर स्त्रियाँ आनंदोत्सव मनाती थीं, नाचती थीं, और अपने बहादुर पुरुषों पर फूली न समाती थीं। सभ्यता के समागम के साथ ऐसी-ऐसी अमानुषिक प्रथाएँ बंद हो गई हैं।

अंध-विश्वास

सुअर के बच्चों द्वारा भविष्य-घटना का निर्णय करने की प्रथा अब भी प्रचलित है। जब कोई गाँव लड़ने पर उतारू होता है, या जब दो दलों में संधि होने लगती है, तब एक सुअर के बच्चे की सहायता ली जाती है। उसका पैर बाँध दिया जाता है, और दल का मुखिया इसके द्वारा ईश्वरेच्छा का अनुभव करता है। इस उत्सव के पूर्व ईश्वर की आरा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

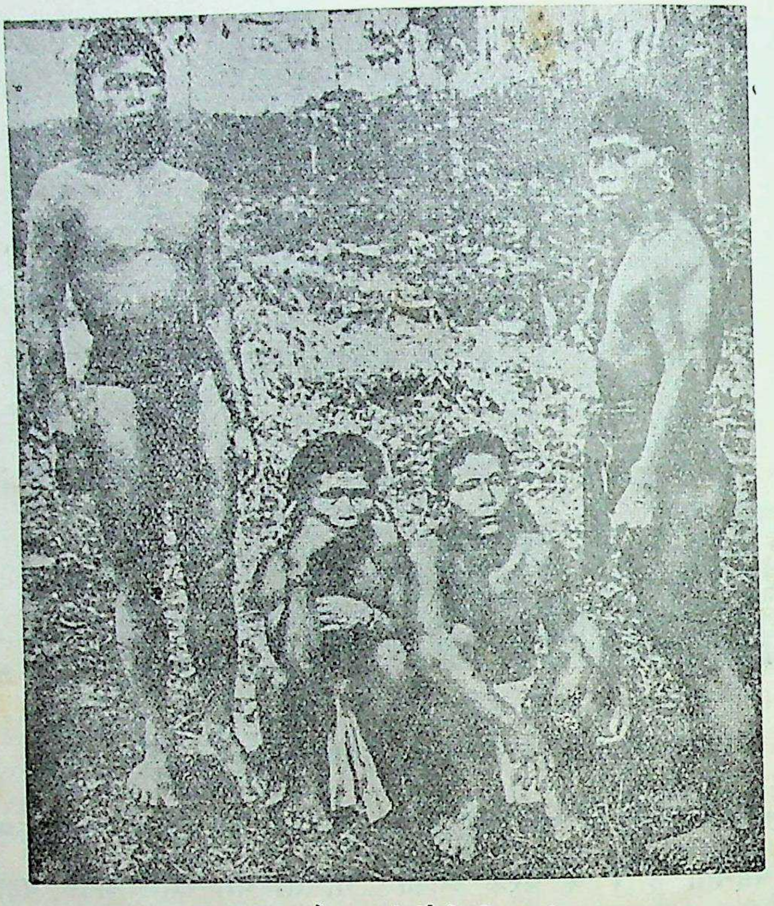

गोदना गोदाए बोर्नियो-निवासी

[इनके यहाँ सोलह वर्ष की अवस्था में गोदना गोदाया जाता है ।]

धना होती और तब अग्नि-कुंड जलाया जाता है । विश्वास यह है कि अग्नि-कुंड के धुएँ के द्वारा मुखिया और ईश्वर के बीच बात-चीत होती है । तदुपरांत सुअर के बच्चे का बलिदान होता है, और उसके यकृत के भाव से ईश्वरेच्छा का अनुमान किया जाता है ।

मोतियाबिंद

कौन कहता है कि बग़ैर चीर-फाड़ के अच्छा नहीं होता ? डिजन्स "आइ-क्योर" Degon's "Eye Cure" के कुछ ही दिनों के लगाने से नया या पुराना मोतियाबिंद तथा और भी आँख की बीमारियाँ शर्तिया आरोग्य होती हैं । मूल्य २), डाकख़र्च ॥=)

कमला-वर्क्स (S/I) पाँचपोटा, बंगाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार

[श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०]

जागृति के मधुर प्रलोभन में
क्यों छीन रही हो सुप्ति आज ?
अभिलाषाओं की अमिट प्यास
क्यों देने आई तृप्ति आज ?

असफलताओं को प्रिय विरक्ति
क्यों लुटा रहीं अनुरक्ति आज ?
मेरी अचेतना वर मुझको
क्यों माँग रही हो भक्ति आज ?

होने दो यह क्षण आज विफल,
अपनापन ही है अपना बल;
यह युगों-युगों से करुणा का
क्रय - विक्रय कहलाता है छल !

देखा है नभ में तारक - दल,
शशि से पाकर वह ज्योति धवल
हँसता है, फिर निष्प्रभ होकर
कहता प्रभात को क्यों असफल ?

असफल है आशा का विकास,
असफल ममत्व का क्षणिक हास;
असफल है यह मानापमान,
असफल मानवता का प्रयास !

जाने क्यों फिर जग भूल रहा !
तृष्णा की गति पर भूल रहा !
खो देना है जिसको पाकर,
उस वैभव पर है फूल रहा !

हाँ, औरों - सा बन जाने को
मानव बिकता है बिना मोल;
आशा के इंगित पर देखो
मानव लुटता है हृदय खोल !

पर प्यास अमिट यह जीवन की
कहती ममत्व से मुझे तोल;
कैसा अतीत, कैसा भविष्य,
कैसा विरोध, क्या मेल-जोल।

दो मुट्ठी रज - कण से निर्मित,
मानव का यह कैसा परिचय !
दुख-सुख के अनुभव में असीम
संचित आशा का कैसा भय !

इस पंचतत्त्व के पुतले को
मिल गया कहाँ से अरे हृदय ?
प्रतिपल आघातों को गिनकर
जो कहता है मिल गई विजय !

श्वासों के प्रति कंपन में क्यों
पाता विराम गति अरे प्रलय !
इस अहंकार का अंत कहाँ !
अस्थिर क्रम का अस्थिर निश्चय !

भ्रम है विराग, अनुराग और
भ्रम है विराट का यह विस्मय !
चिर-सत्य समझकर जिसे चले,
भ्रम है वह निर्भय अरे समय !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर इस प्रवंचना का प्रवाह
ले, माँग रही हो क्यों जीवन ?
प्रतिक्षण मिटनेवाली तृष्णा
से बना हुआ यह नश्वर तन !

उर में कुछ ऊब रही पीड़ा,
वासना - विकल ये आर्द्र नयन ;
रक्तिम छाया भरकर कपोल
कहते—"संचित है यह यौवन !"

क्यों इस वैभव के साथ तुम्हें
चेतना मिली, अभिमान मिला ;
ऊँचे उठने की मिली चाह,
कुछ होने का यह ज्ञान मिला !

मद मिला दृगों में तुम्हें, और
पलकों में प्रेरित मान मिला ;
अधरों में विकसित मिला हास,
उर के तारों में गान मिला !

क्या रूप, रूप में छिपा हुआ
अभिशाप बन गया तुमको वर ?
क्या सुधा - सार उपमा लेकर
भर गए सुधा से शुष्क अधर ?

क्या जर्जर अस्थि-चर्म निर्मित
तन मिला स्वर्ण-सा बन सुंदर ?
क्या चिर-गति का विश्वास लिए
मिल गया हृदय करुणा होकर ?

तुम माँग रही हो अमृत - रस,
पर यहाँ बरसता सदा गरल ;
नित नए नेह की चाह तुम्हें,
पर यहाँ शुष्क जीवन मरु-थल !

औरों से कुछ पा जाने को
हैं सदा खुले रहते कर - तल ;
दाता की जय - जयकार सदा
करता रहता है याचक - दल !

पहचानो, यदि पहचान सको,
याचक जो है, दाता वह था ;
बीते अतीत की एक रात
क्या प्रणय-भीख पाता वह था ?

वंचना और सर्वस्व - दान,
कैसा असफल नाता वह था ;
शशि की सूनी - सी हँसी देख
सब कुछ खोकर गाता वह था !

शूलों को फूल समझकर जो
उर पर अपने नित सहता था ;
आशाओं का संसार लिए
स्वप्नों में भूला रहता था।

तुम प्रेम - भरी सरिता थीं, वह
जिस में पल्लव - सा बहता था ;
तुम दीपक थीं, वह एक शलभ,
जो व्यथा न अपनी कहता था !

पर, परिवर्तन—हाँ, परिवर्तन !
है चक्र नियति का—परिवर्तन !
अंतर्हित जिसमें अट्टहास,
अंतर्हित है जिसमें रोदन !

जल जाती है संचित उमंग,
तब बुझ जाता धीरे से मन ;
खो जाता है उल्लास, और
मिल जाती उर को एक जलन !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब क्या—यह सूनेपन का सुख !
अब क्या—विस्मृति की अमिट शांति!
ये दोनो सहचर पाकर मैं
अब भूल गया हूँ—कहाँ भ्रांति !

रहने दो आँसू हृदय बीच,
ये कर न सकेंगे कभी क्रांति ;
पा चुका जिसे वरदान-सदृश,
अभिशाप तुम्हें हो वह अशांति !

साहित्य-संसार में क्रांति लानेवाली बिलकुल निराले ढंग की पुस्तक

'प्रिया या प्रजा'

इसकी सर्वोत्तमता का सबसे बड़ा यही प्रमाण है कि एक ही वर्ष में दूसरे संस्करण की तैयारी हो गई। साहित्य-प्रेमियों ने किस उत्कंठा से इसे गले लगाया है, इसे विना पढ़े आप नहीं समझ सकते।

हम सिर्फ़ इतना ही कहेंगे कि—

यह पुस्तक राजनीति, देश-प्रेम, भक्ति, वैराग्य, वीरता आदि का सार है। साहित्य की गंभीरता समझने के लिये ही इसको एक बार पढ़ना चाहिए।

हिंदी की उच्च कोटि की परीक्षाएँ देनेवालों के लिये तो यह प्राण है। इसीलिये इसकी इकट्ठी प्रतियाँ कितनी ही साहित्यिक संस्थाओं ने ख़रीद ली हैं। इस पर भी इस अमूल्य रत्न का मूल्य केवल आठ आना है।

सोल एजेंट्स

१—गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ
२—रत्नाश्रम, आगरा
३—गुप्ता ब्रादर्स, धनौरा मंडी
४—विनीत-ग्रंथ-माला, तालबेहट (झाँसी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुकि आए बदरवा……………

[श्रीयुत लक्ष्मीचंद्र वाजपेयी 'चंद्र']

(१)

झुकि आए बदरवा रूम-झूम… ..

प्रणयविहारी पंकजकुमार का घनिष्ठ मित्र है। वह पंकज के प्रेम-स्निग्ध आग्रह से पाँच वर्ष पश्चात् उसके यहाँ आया है। कॉलेज लगभग दो-ढाई मास के लिये बंद है। केवल पंद्रह दिन प्रणय यहाँ ठहरेगा, क्योंकि उसका प्रोग्राम बहुत लंबा है। दादी मसूरी में, बीमारी की दशा में, पड़ी है। प्रणय को देखना चाहती है। दो-चार दिन वह दादी के पास रहेगा।

और…?

भाभी का पत्र आया है। उसकी भाभी अजीब चीज़ है। प्रणय को ख़ूब छकाती है। कहती है—"आजकल के बाबू लोग गंधर्व-विवाह करते हैं। देवता जो ठहरे। और, प्रणय बाबू, क्या तुम भी… अच्छा, अब आगे और कुछ भो नहीं कहूँगी। नया-नया जोश, नई-नई जवानी, कहीं रुष्ट हो गए, तो?"

और, प्रणय देखता है, भाभी कटाक्ष कर हँस देती है। लेकिन भाभी, तुम्हारी इस हँसी का मूल्य…? अभी प्रणय अपनी भाभी को नहीं समझ सका है। न, भाभी थोड़े ही है; वह भी तो खिलौना है—खिलौना! किंतु नहीं, खिलौना बोलता नहीं, हँसता नहीं, और न किसी व्यक्ति-विशेष पर कटाक्ष ही करता है। हाँ, ठीक। यह भाभी—जिसे उसने प्राण-रूप में पाया है—पहेली है। अरे! वाह रे पगले प्रणय, पहेली भी कोई-कोई हल कर लेते हैं—सुलझा लेते हैं। तो फिर आख़िर उसकी भाभी है क्या? प्रणय की कल्पना जवाब दे रही है, वह इस प्रश्न को हल करने में असमर्थ है। अच्छा, प्रणय यही समझ लेता है, उसकी भाभी भाभी है, और कुछ नहीं।

झूकि आए बदरवा रूम-झूम……

हाँ, बादल अवश्य झुके हैं। पानी भी होगा, ऐसा प्रणय का दृढ़ विश्वास है। घड़ी की ओर दृष्टि गई। चार बज गए हैं—ठीक। किंतु अभी तक मीना चाय लेकर नहीं लौटी। कहती थी—अभी हाल चाय लाई। और, इतना समय निकल गया! यदि वह ठीक समय पर अपने इलाहाबादी मित्र पद्म के यहाँ न जा सकेगा, तो? तो क्या…? वह यही समझ लेगा, प्रणय के हृदय में उसके प्रति ज़रा-सा भी प्रेम-भाव नहीं। इसके अलावा प्रणय गंभीर व्यक्ति से डरता है। गंभीर व्यक्ति को वह शत्रु से भी अधिक डरावना समझता है। अपने जीवन के किसी क्षण में वह कुछ-का-कुछ कर सकता है।

किसी के जूतों की आहट से उसकी विचार-तंद्रा टूट गई। पंकज हँसता हुआ आया। पैंट में हाथ डालकर, सिगरेट् का कश खींचकर बोला—"जब से अभी तक यहीं लेटे हो? ख़ूब! चाय पी ली? पद्म के यहाँ न जाओगे? वह तो निरा पागल हो गया है। मैं तो बोलता भी नहीं।"

प्रणय के विना पूछे ही पंकज एक साँस में अनेक बातें कह गया। प्रणय चौकन्ना-सा उठ बैठा। अंतिम वाक्य उसे खटका। सोचने लगा—पंकज पद्म-जैसे विचारशील युवक से क्यों नहीं बोलता? उसके पागल-सा रहने का कारण क्या? उसके जीवन में परिवर्तन की ऐसी भीषण अग्नि क्यों प्रज्वलित हो उठी? कारण…?

कुछ नहीं, प्रणय कुछ भी नहीं ग्रहण कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी बीच पंकज फिर बोल उठा—"क्या सोचने लगे—पद्म के संबंध में? सच कहता हूँ, यार, उसने यहाँ आना तक छोड़ दिया—आना। कभी आता ही नहीं, जैसे मैं उसका शत्रु होऊँ! और भाई, मैं भी परवा नहीं करता। अच्छा, हाँ, अब आज इसी वक्त मैं 'कन्वेसिंग' पर जा रहा हूँ।"

प्रणय चुप। कुछ बोलता नहीं। जैसे उसके अंदर विचारों की आँधी आई हो, और वह पत्ते की भाँति इतस्ततः उड़ता फिरता हो। पंकज कहता गया—"जितने दिन इच्छा हो, ठहरो। तुम्हारा ही घर है। कहने-सुनने की बात ही क्या? मीना आपके निकट है, किसी बात का कष्ट नहीं हो सकता।"

"अभी-अभी जा रहे हो?" आश्चर्य के साथ प्रणय ने प्रश्न किया।

"हाँ भाई, नौकरी का काम ठहरा। अब क्षमा करो, गाड़ी का समय..." वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि शिष्टता-पूर्वक, हँसी की एक रेखा अपने मुख पर प्रस्फुटित कर, उसने अपने मित्र प्रणय से हाथ मिलाया, और बाहर खड़े ताँगे पर जा बैठा।

प्रणय के सामने जैसे सिनेमा के चल-चित्र नाच गए हों। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि उसकी समझ ही में न आया, अब क्या करना चाहिए। वह पराभूत-सा, किंकर्तव्यविमूढ़वत् बैठा-का-बैठा ही रहा।

पद्म के पागल-सा रहने का कारण क्या है, वह विचार-विनिमय कर रहा है। अरे, उसके वश चलते पद्म पागल हो सकता है? नहीं, नहीं। क्या प्रणय को पता नहीं, पद्म ने उसके लिये, उसकी जीवन-रक्षा के लिये अपने प्राणों का कुछ भी मूल्य नहीं आँका। उफ़! वही पागल हो जाय! क्या प्रणय अपनी दृष्टि से उसे देखने का साहस करेगा? उसे बराबर स्मरण आ रहा है, एक बार प्रणय, पद्म के साथ, अपने मामा के यहाँ गया था। वर्षा-ऋतु थी। घर-गाँव के नद, तालाब लबालब ऊपर तक भरे थे। नदियों की उत्तुंग लहरें मनुष्य-मात्र को उदरस्थ करने के लिये समुद्यत थीं। एकाएक, देखते-ही-देखते, तरंग में आकर, प्रणय नदी में जा कूदा—केवल मनोरंजनार्थ। वह अच्छा तैराक था, इसीलिये पद्म की बात न मानकर नदी में जल-क्रीड़ा करता रहा। ईश्वर की इच्छा, उसी समय भीषण तूफ़ान आ गया। जल ने उग्र रूप धारण कर लिया, और संयोग-वश वह एक भँवर-जाल का शिकार हुआ चाहता था कि पद्म अपनी जान हथेली पर लेकर, निर्भीकता-पूर्वक, एक उतावले की भाँति, जल में कूद पड़ा। तैरते-तैरते, कुछ क्षण पश्चात्, वह प्रणय के निकट जा पहुँचा, और उसे अपनी पीठ पर लेकर नदी से बाहर आ गया। उसका शरीर अतिशय क्लांत हो गया था। मुँह से सफ़ेद झाग-सा निकल रहा था। फिर वह संज्ञा-हीन होकर गिर पड़ा—धड़ाम्! दो घंटे बेहोश रहा।

होश आते ही उसने प्रणय को हृदय से लगा लिया। नेत्र तरल हो गए। बोल न सका, जैसे कठिन तपश्चर्या के पश्चात् उसने अपनी चिर-मनोवांछित निधि पा ली हो।

मीना चाय लेकर लौटी, तो देखा, वह अति गंभीर मुद्रा में बैठे हैं।

देखती रही एकटक उन्हीं की ओर। फिर बोली—"चाय?"

प्रणय ने देखा मीना को। देखता ही रहा, जैसे आज वह जी-भर मीना को देख लेगा। सहसा मुँह से निकल गया—"अरे, बड़ी देर कर दी!"

मीना शरमाई। मुँह लटका लिया। लेकिन फिर भी वह मन-ही-मन सोच रही थी, इनसे लज्जा की क्यों जाय? क्या यह कोई अपने दूसरे हैं? न, अपनी ही आत्मा के आलोक, अपनी ही जीवन-नौका के पतवार! तब मीना शरम न करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और, इस नारी के सामने प्रणय ?

वेश-विन्यास ने जादू फेरा। दीर्घ लोचनों में, उसने देखा, एक छिपी प्यास की अभिव्यक्ति ! बड़ा सुख मिल रहा है—आनंद—प्रणय को। चाहता है, मीना उसके जीवन-उपवन की रानी बने। उसके मरुस्थल-सदृश जीवन को, एक बार अपनी स्नेह-सुधा से, आनंद-प्लावित कर दे। उसके अंधकारमय कर्तव्य-पथ पर आलोक की एक रेखा खचित कर दे।

चाय की चुस्कियाँ लेता जाता है, और सोचता चलता है - इससे पूछूँ, पद्म यहाँ आता क्यों नहीं ? और, उसने पूछ भी दिया—"मीना ! पद्म यहाँ नहीं आता ? क्यों ?"

मीना निश्चल पाषाणवत् चुप है।

"बोलो मीना ! वह मेरा घनिष्ठ मित्र है। पंकज से कहीं अधिक स्नेह उसके लिये मेरे हृदय में है। उसके न आने का कारण मैं जानना चाहता हूँ।"

चुप्पी। मीना विधि-लिपि की भाँति मौन है। वह क्या उत्तर दे, वह स्वयं जो नहीं जानती। किंतु प्रणय ने देखा, पद्म का नाम लेते ही मीना के चक्षु दयार्द्र हो उठे हैं। आँसू छलछला आए।

अब मीना अपने को सँभालने में असमर्थ है। उसके अंदर जैसे ज्वालामुखी उठा चाहता हो। उसे आज पद्म की बात याद आ रही है। जिस दिन पद्म ने कहा था—"मीना, अब मैं आज से तुम्हारे यहाँ न आया करूँगा। मुझे नहीं विदित था, प्रणय तुम्हें..." और, शायद इसके आगे वह सब कुछ सुनकर भी कुछ न सुन सकी।

प्रणय निर्निमेष दृष्टि से उसकी मुख-मुद्रा की ओर निहार रहा है।

आज मीना, अपने जीवन के इस क्षण में, यह समझ सकी है कि पद्म मनुष्य नहीं, अपितु देवता है। कितनी सहन-शीलता है उसमें, कितना गांभीर्य है उसमें, और अपने मित्र प्रणय के प्रति कितनी उत्सर्ग की भावना है उसमें।

टप्-टप्-टप्-टप् !

"अरे, तुम रोती हो मीना ! दुत पगली, कहीं ऐसा भी होता है ?"

वह अब फफक-फफककर रोने लगी। प्रणय को लगा, किसी व्यथा के कारण मीना का हृदय चूर-चूर हो गया है। बोला—"क्या पद्म ने तुम्हें कुछ कहा है ? बोलो, उत्तर दो।"

मीना क्या बोले, और क्या उत्तर दे ? उसके नेत्रों का गरम जल सब कुछ कह रहा है। यदि प्रणय समझना ही चाहता है, तो सब कुछ समझ ले।

अपने बाहु-पाश में लेकर उसने मीना के दीर्घ लोचनों से ललाम कपोलों पर ढुलक रहे आँसुओं को अपने रूमाल से पोंछ दिया। मीना इस समय अपने आपको भूल-सी गई थी।

"देखो मीना, तुम्हें मेरी क़सम, सच-सच कह दो, पद्म यहाँ क्यों नहीं आता ?"

"एक दिन संध्या-समय, घर से बाहर निकलते हुए, उसने कहा था—'मीना, अब मैं आज से तुम्हारे यहाँ नहीं आया करूँगा। मुझे नहीं विदित था, प्रणय तुम्हें...' इसके आगे मैं कुछ भी नहीं सुन सकी।"

प्रणय अवाक्-सा है। बोला—"हाँ, और आगे कहती चलो मीना !"

मीना कहती है—"मुझे ऐसा मालूम हो रहा था, वह भावोद्वेलन में..."

वह फिर रो पड़ी। सच तो यह है, वह नहीं समझ सकी है—पद्म है क्या। यद्यपि वह मानती है, पद्म इस लोक का मनुष्य नहीं। आज उसके हृदय में पद्म के प्रति श्रद्धा का सागर उमड़ पड़ा है। यदि वह उसके समक्ष होता, तो अवश्य ही मीना उसकी चरण-रज अपने उन्नत मस्तक पर धारण कर अपने अनजान में किए गए अपराधों के लिये क्षमा-याचना करती, और कहती - पद्म, तुम मनुष्य नहीं, देवता हो—देवता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित

झंडु

केन्थार्डीन हेअर ओइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताज़गी मिलती है।
आज ही से आज़मायश के लिये ख़ास सिफ़ारिश है।

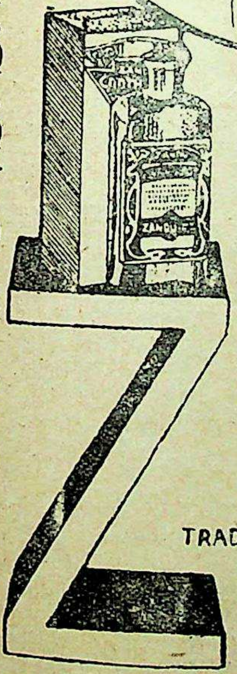

TRADE MARK

झंडु
फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड,
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ „ „ „—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

*** सात भाग ***

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं ; क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है, उनके रोग दूर भागते हैं। इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद रोज़ों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है !

		पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय	१ ला भाग	३)	१॥)
,,	२ रा भाग	५)	२॥)
,,	३ रा भाग	४।)	२=)
,,	४ था भाग	४।)	२=)
,,	५ वाँ भाग	५)	२॥)
,,	६ ठा भाग	३॥)	१॥)
,,	७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा	१२ वाँ संस्करण	३)	१॥)

दो हज़ार वर्षों में नई बात !

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

	मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक सचित्र	४॥)	२।)
वैराग्य ,,	५)	२॥)
शृंगार ,,	३)	१॥)
	१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मलीन परमहंस श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के लेख व उपदेश

हिंदी में

स्वामी रामतीर्थ के लेख और उपदेश ६ जिल्दों में (जिनमें पूर्व प्रकाशित ग्रंथावली के १८ भाग आ गए हैं) अब संशोधित होकर बड़ी सुंदरता-पूर्वक प्रकाशित हुए हैं, पृष्ठ-संख्या क्रमशः ३५०, ३५०, ४५०, ५५०, ४२० और ४५० है, प्रत्येक पुस्तक सजिल्द है; मूल्य प्रत्येक का साधारण संस्करण १), विशेष संस्करण १॥)

रामतीर्थ-ग्रंथावली पूर्व-प्रकाशित भाग १६ से २८ तक, प्रत्येक भाग साधारण संस्करण ॥), विशेष संस्करण ॥।)

नोट—संपूर्ण सेट्, साधारण संस्करण १०), विशेष संस्करण १५)

स्वामी राम के दश आदेश, पृष्ठ ३५०, (सजिल्द) १)

स्वामी राम का वृहत् जीवन-चरित, पृष्ठ ६७२, (सजिल्द); मू० २॥), विशेष संस्करण ३)

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमन्नारायण स्वामीजीकृत टीका) दो जिल्दों में, प्रत्येक जिल्द २), विशेष संस्करण ३)

वेदानुवचन (आत्म-दर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी) पृष्ठ ७१२; मूल्य २॥), विशेष संस्करण ३)

आत्म-साक्षात्कार की कसौटी (,,) पृष्ठ १७६; मूल्य ॥), विशेष संस्करण ॥।)

भगवत्-ज्ञान के विचित्र रहस्य (,,) पृष्ठ १६०; मूल्य ॥), विशेष संस्करण ॥।)

अँगरेज़ी में

The complete works of Swami Ram in 8 volumes of about 300 pages each, new published edition, price popular edition, cloth bound; per volume Re. 1/-/- Royal edition Rs. 2/-/-

The Rama's (11) Note Books in 2 volumes; cloth bound Rs. 2/-/- Royal Rs. 4/-/-

The Parables of Rama, pages 500, Rs. 2/-/- Royal Rs. 3/-/-

Heart of Rama, pocket edition, pages 250, As. -/4/- Royal As. -/8/-

Poems of Rama, Pages 300, As. -/4/- Royal As. -/8/-

The Story of Rama (By Sardar Puran Singh) Rs. 2/8/- Royal Rs. 3/8/-

Swami Ram: His Life and Legacy (By B. N. Sharga) Rs. 3/-/- Royal Rs. 3/8/-

A brief sketch of Rama's life Pages 100, As. -/6/-

Practical Gita (By B. Narayan Swarup) Pages 200, As. /4/-

Adi Bhagawad Gita both Hindi and English Translations -/2/6 each.

Swami Rama Text ward Several aspects of his life As. -/8/-

उर्दू में

खुम ख़ाना-ए-राम (तीन जिल्दों में)	प्रत्येक में पृष्ठ संख्या	५००; मूल्य	१॥),	विशेष संस्करण	२)
रामवर्षा दोनो भाग १ जिल्द में,	,,	३००; ,,	१),	,, ,,	१॥)
ख़ुतूते-राम (राम के पत्र गुरुजी के नाम)	,,	२०८; ,,	॥),	,, ,,	॥।)
सवानेह उमरी-ए-राम (संक्षिप्त जीवनी)	,,	३३०; ,,	॥।),	,, ,,	१)
वेदानुवचन (आत्म-दर्शी बाबा नगीनासिंह)	,,	५२०; ,,	१॥),	,, ,,	२)
मयारुल मुकाशफ़ा (,,)	,,	१७०; ,,	॥),	,, ,,	१)
रिसाला अजायबुल इल्म (,,)	,,	१२०; ,,	।=),	,, ,,	॥)
जगजीत-प्रज्ञा (,,)	,,	१००; ,,	।=),	,, ,,	॥।)

चित्र

स्वामी राम का चित्र तिरंगा (८॥×१०॥) =), केबिनट साइज़ -), विविध चित्र एकरंगे)॥, श्रीनारायण स्वामी)॥, भगत धन्नाराम)॥, झंडूमल हलवाई)॥

मैनेजर, श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, २५, मारवाड़ी गली, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी शिक्षक और विद्यार्थी

तो पहेली प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सैकड़ों रुपया पैदा करते रहते हैं,

परंतु

भारतीय शिक्षक और विद्यार्थी

इन पुरस्कार-प्रतियोगिताओं के प्रश्न हल करने तक का कष्ट नहीं उठाते।

यह अपवाद दूर करने के लिये

कपूर-पहेली नं० ७

में

नक़द ६५०) इनाम

अवश्य जीतिए

प्रश्न—एक बनिया एक सेर से लेकर तीस सेर तक माल केवल चार बाँटों से तौल लेता है। आवश्यकता पड़ने पर वह उन बाँटों को तराज़ू पर आगे-पीछे भी रख लिया करता है। उसका एक बाँट एक सेर का है। बताइए, उसके शेष तीनो बाँट किस-किस वज़न के हैं? उत्तर भेजकर पुरस्कार लीजिए।

नियम

(१) पहेली नं० ७ के प्रश्न पर कुल ६५०) इनाम है। ६००) शुद्ध उत्तरों में तथा ५०) स्पेशल पुरस्कार में विभाजित किए जायँगे। विशेष अवस्था में पुरस्कार-वितरण लाटरी द्वारा भी किया जा सकता है।

(२) इस प्रश्न के प्रत्येक उत्तर की प्रवेश-फ़ीस केवल १) है, जो मनीआर्डर या पोस्टल-ऑर्डर द्वारा आनी चाहिए। फ़ीस साथ आए बग़ैर उत्तर बेकार समझा जायगा।

(३) यद्यपि उत्तर आने की अंतिम तिथि २६ अगस्त है। परंतु १० अगस्त तक प्राप्त होनेवाले उत्तरों पर उनके असली पुरस्कार के अलावा ५०) और अलग से स्पेशल इनाम में दिए जायँगे। इस प्रकार शीघ्र उत्तर भेज देनेवाले व्यक्ति दो-दो पुरस्कार पा सकेंगे।

(४) इस पहेली का विस्तृत परिणाम यथासमय प्रतियोगियों के पास मुफ़्त भेज दिया जायगा।

(५) यदि कोई नए सज्जन अविश्वास के कारण पहेली में भाग न लेना चाहें, तो उन्हें ।)॥ का टिकट भेजकर पिछली पहेली का नतीजा मँगा लेना चाहिए।

(६) इस पहेली में नियमानुसार सभी लोग भाग ले सकते हैं। यह पहेली केवल शिक्षक और विद्यार्थियों के लिये ही नहीं; बल्कि सर्व-साधारण की बुद्धि नापने के लिये बनाई गई है।

(७) मैनेजर का निर्णय सर्व-प्रकार से प्रत्येक दशा में क़ानूनन् मान्य होगा।

(८) समस्त डाक निम्न-पते से रवाना करनी चाहिए—

मैनेजर, कपूर-पहेली नं० ७, पिहानी, हरदोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उसे देखता आऊँ मीना ! उसने मेरे लिये बहुत कुछ किया है। मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ ?" उद्विग्नता के साथ प्रणय ने मीना की सघन घन-घटा-सी केश-राशि पर हाथ फेरते हुए कहा।

मीना काँप रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, मीना के सामने पागल पद्म खड़ा है, और वह उसे देखकर हरिणी की तरह भयाकुल हो उठी है।

(२)

पद्म एक 'ईज़ी चेयर' पर लेटा-लेटा गुनगुना रहा है—

"झुकि आए बदरवा रूम-झूम..."

उसके इस गान में व्यथा है, कसक है, और एक छिपी हुई पीड़ा। कांति से जगमगाता उसका मुख-मंडल विवर्ण और म्लान हो गया है। विक्षिप्त-सा बैठा गुनगुनाता है—

"झुकि आए बदरवा रूम-झूम !"

गट्ट, गट्ट, गट्ट...

प्रणय सोचता है, आश्चर्य से—शराब...?

कितना बीभत्स दृश्य है ! परिवर्तन—आमूल परिवर्तन ! इतना नैतिक पतन—उसके पद्म का ! आँखें फाड़-फाड़कर दरवाज़े की ओट से देखता है।

ह...ह...ह...ह...ह...ह ! दुनिया...यह दुनिया...ह...ह ..ह...ह !

प्रणय आगे बढ़कर पद्म के सामने आया। पद्म ने उसे ध्यान से देखा, और देखता ही रहा। उसकी इच्छा हुई, उठे, किंतु विवश था। शक्ति न थी, बल न था – कंकाल, जीर्ण-शीर्ण शरीर और दाढ़ी पर बड़े-बड़े बाल। प्रणय डरा, क्योंकि मित्र की आँखें रक्त-वर्ण थीं।

लेटे - ही - लेटे बोला—"प्रणय बाबू, आओ। पाँच वर्ष पश्चात्। भूल गए ? ह...ह...ह... ह...। याद है तुम्हें—मैंने तुम्हारी जान बचाई थी ? और तुमने मुझे इस रूप में अपना बदला चुकाया ? ह...ह...! ख़ैर, मैं उस घटना को नहीं दोहराना चाहता। तुम अत्याचार कर लो मुझ पर ! और, मैंने एक ग़लती भी की है। मुझे नहीं विदित था कि तुम मीना को......और, तब से मैंने उसे देखने की चेष्टा भी नहीं की। ओह, थक गया भाई। तुम भी पीते हो ? लो, यदि इच्छा हो, तो लो एक कप !"

गट्ट, गट्ट, गट्ट !

पद्म बग़ल में रक्खी शराब के चार घूँट अपने गले के घाट से उतार गया। फिर उसने कप—चीनी मिट्टी के कप को सामने—ठीक सामने—चट्टान पर फेंक दिया। चूर-चूर हो गया। बोला—"देखा, ह...ह...ह......"

प्रणय के सामने सारी कहानी आ गई। वह कुछ कहना चाहता था कि भृकुटी तानकर पद्म बोला—"तू नीच है रे प्रणय ! चल, हट जा मेरे सामने से। तूने मेरा ख़ून किया है। ह...ह... ख़ून ! नहीं जी, ख़ून नहीं...मैं यह जो पीता हूँ, अपने...हृदय...की...जलन...शांति करने के लिये।"

दाँत पीसता हुआ फिर बोला—"मीना, वह मीना...अः...ह...ह...ह"

प्रणय सोच रहा था—तुम्हारा त्याग कितना महान् है पद्म ! मैं उऋण नहीं हो सकता। किंतु तुम यह जो आँसू गिरा रहे हो, तुम्हारे नहीं, अपितु मेरी आत्मा के हैं। तुम—सचमुच तुम पागल नहीं हुए, वरन् मैं। तुम मेरी ही आत्मा के आलोक हो। वह, जिसे तुम दूसरा समझते हो, तुम्हारा है—सदैव तुम्हारा। तुम्हारा ही होकर रहेगा।

पद्म संज्ञा-हीन होकर कुर्सी पर बैठा रह जाता है।

"टेलीफ़ोन...टेलीफ़ोन कहाँ है ?" प्रणय ने पद्म के नौकर से पूछा।

उसने टेलीफ़ोन की ओर संकेत कर कहा—"वह।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"टु नॉट फ़ाइव एट।" प्रणय ने 'डायल' घुमाया।

डॉक्टर के टेलीफ़ोन की घंटी घनघना उठी। 'रिसीवर' उठाया—"हलो।"

"कम सून प्लीज़। प्रणय।" उसने उत्तर दिया।

डॉक्टर खट-पट करता प्रणय के मित्र के यहाँ जा पहुँचा।

पद्म ने आँखें उठाईं। कुछ बोला नहीं। डॉक्टर और प्रणय की ओर देखता-भर रहा।

डॉक्टर ने स्टेथसकोप को उसकी छाती से लगाया।

दूसरे ही क्षण पद्म लुढ़क गया, और एक अज्ञात कहानी उसके मुख पर मूर्तिमान् होकर रह गई।

डॉक्टर को जैसे काठ मार गया हो। उसका चेहरा काला पड़ गया। बोला—"हार्ट फ़ेल्योर बाई सडन शॉक!"

घटाएँ घिर आईं। बूँदें गिरीं। और' फिर वही...

झुकि आए बदरवा झूम-झूम... !

सुधा की प्रसन्नता

का ठिकाना न रहा, जब कि उसकी सखी द्वारा बताई हुई दवा से उसके हाथ की जलन व पीड़ा तत्क्षण शांत हो गई। उसका हाथ आग से जल गया था, और वह जलन व पीड़ा से रो रही थी। अपनी सखी से उसने इसका नाम पूछा। सखी ने कहा—मैं तो इसे अपने यहाँ हमेशा रखती हूँ, क्योंकि जिन दुर्घटनाओं में इसकी आवश्यकता होती है, वह गृहस्थी में हुआ ही करती हैं। तुम भी इसे हमेशा अपने यहाँ रक्खा करो। देखो, तुमको इसने किस तरह रोते से हँसा दिया। इसका नाम है—

हील-एक मरहम (Regd.)

(चोट, कटे, जले आदि पर लगाने का विख्यात मरहम)

स्थानीय हमारे एजेंट से खरीदिए।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्म्मन) लि॰

विभाग नं॰ ४६, पोस्ट-बक्स नं॰ ५५४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आगामी महायुद्ध

[श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०]

विगत महायुद्ध की समाप्ति के बाद अनेक देशों के राजनीतिज्ञों का विचार था कि अब भविष्य में ऐसा विकराल युद्ध न होगा। उनकी राय में यह युद्ध युद्ध का अंत कर देने (war to end war) के लिये ही हुआ था। उनका यह विचार बहुत दिनों तक सत्य साबित न हो सका। आगामी महासमर के लिये सब प्रकार की तैयारियाँ हो रही हैं। युद्ध का वातावरण भी सब ओर दिखलाई पड़ रहा है। इसके छिड़ने में अधिक समय नहीं। किसी क्षण भी कोई चिनगारी इस साज़ो-सामान को भड़काने के लिये पर्याप्त हो सकती है।

वास्तव में युद्ध न होना एक असाधारण बात ही समझनी चाहिए। यह कोई इस शताब्दी का नया आविष्कार नहीं। इतिहास युद्धों से भरा पड़ा है। जब योरपीय देशों के राजनीतिज्ञों के एक समुदाय ने विगत महासमर को अंतिम युद्ध समझा था, उसी समय उन्हीं देशों में राजनीतिज्ञों का एक दूसरा समुदाय था, जो युद्ध को पहले की अपेक्षा और भी अधिक नज़दीक समझता था। उनका ख़याल था, आगामी महासमर इससे भी अधिक भयानक, व्यापक और ज़बरदस्त होगा। हमें उनका डर अब दिन-पर-दिन सच होता मालूम पड़ता है। राजनीतिज्ञों के एक दल की राय में तो आगामी समर की तैयारी उसी समय शुरू हो गई थी, जब पिछले युद्ध की समाप्ति के फलस्वरूप संधि-चर्चा हो रही थी। वह संधि ही, हमारी राय में, बहुत कुछ अंशों में, इस आगामी महायुद्ध की जड़ होगी, और इसका सारा उत्तरदायित्व होगा इस संधि में भाग लेनेवाले देशों पर, जो संसार की महान् शक्तियों के नाम से पुकारे जाते हैं। संधि की शर्तों के तय होने के समय जीती हुई शक्तियों का रुख़ अत्यंत स्वार्थ-पूर्ण तथा अदूरदर्शिता का था। हारे हुए देशों को वे बिलकुल पीस देना चाहते थे, जिसमें वे कभी भविष्य में फिर न उठ सकें। उनके साथ इन्होंने ज़रा भी सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार नहीं किया, यहाँ तक कि सभापति विलसन को भी यह बड़ा बुरा मालूम हुआ, पर उनकी इनके सामने कुछ न चली। किन्हीं बातों में उन्हें भी इन देशों ने उल्लू बना डाला था। जिन शर्तों के आधार पर जर्मनी ने संधि के लिये युद्ध बंद कर दिया था, और जिन्हें इन देशों ने मान लिया था, उन्हीं शर्तों की बाद में परवा न की गई थी।

संधि के बाद सभी देशों में अशांति और असंतोष की लहर दौड़ रही थी। सभी के दिलों में इन साम्राज्यवादी देशों की धींगा-धींगी के प्रति प्रतिशोध की भावना जड़ पकड़ रही थी। उसी समय से इन देशों ने बदला लेने के लिये आगामी महासमर की कल्पना की, और उसके लिये ज़ोर से तैयारी करने लगे। कुछ समय तो यह तैयारी धीरे-धीरे होती रही, परंतु अब इसने बड़ा ज़ोर पकड़ लिया है, इतना कि इस तैयारी की ख़बरें चारो ओर से सुनाई दे रही हैं।

इस भयानक तैयारी के कारण संसार की राजनीतिक परिस्थिति के अतिरिक्त अन्य बातों पर भी भारी प्रभाव पड़ा है। इस प्रभाव से कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं बचा। पर प्रत्येक व्यक्ति उस प्रभाव को समझ न सकेगा। उसे समझने के लिये बहुत बातें जानने-समझने की आवश्यकता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछला महायुद्ध योरप में हुआ था। उसमें लड़नेवाले सभी देश क़रीब-क़रीब योरप के ही थे। इसका अधिकांश प्रभाव वहीं पड़ा। वहीं के देशों में साम्राज्य-विस्तार की भूख ज़ोरों से विद्यमान है। संसार के अन्य देशों का भाग युद्ध में बहुत कम था। अमेरिका और जापान बाद में सम्मिलित हुए थे। इस समय भी योरप में ही युद्ध के लिये विशेष समरायोजन हो रहा है। हमारा तो अनुमान है कि आगामी युद्ध की रणस्थली भी योरप में ही होगी।

लड़ाई की तैयारियाँ सभी देशों में हो रही हैं। अमेरिका और जापान भी इस ओर क़दम बढ़ाए हुए हैं। यदि आगामी महासमर अधिक दिनों तक चला, तो ये देश भी उसमें किसी-न-किसी रूप में भाग लेने को मजबूर होंगे। थोड़े दिनों की लड़ाई में शायद ये भाग न लें। हमारा तो अनुमान यह भी है कि युद्ध के प्रारंभ में, जो योरप में होगा, ये देश किसी भी ओर न होंगे। इसका कारण है। जापान का संघर्ष योरप के देशों से है, पर यह उसका प्रमुख लक्ष्य नहीं। उसका सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण और चिर-वांछित मतलब है चीन को हड़प लेने से। वह चीन को हड़प लेने के लिये ही महायुद्ध में भाग लेगा, अथवा जब उसकी किसी अन्य बात में हक़तलफ़ी होगी, तब। वह यथासंभव योरप के झगड़ों से अलग रहना चाहता है। जापान की साम्राज्यवादी नीति का शिकार चीन है। इस देश पर और देशों की निगाह भी है, परंतु जापान की सबसे अधिक। वह उसके नज़दीक बहुत मौक़े का देश है।

अमेरिका का साम्राज्यवाद की ओर झुकाव तो है, पर इन देशों के मुक़ाबले में बहुत कम। यह सदा से साम्राज्यवाद का विरोधी होने का दावा करता रहा है, और अब भी करता है। परंतु इसने भी कुछ देशों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया है, और वह यह प्रभुत्व क़ायम रखने के लिये प्रयत्नशील भी रहा है। इस वजह से हम उसे साम्राज्यवादी मानते हैं। उसमें साम्राज्य-विस्तार के मुक़ाबले में व्यापारिक प्रवृत्तियाँ अधिक प्रबल हैं। व्यापार बढ़ाने के लिये साम्राज्य का होना अब आवश्यक नहीं समझा जाता। सन् १८७०-८० के क़रीब, जब योरप की वर्तमान महा-शक्तियाँ व्यापार तथा साम्राज्य बढ़ाने की इच्छुक थीं, तब उनका यही विश्वास था कि व्यापार बढ़ाने के लिये साम्राज्य-विस्तार बहुत आवश्यक है। परंतु अब इस बात में विश्वास करनेवाले थोड़े ही हैं। साम्राज्य कभी-कभी हानिकर सिद्ध हुआ है। व्यापार को इससे तरजीह नहीं मिलती, यह तो दिन-पर-दिन साबित होता जा रहा है।

जापान और अमेरिका ने भी समरायोजन को नए-से-नए आविष्कारों के आधार पर तैयार किया है। जब संसार की प्रमुख शक्तियाँ इस कार्य में जुटी हैं, तो अन्य देश क्यों पीछे रह जायँ। साम्राज्य-विस्तार के लिये नहीं, तो उन्हें कम-से-कम अपनी रक्षा के लिये तो शस्त्रीकरण की दौड़ में शामिल होना ही पड़ता है। जापान तथा अमेरिका संसार की प्रमुख शक्तियों में गिने जाते हैं।

संसार में जापान तथा अमेरिका को छोड़कर शेष सब शक्तिशाली देश योरप में ही हैं, अथवा उनका असर अवशेष देशों पर है। आस्ट्रेलिया, दक्षिण-आफ़्रिका, कैनाडा, इजिप्ट आदि देश बड़े तो बहुत हैं, पर राजनीतिक दृष्टि से इँगलैंड के मित्र आदि ही कहने चाहिए। उनकी पहले तो कोई गणना ही नहीं, यदि है भी, तो इँगलैंड के लिये ही। अमेरिका के छोटे-छोटे राष्ट्र इनके मुक़ाबले में बच्चे ही हैं।

विगत महासमर के बाद कई बार ऐसे अवसर आए, जब सबको दूसरे महासमर की आशंका प्रतीत होने लगी। कई छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार कई देशों में मनमुटाव बढ़ गया। ज्योतिष-विद्या-विशारद भी कई बार भविष्य-वाणी कर चुके कि अमुक वर्ष में महायुद्ध प्रारंभ होगा। परंतु वह महासमर अभी तक न हो सका, जिसका होना संसार के प्रत्येक राजनीतिज्ञ की दृष्टि में अनिवार्य है। राजनीतिक परिस्थिति की नाज़ुक स्थिति हमेशा से ही रहती आई है। अतः भविष्य-वाणी करना तो आसान है, पर यह कहना मुश्किल कि कौन बात कब होगी। सबों की निगाह में महासमर निश्चित है ; पर कब होगा, यह कहने का कोई साहस नहीं कर सकता। इतना तो कहा जा सकता है कि वह अत्यधिक दिनों तक न टल सकेगा, संभवतः चार-छ साल में शुरू हो जायगा। हमारी तो धारणा है कि आगामी महासमर जितना ही टलता जायगा, उतना ही अधिक व्यापक और भयानक होगा। विज्ञान के कितने ही आविष्कार युद्ध के लिये हो रहे हैं, जो एक-से-एक भीषण हैं। कौन कह सकता है कि आगामी युद्ध में संसार की ज़बरदस्त हानि न होगी। हमारा तो विचार है, और परिस्थिति से भी यही प्रतीत होता है कि इसमें करोड़ों व्यक्तियों की जानें जायँगी, अरबों का नुक़सान होगा, और ताज्जुब नहीं, दो-चार देश ही नेस्त-नाबूद हो जायँ। कुछ लोगों ने अंदाज़ लगाया है कि जितना ख़र्च इस बार शस्त्रीकरण में किया गया है, उतना विगत महासमर में हुआ था, जो कई साल तक चला था। जब इतना ख़र्च अभी तक हो चुका है, तब न-मालूम कितना और होगा, जब लड़ाई शुरू होगी।

एक बार चीन-जापान की आपाधापी में हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि रूस भी उसमें सम्मिलित होनेवाला है। परंतु वह मौक़ा बच गया। अबीसीनिया और इटली के युद्ध में भी कई बार ऐसे अवसर आते प्रतीत हुए, जब हमें डर था कि कहीं उसमें अन्य देश भी भाग न लेने लग जायँ। अन्य देशों के भाग लेते ही संसार-व्यापी युद्ध प्रारंभ हो जाता, क्योंकि सभी इस मौक़े पर अपने-अपने दिलों के हौसले, जो उन्होंने अभी तक अपने मन में ही रक्खे थे, दिखाने लगते। स्पेन का गृह - युद्ध भी कभी का समाप्त हो गया होता, परंतु अन्य शक्तियाँ इसे चलाती रहीं। इसमें इटली और रूस का विशेष भाग था। दोनो के सिद्धांतों की वहाँ मुठभेड़ हो रही थी। अस्तु।

संसार बहुत नज़दीक आ गया है। अब यह संभव नहीं कि एक देश में युद्ध हो, और अन्य देशों पर उसका प्रभाव न पड़े, उनका इससे कोई भी नफ़ा-नुक़सान न हो। किसी भी देश की, युद्ध तो एक बड़ी घटना है, साधारण घटना का प्रभाव भी संसार के अन्य देशों पर पड़ता है। प्रत्येक देश दूसरे देशों की आंतरिक परिस्थिति से भली भाँति परिचित रहता है। उनके राजनीतिक कार्य-क्रमों का ध्यान-पूर्वक, बारीकी से, अध्ययन करता है, क्योंकि उनका प्रभाव संसार पर तत्काल पड़ता है। यदि एक देश अपने देश के सिक्के की दर में कमी कर देता है, तो उसका असर संसार-भर के आर्थिक वातावरण पर होता है। केवल आर्थिक ही नहीं, राजनीतिक परिस्थिति भी इससे प्रभावित होती है। इसीलिये उपर्युक्त लड़ाइयों से किसी भी समय महायुद्ध की आशंका रहती थी। जब एक देश में युद्ध होता है, तो सभी देशों को, उसकी गति-विधि पर नज़र रखते हुए, अपनी नीति स्थिर करनी पड़ती है। कोई भी देश इस परिस्थिति की उपेक्षा नहीं कर सकता।

आजकल जो राजनीतिक संधियाँ होती हैं, उनका मूल्य बहुत कम होता है *, फिर भी उनका

* इस संबंध में अधिक जानने के लिये पाठक हमारा 'अंतरराष्ट्रीय संधियों का मूल्य'-शीर्षक लेख 'सुधा' (जनवरी, ३७) में पढ़ सकते हैं। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव संसार के राजनीतिक वातावरण पर तो पड़ता ही है। आगामी युद्ध के संबंध में कोई बात सोचने के लिये हमें इन संधियों पर ग़ौर करने की आवश्यकता नहीं। संधियाँ केवल दिखावा हैं। इनका जो कुछ मूल्य है, वह युद्ध होने के पहले ही भले हो, युद्ध के समय तथा युद्ध की परिस्थिति पर कुछ भी नहीं होता। इतिहास से यह बात स्पष्ट है कि युद्ध में भाग लेने के लिये सभी देशों ने संधियों के अनुकूल आचरण नहीं किया। सबसे प्रमुख बात, जो युद्ध के प्रति किसी भी देश की नीति का संचालन करती है, संधियाँ नहीं होतीं, वरन् होते हैं उसके निजी स्वार्थ के प्रश्न। जिसमें अधिक लाभ हो, सभी देश उसी नीति को अपनाते हैं—उसी के अनुसार कार्य करते हैं। इसमें यदि कोई संधि आ जाय, तो वे उसका नाम भले ही लेने लग जायँ, पर वास्तव में उससे उनका उतना संबंध नहीं होता। विगत महासमर में भाग लेने के लिये इँगलैंड ने पोलैंड के प्रति किए हुए अपने वादे की दोहाई देकर जर्मनी से युद्ध छेड़ दिया। परंतु हमारे पाठक जानते हैं, इसमें सचाई कितनी है। उसे जर्मनी के ख़िलाफ़ लड़ना था, बहाना भी मिल गया। यदि उसे लड़ना न होता, तो वह इस संधि की कुछ भी परवा न करता। इटली-अबीसीनिया-युद्ध का उदाहरण अभी ताज़ा है। इसमें कितने देशों ने अपने वादों के अनुकूल आचरण किया? यदि वे अपने वादे पर डटे रहते, तो क्या अबीसीनिया को इस तरह इटली पछाड़ देता? अबीसीनिया के सम्राट् ने राष्ट्र-संघ में विश्वास रक्खा, और अपने को नष्ट-भ्रष्ट हो जाने दिया। उसे धोके में रखकर हरवा दिया, और इसके ज़िम्मेदार हैं संसार के शक्तिशाली राष्ट्र। अगर उसे वास्तविक स्थिति का पता होता, तो वह अपने देश का किसी-न-किसी प्रकार कुछ-न-कुछ भाग बचा लेता।

पिछले महायुद्ध में कितने प्रकार के नए-नए शस्त्रास्त्र इस्तेमाल किए गए थे शत्रु-सेनाओं का नाश करने के लिये? विज्ञान ने इधर के वर्षों में अधिक तरक़्क़ी की है, और इसके परिणाम-स्वरूप मनुष्य का संहार करनेवाले साधनों में भी ख़ूब अभिवृद्धि हुई है। इससे हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अगले महासमर में न-मालूम कितने प्रकार की ज़हरीली गैसों, बम-गोलों, हवाई-समुद्री जहाज़ों आदि का प्रयोग किया जायगा।

युद्ध के समय शत्रुओं की सेनाओं का नियंत्रण करने के लिये सभी देशों ने एक अंतरराष्ट्रीय क़ानून माना है। इस क़ानून की धाराओं में समय-समय पर वृद्धि होती गई है। युद्ध के समय शत्रुओं के साथ कैसा बरताव करना चाहिए, आदि बातें इसमें बतलाई गई हैं। परंतु यह क़ानून भी एक दिखावा ही है। इसकी परवा भी कोई नहीं करता। इटली अबीसीनिया को, इन क़ानूनों को भंग करके ही पछाड़ पाया है। यदि वह इन्हें भंग न करता, तो संभवतः इटली इस प्रकार न जीत सकता। संसार के देश इसे मनवाने की गारंटी करते हैं, पर किसी ने इस बात पर चूँ तक न की, क्योंकि किसी का इसमें कोई हित न था। यदि उनका मतलब होता, तो वे इसी बहाने महासमर की रचना करके इसके रूप को बिलकुल बदल देते। अभी तक उन्हीं की ज़िंदगी पर बीतती थी, जो युद्ध में भाग लेते थे—युद्ध-भूमि में, परंतु अब किसी की ज़िंदगी की ख़ैर न समझनी चाहिए। इटली ने अबीसीनिया के उन अधिवासियों पर भी भीषण बम-वर्षा की थी, जो युद्ध से दूर रह रहे थे, और उन शहरों को तहस-नहस कर डाला, जो युद्ध-भूमि से सैकड़ों मील दूर थे। इस एक उदाहरण से हम यह बतलाना चाहते हैं कि आगामी महासमर के समय किसी भी व्यक्ति को, संसार के किसी भी देश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह रहता हो, अपने को सुरक्षित न समझना चाहिए। चाहे उसका संबंध लड़नेवाले देशों से हो या न हो, उसका जीवन ख़तरे में ही रहेगा।

इस लेख में हमने संक्षेप में संसार की वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण करके आगामी महासमर के संबंध में कुछ बातें लिखने का साहस किया है। इन बातों तथा अन्य अनेक बातों पर विचार करते हुए यह कहना मुश्किल है कि आगामी महासमर कब छिड़ेगा, और इसमें संसार के किन-किन देशों को भाग लेना पड़ेगा? ये बातें उसी समय की अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति पर निर्भर होंगी। उनके संबंध में अभी से ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। परंतु परिस्थिति की गंभीरता से कुछ बातों का अनुमान लगाया जा सकता है, और, वे ६६ प्रतिशत सही भी उतर सकती हैं, ऐसा हमारी धारणा है। यह तो हम नहीं बता सकते कि युद्ध कब होगा, पर यह सभी जानते हैं कि वह अब अधिक दिनों तक नहीं टाला जा सकता। आगामी चार-छ वर्षों में इसे किसी भी समय शुरू हो जाना चाहिए। इसमें संसार की क़रीब-क़रीब सभी शक्तियों को भाग लेना होगा। पहले चाहे युद्ध प्रारंभ थोड़ी-सी ही शक्तियों में हो, परंतु संसार की अन्य शक्तियाँ अपने को अधिक दिनों तक इससे दूर न रख सकेंगी। जहाँ तक हमारा अनुमान है, यह युद्ध योरप में ही प्रारंभ होगा, और बाद में संसार के प्रत्येक देश में फैल सकता है। यह बात भी निश्चित रूप से कही जा सकती है कि इससे मनुष्य-जाति पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। संसार की भारी क्षति होगी। संभव है, युद्ध के बाद संसार की प्रमुख शक्तियों के दृष्टिकोण में अंतर आ जाय। साम्राज्यवादी सिद्धांतों की हत्या होकर किसी नए सिद्धांत का बोल-बाला हो, और इसमें शायद रूस का साम्यवाद सबसे बाज़ी मार ले जाय। कुछ लोगों का अनुमान है कि महासमर के बाद संसार में भारी परिवर्तन होगा, और उसमें नई-नई बातों का समावेश होगा। इस महासमर में संसार की बहुत-सी समस्याएँ हल हो जायँगी, जिनका इस समय हल करना अत्यंत कठिन है।

पद-दलित और पराधीन देशों के लिये इससे लाभ की संभावना है। उनके लिये स्वतंत्रता प्राप्त कर लेना आसान काम होगा। भारत को इस महायुद्ध के फल-स्वरूप स्वतंत्रता मिल सकती है। अतएव हम तो उस दिन की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता-पूर्वक कर रहे हैं, जब संसार में महासमर की सृष्टि हो।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। बिना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमा-परवाने

[श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र']

हम शमा खोजने को निकले ;
हम दीवाने परवाने हैं !

(१)

गिरि, वन, उपवन, आँगन-आँगन
हम खोज रहे वह ज्योति-किरन,
जो ले-ले हमसे अपनापन,
ये पंख हमें झुलसाने हैं।
हम दीवाने परवाने हैं !

(२)

है शमा कहीं जलती अविरल
झिलमिल हिल हो आकुल-व्याकुल ;
है उसे स्नेह की प्यास प्रबल,
हम भरे प्यार - पैमाने हैं।
हम दीवाने परवाने हैं !

(३)

हम हास कभी, उल्लास कभी,
हम अश्रु कभी, उच्छ्वास कभी,
हम तृप्ति कभी, हम प्यास कभी,
हम तरह - तरह के गाने हैं।
हम दीवाने परवाने हैं !

(४)

हम रहे भ्रमर, जब खिली कली,
हम शलभ बने, जब शमा जली ;
पहचान सरस सबसे कर ली,
हम कब किससे अनजाने हैं।
हम दीवाने परवाने हैं !

ESTABLISHED 1899 TELEPHONES:—2 & 2A

BHOLA NATH & CO.

30, AMINABAD PARK, LUCKNOW

MANUFACTURE RUBBER STAMPS, BRASS &
METAL BADGES, BRASS SEALS, BRASS &
IRON PADLOCKS, THUMB IMPRESSION OUTFITS,
MILITARY BADGES, TURBAN MONOGRAMS, FILE LACES
EMBOSSING MACHINES, INKS Etc. Etc

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहार के नर-रत्न

श्रीविपिनविहारीजी वर्मा

[आप अभी हाल ही में बेतिया-राज्य के मैनेजर नियुक्त हुए हैं । आप बहुत ही कार्य-कुशल और उदार व्यक्ति हैं । आपके संबंध में एक नोट धारा में दिया गया है ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ-रेडियो-स्टेशन पर कवि-सम्मेलन

[युक्त प्रांत के कुछ प्रमुख कवियों ने, १५ जनवरी को, लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं। कवि
ं० बालकृष्णजी शर्मा 'नवीन', आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेनजी शास्त्री, कुमारी सावित्री, प्रो० रामकुमारजी व
डॉ० रमाशंकरजी शुक्र 'रसाल' आदि कवि बाहर से पधारे थे। अधिकांश कवि कवि-कुटीर में ठहरे थे। दूसरे दिन उपस्थि
कवियों का ग्रूप-चित्र खींचा गया—

कुर्सी पर बैठे (बाईं ओर से)—आयुर्वेदाचार्य श्रीप्रो० चतुरसेनजी शास्त्री, डॉ० रमाशंकरजी शुक्र 'रसाल' एम्० ए
डी० लिट्०, कुमारी सावित्री बी० ए०, रावराजा रायबहादुर डॉक्टर श्यामविहारीजी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्०, रा
बहादुर श्रीपं० शुकदेवविहारीजी मिश्र बी० ए०, कुमारी सरस्वती बी० ए० और प्रो० रामकुमारजी वर्मा एम्० ए

पीछे खड़े (बाईं ओर से)—श्रीयुत श्रीधरसिंहजी एम्० ए०, सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल और श्रीप्रतापनारायणजी मिश्र

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य की कजलियाँ

[श्रीदिनेशनारायण उपाध्याय साहित्यरत्न]

हिंदी-साहित्य में गीत-काव्य का शृंखला-बद्ध इतिहास वीर-गाथा-काल से ही प्रारंभ हो जाता है। जिस प्रकार वीर-गाथा-काल में भारतीय वीरों के यशोगान की परंपरा प्रत्यक्ष रूप से लक्षित होती है, वैसे ही भक्ति-काल में कृष्ण-भक्तों की सुरीली तानें राधा-कृष्ण के प्रेममय विरह का सच्चा चित्र हमारे समक्ष उपस्थित करती हैं। पर जिस समय (भारतेंदु-काल में) हम गीत-काव्य का निरीक्षण करते हैं, तब हमें गीत-काव्य की प्राचीन धारा के साथ एक नवीन धारा का भी आभास मिलता है। हमें—

खोटाई पोरहि पोर भरी ;
हमें छाँड़ि मधुबन में बैठे, बरी कूर कुबरी।
स्वारथ-लोभी मुँह देखे की हमसों प्रीत करी ;
'हरीचंद' दूजन कै ह्वै कै हा-हा हम निदरी।

(भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र)

के साथ-साथ—

जय-जय भारत-भूमि-भवानी।
जाकी सुजस-पताका जग के दसहूँ दिसि फहरानी।
सब सुख-सामग्री-पूरित ऋतु सकल समान सोहानी;
जा श्री-सोभा लखि अलका अरु अमरावती खिसानी।

(पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन')

ऐसे भी गीत मिलने लगे। इसी काल में हमें संगीत के अंतर्गत मलार इत्यादि वर्षा-कालीन गीतों के साथ कजली की रचनाएँ भी मिलती हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि कजली के गीत भारत में कब से प्रचलित हैं, तथा इनका समाज से कैसे संबंध हुआ ? ऐसा देखा जाता है कि आर्य-स्त्रियाँ भाद्र शुक्ल तृतीया को कजली का व्रत रखती हैं। इस व्रत का मुख्य ध्येय सौभाग्य की वृद्धि करने की आशा ही है। पूजनादि के अतिरिक्त स्त्रियों के आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा-कौतूहल के कार्यों से ही, जो धर्म तथा सदाचार-संबंधी उत्सव की शोभा बढ़ाने के हेतु होते थे, कजली के गीत निकले, जो उस समय गाए जाते थे। आधुनिक कजलियाँ इन्हीं गीतों की उपज हैं। कजली की परिभाषा में हम कह सकते हैं कि ये वर्षा-काल के गीत हैं, जो पहले स्त्रियों द्वारा ही बनाए तथा गाए जाते थे। आधुनिक समय में कजली का प्रचार पुरुषों में पूर्ण रूप से हो गया है। कजली का जन्म मिर्ज़ापुर के आस-पास के प्रांतों में ही हुआ है, जिसके प्रमाण में आजकल की जितनी प्राचीन कजलियाँ हैं, उपस्थित की जा सकती हैं। उनकी भाषा मिर्ज़ापुरी तथा बनारसी है। पर जब हम हिंदी-साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कवियों द्वारा भाषा का चित्र अपने समक्ष उपस्थित करते हैं, तब तो कविता की मधुरता का पूर्ण आभास दिखाई पड़ता है। उदाहरणार्थ—

रिम-झिम बरसे रे बादरिया
मोरी चादरिया भीजी जाय।
कहाँ जाय अब हाय बचों मैं,
दैया ! जिय घबराय।
लै छाता तर छाती से लगि,
प्रीति - रीति सरसाय।
पिया 'प्रेमघन' ! पैयाँ लागौं,
बेगि बचाओ आय।

(पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन')

कजलियाँ, जो वास्तव में अपने पूर्व रूप में ग्रामीण गीतों के स्वरूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं, केवल ग्रामीणता से ही युक्त न होकर सुंदर, अलंकार-युक्त गीतों के रूप में भी मिलती हैं। यद्यपि कजली का राग-रागिनियों से कोई विशेष संबंध नहीं, पर इनकी धुन ठुमरियों से भी बेठिकाने है। प्रायः देखा गया है कि एक ही प्रकार की कजली गानेवालों ने भिन्न-भिन्न रूपों में गाई है। इसकी एक लय ही प्रधान मानी जा सकती है। और, वह है ग्रामीण स्त्रियों की लय, जो परिवर्तनों से शून्य है—प्रत्येक स्त्री कजली को उसी विशेष लय में ही गाती है। मुख्य-मुख्य भेद की कजलियाँ बहुधा मलार के मेल से घनिष्ठ संबंध रखती हैं, यद्यपि कइयों में कई अन्य रागिनियों, जैसे गौड़मलार, देस, सिंध इत्यादि, के स्वर लगते हैं। गाने में इनमें ताल की एक विशेष तौल है। और, इनमें तीन ताल ही बजाया जाता है। इनमें छंदों का कोई विशेष क्रम नहीं रहता। मात्रा गिनकर भी कजलियाँ बनाई जा सकती हैं, पर इनकी रचना की शुद्धता ताल से ही तौल ली जाती है।

भारतेंदु-काल में जिस प्रकार उस समय कवियों ने स्वदेश-प्रेम इत्यादि नवीन विषयों पर प्रकाश डाला, वैसे ही, हम देखते हैं, उस समय के कवियों ने कजलियाँ भी ख़ूब लिखीं। भारतेंदु-मंडल में कजली के लेखकों में भारतेंदुजी, पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', पं० बालकृष्ण भट्ट, पं० अंबिकादत्त व्यास इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। यद्यपि इस विषय पर भारतेंदुजी इत्यादि ने रचनाएँ कीं, पर इस विषय पर जितनी कला-पूर्ण रचनाएँ उपाध्याय पं० बदरीनारायणजी 'प्रेमघन' ने कीं, उतनी और कोई न कर सका। आपकी कजली के ऊपर दो पुस्तकें आपके समय में ही प्रकाशित हो चुकी थीं, और आपके गीत इतने लोक-प्रिय हुए कि आपके जीवन-काल में ही पूर्ण रूप से गाए जाने लगे। आप संगीत के पूर्ण आचार्य, भाषा के कलाकार तथा बड़े सहृदय थे। आपकी भावुकता भाषा से ही प्रकट हो जाती है। कजली के संकुचित क्षेत्र में उपाध्यायजी ने राधाकृष्ण के प्रेम की व्यथा ही को स्थान न देकर कजली के अंग-प्रत्यंग के विवेचन तथा भेदोपभेद के प्रदर्शन के उपरांत स्वदेश-दशा, सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरीतियों और मिर्ज़ापुर की ऐतिहासिक घटनाओं का भी बड़ा सुचारु वर्णन किया है। उदाहरणार्थ कुछ कजलियाँ यहाँ दी जाती हैं—

स्वदेश-प्रेम

है कैसी कजरी यह भाई ! भारत-श्रंबर ऊपर छाई।
मूरखता, दृढ़ आलस के घन
मिलि-मिलि कुमति-घटा घिरि आई।
बरसत बारि निरुद्यमता को,
दारिद - दामिनि - दुति दरसाई।
परबसता तन छाय लियो छिति
सुख - मारग नहिं परत लखाई।

स्थानीय चित्र

बनी शकल गुंडानी बोलें
गजबै बीहड़ बानी रामा;
हरि-हरि, चालें मिर्ज़ापुरियों
की मस्तानी रे हरी।

वृद्ध-विवाह पर

चलः हटः जिनि झाँसा - पट्टी
हमसे बहुत बघारः रामा;
हरि - हरि फुसिलावः जिनि
दै दै बुत्ता बाला रे हरी।
बूढ़े प्रेमी सुजन 'प्रेमघन' की
सुनि सीख बिचारौ रामा;
हरि - हरि तजौ बुढ़ाई में
तो गड़बड़झाला रे हरी।

इस प्रकार की रचनाओं के अतिरिक्त 'प्रेमघन'जी ने भारतेंदुजी की कजली की प्रणाली (जिसमें राधाकृष्ण के विरह, मिलन का वर्णन-मात्र ही है) भी अपनाई है। हमें 'प्रेमघन'जी की कजलियाँ भारतेंदुजी की कजलियों से कहीं अच्छी प्रतीत होती हैं। भारतेंदुजी ने कजली के विषय को अधिक प्रधानता नहीं दी, पर 'प्रेमघन'जी इस विषय को प्रधान रूप से लेकर १९वीं शताब्दी के गीत-काव्य की धारा में बहे। भारतेंदुजी लिखते हैं—

प्यारी झूलन पधारो, झुकि आए बदरा;
ओढ़े सुरख चुँदरी, तापै श्याम चदरा।
देखो बिजुरी चमकै, बरसै अदरा;
'हरीचंद' तुम बिन पिय अति कदरा।

एक दूसरे स्थान पर भारतेंदु बाबू लिखते हैं—

मोहिं नंद के कन्हाई बेलमाई रे हरी।
बहै पुरवाई औ बदरिया झुकि आई रामा;
कुंज में बुलाई ब्रजराज रे हरी।

पर जब हम 'प्रेमघन'जी की इस रस की कजलियाँ देखते हैं, तो चित्त उन पर अधिक आकर्षित हो जाता है—

जय-जय राधा-बदन-सरोरुह-मधुकर मोहन बनमाली।
बिहरसि युवति - समूह-समेतो, नव शोभाशाली;
कुसुमित बकुल-कदंब-निकुंजे गुंजित भ्रमराली।
कंस-विमर्दन, कालिय-मंथन, कुंचित कच-जाली;
प्रसरत सदा 'प्रेमघन' हृदि तव नवपद-प्रेम-प्रणाली।

पं० बालकृष्णजी भट्ट की रचना का यह एक अच्छा उदाहरण है—

टिकस लगा रे कस-कसके छोड़ो अपना रोज़गार;
टिकस लगा आए न बादल पागल सब संसार।

स्व० पं० अंबिकादत्त व्यास लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे होकर हिंदोस्तानी बाबू अँगरेज़ी मत बोल ;
हाऊ डू यू डू हाऊ डू यू डू कहकर क्यों होता डावाँडोल?

इन कतिपय उदाहरणों से मेरा आशय पूर्ण-रूपेण पाठकों के समक्ष आ जाता है, तो कजली के प्रधान कवि के रूप में हमारे समक्ष 'प्रेमघन'जी ही आते हैं। अब कजली के जन्म-स्थान (मिर्ज़ापुर) में 'प्रेमघन'जी के समय में और अब की अवस्था में कितना परिवर्तन हो गया है, और आधुनिक समय में कजली की क्या दशा है? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

मिर्ज़ापुर में कजलियों के प्रचार के साथ-साथ कजली का मेला भी लगने लगा। यों तो कजलियाँ कजली के दिन प्रत्येक गृह में होती ही थीं, पर वहाँ के रईसों तथा नागरिकों के परिश्रम से कई मेले लगने लगे थे। पर तीस वर्ष हुए, वहाँ का सर्व-प्रधान मेला, जो अपने ढंग का निराला होता था, बंद हो गया।

सर्व-प्रथम मेला, जो कजली के त्योहार के व्यापक रूप ग्रहण करने के समय से प्रचलित था, कजरहिया-मेले के नाम से प्रसिद्ध था। यह स्थान शहर के पास ही है। यहाँ सामान्य स्त्रियाँ भाद्र शुक्ल तृतीया को प्रातःकाल गाती-बजाती स्नान करने आती थीं, और अपने साथ लाई हुई जई (जौ के छोटे-छोटे पौधे) को पानी में सेरवाकर * चली जाती थीं। यही यहाँ का सर्व-प्राचीन मेला था।

* सेरवाने का अर्थ पानी में डुबो देना है। यह शब्द इस कार्य के लिये विशेषकर प्रयुक्त होता है।—लेखक

प्राचीन काल में मिर्ज़ापुर व्यापार का केंद्र था, तथा प्राचीन विचार के लोगों का वहाँ आधिक्य था, अतः वहाँ के रईसों में पहले तो कजली के दिन वेश्याओं को घर पर बुलाकर कजली सुनने की प्रथा प्रचलित थी। पर आगे चलकर इस परंपरा ने बड़ा विलक्षण रूप ग्रहण किया। शनैः-शनैः लोगों ने कुछ ऐसी परिपाटी-सी बना ली कि कजली के दिन वेश्याओं का गान, उनके घर के सामने के चबूतरे पर, सुनने जाने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि सब वेश्याओं ने अपने अड्डों के नीचे कजली गाना प्रारंभ कर दिया, और अमीर लोग रुपया भी देने लगे। आगे चलकर इस मेले ने और भी बड़ा रूप धारण किया। वहाँ के प्रसिद्ध रईस और महंत स्व० जयरामगिरिजी ने अपने शिवालय के सामने, लगभग आध-मील में, इसी मेले को आश्रय दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि अन्यत्र से भी वेश्याएँ आने लगीं। पर इस मेले का अंत इनके मरने के कुछ दिन बाद हो गया।

आजकल ये मेले एक भी नहीं हैं। अब श्रावण के अंतिम मंगल को विंध्याचल-पर्वत पर गेरुअहिया स्थान पर एक मेला लगता है, जिसमें एकाध गोल कजलीवालों का रहता है; पर न अब वह समय है, न वे लोग।

आधुनिक समय में कजली का साहित्य कलाकारों के हाथ में नहीं है, इसका मुझे बड़ा दुःख है। कजलियाँ अब इधर-उधर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लोगों द्वारा ही बनाई मिलती हैं। अब स्त्रियों में भी कजली बनाने की परिपाटी उतनी अधिक नहीं मिलती। प्राचीन समय में स्त्रियाँ बड़ी सुंदर रचनाएँ करती थीं। उदाहरणार्थ—

मोरे बाबा रे! गौवँ जोन्हरी बोवाव।
ओहि कुलबोरना से चिरई हँकवाव;
जियरा डाहेसि हो लरिकैयँवाँ से हमार।

यह सीधे-सादे ढंग का कितना अर्थ-गांभीर्य-युक्त उदाहरण है। नायिका अपने ससुर से अपने पति के नपुंसक होने का कैसा संकेत करती है। स्त्रियों की कविता का एक दूसरा उदाहरण यह है—

गुहि दे मोरे मथवा कै चोटिया रे बालम।
चोटिया गुहत हमैं गरवा लगावै;
गलवा में काटत थै चिकोटिया रे बालम।

इन पंक्तियों में शृंगार का कितना सुंदर वर्णन है।

इस प्रकार हिंदी-साहित्य में कजलियों का स्थान बड़ा आदरणीय है। इसके साहित्य की उन्नति में हमें अपनी बहनों तथा भाइयों का सहयोग प्राप्त था, और अब भी परम आवश्यक है।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, जुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।/), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।/)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥।-/)
२५ ,, ,, ,, ५=)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

हिरण्यका

[श्रीयुत विजयबहादुर श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०]

(१)

हिरण्यका विधवा थी। पति को मरे केवल पाँच वर्ष हुए थे, किंतु उसने उसे बिलकुल भुला दिया था। संसार में बहुत स्त्रियाँ देखी हैं, लेकिन उस-जैसी नहीं। रोना-सिसकना तो अलग रहा, आँख में एक आँसू भी न आता था। दुनिया की स्त्रियाँ अपने पति विना मरी जाती हैं, सूखकर काँटा हो जाती हैं, किंतु हिरण्यका न-जाने कौन-सी मिट्टी की बनी थी। कितनी कठोर, कितनी बेपीर थी। उसे रँड़ापा चढ़ा था। मोटाकर दूनी हो रही थी।

कोई-कोई उसे अभिमानिनी कहते थे। वह किसी से बोलती तक न थी। बोलना तो दूर रहा, किसी की ओर देखती भी न थी। आदमियों की उसे बास आती थी। पास-पड़ोस की स्त्रियाँ जातीं, तो बैठी-बैठी चली आती थीं। न बिछौना, न पानी, न पान, न सुपारी। उसे मुँह-भर बोलना भी भारी होता था। रूखी-सूखी एक-दो बातें कर लीं, और चुप हो गई।

और, उसका वह छोकरा? वह तो विधाता ने अपने ही हाथों गढ़ा था। मा से भी हाथ-भर बढ़कर था। कोई बुला-बुलाकर तंग आ जाता, लेकिन वह किसी की ओर देखता तक न था। किसी ने छुआ कि वह चिल्लाया, जैसे बिच्छू ने काट खाया हो। छ वर्ष का हो गया था, किंतु मा की गोद ही में ठुसा रहता था। आप बिगड़ी तो बिगड़ी, उसने लड़के को भी बिगाड़ दिया था। बेचारा हेमवर्मन कैसा अच्छा आदमी था। उस-जैसा मिलनसार और मधुरभाषी वही था। उसके मरने पर हिरण्यका की बन आई।

हिरण्यका के विषय में संसार का, ख़ासकर स्त्रियों का, ऐसा मत था; किंतु वह कुछ भी परवा न करती। उसका अपना निज का संसार था। उसमें केवल दो व्यक्ति थे—वह और उसका पुत्र सुविक्रम। पतिदेव सब प्रकार से भरी-पूरी गृहस्थी छोड़ गए थे। ख़ूब बड़ा महल था। बाग़-बग़ीचे, झाड़-पेड़, जंगल-झाड़ी, किसी भी वस्तु की कमी न थी। घर में गाय-बैल आदि पशुओं का बड़ा समूह था। घोड़े और रथ भी थे। बड़े शौक़ से हेमवर्मन ने सब कुछ जोड़ा था; किंतु कुछ दिन भी उनका सुख न भोग पाया। अब हिरण्यका इनका ख़ूब उपभोग करना चाहती थी। आदमी मर जाता है, तो सब पड़ा रहता है। जो कुछ वह भोग ले, वही साथ जाता है।

अतः हिरण्यका लोक-मत की ओर बहरा कान किए रहती। घर में दास-दासियों की कमी न थी। प्रतिदिन रथ सजाया जाता। प्रातः-संध्या उसी पर चढ़कर वह वायु-सेवनार्थ जाती। जब वह निकलती, तो लोग तमाशा देखते। उसके शरीर पर अच्छे-से-अच्छे वस्त्र रहते, आभूषणों की भरमार होती। वह जहाँ से निकलती, वहाँ की वायु घंटों सुगंधित रहती। उसके घोड़ों के-से घोड़े राजाओं की घुड़सालों में भी न थे। वह स्वयं उन्हें हाँकती थी। सारथि तो बग़ल में बैठा रहता था। वह भी बड़ा रँगीला जवान था। देखने में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सुंदर था, किंतु नगर के बदमाशों में पहले नंबर का था। किसी भले घर में उसे पैर नहीं रखने दिया जाता था, किंतु हिरण्यका के यहाँ वह पूजनीय था। जो चाहता, वह करता था। उसे कोई रोक-टोक न थी। सारे नगर की दृष्टि उसी पर लगी थी।

(२)

सचमुच सारथि पर 'आर्या' (हिरण्यका) की कुछ विशेष कृपा थी। वह उससे बहुत अच्छा व्यवहार करती थी। एक तो उसका भाषण वैसे ही मधुर था, किंतु सारथि पर तो अमृत-वर्षा ही हुआ करती थी। उसे रथवान् अथवा सारथि कहकर नहीं पुकारा जाता था। उसका नाम भी कभी नहीं लेती थी। उसे सुमंतजी कहा करती थी। इनाम-इक़राम और भेंटों की तो बाढ़-सी आई रहती थी। ऐसा नहीं कि दूसरे नौकरों को कुछ न मिलता हो; किंतु सुमंत की बात कुछ और ही थी।

सुमंत का भी आर्या से कुछ अन्य ही संबंध था। दुनिया-भर के लिये वह लुच्चा-लफंगा था, किंतु उसके साथ उसका बड़ा भला बर्ताव था। जब से उसकी नौकरी में आया, उसका स्वभाव ही बदल गया। न चोरी करता, न बदमाशी। किसी से लड़ाई-झगड़ा तो दूर रहा, बुरे शब्द तक न बोलता। आर्या को देखकर वह अत्यंत श्रद्धा से नमन करता। कोई किसी देवी में क्या इतना भक्ति-भाव रक्खेगा। किंतु था तो अंत में बदमाश ही। सर्प कितना ही भला हो, है तो विषधर ही। उससे दूर रहना ही अच्छा। न-जाने कौन घड़ी धोखा दे।

सुमंत भी बड़े चक्कर में था। उसने बहुत-सी स्त्रियाँ देखी थीं। कितनों को ही बिगाड़ दिया था। किंतु यहाँ न-जाने क्या बात थी? आर्या की ओर उससे निगाह तक नहीं उठाई जाती थी। बहुत जी चाहता था, यहाँ-वहाँ की बातें करे, किंतु मुँह ही न खुलता। उससे बोलने को घंटों तड़फता रहता, किंतु जब मौक़ा मिलता, तो चूक जाता। काम की बात छोड़कर दूसरी निकाल ही न सकता। न-मालूम वह कौन-सा जादू सीखे थी। आते ही उस पर दबाव-सा पड़ जाता। वह अपने आपको भूलकर पर-वश हो जाता। जैसा वह नचाती, वैसा ही नाचने लगता। कोई कहे, नौकरी की बात हो, सो भी नहीं; उसने ऐसी कितनी ही नौकरी कीं, और कितनी छोड़ दीं। सचमुच बात कुछ और ही थी।

(३)

सुमंत में आर्या से बोलने की शक्ति तो न थी, किंतु वह एक काम अवश्य कर सकता था। उसे प्रतिदिन उसके साथ रथ में जाना ही पड़ता था। किसी समय धीरे से धक्का मार सकता था। इतने में ही सब भेद खुल जाता। भली और बुरी स्त्री की पहचान क्षण में हो जाती है। अतः सुमंत ने यही निश्चित किया।

दूसरे दिन ख़ूब सजधज की। अच्छी तरह बाल बनवाए। घंटों नहाया। साफ़-सुथरे कपड़े निकाले। लाल रंग का अँगरखा पहना। आसमानी पगड़ी बाँधी। कमर में ज़री के काम का पटका कसा। समय के पूर्व ही रथ सजाया गया, और आर्या के आने की प्रतीक्षा की जाने लगी। बार-बार दाढ़ी पर हाथ फेरता था। मूछें उमेठता था। अँगड़ाई लेता था, और व्याकुल हो रहा था। कभी चाबुक सहलाता, कभी उसे फटकारता, और कभी-कभी रथ से उतरकर घोड़ों को थपथपाने लगता। कभी उनकी केशवार सँभालता और कभी उनके कल्लों को ऊपर-नीचे करके शान से खड़ा करने की कोशिश करता। उसकी आज की झाँकी और शान पर ही बहुत-सी बातें निर्भर थीं। वह इस प्रकार का दृश्य बनाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता था कि हिरण्यका उसे देखकर एकदम मुग्ध हो जाय।

उसे ऐसा मालूम पड़ता था कि घंटे बीत गए हों। न-जाने आज क्या हो गया था कि आर्या आ ही नहीं रही थी। आज उसे ऐसा कौन-सा काम लग गया था। घंटों खड़े रहना तो बहुत बुरा लगता है। वह ऐसा-वैसा रथवान् न था। आर्या की ऐसी लापरवाही वह नहीं सह सकता था। वह जानती थी कि वह कैसे स्वभाव का आदमी है। फिर भी घंटों खड़ा रखती थी। हो सकता है, आ रही हो। संभवतः उसने उसे खिड़की से देख लिया हो, इसीलिये देर हो रही हो। उसकी सजावट देखकर वह भी आज विशेष शृंगार कर रही होगी। जो भाव उसके मन में थे, वे उसके मन में भी अवश्य होंगे। वह भी तो आख़िर मनुष्य थी। प्रेम किसके हृदय में नहीं होता? "अच्छी सूरत का भला कौन तलबगार नहीं?" वह सारथि था, तो क्या हुआ। उस-जैसा जवान लाखों में न था। बस, यही बात थी, और कुछ नहीं। इसीलिये देर हो रही थी।

अंत में हिरण्यका बाहर निकली। सचमुच आज उसका शृंगार विशेष था। उत्तम गुलाबी रंग के रेशम का अधोवसन था। आकाशी रंग का उसका उत्तरीय था। गहरे लाल ऊन की कंचुकी थी। उन्नत वक्ष पर मोतियों की मालाएँ खेल रही थीं। मृणाल-बाहुओं पर गज-मुक्ताओं के बिजायठ शोभित थे, और कोमल कलाइयों पर कंकण पहने थी। विशेष सौभाग्य-चिह्नों को छोड़कर सब आभूषण उसने धारण किए थे। उर्वशी का कुछ ढलता-सा संस्करण बन आई थी।

सुमंत उसे देखकर प्रफुल्लित हो गया। उसका हिसाब-किताब बिलकुल ठीक था। वह तो स्त्री-स्वभाव का पूर्ण ज्ञाता था। आधा जीवन उसने इसी में बिता दिया था। अब तो उसकी पाँचो घी में थीं।

आज उसने आर्या को प्रणाम नहीं किया। कुछ क्षणों में आर्या उसकी भार्या से भी बढ़कर हो जानेवाली थी। फिर वह क्यों यह ढोंग रचने लगा?

हिरण्यका चुपचाप आई, और एक भी शब्द बोले विना रथ पर सवार हो गई। सुमंत भी चुपचाप मुख्य आसन पर जाकर बैठ गया। आज वह 'रथिक' था, और आर्या रथवान्।

(४)

चाबुक की फटकार हुई। धीरे-धीरे घोड़ों की पीठ पर तीन-चार सटाके पड़े। उन्होंने पूँछ फटकारी, कुछ हिनहिनाहट की, और आगे को ताक़त लगाई। दो-एक टापों की आवाज़ें हुईं, और वे हवा हो गए। रथ भागता जाता था। हिरण्यका उसे सँभालती जाती थी। ऊँची-नीची भूमि बचाती, मोड़ों का ध्यान रखती, राहगीरों को हटाती, किंतु रथ की गति क्षीण न होने देती। उसकी कुशलता देखकर लोग दंग रह जाते। चेहरा लाल हो रहा था, परिधान उड़ रहे थे, घोड़े मस्ता रहे थे, किंतु वह बिलकुल निःशंक थी। उसके चेहरे पर शांति छाई हुई थी। बाएँ हाथ में बागें थीं, दाहने में चाबुक। कभी-कभी वह पीछे को झुक जाती और चाबुक रख देती। दोनो हाथों से बाग सँभालने लगती। कभी आगे बढ़कर घोड़ों की पीठों पर सड़ासड़ चाबुकों की बौछार कर देती। घोड़े बेतहाशा भागते थे। देखनेवाले कहते—अब गया रथ, अब लौटा, अब बागें टूटीं, अब घोड़े बेहाथ हुए। किंतु होता कुछ न था। वह मज़े-मज़े चली जा रही थी। नगर के बाहर का चौगान आ गया था।

सुमंत का बुरा हाल था। उसे सारथि के स्थान पर बैठने का अभ्यास था। आगे के आसन पर बहुत सुबीता रहता है। वहाँ धक्का कम लगता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। आगे का मार्ग दिखाई देता है। ऊँचे-नीचे स्थानों के लिये तैयार हो जाता है। घोड़ों पर भी ध्यान रहता है। दृश्य पहले दिखाई देते हैं; अतः मन लगा रहता है। किंतु पीछे कुछ दूसरी ही बात होती है—अचानक धक्के लग जाते हैं। उनसे बचने के लिये सदैव सतर्क रहना पड़ता है। ज़रा ढीले हुए कि हड्डी-हड्डी हिल गई, नस-नस खिच गई। धूल से बचने को मुँह मूँदे रहो। आँख-मिचौनी करते रहो। सारांश यह कि रथ में पीछे बैठना ख़ासी सज़ा है। ख़ासकर उस आदमी को, जिसकी ज़िंदगी घोड़े टिटकारते बीती हो। उसके लिये अभ्यास चाहिए, गांभीर्य चाहिए, बल चाहिए।

जब से रथ चला, सुमंत को अपनी दाढ़ी और पगड़ी सँभालते हुए बीता। वह रथ के बीच में बैठ न सकता था, क्योंकि ऊँची-नीची ज़मीन आने पर उछलकर दूर जा पड़ता। एक किनारे पर टिकने से सिर धड़ाम से रथ की चौखट में लगता। कभी उसकी पगड़ी गिर जाती; कभी दाढ़ी बिखर जाती। धूल निकालते-निकालते उसकी नाक से पानी बहने लगा। आँखों से आँसू ढरक-ढरक पड़ते। धक्के खा-खाकर कमर चकनाचूर हो रही थी। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह अब अधिक देर न सह सकेगा। किंतु कर क्या सकता था? हिरण्यका तो घोड़ों को पीटे जाती थी। ज़रा चाल धीमी हुई कि चाबुक के सटाकों से कान फूटे। वैसे ही रथ से काफ़ी आवाज़ होती थी।

बेचारा जो बातें घर से सोचकर चला था, आज एक भी पूरी होती न दिखाई देती थी। जिसे दिखाने को उसने सब स्वाँग रचा था, वह पीछे मुड़ती तक न थी। आज कहाँ-से-कहाँ वह मुख्य आसन पर बैठ गया। यदि पार्श्व में होता, तो कुछ-न-कुछ हो ही जाता। जितना शृंगार किया था, सब फीका हो रहा था। शरीर सँभालते-सँभालते प्राण निकल रहे थे। किसे प्रेम की बात सूझती। अच्छा हुआ, जो पीछे था, अन्यथा उसकी दुर्गति आर्या की आँखों से न छिपती। वह कितना बुरा होता? जिसे तुम रिझाना चाहते हो, उसके सामने तुम्हारी दाढ़ी बिखरे, पगड़ी गिरे, आँसू ढरकें और नाक टपके, इससे बुरा और क्या हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में तो मरने की ही इच्छा होती है। किंतु अभी तक ख़ैरियत थी। आर्या ने उसकी ओर देखा ही न था।

सुमंत की तो यह दशा थी, और हिरण्यका घोड़े भगाए ही जाती थी। बड़े ग़ज़ब की स्त्री थी। बिलकुल निर्भीक, बिलकुल बेफ़िक्र। उसे न रथ के छूटने का भय था, न घोड़ों के गिरने का और न अपने मरने का। सुमंत परेशान हो गया। अब उससे नहीं सहा जाता था। दिल थामकर, धीरज धरकर, ख़ूब सोच-समझकर, कड़ा जी करके बोला—"स्वामिनि, अब भूमि बहुत बुरी है। कृपया मुझे बागडोर दे दीजिए। आप विश्राम कीजिए।"

हिरण्यका ने बिना मुड़े ही कह दिया—"चुप रहो। मैं जानती हूँ, कहाँ कैसे रथ चलाना।"

बेचारे सुमंत के हृदय पर वज्राघात-सा हुआ। सन्न हो गया। आज पहला अवसर था कि आर्या ने ऐसे कड़े शब्द कहे थे। उसने त्रुटि की कि उसे छेड़ा। अश्व-चालन में सचमुच वह उससे अधिक निपुण थी। फिर उसने क्यों उसे छेड़ा? इतनी देर जैसे सहता रहा था, और सहता रहता। बड़ी स्त्रियों का बहुत तेज़ मिज़ाज रहता है। फिर आर्या तो बहुत अभिमानिनी थी। वही अकेला था, जिससे वह अच्छी तरह बोलती थी। औरों की ओर तो वह ताकती तक न थी। ऊँह! कह लेने दो। उसका बिगड़ा क्या? आख़िर को मालकिन थी। कितना चाहती थी। कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर थी। ऐसों की सब बातें सहनी पड़ती हैं।

सुमंत इस प्रकार विचार-धारा में पड़ा था कि एकाएक रथ की गति धीमी हुई। घोड़ों ने दौड़ना बंद कर दिया। वे धीरे-धीरे चलने लगे। कुछ दूर तक गए। फिर वे रोक लिए गए। हिरण्यका ने सुमंत की ओर देखा। वह अधमरा-सा हो रहा था। सूरत-शकल बिलकुल बिगड़ी हुई थी। उसकी दृष्टि पड़ते ही वह घबरा-सा गया। मुँह से शब्द नहीं निकले। जीभ दो-चार बार लड़खड़ाकर रह गई। जल्दी से पगड़ी सँभाली। कटिबंध कसा, और रथ से नीचे उतरा। पैर निर्जीव-से हो गए थे। ऐसा मालूम पड़ता था, जैसे गिरा पड़ता हो। झनझनी दौड़ रही थी। किसी प्रकार लँगड़ाता हुआ घोड़ों के समीप पहुँचा। उनकी रास थाम ली। धीरे-धीरे उनकी गर्दनों को सहलाया। बार-बार उन्हें पुचकारा। उनके मुँह से फेन बह रहा था। आँखों में पानी आ गया था।

हिरण्यका भी रथ से कूद पड़ी। बायाँ हाथ एक घोड़े के कंधे पर रक्खा, और दाहना उसकी पीठ पर फेरा। फिर पुट्ठे पर धीरे से थपकी मारी। घोड़ा धीरे-धीरे हिनहिनाने लगा। इसी प्रकार उसने प्रत्येक घोड़े को सहलाया। उन सबकी आँखों से प्रसन्नता झलकने लगी। थकावट दूर हो गई।

सुमंत रथ के समीप ठहरा। हिरण्यका उस खुले मैदान में कुछ देर टहलती रही।

कुछ देर में वह लौटी। रथ पर सवार हुई, और घर की ओर प्रस्थान किया। रथ धीरे-धीरे जा रहा था। हिरण्यका उसे हाँक रही थी, सारथि उसके वाम पार्श्व में बैठा था। कुछ अंधकार भी हो गया था। मार्ग सुनसान था। वायु शीतल थी। दिशाओं में मादकता थी। परिश्रम के उपरांत विश्राम बहुत सुखकर प्रतीत हो रहा था। अब सुमंत की वासनाएँ भड़कीं।

यद्यपि रथ बहुत धीरे चल रहा था, झोंके और धक्के बिलकुल नहीं लगते थे, तो भी वह बहुत हिलता-डुलता हुआ था। घड़ी-घड़ी वह सँभलकर बैठता था। सतर्क रहता था, तो भी खिसककर आर्या के समीप आ जाता था। दिखलाने को वह फिर हटता, और प्रकट यह करता कि रथ की गति के कारण ऐसा हो रहा है। हिरण्यका उसकी मनोवृत्ति देख रही थी। वह चुपचाप रथ चला रही थी। न तो सुमंत से बचने का प्रयत्न करती, और न उसकी ओर जाने का। वह बिलकुल निश्चेष्ट थी।

धीरे-धीरे सुमंत उसके बहुत निकट आ गया। अब वह इच्छा कर रहा था कि हिरण्यका ही उसका अंग छुए। क्षण-क्षण उसे आशा होती थी कि हिरण्यका ऐसा करेगी। वह अत्यंत व्याकुल हो रहा था, किंतु न तो रथ का ही हिचकोरा लगता था, और न वही छू सकता था। वह बहुत चाहता था कि दो अंगुल उसका शरीर हिरण्यका की ओर को हो जाता, थोड़ा ही वह उसकी तरफ़ आ जाती, ज़रा-सा ही धक्का लग जाता, किंतु यह सब असंभव हो रहा था। वह योजनों चलकर स्त्रियों से मिलने गया, उसने बढ़ी हुई नदियाँ पार कीं, बड़े-बड़े बन छान डाले, सिंहों और व्याघ्रों का उसे भय न था, उसने न-जाने क्या-क्या किया था, किंतु यहाँ वह दो अंगुल, केवल दो अंगुल का अंतर पार न कर सकता था। उसके लिये उसने सब प्रयत्न किए, शक्ति लगाई, ज़ोर मारा, किंतु न कर सका।

अंत में घर आ गया। अब वह हताश होने लगा, घबरा गया। बड़ी कठिनाई से अवसर प्राप्त हुआ था, वह हाथ से जा रहा था। यह वह सहन न कर सकता था। उसे रात-भर तड़फना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा। जीवन नीरस हो जायगा। अतः ज्यों ही रथ रुका, थोड़ा-सा धक्का लगा, उसी समय उसने हिरण्यका के शरीर में अपनी टिहुनी मार दी।

(९)

उसी रात को—

हिरण्यका के महल का सबसे सुंदर कमरा जगमगा रहा था। एक बड़े पलँग पर कोमल सेज बिछी थी। उसके ऊपर एक लाल रंग का चँदोवा तना था। इससे एक अत्यंत सूक्ष्म वस्त्र लटका हुआ था। इस समय वह केवल तीन ओर से पलँग को घेरे हुए था। अन्य अवसर पर मच्छरदानी का काम देता होगा। पलँग के बीच में एक नीली मख़मल के-से वस्त्र का बड़ा भारी तकिया रक्खा था। इस पर हिरण्यका दक्षिण कुक्षि के बल टिकी हुई थी। तकिया काँख के नीचे था। दाहना हाथ उस पर मुड़ा हुआ था। उसके पैर पलँग के बाहर आकर एक कोमल, गद्देदार मोढ़े पर क्रीड़ा कर रहे थे। उसके बाएँ हाथ में एक चित्र-सा था, जिसे वह अत्यंत ध्यान-पूर्वक देख रही थी। उसके नेत्रों में एक क्षीण-सी अश्रु-रेखा प्रतीत होती थी, जो पलकों के बाहर न आ सकती थी।

पलँग से कुछ दूर, दीवार पर, सिरहाने की ओर, एक लंबी तलवार लटक रही थी। उसका म्यान सीधा-सादा, किंतु असाधारण आकार का था। मूठ की मोटाई देखकर प्रतीत होता था कि केवल राक्षस ही उसे चला सकते होंगे। तलवार के दाईं ओर (दर्शक के बाएँ हाथ पर) लगभग दो फ़ीट त्रिज्या की एक ख़ूब भारी और सुदृढ़ ढाल टँगी थी। बाईं ओर एक लंबा-चौड़ा कवच और एक विशालकाय शिरस्त्राण भी दीवार पर टँगा था। इसी प्रकार धनुष-बाण, शार्दूल, तोमर आदि अन्य शस्त्र भी कमरे में चारो ओर लगे हुए थे। बीच-बीच में सुंदर प्रस्तर-खंडों पर खचित बड़े-बड़े चित्र लगे थे। कहीं-कहीं हाथी-दाँत के काम के खिलौने बड़े-बड़े आलों में रक्खे थे। सोने-चाँदी के कलशों में रक्खे हुए पत्र-पुष्प लहरा रहे थे। इन सब पर सौ-सौ बत्तियों के बड़े-बड़े दो शमादानों से प्रकाश जा रहा था। कमरे में तीन ओर से खिड़कियों द्वारा मंद-मंद वायु आ रही थी। इसके कारण दीपिकाएँ लजा-लजा-सी जाती थीं; किंतु हिरण्यका बिलकुल दृढ़ और निश्चिंत-सी थी।

एकाएक उसने पास रक्खी हुई एक छोटी-सी बाँसुरी उठाई, और उस पर मंद-मंद दो फूँकें मारीं। एक दास और एक दासी ने कक्ष में प्रवेश किया। उन्हें कुछ संकेत-सा कर दिया।

कुछ ही क्षणों में दो सुंदर आसन लाकर रक्खे गए। उन पर मोटी-मोटी गद्दियाँ डाली गईं, और उनकी पीठ से लगाकर छोटे-छोटे तकिए रख दिए गए। वे सिंहासन-से लगते थे।

एक छोटा-सा बच्चा आया। वह नख से शिख तक युद्ध-वेश से सजा था। उसका छोटा-सा कवच, छोटा-सा झिलम-टोप और छोटी-छोटी ढाल-तलवारें बड़ी सुंदर प्रतीत होती थीं। खट-खट करता हुआ, एक-एक पग गिनता हुआ-सा, वह आया। आकर उसने तलवार की मूठ पर अपना दाहना हाथ रक्खा, ढाल को हृदय से लगाया, और मस्तक नीचे झुका दिया। माता हिरण्यका की दृष्टि बदल गई। उसने धीमे स्वर में कहा—"महान् वीर बनो।"

बालक एक आसन पर बैठ गया।

कुछ ही देर में सुमंत ने कमरे में पैर रक्खा। वह दरवाज़े के पास आकर ठिठक गया। एक सेवक उसके पीछे था। उसने कहा—"चले चलिए।" किंतु न-जाने क्यों उसकी हिम्मत न पड़ती थी। सेवक ने फिर आगे बढ़ने का आदेश किया। किंतु वह फिर भी खड़ा ही रहा।

अंत में हिरण्यका की समाधि-सी टूटी। वह उठकर बैठ गई। पैर शय्या के नीचे लटके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उसने क्रमशः दृष्टि उठाई। वह सुमंत पर जाकर लग गई। उसका चेहरा सूख गया। श्वासोच्छ्वास तीव्र था। हृदय काँप-सा रहा था।

हिरण्यका के मुख-मंडल पर ज्योति-सी छिटक गई। ओठों पर मुस्किराहट आ गई। आँखें नाचने लगीं। उसने कहा—"सुमंतजी, आइए-आइए। बाहर क्यों खड़े हैं?"

अब सुमंत के जी में जी आया। कुछ आशा भी बँधी। वह कमरे के भीतर आ गया। वहाँ जाकर रुक गया।

हिरण्यका ने फिर कहा—"आसन ग्रहण कीजिए।" अब तो सुमंत के पैर के नीचे की पृथ्वी खिसक गई। वह अचंभित होकर रह गया। समझ में नहीं आता था कि बात क्या थी। वह जैसे का तैसा खड़ा रहा। हिरण्यका ने फिर नम्र स्वर में कहा—"कृपया आसन ग्रहण कीजिए। यह आप ही के लिये है।"

वह बैठ गया। उसके पीछे, कुछ दूर पर, दो दास खड़े थे। बालक सुविक्रम के पीछे दो दासियाँ थीं।

हिरण्यका कुछ देर तक चुप रही। फिर सुमंत की ओर देखा। कुछ मुस्किराई-सी।

एक दासी पान ले आई। दूसरी अन्य स्वागत की वस्तुएँ रक्खे थी। सुमंत को वे अर्पित की गईं।

उसका आज अपूर्व स्वागत हो रहा था। वह फूला नहीं समाता था। आज परी उसके हाथ लग गई थी। अनायास सुंदर पुत्र, विशाल भवन और अटूट संपत्ति उसे प्राप्त हो रही थी।

हिरण्यका ने फिर उसकी ओर देखा। बोली—"हाँ, तो सुमंतजी, क्या इच्छा है? स्वास्थ्य तो अच्छा है?"

सुमंत से बोला नहीं गया। फिर भी प्रयत्न करके कहा—"जी, सब आपकी अनुकंपा है।"

हिरण्यका फिर कुछ मुस्किराई। उसकी ओर सतृष्ण दृष्टि से देखा। बोली—"कृपया आप उठेंगे? दीवार पर टँगी हुई वह तलवार चाहिए।"

सुमंत चुपचाप उठा। दीवार के समीप गया। तलवार को बीच से पकड़ा, और खूँटी से निकाल लिया। वह धड़ाम से गिर पड़ी। सुमंत का हृदय धक से हो गया। उसे मालूम न था कि इतनी वज़नदार होगी। फिर भी उसे दोनो हाथों से उठाकर वह ले आया। हिरण्यका ने उसकी ओर देखा और प्रसन्नता प्रकट की। फिर वह बोली—"कृपया इसे आवरण के बाहर निकालिए।"

सुमंत ने बाएँ हाथ में म्यान पकड़ा, और दाहने से तलवार की मूठ पकड़कर खींचना आरंभ किया। एक बार ताक़त लगाई, दूसरी बार खींचा, किंतु वह नहीं निकली। तीसरी बार फिर खींचा, किंतु सफलता न प्राप्त हुई। अब वह खड़ा हो गया। अपना बायाँ पैर आसन पर रक्खा, घुटने पर बाएँ हाथ की मुट्ठी रक्खी। उसे दबाया। उसमें तलवार का म्यान था। दाहने हाथ से ताक़त लगाई, किंतु तलवार अणु-भर भी बाहर न आई। उसने हिरण्यका से पूछा, इसमें कोई कील तो नहीं? सचमुच उसमें कील, पेंच कुछ भी न था।

हिरण्यका ने उसकी ओर देखा, और कहा—"अधिक प्रयास मत कजिए। विश्राम कीजिए। आपको बहुत कष्ट हुआ।"

इतना कहकर उसने स्वयं तलवार ली। उसे पकड़कर उसका भार-सा तौलती रही। फिर मूठ पकड़कर हलका-सा झटका मारा। तलवार बाहर निकल आई।

उत्तम फ़ौलाद का चमचमाता हुआ ढाई हाथ लंबा दुधारा खड्ग था। उसकी आधी लंबाई फिर म्यान के भीतर कर दी गई। फिर तलवार सुमंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दे दी गई। उसने उसे अपनी गोद में आड़ा रख लिया।

अब हिरण्यका ने अपने पुत्र सुविक्रम की ओर देखा। वह खड़ा हो गया। उसके हाथ में हिरण्यका ने एक चित्र दिया। बोली—"बेटा, यह आर्य का चित्र है।"

बालक की आँखें डबडबा आईं। वह चुपचाप आसन पर बैठ गया। उस चित्र को बड़े ध्यान से देखता रहा। उसके हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ रहा था। चेहरा उदास था।

हिरण्यका ने कहा—"बेटा, आर्य ने वीर-गति पाई थी। अपूर्व विक्रम दिखलाया था। तुम भी उन्हीं के समान होओगे न?"

सुविक्रम का चेहरा चमक उठा। ओज झलक आया। बाहुएँ फड़क उठीं। बोला—"हाँ, माताजी।"

"अच्छा, तो मैं तुम्हारी संरक्षिका हूँ। तुम मेरे संरक्षक हो। तुम्हारे सिवा मेरा कोई आधार नहीं। तुम्हारे लिये ही मैं जीती हूँ।"

बच्चे ने सिर नीचा कर लिया।

"हाँ, तो अब बोलो सुविक्रम, यदि कोई मुझे पकड़कर ले जाय, तो तुम क्या करोगे?"

"माता, उस दुष्ट का मस्तक काट लूँगा।"

"अच्छा, तो आज सुमंत ने मुझे भ्रष्ट करना चाहा था। यह तुम्हारे सामने........"

वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि सुविक्रम उठ खड़ा हुआ। बायाँ पैर आगे बढ़ गया, दायाँ पीछे हट आया। खट से हाथ तलवार की मूठ पर पड़ा। ढाल उठकर वक्ष के सामने आ गई। क्षण-मात्र में खड्ग ऊपर उठा। वायु में लीक-सी बन गई।

सुमंत चकित-सा हो गया। उसकी गोद से तलवार गिर पड़ी। पैर काँपने लगे। नत-मस्तक हो गया। भूमि पर बैठ गया। सुविक्रम के चरणों पर माथा टेक दिया।

सुविक्रम ने माता की ओर देखा। कहा—"माताजी, आज्ञा?"

"बेटा, शरण में आए को क्या मारना। सुमंत को प्राणदान है।"

सुमंत उठा। हिरण्यका के चरण चूम लिए।

उस दिन से सुमंत सबसे अच्छा नागरिक और सुविक्रम का सबसे बड़ा स्वामिभक्त सेवक था।

दुनिया में हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद-टॉनिक शारीरिक समस्त त्रुटियों को पूरा कर, स्वास्थ्य को सुधारकर, झुर्रियाँ नष्ट कर, आँख की रोशनी तेज़ कर, बाल का पकना रोककर, बूढ़ा, जवान, सभी का पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी न रक्खे और झूठा साबित हो, तो १००) देने की शर्त। दाम ५) फ़ी शीशी।

पता—जड़ी-बूटी-दवाखाना, पो० बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याय और न्याय-पद्धति

[श्रीयुत रामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का दावा है कि अँगरेज़ी राज्य ने भारत में न्याय - प्रणाली की ऐसी स्थापना की, जिससे ब्रिटिश भारत में प्रत्येक नागरिक शांति-पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकता, अपने व्यवसाय में संलग्न रह सकता और अपने श्रम का फल अपने उपयोग के लिये सुरक्षित रख सकता है।

उपर्युक्त कथन की परीक्षा न्यायालयों के न्याय और न्याय-प्रणाली के विश्लेषण द्वारा आसानी से की जा सकती है। आज के न्यायालय न्याय-मंदिर नहीं, व्यवसाय-भवन हैं, जहाँ न्याय का क्रय-विक्रय होता है—यह एक प्रकट सत्य है। न्यायालय में असत्य भाषण किया जाता है। न्यायालय के 'रिकार्ड' में सत्यांश बहुत कम होता है, यहाँ तक कि सच्चे मामलों को भी असत्य रूप देकर न्यायाधीश के समक्ष रक्खा जाता है।

न्यायालय में प्रत्येक नागरिक के लिये न्याय नहीं। जो नागरिक पूँजीपति है—जो व्यापारी, मिल-मालिक, ज़मींदार, ताल्लुक़ेदार हैं—वे ही आसानी से न्यायालय में न्याय ख़रीद सकते हैं। परंतु ग़रीब नागरिकों के लिये, पीड़ित-वर्ग, मज़दूर और किसान के लिये, न्यायालय में न्याय नहीं। न्यायालय में शोषितवर्ग के लिये न्याय क्यों नहीं? इसका एकमात्र कारण उनकी दरिद्रता ही है। पूँजीपतियों का न्यायालयों पर एकाधिकार है। हाई-कोर्ट-जज से लेकर साधारण मैजिस्ट्रेट तक पूँजीवादी न्यायाधीशों का एकच्छत्र राज्य है। पूँजीवादियों का पुलिस में भी अधिक प्राधान्य है। न्यायाधीश, पुलिस और ज़मींदार, इन सबों की क़ौम एक ही है, और न्यायालय की न्याय-प्रणाली के संचालन तथा नियमों में इन तीनों का पूरा-पूरा हाथ रहता है।

ग्रामों के ग़रीब किसान, नगरों के मज़दूर तथा पीड़ित-वर्ग अज्ञानता और दरिद्रता के कारण सदैव पूँजीपतियों के शिकार बनते रहते हैं, और पूँजीपति न्यायाधीश, पुलिस और अन्य सरकारी कर्मचारियों के साथ षड्यंत्र रचकर इस ग़रीब जनता का रक्त-शोषण करते हैं। इन ग़रीब, निर्दोष प्राणियों को बंदी बनवाकर कारागार भेज देते हैं; अनेक निर्दोष प्राणी फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दिए जाते हैं। दीवानी न्यायालय में ये पूँजीपति, महाजन और व्यापारी इन ग़रीब लोगों का अर्थ-शोषण कर उनका ही नहीं, उनके परिवारों का भी सर्वनाश कर देते हैं।

न्यायालय में न्याय की इस दुर्दशा के कई कारण हैं। परंतु सबसे प्रमुख कारण है न्यायालयों में पूँजीपतियों का एकाधिकार (monopaly) सरकार ने न्यायालय के उच्च पदों के लिये नियुक्तियों के नियम भी कुछ ऐसे बनाए हैं, जिनसे ज़मींदारों और पूँजीपतियों को प्रोत्साहन मिलता है।

न्यायाधीश क़ानून की परिभाषा पर विचारकर उसकी मनोवांछित व्याख्या करता, और इसके अनुसार अभियुक्त को अपराधी घोषित कर दंड देता है। वह अपना थोड़ा भी समय अपराधी के मनोवैज्ञानिक अध्ययन में व्यय नहीं करता। अपराधी को सज़ा देते समय वह उस समाज के नीति-शास्त्र और आदर्शों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता, जिसमें उस अपराधी का जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है। पं० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में—"क्या हमारे न्यायाधीश कभी यह महसूस करते हैं, या इस बात की ज़रा भी कल्पना करते हैं कि अपनी स्त्री या बच्चों को भूखों मरते देखकर किसी औसत दर्जे के मनुष्य में किस प्रकार की निराशा पैदा हो सकती है? क्या कोई मनुष्य चुपचाप असहाय होकर बैठा-बैठा अपने प्यारों को मानव-जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकताओं के अभाव के कारण बीमार और मरणासन्न देखता रहे? वह चुपचाप वहाँ से खिसक जाता है, और क़ानून के विरुद्ध अपमान करता है, और तब क़ानून और न्यायाधीश ऐसी व्यवस्था करते हैं, जिससे वह आदमी फिर कभी समाजोपयोगी किसी जीविका के सहारे भलमनसी का जीवन न बिता सके। वे अपराधियों की एक श्रेणी बनाने में पहले तो मदद करते हैं, और बाद को यह देखकर कि ऐसी श्रेणी दुनिया में मौजूद है, और वह बढ़ती ही जा रही है, उन्हें आश्चर्य होता है *।"

फ़ौजदारी अदालतों में चोरी, डकैती, बलवा, हत्या, नारी-अपहरण, राजद्रोह आदि संबंधी मुक़द्दमे पुलिस द्वारा चलाए जाते हैं। पुलिस इन मुक़दमों को ज़िला-मैजिस्ट्रेट की आज्ञा से चलाती है। ज़िले के अन्य सब मैजिस्ट्रेट ज़िला-मैजिस्ट्रेट के अधीन होते हैं। इस प्रकार भारत में न्याय-व्यवस्था और शासन-व्यवस्था के सम्मेलन का दुष्परिणाम न्यायालयों में स्पष्ट देखने में आता है। राष्ट्रीय नेता अनेक वर्षों से न्याय और शासन के पृथकरण के लिये आंदोलन करते आ रहे हैं, और आज भारत के प्रांतों में प्रांतीय 'स्वराज्य' की स्थापना और राष्ट्रीय मंत्रिमंडलों द्वारा शासन-संचालन हो जाने पर भी यह समस्या उसी रूप में मौजूद है।

* देखिए पं० जवाहरलाल नेहरू का 'न्यायाधीश का मानस-क्षितिज' लेख 'नवशक्ति', २८ दिसंबर, १६३५ ई०।—लेखक

विशुद्ध न्याय की दृष्टि से यह अतीव आवश्यक है कि न्यायाधीश और शासक दोनो पृथक् हों। जो व्यक्ति पुलिस द्वारा मुक़द्दमे चलाने का कार्य करे, वही मैजिस्ट्रेट के आसन पर विराजमान होकर न्याय करे, तो यह कैसे संभव है कि वह अभियुक्त के साथ न्याय कर सकेगा।

विशुद्ध न्याय के लिये यह आवश्यक है कि न्यायाधीश कार्य-कुशल, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान और अपराध-मनोविज्ञान का पूर्ण पंडित हो; उसके हृदय में शोषित-पीड़ित व्यक्ति के लिये करुणा का भाव हो। परंतु एक कार्य-कुशल न्यायाधीश मिथ्या-वाद के ढेर में सत्य-कण की खोज उस समय तक नहीं कर सकता, जब तक उसके पास अमोघ साधन या यंत्र न हों। न्यायाधीश को सत्य-शोधन में सहायता देने में वकील अधिक योग दे सकते हैं। परंतु आजकल वकील इस कार्य में कितना सहयोग देते और कितने न्यायाधीश सत्य-शोधन में सहायता देनेवाले वकीलों की सहायता की इच्छा करते हैं, यह कहना कठिन है।

आज के न्यायाधीश, वकील और मुवक्किल—इन तीनो ने ही न्यायालय के समूचे वातावरण को दूषित बना दिया है, जहाँ सत्य, नीति, धर्म और न्याय नाम की चीज़ मिलना दुर्लभ है। न्यायालय जालसाज़ी, मिथ्यावाद, कपटाचार और अनीति के गढ़ हैं। न्यायालय की न्याय-प्रणाली का स्वरूप ही ऐसा बनाया गया है, जिसके कारण सत्य, नीति और न्याय को प्रोत्साहन नहीं मिलता।

न्यायालय का तथाकथित न्याय भी इतना क़ीमती है कि एक साधारण व्यक्ति न्यायालय की शरण नहीं ले सकता। वकील की फ़ीस, मुहर्रिर की फ़ीस, स्टांप, पेशकार का 'हक़', अहलमद का 'हक़', अर्दली का इनाम, डॉक्टर की फ़ीस, गवाहों के लिये ख़र्च आदि इतने ख़र्च हैं कि ग़रीब जनता के लिये न्याय प्राप्त करना संभव नहीं। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस की ओर से मुक़द्दमा चलाया गया है, तो कोर्ट-इंस्पेक्टर की भेंट भी देनी पड़ेगी।

रिश्वतख़ोरी का रोग इतना अधिक व्याप्त और भयंकर है कि इसके कारण न्याय-प्राप्ति और भी कठिन हो गई है।

न्यायालय में मुक़द्दमों के निर्णय में अनावश्यक रूप से अधिक विलंब किया जाता है। दीवानी अदालत में तो एक-एक मुक़द्दमे में दस-दस साल लग जाते हैं। इस अनावश्यक विलंब के कारण न्याय के स्थान में अन्याय हो जाता है। फ़ौजदारी के मामलों में विलंब बहुत ही हानिकर है। परंतु न्यायालयों में इस्तग़ासा (Complaint) दायर करने के बाद दो-दो महीनों तक कुछ भी सुनाई नहीं होती। 'मिसलें' ज्यों-की-त्यों पड़ी रहती हैं।

फ़ौजदारी का इस्तग़ासा दायर करने के बाद वह उसी समय अहलमद के पास भेज दिया जाता है। अहलमद प्रार्थी (Complainant) का बयान लिखता है। परंतु वह बयान लिखने से पहले उससे एक रुपया लेकर अपनी जेब गरम कर लेता है, तब क़लम सँभालता है। प्रार्थी भी यह सोचता है कि यह तो उसका 'हक़' है, देना ही पड़ेगा। इसके बाद वह बयान मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाता है। मैजिस्ट्रेट प्रार्थी से दफ़ा २०२ ज़ाब्ता फ़ौजदारी के अनुसार साक्ष्य माँगता है। अथवा वह उस इस्तग़ासे को अपने अधीन मैजिस्ट्रेट या ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के पास सुनाई (Trial) के लिये भेज देता है। कुछ मैजिस्ट्रेट ऐसे इस्तग़ासे को तहसीलदार के पास जाँच के लिये या पुलिस-थानेदार के पास तहक़ीक़ात के लिये भेज देते हैं। तहसीलदार या थानेदार के पास इस्तग़ासा भेजने की प्रणाली अतीव दूषित है। जहाँ यह रिश्वतख़ोरी को प्रोत्साहन देती है, वहाँ प्रार्थी के साथ अन्याय का भी कारण बनती है। लेखक अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकता है कि ऐसे मामलों में प्रार्थी के साथ, विशेषतः ग़रीब प्रार्थी के साथ, बहुत अन्याय होता है। नायब तहसीलदार, जो तहक़ीक़ात करने जाता है, अभियुक्त से रिश्वत लेकर प्रार्थी के इस्तग़ासे के संबंध में अपनी रिपोर्ट विरुद्ध लिखकर भेज देता है। इसका परिणाम यह होता है कि मैजिस्ट्रेट ऐसी रिपोर्ट के आधार पर ही इस्तग़ासे को ख़ारिज कर देता है।

यदि सौभाग्य से जाँच ठीक हो गई, या २०२ दफ़ा के अनुसार प्रमाण भी समुचित रीति से दे दिया गया, तो मैजिस्ट्रेट अभियुक्त के न्यायालय में उपस्थित होने के निमित्त सम्मन या वारंट के लिये आज्ञा दे देता है। यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि इस कार्य में प्रार्थी का अनावश्यक व्यय होता है।

साक्षी और प्रमाण

न्यायाधीश और क़ानून – ये दोनो ही प्रार्थी को मिथ्या साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिये बाध्य करते हैं।

वकील और प्रार्थी को यह पूरा विश्वास होता है कि यदि प्रार्थी के वक्तव्य (Statement) के समर्थन में साक्षी प्रस्तुत न किया गया, तो न्यायाधीश उसे स्वीकार न करेगा।

लेखक को ऐसे अनेक मामलों का ज्ञान है, जो यद्यपि सच्चे थे, परंतु साक्षी न होने के कारण न्यायाधीश द्वारा ख़ारिज कर दिए गए। यह संभव है कि अभियुक्त ने एकांत में चोरी की हो, जब मकान में प्रार्थी के सिवा कोई अन्य व्यक्ति उपस्थित न हो; यह संभव है कि अभियुक्त ने प्रार्थी को उसके मकान में घुसकर अकेले में मारा-पीटा हो; यह संभव है कि अभियुक्त ने प्रार्थी की पत्नी पर एकांत में बुरी भावना से आक्रमण किया हो; परंतु न्यायाधीश ऐसे मामलों में भी प्रार्थी के कथन की सत्यता की जाँच साक्षी के प्रमाण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयावृत्ति

अब कोई बेकार न रहेगा

छप गई !!

जिसके पास हुनर-प्रचारक पुस्तक है, वह एक बड़ी भारी संपत्ति का मालिक है।

(१) यदि आप धनवान् हैं, किंतु आपके सामने कोई लाभदायक व्यापार नहीं है। (२) यदि आप मध्यम श्रेणी के व्यक्ति हैं, और थोड़ी पूँजी से किसी काम को शुरू करने की स्कीम नहीं जानते। (३) यदि आपके पास पूँजी बिलकुल नहीं है और सर्वथा बेकार हैं, तो भी हमारी इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़ें। इससे उपर्युक्त तीनो श्रेणी के आदमी अपनी बेकारी मिटा सकते हैं। यह गारंटी है। पुस्तक की संक्षिप्त विषय-सूची निम्न-लिखित है—

(१) अमेरिका के बेकार आदमी केवल एक क़लम-दवात लेकर व्यापार द्वारा केवल डाक की सहायता से किस प्रकार मालामाल बन जाते हैं, उनके क्रियात्मक अनुभव एवं सुगम उपाय, (२) अपनी वस्तु बेचने का अनुपम उपाय, (३) ग्राहकों को अपनी तरफ़ खींचने का रहस्य, (४) अत्यधिक नफ़े के व्यापार, (५) डाक द्वारा व्यापार करने के गुप्त रहस्य, (६) योरप की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते, जो नई-नई वस्तुओं के नमूने मुफ़्त भेजती रहती हैं, (७) अमेरिका की प्रसिद्ध फ़र्म का पता, जो केवल टिकट भेजने पर संसार-भर की प्रत्येक चीज़ का आपको पता बता देगी, (८) ५०) से ५००) तक की पूँजी के कारख़ाने चलाने का विवरण, जिनसे ६०) से ५००) मासिक तक कमाया जा सकता है, (९) फ़्रांस की नई-नई चीज़ें प्राप्त करने और उनकी एजेंसी लेने के लिये वहाँ की भिन्न-भिन्न फ़र्मों के पते (१०) जर्मनी, जापान और अमेरिका की ताज़ी मालूमात और घर बैठे एजेंसी लेने के तरीक़े इस पुस्तक में सविस्तार छापे गए हैं। इसके अतिरिक्त छ पैसे सेर साबुन बनाना, जादू का रंग, कास्ट्रायल, बर्फ़ का पौडर, हर प्रकार के जर्मनी ख़िज़ाब, जादू का साँप, बूट-पालिश, मुख देखने के दर्पण बनाना, कानपुरवाले-जैसा पान का मसाला, ख़िज़ाब साबुन, फ़ोटोग्राफ़ी के प्लेट और पेपर बनाना, ४००) तोला मूल्य की बताई जानेवाली 'क्निसीन' पैदा करना, नक़ली शहद, हींग, कपूर, पिपरमेंट, क्रिस्टल, फ़िनायल, भाँति-भाँति के सुगंधित तेल और शर्बत बनाना, भारतवर्ष के कच्चे माल से रुपया कमाना, तैल सफ़ेद करना, क्लौरीन गैस बनाना, जिससे कपड़े बगले के पर के समान सफ़ेद निकल आते हैं, नक़ली रबर, अचार, मुरब्बे और चटनियाँ, वनस्पति-घृत बनाना, एक सेर दूध से पाव-भर मक्खन निकालना। इनके अतिरिक्त अनेक विलायती चीज़ों को स्वदेशी तैयार करना, इस पुस्तक में सिखाया गया है, और ऐसे-ऐसे प्रयोग लिखे गए हैं, जो आज तक सुनने में नहीं आए। २५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १), डाक-व्यय।-)

१०० गुना नफ़े का व्यापार

संसार में सबसे अधिक लाभदायक व्यापार पेटेंट ओषधियों का है। इससे सौगुना नफ़ा कमाया जा सकता है। एक पैसा लागत की दवा के दो-दो रुपए मिलते देखे हैं। अमृतधारा और सुधासिंधु के मालिकों ने एक-एक पेटेंट दवा के नुस्ख़े से लाखों रुपया कमाया है! विलायती फ़र्में एक-एक पेटेंट दवा से करोड़ों रुपया कमा रही हैं। यदि उनकी तरह आप भी भारतवर्ष, जर्मनी, इँगलैंड, अमेरिका की प्रसिद्ध और सर्वप्रिय, प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए की बिकनेवाली पेटेंट ओषधियों के नुस्ख़े बिना किसी कष्ट के घर बैठे सीखकर साधारण पूँजी से प्रायः सभी प्रचलित पेटेंट ओषधियों को स्वयं तैयार करके विज्ञापन द्वारा मुक़ाबले में कम क़ीमत में बेचकर सैकड़ों रुपए मासिक की स्थायी आमदनी पैदा करना चाहते हैं, तो आज ही "पेटेंट ओषधियाँ और भारतवर्ष"-नामक पुस्तक की एक प्रति मँगाकर कारोबार शुरू कर दें संभव है, फिर आपको यह पुस्तक किसी मूल्य पर न मिल सके। मूल्य ॥।), पोस्टेज।-)

पता—रसायन-कार्यालय (३) पोस्ट-बक्स नं० १२५, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

असली अष्टवर्ग भावप्रकाशोक्त

(१) जीवक कूर्चिकाकारो मधुरः (२) ऋषभो वृष शृङ्गवत् (३) शुष्कार्दक सन्निभः कन्दोलता जातः सपाण्डुरः (४) मेंदा महामेंदा का लक्षण।

प्रसिद्ध महानुभावो तथा वैद्य बंधुओ! यह किसी से छिपा नहीं कि निर्बलता, दमा, पुरानी खाँसी, कफ की व्याधियों, श्वास-यंत्र-संबंधी रोग तथा यक्ष्मा-जैसी रोगराट् बीमारियों का मर्दन करनेवाली "च्यवनं प्राश" रसायन में हिमालय पर्वत के अंचल में लहरानेवाली बहुपयोगी, किंतु दुर्लभ इन "अष्टवर्ग" की ओषधियों का ही विशेष भाग है। अतः इनको हम बड़ी कठिनता से प्राप्त करते हैं। अपनी इच्छानुसार मँगा लें। मूल्य १६) रु० सेर, डाक-व्यय अलग।

नव-अमृत-धारा (Regd.)

अनेक रोगों पर रामबाण ओषधि

यह अकेली दवा अजीर्ण, दस्त, उल्टी, हैज़ा, अरुचि, श्वास, खाँसी, ज्वर, हिचकी, आधाशीशी, उदर-शूल, कमर का दर्द, सूज़ाक आदि, जहरीले जानवरों का दंश इत्यादि अनेक रोगों में अपूर्व गुणकारी है। हर एक को सफ़र में और घर में हर समय जेब में रखनी चाहिए। सफ़र में या रात के वक्त तथा छोटे गाँवों में, जहाँ समय पर वैद्य या डॉक्टर और हकीम का मिलना मुश्किल होता है, बड़ा काम देती है। प्रसिद्ध महानुभावों तथा चिकित्सक-समुदाय ने भी इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। एक बार आज़माकर परीक्षा कीजिए।

छोटी शीशी का मूल्य ।)॥, बड़ी शीशी का मूल्य ।=)।, डाक-व्यय अलग।

भीमसेनी काजल (Regd.)

आँख के तमाम रोगों पर अचूक ओषधि

मोतियों और भीमसेनी कर्पूर आदि बहुमूल्य खनिज पदार्थों और अत्यंत लाभकारी वन-ओषधियों और जड़ी-बूटियों इत्यादि के योग से हम इस काजल को बड़े परिश्रम से बनाते हैं। पुराने मोतियाबिंद के सिवा आँखों का कोई ऐसा रोग नहीं है, जो इसके सेवन करने से अच्छा न हो जाय। फूली, माड़ा, कुकरे, आँखों से पानी बहना, खुजली, नज़र की कमज़ोरी आदि आँखों की समस्त बीमारियों के लिये अद्वितीय है। आँख के रोगों से पीड़ित महानुभावों से हमारा अनुरोध है कि वह हमारे "भीमसेनी काजल" का व्यवहार कर लाभ उठावें।

मूल्य ४) रु० तोला, डाक-व्यय अलग।

श्वास-गज-केसरी (Regd.)

श्वास-यंत्र-संबंधी रोगों पर अमूल्य ओषधि

यह अत्यंत लाभकारी भस्म है। इसको हम बहुमूल्य, किंतु कठिन द्रव्यों की प्राप्त कर, बड़े परिश्रम के साथ फूँककर सिद्ध करते हैं। इसके सेवन करने से समस्त श्वास-यंत्र-संबंधी रोग समूल नष्ट होते हैं। श्वास-रोग से पीड़ित भाइयों से हम अनुरोध करते हैं कि वे हमारे "श्वास-गज-केसरी" का सेवन कर लाभ उठावें।

मूल्य ३) रु० तोला, डाक-व्यय अलग।

मैनेजर अष्टवर्ग प्रयोगशाला (Regd.), श्रीहनुमत-निवास, चित्रकूट बाँदा, (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव में नहीं कर सकता । न्यायाधीश प्रार्थी के कथन की पुष्टि के लिये साक्षी का प्रमाण आवश्यक समझता है ।

न्यायाधीश की इस मनोवृत्ति एवं न्याय-प्रणाली की इस विचित्रता का परिणाम न्याय के लिये बड़ा घातक होता है । प्रार्थी यह सोचने लगता है—"मुझे सबसे पहले गवाह तैयार करने चाहिए, जिससे मैं उपयुक्त प्रमाण (Proof) प्रस्तुत करा सकूँ ।" इस संबंध में पटना-हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस वार्ट ने बिहार-प्रांतीय जुडिसल सर्विस कान्फ्रेंस में एक भाषण में यह कहा था—

"मैं अधिक सख़्त होना नहीं चाहता ; परंतु यह सदैव प्रतीत हुआ है कि इसका परिणाम इन तीन में से एक तो होता ही है—मुक़द्दमे में अधिक व्यय, केस का अधिक दिनों तक चलते रहना और संभवतः मिथ्या साक्ष्य ।"

न्याय-प्रणाली की इस विचित्रता के कारण जनता में अनीति और दूषित विचार-धारा पनपने लगती है । जब घटना के समय कोई साक्षी उपस्थित न था, और न्यायाधीश प्रार्थी को यह आज्ञा देता है कि वह साक्षी प्रस्तुत करे, तो इसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि वह मिथ्या साक्षी तैयार करने का प्रयत्न करेगा । अनेक अवसरों पर ऐसा होता है कि प्रार्थी के ग्राम के लोग पंचायत करके यह निश्चय कर लेते हैं कि उसके पक्ष में कोई साक्ष्य न दी जाय, और जो साक्ष्य देने जाते हैं, उन्हें भी प्रलोभन देकर फुसला लिया जाता है, तो वे न्यायालय में प्रार्थी के विरुद्ध गवाही देने लगते हैं । ऐसे अवसरों पर प्रार्थी के लिये बड़ा संकट उपस्थित हो जाता है । लेखक का विश्वास है कि ऐसे संकट उत्पन्न करने में न्यायाधीश और क़ानून अधिक मदद देते हैं ।

साक्षी के वक्तव्य न्यायाधीश स्वयं लिखता है, और पेशकार भी लिखता है । न्यायाधीश वक्तव्य लिखने में इतना संलग्न रहता है, मानो यही उसका एकमात्र कार्य हो । वे साक्षियों के आचरण, भाषण और वकीलों के अनुचित अभ्यासों की ओर ध्यान तक नहीं देते । लेखक की यह दृढ़ धारणा है कि न्यायाधीश अपराधियों के संबंध में विचार करते समय मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं रखते । यह वास्तव में सबसे बड़ी कमी है । न्यायधीश को चाहिए कि वह अपना समय वक्तव्य को लेख-बद्ध करने में न लगाकर प्रार्थी, साक्षी या अभियुक्त के मनोवैज्ञानिक अध्ययन में व्यय करे ।

वकील अधिकांश में साक्षियों से ऐसे प्रश्न (Leading Questions) पूछते हैं, जिनके उत्तर केवल 'हाँ' या 'नहीं' में पर्याप्त होते हैं । ऐसे प्रश्नों से साक्षियों के वक्तव्यों की सत्यता की जाँच करना संभव नहीं ।

जिरह

जिरह का वास्तविक अभिप्राय तो साक्षी के वक्तव्य की सत्यता की जाँच करना होता है । परंतु अधिकांश में यह उद्देश सफल नहीं होता । अनेक प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली वकील भी जिरह में ऐसे पेचीदा प्रश्न पूछते हैं, जो सर्वथा अप्रासंगिक होने के साथ-साथ अनावश्यक भी होते हैं । एक बलवे के मुक़द्दमे में प्रश्न यह था कि अभियुक्तों ने बारात में मार-पीट की । सुबूत की ओर से प्रमाण दिया जा चुका था, और अभियुक्त के वकील, जो एक ख्यातनामा वकील हैं, प्रार्थी से जिरह कर रहे थे । जिरह में वह पूछने लगे—"क्या आप महंत हैं ; लोग आपके चरण छूते हैं ?"

"क्या यह सत्य है कि आप अपनी जाति में ऐसा प्रचार करते हैं कि विवाहादि में वर को एक विशेष प्रकार की पोशाक तथा शिरोवस्त्र धारण करना चाहिए ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपकी जाति में वर सवर्ण जाति के वर के समान वस्त्रादि धारण नहीं करते ?"

ये प्रश्न सर्वथा अप्रासंगिक थे। इनका उत्तर देने में प्रार्थी भी संकोच करता था, और न्यायाधीश भी इन्हें अनावश्यक समझते थे। परंतु न्यायाधीश की उदात्त भावना का यह अनुचित लाभ वकील उठा रहे थे।

इँगलैंड में वकील संपूर्णतः जिरह करते हैं। यदि वकील पूर्णतः जिरह नहीं करते, तो वह प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत मूल-साक्ष्य को सही स्वीकार कर लेते हैं। यदि किसी विशेष घटना के संबंध में कोई जिरह न की जाय, तो यह समझा जाता है कि उस विषय में मूल-साक्ष्य उसे स्वीकार है। इस प्रकार जिरह करने से ही इस संबंध में कार्य-प्रणाली (Law of Procedure)-संबंधी क़ानून की ठीक-ठीक पूर्ति होती है।

सन् १८५१ ई० से पूर्व इँगलैंड में कोई पक्ष (Party) अपने समर्थन में कोई साक्ष्य देने का अधिकारी नहीं था। तब से वह अपने समर्थन में साक्ष्य देने का अधिकारी बन गया है। भारतवर्ष में वह अपने समर्थन में साक्ष्य देने का अधिकारी है।

साक्ष्य के संबंध में माननीय चीफ़ जस्टिस वार्ट का यह कथन है—

"यह कहना कि किसी पक्ष पर इसलिये विश्वास नहीं किया जा सकता कि उसने अपने समर्थन में समर्थक साक्ष्य प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त नहीं की, इस कथन के समान होगा कि उस विशेष मामले में, पक्ष-योग्य साक्षी नहीं है। हमें मामले की जाँच बड़ी बारीकी से करनी चाहिए। यदि कोई पक्ष ऐसी साक्ष्य देता है, जो न्यायाधीश को संदिग्ध प्रतीत होती है, तो क्या उसे दूसरे साक्षी से कोई समर्थन मिल सकता है, जो बिलकुल वैसी ही साक्ष्य देता है। असत्य भी सत्य की भाँति कई बार दोहराया जा सकता है। और, अंत में प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या सिर्फ़ पक्ष पर विश्वास किया जा सकता है ?"

भारतवर्ष के न्यायालयों में उपर्युक्त कथन की उपेक्षा कर, न्यायाधीश पक्ष के साक्ष्य की ओर अधिक ध्यान न देकर साक्षी के साक्ष्य की ओर अधिक ध्यान देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

न्यायाधीश अपने निर्णयों (Judgments) में बहुधा कुछ साक्षियों को 'आकस्मिक साक्षी' या 'दिलचस्पी रखनेवाला साक्षी' (Chance witness or Interested witness) कहकर उनके साक्ष्य को मिथ्या घोषित कर देता है। परंतु यह सर्वथा अनुचित है।

यदि किसी स्थान पर कोई घटना घटित हो जाय, और उस समय संयोग से कोई व्यक्ति उपस्थित हो, तो इस व्यक्ति को जब न्यायालय में साक्ष्य के लिये प्रस्तुत किया जायगा, तो यह व्यक्ति 'आकस्मिक साक्षी' कहलाएगा। कोई ऐसा कारण नहीं कि ऐसे व्यक्ति की साक्ष्य सत्य स्वीकार न की जा सके। इसी प्रकार यदि कोई नौकर अपने स्वामी के मुक़द्दमे में साक्ष्य दे, तो वह साक्ष्य केवल इस आधार पर कि नौकर दिलचस्पी रखता है, मिथ्या नहीं मानी जा सकती।

न्यायाधीश के मस्तिष्क में यह धारणा बहुत गहराई के साथ पैठ गई है कि पुलिस द्वारा चलाए गए मामले व मुक़द्दमे सर्वथा सच्चे होते हैं। अनेक न्यायाधीश यह जानते हुए कि पुलिस के मामले अधिकांश में मिथ्या होते हैं, वे उनके पक्ष में अपने निर्णय इसलिये देते हैं, जिससे पुलिस का जनता पर प्रभाव जमा रहे। इस प्रकार न्याय का गला घोटकर पुलिस के आतंक को शक्ति-प्रदान करने का सत्संकल्प अत्यंत दूषित विचार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में हम यह लिखे बिना नहीं रह सकते कि भारत में न्याय-प्रणाली में यथेष्ट सुधार की आवश्यकता है। जब तक न्याय-प्रणाली में इतना सुधार न हो जाय कि जनता में न्यायाधीश की न्याय-बुद्धि के प्रति अटल श्रद्धा पैदा हो जाय, तब तक इन न्यायालयों से, जो व्यापार की मंडी से किसी बात में कम नहीं, जनता के नागरिक अधिकारों की रक्षा संभव नहीं।

हमारी योजना के अनुसार

शीघ्र प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें!

पुस्तकें प्रेस में छप रही हैं, अगस्त में निकल जायँगी!!

स्थायी ग्राहकों को नियमानुसार इन सब पुस्तकों पर २५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। कृपया अपनी प्रति मँगा लें।

पुस्तकों की सूची

१. आदर्श पत्नी—ले०, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)
२. राष्ट्रपति जवाहर—ले०, श्रीशीतलासहाय बी० ए० ; मूल्य लगभग ॥), १)
३. शारदीया (गद्य-काव्य)—ले०, श्रीदिनेशनंदिनी चोरड़्या ; मूल्य लगभग १), १॥)
४. पौराणिक कहानियाँ (बालोपयोगी)—ले०, अध्यापक श्रीहरिप्रसाद द्विवेदी ; मूल्य लगभग ॥=), १=)
५. स्वास्थ्य-विज्ञान—ले०, श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार ; मूल्य लगभग १॥), २)
६. सुखी जीवन—ले०, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री ; मूल्य लगभग १), १॥)
७. ला-मज़हब (कहानी)—ले०, श्रीबलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस' ; मूल्य लगभग ॥), १)
८. चूहों की राजकुमारी (बालोपयोगी)—ले०, कुमार बुद्धिभद्र ; मूल्य लगभग १), १॥)
६. नक्षत्र-मंडल (कहानी)—ले०, स्व० श्रीरमाशंकर जैतली ; मूल्य लगभग १), १॥)
१०. कुंद-ज़ेहन (हास्य)—ले०, श्रीबदरी-नारायण शुक्ल ; मूल्य लगभग १), १॥)
११. प्रत्यागत (उपन्यास)—ले०, श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; मूल्य १॥), २)
१२. उपयोगी बातें—ले०, श्रीहरीराम गुप्त ; मूल्य लगभग ॥=), १=)
१३. स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य—ले०, श्री-बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०, बी० टी० ; मूल्य लगभग २), २॥)
१४. देवी चौधरानी (बालोपयोगी)—ले०, श्रीनलिनीमोहन सान्याल; मूल्य लग० ॥), १)

मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओव्हरा

[श्रीमती विमल लेले]

पाँच मई, सन् १९३६ को अपने चातुर्य से अबीसीनिया हड़प-कर इटली ने भावी महायुद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी, इटली, रशिया, इन राष्ट्रों ने स्पेन-गृह-दाह में भाग लेकर उस घोषणा का मध्य भाग पूरा किया, और अब चीन के टुकड़े-टुकड़े करके जापान उसी घोषणा का उत्तरार्ध पूर्ण करने पर तुला है। यह युद्ध समाप्त होते ही विजय से मदांध इटली, जर्मनी, जापान, पराभव के कारण उन्मत्तता-पूर्ण रशियन राष्ट्र तथा उसके अन्य मित्र-राष्ट्र—इनकी चकमक में आधी दुनिया श्मशान का रास्ता देखेगी। इस घोर, प्रचंड तथा जागतिक युद्ध की तैयारी में प्रत्येक राष्ट्र शांति की बातें बघारता हुआ सन् १९२९ से उलझा पड़ा है। इसी समय से इटली, जर्मनी, जापान का संघ बनने के लक्षण दृष्टिगोचर होते थे। ये लक्षण केवल वैसे ही न रहकर शीघ्र ही कार्य-रूप में परिणत हुए, तथा अभी-अभी इस पर मुहर भी लग गई। इस संघ के लिये आवश्यक राजकीय घटनाएँ जिस विभाग ने उत्पन्न कीं, तथा जिसने इटली को सँवारा, वह विभाग ओव्हरा नाम से प्रसिद्ध है। इसी ओव्हरा को नेस्त-नाबूद करने के लिये स्टॅलिन की ऑगप्यू-संस्था भरसक प्रयत्न करती रही, तथा अब भी करती है। दोनों संस्थाएँ अपना-अपना काम पहले के दुगने उत्साह से तथा अत्यंत कुशलता-पूर्वक कर रही हैं। इन संस्थाओं की हलचल में—रक्त-विहीन लड़ाई में—अभी तक इटली की ओव्हरा को विजय-श्री ने जयमाला पहनाई है। और, इसी रक्त-विहीन लड़ाई के अंत में जो संस्था विजयी होगी, वही 'संसार-विजेता' का मौर धारण करेगी।

अनंत सूर्यों की किरणों से चमचमाता हुआ 'विश्व-विजेता' का मुकुट अपने राष्ट्र के सिर पर, कम-से-कम अपने दल के सिर पर शोभायमान हो, इसके लिये दो महापुरुष प्रयत्न कर रहे हैं। उनमें मुसोलिनी (इटली का भाग्य-निर्माता) ने ओव्हरा-नामक संस्था स्थापित की। जिस समय इस महाभाग पर हत्यारे नियुक्त हुए, तथा उनकी पिस्तौलों से ख़ून पीनेवाली गोलियाँ निकलने लगीं, ख़ून के षड्यंत्र साधारण बात हो गई, उस अवसर पर इस संस्था का जन्म हुआ। शैशव-काल में ही इस संस्था ने स्वतंत्रता से अथवा दूसरे राष्ट्रों की मदद से रचे जानेवाले षड्यंत्रों का भेद निकालकर, उनकी नींव पर कुल्हाड़ी चला मुसोलिनी का कंटक-मार्ग राजमार्ग में परिणत कर दिया। ओव्हरा ने जिन-जिन लोगों को अपने जाल में फँसाया, उनमें से प्रायः सबों को मास्को का आधार था। इतना ही नहीं, बल्कि मास्को की प्रेरणा से ही वे इस पथ पर अग्रसर हो रहे थे। संसार के शरारती लोगों को मास्को का सहारा है। यह बात केवल मुसोलिनी को ही नहीं, अन्य राष्ट्रों को भी विदित हो चुकी है। इन सब उपायों में ओव्हरा को यश का ताज मिला है।

सन् १९२९ में इस शक्तिमान् संस्था का जन्म हुआ। इस अवसर पर इसकी केवल एक ही शाखा थी, और इसका कार्य-क्षेत्र केवल इटली ही था। परंतु जैसे-जैसे मास्को और अन्य विरोधियों के षड्यंत्रों का पता लगता गया, इस संस्था का कार्य-क्षेत्र बढ़ा दिया गया। आजकल इसकी दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखाएँ बन गई हैं, तथा उनके भिन्न-भिन्न काम भी उन्हें सौंप दिए गए हैं। ओव्हरा राष्ट्रीय शाखा है, और इसका कार्य-क्षेत्र केवल इटली है। दूसरी शाखा, जिसने सारे संसार को अपना कार्य-क्षेत्र बना रक्खा है, तथा जो सदैव गड़बड़ करती रहती है, "पोलिटिकल ब्यूरो" (राजकीय विभाग) के नाम से प्रसिद्ध है।

इस पोलिटिकल ब्यूरो की कई उपशाखाएँ भी हैं। 'ईस्टर्न पोलिटिकल ब्यूरो' उपशाखा को पूर्व का प्रदेश सौंप दिया गया है। इस उपशाखा के अनेक जासूस प्रत्येक राजकीय हलचल का अत्यंत बारीकी से निरीक्षण करते हैं। कभी-कभी स्वयं भी कुछ हलचल कर डालते हैं। कश्मीर-विद्रोह के समय इस उपशाखा के कई जासूस कश्मीर तथा सरहद प्रांत में वर्तमान थे। कुछ लोग तो बलवा करनेवालों में मिले हुए थे। जिस समय बलवे की ज्वाला ने ज़ोर पकड़ा, तथा उनकी विजय हुई, तब विजय से मदांध होकर बलवा करनेवाले रशिया में जा पहुँचे, और वहाँ भी उन्होंने लूट-मार आरंभ की। इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न होते ही रशियन सरकार ने अख़ीरी पत्र कश्मीर भेजा, साथ ही फ़ौज भी उस ओर रवाना कर दी। जिस समय यहाँ तक नौबत आ गई, तब भारत-सरकार ने कश्मीर की मदद की, और बलवा शांत हुआ। इस बलवे की अत्यंत सूक्ष्मतम ख़बर ओव्हरा की कृपा के कारण सारे संसार के सम्मुख आई। कई गौरवर्णीय लोगों ने प्रवासी आदि के बहाने हिंदुस्थान को पदाक्रांत किया, सरहद पर रहनेवाली जंगली जातियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया, तथा स्थान-स्थान पर अनुकूल बीज भी बो दिया।

इसी पोलिटिकल ब्यूरो की एक दूसरी शाखा का निवास-स्थान 'अस्मारा' है। यह शाखा अरब, उत्तर-आफ़्रिका, इजिप्ट, सायप्रस, माल्टा आदि भागों में गड़बड़ मचाया करती है। इसी शाखा की मदद करनेवाली 'ऑफ़िस ऑफ़् इन्फ़ॉर्मेशन'-नामक एक दूसरी शाखा का कार्य-क्षेत्र इरिट्रिया में है। इन दोनो शाखाओं ने गत अबी-सीनिया की लड़ाई में अत्यंत महत्त्व का काम किया। इन दोनो शाखाओं ने, इटालियन फ़ौज तथा फ़ैसिस्ट मिलीशिया के अबीसीनिया हड़प लेने के पूर्व ही, अपने षड्यंत्रों द्वारा, उस पर प्रायः पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर ली थी। इन दोनो संस्थाओं के जासूसों ने कई वर्ष पूर्व ही अबी-सीनिया छान डाला था; उसका प्रत्येक इंच पैरों-तले रौंदा था। बर्बर-जातियों को पैसे देकर अपने अनुकूल बना लिया था। अनेक दुर्गम स्थानों पर रेडियो लगाए गए थे, और वहाँ ओव्हरा के गुप्तचर अपना काम करते थे। इन्हीं के द्वारा अबीसीनिया की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म ख़बरें मुसोलिनी के पास पहुँचाई जाती थीं। इतना ही नहीं, प्रत्युत इन्हीं ख़बरों के आधार पर कार्य भी आरंभ हो चुका था।

जिन दो इटालियन देश-भक्तों ने विशेष परिश्रम करके अबीसीनिया जीतने की पूर्व तैयारी कर दी, उनमें से एक 'बॅरनरेमोंदो फ़्रेंचेटी' है। असली कार्य शुरू होने के कई वर्ष पूर्व यह शूर पुरुष संशोधक के बहाने अबीसीनिया में भ्रमण करता रहा। इतना ही नहीं, 'डानाकील'-विभाग में कुछ दिन तक इसने अपना निवास रक्खा था। इसी जंगली प्रांत की परिस्थिति तथा उनके मुखिए और आस-पास के मुसलमान सुलतानों को इसने अपने वश में कर लिया था। इसी ने अबीसीनिया-युद्ध में इटली के 'एडवांस गार्ड' का काम अच्छे प्रकार किया। सौंपा हुआ काम करने के बाद लौटते समय इस शूर पुरुष का वायुयान गिर पड़ा, और उसी से इसकी मृत्यु हुई। 'जॅ कोपो ग्रास पेरिनी' अबी-सीनिया को पदाक्रांत करनेवाला दूसरा पुरुष है। यह षड्यंत्रकारी चंद दिनों तक इरिट्रिया का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांताधिकारी रह चुका था। अपने शासन-काल में ही इसने सारा अबीसीनिया अपने अनुकूल कर लिया था। प्रांताधिकारी के उत्तरदायित्व से छुटकारा पाते ही इसने व्यापारी के बहाने सारा अबीसीनिया छान डाला। गोजम और आगोडेन, इन प्रांतों की तो प्रत्येक इंच भूमि छान-बीन डाली थी। और, इसी समय फ़ौजी हलचल के उपयुक्त नक़्शे भी तैयार कर लिए थे। फ़ौज के विश्राम करने के उपयुक्त स्थान, उनके छाया-चित्र, गमनागमन के मार्ग तथा आस-पास की सूक्ष्मतम ख़बरें इसने पूर्व ही भेज दी थीं। प्रत्येक काम अत्यंत दक्षता से किया गया था। यह कूट-नीतिज्ञ जहाँ कहीं गया, वहाँ इसने धन के बल पर घर-भेदिए बना रक्खे थे।

इस प्रकार लड़ाई का क्षेत्र पहले से ही तैयार होने के कारण, प्रकट रूप से लड़ाई होने के पूर्व ही, रास गुकसा तथा उसके सरदार इटली के अधीन हो गए थे, और उसे हर प्रकार की मदद पहुँचाते थे। इस प्रकार की परिस्थिति होने के कारण प्रकट रूप से लड़ाई आरंभ होते ही इटैलियन फ़ौज की उन्नति शीघ्र ही होने लगी। और, आश्चर्य की बात यह कि जब 'नेगस-रासतफारी' 'हेले सलासी' स्वदेश के लिये आत्मबलिदान का निश्चय कर समरांगण में उतरे, उस समय देश के लड़ाई के योग्य तरुण पुरुषों में से दो लाख तरुण, प्रायः पचास फ़ीसदी फ़ौजी सिपाही, पहले से ही इटली के गुलाम बनकर मातृभूमि का जीर्ण वस्त्र छीनने, कुछ लोग बलवा मचाने तथा कुछ युद्ध न करने के लिये तैयार थे। यह भीषण परिस्थिति देखकर रासतफारी का धैर्य जाता रहा। जिन तरुण पुरुषों के बल पर उसने इटली-जैसे बलवान् राष्ट्र का सामना करने की तैयारी की थी, उनमें से अधिक-से-अधिक पुरुषों को जन्मभूमि का घात करने पर तुला हुआ देखकर उसकी अवस्था कठपुतली-सी हो गई। उसने राष्ट्र-संघ की ओर दौड़ लगाई, संसार की प्रार्थना की। कुछ लोगों ने उसकी प्रार्थना पर ध्यान देकर उसे शस्त्रास्त्रों में मदद भी दी। संसार के भिन्न-भिन्न भागों से देश-प्रेमी वीर आए, और जागतिक युद्ध की संभावना दिखाई देने लगी। ऐसे अवसर पर अबीसीनिया जीतने के विषय पर मुसोलिनी ने हुक्म दिए, तथा साथ ही 'पोलिटिकल ब्यूरो' और 'ऑफ़िस ऑफ़् इन्फ़ॉर्मेशन' का काम ज़ोरों से होने लगा। परिणाम-स्वरूप पहले ही धड़ाके में ॲडोवा ख़लास हो गया। प्रकट रूप से जीतने के पूर्व ही ओव्हरा के जासूसों ने ॲडोवा और आस-पास का सारा प्रदेश जीत लिया था। अन्य प्रांतों के विषय में 'ब्यूरो' की भाषा में ही कहना हो, तो वे सारे प्रांत 'Zone worked out, ready' इस प्रकार थे। और, आक्रांत होनेवाले प्रांत से ready अथवा worked out ऐसी ख़बर मिलती, तभी विजयी फ़ौज आक्रमण करती थी। इटालियन जनरल स्टाफ़ हर बार इन दोनो संस्थाओं की सलाह के अनुसार कार्य करता था। जो प्रदेश इन दोनो संस्थाओं द्वारा 'worked out, ready' नहीं थे, उनमें अबीसीनियन लोगों ने इटालियन फ़ौज को अच्छा हाथ दिखाया, और अपनी युद्ध-कुशलता का परिचय सारे संसार को करा दिया। उनकी युद्ध-कुशलता तथा शूरता के विषय में 'जनरल डी बोनो' ने इस प्रकार उद्गार निकाले हैं—

"हम लोगों के पास आधुनिक युद्ध-सामग्री होने के कारण हम लोग टिक सके, तथा अबीसीनियन लोगों का पराभव कर सके। इन सब लड़ाइयों में इतने कुशल लोग अन्यत्र मिलना असंभव नहीं, तो अत्यंत कठिन है। चपलता, सावधानी, सहन-शक्ति—इन बातों में वे किसी से भी हार स्वीकार न करेंगे। अन्न-सामग्री कम होते हुए भी उन्होंने जो सहनशीलता दिखाई, उसका दूसरा उदाहरण हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही नहीं सकता । फ़ौज की शीघ्र हलचल, हाथो-हाथ लड़ाई-प्रसंग का महत्त्व जानते हुए आत्मोत्सर्ग करने की तैयारी में यह काली फ़ौज गोरी फ़ौज की अपेक्षा कहीं अच्छी थी ।

परंतु इस युद्ध-कुशल सेना पर इटली ने अत्यंत अल्प अवधि में विजय पाई । इसके लिये उसने सारे संसार का विरोध तथा नैसर्गिक प्रतिकूलताएँ ठोकरों से उड़ा दीं । इस विजय की पूर्व-तैयारी ओव्हरा के जासूसों ने पहले ही कर रक्खी थी । सेना ने केवल बचा हुआ कार्य किया । ओव्हरा के जाल में नेगस हेले सलासी पूर्ण रूप से जकड़ा जा चुका था, और इसी कारण 'लेक अशांगी' की पहली ही लड़ाई में अबीसीनिया की पराजय हुई ।

वर्षा-ऋतु पास आ रही थी । जागतिक युद्ध का डर प्रतिक्षण बढ़ता जाता था । सारा संसार अबीसीनिया की मदद कर रहा था । स्वातंत्र्य-प्रेमी आत्मोत्सर्ग का निश्चय कर युद्ध-क्षेत्र में उतरने जा रहे थे । वर्तमान पत्रों ने इटली के विरुद्ध प्रचार करने का बीड़ा उठाया था । इटली और इँगलैंड के पारस्परिक संबंध का अंत होने की आशंका थी, और यह प्रकरण कहाँ तक बढ़ता है, इस ओर सारा संसार आँखें फाड़कर देख रहा था । ऐसी परिस्थिति में मुसोलिनी ने चढ़ाई का काम वर्षा-ऋतु के पहले ही समाप्त करने के लिये कठोर हुक्म दिए । मार्शल बाडोग्ली या की मुख्य सेनापति के स्थान पर नियुक्ति हुई । और, सब लोग अपना-अपना काम दूने उत्साह से करने लगे । मैनेलेक के पराक्रम की याद दिलाकर अपनी सैन्य को उत्साहित करनेवाला रासतफारी ख़बर सुनते ही निराश हो गया । छापे मारकर अथवा धोखा देकर वर्षा-ऋतु तक समय काटने का विचार उसने किया, तथा उस प्रकार की तैयारी में भी लग गया । रास कासा, रास सेयूम ने राजा के सहायतार्थ कमर कसी, और अपनी-अपनी फ़ौज लेकर भिन्न-भिन्न स्थानों को रवाना हुए । रासतफारी ने भी अपनी सेना-सहित डेसी की ओर कूच किया । डेसी-स्थान पर मुख्य छावनी रखकर उसके आस-पास लड़ाई करने का उसका विचार था । यह स्थान पहाड़ी लड़ाई के लिये नैसर्गिक अनुकूलता-पूर्ण होने के कारण शत्रु की बड़ी-से-बड़ी सेना का पराभव करना बाएँ हाथ का खेल था । हेले सलासी के तुर्की सलाहकारों ने इसी नैसर्गिक अनुकूलता को देखकर उसकी कल्पना को पुष्टि दी थी, और उस प्रकार तैयारी भी होने लगी ।

अपना राजा परदेशी सलाहकारों से सलाह लेता है, इस बात से रास कासा और रास सेयूम को बड़ा आश्चर्य मालूम हुआ । इन दोनो का वैमनस्य होते हुए भी एक ही संकट से पीड़ित होने के कारण दोनो एक दूसरे के विश्वास-पात्र बन रहे थे । रास कासा और रास सेयूम दोनो वीरों को नासीर भेज दिया गया था । इटली की 'ऑफ़िस ऑफ़् इन्फ़ॉर्मेशन' और 'पोलिटिकल ब्यूरो' द्वारा सारी ख़बर इटालियन जनरल स्टाफ़ को मालूम हो चुकी थी, और इस घटना को नष्ट करने के लिये उसके दूत प्रयत्न भी कर रहे थे ।

आगे की कार्रवाई करने के उद्देश से बादशाह हेले सलासी ने अपने सारे सरदार तथा सेनापति एकत्र किए थे, इस दरबार में तुर्की के एक दूत ने एक पत्र नज़र किया । इस पत्र पर टर्कीने इतना ही लिखा था । बादशाह ने यह पत्र रास सेयूम को दिया । पत्र खोलने पर उसमें से ४० हज़ार की फ़्रेंच-बैंक नोटों को बंडल और तुर्की सेनापति सलाहकार का लिखा हुआ एक पत्र निकला । रास सेयूम ने सब हाल रास कासा को बता दिया । पश्चात् इन दोनो ने बादशाह को एकांत में ले जाकर सब कथा सुनाई, तथा पत्र भी नज़र किया । अब हेले सलासी घबरा गया । उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सरदारों ने तुर्की सलाहकारों के विरुद्ध उसके कान अच्छी तरह भर दिए। बादशाह अत्यंत क्रुद्ध हुआ। सलाहकारों की उसने एक भी न सुनी, और सारी फ़ौज लेकर 'अशांगी लेक' की ओर प्रयाण किया। इस सरोवर के पास सारी इटालियन फ़ौज तैयार थी। अग्नि-वर्षा करनेवाले वायुयान ज़हरीली गैस के बम लेकर सेनापति के हुक्म की राह देख रहे थे। सारी सामग्री प्रथम श्रेणी की थी। सारी सेना युद्ध के लिये उत्साहित थी। इस प्रकार की सेना पर बादशाह तुर्की-सेनापति के विरोध करने पर भी अपनी सेना लेकर टूट पड़ा। बड़े ज़ोर से चकमक शुरू हुई, और पहले ही धड़ाके में पाँच हज़ार अबीसीनियन स्वर्ग सिधारे। बादशाह का घोड़ा घायल हुआ। सारी सेना का धैर्य जाता रहा, और वह इधर-उधर भागने लगी। भागनेवालों को वायुयानों ने भून डाला। चारो ओर लाशें दिखाई देने लगीं। मरनेवालों की संख्या दस हज़ार तक पहुँच चुकी। अबीसीनिया की पराजय हुई, और इटली को विजय-श्री ने जयमाल पहनाई—वह भी केवल ओव्हरा के षड्यंत्रों के कारण। तुर्की-सेनापति के कहने के अनुसार यदि लड़ाई डेसी के पास होती, तो शायद अबीसीनिया का भविष्य कुछ और ही होता। परंतु इसी लड़ाई में रोमन-साम्राज्य तथा भविष्यकालीन जागतिक युद्ध की नींव डाली गई।

इस प्रकार अनेक षड्यंत्रकारिणी इस संस्था का इटालियन नाम "Opera Vigilanze Reati Antifas cistis" है। आरंभ में इसी संस्था के बल पर मुसोलिनी ने अपना पक्ष बलवान् बनाया, और अपना आसन स्थिर किया।

यद्यपि आजकल ओव्हरा जागतिक हलचल में व्यस्त है, तो भी इटली की फ़ैसिस्ट-विरोधी हलचल पर उसका ध्यान नहीं, यह कहना अनुचित होगा। स्वदेशी सूक्ष्मतम समाचार भी अपनी नज़र से छूट न जाय, इसलिये इसने अपने दूत हर जगह रख छोड़े हैं। विश्रांति-गृह, होटल अथवा सार्वजनिक जगह—इनमें से एक भी स्थान ऐसा नहीं, जहाँ इसका दूत वर्तमान न हो। साधारण चौकीदार से लेकर उच्च-से-उच्च अधिकारियों के पद पर इसके दूत वर्तमान हैं। और, ये लोग ओव्हरा के हुक्मों का अत्यंत सावधानी के साथ पालन करते हैं। इन्हीं दूतों द्वारा ख़ास-ख़ास घरों में होनेवाली घटनाओं की सूक्ष्मतम ख़बरें रोज़ संध्या-समय मुसोलिनी के टेबुल पर तैयार रहती हैं। इन ख़बरों का प्रथम निरीक्षण पुलिस का मुख्य अधिकारी 'सी क्रिस्पो भाँकादा' करता है, और महत्त्व की घटना पर निशान बना देता है। पश्चात् मुसोलिनी स्वयं सबका निरीक्षण करता तथा आगे हुक्म देता है। दिए गए हुक्म वायु-गति से सारे इटली में पहुँचाए जाते हैं। दस हज़ार ख़ास दर्जे की तालीम पाए हुए जासूस इटली का कोना-कोना ढूँढ़ते रहते हैं। ये दूत वर्ष में एक बार Palazo Venezia स्थान पर एकत्र होते हैं। यहाँ मुसोलिनी स्वयं उनसे भेंट करता, कठिनाई पूछता और उन्हें दूर करने के उपाय भी बताता है। अपने दूत-दल को अत्यंत कार्यक्षम बनाने के लिये मुसोलिनी कड़ी मेहनत करता है। ओव्हरा की कार्य-क्षमता बढ़ाने के लिये उसने Capillary System आरंभ किया है। बालकन-राष्ट्र तथा भूमध्य-समुद्र के आस-पास के देशों में इस System का जाल फैला हुआ है। अपने देश में रहनेवाले विदेशियों की हलचल पूर्ण रूप से समझने के लिये उसने Telephone System शुरू किया है। टेलीफ़ोन के क्रमांकों के विभाग बनाकर वे विभाग हरएक को सौंप दिए हैं। ऑपरेटर और उसका सहायक भाषा-शास्त्रज्ञ तथा ब्लॉक चेंबर का एक मनुष्य—तीनो मिलकर महत्त्वपूर्ण संभाषणों की रिपोर्ट करते हैं। पश्चात् सब रिपोर्टें मुसोलिनी के पास भेज दी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों का सखा　　　　आलोचना-प्रधान

हिंदी में अपने ढंग का अनूठा मासिक पत्र

साहित्य-संदेश

संपादक—(१) श्रीगुलाबराय एम्० ए०, (२) श्रीमहेंद्रजी

साहित्य-संदेश की विशेषताएँ

१—इस पत्र में साहित्य-संबंधी केवल आलोचना-विषयक लेख छपते हैं।

२—हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की जल्दी-से-जल्दी निष्पक्ष आलोचना करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

३—लेखकों को प्रोत्साहन देना, उनकी कृतियों को लोकप्रिय बनाना इसका ध्येय है।

४—"अधिक पुस्तकें पढ़िए" (Read more books) का आंदोलन करना इसका मोटो है।

५—इस पत्र में दवा-दारू, विदेशी वस्तु, प्रतियोगिता आदि के तथा अश्लील विज्ञापन नहीं छपते। साहित्य-संबंधी विज्ञापन छापना ही इसे अधिक अभीष्ट है।

६—हिंदी में यह पत्र सबसे सस्ता है, और उपयोगिता की दृष्टि से सबसे अधिक मान्य है।

७—हिंदी-साहित्य के विद्यार्थियों, शिक्षा-संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिये यह पत्र अत्यंत उपयोगी और नितांत आवश्यक है। विभिन्न प्रांतीय सरकारों और देशी राज्यों द्वारा स्वीकृत है।

मूल्य सर्व-साधारण से २) वार्षिक और शिक्षा-संस्थाओं, पुस्तकालयों तथा विद्यार्थियों से १) मात्र।

नमूना मुफ़्त मँगाइए!

कुछ विख्यात विद्वानों की सम्मतियाँ

श्रीमान् हरिभाऊजी उपाध्याय—"आपने गागर में सागर भरने की कोशिश की है।"

श्रीराधाकृष्णजी—"इस पत्र की आलोचनाओं की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वे निष्पक्ष हैं।"

सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार—"आपने साहित्य-संदेश का प्रकाशन करके हिंदी की बड़ी सेवा की है।"

श्रीमहावीरप्रसाद अग्रवाल एम्० ए०—"ऐसे सुंदर पत्र का १), चंदा सुनकर मेरे पुस्तकालयाध्यक्ष मित्र आश्चर्य करते थे।"

शंकरदेवी विद्यालंकार, गुरुकुल-विद्या-मंदिर, सूपा—'साहित्य-संदेश पत्र हिंदी के मासिक पत्रों में अपना विशेष स्थान रखता है। हिंदी-साहित्य के प्रवाह से जनता को परिचित कराने का बहुत सुंदर प्रयास कर रहा है।"

प्रो० गुरुप्रसादजी टंडन एम्० ए०—"इसकी गंभीर, पर तुली हुई आलोचनात्मक पद्धति को देखकर बड़ा संतोष हुआ।"

डॉ० बेनीप्रसादजी, प्रयाग-विश्वविद्यालय—"संपादकों ने इसे उच्च श्रेणी का साहित्यिक पत्र बनाने का प्रयत्न किया है, और सफलता प्राप्त की है।"

श्रीपं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी—"पत्र में निस्संदेह हिंदी-पाठकों के लिये विशेषतः उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये—उपयोगी मसाला इकट्ठा रहता है।"

पं० किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री—"…… आलोचना के क्षेत्र में व्यक्तिगत राग-द्वेष से बचना अत्यंत आवश्यक, परंतु दुष्कर काम है। लेकिन इस पत्र की आलोचनाएँ इस कसौटी पर भी खरी उतर रही हैं।"

पता—साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा।

तार का पता—'पंच', आगरा।　　　　टेलीफ़ोन-नं० १७१, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

मैं एक ज़मींदार का बेटा हूँ। कुसंगतों के कारण मुझे जिरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक-दो साल मैंने लोक-लाज के कारण अपना भेद छिपाए रक्खा, परंतु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा। संसार में चारो ओर से अँधेरा मालूम होने लगा। तब मेरी आँखें खुलीं। रुपया-पैसा की मेरे यहाँ कमी न थी। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डॉक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवाएँ मँगाईं और खाईं, मगर रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। आख़िर मामला यहाँ तक आ पहुँचा कि मैं आत्महत्या की सोचने लगा, और इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर समझने लगा। हमारे गाँव के पास ही एक मील की दूरी पर ईंटों का एक खेड़ा है। कारण-वश उसी खेड़े पर काठियावाड़ के एक प्रसिद्ध त्यागी योगिराज आ बैठे, और एक झाड़ी में आसन लगाकर ईश्वर-चिंतन में मग्न हो गए। गाँव के बालक और युवकों ने जब उन्हें देखा, तो उनकी प्रशंसा गाँव में फैला दी कि खेड़े पर एक महात्मा आए हैं, जो बड़े तेजस्वी प्रतीत होते हैं। यह सुनकर लोगों के समूह-के-समूह उनकी सेवा में जाने लगे। जब मैंने यह सुना, तो मैं निराशा और आशा को साथ लिए उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। उस तेजस्वी के आत्म-दर्शन करते ही मेरा चित्त गद्गद और प्रसन्न हो गया। और, मैं नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। महात्माजी मेरी दशा देखकर फ़ौरन् ताड़ गए, और मेरी ओर आकर्षित होकर बोले कि बेटा, तुम बड़े निराश और दुखी मालूम होते हो, क्यों, तबियत कैसी है, और तुम्हारे दुखी होने का क्या कारण है? बस, फिर क्या था, जैसे मेरे दिल के घाओं को किसी ने छेड़ दिया हो, मैं फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजी यह दशा देखकर बेचैन हो उठे, और मेरे पास आकर मुझे धीरज देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने अपनी बीमारी का सारा हाल उनके सम्मुख रख दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई, इसके पश्चात् उन्होंने एक प्रयोग मुझे बतलाया, जिसको बनाकर मैंने सेवन किया, अब बिलकुल आरोग्य हूँ। प्रयोग—असली त्रिफला चूर्ण ५ तोला, असली सूर्यतापी शिलाजीत २॥ तोला, असली वंग भस्म ६ माशा, असली सूर्य छाप केशर ६ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नैपाली कस्तूरी ६ रत्ती, इन सब ओषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतलचीनी का तेल २० बूँद, बहरोज़ा का तेल २० बूँद, इत्र संदल २० बूँद मिलावे। इसके बाद ताज़ा ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घंटे तक घोटकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें, और साया में सुखा लें। बस, ओषधि तैयार है। सेवन-विधि—एक गोली प्रातः और एक गोली सायंकाल पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शकर मिलाकर खाएँ। इस ओषधि के सेवन से ४० रोज़ में आरोग्य हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से मेरे तीन बच्चे हैं, जो बिलकुल ही आरोग्य हैं। उस वक़्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के-दाम पर दे रहा हूँ, जिससे सैकड़ों व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग ऊपर भली प्रकार समझा दिया गया है। इसको बनाकर लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ हों या कारोबार के कारण आपको फ़ुरसत कम मिलती हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी-बनाई ओषधि मँगा लें, और उसके आश्चर्य-जनक गुण देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों क़िस्म के प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, पाख़ाना के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सुज़ाक, सुस्ती, कमज़ोरी और नामर्दी, जवानी में बुढ़ापे की हालत, असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो जाना वग़ैरह दूर करके अत्यंत ही ताक़त देती है, और नस-नस में जीवन-संचार करती है। क़ीमत पूरी ख़ूराक ८० गोली के दो पैकट का ४), डाक-ख़र्च माफ़, मनीऑर्डर-फ़ीस =)

निवेदक—बाबू श्यामलालजी रईस,

प्रेमवटी-ऑफ़िस, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, ज़िला इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पोस्टल सेंसॉरशिप' भी अत्यंत दक्षता से काम में लाई जाती है। रेडियम की मदद से सब पत्र पढ़े जाते हैं। मुख्य-मुख्य पत्रों के छाया-चित्र भी खींचे जाते हैं। यह सब अखंड रूप से चलने के लिये इटालियन सरकार पानी की तरह पैसा ख़र्च करती है। अब तक का ख़र्च ½ लाख पौंड है। इसका जमा-ख़र्च केवल मुसोलिनी को ही मालूम है। अभी तक की सारी विजय इन्हीं दूतों के बल पर होने के कारण अन्य विभागों की अपेक्षा इस विभाग की ओर मुसोलिनी अधिक ध्यान देता है। इस विभाग के लोगों के विद्याध्ययन का प्रबंध करने के लिये रोम और नेपल्स, इन स्थानों पर विद्यालय स्थापित किए गए हैं। इन विद्यालयों में जासूसी की शिक्षा सप्रयोग दी जाती है। इन दोनो संस्थाओं में सामाजिक तथा राजकीय जासूस तैयार करने का काम अखंड रूप से चला करता है। सामाजिक जासूस-विभाग में स्त्रियों की संख्या अधिक है। इसी विद्यालय से तैयार हुए स्त्री-जासूस द्वारा योरपीय देश के षड्यंत्रकारी स्त्री-पुरुष मुसोलिनी ने बड़ी ख़ूबी से पकड़े, तथा विरोधी पक्ष का नाश कर डाला, और अब यह शूर पुरुष इसी ओव्हरा की मदद से संसार का सामना करने के लिये प्रस्तुत है। दूसरा रशियन क्रूरता का मूर्तिमान् आदर्श जोसेफ़ स्टॅलिन भी लँगोट कसकर तैयार है। इन दोनो मल्लों की मुठभेड़ से संसार को भस्म करनेवाला बड़वानल निकलनेवाला है।

गढ़-कुंडार

(द्वितीयावृत्ति)

इस सर्वोत्तम उपन्यास के लेखक हैं हिंदी के सर वाल्टर स्कॉट श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०—झाँसी के गण्य-मान्य ऐडवोकेट। यह सम्राट् हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, पढ़िहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्य-कालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ, आल्हा-ऊदल की जन्म-भूमि बुंदेलखंड का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है। इस प्रकार का रोमांटिक—प्रेम-गाथा-पूर्ण—वीरत्वमय, दिल दहला देनेवाला, मनोरंजक, मौलिक उपन्यास अब तक हिंदी-साहित्य में एक भी नहीं है। इसमें बुंदेलखंड के वीरों का इतिहास, छत्रसाल की इतिहास-प्रसिद्ध जन्मभूमि की मनोमोहक सीनरी तथा सरल चंदेल और खंगार-युवतियों की प्रेम-लीला, देश-प्रेम, वीरता—सब आदि से अंत तक नया-ही-नया है। लेखक को इसी पुस्तक पर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से २००) का पुरस्कार भी मिल चुका है। चार-पाँच रंगीन और सादे चित्र भी। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

मिलने का पता— गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजत-रजनि

[श्रीयुत ब्योहार राजेंद्रसिंह]

(पहलगाँव की पूर्णिमा *)

राजति रजत-रजनि सुखकारी।
प्रकृति-सुंदरी पुण्य प्रभा निज दस दिसि मनहुँ बगारी।
प्रगट पूर्व ससि-आनन सुंदर नीलांबरहिं बिदारी।
जनु निहारि एकांत निसीथहि अवगुंठन परिहारी।
रजत-हिम-सिखर ऊपर राजत हिमकर-कर चितहारी।
रजत-बदन झलकत अभ्यंतर ऊपर रजतहि सारी।
पंथ अनंत, एकांत प्रांत मैं खग-मृग सुप्त बिचारी।
शुक्लांबर परिधान पहिरि निसि सुंदरि चलि अभिसारी।
कल कल रव करि करति कुलाहल लंबोदरि सरि न्यारी।
राजति रजत-रजनि सुखकारी।

---

* लंबोदरी-नदी (लिदर) की घाटी में बसे हुए कश्मीर के प्रसिद्ध स्थान पहलगाम के निवास के अवसर पर रचित।—लेखक

TELEGRAMS:—"BHOLANATH COY" TELEPHONES:—2 & 2A

IRON & BRASS
LOCKS
MADE BY OUR WORKMEN AT
ALIGARH
TO
SUIT ALL PURPOSES

BHOLA NATH & CO.
HARDWARE MERCHANTS & STATIONERS
30, Aminabad Park, LUCKNOW.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

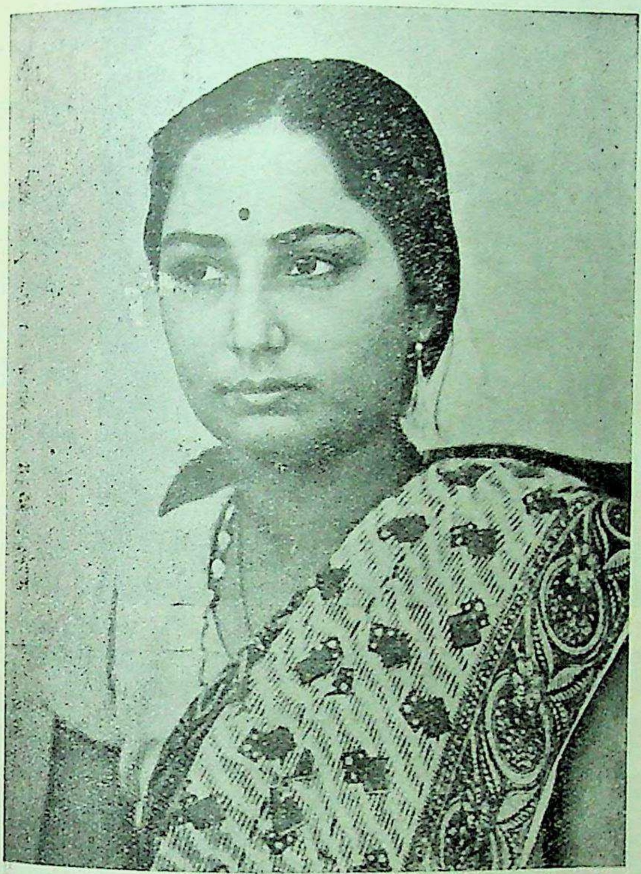

मिस बी० संजीवी बालिगा बी० ए०

[आप इंद्रप्रस्थ-गर्ल्स-कॉलेज, दिल्ली की छात्रा हैं। बी० ए० की परीक्षा में छात्राओं में सर्व-प्रथम उत्तीर्ण होने पर आपको हम सहर्ष बधाई देते हैं! दिल्ली की युनिवर्सिटी के सभी छात्र-छात्राओं में आपका द्वितीय नंबर रहा।]

मिस मीरा बेन

[आप पेशावर-गर्ल्स-स्कूल की एक छात्रा को चर्खा कातने की शिक्षा दे रही हैं।]

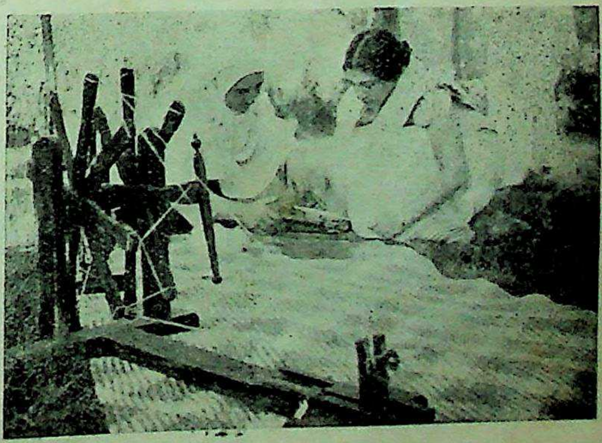

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत छात्राएँ

[इन्होंने हर एक्सलेंसी लेडी लिनलिथगो द्वारा भिन्न-भिन्न विषयों पर पुरस्कार प्राप्त किया है ।]

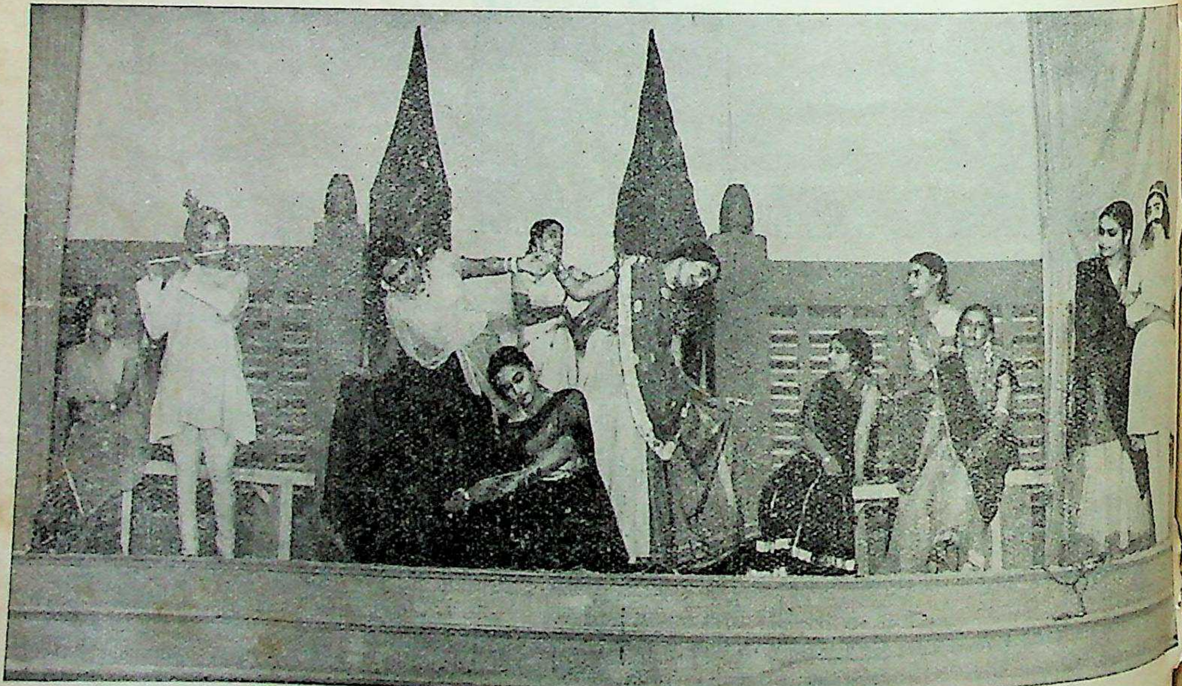

'प्रिंस हू वाज़ ए पाइपर'-नाटक का एक दृश्य

[इसका अभिनय अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन के अवसर पर, दिल्ली के लेडी इरविन-कॉलेज की छात्राओं द्वारा, हुआ था ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

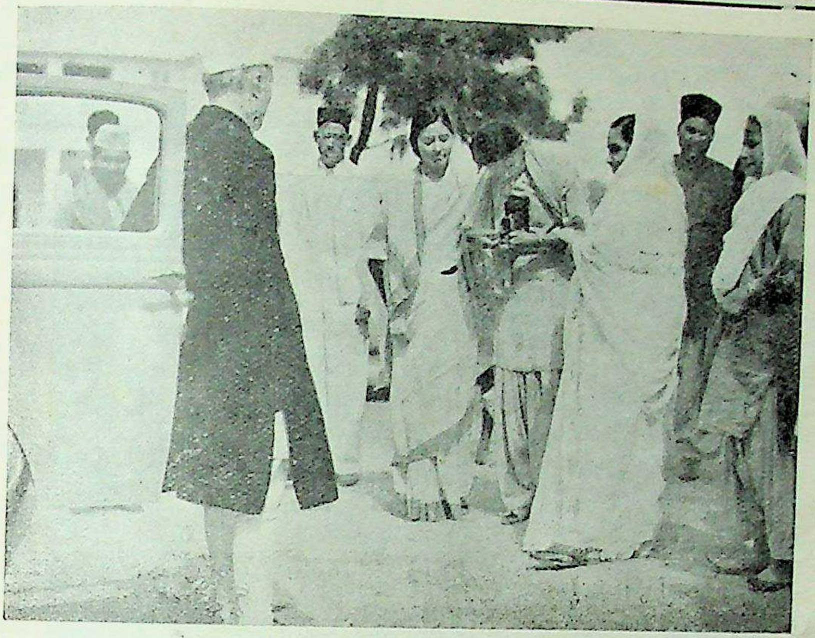

पं० जवाहरलाल नेहरू

[महात्माजी से मिलकर लौटने पर बिड़ला-हाउस के बाहर कॉलेज की छात्राओं को अपना फ़ोटो खींच लेने की स्वीकृति दे रहे हैं ।]

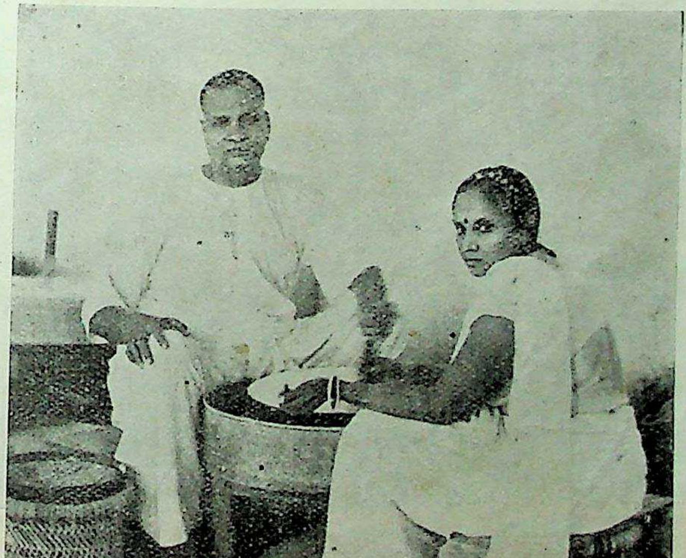

सेठ जमनालालजी बजाज

[आप महात्मा गांधी की ७०वीं वर्ष-गाँठ के महोत्सव पर अपनी पत्नी के साथ आटा पीस रहे हैं ।]

(प्रतिच्छविकार—श्रीयुत ललितगोपाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

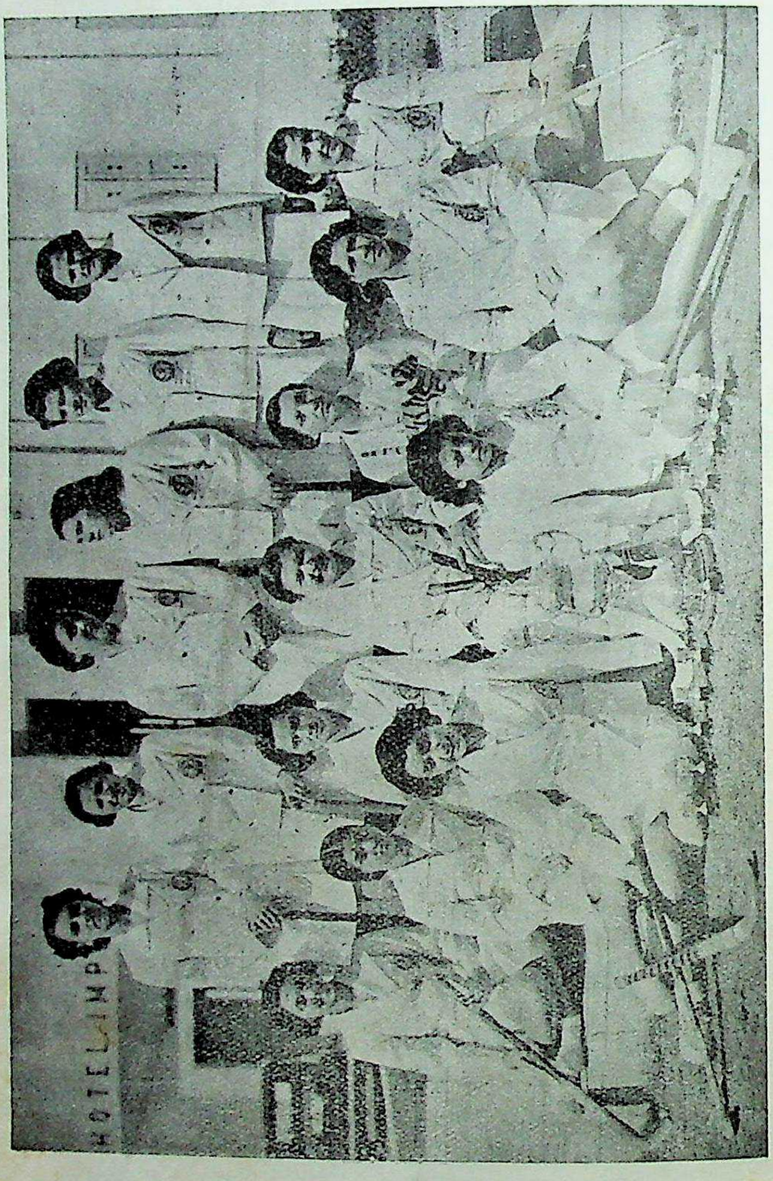

कलकत्ते की हॉकी-टीम की खिलाड़िनें

[इन्होंने अखिल भारतवर्षीय हॉकी-टूर्नामेंट में मदरास की टीम को तीन गोलों से हराया ।]

(प्रतिच्छविकार—श्रीयुत ललितगोपाल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

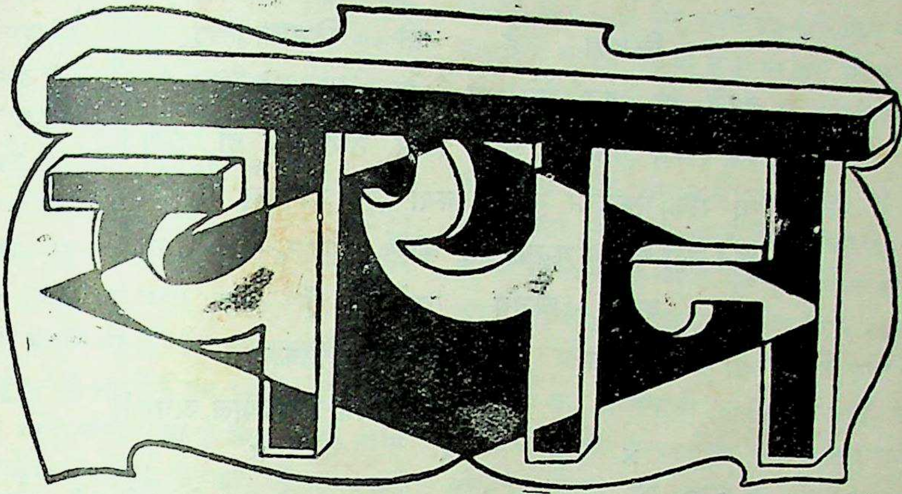

१. आवागमन का चक्र

मत पूछो मुझसे, मुझे कहाँ है जाना ;
क्या जानूँ, मेरी क़िस्मत ने क्या ठाना ?
किस ओर, किधर जाता हूँ, इसका भी भेद न जाना ;
मैं चला चलूँ इस पथ पर, इतना ही मैंने ठाना।
क्या अजब बटोही हूँ मैं,
जिसका है नहीं ठिकाना।
दुनिया पूछे यदि मुझसे, किस ओर बहा जाता हूँ ;
झाड़ी, दरिया, कूचों में, किस ओर, कहाँ जाता हूँ ?
मैं उनसे पूछ रहा हूँ, भावुक का कहाँ ठिकाना ;
उसके आने-जाने का क्या भेद किसी ने जाना ?
क्या अजब बटोही हूँ मैं,
जिसका है नहीं ठिकाना।
बन गया कभी कुछ कुछ से, मछली, मच्छर, कृमि नाना ;
क्या था, क्या होऊँगा मैं, यह भी न अभी तक जाना ?
बन लूँगा जो कुछ मुझसे मेरा कर्तार कहेगा ;
करने वह कार्य लगूँगा, जो होगा उसने ठाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या अजब बटोही हूँ मैं,
जिसका है नहीं ठिकाना।
बनने दो, बन लेने दो, जो कुछ उसने हो ठाना;
मत रोको, जाने दो तुम, जिस ठौर मुझे हो जाना।
यों रोक, पकड़कर मुझको, क्या तुम भी कुछ पाओगे;
अब नहीं चाहिए मुझको यह कीर्ति, सौख्य, धन नाना।
क्या अजब बटोही हूँ मैं,
जिसका है नहीं ठिकाना।

लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल अवस्थी

× × ×

२. न तो अरमान ही निकले, न दम निकले

मई, सन् ३६ की सुधा के ३५८ वें पृष्ठ पर श्रीमती मंगलादेवी बालूपुरी का एक लेख 'न तो अरमान ही निकले, न दम निकले'-शीर्षक छपा है। बहन मंगलादेवी जिस ख़ानदान की लड़की और जिस ख़ानदान में ब्याही हैं, इसे जानकर बड़ी श्रद्धा से उनकी लिखी हुई एक-एक लाइन पढ़कर हम अपने को गौरवान्वित समझती हैं। भी मैंने उपर्युक्त लेख आदि से अंत तक कई बार पढ़ा। पहले तो मेरी समझ में यह आया कि यह कोई दिलचस्प गल्प है, लेकिन फिर राधा और रमेश के प्रति श्रीमंगलादेवीजी तथा उनके पति श्रीसुरेंद्रदेवजी बालूपुरी की अंतरात्मा की छटपटाहट और राधारानी के लिये आहों-भरी सहानुभूति के साथ बहन मंगलादेवी के ये शब्द पढ़े—

"समाज के क्रूर शासन-विधान और उसके भय से उत्पन्न कायरता ने ही उसके दिल में लहलहाते अरमानों के बाग़ में यह सारी ज़िंदगी के लिये भयानक दावानल लगाई है।"

"उसकी व्यथा का, उसके दर्द का आंशिक अनुभव तुम (बालूपुरीजी) कर सकोगे? त्रिकाल में भी एक पर टिककर न रहनेवाली पुरुष-प्रकृति को इन बातों पर विश्वास हो सकेगा? पुरुष के लिये रमणी और प्रेम एक ख़ूबसूरत सौदा है और वह उसे नित्य नए रूप में क्रय-विक्रय करनेवाला नया व्यापारी।"

"राधा की मनोव्यथा आज मेरा ही मन जलाए डालती है। उसकी तेज़ आँच से मेरा ही मन जला जा रहा है। अपनी व्यथा मुझे बताकर उसने अपना तो बोझ हलका कर लिया, और जब दिल भर उठता है, तब लिखकर मुझे रुला दिया करती है। पर हाय! उसके दर्द से मैं ही दर्दवाली बन गई हूँ, जैसे यह दर्द मेरा हो, और यह तो सत्य ही है कि यह दर्द कभी दूर नहीं हो सकता।"

इन सहानुभूति-भरे शब्दों के साथ राधारानी और रमेश बाबू की कहानी आरंभ करके अंत में श्रीबालूपुरीजी का यह कहना कि हमारी सामाजिक भीरुता के पीछे जाने कितने मासूम दिल यों ही तड़प-तड़पकर दिन गुज़ार देते हैं, इसे कौन जानता है। केवल इन्हीं लाइनों ने हमें कई बार लेख को पढ़ने और उस पर अपनी सम्मति प्रकट करने के लिये विवश किया। घटना इस प्रकार शुरू होती है—राधादेवी जब शैशव का आँगन लाँघकर जवानी की सीढ़ी पर चढ़ रही थी, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय वह कैसी मोहक लगती थी। उसका उस समय का भरा-पुरा, हँसता हुआ, चाँद-सा मुखड़ा अब जब याद आता है, तो मुँह से एक आह निकल जाती है। पहली ही बार जब वह ससुराल से लौटकर आई थी, तो कितनी दुबली थी, मानो महीनों को बीमार हो। उसके पति (चंद्रशेखर बाबू) उसका बहुत ख़याल रखते हैं। उनकी ओर से प्रेम और आदर की कमी नहीं। फिर भी वह अपने ही में घुलती जा रही है। ससुराल में सबकी प्रिय होते हुए भी वह जैसे उन प्यारों की इच्छुक नहीं। राधा अपने माता-पिता के साथ, अपने मामा के लड़के के मूँड़न में मामा के यहाँ, फ़ैज़ाबाद गई थी। कितनी हँसी-ख़ुशी से गई थी। बेचारी क्या जानती थी कि लौटेगी, तो कलेजे में एक जलन, एक पीड़ा लिए, और जो पीड़ा मृत्यु-पर्यंत उसके लिये पीड़ा ही रहेगी। राधा के मामा के एक बहुत ही गहरे मित्र अपने पुत्र रमेश बाबू के साथ नित्य आया करते थे। यही रमेश बाबू राधा के कलेजे में एक जलन और पीड़ा के कारण हुए। राधा का एकांत में रमेश बाबू से प्रेमालाप करना, साथ में घूमना और बग़ल में बैठकर सिनेमा देखना, रात्रि में घंटों जल-विहार तथा रमेश का चुंबन करते हुए मुहब्बत-भरा राधा का गाना (तुम्हें चाहा है, चाहूँगी, तुम कभी होना नहीं न्यारे) गाना, राधा के घर लौटने पर बिदा होते समय रमेश का काग़ज़ के टुकड़े पर यह लिखकर राधा को भेंट करना कि "छूट जावें ग़म के हाथों से, जो निकले दम कहीं; ख़ाक ऐसी ज़िंदगी पर, हम कहीं और तुम कहीं!" यही वह दावानल है, जिसने एक दांपत्य जीवन का सत्यानास किया, और अपने प्यारों की प्रिय होते हुए भी वह इच्छुक नहीं, तथा इससे भी आश्चर्य की बात तो यह कि बहन मंगलादेवी तो आज आठ साल बाद केवल पत्रों में रमेश तथा राधा की प्रेम-लीला पढ़कर उसमें अपने को ही समझ रही हैं। क्यों न हो, जब आपका आठ साल बाद केवल पत्र-मात्र पढ़ने से यह हाल, तो आपकी सहेली राधा तो कुछ भी नहीं।

राधारानी और रमेश बाबू की यह प्रेम-लीला नई नहीं। हमारा साहित्य ही ऐसा है, जिसे पढ़कर आज देश और समाज में राधा-रमेश की कमी नहीं। अंतर केवल इतना है कि साधारण लोग समाज को डरते हुए अपनी भूल स्वीकार करते और अपनी ग़लती दुरुस्त करने को सदैव तैयार रहते हैं, तथा जो अधिक चालाक होते हैं, वे उल्टे चोर कोतवाल को डाँटनेवाली कहावत की तरह करते हैं। इंद्रियों की वासना-तृप्ति और उलटा समाज को क्रूर बताते हुए समाज की आँखों में धूल झोंकने का प्रयत्न करते हैं। इधर बहुत दिनों से मुझे भी यह रोग हो गया है कि वर्षा-ऋतु में बढ़े हुए दादुरों की तरह कुमारी कवयित्रियों तथा लेखिकाओं के लेखों को ढूँढ़-ढूँढ़कर पढ़ा करती हूँ। उनका सारा काव्य विरह-वेदना से बिंधा मिलता और आजकल यही प्रधान विषय हो रहा है। अभी हाल में दिल्ली के श्रीतरंगीजी ने इस पर एक लेख (कहौ इनै कैसे कहैं कुमारी) द्वारा काफ़ी प्रकाश डाला है। महात्मा गांधी ने तो केवल कुमारियों को उनकी पोशाक और चाल-ढाल के लिये ज़रा-सा टोक दिया था, जिस पर उन्हें प्राण बचाना मुश्किल पड़ गया था, नाना प्रकार के अपशब्द सुनने पड़े थे। फिर भला मेरी-जैसी एक मामूली-सी देहातिन क्या हिम्मत कर सकती है, जब कि बहन मंगलादेवी ने, जो उस कुटुंब की संतान हैं, जिसके व्यक्ति समाजसेवा में अपने को फ़ना कर रहे हैं, और उनका जीवन-साथी समाज के एक ख़ास हिस्से का प्रतिनिधि माना जाता है, राधा और रमेश के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए सारा दोष सामाजिक व्यवस्था पर ही लादा है। यदि यही विचार एक समाजवादी की संतान (लड़की) और एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट कहे जानेवाले की पत्नी के हो सकते हैं, तो समाज का क्या हाल होगा, इस कल्पना-मात्र से ही रोमांच हो जाता है। ऐसी ही मनोवृत्ति द्वारा बनाई हुई सामाजिक व्यवस्था के अंदर एक ऐसी गड़बड़ी पैदा होगी, जिसे हर समझदार व्यक्ति वाम-मार्गी समझकर उससे घृणा करेगा, उसमें जीवन का उद्देश्य केवल व्यभिचार ही रह जायगा। भाई और बहन-जैसा पवित्र नाता समाज से क़तई उठ जायगा।

मैं बड़े ही अदब के साथ अपनी बहन श्रीमंगला-देवीजी से यह पूछती हूँ कि राधा के मामा के एक घनिष्ठ मित्र का लड़का राधा का बजाय भाई होने के प्रेमी हो जाय, क्या यह समाज के साथ धोखा और निंदनीय नहीं? राधा के मामा और मामी ने रमेश को राधा के साथ घूमने, एकांत में मिलने, सिनेमा देखने, घर में एक ही कमरे में सोने, रात्रि के समय घंटों नाव में घूमने के लिये क्या समझकर आज़ादी दे रक्खी थी? वे बेचारे तो यही समझते थे कि जैसा हमारा लड़का, वैसा रमेश, और फिर रमेश ने जो इन सब अवसरों से नाजायज़ फ़ायदा उठाकर अपनी प्रणय-लीला दिखाई, क्या वह समाज के साथ विश्वास-घात नहीं? मुग़ल-कालीन इतिहास में रानी कर्णवती ने जिस राजपूत से एक बार भाई कहकर सहायता ली, यदि वह भी रमेश-जैसा करता, तो समाज क्या इसी आदर से आज उसे देखता? १३ वर्ष की राधा विद्याध्ययन कर रही थी, उसके मा-बाप को उसके सुख-दुख का पूरा ख़याल था, जैसा कि उन्होंने चंद्रशेखर बाबू-जैसा सुयोग्य वर भी ढूँढ़ दिया। और, वह गई थी अपने मामा के यहाँ उत्सव में शामिल होने, तब उसे क्या हक़ था कि समय से पहले ही वह किसी को अपना दिल निछावर कर दे? क्या यह समाज के लिये क्षम्य है? कोई भी मा-बाप राधा-जैसी हरकत करने के बाद भी अपनी लड़की को कहीं रिश्तेदारी में भेजने का साहस कर सकेंगे? क्या कोई भी मित्र अपने मित्र के अन्य कुटुंबियों से भी मित्रवत् व्यवहार करेगा, और उसमें ठगा न जायगा? और, अंत में यह भी प्रश्न उठता है कि रमेश बाबू, जिन्हें राधा के मामा ने अपना-जैसा ही लड़का (राधा का भाई) समझकर बग़ैर किसी भेद-भाव के दोनो को आपस में आज़ादी से मिलने दिया, क्या इसीलिये कि उनकी भानजी से प्रेमाभिनय करे? दोनो का प्रेम बहन-भाई-जैसा ही क्यों न हुआ?

बहन मंगलादेवी जिस समाज को क्रूर कहती हैं, उसके बजाय एक अच्छे समाज का क्या यही नियम है? अगर यही नियम है, तो कोई भी युवक किसी कुमारी को क्या समझे? उसे कब तक कुमारी समझे? विवाह का आपके समाज में क्या महत्त्व रह जाता है? आर्य महर्षियों ने समाज में ग़दर और व्यभिचार को सीमित और रोककर अच्छी संतानोत्पत्ति के हेतु जिस विवाह-जैसे एक महान् रिवाज को चलाया था, आपका यह रमेश-राधा-कांड उसे नष्ट नहीं कर रहा है।

हम आशा करती हैं कि बहन मंगलादेवी मौजूदा क्रूर सामाजिक शासन-विधान में संशोधन करने के पहले अपनी देहाती बहनों से भी राय लेने की कृपा करेंगी। उन्हें यह भी मालूम होना चाहिए कि समाज में सब राधा-जैसी कुमारी ही नहीं हैं। ऐसी भी कुमारियाँ हैं, जो अपनी हर बात की सीमा रखती हैं। विवाह से पहले रमेश-जैसे सामाजिक क्रांतिकारियों को क्रांति का ककहरा पढ़ा सकती हैं। समय आने से पूर्व और शारदा-बिल के होते हुए भी १३ ही वर्ष में माता बनना पाप समझती हैं।

लक्ष्मीदेवी शुक्ल

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. पारिभाषिक शब्दकोश-निर्माण

टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, बनारस में रविवार ता० १२-२-३९ को एक बजे दिन में प्रयाग के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की पारिभाषिक शब्दकोश-निर्माण-समिति की पहली बैठक हुई थी, और उसमें निम्न-लिखित प्रस्तावों पर विचार किया गया—

१—पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद, जहाँ तक संभव हो, प्रचलित तद्भव या देशी शब्दों में किया जाय।

२—शब्द की ध्वनि-समता का ध्यान न रखकर गुण, क्रिया, अवस्था और तत्त्वों के आधार पर अनुवाद हो।

३—विज्ञान के भिन्न-भिन्न अंगों का एक ही कोश हो। उपस्थिति कम होने के कारण यह निश्चय हुआ कि अन्य सदस्यों की लिखित सम्मति आने की प्रतीक्षा की जाय। आगरा-कॉलेज के विज्ञानाचार्य डॉक्टर निहालकरण सेठी ने जो उत्तर दिया है, उसका आवश्यक अंश विचार के लिये नीचे दिया जाता है—

"नियम २ से तो मैं सर्वथा सहमत हूँ। नियम ३ भी अच्छा है, किंतु भिन्न-भिन्न विज्ञान-संबंधी कोश पृथक् भी छपें, तो कोई हानि नहीं। शायद लेखकों को कुछ सुविधा ही हो, किंतु यह कोई ऐसी बात नहीं है कि जिसको नियम के रूप में रखने की आवश्यकता हो। यह तो पीछे भी निश्चित हो सकता है। पहले तो शब्दों के अनुवाद की आवश्यकता है।

"सबसे महत्त्व का नियम तो आपका प्रस्तावित नियम १ ही है। सामान्य दृष्टि से तो मैं इस नियम का पक्षपाती हूँ। किंतु एक बात इसके विपरीत पड़ती है, और हमें उसका ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है—वह है भारतवर्ष-भर में पारिभाषिक शब्दों की एकता। यदि सारे भारत की भाषा एक ही होती, तब तो कोई दिक़्क़त की बात थी ही नहीं। किंतु बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण-भारत के लोग युक्त प्रांत के प्रचलित देशी शब्दों को मंज़ूर करेंगे, इसमें मुझे बहुत शक है। युक्त प्रांत में उर्दू-वालों के लिये शायद नियम १ से कुछ सुविधा हो, क्योंकि प्रचलित शब्दों में उर्दू के भी कुछ शब्द अवश्य आ जायँगे। किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि भिन्न-भिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न प्रकार की शब्दावली प्रचलित हो जाय; क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रांतों में प्रचलित शब्द अवश्य ही भिन्न-भिन्न हैं।

"मेरा ख़याल है कि प्रचलित शब्द, जो वैज्ञानिक परिभाषा के लिये काम में आ सकें, बहुत ही थोड़े निकलेंगे। यह मैं नागरी-प्रचारिणी के कोश-निर्माण के अनुभव से कह रहा हूँ। अतः इन शब्दों को ग्रहण करने या न करने से कोई विशेष लाभ होने की संभावना नहीं है। मैं समझता हूँ कि ऐसे प्रचलित शब्द भी काम में आ सकते हैं, किंतु इनके लिये भी समस्त भारत-व्यापी शब्दों का निर्माण ज़रूरी है।

"अब समय आ गया है कि इस प्रश्न पर केवल एक ही भाषा की दृष्टि से विचार न किया जायगा। वह काम तो बहुत कुछ नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी ने किया है। अब तो आवश्यकता इस बात की है कि बंगाली, मराठी, गुजराती, हिंदी, तामिल, तैलगू, उर्दू आदि सभी भाषाओं के विद्वान्, जिन्हें भारतीय ऐक्य का भी ध्यान हो, एकत्र होकर इस विषय पर निर्णय करें। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को यह प्रयत्न करना चाहिए।"

इसके बाद माघ-फाल्गुन संवत् १९९५ की सम्मेलन-पत्रिका (भाग २६, संख्या ६, ७) में प्रकाशित श्रीगुलाबराय एम्० ए० के 'हिंदी में पारिभाषिक शब्द'-शीर्ष-युक्त लेख का आवश्यक अंश भी नीचे दिया जाता है, जिससे विद्वानों को विचार प्रकट करने में सरलता हो—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—चाहिए तो यह कि भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा में एक-से ही पारिभाषिक शब्द हों, और वे उर्दू-लिपि में लिखे जायँ, चाहे नागरी-लिपि में।

२—इस आदर्श से कुछ नीचा, परंतु अधिक व्यावहारिक आदर्श यह है कि कम-से-कम संस्कृत से संबंध रखनेवाली भाषाओं के पारिभाषिक शब्द एक हों।

३—पारिभाषिक शब्दों के संबंध में प्रांतीय सहकारिता के लिये अपील हिंदी, उर्दू, बंगाली, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में लिखाकर उन भाषाओं के प्रमुख पत्रों में निकाली जाय। उसमें इस बात का ज़ोर दिया जाय कि वैज्ञानिक और दार्शनिक विषयों के लेखक अपनी-अपनी किताबों से पारिभाषिक शब्दों को छाँटकर संयोजक के पास भेजें। इसकी जो कमेटी रहे, उसमें एक बंगाली, एक गुजराती, एक महाराष्ट्र, एक सिंधी सज्जन रहें। एक या दो सज्जन दक्षिणी भाषाओं के भी प्रतिनिधि रहें। यदि हो सके, तो उन भाषाओं की साहित्य-परिषदों से प्रतिनिधि माँगे जायँ।

४—विज्ञान-परिषद् के विज्ञान की फ़ाइलों से भी, दो-एक जानकार आदमी लगाकर, शब्द छँटवा लेने चाहिए।

५—इसके पश्चात् अँगरेज़ी-भाषा में लिखे हुए विज्ञान और दर्शन के कोशों को मँगाकर उनकी शब्दावली से यह देख लेना आवश्यक होगा कि हिंदी की शब्दावली में कोई कमी तो नहीं रह गई?

६—प्रत्येक अँगरेज़ी-शब्द के संभावित हिंदी पारिभाषिक शब्द लिखे जायँ, और उन पर विचार किया जाय। जिन शब्दों के संबंध में संदेह हो, उनकी सूची निकालकर विद्वानों का मत माँगा जाय। शब्द-निर्माण के सिद्धांत पहले से निश्चय कर लिए जायँ। उनमें निम्नोल्लिखित बातों का ध्यान रक्खा जाय—

७—(क) जहाँ तक हो, शब्द नए न बनाए जायँ।

(ख) प्राचीन शब्दों को काम में लाया जाय।

(ग) अँगरेज़ी के शब्द लिए जायँ, तो उनको देशी रूप दिया जाय।

(घ) शब्दों को वाक्यों में भी व्यवहार करके देख लिया जाय।

(ङ) अगरेज़ी-शब्दों का शब्दार्थ देखा जाय। उस शब्दार्थ के अनुकूल शब्द गढ़े जायँ, किंतु जहाँ पर देखा जाय कि जिस विचार पर शब्द बना है, वह अब ठीक नहीं है, तो ठीक विचार का शब्द रक्खा जाय।

८—कार्य को सरल बनाने के लिये भिन्न-भिन्न विज्ञानों की उपसमितियाँ बना ली जायँ। भौतिक विज्ञान और रसायन-शास्त्र की एक उपसमिति हो। प्राणिशास्त्र (ज़ूओलौजी), वनस्पति-शास्त्र (बौटनी) तथा चिकित्सा-शास्त्र की एक पृथक् उपसमिति हो। एक गणित और ज्योतिष की उपसमिति हो। क़ानून यद्यपि विज्ञान नहीं, तथापि एक क़ानून के कोश की भी आवश्यकता है।

हमारी समिति की स्थानीय बैठकों में उपर्युक्त सम्मतियों में से ३, ४, ५, ६ तथा ८ स्वीकार कर ली गई हैं। शेष विद्वानों के निर्णय के लिये छोड़ दी गई हैं, और उन पर विस्तार-पूर्वक विचार होने पर ही उनका निर्णय संभव है।

इनके अतिरिक्त जो प्रस्ताव हमारी स्थानीय समिति ने किए हैं, वे भी विचारणीय हैं। प्रस्ताव इस प्रकार हैं—

१—प्रत्येक शब्द के साथ उसका प्रयोग, उसका इतिहास, उसकी व्याख्या और उसके विभिन्न स्वरूप देने चाहिए।

२—इस पारिभाषिक कोष में विज्ञान की निम्न-लिखित शाखाओं के शब्दों का समावेश हो।

(१) रस-शास्त्र (व्यावसायिक, ओषधि),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) भौतिक विज्ञान, (३) वनस्पति-विज्ञान, (४) जंतु-विज्ञान (५) शरीर-विज्ञान, (६) क्रिया-विज्ञान, (७) प्रसुति-तंत्र, (८) भूगर्भ-शास्त्र तथा भूगोल शास्त्र, (९) ज्योतिष, (१०) यंत्र-शास्त्र, (११) कृषि-शास्त्र, (१२) मनोविज्ञान, (१३) खनिज-विज्ञान तथा (१४) स्वास्थ्य-विज्ञान।

३—इनके अतिरिक्त यदि कोई और शाखा रह गई हो, तो वह भी जोड़ दी जाय।

समिति ने कार्य प्रारंभ कर दिया है, किंतु इस बात का अभी तक खेद है कि विद्वानों ने अपनी सम्मति और अपना सहयोग देने की उदारता नहीं दिखलाई है। कार्य के गुरुत्व को देखकर यह अनुमान करना कठिन नहीं है कि इस भगीरथ-प्रयत्न में परिश्रम की कितनी आवश्यकता है।

हम समिति के सदस्यों तथा अन्य विद्वानों से अनुरोध करते हैं कि वे शीघ्र अपनी सम्मति देकर हमें सहायता दें, तथा ऐसे हिंदी-प्रेमी उदार महानुभावों का भी पता दें, जो हमें आर्थिक सहायता दे सकें। अगस्त के अंत तक यह कार्य समाप्त करने का हमारा निश्चय है। बाद में रूढ़ि के अनुसार बहुत-से विद्वान् अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर हमारे संपूर्ण प्रयास को निरर्थक, अव्यवस्थित और अशुद्ध सिद्ध करने का अथक परिश्रम करेंगे। उनसे विशेष रूप से प्रार्थना है कि अपने सार्थक, व्यवस्थित और शुद्ध विचार हमारे पास भेजकर हमारा काम सरल करें।

सीताराम चतुर्वेदी
(एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, बी० टी०, साहित्याचार्य)
संयोजक

× × ×

४. उमंग
(बुलबुल का गान)

बिहँस पड़ी हैं सुवर्ण - किरणें
बिखेर छवि की विचित्रताएँ;
चटक-चटक फूल खिल पड़े हैं,
पुलक उठी हैं ललित लताएँ ॥ १ ॥
महा मगन मन हुआ, गगन में
चलो, चलें उड़ ख़ुशी मनाएँ;
गुलाब-से, मेघ-से किरण में
पसार डैने चलो रँगाएँ ॥ २ ॥
जो दिन चढ़ेगा, बिगाड़ देंगे
प्रचंड रवि - कर सुघर छटाएँ;
है ज़िंदगी ही का क्या ठिकाना,
अभी वधिक-शर से मर न जाएँ।
इसी से चलकर, मचल-मचलकर
चलो, चहक लें, ख़ुशी मनाएँ;
फुदक-फुदक तरु की डालियों पर
चलो, घड़ी-भर हँसें-हँसाएँ ॥ ४ ॥
बुला रहीं हैं बिहँस के कलियाँ,
प्रणय के बंधन से डर न जाएँ;
बने हैं बुलबुल, रगों में गुल के
चलो, बँधें पर, सिहर न जाएँ।

प्रो० विश्वनाथप्रसाद (एम्० ए०, बी० एल्०,
साहित्याचार्य, साहित्यरत्न)

× × ×

५. गद्य-काव्य

निशा के जीवन की अंतिम इनी-गिनी घड़ियाँ भी व्यतीत हो रही थीं। लंबे-लंबे, काले बाल दोनो कंधों पर बिखरे हुए थे, और श्यामल साड़ी का आँचल ललाट से हटकर अस्त-व्यस्त हो रहा था। आख़िर जगत् की सब मोह-माया त्यागकर अविचल, शांत भाव से किसी दूसरे लोक के निवासियों पर सुख-वृष्टि करने के लिये वह प्रस्थान कर गई।

तारे उसके वियोग में छटपटाकर रह गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश ने अपने वक्षःस्थल पर सुशोभित हीरक-हार तोड़कर बखेर दिया। स्वयं निशा-नाथ का मुख-मंडल मलिन और निस्तेज हो गया।

रजनी के उजड़े हुए रूप-लावण्य को देखकर पवन ठंडे श्वास ले रहा था, और ओस अपने अश्रु-कणों से प्रकृति का अणु-अणु भिगो रही थी।

❀ ❀ ❀

सुप्रभात के प्रकाश का प्रथम चुंबन पाकर नव-कलियाँ मुस्किरा रही थीं—यौवन के मद में चूर और मधुर कल्पनाओं का सुंदर संसार बसाने की आशा लिए हुए!

ऊषा ने सोने के थाल में एक जगमगाती ज्योति रखकर सबकी आरती उतारी। अलि-दल ने गूँज-गूँज और घूम-घूमकर एक-एक की बलाएँ लीं। विहंग-समूह हर्षोल्लास में प्रभाती-राग अलापने लगा। चारो तरफ़ जीवन और जागृति की लहर दौड़ गई।

परंतु दिन के प्रथम प्रहर में ही कोमल कलियाँ एक-एक कर सब मुरझा गईं, और समीर के झोंकों ने दयार्द्र होकर सबको धरती की गोद में सुला दिया।

❀ ❀ ❀

दिन वयस्क शरीर की तरह ढल गया। बुझते हुए दीपक की तरह एक बार तेज़ी से चमककर उस जगमगाती ज्योति की आभा न-जाने किस लोक में अदृश्य हो गई, और शेष रह गई निर्जीव शोणित-शिखा!

पश्चिम के अंतिम छोर पर चिता की अग्नि दहक उठी। और, कुछ क्षणों में ही आकाश में उड़ते हुए धूम के बादलों के सिवा कुछ न रहा। पशु, पक्षी और मनुष्य, सब चुपचाप अपने नीड़ों और विश्राम-स्थलों को प्रयाण कर गए। थोड़ी देर में चारो तरफ़ गहरी निस्तब्धता छा गई!

संध्या-देवी ने अपना प्रशस्त आँचल पसारकर सबको एक बार फिर अपने प्रशांत साम्राज्य में ले लिया।

केदार

× × ×

६. संगी

कितनी दूर और चलना है पथिक? तुमने कहा था—"मेरे साथ हो लो, पथ में तुम्हारे ऊपर प्रणय-पुष्पों की वर्षा होगी।" वे फूल कब बरसेंगे? बोलो, मैंने सोचा था, उन नवीन पुष्पों को अपने आँचल में भर लूँगी। रास्ते के उस पार मंदिर में जाकर प्रियतम के चरणों पर अर्पण करूँगी। वह प्रसन्न होकर हँस देंगे। और मैं? मैं स्नेहोन्माद से पुलकित होकर उनके चरणों पर अपना मस्तक रख दूँगी।

क्या भूल-पथ पर ले आए? मुस्कराहट क्यों है पथिक? मुख पर शांति-मिश्रित विचित्र कौतूहल-पूर्ण रेखा क्यों? अवश्य कुछ भेद है पथिक!

अच्छा! होगा, रहने दो, यदि प्रणय-पुष्प नहीं बरसते हैं, तो क्या? अश्रु-मुक्ताओं का हार पिरोकर 'स्वामी' के गले में पिन्हा दूँगी! मेरे देवता उसे अधिक बहुमूल्य समझेंगे, क्योंकि उसमें मेरी दबी वेदना का, मेरे उन्मत्त भावों का विशाल एवं करुण चित्र होगा—तब वह मुझे समझ सकेंगे। मेरे जीवन के शून्य और अंधकारमय पथों पर प्रेम-दीपक ले स्वयं आतुर हो ढूँढ़ने निकलेंगे! किंतु तब तक मेरी यात्रा समाप्त हो चुकेगी—रास्ते के उस पार, उसी प्रणय-मंदिर के द्वार पर आकुल स्वामी के दर्शन होगें—तब मैं एक बार वैसे ही हँस दूँगी, जैसे प्रणय-पुष्प अर्पित करने पर वह हँस देते। जिह्वा स्वयं कह उठेगी—"उफ़्! मेरे देवता।" वह कहेंगे—"देवता नहीं, तुम्हारा संगी हूँ प्रिये! छाया-सम तुम्हारे साथ रहता हूँ।" मैं रूठकर उत्तर दूँगी—"दूर हट जाओ, तुम मेरे साथ नहीं थे—मैं पथिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ तुम्हें खोजने निकली थी—फिर तुम साथी कैसे ?"

बहुत थक गई हूँ पथिक ! थोड़ी देर सुस्ता लेने दो। रास्ता बहुत दूर है।

तुम बार-बार हँस क्यों देते हो पथिक ? क्या पथिक-वेश में मेरे देवता मेरी परीक्षा तो नहीं ले रहे हैं ?

मेरी हार हुई ! यह कैसी छेड़-छाड़ संगी ?

(कुमारी) नीता मित्रा 'कनक'

× × ×

७. गद्य-गीत

राजप्रासाद की गगन-चुंबी अट्टालिका पर मणि-जटित दीपाधार के मुकुट-सा विद्युद्दीप चकाचौंध करनेवाले, उन्मत्त प्रकाश से समस्त राज-भवन को आलोकित कर रहा है, और उसके किरण-समूह से रंग-बिरंगे फ़र्श पर असंख्य इंद्र-धनुषों की वर्षा-सी हो रही है। किरणों के इस बृहन्मंडल के नीचे राज-सभा एकत्र होकर आमोद-प्रमोद में संलग्न है। मुशाइरा हो रहा है। एक दीपवाहक दीपाधार को अदब से लिए खड़ा है, और मीरे-मजलिस की आज्ञा पाते ही कविता पढ़नेवाले के सामने निकटस्थ हो, घुटने टेककर बैठ जाता है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो कोई रश्मिवती नर्तकी चारो ओर घूम-घूमकर थिरक रही हो। मुशाइरे के लिये इस दीप का आश्रय इतना अनन्य और आवश्यक होते हुए भी सभ्यगण उसकी ओर से नितांत उदासीन हो केवल काव्य-माधुरी के पान में लगे हैं। अनेक नेत्रों द्वारा उपेक्षित यह दीप दौड़-दौड़ सबकी ख़िदमत कर रहा है।

सुदूर निर्जन में एक टूटी-फूटी क़ब्र पर एक बेढंगे पत्थर के सहारे रक्खा हुआ एक नन्हा-सा चिराग़ टिमटिमा रहा है। उसकी क्षीण ज्योति, मंद प्रकाश-धारा और करुण-कंपित शिखा, सब मिलकर उसकी रंकता की गवाही दे रही हैं। उसके धूम्रज धुँधले प्रकाश के नीचे किसी अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित होकर, असंख्य कीट-पतंगों की सभा उसके आस-पास जुटकर, इर्द-गिर्द घूम-घूमकर नाच रही है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो इतनी अधिक परियाँ आकाश से उतरकर किसी आलोक-मंडित तपस्वी की एकांत-साधना में विघ्न-बाधा उपस्थित कर रही हैं। अगणित नेत्रों का एकमात्र केंद्र वह दीप मौन और अविचलित है। पतंगे अपने नाच-गान से उसे रिझा रहे हैं। वह मुस्किरा रहा है।

राजप्रासाद के दीप और क़ब्र के दीप में एक बड़ा भेद और है। पहला नाच-नाचकर नाच दिखाता है, दूसरा स्थिर रहकर नाच देखता है। पहला ऐश्वर्यवान् होकर भी नौकर है, दूसरा रंक होकर भी राजा है।

रामनारायण मिश्र (एम्० एस्-सी०)

× × ×

८. एक वृक्ष की आत्मकथा

क्या तुम समझते हो, मैं हँस रहा हूँ ? नहीं, यह मेरा हँसना नहीं। मैं अपना सिर हिलाकर अपना दुःख प्रकट करता हूँ। तुम प्रसन्न हो, इसलिये दूसरे भी तुम्हें प्रसन्न दिखलाई पड़ते हैं। जब मेरा सिर हवा के झोंके में इधर-उधर हिलता है, तो तुम कल्पना करते हो कि मैं हँसकर तुम्हारे सुख में सहयोग दे रहा हूँ। पर हम कितने दुखी हैं, इसका अनुमान तुम नहीं कर सकते। अनुमान तुम करो, तो कैसे करो; तुम तो अपनी मस्ती में भूले हुए हो। तुम्हें किसी के दुख-सुख की क्या परवा। तुम्हें नहीं मालूम कि मैं अपना सिर हिलाकर अपना दुःख प्रकट करता हूँ, और तुमसे बिनती करता हूँ कि तुम सबको अपना-सा समझकर दूसरों को कष्ट न दो। किंतु तुम कर ही क्या सकते हो। तुम तो शायद जानते भी नहीं कि हमें कौन कष्ट देते हैं, और किस प्रकार हमें तकलीफ़ देकर तुम्हारे आराम की सामग्रियाँ प्रस्तुत की जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। तुम जानते, तो शायद इस तरह हमें देखकर प्रसन्न न होते।

अच्छा, अगर नहीं जानते, तो सुनो। मैं स्वयं तुम्हें अपना कष्ट सुनाता हूँ। नहीं, मैं न सुनाऊँगा, क्योंकि उसे सुनकर, मुझे भय है, तुम एकदम उबल पड़ोगे, और जो हमें कष्ट देते हैं, उनके ख़िलाफ़ बग़ावत कर बैठोगे। अगर ऐसा करोगे, तो तुम्हीं को कष्ट होगा। हम तो अपनी आदत से बाज़ आ ही नहीं सकते। जब हमारी बदौलत लाखों का पेट भरता है, तो इस बेकारी के ज़माने में हम क्यों उन बेचारों की रोटी छीनें। यही कारण है कि हम चुपचाप उनके अत्यचारों को सहते हुए भी हर तरह उनकी सेवा करने को तैयार रहते हैं।

अगर तुम न मानोगे, तो आप-बीती सुनानी ही पड़ेगी। पर ज़रा धैर्य-पूर्वक सुनना। मुझे कोई एक-दो तकलीफ़ें नहीं हैं कि झट से कह डालूँ। हम तो हर तरह बरबाद किए जाते हैं। अगर मैं अपने परिवार-भर का दुखड़ा रोऊँ, तो तुम सुनते-सुनते ऊब उठोगे। क्या कहते हो? नहीं ऊबोगे। अच्छा, तुम्हारी ज़िद रखने को मैं पहले अपनी छोटी बहन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें सुना दूँगा। यों तो मेरा परिवार बहुत बड़ा है, पर सबसे अधिक मैं अपनी छोटी बहन को, जिसे तुम घास कहते हो, प्यार करता हूँ। तुम्हारी आँखों में हरी-हरी घास और उसके बीच में खड़ा हुआ मैं कैसे अच्छे लगते हैं। पर तुम उसे इसका यही इनाम देते हो कि रोज़ शाम को उसके सिर को, टेनिस खेलते समय, जूतों से कुचल डालते हो। इसके अलावा जब कभी तुम जाकर चुपके से घास के मैदान में बैठ जाते हो, तो तुम्हारी उँगलियाँ हमेशा घास उखाड़ने में ही व्यस्त रहती हैं। अगर तुमसे कोई कहे कि थोड़ी घास उखाड़ लाओ, तो तुम उसे मारने को तैयार हो जाओगे, पर अपने से अगर तुम घास पर दो-एक घंटा लगातार बैठे रहते हो, तो वही काम करते हो, जिसके लिये तुम उस बेचारे को मारने के लिये लपके थे।

इतना ही नहीं, बेचारी घास तुम्हारे और भी बहुत-से कामों में लाभदायक होती है। तुम नित्य ही दूध पीते होगे। क्या तुम्हें मालूम है कि वह दूध कहाँ से आता है? ग्वाला हमारे ही पत्ते और हमारी ही बहन घास अपनी गायों को खिलाता है, और उनसे दूध लेकर तुम्हें देता है। एक ओर तो वह हमें ठूँठ बना देता है, और दूसरी ओर हमारी छोटी बहन का समूल नाश कर देता है। देखो, मैं यह सब तुमसे कहता तो हूँ, पर कहीं बेचारे ग्वालों का बहिष्कार न कर देना, नहीं तो वे और उनकी गाएँ तो मर ही जायँगी, और तुम भी दुर्बल हो जाओगे। फिर काम कैसे कर सकोगे। हमारे जीवन से तुम्हारे जीवन का अधिक महत्त्व है। दूध ही नहीं, और भी बहुत-सी वस्तुएँ--जिन्हें तुम रोज़ काम में लाते हो, जैसे रबड़, दवाइयाँ, ज़हर, तुम्हारे बैठने-उठने के सामान -- हमारे ही कलेजे को चीरकर बनाई जाती हैं।

अब मैं तुम्हें अपने निजी थोड़े-से कष्ट बतलाऊँगा। क्या तुम जानते हो कि कोयला, जिससे तुम्हारा भोजन पकाया जाता है, क्या है? वह हमारा ही दूसरा रूप है। तुम्हें यह तो मालूम ही होगा कि जंगलों में हम बहुतायत से पैदा होते हैं। जब हमारी वृद्धावस्था आती है, तो हम आप-से-आप गिरकर धराशायी हो जाते हैं। कुछ दिनों बाद हम सबके ऊपर बालू और मिट्टी का ढेर लग जाता है। फिर उसी स्थान पर हम पैदा होते हैं, और बुड्ढे होने पर फिर गिरकर मिट्टी और बालू के ढेर के नीचे दब जाते हैं। इस तरह हम बराबर पृथ्वी के नीचे धँसते चले जाते हैं, और हमारे स्थान पर नए-नए वृक्ष उत्पन्न होते रहते हैं। जब हमें पृथ्वी के भीतर रहते हुए हज़ारों बरस हो जाते हैं, तो हममें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक परिवर्तन होता है। हमारी सूरत-शक्ल में अंतर पड़ जाता है। हम काले हो जाते हैं। जब लोगों को इस बात का पता लगता है, तो वे हमें खोदकर निकाल लेते हैं। इसके बाद तुमसे पैसा लेकर तुम्हारा खाना पकाने के लिये हम तुम्हारे घरों में भेज दिए जाते हैं। तुम हमें जलाकर राखकर देते हो। इससे यह न समझ लेना कि मैं तुम्हें कोयला जलाने के लिये मना कर रहा हूँ। आख़िर भोजन तो करना ही है। कोयला न जलाओगे, तो लकड़ी जलानी पड़ेगी। कोयला तो हम लोगों के क़ब्र में जाने के बाद का रूप है, पर लकड़ी तो हमारे जीते जागते भाइयों का शरीर है। इससे मैं तो तुमसे प्रार्थना करूँगा कि तुम कोयला ही जलाओ। इस में हमारा भी लाभ है, और उन बेचारे मज़दूरों का भी, जो अपनी जान पर खेलकर खान में जाते और उससे कोयला निकाल लाते हैं।

सुबह उठने के साथ ही तुम अख़बार की खोज करते हो। क्या तुम जानते हो, वह क्या है? अरे, इतनी-सी भी बात नहीं जानते! अच्छा, सुनो। अगर हम न होते, तो तुम्हें ये अख़बार और ये सब पुस्तकें, जिन्हें पढ़कर तुम अपने ज्ञान की वृद्धि करते हो, कभी न मिलतीं। तुम अपनी तस्वीर देखकर प्रसन्न होते हो, पर उस तस्वीर का काग़ज़ हमारे ही कलेजे का टुकड़ा है। काग़ज़ तैयार करनेवाली मिलों के आदमी बराबर जंगलों में हमारा सत्यानास करते रहते हैं। पहले तो वे हमारी ऊपरी त्वचा को, जिसे तुम छिलका कहते हो, अलग कर देते हैं। इसके बाद बड़ी बेरहमी के साथ वे हमें चीर डालते हैं, और हमारे कई पतले-पतले टुकड़े कर दिए जाते हैं। वहाँ से हम मिल पहुँचाए जाते हैं। वहाँ पहुँचने पर हमारी और भी फ़ज़ीहत की जाती है। भारी-भारी मशीनों में हम पिसकर चूर कर दिए जाने के लिये छोड़ दिए जाते हैं। एक ओर तो वे मशीनें हमें पीसकर चूर कर देने में लगी रहती हैं, दूसरी ओर कुछ लोग बराबर पानी का पुट भी देते रहते हैं। जिन लोगों ने हमारी जड़ में एक दिन भी पानी न दिया था, वे अब, जब मैं पीसा जाने लगता हूँ, मरते दम पानी पिलाते हैं। इसलिये नहीं कि मैं मर रहा हूँ, मुझे प्यास लगी होगी, बल्कि इसलिये कि जो पल्प वे बनाते हैं, वह अच्छा हो। इसके उपरांत कई तरकीबों से वह पल्प साफ़ किया जाता है। साफ़ हो जाने पर हमें कई बार बड़े-बड़े रोलरों के बीच से होकर गुज़रना पड़ता है। पहली बार जब हम रोलरों के बीच से होकर निकलते हैं, तो काग़ज़ के रूप में होकर निकलते हैं। पर गीले होने की वजह से हमें फिर रोलरों के बीच से होकर गुज़रना पड़ता है। ये रोलर गरम होते हैं। इनके बीच से होकर जाने में हम अच्छी तरह सूख जाते हैं। अब भी हमें छुट्टी नहीं मिलती। फिर एक बार हमें रोलरों के बीच से होकर जाना पड़ता है। अब की बार ये रोलर हमारे ऊपर चिकनाहट ला देते हैं, ताकि जब तुम काग़ज़ पर लिखने लगो, तो तुम्हारी क़लम आप-से-आप फिसलती चली जाय। इसके बाद हमें काट-छाँटकर एकनाप किया जाता है, और तब हम प्रेस में भेज दिए जाते हैं।

प्रेस में भी हमारी पूरी फ़ज़ीहत की जाती है। वहाँ भी हम मशीनों पर चढ़ाए जाते हैं, और सुबह होते-होते हम अपनी पीठ और पेट को ताज़ी ख़बरों से सुशोभित किए हुऐ तुम्हारे टेबुल पर पहुँच जाते हैं। दिन-भर तो तुम और तुम्हारे घरवाले हमारा बड़ा आदर करते हैं, पर शाम को हम रद्दीख़ाने में फेक दिए जाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो बड़े यत्न-पूर्वक हमारा संचय करते हैं, पर उनके बनिस्बत फेक देनेवालों की संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक है। रद्दी की टोकरी से निकलकर हमारी क्या-क्या दुर्गति होती है, यह बतलाकर मैं तुम्हारा समय न ख़राब करूँगा। बस, तुम इतना ही समझ लो कि उसके बाद भी हम पर बराबर दुःख-ही-दुःख पड़ते जाते हैं।

मैं पहले ही कहता था कि तुम हमारी दुःख-कहानी सुनकर ऊब उठोगे, पर तुम नहीं माने। मुझसे कहलाकर ही छोड़ा। पर अब घबराते क्यों हो, ज़रा शांति रक्खो, मेरा दुःख उमड़ पड़ा है, सब कहकर ज़रा दिल हलका कर लेने दो। यह क्या? तुम भी दुःखी हो रहे हो? अच्छा, आज यहीं तक रहने दो। तुम भी शांत हो लो, फिर कभी अपनी बाक़ी राम-कहानी सुना दूँगा।

विद्याधर पाठक (बी० ए०)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डा० जसानी का जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

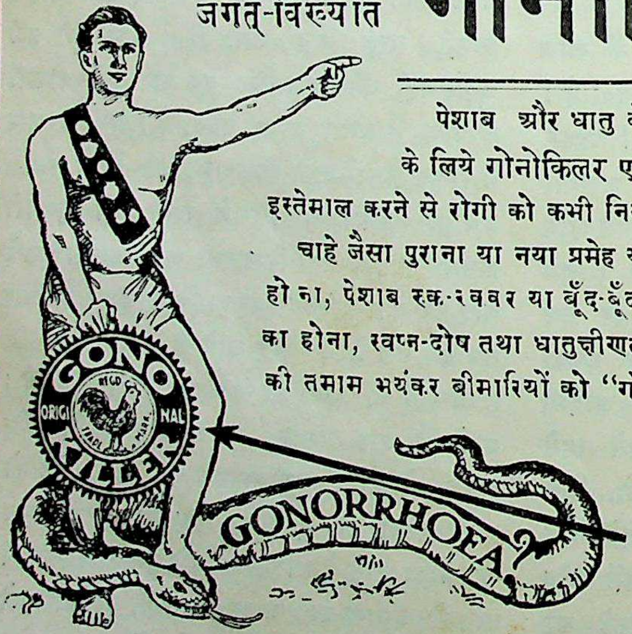

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव वा सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान!
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डो० एन० जसानी S. L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ स्टाकिस्ट—किंग मेडिकलहाल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

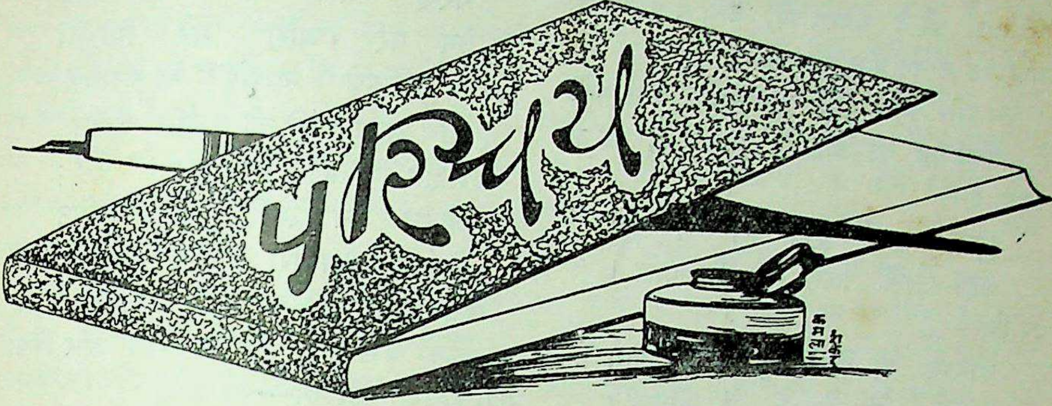

अनुभूति—लेखक, श्रीजनार्दनप्रसाद झा 'द्विज'; प्रकाशक, श्रीमंगलप्रसादसिंह, 'वाणी-मंदिर', छपरा; मूल्य १॥)

मनुष्य-जीवन एक विचित्र पहेली है। चाहे कितना भी सुख, शांति, ऐश्वर्य तथा वैभव क्यों न प्राप्त हो जाय, कुछ-न-कुछ अभाव बना ही रहता है। यह अभाव ही मनुष्यत्व का द्योतक है। अभाव कहिए या अपूर्णता, जब यह वस्तु नहीं रहती, तभी मनुष्य देवत्व-पद प्राप्त कर पाता है। अभाव अथवा अपूर्णता की जो अनुभूति मानव-हृदय में रह-रहकर होती है, उसके साथ एक और भी वस्तु है। वह अभाव की अनुभूति से उत्पन्न हुई विकल वेदना है। इसी वेदना को लेकर आज सारा संसार तड़प रहा है। योगी हो या भोगी, राजा हो या रंक, प्रेमी हो अथवा निर्मोह, प्रत्येक के पास किसी-न-किसी वस्तु का अभाव अवश्य है। इसी अभाव की अनुभूति आज एक ग्रंथ द्वारा देखने को मिली है। उसके रचयिता हैं, श्रीजनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', जो हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक हैं। आपने अपने ग्रंथ (अनुभूति) के आरंभ में लिखा है—"कवि किसी व्यक्ति-विशेष का नाम नहीं है......कवि वह नहीं है, जो कविता की ठेकेदारी करे......इसका काम अपने आपको अभिव्यक्त कर देना है।" सचमुच कवि एक मनुष्य है, चाहे वह कितनी ही मनोरंजन की सामग्री औरों के लिये क्यों न जुटा दे, स्वयं उसे मनुष्यता के नाते अभाव के चक्कर में आना ही पड़ता है। उसका यह अभाव उसे भी औरों की तरह नहीं, औरों से कहीं अधिक वेदना पहुँचाता है। यों तो स्वयं लेखक के शब्दों में—"स्वभावतः प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही व्यथा को सबसे अधिक असह्य और गंभीर समझता है—औरों की व्यथा उसे अपनी व्यथा के आगे सदैव छोटी ही जान पड़ती है। जब कोई अपने दुख में होता है, तो यही समझता है कि उससे बढ़कर कोई दुखी नहीं है।" किंतु कवि के लिये तो "मानव-हृदय का यही पीड़ा-प्रेम काव्य-कला में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का रूप धारण कर लेता है।" 'द्विज'-जी ठीक ही कहते हैं—"कविता काग़ज़ पर निकाल-कर रख दिए जानेवाले व्यथित कलेजे का ही दूसरा नाम है, और कवि उसका अभिव्यक्ता है।"

'द्विज'जी की कृति 'अनुभूति', जिसके संबंध में ऊपर कुछ कहा गया है, भावुक हृदयों के लिये तो—

कलित किसलय-से अति सुकुमार
विधुर मानस के मृदु उच्छ्वास।

का अनूठा संकलन कही जा सकती है। पाठकों से हमारा अनुरोध है कि आरंभ में दिए गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आभास' को वे अवश्य पढ़ें, तभी वे पुस्तक का वास्तविक आनंद प्राप्त कर सकेंगे।

प्रेम और विरह दोनो साथ-साथ चला करते हैं। पवित्र प्रेम को विरही ही जानता है, वह तो कहता है—

सुखी रहता दुख ही में डूब
कहाँ जाऊँ, किस सुख के पास।

क्योंकि—

वासना में विष है, है आग
लालसा में, सुख में संताप।

किंतु ऐसा विरही साधारण व्यक्तित्व की सीमा को अतिक्रमण कर, एक दार्शनिक के स्वर में स्वर मिलाकर कहता है—

आरंभ और अवसान, एक
होकर चलते हैं साथ-साथ;
जग में वह ऐसी वस्तु कौन,
जिसमें परिवर्तन का न हाथ?

फिर भी वह व्याकुल होकर सोच बैठता है—

जीवन की यह 'करुण पहेली'
अब मैं समझाऊँ किसको?

कभी वह प्रेम का दीवाना कह उठता है—

जगाओ अब न हिये की भूख,
न भड़काओ चाहों की प्यास;
इसी 'सूनेपन' में है शांति,
तृप्ति, सुख, संयम, हर्ष, हुलास।

वह कहता है—

निरमोही बनकर अपराधी
से मत नेह लगाओ;
प्रणय-भरे पागलपन को
सोने दो, अब न जगाओ!

❀ ❀ ❀

अब न गड़ाओ तपन-भरे
तन में करुणा की किरनें;
चरण खींच लो, दो मत
उन पर आँसू मेरे गिरने।

निज वक्षःस्थल के अंतर्दाह से वह कहता है—

अयि अमर शांति की जननि जलन!
अक्षय तेरा शृंगार रहे;
जीवन-धन-स्मृति-सा अमिट
निरंतर तेरा-मेरा प्यार रहे।"

अनुभूति की कसक का एक घूँट बानगी के तौर पर पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयत्न ऊपर किया गया है, किंतु यहाँ तो—

प्रलय-वारिधि का भीषण ज्वार
क्षुब्ध हो, सीमा को कर पार
उमड़ता बढ़ा चला आ रहा
डुबाने को मेरा संसार!

वाला हिसाब है, अतः संक्षेप में यही कहना पड़ता है कि 'अनुभूति' वास्तव में अनुभूति की वस्तु है, आलोचना का विषय नहीं।

भाषा के बारे में हम 'द्विज'जी के विचारों से सहमत हैं। भाषा भावों की जननी नहीं, वरन् भाव ही भाषा को सुंदर बनाया करते हैं।

अनुभूति में भाव और भाषा दोनो का सामंजस्य है। आशा है, हिंदी-संसार इस पुस्तक को विशेष आदर की दृष्टि से देखेगा।

'उमेश'

× × ×

लव-लेटर्स—संकलनकर्ता, ठाकुर सूर्यबलीसिंह; प्रकाशक, काशी-पुस्तक-भंडार, बनारस-सिटी; मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

प्रस्तुत पुस्तक पति-पत्नी के प्रेम से सराबोर पत्रों का अपूर्व संग्रह है। हिंदी के अनेक योग्य विद्वानों की कृतियों का इसमें समावेश हुआ है, जिनमें भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से प्रेम पर प्रकाश डाला गया है। इन भाव-पूर्ण पत्रों को पढ़कर उनकी सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता।

कौतूहल-वर्धक बात इस पुस्तक में यह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी भूमिका में प्रेम की मीमांसा करते हुए उसे विषय-वासना एवं जनन-क्रिया का प्रेरक बतलाकर उसकी पवित्रता को कलंकित किया गया है, किंतु पुस्तक के अंत में जो उपसंहार दिया गया है, उसमें प्रेम से गंदगी को दूर करके उसकी पवित्रता की रक्षा करने का सदुद्योग है, जिसके कारण पुस्तक का गौरव नष्ट नहीं होने पाया है।

उक्त पुस्तक के संबंध में संक्षेप में केवल इतना ही कह देना पर्याप्त है कि हिंदी के प्रतिभाशाली लेखकों की लेखनी से बहे हुए प्रेम-रस के प्रवाह में पड़कर पाठक उसके अपूर्व आनंद का अनुभव करेंगे। पुस्तक में यत्र-तत्र चित्र भी दिए गए हैं।

× × ×

दहेज़—लेखक, पं० देवनारायणजी द्विवेदी; प्रकाशक, काशी-पुस्तक-भंडार, बनारस-सिटी; मूल्य ?), सजिल्द २)

यह एक सामाजिक, सचित्र उपन्यास है, जिसमें दहेज़-प्रथा से पीड़ित परिवार की कहानी है। सामाजिक कुरीतियों का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। इसकी रोचकता देखते हुए यह कहना पड़ता है कि समाज-सुधारकों एवं नवीन विचार रखनेवालों का ही नहीं, बल्कि पुराने विचारवालों का भी मनोरंजन इस पुस्तक से हो सकता है।

'स्मृति'

× × ×

सुषमा—लेखक, श्रीगंगाप्रसाद 'कौशल'; प्रकाशक, नवलकिशोर-प्रेस-बुकडिपो, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ६८; मूल्य।-)

मैंने सुषमा आदि से अंत तक पढ़ी, और उसे पढ़ते समय मुझे वे दिन याद आ गए, जब मैंने अपनी प्रारंभिक कविताएँ लिखी थीं।

कुछ कविताएँ बड़ी सुंदर बन पड़ी हैं—जैसे 'दीन', 'चित्तौड़', 'पुकार', 'प्रश्नोत्तर'। कुछ गीत भी बड़े सुंदर हैं। श्रीगंगाप्रसादजी 'कौशल' अभी नवयुवक हैं, यह उनके निर्माण का काल है, और अपने निर्माण-काल में ऐसी कविताएँ लिखकर उन्होंने हिंदी-संसार में जो गौरव प्राप्त किया, इसके लिये मैं उन्हें बधाई दे सकता हूँ। मैं 'कौशल'जी में श्रेष्ठ कवि के विकास का क्रम देखता हूँ। और, मुझे आशा है, सतत प्रयत्न करके एक दिन वह हिंदी-साहित्य के गौरव बन सकेंगे।

आशा है, हिंदी-संसार इस नवयुवक की प्रथम कृति का स्वागत करेगा, और 'कल' के कवि को प्रोत्साहित करके अपनी रुचि का परिचय देगा।

भगवतीचरण वर्मा

× × ×

चिड़ियाघर—लेखक, श्रीयुत हरिशंकर शर्मा; प्रकाशक, साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा; मूल्य ?)

इस पुस्तक का दूसरा संस्करण हमारे सामने है। हिंदी में आलोचनात्मक हास्य-प्रधान व्यंग्य (Critical Satire)-विषयक साहित्य की बहुत बड़ी कमी है, लेखक ने इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक विषयों पर हास्य-प्रधान व्यंग्य लिखने का प्रयास किया है। भाषा के पचड़े में पड़कर, अपने उद्देश्य से कभी-कभी पृथक् होकर लेखक ने कुछ ग़लतियाँ की हैं, परंतु पुस्तक का विषय ही हास्य-प्रधान होने के कारण वे क्षम्य हैं। पुस्तक में मनोरंजन की काफ़ी सामग्री है।

× × ×

ग्राम-सुधार-प्रवेशिका—लेखक, श्रीयुत बी० एस्० मनिश्रम; अनुवादक, श्रीरामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र' एम्० ए०, एल्०-एल्० बी०; प्रकाशक, पट्ट ऐंड कंपनी, आगरा; मूल्य ॥)

ग्राम-सुधार-विषयक साहित्य को इस समय देश में काफ़ी प्रोत्साहन मिल रहा है, और वर्तमान सरकार की प्रचार-नीति में इसका बड़ा महत्त्व है। प्रस्तुत पुस्तक भी ग्राम-सुधार-विषय पर लिखी गई है। अनुवाद अच्छे ढंग से किया गया है। आशा है, इस पुस्तक का अच्छा प्रचार होगा।

'अरुण'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'मृत्यु के मुख में' (उपन्यास)—लेखक, श्रीव्रजकिशोर वर्मा 'श्याम' ; मूल्य ।)

(२) 'गड़बड़झाला' (हास्य)—लेखक, श्रीसीताराम गुप्त 'विनोद' ; मूल्य ॥=)

(३) 'शिकार के शौक़ीन' (उपन्यास)—लेखक, पं० अमरचंद्र त्रिवेदी ; मूल्य १॥)

(४) 'प्रायश्चित्त दूसरा भाग' (उपन्यास)—लेखक, 'श्रीसोपान' ; मूल्य २)

(५) 'क्रांतिकारी कहानियाँ'—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र' ; मूल्य १॥)

(६) 'झलक' (जीवनी)—लेखक, श्रीबेनी-माधव शर्मा ; मूल्य ॥)

(७) 'वीर-गाथा' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीरामेश्वर 'करुण' ; मूल्य ।=)

(८) 'झिलमिल' (उपन्यास)—लेखक, श्रीजोतिनप्रसाद ; मूल्य ॥=)

(९) 'हिंदी-साहित्य की रूप-रेखा'—लेखक, श्रीआत्माराम सूरी बी० ए० ; मूल्य १।)

(१०) 'वेदना' (गद्य-काव्य)—लेखक, श्रीभँवरमल सिंघी बी० ए० ; मूल्य १॥)

(११) 'योग के चमत्कार' (योग)—लेखक, श्रीरामनाथलाल 'सुमन' ; मूल्य १।)

(१२) 'गांधीवाद की रूप-रेखा'—लेखक, श्रीरामनाथलाल 'सुमन' ; मूल्य १)

(१३) 'झारखंड-झंकार' (इतिहास)—लेखक, श्रीरघुवीरप्रसाद ; मूल्य १)

(१४) 'त्रिपुरी का इतिहास'—लेखक, ब्योहार श्रीराजेंद्रसिंह तथा विजयबहादुर श्रीवास्तव; मूल्य १॥)

(१५) 'मध्यप्रदेश में शिकार'—लेखक, श्रीप्रभातचंद्र बोस ; मूल्य १)

(१६) 'स्वराज्य का रास्ता'—लेखक, पं० सीताराम शुक्ल एम्० एल्० ए० ; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

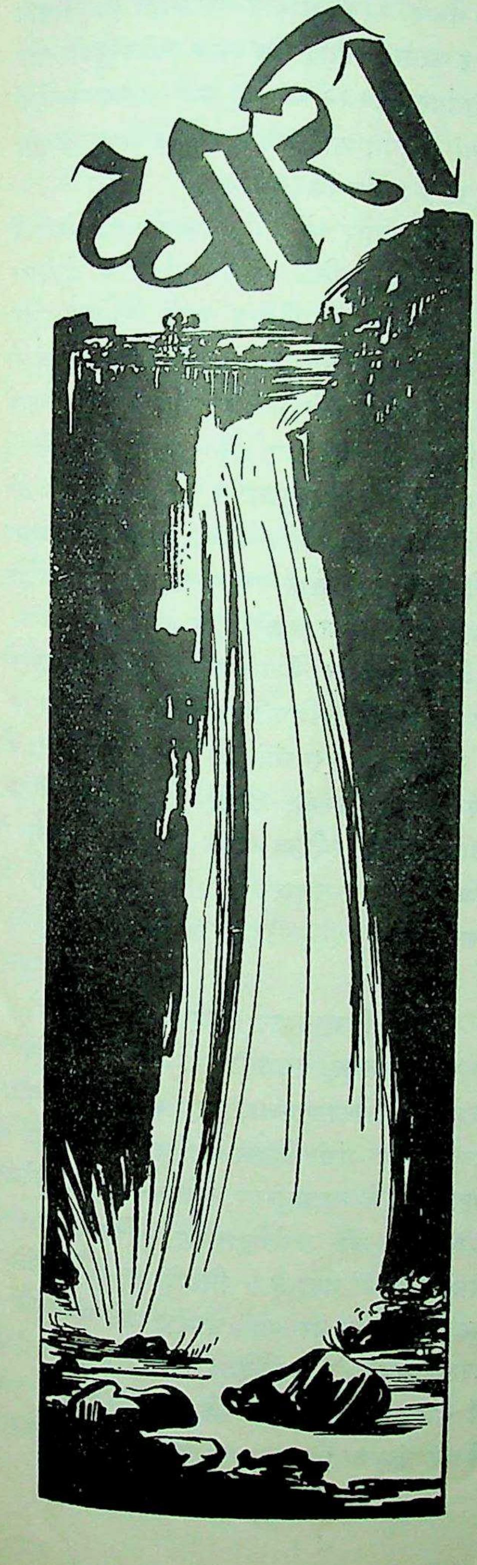

१. होलकर-राज्य में ग्राम-सुधार की विशाल योजना

होलकर-राज्य में ग्राम-सुधार का काम तेज़ी से आगे बढ़ाने के लिये एक अच्छा संगठन क़ायम करने के उद्देश से श्रीमान् महाराजा इंदौर ने नीचे-लिखी योजना स्वीकार की है—

१. माननीय रेवेन्यू-मिनिस्टर की अध्यक्षता में एक ग्राम-सुधार-संघ (रूरल अपलिफ़्ट बोर्ड) नियुक्त किया गया है। माननीय होम-मिनिस्टर इसके उप-प्रधान होंगे, और मालवा-डिवीज़न के कमिश्नर, स्वास्थ्य तथा सफ़ाई-विभाग के डाइरेक्टर, स्कूल-शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर तथा रजिस्ट्रार को - ऑपरेटिव - सोसाइटीज़ इसके सदस्य रहेंगे। बोर्ड को अधिकार होगा कि अधिक-से-अधिक तीन ग़ैर-सरकारी सदस्य और चुन ले। सरकार इस बोर्ड के लिये एक मंत्री नियुक्त करेगी। यह बोर्ड ग्राम-सुधार की विस्तृत योजना तैयार करेगा।

२. प्रारंभ में ग्राम-सुधार का कार्य एक ही ज़िले में केंद्रित किया जायगा, जिससे थोड़े-से क्षेत्र में ख़ूब ज़ोरों का काम करके अच्छी सफलता प्राप्त की जाय, और एक ज़िले के अनुभव से फ़ायदा उठाकर दूसरे ज़िलों में भी सरगर्मी के साथ काम किया जायगा। तदनुसार नेमावर का ज़िला वह कार्य तुरंत प्रारंभ करने के लिये चुना गया है। यह ज़िला अधिक फैला हुआ नहीं है, आमद-रफ़्त के सरल साधन मौजूद हैं, और साथ ही यहाँ की बस्तियाँ पिछड़ी हुई हैं।

३. एक ज़िला-ग्राम-सुधार-कमेटी क़ायम की जायगी। ज़िले के सूभा इसके प्रधान होंगे। जंगलात महकमे के अफ़सर तथा ज़िले के मेडिकल अफ़सर इसके सदस्य होंगे। ग्राम-सुधार-संघ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकृति लेकर यह कमेटी दो ग़ैर-सरकारी सदस्यों को और सम्मिलित करेगी।

४. प्रत्येक ग्राम में, जहाँ-जहाँ पटेल पटवारी तथा स्कूल का अध्यापक मौजूद है, एक स्थानीय सुधार-कमेटी नियुक्त की जायगी, जिसके ये लोग सदस्य होंगे। दूसरे गाँवों में भी बोर्ड की स्वीकृति से ऐसी कमेटियाँ बनाई जा सकेंगी। बोर्ड की राय में उन गाँवों में दूसरे योग्य व्यक्ति इस काम के लिये मिल सकते हैं। इस प्रकार की कमेटियों की स्थापना की सूचना हर हालत में सरकार को देना आवश्यक होगा।

५. ग्राम-सुधार का काम पूरी तरह से होना चाहिए, जिससे यथासंभव थोड़े ही वक़्त में ज़्यादा-से-ज़्यादा नतीजा निकल सके। जहाँ ग्राम-सुधार का काम सरकार के दूसरे महकमों से ख़ास तौर पर संबंधित होगा, वहाँ ग्राम-सुधार-बोर्ड उन महकमों को अपना काम और भी सरगर्मी के साथ करने की प्रेरणा करने के अलावा उन महकमों को हर तरह से मदद पहुँचाकर उनके काम को और भी ज़्यादा तेज़ी से आगे बढ़ाने की कोशिश करेगा। प्रौढ़-शिक्षा, गाँव की सफ़ाई, खेती के सुधरे हुए तरीक़े, बाज़ारों में माल की खपत की सुविधाएँ, आवश्यकतानुसार ऊसर ज़मीन को मजबूरी तौर से क़ब्ज़े में लेना, ख़ाली वक़्त काम में लाकर आमदनी बढ़ाने के तरीक़े ढूँढ़ना, अच्छा जीवन व्यतीत करनेवाली सोसाइटियाँ स्थापित करना तथा ग्राम-पंचायत और को-ऑपरेटिव-सोसाइटियों की स्थापना और उन्नति करना आदि सारे कार्य ग्राम-सुधार की योजना में सम्मिलित रहेंगे।

६. इस योजना को अमल में लाने के लिये ज़रूरी सारी प्रारंभिक व्यवस्था—जैसे कि इंस्पेक्टरों की नियुक्ति और ट्रेनिंग तथा इस काम के लिये आवश्यक ख़र्च के पूरे बजट के साथ एक ख़ुलासा स्कीम तैयार करके श्रीमान् महाराजा की स्वीकृति हासिल करना—आदि सब कार्य ग्राम-सुधार-बोर्ड को सितंबर, १९३९ के अंत तक समाप्त कर देना लाज़िमी होगा, और अगले बजट के साल के शुरू से ही काम प्रारंभ किया जायगा।

७. ग्राम-सुधार के आंदोलन को बड़ी तेज़ी के साथ चलाने के लिये काफ़ी संख्या में इंस्पेक्टर और सब-इंस्पेक्टर नियुक्त करके शिक्षित किए जायँगे। कुछ कार्यकर्ताओं—जैसे पटेल, पटवारी तथा गाँव के स्कूल के मास्टर आदि—को इस कार्य में दिलचस्पी लेने के लिये उत्साहित करने के उद्देश से उन्हें कुछ एलाउंस या ऑनरेरियम देने की भी व्यवस्था करनी आवश्यक होगी। इस प्रकार के वैतनिक कर्मचारियों पर १० हज़ार रुपया वार्षिक तक ख़र्च किया जा सकता है।

८. ग्राम-सुधार के काम के लिये सरकार को २५ हज़ार की प्रारंभिक स्वीकृति दी गई है।

९. सरकार इस संबंध में किसी भी योजना को स्वीकार कर सकेगी, बशर्ते उनका ख़र्च श्रीमान् महाराजा द्वारा स्वीकृत बजट के भीतर हो, और वे योजनाएँ ग्राम-सुधार की स्वीकृत योजना के अंतर्गत हों।

× × ×

२. बेतिया-राज्य और विपिन बाबू

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीयुत विपिन-बिहारी वर्मा बार-एट्-ला, एम्० एल्० ए०(केंद्रीय) तथा प्रधान मंत्री बिहार-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी ने, महात्माजी के आज्ञानुसार, बेतिया-राज्य की मैनेजरी क़बूल कर ली। बेतिया-राज्य बिहार की सभी रियासतों से बड़ा है। निलहे साहबों के पंजे से छुटकारा पाने पर भी अँगरेज़ मैनेजर रहने के कारण अब भी वहाँ देशी राज्य-सा ज़ुल्म देखने में आता था। राज्य के अफ़सर रियाया को बेतरह तंग करते। प्रजा का रुपया प्रजा में न ख़र्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर साहब-मेम, रास-रंग, पादरी और गिरजाघरों में ख़र्च होता था। पटवारी दारोग़ा-सा ज़ुल्म करते और तहसीलदार निलहों-सा। अब जब कि प्रांत के शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथों में है, उसका यह कर्तव्य था कि वह एक लोक-प्रिय तथा न्यायी मनुष्य को यह दायित्व-पूर्ण कार्य सौंपे। सभी बातों का ख़याल करते हुए कहना पड़ेगा कि विपिन बाबू के सिवा कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा था ही नहीं, जो इस महान् उत्तरदायित्व का भार वहन कर सके। पर दुःख के साथ कहना पड़ता है कि बिहार में कुछ लोगों ने जाति-पाँति का विष-बीज बोकर इस कार्य में भी अड़ंगा लगाया। हम मंत्रिमंडल के इस कार्य की प्रशंसा करते और आशा करते हैं कि विपिन बाबू रियाया के रुपए रियाया के उद्धार में लगा शिक्षा, कृषि और उद्योग-धंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन कर बेतिया-राज्य-निवासियों को अच्छा नागरिक बनाने में कोई कोर-कसर न उठा रक्खेंगे।

× × ×

३. जाति-पाँति लड़के-लड़कियाँ न लिखें

जात-पाँत-तोड़क मंडल, लाहौर के मंत्री महोदय ने निम्न-लिखित पत्र, पंजाब तथा अन्य प्रांतों के कॉलेजों के प्रिंसिपलों और विश्वविद्यालयों के नाम, भेजा है—

"जात-पाँत-तोड़क मंडल, लाहौर गत १६ वर्ष से राष्ट्रीय संगठन के निमित्त हिंदुओं में से जात-पाँत मिटा देने और इस प्रजातंत्र-विरोधी कुप्रथा के कारण उत्पन्न होनेवाली सामाजिक हानियाँ दूर करने का प्रयत्न कर रहा है। यह बात सब स्वीकार करते हैं कि भूतकाल में जाति-भेद से चाहे कुछ ही लाभ क्यों न रहा हो, अब तो यह अपने सभी रूपों में देश की प्रगति के मार्ग में बड़ी भारी बाधा है। क्या राजनीतिक, क्या सामाजिक और क्या धार्मिक, सभी नेताओं ने इसे भारत का सबसे बड़ा कलंक बताकर इसकी निंदा की है, और इसके अस्तित्व को वे हमारे देश के सामाजिक और राजनीतिक पुनरुद्धार के लिये एक भीषण भय समझते हैं। उन सबका यह प्रबल मत है कि यह कुप्रथा तुरंत और पूर्ण रूप से मिटा देनी चाहिए, क्योंकि ऐसा किए बिना हमारा राष्ट्रीय निर्माण हो ही नहीं सकता।

युवक ही देश के मेरुदंड और सच्ची शक्ति हुआ करते हैं। वे ही देश एवं सभ्यता के निर्माता और भावी नागरिक होते हैं। आपकी विद्यापीठ, जहाँ सहस्रों तरुण शिक्षा-दीक्षा पा रहे हैं, हमारे ऐसे आंदोलन का बीजारोपण करने के लिये सच्चा स्थान है। यह उद्देश्य दृष्टि में रखते हुए मंडल के गत वार्षिकोत्सव पर होनेवाले सार्वजनिक सम्मेलन ने निम्न-लिखित प्रस्ताव स्वीकार किया था। यही प्रस्ताव मंडल के आश्रय में अथवा इसकी प्रेरणा से दूसरे स्थानों में होनेवाले सम्मेलनों में भी पुनः पास किया जा रहा है—

यह सम्मेलन विश्वविद्यालयों और दूसरी शिक्षा-संबंधी संस्थाओं से प्रार्थना करता है कि उनके फ़ार्म आदि में जहाँ जाति का कोष्ठ हो, उसे निकाल दें, और यदि वह कोष्ठ रहे, तो आज्ञा दे दें कि किसी भी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध जाति लिखाने पर विवश न किया जाय, और सबके सुबीते के लिये यह अच्छा रहेगा कि 'जाति' के कोष्ठ का शीर्षक बदलकर "जाति यदि कोई है" कर दिया जाय।

हमारी इच्छा आपकी संस्था पर कोई ऐसी बात ठूँसने की नहीं, जो असाध्य या क्लेशदायक हो। इसके विपरीत, हम समझते हैं, ऐसे युवकों की संख्या बहुत अधिक है, जो जात-पाँत के साथ कोई संबंध रखना नहीं चाहते, और जो खान-पान और ब्याह-शादी में इसका परित्याग कर चुके हैं। छात्रों के नामों के साथ लगाई हुई उपजातियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल पारिवारिक नाम हैं, और जाति-भेद में उनके विश्वास की द्योतक नहीं।

सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार १९ लाख कट्टरपंथी हिंदुओं ने जाति के कोष्ठ में "कुछ नहीं" लिखाया था। आर्यसमाजी, सिक्ख और दूसरे उदार विचार के हिंदू, जिन्होंने अपनी जाति नहीं लिखाई, इनके अतिरिक्त हैं। इसलिये हमारा अनुरोध है कि आपकी संस्था के फ़ार्मों और रजिस्टरों में से जाति का कोष्ठ बिलकुल निकाल दिया जाय, और यदि ऐसा करना संभव न हो, तो उसे बदलकर "जाति यदि कोई है" कर दिया जाय, ताकि जो व्यक्ति जाति-भेद में विश्वास नहीं रखता, उसे वह कोष्ठ भरना न पड़े। ऐसी घटनाएँ हुई हैं कि विद्यार्थी के जाति का कोष्ठ भरने से इनकार करने पर क्लार्क ने स्वयं ही उसकी जाति उस कोष्ठ में लिख दी है।

आपकी शिक्षा-संस्था समाज-सुधार के लिये प्रख्यात है, इसलिये मैं आशा करता हूँ कि आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करेंगे, वरन् अपने प्रांत के विश्वविद्यालय को भी ऐसा करने के लिये कहेंगे।"

शिक्षा-संस्थाओं को ही नहीं, छात्रों और छात्राओं को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

× × ×

४. बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी का अधिवेशन

जून के अंतिम सप्ताह में बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी का अधिवेशन, राष्ट्रपति बाबू राजेंद्रप्रसादजी की अध्यक्षता में, हुआ। इस अधिवेशन का महत्त्व इसलिये बढ़ गया था कि पिछले कलकत्ता-अधिवेशन में श्रीयुत सुभासचंद्र बोस ने जिन कारणों से अपने राष्ट्रपति के पद से इस्तीफ़ा दिया था, और कांग्रेस-क्षेत्र में उसकी जो प्रतिक्रिया हुई, उसका परिणाम इस अधिवेशन से प्रकट हो जाय। कलकत्ता-अधिवेशन के बाद श्रीयुत सुभासचंद्र बोस एक नए रूप में प्रकट हुए, और आपने कांग्रेस के अंदर एक 'अग्रगामी दल' (फ़ोरवार्ड ब्लाक) की नींव डाली। बंबई में इस नए अग्रगामी दल और उसके साथ कांग्रेस के अन्य उग्रवादी दलों—कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, रायस्ट—का मुक़ाबिला उस दल के साथ हुआ, जिसके हाथ में आज कांग्रेस की बागडोर है—उसे दक्षिणपक्ष, गांधीवादी दल आदि नामों से पुकारा जाता है। इस बंबई-अधिवेशन ने यह प्रकट कर दिया कि आज कांग्रेस का नेतृत्व जिन हाथों में है, वे हाथ काफ़ी शक्तिशाली हैं। अगर कांग्रेस को एकमत-वालों की संस्था बनाकर चलाना है, तो कांग्रेस का नेतृत्व गांधीवादी दल के ही हाथों में रहना चाहिए। इस दशा में श्रीयुत सुभासचंद्र बोस का राष्ट्रपति-पद पर आसीन रहना कोई अर्थ भी नहीं रखता। लेकिन इसके साथ यह भी विचार करना है कि क्या कांग्रेस एक विचारवाली संस्था रह सकती है? उसकी शक्ति और आकार में जैसी वृद्धि हो चुकी है, उससे यह उम्मेद नहीं की जा सकती कि कांग्रेस में भिन्न विचार और सिद्धांतों का प्रवेश न हो सके। आवश्यकता इस बात की है कि ये भिन्न-भिन्न विचार और सिद्धांत आपस में न टकराएँ, और जब तक देश आज़ाद नहीं होता, तब तक कांग्रेस एक संयुक्त मोर्चे के रूप में आगे बढ़े। कुछ भाइयों का यह कहना है कि संयुक्त मोर्चा अथवा 'पापुलर फ्रंट' की नीति कई देशों में असफल हो चुकी है, भारत में इसकी ज़रूरत नहीं, क्योंकि कांग्रेस के अंदर अलग-अलग विचारों के कई दल होंगे, तो उनमें आपस में मतभेद बढ़ जायँगे, और ये मतभेद कांग्रेस को आज़ादी प्राप्त कर लेने के मार्ग में बाधक ही बनेंगे। इसलिये कांग्रेस सर्वथा एक रस, एक सिद्धांत, एक नीति और एक कार्य-क्रम पर चलनेवाली संस्था रहे। इस संबंध में दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें कही जा सकती हैं—एक तो यह कि कांग्रेस के वर्तमान स्वरूप में अब यह मुमकिन नहीं जान पड़ता कि उसके अंदर की विभिन्न विचार-धाराओं को मिटा दिया जाय। कांग्रेस में उग्र दलवालों का अल्पमत भले ही हो, पर वह अल्पमत ऐसा नहीं कि उसे कांग्रेस से अलग कर देने पर कांग्रेस आज-जैसी ही शक्तिशाली संस्था बनी रहे। उग्र दलवालों में भी कांग्रेस के बड़े पुराने सेवक, उच्च राजनीतिज्ञ और प्रभावशाली व्यक्ति हैं। यह कोई भी न चाहेगा कि वे कांग्रेस से अलग रहें। दूसरे कांग्रेस के संयुक्त मोर्चे में और दूसरे देशों के संयुक्त मोर्चे में फ़र्क़ है। दूसरे देशों में अलग-अलग सिद्धांत और नीति को माननेवाले पृथक्-पृथक् दलों ने एक सामान्य उद्देश के लिये समान कार्य-क्रम निश्चित कर संयुक्त मोर्चा बनाया, और जब एक हद तक ये इसमें सफल हो गए, तो उनमें परस्पर जितना मतभेद था, उसके कारण उनका दृढ़ संगठन स्थायी न रह सका। लेकिन कांग्रेस के संबंध में यह बात नहीं। यहाँ तो पहले से ही सभी कांग्रेस-जन एक संगठन-सूत्र में बँधे हुए हैं। कांग्रेस के अंदर अलग-अलग विचार रखनेवाले लोग भी सर्व-प्रथम कांग्रेस-जन हैं, कांग्रेस में उनका सामूहिक प्रतिनिधित्व नहीं, और इस समय उनके सामने सबसे पहला काम राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करना है। जब तक राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती, तब तक उनका संयुक्त मोर्चा दृढ़ रहेगा। जिन दूसरे देशों में अलग-अलग दलों के संयुक्त मोर्चे क़ायम हुए, उनकी स्थिति भिन्न प्रकार की थी। हिंदुस्थान का संयुक्त मोर्चा तो यहाँ की विदेशी सरकार और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ है। इसलिये अगर देश स्वतंत्र होने पर यह संयुक्त मोर्चा टूट जाता है, तो इस भय से हमें आज ही राष्ट्रीय एकता छिन्न-भिन्न नहीं करनी चाहिए।

बंबई के अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटी के अधिवेशन की कुल कार्यवाही में एक यही विचार ओत-प्रोत हो रहा है। यद्यपि इसके बाद देश में जो कुछ हुआ, और कांग्रेस के निर्णय के विरुद्ध देश-भर में उग्रवादी लोगों की तरफ़ से जो प्रदर्शन किया गया, वह हमारी इस आशा के विपरीत हुआ। इस तरह की दुःख-जनक परिस्थिति हमारे भविष्य को निराशा-जनक बना देती है। एक ओर जहाँ हम अपने पुराने नेताओं से यह अपील करते हैं कि वे कांग्रेस की एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिये अपने से भिन्न विचार रखनेवालों के साथ भी सहानुभूति-पूर्ण बर्ताव करें, वहाँ उग्रवादी लोगों की हठधर्मी और अनुशासन भंग करने की प्रवृत्ति को भी हम बुरा समझते हैं। बंबई-अधिवेशन में कांग्रेस के विधान में जो परिवर्तन किए गए, अच्छा होता कि सर्व-सम्मति से ही उनका निर्णय किया जाता, क्योंकि उग्रवादी लोग भी यह तो चाहते ही थे कि कांग्रेस के अंदर अवांछित लोगों का प्रवेश रोका जाय। पर इसका यह अर्थ नहीं कि जिन लोगों ने अब तक कांग्रेस के अंदर रहकर देश की सेवा की है, और जो आज भिन्न विचार रखने के कारण कांग्रेस के बुज़ुर्ग नेताओं की सभी बातें स्वीकार करने को तैयार नहीं, उनकी प्रगतियों को वैधानिक प्रतिबंध लगाकर रोक दिया जाय। पर जब एक बार कांग्रेस में बहुमत से जो निर्णय हो चुका, उसका पालन करना प्रत्येक कांग्रेस-व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। हम यह नहीं कहते कि जो बात किसी को अप्रिय मालूम होती हो, उसका विरोध न किया जाय, पर वह विरोध कांग्रेस के अंदर ही हो, और अपनी उक्ति तथा तर्क-शक्ति द्वारा कांग्रेस के बहुमत का निर्णय बदलवाने की कोशिश की जाय। कांग्रेस से बाहर आम जनता में विरोधी प्रदर्शन करने से कांग्रेस की दृढ़ता और शक्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धक्का लगेगा। हम अपने नेताओं से प्रार्थना करेंगे कि वे एक बार गंभीरता के साथ इस समस्या पर विचार करें, और वैयक्तिक तथा दलबंदी के मामले छोड़कर राष्ट्रीय एकता अक्षुण्ण बनाए रक्खें।

× × ×

५. डेंजिंग और तिंतसिन

गत महासमर के बाद जब से संसार में आर्थिक संकट का काल आया, तभी से फिर कोई महासमर छिड़ने की कल्पना पैदा हुई। इस कल्पना का एक आधार भी है। शांति के समय सभी देशों ने अपने उद्योग-व्यवसायों में इतनी उन्नति कर ली कि जितना माल वहाँ तैयार होने लगा, उसकी खपत के लिये बाज़ार उतने ही तंग होने लगे। संसार की मंडियाँ माल से पट गईं। तब यह सोचा जाने लगा कि अगर संसार में फिर कोई लड़ाई छिड़ती है, तो उस वक्त लोगों की शक्तियाँ युद्ध के कामों में लग जायँगी, उत्पत्ति कम होने लगेगी, और माल की खपत बढ़ जायगी, क्योंकि तब युद्ध की भट्टी में झोंकने के लिये भी काफ़ी सामान की ज़रूरत पड़ेगी। इससे एक ओर युद्ध में जहाँ जन और धन की हानि होगी, वहाँ गोदाम और फ़ैक्टरियों में बंद पड़े हुए माल की खपत भी शुरू हो जायगी। इसीलिये संसार के बड़े-बड़े पूँजीपति और उनके असर से चलनेवाली सरकार इस पक्ष में थीं कि संसार में महायुद्ध छिड़ जाय। केवल लोक-लज्जा से वे शांति के गीत अलापा करती थीं। पर इसकी क़लई शीघ्र ही खुल गई।

एथोपिया, स्पेन और सार आदि प्रदेशों में जो लड़ाइयाँ और हलचलें शुरू हुईं, उस अवसर पर इन धन-कुबेरों की तरफ़ से महायुद्ध छिड़ जाने का तराना गाया जाने लगा। एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र की बुनियाद डाली गई, जिसमें हथियारों की फ़ैक्टरियों के मालिक और कुछ सरकारें शामिल थीं। चूँकि उद्योग-व्यवसायों की प्रगति मंद पड़ गई थी, और उनमें नफ़ा होने की गुंजाइश न थी, इसलिये संसार के धन-कुबेर इस चिंता में पड़ गए कि वे अपनी पूँजी को किस जगह लगावें। तब उन्हें एक ही मार्ग सूझा, और वह था हथियारों की फ़ैक्टरी का। यहाँ काफ़ी पूँजी खप सकती थी, क्योंकि एक-एक क़िस्म की गैस तैयार करने में ही लाखों का व्यय हो जाता है। जब इस तरह हथियारों की फ़ैक्टरियाँ भर गईं, तो यह ज़रूरत हुई कि इन हथियारों का प्रयोग कैसे किया जाय, जिससे पूँजी और नफ़ा वापस मिले। अबीसीनिया, स्पेन और चीन की लड़ाइयाँ एक हद तक ही इस इच्छा की पूर्ति कर सकीं। इसलिये जब उक्त तीन क्षेत्र महासमर का रूप धारण न कर सके, तो यह चेष्टा बराबर जारी रही कि कोई ऐसा नया क्षेत्र ढूँढ़ा जाय, जहाँ से इन मौत के सौदागरों की इच्छा-पूर्ति हो सके।

आजकल पश्चिम में डेंजिंग और पूर्व में तिंतसिन ऐसे दो क्षेत्र हैं, जहाँ महायुद्ध छिड़ने की पूरी तैयारियाँ हो चुकी हैं। असल में ये दोनो क्षेत्र स्पेन और चीन के पुराने क्षेत्रों के ही नए संस्करण हैं। सन् १९३७ से ही, जब से रोम में इटली, जर्मनी और जापान की संधि हुई थी, पूर्व और पश्चिम में एक महासंघर्ष होने की बुनियाद डाल दी गई थी। उसके लिये उपयुक्त अवसर की तलाश थी, सो हमारे ख़याल में वह अवसर इस वक्त मौजूद है। जब तक हिटलर की धमकियों से इतना काम बनता रहा कि ब्रिटेन और फ़्रांस तरह देते गए, और जर्मनी, जापान तथा इटली की शक्ति बढ़ती गई, तब तक महायुद्ध छेड़ने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। पर अब ब्रिटेन को भी यह ख़तरा हो गया है कि इस तरह तरह देने से एक दिन वह फ़ैसिज़्म का शिकार बन जायगा, इसलिये अब अपनी ज़िंदगी की रक्षा के लिये लड़ना ही पड़ेगा। उधर इटली और जापान के साथ जर्मनी कुछ दिनों तक यही विचार करता रहा कि पहले रूस से लड़ा जाय या लोक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंत्रवादी राष्ट्रों से। पहले उसका क्रोध रूस पर था, लेकिन रूस के साथ उसकी सैद्धांतिक शत्रुता है। असल में उसके उपनिवेश तो इँगलैंड और फ़्रांस ने हड़प लिए हैं। दूसरे, वह यह भी जानता है कि रूस अपनी नीति के अनुसार दूसरे देश पर अपनी तरफ़ से आक्रमण नहीं करता, इसलिये उसे रूस से ख़तरा नहीं। उसने यह भी देख लिया कि ब्रिटेन की स्थिति आजकल कमज़ोर है, इसलिये रूस की अपेक्षा ब्रिटेन से लड़ना आसान होगा, तभी वह ब्रिटिश मंत्रिमंडल की बार-बार की धमकियों की परवा न करता हुआ डेंजिग को हथिया लेने के लिये आगे बढ़ रहा है।

तिंतसिन में जो हरकतें हो रही हैं, उनका सूत्र डेंजिग से बँधा हुआ है। अगर महासमर छिड़ा, तो दोनो जगह छिड़ेगा, क्योंकि ब्रिटेन की युद्ध-संबंधी शक्ति के दो ही प्रधान अड्डे हैं। पूर्वी अड्डों का केंद्र है सिंगापुर और पश्चिमी अड्डों का अटलांटिक महासागर में जिब्राल्टर-मुहाने से लेकर टेम्स-नदी तक। अगर योरप में ही महासमर छिड़ता है, तो ब्रिटेन की पूर्व की सारी ताक़तें सिमटकर पश्चिम में आ जायँगी। इसलिये जर्मनी और इटली पूर्व में जापान को भिड़ाकर ब्रिटेन की पूर्वीय शक्ति का उपयोग पश्चिम के स्थल में नहीं होने देंगे, और उन्हें विश्वास है कि ब्रिटेन और फ़्रांस से वे पश्चिम में आसानी के साथ निबट लेंगे।

इस तरह पोलैंड के डेंजिग का संबंध चीन के तिंतसिन के साथ अटूट है। दोनो जगह एक ही समय पर हलचलें शुरू हुईं। आज ये दोनो स्थान अंतरराष्ट्रीय संकट के केंद्र हैं। अगर महासमर छिड़ता है, और ब्रिटेन का उसमें फँसना अनिवार्य है, तो हम भारतवासी उस वक़्त क्या करेंगे? यह ऐसा सवाल है, जो हमें अभी तय कर लेना चाहिए। किंतु अपने देश की राजनीतिक हालत जैसी हो रही है, उसे देखकर दुःख होता है। कहीं 'औसर चूकी डोमनी गावै ताल बेताल' वाली कहावत चरितार्थ न हो।

× × ×

६. हैदराबाद-आंदोलन और अँगरेज़ी सरकार

हैदराबाद का सत्याग्रह-आंदोलन जिस सीमा तक आगे बढ़ गया है, अभी वह उससे और भी आगे बढ़ेगा। जो लोग सत्याग्रह की प्रगति का निरंतर अध्ययन करते रहते हैं, उन्हें ऐसा मान लेने में कुछ भी संदेह नहीं। आर्य-समाज ने धर्म की वेदी पर अब तक कई बलिदान किए हैं, लेकिन उसका हैदराबाद का बलिदान अनुपम है। इसने न केवल आर्य-समाज में नया जीवन फूँक दिया, बल्कि ऋषि दयानंद की तपश्चर्या को सार्थक करके दिखला दिया। अत्याचार की भभकती हुई भट्टी में पड़ने पर आर्य-सत्याग्रही उसमें से खरा सोना होकर निकल रहे हैं। इन पंक्तियों के लिखने के वक़्त तक १२ सहस्र सत्याग्रही जेल जा-चुके हैं। निज़ाम-राज्य की जेलों में स्थान भी नहीं रहा है, इसलिये कुछ आदमी तरह-तरह का बहाना करके छोड़ भी दिए जाते हैं। जेल में शहीद होनेवालों की भी संख्या दिन-पर-दिन बढ़ रही है। पर अभी तक नवाब हैदराबाद की तरफ़ से अपने कड़े रुख़ में परिवर्तन करने का भाव नहीं दिखलाया गया है।

इस संबंध में भारत-सरकार जिस उपेक्षा-वृत्ति से हैदराबाद-आंदोलन की गति-विधि देख रही है, वह बड़ी ही आश्चर्य-जनक है। हज़ारों आदमियों का जेल जाना, और कितने ही सत्याग्रही वीरों का शहीद हो जाना साधारण आंदोलन की बात नहीं। हमें पता है, जब काश्मीर में अहरारी मुसलमानों ने आंदोलन किया था, तो सरकार के कान खड़े हो गए थे, और उसने मामले की जाँच के लिये फ़ौरन् एक कमीशन नियुक्त किया था। हैदराबाद-आंदोलन को कई महीने हो गए। इस बीच में प्रमुख हिंदू-नेताओं ने वाइसराय महोदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास आवेदन-पत्र भी भेजा है, लेकिन सरकार अभी तक ऐसी चुप है, मानो हैदराबाद में कुछ हो ही नहीं रहा है। यही नहीं, बल्कि हाउस ऑफ़् कामंस में कर्नल म्यूर होड ने तो एक सवाल के जवाब में यह कह दिया कि हैदराबाद-रेज़िडेंट की रिपोर्ट के अनुसार निज़ाम की जेलों के प्रबंध के संबंध में कोई आलोचना हो ही नहीं सकती। इसका अर्थ क्या है? अभी कुछ महीने पूर्व वाइसराय महोदय ने देशी नरेशों को यह नेक सलाह दी थी कि वे अपनी प्रजा के दुःख दूर करें, और प्रजा की उचित माँग स्वीकार करें। वाइसराय महोदय के इन शब्दों पर कहाँ तक अमल हुआ? इससे दो ही अर्थ निकल सकते हैं—एक तो यह कि अब देशी राजाओं में भी इतना साहस पैदा हो गया है कि वे सम्राट् के प्रतिनिधि की बात की भी परवा नहीं करते, दूसरे यह कि वाइसराय महोदय ने जो कुछ कहा, वह हाथी के दिखाने के दाँत थे। हम पहली बात की अभी आशा नहीं करते। हमारे देशी राजा यहाँ की सर्वोच्च सत्ता की बात न मानने का कभी साहस कर सकेंगे, ऐसी हमें स्वप्न में भी आशा नहीं करनी चाहिए। तब हमें दूसरी बात ही ठीक मालूम होती है। जैसा कि महात्मा गांधी ने, अपने सबसे ताज़ा एक लेख में, इस संबंध में 'हरिजन' में लिखा है—

"मुझे सर्वोच्च सत्ता को भूलना नहीं चाहिए। इस प्रकार के लक्षण प्रतीत हो रहे हैं कि सर्वोच्च सत्ता राजाओं को दी गई अपनी इस पिछली घोषणा पर पछता रही है कि प्रजा जो सुधार चाहती है, उन्हें देने की राजाओं को पूरी आज़ादी है। इस प्रकार की कानाफूसी ज़ोरों से होती हुई मालूम होती है कि घोषणा का अक्षरशः पालन करना लाज़िमी नहीं। यह रहस्य सभी जानते हैं कि राजाओं में ऐसा कोई भी काम करने का साहस नहीं, जिससे उनके ख़याल से सर्वोच्च सत्ता नाराज़ हो सकती हो। वे ऐसे लोगों से बात भी करना न चाहेंगे, जिनसे उनकी बातचीत सर्वोच्च सत्ता पसंद न करती हो। जब राजाओं पर इतना भारी प्रभाव डाला जाता है, तब यह स्वाभाविक ही है कि बहुत-सी रियासतों में शासकों की भीषण निरंकुशता के लिये सर्वोच्च सत्ता को भी ज़िम्मेदार माना जाय।"

महात्माजी की यह वाणी हैदराबाद-सत्याग्रह के संबंध में भी चरितार्थ होती है। सरकार का मौन-व्रत इस संदेह की पुष्टि करता है कि वह इस प्रकार की अशांत अवस्था जारी रखने में प्रसन्न है, और इसमें उसका कोई छिपा हुआ स्वार्थ है। पर हम इतना बतला दें कि हैदराबाद-आंदोलन को सांप्रदायिकता का रूप नहीं दिया जा सकता, मुसलिम अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये या मियाँ ज़फ़रअली और चौधरी ख़लीकुज़्ज़मा साहब अपनी लीडरी के लिये कुछ भी राग अलापा करें। काश्मीर के मुसलमानों के नेता श्रीअब्दुल्ला ने कहा है—"जब हिंदू, मुसलमान और सिख देशी नरेश आपस के भेद-भाव भूलकर बंबई में एक जगह एकत्र हो सकते हैं, तो फिर क्या वजह है कि देशी राज्यों की प्रजा एक दूसरे की मदद न करे।" आप आगे कहते हैं—"अगर ज़रूरत पड़ी, तो काश्मीर के मुसलमान हैदराबाद को अपने जत्थे भेजेंगे।"

क्या हम उम्मेद करें कि वाइसराय महोदय और भारत-सरकार अपना मौनव्रत तोड़कर हैदराबाद का मामला अपने हाथ में ले लेंगे, और निज़ाम-सरकार की जेलों के प्रबंध की जाँच कराने के लिये एक कमीशन की नियुक्ति की जायगी?

× × ×

७. ग्राम-सहयोग-समितियों का संगठन

ग्रामीण समस्या हमारे लिये दिन-दिन अधिकाधिक आकर्षण की चीज़ बनती जा रही है। लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी महसूस करने लगे हैं कि अब केवल मौखिक सहानुभूति प्रकट करने या ग्रामीण लोगों की बुरी हालत पर आँसू बहाने से काम नहीं चलेगा। इस वक़्त जो भी व्यक्ति ग्राम-सुधार की आवश्यकता मानता है, उसे चाहिए कि वह अपने ढंग पर कोई-न-कोई काम ऐसा करे, जिससे ग्रामीणों को किसी-न-किसी रूप में लाभ पहुँचे। अब तक कितने ही प्रयत्न भिन्न-भिन्न आयोजनाओं के आधार पर इस दिशा में किए गए हैं। ख़ासकर नए विधान के अंदर सभी प्रांतीय सरकारों ने अपने-अपने यहाँ ग्राम-सुधार का कार्य जारी किया है। उसके दो रूप हैं—एक तो ग्रामीणों की बुनियादी आर्थिक दशा में सुधार करना और इसके लिये भूमि-संबंधी तथा क़र्ज़ आदि के क़ानून बनाए गए हैं; दूसरे अन्य रचनात्मक कार्य, जिनसे ग्रामीण लोग अपनी वर्तमान अवस्था में भी ऐसा सुधार कर सकें, जिससे उनका जीवन अब से अधिक सुखी और सुंदर बन सके। इसलिये गाँव-सुधार का कार्य शुरू हुआ है। उसमें गाँव के स्वास्थ्य, सफ़ाई, शिक्षा, अच्छे बीज का प्रबंध, गाँव-पंचायत, पशुओं की नस्ल का सुधार आदि बातों की ओर ध्यान दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रांतीय सरकारें गाँवों की तरक़्क़ी के लिये कुछ और भी उपाय कर रही हैं। पंजाब-सरकार ने खेती की पैदावार की बिक्री के लिये जैसा क़ानून बनाया है, उसी तरह के क़ानून अन्य प्रांतों में भी बन रहे हैं। लेकिन भिन्न-भिन्न प्रांतों की सरकारें अपने-अपने यहाँ गाँवों की उन्नति के लिये जो प्रयत्न कर रही हैं, उसके संबंध में एक सबसे बड़ा दोष यह है कि उन सबमें एकरूपता क़ायम नहीं की जा सकती। यह ठीक है कि प्रांत के अवस्था-भेद से सब जगह एक ही-सी व्यवस्था न की जा सके, लेकिन भारत के गाँवों का स्वरूप, उनके संगठन और व्यवस्था में इतनी समानता है कि सब जगह के गाँवों के लिये एक निश्चित योजना काम में लाई जा सकती है। भारत के गाँवों में एक प्रथा तो अति प्राचीन काल से अभी तक चली आ रही है, और यहाँ के ग्रामीण जीवन का वह आधार है। वह है गाँव-पंचायत की प्रथा। हर गाँव में, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, कुटुंब, थोक अथवा घरों के हिसाब से चुने हुए पंचों की एक पंचायत ज़रूर होगी। इस पंचायत के स्वरूप और इसके कार्य में आजकल काफ़ी सुधार होने की आवश्यकता है, पर अब तक गाँववालों के बहुत-से मामले इन्हीं गाँव-पंचायतों के ज़रिए तय होते रहते हैं। यही पंचायत वास्तव में गाँव का प्रजातंत्र है। अवश्य ही पहले इन पंचायतों के चुनाव और इनके कार्य का बड़ा महत्त्व रहा होगा, पर आजकल तो इनमें दावत, निमंत्रण, बिरादरी के मामले और कभी खेल-तमाशे तथा हाट-मेला-संबंधी मामलों पर ही विचार होता है। आज-कल की समस्याएँ गाँववालों की आर्थिक स्थिति का सुधार, घरेलू उद्योग-धंधे, पैदावार की उन्नति, बिक्री का प्रबंध आदि हैं, जिनके ऊपर गाँव-वालों की भावी उन्नति निर्भर है। सवाल यह है कि क्या गाँव के लोग इन मामलों को स्वयं अपने हाथ में ले सकते हैं? इस बात की आवश्यकता महसूस होती है कि ग्रामीण संस्थाओं का पूर्ण विकास करने के लिये इन कामों का प्रबंध स्वयं गाँववालों को दिया जाय, और पुरानी जर्जरित अवस्था में पड़ी हुई ग्रामीण पंचायतों का पुनरुद्धार किया जाय।

इस संबंध में यू० पी० के न्याय, उद्योग-व्यवसाय तथा-ग्राम-सुधार-विभाग के मंत्री माननीय डॉक्टर कैलासनाथ काटजू ने बड़े व्यवस्थित ढंग के साथ अपने विचार प्रकट किए हैं। आपने ग्रामीण सहयोग-समितियों के निर्माण पर ज़ोर देते हुए ग्रामीण परिपाटी के अनुसार ही सहयोग-समितियों का संगठन करने की आवश्यकता बतलाई है। आपका कहना है, अगर बालिग़-मताधिकार के साथ सहयोग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितियों का चुनाव किया जाय, तो उसमें लोक- चुनाव की परिपाटी न रखकर प्रत्येक कुटुंब का एक

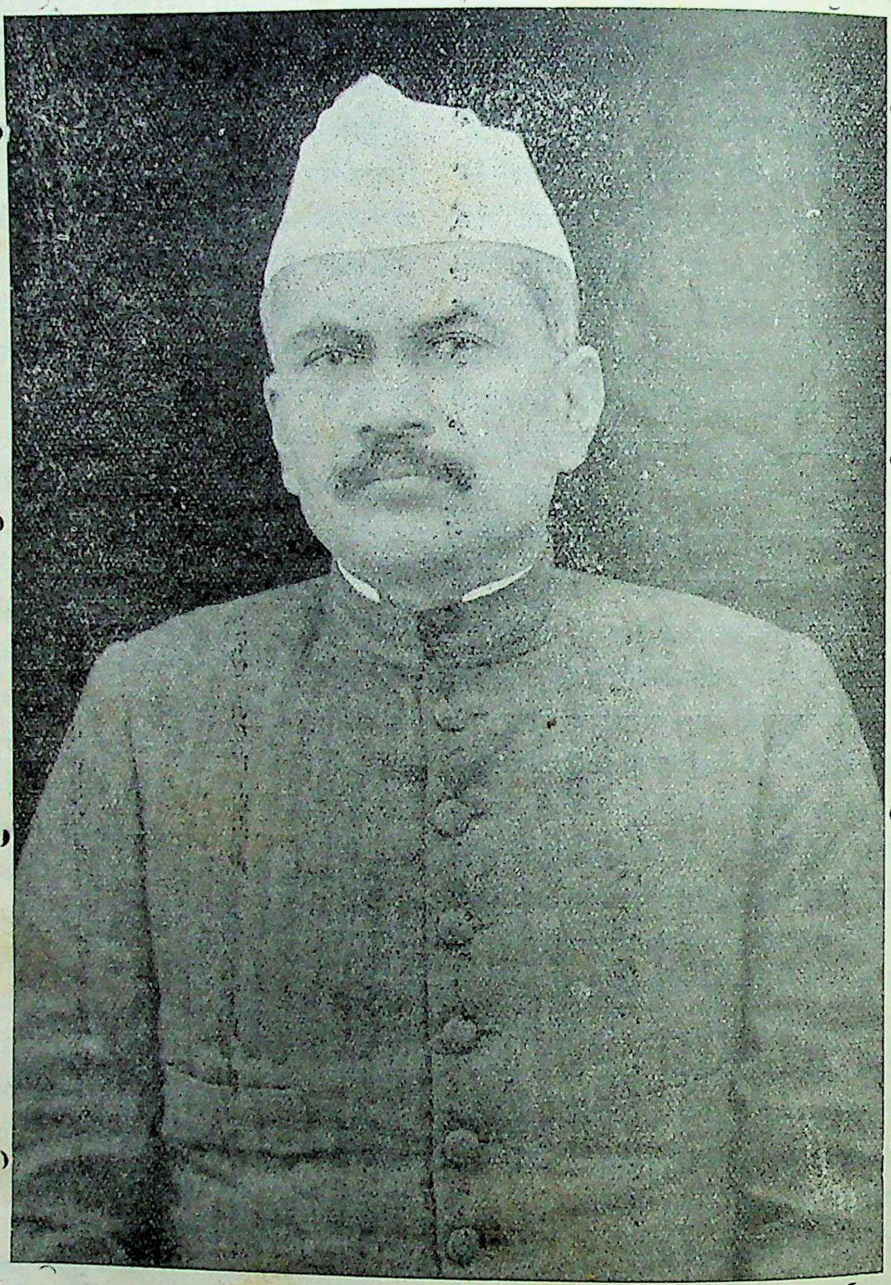

डॉक्टर कैलासनाथजी काटजू

[यू० पी० के न्याय, उद्योग और ग्राम-सुधार-विभाग के मंत्री]

तंत्रवाद की स्वाभाविक बुराइयाँ रहेंगी, इसलिये प्रतिनिधि ग्राम-सोसाइटी में लिया जाय, और कुटुंब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा घर को आज़ादी दी जाय कि वे अपना पंच चुनकर सोसाइटी में भेज दें। इस प्रकार प्रत्येक गाँव में ऐसे पंचों की एक सोसाइटी बने, और उसी में से एक कार्यकारिणी कौंसिल का चुनाव हो। इस कार्यकारिणी के चुनाव में अलग-अलग वर्ग और बिरादरी के लोगों का प्रतिनिधित्व रहे। जहाँ छोटे-छोटे गाँव हों, वहाँ दो-तीन गाँवों को मिलाकर एक सोसाइटी क़ायम की जाय। फिर कई ग्राम-सोसाइटी मिलकर एक संघ बनावें, और संघों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों का एक ज़िला-संघ हो। इन सोसाइटियों को वे सब अधिकार प्राप्त होंगे, जिनकी चर्चा ऊपर की गई है। अर्थात् आजकल ग्राम-सुधार-संबंधी जो रचनात्मक कार्य हो रहा है, उसके अलावा ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति, पैदावार की बिक्री, नए टैक्स लगाने आदि के अधिकार भी ग्राम-सोसाइटी को हासिल होंगे। संक्षेप में डॉक्टर काटजू की योजना का यही मतलब है।

हम इस योजना का स्वागत करते हैं। केवल एक ही मतभेद की बात है। क्या इस प्रकार सहयोग-समितियों के निर्माण होने पर और ग्रामीण-संघ तथा ज़िला-संघ स्थापित हो जाने पर फिर ज़िला-बोर्डों की कोई आवश्यकता रह जाती है? सहयोग-समितियों को जितने व्यापक अधिकार दिए गए हैं, हमारी समझ में, वे ठीक हैं, और आजकल ज़िला-बोर्ड द्वारा जो कार्य किए जाते हैं, वे भी उनके अंदर आ जाते हैं। वास्तव में ये सहयोग-समितियाँ स्थानीय स्वायत्त शासन-संस्थाएँ होंगी, और जब उनका संगठन ठीक ढंग से हो जायगा, तो फिर देहात में अन्य किसी मुक़ाबले की संस्था की ज़रूरत ही नहीं रह जाती। फिर सारी शक्तियाँ इसी आयोजना को सफल बनाने में लगाई जायँ। इससे गाँवों में पंचायती राज्य क़ायम हो जायगा, जिसकी मधुर कल्पना ही अब तक हमने की है। इसलिये हम उक्त आयोजना का स्वागत करते हैं।

× × ×

८. एक भारतीय विद्वान् का स्तुत्य प्रयास

हिंदोस्तान की सैनिक प्रतिभा, जो सदियों से दबी-कुचली थी, अब फिर नई कोपलें लेने लगी है। देश की, सैनिक दृष्टि से, अरक्षितावस्था ने कितने ही विद्वानों की नज़र भारत के सैनिक मसलों की ओर खींची है। सेना के भारतीयकरण की बातें ज़ोरों से चल रही हैं। उपेक्षा और उदासीनता की जगह उत्साह ने तो ख़ैर नहीं, दिलचस्पी ने ज़रूर ले ली है। और तो और, अहिंसात्मक स्वराज्य के नक़्शे में भी सैनिक स्कूलों के लिये एक कोना है। अभी-अभी पंडित जवाहरलालजी ने स्वाधीन भारत पर जापान के हमले को निराधार बताते हुए फ़र्माया है कि उस वक़्त तक हमारा देश गराँ निवाला होगा, जो वह आसानी से निगल न सकेगा। इशारा भारत की बढ़ी हुई सैन्य शक्ति की ओर है। स्वाधीनता और न्याय के झंडे के नीचे स्वाधीन भारत की सैन्य शक्ति अजेय होगी, यह एक आनेवाला सत्य है, सपना नहीं।

भविष्य की यह सुंदर इमारत भूत की भूलों पर न खड़ी हो, इसका ख़याल ज़रूरी है। पराजय की लंबी कहानी के पीछे जो कारण हैं, उनकी छान-बीन करनी होगी। सतह के कारणों से संतुष्ट न हो गहराई में उतरना होगा, और तभी हिंदोस्तान का एक प्रामाणिक सैनिक इतिहास तैयार हो सकेगा।

बड़े हर्ष की बात है कि हमारे देश के प्रसिद्ध विद्वान् ठाकुर गोरखनाथसिंह (बिहार) ने अपने ऊपर इस कार्य का भार लिया है। आप इन दिनों बिहार के शिक्षा-विभाग के डिप्टी-डाइरेक्टर हैं। मिलिटरी साइंस आपकी दिलपसंद चीज़ है—आपकी 'हाबी' है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मढ़ौरा (सारन, बिहार)-ग्राम के एक साधारण राजपूत-परिवार के आप अनमोल रत्न हैं। भारत की जीर्ण-शीर्ण सैनिकता एक क्षत्रिय के हाथों उद्धार पाए, यह उचित ही है।

आप बचपन ही से बड़े ज़हीन हैं। एक सामान्य परिवार की कठिनाइयों के बीच भी आप ख़ूब चमके। १९१५ में मैट्रिक, १९१७ में एफ़्० ए० और १९१९ में बी० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के बाद आपने एम्० ए० और क़ानून की पढ़ाई शुरू की। उसी समय देश पहली बार जगा, और विप्लव की एक लहर सारे देश में दौड़ गई। भावी जीवन के अरमानों और सपनों को ठुकरा आप भी असहयोग-आंदोलन में शरीक हुए। रण-भेरी की पुकार पर एक सैनिक निश्चेष्ट कैसे बैठे?

मगर जब सत्याग्रह रुका, तो ख़ानादारी के तक़ाज़ों और वृद्ध पिता की इच्छाओं के आगे आपको सिर झुकाना पड़ा, और जो व्यक्ति हिंदोस्तान के इने-गिने नेताओं में आगे होता, उसे स्कूल की सब-इंस्पेक्टरी करनी पड़ी। इसी पद से आपने अर्थ-शास्त्र में एम्० ए० की प्राइवेट परीक्षा दी, और आप सर्व-प्रथम आए। पुरस्कार-स्वरूप आपको इँगलैंड में पढ़ाई के लिये स्टेट-स्कॉलरशिप मिला।

कैंब्रिज की बी० ए०-परीक्षा में आप प्रथम श्रेणी में प्रथम आए। यही नहीं, आपने इतने अधिक नंबर पाए, जितने कई वर्षों से किसी को नहीं मिले थे। इँगलैंड के पत्रों में आपकी विलक्षण प्रतिभा की ख़ूब चर्चा रही।

विलायत से लौटने के बाद आप कटक-कॉलेज में अर्थ-शास्त्र के प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए। फिर कुछ दिन बाद इंस्पेक्टर ऑफ़् स्कूल्स और पटना-कॉलेज के अर्थ-शास्त्र-विभाग के प्रधान रहने के बाद आप डिप्टी-डाइरेक्टर बना दिए गए। शिक्षा-विभाग का जितना अनुभव आपको है, उतना शायद ही किसी और को हो।

आपको साहित्य से भी अनुराग है। हिंदुस्तानी के आप कट्टर हिमायती हैं। मगर आपका कहना है, यदि हमें जनता की भाषा बनानी है, तो हमें जनता के पास जाना होगा। हमें वहीं से शब्द लेने होंगे। एक बंद कमरे में कोषों की सहायता से जो मरी हुई ज़बान तैयार होगी, उसे हम चाहे जो नाम दे लें, वह जनता की भाषा न होगी।

आप हिंदुस्तानी का कोष भी तैयार करनेवाले हैं।

आप खरी कहना और खरी सुनना पसंद करते हैं। स्वभाव की स्निग्धता और कोमलता जैसे सैनिकता के आवरण में ढँकी हो। काम-चोर, सुस्त और बात बनानेवाले तो आपके पास जाते काँपते हैं।

हमें दुःख है, आपकी प्रतिभा को, जिससे साहित्य और स्वदेश का स्थायी लाभ हो सकता था, फ़ाइलों के जंगल में फँसा रहना पड़ता है!

× × ×

६. निरक्षरता-आंदोलन और महिलाएँ

हरएक प्रांत की सरकार ने अपने यहाँ शिक्षा का प्रसार किया है। उसमें इस बात पर ख़ास तौर से ज़ोर दिया जा रहा है कि आजकल लोगों की बड़ी भारी तादाद को, जो अपना नाम भी लिखना नहीं जानती और नाम की जगह अँगूठे के निशान से काम चलाती है, इतना अक्षर-बोध तो होना ही चाहिए कि अपने हस्ताक्षर और मामूली तौर से लिखा-पढ़ी का कार्य ख़ुद कर सके। इसके लिये जगह-जगह प्रौढ़-पाठशालाओं की भी आयोजना की गई है। किंतु इस शिक्षा-प्रसार में महिलाओं के लिये क्या व्यवस्था की गई है? वर्धा-शिक्षा-योजना का जो उद्देश्य है, और प्रांतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारें जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये शिक्षा को सर्व-सुलभ बनाने का प्रयत्न कर रही हैं, उसमें महिलाओं की शिक्षा पर भी काफ़ी ध्यान दिया जाना चाहिए। देश के कर्णधार अब यह महसूस करते हैं कि उच्च शिक्षा पर जितना अधिक व्यय किया जाता है, उसकी अपेक्षा साधारण जनता को शिक्षित बनाने पर अधिक ज़ोर दिया जाय, तो उससे राष्ट्र का अधिक हित संपन्न होगा। इसका मतलब यह नहीं कि हमें उच्च शिक्षितों की आवश्यकता कम है। पर एक तरफ़ बानबे फ़ीसदी जन-संख्या को निरक्षर रखकर शेष में से एक या आधी फ़ीसदी लोगों को उच्च दर्जे की शिक्षा देने से राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। हमारे देश में शिक्षा की जैसी प्रगति है, उसके अनुसार यहाँ जितने बालक शिक्षा-प्राप्ति के लिये योग्य समझे जाते हैं, उनमें से केवल आधे ही शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं। सो भी उनमें से अधिकांश तो उस शिक्षा से कोई लाभ भी नहीं उठा पाते, क्योंकि प्राइमरी शिक्षा समाप्त न करके पहले से ही स्कूल छोड़ देनेवाले बालकों को साक्षर कहना बड़ी भूल है। दो-एक वर्ष में ही वे अपनी सारी पढ़ाई भूल जाते हैं। इसके साथ ही जब हम लड़कियों की शिक्षा की ओर दृष्टि डालते हैं, तो हालत बहुत ही शोचनीय मालूम होती है। यहाँ क़रीब एक करोड़ तीस लाख लड़कियाँ ऐसी हैं, जिनकी अवस्था स्कूलों में जाकर शिक्षा प्राप्त करने की है, पर उनमें से केवल सोलह फ़ीसदी स्कूलों में जाती हैं, और उनमें भी अधिकांश तो दो-एक वर्ष पढ़कर ही बिठाल ली जाती हैं। कुछ समाज की रूढ़ियाँ तथा अल्प आयु में विवाह आदि के बंधन ऐसी बातें हैं, जो लड़कियों की शिक्षा में बाधक हैं। फिर भी इससे हम यह नतीजा तो निकाल ही सकते हैं कि हमारे देश में आगे भी सोलह फ़ीसदी से अधिक महिलाएँ साक्षर न हो सकेंगी। और, आजकल वयस्क स्त्रियों में जितनी निरक्षरता है, वह तो क़ायम रहेगी ही। लड़कियों की शिक्षा पर इस देश में जितनी रक़म ख़र्च की जाती है, वह लड़कों की शिक्षा पर ख़र्च होनेवाली रक़म का १४ फ़ीसदी है। अगर सरकार लड़कियों की शिक्षा का पूरा प्रबंध करे, तो उसे साढ़े तेरह करोड़ रुपए वार्षिक और व्यय करने पड़ेंगे, तथा तीन लाख अध्यापिकाओं की और आवश्यकता होगी। पर सरकार की हालत यह है कि वर्ष-भर में उसके यहाँ केवल डेढ़ हज़ार अध्यापक ही तैयार किए जाते हैं। इससे अधिक ख़र्च करने में वह असमर्थ है, तब यह समस्या कैसे सुलझ सकेगी?

हमारी समझ में यह नहीं आता कि सरकार की आर्थिक दशा निकट भविष्य में इतनी अच्छी हो सकती है कि वह शिक्षा की प्रगति असाधारण रूप से बढ़ा सकेगी। तब दो कार्य होने चाहिए—एक तो यह कि जितने बालक या बालिकाओं को शिक्षा दी जाती है, और उसका अधिकांश व्यर्थ जाता है, उसे रोका जाय। कोई बालक या बालिका जो स्कूल में जाकर कुछ वर्ष तक लिखना-पढ़ना सीखे, उसका लाभ उसे जन्म-भर मिलना चाहिए। यह न हो कि दो-चार वर्ष स्कूल में ख़राब किए, और इसके बाद पढ़ना-लिखना छोड़ दिया—दो-एक वर्ष में जितना पहले पढ़ा-लिखा था, उसका सफ़ाया हो गया। इस तरीक़े से शिक्षा पर व्यय की गई रक़म का अधिकांश व्यर्थ जाता है। ज़रूरत इस बात की है कि जितनी बालिकाएँ स्कूलों में दाख़िल हैं, उन्हें कम-से-कम प्राइमरी कक्षा तक पढ़ना लाज़िमी हो। इससे साधारण तौर पर वे घर के काम-काज लायक़ पढ़-लिख जाती हैं। इससे यह होगा कि आगे जिन सोलह फ़ीसदी महिलाओं के साक्षर होने की आज हम आशा रखते हैं, कम-से-कम उतनी प्रगति तो होगी। साथ ही चौरासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़ीसदी महिलाओं का सवाल रह जाता है, उसके लिये इसी प्रकार की वयस्क शिक्षा जारी की जाय, जो पुरुषों के लिये की जा रही है। इसमें कठिनाई यह होगी कि पुरुषों के लिये तो अध्यापक और पढ़े-लिखे लोग तालीम देने को मिल जाते हैं, लेकिन वयस्क महिलाओं के लिये इतनी पढ़ी-लिखी स्त्रियों का मिलना मुश्किल है। निस्संदेह यह कार्य केवल अध्यापिकाओं द्वारा ही पूरा नहीं किया जा सकता, इसके लिये पढ़े-लिखे पुरुषों का सहयोग आवश्यक होगा। शहरों में तो पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ मिल जाती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ ऐसी हैं, जिन्होंने साधारण शिक्षा प्राप्त की है, और उन्हें अपने भरण-पोषण की आवश्यकता के लिये नौकरी की ज़रूरत हैं, पर उन्हें नौकरी नहीं मिलती। ऐसी स्त्रियों को वयस्क महिलाओं के पढ़ाने का कार्य सौंपा जाय। जहाँ-जहाँ—शहर और देहात में—लड़कियों के स्कूल हैं, वहाँ की अध्यापिकाएँ अपने बचे हुए समय में गृहस्थ स्त्रियों को साक्षर बनाने का कार्य करें। बहुत-से रिटायर्ड और बूढ़े अध्यापकों से, जो बेकार बैठे रहते हैं, यह काम लिया जा सकता है। इसके अलावा प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति इतना कार्य तो कर ही सकता है कि वह अपने घर में अथवा पड़ोस और रिश्तेदार या कुटुंब की स्त्रियों को पढ़ा सके। यदि प्रत्येक पढ़ा-लिखा आदमी यह प्रतिज्ञा कर ले कि उसे अपनी स्त्री, बहन या लड़की को निरक्षर नहीं रखना है, तो वह इसके लिये बहुत कुछ कार्य कर सकता है। ज़रूरत इस बात की है कि इस तरह की भावना जाग्रत् करने के लिये साक्षरता का आंदोलन ज़ोरों के साथ हो। केवल सरकार की सहायता के बल पर ही हम निरक्षरता का अंत न कर सकेंगे, इसके लिये सार्वजनिक आंदोलन का आश्रय लेना पड़ेगा।

हिंदी-प्रेमियों को सूचना

आपको जब कभी हिंदी की किसी पुस्तक की आवश्यकता हो, तो आप इधर-उधर न भटककर सीधे हमारे यहाँ एक पत्र लिख दें। हिंदोस्तान के सभी गण्य-मान्य प्रकाशकों की पुस्तकों का हमने समुचित प्रबंध कर लिया है।

और

राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल ने निम्न-लिखित पुस्तकें अभी-अभी निकाली हैं। पुस्तकों की उपयोगिता उनके नाम से ही आपको मालूम हो जायगी। प्रत्येक मनुष्य के पास इनकी एक-एक कापी होनी चाहिए—

१. राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्रप्रसाद १॥), २)
२. हमारे नेता ... ... १)
३. गाँवों के उद्योग-धंधे ... ... १)
४. देश-विदेश के गाँव ... .. १)
५. हिंदू-मुस्लिम-समस्या ... ... ॥)
६. हम कैसे पढ़ें? ... ... ॥)

और भी बहुतेरी पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होंगी। पूरी जानकारी के लिये लिखिए—

मैनेजर राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
(पटना-पब्लिशर्स)
कदमकुआँ, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गौरांग महाप्रभु ईश्वर-प्रेम-प्रचार में देश-भ्रमण को निकले थे

यह बड़ी और विचित्र दुनिया उस सर्व-शक्तिमान् भगवान का सबसे अच्छा परिचय है। जो घर के भीतर हमेशा बंद रहता है, वह भला उसके बारे में कितना जान सकता है ? घर छोड़कर देश-विदेश में भ्रमण करने से ही आपको मालूम होगा कि उसकी सृष्टि कितनी मनोहर, कितनी विचित्र है, और उसे देखकर आप मुग्ध हो जायँगे। प्रत्येक धर्म-प्राण हिंदू का कर्तव्य है कि वह तीर्थों का दर्शन करे।

नवद्वीप—श्रीगौरांग महाप्रभु की जन्म-भूमि है। कलकत्ते से ६० मील दूर, पतित-पावनी गंगा के किनारे पर बसी है। वैष्णव-धर्म का प्रधान तीर्थ तथा बंगाल में प्राचीन संस्कृति का उद्‌गम स्थान है। प्रत्येक हिंदू के दर्शन योग्य है।

रेलवेज

भारत का सबसे सस्ता यातायात साधन

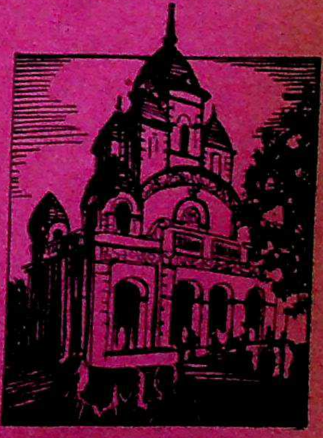

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[बदस्त अवाम फ़रोख़्त के लिये]

नमूना नंबर १७०

फ़ार्म इत्तिलानामा हस्ब दफ़ा ११ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा संयुक्त प्रांत

बइजलास मिस्टर ठाकुरप्रसाद दुबे स्पेशल जज सेकंड ग्रेड, जौनपुर

मुक़दमा-नंबर २९ सन् १९३९ ई०

ता० मुक़र्रह २८—८—३९

१. हरगाह हरनाथसिंह २. विजयबहादुरसिंह ३. मु० रजवंती बालिग़ान ४. ईशननरायनसिंह पिसर नाबालिग़ दुखरनसिंह बवेलायत मु० कमदेया कुँवर मादर ख़ुद ५. सुखरामसिंह पिसर नाबालिग़ हरनाथसिंह बवेलायत पिदर ख़ुद ६. मु० हुबराजी ज़ौजा हरनाथसिंह साकिनान मौ० समोधपुर प० उगली, ज़ि० जौनपुर सायलान की ओर से एक दरख़्वास्त हस्ब दफ़ा ४ ऐक्ट जायदादहाय मक़रूज़ा पेश हुई है।

लिहाज़ा इस तहरीर की रू से हस्ब दफ़ा ज़िम्नी १ दफ़ा ११ ऐक्ट मज़कूर इत्तिला दी जाती है कि उस जायदाद को जिसका ब्योरा नत्थी किए हुए ज़मीमों में दर्ज है, दरख़्वास्त देनेवाले ने हस्ब दफ़ा ८ या क़र्ज़दारों ने हस्ब दफ़ा १० सायलान मज़कूर की जायदाद बताया है।

अगर कोई शख़्स जायदाद मज़कूर पर कोई दावा रखता हो, तो   से जो इस इश्तिहार के संयुक्त प्रांत के गज़ट में छपने की तारीख़ है, तीन मास के भीतर अपने हक़ों के संबंध में, उस हाकिम के आगे अपनी अर्ज़ी पेश करे, जिसके हस्ताक्षर नीचे दिए हुए हैं।

ज़मीमा (क)

क़र्ज़दार के हक़ मालिकाना आराज़ी के मुताल्लिक़

नंबर सिलसिलेवार	ज़िला	नाम जायदाद	मौज़ा मय नंबर बंदोबस्त व मोहाल	दरख़्वास्त देनेवाले की मुस्तक़िल व क़ाबिल विरासत और क़ाबिल इंतक़ाल हक़ि़यत का ब्योरा	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ि़यत का विस्तार जो रजिस्टर दफ़्तर साहब कलक्टर में दर्ज है	दरख़्वास्त देनेवाले की हक़ि़यत पर मौजूदा तशख़ीस मालगुज़ारी
१	२	३	४	५	६	७
१	जौनपुर प० उगली	ज़मींदारी	१६ आना समोधपुर मोहाल रामजियावनसिंह		१६ आना	
२	,,	,,	१ गंडा २ कौड़ी लच्छीपट्टी		१ गंडा २ कौड़ी	
३	,,	,,	४ ,, ३ ,, मित्रसेनपुर		४ ,, ३ ,,	
४	,,	,,	४ ,, ३ ,, ४ दंत के निस्फ़ मौ० बिरवल		४ ,, ३ ,, ४ दंत के निस्फ़	
५	,,	,,	१४ ग० २ कौ० ३ दंत ४ रतन कोटला		१४ ग० २ कौ० ३ द० ४ र०	
६	,,	,,	१४ ग० २ कौ० ३ दंत ४ रतन मुहम्मदपुर		१४ ग० २ कौ० ३ द० ४ र०	
७	,,	,,	।) डीह अशरफ़ाबाद		।)	
८	,,	,,	२ पाई १३ केरांट जुनेदपुर		२ पाई १३ केरांट	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़मीमा (ख)

क़र्ज़दार की जायदाद जो भूमि-संबंधी मालिकाना हक़ों को छोड़कर हस्ब दफ़ा ६० ज़ाब्ता दीवानी सन् १६०८ ई० .कुर्क़ और नीलाम हो सकती है।

सिलसिले का नंबर	जायदाद की क़िस्म	दरख्वास्त देनेवाले की हक़िक़यत की वसअत (विस्तार)
१	२	३
१	बाग़ समोधपुर प० उगली ज़ि० जौनपुर	१३३६/½ -४३, ३४४५/१ -३३, २४५२/½ -४७, ३ गाटा/१-२३
२	बाग़ मौ० डीह अशरफ़ाबाद प० उगली ज़ि० जौनपुर	१/१० -१, २०६/-३६, २६३/-३६, ८३७/२०१४/४ -८, ४ गाटा/-८१
३	आराज़ियात सीर मौज़ा समोधपुर प० उगली जौनपुर	५२ गाटा
	नंबरान जिन पर अवधनार्थसिंह का क़ब्ज़ा मुर्तहिनाना है	४५७५/१ -५६, १३५६/-२, १४०५/-१४, १५४५/-३२, १५४६/१ -३२, १७६७/१ -२०, २७०७/-४४, २८०२/२ -३१, २८२२/१ -२०, १८२६/-७४, २११३/—,
	आराज़ियात ख़ुदकाश्त समोधपुर	१४ गाटा
	आराज़ियात सीर ,,	१० गाटा/३-३३
	आराज़ियात सीर मौ० कोटला	११ गाटा नं० ३५/४ पर अवधनार्थसिंह का क़ब्ज़ा मुर्तहिनाना है
	आराज़ियात सीर डीह अशरफ़ाबाद	१३ गाटा/१-२६
	,, ख़ुदकाश्त ,,	६ गाटा/१-४
	आराज़ियात सीर व ख़ुदकाश्त मौज़ा जुनेदपुर	६ गाटा/२-४

मिनजुमला नंबरान मज़कूर जिन पर महाजनान का क़ब्ज़ा मुर्तहिनाना है

नाम मौज़ा	क़ब्ज़ा व नाम महाजन	नंबर गाटा
समोधपुर	अभयमानसिंह	१०५०/-५, १०५१/१ -१३, १०५२/१ -१३, ११५२/१ १३
,,	रामखेलावनसिंह	१४६८/-६०
,,	रामनरायन सोनार	२४६६/-६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नाम मौज़ा	क़ब्ज़ा व नाम महाजन	नंबर गाटा
समोधपुर	रामनेवाज	२३५२/-३२
डीह अशरफ़ाबाद	आद्याशंकर	१५६५/-३८
,,	रामउसम्पतसिंह	४३३/-४४ ६७४/-५
,,	गुदरीसिंह	७३०/-६ ७७३/१ -३१ ७७३/२ -१६
,,	हरखनरायनसिंह	१८६१/२ -३०
जुनेदपुर	आद्याशंकर	४७६/-१७ ४७५/-१३ ४७४/-१७ ४७८/-३६ ६५६/-२८

मुंसरिम स्पेशलजज सेकंड ग्रेड, जौनपुर

हिंदी का सबसे सस्ता मासिक पत्र

नोक झोंक

संपादक—पं० केदारनाथ भट्ट एम्० ए०
पं० ओमप्रकाश शर्मा बी० ए०

हास्य-रस-प्रधान सचित्र मासिक पत्र

विशेषताएँ

(१) हास्यरस और मनोरंजन के चटपटे लेख और कविताएँ। (२) मनोहर कहानियाँ। (३) उर्दू की शायरी। (४) मज़ेदार चुटकुले और पहेलियाँ। (५) अजीब दुनिया। (६) सरस्वती और देशदूत की पहेलियों का हल। (७) अपनी इनामवाली क्रासवर्ड पहेली। (८) सामाजिक और साहित्यिक व्यंग और कार्टून। (९) सचित्र सिनेमा-संसार। (१०) धारावाहिक रोचक उपन्यास। (११) वामंडल।

पृष्ठ-संख्या कम-से-कम ३६। ह्वीलर के सभी बुकस्टाल्स पर मिलता है।
वार्षिक मूल्य केवल एक रुपया एक अंक का मूल्य डेढ़ आना।

आज ही ग्राहक बनिए। नमूने के लिये टिकिट भेजिए।

एजेंटों की सर्वत्र आवश्यकता है

प्रकाश ब्रदर्स, मैनेजर नोक झोंक, बाग मुज़फ़्फ़रखाँ, आगरा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विराट् आयोजन ! विराट् आयोजन !!

राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन के लिये

प्रशंसनीय प्रयास

हिंदी-भाषा के भांडार में अभी राष्ट्रीय पुस्तकों की कितनी कमी है, यह सभी स्वदेश-प्रेमी सज्जनों को विदित है। इस अभाव की पूर्ति के लिये हमने प्रयत्न कर दिया है, और २५ पुस्तकें प्रति वर्ष निकालने का संकल्प किया है। नीचे अपनी कुछ किताबों के नाम हम दे रहे हैं—

देहात-साहित्य-माला

१—गाँव-सुधार कैसे हो ? ॥), १)
२—गाँव के उद्योग-धंधे ॥|), १=)
३—देहात की बातें ३), ३॥)
४—देश-विदेश के गाँव ॥|)
५—वोट का सवाल ॥)
६—देहात की विभूतियाँ ॥)
७—हिंदू-मुस्लिम-समस्या ॥)

प्रौढ़-साहित्य-माला

१—हिंदोस्तानी पोथी ॥)
२—हिंदोस्ताँ हमारा (नाटक) ॥)
३—नेता या रहनुमा ॥)
४—देश की बात ॥)
५—जाहिल कैसे पंडित बना ? ॥)
६—साक्षरता का प्रचार कैसे हो ? ॥)
७—खेती ॥)

राष्ट्रीय पुस्तकमाला

१—देश-रत्न डॉ॰ राजेंद्रप्रसाद १)
२—विकास (२ भाग, सामाजिक उपन्यास) ४), ५)
३—मन की मौज (राष्ट्रीय कविताएँ) ॥), ॥=)
४—रानी भवानी (राजनीतिक नाटक) ॥=), १=)
५—सुदामा (राजनीतिक नाटक) ॥), १)
६—रजकण (राष्ट्रीय काव्य) ॥), १)
७—तुम क्या हो ? (सामाजिक और राष्ट्रीय) ॥|), १|)
८—हमारे नेता ... ... १)
९—नाजी हिटलर ... ॥)
१०—फासिस्ट मुसोलिनी ... ॥)
११—समाजवादी स्टेलिन ... ॥)
१२—समाजवाद ... ... १)

स्थायी ग्राहकों को सब पौने मूल्य में ! शीघ्र ही ग्राहक बनकर २-४ पुस्तकें मँगाइए !!
भला आप इन पुस्तकों की उपेक्षा कैसे करेंगे ? शीघ्रता कीजिए, अन्यथा
दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

हिंदी की सब प्रकार की पुस्तकें हमसे मँगाइए—

व्यवस्थापक, राष्ट्रीय-प्रकाशन-मंडल

या

पटना-पब्लिशर्स

नवलकिशोर रोड, बाँकीपुर (पटना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक

हिंदी के क्रांतिकारी लेखक

श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुगल-साम्राज्य के पतन-कालीन उसके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीखाँ के मातहत नाटौर-नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहखर्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के जुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर ! हृदयग्राही !! सरस !!!

महारानी दुर्गावती

[राष्ट्रीयता से ओतप्रोत काव्य]

लेखक, पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

भारत की अमर वीरांगना महारानी दुर्गावती के पावन चरित्र की काव्यमय गुण-गाथा का हिंदी में आज तक एकांत अभाव रहा है। किंतु हिंदी-संसार के सुपरिचित कवि और पत्रकार 'मस्त'जी ने सुंदर और वीर-रस-पूर्ण काव्य लिखकर इस कमी की प्रशंसनीय पूर्ति की है। पुस्तक का काव्य इतना रोचक और हृदयग्राही हुआ है कि ग्रामोफ़ोन-कंपनी, बंबई ने इसका रिकार्ड [नंबर एफ़० टी० ४८८४] तक बना डाला है, और भारत के घर-घर में इस वीरांगना की यश-कहानी गूँज रही है। मूल्य ।=)

पुस्तक शुरू करने पर बिना समाप्त किए आपकी तबियत न मानेगी। हाथ-कंगन को आरसी की क्या आवश्यकता ? हिंदी के राष्ट्रीय-साप्ताहिक 'कर्मवीर' और मासिक 'साहित्य-संदेश' की समालोचनाएँ पढ़कर स्वयं निर्णय कीजिए कि यह काव्य कैसा है ?

'कर्मवीर' [खंडवा, ३ जून, ३९]—जीवित चित्र आँकना साधारण कलाकार के बूते भी सहज हो जाता है, किंतु अतीत के मृत—इतिहास को सजग कर देने की अँगुली कुछ विशेष सजग प्रतिभा-कण माँगती है। मध्यप्रांत के श्रेष्ठ कवि श्रीदेवीदयाल चतुर्वेदी का यह खंड-काव्य कवि को इसी बाज़ू का सिद्ध प्रमाण है। कोमलकांत भावना को राष्ट्रीयता के ही रंग में रँगा गया है, इसलिये रचना आज के युग-धर्म के साथ है। चमत्कार-पूर्ण कथानक को सरल, सहज वाणी के साथ सरस अभिव्यक्ति भी मिली है, जिससे पुस्तक काफ़ी रोचक हो गई है।

'साहित्य-संदेश' [आगरा, जून, ३९]—'मस्त'जी ने अमरकंटक और रेवा-तट के जो दृश्य खींचे हैं, महारानी दुर्गावती के बचपन का जिस ढंग से वर्णन किया है, और युद्ध के समय पर रानी द्वारा जिस ढंग से सैनिकों को प्रोत्साहित कराया है, वह उनकी कल्पना और भाव-प्रवणता से बहुत सुंदर बन पड़ा है। अकबर की कूटनीति का भी बहुत मोहक चित्र खींचा गया है।

शीघ्र मँगाइए !

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! बिक रहा !! शीघ्र मँगाइए !!!

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

'गिरीश' जी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफ़ी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, वन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १।।) मात्र।

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के कागज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोषप्रद होने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस,
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712.

पहाड़ी सान्यालकी स्त्री, मीरा सान्याल को कौन नहीं जानता ! फैशन की साड़ियां चुननेमें उनकी जैसी सुरुचि है वैसी ही चायके लिये भी है। उनका कहना है :

“चाय व्यवहारिक मंडलीकी सुन्दरता है”। सुरुचिपूर्ण महिलाओं द्वारा बनी चायसे बढ़कर और क्या हो सकता है ? चाय ही आधुनिकता का विशेषत्व है !

आधुनिक महिलायें चाय पसन्द करती हैं

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित IK. 129

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...angri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली अष्टवर्ग भावप्रकाशोक्त

(१) जीवक कूर्चिकाकारो मधुरः (२) ऋषभो वृषशृङ्गवत् (३) शुष्कार्द्रकसन्निभः कन्दोलता जातः सपाण्डुरः (४) मेदा महामेदा का लक्षण ।

प्रसिद्ध महानुभावो तथा वैद्यबंधुओ ! यह किसी से भूला नहीं कि निर्बलता, दमा, पुरानी खाँसी, कफ़ की व्याधियों, श्वास-यंत्र-संबंधी रोग तथा यक्ष्मा-जैसी रोगराट् बीमारियों को मर्दन करनेवाली "च्यवन-प्राश" रसायन में हिमालय पर्वत के अंचल में लहरानेवाली बहुपयोगी किंतु दुर्लभ इन "अष्टवर्ग" की ओषधियों का ही विशेष भाग है । अतः इनको हम बड़ी कठिनता से प्राप्त करते हैं । अपनी इच्छानुसार मँगा लें ।

असली अष्टवर्ग के गुण

अष्टवर्गो हिमः स्वादु बृंहणः शुक्रलो गुरुः ।
भग्नसंधानकृत्काम-बलालं बलवर्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाह - ज्वर-प्रमेह-क्षय-प्रणुत ।

अष्टवर्ग शीतल, मीठा, रसायन, वीर्य बढ़ानेवाला, टूटे स्थान को जोड़नेवाला, काम-शक्ति-वर्द्धक, बल को क़ायम रखनेवाला तथा बलवर्धक है, और वात-पित्त, खून-विकार, तथा तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय का नाश करता है । वैद्य मित्र ! इन उत्तम रासायनिक ओषधियों का दर्जा कितना ऊँचा है, यह भी आपसे भूला नहीं । ऐसी गुणकारी जड़ी-बूटियों के मेल से जो दवाइयाँ तैयार की जाती हैं, उनसे बीमारों को कितना लाभ हो सकेगा, इसका अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं । बहुत-सी फ़ार्मेसियाँ नक़ली अष्टवर्ग सस्ता बेचकर वैद्यक को बदनाम कर रही हैं, उनके धोके से बचें, और हमारे अष्टवर्ग को एक बार आज़माकर परीक्षा करें । मूल्य १६) रु० सेर, डाक-व्यय अलग ।

मृत संजीवनी दवा

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड अनेक रोगों पर रामबाण ओषधि—

अमृत के समान गुणकारी नौ ओषधियों के योग से तैयार की गई यह अकेली दवा शारीरिक सामर्थ्य को क़ायम रखनेवाली तथा मस्तिष्क-शक्ति को बल प्रदान करनेवाली, किंतु अजीर्ण, दस्त, उल्टी, हैज़ा, अरुचि, श्वास, खाँसी, ज्वर, हिचकी, आधाशीशी, उदर-शूल, कमर का दर्द, सूजाक, गर्मी, बिच्छू आदि ज़हरीले जानवरों का दंश इत्यादि अनेक रोगों में अपूर्व गुणकारी है । हरएक को सफ़र में और घर में हर समय जेब में रखनी चाहिए । सफ़र में या रात के वक्त, तथा छोटे गाँवों में, जहाँ समय पर वैद्य या डॉक्टर और हकीम का मिलना मुश्किल होता है, बड़ा काम देती है । प्रसिद्ध महानुभावों तथा चिकित्सक समुदाय ने भी इसकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है । एक बार आज़माकर परीक्षा कीजिए, सेवन-विधि, अनुपान व पथ्य-विधि साथ में भेजी जायगी । छोटी शीशी का मूल्य ॥=), बड़ी शीशी का मूल्य १) डाक-व्यय अलग ।

मैनेजर, अष्टवर्गप्रयोगशाला फ़ार्मेसी (Regd) श्रीहनुमत-निवास, चित्रकूट (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

शुभ   लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरबों-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सर्वइच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई; म..र आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह' यंत्र—

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हरएक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति वग़ैरह हरएक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा तथा आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है,

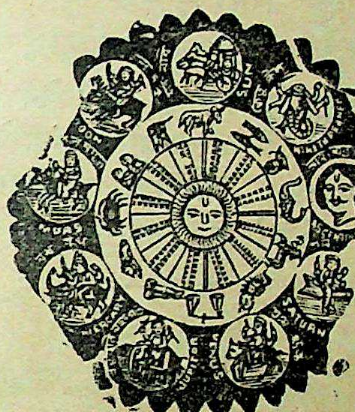

इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३), सोने का ९॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाई, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवार बी० ए० क्लास, वेलिंगडन कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं०जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव सभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपा कर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० घड़ियाँ सिर्फ़ ३॥ ≈) में

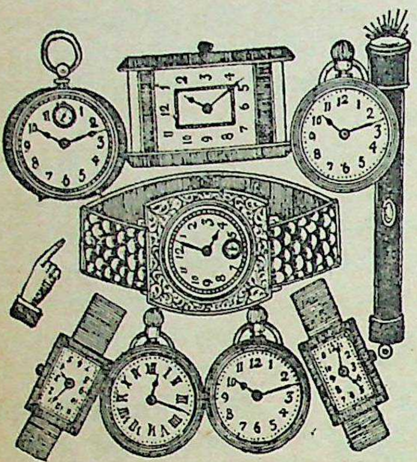

सात डमी रिस्ट-वाच, दो डमी पाकिट-वाच और एक अदद मज़बूत मशीनरी का सच्चा वक्त. देनेवाला जर्मनी टाइमपीस चाबी ३० घंटा, गारंटी १२ साल, ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर बिलायत से बड़ी भारी संख्या में मँगवाई हैं। सिर्फ़ दस हज़ार घड़ियाँ इस रियायती क़ीमत पर बेचने का फ़ैसला किया है। इसलिये जल्दी करें, वरना यह मौक़ा हाथ से निकल जायगा। घड़ियों के साथ एक फ़ौंटेनपेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब, एक असली ठंडी ऐनक, एक ख़ूबसूरत मोतियों का हार मुफ़्त दिया जायगा। महसूल-डाक व पैकिंग अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस।

मिलने का पता—

जर्मन वाच कंपनी, पोस्ट-बक्स नं २७, (S. M. L.) अमृतसर

AMRITSAR (India)

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ास्फ़ोरस क्रीम

गुह्यांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है। ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है। न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का ख़याल। अधिक प्रशंसा व्यर्थ। यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी। मूल्य केवल २); डाक-महसूल ।≋)

पता——मैनेजर ग्लोब-फ़ार्मेसी, ग्लोब-बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. अनुभूति (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल ११३

२. विधि-विपर्यय (कविता)—[लेखक, श्रीठाकुर गोपालशरणसिंह ११४

३. सुख (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ११४

४. हिंदू-समाज तथा धार्मिक विकास—[लेखक, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेव-विहारी मिश्र ११५

५. अंत में (कहानी)—[लेखिका, कुमारी रूपकुमारी वाजपेयी बी० ए० ... १२३

६. काव्य-कला की कसौटी और उसके मुखर आलोचक—[लेखक, अध्यापक चेतराम शर्मा, कन्या-महाविद्यालय, जालंधर नगर १२८

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन'

आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

চ্যবনপ্রাশ ৩্ সের

অধ্যক্ষ মথুর বাবুর

মকরধ্বজ ৪্ তোলা

শক্তি ঔষধালয়-ঢাকা

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।

कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।

कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी

बंगाल से बाहर की शाखाएँ:—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मद्रास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच:—२, श्रीरामरोड, लखनऊ इत्यादि।

ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में

मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।

अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, ललमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय, चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिष्ट और फ़िज़ि़सियन

पत्र और मनीआर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्)

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पृष्ठ

७. मलेंद्रिय और उसकी रक्षा—[लेखक, श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी० ... ... १३३
८. कवि और चित्रकार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत रामचंद्र मित्तल ... १४४
९. महाराज रणजीतसिंह—[लेखक, श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह १४५
१०. स्वस्तिका की पहेली (सचित्र)—[लेखिका, श्रीमती प्रभावतीदेवी ... १५१
११. प्रतिशोध (कहानी)—[लेखिका, श्रीमती डी० बी० बैजल एम्० ए० ... ... १५६
१२. शहनाई (कविता)—[लेखक, श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' १६१
१३. तब और अब—[लेखिका, कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न १६३
१४. चंपानगरी—[लेखक, ज्योतिषाचार्य श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास १६९

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको १।) की वी० पी० से आपके आने-वाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियों इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर १।) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

जे० बी० मंघाराम कम्पनी का
इनर्जी फुड बिस्कुट

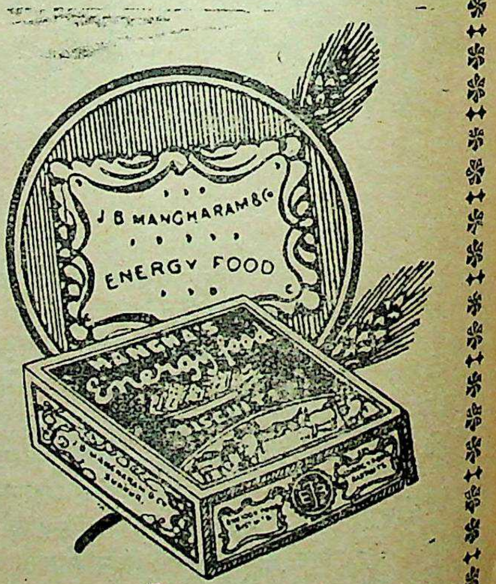

बच्चों को तंदुरुस्त और ताक़तवर बनाने के लिये लाभदायक साबित हो चुका हैं, क्योंकि इसमें (Condensed Milk) कन्डेंस्ड मिल्क, (Glucose) गुल्कोज़ और दूसरी कई चीज़ें इस्तेमाल की गई हैं। इसे बच्चे ख़ुशी से खाते हैं।

जे० बी० मंघाराम कं० सक्खर (सिन्ध)

मिलने का पताः—लखनऊ-एजेंट—ए० एम० चंदवनी, ३२, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ।
A. M. Chandwani, 32, Aminabad Park, Lucknow.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ
१५. मुसलिम लीग की उलटी सूझ (व्यंग्य-चित्र) १७४
१६. सुधा-चित्रावली १७५
१७. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल', श्रीयुत हनुमान शर्मा चौमूँ, श्रीयुत व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत गोविंदवल्लभ त्रिपाठी, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास, कुमारी शीलवती कोचर, कुमारी विद्या-कुमारी भार्गव, श्रीमती मनोरमा टंडन और श्रीमती कमलादेवी जैन ... १७६
१८. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत श्री०, श्रीयुत श्यामविहारी शुक्ल 'तरल' और श्रीयुत 'उमेश' १९१
१९. कुसुम १९५
२०. धारा १९६
२१. युद्ध के ढोल बजने लगे—[लेखक, श्रीवेंकटेशनारायण तिवारी एम्० ए०, पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी १०४

पागलपन

तथा मूर्च्छा-रोग की दवा

यह दवा नहीं, जंगली जड़ी है। यदि आप अनेकों दवा कराकर निराश हो चुके हैं, तो भी इसकी परीक्षा करें। ८-१० खूराक से पूरा लाभ मालूम होगा। वेफायदा साबित करने पर दूना मूल्य वापस।

खूराक पूरी मात्रा मू० ५) रु०, २० मात्रा ३) रु०, १० मात्रा २) रु०। पो० पै० माफ़।

प्राप्ति-स्थान—
बिहार-एजेंसी ऐंड ट्रेडिंग हाउस
कदमकुआँ, पटना

सफ़ेद बाल काला बने

ब्लैक्सो तेल ही वह एकमात्र चीज़ है, जिसके उपयोग से सफ़ेद बाल हमेशा के लिये जड़ से काला हो जाता है। आपकी दूसरी सारी कोशिशें बेकार होंगी। ब्लैक्सो तेल का उपयोग आज ही से शुरू कीजिए। यह सफ़ेद बालों की चिकित्सा का सबसे नया और बढ़िया, अजीब आविष्कार है, जो एक जर्मन डॉक्टर का किया हुआ है। फ़ी बोतल का मूल्य १॥), डाक-ख़र्च अलग।

भद्दे बालों की सफ़ाई

केवल ३ मिनट में "डेस्ट्रायर" सब भद्दे और बेक़ायदा बालों की जड़ से सफ़ाई कर देता है, और चमड़ा रेशम-जैसा मुलायम कर देता है। डेस्ट्रायर सबसे ज़्यादा वेख़तरे काम में लाने लायक़, जल्द और हमेशा के लिये बालों का सफ़ाया करनेवाला है। नाटक और सिनेमा के प्रसिद्ध नट और नटी इसी को काम में लाते हैं। मूल्य प्रति बोतल ३), डाक-ख़र्च अलग।

पता—मैनेजर, मार्शल ब्रादर्स बच्छोवाली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. शतरंज—[मियाँ वसंतसिंह जागीरदार की कृपा से प्राप्त ११३

(ख) व्यंग्य

२. मुसलिम लीग की उलटी सूझ!—[चित्रकार, श्रीयुत शिक्षार्थी ... १७४

(ग) सादे

३. श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी० ... ... १३३

४. स्वस्तिका का आदि रूप १५१

बल व वीर्य बढ़ानेवाली

मदनमंजरी

ये गोलियाँ पाचन-शक्ति को सुधारकर दस्त साफ़ लाती हैं, रक्त को शुद्ध करके बढ़ाती हैं, और धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, अशक्ति, शिथिलता वग़ैरह को नष्ट करके बरबाद जीवन को पुनः हरा-भरा बना देती हैं। फ़ी डि० १) एक रुपया

राजवैद्य नारायणजी-केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ—निगम-मेडिकल-हॉल, अमीनाबाद-रोड फ़तेहगंज

बनारस—राधेलाल ऐंड संस, चौक

हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों-सहित

द्वितीय वार छपकर तैयार है

यदि आप विना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य, शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है, यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा-लाटरी वग़ैरह से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों, तो आज ही एक प्रति हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान विना किसी गुरु की मदद के आपको भले प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य-देशीय समग्र सामुद्रिक-शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में, रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित, भले प्रकार वर्णित है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी, परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी न छपी होने से धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करो, पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रह गई हैं, फिर हाथ न आवेंगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी; मूल्य सिर्फ़ ४) रुपए हैं। डाक-महसूल ॥) अलग है।

पता—मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी-प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम [सी० आई०]

५५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिदायक सिद्ध यंत्र—जिस सुंदरी को आप चाहते हैं, वह पत्थरहृदया क्यों न हो, इस शक्तिशाली यंत्र द्वारा एक क्षण में आपके पास आ जायगी। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबा २)

लक्ष्मी-यंत्र—यह व्यवसाय में उन्नति, मुक़दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में पास, नवग्रहों की शांति और सौभाग्यवान् बनाता है। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबे का २)। झूठा साबित करने पर ५५०) इनाम!

श्रीमहामुनि-आश्रम नं० २१०, पोस्ट क़तरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

५. नाज़ियों द्वारा व्यवहृत स्वस्तिका का रूप १५१
६. हिंदुओं द्वारा व्यवहृत स्वस्तिका का रूप १५२
७. नए बहीखाते पर स्वस्तिका का चिह्न ... १५३
८. दार्जिलिंग में वेधशाला पहाड़ी पर अंकित स्वतिका का चिह्न... ... ... १५४
९. गुजरातियों के विवाह के अवसर पर स्वस्तिका से सुसज्जित बल्ब... ... १५४
१०. श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास १६६
११. साम्यवादी-दल के प्राण और हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, आचार्य नरेंद्रदेवजी ... १७५
१२. बंगाल के प्रसिद्ध तैराक मिस्टर रोबिन चटर्जी १७६
१३. हैदराबाद-सुधार के संबंध में विचार करने के लिये उपस्थित आर्य-समाजी ... १७६
१४. पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार १७७
१५. कुमारी विद्या छगनलाल १७८
१६. कुमारी शीलवती कोचर १८४
१७. माननीय बाबू संपूर्णानंदजी २०१
१८. आचार्य रामचंद्र शुक्ल २०३

---

१५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिवाले सिद्ध यंत्र

(१) वशीकरण यंत्र—इस यंत्र के प्रभाव से दोस्त या दुश्मन पुरुष या स्त्री कैसी ही कठोर-हृदय क्यों न हो, शीघ्र आपके वश में हो जायगी। मूल्य चाँदी का २।।), असली सोने का ६) रु०

(२) महालक्ष्मी यंत्र—इस यंत्र से बुरे ग्रहों का नाश होकर, बेकारों को नौकरी, नौकरीवालों को तरक़्क़ी, व्यापार में लाभ, लाटरी इत्यादि में सफलता प्राप्त होकर भाग्योदय होता है। मूल्य चाँदी का २।।), असली सोने का ६)

ये यंत्र शास्त्रोक्त और परीक्षित हैं, इन यंत्रों से कार्य शीघ्र पूर्ण होते हैं। झूठा साबित करने पर १५०) इनाम।

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम

पो० कतरीसराय (गया)

सफ़ेद बाल काला

ख़िज़ाब से नहीं, हमारे (आयुर्वेदिक) वीरेंद्र-मोहनी सुगंधित तैल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफ़ेद बाल जड़ से काला हो जाता है। जिन्हें विश्वास न हो, दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें! एकाध बाल पका हो, तो २); इससे अधिक पका हो, तो ३।); या कुल पक गया हो, तो ४।) का तैल मँगाएँ। "नक़्क़ालों से सावधान"!

पता—बी० के० पी० फ़ार्मेसी

पो० कतरीसराय (गया)

सुखसंचारककम्पनीमथुराकी दवाइयां

सुधासिन्धु

कफ,खांसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी अतिसार आदि की स्वादिष्ट सुगंधित दवा की० ॥)

दद्रुगजकेसरी

दादकी सबसे अच्छी दवा. की० ।)

बालसुधा

दुबले, और कमज़ोर बच्चोंको ताक़तवर बनानेवाली मीठी दवा. की० ॥।)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाद की सर्वोत्तम और जादू के समान गुण दिखानेवाली दवा

इससे ३ दिन में दाद को आराम होने की गारंटी है, फ़ायदा न हो, तो दाम वापस।

यह दवा नहीं, बल्कि सच्चा जादू है। नया अथवा पुराना कैसा ही दाद हो, खाल फूल गई हो, खुजली बेताब किए डालती हो, इसके लगाते ही चमत्कारी गुण दीखने लगता है। दाद को हमेशा के लिये जड़ से खो देनेवाली यह एक ही दवा है। इसके लगाते ही ठंडक पड़ जाती है, और अन्य दवाओं की तरह जलन और तकलीफ़ नहीं होती। क़ीमत फ़ी डिब्बी ≡), १ दरजन का १।≡), २ दरजन का २।।), ४ दरजन का ४।।।) डा०, पै०-ख़र्च अलग।

पता—बिहारी ऐंड कंपनी, अरक पो० सोवाँ (आरा)

प्रकाशित हो गया! छप गया!! छप गया!!!

क्या ?

धीरे-धीरे

(हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम व्यंग्य!)

इसके लेखक हैं हिंदी-साहित्य के सर्वोत्तम उपन्यासकार श्रीवृंदावनलालजी वर्मा ऐडवोकेट।

इसमें मौजूदा राजनीतिक हलचल का ख़ाका जितनी ख़ूबसूरती के साथ खींचा गया है, उस पर आश्चर्य होता है।

इस मीठी चुटकी के लेनेवाले हिंदी-साहित्य के सिद्धहस्त कलाकार हैं। चुटकी से आपको आनंद की गुदगुदी का एकबारगी अनुभव होगा।

क्या लिबरल, क्या जमींदार और क्या कांग्रेसी—गांधी आइट अथवा सोशलिस्ट और क्या कम्यूनिस्ट—सभी इसे पढ़कर एक बार आनंदित हो उठेंगे।

इससे आपको वास्तविक मानसिक भोजन मिलेगा। यह पूर्णतया मौलिक है। इस अनोखी कृति की एक प्रति शीघ्र ही मँगाइए। सादी।।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

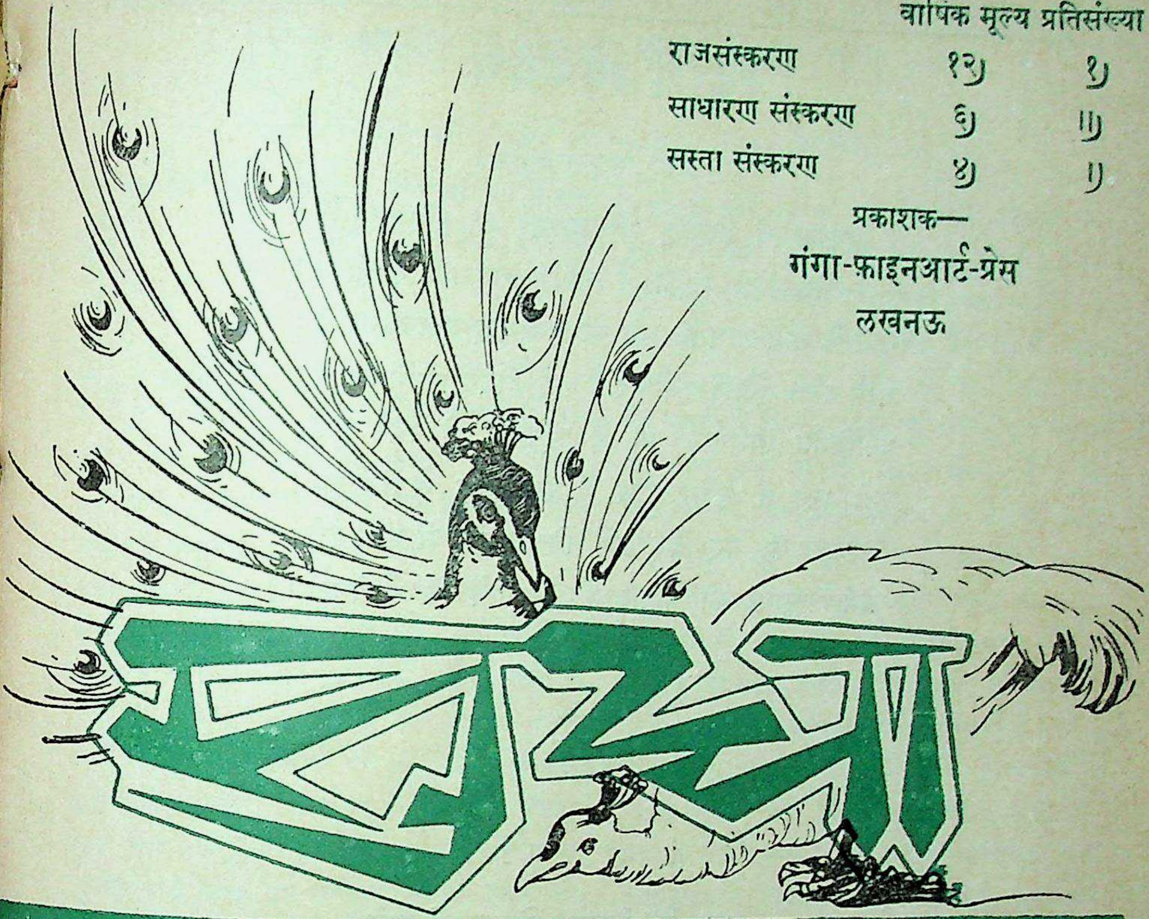

वर्ष १३ } भाद्रपद, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)— { संख्या २
खंड १ } सितंबर, १९३९ { पूर्ण संख्या १५८

अनुभूति

[श्रीदुलारेलाल]

राखत दूरी दूरि ही सखि, प्रेमिन कौ प्यार ;
नित तिनके मन-कुसुम मैं बसति बसंत-बहार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विपर्यय

[श्रीठाकुर गोपालशरणसिंह]

हैं विकास एवं विनाश भी वसुधा की हरियाली में ;
उषा और संध्या रहती है छिपी गगन की लाली में।
गति के साथ-साथ स्थिरता भी है अथाह जल-सागर में ;
छिपे बहुत सुख-दुख-सागर हैं लघु जीवन की गागर में।
ज्योतिर्मय तारागण भी हैं अंधकार से घिरे हुए ;
सने धूल में रुचिर रत्न हैं राजमुकुट से गिरे हुए।
हैं वसुधा की वर विभूतियाँ निर्जन वन में बसी हुई ;
कोमल कुसुमों की पंखड़ियाँ हैं काँटों में फँसी हुई।

सुख

[श्रीयुत 'वचनेश']

सुख है केवल मिलन तिहारो।
जहँ-जहँ सुख पावत मैं रंचहु,
तहँ-तहँ तोहिं निहारो।

असन, बसन, छबि, परस, गान-रस,
जब जो सुख निरधारो ;
सो साधन तब छनिक झलक को,
अंत फिरौं दुखमारो।

तीरहिं है तैं, मैं नहिं जान्यो,
मान्यो भ्रम-बस न्यारो ;
खोजत भ्रम्यो बास इत-उत,
ज्यों मृग कस्तूरीवारो।

थकित भयो, बल-गरब गयो, अब
लखत न आन सहारो ;
अपनो जानि आनि उर लीजै,
है 'बचनेस' नकारो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-समाज तथा धार्मिक विकास

[रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवविहारी मिश्र]

भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम में एक बहुत भारी नदी है, जिसकी महत्ता के कारण आर्यों ने उसे समुद्र के समान मानकर उसका नाम सिंध रक्खा। जब सिकंदर के धावे (ईसा-पूर्व ३२६-२३) में ग्रीकों ने इसका नाम लिया, तब अपनी 'स' को 'ह' कहने की उच्चारण-संबंधी आदत के अनुसार उन्होंने इसे हिंध कहा, जिससे समय के साथ देश ही हिंद कहलाने लगा, अथच देश-निवासी हिंदू कहे जाने लगे। मुसलमानी भाषा में हिंदू-शब्द के अर्थ काले और गुलाम के हैं। कुछ लोगों का विचार है, उन्होंने इन्हीं अर्थों के कारण हम लोगों को हिंदू कहा। जो हो, हिंदू हमारा स्वदेशी शब्द तो है नहीं, और इसका मूल चाहे ग्रीस से आया हो या फ़ारस से, फिर भी समय के साथ इस शब्द ने उन्नति करके अब एक महत्ता-युक्त उच्च अर्थ प्राप्त कर लिया है। अतएव इस शब्द से हम लोगों को किसी प्रकार की घृणा या उदासीनता की आवश्यकता न तो है, और न दिखलाई ही जाती है।

हिंदुओं में कई जातियों के लोग सम्मिलित हो गए हैं। सबसे पहले यहाँ कोलों का निवास था। इस काल भारत में प्रायः ३० लाख कोल हैं। भील और संथाल इन्हीं की शाखाएँ हैं। कोल मुंडा-भाषा बोलते हैं। ये लोग वीर, चतुर, प्रसन्न-चित्त, आलसी और संतोषी थे। इनके आयुध पत्थर और हड्डी के थे। कुछ लोगों का विचार है, कोल आदिम भारतीय थे, और उत्तर-पूर्व से शेष देश में फैले। इसका कोई पता नहीं कि ये लोग कहीं बाहर से आए, अथवा यहीं के आदिम निवासी थे। कोलों के पीछे द्रविड़ों का पता लगता है। इनका स्थान दक्षिणी भारत था। इनकी जाति बलूचिस्तान की ब्राहोई-जाति से बहुत कुछ मिलती है। किंतु अभी तक यह पूर्ण रीति से नहीं सिद्ध हुआ कि मूलतः ये दोनो एक ही थे, यद्यपि इस विचार में बहुत कुछ तथ्यांश समझ पड़ता है। यह नहीं ज्ञात है कि दक्षिण-भारत से फैलकर द्रविड़ बलूचिस्तान पहुँचे, या वहाँ से फैलकर इधर आए। हो दोनो बातें सकती थीं। अतएव जहाँ कोलों का उत्तर-पूर्व से संबंध है, वहीं इनका उत्तर-पश्चिम से है। आजकल प्रायः पौने छ करोड़ द्रविड़ भारत में हैं। खांड और गोंड़ इन्हीं की शाखाएँ हैं। कहते हैं, आर्यागमन के पूर्व द्रविड़ों ने विंध्याचल के निकट कोलों को हराया। ये लोग खेती और व्यापार करते, नगरों और ग्रामों में बसते, सूती कपड़े पहनते, स्वर्णालंकार धारण करते और ताँबे के आयुधों का भी व्यवहार करते थे। इनके कुटुंब माताओं पर थे। ये पृथ्वी, नाग, वृक्ष आदि की पूजा करते और अपने देवताओं से डरते थे। शेष-नाग इनके मुख्य देवता थे। इन दोनो जातियों के अतिरिक्त भारत में नाग लोग भी थे। यह नहीं ज्ञात है कि ये पृथक् थे अथवा इन्हीं में से कोई शाखा। समय पर इनकी सभ्यता बहुत बढ़ी, और साम्राज्य भी स्थापित हुआ, जिससे हिंदू-जाति को भारी सहायता मिली। ये तीनो जातियाँ श्याम वर्ण की थीं, और समय पर आर्यों द्वारा पराजित होकर हिंदू हो गईं। समय के साथ विवाहों द्वारा इन चारो जातियों का थोड़ा-बहुत मिश्रण भी हुआ। अब नाग लोग तो आर्यों में प्रायः मिल ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए हैं, किंतु कोल और द्रविड़ अब भी बहुत कुछ पृथक् हैं। बिहार-प्रांत के पाल-नरेशों के समय (आठवीं से बारहवीं शताब्दी) में आसाम के मार्ग से आकर मंगोल भी बंगाल में बसे, तथा बिहार, नैपाल आदि में भी फैले। आर्यों का भारत में प्रवेश २८वीं से २५वीं शताब्दी बी० सी० (ईसा-पूर्व) में कहा जाता है। अहीरों को योरपीय पंडित मूलतः आर्मीनिया-निवासी मानते हैं। श्रीकृष्ण के समय (१०वीं शताब्दी बी० सी०) में नंदादिक के नेतृत्व में, इनका अच्छा मान था, और श्रीमद्भागवत में ये वैश्य कहे गए हैं। गो-पालन के कार्य से भी ये वैश्य ही समझ पड़ते हैं। मुशल-पर्व में आभीरों ने ही यादवों तथा अर्जुन को लूटा था।

अहीरों (या आभीरों) के पीछे गुर्जर किसी समय भारत में आए। प्रमार, परिहार, सोलंकी और चौहान इन्हीं की शाखाएँ हैं। पीछे सिकंदरी धावे से बहुत-से ग्रीक पाश्चात्य एशिया में बसे, तथा वहाँ के आदिम निवासियों से भी थोड़ा-बहुत मिल गए। उन्हें सीदियन कहते हैं। दूसरी-तीसरी शताब्दी बी० सी० में कुछ सीदियन भी हिंदुओं में मिल गए। तीसरी शताब्दी बी० सी० के भारतीय सम्राट् अशोक ने बौद्ध-धर्म फैलाने के लिये एशिया के अनेक देशों में बौद्ध शिक्षक भेजे। मध्य एशिया में जानेवाले शिक्षकों के प्रयत्नों से उधर भारतीय सभ्यता से सहानुभूति हो गई थी। इसीलिये कई सीदियन भारतीय नरेश अपने को भागवत कहते और भारतीय धार्मिक बातों को मानते थे। प्रायः दूसरी शताब्दी बी० सी० में उसी ओर से शक भी आकर भारत के कुछ पाश्चात्य प्रांतों के शासक हुए। इन्होंने हिंदू और बौद्ध-मतों से पूर्ण सहानुभूति रक्खी, और जहाँ जिस मत का चलन देखा, वहाँ स्वयं वैसा ही व्यवहार रियाया के साथ किया। शकों ही की शाखा वे तुरुष्क कुशान थे, जिनका साम्राज्य प्रायः दो शताब्दियों तक उत्तरी भारत से लेकर फ़ारस के आगे पाश्चात्य लघु एशिया तक पर रहा। इनमें कनिष्क महायानीय बौद्ध-मत का पूरा समर्थक एवं भारी सम्राट् था। तीसरी शताब्दी में नागवंशी हिंदुओं ने कुशानों का साम्राज्य ध्वस्त करके उत्तरी भारत में ६० वर्षों के लिये नाग-साम्राज्य स्थापित किया। ये लोग शैव थे, और इनका राजवंश भार शिव कहलाता था। इसी समय द्रोणाचार्य के वंशधर वाकाटक-नरेशों का साम्राज्य फैला और तब गुप्तों का। वाकाटक ब्राह्मण थे, और गुप्त कलवार, किंतु साम्राज्य पाने पर ये दोनो वंश क्षत्रिय हो गए, तथा नाग एवं गुप्त-सम्राटों की दो कन्याओं के विवाह दो वाकाटक-नरेशों से हुए। गुप्त-साम्राज्य दो शताब्दियों तक सबल रहा, और तब छठी शताब्दी में हूणों ने थोड़े ही वर्ष भारतीय सम्राट्-पद भोगा। ये लोग पहले ही से शैव थे। दाक्षिणात्य द्रविड़ों का व्यापार बैबिलोन आदि से चलता था। इसी संबंध में कुछ यहूदी भी पहली शताब्दी के निकट दक्षिण-भारत में आ बसे। मुसलमानी धर्म के बल-पूर्वक चलाए जाने से, कुछ पारसी राना संजन के राज्य में, गुजरात में, नवीं-दसवीं शताब्दी में, बस गए। किंतु ये हिंदुओं से पृथक् रहे, यद्यपि इन्होंने गो-गंगा का पूजन मान लिया, तथा बहुत-सी और भी हिंदू-रीतियों को सत्कारा। इस प्रकार, हम देखते हैं, आर्यों के पीछे समय-समय पर आर्मीनियन, गुर्जर, सीदियन, शक, तुरुष्क (तुर्क), यहूदी, हूण और मंगोल भारत में आ-आकर अपने-अपने सामाजिक पदों के अनुसार हमारे चातुर्वर्ण्य में मिलकर पूरे हिंदू हो गए, यहाँ तक कि जब आठवीं और ग्यारहवीं शताब्दियों में अरबी और अफ़ग़ानी मुसलमान यथाक्रम सिंध और पंजाब-प्रांतों में आ बसे, तब भारत में हिंदुओं के अतिरिक्त सिवा मुट्ठी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर पारसियों के कोई दूसरी जाति न थी। मुसलमान अपने मत के इतने पक्के थे कि उन्होंने न केवल हममें मिलना पसंद न किया, वरन् हिंदुओं को मुशरिक (ईश्वर का साझीदार माननेवाले) तथा बुत-परस्त (प्रतिमा-पूजक) कहकर हमारे धर्म की निंदा की, तथा हमें बल-पूर्वक मुसलमान बनाने का साढ़े तीन शताब्दियों तक प्रयत्न किया। इसी प्रकार ईसाइयों ने भी हमें प्रेम-पूर्वक ईसाई बनाने का डौल डाला। इन दोनो मतों के ये प्रयत्न अब भी चल रहे हैं। मुसलमानों के धर्म में बल-प्रयोग करने से हमने भी बारहवीं शताब्दी से बराबर इनके साथ विजितों के एकमात्र अमोघ अस्त्र—बहिष्कार—का प्रयोग जारी रखकर अपने समाज की रक्षा की है।

योरपियनों की कल्पना है कि आधुनिक भारतवासियों में केवल कश्मीर, पंजाब और राजपूताना में असली आर्य हैं। उनके अनुसार गंगा-यमुनावाले देश, बिहार आदि में आर्यों और द्रविड़ों का मिश्रण पाया जाता है ; गुजरात, सिंध और बंबई-प्रांतों में: सीदियनों तथा द्रविड़ों का मेल है ; नैपाल, भूटान, आसाम आदि में मंगोल-रुधिर का प्राधान्य है; बंगाल, छोटा नागपुर और उड़ीसा में मंगोलों और द्रविड़ों का मिश्रण है, तथा वायव्य सीमा-प्रांत के लोग तुरुष्क (तुर्की ईरानी) हैं। छठी शताब्दी बी० सी० से चौथी तक के कुछ बौद्ध-ग्रंथों का कथन है कि कोशल (अवध) के लोग अमिश्र आर्य हैं। वैदिक साहित्य में कोलों का नाम नहीं है, न द्रविड़ों का विशेष कथन। ऋग्वेद तथा हमारे पुराणादि में महिष, कपि, नाग, मग, दैत्य, दानव, राक्षस आदि के नाम आए हैं। इनमें दैत्य और दानव तो आर्य हैं, और शेष कोल या द्रविड़ समझ पड़ते हैं। वायुपुराण का कथन है कि भूत, पिशाच, नाग और देव उत्तर से भारत में आए। भूतगण भूतस्थान (भूटान) में बसे। भविष्यपुराण बतलाता है कि आर्य उत्तर कुरु (साइबेरिया) में रहते थे, और वहीं से मध्यभूमि (युक्त प्रांत) में आए। दैत्य-दानवों आदि के जो देवताओं से युद्ध लिखे हैं, वे बलि-बंधन-पर्यंत भारत में न होकर फ़ारस में हुए थे, ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। बलि-बंधन के पीछे उनके पितामह प्रह्लाद ने दैत्यों का बल सँभालकर इंद्रत्व प्राप्त किया, तथा योगवाशिष्ठ के अनुसार विष्णु द्वारा देव-दैत्यों में स्थायी संधि हुई। समझ पड़ता है कि इसके पीछे इंद्र पूर्व-उत्तर की ओर जाकर उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान या पामीर में राज्य करने लगे, जहाँ कुछ दिन नहुष भी इंद्र रहे। इस प्रकार कई जातियों के मिश्रण से हम वर्तमान हिंदू-जाति की स्थापना पाते हैं। महाभारतीय युद्ध (१०वीं शताब्दी बी० सी०) तक अनार्य लोग पूरे तौर से आर्यों से न मिले। पीछे सूत्रकाल (सातवीं से पहली शताब्दी बी० सी०) में वे धीरे-धीरे हिंदू हो गए। किंतु बढ़ई, लोहार, चमार आदि के जो कामवार जत्थे उनमें थे, वे फिर भी शेष लोगों से अलग बने रहे, जिससे समय पर हिंदुओं में भी जातियों की दृढ़ता बढ़ी। नवीं शताब्दी तक ब्राह्मण-क्षत्रियों के वैवाहिक संबंध होते थे, जो पीछे से लुप्त हो गए। इस प्रकार धीरे-धीरे विकसित होता हुआ तथा इतरों को भी अपने में लेता हुआ हमारा हिंदू-समाज अपने वर्तमान दृढ़ रूप में स्थापित हुआ है।

अब हम अपने धार्मिक विकास की ओर आते हैं। आर्य पहले उत्तरी ध्रुव के प्रांतों में रहते थे, जहाँ दिन और रात छ-छ महीने के होते हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथों में देवताओं के दिन-रात का यही परिमाण लिखा हुआ भी है। अनंतर (८००० से ७००० बी० सी० तक) समुद्र में तैरनेवाले बर्फ़ के पहाड़ों से शीताधिक्य तथा स्वयं अपनी संख्या-वृद्धि के कारण ये अपने प्राकृतिक स्थान को छोड़कर आगे बढ़े। ६००० बी० सी० तक ये मध्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशिया में थे। अब तक ये खाद का हाल नहीं जानते थे, किंतु रथ, नाव, बुनाई का काम, यव और मधु-पान से अभिज्ञ थे। इनके देवता उषस, द्युस और वरुण थे, तथा ये यज्ञ करते थे। पीछे (६००० से ४००० बी० सी० तक) ये बैबिलोनवालों से मिले। उनकी सभ्यता उच्च थी, सो इन्होंने बहुत कुछ सीखा, और इनको गति भी रुकी। अनंतर इनका फ़ारस और तब भारत से संबंध प्रारंभ हुआ। इनका कुछ संबंध पूर्वी रूस और मध्य एशिया (इंद्रालय) से भी था। आर्यों का प्रभाव उत्तरी लघु एशिया से उत्तरी-पश्चिमी बैबिलोनिया तथा मीडिया तक था। अनंतर ये भारत और योरप में भी फैले। द्युस का नाम पश्चिम में ज्यूस, जोव और जुपिटर भी हुआ। वरुण ऋत के देवता थे, अर्थात् वे प्राकृतिक शक्तियों के नियम-पूर्वक संचालक थे। द्युस आकाशदेव थे।

मन्वंतर-काल को हम सत्ययुग कह सकते हैं। इसका समय स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत और चाक्षुष मन्वंतरों पर विभक्त है, जिनमें कम-से-कम ४५ राजे (एक दूसरे के पीछे) हुए, और जिनका अंदाज़ी समय ७५० वर्षों का बैठता है। स्वायंभुव मन्वंतर में ऋषभदेव जैनियों के पहले तीर्थंकर कहे जाते हैं। इसी से उनका नाम आदिनाथ भी है। भरत भारी योगी थे, जिससे वह जड़ भरत भी कहलाते हैं। स्वारोचिष मन्वंतर में लिखा है कि उस काल भी वनों में ऋषि रहते थे। चाक्षुष मन्वंतर में बलि यज्ञकर्ता थे। भगवान् वामन ने शुक्राचार्य की विधि से बढ़ी-चढ़ी यज्ञ-विधि कहकर बलि को जीता था। प्रह्लाद भारी विष्णु-भक्त कहे गए हैं, किंतु इस कथन में काल-विरुद्ध दूषण समझ पड़ता है। ध्रुव भारी भक्त थे। चाक्षुष मनु परम प्राचीन वेदर्षियों में एक हैं। स्वायंभुव मनु का समय २७वीं या २८वीं शताब्दी बी० सी० समझ पड़ता है। २८वीं शताब्दी बी० सी०वाली मोहंजोदड़ो तथा हड़प्पा की द्राविड़ सभ्यता भी इन दिनों प्राप्त हुई है। उन लोगों का वर्णन उनके सामानों से प्राप्त है। उनमें पृथ्वी या सिंहवाहिनी मातृदेवी बहुत पाई जाती हैं। त्रिनेत्र शिव के तीन सिर हैं। त्रिशूल है। योग का विचार भी प्राप्त है। शिव के निकट हाथी, चीता, गैंडा और भैंसा हैं, जिससे वह पशुपति हैं। नाग उनकी पूजा करते हैं, और वह दो मृग-चर्मों पर बैठे हैं। लिंग और योनि के पूजन थे। सिंध और बलूचिस्तान में उसी काल के योनि-लिंगवाले अरघे मिले हैं। जानवरों का भी पूजन था। सींग देवत्व का चिह्न था। स्नान पर बड़ा ज़ोर था। हिंदुओं में पीछे से शिव, मातृदेवी, कृष्ण, नाग, जानवर, वृक्ष, पाषाण-लिंग, योग, शक्ति, संसार-भक्ति आदि के पूजन-विधान जो उठे, उनके मूल इनमें पाए जाते हैं, जिससे प्रकट है कि हिंदू-धर्म के विकास में अनार्यों का भारी प्रभाव था। उस काल तक आर्यों में इन विचारों का अभाव था।

अनंतर २०वीं से दसवीं शताब्दी बी० सी० तक ऋग्वेद का गान हुआ। श्रीरामचंद्र का समय १३वीं शताब्दी माना जाता है और श्रीकृष्ण का दसवीं। ऋग्वेद में ईश्वर का भाव है, किंतु प्रार्थनाएँ ३३ देवताओं से ही की जाती हैं, और उन्हीं के वर्णन प्रायः सर्वत्र हैं। तो भी इतना अवश्य कहा गया है कि देवता स्वयं शक्तिमान् न होकर केवल ईश्वरीय बल से सशक्त हैं। इन ३३ देवों में १२ आदित्य, ११ रुद्र, ८ वसु, इंद्र और अग्नि की गणना है। इंद्र इनमें प्रधान हैं, और उनके पीछे विष्णु का नंबर आता है। रुद्र एक साधारण देवता-मात्र हैं। इन ३३ देवतों में विशेष मुख्यता इंद्र, विष्णु और अग्नि की है। प्राचीन काल में शीत-प्रधान देशों के निवासी होने से आर्य पारसियों की भाँति पावक-पूजक थे। इसी पूजन से यज्ञों की महिमा बढ़ी। ऋग्वेद में चातुर्वर्ण्य की मुख्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलकुल नहीं, वरन्, पुरुषसूक्त को छोड़कर इसका कहीं कथन भी नहीं। इस सूक्त के ऋषि युधिष्ठिरी समयवाले नारायण थे। अतएव प्रकट है कि चातुर्वर्ण्य का बल ऋग्वेद के केवल अंतिम काल में हुआ। सामवेद बहुत करके ऋग्वेदीय ऋचाओं का संग्रह-मात्र है। अथर्ववेद और यजुर्वेद चले तो प्राचीन समय से ही थे, किंतु समाप्त ऋग्वेद के प्रायः १०० वर्ष पीछे हुए। ऋग्वेद में हमारे ऋषियों ने प्राचीन भारतीयों के धर्म की बिलकुल निंदा न की, केवल शिश्न-पूजन को बहुत अनुचित माना। द्रविड़ों के देवता प्रेम से न पूजे जाकर भय से पुजते थे। इधर हमारे देवताओं में केवल रुद्र ऐसे थे, जो प्रेम और भय दोनो से पुजते थे। जब आर्यों का अनार्यों से संबंध बढ़ा, तब उनके पूजन-विधान का भी प्रभाव इन पर पड़ा, जिससे यजुर्वेद और अथर्ववेद में ही हमारे रुद्र की इतनी महिमा बढ़ी कि सत्य शिव सुंदर के रूप में वह ईश्वर हो गए। हमारे देवताओं में यही ऐसे थे, जो उनके प्रधान देवता से मिलते थे। अनार्यों पर भी आर्यों का भारी प्रभाव पड़ा, किंतु यहाँ कहने का इतना ही प्रयोजन है कि आर्य-धर्म तक अनार्य प्रभाव से मुक्त न रह सका।

ऋग्वेद के पीछे, सम्राट् जनमेजय के समय, नवीं शताब्दी बी० सी० में, कृष्ण द्वैपायन व्यास ने चारो वेदों का पृथक्-पृथक् संकलन एवं संपादन करके उन्हें अपने चार शिष्य-संप्रदाय में बाँट दिया। अनंतर याज्ञिक विचारों की वृद्धि से जैसे यजुर्वेद तैयार हुआ था, वैसे ही यज्ञ-संबंधी विधानों के लिये बहुत-से ब्राह्मण-ग्रंथों की रचना हुई, जिनमें से बहुतेरे लुप्त होकर समय के साथ अब केवल ७० शेष हैं। राजन्य-वर्ग की केवल याज्ञिक विधानों की महती वृद्धि पर अश्रद्धा से ब्राह्मण-ग्रंथों के साथ-ही-साथ उपनिषदों का प्रचार हुआ। इसी भाव से अग्निमान् से निरग्निक का पद ऊँचा सिद्ध करने को वानप्रस्थ और संन्यास के विचार उठे। प्रत्येक ब्राह्मण का अंतिम अध्याय उपनिषत् है, तथा सैकड़ों उपनिषत् किसी भी ब्राह्मण-ग्रंथ से संबद्ध नहीं। अब प्रायः ११६५ उपनिषत् वर्तमान हैं। इनमें विशेषतया ईश्वर, आत्मा आदि पर दार्शनिक विचार हैं। बारह-तेरह आरण्यक ग्रंथ भी हैं, जिनके विषय ब्राह्मण और उपनिषत्, दोनो से मिलते हैं। इनका समय आठवीं-नवीं शताब्दी से तीसरी-चौथी बी० सी० तक है। सूत्रकाल छठी-सातवीं शताब्दी से चलकर पहली शताब्दी बी० सी० तक चला है। उपनिषदों के विषय को वेदांत कहते हैं, तथा सूत्रों में श्रौत, धर्म और गृह्य, तीनो विषय हैं। इनसे सामाजिक उन्नति का अच्छा चित्र प्राप्य है। वेदांत में निर्गुण ब्रह्म की विशेषता है, यद्यपि बहुत स्वल्प रीति से केवल परमोच्च भाव-गर्भित सगुण ब्रह्म का भी थोड़ा-सा कथन उपनिषदों में आ गया है। जैसे वेदों का बल देवताओं पर है, वैसे ही उपनिषदों का ईश्वर पर। समय पर महावीर तीर्थंकर ने छठी शताब्दी बी० सी० में जैन-मत चलाया, और उसी शताब्दी में गौतम बुद्ध ने जैन-मत के कुछ ही पीछे बौद्ध-मत चलाया। इनका जन्म ५६३ (या ५६८) बी० सी० में हुआ था। बौद्ध-मत की मुख्यता इतनी हुई कि इसी समय से मानो भारत में सभी बातों में क्रांति-सी उपस्थित हो गई। इसीलिये बुद्ध-पूर्व के विचारों का एक प्रकार से कथन होता है और बुद्धांतर का दूसरे प्रकार से। चौथी शताब्दी बी० सी० दाक्षिणात्य आचार्य बौधायन और आपस्तंब के शास्त्रों के सारे देश में भारी मान से सिद्ध है कि हिंदू-मत दक्षिण में भी प्रायः छठी शताब्दी से फैल चुका था।

हमारा वेदांत का मत बहुत करके शुद्ध तर्क पर अवलंबित था। भारत में उस काल भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा की बहुत कमी थी। अतएव साधारण लोगों को वेदांत का ब्रह्म-विचार अपने से असंबद्ध और हृदय-हीन समझ पड़ा। गज-ग्राहवाली कथा के समान दुख-दर्द की पुकार सुनने का उसका काम न था। मनुष्य अपने ही बुद्धि-बल से उन्नति करे, ऐसा परम शुद्ध, किंतु शुष्क और कठिन भाव साधारण जन-समुदाय को संतुष्ट न कर सका। सुतराम् देश में अनीश्वरता के विचार फैलने लगे। हिरण्यकशिपु और हयग्रीव सबसे पुराने शरीरवादी थे। बलि के पिता विरोचन भी लोकायत मत मानते थे। समय पर बृहस्पति ने चार्वाक-शास्त्र में लोकायत मत का शास्त्रीय प्रतिपादन कर डाला। इसका प्रभाव देश पर बहुत भारी पड़ा। चार्वाक-मत की वर्तमान तर्क-माला बहुत ही ओछी है, क्योंकि उसका कोई ग्रंथ प्राप्त नहीं, और जो कुछ वर्णन मिलता है, वह उसके विरोधियों द्वारा उसके सिद्धांतों का कथन-मात्र है। उसके भारी प्रभाव से उसमें बहुतेरे उच्च, किंतु खंडनात्मक भावों का होना समझ पड़ता है, नहीं तो उसका इतना मान समाज न करता। उसकी मुख्यता केवल प्रत्यक्ष प्रमाण और सुख-साधन के मान की है। जब पंडित-समाज ने देखा होगा कि ईश्वरीय विचार के साथ-ही-साथ वेदांत के सारे सिद्धांत गिरे जाते हैं, तब जिस ईश्वरीय भाव को समाज मानने को किसी प्रकार तैयार न था, उसे छोड़-कर अपने शास्त्र के शेष सिद्धांत-रक्षण का प्रयत्न किया गया होगा। समझ पड़ता है, इसी-लिये कपिल ने सांख्य और जैमिनि ने पूर्व-मीमांसा की रचना की। सांख्य में जीवात्मा और प्रकृति की सत्ता मुख्य है, तथा पूर्व-मीमांसा में ईश्वर तो नहीं माना हुआ है, तथापि वेदों तक का मंडन किया गया है। कपिल का कथन शतपथ ब्राह्मण से प्राचीन ग्रंथ में होने से आप उससे भी पूर्ववर्ती ठहरते हैं। जैमिनि और कणाद भी बुद्ध-पूर्व के थे। कणाद ने वैशेषिक में ईश्वर का भी मान नहीं छोड़ा। फिर भी संशयवाद चलता रहा, और शैव ईश्वरत्व गिर-सा गया। वैष्णव ईश्वरत्व इस काल प्रायः नहीं के बराबर था। प्राचीन उपनिषदों और ब्राह्मणों में कोई देवता मत्स्य, कच्छ और वराह के रूपों में भारी कार्य अवश्य करता है, किंतु अवतारवाद का अभाव है। छठी या सातवीं शताब्दी के रामायणवाले प्राचीन पाँच कांडों में भी अवतारवाद नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, महेशवाला त्रिदेव-भाव भी अब तक नहीं उठा था। वेदों में प्राकृतिक नियम-संचालन का वरुणवाला प्राचीन अधिकार तो विष्णु को मिल चुका था, और उनका 'परमपद' भी था, किंतु ईश्वरत्व नहीं। वेदों में ब्रह्म से पृथक् ब्रह्मा नहीं हैं, किंतु उपनिषदों में हैं, जहाँ उनकी गणना देवताओं में है, न कि ईश्वर में। ईश्वर केवल शिव हैं, जो निर्गुण ब्रह्म के साथ बहुत कुछ अमान्य हो गए। चातुर्वर्ण्य और यज्ञों का प्रभाव फिर भी अब तक चल रहा था। इनके प्रतिकूल भी जनता में भाव उठ रहे थे। प्रतिमा-पूजन का चलन मोहंजोदड़ो और हड़प्पा के समय २८वीं शताब्दी बी० सी० में अनार्यों में था ही, किंतु आर्यों ने इसे न अपनाया। बुद्ध-पूर्व के वैदिक साहित्य में केवल षड्विंश ब्राह्मण में प्रतिमा का कथन है, जो ऐसा भद्दा है कि उसका चलन केवल शूद्रों में समझ पड़ता है। सूत्र-ग्रंथों से भी प्रतिमा का अस्तित्व मिलता है, किंतु पूजन का आदेश नहीं। अब तक बुद्ध-पूर्व की मोहंजोदड़ो हड़प्पा से इतर श्रीदेवी-मात्र की प्रतिमा मिली है, सो भी सांकेतिक अर्थात् प्रतिमा है नहीं, वरन् दो हाथियों के शून्य स्थान पर सूँडों से पानी डालने से संकेत द्वारा वहाँ श्रीदेवी की स्थापना मानी जाती है। श्री का पूजन प्रायः वैश्यों में होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इससे जान पड़ता है कि बुद्ध-पूर्व के समय तक केवल वैश्यों और शूद्रों में प्रतिमा-पूजन का थोड़ा-बहुत चलन था, ब्राह्मणों और क्षत्रियों में नहीं। श्राद्धादि का भान था ही।

ऐसे समय में भगवान् गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध-मत का प्रादुर्भाव हुआ, जिससे सामाजिक और दार्शनिक संशयवाद बढ़कर धर्म में भी प्रविष्ट हो गया। आपने कार्मिक धर्म चलाया, जिसमें विश्वास की आवश्यकता न थी, क्योंकि वह प्रायः सब-का-सब तर्क-साध्य था। जैन-मत भी बहुत कुछ ऐसा ही था। भगवान् बुद्ध के समय में ही इनका भारी भिक्षु-संप्रदाय स्थापित हो गया था, किंतु ४८३ बी० सी० में, इनके निर्वाण से प्रायः सवा दो सौ वर्षों तक, इस मत का चलन गृहस्थों में न हुआ, और भिक्षुओं का यह एक संप्रदाय-मात्र बना रहा। फिर भी पंडितों पर इसका भारी प्रभाव पड़ा, और धर्म तक में संशयवाद के प्रविष्ट हो जाने से हिंदुओं को अपने मत में लोकमान्यता बढ़ाने की प्रबल आवश्यकता प्रतीत हुई। उस काल वासुदेव-नामक एक वैष्णव-मत ऐसे ही विचारों से चलने लगा, जिसमें कोई वासुदेव विष्णु के समान पूज्य थे। हिंदुओं में अवतार-वाद का यह पहला बीजारोपण था। उधर भगवान् बुद्ध के भारी व्यक्तिगत मान से भी समाज में यही भाव उठ रहा था। बौद्ध-मत का मुख्य सिद्धांत यह था कि सत्कर्मों द्वारा जब मानुष-आत्मा सब पापों से मुक्त हो जाता है, तब उसे निर्वाण प्राप्त होता है। यद्यपि लोक में बौद्ध-मत का चलन नहीं था, तथापि इनका व्यक्तिगत सत्कार बहुत भारी था, और इनके सिद्धांतों का मान भी कम न था। आपने ईश्वर, वेद, यज्ञ और चातुर्वर्ण्य, इन सबको अमान्य कहा, और केवल सत्कर्मों को प्रधान रक्खा।

ऐसी दशा में पाँचवीं शताब्दी बी० सी० में भगवान् बादरायण व्यास का प्रादुर्भाव हुआ। आपने उत्तर-मीमांसा रचकर ईश्वरवाद को दृढ़ता दी, तथा उसी में वासुदेव-मत को वेद-विरुद्ध कहकर उसकी समीक्षा की। अनंतर श्रीमद्भगवद्गीता रचकर निर्वाण, वैष्णव ईश्वरत्व और अवतार-वाद को पहलेपहल बल के साथ हिंदू-मत में स्थान दिया। फिर भी गीता में व्यूह-पूजा नहीं है, अर्थात् राम और कृष्ण के भाई ईश्वरांश नहीं माने गए हैं। इस भाँति पहलेपहल हमारे यहाँ कार्ष्ण ईश्वरत्व चला। पुराने पूज्य वासुदेव इन वासुदेव कृष्ण से पृथक् थे, किंतु समय पर उनका माहात्म्य भी इन्हें इसी नाम के कारण अवश्य मिल गया। राम के संबंध में अवतार का भाव कई शताब्दी पीछे उठा।

कृष्ण का पूजन पहले सात्वत विधि से लिखा हुआ है। इसका अर्थ कोई सत्व पर अवलंबित मानता है, और कोई सात्वत वंश में प्रचलित विधि बतलाता है। शुद्ध अर्थ सत्यावलंबन ही समझ पड़ता है। भगवद्गीता बनी तो पाँचवीं शताब्दी बी० सी० में, किंतु इसमें कुछ विचार इससे सात सौ वर्ष पीछे तक के हैं, तथा यद्यपि व्यासजी ने वासुदेव-मत को निंद्य कहा, तो भी गीता में श्रीकृष्ण बहुतायत से वासुदेव कहे गए हैं। इससे प्रकट है कि इस ग्रंथ-रत्न में सात सौ वर्ष पीछे तक के कुछ विचार दूसरी शताब्दी तक के पंडितों ने यथासमय जोड़ दिए। चौथी शताब्दी बी० सी० के निद्देश-नामक बौद्ध-ग्रंथ से उस काल देश में व्यूह-पूजन का चलन सिद्ध है, और इसी शताब्दी की ग्रीक-साक्षी से गंगा-स्नान से पुण्य का विचार प्राप्त है। गीता में गंगा की महत्ता है, किंतु स्नान से पुण्य का भाव नहीं।

गौतम बुद्ध और बादरायण व्यास के समान परमोच्च धर्मोपदेशकों के होते हुए भी अपढ़ जनता के कारण देश में एक तीसरा मोटिया धर्म चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था, जिसकी साक्षी वाल्मीकीय रामायण और कौटिल्य-कृत अर्थ-शास्त्र से प्राप्त है। उस चलतू धर्म के विचार निम्नानुसार थे—उसमें अवतार अकथित हैं, तथा वैदिक देवता एवं काम, कुबेर, शुक्र, कार्त्तिकेय, गंगा, लक्ष्मी, उमा आदि देवी-देवता हैं। नाग, वृक्ष, नदी, तड़ागादि पूजित हैं। देवताओं के मंदिर और प्रतिमाएँ हैं, किंतु शिव-लिंग नहीं। पशु-बलि है। आवागमन-सिद्धांत की पूरी उन्नति नहीं। तीसरी शताब्दी बी० सी० के महानारायणीय उपनिषत् में वासुदेव विष्णु हैं। प्रतिमा कल्पसूत्र में है, किंतु उसके पूजन का आदेश नहीं। अर्थ-शास्त्र में छोटे-बड़े देवता हैं। पहाड़ों, नदियों, वृक्षों, अग्नि, चिड़ियों, नागों, गायों आदि के पूजन मरी आदि से बचने को किए जाते थे, तथा इसी अभिप्राय से रीतियों, मंत्रों और जादू के काम कराए जाते थे। आवागमन, कर्म और मुक्ति के कथन नहीं हैं। यह धर्म कुछ-कुछ अशोकवाले के समान है। इसका चलन देश में प्रायः छठी से पहली शताब्दी बी० सी० तक में समझ पड़ता है। बादरायण व्यास को वासुदेव-मत ज्ञात था, जिससे उसका चलन पाँचवीं शताब्दी बी० सी० से पूर्व हुआ। गीता में वैष्णव ईश्वरत्व के सामने शैव में कमी कथित है। यह बात शिव के गिराने को नहीं कही गई, वरन् उस काल लोगों का विचार ही वैसा था। समय के साथ ब्रह्मा, विष्णु और महेश में कर्ता, पालक और संहर्ता के भाव पुष्ट होकर बौद्ध-मत के त्रिरत्न, बुद्ध, धर्म और संघ, के जोड़ पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश में त्रिदेव का भाव स्थापित होकर इनका बहुत कुछ एकीकरण भी हुआ। अशोक का मत उपर्युक्त मोटिया धर्म से बहुत कुछ मिलता था, केवल उसमें बौद्ध और जैन-मतों के कुछ सिद्धांत भी मिले थे। उसमें जैन-विचार अहिंसा पर बल था, तथा गुरु, माता, पिता आदि का पूजन समय पर राजाज्ञा द्वारा भी स्थापित किया गया। अशोक ने यह बौद्ध-मत बड़े चोप से चलाया, किंतु इसके मानने को हिंदुओं पर कोई दबाव नहीं डाला। उन्होंने बाहर भी उपदेशक भेज-कर लंका में इस हीनयानीय बौद्ध-मत का प्रचार किया, तथा मध्य और पाश्चात्य एशिया में भी भारतीय सभ्यता का मान बढ़ाया। अशोक के ही समय में भारत में बौद्ध-मत का महत्त्व बहुत बढ़ गया। मामला फिर भी केवल विश्वासात्मक था, और किसी के बौद्ध होने से हिंदुओं से रोटी-बेटी के संबंध में कोई विच्छेद नहीं पड़ता था। यहाँ तक बात थी कि एक भाई बौद्ध है, तो दूसरा हिंदू। फिर भी दोनो बने एक ही में रहते थे। बौद्ध-मत का प्रचार अशोक ने २६० बी० सी० के निकट आरंभ किया। मौर्य साम्राज्य ३२३ से १८५ बी० सी० तक चला। इतने ही में इस मत का इतना प्रचार हो गया कि १८५ में साम्राज्य पानेवाले पुष्यमित्र ने इस मत का दमन खड्ग द्वारा किया, ऐसा कुछ ऐतिहासिकों का कथन है। उनका देश-निकाला सिद्ध ही है। ११२ के पुष्यमित्र द्वारा स्थापित शुंग-शासन तथा ४६ वर्षों के काण्वायन साम्राज्य में उत्तरी भारत में २४ बी० सी० तक बौद्ध-मत स्थापित तो रहा, किंतु उसकी महत्ता न हुई। फिर भी दाक्षिणात्य आंध्र-राज्य में उसका मान था। २४ बी० सी० में आंध्र-शासन उत्तर में भी फैलकर साम्राज्य के रूप में कुछ काल स्थापित रहा, जिससे इधर भी बौद्ध-मत का प्रभाव बढ़ा। पहली शताब्दी से उत्तरी भारत में बनारस पर्यंत कुशान-साम्राज्य स्थापित हुआ, जिससे इस मत का और भी मान बढ़ा।

(आगामी संख्या में समाप्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में

[कुमारी रूपकुमारी वाजपेयी बी० ए०]

(१)

"तुम चाहे जो कहो नैना ! इस झारखंड में मेरा तो मन नहीं लगता । सौंदर्य ! सौंदर्य ! कहाँ है सौंदर्य, देखूँ तो ?"

धुनके कपास - सा कोमल, बर्फ़-सा श्वेत बादल का एक छोटा टुकड़ा अथाह, नीले सागर-जैसे आकाश का हृदय चीरता भागा जा रहा था । सुनैना अपनी अलसाई आँखें उसमें उलझाए बैठी थी ।

"तुम चाहे जो कहो कुमुदरानी ! मेरा तो मन इसी झारखंड में रम गया है । सौंदर्य ! सौंदर्य ! कहाँ नहीं है सौंदर्य, बताओ तो ?"

कुमुद इस प्रत्युत्तर के लिये तैयार न थी । तुनककर बोली—"नैना ! तुम्हारे विचार न-जाने कौन-सी दुनिया के हैं ? वास्तविक जगत् से जैसे तुम्हें संबंध ही नहीं !"

सुनैना खेत की मेड़ के पास ही उगे हुए पेड़ के तने से टिककर आराम से बैठ गई । पाँव के पास घास ऊँची हो रही थी, उसे हिलाने लगी । "सच कहना, ये लहलहाते, कोमल पौधे, यह हरी-हरी घास, चिड़ियों की यह चुहल तुम्हें लखनऊ में भी नसीब हुई थी ?"

"घास ? हर चौराहे पर । जितनी चाहो, उतनी दिखा दूँ । और, चिड़ियाँ क्या लखनऊ से निर्वासित हैं ?"

"पर यह सजीवता उनमें कहाँ ? ये नन्ही पत्तियाँ वायु के झकोरों के साथ झूम-झूमकर जिस मस्ती से गा ......"

"तुम कविता यदि जीवन से भिन्न रखकर देखो, तो ?"

सुनैना हँस पड़ी—"कविता ही जीवन है कुमुद ! मनुष्य के संसार में जब जीवन नाम की वस्तु प्रवेश करती है, तब उसमें से सितार के तारों की-सी एक झनकार उठती है । करुणात्मक हो या सुखमय, पर है यह कविता ही । समझीं न ? कविता के अंत का ही नाम है जीवन की समाप्ति ।"

"मेरे और तुम्हारे दृष्टिकोणों में विज्ञान और साहित्य का अंतर है । तुम भावुकता से देखती हो, मैं रुक्ष विवेचना करती हूँ । जिसे तुम कविता कहती हो, मेरे लिये वह कल्पना की क्रीड़ा-मात्र है ।"

"कुमुद ! यह कॉलेज का डी० एस्-सी० क्लास नहीं, प्रकृति का विस्तृत प्रांगण है । वहाँ तुम दूसरों की लगाई फुलवारी का आनंद लूटती हो, यहाँ जो कुछ पाओगी, वह तुम्हारे ही अन्वेषण का फल—तुम्हारा अपना होगा ।"

"तुम तर्क में हराने की व्यर्थ कोशिश न करो । लखनऊ मेरे चित्त से एक मिनट के लिये भी नहीं उतरता ।"

सुनैना के सुंदर नेत्र पूर्व की अरुणिमा से चमक उठे । हँसकर उसने कहा—"अच्छा, चलो, कुछ खाया-पिया जाय । इससे तो घर-बाहर कहीं छुटकारा नहीं ।"

बहुत अँधियारे उठकर दोनो दूर इन खेतों के बीच निकल आई थीं । गर्मी की ऋतु थी । पर रात अपने पिछले पहर में सर्दी लिए हुए आती, और फूल-पौधों पर मोतियों की बौछार कर जाती । नए फ़ैशन के कटे सुंदर बालों को हाथ से सँभालते कुमुद ने उठकर साड़ी से ओस-कण झाड़े । फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़ की नीची टहनी से झूलता हुआ अपना फ़र का क़ीमती कोट उतारकर पहन लिया। "कितनी बार कह दिया, मुझे न लाया करो। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। पर जब तुम मानो!" वायु के ठंडे झोकों ने उसके गालों की सुर्ख़ी गाढ़ी कर दी थी।

सुनैना भी एक फुरहरी लेकर उठ खड़ी हुई। "तुम तो बड़ी ही पागल लड़की हो कुमुदरानी!" नैना को प्रकृति के प्रत्येक परमाणु से प्रेम था। वह जहाँ दृष्टि उठाती, वहीं शाश्वत लावण्य की अमर छवि झलकती पाती। किसी अनिर्वचनीय आनंद से उसका हृदय छलकने लगा। वह गुनगुना उठी—"जागे भाग हमारे साजन, पाए दरस तुम्हारे।"

कुमुद ने उसके आनंद में योग न दिया। वह चुपचाप चलती रही। गाँव अब पास आ गया था। ज़मींदार की सुविशाल अट्टालिका का ऊपरी भाग बादलों का आवरण फाड़कर झाँकता दिखाई पड़ा। चलते-चलते सुनैना रुक गई। "मौसी, तुम हो? पहचानी भी नहीं जातीं, ऐसी दुबली हो गई हो।"

सिर पर दूध की हाँड़ी रक्खे, हाथ के लोटे में दूध भरे एक प्रौढ़ा अहीरिन उसी ओर आ रही थी। हँसकर बोली—"बिटिया! बहुत दिनों में सुधि ली।" फिर चिल्लाई—"अरी ओ दुर्गा! अरी देख तो, कौन खड़ा है।"

मिट्टी का कच्चा घर था। फूस का छप्पर। सामने, चबूतरे पर, नीम की सघन छाया में, दो खाटें खड़ी थीं। दुर्गा ने निकलकर बिछा दीं। फिर उलाहना-भरे स्वर में बोली—"काहे को पहचाना होगा!"

सुनैना ने देखा, तो लिपट गई। बाल्य-सखी को बहुत दिनों में देखा था। खिलकर बोली—"अरी! यह तू कैसी हो गई है री!"

दुर्गा की मा ने उसाँस लेकर कहा—"बच गई, यही बहुत समझो बिटिया, तीन बरस हुए जमाई को गुज़रे। बहुत कहती हूँ, दूसरा घर पकड़ ले, ऐसे कब तक चलेगा, पर यह सुनती ही नहीं।" और, फटे आँचल के कोने से आँखें पोंछीं।

कुमुद अभी तक मन-ही-मन झुँझला रही थी। फिर भी उसका क्रोध शिष्टाचार की सीमा तोड़ न पाया था। दुर्गा की मा ने जब उसकी ओर देखकर कहा—"बैठो बेटी," तब वह आकर संकोच से एक ओर बैठ गई। सुनैना दूध का कटोरा मुँह से लगाए बैठी थी। गन्ने के ताज़े रस से मीठा किया हुआ दूध बहुत दिनों में मिला था। वृद्धा बैठकर अपने हास्य और आँसुओं की कहानी सुनाने लगी—"पारसाल लड़के का ब्याह किया है। एक महीना हुआ गौना लिए। खेती में बड़ा नुक़सान रहा। छूट नहीं मिलती।"

धीरे-धीरे पाँव बढ़ाती छप्पर से निकलकर इसी समय बहू आई, और उनके चरण-स्पर्श किए। सुनैना ने उसके दोनो हाथ पकड़कर अपने पास ही बिठा लिया। मुँह खोला। जैसे काले बादलों के बीच पूर्णिमा का चंद्र अपनी निरभ्र ज्योत्स्ना में खिला हो। मुग्ध होकर वह कह उठी—"मौसी, हो भाग्यवान्।"

× × ×

"नैना! मैं तो हैरान हूँ।"

"क्यों कुमुद?"

"पूछती हो क्यों? उन लोगों के साथ बैठते बड़ा अच्छा लगा तुम्हें?"

"बुरा क्या था?"

"वहाँ दूध पीने में तुम्हें......भाई! मैंने तो हटा दिया।"

सुनैना जैसे तंद्रा से जागकर बोली—"बहू बड़ी सुंदर है कुमुद!"

(२)

भुवनमोहन हाल ही में बैरिस्टर होकर वापस आया है। स्वस्थ शरीर, लंबा क़द। देखकर भूख-प्यास बुझती। ज़मींदार ने अत्यधिक लाड़-प्यार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले बेटे को किसी हद तक ढीठ कर दिया है। अभी लड़का ही था। भुवन छत की दीवार पकड़े तन्मय होकर सुबह का सुहावना दृश्य देख रहा था। बहुत वर्षों बाद मातृभूमि ने अपने रूप का अक्षय भांडार उसके सम्मुख बिखेरा है। नैना और कुमुद घूमकर लौट रही थीं। देखा, तो चौंका। कौतूहल हुआ। इस वीरान में ये बुलबुलें कहाँ! अभी वह अवस्था के उस भाग में था, जहाँ प्रत्येक सुंदर वस्तु से एक रागात्मक संबंध स्थापित करने की आकांक्षा रहती है। दूसरे दिन वह भी छड़ी घुमाता उनकी ओर चला। "अशिष्टता हो, तो क्षमा कीजिएगा; आप हमारे गाँव आई हैं, आप लोगों का जिसमें मनोविनोद हो, यह देखना हम गाँववालों का काम है। हम नहीं चाहते, यहाँ से जाने के बाद हमसे आपको किसी प्रकार की शिकायत रहे।"

नमस्ते का जवाब देते हुए सुनैना हँसकर बोली—"मैंने आपको देखा है। आप ज़मींदार साहब हैं कुमुद!" उसने दोनो का परिचय कराया। "आपकी मेहमान यह मेरी सहेली मिस वर्मा हैं। मैं मामा के यहाँ आई हूँ। मेरा तो घर है, पर इसका मन नहीं लगता।"

कुमुद ने कहा—"यह मुझे ज़िद करके लाई है, और ज़िद करके ही बाँधे हुए है, अन्यथा मैं कब की भाग निकली होती।"

सुनैना ने भुवन की ओर उन्मुख होकर कहा—"एक बार नवाब हैदराबाद ने ज़ौक के पास कुछ अशर्फ़ियाँ भेजकर बड़े आग्रह से उन्हें बुलाया। वे दिल्ली के पतन के दिन थे। हैदराबाद स्वर्ग-सुखों का केंद्र हो रहा था, यह जानते हुए भी ज़ौक कहते हैं—'कौन जाए 'ज़ौक' पर दिल्ली की गलियाँ छोड़कर।' बस, कुछ वैसा ही इसका हाल है। दिन-रात लखनऊ के नाम की माला जपती है।"

"तो तुम्हें लखनऊ से इतनी चिढ़ क्यों है भई!"

"मुझे शहरों से चिढ़ है।"

गरम होकर कुमुद ने कहा—"और मुझे तुम्हारी बेवक़ूफ़ी से।"

भुवन ने बात पर पर्दा डालना चाहा—"लखनऊ उनकी मातृभूमि है। घर से स्नेह होना स्वाभाविक है।"

"मातृभूमि तो हमारा समस्त देश है मेरे भाई! कोई कहे, फिर मुझे शहरों से नफ़रत क्यों!...... निसर्ग ने हमारे देश को जो अनुपम लावण्य प्रदान किया है, उसे मनुष्य ने विद्वत्ता के अभिमान में नष्ट कर डालने का वहाँ काफ़ी प्रयत्न किया है। गाँवों में हम अब भी अपना भारत पाते हैं। जिस सौहार्द, जिस ममता, जिस अनुराग को अपनी कल्पना में मातृभूमि की प्रतिमा के चारो ओर बिखेरकर हम उसकी आराधना करते हैं, वह दीपक लेकर खोजने पर भी शहरों में नहीं मिलता। कितनी दूर छूट जाता है हमारा देश हमसे! यही मैं सह नहीं सकती।" फिर हँसकर उसने कुमुद की ओर देखा। "कुमुद! तुम शायद कहना चाह रही हो—'तुम देखो घर ख़ुदा का, हम ख़ुदा की शान देखेंगे।' ऐं?"

भुवन हँस पड़ा, पर कुमुद का मुँह लाल हो गया—"कविता तुम्हें ही मुबारक। यहाँ कोई रहे भी, तो क्या? सोसायटी भी तो चाहिए। तुम्हारी तरह मैं तो अहीर-चमारों में मिल नहीं सकती!"

"तुम भूलती हो कुमुद! देश की ये सबसे बहुमूल्य संपत्ति हैं।" नैना पानी-पानी होकर बोली—"उनकी संस्कृति ही मेरी संस्कृति है।"

"अच्छा, मान लो नैना! तुम कॉलेज में रहो, और ये लोग तुमसे रिश्ता जोड़ने आ जायँ?"

"अपनों को कभी कोई छोड़ देता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य के गौरव में अचल यह युवती भुवन को भगवती गौरी-सी गरिमामयी दिखाई पड़ी। विदेश में रह उसने स्वयं ही कई बार इन बातों की यथार्थता का अनुभव किया था। उसके सुंदर विचारों पर वह मुग्ध हो उठा। किंतु कुमुद...? इस गर्वीली तरुणी का और ही मूल्य था भुवन की दृष्टि में! इच्छा रहते भी वह नैना का स्पष्ट समर्थन न-जाने क्यों न कर सका।

(३)

बहुत रोकने पर भी एक मास बाद कुमुद चली ही गई एक दिन। इस बीच में तीनो अधिकतर साथ ही रहे। मेल भी हुआ, झगड़ा भी। पर कुमुद के मन की थाह पाना भुवन के लिये असंभव ही रहा। अपनी विह्वल दृष्टि में प्राणों के मूक उद्गार वह कितनी ही बार उसके चरणों पर अर्पित कर चुका है। किंतु कुमुद ने उसके मनोभावों को कभी आँख उठाकर देखा तक नहीं। वे वैसे ही उसके चरणों पर पड़े रहते.. कुँभलाते! उपेक्षित! आख़िर नैना उस दिन अपने को रोक न सकी—"कुमुद! इस प्रकार किसी का दिल तोड़ना ठीक नहीं। जानती हो, मेरी बातों से सहमत होते हुए भी भुवन चुप क्यों रहते हैं?"

"यह तो हद दर्जे का पागलपन है।"

"पागल कोई जान-बूझकर नहीं हुआ करता।"

"इसकी ज़िम्मेदारी मेरे सिर नहीं।"

सुनैना ने करुणा-पूर्वक उसकी ओर देखकर कोमल स्वर में कहा—"तुम न-जाने कितनी भूलें कर चुकी हो कुमुद! पर यह तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ी भूल होगी।"

कुमुद ने लापरवाही से उत्तर दिया—"देखा जायगा।"

जब रेल ने सीटी दे दी, तब नैना का हाथ दबाकर वह धीरे से बोली—"पागलपन मुझमें भी है देवी! पर मेरी बीमारी की दवा अभी इँगलैंड ही में है। इसी वसंत में हम लोगों का विवाह .. .." और, उसने हँसकर इँगलैंड से हाल ही में आया अपने नाम का एक पत्र सहेली के हाथ में रख दिया।

नैना जब स्टेशन के बाहर आई, तब उसकी आँखों में आँसू थे, ओठों पर हँसी।

(४)

दोपहर बीतने पर थी। सुनैना भुवनमोहन के दोनो बच्चों को लिए खेल रही थी। वह सात वर्षों बाद मामा के घर आई है। समय की इस विशाल अवधि में ज़माना एक उलट-फेर देख चुका था। बात-बात पर खिलखिला उठने की नैना की प्रवृत्ति अब एक गंभीर स्मित के रूप में परिवर्तित होकर सदा उसके ओठों से अठखेलियाँ किया करती है। वह एक छोटे-से संसार की रानी है।

वह कुतूहल से कुछ देर देखती रही। दूर पर दुर्गा के साथ आती एक स्त्री पहचानी-सी जान पड़ी। मामूली सफ़ेद साड़ी, लंबी बाँहों का ब्लाउज़।

"कुमुद! अरे तुम!" और बच्चों को गोद से उतार वह उससे मिलने दौड़ी। "कहो, यह क्या रूप बना रक्खा है? कहाँ हो आजकल?"

कुमुद ने चप्पल उतारकर एक ओर रख दिए। फिर ख़ाली ज़मीन पर बैठते हुए बोली—"अब तो यहीं आ गई हूँ। यहीं रहूँगी, यदि रहने दो, तो"

हाथ-मुँह धो चुकने के बाद जब वे दोनो बैठीं, तब कुमुद ने कहा—"अम्मा और बाबूजी का देहांत हुए दो वर्ष बीत गए। तुमने तो सुना न होगा?"

नैना ने दुख से सिर हिलाया—"कैसे सुनती, तुम तो सब संबंध ही तोड़ चुकी थीं।"

कुछ देर बाद कुमुद फिर बोली—"कुछ नक़द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपए हैं। यदि ज़मीन मिल जाय, तो इन्हीं दुर्गा बहन के पास ही एक झोपड़ी डाल लूँगी।"

"ऐसा क्यों कहती हो बहन! तुम यहीं रहो न।"

कुछ देर दोनो चुप रहीं। तब कुमुद ने सिर उठाया—"वह वसंत फिर कभी न आया नैना! कोई ख़बर नहीं। कई बार सोचा, चलूँ, इँगलैंड ही में खोजूँ, पर अम्मा और बाबूजी किसी प्रकार तैयार न हुए। इसी बीच अम्मा न रहीं। बाबूजी को अकेले कैसे छोड़ती। कॉलेज की वाइस-प्रिंसिपल होने के कारण काम बहुत अधिक रहता था। ध्यान बँटा रहता था किसी प्रकार। इन्हीं दिनों स्थानीय सरकारी अस्पताल में नया सिविल-सर्जन आया। उसकी अमेरिकन पत्नी हमारी प्रिंसिपल की सहपाठिन निकलीं। एक दिन मिलने आईं। मुझसे जम गईं। डिनर के लिये बुलाया। गई। बाहर लान पर बातें होती रहीं। उनके पतिदेव का इंतज़ार था। कुछ देर में एक बढ़िया कार हॉर्न देती हुई आई। 'मेरे पतिदेव' मैंने सुना, और आँखें उठाकर देखा। शेक-हैंड के लिये बढ़ता हाथ ठिठक गया। बड़ा गहरा धक्का था नैना! ...." वह कहती गई ......

"उनकी मिसेज़ जब डिनर तैयार कराने चली गईं, तब मैंने पूछा—'पहचाना?' मुस्किराकर बोले—'देखा ज़रूर है, याद नहीं आ रहा।' मैं कट गई। फिर भी बोली—'तुमसे यह आशा न थी।' उन्होंने लापरवाही से कह दिया—'परिवर्तन संसार का अटल विधान है।' 'तुम्हारे लिये मैं पागल थी!' वह फिर मुस्किराए, 'पागलपन अच्छी बीमारी नहीं।'"

इस लंबी प्रतीक्षा के बाद उपेक्षा का ऐसा वरदान किस आँचल में सँभालती? लखनऊ ज़हर हो गया। आज जब अपने समस्त स्नेही जनों को खोकर ममता की एक बूँद के लिये पिपासित प्राण तड़प उठे, तब यह स्थान याद आया। जीवन का नग्न सत्य सामने रखकर स्वप्न भंग हो गया। सोचा, चलूँ अपने घर—अपने भारत। इस्तीफ़ा दिया, और चल दी।

सुनैना रो रही थी, किंतु कुमुद की आँखें सूखी थीं। उसकी अव्यक्त वेदना आँसुओं का पथ पार कर चुकी थी। कुछ देर चुप रहकर उसने पूछा—"जज साहब तो मज़े में हैं?"

"हाँ, अच्छे हैं।" नैना ने हिचकी सँभालते हुए कहा।

"बड़े प्यारे बच्चे हैं नैना!" उसने एक को गोद में उठा लिया था। "तुम्हारे हैं?"

नैना ने चुपचाप सिर हिलाया—"भुवन के।"

कुमुद ने नैना की आँखों में देखकर पूछा—"कितने?"

"दो।"

कुछ देर तक वहाँ एक गहरी अन्यमनस्कता छाई रही। तब धीरे से नैना बोली—"कुमुद! सुनती हूँ, सब भूलों का सुधार है। फिर जो भूल तुमसे हो गई, उसका सुधार क्यों नहीं?" कुछ देर बाद उसने तरल स्वर में फिर कहा—"कुमुद! तुम्हारे जीवन की वह भूल सबसे महँगी पड़ी!"

कुमुद ने हँसकर बच्चों को चूम लिया—"बहन! इस भारत में प्रवेश कर मैं सारे अभाव भूल गई हूँ। अब मुझे कोई दुःख नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-कला की कसौटी और उसके मुखर आलोचक

[अध्यापक चेतराम शर्मा, कन्या-महाविद्यालय, जालंधरनगर]

'साहित्यालोचन' में उपयोगी कला और ललित कला के नाम से 'कला के दो प्रकार' सिद्ध और स्वीकृत किए गए हैं। 'उपयोगी कला में बढ़ई, लुहार, सुनार आदि की बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, सुनारगीरी आदि का और ललित कला के अंतर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला' का उल्लेख हुआ है। 'उपयोगी कलाओं द्वारा मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति और ललित कलाओं द्वारा उसके अलौकिक आनंद की सिद्धि' मानी गई है। 'साहित्यालोचन' में यह भी प्रतिपादित है कि आधार की सूक्ष्मता पर कला की उत्तमता निर्भर है—जिसका आधार जितना ही अमूर्त—सूक्ष्म—होगा, वह कला उतनी ही ऊँची होगी। काव्य-कला इसीलिये सर्वोच्च है कि उसमें मूर्त आधार का अभाव है।

उक्त विवेचन पर श्रीपंडित किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री का 'काव्य और उसके गूँगे समालोचक'-शीर्षक एक लेख 'साहित्य-संदेश' में प्रकाशित हुआ है। हमें उसी लेख पर कुछ कहना है। श्रीवाजपेयीजी के लेख का सारांश, प्रायः उन्हीं के शब्दों में, यहाँ दिया जाता है—१—'उक्त ('साहित्यालोचन'वाली मूर्त आधार की) कसौटी और परख ग़लत है।' २—'आधारों की सूक्ष्मता ही कलाओं की श्रेष्ठता का कारण (क्यों) है; इसका कोई भी उत्तर नहीं है।' ३—'आधारों की विशालता ही कला की उत्तमता की कसौटी' मानकर 'स्थापत्य और मूर्ति-निर्माण-कला को ही सर्वोत्तम क्यों न ठहराया जाय?' ४—'लुहारगीरी भी उपयोगी है और कविता भी; पर दोनो के उपयोग में महान् अंतर है।' ५—'स्वर्णकारी उपयोगी कला नहीं है। अँगूठी पहनने से शरीर-मस्तिष्क की कोई पुष्टि-परिष्कृति नहीं होती।' ६—'ललित और उपयोगी नाम से कलाओं के दो भेद न करके साधारण तथा उपयोगी, ये दो भेद करने चाहिए।' ७—'सौंदर्य तथा उपयोगिता के कारण ही संसार की प्रत्येक वस्तु का मूल्य तथा उत्कर्ष स्थिर (?) किया जाता है।' ८—'काव्य-कला में सर्वाधिक सौंदर्य और सबसे बड़ी उपयोगिता है। दूसरी (?) कलाओं में यह बात नहीं।' ९—'आजकल के नए काव्यालोचक गूँगे हैं। अपनी बात दूसरों (?) को बतलाने के लिये छटपटाते रहते हैं।'

हमें 'साहित्यालोचन' से मोह नहीं, न हमें उसका पक्ष लेना है। वाजपेयीजी से भी हमें कोई द्वेष नहीं। 'साहित्यालोचन' में दोष और त्रुटियाँ होंगी; पर इस लेख में हमें उन पर कुछ नहीं कहना है। विचारणीय यह है कि क्या 'साहित्यालोचन' की उक्त कसौटी, जिस पर श्रीवाजपेयीजी ने आक्षेप किया है, अशुद्ध, कच्ची और अधूरी है?

श्रीवाजपेयीजी ने 'सौंदर्य तथा उपयोगिता' को 'चीज़ों' और 'कलाओं' की परख का कारण माना है। 'साहित्यालोचन' ने भी इन दोनो पर पर्याप्त लिखा है। जिन्हें हमारे इस कथन पर संदेह हो, वे 'साहित्यालोचन' का प्रथमाध्याय—कला का विवेचन—पढ़ने का कष्ट उठाएँ। वाजपेयीजी ने भी इस प्रसंग के ये शब्द—सौंदर्य और उपयोगिता—'साहित्यालोचन' से ही लिए हैं, किसी अन्य ग्रंथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नहीं। शास्त्रीजी ने स्वयं अँगरेज़ी से अनुवाद भी नहीं किया; क्योंकि स्वयं उनके लेख से उनका (श्रीवाजपेयीजी का) अँगरेज़ी से अधिक परिचित होना नहीं पाया जाता। (हम स्वयं अँगरेज़ी-ज्ञान को प्रतिभा या मौलिकता का मूल नहीं मानते—समझते।) साहित्यालोचन ने सौंदर्य और उपयोगिता का निषेध नहीं किया, न उपेक्षा ही की। ये दोनो सापेक्ष गुण हैं, निरपेक्ष—स्वतंत्र—नहीं। ये किसी कला के गुण हो सकते हैं, कसौटी नहीं। कसौटी कसौटी ही है, परिभाषा नहीं। सौंदर्य और उपयोगिता का उल्लेख परिभाषा में होना चाहिए। (साहित्यालोचन में ऐसा ही हुआ है) कसौटी में इनके उल्लेख की आवश्यकता नहीं। साहित्यालोचन-निर्दिष्ट कसौटी तब अशुद्ध हो सकती है, जब उसमें और कला की परिभाषा में विरोध हो। आधार की सूक्ष्मता को कला की उच्चता की कसौटी मानना किसी विचार से भी अनुपयुक्त और अशुद्ध नहीं। सुंदरता और उपयोगिता तो सभी कलाओं में (न्यूनाधिक मात्रा में) होती ही हैं। किंतु काव्य-कला में ये गुण सर्वाधिक मात्रा में क्यों हैं? क्योंकि उसमें मूर्त आधार का अभाव है, अथवा उसका आधार सर्वाधिक अमूर्त या सूक्ष्म है। जिस कला में कलाकार को भाव व्यक्त करने में जितनी अधिक सुविधा और स्वतंत्रता होती है, वह उतनी ही ऊँची कला है। सुविधा और स्वतंत्रता का मूल-कारण मूर्त आधार का अभाव है। मूर्त आधारों की विशालता को कसौटी बनाकर सिद्ध कीजिएगा, तो काव्य की उत्तमता सिद्ध न होगी! इस विशालता से जो सिद्ध होगा, वह काव्य नहीं, कोई मालगाड़ी, टैटैनिक या पहाड़ होगा; ह्वेल मच्छ या अजगर होगा।

कला में ही नहीं, लोक-वेद में भी आधारों की सूक्ष्मता आधेयों की उत्तमता की कसौटी मानी गई है। हम नित्य देखते हैं, विद्यार्थी ज्यों-ज्यों ज्ञानवान् होता जाता है, त्यों-त्यों उसका सामान घटता जाता है; वह अधिकाधिक स्वतंत्र होता जाता है। ज्ञान हो जाने पर कोट-बूट और नेकटाई-कॉलर का आडंबर छूट जाता है। प्रौढ़ और सिद्ध-हस्त लेखक एवं कवि की रचना में शब्द स्वल्प और भाव (अर्थ) अनल्प होते हैं। कविवर रवींद्र का 'चार अध्याय' उपन्यास पढ़िएगा।

'हिंदी-शिक्षावली' के प्रथम या द्वितीय भाग में सूरज और हवा का झगड़ा अनेक सज्जनों ने पढ़ा होगा। दोनो के बल की परीक्षा एक बटोही के कपड़े उतरवा देने में थी। वायु से तेज—हवा से घाम या धूप—अधिक सूक्ष्म है। कहना न होगा कि हवा हार गई, तेज (घाम) जीत गया—स्थूल हार गया, और सूक्ष्म जीत गया। श्रीमद्भगवद्गीता भी ऐसा ही बताती है—

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः;
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥३।४२॥

आधार की सूक्ष्मता का समर्थन श्रीमम्मटाचार्य ने भी भाव-विभोर हो, झूम-झूमकर किया है—

नियतिकृतनियमरहितां
ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्;
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती
भारती कवेर्जयति ॥ का० प्र० १। १॥

कवि-भारती की ऐसी सर्वांग-सुंदर, संपूर्ण स्तुति और कहाँ मिल सकती है।

स्थूल वस्तु अधिक व्यापक नहीं हो सकती—आग और पानी से भाप अधिक सूक्ष्म, व्यापक और बलवती है। सर्वाधिक सूक्ष्म तत्त्व ही सर्वाधिक व्यापक और बड़ा है। पंचतत्त्व इसके साक्षी हैं। सूक्ष्म में अधिक बल, बल में स्वतंत्रता और स्वतंत्रता में सुख होता है। सुख और आनंद में स्थूल और सूक्ष्म का ही अंतर है।

मूर्त आधार की न्यूनाधिकता या स्थूलता-सूक्ष्मता कलाओं के तारतम्य की अनिवार्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध कसौटी है। कला का प्रयोजन भावाविष्करण और आनंद-दान है। भावाविष्करण में कलाकार को जितनी ही अधिक सुविधा-स्वतंत्रता होगी, आनंद-प्राप्ति भी उतनी ही अधिक होगी। कला का आधार जितना ही अधिक मूर्त या स्थूल होगा, भावाविष्करण में कलाकार उतना ही अधिक पराधीन और आनंद-हीन होगा। आधार की सूक्ष्मता और कलाकार की अपनी क्षमता—आंतरिक योग्यता—कला का घना ज्ञानाभ्यास—दोनो ही भावाविष्करण में सहायक होने से आनंद के कारण हैं। आधार की अपनी सूक्ष्मता की अपेक्षा कलाकार की अपनी क्षमता—अनुभूति और उसे व्यक्त करने की निपुणता—अतिशय महत्त्व-पूर्ण है। समर्थ कलाकार घटिया उपकरण से भी बढ़िया भावाविष्कार कर सकता है; क्योंकि "क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।" किंतु उपकरण भी नगण्य और हेय नहीं। वास्तुकला और मूर्तिकला इसलिये घटिया हैं कि वास्तुकार और मूर्तिकार भावाविष्करण में अधिक स्वाधीन नहीं, उपकरण-परवश हैं। वास्तुकार, मूर्तिकार और चित्रकार के मूर्ताधार—ईंट, पत्थर, छेनी, हथौड़ा, मिट्टी, लकड़ी, पत्र, मसि, रंग, लेखनी, तूलिका उपकरण—कलाकार की इच्छा और प्रयोजन से न्यूनाधिक टूट-फूट, कट-फट, हट-फैल, लग-निकल सकते हैं; मोटे-पतले हो सकते हैं। कलाकार को अपने मूर्त आधार की भी चिंता रहती है। वह कवि के समान मूर्त आधार-निश्चित और एकाग्र नहीं हो सकता। उपकरण की स्थूलता और कठोरता कलाकार के मनोनुकूल न रहने से उसके भावाविष्करण में बाधक होती हैं। ये स्थूल उपकरण इन कलाकारों के इच्छाधीन, अनुयायी या दास नहीं हैं; इनकी उँगलियों पर नहीं नाचते; इनके संकेत नहीं समझते। इसलिये ये मूर्त आधार-कलाकार सूक्ष्म उपकरण-कलाकार कवि के समान स्वाधीन और सानंद नहीं हो सकते। परवशता में आनंद कहाँ!

भावाविष्करण में कवि सर्वाधिक स्वाधीन होता है। उसे किसी स्थूल उपकरण की अपेक्षा नहीं, मूर्त आधार की आवश्यकता नहीं, मूर्त आधार के टूटने-फूटने की चिंता नहीं, आशंका नहीं। कवि की अधिक स्वतंत्रता और आनंद का कारण मूर्त आधार का अभाव भी है। इससे सिद्ध हुआ कि मूर्त आधार का तारतम्य कलाओं के तारतम्य की उचित, अनिवार्य और शुद्ध कसौटी है। काव्य-प्रकाशकार मम्मटाचार्य ने भी 'नियतिकृतनियम-रहितां, ह्लादैकमयीं, अनन्यपरतन्त्राम्' कहकर मूर्त आधार का निषेध या खंडन ही किया है, समर्थन नहीं। मूर्त आधार-कला पर उक्त विशेषण नहीं घट सकते।

श्रीबाबू गुलाबराय महाशय ने 'इसके साथ कुछ भावात्मक कसौटी भी देनी चाहिए थी' लिखा है; किंतु यह कसौटी है, परिभाषा नहीं। 'मूर्त आधार के अभाव' में क्या भावात्मकता का भाव नहीं? भावात्मकता का उल्लेख काव्य-कला की परिभाषा में अनिवार्य है, कलाओं की कसौटी में नहीं। भावात्मक कसौटी पर सब कलाएँ समान रूप से नहीं परखी जा सकतीं। तब कसौटी में अव्याप्ति दोष आ जायगा।

श्रीवाजपेयीजी ने भी काव्य-कला के अमूर्त आधार को प्रकारांतर से स्वीकार किया है—'लोहे और दिल में जो अंतर है, वही अंतर लुहारगीरी और कविता में है।' लोहे की अपेक्षा दिल अमूर्त और सूक्ष्म है; अतएव लुहारगीरी से कविता भी अधिक अमूर्त और सूक्ष्म है। 'दिल और दिमाग़ का परिष्कार करने' वाला साधन (काव्य) स्थूल नहीं हो सकता। सूक्ष्म आधार मानने से काव्य की 'बेजोड़'ता के बिगड़ने की भी आशंका नहीं हो सकती। अतएव कलाओं की 'साहित्यालोचन'-निर्दिष्ट कसौटी ठीक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लुहारगीरी उपयोगी है, तो स्वर्णकारी भी उपयोगी हुई। स्वर्णकारी से भी कुछ-न-कुछ भाव व्यक्त किया जाता है, उससे कुछ-न-कुछ आनंद भी मिलता ही है, उसकी उपादेयता भी है। अँगूठी की भी उपयोगिता है; अन्यथा उसे कोई क्यों ले-पहने। अँगूठी उपयोगी नहीं, तो अन्य आभूषण भी नहीं। ज्योतिष से मिलकर आयुर्वेद भिन्न-भिन्न राशि के मनुष्यों के लिये भिन्न-भिन्न नग (रत्न)-जड़ी अँगूठी का धारण करना सुख-स्वास्थ्य-प्रद बताता है; अतएव स्वर्णकारी भी उपयोगी और आनंदप्रद होने से कला हुई।

कला के प्रसंग में उपयोगी का अर्थ है आवश्यक, प्राथमिक, प्रथम आवश्यकता—शारीरिक आवश्यकता—की पूर्ति करनेवाली कला। जो गुण या वस्तु उपयोगी है, वह कुछ-न-कुछ आनंदप्रद भी अवश्य है। कटु नीम भी सुखप्रद है। उपयोगी कला से शारीरिक सुख और ललित कलाओं से मानसिक सुख (आनंद) मिलता है। उपयोगी कला में मूर्तता की और ललित कला में सूक्ष्मता की अधिकता है। आनंद तो उपयोगी कला में भी है; पर ललित कला के समान बहुत अधिक नहीं, इसलिये 'उपयोगी कला' और 'ललित कला,' कला के इन दो मुख्य भेदों के नामकरण में भी कोई दोष नहीं। पुनर्नामकरण आवश्यक ही हो, तो 'साधारण कला' और 'ललित कला' होना चाहिए, 'साधारण' और 'उपयोगी' नहीं।

काव्य-कला में सर्वाधिक सुंदरता और आनंद-दान की क्षमता तो अवश्य है, पर सबसे अधिक उपयोगिता नहीं। 'उपयोगिता' का अर्थ उपादेयता, व्यावहारिकता है। सोना लोहे से अधिक सुंदर हो सकता है; पर अधिक उपयोगी नहीं। काव्य-कला और सोना सर्वजन या बहुजन-सुलभ नहीं।

'सौंदर्य तथा उपयोगिता के कारण ही संसार की प्रत्येक वस्तु का मूल्य तथा उत्कर्ष स्थिर' (?) नहीं 'किया जाता।' किसी वस्तु का मूल्य उसकी उपज की न्यूनाधिकता पर भी निर्भर होता है। (अपनी) प्रचुरता के कारण गढ़वाल में घास-लकड़ी-पत्थर बिकते नहीं या बहुत सस्ते बिकते हैं। (अपनी) प्रचुरता के कारण ही बहुत उपयोगी होने पर भी मिट्टी बहुत सस्ती है। कहीं-कहीं पानी बिकता है। जहाँ पानी सुलभता के कारण बिकता नहीं, वहाँ भी उसकी उपयोगिता वैसी ही है, जैसी बिकनेवाले प्रांत में। पानी के महँगे होने का कारण उसकी स्वल्पता भी है, उपयोगिता ही नहीं। उपज कम और माँग अधिक हो, तो अवश्य ही वस्तु महँगी हो जायगी। ब्राह्मी बूटी और फूल सुंदर भी हैं और उपयोगी भी; तथापि अपनी प्रचुरता के कारण बहुत उपयोगी होने पर भी ये गढ़वाल में बिकते नहीं, सुलभ हैं, मूल्य बिना ही मिल जाते हैं। 'मूल्य तथा उत्कर्ष' के 'स्थिर' किए जाने की बात भी अच्छी रही! पर ये तो घटते-बढ़ते रहते हैं। किसी वस्तु का मान-मूल्य उसकी सुंदरता और उपयोगिता पर अवश्य निर्भर है; पर कभी-कभी, कहीं-कहीं ऐसा नहीं भी होता। भंगी का कार्य कितना सुंदर और उपयोगी है; पर इस देश में उसका कुछ भी मान-मूल्य नहीं।

हीरा सुंदर तो है ही, उपयोगी भी है। अनेक कर्म-क्रियाओं में उसका उपयोग होता है।

जब तक्षण और तर्कुकर्म भी ६४ कलाओं में गिने गए हैं, तो स्वर्णकारी को कलाओं में क्यों न गिना-माना जाय? स्वर्णकारी में थोड़ा-बहुत चित्रणा-लेखन भी होता है। अल्प समय में अल्प शक्ति-सामग्री से जिस कौशल द्वारा भावाविष्करण होकर अधिक, सुंदर और चिरस्थायी सुखसुविधा की प्राप्ति हो, उसे कला कहते हैं। सोना सुंदर भी है, और उपयोगी भी। (स्वर्णकार के) चित्रणा-लेखन द्वारा उसके दोनो गुण और अधिक बढ़ जाते हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतएव स्वर्णकारी भी कला है। उक्त परिभाषा स्वर्णकारी पर भी घटती है; अतः स्वर्णकारी को उपयोगी कलाओं में स्थान देना उचित ही है।

साहित्य की आलोचना होनी ही चाहिए; वांछनीय है। 'समालोचक में विशेषता होती है' और सूक्ष्म विवेक भी। पर 'दूसरी (?) कलाओं में यह बात नहीं,' 'अपनी बातें दूसरों (?) को बतलाने के लिये छटपटाता रहता है,' स्वयं ऐसे अनुपयुक्त, व्याकरण-विरुद्ध पद-प्रयोग करना और 'आजकल के (सभी) नए आलोचकों' को उनकी आलोचना पढ़े विना ही 'गूँगे' कहना, न कोई विशेषता है, न 'सूक्ष्म विवेचन'; वरन् बड़ी मुखरता है!

'दूसरी', 'दूसरे', 'दूसरों' का अर्थ 'और' या 'औरों' नहीं है। संस्कृत में भी औरों या अन्य के अर्थ में द्वितीय का प्रयोग नहीं होता। अँगरेज़ी में भी उक्त अर्थ में सेकंड (Second) या सेकंड्स नहीं प्रयुक्त होते, अदर्स (Others) होता है। यह ठीक है कि बहुत सज्जन औरों के स्थान दूसरों का प्रयोग करते हैं; पर बहुत लोगों के अपनाने से भी कोई दोष गुण नहीं हो सकता। भंग-तमाखू आदि मादक पदार्थों का सेवन बहुत जन—अनेक 'सज्जन' भी—करते हैं; पर इससे उन पदार्थों की दुष्टता और 'सज्जनों' का दोष दूर नहीं हो जाता। सज्जनों से भी दोष हो जाते हैं; क्योंकि कोई सज्जन सभी विषयों में सतर्क और जागरित नहीं हो सकते। जो सज्जन जिस विषय में सतर्क, जागरित और अभ्यस्त हैं, उस विषय में उनकी सम्मति मान्य और ग्राह्य होनी ही चाहिए। हिंदी में अनेक अशुद्ध प्रयोग चल पड़े हैं—लड्डू को खाया गया, तंबाकू को लाया गया, जैसा कि, जितना कि, यहाँ पर, वहाँ पर, दर असल में, बाद में इत्यादि। 'बहुजन-प्रयुक्त' की दुहाई देने से भी ऐसे प्रयोग शुद्ध नहीं हो सकते। पंजाब में अनेक शिक्षित सज्जन भी 'स्त्री-पुरुष'—'औरत-मर्द'—न कहकर 'मनुष्य और स्त्री', 'आदमी और औरत' कहते हैं; पर 'प्रयोगशरणा वैयाकरणाः।' कहकर इन प्रमत्त प्रयोगों का समर्थन नहीं हो सकता।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकमायहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥–)
२५ ,, ,, ,, ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलेंद्रिय और उसकी रक्षा

[श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०]

सफ़ाई का महत्त्व

एक उर्दू-कवि ने कहा है—"सफ़ाई अजब चीज़ दुनिया में है; नहीं इससे बढ़कर कोई और शै।" वास्तव में जब हम अपने शरीर की ओर ध्यान देते हैं, तो हमें इसकी सचाई स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाती है। सफ़ाई और स्वास्थ्य-कर नियमों का समुचित पालन किए विना कोई भी अंग-प्रत्यंग रोगों से मुक्त नहीं रह सकता। यही कारण है कि हमारे धर्म-शास्त्रों ने शौच-स्नान के कड़े-से-कड़े नियम बना रक्खे हैं। मनुजी कहते हैं—

"अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति ;
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ।"
(अध्याय ५ श्लोक १०६)

अर्थात् शरीर के भीतर अंतःकरण की शुद्धि सत्याचरण से होती है। विद्या और तप से जीवात्मा शुद्ध होता है। इसी भाँति ज्ञान से बुद्धि संस्कृत होती है। यह शुद्धि अभ्यंतर शुद्धि कहाती है। और, शरीर के बाहर मल-मूत्र, थूक, खखार, लोहू, कान और नाक के मैल आदि की सफ़ाई—जैसे हाथ-पैर धोना, कुल्ली करना, स्नान करना आदि—बाह्य शुद्धि कहाती है। उक्त दोनो प्रकार की शुद्धि शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये परमावश्यक है।

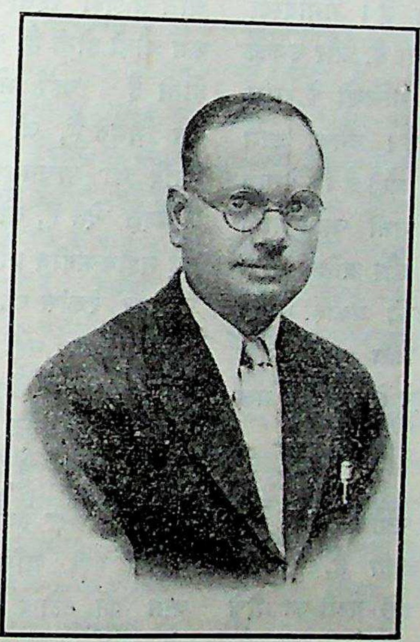

श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद, बी० ए०, एल्० टी०

परिचय

मलेंद्रिय में त्वचा, गुर्दे और अँतड़ियों का भी समावेश है। गुदा अँतड़ियों का अंतिम छिद्र है। अतः प्रसंग-वश त्वचा और अँतड़ियों आदि के कार्य की जानकारी भी आवश्यक है।

त्वचा

इसके द्वारा रक्त का मल पसीने के रूप में शरीर के बाहर निकला करता है। हमारी त्वचा में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं, जो वास्तव में महीन-महीन नलिकाओं के मुँह हैं। इन नलिकाओं के दूसरे किनारे पर त्वचा के भीतर छोटी-छोटी ग्रंथियाँ होती हैं। इन ग्रंथियों का मुख्य काम रक्त से मल को पसीने के रूप में बाहर निकाल देना है। साधारणतया पसीने का निकलना मालूम नहीं होता, क्योंकि निकलते-निकलते उसका जलांश या तो वायु-मंडल में लय हो जाता, या पहने हुए वस्त्रों में सूख जाता है। पसीना केवल गर्मी के मौसम में या परिश्रम करने के पश्चात् निकलता हुआ दिखाई पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसीने का जलांश तो वायु में मिल जाता है, और मलांश (फ़ुज़ला) चमड़े पर लगा रह जाता है। इस मलांश के साथ चमड़े पर और भी मल मिलकर, काला-काला मैल बनकर जम जाता है। इस मैल में मुरदार खाल, मिट्टी और चिकनाई शामिल होती है। यदि यह मैल प्रतिदिन साफ़ न किया जाय, तो त्वचा के छिद्र बंद हो जाते हैं, और रक्त का मलांश निकलने में कठिनाई पड़ती है। अतः नित्यप्रति उचित रूप से स्नान करना चाहिए।

गुर्दे

मूत्र द्वारा जो मल रक्त से बाहर निकलता है, वह गुर्दों द्वारा ही पृथक् किया जाता है। गर्भावस्था में गुर्दों को बहुत काम करना पड़ता है, और उनका काम निर्विघ्न समाप्त होते रहना गर्भिणी के शरीर की रक्षा के लिये अत्यंतावश्यक है। उनका काम ठीक-ठीक होते रहने की पहचान यही है कि पेशाब की मात्रा में कमी न होने पाए। पानी बहुत मात्रा में पीने से पेशाब शीघ्र-शीघ्र और अधिक मात्रा में होता है। रक्त का मल उसी प्रकार पेशाब बन-बनकर निकल जाता है, जिस प्रकार गंदी नाली में बहुत-सा पानी डाल देने से उसका मल बह जाता है।

अँतड़ियाँ

जब भोजन का ग्रास मुँह में चबाया जाकर और थूक से ख़ूब मिलकर निगला जाता है, तो पहले अन्न-प्रनाली में पहुँचता है। इस नली का नीचे का सिरा एक थैली से जुड़ा रहता है, जिसे आमाशय कहते हैं। अन्न-प्रनाली की लंबाई १० इंच होती है। इसमें किसी प्रकार का पाचक रस नहीं बनता। इस नली का मुख्य काम भोजन को कंठ से आमाशय तक पहुँचाना है। आमाशय को पाकस्थली भी कहते हैं। साधारण बोलचाल में हम इसे पेट कहते हैं। यह थैली उदर के बाएँ भाग में होती है। इसका आकार चमड़े की मशक से बहुत मिलता-जुलता है। इसकी लंबाई १२-१३ इंच और चौड़ाई ४ इंच के लगभग होती है।

थूक मिला हुआ गीला भोजन आमाशय के बाएँ चौड़े भाग में आकर इकट्ठा होता है। भोजन पहुँचने पर आमाशयिक रस बनने लगता है। उक्त रस तैयार होने में लगभग आध घंटा लगता है। यहाँ भोजन लगभग ४½ घंटे ठहरता है। पश्चात् आँतों में प्रवेश करता है। छोटी आँत लगभग २२ फ़ीट लंबी होती है। यह सर्प की तरह गेंडली मारे उदर में पड़ी रहती है। इसका नीचे का सिरा बड़ी आँत से जुड़ा रहता है। छोटी आँत बड़ी आँत से कम चौड़ी होती है, परंतु लंबाई में उससे चौगुनी होती है। यहाँ भोजन से पित्त और कई ऐसे रस मिलते हैं, जो अन्न, दाल, मांस, चिकनाई आदि का पाचन कर उन्हें एक ऐसे तरल रस में बदल देते हैं, जो अँतड़ियों की झिल्ली में गुथी हुई महीन-महीन नलियों द्वारा सहज ही में रक्त में पहुँचकर रक्तांश बन जाता है। जो द्रव्य ये नलिकाएँ स्वीकार नहीं करतीं, वे बहिष्कृत हो जाते हैं। परमात्मा ने अँतड़ियाँ इसी कारण इतनी लंबी बनाई हैं कि इनमें रहते हुए भोजन का जो-जो अंश उपयोगी है, वह नलिकाओं द्वारा रक्तांश बन जाय, और केवल मल ही बाहर जाय। जब मलांश बड़ी आँत में पहुँचता है, तो फिर इस बात की टटोल शुरू होती है कि रस बाक़ी तो नहीं रह गया। इस प्रकार मलांशचुसताचुसता गुदा तक पहुँच जाता है। गुदा में पहुँचते-पहुँचते उसका जलांश तक सोख लिया जाता है, और वही विष्ठा के रूप में बाहर निकलता है।

भोजन, पचा हुआ रस, तथा विष्ठा, ये तीनो ही पदार्थ ऐसे हैं, जो रक्खे रहने से सड़ उठते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके अतिरिक्त विशेषकर बड़ी अँतड़ी में ऐसे जीवाणु मौजूद रहते हैं, जो इन चीज़ों को सड़ा देते हैं। इसलिये यदि उचित समय पर मल-त्याग न किया जाय, तो एक तो उसका जलांश और भी कम होकर वह सख़्त हो जाता है; दूसरे, उससे जो बदबूदार हवाएँ ख़ारिज होती हैं, वह भी जलांश के साथ शरीर में जज़्ब होकर व्याधि उत्पन्न कर देती हैं; तीसरे, गुदा के भरे होने से और नया फ़ुज़ला वहाँ आ नहीं सकता, और वह बड़ी आँत के ऊपरी भाग में पड़ा रहकर सड़ा करता है। इसका परिणाम और भी बुरा होता है—पेट फूलना, अजीर्ण, सिर-पीड़ा आदि अनेक रोग उठ खड़े होते हैं।

मल-त्याग

आजकल बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो समय पर टट्टी जाते हैं। टट्टी लगने पर भी कितने ही व्यक्ति आलस्य-वश चारपाई पर पड़े-पड़े ऊँघते रहते हैं। विद्यार्थियों में प्रायः देखा गया है कि वे प्रातःकाल उठते ही पढ़ना आरंभ कर देते हैं। स्त्रियाँ भी झाड़ू-बुहारी पहले कर लेती हैं, तब मुँह-हाथ धोने का विचार करती हैं। ये सब बुरी आदतें हैं। टट्टी लगते ही फ़ौरन् जाना चाहिए। इसके रोकने से पेट में पीड़ा और गुड़गुड़ाहट होने लगती है, बुरी-बुरी डकारें आती हैं, और नाना प्रकार के उदर-विकार उत्पन्न हो जाते हैं। अधोवायु—अर्थात् वह हवा, जो गुदा-मार्ग से निकलती है—का रोकना भी उचित नहीं। इससे मल-मूत्र बड़ी कठिनाई से उतरते हैं, और पेट में दर्द भी शुरू हो जाता है। किसी ने बहुत ठीक कहा है कि यदि रोकना ही है, तो काम, क्रोध, मोह, शोक, भय आदि के वेगों को रोकिए, इससे आपकी बुद्धि और शक्ति बढ़ेगी। मल-मूत्रादि के वेगों का रोकना बुद्धिमानी नहीं।

महात्मा सुश्रुत ने लिखा है कि प्रातःकाल उठकर अन्य कार्य करने से पूर्व मल-मूत्र का त्याग करना चाहिए। इससे अफारा और भारीपन दूर होता है, आँतों में गुड़गुड़ाहट नहीं होती तथा आयु बढ़ती है। जिन लोगों को प्रातःकाल टट्टी जाने की आदत नहीं, उन्हें भी ऐसी आदत डालनी चाहिए। क्योंकि नींद खुलने के बाद टट्टी जाने में जितनी ही देर होगी, उतना ही शरीर में आलस्य बढ़ेगा, और उतना ही उदर-संबंधी बीमारियों का भय भी रहेगा। काँख-काँखकर मल-त्याग करने का उद्योग भी अनुचित है। यदि क़ब्ज़ की शिकायत हो और खुलकर दस्त न आए, तो कभी-कभी कोई हलकी दस्तावर दवा खा लेनी चाहिए। किंतु दवा के ही सहारे नित्यप्रति मल-त्याग करना उचित नहीं, क्योंकि इससे कालांतर में आँतें कमज़ोर हो जाती हैं। जामुन खाने से ख़ुलासा दस्त होता है, किंतु यह प्रत्येक मौसम में नहीं मिल सकतीं। अतः जिन्हें क़ब्ज़ की शिकायत रहती हो, उन्हें जामुन की ऋतु में नित्य काली-काली पकी हुई जामुन खानी चाहिए। अन्य ऋतुओं में हरड़ के छिलके का चूर्ण, सनाय, अंडी का तैल, मुनक़्क़े डालकर औटाया हुआ दूध आदि से काम लेना चाहिए।

शौच-जल (आबदस्त)

प्राकृतिक चिकित्सकों का मत है कि जो मनुष्य पूर्ण स्वस्थ है, उसकी गुदा में टट्टी जाने के पश्चात् ज़रा भी मल नहीं लगा रह जाता। कुत्ता, बिल्ली, गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट आदि पशुओं को सभी ने देखा होगा। जब ये मल-त्याग कर चुकते हैं, तो भी ऐसे साफ़ रहते हैं, मानो इन्होंने आबदस्त लिया हो। स्वस्थ व्यक्ति भी इसी प्रकार मल-त्याग करने पर स्वच्छ रहता है। जिस पुरुष के मल लगा रह जाता है, उसे समझना चाहिए कि उसके उदर के कार्य-क्रम में कुछ विकार अवश्य है। अतः उसे आहार-व्यवहार के उचित नियमों का पालन करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं कि तंदुरुस्त आदमी को आबदस्त लेना ही न चाहिए। प्रत्येक सफ़ाई-पसंद मनुष्य को काफ़ी आबदस्त लेना चाहिए। बहुधा देखा गया है कि लोग एक ही आध गिलास पानी से काम चला लेते हैं। भारत-जैसे देश में—जहाँ पानी की कमी नहीं—इस प्रकार थोड़े पानी से आबदस्त लेना काहिली नहीं, तो और क्या है? अतः टट्टी जाते समय कम-से-कम १½ सेर ठंडा पानी ले जाना चाहिए। मल-मार्गों की सफ़ाई के विषय में कहा है—

गुदादिमलमार्गाणां शौचं कान्तिबलप्रदम्;
पावित्र्यकरमायुष्यमलक्ष्मीकलिपापहृत्।

अर्थात् गुदा आदि मल-मार्गों को ख़ूब धोकर शुद्ध करने से पवित्रता प्राप्त होती है, बल और कांति की वृद्धि होती है, आयु बढ़ती है, और दरिद्रता तथा पाप इत्यादि का नाश होता है।

प्राचीन ऋषि-मुनियों का सिद्धांत है कि मल-त्याग के पश्चात् गुदा-मार्ग को प्रथम मिट्टी के छोटे-छोटे ढेलों से पोंछकर फिर जल से धोवे। इस प्रकार मिट्टी के प्रयोग से मल की दुर्गंधि मिट जाती है, तथा कृमि होने या अर्श (बवासीर) के मस्सों के बढ़ने का भय नहीं रहता, और जल की तरावट से गुदा की नाड़ियाँ स्थिर हो जाती हैं। इसीलिये शौच के लिये सदा शीतल या ताज़े जल का ही प्रयोग बताया गया है। गरम जल से शौच करने से गुदा की नाड़ियाँ चंचल रहती हैं। और, प्रायः गुदा-भ्रंश (काँच निकलना) और अर्श-रोग हो जाते हैं। अँगरेज़ लोग और कतिपय फ़ैशनेबिल व्यक्ति मिट्टी के स्थान पर एक प्रकार के काग़ज़ का प्रयोग करते हैं, किंतु इसमें वह विशेष गुण कहाँ? हम इसे कभी पसंद न करेंगे।

बवासीर

गुदा की समुचित सफ़ाई पर ध्यान न देने से नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। उनमें से बवासीर एक सामान्य रोग है। इसे अँगरेज़ी में Piles कहते हैं। ६० प्रतिशतक व्यक्ति इससे पीड़ित पाए जाते हैं। उन्हें सदा क़ब्ज़ की शिकायत रहती है। यह हठीला रोग प्रायः पीढ़ी-दर-पीढ़ी बराबर चला जाता है। जो बार-बार तेज़ जुलाब लिया करते हैं, जिन्हें एक ही आसन से अधिक बैठना पड़ता है, जिन्हें अति मैथुन करने की बुरी आदत पड़ गई है, जिन्हें बहुत घोड़े की सवारी करनी पड़ती है, जो अधिक उपवास किया करते हैं, जो सदा ऐशो आराम में पड़े रहते हैं, जो तेज़ मिर्च-मसालों तथा रूखे, ठंडे और तीखे पदार्थों का अधिक सेवन करते हैं, या जिन्हें मद्य-मांस के विना भोजन ही नहीं रुचता, उन्हें प्रायः इस रोग का शिकार बनना पड़ता है। कभी-कभी यकृत (जिगर) दोष से भी यह रोग आ दबाता है। अक्सर यह रोग पैत्रिक भी होता है। स्त्रियों को उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त रज और गर्भ आदि के विकारों से भी होता है।

वैद्यक-मतानुसार बवासीर की कई क़िस्में हैं, किंतु स्थूल दृष्टि से हम इसे तीन प्रकार का कह सकते हैं—(१) भीतरी, (२) दरमियानी और (३) बाहरी।

भीतरी बवासीर में मस्सों से रक्त तो आता है, किंतु अधिक पीड़ा नहीं होती। दरमियानी में रक्त-स्राव और पीड़ा दोनो ही होते हैं। बाहरी में रक्त-स्राव नहीं होता, लेकिन पीड़ा बेहद होती है।

भीतरी बवासीर में गुदा में जलन, खुजली और थोड़ी-थोड़ी पीड़ा भी हुआ करती है। शौच के समय यह पीड़ा बहुत बढ़ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़ब्ज़ रहने से इस रोग की विशेष वृद्धि होती है। रक्त कभी शौच के साथ गिरता है, और कभी बाद में बूँद-बूँद करके टपकता है। कभी तो रक्त-स्राव इतनी अधिक मात्रा में होता है कि रोगी मूर्च्छित हो जाता है। लगातार रक्त-स्राव होते रहने से रोगी पीला पड़ जाता है, और उसका शरीर दुर्बल एवं निर्बल हो जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि भीतरी मस्से गुदा के बाहर निकल कर इतने फूल जाते हैं कि उनका भीतर प्रवेश करना कठिन हो जाता है।

इसके अतिरिक्त सरदी, गरमी और नमी का प्रभाव भी गुदा की नाड़ियों पर पड़ता है। इस-लिये गीले अथवा शीतोष्ण स्थानों पर बैठना भी हानिकर है। खुली हवा में फुरतीला व्यायाम, अंग-संचालन, टेनिस आदि का खेलना, पैदल चलना आदि बहुत उपयोगी है। बवासीर के रोगी को गरम तथा बादी पदार्थों—गरम मसाले, अचार, सिरका, चाय, क़हवा, लाल मिर्च, तेल, बैंगन, मेथी, लहसुन आदि—की भरमार से बचना चाहिए। यदि शौच न होता हो, तो बल-पूर्वक शौच उतारना ठीक नहीं। ऐसी दशा में एनिमा* लेना चाहिए। रात्रि में सोने से पूर्व ऐसे पदार्थों का सेवन करना चाहिए, जिनसे प्रातः-काल नरम पाख़ाना आ जाय, यथा गरम दूध या मुरब्बा, हड़ इत्यादि। रोगी को ख़ुश्क और कड़ा पाख़ाना लानेवाले रूक्ष पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। कहा जाता है, कंधे की किसी नस का गुदा-मार्ग से विशेष संबंध है, और उस पर दबाव पड़ते रहने से अर्श रोग दब जाता है। शायद यही कारण है कि मुगदर हिलानेवालों, कंधों पर बोझा ढोनेवाले श्रम-जीवियों, बहेगी, पीनस, पालकी ले जानेवाले कहारों, हल कंधे पर रखकर ले जानेवाले किसानों और मोटा लट्ठ कंधे पर रखनेवाले देहातियों को प्रायः यह रोग नहीं होता।

गर्भावस्था में गर्भिणी स्त्रियों को प्रायः बवासीर भी बहुत सताती है *। इसका कारण गुदा पर गर्भाशय का दबाव पड़ना तथा क़ब्ज़ का रहना है। बहुधा मस्से बाहर निकल आते हैं, और जितनी-जितनी गर्भावधि बढ़ती जाती है, बवासीर का कष्ट भी बढ़ता जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी तो मस्से इतने बढ़ जाते हैं कि चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है। डॉक्टर दयानिधान अपनी 'गर्भ और गर्भिणी'-नामक पुस्तक में लिखते हैं कि बवासीर के मस्से बड़े हो जाने की दशा में बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि क़ब्ज़ न होने दिया जाय †। और, यदि शौच के समय मस्से बाहर निकल आते हों, तो उँगलियों से उन्हें भीतर कर दिया जाय, क्योंकि जो मस्से बाहर निकले रह जाते हैं, वे फूल जाते और बड़ा कष्ट देते हैं। जब तक उन्हें भीतर नहीं किया जाता, वे कम नहीं होते। मस्सों की तकलीफ़ से बचने का दूसरा उपाय यह है कि

* बहुत-सी स्त्रियाँ इसे अच्छा नहीं समझतीं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि इससे शरीर निर्बल हो जाता है। यह भ्रम है, तुरंत दस्त लाने के लिये इससे बढ़कर दूसरा उत्तम इलाज नहीं। इससे मल बिलकुल साफ़ हो जाता है, और शरीर में नया जहर नहीं जमता। महात्मा गांधी ने इसकी बहुत प्रशंसा की है। —लेखक

* जिन स्त्रियों को गर्भ रहने से पहले ही बवासीर होती है, उनमें से किसी-किसी को प्रायः गर्भावस्था के समय अधिक कष्ट होता है। गर्भावस्था में उत्पन्न होनेवाली बवासीर बालक उत्पन्न होने के बाद स्वयं शांत हो जाती है।

† ऐसी दशा में क़ब्ज़ न होने देने के लिये आवश्यकता इस बात की है कि दस्त खुलासा होता रहे। सरल उपाय यह है—(१) २ तोला मुनक्के बीज निकालकर, एक पाव दूध में पकाकर सेवन करें। (२) त्रिफला (हड़, बहेड़ा, आँवला) का चूर्ण ४ माशा मिसरी मिलाकर सेवन करें। इससे लाभ होगा। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलना-फिरना कम करके गर्भिणी बिस्तरे पर लेटी रहा करे। इससे गर्भाशय का भार गुदा पर से हटा रहता है, और यदि चूतड़ों के नीचे तकिया रख दिया जाय, तो और भी आराम मिलता है। इलाज के लिये पोस्ता की ढोढ़ियों से सेंकना तथा माजूफल की बुकनी बारीक पीसकर, घी में मिलाकर लगाना गुणकारी है*। फिटकरी के पानी से मस्सों का धोना और धतूरे के मुलायम पत्तों पर कड़ुआ तेल चुपड़कर सेंककर बाँधना भी फ़ायदा करता है। रसौत और हड़ एक साथ घिसकर गरम कर लेप करने से भी पीड़ा शांत होती है। अँगरेज़ी ओषधियों में हैज़लीन क्रीम प्रसिद्ध है। शौच के पश्चात् थोड़ी-सी उँगलियों से लगा देना चाहिए। किंतु किसी डॉक्टर की सम्मति लेकर लगाना उचित है। कहा जाता है, अपनी बाईं जंघा को बाईं बग़ल के नीचे और दाहनी ऐंड़ी को गुदा-मार्ग पर रखकर भोजन करनेवालों को बवासीर नहीं होती।

सफ़ाई का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। आबदस्त के समय शुद्ध, शीतल जल से गुदा को भली भाँति रगड़-रगड़कर साफ़ करना चाहिए। जिन्हें अर्श-रोग हो, उन्हें रेहू के पानी से आबदस्त लेना चाहिए, या एक लोटे पानी में १ माशा तूतिया पीसकर डाल दें, और उससे आबदस्त लें। जंगली गोभी (एक छटाँक) की तरकारी नित्य खाने या इसकी ५-७ पत्तियाँ काली मिर्च मिलाकर पीने से ख़ूनी बवासीर जाती रहती है। गाय के मट्ठे में सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च और काले नमक का चूर्ण मिलाकर पीना भी बहुत लाभदायक है। गूलर का पका फल भी ख़ूनी बवासीर को दबाता है। काले तिल और मक्खन नित्य खाते रहने से कुछ दिनों में बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। ज़मींक़ंद और मूली का सेवन भी गुण करता है। गाजर, छोटी इलायची, तेजपात, सोंठ, पका-मीठा आम, आँवला आदि का सेवन भी हितकर है। केले की जड़ ३ माशा शीतल जल से नित्य सायं-प्रातः सेवन करने से ख़ूनी बवासीर मिटाती है। सूखा विरोज़ा ७ माशा नित्य पानी के साथ सेवन करने से बवासीर बिलकुल जाती रहती है। इस रोग में द्राक्षासव भी लाभदायक है।

बवासीर के उत्तम प्रयोग

(१) सौंफ़, मुनक़्क़ा, भंग, सफ़ेद मिर्च, छोटी इलायची, सम भाग बारीक पीसकर, मिसरी मिला-कर नित्य नियम-पूर्वक सेवन करने से ख़ूनी-बादी दोनो प्रकार की बवासीर शांत होती है।

(२) बाहरी मस्से यदि अधिक कष्ट देते हों, तो रसौत, चीनिया कपूर, निमौली की मींगी, तीनो को पानी में महीन पीसकर लेप करें। घोड़े का पसीना लगाने से भी मस्सों को फ़ायदा पहुँचता है।

(३) नीम की निमौली का चूर्ण ७ माशा नित्य गाय के कच्चे दूध के साथ खाने से बवासीर का ख़ून बंद हो जाता है। ५-७ ताज़ी निमौली प्रातः कुल्ली करने के बाद नहार मुँह पानी से निगल जाओ, और तेल, नमक, खटाई, लाल मिर्च का परहेज़ रक्खो। जब तक आराम न हो जाय, यह प्रयोग नियम-पूर्वक करना चाहिए। यदि ताज़ी न मिल सकें, तो सूखी निमौली कपड़े में बाँधकर रात-भर भिगो रक्खें, और प्रातः ऊपर कही हुई विधि से सेवन करें। नमक, जहाँ तक हो, कम खाया जाय। उक्त प्रयोग प्रत्येक प्रकार की बवासीर के लिये लाभदायक और अनुभूत है।

(४) मस्सों पर मदार का दूध बहुत थोड़ी

* इसमें थोड़ी अफ़ीम मिलाकर, गरम करके लेप किया जाय, तो और भी अच्छा। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा में लगा दो, और थोड़ी देर बाद धो डालो। बहुत लाभ होगा। अनुभूत है। कुछ देर कष्ट अवश्य होता है।

(५) गेंदे की पत्ती, नीम की पत्ती और बकायन की पत्ती पाव-पाव-भर छोटी हड़ १ छटाँक, काला नमक १ छटाँक कूट-पीसकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली नित्य प्रातः बासी पानी से सेवन करें। हर प्रकार की बवासीर के लिये उत्तम है।

(६) १ तोला खट्टे अनार के छिलके का क्वाथ (जुशाँदा) पीने से बवासीर का रक्त-स्राव तुरंत वंद हो जाता है। अनार के छिलके का चूर्ण पानी में गूँधकर मस्सों पर लगाना भी हितकर है।

(७) भंग के पत्ते और कोकनार ३-३ तोला कूटकर दो सेर गो-दुग्ध में पकाएँ। पहले उससे मस्सों को भाप दें, फिर उसे साफ़ करके उसी में रोगी को बिठाएँ, तो बवासीर की पीड़ा शांत होती है।

(८) हुब्ब रसौत, निमौली की गिरी, रसौत, छोटी इलायची ४-४ तोला, गेरू ३ तोला, बकायन के बीज की गिरी ५ तोला, सोंठ ६ तोला, काफ़ूर ६ माशा, फिटकरी सफ़ेद २ तोला, गारेकून २ तोला, सबको पीस कपड़-छानकर कुकरौंधा के अर्क़ में खरल कर जंगली छोटे बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक गोली प्रातः नहार मुँह बासी पानी के साथ सेवन करें। ख़ूनी और बादी दोनो प्रकार की बवासीर को अच्छा करता है। अनुभूत है।

(९) सफ़ेद सुरमा अठगुने दही के तोड़ में भिगोकर खरल करें। सूखने पर मिट्टी के प्यालों में संपुट बनाकर भस्म कर लें। एक से दो रत्ती तक ताज़े मक्खन के साथ सेवन करें, और गाय का मट्ठा पिएँ, ख़ूनी बवासीर निर्मूल होती है।

(१०) स्वच्छ रसौत एक छटाँक मूली के आध सेर स्वरस में भिगो दें, सूखने पर फिर स्वरस छोड़ें, और खरल करते रहें। इस प्रकार ४ बार स्वरस छोड़कर चने के बराबर गोलियाँ बना लें। एक-एक गोली प्रातः-सायं ताज़े गाय के मट्ठे के साथ सेवन करें, बादी बवासीर जड़ से दूर होती है।

(११) पाव-भर रीठे का छिलका सुखाकर चूर्ण कर लें। पानी से चने-बराबर गोलियाँ बना लें। ख़ूनी बवासीर में ताज़े जल से और बादी में मट्ठे से एक-एक गोली प्रातः-सायं खाने से अपूर्व लाभ होता है।

(१२) बादी बवासीर पर फ़क़ीरी लटका—सफ़ेद फूलवाली कटेरी जड़-सहित उखाड़कर छाया में सुखा लें। कूटकर ढाई-ढाई तोले की पोटली बाँध लें। एक पोटली पकते हुए चावलों में डाल दें। पक जाने पर पोटली निकाल डालें, और चावल-मिसरी मिलाकर दोनो समय यही खाने को दें। १०-१२ दिन में लाभ होगा। खटाई, तेल, लाल मिर्च का परहेज़ अत्यंतावश्यक है।

(१३) मुर्दे की जली खोपड़ी १ छटाँक, मोती की सीप १ छटाँक, दोनो को एक सेर कोयले की आग में फूँककर ख़ूब महीन पीस लें। शौच से निवृत्त होकर उक्त भस्म उँगली से गुदा में मलें। सब प्रकार की बवासीर एक सप्ताह में जाती रहती है।

(१४) नीम की पत्तियों को घी में भूनकर, थोड़ा कपूर डालकर टिक्की बना लें। उसे मस्सों पर बाँधने से मस्से बैठ जाते हैं।

(१५) नारियल के फल का छिलका आग में जलाकर राख छान लें। राख के बराबर अकरकरहा का छना हुआ चूर्ण मिला दें। पानी के साथ छ माशा दिन में ३ बार सेवन करें। ख़ूनी बवासीर के लिये हितकर है।

(१६) सूखे ज़मींक़ंद का चूर्ण १६ तोला, चीते की जड़ की छाल ८ तोला, सोंठ २ तोला और काली मिर्च १ तोला, कूट-पीसकर चूर्ण कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्ण के बराबर पुराना गुड़ मिलाकर १-१ तोले की गोलियाँ बना लें। एक गोली नित्य जल के साथ खाने से हर प्रकार की बवासीर को आराम होता है।

(१७) गेहूँ की भूसी और भंग बराबर लेकर मस्सों पर धूनी देने से अति शीघ्र लाभ होता है।

(१८) ३ माशे जंगली उपले की भस्म शीतल जल से दिन में तीन बार खाय। दो ही दिन में ख़ून आना बंद हो जाता है।

बवासीर के रोग में शस्त्र-चिकित्सा (Operation) भी की जाती है। अर्थात् मस्से काट दिए जाते हैं। किंतु अनुभवी वैद्यों का कहना है कि जब मस्से बहुत हों, तो सबको एक साथ ही नहीं काटना चाहिए। कम-से-कम एक तो अवश्य ही छोड़ देना चाहिए, ताकि वह दूषित रक्त, जिसे निकलते रहने की आदत पड़ गई है, कुछ-कुछ निकलता रहे। नहीं तो इसके एक दम बंद होने से और भी कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं। जब अत्यंत सूजे हुए और कठिन मस्सों से रक्त न निकलने के कारण बहुत पीड़ा होती है, तब जोंकें भी लगवाई जाती हैं। कोई-कोई वैद्य मस्सों पर तेज़ दवा लगा देते हैं, जिससे वे गिर जाते हैं। इस प्रकार की दवाओं में हरताल, संखिया और विषैले पदार्थों का सम्मिश्रण रहता है। अतः रोगी को अत्यंत कष्ट होता है। यदि इनका प्रयोग किया ही जाय, तो बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। अताई लोग प्रायः इस प्रकार के प्रयोग किया करते हैं। कभी-कभी परिणाम संतोष-जनक भी होता है, किंतु कभी-कभी तो अत्यंत भयंकर। बहुतों के तो इस प्रकार के इलाज से बवासीर अच्छी होने के बदले बढ़ जाती है।

भगंदर (नवासीर)

यह भी बवासीर का ही विकृत रूप है। यह रोग और भी भयंकर और दुःखदायी होता है। गुदा के चारो ओर दो अंगुल तक फोड़ा-सा उठता है। कालांतर में पकने और फूटने पर इंद्रिय के आस-पास व्रण और छिद्र हो जाते हैं। जब ये छिद्र गुदा के छिद्र तक पहुँच जाते हैं, तो कभी-कभी इनसे भी पाख़ाना निकलने लगता है। ऐसी दशा में किसी सद्वैद्य अथवा अनुभवी डॉक्टर की सलाह से चिकित्सा करनी चाहिए।

(१) डशवा ऽ= चोबचीनी ऽ॥, कूट-पीसकर ऽ॥= मिसरी और ऽ। गौघृत मिलाकर २-२ तोले के लड्डू बना लें। एक-एक लड्डू प्रातः-सायं गरम दूध के साथ १ मास तक सेवन करने से भगंदर रोग दूर होता है।

(२) भाँगरा, चाकसू, नौसादर, कचूर, रेवंद चीनी, हड़ की बकली, शाहतरा, नीम के पत्ते, चिरायता, बड़ी इलायची, उन्नाब, मूली के बीज, काला ज़ीरा, काली मिर्च, लाल चंदन, गुलाब के फूल, सम भाग ले, कूट-पीसकर छान लें। ३ माशा ताज़े जल से प्रातःकाल फाँकें।

(३) त्रिफला, रसौत, बेर की छाल, मूली-खार, सम भाग लेकर मूली के रस में बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। सुबह-शाम एक गोली गरम दूध से सेवन करें।

गणेश-क्रिया

शौच के पश्चात् गुदा-मार्ग में भीतरी ओर उँगली डालकर, गुदा के प्रथम चक्र से मलांश निकालकर उसे साफ़ कर देना चाहिए। यह क्रिया नित्य नियम-पूर्वक करनी चाहिए। इससे अर्श के मस्से सदा दबे रहते हैं, और प्रथम चक्र की सफ़ाई के कारण मलेंद्रिय-संबंधी अन्य रोग भी नहीं होने पाते। इसकी महत्ता परीक्षा द्वारा जानी जा सकती है।

गुदा में खुजली

बवासीर, चुन्ने* और कोष्ठबद्धता आदि कारणों

* चुन्ने आँतों में एक प्रकार के छोटे-छोटे, पतले, सफ़ेद कीड़े होते हैं। प्रायः मल के साथ बाहर निकलकर रेंगने लगते हैं। इन्हें आँखों द्वारा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रायः गुदा में खुजली पैदा हो जाती है। गर्भावस्था में यह खुजली और भी अधिक दुःखद हो जाती है। कभी-कभी रात्रि में तो इतनी बढ़ जाती है कि खुजलाते-खुजलाते ज़ख़्म हो जाते हैं। बाद को बड़ी जलन और पीड़ा होती है। ऐसी दशा में सबसे प्रथममूल-कारण को खोजकर दूर करना चाहिए। कोष्ठ-बद्धता को किसी विरेचन औषधि द्वारा दूर करना अत्यंतावश्यक है। पिपरमिंट ३ ड्राम *, ग्लेसरीन ४ ड्राम, पानी ४ औंस † मिलाकर गुदा पर लगाना चाहिए। लाल मिर्च, गरम मसाले, तेज़ अचार, चटनी आदि का सेवन बंद कर देना चाहिए। रोग़न-बनफ़्शा या जैतून का तेल लगाना भी लाभदायक है। कड़ुआ तेल लगाकर चिलम में जली हुई तंबाकू की गुल लगा दें। मीठी और सोंधी चीज़ों से परहेज़ रक्खें।

गुदा-भ्रंश (काँच निकलना)

यह रोग भी बहुत बुरा होता है। साधारण निर्बलता, पुरानी बवासीर, पुराने दस्त या पेचिश, स्थायी क़ब्ज़ आदि इसके मुख्य कारण हुआ करते हैं। गुदा के स्नायु ढीले पड़ जाते हैं, और यह रोग आ दबाता है। औरों की अपेक्षा बालकों को यह रोग अधिक होता है। पहले तो मल-त्याग के समय ही काँच निकलती है, किंतु कुछ काल पश्चात् खाँसने, ज़ोर से हँसने, थूकने या अधिक देर तक खड़े रहने से भी निकल आती है। कभी-कभी तो इसकी लंबाई ५-६ इंच तक होती है। इस पर व्रण हो जाते हैं, और मल-त्याग के समय बड़ी पीड़ा होती है।

मूल-कारण दूर करने के साथ-साथ रोगी को लिटाकर पाख़ाना कराएँ। शीतल जल से शौच

*१ ड्राम = ४ माशा।

† ४ औंस = आध पाव।—लेखक

कराने के बाद १५ ग्रेन * फिटकरी या एक औंस टिंचर स्टील पानी में मिलाकर, या ६ माशा माजू और ६ माशा फिटकरी पाव-भर पानी में मिलाकर उसमें रुई का फाया तर करके काँच पर लगाएँ, और उसे धीरे-धीरे भीतर कर दें। ऊपर से लँगोट बाँध दें। अथवा आम की पत्ती, जामुन की पत्ती और इन वृक्षों की छाल बराबर-बराबर लेकर जौकुट करके १ तोला औषधि पाव-भर पानी में धीमी-धीमी आँच पर पकावें। जब १ छटाँक पानी रहे, तब उतार लें, और इस काढ़े से बालक की काँच धोवें। ५-७ बार धोने से ही आराम हो जाता है।

बालक के ही मूत्र से उसे आबदस्त कराना, या पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर और उस स्थान को पानी से धोकर उस पर छिड़कना या कड़ुआ तेल लगाकर ऊपर से जला हुआ लसोड़ा पीसकर लगाना भी लाभदायक है। भंग १ तोला, बनफ़्शा ६ माशा पीसकर लेप करें, अथवा रसौत, बबूल का दूध, दमुलअख़्वैन सम भाग पीसकर लेप करें। फ़ायदा होगा।

किंतु प्रत्येक दशा में किसी सद्वैद्य अथवा डाक्टर का परामर्श आवश्यक है।

शिशु-रक्षा

माता का कर्तव्य होना चाहिए कि वह बच्चे की प्रत्येक प्रकार की स्वच्छता पर पूरा-पूरा ध्यान रक्खे। बच्चे को समय पर पाख़ाने जाने की आदत डलवानी चाहिए। यदि उचित समय पर बच्चा पाख़ाने न जाय, तो भी उसे बिठा देना आवश्यक है। इससे धीरे-धीरे उसकी आदत पड़ जायगी। छोटे-छोटे बच्चों को शीतल जल से भले प्रकार शौच करा देना चाहिए। फूहड़ स्त्रियाँ अपनी उँगलियाँ पानी में भिगोकर चुपड़ देती हैं, और समझती हैं, शौच हो गया। यह तरीक़ा

* १ ग्रेन लगभग आधी रत्ती के होता है।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बुरा है। गुदा में ज़रा भी मल लगा रह जाना गंदेपन के अतिरिक्त नाना प्रकार के रोग उत्पन्न कर सकता है। बहुधा ४-५ वर्ष के बच्चे स्वयं आबदस्त लेना सीख लेते हैं। उन बेचारों के नन्हे हाथों में पानी तो रुकता नहीं, यों ही फ़र्ज़-अदाई कर अलग हो जाते हैं, और मल का बहुत-सा अंश लगा ही रह जाता है। यदि माताएँ ज़रा सावधानी से काम लें, तो यह दोष सहज ही में दूर किया जा सकता है। बच्चों को स्वयं आबदस्त लेना अवश्य सिखाइए, किंतु अपनी देख-रेख में। इस विषय में लापरवाही नहीं होनी चाहिए। माताओं को चाहिए कि स्वयं पानी दें, और अपनी आँख से देख लें कि आबदस्त ठीक तौर से हो गया। यदि बच्चों को नौकरों के सिपुर्द कर रक्खा है, तो दूसरे-तीसरे उनकी भी जाँच होनी चाहिए कि वे बेगार तो नहीं कर रहे हैं। माता को इन सारी बातों के लिये सदा सावधान रहना चाहिए, अन्यथा बड़े होने पर बालक की गुदेंद्रिय में रोग उत्पन्न हो जाना आवश्यक है। इसी प्रकार की मलिनता के कारण प्रायः बच्चों की गुदा पक भी जाती है, और बड़ा कष्ट होता है। ऐसी अवस्था में शंख, मुलहठी और रसौत पानी में पीसकर लेप करना चाहिए।

बालिका के बड़े हो जाने पर अर्थात् १२-१३ वर्ष की अवस्था में नित्यप्रति प्रातःकाल शुद्ध शौच हो जाना अत्यंतावश्यक है। जिन बालिकाओं के मलाशय में अधिक मल संचय हो जाता है, उनके गर्भाशय में ऋतु-स्राव के समय शूल और भारीपन आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जिन कन्याओं को प्रातःकाल खुलकर शुद्ध शौच होता रहता है, उनके शरीर में उत्साह, स्फूर्ति, चैतन्यता और निरालस्य आदि बने रहते हैं। माताओं की असावधानी के कारण उनकी बालिकाएँ प्रायः आजीवन क़ब्ज़-रोग से पीड़ित रहकर शारीरिक एवं मानसिक विकारों के भँवर-जाल में पड़ जाती हैं। यदि बालिका मासिक धर्म प्रारंभ होने के समय क़ब्ज़ से पीड़ित हो, तो नीचे-लिखे उपायों द्वारा विरेचन देने से लाभ होगा—

(१) मुलहठी का चूर्ण २ माशा, शुद्ध गंधक १ माशा, सनाय का चूर्ण २ माशा, शकर ३ माशा, सबको मिलाकर रात्रि में सोते समय गरम जल के साथ खिला दें। यह एक मात्रा है।

(२) ६ माशा सनाय छटाँक-भर खौलते पानी में डालकर १० मिनट तक भिगोए रक्खें। फिर उसे छानकर, २ तोला मिसरी मिलाकर प्रातः-काल पिला दें।

(३) अंडी का तेल दो से तीन तोले तक गरम दूध में मिलाकर प्रातःकाल पिला दें। यदि जी मिचलाय, तो एक बीड़ा पान खिला दें। उपर्युक्त तीनो प्रयोगों में से किसी एक का व्यवहार किया जा सकता है। परंतु यह बात न भूलनी चाहिए कि बार-बार विरेचन देने से हानि होती है। विरेचन देने के पश्चात् भी यदि क़ब्ज़ दूर न हो, तो ताज़े फल, मुनक़्क़ा, अंजीर, मोटे आटे की रोटी आदि सेवन करावें, और रात्रि को सोते समय एवं प्रातःकाल उठते ही (विना शौच गए) एक गिलास शीतल जल का पिला देना बहुत ही लाभदायक है। यदि इन उपायों से भी लाभ न हो, तो ४-५ छटाँक साधारण गरम जल भोजन करने के पूर्व धीरे-धीरे पान करावें।

पेट की मालिश करना भी क़ब्ज़ दूर करने का उत्तम उपाय है। बच्चों का तो भले प्रकार मालिश करने से ही क़ब्ज़ दूर हो जाता है। मालिश करने की सादी विधि इस प्रकार है—हाथ को नाभि के नीचे से दाईं ओर पसलियों के नीचे तक ऊपर की ओर लावें, और फिर कौड़ी के नीचे हाथ को घुमाकर दाईं ओर नाभि के दूसरी ओर नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक लावें। इसी प्रकार हाथ बराबर घूमता रहे। यह क्रिया १० से २० मिनट तक दिन में दो बार करनी चाहिए। बालिकाओं के लिये १० मिनट और युवतियों के लिये २० मिनट की मालिश पर्याप्त है।

यदि इन समस्त विधियों से भी कोष्ठबद्धता दूर न हो, तो चिकित्सक की सम्मति से इलाज करना चाहिए*।

* 'स्त्री-सौंदर्य और स्वास्थ्य'-नामक अप्रकाशित पुस्तक से। —लेखक

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

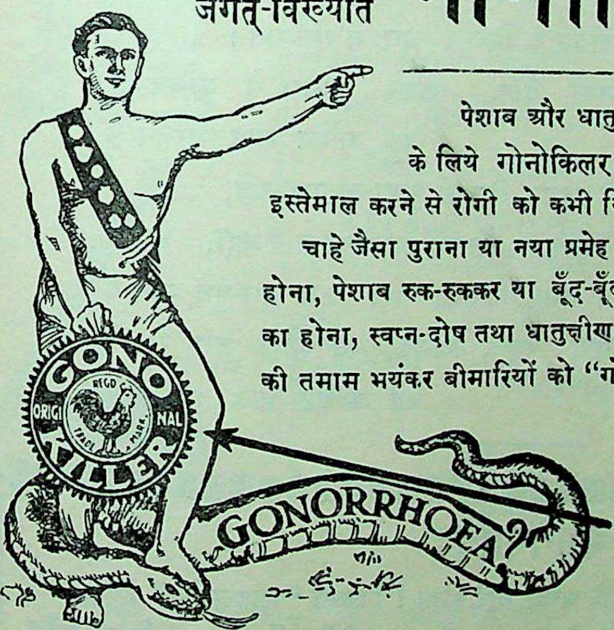

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S.L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ स्टाकिस्ट—किंग मेडिकलहाल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि और चित्रकार

[श्रीयुत रामचंद्र मित्तल]

दुर्बल तन, चिथड़े ही पहने, 'बाबा कुछ दो' कहते-कहते,
दाने-दाने के लिये हाय! जग के ताने सहते-सहते,
जो हाथ उठाए रह जाते, तू उनकी पीड़ा अंकित कर—
ओ अमिट भाव भरनेवाले!

उनकी आहों के गीत लिखूँ, 'जिनके बच्चे भूखे रोते',
टुकड़े-टुकड़े के लिये सुभग, उज्ज्वल मोती भू में बोते।
पर हाय! नहीं टुकड़ा मिलता, तन ढकने को कपड़ा मिलता;
कितना निष्ठुर, कितना निर्मम, कितना निर्दय, यह जग है रे!
ओ अमिट भाव भरनेवाले!

तू उन दुखियों के चित्र बना, जिनके बच्चे भू पर सोते,
जो काट रहे यह जीवन रे, निष्ठुर जग में रोते-रोते।
है टाट कहाँ उनको पैदा, कितने कोमल वे बालक रे!
ओ अमिट भाव भरनेवाले!

जिनके रोदन, जिनकी तड़पन, जिनकी पीड़ा का पार नहीं,
जिनके क्रंदन, जिनकी सिहरन, जिनकी आहों का सार नहीं,
तू उनके ऐसे चित्र बना, जिनको लख जग सुध-बुध खो दे;
मैं उनके ऐसे गीत रचूँ, जिनको सुन सारा जग रो दे।
ओ अमिट भाव भरनेवाले!

मोतियाबिंद

कौन कहता है कि बग़ैर चीर-फाड़ के अच्छा नहीं होता ? डिजन्स "आइ-क्योर" Degon's "Eye Cure" के कुछ ही दिनों के लगाने से नया या पुराना मोतियाबिंद तथा और भी आँख की बीमारियाँ शर्तिया अच्छी होती हैं। मूल्य २), डाकख़र्च ।।=)

कमला-वर्क्स (S/L) पाँचपोटा, बंगाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

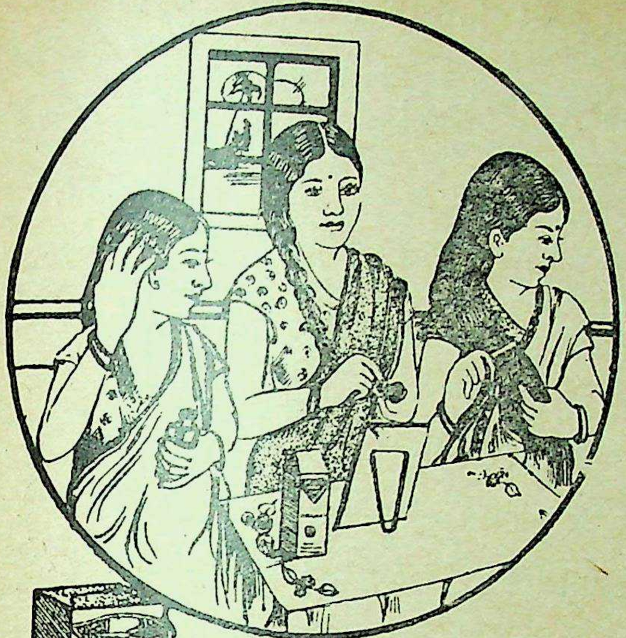

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित

झंडु

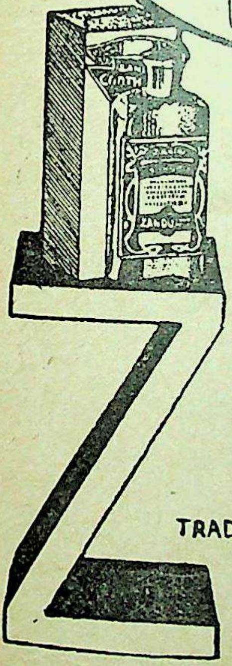

केन्थार्डीन हेअर ओइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताज़गी मिलती है।
आज ही से आज़मायश के लिये खास सिफ़ारिश है।

TRADE MARK

झंडु
फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ ,, ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

*** सात भाग ***

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं; क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है, उनके रोग दूर भागते हैं। इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद रोज़ों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है!

		पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय	१ ला भाग	३)	१॥)
,,	२ रा भाग	५)	२॥)
,,	३ रा भाग	४।)	२=)
,,	४ था भाग	४।)	२=)
,,	५ वाँ भाग	५)	२।)
,,	६ ठा भाग	३॥)	१॥)
,,	७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा	१२ वाँ संस्करण	३)	१।)

दो हज़ार वर्षों में नई बात!

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

		मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक	सचित्र	४।)	२।)
वैराग्यशतक	,,	५)	२॥)
शृंगारशतक	,,	३)	१॥)
		१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ साहित्य-माला का

शरत्-साहित्य

स्व० शरचंद्र चटर्जी भारत के सबसे श्रेष्ठ और सबसे अधिक लोक-प्रिय उपन्यास-कहानी-लेखक थे। उनका तमाम साहित्य सस्ते-से-सस्ते मूल्य में घर-घर पहुँचा देने के उद्देश्य से यह पुस्तकमाला शुरू की गई है। सस्तेपन का अंदाज़ा आप इसी से लगा सकते हैं कि जब मूल बँगला में 'पथेर दावी' का मूल्य तीन रुपया और गुजराती में साढ़े चार रुपया है, तब इसी पुस्तक का हिंदी-अनुवाद, पथ के दावेदार, हम सिर्फ़ एक रुपया में दे रहे हैं, अनुवाद भी शुद्ध, प्रामाणिक, और बढ़िया छपाई, सुंदर 'गेट-अप'। यह सस्तेपन की हद है।

अब तक शरत्-साहित्य के १५ भाग निकल चुके हैं, जिनमें नीचे-लिखी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रत्येक भाग का मूल्य आठ आने और बढ़िया ग्लेज़ काग़ज़ के एडीशन का दस आने है।

१५ भागों का मूल्य न्यूज़ एडीशन का ७ᐧ।ᐟ और ग्लेज़ एडीशन का ८॥ᐟ होता है; फिर भी एक साथ पूरा सेट् मँगानेवालों को ६ᐟ और ७ᐟ देने पड़ते हैं। फुटकर भाग लेनेवालों को यह रियायत नहीं मिलती।

पंद्रहों भागों का वज़न ढाई सेर के लगभग है। रेलवे-पार्सल से मँगाने में ख़र्च कम पड़ता है। मूल्य पेशगी भेजना चाहिए।

भाग १—सुमति, पथनिर्देश, काशीनाथ, अनुपमा।
भाग २—स्वामी, वैकुंठ का दानपत्र, अंधकार में आलोक।
भाग ३—चंद्रनाथ, तस्वीर, दर्पचूर्ण।
भाग ४-६-७—श्रीकांत के तीन पर्व।
भाग ५—बाम्हन की बेटी, प्रकाश-छाया, विलासी, एकादशी-वैरागी, बाल्य-स्मृति।
भाग ८—विंदो का लल्ला, बोझा, मंदिर, मुक़दमे का नतीजा, हरिचरण, हरिलक्ष्मी, अभागिनी का स्वर्ग।
भाग ९—षोडशी, निष्कृति।
भाग १०—देवदास, बड़ी बहिन।
भाग ११—पंडितजी, मझली बहिन।
भाग १२—रमा, परिणीता।
भाग १३-१४—पथ के दावेदार (पथेर दावी)।
भाग १५—नारी का मूल्य, अनुराधा, महेश, पारस।

संचालक—हिंदी-ग्रंथरत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग़

गिरगाँव, बंबई

नोट—एक कार्ड लिखकर हमारा सूचीपत्र मँगाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

मैं एक ज़मींदार का बेटा हूँ। कुसंगतों के कारण मुझे जिरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक-दो साल मैंने लोक-लाज के कारण अपना भेद छिपाए रक्खा, परंतु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा। संसार में चारो ओर से अँधेरा मालूम होने लगा। तब मेरी आँखें खुलीं। रुपया-पैसा की मेरे यहाँ कमी न थी। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डॉक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवाएँ मँगाईं, और खाईं, मगर रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। आख़िर मामला यहाँ तक आ पहुँचा कि मैं आत्महत्या की सोचने लगा, और इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर समझने लगा। हमारे गाँव के पास ही एक मील की दूरी पर ईंटों का एक खेड़ा है। कारण-वश उसी खेड़े पर काठियावाड़ के एक प्रसिद्ध त्यागी योगिराज आ बैठे, और एक झाड़ी में आसन लगाकर ईश्वर-चिंतन में मग्न हो गए। गाँव के बालक और युवकों ने जब उन्हें देखा, तो उनकी प्रशंसा गाँव में फैला दी कि खेड़े पर एक महात्मा आए हैं, जो बड़े तेजस्वी प्रतीत होते हैं। यह सुनकर लोगों के समूह-के-समूह उनकी सेवा में जाने लगे। जब मैंने यह सुना, तो मैं निराशा और आशा को साथ लिए उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। उस तेजस्वी के आत्मदर्शन करते ही मेरा चित्त गद्गद और प्रसन्न हो गया, और मैं नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। महात्माजी मेरी दशा देखकर फ़ौरन् ताड़ गए, और मेरी ओर आकर्षित होकर बोले कि बेटा, तुम बड़े निराश और दुखी मालूम होते हो, क्यों, तबियत कैसी है, और तुम्हारे दुखी होने का क्या कारण है? बस, फिर क्या था, जैसे मेरे दिल के घाओं को किसी ने छेड़ दिया हो, मैं फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजी यह दशा देखकर बेचैन हो उठे, और मेरे पास आकर मुझे धीरज देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने अपनी बीमारी का सारा हाल उनके सम्मुख रख दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई, इसके पश्चात् उन्होंने एक प्रयोग मुझे बतलाया, जिसको बनाकर मैंने सेवन किया, अब बिलकुल नीरोग हूँ। प्रयोग—असली त्रिफला चूर्ण ५ तोला, असली सूर्यतापी शिलाजीत २॥ तोला, असली वंग भस्म ६ माशा, असली सूर्य छाप केशर ६ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नैपाली कस्तूरी १ रत्ती, इन सब ओषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतलचीनी का तेल २० बूँद, बहरोज़ा का तेल २० बूँद, इत्र संदल २० बूँद मिलावे। इसके बाद ताज़ा ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घंटे तक घोटकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें, और साया में सुखा लें। बस, ओषधि तैयार है। सेवन-विधि—एक गोली प्रातः और एक गोली सायंकाल पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शकर मिलाकर खाएँ। इस ओषधि के सेवन से ४० रोज़ में स्वस्थ हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से मेरे तीन बच्चे हैं, जो बिलकुल ही तंदुरुस्त हैं। उस वक़्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के-दाम पर दे रहा हूँ, जिससे सैकड़ों व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग ऊपर भली प्रकार समझा दिया गया है। इसको बनाकर लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ हों या कारोबार के कारण आपको फ़ुरसत कम मिलती हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी-बनाई ओषधि मँगा लें, और उसके आश्चर्य-जनक गुण देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों क़िस्म के प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, पाख़ाना के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सुज़ाक, सुस्ती, कमज़ोरी और नामर्दी, जवानी में बुढ़ापे की हालत, असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो जाना वग़ैरह दूर करके अत्यंत ही ताक़त देती है, और नस-नस में जीवन-संचार करती है। क़ीमत पूरी ख़ूराक ८० गोली के दो पैकट का ४), डाक-ख़र्च माफ़, मनीऑर्डर-फ़ीस ≋)

निवेदक—बाबू श्यामलालजी रईस,

प्रेमवटी-ऑफ़िस, नं० ३, कंचौसी बाजार, जिला इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज रणजीतसिंह

(१७८०—१८३९)

[श्रीयुत कुँवर राजेंद्रसिंह]

बहुत-से अँगरेज़ लेखकों ने महाराज रणजीतसिंह को भारतवर्ष का नेपोलियन कहा है। इस उपमा से अन्य देशवाले महाराज की कुछ कल्पना कर सकते हैं, परंतु वास्तव में रणजीतसिंह और नेपोलियन में बड़ा अंतर था। यह ज़रूर है कि दोनो समकालीन थे। नेपोलियन महाराज से सिर्फ़ एक वर्ष बड़ा था, और महाराज उसकी मृत्यु के बाद १८ वर्ष जीवित रहे। उपमा प्रायः प्रभाव बढ़ाने की अपेक्षा घटा देती है। केवल एक चीज़ की समानता से उपमा में पूर्णता नहीं कही जा सकती। सूरदास को हम लोग, अँगरेज़ी-पढ़े हिंदोस्तानी भी, हिंदी-कविता का मिल्टन कहते हैं। कहने को चाहे जिसे जो कहें, परंतु दोनो में समता न थी। दोनो की कविता में अंतर है, और बहुत बड़ा अंतर है। सूरदासजी का नाम मुख्यतः गीत-काव्य में है, जैसे मिल्टन का महाकाव्य में। दोनो ने अपने-अपने रास्ते में वह नाम कमाया, जो किसी दूसरे को नसीब नहीं हुआ। किसी ने सीधे-सादे देहाती शब्दों में ख़ूब कहा है—"कहन रहै, सो अँधरा कहिगा।" ठीक है, जो कुछ कविता में कहा जा सकता था, क़रीब-क़रीब सभी कुछ सूरदास कह गए हैं। दोनो में समता इस बात में थी कि दोनो अभाग्य-वश अंधे थे। सूरदास जन्मांध थे, और मिल्टन पर पढ़ने-लिखने और बहुत दिनों तक नौकरी करने के बाद यह आफ़त आई थी। दोनो में एक समता और थी—दोनो राजधानी में रहते थे। इन दो बातों को छोड़ और किसी भी बात में समता न थी। दोनो समकालीन भी न थे। सूरदास का जन्म १४८३ में हुआ था, और मिल्टन का १६०८ में। सूरदास की मृत्यु १५६३ में हुई थी, और मिल्टन की १६७४ में। मिल्टन ने भी कुछ गीत-काव्य लिखा है, और उसकी भी प्रशंसा है, परंतु सूरदास के भजनों में जो भक्ति है, जो साहित्यिक स्वाद है, जो भाषा में सूचकता है, जो भावों में मृदुता है, जो शब्दों में मधुरता है, वह अँगरेज़ी-साहित्य-भर में कहीं न मिलेगी। मिल्टन के 'सोनेट्स' का और रंग है।

जितना इन दोनो में अंतर है, कम-से-कम उतना ही नेपोलियन और महाराज रणजीतसिंह में है। जब दोनो के उद्देश्यों में समता न थी, तो साधनों में कैसे होती। अभी तक नेपोलियन के जीवन-चरित्र बराबर प्रकाशित हो रहे हैं। लेकिन किसी ने भी आज तक नहीं लिखा कि उसका उद्देश्य अपना राज्य विस्तृत करने के अतिरिक्त कुछ और था। जूलियस सीज़र का और क्या उद्देश्य था, चंगेज़ख़ाँ का और क्या उद्देश्य था, नादिरशाह का और क्या उद्देश्य था, और सच तो यह कि स्वार्थता सबका उद्देश्य होता है। कहने को तो बेशक यह कहा जाता है कि उस देशवालों पर दया करने के लिये लड़ाई लड़ी गई थी। बेकार लड़ाइयाँ लड़कर ख़ून की नदियाँ बहाने का उद्देश्य प्रातः-स्मरणीय महाराणा प्रतापसिंह, स्वनाम-धन्य महाराज शिवाजी और पंजाब-केसरी महाराज रणजीत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह का न था। इनकी लड़ाइयों का उद्देश्य समझने के लिये यह ज़रूरी है कि उस समय की देश की परिस्थिति का समुचित ज्ञान हो। जिस समय राजे-महाराजे आत्माभिमान और स्वाभिमान खोए हुए तुच्छ स्वार्थ के लिये अकबर की हर तरह की ख़ुशामदें करने में लगे थे, उस समय महाराणाजी को हिंदुत्व बचाने की चिंता व्याकुल किए हुए थी। कौन-सा ऐसा कष्ट है, जिसे उन्होंने सहन नहीं किया, लेकिन पैर नहीं डिगाए। समस्त मुग़ल-शक्ति एक ओर थी, और वह स्वयं दूसरी ओर थे, केवल मुग़ल-शक्ति ही क्यों, स्वार्थसेवी हिंदू भी तो सब उधर ही थे। इसकी ज़रा भी परवा महाराणाजी को न थी, उनकी निगाह अपने उद्देश्य पर थी। अपनों से ज़्यादा अपनी बुराई और कोई नहीं कर सकता। महाराणा प्रतापसिंह से लड़ाई लड़ने के लिये मुग़ल-फ़ौज के सेनापति महाराज मानसिंह बनाए गए। अकबर ने यही समझा होगा—"कर्तव्य से जो च्युत हो चुका हो; क्या है, जिसे वह न डुबो चुका हो?" कहाँ सुसज्जित और सुशिक्षित मुग़ल-सेना और कहाँ महाराणाजी के दस-पाँच हज़ार अनभ्यस्त आदमी! फ़र्क़ इतना था कि एक तरफ़ तनख़्वाह की लालच थी, और दूसरी तरफ़ देश-प्रेम। उस लड़ाई का हाल एक कवि ने ख़ूब वर्णन किया है। महाराज मानसिंह लड़ाई में कहीं छिपे-छिपे रहते होंगे। जब मिल गए, तब महाराणाजी ने कहा—

"आख़िर में बड़ी देर में श्रीमान को पाया;
ललकार के परताप ने यह बोल सुनाया।
ऐ मान मुसलमान, अमारी में सँभल बैठ;
अब देख ले क्षत्रिय की भी मूछों की ज़रा ऐंठ।
यह कहके तमक ताव से भाले को सँभाला;
भुजदंड के बल तौल किया वार निराला।
बस छोड़ दिया मान पै इक साँप-सा काला;
डस पाता, तो बस उम्र का भर जाता पियाला।
अफ़सोस! महावत ही गिरा उससे निपटकर;
लोहे की अमारी में रुका ज़ोर से ठटकर।"

महाराणाजी घोड़े पर थे, और मानसिंह हाथी पर। सिवा हिंदुत्व की रक्षा करने के और इन लड़ाइयों से महाराणाजी का क्या फ़ायदा था। आक्षेप करने से ज़्यादा और कोई सहज काम नहीं। महाराणाजी पर यह आक्षेप होता है कि मुग़ल-सेना से लड़ना बुद्धिमानी नहीं थी। संसार के सभी बड़े आदमियों पर आक्षेप हुए हैं। महाराज कृष्णचंद्र ने अर्जुन से कहा था—"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" इसी सिद्धांत पर सभी बड़े आदमियों ने काम किया है। पुरानी बात जाने दीजिए, महात्मा गांधी का और क्या सिद्धांत है। अगर मशीनगनों, तोपों और तलवारों को डरा करते, तो कुछ भी न कर पाते। जेलख़ाने गए, सख़्तियाँ झेलीं, और दूसरों के लिये वह मिसाल क़ायम कर दी, जो बहुत दिनों तक देश के सामने रहेगी। यही आन-बान यहाँ की महिलाओं ने भी रक्खी। युद्ध करके उनका भी उद्देश्य स्वार्थ-सेवा का न था। जब औरंगज़ेब और दारा का युद्ध राज्य-प्राप्ति के लिये हुआ था, तब जोधपुर के महाराज ने दारा का साथ दिया था। अनेक कारणों से औरंगज़ेब की जीत हुई, और महाराज विरत होकर युद्ध से चले आए थे। महाराज को वापस आते देख महारानी ने फाटक बंद करा दिया था, और पत्र लिख भेजा था—

"होते कहीं जो तुम नाथ मेरे,
तो भागते क्या फिर पीठ फेरे?
यथार्थ ही क्या मुँह को छिपाए
संग्राम से हो तुम भाग आए?
धिक्कार है हा! अब क्या करूँ मैं,
रक्खी कहाँ मौत कि जो मरूँ मैं;
आए यहाँ क्या छिपने घरों में,
या रानियों के घन घाँघरों में?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मृत्यु की थी इस भाँति भीति,
जो मेटनी थी निज रीति-नीति,
तो जन्म क्यों सत्कुल में लिया था,
क्यों व्याह राना-कुल में किया था ?
जयाब्धिजा को न वरा गया जो,
न युद्ध का सिंधु तरा गया जो,
तो क्या मरा भी न गया समत्त,
डूबा सभी हा ! तुमसे स्वपत्त।
जाओ, यहाँ से तुम लौट जाओ,
तुम्हें यहाँ स्थान कहाँ कि आओ ;
हो शून्य, तो भी यह सिंह-पौर,
है गीदड़ों को इसमें न ठौर।"

यही हाल महाराज शिवाजी का था। उस समय हिंदू-जाति अपने को भूली हुई शताब्दियों से पड़ी सो रही थी। कोई जगानेवाला न था। उस कठिन समय में शिवाजी हिंदू-राज्य की स्थापना करने का स्वप्न देख रहे थे। स्वप्न स्वप्न ही की तरह अपूर्ण रह जाता, यदि उनमें असाधारण साहस और अद्वितीय वीरता न होती। उनके पास कौन-सा राज्य था, जिसे विस्तृत करने की उन्हें फ़िक्र होती। फ़िक्र यह थी कि यदि हिंदू-जाति का यही हाल रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब इसका नाम ही मिट जायगा। हिंदू-जाति के पुनरुत्थान के लिये उन्होंने जीवन-पर्यंत उद्योग किया, सब मुसीबतें झेलीं, और अंततः उसे जगाकर ही छोड़ा। ऐसों ही के लिये कहा गया है—"मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिये।"

पंजाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह का जन्म उस समय हुआ था, जब पंजाब की समस्त शक्ति तितर-बितर थी। आपस में लड़कर मरना हम लोगों का राष्ट्रीय चिह्न है। महाराज की जन्म-तिथि २ नवंबर, १७८० है। आप केवल १२ वर्ष के थे, जब आपके पिता का देहांत हो गया था। आपकी देख-रेख आपकी माता करती थीं। इसकी बहुत-सी मिसालें मिलेंगी कि बाप की अनुपस्थिति में माताओं ने अपने लड़कों का लालन-पालन इस उचित ढंग से किया कि वे संसार में अपने पद-चिह्न छोड़ गए हैं। बाप के तमाचा-रूल से शिवाजी या महाराज रणजीतसिंह वह न हो पाते, जो वह थे। जो छोटी-सी रियासत थी, उसका प्रबंध दीवान लखपतराय के हाथ में था। जो अड़ोस-पड़ोस की और रियासतें थीं, उन सबके मालिकों की आपस में अनबन रहती थी। इस वजह से बहुत ज़रूरी था कि किसी होशियार आदमी के हाथ में इंतिज़ाम हो। सब तरफ़ से असुविधाएँ थीं, और रणजीतसिंह की जान का भी डर था। निर्भीक पुरुष भय का सामना करने ही में प्रसन्न रहते हैं। पाँच ही साल तक महाराज रणजीतसिंह चुप रह पाए। आग पयाल के नीचे कब तक दबी रहती, ख़ुद हुकूमत हाथ में ली। अँगरेज़ी के एक इतिहास-लेखक ने लिखा है कि बेकार के लिये महाराज ने कभी अपने हाथ ख़ून में नहीं डुबोए। स्वार्थ जब आँखों पर परदे डाले होता है, तब उचित-अनुचित का ख़याल नहीं रह जाता, और जब उद्देश्य में उच्चता होती है, तब लोग उसे कलंकित होने से बचाते हैं। एक दूसरे अँगरेज़ी के इतिहासकार का कहना है कि महाराज बहुत अच्छी नीति जानते थे, परंतु निर्दयता न थी। यह लिखना भी बड़े उद्देश्य का प्रमाण है।

जब रणजीतसिंह ने अपने हाथ में हुकूमत ली, तो हर तरफ़ कठिनाइयाँ थीं। उनके राज्य के पास जिनके राज्य थे, उनका डर रणजीतसिंह को इतना ज़्यादा न था। हिंदोस्तान में ईस्ट-इंडिया-कंपनी के पैर जम चुके थे, और वह ऐसी शक्ति थी, जिसका उस समय सबको डर था। दूसरी बड़ी शक्ति दुर्रानी साम्राज्य थी। इन सब अड़चनों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणजीतसिंह की दृढ़ता और बढ़ती जाती थी। दुर्रानी साम्राज्य का सूर्य अब अस्ताचल की ओर जा रहा था, और सिक्खों की क़िस्मत चमकना शुरू हो चुकी थी। इन लोगों ने अहमदशाह के आक्रमण सहे, और आफ़तों का सामना किया, परंतु दबे नहीं—ऐंठ वही रही, दबानेवाले को ख़ुद दबना पड़ा। मनुष्य सब कुछ देख सकता है, परंतु किसी को बढ़ता हुआ नहीं देख सकता। निस्संदेह वे नमस्कार करने योग्य होते हैं—"जे बिन काज दाहने-बाएँ।" रणजीतसिंह के भी दाहने-बाएँवालों की एक गोष्ठी बँध गई, और चारो तरफ़ से उन्हें अकारण विरोध का सामना करना पड़ा। ज्यों-ज्यों वह कोशिश करते थे कि सिक्खों की रक्षा का समुचित प्रबंध हो, और संगठित हो जायँ, त्यों-त्यों उन पर संदेह होता था। अहमदशाह के पोते ज़मनशाह उस पदार्थ से नहीं बने थे, जिससे प्रकृति बहादुरों का निर्माण करती है। रणजीतसिंह की बढ़ती हुई ताक़त देखकर इन्हें लाहौर दे दिया। मजबूरी और कमज़ोरी भी प्रायः दोस्ती का कारण बन जाती है। शाहज़मन समझते थे, अगर रणजीतसिंह का-सा जवान और बहादुर आदमी उनकी तरफ़ हो जायगा, तो उन्हें बड़ी मदद मिलेगी। रणजीतसिंह की इस सफलता से लोग और भी चिढ़ गए, और यह सबकी निगाहों में खटकने लगे। इनके ख़िलाफ़ जो पार्टी बनी थी, उसके नेता गुलाबसिंह थे। "कुछ न हो, इंसान में चमकी हुई तक़दीर हो," और वही रणजीतसिंह की थी। लाठी भी नहीं टूटी, और साँप मर गया। गुलाबसिंह की मौत हो गई, और रणजीतसिंह के रास्ते का एक बड़ा रोड़ा निकल गया। जब उन्होंने देखा, और राज्यवाले समझाने-बुझाने से ठीक रास्ते पर न आएँगे, तो उन लोगों पर आक्रमण करके उनकी शक्तियाँ घटा दीं, और किसी-किसी की रियासतें ज़ब्त कर लीं। किसी से संधि की, किसी को साथी बनाया, किसी से लड़ाई लड़ी, इस तरह अपनी शक्ति बढ़ाई। दुश्मन घटते जाते थे, दोस्तों की संख्या बढ़ती जाती थी। "बिन भय होय न प्रीति।" भय था, और लोगों को अब प्रीति भी थी। दुर्रानी साम्राज्य के अंतिम दिन थे, वह इनका क्या मुक़ाबिला करता। बढ़ते-बढ़ते अमृतसर पर भी इनका क़ब्ज़ा हो गया, और फिर कश्मीर पर। अफ़ग़ानों की फ़ौज, जो वहाँ थी, बुरी तरह हारी। सिक्खों की शक्ति, जो छिन्न-भिन्न थी, एक सूत्र में बँध जाने से एकत्र हो गई, और उसमें वह साहस और बल आ गया, जिसकी आशा लोगों को न थी। यही हालत मरहठों की थी। उनकी भी शक्ति शिथिल थी, और कुछ खोए हुए-से थे, जब तक शिवाजी ने उन्हें जगाकर सचेत नहीं कर दिया। शिवाजी और रणजीतसिंह का एक ही उद्देश्य था कि महाराष्ट्र और पंजाब की सब शक्तियाँ एकत्र और संगृहीत हो जायँ, और दोनो को असाधारण सफलता हुई थी। मरे का कहना है, रणजीतसिंह ने उसे भी कभी प्राण-दंड नहीं दिया, जिसने अक्षम्य अपराध किया। एक दूसरे का कहना है, इतने बड़े राज्य की स्थापना करने में शायद ही और कभी इतना कम मानुषी रुधिर बहाया गया हो। मानुषी रुधिर से स्वार्थता की जड़ सींची जाती है। रणजीतसिंह तभी युद्ध छेड़ते थे, जब किसी तरह काम चलते न दिखलाई देता था। महाराज केवल अद्वितीय वीर ही नहीं, वरन् बहुत बड़े नीतिज्ञ भी थे। यह गुण शिवाजी में भी था। १८२१ में पश्चिमीय और मध्य पंजाब पर इनकी पूरी हुकूमत हो गई थी। अब इनका वह नाम था, जिसे सुनते ही लोग दहल जाते थे, और सफलता पूर्ण सहायता कर रही थी।

२५ एप्रिल, १८०० में रणजीतसिंह ने ईस्ट-इंडिया-कंपनी से संधि कर ली। मेटकाफ़ ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज से कहा था कि सतलज-नदी के दाहने किनारे पर जो ज़मीन है, केवल उसी से उनका संबंध है, और यह भी कहा था कि सतलज और यमुना के बीच जो ज़मीन है, उस पर कंपनी का अधिकार है। कुछ इतिहासकारों ने संधि करने की वजह से महाराज पर आक्षेप किए हैं, और कहा है, इस संधि से पूर्ण पंजाब का संगठन नहीं हो पाया। आक्षेप करनेवालों का कभी यह काम नहीं रहा कि परिस्थिति पर ध्यान रखकर आलोचना किया करें। महाराज में अपूर्व दूरदर्शिता थी। वह समझते थे, और ठीक समझते थे कि अँगरेज़ों की फ़ौजों का मुक़ाबिला करना मुश्किल है, क्योंकि उनमें वे भी सम्मिलित हो गए थे, जिन्हें महाराज से ईर्ष्या थी। महाराज का यह ठीक विचार था कि यदि युद्ध हुआ, और उसमें उन्हें सफलता न हुई, तो उनकी तमाम उमर की सब कोशिशें बेकार हो जायँगी। कूटनीति में निपुण होने पर भी रणजीतसिंह अपनी बात के बड़े धनी थे। तमाम उमर संधि के नियमों का पालन किया। ईस्ट-इंडिया-कंपनी गोरखों और मरहठों से युद्ध करने में लगी हुई थी, और रणजीतसिंह मुलतान और पेशावर इत्यादि पर विजय प्राप्त कर रहे थे। अब सीमा-प्रांतों में भी रणजीतसिंह का पूर्ण प्रभाव था। जब ईस्ट-इंडिया-कंपनी को मरहठों की लड़ाई से फ़ुरसत मिली, तब उसकी निगाह रणजीतसिंह की तरफ़ गई, और यह ख़याल आया कि यदि इनका साम्राज्य इसी तरह विस्तृत होता रहा, तो कोई नया गुल खिलेगा। दोनों में छिड़ गई होती, यदि कंपनी को यह डर न होता कि उस आदमी का सामना है, जो बहुत बड़ा बहादुर और दाँव-पेंच जाननेवाला है, और जिसका पूर्ण प्रभाव पंजाब पर है। दूसरी बात यह भी थी कि मरहठों और गोरखों से युद्ध करते-करते कंपनी की फ़ौजें थक गई थीं। कंपनी ने फ़ीरोज़पुर अपने क़ब्ज़े में कर लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि रणजीतसिंह को अपना साम्राज्य विस्तृत करने में बहुत-सी कठिनाइयाँ बढ़ गईं, तब भी वह चुप ही रहे। वह यह समझते थे कि यह उलझन बिना युद्ध के न सुलझेगी, और युद्ध करने में यह डर था कि अपने ही लोग कंपनी से मिल जायँगे, और बना-बनाया काम सब बिगड़ जायगा। रणजीतसिंह और कंपनी, दोनो की निगाह सिंध पर थी। यदि सिंध हाथ में आ जाता, तो रणजीतसिंह की शक्ति बहुत बढ़ गई होती। लेकिन पाटिंगर इस चाल को समझ गया, और जब इधर गवर्नर जनरल और रणजीतसिंह में मित्रता के वादे हो रहे थे, वह सिंध की तरफ़ बढ़ता चला जा रहा था। कंपनी के हाथ में सिंध आते ही और युद्ध के बचाने के अभिप्राय से कंपनी की तरफ़ से यह प्रस्ताव हुआ कि सिंध की सड़कें और नदियाँ हिंदोस्तान के सौदागरों के लिये खुली रहें। ब्रिटिश कूटनीति अपना काम कर गई। महाराज समझते तो थे कि इसका मतलब क्या है, परंतु युद्ध बचाते थे। अब कंपनी की शक्ति भारतवर्ष-भर में सबसे बड़ी शक्ति थी। यद्यपि महाराज की फ़ौज का संगठन अनुभवी अँगरेज़ों ने कर दिया था, और वे लोग फ़ौज में नौकर भी थे, तथापि महाराज के सामने मरहठों की फ़ौज की मिसाल थी। उसमें भी अँगरेज़ी अफ़सर थे, जो कंपनी से लड़ाई छिड़ते ही अपनी जेबें गरम करके चलते बने थे।

जब महाराज मृत्यु-शय्या पर थे, तब उन्होंने एक दफ़े कहा था कि वह अँगरेज़ों को मुल्क से निकाल तो सकते थे, परंतु समुद्र को कैसे सुखा पाते। यह भी उन्होंने स्वीकार किया था कि अलीगढ़ तक वह 'अँगरेज़ बहादुर' को पीछे हटा ले जा सकते थे, परंतु उन्हें भी यह डर था कि मुझे भी वे लोग अपने राज्य से निकालकर सतलज के पार कर देंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सब लाल हो जायगा, अर्थात् पृथ्वी रक्त-रंजित हो जायगी। वह जानते थे, शक्ति-संपन्न कंपनी से लड़ना पहाड़ से सिर टकराना है। नागपुर के भोंसलों ने मदद माँगी, और नेपाल से भी मदद की माँग आई, परंतु महाराज ने स्वीकार नहीं किया। जब अपने ही लिये न लड़े, तो दूसरों के लिये क्यों आग में कूदते। अगर युद्ध होता, और वह हारते, तो पंजाब के संगठन का जो कुछ काम उन्होंने किया था, वह उन्हीं की आँखों के सामने नष्ट हो जाता।

महाराज शासन-कला में भी बहुत निपुण थे। प्रत्येक विभाग एक योग्य कर्मचारी के हाथ में था, और स्वयं उसकी देख-रेख करते थे। स्मरण-शक्ति इतनी अच्छी थी कि बड़े-से-बड़ा हिसाब, जो देखते थे, हमेशा उन्हें याद रहता था।

यह महाराज के जीवन पर विहंगम दृष्टि है। महाराज की उपमा नेपोलियन से नहीं दी जा सकती, क्योंकि दोनो के उद्देश्यों में बड़ा अंतर था। जो कुछ हो, भारतवर्ष को महाराज रणजीत-सिंह की वीरता पर सदैव उचित अभिमान रहेगा।

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत, चमत्कारी ओषधियाँ

गर्भ-निवारक

अगर आप अधिक औलाद पैदा करना नहीं चाहते, तो हमारी सरकार से रजिस्टर्ड 'गर्भ - निवारक' ओषधि का अपनी धर्मपत्नी को सेवन कराइए। ध्यान रखिए, इसके बाद फिर कभी गर्भ नहीं रहेगा, यह हमारी ३० साल की अनुभूत है, इससे तंदुरुस्ती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता, मासिक धर्म भी बंद नहीं होता। किंतु फिर आजन्म गर्भ की आशा न करें। मूल्य २।।), डा० म० ।≡) पता—पं० चंद्रशेखर वैद्य-शास्त्री, ब्राह्मी औषधालय (नं० १) अलीगढ़।

कामिनी-वशीकरण

सरकार से रजिस्टर्ड

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता, या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है, जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खावेंगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है, जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मू० ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५।।), ८ गोली का २।।), नमूना दो गोली ।।।); मात्रा आधी गोली से एक गोली तक।

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मू० छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्तिका की पहेली

[श्रीमती प्रभावती देवी]

यह मानी हुई बात है कि स्वस्तिका का चिह्न बहुत प्राचीन है। पर इसके विषय में अब तक बहुत कम सुनने में आता था। आज यह चिह्न हिटलर के नाज़ी दल के 'बैज' का चिह्न बनकर विख्यात

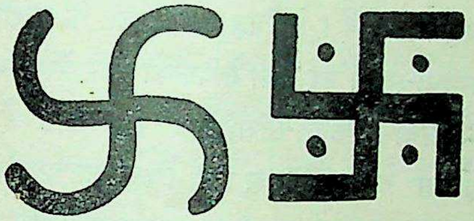

स्वस्तिका का आदि रूप

हो गया है। आज एक शक्तिशाली राष्ट्र का

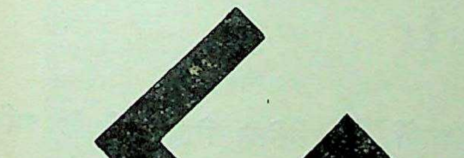

नाज़ियों द्वारा व्यवहृत स्वस्तिका का रूप

राष्ट्रीय चिह्न होने के कारण इसकी सर्वप्रियता तथा प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई है। परंतु नाज़ी जर्मनी का यह राष्ट्रीय चिह्न भारतवर्ष में भी बहुधा व्यवहृत होता है। पर भारतवर्ष की राष्ट्रीयता से यह चिह्न कुछ संबंध नहीं रखता। हिंदुओं के कुछ शुभ अवसरों पर स्वस्तिका की आवश्यकता होती है।

प्राचीन आर्यों का चिह्न

स्वस्तिका के व्यवहार में यहाँ तथा नाज़ियों के देश में बहुत विभिन्नता पाई जाती है। तीन हज़ार वर्ष पूर्व यह चिह्न उन आर्यों की सभ्यता से संबंध रखता था, जो योरप तथा एशिया के महादेशों में फैले थे। नाज़ियों के झंडों पर स्वस्तिका का चिह्न तिरछा अंकित किया जाता है। परंतु भारतवर्ष में इसे अंकित करने की दूसरी ही रीति है। कभी-कभी स्वस्तिका के चतुष्कोणों पर केवल चार बिंदुओं का निशान ही भर दिया जाता है।

आर्यों द्वारा उत्पत्ति

जाति-विज्ञान के जर्मन पंडित स्वस्तिका की उत्पत्ति पाँच हज़ार वर्ष पूर्व आर्यों द्वारा बतलाते हैं। कहा जाता है, आर्य लोग अनार्यों से विभिन्नता रखने के लिये इस चिह्न का व्यवहार करते थे। हैवेल का कहना है, स्वस्तिका बलिदान-सूचक चिह्न है, तथा बलि-वेदी की प्रदक्षिणा की ओर संकेत करता है। आर्यों के प्राचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामों में चौराहों पर स्वस्तिका के चिह्न बने रहते थे। 'मिडेवल आर्चीटेक्चर' में हैवेल साहब कहते हैं, स्वस्तिका के चिह्न आर्यों की

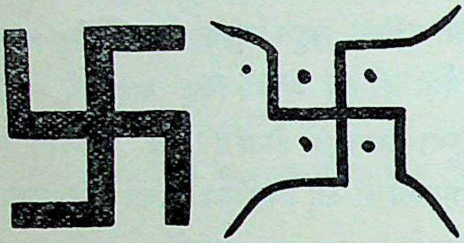

हिंदुओं द्वारा व्यवहृत स्वस्तिका का रूप

सैनिक छावनियों के प्रवेश-द्वारों पर बने रहते थे। विश्वास यह था कि ये चिह्न छावनियों की रक्षा करेंगे।

सर्व सांसारिक व्यवहार

स्वस्तिका का व्यवहार केवल आर्यों तक ही सीमित न था। पुरातत्त्ववेत्ताओं ने सूसा, मेसोपोटामिया, बेबिलोनिया, ट्राय और इटली में भू-गर्भ से निकली हुई कई वस्तुओं पर इस चिह्न को अंकित पाया है। ट्राय में स्क्लीमैन की छान-बीन के फल-स्वरूप भू-गर्भ से कई पदार्थ ऐसे निकले, जिन पर स्वस्तिका के चिह्न कई रूपों में अलंकृत थे। थियोबोल्ड बहुत पहले ही कह चुके हैं कि यह चिह्न प्राचीन मिस्र तथा असीरिया में व्यवहृत होता था।

ऐतिहासिक समय के पूर्व ही से माध्यमिक काल (Middle Ages) के अंत तक योरपीय अलंकारों पर अंकित होनेवाले सभी चिह्नों से बढ़कर सर्वप्रिय स्वस्तिका का चिह्न था। इस चिह्न की नींव पाषाण-युग (Stone Age) में दी गई थी। ट्रैनसिलमेनिया, सिसिली और क्रीट में यह चिह्न अंकित किया जाता था। स्पेन और इटली में प्राचीन काल की अवशिष्ट वस्तुओं पर, प्राचीन ग्रीस के मिट्टी के बरतनों पर तथा दक्षिण-योरप में भू-गर्भ से निकले हुए प्राचीन भवनों पर इस चिह्न के निशान मिलते हैं। इन प्रमाणों से ज्ञात होता है कि स्वस्तिका का रहस्यमय तथा अलंकार-सूचक चिह्न प्राचीन सभ्यता का एक अंग था।

अमेरिका के पाषाण-युग में भी स्वस्तिका के चिह्न मिलते हैं। ये चिह्न अमेरिका के प्राचीन समाधी-स्थलों पर तथा मेक्सिको और पेरूविया के प्राचीन कीर्ति-स्तंभों पर पाए जाते हैं। एशिया में पहलेपहल इस चिह्न का पदार्पण बेबिलोनिया की प्राचीन राजधानी सूसा में हुआ। जापान, चीन तथा तिब्बत में यह चिह्न प्राचीन काल से अब तक व्यवहृत होता आ रहा है।

भारतवर्ष में

आर्यों के सैनिक चिह्न होने के अतिरिक्त इस चिह्न की प्राचीनता का प्रमाण ईसवी सन् से ६०० वर्ष पूर्व पाणिनि (प्रसिद्ध वैयाकरण) द्वारा व्यवहृत होने में मिलता है। पाणिनि ने अपने ग्रंथों में गौओं को स्वस्तिका के चिह्न से दागने की प्रचलित प्रथा के ऊपर प्रकाश डाला है। प्राचीन भारतवर्ष में हिंदू राजाओं के सिक्कों पर इस चिह्न से बेल-बूटे बनाए जाते थे।

बंगाल तथा मदरास में आजकल भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्तिका के चिह्न अनेक रूपों में, सजावट के प्रत्येक अवसर पर, व्यवहृत होते हैं। इन दोनो प्रांतों में अलपोना (स्वस्तिका का एक रूप) का चिह्न तो बहुत प्रचलित है, और हिंदू-घरों में प्रत्येक उत्सव पर यह चिह्न द्वार की चौखट पर या आँगन में बनाया जाता है। किसी हिंदू के विवाहोत्सव में ये चिह्न उस दीवार पर अंकित किए जाते हैं, जिस पर कुल-देव चित्रित रहते हैं। ऐसे शुभ अवसरों पर पुरोहित स्वस्तिका के चिह्न कुमकुमा द्वारा अंकित करते हैं।

हिंदू दूकानदार अपने हिसाब-किताब के बहीखाते दीवाली के दिन बदलते हैं। बही-खाते बदलने की क्रिया उत्सव के साथ संपन्न

नए बहीखाते पर स्वस्तिका का चिह्न

होती है। इसके प्रथम पृष्ठ पर स्वस्तिका का चिह्न कुमकुमा से अंकित किया जाता है। इस चिह्न को अंकित करने में दूकानदारों का अभिप्राय यह रहता है कि सिद्धिदाता भगवान् गणेश उन्हें आशीर्वाद दें, जिससे उनके व्यापार में उन्नति हो।

इन सबों के अतिरिक्त हाल ही में एक फ़ैशन-सा चल गया है, और बड़े-बड़े शहरों में लोग अपने मकानों के पलस्तर पर स्वस्तिका के चिह्न अंकित करने लगे हैं। स्त्रियों के गहनों पर अब सोने-चाँदी के बने हुए स्वस्तिका के चिह्नों की प्रधानता अधिक है, और इसकी सर्वप्रियता भी बहुत बढ़ गई है। आधुनिक काल में गहनों पर अलंकृत स्वस्तिका के वे चिह्न सोने में सुगंध लाते हैं। ब्रौंज़ युग में (Bronze Age) जर्मनी में भी कुछ ऐसी ही चाल थी। स्वस्तिका के चिह्न से अलंकृत कोई भूषण एक सुंदर नमूना समझा जाता था।

बौद्ध तथा जैन-धर्मों में

आश्चर्य तो यह है कि स्वस्तिका के चिह्न बौद्ध तथा जैन-धर्मानुयायियों के यहाँ भी पाए जाते हैं। पूरी ज़िले के अंतर्गत भुवनेश्वर के उदयगिरि तथा खंडगिरि शिला-खोहों में पत्थर पर खुदी हुई कई मूर्तियाँ हैं, जिनमें रहस्यमय स्वस्तिका के चिह्न भी मिलते हैं।

बौद्ध लामा पवित्रता तथा भगवान् बुद्ध का आशीर्वाद पाने के अभिप्राय से स्वस्तिका-चिह्न व्यवहार करते हैं। दार्जिलिंग की वेधशाला पहाड़ी (Observatory Hill)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ऊपर यात्रियों ने स्थानीय लामाओं के

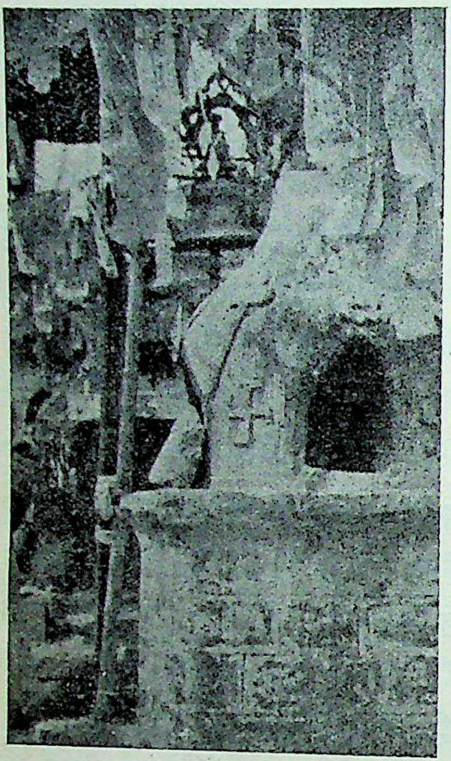

दार्जिलिंग में वेधशाला पहाड़ी (Observatory Hill) पर अंकित स्वस्तिका का चिह्न

देवता महाकाल की बलि-वेदी पर स्वस्तिका के दो विशाल चिह्नों को अंकित देखा होगा।

चीन और जापान में

बौद्ध सभ्यता के विस्तार के साथ ही स्वस्तिका के चिह्न का शुभागमन चीन और जापान में भी हुआ। चीनवाले इसे वान कहते हैं, जिसका अर्थ अनंत होता है। जापान में आठवीं शताब्दी में यह चिह्न इतना सर्वप्रिय हो गया कि जापानी सरकार को इसकी बढ़ती हुई सर्वप्रियता को सीमावद्ध करने के लिये क़ानून की शरण लेनी पड़ी। स्वस्तिका के चिह्न सरकारी सनदों पर अंकित रहते थे, इसीलिये इसकी सर्वप्रियता रोकने की आवश्यकता पड़ी।

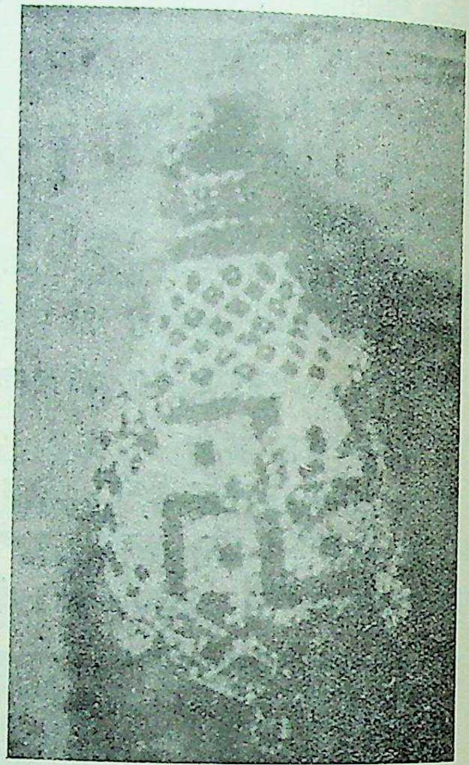

गुजरातियों के विवाह के अवसर पर स्वस्तिका से सुसज्जित बल्ब

सूर्य-पूजा का चिह्न

स्वस्तिका का व्यवहार अनेक अभिप्रायों से किया जाता है। साधारण धारणा है कि यह एक शुभ चिह्न है, और सूर्य की चाल को चित्रित करता है। ऐसी कल्पना की जाती है कि यह चिह्न पहलेपहल सूर्य-पूजा का चिह्न था। भारतवासियों का विचार है कि यह चिह्न ॐ तथा स्वस्ति से संबंध रखता है। कुछ पंडितों का कहना है कि स्वस्तिका का चिह्न प्राचीन वैदिक काल में बनाए जानेवाले अग्नि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंड से निकला है, जिसका ढाँचा लगभग ऐसा ही होता था।

इँगलैंड में इसे लोग फ़्लाइ फ़ुट कहते हैं, जिसका अर्थ चौपाया होता है। स्कैंडिनेविया में इसे लोग थौर की हथौड़ी कहते हैं। योरप की दंत-कथा के अनुसार थौर का स्थान कुछ हम लोगों के इंद्र के ऐसा है। वह (थौर) सूर्य का पुत्र तथा वर्षा का देवता है।

हिमालय के बहुमूल्य पदार्थ

शुद्ध सत शिलाजीत

ताक़त और मर्दानगी देती है। प्रमेह और प्रदर की एकमात्र क़ुदरती दवा है। गठिया, चोट तथा कफ के रोगों को आराम करती है। बवासीर को फ़ायदा पहुँचाती है। जो लोग वैद्य-डॉक्टरों की दवाओं से परेशान हो चुके हों, वे इस क़ुदरती महौषध को भी आज़मा देखें। चालीस वर्ष के लगभग पहुँचने पर प्रत्येक व्यक्ति को साल में कम-से-कम छटाँक-भर ज़रूर सेवन कर लेनी चाहिए। बच्चों के लिये ख़ास 'टानिक' है। मूल्य ४) रु० छटाँक

च्यवनप्राश महारसायन—हिमालय की ताज़ी औषधियों द्वारा प्रस्तुत। ताक़त और नवजीवन देती है। क्षय तथा पुरानी खाँसी को भी लाभ पहुँचाती है। मूल्य ४) रु० सेर।

ब्राह्मी घृत—हिमालय की ब्राह्मी बूटी दिमाग़ को तर तथा तेज़ करती है। ब्राह्मी की पत्तियाँ घोट-छानकर भाँग की तरह पी जाती हैं, परंतु वर्षा और जाड़े में इस तरह न पीना चाहिए। इन दिनों के लिये हमने ताज़ी ब्राह्मी के स्वरस से ब्राह्मीघृत तैयार कराया है। मृगी तथा हिस्टीरिया में लाभप्रद। स्मृति-वर्द्धक। मूल्य—ब्राह्मीघृत ८) रु० सेर, ब्राह्मीबूटी ४) रु० पाँच सेर।

असली कस्तूरी ३०) रु० तोला
असली अंबर ३५) रु० तोला
केशर कश्मीरी ६) रु० छटाँक

दूध बढ़ने की दवा—'दुग्धदा' जिन माताओं के दूध कम उतरता हो, उन्हें दुग्धदा का सेवन करना चाहिए। दूध और दूध की पौष्टिकता बढ़ती है। मा को भी ताक़त मिलती है। तीसरे ही दिन दूध उमड़ पड़ेगा। मूल्य २॥) रु० डिब्बा (बीस दिन सेवन योग्य)

नोट—सबकी सेवन-विधि साथ भेजी जाती है। मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (हरिद्वार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशोध

[श्रीमती डी० बी० बैजल एम्० ए०]

कानपुर का झगड़ा अभी शांत नहीं हुआ था। इक्का-दुक्का केस गलियों में सुनाई दे जाते थे। पकड़ा-धकड़ी भी चल रही थी। पर जो वास्तविक मारनेवाले थे, उनका पता भी नहीं लगता था। उपद्रवियों को इस बार खुलकर लड़ने का मौक़ा नहीं मिल सका था। पहले की भाँति इस बार रक्त की भयंकर होली नहीं खेली जा सकी थी। एक-एक बूँद से प्यास बुझ रही थी। इस कारण अब तक शांति के ज़रा भी लक्षण दिखाई नहीं पड़ते थे।

ऐसे समय में सकीना अपनी अँधेरी कोठरी में बैठी मुहम्मद का इंतज़ार कर रही थी। चिराग़ जल गए, पर उसका अभी तक पता न था। जैसे-जैसे अँधेरा होता जाता था, उसका दिल बैठा जाता था। मुहम्मद उस दुखिया मा का अकेला लाल था। उसी के लिये वह जी रही थी, उसके अतिरिक्त उसका संसार में कोई न था। यदि वह लौटकर न आए, तो……… यदि उसे किसी ने…………आगे उससे सोचा न जाता था।

सकीना दीवार के सहारे बैठी थी। उसकी आँखों के सामने उसका अतीत चक्कर लगा रहा था। उसका बचपन का नाम मोहिनी था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, भोला-भाला मुँह, उसके गोरे-गोरे शरीर के छोटे-छोटे अवयव थे। पिता ने इस कारण बड़े लाड़ से उसका नाम मोहिनी रक्खा था। मा के साथ जब वह पिता की गोद में बैठकर गंगाजी जाती, तो रास्ते में रोककर सभी परिचित मोहिनी को प्यार करते, उसकी तोतली बोली सुनते, और उसकी हँसी से स्वयं हँसते। अक्सर उन्हें गंगाजी से लौटने में देर हो जाती, और घर आकर, उलटी-सुलटी खिचड़ी खाकर दफ़्तर भागना पड़ता। पर वह थे पक्के सनातनी ब्राह्मण। बिना गंगाजी नहाए मुख में पानी भी नहीं जा सकता था। २५) की नौकरी करते थे। धनाभाव के कारण नौकर रख नहीं सकते थे। जब तमाम दिन के कड़े परिश्रम के पश्चात् घर आते, तो मोहिनी को देखकर ही उन्हें सुख मिलता। उसे गोद में ले मुंशी रामगोपाल के तख़्त पर जा बैठते। वहाँ मुंशीजी उसे खिलाते। उनके लड़के-बच्चे भी आकर बैठ जाते। बाल-मंडली में मोहिनी ख़ूब खिलती-खेलती। यों ही रात हो जाती।

उस समय वह बहुत छोटी थी। पर जब वह छ वर्ष की हुई, तब स्कूल पढ़ने जाने लगी। मुंशीजी का लड़का मदन उसमें पहले ही से पढ़ता था। उसकी आयु दस वर्ष की थी। मोहिनी को मदन पहले ही से अच्छा लगता था। और, सब लड़कों की अपेक्षा वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी के साथ खेलना पसंद करती थी। स्कूल में साथ-साथ पढ़ने के कारण ही दोनो का मन लग जाता था। मदन कभी-कभी उसे अपनी किताबें दिखाता, वह भी उसकी बैठक में जाकर घंटों बैठती, उसकी नक़शों की कॉपी देखती, और उसकी बातें बड़े ध्यान से सुनती। जब पिता के जाने का समय होता, तब वह उनकी पुकार सुनकर दौड़ी चली आती, पर उसका मन चाहता कि वहीं बैठी रहे। फिर दिन-भर सोचती कि कब शाम हो, और वह मदन से मिले। कभी-कभी मदन दिन में भी उसके घर आता। मा भी अपने पति के अमीर मित्र का लड़का समझकर उसकी ख़ातिर करती। उसके खेल से ख़ुश होती। बालपन का यह स्नेह भी अवस्था के साथ-साथ बढ़ता गया।

मोहिनी अब ग्यारह वर्ष की हो गई थी। मा को उसके लिये वर की चिंता थी। ग़रीब घर की लड़की के लिये वर कहाँ मिले। कुल से नीचे उतरकर माता-पिता ब्याह करना नहीं चाहते थे। उच्च कुलवाले कम-से-कम दो हज़ार नक़द माँगते थे। इसी चिंता में दिन बीतने लगे। मुंशीजी के तख़्त पर विवाह की कठिनाइयों, दहेज़ की कुप्रथा और समय के परिवर्तन पर बहस होती, पर अब मोहिनी घर पर ही रहती। वह मदन की बाट घर पर ही देखा करती, और जब कभी वह आता, तभी दर्शन हो पाते।

उसे वह दिन अच्छी तरह याद था, जब उसके पिता ने पास के गाँव से दो दिन बाद आकर ख़बर दी कि वह मोहिनी की सगाई पक्की कर आए हैं। मोहिनी उस समय तेरह वर्ष की थी। उसे यह सुनकर कुछ ख़ुशी हुई कि माता-पिता की चिंता मिटी। पर यह सोचकर कि वह मा, बाबूजी और मदन से दूर चली जायगी, उन्हें देख न सकेगी, उसका जी बैठ गया। मदन ने भी यह ख़बर सुनी, पर उस दिन से उसके पाँव मोहिनी के घर की ओर नहीं पड़ सके। दो महीने बाद उसकी बरात उसने आँसू-भरी आँखों से आते देखी थी, और जिस समय मोहिनी विदा होकर डोली में बैठी थी, वह अपने कमरे के किवाड़ बंद किए सोच रहा था कि ईश्वर ने जाति और समाज का बंधन इतना दृढ़ क्यों बनाया। और, यदि बनाया भी था, तो मोहिनी को ब्राह्मण और उसे कायस्थ क्यों बनाया।

मोहिनी को एकाएक याद आया कि विवाह के नवें दिन ही गाँव में प्लेग फैला। बालक, वृद्ध, युवा, सब काल-कवलित होने लगे। लोग घबरा गए। भागते-भागते मोहिनी के पति को भी प्लेग हो गया। घरवालों ने उसे घर से दूर ले जाकर धर्मशाला में रक्खा, पर कोई लाभ न हुआ। मोहिनी का सिंदूर पुँछना था, और... और उसके जीवन का प्रवाह दूसरी ओर बहना था। वह उस समय नितांत किंकर्तव्य-विमूढ़ थी। तीसरे दिन उसके पिता उसे लिवा ले गए थे। तब से ससुराल के विषय में उसने कुछ नहीं सुना। उसे नहीं मालूम कि कौन बचा और क्या हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता के घर में मोहिनी ने एक अपूर्व परिवर्तन देखा। उसकी चूड़ियाँ फोड़ डाली गईं। पहला-सा सुख सपना हो गया। दिन-भर आँगन में उदासी छाई रहती। वह बड़ी सादगी से रहती। सफ़ेद धोती पहनती। माथे पर बिंदी न लगाती। इस प्रकार सूने-सूने दिन एक के बाद एक आते और चले जाते थे।

मदन ने सब सुना। सुनकर मन-ही-मन कुछ निश्चय किया। वह उसके मकान के सामने से निकलता, पर मोहिनी सामने न दिखाई देती। घर के भीतर पैर रखने का उसे साहस न होता था। मोहिनी को कभी वह सांत्वना न दे सका, धीरज से दो शब्द न कह सका। मोहिनी कभी रामायण पढ़ती; कभी महाभारत, कभी मा के साथ काम-काज कराती। वह अपना जीवन शांति, सरलता और पवित्रता से बिताने का निश्चय कर चुकी थी। पर विघ्न-बाधाएँ तो भविष्य के अंधकार में छिपी बैठी थीं। तीन साल बाद ही उसके माता-पिता, दो महीने के आगे-पीछे, उसे इस संसार में एकाकी छोड़कर चल बसे।

मोहिनी पर वज्र टूट पड़ा। वह अपनी दशा स्वयं न समझ सकी। ऐसा उसने कभी अपने होश में न सुना, न देखा था। कुछ ही दिन में दिलासा देनेवाले, दुःख प्रकट करनेवाले और विदेशों से आए हुए संबंधी एक-एक करके लौट गए। वह बिलकुल अकेली रह गई। अबोध, युवा बालिका हतज्ञान होकर दालान में गिर पड़ी। डेढ़ घंटे बेहोश पड़ी रही। होश आने पर उसने देखा कि उसका सिर मदन की गोद में था।

वह घड़ी भूलने की न थी। वह मोहिनी के जीवन की अमूल्य निधि थी, जिसे वह अपने हृदय में यत्न से छिपाए हुए थी। वह स्मृति ही अतीत के अंधकार को आलोकित किए हुए थी। उसे याद था कि मदन ने धीरे-धीरे उसे उठाया था, और अपने वक्ष में छिपा लिया था। बड़ी देर तक दोनो चुप रहे। फिर मदन ने मोहिनी का सिर उठाकर कहा—"मोहिनी, मुझे तुम्हारी सारी दशा मालूम है। जो भाग्य में लिखा था, वह तो होना ही था। अब तक मैं तुम्हारे पास आते डरता था। शायद मुझे कोई आने भी न देता। पर अब तुम कुछ डरो मत। समाज ने मुझे तुम्हारे लिये कुछ भी करने का अधिकार नहीं दिया है, पर यह अधिकार हमें स्वयं लेना है। तुम अब मेरी होकर रहोगी, और सुख से रहोगी।" मोहिनी ने सुना, समझा, पर ज़्यादा न सुन सकी।

छ महीने और बीत गए। मदन ने मोहिनी के घर पर ज़रूरत की कुछ चीज़ें भिजवा दी थीं। वह उससे प्रतिदिन मिलता था। मदन की इस वर्ष अंतिम परीक्षा थी। इलाहाबाद जाना आवश्यक था। उसने मोहिनी को हर प्रकार का दिलासा देकर प्रतिज्ञा की थी कि लौटने पर वह सारा हाल अपने कुटुंब पर प्रकट कर देगा, और उससे ब्याह करके सारा जीवन सुख से बिताएगा। जाने का रास्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके घर के सामने से था। संध्या के धूमिल आकाश में जब तक मदन का मुख दिखाई दिया, मोहिनी देखती रही। वही उसका और मदन का अंतिम मिलन था।

चार दिन बाद मोहिनी के घर नायन आई। मोहिनी किवाड़ बंद किए नहा रही थी, बोली पहचानकर किवाड़ खोले, और गीली धोती बदलकर नायन के पास आ बैठी। वह समझी, मदन की चिट्ठी आई होगी, और यह कुछ संदेश देने आई है। नायन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, पेट पर भी छिपी दृष्टि डाली, और कुछ भाँपकर हँसी, और इधर-उधर की बातें करके चली गई। मोहिनी कुछ न समझी, किंतु जब आध घंटे बाद मुंशीजी ने दरवाज़े पर कड़ी आवाज़ में पुकारा, तो वह सहम गई। मुंशीजी ने गरजकर कहा—"मुझे यह नहीं मालूम था, मामला यहाँ तक बढ़ गया है, नहीं तो मैं मदन को कभी तुम्हारे पास न आने देता। तुम मेरे मित्र की लड़की थीं। तुम्हारे दुख से दुखी होना हमारे लिये स्वाभाविक था। पर कष्ट-निवारक दयालु को भी तुम ले डूबोगी, यह हमने नहीं सोचा था। तुम जो यह समझती हो कि मदन से तुम्हारा विवाह हो जायगा, सो असंभव है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि गाँव में बदनामी फैलने से पूर्व तुम अपना काला मुँह लेकर कहीं चली जाओ।" यह कहकर, पैर पटकते हुए, मुंशीजी चले गए।

मोहिनी सिर झुकाए खड़ी थी, धम से ज़मीन पर गिर पड़ी, पर उसे सूझता न था कि क्या करे। मदन के आने तक वह वहीं रहेगी, यह उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था। पर यह निश्चय उसका संध्या से अधिक नहीं रह सका। रात होते-होते वह एक पोटली दबाए सड़क पर निकल गई।

मोहिनी को याद आ रहा था कि उसे मार्ग में लाठी टेककर जानेवाली एक भिखारिन मिली थी। वह मुसलमान थी। बड़ के पेड़ के नीचे वह उससे मिलकर रोई थी, फिर उसके घर चली गई थी। वहीं मोहिनी सकीना हुई, और मुहम्मद का जन्म हुआ। सोलह वर्ष से मोहिनी वहीं रहती है। घर पर कुरते काढ़-काढ़-कर अपना पेट पालती है। वृद्धा की मृत्यु हो चुकी थी। सकीना और मुहम्मद, घर पर दो ही प्राणी थे। मुहम्मद की प्रवृत्ति बड़ी बर्बर है। वर्तमान झगड़ा उसके लिये धार्मिक युद्ध है। पर आज उसे गए देर हो गई है। सहसा किवाड़ बड़ी जोर से खुले। मुहम्मद एक हिंदू को घसीटता अंदर घुसा। कुछ मुसलमान मित्र पीछे-पीछे थे। वे लोग आँगन के दरवाज़े पर ही रह गए। आँगन में आते-आते उस मनुष्य की दशा शोचनीय हो चली थी। उसके शरीर पर अनगिनती शस्त्र-प्रहार हुए थे। वह रक्त से रँगा हुआ था। मुहम्मद के अंतिम वार से उसके प्राण-पखेरू सदा के लिये उड़ गए।

जब अन्य मित्र एक-एक करके घर से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता के घर में मोहिनी ने एक अपूर्व परिवर्तन देखा। उसकी चूड़ियाँ फोड़ डाली गईं। पहला-सा सुख सपना हो गया। दिन-भर आँगन में उदासी छाई रहती। वह बड़ी सादगी से रहती। सफ़ेद धोती पहनती। माथे पर बिंदी न लगाती। इस प्रकार सूने-सूने दिन एक के बाद एक आते और चले जाते थे।

मदन ने सब सुना। सुनकर मन-ही-मन कुछ निश्चय किया। वह उसके मकान के सामने से निकलता, पर मोहिनी सामने न दिखाई देती। घर के भीतर पैर रखने का उसे साहस न होता था। मोहिनी को कभी वह सांत्वना न दे सका, धीरज से दो शब्द न कह सका। मोहिनी कभी रामायण पढ़ती, कभी महाभारत, कभी मा के साथ काम-काज कराती। वह अपना जीवन शांति, सरलता और पवित्रता से बिताने का निश्चय कर चुकी थी। पर विघ्न-बाधाएँ तो भविष्य के अंधकार में छिपी बैठी थीं। तीन साल बाद ही उसके माता-पिता, दो महीने के आगे-पीछे, उसे इस संसार में एकाकी छोड़कर चल बसे।

मोहिनी पर वज्र टूट पड़ा। वह अपनी दशा स्वयं न समझ सकी। ऐसा उसने कभी अपने होश में न सुना, न देखा था। कुछ ही दिन में दिलासा देनेवाले, दुःख प्रकट करनेवाले और विदेशों से आए हुए संबंधी एक-एक करके लौट गए। वह बिलकुल अकेली रह गई। अबोध, युवा बालिका हतज्ञान होकर दालान में गिर पड़ी। डेढ़ घंटे बेहोश पड़ी रही। होश आने पर उसने देखा कि उसका सिर मदन की गोद में था।

वह घड़ी भूलने की न थी। वह मोहिनी के जीवन की असूल्य निधि थी, जिसे वह अपने हृदय में यत्न से छिपाए हुए थी। वह स्मृति ही अतीत के अंधकार को आलोकित किए हुए थी। उसे याद था कि मदन ने धीरे-धीरे उसे उठाया था, और अपने वक्ष में छिपा लिया था। बड़ी देर तक दोनो चुप रहे। फिर मदन ने मोहिनी का सिर उठाकर कहा—"मोहिनी, मुझे तुम्हारी सारी दशा मालूम है। जो भाग्य में लिखा था, वह तो होना ही था। अब तक मैं तुम्हारे पास आते डरता था। शायद मुझे कोई आने भी न देता। पर अब तुम कुछ डरो मत। समाज ने मुझे तुम्हारे लिये कुछ भी करने का अधिकार नहीं दिया है, पर यह अधिकार हमें स्वयं लेना है। तुम अब मेरी होकर रहोगी, और सुख से रहोगी।" मोहिनी ने सुना, समझा, पर ज्यादा न सुन सकी।

छ महीने और बीत गए। मदन ने मोहिनी के घर पर ज़रूरत की कुछ चीज़ें भिजवा दी थीं। वह उससे प्रतिदिन मिलता था। मदन की इस वर्ष अंतिम परीक्षा थी। इलाहाबाद जाना आवश्यक था। उसने मोहिनी को हर प्रकार का दिलासा देकर प्रतिज्ञा की थी कि लौटने पर वह सारा हाल अपने कुटुंब पर प्रकट कर देगा, और उससे ब्याह करके सारा जीवन सुख से बिताएगा। जाने का रास्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके घर के सामने से था। संध्या के धूमिल आकाश में जब तक मदन का मुख दिखाई दिया, मोहिनी देखती रही। वही उसका और मदन का अंतिम मिलन था।

चार दिन बाद मोहिनी के घर नायन आई। मोहिनी किवाड़ बंद किए नहा रही थी, बोली पहचानकर किवाड़ खोले, और गीली धोती बदलकर नायन के पास आ बैठी। वह समझी, मदन की चिट्ठी आई होगी, और यह कुछ संदेश देने आई है। नायन ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, पेट पर भी छिपी दृष्टि डाली, और कुछ भाँपकर हँसी, और इधर-उधर की बातें करके चली गई। मोहिनी कुछ न समझी, किंतु जब आध घंटे बाद मुंशीजी ने दरवाजे पर कड़ी आवाज में पुकारा, तो वह सहम गई। मुंशीजी ने गरजकर कहा—"मुझे यह नहीं मालूम था, मामला यहाँ तक बढ़ गया है, नहीं तो मैं मदन को कभी तुम्हारे पास न आने देता। तुम मेरे मित्र की लड़की थीं। तुम्हारे दुख से दुखी होना हमारे लिये स्वाभाविक था। पर कष्ट-निवारक दयालु को भी तुम ले डूबोगी, यह हमने नहीं सोचा था। तुम जो यह समझती हो कि मदन से तुम्हारा विवाह हो जायगा, सो असंभव है। तुम्हारी भलाई इसी में है कि गाँव में बदनामी फैलने से पूर्व तुम अपना काला मुँह लेकर कहीं चली जाओ।" यह कहकर, पैर पटकते हुए, मुंशीजी चले गए।

मोहिनी सिर झुकाए खड़ी थी, धम से ज़मीन पर गिर पड़ी, पर उसे सूझता न था कि क्या करे। मदन के आने तक वह वहीं रहेगी, यह उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था। पर यह निश्चय उसका संध्या से अधिक नहीं रह सका। रात होते-होते वह एक पोटली दबाए सड़क पर निकल गई।

मोहिनी को याद आ रहा था कि उसे मार्ग में लाठी टेककर जानेवाली एक भिखारिन मिली थी। वह मुसलमान थी। बड़ के पेड़ के नीचे वह उससे मिलकर रोई थी, फिर उसके घर चली गई थी। वहीं मोहिनी सकीना हुई, और मुहम्मद का जन्म हुआ। सोलह वर्ष से मोहिनी वहीं रहती है। घर पर कुरते काढ़-काढ़कर अपना पेट पालती है। वृद्धा की मृत्यु हो चुकी थी। सकीना और मुहम्मद, घर पर दो ही प्राणी थे। मुहम्मद की प्रवृत्ति बड़ी बर्बर है। वर्तमान झगड़ा उसके लिये धार्मिक युद्ध है। पर आज उसे गए देर हो गई है। सहसा किवाड़ बड़ी ज़ोर से खुले। मुहम्मद एक हिंदू को घसीटता अंदर घुसा। कुछ मुसलमान मित्र पीछे-पीछे थे। वे लोग आँगन के दरवाजे पर ही रह गए। आँगन में आते-आते उस मनुष्य की दशा शोचनीय हो चली थी। उसके शरीर पर अनगिनती शस्त्र-प्रहार हुए थे। वह रक्त से रँगा हुआ था। मुहम्मद के अंतिम वार से उसके प्राण-पखेरू सदा के लिये उड़ गए।

जब अन्य मित्र एक-एक करके घर से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गए. सकीना किवाड़ के पीछे से निकली, और लाश को देखते ही धक्क से रह गई। पास जाकर ग़ौर से देखा, तो मृत देह के सीधे हाथ पर खुदा था 'मदन'। सकीना देखती-की-देखती रह गई, और कुछ न बोली। मुहम्मद की ख़ुशी की हद न थी।

कुमार

तरुणों का एकमात्र मासिक

वार्षिक मूल्य चार रुपए

तरुणों के इस सर्वांग-सुंदर मासिक पत्र में

शिक्षा और ज्ञानवर्धन के अलावा राष्ट्रीय भावना जाग्रत् करनेवाले सुंदर लेख रहते हैं।

देखिए, हमारे विद्वान् साहित्यिकों और पत्र-पत्रिकाओं की यही राय है—

'प्रताप', कानपुर

"साहित्यिक लेखों, कविताओं, कहानियों के अलावा वैज्ञानिक लेखों का चयन भी सुंदर हुआ है।"

'भारत', प्रयाग

"इसके लेखों से ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उत्साह और देश-प्रेम के भाव भी जाग्रत् होंगे।"

'सरस्वती', प्रयाग

"इस बहुविभूषित पत्र में पाठ्य सामग्री उपादेय एवं मनोरंजन, दोनो प्रकार की रहती है।"

'माधुरी', लखनऊ

"इसमें जितने लेख हैं, सब शिक्षाप्रद और मनोरंजक हैं।"

माननीय डॉ० काटजू (मंत्री यू० पी०-सरकार)

"मुझे विश्वास है, इसके लेख शिक्षाप्रद साबित होंगे, और इसका आदर एवं प्रचार होगा।"

माननीय पं० द्वारकाप्रसादजी मिश्र (मंत्री सी० पी०-सरकार)

"ऐसा सर्वांग-सुंदर पत्र संसार की उन्नत से उन्नत भाषा को भी गौरवान्वित करेगा।"

श्रीअमरनाथ झा (वाइस चांसलर प्रयाग-युनिवर्सिटी)

"कुमार, सबका स्नेह-भाजन होगा, ऐसी मेरी आशा है।"

श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त

"इसे देखकर आशा होती है कि यह मानसिक प्रौढ़ता प्रदान करने में समर्थ होगा।"

श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

"ऐसे पत्र में लिखने की अपने आप इच्छा होती है।"

श्रीकामताप्रसादजी गुरु

"मनोरंजन के साथ-साथ 'कुमार' शिक्षक का भी काम करता है।"

आज ही ग्राहक बनें।

पता—प्रकाश-गृह, कालाकाँकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहनाई

[श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

अंबर से अवनी तक आई एक लहर तूफ़ानों की;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की!

[१]

होली जलने लगी अचानक अंतर के अरमानों की;
हस्ती मिटने लगी आज लो, दुनिया के दीवानों की।
चली चेतना, रही न किंचित माया-सी इठलाने को;
प्रलय हुआ, पर प्रलय-शिखा तो रही आज सुलगाने को।
टूट चलीं अब जादू-जैसी दीवारें व्यवधानों की;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की!

[२]

मर मिटने की साध देख यह आज शौर्य का ज्वार जगा;
अरमानों को सुलगाने में जग का हाहाकार भगा।
आग लगा माया-ममता में मानव अब उन्माद जला—
मस्ती की बस्ती को फिर से करने को आबाद चला।
श्राद्ध मनाने भीड़ लगी यह दुनिया के दीवानों की;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की!

[३]

पावक की ये लपटें ऊँची भस्मसात करने लपकीं;
इस कल्पांतक ज्वाला में अब आँखें सोने को झपकीं।
आत्मविसर्जन के तर्पण को झिझका-सा कंगाल खड़ा;
अभिशापों से मानवता का बेबस यह कंकाल पड़ा।
भीड़ लगी मानव पुतलों की और अचेतन प्राणों की;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की!

[४]

झुलस पड़ी यह वसुंधरा भी, देखा जो कंकाल पड़ा;
चल न सका उत्तुंग हिमालय—पर्वत धृष्ट विशाल खड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलक पड़ीं आँखें भी इसकी, गंगा-यमुना मचल पड़ी ;
धूम्र-पान का सिरजन करने रेवा रोती विकल अड़ी।
मानवता पर आँक सकी कब क़ीमत इन अरमानों की ?
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की !

[५]

रोम-रोम जब आज बभुक्षित मानव का चीत्कार उठा ;
अग जग के परितप्त कणों से दाहक हाहाकार उठा।
जलते रक्तिम अंगारे भी जलते-जलते काँप उठे ;
महानाश के आवर्तन में एक शिथिलता भाँप उठे !
घुल-घुलकर मिट चली चिंतना आज मृत्यु-परवानों की ;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की !

[६]

ज्वालाओं का खेल खेलकर अंगारों से प्रेम किया ;
अपना वैभव लुटा-लुटाकर जगती को सप्रेम दिया।
संचित कोष लुटाया सारा याचक की उस झोली में ;
निर्धनता को गले लगाया इस दुनिया की बोली में।
हम मस्तों की यही फ़क़ीरी बनी कथा धनवानों की ;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की !

[७]

आज हँसेंगे जी-भर जग में, हृदय बनेगा मतवाला ;
जलने दो, यदि जलती रहती दिल में होली की ज्वाला।
पाप-पुण्य की जलनेवाली आज भयंकर यह ज्वाला
जला सकेगी कैसे तांडव यह प्रलयंकर मतवाला ?
लगने दो अब होड़ जूझने में विदग्ध अरमानों की ;
बजने दो शहनाई जी-भर मस्ती के अब गानों की !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब और अब

[कुमारी सुशीलादेवी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न]

आज से कई सहस्र वर्ष पूर्व महाराज युधिष्ठिर द्वारा किए गए तीन प्रश्न आज रह-रहकर मेरे अंतःकरण को उद्वेलित कर रहे हैं। उन प्रश्नों में प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय जीवन की एक ऐसी झाँकी अंतर्हित है, जिसे देखकर प्रत्येक आर्य-संतति अपने उत्थान तथा पतन की कहानी से परिचित हो 'हम कौन थे, क्या हो गए' का अनुभव करेगी।

राजसूय यज्ञ का आयोजन हो चुका है। प्रातः-स्मरणीय ऋषि-महर्षि तथा विद्वज्जन, सभी उपस्थित हैं। धर्मराज युधिष्ठिर दक्षिणा देने के लिये उठते हैं, पर दक्षिणा किसे दी जाय? महर्षियों को देने का साहस न हुआ। आध्यात्मिकता के उत्तुंग शृंग पर आसीन ऋषियों को सोने-चाँदी के तुच्छ टुकड़ों की भेंट कैसे चढ़ावें। पर किया क्या जाय? दक्षिणा भी यज्ञ का आवश्यक तथा महत्त्व-पूर्ण अंग है, उसे दिए विना यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता। अंत में अर्जुन को आज्ञा मिलती है—"जाओ, किन्हीं ऐसे ब्राह्मण को लाओ, जो हमारी दक्षिणा स्वीकार कर लें।" अर्जुन चल देते हैं, जंगल-जंगल घूमते हैं, तब कहीं एक ब्राह्मण—अत्यंत दुर्बल ब्राह्मण दृष्टि-पथ पथिक के बनते हैं। अर्जुन तुरंत ही उनके निकट जाकर उनसे यज्ञ की दक्षिणा लेने के लिये अपने साथ चलने का आग्रह करते हैं। उनके इस आग्रह पर ब्राह्मण देवता रोने—अत्यंत वेदनामय क्रंदन करने—लगते हैं। उन्हें रोते देख अर्जुन की आँखें भी सजल हो जाती हैं।

ख़ैर, निराश तथा संतप्त होकर अर्जुन उसी प्रकार लौटकर सबसे संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाते हैं। उनकी कहानी सुन हमारे योगिराज महाराज कृष्णचंद्रजी भी आँसू बहाने लगते हैं।

इस अद्‌भुत कहानी को सुनकर विस्मित हुए युधिष्ठिर कृष्ण से तीन प्रश्न पूछते हैं—

१ – ब्राह्मण क्यों रोया?

२—अर्जुन क्यों रोया?

३ – स्वयं भगवान् कृष्ण क्यों रोए?

ये तीन प्रश्न हैं, जिनकी चर्चा मैंने लेख के प्रारंभ में ही की है। इन तीनों महानुभावों के रुदन साभिप्राय और अपने साथ एक गंभीर तात्पर्य लपेटे हैं। ज़रा ग़ौर कीजिए, कृष्ण भगवान इनका क्या उत्तर देते हैं—आप फ़रमाते हैं, ब्राह्मण इसलिये रोया—उसने सोचा, शायद उसकी तपस्या में कोई त्रुटि रह गई है, इसी से राजा ने उसे ही दक्षिणा लेने का अधिकारी समझा। ब्राह्मण के लिये अपनी तपस्या की असफलता या अपूर्णता से अधिक कष्टकर और क्या बात हो सकती है।

अर्जुन इसलिये रोए—उन्होंने सोचा, शायद उनकी दक्षिणा ही अपवित्र है, इसी कारण ब्राह्मण देवता उसे लेना नहीं चाहते।

योगिराज कृष्ण स्वयं इसलिये रोए—उनकी दूरदर्शी आँखों के आगे सहसा निकट भविष्य का दुःखद चित्रपट मूर्त्तिमान् हो आया। सोचने लगे, आज तो भारत में ऐसे-ऐसे आदर्श ब्राह्मण हैं, जो दान लेना अधर्म समझते हैं। कोई उन्हें दान लेने का अधिकारी समझे, इसे वे अपने लिये—अपने व्यक्तित्व के लिये—अपने सच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणत्व के लिये अपमान का विषय समझते हैं। कोई उनसे लेने के लिये आग्रह करे, इतने मात्र से ही उन्हें अपनी अंतरात्मा धिक्कारने लगती है। इसी अंतर्वेदना के वश उनकी आँखों से अश्रु-धारा प्रवाहित होने लगती है। आज क्षत्रिय भी ऐसे विद्यमान हैं, जो दान देना अपना धर्म समझते हैं। कोई लेनेवाला न मिले, तो अपने पैसे के अपवित्र होने की कल्पना कर उनका अंतःकरण उद्वेलित हो उठता है; पर ज़माना शीघ्र ही रंग बदलेगा। निकट भविष्य में ऐसा समय आनेवाला है, जब ब्राह्मण पैसा-पैसा माँगते फिरेंगे। पैसों के ही पुजारी बन अपना उत्कृष्ट उद्देश्य भूल जायँगे। क्षत्रिय भी इतने कंजूस हो जायँगे कि पैसा-पैसा गाड़कर रक्खा करेंगे। इस बात की संभावना ने उनके नेत्रों से अश्रु-धारा प्रवाहित करवाई।

हंत! योगिराज कृष्ण की दूरदर्शी आँखों ने जिस दुःखद दृश्य के आगमन की कल्पना में आँसू बहाए; जिस दुःस्थिति की संभावना में उनका अंतःकरण क्रंदन कर उठा; जिस मर्मस्पर्शी भविष्य की दुख-कथा के भावना-चित्र ने ही उस महान् आत्मा की अंतरात्मा को हिला दिया; आज हम उसी दृश्य के दर्शक तथा उसी दुःखद कहानी के श्रोता बने हुए हैं। योगिराज कृष्ण की वह कल्पना हमारे सम्मुख प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित है। योगिराज कृष्ण की अंतरात्मा क्यों रोई थी? ब्राह्मणों की अधोगति की शंका में। यथार्थ में संसार के आकाश में सूर्य की तरह चमकनेवाले तपस्वी ब्राह्मण आज विलासी बन गए! हमारे किसी ज़माने के ब्राह्मण 'देवता', विद्या का, सत्य का, ज्ञान के प्रकाश का अखंड दान करनेवाले महात्मा, अपनी इन दिव्य विभूतियों को तिलांजलि देकर आज तुच्छ टकों के 'लेवता' बन गए! कितने दुःख की बात है। जब तक हमारे आर्यावर्त में सच्चे, तेजस्वी ब्राह्मण मौजूद थे, तब तक विदेशों के बड़े-बड़े सिकंदर-जैसे दिग्विजयी भी हमारे यहाँ के फ़क़ीरों के आगे नत-मस्तक हुआ करते थे। उनके चरित्र-बल से प्रभावित हो, बड़े-बड़े महाराजा भी उनका शिष्यत्व स्वीकार कर अपना जीवन सफल बनाते रहे।

एक समय की बात है। एक राजा ने ब्राह्मण देवता को अपने यहाँ यज्ञ में निमंत्रित किया। यज्ञ संपन्न हुआ। दक्षिणा देने का समय आया। राजा ने ५०) ब्राह्मण की सेवा में भिजवा दिए। ब्राह्मण महाराज ने फ़रमाया, "किसी ग़रीब को दे दो।" राजा ने सोचा, शायद कम होने की वजह से ऐसा कह रहे हैं; इसलिये उन्होंने अब की बार १००) भिजवाए। ब्राह्मण ने फिर कहा—"किसी ग़रीब को दे दो।" राजा ने अब की ३००) भिजवाए। ब्राह्मण देव का वही उत्तर अब भी क़ायम रहा। राजा ने सोचा, अब भी थोड़े हैं, चलो, ५००) भिजवाते हैं। ब्राह्मण ने फिर भी वही फ़रमाया—"किसी ग़रीब को दे दो।" अब राजा को क्रोध आ गया। स्वयं ब्राह्मण के पास आए, और पूछा—"लेते क्यों नहीं?" उन्होंने मुस्किराकर फिर वही फ़रमाया—"किसी ग़रीब को दे दो।" राजा ने क्रोध में आपे से बाहर होकर कहा—"तुम्हीं ग़रीब हो; लो, मैं तुम्हें ही दे रहा हूँ।" ब्राह्मण ने अपनी उसी प्रशांत मुख-मुद्रा से उत्तर दिया—"मैं ग़रीब नहीं। ग़रीब वह है, जिसे पैसे की ज़रूरत हो। मुझे इनकी ज़रूरत नहीं।" राजा ने कहा—"तुम्हारे पास महल कहाँ है। इन पैसों से महल बनवा लेना।" अहा! इस पर ब्राह्मण देव क्या ही ख़ूब सोने के अक्षरों में लिखी जाने लायक़ बात कहते हैं—"महलों की उन्हें ज़रूरत है, जो उस महामहिमामय अखिलेश की दिव्य सृष्टि, नाना रंग-विरंगों से चित्रित, प्रचंड सूर्य, स्निग्ध चंद्र-जैसे प्रदीपों से प्रदीप्त, विशाल प्राकृतिक महल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आनंद लेने की कला से अनभिज्ञ हों। मैं इनका आनंद लेना जानता हूँ। फिर मुझे इन महलों से क्या प्रयोजन ?"

राजा फिर प्रश्न करते हैं—"तुम्हारे पास फ़ौज कहाँ है ?"

ब्राह्मण देवता फ़रमाते हैं—"फ़ौज की उसे आवश्यकता है, जिसे सदा ही किसी के आक्रमण का भय बना रहता हो। हम-जैसे अजात-शत्रुओं को फ़ौज से क्या काम ?"

अंत में राजा पूछते हैं—"तुम्हारे पास सोना कहाँ है ?"

ब्राह्मण देवता सोचते हैं, इस राजा को भी कोई शिक्षा देनी चाहिए, जिसमें याद रक्खे कि किसी ब्राह्मण से पाला पड़ा था। कहने लगे—"मैं सोना बनाने की कीमिया जानता हूँ, मुझे जब आवश्यकता होती है, बनाकर काम चला लेता हूँ, फिर मुझे सोना भी अपने पास रखने की क्या ग़रज़ ? जाओ, मैं ग़रीब नहीं ; तुम अपने ५००) किसी ग़रीब को दे आओ।"

सब प्रकार से निरुत्तर होकर राजा अपने महल में तशरीफ़ ले आए। चले तो आए, पर अब उनके सिर एक और ही धुन सवार हुई। यही फ़िक्र लगी रही कि यदि किसी प्रकार मैं भी ब्राह्मण देवता से सोना बनाने का उपाय सीख लूँ, तब तो मेरे पास सोने के ढेर लग जायँगे। सारी रात इसी फ़िक्र में बीती। सबेरा होते ही वह अपने धन का अभिमान कर उस ब्राह्मण देवता को ग़रीब कहनेवाले अभिमानी राजा उसी के चरणों में आ बैठे। बोले—"महात्मन्, सत्य है, आप ग़रीब नहीं। मैं ही ग़रीब हूँ। आपके दरबार में भिक्षा माँगने के लिये आया हूँ। बड़ा अनुग्रह हो, यदि मुझे भी आप सोना बनाने का उपाय बता दें।"

ब्राह्मण मन-ही-मन में हँसे। वह तो पहले ही जानते थे। जान-बूझकर ही उन्होंने सोना बनाने का उपाय जानने की बात कही थी। सच है—"स तु भवति दरिद्री यस्य तृष्णा विशाला !" ख़ैर, ब्राह्मण ने कहा—"रोज़ एक घंटा आकर मेरे पास बैठा करो; जो मैं बताया करूँगा, उसे स्मरण रक्खा करना।" उस दिन से राजा एक वर्ष तक निरंतर ब्राह्मण के चरणों में बैठ उपदेश ग्रहण करते रहे। उन्होंने राजा को 'ईशा वास्यमिद ँ' का उपदेश देकर त्याग-पूर्वक भोग करने की बात अपने चरित्र में घटानी सिखाई। एक वर्ष के उपरांत ब्राह्मण ने राजा से पूछा—"क्यों, क्या सोना बनाने की कीमिया जानना चाहते हो ?" अहा ! हा ! राजा क्या ही सुंदर उत्तर देते हैं—"महात्मन्, आपने तो मेरे जीवन को ही सोना बना दिया, अब मुझे किसी और सोने की क्या ज़रूरत ?"

जिसका जीवन ही सुवर्ण की तरह निष्कलंक, प्रकाशमय हो, उसे इस दुनियावी सोने से क्या काम ? सच ही 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्' इस सोने की चमक ने हमारी अंतरात्माओं के सत्य को ढाँप लिया है। हमारे जीवन अब सोना नहीं रहे, पीतल बन गए, इसीलिये यह बाह्य सोना हमें बहुत प्रिय तथा आकर्षक प्रतीत होने लगा। संसार के इतिहास के पृष्ठों को उलटने पर इस सत्य के एक नहीं, अनेकों प्रमाण मिलेंगे। आज से सहस्रों वर्ष पूर्व एक आर्य-ललना की अंतरात्मा से निकला हुआ 'येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्' आज किसके अंतःकरण को एक बार फिर अमरत्व की—सच्चे सुवर्ण की—प्राप्ति के लिये लालायित न कर देगा। एक नहीं, प्राचीन आर्य-संस्कृति की 'पूर्वा संस्कृतिर्विश्ववारा' के गौरव से गौरवान्वित आर्य-संस्कृति की गोद में पला प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय हृदय ऐसा ही अनुभव किया करता था। जिससे मैं अमर न हो सकूँगी, उसे लेकर क्या करूँगी। अहा! हा! कैसे प्यारे, मधुर तथा तेजस्वी शब्द हैं। मेरी आर्य-संस्कृति की एकमात्र धरोहरो! अनुभव करो, इस सुंदर अमरत्व के सौंदर्य को, जिसकी प्राप्ति की साध में हमारे पूर्वज सोने के ढेरों को लात मार गए! बड़े-बड़े राज्यों को फ़ुटबाल की तरह लात मारकर एक दूसरे पर पटक गए। आज का संसार इस सत्य से कोसों दूर है, इसी से छोटे-छोटे तुच्छ राज्य के टुकड़ों के लिये एक दूसरे की गर्दन पर छुरी फेरने को तैयार है। क्या ये शांति-महासभाएँ संसार को शांति का पाठ पढ़ाएँगी? नहीं, तुम धोखे में हो। आओ, यदि शांति का पाठ पढ़ना है, तो मेरे देश के तपस्वी ब्राह्मणों की शरण में आओ। उनके चरणों में बैठो, वहीं से तुम्हें शांति का संदेश मिल सकेगा। क्या बाह्य सुवर्ण का चश्मा पहनकर बैठे हुए शांति-महासभा के सदस्य संसार को त्याग का पाठ पढ़ाएँगे? कैसी हास्यास्पद बात है? शांति का संदेश बाह्य सोने के ढेरों को लात मार, अपने जीवनों को ही सुवर्ण बनाने का उपाय बतानेवाले ब्राह्मण ही दे सकते हैं।

समय का फेर है। आज दुर्दैव के दुर्विपाक से हमारे देश के ब्राह्मण भी पैसों के माया-जाल में फँस गए। तब और अब में महान् अंतर हो गया। सुवर्ण के चक्कर में आ अपने असली ज्योतिःस्वरूप को भूल बैठे। पर फिर भी हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। अभी कुछ साल पूर्व ही तो हमारे देश में एक सच्चे ब्राह्मण का पदार्पण हुआ था। अहा! उनका वह तेजस्वी ब्राह्मणत्व! क्या आप जानते हैं, वह कौन था? वही हम सबके चिरपरिचित आनंदकंद, भुवन-भावन भगवान् दयानंद जिनका जीवन स्वयं सुवर्ण था। इसीसे अपने पिता के राज-पाट को लात मार हम सांसारिकों के जीवनों को भी सुवर्णवत् प्रकाशमय बनाने के लिये ही अपना जीवन लगा गए। आज भी हमारे अंदर उनके दिव्य संदेश नव-जीवन का संचार करने के लिये पर्याप्त हैं।

और दूर नहीं; यह देखो न, एक और तेजस्वी ब्राह्मण हमें शांति का—अमरत्व का संदेश सुना रहा है। जानते हो, वह कौन है? वही संसार के हृदय-सम्राट् महात्मा गांधी। आज कांग्रेस की सफलता का रहस्य उस तेजस्वी ब्राह्मण के अहिंसा तथा सत्य के संदेश में ही है। सत्य की रक्षा के लिये कटिबद्ध रहो। सचाई पर अड़े रहो। संसार की कोई शक्ति तुम्हें पराजित न कर सकेगी। आज युक्त प्रांत, बिहार तथा उड़ीसा के वैधानिक संकटों की सफलता सचाई पर मर मिटने की साध का ही परिणाम है।

किसी भी देश की उन्नति के लिये सच्चे ब्राह्मणों तथा सच्चे क्षत्रियों की बहुत आवश्यकता है। क्षत्रिय बाह्य शत्रुओं से देश की रक्षा करने में कटिबद्ध रहें और ब्राह्मण अंतःशत्रुओं—अविद्या, आलस्य, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ-भाव आदि—से रक्षा करने में। इन दोनो के सम्यक् सहयोग पर ही कोई भी राज्य क़ायम रह सकता है। सम्राट् चंद्रगुप्त अपने इतने विशाल, एक शताब्दी तक क़ायम रहनेवाले राज्य को कैसे क़ायम कर पाए? उस तेजस्वी, वर्चस्वी, ब्राह्मण चाणक्य की सहायता से। सम्राट् अशोक अपने राज्य को स्याम, लंका, चीन, जापान तक कैसे फैला सके? आचार्य उपगुप्त के धर्म-संदेशों के बल पर। वीर शिवा ने एक बार फिर इतना विशाल हिंदू-राज्य कैसे क़ायम किया? उनके अंतःकरण में भी गुरु रामदास के उपदेश कार्य कर रहे थे। सिक्खों ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित किया गुरु नानक के ब्राह्मणत्व की नींव पर। आज हमारी राष्ट्रीय महासभा तेज़ी से बढ़ी जा रही है। उसकी सफलता का रहस्य भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे हृदय-सम्राट् गांधी के आदर्श ब्राह्मणत्व में ही मिलेगा। तात्पर्य यह कि ब्राह्म बल और क्षात्र बल के सम्यक् सम्मिलन से ही राष्ट्रों का उत्थान हुआ करता है। ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व के गंगा-यमुनी के संगम पर बैठकर ही राष्ट्र उन्नति का पाठ पढ़ा करते हैं।

आज जहाँ हमारे ब्राह्मण अपने आदर्शों से पतित हो धनदास बन बैठे, वहाँ हमारे वीर क्षत्रिय भी अपने आदर्शों से च्युत हो गए। पहले क्षत्रिय "क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः", क्षत (दुःख) से त्राण करना अपना कर्तव्य समझते थे; आज भी संसार में क्षत्रिय हैं, पर उनका कार्य दूसरों की रक्षा करना न रहकर औरों को—निर्बलों को क्षत-विक्षत करना ही रह गया है। आज संसार के पास बड़ी-बड़ी फ़ौजें हैं, पर किसलिये? समय पड़ने पर अबीसीनिया-ऐसे निर्बलों को—शस्त्र-हीनों को धर दबाने के लिये! यही कारण है, संसार में शांति नहीं। आज तो संसार का मूल-मंत्र स्वार्थ-मात्र रह गया है। ब्राह्मण और क्षत्रिय, सब इसी के चक्कर में फँस गए। आज टका ही उनका सर्वस्व हो गया। ज़रा तब और अब का मिलान कीजिए, तो समझ में आएगा कि हम कहाँ से कहाँ पहुँच गए हैं, महाभारत-जैसे गिरे हुए ज़माने के ब्राह्मण और क्षत्रिय भी आज हम लोगों के पथ-प्रदर्शन में सहायक हो सकते हैं। अहा! उस समय के ब्राह्मण। लेना अपने लिये पाप समझ, लेने के आग्रह पर वेदना के आँसू बहानेवाले! अहा! उस समय के क्षत्रिय; दान देना अपना धर्म समझनेवाले! न लेने पर अपने धन की अपवित्रता की आशंका में आँसू बहानेवाले! अहा! तब देनेवाले बहुत थे, पर कोई लेनेवाला दृष्टिगोचर न होता था। अब लेनेवाले बहुत हैं, पर देनेवालों का अभाव हो गया। आज हमारे कितने काम धनाभाव के कारण रुके पड़े हैं। अब भी धनियों की कमी नहीं, देने की भावना की कमी है। आज हमारे देशी राजा, रईस यदि इस ओर ध्यान दें, तो कितना मंगल हो सकता है।

यह जानकर मुझे कितना हार्दिक उल्लास हो रहा है कि अवागढ़-नरेश ने गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के प्रचार तथा आर्य-संस्कृति और साहित्य के उद्धार के लिये आर्यसमाज को सात लाख रुपए प्रदान किए हैं! हमारे महर्षि दयानंद इन देशी रियासतों के उद्धार, इनके नैतिक उत्थान में ही अपनी बलि चढ़ा गए। अब यदि ये रियासतें प्रातः-स्मरणीय महर्षि के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन के रूप में ही ऋषि के महदुद्देश्य वेद-प्रचार, प्राचीन शिक्षा-प्रणाली, साहित्य का उद्धार तथा वैदिक धर्म के प्रसार की ओर ध्यान दें, तो हमारा मार्ग कितना निष्कंटक हो सकता है।

आज प्राचीन शिक्षा-प्रणाली के आधार पर अमर शहीद स्वामी श्रद्धानंदजी द्वारा संस्थापित बालिकाओं की एकमात्र संस्था कन्या-गुरुकुल, देहरादून, जिसे भारतवर्ष के लिये प्रभु का वरदान समझना चाहिए, न-जाने कितनी अभिलाषाओं को धनाभाव के कारण हृदय में दबाए बैठी है। यदि किसी राजा-रईस की थैलियों का मुँह उसकी तरफ़ खुल जाय, तो हमारा गुरुकुल आज से कई अंशों में ज़्यादा भारतवर्ष की सेवा करने में समर्थ हो सकता है। अभी उस दिन की बात है, हमने सुना—लंदन में 'नूफ़ील्ड' ने तीन करोड़ रुपए ऑक्सफ़ोर्ड-युनिवर्सिटी को दान किए। क्या हमारे देश में ऐसे 'नूफ़ील्डों' की कमी है? नहीं। नूफ़ील्डों—धनी नूफ़ील्डों की कमी नहीं, देनेवाले नूफ़ील्डों की कमी है। सच तो यह कि अब हम लक्ष्मी के सेवक बन गए, लक्ष्मी के पति, स्वामी नहीं रहे। लक्ष्मी हमसे अपनी चौकीदारी करवाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ; हम लक्ष्मी को अपने काम में लाना नहीं चाहते। यही कारण है, हमारे जीवन सोना नहीं रहे; हमीं सोने के दास बन गए। आज हमारे राजा-रईस, महाराज जनक की तरह विशाल राज्य-शासन-सूत्र का संचालन करते हुए भी उससे निःस्पृह रह 'राजर्षि' का गौरव प्राप्त कर सकने का रहस्य भूल गए।

ऐ भारत की ब्राह्म तथा क्षात्र शक्तियो ! आओ; आज हम सब मिलकर योगिराज कृष्ण के आँसुओं की याद करें, और अपने समय की दुर्दशा पर पश्चात्तापों से संतप्त होकर ऊँचे उठने का प्रयत्न करें। एक बार फिर अपने में नव-स्फूर्ति, नव-जीवन तथा नवोत्साह भरकर अपने उसी प्राचीन स्वर्ण-युग की पुनरावृत्ति कर लें। अपनी आँखों पर से सुवर्ण के नश्वर प्रकाश को हटाकर सत्य के अमर प्रकाश से अपनी आत्माओं को भर लें, जिससे हमारा जीवन स्वयं ही सुवर्णवत् प्रकाशमान, निष्कलंक तथा तेजस्वी बन सके। अनंत मंगल का अधिनायक, सर्वनियामक पिता अपनी वरद छाया से हमें बाह्य संतापों से सुरक्षित रख अभीष्ट-सिद्धि में सहायक बनें। सविता देव हमें सर्वांगीण सफलता का शुभाशीष दें।

दाँतों के सौंदर्य पर विचार

"सुधा ! तुम्हारे दाँत आज बहुत ही साफ़ व चमकदार मालूम होते हैं। क्या तुम कोई दूसरा मंजन व्यवहार कर रही हो ?" माधुरी ने पूछा।

"हाँ बहन माधुरी ! कई दिनों से मैं एक दूसरा मंजन लगा रही हूँ। क्या सचमुच मेरे दाँत पहले से ज्यादा साफ़ और चमकदार मालूम होते हैं ?"

सुधा ने अपने दाँतों को आइने में देखते हुए बताया—"मैं अब व्यवहार करती हूँ—

दंत-मुक्ता (Regd.)

(दंत-रोग-नाशक सुगंधित मंजन)"

—:o:—

स्थानीय हमारे एजेंट से खरीदिए।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्टबक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपानगरी

[श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

चंपापुरी के नाम से जिस नगरी की ख्याति रामायण, महाभारत और अन्य पुराणों में प्राप्त होती है, हुएनत्संग ने जिसकी विशेषताओं का वर्णन किया है, उसके विषय में आज बड़ा मतभेद बना हुआ है। चंपापुरी की अनेकता बतलाई जाती है।

हुएनत्संग के कथनानुसार चंपा स्याम-देश का ही दूसरा नाम है। कहा जाता है, यह यवनों का देश रहा है ❀।

और, कर्नल यूलनो मार्कोपोलो के मतानुसार कंबोडिया के अंतर्गत टॉन क्रीन-नामक प्रदेश का नाम चंपा है †।

तीसरा मत, डॉ० सर ओरेल-स्टीन के कथनानुरूप, यह है कि कांगड़ा और कास्टवाट के बीच में रावी-नदी के उद्गमवाली खनिज भूमि, जिसे आज चंबा कहते हैं, पुरा काल में चंपा कहाती थी ❀।

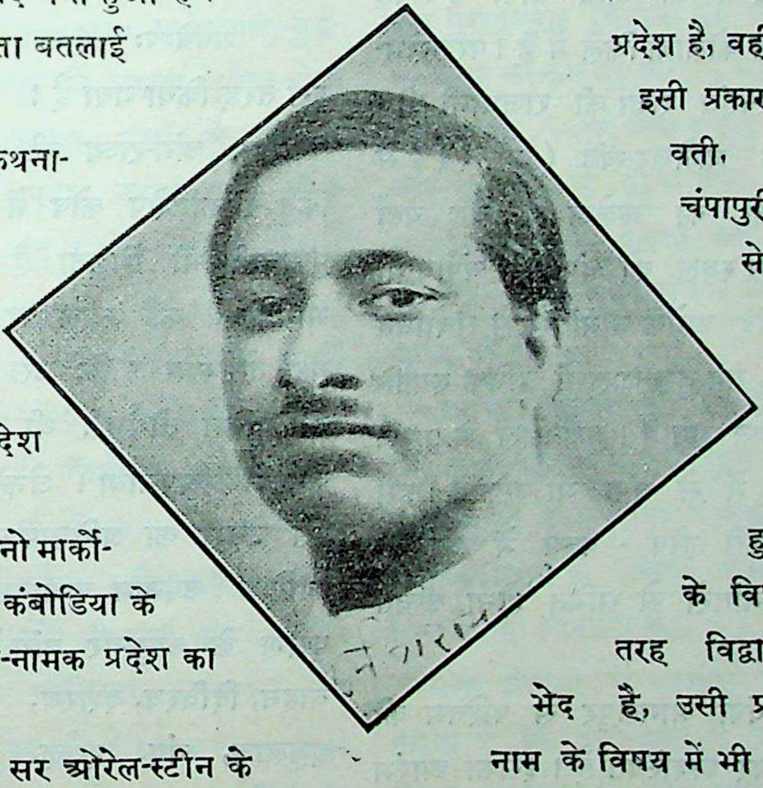

श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास

कैंब्रिज में मुद्रित चंपेचीय-जातक † में लिखा है कि अंग-देश और मगध-देश के मध्य में जो चंपा-नदीवाला ‡ प्रदेश है, वही है।

इसी प्रकार चंपा, चंपावती, चंपानगरी, चंपापुरी आदि नामों से यही चंपा प्राचीन काल से ऐतिहासिक स्थल बना हुआ है। चंपा के विषय में जिस तरह विद्वानों में मतभेद है, उसी प्रकार चंपावती नाम के विषय में भी।

क्यूमा के राजाओं के

❀ बील-कृत हुएनत्संग की जीवनी की भूमिका देखिए।

† पु० २ पा० २५५ की टिप्पणी।

❀ सरस्टीन्—राजतरंगिणी पु० २ पृ० ४३१।

† चंपेचीय-जातक—आवृत्ति४, पृ० २८१तथा२०६

‡ पद्मपुराण के सृष्टि-निरूपण अध्याय ११ में इस चंपा-नदी को यात्रा-स्थल माना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास में लिखा है कि इन लोगों की पुरातन राजधानी चंपावती ही थी, और इसे ही चंपा तीर्थ भी कहा जाता था ❀।

दूसरा मत यह है कि ऍरिथ्रियन समुद्र के पेरिप्लस में सोमाली और अरेबियन लोग जिसे सैबूर कहते हैं, उसका नाम चंपावती है, और बंबई से दक्षिण की ओर २५ मील पर जो चौल नाम का स्थान है, वही चंपा है। इस समय इसे रेवादंड कहते हैं। रेवती-क्षेत्र † भी इसी को माना जाता है। यह उत्तर-कोंकण के कोलाबा-ज़िले में है। परशुराम-क्षेत्र में एक स्वतंत्र राजा की राजधानी थी। स्कंदपुराण के ब्रह्मोत्तर-खंड (अ० १६) में जिस चंपावती का उल्लेख है, वह यहाँ थी। किंतु जिस स्थल को चंपापुरी, चंपावती, चंपानगरी आदि अनेक नामांतरों से संबोधित किया जाता है, वह बुद्ध-काल में अधिक ख्याति पाया हुआ स्थान रहा है। बुद्ध-काल के प्रमुख व्यापार-मार्गों में से चंपा भी एक है। इस चंपा को किसी द्वीप - कल्प में कल्पित करना या नामांतरों से भ्रमित होना उचित नहीं।

वास्तव में चंपा भागलपुर से पश्चिम की ओर ४ मील पर अवस्थित है। इसका आरंभ में नाम चंपा-मालिनी अथवा मालिनी-मात्र था ❀। रामायण † में कहा है कि रोमपाद (अथवा लोमपाद)-नामक अंग-देश के राजा की यहाँ राजधानी थी। रोमपाद ने दशरथ राजा की पुत्री शांता को गोद ले लिया था। इस प्रकार रोमपाद के प्रपौत्र चंपा ने चंपानगर की प्रतिष्ठा की।

महाभारत और रामायण में भी अंग-राज्य के विषय में अनेक कथाएँ कही गई हैं। अंग-राज्य का उल्लेख अथर्ववेद में—

"गान्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो
मगधेभ्यः" (५ । २२ । १४)

इस तरह किया गया है।

चंपा अंग-राज्य की प्रमुख नगरी थी, किंतु त्रिकांडशेष कोष में इसका एक नाम पुष्पवती भी मिलता है। महाभारत और भागवत में कई स्थल पर चर्चा हुई है, इससे यह तो स्पष्ट है कि उस समय यह हिंदुओं की पवित्र तीर्थपुरी थी। आगे चलकर इसे जैनों ने अपनाया। जैन-ग्रंथों के अनुसार इस नगरी का प्रतिष्ठापक श्रेणिक का पुत्र कोणिक (उपनाम अजातशत्रु) था। हरिवंश-पुराण के अनुसार अंग-देश में अंग, दधि-वाहन, दिविरथ, दशरथ, लोमपाद, चतुरंग, पृथुलाक्ष, चंप, हर्यक्ष, भद्ररथ, बृहत्कर्मा, बृहदर्थ, बृहन्नल, जयद्रथ, दृढ़रथ, विश्वजित् और कर्ण, इस तरह १७ राजा हुए हैं। किंतु इसमें भी, मालूम होता है, कुछ नाम छूट गए

❀ ज० ए० सो० बंगाल १८४४, पृ० ८८७।
† ज० ए० सो० पु० ३, पृ० ३८६ (शिला-लेख देखो)।

❀ मत्स्यपुराण अ० ४८। हेमकोष में भी।
† रामायण आदि सर्ग—१०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अंग-देश में पौरव-नामक राजा बड़ा दानी हो गया है। उसने एक लाख अश्व, एक हज़ार गज, एक हज़ार गऊ और एक लाख सुवर्ण की मालाओं का दान किया था। हरिवंश की उक्त नामावली और जैन-ग्रंथोक्त नामावली में बहुत अंतर है। जैनों ने एक श्रीपाल राजा की भी यहाँ चर्चा की है। पौराणिक नामावली में जिस चंप-नामक राजा का वर्णन आया है, उसके प्रपौत्र बृहन्नल के विजय-नामक एक लड़का था। उसकी उपाधि 'ब्रह्मक्षत्रोत्तर' थी।

पौराणिक काल के बाद सर्व-प्रथम बुद्ध-काल ही में अंग-राज्य की महत्ता विदित होती है। 'महापरि गीव्वाण सुत्त' में उल्लेख है—"वह ब्रह्मदत्त उपदेश करता हुआ चंपा-नगरी के निकट, भद्द (भद्र)-नामक गाँव में गया था।"

दशकुमार-चरित और कादंबरी आदि बुद्धेतर ग्रंथों में भी चंपा का वर्णन है।

जैनों के बारहवें तीर्थंकर वसुपूज्य इसी चंपानगरी में पैदा हुए थे ❀। लंकावतार-सूत्र का विख्यात निर्माता, बौद्ध-पंडित जिन महाशय की जन्म-भूमि भी चंपा ही रही है। और, सुविख्यात स्मृतिकार कात्यायन की उत्पत्ति इसी भूमि पर हुई है। बुद्ध-जातक-कथा से स्पष्ट है कि व्यापार के प्रमुख स्थानों में चंपा रही है। वामनपुराण में कहा गया है कि नवनागों ने चंपा में राज्य किया है। ऐतिहासिकों का मत है कि ये नवनाग 'हूण' होने चाहिए। गौड़-राजमाला में इस देश के विषय में विभिन्न चर्चाएँ हैं।

❀ बुरमन का जैन-संबंधी लेख ए० सो० दि० ज० पु० ६ पृ० ३०।

महाभारत के वनपर्व ❀ में बतलाया है कि लोमपाद की राजधानी का नगर चंपा था। दुर्योधन के मित्र कर्ण की भी यह राजधानी रह चुकी है। वन-पर्व † में ही यात्रा का प्रमुख स्थान भी माना है। इसी चंपा-नगर के अंदर कर्णगढ़-नामक क़िले के ध्वंसावशेष को कर्ण का आवास-स्थल कहा जाता है। परंतु कुछ पुरातत्त्वज्ञ विद्वानों का कथन है कि चंपा के अंदर का कर्णगढ़ और मुँगेर-ज़िले का कर्ण-चंदा-नामक स्थान कर्ण-सुवर्ण के राजा कर्ण-सेन के नाम से ही स्थापित है। महाभारत-कालीन कर्ण से इनका कोई संबंध नहीं। सातवीं सदी में हुएनत्संग ने भी इस स्थान की यात्रा की है।

हम पहले बतला चुके हैं कि लंकावतार-सूत्र के कर्ण का जन्म यहीं हुआ है। इसी तरह हस्त्यायुर्वेद के निर्माता पालकाव्य मुनि तथा थेर-गाथावली के लेखक सोम कोलविस भी चंपा के ही निवासी थे ‡।

सोम कोरोसी के आधार पर सुएंस हॉर्डी कहता है कि अंग-देश के राजा ब्रह्मदत्त की राजधानी चंपा में थी। इसने बुद्ध-जन्म के पूर्व ही मगध को जीत लिया था, उस समय

❀ अध्याय ११२।

† अध्याय ८९।

‡ महावग्ग—पं० १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिंबसार राजकुमार ही था। जब वह प्रौढ़ हुआ, तब पुनः अंग पर विजय कर राजा को मरवा दिया था, उसके बाद अपने पिता की मृत्यु तक वह चंपा में ही आकर बस गया था। बाप की मृत्यु के बाद वह राजगृह गया था ❀। तब से अंग मगध के अधीन हो गया था।

हम कह आए हैं कि जैनों का भी यह तीर्थ-स्थान रहा है। अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी भी यहाँ रहे थे, और उन्होंने तीन पर्यूषण † किए थे।

जैनों के बारहवें तीर्थंकर वसुपूज्य का, जिनका जन्म-मरण इसी स्थान पर हुआ है, मंदिर जयपुर के संघी श्रीघट्ट ने युधिष्ठिर-संवत् २५५४ ‡ में बनवाया था, यह मेजर फ्रैंकलिन ने प्राचीन पाली बोथा के लेख में स्वीकार किया है §। यह दिगंबर-संप्रदाय का मंदिर चंपा-नगर के नाथनगर-नामक मुहल्ले में है।

इसी प्रकार सुधर्मा महावीर स्वामी के प्रमुख चार शिष्यों में से रहे हैं। महावीर के निर्वाण के अनंतर इस संप्रदाय के यही प्रमुख हो गए थे। इनके समय में उवासगदसाओ में कहा है कि पुन्नबद्ध-नामक एक देवालय था ❀। जैन-धर्माचार्य गणधर सुधर्म जिस समय चंपा आए थे, उस समय चंपा में कोणिक (उपनाम अजातशत्रु) ने खुले पैर नगर के बाहर आकर सुधर्मा का स्वागत किया था।

क्रमशः सुधर्मा के अनंतर जंबू और प्रभव भी चंपा में आए थे। जंबू के पश्चात् स्वयंभव-नामक आचार्य ने चंपा में रहकर अपने 'दश-वैकालिक सूत्र' की—जो जैन-सिद्धांत का ग्रंथ है—रचना की थी †। बिंबसार के अवसान के बाद अजातशत्रु ने चंपा ‡ को ही अपनी राजधानी बना लिया था।

दशकुमार-चरित की 'चंपकश्रेष्ठी'-कथा में कहा है कि चंपा में बहुत-से धूर्त रहा करते थे। उस समय चंपा बहुत वैभव-संपन्न नगर था। वहाँ बहुत-सी जातियों का रहना, अनेक प्रकार का व्यापार होना, जवाहरात आदि का उल्लेख है। उस समय वहाँ के राजा का नाम सामंतमाल बतलाया है। और प्रधान मंत्री ब्रह्मदत्त होना सूचित किया है §।

एक आख्यायिका के आधार पर चंपा में चाँद सदागर का निवास-स्थान था। इस सदागर के पुत्र लखीनदर और उसकी स्त्री सती बेहुला की कथा मानसार-भाषा-

---

❀ हॉर्डी का मेन्युअल ऑफ़् बुद्धिज़्म पृ० १६६, आवृत्ति २, डफलु-'क्रॉनिकल' पृ० ५।

† कल्पसूत्र—अ० ६।

‡ युधिष्ठिर-संवत् २५५४ ई० सन् पूर्व ५४१ वर्ष में था।

§ रॉ० ए० सो० पृ० १६-१७।

❀ हॉर्नैल का उवासगदसाओ पृ० ८ टिप्पणी, ज्ञाताधर्म सूत्रपाठ।

† हेमचंद्र स्थविरावली—परिशिष्ट, पर्व अ० ४-५।

‡ चंपा में एक दूसरा श्वेतांबरों का भी देवालय है।

§ महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री की संस्कृत-हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज—१८९२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक काव्य में बड़ी हृदय-स्पर्शी शैली में लिखी है। इस कथा में चंपा को गंगा-तटवर्ती बतलाया है। यह चंपापुरी गंगा-तटवर्ती ही है। हिंदू तथा बौद्ध-ग्रंथों के अनुसार भी भागलपुर के पासवाले चंपानगर के अतिरिक्त दूसरा कोई स्थान गंगा-तटवर्ती चंपा-नामक है ही नहीं।

सुप्रसिद्ध सम्राट् अशोक की माता सुभद्रांगी चंपा में ही उत्पन्न हुई थीं।

बौद्ध-ग्रंथ में वर्णित सुंदर तालाव रानी गग्गरा ने खुदवाया था, और इसके चारो ओर चंपा के वृक्षों के कुंज लगा दिए थे। बुद्ध-काल में इन कुंजों में बुद्ध-साध्वियाँ अर्थात् पव्बजिका रहती थीं ❀।

❀ रिसडेवल का बुद्धिस्ट इंडिया-महावग्ग ६७१ सन डाका सूत्त १ पर डॉ० रिस डेविस की टिप्पणी।

महाभारत के समय भी चंपापुरी चंपक-वृक्षों के सघन कुंजों से आवृत थी ❀।

चंपापुरी के राजा के दो सुंदर महल थे। एक कुरुवत्तर—जिसे आजकल करपट कहते हैं, जो भागलपुर के पूर्व सात मील पर गंगा-यमुना के संगम पर गोधनाला के निकटवर्ती था; दूसरा, 'क्रीड़ास्थल'-नामक महल गंगा एवं कोसी-नदी के संगम के निकट पत्थर-धारा पर था †। इससे स्पष्ट है कि चंपा कोई द्वीपांतरवर्ती नगर नहीं, किंतु भारतवर्ष के अंदर ही सुप्रसिद्ध अंग-देश की एक राज-नगरी रहा है, जो भागलपुर के निकट ही है।

❀ अनुशासन पर्व अ० ४२।

† फ्रैंकलिन का पाली बोथा का 'स्थल-निर्णय' पृ० २८-२९। ज० ए० सो० बंगाल के १९१४ पु० १० में 'अंग' पर नंदलाल दे के विवेचन को देखें।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। विना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलिम लीग की उलटी सूझ !

[चित्रकार—श्रीयुत शिक्षार्थी]

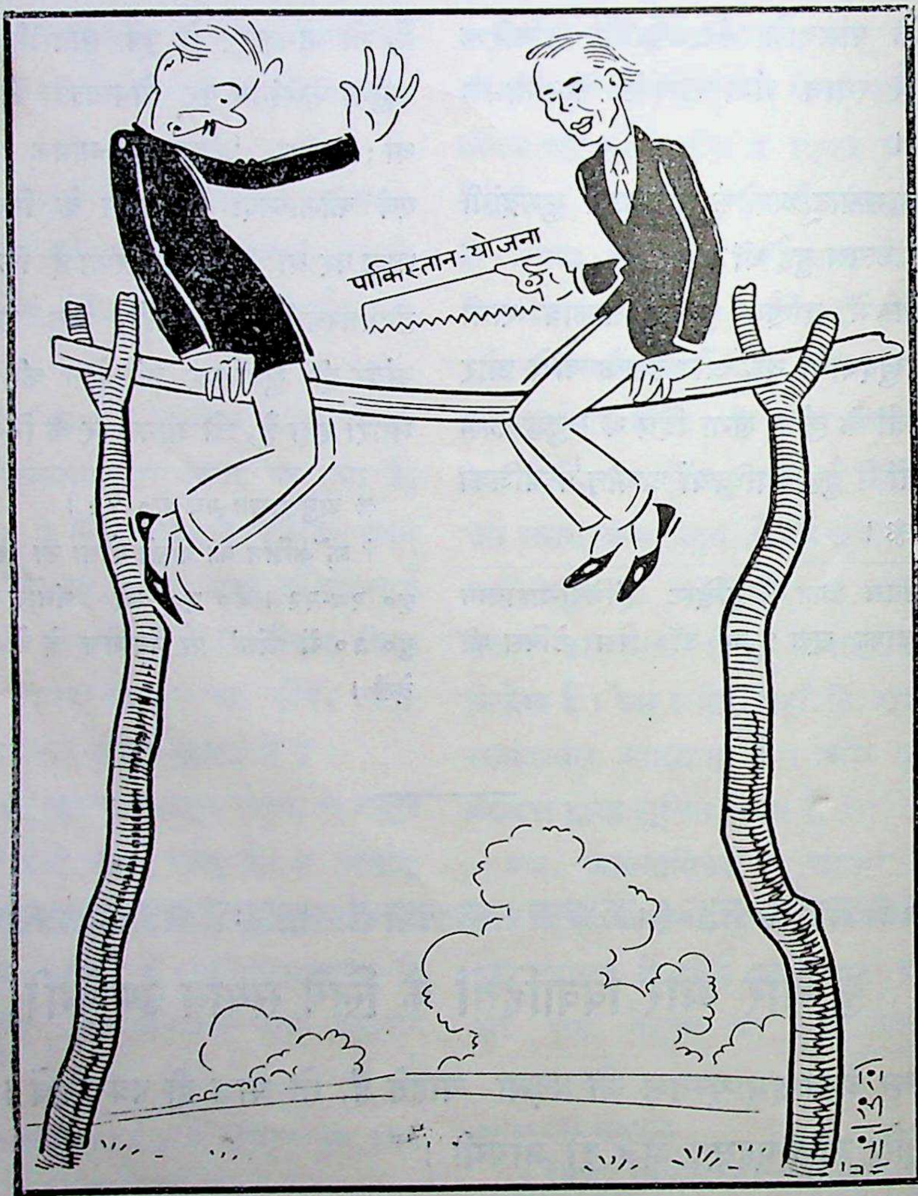

"आप-के-आप जायँ, चार हाथ पगहा ले जायँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

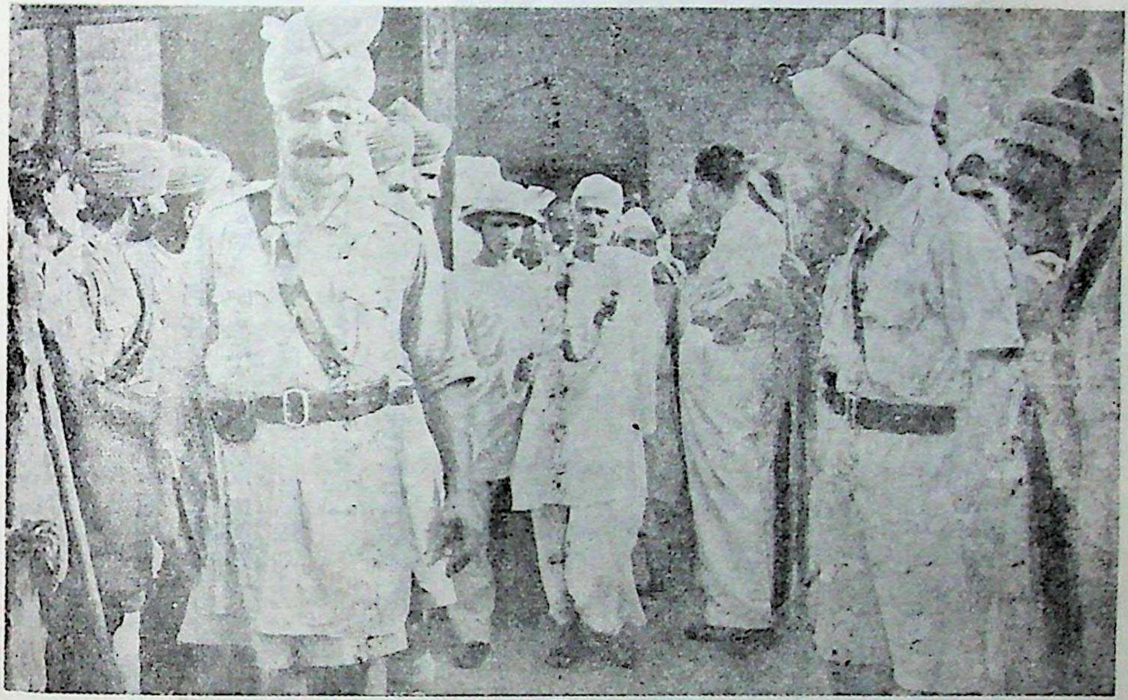

साम्यवादी-दल के प्राण और हिंदी के प्रसिद्ध लेखक
आचार्य नरेंद्रदेवजी

[पंजाब-प्रांतीय साम्यवादी-कॉन्फ्रेंस के सभापति आचार्य नरेंद्रदेवजी रोहतक-स्टेशन पर दफ़ा ३ पंजाब-क्रिमिनल-लॉ एमेंडमेंट ऐक्ट के अनुसार हिरासत में ले लिए गए थे। चित्र में मिस्टर टेलर डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट पुलिस आचार्यजी को साथ लिए जा रहे हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

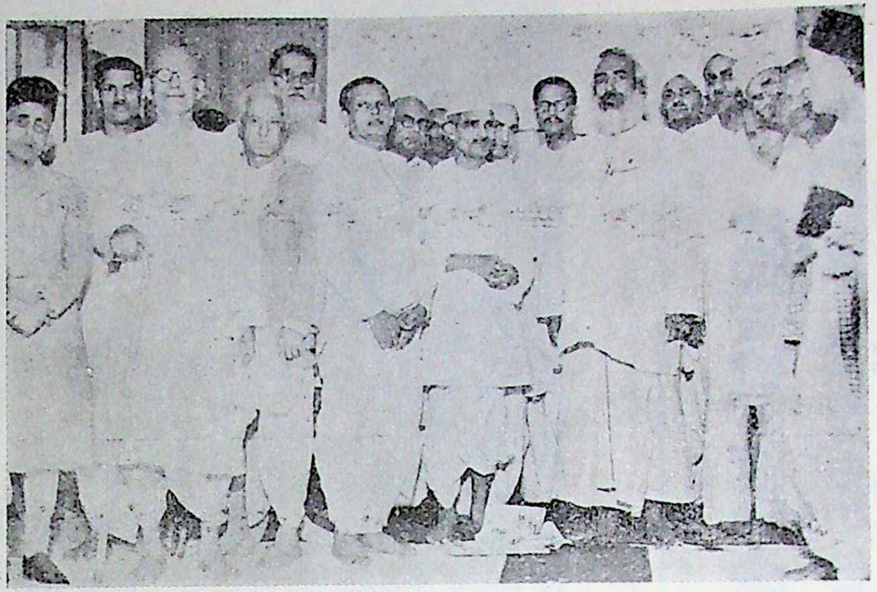

हैदराबाद-सुधार के संबंध में विचार करने के लिये उपस्थित आर्य-समाजी

[इंटरनेशनल आर्यन लीग की कार्यकारिणी समिति की मीटिंग माननीय श्रीघनश्यामसिंह गुप्त (मध्य में) के सभापतित्व में, दिल्ली में, हुई। लाला देशबंधु गुप्त एम्० एल्० ए०, डॉ० सर गोकुलचंद नारंग, स्वामी सत्यानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, लाला नारायणदत्त, रा० सा० श्रीपरमानंद और मिस्टर विनायकराव बैरिस्टर आदि इस चित्र में हैं।]

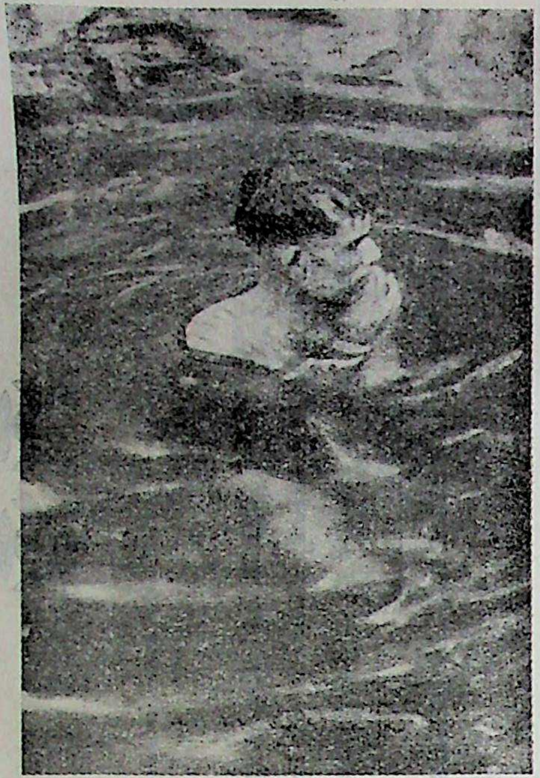

बंगाल के प्रसिद्ध तैराक

मिस्टर रोबिन चटर्जी

[आप दिल्ली-क्लाथ-मिल्स के तालाब में नया रिकार्ड स्थापित करने के लिये उतरे थे।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

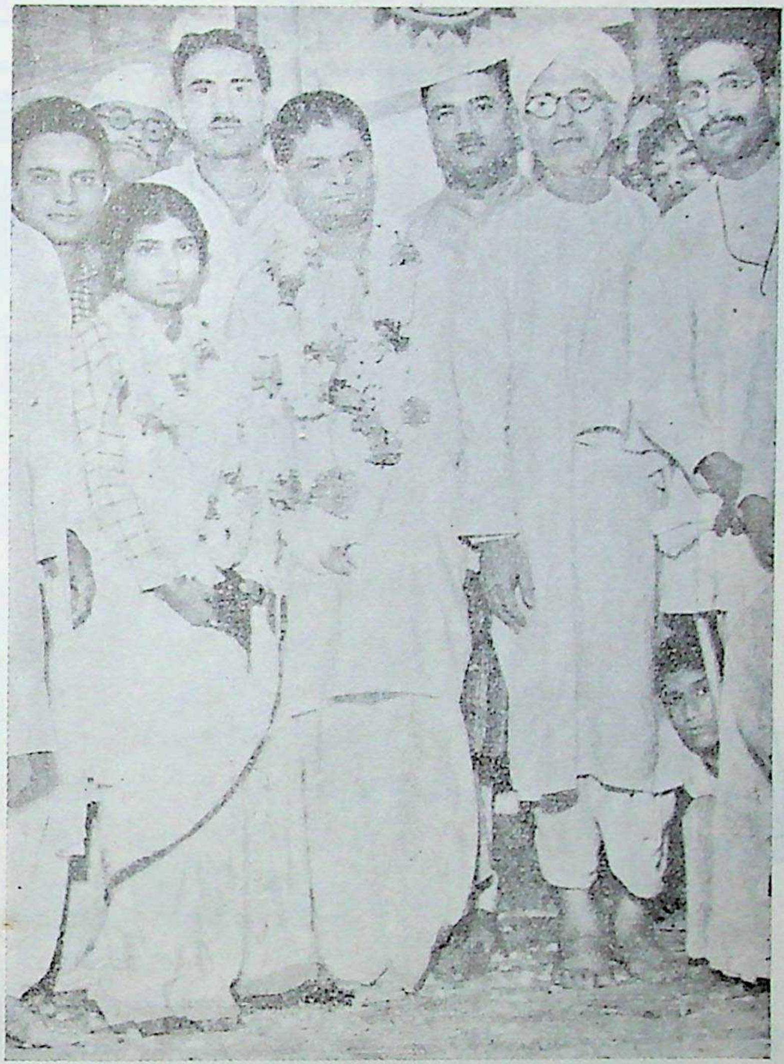

पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार

[आप हैदराबाद में सत्याग्रह करने के लिये ३०० स्वयं-सेवकों-सहित गए थे। आपके साथ आपकी पुत्री, स्वामी सत्यानंद और लाला नारायणदत्त खड़े हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी विद्या छगनलाल

[आप डॉक्टरी की उच्च डिग्री (एम्० डी०) प्राप्त करने के लिये लंदन गई हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. मेरी कुटिया की चादर

(१)

कितना विस्तृत विश्व अरे, यह
　कैसा नीलाकाश बना ;
मेरी कुटिया के ऊपर है
　नीलांबर यह ख़ूब तना !

(२)

तारे नहीं व्योम के, ये हैं
　नीलांबर में रत्न जड़े ;
झिलमिल-झिलमिल करते रहते,
　देते स्वर्गिक सौख्य बड़े।

(३)

मेरी कुटिया की चादर का
　कौन बनानेवाला है ?
किसकी यह कमनीय कला की
　कृति का पूर्ण उजाला है ?

(४)

षट ऋतुएँ आती-जाती हैं,
　वर्षा का नर्तन होता ;
किंतु अरे, चादर के रँग में
　ज़रा न परिवर्तन होता।

(५)

पावस में घनघोर घटाएँ
　अपना रंग जमाती हैं ;
उमड़-घुमड़कर, घुमड़-उमड़कर
　इसका रंग उड़ाती हैं।

(६)

किंतु घटाएँ ज़रा देर में
　पानी हो बह जाती हैं ;
स्वयं मिटा, जो चला मिटाने,
　यह रहस्य बतलाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

ज़रा देर में फिर चादर का
नीला रंग दिखाता है;
लीलामय की लीला की यह
हमको याद दिलाता है।

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

२. जानवरों के शब्द-संकेत

संसार में जितनी जाति के जीव या पशु-पक्षी हैं, उन सबकी अपेक्षा मनुष्य महाबुद्धिमान् माना जाता है, और कई अंशों में यह है भी ऐसा ही। किंतु इसके लिये जो धृति, क्षमा, दम, अस्तेय और अक्रोधादि नियत किए गए हैं, उनके पालन में ढीला रह जाने से इसके ज्ञान-तंतु घिस जाते हैं, और इस कारण यह अपना मनुष्यत्व शब्दों के सहारे रखता है।

विचारकर देखा जाय, तो आफ़्रिका आदि की जंगली जातियों या हिमालय के अप्रकट महात्माओं के सिवा सभी मनुष्यों को आपस के वार्तालाप या लोक-व्यवहार के लिये सैकड़ों या हज़ारों शब्द ऐसे याद करने पड़ते हैं, जिनसे इनका निर्वाह होता है। और, यदि ये विद्वान् हुए, तो कई तरह की डिक्शनरी या कोश और देखने पड़ते हैं। और, उन्हीं की सहायता से ये अपने कामों की व्यवस्था या विधान बनाकर उन्हें लेख, निबंध या पुस्तक-रूप में प्रकट करते हैं। फिर भी बहुधा उन शब्दों का यथोचित उपयोग न करने की इनसे भारी भूल हो जाती है।

ऐसी दशा में इनका यह प्रकट करना किसी काम का नहीं कि हम ऐसे वक्ता हैं, इतनी भाषा जानते हैं, और इतने हज़ार शब्द याद हैं। इस प्रकार के वक्ता, बहुज्ञ या विद्वान् होने में इनकी कोई विशेषता नहीं, यह तो उन शब्दों का प्रभाव है, जिन्हें ये घोखते हैं। इनकी अपेक्षा उन जानवरों को धन्य कहना चाहिए, जो विभिन्न जाति और बनावट के होने पर भी अपने 'कू-चू-टू-तू-पू' आदि इने-गिने शब्दों या एक-दो संकेतों से ही सब काम चलाते हैं, और इन्हीं से युद्ध-मित्रता, भक्ति-परिचर्या, सभा-सुसाइटी, भरण-पोषण और परिवार-पालन आदि को संपन्न करते हैं।

भगवान् के विधान बड़े अद्भुत हैं। उन्होंने जिस जीव को मनुष्य-रूप में सर्वोत्कृष्ट बनाया, और उसे अन्य सभी जीवों को वश रखने की सामर्थ्य दी, उसे तो हज़ारों-लाखों शब्द याद रखने की खाईं में पटक दिया, और जिन जीवों को लोग निकृष्ट मानते हैं, उनमें यह विलक्षण शक्ति भर दी कि वे सब प्रकार के एक-से-एक अनोखे काम भी विना कुछ कहे-सुने या बोले ही भली भाँति कर लेते हैं। यद्यपि जितनी ज़ाति के जीव हैं, उन सबकी बोली अवश्य विभिन्न है, और जीव तथा बोली एक, दो, दस या सौ-दो सौ नहीं, अगणित हैं; फिर भी उनमें बहुत-से जीव तो बोलते ही नहीं— संकेतों से ही काम चलाते हैं, और जो बोलते हैं,—वे 'हम्मा', 'हुक्खाँ', 'ढाँह', 'आँ ३', 'हिन्', 'चीं' या 'कुट्' आदि शब्दों में न-मालूम क्या कहकर काम चला लेते हैं।

अंदाज़ से चाहे यह मान लें कि गाय हम्मा कहकर चारा-दाना, पानी और आने-जाने की आज्ञा माँगती, हुं कहकर मालिक और बछड़ों को बुलाती और जीभ से चाटकर अंतरीय प्रेम प्रकट करती है। साँड़ हुक्खाँ कहकर बैलों या गाड़ियों को रोकता, और ज़मीन खोदकर अपना बल दिखलाता है। भैंस आँ ३ से ही सब काम करती है। घोड़ों के हिन्-हिन्, गधों के हाँकी, ऊँट के अड़ाँ-आँ और हाथी के चिर्रं शब्द ही सर्वशास्त्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सार हैं। सिंह और बघेरों के होकड़ से अन्य जीव कंपित हो जाते और लंगूर के हाँ-कड़हाँ से उसका परिवार एकत्र हो जाता है। कुत्तों के व्हाय-हू १-१० या ओ से कई बातों का बोध हो जाता है। और, बिल्ली के म्याऊँ या धुर्र से उसकी शिष्टता और क्रूरता दिखाई देती है।

इसी प्रकार—मोर के म्याओ से देश-भर के मोर शोर मचा देते और भय-गर्जना या उत्पातादि की सूचना देते हैं। कौए की काय़ँ-काय़ँ से उसके जाति-भाई इकट्ठे होते और कुएँय-कुएँय से मनुष्यों के आने-जाने का शुभाशुभ बतलाते हैं। कबूतर के गुटरगूँ में पुरुषार्थ और कमेड़ी या फ़ाख़्ता के केशोतू में भक्ति और गटरूँ में शोक मानते हैं। मुर्ग़े का कूकड़ूँकू प्रातःकाल को सूचित करता है, और तीतर का पकड़ल्यो यात्री को उत्साह देता है। सूआ की राधाकृष्ण-ध्वनि और मैना की आज्यो आदि आवाज़ मानव-संहिता के सूत्र हैं। पपीहा पीह कहकर पानी माँगता और कोयल केवल कूऊ से ही कवियों में आदर पाती है। इस प्रकार सभी जानवर एक-एक या दो-दो शब्दों से ही अपनी जीवन-यात्रा को सुख-पूर्वक पूर्ण करते और बर्ताव-व्यवहार के सभी कामों का सुचारु रूप में संपादन करते हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि इनके शब्द और संकेतों का असली अर्थ क्या होता है, और हम उन्हें क्या मानते हैं।

जानवरों में यह स्वाभाविक गुण होता है कि वे बोलते कम और काम ज़्यादा करते हैं। उनका बोलना व्यर्थ नहीं; प्रयोजन से पूर्ण होता है। आग, सिंह, सर्प या चोर आदि को अति दूर से देखकर ही कुत्ते, कौए, चिड़ी और कोचरी शोर मचा देते और जन-समुदाय को सूचित कर देते हैं। इसी प्रकार अन्य अवसरों या दुर्घट घटनाओं के उपस्थित होने पर भी ये मनुष्यों का बहुत कुछ हित-साधन करते हैं। बहुत-से जानवर समय बतलाते, बहुत-से आपत्तियों से बचाते, बहुत-से शिक्षा देते और बहुत-से मनोरंजन कराते हैं। कई जानवर दिन में ही बोलते और विचरते हैं, रात में नहीं; और कई सिर्फ़ रात में ही खाते-पीते, बोलते-चालते और मौज उड़ाते हैं, और दिन में हिलते भी नहीं। कई जानवर अर्धरात्रि में, कई चौथे पहर में, कई तड़के, और कई ब्राह्म मुहूर्त में बोलते हैं। विशेष-कर पक्षी ब्राह्म मुहूर्त में ही उठते और अपनी-अपनी बोलियों में सोती हुई जनता को जगाते या प्रबोध करते हैं। यदि प्रातःकाल से कुछ पहले किसी बाग़ या जंगल में जाकर जानवरों का कलरव सुना जाय, तो उनकी अनेक प्रकार की बोलियों और विविध प्रकार के शब्द या संकेतों से अपूर्व आनंद उपलब्ध होता है, और स्वास्थ्य, शिक्षा, सुचेष्टा या बर्ताव-व्यवहार आदि के ज्ञान की वृद्धि होती है।

हनूमान शर्मा
(चौमूँ, जैपुर)

× × ×

३. विष्णोई-मत-प्रवर्तक भंवाजी

हिंदी-साहित्य के किसी भी संग्रह-ग्रंथ या इतिहास में भंवाजी का उल्लेख नहीं मिलता, यद्यपि वह शुद्ध खड़ी बोली के चार सौ वर्ष से अधिक प्राचीन कवि हैं। पंद्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी के मत-प्रवर्तकों के विषय में खोज करते हुए उनका उल्लेख क्रुक्स-कृत 'ट्राइब्ज़ ऐंड कास्ट्स ऑफ़् इंडिया' के दूसरे भाग में मिला, जिसके आधार पर नीचे लिखा विवरण दिया जाता है—

पंद्रहवीं शताब्दी के प्रायः अंत में बीकानेर-राज्य के अंतर्गत दक्षिण में, पिनयासर-नामक एक ग्राम में लॉट नाम का एक पँवार राजपूत रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ वर्ष की अवस्था तक इसके कोई संतान नहीं हुई। सं० १५०८ में इसकी स्त्री हंसा को एक लड़का उसी के घर में यों ही पड़ा हुआ मिल गया, जिसे उसने अपना दूध पिलाकर पाला। सात वर्ष की अवस्था होने पर यह ग्राम के अन्य बालकों के साथ गाय चराने जाने लगा। यह कार्य इसने २७ वर्ष तक किया। इस अवस्था तक यह मौन बना रहा। किसी से कुछ बोलता-चालता न था। इसके अनंतर यह बीकानेर से १५ कोस दक्षिण समरथल-नामक बालू के टीले पर प्रायः ५१ वर्ष तक तपस्या तथा अपना विष्णोई(वैष्णवी)-मत-प्रवर्तन करते हुए सं० १५९२ में परलोक सिधारा। कहते हैं, इसका शव छ मास तक विना सड़े-गले रथी पर रक्खा रह गया था, इसके अनंतर वह गाड़ा गया।

झंबाजी के विषय में अनेक चमत्कार भी सुने जाते हैं। बाल्यकाल में ही यह अपनी उँगली बजाकर दीपक जला देते और अपने बाल-मित्रों के लिये मिठाई पैदा कर देते थे। एक बार ऊदा-नामक एक पुरुष ने झंबाजी को हरएक गाय को अलग-अलग सीटी बजाकर बुलाते तथा कुएँ से पानी पिलाते हुए देखा, और इस चमत्कार से भयभीत होकर उसके घोड़े पर चढ़कर भागने पर भी झंबाजी साथ-साथ आते दिखाई पड़े। तब वह घोड़े से उतरकर इनके पैरों पर गिर पड़ा। झंबाजी ने उसे उसका नाम लेकर पुकारा, और ढाढ़स देकर बिदा कर दिया।

यह मत प्रह्लाद-पंथ या प्रह्लाद-वंशी भी कहलाता है। प्रह्लाद की रक्षा के लिये श्रीनृसिंहजी का अवतार हुआ था, उन्हीं प्रह्लाद को प्रसन्न तथा कलियुग में उक्त पंथ का प्रसार करने के लिये विष्णु भगवान् का झंबाजी के रूप में अवतार हुआ। यह पंथ वैष्णव ही था, अतः विष्णोई भी कहलाया। सं० १५४७ में उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, जिसमें झंबाजी ने असंख्य क्षुधा-पीड़ितों को भोजन देकर अपना मतानुयायी बना लिया था।

मि० जे० विल्सन लिखते हैं, झंबाजी के १२० शब्द या बानी नागरी में लिखी मिलती हैं। इनके २९ उपदेश नीचे दिए जाते हैं—

तिस दिन सूतक, पाँच रोज रतिवंती नारी;
सेका करो स्नान, शील, संतोष सुच्छ प्यारी।
पानी, बानी, ईंधनी इतना लीजो छान;
दया-धर्म हिरदय धरो, गुरू बताए जान।
चोरी, निंदा, झूठ बर्ज्य बादि न करियो कोइ;
अमल, तमाखू, भाँग, लिल दूरहि त्यागो सोइ।
मद्य-मांस से देखके दूर ही भागो;
अमर रखाओ थाट, बैल तनी न बागो।
अमास बरत रूख लीलो न छाओ;
होम, जप, समाध, पूजा बास बैकुंठे पाओ।
उंतीस धर्म की आखिरी गुरू बताए सोइ;
पाहुल दोए पर चाव्य जिसको नाम विष्णोई होइ।

भावार्थ—पुत्रोत्पत्ति के तीस दिन और मासिक धर्म के पाँच दिन बाद स्नान करके रसोई करे, तथा शील और संतोष रक्खे। जल, बातचीत तथा ईंधन, इन्हें छानकर अर्थात् देखभाल एवं समझकर काम में लाना चाहिए। गुरु का बतलाया समझकर मन में दया रक्खे। चोरी, निंदा, झूठ, ये तीनो मना हैं, कोई न करे। तमाखू तथा भाँग का नशा न करे, नीला कपड़ा न पहने, और मांस-मदिरा से दूर भागे। बकरी को न मारे, और बैल से न जोते। अमावास्या का व्रत रक्खे, और हरा वृक्ष न काटे। होम, जप, समाधि तथा पूजा करने से वैकुंठ में वास मिलता है। यह उनतीस में अंतिम उपदेश है, और इन्हें जो मानता है, वही विष्णोई है।

व्रजरत्नदास
(बी० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. माली की बालिका

मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।
मेरा परिचय है युग-युग से,
उपवन के फूलों-फूलों से,
मूक सँदेशा इनसे पाकर
निज उर का संताप हरूँगी।
मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।
यह जीवन की अटल साधना,
यह मेरे मन की अभिलाषा,
तितली-से पर फैला, उड़-उड़
पागल-सी इनमें विचरूँगी।
मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।
आँख-मिचौनी इनसे होगी,
लुका-छिपी होगी इनसे ही,
खेल-खेल में, गूँथ अलक में
कभी अनोखा वेष धरूँगी।
मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।
रूप-पान को आकुल होंगी
जब जग की अलि-दल-सी आँखें,
तभी लाज की लाल सुरा से
अपने मृदुल कपोल भरूँगी।
मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।
जब मधु-ऋतु आएगी अपना
वैभव ले मेरे मधुवन में,
यौवन - स्वप्न - अधीर-हृदय
निज प्रेमी से मैं मान करूँगी।
मैं माली की चपल बालिका
फूलों से खिलवाड़ करूँगी।

गोविंदवल्लभ त्रिपाठी

× × ×

५. प्याली

नव-किसलय-दल झूल रहे हों, झूम रही हो डाली;
मधुर तराना छेड़ रही हो खग-बाला मतवाली।
पूर्व-दिशा में फैल रही हो धीरे-धीरे लाली;
आज सुबह से क्यों न सखी री! ले आ भरकर प्याली।
जीवन की आशा समेटकर इसे करूँगा खाली;
अरुण अधर से मिले आज यह मधुर अरुणिमावाली!

सूर्यनारायण व्यास

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. बेचारी मा

(१)

"रहम ! रहम !" के करुण शब्द ने समस्त न्यायालय में निस्तब्धता फैला दी। यहाँ तक कि उस नीरव, विशाल हॉल में सुई गिरने का शब्द भी बड़ी सरलता से सुनाई पड़ सकता था। सब नीरव, आश्चर्यान्वित हो एक दूसरे का मुख ताक रहे थे। यदि उस समय निस्तब्धता में झनकार थी, तो केवल उसी 'रहम' शब्द की, जिसे हॉल की दीवारें भी प्रकंपित होकर धीरे से बीच-बीच में बड़बड़ा देती थीं, मानो उन अर्थ-हीन मनुष्यों को अर्थ समझने के लिये प्रेरित कर रही हों।

कुमारी शीलवती कोचर

"क्या है जी ? यह कैसा तूफ़ान मचा रक्खा है ?" निस्तब्धता भंग करते हुए, न्यायाधीश के मुख से निकले हुए इन शब्दों ने समस्त जनता को मानो चेतना-शक्ति दे दी हो। वे अचल मूर्तियाँ हिलीं। कुछ पीछे घूमीं, और किसी-किसी ने एक दूसरे के कान में फुस-फुसाना भी आरंभ कर दिया।

"तुम पूछते हो, क्या है ? मेहरबान, ज़रा अपने दिल पर हाथ रखकर देखो, तुम्हारे भी दिल है या नहीं ? दिल होगा, तो ज़रूर उसमें रहम का दरिया बहता होगा। इसके बाद ? हाँ, इसके बाद पूछना, क्या है जी।"

"दरबान, इसे निकाल बाहर करो। मालूम होता है, कोई दीवानी है।"

"हाँ बाबू, दीवानी हूँ। क्योंकि अपने लख़्ते-जिगर के ख़ून से तुम्हारे—तुम झूठे, दग़ाबाज़ों के—कठोर हाथों को रँगने और मेहँदी रचाने जा रही हूँ।"

तड़ ! तड़ ! दो हंटर बेचारी ग़रीब पर पड़े। चीत्कार कर उठी। किंतु उसी क्षण चुप हो गई। एक सिपाही के कठोर झटके ने उसे हॉल से बाहर निकाल दिया। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय उसने न्यायाधीश, न्यायाधीश के पिट्ठुओं, जनता को और—और अपने लाड़ले लाल... नहीं-नहीं, बंदी को जी भरकर देखा। वहाँ से चल पड़ी। हृदय में तूफ़ान लिए, उसके कोने में टीस लिए, दर्द लिए। पता नहीं, किस ओर मंज़िल तय करने जा रही है।

"बाबूजी, तुम्हारे दिल है?" उसने करुण स्वर में, रुँधे कंठ से पूछा।

"हः हः हः हः पगली, भला दिल किसके पास नहीं होता? अगर दिल न हो, तो ज़िंदा कैसे रहें।" एक ने कहा।

"क्यों मैया, क्या दिल बेच खाया है या गिरों रख आई हो, जो दूसरे का दिल ख़रीदने के लिये बड़ी ज़ोरों से तहक़ीक़ात कर रही हो?" दूसरे ने कहा।

"अमाँ चलो भी, कोई दीवानी मालूम होती है।" तीसरे ने कहा।

सब चले गए। मानो वह दुखिया दुनिया-वालों की दृष्टि में एक खिलौना हो गई हो। जिसने पाया, उसी ने ठठोली करनी आरंभ कर दी, और तोड़-मरोड़कर फेक दिया। हो भी सकता है। कारण, निर्धन है, दुखिया है। तो फिर क्यों न ऐसे फालतू खिलौने से दुनियावाले अपना मन बहलाएँ?

जो भी मार्ग में मिलता, सबसे यही प्रश्न करती—"बाबू, तुम्हारे दिल है?" मानो वास्तव में ही पागल हो गई हो।

इसी प्रकार प्रश्न करती हुई अपनी झोपड़ी के सम्मुख बैठ गई।

"मा,...तू...कहाँ...चली गई...। थोड़ा... पानी...दे...दे।" झोपड़ी को चीरते हुए ये अस्फुट शब्द दुखिया के कानों में पहुँचे। वह एक तैयार सैनिक की भाँति विचारों का चर्खा छोड़कर भीतर घुसी। बच्चे को छाती से चिपकाया, और पुचकारने लगी।

उफ़! वह झोपड़ी क्या थी, साक्षात् दरिद्र-देवता का निवास था। इधर-उधर गिरे हुए खपरैल उसकी बाह्य दरिद्रता का रूप दर्शा रहे थे। भीतर का तो कहना ही क्या। एक दरबा था, उसी में सोना और उसी में समस्त गृहस्थी का सामान रखना। उसी दरबे के एक कोने में थोड़ा-सा पुआल पड़ा था, जिस पर १० साल का रोग-ग्रस्त बालक पड़ा कराह रहा था। पास ही एक टूटा हुआ कुल्हड़ उसके जल पीने को रक्खा था। उसके ठीक सामने-वाले कोने में एक चूल्हा बना था, और उसी के समीप एक टूटा लोटा और सौ छेदवाला टूटा तवा पड़ा था। यही उस झोपड़ी की समस्त संपत्ति थी, और यही उस दुखिया का विशाल वैभव!

"मा,...थोड़ा...पानी...दे दे।" रुग्ण बालक ने कहा।

वह उठी। जल का लोटा देखा, ख़ाली था। एक ठंडी साँस खींची, और जल लेने के लिये झोपड़ी के बाहर निकल आई। पास ही पोखरे से जल लाकर बालक को पिलाया।

"मा,...आज भैया...कई रोज़ से परदेश... गए हैं, कब...आएँगे? मा, भैया मेरे लिये खिलौने लेने गए हैं। ...मगर अभी...तक आए नहीं? ऐ...मा, वह कब...आएँगे? मैं...उन्हें देखूँगा।"

दुखिया निस्तब्ध थी, नीरव थी। केवल उसके नेत्र यह सूचना दे रहे थे कि अब उसका भाई कभी न लौटेगा! वह जा रहा है—बड़ी दूर—खिलौने लेने। टप-टप करके दो बूँद बालक के कोमल गाल पर गिर पड़े। वह घबराकर उठ बैठा।

"मा, तुम रोती क्यों हो? भैया तुम्हारे लिये अब की ज़रूर एक रेशमी साड़ी लाएगा। मा! उसने मुझसे धीरे से कहा था कि बच्चू, तेरे लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िया-बढ़िया खिलौने और मा के लिये एक सुंदर साड़ी लाऊँगा। मेरी अच्छी मा उसे पहनकर अब की गुड़ियों का मेला देखने जायगी। बोल मा, चलेगी न ?"

"हाँ बच्चू, क्यों न चलूँगी।" एक ठंडी साँस ली, और चुप हो गई।

दूसरे दिन—

"दुखिया मा ! दुखिया मा ! तुमने कुछ सुना ? आज रमई......"

आगंतुक इतना ही कह पाया था कि दुखिया ने मुख पर उँगली रखकर उसे चुप रहने का आदेश दिया, और उसे बाहर ले आई।

"क्या हुआ कलुआ ? आज का मुक़दमा कैसा रहा ?"

"दुखिया मा, क्या बताऊँ, रमई भैया तो हम सबको धोखा देकर जा रहे हैं। परसों......बस परसों सब समाप्त हो जायगा। निर्दय लोग उन्हें फाँसी का हुक्म सुना देंगे। इस साले ज़मींदार के बच्चे से बदला न लिया, तो मेरा नाम कलुआ नहीं।"

दुखिया चुप थी, मानो कोई निर्जीव मूर्ति बैठी हो। अचल, निस्तब्ध, अश्रु-हीन, किंतु हृदय में वेदना-भार लिए !

"मा, सुनो, कल तुम भी कचहरी चलो। तुम भैया का बयान पेश करना। शायद उन क्रूरों का हृदय तुम्हारे ही करुण-शब्दों से पिघल जाय। अच्छा मा, तुम भीतर जाकर बच्चू को सँभालो, और आज मैं थोड़े आदमियों को जमा कर रमई भैया के छुड़ाने की चेष्टा करता हूँ। मा, घबरा नहीं, अच्छा, धैर्य से काम लेना। बच्चू को समझाती रहना। अच्छा, मेरी प्यारी मा, बेचारा निर्दोष रमई........" यह कहकर अपनी धर्म-मा को सांत्वना देता हुआ कलुआ चल दिया।

(२)

आज रमई के भाग्य का निर्णय होने जा रहा है। बेचारा इस पार होगा या उस पार। कचहरी जनता से ठसाठस भरी है। सब लोग उत्कंठित हो कभी बंदी और कभी न्यायाधीश की ओर देखते हैं। सब चुप थे। न्यायाधीश ने प्रश्न किया—"बंदी ! तुम्हें अपने बारे में कुछ कहना तो नहीं ? अपने लिये कोई गवाह तो पेश नहीं करना ?"

"नहीं। मेरा गवाह ईश्वर है। वही मेरी निर्दोषिता का सच्चा प्रमाण दे सकता है। किंतु वह मानव के अधीन नहीं। इसलिये क्षमा करिएगा।"

न्यायाधीश कुछ कहना ही चाहते थे कि एक औरत—वही हमारी पूर्व-परिचित दुखिया—सम्मुख आई। अब की पहले-जैसा रूप न था। वह शांत थी—सरलता की प्रतिमूर्ति थी। उसने आगे बढ़कर अदब से सिर झुकाया, और कहा—"साहब ! मुझे इस बंदी का गवाह बनने की इजाज़त दीजिए। शायद मैं ही इसे निर्दोष साबित कर सकूँ।"

"जो कुछ कहना चाहती है, जल्दी कह। मेरे पास समय नहीं।" न्यायाधीश ने कहा।

"बाबू, यह बालक बिलकुल निर्दोष है। इसने ज़मींदार बाबू के नौकर बुधुआ का ख़ून नहीं किया। जिस दिन बुधुआ लगान-वसूली करने आया था, उसी रोज़ तो यह कुछ सामान लेकर शहर गया था। मेरे बाबूजी, मैं जानती हूँ, तुमने उसे क्यों पकड़ा है ? जहाँ बुधुआ की लाश पड़ी थी, वहाँ ज़मींदार के लोगों ने इसे खड़े देख लिया था। इसी कारण मेरे लाल को पकड़ लिया है। मगर नहीं, धर्मदास वह तो उस समय अपना सामान बेचकर शहर से लौट रहा था। और, बुधुआ की यह दशा देखकर वहीं रुक गया था। इसी कारण उन लोगों ने उसे पकड़ लिया है। वह तो थाने रिपोर्ट देने गया था, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम लोगों ने उसी को हत्यारा समझ लिया। मगर दया, मेरे लाल के ख़ून से अपने हाथों को न रँगो। कारण, वह निर्दोष है, उसकी आत्मा तुम्हें कोसेगी—चैन से न बैठने देगी, और तुम्हें तड़पाकर मारेगी। ज़रा सोचो बाबूजी! फिर सोचो। मेरे निर्दोष रमई को न मारो। अरे! वह बेख़ता है—बेगुनाह है। मुझ ग़रीब की भी सुनो। बोलो बाबूजी, क्या ग़रीब सच नहीं बोलते? नहीं, अमीरों से अधिक तो ग़रीब सच बोलते हैं। अमीर पैसे के ज़ोर से झूठ बोलते हैं, किंतु बेचारा ग़रीब किस बिरते पर झूठ बोलेगा?"

"अच्छा, चुप रह। मैं तुझसे अमीर-ग़रीब के चरित्र की परिभाषा करवाने नहीं बैठा हूँ। (एसेसरों से) मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि यह पुरुष, जो आप लोगों के सम्मुख खड़ा है, अपराधी है, क्योंकि इसकी निर्दोषिता का हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। इस कारण मैं इसे फाँसी की सज़ा सुनाता हूँ।"

(३)

"भैया, मा...अभी तक......नहीं आई? देखो भैया, दो भूत मुझे डरा रहे...हैं। मुझे...अपने साथ...ले जाने को...घसीटते हैं......भैया-भैया!" यह कहकर ज्वर से पीड़ित बालक बेहोश हो गया। इसी भाँति जब बीच में होश आता था, तो बकने लगता था।

सारी सड़क पर निस्तब्धता छाई थी, केवल बीच-बीच में उस निस्तब्धता को भंग करता हुआ "राम-नाम सत्य है!" का शब्द गूँज उठता था।

रमई की अंत्येष्टि क्रिया करने को लोग उसका शव लिए जा रहे थे।

"मा,... मेरी...मा,... भैया..." ये निरर्थक शब्द यों ही गूँज गए। सुननेवाला कोई न था। मा मूर्च्छित थी, और भैया अनंत की ओर था।

"आह!" दुखिया कराही।

"मा!......"

"आह ...मेरे ...लाल!" पुनः निस्तब्धता!

"मा, ...रमई भैया ...बुला ... रहे ...हैं!"

रमई का नाम सुनते ही दुखिया चौंकी। आश्चर्यान्वित होकर चारो ओर देखने लगी। वहाँ कुछ न था। सब सन्नाटा था।

"मा, ..तू......"

"मेरे...लाल, ...क्या है?"

दुखिया ने रुँधे कंठ से कहा, और धीरे से बालक के समीप उठकर गई। उसके माथे पर हाथ रक्खा। ज्वर के कारण तवे के समान जल रहा था। दुखिया घबरा गई। जिगर का एक टुकड़ा तो कटकर गिर गया है, क्या अब दूसरे की बारी है! वह उस समय रमई के दुःख को भूल गई। झट उठकर, बालक को उठाकर झोपड़ी से बाहर निकल आई।

पास ही रामदीन वैद्य रहते थे। उन्हीं के समीप दौड़ी—ख़ाली हाथ।

"वैद्यजी, मेरे बच्चे को चार दिन से बुख़ार चढ़ा है। उसे चलकर देख लीजिए। दया करके जल्दी चलिए।"

"फ़ीस लाई है? पहले मैं फ़ीस वसूल करता हूँ, पीछे देखने जाता हूँ।"

"आपकी फ़ी......"

"हाँ-हाँ, फ़ीस के बारे में पूछती है? वह तो वही है, जो अब तक वसूल करता आया हूँ। यही चार रुपए! बस।

उफ़्! चार रुपए—जिसके पास चार फूटी कौड़ी भी नहीं, वह चार रुपए? चार रुपए कहाँ से देगी। वह चल दी।

"हकीमजी, रहम कीजिए। मेरा बच्चा चार रोज़ से बीमार है। न-जाने बेहोशी में क्या-क्या बकता है। उस पर......फूल-से कोमल बच्चे पर रहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाइए। ज़रा चलकर उसे देख लीजिए। मैं आपका बड़ा एहसान मानूँगी। ज़रा जल्दी कीजिए।" दुखिया अपना दुखड़ा एक साँस में कह गई।

"फ़ीस क्या देगी?"

"फ़ीस? यहाँ भी फ़ीस का सवाल?" वह बड़बड़ा उठी, और भागी।

हकीमों और वैद्यों की फ़ीसें उसके हृदय में शूल के सदृश चुभने लगीं।

"पंडितजी! ज़रा पत्रा लेकर चलिए। मेरा लाल—मेरा बच्चू आज चार दिन से खटिया पर बेहोश पड़ा कराह रहा है। चलकर उसके ग्रह देख लीजिए।"

"सुन माई। आध गज़ काला कपड़ा, सेर-भर चावल, पाव-भर कड़ुआ तेल और आधी बोतल शराब जाकर झटपट ले आ, और मुझे दे दे। मैं उसे देवी के अर्पित कर तब चलूँगा। ऐसा करने से देवी प्रसन्न हो जायँगी, और तेरे बालक को शीघ्र अच्छा कर देंगी।"

"मगर बाबा, मेरे पास...पैसा...तो...है...न...हीं...।"

"तो भाग यहाँ से, सुबह-सुबह अपना मनहूस मुँह दिखाने आई है। देखो भगवान्, आज रोटी भी मिलती है या नहीं।"

वह अचल मूर्ति खड़ी रही।

"अरी, जाती है, या डंडे मारकर भगाऊँ।"

वह होश में आई, और चल दी ख़ाली हाथ ही अपने दूसरे लख़्ते-जिगर का बलिदान करने। वह समाज से अलग है। कारण, धन-हीन है। समाज के निष्ठुर हाथों द्वारा सूखा हुआ मांस का टुकड़ा—निर्जीव—प्राण-हीन है।

झोपड़ी के समीप पहुँचते ही उसने अपार कोलाहल सुना। दौड़ पड़ी।

"मेरा बच्चू! हाय! तू कहाँ गया? रमई भैया भी गए, और तू भी......" कलुआ का यह रोदन सुनते ही दुखिया ठिठक गई। थोड़ी देर उपरांत शून्य नेत्रों से, छिन्न-भिन्न हृदय से, कंपायमान शरीर से आगे बढ़ी, और बच्चू की लाश पर धड़ाम से गिर पड़ी। चीत्कार कर उठी—"मेरे लालों को लौटा दो,...मत ले जाओ......"

"नाहीं मिलेगा मीत, तू पगली..." किसी ने गाया। पुनः चारो ओर निस्तब्धता छा गई।

(कुमारी) शीलवती कोचर

× × ×

७. काश मैं अपने हृदय में......

काश मैं अपने हृदय में कल्पना का जग बसाती!
तितलियों के झुंड बनकर
विजन में करती सबेरा;
कूकती, गुंजारती मैं
उपवनों में कर बसेरा,
खोजती पद-चिह्न प्रिय के कोकिला बन गीत गाती!
सत्य से परिचय पुराना,
कठिन गिरि से पार जाना;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेबसी के स्वप्न झिलमिल
हैं यहाँ सब छोड़ जाना।
आँकती मैं नेह सचमुच, मृत्यु को जो जीत लाती !
रुक रहा संगीत का स्वर,
बिंध गया है शूल से उर,
भर रहे सर नित्य निर्झर,
नयन मेघों-से रहे झर।
माँगती मैं दान सुख का, जो कहीं दुख-भार पाती !

(कुमारी) विद्याकुमारी भार्गव

× × ×

८. हमारा विद्यार्थी-जीवन

विद्यार्थी-जीवन कितना सुखमय है ! उसकी वे सुखमय घड़ियाँ कितनी जल्द पानी के बुलबुलों की तरह विलीन हो जाती हैं। नाना प्रकार के आमोद-प्रमोद, साथियों से मिलना, प्रतिदिन का वार्तालाप, कभी-कभी विनोद ही में छोटी-छोटी बातों पर झगड़ना, इसकी स्मृति-मात्र कितनी सुखद है, कितनी मीठी है। जी चाहता है, सदैव विद्यार्थी ही बने रहें।

परंतु आरंभ का पाठशाला-प्रवेश कितना बड़ा भय का पहाड़ ज्ञात होता है ! पाठशाला कितनी भी निरुपद्रवी हो, तो भी आख़िर है तो वह पाठशाला ही। कक्षाओं की कोठरियाँ क़ैदख़ाना दिखाई पड़ती हैं, और उसके आस-पास की दीवारें पुलिस के पहरेदार सिपाहियों के समान मालूम पड़ती हैं। परंतु जैसे-जैसे हम शिक्षा-लाभ करते जाते हैं, उसकी क़ीमत नज़र आती जाती है। विद्यार्थी-जीवन ज्ञानोपार्जन और आत्मसंस्कार की सीढ़ी है। शिक्षा के प्रकाश के साथ ही मन का विकास भी होता जाता है। बाल्यावस्था ऐसा समय है, जब मनुष्य पर कैसा भी प्रभाव डाला जा सकता है। उस समय वह कच्चे घड़े के समान होता है। कच्चे घड़े पर चाहे जैसा निशान बना दो, बन जायगा, पर पक जाने पर न तो सरलता से कोई निशान उस पर बन ही सकता और न पहला निशान मिट ही सकता है। हम लोगों को विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही इस विश्व में आना पड़ा है, उसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमें ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। हम अपने प्रत्येक कार्य को सुव्यस्थित रूप से कर सकें, इसीलिये पाठशालाएँ, विद्यालय आदि स्थापित किए गए हैं।

विद्याध्ययन करने का मुख्य उद्देश्य यही नहीं कि हम ज्ञान प्राप्त करके अपने भविष्य जीवन को सुखमय बना सकें, और जीविकोपार्जन का साधन जुटा सकें, बल्कि अपनी उस उपार्जित ज्ञान-राशि से हम अपने आदर्श और संस्कृति को फिर से अपनावें, यही हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। यह छोटा-सा विद्यार्थी-जीवन का समय हमारे जीवन-भर की घड़ियों में अमूल्य होता है। इसी नन्हे-से जीवन में हम अपने आपको भविष्य के योग्य, जैसा चाहें, बना सकते हैं। इसी जीवन में हमें मानसिक और शारीरिक, दोनो प्रकार के आनंद की प्राप्ति होती है। जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की समस्याओं के संबंध में खेल-ही-खेल में नई-नई बातों की खोज करते हैं। संसार के तमाम झमेलों से कोई सरोकार नहीं होता, और अपने चारो ओर एक सुनिश्चित तथा उन्नतिशील व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जीवन काम और विनोद से भरा रहता है। परंतु इस विनोद का मतलब यह नहीं कि हम इसी में फँसे रहें। हमारा प्राचीन काल का विद्यार्थी-जीवन सादा था, आडंबरों से भरा नहीं, परंतु आजकल के विद्यार्थी-जीवन में फ़ैशन और टीमटाम बहुत आ गई है। हम लोगों का जीवन विलासमय हो गया है। फ़ैशन के पीछे हम बेतरह पड़े रहते हैं, और हमारा अधिकांश समय तत्संबंधी बातों में ही बीतता है। यही कारण है कि देश में अच्छे-अच्छे विद्वानों की कमी होती जा रही है। विद्यार्थियों को अपना कर्तव्य समझना चाहिए, अपने आचरणों को सुधारना चाहिए, और बुरे वातावरण से अलग रहकर तन्मयता के साथ विद्या-लाभ करना चाहिए, जिसमें विद्यार्थी-जीवन के बाद जब हम संसार के कार्य-क्षेत्र में पदार्पण करें, तो हममें कार्य करने की पूर्ण योग्यता आ जाय, और हम अपने पैरों खड़े होकर देश का कल्याण करें—जीवन भार न मालूम हो, बल्कि फूलों से हलका और मधु से भी प्यारा हो।

(श्रीमती) मनोरमा टंडन

× × ×

६. वियोगिनी

(१)

प्रिय न आए, पिऊँ कब तक
यह निरंतर धैर्य-प्याली;
व्यथित मन को सांत्वना दूँ
किस तरह अब, कहो आली!

(२)

हृदय-दीपक हाथ से ढक
चिर समय से जी रही हूँ;
मिलन की आशा लिए
समता-सुधा को पी रही हूँ।

(३)

किंतु समता - सहचरी भी
ऊबकर मुझसे किनारा
कर गई, देता दिखाई
अब न मुझको कुछ सहारा।

(४)

तप्त तन की ऊष्म आहें
हृदय-दीपक को बुझाने
कर रही हैं यत्न भरसक
आज इस पर विजय पाने।

(५)

टिमटिमाता दीप अब यह,
कह सखी, कैसे बचाऊँ?
डाल अंचल आश का अब
ओट में कैसे छिपाऊँ?

कमलादेवी जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

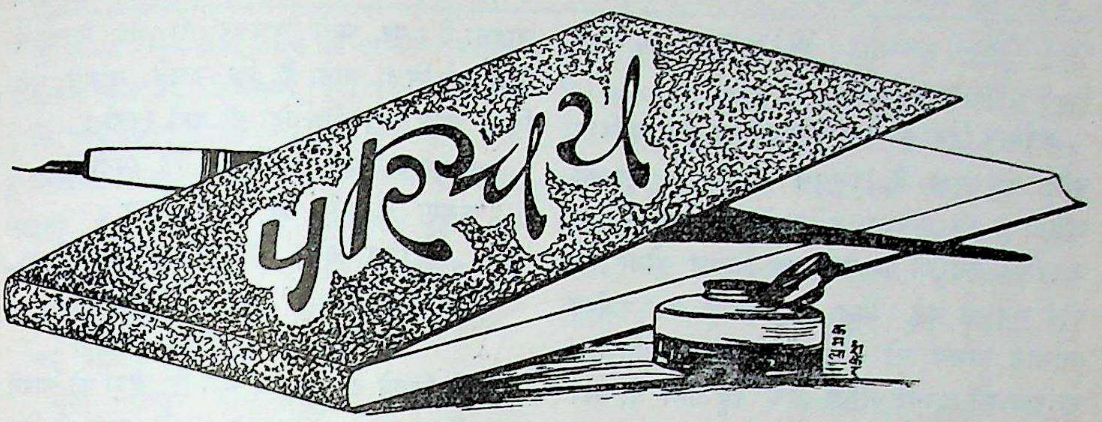

क्रांतिचक्र—अनुवादक, श्रीराधेलाल शर्मा एम० ए०; प्रकाशक, भारती भंडार लीडर-प्रेस, इलाहाबाद; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक के मूल-लेखक मेरठ-कॉलेज के प्रिंसिपल कर्नल टी० एफ़० ओडानेल साहब हैं, जिन्होंने पहलेपहल यह कहानी साप्ताहिक 'लीडर' में, धारावाहिक रूप में, लिखी थी । उन दिनों बहुत-से लोग केवल यही कहानी पढ़ने के लिये साप्ताहिक 'लीडर' ख़रीदा करते थे। इसी से इसकी सुंदरता तथा मनोहारिता का अनुमान किया जा सकता है। किंतु इस कहानी का गौरव केवल इसकी सर्वांग-सुंदरता तथा रोचकता से ही नहीं, बल्कि लेखक ने इसमें एक सुंदर आदर्श उपस्थित करने की चेष्टा की है, जिसका अनुसरण करने से अँगरेज़ अफ़सर तथा हिंदोस्तानियों का मनोमालिन्य बहुत कुछ कम हो सकता है। लेखक के विचार से हमारे पारस्परिक अविश्वास का कारण एक दूसरे के प्रति अज्ञानता है, जो आपस के मिलने-जुलने से दूर हो सकती है।

अनुवादक महाशय भी अपने प्रयत्न में काफ़ी सफल रहे हैं, और वह हम लोगों के बधाई के पात्र हैं । एकाध जगह यदि शब्दानुवाद न करके छायानुवाद किए होते, तो और भी अच्छा होता। जैसे पृष्ठ २२३ पर आनंददायक शब्द अथवा पृष्ठ २२५ पर नृत्यालय-भोजनालय के साथ-साथ 'बातचीत करने के हाल' तथा पृष्ठ २४७ पर 'जो न हो', उस समय भी वह आप ही की खोज में थी। उपर्युक्त शब्द कानों में कुछ खटकते-से हैं। अच्छा होता, यदि वे बिलकुल ही निकाल दिए गए होते, क्योंकि उससे अर्थ में कोई अंतर न आता।

× × ×

शिकार (सुलभ संस्करण)—लेखक, श्रीश्रीराम शर्मा; प्रकाशक, श्रीजगन्नाथ शर्मा, साहित्य-सदन, किरथरा, पो० मक्खनपुर, ज़िला मैनपुरी; मूल्य ॥=)

शर्माजी की लेखनी की शक्ति हिंदी-प्रेमियों से छिपी नहीं। कई वर्ष पहले आपने 'शिकार'-नामक पुस्तक लिखकर हिंदी-जगत् में नवीन मार्ग का उद्घाटन किया था। प्रस्तुत पुस्तक उसी लोक-प्रसिद्ध पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण है, जिसे आपने विद्यार्थियों के लाभ के लिये लिखा है । इसमें आपने शिकार-संबंधी सात घटनाओं का उल्लेख किया है । वर्णन-शैली अत्यंत सजीव तथा हृदयग्राहिणी है। आशा है, इन घटनाओं को पढ़कर हमारे नवयुवकों में भी कुछ साहस का संचार होगा, तथा प्रकृति के प्रति उनका स्नेह बढ़ेगा।

श्री०

× × ×

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय का भार (काव्य)—लेखक, श्रीदीनानाथ व्यास विशारद; प्रकाशक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ; मूल्य ।।)

वर्तमान हिंदी-साहित्य में उत्तरोत्तर ऐसा साहित्य वृद्धि पा रहा है, जिसमें समाज के एकाकी दृष्टिकोण पर विचार न करके मानव-हृदय की वास्तविक दशाओं का कला-पूर्ण चित्रण होता है। कोई कुछ भी कहे, किंतु जहाँ कवि का कर्तव्य वर्तमान समय को दृष्टि में रखकर प्रगतिशील साहित्य को जन-साधारण तक पहुँचाना है, वहाँ कवि अपनी करुण दशा का चित्रण अपने ही ढंग से करने का अधिकारी भी है। इस पुस्तक को पढ़कर हम उक्त सिद्धांत पर ही पहुँचते हैं। प्रस्तुत पुस्तक को यदि प्रगतिशीलता की माँग से हटाकर देखा जाय, तो उसका एक अलग अपना विषय बन जाता है। वस्तुतः वे समाज को लक्ष्य न करके अपने ही विषय में लिखे गए कवि के कुछ मादक तराने हैं, जिन्हें पढ़कर वह स्वयं झूमता है। उसकी कविता स्वयं उसके लिये आत्मसंतोष की वस्तु है, और इसे पुस्तक के लेखक (श्रीदीनानाथ व्यास) ने स्वयं अपनी पंक्तियों में व्यक्त भी किया है। देखना तो यह है कि कवि मानव-समाज को अपनी कहानी सुनाकर आकर्षित कर सकने में कहाँ तक सफल हुआ है।

'हृदय का भार' कवि के लिये एक महत्त्व-पूर्ण वस्तु है, और इसीलिये वह उसकी चाहना करते हुए लिखता भी है—

तेरा स्मृति-पादप नित पनपे,
बढ़ता रहे हृदय का भार;
विरह-वेदना के घन बरसें,
मिलता रहे कसक में प्यार।

कवि प्यार तो चाहता है, पर उसे सुख के साथ नहीं, वेदना और कसक के साथ। प्यार में आनंद है, और शायद इसीलिये उस आनंद को प्राप्त करने के पहले वह वेदना के असह्य दुख को सह लेना चाहता है। पर आगे चलकर तो वह वेदना में ऐसा घुल-मिल जाता है कि उसके सामने उसे किसी अन्य वस्तु की चिंता ही नहीं रहती।

उस समय उसकी ये पंक्तियाँ गूँज उठती हैं—

करुण कहानी का रस लेकर
फिर क्या पाना रहता शेष?
डूबा-बहा-रहा क्या जिसके
लगी हृदय में लगन विशेष।

जाने कितने कष्ट सहकर कवि ने पीड़ा को अपने हृदय में स्थान दिया है! वह उसके हृदय की प्रिय वस्तु बन गई है। इसीलिये तो वह उसके नष्ट हो जाने की शंका-मात्र से अधीर हो कह उठता है—

कितने कष्टों को सहकर यह
पीड़ा आज बचा पाई;
भय है बेहोशी में इसकी
लुट न जाय पाई-पाई।

कहीं-कहीं हृदय के भार से व्यथित होकर कवि रो भी पड़ा है, और तब तक उसकी लेखनी से अश्रुओं का वर्णन नए ढंग से हो जाता है। वह कहता है—

आँखों की मादक मदिरा को
ख़ाली करता बारंबार;
भर-भर आता मधुशाला का
उर में कोई पारावार।

अश्रुओं द्वारा आँखों की मादक मदिरा का ख़ाली होना और फिर हृदय में पुनः उसका समुद्र-सा भर जाना एक नवीन और सुंदर कल्पना है।

पर आगे चलकर वह अपने रोने पर भी पश्चात्ताप करता हुआ कह उठता है—

क्यों न कह दिया पहले तुमने
रोना व्यर्थ निरा सपना;
कभी न करता रो-रोकर मैं
सारा जग सूना अपना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा का परिमार्जन, कथन की स्पष्टता पुस्तक के प्रत्येक स्थल पर विद्यमान है। मज़ा तो यह है कि कवि प्रियतम को आमंत्रित करके भी उसे दुःख-वीणा बनाकर उस पर करुण संगीत गाना चाहता है। "दुख को अपनाकर सुख का परित्याग !" क्या इसमें उसकी कष्ट-सहन की दृढ़ प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता ?

वह प्रियतम से कहता है—

मेरी जर्जर दुख-वीणा के
बन जाओ टूटे-से तार ;
चार चरण संगीत करुण के
गा लूँगा मैं किसी प्रकार।

मुझे पुस्तक के आदि और अंत (दोनो स्थानों पर एक ही) की ये पंक्तियाँ भी बहुत पसंद आईं—

जब तक आवागमन रहे,
तब तक स्थायी हो मेरी प्यास ;
मेरी करुण व्यथा से भरता
रहे सदा उर का इतिहास।

इन्हें पढ़कर यह प्रमाणित हो जाता है कि कवि ने अंत तक अपनी पीड़ा के विषय का निर्वाह किया है। किसी को प्यार करने के उपलक्ष में उसके हृदय को जो वेदना का भार प्राप्त हो गया है, उसकी उसने कहीं भी उपेक्षा नहीं की। बल्कि संसार के सारे सुखों को त्याग कर भी वह अपनी करुण व्यथा को चिर-स्थायी रखना चाहता है। सचमुच यह भाव और यह दृढ़ता स्तुत्य है।

पुस्तक में इससे भी अधिक आकर्षक, सरस और हृदयग्राहिणी पंक्तियाँ अनेक स्थलों पर विद्यमान हैं, जो सब-की-सब स्थानाभाव से यहाँ नहीं दी जा सकतीं। जैसा कि स्वाभाविक है, पुस्तक के कुछ स्थलों पर कविता की पंक्तियाँ कुछ शिथिल भी हैं, परंतु गुणों के आधिक्य के कारण यह दोष नगण्य-सा है। मानव-हृदय की वेदना का चित्रण सरस और सर्व-साधारण की भाषा में किया गया है। कथन की स्पष्टता पुस्तक का सर्व-प्रधान गुण है। ऐसी सुंदर पुस्तक के लिये मैं उसके लेखक श्रीदीनानाथजी व्यास को हार्दिक बधाई देता हूँ। श्रीयुत व्यासजी गद्य के प्रतिष्ठित लेखक हैं। अब उनकी यह काव्य-पुस्तक देखकर हम उनसे इस दिशा (पद्य) में भी बहुत कुछ आशा कर सकते हैं।

श्यामविहारी शुक्ल 'तरल'

× × ×

पत्र-पुष्प—लेखक, श्रीदेवीसिंह चौमूँ ; मूल्य कुछ नहीं।

इस पुस्तक में लेखक के सुंदर-सुंदर भजनों और स्तुतियों का चयन है। पुस्तक छोटी है, परंतु पढ़ने लायक़ है। आशा है, पाठकों को यह पुस्तक रुचिकर प्रतीत होगी।

× × ×

धार्मिक शिक्षा—लेखक, पं० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार, सिद्धांत-शास्त्री, एम्० ए०, एल्० टी०।

यह कक्षा १, २ के लिये, धार्मिक शिक्षा के उद्देश्य से, लिखी गई है। इसमें वैदिक मंत्रों का, सरल पद्यों में, अनुवाद भी है। यद्यपि इसमें ३२ पेज ही हैं, परंतु छोटे बालकों के लिये इसमें उपदेश के अमूल्य रत्न संगृहीत मिलेंगे।

× × ×

धन्नीदेवी—लेखिका, श्रीमती लक्ष्मीबाई ; प्रकाशक, सुदर्शन-प्रेस, प्रयाग।

इस पुस्तक में धन्नीदेवी का संक्षिप्त जीवन-चरित्र लिखा गया है। माताओं और बहनों को यह छोटी पुस्तक अवश्य देखनी चाहिए। पुस्तक उपदेश प्रद है।

× × ×

भारत में भूत—संग्रहकर्ता, श्रीहनुमान शर्मा, जयपुर; प्रकाशक, इंडियन-प्रेस, प्रयाग।

यह पुस्तक भूत-प्रेत के अस्तित्व को निर्मूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साबित करने के लिये अच्छा प्रयास है। सर्व-साधरण को, ख़ासकर उन लोगों को, जिनका मन दुर्बल है, इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

× × ×

वेदांतसार रामायण—लेखक, श्रीहनुमान शर्मा; वितरणकर्ता, श्रीकन्हैयालालजी श्रीशिवसहायजी हवेलीवाले, मु॰ चौमूँ, ज़िला जयपुर।

इस छोटी-सी पुस्तक में संपूर्ण रामायण की कथा मनुष्य के शरीर ही पर घटाई गई है। शरीर में सत्य, शील, दया, धर्म आदि गुण विद्यमान हैं, और, काम, क्रोध, मद, लोभ आदि अवगुण भी। इन्हीं का पारस्परिक युद्ध ही राम-रावण का युद्ध है। अंत में किसकी विजय होती है, यह पुस्तक पढ़ने पर पाठक स्वयं समझेंगे। इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ने पर मानसिक तथा शारीरिक कमज़ोरियाँ दूर होती हैं, और हृदय में ज्ञान का उदय होता है।

× × ×

सारिका (कविताओं का संग्रह)—लेखक, श्रीआनंद-कुमार, प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, प्रयाग ; मूल्य ॥)

इस पुस्तक में लेखक की मनोहर कविताओं का चयन है। पुस्तक बहुत अच्छी छपी है। काव्य-प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

'उमेश'

लाइमजूस

ऐंड ग्लिसरिन

बालों की परिचर्या प्रसाधन के उपयोगी सुस्निग्ध क्रीम स्नान के पहले और बाद नित्य व्यवहार करने से बाल सब सज जाते हैं, और मुलायम हो जाते हैं।

स्त्री और पुरुष सभी के लिये

४ औंस और ६ औंस की शीशी

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'लवलेटर्स' (उपन्यास)—लेखक, श्रीसूर्यबलीसिंह ; मूल्य ३)

(२) 'सन् ५७ के बाद' (इतिहास)—लेखक, पंडित शंकरलाल तिवारी ; मूल्य १॥)

(३) 'क्रांति-युग की चिनगारियाँ' (इतिहास)—लेखक, श्रीसूर्यबलीसिंह; मूल्य १॥)

(४) 'अपराधी' (नाटक)—लेखक, श्रीपृथ्वीनाथ शर्मा बी० ए० ; मूल्य ॥)

(५) 'करुण पुकार' (एकांकी नाटक)—लेखक, श्रीसूर्यदेवनारायण श्रीवास्तव ; मूल्य ॥)

(६) 'पंजा' (नाटक)—लेखक, श्रीजगन्नाथसिंह बी० ए० ; मूल्य ≡)

(७) 'सीता-दाह' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीकपिलेश्वर मिश्र ; मूल्य ।)

(८) 'बाल-विनोद' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीहवलदारीराम गुप्त ; मूल्य ।)

(९) 'बालिका-विनोद' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीहवलदारीराम गुप्त ; मूल्य ≡)

(१०) 'लोक-सेवक महेंद्रप्रसाद' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीसाँवलिया विहारी वर्मा ; मूल्य १॥)

(११) 'मौर्य चंद्रगुप्त' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीअच्युतानंद दत्त ; मूल्य =)

(१२) 'वीरवर हम्मीर' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीअच्युतानंद दत्त ; मूल्य =)

(१३) 'गोस्वामी तुलसीदास' (जीवन-चरित)—लेखक, श्रीअच्युतानंद दत्त ; मूल्य =)

(१४) 'पूजा' (गद्य-काव्य)—लेखक, श्रीरामप्रसाद विद्यार्थी ; मूल्य १)

(१५) 'ढोरों का इलाज' (चिकित्सा)—लेखक, श्रीरमेश वर्मा ; मूल्य ।=)

(१६) 'निसर्ग' (गल्प)—लेखिका, श्रीमती होमवतीदेवी ; मूल्य १)

(१७) 'क्या करें?' (राजनीतिक तथा सामाजिक निबंधों का संकलन)—लेखक, पंडित राहुल सांकृत्यायन ; मूल्य ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

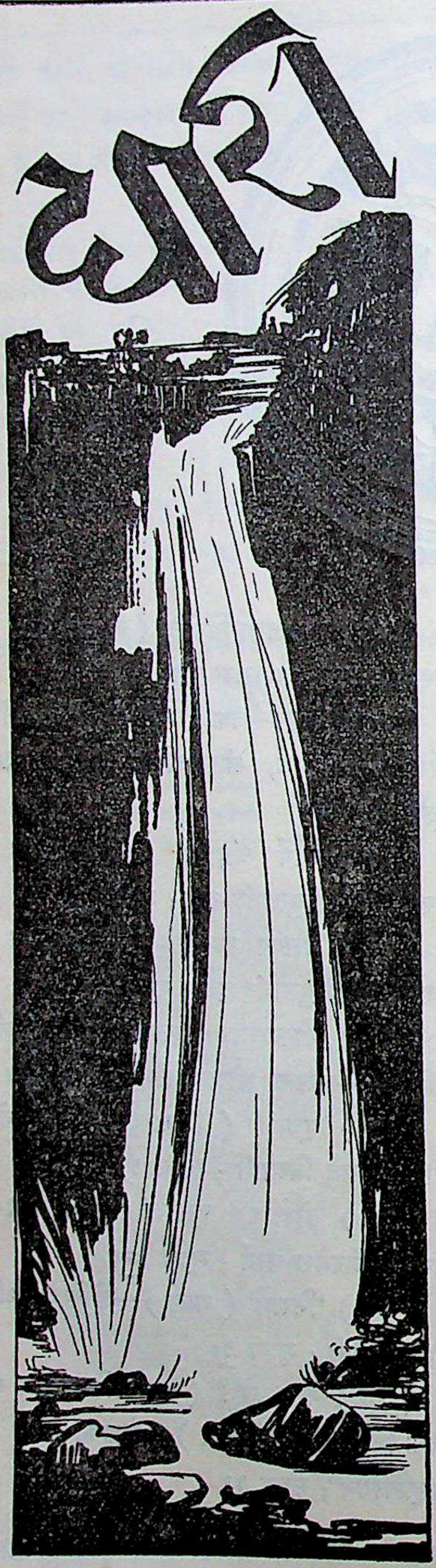

१. योरप का महायुद्ध

आख़िर वर्षों से अंतरराष्ट्रीय जगत् में गरजनेवाले बादल पोलैंड में जाकर बरस पड़े । किसी को यह अनुमान भी न था कि बेचारा पोलैंड सन् १९१४ ई० का बेलजियम बन जायगा । ये पंक्तियाँ लिखते हुए लेखनी पोलैंड की स्वतंत्रता के लिये स्याही के आँसू बहा रही है ! एक स्वतंत्र और सुखी देश हिटलर-राहु की क्रूर दृष्टि का शिकार बन गया, और उसके धन तथा जन की अपार क्षति हो रही है । अपनी शेख़ी और शक्ति की डींग हाँकनेवाला ब्रिटेन पोलैंड की जनता का विध्वंस टुकुर-टुकुर देख रहा है । जर्मनी के बम जहाँ कुहराम मचा रहे हैं, वहाँ मि० चैंबरलेन के अभी पर्चे बँट रहे हैं । एक ओर बमों की वर्षा और दूसरी ओर पर्चों की ! मि० चैंबरलेन पोलैंड की स्वतंत्रता की रक्षा करने का अपना वचन ख़ूब पालन कर रहे हैं । जब तक अँगरेज़ी फ़ौजें जर्मनी की सीमा पर पहुँचेंगी, तब तक बेचारे पोलैंड की स्वतंत्रता ख़त्म हो चुकी होगी । फिर हिटलर घोषणा कर देगा कि उसे ब्रिटेन और फ़्रांस से कोई दुश्मनी नहीं । बस, फिर मि० दलादियर और चैंबरलेन उस घोषणा का स्वागत कर लेंगे, और इस तरह पोलैंड की स्वतंत्रता के अंत के साथ लड़ाई का अंत हो जायगा ।

आज तक युद्ध की जो परिस्थिति है, उससे हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं । अबीसीनिया और स्पेन की स्वतंत्रता का अंत इसी तरह हुआ । चेकोस्लोवेकिया की स्वतंत्रता इन्हीं तरीक़ों से छीनी गई । हाँ, अब की बार इँगलैंड और फ़्रांस युद्ध की तैयारी भी कर चुके हैं । पहले उनकी घुड़कियाँ आर्थिक दंड देने तक ही महदूद थीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब की बार वे शस्त्र भी खनखना रहे हैं; पर हैं ये भी घुड़कियाँ ही। अधिक-से-अधिक हम इतना समझ सकते हैं कि इँगलैंड और फ्रांस अपनी रक्षा की तैयारियाँ कर रहे हैं—जर्मनी की बर्बरता ख़त्म करने के लिये नहीं, बल्कि उससे बचने के लिये। हिटलर की शक्ति का लोहा मान लेने का इससे अधिक सबूत और क्या होगा?

लड़ाई का अंत कब होगा?

अगर पोलैंड की पराजय के साथ लड़ाई का अंत हो गया, तो ब्रिटेन और फ्रांस की शक्ति का भी अंत हो गया समझ लेना चाहिए। फिर संसार यह जान लेगा कि इन दो राष्ट्रों में अकेले जर्मनी का मुक़ाबिला करने की शक्ति नहीं। यही नहीं, लोग तो यहाँ तक समझ रहे हैं कि यह म्यूनिक-कांड की ही पुनरावृत्ति तो नहीं हो रही है। इसके सबूत भी हैं। जर्मनी ने कई अँगरेज़ी जहाज़ डुबो दिए, पर अँगरेज़ी शक्ति के दरिया में तब भी बाढ़ नहीं आई, अँगरेज़ों का ख़ून तक भी न खौला। दूसरा सबूत—अँगरेज़ी वायुयान जर्मनी में और जर्मनी वायुयान लंदन के ऊपर चक्कर काट आते हैं, और ख़तरे का घंटा बजकर रह जाता है, हवाई जहाज़ बिना दुश्मन का कोई नुक़सान किए हुए चले आते हैं। फ्रांस की फ़ौजें जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर प्रगति कर रही हैं, पर वह प्रगति क्या है? क्या फ्रांस और अँगरेज़ों की फ़ौजों ने जर्मनी के कुछ भाग पर क़ब्ज़ा कर लिया? फिर यहाँ जर्मनी फ़ौजें क्या कर रही हैं? उनकी तरफ़ से भी कोई मुक़ाबिला किया जाता है या नहीं? पश्चिमीय सीमा पर दोनो दलों के कितने-कितने आदमी मरे, आदि बातों का अख़बारों में, युद्ध-क्षेत्र से आई हुई ख़बरों में, कोई ज़िक्र नहीं।

तब यह क्या हो रहा है? कहा जाता है, लड़ाई तीन साल तक जारी रहेगी। यह किस आधार पर कहा गया है? क्या लंबी लड़ाई के ख़याल से ही अभी तक ब्रिटेन जर्मनी के ख़िलाफ़ पूरे जोश के साथ नहीं भिड़ा, या फिर लोगों को यह झाँसा दिया जा रहा है कि अभी लड़ाई लड़ने के बहुत दिन पड़े हैं, और अंदर-ही-अंदर कुछ और बातें हो रही हैं?

हमारा कर्तव्य क्या है?

इस लड़ाई के संबंध में हमारा कर्तव्य क्या होना चाहिए, इसे हम तब तक अच्छी तरह तय ही नहीं कर सकते, जब तक उक्त प्रश्नों का उत्तर हमें न मिल जाय, या हम अपनी आँखों से यह न देख लें कि इस लड़ाई का भविष्य कैसा है। क्या लड़ाई आगे चलेगी, या कुछ दिनों में ख़त्म होनेवाली है? कांग्रेस-कार्य-समिति का वर्धा का निर्णय चाहे जो कुछ हो, पर समस्त देश को अपना भावी कर्तव्य उक्त प्रश्नों के जवाब के प्रकाश में ही तय करना पड़ेगा। हमारा विश्वास है, कांग्रेस भी अपना निर्णय उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही करेगी।

ब्रिटेन की सहायता करो

इस वक्त देश में चारो ओर से ऐसी आवाज़ें आ रही हैं—युद्ध में ब्रिटेन की सहायता करो। सर सिकंदर हयातख़ाँ से लेकर कवींद्र रवींद्रनाथ तक ने यही कहा है। लिबरल नेता सर तेजबहादुर सप्रू, लिबरल फ़ेडरेशन और अन्य संस्थाओं ने भी युद्ध में इँगलैंड की सहायता करने की अपील की है। इससे मालूम होता है, न केवल देशी राजे लोग, बल्कि देश का बहुत बड़ा भाग इस महायुद्ध में ब्रिटेन की सहायता करने को तैयार है। यह याद रखना चाहिए कि इस सहायता का अर्थ ब्रिटेन के प्रति इतनी सहानुभूति नहीं, जितनी जर्मनी की बर्बरता के प्रति लोगों में घृणा और रोष है। फ़ैसिज़्म के आतंक से घबराकर, आज लोग ब्रिटेन, फ्रांस और पोलैंड के प्रति सहानुभूति दिखलाकर उनकी सहायता करने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हैं। पर भारत का रुख़ युद्ध के प्रति क्या होगा, यह बहुत कुछ कांग्रेस के रुख़ पर निर्भर है। आज देश में कांग्रेस की शक्ति ही सर्वोपरि है। आठ प्रांतों में कांग्रेस का शासन है। इसलिये कांग्रेस के निर्णय का ही सबसे बड़ा मूल्य और सबसे अधिक असर होगा। इसमें संदेह नहीं कि कांग्रेस प्रजातंत्रवाद के उसूलों के लिये लड़ रही है। आज नाज़ी लोगों के नृशंसता-पूर्ण कामों के प्रति लोगों के दिलों में घृणा है। ऐसी दशा में जब ब्रिटेन और फ्रांस लोकतंत्री देश फ़ैसिज़्म के ख़िलाफ़ शस्त्र उठाते हैं, तो देश का फ़र्ज़ यही होता है कि वह प्रजातंत्रीय देशों के साथ रहे, और युद्ध में उनकी सहायता करे। भारत और यहाँ की राष्ट्रीय महासभा का भी इस वक़्त फ़ैसिज़्म के ख़िलाफ़ लोकतंत्रवाद की सहायता करना फ़र्ज़ है। पर इसके साथ-साथ हमारे देश की भी कुछ निजी समस्याएँ हैं। उनमें से मुख्य समस्या तो यह है कि इस युद्ध में भारत किस हैसियत से ब्रिटेन की सहायता करे? पं० जवाहरलाल नेहरू कहते हैं—प्रजातंत्रीय देशों की सहायता करना इस वक़्त हमारा फ़र्ज़ है, पर पहले भारत प्रजातंत्रीय देश तो बन ले। यह तय है कि अब देश को महज़ इस वजह से कि वह ब्रिटिश हुकूमत के अंदर है, और पराधीन देश है, इसलिये उसे युद्ध में हर हालत में ब्रिटेन का साथ देना होगा, युद्ध में नहीं घसीटा जा सकता। वह ब्रिटेन के अन्य उपनिवेशों के बराबर का दर्जा प्राप्त कर, बराबर के भाई के नाते से ही युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिये लड़ सकता है। अतः ब्रिटिश पार्लियामेंट का इस वक़्त यह कर्तव्य है कि वह भारत की माँग पूरी करे, और तब देश का भी कर्तव्य है कि वह इँगलैंड के साथ अपना संबंध बनाए रखने के लिये युद्ध में उसकी सहायता करे।

× × ×

२. भारत की रक्षा का सवाल

इस वक़्त एक मुख्य सवाल भारत की रक्षा का है। यह ठीक है कि भारत की किसी अन्य राष्ट्र के साथ शत्रुता नहीं, पर ब्रिटेन के साथ जिन राष्ट्रों की शत्रुता है, वे भारत को अपने विरोधी राष्ट्रों में ही समझते हैं। यदि कोई प्रबल राष्ट्र भारत पर चढ़ाई करे, तो देश की रक्षा के लिये हमें अँगरेज़ी फ़ौजी शक्ति का ही मुँह ताकना पड़ेगा, या फिर अपने को आक्रमणकारी के सुपुर्द कर देना होगा। मान लो, ब्रिटेन पश्चिम में जर्मनी के साथ युद्ध में फँस जाता है, और जापान अपनी तटस्थता छोड़कर पूर्व में ब्रिटेन के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा कर देता है, तो भारत की रक्षा के लिये लेने के देने पड़ जायँगे। इसीलिये हम, ब्रिटेन और भारत दोनो की भलाई के लिये, इस बात का समर्थन करते हैं कि उनमें भाई-चारे का संबंध बना रहे, और एक मित्र दूसरे मित्र से पृथक् न हो। भारत की केंद्रीय सरकार भारतीयों के हाथ में हो, और भारत की रक्षा के लिये ब्रिटिश फ़ौजी शक्ति का सहयोग रहे। यह सहयोग तब तक क़ायम रहे, जब तक भारत की सैनिक शक्ति आधुनिक ढंग के सभी युद्ध-कौशल में पारंगत न हो जाय। अभागा भारत अब भी अपनी सेना पर प्रति-वर्ष पैंतालीस करोड़ रुपया ख़र्च करता है, और इतनी बड़ी रक़म ख़र्च करने पर भी अपनी रक्षा के लिये वह समर्थ नहीं हो पाया है। फ़ौजों के भारतीयकरण की बात एक मुद्दत से कही जा रही है, पर अब जब युद्ध का ख़तरा सिर पर आ गया, तब चेटफ़ील्ड-कमेटी की वह रिपोर्ट निकली है, जिसमें भारतीयकरण और भारत की रक्षा के लिये कुछ क्रियात्मक उपायों की तजवीज़ रक्खी गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत की स्थल, जल और हवाई शक्ति को दृढ़ तथा आधुनिक ढंग के सभी साधनों से संपन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने के उपायों पर विचार किया गया है। ब्रिटिश सरकार इसके लिये अपने ख़ज़ाने से ४५ करोड़ रुपया ख़र्च करेगी, और इस रक़म का तीन चौथाई भाग वह भारत से वसूल नहीं करेगी। इसे वास्तव में ब्रिटेन की उदारता कहना चाहिए। पर इसके अन्य पहलुओं पर विचार किया जाय, तो पता चलेगा कि अब तक भारत की धन और जन-शक्ति का जितना उपयोग साम्राज्य-रक्षा के लिये किया गया है, उसे देखते हुए ब्रिटेन की यह उदारता कुछ भी नहीं। इस रिपोर्ट में भी यह सिफ़ारिश की गई है कि भारत की सेना का काम जहाँ देश की रक्षा करने का होगा, वहाँ वह भारत से बाहर भी भेजी जाया करेगी, और बाहर के ख़र्च पर दस प्रतिशत भाग भारत को देना पड़ेगा। यह क्यों? भारत की सेना को देश से बाहर भेजने का अर्थ भारत की रक्षा न होकर ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना है। अगर पूर्व में सिंगापुर में और पश्चिम में अदन आदि फ़ौजी अड्डों पर भारतीय सेना की ज़रूरत है, तो भारत उसका ख़र्च क्यों बरदाश्त करे। सिंगापुर के सैनिक अड्डे से केवल भारत की ही रक्षा का संबंध नहीं; न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया और दूसरे पूर्वी ब्रिटिश उपनिवेश तथा द्वीपों की रक्षा के लिये भी सिंगापुर पर सैनिक शक्ति जमा रहती है। पर ब्रिटिश सरकार आस्ट्रेलिया या न्यूज़ीलैंड को इस बात के लिये मजबूर नहीं कर सकती कि वे इस सैनिक अड्डे के ख़र्च में हिस्सा बँटावें। यह भारत ही है, जिसकी रक्षा के नाम पर सरकार उसके धन के स्रोतों का उपयोग अपने साम्राज्य की रक्षा करने के लिये करती है। इस दृष्टि से चेटफ़ील्ड-कमेटी की रिपोर्ट को हम भारत के लिये उपयोगी समझकर भी उसे दोष-मुक्त नहीं मानते।

× × ×

३. फ़ेडरेशन मर गया!

इस महायुद्ध का भारत पर सबसे बड़ा असर यह हुआ कि जिस फ़ेडरेशन की इतने दिनों से भारी चर्चा हो रही थी, उसका भारत में लागू होना घोषणा-रूप में स्थगित कर दिया गया। वायसराय महोदय ने केंद्रीय धारा-सभाओं की बैठक में इसकी घोषणा कर दी, अतः जब तक संसार को युद्ध का ख़तरा है, तब तक भारत में फ़ेडरेशन क़ायम होने की कोई संभावना नहीं। पर इसके साथ ही अब सवाल यह पैदा होता है कि भारत की केंद्रीय सरकार कैसी रहेगी? क्या उसका संगठन अब का-सा ही रहेगा? क्या केंद्रीय धारा-सभाओं का फिर चुनाव होगा? क्या एक तरफ़ प्रांतीय स्वाधीनता और दूसरी ओर केंद्र में ब्यूरोकेसी हुकूमत चलेगी? यह समझ में नहीं आता। एक बात यह भी सुनी जाती है कि केंद्रीय सरकार के निर्माण में सुधार होगा। वह सुधार कैसा होगा? क्या रक्षा, वैदेशिक संबंध और अर्थ-संबंधी कुल मामलों को जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में सौंप दिया जायगा? यह तब तक संभव नहीं, जब तक भारत के लिये ख़ास तौर पर नया विधान तैयार न किया जायगा। तब अधिक-से-अधिक यह हो सकता है कि ये विषय अब की तरह वायसराय महोदय और उनकी बनाई हुई कार्य-कारिणी के हाथ में ही रहे, और भारतीय प्रतिनिधि की एक सलाह देनेवाली कमेटी बनाकर लोगों को फुसलाने का ढोंग रचा जाय। पर इससे लाभ क्या होगा? देश और कांग्रेस की ताक़त इसे कभी स्वीकार न करेगी। तब वातावरण वैसा ही अशांत, क्षुब्ध और असंतोषजनक रहेगा। इस समय उचित यही जँचता है कि वायसराय देश के प्रतिनिधियों की एक कॉन्फ़्रेंस बुलावें, और उनके सामने भारत के संबंध में एक सर्वमान्य, सामान्य शासन-योजना तैयार करने का सवाल रक्खें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो विधान इस परिषद् द्वारा तय हो जाय, उसे पार्लियामेंट से स्वीकृत कराके उसके अनुसार भारतीय सरकार का निर्माण हो। इसके अतिरिक्त मौजूदा असंतोष दूर करने का कोई दूसरा उपाय नहीं।

× × ×

४. चीज़ों के मूल्य में वृद्धि

योरप में जंग छिड़ने के साथ ही चीज़ों के मूल्य में असाधारण गति से वृद्धि होने लगी। इसका कारण यह न था कि युद्ध-संबंधी तैयारियों या युद्ध के कारण इतनी अधिक चीज़ों की माँग बढ़ गई, बल्कि भावी महायुद्ध की आशंका और उसमें आयात-निर्यात के मार्ग बंद हो जाने के भय के कारण ही चीज़ों के दाम इतने चढ़ गए। पर इसमें भी अधिक हाथ कुछ व्यापारियों और बड़े-बड़े दलालों का है। वास्तव में दलाल लोग ही बाज़ार-भाव को इस वेग से चढ़ा-उतरा सकते हैं। जर्मनी द्वारा पोलैंड पर चढ़ाई करने के साथ ही दो-तीन दिन तक तो बाज़ारों में इतनी अराजकता फैल गई कि लोगों ने मुँह-माँगे दामों पर चीज़ें ख़रीद लीं, और कई चीज़ों के मूल्य में दूनी और ढाई-गुनी वृद्धि हो गई। अगर यह स्थिति क़ायम रहने दी जाय, तो मनों के भाव की चीज़ थोड़े दिनों में तोलों के भाव बिकने लगे। लेकिन यह हर्ष की बात है कि सरकार का ध्यान बहुत शीघ्र इस बात की ओर गया। और, प्रांतीय सरकार तथा केंद्रीय सरकार ने शीघ्र ही बाज़ार के भावों पर नियंत्रण करने की व्यवस्था प्रकाशित कर दी। भारत-सरकार ने इस संबंध में प्रांतीय सरकारों को विशेष अधिकार दिए हैं, जिससे चीज़ों के मूल्य में असाधारण वृद्धि न हो सकेगी, और जो लोग अधिक तेज़ भाव पर चीज़ें बेचेंगे, उन्हें कठोर दंड दिया जायगा।

सरकार के इस साहस की हम प्रशंसा करते हैं। वास्तव में इस दशा में जब तक सरकार चीज़ों के मूल्य पर अपना नियंत्रण नहीं रक्खेगी, बाज़ारों में अराजकता फैल जायगी। युद्ध-काल और असाधारण परिस्थितियों में सरकार को ऐसा करना अनिवार्य है। साथ ही हम उन व्यापारियों के इस कार्य को बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते हैं। एक तरफ़ जहाँ नर-संहार हो रहा है, कितनी बहनें विधवा या निपूती और बच्चे यतीम हो रहे हैं, उस वक्त की स्थिति से अपना आर्थिक लाभ उठाने की अनुचित चेष्टा करना कितना निंदनीय कार्य है। आशा है, सरकार और हमारे व्यापारी भाई दोनों ही इस समय के अपने-अपने कर्तव्यों को याद करेंगे।

× × ×

५. समाचार-पत्र-संग्रहालय की उपयोगिता

प्रयाग में समाचार-पत्र-संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए हमारे प्रांत के शिक्षा-मंत्री माननीय श्रीसंपूर्णानंदजी ने पत्र-पत्रिकाओं की उपयोगिता पर एक बहुत ही महत्त्व-पूर्ण भाषण दिया। आपने कहा—"मनुष्य की आत्मा के एक पहलू के प्रदर्शक के रूप में समाचार-पत्र का स्थान अद्वितीय है। यदि हम समाचार-पत्र का व्यापक अर्थ लगाएँ, तो जैसे किसी आदमी के स्वभाव का, उसकी मानसिक, नैतिक और सौंदर्य-संबंधी प्रकृति का पता उसके घर का सामान, तस्वीर और लिखने-पढ़ने का सामान देखकर चल जाता है, और उससे यह मालूम हो जाता है कि अमुक व्यक्ति किस प्रकार की चीज़ों को अपनाकर अपने को गौरवान्वित करता है, उसी प्रकार समाचार-पत्रों को देखकर हम यह जान सकते हैं कि उनके विचार, उनकी भावनाएँ और उनकी संकल्प-शक्ति किस प्रकार की थी। पुस्तकें मनुष्य की क्रियात्मक शक्ति की मूर्ति हैं, और प्रत्येक ग्रंथकार अपने कार्य पर अपने व्यक्तित्व की छाप लगा देता है।...किसी ख़ास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल और देश के समाचार-पत्र उस समय के मस्तिष्क की काफ़ी सच्ची तस्वीर खींचते हैं, जो और किसी दूसरे साधन से नहीं मिल सकती।"

सामयिक परिस्थिति का दिग्दर्शन कराते हुए माननीय शिक्षा-मंत्री ने आगे कहा—"हिंदोस्तान में इस समय हम असाधारण युग से गुज़र रहे हैं। इस समय भिन्न-भिन्न वर्गों में संघर्ष हो रहे हैं। एक तरफ़ डिक्टेटरी का निर्लज्जता-पूर्ण, अहंकार और नृशंसता-भरा दृश्य है, दूसरी तरफ़ प्रजातंत्रवाद की कायरता और दंभ-पूर्ण बातें हैं। पुराना आर्थिक संगठन, जिसमें चंद आदमी असंख्य आदमियों को चूस रहे थे, हिल रहा है। इसके स्थान पर एक नई व्यवस्था बन रही है, जो मनुष्य के आत्मगौरव पर क़ायम की गई है। ये बातें हमारे जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन कर रही हैं, और इसके अलावा हमारी अपनी समस्याएँ भी हैं, हमें विदेशियों के राजनीतिक प्रभुत्व से आज़ादी जीतनी है। हमें अपने उन करोड़ों देशवासियों को मुर्दा सामंतशाही के पंजे से छुड़ाकर इस बात का अधिकार पाना है कि वे आदमी की तरह रह सकें, हमें ग़रीबी और जिहालत के क़िले को तोड़ डालना है, जिसके अंदर हमारी आत्मा दिखाई दे रही है। हमें एक नई आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था बनानी है, जिसमें जीवन का अर्थ कर्म और कर्म का अर्थ आनंद होगा। इस व्यवस्था के अंदर हरएक व्यक्ति-समूह के करने के लिये काम होगा, हर व्यक्ति के लिये आज़ादी होगी, जिससे वह उस मानसिक और आध्यात्मिक विकास तक पहुँच सके, जिसकी उसमें संभावना पाई जाती है। ऐसा दिन अभी तक देखने में नहीं आया, लेकिन हम उस दिन के उदय की हलकी-सी झलक देख रहे हैं। एक नम्र सार्वजनिक सेवक की हैसियत से, जिसने क़रीब २० वर्ष सेवा की है, और जिसे इस शानदार सूबे के शासन में भी दख़ल है, मैं यह देख रहा हूँ कि हाल की घटनाओं ने बहुत बड़ी आध्यात्मिक शक्ति का संचार किया है। यह शक्ति अभी तक मुनासिब तरीक़े पर प्रवाहित नहीं हुई है। लेकिन यह मैं देख रहा हूँ कि जिन लोगों पर ज़माने का असर पड़ा है, वे कैसी आशा रखते हैं, उनके हौसले क्या हैं, उनके स्वप्न क्या हैं। ये लोग उस शक्ति से खिंचे जा रहे हैं, जिसके बारे में वे जानते भी नहीं। ये सब बातें हमारे अख़बारों में प्रकट हो रही हैं, और ख़ासकर उन अख़बारों में, जिन्हें कुछ लोग घृणा से 'वर्नाक्युलर प्रेस' कहते हैं। सरकारी और ग़ैर-सरकारी काग़ज़ों से या और किसी दूसरी चीज़ से हम इस समय के इतिहास का पुनर्निर्माण करने में मदद नहीं पा सकते, जितनी मदद हम अख़बारों के अजायब-घर में पाएँगे। इसलिये आजकल के युग में समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के संग्रहालयों का बहुत बड़ा मूल्य है।"

माननीय बाबू संपूर्णानंदजी

हम माननीय बाबू संपूर्णानंदजी के इस सामयिक, उपयोगी, विद्वत्ता-पूर्ण भाषण के लिये हृदय से उन्हें धन्यवाद देते हैं, ख़ासकर इस वास्ते भी कि आपके इस भाषण का देश में और ख़ासकर संयुक्त प्रांत में व्यापक असर होगा, और समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के संग्रहालयों के कार्य का महत्त्व लोग स्वीकार करेंगे, तथा इससे राष्ट्र और राष्ट्रीय भाषा, दोनो की उन्नति होगी।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. साहित्यकारों के चित्रों का प्रकाशन

पत्रकार श्रीसुंदरलालजी गर्ग, अजमेर से लिखते हैं—

"मैंने नीचे-लिखा प्रस्ताव आगामी सम्मेलन में प्रस्तुत करने की सूचना दी है—

"यह सम्मेलन हिंदी और हिंदोस्तान के सभी बड़े विद्वान् साहित्यकारों के बड़े साइज़ के चित्रों के प्रकाशित किए जाने की आवश्यकता को अनुभव करता है, और आशा करता है कि जो प्रकाशक इस सत्प्रयत्न को अपने हाथ में ले, जनता उसका पूरी तरह से साथ देगी।

"वैसे प्रस्ताव निर्विवाद ही है। फिर भी हिंदी-संसार के अपने विचार इस संबंध में जान लेना ज़रूरी है। यह राजनीति का युग है, पर जिस तरह का हिंदोस्तान हम चाहते हैं, उसके लिये साहित्य की ओर अधिक-से-अधिक ध्यान दिया जाना ज़रूरी है। प्राचीन साहित्य के लिये आज रोना पड़ता है, उस समय के लोग साधन-हीन थे, पर आज, सब साधन होने पर भी, हम साहित्य और साहित्य-कारों का ठीक हिसाब नहीं रख सके, तो आनेवाली संतान (Generation) क्या सोचेगी, और उस समय क्या होगा ?

"आज भारतेंदु, द्विवेदी, प्रेमचंद, शरत् और प्रसाद इत्यादि उठ गए, और कई मौजूद हैं। उनके प्रति हम अपने कर्तव्य को पहचानें। राजनीति के सभी छोटे-बड़े नेताओं के चित्र, सब तरह और सब साइज़ के, मिलते हैं, और लोग लेते भी हैं। क्या जनता में इन साहित्यकारों की कोई माँग नहीं है ? यात्रा में मुझसे सैकड़ों ने यह इच्छा प्रकट की है कि हमें साहित्यकारों के चित्र मिलने चाहिए। इससे मैं समझता हूँ कि व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी इसमें घाटा नहीं रहेगा, चाहे अभी कमाया नहीं जा सके।

"हिंदी राष्ट्र-भाषा हो रही है, और उसे हर क़दम समझ के साथ आगे रखना है। अच्छा हो, चित्रों का दायरा हिंदी तक सीमित न रहकर हिंदोस्तानी साहित्यकारों तक रहे। संसार की आँखें आज हिंदोस्तान की ओर लगी हुई हैं, और वह यहाँ के साहित्यकार के प्रति उपेक्षित नहीं रह सकेगा।

"मदरास-अधिवेशन के अवसर पर मैंने हिंदी-संसार के सामने कहानी-सम्मेलन की आयोजना करने का प्रस्ताव रक्खा था, इस वर्ष कहानी-सम्मेलन हो रहा है, यह प्रसन्नता की बात है। उसे जिन पत्रों ने प्रकाशित करने और अपनी टिप्पणी देने की कृपा की, उनका मैं आभारी हूँ।

"क्या मैं आशा करूँ कि आप इस प्रस्ताव को अपने पाठकों तक पहुँचाने के साथ ही अपनी सम्मति भी बताने की कृपा करेंगे ? प्रस्ताव में संशोधन भी सुझाए जा सकते हैं। जिस अंक में यह प्रकाशित हो, वह भेजने की कृपा करेंगे ?"

निस्संदेह प्रस्ताव उपयोगी और आवश्यक है। पर जनता प्रकाशकों का करावलंब करेगी, इसमें संदेह है। हमारे बँगाला, मराठी, गुजराती-भाषा-भाषी भाई अपने साहित्यकारों की इज़्ज़त करना जानते हैं। यहाँ तो केवल सस्ती और इसीलिये अधिकतर रद्दी पुस्तकों पर जनता टूटती है, अभी उसमें सत्साहित्य पढ़ने की रुचि उत्पन्न नहीं हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि सुंदर, अमर साहित्य पढ़ने की ओर जनता को प्रवृत्त किया जाय। तभी वह अपने श्रेष्ठ साहित्यकारों को पहचानेगी, और मानेगी। उसमें यह सुरुचि उत्पन्न किए विना यह प्रस्ताव कोरा प्रस्ताव ही रह जायगा। जो हो, हम अपने पत्रकार बंधु के इस प्रस्ताव का हृदय से अनुमोदन करते हैं।

× × ×

७. दो साहित्यिकों का निधन !

मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तव और पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी के सहसा निधन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़बर हिंदी-साहित्यिकों के लिये अत्यंत ही शोक-पूर्ण दुर्घटनाएँ हैं ! इन दोनो ही महानुभावों की साहित्यिक सेवाओं को हिंदी-संसार कभी न भूलेगा। हिंदी में हास्य-रस की निर्झरिणी बहाने में दोनो ही स्वर्गीय आत्माओं ने श्रेय प्राप्त किया। श्रीचतुर्वेदीजी तो हास्य-रसावतार कहे जाते थे। श्री-मुंशीजी ने भी चाँद और भविष्य के अतिरिक्त मतवाला के भी संपादन में अपनी हास्य-रस-वृत्ति का परिचय दिया था। श्रीचतुर्वेदीजी की साहित्यिक सेवाओं के कारण उन्हें अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद का सम्मान देकर हिंदी-भाषा-भाषियों ने अपने को गौरवान्वित किया था। इधर अपनी वृद्धावस्था में कुछ दिनों से चतुर्वेदीजी बहुत थोड़ा ही लिखते थे। वैसे तो हिंदी-साहित्यिकों की आर्थिक अवस्था किसी से छिपी नहीं, पर मुंशीजी के लिये तो आज हम यह कहने को तैयार हैं कि जिस दरिद्र अवस्था में रहकर वह आजन्म हिंदी की सेवा करते रहे, ऐसे उदाहरण कम मिलेंगे। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह स्वर्गीय आत्माओं को शांति प्रदान करें, और शोक-संतप्त परिवारों को धैर्य बँधावें।

× × ×

सन् १९३९ के मंगलाप्रसाद-पारितोषिक-विजेता, हिंदी के सर्वश्रेष्ठ समालोचक और निबंध-लेखक
आचाय रामचंद्र शुक्ल

८. मंगलाप्रसाद-पुरस्कार

सुधा-पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने १२००) का मंगलाप्रसाद-पारितोषिक हिंदू-विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के अध्यक्ष और हिंदी-संसार के सर्वश्रेष्ठ समालोचक तथा निबंध-लेखक आचार्य श्रीरामचंद्र शुक्ल को देना निश्चित किया है। यह पुरस्कार उन्हें 'चिंतामणि'-नामक निबंध-संग्रह पर मिलेगा। एतदर्थ हम अपने मान्य मित्र शुक्लजी को बधाई देते हैं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के ढोल बजने लगे !

(क्या लड़ाई में भारत तटस्थ रहे ?)

[श्रीवेंकटेशनारायण तिवारी एम्० ए०, पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी]

योरप में युद्ध के बाजे बज रहे हैं, तोपों की गर्जन और हवाई जहाज़ों की गड़गड़ाहट से पोलैंड, जर्मनी, फ्रांस और इँगलैंड के निवासी व्यथित और चिंतित हो रहे हैं। यह लड़ाई न तो हफ़्तों में समाप्त होनेवाली है, न महीनों में। मेरा अनुमान है, यह संग्राम वर्षों चलेगा, और इसका क्षेत्र आगे चलकर आज की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत हो जायगा। मुझे यह भी भय है कि आगे चलकर इस युद्ध में संसार के कई बड़े-बड़े राष्ट्र भाग लेने के लिये विवश हो जायँगे। आज से २५ वर्ष पहले जिस महायुद्ध का आरंभ हुआ था, वह वर्तमान युद्ध की तुलना में बहुत साधारण था। पिछले २५ वर्षों ने हवाई जहाज़ में जो अभूतपूर्व उन्नति कर दिखाई है, उसकी बदौलत अब की लड़ाई की रूप-रेखा और रंग-ढंग पिछली लड़ाइयों के मुक़ाबले एकदम भिन्न हो जायगा। यह युद्ध क्यों छिड़ा? योरप के राजनीतिज्ञ इस विश्वव्यापी संहार को रोकने में असमर्थ क्यों हुए? पोलैंड की रक्षा के लिये इँगलैंड और फ्रांस ने क्यों तलवार खींची? जब वे पहले भीष्म पितामह की तरह ख़ामोश बैठे रहे, और जर्मन एवं इटैलियन-दुःशासनों ने अबीसीनिया, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, स्पेन और अलबेनिया की स्वतंत्रता का हरण, द्रौपदी के चीर की तरह, सफलता-पूर्वक किया। द्रौपदी की मान-मर्यादा की रक्षा भगवान् कृष्ण ने की थी। लेकिन इस युग में निरीह और निर्बल राष्ट्रों पर बलात्कार करनेवाले हिटलर और मुसोलिनी के ख़िलाफ़ किसी ने सशस्त्र प्रतिवाद करने का साहस न दिखाया। जहाँ इतने राष्ट्रों की आज़ादी का दिया बुझ चुका था, वहाँ क्या कारण है कि पोलैंड के मामले को लेकर इँगलैंड और फ्रांस जर्मनी के ख़िलाफ़ ताल ठोंककर आगे बढ़ आए हैं?

रूस क्यों तटस्थ रहकर जर्मनी को मदद पहुँचा रहा है? उसके इस विश्वासघात की जड़ में कौन-से कारण छिपे हैं? इन और ऐसे ही प्रश्नों को लेकर लोग जहाँ देखो, वहाँ गंभीर विचार में निमग्न दिखाई देते हैं। लेकिन इन सब प्रश्नों से भी हमारे लिये कहीं अधिक आवश्यक प्रश्न यह है कि इस लड़ाई में हिंदोस्तान का क्या फ़ैसला होगा? क्या वह इँगलैंड का साथ देगा? या तटस्थ रहेगा? उसके तटस्थ रहने से भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा? और लड़ाई के गति-क्रम के विकास को वह किस तरह प्रभावित करेगा? क्या भारत सहायता का सौदा करेगा? या आँख बंद कर उन लोगों की आज़ादी बचाने के लिये, जिनका वह ख़ुद ग़ुलाम है, अपना धन और अपना जन-बल विश्वव्यापी संग्राम की ज्वाला में मुक्त-हस्त फेंकने के लिये तैयार हो जायगा? इन मसलों पर विचार करना हमारा धर्म है। घटना-चक्र ने हमें विवश कर दिया है कि अपने-अपने अंतःकरण में हम इन बातों को सोचें, और अपने-अपने कर्तव्य का निर्णय करें। टालमटोल का समय नहीं। इन बातों का जवाब हमें आज यहीं देना पड़ेगा। युद्ध की आवश्यकताएँ इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तात्कालिक होती हैं कि उनके सामने संशय के लिये कोई स्थान नहीं रहता। तड़पड़ जवाब देना, तड़पड़ बात तय कर लेना, और निर्णय कर लेने के पश्चात् उसी के अनुकूल कार्य करना अनिवार्य हो जाता है। जितने प्रश्न मैंने उठाए हैं, उन्हीं का इस लेख में उत्तर देना चाहता हूँ।

युद्ध के पूर्व

मौजूदा लड़ाई के कारणों को ठीक-ठीक समझने के लिये यह ज़रूरी है कि पाठक पिछले २५ वर्षों की कुछ प्रमुख घटनाओं को स्मरण करें। १६१४-१८ के महायुद्ध के बाद विजेता राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ जो संधि की थी, उसका नाम है वरसाई की संधि। वरसाई फ्रांस के राजाओं के एक राज-महल का नाम है। वह पेरिस के बाहर कुछ मील की दूरी पर है। इसी राजमहल के एक कमरे में विजेता राष्ट्रों और जर्मनी के प्रतिनिधियों ने संधि पर हस्ताक्षर किए थे, इसीलिये इस संधि को वरसाई की संधि कहते हैं। इस संधि में विजेता राष्ट्रों ने बहुत-सी ऐसी शर्तें रक्खी थीं, जिनकी खुल्लमखुल्ला यह मंशा थी कि जर्मनी अपाहिज हो जाय। उसके उपनिवेश छीन लिए गए। उसके जंगी बेड़े का नाश कर दिया गया। उसके हथियार रखा लिए गए। सेना नाम-मात्र की कर दी गई। ये और ऐसी ही और बातें उस संधि में थीं। उन सबका यहाँ उल्लेख करना ज़रूरी नहीं। यहाँ इतना ही कह देना काफ़ी होगा कि उस संधि की शर्तें इतनी अपमान-जनक थीं कि जर्मनी की-सी महाराष्ट्रीय जनता में घोर अशांति व्याप्त हो गई। लेकिन उस समय वे बुरी तरह हार चुके थे। हस्ताक्षर तो उन्होंने संधि पर कर दिए, लेकिन वरसाई से वापस जाने पर जर्मन-प्रतिनिधियों और जनता ने इस अपमान का बदला लेने की अटल प्रतिज्ञा की। प्रतिहिंसा की ज्वाला प्रत्येक जर्मन के हृदय में अनायास ही भभक उठी। लेकिन इस पर भी जर्मनों ने वर्षों तक इस बात की चेष्टा की कि समझौते से वरसाई के अपमान का परिशोध हो जाय। इसमें उन्हें सफलता न हुई। इस असफलता की वजह से जर्मनी में राजनीति की अव्यवस्था क़ायम हो गई, और स्थायी मंत्रिमंडल का बनाना असंभव-सा हो गया। अंत में नाज़ियों के हाथ में शासन की बागडोर आ गई, क्योंकि नाज़ियों ने वरसाई का कलंक मिटाने का दावा किया, और त्रस्त, बद्ध तथा निस्सहाय जर्मनी को वरसाई की अपमान-जनक ज़ंजीरों से मुक्त कर उसे सबल और शक्तिशाली बनाने का वचन दिया। नाज़ियों की विजय से हिटलर शक्ति के सिंहासन पर आसीन हुआ।

नाज़ियों के हाथ में शक्ति आने के बाद जर्मनी ने करवट बदली। वरसाई ने जर्मनी को निरस्त्र कर दिया था। हिटलर ने उसे सशस्त्र बनाया। वरसाई की बदौलत जर्मनी के रूर और सार-प्रांतों में फ्रेंच सेनाओं ने अड्डा जमा रक्खा था। हिटलर ने उन्हें वहाँ से हट जाने के लिये विवश कर दिया। महायुद्ध के बाद आस्ट्रिया का महाविशाल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। जर्मन-प्रमुख आस्ट्रिया यद्यपि स्वतंत्र राष्ट्र था, लेकिन था इतना छोटा कि उसे देखकर पड़ोसियों को उसे हड़प लेने की बरबस इच्छा हो आती थी। जर्मनी ने आस्ट्रिया का स्वतंत्र अस्तित्व मिटाकर उसे अपना एक प्रांत बना लिया। इसके बाद चेकोस्लोवाकिया की बारी आई। चेकोस्लोवाकिया का राष्ट्र भी महायुद्ध के बाद स्थापित हुआ। महायुद्ध के विजेता राष्ट्रों ने चार अनमेल टुकड़ों—बोहीमिया, मोरेविया, स्लोवाकिया और रूथिनिया—को आस्ट्रिया और जर्मन-साम्राज्य से काटकर चेकोस्लोवाकिया-से स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण किया। इस राष्ट्र के पूर्वी, पश्चिमी और उत्तरी हिस्से में जर्मनों की आबादी थी। जिस हिस्से में जर्मन रहते हैं, उसका नाम सूडेटेनलैंड है। इसी सूडेटेन-मसले को लेकर गत सितंबर-महीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जर्मनी ने तलवार उठा ली थी। फ्रांस, इँगलैंड और रूस ने चेकोस्लोवाकिया को विदेशी आक्रमण से बचाने का वचन दिया था। लेकिन हिटलर के आतंक के सामने किसी की न चली, सब देखते ही रह गए। वह साफ़ चेकोस्लोवाकिया को हड़प कर गया। जब सूडेटेन का मसला छिड़ा था, उस समय हिटलर ने आश्वासन दिया था कि योरप में यह इसकी अंतिम माँग है। लेकिन उसकी बात की साख ही क्या। जिस बात के कहने से उसका काम बनता हो, उसे कहने और करने के लिये वह सदा तैयार रहता है। इसीलिये उसने पहले तो चेकोस्लोवाकिया से सूडेटेनलैंड को घसीट लिया, और बाद में अवशिष्ट चेकोस्लोवाकिया के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। इन टुकड़ों में से दो बड़े-बड़े प्रांतों—बोहेमिया और मोरेविया—को तो उसने जर्मन-राष्ट्र का अंग बनाया, और स्लोवाकिया को जर्मनी के संरक्षण में अधीन राष्ट्र का पद दिया। छोटे-छोटे टुकड़े पोलैंड और हंगरी के सामने फेंक दिए, जिसे पाकर जर्मनी के सामने वे कृतज्ञता से नत-मस्तक हो गए। उन्हें उस समय इस बात का ध्यान न रहा कि चेकों के बाद उनकी भी एक-न-एक दिन जर्मन-भेड़िया के सामने आत्मसमर्पण की बारी आएगी। लिथोनिया से उसने मैमनलैंड छीन लिया, और बेचारे लिथोनिया ने चुपचाप जर्मनी की आसुरी शक्ति के इस बलात्कार को सह लिया। मुँह से आवाज़ भी न निकली, प्रतिवाद की कौन कहे।

नाज़ी जर्मनी की नीति

नाज़ी जर्मनी की नीति के दो मुख्य आधार थे—एक तो वह अपने को बोल्शेविज़्म या साम्यवाद का सबसे बड़ा विरोधी कहता था। संसार के कोषों में घृणा और तिरस्कार का ऐसा कोई शब्द न था, जिसे हर हिटलर ने रूस की साम्यवादी हुकूमत की निंदा में प्रयोग न किया हो। सभ्यता और संस्कृति का सबसे भयंकर शत्रु, हर हिटलर के अनुसार, यही था। उस नीति का दूसरा आधार था यहूदियों और यहूदी-संस्कृति का इस संसार से समूल संहार। यहूदियों के साथ जो अकथनीय अत्याचार हिटलर की जर्मनी ने किए, उनकी करुण कहानी रोमांचकारी है। साथ ही नाज़ी जर्मनी का प्रजा-सत्ता में पूर्ण अविश्वास है। पाशविक बल की महत्ता पर नाज़ियों ने सबसे अधिक ज़ोर दिया। युद्ध ही से मानवता का पूर्ण विकास संभव है। युद्ध की तैयारी में राष्ट्र की संपूर्ण शक्ति लगनी चाहिए। इन्हीं सिद्धांतों के अनुसार जर्मनी जल, थल और आकाश की सेनाओं को संवर्द्धित और सुसज्जित करने में पिछले कई साल से रात-दिन लगा रहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि जर्मनी इस समय योरप के सब राष्ट्रों में परम शक्तिशाली और दुर्जेय समझा जाता है। उसकी हुंकार से सारा संसार थर-थर काँप उठता है।

लड़ाई का कारण

वरसाई की संधि ने पोलैंड के लुप्त राष्ट्र को फिर से स्थापित किया। पोलैंड को समुद्र तक पहुँचने का कोई मार्ग नहीं, क्योंकि उसकी सीमा का कोई भी भाग ऐसा नहीं, जिसके पद को कोई भी सागर चूमता हो। पोलैंड में विस्च्यूला-नामक नदी है। उसके सांपत्तिक जीवन का इसी नदी पर दारोमदार है। यह नदी बाल्टिक सागर में जाकर गिरती है। इसी के मुहाने पर डैंज़िग-नामक बंदरगाह है। वरसाई की संधि से डैंज़िग पोलैंड को दिया गया, ताकि पोलैंड को समुद्र तक पहुँचने का स्वतंत्र मार्ग मिल जाय। लेकिन डैंज़िग में जर्मनों की पोलों के मुक़ाबले में कहीं अधिक संख्या है। डैंज़िग के नीचे और पोलैंड की असली उत्तरी सीमा के बीच में जर्मन-राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक भाग पड़ता है। अगर यह भाग जर्मनी के क़ब्ज़े में बना रहता, तो डैंज़िग तक पहुँचने के लिये पोलैंड को स्वतंत्र मार्ग प्राप्त न होता। इसलिये इस जर्मन-प्रदेश का कुछ हिस्सा काटकर पोलों को दे दिया गया। इसे पोलिस मार्ग का कौरीडर कहते हैं। डैंज़िग और पोलिश कौरीडर के ऊपर जर्मनी अपना फिर से आधिपत्य जमाना चाहता था, और जमाना चाहता था इसी प्रकार के बल-प्रदर्शन से, जिसके द्वारा उसे आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया और मैमन पर क़ब्ज़ा करने में कामयाबी हुई थी। इँगलैंड, फ़्रांस और पोलैंड समझौते द्वारा इस मामले को तय करने को उत्सुक थे। हर तरह की कोशिश की गई कि समझौते के लिये जर्मनी तैयार हो जाय, लेकिन उसने किसी की एक न मानी। तलवार के ज़ोर से वह अपने दावे को पोलैंड से मनवाना चाहता था। इँगलैंड और फ़्रांस इसीलिये पोलैंड की मदद कर रहे हैं। उनका कहना है कि अंताराष्ट्रीय झगड़े धमकियों से नहीं, ज़ोर दिखाकर नहीं, बल्कि समझौते से तय करने ही में संसार का कल्याण है।

कुछ राजनीतिक चालें

लड़ाई के पहले योरप में राजनीतिक चालें ख़ूब चली गईं। जर्मनी के साथ इटली, हंगरी, जापान और स्पेन थे। फ़्रांस और इँगलैंड पोलैंड के साथी थे। रूस किसका साथ देगा? यही प्रश्न सबकी ज़बान पर था। जर्मनी से भी अधिक रूस की शक्ति है। इँगलैंड और फ़्रांस ने इस बात की कोशिश की कि रूस उनका साथ दे, लेकिन इसमें वे असफल रहे। नाज़ी जर्मनी और साम्यवादी रूस में, जैसा ऊपर कहा गया है, साँप-छछूँदर का-सा वैर था। वे एक दूसरे को देख नहीं सकते थे, लेकिन विपत्ति की घटाओं से भयभीत होकर नाज़ी जर्मनी साम्यवादी रूस के दरवाज़े पर तटस्थता की भीख माँगने के लिये विवश हो उठा। रूस ने उसके साथ तटस्थता की संधि कर ली। पूँजी-पुजारी फ़्रांस, इँगलैंड और जर्मनी यदि आपस में लड़ मरें, तो रूस के पौ-बारह हैं। इसीलिये शायद वह तटस्थ हो गया। लेकिन रूस के इस काम से संसार को गहरी चोट लगी। उसने स्वतंत्रता के साथ विश्वासघात किया, और क्रूर अत्याचार को मारने में सहायक होने के बदले उसे संधि प्रदान की।

अब क्या होगा?

लड़ाई छिड़ गई है। कितने दिनों तक यह जारी रहेगी, यह कहना कठिन है। इँगलैंड तो फ़िलहाल तीन साल की तैयारी करने में लगा है। इतनी अवधि तक जर्मनी टिका रह सकेगा, इसमें लोगों को बहुत संदेह है, क्योंकि उसकी सांपत्तिक दशा उतनी मज़बूत नहीं, जितनी उसकी सैनिक शक्ति है, और जर्मनी के बाहरी व्यापार को इँगलैंड के जंगी बेड़े आसानी से समाप्त कर सकते हैं। नाविक शक्ति में जर्मनी फ़्रांस या इँगलैंड की तुलना में बहुत कमज़ोर है। पिछली लड़ाई में भी वह रणक्षेत्र में नहीं हारा था। उसकी हार हुई थी इसलिये कि उसकी प्रजा भूखों मरने लगी, और लड़ाई के लिये आवश्यक सामान का बाहर से आना बंद हो गया। यह काम अँगरेज़ी बेड़ों का था। जिन कारणों से पिछले युद्ध में सफलता हुई थी, वे ही कारण आज भी विद्यमान हैं। ऐसी दशा में जर्मनी की हार निश्चित है। लेकिन क्या तीन वर्ष तक लड़ाई चलती रहेगी, और संसार के दूसरे राष्ट्र दर्शक बने यह तमाशा देखते रहेंगे? संभव है, ऐसा हो। यह भी संभव है, ऐसा न हो। ये सब बातें तो भविष्य की गोद में हैं। लेकिन इसमें संदेह है कि ज्यों-ज्यों दिन बीतेंगे, त्यों-त्यों लड़ाई का रूप अधिकाधिक उग्र होता जायगा। यह भी निश्चित है कि लड़ाई का अंत तभी होगा, जब हिटलरी शासन-पद्धति का अंत हो जायगा। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में संसार का कल्याण है। इसी में भावी विकास की आशा संभव है।

पोलैंड के साथ जर्मनी ने जो पाशविक बलात्कार किया है, उसे देखकर कौन ऐसा है, जिसका हृदय करुणा-पूर्ण सहानुभूति से द्रवित न हो।

पोलैंड की निर्दोष, निरीह और स्वतंत्रता-प्रेमी जनता आज अनंत कष्टों का वीरता के साथ सामना कर रही है। उसके गाँवों और नगरों पर आकाश से गोले बरसाए जा रहे हैं, बच्चे, औरतें और मर्द लड़ाई के बवंडर में पड़कर चकनाचूर हो रहे हैं। पौलैंड अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिये लड़ रहा है। लेकिन हमें यह भी न भूलना चाहिए कि उसके जीवन-मरण के प्रश्न पर निर्भर है स्वतंत्रता और अंताराष्ट्रीय सौजन्य का भविष्य। मानव-समाज आज आशंका, भय और आशा के परस्पर विरोधी थपेड़ों से विचलित है। आधुनिक सभ्यता और संस्कृति का जीवन सिर्फ़ एक धागे के सहारे लटक रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में यदि कोई ख़ामोश बैठना चाहे, तो संभव नहीं।

भारत की क्या नीति होनी चाहिए ?

इस लड़ाई में भारत क्या करेगा? इसकी जन-शक्ति अतुलनीय है। सांपत्तिक शक्ति उससे भी कहीं अधिक है। भारत हिटलर की जर्मनी का हृदय से विरोधी है। क्योंकि क्रूर अन्याय और अत्याचार को सहन करना उसके लिये असंभव है। पद-दलित पोलैंड के क्रंदन से वह विचलित हो उठा है। लेकिन सहानुभूति करना एक बात है, युद्ध में भाग लेना दूसरी बात। हमें यह न भूलना चाहिए कि भारत एक ग़ुलाम देश है। स्वतंत्र भारत ही इस बात का निर्णय कर सकता है कि वह किसी अंताराष्ट्रीय झगड़े में किस पक्ष में बोले। साथ ही इँगलैंड की विपत्ति से हम लोग भी कोई लाभ नहीं उठाना चाहते। संसार के कल्याण में भारत का कल्याण है। भारत की स्वतंत्रता का क्या मोल होगा, यदि फ्रांस और जर्मनी विजयी हों, या जर्मनी की शक्ति बहुत दिनों के लिये क्षीण हो जाय। लेकिन जहाँ अंताराष्ट्रीय दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार करना है, वहाँ भारत के लिये अपने हिताहित की भी बात सोचनी आवश्यक है। यह ख़ुशी की बात है कि फ़ेडरेशन का ताज़िया ठंडा हो गया, लेकिन इससे न समस्या सुलझी, और न सुलझ सकती थी। केंद्र में जब तक भारत के लोकप्रिय नेता शासन की बागडोर अपने हाथों में नहीं लेते, और जब तक अनुत्तरदायी शासन का बोलबाला है, तब तक कौन यह कह सकता है कि भारत का सहयोग एक स्वतंत्र राष्ट्र का सहयोग है। हमें ख़ुशी है कि महात्मा गांधी और वायसराय महोदय इस बात में सहमत हैं कि इस समय भारत में एकता की परमावश्यकता है। जब तक हम एक स्वर से नहीं बोल सकते, तब तक हमारे बोलने की कोई वक़त नहीं।

दुनिया में हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद-टॉनिक शारीरिक समस्त त्रुटियों को पूरा कर, स्वास्थ्य को सुधारकर, झुर्रियाँ नष्ट कर, आँख की रोशनी तेज़ कर, बाल का पकना रोककर, बूढ़ा, जवान, सभी का पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी न रक्खे और झूठा साबित हो, तो १००) देने की शर्त। दाम ५) फ़ी शीशी।

पता—जड़ी-बूटी-दवाखाना, पो० बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! छप गया !!

कुली भाट

कवर-डिज़ाइन उल्टा पेड़

लेखक—श्रीनिराला

मूल्य सादी १)
सजिल्द १॥)

१. हास्यरस की अभूतपूर्व छटा ।
२. जीवनी, कथा, स्केच एक साथ ।
३. आदर्श गद्य अलंकृत और सरल ।
४. साधारण जीवन का असाधारण रूप ।
५. कल तक जो नहीं था ।
६. बीसवीं सदी की मेख ।
७. उल्टी गंगा ।
८. आठवाँ चमत्कार ।

मिलने का पता—

अध्यक्ष—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप रही है ! छप रही है !!

चूहों की राजकुमारी

(बच्चों का सचित्र, जासूसी उपन्यास)

लेखक—कुमार बुद्धिभद्र

एक जमाना वह था, जब चूहों के भी क़िले थे, सल्तनत थी, फ़ौजें थीं, राजा, सेनापति, सामंत, सभी कुछ।

उसी जमाने में, जब चूहों के राजा महाराज मार्तंड राज्य करते थे, उनके ताक़तवर सेनापति छल्ला ने उन्हें मरवाकर उनकी लड़की से शादी करनी चाही, और सामंत अंबर-नामक एक चूहे ने उनके इस काम में बाधा डाली। फिर किस तरह इन दो बुद्धिमान् चूहों ने आपस में दाँव-पेंच लड़े, बिल्लियों और चीलों ने क्या उपद्रव मचाया, और मेंढकों के राजा कोली ने कैसे कर्तब दिखाए, यह जानने के लिये 'चूहों की राजकुमारी' पढ़िए।

एक बार उसे पाकर बच्चे छोड़ने का नाम न लेंगे। मनोरंजन के साथ ही उन्हें अच्छी शिक्षाएँ भी मिलेंगी। आज ही ऑर्डर दीजिए। मूल्य लगभग ।।)

बाल-साहित्य मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक
हिंदी के क्रांतिकारी लेखक
श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उसके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर-नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहख़र्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—

मैनेजर—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! प्रकाशित हो गया !! छप गया !!!

ला-मज़हब

हिंदी के कहानी-साहित्य में क्रांतिकारी प्रकाशन !

श्रीबलभद्रजी दीक्षित के उपनाम 'पढ़ीस' से हिंदी-पाठक भली भाँति परिचित हैं। उनकी देहाती बोली में लिखी कविताओं ने शिक्षित-अशिक्षित श्रोताओं और पाठकों को समान रूप से मुग्ध किया है। इसका कारण उनके अनुभव की सचाई है। वह सचाई इस संग्रह की कहानियों की भी जान है। उन्हें देहाती जीवन का बहुत सूक्ष्म ज्ञान है, जिसका इन कहानियों में उन्होंने बहुत कला-पूर्ण ढंग से प्रयोग किया है। ख़ासकर ग़रीबों और समाज से ठुकराए हुओं का ऐसा सजीव चित्रण अभी तक हिंदी में नहीं हुआ। उनका पतन देखकर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। लेकिन जब लेखक के साथ उनकी परिस्थितियों की ओर ध्यान देंगे, तो आपका हृदय सहानुभूति से पसीज उठेगा।

देहात के कटु वर्ग-संघर्ष का चित्र आपको यहाँ देखने को मिलेगा। ग़रीबी और पतन के बीच उच्च मनुष्यता की झाँकी देख आप मुग्ध हो जायँगे। इन कहानियों में एक नई संस्कृति की ओर इंगित है, जहाँ मनुष्यता से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं माना गया। 'ला-मज़हब' ने छोटे मज़हबों को तोड़ दुनिया के सामने एक और बड़े मज़हब को लाकर रक्खा है। भाषा ज़ोरदार और सीधी, चरित्र-चित्रण सजीव और कथानक रोचक तथा कुतूहल उत्पन्न करनेवाले हैं। निश्चय यह हमारे कहानी-साहित्य में एक नया क़दम है। सभी साहित्य-प्रेमियों को एक बार इस पुस्तक को ध्यान-पूर्वक पढ़ना चाहिए। मूल्य सादी ।।।), सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी पार्वती

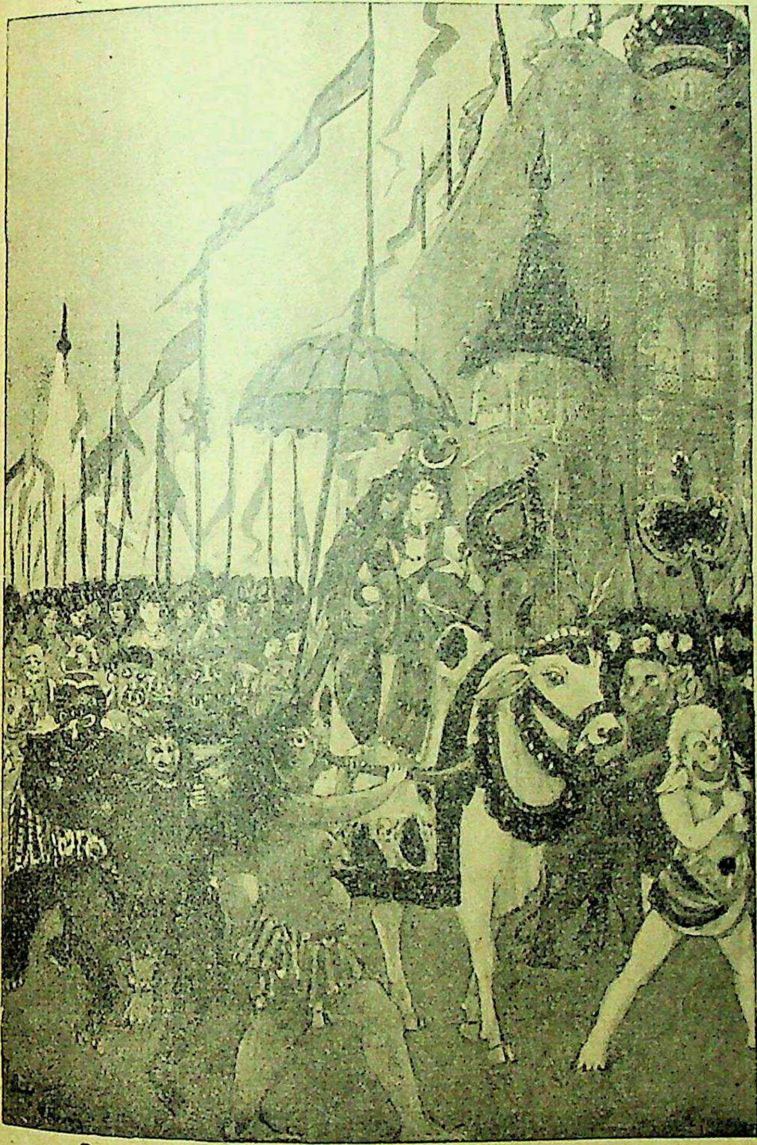

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी जहूरबख़्श हिंदी-कोविद। इसमें जगज्जननी देवी पार्वती का जन्म, विवाह-संबंधी नारद की भविष्य-वाणी, पार्वतीजी की तपस्या, शिवजी की आराधना, शिवजी का प्रसन्न होना; उनका विवाह, पार्वतीजी का हठात् अपने मैके जाना, वहाँ उनका अनादर, स्वामिकार्त्तिक का जन्म, तारकासुर-वध आदि सभी एक-से-एक रोचक, ज्ञातव्य और मनोरंजक बातें बड़ी सुंदर, सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई हैं। अनेक रंगीन और सादे चित्रों ने तो इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है। पृष्ठ-संख्या १५०; मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों की सेज

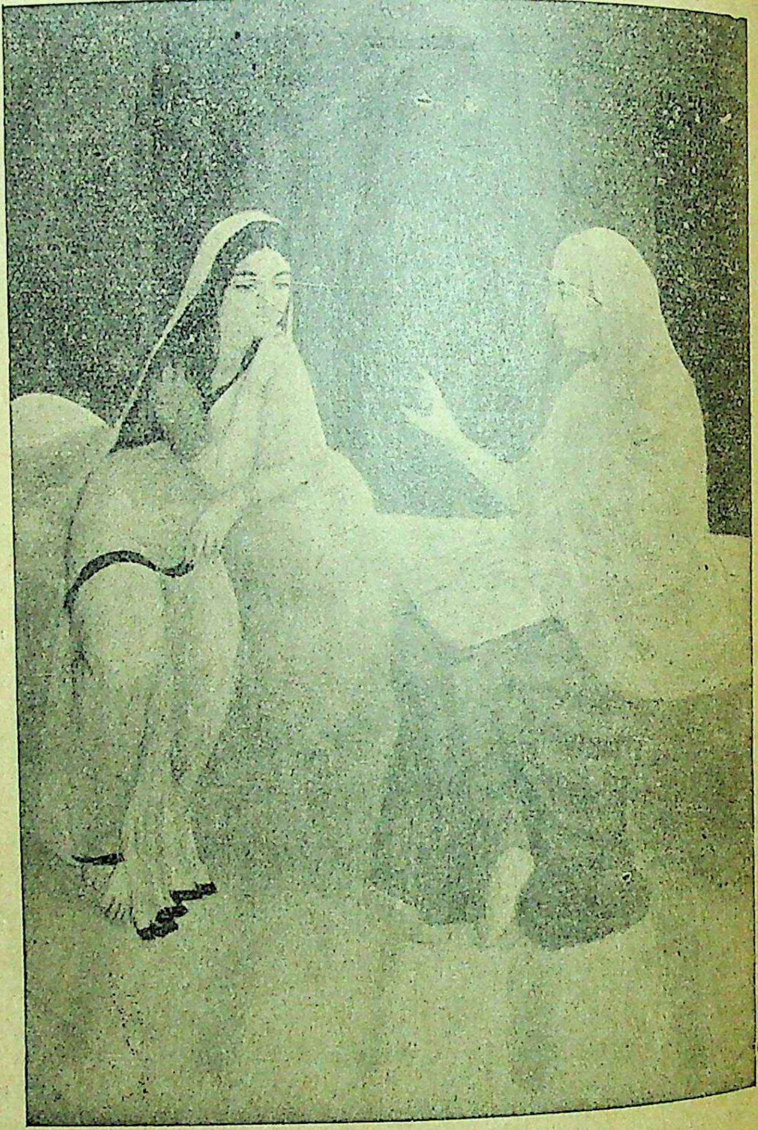

लेखक, श्रीविजय-बहादुरसिंह बी० ए०। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। वर्णन दो स्त्रियों के परस्पर वार्तालाप के रूप में है। गार्हस्थ्य सुख की पूर्ण अभिज्ञता रखनेवाली एक शिक्षिता, प्रौढ़ा रमणी एक नव-विवाहिता युवती को उपदेश देती है। और, वह उपदेश आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुकूल अर्थात् अप-टु-डेट है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं – यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतुबाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौर्हृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है और प्रत्येक स्त्री के लिये आवश्यक ज्ञान की वस्तु। भाषा बड़ी ही सरल और सुंदर है। वर्णन ऐसी उत्तमता से हुआ है कि इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं है, और इसे शिक्षित माता-पिता निस्संकोच भाव से अपने पुत्र-पुत्रियों और वधुओं के हाथों में दे सकते हैं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LET US ADVERTISE YOUR BUSINESS !

Mrs. Sarojini Naidu. 27th Nov. 1938.

..........I hope that your magazine "Mahila" will be of great educative interest to all women and deal with vital subjects concerning the social & economic welfare and progress abroad enlightened and courageous spirit in keeping with the need of our modern generation.

Sarojini Naidu

A. H. Wheeler & Co. 15, Elgin Road,
No. 480 *Allahabad, 14-1-1939.*

Dear Sir,

MAHILA HINDI MAGAZINE.

With reference to your letter dated the 14th instant acceptin our terms re. Sale of above on our Bookstalls, please continue sending copies of the magazine to our stall keepers from February 1939 issue as per our list sent you. Meanwhile we will advise our agents to accept your magazine for sale.

The Manager,
"Mahila"
132/1, Harrison Rd.,
Calcutta.

Yours faithfully,
A H Wheeler & Co

"MAHILA"

The only Hindi Monthly tremendously popular for most modern and attractive display of Advertisements.

Being sold all over India, through Agencies & Bookstall Agents of M/s. A. H. Wheeler & Co., leading Railway Bookstalls and Book Depots etc.

Subscription Rates *(payable in advance)*

		Inland		*Foreign*
Yearly	Rs.	4 -	Rs.	8/-
Half-yearly	,,	2/8/-	,,	5/-
Single Copy	,,	-/6/-	,,	-/12/-
Life Subscription	,,	101/-	,,	201/-

Permanent subscribers are entitled to get all the Special Numbers of the "Mahila" **FREE.**

All correspondence to :—

General Manager, "MAHILA,"
132/1, Harrison Road, Calcutta.

ADVERTISEMENT RATES
OF
The "MAHILA"
132-1, HARRISON ROAD,
CALCUTTA.

Ordinary Positions

	One Insertion.	*Six Insertions.*	*Twelve Insertions.*
	Rs.	Rs.	Rs.
1 full page	25/-	120/-	225/-
$\frac{1}{2}$ page	15/-	72/-	135/-
$\frac{1}{4}$ page	9/-	43/-	81/-
$\frac{1}{8}$ page	5/-	22/8/-	48/-

Special Positions

	One Insertion.	*Six Insertions.*	*Twelve Insertions.*
	Rs.	Rs.	Rs.
Page against art plate & back	30/-	144/-	270/-
2nd Cover page	40/-	192/-	360/-
3rd Cover page	40/-	192/-	360/-
4th Cover page	60/-	288/-	540/-

Technical Details of size

Full page	....	8"×6"
Half page	....	4"×6"
Quarter page	....	4"×3"

Advertisements sent in English are carefully translated into Hindi by an expert and this Service is free to our advertisers.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन, जागृति तथा कर्मण्यता की सन्देश-वाहिका उच्च कोटि की

मेसर्स ए०एच० ह्वीलरके रेलवे-बुक-स्टालसे खरीदिये या— | सचित्र मासिक | ।=) के टिकट भेजकर सीधे कार्यालय से मंगाइये।

संचालक — जे०एल०कड़ोकर

"महिला"

वार्षिकमूल्य—देशमें ४) रु०, विदेशमें ८) रु०
एक प्रति ,, ।=) आ०, ,, ।।।) आ०

सम्पादिका— सीता देवी

विचारपूर्ण गम्भीर लेख, प्राण-संचारकारी कवितायें, निर्भीक अग्रलेख और टिप्पणियां, मनोरंजक कहानियां, राष्ट्रीय विषयोंकी चर्चा, घरेलू नुस्खे, हास-परिहासकी बातें, बालिका-विनोद, उर्दू-शायरी, तिरंगा कवर, दर्जनों चित्र, उत्तम छपाई, आकर्षक गेट-अप तथा चित्ताकर्षक आकर्षण !

हमारा विश्वास न कीजिये, देखिये, "ट्रिब्यून" क्या कहता है—

"महिला" भारतकी विद्रोही महिलाओंकी मुख पत्रिका है। इसके प्रकाशनका उद्देश्यही है, पुरुष द्वारा नारीपर होनेवाले अत्याचारोंके विरुद्ध बग़ावत करना ! यह अधिकारोंकी समानता तथा महिलाओंको ××× अधिकार दिलानेकी कट्टर समर्थिका है। ××× महिलाओंसे सम्बन्ध रखने वाली बातोंके अतिरिक्त "महिला" में सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों पर दिलचस्प लेख रहते हैं।"

यदि आप मातृ-जातिकी उन्नतिके समर्थक हैं और अपनी बहू-बेटियोंको एक सुयोग्य एवं सुशिक्षिता गृहणीके रूपमें देखना चाहते हैं तो आज ही ४) भेजकर उन्हें ग्राहिका बना दीजये। "महिला" उन्हें नवीन युगका नया सन्देश सुनायेगी।

"महिला" की उपयोगिताको सरकार भी स्वीकार करती है।

बिहारकी सरकारने अपने पत्र-संख्या १३७४ ई० ता० १७-९-३९ द्वारा तथा सी० पी० और बरारकी सरकारने अपने पत्र संख्या १९०८ ता० १९-७-३९ द्वारा अपने-अपने प्रान्तके समस्त स्कूल, लायब्रेरी तथा स्कूल-होस्टल आदिके लिये "महिला" को स्वीकार किया है।

क्या यह यथेष्ट प्रमाण नहीं है कि "महिला" निःसंकोच बहू-बेटियोंके हाथोंमें देकर निश्चिन्त रहा जा सकता है!

"महिला" का नव-वर्षांक

"महिला" ने अपने द्वितीय वर्षके प्रथम अंकको—जो आगामी अक्टूबर मासमें प्रकाशित हो जायगा—नव-वर्षाङ्कके रूपमें निकालनेका निश्चय किया है। हमारी कामना है कि नव-वर्षाङ्कमें वर्तमान भारतीय महिलाएं राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तथा साहित्यिक क्षेत्रमें जो कुछ कर रही हैं या करने जा रही हैं, उसका इस नव-वर्षाङ्कमें पूर्ण दिग्दर्शन तो करायाही जाय साथ ही विभिन्न स्वतन्त्र विषयोंपर भी नाना प्रकारके लेख, कहानी, कवितादि तथा चित्र एवं कार्टून आदिसे सजाकर इसे पठनीय एवं संग्रहणीय ग्रन्थ बना दिया जाय।

हमें विश्वास है, इस प्रकार यह नव-वर्षाङ्क अपने ढंगका निराला होगा। इसकी क़ीमत एक रुपया होगी, मगर पहलेसे ग्राहक बननेवालोंको नव-वर्षाङ्क मुफ्त मिलेगा।

नोट—सीमित संख्यामें कुछ सौ प्रतियां ग़रीब व्यक्तियों तथा सस्थाओंको आधे मूल्यमें अर्थात् २) में दी जायेंगी। नमूनेके लिये ।=) के टिकट भेजना आवश्यकीय हैं; मुफ्त नहीं भेजा जाता। वी०पी० भेजनेका भी नियम नहीं है।

महिला कार्य्यालय,
१३२।१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

चतुर्वेदी जवाहिरलाल शर्मा,
जेनरल मैनेजर, "महिला"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पत्र के इसी अङ्क का क्रोड़-पत्र !

महिला की माँग

? ? ?

कहना नहीं होगा कि भारतीय नारी-समाज सदियोंसे दासताकी जिन मज़बूत बेड़ियोंमें जकड़ा चला आ रहा है और जिस प्रकार अविद्याके अन्धकारने उसके मार्गको और भी अवरुद्ध कर दिया है तथा संसारकी परिस्थितियोंसे-राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय हलचलोंसे-वह जिस प्रकार अनभिज्ञ रहा है उसके फलस्वरूप उसकी कितनी अधोगति हुई है ? और उसकी इस अधोगतिके कारण राष्ट्रीय उन्नतिमें जो क्षति पहुंची है, पहुंच रही है तथा पहुंचेगी उसके स्मरण मात्रसे ही आधुनिक भारत भयभीत हो उठता है, यही कारण है कि आज वह मातृ-जातिको सुशिक्षित बनाकर उसे अधिक से अधिक उन्नत बनानेके लिये सचेष्ट है। किन्तु जैसा कि सी० पी० और बरारके प्रधान मन्त्री, माननीय पं० रविशंकरजी शुक्लने "महिला" को सन्देश देते हुए लिखा है कि, "भारतीय महिलाओंकी समस्यायें केवल स्त्रियों ही द्वारा ठीक-ठीक तौरसे समझी और हल की जा सकती हैं। हर महीने ऐसे विषयों पर प्रकाश डालना जिनसे स्त्रियोंको गम्भीर शिक्षा मिले और वे उनके लिये पथ-प्रदर्शक सिद्ध हों और उन्हींमेंसे किसी द्वारा सम्पादित हों; यह समयकी मांग है।"

हमें प्रसन्नता है कि इस समयकी मांगको आप भी समझते हैं। बस, इसी समयकी मांगकी पूर्तिके लिये प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्री श्रीमती सीता देवीके सुयोग्य सम्पादकत्वमें "महिला" का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य है नारीपर होनेवाले अत्याचारोंके विरुद्ध आवाज़ बुलन्द कर बग़ावत करना और उनके अधिकारोंके लिये लड़ना। इसमें ऐसे विषयोंका समावेश किया जाता है जिनके पढ़नेसे अशिक्षिता नारी सुशिक्षिता बन जाती है और अयोग्य गृहणी सुयोग्य गृहणीके रूपमें परिणत हो उठती है। यहीं तक नहीं, इसका महत्व स्त्री और पुरुष दोनोंके लिये एक-सा है, इसमें कुछ ऐसे विषयों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे कितने ही दुखी जोड़े सुखी बन जाया करते हैं; पति-पत्नी दोनोंमेंसे किसी एककी भूल अथवा मूर्खता-वश जिनका दम्पत्ति-जीवन असफल हो चुका हो वे भी सानन्द सफल जीवन व्यतीत करने लग जाते हैं।

इस प्रकार "महिला" नर और नारी दोनोंको उनके कर्तव्योंका ज्ञान करा, एक दूसरेके प्रति सम्मानका भाव पैदा कर पारिवारिक जीवन सुखी बनानेमें मदद पहुंचावे और मुख्यतः नारीको अपना व्यक्तित्व समझानेमें समर्थ हो और उसकी विवशताओंका अन्त कर दे; इसी पवित्र उद्देश्यसे "महिला" को जन्म दिया गया है। किन्तु, हमारे उक्त उद्देश्यकी सफलताका दारोमदार आप ऐसे सुयोग्य भाई एवं बहनोंके सहयोगपर निर्भर है। हमें स्मरण है कि २० वीं शताब्दीके आरम्भमें एक अंग्रेज महिलाने इंग्लैण्डमें "वोट्स फार वीमन" (Votes for women) नामक स्त्री सम्बन्धी एक मासिक पत्रिका निकाली थी और उसकी ग्राहक संख्या एकही वर्षके अन्दर बढ़कर ४० हजार हो गई थी। हम चाहती हैं, हमारा विशाल भारत उस रेकॉर्डको तोड़ दे, हमारी इच्छा है, आपके सम्पर्कमें आनेवाला एक भी ऐसा व्यक्ति न बचे जो "महिला" का ग्राहक न हो। एक बहिनके नाते हमारी आपसे यही अपील है—मांग है! आशा ही नहीं बल्कि दृढ़ विश्वास है कि हमारी यह अपील मंजूर होगी और आप अपने सभी परिचितोंको "महिला"—परिवारमें सम्मिलित होनेके लिये बाध्य करेंगे तथा उनसे भी हमारी ओरसे यही प्रार्थना करनेकी दया करेंगे।

और यदि आप—

विज्ञापनदाता हैं तो विज्ञापन देकर, लेखक या कवि हैं तो लेख अथवा कवितादिसे 'महिला'को सहायता करें।

महिला-कार्यालय,
१३२।१, हरिसन रोड, कलकत्ता।

भवदीया,
शान्ता देवी चतुर्वेदी
व्यवस्थापिका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JUST SEE WHAT THEY SAY?

Mrs. Sarala Devi Chaudharani.

15-9-38.

I congratulate Srimati Sita Devi on her awakening to the consciousness of indebtedness to her surrounding and wish her every success in her attempt to lighten the obligation by starting a Hindi Ladies' magazine in Calcutta.

Mrs. Hansa Mehta, *Parliamentary Secy., Educational Dept., Bombay.*

Council Hall, Poona,
21st Sept. 1938.

I am glad to note that you are bringing out "Mahila" a Hindi Magazine, devoted mainly to the cause of the betterment of Indian women. I wish your endeavour every success.

Hon'ble Mr. K. M. Munshi, *Home Minister, Bombay.*

कॉन्सिल हाल, पूना, २७-९-३८

मुझे यह सुनकर अतिशय आनन्द हुआ किआप 'महिला' नाम की मासिक पत्रिका प्रसिद्ध करते हैं, मैं इस पत्रिका के लिये यश चाहता हूं।

Mr. S. Satyamurti, *M. L. A. (Central.)*

Madras, 3rd Oct. '38.

..........I congratulate you on starting a Hindi monthly Magazine the "MAHILA" mainly devoted to the cause of the betterment of Indian women. I wish you all success.

Hon'ble Pt. Govind Ballabh Pant,

Premier, U. P.
Lucknow, Nov. 21, 1938.

..........Glad to see your Magazine "Mahila". It contains useful and interesting articles.

P. Secy. to the Hon'ble Premier.

Hon'ble Pt. R. S. Shukla, *Prime Minister, C. P. & Berar.*

Nagpur, 3.11.38.

... .The problems of the womanhood of India can truly be appreciated by only women. A monthly dealing with the subject that instructs and delight the Ladies and edited by one of them is therefore a necessity of the time. Your monthly undoubtedly fills this want and I wish it success.

Mrs. Lilavati Munshi, *M. L. A., Bombay.*

8, Queens Garden,
Poona, 14th Nov. 1938.

..........It is really for us women to cultivate public opinion with regard to many of the social evils.

The get up of your Journal is nice and I wish every success in your effort.

Thanking you again,

श्रीयुक्त डा० बा० शि० मुंजे

कलकत्ता, २९-९-३८

आप हिन्दी 'महिला' मासिक पत्रिका स्त्रियों की उन्नति के लिये निकालते हैं ऐसा जानकर बड़ा सन्तोष हुआ। * * * * यह कार्य्य पवित्र कार्य्य है और इन उद्देश्यों से आप अपना कार्य्य आरम्भ करेंगे तो परमेश्वर आपको अवश्य सफलता देगा और हिन्दू-समाज आपको धन्यवाद देगी।

Hon'ble Dr. Syed Mahmud, *Minister of Education, Bihar.*

Patna, 17-10-38.

It gave me great pleasure to hear of your project of publishing the "Mahila" a Journal devoted to the furtherance of the cause of women. The expansion of education among our sisters is indispensible for the advancement of our country and I sincerely hope and trust that your Journal will be a powerful agency for promoting the welfare of our nation in general and of our women in particular.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का मनोरंजन करनेवाला

बाल-विनोद

जनवरी का अंक वसंतांक है !

मार्च का अंक होलिकांक है !!

अगस्त का अंक कविता-अंक होगा !!!

ग्राहक बनकर कोई एक विशेषांक मुफ़्त लें

इसमें क्या है ?—सुनिए—

१. मुख-पृष्ठ पर प्रतिमास नई नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति।
२. प्रथम पृष्ठ पर २ दुरंगे तथा १ तिरंगा चित्र।
३. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४० पृष्ठों का मैटर।
४. मज़ेदार बालकोपयोगी कहानियाँ और शिक्षाप्रद हास्यरस की कविताएँ।
५. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन।
६. देश-विदेश की अनोखी बातें।
७. २५ इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो उठेंगे।

वार्षिक मूल्य २॥)

आप अपने बच्चों के लिये इसे अवश्य मँगाइए !

हमारा दावा है कि बच्चों के लिये ऐसा सुंदर और अनूठा पत्र और कोई नहीं है।

इसके संपादक हैं

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

ऑर्डर भेजने में देर मत कीजिए !

पता—मैनेजर, बाल-विनोद, कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712.

'सितारों' का अनुसरण कीजिये

आपकी प्रिय अभिनेत्री लीला देसाई कहती हैं:"खोई हुई स्फूर्तिकी पुनः प्राप्ति के लिये भारतीय चायके समान कुछ भी नहीं है"। आपने लक्ष्य किया होगा, चायकी स्फूर्तिदायिनी शक्ति पर ही वे जोर देती हैं। छाया-चित्रमें जिन्हें देखकर आप मुग्ध हो जाते हैं, उनका काम कुछ सहज नहीं है—न उनके काम करनेका समय ही बंधा हुआ है और न उन्हें समय पर विश्राम ही मिलता है। इतना कड़ा काम करते हुए, यदि वे चायका आश्रय न लें तो उनका शरीर तथा मन तरोताजा हो ही नहीं सकता।

भारतीय चाय सब 'सितारों' को प्रिय है

I K 127

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली अष्टवर्ग भावप्रकाशोक्त

(१) जीवक कूर्चिकाकारो मधुरः (२) ऋषभो वृषशृङ्गवत् (३) शुष्कार्द्रकसन्निभः कन्दो- लता जातः सपाण्डुरः (४) मेदा महामेदा का लक्षण ।

प्रसिद्ध महानुभावो तथा वैद्यबंधुओ ! यह किसी से भूला नहीं कि निर्बलता, दमा, पुरानी खाँसी, कफ की व्याधियों, श्वास-यंत्र-संबंधी रोग तथा यक्ष्मा-जैसी रोगराट् बीमारियों को मर्दन करनेवाली "च्यवन-प्राश" रसायन में हिमालय पर्वत के अंचल में लहरानेवाली बहुपयोगी किंतु दुर्लभ इन "अष्टवर्ग" की ओषधियों का ही विशेष भाग है। अतः इनको हम बड़ी कठिनता से प्राप्त करते हैं। अपनी इच्छानुसार मँगा लें।

असली अष्टवर्ग के गुण

अष्टवर्गो हिमः स्वादु बृंहणः शुक्रलो गुरुः ।
भग्नसंधानकृत्काम-बलालं बलवर्धनः ॥
वातपित्तास्रतृड्दाह - ज्वर-प्रमेह-क्षय-प्रणुत ।

अष्टवर्ग शीतल, मीठा, रसायन, वीर्य बढ़ानेवाला, टूटे स्थान को जोड़नेवाला, काम-शक्ति-वर्द्धक, बल को क़ायम रखनेवाला तथा बलवर्धक है, और वात-पित्त, रक्त-विकार, तथा तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षय का नाश करता है। वैद्य मित्र ! इन उत्तम रासायनिक ओषधियों का दर्जा कितना ऊँचा है, यह भी आपसे भूला नहीं। ऐसी गुणकारी जड़ी-बूटियों के मेल से जो दवाइयाँ तैयार की जाती हैं, उनसे बीमारों को कितना लाभ हो सकेगा, इसका अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं। बहुत-सी फ़ार्मेसियाँ नक़ली अष्टवर्ग सस्ता बेचकर वैद्यक को बदनाम कर रही हैं, उनके धोके से बचें, और हमारे अष्टवर्ग को एक बार आज़माकर परीक्षा करें। मूल्य १६) रु० सेर, डाक-व्यय अलग।

मृत संजीवनी दवा

भारत-सरकार से रजिस्टर्ड— अनेक रोगों पर रामबाण ओषधि—

अमृत के समान गुणकारी नौ ओषधियों के योग से तैयार की गई यह अकेली दवा शारीरिक सामर्थ्य को क़ायम रखनेवाली तथा मस्तिष्क-शक्ति को बल प्रदान करनेवाली, किंतु अजीर्ण, दस्त, उल्टी, हैज़ा, अरुचि, श्वास, खाँसी, ज्वर, हिचकी, आधाशीशी, उदर-शूल, कमर का दर्द, सूज़ाक, गर्मी, बिच्छू आदि जहरीले जानवरों का दंश इत्यादि अनेक रोगों में अपूर्व गुणकारी है। हर एक को सफ़र में और घर में हर समय जेब में रखनी चाहिए। सफ़र में या रात के वक़्त, तथा छोटे गाँवों में, जहाँ समय पर वैद्य या डॉक्टर और हकीम का मिलना मुश्किल होता है, बड़ा काम देती है। प्रसिद्ध महानुभावों तथा चिकित्सक समुदाय ने भी इसकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। एक बार आज़माकर परीक्षा कीजिए, सेवन-विधि, अनुपान व पथ्य-विधि साथ में भेजी जायगी। छोटी शीशी का मूल्य ॥=), बड़ी शीशी का मूल्य १) डाक-व्यय अलग।

मैनेजर, अष्टवर्गप्रयोगशाला फ़ार्मेसी (Regd) श्रीहनुमत-निवास, चित्रकूट (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ | लाभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरबों-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सब इच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई, मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंध-धुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह'-यंत्र

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान् ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

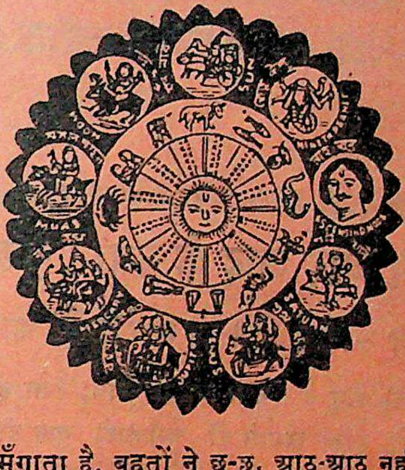

वग़ैरह हर एक कार्य पूर्ण होगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा तथा आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्रका मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३) सोने का ६॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ।।), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनबाद बी० ए० क्लास, वेलिंगटन-कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं० जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपाकर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५०) इनाम

आश्चर्यजनक, शक्तिदायक सिद्ध यंत्र—जिस सुंदरी को आप चाहते हैं, वह पत्थरहृदया क्यों न हो, इस शक्तिशाली यंत्र द्वारा एक क्षण में आपके पास आ जायगी। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबा २)

लक्ष्मी-यंत्र—यह व्यवसाय में उन्नति, मुक़दमा, कुश्ती, लाटरी में जीत, परीक्षा में पास, नवग्रहों की शांति और सौभाग्यवान् बनाता है। मूल्य चाँदी ३), सोना ५), ताँबे का २)। झूठा साबित करने पर ५५०) इनाम!

श्रीमहामुनि-आश्रम नं० २१०, पोस्ट कतरीसराय (गया)

दाद की सर्वोत्तम और जादू के समान गुण दिखानेवाली दवा

इससे ३ दिन में दाद को आराम होने की गारंटी है, फ़ायदा न हो, तो दाम वापस।

यह दवा नहीं, बल्कि सच्चा जादू है। नया अथवा पुराना कैसा ही दाद हो, खाल फूल गई हो, खुजली बेताब किए डालती हो, इसके लगाते ही चमत्कारी गुण दीखने लगता है। दाद को हमेशा के लिये जड़ से खो देनेवाली यह एक ही दवा है। इसके लगाते ही ठंडक पड़ जाती है, और अन्य दवाओं की तरह जलन और तकलीफ़ नहीं होती। क़ीमत फ़ी डिब्बी ≡), १ दरजन १।≡), २ दरजन २॥), ४ दरजन ४।॥) ; डा०, पै०-ख़र्च अलग।

पता—बिहारी ऐंड कंपनी, अरक, पो० सोवाँ (आरा)

दम के लिये	**श्वासकासारी अवलेह**	खाँसी के लिये

दम, श्वास, खाँसी, छाती में दर्द व जलन, पसलियों की सूजन, फेफड़े व श्वास-नली का दर्द इत्यादि रोगों को दूर करके शरीर सशक्त बनाता है, क़ीमत २० तोले का डिब्बा १।)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी हेडऑफ़िस जामनगर (काठियावाड़)

लखनऊ—निगम मेडिकल हाल, अमीनाबाद रोड :: बनारस—राधेलाल एन्डसन्स, चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
१. तन्मयता (कविता)—[लेखक, श्रीदुलारेलाल भार्गव	२०६
२. मालव में पावस (कविता)—[लेखक, कविवर श्रीगोपालसिंह नेपाली	२१०
३. कुछ मौलिक ग्रामीण समस्याएँ—[लेखक, श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०	२११
४. बदला (कविता)—[लेखक, कविवर आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव	२१६
५. पथ (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत 'नवल' प्रभाकर	२२०
६. चीन-जापान-युद्ध—[लेखक, श्रीयुत पन्नालाल श्रीवास्तव एम्० ए० ...	२२७
७. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह	२३३

आपका भाग्य

आप हमको सिर्फ़ एक पोस्टकार्ड में अपना पूरा नाम, पता व पत्र लिखने का समय लिख भेजिए। हम आपको ११) की वी० पी० से आपके आनेवाले १२ महीनों का पूर्ण विवरण, जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त आपके व्यापार में हानि या लाभ, तरक़्क़ी, नौकरी में वृद्धि अथवा कमी, पैदाइश या शादी, प्रसन्नता और शारीरिक व्याधियाँ इत्यादि के बाबत लिख भेजेंगे।

एक दफ़ा की आज़माइश ही हमारी सत्यता को साबित करेगी।

किन्हीं पाँच प्रश्नों का ठीक उत्तर ११) में। डाक-व्यय पृथक्।

नोट—हमारे पास सहस्रों प्रशंसा-पत्र हैं। बेफ़ायदा साबित करने पर १००) इनाम।

मैनेजर योगाभ्यासी आश्रम, पोस्ट-बॉक्स १६५, लाहौर

जे० बी० मंघाराम कम्पनी का
इनर्जी फुड बिस्कुट

बच्चों को तंदुरुस्त और ताक़तवर बनाने के लिये लाभदायक साबित हो चुका है, क्योंकि इसमें (Condensed Milk) कन्डेंस्ड मिल्क, (Glucose) गुल्कोज़ और दूसरी कई चीज़ें इस्तेमाल की गई हैं। इसे बच्चे खुशी से खाते हैं।

जे० बी० मंघाराम कं० सक्खर (सिन्ध)

मिलने का पताः—लखनऊ-एजेंट—ए० एम्० चंदवनी, ३२, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ।
A. M. Chandwani, 32, Aminabad Park, Luckno.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. हिंदू-समाज तथा धार्मिक विकास— [लेखक, रावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेव-विहारी मिश्र	पृष्ठ २३४
९. दौलतपुर का तिरस्कृत दुबौना— [लेखक, श्रीयुत देवीरत्न अवस्थी ...	२४७
१०. अंतर्भान एक महान् दिव्य शक्ति है— [लेखक, 'कल्पवृक्ष' - संपादक डॉ० दुर्गाशंकर नागर	२५५
११. धुआँधार (सचित्र, कविता)—[लेखिका, श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव	२६१
१२. उपकार का बदला (कहानी)— [लेखिका, कुमारी कामिनीदेवी सेठ ...	२६३
१३. योग और स्वास्थ्य—[लेखक, श्रीयुत गणेशदत्त 'इंद्र' आगर	२७१
१४. कर्णधार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास	२७४

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सर्दी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन'

आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर — अध्यक्ष मथुरा बाबू का — मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२।१, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी
बंगाल से बाहर की शाखाएँ:—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांच:—२, श्रीरामरोड, लखनऊ इत्यादि।
ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में
मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।
अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिष्ट और फ़िज़िसियन

पत्र और मनी-ऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)
आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१५. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत राजकिशोर कक्कड़, श्रीयुत दयाशंकर शर्मा, श्रीयुत उमाशंकर तिवारी 'समीर' साहित्यालंकार, एक इंदौर-प्रेमी, श्रीयुत देवर्षि सनाढ्य 'पुष्प' शास्त्री, 'सुमन'-संपादक, श्रीयुत करुण और श्रीयुत रघुनाथ गुप्त विशारद २७५

१६. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत 'उमेश' एम्० ए० और श्रीयुत रामदत्त शुक्ल एडवोकेट २८८

१७. कुसुम २९२

१८. धारा २९३

---

१५०) इनाम

आश्चर्यजनक शक्तिवाले सिद्ध यंत्र

(१) वशीकरण यंत्र—इस यंत्र के प्रभाव से दोस्त या दुश्मन पुरुष या स्त्री कैसी ही कठोर-हृदय क्यों न हो, शीघ्र आपके वश में हो जायगी। मूल्य चाँदी का २।।), असली सोने का ६) रु०

(२) महालक्ष्मी यंत्र—इस यंत्र से बुरे ग्रहों का नाश होकर, बेकारों को नौकरी, नौकरीवालों को तरक्क़ी, व्यापार में लाभ, लाटरी इत्यादि में सफलता प्राप्त होकर भाग्योदय होता है। मूल्य चाँदी का २।।), असली सोने का ६)

ये यंत्र शास्त्रोक्त और परीक्षित हैं, इन यंत्रों से कार्य शीघ्र पूर्ण होते हैं। झूठा साबित करने पर १५०) इनाम।

पता—श्रीमहाशक्ति-आश्रम

पो० कतरीसराय (गया)

आंशिक गंजापन

वह कष्ट है, जिससे मुख का सारा सौंदर्य नष्ट हो जाता है, सिर के बीच अथवा ललाट के ऊपर के, दोनो जगह के बाल गिर जाना समान है।

केशवर्धिनी

सेट् चुन लेने से आप दोनो से अपनी रक्षा कर सकते हैं। केशवर्धिनी से पुनः बाल उग आने से स्त्रियों का गया हुआ सौंदर्य लौट आता है।

पुरुषों को केशवर्धिनी क्रीम का प्रयोग कर अपने बालों की रक्षा करनी चाहिए। बालों में सुगंधि और नव-जीवन लाने और स्वच्छ करने के लिये केशवर्धिनी शंपू का प्रयोग कीजिए। इस स्वास्थ्य-वर्धक 'केशवर्धिनी' का उपयोग आज से ही करना आरंभ कर दीजिए।

केशवर्धिनी ।।।) केशवर्धिनी शंपू ।।।) केशवर्धिनी क्रीम १)

पैकिंग-पोस्टेज इसके अलावा

एजेंट्सः— साउथ इंडिया केमिकल्स, मलयापुर, मदरास

इंडियन स्टोर्स, चाँदनी चौक, दिल्ली।
मणिलाल-वल्लभजी, इलगिन रोड, कलकत्ता।
मेसर्स कलाधरप्रसाद एंड संस, नीचीबाग़, बनारस।
दि टंडन स्टोर्स, लश्कर, गवालियर।
मेसर्स बर्दराज एंड को०, बिसोपुर बाज़ार, जमशेदपुर।
अब्दुल्लाभाई एंड संस, जबलपुर।
बी० एम्० समथांडे एंड ब्रदर्स, महल, नागपुर।
गांधी व्रजलाल-मणिलाल बाँकीपुर, पटना।
एस्० मंजूरहसन, चौक, इलाहाबाद।
छिद्म्मीलाल एंड को०, किनारी बाज़ार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. पत्र-लेखन—[श्रीदुलारेलाल भार्गव की चित्रशाला से २०६

(ख) दुरंगे

२. श्रीमंत हिज़ हाइनेस महाराजाधिराज राजराजेश्वर सवाई श्रीयशवंतराव होल्कर बहादुर... ... ... २५६

३. एतमादुद्दौला, रायबहादुर कर्नल दीनानाथ बार-एट-ला प्राइम-मिनिस्टर, इंदौर २५७

(ग) सादे

४. 'कल्पवृक्ष'-संपादक डॉ० दुर्गाशंकर नागर २५५

५. धुआँधार-जल-प्रपात २६१

६. संगमरमर की चट्टानों के बीच नर्मदा-नदी का दृश्य २६२

तुरंत चाहिए

चार ग्रेजुएट कनवेसर। वेतन ४०) से ६०) तक। केवल अनुभवी आदमियों को ही आवेदन-पत्र भेजना चाहिए।

संचालक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

नं० ३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

सफ़ेद बाल काला बने

ब्लैक्सो तेल ही वह एकमात्र चीज़ है, जिसके उपयोग से सफ़ेद बाल हमेशा के लिये जड़ से काला हो जाता है। आपकी दूसरी सारी कोशिशें बेकार होंगी। ब्लैक्सो तेल का उपयोग आज ही से शुरू कीजिए। यह सफ़ेद बालों की चिकित्सा का सबसे नया और बढ़िया, अजीब आविष्कार है, जा एक जर्मन डॉक्टर का किया हुआ है। फ़ी बोतल का मूल्य १॥), डाक-ख़र्च अलग।

भद्दे बालों की सफ़ाई

केवल ३ मिनट में "डेस्ट्रायर" सब भद्दे और बेक़ायदा बालों की जड़ से सफ़ाई कर देता है, और चमड़ा रेशम-जैसा मुलायम कर देता है। डेस्ट्रायर सबसे ज़्यादा बेख़तरे काम में लाने लायक़, जल्द और हमेशा के लिये बालों का सफ़ाया करनेवाला है। नाटक और सिनेमा के प्रसिद्ध नट और नटी इसी को काम में लाते हैं। मूल्य प्रति बोतल ३), डाक-ख़र्च अलग।

पता—मैनेजर, मार्शल ब्रदर्स, बच्छोवाली, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
७. कुमारी कामिनीदेवी सेठ	२६४
८. डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी	२६७
९. माननीय श्रीरफ़ीअहमद क़िदवई ...	२६८
१०. माननीय पं० मदनमोहनजी मालवीय...	३०४
११. महाकवि पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	३०५
१२. हर हिटलर	१०६

हर तरह की सस्ती, सुंदर और टिकाऊ

ब्लॉक, रबर की मुहरें

पीतल के सील, चपरास, हरूफ़,
साइनबोर्ड, नेम प्लेट, एम्बोसिंग
मशीन आदि के लिये मशहूर

रबर स्टैंप फ़ैक्टरी (गवर्नमेंट कंट्रैक्टर)

कदमकुआँ, पटना जं०

से सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर ऑर्डर दें या एजेंसी लें

सफ़ेद बाल काला

ख़िज़ाब से नहीं, हमारे (आयुर्वेदिक) वीरेंद्र-मोहनी सुगंधित तैल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफ़ेद बाल जड़ से काला हो जाता है। जिन्हें विश्वास न हो, दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें! एकाध बाल पका हो, तो २); इससे अधिक पका हो, तो ३।); या कुल पक गया हो, तो ४।) का तैल मँगाएँ। "नक़्क़ालों से सावधान"!

पता—बी० के० पी० फ़ार्मेसी

पो० कतरीसराय (गया)

१० घड़ियाँ सिर्फ़ ३॥ ≈) में

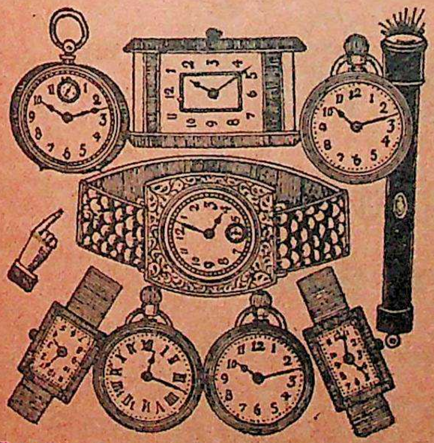

सात डमी रिस्ट-वाच, दो डमी पॉकेट-वाच और एक अदद मजबूत मशीनरी का सच्चा वक़्त देनेवाली जर्मनी टाइमपीस चाबी ३० घंटा, गारंटी १२ साल, ये घड़ियाँ हमने ख़ास तौर पर विलायत से बड़ी भारी संख्या में मँगवाई हैं। सिर्फ़ दस हज़ार घड़ियाँ इस रियायती क़ीमत पर बेचने का फ़ैसला किया है। इसलिये जल्दी करें, वरना यह मौक़ा हाथ से निकल जायगा। घड़ियों के साथ एक फ़ौंटेनपेन मय १४ केरिट रोल्ड गोल्ड निब, एक असली ठंडी ऐनक, एक ख़ूबसूरत मोतियों का हार मुफ़्त दिया जायगा। महसूल-डाक व पैकिंग-ख़र्च अलग। नापसंद होने पर क़ीमत वापस।

मिलने का पता—

जर्मन वाच कंपनी, पोस्ट-बॉक्स नं २७, (S. M. L.) अमृतसर

AMRITSAR (India)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर-बैठे डॉक्टरी का पूरा ज्ञान करानेवाली पुस्तकें

"इस पत्र के पढ़नेवाले हैं" ऐसा लिखनेवालों को २५) सैकड़ा कमीशन मिलेगा।

डॉक्टरी-चिकित्सा

डॉक्टरी रीति से रोग का निदान, लक्षण, चिकित्सा ६)

एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका

डॉक्टरी औषधियों का पूरा वर्णन, बनाने की विधि, मात्रा, विरोधी दवाओं के नाम ६)

कंपौंडरी-शिक्षा—१॥)

इंजैक्शन-चिकित्सा (सचित्र) (सुई द्वारा इलाज) ४)

डॉक्टरी नुसखे—बड़े-बड़े डॉक्टरों द्वारा परीक्षित १)

चिकित्सक के कर्तव्य—१॥)

प्रसिद्ध देशीय औषधियों के अँगरेज़ी डॉक्टर द्वारा परीक्षित प्रयोग, क़ीमत १)

भारतीय वनस्पतियों पर विलायती डॉक्टरों के अनुभव—

क़ीमत २)

याद रक्खो—अगर आपको तन्दुरुस्त रहना है, तो इसकी बातें याद रक्खो; क़ीमत।)

कायाकल्प—घर-बैठे कायाकल्प करने की विधि व औषधियाँ; क़ीमत।)

जच्चा-बच्चा—संतान पैदा होने से लेकर बच्चे के पालन-पोषण की विधि; क़ीमत।)

संतति-निग्रह—जो लोग संतान पैदा होना पसंद नहीं करते, उसकी निर्दोष विधियाँ तथा बिना दवा के उपाय-बताए गए हैं; क़ीमत।)

पुस्तकों का पैकिंग माफ़; डॉक-खर्च मनी-ऑर्डर जुदा पड़ेगा।

मँगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

मर्दानगी के लिये

भारतवर्ष-भर में एक बिलकुल नई चीज़

राजर्स फ़ास्फ़ोरस क्रीम

गुप्तांग में लगाते ही मुरदा रगों में बिजली की-सी ताक़त और फ़ौलाद की-सी सख़्ती पैदा करके पूर्ण पुरुषत्व प्रदान करती है। ढीलापन, पतलापन, वक्रता, छोटापन और सुस्ती के लिये खानेवाली दवाइयों की बनिस्बत यह लगानेवाली दवाई सहस्रगुणा लाभकारी प्रमाणित हुई है। न बाँधने की ज़रूरत, न फफोले का डर, न परहेज़ का झगड़ा, न तबियत और रुचि का ख़याल। अधिक प्रशंसा व्यर्थ। यदि फ़ायदा न हो, तो दूना मूल्य वापस करने की गारंटी। मूल्य केवल २); डाक-महसूल।≋)

पता——मैनेजर ग्लोब-फ़ार्मेसी, ग्लोब-बिल्डिंग नं० १५१, लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	वार्षिक मूल्य	प्रतिसंख्या
राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

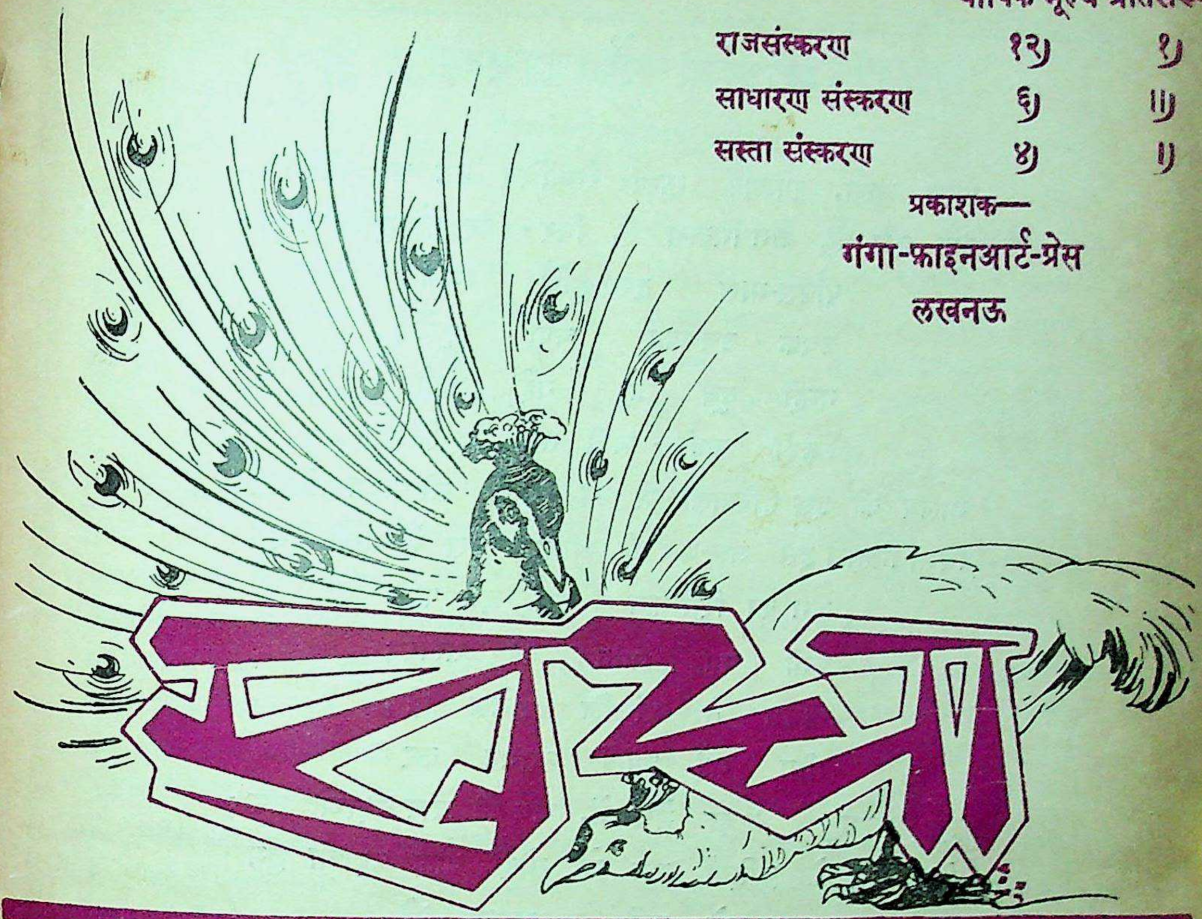

वर्ष १३	आश्विन, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)—	संख्या ३
खंड १	ऑक्टोबर, १९३९	पूर्ण संख्या १५९

तन्मयता

[श्रीदुलारेलाल]

नयनन रूप ललाम तुव, बयनन तुव प्रिय नाम ,
कानन सुर अभिराम तुव, प्रानन तू बसु जाम ।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालव में पावस

[कविवर श्रीगोपालसिंह नेपाली]

पवन चला, शाखाएँ भूलीं, रोमांचित तरु का जीवन;
देश हरा है, जग निखरा है, घिर-घिर रहे सुरीले घन।
पावस-मास हृदय-सुधि भूले,
उचक-उचककर चंपा फूले;
नन्ही दूब हो गई ऊँची,
मेहँदी खड़ी-खड़ी तन छू ले।
मालव की इस हरियाली में जो खोजो, सो पाओ प्रिय!
विभा निहारो इस जल-थल की, अविरल जल में गाओ प्रिय!
जग का रिमझिम है इस छत पर,
प्रेमी मन नर्तन को तत्पर;
पावस ने अंजलि उँडेल दी,
भीग गईं आँखें स्वागत कर।
इंद्र-धनुष है खड़ा मेघ में, अब की चाप चढ़ाओ तुम;
छेड़ रहीं ये फुहियाँ कब से, स्नेही, बाँह बढ़ाओ तुम।
बादल फटे, घड़ी न शयन की,
अब वेला है कुसुम-चयन की;
क्यारी-क्यारी छिपे रहो मन,
चमक रही है ज्योति नयन की।
श्वेत गुलाब न जी को भाया, प्राण जुही से मिल भूले;
विस्मय है, प्रस्तर-समाधि पर फूल यहाँ किस दिन फूले!
यह करील है एक अभागा,
बाँधो गले प्रेम का धागा;
स्नेह-लता का पाँव लग गया,
जीवन जगा, मरण भी जागा।
अनुकंपा उमड़ी है ऐसी, आँगन में टप-टप बूँदें;
पीछे रोना-गाना, आओ, दोनो हृदय-नयन मूँदें!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ मौलिक ग्रामीण समस्याएँ

[श्रीराजबहादुर लमगोड़ा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

सच्चा दृष्टिकोण

कुछ समय पूर्व हमारे प्रांत के प्रधान मंत्री श्रीपंतजी ने, जो स्वयं ज़मींदार हैं, यह कहा था कि ज़मींदारों के दुष्कर्मों के कारण, एक सभ्य पुरुष को, अपने को ज़मींदार कहने में लज्जा आती है। इसे पढ़कर मैं विचार-सागर में डूब गया, और समुद्र की लहरों की तरह पचासों प्रश्न मस्तिष्क में उठने लगे। वास्तव में ज़मींदारों का भूतकाल इतना अंधकारमय नहीं। बात यह जान पड़ती है कि हम वर्तमान शासन-प्रणाली का सारा दोष ज़मींदारों के ही सिर मढ़ देते हैं। सोचने की बात है, आख़िरकार ज़मींदार जो कुछ वसूल करता है, उसमें से स्वयं उसे क्या बचता है। अब तक उसका हिस्सा ४५ प्रतिशत रहा है, और उसमें से भी १० प्रतिशत 'अबवाब' के निकल जाते हैं। अब अगर १५) सैकड़ा, जो सरकारी वसूल-तहसील का निर्ख़ है, निकाल डालिए, और मुक़दमों का ख़र्च भी अपने सामने रखिए, तो उस ग़रीब ज़मींदार को, जिसके माथे पर कलंक का टीका लगाया जा रहा है, १५) सैकड़ा से अधिक नहीं बचता, और वह भी जब सारी वसूली पूरी हो जाय। फिर इस पर दुनिया-भर का झंझट! बात यह है कि वर्तमान शासन-विधान बाहर से लाया हुआ है, और उसका सारा उद्देश यह रहा है कि जितना भी रुपया खींचा जा सके, खींचा जाय, और बड़े-बड़े विदेशी कर्मचारियों को बड़ी-बड़ी तनख़्वाहें दी जायँ। विदेशी शासन बनाए रखने के लिये बड़ी लंबी-चौड़ी फ़ौज भी रक्खी जाय, जो ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य विभागों में भी सहायता दे सके। फिर यह रुपया खींचा किसके द्वारा जाता रहा? उसी ग़रीब ज़मींदार द्वारा ग़रीब किसान के यहाँ से। शासन ने एक को बना दिया मुद्दई और दूसरे को मुद्दालेह, और ख़ुद मानो बिलकुल अलग! परंतु खेद की बात यह है कि हमारे क्रांतिकारी कांग्रेसी भाई भी उसी भ्रम में पड़ गए! सोचिए तो सही कि एक ज़मींदार लगान-वसूली के लिये किसी किसान को एक घंटा भी अपने चौरे पर बिठा नहीं रख सकता, पर मालगुज़ारी पिछड़ने पर वही शासन-विधान एक ज़मींदार की हवालात में बंद कर देता है! किसान की बहुत-सी चीज़ें कुर्क़ नहीं हो सकतीं, पर ज़मींदार की कोई भी चीज़ कुर्क़ी और नीलाम से बरी नहीं। किसानों को महीनों क्या, वर्षों तक अदाई के टालने का मौक़ा, पर ज़मींदार के लिये कुछ भी नहीं। अब हम अपने पूज्य प्रधान मंत्री से पूछेंगे कि शर्म किसे आनी चाहिए, और अधिक शोचनीय दशा किसकी है? हमारा अपना उत्तर तो स्पष्ट और निश्चित है कि ज़मींदार और किसान, दोनो एक ही नाव पर हैं, एवं दोनो की दशा शोचनीय है। शर्म तो है विदेशी शासन-विधान पर! क्या अच्छा होता, यदि हमारे कांग्रेसी भाई अपने ही भाई ज़मींदार के गले पर छुरी चलाने से पहले उस शासन-विधान से मोर्चा लेते। २३।७।३९ के 'लीडर' में भले ही एक आशाप्रद सूचना है कि श्रीसरदार पटेल ने फ़ौजी ख़र्च और आय-कर के संबंध में अगले वर्ष वैसे मोर्चे की संभावना प्रकट की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपं० जवाहरलालजी नेहरू ने अपनी अँगरेज़ी आत्मकथा में १०००) से कम मालगुज़ारीवाले ज़मींदारों की दशा शोचनीय ही बतलाई है, और उनकी देश-सेवा को भी स्वीकृत किया है। उन्होंने तो यहाँ तक लिखा है कि "वे—स्त्री, पुरुष और बच्चे—सब मिलकर एक ऐसा सुंदर सामाजिक समूह बन जाते हैं, जो तनिक सहायता से ही बड़े अच्छे नागरिक बन सकते हैं।" आह, आज वोटों के लालच में पड़कर इसी सुंदर समूह को नष्ट किया जा रहा है। नाशुकरेपन का यह हाल कि गत चुनाववाली वह बड़ी सहायता भी इतनी जल्दी भूली जा रही है, जो ज़मींदारों से प्राप्त हुई थी।

ग्रामों के पुनरुद्धार के मौलिक सिद्धांत

तनिक विस्तृत क्षेत्र की बात है; परंतु चूँकि वह बात ऐसी है, जिसका निश्चय एक बार किए विना ही सारी गड़बड़ी फैल रही है, इसलिये उस पर थोड़ी बहस करनी ज़रूरी है। प्रश्न यह है कि हमारा आदर्श जाति-संघर्ष रहे या पारस्परिक सहयोग? बड़ी लंबी-चौड़ी बहस की ज़रूरत नहीं। जब तक हमें पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिलती, इस गृह-कलह से सर्वथा हानि ही है। फिर हमें तो योरपीय देशों के जाति-संघर्ष में अशांति के सिवा और कुछ नहीं देख पड़ता। देखिए न, आज युद्ध-घोषणा की बात चलती है, तो हमारे कांग्रेसी भाइयों के पैर भी आगे नहीं पड़ते, और ब्रिटिश साम्राज्य से मोर्चा लेने की बात से उनका दिल काँपने लगता है। महात्मा गांधी तो यहाँ तक कहते हैं कि उन्हें भारतीय वातावरण में हिंसा तथा संघर्ष ही की गंध मिल रही है। हिंदू-मुसलिम-विरोध, शिया-सुन्नियों की लड़ाई, ज़मींदार-किसान में द्वेष, पूँजीपतियों और मज़दूरों में विग्रह तथा सबसे बढ़कर स्वयं कांग्रेसियों में दो दलों का होना! भला, जिस सेना के सिपाही आपस ही में लड़ रहे हों, वह दूसरों से कब मोर्चा ले सकेगी। मैं रामायण का आजन्म विद्यार्थी हूँ। मुझे एक बात बार-बार खटकती है। जब मैं रामायण का अध्ययन राजनीतिक दृष्टि से करता हूँ, तब मुझे आर्य-जाति के सामाजिक पतन और रावण-साम्राज्य की वृद्धि का कारण यही प्रतीत होता है कि एक ओर ब्राह्मणों और क्षत्रियों में युद्ध हो रहा था, और परशुरामजी को अहंकार था—

बाल - ब्रह्मचारी, अति कोही,
विश्व-विदित क्षत्रिय - कुल - द्रोही।
भुज-बल भूमि भूप बिनु कीन्हीं,
विपुल बार महिदेवन दीन्हीं।

और, दूसरी ओर रावण-राज्य की वृद्धि होती जा रही थी, यहाँ तक कि उसके लिये लिखा है—

मंडलीक महिरावण राज करै निज मंत्र।

राम-राज्य ने आर्य-जाति के इस पारस्परिक संघर्ष को मिटाकर उसे पारस्परिक सहयोग की शिक्षा दी, ब्राह्मण और क्षत्रियों की कौन कहे, निषादों तक को अपना सहयोगी बनाया। जंगली जातियों और वानरों का ऐसा सुंदर संगठन तैयार किया कि रावण के अधिनायकी शासन को मिट्टी में मिलाकर छोड़ा। पर याद रहे, यह सहयोग-भवन न्याय तथा प्रेम की ही नींव पर बन सकता है, न कि द्वेष और नाशकारी भावों पर।

उपर्युक्त सिद्धांतों को यदि अब हम ग्रामीण समस्याओं पर लागू करें, तो हमें कहना पड़ेगा कि ज़मींदार, महाजन और किसान को एक दूसरे का मित्र एवं सहयोगी बनाना चाहिए। महात्मा गांधी इसी हेतु बार-बार कहते हैं कि ज़मींदारों को किसानों के हक़ों का सिपुर्ददार बनाओ। श्रीपटेल ने भी हाल में कहा है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ज़मींदारों के मिटा देने से ग्रामीण-समस्या सुलझ नहीं सकती। कविवर टैगोरजी का भी कथन है कि ग्राम-सुधार का मूल-मंत्र पारस्परिक प्रेम ही होना चाहिए। ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्व ग्रामीण-संगठन उपर्युक्त तीनो समुदायों की पंचायती सहकारिता एवं एकीकरण पर निर्भर था। गाँव के पंच चौरे पर या वट-वृक्ष के नीचे बैठकर सारी पारस्परिक समस्याएँ हल कर लेते थे। जितने भी इतिहासकार हुए हैं, उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्ववाली इन ग्रामीण पंचायतों की प्रशंसा ही की है, और यहाँ तक लिखा है कि साम्राज्यों के परिवर्तनों तथा बड़े-बड़े विदेशी आक्रमणों का कोई प्रभाव इन पंचायतों पर नहीं पड़ता था, और ग्रामीण-जीवन अधिकांश में सुरक्षित रहता था। एक ओर क़र्ज़ लेनेवाले को यह सिखाया जाता था कि क़र्ज़ चुकाए विना पितरों की 'गया' नहीं हो सकती, या यह कि क़ुरान शरीफ़ में क़र्ज़ चुका देना सबसे बड़ा फ़र्ज़ है, तो दूसरी ओर मैंने पुराने महाजनों को अब भी यह कहते हुए अपने कानों सुना है—"किसान चने का खेत है, उसे इस प्रकार खोंटना चाहिए कि उसकी उन्नति में बाधा न पड़े, नहीं तो जब खेत ही न रहेगा, तो खोंटोगे क्या।" एक ओर किसान को सिखाया जाता था कि ज़मींदार तथा ग्रामपति ही तुम्हारी रक्षा का मुख्य साधन है, और दूसरी ओर ज़मींदारों को यह सीख दी जाती थी—

जो प्रतिपालइ, सोइ नरेसू।

तथा—

रियायत दरेग़ अज़ रऐअत मदार; *

मेरे घराने में न-जाने कितनी शताब्दियों से ज़मींदारी है, इसलिये पारस्परिक सहयोग की भावना मानो हमारी घुट्टी में ही पड़ी है।

ग़दर के ज़माने में जिस प्रकार हमारे गाँवों की रियाया ने हमारे घर की स्त्रियों और एक बालक को फ़तेहपुर से ले जाकर उनकी रक्षा की, वह हमें कभी नहीं भूलता। दूसरी ओर मेरे बाबा की माता श्रीख़ुशहाली कुँवरि ने, जो उन्हीं स्त्रियों में से एक थीं, जिस तरह ग्रामीण नवयुवकों को संगठित कर स्वयं मर्दाना लिबास पहनने लगी थीं, वह भी याद रखने की चीज़ है। वृत्तांत इतने रोचक हैं कि मैंने उन्हें कहानी के रूप में पाठकों की भेंट करने का निश्चय किया है। दूर क्यों जाइए, जब मैंने वकालत शुरू की, तब मेरे बाबा मुंशी शिवप्रसाद जीवित थे। उन्होंने ज़मींदारी का प्रबंध सौंपते हुए ऊपर लिखे दोनो पद पढ़े थे, और बड़े ज़ोर के साथ कहा था कि अपने ज़मींदारीवाले गाँवों की हद पर पहुँचकर अपना क़ानून भूल जाना, रियाया को अपना परिवार समझना, और यह बताया था कि हमारे घराने में रियाया पर कोई इज़ाफ़ा लगान उस समय तक कभी नहीं किया जाता, जब तक सरकार स्वयं मालगुज़ारी न बढ़ाए। अब तक ऐसा ही हुआ भी है।

अब रहा किसानों का एक दूसरे से पारस्परिक संबंध, उसके लिये भी 'साँपर' की खेती आधुनिक सहकार-समिति का एक रूपांतर ही था। इसीलिये महात्मा गांधी कहते हैं कि सहकार-समिति-प्रणाली ही समाजवाद का वह रूप है, जो भारतवर्ष के लिये उपयोगी हो सकता है। हमें हर्ष होता है कि गत शताब्दी में हम ज़मींदारों में से ही एक रायबहादुर लाला ईश्वरसहाय ने भारत में सबसे पहले सहकार-समिति की नींव डाली थी, और उस समितिवाले सरकारी विभाग की स्थापना लाला साहब की सफलता का ही परिणाम था।

ग्रामीण दुर्दशा का मुख्य कारण और उसका इलाज

अभी कुछ ही दिनों की बात है, जब गत

* रियाया से कभी रियायत उठा न रक्खो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरपीय महासमर के कारण, महासमर के समय और उसके बाद भी, अनाज का भाव महँगा था, भारतवर्ष का नाज विदेशों में धड़ाधड़ बिकता था, और हम ख़ुशहाल थे। किसानों के गले में सोने की मुहरें और उनकी स्त्रियों के शरीर पर गहने दिखाई पड़ते थे। सोना इस ज़ोर के साथ बाहर से आता था कि गिन्नियों का गलाना जुर्म क़रार दिया गया था, और फिर भी गिन्नियाँ उसी प्रकार गलाई जा रही थीं। परंतु तनिक भाव पलटा और अरबों का सोना भारतवर्ष से बाहर चला गया। आज स्त्रियों के पैरों में फूल की बिछिया और काँस के कड़ों के सिवा और कुछ भी नहीं। जाड़े के दिनों में भी यथोचित वस्त्रों का प्रबंध नहीं होता। नाज है, पर बिकता नहीं। भारत में तो ८५ प्रतिशत लोगों का संबंध कृषि से है ही, अब रहे १५ प्रतिशत, वे बेचारे कहाँ तक ख़रीद सकते हैं? हमारे व्यापार में किसी समय ७८ करोड़ का लाभ था, फिर ३१ करोड़ हुआ, और आज सिर्फ़ १० करोड़ है, जिसके मानी यह हैं कि 'होम चार्जेज़' के लिये भी काफ़ी नहीं। 'होम चार्जेज़' से आशय उन रक़मों से है, जो यहाँ से अनेकानेक रूपों में इँगलैंड जाती हैं। क्या यह दुःख की बात नहीं कि सन् १९३८ ई० में, कुछ ही महीनों तक, जब बाहरी गेहूँ पर कर न था, आस्ट्रेलिया से गेहूँ के जहाज़ पर जहाज़ भारत में आ गए थे, और भारत-सरकार को शीघ्र-से-शीघ्र फिर टैक्स लगाना पड़ा था। अब भी 'लीडर' में ख़बर छपी थी कि एक लाख टन गेहूँ कलकत्ते में आया। नील की खेती पहले ही जा चुकी, शकर का यह हाल कि कर के भरोसे पर ही रोज़गार सँभला है, परंतु शकर की कॉन्फ़्रेंस में हमें समझौता करना पड़ा कि यहाँ की शकर पाँच वर्ष तक बाहर न जायगी। इन सबके देखते हुए तो यही कहना पड़ता है कि 'बकरे की मा कब तक ख़ैर मनाएगी।'

क्या इसका इलाज केवल इतने ही से हो सकेगा कि लगान में थोड़ी-सी छूट दे दी जाय, और ज़मींदारों की 'सीर' का कुछ अंश छीन लिया जाय? यह तो ओस चाटने से प्यास का बुझाना ही है। मेरी समझ में तो इतना कोलाहल मचाने से अच्छा था कि रुपए के दाम घटाने की समस्या पर मोर्चा लिया जाय, क्योंकि सौभाग्य-वश भारतवर्ष के अँगरेज़-व्यापारी भी अब इस विषय पर हमसे सहमत हैं। दूसरा इलाज यह है कि भारत में कारख़ानों की वृद्धि हो, और भूमि का भार घटे। हर्ष की बात है, श्रीपं० जवाहरलालजी का ध्यान इस ओर है, परंतु और नेताओं का ध्यान केवल खादी तक ही सीमित जान पड़ता है। इन सबसे भी अधिक आवश्यकता है, भारत की बढ़ी हुई आबादी के बाहरी निकास और खपत की। आप चारो ओर आँख उठाकर देखें, तो लड़ाइयाँ या तो तैयार माल की खपत या बढ़ी हुई आबादी की खपत के लिये होती रही या हो रही हैं। अबीसीनिया पर आक्रमण क्यों हुआ? चीन क्यों सताया जा रहा है? हिटलर की हाँक किसलिये है? इन सबका उत्तर वही एक है। कितना अन्याय है कि पृथ्वी पर कहीं तो, कनाडा आदि में, ७ या ८ मनुष्य प्रति वर्ग मील में रहें, और कहीं, भारत आदि में, ३०० या ४००। ब्रिटिश साम्राज्य का दावा कि वह एक कॉमन-वेल्थ है, जिसका आशय यह है कि उसकी पूँजी में सबका बराबर हक़ है, मानो वह एक सम्मिलित परिवार की पूँजी है। यदि सत्याग्रह-संग्राम इस समस्या को हल करे, और साम्राज्य से इस विषय पर मोर्चा ले, तभी महात्मा गांधी का यह दावा ठीक हो सकता है कि अहिंसात्मक सत्याग्रह ही संसार की सारी समस्याओं के हल का एक मुख्य उपाय है। कुछ परवा नहीं, यदि उस संग्राम में करोड़ों मर मिटें, क्योंकि भूखों मर जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से तो अच्छा ही है, और इससे तो कहीं अच्छा है कि घर ही में भाई भाई का गला काटे। मेरी समझ में तो ब्रिटिश साम्राज्यवादी कांग्रेसी सरकारों के हो जाने से बड़े ख़ुश हैं, क्योंकि उनका साम्राज्य सुरक्षित है, और यहाँ घर की लड़ाइयाँ छिड़ी हुई हैं।

कर-विधान का प्रभाव

शुक्रनीति और मनुस्मृति के उन अवतरणों से, जो आचार्य रामदेवजी ने अपने इतिहास में दिए हैं, यह प्रमाणित होता है कि भारतवर्ष में कर हल्का और सब पर रहा है। यह नहीं कि ज़मींदार और किसान तो कर-विधान के कोल्हू में पेल दिए जायँ, और बाक़ी लोग चैन करें। यह बात उदाहरण से अधिक स्पष्ट हो जायगी। अभी दो वर्ष हुए, इसी फ़तेहपुर-ज़िले में बंदोबस्त के हाकिम ने १० बीघे की औसत पैदावार की मालियत १३२) निकाली थी, और वह भी खजुहा तहसील में, जहाँ की भूमि उपजाऊ है, और बहुधा नहर की सींच है। उन्होंने मुझसे बड़े गर्व के साथ कहा था कि हम उपज का केवल छठा हिस्सा ही तो लेते हैं। परंतु क्या यह अन्याय नहीं कि एक बनिया, महाजन या और कोई पेशेवाला, जो इतना ही कमाता हो, कुछ भी न दे? उस पर तो टैक्स तब लगेगा, जब उसकी आय दो हज़ार के ऊपर पहुँचे। शुक्रनीति और मनुस्मृति में तो पलाश के पत्ते, जंगल के फल-फूल, लकड़ी और शहद आदि पर भी वैसा ही कर का विधान है, जैसा भूमि की उपज पर।

इस असमता का ही परिणाम यह है कि किसान को यथोचित छूट नहीं मिल सकती। हमारे प्रधान मंत्रीजी, जो अपने को ज़मींदार कहते हुए शरमाते हैं, उस कर-विधान को कुछ नहीं कहते, जिसके कारण, जब उनसे एक करोड़ लगान और छोड़ने के लिये कहा गया, तो, वह इस्तीफ़ा देने पर आमादा हो गए।

अर्थ-शास्त्र का कोई भी विद्यार्थी यह बता देगा कि न्याय-पूर्ण विधान वही है, जिसमें पहले खेती का सब ख़र्चा और किसान की मज़दूरी निकालकर उस बचत का निश्चय किया जाय, जिस पर टैक्स (Taxable Surpuls) लगना चाहिए, और तब उसका उचित अंश टैक्स में लिया जाय, जिसमें किसान के पास कुछ-न-कुछ इत्तफ़ाक़िया ख़र्चों के लिये भी बच रहे। आज हम यह देखते हैं कि हमारा किसान भूखा और नंगा रहता है, और ऋण-भार से भी दबा हुआ है। उसका कारण कर-विधान के इस सिद्धांत की अवहेला है—ज़मींदारों का अस्तित्व नहीं।

ज़मींदारों को तो इस कर-विधान में कोयले का दलाल ही समझिए, जिनका सिर्फ़ हाथ ही काला होता है! स्मरण रहे, यदि ज़मींदार हटा दिए जायँगे, और उनकी जगह छोटे कर्मचारियों की नियुक्ति होगी, तो ऐसे कर्मचारियों को कोई परंपरागत सहानुभूति तो होगी नहीं, अतः बेचारे किसानों पर और भी ज़्यादती होगी। अब भी तक़ावी और नहर-कर की वसूली में जो सख़्ती होती है, और जितनी घूस चलती है, वह सभी जानते हैं। फिर इन कर्मचारियों को वेतन अलग देना होगा, और किसानों पर घूसवाला पलेथन अलग लगेगा। तब किसानों को महीनों और वर्षों की 'मुहलत'वाला आराम कहाँ मिल सकेगा? मेरी समझ में तो ज़मींदार किसान को उस कर-विधान की कटुता से थोड़ा-बहुत सुरक्षित ही किए हुए है।

हमें हर्ष है कि पंचायत के क़ानून और रोज़गार-कर (Employment Tax) के संबंध में अब और लोग भी पूछे गए हैं। हम तो यही कहेंगे कि सबकी आय का दशांश कर-रूप में वसूल कर लिया जाय, ताकि निरीह किसान को ठीक छूट मिल सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग ज़मींदारों के बेगार लेने पर बहुत ख़फ़ा थे, और आज पंचायत-विधान के संबंध में यह कहा जा रहा है कि जो कर देने योग्य नहीं, वे वर्ष में कुछ दिनों बेगार किया करें। दोनो की तह में एक ही बात है।

पंचायत

हमें हर्ष है कि अब किसी को भी इस बात में संदेह नहीं कि पंचायत के निर्माण पर ही ग्राम-सुधार की नींव होनी चाहिए। पंचायत के बनाए बिना ग्राम-सुधार का काम शुरू कर दिया गया है, इसीलिये अभी उसका रुपया एक प्रकार से व्यर्थ ही जा रहा है। श्रीप्रेमचंद ने अपने 'गोदान'-नामक अंतिम उपन्यास में इसी कारण ग्राम-सुधार-वाले कर्मचारी की गणना भी उन्हीं सरकारी कर्मचारियों में कराई है, जिनका भार किसानों के सिर है, और जो किसानों को ही नोच-खसोट रहे हैं।

इस पंचायत के निर्माण में राजनीतिक दलबंदी न होनी चाहिए। इँगलैंड में भी स्थानीय स्वायत्त शासन में वैसी दलबंदी का ज़्यादा ज़ोर नहीं होता। प्राचीन विधान तो यह था कि हर घर का मुखिया पंचायत का सदस्य होता था। हाँ, ब्राह्मणों का विद्या, क्षत्रियों का बाहु-बल, वैश्य का धन और शूद्र का आयु के हिसाब से आदर होता था। जो गाँव का नंबरदार होता था, वही मानो पंचायत का प्रधान था और पटवारी लिखा-पढ़ी, हिसाब इत्यादि का मालिक। युवक-समाज गाँव का स्वयंसेवक-समूह होता था, जो सार्वजनिक सेवा को अपना परम कर्तव्य समझता था, परंतु वृद्धों को समय से पहले अधिकार-वंचित नहीं करना चाहता था। योरपीय देशों में भी नगर-समिति के सदस्य 'नगर के पिता' कहलाते रहे हैं। मैं तो हँसी में अक्सर कहा करता हूँ कि भारत में वैसे सदस्यों को 'नगर के पिता' नहीं, 'नगर के पुत्र' कहना चाहिए, क्योंकि भारतीय संघर्ष में वृद्ध जन निकाल बाहर कर दिए गए हैं। इसीलिये किसी-किसी प्रांत में कांग्रेस-सरकार ने भी यह मान लिया है कि स्थानीय स्वायत्त शासन असफल ही रहा है। क्योंकि वहाँ दल-बंदियों और वैमनस्य के कारण कोई ठोस काम नहीं हो सका। हम नहीं जानते कि उपर्युक्त प्राचीन विधान किस हद तक स्वीकृत किया जायगा, पर हम इतना अवश्य कहेंगे कि उसमें ज़मींदार, महाजन और किसान, तीनो का सह-योग होना चाहिए। और, वोट-विधान ऐसा हो, जिसमें लड़कों की हुल्लड़शाही न मचे। कारण, शहर में तो शिक्षा कुछ अनुभव का काम दे सकती है, पर देहात में अनुभव एवं आयु, दोनो अत्या-वश्यक हैं।

कृषिवाले देश में पैसे की कमी सदा हुआ करती है, इसीलिये हमारे यहाँ नक़द वेतन का चलन कम रहा है। अब भी देहातों में सभी कार्य-कर्ता—जैसे नाई, बढ़ई, गुड़इत, लुहार, मेहतर आदि—फ़सल पर 'ज्योरा' पाते और उसी के बदले साल-भर काम करते हैं। सबसे अच्छा यह होगा कि यही 'ज्योरा' नियम-बद्ध कर दिया जाय, और कर्मचारियों से काम भी पंचायतों के निरीक्षण में लिया जाय। हाँ, जो किसान या ज़मींदार नहीं हैं, उन पर अवश्य पंचायत-कर होना चाहिए। पर दुःख है कि फिर भी किसानों पर शतांश पंचाइत-कर के रूप में लगाने की चर्चा चल रही है। एक बार यह टैक्स चला, और वही फिर ज़रूरत पर बढ़ेगा, और ग़रीब किसान का मरण हो जायगा।

ग्रामीण शिक्षा-विधान

वर्धा-शिक्षा-विधान के संबंधवाले विस्तृत लेख में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, इसलिये अब यहाँ संक्षिप्त ही लिखा जायगा। उस लेख में मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक शिक्षा पर बड़े विस्तार के साथ बहस की है, परंतु यहाँ भी इतना कहे विना नहीं रह सकता कि धर्म के विना कुछ समय बाद हमारी भी वही दशा होगी, जो आज योरप की हो रही है, जहाँ एक को दूसरे पर एतबार और भरोसा नहीं, राष्ट्रों की पारस्परिक संधियाँ रद्दी काग़ज़ों के समान ही हो रही हैं। कांग्रेस का सिद्धांत सत्य और अहिंसा है। अहिंसा पर विश्वास और सत्य की दृढ़ता ईश्वर की सत्ता माने विना चल नहीं सकती। पुस्तकें ऐसी बननी चाहिए, जिनमें स्वधर्म की सारी बातें होते हुए भी अन्य धर्मों से विरोध न हो। कबीर का सिद्धांत है—"नदिया एक, घाट बहुतेरे।", और मौलाना रमु का कथन—"भगवान् को जिस नाम से भी पुकारो, वह प्रकट होते हैं।" सब हृदयों पर अवश्य बिठा दिया जाय।

हर्ष है कि अब शिक्षा को उपयोगी बनाने का उद्योग हो रहा है। नरेंद्रदेव-कमेटी की रिपोर्ट का संबंध जहाँ तक सिद्धांतों तथा आदर्शों से है, बड़ी ही रोचक और काम की चीज़ है। मगर ७ वर्षों की अनिवार्य शिक्षा का ख़र्च जब ६ करोड़ बताया जाता है, तो हमें यही कहना पड़ता है—"न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेंगी।" ख़ास-ख़ास जगहों पर उसका प्रयोग करना उस विधान की परीक्षा की दृष्टि से भले ही उपयोगी हो, परंतु जन-सत्तात्मक शासन की प्रथम आवश्यकता यह है कि वोटर को जल्द-से-जल्द शिक्षित बना दिया जाय, ताकि वोट का दुरुपयोग न हो, नहीं तो वह शासन गड़बड़शाही बन जायगा। हम तो यह कहेंगे कि ७ वर्ष से १० वर्ष के बालकों को ही अनिवार्य शिक्षा देनी चाहिए, और उसके ऊपर के शिक्षा-विधान की सुविधाएँ तो अवश्य बढ़ाई जायँ, पर उसे अनिवार्य न किया जाय। इसका एक कारण यह भी है कि ११ वर्ष की अवस्था का ऐसा ही कोई विरला देहाती बालक होगा, जिसके साहाय्य की आवश्यकता किसान को अपने कार्य में न पड़े, क्योंकि बेचारे किसान के पास पैसे ही की तो कमी है। और कुछ न सही, तो बालक ढोरों के चराने, खेत की बरहियों में पानी का रास्ता सुगम करने, पुरहाई के समय बैलों के हाँकने आदि का ही काम करता है। इस संबंध में एक बात और। अनिवार्य शिक्षा-विधान का नियम इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि बालक पढ़ने के लिये मिले, परंतु पिता आदि पर उसकी ग़ैरहाज़िरी का दंड न लगाया जाय। नहीं तो, जहाँ वैसा विधान इस समय चल रहा है, वहाँ या तो घूस चलती है, या फिर मुक़दमे की पैरवी और जुर्माने में ग़रीब किसान मर मिटता है! हाँ, ग्रामीण वाचनालयों और रात्रि-पाठशालाओं आदि से बड़े लड़कों को क्या, बल्कि प्रौढ़ों को भी शिक्षा के निमित्त प्रोत्साहित करना सर्वथा सराहनीय है।

ऋण की समस्या

हिंदू-धर्म-शास्त्रों में अपना क्या, पैत्रिक ऋण अदा किए विना भी मुक्त होना नहीं लिखा है। क़ुरान शरीफ़ में भी क़र्ज़ की वापसी पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। मुहम्मद साहब ने अपनी ज़िंदगी में जो आख़िरी नमाज़ आम मसजिद में पढ़ी थी, उसके बाद ही पहला सवाल यह किया था कि यदि किसी को मुझसे कुछ पाना हो, तो माँग ले, ताकि मैं ख़ुदा के सामने अपराधी न बनूँ। श्रीअब्दुल्लायूसुफ़अली ने अपने क़ुरान के भाष्य में यह लिखा है—अरबी में जो शब्द आया है, उसका अर्थ यह नहीं कि सूद लिया ही न जाय, बल्कि अर्थ यह है कि सख़्त सूद (usury) न लिया जाय। हिंदू-धर्म-शास्त्रों में इसीलिये असल से अधिक सूद लेना मना है। हमें हर्ष है कि क़र्ज़ के क़ानून का जो नया मसविदा अपने प्रांत में सरकार की ओर से छपा है, उसमें धर्म-शास्त्र का यही नियम माना गया है। पर दुःख की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है कि असेंबली की बहस में ५०) से कम लगानवाले किसान का १००) से अधिक जो भी ऋण हो, उसे बिलकुल छोड़ दिए जाने की बात भी चल पड़ी है। दिवालिया होने के सिवा और कभी क़र्ज़ नहीं छूटता। किसान के पास तो उसकी ज़मीन सुरक्षित ही रहती है। आप सूद घटा सकते, क़िस्त करा सकते और किसान की भूमि के कुछ भाग का सुपुर्ददार बनाकर उसके द्वारा क़र्ज़ चुकवा सकते हैं, या और ऐसी ही कोई युक्ति निकाल सकते हैं। परंतु एकदम, कुछ सोचे-समझे विना, सूद क्या, असल क़र्ज़ का भी छुड़ा देना सर्वथा अन्याय है। याद रहे, ऐसे क़ानून से किसान की साख मिटी जाती है। अभी उसे समय पर कोई क़र्ज़ मुश्किल से देता है, आगे बिलकुल ही न देगा, फिर आड़े वक़्त पर कौन उसके काम आ सकेगा? सरकार के पास भी तो इतना पैसा नहीं दिखाई पड़ता। उदाहरण से यह अधिक स्पष्ट होगा। मान लीजिए, खेती सूख रही है, और किसान को दोगला लगाने की ज़रूरत है। अब उसे १०) या ५) दो दिन के भीतर चाहिए। अगर महाजन का द्वार बंद होता है, तो उसे समय पर पैसा कौन देगा? और जगह तो दरख़्वास्त पर हफ़्तों चाहिए, जब कहीं कुछ मिल सकेगा। इसीलिये भारत-सरकार के विशेषज्ञ श्रीडार्लिंग का यह कहना है कि महाजन को ख़त्म कर देना सर्वथा भूल है।

तनिक और बड़े क्षेत्र में देखिए, तो क़र्ज़ के क़ानूनों के कारण बड़े-बड़े बैंक टूटे जा रहे हैं। बनारस-बैंक की मिसाल हमारे सामने है। न-जाने आजकल की राजनीति किस सिद्धांत पर निर्भर है। नहीं तो हमने अर्थ-शास्त्र में यही पढ़ा है कि ज़मीन, मज़दूरी और पूँजी (land, labour and capital) के सहयोग से ही आर्थिक अवस्था सफल हो सकती है। और, इन तीनो में से किसी एक को मिटा देने से भी काम नहीं बनता। भारतवर्ष में बड़े कारोबार के लिये यों ही पूँजी कम थी, और इसीलिये बाहर की पूँजी से बहुत-सा काम चल रहा है, अब अगर क़र्ज़-क़ानूनों द्वारा पूँजी को बिलकुल मिटा दिया गया, तो राम जाने, भारत की आर्थिक अवस्था की क्या गति होगी।

स्फुट

हमारी कांग्रेस-सरकार ने जो सरकारी चिह्न स्वीकृत किया है, उसमें राम-राज्य का चिह्न धनुष-बाण-रूप में बना हुआ है। राम-राज्य के झंडे की व्याख्या करते हुए तुलसीदासजी ने लिखा है—

सत्य, शील दृढ़ ध्वजा-पताका

इससे स्पष्ट है कि राम-राज्य का आदर्श 'सत्य-शील-आग्रह' था। शील तो बड़ी चीज़ है, परंतु महात्मा गांधी भी 'सत्य' के साथ 'अहिंसा' का प्रयोग ही 'सत्याग्रह' का मूल-तत्त्व समझते हैं, और इसी आदर्श को कम-से-कम इस समय कांग्रेस स्वीकृत किए हुए है। अतः हम इसी कसौटी पर अपनी प्रांतीय सरकार की दो-एक बातों को कसेंगे।

छूट का सिद्धांत सदा से यह रहा है कि ज़मींदार और सरकार, दोनो छूट के भार को सहन करें, और किसान को, जो इन दोनो से ग़रीब है, छूट से लाभ हो। अहिंसा का कम-से-कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि किसी की अनुचित हानि न हो। पहले तो इस अमर्यादिक छूट से कि सन् १३४४ फ़सली तक का बक़ाया माफ़ हो, अधिकतर दुष्ट किसानों का ही फ़ायदा है, जो पैसा रखते हुए भी सदा बाक़ीदार बने रहते हैं। बेचारा ग़रीब, पर ईमानदार किसान, जो अपना लगान किसी-न-किसी प्रकार बराबर देता रहा है, ज्यों-का-त्यों ही रह गया! हमने पत्रों में कई बार लिखा कि अंदाज़े के साथ एक निश्चित रक़म माफ़ की जाय, और नायब-तहसीलदारों द्वारा सरसरी तहक़ीक़ात कराके वह रक़म इस तरह बाँट दी जाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि ग़रीब यदि अदा कर चुका है, तो उसे वापस मिले, और पैसेवाले किसानों का बक़ाया वसूल किया जाय। परंतु इस पर कोई विचार नहीं हुआ। हमारी समझ में इस अहिंसा का अर्थ नहीं आता कि सरकार छूट का पूरा भार ज़मींदार पर डाल रही है, और जो मालगुज़ारी वह वसूल कर चुकी है, उसका यथोचित अंश लौटा देने पर तैयार नहीं। राम-राज्य में तो अन्याय से लिप्त मिलते हुए राज्य को भरत ने ठुकरा दिया था। क्या यह लज्जा की बात नहीं कि उस राज्य का चिह्न ग्रहण करनेवाली कांग्रेस-सरकार आज खुला अन्याय कर रही है। और, अपने छूट-संबंधी कुकृत्यों से नादिहंद किसानों को बेईमानी के निमित्त प्रोत्साहित कर रही है? परंतु यदि जन-सत्तात्मक राज्यवाले सिद्धांत में कुछ भी तत्त्व है, तो पाँसा पलटेगा ज़रूर—भले ही वह देर में हो। हम चेतावनी-रूप में बता देना चाहते हैं कि यह अन्याय आगे अनेकानेक अन्यायों का उदाहरण बनेगा, और यदि कहीं किसान-संघ का राज्य हुआ, तो फिर न-जाने क्या होगा, और उस समय कांग्रेस के अगणित कार्य-कर्ता, जो अभी देहातों में मज़े उड़ा रहे हैं, दूध की मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेक दिए जायँगे।

यह सबको मालूम है कि अब से पहले जो-जो स्वत्व कृषकों को मिले हैं, वे अधिकतर सरकार और ज़मींदार में होनेवाले किसी समझौते का ही परिणाम होते रहे। अतः हमें हर्ष है कि ज़मींदार ७५ प्रतिशत से अधिक कृषकों को दख़ीलकारी का हक़ दे चुके, और शेष १५ प्रतिशत को हक़दार असामी (जीवन-काश्त) बना चुके, और ज़मींदारों ने स्वयं अपने लिये १० प्रतिशत जुती ज़मीन को 'सीर' में रक्खा है। तो क्या यह घोर अन्याय नहीं कि इस थोड़ी ज़मीन में भी काट-छाँट की जा रही है? नए ज़मींदार रोज़ बनते हैं, और पुराने बिगड़ते हैं। पुराने ज़मींदार की 'सीर' काश्तकारी हो जाती है। तो फिर क्या यह अन्याय नहीं कि कम-से-कम उस हद तक किसी नए ज़मींदार को 'सीर' बनाने का हक़ न हो? आप अब भी ज़मींदार को मालिक (proprietor) मानते हैं, पर क्या यह अन्याय नहीं कि जब कोई ज़मीन लावारिसी होकर उसे मिले, या वह ऊसर आदि को नौतोड़ बनाना चाहे, तो उसे उतना भी हक़ अपनी ख़ुदकाश्त पर न हो, जितना एक दख़ीलकार को अपनी भूमि पर है?

फिर समझ में नहीं आता कि नवीन आविष्कारों का प्रयोग और परीक्षा किसानों के छोटे-छोटे खातों में कैसे हो सकेगी? श्रीविष्णुमानसिंह का, जो कृषि-विशेषज्ञ और रायबहादुर लाला ईश्वरसहाय के सुयोग्य पुत्र हैं, यह कथन ही ठीक जँचता है कि उन प्रयोगों की ठीक जाँच तो ज़मींदारों के बड़े फ़ार्मों में ही हो सकती है। सरकारी फ़ार्मों की जाँच ठीक नहीं होती, क्योंकि वे वास्तविक आर्थिक संघर्ष से बाहर हैं, जहाँ आर्थिक हानि-लाभ का विचार नहीं होता। हम कई बार लिख चुके हैं, अतः अधिक नहीं लिखना चाहते; परंतु जिन्हें देखना हो, वे श्रीविष्णुमानसिंहजी के जेल और विलंदावाले फ़ार्मों को आकर देख लें, तब उन्हें मालूम होगा कि सस्ते और सुलभ प्रयोगों से भी कृषि में कितनी उन्नति हो सकती है।

बदला

[कविवर आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव]

हलकेपन पर तूल के हँसा हवा में भूल;
उड़ने को मिल धूल में गिर के बिखरा फूल!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ

[श्रीयुत 'नवल' प्रभाकर]

(१)

विशाल पहाड़ी के अंक में हरे-हरे खेत और एक छोटा-सा गाँव था, जिसकी जन-संख्या लगभग चार सौ थी। इसमें सभी जाति के मनुष्य रहते थे। गाँव के सिरे पर कुम्हार और आगे जुलाहे रहते थे। जुलाहों की बस्ती के ऐन सिरे पर सुखिया का घर था। आज सुखिया के पति को मरे दस वर्ष हो गए, तभी से बेचारी सूत कातती, पीसना पीसती और इसी प्रकार अपने जीवन के क्षण बिताती थी। सुखिया के चौदह वर्ष की एक लड़की थी। यही सुखिया का सहारा थी। इसी के कारण सुखिया अपने वैधव्य जीवन को सुख, शांति और सरलता से बिता रही थी। लड़की का नाम केसर था, किंतु प्यार से, वह उसे केसो कहा करती थी। केसो सुखिया का जीवन थी। धन-धान्य, सुख-वैभव जो कुछ भी था, केवल केसर थी। सुखिया ने उसका लड़के के समान पालन-पोषण किया था। एक दिन जब केसर बीमार हो गई थी, तब सुखिया पंडित गाँगूराम के घर आधी रात को दवा लेने गई थी। कड़ाके का जाड़ा था। वर्षा हो रही थी। वह पंडितजी से जाकर गिड़गिड़ाई—"मेरी केसो के लिये दवा दे दो, अन्यथा वह मर जायगी।" कहने का मतलब यह कि सुखिया केसर पर जी-जान से अनुरक्त थी।

केसर भोली-भाली और हँसमुख बालिका थी। वह बात-बात में हँसकर उत्तर देती। मा कई बार मना भी कर चुकी थी, किंतु वह उसका स्वभाव ही था। वह अब भी उसी प्रकार लड़कों में खेलती थी। मा समझाते-समझाते हार गई। अंत को उसे गाँव की बकरियाँ आदि चराने भेजने लगी। घर आने पर गोबर पथाती।

अब केसर में भी यौवन की झलक दिखाई देने लगी थी। उसका गेहुँआ रंग और भी निखर गया था। नयनों में अज्ञात सुषमा थी—उनमें एक मादक राग था। वह पासवाली घाटी में बकरियाँ चराती, गाँव का गाना गाती, और बकरियों से बातें करती। उसके पास उनके सिवा और कोई मित्र भी न था।

घाटी के पार एक बड़ा मनोरम ताल था। उसके आस-पास आम के वृक्ष थे। पानी में कमल खिल रहे थे। केसर कमल तोड़कर माला बनाती, और छोटे-छोटे मेमनों के गले में अनुरक्त नयनों से देखकर पहनाती। अब उसे प्रकृति के दृश्यों में आनंद आने लगा था। उसका हृदय ठीक कवि का-सा था। जिस प्रकार कवि प्राकृतिक दृश्यों में अद्भुत सुषमा ढूँढ़ता है, उसी प्रकार उसका एकांत मन प्रकृति की मंजुलता पर मोहित था।

❀ ❀ ❀

प्राची दिशा से प्रभात की सुनहली रश्मि-राशि धीरे-धीरे गगनांगन में आ रही थी। पक्षी अपने नीड़ से आहार की खोज में जा रहे थे, तो केसर ही क्यों रहती, उसने भी अपनी बकरियाँ सँभालीं। इसी समय मार्ग में गाँव के सेठ का लड़का चतुरसेन मिला। चतुरसेन पासवाले परगने के मिडिल स्कूल में पढ़ता था। केसर ने हँसकर कहा—"हे हो! चतरू!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुरसेन ने मुड़कर देखा, सुखिया की लड़की है।

"क्या है ?"

"आज देर से कैसे जा रहे हो ?"

चतुरसेन खड़ा हो गया। केसो उसके पास पहुँच चुकी थी। उसने फिर उसी तरह हँसते हुए कहा—"देर से कैसे ?"

चतुरसेन ने आर्द्र वाणी में कहा—"मा बीमार थी, इसलिये देर हो गई। भई, आज तो मार पड़ेगी !"

"तो क्यों जाते हो ? घर लौट जाओ।"

व्यग्रता दिखाते हुए चतुरसेन ने कहा—"न भई, घर में भी मार पड़ेगी !"

केसर अब भी हँस रही थी। चतुरसेन उसके मुख-चंद्र को चकोरी की तरह निस्तब्ध देख रहा था। केसर ने विजयी वीर के समान कहा, मानो कोई न सुलझनेवाली समस्या हल कर ली हो—

"तो मेरे साथ बकरियाँ चराओ।"

चतुरसेन को यह बात ठीक जँची। उसने सोचा, मेरे लिये यही मार्ग उत्तम है, क्योंकि कल पाठशाला में मैं अपनी मा की बीमारी का हाल बताकर बच सकता हूँ, और घर पर तो ठीक समय पर पहुँच ही जाऊँगा। वह केसर की बुद्धि की सराहना कर रहा था। उसकी अवस्था ठीक उस भूखे भिखारी की-सी थी, जिसे सारे दिन माँगने पर एक पैसा भी न मिले, और ठीक दिन-छिपे, जब वह निराश हो जाय, एकाएक उसे कोई रुपया दे दे, तो वह उसका कितना कृतज्ञ होगा। यही दशा चतुरसेन की थी। वह केसर के इस नए आविष्कार का आभारी थी। वह प्रसन्न था। उसने मुस्किराते हुए कहा—"है तो ठीक।"

घाटी आ चुकी थी। केसर ने पहले बकरियों को पानी पिलाया, फिर आम के वृक्ष की ठंडी छाया में हरी-हरी दूब के कोमल फ़र्श पर पहले चतुरसेन को बैठाया, फिर स्वयं बैठी। वह बार-बार पूछती—"पानी पिओगे ?" चतुरसेन सिर हिला देता। केसर की दशा उस आदमी के सदृश थी, जिसके घर मेहमान आया हो, और वह उसकी आव-भगत में लगा हो। वह उसके मनोरंजन को लक्ष करके गाने लगी। चतुरसेन मौन होकर उसके सुमधुर गायन में लीन था। वह उसके मुख-कमल को देख रहा था। उसने पहले भी केसर को देखा था, पर आज उसकी आभा, और सुषमा अपूर्व थी। आज उसमें विलक्षण आकर्षण था।

वायु के झोंके से केसर की ओढ़नी सरक गई। चंचल समीर उसकी अलि-सी श्यामल अलकों से क्रीड़ा कर रहा था। सर में कमल हँस रहे थे। चतुरसेन ने एक निःश्वास छोड़ते हुए कहा—"केसो ! देखो, कमल कितने सुंदर हैं ?"

"हाँ, मैं तो रोज़ इन्हीं से खेलती हूँ। तोड़ती भी हूँ। लोगे ?"

यह कहकर केसो उठ खड़ी हुई। उसने कमल तोड़कर चतुरसेन को दिया। चतुरसेन ने कमल को हृदय से लगा लिया। केसर बकरियों को इकट्ठा करने लगी। चतुरसेन की छुट्टी का समय हो गया था, अतः वह गाँव लौट आया।

(२)

लाला पूरनमल यहाँ के धनी-मानी आदमी थे। गाँव में अच्छी धाक थी। सब क़र्ज़दार थे। किसी को सिर उठाने की हिम्मत न थी। बाप चार सौ रुपए छोड़ गए थे, उन्हीं से अपनी हिकमत से दस-ग्यारह हज़ार कर लिए। लोग कहते—बनिए को ही परमात्मा ने धन पैदा करने को बनाया हैं। हम रात-दिन एक कर देते हैं, झूठ भी बोलते हैं, सौ कुकर्म भी करते हैं, पर पैसा पैदा होता नहीं दिखाई देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला के चतुरसेन ही एकमात्र संतान थी। वह उसे बड़े प्यार से रखते थे। चतुरसेन के कहते ही उसका काम कर देते। यहाँ तक कि वह अठारहवें वर्ष में है, किंतु फिर भी उससे आज तक एक गिलास पानी भी न मँगाया। यदि उसकी इच्छा होती, तो काम कर देता। लाला पूरनमल को गर्व था कि उनका बेटा तार पढ़ देता है। आदमियों में बैठते, तो प्रशंसा के पुल बाँध देते। कहते—"उस दिन दीनू भाई चुंगी के मुंशी के पास तार ले गए, किंतु वह पढ़ ही नहीं सका, फिर चतरू को लाकर दिया, चतरू ने चट पढ़ दिया। और, एक ने एक दिन बैठे हुए लोगों में कहा—"एक दिन कहता था, अगर मुझे तारीख़ और सन् बता दिया जाय, तो उस दिन कौन वार था, सो मैं बता सकता हूँ।"

लाला ने पुलकित होकर कहा—"यही मुझसे भी कह रहा था। मैंने उसकी परीक्षा लेनी चाही। मेरी बही में तारीख़, सन्, महीना, वार सब लिखे थे। मैंने सब बता दिया, पर वार न बताया। भैया, सच कहता हूँ, कोई चार-पाँच मिनट में ही वार बता दिया।"

इसी प्रकार चतुरसेन की प्रशंसा के पुल बँध जाते। वह भी अपने आपको चतुर समझता, किंतु अभिमान न था। कोई कुछ पढ़वाने लाए, और वह इनकार कर जाय, सो बात न थी।

चतुरसेन अपनी कक्षा में अच्छा था। वह जी लगाकर पढ़ता था। वह उन लड़कों में से न था, जो पढ़ने से जी चुराकर दिन-भर खेलते रहते हैं।

उस दिन जब चतुरसेन घर आया, तो उसका मुख म्लान था। वह लाख पढ़ने की चेष्टा करता था, पर मन पढ़ने में न लगता था। उसके हृदय में सरिता की बनती-बिगड़ती लहरों के समान लहरें उठतीं, और विलीन हो जातीं। उसके हृदय में घोर आंदोलन हो रहा था, जो आज से पहले कभी न हुआ था। कानों में सुमधुर गीत भरा था। मस्तिष्क में आलोचना हो रही थी। मन में विचार उठा—वह नीच ज़ात...... जुलाहे की लड़की, और मैं वैश्य। कहाँ वह, और कहाँ मैं! दूसरा विचार उठा—वह भी तो मेरे समान मनुष्य ही है। फिर तरंग उठी—किंतु धर्म......, फिर एक और भावना उठी, उस दिन हेडमास्टर ने बताया था—'जो जिसे उत्तम लगे, वही उसका धर्म है।'

आज उसकी आँखों के आगे केसर की रूप-राशि थी। वह कमल-सा मुख, वे रस-भरी बातें, वह मधुर मुस्कान उसके सामने थी। आज उसके कानों में एक मादक रागिनी बज रही थी। वह रागिनी, जो हरिण को मुग्ध कर लेती है। नयन-पट पर एक प्रतिमा सिनेमा के चित्रों के समान गतिमान् थी। आज उसके सामने सुषमा का संसार था, स्वर्ण-चित्र थे, रूप-राशि थी। वह रूप-राशि, जो मधुकर को विक्षिप्त बना देती है—जिससे शलभ उन्मुक्त हो जाता है। वह इसी प्रकार गंभीर भाव से बैठा हुआ था।

शिशु-जलद-दल से प्रभाकर की रश्मि-राशि क्रीड़ा कर रही थी। संध्या-सुंदरी हाथ में तारक-दीप लिए उधर उस पार—तिमिर-पट की ओर जा रही थी। वृक्षों पर चिड़ियाँ चहचहा उठीं। राधा ने आकर कहा—"क्या सोच रहे हो लला?"

"कुछ नहीं।" कहकर चतुरसेन उठ खड़ा हुआ।

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन चतुरसेन का मन पढ़ने में न लगा। अध्यापकों का पढ़ाना कोरी बकवास-सी प्रतीत हो रही थी। वह संज्ञा-हीन-सा मौन बैठा रहा। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी उसकी समझ में न आया। एक-एक करके सब घंटे ख़त्म हो गए। छुट्टी का घंटा बजा, किंतु चतुरसेन मौन बैठा रहा। एक लड़के ने कंधे पर हाथ रखकर कहा—"कहो चतरू भाई! बहुत उदास मालूम होते हो?"

"नहीं तो।"

हँसने का उपक्रम करते हुए चतरू उठ खड़ा हुआ। स्कूल से चला। मार्ग में घाटी पड़ती थी। वह केसर की ओर मुड़ा। हृदय स्पंदित था, पैर उठाए न उठते थे, किंतु फिर भी अज्ञात नियंत्रण उसे घेरे लिए जा रहा था। उसने सोचा, वह क्या समझेगी, कहीं यह न समझ बैठे कि यह मेरे पीछे क्यों पड़ा है? कहीं कुछ कह दे—फटकार दे, तो क्या रह जायगी?

घाटी आई। केसर कमल का डंठल चीरकर माला बना रही थी। उसकी दृष्टि नीची थी। चतुरसेन ठिठक गया। वह कई मिनट तक उस रूप-सुधा का पान करता रहा। माला बनाकर पशुओं को देखने के लिये केसो ने दृष्टि उठाई, सामने चतुरसेन था। मुस्किराते हुए कहा—"आओ चतरू!"

"नहीं, घाम बढ़ रहा है।"

"बैठो भी।"

"नहीं, मैं जा रहा हूँ, रोटी खानी है।"

चतरू बैठना चाहता था। वह उस रूप-माधुरी का पान करना चाहता था। उस अज्ञात हृदय से उठती हुई प्यास से तृप्त होना चाहता था, किंतु लाज न बैठने देती थी। वह मुस्किराता हुआ चलने को उद्यत हुआ। केसो ने कहा—"चतरू!" उसकी आँखें प्रश्नमयी थीं।

"हाँ।"

बात बदलते हुए केसर ने कहा—"यह हार..."

"हार!"

"पहन लो।"

चतरू ने हार ले लिया, और घर की राह ली। वह उदास था। उसकी दशा ठीक उस जुआरी की-सी थी, जो स्वयं अड्डे पर जाकर हार आवे। चतरू भी अपना सब कुछ यहीं हारकर जा रहा था। मन घाटी पर था, और वह जा रहा था घर की ओर।

❀ ❀ ❀

एक दिन रात को केसर को नींद न आती थी। वह विशाल गगन की ओर देख रही थी। मौन, न-जाने क्या पढ़ने की-सी चेष्टा कर रही थी। चाँदनी खिल रही थी, जो उस जीर्ण कुटी के टूटे छप्पर से डरती-डरती-सी आती प्रतीत हो रही थी। थोड़ी देर में नींद आ गई। वह स्वप्न में कह रही थी—"चतरू!"

"क्यों केसो?"

"नहीं, कुछ नहीं।"

"कुछ तो कहो।"

"मैं......मैं......"

कहते केसर का मुख लाल हो गया। बात मुँह से न निकलती थी। वह लजा गई। पैर के नाख़ून से ज़मीन कुरेदने लगी। चतरू ने मुस्किराते हुए कहा—"क्या कहना चाहती हो? कहो न।"

"यही कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।"

"मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ केसो!"

केसर अब भी सकुचाई-सी खड़ी थी।

चतरू ने कहा—"बोलो केसर!"

"हाँ......"

वही घाटी थी। वही ताल था। उसी प्रकार कमल हँस रहे थे। बत्तख़ें तैर रही थीं। आम की डाल पर मोर बोल रहा था। ताल के तट पर एक डोंगी पड़ी थी। चतरू ने हाथ पकड़कर कहा—"आओ केसो, बैठें।"

"हाँ-हाँ।"

केसो के मुख पर मुस्किराहट थी। चतरू डोंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला रहा था। केसो की कोमल उँगलियाँ भी सर के तरल जल से क्रीड़ा कर रही थीं। डोंगी बीच में आई। केसो ने हँसते हुए कहा—"चतरू!"

"कहो केसो!"

"अब मत चलाओ, छोड़ दो डोंगी को; स्वयं बहने दो।"

डोंगी निर्मल जल में स्वच्छंद बहने लगी। केसो ने कहा—"चतरू!"

"क्या?"

"वह देखो, कितना सुंदर है!" एक कमल की ओर संकेत कर केसो ने कहा।

कमल मलय-पवन के झोंके से दूसरे कमल को स्पंदित करने की चेष्टा कर रहा था।

"तोड़ूँ?"

कहकर चतरू उसकी ओर झुका। नाव का झोंक एक ओर हो गया। नौका उलट गई। चतरू और केसो डुबकी लेने लगे। केसो चिल्ला पड़ी। स्वप्न उचट गया।

आह......ह!

मा जग गई। मा ने उठकर पूछा—"अरे क्या है बेटी?"

अनमने भाव से केसो ने उत्तर दिया—"मा, बुरा सपना था।"

❀ ❀ ❀

चतुरसेन का प्रेम दीपक के समान था। जिस प्रकार दीपक स्वयं जलता रहता है—आह नहीं करता—मौन, शांत गति से, जब तक उसमें तेल है, उसी प्रकार वह भी विरह में घुला जाता था॥ वह नित्य नई-नई भूमिका बाँधकर जाता, पर केसर के पास जाते ही भूल-सा जाता था।

एक दिन—चतुरसेन बहुत ही साहस करके गया था। उसने भूमिका के लिये अच्छे-अच्छे शब्द ढूँढ़े थे। वह सोच रहा था—इस प्रकार मैं अपनी वेदना का इतिहास सुनाऊँगा। वह ज़रूर द्रवित हो जायगी। घाटी आई। वह चुपके से झाड़ी की आड़ में बैठ गया।

केसर शिला-खंड पर बैठी सरोवर के निर्मल जल में पैर हिला रही थी। उस कोमल पदाघात से जल सिहर-सा उठता था। वह मौन नीचे एकटक देख रही थी। उसे यह भी मालूम न था कि उसकी ओढ़नी सरक गई है। मलय-पवन केसर के कुंचित केशों से क्रीड़ा कर रहा था। उसकी हँसी न-जाने किस विषम अंतराल में विलीन हो गई। कहाँ वह पहले सारे दिन गाया करती थी, कहाँ यह निस्तब्धता! बकरियों की गरदन पर सिर रखकर बातें करती। बकरियाँ अज्ञात स्नेह से हाथ चाटने लगतीं, या मैं-मैं करके अज्ञात भाषा में जाने क्या कह देतीं। केसर हँस पड़ती, किंतु वह चंचलता, वह मधुर मुस्कान न-जाने कहाँ चली गई। अब उसके मुख पर उदासी थी। वह उदासी, जो धूल से ढके सूर्य पर होती है; वह उदासी, जो सूर्य के छिपने पर सूरजमुखी के मुख पर होती है, वही केसर के मुख पर थी। उसके हृदय में कोई पीड़ा थी। वह पीड़ा, जो भौंरे के हृदय में रहती है; वह पीड़ा, जो पतंगे के हृदय में दीपक के प्रति होती है, वही आज केसर को सता रही थी।

चतुरसेन ने साहस बटोरकर पंजों के सहारे चलना आरंभ किया। केसर के पीछे खड़ा हो गया, किंतु केसर अब भी निश्चल भाव से बैठी थी। चतुरसेन का हृदय धक्-धक् कर रहा था। उसका मुख लाल हो गया। आँखें मीचनी चाहीं, किंतु अज्ञात भय से न मीच सका। कंधे पर हाथ रक्खा। केसर चौंक पड़ी। उसने मुस्किराकर दृष्टि नीची कर ली। कानों तक मुँह लाल हो गया। चतुरसेन ने साहस बटोरकर कहा—"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

"..........।" केसर की आँखों में उत्तर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसके पास बैठ गया, बिलकुल समीप सटकर। देह से देह का स्पर्श हुआ। दोनो सिहर उठे। शिराओं में रक्त चक्कर लगाने लगा। हृदय में मधुर कंपन आरंभ हुआ। उस स्पर्श में उन्माद था। चतुरसेन ने केसर को बाहु-पाश में जकड़ते हुए कहा—"आज आनंद का दिन है!"

सचमुच वह आनंद का दिन था। मधुर मिलन था। दो हृदयों में कलित भावनाएँ थीं। नयनों में नवल राग था। सरोवर मलय-पवन से तरंगित था। कमल-कुसुम हँस रहे थे। लता झूम रही थी। आम-बौर पर कोयल कुहुक रही थी। दिनमणि की कलित किरणें आम्र-पल्लवों से आ रही थीं। दोनो के मुख पर उल्लास था। वह उल्लास, जो ऊषा की सुनहली रश्मियों में क्रीड़ा करनेवाले पुष्पों में होता है, वह उल्लास, जो सूर्योदय होने पर कमलिनी को होता है।

मादक पलकों को हिलाते हुए केसर ने कहा—"सचमुच, आज आनंद का दिन है!"

(३)

छ मास बाद—केसर और चतरू घुल-मिलकर एक हो गए थे। उनके शरीर दो थे, पर प्राण एक। स्कूल से लौटने पर चतरू केसर के पास बैठता, ख़ूब बातें होतीं। केसर भी हँसती, चतरू भी हँसता। केसर झाड़ियों में छिप जाती, चतरू ढूँढ़ता, और पकड़ने की चेष्टा करता। पकड़ लेने पर दोनो हँसते। ये ही इनके मधुर दिन थे। एक दिन वे इसी प्रकार खेल रहे थे। इसी समय दीनू किसी कार्य-वश पासवाले परगने में जा रहा था, इनका खेलना देखकर ठिठक गया। उसने देखा, वे हाथों में हाथ डाले हँस रहे हैं। इसी बात पर दीनू जल उठा, किंतु साहजी का लड़का ठहरा, नहीं तो, और कोई होता, तो ख़ून ही कर देता। जैसे-तैसे ख़ून का घूँट पीकर चला गया। घर आकर बैठा। राधा (अपनी पत्नी) से दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा—"हा राम! कलजुग आ गया, कलजुग!"

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।"

"तो फिर इस तरह क्यों निःस्वास लेते हो?"

"क्या कहूँ, घोर कलजुग आ गया!"

"कुछ बतओगे भी।"

"क्या बताऊँ।"

"न बताओ, बात बढ़ानी तुम्हें जाने कैसे आती है?"

"अरे ठहरो भी, तुम तो रूठी जाती हो। मैं कहना तो न चाहता था, पर तुमसे कहे देता हूँ; पर बात गुप्त रखने की है।"

"हाँ-हाँ।"

"साहजी का जो लड़का है न।"

"हाँ-हाँ।"

"औ' सुखिया की लड़की।"

"फिर?"

"अरे......तू तो निरी गँवार है।"

राधा ने भी नमक-मिर्च लगाकर बात मुलिया से कही। किंतु कह दिया कि तुझे मेरी क़सम, जो और से कहे। इसी प्रकार मुलिया ने अन्य से सौगंद दिलाकर कह दिया। किसी ने सिर बँधवाते हुए कहा—"तुम्हें मालूम है?"

"क्या?"

"अरे, सुखिया की लड़की की बात?"

"नहीं।"

उसने सारा वृत्तांत बता दिया।

यह बात सुखिया के कान में पड़ी, तो वह सन्न से रह गई। हाय! यह क्या हुआ? एकमात्र यही प्रश्न सुखिया के सामने था। आज उसके जीवन के ५० वर्ष बीत गए, किंतु नाक पर मक्खी न बैठने दी थी। आज उसे पुत्र और पुत्री का भेद मालूम हुआ। ओह! राम मुझे उठा ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी लड़की से तो मैं विना संतान ही ठीक रहती। हाय ! मेरी इज़्ज़त धूल में मिल गई, मैं क्या करूँगी ?

उधर साहजी के कान में बात पड़ी, तो सिर पकड़कर रह गए। चतरू से कड़ककर पूछा कि उसने धर्म क्यों नष्ट किया, किंतु बेचारा चतरू क्या उत्तर देता। उधर केसर का भी यही हाल था।

❀ ❀ ❀

एक दिन बड़ी कठिनता से दोनो प्रेमी मिले। चतरू ने केसो से कहा—"आओ केसो, कहीं भाग चलें।"

"लोग क्या कहेंगे ?"

"लोगों से क्या बनता-बिगड़ता है ?"

"नहीं-नहीं, नहीं चतरू !"

"तो केसो, मेरा-भी जीवन न रहेगा।"

"चतरू ! मेरी मा क्या करेगी ? मैं चली जाऊँगी, तो मेरी मा दुख पाएगी। बुढ़िया है, उसे एक मेरा ही सहारा है। चतरू ! चतरू ! नहीं-नहीं, मैं नहीं चल सकती।"

"अच्छा.........तो मेरा जीना ....."

"नहीं चतरू।"

चतरू ने तीव्र निःश्वास ली। केसर दुबिधा में पड़ गई—वह क्या करे, क्या न करे ?

❀ ❀ ❀

वही सर था। वही घाटी थी। आज भी सुमन हँस रहे थे। चाँदनी नवल पल्लवों पर विहार कर रही थी।

चतरू और केसो, दोनो तालाब में घुसे। पानी मुँह तक आया। दोनो ने एक दूसरे को बाहु-पाश में जकड़ लिया, और आगे की ओर डुबकी ले गए।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाजमा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।।-)
२५ " " " ५≡) } श्रीसीताराघव वैद्यशाला—मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-जापान-युद्ध

[श्रीयुत पन्नालाल श्रीवास्तव एम्० ए०]

जुलाई, सन् १६३७ में जब जापान ने चीन पर आक्रमण किया था, तब जापानी सेना-विशेषज्ञों का विश्वास था कि ज़्यादा-से-ज़्यादा तीन या चार महीने के भीतर ही वे चीन को नत-मस्तक कर देंगे, और मनमानी संधि करेंगे। परंतु दो वर्ष हो गए, जापान के विजयी होने के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते। पिछले कुछ महीनों से जो ख़बरें चीन-जापान-युद्ध के संबंध में मिल रही हैं, उनसे तो यही प्रकट है कि अब जापान हार पर हार खा रहा है। और, चीनियों ने कई खोए हुए स्थान फिर से ले लिए हैं। जापान के सेना-नायकों ने कभी न सोचा था कि पाँसा इस प्रकार पलट जायगा।

परंतु प्रश्न यह है कि चीनियों की यह विजय क्षणिक तो नहीं? जब युद्ध चल ही रहा है, तो आज न सही कल, या एक साल बाद, अंतिम विजय जापान की ही होगी। युद्ध में तो अंतिम विजय ही विजय समझी जाती है। अँगरेज़ों के संबंध में तो यह कहावत-सी हो गई है कि वे अंतिम लड़ाई को छोड़कर और सब लड़ाइयों में हार जाते हैं। जापान के संबंध में इस कहावत के सच होने की कहाँ तक संभावना है?

चीन-जापान-युद्ध का अध्ययन दो दृष्टियों से करना चाहिए—सैनिक दृष्टि और आर्थिक दृष्टि से। सैनिक दृष्टि से इस युद्ध का मोर्चा २,२४० मील की लंबाई पर फैला हुआ है। यह लंबाई गत महायुद्ध के पश्चिमी मोर्चे से चौगुनी है। इस लंबे मोर्चे पर लगभग दस लाख जापानी सैनिक लड़ रहे हैं। युद्ध का इतना बड़ा मोर्चा ही जापानियों के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। जब चीनी पेकिंग तथा शांसी प्रांतों में हार रहे, और पीछे हट रहे थे, उस समय जाग्रत् चीनी राष्ट्र के प्राण जनरल चांगकाई शेक ने कहा था, हमें निराश होने का कोई कारण नहीं। वह समय शीघ्र ही आवेगा, जब हमारी हार हमें विजय दिलाएगी। उन्होंने इस युद्ध का पृथक्करण करते हुए कहा था, युद्ध की पहली स्थिति वह होगी, जब जापानी चीन के बाहरी प्रांतों, रेलों तथा बंदरगाहों पर अधिकार कर लेंगे। दूसरी दशा में वे सारे बाहरी देश में फैल जायँगे। उस समय चीनी फ़ौजें उन्हें फोड़-फोड़कर मारेंगी। तीसरी स्थिति में जापानी मोर्चा जगह-जगह पर टूट जायगा, तब सैनिक तथा आर्थिक कठिनाइयों के कारण जापानी फ़ौजें भाग जायँगी। उन्होंने कहा था, युद्ध का दीर्घ जीवन ही हमारे लिये सफलता होगी। जनरल चांगकाई शेक का अनुमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक तो बिलकुल सच निकल रहा है। जैसा कहा जा चुका है, जापानी मोर्चा दो हज़ार मील से ज़्यादा फैला हुआ है। चीनी गौरीला सिपाही इसे जगह-जगह से तोड़ रहे हैं। इतने बड़े मोर्चे पर एक जगह से दूसरी जगह युद्ध-सामग्री और सैनिक ले जाना काफ़ी कठिन है। और, सबसे बड़ी कठिनाई तो यह कि जापानी युद्ध किससे करें? चीनी सिपाही अधिकतर अब गौरीला-युद्ध कर रहे हैं। इनके लड़ने का तरीक़ा ठीक उसी प्रकार का है, जिस प्रकार भारत में शिवाजी और उनके मराठे सैनिक मुसलमान फ़ौजों से लड़ा करते थे। ये चीनी गौरीला सिपाही सामने होकर कभी नहीं लड़ते। जापानी फ़ौजों को कुछ पता ही नहीं लगता कि वे कब और कहाँ प्रकट हो जायँगे। जब दुश्मन सामने नहीं, तब हर समय तो फ़ौज बेल्ट कसे लड़ने को खड़ी न रहेगी। ऐसे ही असावधानी के अवसरों को देखकर ये गौरीला सिपाही एकाएक हमला करके शत्रु-सेना को करारी हार देते हैं। युद्ध-सामग्री लूट लेते या नष्ट कर देते हैं, और अपने खोए हुए स्थानों को फिर से ले लेते हैं। जब युद्ध नहीं करते, तो जापानियों द्वारा अधिकृत रेलों, तारों और नदियों के पुलों को नष्ट कर देते हैं। इससे सेना-परिचालन असंभव हो जाता है। पिछले दो महीनों में इसी प्रकार के युद्ध से इन चीनी सिपाहियों ने कई खोए हुए स्थान फिर से प्राप्त किए, और करते जा रहे हैं। इसलिये जब हमें यह ख़बर मिले कि जापान ने अमुक स्थान पर अधिकार कर लिया, तो उसे ज़्यादा महत्त्व नहीं देना चाहिए, क्योंकि मालूम नहीं, किस समय चीनी गौरीला उसे फिर छीन लें। ये गौरीला देश-भर में फैले हुए हैं, और इन्हें इस प्रकार के युद्ध की पूरी-पूरी शिक्षा दी जाती है। जापानी सेना जितना अधिक इनसे डरती है, उतना और किसी से नहीं डरती। इन्होंने जापानी मोर्चे को जगह-जगह तोड़ दिया है।

गौरीला-युद्ध के सिवा कई स्थानों पर खुला युद्ध भी हो रहा है। चीन की लाल सेना तो अपनी वीरता के कारण अब प्रसिद्ध हो गई है। इस सेना ने जापानियों को कई करारी हारें दी हैं, और दे रही है। इस लाल सेना के सेनापति का कहना है कि अभी मैंने युद्ध-क्षेत्र में केवल आधी सेना उतारी है, आधी तो अभी सुरक्षित है। इसके सिवा शांति-पूर्ण चीनी प्रांतों में जनरल चांगकाई शेक ने जगह-जगह सैनिक शिक्षा के केंद्र खोल रक्खे हैं, जहाँ चीनी देशी और विदेशी सेना-विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा प्राप्त करते, और युद्ध-क्षेत्र में जाकर सुचारु रूप से लड़ते हैं। जैसा एक साल पहले था, अब चीन के पास सैनिकों की कमी नहीं। इस बात का प्रमाण पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी अपने व्याख्यानों और लेखों में दिया है। पंडितजी चीन से अभी लौटे हैं। वह वहाँ के सैनिक शिक्षा के केंद्र और लड़ाई के सामान बनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारख़ाने स्वयं देख आए हैं। चीनी सिपाहियों की वीरता की सराहना विदेशी संवाददाताओं ने विशेष रूप से की है। किसी भी नवजाग्रत् राष्ट्र की उमंग कौन रोक सकता है ?

अब रहा युद्ध-सामग्री का प्रश्न। जापान ने सोचा था, यदि चीन के सारे समुद्र-तट और बंदरगाहों पर अधिकार कर लिया जाय, तो चीन को युद्ध-सामग्री बाहर से मिलना बंद हो जायगी, और स्वयं चीन में युद्ध के लिये पर्याप्त मात्रा में सामग्री बनती नहीं, अतएव लाचार होकर चीन घुटने टेक देगा। चीन के पास कोई शक्तिशाली समुद्री बेड़ा नहीं, इसलिये जापान ने सफलता-पूर्वक चीन के सब बंदरगाह और समुद्री तट बंद कर दिए। समुद्र से युद्ध-सामग्री का आना बंद हो गया, पर वह दूसरे रास्तों से आने लगी। रूस सदा की तरह थल-मार्ग से सामग्री भेजता है, उसे कोई बाधा नहीं। इँगलैंड और फ़्रांस अब ब्रह्म-देश और इंडोचाइना के थल-मार्ग से सामग्री भेजने लगे। जापान को यहाँ भी मुँह की खानी पड़ी। उसने इसका तीव्र विरोध किया, पर सब निष्फल हुआ। अब जापान को निश्चय हो गया कि जब तक इँगलैंड और फ़्रांस चीन की इस प्रकार सहायता करते रहेंगे, तब तक विजय दूर की बात है। इसलिये जापान ने अब चीन के ब्रिटिश प्रदेश टिंटसिन का घेरा डाल दिया। परिस्थिति क़ाफ़ी गंभीर हो गई। जापान ने साफ़ कह दिया कि वह ब्रिटेन की जापान-विरोधिनी नीति का अंत चाहता है। इँगलैंड इस समय जापान से युद्ध नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह योरप में युद्ध की आशंका कर रहा था। इसलिये इँगलैंड ने समझौते का प्रस्ताव रक्खा। टोकियो में अँगरेज़ राजदूत और जापान सरकार के प्रतिनिधियों की गोल-मेज़ सभा बैठी। यह सभा चल ही रही थी कि योरपियन राजनीति ने एकाएक ऐसा पलटा खाया कि सभा टूट गई, और जापान उलटा इँगलैंड की सहायता के लिये मुँह देखने लगा। जापान के मित्र जर्मनी और शत्रु रूस में आपस में मित्रता का समझौता हो गया। इटली जर्मनी का साथी है। जर्मनी और रूस ने मिलकर दो तरफ़ से पोलैंड पर आक्रमण कर दिया है। इस मित्रता के समझौते के कारण अब जापान का कोई मित्र नहीं रह गया है। इँगलैंड से तो उसने शत्रुता कर ही ली थी। जब जर्मनी की सहायता की आशा टूट गई, तो जापान ने तुरंत ही टिंटसिन का घेरा उठा लिया, और इँगलैंड के विरुद्ध प्रदर्शन बंद कर दिए। और, यद्यपि इँगलैंड की नीति चीन में अब भी वही है, जो पहले थी, पर अब जापान उसमें हस्तक्षेप या विरोध नहीं करता। आगे परिस्थिति चाहे जैसी हो, पर इस समय तो यह बात सत्य है कि रूस, फ़्रांस और इँगलैंड सफलता-पूर्वक चीन को युद्ध-सामग्री पहुँचा रहे हैं, और जापान का समुद्री घेरा बेकार-सा हो गया है। साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन को जैसे-जैसे समय मिलता जा रहा है, वैसे-ही-वैसे वह भी अपने निज के कारखाने खोल रहा है।

आर्थिक दृष्टि से यदि हम चीन-जापान-युद्ध का अध्ययन करते हैं, तो जापान की स्थिति महान् संकट-पूर्ण पाते हैं। जापान में खनिज पदार्थ और कच्चे सामान नहीं होते। वह लोहा, कोयला, कपास, जूट, रबर इत्यादि दूसरे देशों से ख़रीदकर, अपने कारखानों में बनाकर, बना हुआ माल संसार-भर के बाज़ारों में बेचता है। परंतु जब से युद्ध छिड़ा, तब से जापान के लिये ख़रीदना और बेचना दोनो ही कठिन हो गया है। जापान के अधिकतर कारख़ाने आजकल युद्ध का सामान बनाने में लगे हुए हैं। अब वह संसार के बाज़ारों में बेचने के लिये सामान कहाँ से बनावे ? युद्ध-क्षेत्र में लगभग १० लाख सैनिक हैं, उन पर भी लाखों रुपए प्रतिदिन ख़र्च होते हैं। जिन रुपयों से वह कच्चा माल ख़रीदता था, वे तो युद्ध-क्षेत्र में नष्ट हुए जा रहे हैं। जापान के जहाज़ संसार-भर के देशों के साथ व्यापार करते थे, वे अब सेनाओं को इधर-उधर ले जाने, युद्ध-सामग्री ढोने इत्यादि युद्ध-संबंधी कामों में लगे हैं। इससे जापानी राष्ट्रीय आयु का एक बड़ा भारी भाग नष्ट हो गया है।

इस युद्ध के कारण जापान के व्यापार को कितना भारी धक्का पहुँचा है, इसका अंदाज़ नीचे दिए हुए आँकड़ों से लगाया जा सकता है। भारत और जापान के बीच में बहुत भारी व्यापार चलता है। जापान भारत से लाखों रुपए का कपास तथा अन्य कच्चे माल ख़रीदता है, और बदले में कपड़ा, काच, रबर, धातु इत्यादि के तैयार माल बेचता है। जापानी माल तो भारत में सस्तेपन के लिये एक कहावत-सा हो गया है। श्रीआर० आर० सक्सेना जापान में भारत-सरकार के व्यापार-कमिश्नर हैं। अपनी सन् १९३७-३८ का रिपोर्ट में वह कहते हैं कि युद्ध के कारण सन् १९३८ में पिछले वर्ष की तुलना में जापान ने जो माल भारत से ख़रीदा, उसमें ७६.७ प्रति सैकड़ा की कमी रही; और जापान से भारत में जो माल आया, उसमें ३०.७ प्रति सैकड़ा की कमी आई। सबसे ज़्यादा कमी बने हुए पक्के माल में आई, जो सारे व्यापार का ६७ प्रति सैकड़ा है। भारत के देशी और अँगरेज़ी कपड़े के व्यापारी जापानी कपड़े के साथ सफलता-पूर्वक प्रतियोगिता नहीं कर पाते थे, क्योंकि वह इनसे कहीं ज़्यादा सस्ता होता था। पर सन् १९३७-३८ में जापानी कपड़ा भारतीय तथा विलायती कपड़े के साथ प्रतियोगिता नहीं कर सका। जापान के व्यापार का जो हाल भारत के साथ रहा, वही अन्य देशों के साथ हुआ। बल्कि अमेरिका तथा इँगलैंड इत्यादि देशों के साथ तो और भी बुरा रहा। क्योंकि जापानी माल की बिक्री तो वहाँ कम हो गई, पर साथ ही जापान इन देशों से युद्ध का सामान, गोला-बारूद, मशीनें इत्यादि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ों रुपए की तादाद में ख़रीदता है। इनके लिये उसे रुपया देना पड़ता है। इससे राष्ट्र का संचित धन दिन-पर-दिन घटता जाता है, और तरह-तरह की कठिनाइयाँ प्रतिदिन उठ रही हैं।

अपने व्यापार को समतुल रखने के लिये जापान ने, सन् १९३७ में, ८७,५७,००,००० येन की क़ीमत का सोना बाहर भेजा, और सन् १९३८ में ७५,००,००,००० येन के मूल्य का। जापान सोना प्राप्त करने के लिये जी तोड़कर प्रयत्न कर रहा है। क्योंकि अंतरराष्ट्रीय विनिमय तो सोने में ही चलता है। बैंक ऑफ़् जापान वहाँ का राष्ट्रीय बैंक है, जैसा भारत में रिज़र्व बैंक ऑफ़् इंडिया है। इस बैंक में, सन् १९२९ में, १०,२०,००,००० पौंड मूल्य का सोना था, पर आज केवल २,९०,००,००० पौंड मूल्य का बच रहा है। कितनी भारी कमी है। देश-भक्त धनी जापानी अपने क़ीमती जवाहरात सरकार को दे रहे हैं, जिसमें देश एकाएक आर्थिक संकट में न पड़ जाय। विदेशी मुद्रा की जो रक्षित रक़में बीमा-कंपनियाँ रक्खे हुए थीं, वे उन्होंने गवर्नमेंट को दे दी हैं। बैंक ऑफ़् जापान का नोट छापने का अधिकार दुगुना कर दिया गया है। दस वर्ष पहले एक दस येन का नोट ६.५३ येन मूल्य का सोना और ३.४७ येन मूल्य का सरकारी काग़ज़ सरकारी मंत्री निर्देश करता था। परंतु आज वही नोट ७.४० येन सरकारी काग़ज़ और केवल २.६० येन मूल्य के सोने का निर्देशक है। इस दो वर्ष के युद्ध के कारण जापान को १,६८,५०,००,००० येन मूल्य का सोना बाहर भेजना पड़ा है।

चीन अपनी मुद्रा की रक्षा ब्रिटेन की सहायता से कर रहा है। चीन का सिक्का युआन विदेशी मुद्रा में बदला जा सकता है। ब्रिटेन, फ़्रांस और अमेरिका की करोड़ों रुपए की पूँजी चीन में लगी हुई है, इसलिये ये देश चीन की मुद्रा को कभी न गिरने देंगे। जब चीन पर आर्थिक संकट आया था, तब ब्रिटेन ने चीन को चाँदी देकर सहायता की थी। पर जापान की इस प्रकार की सहायता कोई नहीं कर रहा है। जापानी येन विदेशी मुद्रा में नहीं बदला जा सकता। जापान के सबसे बड़े विदेशी हितैषी जर्मनी और इटली थे। परंतु उनके ख़ज़ाने स्वयं ख़ाली हैं, वे जापान की सहायता कहाँ से करेंगे ? और, अब जर्मनी स्वयं एक भयंकर युद्ध में फँस गया है। यदि वह चाहे, तो भी जापान को किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकता।

इस आर्थिक कठिनाई से जापान का व्यापार बैठा जा रहा है। राष्ट्रीय आयु कम हो गई है। अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में जापान की साख कम हो गई है, उसे कोई क़र्ज़ या उधार माल देने को तैयार नहीं। और, सबसे बड़ी बात जो हुई है, वह यह है कि देश में लोगों का जीवन दिन-पर-दिन महँगा होता जाता है। जब से युद्ध आरंभ हुआ, तब से वस्तुओं के फुटकल दाम २५ प्रति सैकड़ा बढ़ गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ों की क़ीमत ३२ प्रति सैकड़ा बढ़ गई है, खाने-पीने की वस्तुओं की २० प्रति सैकड़ा और जलाने की वस्तुओं की ३० प्रति सैकड़ा। जापानियों की दैनिक रहन-सहन दिन-पर-दिन महँगी होती जाती है। सारा देश उजाड़-सा होता जा रहा है। कहीं भी मोटरकार चलती नहीं दिखाई देती। बाज़ार आधे से ज्यादा बंद हो गए हैं। ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिन्होंने दो साल से कपड़े नहीं बनवाए, पुराने कपड़ों पर ही दिन काट रहे हैं। जनता के मुँह पर उदासी छाई है। पता नहीं, युद्ध में कितने संबंधी मारे गए, और कितने मारे जायँगे। मज़दूर अधिक काम और कम मज़दूरी के कारण असंतुष्ट हैं। जनता जल्दी-से-जल्दी युद्ध का अंत चाहती है।

यह है जापान की आंतरिक और बाह्य स्थिति। इससे हम दोनो लड़ाकू राष्ट्रों की शक्ति का अंदाज़ लगा सकते हैं, और यह अनुमान कर सकते हैं कि चीन-जापान-युद्ध का भविष्य क्या होगा। राजनीति में भविष्यवाणी तो की नहीं जा सकती, परंतु दोनो राष्ट्रों के बल को सब पहलुओं से तौलते हुए यह कहा जा सकता है कि समय जापान के विरुद्ध है। जब से रूस और जर्मनी में समझौता हुआ है। तब से जापान एक राजनीतिक अनाथ हो गया है। रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी टूट गई। अब जर्मनी और इटली की सहायता या सहानुभूति की उसे कोई आशा नहीं। रूस ने सदा से चीन की सहायता की है। वह जापान की उन्नति में अपनी अवनति देखता है। इँगलैंड और अमेरिका तथा फ्रांस की करोड़ों रुपए की पूँजी चीन में लगी हुई है। यदि ये जापान की सहायता करेंगे, तो इनका सुदूर पूर्व का व्यापार नष्ट हो जायगा, क्योंकि जापान का ध्येय चीन के व्यापार को अपने हाथ में पाना है। उसने साफ़ कह दिया कि एशिया एशियावासियों के लिये है। इसलिये इँगलैंड जापान से चाहे क्षणिक समझौता कर ले, पर उसे चीन में विजयी कभी न होने देगा। इन सब कारणों से जापान की स्थिति बड़ी नाज़ुक हो गई है, और उसकी जीत की आशा दिन-पर-दिन क्षीण होती जाती है। साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि चीन एक नवजाग्रत् राष्ट्र है, और उसके नेता जनरल चांगकाई शेक महत्त्वाकांक्षी हैं। एक नवजाग्रत् राष्ट्र की स्फूर्ति आसानी से नहीं दबाई जा सकती। लगभग सवा सौ वर्ष पहले नेपोलियन बोनापार्ट ने चीन की ओर इशारा करके कहा था कि वहाँ एक राक्षस सो रहा है। उसे सोने दो, क्योंकि जब वह जागेगा, तो सारे संसार को हिला देगा। आज चीन जागा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित
झंडु

केन्थाडींन हेअर ओइल

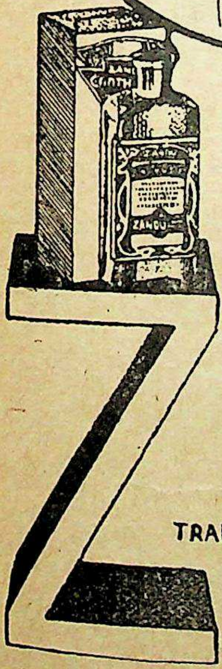

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताजगी मिलती है।
आज ही से आज़मायश के लिये ख़ास सिफ़ारिश है।

TRADE MARK

झंडु
फ़र्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ ,, ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

✻ सात भाग ✻

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं; क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है, उनके रोग दूर भागते हैं। इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद दिनों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है!

	पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय १ ला भाग	३)	१॥)
" २ रा भाग	५)	२॥)
" ३ रा भाग	४।)	२=)
" ४ था भाग	४।)	२=)
" ५ वाँ भाग	५)	२॥)
" ६ ठा भाग	३॥)	१॥)
" ७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा १२ वाँ संस्करण	३)	१॥)

दस हज़ार वर्षों में नई बात!

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

	मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक सचित्र	४।)	२।)
वैराग्यशतक "	५)	२॥)
शृंगारशतक "	३)	१॥)
	१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बेकारी के युग में

अधिक संतानें उत्पन्न करना पाप है !

अधिक संतानोत्पत्ति से स्त्रियों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। जीवन नीरस और विषम बन जाता है। फिर अधिक संतानों का भरण-पोषण माता-पिता के लिये एक समस्या है। इसलिये—

कम संतानें उत्पन्न करो।

संतान-संख्या सीमित रखने के लिये हिंदी में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है

संतान-निग्रह-विज्ञान

लेखक—डॉ० रामचंद्र मिश्र एम्० बी०,-बी० एस्०

जिन स्त्री-पुरुषों के संतानें अधिक हैं, तथा जो और संतानें उत्पन्न करना नहीं चाहते तथा जिन रुग्णा स्त्रियों को गर्भ-धारण करने में जान-जोखिम का सामना है, ऐसी स्त्रियों को पुस्तक में वर्णित उपायों के प्रयोग में लाने से गर्भस्थिति न होगी। १७ चित्रों और आकृतियों-सहित कपड़े की सुंदर जिल्दवाली पुस्तक का मूल्य केवल १) है, डाक-ख़र्च ।=)। ; 'अरुण' के ग्राहकों को पुस्तक पौने मूल्य में मिलेगी।

आज ही ऑर्डर दीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

रेलवे-स्टेशनों पर ह्वीलर की बुक-स्टालों पर भी बिकती है।

पता—"अरुण" कार्यालय, मुरादाबाद (यू० पी०)

हिंदी में सबसे सस्ता

सचित्र, साहित्यिक, सामाजिक तथा कहानी-प्रधान मासिक पत्र

'अरुण'

रोचक, मौलिक कहानियाँ, विदेशी कहानियों के ललित अनुवाद, मार्मिक कविताएँ, धारावाहिक उपन्यास, हास्यरस-प्रधान प्रहसन, साहित्यिक तथा सामाजिक लेख, निष्पक्ष समालोचना, 'पाँडेजी की टेलीफ़ोन-वार्ता', फूलों की डाली, २५०) इनाम की 'अरुण'-पहेली, तिरंगे तथा इकरंगे अनेक चित्र इसकी विशेषताएँ हैं।

'अरुण' पुरस्कार-पहेलियाँ हिंदी-संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।

वार्षिक मूल्य ३)] नमूने की प्रति मुफ़्त [एक प्रति ।)

रेलवे-स्टेशनों पर ह्वीलर की बुक-स्टालों तथा शहरों की अख़बार-एजेंसियों में बिकता है।

पता—'अरुण' कार्यालय, मुरादाबाद (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामी लेखकों की नामी पुस्तकें

सुप्रसिद्ध कहानी लेखक श्रीसुदर्शन	चार कहानियाँ	मूल्य २)
	पनघट (कहानियाँ)	मूल्य १॥)
	राजकुमार सागर	मूल्य ॥)
	झंकार (गीत-संग्रह)	मूल्य ॥)
आधुनिक भूषण सुकवि श्रीअनूप शर्मा एम्० ए०, एल्० टी०	सिद्धार्थ (महाकाव्य)	३)
	सुमनांजलि (काव्य-संग्रह)	२)
सीतामऊ के राजकुमार डा० रघुवीरसिंह डी० लिट्	सप्तद्वीप	१॥)
	शेष स्मृतियाँ	३)
रूस-प्रवासी डा० सत्यनारायण पी० एच० डी०	रोमांचक रूस में (उपन्यासात्मक यात्रा)	२)
विचारक और लेखक श्रीजैनेंद्रकुमार	जैनेंद्र के विचार	३)
	प्रस्तुत प्रश्न	३)
	नीलम देश की राजकन्या	१॥)
	त्याग-पत्र	१)

पथ के दावेदार

(पथेरदावी)

स्व० शरच्चंद्रचटर्जी का राजनीतिक रोमांचकारी उपन्यास, जो दस वर्ष तक ज़ब्त रहा, और जिसके पढ़ने के लिये लोग तरसते थे, प्रकाशित हो गया है। भारतीय साहित्य में यह बे-जोड़ उपन्यास है। पृष्ठ-संख्या ३५०। मूल्य सिर्फ एक रुपया और सवा रुपया। गुजराती में इसी का मूल्य चार रुपया और बंगाला में तीन रुपया है।

नोट—हमारा बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

संचालक—हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय

हीराबाग़, गिरगाँव, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

[श्रीयुत कुँवर चंद्रप्रकाशसिंह]

पावस-निशीथ, घन-संकुल नभ,
रस-मुकुल बरसती जल-धारा ;
कुछ खोज रही दामिनी विकल,
तुम सोईं मुद्रित दृग - तारा ।
बिखरी कपोल पर कुटिल अलक,
कुछ रहस-भरी मृदु पवन-चपल ;
निद्रित इस मुख-छवि में विलीन
कितने ब्रीड़ा-पीड़ा, सुख-छल ।

❀ ❀ ❀

सोओ प्रिय, सोए विश्व स्तब्ध,
हो तमोमयी यह निशा अमर;
निष्पलक चंचला के क्षण में
मैं पिऊँ रूप लोचन भर-भर ।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें । बिना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी ।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-समाज तथा धार्मिक विकास

(गतांक से आगे)

[रावराजा डॉक्टर श्यामबिहारी मिश्र तथा रायबहादुर पंडित शुकदेवबिहारी मिश्र]

जिस प्रकार द्रविड़ों में वैदिक मत फैलने से उस पर भी थोड़ा-बहुत द्राविड़ धर्म का प्रभाव फैला, उसी प्रकार हिंदू गार्हस्थ्य समाज में बौद्ध-मत फैलने से अति शीघ्र उसका शुद्ध तार्किक रूप हटकर उसमें विश्वासवाद बढ़ने लगा, जिससे गौतम बुद्ध का मानुषीय भाव हटकर उनमें देव-भाव जुड़ने लगा। किया तो ऐसा गया उनका माहात्म्य बढ़ाने को, किंतु इसी प्रयत्न ने भारत में पहले तो शुद्ध बौद्ध-मत को नष्ट करके उसमें क्रमशः विश्वासवाद की महती वृद्धि कर दी, और तब उसकी उच्चता नष्ट हो जाने से वह धीरे-धीरे भारतीय समाज में अमान्य होकर यहाँ से लुप्त हो गया ; यद्यपि लंका, चीन, जापान, बर्मा, स्याम आदि में अब तक व्यापक रूप से चल रहा है। हिंदुओं में त्रिदेव का मान विशेष था, और बुद्ध का उनसे कम। उधर बौद्धों में भी हिंदू-देवता माने जाते थे, किंतु बुद्ध का नंबर सबसे बड़ा था। धीरे-धीरे यह विष्णु भगवान् के अवतार हिंदुओं तक में माने जाने लगे। भगवान् बुद्ध के अनुसार उच्च कर्मों से केवल वही सत्कर्मी निर्वाण प्राप्त कर सकता था, किंतु उनके बढ़े हुए प्रभाववाले मत में एक व्यक्ति के सत्कर्मों से सैकड़ों-हज़ारों लोग निर्वाण प्राप्त करने लगे। इस प्रकार जहाँ शुद्ध बौद्ध-मत केवल एक के तारने से हीनयान कहलाया, वहाँ प्रभाव बढ़े हुए चेलों के मत में एक के द्वारा हज़ारों के तरने से वह अशुद्ध विश्वासात्मक मत महायान कहलाने लगा। अशोक के समय तक जो त्रिपिटक (बौद्ध-ग्रंथों का संग्रह) था, वह हीनयानीय विचारों पर चलता था, किंतु मुख्य कुशान सम्राट् कनिष्क के समयवाला वही त्रिपिटक महायानीय मत-गर्भित भावों से भर गया। इन दोनो मतों के अनुसार बौद्ध-दर्शन ग्रंथ भी बने। समय के साथ भगवान् बुद्ध की पहले तो सांकेतिक प्रतिमाएँ बनीं, और पीछे मानुषीय रूप में भी बनने लगीं। भारतीय समाज में प्रतिमाओं का भारी चलन बौद्ध-मत और कुशान साम्राज्य के प्रभाव से चला। हिंदुओं में भी इस काल प्रतिमा का भारी प्रचार और पूजन स्थापित हुआ। २२५ से २४१ ईसवी तक भारत से कुशान और आंध्र-साम्राज्य, दोनो नष्ट होकर पहले तो प्रायः ६० वर्षों के लिये नाग (भारशिव)-साम्राज्य स्थापित हुआ, और तब प्रायः २५० से ३३० ई० तक वाकाटक-साम्राज्य मध्य भारत से फैलकर उत्तर तक जमा। कुछ काल ये दोनो साम्राज्य साथ-ही-साथ चले, और तब वाकाटक-सम्राट् ने उत्तराधिकार में अपने नाना नागराज का भी साम्राज्य प्राप्त किया। अनंतर वाकाटकों को प्रायः ३३० ई० में पराजित करके गुप्त-साम्राज्य स्थापित हुआ, और तब वाकाटक-प्रभाव कई शताब्दियों तक केवल राज्य के रूप में स्थिर रहा। भारशिवों व नागवंशी होने तथा गंगा-यमुना के देश में प्रभाव प्राप्त करने से हमारे प्राचीन मंदिरों में गंगा-यमुना की मूर्तियाँ देवियों के रूप में स्थापित होने लगीं, और इनके शृंगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नागों की मूर्तियाँ बनने लगीं। महायानीय मत के साथ देश में शैव-मत का भी प्रभाव बढ़ता गया, और इन दोनो में विश्वासवाद प्रायः समान होने से बौद्ध-मत की तार्किक उच्चता लुप्त हो गई, जिससे इनमें धार्मिक महत्ता या हीनता समान हो गई। उधर बौद्ध-मत में मांसाशन के निषेध, गुरु, माता, पिता आदि के राजाज्ञा द्वारा भी मान से व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बहुत कमी थी। बौद्ध लोग विदेशों में स्वधर्म फैलाने के चाव में इतना पड़े कि जब संबंध-वृद्धि से बौद्ध विदेशियों ने भारत पर भी न्यूनाधिक मात्रा में अपना राज्य तक फैलाया, तब भी धर्मांधता के चाव में भारतीय बौद्धों ने स्वदेश-प्रेम की कोई उमंग न दिखाई, वरन् अपने उन देश-प्रेमी हिंदू भाइयों को कोसा, जिन्होंने विदेशियों के राज्य हटाकर भारतीय स्वराज्य के स्थापन में सफल प्रयत्न किए। इन कारणों से धीरे-धीरे विना किसी दबाव के लोक-स्वीकृति खोकर और शैव-मत के तर्कों से पराजित होकर बौद्ध-मत भारत से लुप्त हो गया। इसका प्रभाव बहुत करके राजमान से ही बढ़ता था, और जब राजा हिंदू होता था, तब घट जाता था। अपने अधिक-से-अधिक विस्तार के समय भी चौथाई से अधिक भारतीयों को यह बौद्ध न बना पाया, ऐसा पंडितों का मत है, यद्यपि उस काल जन-गणना के अभाव में निश्चय के साथ कुछ कहा नहीं जा सकता। प्रायः ५१० ई० तक गुप्त-साम्राज्य सबल रहा। ४६५ के लगभग गुप्त-सम्राट् बौद्ध हो गए। ५११ ई० के निकट से ५२७ तक शैव हूण-सम्राट् रहे। अनंतर यशोधर्मन और तब मौखरि-साम्राज्य ६०६ ई० तक रहा। ये लोग हिंदू थे। फिर ६४७ ई० तक बौद्ध हर्षवर्द्धन का साम्राज्य रहा। इनके पीछे बौद्ध-मत ने कभी ज़ोर नहीं पकड़ा। बंगाल के पाल नरेश अवश्य बौद्ध थे। छठी शताब्दी तक वाकाटक-राज्य कुछ प्रांतों में स्थापित रहा। इसी वंश के पल्लव नरेशों ने कांची में चौथी से दसवीं शताब्दी तक शासन किया। इनके प्रभाव से ठेठ दक्षिण में उत्तर भारतीय हिंदू-सभ्यता अच्छी फैली। पांड्य और चोल राज्यों के भी ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी तक ऐसे ही प्रभाव पड़े, जिससे उस ओर हिंदू-सभ्यता महत्ता-पूर्ण हुई। यही फल भारशिव, वाकाटक और गुप्त-साम्राज्यों एवं राज्यों का पड़ा। गुप्तों ने वैष्णव-मत की महिमा अच्छी बढ़ाई।

शैव-मत में दार्शनिक और उपासना-संबंधी दो विभाग थे। लिंग-पूजन के कारण इसमें कामुक मत था ही। एक लिंगायत संप्रदाय भी था, तथा पाशुपत भी चलता था, जिसे स्वयं शंकराचार्य ने शैव होकर भी निंद्य ठहराया। यह आठवीं शताब्दी की बात है। शैव-मत के साथ बंगाल, आसाम और मदरास में शाक्त-मत का भी बल था। इसकी ७२ शाखाओं में ६ दक्षिण-मार्गस्थ हैं और शेष वाम-मत-पूर्ण। इसमें कामुक विचारों की भरमार है। शाक्त-मत का नाम लेने से ही कामुक धर्म का विचार उठ पड़ता है। कश्मीर में शुद्ध दक्षिण-मार्गस्थ शैव-मत का बल था। शैव और शाक्त-मतों में कभी कोई विरोध नहीं हुआ। इन मतों में कामुक भावों की वृद्धि द्राविड़ प्रभाव से हुई। द्रविड़ों को स्वमत में लाने और रखने की इच्छा से ही आर्यों ने उनके नीचे धार्मिक भावों की तीव्र निंदा न की, जिससे समय पर उच्च वैष्णव-मत में भी वाम-मत के विचार स्थान पा गए। लकुलिन अथवा नकुलीश कोई प्राचीन शैव उपदेशक थे, जिससे सारे शैव-संप्रदाय लाकुल कहलाते हैं। वैष्णव-मत प्रायः दार्शनिक था, और शैव-मत की प्रतिकूलता को निकला था। मूलतः यह बहुत ही सात्त्विक और वाम-मत के प्रतिकूल था, यद्यपि समय पर राधा के रूप में इसमें वाम-मत भी घुस ही पड़ा। वैष्णव-मत में कई धर्मों के तत्त्वों तथा विचारों का सामंजस्य है। गीता के पूर्व पश्चिमीय-मध्य भारत में वासुदेव - संप्रदाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलता था, जिसमें वह ईश्वरावतार के समान थे। कोई एकांतिक मत भी किसी श्वेतद्वीप से आकर चला। इसमें नारायण को हरि के रूप में पूजा जाता था। थोड़े ही दिनों में ये दोनो मत मिल गए, जिससे नारायण, हरि, भगवत्, वासुदेव आदि का एकीकरण हो गया। दूसरी शताब्दी बी० सी० में वैष्णव-मत ज़ोर से चला, जिससे ये दोनो मत भी इसी में जुड़ गए, और कृष्ण वासुदेव के रूप में भी पुजने लगे। स्वयं गीता में वह विष्णु के अवतार थे, और तीसरी-चौथी शताब्दी ईसा-पूर्व में ही, मेगास्थनीज़ के समय, वह मथुरा में पुजते थे, किंतु अब वासुदेव तथा हरि होकर भी पुजने लगे। तीसरी शताब्दी बी० सी० में कार्ष्ण वैष्णवता का इतना बल था कि प्रभावशाली ग्रीक लोग भी अपने को भागवत कहकर भारत में वासुदेव की पूजा करते थे। पहली शताब्दी ईसवी के ग्रंथ अमर-कोष में दामोदर शब्द मिलता है, जो बालकृष्ण से संबद्ध है। लगभग इसी काल मथुरा की आभीर-जाति गोपाल कृष्ण को पूजती थी। यह उस काल भी एक विदेशी जाति थी। समय पर कृष्ण के साथ गोपाल कृष्ण का एकीकरण पूजन में भी होकर बालकृष्ण के पूजन-विधान की वृद्धि हुई। वैष्णव पूजन-विधान युक्त प्रांत एवं उत्तरी भारत में गीता के ही समय से बराबर चला आया था, किंतु समय पर बौद्ध-मत की वृद्धि से इसका प्राधान्य यहाँ कम हो गया, और बहुतेरे वैष्णव भक्त दक्षिणी भारत को चले गए। दूसरी शताब्दी ईसवी में वृष्णि-जाति के कुछ लोगों का राज्य मदुरा-प्रांत में था। इनमें वैष्णव-धर्म का प्रचार था। बौद्ध-मत-ग्रहण के पूर्व गुप्त-सम्राट् भी बराबर वैष्णव होते आए थे। समझ पड़ता है कि बौद्ध होने ही से लोक-साहाय्य खोकर यह साम्राज्य बल-हीन होकर गिरा। चौथी-पाँचवीं शताब्दी ईसवी में कुछ भक्तों ने तामिल-प्रांत में वैष्णव-साहित्य रचा, जो बहुधा गीतात्मक हुआ, और जिसका केंद्र आड़वर में था। ये लोग नारायण विष्णु को ईश्वर मानते थे। इसी प्रकार वहाँ शैव-मत का भी बल बढ़ा, जिसके साथ दार्शनिक ज्ञान भी वृद्धिगत हुआ।

इन भक्तों में बहुतेरे महाशय भारी विद्वान् और महात्मा थे। इन्हीं महात्माओं में प्रसिद्ध उपदेशक शंकराचार्य का जन्म आठवीं शताब्दी में हुआ। इन्होंने उत्तर-भारत में आकर जगत्प्रसिद्ध दार्शनिक शैव-मत, अद्वैतवाद एवं तार्किक मत का डंका पीटा। कश्मीर से रासकुमारी तक सारे भारत में घूमकर पाशुपत मतावलंबी नीलकंठ, पूर्व-मीमांसावादी मंडन मिश्र तथा अनेकानेक बौद्ध एवं जैन-पंडितों के मत खंडित करके आपने मायावादात्मक अद्वैतवाद चलाया। चार्वाक-मत के उत्तराधिकारी जिस मोटिया लोकायत मत के चलन की साक्षी वाल्मीकीय रामायण और कौटिल्य-कृत अर्थ-शास्त्र से मिलती है, उसके स्थूलपन और असंभवनीय कथन-पूर्ण विश्वासवाद की महती वृद्धि गुप्तकालीन पौराणिक साहित्य से हुई थी। उसके मोटियापन को दूर करने के विचार से शंकर स्वामी ने भगवद्गीता, दशोपनिषत् और उत्तर-मीमांसा की टीका का त्रिरत्न-नामक ग्रंथ रचा। जनता से बौद्ध-मत आपके पहले ही उठ-सा गया था, किंतु बौद्ध-पंडित वाद-रत रहते थे। उन्हें पराजित करके आपने बुद्ध-मत की रीढ़ भारत में तोड़ दी। कनिष्क के समय वह चीन में फैल चुका था तथा गुप्त-काल में प्राच्य एशिया के देशों में व्याप्त हो चुका था। उन देशों में वह अब तक चल रहा है, किंतु उपर्युक्त कारणों से भारत से लुप्त हो गया।

हमारा पौराणिक साहित्य नवीं शताब्दी बी० सी० से चला था। एक पुराण ग्रंथ स्वयं कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वैपायन व्यास ने रचा था, जो अब अप्राप्य है। उनकी सूत-शिष्य-परंपरा ने प्राकृत भाषा में पुराण-ग्रंथ रचे, जिनके समाज में सुनाए जाने की प्रथा बुद्ध-पूर्व के भारत में भी प्रचलित थी। चारो वेदों, ब्राह्मणों और सूत्रों को वैदिक साहित्य कहते हैं। इनमें असंभवनीयता की मात्रा प्रायः नहीं के बराबर है। पुराणों का मूल भी उसी काल से चला था, यद्यपि उसका कथन और चलन दोनो निम्नतर श्रेणी के लोगों से संबद्ध थे। फिर भी समझ पड़ता है कि तत्कालीन चलन के अनुसार उनमें भी असंभव और अनर्गल विवरण न होंगे। समय के साथ पौराणिक साहित्य का मान बढ़ा, जिससे वे संस्कृत-भाषा में भी रचे गए, और इनके आगे नीरस होने के कारण प्राकृत पुराण लुप्त हो गए। पहली शताब्दी में अमरकोष के समय १८ पुराण प्रस्तुत थे, जिनके विषयों का लक्षण उस कोष में प्रस्तुत है। उस काल के पुराण उसी लक्षण के अनुसार होंगे, नहीं तो वह लक्षण ही क्यों बनता? फिर भी वर्तमान रूप में १७ पुराण उसके अनुसार नहीं हैं, केवल विष्णु-पुराण उस लक्षण पर ठीक उतरता है। इससे प्रकट है कि पहली शताब्दी के पीछे हमारे पुराण-ग्रंथ छितर गए, और गुप्तकालीन व्यासों द्वारा संपादित अथच परिवर्द्धित होकर अपने वर्तमान रूप में उपस्थित हुए। पंडितों का मत भी इस विषय पर ऐसा ही है। इस पौराणिक साहित्य में पहली शताब्दी बी० सी० तक का उपर्युक्त लोकायत मोटिया धर्म स्थूलता की ओर परम प्राचुर्य से परिवर्द्धित होकर अपने वर्तमान रूप में हमारे सामने है। बुद्ध के पीछे सीदियन, शक, कुशान, हूण, मंगोल आदि बाहरी लोग भी हमारे समाज में आ मिले। इनके विचारों के अनुसार भी हमारे धर्म में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ। हमारे पूर्व-पुरुषों को ऐसा करने पर राजनीतिक विचारों एवं समाज-संगठन के भावों से विवश होना पड़ा। उन्हें हिंदू-समाज को ऐक्य के सूत्र में बाँधना तथा विदेशी नरेशों को स्वमत में लाना आवश्यक था। इसीलिये उनकी मानसिक और धार्मिक उन्नति के अनुकूल भावों की वृद्धि हमारे मत में अपरिमेय मात्रा में हो गई। इधर मुसलमानों से हम लोगों ने न तो उन लोगों के समान रोटी-बेटी का संबंध किया, न उनके लिये कोई धार्मिक परिवर्तन हुआ। उनके साथ जो बहिष्कार का पूरा व्यवहार हुआ, उसके मुख्य कारण दो थे—एक तो वे अपने मत में इतने पक्के थे कि हमारे मत में आना ही न चाहते थे। दूसरे, खड्ग के बल से वे स्वयं हमें स्वमत में दीक्षित करना चाहते थे। केवल तर्क द्वारा मत-परिवर्तन यहाँ सदा से, बहुतायत से होता आया था, किंतु धर्म में बल-प्रयोग हमें असह्य हो गया।

आठवीं शताब्दी के निकट सिंध और उत्तर-पश्चिमी पंजाब में ब्राह्मण शासक थे, तथा अफ़ग़ानिस्तान में बौद्ध। अरबों ने बौद्ध अफ़ग़ान-शासक को पराजित कर दिया, किंतु कई कारणों से वहाँ अरबी राज्य न जमा, तथा कश्मीर की सहायता से ब्राह्मण-राज्य स्थापित हो गया। अनंतर ७१२ ई० में ख़लीफ़ा बग़दाद (अरबी सम्राट्) ने सिंध-नरेश दाहर को जीतकर वहाँ अरबी राज्य जमाया। फिर भी ख़लीफ़ा ने यहाँ मुसलमानी मत चलाने का कोई प्रयत्न न किया, वरन् प्रबंध भी हिंदू अफ़सरों के हाथ में रक्खा। यह राज्य दो-तीन शताब्दियों तक प्रेम-पूर्वक चला, किंतु वृद्धि न कर सका। अनंतर दसवीं शताब्दी में अफ़ग़ानों ने अफ़ग़ानी ब्राह्मण-राज्य ध्वस्त कर वहाँ मुस्लिम राज्य जमाया, और १००१ से १०२९ ई० तक महमूद ग़ज़नवी ने उत्तरी भारत पर १२ धावे किए। इनमें लूट और धार्मिक उद्दंडता की विशेषता रही। ग़ज़नी-बल उत्तर-पश्चिमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में १८५ वर्ष स्थापित रहा, और फिर ११९३ से सारे उत्तरी भारत में ग़ोरी-साम्राज्य बैठ गया। अनंतर क्रम से ग़ुलाम, ख़िलजो, तुग़लक़, सैयद, लोदी और मुग़लों के मुस्लिम-साम्राज्य जमे, जिनके प्रभाव १७वीं शताब्दी पर्यंत क्रमशः बढ़ते ही रहे। १५५५ में अकबर सम्राट् हुए, और इन्होंने साढ़े तीन शताब्दियों से चलनेवाले हिंदू-समाज से मुसलमानी धार्मिक झगड़े को दूर किया। अकबर के पीछे केवल प्रायः ४० वर्षों के लिये औरंगज़ेब ने यह झगड़ा फिर उठाया, नहीं तो १५५५ के पीछे बल-पूर्वक हिंदुओं के मुसलमान बनाए जाने की नीति सदा को त्यक्त हो गई, और बहुत करके राज्य ने मत-विवर्द्धन से अपना संबंध हटा लिया। फिर भी उपर्युक्त साढ़े तीन शताब्दियों तक जो धार्मिक विद्वेष रहा, उसके राजनीतिक और सामाजिक फल बहुत महान् हुए, जिनमें से कुछ अब तक चल रहे हैं। इनका मुख्य प्रभाव तेरहवीं शताब्दी के साथ प्रारंभ हुआ।

आठवीं शताब्दी में यद्यपि शंकर स्वामी ने मोटिया लोकायत मत हटाकर औपनिषत् एवं गीता का उच्च मत फिर से चलाने का भारी प्रयत्न किया, और यद्यपि उनका मौखिक मान बहुत हुआ, जो अब तक चला आता है, तथापि वास्तव में उच्चता की ओर पौराणिक मत का परिवर्तन कुछ भी न हुआ, वरन् दो-तीन शताब्दियों के लिये लोकायत पौराणिक मत में भद्देपन की ओर और भी महती वृद्धि हुई। बौद्ध-मत तो प्रायः जा चुका था, किंतु उसका सबसे भद्दा अंश वज्रयान उपनाम सहजिया संप्रदाय फिर भी कुछ-कुछ सजीव था। इसमें मद्य और रमणी-सेवन की प्रधानता थी, और गुरु लोग अपढ़ जनता को ख़ूब ही फटकारते थे, तथा त्राटकादि द्वारा कुछ चमत्कार दिखलाकर फिर भी उन्हें वश में रखते थे। हिंदू-मत में भी दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दियों में चक्र-पूजन, तांत्रिक मत आदि की, आसाम, बंगाल और बिहार में, भारी वृद्धि हुई। बारहवीं शताब्दी तक नाथ-संप्रदाय के प्रायः २१ हिंदी-कवि तथा बहुतेरे इतर उपदेशक हुए, जिनमें सब बुरे न थे, किंतु उनका सम्मिलित प्रभाव हिंदू और बौद्ध, दोनो मतों में कामुक विचारों और आचारों की वृद्धि का हुआ। भारतीय धर्म जितना नीचा इन दिनों गिर गया था, उतना पहले या पीछे कभी नहीं गिरा। शुद्ध सात्त्विक वैष्णव-धर्म में भी इन्हीं दिनों राधा के रूप में कामुक भाव घुसे। इसके कारण कई शताब्दियों तक सुरति-वर्णन में भी राधा-कृष्ण के नाम जोड़ देने से लोग धार्मिकता के स्वप्न देखते रहे। श्रीभागवत, गीत-गोविंद आदि तक में इसी से लगत्-मिलत् रचनाएँ समाज के उच्च भागों में भी चलीं। इन्हीं दिनों चार भारी वैष्णव उपदेशकों का भी प्रादुर्भाव हुआ। महात्मा रामानुजाचार्य (१०१६-११३६ ई०) ने नारायण को प्रधानता देकर, तथा शांकर अद्वैत-मत की समीक्षा करके विशिष्टाद्वैत-मत चलाया, जिसमें ईश्वर सत् अथच जीवात्मा और प्रकृति सत् के समान माने गए। प्रतिमा को भी उपास्य मानकर आपने शुद्ध प्रेम-भाव-गर्भित भक्ति को प्रधानता दी। नित्यात्मा परमात्मा को चैतन्यात्मा कहकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश को उनके प्रधान उपरूप बतलाया। अवतार भी नित्यात्मा स्वेच्छा से ग्रहण करती है, ऐसा कहा। जैसे शंकर ने उत्तर में आकर बौद्ध-धर्म को ध्वस्त किया था, वैसे ही आपने दक्षिण ही में रहकर जैन-मत को गिराया। आपने अवतारों को मानते हुए भी उन्हें प्रधानता न दी, अथच गोपाल कृष्ण का कभी वर्णन न किया। आपके उपदेश उच्च थे, किंतु वैष्णव-संप्रदाय में शूद्रों का प्रवेश वर्ज्य रक्खा गया। आपके शिष्य निंबार्क स्वामी का मृत्यु काल ११६२ ई०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। आपने गुरु के ही समान दाक्षिणात्य ब्राह्मण होकर भी आपने स्वमत-प्रचार वृंदावन में किया, तथा उनके द्वारा प्रतिष्ठित सेवक-सेव्य-भाव में शृंगारात्मिका भक्ति जोड़कर राधा-संबंधी विचारों का मान किया। ये दोनो वैष्णव, किंतु गुरु का उपदेश शुद्ध सात्त्विक था, जिसके प्रभाव से समय पर अयोध्या की दक्षिण-मार्गस्थ वैष्णवता का बल अवध, पूर्वी-दक्षिणी युक्त प्रांत, मध्यदेश आदि में फैला, तथा शिष्य के उपदेश से वाम-मार्गस्थ वैष्णवता मथुरा-वृंदावन में स्थापित होकर पश्चिमी युक्त प्रांत तथा गुजरात पर्यंत फैली। स्वयं निंबार्क स्वामी ने राधा का वर्णन तो किया, किंतु महत्ता न की। तथापि समय पर बढ़कर यह मत वाम-मार्ग का भारी पोषक हुआ।

स्वामी माधवाचार्य (११६७-१२७७) भी दाक्षिणात्य ब्राह्मण संन्यासी थे। आपका ईश्वर और आत्मा का माननेवाला द्वैत मत है। आपने लक्ष्मी और विष्णु-भक्ति को प्रधानता दी, तथा कार्ष्ण भक्ति कहते हुए भी राधा का कथन न किया। इनके शिष्य विष्णु स्वामी ने इस भक्ति में दार्शनिक विचारों का आधिक्य रक्खा। पीछे से दाक्षिणात्य ब्राह्मण वल्लभाचार्य महाप्रभु ने अपने दार्शनिक विचार विष्णु स्वामी पर अवलंबित किए, और भक्ति निंबार्क पर। आपका मान अपनी भारी वल्लभीय संप्रदाय में अत्यधिक हुआ, जिसमें आप कृष्ण के अवतार समझे जाते हैं। माध्व संप्रदाय में राम और कृष्ण-पूजन की उपशाखाएँ हैं, अथच नारायण की प्रधानता है तथा भक्ति की मुख्यता। वल्लभाचार्य के सहपाठी चैतन्य महाप्रभु इसी संप्रदाय में थे। आप भी कृष्ण के अवतार तथा बंगाली थे। वहाँ इनका भारी प्रभाव था। विष्णु स्वामी का कुछ संकेत शिवोपासना की ओर भी है। आपने राधा-कृष्ण की भी भक्ति कही है, किंतु इनमें वाम-मत की ओर झुकाव निंबार्क से कम है। माध्व संप्रदाय का भी मान गुजरात में हुआ। इन वाम-संप्रदायों का विशेष प्रभाव धनी वैश्यों में है, तथा रामानंदी का सर्व-साधारण में। चक्रधर महाराष्ट्र (१२७२ ई०) बौद्ध-धर्म-महानुभाव-नामक पंथ के आचार्य थे। इनके पाँच सौ शिष्य थे। इस मत का प्रचार पंजाब और काबुल तक हुआ, जहाँ यह जयकृष्णी पंथ कहलाया। इससे प्रकट है कि बौद्ध-मत होकर भी यह हिंदू-धर्म से मिलकर ही बढ़ा, शुद्ध बौद्ध रूप में नहीं। महात्मा गोरखनाथ (१३५० ई० के लगभग) के समय पर मतभेद बहुत है। जान पड़ता है, गुरु-शिष्य-रूप में दो-तीन मुछंदर-नाथ और गोरखनाथ हुए हैं, जिनके कथन दसवीं, बारहवीं और चौदहवीं शताब्दियों में होते हैं। गोरख की भाषा गद्य और पद्य दोनो में अंतिम शताब्दी से ही मिलती है। आठवीं शताब्दी से ही भारत के सभी बौद्ध-संप्रदाय सहजिया पंथ के अनुयायी हो गए थे। समय के साथ इसके अनुयायियों की संख्या घटती गई, यहाँ तक कि तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में महात्मा गोरखनाथ ने इसे अपने गोरखपंथी शैव-मत में मिला लिया, जिससे बौद्ध-संप्रदाय के रूप में इसका अंत हो गया। गोरख-पंथ के अघोर-पंथ एवं वाममार्गी भाग शायद सहजियावालों के इस पंथ में अस्तित्व के अनिवार्य फल थे। गोरख-पंथ में वेदांत की विशेष विभूतियाँ एवं शैव उपासना-वाली ऐसी प्रणालियाँ भी हैं, जो इसे लोक द्वारा ग्रहण के योग्य बनाती हैं। इसमें उपासना, तंत्रवाद, कर्मकांड और कुछ शारीरिक क्रियाएँ भी हैं। यह मत योग से संबद्ध होकर विशेषतया साधुओं में प्रचलित है। आपने तांत्रिक मत को स्वच्छ करके उसे दक्षिण-मार्ग की ओर लाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रयत्न किया, तथा शंकर स्वामी के निर्गुण शैववाद को कुछ सगुणत्व देकर तार्किक शुद्धता को कम करते हुए अधिक लोकोपयोगी बनाया। जलंधरनाथ, चौरंगीनाथ, कणेरीपाव, चरपटनाथ, चुणकरनाथ आदि महात्मा आपसे संबद्ध थे। इस पंथ का मान पूर्वी युक्त प्रांत तथा महाराष्ट्र-देश में है, जहाँ इसके लाखों अनुयायी हैं। फ़रीद (१२६७) और शेख़ सुल्तान (१३१७), दोनो मुसलमान होकर भी श्रीकृष्ण के भक्त, महाराष्ट्र-देश के निवासी थे। नामदेव वैष्णव (१४२३) परम प्रसिद्ध थे। इनके कुछ पद बाबा नानक ने अपने (ग्रंथ साहब) में रक्खे। नामदेव धार्मिक आडंबरों को हटाकर आचार-मूलक, हिंदू-मुसलिम-ऐक्य-पूर्ण, स्वावलंबी मत द्वारा आत्मगौरव की वृद्धि चाहते थे। जाति के दर्ज़ी या छीपी थे। एकेश्वरवाद को प्रधानता देकर इन्होंने राम-रहीम की एकता का उपदेश दिया, किंतु सगुणोपासना और मूर्ति-पूजा को नहीं छोड़ा। जाति-पाँति की एकता, ज्ञानात्मक ब्रह्मवाद की महत्ता तथा भक्ति का प्राधान्य रक्खा, किंतु फिर भी इनमें ब्रह्मवाद का प्रेम-प्रधान भाव कम था। गुरुपन की महिमा का प्राधान्य आदि में गोरखनाथ द्वारा हुआ। नामदेव, कबीरदास, नानक, दादू, सुंदरदास आदि ने शब्द और सद्गुरु की महिमा को बल देकर मूर्ति, अवतार, जाति आदि का प्रभाव घटाना चाहा, किंतु देश में यह सिद्धांत सबल न हो सका। यद्यपि पंथों के कारण कोई धार्मिक उच्चता नहीं स्थापित हुई, और नानक से इतर पंथ बहुधा निम्न-श्रेणियों ही में प्रचलित रहे, तथापि इन्होंने अपने अनुयायियों द्वारा समाज में भारी धार्मिक जोश उत्पन्न करके उनमें मुसलमानी धार्मिक अत्याचार रोकने की इच्छा और शक्ति उत्पन्न कर दी, क्योंकि इनके जोश द्वारा समाज को अपनी अब तक की उदासीन निम्न श्रेणियों का भी दृढ़ सहयोग प्राप्त हो गया। जहाँ कश्मीर में जनता ६० प्रतिशत मुसलमान हो गई, पंजाब में ५५ प्रतिशत और बंगाल में ५२ प्रतिशत, वहाँ बिहार और युक्त प्रांत में केवल १४ प्रतिशत जन-संख्या मुसलिम है, यद्यपि युक्त प्रांत ५०० वर्षों तक मुसलिम सभ्यता और शक्ति का केंद्र रहा। युक्त प्रांत और बिहार को गोस्वामी तुलसीदास और कबीरदास के उपदेशों से भी भारी बल प्राप्त रहा। उधर बँगाल में धार्मिकता का इतना जोश रहा कि निम्न श्रेणियों का हिंदुओं में आदर कम हुआ। बँगला-भाषा के आधिक्य से संस्कृत-गर्भित होने से भी निम्न जनता उसके उपदेशों से पूरा लाभ भी नहीं उठा सकती थी। पंजाब में एक तो गोस्वामीजी का-सा उपदेशक नहीं हुआ; दूसरे, वहाँ बल पकड़नेवाले सिक्ख-धर्म ने भी जाति को शिथिल किया, जिससे जिस जातीय बंधन ने युक्त प्रांत में हिंदू-समाज को सुगठित रक्खा, उसका समुचित लाभ पंजाब को न मिला। पंजाब के दो भाग भी एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। उसका पूर्वी भाग तो युक्त प्रांत से मिलता है और पश्चिमी वायव्य सीमा से। उस ओर मुसलमानों की बल-वृद्धि से भी पंजाब ने अपनी हिंदू-जनता खोई।

श्रीस्वामी रामानंद (१४०० ई०) रामानुजाचार्यवाली संप्रदाय के वैष्णव युक्तप्रांतीय ब्राह्मण थे। महात्मा कबीरदास इन्हीं के शिष्य थे। स्वामीजी दक्षिण-मार्गस्थ वैष्णवता के हमारे बहुत ही बड़े धर्मोपदेशक थे। गोस्वामी तुलसीदास भी इन्हीं के शिष्य-संप्रदाय में हुए। रामानुज ने शूद्रों को संप्रदाय में न लिया, किंतु इन्होंने यह कमी भी पूरी कर दी। आपने नारायणोपासना पर बल देकर अहिंसा का प्राधान्य तथा हिंसा-युक्त कर्मकांड का निरादर किया। जो पद दक्षिण में रामानुज का है, वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर में इनका। सीताराम-संबंधी पवित्र भक्ति का प्रचार करके आपने परमेश्वर को भुलाया तो नहीं, किंतु बल सगुणत्व पर रक्खा। ईश्वर के अर्चा, व्यूह-विभव, पर और अंतर्यामी-नामक चार आदर्शीकरण माने। वैष्णवता की रामवाली शाखा आप ही की चलाई हुई है। यद्यपि लोक-संग्रह के विचार से गृहस्थों में समता-सिद्धांत चलाकर आपने खलबली न डाली, तथापि साधुओं में शूद्रों को भी लेकर समाज को ऐक्य के सुदृढ़ सूत्र में बाँधा। आपके शिष्यों में सदन, सेन नाई, भवानंद, महाराजा पीपा, कबीरदास, अंगद, धना, रैदास आदि की प्रधानता है। कबीरदास (१३६८-१५१८) ने साधारण बातों ही में चोखा निर्गुण ज्ञान कहा है, जिसमें हिंदू-मुसलमानों के मिलाने का प्रचुर प्रयत्न है। कबीर-पंथ कुछ मुसलमानी लिए हुए भी वास्तव में हिंदू है। उपासना की प्रधानता न होने अथच अद्वैतवाद की ज्ञानात्मिकता-मात्र की महत्ता से यद्यपि यह चला अवश्य, तथापि औपनिषत् ज्ञान के समान सर्व-साधारण में विद्या के अभाव से समाज में सर्वमान्य न हो सका। आपने उल्टवाँसी आदि द्वारा अपने साहित्य को लोक-प्रिय बनाना चाहा, और यद्यपि इनके साहित्यिक उपदेश समाज में चले भी काफ़ी, तथापि धर्म के रूप में इसमें व्यापकता की कमी रही, यद्यपि हैं अब भी लाखों कबीर-पंथी। कबीरदास ने सूफ़ी-मत का भी कुछ समावेश अपने उपदेशों में किया है। उत्तरी भारत में इसका मुख्य प्रचार क़ुतबन शेख़, जायसी आदि कवियों ने किया। यह मत अरब से आया था, और भारतीय अद्वैतवाद से भी प्रभावित होकर रुचिर कथाओं द्वारा हिंदू-मुसलिम-ऐक्य में प्रवृत्त हुआ था। इसमें ईश्वर का भजन नायिका के रूप में होता था। इन संतों का विश्वास था कि इस प्रकार से भी सच्ची लगन द्वारा अंत में शुद्ध भक्ति प्राप्य है। ये लोग चाहते तो मुसलिम-धर्म का विस्तार थे, किंतु कथाएँ हिंदुओं की कहते थे, तथा उनके संबंध में जहाँ हिंदू-देवी-देवताओं के विवरण आते थे, वहाँ भी पूरी सहृदयता रखते थे, और हिंदू-रस्मों आदि का भी अच्छा विवरण देते थे। हिंदू-धर्म से इतना प्रेम दिखलाने के कारण अंत में इसे मुसलमानों ने पसंद न किया, तथा वास्तव में मुसलिम-शिक्षा होने से यह हिंदुओं के भी पसंद न आई। अतएव ये कथाएँ अब केवल साहित्यिक प्रेमियों को पसंद रह गई हैं। झाँसी में शेख़ तक़ी उस काल अच्छे सूफ़ी फ़क़ीर थे, और बंगाल के पड़ुवा शरीफ़ में भी सूफ़ी-मत की एक गद्दी थी। ये लोग जीव और जगत् को ईश्वर से अभिन्न मानते थे। हज़रत पड़ुवा के शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया अच्छे फ़क़ीर थे। हुसैनशाह (१४९३) ने सत्यपीर का मत चलाया। जौनपुर के भी पीर प्रसिद्ध थे।

बाबा नानक खत्री (१४६९-१५३९) प्रसिद्ध सिक्ख-मत के प्रवर्तक थे। प्रतिमा-पूजन, जाति-पाँति आदि को निंद्य ठहराकर आपने अद्वैतवादात्मक, ईश्वर-भक्ति-पूर्ण, शुद्ध दक्षिण-मार्गस्थ श्रेष्ठ धर्म चलाया। इस मत के दस गुरु हुए, जिनमें गुरु गोविंदसिंह (१६६१-१७०८) अंतिम थे। आपने ख़ालसा-पंथ स्थापित करके सिक्खों में उद्दंड जातीयता का बीज बोया, जिससे समय पर भारी सिक्ख-राज्य स्थापित हुआ। इस मत की पंजाब में मुख्यता है। चैतन्य महाप्रभु (१४८४-१५३२) ने बंगाल और वल्लभाचार्य (१४७८-१५३०) ने पाश्चात्य युक्त प्रांत में कामुक वैष्णवता का दृढ़ स्थापन किया। वैष्णव संप्रदाएँ हैं बहुतेरी, किंतु प्रचार इन दोनो तथा रामानंदी का बहुत आधिक्य से है। इनके सिद्धांतों का कथन ऊपर आ चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टछाप के कविगण वल्लभीय संप्रदाय में थे। इनमें सूरदास की मुख्यता थी। साहित्य तो आपका श्रेष्ठ है, किंतु कुछ कठिन और शृंगारात्मक होने से इनका उपदेशक के रूप में विशेष प्रभाव नहीं है, जैसा कबीर और तुलसी का है। मीराबाई (१५१६ जन्म) भी इस काल की प्रसिद्ध भक्तिन थीं। इन पर विष्णु तथा निंबार्क स्वामी के मतों का प्रभाव था। इस काल भक्त बहुतेरे हो गए हैं। जाति के धुना दादूदयाल (१५४४-१६०३) भी अच्छे निर्गुणवादी संत थे, जिनसे अकबर बहुत प्रसन्न थे। इन्हीं से मिलने के पीछे उन्होंने हिंदू-मुसलमानों के मिलाने को दीन-इलाही चलाया, जिसका कलमा था—"अल्ला हो अकबर, ज़िल्ले जलालहू।" कहने को तो यह दोनो मतों से मिलता था, किंतु था मुख्यतया मुसलमानी। इसी से इसे हिंदुओं ने पसंद न किया। अब तक महाराष्ट्र-देश मुसलिम धार्मिक बल से मुक्तप्राय था, किंतु अब वहाँ भी वह बल जमा। इसीलिये जैसे संतों ने उत्तरी भारत में उपदेशों द्वारा समाज-रक्षा के विचार से उसका संगठन किया था, वैसे ही महाराष्ट्र में भी इस काल उपदेशक संत खड़े हुए। ठेठ दक्षिण मुसलिम प्रभाव से सदैव पृथक् रहा आया है। महात्मा तुकाराम (१५६८) भागवत-धर्मांतर्गत बारकड़ी पंथ के जन्मदाता माने जाते हैं। यह ईश-चिंतवन नवीन काव्य ही में किया करते थे। छत्रपति शिवाजी इनके शिष्य होना चाहते थे, किंतु इन्होंने उन्हें रामदास का शिष्य बनाया। महाराष्ट्र लोग इनकी रचना में सूर और तुलसी का संयुक्त प्रभाव मानते हैं। स्वामी एकनाथ (१६७१) को ही दृढ़ रूप से दक्षिण में भागवत-धर्म के स्थापन का श्रेय प्राप्त है।

गोस्वामी तुलसीदास (१५३२-१६२३) हमारे सर्वोत्कृष्ट हिंदी-कवि शंकर स्वामी के पीछे सबसे अधिक प्रभाव-पूर्ण धर्मोपदेशक थे। आपने बहुतेरे ग्रंथ रचे, जिनमें राम-चरितमानस का परम व्यापक प्रचार हुआ। भगवद्गीता के पीछे हिंदुओं में मानस के समान प्रभाव-पूर्ण ग्रंथ दूसरा नहीं बना। इसमें कहीं तो रामायण की कथा गई, किंतु स्थान-स्थान पर उपदेश परम प्राचुर्य से दिए गए। इनके जो उपदेश हैं, प्रायः वे सब हिंदू-समाज के आचार-लक्ष्य में अब तक मौजूद हैं। लक्ष्यों की उच्चता तो इनमें औपनिषत् और कबीर की कुछ शिक्षाओं से कम है, किंतु लोक-स्वीकृति अद्वितीय पाई जाती है। इन्होंने भारतीय मानस-बल की नस ऐसी कुछ पकड़ पाई थी, और उपदेश ऐसी सरल और सर्व-मान्य भाषा में किया कि साढ़े तीन शताब्दियों-भर इनकी शिक्षा का प्रचार अक्षुण्ण रहा है, और अब तक उस स्वीकृति में कमी नहीं आई है। साहित्यिक गौरव में भी इनसे बढ़कर किसी कवि का होना नहीं कहा जा सकता। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इनकी कई शिक्षाओं से वर्तमान समय की भारतीय जनता में उन्नति की कमी कही जा सकती है, किंतु इसमें भी इनका दोष नहीं। इन्होंने तो ऐसे उपदेश दिए, जिससे तत्कालीन जनता में बल-वृद्धि और दोष-शांति हो सकती थी, और हुई। यह पीछे के उपदेशकों की कमी थी कि वे अपने समय के समाज को जाति आदि के प्रतिकूल सर्व-मान्य शिक्षा देकर उन्नति के समुचित और व्यापक मार्ग पर न लगा सके। गोस्वामीजी ने वैष्णवों तथा शैवों के तत्कालीन झगड़ों को दूर किया, तथा शुद्ध एकेश्वरवाद का सगुण-मत-गर्भित उच्च भक्ति-पूर्ण उपदेश दिया। रामानंद, कबीर और तुलसी, तीनो गाते राम-नाम ही की महिमा थे, किंतु राम-संबंधी भाव इनके पृथक् थे। उस काल रसखान, रहीम आदि कई मुसलमान वैष्णव भी उच्च समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक में हुए। नाभादास (१६१३) ने भक्तमाल रचकर बहुतेरे भक्तों का बहुमूल्य विवरण रचा। सेनापति (१६५०) पहले ब्राह्मण सत्कवि थे, जिन्होंने उपदेशक न होकर भी अपने साहित्य में प्रतिमा की अमान्यता प्रकट की। महात्मा रामदास (१६५०) दाक्षिणात्य उपदेशक और छत्रपति शिवाजी के गुरु थे। एक बार उनके यहाँ आप भिक्षा माँगने गए, तो उन्होंने अपने सारे राज्य का दान एक पर्चे में लिखकर उसे आपके हाथ में दे दिया। पर्चे को पढ़कर आप बोले, मैं तो एक पहर का भोजन माँगता हूँ, और तू काग़ज़ का एक टुकड़ा देता है। अब क्या इसे खाऊँ? इस पर छत्रपति के विशेष हठ करने पर आपने आज्ञा दी कि अच्छा, मेरे ही राज्य का प्रबध मेरी ओर से करो। तभी से स्वामीजी का भगवा झंडा महाराष्ट्र-राज्य में चलने लगा, जो कई शताब्दियों तक चलता रहा, और जिसका अब भी मान है। स्वामी प्रेमनाथ (१६६०) ने बुंदेलखंड में महाराज छत्रसाल के समय धामी-मत चलाया, जिसकी गद्दी मऊमहेवा में अब भी है। है तो यह भी हिंदू मत, किंतु हिंदू-मुसलिम-ऐक्य के भाव से इसमें भी कुछ मुसलमानी विचार सम्मिलित हैं। उपर्युक्त वर्णनों से प्रकट है कि यद्यपि बहुतेरे हिंदू-मुसलमान उपदेशकों ने समय-समय पर इन दोनो मतों का वैमनस्य दूर करने के प्रयत्न किए, तथा सम्राट् अकबर ने भी इसमें प्रचुर प्रयत्न किया। और, यद्यपि समय के साथ इन दोनो मतों का धार्मिक विरोध कम हो गया है, तथापि हिंदू-मुसलमानों में जो राजनीतिक विरोध पड़ गया है, उसका दूर होना अब भी शेष है।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही मुसलिम-साम्राज्य मिटकर भारत के बृहदंश पर महाराष्ट्र-साम्राज्य स्थापित हुआ, किंतु प्रायः १०० वर्ष ही चलकर वह भी समाप्त हो गया, और ब्रिटिश साम्राज्य तभी से अब तक चल रहा है। महाराष्ट्र-साम्राज्य के समय हिंदू-मुसलिम धर्मों के मेल का प्रयत्न गिर गया, तथा कोई भारी धर्मोपदेशक भी उत्पन्न न हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य में काम-काजू बातें प्रचलित होने लगीं, तथा धार्मिक दबाव कम हो गया, किंतु प्रेम से मत-परिवर्तन का प्रयत्न पादड़ियों द्वारा चलने लगा। हमारा हिंदू-धर्म गीता-काल के पीछे से ही तार्किक प्रबलता को छोड़कर विश्वासवाद के सहारे चल रहा था। जो विजयी जातियाँ ब्रिटिशों के पूर्व उसी काल से आई थीं, उन्होंने भी विश्वासवाद ही को अपनाया था। अतएव हमारा असंभवनीयता-पूर्ण, मूर्ख-मोहक यह विश्वासवाद पादड़ियों के विज्ञान-भाव-गर्भित, असंभवनीयता पर हँसनेवाले तर्कवाद का सामना करने को तैयार न था। ब्रिटिश राज्य के साथ ही विज्ञान का भी प्रभाव बढ़ चला, जिसके ज्ञान से हमारे उच्च समाज ने भारी उपदेशकों के अभाव में हिंदू-धर्म में सिवा भद्दी पोप-लीला के कुछ भी न देखा, और बंगाल तथा पंजाब में बहुतेरे ऊँची कक्षाओं तक के हिंदू सुख से ईसाई होने लगे। इस अवांछित दशा से बचने को १९वीं शताब्दी के मध्य से ही हमारे यहाँ तार्किक बल-पूर्ण उच्च उपदेशकों का आविर्भाव होने लगा। बंगाल में केशवचंद्रसेन तथा राजा राममोहन राय के प्रयत्नों से ब्रह्मसमाज जमा, तथा पंजाब में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य-समाज स्थापित होकर सबल हुआ। इन दोनो धार्मिक संस्थाओं ने न केवल हमारे वैदिक और औपनिषत् शिक्षाओं को फिर से जाग्रत् किया, वरन् जातीयता को भी धर्म से मिलाकर देशोन्नति का डौल डाला। इनके उपदेशों से ईसाई बनने की इच्छा हमारे समाज से तिरोहित हुई, अथच तर्क-पूर्ण वैदिक उपदेशों की ओर अभिरुचि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी विद्वान् हिंदुओं में बढ़ने लगी। समय के साथ जातीयता अच्छी वृद्धि पा रही है, और कांग्रेस एवं महात्मा गांधी के बढ़े हुए प्रभाव से हिंदुओं में देश-भक्ति ही ईश-भक्ति का स्थान समाज के उच्च भागों में ले चुकी है। हरिजनों का जो अनादर समाज में प्राचीन काल से होता आया था, वह भी अब उन्हें असह्य है, तथा देश-भक्त उच्च श्रेणी के हिंदू भी समाज-संगठन एवं न्याय के विचार से उसे अति शीघ्र हटाने के प्रयत्न में हैं। अभी हरिजन लोग हमारे मंदिरों में जाकर हमीं लोगों के साथ केवल देव-पूजन में भाग लेना चाहते हैं, और कई स्थानों पर उन्हें यह अधिकार मिल भी चुका है। सामाजिक अन्य बर्तावों में भी उनकी यह माँग है, और दिनोंदिन बढ़ेगी। देश में अपने राजनीतिक बल की वृद्धि से भी समाज की उन्नति अति शीघ्र होती हुई देख पड़ती है, जिससे शुद्ध धार्मिक उन्नति भी अनिवार्य है। एवमस्तु।

अब थोड़े में विविध प्रांत-संबंधी हिंदू-फैलाव का इतिहास भी लिख देना अरुचिकर न होगा। समझ पड़ता है कि उत्तर-पूर्वी भारत से कोल मध्य और पश्चिमी भारत तक फैले। खेती न करने के कारण आदि में ये केवल जंगली और शिकारी थे, तथा पूरा देश भी जंगलों से आच्छादित था। द्रविड़ कृषिजीवी और सभ्य थे। इनका फैलाव दक्षिण से सिंध और पंजाब तक था। इनके धार्मिक विचार भी बहुत बढ़े हुए थे, जैसा ऊपर, मोहंजोदड़ो (सिंध) और हड़प्पा (पंजाब) के कथनों में, आ चुका है। हमारा मन्वंतर-काल प्रायः ७५० वर्षों का था, जो प्रायः बीसवीं शताब्दी बी० सी० तक चला। इस काल आर्यों की पहली धारा भारत में आ चुकी थी, और स्वारोचिष मन्वंतर में या उससे भी पूर्व महिषासुर का आर्यों से युद्ध हो चुका था। महिष-मंडल माइसूर से मध्य-भारत पर्यंत कहा जाता है। सत्ययुग (मन्वंतर-काल) में आर्य लोग पंजाब में थे। इस काल की कुछ कथाएँ भारत से संबद्ध हैं, तथा हिरण्यकशिपु, बलि आदि की फ़ारस से, ऐसा कुछ पंडितों का विचार है, जिससे देवासुर-संग्राम, समुद्र-मंथन और बलि-बंधन की भी कथाएँ उधर ही की निकलती हैं। वैवस्वत मन्वंतर से दूसरी आर्य-धारा का भी आगमन भारत में हुआ, किंतु नहुष के समय तक इंद्र का स्थान अफ़ग़ानिस्तान या इंद्रालय (मध्य-एशिया) में ही था। इसके पीछे रामायण से पूर्व इंद्र का ऐतिहासिक विवरण नहीं है। रावण से हारनेवाले इंद्र हिमालय के नरेश समझ पड़ते हैं। अर्जुन के पिता इंद्र तो निश्चय ही हिमालय के ही सम्राट् थे।

वैवस्वत मन्वंतर (त्रेता युग) के आरंभ से राम के समय त्रेतांत तक आर्यों ने भारत में, धार्मिक और राजनीतिक दोनो प्रकार से, काफ़ी वृद्धि की। सूर्य और चंद्र के आर्य-घराने मुख्य थे। प्रथम वंश में ऐक्ष्वाकुओं की मुख्यता थी, किंतु रीवा, बंगाल और उड़ीसा में सौद्युम्नों का भी प्रभाव था। ऐक्ष्वाकुओं में वैवस्वत से रामचंद्र के समय तक अयोध्या (उत्तर-कोशल), दक्षिण-कोशल (मध्य भारतीय राज्य), मैथिल, आनर्त (कच्छ की ओर), हरिश्चंद्र औ सगरवाला वंश प्रधान शासक थे। चंद्र-वंश में इससे अधिक महत्ता हुई। उसमें सम्राट् ययाति के पाँच पुत्र थे, अर्थात् यदु, तुर्वश, अनु, द्रुह्यु और पुरु। ययाति ने सबसे छोटे पुत्र पुरु को सम्राट् बनाया। इस वंश में हस्तिनापुर उत्तर-पांचाल, दक्षिण-पांचाल, बुंदेलखंडी चेदि, मध्य-भारतीय चेदि, मत्स्य, कान्यकुब्ज, काशी और मगध की शाखाएँ प्रधान राजाओं की हुईं, जिनके राजवंश सैकड़ों वर्ष चले। त्रेतायुग उनतालीस पुश्तों अथच प्रायः ६५० वर्षों का था, जिससे त्रेतांतवाले राम का समय तेरहवीं शताब्दी बी० सी० में पड़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यदुवंशियों में हैहय और माथुर-यादवों की दो शाखाएँ हुईं। हैहय-शाखा ने मध्य-भारत में बस-कर प्रायः एक शताब्दी के लिये उत्तरी भारत पर भी भारी प्रभाव फैलाया, तथा राम के समय से कुछ ही पीछे राज्य-च्युत भी हो गई। माथुर-शाखा पहले चंबल के निकट रहकर हैहय दबाव से विदर्भ (बरार) में जमी। वहाँ द्विमीढ़-वंश की एक पौरव-शाखा भी समय पर कई शताब्दियों के लिये जमी। विदर्भ में स्थापित रहते हुए भी माथुर-यादव मथुरा और आनर्त में भी स्थापित हुए, किंतु मधु-यादव ने अपना आनर्त-राज्य सूर्य-वंशी (अपने) जामाता यदु को दे दिया। तौर्वश और द्रुह्यु-वंश पंजाब, अफ़ग़ानिस्तान और राजपूताना में जमे, तथा भोज-शाखा के रूप में मध्य और दक्षिणी भारत में भी स्थापित हुए। आनव-शाखा उत्तर-पश्चिमी पंजाब और अंग में जमी। आंग बलि के पाँच पुत्र हुए, जिन्होंने अंग के अतिरिक्त बंग, कलिंग (उड़ीसा), पुंड्र और सुम्ह-प्रांतों में भी अधिकार बढ़ाया। यह कथन प्रायः १७वीं शताब्दी बी० सी० का है। दक्षिण-भारत में राम से प्रायः १०० वर्ष पूर्व एक भारत-वंश भी शासक था, जिसमें राजा नल का प्राधान्य था। इन मध्य भारतीय नरेशों का कुछ प्रभाव दक्षिण पर भी था। परशुराम हैहयार्जुन सम्राट् को जीतकर दक्षिण में बसे। अनंतर आतापी और वातापी को जीतकर वीरवर मांदार्य अगस्त्य भी उधर ही बसे। आपने जल-सेना सन्नद्ध करके, अरब-समुद्र में अरबी डाकुओं को निर्मूल करके पाश्चात्य एशिया से भारतीय व्यापार निर्विघ्न किया। इसी समय राम के पिता दशरथ तथा सुदास के पिता दिवोदास ने वैजयंत-नरेश तिमिध्वज शंबर को मारकर दक्षिण में आर्य-प्रभाव और भी बढ़ाया। अनंतर रावी-नदी के युद्ध में भेद और वर्चिन को जीतकर सुदास ने सारे भारत में आर्य-प्रभाव जगमगा दिया, तथा राम ने बालि और रावण को जीतकर दक्षिण में आर्य-बल का सिक्का जमाया। एक तामिल-रामायण में लिखा है कि हनुमान, बालि और रावण सब एक दूसरे के संबंधी थे। एक दार्ष्टांतिक कथा भी तत्कालीन धार्मिक वृद्धि का पता देती है। यह कथा शैव और वैष्णव दोनो पुराणों में मिलने से किसी प्रकार से धार्मिक तथ्य पर अवलंबित समझ पड़ती है। कुछ पंडितों का विचार है कि उमादेवि का भाव तामिल से ही आया है। राम ने उमा का मान न किया, जिससे समय पर वह अपने पिता दक्ष के यज्ञ में विना बुलाए जाकर वहाँ भी सत्कारित न हुईं, और दक्ष के यज्ञ में विष्णु की महत्ता तथा अपने पति शिव की हेयता देखकर, उन्होंने सत्याग्रह करके वहीं शरीर त्याग दिया। अनंतर शैव कोप से दक्ष का प्रचंड पराभव हुआ, सब देवताओं के साथ विष्णु भी पराजित हुए, तथा शिव को आगे से यज्ञों में भाग मिलने लगा। इससे प्रकट है कि रामचंद्र के समय तक शैव ईश्वरत्व पहले स्थापित न था, किंतु उसी काल हो गया। अतएव यजुर्वेद के जिस शतरुद्रिय अध्याय में तथा अथर्ववेद के जिन भागों में शैव ईश्वरत्व कथित है, वे राम के समय से पीछे के हैं। इस प्रकार शिव विष्णु से बढ़ गए, यद्यपि पहले विष्णु ही इनसे बड़े तथा इंद्र से कम थे। अनंतर कई शताब्दियों के पीछे शैव महिमा-वृद्धि से उमा का भी प्रभाव बढ़ा, और जिन ईश्वर का भाव मुख्य वैदिक देवता मरुत, अग्नि और इंद्र तक केनोप-निषत् में न जान पाए थे, उसे उमा ने देव-समाज को बतलाया। यह ईश्वर-भाव भी शैव समझ पड़ता है। इन बातों से प्रकट है कि आर्यों ने यद्यपि द्राविड़ देव-भाव अपने धर्म में लिए अवश्य, किंतु ऐसा हुआ बहुत धीरे, सात-आठ शताब्दियों के पीछे।

जिस काल आर्य लोग भारत में आए, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें कोई जाति-भेद न था। भारतीय काले रंग-वाले निवासियों के कारण यहाँ उनके आने पर जाति-भेद का पहला रूप वर्ण-भेद स्थापित हुआ, क्योंकि आर्य गोरे थे। अनंतर कुछ आर्य नगरों, ग्रामों आदि में बस गए, और शेष फिरते रहे। बस जानेवाले आर्यों की संज्ञा विश (बैठना) शब्द से वैश्य हुई, क्योंकि वे एक ही स्थान पर बैठ गए। शेष अवैश्य आर्यों में तब तक ब्राह्मणों और क्षत्रियों की संज्ञा स्थापित न हुई थी। समय के साथ वैश्यों की संख्या अवैश्यों के देखते हुए बहुत बढ़ गई। इतने में राज्यादि के स्थापन से शेष आर्यों में राज्य करनेवाले राजन्य वर्ग में आकर समय पर क्षत्रिय कहलाने लगे, और शेष आर्य ब्राह्मण हो गए। अनार्य और कुछ पतित आर्यों को मिलाकर शूद्र-वर्ग स्थापित हुआ। वेदों में इस चातुर्वर्ण्य का पहला कथन पुरुषसूक्त में है। पहले संख्या में वैश्य सबसे अधिक थे। धीरे-धीरे इतरों की भी संख्या बढ़ी, क्योंकि जब आर्य-जाति फिरंदर न रही, तब गुण-कर्मानुसार बहुतेरे वैश्य भी ब्राह्मण या क्षत्रिय-वर्ग में आ गए। १९३१ की गणनानुसार चातुर्वर्ण्य की संख्या का पता लगाना बहुत सुगम नहीं, क्योंकि कई जातियों के नाम व्यापारानुसार लिखे हुए हैं; जिनके विषय में निश्चय करना कठिन है कि वे कौन हैं। फिर भी अपने विचारानुसार विभाग जोड़कर हमने हिसाब लगाया, तो प्रकट हुआ कि सारे भारत में प्रायः ६ करोड़ वैश्य हैं, ५ करोड़ क्षत्रिय तथा ३ करोड़ ब्राह्मण। यद्यपि भारतीय जन-संख्या बराबर बढ़ती आई है, तो भी १८६८ के सामने १९३१ में ब्राह्मण ४ प्रतिशत कम थे।

ऊपर हम कह आए हैं कि त्रेता में विविध प्रांतों में, आर्यों के राज्य किस प्रकार स्थापित हुए। यह समझ लेना चाहिए कि जहाँ-जहाँ आर्य-राज्य या प्रभाव जमे, वहीं-वहीं आर्य-सभ्यता स्थापित होती गई। द्वापर में दसवीं शताब्दी बी० सी० के युधिष्ठिरी राजसूय के संबंध में जब भारतीय विजय पांडवों ने की, तब के वर्णन से प्रकट है कि समुद्र के किनारे-वाले प्रांतों में प्रायः अनार्य राज्य थे, और शेष देश आर्य-राज्यों में विभक्त था। क्रमशः बौद्ध-काल तक ये सब प्रांत भी आर्य-प्रभाव में बहुत कुछ आ गए, और हिंदुओं से पृथक् कोई जाति देश में न रही। आठवीं-नवीं शताब्दी तक जो बाहरी जातियाँ विजय अथवा अन्य संबंधों में यहाँ आईं, वे भी पारसियों को छोड़कर हिंदुओं में मिल गईं, जिससे राजनीतिक उन्नति तो अच्छी हुई, किंतु धार्मिक उच्चता में कमी आती गई। आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक जो कामुक मत स्थापित हुआ था, वह इधर के संतों ने अपने उच्च उपदेशों द्वारा दबा दिया है। अब राधा-कृष्ण के रति-केलि-कथन को लोग धर्म नहीं मानते, यद्यपि मौज के लिये धर्म के रूप में उसका कथन काव्य में करते हैं। ऐसी साहित्य-प्रणाली भी अब शीघ्रता-पूर्वक उठ रही है। उधर शैव मंदिरों में जो देव-स्थापना योनि-लिंग के रूप में है, उसे लोग स्वयं महादेव और उनके बैठने का स्थान मानते और विशेषांगों से उनका कोई संबंध नहीं समझते। आजकल हिंदू-मत में सात्त्विकता का पूरा समावेश है, यद्यपि तीर्थों, मूर्तियों आदि के कारण अनुचित दान और व्यय की चाल पड़ी हुई है। वह भी धीरे-धीरे प्रभाव खो रही है।

(समाप्त)

मिश्रबंधु-विनोद (चार भाग) ... ११)
शिवाजी (नाटक) ... ... १)
संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न ... ... १)

मैनेजर
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलतपुर का तिरस्कृत दुवौना

[श्रीयुत देवीरत्न अवस्थी]

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदीजी महाराज के देहावसान के पश्चात् सभी सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में उनके जीवन से संबंधित अनेकानेक लेख लिखे गए। कई पत्र-पत्रिकाओं ने द्विवेदीजी महाराज की पुण्य स्मृति को स्थायी बनाने के लिये अपने विशेषांक भी निकाले। इस प्रकार के सभी लेखों में स्वर्गीय आचार्य का यशोगान करके राष्ट्र-भाषा के कवि-कोविदों ने अपनी वाणी को सार्थक करने की अत्यंत सफल चेष्टा की है। अपने देश के महान् पुरुषों की यशोगाथा की रक्षा के लिये किए गए ये प्रयत्न अवश्य अभिनंदनीय हैं। आचार्य द्विवेदीजी महाराज के सम्मान के लिये उनके जीवन में नाना यत्न किए गए। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा-जैसी भारत-विख्यात संस्था की ओर से उन्हें, उनकी सत्तरवीं वर्ष-गाँठ के उपलक्ष में, द्विवेदी-अभिनंदन ग्रंथ-जैसी महान् भेंट देकर सम्मानित किया गया था। इस महान् अभिनंदन ग्रंथ में भारत के हृदय-सम्राट् महात्मा गांधी ने भी स्वर्गीय आचार्य द्विवेदीजी की साहित्यिक सेवाओं की प्रशंसा की थी; और उन्हें आचार्य कहकर संबोधित किया था। अनेक प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने भी इस ग्रंथ में उनकी प्रशंसा से अपनी लेखनी को सफल बनाया था। राष्ट्र-भाषा के पुजारियों की ओर से लगवाया हुआ 'द्विवेदी-मेला' भी उनके सर्वोपरि सम्मान का उज्ज्वल प्रतीक था। अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने उन्हें विद्या-वाचस्पति की गौरवान्वित उपाधि से विभूषित किया था। कुछ विश्वविद्यालयों की ओर से उन्हें डाक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित करने की भी आयोजना हुई थी, पर स्वर्गीय आचार्य की इन उपाधियों के प्रति हार्दिक विरक्ति देखकर ही यह आयोजना रोक दी गई। भारत के किसी भी साहित्यिक का भारत के भीतर इतना देशव्यापक सम्मान नहीं हुआ, यह बात कदाचित् विना किसी संकोच के कही जा सकती है।

राष्ट्र-भाषा के इस अग्रदूत को इतने सम्मान पर भी शांति नहीं मिल सकी। उसके हृदय में मरते दम तक क्षोभ की एक ज्वाला प्रज्वलित थी। उसका हृदय एक भयंकर तिरस्कार की प्रताड़ना से तड़फड़ाया करता था। इसी क्षोभ ने—अंतर की इसी तड़फड़ाहट ने हमारे इस महान् साहित्य-स्रष्टा को घुला-घुलाकर मार डाला। अपने अभागे और परतंत्र देश में पलनेवाले हम संकीर्ण हृदय के प्राणी क्या जानें कि एक साहित्य-स्रष्टा के व्यक्तित्व का क्या मोल होता है? आगे की पंक्तियों में स्वर्गीय आचार्य के व्यथित जीवन का असफल-सा चित्रण किया गया है। यदि इससे पाठकों के हृदयों में अपने महान् साहित्यिक नेता के प्रति कुछ भी सहानुभूति जगी, तो इन पंक्तियों के लेखक को अपने लिखने पर संतोष हो जायगा। मुझे इस बात का हार्दिक दुःख है कि अपने जिन ग्राम्य बंधुओं से द्विवेदीजी ने स्नेह की आशा की थी, उन्होंने बदले में उन पर भयंकर अग्नि-वर्षा की। यह हमारा और हमारे भूखे और नंगे गाँवों का दुर्भाग्य ही तो है कि राष्ट्रवाणी के इस अनन्य पुजारी को हमारी ओर से यावज्जीवन दुःखी किया गया। यही नहीं, हमेशा उन्हें तिरस्कृत किया जाता था, और अवसर पाते ही हमारी शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके अपमान के लिये भी संगठित हो जाती थी। जब-जब मैं पूज्य द्विवेदीजी महाराज के ग्रामीण जीवन में उठे हुए प्रपंच-भरे आंदोलन की बात सोचता हूँ, तब-तब मेरे क्षुब्ध हृदय से महाकवि रहीम के दोहे का यह अर्द्धांश निकल पड़ता है—

"कहु रहीम, कैसे निभै केर-बेर को संग ?"

द्विवेदीजी महाराज का जन्म-स्थान दौलतपुर उच्च कुल के कनवजिया ब्राह्मणों की बस्ती है। इन पवित्र और कुलीन कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की समता में आचार्य द्विवेदीजी की सामाजिक हैसियत हाथी के आगे चींटी-जैसी तुच्छ थी। दौलतपुर के कुलीन कान्यकुब्ज ब्राह्मण सदैव द्विवेदीजी महाराज को एक नीच कुल का 'धाकर' समझते रहे। कान्यकुब्जों में जिन ब्राह्मणों की सामाजिक मर्यादा १० बिस्वा से कम होती है, वे 'धाकर' कहे जाते हैं। अपनी उक्त अनोखी समझ के कारण दौलतपुर के ऊँचे कनवजिया ब्राह्मण आचार्य महोदय के सम्मान के लिये ज़रा भी चिंतित न होते थे। २५ वर्ष का कनवजिया युवक भी यह आशा करता था कि ७५ वर्ष का बूढ़ा दुबौना उसे पूज्य समझे। आचार्य द्विवेदीजी महाराज ग़रीब पिता के पुत्र थे। अपनी कार्य-कुशलता की बदौलत ही उन्होंने अपनी ग़रीबी को द्वंद्व-युद्ध में परास्त किया था। यद्यपि वह लखपती न थे, फिर भी उनकी आमदनी उनके तथा उनके आश्रित व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिये काफ़ी थी। द्विवेदीजी महाराज के इस आर्थिक उद्भव के कारण भी उनके गाँव के अधिकांश कुलीन लोग उनसे द्वेष करते थे। पूज्य द्विवेदीजी महाराज के जीवन की उपमा उस केले के वृक्ष से देना बिलकुल ठीक है, जो किसी प्रकार के भी प्रहार नहीं सह सकता। उनकी प्रौढ़ावस्था चाहे जितनी कठोर रही हो, पर उनकी वृद्धावस्था का ग्रामीण जीवन तो सचमुच ही करुणा का एक अप्रतिम उदाहरण था। उनके हृदय में परले सिरे का स्वाभिमान तो पहले से ही मौजूद था। अपनी करुणा-पूर्ण भावुकता के कारण वह ग्रामीण भाइयों की इस उपेक्षणीय वृत्ति से सदा दुःखी हुआ करते थे। यह दुःख उन्हें घुलाता जाता था। स्वाभिमानी व्यक्ति यदि भावुक हुआ, तो उसे अपमान सचमुच मृत्यु से भी अधिक डरावना लगने लगता है। स्वर्गीय आचार्य में स्वाभिमान की मात्रा तो अत्यधिक थी ही, फिर इस स्वाभिमानी 'धाकर' की वंशाभिमानी कनवजियों से कैसे पटरी बैठ सकती थी। दूसरी बात, जिसने उन्हें अपने गाँववालों का व्यर्थ ही कोप-भाजन बनाया, उनकी मनःकल्पित स्वराज्य-योजना ग्राम्य पंचायत थी। तीसरी और अंतिम बात, जो उन्हें विशेष बदनाम करती थी, उनकी देशव्यापिनी ख्याति थी, जिसके कारण उनके संबंध की छोटी-से-छोटी घटना की चर्चा भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर की जाती थी। विश्ववंद्य महात्मा गांधी के संबंध में भी मध्यम श्रेणी के लोगों द्वारा ऐसे आक्षेप किए जाते हैं। इस तरह पाठकों की समझ में यह बात आ गई होगी कि आचार्य द्विवेदीजी महाराज की हृदय-वेदना का उद्गम-स्थान उनकी जन्मभूमि दौलतपुर में ही था, और निम्न-लिखित बातों के कारण ही उनके पड़ोसियों की क्रोधाग्नि उन्हें जलाती रही—(१) सामाजिक हीनता, (२) अच्छी आर्थिक स्थिति, (३) स्वाभिमान, (४) ग्राम-पंचायत और (५) ख्याति। पाठकों को इन पाँचो बातों से युक्त दूसरे लोग अत्यंत सुखी भी मिल सकते हैं। मैं यह नहीं कहता कि ये पाँचों बातें जिसमें होंगी, वह भी आचार्य द्विवेदीजी महाराज की ही तरह दुःखी रहेगा। दौलतपुर के देहाती वातावरण में कुछ दिन रहने से ही इन बातों की सत्यता का वास्तविक पता लग सकता है। मेरा दावा है, यदि कोई समझदार आदमी एक-दो महीने दौलत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुर में रहे, तो वह भी इस संबंध में किए गए मेरे इस निर्णय से अधिकांशतः सहमत हो जायगा। मैं दौलतपुर के बड़े-बूढ़ों, नवयुवकों, महिलाओं और स्वतः आचार्य महोदय से महीनों बातचीत करके ही इस परिणाम पर पहुँचा हूँ। नातेदारी के संबंध से मुझे बहुधा दौलतपुर जाना-आना पड़ता है। दौलतपुर के द्विवेदीजी के प्रेमी और विरोधी, सभी मेरे सगे-संबंधी अथवा भली भाँति परिचित मित्र हैं। इसलिये मुझे स्वभावतः जहाँ द्विवेदीजी महाराज के प्रति भक्ति-भाव है, वहाँ उनके विपक्षियों से ज़रा-सा भी द्वेष नहीं। पूज्य द्विवेदीजी महाराज के 'धाकर' होने के कारण कुलीन कान्यकुब्ज इस बात के इच्छुक रहते थे कि दुबे के घर से उनका, प्राचीन प्रथाओं के अनुसार, सत्कार हुआ करे। द्विवेदीजी महाराज पहले कुछ दिनों तक पूज्य-बुद्धि से उनकी चरण-सेवा भी करते थे—उन्हें ब्राह्मणोचित पूजन से संतुष्ट रखते थे, पर बाद में वह इस कार्य को छोड़ बैठे। बस, गाँव के कनवजियों ने बहुमत से उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया। 'धाकर' होकर भी कनवजियों का पूजन न करने के कारण किस तरह वह कुलीन द्विजों के कोप-भाजन थे, यह निम्न-लिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट हो जायगा। एक बार मैं दौलतपुर में ही था। अपने पढ़ने के लिये मैं द्विवेदीजी के पुस्तकालय से किताबें लाता था। संयोग-वश उनकी एक किताब की जिल्द दीमकों ने स्वाहा कर दी थी। एक सज्जन मुझसे किताब का नाम पूछकर और उसके मालिक श्रद्धेय द्विवेदीजी महाराज का नाम सुनकर कहने लगे—"जो यहि की सारे की सब किताबन माँ यही तना दिवारु लागि जात, तौ हम बड़े खुस होइति।" एक दूसरे सज्जन हैं। द्विवेदीजी के पड़ोस में ही उनका घर है। मध्य-प्रदेश में लगभग ९० वर्षों से रहते हैं। दस-पाँच वर्ष में एक-आध बार ही अपने गाँव आते, और कुछ दिन रहकर चले जाते हैं। जिन दिनों की यह बात है, उन दिनों मैं भी मध्य-प्रदेश के उसी स्थान में रहता था, जहाँ उपर्युक्त सज्जन रहते हैं। एक मासिक पत्र में स्वर्गीय आचार्यजी का चित्र छपा था। मैंने वह चित्र उक्त सज्जन को दिखाया। चित्र के नीचे लिखा हुआ था—"आचार्य पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी"। चित्र देखकर वह कहने लगे—"राई असि बिटिया, भाँटा असि आँखि। आचार्य बना है सार।" थोड़ी देर बाद उन्होंने चित्र को फिर घुमा-फिराकर देखा, और कहने लगे—"अरे, अब तौ यहु बहुत मोटाय गा है हो।" ध्यान में रखने की बात है कि उक्त सज्जन से द्विवेदीजी महाराज की न तो मित्रता थी, न शत्रुता। इस प्रकार राष्ट्र-भाषा का यह अप्रतिम निर्माता 'धाकर' होने के कारण ही अपने गाँव-वालों की कुलीनता-जनित दुर्भावना का शिकार हुआ करता था। झूठे वंशाभिमान में पड़े हुए उच्च कुलीन कान्यकुब्जों को यह देखकर ईर्ष्या होती थी कि बिना उनकी भक्ति किए हुए ही उनके गाँव का एक तुच्छ 'धाकर' उन्हीं की छाती पर उन्नति करता चला जा रहा है।

द्रव्योपार्जन के लिये स्वर्गीय आचार्य के साथ-साथ उनके समवयस्क ग्रामीणों ने भी नौकरियाँ की थीं। इन लोगों को आप किसी प्रकार भी इस बात का विश्वास नहीं करा सकते कि आर्थिक उन्नति में भी तत्परता, परिश्रम तथा कार्य-दक्षता की आवश्यकता पड़ती है। मुझसे उनके एक समवयस्क व्यक्ति ने बड़ी हेठी से बताया कि अफ़सरों की बेजा खुशामद करने के कारण ही दुबौना बाबू बन बैठा। ज्यों ही मैंने उनकी बातों का प्रतिवाद किया, त्यों ही वह बिगड़कर कहने लगे—"का हम अपई नौकरी माँ बेकारै पैसा लेत रहेन, हमहूँ अपने मालिक कै नमकहरामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कीन, फिरि हम काहे वई पचीस-तीस रुपैयन माँ परे रहेन, औ यहु सैकरन गनावै लाग।" मैने उक्त सज्जन से यह भी कहा कि यदि यह सच है कि द्विवेदीजी ने स्वाभिमान के कारण ही सैकड़ों की आमदनी की नौकरी छोड़ दी, तो यह बात मैं कैसे मानूँ कि अफ़सरों की सब तरह की ख़ुशामद करके ही वह छोटी-सी नौकरी से बड़े बाबू बन बैठे। इस पर वह सज्जन कहने लगे—"हम तुमसे हारि गएन, तुम तौ बात पूछति हौ, औ फिरि बात कै जर पूछति हौ।"

आचार्य द्विवेदीजी महाराज का स्वभाव उस मीठी रोटी के समान था, जिसका स्वाद लेने में दाँतों को पहले उसके सूखे किनारों से लड़ना पड़ता है। यदि आप इस रोटी के किनारों की कठिनता से न डरें, तो शीघ्र ही आप रोटी के बीच के मधुरतम और कोमल भाग का स्वाद प्राप्त कर सकेंगे। एक बार इसका स्वाद ले चुकने के बाद आप यावज्जीवन उसकी इच्छा किया करेंगे। आचार्य-चरण के प्रायः समस्त विरोधियों ने उनके स्वभाव की मीठी रोटी के किनारों की कड़ाई देखकर ही हिम्मत ढीली कर दी। उनकी प्रकृति में इतना अधिक स्वाभिमान था, जिसका कोई ठिकाना नहीं। अन्य बातों के साथ-साथ उनकी स्वाभिमानिनी प्रकृति के कारण किस तरह लोग उन्हें ग़लत समझने लगते थे, इसकी जानकारी के लिये निम्न-लिखित उदाहरण पर्याप्त होगा। एक बार आचार्य महोदय ने रायबरेली-ज़िले के एक प्रतिष्ठित कांग्रेसी सज्जन को एक पत्र लिखा। यह कांग्रेसी सज्जन द्विवेदीजी के ग्रामीण क्षेत्र से रायबरेली के ज़िला-बोर्ड के सदस्य हैं। द्विवेदीजी ने अपने पत्र में उनसे प्रार्थना की थी कि कृपया आप दौलतपुर के मवेशीख़ाने की मरम्मत का प्रस्ताव बोर्ड में रखिए। उन्होंने कांग्रेसी सज्जन से यह भी प्रार्थना की थी कि शीघ्र ही होनेवाली ज़िला-बोर्ड के बजट की बैठक में यदि आप प्रस्ताव रक्खेंगे, तभी सफलता मिल सकेगी। कांग्रेसी सज्जन थे पूरे कार्य-ग्रस्त कांग्रेस मैन। किसानों की सेवा के आगे पत्रोत्तर का कोरा शिष्टाचार निभाना उन्हें कहाँ रुचता। उन्होंने निश्चय कर लिया कि मवेशीख़ाने की मरम्मत का प्रस्ताव पास करा लेंगे, और मरम्मत हो जाने के बाद फिर पत्रोत्तर की आवश्यकता ही क्या? प्रस्ताव पास हो गया, और मवेशीख़ाने की मरम्मत भी हो गई। इसके कुछ दिनों बाद उक्त कांग्रेसी सज्जन द्विवेदीजी महाराज के दर्शनार्थ गए। द्विवेदीजी महाराज-जैसे नियमित पत्रोत्तर भेजने में बुरी तरह प्रसिद्ध व्यक्ति भला कैसे उक्त कांग्रेसी सज्जन के मौनावलंबन को बरदाश्त कर सकते। पत्रोत्तर न भेजनेवालों को वह अशिष्ट तो समझते ही थे, साथ ही उनकी चुप्पी को वह अपना घोर अपमान भी समझते थे। उन्होंने कांग्रेसी सज्जन को देखते ही कहा—"धर्मावतार! क्षत्रिय-कुल-भूषण! देश-भक्त शिरोमणि! आपने कैसे यहाँ पधारने का कष्ट किया। आपके चरण-कमलों को तो असीम कष्ट हुआ। क्या ज़रूरत थी इतना कष्ट करने की? महाराज! यदि हम जानते कि आप यहाँ पधारेंगे, तो ख़ुद ही आपके दर्शनार्थ आपकी सेवा में उपस्थित हो जाते। देवता! आप धन्य हैं। आपकी देश-भक्ति धन्य है!" कांग्रेसी सज्जन इस प्रताड़ना से अत्यंत दुःखी हुए। उन्होंने इसे अपना घोर अपमान समझा। बात कुछ थी भी ऐसी ही। बस, इसी एक बात के कारण एक लोक-प्रतिष्ठ जन-सेवक और राष्ट्र-भाषा के सर्वश्रेष्ठ साहित्य स्रष्टा के बीच उदासीनता की गहरी नदी लहराने लगी।

ग्राम्य पंचायत से आचार्य की स्वाभाविक ममता थी। अपने समय में उन्होंने गाँवों की समस्याओं पर बहुत कुछ लिखा था। सरकारी ग्राम्य पंचायतों का प्रारंभ भी उन्हीं की बदौलत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हुआ था। लगातार १७ वर्षों तक उन्होंने अपने गाँव की पंचायत की प्रधानता की थी। कुछ लोग उन पर यह भी आक्षेप करते हैं कि गाँव-वालों पर और पड़ोस के गाँवों पर अपनी धाक जमाने के लिये ही वह दौलतपुर की ग्राम्य पंचायत पर अधिकार किए हुए थे, पर यह ख़याल कितना ग़लत है। इसके अनुमान के लिये यह जान लेना ज़रूरी है कि पंचायत के प्रधान बनने के पूर्व वह ऑनरेरी मुंसिफ़ थे। पंचायत की कल्याण-कामना के लिये उन्होंने ऑनरेरी मुंसिफ़ी से इस्तीफ़ा दे दिया था। यदि उनके चित्त में अपनी धाक जमाने की ही अभिलाषा होती, तो वह ऑनरेरी मुंसिफ़-जैसा धाक जमानेवाला पद छोड़कर पंचायत के प्रधान न बनते। ग्राम्य पंचायतों का काम आगे चलकर भले ही परम पवित्र कार्य बन जाय, पर अब तक तो वह बड़ा ख़तरनाक और नीरस बना हुआ है। यह बात सोलहो आने सच है कि ग्राम्य झगड़ों के निर्णय में चाहे जितनी निष्पक्षता बरती जाय, पर अंत में एक ओर से निर्णायक को धूर्त ज़रूर कहा जायगा। कोई भी दंड-प्राप्त व्यक्ति, चाहे उसने कैसा गुरुतम अपराध किया हो, अपने योग्य-से-योग्य न्यायाधीश को भी बेईमान कहने में नहीं चूकता। सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में हमारे देश के लोग अपराध करने के बाद भले दंड प्राप्त करने को उत्सुक रहते हों, पर आज तो स्थिति बिलकुल उलटी है। बस, जनता ने इसी मनोवृत्ति के कारण हमारे साहित्याकाश के प्रकाशमान चंद्रदेव पर कीचड़ उछालना प्रारंभ कर दिया। मैंने दौलतपुर की पंचायती अदालत में बैठकर अपनी आँखों देखा था कि किस तत्परता और अध्यवसाय के साथ राष्ट्रभाषा का वह अप्रतिम पुजारी ग्रामीण झंझटों का निबटारा करता था। एक बार तो यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया "........भाई, यहि कलम ते एठईं अपनि दसख़त बनाय दियौ, तुम्हरे छुए ते हमारि यह कलम पवित्र हुइ जाई।" आचार्य ने ये शब्द एक अछूत से कहे थे, जो किसी मामले में प्रतिवादी की हैसियत से अदालत में उपस्थित हुआ था। पाठकों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि दौलतपुर के इस तिरस्कृत दुबौना ने कनवजियों की बस्ती में, और उनके बहुमत की उपस्थिति में, ये शब्द उस युग में कहे थे, जब आज के हरिजन-आंदोलन का गर्भाधान भी नहीं हुआ था। उपस्थित कान्य-कुब्ज ब्राह्मणों का दल मन-ही-मन साहित्य के इस वृद्ध तपस्वी को अवश्य धिक्कारने लगा होगा। यदि पता लगाया जाय, तो ऐसे एक नहीं, अनेक लोग मिलेंगे, जिन्हें दौलतपुर की पंचायत ने जुर्माने का दंड दिया था। पर इन लोगों में से बहुतों के जुर्माने की रक़में हमारे उसी वृद्ध तपस्वी की जेब से निकलती थीं, जो अपनी ग्राम्य पंचायत को सफल बनाने के लिये अपना ख़ून पानी किया करता था। अपनी जन-सेवा की भावना लेकर ही भारत का यह महान् साहित्य-स्रष्टा उस हालत में भी ग्राम्य पंचायत के अत्यंत भयावने और नीरस काम से जूझता रहा, जब डॉक्टरों की सलाह के अनुसार प्रत्येक प्रकार का मानसिक परिश्रम उसे मृत्यु के मुँह में डाल सकता था। कहाँ है हम लोगों में अपने इस वृद्ध आचार्य के अलौकिक सेवा-भाव को परखने की समझ? कहाँ हैं हमारी वे हृदय की आँखें, जिनसे हम यह देख पाते कि एक जन्मजात साहित्यिक महा-पुरुष को ग्राम्य पंचायत-जैसे रूखे कार्यों के संपादन में अपनी कितनी महत्त्वाकांक्षाओं का परित्याग करना पड़ता है। आह! यदि कहीं हम उनके जीवन में इस रहस्य को जान पाते, तो सचमुच आज हम अपने इस महान् साहित्यिक अग्रदूत का तर्पण करने के वास्तविक अधिकारी बन जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस के जन-आंदोलन के प्रारंभ से उत्पन्न देवासुर-संग्राम किसे भूलेगा । इस संग्राम में जहाँ दैवी भावना अपने विशुभ्र रूप में प्रकट हुई थी, वहाँ आसुरी भावना के नग्न नृत्य का प्रदर्शन भी हुआ था । इस आसुरी भावना ने देवों को तो नहीं, पर मनुष्यों को तो कभी-कभी राक्षसों से भी अधिक भयंकर बना डाला था । दौलतपुर के कुछ अनुभव-हीन नवयुवक भी इस आसुरी भावना के चक्कर में पड़ गए थे । आचार्य द्विवेदीजी महाराज की चिर-पोषित ग्राम्य पंचायत के ख़िलाफ़ एक दल बन गया । दस-दस वर्ष पहले के किए फ़ैसलों के ख़िलाफ़ लोगों को उकसाया गया, जिसके परिणाम-स्वरूप द्विवेदीजी महाराज के ख़िलाफ़ एक बदतमीज़ी और उच्छृंखलता से भरा हुआ आंदोलन मच गया । अपने गाँव के नवयुवकों की इस अद्भुत करनी से दुःखित होकर उन्होंने पंचायत की प्रधानता और उसकी सदस्यता से इस्तीफ़ा दे दिया । इसके परिणाम-स्वरूप दौलतपुर की इस ग्राम्य पंचायत का अंत हो गया, और १७ वर्षों की लगाई हुई उनकी स्वराज्य-योजना की बाग उजाड़ हो गई । मैंने स्वर्गीय आचार्य के ख़िलाफ़ चलाए गए इस आंदोलन को जान-बूझकर बदतमीज़ी और उच्छृंखता से भरा हुआ कहा है । मेरा निश्चित मत है कि उनके ख़िलाफ़ आंदोलन करनेवाले लोगों ने अपने मनुष्यत्व की जान-बूझकर हत्या की थी । इसका केवल एक उदाहरण देकर मैं अपने हृदय की व्यथा अपने पाठकों तक पहुँचा सकता हूँ । जिन नवयुवकों ने द्विवेदीजी के ख़िलाफ़ आंदोलन उठाया था, उनमें से एक के पूर्वजों के ऊपर बहुत पहले दौलतपुर की पंचायत से जुर्माना हुआ था । एक दिन जब द्विवेदीजी महाराज वायु-सेवन के लिये जा रहे थे, तब इस मनचले युवक ने उनसे अपने पूर्वजों का भरा हुआ जुर्माना वापस माँगा, और चलने-फिरने में असमर्थ उनके वृद्ध शरीर पर प्रहार किया । यह है हमारी साधु-पूजा । यह है ऋषि-ऋण से मुक्त होने के लिये परतंत्र भारत की अभागी संतानों का अनोखा आविष्कार !

आज देश के कोने-कोने से 'इनक़िलाबज़िंदा-बाद' की आवाज़ आ रही है, पर इनक़िलाब के सँभालने की शक्ति का तो हममें कोई चिह्न भी नहीं दिखाई देता । ऐसी परिस्थिति में इस बात का बड़ा ख़तरा है कि हमारी रही-सही कमाई भी न चौपट हो जाय । आज क्रांति की यशोगाथा सुनकर पागल बन जानेवालों की देश में कमी नहीं । आज आवश्यकता है उन धीर, वीर और कर्मठ युवकों की, जिनके दिल और दिमाग़ दूध और पानी का वास्तविक भेद समझ सकें । आज हमें अपने को क्रांति के पवित्र यशोगान का अधिकारी प्रमाणित करना होगा, अन्यथा क्रांति की अधिष्ठात्री देवी संसार के लिये एक प्रलयंकर अभिशाप उपस्थित कर देगी । उदय से अस्त तक राज्य करनेवाले हमारे गौरांग महाप्रभु अपनी शक्ति के ही बूते तो हमें अपना मौरूसी शासित समझे बैठे हैं । हमें यह समझ लेना चाहिए कि संसार का कोई भी देश मकरध्वज और स्वर्ण-भस्म की मात्राओं के बल पर संगठित, साहसी और उद्यमी नहीं बनाया जा सकता । राष्ट्रों के उत्थान में उनके महान् साहित्य-स्रष्टा सर्वोत्कृष्ट साझीदार होते हैं । जो राष्ट्र अपने महान् साहित्यिकों का समादर करना सीख जाते हैं, उन्हें स्वतंत्रता की रक्षा करने के गुरु-मंत्र के लिये पराया मुँह नहीं ताकना पड़ता । एक बार इँगलैंड के एक महान् व्यक्ति ने कहा था कि इँगलैंड और शेक्सपियर दोनो की यदि तुलना की जाय, तो शेक्सपियर का ही पलड़ा भारी रहेगा । बात बिलकुल ठीक है । इँगलैंड ने तो केवल एक शेक्सपियर पैदा किया है, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेक्सपियर ने संसार को मनुष्यों के योग्य बनाने का सफल प्रयत्न किया था। हम लोगों में यदि अपने साहित्यिकों के प्रति इसकी शतांश कृतज्ञता भी जग जाय, तो हम सचमुच कुछ-के-कुछ हो जायँ।

कुछ लोगों का यह भी ख़याल है कि आचार्य द्विवेदीजी महाराज को देश की स्वतंत्रता के प्रति सहज द्वेष था। यह आरोप यदि कोरे देहाती का होता, तो मैं इसकी सचमुच ही उपेक्षा कर जाता; पर यह आरोप देहाती का नहीं, ख़ासे पढ़े-लिखे और सभ्य कांग्रेस-कार्य-कर्ताओं द्वारा ही ऐसे आरोप लगाए जाते हैं। हमारे एक कांग्रेसी बंधु ने बातचीत के सिलसिले में द्विवेदीजी महाराज के व्यक्तित्व की जैसी कटु आलोचना की थी, उससे निम्न-लिखित चार आरोप टपकते थे—(१) राजनीतिक मामलों और राजनीतिक स्वतंत्रता पर उन्होंने कुछ नहीं लिखा। (२) वह ब्रिटिश साम्राज्यशाही की भक्ति के मारे स्वदेशी का समर्थन और उसका उपयोग नहीं करते थे। (३) वह अपने भानजे को कांग्रेस में सम्मिलित होने से रोकते थे। (४) वह कांग्रेसवादियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इन आक्षेपों पर विचार करने के पहले यह आवश्यक है कि हम अपने को आचार्य द्विवेदीजी की आलोचना करने के योग्य बना लें। यह तो स्पष्ट ही है कि द्विवेदीजी महाराज राजनीतिक नेता नहीं, वरन् राष्ट्र-वाणी के निर्माता थे। उनकी यशोगाथा इसलिये नहीं गाई जा रही कि उन्होंने अपनी जवानी के अनमोल दिन जेल के सींख़चों के भीतर बिता दिए, इसलिये यदि राजनीतिक क्षेत्र में हम उन्हें आगे नहीं देखते, तो कोई कारण नहीं कि हम उनके महत्त्व को भूल जायँ। यदि किसी साहित्यिक का मोल उसकी राजनीतिक महत्ता के आधार पर आँका जायगा, तो प्रारंभ से आज तक का सारा साहित्य खटाई में पड़ जायगा। यह भी न भूलना चाहिए कि राजनीतिक क्षेत्र में क्रियात्मक भाग न लेने के कारण ही हम किसी को देश-द्रोही नहीं कह सकते। साथ ही यह बात भी तो सिर से पैर तक ग़लत है कि आचार्य द्विवेदीजी महाराज ने राजनीतिक मामलों अथवा राजनीतिक स्वतंत्रता पर कुछ नहीं लिखा। उन्होंने आज से बहुत दिन पूर्व स्वाधीनता-नाम की एक बड़ी पुस्तक का प्रणयन किया था। यह ग्रंथ सुप्रसिद्ध विद्वान् जॉन स्टुअर्ट मिल की लिबर्टी-नामक पुस्तक के आधार पर लिखा गया था। उनके उन तमाम लेखों और कविताओं के उद्धरण यहाँ स्थानाभाव से नहीं दिए जा रहे। संक्षेप में मैं पाठकों को यह बता देना चाहता हूँ कि जिस समय उन्होंने स्वदेशी-समर्थन में लिखा था, उसके चार वर्ष बाद ही स्वदेशी-आंदोलन का सूत्रपात हुआ। उनके किसानों से संबंधित लेख उस युग में लिखे गए थे, जब किसानों की समस्या पर बोलना और लिखना उपहासास्पद समझा जाता था। कौंसिल के मेंबरों को वोट न देने की बात उन्होंने उस समय लिखी थी, जब सारा सभ्य समुदाय लाट साहब से हाथ मिलाकर ही अपने पूर्वजों का तर्पण करने की इच्छा रखता था। जो लोग यह कहते हैं कि अँगरेज़ी राज्य की भक्ति के मारे वह विलायती वस्त्रों का उपयोग करते थे, वे मानो अपने विवेक की आँखों में दिन-दहाड़े धूल झोंकते हैं। हमारे बहुत-से देश-भक्त बंधु द्विवेदीजी महाराज का विदेशी टोपी से अलंकृत चित्र देखकर ही उन्हें विलायती का भक्त घोषित कर देते हैं। बात यह थी कि आज से लगभग ३० वर्ष पहले उन्होंने एक ऐसे ग़रज़मंद व्यक्ति से दो टोपियाँ ख़रीद ली थीं, जो टोपी न बिकने के कारण अत्यंत दुःखित हो रहा था। इनमें से एक तो गत वर्ष तक उनके पास थी। पाठक समझ गए होंगे कि स्वदेश के इस महान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-शिल्पी की यह विदेशी टोपी भी उसकी पर-दुःख-कातरता का उत्तम प्रमाण थी । शायद यह टोपी उस युग की स्मृति भी थी, जब हमारे गुलाम देश के बाज़ारों में स्वदेशी टोपी मिल ही नहीं सकती थी । उस समय तो बड़े-बड़े कांग्रेस-वादी नेता भी विलायती कपड़ों से अपना तन ढँकते थे । हम कांग्रेस-जनों को यह जानकर प्रसन्न ही होना चाहिए कि जेल में चक्की घसीटनेवाले हम देश-भक्त स्वदेशी-स्वदेशी की रट लगाते हुए भी १० वर्षों के अंदर जितने दामों की विलायती वस्तुएँ ख़रीद लेते हैं, आचार्य द्विवेदीजी महाराज ने अपने सारे जीवन में भी उतने की विलायती चीज़ें शायद न ख़रीदी हों । उनके ३०-३५ वर्षों के पुराने गाढ़े के कपड़े मैंने अपनी आँखों देखे हैं । जब आज के स्वदेशी-आंदोलन का जन्म भी नहीं हुआ था, तब से वह अपनी ज़रूरतों के लिये यथा-संभव गाढ़ा ख़रीदते थे । हाँ, वह विशुद्ध खद्दरधारी नहीं थे, पर इसका यह मतलब तो नहीं होता कि वह खद्दर के विरोधी थे । धोतियाँ तो नहीं, पर शेष कपड़ों के लिये वह कुछ अंशों में खद्दर का भी व्यव-हार करते थे । मैं लगभग १२ वर्षों से आचार्य द्विवेदीजी के संपर्क में हूँ, पर मैंने तो उनके शरीर पर कभी विलायती कपड़े की एक चिट भी नहीं देखी । अपने भानजे श्रीकमलाकिशोरजी को वह अयोग्यता के कारण ही कांग्रेस में सम्मिलित होने से रोकते थे । उन्होंने एक बार रायबरेली के कांग्रेस-जनों से बातचीत करते हुए स्पष्ट कहा था कि यदि मेरे सात बेटे होते, और वे सातो देश के लिये फाँसी पर लटक जाते, तो मुझे कुछ भी खेद न होता । श्रीकमलाकिशोरजी में वह उन बातों का स्पष्ट अभाव देखते थे, जिनके कारण मनुष्य राजनीति के उच्च शिखर पर सफलता-पूर्वक आरोहण कर सकता है । आचार्य द्विवेदीजी महाराज राष्ट्रीय आंदोलन में जेल जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को देवता समझने में ज़रूर असमर्थ थे । वह उन्हीं का आदर करते थे, जो उनकी समझ में शुद्ध और सुसंस्कृत हृदय के थे । यदि उनकी दृष्टि में हमारी कांग्रेस के अधिकांश झंडा उठा लेनेवाले लोग नहीं जँचते थे, तो इसमें उनका नहीं, हमारा ही दोष है । समझ में नहीं आता कि दो-चार बार जेल का रोटियाँ तोड़ आने पर ही क्यों हम अपने को सर्वोपरि समझें । अन्य कांग्रेस-जनों की तरह इन पंक्तियों के लेखक को भी कई बार जेल जाना पड़ा है, पर द्विवेदीजी महाराज इसे सदैव अपनी वात्सल्य-भावना से कृतकृत्य करते रहे । सारे भारत के बड़े-बड़े राष्ट्रीय पुरुष उनकी महत्ता का सम्मान करते थे । श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टंडन, स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी, श्रीश्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीबालकृष्ण शर्मा, सेठ गोविंददास, श्रीशिवप्रसाद गुप्त और आचार्य भगवानदास-जैसे राष्ट्रीय नेताओं से जो वंदित था, उसे ही हम ग़लत समझते हैं, यह हमारा दुर्भाग्य ही तो है । पाठक अपने हृदय से इस प्रश्न का उत्तर पूछें कि महात्मा गांधी के शब्दों में जो साहित्य-स्रष्टा आचार्य कहा जा सकता है, क्या वह भी देश की परतंत्रता का समर्थक हो सकता है ?

द्विवेदी ग्रंथावली की पाँच पुस्तकें

सुकवि-संकीर्तन ... ... ।।।), १)	प्राचीन पंडित और कवि ...।।।=), १=)
अद्भुत आलाप ... ... ।।।), १)	साहित्य-संदर्भ ... ... १।।), २)

नैषध चरित चर्चा ... ... ।।।), १)

पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्भान एक महान् दिव्य शक्ति है

['कल्पवृक्ष'-संपादक डॉ० दुर्गाशंकर नागर]

क्या तुमने कभी अपने जीवन के मानस-व्यापारों को सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया है? यदि तुम सूक्ष्म निरीक्षण करोगे, तो पता लगेगा कि तुम्हारा जाग्रत् मन उन व्यापारों में दशांश भी नहीं लगा है। तुम यह समझते हो कि तुम्हारे जाग्रत् मन के मानस - व्यापार ज्ञान-पूर्वक चल रहे होंगे, किंतु जाग्रत् मन का इन मनोव्यापारों से कोई संबंध नहीं। वास्तव में अज्ञात प्रदेश में अंतर्भान में ही उन व्यापारों का अस्तित्व है।

अधिकतर मनुष्य इस अंतर्भान की दूसरी दुनिया में ही विचरण करता है। मनुष्य की प्रत्येक बाह्य चेतना की अनुभूति के पृष्ठभाग में अति विशाल अंतर्भान में जाग्रत् के समान ही विचार-लहरियाँ उठा करती हैं। अमेरिका के मानस-शास्त्र के अत्यंत प्रवीण प्रोफ़ेसर गेट्स कहते हैं—

'कल्पवृक्ष'-संपादक डॉ० दुर्गाशंकर नागर

"At least ninty percent of our mental life is subconscious. If you will analyse your mental operations you will find that conscious thinking is never a continuous line of consciousness, but a series of conscious data with great intervals of subconsciousness. We set and try to solve a problem and fail. We walk around and try again and fail. Suddenly an idea dawns that leads to a solution of the problems. The subconscious processes were at work. We do not volitimatly create our own thinking. It takes place in

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

us. We are more or less passive recipients."

कम-से-कम हमारे मानस-जीवन में ६० प्रतिशत जीवन अंतर्भान का ही है। तुम अपने मानस-जीवन का पृथक्करण करके देखो, तो तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारी विचार-धारा अखंड भान-पूर्वक बहते विचारों का प्रवाह नहीं प्रत्युत तुम्हारे स्वीकृत विचारों की परंपरा है, जिसमें आंतरिक विचारों का प्रवाह बहता रहता है। हम बैठकर किसी प्रश्न का समाधान करने का विचार करते और उसमें निष्फल होते हैं; हम पुनः तदर्थ प्रयत्न करते हैं, पुनः-पुनः निष्फल होते हैं। एकाएक एक विचार की स्फुरणा होती है, जिसके द्वारा हमारे प्रश्न का निराकरण हो जाता है। इसका कारण हमारा अंतर्व्यापार ही है। हम अपनी इच्छा से अपने विचार उत्पन्न नहीं कर सकते, वे स्वतः उत्पन्न होते हैं। हम ग्रहणशील दशा में कुछ अंश में निष्क्रिय अवश्य होते हैं।

विज्ञानवेत्ता कहते हैं, सूर्य की प्रखर किरणों में जो ताप का भान होता है, उस ताप का मुख्य भाग अति सूक्ष्म लाल किरणों (ultra red) से, जो लेश भी प्रकाश प्रकट नहीं करतीं, प्रकट होता है। उसी प्रकार वनस्पति-सृष्टि में रासायनिक फेरफार का कारण अपनी सूक्ष्म बैंगनी रंग की किरणें (ultra violet) ही हैं, जो दृष्टिगोचर नहीं हो सकतीं। उनके कार्य से उनका अस्तित्व प्रतीत होता है। मन का व्यापार भी इसी प्रकार का है। जो रंग की किरणें दृष्टिगोचर नहीं होतीं, वे किरणें ही सृष्टि में महत्त्व-पूर्ण फेरफार उत्पन्न करती हैं। यही हाल मन के संबंध में भी है।

विज्ञानवेत्ता ने जिस प्रकार सूर्य के पृष्ठ-भाग में अंधकारमय प्रदेश का शोध किया है, उसी प्रकार मन के पृष्ठभाग भी, जिसका कार्य हमें नहीं मालूम होता, ऐसा अव्यक्त प्रदेश है। इस प्रदेश के व्यापारों का भान अंतर्मन में जाग्रत् रहता है। सामान्य मनुष्य, जिन्हें अपने मन के स्वरूप का लेश ज्ञान नहीं, अपने मनोव्यापारों का मूल-कारण अपने बाह्य मन में ही देखते हैं। परंतु मन के पृष्ठभाग में रहकर जो अपने कार्यों को मन प्रकट करता है, उसकी ओर उसका लक्ष्य नहीं जाता। अंतर में किस प्रकार के निश्चय दृढ़ हैं, किस प्रकार की कल्पना की रचना होती है, किस प्रकार की स्फुरणा होती है, इस संबंध में निरीक्षण करने का उन्होंने प्रयत्न तक नहीं किया।

जल-बुद्बुद का अस्तित्व हम जल के ऊपर ही देखते हैं, किंतु उसका अस्तित्व जल के गर्भ-भाग में रहता है, और वहीं से वह ऊपर आता है। जब तक वह ऊपर नहीं आता, तब तक हम उसके अस्तित्व को नहीं जान सकते। किंतु हमारे न जानने से उसका अनस्तित्व सिद्ध नहीं हो सकता। इसी प्रकार जाग्रत् मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भदभद

[बालकोपयोगी कविता-संग्रह]

संपादक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक, विनोद-पूर्ण सचित्र कविताओं का यह अपूर्व संग्रह है। बाल-वृंद पढ़कर लोट-पोट हो जायँगे।

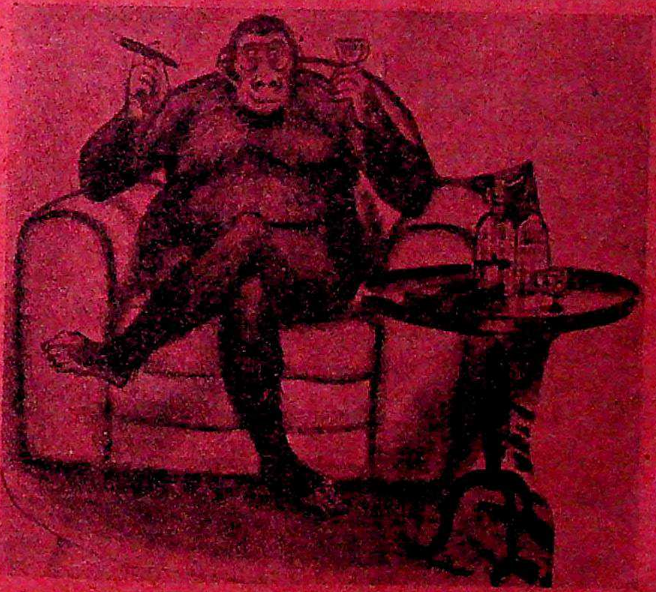

चित्रों की भरमार इतनी है कि देखते ही बनता है। पुस्तक इतनी सरल और सरस भाषा में है कि समझने में ज़रा भी कठिनाई नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से उपन्यास-सा मज़ा आता है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि बालक चित्र देखकर कविता बनाना भी सीख सकते हैं। छपाई-सफ़ाई उत्तम। मूल्य ||=), सजिल्द |||=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-विज्ञान

[प्रथम भाग]

लेखक, श्रीअत्रिदेव गुप्त विशालंकार। संसार में मनुष्य-जीवन के लिये स्वास्थ्य-रक्षा परमावश्यक और स्वास्थ्य-विद्या का ज्ञान अनिवार्य है। इस ज्ञान के विना मनुष्यों से अपने जीवन-निर्वाह और आहार-व्यवहार में भयंकर भूलें होती हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप उनको नाना प्रकार के रोग ग्रसते हैं, और वे अपनी पूरी आयु को पहुँचने से पूर्व ही मृत्यु के मुख में चले जाते हैं। अतः स्वास्थ्य ही जीवन का मूल है। जिसने इसे खो दिया, उसके लिये सारा संसार अंधकारमय है—उसे कोई लौकिक सुख सुलभ नहीं। वह सब प्रकार से संपन्न होकर भी दरिद्री है।

प्रस्तुत पुस्तक में स्वास्थ्य-संबंधी सभी बातों का विशद विवेचन किया गया है। जो ज्ञान आपको इस पुस्तक के पढ़ने पर होगा, वह बहुत-सी पुस्तकों के अवलोकन से न होगा। आयुर्वेदिक ग्रंथों के मंथन से यह पुस्तक तैयार की गई है, और इसकी उपादेयता आप पढ़कर ही जान सकेंगे। स्वास्थ्य-संबंधी कोई भी विषय पुस्तक से छूटने नहीं पाया है। यत्र-तत्र चित्र दे देने से तो पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। प्रत्येक गृहस्थ को इस उपयोगी पुस्तक को अवश्य रखना चाहिए। मूल्य १।), सजिल्द १।।)

सिंहगढ़-विजय

[चुनी हुई ऐतिहासिक कहानियाँ]

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में शास्त्रीजी की दस कहानियाँ संगृहीत हैं। कहना न होगा कि शास्त्रीजी हिंदी के श्रेष्ठ कहानी-लेखक और उपन्यासकार हैं, और, उन्हीं की लौह लेखनी का यह प्रसाद है। कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं, जिन्हें पढ़कर आपके हृदय में वीर-रस का अनुभव होगा, और जिन्हें पढ़कर अतीत भारत का एक अस्पष्ट, किंतु वेदना-विह्वल छाया-चित्र आपको कदाचित् कुछ आर्द्र करेगा। इन कहानियों में ऐतिहासिक सत्य कम है, फिर भी भावना और कल्पना से तत्कालीन ओज-पूर्ण जीवन की रेखाएँ खींची गई हैं। ये रेखाएँ आपके हृदय पर प्रतिबिंबित होकर उनके रक्त में एक जीवन और उमंग की लहर पैदा कर देंगी। आज ही एक प्रति का ऑर्डर दे दें। मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर ! हृदयग्राही !! सरस !!!

महारानी दुर्गावती

[राष्ट्रीयता से ओतप्रोत काव्य]

लेखक, पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

— —:○○:— —

भारत की अमर वीरांगना महारानी दुर्गावती के पावन चरित्र की काव्यमय गुण-गाथा का हिंदी में आज तक एकांत अभाव रहा है। किंतु हिंदी-संसार के सुपरिचित कवि और पत्रकार 'मस्त' जी ने सुंदर और वीर-रस-पूर्ण काव्य लिखकर इस कमी की प्रशंसनीय पूर्ति की है। पुस्तक का काव्य इतना रोचक और हृदयग्राही हुआ है कि ग्रामोफ़ोन-कंपनी, बंबई ने इसका रिकार्ड [नंबर एफ़० टी० ९८८४] तक बना डाला है, और भारत के घर-घर में इस वीरांगना की यश-कहानी गूँज रही है। मूल्य ।=)

पुस्तक शुरू करने पर बिना समाप्त किए आपकी तबियत न मानेगी। हाथ-कंगन को आरसी की क्या आवश्यकता ? हिंदी के राष्ट्रीय साप्ताहिक 'कर्मवीर' और मासिक 'साहित्य-संदेश' की समालोचनाएँ पढ़कर स्वयं निर्णय कीजिए कि यह काव्य कैसा है ?

'कर्मवीर' [खंडवा, ३ जून, ३९]—जीवित चित्र आँकना साधारण कलाकार के बूते भी सहज हो जाता है, किंतु अतीत के मृत इतिहास को सजग कर देने की अँगुली कुछ विशेष सजग प्रतिमा-कण माँगती है। मध्यप्रांत के श्रेष्ठ कवि श्रीदेवीदयाल चतुर्वेदी का यह खंड-काव्य कवि के इसी बाज़ू का सिद्ध प्रमाण है। कोमलकांत भावना को राष्ट्रीयता के ही रंग में रँगा गया है, इसलिये रचना आज के युग-धर्म के साथ है। चमत्कार-पूर्ण कथानक को सरल, सहज वाणी के साथ सरस अभिव्यक्ति भी मिली है, जिससे पुस्तक काफ़ी रोचक हो गई है।

'साहित्य-संदेश' [आगरा, जून, ३९]—'मस्त' जी ने अमरकंटक और रेवा-तट के जो दृश्य खींचे हैं, महारानी दुर्गावती के बचपन का जिस ढंग से वर्णन किया है, और युद्ध के समय पर रानी द्वारा जिस ढंग से सैनिकों को प्रोत्साहित कराया है, वह उनकी कल्पना और भाव-प्रवणता से बहुत सुंदर बन पड़ा है। अकबर की कूटनीति का भी बहुत मोहक चित्र खींचा गया है।

शीघ्र मँगाइए !

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखी जीवन

लेखक, श्रीआचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। आप हिंदी के श्रेष्ठ कहानी-लेखक की हैसियत से सुप्रसिद्ध तो हैं ही, वरन् एक सफल वैद्य भी हैं। आरोग्य-शास्त्र का आपका अध्ययन बड़ा गहरा है। इस विषय में आपने कई पुस्तकें लिखी हैं, जिनका बहुत आदर हो चुका है।

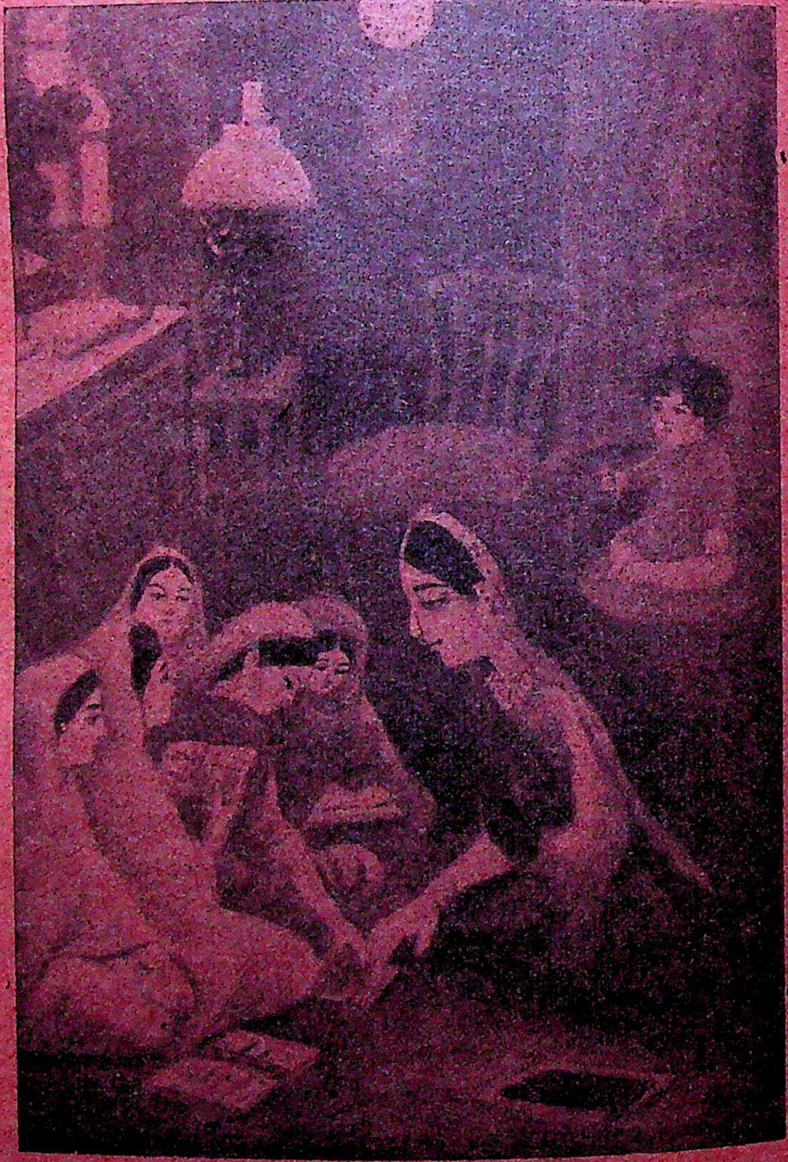

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यजी ने अधिकार-पूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। ग्रामीण और नागरिक स्त्री-पुरुषों तथा विशेषकर स्त्रियों के लिये पुस्तक अत्यंत लाभदायिनी है। स्त्रियों का बचपन, उनका गार्हस्थ्य जीवन, उनकी तंदुरुस्ती आदि विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेने पर स्त्रियाँ अपना जीवन निस्संदेह सुख-पूर्वक बिता सकती हैं, पुस्तक प्रत्येक स्त्री के हाथ में जाना अत्यंत आवश्यक है। मूल्य सादी ॥।), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श पत्नी अर्थात् इंदिरा के पत्र

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल-एल० बी०। यह दांपत्य जीवन पर विद्वान् लेखक की नवीन रचना है। प्रस्तुत पुस्तक में इंदिरा ने अपनी अभिन्न-हृदया सहेली शांता के लिये पत्रों के रूप में विवाहित जीवन को सफल एवं सुखी बनाने के लिये बड़ी अमूल्य सीख दी है। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई हैं कि जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। इसमें केवल-मात्र सिद्धांतों (Theories) का विवे-

चन नहीं है, प्रत्युत क्रियात्मक रूप से प्रत्येक विषय पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक सर्वथा शिष्ट, संयत और सुंदर भाषा में लिखी गई है, जिससे प्रत्येक साधारण पाठिका आसानी से समझ सकती है। प्रत्येक विवाहिता देवियों को हर समय इसकी एक प्रति अपने पास रखनी चाहिए। यह पुस्तक विवाहादि शुभ अवसरों पर भेंट में देने योग्य है। मूल्य १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शबरी

शुद्ध, सुबोध, निखरी व्रजभाषा में

अद्वितीय मौलिक

खंड-काव्य

लेखक, श्रीयुत वचनेशजी । जिसमें शबरी के बाल्यकाल का विकास, उसमें प्रकृति-निरीक्षण और उसकी प्रेम-दशाओं का रस-भाव से भरा चारु चित्रण है । (रसाल) काव्य-कौशल तथा सामयिकता, दोनो दृष्टियों से ग्रंथ महत्त्व-पूर्ण है, और भगवद्भक्ति के साथ अछूतों की ओर सहानुभूति आकर्षित करता है । ऐसा सजीव चित्रण, आधुनिक किसी रचना में, देखने में नहीं आता । (सनेही) पढ़कर हृदय लोकोत्तरानंद में मज्जित हो जाता है । (निराला) साथ ही सुंदर भाव-व्यंजना प्रशंसनीय ही नहीं, उदात्त भी है । (हरिऔध) रचना अत्यंत सरस और सुंदर है । (प्रो० धीरेंद्र) इसमें प्रेम की काव्य-पूर्ण एवं स्पृहणीय व्याख्या की गई है । कवि की सुलझी हुई शैली ने शबरी के जूठे बेरों को अत्यंत मधुर बना दिया है । कवि ने सवैया-छंद को कहीं-कहीं जो नवीन रूप देने का प्रयत्न किया है, उसमें उसे सफलता प्राप्त हुई है । (पंत) फलतः भक्ति-भाव-दर्शक बड़ी ही सरस कविता है । अतएव सर्वथा प्रशंसनीय है । (स्व० द्विवेदीजी)

आस्वाद्य शबरीकाव्यं वचनेशेन निर्मितम् ।
आनन्दभक्तिसंदोहप्लावितं हृदयं मम ॥

मूल्य ॥) (म० महो० गंगानाथ झा)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुकवि-संकीर्तन

(द्वितीयावृत्ति)

लेखक, भूतपूर्व सरस्वती-संपादक साहित्य-महारथी स्व० पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रय-दाताओं के संबंध में सचित्र परिचयात्मक निबंध हैं । जिनमें श्रीमान् द्विवेदीजी की ओजस्विनी लेखनी की सभी विशेषताएँ मौजूद हैं । इन मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद निबंधों में जो बातें वर्णित हैं, वे कभी पुरानी नहीं हो सकतीं, इन्हें बार-बार पढ़ने पर भी जी नहीं ऊब सकता, इस पुस्तक के पढ़ने में एक उपदेशप्रद उपन्यास का-सा आनंद आता है । कहीं साहित्यिक लालित्य है, कहीं अगाध पांडित्य है, कहीं काव्य की कमनीय छटा है, बिलकुल नायाब चीज़ है, पुस्तक सचित्र है, एक बार अवश्य देखिए । मूल्य ॥।), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-रूपी बुद्बुदों का भान होने के पूर्व उनका अंतर में अस्तित्व होता है।

अंतर्भान ही हमारे जीवन का मुख्य प्रवर्तक है। इन विचारों से यह स्पष्ट है कि मनुष्य को उत्तम प्रकार के अनुभव करने की परम आवश्यकता है; क्योंकि उसका प्रत्येक अनुभव स्मृति-पट पर अंकित होता और अनुभव का तादृश भान होता है। और, उच्च अनुभव जाग्रत् हो, तो उसके समान जीवन को आह्लाद-जनक दूसरा क्या हो सकता है।

अंतर्भान की मर्यादा का स्मृति-प्रदेश ज्ञान-प्राप्ति में कितना सहायक होता है तथा जीवन में कितना उपयोगी है।

बेकन का कथन है—"All knowledge is best rememberance. अर्थात् समग्र ज्ञान स्मृति-मात्र है।"

टेनी कहता है—"स्मरण-शक्ति का जो कार्य है, वह पूर्व के कोई अनुभव की छाप जो मस्तिष्क पर अंकित हुई है, वही वर्तमान में प्रतिभा के रूप में प्रकट होती है।"

बेजिली का कथन है—"स्मरण-शक्ति कल्पना-शक्ति का घर है, तर्क-शक्ति का कोष है, सदसद्विचार-शक्ति का हिसाब लेने का स्थान है, और विचार का कौंसिल चेंबर है।"

अलेक्जेंडर स्मिथ का कथन है—"मनुष्य का सच्चा भांडार उसकी स्मरण-शक्ति है।"

इमर्सन ने कहा है—"एक शतक में प्रकट हुए अनेकानेक ग्रंथ पढ़ने की अपेक्षा एक सप्ताह में जो विचार मैंने किए हैं, उन्हें पूर्ण रीति से स्मरण रखना मैं अधिक पसंद करता हूँ।"

इन सब कथनों का तात्पर्य यही है कि हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्मृति-मूलक संस्कार अंतर्भान के प्रदेश में रहते हैं। इस अज्ञात प्रदेश को थोड़े दिन पूर्व विद्वान् स्वीकार नहीं करते थे, किंतु आज बड़े-बड़े मानस-शास्त्र-वेत्ता इसके अनुसंधान में लगे हैं।

अंतर्भान के कई प्रदेश विशाल संग्रहालय के समान हैं। इस संग्रहालय में अनेक पदार्थों का संग्रह है। उन पदार्थों में से हमारे विचार की रचना होती है, और वे विचार कर्मशाला (Thought Factory) में लाए जाते हैं। इस स्थान में उनमें से एक प्रकार की रचना का प्रादुर्भाव होता है, और यह रचना हमारे भान-अवस्था के विचार हैं, हमारी मानस-कृतियाँ हैं।

इस संग्रहालय में हमारे बुरे-भले विचार-द्रव्य का विशाल संग्रह है, और जो कुछ भी विचार हमने इस भांडार में एकत्र किए हैं, वे ही हमारी और क्रियाओं का निर्णय करते हैं।

हमारे संग्रहालय का उत्तम द्रव्य उत्तम विचारों और असार द्रव्य-हीन विचारों की रचना का कारण है।

हमारी विचार-कर्मशाला के सुंदर द्रव्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक, सुंदर और भव्य विचार - रचना उत्पन्न होती है, और निकृष्ट एवं कुरूप वस्तुएँ उत्पन्न करनेवाले विचार-द्रव्य से तिरस्कार, आत्महीनता, घृणा आदि विचार-रचना का उद्भव होता है।

क्या तुम कभी विचार करते हो कि तुम अपने मानस-संग्रहालय में—मानस-द्रव्यागार में किस प्रकार के पदार्थों—द्रव्यों का संग्रह करते हो। इस विषय को कितनी सावधानता-पूर्वक विचार करने की अनिवार्य आवश्यकता है।

हमारे वर्तमान विचार, वर्तमान कृतियाँ तथा चरित्र, ये सब हमारे भूतकाल की मन-संस्थिति (Mental attitude) के ही परिणाम हैं। इसी प्रकार भविष्य के विचार, व्यवहार, चरित्र, ये सब हमारे वर्तमान समय में—मानस-संग्रहालय में जिस प्रकार के द्रव्यों का संग्रह कर रक्खा है—उसी के परिणाम-स्वरूप प्रकट होंगे। यह मानस-शास्त्र का अचूक सिद्धांत है, और इस सत्य की ओर पाठकों का लक्ष्य आकर्षित करना ही इस लेख का मुख्य हेतु है।

भूतकाल में जैसे विचारों का चिंतन मन में किया है, अथवा जिन दृढ़ संस्कारों को अपने मानस-पटल पर अंकित किया है, वैसे ही आज हम बने हुए हैं। हमारे मन की संस्थिति ने भूतकाल में जिन द्योतनों का दृढ़ संस्कार अंकित किया है, वे ही एकत्र होकर हमारे वर्तमान जीवन-चरित्र या आत्मविकास का निर्णय करते हैं। जब हम विचार करते हैं, तो विचार-रचना सूक्ष्म वायु के प्रवाह, प्रकाश की किरणों या शून्य से नहीं उत्पन्न होती, बल्कि हमारे विचार-पट का प्रत्येक भाग अंतर्भान-प्रदेश में भूतकाल के संचित मानस-द्रव्य का ही परिणाम-स्वरूप है।

क्षण-भर स्थिर होकर विचार करो, तो तुम्हें यह सिद्धांत यथार्थ में तुम्हारे जीवन में मानस-शास्त्र के नियम के अनुसार सिद्ध हुआ अनुभव होगा।

हम जो कुछ सोचते हैं, वैसी ही हमारी दुनिया है। प्रत्येक मनुष्य अपने आंतरिक विचार-जगत् में चलता-फिरता और गति करता है। मन में उठनेवाली तरंगें किसी को सातवें आसमान में ले जाती हैं, और किसी को आत्महीनता (Inferiority complex) की भावना, रंज-ग़म और आत्मग्लानि के हीन विचारों में डुबा देती हैं, जिससे वह विधेयात्मक विचार करने में असमर्थ हो जाता और अपने जीवन का अंत कर लेता है।

अभी विगत मास में ही हमारे मेंटल क्लिनिक में एक विचारशील ग्रेजुएट को, जो अच्छा मासिक वेतन पाता था, आत्म-हीनता की भावना ने आ दबाया, और उसके अंतर्मन पर यही हीनबल की भावना आरूढ़ रहा करती। वह बार-बार यही कहा करता कि मैं नौकरी करने के सर्वथा अयोग्य हूँ। इस हीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना से अनिद्र-रोग हो गया, और मानसिक विषाद (Melancholia) का आवेग बार-बार होने लगा। बार-बार अनैच्छिक आत्मघात करने के विचार दौरे के रूप में उठा करते। उसके लिये एक-दो बार प्रयत्न किया, किंतु असफल रहे। दो-तीन मास मानसिक एवं आध्यात्मिक चिकित्सा से निद्रानाश-रोग दूर हुआ, उसमें कुछ साहस और आत्मबल प्रतीत होने लगा, और वह समझने लगा कि अब मैं कार्य करने के सर्वथा योग्य हो गया हूँ। एक मास से उसने मानसिक चिकित्सा भी स्थगित कर दी है कि आदत न पड़ जाय, किंतु उसे यह पता न था कि अंतर्भान के भांडार से आत्महीनता की भावना निर्मूल नहीं हुई है। एक मास की छुट्टी उसने अपने डिपार्टमेंट से और बढ़वाई थी। एक रात्रि को, जिस दिन अपने घर जाने का उसने निश्चय किया था, आत्महीनता की भावना ने उसे बड़े ज़ोर से आ दबाया, और यह द्योतन उसके अंतर्मन पर आरूढ़ रहा कि मेरी छुट्टी मंज़ूर होकर अभी तक नहीं आई। इसका कारण यही है कि मैं नौकरी के योग्य नहीं रहा, मुझे नौकरी से हटा दिया गया है, इसीलिये मेरी छुट्टी की तनख्वाह का मनीऑर्डर भी अभी तक नहीं आया, अब मैं घर पर जाकर क्या मुँह दिखलाऊँ, इसलिये जीवन का अंत कर लेना ही अच्छा है। इस अनैच्छिक हीन विचार ने उसे ऐसा पागल बना दिया कि उसने दस मिनट में ही अपने जीवन का अंत कर लिया। इस दुर्घटना के तीसरे ही दिन उसकी छुट्टी मंजूर होकर आ गई, और एक दिन बाद तनख्वाह का मनीऑर्डर भी आ गया, किंतु वह तो संसार से बिदा हो चुका था।

कोई चिथड़े पहनकर अपने को महाराजा मान रहा है, और अपनी उन्माद की तरंगों में अपनी दुनिया में मस्त रहता है। इस प्रकार की उच्च भावना-(Superiority complex) वाले भी पागलखाने की शरण लेते हैं, और आत्महीनता की भावनावाले अपने जीवन का अंत कर लेते हैं।

हमारे जीवन का हरएक अनुभव हमारी स्मृति-पट पर अंकित होता है, जो कभी लोप नहीं होता। बहुत-से अनुभव विस्मृत हो जाते हैं, क्योंकि वे अज्ञात दशा में अंतर्मन में दब जाते और हानि अथवा लाभकारक हो सकते हैं।

अंतर्मन में दबे हुए कई अनुभव शरीर में शून्यता या विकार पैदा कर देते हैं। और, कई विश्लेषण द्वारा जाग्रत् होने पर रोग को समूल नष्ट कर देते हैं, और कई मनुष्य का प्राण-हरण कर लेते हैं।

हज़ारों मनुष्य आज क्षुद्र और हीन भावनाओं और भ्रम एवं भ्रांति के भार से दबकर निराशा में अपने जीवन को व्यर्थ बरबाद कर रहे हैं। यांत्रिक रीति से इस प्रकार के विचार का प्रवाह सतत चलता रहता है, और ये विचार अंतर्भान की मर्यादा में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। मानस-शास्त्र में आगे बढ़े हुए विद्वानों का यह मत है।

अंतर्भान की मर्यादा से हीन विचारों और अंधकार को निर्मूल करने का एकमात्र उपाय प्रकाशमान विचारों का निदिध्यासन है। प्रकाशमान, शुद्ध विचार एक क्षण में मानस-जगत् का अंधकार विलीन कर देते हैं।

आज से तुम यह निश्चय करो कि अपने अंतर्मन में कोई दुर्बल, अस्पृहणीय, हीनता के विवाद प्रकट करनेवाले विचारों को तुम स्थान न दोगे, बल्कि इसके विपरीत अनावश्यक, अनैच्छिक द्रव्य के स्थान में आवश्यक एवं इच्छित द्रव्य को ही मानस-संग्रहालय में स्थापित करोगे। तुम्हारी ज्ञान-मर्यादा में कोई दुर्बल विचार प्रवेश करता हुआ प्रतीत हो, तो तुरंत ही विचार-पूर्वक उसे आज्ञा दो कि ऐ निरुपयोगी विचार! तुम्हारे लिये यहाँ स्थान नहीं, मेरे मानस-क्षेत्र से दूर हट जाओ, भाग जाओ, चले जाओ। और, फिर तुरंत ही प्रकाश-युक्त, सबल, विधेयात्मक, आनंद, उत्साह, प्रसन्नता के तेजस्वी, सुंदर विचारों को धारण करके मानस-संग्रहालय में एकत्र करने को विलंब न करो, और इस प्रकार के तेजस्वी और रमणीय विचारों को अपने जीवन-व्यवहार में लाओ। इन विचारों को जीवन के बर्तन में लाने से अपने मानस-संग्रहालय में योग्य द्रव्य पुष्कल परिमाण में एकत्र कर सकोगे।

एक शुद्ध, बलवान् विचार अनेक दुर्बल विचारों को हीन-बल और परास्त करने को समर्थ है। निश्चय बल का उपयोग करो, दृढ़ आग्रह को धारण करो। अंतर्भान के संग्रहागार में एकत्र मलिन और अशुद्ध द्रव्य को बदल दो। निःसार द्रव्य बाहर फेंक दो, और सुंदर, नवीन और उत्तम द्रव्य का संग्रह करो। तुम्हारा 'अहं' मानस-संग्रहालय का स्वामी है। इसलिये तुम अपने जीवन में अपनी सत्ता के प्रभाव से चाहे जो फेरफार करने को समर्थ हो, और अपने जीवन को उन्नत, विशाल, सुखमय, आनंदमय, प्रेयमय और नवयौवन-युक्त रचने को सर्वथा समर्थ हो।

दुनिया में हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद-टॉनिक शारीरिक समस्त त्रुटियों को पूरा कर, स्वास्थ्य को सुधारकर, झुर्रियाँ नष्ट कर, आँख की रोशनी तेज़ कर, बाल का पकना रोककर, बूढ़ा, जवान, सभी का पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी न रक्खे, और झूठा साबित हो, तो १००) देने की शर्त। दाम ५) फ़ी शीशी।

पता—जड़ी-बूटी-दवाख़ाना, पो० बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुआँधार*

[श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव]

हे मेरे प्यारे धुआँधार !
मैं बेसुध-सी हो जाती हूँ यह रूप-राशि तेरी निहार ॥ हे० ॥
यह दुग्ध-सदृश है फेन धवल,
कितना निर्मल, सुंदर, उज्ज्वल,
धोता है यह सारे कलि-मल,
विधि हुआ स्वयं आश्चर्य-चकित लखकर तेरी सुषमा अपार ॥ हे० ॥

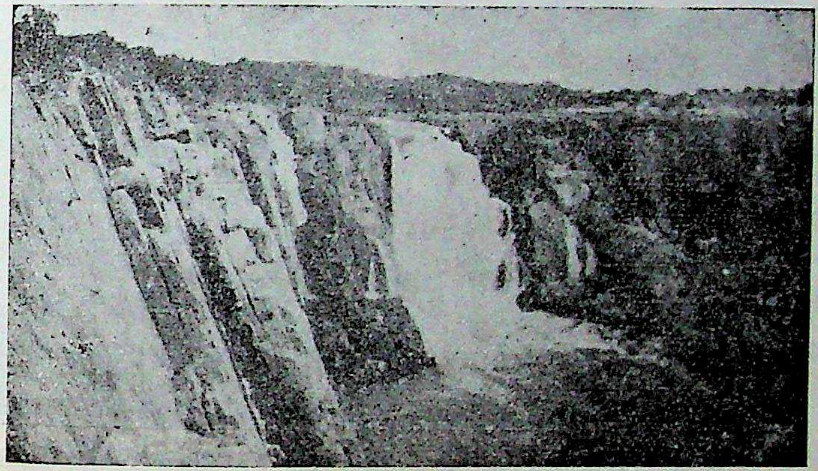

धुआँधार जल-प्रपात

तू करता इतना धूम त्यक्त,
करता है मन का रोष व्यक्त,
क्यों उबल रहा तव सखे ! रक्त,
है निहित कठिन ज्वाला उर में, फुंकार छोड़ता बार-बार ॥ हे० ॥
प्रतिपल होता है परिवर्तन,
है प्रकृति-नटी करती नर्तन,
पर है अनंत तव आकर्षण,
तुझको इतना अवकाश कहाँ, जग को देखे आँखें पसार ॥ हे० ॥

* जबलपुर से १४ मील की दूरी पर, नर्मदा-तट भेड़ाघाट पर, स्थित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू गाता है नित करुण गान,
क्या तेरा है आशय महान ?
सुनकर विस्मत हो गए प्राण,
तू अपना स्वर गंभीर किए करता प्रतिपल करुणा-प्रसार ॥ हे० ॥
करने को जग में अमर नाम
करता रहता है सतत काम,
पल को न तुझे मिलता विराम,
देता है तुझको कौन यहाँ तेरे श्रम का प्रिय, पुरस्कार ॥ हे० ॥

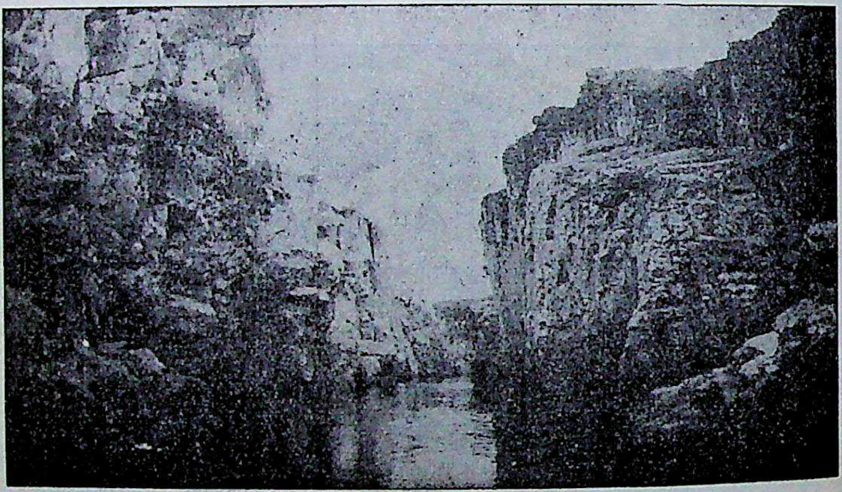

संगमरमर की चट्टानों के बीच नर्मदा-नदी का दृश्य

सौंदर्य किया किसने प्रदान,
हो गया मुग्ध सारा जहान,
वह जन है कितना भाग्यवान,
हाँ, तुझे देखकर सफल हुए जिसके लोचन हैं एक बार ॥ हे० ॥
बस यही चाहता मेरा मन,
मैं तुझको ही निरखूँ प्रतिक्षण,
तट पर व्यतीत कर दूँ जीवन,
तू है त्रिभुवन में अद्वितीय, है वसुंधरा का स्वर्ग-द्वार ॥ हे० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपकार का बदला

[कुमारी कामिनीदेवी सेठ]

(१)

"अरे रमैया ! ओ रमैया ! देख, जानवरों के पास चारा है या नहीं।" रामू के पिता भीखम ने कहा।

"अच्छा।" कहकर रामू बैलों के पास गया, और एक डलवा भूसा भरकर बैलों की नाँद में डाल दिया। इतने में उसकी बड़ी बहन कमला ने आकर कहा—"भैया, कोई बाहर पुकारता है।" रामू बाहर गया और फ़ौरन् लौट आया, और अपने काम में लग गया।

भीखम एक निर्धन किसान है। एक जंगल के किनारे, एक झील के पास, कुछ आदमियों ने झोपड़ियाँ डाल ली हैं। वह भी अपनी दो बालिकाओं, स्त्री और एक पुत्र के साथ इसी झील के पास चिरकाल से रहता आ रहा है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोमोहक और चित्ताकर्षक है। भिन्न-भिन्न प्रकार के पशु-पक्षी अपनी भाँति-भाँति की किलोलों से उस दृश्य की शोभा को दुगुना कर देते हैं। प्रातःकाल मंद-मंद सुगंधित वायु का चलना, वट-वृक्ष की सघन छाया, सूर्य भगवान् का निकटवर्ती गिरि-शिखरों से आलोकित होना, और फिर अपनी प्रखर रश्मियों द्वारा उक्त झील पर प्रतिबिंबित होना, मानो स्वर्ग की छूट को भूमि पर बिखेर देता है।

कमला, जिसकी आयु इस समय ७-८ वर्ष की है, अपने गृह-कार्यों से निवृत्त होकर वट-वृक्ष की छाया में अपनी सहेलियों-सहित खेला करती है। उसकी छोटी बहन विमला भी उसका अनुकरण करने की चेष्टा करती और अपना सारा समय यहीं व्यतीत करती है। रामू ही अपने पिता का एकमात्र सहारा है, पर अभी छोटा होने के कारण बहुत काम नहीं कर सकता, फिर भी नहीं से बहुत कुछ हो जाता है।

इस समय भीखम की आयु ३०-३५ साल की है। वह लाख प्रयत्न करने पर भी अपने बच्चों के पेट भरने योग्य नहीं पैदा कर पाता। कुछ खेती कर रक्खी है। जंगल की लकड़ी, फल, फूल बेचकर अपनी और अपने परिवार की जीविका उपार्जन करता है। फिर भी वह इतना धन न संचय कर पाता कि दूसरे रोज़ कुछ बचे। बहुधा पहले पहर व्रत ही हो जाता। ऐसे अवसर पर बच्चों को रूखा-सूखा खिलाने के बाद स्त्री और आप भूखे पड़े रहते। ऐसी दीन-हीन दशा में राम-राम करके वे लोग अपना समय व्यतीत करते, और "टुक-टुक दी दम, दम न कशीदम" वाली कहावत चरितार्थ करते हुए अर्थ-संकट में पड़े रहते।

(२)

एक दिन एक साधुनी उस राह से आ निकली। रमणीक स्थान देख कुछ समय वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यतीत करने की इच्छा से, उस सघन कुंज के पास, एक ओर, ठीक झील के निकट, एक वृक्ष के नीचे आसन जमा दिया। एक डंडा, जिसे बजाकर वह गाया करती, और एक झोली में कुछ पूजा का सामान, यही उसकी पूँजी थी। उसका गाना "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई रे। मेरे तो गिरधर गोपाल०।" यही उसकी पूजा थी, और यही मन-बहलाव। उसका गाना सुन बच्चे दौड़ आते, और उसके साथ बैठकर पहले तो केवल मन में ही गाते, फिर धीरे-धीरे स्वर स्पष्ट होने लगता—"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई रे। मेरे तो गिरधर गोपाल०।" क्रमशः सब बच्चे उस साधुनी से बहुत हिल गए। मा के पास तो थोड़ी ही देर को जाते, बाक़ी दिन-भर उसी साधुनी के पास बैठे रहते। गीत गाते और उसकी अच्छी-अच्छी बातें सुन या देखकर वैसा ही करने की चेष्टा करते। उसने उन्हें पढ़ाने की भी आयोजना की, और इधर-उधर की बहुत-सी अच्छी-अच्छी शिक्षाप्रद बातें बताने लगी।

कुमारी कामिनीदेवी सेठ

[आप शाहजहाँपुर के सुप्रसिद्ध वकील बाबू नवलकिशोरजी सेठ ऐडवोकेट की पुत्री-रत्न हैं। आपकी आयु लगभग १८ वर्ष की है। आपने हिंदी-विद्याविनोदिनी-परीक्षा सम्मान-पूर्वक पास की है। इस वर्ष हाईस्कूल-परीक्षा में सम्मिलित हुई हैं। आपको हिंदी-साहित्य से बड़ा प्रेम है। आप होनहार, विद्या-व्यसनी और प्रतिभाशालिनी बालिका हैं। हिंदी-साहित्य और मातृभूमि को आपसे भविष्य में बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। हम जीवन में कुमारीजी की सफलता चाहते हैं।]

(३)

अपने नए पल्लवों से सुसज्जित ऋतुराज वसंत का आगमन हुआ। नई डालें, नई कलियाँ और नई लताएँ देखने से मन चलायमान होता है। पक्षी सुमधुर गीत गाते हैं। वृक्षों ने पूर्ण पल्लवित होकर नवीन वस्त्र धारण किए हैं। चारो ओर ऋतुराज ने बहार-ही-बहार भर दी है। इसी समय एक डिप्टी ने, जो दौरे पर आए हुए थे, इन बच्चों से पूछा—"तुम लोग कहाँ रहते हो? क्या करते हो? कुछ पढ़ते हो या नहीं?" बच्चों ने कहा—"हाँ, यह साधुनी हम लोगों को पढ़ाती है, और इधर-उधर की नई-नई बातें भी बताती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिप्टी साहब बच्चों की बातें सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा, यदि इनकी पढ़ाई हो सके, तो ये देश की बड़ी सेवा कर सकते हैं। यह सोचकर, उन्होंने भीखम से कहकर उस जंगल के निकटवर्ती एक क़सबे के स्कूल में उसके तीनो बच्चों के पढ़ने तथा खाने-कपड़े का प्रबंध कर दिया। समय-चक्र बलवान् है, वक़्त जाते देर नहीं लगती। साल व्यतीत हो गए। कमला, विमला तथा रामू पढ़-लिखकर होशियार हो गए। कमला का एक सज्जन के साथ विवाह भी हो गया और कुछ दिन बाद विमला का भी। रामू उसी स्कूल में अध्यापक हो गया, और भीखम अपनी खेती-बारी ही करता रहा। बहुधा रामू बहुत-सी दवाइयाँ लेकर निकलता, सब किसानों को बाँटता और उन्हें शिक्षाप्रद बातें बताता। फलतः उसने ग्राम-सुधार का कार्य करना ही अपना ध्येय समझा, और उसी में लग गया।

(४)

भाग्य बलवान् हो, ईश्वर सहायक हो, तो पृथ्वी का एक छोटा-सा कण भी प्रकाश तक पहुँच सकता है। अब रामू शिक्षा प्राप्त कर उसी स्कूल में हेडमास्टर हो गया। जो कुछ तनख़्वाह मिलती, उसमें से केवल अपने ख़र्च-भर के लिये निकालकर शेष सब परोपकार और धार्मिक कार्यों में ख़र्च करता। वहीं एक सुंदर स्थान पर एक छोटी-सी धर्मशाला बनवा दी, और उसमें निर्धनों को भोजन तथा दवा मुफ़्त बँटवाने लगा। रामू घरों में पढ़ाने का भी कार्य करता। एक जगह वह एक सुंदर कन्या को पढ़ाने जाता, जिसका विवाह अभी नहीं हुआ था। धनी होने के कारण सामान जुटाते देर नहीं लगती, फिर भी जब कभी उसकी मा विवाह की चर्चा चलाती, तो लड़की आँखों में आँसू भर लाती, और कहती—"माताजी, क्या अब मैं भारू हो गई, जो इस प्रकार मुझे पृथक् करने का प्रयत्न करती हो? जब समय आएगा, तब देखा जायगा। होनी कोई मेट नहीं सकता।" उसकी सखियों से ज्ञात हुआ कि वह अपनी मनचाही शादी करेगी। वह टेंथ की परीक्षा देनेवाली थी। उसका नाम सुंदरी था। जैसा नाम था, वैसी ही वह थी भी। सुंदरता और मधुरता उसमें कूट-कूटकर भरी थी। स्वास्थ्य अच्छा होने के कारण अब वह बहुत बड़ी ज्ञात होती थी। रामू भी बीस वर्ष का युवक था। सादा ढंग, सादा रहन-सहन, गठीला शरीर, अपार योग्यता, उन्नत विचार उसके उज्ज्वल भविष्य के परिचायक थे। वह भी अभी तक अविवाहित था। स्वच्छंदता-पूर्वक परोपकार में सब समय लगाता। सुंदरी उसके इन गुणों पर तन-मन से मुग्ध हो गई, और स्वयं उसके कार्यों में हाथ बँटाने लगी। अब तो जिसकी भी दृष्टि पड़ती, वही कहता—"क्या सुंदर जोड़ी है!" पर रामू का मन तनिक भी विचलित न हुआ। वह सदा उससे एक शिष्या की भाँति ही व्यवहार करता रहा। यद्यपि कभी-कभी सुंदरी के मन के भाव प्रकट हो जाते,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर वह उन्हें छिपाने का ही प्रयत्न करती रहती।

(५)

एक दिन सायंकाल के समय रामू घूमने गया। घूमते-घूमते काफ़ी रात्रि हो जाने के बाद उसे उत्तर की ओर कुछ रोने की आवाज़ सुनाई दी। पहले तो वह चौंका कि यह रोने की आवाज़ किसकी, फिर तुरंत ही उसकी ओर अग्रसर हुआ। थोड़ी दूर चलने पर देखा, एक बूढ़ी स्त्री नाली में पड़ी हुई कराह रही है। यह देख रामू से न रहा गया। वह शीघ्र ही नाली में कूद उस बुढ़िया को बाहर निकाल लाया, और धर्मशाले की ओर चल पड़ा। धर्मशाले में पहुँचकर उसने देखा, बुढ़िया के सारे शरीर से पीव निकल रहा है। सूरत बड़ी भयानक मालूम होती है। रामू ने अपने ही हाथ से उसकी सफ़ाई की। धीरे-धीरे वह स्वस्थ होने लगी, कुछ काल में बिलकुल चंगी हो गई। पर अब भी इतनी दुर्बलता थी कि वह चल न सकती थी। एक दिन रामू ने उस बुढ़िया से उसका परिचय पूछा। बुढ़िया ने कहा—"मेरा परिचय पूछकर क्या करोगे? यह एक बड़ी दुःखद कहानी है। तुम्हें दुख होगा। पर यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है, तो सुनो—मैं एक अच्छे घराने की स्त्री थी। पर मेरे स्वामी मुझे कम चाहते थे, क्योंकि मैं अधिक सुंदर न थी। ३० वर्ष की आयु में वह मुझे हरद्वार में छोड़ आए। कोई सहारा न था। एक पुत्र के सिवा सब बच्चे काल के गाल में जा चुके थे। एक रात उस पुत्र को भी कोई दुष्ट चुरा ले गया, जिसका आज तक पता न चला। फिर मैंने एक सज्जन के यहाँ नौकरी कर ली। थोड़े ही दिन बाद अस्वस्थ हो जाने के कारण वहाँ भी न रह सकी। ऐसी दशा में कौन सहारा देता। अब मेरे सारे शरीर में फुड़ियाँ निकलीं, जिनकी वेदना न सहकर मैंने आत्म-हत्या करने का निश्चय किया। आत्महत्या करने जा रही थी कि भूख के कारण चक्कर आ गया, गिर पड़ी, बेहोश हो गई। बाद का सारा हाल बेटा, तुझे मालूम ही है। इसी अर्थ-संकट के समय लगभग डेढ़ साल संन्यासिनी रहकर बिताया, पर पुत्र-शोक ने उससे भी गिरा पथ की भिखारिन बनाया।"

बुढ़िया की बातें सुनकर रामू को कुछ-कुछ याद आने लगा कि यह वही स्त्री है, जिसके कारण वह आज इस उच्च पद पर स्थित है, और आनंद-पूर्वक भर पेट भोजन पाता है। वह एक क्षण-भर मंत्र-मुग्ध-सा खड़ा रहा, आँखों में आँसू झलकने लगे, और थोड़ी देर में वह फूट-फूटकर रोने लगा। बुढ़िया उसकी यह दशा देखकर चकित हो गई, और रामू से इसका कारण पूछा। उसने सब हाल कह सुनाया कि कैसे उसी की शिक्षा के कारण वह आज इस उच्च पद पर है। बुढ़िया ने उसे बहुत सांत्वना दी, और उस समय शांत किया।

अब रामू अपने गाँव (जन्म-स्थान) गया। पिता से मिलने पर मालूम हुआ कि किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार वह एक रात को चुराकर लाया गया था, क्योंकि दोनो कन्याएँ ही होने के कारण पिता का मन पुत्र के लिये लालायित हुआ, और वह उसे चुरा लाया। रामू उसी साधुनी का पुत्र था, बुढ़िया अपने बेटे को पाकर कृत-कृत्य हो गई, और एक बार फिर देश-सेवा के लिये उसका मन उसे बाध्य करने लगा। उसने एक वैसा ही स्त्री-सुधार-विद्यालय और महिला-संघ खोला, जिससे सैकड़ों विधवा, अनाथ और दुखी स्त्रियों का पालन-पोषण होने लगा। सब लोग उसे बूढ़ी मा कहकर पुकारने लगे।

(६)

एक तो साधारण व्यक्ति, दूसरे किसान, कैसे संभव हो सकता है कि एक शहर के इतने धनी-मानी, प्रसिद्ध साहूकार की कन्या उसको बरे। पर सुंदरी के माता-पिता इस स्वभाव के न थे। वे अब सभ्यतानुकूल बदल गए थे। उनका कहना था, जाति-पाँति कुछ नहीं। वर कन्या के अनुकूल सुशिक्षित, सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और योग्य हो। धन पास नहीं रहता। यदि किसी ऐसे से विवाह कर दिया कि दोनो में न पटी, तो दोनो की जान संकट में, किसी की भी आत्मा किसी समय शांत नहीं। इन्हीं विचारों से माता-पिता ने पहले ही सोच लिया था कि रामू बाबू एक योग्य वर है। यदि सुंदरी भी पसंद कर ले, तो क्या अच्छा हो, और इसी कारण रामू को पढ़ाने पर नौकर रख लिया था। इसके साथ ही और बहुत-से देश-सेवा के कार्य अपने गुरु को करते देख उसकी भी उत्कंठा प्रबल हुई, और उसने अपने माता-पिता से आज्ञा माँगकर मास्टर साहब से स्वयं इस कार्य में सहयोग देने की अनुमति माँगी। मास्टर साहब ने आज्ञा दे दी।

(७)

बूढ़ी मा ने अपना फिर पहले-जैसा नाम पैदा कर लिया। जिधर देखो, उधर बूढ़ी मा की प्रशंसा। रामू की प्रशंसा, सुंदरी की प्रशंसा। इन तीनो ने तन-मन-धन से देश-सेवा-व्रत ठानकर निस्सहायों को सहायता, दुखियों को सांत्वना और भूखों को भोजन-वस्त्र इत्यादि से जितनी भी सहायता हो सकती, देने में कोई बात उठा न रक्खी।

सुंदरी इस नए कार्य में ऐसी संलग्न हुई, जैसे इसके अतिरिक्त उसे दुनिया से और कोई काम ही नहीं। टेंथ भी सेकंड डिवीज़न में पास हो गई, पर उसे इससे कोई विशेष आनंद नहीं हुआ। न-जाने अब वह किस चिंता में निमग्न रहने लगी कि उसे न भोजन की चिंता और न माता-पिता से मिलने ही की उत्कंठा। रात-दिन रोगियों की सेवा करना, ग्रामों में जाकर निर्धन कृषकों को नए प्रकार से खेती करने के ढंग, ग्राम-सुधार के नियम और किस तरह उन्हें कितना लाभ हो सकता है, ये ही बातें बताना उसका कार्य हो गया। पर उपर्युक्त कार्यों में लिप्त रहने के अतिरिक्त वह सदा चिंता-सागर में डूबती, न-मालूम कहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहती चली जाती, और जब तनिक सुध आती, तो अपने को शीघ्र सँभालकर उस चिंता को तरह-तरह की और बातों से भुलाने का प्रयत्न करती। पर क्या चिंता जिस शरीर में लग जाय, और जब तक उसका निवारण न हो जाय, वह उसे सरलता से छोड़ देती है? नहीं। अब तो दिन-प्रति-दिन सुंदरी दुबली होने लगी, और चिंता नित्यप्रति एक नया खिलौना खेलने को उसके सामने आने लगी।

आज वह अपने कमरे में बैठी कुछ बड़बड़ा रही है। शायद किसी का नाम लेकर विह्वल दशा में ज़ोर-ज़ोर से कह रही है—"क्या मेरी साध पूरी न होगी? क्या मेरे आराध्य देवता मुझसे सदा रूठे ही रहेंगे? ईश्वर, ईश्वर, तू भी एक अबला की सहायता नहीं करता। रामू बाबू, रामू बाबू, अब यह असहनीय दुख नहीं सहा जाता। मैं अथाह सागर में डूब रही हूँ, आओ, और मेरा हाथ पकड़कर मुझे उबारो।"

ऐसे कहते-कहते सिसक-सिसककर रोने लगी, और न-मालूम कब तक रोती रही। इसी प्रकार रोते-रोते सो गई, और स्वप्न में देखा कि रामू ने उसे अपना लिया है, और आज उसका विवाहोत्सव है। वह आज फूली नहीं समाती है। सहसा किसी ने आकर जगा दिया। देखा, पिताजी खड़े हैं, और कह रहे हैं—"बेटी, देख, रामू बाबू आए हैं, क्या कहीं जायगी?" सुंदरी पहले तो कुछ न बोली, फिर कहने लगी—"आज न जा सकूँगी, कुछ स्वस्थ नहीं हूँ।" पिताजी ने सब हाल रामू बाबू से कह दिया। रामू बाबू ने सारा वृत्तांत बूढ़ी मा से कह सुनाया। बूढ़ी मा उसे अपने आश्रम में ले गई, और उपचार आरंभ कर दिया। पर इस रोग की कोई दवा ही नहीं।

(८)

अब सुंदरी उसी आश्रम में बूढ़ी मा के साथ रहने लगी। वह दिन-भर उदास रहती, और उसे इस दशा में देख बूढ़ी मा पूछती—"क्यों बेटी, तुम अब कुछ दिनों से उदास और अन्यमनस्क रहती हो, कोई विशेष रोग प्रत्यक्ष प्रतीत नहीं होता, क्या बात है?" "कुछ नहीं।" यही उसका छोटा-सा उत्तर होता। "क्या तुमको अभी कुछ खाने को नहीं मिला?" वह उसके हृदय की थाह लेने को पूछती। पर सुंदरी बिलकुल चुप हो जाती, और अपने मन को बूढ़ी मा के सामने रखने में लजाती। इसका एक सरल उपाय यही था कि एक चुप सौ बलाएँ टालती है।

एक दिन बुढ़िया के मन में एक आशंका उत्पन्न हुई, और उसे अपनी जवानी की अवस्था याद आई। वह तुरंत सुंदरी की दशा समझ गई। बूढ़ी मा उसके पास जा बैठी, और कहने लगी—"देखो बेटा, मैं कैसी दुखी और निस्सहाय थी, और अब भी कुछ-न-कुछ अंतर्वेदना का अंश बाक़ी ही है। तुम भी दुखी प्रतीत होती हो, तो क्या बेटी तुम मुझे अपना दुख नहीं बता सकतीं? शायद मैं तुम्हारे किसी कार्य में सहायक हो सकूँ।" सुंदरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय नदी का बाँध टूटने की तरह बहकर नेत्रों से प्रवाहित होने लगा, और फिर कुछ धैर्य धारण कर उसने कहना आरंभ किया—"बूढ़ी मा, मैं बड़ी निर्लज्ज हूँ, पर कुछ भी हो, आप पूछती हैं, तो मैं अपनी बात न छिपाऊँगी। मैं उन्हें प्यार करती हूँ। न-मालूम यह हृदय उनकी ओर क्यों खिंचा जाता है? उनका चित्र मेरे हृदय-पटल पर हर समय नाचा करता है।" "शांत हो बेटा, धैर्य धरो, मैं उपाय करूँगी, घबराओ नहीं।" बूढ़ी मा ने कहा। उसी दिन सायंकाल को जब वह रामू से मिली, उसने सब हाल कह सुनाया। 'जोई रोगी के मन भावे, सोई वैद्य बतावे।' रामू कुछ देर शांत मन से सब सुनता गया, फिर कुछ सोचकर बोला—"उपकार का बदला अवश्य मिलेगा।" बूढ़ी मा ने सुंदरी से रामू का उत्तर कह सुनाया, और उसके माता-पिता से भी कुछ गोल शब्दों में कह दिया। उसकी मा को इतनी प्रसन्नता हुई कि वह फूली न समाई। उसने सुंदरी के पिता से कहकर सब सामान जुटाना आरंभ कर दिया। और, एक दिन अच्छा अवसर समझ कन्या के कान में भी यह बात डाल दी। सुंदरी तो आनंद-सागर में गोते लगाने लगी। उसकी प्रसन्नता की थाह न रही।

(६)

कल लगन चढ़ेगी। इस समय बूढ़ी मा, सुंदरी और रामू बाबू एक ग्राम से, जहाँ आज प्रातःकाल ग्राम-सुधार का उत्सव था, आ रहे हैं। सुंदरी के बाईं ओर बूढ़ी मा और दाईं ओर रामू बाबू चले आ रहे हैं। रामू और सुंदरी के मन में न-मालूम क्या-क्या भाव उत्पन्न हो रहे हैं। सुंदरी ने एक बार रामू बाबू की ओर कनखियों से देखा, कुछ मुस्किराई, और फिर अपनी दृष्टि पृथ्वी पर गड़ा दी। रामू बाबू यह सब ताड़ गए, और कुछ हँसी आई, पर उसे खाँसकर टाल दिया। बूढ़ी मा भी सब समझ गई, और बहाना कर बैठ गई—"बेटा, मैं तो अब थक गई, आज इसी गाँव में रहकर कल प्रातःकाल ७ बजे तक घर पहुँच जाऊँगी। तुम दोनो आगे चलो।" बूढ़ी मा की ऐसी दशा देख वे दोनो भी ठहरने को कहने लगे, पर उसने यह कहकर कि तुम्हारा आज ही पहुँचना अनिवार्य है, उन्हें न ठहरने को बाध्य किया। उचित प्रबंध के बाद रामू और सुंदरी चल पड़े।

बहुत दूर चले जाने पर एक दूसरे की चुप ने दोनो को अधीर कर दिया। कौन पहले बोले। यदि बोले भी, तो क्या बोले। कौन-सा विषय लिया जाय, और जो विषय नियत होता, उसमें एक-न-एक ऐसी बात निकल पड़ती, जिसके कारण उसे छोड़ना पड़ता। आंतरिक भावनाएँ हृदय का द्वार खट-खटा रही थीं कि सहसा एक पक्षी की बहुत ही शोक-पूर्ण चीख़ से दोनो का हृदय उस ओर आकर्षित हुआ। रामू बाबू बोले—"सुंदरी! जानती हो, यह आवाज़ किस पक्षी की है?।" सुंदरी ने कहा—"नहीं, मैं तो नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानती, पर उसकी आवाज़ से ज्ञात होता है कि वह बहुत दुखी है।" रामू ने कहा—"हाँ, यह चकई-चकवा हैं, दिन में दोनो साथ-साथ रहते हैं, और रात को अलग हो जाते हैं। ईश्वर का कुछ ऐसा ही नियम है।" सुंदरी ने कहा—"अच्छा, देखिए, जब पक्षियों की विरह से यह दशा है, तो मनुष्य का तो कहना ही क्या। वह देखिए, 'पी कहाँ, पी कहाँ' पपीहा भी रट लगा रहा है। सब प्रकृति अपनी हृदयेच्छा-पूर्ति के लिये व्याकुल हो रही है, फिर ..."

रामू ने कहा—"सच कहती हो। रुक क्यों गईं, अपना वाक्य पूरा करो।"

सुंदरी शर्मा गई। अभी तक वह रामू बाबू का हाथ धीरे से पकड़े हुए थी, अब अधिक ज़ोर से पकड़ लिया, फिर एकटक रामू बाबू की ओर देखने लगी। दोनो आनंद-विभोर हो गए, और फिर एक हो गए। रामू बाबू ने एक मधुर मुस्कान से उसका दूसरा हाथ भी पकड़ लिया, और सुंदरी को उपकार का बदला मिल गया।

पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री की तीस साल की अनुभूत, चमत्कारी ओषधियाँ

गर्भ-निवारक

अगर आप अधिक औलाद पैदा करना नहीं चाहते, तो हमारी सरकार से रजिस्टर्ड 'गर्भ - निवारक' ओषधि का अपनी धर्मपत्नी को सेवन कराइए। ध्यान रखिए, इसके बाद फिर कभी गर्भ नहीं रहेगा, यह हमारी ३० साल की अनुभूत है, इससे तंदुरुस्ती पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता, मासिक धर्म भी बंद नहीं होता। किंतु फिर आजन्म गर्भ की आशा न करें। मूल्य २॥), डा० म० ।=) पता—पं० चंद्रशेखर वैद्यशास्त्री, ब्राह्मी औषधालय (नं० १) अलीगढ़।

कामिनी-वशीकरण

सरकार से रजिस्टर्ड

जो लोग यह कहा करते हैं कि उन्हें स्तंभन नहीं होता, या जो सदा शर्मिंदगी उठाते रहे हों, और कभी भी अपने मन के अरमान न निकाल सके हों, वे इसे आज़मा देखें। यह अत्यंत स्तंभन करती है, जिनको शीघ्रपतन का रोग न हो, वे जब तक खारी या खट्टी वस्तु न खावेंगे, वीर्यपात नहीं होगा, वैसे आठगुना स्तंभन तो मामूली बात है। अधिक लिखना सभ्यता के विरुद्ध है, जो आनंद के शौक़ीन इस्तेमाल करेंगे, वे ख़ुद तारीफ़ करेंगे। मू० ३२ गोली का १०), १६ गोली का ५॥), ८ गोली का २॥।), नमूना दो गोली ॥।); मात्रा आधी गोली से एक गोली तक।

मर्दकर्दम तिला—(तिला नं० १) इसकी मालिश से गया-गुज़रा नामर्द भी मर्द हो जाता है। शिथिलता, वक्रता आदि ख़राबियाँ दूर करके यथेष्ट लंबाई और स्थूलता प्रदान करता है। कुछ दिन लगकर लगाना लाज़िमी है। मू० छोटी शीशी २), बड़ी शीशी ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग और स्वास्थ्य

[श्रीयुत गणेशदत्त 'इंद्र' आगर]

योग-साधन द्वारा ईश्वर का प्राप्त होना बताया गया है। इसमें कितना सत्य है, इसे तो वे ही बता सकते हैं, जो ईश्वर के दर्शन कर चुके हों, या उसके अस्तित्व के सोलहो आने हिमायती हों। लेखक को ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं, इसलिये मैं इस झगड़े में अपने को डालना उचित नहीं समझता। हाँ, यदि बल, शक्ति और पुरुषार्थ ही ईश्वर है, जैसा हमारे प्राचीन विधि-विधानों से विचार करने पर स्पष्ट होता है, तो ऐसे ईश्वर की प्राप्ति निस्संदेह योग द्वारा होती है। वास्तव में योग की समस्त क्रियाएँ मनुष्य को सबल, स्वस्थ और दीर्घजीवी बनानेवाली हैं। मैं जानना चाहता हूँ, योग के आठ अंगों में से यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा से ईश्वर कैसे मिलेगा। आसनों से शरीर नीरोग, फुर्तीला, लचीला, सुंदर और कांतिमान् होता है। शारीरिक विजातीय द्रव्य (Forirgn matter) निकल जाता है, और अंग-प्रत्यंग एवं स्नायुमंडल, सभी शुद्ध होकर अपनी स्वाभाविक दशा में रहते हैं। पूर्वाचार्यों का भी यही कहना है—

"कुर्यात्तदासनं स्थैर्यमारोग्यं चाङ्गलाघवम्।"

प्राणायाम योग का एक महत्त्व-पूर्ण अंग है। यह द्विजातियों के नित्यकर्म (संध्योपासना) में भी रक्खा गया है। प्राणायाम से शरीरस्थ वायु, फेफड़ों और रक्त की शुद्धि होती है। इससे विविध रोगों का नाश और दीर्घ जीवन होता है। योग-शास्त्र में वर्णित षट् कर्म धौती, बस्ती, नेती, त्राटक, नौली और कपालमाथी वगैरा सभी स्वास्थ्यरक्षा के लिये हैं। धौती से उदरस्थ अंत्रि और बृहदंत्रि की शुद्धि होती है, और—

कासश्वासप्लीहकुष्ठं कफरोगाश्च विंशति ;
धौतिकर्मप्रभावेन प्रयान्त्येव न संशयः।

कास, श्वास, कुष्ठ और कफ-रोगों का नाश होता है। वस्ति-कर्म में गुदा-मार्ग में नलिका लगाकर पानी खींचा जाता है। 'एनिमा' और वस्ति में बहुत कुछ साम्य है। वस्ति द्वारा अभ्यासी स्वयं पानी खींचकर और नौली द्वारा उस पानी को मलाशयादि में घुमाकर निकालता है। एनिमा में बलात् जल को भीतर पहुँचाया जाता है, और मलाशय उसे बाहर फेकता है। इस वस्ति से भी उदरस्थ यंत्रों की शुद्धि होती है। गुल्म, प्लीहा, जलोदर, वात-पित्त-कफ से उत्पन्न रोगों का नाश होता है। जठराग्नि प्रदीप्त होती है, और शरीर कांति-युक्त हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुल्मप्लीहोदरं चापि वातपित्तकफोद्भवाः ;
वस्तिकर्मप्रभावेन क्षीयन्ते सकलामयाः ।
धात्विन्द्रियान्तःकरणप्रसादं दद्याच्च कान्तिर्दहनप्रदीप्तिम् ;
अशेषदोषोपचयं निहन्यादभस्यमानं जलवस्तिकर्म ।

अब नेती को लीजिए। यह क्रिया मस्तिष्क को तरोताज़ा बनाती है। आँखों की ज्योति को स्थिर करती है। कंधे तक के अवयवों का पूर्णतया शोधन हो जाता है। इस क्रिया में नासिका के छिद्रों में ६-१० इंच का सूत्र डालकर मुँह से निकाला जाता है। इससे नाक के रोग दूर हो जाते हैं। नेती-क्रिया के विषय में योग-शास्त्रों में ऐसा लिखा है—

कपालशोधिनी चैव दिव्यदृष्टिप्रदायिनी ;
जत्रूर्ध्वजातरोगौघं नेतिराशु निहन्ति च ।

योग के षट् कर्मों में त्राटक भी एक है। इसमें आँसू आने तक किसी पदार्थ पर निश्चल दृष्टि जमानी पड़ती है। इसका गुण है—

मोचनं नेत्ररोगाणां तन्द्रादीनां कपाटकम् ।

आँखों के सब रोग दूर करना और आलस्य को हटाना। नौलि-कर्म में पेट के नलों को इधर-उधर गति देना पड़ता है। इसके लाभ योग-शास्त्र में इस प्रकार बताए गए हैं—

मन्दाग्निसंदीपनपाचनादि संघापिकानन्दकरी सदैव ;
अशेषदोषामयशोषणी च हठक्रियामौलिरियं च नौलिः।

अर्थात्—नौलि से मंदाग्नि का नाश होता है। भोजन का परिपाक अच्छे प्रकार होता है, सभी वात-विकार दूर हो जाते हैं। कपालभाति में अपनी साँस लुहार की धौंकनी की भाँति लेनी और छोड़नी पड़ती है। इस क्रिया से फेफड़े बिलकुल शुद्ध हो जाते हैं, तथा शरीर में अच्छे प्रकार रुधिरामिश्रण होने लगता है। उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी-कुंभक, मूर्च्छा-कुंभक, प्लाविनी-कुंभक आदि योग की सभी क्रियाएँ मनुष्य को स्वस्थ, नीरोग और दीर्घजीवी बनाती हैं। योग में मूलशोधन, कपालमाथी, कर्णमाथी आदि क्रियाएँ भी हैं—

१—मलोत्सर्ग के बाद जो उँगली जा सके, उसे वैसे ही या तेल लगाकर गुदा में दूर तक प्रवेश करके घुमाने की क्रिया को 'मूलशोधन' कहते हैं।

२—अँगूठे के पास की गद्दी से कपाल को घिसने की क्रिया का नाम 'कपालमाथी' है। और—

३—तर्जनी उँगली को कर्ण-छिद्रों में डालकर घुमाने को 'कर्णमाथी' कहते हैं।

यद्यपि ये क्रियाएँ साधारण-सी हैं, तथापि बड़ी ही चमत्कारिणी हैं। अब हम योग की अन्य छोटी-मोटी बातों से स्वास्थ्य पर होनेवाले प्रभावों का यहाँ उल्लेख करेंगे।

ब्राह्ममुहूर्त में अर्थात् सूर्योदय से डेढ़ घंटा पूर्व उठना चाहिए, और शय्या त्यागने के पूर्व चित लेटकर हाथ-पाँव को जुटा दो। हाथों की कोहनियों से दोनो ओर से पसलियों को दबाकर छोड़ दो। ऐसा ४-५ बार करना चाहिए। इसके बाद ऊपर लिखे अनुसार कपालमाथी और कर्णमाथी करना चाहिए। जिस नथुने से साँस चल रही हो, साँस को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर खींचते हुए, उसी ओर के पाँव को भूमि पर रखते हुए शय्या से उठना चाहिए। बाद में मल-मूत्र त्यागना चाहिए। जब दाहने नथुने से साँस चलती हो, तब पाखाने जाना चाहिए, और बाईं श्वास चलते समय पेशाब करना चाहिए। यहाँ यह प्रश्न होता है कि पाखाना जाते समय पेशाब होता ही है, अतएव दाहने बाएँ स्वर का नियम कैसे पालन किया जाय? इस संबंध में यह जान लेना ज़रूरी है कि पेशाब और पाखाने का एक साथ होना अप्राकृतिक कार्य है। आप किसी भी प्राणी को देख लीजिए, वह पाखाने के साथ पेशाब या पेशाब के साथ पाखाना नहीं करता। मनुष्य यदि इसका अभ्यास करे, तो कुछ दिनों में ही वह दोनो को अलग-अलग करने लगेगा। जो लोग पाखाना और पेशाब साथ-साथ नहीं करते, वे वीर्य-रोगों से मुक्त रहकर ऊर्ध्वरेता हो जाते हैं। स्वप्नदोष, प्रमेह, मधुमेह, शीघ्रपतनादि व्याधियाँ उनके पास भी नहीं फटकने पातीं। मल-मूत्र त्यागते समय दाँतों को दबाए रखना चाहिए। इससे दाँत मजबूत होते हैं। पेशाब करते समय जब तक पेशाब होता रहे, दोनो अंडकोषों को हाथ में दबाए रहना चाहिए, इससे मूत्र एवं इंद्रिय-संबंधी कोई रोग नहीं होगा।

गुदा-प्रक्षालन के समय मूल-शोधन, जैसा पीछे लिख आए हैं, करना चाहिए। उसके बाद दो-तीन बार मिट्टी लगाकर गुदा और लिंग को शुद्ध जल से साफ़ कर देना चाहिए। मलेंद्रिय की शुद्धि की जब से अवहेला की गई, तभी से अर्श, सूज़ाक तथा गर्मी आदि रोगों की प्रधानता हो गई। शौच से आकर हाथ-पैरों को यथावश्यक मिट्टी लगा-लगाकर जल से धो डालना चाहिए।

दतून का योग-शास्त्र में बहुत ही महत्त्व है। किसी उपयोगी, गुणप्रद वृक्ष की अनामिका उँगली के सदृश मोटी शाखा लेकर, उसे दाँतों से चबाकर कूँची बना लेनी चाहिए। उस कूँची से ऊपर-नीचे के दाँतों को बाहर-भीतर से अच्छी तरह साफ़ करके, दतून की दो फाँकें करके, उसे बीच से मोड़कर ज़बान पर का मैल घिस देना चाहिए। दूर तक कंठ में तर्जनी और मध्यमा डालकर ज़बान और कंठ का कफ वग़ैरा निकाल देना चाहिए। फिर अँगूठे से तालू को दूर तक रगड़कर मल-रहित करना चाहिए। इसके बाद अच्छी तरह कुल्ले करके आँख, नाक, मुँह वग़ैरा धो डालना चाहिए। इसके बाद मुँह में पानी का कुल्ला लेकर शीतल जल से आठ-दस बार आँखों में पानी के छपके देने चाहिए। फिर दूसरा कुल्ला मुँह में लेकर कपाल को पाँच-सात बार धो देना चाहिए। इस प्रकार दतून और शौच-क्रिया करने से कभी कोई रोग नहीं होता। आँखों की ज्योति बढ़ती है। दिलोदिमाग़ में ताज़गी रहती है। अरुचि और मंदाग्नि नष्ट हो जाती है। श्लेष्मा-संबंधी कोई दोष नहीं होता।

मुख-मार्जनादि उक्त कार्यों से निवृत्त होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान करना चाहिए। सूर्योदय के पूर्व स्नान करने से वात, पित्त और कफ समान गति से अपना कार्य करते हैं। जो लोग सूर्योदय के पश्चात्, १० बजे के बाद स्नान करते हैं, उनके शरीरस्थ तीनो दोष कुपित होकर शरीर को रोगी बना देते हैं।

इसके बाद आसन-प्राणायाम आदि क्रियाएँ यथाविधि, यथासमय अच्छे स्थान में करनी चाहिए। आहार शुद्ध, सात्त्विक और नियमित होना चाहिए। जब दाहनी साँस चलती हो, तब भोजन करना चहिए। बाईं श्वास के समय जल पीना चाहिए। भोजन और जल के संबंध में भी हमारा वही मत है, जो पाख़ाना और पेशाब के साथ-साथ न होने का है। भोजन के समय पानी पीना और पानी की प्यास में भोजन करना अप्राकृतिक बात है। जब भूख हो, भोजन करो, पानी न पिओ, और जब प्यास हो, पानी पिओ, भोजन न करो। इसका ध्यान रखने से बहुत-से रोग नष्ट हो जाते हैं। जिन्हें रोग हों, वे इन बताए हुए नियमों के अनुसार चलकर योग के चमत्कार का अनुभव कर सकते हैं।

जब बाईं साँस चल रही हो, तब सोना चाहिए। एक-दो मिनट चित लेटकर, बाईं करवट लेकर सो जाना चाहिए। इससे स्वप्नदोष आदि विकार नहीं होते। दाहनी करवट भी यदा-कदा सोते रहना चाहिए, किंतु विशेषतः बाईं करवट सोने से ही लाभ होता है। दिन में स्वस्थ मनुष्य को कभी न सोना चाहिए। इससे आयु-नाश होता है।

जब कभी पेशाब करें, तब बाद में शुद्ध जल से शिश्न को धोना चाहिए। बाद में २-४ कुल्ली करके आँखों और कपाल को शीतल जल से धो डालना चाहिए। इससे कभी कोई वीर्य-रोग न होगा। वृद्धावस्था तक चश्मा लगाने की जरूरत न पड़ेगी।

योग-संबंधी कतिपय मुख्य-मुख्य और आवश्यक बातों को यहाँ बताया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि योग और स्वास्थ्य का घनिष्ठ संबंध है। स्वास्थ्य-निर्माण ही योग का मुख्य कार्य है। आशा है, योगाभ्यास का नाम सुनकर उसे कठिन माननेवाले इस ओर क़दम बढ़ाकर योग द्वारा स्वास्थ्य-संपादन करने में अग्रसर होंगे।

कर्णधार

[श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास]

मेरी मानस-नौका के तुम कर्णधार-पतवार! हृदय-सिंधु की तुंग तरंगें, निर्मलता-आगार।
स्वर्गंगा की पावनतम हो एक तरल-सी धारा; आँखों की पुतली में रहते बन उज्ज्वल-सा तारा।
अंतस्तल के तमोदेश की हो प्रकाश की रेखा;
जीवन की धड़कन में प्रति पल लेते हो तुम लेखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. प्रेम-पत्र

पद्म - पत्र पर लिखा निशा नें एक प्रेम का पत्र;
प्रातः ही खुल गया भेद यह अग-जग में सर्वत्र।
करने लगे विहग कल कूजन, दिनमणि हँसे अमंद;
तरु, तृण, विटप बिहँसकर डोले, इठलाया मकरंद।
दक्षिण-पवन अखिल वन में दे आई यह संदेश;
उसी समय सौरभ-पंखों पर आ पहुँचे सुमनेश।
मँडराए शतदल पर गुंजन करके अगणित बार;
पर न समझ पाए कुछ, केवल रहे निहार-निहार।
इतने में कँप गया पद्म पा दिनकर का आभास;
चली समीरण लिए पत्र को निशि-प्रियतम के पास।

राजकिशोर कक्कड़

× × ×

२. आओ, चलें उस पार साजन !

काली-काली, सघन घटाएँ पूर्व से उठती चली आ रही थीं, एकदम मस्त और आज़ाद, जैसे किसी सुंदरी की केश-राशि खुलकर बिखर रही हो, लहरा रही हो। तारे एक-एक कर ढकते चले जाते थे, मानो आकाश के घावों पर पट्टी बँधती जाती हो। हवा रुक-रुककर तेज़ी से चल रही थी, जैसे मिलन की रात को नायिका का हृदय ! और, औरंगज़ेब एक बढ़िया जालीदार झरोखे से यमुना और आकाश की ओर देख रहा था। शायद वह सोच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हो कि ये बरसात की मादक रातें क्यों आती हैं। और, यमुना उछलती-कूदती, कुछ गुनगुनाती, बुदबुदाती हुई क्यों चली जाती है।

'क्यों चली जाती है,' दूर पर लहरों ने टूटकर प्रतिध्वनि की। बिजली चमकी, एकदम तेज़ी से, निठुर प्रेयसी की झलक के समान। कुछ दूर पर उसने देखी यमुना के वक्ष पर नाचती हुई एक किश्ती। बादल गड़गड़ाए। भीनी-भीनी फुहारें पड़ने लगीं, और उसने सुना—

आओ, चलें उस पार साजन !

न-जाने क्यों उसे कुछ अच्छा-सा लगा वह गाना। कितना कोमल स्वर था। सावन की मनोमोहक घटाएँ, रिमझिम-रिमझिम यमुना-जल में नाचती हुई फुहारें, और—आओ, चलें उस पार...! मस्ती के साथ-साथ स्वर भी बढ़ता गया, स्पष्ट होता गया—

अमवा की डाल पै कोयल बोले,
पी-पी पपिहरा जियरा डोले ;
पिया-मिलन की रैन सजनियाँ,
टूटी हुई पतवार साजन !
आओ, चलें उस पार... !

औरंगज़ेब का दिल सचमुच कुछ महसूस करने लगा। क्या बात थी यह, उसने टटोलकर देखा—पिया-मिलन की रैन सजनियाँ, टूटी हुई पतवार..., जैसे उसके दिल में कोई बोल रहा हो, कुछ कुरेद रहा हो! उसने फिर सुना, अजीब बेफ़िक्री और मस्ती से कोई गाए जा रहा था—

पिया-मिलन की रैन री आली,
नैया पड़ी मँझधार साजन !
आओ, चलें उस पार...!

उफ़! किस ग़ज़ब के अंदाज़ के साथ गाना हवा में थिरक रहा था। उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे कोई कह रहा हो—इसलिये आती हैं बरसात की रातें, और इसीलिये बहती है यमुना की जल-धारा।

वह चिहुँक उठा। नींद हराम कर दी इस गाने ने तो। पहर रात बीत गई, चुपचाप, बेख़बर! कितना बेसुध कर दिया उसे गाने की ध्वनि ने। किसने अपनी मौत को बुलाया है।—'मैं, मैं गाने से, संगीत से नफ़रत करता हूँ, चिढ़ता हूँ, फिर भी किसकी जुर्रत हुई इस अँधेरी रात में गाने की।' वह मन-ही-मन बड़बड़ाया, झुँझलाया।—'उस पार साजन! भाड़ में जाय यह गाना। मुझे बिलकुल पसंद नहीं। एकदम वाहियात!' लेकिन, उसने फिर सुना, कुछ रुक-रुककर गानेवाला कह रहा था—अमवा की डाल पै कोयल बोले, पी-पी पपिहरा......वह झूमता गया—पिया-मिलन की रैन सजनियाँ—उसने एक गहरी साँस ली—टूटी हुई पतवार साजन! आओ, चलें उस पार . !

वह चौंक उठा। उसने देखा, बिस्तर अस्त-व्यस्त पड़ा था। कपड़ों पर जहाँ-तहाँ शिकन पड़ गई थी, न-जाने कैसे। सुबह की सफ़ेदी झरोखे में से झलक रही थी। गाना भी बंद हो गया था। वह उठ खड़ा हुआ। न-जाने क्यों उसकी देह अँगड़ा रही थी, सिर भारी हो रहा था। क्यों! जैसे उसे कुछ याद हो आया—

नैया पड़ी मँझधार साजन !

❀ ❀ ❀

"तुम्हारा नाम क्या है ?" लाल-लाल आँखों से तरेरते हुए औरंगज़ेब बोला।

"बरसात कहते हैं मुझे।" विना भय या हिचकिचाहट के वह बोली।

"बरसात !" उसने दुहराया। "हूँ, इसीलिये आती हैं बरसात की रातें।"

"क्यों गा रही थीं तुम ?" वह बोला।

'क्यों गा रही थीं' वह मन-ही-मन हँसी उसकी मूर्खता पर! यह भी कोई प्रश्न है! फिर भी वह बोली—"क्योंकि बुलबुल गाती है, कोयल गाती है। क्यों गाती हैं वे जहाँपनाह! कभी सोचा आपने?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसने सिखाया उन्हें इस तरह गाना ? चिड़ियाँ गाती हैं डाली-डाली पर ?" वह कहती गई "क्यों गाती चली जाती हैं नदियाँ ?"

"बस करो।"

जैसे उसने सुना ही नहीं। वह बोलती रही—"क्योंकि इससे ख़ुदा ख़ुश होता है। उसे गाना पसंद है। झरना गाता है—टल मल टल—और ख़ुदा ख़ुश होता है। मैं गाती हूँ, क्या बुरा करती हूँ ?"

'झरना गाता है, ख़ुदा ख़ुश होता है ; चिड़ियाँ, बुलबुल, कोयल, सभी तो गाती हैं, क्योंकि ख़ुदा ख़ुश होता है।' औरंगज़ेब के कानों में ये वाक्य गूँज रहे थे, 'फिर मैं गाती हूँ, क्या बुरा करती हूँ ?'

"फिर भी तुम नहीं गा सकोगी, और अगर गाना ही हो, तो......" वह कहते-कहते रुक गया। "संगीत तो दफ़ना दिया गया है, और ख़ुदा ख़ुश होता है।" वह सिर खुजलाने लगा। "अच्छा, कुछ दिन यहीं रहो तुम।" वह बोला, "फिर बाद में इस पर सोच लेंगे।"

❀ ❀ ❀

"आओ, चलें उस पार साजन !" उसने भी सुना यह गाना। रात को जब सब सो जाते, वह करवटें बदलता रहता.. ...पिया-मिलन की रैन सजनियाँ...ओह ! वह दिल दबाकर खड़ा हो जाता, कराहने लगता। उसे ऐसा लगता, मानो कोई चीज़ उससे ज़बरदस्ती छीनी जा रही है, कोई उसे बुला रहा है। वह सिर थामकर दीवार के सहारे खड़ा हो जाता...टूटी हुई पतवार साजन !... आओ, चलें उस पार...गाना चलता रहता।

असद था उसका नाम। गोरा-गोरा पतला-सा, कवि और गायक, दोनों था वह, शायरी और संगीत, दोनों का पुजारी। उसके काले-काले, घुँघराले बाल और मस्ती की चाल, कैसा ग़ज़ब ढाते थे बेगमों के दिल पर, वह ख़ूब जानता था। लेकिन कभी उसने मुड़कर, आँख उठाकर देखा तक नहीं। और, इसी से, शायद उसके संयम से औरंगज़ेब प्रसन्न था। हाँ, तो उसने भी सुना वह गाना—उस पार। या ख़ुदा ! वह जिगर थामे उठ खड़ा हुआ। बरसात की अँधेरी रात, यह क़ातिलाना रात और यह गाना। वह चुपचाप बढ़ता चला गया, वहाँ, जहाँ आज़ाद बुलबुल क़फ़स में क़ैद थी। छिपकर उसने देखा, एक खंभे के सहारे बैठी थी वह, पैर फैलाए, एक पैर से फ़व्वारे के जल को थपथपाती जाती थी, जैसे कविता भावों से खेल रही हो। काले-काले नागिन-जैसे उसके बाल हवा में झूम रहे थे, और गुलाबी दामन हिल रहा था—फर-फर। वह गा रही थी वही पुराना गीत। सहसा वह चौंकी। उसने अंधकार में देखी कोई छाया, अजनबी छाया। गाना थम गया, असद आगे बढ़ा, और क़दम चूम लिए उस हूर के, ख़ूबसूरती के। और......!

❀ ❀ ❀

फिर, सारी रातें, बरसात की रातें इसी तरह कटतीं। वह गाती, और असद भी कहता जाता झूम-झूमकर—आओ चलें, उस पार साजन ! किसी को उधर जाने की इजाज़त न थी। जब सारी दुनिया सो जाती, और ऊदी-ऊदी घटाएँ छा जातीं आकाश में, वे गाते—टूटी हुई पतवार साजन ! आओ, चलें उस पार !

❀ ❀ ❀

एक दिन औरंगज़ेब उठा। न-जाने क्यों चल दिया वह बरसात की ओर। काली अँधेरी रात थी, बादल छाए हुए थे—घने-घने, काले-काले। वह पहुँच गया, कुछ रुककर उसने सुना, कुछ शक-सा हुआ उसे। सहसा गड़गड़ाहट हुई, बिजली चमकी, और उसने देखा—असद और बरसात—'आओ, चलें उस पार साजन !' दाँत पीसता हुआ वह लौट आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दिन। जब काली-काली अलस घटाएँ घुमड़ रही थीं आकाश में, दो किश्तियाँ यमुना में उतरीं। एक में थे ज़ंजीरों से जकड़े हुए असद और बरसात, दूसरी में औरंगज़ेब और उसके कुछ सलाहकार। किश्तियाँ बीच धारा में पहुँचीं। आलमगीर का इशारा हुआ, और कुछ बेरहम, बेदिल, कठोर हाथों ने दोनो को उठाया, और पटक दिया यमुना के जल में। छप! एक छपाके की आवाज़ हुई, और सब शांत। क्यों ऐसा हुआ, कोई नहीं जानता इसे!

❀ ❀ ❀

बरसात तो रुकती नहीं, रुक सकती नहीं। वह आती, हमेशा, हर साल। उसी मस्ती से, उसी नाज़ो अंदाज़ से। और औरंगज़ेब, जब बादल रोते, उसी झरोखे से देखता, एक किश्ती में दो फ़रिश्ते और फिर सुनाई पड़ता—'आओ, चलें उस पार साजन!' वह काँप उठता। बेचैनी से करवटें बदलता; और ज्यों-ज्यों रात गहरी होती जाती, गाने का स्वर क्रमशः बढ़ता जाता—पिया-मिलन की रैन सजनियाँ, टूटी हुई पतवार... साजन! आओ............!

दयाशंकर शर्मा

× × ×

३. तकली

तकली, तेरा यह मंजु तार जीवन-आशा का तार बना;
संसृति के ताप मिटाने को बहती गंगा की धार बना।
नभ से सजकर शशि-बाला-सी झूमती चली जब आती हो,
यौवन की मधुमय मस्ती-सी अयि! प्राणों में छा जाती हो।
छेड़ते तनिक ही अयि रंगिनि! होता है रास शुरू तेरा;
देखते जिसे भर पुलक गात चेरा हो जाता मन मेरा।
घर-घर में करतीं सुख-प्रसार, हरतीं अनंत भव-बाधा हो;
सेगाँव-निवासी मोहन के उर बसी हुई तुम राधा हो।

आहत प्राणों की दुनिया में तुम सुधा-धार बनकर आईं;
इन देश-प्रेमियों के उर में तुम राष्ट्र-प्यार बनकर छाईं।
उजियाली बनीं अरी रानी! उजड़े इस भारत के घर की;
पशुपत शर हुईं करों में आ सुभगे! इस कृषक दिगंबर की।
पैंतीस कोटि प्राणों ने तुमसे नवयुग का संदेश सुना;
है वृद्ध तपस्वी ने तुमको सुंदर स्वराज्य का मार्ग चुना।
रूपसि! मन-हारिणि जान तुम्हें हर्षित तरुणों ने अपनाया;
सौम्ये! गृह की श्री कह करके वयवालों ने स्वागत गाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु मान तुम्हें सुकुमारों ने सुखप्रद स्वतंत्रता-पाठ पढ़ा;
भद्रे! तव द्वारा ही फिर से जग में भारत का मान बढ़ा।
रम्ये! हर घर इस भारत का तव क्रीड़ा का आगार बने;
तुझसे निकला हर तार मुझे मोहक रेशम का तार बने।

उमाशंकर तिवारी 'समीर' (साहित्यालंकार)

× × ×

४. इंदौर के मुसलमानों, मजदूरों और हरिजनों को आश्वासन

रविवार ता० २५ जून, १९३९ को इंदौर के प्रधान मंत्री एतमादुद्दौला, रायबहादुर कर्नल दीवान दीनानाथ बार-एट-ला को इंदौर के मज़दूरों, हरिजनों तथा मुसलमानों की ओर से अभिनंदन-पत्र दिए गए। सायंकाल मुसलमानों द्वारा दिए गए अभिनंदन-पत्र का समारोह एक विराट् सार्वजनिक उत्सव-सा बन गया था। प्रायः १५ या २० हज़ार जनता और इंदौर के सरदारों, जागीरदारों, व्यापारियों तथा मिनिस्टरों की उपस्थिति में अभिनंदन-पत्र भेंट किया गया था।

अभिनंदन-पत्र के सिलसिले में प्रधान मंत्री की योग्यताओं का वर्णन करने के बाद उनकी नियुक्ति पर महाराजा साहब को धन्यवाद देते हुए, ग़रीब जनता के प्रति श्रीमंत की सद्भावनाओं का उल्लेख करते हुए, मुसलमानों की ओर से अपने अधिकारों की रक्षा के लिये विनती की गई। प्रधान मंत्री महोदय ने उत्तर देते हुए मुसलिम समुदाय को विश्वास दिलाया कि अभिनंदन-पत्र में उल्लिखित उनकी सारी प्रार्थनाओं पर सरकार पूरा ध्यान देगी, और श्रीमंत महाराजा इंदौर की सरकार के शासन में किसी भी व्यक्ति को अपनी जाति-पाँति या मज़हब की वजह से किसी कठिनाई का सामना न करना पड़ेगा। प्रधान मंत्री ने घोषणा की कि सरकार तथा राज्य का प्रत्येक ऑफ़िसर इस नीति के पालन में तत्पर रहेगा। पिछड़ी हुई जातियों के लिये शिक्षा की पूरी सुविधाओं, विशेषकर धनगर, मराठों तथा स्त्रियों की शिक्षा के उपायों पर सरकार विचार कर रही है, और ये योजनाएँ तुरंत अमल में लाई जायँगी। सरकारी शासन के प्रत्येक विभाग में अधिक-से-अधिक कमख़र्ची को काम में लाया जायगा, और इस प्रकार जो भी धन बचेगा, उसका उपयोग श्रीमंत महाराजा की ग़रीब प्रजा तथा किसानों की भलाई और उन्नति के लिये किया जायगा। गाँव में रहनेवाली प्रजा की आर्थिक दशा सुधारने के लिये सरकार घरेलू उद्योग-धंधों की उन्नति की ओर विशेष रूप से दत्तचित्त है। रिश्वतख़ोरी बंद करने की ओर सरकार का ध्यान विशेष रूप से है। और, चाहे कितना ही बड़ा कोई ऑफ़िसर क्यों न हो, यदि वह अपराधी पाया जायगा, तो तुरंत नौकरी से बरख़ास्त कर दिया जायगा। मज़दूरों के लिये अच्छे मकान बनाने का कार्य सरकार ने हाथों में ले रक्खा है, और इसके लिये श्रीमंत महाराजा ने एक लाख रुपया अपने निजी ख़र्च से प्रदान किया है।

अंत में प्रधान मंत्री ने मुसलिम समुदाय को अभिनंदन-पत्र देने के लिये धन्यवाद दिया।

उसी दिन प्रातःकाल मज़दूरों की ओर से दिए गए अभिनंदन-पत्र में श्रीमंत महाराजा सवाई श्रीयशवंतराव होलकर को नए प्रधान मंत्री की नियुक्ति पर धन्यवाद देते हुए मज़दूरों ने कर्नल दीवान दीनानाथ का प्रधान मंत्री के रूप में हार्दिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत किया। साथ ही प्रधान मंत्री के समक्ष निम्न लिखित विनम्र प्रस्तुत की—

१. मज़दूर-संघ को सरकारी मान्यता मिले।

२. इंदौर-म्युनिसिपैलिटी में मज़दूरों के चुने हुए दो नुमाइंदों का प्रतिनिधित्व हो।

३. सुधार-कमेटी में मज़दूर-संघ से प्रतिनिधि लिया जाय।

४. सुधार-असेंबली में मज़दूरों का ही चुना हुआ मेंबर रक्खा जाय।

५. मज़दूरों के सुबीते के लिये को-ऑपरेटिव-स्टोर्स लि० को, जो मज़दूरों को अच्छा और सस्ता माल देने के लिये क़ायम किया गया है, पूँजी के लिये सरकार से दस हज़ार रुपया बिना ब्याज क़र्ज़ दिया जाय।

६. लेबर-कमिश्नर जल्द मुक़र्रर किया जाय।

अभिनंदन-पत्र के लिये मज़दूरों को धन्यवाद देते हुए प्रधान मंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया कि होलकर सरकार उनकी प्रार्थनाओं पर सहानुभूति के साथ पूर्णतया विचार करेगी। ग़रीब जनता की, विशेषकर मज़दूरों की, आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये प्रयत्न करना सरकार का प्रथम कर्तव्य होगा।

इसके कुछ समय बाद हरिजनों की ओर से प्रधान मंत्री को अभिनंदन-पत्र भेंट किया गया, जिसमें श्रीमंत इंदौर-नरेश की दीर्घायु के लिये प्रार्थना करते हुए तथा प्रधान मंत्री को, इस उच्च पद पर नियुक्त होने पर, बधाई देते हुए निम्न-लिखित माँगें पेश की गईं—

१—हरिजन-अपलिफ़्ट-कमेटी पर एक हरिजन नियुक्त किया जाय, २—'हरिजन-संघ' में भी हरिजन सभासद् होना आवश्यक है, ३—'म्युनिसिपल कौंसिल' में दो हरिजन-सदस्य नामिनेट किए जायँ, ४—'सुधार-कमेटी' में हरिजन-सदस्य लिया जाय, ५—'नई असेंबली' में हरिजन-मेंबर्स लिए जायँ और ६—पुलिस और मिलीटरी में हरिजन भरती किए जायँ।

अभिनंदन-पत्र का उत्तर देते हुए प्रधान मंत्री ने हरिजनों को धन्यवाद दिया, और यह आश्वासन दिया कि श्रीमंत इंदौर-नरेश को उनके साथ हार्दिक सहानुभूति है, जैसा कि अपनी गत वर्ष की हरिजन-संबंधी घोषणा द्वारा वह प्रकट कर चुके हैं। श्रीमंत महाराजा की घोषणा में हरिजनों के लिये नागरिकता के वे सभी अधिकार मौजूद हैं, जो अन्य लोगों को प्राप्त हैं। प्रधान मंत्री ने हरिजनों को उनकी राजभक्ति के लिये धन्यवाद दिया। श्रीमंत महाराजा ने हरिजनों की आर्थिक दशा सुधारने के लिये एक कमेटी नियुक्त की है, और उदारता-पूर्वक जो धन इस कार्य के लिये दिया है, वह पूर्ण रूप से हरिजनों की उन्नति के लिये ही व्यय किया जायगा। प्रधान मंत्री ने हरिजनों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि हाल ही में महाराजा साहब ने राज-भर में हरिजनों के लिये कुएँ बनवाने का हुक्म जारी किया है। श्रीमंत की सरकार उनके हित के लिये अच्छे मकानों की व्यवस्था पर भी पूर्णतया विचार कर रही है। अंत में प्रधान मंत्री ने हरिजनों को आश्वासन दिया कि उनकी सारी माँगों पर सरकार पूरी तौर से विचार करेगी, और यह आशा प्रकट की कि वे लोग सर्वदा की भाँति राजभक्त रहेंगे, और उनके सहयोग से इंदौर को इस बात का गर्व होगा कि यहाँ के हरिजन उन्नति और प्रगतिशील हैं।

एक इंदौर-प्रेमी

× × ×

५. समाधि के प्रति

ओ मौन हुए मीठे दुलार!
ओ सुख-स्नेह की अंतिम छवि,
ओ प्रिय की मूर्तिमती सीमा,
ओ 'उस जीवन' के जीवन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी रियायत

सुधा के ग्राहकों को नीचे दी हुई पुस्तकों पर ५०) प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। इनकी थोड़ी-थोड़ी प्रतियाँ ही स्टाक में हैं। यह रियायत केवल उसी अवधि तक रहेगी, जब तक ये पुस्तकें स्टाक में रहेंगी।

इँगलैंड का इतिहास	१)	राजसत्ता	॥)
इंद्रगुप्त	॥)	केतकी	।=)
श्रीदामाख्यान	=)	हमारा सर्वस्व	।)
भयानक षड्यंत्र	=)	रूस-जापान-युद्ध	२)
भारतीय तरंग	।)	संसार-सार-संग्रह	=)
भारतीय प्रार्थी	=)	प्रभु महावीर	।)
भारतबीती	।॥)	सनयात सेन	।)
पागलप्रलाप	।)	उद्योगी पुरुषों का जीवन-चरित्र	=)
भक्ति भवानी	=)	पतितपावन	॥–)
भारत जाग्रत्	१=)	मदनविलास	॥=)
हिंदू-संगठन	१)	रानी जयमती	॥)
सावित्री की कथा	।=)	प्रेम मोहनी और चेत चाकरी	=)॥
आत्मतत्त्व-प्रकाश	।≡)	जाग्रत् नारियाँ	॥)
पतिव्रता दमयंती	।=)	कुमारी चंद्रकिरण	।=)
महाभारत-महिमा	१॥)	परासर-संहिता	१)
शिक्षा-भूषण	।≡)॥	उपनिषद्सार	॥)
भयंकर दुर्दशा	=)	मारकंडेय-पुराण	४)
स्वतंत्रता की धुन	।)	छ आदर्श	॥)
स्वदेशी और स्वराज्य	।=)	अक्षर तत्त्व	।)
श्रीकृष्ण-चरित्र	=)॥	मोदक	≡)
सफलता	॥)	द्रौपदी-स्वयंवर	≡)
स्वास्थ्य-शिक्षा	३)	सुखद सम्मिलन	।)
शिवाजी	१)	महात्मा तिलक	≡)
सत्य-निबंधावली	॥)	हिंदी-संदेश	।)
श्रीहनुमानजी	१॥)	हिंदी-गीता-रहस्य-सार	।–)
स्त्री-धर्मबोधिनी	।=)	हिंदोस्तान हमारा	≡)
श्रीकृष्ण भगवान् ने वंशी में क्या गाया	=)॥	नारी-नीति	॥=)
		गीता-सूर्य-प्रकाश	।)
शाकाहार की विशेषता	≡)	हिंदुओं पर वज्राघात	–)
भारत-जननी को हिमालय का संदेश	≡)	उलटी गंगा	≡)
		हमारा शासन	॥=)
रामभक्ति-प्रकाश	।)	हिंदी-भजनमाला	=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्या और कृष्णा	।)	गायन स्त्री-सुबोधिनी	१=)॥
शब्द-रूपावली	।)	मनमोहनी	॥)
सिख-इतिहास	१)	उपदेश सप्तक	॥-)
सौंदर्योपासक	॥=)	कृष्णकुमारी	।=)
स्वदेशी धर्म	।)	फलित स्वप्न	=)
सीता-हरण	=)	रचना-विचार	॥)
हरिश्चंद्र-चरित्र	।)	अलंकार और शिक्षा	॥)
महाभारत	॥)	स्वतंत्रता के प्रेमी	।)
कल्कि-पुराण	१॥)	विश्व-व्यापार-भंडार	१)
अत्रिस्मृति	२॥)	शंकर सतनाम योग	॥)
न्याय-भाष्य	१॥)	धर्म-दिवाकर	।)
राजसिंह	२)	दीनबंधु कबीर	।)
बीमारों का आहार	।)	हिंदू-जीवन	१)
सचित्र शुद्धबोध	१)	स्वास्थ्य-संदेश	॥)
प्रेम-प्रभास	१)	शिक्षादान	॥)
होम-इंगलिश-ट्यूटर	१)	अग्निहोत्र-व्याख्या	॥)
पतिप्राणा राधा	१॥)	अनुभूतिप्रयोग	।)
हिंदी-पद्य-गीता	॥)	अकालियों का सत्याग्रह	॥)
पद्य-प्रदीप	॥)	अर्थशास्त्र बंधन की उत्पत्ति कथावृद्धि	१॥)
भारत-रमणी-रत्न	॥।=)	आदर्श पुरुष रामचंद्र	।-)
नंदन-भवन	॥=)	अन्योक्ति-तरंगिणी	।)
यात्रा-क्षेत्र-माहात्म्य और हरद्वार का इतिहास	१)	आदर्श मित्र	१)
विचार-कुसुमांजलि	॥=)	अमूल्य रत्न	१)
दयानंद-जीवन-चरित	१॥)	भक्ति-उपदेश-ज्ञान-दर्पण	=)
न्याय-प्रवेशिका	॥=)	अशोक	१)
गीता हमें क्या सिखाती है ?	।-)	असहयोग-दर्शन	१)
गोपी चंद्रोदयम्	॥)	आदर्श नगरी	॥)
युरोपियन पतिव्रता	॥=)	आर्य-आदर्श	॥)
भारती	॥)	आर्थिक सफलता	।=)
ऐतिहासिक स्त्रियाँ	॥)	किसानों का अधिकार	।)॥

मैनेजर—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गारंटी के साथ होता है

सूज़ाक, गर्मी और नामर्दी का इलाज

हज़ारों रोगी लाभ उठा चुके हैं। सैकड़ों रईस, राजा-महाराजाओं से प्रशंसित व प्रमाणपत्र प्राप्त डॉक्टरों, वैद्यों, हकीमों से निराश हुए तमाम रोगी दूर-दूर से स्वयं आकर गारंटी से इलाज कराते हैं। जो सज्जन यहाँ आने की तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते, वे घर बैठे मेरी औषधि मँगाकर इन रोगों को जड़ से नष्ट करें। दो सप्ताह में आराम होता है। मूल्य औषधि सूज़ाक (गनोरिया) नया का २॥), पुराना ५); गर्मी नई हो २॥), पुरानी ५); नामर्दी थोड़ी हो ५), पुरानी के ६) हैं, जिसमें खाने-लगाने की दवाएँ रहती हैं, डा०-ख़० प्रति रोग ॥-)

महालक्ष्मी-विलास गोलियाँ

अत्यंत स्तंभन, कामोत्तेजक, नपुंसकत्व पर चमत्कारिक स्वर्ण-वर्क, चाँदी, अभ्रक, फ़ौलाद, मोती, कस्तूरी आदि बहुमूल्य द्रव्यों द्वारा बड़े परिश्रम से बनाई हैं। इससे इंद्रिय-शिथिलता, थोड़ी उत्तेजना से धातु का गिरना, धातु का पतलापन, आँखों के सामने अँधेरा जान पड़ना, दिशा-पेशाब के साथ वीर्य निकल जाना, दिमाग़ कमज़ोर, शिर-दर्द, कमर-दर्द, स्वप्न-दोषादि बीसो प्रमेह आराम होकर वृद्ध मनुष्य भी रक्त, मांस, धातु से परिपूर्ण, हृष्ट-पुष्ट, अपार वीर्यवाला, महाकामी होता है। स्तंभन-शक्ति अत्यंत बढ़ जाती है; मूल्य ६० गोलियों का ५), डा०-ख़र्च ॥-)

नपुंसकताहरण तिला कस्तूरी-मिश्रित

यह सुस्ती, नामर्दी, ढीलापन, बाँकपन को नाश कर असली ताक़त पैदा करता है; मूल्य ५), फ़ी शीशी डा०-ख़र्च ॥-)

पता—पं० अयोध्याप्रसाद शुक्ल वैद्यशास्त्री

शुक्ला आयुर्वेदिक औषधालय, निशातगंज, लखनऊ.

हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों-सहित

द्वितीय बार छपकर तयार है

यदि आप बिना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य, शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है, यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा-लाटरी कौ-रस से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों, तो आज ही एक प्रति हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान बिना किसी गुरु की मदद के आपको भले प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य-देशीय समग्र सामुद्रिक-शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में, रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित, भले प्रकार वर्णित है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी, परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी न छपी होने से धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करो, पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रह गई हैं, फिर हाथ न आवेंगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी; मूल्य सिर्फ़ ४) रुपए हैं। डाक-महसूल ॥) अलग है।

पता —मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी-प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम [सी० आई०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्रियजनों को प्रसन्न करने के लिये

उन्हें उपहार में दीजिये

नैवेद्य (Regd.)

(उपहार में देने का श्रृंगारदान)

यह एक सुन्दर बक्स है और इसमें चुनी हुई चार नित्य प्रयोजनीय श्रृंगार-सामग्रियाँ (१ केशराज, २ निहारिन स्नो, ३ डाबर मस्कलवेंडर, ४ निहारिन पाउडर) इस तरह सुसज्जित हैं कि देखते ही चित्त लुभा जाता है और खरीदने की इच्छा हो जाती है। एक बार आप भी इसकी परीक्षा करें।

स्थानीय हमारे एजेंट से खरीदिये।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) लि०

विभाग नं० २२ पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

जाड़े के शुरू से वसंत के अंत तक सेवन करें—

चाय नहीं, शिलाजीत

हिमालय की असली शुद्ध शिलाजीत शरीर में नसों तक गर्मी पहुँचाती है। वह पोषक गर्मी, जो चालीस के लगभग पहुँचने पर क्षीण होने लगती है। शिलाजीत—

ताक़त और मर्दानगी

के लिये एकमात्र क़ुदरती दवा है। जो लोग वैद्य-डाक्टरों की कुटी-पिसी और जली-भुनी दवाओं से परेशान हो चुके हों, वे इस प्रकृति-प्रदत्त दवा को भी बरत देखें। यह—

प्रमेह, प्रदर, बवासीर, पथरी

तथा कफ-संबंधी और गठिया आदि वात-संबंधी रोगों पर अचूक असर करती है। किसी भी अवस्था में स्त्री-पुरुष इसका सेवन कर सकते हैं; पर जिनकी—

उम्र ४० के क़रीब

पहुँच चुकी हो, उन्हें तो हर जाड़े में कम-से-कम आध पाव ज़रूर सेवन कर लेनी चाहिए। मूल्य ४) रु० छटाँक, १४) रु० पाव। पाव-भर या इससे ज़्यादा मँगाने पर डाक-खर्च माफ़। पता—

किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री

व्यवस्थापक,

हिमालय-एजेंसी, कनखल (हरिद्वार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरे यश की संचित महिमा !
क्या तू लाई है कुशल-वृत्त
हो करुण वेदना से अशांत ?
पर तूने ही निज उर विदार
कर दिया मुझे निर्मम प्रशांत।
ओ त्रेता की आकुल धरणी,
सीता - राघव की विरह-धार !
ओ मौन हुए मीठे दुलार !
मेरे श्वासों की माला भी
होकर क्यों है इतनी कठोर ?
क्या इसीलिये हैं साथ तुम्हारे
भयाकार पाषाण घोर ?
पर (सोचो तो) है कुसुम-कोमला
मूर्ति तुम्हारे अंतर में।
(बहती होवेगी लज्जा से
दुख की असीम धारा मन में।)
ओ जीवन-संगिनि की संगिनि,
फिर एक बार तू हो उदार।
ओ मौन हुए मीठे दुलार !

देवर्षि सनाढ्य 'पुष्प'
(शास्त्री, 'सुमन'-संपादक)

× × ×

६. आधुनिक हिंदी-साहित्य में स्त्रियाँ

संस्कृत के किसी आचार्य ने कहा है—
"साहित्यसंगीतकलाविहीनः ;
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।"

इसी प्रकार जैनेंद्र ने भी एक स्थान पर कहा है, अनुभूतिशील जीवन का लिपिबद्ध व्यक्तीकरण साहित्य है। विदेशी लेखकों ने भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं, किंतु इतना तो सभी स्वीकार करते हैं कि मानव-जीवन तथा साहित्य का बहुत घनिष्ठ संबंध है। इस मानव-जीवन से हमारा तात्पर्य केवल शरीर-धारण से ही नहीं, प्रत्युत मनुष्यता से है। मनुष्य-शरीर पाकर भी मनुष्यता प्राप्त करना दुर्लभ है। इस कथन से हम इस निष्कर्ष पर आए कि साहित्य में इस मनुष्यता की दो विभिन्न शाखाओं का समष्टीकरण अनिवार्य है। इन्हीं दो शाखाओं को आगे चलकर स्त्री एवं पुरुष का रूप दे दिया गया है। फल-स्वरूप हमारा यह कथन अमार्जनीय प्रतीत न होगा। साहित्य का स्त्री-जाति से संबंध पूर्व-काल से चला आ रहा है, तथा भविष्य में सदैव रहेगा।

पश्चिमीय साहित्यकारों ने कदाचित् कहीं-कहीं स्त्री-जाति के प्रति अन्याय किया है। ऐसा होना स्वाभाविक ही है; क्योंकि एक बार उनकी धारणा थी—"Women have no soul." शेक्सपियर को मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञाता माना जाता है, किंतु उसकी पोटशिया स्वयं ही कहती है—"स्त्रियों के लिये रहस्य छिपा रखना कितना कठिन है ?" इधर बर्नार्ड शॉ ने भी एक स्थान पर कह दिया है—"Women are lioness preying upon mankind……" ठीक इसके विपरीत भारतीय कलाकारों का पक्ष सदैव मांगलिक रहा है। उनके लिये न तो केवल वे शेरनी ही हैं, बल्कि करुणा की सजग प्रतिमा भी हैं।

आधुनिक साहित्य में स्त्रियों के हृदय की भिन्न-भिन्न मार्मिक पहेलियों के सुलझाने का प्रयत्न किया गया है, और वह भी सफलता-पूर्वक। मैथिली की स्त्रियाँ केवल त्याग, स्वाभिमान एवं अनुराग की मूर्तियाँ ही नहीं, वरन् उनमें इससे भी कुछ अधिक गुण प्रस्तुत है—चाहे उसे अवगुण ही कह लीजिए। वह है स्त्रीत्व। कतिपय लेखकों का तो मत है कि साकेत एवं यशोधरा, इन दो ग्रंथों की रचना मूलतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-सुलभ गुणों से ही प्रेरित होकर हुई है। कवि के हृदय में स्त्रियों के प्रति सहानुभूति है। वह उनके हृदय में घुसकर उसे भली भाँति विश्लेषण करना चाहता है, और समझने का प्रयास करता है, न कि बर्नार्ड शॉ की भाँति सिंहिनी कहकर दूर भाग जाना चाहता है।

गुप्तजी की उर्मिला हमारे सम्मुख भारतीय पति-व्रत का आदर्श लेकर प्रस्तुत होती है, और यह स्पष्ट दिखाई देने लगता है कि "गुप्तजी ने स्त्रियों में भी भारतीय आदर्श के ढाँचे में दिव्यता भरने की कोशिश की है।" उनकी कैकेयी अपराधिनी है, किंतु उसका अपराध अमार्जनीय नहीं, क्योंकि—

"भरत-से सुत पर भी संदेह,
बुलाया भी न उसे जो गेह।"

अंत में इतना कहना अनुचित न होगा कि स्त्री-सुलभ द्वेष-भावना एवं अन्य दोष भी गुप्तजी की दृष्टि से न बच सके, और उन सबका सम्मिश्रण हमें शूर्पणखा के चरित्र में मिलता है। अस्तु।

'प्रसाद'जी की स्त्रियाँ कुछ दूसरा ही रूप प्रस्तुत करती हैं। एक ओर तो उनकी देवसेना स्वर्गलोक से झाँकनेवाली देवी का रूप प्रस्तुत करती है, दूसरी ओर अनंतदेवी लेडी मेकबेथ से होड़ करती प्रतीत होती है। इतना ही नहीं, इधर उनकी विजया बीसवीं शताब्दी की, पार्कों में घूमनेवाली, प्रशंसा की प्यासी स्त्रियों की समता करती है। छलना को देखकर सहसा हमारे मुख से निकल पड़ता है—"नारी की इच्छा का मार्ग जानना अति कठिन है, और उसका पता लगाना और भी अधिक कठिन।" (हैज़लेट)

'प्रसाद'जी की श्यामा एवं विजया में प्रतिस्पर्धा-सी प्रतीत होती है। श्यामा का—"बहुत छिपाया, उफन अब पड़ा, सँभालने का समय नहीं है।"-वाला गीत विजया के "अरुण धूम की श्याम लहरियाँ उलझी हों इन पलकों से।" की टक्कर का ही प्रतीत होता है। इन दोनो गीतों में कितनी तीव्रता है, विकलता है, और विलास की नारकीय भावना। फिर वही देवसेना का कथन—"संगीत सभा की अंतिम लहरदार और आश्रय-हीन तान, धूपदान की एक क्षीण गंध-धूम-रेखा, कुचले हुए फूलों का म्लान सौरभ और उत्सव के पीछे का अवसाद, इन सबों की प्रतिकृति मेरा क्षुद्र नारी-जीवन।" हाँ, तो इस निष्कर्ष पर आए कि 'प्रसाद'-जी की स्त्रियाँ एक ओर तो करुणा, सहानुभूति एवं स्नेह-युक्त मूर्तियाँ हैं, और दूसरी ओर उन्हीं के ही शब्दों में—"पहाड़ी नदियों से भयानक, ज्वालामुखी के विस्फोट से भी बीभत्स और प्रलय की अनल-शिखा से भी लहरदार" होती हैं।

मल्लिका के 'क्षमा' के सिद्धांत का पुष्टीकरण 'प्रेमी'जी की श्यामा भी किसी सीमा तक करती है। फिर वही त्याग का महत्त्व "देश सर्वोपरि है, देश सर्वश्रेष्ठ है। जो सर्वश्रेष्ठ है, उसके चरणों पर शेष सर्वस्व का उत्सर्ग करना ही होगा।" इन्हीं सब आदर्शों का सहारा लेकर भारतेंदुजी ने शैव्या का चरित्र खींचा है।

हिंदी की अन्य रचनाओं में भी उपर्युक्त किसी-न-किसी आदर्श का अवलंब लेकर स्त्री-पात्रों के चरित्र उपस्थित किए गए हैं। बाबू प्रेमचंदजी के पात्रों का भी विवेचन आवश्यक है। किंतु स्थानाभाव के कारण हम इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि इनकी स्त्रियाँ चाहें तो गाँव के झोपड़ों के नीचे बैठकर ज़मींदार से लड़ सकती हैं, अथवा गगन-चुंबी प्रासादों में भी असंतोष प्रकट कर सकती हैं। हाँ, इतना कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि अन्य लेखकों से प्रेमचंदजी की स्त्रियाँ अधिक "चलती-फिरती" हैं, और सायं-प्रातः ही वे हमें दृष्टिगोचर होती हैं। अस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर कुछ दिनों से बँगला के प्रभाव-स्वरूप हिंदी में रहस्यवाद एवं छायावाद का बोलबाला है। छायावाद स्थूल जगत् के प्रति सूक्ष्म जगत् का विद्रोह है। इसकी प्रथम श्रेणियों को दुःखवाद के अंतर्गत लिया जा सकता है, अथच इसकी स्त्रियाँ दुःख से ही प्रसन्नता पाती हैं। वे सदैव पीड़ा ही खोजना चाहती हैं—

"तुझको पीड़ा में ढूँढ़ा,
तुझमें ढूँढ़ूँगी पीड़ा।"
(महादेवी)

और उनका यही सिद्धांत—"अमरता है जीवन का ह्रास, मृत्यु जीवन का चरम विकास।" रहता है। उसकी 'सजनि' एवं 'सखि' अनंत और असीम के वायुयान पर बैठकर नश्वर जीवन-क्षितिज के 'उस पार' नंदन-कानन में विहार किया चाहती हैं। मार्ग में गुनगुनाती हैं—

"उर-उदधि में आज मेरे
प्यार का यह ज्वार आया।"

परिचय पूछे जाने पर वहीं से हाथ उठाकर कह देती हैं—

"करुणालय की मैं वासिन हूँ,
करुणा ही मेरी संगिन है।"

फिर एक भिक्षा भी माँगती हैं—

"फिर करुणा ही से सुख पाने का
कोई पाठ पढ़ा देता।"

इतने से भी उन्हें संतोष नहीं। वे उलाहना अथच अपने जाने का कारण बतलाती जाती हैं—

"वह प्रेम कहाँ प्रियतम, तेरा,
जो प्रेम किया तुमने उस दिन।"

इतना कहते-कहते वे हमारी आँखों से ओझल हो जाती हैं। हम जान नहीं पाते कि वे अपनी अनंत की उड़ान पूर्ण कर आनंद-स्वरूप अंतर्यामी को पा लेती हैं, अथवा किसी विलासिता की विकराल घटा की ओट में छिप जाती हैं। हमारे मतानुसार द्विपद-कवि अपनी सजनियों एवं सखियों के उड़ाने के प्रयास में सर्वथा असफल हुए हैं, और उनका यह प्रयत्न प्रशंसनीय भी प्रतीत नहीं होता। शोक की बात है कि इधर पश्चिमीय साहित्य का भौतिकवाद घुसा आ रहा है। उसके रोकने का समुचित प्रयास अत्यंत आवश्यक है। हाँ, तो ये स्त्रियाँ सुंदर हैं, कोमल हैं, भावनाओं से ओत-प्रोत हैं तथा करुणा की उपासिका, किंतु इनके चरित्र के विषय में हमें संदेह है।

इधर हिंदी में एक उग्रवाद निकल पड़ा है। हमने इसका विस्तार-पूर्वक विवेचन अपने एक 'वीणा'-वाले लेख में किया है। यहाँ तो इतना कहना ही आवश्यक समझते हैं कि इस उग्रवाद की स्त्रियों के वक्षःस्थल में आग के जलते हुए अंगारे भरे हुए हैं। वे मनुष्यों को उकसाना चाहती हैं, भड़काना चाहती हैं, प्रलय कर देना चाहती हैं, और तांडव भी। 'प्रेमी'जी 'मिलिंद'जी, 'सुधींद्र'जी एवं अन्य कवियों ने इसकी परख की है। और, तभी कवि प्रार्थना करता है—"सजनि! सुना दे फिर से अपनी टूटी-फूटी तान पुरानी।" इसमें भी सीमोल्लंघन का प्रयास कहीं-कहीं अस्वाभाविकता एवं उच्छृंखलता ला देता है।

हमें प्रसन्नता है कि रीति-काल के विपरीत अर्वाचीन कवियों की दृष्टि, मुख के सौंदर्य पर से हटकर, स्त्री-जाति के मानसिक सौंदर्य पर आ रही है। किंतु इतने से ही हमें संतोष नहीं, हम तो हर वेला उस स्वर्णिम अवसर की प्रतीक्षा किया करते हैं, जब कलाकारों की दृष्टि उनमें छिपी हुई अनुपम शक्ति पर पड़ेगी, जिसे आप स्त्रीत्व की महत्ता कह लें, या पावन पदरज!

'करुण'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. पशु-पक्षियों की बोली समझना

इसे हमारे भारतीय मस्तिष्क की ही विशेषता समझना चाहिए कि जब तक कोई विदेशी किसी विषय पर अपनी राय नहीं दे देता, तब तक हम उस विषय पर ध्यान देना तो दूर रहा, उसे देखते तक नहीं । और, फिर हम उनके अन्वेषण को अपने ही मस्तिष्क की उपज बताने लगते हैं। उदाहरण के लिये साम्यवाद को लीजिए। रूस में साम्यवाद के सिद्धांत का प्रचार होते ही हम लोग कहने लगे कि साम्यवाद तो वेदों से आया है। वायुयान के बनते ही कहने लगे कि हमारे पूर्वजों ने पुष्पक विमान बनाया था । और, अग्न्यस्त्र, मेघास्त्र आदि अद्भुत अस्त्र हमारे यहाँ पहले से ही विद्यमान थे । उसी तरह कल जब कोई वैज्ञानिक ऐसा आविष्कार करेगा, जिससे मुर्दे जी उठेंगे, तो फिर हम कहने लगेंगे कि यह कौन-सी नई बात है, अरे, हनुमानजी भी तो संजीवन बूटी लाए थे। पर हम लोग वैसा अन्वेषण करने की कोशिश नहीं करते । हमारी आँखें पाश्चात्य सभ्यता से ऐसी चौंधिया गई हैं कि हम आगे बढ़ने का प्रयत्न नहीं करते । इस चकाचौंधी ने न केवल हमारी आँखों पर ही असर डाला है, वरन हमारे मस्तिष्क पर भी असर किया है। हमें अपनी बातों में नवीनता दिखाई नहीं देने लगी, और हम नवीनता के ऐसे आदी हो गए हैं कि 'पशु-पक्षियों की बोली समझना'-ऐसी विद्या को भी भूल गए हैं। अब यह विद्या या तो अपढ़ कहे जानेवाले किसानों के पास रह गई है, या फिर नानी की कहानियों में।

मैं आज पाठकों के सामने एक ऐसी ही कहानी रक्खूँगा, जो मैंने अपनी नानी से सुनी थी। और, दो ऐसी ही घटनाओं का ज़िक्र करूँगा, जिन्हें मैं आपके सामने रखकर आपका ध्यान इस विषय की ओर ले जाने का प्रयत्न करूँगा।

यह नानी की कहानी न केवल काल्पनिक मालूम होती है, जैसा कि आप देखेंगे भी, वरन् सत्य घटना-सी है।

एक गाँव में एक मनुष्य रहता था । उसके एक लड़की थी। उसने उस लड़की को सब विद्याओं के साथ-साथ कोक-विद्या (पशु-पक्षियों की बोली पहचानने की विद्या) भी पढ़ाई। लड़की इस विद्या में ख़ूब निपुण हो गई। उस मनुष्य ने उसकी शादी एक पास ही के गाँव में, एक संपन्न परिवार में, कर दी। लड़की ससुराल गई। रात में जब वह सो रही थी, तब एकाएक किसी जानवर की बोली सुनकर उठी, और चल पड़ी। उसका पति यह देखकर उसके पीछे हो लिया। लड़की नदी पर पहुँची । वहाँ पानी से एक लाश खींचकर लाई, और उसकी जाँघ अपने दाँतों से चीर, उसमें से कुछ चीज़ निकालकर उसे अपनी साड़ी के एक छोर में बाँध लिया। फिर वह घर लौट आई। प्रातःकाल उसके पति ने अपने पिता से कहा—"पिताजी, आप इसे इसके पिता के घर भेज आइए, मैं इसे अब एक मिनट भी नहीं रख सकता।" पिता चकराए, और पूछने लगे—"क्यों, क्या बात हुई?" लड़के ने कहा—"यह डायन है। मैंने इसे अपनी आँखों से मुर्दा खाते हुए देखा है। अब आप कृपा कर इसे अभी पहुँचा आइए।"

पिता ने तुरंत गाड़ी मँगाई, और अपनी पुत्र-वधू को उसके पिता के घर भेजने के लिये रवाना हो गए। थोड़ी दूर पहुँचे ही थे कि एक वट का वृक्ष मिला। वह उसके नीचे थोड़ी देर विश्राम करने के लिये ठहर गए । उस वृक्ष के नीचे दो यात्री और भोजन बना रहे थे। उस पेड़ पर एक पक्षी की आवाज़ सुनकर लड़की उसकी ओर दृष्टि कर रोने लगी । उसे रोते देख उसके ससुर ने कहा—"क्यों रोती है बेटी?" लड़की ने कहा—"पिताजी, मैं अपनी तक़दीर को रो रही हूँ, और अपने पिता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी को कोस रही हूँ, जिन्होंने मुझे ऐसी विद्या पढ़ाई, जिसके कारण मुझे डायन बनना पड़ा।" ससुर ने उत्सुकता-पूर्वक पूछा—"क्यों, क्या बात है बेटी?" लड़की ने कहा—"कल रात को एक जानवर बोल रहा था कि यदि कोई सुननेवाला हो, तो इस नदी में एक मुर्दा बहा जा रहा है, उसकी जाँघ में चार रत्न हैं। मैं एकदम उठी, और नदी पर पहुँची। मुर्दे को निकाला। वहाँ मेरे पास कोई ऐसा शस्त्र न था, जिससे मैं उसकी जाँघ चीरकर रत्न निकाल लेती, अतः मैंने दाँतों से ही जाँघ चीरकर इन रत्नों को निकाल लिया।" ऐसा कहकर उस लड़की ने चारो रत्न अपनी साड़ी के छोर से निकालकर उन्हें दे दिए, और वह कहने लगी—"इस पेड़ पर कौआ यह कह रहा है कि इस भोजन बनाने की जगह के नीचे चार चरुए (बर्तन) धन के भरे हुए हैं।" धन किसे अच्छा नहीं लगता। ससुर उस लड़की को वापस ले आए, और उस ज़मीन को ख़रीद, वहाँ मकान बनवाकर उन्होंने सब धन निकाल लिया। यह तो हुई कहानी, अब मैं एक सच्ची घटना का वर्णन करूँगा।

थोड़े ही दिनों की बात है, मेरे गुरु श्रद्धेय पंडित रमाकांतजी शास्त्री ने यह घटना मुझसे कही। श्रीशास्त्रीजी के भाई पं० वल्लभजी इंदौर-स्टेट के गरोठ-नामक स्थान पर जज-कोर्ट में क्लर्क हैं। उन्हीं के साथ गुज़री हुई यह घटना है। गरोठ के पास ही रामपुरा-नामक स्थान है, जिसके आस-पास बंजारों की बस्ती है। उन्हीं बंजारों में से एक ने अपने साथी की हाज़िर-ज़मानत दी थी। पर वह उसे हाज़िर न कर सका। अतः जज साहब ने उसे रुपया जमा करने, नहीं तो हिरासत में बंद रहने की आज्ञा दी। उसी संबंध में उसकी स्त्री आठ दिन से वहाँ आई हुई थी। पर वहाँ काम न बनने पर उस आदमी को खोजने चली। उसी दिन पंडित वल्लभजी एक गाँव जा रहे थे। रास्ते में उससे भेंट हो गई। आठ दिन तक कोर्ट में आने-जाने के कारण वह पंडितजी को अच्छी तरह पहचान गई थी, अतः वह इनके सामने अपना दुखड़ा रोने लगी। वह इस तरह आगे बढ़ ही रहे थे कि सामने एक वृक्ष पर कौआ बोला। उसकी बोली सुन वह बंजारिन बोली—"हुज़ूर, आगे मत जाइए।" पंडितजी ने पूछा—"क्यों?" वह बोली—"यह कौआ कह रहा है कि रास्ते में गाय मरी हुई पड़ी है। वापस लौटना पड़ेगा।" पंडितजी को विश्वास न हुआ। वह आगे बढ़े, तो देखा, रास्ते में गाय मरी हुई पड़ी है। वह वापस लौट आए, और दूसरे रास्ते से चलने लगे। थोड़ी ही दूर चले थे कि एक कुआँ दिखाई दिया। वहाँ पहुँचकर वह उसके थाले पर बैठ गए, और कहा—"तुम थोड़ी देर बैठ जाओ, मैं अभी स्नान कर लेता हूँ।" इतने में पास ही एक झाड़ी में तीतर बोलता हुआ सुनाई पड़ा। उसकी बोली पहचानकर स्त्री ने कहा—"यह कुआँ तो तीन दिन से हत्यारा हो गया है।" पंडितजी को आश्चर्य हुआ, और वह कहने लगे—"तुम आठ दिन से गरोठ में हो, फिर तुमने कैसे जाना कि कुआँ तीन दिन से हत्यारा हो गया।" तब उस स्त्री ने कहा—"यह तीतर कह रहा है कि कुआँ तीन दिन से हत्यारा हो गया है।" इतने में ही पास ही के गाँव का एक आदमी आता हुआ दिखाई दिया। उससे पूछने पर मालूम हुआ कि बात बिलकुल सत्य है।

आगे बढ़ने पर वह एक गाँव के पास पहुँचे। वहाँ एक आम के वृक्ष पर मोर बोल रहा था। उसकी आवाज़ सुन स्त्री ने कहा—"हुज़ूर, चोर तो मिल गया। यह मोर कह रहा है कि वह यहीं जमीन में है।" ऐसा कहकर वे दोनो पास ही, जहाँ गन्ने का रस निकाला जा रहा था, गए। जिस आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ज़मानत दी थी, वह खड्डे में बैठा था। स्त्री ने उसे पहचान लिया, और अपने साथ ले लिया। फिर पंडितजी से कहा—"आप यहीं भोजन बना लीजिए।" पंडितजी ने कहा—"अब मेरा गाँव मील-भर रह गया है, वहीं जाकर भोजन करूँगा। और, मैंने अभी स्नान भी नहीं किया है।" स्त्री ने कहा—"देखिए हज़ूर, यह पत्ती कह रहा है कि वहाँ ताला लगा हुआ मिलेगा।" पंडितजी ने उससे कहा—"कुछ भी हो, मैं वहाँ जाऊँगा तो ज़रूर।" और, उन्होंने यह भी पूछा कि "तुम यह बोली कैसे पहचान लेती हो?" इसके उत्तर में उसने कहा—"आप हमारे गाँव आना, फिर मैं आपको बताऊँगी। अभी मैं कुछ नहीं कह सकती।"

पंडितजी वहाँ जाकर देखते हैं, तो ताला लगा है! तलाश करने पर मालूम हुआ कि वे लोग तीन दिन में लौटेंगे। हताश पंडितजी शाम को घर आए, और फिर भोजन किया।

तीसरी घटना मेरे साथ हुई। अभी हाल ही की बात है, मैं पास ही अपने मामा के गाँव गया हुआ था। एक दिन दोपहर से ही मैं, मेरे मामा और गोपीलाल खेत की तरफ़ चले गए। जब शाम होने लगी, तब वापस आए। हम लौट ही रहे थे कि बाईं ओर एक खेत में तीतर बोला। वह जल्दी-जल्दी बोल रहा था। उसे बोलते देख मेरे मामा ने मुझे बताया कि यह तीतर अशुभ बोल रहा है, और घर पर ज़रूर कोई-न-कोई बात हुई होगी। गोपीलाल को पुकारकर कहा—वह हमसे ज़रा आगे था—"क्यों गोपीलाल, यह तीतर क्या कह रहा है?" गोपीलाल ने कहा—"यह तो बुरा बोल रहा है। कह रहा है, घर जाओ, जल्दी जाओ।" मैंने पूछा—"आपने यह कैसे जाना कि यह अशुभ बोल रहा है?" उसने कहा—"पहले तो यह समय तीतर के बोलने का नहीं।

बाएँ तीतर, बाएँ मोर,
बाएँ खरहा करे किलोल;
बायाँ मृग दाहिना जावे,
निश्चय राज्य विभीषण पावे।

यह शकुन सुबह का है। अब शाम हो गई है, अतः इसका उलटा परिणाम निकलेगा। दूसरे, यह तीतर जैसे बोल रहा है—'जल्दी जाओ, जल्दी जाओ।' अतः इसका फल अनिष्ट है।" मैं इस विषय की ओर भी बातें पूछनेवाला था कि एक आदमी ने कहा—"गोपीलाल, धीरे क्यों चल रहे हो? जाओ, तुम्हारी मा मर गई।" मैं चकित हो गया, और गोपीलाल यह कहता हुआ आगे बढ़ा कि तीतर यही कह रहा था।

घर आने पर मैंने अपने मामा से इस विषय पर बातचीत की। तब मुझे मालूम हुआ कि कालीसिंध-नदी के दूसरे पार—जिसे सोंधवाड़ कहते हैं—बहुत-से लोग पशु-पक्षियों की बोली समझते हैं। मुझे यह भी मालूम हुआ कि एक सोंधिया, जो सोंधवाड़ का निवासी था, किसी कार्य-वश मेरे मामा के यहाँ आया था। उसने बताया—"साल-भर तक बीच जंगल में एक पत्थर का चाठा (हौज़) रक्खे। उसमें रोज़ पानी डाला जाय। उसका संबंध नहीं टूटना चाहिए, यानी ऐसा न हो कि किसी दिन उसमें बिलकुल पानी न रहे। उसमें रोज़ाना थोड़ा-बहुत पानी बचना चाहिए, और उसी में फिर पानी डालते रहना चाहिए। इस तरह कई जानवर रात-दिन वहाँ का पानी पिएँगे। जब पूरे बारह महीने हो जायँ, तब एक दिन जो पानी शेष रहे, उसे एक बोतल में रख लिया जाय, और जब किसी के बच्चा पैदा हो, और उस पानी का गुरला* दिया जाय,

* लड़का पैदा होने के बाद उसे पहलेपहल जो पानी पिलाते हैं, उसे गुरला कहते हैं।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमंत हिज़ हाइनेस महाराजाधिराज
राजराजेश्वर सवाई श्रीयशवंतराव होल्कर बहादुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

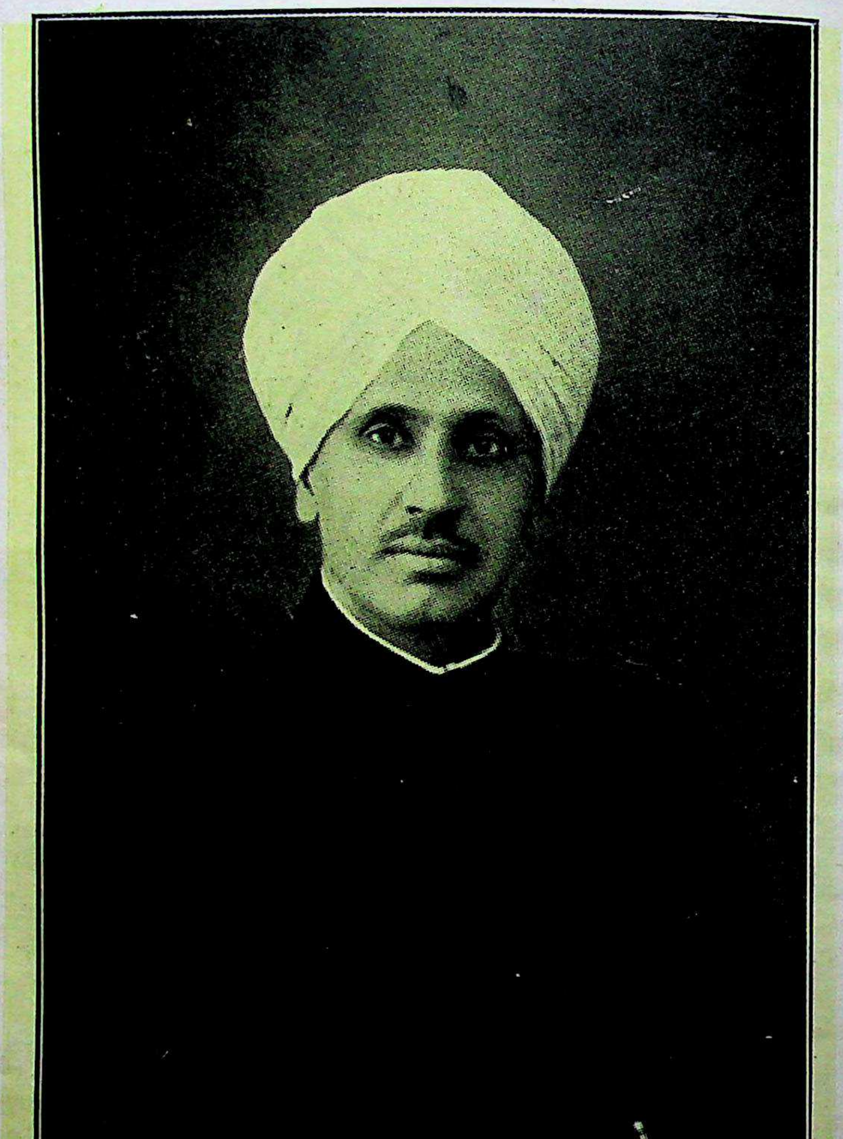

एतमादुद्दौला, रायबहादुर कर्नल दीनानाथ बार-एट-ला
प्राइम मिनिस्टर, इंदौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तो निश्चय ही वह बालक बड़ा होने पर जानवरों की बोली समझने लग जायगा। यह मेरी अनुभूत बात है।

इससे पाठक जान गए होंगे कि 'पशु-पक्षियों की बोलियाँ समझना' यह विद्या कितनी उपयोगी है, और अब यह कितने लोगों को ज्ञात है। पाठकों को यह लेख पसंद आया, तो मैं इस विषय की और भी बातें पाठकों के सामने रक्खूँगा।

रघुनाथ गुप्त (विशारद)

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ४० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S.I. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई न० ४

लखनऊ स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद-पार्क

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

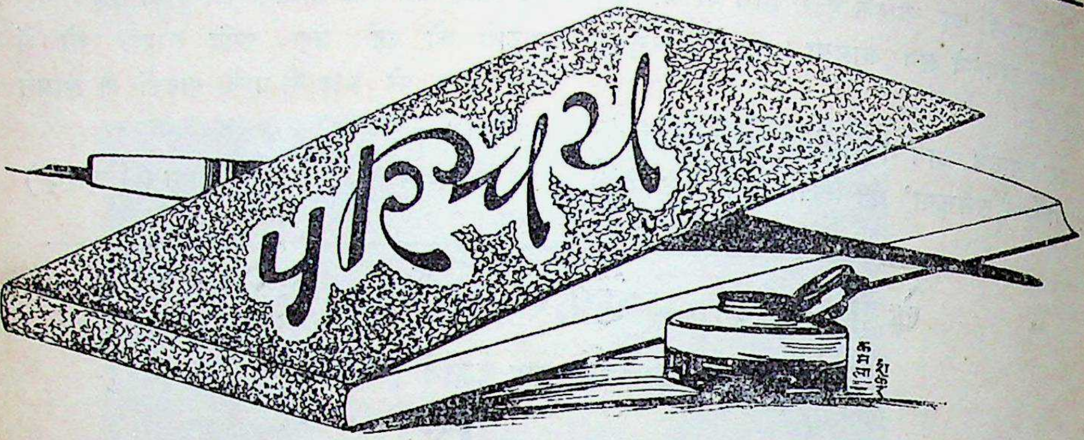

त्रिपुरी का इतिहास—लेखक, श्रीब्योहार राजेंद्र-सिंहजी एम्० एल० ए०; प्रकाशक, मानस-मंदिर, जबलपुर; मूल्य १॥)

पिछली कांग्रेस की 'त्रिपुरी' का परिचय दिलाने की ज़रूरत कांग्रेस के समय अनुभव की गई थी। यह पुस्तक उसी ज़रूरत को पूरा करने के लिये लिखी गई थी। महाकोशल की प्राचीन राजधानी त्रिपुरी, जो अब 'तेवर' के खँडहरों से झाँकती हुई दिखाई देती है, किसी समय भारत के इतिहास में केंद्रीय स्थान रखती थी। हैहय क्षत्रियों, गोंडों और चेदि-सम्राटों के ज़माने में इस नगरी का अनुपम वैभव पाटलिपुत्र तथा क़न्नौज के लिये ईर्ष्या की वस्तु था। प्रस्तुत पुस्तक में त्रिपुरी के उसी अतीत वैभव का चित्र है। सैकड़ों चित्रों तथा बहुत ही खोज-पूर्ण वर्णनों से ओत-प्रोत इस सुंदर पुस्तक से हिंदी के इतिहास-विभाग की बहुत कुछ श्री-वृद्धि हुई है। छपाई अगर कहीं और अच्छी होती, तो हमें बड़ी ख़ुशी होती। किंतु पुस्तक स्वयं बड़ी ही महत्त्व-पूर्ण है, क्योंकि इससे महाकोशल के इतिहास पर बहुत कुछ नवीन प्रकाश पड़ता है। आशा है, अगले संस्करण में यह इतिहास अप-टु-डेट कर दिया जायगा, क्योंकि पुस्तक का आकस्मिक अवसान ज़रा खटकता-सा है। भाषा प्रांजल है। शैली के लिये श्रीब्योहार राजेंद्रसिंहजी का नाम ही काफ़ी है।

× × ×

भारतीय इतिहास की बालपोथी—लेखक, श्रीपरिपूर्णानंदजी वर्मा; प्रकाशक, पुस्तक-भंडार, लहरियासराय (बिहार); मूल्य १॥)

कांग्रेस-प्रांतों में भारतीय इतिहास को नवीन शैली पर लिखे जाने की जो भावना प्रचलित हुई है, उसी का परिणाम यह पुस्तक है। छोटे बालकों के पढ़ने के लिये राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लिखे हुए इतिहासों की ओर ख़ास तौर पर कांग्रेसमैनों द्वारा लिखे इतिहासों की अच्छी खपत आजकल हो सकेगी, यह भावना भी प्रकाशकों के हृदयों में ज़ोर पकड़ रही है। इसी का परिणाम है कि कच्ची-पक्की और अधकचरी पुस्तकें धड़ाधड़ प्रकाशित हो रही हैं, और इतिहास का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है। इतिहास और गल्प में फ़र्क़ है। गल्प में सत्य का मख़ौल करने की स्वतंत्रता लेखक को रहती है, इतिहास में नहीं। इतिहास किसी शिक्षा-मंत्री के नादिरशाही फ़रमान के अनुसार गढ़ा नहीं जाता, वह तो ध्रुव सत्य के समान निश्चित रूपवाला ही है। हाँ, कभी-कभी खोज के अभाव अथवा लेखक के प्रमाद से वह अंधकार-पूर्ण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्पष्ट या अपरिचित-सा रह सकता है, लेकिन खोज पूरी होने के बाद, जब उसका वास्तविक रूप सामने आ गया, फिर उसे गल्प का रूप नहीं दिया जा सकता। इसी कारण उपर्युक्त प्रकार की पुस्तकें वास्तव में इतिहास की पुस्तकें नहीं कही जा सकतीं; हाँ, ऐतिहासिक गल्प ज़रूर कही जा सकती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक भी ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह है। लेखक ने उसे बड़े मनोरंजक ढंग से लिखा है। छोटे-छोटे बच्चों और बे-पढ़े-लिखे बुड्ढों के ... जो स्कूल अभी ग्राम-सुधार या शिक्षा-प्रसार-योजना ...ओं के अनुसार खोले गए हैं, उनमें इसकी अच्छी खप... होगी। इसमें भारतीय इतिहास की, शुरू से आज ...तक की, अच्छी तथा मनोरंजक कहानियाँ सिलसिले...वार दी गई हैं। किंतु दुःख इतना ही है कि कई जगह ... कांग्रेसी प्रोपेगेंडा के दृष्टिकोण को सामने रखकर ...लेखक ने इतिहास को तोड़ा-मरोड़ा है। यह एक नैति...क अपराध है। आशा है, विद्वान् लेखक महोदय इस ...दोष को अगले संस्करण में अवश्य दूर कर देंगे। कम-से-क...म खोज से निश्चित की गई घटनाओं को तो उसी ... रूप में लिखना चाहिए, जो उनका निश्चित रूप है। दाम भी कुछ ज़्यादा मालूम होता है। विद्यार्थियों औ...र विशेषतः ग़रीब भारतीय विद्यार्थियों की दृष्टि ...से तो वह काफ़ी ज़्यादा है। आशा है, प्रकाशक इस पर ध्यान देंगे।

सुधींद्र वर्मा
(एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

विश्व की पहेली (ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, त्रैतवाद)—लेखक, श्रीपूर्णचंद्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०, एडवोकेट, पूर्व-प्रधान आर्य-प्रतिनिधि-सभा, संयुक्त प्रांत; प्रकाशक, आर्य-साहित्य-मंडल लि०, अजमेर; मूल्य ॥)

उक्त पुस्तक लगभग २०० पृष्ठों में ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के संबंध में लिखे गए तीन निबंधों का एक सुंदर संकलन है। लेखक ने भूमिका में वैदिक त्रैतवाद की आवश्यकता दिखलाते हुए लिखा है कि महाभारत के उपरांत जब वैदिक धर्म का शनैः-शनैः लोप हुआ, तो विविध मत-मतांतरों द्वारा भ्रम-मूलक विचार फैल गए। वह आगे कहते हैं—"यदि हम वैदिक त्रैतवाद के स्वच्छ स्वरूप को संसार के सम्मुख प्रचलित और सिद्ध करना चाहते हैं, तो हमें इस चार हज़ार वर्ष पुरानी खाई को पार करके प्राचीन वैदिक युग की ओर अपनी दृष्टि फेरनी पड़ेगी, और केवल वेदों का सहारा लेकर विश्व की पहेली को सुलझाना पड़ेगा।" हम निस्संकोच कह सकते हैं कि वह अपने इस प्रयत्न में बहुत कुछ सफल हुए हैं।

वास्तव में बात यह है कि आजकल प्रत्येक बात जब तक पश्चिमी शैली में न उपस्थित की जाय, साधारण पाठकों के हृदय पर कुछ प्रभाव नहीं डालती। अँगरेज़ी शिक्षा का प्रभाव कुछ हम पर इस क़दर गहरा पड़ा है कि हम केवल अपनी ही बात सुनने को तैयार नहीं होते, बल्कि सदा यही जानना चाहते हैं कि देखें, पश्चिमवाले इस संबंध में क्या कहते हैं। इसमें कोई हताश होने की बात नहीं, "यथा राजा तथा प्रजा" के नियमानुसार ऐसा ही होना चाहिए। केवल यह कह देने से कि वेद सब सद्विद्याओं का भांडार है, काम न चलेगा। आज तो भारतीय नवयुवक की आत्मा अपनी हीनावस्था को देखकर ईश्वर की सत्ता तक को स्वीकार करने में अचकचा रही है। ऐसे समय में ये छोटे-से तीन निबंध साधारण योग्यतावाले मनुष्य के लिये अत्यंत लाभकारी हो सकते हैं। यदि साथ में दिए गए परिशिष्ट 'अ' के अनुसार ऐसे छोटे निबंध लिखे जायँ, तो ठोस साहित्यिक सामग्री एकत्र हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है, और इससे एक बहुत बड़ी यह कमी पूरी होगी कि अँगरेज़ी जाननेवाले सुगमता से वैदिक धर्म के असली रूप को जानकर व्यर्थ के भ्रम-जाल से बच जायँगे ।

पहले ईश्वर-संबंधी निबंध में जड़-चेतन का भेद बताते हुए लेखक ने ईश्वर की उपयोगिता बड़े सुंदर ढंग से सिद्ध की है । अवतारवाद की हानियाँ बताकर लेखक ने मूर्ति-पूजा में जो दोष बताए हैं, संभव है, सनातनधर्मी उससे कुछ असहमत हों । किंतु इसमें तो संदेह नहीं कि गुरुडम पाप है, अतएव जहाँ तक हो सके, तर्क से काम लेकर स्वयं उसे सोचने की आदत डालनी चाहिए ।

पुनर्जन्म, मृत्यु एवं मुक्ति से संबंधित विचार अत्यंत सुंदर एवं पठनीय हैं ।

उदाहरणार्थ—"पूर्व-जन्म की याद न रहने से एक लाभ और भी है । हमारे इस जन्म के ही झगड़े नहीं निबटते, यदि पूर्व-जन्म की बातें याद रहतीं, तो बड़ी आपत्ति उत्पन्न हो जाती । एक मनुष्य ने किसी परिवार में जन्म ले लिया है, परंतु वह जानता है कि उसका उसकी पूर्व-जन्म की कमाई का एक लाख रुपया किसी दूसरे आदमी के पास है, वह इसके लिये झगड़ा करेगा, इसी प्रकार जायदाद और स्त्री के लिये भी झगड़ा कर सकता है । हमारी भलाई तो इसमें है कि या तो बच्चे को याद रहती है, जिसमें झगड़ा करने की सामर्थ्य नहीं होती, या किसी योगी को याद रहती है, जिसके अंदर किसी योग्य पदार्थ के लिये विवाद करने की इच्छा नहीं रहती ।" पूर्व-जन्म के सिद्धांत से जो क्रियात्मक लाभ लेखक ने बताए हैं, उनके मानने में किसी को भी आपत्ति न होगी ।

हमारा यह विश्वास है कि यदि आर्य-संस्थाएँ इस ढंग के छोटे-छोटे निबंध तैयार कराके अधिक-से-अधिक प्रकाशित कराएँ, तो एक बड़े अभाव की पूर्ति होगी । किंतु लेखक ही के शब्दों में "निबंध-लेखकों को प्रत्येक विषय पर प्राचीन वैदिक साहित्य और वर्तमान पाश्चात्य जगत् के साहित्य से सहायता लेकर प्रकाश डालना चाहिए, और इस बात को स्पष्ट करने का यत्न करना चाहिए कि जिन प्राचीन वैदिक सिद्धांतों को ऋषि दयानंद पुनः प्रचलित करना चाहते थे, उनके संबंध में वर्तमान पश्चिमी जगत् की सम्मति क्या है ।"

अच्छा हो, यदि यह संकलन युक्त प्रांत के शिक्षा-विभाग द्वारा इंटरमीजिएट की हिंदी-परीक्षाओं के लिये स्वीकृत हो जाय । इसका परिणाम यह होगा कि नवीन ग्रेजुएट अपने प्राचीन दर्शन-शास्त्र का कुछ ज्ञान रखने में अवश्य समर्थ होंगे ।

'उमेश' (एम्० ए०)

× × ×

शिक्षा-सरोज—लेखक, श्रीवच्चीलाल 'योगेंद्र'; प्रकाशक, योगेंद्र-कुटीर, ग्राम बराटा, पोस्ट बड़ागाँव, झाँसी; मूल्य))'; पृष्ठ-संख्या २८; काग़ज़, छपाई साधारण ।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के मतानुसार एक शिक्षा-पूर्ण कविताओं का संग्रह है । इस लघु पुस्तिका के २८ पृष्ठों में ३३ स्फुट कविताएँ भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखी गई हैं । एक चित्र सुप्रसिद्ध कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त का, समर्पण-सहित, दिया गया है । इस छोटे-से संग्रह में अनेक अमेल विषयों का सफल समन्वय कठिन है, तथापि शिक्षा के नाम पर अनेक ज्ञात-अज्ञात एवं विज्ञात गद्य-पद्य-लेखक अपने उत्साह-बल से प्रदत्त प्रतिभा का परिचय देते ही रहते हैं । ऐसे संग्रहों को बालकोपयोगी बनाने के लिये इस बात का ध्यान कदाचित् अधिक रखने का अनुभव नहीं किया जाता कि किनके लिये और किस प्रकार विद्वान् लेखक अपनी प्रतिभा का उपयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं। इस लघु पुस्तिका का मूल्य भी कुछ अधिक है।

× × ×

सिद्धांत-रहस्य अर्थात् सिद्धांत-रत्नमार्ग-माला (आध्यात्मिक निबंध)—लेखक, श्रीस्वामीजी महाराज; प्रकाशक, श्रीलोकेंद्र-साहित्य-मंडल, दतिया; मूल्य ।।।); पृष्ठ-संख्या ६४; मुद्रक, अयोध्याप्रसाद शर्मा स्वाधीन-प्रेस, झाँसी।

यह पुस्तक लोकेंद्र-साहित्य-मंडल का प्रथम पुष्प है। प्रारंभिक वक्तव्य से प्रतीत होता है कि मंडल का मुख्य उद्देश्य साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन है। किंतु विशेष उपयोगी होने के कारण इस आध्यात्मिक निबंध को भी प्रकाशित किया गया है। श्रीहरिमनोहरलाल वर्मा ने प्रारंभिक वक्तव्य लिखा है। उसमें उन्होंने मंडल का संक्षिप्त परिचय दिया है। श्रीबलवीरसिंह ने अपने प्राक्कथन में निबंध के विवेचनीय विषय पर दृष्टिपात किया है। अनुक्रमणिका में बतलाया गया है कि आचार-प्रकरण, योग-प्रकरण, भक्ति-प्रकरण, ज्ञान-प्रकरण और अवशिष्ट-प्रकरण, इन पाँच विषयों का प्रतिपादन किया गया है। पहले प्रकरण में मन, वाणी और कर्म से पवित्र जीवन बनाने का उपदेश किया गया है। दूसरे प्रकरण में मंत्र-हठ-लय-राज-योग आदि योग-संबंधी विषयों की विवेचना की गई है तीसरे प्रकरण में सगुण-निर्गुण-उपासना, मूर्ति-तत्त्व, वाहन-रहस्य, पंचदेवोपासना तथा शक्तियों के योग पर प्रकाश डाला गया है। चौथे प्रकरण में सच्चिदानंद-स्वरूप, परा शक्ति, जीव, ईश्वर, माया तथा साधनचतुष्टय के संबंध में विचार किया गया है। पाँचवें प्रकरण में ज्ञान और भक्ति का समन्वय, भक्तों के लक्षण तथा वर्णाश्रम-धर्म के संबंध में उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत निबंध आकार में केवल चौरानबे पृष्ठ का है। किंतु इसके लेखक महोदय ने मानव-बुद्धि-गम्य और अगम्य प्रायः समस्त विषयों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। अत्यंत गहन, गंभीर एवं दुरूह आध्यात्मिक रहस्य विज्ञान-क्षेत्र में छलाँग मारना विरले ही मनीषी आर्ष प्राणों से अनुप्राणित सूक्ष्मदर्शियों का कार्य है। इन विषयों पर अब तक बड़े-बड़े ग्रंथ प्राचीन और नवीन विशेषज्ञ विद्वानों ने लिखे हैं। और, वर्तमान समय में भी अनेक विचक्षण एवं स्वाध्यायशील विद्वानों ने इन विषयों को अपनी प्रतिभा का लक्ष्य बनाया है। इसलिये इन विषयों में मतभेद, दृष्टिकोण-भेद, विचार-भेद और सिद्धांत-भेद होना अनिवार्य है। अहम्मन्यता, पंडितम्मन्यता, अहंकार और दुराग्रह आध्यात्मिक क्षेत्र में अनवरुद्ध विचरण करनेवाले जिज्ञासुओं और साधकों के लिये दुर्दमनीय अंतराय हैं। तथापि 'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' और 'अध्यात्मविद्या विद्यानाम्' (गीता) आदि स्मार्ततत्त्वों को ध्यान में रखते हुए यह अत्यावश्यक है कि वर्तमान समय में मानव-समाज को समुन्नत बनाने के लिये अधिक-से-अधिक आध्यात्मिकता का प्रचार किया जाय।

इस दृष्टि से यह पुस्तक उपादेय है, किंतु इसका मूल्य अधिक है। और, सर्व-साधारण में प्रचार की दृष्टि से इसमें अत्यधिक अशुद्धियों का हो जाना भी सर्वथा अक्षम्य है। हम आशा करते हैं कि स्वल्प मूल्य के साथ इस पुस्तक का परिमार्जित एवं विशद संस्करण निकालने में मंडल के प्रकाशक समर्थ हो सकेंगे।

रामदत्त शुक्ल
(ऐडवोकेट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसुम

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'विज्ञान के महारथी' (विज्ञान)—लेखक, श्रीयुत जगपति चतुर्वेदी हिंदी-भूषण, विशारद ; मूल्य १।)

(२) 'जागृति का संदेश' (राष्ट्रीय)—लेखक, स्वामी विवेकानंद ; अनुवादक, श्रीयुत गणेश पांडेय ; मूल्य १)

(३) 'आदर्श भोजन' (स्वास्थ्य)—लेखक, स्व० रायबहादुर एल्० एन्० चौधरी ; मूल्य ।॥)

(४) 'साम्यवाद ही क्यों ?' (राजनीतिक)—लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन ; मूल्य ॥)

(५) 'इंद्र-धनुष' (काव्य)—लेखक, श्रीनीलकंठ तिवारी एम्० ए०, साहित्यरत्न ; मूल्य ।॥)

(६) 'मालवा में युगांतर' (इतिहास)—लेखक, श्रीरघुबीरसिंह एम्० ए०, एल्-एल्० बी० डी० लिट्० ; मूल्य ४॥)

(७) 'राजकुमार सागर' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीसुदर्शन ; मूल्य ॥)

(८) 'संयोगिता' (नाटक)—लेखक, श्रीमायादत्त नैथानी ; मूल्य ॥)

(९) 'आदर्श नगर' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीनिरंजननाथ ; मूल्य ≈)॥

(१०) 'इतना तो जानो ही' (नवयुवकोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत जीवनाथ ओझा शास्त्री ; मूल्य ॥≈)

(११) 'अम्मा, कहानी सुना' (बालोपयोगी—दो भाग)—लेखक, प्रो० रामस्वरूप जी कौशल ; मूल्य प्रथम भाग ।-), द्वितीय भाग ।)

(१२) मतवाली मीरा (नाटक) लेखक, श्रीतुलसीराम शर्मा 'दिनेश' मूल्य ॥।)

(१३) 'ध्यानयोग-प्रकाश' (धार्मिक)—लेखक, श्रीस्वामी लक्ष्मणानंद ; मूल्य १।≈)

(१४) 'सोवियत् भूमि' (भ्रमण)—लेखक, श्रीराहुल सांकृत्यायन ; मूल्य ५)

(१५) 'मदशाला' (काव्य)—लेखक, श्रीकृष्णचंद्र शर्मा 'चंद्र' ; मूल्य ॥)

(१६) 'पुरुषोत्तम' (काव्य)—लेखक, श्रीतुलसीराम शर्मा 'दिनेश' ; मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

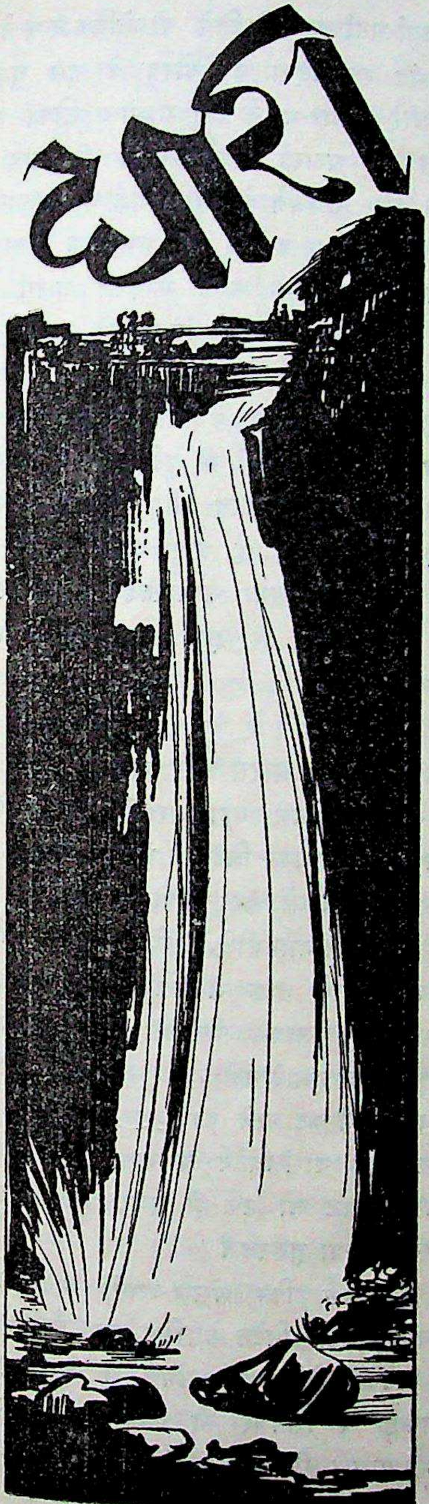

१. तोप के मुँह पर पलीता

योरप और एशिया में अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि क्षण-क्षण पर युद्ध की संभावना गत दो वर्षों से की जा रही थी। अंत में पहली सितंबर को तोप के मुँह पर पलीता रख दिया गया, और पोलैंड की भूमि जर्मन सेनाओं के घोड़ों की टापों से रौंद दी गई।

जर्मनी युद्ध नहीं चाहता था। वह केवल पोलैंड की वह भूमि चाहता था, जहाँ से उसे कच्चे माल की खानें मिल जायँ, और बाल्टिक सागर की कुंजी डैंज़िग भी मिल जाय। वह समझता था, चेकोस्लोवाकिया की तरह यह छोटा-सा राष्ट्र भी उसकी बंदर-घुड़की में मिल जायगा। किंतु चेकोस्लोवाकिया से पोलैंड की स्थिति भिन्न थी। चेकोस्लोवाकिया सामुद्रिक राष्ट्र नहीं था, पर पोलैंड की उत्तरी सीमा बाल्टिक सागर में समाप्त होती थी। पोलैंड-पतन के अर्थ हैं जर्मनी के हाथ में बाल्टिक सौंप देना। इसका दूसरा अर्थ है स्कैंडिनेविया, लिथुआनिया, एस्टोनिया और पोलैंड के बाज़ारों का इँगलैंड के लिये बंद हो जाना, और अँगरेज़ी सागर के पड़ोस में ही जर्मन-नौसेना का पड़ाव डलवा देना। इसका तीसरा अर्थ है नाज़ी और फ़ासिस्टवाद की पुष्टि और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की कमज़ोरी। इँगलैंड के लिये यह आत्मघात से बढ़कर ही था। इसीलिये ब्रिटिश राष्ट्र जी-जान से जर्मनी का विरोध कर रहा था। वह पोलैंड को युद्ध-सामग्री भी धड़ाधड़ दे रहा था, जिससे जर्मनी डरकर लड़ाई न करे।

फिर लड़ाई हुई क्यों? लड़ाई एक दूसरे को धोखा देने के प्रयत्न में ज़बरदस्ती जर्मनी और ब्रिटेन के गले आ पड़ी। संसार में ब्रिटिश साम्राज्य-वाद का सबसे बड़ा दुश्मन बोल्शेविक रूस है, जो जनतंत्र-शासन का एकमात्र प्रतिनिधि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाज़ी और फ़ासिस्टवाद आपाधापीवाद के ही रूपांतर हैं। उन्हें तानाशाही एकतंत्रवाद भी कहा जा सकता है। हिटलर और मुसोलिनी के सिद्धांत जहाँ साम्राज्यवाद की जड़ पर कुठाराघात करते हैं, वहाँ जनतंत्र-शासन-प्रणाली की भी वे जड़ खोदते हैं। उनका एकतंत्रवाद दुधारा खाँड़ा है।

ब्रिटेन चाहता था, नाज़ीवाद और बोलशेविज़्म की भिड़ंत हो जाय, और इसी को दृष्टि में रखकर वह संधि-विग्रह की स्कीमें बना रहा था। ऐंग्लो-जर्मनी-पैक्ट इसीलिये किया गया था कि रूस भड़के और जर्मनी से बिगाड़ कर बैठे। किंतु जब इसमें सफलता न हुई, तो ब्रिटेन ने रूस से मित्रता करके जर्मनी के विरुद्ध उसे भड़काने का प्रयत्न किया, जिससे ये दोनो दुश्मन आपस में कट मरें। रूस इतने दिन तक अँगरेज़ों को पुचकारता रहा, और अंत में उसने जर्मनी से संधि करके अँगरेज़ों को मजबूर कर दिया कि वे पोलैंड की रक्षा के लिये बढ़ें। रूस ने अपनी शक्ति का संरक्षण करके नाज़ी जर्मनी और साम्राज्यवादी ब्रिटेन को भिड़ा दिया, जिससे इन दोनो के लड़कर निर्बल हो जाने पर बोल्शेविक रूस का अंतरराष्ट्रीय प्रभाव बढ़ जाय। इसीलिये यह लड़ाई इतनी एकाएक हो पड़ी, और ज़बरदस्ती अँगरेज़ों और जर्मनी के गले पड़ी।

इधर एशिया में भी रूस का बहुत बड़ा राज्य है। यहाँ जापान साम्राज्यवाद का पोषक है, और राष्ट्रवादी महादेश चीन में साम्राज्यवाद के स्वप्न देखा करता है। रूस ने मंचूरिया और चीन को युद्ध-सामग्री बहुत बड़ी मात्रा में देकर जापान से उन्हें भिड़ा दिया, जिससे इस साम्राज्यवादी शत्रु की शक्ति क्षीण होकर वह भी परास्त हो जाय, और चीन में बोल्शेविक सिद्धांतों का प्रचार करने का रूस को मौक़ा मिल जाय।

इस प्रकार एशिया और योरप में शक्ति-संतुलन का कर्ता-धर्ता बनने के लिये बोल्शेविक रूस ने यह महाकांड रच दिया है। योरप के इस युद्ध में धीरे-धीरे संसार-भर के राष्ट्र शामिल होकर महाभारत की अठारह अक्षौहिणियों की तरह कट मरेंगे, और गणतंत्र के नेता श्रीकृष्ण भगवान् की तरह गणतंत्र या जनतंत्र का आधुनिक नेता रूस विना चोट-चपेट के कपड़े झाड़कर अलग खड़ा हो जायगा। श्रीकृष्ण भगवान् की तरह उसकी इन राजनीतिक चालों से इस युद्ध में संसार के पूँजीपति और उनका पूँजीवाद भस्म हो जायगा, किसानों तथा मज़दूरों की दुनिया मज़ा करेगी। लड़ाई की तोपों का यह गोला वास्तव में पूँजीवाद के गढ़ पर पड़ा है, और उससे साम्राज्यवाद की चहारदीवारी तथा तानाशाही के प्राचीर ढह रहे हैं। भविष्य ही इस चाल के महत्त्व को बतलावेगा।

× × ×

२. भारत और महायुद्ध

गत योरपियन महासमर के समय चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर ब्रिटेन ने सैनिक-संग्रह के लिये भारतीय नेताओं का सहयोग प्राप्त कर लिया था। लड़ाई समाप्त होते ही ब्रिटेन की सब प्रतिज्ञाएँ और सदाशाएँ ताक़ में रख दी गईं, और रौलट-ऐक्ट तथा पंजाब-मार्शल-लॉ की अपमान-जनक कार्यवाहियाँ हमारे गले पड़ीं। १६ लाख भारतीयों के लड़ाई में कट मरने का यह सुंदर पुरस्कार हमें दिया गया था! ब्रिटेन समझता था, सिर पर आया संकट तो टल ही गया, अब प्रतिज्ञा पूरी करने की क्या ज़रूरत?

भाग्य-वश फिर संसार-व्यापी महासमर की घनघोर घटाएँ ब्रिटेन के सिर पर मँडराईं। अंत में ब्रिटेन ने पोलैंड-जर्मन-संघर्ष में कूद पड़ने की घोषणा ३ सितंबर को कर दी। इस घोषणा का आधार ब्रिटेन ने जनतंत्रवाद की रक्षा तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाज़ीवाद के नाश की इच्छा बतलाया । उसका कहना है, संसार की शांति-रक्षा के लिये हिटलर की नादिरशाही का नाश तथा जनतंत्र-प्रणाली का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। चूँकि जर्मनी का नाज़ीवाद संसार के जनतंत्रवादी राष्ट्रों की स्वतंत्रता के लिये एक ख़तरे की चीज़ हो उठा था, इसलिये उसके नाश के लिये ब्रिटेन अग्रसर हुआ है। अपने इस महान् उद्देश्य में सहायता देने की अपील उसने संसार के सभी जनतंत्रवादी राष्ट्रों के नाम निकाली । अपने उपनिवेशों तथा अधिकृत प्रदेशों की प्रजा से भी उसने हाथ बँटाने का अनुरोध किया । भारत के वायसराय के नाम भी लंदन का ख़रीता आ पहुँचा है, और हमारे नेताओं को बुला-बुलाकर वायसराय महोदय लल्लो-चप्पो कर रहे हैं ।

वायसराय के इस अनुरोध को लेकर देश में काफ़ी चर्चा उठ खड़ी हुई है। कुछ लोग युद्ध में ब्रिटेन की सहायता करने के पक्ष में हैं, और कुछ ब्रिटेन से सौदा तय करने की राय देते हैं। कांग्रेस के सामने भी यही प्रश्न महात्मा गांधी ने वायसराय की मुलाक़ात के बाद रक्खा था। वर्किंग कमेटी ने इस शर्त पर ब्रिटेन की सहायता करने की संभावना प्रकट की कि ब्रिटेन तुरंत भारत में जनतंत्र-शासन-प्रणाली की स्थापना उद्घोषित करे, और भारत की स्वतंत्रता स्वीकृत करने का वचन दे ।

हम कमेटी को उसके इस दूरदर्शिता-पूर्ण निर्णय के लिये बधाई देते हैं ! वास्तव में इससे अच्छा निर्णय और हो ही नहीं सकता था ।

अहिंसा और सत्य की लड़ाई लड़नेवाला भारत ब्रिटेन की असहायावस्था का लाभ उठाने की बात सोच भी नहीं सकता था। साथ ही हिटलर की तानाशाही का पृष्ठ-पोषण भी वह नहीं कर सकता था। किंतु दूसरी ओर भारतीय महत्त्वाकांक्षाओं के शत्रु ब्रिटेन की सहायता के लिये विना कारण ही अपनी जन-शक्ति का संहार भी वह नहीं सह सकता था, इसलिये कुछ शर्तों के साथ ब्रिटेन की सहायता करने का वचन देना ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग था। वर्किंग कमेटी ने उसे ग्रहण करके राजनीतिक बुद्धिमत्ता प्रकट की है।

भारत की माँग अन्य दृष्टिकोण से भी उचित ठहरती है । जनतंत्रवाद का झंडा फहराते हुए साम्राज्यवादी ब्रिटेन आज जब जनतंत्र-प्रणाली की रक्षा का ढोंग बनाने चला है, तो यह बिलकुल उचित ही है कि वह अपने अधीनस्थ प्रदेशों में सबसे पहले उन सिद्धांतों की रक्षा का उदाहरण पेश करे, जिनके लिये वह लड़ने जा रहा है। अगर ब्रिटेन चाहता है कि जनतंत्रवाद की रक्षा के युद्ध में भारत उसकी मदद करे, तो उसका यह फ़र्ज़ है कि वह भारत में जनतंत्र-प्रणाली की तुरंत स्थापना की घोषणा कर दे।

गुलामों का भारत दूसरे देशों की स्वतंत्रता के लिये कैसे और किस मुँह से लड़-भिड़ सकता है। लड़ाई में जाने से पहले उसे भी जनतंत्र-प्रणाली के सब अधिकार ब्रिटेन को दे देने चाहिए। यदि ब्रिटेन यह नहीं करना चाहता, तो फिर भारत की कोई भी हार्दिक सहायता उसे नहीं दी जा सकती। हाँ, पेट की ज्वाला से जले कुछ अर्थ-दास अवश्य उसे मिल जा सकते हैं, किंतु भारत का हृदय उसके साथ हरगिज़ नहीं जा सकता ।

× × ×

३. भारत-रक्षा-क़ानून

केंद्रीय एसेंबली से भारत-रक्षा-बिल पास हो गया। इस बार कांग्रेस-पार्टी द्वारा एसेंबली का बहिष्कार करने के कारण इस बिल पर न कोई ज़ोरदार बहस हुई, और न सरकार को बिल पास कराने में किसी कठिनाई का अनुभव हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कांग्रेस-पार्टी इस बैठक में भाग भी लेती, तब भी बिल क़ानून की शकल धारण करता। यह माना कि ऐसे मामलों में केंद्रीय व्यवस्थापिका में जनता के प्रतिनिधियों की ही विजय होती है, और निश्चित रूप से अब की बार भारत-रक्षा-बिल को सरकार इस रूप में पास नहीं करा पाती, यदि कांग्रेस पार्टी उसकी बहस में भाग लेती। पर तब भी बिल क़ानून बन जाता, और वह बनता वायसराय महोदय के विशेष अधिकार द्वारा। इसलिये जहाँ तक इस बिल के नतीजे से ताल्लुक़ है, कांग्रेस-पार्टी के बहस में भाग लेने-न लेने का कोई ख़ास मूल्य नहीं।

अब रह जाता है इस क़ानून की आवश्यकता और उपयोगिता का सवाल। सरकार की दलील यह है कि विशेष परिस्थितियों में उसे ऐसे क़ानूनों का सहारा लेना पड़ता है। और, चूँकि इस वक्त़ युद्ध के कारण विशेष परिस्थिति पैदा हो गई है, इसलिये ऐसे क़ानून निर्माण करना सरकार अपना कर्तव्य समझती है। पिछले महायुद्ध के समय भी सरकार ने ऐसा क़ानून पास किया था। अगर यह बात है, तो भारतीय लोकमत का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्ति इस बिल का विरोध क्यों करते हैं? क्या उन्हें भारत की रक्षा का ख़याल नहीं? बात यह है कि सरकार जिस चीज़ को भारत की रक्षा का नाम देती है, वह लोक-प्रतिनिधियों की दृष्टि में सरकार का दमन-अस्त्र है। भारत-रक्षा-क़ानून के रूप में सरकार ने जो अस्त्र तैयार किया है, वह इतना भयंकर है कि उसके होते हुए किसी भी भारतीय की स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं। सरकार जब चाहेगी, तब किसी भी व्यक्ति की जायदाद ज़ब्त कर सकेगी, उसे नज़र-क़ैद या एक जगह बंद रहने और किसी भी प्रदेश से बाहर निकालने तथा लंबी मुद्दत तक जेल में डाल रखने का दंड दे सकेगी। सरकार के ऊपर इस वक्त़ योरप के युद्ध का भय सवार है। पर युद्ध के संबंध में भारत का दृष्टिकोण ब्रिटिश सरकार के ख़िलाफ़ नहीं, प्रत्युत भारत की सभी संस्थाएँ, जो यहाँ के लोकमत का प्रतिनिधित्व करती हैं, फ़ैसिस्ट शक्तियों और जर्मनी की कार्यवाहियों का विरोध कर रही हैं। कांग्रेस-कार्य-समिति ने जो प्रस्ताव पास किया है, उससे भी यह प्रकट है कि यदि सरकार ने इस वक्त़ समझदारी से काम लिया, तो युद्ध में उसे कांग्रेस की तरफ़ से सहायता ही प्राप्त होगी। ऐसी हालत में एक तरफ़ जब सरकार को एक प्रबल वायु का मुक़ाबला करना है, तब भारत-जैसे देश में ऐसे उपायों का अवलंबन नहीं करना चाहिए, जिससे यहाँ की जनता में विक्षोभ और असंतोष पैदा हो। हमें खेद है, सरकार यह ग़लती कर रही है। उसे भय है कि उधर ब्रिटेन युद्ध में फँसा हुआ होगा, और इधर भारत में कहीं दूसरी तरह का उत्पात खड़ा न हो जाय, जिसके लिये उसे अभी से अपनी तैयारी कर लेनी है। पर इस तरह के उपायों से सरकार का अभीष्ट सिद्ध नहीं हो सकता। उसे तो चाहिए कि आजकल प्रत्येक बात में भारतीय लोकमत का दृष्टिकोण मालूम करे, और असाधारण परिस्थिति का मुक़ाबला करने के लिये साधारण क़ानून और व्यवस्था से ही काम ले, जिसमें लोगों को यह न मालूम हो कि युद्ध के कारण सरकार इतनी विचलित हो गई है कि वह साधारण क़ानूनों से अपना काम नहीं चला सकती।

× × ×

४. राष्ट्रीय आर्थिक योजना

भारत के लिये एक ऐसी आर्थिक योजना का सवाल, जिसमें देश की संपत्ति, पैदावार, वितरण, उद्योग-धंधे, कृषि और व्यावसायिक समस्याओं का परस्पर सामंजस्य हो, जिसमें प्रत्येक वर्ग के लोगों को उनकी योग्यता और श्रम के अनुसार फल मिल सके, आजकल देश के कर्णधारों के दिमाग़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उठ रहा है। इसके लिये प्रयत्न भी शुरू हो गया है। कांग्रेस ने पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय योजना-समिति बनाई है; और उसमें राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देश की आर्थिक समस्या के संबंध में पूरा विचार हो रहा है। यह बात सभी लोग महसूस करते हैं कि देश का वर्तमान आर्थिक संगठन दोष-पूर्ण है। पर ऐसी कौन-सी योजना संपूर्ण राष्ट्र और उसके प्रत्येक वर्ग के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है, इस पर अर्थशास्त्र-विशेषज्ञों के समान विचार नहीं।

हाल ही में कलकत्ता-विश्वविद्यालय की 'इकोनॉमिक सोसाइटी' में प्रो० राधाकमल मुकर्जी ने इस संबंध में बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण व्याख्यान दिया है, जो सभी के लिये पठनीय और विचारणीय है। आप कहते हैं—"भारत अब अपने राष्ट्रीय जीवन की ऐसी अवस्था में पहुँच गया है, जहाँ से अपने आर्थिक ध्येय की ओर उसे योजना बनाकर संगठित रूप से आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्रीय आर्थिक योजना तैयार करनेवालों के सामने सबसे पहला प्रश्न यह है कि जन-साधारण के रहन-सहन के दर्जे को ऊपर उठाया जाय, जिसमें सब लोग सभ्य जीवन बिता सकें। भारत में प्रत्येक व्यक्ति के लिये जितना धन उसके भोजन और वस्त्रों में ख़र्च होता है, वह अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम है। इस मौजूदा कमी को पूरा करने के लिये भारत को एक करोड़ चौदह लाख टन अन्न और पैदा करना चाहिए।"

डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी

कृषि-समस्या के संबंध में आगे आप कहते हैं—"प्रति व्यक्ति पीछे जितनी भूमि पर पहले खेती की जाती थी, उतनी ज़मीन पर अब फ़सल नहीं उगाई जाती। अर्थात् कृषि में लगी हुई भूमि का क्षेत्रफल धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। दूसरे, ऐसे सस्ते नाजों की फ़सल अब अधिक उगाई जा रही है, जो शरीर को पौष्टिक तत्त्व कम प्रदान करते हैं। पैदावार के परिमाण और उसकी श्रेष्ठता, दोनो में ह्रास हो रहा है।"

फ़सल की पैदावार संगठित करने का तरीक़ा आप इस प्रकार बतलाते हैं—'नदी का प्रवाह बदलने, बाढ़ पर नियंत्रण करने, मिट्टी उपजाऊ बनाने तथा खेती का नए सिरे से बंदोबस्त करने के लिये प्रांत और देशी राज्यों में कृषि-बोर्ड क़ायम हों, और उनमें परस्पर सहयोग का संबंध हो। इन सबके कार्यों में सामंजस्य पैदा करने के लिये एक केंद्रीय बोर्ड होना चाहिए। रूस, इटली और अमेरिका आदि देशों में इसी तरह की योजनाओं से काम लिया जाता है। साथ ही एक बात और भी ध्यान में रखनी चाहिए। आजकल ६० प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं, आगे के लिये जो योजना तैयार की जाय, उसमें इस बात का ध्यान रक्खा जाय कि राष्ट्र की संपत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस वर्षों के अंदर दूनी-तिगुनी बढ़ जाय, साथ ही उद्योग-धंधों की भी उन्नति हो, और खेती पर सिर्फ़ ५० फ़ीसदी लोग ही निर्भर रहें।"

उद्योग-धंधों के संबंध में आपका कहना है—"घरेलू उद्योग-धंधों का सुधार अवश्य करना चाहिए, और उनमें सहयोग और संगठन होना चाहिए। देश के आर्थिक सुधार में घरेलू उद्योग-धंधों का महत्त्व है, पर यह समझना भूल है कि केवल चर्खा कातने या हाथ के उद्योग-धंधों से ही काम चल जायगा। देश में बड़े पैमाने पर चलाए जानेवाले उद्योग-धंधों की बड़ी आवश्यकता है, और राष्ट्रीय संपत्ति की वृद्धि इन्हीं साधनों से होगी। ऐसे उपाय निर्माण करने होंगे, जिनसे बड़े और छोटे उद्योग-धंधों में प्रतिद्वंद्विता पैदा न हो सके।"

अंत में आप कहते हैं कि राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था प्रत्येक शाखा के लिये एक साथ क़ायम करनी होगी। सभी क्षेत्रों में एक साथ उन्नति करनी होगी। उन्नति की नाप और तुलना के लिये आँकड़े संग्रह किए जाने चाहिए।

मान० श्रीरफ़ी अहमद क़िदवई

× × ×

५. हक़-आराज़ी-क़ानून

हर्ष की बात है कि यू० पी०-कौंसिल से वह हक़-आराज़ी-बिल पास हो गया, जिसकी चर्चा दो साल से अधिक समय से चल रही थी, और जिसकी तरफ़ इस प्रांत के क़रीब साढ़े चार करोड़ ग्रामीणों की आँखें लगी हुई थीं। अब तक प्रांत की किसान जनता ने आशा-निराशा के कितने ही झोंके खाए। बिल को पूरी मुराद तक ले जाने में भारी कठिनाइयाँ आईं। एसेंबली से बिल पास हो गया, तो कौंसिल से तो उसके पास होने की आशा ही नहीं थी। पर इस संबंध में रेवेन्यू-मिनिस्टर माननीय श्रीरफ़ी अहमद क़िदवई की कार्य-दक्षता, पटुता और कुशलता के लिये हमें धन्यवाद देना चाहिए। यह उन्हीं का काम था कि यू० पी०-कौंसिल में भी उन्होंने कौंसिल के सदस्यों का बहुमत सरकार के पक्ष में कर लिया, और साधारण संशोधनों के साथ बिल पास करा लिया। अब इस क़ानून पर गवर्नर महोदय की स्वीकृति मिलना बाक़ी है। इस संबंध में यह भी मालूम हो रहा है कि बिल के विरोधी लोग अब भी अपनी कोशिश कर रहे हैं, और महात्मा गांधी तथा वायसराय तक दौड़-धूप की जा रही है, और की जायगी। पर हम आशा करेंगे कि बिल जिस रूप में पास हुआ है, उसे शीघ्र-से-शीघ्र क़ानून का रूप दिया जायगा, और उस पर अमल करने में अब अधिक देर न की जायगी, क्योंकि अब तक काफ़ी हलचल इस संबंध में हो चुकी है। किसान भी इस इंतज़ारी में अब अपना धैर्य खोते जा रहे हैं। आगे और बड़े महत्त्व के सवाल सामने आ रहे हैं। इस हालत में हमारे प्रांतीय मंत्रिमंडल को अब इस कार्य से छुट्टी लेनी चाहिए, और हक़-आराज़ी-क़ानून को शीघ्र-से-शीघ्र प्रांत में लागू कर देना चाहिए।

× × ×

६. खुली छूट

शराब पीने की खुली छूट ने दीन भारतवर्ष के दरिद्र लोगों की आँतें बाहर निकाल दी हैं। समाज के चरित्र-गठन और ग़रीबों की आर्थिक दशा में सुधार के लिये शराब का बंद कर दिया जाना निहायत ज़रूरी है। कांग्रेस-सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इस ओर क़दम बढ़ाया है। देश का प्रत्येक शुभचिंतक उसके इस कार्य में कामयाबी की कामना करता है।

शराब से सरकार को एक बड़ी रक़म मिलती है, जिससे उसके शिक्षा और स्वास्थ्य के मानव-कल्याणकारी विभाग चलते हैं, इसलिये शराब से होनेवाली आय का, शराब बंद कराकर, अंत नहीं कर देना चाहिए। राष्ट्र के अर्थशास्त्र का ऐसा ज्ञान रखनेवाले अनेक विद्वान् हैं, जो यह भी कहते हैं कि भारतवर्ष सूखा नहीं हो सकेगा। सरकार की नज़र बचाकर शराब की नदी अंतः-सलिला होकर बहेगी। क़ानून द्वारा शराब बंद कराने का परिणाम यह होगा कि सरकार को शराब से जो आय होती है, वह न होगी, पर शराब आनंद से टैक्स-रहित चलेगी।

शराब के दुर्गुणों में डूबा हुआ देश अगर अपना अधःपतन नहीं देख सकता, तो क्या उसके शुभचिंतकों को यही समझकर मौन रहना चाहिए कि राष्ट्र की विशाल जड़ता के कारण कुछ नवयुवक उच्च शिक्षा पा रहे हैं, अथवा कुछ बीमारों का इलाज हो रहा है। भारतवर्ष के करोड़ों प्राणियों को नशे में चूर कराकर उनकी अर्ध-मूर्च्छित लाशों के ऊपर यदि हमारे दो-चार कॉलेज या अस्पताल आनंद से चल रहे हैं, तो क्या यही हमारी अभीष्ट-सिद्धि है? "वा सोने को जारिए, जासों टूटै कान।", उन कॉलेज और अस्पतालों को कल तोड़ दिया जाय, जो देश की दरिद्र आबादी को शराब पिलाए बिना चल ही नहीं सकते।

देश के अनेक प्रांतों में शराब बंद कराकर कांग्रेसी सरकारों ने मानो शराब का समुद्र सुखा देने का उपक्रम किया है। सरकार के इस महान् सदुद्योग के लिये सारे राष्ट्र का सहयोग प्राप्त होना चाहिए। दारूबंदी के इस महान् उद्योग की सफलता के लिये धन की दोहरी ज़रूरत है। दारूबंदी से आय का घाटा पूरा करने के साथ उसे सफल बनाने के लिये उस ओर के व्यय की ज़रूरत है। इस धन के लिये सरकार ने बंबई में 'प्रॉपर्टी-टैक्स' लगाया है। इस टैक्स के विरोध में यह दलील पेश की जा रही है कि शराब पीनेवालों की शराब छुड़ाने के लिये शराब न पीनेवालों पर क्यों टैक्स लादा जाय? इसका जवाब यह है कि शराब न पीनेवालों के आराम के लिये ही निरीह लोगों को क्यों पुश्त-दर-पुश्त शराब पिलाई जाय?

कौन-सी बात अधिक असंगत है? बहुसंख्यक ग़रीबों के सुधार के लिये अल्पसंख्यक धनिकों पर व्यय-भार रखना या अल्पसंख्यक धनिकों की सुविधा के लिये बहुसंख्यक दीनों का जीवन नष्ट करा देना। धनिकों के कुछ महल बचाने के लिये ग़रीबों के अनेकों झोंपड़े शराब की बाढ़ में क्यों बहा दिए जायँ?

शराबबंदी के नवयुग का दर्शन करानेवाले पुण्य प्रभात को उज्ज्वल, सफल और सुनहला बनाने के लिये सारे देश को केवल धन से ही नहीं, बुद्धि और चरित्र-बल से भी इस ओर सहयोग देना चाहिए।

शराबबंदी के असफल हो जाने की आशंका है, इसीलिये इस विराट् उद्योग को सफल बनाने का महत्त्व है। हिंदू-मुसलमान एवं अन्य सब संप्रदायों को मिलकर देश के सुधार की इस चेष्टा में साथ देना चाहिए।

दारूबंदी देश का चरित्र-सुधार कर ग़रीबों की आर्थिक स्थिति सँभालने की चेष्टा है। यदि यह सफल हो गई, तो संसार में भारतवर्ष का नाम होगा। देश के विद्वान्, लेखक, कवि, उपदेशक, पंडित, संपादक, मास्टर, प्रोफ़ेसर और लीडर, सबको अपनी-अपनी ओर से शराब के विरुद्ध प्रचार करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस वर्षों के अंदर दूनी-तिगुनी बढ़ जाय, साथ ही उद्योग-धंधों की भी उन्नति हो, और खेती पर सिर्फ़ ५० फ़ीसदी लोग ही निर्भर रहें।"

उद्योग-धंधों के संबंध में आपका कहना है—"घरेलू उद्योग-धंधों का सुधार अवश्य करना चाहिए, और उनमें सहयोग और संगठन होना चाहिए। देश के आर्थिक सुधार में घरेलू उद्योग-धंधों का महत्त्व है, पर यह समझना भूल है कि केवल चर्खा कातने या हाथ के उद्योग-धंधों से ही काम चल जायगा। देश में बड़े पैमाने पर चलाए जानेवाले उद्योग-धंधों की बड़ी आवश्यकता है, और राष्ट्रीय संपत्ति की वृद्धि इन्हीं साधनों से होगी। ऐसे उपाय निर्माण करने होंगे, जिनसे बड़े और छोटे उद्योग-धंधों में प्रतिद्वंद्विता पैदा न हो सके।"

अंत में आप कहते हैं कि राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था प्रत्येक शाखा के लिये एक साथ क़ायम करनी होगी। सभी क्षेत्रों में एक साथ उन्नति करनी होगी। उन्नति की नाप और तुलना के लिये आँकड़े संग्रह किए जाने चाहिए।

× × ×

५. हक़-आराज़ी-क़ानून

हर्ष की बात है कि यू० पी०-कौंसिल से वह हक़-आराज़ी-बिल पास हो गया, जिसकी चर्चा दो साल से अधिक समय से चल रही थी, और जिसकी तरफ़ इस प्रांत के क़रीब साढ़े चार करोड़ ग्रामीणों की आँखें लगी हुई थीं। अब तक प्रांत की किसान जनता ने आशा-निराशा के कितने ही झोंके खाए। बिल को पूरी मुराद तक ले जाने में भारी कठिनाइयाँ आईं। एसेंबली से बिल पास हो गया, तो कौंसिल से तो उसके पास होने की आशा ही नहीं थी। पर इस संबंध में रेवेन्यू-मिनिस्टर माननीय श्रीरफ़ी अहमद क़िदवई की कार्य-दक्षता, पटुता और कुशलता के लिये हमें धन्यवाद देना चाहिए। यह उन्हीं का काम था कि यू० पी०-कौंसिल में भी उन्होंने कौंसिल के सदस्यों का बहुमत सरकार के पक्ष में कर लिया, और साधारण संशोधनों के साथ बिल पास करा लिया। अब इस क़ानून पर गवर्नर महोदय की स्वीकृति मिलना बाक़ी है। इस संबंध में यह भी मालूम हो रहा है कि बिल के विरोधी लोग अब भी अपनी कोशिश कर रहे हैं, और महात्मा गांधी तथा वायसराय तक दौड़-धूप की जा रही है, और की जायगी। पर हम आशा करेंगे कि बिल जिस रूप में पास हुआ है, उसे शीघ्र-से-शीघ्र क़ानून का रूप दिया जायगा, और उस पर अमल करने में अब अधिक देर न की जायगी, क्योंकि अब तक काफ़ी हलचल इस संबंध में हो चुकी है। किसान भी इस इंतज़ारी में अब अपना धैर्य खोते जा रहे हैं। आगे और बड़े महत्त्व के सवाल सामने आ रहे हैं। इस हालत में हमारे प्रांतीय मंत्रिमंडल को अब इस कार्य से छुट्टी लेनी चाहिए, और हक़-आराज़ी-क़ानून को शीघ्र-से-शीघ्र प्रांत में लागू कर देना चाहिए।

मान० श्रीरफ़ी अहमद क़िदवई

× × ×

६. खुली छूट

शराब पीने की खुली छूट ने दीन भारतवर्ष के दरिद्र लोगों की आँतें बाहर निकाल दी हैं। समाज के चरित्र-गठन और ग़रीबों की आर्थिक दशा में सुधार के लिये शराब का बंद कर दिया जाना निहायत ज़रूरी है। कांग्रेस-सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इस ओर क़दम बढ़ाया है। देश का प्रत्येक शुभचिंतक उसके इस कार्य में कामयाबी की कामना करता है।

शराब से सरकार को एक बड़ी रक़म मिलती है, जिससे उसके शिक्षा और स्वास्थ्य के मानव-कल्याणकारी विभाग चलते हैं, इसलिये शराब से होनेवाली आय का, शराब बंद कराकर, अंत नहीं कर देना चाहिए। राष्ट्र के अर्थशास्त्र का ऐसा ज्ञान रखनेवाले अनेक विद्वान् हैं, जो यह भी कहते हैं कि भारतवर्ष सूखा नहीं हो सकेगा। सरकार की नज़र बचाकर शराब की नदी अंतः-सलिला होकर बहेगी। क़ानून द्वारा शराब बंद कराने का परिणाम यह होगा कि सरकार को शराब से जो आय होती है, वह न होगी, पर शराब आनंद से टैक्स-रहित चलेगी।

शराब के दुर्गुणों में डूबा हुआ देश अगर अपना अधःपतन नहीं देख सकता, तो क्या उसके शुभचिंतकों को यही समझकर मौन रहना चाहिए कि राष्ट्र की विशाल जड़ता के कारण कुछ नवयुवक उच्च शिक्षा पा रहे हैं, अथवा कुछ बीमारों का इलाज हो रहा है। भारतवर्ष के करोड़ों प्राणियों को नशे में चूर कराकर उनको अर्ध-मूर्च्छित लाशों के ऊपर यदि हमारे दो-चार कॉलेज या अस्पताल आनंद से चल रहे हैं, तो क्या यही हमारी अभीष्ट-सिद्धि है? "वा सोने को जारिए, जासों टूटै कान।", उन कॉलेज और अस्पतालों को कल तोड़ दिया जाय, जो देश की दरिद्र आबादी को शराब पिलाए बिना चल ही नहीं सकते।

देश के अनेक प्रांतों में शराब बंद कराकर कांग्रेसी सरकारों ने मानो शराब का समुद्र सुखा देने का उपक्रम किया है। सरकार के इस महान् सदुद्योग के लिये सारे राष्ट्र का सहयोग प्राप्त होना चाहिए। दारूबंदी के इस महान् उद्योग की सफलता के लिये धन की दोहरी ज़रूरत है। दारूबंदी से आय का घाटा पूरा करने के साथ उसे सफल बनाने के लिये उस ओर के व्यय की ज़रूरत है। इस धन के लिये सरकार ने बंबई में 'प्रॉपर्टी-टैक्स' लगाया है। इस टैक्स के विरोध में यह दलील पेश की जा रही है कि शराब पीनेवालों की शराब छुड़ाने के लिये शराब न पीनेवालों पर क्यों टैक्स लादा जाय? इसका जवाब यह है कि शराब न पीनेवालों के आराम के लिये ही निरीह लोगों को क्यों पुश्त-दर-पुश्त शराब पिलाई जाय?

कौन-सी बात अधिक असंगत है? बहुसंख्यक ग़रीबों के सुधार के लिये अल्पसंख्यक धनिकों पर व्यय-भार रखना या अल्पसंख्यक धनिकों की सुविधा के लिये बहुसंख्यक दीनों का जीवन नष्ट करा देना। धनिकों के कुछ महल बचाने के लिये ग़रीबों के अनेकों झोंपड़े शराब की बाढ़ में क्यों बहा दिए जायँ?

शराबबंदी के नवयुग का दर्शन करानेवाले पुण्य प्रभात को उज्ज्वल, सफल और सुनहला बनाने के लिये सारे देश को केवल धन से ही नहीं, बुद्धि और चरित्र-बल से भी इस ओर सहयोग देना चाहिए।

शराबबंदी के असफल हो जाने की आशंका है, इसीलिये इस विराट् उद्योग को सफल बनाने का महत्त्व है। हिंदू-मुसलमान एवं अन्य सब संप्रदायों को मिलकर देश के सुधार की इस चेष्टा में साथ देना चाहिए।

दारूबंदी देश का चरित्र-सुधार कर ग़रीबों की आर्थिक स्थिति सँभालने की चेष्टा है। यदि यह सफल हो गई, तो संसार में भारतवर्ष का नाम होगा। देश के विद्वान्, लेखक, कवि, उपदेशक, पंडित, संपादक, मास्टर, प्रोफ़ेसर और लीडर, सबको अपनी-अपनी ओर से शराब के विरुद्ध प्रचार करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस-सरकार को आर्थिक हानि के भय से शराबबंदी न करने की सलाह देना कांग्रेस को पथ-भ्रष्ट बनानेवाले प्रलोभन के समान है। कांग्रेस ने असहयोग के समय में हज़ारों स्वयं-सेवकों द्वारा जिन शराब की दूकानों पर धरना दिया, शासन ग्रहण करने के बाद यदि उन शराब की दूकानों के द्वार सदा की भाँति सभी के लिये खुले छोड़ दिए गए, तो वह किस मुँह से अपने कार्यों का औचित्य सिद्ध करेगी ?

शराबबंदी का यह सदुद्योग सफल बनाने के लिये कांग्रेस और कांग्रेस-सरकारों को अत्यंत गंभीर रूप से सचेष्ट होना है।

कांग्रेस के प्रत्येक मेंबर के लिये यह अत्यंत आवश्यक हो कि वह स्वयं शराब के स्पर्श से दूर रहे। यदि कांग्रेस सचमुच देश से शराब बंद कराना चाहती है, तो प्रत्येक कांग्रेस-मेंबर का यह पहला फ़र्ज़ है कि वह अपने अंदर से शराब दूर करे। कांग्रेस-सरकारें जहाँ शराब बंद कराएँ, वहाँ उनके कार्यकर्ताओं का यह धार्मिक कर्तव्य हो जाता है कि दूसरों की शराब बंद करने से पहले वे स्वयं भी शराब का सेवन एकदम बंद करें।

केवल महात्मा गांधी ही नहीं, स्वर्गीय लोकमान्य तिलक और उनसे पहले भी अनेक

लाइमजूस

ऐंड ग्लिसरिन

बालों की परिचर्या प्रसाधन के उपयोगी सुस्निग्ध क्रीम स्नान के पहले और बाद नित्य व्यवहार करने से बाल सब सज जाते हैं, और मुलायम हो जाते हैं।

स्त्री और पुरुष सभी के लिये

४ औंस और ६ औंस की शीशी

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-प्रेमी नेताओं की यह हार्दिक शुभेच्छा थी कि उनके प्यारे भारतवर्ष से शराब दूर हो। आज बड़े सौभाग्य से वह दिन आया है कि देश इस ओर उद्योग करने के लिये अग्रसर हुआ है। ऐसे सुअवसर पर देश के प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक संस्था को इसमें हाथ बँटाना अपना कर्तव्य समझना चाहिए। हिंदू-सभा, मुसलिम लीग और अन्य परस्पर विरोधी तत्त्वों को अपने अन्य भेद-भाव तजकर इस विषय में कांग्रेस का साथ देना चाहिए।

बंबई के व्यापारियों के चेंबर ने यह घोषित किया है कि जब सरकार ने भारत को सूखा बनाने के लिये परीक्षण आरंभ कर दिया है, तब इसमें पूर्ण सहयोग देकर इसे सफल बनाने ही में देश और समाज का नाम है। बंबई के गवर्नर ने इस परीक्षण के लिये सहानुभूति रखने को घोषित किया है कि सरकारी भोज भी सूखे रहेंगे। अब देश के शिक्षित और अशिक्षित आबाल-वृद्ध नर-नारी का कर्तव्य है कि वे बंबई-प्रांत के इस परीक्षण को सफल बनाकर वह दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त करें, जब सारे भारतवर्ष से शराब दूर हो जाय।

× × ×

७. दो तरफ़ से ख़तरा !

अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति दिनोंदिन जैसी भयावह होती जा रही है, उससे भारत के संबंध में प्रत्यक्ष ख़तरा नज़र आने लगा है। रूस द्वारा पोलैंड की लूट में शामिल होने तथा रूस और जापान में संधि हो जाने से अब यह दिखलाई देता है कि योरप के युद्ध की चिनगारी एशिया में भी पड़ गई। ख़बर है कि टर्की और रूस में भी संधि की शर्तें तय हो चुकी हैं। इन दिनों रूस अपने तटवर्ती देशों से संधि करने में लगा हुआ है, और इसमें उसका कोई विशेष उद्देश्य छिपा है। दुनिया के लोगों के सामने आजकल तीन पुरुषों के नाम जल्दी-जल्दी आते हैं। उनमें मि० चैंबरलेन अपनी बेवक़ूफ़ी के लिये, हिटलर मदांधता के कारण और स्टेलिन अपनी चाणक्य-नीति के लिये नाम पा रहे हैं। चैंबरलेन साहब पहले ग़लती न करते, और हिटलर की हरकतों पर पहले से ही रोक-थाम लगा दी जाती, तो आज पोलैंड का विध्वंस दिखाई न देता। फिर भी इस युद्ध से जर्मनी से अधिक रूस का लाभ हुआ है। पोलैंड में से जर्मनी को केवल उतना ही हिस्सा मिला, जितने की माँग उसने की थी; शेष भाग रूस के अधिकार में आ गया। बालकन राज्यों की तरफ़ जर्मनी की प्रगति को रूस ने रोक दिया है। इसका अर्थ यह है कि रूस जर्मनी को पश्चिम-योरप में ब्रिटेन और फ़्रांस से भिड़ा देने की तरकीबें लड़ा रहा है, और हिटलर आज स्टेलिन के हाथ का खिलौना बन गया है। यह निश्चय है कि रूस जर्मनी को खाद्य सामग्री और दूसरे प्रकार की सहायता देगा। जर्मनी और रूस में सैद्धांतिक शत्रुता है, इसे न हिटलर भूल सकता है, और न स्टेलिन। पर हिटलर आजकल मजबूर है, और स्टेलिन मौक़े से पूरा लाभ उठाना चाहता है। योरप के महायुद्ध में जर्मनी और प्रजातंत्रवादी देशों को परस्पर जूझते देखकर वह एशिया में ज़रूर कोई खेल खेलेगा। इसी के लिये उसने अपने पड़ोसी राष्ट्रों से दोस्ती गाँठी है। एशिया में ऐसा कौन देश है, जिस पर रूस की गृद्ध-दृष्टि नहीं पड़ रही है। चीन के संबंध में वह जापान से दोस्ती कर चुका। पश्चिमी एशिया के मुसलिम राष्ट्रों से उसकी संधि है। तब केवल भारत ही ऐसा देश रहता है, जो स्वतंत्र राष्ट्र नहीं, और यदि अँगरेज़ योरप के युद्ध में बुरी तरह फँस गए, तो रूस की लाल सेना भारत की भूमि पर अपने क़दम बढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है । उत्तर में खीवा-बुख़ारा के प्रदेश भारत की सीमा से मिले हुए हैं । वहाँ रूस की प्रभुता है । उधर जापान ने रूस के साथ संधि करते ही अँगरेज़ों को फिर क्रुद्ध दृष्टि से देखना शुरू कर दिया है । तब एक तरफ़ रूस और दूसरी तरफ़ जापान, इन दो क्रुद्ध ग्रहों की निगाहें भारत की तरफ़ लगी हुई हैं । संभव है, रूस चीन में जापान को खुलकर खेल खेलने की आज़ादी दे दे, और उसके बदले में भारत को अपना क्रीड़ा-स्थल बनाने की कोशिश करे । जो हो, हमारे लिये 'जैसे साँपनाथ' 'तैसे नागनाथ ।' इस अवस्था में हमें किसी भी बाहरी शक्ति का विरोध करने के लिये तैयार रहना पड़ेगा । इसके लिये ब्रिटेन और भारत के सहयोग की बड़ी ही आवश्यकता है । समय का यह तक़ाज़ा है कि पिछली बातें भूलकर भारत और इँगलैंड एक दूसरे के अधिक निकट आवें । इसके लिये पहले इँगलैंड को अपनी तरफ़ से मेल का हाथ बढ़ाना चाहिए । और, यह तभी हो सकता है, जब इँगलैंड भारत के राजनीतिक असंतोष को दूर करने के लिये देश की राष्ट्रीय माँग स्वीकार कर ले, तब भारत को भी तन, मन, धन से युद्ध में ब्रिटेन की सहायता करनी चाहिए । हम यह साफ़ कह दें कि किसी अन्य सत्ता के मुक़ाबले हम अँगरेज़ी सत्ता को तरजीह देते हैं, और इँगलैंड तथा भारत में परस्पर भाईचारे का संबंध चाहते हैं ।

× × ×

८. हरिजनों को मंदिर-प्रवेश का अधिकार

हिंदुओं की जाति-पाँति-प्रथा न केवल हिंदू-समाज के लिये, बल्कि राष्ट्र के लिये भी बड़ी अहितकर है । इस पर हम इन कालमों में पहले भी प्रकाश डाल चुके हैं । इस जाति-भेद और ऊँच-नीच के भाव के कारण ही हिंदू-समाज का एक अंग अभी तक मानवीय अधिकार से वंचित है । और बातें जाने दीजिए, जिस सर्वव्यापी और समदर्शी ईश्वर की प्रतिमा पूजने और उसके दर्शन करने का मनुष्य-मात्र को अधिकार है, उसे भी कुछ लोगों ने अपनी वैयक्तिक संपत्ति बनाकर रख छोड़ा है । देव-मंदिरों में अछूत कहे जानेवाले लोगों को प्रवेश न करने देना मनुष्यता के प्रति कलंक है, पर रूढ़िपंथी कट्टर लोग इन उपदेशों को कब माननेवाले हैं ? अब तक हरिजनों के मंदिर-प्रवेश के लिये जितना आंदोलन हुआ, उससे भी इन लोगों पर प्रभाव नहीं पड़ा । अतः मदरास-सरकार ने तो अपने यहाँ मंदिर-प्रवेश-बिल बनाकर एसेंबली में उसे पास करा लिया है । इस क़ानून के अनुसार हरिजनों के मंदिर-प्रवेश पर कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा । मंदिर के ट्रस्टी और अधिकारीगण सरकार की स्वीकृति लेकर किसी भी मंदिर को हरिजनों के लिये खोल सकते हैं । हम इस क़ानून का स्वागत करते हैं । यद्यपि धार्मिक और सामाजिक मामलों में सरकार के विशेष नियंत्रण और क़ानूनों का हम सदैव समर्थन नहीं कर सकते । हमारा विचार है, इन मामलों में सरकार जितना कम दख़ल दे, उतना ही अच्छा । पर तब भी किसी सामाजिक सुधार के संबंध में इतना लोकमत जाग्रत् हो चुका है, तो उसे थोड़े-से रूढ़िवादी लोगों के कहने से व्यवहार में न लाया जाना हमें पसंद नहीं । इसके लिये यदि क़ानूनी शक्ति का आश्रय लिया जाय, तो अच्छा ही है । टर्की में स्व० कमाल पाशा ने क़ानून द्वारा मुसलमानों की कट्टरता ख़त्म कर दी । जहाँ प्रचार असफल हो जाय, वहाँ क़ानून से सफलता प्राप्त करनी चाहिए ।

× × ×

९. तबर्रा और ख़ाकसार-आंदोलन

यह प्रसन्नता की बात है कि मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के प्रयत्नों के फल-स्वरूप शिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुन्नी मुसलमानों के झगड़ों का अंत हो गया। यद्यपि वातावरण पूर्ण शांत कुछ समय बाद ही होगा, जब कि दोनो पक्ष समझौते की शर्तों का ठीक-ठीक पालन करने लगेंगे, पर इस समझौते के फल-स्वरूप तबर्रा-आंदोलन बंद कर देने से चारो ओर शांति का वातावरण पैदा हो गया है। इससे न केवल मुसलमानों की आपस की कलह शांत हो गई, बल्कि प्रांतीय सरकार की एक बड़ी ज़िम्मेदारी और इस आंदोलन के फल-स्वरूप उसके ऊपर जो बोझ पड़ा हुआ था, वह भी हलका हो गया। जब से यह झगड़ा शुरू हुआ, तब से सार्वजनिक शांति के लिये भी ख़तरा पैदा हो गया था, अतः इस संबंध में हम मौलाना आज़ाद के सत्प्रयत्न की प्रशंसा करते और जिन व्यक्तियों ने इस समझौते में सहयोग दिया, उन्हें धन्यवाद देते हैं!

लेकिन इसके साथ ही एक दूसरा झगड़ा, जिसे ख़ाकसारों का आंदोलन कहा जाता है, नया रूप धारण करता जाता है। इस आंदोलन के नेता युक्त प्रांत में अपनी कारगुज़ारी का सबूत दे चुके हैं। उससे उनके कार्य, उद्देश्य और साहस का भी पूरा पता चल जाता है। आपने यह घोषित किया है कि ख़ाकसार आंदोलन सांप्रदायिक नहीं। आपने बड़े गर्व के साथ यह घोषणा भी की कि मैं शिया-सुन्नी झगड़े को अपनी शक्ति से ख़त्म कर दूँगा। लेकिन वह बात अलग रही, आपने और आपके दल के लोगों ने जगह-जगह अपनी हरकतें शुरू कर दी हैं। पहले जब आप सार्वजनिक शांति को ख़तरे में डालने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए, तो आपने सरकार को अपनी नेकचलनी की सफ़ाई दी, और यह भी कहा कि यू० पी० में आगे से मेरी हरकतें बंद हो जायँगी, और मैं फिर इस प्रांत में प्रवेश न करूँगा। इसी आश्वासन पर आप छोड़ दिए गए। लेकिन फिर आपको होश आया कि इस बात से आपकी किरकिरी हुई है, और फल-स्वरूप खाक़सारों ने जगह-जगह अपनी हरकतें शुरू कर दीं, और उनकी गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं, तथा सज़ा भी दी जा रही है। पता नहीं, इस आंदोलन में किस शक्ति का छिपा हुआ हाथ है। पर यह निश्चित है कि इस आंदोलन को सांप्रदायिक उत्तेजना का बल मिल रहा है, और शिया-सुन्नी-झगड़े का अंत होने के कारण कट्टर मुसलमानों की तरफ़ से यह नया शिगूफ़ा छोड़ा गया है, जिसका उद्देश्य सरकार को बदनाम करना और उसके शासन की कमज़ोरी बतलाना है। पर हम सरकार से यह अपील करेंगे कि वह काफ़ी मुस्तैदी और सख़्ती से काम ले, और इस आंदोलन को आगे बढ़ने से पहले ही कुचल दे, जिसमें कुत्सित मनोवृत्ति के लोगों का अभीष्ट सिद्ध न हो सके, और देश में अमन-चैन क़ायम रहे।

× × ×

१०. काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय और महामना मालवीयजी

भारत का यह वृद्ध तपस्वी लगभग ६० वर्ष तक इस देश और समाज की अनवरत सेवा करने के बाद अब क्रियात्मक जीवन से अवकाश ले रहा है, और भगवद्भजन की उस पुण्य-अवस्था में जा रहा है, जो भारत का प्राचीन आदर्श है। महामना पं० मदनमोहनजी मालवीय के नाम के साथ एक भव्य, सफ़ेद खादी-वस्त्र-वेष्टित, कृश-शरीर और सौम्यता तथा ब्रह्मतेज लिए हुए मुख-मंडलवाली मूर्ति का चित्र सामने आ जाता है। भारतीय नेताओं में इतने दीर्घ समय तक जनता की सेवा करनेवाला अन्य व्यक्ति पैदा नहीं हुआ। पूज्य मालवीयजी का जीवन तप, त्याग, सेवा और पुण्य का जीवन है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आपका आदर्श अनुपम है। न केवल राष्ट्रीय क्षेत्र में ही, बल्कि सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों

माननीय पं० मदनमोहनजी मालवीय

में भी आपकी सेवाएँ महान् हैं। भारतीय नेताओं में केवल महामना मालवीय ही ऐसे नेता हैं, जिनकी सेवाएँ चौमुखी हैं। राष्ट्रीय महासभा के आप प्राचीन स्तंभ हैं, और कई बार आप राष्ट्र-पति का पद अलंकृत कर चुके हैं। हिंदू-महासभा की तो आप जान हैं, और उसके संस्थापक हैं। देश में जब-जब राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन शुरू हुए, तब-तब महामना मालवीय जी अपना दृष्टिकोण लेकर सबसे आगे खड़े दिखाई दिए। शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद आपने अपना समस्त जीवन राष्ट्र और समाज की सेवा के लिये अर्पित कर दिया। आज भी आप निरंतर रुग्णावस्था में देश के कार्यों से उदासीन नहीं रहते। आपके कार्यों का एक बड़ा स्मारक काशी का हिंदू-विश्वविद्यालय है। इस विद्यालय की एक-एक ईंट, शिला और चूने से पूज्य मालवीयजी के नाम की मौन ध्वनि निकलती है। मालवीयजी ने उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली ईंट से लेकर उसे एक विशाल युनिवर्सिटी बनाने तक निरंतर कार्य किया है। आपने बीस वर्ष तक इस संस्था की अथक सेवा की।

अभी उस दिन हिंदू-विश्वविद्यालय कोर्ट का एक विशेष अधिवेशन हुआ। इसमें मालवीयजी का वाइस-चांसलर के पद से त्याग-पत्र स्वीकार किया गया, और सर एस्० राधाकृष्णन् की इस पद पर नियुक्ति की गई। प्रो-वाइस-चांसलर राजा ज्वालाप्रसाद ने महात्मा गांधी तथा कुछ भारतीय नरेशों के संदेश पढ़कर सुनाए, और मालवीयजी के कार्य की प्रशंसा की। मालवीयजी ने हिंदी में ही छोटा-सा उत्तरात्मक भाषण देते हुए कोर्ट, स्व० महाराजा दरभंगा, महाराजा बनारस, डॉ० एनी बीसेंट, डॉ० भगवानदास तथा अन्य सहयोगियों को धन्यवाद दिया। इसके पश्चात् आपने अपने उत्तराधिकारी सर एस्० राधाकृष्णन् का परिचय देते हुए आशा प्रकट की कि विश्वविद्यालय और भी अधिक उन्नति करेगा। सर राधाकृष्णन् तीन वर्ष के लिये वाइस-चांसलर नियुक्त हुए। महाराजा दरभंगा की ओर से ५०,०००) और महाराजा कोटा की ओर से २५,०००) के चेक नए वाइस-चांसलर को दिए गए। महाराजा दरभंगा ने 'कोचीन-भवन' की नींव रक्खी।

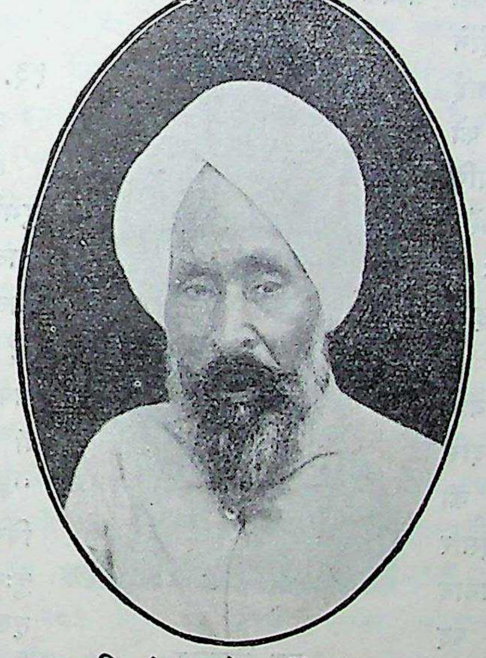

महाकवि पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

सर राधाकृष्णन् ने मालवीयजी के अवकाश-ग्रहण पर दुःख प्रकट करते हुए कहा—"मालवीयजी में भगवान् कृष्ण की यौगिक और धनुर्धारी अर्जुन की धानुषिक, दोनो शक्तियाँ हैं। यह महान् योगी संस्था से अवकाश ग्रहण करके भी हृदय से इसके साथ रहेगा।"

इस अवसर पर हम पूज्य मालवीयजी के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते और आशा करते हैं कि श्रीयुत राधाकृष्णन्-जैसे सुयोग्य व्यक्ति के निरीक्षण में हिंदू-विश्वविद्यालय का पौदा और भी फूले-फलेगा, और वह पूज्य मालवीयजी के सच्चे उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे। ईश्वर मालवीयजी को शतायु करें।

× × ×

११. 'हरिऔधजी' का सम्मान

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के सभापति पं० रामनारायणजी मिश्र और मंत्री पं० रामबहोरीजी शुक्ल सूचित करते हैं—

"कवि-सम्राट् पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का ७५वाँ वर्ष पूरा हो गया। हिंदी-साहित्य की जो महत्त्व-पूर्ण सेवाएँ उनके द्वारा हुई हैं, वे हमारे गौरव की वस्तु हैं। ऐसे साहित्य-सेवी को पाकर हिंदी-संसार को गर्व होना सर्वथा उचित है।

"'हरिऔध'जी का ७५वाँ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष में उनके सम्मान के लिये नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी का एक विशेष अधिवेशन आगामी हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर होगा। इस उत्सव में सभा को सहयोग देकर 'हरिऔध'जी के प्रति अपनी श्रद्धा और आदर-भाव प्रकट करना आपका भी कर्तव्य है। आप उनकी रचनाओं से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और उनके व्यक्तित्व से भली भाँति परिचित हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप कृपा कर 'हरिऔध'-जी के संबंध में अपनी सम्मति यथाशीघ्र भेज दें, और सम्मतियों को प्रकाशित कराने तथा इस उत्सव को सफल बनाने के लिये कुछ धन देकर सभा की सहायता करें।"

हम हृदय से इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हैं। 'हरिऔध'जी की बहुमुखी प्रतिभा की प्रशंसा करके सूर्य को दीपक दिखाना होगा। राष्ट्र-भाषा की सेवा करते हुए उन्हें ५० वर्ष से भी कहीं अधिक हो गए हैं। इस दीर्घ काल में उन्होंने अनेक विषयों पर क़लम चलाई है। हम हिंदी-भाषा-भाषियों को महाकवि 'हरिऔध'जी पर अभिमान है। ईश्वर उन्हें शतायु करें।

× × ×

१२. हिटलर क्या मेघनाद का अवतार है ?

बिहार के श्रीअनंतप्रसाद बी० एल्० ने भक्त-शिरोमणि सूरदास का अध्ययन करते हुए खोज की है कि भक्त कवि के कथनानुसार हर हिटलर रावण के पुत्र मेघनाद का अवतार है। आपने जिस पद के आधार पर यह निर्णय किया है, वह इस प्रकार है—

हर हिटलर

"एक सहसु नौ सौ के ऊपर ऐसो जोग परे ;
पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन चहुँदिसि गदर परे।
मेघनाद रावन के बेटा पच्छिम जनम धरे ;
तेज तुरुक को यों दाहे, ज्यों पावक पतँग जरे।
असी वर्ष सतजोग को व्यापे धर्म की बेल बढ़े ;
'सूरदास' प्रभु की यह बानी टारेहूँ न टरे।"

पद में आए तुरुक का शब्दार्थ न लेकर भावार्थ अविश्वासी, धर्म में जिसका विश्वास न हो, लेना चाहिए। सूरदास ने, भावी विनाश जिस प्रकार होगा, उसकी ओर भी संकेत कर दिया है। आपका कहना है कि खुली लड़ाई न होकर मानव-जाति का विनाश और क़त्ले-आम 'ज्यों पावक पतँग जरे' के समान होगा। इसी के आधार पर श्रीअनंतप्रसाद ने यह परिणाम निकाला है कि हर हिटलर ही मेघनाद का अवतार है, क्योंकि उसके युद्ध का भी ढंग यही है।

साहित्य-सेवियों, राजनीतिज्ञों और ज्योतिषियों को इस पर विचार करना चाहिए !

× × ×

१३. विद्यावाचस्पति श्रीमधुसूदन-जी ओझा का स्वर्गवास !

हम भारतीयों का यह परम दुर्भाग्य है कि हमारे देश के प्रतिभा-शाली, प्रकांड विद्वान् एक-एक करके काल के कराल गाल में चले जा रहे हैं ! किंतु इस अटल नियम का अपवाद करने की सामर्थ्य न किसी में थी, न है, और न होगी। "जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः।" यही विचार इस विद्वद्वियोगजन्य दुःखार्णव में निमग्न हम लोगों को तृणवत् साहाय्य प्रदान करता है। अस्तु। अभी उस दिन, २७ । ६ । ३६ को, वैदिक विज्ञान और वैदिक इतिहास के अन्वेषक, जयपुर-राज्य के प्रधान राजपंडित, गुरुवर, विद्यावाचस्पति श्रीमधुसूदनजी ओझा का स्वर्गवास, ७३ वर्ष की अवस्था में, हो गया ! आपके निधन से विद्वत्समाज में जो त्रुटि हुई है, उसकी पूर्ति होना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

आपका जन्म मिथिला-देश के मुज़फ़्फ़रपुर-ज़िले के 'गाढ़ा'-नामक ग्राम में, जो रेलवे-स्टेशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीतामढ़ी से दक्षिण की ओर क़रीब १० मील है, पंडित श्रीवैद्यनाथजी ओझा के घर, सं० १९२३ वि० में, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (भाद्र-कृष्ण-अष्टमी) को, रात्रि को १० ½ बजे हुआ था। आपका कुल प्रसिद्ध विद्वानों का कुल है। आपके पितामह पं० श्रीदेवनाथजी ओझा सम्भोलिया-राज्य के प्रधान पंडित थे। वह सभी शास्त्रों के गंभीर विद्वान् थे। सम्भोलिया-राज्य से जो भूमि उन्हें जीविकार्थ मिली थी, वह अब तक इस वंश के अधिकार में है। आपके कुटुंब में सन्निहित पितृव्य पं० श्रीतुलसीदत्तजी ओझा प्रकांड विद्वान् थे। आपने काशी में ही निवास किया था। असीघाट के समीप इनका मकान अब भी मौजूद है। व्याकरण में नवीन युग उत्पन्न करने-वाले दाक्षिणात्य पंडित श्रीकाशीनाथजी शास्त्री काशी-भर में आपको ही विशिष्ट विद्वान् मानते थे। अन्य शास्त्रों के अतिरिक्त मंत्रशास्त्र पर भी आपका असा-धारण अधिकार था। श्रीमधुसूदनजी के ख़ास पितृव्य श्रीराजीवलोचनजी ओझा ने जयपुर-राज्य में अतुल सम्मान और पूर्ण जीविका प्राप्त की थी।

श्रीराजीवलोचनजी ओझा के कोई पुत्र न था, इससे इन्होंने अपने भ्राता के पुत्र श्रीमधुसूदनजी ओझा को ही अपना पुत्र बनाया, और ९ वर्ष की अवस्था में ही, सं० १९३२ वि० में, अपने पास जयपुर बुला लिया। इस समय तक श्रीमधु-सूदनजी ने केवल कोष आदि की साधारण शिक्षा प्राप्त की थी। जयपुर आकर पहले आप भाषा-ज्ञान के उद्देश्य से कुछ दिन प्राइवेट अँगरेज़ी-फ़ारसी पढ़ते रहे। फिर इन भाषाओं के साधारण ज्ञान के अनंतर आपकी नियमबद्ध संस्कृत-शिक्षा जयपुर में ही प्रारंभ हुई। अध्ययन-काल में ही आपकी चमत्कृत प्रतिभा देखकर गुरुजन आपसे परम संतुष्ट रहते थे, और आपकी प्रौढ़ता की चर्चा इधर-उधर फैलने लगी थी।

संयोग-वश कुछ दिन बाद आप अपने पिता आदि कुटुंबियों की आज्ञा लेकर अध्ययनार्थ काशी चले गए। वहाँ दरभंगा-पाठशाला में स्वनामधन्य श्रीशिवकुमारजी शास्त्री के समीप विद्याध्ययन करने लगे। बस, फिर क्या था "रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन।" का पूरा निदर्शन उपस्थित हो गया। जैसी आपकी विचित्र प्रतिभा, वैसे ही अलौकिक विद्वान् गुरु। काशी में रहकर आपने व्याकरण, न्याय, साहित्य, मीमांसा, वेदांत आदि के मुख्य-मुख्य सभी ग्रंथों का गुरु-मुख से न केवल अध्ययन कर लिया, प्रत्युत उन पर पूर्ण अधिकार भी प्राप्त कर लिया।

काशी में रहते ही आपके शास्त्रार्थ और विषय-निरूपण-शैली आदि की अच्छी प्रसिद्धि हो गई थी। सुप्रसिद्ध विद्वान् भी आपको सम्मान की दृष्टि से देखते और बड़े-बड़े विद्वानों की सभाओं में भी आपको शास्त्रार्थ का अवसर मिलता था। उन दिनों आर्य-समाज का प्रभाव शनैः-शनैः चारो ओर फैल रहा था। काशी में भी आर्य-समाज के प्रचारक बराबर व्याख्यानों द्वारा सनातनधर्म के सिद्धांतों के उपमर्दन में सयत्न थे। आपके गुरुदेव श्रीशिवकुमारजी शास्त्री सनातनधर्म पर प्रहार होते देख न सकते थे। समय-समय पर आस्तिक जनता के समक्ष सनातनधर्मावलंबियों की सभा में उन आक्षेपों का प्रतीकार एवं सामाजिक विद्वानों का शास्त्रार्थ के लिये आह्वान भी करते थे। एक बार, सं० १९४५ में, एक ऐसी ही सभा में आप गए। जब सभा से लौटे, तो वैदिक सिद्धांतों की दुरवस्था होती देख आपका चित अत्यंत खिन्न हो रहा था। आपने श्रीमधुसूदनजी में इस भार के ग्रहण की योग्यता जानकर उन्हें अपने पास बुलाया, और आदेश दिया—"तुम सत्य वैदिक सिद्धांतों का प्रकाश करने में अपना जीवन लगाओ। तुममें इस कार्य की शक्ति है। और,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हें वैदिक अर्थों का यथार्थ प्रतिभान होगा।" श्रीमधुसूदनजी ने भी गुरु के आज्ञानुसार उनके समत्त वैदिक विवेचन में जीवन लगाने की उसी समय प्रतिज्ञा कर ली। भला, यह कब हो सकता था कि ऐसे महानुभाव विद्वान् व्यक्ति की प्रतिज्ञा विफल हो। साथ ही तपस्या और विद्या की मूर्ति, विश्वेश्वर-विभूति-भूत स्वर्गीय श्रीशिवकुमारजी शास्त्री का आशीर्वाद भी कैसे विफल हो सकता था। बस, जो कुछ वैदिक आविष्कार ओझाजी द्वारा हुए हैं, उनका सूत्रपात उसी दिन हो चुका था।

आप षट् शास्त्रों के अतिरिक्त वैदिक साहित्य के अद्वितीय विद्वान् थे। आपकी प्रतिभा अपूर्व थी, आपका पांडित्य महान् था। आपने संस्कृत में २०० से ऊपर ग्रंथों का निर्माण किया। ऐसी अनेक घटनाएँ हैं, जो आपकी अलौकिक विद्या-बुद्धि की परिचायिका हैं, किंतु स्थानाभाव से उन सबका उल्लेख करने में हम असमर्थ हैं।

अंत में हम अत्यंत दुःख-पूर्ण हृदय से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह ओझाजी की महानात्मा को शश्वच्छांति एवं उनके दुःखित कुटुंब को धैर्य प्रदान करें।

आनरेबल डाक्टर सर गोकुलचन्द नारंग

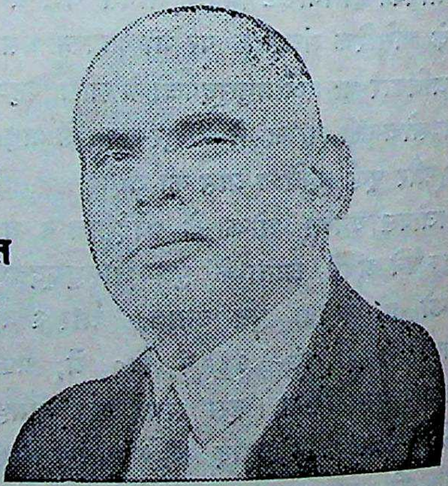

भूतपूर्व वजीर (मंत्री) पंजाब गवर्नमेंट लिखते हैं—"मुझे आपकी विवाहित आनन्द, पत्नी पथ प्रदर्शक आदि पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। मैं इन्हें बहुत लाभदायक पुस्तकें समझता हूं। हमारे देश के स्त्री—पुरुषों को ऐसे पथ प्रदर्शन की बहुत आवश्यकता थी। अब विद्यार्थियों के लिए भी एक हदायत-नामा लिखें।"

ये पुस्तकें सब बुकसेलर और रेलवे बुकस्टाल बेचते हैं।

कविराज हरनामदास बी० ए०, लोहारी अड्डा, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-जगत् में अब तक जिसकी प्रतीक्षा थी, वही ग्रंथ तैयार है !!

बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा हुआ

हिंदी-साहित्य का इतिहास

(लेखक—'मिश्रबंधु')

याद रखिए ! साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण
ग्रंथ आपने न देखा होगा, 'मिश्रबंधु' ही सबसे प्रथम
इस प्रयास में आगे बढ़े हैं, हिंदी-भाषा में ऐसी
प्रामाणिक पुस्तक आपको सुलभ है।

शीघ्र मँगाइए।

पृष्ठ-संख्या लगभग ३७०

मूल्य ११।) सजिल्द २)

कविता ! हाँ—जीवन का वह सत्य, जिसे जड़-चेतन की अनुभूति से व्यापकता मिली !

हृदय के कोमल तारों से प्रतिध्वनित संगीत !

आपका जीवन भी एक कविता है ! — आत्मानुभूति का सजीव चित्रण !

कल्पना की गति का शब्द-चित्र !

आज ही पढ़िए ! अभी मँगाइए !! प्रकाशित हो गया !!!

इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ सरस सामयिक भावमय काव्य-संग्रह

* म क रं द *

[लेखिका—स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी']

सर्वथा नवीन ! हृदय-स्पर्शी ! सजीव ! सुबोध ! लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ !

हिंदी-साहित्य में स्वर्गीया श्रीमती 'चकोरी' की कविताओं को कितना ऊँचा
स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री
की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह भी 'किंजल्क' से भी बढ़कर
लोकप्रिय बनेगा, [illegible] बोली में ऐसी सुंदर कविता-पुस्तक
इस वर्ष प्रकाशित ही नहीं हुई, अवश्य मँगाइए !

सादी [illegible] सजिल्द [illegible]

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, [illegible], [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

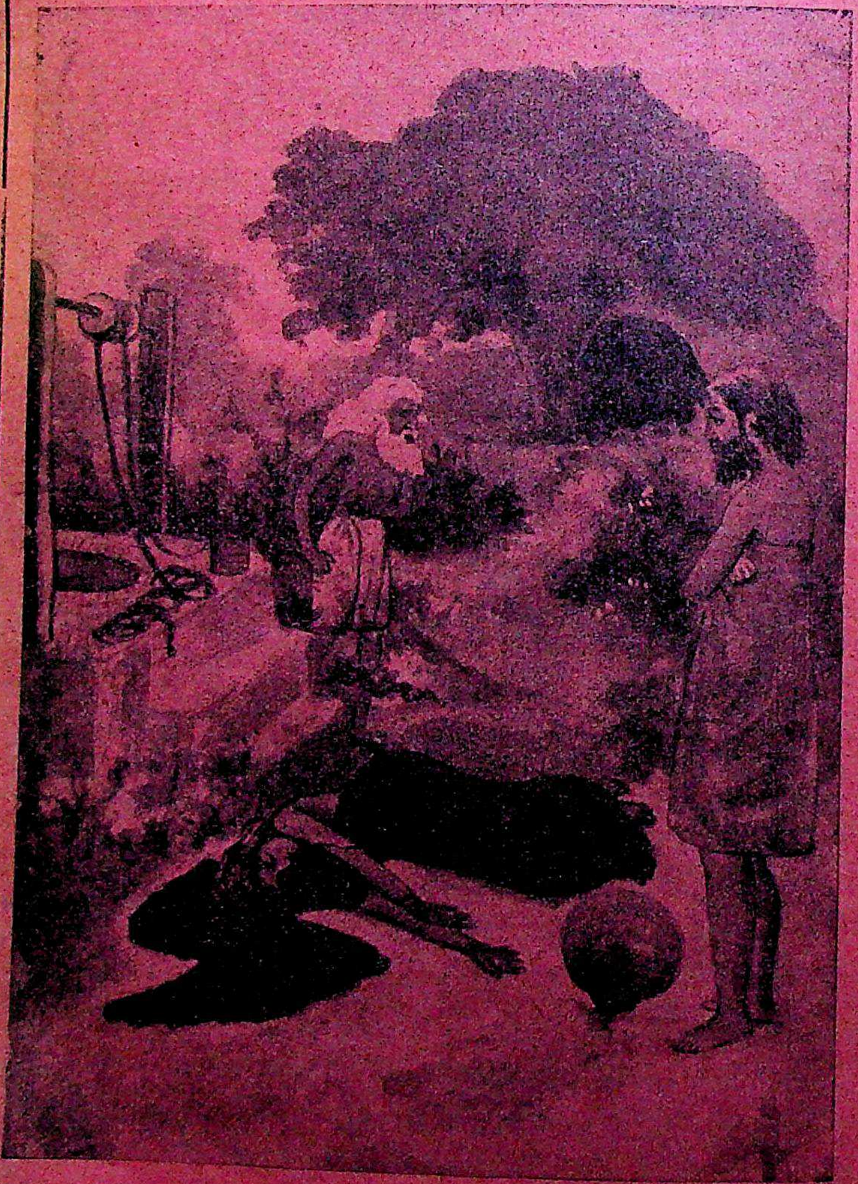

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कठिन जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में कांग्रेस क्यों आंदोलन कर रही है ?

यह जानना हो, तो

श्रीनाथसिंह-लिखित

जागरण-उपन्यास पढ़िए !

देशी राज्यों में अधिकारी कैसी मनमानी करते हैं ?
स्त्रियों का सतीत्व तक अपहरण करने
के लिये क्या-क्या चेष्टाएँ की जाती हैं ?
राष्ट्रीय आंदोलन को किस तरह
कुचला जाता है ?
और अंत में संगठित प्रजा की
किस तरह जीत हो सकती है ?
आदि-आदि बातों पर प्रकाश
डालनेवाला यह हिंदी का
एक-मात्र उपन्यास है ।
मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! छप गया !! छप गया !!!

क्या ?

धीरे-धीरे

(हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम व्यंग्य !)

इसके लेखक हैं हिंदी-साहित्य के सर्वोत्तम उपन्यासकार श्रीवृंदावनलालजी वर्मा ऐडवोकेट।

इसमें मौजूदा राजनीतिक हलचल का ख़ाका जितनी ख़ूबसूरती के साथ खींचा गया है, उस पर आश्चर्य होता है।

इस मीठी चुटकी के लेनेवाले हिंदी-साहित्य के सिद्धहस्त कलाकार हैं। चुटकी से आप को आनंद की गुदगुदी का एकबारगी अनुभव होगा।

क्या लिबरल, क्या ज़मींदार और क्या कांग्रेसी—गांधी आईट अथवा सोशलिस्ट और क्या कम्यूनिस्ट—सभी इसे पढ़कर एक बार आनंदित हो उठेंगे।

इससे आपको वास्तविक मानसिक भोजन मिलेगा। यह पूर्णतया मौलिक है। इस अनोखी कृति की एक प्रति शीघ्र ही मँगाइए। सादी ।॥), सजिल्द १)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! बिक रहा !! शीघ्र मँगाइए !!!

आधुनिक हिंदी-कविता की एक अपूर्व पुस्तक

मंदार

लेखक, श्रीगिरिजाशंकर मिश्र 'गिरीश'

'गिरीश' जी अपनी उत्प्रेक्षाओं के लिये काफी प्रसिद्ध हैं। उनकी कल्पना ऊँची, भाव मौलिक, उपमाएँ सुंदर, प्रकृति-चित्रण सजीव और सौंदर्य-वर्णन मनोहारी होता है। उनकी कविताएँ पढ़कर आप आश्चर्य-मुग्ध रह जायँगे।

प्रस्तुत संग्रह में उनकी इंद्र-धनुष, बिंदिया, बन-बाला, तारिका, अश्रु-छवि, जल-विहार, वर्षा-विहार, स्वर-लहरी, कवि की तरंग, स्वर्ग और संसार, अनुभूति और कल्पना आदि अनेक ललित एवं भाव-पूर्ण रचनाएँ हैं।

शीघ्र मँगाइए। मूल्य १), सजिल्द १।।) मात्र।

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर ! हृदयग्राही !! सरस !!!

महारानी दुर्गावती

[राष्ट्रीयता से ओतप्रोत काव्य]

लेखक, पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

भारत की अमर वीरांगना महारानी दुर्गावती के पावन चरित्र की काव्यमय गुण-गाथा का हिंदी में आज तक एकांत अभाव रहा है। किंतु हिंदी-संसार के सुपरिचित कवि और पत्रकार 'मस्त'जी ने सुंदर और वीर-रस-पूर्ण काव्य लिखकर इस कमी की प्रशंसनीय पूर्ति की है। पुस्तक का काव्य इतना रोचक और हृदयग्राही हुआ है कि ग्रामोफ़ोन-कंपनी, बंबई ने इसका रिकार्ड [नंबर एफ़्० टी० ५८८४] तक बना डाला है, और भारत के घर-घर में इस वीरांगना की यश-कहानी गूँज रही है। मूल्य ।=)

पुस्तक शुरू करने पर बिना समाप्त किए आपकी तबियत न मानेगी। हाथ-कंगन को आरसी की क्या आवश्यकता ? हिंदी के राष्ट्रीय साप्ताहिक 'कर्मवीर' और मासिक 'साहित्य-संदेश' की समालोचनाएँ पढ़कर स्वयं निर्णय कीजिए कि यह काव्य कैसा है ?

'कर्मवीर' [खंडवा, ३ जून, ३६]—जीवित चित्र आँकना साधारण कलाकार के बूते भी सहज हो जाता है, किंतु अतीत के मृत इतिहास को सजग कर देने की अँगुली कुछ विशेष सजग प्रतिभा-कण माँगती है। मध्यप्रांत के श्रेष्ठ कवि श्रीदेवीदयाल चतुर्वेदी का यह खंड-काव्य कवि के इसी बाज़ू का सिद्ध प्रमाण है। कोमलकांत भावना को राष्ट्रीयता के ही रंग में रँगा गया है, इसलिये रचना आज के युग-धर्म के साथ है। चमत्कार-पूर्ण कथानक को सरल, सहज वाणी के साथ सरस अभिव्यक्ति भी मिली है, जिससे पुस्तक काफ़ी रोचक हो गई है।

'साहित्य-संदेश' [आगरा, जून, ३६]—'मस्त'जी ने अमरकंटक और रेवा-तट के जो दृश्य खींचे हैं, महारानी दुर्गावती के बचपन का जिस ढंग से वर्णन किया है, और युद्ध के समय पर रानी द्वारा जिस ढंग से सैनिकों को प्रोत्साहित कराया है, वह उनकी कल्पना और भाव-प्रवणता से बहुत सुंदर बन पड़ा है। अकबर की कूटनीति का भी बहुत मोहक चित्र खींचा गया है।

शीघ्र मँगाइए !

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली अगस्त की प्रतीक्षा कीजिए ।

महायुद्ध अनिवार्य है !

क्योंकि हिटलर, मुसोलिनी और दुनिया की हर फ़ाशिस्त ताक़त
अग्रदूत है महायुद्ध का !

और ब्रिटेन तथा दुनिया की हर साम्राज्यवादी ताक़त
मददगार है फ़ाशिस्तों की !

इसलिये सचेत रहने के लिये आपको महायुद्ध के सभी पहलुओं की
जानकारी रखनी चाहिए ।

अवश्य देखिए

युद्धक्षेत्रों के नक्शों और युद्ध के वैज्ञानिक साधनों के भयंकर फ़ोटो-चित्रों के साथ

'प्रगति' का **'महायुद्ध-अंक'**

१५० पृष्ठ, दर्जनों कार्टून और दाम ।=)

३।।) भेजकर वार्षिक ग्राहक बननेवालों को मुफ्त ।
वर्ना महायुद्ध-अंक के बाद वार्षिक मूल्य ३) हो जायगा ।

पता:— **मैनेजर 'प्रगति' लखनऊ ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

मैं एक ज़मींदार का बेटा हूँ। कुसंगतों के कारण मुझे जिरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक-दो साल मैंने लोक-लाज के कारण अपना भेद छिपाए रक्खा, परंतु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा। संसार में चारों ओर से अँधेरा मालूम होने लगा। तब मेरी आँखें खुलीं। रुपया-पैसा की मेरे यहाँ कमी न थी। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डॉक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवाएँ मँगाईं और खाईं, मगर रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। आख़िर मामला यहाँ तक आ पहुँचा कि मैं आत्महत्या की सोचने लगा, और इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर समझने लगा। हमारे गाँव के पास ही एक मील की दूरी पर ईंटों का एक खेड़ा है। कारण-वश उसी खेड़े पर काठियावाड़ के एक प्रसिद्ध त्यागी योगिराज आ बैठे, और एक झाड़ी में आसन लगाकर ईश्वर-चिंतन में मग्न हो गए। गाँव के बालक और युवकों ने जब उन्हें देखा, तो उनकी प्रशंसा गाँव में फैला दी कि खेड़े पर एक महात्मा आए हैं, जो बड़े तेजस्वी प्रतीत होते हैं। यह सुनकर लोगों के समूह-के-समूह उनकी सेवा में जाने लगे। जब मैंने यह सुना, तो मैं निराशा और आशा को साथ लिए उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। उस तेजस्वी के आत्मदर्शन करते ही मेरा चित्त गद्‌गद और प्रसन्न हो गया, और मैं नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। महात्माजी मेरी दशा देखकर फ़ौरन् ताड़ गए, और मेरी ओर आकर्षित होकर बोले कि बेटा, तुम बड़े निराश और दुखी मालूम होते हो, क्यों, तबियत कैसी है, और तुम्हारे दुखी होने का क्या कारण है? बस, फिर क्या था, जैसे मेरे दिल के घावों को किसी ने छेड़ दिया हो, मैं फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजी यह दशा देखकर बेचैन हो उठे, और मेरे पास आकर मुझे धीरज देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने अपनी बीमारी का सारा हाल उनके सम्मुख रख दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई, इसके पश्चात् उन्होंने एक प्रयोग मुझे बतलाया, जिसको बनाकर मैंने सेवन किया, अब बिलकुल नीरोग हूँ। प्रयोग—असली त्रिफला चूर्ण ५ तोला, असली सूर्यतापी शिलाजीत २॥ तोला, असली वंग भस्म ६ माशा, असली सूर्य छाप केशर ६ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नैपाली कस्तूरी १ रत्ती, इन सब ओषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतलचीनी का तेल २० बूँद, बहरोज़ा का तेल २० बूँद, इत्र संदल २० बूँद मिलावे। इसके बाद ताज़ा ब्राह्मी बूटी के अर्क़ १२ घंटे तक घोटकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें, और साया में सुखा लें। बस, ओषधि तैयार है। सेवन-विधि—एक गोली प्रातः और एक गोली सायंकाल पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शकर मिलाकर खाएँ। इस ओषधि के सेवन से ४० रोज़ में स्वस्थ हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से मेरे तीन बच्चे हैं, जो बिलकुल ही तंदुरुस्त हैं। उस वक़्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के-दाम पर दे रहा हूँ, जिससे सैकड़ों व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग ऊपर भली प्रकार समझा दिया गया है। इसको बनाकर लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ हों या कारोबार के कारण आपको फ़ुरसत कम मिलती हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी-बनाई ओषधि मँगा लें, और उसके आश्चर्य-जनक गुण देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों क़िस्म के प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, पाख़ाना के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सुज़ाक, सुस्ती, कमज़ोरी और नामर्दी, जवानी में बुढ़ापे की हालत, असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो जाना वग़ैरह दूर करके अत्यंत ही ताक़त देती है, और नस-नस में जीवन-संचार करती है। क़ीमत पूरी ख़ूराक ८० गोली के दो पैकट का ४), डाक-ख़र्च माफ़, मनीऑर्डर-फ़ीस ≈)

निवेदक—बाबू श्यामलालजी रईस,

प्रेमवटी-ऑफ़िस, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, ज़िला इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक-बालिकाओं का मनोरंजन करनेवाला

बाल-विनोद

जनवरी का अंक वसंतांक है !

मार्च का अंक होलिकांक है !!

अगस्त का अंक कविता-अंक है !!!

ग्राहक बनकर कोई एक विशेषांक मुफ़्त लें

इसमें क्या है ?—सुनिए—

१. मुख-पृष्ठ पर प्रतिमास नई नयनाभिराम तिरंगी प्रतिमूर्ति ।
२. प्रथम पृष्ठ पर २ दुरंगे तथा १ तिरंगा चित्र ।
३. विविध चित्रों से सुसज्जित सुधा-साइज़ के ४० पृष्ठों का मैटर ।
४. मज़ेदार बालकोपयोगी कहानियाँ और शिक्षाप्रद हास्यरस की कविताएँ ।
५. मनोरंजक और ज्ञान-वर्धक नए-नए आधुनिक आविष्कारों के वर्णन ।
६. देश-विदेश की अनोखी बातें ।
७. २५ इकरंगे और दुरंगे चित्र, जिनको देखकर आप हँसते-हँसते लोट-पोट हो जायँगे ।

वार्षिक मूल्य २॥)

आप अपने बच्चों के लिये इसे अवश्य मँगाइए !

हमारा दावा है कि बच्चों के लिये ऐसा सुंदर और अनूठा पत्र और कोई नहीं है ।

इसके संपादक हैं

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

ऑर्डर भेजने में देर मत कीजिए !

पता—मैनेजर, बाल-विनोद, कवि-कुटीर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712

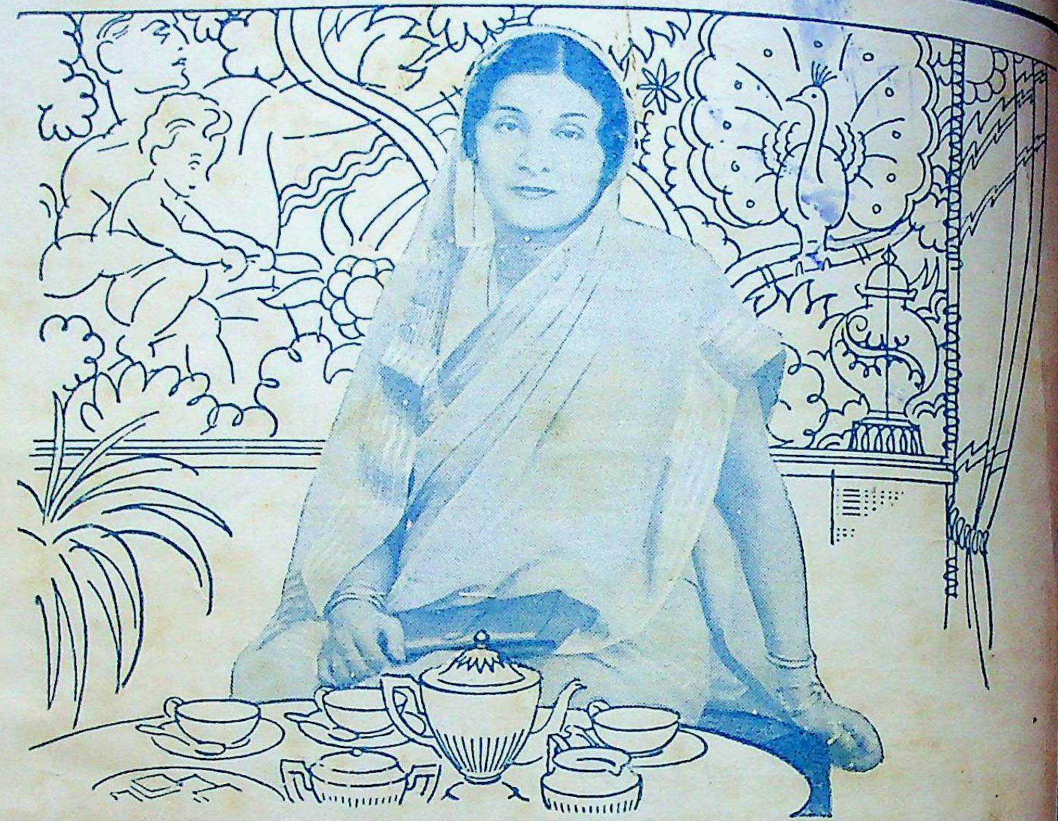

रिवाज चलाइये

लेडी सिंह कहती हैं : "अपने अतिथि-अभ्यागतोंकी अभ्यर्थना में भारतीय चायसे ही करती हूँ"। इन कई शब्दोंके भीतर अतिथि-सत्कारका वह मर्म छिपा है जो सामाजिक आयोजनोंको सफलता प्रदान करता है। चाय ही सामाजिकता का आधार है। अतिथियोंका स्वागत, सत्कार इससे इतना पूर्ण तथा सफल होता है कि इसका रिवाज चल गया है।

सम्भ्रान्त व्यक्ति सर्वदा भारतीय चाय पीते हैं

IK. 19

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ngri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-पुरुषों की प्यारी पत्रिका

हिंदी-संसार में युगांतर उपस्थित करनेवाली

सबसे सस्ती और सुंदर पत्रिका !
सस्ता संस्करण ४) !!

सुधा

साधारण संस्करण		राजसंस्करण	
वार्षिक मूल्य	६)	वार्षिक मूल्य	१२)
विदेश में	६)	विदेश में	१२)

७ दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका है।

१. लेखों और कविताओं के चुनाव की दृष्टि से
२. प्रूफ़-रीडिंग और भाषा की शुद्धता की दृष्टि से
३. काग़ज़, छपाई, रूप-रंग और गेट-अप की दृष्टि से
४. महत्त्व-पूर्ण संपादकीय टिप्पणियों की अधिकता की दृष्टि से
५. सभी विषयों पर उत्तमोत्तम और सामयिक लेखों की दृष्टि से
६. उच्च कोटि की चित्रकला के सुंदर, भाव-पूर्ण चित्रों की दृष्टि से
७. अमीर-ग़रीब सभी श्रेणी के पढ़नेवालों की दृष्टि से

हमारी राय है कि ६) भेजकर आप साधारण संस्करण के ग्राहक बनें।

मनोविनोद का सुंदर साधन ! नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए !!

मैनेजर 'सुधा'-कार्यालय ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

शुभ

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरबों-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सब इच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई, मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह'-यंत्र

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान्, ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

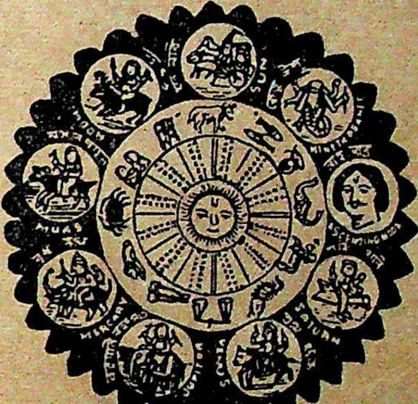

वग़ैरह हर एक कार्य पूर्ण करेगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा तथा आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगा। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छः-छः, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो ⌐) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्म-हीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३) सोने का ६॥⌐); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है। स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)।, यह यंत्र बहुत ही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ।।), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किसी ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनवाद बी० ए० क्लास, वेलिंगटन-कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं० जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपाकर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० बी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गया—बीसियों चित्रों और व्यंग्य चित्रों से सुसज्जित

'प्रगति' का 'युद्ध-अंक'

कुछ ख़ास लेख

१—गत साम्राज्यशाही युद्ध का विश्लेषण। २—युद्ध में जासूसों के सनसनीखेज़ कारनामे। ३—नर-संहार में विज्ञान का सहयोग। ४—युद्ध-जीवन में वेश्या। ५—रूस की लाल फ़ौज। ६—काग़ज़ी गोलाबारी, आदि। इसके अतिरिक्त कई युद्ध-संबंधी रोमांचकारी कहानियाँ और एकांकी नाटक। मूल्य ॥), १५ नवंबर के बाद १)

अगला अंक १५ नवंबर को

'अंतर्राष्ट्रीय अंक'

जिसके कुछ ख़ास लेख होंगेः—

१—इटैली के गुप्त शासकों का रहस्योद्घाटन। २—१९३६ का रूस। ३—हिटलर का अगला रुख़—अफ़्रीका के उपनिवेश। ४—इँगलैंड में नात्सी जासूसिनें। ५—जर्मनी का हिटलर-विरोधी गुप्त आंदोलन। ६—जर्मनी के ७ भाग्य-विधाता। ७—हिटलर का बंदी—कम्यूनिस्ट नेता अर्न्स्ट थयलमान। इसके अलावा कई सनसनी-पूर्ण कहानियाँ आदि। ४) भेजकर वार्षिक ग्राहक बननेवालों को मुफ़्त।

१५ दिसंबर को सन् ५७ का विप्लव-अंक ॥) १५ जनवरी को वेश्या-वृत्ति अंक ॥)

नमूने के लिये ॥)। का टिकट भेजें।

पता—मैनेजर, 'प्रगति', लखनऊ.

श्रीसुरेंद्रदेव बालूपुरी द्वारा संचालित

दि लेफ़्टविंग पब्लिशिंग हाउस की दो प्रवृत्तियाँ

प्रगति-पुस्तकावली

(१) आँखों देखा—लेखक, श्रीमंगलामोहन (प्रगतिशील कहानियों का अद्वितीय संग्रह); मू० ॥।)

(२) सुखी समाज—ले०, श्रीबुद्धिभद्र (अद्वितीय सामाजिक उपन्यास); मू० ।=)

(३) कलियुग—लेखक, श्रीरामविलास शर्मा (प्रगतिशील कविताओं का बेजोड़ संग्रह); मू० ।।)

(४) सोहन सकटू—ले०, श्रीबुद्धिभद्र (रोमांचकारी उपन्यास); मू० ।=)

(५) श्रीजवाहरलाल का अंतर्द्वंद्व—ले०, श्रीरामविलास शर्मा (राजनीतिक निबंधों का संग्रह); मू० ॥।)

लाल ट्रैक्ट-माला

-)॥ में प्रत्येक ट्रैक्ट

(१) क्रांतिकारी आंदोलन और राष्ट्रीय विकास ले०—श्रीसन्मथनाथ गुप्त

(२) रूस के मुक़दमे और त्रात्सकी पंथी ग़द्दार ले०—डॉ० एस० पी० सिनहा

(३) सोवियट रूस का नया शासन-विधान ले०—परमेश्वरीलाल गुप्त

(६) तोपों के साए में—(युद्ध और क्रांति की कहानियों का बेजोड़ संग्रह); मू० ॥।)

१) प्रवेश-फ़ीस देकर सभी पुस्तकें और ट्रैक्ट ¾ दाम में—

मैनेजर लेफ़्टविंग पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए० ... ३०६

२. प्रियानुभव (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ३१०

३. दांपत्य जीवन—[लेखक, श्रीदुलारेलाल ३११

४. सहयोग-आंदोलन का नैतिक आधार—[लेखक, रायबहादुर पं० राधेलाल चतुर्वेदी ३१७

५. चोरी (कहानी)—[लेखिका, श्रीमती राजकुमारी बैजल एम्० ए०... ... ३२२

६. श्रीयुत एम्० एन्० राय (आलोचना)—[लेखक, श्रीयुत क, ख, ग... ... ३२७

७. रात्रि का यह मौन-मंदिर ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत नीलकंठ तिवारी एम्० ए०, साहित्यरत्न ... ३३२

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध । सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है ।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

जे० बी० मंघाराम कंपनी का

इनर्जी फुड बिस्कुट

बच्चों को तंदुरुस्त और ताक़तवर बनाने के लिये लाभदायक साबित हो चुका है, क्योंकि इसमें कन्डेंस्ड मिल्क (Condensed Milk), (Glucose) गुल्कोज़ और दूसरी कई चीजें इस्तेमाल की गई हैं । इसे बच्चे खुशी से खाते हैं ।

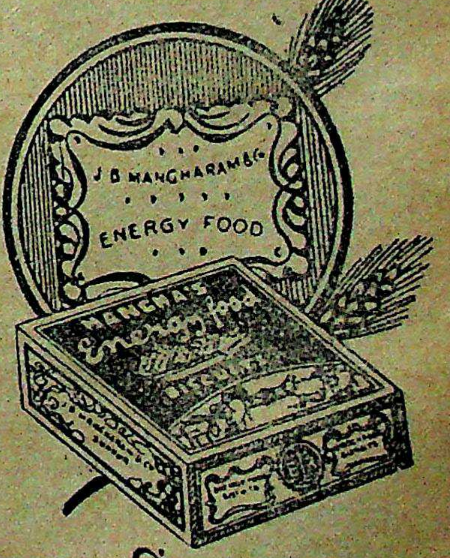

जे० बी० मंघाराम कं० सक्खर (सिंध)

मिलने का पताः—लखनऊ-एजेंट—ए० एम्० चंदवनी, ३२, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ ।
A. M. Chandwani, 32, Aminabad Park, Lucknow.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

८. ग्वालियर के युवा नरेश—[लेखक, श्रीसूर्यनारायण व्यास ३३३

९. जीवेम शरदः शतम्—[लेखक, श्रीयुत चंद्रकांत बाली शास्त्री प्रभाकर ... ३३७

१०. सुधार के नाम पर—[लेखक, श्रीयुत विश्ववेद ३४२

११. तन्मयता (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र' ... ३४८

१२. हिमालय की झलक (भ्रमण)—[लेखक, श्रीयुत सियारामशरण गुप्त ... ३४९

१३. हिलोर (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' ३५९

सफ़ेद बाल काला

ख़िज़ाब से नहीं, हमारे (आयुर्वेदिक) वीरेंद्र-मोहनी सुगंधित तैल के सेवन से बालों का पकना रुककर सफ़ेद बाल जड़ से काला हो जाता है। जिन्हें विश्वास न हो, दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें ! एकाध बाल पका हो, तो २); इससे अधिक पका हो, तो ३।); या कुल पक गया हो, तो ४।।) का तैल मँगाएँ। "नक़्क़ालों से सावधान"।

पता—बी० के० पी० फ़ार्मेसी

पो० कतरीसराय (गया)

गारंटी के साथ होता है

सूज़ाक, गर्मी और नामर्दी का इलाज !

हज़ारों रोगी लाभ उठा चुके हैं। सैकड़ों रईस, राजा-महाराजाओं से प्रशंसित व प्रमाणपत्र प्राप्त। डॉक्टरों, वैद्यों, हकीमों से निराश हुए तमाम रोगी दूर-दूर से स्वयं आकर गारंटी से इलाज कराते हैं। जो सज्जन यहाँ आने की तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते, वे घर बैठे मेरी औषधि मँगाकर इन रोगों को जड़ से नष्ट करें। दो सप्ताह में आराम होता है। मूल्य औषधि सूज़ाक (गनोरिया) नया २।।), पुराना ५); गर्मी नई हो २।।), पुरानी ५); नामर्दी थोड़ी हो ५), पुरानी के ६) हैं, जिसमें खाने-लगाने की दवाएँ रहती हैं, डा०-ख़र्च प्रति रोग ।।-)

महालक्ष्मी-विलास गोलियाँ

अत्यंत स्तंभक, कामोत्तेजक, नपुंसकत्व पर चमत्कारिक। स्वर्ण-वर्क़, चाँदी, अभ्रक, फ़ौलाद, मोती, कस्तूरी आदि बहुमूल्य द्रव्यों द्वारा बड़े परिश्रम से बनाई हैं। इससे इंद्रिय-शिथिलता, थोड़ी उत्तेजना से धातु का गिरना, धातु का पतलापन, आँखों के सामने अँधेरा जान पड़ना, दिशा-पेशाब के साथ वीर्य निकल जाना, दिमाग़ कमज़ोर, शिर-दर्द, कमर-दर्द, स्वप्न-दोषादि, बीसों प्रमेह आराम होकर वृद्ध मनुष्य भी रक्त, मांस, धातु से परिपूर्ण, हृष्ट-पुष्ट, अपार वीर्यवाला, महाकामी होता है। स्तंभन-शक्ति अत्यंत बढ़ जाती है; मूल्य ६० गोलियों का ५), डा०-ख़र्च ।।-)

नपुंसकताहरण तिला कस्तूरी-मिश्रित

यह सुस्ती, नामर्दी, ढीलापन, बाँकपन को नाश कर असली ताक़त पैदा करता है; मूल्य ५) फ़ी शीशी, डा०-ख़र्च ।।-)

पता—पं० अयोध्याप्रसाद शुक्ल वैद्यशास्त्री

शुक्ला आयुर्वेदिक औषधालय, निशातगंज, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

१४. एडमंड स्पेंसर (जीवनी)—[लेखक, श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्यशिरोमणि ... ३६२
१५. देवदार का वन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत चंद्रकुँवर वर्तवाल ३६७
१६. साहित्यिक पार्लियामेंट, आगरा—[लेखक, श्रीहरिशंकर शर्मा ३६८
१७. सुधा-चित्रावली ३७३
१८. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत राजाराम 'पुनीत', श्रीयुत गोविंदराव मराठे, कुमारी कमला बी० ए०, एक इंदौर-प्रेमी, कुमारी राज्यश्री बी० ए०, श्रीयुत उमाशंकरसिंह, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल' और श्रीयुत वासुदेव गणेश ... ३७७
१९. परिचय—[लेखकगण, श्रीयुत 'उमेश' वाजपेयी, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीयुत गंगाप्रसाद 'कौशल' और श्रीप्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए० ... ... ३८९
२०. कुसुम ३९३
२१. धारा ३९४

हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री)

अनेक चित्रों-सहित

द्वितीय वार छपकर तैयार है

यदि आप विना जन्म-पत्र के केवल अपने हाथों पर से ही अपनी ज़िंदगी-भर का संपूर्ण भूत-भविष्य शुभाशुभ फल जानना चाहते हों, अथवा उत्तम हस्त-परीक्षक बनना, अंट-संट भावी फल कहके धोका देनेवाले धूर्तों के प्रपंच से बचना, धंधा-रोज़गार का निर्णय करना, भावी रोगों के हमलों से बचना, कौन किस अधिकार के पद मिलने योग्य है, यह जानना, जल-स्थल-यात्रा में से कौन यात्रा होना, सट्टा-लाटरी वग़ैरह से धन मिलना, कब कौन बात होना इत्यादि अनेक बातें स्पष्ट जानना चाहते हों, तो आज ही एक प्रति हस्त-परीक्षा (हिंदी-पामिस्ट्री) ख़रीद लीजिए, जिससे उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान विना किसी गुरु की मदद के आपको भले प्रकार हो सकेगा। इस पुस्तक में पाश्चात्य-देशीय समग्र सामुद्रिक-शास्त्र के ग्रंथों का आशय पूर्वीय सामुद्रिक-शास्त्र के साथ तुलना करके सरल हिंदी-भाषा में, रेखाओं के अनेक चित्रों-सहित, भले प्रकार वर्णित है। हिंदी-भाषा में ऐसी बड़ी, परम उपयोगी पुस्तक कहीं भी न छपी होने से धड़ाधड़ विक रही है। शीघ्रता करो, पुस्तकें थोड़ी संख्या में ही रह गई हैं, फिर हाथ न आवेंगी, पुनः छपने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी; मूल्य सिर्फ़ ४) रुपए हैं। डाक-महसूल ॥)। अलग है।

पता —मैनेजर श्रीभुवनेश्वरी-प्रिंटिंग-प्रेस, रतलाम [सी० आई०]

'सुधा'

में अपना विज्ञापन छपवाने से आपके व्यापार को बहुत अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

क्योंकि

यह हिंदी की एक उच्च श्रेणी की सामाजिक मासिक पत्रिका है, और इसका प्रचार अत्यधिक है।

विज्ञापन-छपाई के नियम और रेट नीचे के पते से मँगाइए।

मैनेजर 'सुधा', गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. प्रेम-संदेश—[चित्रकार—श्रीयुत ठाकुर-सिंह ३०६

(ख) दुरंगे

२. श्रीपं० शिवनारायणजी मिश्र ... ३४८
३. वंशीवाला—[प्रसिद्ध नाटककार, कहानी-लेखक और उपन्यासकार श्रीगोविंदवल्लभ पंत-निर्मित 'लिनोकट' से ३४९

(ग) सादे — पृष्ठ

४. रायबहादुर पं० राधेलाल चतुर्वेदी ... ३१७
५. पंचायत-घर ३७३
६. अबोहर में तुलसी-जयंती-समारोह ... ३७४
७. बंबई-विश्वविद्यालय का पदवी-दान-समारोह ३७५
८. लेडी हेग ३७६
९. कुमारी कमला बी० ए० ... ... ३८०
१०. श्री १०८ ब्रह्मर्षि चंचल झा ... ३८४
११. स्व० मियाँ बसंतसिंह जागीरदार ... ४०६

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारख़ाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२।१, बीडन स्ट्रीट। चौरंघी
बंगाल से बाहर की शाखाएँ:—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांचः—२, श्रीरामरोड, लखनऊ इत्यादि।
ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में
मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।
अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।
प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०
हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िसियन
पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)
आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़ेद बाल काला बने

ब्लैक्सो तेल ही वह एकमात्र चीज़ है, जिसके उपयोग से सफ़ेद बाल हमेशा के लिये जड़ से काला हो जाता है। आपकी दूसरी सारी कोशिशें बेकार होंगी। ब्लैक्सो तेल का उपयोग आज ही से शुरू कीजिए। यह सफ़ेद बालों की चिकित्सा का सबसे नया और बढ़िया, अजीब आविष्कार है, जो एक जर्मन डॉक्टर का किया हुआ है। फ़ी बोतल का मूल्य १।।), डाक-ख़र्च अलग।

भद्दे बालों की सफ़ाई

केवल ३ मिनट में "डेस्ट्रायर" सब भद्दे और बेक़ायदा बालों की जड़ से सफ़ाई कर देता है, और चमड़ा रेशम-जैसा मुलायम कर देता है। डेस्ट्रायर सबसे ज़्यादा बेख़तरे काम में लाने लायक़, जल्द और हमेशा के लिये बालों का सफ़ाया करनेवाला है। नाटक और सिनेमा के प्रसिद्ध नट और नटी इसी को काम में लाते हैं। मूल्य प्रति बोतल ३), डाक-ख़र्च अलग।

पता—मैनेजर, मार्शल ब्रदर्स, बच्छोवाली, लाहौर

'गुलाब'जी की क्रांतिकारी पुस्तकें फ़ौरन् पढ़िए !

यदि आप दुनिया में एक शक्तिशाली मनुष्य बनकर चमकना चाहते हैं, अपनी दिलचस्पियों के साधन जुटाकर व्यापार तथा नौकरी-पेशे में तेज़ी के साथ उन्नति करना चाहते हैं, मुसीबतों को दूर भगाकर सुख, स्वास्थ्य और सफलता के अधिकारी होना चाहते हैं, तो 'मनुष्य-साइंस' की दो विचित्र पुस्तकें 'आकर्षण-शक्ति' और 'नई रोशनी' आज ही पढ़िए। समूचे भारतवर्ष में इन पुस्तकों से मनुष्यों को नई ज़िंदगियाँ मिल रही हैं—हज़ारों प्रशंसा-पत्र प्राप्त।

आकर्षण-शक्ति

मूल्य हिंदी २) डाक-ख़र्च ।=)
बँगला १।।) डाक-ख़र्च ।=)

नई रोशनी

मूल्य १।।) डाक-ख़र्च ।=)

अन्यान्य हलचल-भरी पुस्तकें—

काँटा—गुलाबजी का ताज़ा उपन्यास और सामाजिक क्रांति	मूल्य १।।।) डाक-ख़र्च ।=)
तारामंडल—फ़ैशन, फ़रेब और धनिकों की विलास-लीला	मूल्य १।।) डाक-ख़र्च ।=)
दिल की प्यास—आगा हश्र कश्मीरी का अमर नाटक	मूल्य १) डाक-ख़र्च ।)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-अपने क्षेत्रों के दो उत्कृष्ट

पत्र

कला !

सिनेमा आधुनिक युग की प्रमुख कला है। सिनेमा से परिचित रहना कला की प्रगति से परिचित रहना है।

क्रांति !

साहित्य और समाज आज क्रांति के कर्म-क्षेत्र हैं। साहित्य और समाज की प्रगति से परिचित रहना क्रांति की आवाज़ से परिचित रहना है! और

कला और क्रांति

से परिचित रहने के लिये

भारत के एकमात्र प्रगतिशील साप्ताहिक

'चित्रपट'

से परिचित रहना आवश्यक है!

क्योंकि

साहित्य, समाज और सिनेमा के क्षेत्र में

'चित्रपट'

क्रांति का अग्रदूत है!

[संपादक—श्रीचंद्रधर]

वार्षिक मूल्य पाँच रुपया, एक प्रति दो आना।

देशी राज्यों की आठ करोड़ मूक और दुखी प्रजा के मानवोचित अधिकारों की ज़ोरदार वकालत और देशी राज्यों को सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्था की ओर अग्रसर करना

'सचित्र दरबार'

का मुख्य उद्देश्य है।

[संपादक—श्रीचंद्रधर]

'दरबार'

सामाजिक समस्याओं के संबंध में अत्यंत उग्र, तप्त और असहनशील है, और हिंदुओं के सामाजिक अधःपतन के प्रत्येक कारण को जड़-मूल से उखाड़ फेकने के लिये तत्पर है।

'दरबार'

का प्रत्येक अंक फड़कते हुए समाचारों, अनाचार-पूर्ण राज्यों की व्यवस्था की निष्पक्ष आलोचनाओं, देश-विदेश की साप्ताहिक प्रगति तथा सामयिक लेखों से भरा रहता है।

'दरबार'

यदि आपने अभी तक नहीं देखा है, तो नमूने के अंक के लिये दो आने के टिकट भेजिए। गत वर्ष के अंक किसी मूल्य पर भी न मिल सकेंगे।

मूल्य

साधारणसंस्करण एक प्रति =), वार्षिक ५), आजीवन २५१)
राज-संस्करण वार्षिक २०), आजीवन ५०१)

लिखिए

'साहित्य-मंडल', २३, दरियागंज, दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजसंस्करण १२) १)
साधारण संस्करण ६) ॥)
सस्ता संस्करण ४) ।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १३ } कार्त्तिक, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)— { संख्या ४
खंड १ } नवंबर, १९३९ { पूर्ण संख्या १६०

गीत

[श्रीपं० उमाशंकर वाजपेयी एम्० ए०]

(१)
गगन के नीले अंतर में
तारकों की छवि का दर्शन,
आज उर - उर के स्पंदन में
तुम्हारा - मेरा आकर्षण।

(२)
ज्योति रिंगण की लघु द्युति में
वल्लरी-तरु का भुज - बंधन,
आज आशा की नव रुचि में
तुम्हारा - मेरा आलिंगन।

(३)
दूर दिङ्मंडल पर मधुमय
व्योम-वसुधा का अधर-मिलन;
आज इस वन के प्रांतर में
तुम्हारा - मेरा मृदु चुंबन।

(४)
मदिर सुमनावलियों से मिल
मधुप करते लोरी-गायन,
आज हम दोनों भी आओ,
मूँद लें निद्रा में लोचन।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियानुभव

[श्रीयुत 'वचनेश']

सुनके गुण मोहित हो रहे हैं,
मनमाना उसे अनुमानते हैं;
कभी खोजते हैं उर-अंतर में,
कभी धूल जहान की छानते हैं।
'वचनेश' हैं भक्त कि हैं हम मत्त,
इसे ख़ुद भी नहीं जानते हैं;
जिसे चाहते हैं, उसको न कभी
कहीं देखा, न तो पहचानते हैं।
श्रुति मानता है ध्वनि-माधुरी,
सुंदरता उसे आँख प्रमानती है;
रसना कहती रस है वह, नासिका
बास-सुबासना जानती है।
प्रिय का परिरंभण ही 'वचनेश'
य' देह उसे अनुमानती है;
मनसूबे गढ़ा करता मन है,
परमाणुओं को मति छानती है।
अति पास ही है, विभु है, कहते यों
कभी से सभी चले आ रहे हैं;
नित खोजते औ' बिनती करते
युग बीत गए, नहीं पा रहे हैं।
तब 'कोई नहीं वह है' कहने पर
दोष क्यों लोग लगा रहे हैं;
'हम ही भगवान हैं,' और नहीं,
हमसे जो वही कहला रहे हैं।

हम प्रेम-भरे अपनी छवि में,
अपना प्रतिबिंब निहारते हैं;
उसमें हुए लीन हैं, ऐसे अहो!
निज आपा उसे निरधारते हैं।
'वचनेश' प्रमाद से मोहित हो
निज को कोई ग़ैर विचारते हैं;
ख़ुद खोजते हैं अपने को, न पाकर
झीखते हैं, झख मारते हैं।
सिर मारते हैं श्रुति, दर्शनों में,
कभी यज्ञ, व्रतादिक ठानते हैं;
कभी द्वारका से ले पुरी तक मार्ग की
धूल वृथा हम छानते हैं।
'वचनेश' कभी अनुमानते हैं
'कोई है' औ' कभी नहीं मानते हैं;
इन दो दृगों की द्विविधा में पड़े
'हम ही भगवान' न जानते हैं।
हम ही 'वचनेश' छिपे हैं, हमीं
अपने को वियोग में दाहते हैं;
हम ही निज नाज़ दिखा रहे हैं,
हम ही उसको निरवाहते हैं।
परदा उठा, तो समझे अपनी
छवि पै हमीं प्रेम उभारते हैं;
यहाँ और कोई कहीं है ही नहीं,
हैं चहीते हमीं, हमीं चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दांपत्य जीवन*

[श्रीदुलारेलाल]

हिंदी में दांपत्य जीवन-विषयक साहित्य की बड़ी कमी है, और जो पुस्तकें इस विषय पर प्रकाशित भी हुई हैं, उनमें पाश्चात्त्य विचारों को ही प्रधानता देकर बहुत-सी भ्रमात्मक बानों का समर्थन किया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ पुस्तकें कोक-शास्त्र अथवा काम-शास्त्र आदि संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद-रूप में भी प्रकाशित हुई हैं, परंतु उनमें वर्णित विषय सर्व-साधारण के लिये उपयोगी और उपयुक्त कदापि प्रमाणित नहीं होते, जिसका मुख्य कारण अनुवाद की क्लिष्टता, अशुद्धता एवं अप्रासंगिक शैली है। प्रस्तुत पुस्तक में इस बात का पूरा ध्यान रक्खा गया है कि इसका विषय हमारे समाज की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल और उपयोगी प्रमाणित हो सके।

स्त्री और पुरुष समाज के दो अंग माने जाते हैं, जिन्हें दंपति कहा जाता है। दंपति-शब्द के अंतर्गत गूढ़ तत्त्व की विवेचना है, और उसका प्रतिफल है समाज-सृष्टि। समाज का आदि रूप है दंपति। यदि स्त्री और पुरुष ही, जिन पर भावी युग के समाज-निर्माण का कर्तव्य स्थिर है, अपने पारस्परिक व्यवहार को विना समझे और विना दांपत्य जीवन-विषयक ज्ञान प्राप्त किए, केवल प्रचलित और अधूरी अनुकरण-प्रणाली पर चलें, तो उनकी संतान का भविष्य कैसा होगा, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। बीज के अनुसार ही वृक्ष उत्पन्न होता है, अतएव यदि बीज ही दूषित है, तो उसके दोष उससे उत्पन्न होने-वाले वृक्ष में अवश्य ही पाए जायँगे, और परंपरागत सृष्टि, जो उसी बीज के आदि रूप का प्रतिफल होगी, दूषित ही रहेगी। यहाँ मानव-समाज का बीज स्त्री और पुरुष के एकत्व-भाव से उत्पन्न होता है, इसलिये यह आवश्यक है कि दंपति में से प्रत्येक को अपने दांपत्य कर्तव्य का पूरा ज्ञान हो। यदि दोनो में से एक भी अनभिज्ञ हुआ, तो उनसे उत्पन्न होनेवाली संतान कदापि अच्छी नहीं कही जा सकती। गाड़ी के दो पहियों में से यदि एक भी पहिया टूट जाय, तो गाड़ी नहीं चल सकती; यह दूसरी बात है कि उसे बलात् खींचा जाय। कहना न होगा, आजदिन हमारे देश में दांपत्य-विषयक ज्ञान को अनावश्यक और अश्लील समझकर पढ़-लिखे लोग भी इस दिशा में उदासीन रहते हैं। वे अपनी संतान को भी इन विषयों की शिक्षा

*'दांपत्य जीवन'-नामक पुस्तक गंगा-पुस्तकमाला में, १६६ नं० के पुष्प-रूप में, निकली है। उसी का यह संपादकीय वक्तव्य है। —सु०-सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना महापाप समझते हैं। उनका कहना है, हमारे बच्चे बिगड़ जायँगे। परंतु उनकी यह उक्ति उनकी संतान के भविष्य को कितना अंधकार-मय और शोचनीय बनाकर आगामी युग के सृजन के लिये घातक सिद्ध होती है, इसे वे नहीं जानते। आहार, निद्रा, भय और मैथुन, इनका अस्तित्व पशुओं और मनुष्यों में एक-सा ही रहता है। शायद इसी प्राचीन उक्ति की पुष्टि करते हुए हमारे बहुतेरे भाई-बहन दांपत्य जीवन के विषय में किसी प्रकार का साहित्य पढ़ने से नाक-भौं सिकोड़ते हैं। परंतु ज्ञान की साधना क्या किसी भी युग में लांछनीय समझी गई है, इसे वे नहीं सोचते। सोच ही नहीं सकते, क्योंकि उनके परंपरागत संस्कारों और मनोवृत्तियों का विकास एक निर्धारित सीमा के अंदर ही हुआ है।

दंपति से ही गृहस्थी का निर्माण होता है। प्राचीन भारत की संस्कृति के अनुसार प्रत्येक कुमार और कुमारी का विवाहित होना अनि-वार्य है। गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम और सबसे बड़ा धर्म माना गया है, क्योंकि उसी में मानव-धर्म का आदि रूप अंतर्हित रहता है। गृहस्थाश्रम समाज की सबसे मुख्य वस्तु है। अगर समाज से विवाह-संबंध हटा दिया जाय, तो वह छिन्न-भिन्न हो जाय। गृहस्थाश्रम की मर्यादा का वर्णन हिंदू-शास्त्रों में बहुत है।

प्राचीन भारत की संस्कृति का कुछ ऐसा प्रभाव था कि घर में कन्या का जन्म होते ही माता-पिता को उसके विवाह की चिंता लग जाती थी। मध्यकाल में तो बच्चों को छोटी उम्र में ही व्याह दिया जाता था। किंतु जब परिपक्व अवस्था में विवाह होता था, तब भी लड़कों का विवाह इतना चिंतनीय नहीं था, जितना लड़कियों का। सुयोग्य लड़कों की तलाश में तो अब भी लड़कियों के पिता मारे-मारे फिरते हैं। ज्यों-ज्यों लड़की सयानी होती जाती है, त्यों-त्यों माता-पिता को उसके लिये योग्य घर-वर ढूँढ़ने में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। हाँ, कुछ पुत्री-प्रेम में पड़े, लापरवाह माता-पिता अब भी ऐसे देखे जाते हैं, जो, कन्या के २०-२२ वर्ष की हो जाने पर भी, उसका विवाह शीघ्र हो जाने की प्राकृतिक आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं देते, और उसे आजन्म ब्रह्मचारिणी बनाए रखना चाहते हैं। पर आम तौर से लड़कियाँ पराए घर की चीज समझी जाती हैं। सौ में एक भी ऐसी स्त्री मिल जाना असंभव है, जो अविवाहित रही हो। हिंदू-समाज में विवाह बहुत पवित्र और उच्च कोटि का संबंध * माना

* विवाह आत्मिक संबंध है। दो प्राण-तिथियों का विवाह-संक्रांति में मेल होता है। दांपत्य विज्ञान के अनुसार गुण, कर्म, स्वभाव, स्नेह, स्वास्थ्य को देखकर ही विवाह-बंधन में स्त्री-पुरुष को बाँधना चाहिए, पर ख़याल किया जाता है जाति-पाँति, दहेज़ आदि का। इस जाति-बंधन ने ही हमें गुलाम बनाया है, और इसे तोड़कर ही हम फिर स्वतंत्रता प्राप्त कर सकेंगे। हम इस विषय में, सुधा में, काफ़ी प्रकाश डाल चुके हैं। भगवान् करें, भारतवासी इस संबंध में शीघ्र जग जायँ, और अपनी विवाह-योग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। कन्यादान अत्यंत पुनीत कर्म है, और इसीलिये विवाह के समय कन्या-पक्ष के लोग व्रत करके वेदोच्चारण, अतुल धन और श्रद्धा-भक्ति के साथ कन्या का संप्रदान वर को करते रहे हैं। विवाहित होने के बाद कन्या को सौभाग्यवती कहा गया है, और नव-वधू का जो आदर विवाह होने के बाद ससुराल में होता है, वैसा फिर कभी स्त्री का और किसी अवस्था में नहीं होता।

पर आधुनिक पश्चिमीय शिक्षा ने स्त्रियों के हृदय में जो स्वाधीनता के विचार उत्पन्न किए हैं, उनके प्रभाव से कई नई बातें उनमें आ गई हैं। उनमें से सबसे बड़ी बात 'विवाह से अरुचि' है। इनमें से कई उच्चशिक्षिता कन्याएँ ऐसी भी देखी गई हैं, जो पुरुषों को अपना मित्र बनाना तो उचित समझती हैं, पर किसी को पति-रूप में वरण नहीं करना चाहतीं।

आजकल विवाह के नाम पर पढ़ी-लिखी स्त्रियों के मन में उल्लास और आनंद नहीं होता। जब उनके सामने विवाह की चर्चा होती है, तो वे ठंडी साँस लेकर कहती हैं कि यह उन्हें मजबूरन् करना पड़ रहा है—व्यर्थ ही पुरुषों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ रही है। इसमें संदेह नहीं कि अनेक बार ऐसा भी होता है—ऐसे कई मामले हमें मालूम भी हैं—कि कन्याएँ जहाँ विवाह करना चाहती हैं, वहाँ माता-पिता नहीं करते, अन्यत्र कर देते हैं, और इससे विवाहोपरांत उनके जीवन-कुसुम मुरझा जाते हैं। कई कन्याओं के जीवन माता-पिता द्वारा इस प्रकार नष्ट किए जा चुके हैं। इसीलिये बहुत-सी आधुनिक युवतियाँ कुमारी रहना ही अधिक पसंद कर रही हैं। पर क्या हमें इस बात पर विचार नहीं करना चाहिए कि विवाह होने पर स्त्रियाँ प्रतिष्ठित और सम्मानित होती हैं? क्या विवाह प्राकृतिक दृष्टि से अनिवार्य नहीं? जो स्त्रियाँ पढ़-लिख जाती हैं, वे विवाहित होने की अपेक्षा कोई स्वतंत्र धंधा करके अविवाहित रहना ज्यादा पसंद करती हैं, और इसे अपनी आज़ादी कहकर पुकारती हैं। परंतु आगे चलकर उन्हें पता चल जाता है कि विवाहित होकर उन्हें केवल एक पति के ही स्नेह-संरक्षण में रहना पड़ता है, लेकिन नौकरी करने पर तो उन्हें सैकड़ों पुरुषों की गुलामी करनी पड़ती और तिरस्कृत तथा लांछित होना पड़ता है।

योरप चाहे जितना स्त्रियों के आज़ाद होने का दम भरे, लेकिन वहाँ की स्त्रियाँ अपने गृह के अंदर उतनी स्वतंत्र नहीं होतीं, जितनी भारतीय स्त्रियाँ। स्त्री-पुरुषों का परस्पर विश्वास जो भारतीय जीवन में देखने को मिलता है, योरपियन-जीवन में नहीं, और पारिवारिक

शिक्षित संतान को जाति-पाँति तोड़कर विवाह करने दें—अपने भाई-भतीजों के नाराज़ हो जाने का भय दूर भगावें। महात्मा गांधी, डॉक्टर रवींद्रनाथ ठाकुर, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीराजगोपालाचारी, माननीय सर कुँवर जगदीशप्रसाद आई० सी० एस्०, श्रीवी० एन्० मेहता आई० सी० एस्०, श्री एन्० सी० मेहता आई० सी० एस्० आदि ने जाति-भेद को तोड़ दिया है। हमें इन सबका अनुकरण करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में जो महत्त्व-पूर्ण स्थान उनका है, वह योरप की स्त्रियों का नहीं। विवाह के बाद भारतीय स्त्री पति की पत्नी ही नहीं बनती, प्रत्युत परिवार के स्त्री-पुरुषों की संबंधिनी हो जाती है, और उन संबंधों में आदर-सत्कार का ही बड़ा भारी भाग है। हिंदू-समाज में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का अधिक सम्मान होता है। कहा जाता है, भारत की स्त्रियों को पर्दे में रक्खा जाता है, उन्हें घूमने की फ़ुर्सत नहीं दी जाती, दूसरे किसी भी पुरुष से बातचीत नहीं करने दी जाती, समाजिक जीवन में उनसे कोई काम नहीं लिया जाता, वे अपने घर के अंदर सीमित और दुनिया की सभी बातों से अनभिज्ञ रहती हैं। पर एक तो अब यह अवस्था भारतीय परिवारों में रही नहीं, दूसरे यदि यह सब सच मान भी लिया जाय, तो भी स्त्री परिवार में पूर्ण प्रतिष्ठा की पात्री होती है। सगे-संबंधी और रिश्तेदार मिलकर भाँति-भाँति के रिश्ते स्त्री से क़ायम कर लेते और उस पर आदर-सम्मान की वर्षा करते हैं। इससे जो आनंद भारतीय स्त्री को मिलता है, वह योरपियन स्त्री को स्वप्न में भी नसीब नहीं हो सकता।

असल बात यह है कि स्वाधीनता की भी अलग-अलग जातियाँ हैं, और वे भिन्न-भिन्न प्रकार से भिन्न-भिन्न रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। हम यह अच्छी तरह जानते और कई उदाहरण दे भी सकते हैं कि आजकल की पढ़ी-लिखी लड़कियों की अपेक्षा प्राचीन संस्कृति की बेपढ़ी स्त्रियाँ कहीं अधिक सुखी और सद्गृहिणी होती रही हैं। आजकल की पढ़ी-लिखी स्त्रियों में यह भावना है कि यह कार्य हमारे करने लायक है, और यह नहीं; यह काम हमारी प्रतिष्ठा का है, और यह अप्रतिष्ठा का। किंतु प्राचीन संस्कृति की स्त्रियों में सेवा और विनय के भाव हैं, जो उन्हें बहुत ऊँचा उठा देते हैं।

आज पढ़ी-लिखी स्त्री सबसे पहले अपने पति का तिरस्कार करती है। वह कहती है—"विवाह-संबंध कोई पवित्र और तथ्य संबंध नहीं। चूँकि तुम कमाते हो, हम नहीं, तथा रोटी-कपड़ा हमें तुमसे मिलता है, इसलिये हमने तुमसे विवाह किया।" इसके बाद वह सास-ससुर, सगे-संबंधी आदि का भी तिरस्कार करती है। कहती है—"जो हमें रोटी-कपड़ा देता है, उसकी तो हम ग़ुलामी कर सकती हैं, लेकिन तुमसे मेरा कोई संबंध नहीं, तुम मुझसे कहनेवाले कौन?" जो स्त्रियाँ अपने पति की सेवा नहीं कर सकतीं, वे सास-ससुर और घर के दूसरे लोगों की क्या सेवा-शुश्रूषा कर सकती हैं? परिणाम यह होता है कि परिवार सुख और शांति से वंचित रह जाता है। वे भी घर में दूसरों का प्रेम और विश्वास प्राप्त नहीं कर सकतीं और अकेली रह जाती हैं।

सेवा और सहानुभूति की आवश्यकता तो संसार में सबको होती है। यह सेवा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति सेवा और सहानुभूति के बदले ही मिल सकती है, दूसरे तरीक़े से नहीं—

"ब्याह किए पुनि नेह की एक नेह ही राह।"

लेकिन जो स्त्रियाँ विवाह को एक सौदा मानती हैं, किसी से स्नेह और किसी की सेवा-शुश्रूषा नहीं करतीं, वे किसी के स्नेह तथा सेवा-शुश्रूषा की अधिकारिणी भी नहीं बन सकतीं। जगत् में जिस स्त्री को स्नेह, सेवा और सहानुभूति प्राप्त नहीं, हमारी समझ में, वह सबसे अधिक भाग्यहीना है।

पुरुष, जो व्यवसाय-संबंधी बड़ी-बड़ी योग्यताएँ रखता है, और अपनी बुद्धि, विद्या तथा बाहु के बल से बहुत धन-संपत्ति एकत्र कर लेता है, क्यों विवाह करता है, ज़रा इस बात पर भी तो विचार करना चाहिए। अगर विवाह का उद्देश्य सिर्फ़ रोटी-कपड़ा ही होता, तो वह केवल स्त्रियों के लिये ही क्यों, पुरुषों के लिये भी होता। विवाह का उद्देश्य तो स्त्री और पुरुष दोनो के लिये एक ही होना चाहिए, और वह है दांपत्य सुख। यह तो हो ही नहीं सकता कि स्त्री तो रोटी-कपड़े के लिये किसी यथेष्ट वेतनभोगी आई० सी० एस्०, जज या राजा-रईस से विवाह करे, और पुरुष किसी और उद्देश्य से। फिर यह विवाह की मर्यादा भी तो आज की नहीं, युग-युगांतरों की है।

योरप में जब से इस भावना ने घर किया है, तब से स्त्री-पुरुष दोनो ही विवाह से बचने की चेष्टा करते रहते हैं। इसका फल योरप को हाथोंहाथ मिल रहा है—उनका सामाजिक जीवन छिन्न-भिन्न हो रहा है। क्या हम भारत की पढ़ी-लिखी स्त्रियों से यह प्रार्थना कर सकते हैं कि वे इस विषय पर गंभीरता से विचार करें कि विवाह रोटी-कपड़े के मूल्य का सौदा है, अथवा प्राणों से प्राणों का विनिमय, जो प्राकृतिक दृष्टि से प्रत्येक प्राणी को करना ही पड़ता है, और जिससे उसका कभी उद्धार नहीं हो सकता ?

पर यह सब लिखने का हमारा यह अभिप्राय कदापि नहीं कि आधुनिक सभी शिक्षित स्त्रियाँ ऐसी होती हैं। नहीं, अब भी भारत में पूर्व और पश्चिम की सुंदर बातों का समन्वय करनेवाली रमणियाँ मौजूद हैं, जिनके विचार में विवाह दो आत्माओं का मिलन है, सौदा नहीं, और जिनके हृदय में परम प्रतिष्ठित महाकवि 'हरिऔध'जी के अमर महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' की ये पंक्तियाँ सदा रस-संचार करती रहती हैं—

प्यारे आवें, सु-बयन कहें, प्यार से गोद लेवें ;
ठंडे होवें नयन, दुख हो दूर, मैं मोद पाऊँ।
ए भी हैं भाव मम उर के, और ए भाव भी हैं ;
प्यारे जीवें, जग-हित करें, गेह चाहे न आवें।

ऐसी प्रेम और त्याग में दृढ़ता की मूर्ति, किंतु कुसुम-कोमल कामिनियाँ ही भारतवर्ष को फिर उच्चासन पर प्रतिष्ठित कर सकेंगी, ऐसा हमारा विश्वास है—

सहज सनेह, स्वभाव मृदु, सहयोगिता, सुकाम,
पई दंपति-धाम की दीवारें अभिराम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखत दंपति-दीप कौं दीपित साँच सनेह,
रहति आतमा-जोति तें जगमग जैसे देह।
प्रेमिन के संसार में धरा-धाम-धन धूरि;
नित-नित नूतन नेह ही दंपति-संपति पूरि।

(दुलारे-दोहावली)

यदि यह पुस्तक पाठकों को पसंद आई, और दांपत्य विज्ञान के ज्ञान की तथा गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार विवाह-बंधन की आवश्यकता की ओर उनका ध्यान खींच सकी, तो हम स्त्रियों के लिये यादवेंदुजी की लिखी 'आदर्श पत्नी' ❀ नाम की पुस्तक भी शीघ्र निकालेंगे।

❀ यह पुस्तक भी अब निकल गई है।—सु०-सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग-आंदोलन का नैतिक आधार*

[रायबहादुर पं० राधेलाल चतुर्वेदी]

करीब ३५ साल से हमारे देश में सहकारी समितियाँ काम कर रही हैं। लेकिन, इतने अरसे तक काम करने के बाद भी, जनता ने उन्हें अपनाया नहीं। जिस तहरीक ने दूसरे मुल्कों में काश्तकारों की काया पलट दी, उसकी बाबत चर्चा इस देश में नहीं के बराबर है। ऐसा क्यों? इसके कई कारण हैं। उनमें से ख़ास कारण यह कि सहकारिता, सहयोग या बाहमी इमदाद का असली मंशा क्या है, लोगों ने अब तक ठीक-ठीक नहीं समझ पाया। आम तौर पर लोग यही समझते हैं कि को-ऑपरेटिव सोसाइटी या सहकारी सभा महज़ एक क़र्ज़ बाँटनेवाली संस्था या जमात है। उनका ख़याल है, इस जमात और महाजन में यही फ़र्क़ है कि बमुक़ाबले महाजन के सोसाइटी कम सूद पर क़र्ज़ बाँटती है, और क़र्ज़ की अदायगी के लिये कुछ सहूलियतें भी देती है। बस, इनकी राय में सोसाइटी महाजन का दूसरा रूप है। एक में हमदर्दी की मात्रा कम और दूसरे में ज़्यादा—एक का हिसाब साफ़ और दूसरे का गंदा—बस, महाजनों के चंगुल से बचने के लिये ही लोग इन समितियों में शरीक हुआ करते हैं। कुछ तो यह भी समझ बैठे हैं कि ये सोसाइटियाँ सरकारी तक़ावी बाँटने का एक नया ज़रिया हैं।

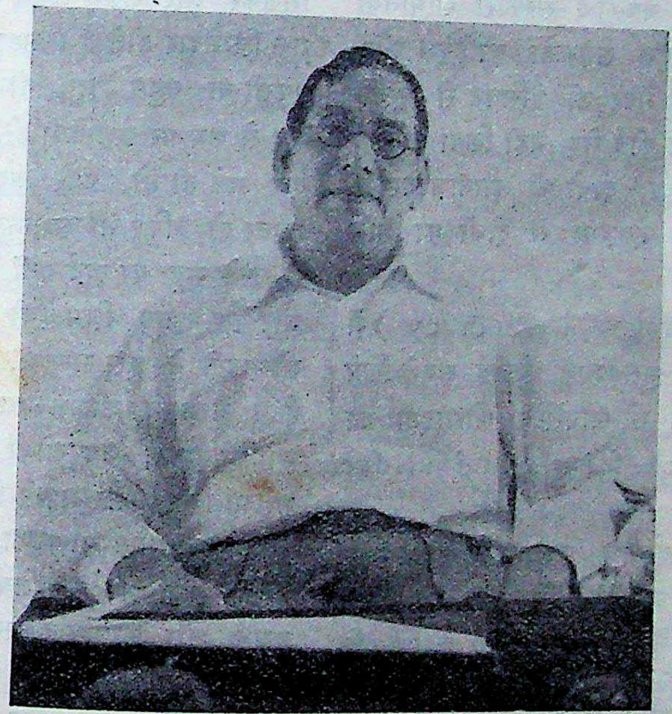

रायबहादुर पं० राधेलाल चतुर्वेदी

लेकिन ऐसा ख़याल करना बिलकुल ग़लत है। सहयोग का असली मतलब और आदर्श इससे कहीं ऊँचा है। चाहे किसी ग़रज़ को लेकर मेंबर शामिल हों, सोसायटी का असली मंशा उनका नैतिक बल (Moral Strength) बढ़ाना है।

* यह वह भाषण है, जिसे रायबहादुर पं० राधेलाल चतुर्वेदी, रजिस्ट्रार को-ऑपरेटिव सोसाइटीज़ यू० पी०, ने हाल ही में लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से ब्राडकास्ट किया था।—सुधा-संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसाइटी मेंबरों को इस बात की तालीम देती है कि वे अपने पैरों पर ख़ुद खड़े हो सकें, और अपने मामलात का ख़ुद इंतज़ाम कर सकें। ज़ोर इस बात पर दिया जाता है कि सचाई और ईमानदारी में इसके मेंबर आस-पास के लिये नमूना बनें। किफ़ायतशारी की आदत डालना और फ़िज़ूलख़र्ची बंद करना जमातों का ख़ास काम है। शिक्षा देकर और नैतिक दबाव डालकर सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने की पूरी कोशिश की जाती है। निर्बल, कुचले हुए और असहाय प्राणियों के लिये ये मसीहा का काम करती हैं। सच तो यह कि सरकारी समितियों को संगठन का बिगुल समझना चाहिए। और, संगठन भी कैसा? मेंबर की हैसियत से पूँजीपति और मज़दूर में कोई भेद नहीं किया जाता। दोनो के हक़ बराबर, दोनो की आवाज़ बराबर और सोसाइटी के इंतज़ाम में दोनो का हाथ बराबर होता है।

इस (Cooperative Democracy) में ऊँच, नीच, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सबके लिये बराबर स्थान है। को-ऑपरेटिव सोसाइटी का आदर्श है—"Each for all, and all for each." यानी—

"सबकी बहबूदी को हर फ़र्द रक्खे मद्दे नज़र,
और हर फ़र्द की बहबूदी है लाज़िम सब पर।"

मैक्लेगन-कमेटी ने साफ़ तौर से कहा है कि सहयोग का मंशा सिर्फ़ मामूली दुनियाबी ज़रूरतों को रफ़ा करना ही नहीं, बल्कि लोगों के चरित्र और अख़लाक़ी ताक़त को भी बढ़ाना है।

१९१७ में स्पीच देते हुए महात्मा गांधी ने भी यही बताया था कि सहकारिता का सच्चा उद्देश्य तो जनता के नैतिक वातावरण (Moral Atmosphere) में तबदीली करना है।

इसी आदर्श को आगे रख क़र्ज़ देनेवाली सोसाइटियों का संगठन किया गया है। इन समितियों में पहले तो जाँच-परखकर ऐसे मेंबर भरती किए जाते हैं, जिनका चाल-चलन अच्छा हो, पास-पड़ोस में साख अच्छी हो, वादे के पक्के हों, और फ़िज़ूल-ख़र्च न हों। अगर किसी शख़्स में ये गुण न हों, तो चाहे वह अमीर क्यों न हो, सोसाइटी में भरती नहीं हो सकता। नेक और ईमानदार ग़रीब के लिये इसका दरवाज़ा हमेशा खुला है। इन समितियों के मेंबरों की ज़िम्मेदारी मुश्तरका और ग़ैर-महदूद होती है, यानी समिति बाहर से जो कुछ क़र्ज़ ले, उसके लिये सब लोग मिलकर और अलग-अलग अपनी कुल हैसियत तक ज़िम्मेदार होते हैं। महाजन एक चमार को एकन्नी या बहुत हुआ, तो अधन्नी रुपए माहवारी सूद से कम पर क़र्ज़ देता ही नहीं। चमार ईमानदार भले ही हो, और अदायगी की नियत भी रखता हो, फिर भी ज़मानत की कमी की वजह से सस्ते सूद पर क़र्ज़ नहीं पा सकता। मुश्तरका और ग़ैर-महदूद ज़िम्मेदारी को अख़्तियार करके सोसाइटी ने इस समस्या को बख़ूबी हल किया है। बतलाने की ज़रूरत नहीं कि यह तभी मुमकिन हुआ, जब लोगों ने एक दूसरे के ऊपर भरोसा किया, और अपनी ईमानदारी को इकजाई करके एक मज़बूत साख का रूप दे दिया।

इन क़र्ज़ की समितियों में अौवल तो क़र्ज़ ज़रूरी और फ़ायदेमंद कामों के लिये दिया जाता है। फिर क़र्ज़ देकर यह देखा जाता है कि क़र्ज़ उसी काम में लगाया गया या नहीं। बैल के लिये क़र्ज़ लेकर अगर कोई जुआ खेल डाले, तो क़र्ज़ की वापसी कैसे हो सकती है। नतीजा यह होगा कि उसकी ज़िम्मेदारी उसके साथियों पर पड़ेगी।

इसीलिये हर क़र्ज़ के दो ज़ामिन होते हैं, जो बराबर यह निगरानी रखते हैं कि क़र्ज़ का मुनासिब इस्तेमाल किया जा रहा है या नहीं। इस तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेंबरान एक दूसरे को फ़िज़ूलख़र्ची और रुपए के बेजा इस्तेमाल करने से बचाते हैं। बेजा ख़र्च करने पर सोसाइटी को अख़्तियार होता है कि कुल क़र्ज़ फ़ौरन् वापस ले ले।

क़र्ज़ वक्त मुक़र्ररा पर अदा हो, इसका पूरा ध्यान रक्खा जाता है। अगर मेंबर वादे पर अदायगी न करें, तो उसकी सोसाइटी भी अपने महाजनों के क़र्ज़ वक्त पर अदा न कर सकेगी, और उसकी साख जाती रहेगी। यह बतलाने की ज़रूरत नहीं कि सोसाइटी की साख पर मेंबर की साख निर्भर है।

समिति मेंबरों को हिस्से ख़रिदवाकर किफ़ायत-शारी की आदत पैदा करती है, जिससे धीरे-धीरे उनके पास कुछ अपनी निजी पूँजी जमा हो सके। इसी भाव से सोसाइटी अपने मेंबरों को तरग़ीब देती है कि वे अपना फ़ालतू रुपया इसमें जमा करें। इन सोसाइटियों में दस साल तक अमूमन् कोई मुनाफ़ा नहीं बाँटा जाता। दर असल इनका मंशा मुनाफ़ा बाँटना नहीं—मुद्दआ है मेंबरों की सेवा करना।

"In a credit society, men are of more account than money."

निकल्सन के इन शब्दों में सोसाइटी के कारोबार का मरक़ज़ है मेंबर, न कि रुपया, जो उसे क़र्ज़ दिया जाता है। सबसे बड़ी बात यह कि समिति के ज़रिए उन्हें अपना इंतज़ाम आप करने की आदत पड़ती है। वे बड़े-बड़े मसले सब-के-सब बैठकर तय करते हैं, और रोज़मर्रा के काम के लिये एक पंचायत चुन लेते हैं, जिसमें समझदार, भले आदमी शरीक किए जाते हैं। ये पंच गाँव के नेता का काम करते हैं।

दूसरे क़िस्म की सोसाइटियों में भी व्यापारिक ईमानदारी या Business Morality पर पूरा ज़ोर दिया जाता है। जैसे दूध और घी बेचनेवाली सोसाइटियों में मिलावट करनेवाले मेंबरों पर भारी जुर्माना ही नहीं किया जाता, बल्कि सोसाइटी से निकाल भी दिए जाते हैं। इसका असर गाँव के और लोगों पर, चाहे वे मेंबर हों या न हों, अच्छा पड़ता है। इस तरह ग़ल्ला बेचनेवाली या कपड़ा बुननेवाली सोसाइटी में भी नमूने के मुताबिक़ ऑर्डर की तामील करने पर हर वक्त ज़ोर दिया जाता है।

अब हम उन सोसाइटियों का ज़िक्र करते हैं, जिनका मंशा ही अख़्लाक़ी सुधार करना है। ऐसा कौन है, जिसने Better-living Societies का या जीवन-सुधार सोसाइटियों का नाम न सुना हो—जैसा उनके नाम से ज़ाहिर है। जीवन-सुधार सोसाइटी का मंशा मेंबरों के जीवन का हरएक पहलू से सुधार करना है। हमारे यहाँ काश्तकारों की जो दर्दनाक हालत है, किसी से छिपी नहीं। ग़रीबी तो है ही, पर जिहालत ने कोढ़ में खाज का काम किया है। शास्त्रों के उसूलों को भूलकर वे तरह-तरह की कुरीतियों के शिकार बन रहे हैं। नतीजा यह हुआ कि उनके आमदनी और ख़र्च में इतना ज़्यादा फ़र्क़ हो गया है कि जीवन-भर के लिये वे ऐसे दलदल में फँस गए हैं, जिससे निकलना कठिन है। कौन नहीं जानता कि हमारे काश्त-कारों का जीवन हर तरह से नीरस हो गया है। उन्हें तरक़्क़ी की कोई आशा ही नहीं, जैसे-तैसे अपने दिन काटते हैं। उन्हें विश्वास-सा हो गया है कि उनके भाग्य में दिन-रात मेहनत करना और रूखी रोटियों पर गुज़र करना है। इस तरह के ख़यालात ने जनता को और भी तबाह कर दिया है। तरक़्क़ी करने के लिये उत्साह का नाम-निशान भी नहीं, और दर असल जीवन में मुर्दापन छाया हुआ है। जीवन-सुधार का सबसे बड़ा उद्देश्य यह है कि इस मुर्दापन को दूर करें, और जीवन को सरस बनाने की मुतवातिर कोशिश करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुरखों की बनाई रस्में ही किसानों के लिये हथकड़ी-बेड़ियों का काम कर रही हैं। जब तक ये न काटी जायँगी, हम सुधार की ओर एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकते। चुनाँचे पंजाब और हमारे सूबे में जीवन-सुधार सोसाइटियों ने इसी काम को ज़्यादातर हाथ में लिया है। हिंदू या मुसलमानों में विवाह में शास्त्रों और शरिअत के मुताबिक़ ख़र्च नहीं के बराबर होना चाहिए। हिंदुओं में विवाह-संस्कार के लिये सिर्फ़ होम ज़रूरी है, और होम के लिये एक आने का घी, दो पैसे की लकड़ी और एक पैसे की खील काफ़ी है। बाक़ी सब रिवाज-ही-रिवाज तो है। शास्त्रकारों का स्वप्न में भी ख़याल न था कि विवाह में बेरहमी से धन-धान्य का होम होगा, और चंद घंटों के बजाय दिन और हफ़्ते लगाए जायँगे। चुनाँचे इन सोसाइटियों ने इस बात के क़ायदे बना रक्खे हैं कि मेंबर एक मुक़र्ररशुदा रक़म से ज़्यादा न ख़र्च कर सके। अगर कोई क़ायदे के ख़िलाफ़ ख़र्च करे, तो उस पर सोसाइटी जुर्माना करती या मेंबरी से निकाल देती है। किसी एक शख़्स के लिये पुरखों की रस्म तोड़ना टेढ़ी खीर है, लेकिन जब गाँव के आदमी मिलकर ख़ुद ही इन ख़र्चों की हद मुक़र्रर कर दें, तो कौन किस पर एतराज़ कर सकता है?

अभी कुछ दिन हुए, पंजाब के एक गाँव में, एक शादी के मौक़े पर २०,०००) ख़र्च हुए, सोसाइटी बनने पर उसी ख़ानदान में दूसरी शादी में सिर्फ़ १,१००) से काम चला लिया। बड़ौदा में औदीच्य ब्राह्मणों ने सोसाइटी खुलने के बाद अपने गाँव में, साल-भर में, सिर्फ़ विवाह के रसूमात में एक लाख की बचत कर ली। हाल में पंजाब की एक सोसाइटी में २४ शादियों में हरएक में एक-एक हज़ार रुपए की बचत हुई। उस गाँव की औरतों में ज़ेवर की बहुत माँग रहा करती थी, और मर्दों में शराबख़ोरी का ज़ोर था। सोसाइटी ने एक मार्के का तस्फ़िया किया था। औरतों ने शादी के चढ़ाव के ज़ेवर की रक़म ३,०००) से ५००) मंज़ूर कर ली, और मर्दों ने शराब न पीने की क़सम खा ली।

हमारे सूबे में इस संबंध में बनारस-ज़िले के चिरई-गाँव को एक बहुत ऊँचा स्थान देना होगा। वहाँ ग्राम-सुधार-सभा ने जो चमत्कार कर दिखाया है, वह पत्रों में कई बार छप चुका है। इतना ही कहना काफ़ी होगा कि इस सोसाइटी से जनता के चरित्र पर इतना असर पड़ा है कि चोरी, शराबख़ोरी और मुक़दमेबाज़ी क़रीब-क़रीब बंद हो गई हैं। इस सोसाइटी को देखने के लिये माननीय वाइसराय और गवर्नर-जैसे आली हुक्काम तशरीफ़ ले जा चुके हैं। थोड़े दिन हुए, बिजनौर-ज़िले की सोसाइटी के सरपंच ने अपने लड़के की शादी में बहू को ज़ेवर देने के बजाय डाकख़ाने में ४००) जमा करके पास-बुक नज़र की। कितनी ही सोसाइटियों ने बरातियों की तादाद कम कर दी है, आतिशबाज़ी और नाच बंद कर दिया है।

शास्त्रों में श्राद्ध में आडंबर की सख़्त मुमानियत है। श्राद्धों में ख़र्च कम करने के लिये मुहकमे की तरफ़ से प्रतापगढ़ में प्रचार हो रहा है। नतीजा यह हुआ कि कई गाँवों में मृत्यु-भोज में भीड़-भाड़ नहीं होती। एक गाँव में महाब्राह्मणों को बुलाना भी बंद कर दिया गया है।

मुक़दमेबाज़ी में जो रुपया और वक़्त बरबाद होता है, उसके कहने की ज़रूरत नहीं। पंचायती फ़ैसला जीवन-सुधार का एक प्रमुख अंग है। पंजाब में Arbitration Societies बनाकर मुक़दमेबाज़ी में बहुत-कुछ रोक-थाम की गई है। वहाँ की Monzang Arbitration Society

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar .

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने एक लाख रुपए का झगड़ा बातों-बातों में तय कर दिया। अगर यह मुक़दमा अदालत जाता, तो २०,०००) से कम ख़र्च न होता। एक दूसरी सोसाइटी ने मेंबरों की रज़ामंदी से ८०,०००) की जायदाद का बटवारा कर दिया, और सिर्फ़ एक रुपया ख़र्च हुआ। हमारे सूबे में भी इस क़िस्म का काम फ़ैज़ाबाद-ज़िले के मसोधा-इलाक़े में हुआ है। और, इस काम को अच्छे ढंग पर चलाने के लिये हाल में ख़ास इंतज़ाम किया गया है।

Better-living Societies ने जिहालत दूर करने का काम भी अपने हाथ में लिया है, और इनके मातहत या अलाहदा क़रीब ५०० गाँवों में रात्रि-पाठशालाएँ काम कर रही हैं। इनमें लिखने-पढ़ने के अलावा कथा, कहानी, अख़बार और दिलचस्प ख़बरें सुनाकर लोगों की जानकारी बढ़ाई जाती है।

अंत में यह बतलाना ज़रूरी मालूम पड़ता है कि ये सोसाइटियाँ सुधार की तरफ़ लोगों को राग़िब कर रही हैं, और क़ानून बनाने में Legislature के लिये सफ़र-मैना का काम कर रही हैं। Rural Areas Development Bill, Consolidation of Holdings Bill और Dowry Restraint Bill इस बात के सबूत हैं।

हम पढ़े-लिखे देश-प्रेमियों से अपील करते हैं कि इस सुधार-योजना में हमारा और ग्राम-सुधार-विभाग का हाथ बटाएँ। धनी अपने धन, विद्वान् अपनी सलाह और अन्य लोग अपनी सेवा से गाँववालों की भलाई कर सकते हैं। लेकिन अब तक जनता से पूरी मात्रा में हमें सहायता नहीं मिली, और काम इतना बड़ा है कि अकेले सरकारी मुलाज़िम इसे पूरा नहीं कर सकते। जब तक इस काम में हरएक आदमी हाथ न बटाएगा, यह अधूरा ही रहेगा। नौजवान और विद्यार्थी ग्राम-सुधार के काम में मदद दे सकते हैं। विद्यार्थी छुट्टियों का कुछ हिस्सा इस तरफ़ आसानी से लगा सकते हैं। क्या हमारे देश-प्रेमी नौजवान इस ओर ध्यान देंगे?

दुनिया में हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद-टॉनिक शारीरिक समस्त त्रुटियों को पूरा कर, स्वास्थ्य को सुधारकर, झुर्रियाँ नष्ट कर, आँख की रोशनी तेज़ कर, बाल का पकना रोककर, बूढ़ा जवान सभी का पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी न रक्खे, और झूठा साबित हो, तो १००) देने की शर्त। दाम ५) फ़ी शीशी।

पता—जड़ी-बूटी-दवाख़ाना, पो० बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी

[श्रीमती राजकुमारी बैजल एम्० ए०]

वह एक उच्च कुल का लड़का था। सारे संबंधी ऊँची-ऊँची पदवियों पर थे। घर में पैसा भी था, सब एक में ही रहते थे। दादा थे, वह हाथों पर मन रखते थे। पर मा नहीं थी, मा के विना उसके लिये संसार सूना था। सर्व-सुख-धन-ऐश्वर्य-प्राप्त विधवा स्त्री जैसे मन मारे रहती है, उसी तरह वह मातृ-हीन बालक घर में खोया-खोया-सा रहता था। घर में दूध-मिठाई रोज़ ही आता, जब कभी वह दादा के सामने पड़ जाता, और भोजन का समय होता, तो वह उसे भी खिला देते। दादा के अतिरिक्त और सबकी आँख का वह काँटा था।

वह बड़ा ही अभिमानी था। होश सँभालते-सँभालते उसने दूध, दही, जूते, पैसे माँगना, सब छोड़ दिया था। अब धोबी के घर कपड़े न जाते थे, क्योंकि धुलाई देते समय पिता की कड़ी आँखें देखने और चाची की कटु वाणी सुनने की उसमें शक्ति न रह गई थी। सबेरे, स्कूल जाने के समय, यदि रोटी तैयार हो सकी, तो दो कौर अन्न मुँह में पड़ जाता—यदि न हो सकी, तो एकादशी ही रहती। रात को खाना अवश्य मिल जाता था। या छुट्टी के दिन दादाजी साथ बिठाकर पेट-भर खाना खिला देते। बात-बात पर झिड़कियाँ तो मामूली बात थी। बीच-बीच मार भी पड़ती रहती। इसी डर से वह अधिकतर घर से बाहर रहता। लड़कों की कुसंगति में उसे बुरी आदतें पड़ने लगीं। वह चाहता था, घर के अंदर बैठे, मन लगाकर पढ़े; लेकिन पढ़ने बैठता, तो किसी-न-किसी काम के लिये उठा दिया जाता। वह इतना तंग आ जाता कि बाहर जान बचाकर भाग जाता—फिर ताश खेलना, आवारा फिरना, मार-पीट और गाली-गलौज यही होता। वह रात को पढ़ता। हाईस्कूल की परीक्षा में वह सेकंड डिवीज़न पास हुआ।

दादाजी ने कॉलेज में भरती करा दिया। खाने-पीने का ढंग था ही नहीं, पढ़ने में भी तबियत न लगती। स्वास्थ्य गिरने लगा। हड्डी-हड्डी निकल आई। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अपने दोषों के दलबल-सहित युवकों का गला दबाए हुए थी। १९३० का ज़माना था। असहयोग-आंदोलन ज़ोरों पर था। उसने भी देश की पुकार सुनी। घर से तो जी उचटा हुआ था ही, बाहर की ओर खिंचाव हुआ। कोई स्नेही ऐसा न था, जो अपने स्नेह-बंधन में उसे बाँध रखता। रुकी हुई जल-धारा को बहने का मार्ग मिल गया। सबेरे प्रभात-फेरी घर की तरफ़ से निकल रही थी। वह भी उठा, और साथ हो लिया। जोशीले गानों ने देश-प्रेम का नशा चढ़ा दिया। घर लौटने पर भी वह नशे में झूम रहा था। द्वार पर पिता की विकराल मूर्ति देखकर उसके प्राण सूख गए। चौखट लाँघते-लाँघते उन्होंने झल्लाकर एक हाथ जमाया, और कहा—"बच्चू, इस भरोसे मत रहना कि तुम गांधी-गर्दी में घूमते फिरो, और इस घर में रोटियाँ तोड़ो; सीधे कॉलेज जाओ, वरना अच्छा न होगा।" घड़ा भर गया था, अब एक बूँद की भी जगह न रही थी—प्रवाह बह निकला। वह कॉलेज आया अवश्य, पर साइकिल और किताबें क्लास में रखकर स्टेशन चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ परिचित व्यक्ति दिल्ली जा रहे थे। उन्हीं के साथ वह भी विना टिकट गाड़ी में बैठ गया। अगले दिन दिल्ली में वह युवकों की टोली के आगे-आगे सड़क पर चल रहा था।

रबर का गेंद जितनी ज़ोर से पटका जाय, उतनी ही ज़ोर से वह ऊपर को उछलता है। सरकार का दमन जितना बढ़ता जाता था, उससे भी अधिक वेग और जोश से आंदोलन बढ़ता जाता था। विदेशी कपड़ा बिलकुल बंद कर दिया गया था। पर ऐसा करने में सारे युवक एक-एक करके 'कृष्ण-मंदिर' में विश्राम करने चले गए। वह भी दो साल के लिये चला गया।

जब तक वह बाहर था, आंदोलन-संबंधी कार्य-क्रम में व्यस्त रहता था; जब जेल चला गया, तो तब तक निश्चिंतता थी, जब तक वह कारागार के फाटक के बाहर न कर दिया जाय। और, बाहर होने की उसे इच्छा भी न होती थी—क्या करेगा, कहाँ जायगा, यह सब अनिश्चित था। भाग्य को स्पष्ट करने की क्षमता उसमें न थी। वहाँ खाना मिल ही जाता था। बान जो बटना पड़ता, उसमें उसे कोई कठिनाई न होती। कभी-कभी उसे सतीश की याद अवश्य आती—छोटा-सा, डेढ़ साल का सतीश सामने के मकान के चबूतरे पर खेलता फिरता था। वह कभी-कभी सायंकाल को उसे गोद में उठाकर घुमाने ले जाया करता। बस, वही सतीश उसकी स्मृति को कभी-कभी जगा देता। संसार में और कोई था ही नहीं, जिसका वह स्मरण करता। अथाह जन-सागर की असीम लहरों के थपेड़ों से इधर-इधर फेंके जाते हुए अभागे के लिये एक ही दूरस्थित तट था, जो उसकी धूमिल स्मृति में प्यार-भरे संकेतों से आमंत्रित करता प्रतीत होता था।

किंतु बाहर आने पर उसके पैर कमला के मकान की ओर न पड़ते थे। एक-दो दिन इधर-उधर करके वह गया, सामने सतीश खड़ा था—उसने पुकारा—"सतीश!" सतीश भौंचक्का होकर देखने लगा। ऊपर से कमला ने देखा, और बुला लिया। कहीं जाने-आने और काम करने की समस्या हल हो गई। वह अपने सतीश के पास रहने लगा।

इस घर का वायु-मंडल उस घर से बिलकुल उलटा था। वहाँ उसने तिरस्कार और झिड़की के अतिरिक्त कुछ न पाया था। यहाँ उसका हर समय ध्यान रक्खा जाता—वात्सल्य और स्नेह-परिप्लावित गृह-स्वर्ग में उसका कमल खिल उठा। कार्य करने की स्फूर्ति और शक्तियाँ जाग गईं। जिस कार्य के लिये उसे भेजा जाता, उसे वह बड़ी तत्परता से कर लाता। दिल्ली के कपड़े के व्यापार में वह बड़ी जल्दी दक्ष हो गया। अपनी कार्य दक्षता से उसने गृह-स्वामी को मुग्ध कर लिया। उनके व्यापार में वह उनका दाहना हाथ हो गया। थोड़ी देर भी उसे घर पर हो जाती, तो कई गाहक लौट जाते। लिखा-पढ़ी करना, रुपया वसूल करके लाना, बैंक से रुपया निकालना-रखना, सब काम उसी के सुपुर्द थे। ताली भी उसी के पास रहती।

बीच-बीच में वह सतीश को पढ़ाता था। सतीश के प्रति उसके हृदय में स्नेह की अनगिनती लहरें उठती-उछलती थीं, जिनकी बौछार घर के कोने-कोने तक जाती थी। सतीश पर केंद्रित द्वितीया के चंद्र ने बढ़ते-बढ़ते पूर्ण राका-पति होकर अपनी ज्योतिर्मयी किरणों से संपूर्ण गृह को आलोकित कर दिया था। उसकी स्नेह-परिधि अपना घेरा बढ़ाती जा रही थी। वह घर का सारा कार्य करता, और उसका निज का सारा कार्य—सारी देख-भाल—करती थीं कमला—गृह-स्वामिनी। दोनो समय खाना अपने सामने ही खिलाती थीं। किसी दिन उपस्थित न होने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे खाया ही न जाता—उनके हाथ से एक-दो चीज़ लेकर उसे अपूर्व आनंद होता। मा की उसे याद न थी। घर पर कभी उसे किसी ने इतने स्नेह से खिलाया ही नहीं। वह बड़ी ही इच्छा और आग्रह-पूर्वक खाना खिलाए जाने की सार ही क्या जानता? जब तक वह घर में रहता, चाहता, कमला भी घर में ही रहें; उसके प्रत्येक कार्य की व्यवस्था कर दें। जब वह बाहर जाय, उनके दर्शन करके जाय। कमला का प्रेमाशीर्वाद उसके लिये अमूल्य निधि थी, जिसे वह बार-बार टटोल-कर देखना चाहता था कि वह सुरक्षित है। जब वह कार्य से लौटकर आता, तो संगम-सदृश पवित्र चरणों के दर्शन करने की उत्कट इच्छा को संवरण करना असंभव-सा हो जाता। कमला के इधर-उधर चले जाने पर उसे बड़ा दुःख होता, कभी-कभी झल्ला भी जाता, और वह रूठ भी जाता। पर यह रूठना, मचलना थोड़ी ही देर रहता—अभीष्ट की प्राप्ति होते ही वह तृप्त हो जाता। अवकाश होने पर कमला जब छत पर सहेलियों से हँस-हँसकर बातें करतीं, तो नीचे उससे ठहरा न जाता, वह झल्लाकर बाहर चला जाता। अन्य संबंधियों के आने पर वह चाहता कि जल्दी ही बिदा हो जायँ, तो अच्छा। व्यर्थ ही कमला को थकावट हो रही है। उन्हें इतना कार्य रहता है—विश्राम भी तो करना चाहिए, न कि इन आगत जनों की ख़ातिरदारी। कभी-कभी अपनी बात दबाना उसके लिये असहनीय हो जाता, और वह कमला पर अपनी इच्छा प्रकट कर देता। कमला को अजीब लगता, वह उसे समझा देतीं। सोचतीं, अकाल का टूटा हुआ अभागा सोने के थाल में सारा भोजन हबड़-हबड़ करके अपने आप ही खा जाना चाहता है, कहीं अजीर्ण न हो जाय।

कमला के प्रति उसकी असीम श्रद्धा थी, अपार आदर था, अथाह प्रेम था, और थी एक आकुल इच्छा, जो उसे हर समय कमला के लिये कुछ-न-कुछ करने को प्रेरित करती थी। वह चाहता था, मैं अपनी नवीन जीवनदात्री के लिये बड़े-से-बड़े कार्य कर सकूँ—यदि कभी जीवन-उत्सर्ग करने का अवसर मिल जाता, तो कितना अच्छा होता। यह उसके जीवन का पवित्र उद्देश्य था।

पर संसार को यह सब बड़ा विचित्र लगता। लोगों के लिये यह संसार का आठवाँ आश्चर्य था। पराया लड़का इस प्रकार घर में आकर स्थान कर ले, ऐसा भी कहीं होता है। यदि काम-काज के लिये—व्यापार के लिये किसी सहायक की आवश्यकता ही है, तो किसी रिश्तेदार को बुला लें। यह तो वही पुरानी कहावत चरितार्थ हो रही है—'दाल-भात में मूसलचंद।' कुछ बड़े संबंधी कहते कि कुछ-न-कुछ कारण अवश्य होगा, जो उसे रक्खे हुए हैं। कोई-कोई तो सामने भी कह देते, पर उनकी बात यों ही टाल दी जाती। इस छोटे-से घर की आँख की पुतली संसार की आँख का काँटा बनी हुई थी।

पिछले आठ महीनों से घर में कमला की मौसी अपने बेटे-बहू-सहित आई हुई थीं। बड़ा शहर है—बेटे का काम-काज लग जायगा। बड़े आदमी हैं—उनके घर रहने से नगर के बड़े-बड़े व्यक्तियों से परिचय होगा। अतः वह यहीं ठहर गईं। वह यहाँ रहने के विचार से आई थीं, इसलिये सामान भी काफ़ी था। कमला ने उनके लिये एक कमरा ख़ाली कर दिया।

मौसी जब उससे किसी काम के लिये कहतीं, वह फ़ौरन् कर देता। दूसरे की यथासंभव सहायता करने में उसे बड़ी प्रसन्नता होती। सद्गुणों का प्रभाव पड़ता ही है। उसकी शिष्टता, सौम्यता और कार्य-कुशलता ने मौसी को मुग्ध कर लिया। वह अब किसी और से काम को न कहतीं। जो वस्तु मँगानी होती, बाहर-भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जो कुछ भी कार्य होता, वही करता। कभी-कभी सबेरे यमुनाजी की पटरी तक पहुँचा भी देता। वह कहतीं—"लड़का तो काम का है।" पर उनका यह सद्भाव कभी स्थायी नहीं रहता। कमला जब एक मुख से उसकी प्रशंसा करतीं, तब वह उसकी विरोधिनी बन जातीं, वह यह मानने को तैयार न होतीं कि उसमें इतने गुण हैं—कमला की की हुई प्रशंसा उसके लिये अनधिकार पुरस्कार की तरह उन्हें बहुत ही खटकती।

कमला का इतने यत्न से उसे खिलाना-पिलाना उन्हें बहुत अखरता। कई बार वह वहाँ से उसे बुलाने की चेष्टा करतीं। और, उसके कपड़े-लत्तों की देख-भाल की आवश्यकता ही क्या है, और फिर बाहरी व्यक्ति से इतना मिलना, बोलना, बात करना उचित भी तो नहीं—कोई क्या कहेगा। कोई और चाहे कहे या नहीं, मौसी अपने दृष्टि-कोण से इसे अच्छा न समझतीं, और अपने विचारों की प्रतिच्छाया संसार में भी देखतीं। जब कमला कहतीं—"बिना मा का बच्चा मेरे घर में मुरझाया हुआ आया था। बड़ा ही लजीला था। अब जाकर उसकी झिझक मिटी है। इसे खिलाने-पिलाने, आदर-स्नेह से रखने में हृदय को संतोष और तृप्ति होती है। मेरे लिये तो जैसा सतीश, वैसा वह।" तब मौसी आँखें फाड़कर कहतीं—"ऐसे लड़के कितने ही फिरते हैं—बराबर का तो है, सतीश की तरह कैसे रह सकता है।"

एक दिन कमला को किसी के घर शादी में जाना था। सब लोग गए। सतीश और कमला को उन्होंने नहीं आने दिया। अगले दिन दस बजे कमला ने आकर घर में नया ही दृश्य देखा। बाहर से ही मालूम हो गया, मौसी की चोरी हो गई है। कमला धक-से रह गई। वह तो घर में मेहमान थीं। इससे तो हमारे ताले टूट जाते। उन बेचारियों की चीज़ तो न जाती। ईश्वर के कार्य में हस्तक्षेप करने का अधिकार किसे है। सब मौसी के कमरे में इकट्ठे थे। वह ख़ूब रो-पीट रही थीं। बड़ा आश्चर्य था—ताले बंद, सब लोग छत पर सोए थे। फिर उनका वही बक्स, जिसमें उनके रुपए-पैसे और कुछ बहुमूल्य सामान था, ग़ायब हो गया। जिस समय सब चले गए थे, नौकर ही घर पर रह गया था। बारह बजे तक लौटकर आए। मौसी कहती थीं—"नौकर मेरे सामने रात को घर गया था। उसका काम नहीं हो सकता, क्योंकि उस समय कमरे का ताला बंद था।" उन्होंने नींद-भरी आँखों से देख भी लिया था कि संदूक़ और सामान सब ठीक रक्खा है। उन्हें रात को कुछ खट-पट मालूम पड़ी थी। पड़ी या नहीं, यह तो वही बता सकती थीं। सुननेवाले कह रहे थे—"जब उनकी चोरी हुई, तो खट-पट तो हुई ही होगी, और उन्होंने सुना भी होगा।" सबेरे भी कमरे का ताला बंद था। बड़ा आश्चर्य था, कुछ समझ में न आता था, बक्स कहाँ गया, कैसे गया।

मौसी रात को देर में सोई थीं। सबेरे आँख लग गई। देर में उठीं। जब तक वह उठकर कमला और सतीश को लेने चला गया था। वह कह रही थीं—"बाहर का कोई आएगा, तो ताला तो तोड़ेगा; घर में ही बक्स उड़ गया, जिसने लिया हो, दे दे, नहीं तो अच्छा न होगा.........., सतीश को लेने जाने की क्या आवश्यकता थी, वे लोग आप पहुँचा देते, और फिर इतनी देर कहाँ लगी ......। मैं तो इस घर में आकर लुट गई।" आदि-आदि।

कमला की कुछ समझ में न आता था। पति से पुलिस में रिपोर्ट कराई। समझाया कि घर में कौन ले जायगा, पर वह किसी तरह मौसी को समझा न सकीं, उनका स्वर बढ़ता ही गया। उस दिन नौकर दिन-भर नहीं आया, सुना, उसके पेट में दर्द हो गया था, वह सायंकाल को आया, पूछने पर बोला—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राम-राम हम का जानी, बकस कहाँ गवा। आपके घर ही माँ कोऊ लिहिसि है।"

यह सब हो रहा था, पर उसके हृदय की दशा किसी को मालूम न थी। कमला ने कमरे में जाकर उसे रोते हुए देखा, तो वह स्वयं भी रोने लगीं। वह कमला के चरणों पर गिर पड़ा। कमला ने कहा—"संसार तुम्हें चोर समझे, पर मैं तो सच्चा समझती हूँ।" उसका रोना बंद न हुआ। अगले दिन सबेरे सबने देखा, दूकान की तालियाँ सामने की अलमारी पर रक्खी हैं। उसका सारा सामान वैसा ही रक्खा है। केवल उसका पलँग ख़ाली पड़ा है। उसका कहीं पता न था।

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात 'गोनोकिलर' रजिस्टर्ड

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान ! ख़रीदने से पहले दवा का नाम गोनोकिलर और मुर्ग़ी छाप सीलबंद पैकेट देख लीजिए

मूल्य ४० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S.L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई न० ४

लखनऊ स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत एम्० एन्० राय

[श्रीयुत क, ख, ग]

आलोचना करनेवाला पक्षपात-शून्य हो, ऐसा कहते समय समझा यह जाता है कि समालोचक देवता होता है, अथवा देवता को ही समालोचक बनने का अधिकार है ; क्योंकि सर्वथा पक्षपात-शून्यता और आलोचना परस्पर विरोधी हैं। मेरा विचार है, कोई भी किसी दिशा में पंख गिराए बिना उड़ नहीं सकता। लंबी उड़ान लेने का तो अर्थ ही है 'पक्षपात' (पक्षाणां पातः)। मनुष्य को सर्वथा पक्षपात-शून्य मानने का अर्थ है मनुष्य को पाषाण मानना अथवा चैतन्य की सुषुप्ति। यह तो ठीक ही है कि पक्षाघात न होना चाहिए। पक्षाघात मृत्यु है अथवा रोग, जब कि पक्षपात मानव-सुलभ स्वभाव है। जब तक पक्षपात पक्षाघात का रूप धारण न कर ले, तब तक उसे हेय नहीं कहा जा सकता। प्रस्तुत लेख का लेखक भी पक्षपात-शून्यता का दावा नहीं करना चाहता। हाँ, जहाँ तक लेखक का संबंध है, वह पक्षाघात-रोग से पीड़ित होकर समालोचना नहीं कर रहा। समालोचना करना कठिन है, और व्यक्ति की आलोचना तो बहुत ही कठिन, इस सत्य का लेखक पूरा-पूरा क़ायल है।

लेखक का स्पष्ट मत है कि जिस प्रकार समालोचना साहित्यिक जगत् में अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि समालोचना से साहित्यिक सदसद्विवेक जाग्रत् होता है, और साहित्य अनियंत्रित होकर जीवन-तत्त्व से दूर नहीं जाने पाता, इसी प्रकार राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में जनता का नेतृत्व करनेवाले अथवा करने के इच्छुक व्यक्तियों के संबंध में भी सदसद्विवेक-भावना जाग्रत् करना परमावश्यक है। यद्यपि इस आलोचना के बिना भी जाग्रत् जनता सदसद्विवेक कर सकती है, और आज भी करती है। पर ऐसा होना इष्ट नहीं, क्योंकि इस प्रकार हानि और लाभ दोनो संभव हैं। हमारा तो विश्वास है कि आलोचना-साहित्य में इस प्रकार की आलोचना का भी प्रमुख भाग रहना चाहिए। व्यक्तिगत आक्षेप और इस प्रकार की आलोचना को समान समझना ठीक न होगा ; क्योंकि यह आलोचना तो सार्वजनिक जीवन में आनेवाले व्यक्ति के सार्वजनिक रूप की ही आलोचना है। ख़ानगी गुण-दोषों का विवेचन इसमें नहीं होना चाहिए।

श्रीयुत मानवेंद्रनाथ राय (एम्० एन्० राय) देहरादून-जेल में बहुत समय तक रहे हैं। देहरादून को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह बंदी-जीवन की यातनाओं से मुक्त भी यहीं हुए। जिस दिन वह जेल से मुक्त हुए, उसी दिन से देहरादून की जनता ने उन्हें हृदय में स्थान दिया है। श्रीराय ने रशिया और चीन की क्रांतियों में प्रमुख भाग लिया है, वहाँ के जनांदोलनों का नेतृत्व किया है, इन बातों को जानकर तब सारा देश श्रीराय के प्रति उत्सुक होकर देखने लगा था, ऐसा प्रतीत होता था। जेल से मुक्त होने के थोड़े ही दिनों बाद फ़ैज़पुर-कांग्रेस के बृहदधिवेशन में श्रीराय सम्मिलित हुए। वहाँ आपका देश ने स्वागत किया। मैं फ़ैज़पुर-कांग्रेस में नहीं जा सका था, परंतु मुझे स्मरण है, कांग्रेस के अधिवेशन को देखकर वर्धा-महिलाश्रम के सुयोग्य अध्यापक श्रीसत्यदेव शास्त्री ने अपने पत्र में ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द लिखे थे—"फ़ैज़पुर-कांग्रेस को देखकर मेरे हृदय पर तो यह अंकित हुआ कि वहाँ दो व्यक्तियों का प्रभाव स्पष्ट था, पहला पूज्य बापू का, दूसरा एम्० एन्० राय का।" परंतु आज? अब इससे विपरीत दशा है। त्रिपुरी-अधिवेशन के डेलीगेटों के चुनाव की तिथि देहरादून में ४ जनवरी थी। शहर से दो प्रतिनिधि चुने जाते थे, पर उम्मीदवार थे पाँच, जिनमें श्रीराय भी थे। फल-घोषणा पर प्रतीत हुआ कि श्रीराय २८ वोटों के कारण एक मुसलमान मेंबर से हार गए; इस प्रकार वह प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी में भी नहीं आ सके। यह बात नहीं कि देहरादून में श्रीराय की स्थिति पहले भी ऐसी रही हो; क्योंकि यहाँ से वह निर्विरोध प्रतिनिधि बनकर प्रांत और भारत-कांग्रेस-कमेटी में जा चुके हैं। और, फिर अब तो श्रीराय देहरादून में बस-से गए हैं, इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ जानी चाहिए थी।

इतने थोड़े-से ही समय में हिमालय पर चढ़कर भूतल पर भी रहने के अधिकार से वंचित क्यों?

प्रत्येक देश की स्थिति में अंतर रहता है। उसकी सभी बातों में कुछ निरालापन रहता है। एक छोटे-से कुटुंब में भी जब हम नए-नए जाते हैं, तो उसकी रीति-नीति तथा व्यवस्था से अपरिचित रहने के कारण हमें कुछ दिन तो खुलकर रहने का अवसर नहीं मिलता। अन्य कुटुंबों और उसके सदस्यों का अनुभव हमारे लिये मार्ग-दर्शक अवश्य हो सकता है, और बहुधा होता भी है। परंतु केवल उसी के आधार पर नए कुटुंब में रहने अथवा व्यवहार करने का अर्थ प्रायः उपहासास्पद बनना ही होता है। जब एक छोटे-से कुटुंब की यह बात है, तब समूचे राष्ट्र के प्रति कुछ धारणाएँ बनाने से पूर्व उसकी संस्कृति, रीति-नीति और विशेषताओं का अध्ययन किए विना धारणाएँ बनाकर चलना कितना हानिकर है, मिथ्याहंकार है, और आत्मविडंबना है, यह तो अनायास ही हम समझ सकते हैं। जब महात्मा गांधी दक्षिण-आफ़्रिका से भारत आए, तब स्वर्गीय गोखले ने उनसे कहा था कि देश में कार्य करने से पूर्व देश को समीप से देखने के लिये आपको सारे देश का भ्रमण करना चाहिए, तभी देश के लिये कोई प्रोग्राम निर्धारित किया जा सकता है, और वही सही होगा। महात्माजी ने स्व० गोखले के आदेश का पूरा-पूरा पालन किया। मौन भाव से उन्होंने समीप से भारत को देखने के बाद ही देश के सम्मुख उसके उद्धार की नीति रक्खी। कहना न होगा कि इसी कारण देश की जनता उस पर बद्ध-परिकर होकर चली; और बहुत हद तक आगे भी बढ़ी। महात्माजी प्रायः कहा करते हैं—"मैं पुस्तकों के बल पर प्रोग्राम नहीं बनाता। मेरे सम्मुख तो देश की खुली किताब है; और मैंने उसका अनेक बार आद्योपांत पारायण किया है।" आर्य-समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी देश के सामने सामाजिक प्रोग्राम रखने से पूर्व देश की वास्तविक स्थिति का समीप से निरीक्षण किया, तभी वह सफल हो सके। यदि कोई डॉक्टर मरीज़ को देखे विना ही उसे दवा देता है, तो वह अपनी असफलता को स्वयं आह्वान करता है। नेता भी रुग्ण देश और जाति का डॉक्टर है। तात्पर्य यह कि जो नया प्रोग्राम रखना चाहता हो, जिसका उद्देश्य देश की दिशा बदलना हो, उसे चाहिए, वह जिसे दवा देना चाहता हो, उसकी हालत समीप से ध्यान-पूर्वक देखे। दुःख की बात है कि श्रीएम्० एन्० राय ने देश को समीप से देखने की आवश्यकता अनुभव नहीं की। विदेशी सड़क पर यहाँ अपनी गाड़ी चलाने का निश्चय सफल नहीं हो सकता। लेखक का दृढ़ मत है कि भारत को सदा का असभ्य मानकर उसे नई संस्कृति में ढालना और सभ्यता का नए रूप में ग्राहक बनाना इतिहास और सत्य के विरुद्ध है। भारत का अतीत रम्य और आकर्षक है। अतीत का भारत संसार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिरोमणि है। इसलिये भारत को सुनहले अतीत के आलोक में वर्तमान में परिश्रम करके भविष्य का स्वामी बनने का उपदेश देना ही भारत के लिये उपयोगी हो सकता है। जिसे भारत के रम्य अतीत पर विश्वास न हो, वह भारत को अपनी कृपा से आभारी न करे। यह भारत की आत्मा की अंतर्ध्वनि है। श्रीएम्० एन्० राय भारत को भारत के शत्रुओं के आलोक में देखकर उसका भला करना चाहते हैं, जो असंभव है।

श्रीराय ने जेल में रहते ही संभवतः यह अनुभव कर लिया था कि देश में कांग्रेस की शक्ति अजेय है। इसलिये केवल इसी कारण उन्होंने जेल से बाहर आकर कांग्रेस में प्रविष्ट होने का निश्चय किया। परंतु कांग्रेस के सिद्धांत पर उन्हें विश्वास आज तक भी न हुआ। अहिंसा, सत्य, खादी, हिंदू-मुसलिम-ऐक्य, हरिजन-सुधार आदि कांग्रेस की किसी नीति पर भी उनका विश्वास नहीं; फिर भी वह कांग्रेस में हैं। इतना ही नहीं, वह दूसरे सोशलिस्टों का भी पृथक् किसान-सभा और समाजवाद आदि संस्था बनाने के कारण विरोध करते हैं, जब कि स्वयं 'रायवाद' को जन्म देना चाहते हैं। ये इतनी स्पष्ट विरुद्ध बातें हैं, जिनसे किसी भी देश-भक्त के हृदय में अनिच्छा रहते भी संदेह हो जाता है कि आख़िर यह कौन है? क्या चाहता है?

जिस प्रकार कांग्रेस की बढ़ती हुई शक्ति से वैयक्तिक स्वार्थ सिद्ध करना बुरा है, संस्था के हित के विरुद्ध है; इसी प्रकार कांग्रेस में विश्वास न रहते भी कांग्रेस का सदस्य इसलिये बने रहना कि इससे अपना नेतृत्व बनेगा, यह भी पाप है, दंभ है, अनाचार और आत्मवंचना है। श्रीराय के असफल होने का मुख्य कारण यही है। नैतिकता का यह तक़ाज़ा है कि जब कोई किसी संस्था के सिद्धांतों और अनुशासन को नहीं मानता, तो वह उसके पृथक् अपनी संस्था बना ले; अथवा दूसरी किसी संस्था में चला जाय। जिस शाख़ पर बैठना, उसे ही काटना तो अमनुष्योचित 'फ़ेल' है।

समालोचना अच्छी चीज़ है। परंतु आज संसार केवल दूसरों की समालोचना-मात्र करनेवाले की बात सुनने को शायद ही तैयार हो। एक और भी बात है, मनुष्य की प्रकृति है कि वह अपनी निंदा सुन भी ले, परंतु अपने पिता की नहीं। भारतवर्ष के धार्मिक जीवन में यह बात और भी अधिक है। भारतीय धार्मिक पुरुष ईश्वर की भी निंदा सुन ले, पर अपने ऋषि और पैग़ंबर की नहीं सुन सकता। श्रीराय ने सभी की आलोचना कमर कसकर की है। शायद उन्होंने सोचा हो, जिस प्रकार 'मार्क्स' सबकी आलोचना करता था, और महापुरुष बन गया, मैं भी ऐसे ही भारत का सबसे बड़ा नेता बन जाऊँगा। परंतु यह पेड़ भारत में नहीं उग सकता। श्रीराय की असफलता का यह भी एक मुख्य कारण है। यह आलोचना तब और भी अखरती है, जब आलोचना करनेवाले के पास कोई अपना प्रोग्राम भी न हो, और वह विना बात औरों की आलोचना करता चला जाय।

भारत का इतिहास हमें बताता है कि यहाँ के लोग सेवा करनेवाले, धार्मिक वृत्ति के पुरुष को ही, उसकी इच्छा न रहते भी, अपना नेता बनाते हैं। सेवा करते-करते वह स्थिति भारत में मनुष्य को अनायास मिल जाती है, जो औरों को चाहने और भटकने पर भी नहीं मिल सकती। यह देश तो भगवान् कृष्ण के कर्मयोग को सुन चुका है। जो नेतृत्व के पीछे भागता है, नेतृत्व उसकी खोपड़ी पर भूत की तरह सवार हो जाता है। आज श्रीराय नेतृत्व के पीछे घूमते हैं। जब वह चुपचाप बैठकर, अपने प्रोग्राम के अनुसार कहीं सेवक बनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठ जायँगे, तब लोग चरणों में जाकर बड़ा बनने की प्रार्थना करेंगे। परंतु सेवा-वृत्ति धर्म और ईश्वर-विश्वास के बिना कठिन है।

एक और भी बात है। श्रीराय के आचरण से देश ने अब तक उनके संबंध में यही धारणा की है कि 'श्रीराय' ऐसे किसी भी अवसर को हाथ से जाने देना नहीं चाहते, जिसमें कांग्रेस को क्षीण और बदनाम किया जा सकता हो, तथा उसमें फूट पड़ सकती हो। खरे-कांड के समय राय ने खरे के पक्ष में पूरी शक्ति लगा दी। इस प्रकार जिस अनुशासन के बल पर कांग्रेस आज की स्थिति पा सकी है, राय उसे नष्ट करने का अवसर ढूँढ़ते हैं। जिस प्रकार और देशों में हिंसात्मक फ़ौज होती है, वह अनुशासन का पालन करती है। इसी में विजय निहित है। इसी प्रकार हमारे देश में भी तो अहिंसात्मक युद्ध चल रहा है। आज उस युद्ध का रूप सेनापति ने बदल दिया है अवश्य, पर है तो वह युद्ध ही। इस समय जो अपने कमांडर की आज्ञा न पालने की बात कहे, वह सेना का साधारण सिपाही होने के भी योग्य नहीं। कोई पद मिलना तो दूर की बात है।

खरे का यही अपराध था कि उसने सिपाही होकर भी सिपहसालार की आज्ञा पालने से इनकार किया। शत्रु से मिलकर अपने ख़ेमे के सिपाहियों को नुक़सान पहुँचाने का षड्यंत्र किया। ऐसा आदमी हमारी सेना में आ कैसे गया? यह सोचने की बात है। परंतु राय ने खरे-कांड का समर्थन किया। केवल इसलिये कि 'कांग्रेस हाई-कमांड' को बदनाम किया जाय। इस प्रकार दिल्ली में पिछले दिनों जब अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, तब राय ने वाक-आॅउट किया और कराया। उसके बाद राय ने अपने 'आज़ाद भारत' पत्र में स्पष्ट शब्दों में कांग्रेस में फूट पड़ने की संभावना पर लेख लिखा। बंबई में मज़दूर-सभावालों और कांग्रेसियों में जो झगड़ा हो गया था, उस पर भी राय ने कांग्रेस को बदनाम करने की पूरी कोशिश की। वह निंदा सरदार पटेल की नहीं थी, कांग्रेस-सरकार और कांग्रेस हाई-कमांड की थी। जब कि हमने स्वेच्छा-पूर्वक मंत्रिपद स्वीकार किए हैं, और उनके विरोधी अनेक ग़ैर पैदा हो गए हैं, उस समय अपने ही आदमी यदि अपनों की निंदा करें, उन्हें बुरा-भला कहें, तो कैसे काम होगा?

राय ने अपने व्यवहार से समाजवादियों को भी विरोधी बना लिया है। धार्मिक विचारों के व्यक्तियों को तो बहुत ही ठेस पहुँचाई है। इसलिये वे भी राय के खुलेआम विरोधी हैं। गांधीजी की खुलेआम आलोचना करके राय ने देश की आत्मा को क्षुब्ध किया है।

मैं राय की विद्वत्ता-योग्यता का क़ायल हूँ। उनकी उन्नति चाहता हूँ। वह अच्छे दार्शनिक हैं। परंतु उनके कामों ने और उनकी स्पष्टता ने जनता को उनके विरुद्ध बना लिया है। यही कारण है कि वह जिस देहरादून से निर्विरोध प्रतिनिधि बनकर जाते थे, वहीं से अब की बार हार गए हैं।

वस्तुतः लेखक की समझ में तो राय की सबसे बड़ी ग़लती यह हुई कि वह बिना सोचे-समझे कांग्रेस में शरीक हुए। तिस पर भी अंदर रहकर क़दम-क़दम पर विरोध करके उन्होंने अपने आपको सबका विरोधी बना लिया। यह और भी ग़लती है कि वह अब तक कांग्रेस के सिद्धांत को न मानते हुए भी उसमें रह रहे हैं।

रायवाद नाम की कोई चीज़ हो, उसके विरोधी भी कुछ हों, यह संभव है। परंतु कांग्रेस में केवल विचार-भेद से कोई सम्मिलित होने से रोका जाय, यह नहीं होना चाहिए; और न ऐसा है ही। परंतु किसी संस्था के मूल-सिद्धांतों से ही जिसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति न हो, और फिर वह विचार-स्वातंत्र्य की दुहाई दे, तो यह ठीक नहीं। इस प्रकार कोई भी संस्था सदा डिबेटिंग-क्लब का रूप धारण किए रहेगी, और सर्व-सम्मति से शत्रु के दुर्ग पर छापा न मार सकेगी। कांग्रेस इस समय देश की सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था है। आज उसकी इस महत्ता से खीझकर जब कुछ लोग उसे नष्ट करने और उसमें फूट डालने पर कमर कसे हों, घर के आदमी ही यदि किसी प्रकार घर के बनकर विरोधियों की इच्छा-पूर्ति का साधन बनें, तो यह कितने अनर्थ की बात है। मुझसे कहा गया है कि राय सशस्त्र क्रांति पर विश्वास करते हैं। मैं नहीं कह सकता कि 'राय'-जैसा समझदार व्यक्ति इतनी अव्यावहारिक बात सोच भी सकता है। परंतु यदि यह कुछ भी सत्य है, तो राय को कांग्रेस में न रहना चाहिए। संक्षेप से श्रीराय के कांग्रेसमैन होने में जनता संदिग्ध है। इसलिये कांग्रेस-प्रतिनिधि के रूप में जनता के सामने आना राय के लिये कठिन होता जा रहा है। हमारा तो विश्वास है कि श्रीराय को आज भी प्रतिष्ठा का पद मिल सकता है, बशर्ते वह कांग्रेसमैन हो जायँ। चवन्नी-सदस्य नहीं, कांग्रेस-सिद्धांतों के क़ायल।

हिमालय के बहुमूल्य पदार्थ

शुद्ध सत शिलाजीत

ताक़त और मर्दानगी देती है। प्रमेह और प्रदर की एकमात्र क़ुदरती दवा है। गठिया, चोट तथा कफ के रोगों को आराम करती है। बवासीर को फ़ायदा पहुँचाती है। जो लोग वैद्य-डॉक्टरों की दवाओं से परेशान हो चुके हों, वे इस क़ुदरती महौषध को भी आज़मा देखें। चालीस वर्ष के लगभग पहुँचने पर प्रत्येक व्यक्ति को साल में कम-से-कम छटाँक-भर जरूर सेवन कर लेनी चाहिए। बच्चों के लिये ख़ास 'टानिक' है। मूल्य ४) रु० छटाँक

च्यवनप्राश महारसायन—हिमालय की ताज़ी औषधियों द्वारा प्रस्तुत। ताक़त और नवजीवन देती है। क्षय तथा पुरानी खाँसी को भी लाभ पहुँचाती है। मूल्य ४) रु० सेर।

ब्राह्मी घृत—हिमालय की ब्राह्मी बूटी दिमाग़ को तर तथा तेज़ करती है। ब्राह्मी की पत्तियाँ घोट-छानकर भाँग की तरह पी जाती हैं, परंतु वर्षा और जाड़े में इस तरह न पीना चाहिए। इन दिनों के लिये हमने ताज़ी ब्राह्मी के स्वरस से ब्राह्मीघृत तैयार कराया है। मृगी तथा हिस्टीरिया में लाभप्रद। स्मृति-वर्द्धक। मूल्य—ब्राह्मीघृत ५) रु० सेर, ब्राह्मीबूटी ४) रु० पाँच सेर।

असली कस्तूरी	३०) रु०	तोला
असली अंबर	३५) रु०	तोला
केशर कश्मीरी	६) रु०	छटाँक

दूध बढ़ने की दवा—'दुग्धदा' जिन माताओं के दूध कम उतरता हो, उन्हें दुग्धदा का सेवन करना चाहिए। दूध और दूध की पौष्टिकता बढ़ती है। मा को भी ताक़त मिलती है। तीसरे ही दिन दूध उमड़ पड़ेगा। मूल्य २॥) रु० डिब्बा (बीस दिन सेवन योग्य)

नोट—सबकी सेवन-विधि साथ भेजी जाती है। मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (हरिद्वार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि का यह मौन-मंदिर !

[श्रीयुत नीलकंठ तिवारी एम्० ए०, साहित्यरत्न]

(१)

रात्रि का यह मौन-मंदिर कह रहा—"उठ, जाग रे, मेरे पुजारी !"
विश्व की जागृति-खगी यह सो रही निशि-नीड़ में जब,
विश्व-कोलाहल बँधा है मौन की चुप मींड़ में जब,
तब किन्हीं आकुल पगों की चाप आहें भर रही है,
प्राण की मानस-तटी को सुधि-सशंकित कर रही है।
उठ गया नव पट अचानक,
कालिमा का अंध कण-कण जल उठा, बन ज्योति-तारक
मौन मुखरित बन गया है,
वाणियों का मुखर बंदनवार चहुँदिशि तन गया है।
कह रही जाग्रत प्रकृति अब—"जाग रे, उठ, ओ पुरुष मेरे पुजारी !"
रात्रि का यह मौन-मंदिर कह रहा—"उठ, जाग रे, मेरे पुजारी !"

(२)

तारकों की घंटियों को मौनता है टुनटुनाती,
प्रेम की आह्वान-वीणा झींगुरों में झनझनाती।
यह अचल, तम-पूर्ण नभ निज ज्योति-अंचल है हिलाता,
गत युगों के प्रात-पाटल आज के दृग में खिलाता।
काल के सब छोर मिलते।
स्वर्ग के शुचि तीर पर आनंद के मृदु मोर मिलते।
मानवों का आदि मानव—
प्रेम - मानव फूँकता उर-बाँसुरी में तान अभिनव।
भूमि नभ से, रात दिन से कह रही—"उठ, जाग रे, मेरे पुजारी !"
रात्रि का यह मौन-मंदिर कह रहा—"उठ, जाग रे, मेरे पुजारी !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर के युवा नरेश

[श्रीसूर्यनारायण व्यास]

भारतवर्ष के प्रमुख हिंदू-राज्यों में ग्वालियर का विशिष्ट स्थान है। ३५ लक्ष प्रजाजनों की रक्षा का भार इस विशाल राज्य पर है। शस्य-श्यामला, हरित परिधानमयी, सजला मालव भूमि का विस्तृत भू-भाग इस राज्य के अधीन है। अनेक वैदिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का समावेश हो जाने के कारण ग्वालियर की महत्ता, भारत ही में नहीं, समस्त विश्व में स्वतंत्र है। सम्राट् विक्रम के संवत् तथा विश्व-कवि कालिदास की गौरव-गरिमा से विश्व का समस्त सुधी-समाज पूर्ण परिचित है। यह इसी पावन भूमि उज्जैन का सौभाग्य है, जिस पर आज सेंधिया-वंश का भगवा झंडा खुले गगन में हर-हर कर फहरा रहा है। प्राचीन काल के परमोज्ज्वल इतिहास पर दृष्टि डालने की अपेक्षा यदि हम ग्वालियर-राज्य के संस्थापक, वीराग्रणी राणोजी और महादजी की परंपरा के उन्नायक स्वर्गीय महाराज माधवराव की ही कीर्ति का व्यापक स्वरूप देखें, तो वह भारत के राजवंशों के इतिहास में अपना सानी नहीं रखता। उनके अंदर ग्वालियर की महान् विभूति महादजी के अनेक महान् गुण केंद्रित हो गए थे। उन्होंने अपने राज्य की सर्वांगीण उन्नति करने में कोई बात उठा नहीं रक्खी थी। इसमें आश्चर्य नहीं, किंतु उनके विशेष व्यक्तित्व का प्रभाव भारत के राजसमूह के अतिरिक्त ब्रिटिश साम्राज्य पर भी पूरी तरह था। यद्यपि दस वर्ष की अवस्था में ही उनके पिताजी की छत्रच्छाया उन पर से उठ गई थी, फिर भी वह बहुत बड़े तेजस्वी, स्वाभिमानी, सूक्ष्मविचारक, दूरदर्शी, नीति-निपुण, साहसी, वीर और कर्मवीर बन अपनी शुभ्र कीर्ति द्वारा यशः-शरीर से अमर बन गए। आज भी महाराज माधवराव का नाम सादर गृहीत होता है, और सहसा कहना पड़ता है कि वह "न भूतो न भविष्यति" थे। उनके साहस, वीरता और स्वाभिमान की गाथाएँ लिखने का यह स्थल नहीं, उसके लिये एक स्वतंत्र पुस्तक चाहिए, किंतु फिर भी ग्वालियर के एक विद्वान्, स्वतंत्र व्यक्तित्ववाले, सहृदय कविवर की कुछ सुंदर पंक्तियाँ यहाँ हम उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर सकते, जिनमें संक्षेप में स्वर्गीय महाराज का सूत्र-रूप में इतिहास ही ग्रथित हो गया है।

कविवर ने राज्य-संस्थापक महादजी के इतिहास का स्मरण करते हुए कहा है—

मानो फिर पाटील आ गए
नृप माधव का रूप वरण कर ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति जगाई फिर वैभव की
वह निश्चेष्ट तमिस्र हरण कर।
फिर लहलहा उठा यह उपवन,
फिर पंछी जागे, फिर चहके;
फिर वासंती छटा छा गई,
सुरभित सुमनों के दल महके।
फिर देखा मोतीवाले का
मान, जगी फिर सिंदेशाही;
फिर वह शान निराली चमकी,
मिल न सकी जिसकी समता ही।

आगे चलकर कवि कहता है—

आँखों ने देखा था उनको,
आँखों में वे ही हैं अब तक;
इन अमोल आँखों की गाथा
याद रहेगी जाने कब तक?
उनने देखा था अतीत, वे
यह भविष्य भी जान चुकी थीं;
वर्तमान की चंचलता को
कब से वे पहचान चुकी थीं।
कहाँ विकलता देखी उनने,
वे तो जगजयिनी आँखें थीं;
जिनने उनको एक बार
देखा, फिर क्या उनकी आँखें थीं।
वे सचमुच आँखोंवाले थे,
गए दूरदर्शी भी तो थक;
आँखों ने देखा था उनको,
आँखों में वे ही हैं अब तक।

वास्तव में स्व० महाराज की तेजस्विनी आँखें लोगों पर, शासन के अंगों पर कितना प्रभाव डालती थीं, यह उनके राज्यवासी या जिन्हें एक बार भी उनसे मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ हो, वे जानते हैं। उनकी दूरदर्शिता और विचार-शीलता आँखों की गहराई में स्पष्ट चमकती थी। बड़ी-बड़ी, गोल-गोल, रोबदार आँखें भावी स्थिति को बहुत पहले ही पहचान गई थीं। तभी से वह ग्राम-पंचायत, डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड, जमींदार-हितकारी-सभा, कृषकों को अधिकार-प्रदान, अन्नदाता कहकर संबोधन करना आदि व्यवहार में ला चुके थे। वास्तव में कवि के शब्दों में उन्होंने जीवन में विफलता के दर्शन ही नहीं किए। जो चाहा, वह करके छोड़ा, और उससे वह देश, राज्य, समाज, सभी की दृष्टि में ऊपर ही उठते गए थे। हज़ार विरोध के रहते हुए भी प्रिंस ऑफ़ वेल्स द्वारा 'शिवाजी' के 'स्टेचू' का अनावरण-संस्कार करा उन्होंने इतिहास में परिवर्तन करा डाला था। कवि ने सच ही कहा है—

वे मनुष्य थे अटल साहसी,
शूर और सैनिक थे निश्चय;
कृती अनोखे थे, न जान पाए
जग में कुछ भी है दुर्जय।
श्रम! अः नरपतियों का श्रम!
पर किसने उनको हटते देखा?
थकनेवाले थके, कर्म-पथ पर
कब उनको थकते देखा?
राजधर्म पहचान, अजी मत
पूछो, वे कितने सचेत थे;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सोचते हैं, माधव कितने
गुरु ज्ञानी, नय-निकेत थे ।

इस पर भी—

अपनी रीति, प्रथा अपनी,
अपने ब्यौहारों ही में रहकर
वे शासन करते थे, प्रतिक्षण
अपनेपन की बातें कहकर ।
अपना देश उन्हें प्यारा था,
प्यारे उनको अपने जन थे ;
हिंदू, मुसलमान, कोई हो,
सबके प्रति वे एक लगन थे ।
भेद-भाव प्यारा न उन्हें था,
उनको प्रेम-नीति प्यारी थी ;
अपनेपन पर अड़ जाने में
उनकी लोक-रीति न्यारी थी ।

इस तरह वह आदर्श भूपेंद्र होते हुए भी—

राजदंड कर में था उनके,
किंतु करुण था उनका ही-तल ;

वह अंतःकरण से इतने कोमल थे कि माता के अवसान होने पर बिलखकर उन्हें लोगों ने रोते हुए देखा है । सारांश यह कि स्व० माधवराव महाराज ग्वालियर के ही नहीं, समस्त भारत के एक विलक्षण प्रभा पुंजवाले महनीय कीर्ति-व्यक्ति थे । वह अमर रहेंगे, और आज तो श्रुति-सिद्धांतानुसार 'आत्मा वै जायते पुत्रः' के रूप में हम उनके दर्शन महाराज जीवाजीराव सिंधिया में प्राप्त कर रहे हैं । वर्तमान महाराज महान् पिता की महान् संतान हैं । उनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक एवं तेजस्वी है । अपने पिता के अनेक-गुण उनमें संस्कार-मात्र से ही आ गए हैं । उनका ज्ञान, व्यापक दृष्टि, सूक्ष्म स्मृति-शक्ति और योग्यता एक प्रौढ़ अनुभवी, विचारक एवं सुलझे हुए व्यक्ति की तरह हैं । जिन लोगों ने महाराज के विभिन्न स्थलों पर और विभिन्न अवसरों पर दिए गए भाषणों को सुना-पढ़ा है, वे श्रीमंत के सुंदर विचारों को सुनकर उनके आदर्श नरेश होने में ज़रा भी संशय नहीं मानेंगे ।

उदाहरण के लिये डॉ० मुंजे के मिलिटरी कॉलेज के उद्घाटन के अवसर का भाषण, ग्वालियर में होनेवाली विभिन्न राज्य के मंत्रियों की कॉन्फ्रेंस के अवसर का भाषण तथा बीकानेर के भोजन-समारंभ के समय का भाषण इतने प्रौढ़ विवेचन एवं तथ्यवादिता-पूर्ण हैं कि किसी भी प्रथम श्रेणी के ज़िम्मेदार नेता के मुँह से शोभा दे सकते हैं । मंदसोर का वह भाषण भी, जिसमें जातीय भेद-भाव पर प्रकाश डालते हुए श्रीमंत ने संकुचितता से ऊपर उठने तथा उदार भावना का आश्रय ग्रहण करने का आदेश दिया था । इन भाषणों में श्रीमंत के विचारों की गहराई, दूरदर्शिता, राजनीतिक नैपुण्य और निर्मल आत्मा का प्रतिबिंब स्पष्ट प्रकट हो रहा है ।

वास्तव में महाराज ने अभी यौवन के प्रांगण में ही पदार्पण किया है । उन्हें भारत के ऐतिहासिक सुसंस्कृत राजवंश में उत्पन्न होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैभव की विशाल शाला के लाडले हैं, राज्यैश्वर्य से सब प्रकार समलंकृत हैं, इस पर भी वह इतने विनम्र-वदन, गर्व-रहित तथा सरल-प्रकृति हैं कि उन्हें स्नेह और माधुर्य की पुण्य-प्रतिमा कहना पड़ेगा। महाराज व्यर्थ की शान पसंद नहीं करते, वह विना व्यवस्था और आडंबर की प्रतीक्षा किए, बे-रोक-टोक गंतव्य स्थान पर सहज पहुँच जाते हैं। सर्व-साधारण में साधारण जनता की तरह आत्मीय भावना से प्रविष्ट हो जाते हैं। उन्हें देखकर सहसा उनकी सरलता के कारण विश्वास करने को जी नहीं चाहेगा कि यही इतने बड़े पैंतीस लक्ष प्रजा के स्वामी महाराज हैं।

श्रीमंत महाराज की गोल-गोल, सुंदर, बड़ी-बड़ी तेजस्विनी आँखें, भरा हुआ, ओजस्विता-पूर्ण, प्रभावशाली चेहरा, नत-वदन हो, विनम्र भाव से चलने की सुमधुर गति-विधि, उनकी मुक्ता की तरह आभामयी, उज्ज्वल, सरल दंत-पंक्ति और अधर युगल पर खेलनेवाली निरंतर मंद हास्य की निर्मल एवं मनोहारिणी स्मित-रेखा किसी को भी यही कहने को विवश करेगी—'यहाँ असाधारण व्यक्तित्व है।' भाषण की माधुरी से तो महाराज प्रभावित किए विना नहीं रह सकते। उनकी वक्तृत्व-शैली बड़ी रस-स्पंदिनी है, और विनम्रता की पुट तो सोने में सुगंध की तरह है। उनमें मानव-हृदय को जीतनेवाली स्वर्गीय विशेषता है।

इसी नवंबर-मास में श्रीमान् महाराज अपनी वय के २४ वें वर्ष में, यौवन की देहली में, प्रवेश कर रहे हैं। मैं श्रीमंत की दीर्घायुष्य-कामना करता हुआ इस पुनीत एवं मंगलमय अवसर पर हृदय से अभिनंदन करता हूँ। और, आशा करता हूँ, महाराज अपने विकसित सद्गुणानुरूप अपने स्व० पितृ-चरण के आदर्शों पर चलकर प्रजा-रंजन करते हुए भारत के इस ऐतिहासिक राज्य को सुख-समृद्धिशाली बनाएँगे।

सुकविवर श्री 'हृदय'जी के शब्दों में—

"आज विजय का मुकुट शीश पर,
है करवाल लिए विजयी कर;
उन्नत वक्षःस्थल पर अंकित
विजय - चिह्न ये हैं शोभनवर।
भाल ग्वालियर का यह उन्नत,
है यह उन्नत भाग्य दमकता;
इन आँखों की करुण कोर से
वीर - अरुण - अनुराग चमकता!
जीव-अजीव सभी के जी हैं,
इसीलिये तो हैं जीवाजी;
राजदंड का प्रण है सचमुच
शासक के प्राणों की बाजी।
ये चिरजीवी हों, जय पाएँ
राजनीति के पौरुष-पथ पर;
आज विजय का मुकुट शीश पर,
है करवाल लिए विजयी कर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवेम शरदः शतम्

[श्रीयुत चंद्रकांत बाली शास्त्री प्रभाकर]

हम सौ साल कैसे जिएँ ? यह सवाल बहुत ही पुराना है। कितना पुराना, इसका कोई अंदाज़ नहीं। कहनेवाले कह देते हैं—"यह सवाल मनुष्य के इतिहास के बराबर पुराना है।" यह बात किसी हद तक ठीक भी है।

इस सवाल पर सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में गर्मागर्म बहस भी चलती रहती है। कुछ पुस्तकें भी छप चुकी हैं। ऐसा होने पर भी यह सवाल अंगद के पैर की तरह अडोल खड़ा है। इतने लंबे अरसे में इस सवाल का एक तिल भी नहीं टूटा।

मेरे सामने जब इस सवाल पर चर्चा चलती है, तभी ये समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं—

(क) हमारी नियत आयु क्या है ?

(ख) हमारे पूर्वज कितनी अवधि तक जी सके हैं ?

(ग) हमारी वर्तमान आयु क्या है ?

(घ) क्या हमारी आयु घट रही है ?

(ङ) हम सौ साल क्यों जिएँ ?

(च) हम सौ साल कैसे जिएँ ?

इन समस्याओं के हल से शतायु जीवन का सवाल हल हो सकता है—

(क) सबसे पूर्व आयु की अवधि का विचार कर लेना चाहिए। गप्पों की चर्चा जाने दीजिए। वर्तमान शास्त्रों की आज्ञा से प्रचलित वर्णाश्रम-विधान के अनुसार आयु की नियत अवधि सौ साल ही है। चार आश्रमों को सौ साल के चतुर्थांश पर—पचीस वर्षों पर—ही निर्भर रक्खा गया है। यदि हमारी आयु में कुछ न्यूनाधिक होता, तो आश्रम-विधान सौ सालों में समानतया विभक्त न होता। बस, आश्रमों के नियत काल के हिसाब से हमें सौ साल जीना चाहिए, और यही हमारी नियत आयु है।

(ख) हमारी आयु के नियत होते ही यह प्रश्न खड़ा हो जाता है कि हमारे पूर्वज कितनी आयु भोगते थे ? हमारे पूर्वज तीन वर्गों में विभक्त हैं—

(१) निकटकालीन पूर्वज

(२) मध्यकालीन पूर्वज

(३) सुदूरकालीन पूर्वज

(१) निकटकालीन पूर्वज सौ साल तक ही जी सके हैं। इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन का पता पुस्तकों में मिलेगा। ऐतिहासिक व्यक्ति सौ साल तक ही जी गए हैं।

(२) मध्यकालीन पूर्वजों के विषय में गप्पें चल पड़ी हैं। कृष्ण एक सौ साठ वर्ष जी गए हैं। धृतराष्ट्र सवा दो सौ वर्ष जी गए हैं। इत्यादि। इस आयु का कोई प्रबल प्रमाण नहीं। यह केवल अंधश्रद्धा का चालू नमूना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) सुदूरकालीन पूर्वज भी सौ साल से अधिक नहीं जीते थे। यदि सौ साल से अधिक उनका जीवन होता, तो वे 'जीवेम शरदः शतम्' की प्रार्थना न करते। माँग सदा अपनी परिस्थिति से ज़्यादा होती है। पाँच रुपएवाले को ही पचीस रुपए की माँग रहेगी; सौ रुपएवाला पचीस रुपए क्या माँगेगा। मैट्रीकुलेट ही बी० ए० होने की प्रार्थना करेगा; एम्० ए० अथवा पी-एच्० डी० बी० ए० होने की प्रार्थना क्यों करेगा। जिन ऋषियों ने सौ साल की प्रार्थना की है, अनुमानतः उनकी आयु सौ साल से कम ही रही होगी। अथवा उन्होंने अपनी सौ वर्ष की आयु की निर्विघ्न समाप्ति के लिये प्रार्थना की है।

निचोड़ यह निकला कि हमारे पूर्वज सौ साल तक ही जीते थे। 'वर्षाणां सहस्राणि तपस्तेपे' इत्यादि बातें गप्पाष्टक समझी जाती हैं। यदि पुराणों पर विश्वास किया जाय, तो आयु पर विश्वास उड़ जाता है। विश्वामित्र की आयु का कोई अंदाज़ नहीं। राजा पुरुरवा के वंशज दुष्यंत के ज़माने में विश्वामित्र को देखा, हरिश्चंद्र के ज़माने में विश्वामित्र को देखा, और देखा रामचंद्र के युग में। कहाँ दुष्यंत और कहाँ रामचंद्र। इन दोनो महापुरुषों के मध्य में एक युग का अंतर है। जहाँ मनुष्य एक युग जी सकता है, तो उसके लिये 'जीवेम शरदः शतम्' की प्रार्थना कोई क़ीमत नहीं रखती।

(ग) हमारी वर्तमान आयु जल-वायु के अनुसार भिन्न-भिन्न है। अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष में आयु बहुत कम है। विदेशियों की आयु ८५, ९०, ९५ के लगभग है, और भारतीयों की २७ तथा ३३ के लगभग। हम तुलनात्मक आयु का निर्णय नहीं कर रहे। भूमंडल में मनुष्य-मात्र की आयु सौ साल ही है। दस-बीस ऊपर या नीचे की कोई बात नहीं।

(घ) क्या हमारी आयु घट रही है? यह दुर्भ्रम शेष रह जाता है। यदि हमारी आयु घट रही है, तो किस युग से, कितनी तीव्रता से घट रही है? यदि आयु सचमुच घट रही है, तो पूर्वजों की आयु निश्चय ही कुछ अधिक होनी चाहिए। प्रगति के अनुसार हमारी आयु घटते-घटते कब सौ साल के स्टैंडर्ड तक पहुँची है। इस निकट काल में सन् १६०० से १९४० तक आयु घटने की प्रगति क्या रही है? यदि आयु सचमुच घट रही है, तो योरप में शतायु जीवी मनुष्य क्यों मिलते हैं। भारतीयों की आयु घट रही है, यह एक प्रश्न जुदा है।

लेखकों और डॉक्टरों ने घट रही आयु के पुनरुत्थान की अपील का महल किस नींव पर खड़ा किया है? न तो हमारी आयु कभी सहस्र-वर्षीय थी, और न घटने का कोई प्रामाणिक उदाहरण मिलता है। 'हमारी आयु घट रही है,' 'हम सौ साल क्यों नहीं जीते' इत्यादि प्रलाप मिथ्या हैं। न हमारी आयु कभी घटी है, और न कभी घटेगी।

ऐसी परिस्थिति में एक प्रश्न हो सकता है। वह यह कि यदि हमारी आयु का स्टैंडर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ साल है, तो अधिकांश व्यक्ति सौ साल से पहले क्यों मरते हैं ?

यह सवाल व्यक्तियों का है, न कि समाज का। समाज की आयु सौ साल की है। दस-पंद्रह ऊपर या नीचे, इसकी कोई बात नहीं। कुछ व्यक्ति थोड़ी आयु भोगकर चल बसते हैं। मैंने यह विचार अपने वैद्य और डॉक्टर मित्रों के सामने रक्खा। उत्तर निम्न-लिखित हैं—

(१) जिस पर दो बार मलेरिया का आक्रमण हुआ है, वह कभी सौ साल न जिएगा।

—डॉक्टर वानिया

(२) दुग्ध-पान की कमी से मनुष्य सौ साल से पूर्व मर रहे हैं।

—वैद्य परमानंद वर्मा वैद्यवाचस्पति

(३) मैथुन की अधिकता सौ साल की घातिनी है।

—वैद्य महता

(४) ग्रामीणों की अपेक्षा नागरिक बहुत थोड़ा जीते हैं।

—डॉक्टर महता

(५) चिंता से मनुष्य थोड़ा जीते हैं।

—डॉक्टर चोपड़ा

(६) हर 'ग्रेट वार' के बाद मनुष्य की आयु घटती है*।

—डॉक्टर रे०

ये सब जीवन का संहार करनेवाली विषम परिस्थितियाँ हैं।

कम जीने का निदान जो भी निर्धारित किया जाय, सब ठीक है। मेरे विचार में कम जीना भी एक रोग है। अन्य रोगों की भाँति यह भी प्रत्येक मनुष्य से पृथक् संबंध रखता है। मनुष्य-मात्र के जीवन का स्टैंडर्ड सौ साल है। मनुष्य अपने निजी कारणों से कम जीते हैं। जिन लोगों ने अपने जीवन को नियमित तथा नियंत्रित बना रक्खा है, वे निर्विघ्न सौ साल तक पहुँचते हैं। विदेशियों में अपने जीवन पर क़ाबू पाना एक गुण है, जिससे वहाँ अधिक संख्या में मनुष्य सौ साल तक पहुँचते हैं, और भारतीयों की इससे विपरीत हालत है।

इतना लिखने का सार यह है कि प्रकृति ने मनुष्य की आयु सौ साल मुक़र्रर कर रक्खी है, पर परिस्थिति-वश मनुष्य प्रकृति-प्रदत्त वस्तु का स्वेच्छा से उपभोग नहीं कर सकता। मनुष्य अपनी विषम परिस्थितियों का स्वाध्याय तो न करे और मनुष्य की आयु घट रही है, इस प्रकार कहकर प्रकृति पर दोषारोपण करे, यह कहाँ तक ठीक होगा ?

मनुष्य की आयु जो पहले नियत थी, अब भी तथैव नियत है। पर मनुष्य अपनी भूलों से वहाँ तक न पहुँचे, तो इसमें प्रकृति का क्या अपराध ? मनुष्य की आयु घट रही है, यह एक दुर्वाद है। हाँ, विषम परिस्थितियों में जकड़े हुए मनुष्य बेशक कम जी रहे हैं।

* ये विचार यद्यपि विश्रुत वैद्य तथा डॉक्टरों के नहीं, तथापि मेरे मित्र एवं समकक्ष वैद्य-डॉक्टरों की सम्मतियाँ मेरे लिये मान्य हैं। विचार सबके सुनने चाहिए। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ङ) यह सवाल भी आम तौर से सुना जाता है कि सौ साल जीने की आवश्यकता क्या है ? इसके समर्थन में कहनेवाले कहते हैं—जितना जल्दी मरेंगे, उतना ही अच्छा। ज़्यादा जीना भी ख़तरनाक है, इत्यादि।

पर ये विचार कायरता-पूर्ण हैं।

हमें सौ साल जीना चाहिए, और अवश्य जीना चाहिए। (१) आश्रम-विधान को पूरा करने के लिये जीना चाहिए। (२) शतवर्षीय परिवर्तन का रसास्वादन करने के लिये जीना चाहिए। (३) बढ़ रहे परिवार के शिक्षणार्थ जीना चाहिए। (४) प्रकृति-प्रदत्त वस्तु का सच्चा उपभोग करने के लिये जीना चाहिए। (५) और, जीना चाहिए जीवन-संग्राम लड़ने के लिये। जल्दी तो कायर मरेंगे।

(च) अंतिम समस्या है कि अपनी परिस्थितियों को पार करके सौ साल कैसे जिएँ ?

हमारी आयु सौ साल है। उसकी प्रगति में विघ्न आ जाते हैं। उन विघ्नों को जीतकर वास्तविक आयु का उपभोग कैसे करें ?

यही एक असली सवाल है। इसके उत्तर में बहुतों ने बहुत कुछ कहा है। एक पक्ष का कहना है, ब्रह्मचर्य से व्यक्ति सौ साल निर्विघ्न जी सकता है। पर आदित्य ब्रह्मचारी साठ साल में मरते सुने गए हैं।

दूसरा पक्ष कहता है, व्यायामी सदा दीर्घजीवी होते हैं। परंतु बड़े-बड़े पहलवान पचास वर्ष में गुल हो जाते हैं। जीते हैं, तो मुरदा बनकर।

तीसरा पक्ष कहता है, ग्रामीण दीर्घजीवी होते हैं। यह बात मान्य हो सकती है।

चौथा पक्ष कहता है, भोजन में प्रोटीन, वसा, लवण, कार्बोज की नियत मात्रा खाने से दीर्घ जीवन प्राप्त होता है। पर ऐसा भी नहीं। डॉक्टर प्रायः साठ साल की आयु में बुझ जाते हैं।

ऐसे बहुत-से पक्ष हैं, जिनके अपवाद उदाहरण की अपेक्षा पचीसगुना ज़्यादा हैं।

वास्तव में परिस्थितियों पर विजय पाने से ही शतवर्षीय जीवन प्राप्त होता है। ब्रह्मचर्य, व्यायाम, ग्रामवास तथा भोजन की नियमावलियों से दीर्घ जीवन प्राप्त हो सकता है। पर इन नियमावलियों का आचरण करनेवाला एक ही व्यक्ति सौ साल जीने का हक़दार होता है। परिस्थितियों को जीतनेवाली नस्ल का अभाव ही रहेगा। हमें तो ऐसा नस्ल-सुधार चाहिए, जो दीर्घ जीवन में विघ्न करनेवाली परिस्थितियों को हठात् विजय करता चला जाय, और जन्म-सिद्ध शतायु जीवन प्राप्त करे।

नानाविध नियमावलियाँ एक व्यक्ति को शतायु जीवनभोक्ता बना सकती हैं। इन नियमावलियों का नस्ल पर कोई प्रभाव नहीं। नाना परिस्थितियों को जीतनेवाली नस्ल का निर्माण निम्न-लिखित विधि से होगा—

(१) संतति-संख्या नियमित रहनी चाहिए।

(२) संतति-जनन-काल नियमित रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन नियमों की व्याख्या इस प्रकार है। संतान की संख्या नियमित रहे, तो नस्ल पुष्ट रहेगी। पचीस-पचीस प्रसव भुगतनेवाली स्त्री की संतान कमज़ोर रहेगी। ऐसी स्त्री के बच्चे सौ साल के जीवन में आनेवाली विषम परिस्थितियों में ही गुल हो जाते हैं। जिस स्त्री ने तीन बच्चे पैदा किए हैं, उसके तीनो बच्चे विषम परिस्थिति पार करते हुए सौ साल सकुशल जिएँगे। संतान-संख्या के नियमित न रहने का परिणाम यह निकला कि नस्ल इतनी मुरदा होती चली गई कि उसके लिये शतायु जीवन स्वप्न हो गया।

दूसरी बात है संतान-जनन-काल का नियत रहना। वर्तमान मनुष्य-समाज में संतान-जनन-काल का कोई नियम नहीं। सत्रह वर्ष के किशोर के भी पुत्र है, और पचहत्तर वर्ष के स्थविर भी संतान पैदा करने के लिये बद्ध-परिकर हैं। जिस नस्ल का रज-वीर्य पक्का नहीं, वह कैसे सौ साल जीने का दम भरेगी। तीस वर्ष के युवक का पुत्र जिस कुशलता से शतायु यापन करेगा, वैसे किशोर तथा स्थविर का पुत्र कभी, किसी भी हालत में, शतायु जीवन का भोक्ता न बनेगा। मैंने एक नस्ल का स्वाध्याय किया है। एक व्यक्ति के तेरह पुत्र हैं। जो तेंतीस वर्ष की अवस्था में पैदा हुए थे, वे जीवित हैं, किंतु वृद्धावस्था में पैदा हुए सब बालक पचास से पहले-ही-पहले मर गए।

इसका सिद्धांत यह निकला—

(१) अपनी आयु में तीन या चार बच्चे पैदा करने चाहिए।

(२) संतान ३० से ४५ वर्ष के अंदर-ही-अंदर पैदा करनी चाहिए। स्त्री के लिये २० से ३५ वर्ष तक पर्याप्त हैं।

इन दो विधियों का अनुसरण करने से वर्तमान तीन पीढ़ियाँ पार करके बादवाली नस्ल सदा के लिये विषम परिस्थिति को विजय करनेवाली तथा जन्म-सिद्ध शतायु जीवन निर्विघ्न उपभोग करनेवाली होगी। ऐसा नियम पालन करने पर तीन पीढ़ियों के बाद सुधरी हुई नस्ल 'जीवेम शरदः शतम्' की प्रार्थना की सही हक़दार होगी। हमारा जीवन तो पानी का बुद्बुद ही है। बस, एक झोंके के इंतज़ार में है। हम क्या पढ़ेंगे—"जीवेम शरदः शतम्!"

हमें चाहिए

चार ग्रेजुएट कनवेसर। वेतन ४०) से ६०) तक। केवल अनुभवी आदमियों को ही आवेदन-पत्र भेजना चाहिए।

संचालक—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, नं० ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधार के नाम पर

[श्रीयुत विश्ववेद]

त्वयि वर्षति पर्जन्ये सर्वे पल्लविता द्रुमाः ;
अस्माकमर्कवृक्षाणां पूर्वपत्रेऽपि संशयः ।

अतीत चिर काल से काशी संस्कृत-विद्या का केंद्र और संयुक्त प्रांत संस्कृत-अध्ययन-अध्यापन का प्रसिद्ध प्रांत माना जाता रहा है । और, आधुनिक परीक्षाओं की दृष्टि से भी भारतवर्ष-भर में काशी-संस्कृत-परीक्षोत्तीर्ण शास्त्री और आचार्य-पदवी-भूषित विद्वानों को सबसे अधिक योग्य समझा जाता रहा है । अब तक काशी के पंडितों की संस्कृत-साहित्य-संसार में एक अनुपम धाक बैठी हुई है । काशी ने अब तक समस्त विषयों के कितने विद्यानिधियों को अपने प्रख्यात क्रोड़ में स्थान दिया, इसका अनुमान लगाना कठिन है । किंतु इसमें संदेह नहीं कि संस्कृत-विद्या-वैतरणी का अनवरत प्रवाह जिस प्रकार काशी के स्वनाम-धन्य पंडितों ने अपने जीवनों की आहुति दे-देकर अक्षुएण रक्खा, उसकी तुलना के लिये अन्यत्र इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है । इतना ही नहीं कि विद्वानों ने तप-त्याग-पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए अपने प्राण-प्रिय शिष्य-पुत्रों को निःशुल्क विद्या-दान ही किया, अपितु छात्रों के भोजन, वस्त्र, पुस्तक तथा निवासस्थानादि की समस्त सुविधाओं का भी प्रबंध किया, और अपनी पूर्ण शक्ति एवं प्रभाव से कराते रहे । उनकी इस परंपरा का अनुकरण प्रांत के अन्य संस्कृतज्ञ विद्वानों और सात्त्विक, उदार धनिकों ने किया । परिणामतः सहस्रों संस्कृतज्ञ विद्वान् बने, और उन्होंने अत्यंत विपरीत परिस्थिति में भी नितांत निःशुल्क प्राचीन शिक्षा-प्रणाली का सफलता के साथ प्रतिष्ठापन किया ।

काशी की परीक्षाओं का संचालन प्रांतीय सरकार द्वारा होते हुए और परीक्षोत्तीर्ण विद्वानों की आजीविका का एकमात्र साधन सरकारी और अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं में नौकरी को समझते हुए प्रांत के संस्कृतज्ञ विद्वानों और उनके प्रश्रयदाता धनिक महानुभावों ने काशी के संस्कृत-कॉलेज की परीक्षाओं के प्रचारार्थ स्थान-स्थान पर विद्यालय और पाठशालाएँ स्थापित कर एवं कॉलेज की परीक्षाओं के लिये अपनी संस्थाओं को संबंधित कर प्रयत्न-पूर्वक सरकारी आर्थिक सहायता से जैसे-तैसे उन्हें संचालित करने का सुप्रयत्न किया । इन सब प्रयासों का परिणाम अब तक यह हुआ कि हमारे प्रांत में १,०८६ संस्कृत-पाठशालाएँ या विद्यालय निःशुल्क विद्या-वितरण कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त अन्य प्रांतों और देशी रियासतों के छात्र भी प्रतिवर्ष काशी-संस्कृत-कॉलेज की परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं ।

हमारी दयालु प्रांतीय सरकार ने शिक्षा-व्यय के लिये २ करोड़ रुपया निश्चित किया है । इसमें से ६२ हज़ार संस्कृत-शिक्षा-प्रचार के लिये और ५० हज़ार अरबी-शिक्षा के लिये स्वीकृत किया है । प्रांत में संस्कृत और अरबी पढ़नेवालों की संख्या का क्या अनुपात है, और किस प्रकार प्रांतीय सरकार ने इन दोनो के लिये ६२ और ५० हज़ार निष्पक्ष होकर स्वीकार किया, इसका रहस्य-ज्ञान असाधारण बुद्धि रखनेवाले ही प्राप्त कर सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस रहस्यमयी विचित्रता का ग्रंथि-बंधन एक और आश्चर्य-चकित करनेवाले रहस्य के साथ किया गया है। प्रांत के ४८ ज़िलों में १,०८६ संस्कृत-संस्थाओं में से केवल ९६ संस्थाओं को दयालु सरकार आर्थिक सहायता देती है, और शेष स्वयं स्वभाग्य-निर्णय करके अपनी सत्ता किसी-न-किसी प्रकार बनाए हुए हैं। ४८ ज़िलों में से १६ ज़िलों को दयालु सरकार इतना अभागा समझती है कि उनमें चलनेवाली पाठशालाओं को एक फूटी कौड़ी भी सहायता-रूप में देना पसंद नहीं करती। अन्य १६ ज़िलों को लगभग १० हज़ार सहायता दी जाती है, और शेष १६ ज़िलों पर न-जाने क्यों प्रांतीय सरकार इतनी प्रसन्न है कि उन्हें लगभग ४५ हज़ार रुपया वार्षिक सहायता देती है। इस रहस्यमय विभाजन का क्या आधार है, और सरकार उसे किस थर्मामीटर या बैरोमीटर से मापती है, यह तो संबंधित देवता ही जानते होंगे। साधारण प्रांतीय बलिप्रदान करनेवाले (Ordinary Tax Payer) के लिये तो यह भी एक अज्ञेय संप्रश्न है।

ग्रंत में दी हुई तालिका में प्रांतवर्ती ४८ ज़िलों में जितनी संस्कृत-पाठशालाएँ हैं, उनकी संख्या क्रमशः देते हुए यह दर्शाया गया है कि कितनी पाठशालाओं को प्रांतीय सरकार कितनी-कितनी आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस तालिका के अनुसार सन् १९३८-३९ में संस्कृत-पाठशालाओं की संख्या १,०८६ है। इनमें से केवल ९६ पाठशालाओं को ५६,१३६) वार्षिक सहायता सरकार की ओर से मिली है! इस तालिका में अंकित आँकड़ों के आधार पर १६ ज़िलों की पाठशालाओं को शून्य, दूसरे १६ ज़िलों की पाठशालाओं को १०,२३६ और शेष १६ ज़िलों को ४५,९००) सहायता दी गई। प्रत्येक पाठशाला में कितने अध्यापक, कितने छात्र, कितने भृत्य कार्य करते हैं, और उन पर कितना वार्षिक व्यय किया जाता है; इसका विस्तृत विवरण तो संबंधित संस्कृत-शिक्षा-विभाग के अधिकारी ही दे सकते हैं। किंतु प्रदत्त तालिका से इतना स्पष्ट है कि प्रांतवर्ती पाठशालाओं में से केवल ९६ पाठशालाओं को ही आर्थिक सहायता देना और १६ ज़िलों में से एक पाठशाला को सहायता न देना न्याय की किसी कसौटी के आधार पर उचित नहीं कहा जा सकता।

प्रदत्त तालिका के आधार पर पाठक बड़े आश्चर्य के साथ यह देखेंगे कि ९६ पाठशालाओं में २९ पाठशालाएँ गोरखपुर और १२ आज़मगढ़ में ऐसी समझी गईं, जिन्हें आर्थिक सहायता दी जाती है, किंतु शेष ज़िलों में कहीं भी ५ से अधिक पाठशालाओं को सहायता नहीं मिलती। आज़मगढ़ में ६१ में १२, बनारस में ८१ में २, बस्ती में ६२ में ३, फ़ैज़ाबाद में ५९ में १ और कानपुर में ५६ में शून्य पाठशालाओं को किस प्रकार सरकारी सहायता दी जाती है, इसका तुलनात्मक परिचय पाठकों के लिये बड़े कौतूहल का विषय होगा। यह रहस्य भी केवल संबंधित अधिकारी ही समझ सकते हैं।

उपर्युक्त संदर्भ से संस्कृत-पाठशालाओं की उन्नति और विस्तार में हमारी प्रांतीय सरकार कितनी और किस प्रकार आर्थिक सहायता कर रही है, यह बात स्पष्ट विदित हो जायगी, और ऐसी आर्थिक दुरवस्था-ग्रस्त संस्कृत-संस्थाएँ अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, इसका अनुमान-मात्र ही बड़े आश्चर्य की वस्तु प्रतीत होगी।

संस्कृत-शिक्षा का विस्तार करने के लिये सरकार ने अब तक जो कुछ आर्थिक सहायता देने का प्रबंध किया है, उसका परिणाम यह है कि यदि १,०८६ संस्कृत-पाठशालाओं को औसत से ५६,१३६) बाँट दिया जाय, तो प्रतिवर्ष प्रति पाठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाला लगभग ५१) वार्षिक और ४।) मासिक पड़ेगा। ऐसी दशा में गत वर्ष प्रांतीय शिक्षा-विभाग के कर्णधार महारथियों ने यह अनुभव किया कि वर्तमान संस्कृत-शिक्षा-पद्धति अधूरी, अव्यवहार्य, देश-कालिक जीवन के विपरीत और असंतोष-जनक है। इसलिये उन्होंने संस्कृत-शिक्षा-सुधार के लिये, डॉक्टर भगवानदासजी की अध्यक्षता में, एक समिति बनाई, जो संस्कृत-शिक्षा को सर्वथा उन्नत, विस्तृत और लोक-हितकारक बनाने के लिये एक आचरणीय योजना तैयार करे। अभी तक इस समिति की रिपोर्ट प्रकाशित भी न हो पाई थी कि गवर्नमेंट-संस्कृत-कॉलेज, बनारस की परीक्षाओं के नियामकों ने प्रचलित पाठ्य-क्रमों में अनेक मौलिक परिवर्तन कर दिए, और इस परिवर्तित पाठ-विधि के अनुसार १६३६-४० की परीक्षाएँ भी लेने का विधान कर दिया है। समय-समय पर प्रकाशित होनेवाले अधिकारियों के वक्तव्यों, परिवर्तित पाठ-विधि के स्वरूप और अनेक अन्य महानुभावों के लेखों तथा भाषणों से यह प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में स्कूल-कॉलेजों की भाँति संस्कृत-पाठ्य-विषयों के साथ गणित, हिंदी-साहित्य, इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य-विज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज-शास्त्र, विज्ञान आदि अनेक नवीन विषयों का संस्कृत-परीक्षाओं में समावेश कर दिया जायगा। इस वर्ष ही परीक्षार्थियों को गणित, इतिहास, भूगोल, हिंदी-साहित्य, स्वास्थ्य, विज्ञान आदि नूतन विषय संस्कृत पाठ्य-पुस्तकों के साथ ही परीक्षा के लिये तैयार करने पड़ेंगे।

ऐसी दशा में भावुकता वाचिक चमत्कृति प्रदर्शनात्मक आंदोलन-संबंधी आकर्षक मनोरंजन को छोड़कर परिस्थिति की जटिलता पर प्रत्येक संस्कृत-शिक्षा-प्रेमी को गंभीरता के साथ विचार करना चाहिए। स्पष्ट प्रश्न हमारे सामने यह नहीं कि संस्कृत-शिक्षा-पद्धति में नवीन विषयों का समावेश किया जाय या नहीं? यह बात तो सभी चाहते हैं कि प्रत्येक शिक्षित नर-नारी समस्त ज्ञातव्य विषयों का न्यूनाधिक आवश्यकतानुसार परिचय प्राप्त करे। जैसे एक डॉक्टर नागरिक के लिये केवल चिकित्सा-शास्त्र का ज्ञान ही उसके जीवन को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिये पर्याप्त नहीं, अपितु विभिन्न कलाओं, विज्ञानों, दर्शनों, धर्मों, संस्कृतियों और साहित्यों का ज्ञान भी उसके जीवन को पूर्ण बनाने के लिये आवश्यक है, इसी प्रकार इंजीनियर, वकील, अध्यापक, कृषक, व्यापारी आदि के लिये भी समझ लेना चाहिए। किंतु कठिनाई तो यह है कि समस्त विषय आवश्यक और उपयोगी होने पर भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबंध न हो सकने के कारण सबको समान भाव से नहीं सिखाए जा सकते।

उपर्युक्त सिद्धांत के अनुसार १,०८६ पाठशालाओं में यदि आधुनिक विषयों के साथ संस्कृत-विषयों की शिक्षा का प्रबंध किया जाय, तो कम-से-कम आरंभ में ही प्रत्येक पाठशाला में तीन अध्यापक रखना अनिवार्य होगा। इन तीनो का मासिक वेतन कम-से-कम क्रमशः ३०+२०+२० योग ७० और एक भृत्य १०) मासिक पर रखना होगा। शेष २०) में अन्य व्यय कठिनाई से हो सकेंगे। इस प्रकार यदि प्रति संस्था १००) मासिक ही व्यय किया जाय, तो १२,०३,२००) वार्षिक प्रांतीय समस्त पाठशालाओं के लिये आवश्यक होगा। इस धन-राशि में यदि आधा भी प्रांतीय सरकार दे, तो समस्त पाठशालाओं के लिये प्राप्तव्य ६,०१,६००) प्रतिवर्ष होगा, किंतु हमारे दुर्भाग्य से संप्रति संस्कृत-पाठशालाओं को मिलनेवाली आर्थिक सहायता केवल ५६,१३६) मात्र है, जिसका औसत प्रति पाठशाला प्रतिमास ४।) होता है।

संसार के किसी देश में भी शिक्षा-प्रचार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये ऐसा शोचनीय प्रबंध नहीं किया गया है। इस प्रसंग में एक बात और बड़े महत्त्व की ध्यान देने योग्य है। जहाँ तक परंपरागत संस्कृत-विद्या के अध्ययन-अध्यापन का परिचय अथवा इतिहास प्राप्त होता है, उसमें कहीं भी यह प्रतीत नहीं होता कि संस्कृत-शिक्षार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क लिया गया हो। विद्या-विक्रय को एक महान् पातक समझते हुए गुरु-शिष्य-परंपरा से अध्ययन करनेवाले संस्कृत-विद्वानों ने निःशुल्क ही संस्कृत-साहित्य-अध्यापन अपना धर्म समझा, और इसी कारण आज तक भारतीय समस्त पाठशालाओं में निःशुल्क ही अध्यापन-कार्य किया जाता है। इतना ही नहीं, अपितु गुरुजन अपने पुत्रवत् प्रिय, अकिंचन शिष्यों के लिये भोजन, वस्त्र, निवास आदि का भी प्रबंध करते चले आ रहे हैं। साथ ही पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली के अनुसार पुस्तक-लेखकों, प्रकाशकों और विक्रेताओं को मालामाल करने के लिये इन संस्थाओं में प्रतिवर्ष पाठ्य-पुस्तकें भी परिवर्तित नहीं होती रहीं। इसलिये विद्यार्थियों ने एक ही पुस्तक तीन-तीन पीढ़ियों तक पढ़ी है, यह बात सब जानते हैं। इस प्रकार पुस्तकों पर अकारण ही सहस्रों रुपया प्रतिवर्ष व्यय करने का प्रश्न ही पाठशालाओं के संचालकों के सम्मुख उपस्थित नहीं हुआ। साथ ही स्कूल-कॉलेजों की भाँति बाह्याडंबर और विशाल प्रासादों एवं महार्घ फ़रनीचर, पुस्तकालय, विज्ञानालय और अन्य आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों की भी इन संस्थाओं को कभी आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। अतः स्कूल-कॉलेज-संचालकों की भाँति संस्कृत-पाठशालाओं को भी यदि सर्वथा आधुनिकता का पुट दिया भी गया, तो भी यह बात अवश्य स्मरण रखनी चाहिए, "विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्।"

"भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः।"

अर्थात् लहसुन खाने पर भी रोग दूर नहीं हुआ। इस लोकोक्ति के अनुसार अनुभव के आधार पर यह बात निर्विवाद कही जा सकती है कि कतिपय अपवादों को छोड़कर प्रायः संस्कृतज्ञों ने जब कभी अँगरेज़ी-भाषा का अभ्यास किया, तो बहुत परिश्रम करने पर भी वे उस भाषा में इतनी दक्षता नहीं प्राप्त कर सके, जिससे उन्हें अँगरेज़ी-भाषा का अध्यापक बनाया जा सके। इसी प्रकार यदि भविष्य में आवश्यक पुस्तकालय, विज्ञानालय, भौगोलिक उपकरण, ऐतिहासिक मानचित्र, स्वास्थ्य-विज्ञान-विषयक साहित्य एवं शरीर-विज्ञान-संबंधी चित्र-पंजर आदि के अभाव में यदि अनभिज्ञ पाठशालाओं के अध्यापकों द्वारा भूगोल, इतिहास, स्वास्थ्य, विज्ञान, गणित और हिंदी-साहित्य की शिक्षा का अभ्यास भी कराया गया, तो इन विद्यार्थियों को अभ्यस्त विषयों में इतनी योग्यता कदापि न हो सकेगी कि ये किसी संस्था में अधीत विषयों को पढ़ा सकें। इतना ही नहीं, इन नवीन विषयों की प्रतिवर्ष परिवर्तित होनेवाली पुस्तकों को अधिक धन व्यय करके लेना भी अकिंचन छात्रों के लिये अत्यंत कठिन होगा। और, यदि मान भी लिया जाय कि समस्त पाठशालाएँ नूतनतम आधुनिक पाठ-विधि के अनुसार शिक्षा का प्रबंध करने में समर्थ होंगी, तो भी यह प्रश्न तो यथापूर्व बना ही रहेगा कि शास्त्री और आचार्य-परीक्षोत्तीर्ण संस्कृत के विद्वानों की क्या कॉलेजों में शिक्षा पाए हुए अँगरेज़ी के विद्वानों की भाँति सरकारी और अर्ध-सरकारी संस्थाओं में, समान वेतन के साथ, कभी नियुक्ति होना संभव होगा? वर्तमान समय में तो स्कूलों में संस्कृताध्यापक शास्त्री, आचार्य और बी० ए०, एम्० ए० अध्यापकों और कॉलेजों में संस्कृत-प्रोफ़ेसरों एवं अन्य विषयों के प्रोफ़ेसरों के वेतनों पर दृष्टि डालने से महान् आश्चर्य होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या कभी संस्कृतज्ञ विद्वान् अन्य विषयों के विद्वानों की कोटि में रक्खे जा सकेंगे? और उन्हें भी अधिकाधिक उन्नति करने का अवसर मिलेगा?

संस्कृत-शिक्षा-पद्धति-सुधार के संबंध में यदि सरकार ने तदनुरूप आर्थिक प्रश्न का समाधान करना आवश्यक अनुभव न किया, और आधुनिकता का पुट लगा ही दिया, तो इसका परिणाम यह हो सकता है कि कतिपय उन संस्कृत-पाठशालाओं को छोड़कर, जो केंद्रीय नगरों में हैं, अथवा संस्कृत-शिक्षा-विभाग के कर्णधारों की कृपा-कटाक्ष की भाजन हैं, शेष ग्रामों, क़स्बों और नगरों की पाठशालाएँ आवश्यक आर्थिक सहायता न प्राप्त करने के कारण अनायास ही अपना जीवन समाप्त कर देंगी। इस अवस्था को संस्कृत-शिक्षा का विकास कहा जाय या विनाश, यह बात तो भविष्य-इतिहास के गर्भ में है। हाँ, यदि वस्तुतः प्रांतीय सरकार के कर्णधार अधिकारी संस्कृत-शिक्षा की सर्वांगीण उन्नति चाहते हैं, तो प्रांतवर्ती संस्कृत-शिक्षा-प्रचार के लिये एक ऐसी समिति बना दें, जिसमें सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि रहें, और वे आवश्यकतानुसार विभिन्न संस्थाओं को संबंधित करने और उन्हें आर्थिक सहायता देने का निर्णय करें।

प्रांतवर्ती संस्कृत-पाठशालाएँ प्रायः ग्रामों और क़स्बों में हैं, और संस्कृत पढ़नेवाले प्रायः वे ही अकिंचन विद्यार्थी होते हैं, जो स्कूल-कॉलेजों में फ़ीस देकर, अधिक धन व्यय करके महँगी अँगरेज़ी-शिक्षा प्राप्त करने में नितांत असमर्थ होते हैं। इनकी दयनीय दशा, नग्न चित्र विराट्-काय विश्व-विद्यालय, काशी के प्राच्यविभागांतर्गत छात्रालय में देखा जा सकता है। भोजन, वस्त्र, पुस्तक और निवास-स्थान आदि की सुविधा प्राप्त होने पर ही दीन-हीन संस्कृत-छात्र अध्ययन करने में समर्थ हो सकते और होते हैं। इस वास्तविकता के चित्र को अपनी दृष्टि में रखते हुए संस्कृत-शिक्षा की उन्नति, विस्तार और उपयोगिता चाहनेवाली प्रांतीय सरकार और प्रांत के अन्य सदाशय, उदार धनी-मानी संस्कृत-प्रेमियों का यह एक महत्त्व-पूर्ण कर्तव्य है कि यथोचित रूप से संस्कृत-अध्ययन और अध्यापन के लिये कम-से-कम बारह लाख रुपयों का प्रतिवर्ष प्रबंध करें। हमारी दयालु सरकार दो करोड़ में से यदि बारह लाख दे सके, तो इस प्रांत में एक प्रथम श्रेणी का संस्कृत-विश्वविद्यालय स्थापित हो सकता है। सरकार भी काशी में एक संस्कृत-विद्यालय स्थापित करने का विचार कर रही है। यह आशा की जाती है कि अचिर भविष्य में ही प्रांतीय सरकार के सदुद्योग, सार्वजनिक नेताओं के सहयोग, सदाशय-संपन्न सज्जनों की सहृदयता और सौभाग्यशाली संस्कृत-शिक्षार्थियों की संलग्नता के अनुरूप काशी-क्षेत्र में एक विशाल संस्कृत-विश्वविद्यालय स्थापित होगा, और तप-त्याग-पूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाले संस्कृत के विद्यार्थियों का पुनः भाग्योदय होगा।

हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, बंबई की सब पुस्तकें हमसे मँगाइए।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यू० पी० सरकार द्वारा प्रदत्त प्रांतीय संस्कृत-पाठशालाओं को आर्थिक सहायता

१९३८–३९

संख्या ज़िला	नाम ज़िला	सं० पाठशाला	सं० सहायता-प्राप्त पाठशाला	धन-राशि वार्षिक	संख्या ज़िला	नाम ज़िला	सं० पाठशाला	सं० सहायता-प्राप्त पाठशाला	धन-राशि वार्षिक
१	अलमोड़ा	६	—कोई नहीं—	—कुछ नहीं मिलता—	२६	झाँसी	८	१	३८४
२	बाराबंकी	७			२७	खीरी	६	१	४६२
३	कानपुर	५६			२८	प्रतापगढ़	१७	१	३००
४	देहरादून	१५			२९	पीलीभीत	७	१	५५२
५	फ़र्रुख़ाबाद	६			३०	रायबरेली	८	१	१३३२
६	फ़तेहपुर	१२			३१	सीतापुर	१६	१	७६२
७	हमीरपुर	५			३२	सुलतानपुर	३०	१	७०८
८	जालौन	८			३३	गोरखपुर	११२	२९	१६०३२
९	लखनऊ	११			३४	आज़मगढ़	६१	१२	६६४८
१०	मैनपुरी	३			३५	इलाहाबाद	२५	५	२३८४
११	मुरादाबाद	२०			३६	बुलंदशहर	२४	५	२९२८
१२	मुज़फ़्फ़रनगर	६			३७	गढ़वाल	२७	५	१७५६
१३	नैनीताल	३			३८	बस्ती	६२	३	१४०४
१४	सहारनपुर	२७			३९	गोंडा	१७	३	२५०८
१५	शाहजहाँपुर	६			४०	मिर्ज़ापुर	१३	३	९२४
१६	उन्नाव	१०			४१	अलीगढ़	२५	२	१०८०
१७	बहराइच	६	१	१४४	४२	बलिया	२४	२	२७७२
१८	बाँदा	११	१	४६८	४३	बनारस	८१	२	१०४४
१९	बिजनौर	५	१	१४४	४४	एटा	१२	२	१०६८
२०	बरेली	१७	१	३८४	४५	ग़ाज़ीपुर	१७	२	११४०
२१	बदायूँ	३४	१	१२१२	४६	मेरठ	३१	२	१३२०
२२	इटावा	१३	१	१८००	४७	मथुरा	३४	२	७९२
२३	फ़ैज़ाबाद	५९	१	४९२	४८	आगरा	११	१	११४०
२४	हरदोई	११	१	३३६			१०८६	९६	३६१३६
२५	जौनपुर	१६	१	६९६					

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन्मयता

[श्रीयुत चंद्रप्रकाश वर्मा 'चंद्र']

सब समय तुम्हीं ले लेती हो,
मैं करूँ विश्व का कौन काम ?

(१)

बनकर प्रभात में अरुण किरण,
मेरी खिड़की के द्वार खोल
चूमा करतीं मेरे कपोल
बनकर प्रकाश की लहर लोल।
मैं सेज छोड़ उठ जाता हूँ
ले प्राण! तुम्हारा मधुर नाम।

(२)

जब करता हूँ मैं स्नान बिहँस,
तब बन गंगा की धार धवल,
तुम लिपट-लिपट मुझसे अधीर
करतीं तन-मन दोनो उज्ज्वल।
फिर ध्यान बीच देखा करता
वह छवि नवीन, वह छवि ललाम।

(३)

भोजन करने के पूर्व तुम्हें
देता हूँ प्रतिदिन प्रेम-भोग;
तुम पागलपन इसको कह लो,
पर ऐसा ही है प्रेम-योग।
पानी न अधिक पी पाता हूँ,
पी लिया प्यार का प्रथम जाम।

(४)

जब पढ़ने को पुस्तक खोली,
तब शब्द-शब्द धुँधले होते;
क्या जानूँ क्यों ये विकल नयन
चेतना हाय! अपनी खोते!
बस; पृष्ठ-पृष्ठ पर दिखती हो
तुम मुझको करती-सी प्रणाम।

(५)

यह जान खिलखिला हँस दोगी,
मैं कर कमरे के द्वार बंद
चलने लगता हूँ कभी-कभी
वह चाल तुम्हारी मंद-मंद।
दिन-भर कौतुक में कट जाता,
फिर आ जाती है सौम्य शाम।

(६)

आ गई शाम, आ गई रात,
आ गई नींद ज्यों-त्यों समीप;
सपने आते, तुम आती हो,
सज-धज कर में ले प्रेम-दीप।
क्या जाने, कब होता प्रभात,
निशि-भर रहती है धूमधाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानपुर के प्रसिद्ध वैद्य, प्रताप-संस्थापक, प्रकाश-पुस्तकालय के अध्यक्ष
श्रीपं० शिवनारायणजी मिश्र

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंशीवाला

[प्रसिद्ध नाटककार, कहानी-लेखक और उपन्यासकार श्रीगोविंदवल्लभ पंत-निर्मित 'लिनो-कट' से]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित

झंडु

केन्थाडीन हेअर ओइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताज़गी मिलती है।
आज ही से आज़मायश के लिये ख़ास सिफ़ारिश है।

TRADE MARK

झंडु
फ़ार्मस्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ „ „ „—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

* सात भाग *

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं; क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है, उनके रोग दूर भागते हैं। इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद दिनों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है!

		पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय	१ ला भाग	३)	१॥)
,,	२ रा भाग	५)	२॥)
,,	३ रा भाग	४।)	२=)
,,	४ था भाग	४।)	२=)
,,	५ वाँ भाग	५)	२॥)
,,	६ ठा भाग	३॥)	१॥)
,,	७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा	१२ वाँ संस्करण	३)	१॥)

दस हज़ार वर्षों में नई बात!

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

		मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक	सचित्र	४॥)	२।)
वैराग्यशतक	,,	५)	२॥)
शृंगारशतक	,,	३)	१॥)
		१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामी लेखकों की नामी पुस्तकें

सुप्रसिद्ध कहानी लेखक श्रीसुदर्शन	चार कहानियाँ	२)
	पनघट (कहानियाँ)	१।)
	राजकुमार सागर	।)
	झंकार (गीत-संग्रह)	।)
आधुनिक भूषण सुकवि श्रीअनूप शर्मा एम्० ए०, एल्० टी०	सिद्धार्थ (महाकाव्य)	३)
	सुमनांजलि (काव्य-संग्रह)	२)
सीतामऊ के राजकुमार डा० रघुवीरसिंह डी० लिट्	सप्तद्वीप	१।)
	शेष स्मृतियाँ	२)
रूस-प्रवासी डा० सत्यनारायण पी० एच्० डी०	रोमांचक रूस में (उपन्यासात्मक यात्रा)	२)
विचारक और लेखक श्रीजैनेंद्रकुमार	जैनेंद्र के विचार	३)
	प्रस्तुत प्रश्न	२)
	नीलम देश की राजकन्या	१।।)
	त्याग-पत्र	१)

पथ के दावेदार

(पथेरदावी)

स्व० शरच्चंद्रचटर्जी का राजनीतिक रोमांचकारी उपन्यास, जो दस वर्ष तक ज़ब्त रहा, और जिसके पढ़ने के लिये लोग तरसते थे, प्रकाशित हो गया है। भारतीय साहित्य में यह बेजोड़ उपन्यास है। पृष्ठ-संख्या ३५०। मूल्य सिर्फ एक रुपया और सवा रुपया। गुजराती में इसी का मूल्य चार रुपया और बंगला में तीन रुपया है।

नोट—हमारा बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

संचालक—हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय
हीराबाग़, गिरगाँव, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

मैं एक ज़मींदार का बेटा हूँ। कुसंगतों के कारण मुझे जिरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक-दो साल मैंने लोक-लाज के कारण अपना भेद छिपाए रक्खा, परंतु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा। संसार में चारो ओर से अँधेरा मालूम होने लगा। तब मेरी आँखें खुलीं। रुपया-पैसा की मेरे यहाँ कमी न थी। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डॉक्टरों, वैद्यों और हकीमों की दवाएँ मँगाईं, और खाईं, मगर रोग बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। आख़िर मामला यहाँ तक आ पहुँचा कि मैं आत्महत्या की सोचने लगा, और इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर समझने लगा। हमारे गाँव के पास ही एक मील की दूरी पर ईंटों का एक खेड़ा है। कारण-वश उसी खेड़े पर काठियावाड़ के एक प्रसिद्ध त्यागी योगिराज आ बैठे, और एक झाड़ी में आसन लगाकर ईश्वर-चिंतन में मग्न हो गए। गाँव के बालक और युवकों ने जब उन्हें देखा, तो उनकी प्रशंसा गाँव में फैला दी कि खेड़े पर एक महात्मा आए हैं, जो बड़े तेजस्वी प्रतीत होते हैं। यह सुनकर लोगों के समूह-के-समूह उनकी सेवा में जाने लगे। जब मैंने यह सुना, तो मैं निराशा और आशा को साथ लिए उनके चरणों में जा उपस्थित हुआ। उस तेजस्वी के आत्मदर्शन करते ही मेरा चित्त गद्‌गद और प्रसन्न हो गया, और मैं नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। महात्माजी मेरी दशा देखकर फ़ौरन् ताड़ गए, और मेरी ओर आकर्षित होकर बोले कि बेटा, तुम बड़े निराश और दुखी मालूम होते हो, क्यों, तबियत कैसी है, और तुम्हारे दुखी होने का क्या कारण है? बस, फिर क्या था, जैसे मेरे दिल के घाओं को किसी ने छेड़ दिया हो, मैं फूट-फूटकर रोने लगा। महात्माजी यह दशा देखकर बेचैन हो उठे, और मेरे पास आकर मुझे धीरज देने लगे। जब उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा, तो मैंने अपनी बीमारी का सारा हाल उनके सम्मुख रख दिया। इस तरह उन्होंने आशा दिलाई, इसके पश्चात् उन्होंने एक प्रयोग मुझे बतलाया, जिसको बनाकर मैंने सेवन किया, अब बिलकुल नीरोग हूँ। प्रयोग—असली त्रिफला चूर्ण २ तोला, असली सूर्यतापी शिलाजीत २॥ तोला, असली वंग भस्म ६ माशा, असली सूर्य छाप केशर ६ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नैपाली कस्तूरी ६ रत्ती, इन सब ओषधियों को कूट-छानकर खरल में डालकर ऊपर से शीतलचीनी का तेल २० बूँद, बहरोज़ा का तेल २० बूँद, इत्र संदल २० बूँद मिलावे। इसके बाद ताज़ा ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घंटे तक घोटकर झरबेरी के बराबर गोलियाँ बना लें, और साया में सुखा लें। बस, ओषधि तैयार है। सेवन-विधि—एक गोली प्रातः और एक गोली सायंकाल पाव-भर गाय के दूध में एक तोला शकर मिलाकर खाएँ। इस ओषधि के सेवन से ४० रोज़ में स्वस्थ हो गया था, और अब उस परम पिता की कृपा से मेरे तीन बच्चे हैं, जो बिलकुल ही तंदुरुस्त हैं। उस वक़्त से अब तक मैं यही ओषधि लोगों को दाम-के-दाम पर दे रहा हूँ, जिससे सैकड़ों व्यक्तियों ने फ़ायदा उठाया है। उनकी आशाओं की पूर्ति हुई है। प्रयोग ऊपर भली प्रकार समझा दिया गया है। इसको बनाकर लाभ उठावें। अगर आप इसके बनाने में असमर्थ हों या कारोबार के कारण आपको फ़ुरसत कम मिलती हो या असली चीज़ें न मिलती हों, तो हमसे बनी-बनाई ओषधि मँगा लें, और उसके आश्चर्य-जनक गुण देखें। यह ओषधि वीर्य का पतलापन, बीसियों क़िस्म के प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्य का जाना, पाख़ाना के साथ धातु का जाना, स्वप्नदोष व सुज़ाक, सुस्ती, कमज़ोरी और नामर्दी, जवानी में बुढ़ापे की हालत, असली ताक़त की कमी, सोचने की ताक़त कम हो जाना वग़ैरह दूर करके अत्यंत ही ताक़त देती है, और नस-नस में जीवन-संचार करती है। क़ीमत पूरी ख़ूराक ८० गोली के दो पैकट का ४), डाक-ख़र्च माफ़, मनीऑर्डर-फ़ीस ≈)

निवेदक—बाबू श्यामलालजी रईस,

प्रेमवटी-ऑफ़िस, नं० ३, कंचौसी बाज़ार, ज़िला इटावा (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय की झलक

[श्रीयुत सियारामशरण गुप्त]

लखनऊ से रात के साढ़े दस बजे गाड़ी छूटती थी। कुछ पहले ही स्टेशन पहुँच गया। इरादा था कि कुछ अच्छी-सी जगह पा सकूँ। मित्र ने इंटर क्लास में बैठने का आग्रह कर दिया था। यह दरजा कुलीन गरीबों का दरजा है। हम-जैसे अनेक जन अपना दरजा बढ़ाने की धुन में रहते हैं। इसलिये भीड़ की आशंका थी। ताँगे से उतरते ही कुली ने बताया कि इंटर में बैठिएगा, तो आगे एक जगह गाड़ी बदलनी होगी। तीसरे दरजे का एक डिब्बा सीधा काठगोदाम तक जाता है। रेल-वालों को मुझे धन्यवाद देना पड़ा। किसी उद्देश से क्यों न यह प्रबंध किया गया हो, उन्होंने मेरे कुछ पैसे बचा दिए। तीसरे दरजे में बैठने का ही निश्चय मुझे करना पड़ा। योग्यता की पहली परीक्षा में एक अपरिचित सज्जन की कृपा से निश्चितता मिल गई। टिकट की खिड़की पर कँगलों की-सी भीड़ को टिकट-दान किया जा रहा था। वहाँ से मेरे लिये टिकट लाकर उन्होंने मुझे घायल हो जाने से बचा लिया।

हमारा डिब्बा गाड़ी के अंत में था। लोग अग्रगामी होना पसंद करते हैं। इसलिये अधिक भीड़ से हम लोग बच गए। किसी तरह बिस्तरा लगा लेने योग्य जगह वहाँ मिल गई। जब मिल गई, तब वह अपनी-ही-अपनी है। सब-के-सब हमारे देशवासी इतने भले हैं कि किसी को उसके चाहे जैसे अधिकार से वंचित करने का पाप वे नहीं लेते।

आकाश बादलों से घिरा था। रात अँधेरी। पता नहीं चलता था, कहाँ आकर गाड़ी रुकी, और फिर कहाँ के लिये रवाना हो गई है। अज्ञात और अदृश्य की ओर बढ़े जा रहे थे। फिर भी निश्चिंतता थी। सो सकते थे, पर सो नहीं सके। पानी बरस जाने से लंप के आस-पास और पूरे डिब्बे में पतिंगों की भरमार थी। इन बिना-टिकटों की संख्या का प्रश्न ही क्या? अपने प्रदीप्त प्रेमी के निकट आकर आत्म-समर्पण करने का अधिकार उनका था। खेद और दुःख इतना ही कि हम सभी यात्रियों को उन्होंने लंप का ही भाई-बंद समझ रक्खा था। ढेर-के-ढेर आ-आकर ऊपर गिरते थे। हम लोग किसी तरह उन्हें विश्वास न दिला सके कि हमारे भीतर या बाहर कहीं एक कण चिनगारी नहीं, तुम धोखा खा रहे हो।

पीलीभीत के आस-पास कहीं सबेरा हुआ। इस नाम के साथ किसी अभूतपूर्व स्वर्णाभा की कल्पना थी। वह पूरी नहीं हुई। मैदान अधिक दिखाई पड़ा, पेड़-पौधे कम। एक जगह सड़क पर देखा कि एक आदमी अपने दुबले-पतले और हड्डी-निकले टट्टू पर सवार है। उसके पीछे, कुछ अंतर पर, अपने महावत को लिए एक हाथी सूँड़ हिलाता हुआ अपनी सहज चाल से चला आता है। बड़ी देर तक यह घटना भुलाए नहीं भूली।

उत्सुकता बढ़ती गई कि कहाँ पहलेपहल गिरिराज के दर्शन होते हैं। सहयात्रियों को यह कुछ अजीब बात जान पड़ी। यह पेड़ कौन-सा है, वह सड़क कहाँ को जाती है, पहलेपहल हिमालय के शैल-शिखर कहाँ से दीखते हैं, ये बातें उनके लिये महत्त्व की न थीं। इन प्रश्नों के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उन्होंने एक विख्यात नगर की चर्चा छेड़ दी। उस नगर का नाम बताकर मैं मूर्ख न बनूँगा। वहीं के लोग उस तरह के प्रश्न करते हैं। अचरज की बात यह है कि सहयात्री यह कैसे जान गए कि उनके उस कौतुक-नगर से मेरा कुछ संबंध है। एक बार मैं भाग्य का मारा वहाँ पहुँच चुका हूँ।

अंत में शिखर-श्रेणी ने दर्शन दिए, और मन-ही-मन मैंने गुनगुनाया—

शैलराज, तुमको प्रणाम है।
भू-तल के पाप-ताप-हारी हर,
दर्शन तुम्हारा, तुम्हारा पुण्यकारी कर
पूर्ण मनःकाम है।

परंतु नहीं। अभी मनःकाम पूरा हुआ कहाँ है? अभी तो इतना ही देखा है कि पुंजीभूत श्याम घन धरती से ऊपर उठकर वहाँ आकाश में फैलना चाहते हैं।

एक नदी के निकट होकर रेलगाड़ी आगे बढ़ने लगी। नदी थी या नाला, कोई नहीं बता सका। हिमालय का नाला भी क्या हमारे यहाँ के नालों-जैसा दुबला-पतला होगा? काले रंग की मोटी रेत का लंबा-चौड़ा पाट और उसके बीच में धूप से चमचमाती हुई एक पतली रजत-जल-धारा; मानो बहुत अधिक मार्जिन देकर छपी हुई कोई हृदय-हारिणी कविता हो। नाम उसका मालूम नहीं हो सका, उसकी कल-मुखर ध्वनि कानों तक नहीं पहुँच सकी; फिर भी वह विना परिचय के हृदय के एक कोने में अंकित हो गई है।

गाड़ी काठगोदाम आकर रुकी। यहीं नैनीताल के लिये मोटर लॉरी मिलेगी।

लॉरी स्टार्ट होकर चल पड़ी। जगह आगे की ओर ही मिल गई थी। गाड़ी की छत नीची थी। आस-पास का दृश्य पूरा दिखाई न देता था। जब हम इस अतुल आकाश में डुबकी लेने जा रहे हैं, तब छत की यह बड़ी-सी पट्टी आँखों को बहुत क्लेशकर प्रतीत होती है।

पक्की सड़क चक्कर खाती हुई ऊपर गई है। इधर-उधर चोटियाँ-ही-चोटियाँ, वृक्ष-ही-वृक्ष। हिमालय के वृक्ष बौने कम होते हैं। अपनी भूमि की उँचाई के प्रसाद से वे वंचित नहीं हुए हैं। जैसे-जैसे उँचाई पर चढ़ते गए, दृश्य की सुंदरता बढ़ने लगी। अब तक भूमि पर ही यात्रा करने का अवसर पाया था। आज हमारी गाड़ी मानो आकाश पर चढ़ रही हो।

आगे या ऊपर की ओर बढ़ते चले गए। कहीं बहुत निचाई पर, कुछ घरों की बस्तियाँ दिखाई दीं। आदमी बहुत कम देखने में आए। स्त्रियाँ क्वचित् ही। खेत एकदम विचित्र थे। हाथ-डेढ़ हाथ लंबी, ऊपर से इतनी ही लंबाई जान पड़ती थी, सीढ़ियाँ थीं। मालूम हुआ, यहाँ के खेत यही हैं। कोई बताता नहीं, तो उन सोपान-पंक्तियों को खेत कौन समझता?

अब तक निर्झर एक भी दिखाई न पड़ा था। निर्झरों के द्वारा ही रसातल अपना स्नेह इस उँचाई के प्रति अर्पित करता है। यहाँ के लिये जैसे हम सब रसातल के ही पड़ोसी थे, इसी से निर्झर देखकर तृप्त होने की इच्छा थी। एक जगह एक नदी-सी दिखाई दे गई। पर कदाचित् इन दिनों उसका कोई निर्जल व्रत था। आगे किसी जगह दूर से एक क्षीण जल-धारा देखकर बड़ा कौतूहल हुआ। पता नहीं, किस पुनीत सरिता का बाल्य-काल उसमें था। नाम-हीन, परिचय-हीन इस धारा ने आगे चलकर किस विराट् गरिमा को धारण किया है, यह हममें से कोई नहीं बता सका। किसी बहुत बड़े लोकनायक को, किसी वंदनीय कविमनीषी को, लौटकर हम उसके बाल्य-काल में देखें, चित्र में नहीं, प्रत्यक्ष, तब जो पुलक हममें उठ खड़ा हो, वही इस जल-धारा से मेरे मन में हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसा नीचे की ओर एक सड़क दिखाई दी। पूछा—"यह दूसरा रास्ता कहाँ को है ?" बताया गया—"वही तो, जिस पर चले आ रहे हैं।" जान पड़ा, सड़क को दूनर करके जैसे किसी ने उसकी तह कर दी हो। यहाँ अब हम बहुत उँचाई पर आ गए हैं। नीचे की ओर खड्ड पर खड्ड और ऊपर हमारी गाड़ी सरपट दौड़ी जाती है। ड्राइवर ज़रा भी असावधान हुआ नहीं कि फिर क्या हो, कौन जाने। इन भयंकर गर्तों को देखकर चक्कर आता है। मुझे ही नहीं, दूसरों को भी चक्कर आते हैं, यह जानकर संतोष की साँस लिए बिना नहीं रहा गया! एक जगह निचाई देखकर क्षण-भर के लिये आँखें झँप गईं। अपनी 'संजुघोष' कविता का एक अंश याद हो आया। देवलोक से शंपा (बिजली) अपने स्वामी मेघ के साथ हिमालय पर जहाँ आती है, वहाँ एक जगह की निचाई देखकर उसे भय होता है। मेरी वह कल्पना कोरी कल्पना नहीं है, इस विचार से आनंद का अनुभव हुआ।

इतनी उँचाई पर पहुँच गया हूँ कि नीचे के खड्डों में बादल दिखाई पड़ते हैं। आकाश हमारे नीचे है! दूर-दूर तक, जहाँ तक दृष्टि जाती है, ऐसा जान पड़ता है कि शांत समुद्र हो। उस समुद्र में ही हम तैरे जा रहे हैं। इस समुद्र में तरंगाघात नहीं हैं। शांत, निश्चल, सुविस्तीर्ण। ऐसे समुद्र की पहले कल्पना नहीं की थी। पहाड़ हमारी दृष्टि से ओझल हो गया है। इस स्वनिर्मित समुद्र में जैसे उसने डुबकी ली हो।

अब फिर गिरिराज, और हमारी गाड़ी एक इमारत के पास पहुँचकर रुक गई। नैनीताल निकट ही है, और उसी का यह चुंगीघर है। प्रकृति के विशाल क्रीड़ा-क्षेत्र पर मनुष्य-कृत यह रचना रुचिकर नहीं जान पड़ी। अपने में डूबा-डूबा मैं गुनगुना रहा था—

("शंपे, प्रिय शंपे,) यही पावन नगाधिराज ;
करके अचंचल नयन आज,
कर लो निमज्जित पवित्र पयोद्गम में,
दिव और भव के विचित्र इस संगम में !"

इस संगम में जैसे यह कहीं का कर्दम आ पड़ा हो। प्रत्येक यात्री को यहाँ एक-एक रुपया कर चुकाना पड़ा।

आगे के मोटर-स्टैंड का पहला ही दृश्य भीषण था। कुलियों के एक झुंड ने आकर मोटर और मोटर-यात्रियों पर हल्ला बोल दिया। जी एकदम घबरा उठा। कपड़े कुलियों के शरीर पर थे, पर क्या कपड़े ही उन्हें कहना चाहिए? किसी मरणासन्न वृद्ध को बालक कह सकें, तो उन चिथड़ों को भी हम कपड़े कह सकते हैं। "बाबू, हम आपका सामान ले चलेंगे, हमें ले चलिए, हमें!" उनकी इस कातर प्रार्थना में न-जाने क्या बात थी कि जी काँप उठा। उसमें कातरता थी, उसमें धिक्कार था, उसमें भर्त्सना थी। क्या नहीं था उसमें, सारे-के-सारे देश के लिये, सारी-की-सारी मानव-जाति के लिये?

पहला जो कुली सामने आ गया, उसी से हामी भर देनी पड़ी। सबके योग्य सामान मेरे पास न था। कुली सामान सँभाल ही रहा था, इतने में उसका एक दूसरा भाई आ पहुँचा। पहला चाहता था कि हमीं सब सामान ले जायँगे, दूसरा कहता था—हम। अंत में एक का सामान दो में बाँट देना पड़ा। दूसरे ने कोई तर्क सुनना पसंद नहीं किया। उनमें एक छत्री था, दूसरा ठाकुर। दोनो लड़-झगड़कर रवाना हुए।

यह नैनीताल है, लगभग एक मील लंबी झील। नीले रंग का शांत सरोवर। इस समय तरंगायित नहीं है। शांत है, सुस्मित है। अन्य सरोवरों की भाँति यहाँ स्नान और जल-क्रीड़ा का उत्सव नहीं दिखाई दिया। दर्शन से ही यह शरीर और मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को शीतलता पहुँचाता है। जल-विहार के लिये कुछ नौकाएँ तट पर बँधी हैं। झील के किनारे-किनारे चलकर यह पतली सड़क ऊपर चढ़ गई है, जिसे एक ओर के इस ऊँचे शैल को काटकर तैयार किया गया है। ऊपर सघन वृक्षराजि है। बड़ी-बड़ी शिलाएँ अपना अर्द्ध भाग कटवाकर अपनी जगह स्थिर हैं। भूकंप के कठोर हाथों से कोई अदृश्य और अज्ञात इनमें से किसी को मचमचा दे, तो क्या हो? यहाँ इनके नीचे हम लोग जो चल रहे हैं, उनका क्या हो? प्रश्न ऐसा है कि इसे टाल ही देना चाहिए।

शीत यहाँ काफी है। गरमी के कपड़ों से काम न चलेगा। इसी समय अनेक महिलाएँ झुंड-की-झुंड दिखाई दीं। प्राचीनाएँ भी और आधुनिकाएँ भी। रंग-विरंगे, बारीक वस्त्रों को धारण किए हुए। देखकर तसल्ली होती है कि आक्रमण कर देने के लिये निमोनिया इसी समय यहाँ सन्नद्ध नहीं खड़ा है। देवियाँ देवताओं में साहस का, पौरुष का संचार करती हैं, इसका एक नया प्रमाण मिला।

अपने डेरे पर आ पहुँचा हूँ। काफी सुंदर स्थान है, स्वागत करनेवालों से एक ही शिकायत। वे अतिथि के रूप में मुझे लेना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ, मैं उन्हीं में का एक हो जाऊँ। बाहरी जन होकर सम्मान और आदर विशेष मिलता है, परंतु घाटे में भी कम नहीं रहना पड़ता।

समुद्र-तल से लगभग ७,००० फीट की उँचाई यह है। इसका मतलब यह हुआ कि सूर्य के इतने निकट पहुँच गया हूँ। साधारण न्याय से सूर्य का उत्ताप यहाँ अधिक होना चाहिए। पर बड़ों के संबंध में साधारण न्याय से विचार करना कदाचित् ठीक नहीं होता।

जहाँ से चला था, वहाँ इन दिनों जून का महीना है, और यहाँ इस जगह नवंबर-दिसंबर। बारह घंटे की यात्रा में ही महीनों की यह दूरी पार कर ली है। आग की भट्ठी में तपते हुए लोहे को पानी में डुबो कर पक्का किया जाता है। मेरा शरीर लोहे का नहीं है, इसलिये कह नहीं सकता, इस परिवर्तन का उस पर क्या असर होगा।

यहाँ का ताप-मान जानने के लिये आतिथेय महोदय ने दिल्ली के एक इँगलिश-पत्र की शरण ली। बात साधारण है, फिर भी कम कौतुककर नहीं।

सायंकाल मित्र महोदय के साथ भ्रमण के लिये निकला। यहाँ न इक्के-ताँगों की खड़खड़ है और न मोटरों का कटु कोलाहल। सवारी यहाँ घोड़े की है। आदमी भी इस काम को करता है। आदमी की इस सवारी का नाम है दाँडी। पौराणिक भाषा में इसे नहुष-यान कह सकते हैं। पालकी की तरह वाहक जन इसे कंधों पर ढोते हैं। सड़कें ऊँची-नीची। मनुष्य के काबू में आकर भी इन्होंने अपनी गिरि-जातीयता का परित्याग नहीं किया है।

नगर के मूल-निवासी कितने हैं, कह नहीं सकता। दत्तक निवासी ही अधिक दिखाई दिए। न-जाने कहाँ-कहाँ से आकर इकट्ठे हुए हैं।

झील के किनारे इस समय विशेष चहल-पहल रहती है। इसी के एक ओर यहाँ की कुलीन, अर्थात् बड़े लोगों की दूकानें हैं। पर यहाँ इस मौसम की तरह ही बाजार भी ठंडा था।

आसन्न रात्रि-वेला में बिजली का प्रकाश जगमगा उठा है। इधर-उधर ऊँची चोटियों पर यत्र-तत्र छिटकी हुई कोठियों के बिजली के प्रदीप एक विचित्र छटा धारण किए हैं। इन ऊँची चोटियों के मिष, जान पड़ता है, नक्षत्र-खचित आकाश का कोई दुपट्टा नीचे की ओर छहर पड़ा हो।

और, इन चोटियों पर यह धूम-पुंज? कहाँ से ये बादल इनमें से निकल पड़े! शीतल आग का अनुभव बरफ़ में होता है, परंतु यह तो शीतल धुआँ है। इन शिखरों पर कभी बरफ़ की आग फैलेगी, इसी के पूर्व-रूप में यह धुआँ गुँगा उठा है। कितना सुंदर, कितना मनोमोहक, कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुभावना! गिरिराज की यज्ञ-वेदियों में जैसे यह आहुति-दान का चिह्न हो।

❁ ❁ ❁

रात में लगातार अविश्रांत वर्षा होती रही। बंद कमरे के भीतर से ही वृक्षों का मर्मर रव और वृष्टि-धारा की सनसनाहट अध-जागते और जागते कानों से सुनता रहा।

सवेरे एक बंधु के बँगले की खोज में निकला। बादल इस समय साफ़ हो गया है। फिर भी यहाँ के बादल का विश्वास कौन करे? हाथ में छाता ले लेना ही उचित है। युद्ध में लौह-कवच और वृष्टि में छाता, अधिक नहीं, तो कुछ सहायता तो करते ही हैं। बंधु का बँगला बहुत दूर नहीं, इसलिये किसी साथी को कष्ट देना व्यर्थ है। अकेला ही निकल पड़ा हूँ। चढ़ाई और उतराई, उतराई और चढ़ाई। एक सड़क इधर को निकल गई है, दूसरी उधर को। आदमियों के नए-नए नमूने—छोटे और बड़े और मझोले; सफ़ेद और काले; नर और मादा; कीमती और धूल-कंकड़ की तरह सस्ते, सब-के-सब यहाँ-वहाँ आ-जा रहे हैं। इतना अधिक चल चुका हूँ, फिर भी मित्र के बँगले तक नहीं पहुँच सका। यहाँ की निकटता भी हिमालय की भाँति लंबी-चौड़ी है। पूछने पर एक भद्र पुरुष ने बताया—"हाँ, हाँ; देखो, आगे चलकर जहाँ उँचाई पड़ती है, उसी के बाएँ ओर वह बँगला मिलता है।" आगे चलकर उँचाई मिली। उस उँचाई में वाम-दिशा भी थी। था नहीं, तो मित्र महोदय का बँगला। दो तिहाई बातें सही होने पर एक तिहाई के लिये उन महोदय की बुराई नहीं की जा सकती। एक दूसरे महोदय ने पूछने पर बताया—"सुनिए, आगे चलकर दाएँ ओर के दूसरे मोड़ का चौथा बँगला उनका है।" "दूर!" "अजी, दूर कहाँ, निकट ही है।" इनका यह निकट कल्पना का निकट निकला। यह रास्ता एकदम निर्जन है। कोई आने-जानेवाला दिखाई नहीं देता, जिसे फिर कष्ट दिया जाय। एक घंटा हुआ, डेढ़ घंटा हुआ, और ये दो पूरे हो गए। वह बँगला अब भी कभी इधर और कभी उधर की आँख-मिचौनी खेल रहा है। और, अब ये बादल झिमिट आए हैं। मुक्त-हस्त होकर इन्होंने उदार वर्षा से गिरि-वन को मुखरित कर दिया है। अब एक इस पहाड़ी श्रमिक की सहायता भी ली जाय। पूछने पर मालूम हुआ कि मेरे मित्र को छोटे से लेकर बड़े तक सब कोई जानते हैं। दो आने के लोभ से पंद्रह-बीस मिनट भीगकर उस बेचारे को भी आशा छोड़ देनी पड़ी। और, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर का वही पाठ अब फिर से पढ़ना है। अंतर इतना ही है कि पहले मित्र महोदय के बँगले तक पहुँचना था, और अब पहुँचना है अपने डेरे तक। लोम और विलोम पढ़ी जा सकनेवाली कविता की तरह तत्त्वतः इन दोनो बातों में अंतर नहीं है।

किसी तरह डेरे पर आ पहुँचा, तब मालूम हुआ कि बहुत थकावट नहीं आई है। दस-पंद्रह बरस में कदाचित् ही कभी इतना परिश्रम कर सका होऊँ। गिरिराज थकान देते तो हैं, पर उसे दूर कर देने में भी उन्हें देर नहीं लगती।

पानी पड़ता जाता है। ठंडी-ठंडी हवा वृक्षों पर अपने कर-स्पर्श से मर्मर-संगीत उत्पन्न करती है। जहाँ तक दृष्टि जाती है, हरियाली-ही-हरियाली। उन चोटियों ने मस्तक पर मेघों के श्याम चंदन का अंगराग किया है। मेघ और आकाश एक दूसरे के शरीर को छूते हैं। देखते रहो, बस, देखते जाओ। नेत्रों को तृप्ति नहीं मिलती है।

वृष्टि थम गई है। फिर भी हवा इस तरह सुरसराहट के साथ बहती है कि वृष्टि का धोखा हुए विना नहीं रहता। गिरि और वन कोमल पल्लवों के साथ मानो वृष्टि-संगीत का अभ्यास कर रहे हैं।

❁ ❁ ❁

घूमना नहीं, घामना नहीं। अपनी एकांत कोठरी में बैठा हूँ। बरसात के कारण कोठरी से निकल ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सका। खिड़की खोलकर सामने देख रहा हूँ। सामने वृक्षों की एक ढालू दीवार है। ऊपर एक जगह चलते हुए एक व्यक्ति का सिर-मात्र दिखाई देता है। वह भीगता चला जा रहा है। उस जगह टेढ़ी-मेढ़ी गति से जाती हुई किसी सड़क का अनुमान करता हूँ।

ज़रा देर में बूँदा-बादी, ज़रा देर में ज़ोर की वर्षा और फिर कुछ ही देर में सब कुछ शांत।

मेरा भाग्य प्रसन्न नहीं जान पड़ता। गिरिराज अपनी पुनीत यात्रा का अवसर मुझे नहीं देना चाहते। वर्षा के पानी में मेरे पुराने रोग के उभाड़ का भय है। आतिथेय महोदय बताते हैं कि एक विख्यात पुरुष, जो मेरे सहरोगी हैं, कुछ ही दिनों में यहाँ पाँच पौंड बढ़ गए हैं। कदाचित् इसीलिये योगियों ने इस नगाधिराज को अपनी तपोभूमि चुना हो। भूख-प्यास की व्याधि यहाँ उन्हें बहुत कृश नहीं करती।

पर यह नैनीताल इन दिनों योगियों की नहीं, भोगियों की भूमि है। भोग भी भाग्यवान् को उपलब्ध होता है। मैं कैसे उसे पा सकूँगा?

पानी फिर थम गया है। कमरे के भीतर बैठा-बैठा मैं अपना सामान ठीक कर रहा हूँ। काक-पक्षी बाहर अपने स्वकीय स्वर में कुछ विशेष संदेश सुना रहे हैं। दूसरे पक्षी भी कलरव करते हैं, पर उनके नाम, गोत्र और कंठ से मेरा परिचय नहीं। काक-पक्षियों को पहचान गया हूँ, इसका कुछ गहरा अर्थ भी लगाया जा सकता है। हाँ, यह कुक्कुट भी बोल रहा है। यह बेचारा नहीं जानता कि प्रभात के झुटपुटे तक ही उसे मुखरित रहना चाहिए। दिन में जब कभी दूर से क्षीण होता हुआ उसका स्वर सुनाई देता है, तब जान पड़ता है, जैसे वह करुण-क्रंदन कर रहा हो।

दूर-दूर से इधर-उधर के आदमियों का अनुभव होता है। एक दूसरे और तीसरे और चौथे के स्वर एक दूसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो गए हैं। कमरे के बाहर फेरीवाले आ-आकर आवाज़ें देते हुए रीते हाथ लौट जाते हैं। और, लौटना अब मुझे भी है।

❀ ❀ ❀

जीवन में दो ही बार हिमालय के दर्शन का सौभाग्य मिला है। एक बार तब, जब यहाँ से सैकड़ों मील दूर अपने कमरे में बैठकर 'मंजुघोष' कविता लिख रहा था, और दूसरी बार यहाँ इस समय नैनीताल में। जानकार लोग यही कहेंगे कि मैंने एक बार भी दर्शन नहीं किया। उनसे मुझे समझौता करना पड़ेगा। इस बार भले ही मैंने गिरिराज के दर्शन न किए हों, किंतु उस बार के संबंध में प्रश्न तक नहीं उठ सकता। उस कल्पना की वास्तविकता में मैं असंदिग्ध हूँ।

इस बार दर्शन हुए हों या न हुए हों, देवतात्मा का बहुत बड़ा प्रसाद लेकर यहाँ से उतर रहा हूँ। मेरे मन में घर के लिये उत्सुक वेदना जाग उठी है। जान पड़ता है, स्वर्ग-विहार करनेवाली आत्माएँ पुण्य के क्षीण होने पर ही अनिच्छा के साथ पृथ्वी पर नहीं लौटतीं। पृथ्वी पर भी कुछ ऐसी गरिमा है, कुछ ऐसी स्नेह-माधुरी है, कुछ ऐसा आकर्षण है, जिसके कारण स्वेच्छा से ही उन्हें इसकी गोद में फिर-फिर आना पड़ता है। इस आकर्षण की गुरुता से, तीव्रता से और शक्तिमत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं।

सोच रहा हूँ, इस समय वहाँ के उस सुदूर प्रांत-भाग में भी आकाश मेघों से भरा होगा। यहाँ की तरह मेघ नीचे उतरकर हमारे शरीरों को वहाँ नहीं छूते, परंतु इस कारण दूर होने पर भी वहाँ वे हमारे अधिक निकट हैं, अधिकतर मनोमोहक हैं, अधिकतम वांछनीय हैं। वहाँ घन-गंभीर घोष होता है, वहाँ क्षण-क्षण पर बिजली कौंधती है, वहाँ रिमझिम-रिमझिम बूँदें पड़ती हैं, और फिर थोड़ी ही देर में अखंड और प्रबल धारा-पात से छोटे-छोटे नाले तक प्रखर प्रवाहिणी का रूप धारण कर लेते हैं। यहाँ की तरह वृष्टि वहाँ अरुचि नहीं उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती, वितृष्णा से मन को नहीं भर देती। वहाँ इसके लिये भीतर और बाहर एक-सी जलन है, एक-सी चाह है। इसी से मेघदूत का विरही यक्ष वहीं के राम-गिरि पर अपने दिन काटने के लिये उतरता है। वहाँ के मेघागम में "वर्षभोग्य" शाप की शांति है। प्रिय विरह-दूत का पुनर्मिलन है। इसी से इस समय वहाँ घर-घर आनंद छाया हुआ है, घर-घर उत्सव की बाँसुरी वहाँ मेघ-मुरज के ताल पर बज उठी है। वहाँ के आम, वहाँ के जामुन, वहाँ के नीम नई वायु में चंचल होकर दोलायित हैं। स्त्रियों के मधुर स्वर में सावन का गीत है। पुरुषों की ध्वनि में मलार की तान है। बेतवा अपने दोनो ही कूलों पर आज के नवीन आनंद में मुखरित हो उठी है। सीधे और टेढ़े, कितने ही मार्गों के बीच में होकर, अनेक आवर्त-विवर्तों में कहीं तो फेनोच्छ्वास के द्वारा वह खिलखिलाती जाती है, और कहीं पर जंबु-वृक्षों के श्यामायमान वनों के मध्य कठिन प्रस्तर-शिलाओं से टकराकर अट्टहास करती हुई दौड़ती है। उछलती हुई, कूदती हुई, किस पुलक से भरकर आज उसने अपने किस प्रिय के लिये यह अभिसार किया है! उसका यह उत्कट उल्लास आज वहाँ के गाँव-गाँव में, वहाँ के घर-घर में, दूर-दूर तक फैल गया है। इतनी दूरी पार करके आज उसने अपनी स्मृति यहाँ इस मेरे मन तक पहुँचा दी है। हिमालय की इस यात्रा ने वहाँ की यह आनंदानुभूति जिस उत्कंठा के साथ हृदय में अंकित कर दी है, उसे मैं कभी न भूलूँगा। मेरे लिये वह कभी पुरानी न पड़ेगी।

❀ ❀ ❀

असमय में यह यात्रा की थी, इसलिये हिमालय के श्रीमंदिर की झलक तो दूर से दिखाई दे गई है, पर उनका रूप-दर्शन मुझे नहीं हुआ। वहाँ के लीला-निकेतन ने अपने पट मेरे लिये नहीं खोले। वहाँ की हिम-गंगा, वहाँ का कुसुम-हास, वहाँ की रंग-बिरंगी परिधान-सज्जा, वहाँ के क्षण-क्षण पर परिवर्तित प्रकृति-चित्र, वहाँ के निर्झर-प्रपात, वहाँ की सरिताओं के उद्दाम-नृत्य, वहाँ के पलायित प्रवाहों के ग्रीवा-भंग मेरे देखने में नहीं आए। खिन्न मन से मैं नीचे उतर रहा हूँ।

पाँच सौ फ़ीट नीचे उतरकर इस झील के किनारे खड़ा हो गया हूँ। पीछे की ओर देख लेने के लिये एक बार गरदन मोड़कर दृष्टि डाली। इस एक क्षण में, बिदा के इस एक क्षण में, यह मेरी दृष्टि कहाँ से कहाँ जा पहुँची है! चारो ओर नीला कुहरा छाया हुआ है। नीलाकाश की नीलम-रज ही यह जैसे यहाँ फैली हो। उसके सौंदर्य की अनुभूति-ही-अनुभूति होती है, वाणी उसे छू नहीं सकती। इस नील-पुंज में नैनीताल की उच्च अट्टालिकाएँ अदृश्य हैं। वहाँ कुछ दिखाई नहीं देता। दिखाई नहीं देता, फिर भी यह देख क्या रहा हूँ, अनुभव कर क्या रहा हूँ? किसी एक अट्टालिका की ही एक कोर अस्पष्ट रूप से वहाँ जान पड़ती है। क्या वहीं, उसी जगह कहीं वह "स्रस्तगंगादुकूला" अलकापुरी है? वहाँ तक चर्म-चक्षुओं की पहुँच नहीं होती। फिर भी वहाँ का कोई अनुपम, अलौकिक, अवर्णनीय चित्रपट एकसाथ मेरे आगे खुल पड़ा है। जान पड़ता है, वहाँ वे वधुएँ हाथ में लीला कमल लिए हुए हैं; अलकों में उनके बालकुंद गुँथे हैं; मुख-मंडल लोध्र-पुष्प के पराग से रंजित है; कर्णों में शिरीष-पुष्प, चूड़ा-पाश में नव-कुरवक और सीमंत में उनके कदंब-कुसुम हैं। उन "विद्युत्वन्तं ललित वनिताः" आदि में कवि के द्वारा उल्लिखित उन अलौकिक-कविताओं की एक झाँकी इस एक क्षण में अचानक मुझे उपलब्ध हो गई है। बिदा के इस एक क्षण में न-जाने किस अतुलनीय पुलक-भार से मैं समाच्छन्न हो उठा हूँ। न-जाने वह कैसा है, न-जाने वह कितना है, न-जाने वह कहाँ का है। मैं उसके संबंध में कुछ नहीं कह सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिलोर*

[श्रीयुत देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

[सरल और हृदयवान् साहित्यिक के जीवन की एक झलक बतानेवाली यह कहानी एप्रिल, १९३९ में लिखी गई थी--ऐसे साहित्यिक की, जो अपने संबंधियों के प्रति सदा ईमानदार रहा ; किंतु दुनियादारी की गर्हित प्रवंचनाओं का चश्मा लगाए रहनेवाले उसे कभी समझ सकने की कोशिश भी न कर सके।]

(१)

सावन-भादों की झड़ी से धरती का आँचल गीला और एकदम तर-बतर हो रहा था। सघन घनों के इन आँसुओं से धरती के झाड़-पेड़ और लताएँ आदि जिस तरह कंपित हो रही थीं, ठीक उसी तरह मलिन मलिना की आँखों से बरसते हुए आँसुओं के स्पर्श से उसके हृदय की भाव-तरंगें भी आज कंपित हो रही थीं। बीती बातों की स्मृतियाँ उसे बेचैन कर रही थीं, अतीत की सुख-सनी घड़ियाँ उसे रुला रही थीं, और दुनियादारी की प्रवंचनाएँ उसे आज शायद रह-रहकर सचेत कर रही थीं। उसने अपने जीवन में आज तक कभी किसी को नहीं सताया, और कभी किसी को नहीं रुलाया ; किंतु जाने क्यों सभी ने उसे जी भरकर सताया, और जी भरकर रुलाया। उसका दिल कहता, सता लेने दो सतानेवालों को, रुला लेने दो रुलानेवालों को ; पर मैं क्यों अपने आदर्श जीवन में बट्टा लगाऊँ ; मैं क्यों हलकी होकर किसी को सताऊँ, और व्यर्थ क्यों किसी को रुलाऊँ। जो मुझे सताता और रुलाता है, उसे परमात्मा सताएगा, उसका अपना पाप उसे रुलाएगा, और आज नहीं, तो कल अवश्य वह सत्पथ पर आ जायगा। किंतु दूसरे ही क्षण उसका हृदय विचलित हो उठता; इन आदर्शों को बालाए-ताक़ रखकर कह उठता, हम क्यों इस प्रकार दूसरों के अन्याय सहे जायँ, और क्यों चुप रह जायँ? ठीक इसी समय मलिना के स्वामी के बैठक-ख़ाने में ग्रामोफ़ोन का रिकार्ड गूँज उठा—

जन्म लिया, तो जी ले बंदे!
डरने का क्या काम?
जीवन है संग्राम बंदे,
जीवन है संग्राम।
यों रोना था, क्यों आया तू
जीवन के मैदान बंदे?
सेज नहीं फूलों की दुनिया,
काँटों की है खान बंदे! जी०

मलिना को ऐसा जान पड़ा कि सचमुच यह दुनिया काँटों की खानि से भी बढ़कर दंशक और भक्षक है। उसने अपने गीले आँचल से बहते हुए आँसुओं को रोका। ग्रामोफ़ोन का रिकार्ड अपनी रफ़्तार से गाए जा रहा था—

जो डरता, सो मरता बंदे,
जो लड़ता, कुछ करता बंदे!
ले हिम्मत से काम बंदे,
जीवन है संग्राम बंदे! जी०

मलिना के मलिन मुख पर किंचित् प्रसन्नता नाच उठी। उसने अपने जीवन में जैसे सदा साहसी क़दम रखने का निश्चय कर लिया; लड़ने-वालों से लड़ने की ठान ली, और सतानेवालों को सबक़ सिखाने की गाँठ बाँध ली।

* शीघ्र प्रकाशित होनेवाले कहानी-संग्रह 'अंतर्ज्वाला' से।—लेखक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

यही सावन-भादों की बरसात थी, यही घर था, और यही जीवन; किंतु आज से ठीक एक साल पहले तक मलिना कभी मलिन न दिखाई देती, उसे दुनिया की कोई चिंता न रहती, और वह सदा प्रसन्नता से फूली-फूली फिरती। मलिना की छोटी बहन विमला थी, विमला के स्वामी थे, और मलिना के स्वामी तो पहले भी थे, और अब भी हैं; किंतु इन दोनों के जीवन में प्रणय-मंदाकिनी की वह अजस्र धारा अब नहीं, जो पहले थी। और, यह क्यों हो गया, इसी उधेड़-बुन में मलिना आज मलिन होकर अपने कमरे में—एकांत में रो-रोकर शायद कुछ खोज ले रही थी; परंतु खोज नहीं सकी, सोच नहीं सकी, और बोझिल हृदय का भार हलका कर नहीं सकी।

मलिना सोचती—यदि विमला के स्वामी नादानी कर बैठते हैं, तो करते रहें; किंतु मेरे स्वामी क्यों उनके लिये इतने कठोर हो चले हैं। वह कहते हैं—मूर्ख के साथ मूर्ख ही बनने में भलाई है। दुष्ट को दुष्टता से ही रास्ते पर लाने में चतुराई है, अन्यथा यह निश्चित है कि जीवन के सपाट मैदान में भी गहरी खाईं है। ठीक इसी समय मलिना के स्वामी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"मलिना, आज तुम इतनी मलिन हो! परंतु मैं कोई वजह नहीं देखता कि आख़िर यह हो क्यों रहा है?"

"ऊँ हूँ" मलिना ने सिर हिलाते हुए कहा—"कहाँ क्या हो रहा है? मैं तो तनिक भी मलिन नहीं।"

"मुझसे छिपाती हो मलिना!" पास आकर मलिना का गीला आँचल छूते हुए मलिना के स्वामी किशोर ने कहा—"मैं जानता हूँ—ख़ूब अच्छी तरह जानता हूँ कि एक छोटी बहन पर अचानक विपत्तियों की बौछार होती देखकर एक बड़ी बहन का हृदय कितना दुखी हो सकता है! किंतु मैं मजबूर हूँ मलिना।"

"काश, आप मेरे दिल की चोट समझ सकते।" मलिना ने फिर गीली आँखें पोछते हुए कहा—"आप नहीं समझते—मैं ज़ोरदार दलील दे सकती हूँ कि आप नारी-हृदय की तह तक नहीं पहुँच सकते, और इसीलिये बिना विचारे मुझ पर यह आरोप आरोपित कर सकते हैं।"

"इसे तुम आरोप कहती हो मलिना!"

"और नहीं तो क्या?"

"हाँ, इसे आरोप ही कहे जाओ।" किशोर ने अपने स्वाभाविक प्रवाह में कहा—"क्यों न ऐसा कहोगी, जब मैं तुम्हारी छोटी बहन के स्वामी को नौकरी से हटा चुका; उसकी नादानी की सज़ा दे चुका, और शायद उसे अपनी नादानी मिटाने के लिये तिल-तिल कर परेशान होने के लिये बहुत-कुछ निराश्रित छोड़ चुका।"

"आपको ग़लतफ़हमी हो रही है।" मलिना ने ज़रा सजग-सी होकर कहा—"विमला के स्वामी को दी गई सज़ा के लिये तो मैं प्रसन्न ही हूँ। उन्होंने जब आपका अपमान किया, हृदय का ओछापन बताया, और एक बड़े भाई के प्रति अप-शब्दों का प्रयोग कर अपना गुंडापन बताया, तब उन्हें दी गई इस ज़रा-सी सज़ा के लिये मैं क्यों दुखी होने चली।"

"समझा। और, शायद प्रसन्नता के आँसुओं से ही तुम्हारा आँचल तर-बतर हो रहा है। क्या इसका यही मतलब नहीं कि तुम्हें विमला के स्वामी के प्रति गहरी सहानुभूति है।"

"हरगिज़ नहीं।" मलिना ने कुछ उत्तेजित होकर कहा—"आप वक्त-बेवक्त किसी भी बात को मज़ाक़ में उड़ा देना चाहते हैं, और तभी तो मैं कह रही हूँ कि आप नारी-हृदय की सतह-भर देख सकते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी तह तक नहीं जा सकते, शायद तह तक पहुँचने की कोशिश ही नहीं करते।"

"तुम्हारी यह दार्शनिकता और गंभीरता मुझे सदा परेशान किए रहती है मलिना!" किशोर ने कहा—"जब तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे मर्म को समझ नहीं सकता, तब क्यों नहीं तुम स्वयं साफ़-साफ़ बात कहकर मेरी परेशानी दूर कर देती हो?"

"आप न-जाने क्या-क्या कहे जा रहे हैं। अपने आवेश में न-जाने कहाँ से कहाँ बहे जा रहे हैं, और पता नहीं, क्यों जान-बूझकर अपनी कमज़ोरी बताए जा रहे हैं।" मलिना कहती गई—"दुनिया की नज़रों में आप एक कलाकार हैं, कवि हैं, कहानीकार हैं, और मेरी नज़रों में भी आप यह सब तो हैं ही, अपितु और भी न-जाने क्या-क्या हैं। फिर भी जब आप मेरी बातों में दार्शनिकता और गंभीरता की पुट होने की बात कह देते हैं, तब शायद आप नहीं समझते कि मेरे अंतस्तल को इससे कितनी गहरी चोट लग जाती है; मैं स्वयं आपको ऐसे स्थलों पर समझ नहीं पाती, और आपकी इस रहस्यमयी धारा में स्वयं बह जाती हूँ।"

किशोर और मलिना दोनो गहरे उतरे जा रहे थे कि इसी समय मकान के नीचे टन्नन्न्-टन्नन्न् साइकिल की घंटी बजी, और किशोर बाबू मुस्किराते हुए आगंतुक से बातें करने नीचे चले गए।

मलिना का दिमाग़ जैसे और भी भारी हो गया; उसका हृदय इस उलझन से और भी अभिभूत हो गया, और अपने स्वामी के इस रुख़ पर और भी परेशानी में पड़ गया। उसने सोचा, आख़िर इतनी ज़रा-सी बात मेरे स्वामी क्यों नहीं समझते कि मेरी यह उदासीनता, मेरी यह आर्द्रता और मेरी यह आत्मीयता जो पिघल-पिघलकर आँखों की राह बह रही है, वह विमला के स्वामी के लिये नहीं, प्रत्युत विमला के लिये ही बह रही है। विमला मेरी बहन है—छोटी बहन! उसे मैंने शैशव से ही अपने हाथों खिलाया-पिलाया; उसे मैंने ही बोलना सिखलाया, और मैंने ही लोरियाँ गा-गाकर, अपने साथ वर्षों उसे सुलाकर अपने वक्षःस्थल से चिपकाया है। उसी विमला के लिये तो यह हृदय उमड़-उमड़ आता है; यह हिलोर बरबस उसी के लिये दौड़ी आती है, और रह-रहकर जैसे मुझसे कह जाती है कि विमला व्यर्थ पीड़ित हो रही है—जैसे गेहूँ के साथ घुन पिस रहा हो!

(३)

"आपकी इजाज़त-भर चाहता हूँ बाबू साहब!" मूछों पर ताव देते हुए आगंतुक ने कहा—"कहीं ऐसा हो सकता है कि कोई आपको इस प्रकार गुंडापन दिखाकर चैन से रह पाए; आपसे ऊँच-नीच कहकर इस शहर में रह जाय, और बिना इसका प्रायश्चित्त किए आगे एक क़दम बढ़ाने का हौसला कर ले।"

"नहीं पीरू, यह हरगिज़ नहीं होगा।" किशोर बाबू ने ज़रा ज़ोर से टेबिल पर हाथ पटकते हुए कहा—"तुम नहीं जानते पीरू, जो जैसा करेगा, उसका फल भी भोगेगा।"

टेबिल पर हाथ पटकने की आवाज़ मलिना के कानों तक पहुँच गई। वह कौतूहल-वश ऊपर से नीचे जानेवाले प्राइवेट ज़ीने पर जाकर खड़ी हो गई—यह सब सुनने के लिये, यह सब जानने के लिये कि उसके स्वामी कर क्या रहे हैं, विमला के उद्दंड स्वामी की उद्दंडता मिटाने का उपाय क्या कर रहे हैं, और इस गंभीर प्रकरण का समाधान क्या कर रहे हैं।

"आप ग़लती कर रहे हैं बाबूजी!" पीरू ने जैसे किशोर को समझाते हुए कहा—"दो हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तो काम ही है—अधिक नहीं, सिर्फ़ दो हाथ। लेकिन फिर कभी वह सिर न उठा सकेगा; आपका यों अपमान न कर सकेगा; और दुनियादारी को बख़ूबी समझ भी सकेगा।"

"लेकिन पीरू, तुम शायद जानते नहीं कि वह मेरे छोटे भाई से भी बढ़कर मुझे प्यारा है। मेरी साली का पति है—उस साली का, जो मेरी बच्ची के समान है; किंतु......"

"किंतु यही न कि उसने बेहद गँवारी की है।" पीरू ने फिर किशोर बाबू को जैसे फुसलाते हुए कहा—"और, इसीलिये उसे इसकी सज़ा मिलनी चाहिए।"

"नहीं पीरू, यह बात नहीं।" किशोर बाबू कहते गए—"उसने मेरा जो अपमान किया है, इसकी सज़ा उसे मिल चुकी है। तुम जानते हो, अपने कारख़ाने में ही मैंने उसे नौकरी दे रक्खी थी; किंतु इसी उद्दंडता के कारण मैंने उसे नौकरी से अलग कर दिया है।"

"तो इससे उसका क्या बिगड़ा साहब?" पीरू ने फिर पानी चढ़ाते हुए कहा—"वह और कहीं नौकरी कर लेगा।"

"ख़ैर, यह तो मैं जानता हूँ पीरू कि वह कहीं नौकरी नहीं कर सकता। करेगा क्या, जब योग्यता हो, तब न?" कहते हुए किशोर बाबू ने पीरू को पाँच रुपए का एक नोट देते हुए समझाया—"मेरे लिये हमदर्दी रखने का इनाम।"

(४)

मलिना यह सब सुनकर दंग रह गई। उसका दिल बोल उठा—मैं सचमुच अपने स्वामी को आज तक समझ नहीं सकी, और शायद कभी समझ भी न सकूँगी। दुनियादारी की गर्हित प्रवंचनाओं का चश्मा लगाए रहनेवाले इनके संबंधी इनकी इस ईमानदारी और वफ़ादारी को कभी समझ सकने की फिर कोशिश भी क्या कर सकेंगे, और यह विमला का स्वामी तो इन्हें जन्म-जन्मांतर में भी शायद न समझ सकेगा।

यह जो अब रुक्ष-से रहा करते हैं, सदा किसी-न-किसी उधेड़-बुन में लगे रहते हैं, और बेरुख़े-से बोला करते हैं—बहुत संभव है, इसी विमला के स्वामी की ऊल-जलूल बातों, उद्दंड व्यवहारों और इसकी बेवफ़ादारी को लेकर ही यह ऐसे बने रहते हों, और तो कोई दूसरी ऐसी बात नज़र नहीं आती, जिससे इनके बेरुख़े होने की बात कही जा सके। किंतु विमला के स्वामी-जैसे अहमक़ को इन्होंने आख़िर इतना अपनाया क्यों, अपना आश्रय दिया क्यों, और छोटे भाई-जैसा उसे माना क्यों? फिर मेरे सुखद संसार में रुक्षता के काँटे बो जानेवाले को, प्रणय-मंदाकिनी की अजस्र धारा को उन्मन बना जानेवाले को पूरी-पूरी सज़ा ही क्यों नहीं दिला देते? विमला के जिस स्वामी ने इनका इतना अपमान किया, इनका अविश्वास किया, और इन्हें पास-पड़ोस-वालों के सामने मारने-पीटने तक को जो आमादा हुआ, उसके प्रति इनके हृदय में इतनी दया क्यों छिपी है; उसके लिये अपने छोटे भाई को दी जानेवाली आत्मीयता सुरक्षित क्यों रक्खी है, और जहाँ मैं समझ रही थी कि विमला के लिये सिर्फ़ मेरे हृदय में एक हिलोर है, वहाँ इनके हृदय में विमला और विमला के स्वामी, दोनो के लिये यह हिलोर क्यों छिपी हुई है?

विमला का जो स्वामी एक दिन इनके चरणों पर अपना सिर रखकर स्वयं को धन्य समझता था, इनके प्रति अपनी जान लड़ाने की बात कहा करता था, और इन्हें सदा अपना शुभचिंतक समझा करता था, उस दिन कितना उच्छृंखल हो गया कि इनका सिर फोड़ने पर आमादा हो गया; इनकी जान तक लेने की बात कह गया, और इन्हें अपना कट्टर शत्रु महसूस करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और, अयोग्य होने पर भी कारख़ाने में नौकरी देकर इन्होंने जो एहसान किया; काम न करने पर भी जिसे कभी डाँटा नहीं, दुतकारा नहीं, वह ये सब बातें चंद मिनटों में ही भुला बैठा, एकदम कृतघ्न हो उठा, और कह बैठा कि तुम मेरा जीवन दुखी करना चाहते हो, मुझे सुख से रहने नहीं देना चाहते, और हरदम मेरी त्रुटियाँ बता-बताकर मुझे बेवक़ूफ़ बनाना चाहते हो !

कितने हलकेपन पर उतर आया वह, और एक यह हैं, जिनके हृदय की हिलोर में भ्रातृत्व की प्रेम-मंदाकिनी का स्वरूप परिलक्षित हो रहा है; इनका हृदय अब तक उसे अपना छोटा भाई महसूस कर रहा है, और हमदर्दी रखनेवालों से भी इनका हृदय स्पष्ट यह कह रहा है कि हरगिज़ ऐसा न होगा, मेरे छोटे भाई का बाल बाँका न होगा, और यदि ऐसा हुआ, तो इसमें मेरी ही तौहीनी होगी।

विमला के स्वामी के लिये क्या कहा जाय। जिसने कभी बड़ों की संगति नहीं की, जिसने कभी पढ़ा-लिखा नहीं, जिसके जीवन का मक़सद ही यह रहा कि 'पढ़ेंगे-लिखेंगे, होंगे ख़राब ; खेलेंगे-कूदेंगे, होंगे नवाब !' उससे कब सदाशा की जा सकती है; उसकी कृत्रिम आत्मीयता कब तक छिपी रह सकती है, और कब नहीं उसकी मूर्खता प्रकट हो सकती है। और, यही सब तो होकर रहा। इनसे बुरा हुआ, मा-बाप से पहले ही से बुरा हुआ। दुनिया में वह किसका अपना होकर रहा। जो उसे अपना समझती है, उस विमला से भी तो उसकी एक मिनट नहीं पटती। जब देखो, तब बहस; जब देखो, तब लड़ाई। यह भी कोई जीवन है ! आख़िर इस दुनिया में यह रहेगा कैसे ? विमला का निर्वाह करेगा कैसे ? और दुनियादारी नाम की चीज़ को समझेगा कैसे ? लोग कहते हैं, विमला का जीवन संकटमय बीतेगा, विमला कभी सुखी न रहेगी, यह ठीक ही है। लोग ऐसा क्यों न कहेंगे, जब विमला के स्वामी स्वयं दुनिया को अपनी हरकतों से धीरे-धीरे वाकिफ़ करते जा रहे हैं, और अपना समझनेवालों को भी अपनी हरकतों से पराया बनाते जा रहे हैं।

मुझे विमला पर तरस आ रहा था। मेरा मन अब तक कह रहा था कि विमला का इस सबमें क्या दोष है; किंतु यह हो नहीं सकता कि एक स्त्री का स्वामी जब अपनों से भी रार ठान बैठता है; अपने शुभचिंतकों को भी अपनी हरकतों से बेक़रार कर बैठता है, तब वह स्त्री इन सब बातों से सर्वथा अछूती रहे। कोई किसी को सन्मार्ग पर लाने की बात कहे, और उसे वह कुमार्ग समझे, तो इसमें मार्ग-दर्शक का दोष ही क्या। जो ऐसा उलटा समझेगा, वह आज नहीं, तो कल अवश्य ऐसे गहन गर्त में जा गिरेगा, जहाँ से उद्धार पाना टेढ़ी खीर हो जायगी; अपने कहे जानेवालों को ऐसा कट्टर शत्रु बना लेगा, जो न कभी उसके दुख में दुख मनाएँगे, और न कभी उसके लिये दो आँसू ही बहाएँगे।

इन विचार-तरंगों में डूबती-उतराती मलिना अपने कमरे में बैठी-बैठी हृदय की इस हिलोर के साथ स्वयं बही जा रही थी कि किशोर बाबू ने अचानक वहाँ आकर उसका ध्यान भंग करते हुए कहा—"मलिना, तुमने सुना ?"

मलिना अब भी ध्यानस्थ थी कि किशोर बाबू ने फिर कहा—"सुनतीं भी नहीं मलिना ! विमला का स्वामी जुआ खेलता हुआ गिरफ़्तार हो चुका है।"

"अच्छा हुआ। अपने किए कर्मों का फल वह स्वयं भोगेगा।" मलिना ने कहा—"लेकिन जुआ खेलने को पैसे कहाँ से आए होंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम इतना भी नहीं जानतीं !" किशोर ने कहा—"विमला का ज़ेवर अभी जो है !"

"विमला का ज़ेवर !" मलिना ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा—"विमला का ज़ेवर गिरवी रखकर भी क्या वह जुआ खेलता है ?"

"और नहीं तो क्या ? अपनी बरसाती, साइकिल, घड़ी और अपने पिता की गाढ़ी कमाई से बनवाई गई सोने की चेन—ये सब जो आदमी जुआ के दाँव पर लगा चुका, वह अपनी स्त्री के ज़ेवर क्यों नहीं जुआ में लगा सकता ! और अब वह करेगा ही क्या; उसके पास और चारा ही क्या ? जो नौकरी नहीं कर सकता, अन्य कोई कमाई नहीं कर सकता, वह जुआ न खेलेगा, तो और करेगा क्या ?"

"अच्छा, अब बंद करो अपना भाषण ।" मलिना ने अपने कान बंद करते हुए कहा—"जाने दो जेल में, और भोगने दो सज़ा ।"

"नहीं मलिना," किशोर ने मुस्किराते हुए कहा—"तुम नहीं जानतीं, उसे मैं अपनी ज़मानत पर रिहा करा चुका हूँ । उसे जेल जाने दूँगा, तब मेरा सम्मान कहाँ रहेगा, मुझे यह संसार क्या कहेगा ?"

"यह तुमने और भी बुरा किया ।"

"नहीं मलिना, मेरे हृदय में उसके प्रति एक हिलोर जो है, और उसमें उसके लिये मेरे छोटे भाई को मिलनेवाला प्रेम जो सन्निहित है । मैंने कोई बुराई नहीं की ।"

"इससे उसका दिमाग़ और चढ़ेगा, वह रोज़ जुआ खेलेगा । फिर देना, कहाँ तक ज़मानतें देते हो ।"

"वह अब यहाँ रह ही न सकेगा, तब जुआ कैसे खेलेगा ?"

"तो कहाँ जायगा ?"

"यह तो मैं नहीं जानता ; पर हाँ, उसकी नौकरी अब रही नहीं ; उसकी इज़्ज़त भी रही नहीं, और शायद इसीलिये वह अब इस शहर को छोड़कर कहीं अन्यत्र जा रहा है ।"

"कहाँ जा रहा है ?" मलिना ने पूछा—"और विमला भी जा रही है ?"

"हाँ, दोनो जा रहे हैं ।" किशोर ने मलिना का हाथ पकड़ते हुए कहा—"आओ, छत पर से तुम्हें दिखाऊँ ।"

मलिना और किशोर दोनो ने गीली आँखों से छत पर खड़े होकर देखा, विमला अपने स्वामी के साथ एक बैलगाड़ी पर अपनी गृहस्थी का सामान लदाए हुए, पता नहीं, कहाँ चली जा रही है !

मलिना और किशोर दोनो की हृदय-हिलोरें आँखों की राह अविरल रूप में बही चली आ रही थीं—गंभीर और बेबस ! उधर किशोर बाबू का बच्चा ग्रामोफ़ोन का रिकार्ड बजा रहा था—

सुख-दुख का है नित का नाता,
इक जाता, इक आता बंदे !
सरदी - गरमी, सूखा - वर्षा,
रैन - दिना का ताँता बंदे !
ले हिम्मत से काम बंदे,
जीवन है संग्राम बंदे !

मोतियाबिंद

कौन कहता है कि बग़ैर चीर-फाड़ के अच्छा नहीं होता ? डिजन्स "आइ-क्योर" Degon's "Eye cure" के कुछ ही दिनों के लगाने से नया या पुराना मोतियाबिंद तथा और भी आँख की बीमारियाँ शर्तिया अच्छी होती हैं । मूल्य २), डाक-ख़र्च ॥=)

कमला-वर्क्स (S/L) पाँचपोटा, बंगाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एडमंड स्पेंसर

[श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०, साहित्य शिरोमणि]

महारानी एलिज़ाबेथ के शासन-काल में अँगरेज़ी-साहित्य की विशेष उन्नति हुई । इसका महान् कारण था महारानी एलिज़ाबेथ का साहित्य से प्रेम होना, और विशेषतः उस युग के ही साहित्यिक प्रेम की ओर अत्यधिक रुचि होना । साहित्यिक रुचि की प्रेरणा के फल-स्वरूप क्या दरबारी, क्या कर्मचारी, क्या राजनीतिज्ञ, क्या सैनिक, सभी साहित्यानुराग रखते, और अवकाश के समय नाटक, काव्य, गद्य और निबंध द्वारा मनोरंजन किया करते थे। तो भी साहित्य-सेवा जीविकोपार्जन के निमित्त न थी, क्योंकि लोग साहित्य द्वारा आर्थिक लाभ करना घृणित समझते थे। पर साहित्य से आय भी थी, साहित्यिक भूखों नहीं मरते थे। नाटकों की काफ़ी खपत थी, अतः नाटककार अपनी रचनाओं से लाभान्वित भी हुआ करते थे। उसी प्रकार कवियों तथा प्रगल्भ लेखकों को भी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ करता था, और उस सम्मान से उन्हें जीवन-पोषण का साधन सहज में प्राप्त हो जाता। यही कारण था, एडमंड स्पेंसर को भी अपने भरण-पोषण के लिये साहित्यिक संसार से बिलग राजनीतिक जगत् में भरपूर चेष्टा करनी पड़ी । यद्यपि उसकी साहित्यिक प्रतिभा ने ही उसे अमर कीर्ति का अधिकारी बनाया ।

स्पेंसर अपने युग का एक प्रमुख कवि था । राजनीतिक यश के प्रलोभन एवं जंजाल में बँधा हुआ भी वह आजीवन कविता-देवी की आराधना में प्रसन्नता-पूर्वक लीन रहा। बचपन से ही १६वीं शताब्दी के नवजीवन के लक्षण उसमें दृष्टिगत हो रहे थे । उसने तत्परता से इटली और फ़्रांस के साहित्य का भी अनुशीलन किया । अवस्था-वृद्धि के साथ उसकी काव्य-भाषा भी रागमयी एवं प्रभावशालिनी होती गई, और भाव सौंदर्यमय। स्पेंसर प्रोटेस्टैंट था, अपना मत विना किसी आपत्ति के, तत्परता से, मानता रहा, पर आश्चर्य है, इसका प्रभाव उसकी काव्य-कल्पनाओं पर बहुत ही कम पड़ा ! स्पेंसर की जीवन-समुन्नति के उद्देश्य की सिद्धि कविता-मंदिर में होने के कारण उसका अध्ययन उसके व्यावहारिक कृत्यों द्वारा करना ठीक नहीं, उसे ठीक-ठीक समझने के लिये उसकी काव्य-प्रतिभा की ही परख उचित है ।

सर टॉमस मूर की भाँति स्पेंसर लंदन का बाशिंदा था, पर वह लंकाशायर के एक प्रसिद्ध घराने का वंशज था । उसका संबंध उस स्पेंसर-वंश से था, जिसकी जातीय इतिहास में विशेष ख्याति है। किंतु स्पेंसर का पिता स्वयं लंदन का एक व्यापारी था, और एक समय एक ऊनवाले के यहाँ नौकर भी रहा । स्पेंसर का जन्म रैले के जन्म-वर्ष १५५२ ई० में, ईस्ट-स्मिथफ़िल में, हुआ । उस समय राज्य में धर्मांधता का प्रभुत्व था । परंतु स्पेंसर की आयु छ साल की होने तक अवस्था बहुत कुछ बदल गई। कट्टर कैथोलिक रानी मेरी की मृत्यु के बाद महारानी एलिज़ाबेथ सिंहासनासीन हुईं, और उसने धार्मिक क्षमता का अनुसरण किया । नए मत प्रोटेस्टैंटिज़्म ने विरोधात्मक अत्याचार को तिरस्कार की दृष्टि से देखा, और शांति-स्थापना पर ध्यान दिया। दूसरे छ वर्षों में अत्यधिक परिवर्तन घटित हुआ,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसी काल शेक्सपियर का जन्म हुआ। संयोग-वश कालैक्य के समान ही स्पेंसर और शेक्स-पियर के आरंभिक जीवन में भी बहुत समानता रही।

स्पेंसर की शिक्षा लंदन के मरचैंट टायलर्स स्कूल में शुरू हुई। उस काल के व्यापारी सर्व-साधारण की शिक्षा के लिये भारी-भारी रक़में दान करने की ओर उतना ही तत्पर थे, जितना आज के अमेरिकन व्यापारी। व्यापारियों के दान के रुपए स्कूल और कॉलेजों के दीन विद्यार्थियों की सहायता में ख़र्च होते थे। स्पेंसर को भी ऐसा ही साहाय्य प्राप्त हुआ, क्योंकि उसी समय लंदन के एक व्यापारी ने लंदन के दीन विद्यार्थियों के सहायतार्थ एक मोटी रक़म दान की थी। उसी की सहायता से स्पेंसर का स्कूल-समय सानंद समाप्त हुआ। फिर उच्च शिक्षा के लिये वह कैंब्रिज में दाख़िल हुआ, और उसका नाम उन दीन विद्यार्थियों में लिखा गया, जिन्हें कुछ कार्य के बदले भोजन-वस्त्र दिए जाते थे। वहाँ की संगत उसे भली लगी, और कॉलेज के नवत्रयस्क फ़ेलो ग्रेब्रिल हार्वे से उसे उल्लेख योग्य साहित्यिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

कॉलेज में स्पेंसर को साहित्यानुशीलन से गाढ़ा प्रेम रहा, और उसकी काव्यानुगति का भी विकास आरंभ हुआ। स्कूल में ही उसने फ़्रेंच से कुछ पद्यानुवाद अँगरेज़ी में किया था, पर उसमें प्रौढ़ता का अभाव था, और कॉलेज-शिक्षा ने उसकी पूर्ति में हाथ बँटाया। कैंब्रिज आने पर उसने लंदन के एक प्रकाशक के लिये फ़्रांस के एक होनहार कवि के पदों का अँगरेज़ी-पदों में अनुवाद किया, और इटालियन कवि प्रेट्रार्क के कुछ पदों का भी 'सॉनेट' में रूपांतर किया इसमें उसने फ़्रेंच-कवि क्लिमेंट मैरोट के अनुवाद से सहायता ली। इन कविताओं में मनुष्य-जीवन की अनिश्चितता और पुरुष-भाग्य की चंचलता के वर्णन थे। स्पेंसर को वे सुंदर जँचे, और उनसे प्रभावित हो वह फ़्रांस और इटली के ऊँचे साहित्य की ओर झुका।

स्पेंसर के सामने एक ओर ग़रीबी थी, दूसरी ओर साहित्य-प्रेम। साहित्य-प्रेम-निर्वाह के निमित्त गंभीर स्वाध्याय की आवश्यकता, जिसके मार्ग में दीनता एक घोर बाधा थी। परंतु स्पेंसर ने दीनता की तनिक चिंता न की, उसने ग्रंथानुशीलन जारी रक्खा, यद्यपि उसके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा। प्रायः वह बीमार पड़ जाता, तो भी उसने कैंब्रिज में सात वर्ष बिताए, और १५७६ ई० में एम्० ए० की डिगरी प्राप्त कर कॉलेज छोड़ा। उसके हृदय में कैंब्रिज के लिये असीम श्रद्धा-सम्मान था, वह कैंब्रिज को 'मा कैंब्रिज' कहकर याद किया करता था, जो 'फ़्रेयरी क्वीन' के एक स्थल में आउस-नदी के प्रसंग से स्पष्ट है—

"Doth by Huntingdon
and Cambridge flit,
My mother Cambridge,
whom as with a crown
He doth adorn and is ador'd of it
With many a gentle muse
and many a learned wit".

कॉलेज छोड़ने के समय स्पेंसर की अवस्था लगभग २४ वर्ष की थी। इस समय उसे किसी पद की खोज करनी चाहिए थी, लेकिन वह एक वर्ष तक लंकाशायर में अपने संबंधियों के यहाँ निश्चिंत बैठा रहा। उस बेकारी में वह एक भद्र महिला से परिचित हुआ, और उससे विवाह करने का निश्चय किया, पर उस महिला ने ही उससे संबंध करना न पसंद किया। लाचार स्पेंसर को काव्य में उसकी चर्चा से संतोष करना पड़ा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असफलता का एक प्रभाव स्पेंसर पर यह ज़रूर पड़ा कि उसने बेकाम रहना निंदित समझा। आगे वह सांसारिकता में प्रवेश करने को सन्नद्ध हुआ।

स्पेंसर लंकाशायर से लंदन चला आया। वहाँ अपने कॉलेज-मित्र हार्वे से उसकी मुलाक़ात हुई। हार्वे की प्रतिष्ठा थी। उसने स्पेंसर की सहायता की। हार्वे अर्ल-ऑफ़् लिसेस्टर से परिचित थे, और उनसे स्पेंसर का भी परिचय कराया। इसका परिणाम स्पेंसर के लिये बड़ा ही लाभप्रद हुआ। महारानी के अन्य दरबारियों की भाँति लिसेस्टर को भी साहित्य से प्रेम था। उसने स्पेंसर के काव्य की प्रशंसा की, और उसे सेक्रेटेरिएट में एक स्थान दिया। वह लिसेस्टर-प्रासाद में रहने लगा। वहाँ से अन्यान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भी उसका परिचय होने लगा। स्पेंसर की अर्ल से मैत्री हो गई, और उसे यथोचित सहायता प्राप्त होने लगी। वहाँ उसे समय भी मिलता था, अतः अवकाश में वह अपने सहायक के लिये काव्य-रचना करता और पुस्तकें पढ़ता। अर्ल के बदले वह बाहर भी जाने लगा, और ज़रूरी डाक अपने साथ ले जाता। इस तरह उसे फ़्रांस, स्पेन और इटली जाने का अवसर मिला। एक बार अपने मित्र के काम के लिये वह आयरलैंड भी गया। विदेश-यात्रा ने उसके ज्ञान में वृद्धि की, और उसकी कल्पनाओं पर नवीनता का रंग चढ़ाया। अर्ल के साथ रहने से स्पेंसर का सर फ़िलिप सिडनी से भी साक्षात् हुआ। दोनो की मैत्री धीरे-धीरे गाढ़ी होती गई। कालांतर में इँगलैंड के प्रतिष्ठित समाज में स्पेंसर की भारी प्रतिष्ठा हुई।

ख्याति-प्राप्त स्पेंसर को कवि-रूप में आर्थिक लाभ नहीं हुआ। उसकी आशा थी कि अर्ल द्वारा उसे पूरा साहाय्य प्राप्त होगा, पर वैसा हुआ नहीं। इस कारण उसके हृदय में कुछ क्षोभ हुआ, और वह सोचने लगा, अपने सहायक की जितनी सेवा मैंने की, उतनी सहानुभूति प्राप्त नहीं हुई। 'व्रीगिल्स ग्रेट' में उसने अपने इस असंतोष को दर्शाया भी—"Wronged, yet not daring to express my pain" संभवतः क्षुब्ध होकर आवेश में उसने ऐसा लिखा। किंतु संयोग-वश 'दी शेफर्ड्स कैलेंडर'-नामक काव्य छपने के छ मास के भीतर ही स्पेंसर को अधिक ज़िम्मेवारी का पद सौंपा गया। आयरलैंड के नए लॉर्ड डिपुटी का वह सेक्रेटरी बनाया गया, और उस पद को स्वीकार कर १५८० ई० के ग्रीष्मकाल में इँगलैंड से आयरलैंड चला गया।

शुरू में स्पेंसर का विचार आयरलैंड में बस जाने का न था। वह लंदन को प्यार करता था, और आयरलैंड से तरक़्क़ी पाकर ऊँचे पद पर लंदन लौट आने की उसकी इच्छा थी। परंतु ऐसा हुआ नहीं, उसकी आशा शनैः-शनैः निराशा में परिणत होती गई। अंत में उसने ऊँचे राजनीतिक सम्मान की आशा त्याग दी, और हतोत्साह आयरलैंड में बस जाना उचित समझा। आयरलैंड की राजनीतिक दशा भी उसकी प्रकृति के प्रतिकूल थी। वह शांत-प्रकृति का सौंदर्य-प्रेमी था, और आयरलैंड अत्याचार तथा पीड़न का क्षेत्र बन रहा था। आयरिशों को अपने शासक अँगरेज़ों से घृणा थी, और अँगरेज़ों के शत्रु स्पेनी उन्हें प्रोत्साहन देते जा रहे थे। पर करना क्या था? लाचार स्पेंसर उस दशा में दृढ़तापूर्वक काल-यापन करने लगा, और शासक की ज़्यादतियों को प्रिय बना आयरिशों की दुःख-कहानियों पर ध्यान देने से भी दूर रहने लगा।

आयरलैंड में उसे कुछ आर्थिक लाभ भी हुआ। सेक्रेटरी-पद पर रहकर भी उसने कई और पद डब्लिन में प्राप्त किए, और उस समय की नीति के अनुकूल आयरलैंड में उसे कुछ भूमि भी मिली। सौभाग्य से वहाँ के कर्मचारियों में कुछ ऐसे लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे मिले, जो साहित्यिक प्रवृत्ति के थे, और जिनसे उसकी पटती रही। लॉर्ड ग्रे वहाँ का गवर्नर था। उसने स्पेंसर का आदर किया, और सहानुभूति दिखलाई। 'फ़ेयरी क्वीन' में सर आर्टीगल के वर्णन में स्पेंसर ने उसकी सज्जनता का संरक्षण भी किया। लोडोविक ब्रिस्केट को साहित्य से पूरा अनुराग था। वह प्रायः स्पेंसर के साथ औरों को साहित्यिक चर्चा के लिये निमंत्रित किया करता, और वहाँ स्पेंसर नम्रता-पूर्वक अपनी साहित्यिक योग्यता का परिचय दिया करता। आयरलैंड में रचनाओं का उसे विशेष अवसर प्राप्त हुआ। उसने अपने मित्रों के अनुरोध से फ़ेयरी क्वीन को पूरा करने पर ध्यान दिया।

आठ वर्ष व्यतीत होने पर स्पेंसर को आयरलैंड के दक्षिण में मंस्टर-कौंसिल का क्लर्क होकर जाना पड़ा। उसने किल्कोलमन के पुराने क़िले में वास किया और खेती भी शुरू की, पर पास के लोगों से नहीं पटी। वहाँ उसे एक लाभ यह हुआ कि सर वाल्टर रैले से मुलाक़ात हुई। रैले की कवित्व-शक्ति का भी स्पेंसर पर प्रभाव पड़ा। रैले की सम्मति से स्पेंसर फिर लंदन आया। उस समय उसकी 'फ़ेयरी क्वीन' के तीन खंड तैयार हो चुके थे। लंदन में 'दी शेफर्ड्स कैलेंडर' से उसकी ख्याति थी ही। तीनो भागों के छपने का प्रबंध हो गया, और १५६० ई० में वे प्रकाशित भी हुए। उनका समर्पण महारानी को किया गया। पर महारानी ही सर्वस्व न थीं, इस कारण सत्रह सानटेस में स्पेंसर ने प्रायः प्रमुख व्यक्तियों की प्रशंसा की। इससे उसकी प्रशंसा की जाने लगी, और वह बहुत बड़ा कवि समझा जाने लगा। किंतु मौखिक सहानुभूति से क्या होता। स्पेंसर के दिन बड़ी कठिनाई से कटने लगे। अंत में महारानी के कहने-सुनने से राजकोषाध्यक्ष लॉर्ड बर्थले ने ५० पौंड वार्षिक पेंशन की आज्ञा निकाली। स्पेंसर लॉर्ड बर्थले पर जलकर ख़ाक हो गया। इससे वह फिर दक्षिण-आयरलैंड को क्लर्क-पद पर ही वापस आ गया।

आयरलैंड में स्पेंसर पुनः काव्य-रचना में दत्तचित्त हुआ। उसने 'मदर हब्बर्ड्स टेल' और 'कोलिन क्लाउट्स कम होम अगेन'-नामक काव्य रचे। 'कंप्लेंट्स'-नामक संग्रह में उसकी फुटकर कविताएँ प्रकाशित हुईं। इस समय उसे ब्याह की फिर इच्छा हुई, और जेम्स बॉयल की पुत्री को पसंद किया। उसके प्रेम-स्वरूप उसने 'एमोरिटी' की रचना की, और विवाहोत्सव-स्मारक-स्वरूप 'इपिथल म्याइन' को जन्म दिया। इसी बीच 'फ़ेयरी क्वीन' का शेषांश भी समाप्त हो गया था, और उसके प्रकाशन के लिये उसे लंदन जाना पड़ा। लंदन में 'अर्ल-ऑफ़्-एसेक्स' द्वारा उसे भारी सम्मान प्राप्त हुआ, और वह अर्ल का अतिथि बना। वहाँ भी उसने अर्ल की दो पुत्रियों की प्रशंसा में काव्य रचे। इस बार उसने गद्य-रचनाएँ भी कीं, और उनमें आयरिशों की राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्था और शासन-प्रणाली पर प्रकाश डाला। पर उसे विशेष लाभ कुछ नहीं हुआ।

१५६७ ई० में स्पेंसर आयरलैंड लौटा। इस बार वह बहुत उदास था। उसके पास धन की भी कमी थी। वह चिंताग्नि में जल रहा था। १५६८ ई० में वह कॉक का शेरिफ बनाया गया, पर यह भी उतना ऊँचा पद न था। फिर उस समय शासन-कार्य भी आसान न था, सर्वत्र विद्रोह का भय व्याप रहा था। कुछ ही समय बाद 'अर्ल-ऑफ़्-टीरोन' की अध्यक्षता में विद्रोह का श्रीगणेश भी हुआ। विद्रोहियों के एक दल ने स्पेंसर के क़िले पर भी आक्रमण किया। स्पेंसर अपनी स्त्री और चार बच्चों के साथ किसी प्रकार वार्क पहुँचा। जैसी अवस्था भारत में अँगरेज़ों की १८५७ ई० के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाही-विद्रोह के समय हुई थी, वैसी ही आयरलैंड में अँगरेज़ों की आयरिश-विद्रोह के अवसर पर हुई।

दिसंबर-मास में सर टॉमस नॉरिस ने स्पेंसर को सरकारी काग़ज़ों के साथ लंदन भेजा। यह उसकी अंतिम यात्रा थी। विद्रोह के प्रभाव से उसका हृदय चूर हो गया था। वह इस बार जीवन-जंजालोन्मुक्त होने के लिये ही लंदन गया। वहाँ वह वेस्ट मिंस्टर के किंग स्ट्रीक की एक सराय में ठहरा, और १५९९ ई० की १६वीं जनवरी को, लगभग ४७ वर्ष की अवस्था में, इस लोक से कूच कर गया। अफ़वाह उड़ी कि स्पेंसर की मृत्यु नितांत निर्धन दशा में हुई। संभव है, इस अफ़वाह में अतिशयोक्ति हो, लेकिन निश्चय है कि स्पेंसर आजीवन असंतोष एवं चिंता से संतप्त रहा, और मृत्यु-काल में भी उसकी मानसिक दशा वैसी ही थी। किंतु मरने पर स्पेंसर की योग्यता सभी दिशाओं से स्वीकार की जाने लगी। और उसका अंतिम संस्कार बड़ी धूमधाम से संपादित किया गया। स्पेंसर को चौसर के पास अमर स्थान देकर देशवासियों ने माना कि स्पेंसर निश्चय ही स्पेंसर की कीर्ति का अधिकारी था।

स्त्रियों के सब रोगों के लिये

डाबर अशोकारिष्ट (Regd.)

(ऋतु व प्रदर के दोषों को मिटाने को प्रसिद्ध आयुर्वेदीय दवा)

प्रदरदोष और मासिक धर्म के विकारों को शीघ्र नष्ट करता है। गर्भाशय के शिथिल पड़ जाने पर इसके कुछ दिनों के सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है और अकाल में नष्ट होने का भय नहीं रहता।

यह स्त्रियों के सब रोगों की दवा है।

स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० ४६, पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवदार का वन

[श्रीयुत चंद्रकुँवर बर्त्तवाल]

नीला देवदार का वन है,
जिस पर मोहित हुआ पवन है।

कंपित छाया बाँहों में भर
तरुवर करते मृदु-मृदु मर्मर;
हिमगिरि में निदाघ फैला है,
खुरच रही हरिणियाँ वदन हैं।
नीला देवदार का वन है।

ग्वाले की वंशी-सा उठता,
पर्वत चीर विमल जल गिरता;
दर्पण फैला किसलय वन की
परियों के लखता आनन है।
नीला देवदार का वन है।

जहाँ ज़रा-सा फैला समतल,
जहाँ बिछी है दूर्वा कोमल,
उस पर बैठी कनक-कुमारी
किसका यह करती चिंतन है!
नीला देवदार का वन है।

दूर कहीं गुंजार गूँजती,
खग-बाला कोई न बोलती;
सूनी सड़क, अकेला पर्वत
छाया में कर रहा शयन है।
नीला देवदार का वन है।

आधे ढके चमक-से लोचन,
घुटनों पर तिरछा है आनन;
शिथिलित भ्रू, बाँहें मुड़ पीछे
अलकों का बाँधे बंधन हैं।
नीला देवदार का वन है।

❀ ❀ ❀

काँप उठा हरिणी का यौवन,
हिलने लगा उठा बाँहें वन;
मधुकर-पीड़ित लतिका-तल पर
किसका यह करती चिंतन है?
नीला देवदार का वन है।

मिश्रबंधु-विनोद (चार भाग) ... ११)
शिवाजी (नाटक) ... ... १)
संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न ... ... १)

मैनेजर
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय,
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक पार्लियामेंट, आगरा

[श्रीहरिशंकर शर्मा]

[२२ फ़रवरी सन् १६३६ ई० की रात्रि को नागरी-प्रचारिणी-सभा, आगरा में साहित्यिक पार्लियामेंट का महाधिवेशन हुआ। साहित्यिक सरकार की ओर से निम्न-लिखित शृंगार-साहित्य-निरोधक बिल पेश किया गया।

शृंगार-साहित्य-निरोधक बिल

(क़ानून सं० १ संवत् १६६५)

उद्देश्य—(१) क्योंकि राष्ट्र-भाषा हिंदी के साहित्य में बहुतायत से शृंगार-संबंधी रचनाएँ वर्तमान हैं, और उनकी संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है, और चूँकि ऐसी रचनाओं के पढ़ने से युवक और युवतियों का नैतिक पतन हो जाना अधिक संभव है, इसलिये ऐसी प्रवृत्ति के नियंत्रण के लिये यह क़ानून बनाया जाता है।

लघुशीर्षक—(२) इस क़ानून का नाम शृंगार-साहित्य-निरोधक क़ानून संख्या १ संवत् १६६५ होगा।

विस्तार—(३) यह क़ानून समस्त भारतवर्ष में लागू होगा।

आरंभ—(४) यह क़ानून पास हो जाने के बाद सरकारी गज़ट में प्रकाशित तिथि से अमल में लाया जायगा।

व्याख्या—शृंगार-साहित्य वह माना जायगा, जिसमें स्त्री-पुरुष-संबंधी उन भावनाओं, विचारों, संकेतों और कार्यों का ऐसा वर्णन तथा चित्रण हो, जिसे पढ़ने में लज्जा उत्पन्न होती हो, अथवा जिससे वासनाओं को किसी प्रकार का उत्तेजन मिलता हो।

(५) इस प्रकार के शृंगार-साहित्य की रचना करना अथवा किसी अन्य लेखक, लेखिका, कवि अथवा कवयित्री की उन रचनाओं को, जो इस प्रकार के शृंगार से युक्त हों, पढ़ना, प्रकाशित करना, बेचना अथवा उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रचार करना अथवा ऐसी रचना को किसी प्रकार भी तन, मन या धन से प्रोत्साहन देना या दिलाना दंडनीय समझा जायगा।

व्याख्या—लेखक-शब्द में गद्य और पद्य के लेखक और लेखिकाएँ शामिल समझी जायँगी।

(६) यदि कोई लेखक इस प्रकार के साहित्य को निर्माण करेगा, या इसके निर्माण में सहायता देगा, तो वह आजीवन निर्वासित कर दिया जायगा।

(७) यदि कोई ऐसे साहित्य का, जिसकी ऊपर व्याख्या की जा चुकी है, अनुवाद करेगा, तो उसको ५ वर्ष तक साहित्य-संसार से निर्वासित कर दिया जायगा।

व्याख्या— साहित्य-संसार से निर्वासित करने का अर्थ यह है कि जो इस प्रकार से दंडनीय समझा जायगा, वह न तो किसी नागरी-प्रचारिणी-सभा से संबंधित सभा का मेंबर हो सकेगा, और न उसकी कोई पुस्तक या लेख प्रकाशित किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) इस प्रकार के साहित्य के प्रकाशकों की कोई भी पुस्तक एक वर्ष तक प्रकाशित न हो सकेगी, तथा उनकी कोई भी पुस्तक शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकार न की जायगी।

(९) जो विक्रेता इस प्रकार के साहित्य की पुस्तकें बेचेंगे, उनकी वे सब पुस्तकें विना कोई मूल्य दिए ज़ब्त कर ली जायँगी।

(१०) जो प्रकाशक नागरी-प्रचारिणी की अदालतों की आज्ञा के विना ऐसे लेखकों की कोई भी पुस्तक प्रकाशित करेंगे, उनकी कोई भी पुस्तकें पाठ्यक्रम में स्वीकार न की जायँगी।

(११) इस क़ानून के अनुसार किसी भी अपराध की सुनवाई केवल वे ही संस्थाएँ कर सकेंगी, जिन्हें नागरी-प्रचारिणी-सभा, आगरा ने साहित्यिक संस्था स्वीकार कर लिया हो।

(१२) ऐसे प्रश्नों का निर्णय उक्त संस्थाओं की कार्यकारिणी समितियों की बहु-सम्मति से करना होगा।

(१३) ऐसे निर्णय को नागरी-प्रचारिणी-सभा के सभापति जब चाहें, तब बदल या रद्द कर सकेंगे, और उनकी आज्ञा पर कहीं सुनवाई न होगी।

उक्त पार्लियामेंट का उद्घाटन आगरा के डिस्ट्रिक्ट ऐंड सेशन जज श्रीयुत के० के० के० नैयर महोदय ने किया था। पार्लियामेंट के स्पीकर थे आगरा-म्युनिसिपल-बोर्ड के चेयरमैन श्रीयुत लक्ष्मीनारायण गर्ग। साहित्यिक सरकार के कुछ अधिकारी इस प्रकार थे—प्रधान मंत्री—श्रीयुत भारतभूषणसरोज, गृह-विभाग-मंत्री—श्रीयुत महेंद्र, वैदेशिक विभाग-मंत्री—श्रीगुलाबराय एम्० ए०, न्याय-विभाग-मंत्री—श्रीयुत छेदीलाल अग्रवाल बी० ए०, एल्-एल्० बी०, स्वास्थ्य और स्वायत्त शासन-विभाग की मंत्रिणी—श्रीमती विद्याधरी जौहरी, शिक्षा-मंत्री—श्रीनरेंद्रदेव शास्त्री, एम्० ए० इत्यादि।

शिक्षा-मंत्री श्रीनरेंद्रदेव शास्त्री, एम्० ए० ने बड़ी सुंदर वक्तृता देकर बिल प्रस्तुत किया। बिल के विरोध में पं० हरिशंकर शर्मा, कुमारी शांता बी० ए०, पं० दुलारेलाल भार्गव, कुँवर हरिश्चंद्रदेव वर्मा 'चातक', पं० प्यारेमोहन चतुर्वेदी आदि के भाषण हुए। पं० हरिशंकर शर्मा का भाषण बड़ा प्रभावशाली तथा महत्त्व-पूर्ण था। इसे बहुसंख्यक उपस्थित जनता ने बड़े ध्यान-पूर्वक सुना, और वह उससे प्रभावित भी हुई। इस दल की ओर से और भी कई भाषण बहुत सुंदर हुए। जनता में ख़ूब दिलचस्पी थी। सभा में कई सहस्र सुशिक्षित दर्शक उपस्थित थे। यहाँ पं० हरिशंकर शर्मा का भाषण दिया जाता है। सं०]

महामान्य अध्यक्ष महोदय, आज इस पार्लियामेंट में सरकार की ओर से शृंगार-साहित्य-निरोधक बिल पेश किया गया है। उसे प्रस्तुत करते हुए माननीय शिक्षामंत्री ने जो विद्वत्ता-पूर्ण भाषण दिया है, वह कई दृष्टियों से विचारणीय है। प्रस्तावित शृंगार-निरोधक बिल में युवक-युवतियों को नैतिक पतन से बाल-बाल बचाने के लिये जो दूरदर्शिता और शुभ कामना प्रकट की गई है, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। परंतु युवक-युवतियों को नैतिक पतन के गढ़े में न गिरने देने के लिये शृंगार-रस को रसातल भेजने की जो बात सोची गई है, वह अत्यंत अनुचित, अनावश्यक और अवांछनीय है।

कवि सृष्टि-सौंदर्य का वास्तविक द्रष्टा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी प्रतिभा-पहाड़ी से प्रादुर्भूत कल्पना-कालिंदी की कल्याणकारिणी धारा विश्व को विमोहित कर देती है। कवि सौंदर्य का उपभोग करता है, और जब वह आनंद में उन्मत्त हो जाता है, तब उसके हृदय-सरोवर से जो उद्गार उद्भूत होते हैं, वे ही काव्य का रूप धारण कर लेते हैं। काव्य की आत्मा रस है। जिस संदर्भ में रस प्रवाहित हो, और वर्णन-वैचित्र्य इतना सुंदर हो कि मतवाला मन-मधुप मुग्ध होकर अलौकिक आनंद अनुभव करने लगे, वही 'काव्य' है। अभिप्राय यह कि रसात्मक वाक्य ही काव्य कहलाता है।

काव्य में नौ रस माने गए हैं। शृंगार-रस, जिसके निरोध के लिये यह बिल पेश किया गया है, सब रसों का राजा है। जिस शृंगार-रस को सृष्टि के आदि में संसार के महाकवियों ने अपनाया, जिससे महाकवि कालिदास का काव्य-भांडार भरा पड़ा है, जिसकी विमुग्धकारिणी बूँदें हिंदी-कवियों की विमल वाणी से भी बरसती रही हैं, उसे आज यह विरोधी-बिल-बवंडर तूल की तरह उड़ा देना चाहता है!

सरकार को यह अधिकार तो है कि वह देश के युवक-युवतियों को नैतिक पतन से बचाने का पूरा उद्योग करे, परंतु उसे यह अधिकार कदापि नहीं कि वह काव्य के किसी चिर-प्रतिष्ठित अंग-विशेष के विरुद्ध विधान बनावे। शृंगार-रस के विरोध के लिये ऐक्ट बनाना कवियों की जन्म-सिद्ध प्रतिभा-प्रभा को मंदप्रभ करना अथवा उनके कल्पना-प्रसूत भद्र भावों को भयंकर आघात पहुँचाना है। कवियों को कल्पना-स्वातंत्र्य से वंचित करना किसी सभ्य सरकार के लिये किस प्रकार समुचित और समीचीन हो सकता है, यह विकट समस्या मेरी समझ में नहीं आती।

परम प्रभु परमात्मा सौंदर्य का स्रष्टा है। उसकी सृष्टि सुंदरता का सदन और अभिरामता का आगार है। भगवान् ने अपनी अलौकिक शक्तिमत्ता द्वारा फल-फूल, लता-पता, बेल-वल्लरी, तरु-गुल्म, पशु-पक्षी और नर-नारियों को जो सौंदर्य प्रदान किया है, उसके लिये सभी को उसका कृतज्ञ होना चाहिए। यदि परमात्मा शृंगार-प्रेमी न होता, तो वह रंग-बिरंगे पुण्य-प्रसूनों की रचना न करता, और नर-नारियों को कमनीय, कलित कलेवर प्रदान कर अपनी कला-कुशलता का चमत्कार न दिखाता।

कितने आश्चर्य की बात है कि साक्षात् सौंदर्य-दर्शन से तो 'युवक-युवतियों' का 'नैतिक पतन' न होगा, परंतु उसका काव्यमय विशद वर्णन उन्हें अधोगति-गर्त में गिराकर पतित बना देगा। नर-नारियों के नग्न और अर्ध-नग्न चित्रों को, जो सरकार की नाक के नीचे निकलनेवाली पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं, देखकर तो युवक-युवती नैतिक पतन-पयोधि में नहीं डूबते, परंतु सौंदर्य-सुषमा का प्रतिभा-पूर्ण, विशद वर्णन अर्थात् शृंगार-रस का कोई कवित्त भी नैतिकता की नयनाभिराम नगरी या सदाचार के सुरम्य सदन को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। आधुनिक युग की विचित्र विभूति सिनेमाओं में उछलती-कूदती, नाचती-गाती, अटकती-मटकती और नाना प्रकार के हाव-भाव दिखाती हुई शृंगार-संपन्न अप्सराओं का साक्षात्कार तो देश के युवक-युवतियों को नैतिकता के उच्चातिउच्च शृंग पर आसीन करा सकता है, परंतु उन्हीं परियों की गति-विधि, भाव-भंगी और अंग-चेष्टाओं का काव्यमय वर्णन करनेवाला रस-सिद्ध कवि दरियाए-शोर भेज दिया जायगा, 'फाँसी के तख़्ते पर लटका दिया जायगा, पर्वत से पटक दिया जायगा, समुद्र में डुबो दिया जायगा, और न-जाने क्या-क्या किया जायगा। यह है शृंगार-रस-निरोधक बिल की विलक्षणता और विशेषता।

अभिप्राय यह हुआ कि शृंगार-संपन्न, कुरुच-वर्द्धक, कामुकता-पूर्ण दृश्यों को देखने-दिखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कोई हानि नहीं। उनके लिये दाम दीजिए, और टिकट लीजिए, परंतु यदि उन परियों की प्रकृति-प्रशस्ति किसी गद्य-पद्यात्मक संदर्भ में आ जाय, तो उसे मत पढ़िए, बल्कि लेखक को पुलिस के हवाले कर दीजिए, और शृंगार-निरोधक बिल की रू से उसे काले पानी भिजवा दीजिए। कैसा निष्पक्ष न्याय और कितना अद्भुत आयोजन है।

संसार के सभ्य देशों में शृंगार-शास्त्र की शिक्षा देकर इस कला को विकसित किया जा रहा है, परंतु हमारे देश की सरकार शृंगार पर अंगार बरसाने के लिये तुली हुई है। रसिक-शिरोमणि, आनंद-कंद श्रीकृष्णचंद्र शृंगार-रस के अनन्य उपासक थे। उनके हास-विलास, परिहास और रास की चर्चा से ग्रंथ-के-ग्रंथ भरे पड़े हैं। परम प्रसिद्ध पुस्तक श्रीमद्भागवत के अनेक स्कंध शृंगार-रस में डूबे हुए हैं। भर्तृहरि महाराज ने 'शृंगार-शतक' लिखकर कविता-देवी की अनन्य उपासना की है। इन सबसे आज तक युवक-युवतियों के नैतिक पतन की आँधी नहीं उठी, और न किसी सरकार को ही ऐसे सत्साहित्य के विरोध में क़ानून बनाने की आवश्यकता अनुभव हुई। परंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारी वर्तमान सरकार अपने विलक्षण बिल द्वारा शृंगार-रस को विष बना देना चाहती है। विष ही नहीं, विष से भी बढ़कर। विष बेचनेवालों को तो एक दिन की भी सज़ा नहीं दी जाती, बल्कि लाइसंस देकर सरकार उनके व्यवसाय में सहायता देती है। परंतु शृंगार-रस पर दो-चार पंक्तियाँ लिखने-मात्र से काले पानी का ऑर्डर! सज़ा! जुरमाना! बहिष्कार! देश-निकाला! इस दृष्टि से शृंगार-रस सरकार के लिये हलाहल-विष से भी तीक्ष्णतर हो गया है।

हे रसराज शृंगार-देव! आज आपके विरुद्ध यह विपरीत व्यापार होता देख आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है। एक वह समय था, और दूसरे देशों में अब भी है, जब आपका गुण-गान करनेवाले रस-सिद्ध कवि लोग राजसम्मान के अधिकारी समझे जाते थे, और एक आज का दिन है, जब आपको नैतिक पतन का मूल-कारण समझ निर्दय और निर्विराम विरोधाग्नि में भस्मीभूत किया जा रहा है! किसी को स्वप्न में भी आशंका न थी कि लेखनी और वाणी की पूर्ण स्वतंत्रता का ढिंढोरा पीटनेवाली वर्तमान सरकार काव्य के प्रधान अंग शृंगार के सरल, सरस और सुंदर मार्ग में पैने काँटों का बिछौना बिछा देगी। आज इस बिल की विकरालता से भवभूति, भर्तृहरि, बिहारी, देव, पद्माकर, केशव, मतिराम आदि महाकवियों की स्वर्गीय आत्माओं को अपार दुःख हो रहा होगा।

कविता-देवी, सावधान! आज तेरे शृंगार को नष्ट करने के लिये कड़ा क़ानून बनाया जा रहा है, कल किसी क़ानून द्वारा तेरे अलंकार भी ज़ब्त कर लिए जायँगे। परसों तेरे छंदों की छबीली छटा पर भी संकटों की घोर घटा घहराने लगेगी। भावों की भट्ठी में भुनने के सिवा तेरे लिये कोई चारा न होगा। फिर तू कहाँ रहेगी, और कौन तुझे आश्रय देगा? आज हमारी सरकार वह विचित्र व्यापार करने जा रही है, जो साहित्य की सीमा में किसी ने नहीं किया।

महामना अध्यक्ष महोदय, क्षमा कीजिए, यदि काव्य-शास्त्र पर सरकार का ऐसा ही कोप-कोदंड तनता रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब अतिशयोक्ति या मुबालग़ा का आधार लेनेवाले कविजन भी दरोग़गोई के संगीन जुर्म में मुल्के-अदम भेज दिए जायँगे। अस्तु।

मैं बड़ी नम्रता, किंतु दृढ़ता के साथ निवेदन करूँगा कि काव्य के प्रधान अंग शृंगार-रस के विरोध में बिल पेश करना सरकार की अधिकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा के बिलकुल बाहर है। जिस प्रकार उसे विज्ञान, गणित, चिकित्सा-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र आदि के अंग-प्रत्यंगों और सिद्धांतों का निरोध करने का अधिकार नहीं, उसी प्रकार वह शृंगार-रस की आवर्जना-पूर्वक काव्य-शास्त्र का सौष्ठव नष्ट नहीं कर सकती। आज तक संसार की किसी सरकार ने शृंगार-रस का निरोध कर अपनी शुष्कता-जन्य नीरसता का प्रचंड परिचय नहीं दिया। फिर हमारी वर्तमान गवर्नमेंट ही ऐसा क्यों करना चाहती है?

हाँ, सरकार उस साहित्य का—यदि उसे साहित्य कहा जाय—तो अवश्य निरोध-विरोध, नाश-विनाश और सत्यानास कर सकती है, जिसके प्रचार से उसे युवक-युवतियों के नैतिक पतन की आशंका हो। परंतु उस साहित्य का नाम 'शृंगार-साहित्य' नहीं हो सकता, और न उसकी वह व्याख्या हो सकती है, जो आज के बिल में की गई है। ऐसे साहित्य को अश्लील साहित्य, कुरुचि-वर्द्धक साहित्य, कामुकता-पूर्ण साहित्य, दूषित साहित्य, घासलेटी साहित्य, अवांछनीय साहित्य, नैतिकता-विहीन साहित्य, युवक-युवती-बिगाड़क साहित्य, नैतिकता-तोड़क साहित्य, सदाचार-फोड़क साहित्य, गंदगी-जोड़क साहित्य, मलिनता-मरोड़क साहित्य आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है; शृंगार-रस-साहित्य के नाम से नहीं। ऐसा प्रतीत होता है, हमारे माननीय शिक्षा-मंत्री महोदय ने बिल बनाते वक्त शृंगार-रस-साहित्य और कुरुचि-वर्द्धक साहित्य में कुछ भेद नहीं समझा। नहीं तो इस बिल की रचना इस रूप में न होती। शुद्ध शृंगार-रस की कविता के सैकड़ों-सहस्रों नमूने पेश कर पूछा जा सकता है कि उनमें नैतिकता-निकेतन को नष्ट कर देनेवाली चिंता-जनक चिनगारी कहाँ छिपी हुई है?

मैं साहित्य के नाम पर की गई अश्लील, अवांछनीय, अशिष्ट और कामुकता-पूर्ण गढ़ंतों का उतना ही विरोधी हूँ, जितनी सरकार है। परंतु शुद्ध शृंगार-रस के सुंदर सरोवर में निरोध-निंब का अर्क या कटाक्ष-कुटकी का चूर्ण मिश्रित होते नहीं देख सकता। मैं चाहता हूँ, सरकार अपने बिल को वापस ले, और यदि उचित समझे, तो उस संज्ञा और व्याख्या के साथ पेश करे, जिससे वास्तव में उसका उद्देश्य पूरा हो सकता हो। सरकार चाहे, तो इस बिल का नाम 'कुरुचि-पूर्ण साहित्य-निरोधक बिल' या 'दूषित-साहित्य-विरोधक बिल' अथवा ऐसा ही कोई और नाम रखकर पेश कर सकती है। बिल का वर्तमान नाम उसे विचार-कोटि में लाने की कदापि आज्ञा नहीं देता। मैं तो कहता हूँ कि अगर यह बिल वापस न लिया गया, और इसी रूप में पास हो गया, तो सरकार के साहित्य-संबंधी कड़े शासन में शृंगार का नाम लेना भी अपराध हो जायगा, और फिर महाकवि अकबर की नीचे-लिखी उक्ति में सत्यता-ही-सत्यता दिखाई देगी—

हरीफ़ों ने लिखाई है रपट जा-जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है "रसों" का इस ज़माने में।

हिंदी-संसार में बालोपयोगी पत्रों में

"बाल-विनोद ही"

सबसे सुंदर और सस्ता पत्र है। २॥) भेजकर ग्राहक बनें, और अपने प्यारे बच्चों की तबियत ख़ुश करें।

पता—बाल-विनोद-कार्यालय, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम गार्हस्थ्य उपन्यास

हृदय की प्यास

(सचित्र और मौलिक)

[लेखक—हिंदी के सुप्रसिद्ध, सिद्ध-हस्त लेखक आयुर्वेदाचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

हिंदी में मौलिक उपन्यास-लेखक इने-गिने ही हैं, और उनमें शास्त्रीजी का स्थान किसी से कम नहीं। गद्य-काव्य लिखने में आप आचार्य माने जाते हैं। बड़े-बड़े साहित्य-सेवी आपकी लेखन-शैली के क़ायल हैं। नवयुवकों के लिये तो यह आदर्श ही है। यह उपन्यास भी उनकी पूर्ण प्रतिभा का परिचायक है; भावमयी भाषा, सुंदर शैली, सरल और सुबोध रचना का यह सर्वोत्तम नमूना है। मित्रता के लक्षण, सौंदर्य की विषमता, शंका की सत्यता, तज्जनित द्वेष और डाह, उसका दुष्परिणाम ही नहीं, वरन् आधुनिक शिक्षा से उत्पन्न सौंदर्योपासना, अविवेक और मतिभ्रम तथा पूर्व-संस्कार के कारण कर्तव्य-परायणता और पश्चात्ताप इसमें पढ़ते ही बनता है। गार्हस्थ्य जीवन क्योंकर सुखी हो सकता है, आजकल के नवयुवक क्यों उसे नरक-तुल्य समझते हैं, घर की लक्ष्मी को छोड़कर कूड़े-कर्कट की कौड़ी पर क्यों दृष्टि गड़ाए रहते हैं—आदि जीवन के कतिपय जटिल प्रश्नों का शास्त्रीजी ने बड़ी ख़ूबी और योग्यता के साथ निराकरण किया है। इन सब बातों के होते हुए भी इसका प्लाट ऐसी ख़ूबी से रचा गया है कि उपन्यास को एक बार हाथ में लेने पर क्या मजाल कि आप खाना-पीना न भूल जायँ, और उसे समाप्त किए बिना ही छोड़ दें। सती की सत्यता और कुलटा की कायरता तो ग़ज़ब ढाती है। एक बार इसको मँगाइए, स्वयं पढ़िए और अपनी गृहिणी को भी पढ़ाइए। ६ रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित इस अमूल्य पुस्तक का मूल्य केवल २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका

सुधा

और

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

की

सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों का और भी अधिक प्रचार करने के लिये हमें १०० स्थानीय एजेंटों की और आवश्यकता है। हमारे एजेंट १००, २०० रुपए तक कमा रहे हैं। कारण, हमारी पत्रिका और किताबें हिंदोस्तान-भर में ख़ूब मशहूर हो चुकी हैं, लाखों मनुष्य उन्हें पढ़ रहे हैं, अतएव उनकी खपत एजेंट लोग आसानी के साथ, थोड़े-से परिश्रम से ही, अन्य मासिक पत्रिकाओं और पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक कर लेते हैं। दिखलाते ही लोग उनके ग्राहक बन जाते हैं। फिर बाहरी हिंदोस्तान-भर के प्रकाशकों की हिंदी-पुस्तकें भी भरपूर कमीशन पर हम उनको बेचने के लिये देते हैं, क्या ये सुविधाएँ उन्हें और कहीं मिल सकती हैं? लेकिन ५० या १०० रुपए की ज़मानत ज़रूरी है। जो सज्जन ज़मानत जमा करके एजेंट या ट्रेवलिंग एजेंट बनना चाहें, वे कृपया हमसे एजेंटों के नियम मँगा लें, और फ़ौरन् एजेंट बनकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य में हमारा हाथ बँटाएँ, और ख़ुद भी रुपया कमाएँ।

इस समय हमारी पत्रिका और पुस्तकों की चारो ओर धूम मची हुई है, अतएव हिंदी-प्रेमी एजेंटों के लिये हिंदी-सेवा करने और प्रचार-कार्य में अपना अनुभव और अभ्यास बढ़ाने के लिये यही सबसे उपयुक्त समय है।

मैनेजर सुधा और गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ

क्या आप १००) प्रतिमास कमाना चाहते हैं?

तो आइए, हमारे ट्रेवलिंग एजेंट बन जाइए

गंगा-पुस्तकमाला का प्रचार कीजिए

प्रतिमास ६०, ७० सुधा और बाल-विनोद के ग्राहक बना लेना और गंगा-पुस्तकमाला की २००) रुपए की पुस्तकें बेच लेना कोई मुश्किल बात नहीं।

एजेंटों के नियम मँगाइए—

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों की सेज

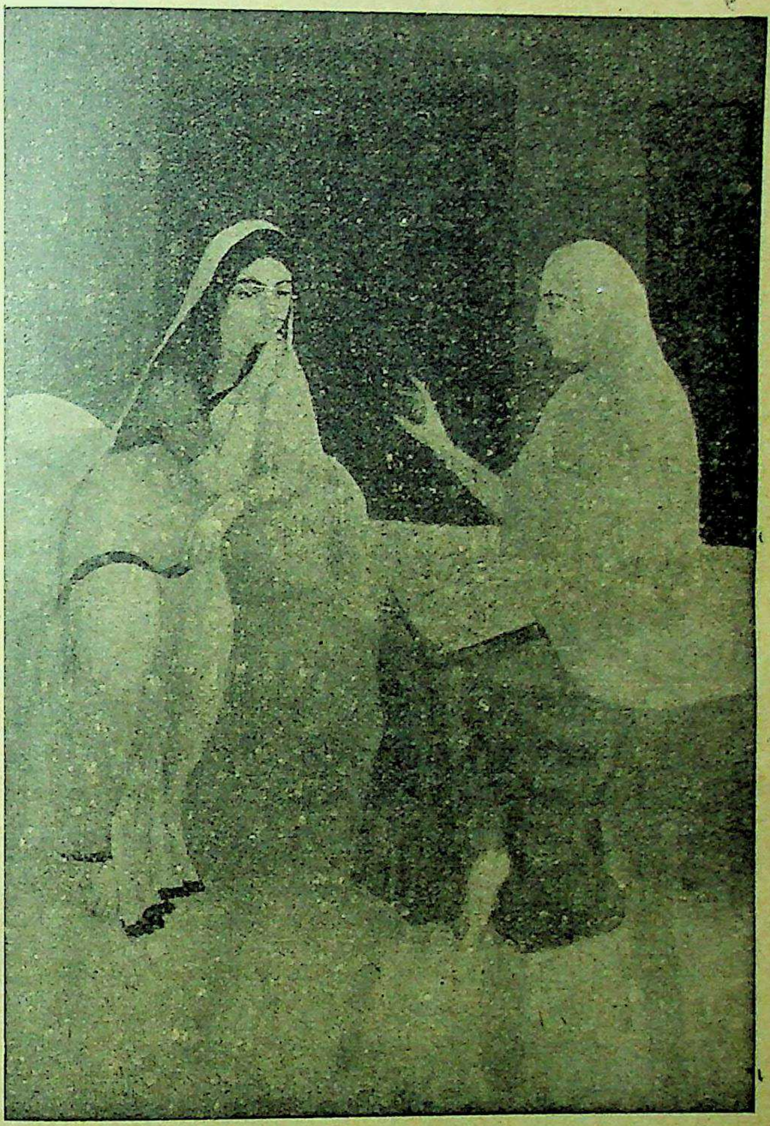

लेखक, श्रीविजय-बहादुरसिंह बी॰ ए॰। इस अपूर्व पुस्तक में वयस्क युवक-युवतियों एवं नव-विवाहित वर-वधुओं के हित की बातों का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। वर्णन दो स्त्रियों के परस्पर वार्तालाप के रूप में है। गार्हस्थ्य सुख की पूर्ण अभिज्ञता रखनेवाली एक शिक्षिता, प्रौढ़ा रमणी एक नव-विवाहिता युवती को उपदेश देती है। और, वह उपदेश आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुकूल अर्थात् अप-टु-डेट है। इसके मुख्य-मुख्य विषय ये हैं—यौवन, स्त्री-पुरुष के कर्तव्य, स्तन, ऋतु-धर्म, शय्या, समागम, अप्राकृतिक गमन, ऋतुबाधा, प्रदर, हिस्टीरिया, वीर्य और आर्तव, गर्भाधान, वंध्यात्व, गर्भावस्था-समय, गर्भ रहने के लक्षण, दौहृद, गर्भ-स्राव और गर्भ-प्रसव इत्यादि। पुस्तक तरुणियों के लिये जीवन-प्रदीप है और प्रत्येक स्त्री के लिये आवश्यक ज्ञान की वस्तु। भाषा बड़ी ही सरल और सुंदर है। वर्णन ऐसी उत्तमता से हुआ है कि इसमें अश्लीलता, अभद्रता एवं कामासक्तता का लेश-मात्र भी समावेश नहीं है, और इसे शिक्षित माता-पिता निस्संकोच भाव से अपने पुत्र-पुत्रियों और वधुओं के हाथों में दे सकते हैं। मूल्य सादी २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी पार्वती

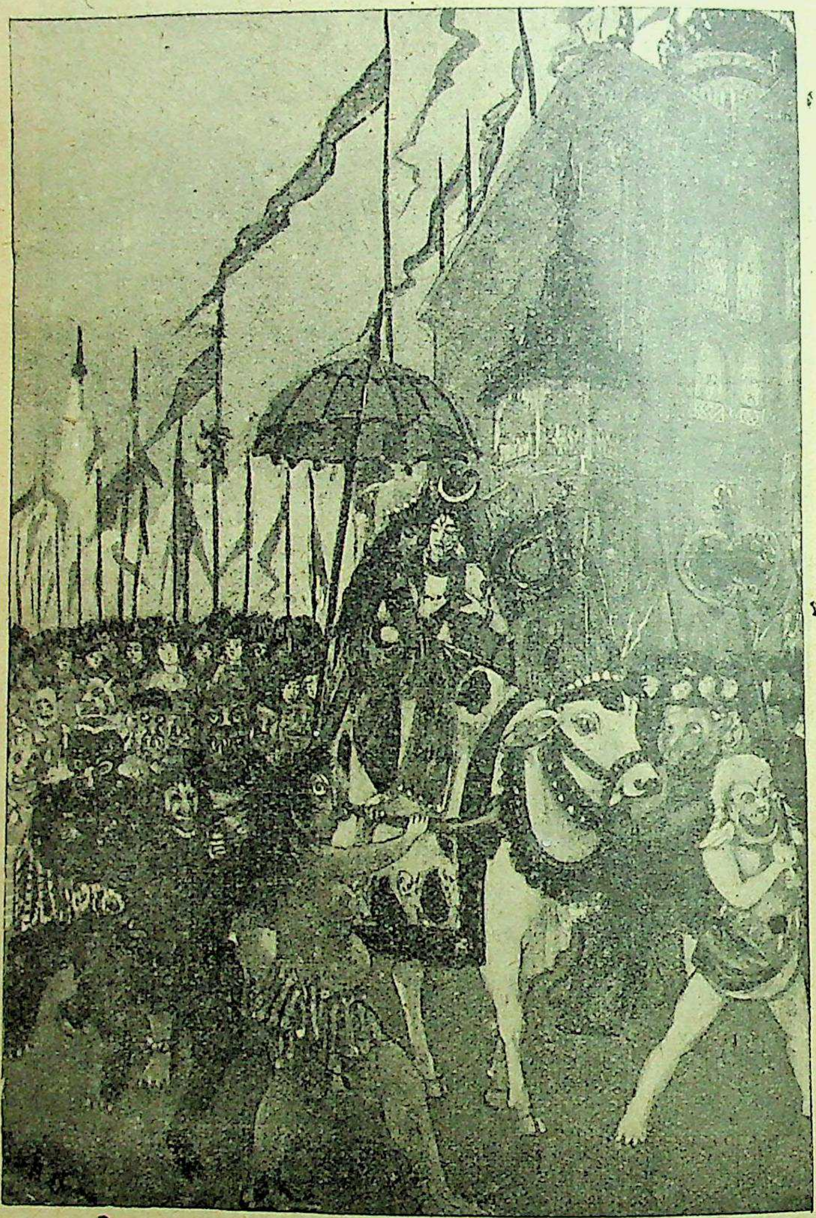

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी जहूरबख्श हिंदी-कोविद। इसमें जगज्जननी देवी पार्वती का जन्म, विवाह-संबंधी नारद की भविष्य-वाणी, पार्वतीजी की तपस्या, शिवजी की आराधना, शिवजी का प्रसन्न होना; उनका विवाह, पार्वतीजी का हठात् अपने मैके जाना, वहाँ उनका अनादर, स्वामिकार्त्तिक का जन्म, तारकासुर-वध आदि सभी एक-से-एक रोचक, ज्ञातव्य और मनोरंजक बातें बड़ी सुंदर, सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई हैं। अनेक रंगीन और सादे चित्रों ने तो इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है। पृष्ठ-संख्या १५०; मूल्य ||=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया ! नई शैली का ऐतिहासिक नाटक !!

रानी भवानी

लेखक

हिंदी के क्रांतिकारी लेखक

श्रीपरिपूर्णानंद वर्मा

श्रीपरिपूर्णानंदजी हिंदी के प्रौढ़ लेखक हैं। आपने यह नाटक लिखकर हिंदी-साहित्य की वृद्धि की है। रानी भवानी का नाम प्रत्येक इतिहासज्ञ जानता है। इस नाटक में उसी सुशीला तथा आदर्श रमणी का सुंदर चरित्र-चित्रण है, जिसे पढ़कर विशेषतया स्त्रियों में सुंदर भाव पैदा हो सकता है। साथ ही इसमें मुग़ल-साम्राज्य के पतन-कालीन उसके प्रांतीय सूबेदारों की स्वच्छंदता एवं विलासिता का अच्छा दिग्दर्शन है। मुर्शिदाबाद के विलासी नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मातहत नाटौर-नाम की एक रियासत थी। वहाँ के राजा रमाकांत बड़े ऐयाश और शाहख़र्च थे। रानी भवानी उन्हीं की स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की बड़ी चेष्टा की, पर फटकार के अतिरिक्त कोई लाभ न हुआ। रमाकांत के ज़ुल्म का समाचार उनके चचा दयाराम को मिला। दयारामजी नवाब के सम्मानित दरबारियों में से थे। उन्होंने रमाकांत को दंड-स्वरूप गद्दी से उतरवाकर उनके भाई देवीदास को गद्दी दिलवा दी। रमाकांत को लेकर रानी भवानी दर-दर मारी-मारी फिरीं। देवीदास को राज्य-मद इतना हो गया कि वह रमाकांत के साथ-साथ दयारामजी की भी उपेक्षा करने लगा। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकांत का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को बड़ा क्षोभ हुआ। फल-स्वरूप उन्होंने रमाकांत को फिर गद्दी पर बिठा दिया। किंतु रानी भवानी पर उनका विश्वास अधिक था, अतएव राज्य उन्हें मिला, और उन्होंने नवाब से अपने पति को साथ रखने की आज्ञा प्राप्त कर ली।

नाटक बहुत छोटा, किंतु मनोरंजक है। पात्र कम हैं, ताकि रंगमंच पर आसानी से खेला भी जा सके। भाषा सरल और मुहाविरेदार। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

मिलने का पता—

मैनेजर—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला की नई देन

सुदामा

(राजनीतिक नाटक)

लेखक—श्रीपं० किशोरीदास वाजपेयी

इसमें संदेह नहीं कि अब तक के उपर्युक्त नाम से प्रकाशित सभी नाटकों में यह श्रेष्ठ है। वाजपेयीजी ने इसमें सुदामा के उन गुणों का दिग्दर्शन कराया है, जिनके द्वारा वह लोकनायक श्रीकृष्ण के अंतरंग मित्र हो चुके हैं। इसके लिये नाटककार ने कथावस्तु में कल्पना की वह आवश्यक पुट ला रक्खी है, जिससे नायक का चरित पूर्णतया चमक उठा है। गोकि सुदामा का कथानक पुराना है, किंतु इस नाटक में स्पष्टतया आप यह देखेंगे कि सुदामा हमसे दूर नहीं—इस युग के ही हैं।

इसमें विशेषता यह है कि स्त्री-पात्रों की भरमार नहीं की गई है। दो-चार जो स्त्री-पात्र हैं, वे ऐसे आदर्श हैं, जिनसे छात्रों के जीवन में पवित्रता की भावना जागेगी, न कि विलास और कामना की। अतएव स्कूल-कॉलेज के छात्रों के अभिनय-योग्य है। राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत है। सुदामा-जैसे महापुरुष के आदर्श गुण जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। भाषा सुंदर, बिलकुल बोलचाल की। मूल्य सादी ।।), जिल्ददार १)

अन्यान्य नाटकों के मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! प्रकाशित हो गया !! छप गया !!!

ला-मज़हब

हिंदी के कहानी-साहित्य में क्रांतिकारी प्रकाशन !

श्रीबलभद्रजी दीक्षित के उपनाम 'पढ़ीस' से हिंदी-पाठक भली भाँति परिचित हैं। उनकी देहाती बोली में लिखी कविताओं ने शिक्षित-अशिक्षित श्रोताओं और पाठकों को समान रूप से मुग्ध किया है। इसका कारण उनके अनुभव की सचाई है। वह सचाई इस संग्रह की कहानियों की भी जान है। उन्हें देहाती जीवन का बहुत सूक्ष्म ज्ञान है, जिसका इन कहानियों में उन्होंने बहुत कला-पूर्ण ढंग से प्रयोग किया है। ख़ासकर ग़रीबों और समाज से ठुकराए हुओं का ऐसा सजीव चित्रण अभी तक हिंदी में नहीं हुआ। उनका पतन देखकर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। लेकिन जब लेखक के साथ उनकी परिस्थितियों की ओर ध्यान देंगे, तो आपका हृदय सहानुभूति से पसीज उठेगा।

देहात के कटु वर्ग-संघर्ष का चित्र आपको यहाँ देखने को मिलेगा। ग़रीबी और पतन के बीच उच्च मनुष्यता की झाँकी देख आप मुग्ध हो जायँगे। इन कहानियों में एक नई संस्कृति की ओर इंगित है, जहाँ मनुष्यता से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं माना गया। 'ला-मजहब' ने छोटे मज़हबों को तोड़ दुनिया के सामने एक और बड़े मज़हब को लाकर रक्खा है। भाषा जोरदार और सीधी, चरित्र-चित्रण सजीव और कथानक रोचक तथा कुतूहल उत्पन्न करनेवाले हैं। निश्चय यह हमारे कहानी-साहित्य में एक नया क़दम है। सभी साहित्य-प्रेमियों को एक बार इस पुस्तक को ध्यान-पूर्वक पढ़ना चाहिए। मूल्य सादी ।।।/, सजिल्द १)

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-जगत् में अब तक जिसकी प्रतीक्षा थी, वही ग्रंथ तैयार है !!

बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा हुआ

हिंदी-साहित्य का इतिहास

(लेखक—'मिश्रबंधु')

याद रखिए ! साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा, 'मिश्रबंधु' ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं, हिंदी-भाषा में ऐसी प्रामाणिक पुस्तक आपको सुलभ है।

शीघ्र मँगाइए।

पृष्ठ-संख्या लगभग ३७०

मूल्य १।) सजिल्द २)

कविता ! हाँ—जीवन का वह सत्य, जिसे जड़-चेतन की अनुभूति से व्यापकता मिली !

हृदय के कोमल तारों से प्रतिध्वनित संगीत !

आपका जीवन भी एक कविता है ! ❀ आत्मानुभूति का सजीव चित्रण !

कल्पना की गति का शब्द-चित्र !

आज ही पढ़िए ! अभी मँगाइए !! प्रकाशित हो गया !!!

इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ सरस सामयिक भावमय काव्य-संग्रह

* मकरंद *

[लेखिका—स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी']

सर्वथा नवीन ! हृदय-स्पर्शी ! सजीव ! सुबोध ! लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ !

हिंदी-साहित्य में स्वर्गीया श्रीमती 'चकोरी' की कविताओं को कितना ऊँचा स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह भी 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोकप्रिय बनेगा, खड़ी बोली में ऐसी सुंदर कविता-पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित ही नहीं हुई, अवश्य मँगाइए !

सादी ॥=) सजिल्द १=)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

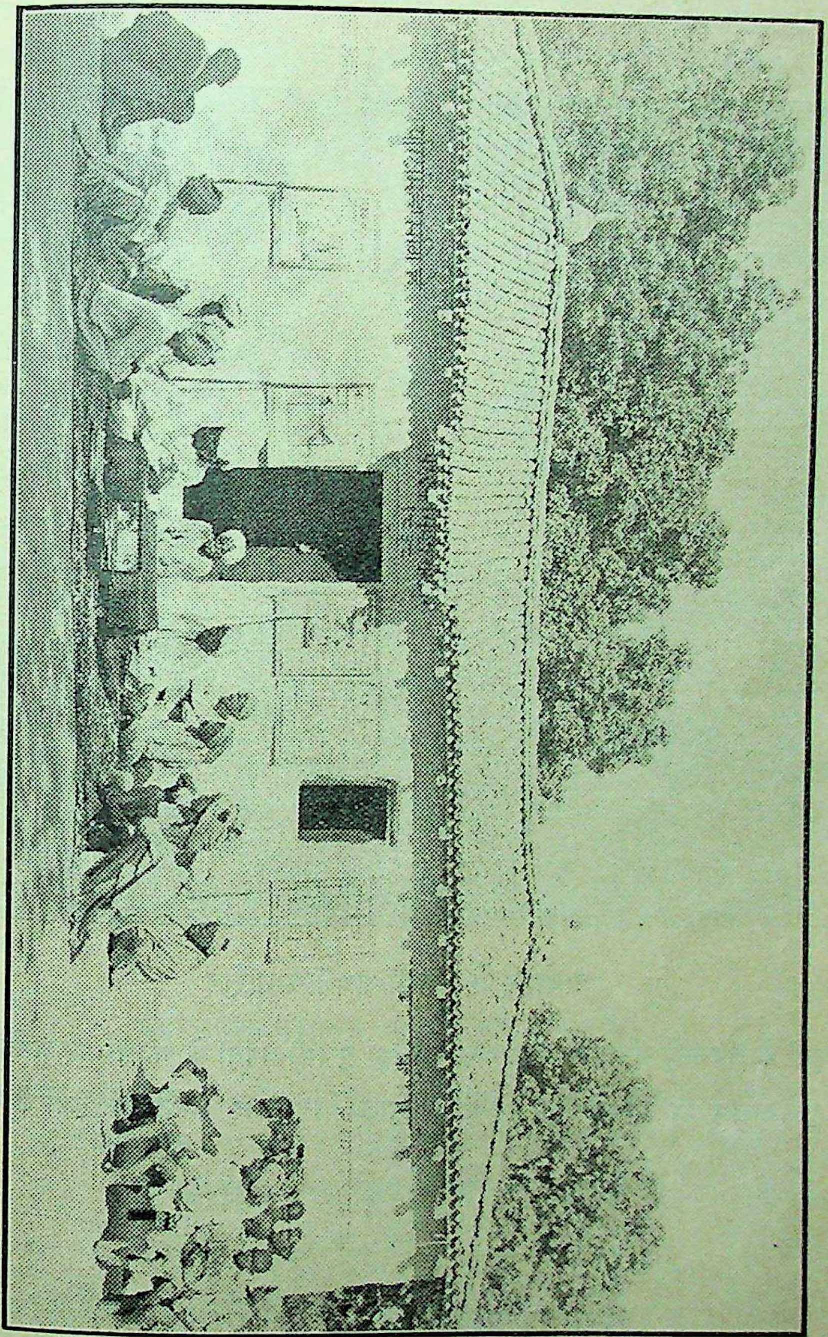

पंचायत-घर

[युक्त प्रांत-सरकार की ग्राम-सुधार-योजना के अंतर्गत मैनपुरी में एक देहाती पंचायत-घर तथा पुस्तकालय । देहाती लोग एकत्र होकर पठन-पाठन कर रहे हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

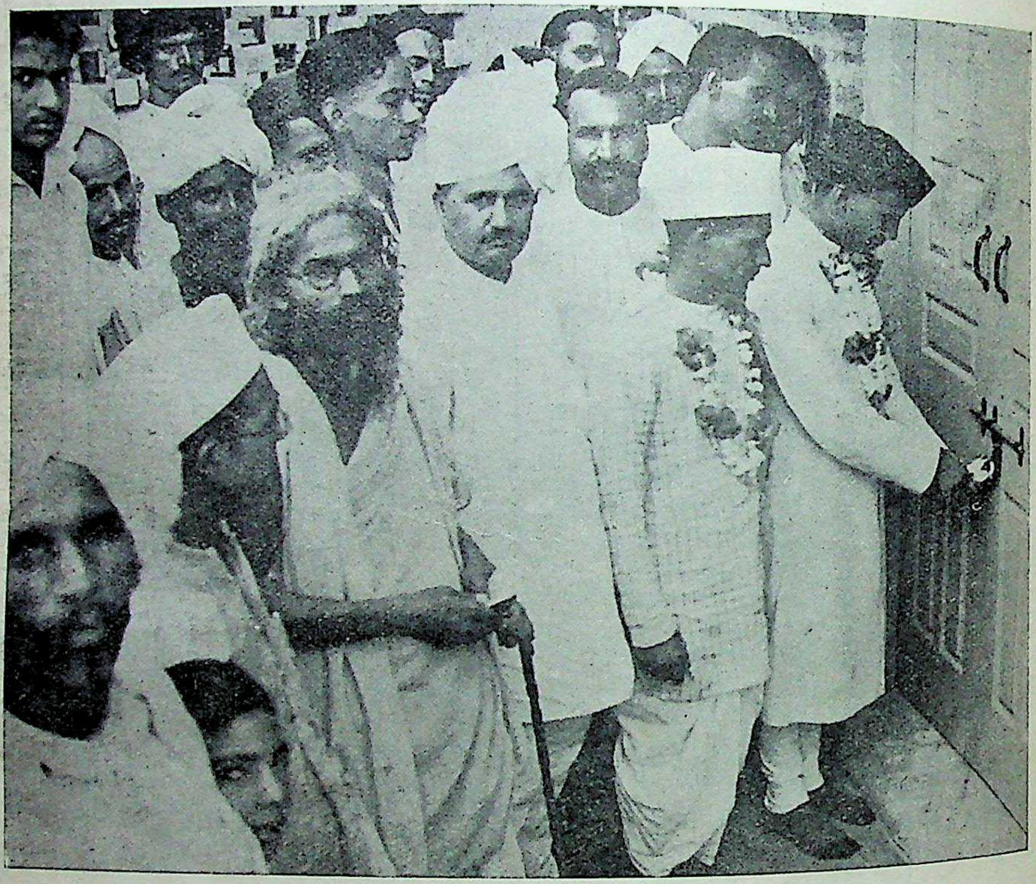

अबोहर में तुलसी-जयंती-समारोह

['ट्रिब्यून' के सहकारी संपादक श्रीजंगबहादुरसिंह तुलसी-जयंती के अवसर पर अबोहर में चलता पुस्तकालय का उद्घाटन कर रहे हैं । गोपाल चित्र-कुटीर, लाहौर की कृपा से प्राप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

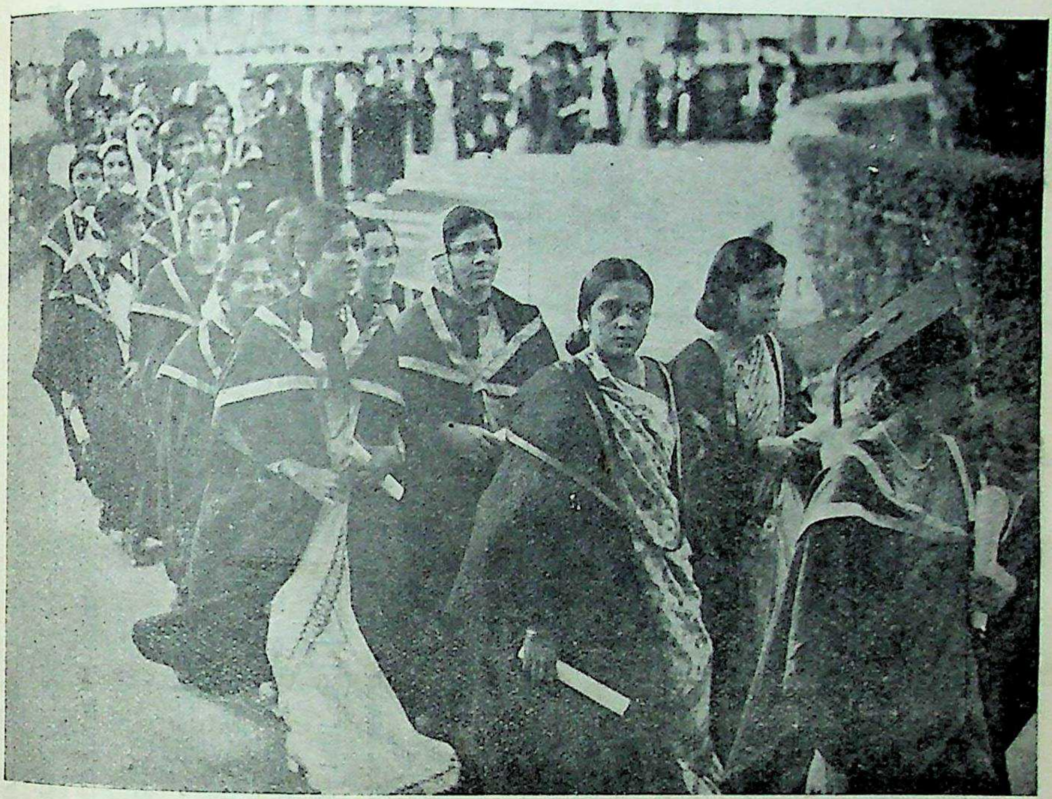

बंबई-विश्वविद्यालय का पदवी-दान-समारोह

[बंबई-विश्वविद्यालय की महिला-ग्रेजुएट एक साथ सम्मिलित होकर अपनी-अपनी उपाधियाँ ग्रहण करने के लिये विश्वविद्यालय के कनवोकेशन हॉल में जा रही हैं । प्रतिच्छविकार-श्रीललिततगोपालजी ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

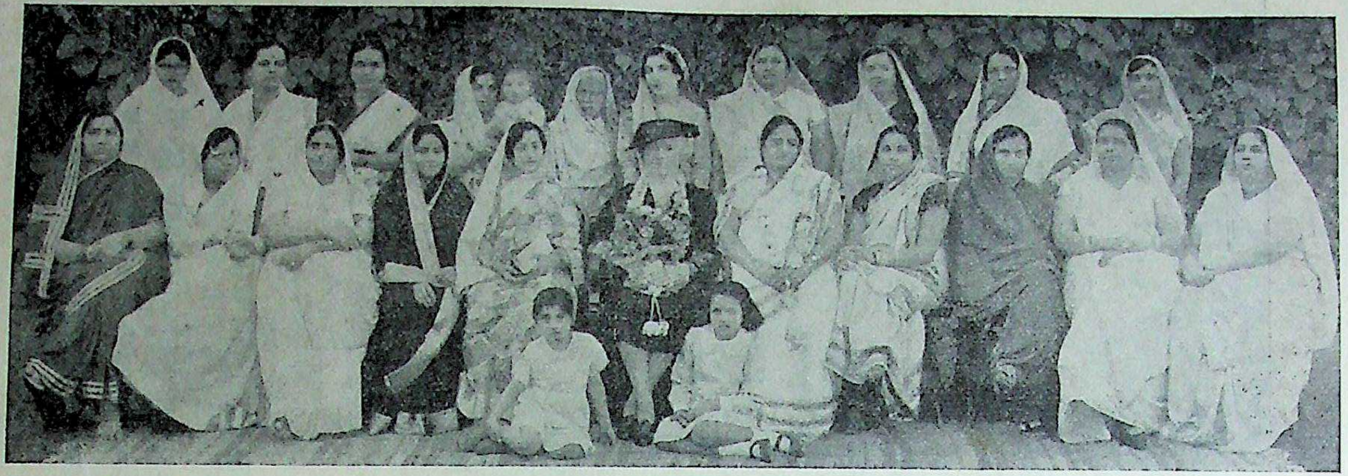

लेडी हेग

[आपको इँगलैंड-प्रस्थान करने के अवसर पर सोशल सर्विस लीग की महिलाओं द्वारा अभिनंदन-पत्र दिया गया था। उसी समय का यह चित्र है।]

बैठी हुई बाईं ओर से—१. श्रीमती फूलवती शुक्ला, २. श्रीमती राजकुमारी, ३. श्रीमती हुक्मसिंह, ४. रानी रेहवा, ५. लेडी बमबहादुरशाह, ६. लेडी हेग, ७. रानी रामनगर, ८. स्व० सावित्रीदेवी, ९. बेगम हफ़ीज़, १०. श्रीमती गुप्ता, ११. श्रीमती शंभूदयाल।

खड़ी हुई बाईं ओर से—१. मिसेज़ रामप्यारी भटनागर, २. श्रीमती राज, ३. श्रीमती कमला शर्मा, ४. मिसेज़ हुकुमसिंह की पुत्रवधू, ५. निरंकार की मा, ६. श्रीमती खरेघाट, ७. मिसेज़ भटनागर, ८. कुमारी सत्यवती, ९. श्रीमती मित्रा, १०. श्रीमती जयजयवंती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

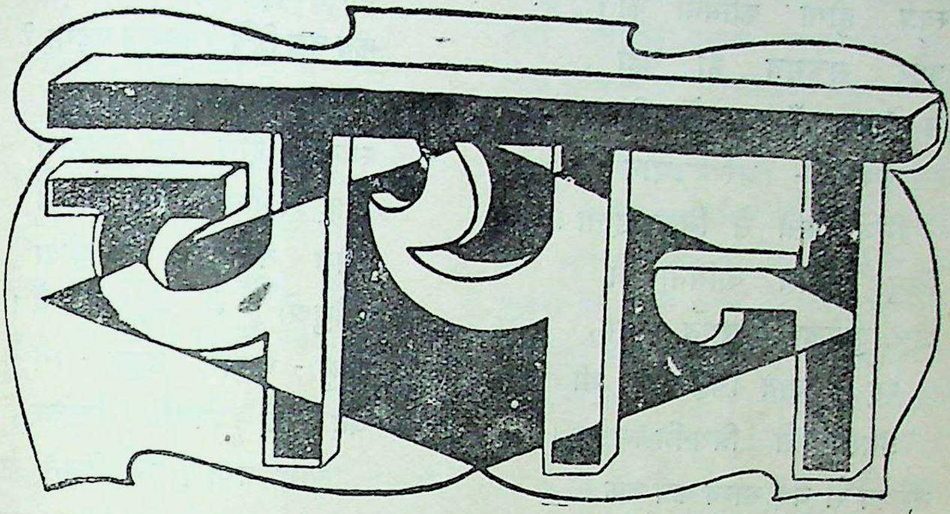

१. अटल आशा

(सवैया)

तुम होगे सुखी, हम होंगे सुखी,
शुभ होगा सभी, है हमें ध्रुव आशा;
दुखदा बिपदा न रहेगी सदा,
त्यों 'पुनीत' विलाएगी दैन्य-दुराशा।
प्रिय, प्रेम हमारा त्यों प्रेम के नाथ
करेंगे प्रपूर्ण शुभा अभिलाषा;
धृति-धैर्य रहे, कृति-स्थैर्य रहे,
निकले न कभी कटु, कातर भाषा।

राजाराम 'पुनीत'

× × ×

२. "जलना पड़ेगा ?"

इस विरह की आग में
कब तक प्रिये! जलना पड़ेगा ?

(१)

ऊर्मि अगणित उठ रहीं,
सरिता चली व्याकुल किधर है ?
निश्चय उधर ही जा रही,
फैला महासागर जिधर है।
प्रियतमा को देख आती
लोल सागर की हिलोरें
चल पड़ीं कल्लोल-सी करती
हुई कुछ शीघ्रता ले।
मिल गए प्रेमी, किया वर,
मधुर आलिंगन वहाँ पर;
एक क्या ? दृष्टांत लाखों
प्रकृति में प्रेमी-मिलन के।
क्या हमारे— मानवों के—
प्रेम ही में विधि अड़ेगा ?
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये! जलना पड़ेगा ?

(२)

वह सुखद आरंभ होता
नित्य स्वप्निल यामिनी का;
आश में इस डूबता हूँ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न होगा कामिनी का।
और सचमुच ही यही
मैं देखता हूँ स्वप्न में भी—
सौरभ - भरे उद्यान में
निज प्रेयसी से मिलन होता।
किंतु स्वप्निल यामिनी का
जब दुःखद अवसान होता,
रह न जाते चिह्न कुछ भी
प्रेयसी से प्रिय-मिलन के।
नैराश्य से यह भाग्य कब तक
हा! कहो, कितना लड़ेगा?
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये! जलना पड़ेगा?

(३)

प्रकृति भी परिहास करती
मुझ अभागे दीन नर से;
पश्चिमी वह अनिल मानो
बेधता वपु कठिन शर से।
संयोग-वश यदि निकल जाता
निज सुभग उद्यान में मैं,
थिरक उठते मोर - गण
औ' कोकिला भी कूक उठती।
वस्तुएँ परिहास की ये
जो विरह-पीड़ा बढ़ातीं,
देख इनको चैन पा
सकते नहीं विरही मिलन के।
प्रकृति का परिहास उर में
आज कंटक-सा गड़ेगा;
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये! जलना पड़ेगा?

(४)

स्मरण होने पर तुम्हारा
आह भीतर खींचता मैं;
आज तक यह प्रेम-पौधा
आँसुओं से सींचता मैं।
अश्रु - धाराएँ बहुत - सी
बह गईं यद्यपि निरंतर,
लाभ क्या? इस सींचने से
लग न पाया प्रेम का फल।
सोचता हूँ बस यही, फिर
क्या हरा यह रह सकेगा?
चाह पूरी क्या करेगा
इच्छुकों की प्रिय मिलन के?
सुमुखि! चंद्रानन तुम्हारा
चित्र-सा उर में जड़ेगा;
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये! जलना पड़ेगा?

(५)

तू है उदित राकेश-सी
कमनीय नीलाकाश में तो;
कर लूँ तुम्हारा आज दर्शन
इस सुभग अवकाश में तो।
क्षितिज की काली घटा तू
बन पपीहा क्यों न बैठूँ?
क्यों न डूबूँ आश में अब
बूँद स्वाती की गिरेगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीकर उसे ही क्यों न अपनी
आज तृष्णा तृप्त कर लूँ ?
क्या मिल सकेंगे वे कभी
जो चाहनेवाले मिलन के ?

हाय ! क्या यह सोचना भी
छोड़ ही देना पड़ेगा ?
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये ! जलना पड़ेगा ?

(६)

मिलन हो तुमसे हमारा,
कामना यह है हमारी ;
कह दो, हँसे जग ख़ूब हम पर,
हँस रही यदि सृष्टि-सारी।
संबंध ही क्या जगत से,
जब हैं निराले हम उसी से ?

अब चल पड़ो उस स्थान के प्रति
जो निरापद-सा विदित है।
क्षितिज के उस पार ही
स्थल ठीक है ऐसे मिलन को ;
क्या मेल का करते प्रदर्शन
चाहनेवाले मिलन के ?
तुझसे रहित इस प्राण तक को
एक दिन खोना पड़ेगा !
इस विरह की आग में
कब तक प्रिये ! जलना पड़ेगा ?

गोविंदराव मराठे

× × ×

३. उत्सर्ग

सुधांशु अपनी शीतल ज्योत्स्ना लिए प्रेम-गद्गद हृदय, बड़ी-बड़ी उमंगों, साधों और अरमानों के साथ रात्रि-विहार को आकाश-मंडल पर प्रेम-मद-माती चाल से चले । आज वह अपनी सहचरी कुमुद से अपने अपराधों की क्षमा माँग, अपने कठोर व्यवहारों को भूल, अपनी निष्ठुरता, अपने गर्व और अभिमान-भरे स्वभाव को तिलांजलि दे, अपनी प्रेयसी को अपने हृदयासन पर बिठा, अपने प्रेमोन्मत्त, प्रेम-उल्लसित हृदय से उस जन्म-जन्मांतर की दुखिया, अभागी का स्वागत कर, उसके अतीत काल के दग्ध हृदय को शीतल कर आज ही, क्षण-भर में ही, उसके भूत के सभी दुःखों का अंत कर, उसे चिर काल के लिये प्रेम-विभोर कर, उसके विरह तथा दुःखों का अंत कर, उसे अपनी प्रेममय गोद में ले, उस जगत् को प्रस्थान करने का दृढ़ निश्चय कर अपनी कुमुद से मिलने को बढ़े चले आ रहे हैं, जहाँ बाह्य जगत् की कोई पीड़ा उनके अनंत मिलन में बाधा न देगी । वह आज कुमुद के समस्त दुःखों को भुला उसे चिर शांति प्रदान करेंगे।

कितने उल्लसित हृदय से वह बढ़े चले आ रहे थे—कैसी मदमाती चाल, कैसा प्रसन्न मुख, कैसी प्रभा वह साथ में लिए थे । क्या कुमुद भी आज सब कुछ भूल अपने उपास्य देव का स्वागत करेगी । क्या आज वह अपना मान छोड़ सकेगी । हाँ, उसे छोड़ना होगा । सब कुछ भूलकर आज उसे अपने इष्ट के चरणों पर लोटकर अपने व्यथित, तृषित और चिर दुःखी हृदय की कसक मिटा ही देनी होगी ।

सुधांशु अपनी शीतल किरणों का प्रसार करते हुए बढ़ते ही आ रहे हैं, परंतु उन्होंने भविष्य की गोद में खेलते हुए अपने भाग्य पर क्षण-भर को भी ध्यान न दिया । वह अपनी दिव्य प्रभा और अद्वितीय छटा लिए मस्त हाथी की भाँति झूमते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले ही आ रहे हैं। अपनी आशा-लता अपनी शक्ति के पास पहुँचते-पहुँचते ही उनके ऊपर वज्रपात हुआ! वह अपने आपको सँभाल न पाए, उनकी मुख-ज्योति मलिन हो गई, उनकी साध

कुमारी कमला बी० ए०

पर पानी पड़ गया, उनके अरमानों में आग लग गई, उनका सोने का संसार राख हो गया। कुमुद मुरझा चुकी थी, वह दिनकर की भीषण ज्वाला तथा उसके प्रचंड क्रोध की उसाँसों को सह न सकी, उसकी कोमल पँखुड़ियाँ सूखकर झड़ चुकी थीं, उसका कोमल शरीर, उसकी विश्वमोहनी छवि, उसका सुंदर रूप धूलि-धूसरित हो चुका था, वह रूप न था, वह रंग न था, वह आभा न थी, वह जीवन न था, वह रक्त-रंजित, सुंदर मुख कुम्हला चुका था। बस, वहाँ शेष बचा था केवल उन रूखी-सूखी पँखुड़ियों का एक छोटा-सा समूह, और उस पर एक ही चाह, एक ही अरमान और एक ही साध की छाप थी, वह थी क्षमा।

सुधांशु यह वज्रपात न सह पाए—वह एक भयंकर चीत्कार कर एक बृहत् श्वेत चट्टान पर सिर पटककर रो ही तो दिए। उनके कुटुंबी तारागण वह धक्का न सह सके, वे टूटने लगे। पृथ्वी काँप उठी। आकाशमंडल तथा मृत्यु-लोक में अंधकार छा गया। गगनमंडल में विचरनेवाले रो पड़े! पृथ्वी जलमय हो चली।

हिमांशु चौंके। अपने लज्जित एवं दुख-भरे मुख-सहित आगे बढ़े, और झुककर अपनी धूलि-धूसरित कुमुद को उठा लिया। उसी बीच में दो बड़ी-बड़ी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छ, मोती की-सी बूँदें टपकीं, और उस अनंत जल-राशि में अनंत काल के लिये विलीन हो गईं। कुमुद ! कुमुद ! तेरी अंतिम साध पूरी हो गई। प्रकृति शांत और नीरव हो चुकी थी कि एकाएक सुदूर दिशा में पपीहा पुकार उठा—पी कहाँ ! पी कहाँ !!

(कुमारी) कमला (बी० ए०)

× × ×

४. होलकर-राज्य के अस्पताल

सेंट्रल इंडिया में सबसे प्रथम होलकर-राज्य में ही आधुनिक ढंग के अस्पताल खोले गए थे। प्रारंभ में इंदौर शहर तथा कुछ ज़िलों के प्रमुख नगरों में अस्पतालों की स्थापना की गई थी। बाद में जैसे-जैसे आवश्यकता बढ़ती गई, वैसे-वैसे नए अस्पतालों की स्थापना होती रही। गत वर्ष राज्य की ओर से प्रचलित अस्पतालों तथा दवाख़ानों की संख्या ८१ थी, जिसमें राऊ का सेनिटोरियम तथा इंदौर के कुष्ठियों और पागलों के अस्पताल भी शामिल हैं। कुल रोगियों की संख्या ८ लाख ४ हज़ार २५१ थी, जिसमें से ११ हज़ार ५ सौ ६६ रोगी अस्पतालों में भरती हुए, और बाक़ी ७ लाख ८२ हज़ार ६४२ रोगियों का बाहर से इलाज किया गया।

इंदौर का सबसे मुख्य अस्पताल महाराजा तुकोजीराव-हास्पिटल है, जिसकी स्थापना ३४ वर्ष पहले हुई थी। इस अस्पताल का सारा व्यय होलकर-सरकार उठाती है। कार्य की दृष्टि से देश-भर के किसी भी उच्च कोटि के अस्पताल से इसकी तुलना की जा सकती है। इसके भवन पुराने ढंग के और दूर तक फैले हुए बने हैं। अब, प्रायः २५ लाख रुपए व्यय करके, आधुनिक ढंग के नए भवन बनाने की योजना पर सरकार विशेष रूप से विचार कर रही है। दो वर्ष से इसके सर्जिकल-विभाग में एक ख़ास सर्जन की नियुक्ति हो जाने से इंस्पेक्टर जनरल ऑफ़् हास्पिटल्स को अस्पतालों के निरीक्षण तथा उन्हें अधिक उपयोगी बनाने की योजनाओं पर विचार करने का पर्याप्त अवसर मिलता है। गत वर्ष महाराजा तुकोजीराव-हास्पिटल में १ लाख ८ हज़ार से अधिक बाहर के रोगियों का उपचार किया गया, जहाँ इससे पूर्व केवल ६८ हज़ार ६६५ रोगी ही अस्पताल में आए थे। परंतु भरती होकर दवा करानेवाले रोगियों की संख्या पिछले साल कुछ कम रही। इसका मुख्य कारण यह था कि इस वर्ष रोगियों के प्रवेश पर कड़ी निगरानी रक्खी गई, और वे ही लोग अस्पताल में भरती किए गए, जो वास्तव में बहुत अधिक बीमार थे। ऐसे लोगों को प्रविष्ट नहीं किया गया, जो अस्पताल की सुविधाएँ उठाने के लिये थोड़ी-सी बीमारी में ही भरती हो जाते थे, जिससे कभी-कभी, स्थान न रहने के कारण, भयंकर रोगी भी प्रवेश न हो पाते थे। डॉक्टरी सहायता के अतिरिक्त ग़रीब, मुहताज बीमारों को सब प्रकार की पेटेंट दवाइयाँ आदि भी बिलकुल मुफ़्त मिलती हैं। अस्पताल में कोई डॉक्टर किसी क़िस्म की फ़ीस नहीं ले सकता।

इस अस्पताल की लेबोरेटरी में पेचिश, तपेदिक़, मधुमेह आदि रोगों की परीक्षा तथा छूत के रोगों के तात्कालिक निदान का पूरा प्रबंध है। एक्स-रे और बिजली के इलाज का प्रयोग भी लगातार बढ़ रहा है। बाहर के सभी रोगियों को जब-जब आवश्यकता हो, इन विभागों के उपयोग की पूरी स्वतंत्रता है। ग़रीब बीमारों को ये सुविधाएँ भी मुफ़्त मिलती हैं।

महाराजा तुकोजीराव-हास्पिटल के अतिरिक्त रेज़ीडेंसी सर्जन के अधीन इंदौर में एक दूसरा बड़ा अस्पताल है। इसके साथ एक मेडिकल स्कूल भी है। इस अस्पताल का व्यय कई राज्यों की सहायता से चलता है। यह किंग एडवर्ड मेडिकल हास्पिटल कहलाता है। कैनेडियन मिशन की ओर से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अस्पताल है। इसके सिवा सार्वजनिक सहायता से चलनेवाले कितने ही उच्च श्रेणी के अस्पताल तथा मेटर्निटो होम्स (ज़च्चा-बच्चा-गृह) हैं। दो प्रथम श्रेणी के नर्सिंग होम्स (शुश्रूषा-गृह) भी हैं। इंदौर के कितने ही धनी-मानी नागरिक अस्पतालों की उदारता से सहायता करते हैं, जिनमें रावराजा सर सरूपचंद-हुकुमचंद तथा रायबहादुर श्रीकन्हैयालाल भंडारी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कल्याणमल-नर्सिंग होम की व्यवस्था और सेवा का प्रबंध इसी दृष्टि से आदर्श कहा जा सकता है।

स्कूलों में पढ़नेवाले बालकों में एनीमिया, तपेदिक़ तथा आँख, दाँत और गले के रोगों को पैदा होने तथा बढ़ने से रोकने के लिये मेडिकल इंस्पेक्टर विद्यार्थियों की समय-समय पर डॉक्टरी परीक्षा किया करते और आवश्यकतानुसार रोगी बालकों के इलाज के लिये इंस्पेक्टर जनरल ऑफ़् हास्पिटल्स को सूचित किया करते हैं। प्रायः बालकों के माता-पिता या संरक्षक इन इंस्पेक्टरों के आदेशों का पालन नहीं करते, इसलिये ऐसे नियम बनाने पर विचार हो रहा है, जिससे उन्हें इसके लिये बाध्य किया जा सके।

योग्य नर्सों को यहाँ के अस्पतालों में कार्य करने के लिये आकर्षित करने की दृष्टि से एक नए अस्पताल की स्थापना पर विचार किया जा रहा है, जिसके साथ एक नर्स-होस्टल भी रहेगा। योग्य और शिक्षित कंपाउन्डरों की कमी प्रायः सब जगह अनुभव की जाती है। होलकर-राज्य में योग्य कंपाउन्डरों की समस्या पर भी सरकार विचार कर रही है। एप्रिल, १९३६ के क़ानून के अनुसार सार्वजनिक हित की दृष्टि से इंदौर में डॉक्टरी, यूनानी या वैद्यक चिकित्सा करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता का प्रमाण देकर रजिस्ट्री कराना आवश्यक है।

इंदौर के अतिरिक्त होलकर-राज्य के प्रत्येक ज़िले में एक योग्य अनुभवी मेडिकल ऑफ़िसर रहता है, जो हर प्रकार के बड़े ऑपरेशन और चीर-फाड़ का काम बड़ी होशियारी से कर सकता है। स्थान-स्थान में कितनी ही चलती-फिरती डिस्पेंसरियाँ भी काम कर रही हैं, और उनका उपयोग लगातार बढ़ रहा है। इस प्रकार जो लोग महाराज तुकोजीराव-अस्पताल तक आने का व्यय नहीं उठा सकते, या जिन्हें तुरंत डॉक्टरी सहायता की आवश्यकता है, वे भी अपने ज़िले के मेडिकल ऑफ़िसर से लाभ उठा सकते हैं।

एक इंदौर-प्रेमी

× × ×

५. अपरिचित

ओ सपनों में आनेवाले!
मेरे सपनों में रँग भरकर
आँसू में घुल जानेवाले!
तुम राह भूल आए उस दिन,
मेरे नयनों ने पहचाना;
श्वासें सुरभित होकर निकलीं,
इन प्राणों ने अपना जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वासों में भरकर स्वर-लहरी इन प्राणों में गानेवाले !
ओ सपनों में आनेवाले !

क्षण-भर के सुख के सपने में
मैं निज तन, अपनापन भूली ;
सुरभित समीर के झोंके में
मैं जीवन का झूला झूली ।
किस मधु क्षण में जीवन कण-कण में मधु बरसा जानेवाले !
ओ सपनों में आनेवाले !

अधिकार समझ भूलेपन ने
अनजाने में ही प्यार किया ;
अधिकार मिला या भीख मिली—
इसका भी नहीं विचार किया ।
भ्रम-भरे प्यार के सपनों में ओ मुझको उलझानेवाले !
ओ सपनों में आनेवाले !
उच्छ्वासों में हँसनेवाले, निःश्वासों में गानेवाले !
घन बनकर मन में, नयनों में आँसू बनकर छानेवाले !
पीड़ा दे-देकर पीड़ित को ख़ुद भी पीड़ा पानेवाले !
ओ सपनों में आनेवाले !

जब सपनों के छाले फूटे,
थे आँसू नयनों से जारी ;
क्षण-भर में ही इन नयनों ने
खो दीं जीवन-निधियाँ सारी ।
मेरे सपनों की सीमा पर आँसू बन मुसकानेवाले !
ओ सपनों में आनेवाले !

(कुमारी) राज्यश्री (बी० ए०)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. श्री १०८ ब्रह्मर्षि चंचल झा

"सकल पदारथ एहि जग माहीं ;
कर्म-हीन नर पावत नाहीं !"

गोसाईंजी की यह चौपाई उस समय कैसी

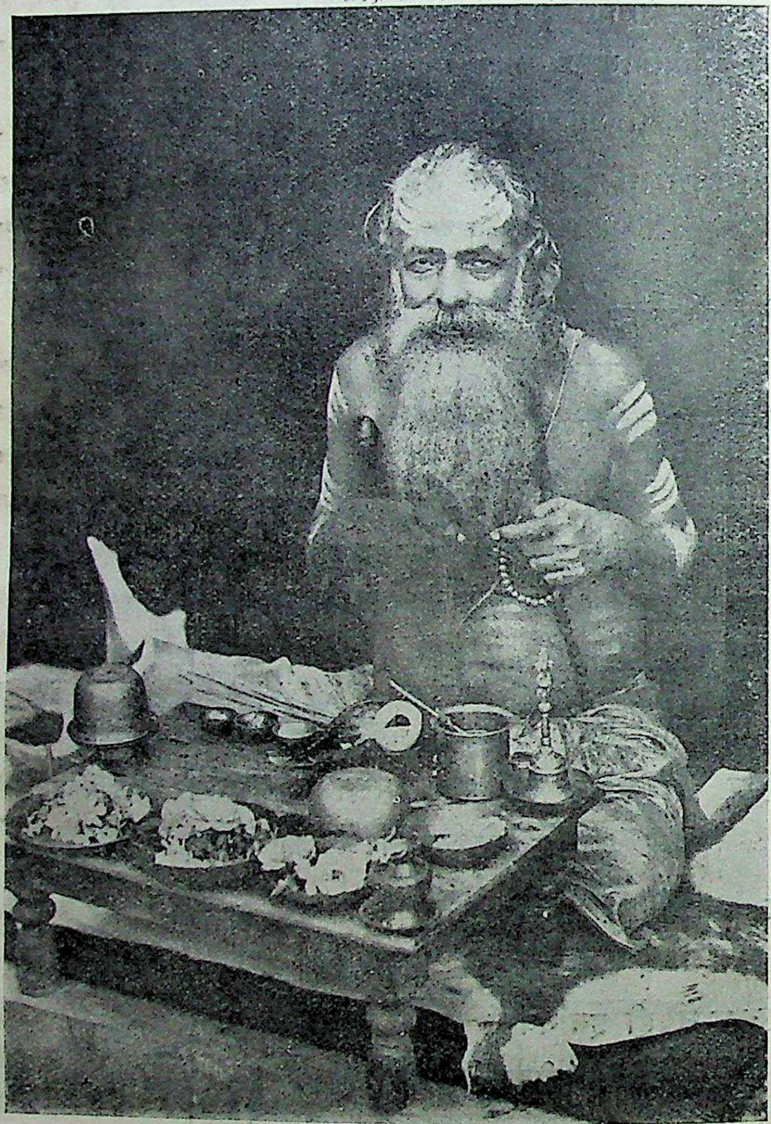

श्री १०८ ब्रह्मर्षि चंचल झा

ठीक बैठती है, जब हम अपने पास ही रक्खी हुई किसी वस्तु से वंचित रह जाते हैं। कभी-कभी तो हम उसे देखते हैं, उसके पास आते-जाते हैं, फिर भी उसे नहीं पाते, क्योंकि वह हमारे भाग्य से परे है। आज हम आपसे एक ऐसे महात्मा का परिचय कराना चाहते हैं, जो हमारे बीच लगभग पचीस वर्षों से हैं, फिर भी पास-पड़ोस के लोग भी उनसे पूर्णतया परिचित नहीं; क्योंकि वह संसार को अपना परिचय देना ही नहीं चाहते—वह नाम-कमाऊ पूत बनना नहीं चाहते। उन्हें नाम की इच्छा नहीं, वरन् इच्छा है अपने काम की। वह संसार के कोलाहल से दूर, बहुत दूर भागते हैं। माया उनसे भागती है, वह माया से भागते हैं।

ब्रह्मर्षि चंचल झा का जन्म दरभंगा-ज़िले के हरिपुर गाँव में हुआ था। आप बचपन से ही ईश्वर-भक्त और शक्ति के उपासक हैं। एक बार, अठारह साल की अवस्था में, आपको शूल का दर्द उठा। पेट फूल आया। लगभग तीन महीने तक बीमार रहे। सब दवाएँ बेकार हो रही थीं। बड़े कष्ट में थे। एक दिन शाम को एक महाशय आपके खाने के लिये सात बरियाँ ले आए। इन महाशय से चंचलजी स्वभावतः कुछ घृणा करते थे, फिर भी उनकी बरियों को सादर स्वीकार किया। जब खाने बैठे, आपको ख़याल आया, अभी दुर्गा-पाठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। माता से कहा—"मा! अभी दुर्गा-पाठ करना है।" माताजी ने कहा—"खा लो, बेटा! जी अच्छा नहीं है। कल दुर्गा-पाठ कर लेना।" आपने निवेदन किया—"नहीं मा! कृपया थाल हटाकर पाठ की सामग्री ला दो।" मा को बाल-हठ के सामने हार खानी पड़ी। उसी समय पाठ का सामान लाया गया। दुर्गा-कवच का प्रेम से पाठ करने के बाद थाल मँगाकर आपने भोजन किया और साथ ही सातो बरियाँ भी खा गए। रात को बहुत प्यास मालूम हुई। आपने पानी पीना शुरू किया। पानी पीते जायँ, प्यास बढ़ती जाय। धीरे-धीरे रात-भर में आप लगभग एक घड़ा पानी पी गए। सुबह मालूम हुआ, जैसे कोई आपसे कह रहा है—"तुमने जो बरियाँ रात में खाई हैं, उनमें ज़हर मिला हुआ था।" थोड़ी देर बाद आपको दस्त आने लगे। कई दस्त आए, पेट साफ़ हो गया। छ-सात दिन में आप भले-चंगे हो गए। इतने दिन की बीमारी उस बरियों में मिले ज़हर से अच्छी हो गई।

"जाको राखे साइयाँ, मारि न सकिहै कोइ।"

संवत् १९६६ में आप लखनऊ पधारे। यहाँ आकर कुछ दिन आप अपने यजमानों का काम करते रहे। कुंडली देखकर उसका फल बतलाते थे, वह भी इस शर्त पर कि यदि आपकी बतलाई हुई बात ग़लत साबित हो, तो पोथी-पत्रा गोमती में फेक देंगे, और यह काम भी छोड़ देंगे। इस प्रकार सच्ची लगन से काम करने के कारण आपको बहुत लोग मानने लगे। विना किसी से माँगे ही आपके पास इतना सामान पहुँच जाता, जो आपकी आवश्यकता से बहुत अधिक होता। यजमानों से प्राप्त अन्न, वस्त्रादि के ढेर देखकर एक दिन आपके मन में विचार आया—बैठे-बिठाए इतना सब सामान हमारे पास क्यों पहुँच जाता है। दर-दर घूमने पर भी बहुतों का क्यों नहीं पेट भरता। फिर ख़याल आया—कदाचित् यह हमारे पूर्व-जन्म के कर्मों का फल हो। फिर सोचा—हमने जो कुछ अगले जन्म में किया, उसका फल पा रहा हूँ। इस जन्म में मैंने कौन-सी कमाई की, जो हमारे दूसरे जन्म में काम आवेगी? मेरा यह जीवन तो पूर्व-संचित कमाई का भोग करते ही बीत रहा है। फिर क्या होगा?

ये ही सब विचार हैं, जिन्होंने श्रीचंचलजी को संसार से विरक्त बनाया, अगले जन्म के वास्ते कुछ करने को बाध्य किया। उसी समय आपने प्रतिज्ञा की—"कार्यं साधयिष्यामि, शरीरं पातयिष्यामि।"

इसके बाद आपने यजमानी छोड़कर गायत्री-जप का अनुष्ठान आरंभ किया। नित्य तीन बजे सुबह उठ जाते। नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर ग्वाले के घर से स्वयं दूध लाते और ६ बजते-बजते आप जप करने बैठ जाते थे। यह जप दो बजे समाप्त होता था। गायत्री-जप का अनुष्ठान चौबीस लाख का होता है, और इसे एक बार समाप्त करने में लगभग तीन साल का समय लग जाता है। विरले ही ऐसे हैं, जो अपने जीवन में एक बार भी इस अनुष्ठान को पूरा कर पाते हैं, लेकिन हमारे ब्रह्मर्षिजी इसे पाँच बार समाप्त कर चुके हैं। अब छठी बार आरंभ किया है।

पहलेपहल जब आपने इसे आरंभ किया था, तो हेमंत का चावल भोजन करते थे। लेकिन दूसरी बार के अनुष्ठान में आपने अन्न खाना बिलकुल छोड़ दिया, केवल डेढ़ सेर दूध ले आते। सेर-भर सुबह और आध सेर शाम को पीते, और चुपचाप गायत्री-जप में मग्न रहते। इस बार डेढ़ सेर दूध पर ही लगभग तीन साल व्यतीत करने से आप बहुत कमज़ोर हो गए, शक्ति क्षीण हो गई, और वृद्धावस्था ने पूर्णतया अधिकार जमा लिया। फिर भी आपने हिम्मत न हारी, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी बार फिर अनुष्ठान आरंभ किया। अब डेढ़ सेर दूध के साथ आप एक छटाँक कूटू का आटा भी नित्य भोजन करने लगे। साथ ही महीने-भर में तीन सेर शकर का भी सेवन करते थे। आपके भोजन का यही नियम अब तक है, जब आप छठी बार यह अनुष्ठान कर रहे हैं।

जिस प्रकार आप ईश्वर-भक्त हैं, उसी प्रकार परम पिता परमात्मा भी सदा आपका सहायक रहा है। इसका भी एक उदाहरण दे देना अनुचित न होगा। आपके हरिपुर गाँव में आप ही का बनवाया एक मंदिर और एक फुलवाड़ी है। अभी हाल ही के बड़े भूकंप को पाठक भूले न होंगे, जिसने तमाम बिहार-प्रांत का नाश कर दिया। इसी भूकंप ने दरभंगा के राजमहलों को भी खँडहर बना दिया। ब्रह्मर्षिजी के घर, मंदिर और फुलवाड़ी के चारो तरफ़ की भूमि फट गई थी, मकान गिर गए थे, लेकिन इन महात्माजी का कुछ नुक़सान नहीं हुआ। सब ज्यों-का-त्यों, मानो कुछ हुआ ही नहीं। उस समय आप लखनऊ में थे। यहाँ भी वही बात हुई। जिस घर में आप रहते हैं, बहुत पुराना, जर्जर हो गया है, दीवारें कमज़ोर हैं। भूकंप ने इस घर में चारो तरफ़ के मकानों को हिला दिया, लेकिन बेचारा इन लोनी लगी दीवारों का कुछ भी न कर सका, क्योंकि एक तपस्वी, एक बालक का हाथ पकड़े, बीच आँगन में खड़ा तमाशा देख रहा था। यह बालक किसी दूसरे घर का था, जो भूकंप के समय ब्रह्मर्षिजी के पास पहुँच गया था।

आपकी अवस्था इस समय लगभग सत्तर वर्ष की है। आजकल भी आप बुध और रविवार के दिन जन्म-कुंडली देखते और सच्चा फल बतलाते हैं। दिन में केवल एक घंटे, तीन से चार बजे के बीच, आप मिल सकते हैं।

उमाशंकरसिंह (प्रकाशक 'कला')

× × ×

७. हमारा अपना पथ

(१)

चलता-चलता मैं थका प्रिये,
पर पथ का मिलता छोर नहीं;
तुम बढ़ी चली जातीं आगे,
जाना न निकल उस ओर कहीं!

(२)

यद्यपि उस ओर प्रकाश-पुंज
हैं देख रहे दुनियावाले;
लेकिन प्रकाश वह तिमिर-भरा
हम दोनो को होगा बाले!

(३)

वह पथ बिलकुल अनजाना है,
उसके हम राही सदा रहे;
यद्यपि उसने दुख दिया बहुत,
फिर भी हम उस पर फ़िदा रहे।

(४)

देखो, पैरों में छाले हैं,
आओ, थोड़ा आराम करें;
फिर कितना ही लंबा पथ हो,
तय कर हम दोनो नाम करें।

(५)

मैंने दुख से घबराकर ही
है छोर नहीं, कह दिया प्रिये!
लेकिन मेरी पीड़ा भागी,
जब तुमने यों हँस दिया प्रिये!

(६)

अब चले चलो गलबाँह डाल,
इस पथ पर उसकी चाह नहीं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटें बाधाओं के पर्वत
सिर पर, हमको परवाह नहीं।

(७)

उस पथ में बिखरे हुए फूल
दुनियावालों को ललचाते ;
इस पथ के काँटे देख पथिक
हैं बड़ी दूर से फिर जाते ।

(८)

हमको तो काँटे भाते हैं,
फूलों से हमको प्यार नहीं ;
वे सुमन सभी हैं सार-हीन,
पर काँटे हैं निस्सार नहीं ।

(९)

हम काँटों पर प्रतिदिन चलते
कितने .खुशहाल नजर आते ;
फूलों पर चलनेवाले तो
देखो, कैसे रोते जाते ।

(१०)

फूलों का मार्ग छोड़कर प्रिय,
काँटों का हमने अपनाया ;
आशा की जगमग ज्योति जगी,
देखो सरले, वह क्या आया ?

(११)

जय - जय के नारे लगे हुए,
फूलों की वर्षा होती है ;
अब बनी सफलता मेरी है,
वाले, असफलता रोती है।

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

८. नाज़ियों का शत्रु

कितने आश्चर्य की बात है कि जिस हिटलर के कारण आज समस्त विश्व की शांति नष्ट हुआ चाहती है, उसी हिटलर की मनःशांति एक साधारण मनुष्य नष्ट करे। इतना ही नहीं, स्वयं हिटलर को उस मनुष्य से भय है। भय इस बात का कि कहीं उस मनुष्य के तत्त्वों के प्रचार के कारण नाज़ी-राज्य समाप्त न हो जाय। इसी भय से हिटलर ने उस व्यक्ति को गत दो वर्षों से नज़रबंद क़ैदी बना रक्खा है। वह व्यक्ति है मि० मारटिन निमोयलर।

वास्तव में मि० मारटिन निमोयलर ने कोई अपराध नहीं किया। जर्मनी की वर्तमान परिस्थिति में ईसाई-धर्म की स्वतंत्र-प्रियता के तत्त्वों का प्रचार करना पाप और राजद्रोह समझा जाता है, और इसी स्वतंत्र-प्रियता के तत्त्वों का प्रचार करने के कारण मि० मारटिन जेल में पड़े हैं। परंतु मि० मारटिन पर इस क़ैद का कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता। वह अपने तत्त्वों पर पहले ही की भाँति दृढ़ हैं। जेल के दुःखित वातावरण में भी वह शांत-चित्त एवं प्रसन्न-मुख हैं। नाज़ी-राज्य के पशुवत् व्यवहार से पीड़ित क़ैदी, जेल के कर्मचारी और अधिकारी भी उनकी ओर एक ही भाव से देखते हैं। उनकी इस दृष्टि में सहानुभूति और मित्रता का भाव भरा हुआ है। आज से २५ वर्ष पूर्व मि० मारटिन जर्मनी के एक जंगी जहाज़ पर काम करते थे। उस समय ब्रिटिश जहाज़ी बेड़ों के हमलों से डरने के कारण जर्मन-जहाज़ बंदरगाहों में, तोपख़ाने की संरक्षकता में, रक्खे जाते थे। इस कारण गत महायुद्ध में प्रथम मि० मारटिन को युद्ध का यथार्थ स्वरूप न दिखाई दिया। थोड़े ही दिनों में उनकी नियुक्ति एक पनडुब्बी पर हुई। यहाँ उन्हें युद्ध का यथार्थ स्वरूप—क्रूरता, नृशंसता, मानव-जाति का संहार और हानि—दिखाई दिया। इस प्रकार यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होते ही उन्हें युद्ध से घृणा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। उनके भीतर दैवी शक्ति का विकास हुआ, और उन्हें मालूम हुआ कि संसार की भलाई के लिये ईसाई-धर्म की शांति-प्रियता के तत्त्वों का प्रचार करना आवश्यक है।

नाविक विभाग से अवकाश पाते ही उन्होंने हिटलर के मंत्रिमंडल में प्रवेश किया। इस समय तक उन्हें विश्वास था कि हिटलर धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करेगा, परंतु जैसे ही हिटलर ने प्रभु ईसा को 'आदर्श नाज़ी' के रूप में चित्रित करना चाहा, मि० मारटिन निमोयलर ने उसके विरुद्ध आवाज़ उठाई।

हिटलर से निराश होने पर मि० मारटिन ने अपने तत्त्वों का प्रचार करना आरंभ कर दिया। इस काम में उन्हें अच्छी सफलता मिली। हज़ारों और लाखों की गिनती में जर्मन जनता उनका उपदेश सुनने के लिये लालायित रहने लगी। कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट-पंथी भी उनका उपदेश बड़े चाव से सुनते तथा ग्रहण करते थे। उनके प्रचार-कार्य की सफलता देख नाज़ी सरकार चिंतित हो उठी। मि० मारटिन को चेतावनी दी गई, उपदेश देना बंद करिए अथवा परिणाम के लिये तैयार रहिए। इस चेतावनी का मि० मारटिन पर कोई असर न हुआ। अंत में एक दिन संध्या समय, जब मि० मारटिन उपदेश का कार्य समाप्त कर घर लौटे ही थे, पुलिस की चार लारियाँ उनके द्वार पर रुकीं। शीघ्र ही पुलिस के पंद्रह जवानों ने उनके घर में प्रवेश किया। सारे घर की तलाशी ली गई, और सब सामान ज़ब्त करके तथा मि० मारटिन को लेकर पुलिस जेल की ओर चली गई। यह घटना जुलाई, १९३७ को हुई। उस समय से लेकर फ़रवरी, १९३८ तक बिना किसी कारवाई के उन्हें जेल में रक्खा गया। कई बार इस बात की घोषणा की गई कि शीघ्र ही मि० मारटिन के विरुद्ध मुक़दमा दायर किया जायगा, परंतु यह सब व्यर्थ था। पूरे आठ महीने तक वह जेल में पड़े रहे। इस बीच जर्मन सरकार मि० मारटिन के विरुद्ध गवाही लाने के प्रयत्न में लगी रही। उन पर राजद्रोही और धोखेबाज़ होने का अभियोग लगाया गया। अंत में जब मुक़दमा दायर करने का समय आया, आम जनता को कोर्ट में प्रवेश न दिया गया। परंतु इससे क्या? उन पर अभियोग साबित न हो सका। मि० मारटिन की ओर से प्रतिष्ठित पुरुषों, राज्य के अधिकारियों तथा नाविक विभाग के उच्च अधिकारियों ने गवाहियाँ दीं। न्यायाधीशों को मानना पड़ा कि मि० मारटिन पर उक्त अभियोग साबित नहीं हो सका। केवल चर्च के कुछ नियमों की अवहेलना करने के अपराध में उन्हें सात मास की क़ैद दी गई। चूँकि वह गत ८ मास से क़ैद में ही थे, उन्हें शीघ्र ही रिहा कर दिया गया। उनकी रिहाई का समाचार मिलते ही जनता में आनंद छा गया। परंतु यह आनंदी वातावरण केवल दो-चार पल-भर का ही था। कोर्ट से बाहर निकलते ही जर्मन-ख़ुफ़िया पुलिस ने उन्हें फिर गिरफ़्तार कर लिया, और बिना किसी अपराध के जेल में ठूँस दिया।

आज से दो वर्ष पूर्व मि० मारटिन निमोयलर सर्व-प्रथम पकड़े गए थे। उस समय से लेकर अब तक वह बिना किसी अपराध के जेल में पड़े हैं। नाज़ी सरकार की प्रचंड सशस्त्र शक्ति भी उनमें कोई परिवर्तन न कर सकी, प्रत्युत नाज़ी सरकार को भय है कि उनके कारण नाज़ी साम्राज्य का स्वप्न स्वप्नवत् न हो जाय।

वासुदेव गणेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

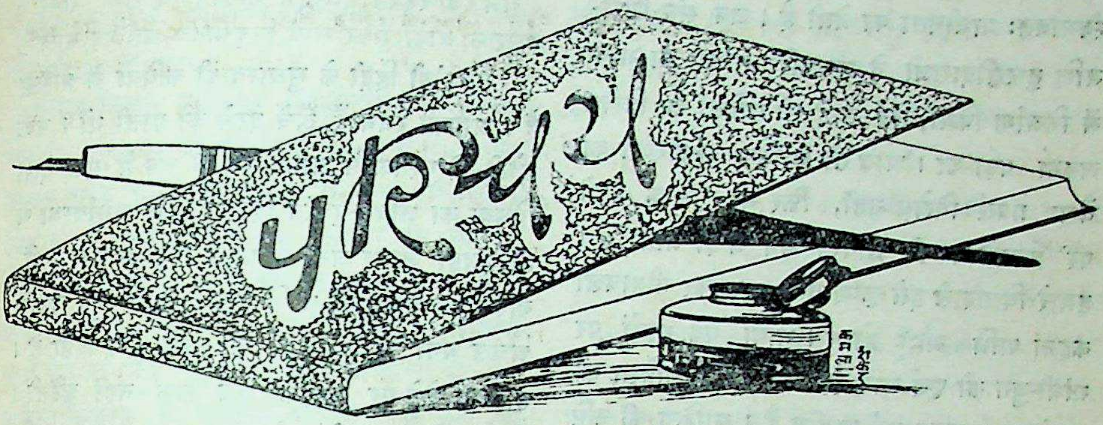

आनंदमठ—मूल-लेखक, स्वर्गीय श्रीवंकिमचंद्र चटर्जी; अनुवादक, श्रीकृष्णदत्त भट्ट; प्रकाशक, पुस्तक-भवन, बनारस सिटी ; मूल्य १)

आनंदमठ के लेखक श्रीवंकिम बाबू को कौन नहीं जानता। आनंदमठ उनकी एक अमर रचना है। हिंदी में भट्टजी ने इसका अनुवाद बहुत सुंदर किया है। मैंने इस पुस्तक के और भी अनुवाद देखे हैं। उन सबमें यह अनुवाद ज़्यादा अच्छा हुआ है। आशा है, पुस्तक प्रत्येक साहित्यिक को प्रिय लगेगी।

× × ×

विक्रमोर्वशीय नाटक—मूल-लेखक, महाकवि कालिदास; अनुवादक, पं० चंद्रकांत पाठक काव्यतीर्थ; प्रकाशक, पुस्तक-भवन, बनारस सिटी ; मूल्य ॥=)

महाकवि कालिदास का यह नाटक अत्यंत सुंदर है। उनकी इस पुस्तक का अनुवाद लेखक ने बड़ी सरल भाषा में किया है। पाठकजी की यह पुस्तक सहृदय पाठकों को पसंद आएगी। छपाई बहुत सुंदर हुई है।

× × ×

आज का सवाल—लेखक, श्री.चंद्रमाराय शर्मा; प्रकाशक, वाणी-मंदिर, छपरा ; मूल्य ॥=)

इस पुस्तक में बालोपयोगी छोटे-छोटे निबंध दिए गए हैं। इसमें धर्म और नीति के साथ सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का बड़े सुंदर ढंग से निरूपण किया गया है। इसमें इस प्रकार के ४३ निबंध हैं। पुस्तक सामाजिक बाल-साहित्य के एक विशेष अभाव की पूर्ति है। बालकों तक यह पुस्तक अवश्य पहुँचनी चाहिए। शर्माजी ने ऐसी सुंदर पुस्तक लिखकर बालकों के हित के लिये एक परिश्रम का कार्य किया है। वह धन्यवाद के पात्र हैं!

× × ×

कृष्णगीत (एक मौलिक धर्मशास्त्र)—लेखक, श्रीदरबारीलाल 'सत्यभक्त' ; प्रकाशक, सत्याश्रम, वर्धा ; मूल्य ।||)

उक्त पुस्तक, जैसा मुख-पृष्ठ पर लिखा है, धर्म-विवेचनार्थ एक मौलिक रचना है। यह शास्त्र है अथवा नहीं, इस पचड़े में न पड़कर हमें यह देखना है कि इसकी उपादेयता क्या है? भूमिकाकार का कथन है—"प्रस्तुत पुस्तक में......(गीता के) उस कर्म-योग से देश को एक ऐसे नूतन रूप से प्रतिपादित किया है, जो उसके लिये पूर्ण संगत होने के साथ-साथ वर्तमान सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं के लिये भी सुंदर हल बन गया है।" इसमें तो संदेह नहीं कि पुस्तक समयानुकूल है, पर गीता के समूचे प्लाट को एकबारगी पलट देना कुछ खटकता है। मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावतः प्राचीनता का प्रेमी है। जब संत-शिरोमणि तुलसीदासजी ने रामचरित-मानस का भाषा में निर्माण किया, तब उन्हें भी पंडितों का विरोध सहना पड़ा था। आज तो धार्मिक संकीर्णता का वैसा प्रबल विरोध नहीं, फिर भी पुस्तक पढ़ने पर अटपटेपन की भावना मन में हो जाती है। हमारे विचार से इसे कृष्णगीता न कहकर गीतावली कहना अधिक मौज़ूँ होगा। भाषा एवं भावों पर गांधी-युग की पूर्ण छाप है। सत्य और अहिंसा का सामंजस्य अद्भुत एवं पठनीय है। साहित्य की दृष्टि से सत्यभक्तजी का यह प्रयास सुंदर है। स्कूली पढ़ाई में धर्म-चर्चा का अत्यंत अभाव है। अच्छा हो, यदि पाठ्य-विधि में इसका समावेश हो।

× × ×

सारिका (कविताओं का संग्रह)—लेखक, कवि आनंदकुमार ; प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, प्रयाग ; मूल्य ॥)

इसके लेखक श्रीआनंदकुमार प्रकृति-उपासक होते हुए भी यथार्थवादी जान पड़ते हैं। अनुभूति की व्यंजना से ऊँची उड़ान न लेते हुए आपने सीधे, किंतु सुंदर शब्दों में हृदय को ज़रा गुदगुदाने का प्रयत्न किया है। रोने का यहाँ नाम नहीं। यहाँ तो—

"एक आशा-सी गगन में
झिलमिलाती तारिका है;
हृदय का संगीत लेकर
जा रही यह सारिका है।"

एक-एक पद पढ़ने पर विवश होकर कहना पड़ता है—

"सोचता हूँ, मैं यहाँ हूँ
या प्रकृति में खो गया हूँ।"

यह हिंदी का सौभाग्य है कि सत्साहित्य का पुनः निर्माण हो रहा है।

पुस्तक प्रत्येक काव्य-प्रेमी को पढ़नी चाहिए।

× × ×

गर्भ-रंडा-रहस्य—लेखक, श्रीनाथूराम शर्मा 'शंकर'; प्रकाशक, श्रीहरिशंकर शर्मा, हरदुआगंज, अलीगढ़; मूल्य =)

'शंकर'जी हिंदी के सुधारवादी कवियों में प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाएँ ऊँचे दरजे की होती थीं। उक्त छोटी-सी पुस्तक में आपने पद्य के रूप में एक ऐसी विधवा का जीवन-वृत्तांत दिया है, जो गर्भावस्था में ही ब्याही जाकर जन्म से पहले राँड़ हो गई, नहीं, बल्कि की जाती है, ताकि उसकी माता का सुहाग अचल बना रहे। स्वार्थ की कैसी परा काष्ठा है। हाथ में लेने पर पुस्तक अंत तक नहीं छूटती। विधवा-विवाह चाहे भले ही शास्त्र-सम्मत न हो, किंतु ऐसा कौन होगा, जिसका हृदय ऐसी भीषण अवस्था देखकर न पिघले। छपाई आदि सुंदर है। पुस्तक अत्यंत रोचक और सुंदर है। इसे एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

× × ×

श्रीभगवत् आनंदप्रकाश—लेखक और प्रकाशक, श्रीयुत भगवानदीन वर्मा, शार्टर रेलवे मेल सर्विस, मॉडल-हाउस, लखनऊ ; मूल्य ।)

इस छोटी-सी पुस्तक के लेखक हिंदी के एक प्रेमी सज्जन हैं। उन्होंने अपनी इस पुस्तक 'भगवत् आनंदप्रकाश' में आनंद का स्रोत बहाया है। इसमें सुंदर-सुंदर राग-रागिनियों की बड़ी ही चित्ताकर्षक चीज़ें दी हुई हैं। लेखक की ज़बान उर्दू-मिश्रित हिंदी है। इसलिये हिंदी से अधिक विज्ञ न होनेवाले लोग भी इस पुस्तक से काफ़ी आनंद उठा सकते हैं। इसमें सब गाने भक्ति, ज्ञान, वैराग्य तथा उपदेश से परिपूर्ण हैं। यह पुस्तक युवा, वृद्ध, नारी, सबके लिये हितकर है। पुस्तक के भजन बड़े सरल और सुंदर हैं। धार्मिक विचार रखनेवाले तो इस पुस्तक को बहुत ही पसंद करेंगे। प्रत्येक गृहस्थ को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक सर्वथा संग्रहणीय है।

'उमेश' वाजपेयी

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजीतसिंह (इतिहास)—लेखक, श्रीसीताराम कोहली; अनुवादक, श्रीरामचंद्र टंडन; प्रकाशक, हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग; मूल्य १)

पंजाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह अर्वाचीन भारतीय इतिहास की उन विभूतियों में से थे, जिनका उचित मूल्य अभी तक नहीं आँका गया। पंजाब की बिखरी हुई शतमुख सैनिक भावना को संगठित करके एक धारा में चलने तथा उसकी उद्दाम शक्ति को नियंत्रित करके उसे राष्ट्र-निर्माण के उपयुक्त बना देने का श्रेय महाराज रणजीतसिंह को ही है। अफ़ग़ानिस्तान में घुसकर भारतीय सीमांत को अभूतपूर्व सीमा तक विस्तृत कर देने का श्रेय भी इन्हीं को है। ऐसे महापुरुष के विषय में यद्यपि अभी तक हिंदी में दो-तीन छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुईं, किंतु अधिकार-पूर्ण खोज के बाद लिखी हुई केवल यह एक ही पुस्तक अभी तक प्रकाशित हुई है।

आज से तेरह वर्ष पहले, सन् १६२६ में, इंडियन हिस्टॉरिकल रेकर्ड्स कमीशन की बैठक में इस विषय पर एक अद्भुत खोज-पूर्ण लेख पढ़ा गया था। उस लेख को पढ़कर इच्छा हुई थी कि ऐसा खोज-पूर्ण लेख यदि और विस्तृत होता, तो रणजीतसिंह के विषय में बहुत कुछ नया ज्ञान प्राप्त हो सकता। बड़े हर्ष का विषय है कि गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, होशियारपुर के प्रिंसिपल श्रीकोहली महोदय ने इस इच्छा को पूर्ण कर दिया।

पुस्तक सुंदर ढंग से छपी और मूल्य में भी सस्ती है। इतिहास-प्रेमियों को अवश्य इस पुस्तक का संग्रह करना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक के अध्याय नं० १, २, ३, ६, ८ तथा ११ बहुत ही विद्वत्ता तथा खोज से लिखे गए हैं। जिस प्रकार मराठा-इतिहास पर श्रीगोविंद-सखाराम सर देसाई की लेखनी का अधिकार है, उसी प्रकार सिख-इतिहास पर श्रीयुत कोहलीजी ने अपना अधिकार कर लिया है। उनका अध्ययन और उनकी विवेचना वास्तव में गौरव करने योग्य है। इसी कारण 'रंजीतसिंह' इतना उपादेय और विद्वत्ता-पूर्ण हुआ है। अपने विषय पर हिंदी में वही एक पुस्तक है।

सुधींद्र वर्मा
(एम्० ए०, एल्-एल्० बी०)

× × ×

हिंदी-शार्टहैंड-मैनुअल—लेखक, ठाकुर सरजूप्रसाद-सिंह बी० कॉम०, एफ़्० आई० पी० एस्० एफ़्-एफ़्० टी० कॉम० (लंदन); मूल्य ३); पृष्ठ-संख्या २२४

प्रस्तुत पुस्तक पिटमैन सिस्टम पर लिखी गई है। इसमें पिटमैन शार्टहैंड की तरह छोटा वृत्त (Small circle), बड़ा वृत्त (Large circle); अंडाकार (Loops), अंकुश (Hooks), अधोगामी और उर्ध्वगामी 'ल', 'आर' और 'ह' (uses of upward and downward 'L', 'R' and 'H'), अर्धाक्षर (Halving Principles), द्विगुण प्रयोग (Doubling Principles), प्रारंभिक चिह्न (Prefixes), अंतिम चिह्न (Logogrammes), वाक्यांश (Phraseography), संक्षिप्त संकेत और Intersections का प्रयोग किया गया है। पुस्तक २१ अध्यायों में विभक्त की गई है। प्रत्येक अध्याय उदाहरण-सहित पूर्णरूपेण समझाया गया है। पुस्तक की भाषा सरल, सुबोध मुहावरेदार और सर्व-साधारण के समझने-योग्य है। पुस्तक के अंत में जो मुख्य-मुख्य व्यक्तियों के, मुख्य-मुख्य शहरों के तथा मुख्य-मुख्य अख़बारों के नाम दिए गए हैं, वे विद्यार्थियों के लिये अत्यंत लाभदायक साबित होंगे। वास्तव में यह पुस्तक विद्यार्थियों के बड़े काम की है। अँगरेज़ी पिटमैन-शार्टहैंड जानने-वाले इस पुस्तक के अध्ययन से बहुत शीघ्र हिंदी-रिपोर्टर हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ठाकुर साहब इस विषय के बड़े ही अनुभवी विद्वान् हैं। वह लगभग २० या २५ साल से उपर्युक्त विषय की, हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी, तीनो भाषाओं में विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं। उन्होंने बहुत-से विद्यार्थियों को क़ाबिल बनाया है। वह विद्यार्थियों की रुचि के अच्छे पारखी हैं। हम ऐसी अच्छी पुस्तक लिखने के लिये ठाकुर साहब को बधाई देते हैं! आशा है, इस पुस्तक का काफ़ी प्रचार तथा आदर होगा।

गंगाप्रसाद 'कौशल'

× × ×

सतयुग (मासिक पत्र)—संपादक, श्रीसत्यभक्त; प्रकाशक, सतयुग-आश्रम, बहादुरगंज, इलाहाबाद; वार्षिक मूल्य २।); एक अंक का); पुस्तक-साइज़, ८० सफ़े, सचित्र।

प्रस्तुत मासिक पत्र की प्रथम संख्या हमारे सामने है। इसके नाम से हमें ऐसा मालूम पड़ा कि अनेक आडंबरों में फँसे हिंदू-समाज को अनेक भ्रांतियों में फँसाने का यह नया प्रयत्न है। इन्हीं संदेहों से युक्त हमने इसे आदि से अंत तक पढ़ डाला। पढ़ने के बाद हमारा भ्रम दूर हो गया। तब मालूम हुआ कि यह हिंदू-समाज के अंध-विश्वास और अंट-शंट विश्वासों को विज्ञान के नए आविष्कारों के आधार पर सही-झूठ साबित करके उन्हें ठीक रास्ते का निर्देश करेगा। इसे पढ़ने के बाद हमारा ख़याल हो गया है कि जितना उपकार इस पत्र द्वारा हिंदुओं का किया जा सकता है, उतना और किसी उपाय से नहीं। अभी तक हिंदुओं के अंध-विश्वासों को दूर करने के लिये भारी प्रयत्न किए गए हैं, पर उनका प्रभाव थोड़े-से इने-गिने पढ़े-लिखे व्यक्तियों तक सीमित रहा है। 'सतयुग' द्वारा इस समाज पर अधिक असर हो सकेगा; क्योंकि यह उनमें मिलकर उनके ही अंध-विश्वासों आदि के ज़रिए उन्हें ठीक रास्ता बतलावेगा, उनकी भ्रांतियाँ दूर करेगा।

'सतयुग' बड़े सत् उद्देश्य से प्रेरित होकर निकाला गया है। इसका मुख्य उद्देश भावी घटनाओं पर तथा उनसे होनेवाले नतीजे पर विचार करना है। भविष्य में होनेवाले महायुद्ध, अकाल, महामारी आदि संभावना पर भी प्रकाश डाला जायगा। युग-परिवर्तन, संसार के सभी देशों और मज़हबों में फैली हुई नवीन अवतार की भावना, दैवी और प्राकृतिक उत्पातों का विवेचन आदि ऐसी बहुत-सी बातें इसमें मिलेंगी, जिनका लोगों को अभी बहुत कम पता है। इस पत्र की नीति भारत के ही नहीं, संसार-भर के मनुष्यों में प्रेम, समता, एकता और न्याय के सिद्धांत की स्थापना करने की है, क्योंकि आनेवाले युग का यही प्रधान धर्म है।

'सतयुग' का क्षेत्र एकदम नवीन है। हिंदी में इस प्रकार का अभी तक कोई भी पत्र न था। 'सतयुग' ने इस कमी को बहुत अंशों तक दूर कर दिया। हमारा ख़याल है, 'कल्याण' की तरह 'सतयुग' भी लोक-प्रिय हो सकेगा।

छपाई-सफ़ाई सभी सुंदर है। कई चित्र भी हैं। हम ऐसा सुंदर पत्र निकालने के लिये श्रीसत्यभक्तजी को बधाई देते हैं!

प्रेमनारायण अग्रवाल (एम्० ए०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'सरकार तुम्हारी आँखों में' (उपन्यास)—लेखक, पांडेय श्रीबेचन शर्मा 'उग्र'; मूल्य १।॥)

(२) 'प्रभात-फेरी' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत नरेंद्र ; मूल्य १।)

(३) 'ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार' (ग्रामोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत ब्यौहार राजेंद्रसिंह एम्० एल्० ए० ; मूल्य १॥)

(४) 'अनुराग-रत्न' (काव्य)—लेखक, महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर' ; मूल्य १।॥)

(५) 'प्राकृतिक विज्ञान' (स्वास्थ्य)—लेखक, डा० पी० आचार्य ; मूल्य ५॥)

(६) 'वीर वधू' (काव्य)—लेखक, श्रीयुत नाथूराम महौर ; मूल्य १)

(७) 'तुलसी-दर्शन' (आलोचना)—लेखक, श्रीयुत बलदेवप्रसाद मिश्र एम्० एल्० ए० ; मूल्य २॥)

(८) 'बड़े म्याँ' (प्रहसन)—लेखक, श्रीयुत इंद्र बसावड़ा ; मूल्य ।)

(९) 'पंचलोक' (उपन्यास)—लेखक, श्रीजगदीशचंद्रदेव ; मूल्य ।)

(१०) 'सृष्टि का आरंभ' (नाटक)— अनुवादक, श्रीयुत प्रेमचंदजी; मूल्य ॥)

(११) 'विश्वमित्र' (नाटक)—लेखक, श्रीउदयशंकर भट्ट ; मूल्य ॥)

(१२) 'काल्पी' (उपन्यास)— लेखक, श्रीयुत पांथरी ; मूल्य ॥)

(१३) 'तारामंडल' (कहानियाँ)— लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी ; मूल्य १॥)

(१४) 'दिल की प्यास' (नाटक)—लेखक, श्रीयुत आग़ा हश्र कश्मीरी ; मूल्य १)

(१५) 'आकर्षण शक्ति' (वैज्ञानिक)— लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी ; मूल्य २)

(१६) 'नई रोशनी' (वैज्ञानिक)— लेखक, श्रीगुलाबरत्न वाजपेयी ; मूल्य १।॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

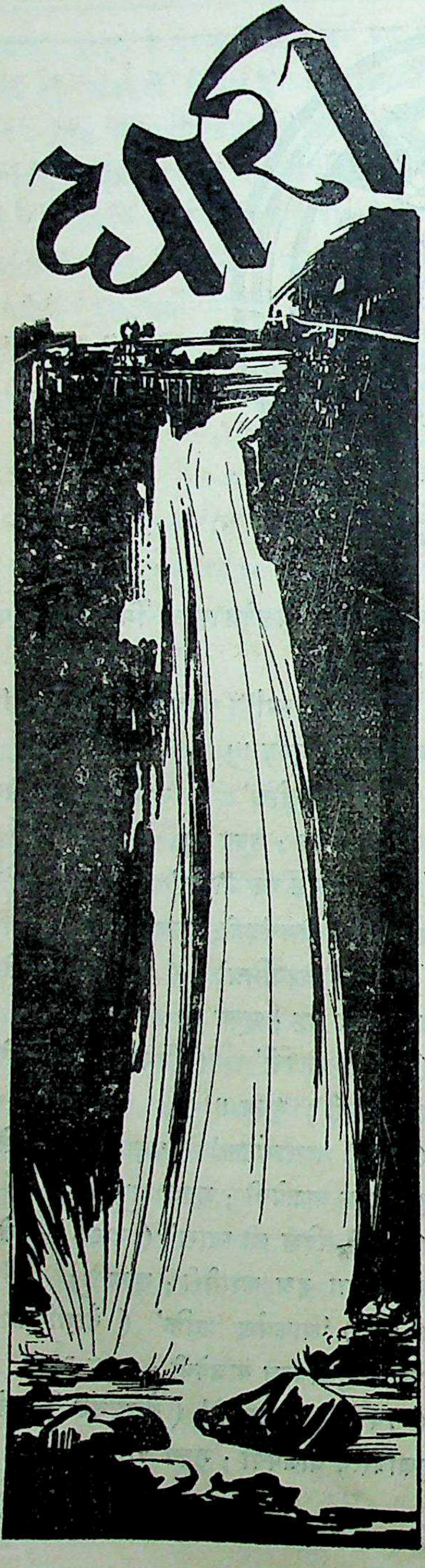

१. हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, काशी

हिंदी और संस्कृत-भाषाओं की आदर्श, ऐतिहासिक काशी नगरी में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन अपूर्व समारोह, अनंत उत्साह और भारी सफलता के साथ समाप्त हो गया। इस पुण्य पर्व में चौदह करोड़ हिंदी-भाषा-भाषी जनता के प्रतिनिधि दूर-दूर से आकर सम्मिलित हुए। हिंदी-प्रेमी और हिंदी-हितैषी जनों का यह समारोह, जो अपने-अपने क्षेत्रों में काम करते हुए एक मातृप्रेम के सूत्र में आबद्ध होकर एक जगह एकत्र हुए थे, कितना सुंदर, आकर्षक और नई आशाओं का द्योतक था! महिला-प्रतिनिधियों और दर्शकों की संख्या भी कम न थी। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष का प्रभावकारी, उच्च व्यक्तित्व और स्वागताध्यक्ष-पद से दिया गया उनका भाषण हिंदी-भाषा-भाषियों के लिये एक संदेश है। सम्मेलन के अध्यक्ष-पद पर अब की बार साहित्यिक व्यक्ति को प्रतिष्ठित किया गया था, अतः आपका अभिभाषण साहित्यिक दृष्टिकोण से सर्वथा सामयिक, उपयोगी और विद्वत्ता-पूर्ण हुआ। हिंदी-साहित्य की विविध प्रगतियों पर आपके मँजे हुए विचार, समस्याओं के सुलझाव के लिये आपकी सूझ और हिंदी को व्यापक राष्ट्र-भाषा बनाने के संबंध में आपके प्रस्ताव सभी के लिये ग्रहणीय और अभिनंदनीय हैं। पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी की साहित्यिक सेवाओं, हिंदी के प्रति उनका अटल और अनुपम अनुराग तथा हिंदी की उन्नति के लिये किए गए उनके अब तक के कार्यों के अनुरूप ही उनका भाषण हुआ। आपकी अध्यक्षता में हरिश्चंद्र की नगरी में बैठकर हिंदी-साहित्यिकों ने जो नवीन स्फूर्ति और प्रेम अर्जन किया, वह मातृभाषा के कल्याण और उसकी भावी उन्नति के लिये अशोक के शिला-लेखों की तरह चिर-स्मरणीय रहेगा, ऐसी हमारी आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किए, वे बड़े महत्त्व-पूर्ण और समय की प्रगति के सूचक हैं। प्रस्तावों पर जो वाद-विवाद हुआ, वह इस बात का सूचक है कि सम्मेलन के प्रस्ताव अब केवल काग़ज़ पर लिखी रहनेवाली चीज़ नहीं रहे, उनका एक व्यापक असर भी होता है। बिहार की हिंदुस्थानी, यू० पी० की लिपि-शिक्षण-योजना, नरेंद्रदेव-समिति, महमूद-सीरीज़ और राजेंद्र-रीडरों के संबंध में जो भाव सम्मेलन में प्रकट किए गए, और इन योजनाओं तथा रीडरों को हिंदी की उन्नति के लिये घातक बतलाकर उन पर जो रोष प्रकट किया गया, उससे यह प्रकट होता है कि हिंदी की प्रगति के लिये जो भी बातें रुकावटें पैदा करती हैं, भले वे कांग्रेसी सरकार या बड़े राष्ट्रीय नेताओं द्वारा पैदा की गई हों, उनकी आलोचना और निंदा करने में हिंदी-हितैषी जन किसी के साथ रू-रियायत करने को तैयार नहीं। इस अवसर पर ऐसे प्रस्ताव पास करने का असर भी काफ़ी होगा, क्योंकि बिहार और यू० पी० की सरकारें डॉक्टर राजेंद्रप्रसाद और माननीय श्री-पुरुषोत्तमदास टंडन की वाणी के महत्त्व को भुला नहीं सकतीं। अदालतों की भाषा के संबंध में सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह नया नहीं। अब तक कितनी ही बार इस तरह के प्रस्ताव पास हो चुके हैं, पर अदालतों में उर्दू और फ़ारसी का ही बोल-बाला रहा। जब से प्रांतों में लोकप्रिय सरकारें क़ायम हुईं, तब से इस बात पर ज़ोर दिया जाने लगा है कि अदालती कार्यवाही और सरकारी दफ़्तरों के काग़ज़ात, जहाँ तक सर्व-साधारण से उनका संबंध है, ऐसी भाषा में तैयार किए जाने चाहिए, जिसे वहाँ के लोग पढ़ और समझ सकें। यू० पी० का हमारा अनुभव है कि यहाँ मुसलमानों की आबादी चौदह फ़ीसदी होने पर भी अदालतों में अभी तक पंचानबे फ़ीसदी उर्दू का व्यवहार होता है। नहर, पुलिस आदि अन्य विभागों में भी अभी तक उर्दू के स्थान पर हिंदी का प्रचलन नहीं हुआ। अदालतों में किसी भी वकील का काम तब तक नहीं चल सकता, जब तक उसके पास उर्दू जाननेवाला क्लर्क न हो। जो वकील हिंदी में काम कराते हैं, उन्हें भी अपनी सुविधा के लिये उर्दू के क्लर्क रखने पड़ते हैं। अदालतों के पेशकार और क्लर्क वग़ैरा इतनी हिंदी नहीं जानते, वे हिंदी में लिखी गई अर्ज़ियों पर इतना ध्यान नहीं देते, जितना फ़ारसी-लिपि में लिखी गई अर्ज़ियों पर देते हैं। जिस जनता को रोज़ इन दफ़्तरों से काम पड़ता है, उसके सामने बड़ी कठिनाई उपस्थित होती है। इसलिये हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतों की सरकारों का यह कर्तव्य है कि वे अपने मातहत सभी दफ़्तरों में हिंदी में कार्यवाही होना अनिवार्य कर दें।

सम्मेलन के साथ-साथ इस अवसर पर और भी महत्त्व-पूर्ण कार्यवाहियाँ हुईं। पुस्तक-व्यवसायी सम्मेलन की योजना एक अच्छी और सामयिक सूझ थी। इसका अधिवेशन श्रीरामलोचनशरण की अध्यक्षता में हुआ। पुस्तक-प्रकाशन के संबंध में पं० बाबूराव पराड़कर, डॉ० राम बाबू सक्सेना-जैसे विद्वानों के विचार काफ़ी महत्त्व के थे। हिंदी-पत्रकार-सम्मेलन पं० माखनलाल चतुर्वेदी की अध्यक्षता में हुआ। स्वागताध्यक्ष-पद से बाबू श्रीप्रकाशजी ने अपने भाषण में पत्रकारों के कर्तव्य पर अच्छा प्रकाश डाला। हिंदी-प्रेमी महिलाओं का एक सम्मेलन श्रीमती सुभद्रादेवी चौहान की अध्यक्षता में हुआ। स्वर्गीय 'प्रसाद'जी के 'स्कंदगुप्त' नाटक का अभिनय भी सम्मेलन में आए हुए व्यक्तियों के लिये मनोरंजन की अच्छी चीज़ थी। इस प्रकार यह साहित्य - सम्मेलन विविध दृष्टिकोणों से पूर्ण सफल रहा। सम्मेलन की स्वागत-समिति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके प्रबंध के लिये हम बधाई और धन्यवाद देते हैं!

× × ×

२. कांग्रेस-मंत्रिमंडलों के इस्तीफ़े

कांग्रेस-कार्य-समिति के निर्णय के अनुसार कांग्रेसी सरकारों ने प्रांतीय शासन की ज़िम्मेदारी से अपने को अलग कर लिया, और कांग्रेसी मिनिस्टर अपने पदों से इस्तीफ़ा देकर बाहर आ गए। अपने देश के वर्तमान इतिहास में इसे हम दुःख-पूर्ण घटना कहेंगे, पर परिस्थितियाँ जैसी पैदा हो गईं, उनमें हमारे देश के कर्णधारों ने यही मार्ग ठीक समझा। योरप के युद्ध ने संसार के सभी देशों की जैसी हालत कर दी है, उसमें हमारा देश उसके अवश्यंभावी परिणामों से कब बचा रह सकता है? हमने पहले ही यह कहा था कि इस युद्ध का हमारे देश की स्थिति पर भारी असर पड़ेगा, क्योंकि भारत का अँगरेज़ों के साथ संबंध है, इसलिये वह आत्मनिर्णय के लिये स्वतंत्र नहीं। भारत का किसी भी अन्य राष्ट्र के साथ द्वेष और दुश्मनी नहीं, पर चूँकि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है, इसलिये ब्रिटेन अपने दुश्मनों के मुक़ाबिले में भारत को युद्ध में घसीट ले जाता है। जर्मनी की बर्बरता, नाज़ी-शासन के अत्याचार और पोलैंड पर किया गया उसका आक्रमण ऐसी घटनाएँ हैं, जिनका विरोध प्रत्येक सभ्य राष्ट्र को करना चाहिए। और, इस दृष्टि से भारत उन सभी राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा है, जो नाज़ी-सत्ता और हिटलरशाही का नाश चाहते हैं। लेकिन इसके लिये कोई राष्ट्र युद्ध के मैदान में जाकर अपने धन और जन का नाश करे, शत्रु के मुक़ाबिले में खड़ा होकर तोप, मशीनगन, बम और ज़हरीली गैसों के प्रयोग में भाग ले, यह प्रत्येक देश की उसकी अपनी अवस्था पर निर्भर है। ऐसे भी देश हो सकते हैं, जो जर्मनी को अनीति-पथ पर जाते हुए देखकर भी उसके विरुद्ध युद्ध में सक्रिय भाग नहीं ले सकते। और, फ़्रांस तथा इँगलैंड ही क्यों जर्मनी से लड़ रहे हैं? यदि उनका जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का अर्थ न्याय, व्यवस्था और स्थायी शांति है, तो अबीसीनिया, स्पेन, आस्ट्रिया और चेको-स्लोवेकिया के मामले में ये महान् उद्देश्य कहाँ जा छिपे थे? पोलैंड पर इधर जो महान् अनुकंपा हुई, वह यहूदी और चैक लोगों की स्वतंत्रता छीनते वक़्त कहाँ चली गई थी? तब यह ज़ाहिर है कि इस युद्ध में पड़ने और इतने धन-जन की हानि का संकल्प करने का मतलब यह है कि इँगलैंड और फ़्रांस को आज अपने-अपने साम्राज्य के लाले पड़ गए हैं, और अंतरराष्ट्रीय जगत् में जर्मनी की बढ़ी हुई शक्ति इन दो साम्राज्यों के सूर्य-चंद्र के लिये राहु बनकर खड़ी है। अतः ये दोनो राष्ट्र अपने अस्तित्व के लिये युद्ध में अवतीर्ण हुए हैं। 'प्रजा-तंत्र और निर्बल राष्ट्रों की रक्षा' के नारे बड़े सुहावने हैं, पर चमकनेवाली प्रत्येक चीज़ खरा सोना ही नहीं हुआ करती।

इँगलैंड के लड़ाई के उद्देश्य तो सब पर प्रकट हैं—वे वे ही हैं, जो सन् १९१४-१८ की लड़ाई में थे। आज भी वही नारा है, और मुख्य दुश्मन भी वे ही पुराने हैं। राजभक्त भारतवर्ष से उस समय भविष्य की उम्मीदें दिलाकर सहायता ली गई थी, और आज भी वैसी ही उम्मीदें दिलाई जा रही हैं। पर इस देश के लोगों की पहली उम्मीदें गहरी नाउम्मेदी के रूप में साबित हुईं, अतः इस बार वे हाँडी को ख़ूब ठोक-बजाकर उसके लिये पैसा ख़र्च करना चाहते हैं, यही अंतर है। अँगरेज़ों और इस देश के लोगों के दृष्टिकोण में यह एक खाई है, जो भरी जानी चाहिए, या तब तक के लिये दोनो सिरों को जोड़ने के लिये कोई पुख़्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुल बन जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता, तो एक दूसरे से मिलने के इच्छुक यात्री विपरीत दिशाओं में चलते नज़र आएँगे।

ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के स्वर इस वक्त युद्ध के भय के कारण रुद्ध हैं। उनमें भारत के प्रति ब्रिटिश सरकार की शुभेच्छा और भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित करने की उत्कंठा फूट-फूट पड़ती है। वाइसराय महोदय के दो भाषणों में हमें यही देखने को मिला। पार्लियामेंट के छोटे और बड़े, दोनो हाउस में हमें काफ़ी मिठास की सामग्री मिली, जिसके साथ कड़ुई चटनी भी चखने को मिलती रही। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की यह सबसे बड़ी भूल है कि वे यह नहीं समझते कि जिस तरह की बातें कहने के वे आदी हो गए हैं, भारतीय लोग वैसी बातें सुनने के अब आदी नहीं रहे। अगर सर सैम्युअल होर, और लॉर्ड सेलिसबरी से अल्पसंख्यक मुसलमानों के हक़ों की हिफ़ाज़त कराने की बात कहलवानी है, और उधर लॉर्ड सैम्युअल और श्रीवेजवुडवेन के भाषणों से भारतीय नेताओं के कानों में रस की बूँदें टपकानी हैं, तो इससे अधिक समय तक लोगों को अँधेरे में नहीं रक्खा जा सकता। आज ही क्यों मि० जिन्ना को अकेला आठ करोड़ भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधि मान लिया? क्या इसलिये कि मि० जिन्ना कांग्रेस से बेतरह चिढ़े हुए हैं, और इस वक्त उन्हें शिखंडी बनाया जा सकता है!

कांग्रेस-मंत्रिमंडलों ने अपने इस्तीफ़े दिए दुनिया को यह दिखाने के लिये कि ब्रिटेन जिस प्रजातंत्रवाद की दुहाई देता है, उस पर वह ख़ुद कितना अमल करता है। कांग्रेस के मंत्रियों के इस्तीफ़े मंज़ूर कर लिए गए, और प्रांतों के गवर्नर महोदयों ने शासन के समस्त अधिकार अपने हाथ में ले लिए। अर्थात् भारत के आठ प्रांतों के प्रजातंत्रवाद का ख़ात्मा करके वहाँ एकतंत्रवाद क़ायम हो गया, और वह हुआ 'प्रजातंत्रवाद की जय' के बुलंद नारों के बीच में। यह कैसी विडंबना है! अँगरेज़ क़ौम में कितने ही अच्छे गुण हैं। हम उनकी क़द्र करते हैं, पर भारत के संबंध में इस तरह की नीति बरतते हुए उनके नैतिक बल का भयंकर ह्रास हो रहा है। सवा दो साल तक कांग्रेस ने प्रांतीय शासन-कार्य में भारत की अँगरेज़ी सरकार के साथ पूरा सहयोग किया। इस वक्त, जब इँगलैंड पर युद्ध का संकट आया हुआ है, कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के सामने नई उलझन और कोई पेचीदा समस्या पैदा नहीं करना चाहती। यह कार्य-समिति के युद्ध-संबंधी वक्तव्य से प्रकट है। फिर कांग्रेस-सरकारों के इस्तीफ़े क्यों? वे इसलिये कि संसार यह जान ले कि ब्रिटिश सरकार के प्रजातंत्रवाद का अर्थ क्या है। कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने अपने कार्य-काल में रचनात्मक कार्यों को जिस प्रकार शुरू किया, और प्रत्येक दिशा में नए सुधार करने की आयोजनाएँ तैयार हुईं, उनसे भी यह प्रकट है कि कांग्रेस का कभी यह मंतव्य नहीं रहा कि वह विधान को अपने हाथ में लेकर उससे जनता को अधिक-से-अधिक जितना लाभ हो सकता है, उसमें कोई कमी करे, और इस अवसर को कांग्रेस की शक्ति बढ़ाने और किसी आनेवाले युद्ध की तैयारी के लिये उपयोग में लावे। इसके लिये कांग्रेस-मंत्रियों ने अपने ही भाइयों की कटु आलोचनाएँ सहीं, पर एक सच्चे शासक का जो कर्तव्य होता है, उससे तिल-भर भी इधर-उधर विचलित नहीं हुए। इस सवा दो साल के वक्त में कांग्रेस-मंत्रिमंडलों की बदौलत देश में एक नए जीवन का संचार होता दिखाई दिया। लोगों को कितनी बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं उन आगे आनेवाले क़ानूनों से, जो अब गवर्नर द्वारा एसेंबली को अनिश्चित समय के लिये स्थगित कर देने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ-के-तहाँ पड़े रहेंगे, लोक-सुधार के कार्यों की प्रगति रुक जायगी। एक ओर जहाँ हम कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को उनके लोक-सुधार-संबंधी कार्यों तथा देश के बड़े हितों के आगे शासक की गद्दी को तृणवत् त्याग देने के उपलक्ष में बधाई और धन्यवाद देते हैं, दूसरी ओर इस बात का हमें खेद भी है कि जिन लोक-हितकारी कार्यों को शुरू किया गया, उनकी प्रगति अब रुकी पड़ी रहेगी। इसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी ब्रिटिश सरकार पर है। क्या हम यह आशा करें कि यह आज का कुहरा अधिक काल तक नहीं रहेगा, और भारतीय राजनीति का आकाश स्वच्छ होकर शीघ्र ही नए प्रकाश से भर जायगा।

× × ×

३. वही ढाक के तीन पात !

वाइसराय-हिंद की चिर-परीक्षित घोषणा हो गई। महात्मा गांधी के शब्दों में इस घोषणा का मूल्य 'कांग्रेस ने रोटी माँगी थी, और मिला उसे पत्थर' है। मौलाना अबुलकलाम आज़ाद और पं० जवाहरलाल नेहरू के लिये वह एक ऐसा वक्तव्य है, जो बीस वर्ष पहले भी सामयिक न होता। देश किस लगन और उत्सुकता से इस भाषण की प्रतीक्षा कर रहा था। युद्ध शुरू होते ही वाइसराय का महात्मा गांधी को बुलावा, कांग्रेस के अन्य दलों के प्रमुख व्यक्तियों के साथ वाइसराय की भेंट, लंदन और शिमला तथा दिल्ली में चहल-पहल, भारत के भावी शासन-विधान के संबंध में दोनो देशों के लोगों में आशावाद, ये सब बातें १७ ऑक्टोबर, सन् १९३९ की वाइसराय की घोषणा के साथ, जल में उठे हुए बुदबुदों की तरह, विनष्ट हो गईं। अब सामने रह गया वही अनिश्चित, निराशामय भविष्य, योरप के युद्ध की डरावनी, बुलंद आवाज़ और भारत की फिर एक अग्नि-परीक्षा। यह ठीक होता, जैसा कांग्रेस के कुछ उच्च नेताओं ने कहा है, ऐसी घोषणा करने के बदले भारत-सम्राट् के प्रतिनिधि मौन ही रहते। आपकी घोषणा का आशय इस प्रकार है—

१—भारत के संबंध में ब्रिटिश सरकार की इच्छा और उद्देश्य इस देश द्वारा औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति है।

२—लड़ाई समाप्त होने के बाद इंडिया-ऐक्ट सन् १९३५ में, भारतीय विचार-धाराओं को ध्यान में रखते हुए, संशोधन किया जायगा।

३—लड़ाई को सफलता के साथ चलाने के लिये ब्रिटिश भारत और देशी राजाओं के प्रतिनिधियों की एक सलाहकार समिति बनाई जाय, जिसके अध्यक्ष गवर्नर जनरल होंगे।

जहाँ तक पहली बात से संबंध है, उसमें कोई भी ऐसी नई बात नहीं, जिसे ब्रिटिश राजनीतिज्ञ पहले कई बार न दुहरा चुके हों, और स्वयं वाइसराय महोदय ने भी उन वक्तव्यों को दुहराया है। भारत का अपना ध्येय पूर्ण स्वतंत्रता है, जिसकी घोषणा राष्ट्रीय महासभा और मुसलिम लीग भी कर चुकी है। इसलिये इस बात के संबंध में भारत और इँगलैंड के दो पृथक्-पृथक् मार्ग हो जाते हैं, और वाइसराय की इस वक्त की घोषणा का पहला नतीजा यह निकला। दूसरी बात इंडिया ऐक्ट सन् १९३५ में संशोधन करने से संबंध रखती है। यह सभी जानते हैं कि इस ऐक्ट में संघ-शासन-विधान को अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार भारत में लागू नहीं कर सकी। वाइसराय ने स्वयं अपने वक्तव्य में यह स्वीकार किया है कि भारत के सभी प्रमुख दलों ने संघ-विधान का विरोध किया। अतः वाइसराय को उसे भारत के मत्थे न मढ़ने के लिये मजबूर होकर ब्रिटिश सरकार के इरादे को प्रकट करना पड़ा। वह विधान अभी तक सरकारी किताब में लिखा हुआ रक्खा है, जिसका मूल्य अब रद्दी के टुकड़े के बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया है। अतः केंद्रीय शासन-व्यवस्था बनाने के लिये सरकार को फिर एक नए विधान की आवश्यकता होगी, जिसके लिये वाइसराय फिर भारत के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाने और पहली गोलमेज़-कॉन्फ्रेंस का-सा एक नाटक रचने की बात कहते हैं। इसमें भी इस बात की गारंटी नहीं कि 'ब्रिटिश सरकार की इच्छा और उद्देश्य' को पूरा किया जायगा, और भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जायगा। पहली बार यह नाटक जिन कारणों से असफल हुआ, उनकी तरफ़ वाइसराय ने अब भी संकेत कर दिया है। आपके शब्दों में यहाँ के 'प्रतिनिधियों के साथ हुई बात-चीत में बहुत विभिन्न मुद्दे और विभिन्न माँगें पेश की गईं,' इससे युद्ध के बाद जो नया भारत-शासन-विधान बनेगा, उसका पता भी अभी से लग जाता है।

आपकी तीसरी बात बहुत स्पष्ट है, और हमारा ख़याल है, मेल-मुलाक़ात का इतना बड़ा तमाशा इसी बात के लिये खड़ा किया गया। भारत के प्रतिनिधियों की एक सलाहकार कमेटी बनेगी, जो सरकार को लड़ाई के संबंध में सहायता देने के मामलों को हल करेगी। वाइसराय जब आवश्यक समझेंगे, तब इन प्रतिनिधियों को बुला लिया करेंगे। इसलिये भारत के पूर्ण स्वराज्य के ध्येय को स्वीकार करने, कम-से-कम युद्ध के बाद औपनिवेशिक स्वराज्य के आधार पर नया शासन-विधान बनाने और उसके संबंध में मूल बातों की तत्काल घोषणा कर देने तथा इस उद्देश्य और इच्छा का परिचय देने के लिये तत्काल केंद्रीय सरकार में लोक-प्रतिनिधियों के हाथ में अर्थ, सेना और वैदेशिक संबंध के मामलों को सौंप देने की बातें और आशाएँ हवा में उड़ गईं। वाइसराय की घोषणा में ऐसी कोई भी बात नहीं निकली, जिससे 'टोरी' और उन 'सदा राज्यभक्त' कहलाने-वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई भी थोड़े स्वतंत्र विचार रखनेवाला व्यक्ति अंशतः भी संतुष्ट होता। जहाँ तक भारत के मसले से संबंध है, हमें वाइसराय के इस वक्तव्य पर न खेद है न आश्चर्य, क्योंकि वह भारत में ब्रिटिश परंपरा के भाव और उद्देश्यों के अनुकूल ही हुआ है। खेद सिर्फ़ इस बात का है कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के दिमाग़ों पर संसार की बदली हुई हालत का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा, और वे सन् १६३६ ई० में भी ऐसा ही सोचते हैं, जैसा १६वीं शताब्दी में सोचा करते थे। चीन, अबीसीनिया, स्पेन, चेकोस्लोवेकिया और अब पोलैंड में हुई घटनाओं ने उनके मस्तिष्कों के ज्ञान-तंतुओं को कुछ भी विकसित नहीं किया। संसार-भर में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की मिट्टी पलीद होती देखकर भी भारत में वे गत शताब्दी के चश्मे से ही प्रत्येक स्थिति को देख रहे हैं। उन्हें अपनी यह नीति परित्याग करनी होगी, पर वे कब ऐसा करेंगे? युद्ध के उद्देश्य को स्पष्ट करने की कांग्रेस ने जो माँग पेश की थी, उस पर वाइसराय कहते हैं—"सम्राट् की सरकार ने अब तक लड़ाई लड़ने का उद्देश्य तफ़सील से निश्चित रूप में व्यक्त नहीं किया है। इस तरह की परिभाषा लड़ाई के मध्य में हो सकती है। लड़ाई समाप्त होने से पहले हमारे सामने विद्यमान परिस्थितियों में बहुत परिवर्तन हो सकते हैं, और यह उन परिस्थितियों पर निर्भर है, जिनमें युद्ध समाप्त होगा, और इस अरसे में लड़ाई चलेगी।"

वाक्य-पटुता के इस माया-जाल से भी हम निश्चित फल निकाल सकते हैं। भारत की शक्तियों के लिये यह वाइसराय का सयानपन से दिया गया एक चैलेंज है। भारत में शक्ति होगी, तो वह लड़ाई के मध्य में और उसके समाप्त होते-होते ब्रिटिश सरकार से युद्ध के उद्देश्य तफ़सील में प्रकट करवा लेगा। इस प्रकार जो कुछ भी है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह युद्ध की परिस्थितियों पर निर्भर है। वाइसराय के भाषण में नई कोई भी बात नहीं, और न उसे हम ब्रिटिश सरकार का अंतिम निश्चय ही कह सकते हैं। हाँ, वर्तमान परिस्थिति को सुधारने के बजाय उसने और बिगाड़ दिया है। भारत के लिये वह एक चेतावनी है कि उसे जो कुछ भी लेना है, वह अपनी शक्ति द्वारा ले सकता है।

× × ×

४. बिहार-सरकार की हिंदी

इधर बिहार-सरकार ने अपने यहाँ की पुस्तिकाओं में जिस प्रकार की हिंदी स्वीकार की है, उसके संबंध में हिंदी-हितैषियों को असंतोष और खेद है। काशी-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन ने इस संबंध में एक प्रस्ताव पास करके बिहार-सरकार को अपने दृष्टिकोण का परिचय दे दिया है। यह हम भी मानते हैं कि हिंदी आम बोल-चाल की भाषा में लिखी जाय। ख़ासकर जहाँ तक प्रचार-विभाग से संबंध है, और आम जनता तथा पाठशालाओं में पढ़ने के लिये हिंदी की जो पुस्तकें निकलें, वे ऐसी हिंदी में होनी चाहिए, जिसे साधारण जन आसानी से समझ सकें। इसमें संस्कृत और फ़ारसी के कठिन शब्दों का प्रयोग अवांछनीय है। पर बिहार-सरकार की पुस्तकों की हिंदी को तो शुद्ध उर्दू भी नहीं कह सकते। उसमें फ़ारसी-शब्दों का जैसा बाहुल्य है, उससे पढ़नेवालों को अपने साथ 'लुग़त' रखना आवश्यक होगा, और सर्व-साधारण तो उसका पूरा भाव भी नहीं समझ सकते। राजेंद्र बाबू के प्रांत में ऐसी हिंदी के प्रचलन की हमने आशा नहीं की थी। हर्ष की बात है कि हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति राजेंद्र बाबू ने इस संबंध में साहित्य-सम्मेलन के सामने अपना स्पष्टीकरण करने की कृपा की और माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने इस संबंध में अपनी गहरी दिलचस्पी प्रकट की। हिंदी को अपने इन दो सपूतों की सेवा और सदुद्देश्य पर काफ़ी अभिमान है। हम आशा करते हैं, बिहार की इस ग़लती का उचित परिमार्जन हो जायगा।

× × ×

५. हिंदू-तलाक़-बिल

हिंदू-तलाक़-बिल का प्रश्न उठाना इस वक्त अवश्य ही लोगों को बेवक्त की सहनाई-जैसा मालूम होगा। पर भारतीय एसेंबली में भले ही यह बिल मर चुका हो, हिंदू-समाज पर उसका एक व्यापक असर अब भी है, और वह आगे भी रहेगा। कांग्रेस-पार्टी द्वारा केंद्रीय एसेंबली के गत अधिवेशन का बहिष्कार करने के कारण डॉ० देशमुखजी का उक्त नाम का बिल एसेंबली से नामंज़ूर हो गया। डॉ० भगवानदास के अंतरजातीय विवाह-बिल के संबंध में जो बात हुई, वही डॉ० देशमुख के तलाक़-बिल के संबंध में भी हुई। और, अब इन दोनो समाज-सुधार-विषयक प्रस्तावों की कहानी ही लोगों की ज़बानों पर रह गई। भारत में समाज-सुधारक विषयों की तरफ़ लोगों का ध्यान कम जाता है। देश में राजनीतिक चेतना जैसी बढ़ी है, उसे देखते हुए समाज-सुधार की प्रगति यहाँ चर्रक-चूँ के साथ चलनेवाली बैलगाड़ी की चाल से अधिक तेज़ नहीं। हम नहीं कह सकते कि एसेंबली के गत अधिवेशन में स्वयं डॉ० देशमुख उपस्थित होते, तब भी वह बिल पास हो जाता। क्योंकि कांग्रेस-पार्टी ने उक्त बिल को पार्टी का प्रश्न बनाया नहीं था, इसीलिये, संभव है, बहुत-से कांग्रेसी सदस्य बिल के विपक्ष में राय देते। सरकार की तरफ़ से, शुरू से ही, बिल का विरोध किया जा रहा था। मुसलमान सदस्य आम तौर से इस संबंध में उदासीन थे। हम नहीं कहते कि जिस रूप में बिल एसेंबली में पेश किया गया, उसका वही रूप सही था। बिल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू-स्त्रियों को पति से संबंध-विच्छेद करने के जो अधिकार दिए गए, उसकी शर्तें बिलकुल ठीक थीं। पति द्वारा दूसरी शादी कर लेने पर, धर्म-परिवर्तन करने पर और लगातार तीन वर्ष तक अपनी स्त्री से अलग रहने पर एक हिंदू-स्त्री अपने पति को तलाक़ दे सकती है। ये शर्तें बिलकुल व्यावहारिक हैं। और, इनसे भारतीय परंपरा की हानि ही क्या हो सकती है? यह दूसरी बात है कि जो बात स्त्रियों की तरफ़ से कही गई है, वह कुछ कम-बढ़ रूप में पुरुषों की तरफ़ से भी कही जा सकती है। अतः स्त्रियों को तलाक़ के अधिकार देते समय पुरुषों का भी ख़याल रखना ही चाहिए। अगर यह बिल क़ानून का रूप धारण कर लेता, तो अवश्य ही इन बातों में कुछ और सुधार होते, और समाज-सुधार की प्रगति में इस क़ानून का एक अच्छा स्थान होता।

भारत में सभी श्रेणियों के स्त्री-पुरुषों की सामाजिक स्थिति एक-सी नहीं है—वह एक-सी हो भी नहीं सकती। इस दृष्टि से उच्च और शिक्षित घरों में स्त्री-पुरुष के जैसे संबंध रहते हैं, वैसे अन्य श्रेणियों में नहीं होते। यह बात हम आम स्थिति को ध्यान में रखकर कह रहे हैं। निम्न-मध्यम और सबसे नीचे की श्रेणी का दांपत्य संबंध सुखकर नहीं होता। इसके कई कारण हैं, जिन्हें यहाँ बतलाने की आवश्यकता नहीं। नतीजा यह होता है कि इन श्रेणियों के पुरुषों द्वारा स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा होती है। डॉ० देशमुख के बिल में जो शर्तें रक्खी गई हैं, पति महाशयों की हरकतें उनसे कितनी ही आगे बढ़ जाती हैं। और, चूँकि हिंदू-व्यवस्था के अनुसार 'ऐसेहु पति कर किय अपमाना, नारि पाव यमपुर दुख नाना' बेचारी स्त्रियाँ प्रताड़ना, आत्मक्लेश और तरह-तरह के कष्टों की भट्टी में जलती रहती हैं। हम नहीं समझते, स्त्रियों को इस तरह दुर्दशा-ग्रस्त रखकर कोई समाज अपने को सभ्य कह सकता और अपनी प्राचीनता पर अभिमान कर सकता है। जब तक पुरुषों की तरह ही हम स्त्रियों को उन मानवीय अधिकारों को भोगने की सुविधा प्रदान नहीं करते, जिनसे कोई भी समाज सभ्यता का दावा कर सकता है, तब तक देश और राष्ट्र के कल्याण के स्वप्न देखना मृग-तृष्णा है।

× × ×

६. कोर्स की किताबें

उक्त शीर्षक से महात्मा गांधी ने 'हरिजन' में एक लेख लिखा है। इस लेख में प्रकट किए गए महात्मा गांधी के विचार हमारे लिये पठनीय हैं। हम चाहते हैं, लोग इन विचारों के महत्त्व को समझें, और फिर उस पर अपनी स्वतंत्र बुद्धि से फ़ैसला करें। महात्मा गांधी कहते हैं—"कोर्स की किताबों को हमेशा बदलते रहने का पागलपन शिक्षा के दृष्टिकोण से कोई अच्छी बात नहीं है। यदि कोर्स की किताबों को ही शिक्षा का साधन मान लिया जाय, तो जीते-जागते अध्यापक के अध्यापन की उपयोगिता बहुत कम रह जाती है। जो अध्यापक कोर्स की किताबों की मार्फ़त पढ़ाता है, वह अपने विद्यार्थियों में मौलिकता नहीं पैदा कर सकता। वह ख़ुद कोर्स की किताबों का ग़ुलाम बन जाता है, और अपनी मौलिकता दिखाने का उसको कोई अवसर नहीं आता। इसलिये यह प्रतीत होता है कि कोर्स की किताबें जितनी कम हों, विद्यार्थियों के लिये और अध्यापकों के लिये उतना ही अच्छा है। ऐसा मालूम होता है कि कोर्स की किताबें व्यापार की चीज़ बन गई हैं। कोर्स की किताबों को लिखनेवाले लेखक और छापनेवाले प्रकाशक अपने पैसे बनाने के लिये किताबों की जल्दी-जल्दी तबदीली चाहते हैं। बहुत दफ़ा तो अध्यापक और परीक्षक स्वयं कोर्स की किताबों के लेखक होते हैं। यह स्वाभाविक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि वे अपने स्वार्थ की दृष्टि से अपनी किताबों को बहुत बेचना चाहें। फिर चुनाव-बोर्ड में भी स्वभावतः ऐसे ही लोग रहते हैं, और इस तरह यह कुचक्र पूरा बन जाता है। माता-पिता आदि संरक्षकों के लिये हर साल नई किताबों के लिये पैसा ख़र्च करना कठिन हो जाता है। जब लड़के और लड़कियाँ किताबों का भारी गट्ठर लिए, जिनका उठाना उनके लिये मुशकिल होता है, स्कूल जाते हैं, तब उन्हें देखकर दुःख होता है। सारी-की-सारी पद्धति को ही बिलकुल बदलने की ज़रूरत है। इसमें से व्यापारिक भावना को तो बिलकुल नष्ट कर देना चाहिए। और, सारे सवाल पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से ही विचार करना चाहिए। ऐसा करने पर हम देखेंगे कि कोर्स की ७५ फ़ीसदी किताबें रद्दी की टोकरी में फेंक देनी होंगी। यदि मेरे हाथ में होता, तो मैं ज़्यादातर ऐसी ही किताबें बनवाता, जो विद्यार्थियों की अपेक्षा अध्यापकों को ज़्यादा मदद दें। जो किताबें विद्यार्थियों के लिये निहायत ज़रूरी हों, उन्हें कई साल तक नहीं बदलना चाहिए, ताकि वे इतने कम ख़र्च में विद्यार्थियों तक पहुँच सकें, जिसे मध्यम श्रेणी के ज़्यादातर लोग बरदाश्त कर सकें। इस दिशा में पहला क़दम शायद यह है कि सरकार कोर्स की किताबों का मुद्रण और प्रकाशन अपने हाथ में ले ले। इससे पुस्तकों की वृद्धि ख़ुद-ब-ख़ुद रुक जायगी।"

× × ×

कैंथरडाइन

हेयर आयल

केशचर्या और केशचर्चा के लिये श्रेष्ठ उपकरण

इसके नियमित व्यवहार से बालों का असमय पकना, झड़ना; सूखना, ख़ुश्की, सिर घूमना आदि दूर होते हैं, और नये बाल निकलने में सहायता मिलती है। इसकी सुगन्ध मनोरम है।

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. गाँवों की बीमारियाँ

भारत-सरकार के स्वास्थ्य-विभाग की सन् १९३७ की रिपोर्ट में, जो अभी प्रकाशित हुई है, भारत के जन-साधारण के स्वास्थ्य के संबंध में काफ़ी चर्चा की गई है। यह संतोषजनक बात है कि अब सरकारी रिपोर्टों में केवल शहरी जीवन और थोड़े-से बड़े आदमियों से संबंध रखनेवाली बातों की ही चर्चा नहीं रहती, अब बहुधा मामलों पर जन-साधारण की हित-दृष्टि से विचार किया जाता है। जिस वर्ष का स्वास्थ्य-संबंधी दिग्-दर्शन उक्त रिपोर्ट में किया गया है, उसमें भारत में केवल बुख़ार की बीमारी से होनेवाली मृत्यु-संख्या तीस लाख है। इसमें दस लाख मौत केवल मलेरिया से होती है। मलेरिया का प्रकोप ज़्यादातर गाँवों में होता है। रिपोर्ट में बुख़ार के अंदर मलेरिया, हैज़ा के अतिरिक्त तपेदिक़ और अन्य प्रकार की बीमारियों का भी नाम है, जो पहले बुख़ार के रूप में प्रकट होती हैं, और गाँव के लोग उसे बुख़ार ही शुमार करते हैं। कुछ बीमारियाँ शहरी जीवन से ख़ास संबंध रखती हैं, जिनमें ख़राब जल-वायु से पैदा होनेवाली तपेदिक़ और फेफड़े की बीमारियाँ हैं। फेफड़े की बीमारियों में भी निमोनिया का प्रकोप अधिक संघातक है। स्त्रियाँ और बच्चों की अधिक मौतें शहरों में होती हैं। केवल प्रसूत-रोग से मरनेवाली स्त्रियों की संख्या प्रतिवर्ष दो लाख है। अर्थात् प्रति हज़ार बीस स्त्रियाँ गर्भ या प्रसव-पीड़ा से मर जाती हैं। बड़े-बड़े शहरों में इस मातृत्व शक्ति के ह्रास के संबंध में बतलाया गया है कि सन् १९३७ में कलकत्ता और लखनऊ शहरों में १५ से ४० साल तक की स्त्रियों की मृत्यु-संख्या इसी उम्र के पुरुषों की मृत्यु-संख्या से तिगुनी और बंबई तथा लाहौर में दुगुनी एवं मदरास में २६ प्रतिशत अधिक थी। इसका कारण उचित मात्रा में पौष्टिक खाद्य पदार्थों का प्राप्त न होना, शहरों की तंग गलियों और धूप तथा प्रकाश-विहीन घरों का रहन-सहन, पर्दे के अंदर बंद रहना तथा समय पर उचित चिकित्सा का अभाव है।

गाँवों में प्रकाश और जल-वायु की सुविधा होने पर भी पर्याप्त चिकित्सा का अभाव है। साथ ही उक्त सुविधा उस कमी की पूर्ति करने में असमर्थ है, जो निहायत तंगी की हालत में जीवन बिताते हुए ग्रामीण जन जीवनोपयोगी अशन-वसन-संबंधी सामग्री भी नहीं जुटा पाते। मलेरिया से होनेवाली मौतें चिकित्सा का प्रबंध बढ़ा देने के साथ कम की जा सकती हैं, पर अन्य बीमारियों का विशेष संबंध गाँववालों की आर्थिक दशा से है। इसका मतलब यह नहीं कि गाँव के लोगों का अपना कुछ कर्तव्य ही नहीं। कुछ बीमारियाँ तो उनके अपने रहन-सहन की ख़राबी से ही पैदा होकर बढ़ती हैं। कच्ची उम्र के बालक और बालिकाओं की शादी का रिवाज गाँवों में प्रचलित है। स्त्रियाँ घरों के अंदर पर्दे में बंद रहकर अपने स्वास्थ्य को ख़राब कर लेती हैं, या जो बाहर खेतों में काम करती हैं, उनसे उनकी शक्ति से अधिक काम लेने के कारण वे रोग की शिकार बन जाती और अपना स्वास्थ्य खो बैठती हैं। गाँवों में प्रसूता स्त्रियों और स्त्री-रोगों के संबंध में नहीं के बराबर चिकित्सा का प्रबंध है। बच्चों को भी छोटी उम्र से ही उनकी शक्ति से अधिक काम करना पड़ता है, उस पर उन्हें ख़ूराक भी अच्छी नहीं मिल पाती! इन दोषों को सर्वथा दूर नहीं, तो वर्तमान हालत में कुछ कम ज़रूर किया जा सकता है। अगर प्रांतीय सरकारें इस ओर पर्याप्त ध्यान दें, जैसा कि वे दे रही हैं, और गाँवों के लोग भी सफ़ाई आदि के महत्त्व को समझें, तथा उन्हें स्वास्थ्य-संबंधी बातों का ज्ञान कराया जाय, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन अकाल मौतों की भयंकरता बहुत कुछ कम हो सकती है।

× × ×

८. महत्त्व के प्रश्न

बाबू शिवप्रसाद गुप्त भारत की श्रेष्ठ आत्माओं में से एक हैं। देश और समाज के लिये आपकी सेवाएँ एकदेशीय नहीं। संपत्ति का किस तरह सदुपयोग हो सकता है, यह बाबू शिवप्रसाद गुप्त से सीखा जा सकता है। आपके कार्यों में हिंदू-संस्कृति और सभ्यता की जैसी छाप रहती है, वैसी भारत के अन्य कितने ही नेताओं में न मिलेगी। काशी का भारत माता का मंदिर आपकी उज्ज्वल कृतियों का एक उत्कृष्ट नमूना है। अभी आपने अपनी धर्मपत्नी का श्राद्ध करते समय पंडितों के सम्मुख कुछ प्रश्न उपस्थित किए। उन प्रश्नों में आपने हिंदू-समाज से संबंधित महत्त्व-पूर्ण विषयों को लिया है। इन प्रश्नों के समुचित उत्तरों से हिंदू-समाज की भावी उन्नति का गहरा संबंध है। यह हो सकता है कि उनके उत्तर एक-से ही नहीं हो सकते। भिन्न-भिन्न रुचि, विचार और उद्देश्य रखनेवाले व्यक्ति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से इन प्रश्नों के उत्तर देंगे। पर बाबू शिवप्रसाद गुप्त की भावना, इन प्रश्नों को उपस्थित करते हुए, जहाँ तक हम समझ सके हैं, हिंदू-समाज के अंदर से रूढ़िवाद को हटाकर समाज का नई व्यवस्था और आधुनिक प्रगतियों के अनुकूल पुनर्निर्माण करना है। प्रश्न इस प्रकार हैं—

१—हिंदू-समाज और हिंदू-धर्म के ह्रास के क्या कारण हैं?

(क) जाति-च्युत कर देने की प्रथा इसका कारण है या नहीं?

(ख) हिंदू-समाज में जन्म से ऊँच-नीच तथा छूत-छात का जो विचार फैला हुआ है, वह इस ह्रास का कारण है या नहीं?

(ग) हिंदू-धर्म तथा हिंदू-समाज के इस ह्रास के रोकने के क्या उपाय हैं?

२—पाणिग्रहण में कन्या का गोत्र यदि बदल जाता है, तो क्या गोत्र की अपेक्षा वर्ण का बदल जाना अधिक कठिन है?

(क) पाणिग्रहण के साथ यदि कन्या का वर्ण भी बदल जाय, तो इससे समाज की रक्षा और वृद्धि होगी या नहीं?

इन प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर काशी के 'आज' अख़बार में छपे हैं, तथा अन्य व्यक्तियों ने इन प्रश्नों पर जैसा प्रकाश डाला है, उससे यह प्रकट होता है कि लोग इन बातों को केवल परंपरा और प्राचीनता के प्रमाणों के आधार पर ही नहीं छोड़ते, बल्कि अपने उत्तरों में वे वैज्ञानिक प्रमाण को अधिक वज़न देना चाहते हैं। जन्मना ऊँच-नीच और छूत-छात का विचार अवैज्ञानिक है और जाति-च्युत कर देने की प्रथा भी अस्वाभाविक। क्योंकि जब जाति-पाँति का बखेड़ा ही एक कृत्रिम चीज़ है, तो उसके आधार पर बनी हुई प्रथा में स्वाभाविकता ही क्या हो सकती है। इसी प्रकार दूसरे प्रश्न का संबंध अंतरजातीय विवाह से है। आजकल यह बंधन भी टूटता जाता है। यदि कुछ लोग जाति और वर्ण के अंदर पाणिग्रहण की प्रथा जारी रक्खें, तो आगे तक यह प्रथा चालू नहीं रह सकती। समय के प्रवाह के साथ रीति-रिवाज और प्रथाएँ भी बदलती रहती हैं, और यही बात उक्त प्रश्नावली में उठाए गए महत्त्व-पूर्ण मामलों के संबंध में है। समाज की धारा निर्मल रखने के लिये उसके बीच में बाँध डालना कदापि वांछनीय नहीं।

× × ×

९. भारत का वस्त्र-व्यवसाय

स्वदेशी आंदोलन की प्रगति के साथ भारत के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र-व्यवसाय में भी उन्नति हुई, यद्यपि विदेशी व्यवसाय के मुक़ाबिले में वह अभी तक एक बच्चे की शकल में ही है, और विदेशों का कपड़ा चुंगी तथा भाड़ा देकर भी जिस दर पर भारत में बिकता है, उसकी स्पर्धा स्वदेशी मिलों का कपड़ा नहीं कर सकता। फिर भी स्वदेशी कपड़े की ही माँग अधिक है, और अगर भारत-सरकार विलायती कपड़े को भारत में खपाने के लिये पक्षपात की नीति से काम न ले, और भारतीय दृष्टिकोण का आदर किया जाय, तो यहाँ का मिल-व्यवसाय अधिक उन्नति पर होता। सरकार ने लंकाशायर के व्यापारियों के साथ जो रियायत कर रक्खी है, उसी का यह नतीजा हुआ है कि भारत की मिलों का बहुत-सा कपड़ा स्टॉक में पड़ा है, जब कि लंकाशायर और मैंचेस्टर की मिलों का कपड़ा भारत में खप रहा है। कुछ दिन हुए, बंबई और अहमदाबाद के मिल-मालिकों ने कपड़े के व्यवसाय को कम कर देने तथा वस्त्र-उत्पादन को एक निश्चित सीमा तक कम कर देने का निश्चय किया था। दूसरे देशों में ऐसा हुआ है। जहाँ तैयार माल का स्टॉक अधिक हो गया, वहाँ फिर उस माल की पैदावार को कम कर दिया जाता है। बहुत-से स्थानों पर तो ऐसा माल नष्ट भी कर दिया गया। पर भारत में विदेशी पूँजीपतियों की यह प्रथा लाभदायक न होगी। उदाहरण के लिये बंगाल के जूट-मिलों के मालिकों ने जूट की पैदावार घटाने के लिये इन्हीं उपायों का अवलंबन किया, पर वे असफल रहे। यदि हमारे देश के वस्त्र-व्यवसायी दृढ़ता से परिस्थिति का मुक़ाबिला करते रहे, तो आगे चलकर उन्हें लाभ ही होगा। क्योंकि सरकार की पक्षपात-पूर्ण नीति के बावजूद भी लंकाशायर का प्रभाव भारत में कम होता जाता है। गत ६ वर्षों में लंकाशायर के कपड़े के आयात का हिसाब इस प्रकार रहा कि सन् १९३२-३३ में जहाँ ५४२,००००००० गज़ कपड़ा भारत में आया, वहाँ सन् १९३७-३८ में वह २६७,००००००० गज़ रह गया। सन् १९३८-३९ के दस महीनों में वह केवल १६७,००००००० गज़ रह गया। यह तब हुआ, जब सन् १९३६ में भारत-सरकार ने लंकाशायर के कपड़े पर से चुंगी कम कर दी। सरकार भारत-ब्रिटेन व्यापारिक समझौते से फिर विलायती कपड़े के व्यवसाय को उत्तेजना देना चाहती है, और भारतीय एसेंबली द्वारा यह समझौता ठुकराया जाने पर भी उसका भार भारत के ऊपर लादा जा रहा है। यदि भारतीय मिल-मालिकों ने विवेक से काम लिया, तो यह समय उनके व्यवसाय की उन्नति के लिये लाभदायक सिद्ध होगा।

× × ×

१०. युद्ध की प्रगति

तोपों की गड़गड़ाहट, मशीनगनों की सन्-सन् और वायुयानों का घर-घर शब्द अब जर्मनी की पूर्वी सीमा से हटकर पश्चिमी सीमा पर आ गया। पूर्व में वह पोलैंड को श्मशान कर आया है जिस पर हिटलर अब बाल्टिक प्रदेश से खदेड़े गए जर्मनों की बस्तियाँ बसावेगा। पश्चिम में यह लड़ाई कैसा रूप धारण करेगी, और उसमें किसकी राख की ढेरी बनेगी, यह भविष्य ही बतलावेगा। अब समस्या और भी पेचीदा हो गई है। महात्मा गांधी कहते हैं, वह लंदन की सुंदर इमारतों को नष्ट-भ्रष्ट होते देख, अँगरेज़ नागरिकों की हत्या होती देख और इस प्रकार ब्रिटिश राज्य के अधःपतन के साथ अपने देश की आज़ादी लेना पसंद नहीं करेंगे, पर चैंबरलेन और दलादियर का कहना है, वे हिटलर का पराभव देख, नाज़ी-वाद को भस्मीभूत करके पोलैंड और चेको-स्लोवेकिया की स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे। तब इस स्थिति तक पहुँचने से पहले हज़ारों-लाखों आदमियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हत्या होगी—रक्त की नदियाँ बहेंगी, और लाखों सधवा और सनाथ विधवा और अनाथ होंगे, इस दुःख को वे पत्थर का कलेजा बनाकर सह लेंगे। हिटलर कहता है—इतना नरमेध क्यों किया जाय? संसार में फिर स्थायी शांति और व्यवस्था खड़ी कर दी जाय। ख़ानदेश के युद्ध में नर-रक्त बहते देखकर सम्राट् अशोक का हृदय बदल गया था, और उसके बाद वह पक्का बौद्ध बनकर अहिंसा का उपासक बन गया। क्या पोलैंड के जन-संहार का ऐसा ही असर हिटलर की मनोवृत्तियों पर भी हुआ? और क्या सचमुच चैंबरलेन और दलादियर निर्बल राष्ट्रों को स्वतंत्रता दिलाने के इस क़दर समर्थक हो गए? इतिहास-ग्रंथ के पत्रों पर खींची जानेवाली ताज़ी लकीरें यह बतलाती हैं कि यह सब झूठ है। राजनीति के सयानों की ये सब चालें हैं। पोलैंड की भूमि में अभी नरमेध रचाकर आया हुआ हिटलर, चैक लोगों के राष्ट्र की हत्या करनेवाला और आस्ट्रिया को हड़पकर डॉ० शुशनिंग को गोली मार देनेवाला हिटलर अब शांति के राग अलापता है? अबीसीनिया को मुसोलिनी के पंजे में देकर, स्पेन के प्रजातंत्र की हत्या करवाकर और चेकोस्लोवेकिया को क़बर में दफ़न करवाकर इँगलैंड और फ्रांस मृत पोलैंड के मक़बरे पर अब उसकी आज़ादी का मरसिया पढ़ने लगे हैं। असल में हिटलर न शांति का दूत है, और न मो० दलादियर और मि० चैंबरलेन निर्बल राष्ट्रों के सहायक। सब अपनी-अपनी घात में और अपने बचने की फ़िक्र में हैं।

हिटलर के सामने समस्या है—उसकी पोलैंड की ज़िद पूरी हो गई, डैंज़िग और कोरीडर का उसका दावा सफल हो गया, और इस बात में रूस भी उसके साथ है कि अब पोलैंड का वह नक़्शा तैयार नहीं हो सकता, जो वरसाई की संधि ने तैयार किया था। इसलिये योरप के नक़्शे में एक बिंदु-मात्र पोलैंड का अस्तित्व रहे, तो हिटलर इसके लिये तैयार हो जायगा। उसे भय इस बात का है कि पूर्व, दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पूर्व की दिशाओं से उसका प्रभाव उठता जा रहा है, और बाल्टिक प्रदेशों से तो नाज़ी-अस्तित्व का ख़ात्मा ही हो गया, उसके स्थान पर बोल्शेविज़्म क़ायम हो गया। हिटलर को बोल्शेविज़्म का भूत-सा डर बना हुआ है, और किसी भी वक़्त उसके कारण हिटलरशाही का ख़ात्मा हो सकता है। पर मजबूरी हालत में आज उसे उसी बोल्शेविक शक्ति के मुँह की ओर ताकना पड़ रहा है। बालकन-राष्ट्रों में अपने भावी हितों की आशा वह छोड़ चुका है। उसकी तीन ओर की वृद्धि रूस की लाल सेना ने रोक दी है, और पश्चिम में मित्र राष्ट्रों की तोपें और मशीनगनें उसके सामने अड़ी हुई हैं। इस प्रकार चारो ओर से वह घिर गया है। और, उसका अकेला जिगरी दोस्त मुसोलिनी भी इस वक़्त उसे दग़ा दे रहा है, जिसकी मदद की उसे बड़ी आशा थी। केवल जोश और बड़ी-बड़ी बातों से ही तो युद्ध नहीं जीता जाता। हिटलर में ये बातें काफ़ी मात्रा में हैं, लेकिन युद्ध के लिये जिन भारी सामानों की ज़रूरत है, वह वर्षों की लड़ाई के लिये कहाँ से आवेगा। उसके सामान के स्वतंत्र स्रोतों पर रूस ने सेंसर बिठा दिया, और अब वह केवल रूस के बल पर लड़ाई लड़ रहा है, जिसकी तरफ़ से उसे विश्वास नहीं कि कब वह हिटलर की मौत का कारण बन जाय। उसकी मित्र राष्ट्रों से उपनिवेशों की माँग में भारी बल नहीं। अपने शांति के प्रस्तावों को ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा ठुकराए जाने पर अब क्रोध से लाल नहीं होता, बल्कि पीला पड़ जाता है। हिटलर की कमज़ोरी स्पष्ट है। वह बातों के जितने गढ़ ढा सकता है, लगातार युद्ध को वह जारी नहीं रख सकता। ताज्जुब नहीं, आजकल सोते में उसे क़ैसर विलियम के स्वप्न आते हों, इसलिये वह सुलह चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैंबरलेन और दलादियर क्या सोचते हैं ? दुनिया-भर की बदनामी अपने सिर पर लेकर जिस सत्या-नाशिनी लड़ाई को अब तक टाला था, वह आख़िर उनके गले मढ़ ही गई—'तत्ता दूध अब न निगला जाता है, न उगला जाता है।' जिस पोलैंड की रक्षा की डींग हाँकी थी, हिटलर की गोलियों ने वह मिसमार कर दी, और इस मरे हुए खलरे में अब जान फूँकना असंभव है। एक जर्मनी से निबटना मुशकिल हो रहा है, फिर पोलैंड को पूरी तरह ज़िंदा करने के लिये सोवियट रूस की अतुल शक्ति से लोहा लेने का ख़तरा कौन मोल ले ? रूस की ताक़त दिनोंदिन बढ़ रही है। उससे योरप और एशिया दोनो महाद्वीपों में ब्रिटिश और फ्रेंच हितों के लिये भारी ख़तरा है। इसलिये सुलह का कोई मार्ग ढूँढ़ा जाय। मुसोलिनी और रूज़वेल्ट में से ही कोई मध्यस्थ बनकर आवे, तब तक हम दोनो (मित्र-पक्ष और फ़्यूहरर का दल) एक दूसरे के आमने-सामने होकर बंदूक़ें चटकाते रहेंगे। अँगरेज़ी सेना फ्रांस की भूमि में पहुँचकर खाईं खोदने का काम करेगी। अँगरेज़ी जहाज़ जर्मनी की भूमि में काग़ज़ की गोलियाँ बरसा आएँगे, और ग़ुस्सावर जर्मनी स्काटलैंड के क़स्बों पर बम टपका दिया करेगा। कभी-कभी वह अँगरेज़ी बेड़े को समुद्र में ग़र्क़ भी कर देगा, तो कोई बड़ी बात नहीं। जॉन बुल के दिल में अभी तक अपने इस बिगड़े भतीजे के लिये मोह है। वह रूस के शिकंजे में पड़ गया है। किसी तरह वहाँ से बचकर निकल जाय, और हमारे साथ मिल जाय, तो उसका जो कुछ हमारे पास है, उसे भी हम धीरे-धीरे उसे वापस कर देंगे। पर उसका रास्ता ऐसा हो, जिससे हमारी नाक दुनिया की निगाह में लंबी बनी रहे। फिर दोनो मिलकर रूस से निबट लें।

युद्ध के गत, वर्तमान और भविष्य का जो चित्र हमारे सामने है, वह इस तरह का है। इसमें भी विकल्प हो सकते हैं। पर इस कथन की पुष्टि के यथोचित कारण इस समय हमारे सामने हैं। मुमकिन है, यह दोनो ओर की चटख़ाचटख़ी और कुछ महीनों तक चले, और दो-एक बार भारी हमला होने की भी नौबत आ जाय। पर जर्मनी तथा इँगलैंड और फ्रांस का एक दूसरे का अंत करने के लिये भिड़ जाने का अर्थ दोनो का ही अंत होना और बोल्शेविज़्म की अनंत शक्ति बढ़ जाना है। इसी डर से यदि आज कोई शक्ति बीच में पड़कर इनमें सुलह करवा दे, तो निश्चय ही हिटलर साहब हिंडन-बर्ग के मज़ार पर घी का दीपक जलाएँगे। और, दलादियर तथा चैंबरलेन एक ही बोट में बैठकर इँगलिश चैनल में मच्छी का शिकार खेलने को निकल पड़ेंगे। फिर जहाँ जैसी भावना है, वहाँ वैसी सिद्धि प्राप्त होना भी असंभव नहीं। हम चाहते हैं, युद्ध का इस तरह ही अंत हो, और इस तरह असंख्य प्राणी और अतुल संपत्ति स्वाहा न हो। पर मनुष्य जो सोचता है, सदा वही नहीं होता।

× × ×

११. उद्योगीकरण का प्रश्न

आवश्यकता आविष्कार की जननी है, यह एक कहावत है। जिस वक्त ब्रिटिश सरकार ने यह देखा कि विदेशी शक्तियाँ यहाँ तक ज़ोर पकड़ रही हैं कि एक ओर योरप में अँगरेज़ों को अपने घर जान बचाने के लाले पड़ रहे हैं, और दूसरी ओर भारत पर भी बाहरी शक्तियों के आक्रमण का डर है, तब उसे यह चिंता हुई कि भारत की रक्षा के लिये भारत में आधुनिक युद्ध-विद्या से पारंगत सैनिक शक्ति की आवश्यकता है। सेना के भारतीयकरण की बात भारत के लोक-प्रतिनिधियों की तरफ़ से बार-बार कही गई थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन सरकार ने तब उस पर ध्यान दिया, जब उसे अपने भारतीय हितों के ऊपर प्रत्यक्ष ख़तरा नज़र आने लगा। तभी चेटफ़ील्ड कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हो गई, और ब्रिटेन ने पैंतालीस करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता भी स्वीकार कर ली। यहाँ अब दूसरा प्रश्न उपस्थित होता है। इस सेना के लिये हथियार, उच्च दर्जे की मैशीनरी, वायु और जल-सेना के लिये जहाज़ तथा विविध प्रकार के सामान कहाँ तैयार होंगे? क्या इन सामानों के लिये भारत फिर दूसरे देशों का मुहताज रहेगा? और इस तरह जो आर्थिक सहायता उसे दी गई है, वह युद्ध के सामानों के मूल्य के रूप में उससे वापस ले ली जायगी? भारत की शिल्पकला गिरी हुई हालत में है। वैसे भारत कच्चे माल की खान है। संसार का कोई देश कच्चे माल की उपज में उसकी बराबरी नहीं कर सकता। पर अपने इन साधनों का उपयोग वह सामूहिक राष्ट्रीय उन्नति के लिये नहीं कर सकता। पिछले महासमर में जब विभिन्न देशों में माल के आने-जाने में रोक खड़ी हो गई, और भारत में भी दूसरे देशों का माल कम आने लगा, तब यहाँ भारतीय पूँजी के बल पर नए कारख़ाने खुले, और उद्योग-धंधों की उन्नति हुई। तब से यहाँ के लोहे और फ़ौलाद के कार्य में तरक़्क़ी हो रही है। वस्त्र-व्यवसाय में भी उस समय से काफ़ी उन्नति हुई है। और, चीनी आदि के धंधे भी तरक़्क़ी पर हैं। पर भारत को अपने ख़र्च के लिये जितने सामान की ज़रूरत होती है, उसे पैदा करने में वह अभी तक काफ़ी कमज़ोर है। आजकल युद्ध के कारण विदेशी माल का आयात कम हो गया है। बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं, जिनके ख़रीदे बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता। उदाहरण के लिये जब से बाहर से यहाँ काग़ज़ आना कम हुआ है, तब से भारत में काग़ज़ के दाम काफ़ी चढ़ गए हैं, और इसका असर पत्र-पत्रिकाओं की आर्थिक स्थिति, पुस्तकों के प्रकाशन एवं उसके साथ अज्ञान और विचारों की वृद्धि पर भी पड़ रहा है। छोटे रूप में इस तरह के चलनेवाले व्यवसाय बंद हो जायँगे, और उससे देश की प्रगति में रुकावट पड़ेगी। बहुत-से पत्रों के कलेवर तो अभी से पतले पड़ गए हैं, और जो अपनी साधारण स्थिति में हैं, उनके मालिकों को पत्रों का मूल्य बढ़ाने के लिये मजबूर होना पड़ा है। इसी प्रकार और भी बहुत-सी चीज़ें हैं, जिनके दाम बाज़ार में बढ़ गए हैं। भारत को आलपीन और हजामत बनाने के ब्लेड तक तो बाहर से मँगाने पड़ते हैं। यह बात नहीं कि भारत में इस तरह के व्यवसाय चलाने के लिये पूँजी का अभाव है, या यहाँ चीज़ें तैयार करने का सामान नहीं। भारत के पास जिस बात की कमी है, वह है मैशीनरी और सुयोग्य शिल्पियों का अभाव। यदि भारत इस महायुद्ध के असर से क्रियात्मक रूप में बचा रहे, और अपनी शक्तियों का उपयोग उद्योग-धंधों की उन्नति में कर सके, तो इस अवसर से लाभ उठा सकता है। इस वक़्त बाहर के माल का मुक़ाबिला (Competition) करने की कठिनाई न पैदा होगी, और देशी चीज़ों के प्रचलन के लिये क्षेत्र तैयार हो जायगा। अगर आठ प्रांतों की कांग्रेसी सरकारें युद्ध के असर से अपने को बचा सकें, और भारत में कोई साधारण राजनीतिक स्थिति पैदा न हो, तो उनसे इस दिशा में बहुत कुछ आगे बढ़ने की आशा की जा सकती है। ब्रिटिश सरकार का भी कर्तव्य स्पष्ट है। वह भारत को सैनिक ढंग से स्वावलंबी बनाना चाहती है, तो उसे तत्संबंधित सामग्री और यहाँ के उद्योग-धंधों की उन्नति के लिये भी धन तथा जन की सहायता देनी चाहिए। इस वक़्त बाहर से कुशल कारीगर भारत में बुलाए जा सकते हैं। जो देश इस वक़्त युद्ध में ग़र्क़ हैं, वहाँ कुशल कारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरों की शक्ति का उपयोग होना असंभव है। यदि पिछले महासमर से भारत के उद्योग-धंधों की दशा में कुछ लाभ हुआ, तो इस अवसर पर वह उससे अधिक लाभ उठा सकता है। और, देशी तथा विदेशी व्यक्तियों की सहायता भी उसे प्राप्त हो सकती है।

× × ×

१२. मियाँ बसंतसिंह जागीरदार का स्वर्गवास !

सुधा - पाठकों को यह जानकर दुःख होगा कि मियाँ बसंतसिंह जागीरदार का स्वर्गवास अभी हाल ही में हो गया ! आपके संबंध में मिस्टर जे० सी० फ्रेंक आई० सी० एस्० अपनी 'हिमालियन आर्ट'-नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखते हैं— "मियाँ बसंतसिंह कांगड़ा-चित्रकारी के चित्र बनाने में सफल चित्रकार हैं। आपकी कला में नूतन और प्राचीन कला, दोनो का मिश्रण बड़ा ही उत्तम है। आपके पास कांगड़ा-कला के चित्रों का अपूर्व संग्रह है। इसमें श्रीगणेशजी का चित्र, ऋद्धि-सिद्धि-सहित, बहुत ही भाव-पूर्ण है।" उपर्युक्त संग्रह के चित्र सुधा में, समय-समय पर, निकलते रहे हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दें और दुखी परिवार को धैर्य।

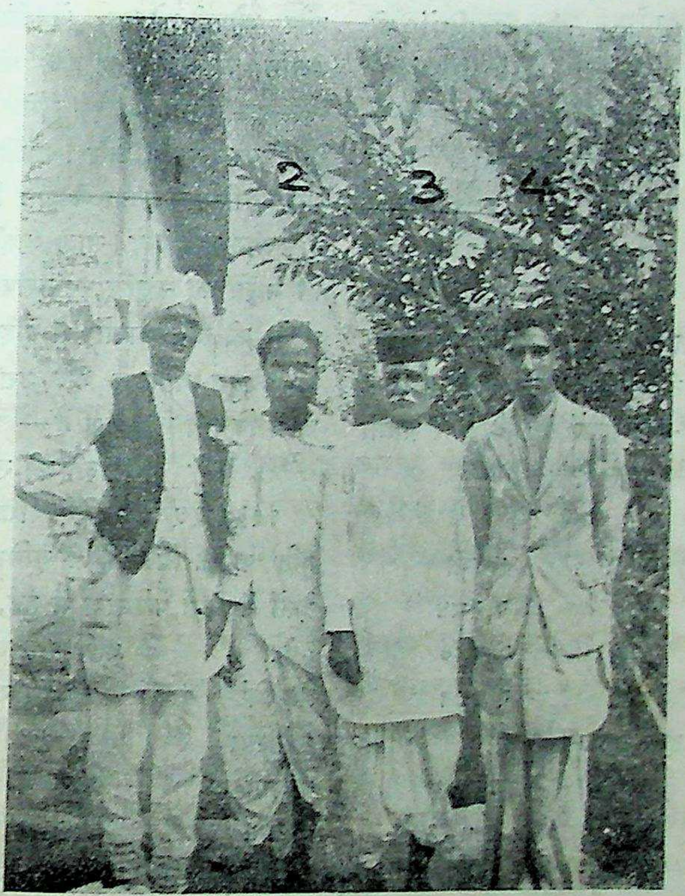

स्व० मियाँ बसंतसिंह जागीरदार
(बाईं तरफ़ से तीसरे नंबर पर)

× × ×

१३. बंबई में मोटर-दुर्घटना

मोटरों की संख्या इस देश में भी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। एक समय मोटरकारें रईसी और अमीरी की निशानी थीं, मगर आज एक आवश्यक अंग हो गई हैं। समय और दूरी पर विजय पाने का वे एक महान् उपकरण हैं। शहरों को गाँवों से जोड़नेवाली एक महत्त्व-पूर्ण कड़ी हैं। पर इसके साथ ही मोटर-दुर्घटनाओं के हताहतों की संख्या भी बढ़ती जाती है। इसलिये 'सुरक्षा प्रथम'-आंदोलन संसार के अन्य देशों में चलाया जा रहा है। बंबई-शहर में भी यह आंदोलन कुछ स्थलों से चल रहा है। इसका उद्देश्य यही है कि मोटरों की वृद्धि के साथ अपघातों की संख्या न बढ़े, मगर अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था सुधरी नहीं। 'सुरक्षा प्रथम'-आंदोलन को और अधिक ज़ोर से चलाने की ज़रूरत है। इस संबंध में बंबई-एसेंबली में हुए प्रश्नोत्तर अच्छा प्रकाश डालते हैं—

प्रश्न (मि० झाबवला)—बंबई-प्रांत में कुल कितनी मोटरें हैं ? मोटर-दुर्घटनाएँ क्या ज़्यादा होती हैं ?

उत्तर (माननीय मुंशी)—१९३६-३७ और १९३७-३८ में रजिस्टर्ड कुल मोटर-सवारियों की संख्या क्रमशः २३,६३० और २७,८१३ थी। बंबई-शहर में हुई दुर्घटनाओं का वृत्तांत इस प्रकार है—

वर्ष	मोटरकार	मोटर-साइकिल	लॉरी	बस
१९३६	३,०६२	१११	८८३	३२४
१९३७	३,६०७	१३८	१,०३३	२७०
१९३८	३,६३४	१८४	१,१५६	२९५

बंबई-शहर से बाहर हुई दुर्घटनाओं में हताहतों की संख्या ठीक-ठीक प्राप्त नहीं होती। बंबई-शहर में मोटर-दुर्घटनाओं से मरे और ज़ख़्मी लोगों का ब्योरा इस प्रकार है—

बंबई-शहर—		
वर्ष	मृत्यु	ज़ख़्मी
१९३६	११२	२,२८४
१९३७	१०४	२,६८०
१९३८	११९	२,७४१
बंबई को छोड़कर इतर भाग—		
१९३५-३६	१३८	१,४०८
१९३६-३७	१७५	१,७७९
१९३७-३८	१६९	२,२४१

× × ×

१४. भारत में बिजली की खपत

बिजली का प्रचार हमारे देश में तेज़ी से बढ़ रहा है। रोशनी के अलावा कल-कारख़ानों के चलाने में इसका अधिकाधिक उपयोग हो रहा है। जिन देशों में कोयला नहीं है, मिट्टी के तेल का भी अभाव है, मगर जल की प्रचुर मात्रा है, वे देश बिजली के सहारे अपने उद्योग-धंधों को स्वावलंबी बनाने में प्रयत्नशील हैं। प्रांतीय स्वायत्त शासन के आरंभ होने से प्रांतों के विद्युतीकरण की ओर प्रांतीय सरकारों का ध्यान गया है। जहाँ यू० पी० में बिजली के द्वारा नल-कूप (Tube Well) गाँव-गाँव पहुँच गए या पहुँचाए जा रहे हैं, वहाँ बिहार-सरकार गाँव-गाँव और झोपड़ी-झोपड़ी में बिजली पहुँचाने का उद्योग कर रही है। इस प्रसंग में यह जानना दिलचस्प होगा कि इस समय हम कितनी बिजली ख़र्च कर रहे हैं, और बिजली के यंत्र, माल और सामग्री कितनी मात्रा में और किस देश से आ रही है, और यदि यह माल यहीं तैयार होने लगे, तो भारत की समृद्धि पर इसका क्या असर पड़ेगा। नीचे की तालिकाओं से यह भी मालूम होगा कि विद्युत्-व्यवसाय की उन्नति की इस देश में अभी कितनी गुंजाइश है—

बिजली की खपत

१९३२-३३ में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय और प्रति व्यक्ति बिजली के यूनिट की खपत विभिन्न देशों में किस परिमाण में हुई, यह नीचे देखिए—

देश	वार्षिक आय	यूनिट
ग्रेट ब्रिटेन	१,०९२ रु०	१२,५१३
अमेरिका	२,०५३ ,,	८२,३७९
कनाडा	१,२६८ ,,	१७,३९९
जापान	२७१ ,,	१८,१६०
भारत	८२ ,,	१,१३०

विद्युत्-यंत्रों का भारत में आयात
(आँकड़े हज़ार रुपयों में)

देश	१९३३-३४	१९३४-३५
ग्रेट ब्रिटेन	८,६०३	१२,१७९
जर्मनी	१,०८७	२,१२४
नेदरलैंड्स	१३६	५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बेलजियम	६६	१४६
फ़्रांस	८५	१६५
इटली	१६७	१३६
जापान	१८	४३
अमेरिका	१,६६६	१,१६७

बिजली के माल और सामग्री की आयात
(आँकड़े हज़ार रुपयों में)

देश	१९३३-३४	१९३४-३५
ग्रेट ब्रिटेन	१३,०५३	१६,२४४
जर्मनी	२,५२१	३,१९८
नीदरलैंड्स	१,१४८	१३००
बेलजियम	३२६	२०६
फ़्रांस	२४६	१०८
इटली	६२७	७६१
जापान	१,५१८	१,६७५
अमेरिका	२,३९३	३,०५९

× × ×

१५. युद्ध और आर्थिक संकट

युद्ध अभी अच्छी तरह प्रारंभ भी नहीं हुआ, और उसका आर्थिक प्रभाव सर्व-साधारण पर अभी से काफ़ी पड़ने लगा। जिस दिन जर्मनी की पोलैंड पर चढ़ाई हुई, और इँगलैंड ने जर्मनी के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा की, उसके दूसरे ही दिन से बाज़ारों में चीज़ों के दाम असाधारण गति से चढ़ने लगे। पर इसका कारण चीज़ों की तेज़ी न था, बल्कि यह व्यापारियों की भावी आशंका और बाज़ार के दलालों की करतूत थी। सरकार ने फ़ौरन् ही इस ओर ध्यान दिया, और इस संबंध में कड़े आदेश दे दिए, जिससे बाज़ार-भाव फिर साधारण स्थिति पर आ गया। पर सरकारी घोषणाओं और आज्ञाओं का असर सदा ही नहीं बना रहेगा, एक सीमा तक ही सरकार चीज़ों के भाव पर अपना नियंत्रण रख सकती है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से बाज़ारों में जो उथल-पुथल मचती है, उसका असर अछूता नहीं रह सकता। आजकल युद्ध जिस ढंग से चल रहा है, उससे लोगों को यह पता चल गया है कि यह अभी न-जाने कितने वर्षों तक जारी रहेगा, इसलिये चीज़ों का उत्पादन अब भांडार भरने के लिये न होगा, बल्कि जितना उत्पादन होगा, उससे लोगों की आवश्यकताओं की ही पूर्ति होगी। इसलिये प्रत्येक चीज़ के दाम कुछ-न-कुछ पहले से चढ़ जायँगे, और ख़ास-ख़ास चीज़ों के मूल्य में तो बहुत ही ज़्यादा वृद्धि होगी। यही आजकल हम देख भी रहे हैं। विलायती चीज़ों के मूल्य में वृद्धि होना तो स्वाभाविक है, पर अपने देश में पैदा हुई चीज़ों—नाज और कपास—के भाव में भी काफ़ी तेज़ी आ गई है। लोग कहते हैं, इससे तो यहाँ के अधिकांश लोगों का भला ही होगा। अब किसानों को उनकी पैदावार के अधिक दाम मिलने लगेंगे। पर यह कोरी ख़ामख़याली है। केवल नाज को छोड़कर और सब चीज़ें तो किसान को बाज़ार से ही ख़रीदनी पड़ती हैं। उनके लिये अब किसान को अपने पास से कितने अधिक दाम ख़र्च करने पड़ेंगे। फिर, जो लोग दफ़्तरों में काम या नौकरी करते हैं, प्रत्येक चीज़ की महँगी उनके आर्थिक संकट को बढ़ाएगी। इँगलैंड की दशा और है। वहाँ के लोगों पर तो युद्ध का भयंकर आर्थिक प्रभाव पड़ रहा है। ज़रा इँगलैंड के युद्ध-बजट पर एक दृष्टि डालिए—

एप्रिल के बजट में अर्थ-मंत्री सर जॉन साइमन ने १ अरब ३२ करोड़ २० लाख पौंड के ख़र्च का अनुमान लगाया था, जिसमें शस्त्रास्त्र के लिये ६३ करोड़ की रक़म रक्खी थी। यह बजट पास भी न हुआ था कि युद्ध की संभावना का ख़याल पैदा हो गया, और युद्ध-बजट में दस करोड़ पौंड की माँग और बढ़ा दी गई। फिर भी ऐसा ख़याल न था कि युद्ध इसी वर्ष में छिड़ जायगा।

अतः फिर इस बजट में ख़र्च की रक़म बढ़ानी पड़ी, और नया बजट १ अरब ६३ करोड़ ३० लाख पौंड के ख़र्च का अनुमान करके तैयार हुआ है। आमदनी का अनुमान ६६ करोड़ ५० लाख पौंड है, अर्थात् सरकार को इस बजट के साल में ६३ करोड़ ८० लाख पौंड का घाटा रहेगा, जिसकी पूर्ति क़र्ज़ लेकर की जायगी।

अब इस ख़र्च का भार जनता पर किस प्रकार पड़ेगा, यह ध्यान देने की बात है। ऊपर जो आमदनी दिखलाई गई है, उसमें १० करोड़ ७० लाख पौंड की वह आमदनी भी शामिल है, जो युद्ध की अवस्था में नए कर लगाकर की जायगी। अर्थात् एक तो जनता पर करों का बोझ पड़ेगा, दूसरे, पैसेवाले लोगों से सरकार क़र्ज़ लेकर घाटे के बजट की पूर्ति करेगी। इससे जितना रुपया अन्य व्यवसाय में लगाया जाता, वह सरकार के ख़र्च में चला जायगा, और इससे उद्योग-व्यवसाय में भी काफ़ी हानि पहुँचेगी। आय-कर के कारण मध्यम श्रेणी के लोगों का संकट बढ़ेगा, और चीनी, तंबाकू, शराब आदि सर्व-साधारण के दैनिक व्यवहार की चीज़ों पर कर लगाने से उसका भार ग़रीब और आम लोगों पर पड़ेगा। अमीर लोगों पर भी अतिरिक्त आय-कर और मृत्यु-कर लगाए गए हैं। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं बचा, जिस पर युद्ध का असाधारण भार न हो। पर इँगलैंड की जनता ख़ुशी-ख़ुशी यह भार सहने के लिये तैयार है, क्योंकि यह समय उसके जीवन-मरण के प्रश्न का है। साधारण दशा में इँगलैंड की जनता कभी इतना टैक्स देने के लिये तैयार न होती, आज वह ख़ुशी-ख़ुशी उसे दे रही है।

प्रश्न यह है कि क्या भारत की जनता भी युद्ध-काल के आर्थिक संकट को उसी तरह सहने को तैयार है, जिस तरह इँगलैंड की जनता? इसका उत्तर 'नहीं' में मिलेगा। भारत का योरप के युद्ध से कोई सीधा संबंध नहीं। इसलिये युद्ध के कारण पैदा हुए आर्थिक संकट को वह उसी हद तक सहन कर सकेगा, जहाँ तक उसका सभी देशों पर सामान्य असर होगा, या इससे अधिक उसे इँगलैंड के भाग्य में साझीदार बनाया जाता है, तो यह साझा वह तभी स्वीकार कर सकता है, जब उसे इँगलैंड की जनता के-से राजनीतिक अधिकार प्राप्त हो जायँ।

बल व वीर्य बढ़ानेवाली

मदनमंजरी

ये गोलियाँ पाचन-शक्ति को सुधारकर दस्त साफ़ लाती हैं, रक्त को शुद्ध करके बढ़ाती हैं, और धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, अशक्ति, शिथिलता वग़ैरह को नष्ट करके बरबाद जीवन को पुनः हरा-भरा बना देती हैं। क़ीमत ४० गोलियों की डि० रु० १) एक

राजवैद्य नारायणजी-केशवजी

हेड ऑफ़िस जामनगर, काठियावाड़

लखनऊ—निगम-मेडिकल-हॉल, फ़तेहगंज

इलाहाबाद—बलभद्रदास, कन्हैयालाल, जान्स्टनगंज। बनारस-एजेंट—राधेलाल ऐंड संस, चौक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगम

[मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

इस सर्वोत्तम उपन्यास के लेखक श्रीयुत वृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी० को कौन नहीं जानता। जिन्होंने आपके रोमांटिक प्रेम-गाथा-पूर्ण, मनोरंजक और मौलिक रचनाएँ गढ़-कुंडार, लगन, कुंडलीचक्र, प्रत्यागत इत्यादि को पढ़ा है, वे आपकी लेखनी की शक्ति से परिचित हैं ही। आपकी ही शक्तिशाली क़लम से यह संगम उपन्यास निकला है। जिसमें आपने सीधी और खरी भाषा में समाज के थोथे रीति-रिवाजों और जाति-पाँति के झूठे अभिमान पर कुठाराघात करके 'मानवता' को ऊँचा स्थान दिया है। भाषा, भाव और भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियों का आपने ऐसा सुंदर, सजीव चित्र खींचा है कि एक बार पुस्तक उठा लेने से छोड़ने को जी नहीं चाहता।

हमें हर्ष है कि प्रथम आवृत्ति के धड़ाधड़ बिक जाने से पाठकों के सामने द्वितीय आवृत्ति रख रहे हैं। हिंदी-संसार की इस अमूल्य निधि को अवश्य पढ़िए। मूल्य २), सजिल्द २।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

हिलोर

[मर्मस्पर्शिनी कहानियाँ]

लेखक, पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी। लेखनी द्वारा ज्यों-का-त्यों चित्र खींचना कोई सहज काम नहीं है। इसके लिये लेखक को कठोर साधना की जरूरत है। इस कला में वाजपेयीजी अपना सानी नहीं रखते। आपकी रचना के विषय में हम श्रीयुत अमरनाथ झा (वाइस-चान्सलर प्रयाग-विश्वविद्यालय) की सम्मति पर्याप्त समझते हैं।

"वाजपेयीजी की कहानियों में श्रेष्ठ कला का यह लक्षण विद्यमान है कि उन्हें बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। चित्त ऊब नहीं जाता। ज्ञान की बातें तो हैं, परंतु लेखक में हृदय को स्पर्श करने की शक्ति है। और, वही कला जीवित रहती है, जो हृदयंगम होती है।"

आपकी रचनाओं में कुछ ऐसी शक्ति है कि पढ़नेवालों के हृदय और मस्तिष्क, दोनो पर प्रभाव पड़ जाता है। इस अमूल्य रत्न को ज़रूर मँगाकर लाभ उठाइए। मूल्य १), सजिल्द १।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

सुधा के लिये

आवश्यकता है

(१) आठ-दस कुशल कंपोज़ीटरों की, वेतन योग्यतानुसार।

(२) दो प्रवीण प्रूफ़-रीडरों की। जिन्होंने प्रेस में प्रूफ़-रीडरी का कार्य किया हो, केवल वे ही आवेदन-पत्र भेजें, वेतन योग्यतानुसार।

(३) दो-तीन क्लर्कों की, वे कम-से-कम हिंदी-मिडिल पास हों, और अँगरेज़ी में पते लिख सकें, वेतन योग्यतानुसार।

अध्यक्ष 'सुधा'

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी राज्यों में कांग्रेस क्यों आंदोलन कर रही है ?

यह जानना हो, तो

श्रीनाथसिंह-लिखित

जागरण-उपन्यास पढ़िए !

देशी राज्यों में अधिकारी कैसी मनमानी करते हैं ?
स्त्रियों का सतीत्व तक अपहरण करने
के लिये क्या-क्या चेष्टाएँ की जाती हैं ?
राष्ट्रीय आंदोलन को किस तरह
कुचला जाता है ?
और अंत में संगठित प्रजा की
किस तरह जीत हो सकती है ?
आदि-आदि बातों पर प्रकाश
डालनेवाला यह हिंदी का
एकमात्र उपन्यास है ।

मूल्य २), सजिल्द २॥)

मिलने का पता—

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के कागज़, लिफ़ाफ़े,
पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मेमो,
रसीद - बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण - पत्र,
अभिनंदन - पत्र, पुस्तक आदि — — — —

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर,

साथ ही

ठीक वक़्त पर, किया जाता है।

संतोषप्रद काम देने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का
कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं !

सब प्रकार की
छपाई के काम
के लिये सुविधा-
जनक स्थान

मैनेजर
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
२३, लाटूश रोड
— लखनऊ —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A. 1712.

पहाड़ी सान्यालकी स्त्री, मीरा सान्याल को कौन नहीं जानता ! फैशन की साड़ियां चुननेमें उनकी जैसी सुरुचि है वैसी ही चायके लिये भी है। उनका कहना है :

"चाय व्यवहारिक मंडलीकी सुन्दरता है"। सुरुचिपूर्ण महिलाओं द्वारा बनी चायसे बढ़कर और क्या हो सकता है ? चाय ही आधुनिकता का विशेषत्व है!

आधुनिक महिलायें चाय पसन्द करती हैं

IE. 129

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0 ... Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-पुरुषों की प्यारी पत्रिका

हिंदी-संसार में युगांतर उपस्थित करनेवाली

सबसे सस्ती और सुंदर पत्रिका !
सस्ता संस्करण ४) !!

साधारण संस्करण		राजसंस्करण
वार्षिक मूल्य ६)	**सुधा**	वार्षिक मूल्य १२)
विदेश में ६)		विदेश में १२)

७ दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका है।

१. लेखों और कविताओं के चुनाव की दृष्टि से
२. प्रूफ-रीडिंग और भाषा की शुद्धता की दृष्टि से
३. काग़ज, छपाई, रूप-रंग और गेट-अप की दृष्टि से
४. महत्त्व-पूर्ण संपादकीय टिप्पणियों की अधिकता की दृष्टि से
५. सभी विषयों पर उत्तमोत्तम और सामयिक लेखों की दृष्टि से
६. उच्च कोटि की चित्रकला के सुंदर, भाव-पूर्ण चित्रों की दृष्टि से
७. अमीर-ग़रीब सभी श्रेणी के पढ़नेवालों की दृष्टि से

हमारी राय है कि ६) भेजकर आप साधारण संस्करण पसन्द ... न।

मनोविनोद का सुंदर साधन ! नमूना मुफ़्त ... र देखिए !!

मैनेजर 'सुधा'-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ

प्रत्येक मनुष्य इस बात की गाँठ बाँध ले !

लाभ

कि यह इश्तहार पैसा कमाने की तरकीब हरगिज़ नहीं, बल्कि हर मनुष्य को फ़ायदा पहुँचाने की युक्ति ज़रूर है। यह वह चीज़ है, जिसके द्वारा लाखों-करोड़ों वर्षों से अरबों-खरबों ने अपनी बिगड़ी बनाई, उजड़ी बसाई, दिली मुरादें पाईं, सब इच्छाएँ पूरी हुईं, बदक़िस्मती टली, ख़ुशक़िस्मती नसीब हुई, मगर आज तक कोई बेयक़ीनी की निगाह से इसकी तरफ़ उँगली नहीं उठा सका है। जब अंधाधुंध, बेहिसाब, अनगिनत लोगों ने लाभ उठाया, तो इसका कोई अर्थ नहीं कि इसके लाभ से आप ही वंचित रहें।

चमत्कारी 'नवग्रह'-यंत्र

मँगाइए। इसके जौहर की प्रशंसा बड़े-बड़े बुद्धिमान्, ज्योतिषी और महा व धुरंधर पंडितों ने की है। इसके गुणगान में अट्ठासी हज़ार ऋषि-मुनियों ने पोथे-के-पोथे रँग डाले हैं। यह वस्तु शास्त्र की है, इस पर किसी प्रकार की नुक़्ताचीनी या बेयक़ीनी की रत्ती-भर गुंजायश नहीं है। जो मनुष्य शास्त्र या शास्त्रविधि पर विश्वास नहीं करता, उसको जीवन-भर में ख़ुशक़िस्मती नसीब नहीं होती। ऐसा श्रीकृष्ण भगवान् ने ख़ुद कहा है (देखो गीता, १६।२३)। यह नवग्रह-यंत्र दुष्ट ग्रहों को शांत कर रोज़गार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुक़द्दमे में जीत, शत्रु परास्त, राजदरबार में इज़्ज़त, इच्छानुसार नौकरी मिलना, संतान-लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, ख़राब स्वप्न का नाश, दिलपसंद शादी होना, अचानक आफ़तों से बचना, वशीकरण, रेसो-लाटरी में धन की प्राप्ति

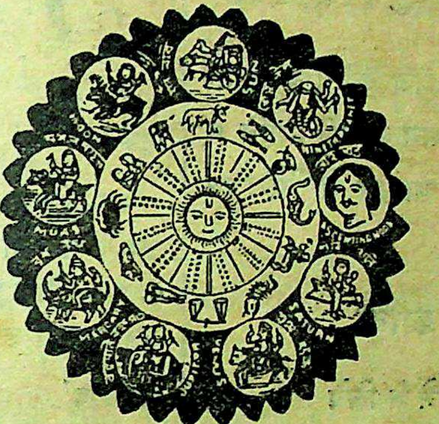

वग़ैरह हर एक कार्य पूर्ण करेगा। जो पूछोगे, हर सवाल का जवाब स्वप्न में देगा, विधि-सहित बताएगा तथा आप जिस काम का ध्यान करेंगे, तुरंत ही यंत्र में बिजली के करेंट की तरह शक्ति निकल उसी काम को पूरा करेगी। हर आदमी को यक़ीन दिलाते हैं कि इसमें लगाया हुआ पैसा कभी निष्फल नहीं जाता। जो एक बार मँगा लेता है, इसके लाभ को देखकर बार-बार मँगाता है, बहुतों ने छ-छ, आठ-आठ नहीं, बल्कि बारह-बारह नवग्रह-यंत्र मँगाए हैं। यदि विश्वास न हो, तो हज़ारों में से कुछ प्रशंसा-पत्र देखिए, अगर अब भी यक़ीन न हो, तो -) का टिकट भेजकर गारंटी लिखाइए। फ़ायदा न हो, तो दाम वापस मँगाइए। शास्त्रोक्त न हो—

झूठा साबित करने से ५००) इनाम

याद रखना, असली चीज़ बराबर नहीं मिलती। शास्त्र कहता है—सकल पदारथ हैं जग माहीं; कर्महीन नर पावत नाहीं। जीवन को स्वर्ग बनाने के लिये हर स्त्री, हर पुरुष, बच्चे-बूढ़े को एक-एक यंत्र अपने पास रखना परम धर्म है। संतान के इच्छुक दो नवग्रह-यंत्र मँगावें। स्त्री को दो लालमणि या पुरुष को दो नीलमणि-युक्त कंप्लीट एक नवग्रह-यंत्र का मूल्य केवल २), तीन यंत्र एक साथ लेने से ५॥), चाँदी का ३) सोने का ६॥-); एक से ज़्यादे चार कामों के लिये स्पेशल यंत्र नं० २ मँगावें, मूल्य ५॥≡)।, चार से ज़्यादे जितने भी काम हों, सबको सफल करता है; स्पेशल नं० १ मँगावें, मूल्य ६॥≡)।; यह यंत्र बहुतही पावरफ़ुल है। डाक-व्यय ॥), विदेशों से ५ शिलिंग। यंत्र के लिये किसी प्रकार का बंधन या पूजा-पाठ आपको करना नहीं है।

शास्त्र का यही नवग्रह-यंत्र है, जिसकी लोगों ने नक़लें कीं, किसी ने यंत्र, किसी ने मंत्र, किस ने कवच नाम रख, कम-ज़्यादे क़ीमत दिखा, इश्तहारबाज़ी से तारीफ़ों की झड़ियाँ लगाईं, लोगों को धोखे में डाला, पर कोई माई का लाल इस नवग्रह-यंत्र के फ़ायदे को आज तक दिखा न सका। नवग्रह-यंत्र की जीती-जागती करामात देखने के लिये पंडितजी का पता नोट कर लें।

वी० अर्जुनबाद बी० ए० क्लास, वेलिंगटन-कॉलेज (सतारा) सांगली—आपके यंत्र से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ, इम्तिहान में पास हो गया। कृपया एक यंत्र वी० पी० से और भेजें।

मि० इबराहीम दाऊदभाई, भिंडी बाज़ार, बंबई—पं० जी, आपके यंत्र ने मुझे हैरत में डाल दिया। असंभव संभव कर दिखाया। एक यंत्र और देने की कृपा करें। इस बार आपको इनाम दूँगा।

मि० ए० डी० एस्० ऐडवोकेट हाईकोर्ट, पटना—एक यंत्र आपसे मँगाया था, उससे काम पूरा हो गया। कृपाकर एक यंत्र वी० पी० करके और भेज दें।

मिलने का पता—पं० वी० आर० भविष्यवक्ता (S. S. L.), बंबई नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-अपने क्षेत्रों के दो उत्कृष्ट

पत्र

कला !

सिनेमा आधुनिक युग की प्रमुख कला है। सिनेमा से परिचित रहना कला की प्रगति से परिचित रहना है।

क्रांति !

साहित्य और समाज आज क्रांति के कर्म-क्षेत्र हैं। साहित्य और समाज की प्रगति से परिचित रहना क्रांति की आवाज़ से परिचित रहना है ! और

कला और क्रांति

से परिचित रहने के लिये

भारत के एकमात्र प्रगतिशील साप्ताहिक

'चित्रपट'

से परिचित रहना आवश्यक है !

क्योंकि

साहित्य, समाज और सिनेमा के क्षेत्र में

'चित्रपट'

क्रांति का अग्रदूत है !

[संपादक—श्रीचंद्रधर]

वार्षिक मूल्य पाँच रुपया, एक प्रति दो आना।

देशी राज्यों की आठ करोड़ मूक और दुखी प्रजा के मानवोचित अधिकारों की जोरदार वकालत और देशी राज्यों को सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्था की ओर अग्रसर करना

'सचित्र दरबार'

का मुख्य उद्देश्य है।

[संपादक—श्रीचंद्रधर]

'दरबार'

सामाजिक समस्याओं के संबंध में अत्यंत उग्र, तप्त और असहनशील है, और हिंदुओं के सामाजिक अधःपतन के प्रत्येक कारण को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिये तत्पर है।

'दरबार'

का प्रत्येक अंक फड़कते हुए समाचारों, अनाचार-पूर्ण राज्यों की व्यवस्था की निष्पक्ष आलोचनाओं, देश-विदेश की साप्ताहिक प्रगति तथा सामयिक लेखों से भरा रहता है।

'दरबार'

यदि आपने अभी तक नहीं देखा है, तो नमूने के अंक के लिये दो आने के टिकट भेजिए। गत वर्ष के अंक किसी मूल्य पर भी न मिल सकेंगे।

मूल्य

साधारणसंस्करण एक प्रति =), वार्षिक ५), आजीवन २५)

राज-संस्करण वार्षिक २०), आजीवन ५०)

लिखिए

'साहित्य-मंडल', २३, दरियागंज, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. हार-स्वीकार (कविता)—[लेखक, श्रीयुत 'वचनेश' ४१३

२. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ४१४

३. छायावाद और रहस्यवाद—[लेखक, प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री, 'मनीषी', एम्० ए० (त्रितय) ४१५

४. पारो (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ... ४२१

५. भारत में ग्राम-सुधार—[लेखक, श्रीपी० सी० जैन एम्० ए०, एम्० एस्-सी० (लंदन), अर्थशास्त्र-अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय ४२६

६. गुप्तकालीन भारतीय समाज—[लेखक, श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी० ... ... ४३३

अमृतांजन

सर्वश्रेष्ठ दर्दनाशक भारतीय महौषध। सिर-दर्द, जलन, पीड़ा, फोड़ा, सूजन, कटना, घाव, वात, गठिया, कमर का दर्द, सरदी, खाँसी, कीड़ों का डंक आदि सभी वेदनाओं में 'अमृतांजन' आश्चर्य-जनक फ़ायदा करता है।

अमृतांजन लिमिटेड

बंबई, कलकत्ता, मदरास

पो० बॉक्स नं० ६८२५

गारंटी के साथ होता है

सूज़ाक, गर्मी और नामर्दी का इलाज !

हज़ारों रोगी लाभ उठा चुके हैं। सैकड़ों रईस, राजा-महाराजाओं से प्रशंसित व प्रमाणपत्र प्राप्त। डॉक्टरों, वैद्यों, हकीमों से निराश हुए तमाम रोगी दूर-दूर से स्वयं आकर गारंटी से इलाज कराते हैं। जो सज्जन यहाँ आने की तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते, वे घर बैठे मेरी ओषधि मँगाकर इन रोगों को जड़ से नष्ट करें। दो सप्ताह में आराम होता है। मूल्य ओषधि सूज़ाक (गनोरिया) नया २॥), पुराना ५); गर्मी नई हो २॥), पुरानी ५); नामर्दी थोड़ी हो ५), पुरानी के ६) हैं, जिसमें खाने-लगाने की दवाएँ रहती हैं, डा०-ख़र्च प्रति रोग ॥-)

महालक्ष्मी-विलास गोलियाँ

अत्यंत स्तंभक, कामोत्तेजक, नपुंसकत्व पर चमत्कारिक। स्वर्ण-वर्क़, चाँदी, अभ्रक, फ़ौलाद, मोती, कस्तूरी आदि बहुमूल्य द्रव्यों द्वारा बड़े परिश्रम से बनाई हैं। इससे इंद्रिय-शिथिलता, थोड़ी उत्तेजना से धातु का गिरना, धातु का पतलापन, आँखों के सामने अँधेरा जान पड़ना, दिशा-पेशाब के साथ वीर्य निकल जाना, दिमाग़ कमज़ोर, शिर-दर्द, कमर-दर्द, स्वप्न-दोषादि, बीसो प्रमेह आराम होकर वृद्ध मनुष्य भी रक्त, मांस, धातु से परिपूर्ण, हृष्ट-पुष्ट, अपार वीर्यवाला, महाकामी होता है। स्तंभन-शक्ति अत्यंत बढ़ जाती है; मूल्य ६० गोलियों का ५), डा०-ख़र्च ॥-)

नपुंसकताहरण तिला कस्तूरी-मिश्रित

यह सुस्ती, नामर्दी, ढीलापन, बाँकपन को नाश कर असली ताक़त पैदा करता है; मूल्य ५) फ़ी शीशी, डा०-ख़र्च ॥-)

पता—पं० अयोध्याप्रसाद शुक्ल वैद्यशास्त्री

शुक्ला आयुर्वेदिक औषधालय, निशातगंज, लखनेऊ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ

७. गिरते हुए पत्ते से (कविता)—[लेखक, श्रीयुत आरसीप्रसादसिंह ... ४३७
८. हिंदी-साहित्यिकों की बोल-पट-साधना—[लेखक, श्रीयुत बालेश्वर गुरु ४३८
९. तने तार (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत बलराम पगारे ४४६
१०. हमारे ग्राम का पुस्तकालय—[लेखक, श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०... ४५२
११. पार्थिव कामधेनु—[लेखक, श्रीपं० कृष्ण-देव शर्मा एम्० ए०, विशारद ... ४५८
१२. लालिमा (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत अखिलेशनारायण वाजपेयी 'अखिलेश' ४६४
१३. कन्या (कविता)—[लेखक, श्रीयुत राजकिशोर कक्कड़ ४६७
१४. रसतरंगिणी और भावविलास—[लेखक, प्रोफ़ेसर विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए० ४६६
१५. सुधा-चित्रावली ... ...
१६. चयन—[लेखकगण, श्रीयुत भारत-भूषण अग्रवाल, महंत धनराजपुरी व्याकरण-वाचस्पति, साहित्य-सरोज, श्रीयुत चाँदमल अग्रवाल 'चंद्र' विशारद, काव्यमनीषी, श्रीयुत लालधर त्रिपाठी साहित्यरत्न, श्रीयुत चिरंजीलाल 'एकाकी', श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास और श्रीयुत रामप्रसाद विद्यार्थी ४७७
१७. परिचय—[लेखक, श्रीयुत जैमिनि और श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ४८९
१८. कुसुम ४९२
१९. धारा ४९३

'गुलाब'जी की क्रांतिकारी पुस्तकें फ़ौरन् पढ़िए !

यदि आप दुनिया में एक शक्तिशाली मनुष्य बनकर चमकना चाहते हैं, अपनी दिलचस्पियों के साधन जुटाकर व्यापार तथा नौकरी-पेशे में तेज़ी के साथ उन्नति करना चाहते हैं, मुसीबतों को दूर भगाकर सुख, स्वास्थ्य और सफलता के अधिकारी होना चाहते हैं, तो मनुष्य-साइंस की दो विचित्र पुस्तकें 'आकर्षण-शक्ति' और 'नई रोशनी' आज ही पढ़िए। समूचे भारतवर्ष में इन पुस्तकों से मनुष्यों को नई ज़िंदगियाँ मिल रही हैं—हज़ारों प्रशंसा-पत्र प्राप्त।

आकर्षण-शक्ति

मूल्य हिंदी २) डाक-ख़र्च ।=)
बँगला १।।) डाक-ख़र्च ।=)

नई रोशनी

मूल्य १।।) डाक-ख़र्च ।=)

अन्यान्य हलचल-भरी पुस्तकें—

काँटा—गुलाबजी का ताज़ा उपन्यास और सामाजिक क्रांति — मूल्य १।।) डाक-ख़र्च ।=)
तारामंडल—फ़ैशन, फ़रेब और धनिकों की विलास-लीला — मूल्य १।।) डाक-ख़र्च ।=)
दिल की प्यास—आग़ा हश्र कश्मीरी का अमर नाटक — मूल्य १) डाक-ख़र्च ।-)

मिलने का पता—
गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. तन्मयता—[चित्रकारिणी, कुमारी सुशीला टोपा ४१३

(ख) दुरंगे

२. आचार्य श्रीपं० रामचंद्र शुक्ल ... १६८
३. श्रीश्रीधरसिंहजी एम्० ए० ... १६९

(ग) सादे

४. प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी ४१५
५. श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए० ... ४२१

पृष्ठ

६. श्रीबालेश्वर गुरु ४३८
७. स्वागत ४७३
८. मदरास-विश्वविद्यालय का वार्षिक पदवी-दान-समारोह ४७४
९. आचार्य कृपलानी ४७५
१०. श्रीमहादेव देसाई ४७६
११. हर हिटलर ४६४
१२. भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ५०३
१३. कमलाजी का स्मारक ५०६

[ई० सन् १९०१ में स्थापित]

च्यवनप्राश-३) सेर अध्यक्ष मथुरा बाबू का मकरध्वज-४) भरी

शक्ति औषधालय-ढाका

आयुर्वेदिक संसार में युगांतर उपस्थित कर दिया है।
कारखाना और हेड ऑफ़िस ढाका, बंगाल। तार का पता "शक्ति" ढाका।
कलकत्ता हेड ऑफ़िस—५२। १, बीडन स्ट्रीट। चौरंगी
बंगाल से बाहर की शाखाएँ:—देहली, कानपुर, इलाहाबाद, पटना, भागलपुर, गया, बनारस, गोरखपुर, बुलानाला, जमशेदपुर, गौहाटी, तिनसुकिया (आसाम), मदरास, कटक, रंगून, बेसिन, मांडले (बरमा), बंबई, लखनऊ ब्रांचः—२, श्रीरामरोड, लखनऊ इत्यादि।
ब्रांच भारतवर्ष में सर्वत्र और बरमा में
मृतसंजीवनी सुरा (गवर्नमेंट से लाइसेंसशुदा) भारतवर्ष और बरमा में हमारी सभी ब्रांचों में मिलती है।
अध्यक्षगण—श्रीमथुरामोहन, लालमोहन, फणींद्रमोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती।

प्रोप्राइटर्स—श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती बी० ए०

हिंदू केमिस्ट और फ़िज़िसियन

पत्र और मनीऑर्डर आदि मथुरा बाबू मैनेजिंग प्रोप्राइटर के नाम भेजिए। (एम्०)
आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली संवलित सूचीपत्र मुफ़्त मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो चाहोगे, हो जावेगा

अपने प्रेमी या प्रेमिका को पाने के लिये निष्फल प्रयत्नों द्वारा यदि आप निराश हुए बैठे हों, तो अन्तिम बार हमारा "कामना-सिद्ध" जन्त्र पास रखकर उसका नाम ले लीजिये। कितने ही दूर तथा कितने ही कट्टर दिलवाला आपका प्रेमी भी आपको मिलने के लिये तड़पने लगेगा। और जीवन-भर आपसे जुदा होने का साहस न कर सकेगा। अपने हाकिम व मालिक को अपना बनाना तथा दुशमन को मित्र बनाना भी इस जन्त्र से विशेष गुण हैं। आपकी हजारों कोशिशों से भी पूरा न हुआ कार्य इस जन्त्र से फ़ौरन् पूरा हो जायगा।

क़ीमत प्रति जन्त्र केवल एक १) डाक-ख़र्च अलग।

नोट—झूठ साबित करनेवाले को ५००) रु० नक़द इनाम।

मँगाने का पता—

प्रकाश-ज्योतिष-आश्रम

बाज़ार जौरे मोरी, लाहौर।

डाह का फल

यह महाकवि शेक्सपियर के परम प्रसिद्ध "Othello"-नामक का हिंदुस्तानी में अनुवाद है। इसमें ऐसी नसीहतें हैं कि हर उम्र और हर क़िस्म के लोग इससे लाभ उठा सकते हैं। युवकों और युवतियों के लिये तो यह धर्म-ग्रंथ का काम देगा। पातिव्रत का उपदेश भी इसमें कूट-कूट कर भरा है। विना विचारे किसी वात को न कर बैठना, दुष्टों के छल-कपट से अपने को बचाना, शुद्ध प्रेम को निभाना, डाह के कड़ाह में अपने को न गिराना, आवारगी और शराब से अपने को हटाना—यही इस नाटक के असल उपदेश हैं। और, इनकी ज़रूरत हर शख़्स को है। रावराजा, डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र आदि विख्यात विद्वानों ने इसकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। इसमें शेक्सपियर और राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्रप्रसादजी के चित्र भी हैं। मूल्य केवल ।।।)

पता—गंगा-ग्रंथागार ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु-पालन

लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। इस पुस्तक में शिशु-पालन-संबंधी समस्त ज्ञातव्य बातों का, बड़ी ही सरल भाषा में, वर्णन किया गया है, कोई बात छोड़ी नहीं गई। पुस्तक माताओं के बड़े काम की है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र भी हैं। मूल्य २), सजिल्द २॥)

हिलोर [कहानी-संग्रह]

लेखक, हिंदी के सुविख्यात कहानी-लेखक श्रीपं० भगवतीप्रसादजी वाजपेयी। वाजपेयीजी की कहानियाँ हिंदी-साहित्य में आदरणीय हैं। उनकी प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं। प्रो० अमरनाथ झा की भूमिका पढ़कर आपको लेखक की प्रतिभा का पता लगेगा। इस संग्रह में उनकी १२ अनूठी कहानियाँ हैं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

मकरंद [काव्य]

लेखिका, स्वर्गीय श्रीमती रामेश्वरीदेवी 'चकोरी'; संकलनकर्ता, श्रीयुत 'अरुण' बी० ए०। हिंदी-साहित्य में 'चकोरी'जी की रचनाओं को कितना उच्च स्थान मिला, इसे सभी काव्य-प्रेमी जानते हैं। इस प्रतिभाशालिनी कवयित्री की रचनाओं का यह दूसरा संग्रह 'किंजल्क' से भी बढ़कर लोक-प्रिय बनेगा। कविताएँ उपयोगी हैं। छपाई सुंदर। मूल्य सादी ॥=), सजिल्द १=)

रजकण [काव्य]

लेखिका, श्रीमती शकुंतला श्रीवास्तव। हिंदी-काव्य-जगत् में शकुंतलाजी अपना विशेष स्थान रखती हैं। आपकी कविताएँ सरस, सरल एवं भाव-पूर्ण होती हैं। इस पुस्तक में एक-से-एक उत्तमोत्तम खड़ी बोली की कविताएँ हैं, जिन्हें पढ़कर न-केवल कविता-मर्मज्ञ, अपितु सर्व-साधारण जन भी मुग्ध हुए बिना न रहेंगे। मूल्य सादी ।।), सजिल्द १)

महारानी दुर्गावती [काव्य]

लेखक, पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'। वीर-प्रसूता भारत माता ने अनेक ऐसी वीरांगनाओं को जन्म दिया है, जिनके शौर्य और बलिदान की पावन गाथाओं से इतिहास के अध्याय स्वर्णाक्षरों से अंकित किए गए हैं। महाकोशल की अमर विभूति महारानी दुर्गावती भी ऐसी ही वीरांगनाओं में अपना प्रमुख स्थान रखती हैं, किंतु हिंदी में उनके पावन चरित्र की काव्यमय गुण-गाथा का एकांत अभाव रहा है, उसी की पूर्ति कवि ने सुंदर वीर-रस-पूर्ण कविताओं में की है। मूल्य ।-), सजिल्द ।=)

जूनिया

(सचित्र, मौलिक उपन्यास)

पंतजी ने यह नया उपन्यास लिखकर हिंदी-साहित्य में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इसमें एक ग़रीब किसान को जाति-पाँति के पचड़ों में पड़कर किस प्रकार अपना धर्म-परिवर्तन करना पड़ा, वह विद्या और शांति की खोज में किस प्रकार अपनी सारी शक्ति लगा देता और बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठाते हुए अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से उन्नति करता है, इसका अच्छा चित्रण है। भाषा मुहाविरेदार। मूल्य १॥), सजिल्द २)

क्यों और कैसे ?

पानी नीचे की ओर क्यों बहता है, भूकंप क्यों आता है, पेड़ से फल नीचे क्यों गिरता है ? आदि बीसों बातों का वर्णन लेखक ने बड़ी ख़ूबी के साथ किया है। इस ढंग की पुस्तक अभी तक बालकों के लिये न थी। उसी अभाव की पूर्ति करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेंगे। मूल्य सादी ।), जिल्ददार ।=)

मिलने का पता—मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-जगत् में अब तक जिसकी प्रतीक्षा थी, वही ग्रंथ तैयार है !!
बड़ी खोज, अध्ययन, परिश्रम और अनुभव से लिखा हुआ

हिंदी-साहित्य का इतिहास

(लेखक—'मिश्रबंधु')

याद रखिए ! साहित्य के भांडार में अब तक ऐसा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ आपने न देखा होगा, 'मिश्रबंधु' ही सबसे प्रथम इस प्रयास में आगे बढ़े हैं, हिंदी-भाषा में ऐसी प्रामाणिक पुस्तक आपको सुलभ है।

शीघ्र मँगाइए।

पृष्ठ-संख्या लगभग ४००

मूल्य १॥) सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

निरंकुशता-निदर्शन

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता'-शीर्षक जो निबंध 'सरस्वती' में लिखा था, उसका, मुँहतोड़ जवाब पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने मनसाराम के नाम से 'भारत-मित्र' में दिया था, यह उन्हीं दोनो लेखों का संग्रह है। यदि दो साहित्यिक महारथियों की पैंतरेबाज़ी देखनी हो, तो इसे अवश्य पढ़िए। अपने ढंग की एक ही चीज़ है। चतुर्वेदीजी ने अपनी स्वाभाविक चटपटी भाषा में द्विवेदीजी की उक्तियों की ऐसी धज्जियाँ उड़ाई हैं कि द्विवेदीजी को चुप ही हो जाना पड़ा। संस्कृत के विद्वानों ने एकमुँह से इसकी प्रशंसा की है। काशी-शैव भारती-भवनस्थ जंगमवाड़ी मठ के व्यवस्थापक पं० वीरभद्र शर्मा तैलंग वेदतीर्थजी लिखते हैं—"श्रीद्विवेदीजी का जो निरंकुशता-प्रासाद बन रहा था, वह एकदम गिर पड़ा, या यों लिखना चाहिए कि द्विवेदीजी का 'वैदुष्य-घमंड' एक तरह से विलीन हो गया। निदर्शन सविनोद, सयुक्तिक है, और निरंकुशता का ख़ूब निदर्शन है। इत्यादि।"

सारांश यह कि ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। मूल्य ॥), १)

रेलदूत

यह भी एक नई चीज़ है। कालिदास ने जैसे संस्कृत में 'मेघदूत' रचा था, वैसे ही यह 'रेलदूत' भी एक देशानुरागी बंदी द्वारा, व्रजभाषा में, लिखा गया है। कालिदास ने मेघ को संबोधन कर लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। वर्तमान परिस्थिति का दोहों में अच्छा वर्णन है। पढ़ने में जी लगता है। देशानुरागियों को तो अवश्य ही पढ़ना चाहिए। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। देश-रत्न बाबू राजेंद्रप्रसादजी ने भूमिका लिखी है। मूल्य ‒), ≡)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजसंस्करण	१२)	१)
साधारण संस्करण	६)	॥)
सस्ता संस्करण	४)	।)

प्रकाशक—
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वर्ष १३ खंड १ } मार्गशीर्ष, ३१७ तुलसी-संवत् (१९९६ वि०)— दिसंबर, १९३९ { संख्या ५ पूर्ण संख्या १६१

हार-स्वीकार

[श्रीयुत 'वचनेश']

प्यारे! तुम जीते, हम हारे।

प्रगट होउ, अब तुमकौं गहिबो
बस को नाहिं हमारे।
कब सों हेरत फिरत, न पावत,
हौ समीप, नहिं न्यारे।
छिपि-छिपि जात झलक दै छन-छन,
छल - बल अगम तुम्हारे।

और खेल खेलौ हिलि-मिलि, सो
खेलैं संक बिसारे।
आँख-मिचौनी तुमसों अब हम
कबहुँ न खेलनहारे।
थकित गात, मति थगित भई अब
पग - पग लागत भारे।

आय मिलौ 'बचनेस', तुम्हारी
चतुराई पर वारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

[श्रीपं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला']

तुम्हें चाहता है वह, सुंदर,
जो द्वार-द्वार फिरकर
भीख माँगता कर फैलाकर।

भूख अगर रोटी की ही मिटी,
भूख की ज़मीन न चौरस पिटी,
और चाहता है वह कौर उठाना कोई,
देखो, उसमें उसकी इच्छा कैसे रोई;
भीख माँगता कर फैलाकर
द्वार - द्वार फिरकर,
तुम्हें चाहता है वह, सुंदर!

देश का, समाज का,
कर्णधार हो किसी जहाज़ का,
पार करे कैसा भी सागर,
फिर भी रहता है चलना उसे—
फिर भी रहता है पीछे डर,
चाहता वहाँ जाना वह भी,
नहीं चलाना जहाँ जहाज़—
नहीं सागर,
नहीं डूबने क' भी जहाँ डर।

द्वार - द्वार फिरकर
भीख माँगता कर फैलाकर,
तुम्हें चाहता है वह, सुंदर!

दुनिया में हिंदुस्तान का नया आविष्कार

हिंद-टॉनिक शारीरिक समस्त त्रुटियों को पूरा कर, स्वास्थ्य को सुधार कर, झुर्रियाँ नष्ट कर, आँख की रोशनी तेज़ कर, बाल का पकना रोककर, बूढ़ा-जवान, सभी का पका बाल खूँटी से काला पैदा कर स्थायी न रखे और झूठा साबित हो, तो १००) देने की शर्त। दाम ५) की शीशी।

पता—जड़ी-बूटी-दवाख़ाना, पो० बिहार-नरसरी (दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छायावाद और रहस्यवाद

[प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी शास्त्री, 'मनीषी', एम्० ए० (त्रितय)]

मेरी राय में एक गहरी भूल—जो वर्तमान साहित्यिक जगत् में विद्वानों द्वारा भी दुहराई जाती है—छायावाद और रहस्यवाद में तादात्म्य का संबंध स्थापित करना और उन्हें परस्पर विनिमयात्मक समझना है। एक सुंदर लेख 'माधुरी' के १३वें वर्ष के द्वितीय खंड में 'बालेंदु' के नाम से प्रकाशित हुआ था। शीर्षक था 'हिंदी-कविता में छायावाद'। उसमें दोनो का भेद बतलाते हुए यह कहा गया था—"रहस्यवाद का मुख्य ध्येय अध्यात्म-जगत् की अनुभूतियों का वर्णन करना है, और छायावाद का उद्देश्य साहित्यिक क्रांति की अवतारणा करके नवयुग के भावों की स्थापना करना,...इसीलिये छायावाद और साहित्यिक क्रांति, दोनो ही एक भावना के द्योतक तथा पोषक हैं।" तात्पर्य यह कि रहस्यवाद भी छायावाद भले ही हो, किंतु रहस्यवाद ही छायावाद हो—यह धारणा नितांत भ्रम-मूलक है। छायावाद वर्तमान युग की अनंत भावनाओं का एक प्रतिबिंबित और प्रतिमूर्त रूप है।

प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी

श्रीरामचंद्र शुक्ल ने 'काव्य में रहस्यवाद'-नामक प्रबंध में रहस्यवाद की विस्तृत विवेचना की है। और, समालोचना के रुख से कुछ ऐसा ज्ञात होता है कि वह भी छायावाद और रहस्यवाद की सीमांत रेखा स्पष्ट नहीं देखते। वह एक स्थल पर लिखते हैं—"किसी अगोचर और अज्ञात के प्रेम में आँसुओं की आकाश-गंगा में तैरने, हृदय की नसों का सितार बजाने, प्रियतम असीम के संग नग्न प्रलय-सा तांडव करने या मुँदे नयन-पलकों के भीतर किसी रहस्य का सुखमय चित्र देखने" को कविता कहना कहाँ तक ठीक है! फिर दूसरे स्थल पर उनका विचार है—"जो कोई यह कहे कि अज्ञात और अव्यक्त की अनुभूति से हम मतवाले हो रहे हैं, उसे काव्य-क्षेत्र से निकल मतवालों (सांप्रदायियों) के बीच अपना हाव-भाव और नृत्य दिखाना चाहिए।" मतलब यह कि शुक्लजी के मतानुसार काव्य का आलंबन व्यक्ति जगत् होना चाहिए, अव्यक्त सत्ता की नींव पर संप्रदायवाद भले ही खड़ा हो, किंतु काव्य की भित्ति नहीं उठ सकती; कबीर आदि का रहस्यवादी काव्य 'काव्याभास' है, 'विशुद्ध' काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। इसी सिलसिले में उन्होंने 'छायावाद' की भी छीछालेदर की है, और उसे सूफ़ियों के 'प्रति-बिंबवाद' से चलकर, योरप के 'प्रतीकवाद' से संसृष्ट होते हुए, वंग-साहित्य का दामन पकड़कर हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में उतरनेवाला 'विलायती चीज़ों का मुरब्बा' समझा है।

छायावाद का ऐसा सूक्ष्म विधान (Summary trial) तरुण हृदय को खटकता-सा है। अच्छा होता, यदि आचार्यजी ने वर्तमान छायावादी कवियों की कुछ विशिष्ट आलोचना की होती; किंतु संभवतः यह उन्हें इष्ट न थी। 'छायावाद' को समझने के लिये 'छाया'-शब्द की व्याख्या और उससे कोई अर्थ निकालना अनावश्यक होगा। यह तो हमारे वर्तमान तरुण हृदय की सहस्रमुखी कवितागत भावनाओं का एक सामूहिक नामकरण है—चाहे यह नाम प्रारंभ में विरोधियों द्वारा व्यंग्य-रूप में ही क्यों न दिया गया हो। इसमें हमारा हास्य है, रुदन है, मस्ती है, सुस्ती है; स्वतंत्रता की पुकार है, तो परतंत्रता का चीत्कार भी है; आशा का इंद्र-धनुष है, तो निराशा की काली घटाएँ भी; रूढ़ियों के विरुद्ध विप्लव है, तो बेड़ियों के बंधन का विप्लव भी; प्रेम की उच्छृंखलता भी है, संयतता भी। हमारी भावनाएँ कहीं सूर्य की किरणों के समान स्पष्ट हैं, तो कहीं सुदूर क्षितिज की तरह धुँधली, और कहीं तो अमावस्या की रात्रि के समान, अंधकारमय। छायावाद, मायावाद, हालावाद, प्यालावाद, रहस्यवाद, प्रकटवाद, सभी इसमें शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त सांप्रदायिकता के नाम पर ही किसी काव्य को 'काव्याभास' क़रार देना भी नामुनासिब है। सच पूछा जाय, तो इस कसौटी पर तुलसी और जायसी की भी कविता—जिसे शुक्लजी ने सर्वोत्कृष्ट काव्यों की कोटि में शुमार किया है—मंद पड़ जायगी। उनका कहना है—'जगत् और जीवन से बाहर' काव्य का पता लगाना अपने को धोखे में डालना है। बात ठीक है। लेकिन यह कैसे स्वीकार कर लिया जाय कि जीवन का अव्यक्त सत्ता से कोई संबंध नहीं। अगर कबीर ने अपने ढंग से अव्यक्त को व्यक्त किया, तो तुलसी ने अपने ढंग से। उत्तरकांड में तो स्पष्ट रूप से उसे अव्यक्त कहा भी है। निर्गुण-सगुण की व्याख्या भी तो सांप्रदायिक है। अतः यदि कबीर सांप्रदायिक है, तो तुलसी भी कम सांप्रदायिक नहीं।

किंतु बात यह है कि सांप्रदायिकता के नाम पर वितंडा ही व्यर्थ है। प्रत्येक मानव-हृदय में धार्मिक भावना भी उसी तरह सार्वभौम रूप से व्याप्त है, जिस तरह प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष आदि की भावनाएँ। अतः यदि प्रमाद के आधार पर सार्वभौम काव्य रचा जा सकता है, तो अव्यक्त सत्ता की खोज करने-वाली धार्मिक भावना के आधार पर क्यों नहीं? मानव-ज्ञान अपूर्ण है, और इसी अपूर्ण ज्ञान के सहारे वह उन गूढ़ आध्यात्मिक तत्त्वों का मर्मस्थल छूना चाहता है, जो मृगतृष्णा के समान उससे सदा कोसों आगे भागते चले जाते हैं। किंतु मानव-ज्ञान अपूर्ण होते हुए भी अथक है, और किसी-न-किसी रूप में उन तत्त्वों की अजेय उलझनों को सुलझाने की विफल अथवा अंशतः सफल चेष्टा करेगा ही *, तब अंतर इतना ही होगा कि

* इस संबंध में 'हरिऔध' की 'हिंदी-भाषा और उसके साहित्य का विकास'-नामक भाषणावली की ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं—

"छायावाद का अनेक अर्थ अपने विचारानुसार लोगों ने किया है। परंतु मेरा विचार है कि जिस तत्त्व का स्पष्टीकरण असंभव है, उसकी व्याप्त छाया को ग्रहण करके उसके विषय में कुछ सोचना, कहना अथवा संकेत करना असंगत नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ निरी धार्मिक भावना दार्शनिकता-प्रधान और नीरस होगी, वहाँ उसी आधार पर निर्मित कविता भावुकता-प्रधान और सरस होगी। जहाँ एक का संबंध मुख्यतः मस्तिष्क से होगा, वहाँ दूसरी में कल्पना का उत्कर्ष अनिवार्य है। जहाँ एक सांप्रदायिकता की तंग गली से गुज़रेगी, वहाँ दूसरी धार्मिकता की व्यापक और उदार भावना को लिए अपने पंख खोलकर उड़ेगी। निष्कर्ष यह कि धर्मशास्त्र और कविता में प्रतिपाद्य वस्तु का उतना अंतर नहीं, जितना प्रतिपादन-शैली का। इसीलिये तो वाक्य की 'रसात्मकता' को ही काव्य का विशिष्ट उपादान माना गया है। सांप्रदायिकता का भी रसात्मक प्रतिपादन, मेरी सम्मति में, काव्य की श्रेणी में शामिल हो सकता है। अतएव काव्यगत रहस्यवाद में सांप्रदायिकता भी हो, तो उससे कोई क्षति नहीं।

इस संबंध में यह भी याद रखना चाहिए कि प्रत्येक रहस्यवाद सांप्रदायिक ही हो, ऐसी बात नहीं। स्वयं शुक्लजी ने भी शैली की एक कविता का उद्धरण देकर 'स्वाभाविक और सच्ची रहस्य-भावना' के 'माधुर्य' का समर्थन किया है। वह माधुर्य, उनके विचार से, तभी तक है, जब तक अव्यक्त सत्ता का 'संकेत'-मात्र हो, 'ब्योरा' नहीं दिया जाय। इस दृष्टिकोण से भी हमारे वर्तमान छायावादी काव्यों के माधुर्य से इनकार नहीं किया जा सकता। जब 'प्रसाद' गाता है—

> ले चल वहाँ भुलावा देकर
> मेरे नाविक ! धीरे - धीरे।
> जिस निर्जन में सागर-लहरी
> अंबर के कानों में गहरी,
> निश्छल प्रेम-कथा कहती हो
> तज कोलाहल की अवनी रे !

उस समय उस रहस्यमय 'नाविक' का संकेत-मात्र है—व्यक्त रूपकों द्वारा अव्यक्त की ओर इशारा-मात्र है। इसमें सांप्रदायिकता की बू कहाँ ?

अथवा—

> एक करुण अभाव में चिर-तृप्ति का संसार संचित,
> एक लघु क्षण दे रहा निर्वाण के वरदान शत-शत,
> पा लिया मैंने किसे इस वेदना के मधुर क्रय में।
> कौन तुम मेरे हृदय में !
> —(महादेवी वर्मा)

यहाँ 'कौन' द्वारा एक रहस्यमय प्रेम-पात्र के अस्तित्व की ओर संकेत अवश्य किया गया है, पर यह सांप्रदायिकता की संकुचित सीमा से परे है। रवींद्र की 'गीतांजलि' ऐसे ही मधुर संकेतों से भरी पड़ी है, और इस मधुरिमा का पाश्चात्य जगत् भी क़ायल हो चुका है।

किंतु रहस्यवाद सांप्रदायिक या असांप्रदायिक रूप से अव्यक्त सत्ता की ओर संकेत करे ही, यह कोई निश्चित सिद्धांत नहीं। अन्य भी प्रकार हैं, जिनसे काव्य में रहस्यमयता का सुखद समन्वय किया जा सकता है। स्वयं कबीर ने कई प्रसंगों में और कई प्रकारों से रहस्यमय शैली का प्रयोग किया है, जो सांप्रदायिकता से सर्वथा दूर हैं।

परमात्मा अचिंतनीय हो, अव्यक्त हो, मन-वचन-अगोचर हो, परंतु उसकी सत्ता कुछ-न-कुछ अवश्य है। उसकी यही सत्ता संसार के वस्तु-मात्र में प्रतिबिंबित और विराजमान है। क्या उसके आधार से उसके विषय में कुछ सोचना-विचारना युक्ति-संगत नहीं ? यदि युक्ति-संगत है, तो इस प्रकार की रचनाओं को यदि छायावाद नाम दिया जाय, तो क्या वह विडंबना है ? ... ...आकाश असीम हो, अनंत हो, तो हो, खग-कुल को इन प्रपंचों से क्या काम ? वह तो पर खोलेगा, जी-भर उसमें उड़ेगा।"

(पृष्ठ ५८३–५८५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणतः—

(अ) क्या जाणौं उस पीव सूँ कैसी रहसी संग।

अथवा—

कहै कबीर ब्याहि चले हैं पुरिस एक अबिनासी।

यहाँ आत्मा-परमात्मा में दांपत्य प्रेम की भावना है।

(आ) 'उलटवाँसियों' का प्रयोग—

बैल बियाइ, गाइ भइ बाँझ;
बछरा दूहै तीनिउ साँझ।

यहाँ व्यंजना यह है कि यह दुनिया 'अंधेर-नगरी' है, और मोह-माया के फेर में हम गुमराह हो रहे हैं। ऐसे ही पदों को लक्ष्य में रखकर मसल मशहूर है—

कबीरदास की उलटी बानी;
बरसै कंवल, भीजै पानी।

(इ) आश्चर्य-जनक घटनाओं का उल्लेख—

पुहुप बिना एक तरिवर फलिया,
बिन कर तूर बजाय।

आदि। *

जायसी ने एक दूसरे ही ढंग से रहस्यमयता का समावेश किया है। सारे कथानक को एक रूपक का रूप देने के अतिरिक्त उसने लौकिक और अलौकिक सृष्टि में बिंब-प्रतिबिंब-भाव दिखलाकर एक रहस्य-मय भावना का उद्रेक किया है। यथा—

बरुनि-बान अस ओप हैं, बेधे रन बन ढाँख;
सौजहिं तन सब रोवाँ, पंखिहिं तन सब पाँख।

यहाँ वन, वनचरों और पक्षियों तक को 'बरुनि-बान' से बिद्ध सिद्ध किया गया है।

* * *

आज की हमारी कविताओं ने तो रहस्यमय उक्तियों का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत कर दिया है। वे केवल परमात्मसत्ता अथवा आध्यात्मिक तत्त्वों में ही सीमित न रहकर अनंत धाराओं में बह चली हैं। और, ऐसा होना उचित भी है, क्योंकि हमारे लिये हमारा सारा जीवन ही पहेली है। पग-पग पर उलझनें हैं। इस सृष्टि में अनगिनत गति-विधियाँ हैं, जिनका हमें लेश-मात्र भी परिज्ञान नहीं। हम अपनी किसी भी प्रगति में नियत कार्य-कारण-संबंध स्थापित नहीं कर सकते। अतः यदि हम अपनी सारी प्रगतियों में रहस्यमयता का सन्निवेश करें, तो इसमें हानि ही क्या? वर्तमान युग तर्क का ज़माना है। ज़माना है जिज्ञासा का, किंतु ज्यों-ज्यों तर्क अपने पंख फैलाता है, त्यों-त्यों उसे अपने बँधे पैरों का ख़याल भीषणतर रूप धारण करता जाता है। हमारा रहस्यवाद इसी मसोस का शब्द-मय भावुक अभिव्यंजन है, किंतु सुखद। जब छाया-वादी कवि अपनी कल्पना की सुनहली तूलिका से अपने दुःख की सीमा को सुख की असीमता में, अपने सांत जगत् को अनंतता के क्षितिज के रूप में चित्रित करने बैठता है, तो मानो उसमें विश्व के रहस्य के प्रत्यक्षीकरण की एक अद्भुत शक्ति आ जाती है, प्रकृति उसके अंतस्तल के अज्ञात और अज्ञेय भावों में भी प्रस्पंदन पैदा करने में समर्थ होती है; उसकी सोई हुई वीणा के तार में झंकार का सृजन करने में सफल होती है। प्लेटो ने 'नक्षत्रों का संगीत' (Music of spheres) अपने कानों सुना था। रवींद्र की भी कामना है—

अरण्येर, पर्वतेर, समुद्रेर गान
झटिकार वज्रगीत स्वर
शुनिबे रे आँखि मूँदि विश्वेर संगीत
तोरे मुखे केमन शुनाय।

पंत की भावना में—

न-जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन!

निमंत्रण और सो भी मौन! छायावादी कवि जब नारी-रूप की ओर निहारता

* देखो रामकुमार वर्मा का हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (पृष्ठ १६८—७०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तो उसकी वृत्ति अंतर्मुखी होती है। वह बाह्य सौंदर्य का पिपासु न होकर अंतःसौंदर्य का उपासक हो जाता है। यदि उसे बिहारी के समान केवल 'तिय-लिलार' की 'बेंदी' अथवा सद्यःस्नाता के 'कुच आँचर बिच बाँह' की ही सुंदरता आँकनी होती, तो कोई बात न थी; किंतु उसे तो उसके हृदय की टोह लेना है, और इसी कारण उसका चित्र सूक्ष्म और रहस्यमय हो जाता है। देखए, पंत का नारी-रूप कितना अरूप-सा हो गया है—

स्वप्नमयि ! हे मायामयि !
तुम्हीं हो स्पृहा, अश्रु औ' हास,
सृष्टि के उर की साँस,
तुम्हीं इच्छाओं की अवसान,
तुम्हीं स्वर्गिक आभास,
तुम्हारी सेवा में अनजान
हृदय है मेरा अंतर्धान।
देवि ! मा ! सहचरि ! प्राण !

सचमुच यह कल्पना की रानी स्वप्नमयी और मायामयी है !

छायावादी कविताओं में कल्पना कभी इतनी ऊँची उड़ जाती है कि उसे चक्कर-सा आने लगता है। इसका ज्वलंत प्रमाण हमें मिलेगा उन शीर्षकों में, जिन्हें हम काव्य अथवा गद्य-काव्य के भी वर्तमान ग्रंथों में पाते हैं। यथा—

निर्गुण वीणा।
अनुराग-विराग।
अस्थायित्व में स्थायित्व।
निरुद्देश-निर्माण की सफलता।
संताप की शीतलता।
अभाव में आविर्भाव।*

परस्पर विरोधी भावनाओं का सुखद समन्वय छायावादी रहस्यवाद का एक विशिष्ट निदर्शन है। 'हरिऔध' के शब्दों में—"छायावादी कवियों की नीरवता में राग है, उनके अंधकार में अलौकिक आलोक, और उनकी निराशा में अद्भुत आशा का संचार। वे ससीम में असीम को देखते हैं। बिंदु में समुद्र की कल्पना करते हैं, और आकाश में उड़ने के लिये अपने विचारों को पर लगा देते हैं *।" सच पूछिए, तो इसी में तो रहस्य है, और रहस्य ही में तो आनंद का अमंद निष्पंद। मुस्कान में हास्य से अधिक रमणीयता क्यों है? कली में उत्फुल्ल गुलाब से अधिक आकर्षण क्यों है? चूँकि हास्य स्पष्ट है, मुस्कान रहस्यमय; गुलाब अपने सारे वैभव को खुले-आम लुटा रहा है, कली अपने अनंत भविष्य को पहलू में दबाए बैठी है। जहाँ जिह्वा नहीं काम देती, वहाँ आँख क्यों समर्थ होती है? क्योंकि आँख की भाषा अनंत काल तक समझी जाय, तो भी पूर्णरूपेण नहीं समझी जा सकती। उपनिषद् ने कहा है—'हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्'—सत्य का मुँह सुनहले ढक्कन से बंद रहा करता है। अथवा दूसरे शब्दों में सत्य जब गुप्त रहता है, अस्पष्ट रहता है, रहता है रहस्यमय और छायामय, तब वह विचित्र स्वर्णिम छटा छिटकाता है। कवि वर्ड्सवर्थ का 'कोकिल' इसलिये मनोरम है कि वह न-जाने कहाँ विलीन होकर अपना मधुर संगीत सुनाया करता है, जिससे उसे एक 'कोकिल' न कहकर केवल एक 'तान' या 'गान' कहना पड़ता है। उसकी विलीनता में ही उसकी समीचीनता है। प्रकृति हमें इसी कारण प्यारी है कि वह न्यारी है। उसे हम पूरी-पूरी जान नहीं पाते। इस अर्थ में हम रहस्यवाद को 'अज्ञेयवाद' भी कह सकते हैं, और इसमें वही प्रगतिशील लुभाव है, जो किसी सौंदर्य के जानने

* ये शीर्षक राय कृष्णदास की 'साधना' से लिए गए हैं।—लेखक

* हिंदी-भाषा और उसके साहित्य का विकास (पृष्ठ ५६३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उत्कट अभिलाषा और चेष्टा होते हुए भी उसे पूर्ण रूप से न जान सकने में हुआ करता है।

हम स्वीकार करते हैं कि 'रहस्यवाद' या 'छायावाद' के नाम पर अनर्थ भी कम नहीं हुए हैं। बालकृष्ण राव ने कुछ साल पहले छायावाद को 'प्रमाद का प्रसाद-रूप' बतलाते हुए ये व्यंग्य कहे थे—

रहते बजाते टूटे तारों की विपंची सदा,
शून्य में भी नित्य वहाँ होता एक नाद है;
बहते अनंत अंतरिक्ष-ओर नित्य प्रति,
रहता सदैव मूक वाणी का प्रमाद है।
करुण बिहाग का सुनाई देता राग सदा,
रहती अतीत स्मृति एक-एक याद है;
यही है प्रमाद का प्रसाद-रूप 'छायावाद',
प्रतिभा सुकवियों की जहाँ अपवाद है।

और, एक 'प्रकटवादी' समालोचक के निम्न-लिखित कथन में सत्य का कुछ अंश अवश्य है—"परंतु एक दल ऐसे ढोंगी कवियों का है, जो समझते हैं कि उन्हें ही परमात्मा ने उपयुक्त पात्र समझ विश्व का पिटारा सौंप दिया है। ऐसे 'छायावादी' कवि (Mystic poets) अपनी हृत्तंत्री झंकृत करते हुए बड़े वेग से किसी विचित्र सत्य की खोज में 'अनंत की ओर' दौड़ते हैं; कुरंग की भाँति कस्तूरी की खोज में वे दिन-रात परेशान रहते हैं; फिर भी उन्हें भास नहीं होता कि सत्य उनमें ही है; शब्दाडंबर में नहीं। प्रायः वे ऐसी लाइनें लिखते हैं, जिनकी व्याख्या कदाचित् वे स्वयं न कर सकें *।" माना कि ऐसी लाइनें भी हैं। किंतु इन्हीं अत्याचारों और उच्छृंखलताओं के कारण सारे छायावाद अथवा रहस्यवाद के साहित्य को ग़ैर-क़ानूनी क़रार देना शायद उन अत्याचारों से भी बड़ा अत्याचार होगा। यदि हम कहीं-कहीं रहस्य-मय भावनाएँ न समझें, तो मैथ्यू आरनॅल्ड के शब्दों में हम कवि को यों संबोधित कर सकते हैं—

हम जिज्ञासा पर जिज्ञासा
करते हैं, पर तू है मौन!
परे ज्ञान सीमा के !†

किंतु उसे 'अदृश्य' की श्रेणी में बिठाने का दुस्साहस न करें।

* नवंबर, १९३१ की 'माधुरी' में प्रकाशित श्रीभगवतशरण उपाध्याय के 'काव्य और कवि', शीर्षक लेख से उद्धृत।

† We ask and ask,
But thou art still
Out-topping knowledge.
——Matthew Arnold

प्रसिद्ध छायावादी कवि श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की अनुपम देन

परिमल

(द्वितीयावृत्ति)

निरालाजी की युगांतरकारिणी कविताओं का मज़ा समय-समय पर हिंदी-पाठकों को मिलता रहता है। इसमें इनकी लिखी हुई उत्कृष्ट कविताओं का अनुपम संग्रह है। छंदोबद्ध कविताएँ, मुक्त संगीत तथा स्वच्छंद छंद, तीनो प्रकार की कविताएँ इसमें संगृहीत हैं। 'यमुना', 'स्मृति', 'महाराज शिवाजी का पत्र', 'गीत' आदि एक-से-एक बढ़कर कविताएँ इसमें छपी हैं। रहस्यवाद की भाव-पूर्ण कविताओं का रसास्वादन करना हो, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १॥), सजिल्द २)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारो

[श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०]

लखनपुर का रामदीन जब बरसों परदेश में भटककर घर लौटा, तो अपने साथ एक अल्हड़ छोकरी भी लेता आया। वह उसे कहीं से भगाकर लाया था अथवा विवाह करके या वही अपनी इच्छा से उसके साथ चली आई थी, यह गाँव-भर में आज तक कोई न जान सका, किंतु इतना सब जानते थे कि अल्हड़ पारो एक रँगीली तितली की तरह चंचल थी, और रामदीन-जैसे चरित्र-हीन की स्त्री बनकर रहना उसे बुरा नहीं लगता था।

रामदीन जब पंद्रह-सोलह वर्ष का था, तभी उसकी आदतें बहुत बिगड़ चली थीं। उसकी दोस्ती पास ही की छावनी के कुछ मुसलमान लौंडों से हो गई थी। उन्हीं के साथ वह दिन-रात छैला बना घूमता रहता और कई-कई दिन बीत जाने पर भी गाँव लौटकर न आता। उसका पिता भवानी लखनपुर का प्रतिष्ठित महाजन था। साठ वर्ष की लंबी आयु पार कर लेने पर भी वह प्रतिदिन सबेरे सात बजे से लेकर रात के आठ-नौ बजे तक अपनी दूकान पर बैठा रहता। उसकी ईमानदारी और सचाई की धाक दूर-दूर के गाँवों तक फैली हुई थी। यहाँ तक कि आस-पास के छोटे-छोटे गाँवों के लोग तो अक्सर उसी की दूकान से खाने-पीने का सामान और पहनने-ओढ़ने की चीज़ें ख़रीदने आया करते थे। यही कारण था कि भवानी ने अपनी ज़िंदगी में लगभग आठ-दस हज़ार रुपया जमा कर लिया था, और अपने पुश्तैनी कच्चे झोपड़े की जगह एक पक्का दुमंज़िला मकान बनवा लिया था, जिसमें कितनी ही गाएँ-भैंसें हमेशा बँधी रहती थीं।

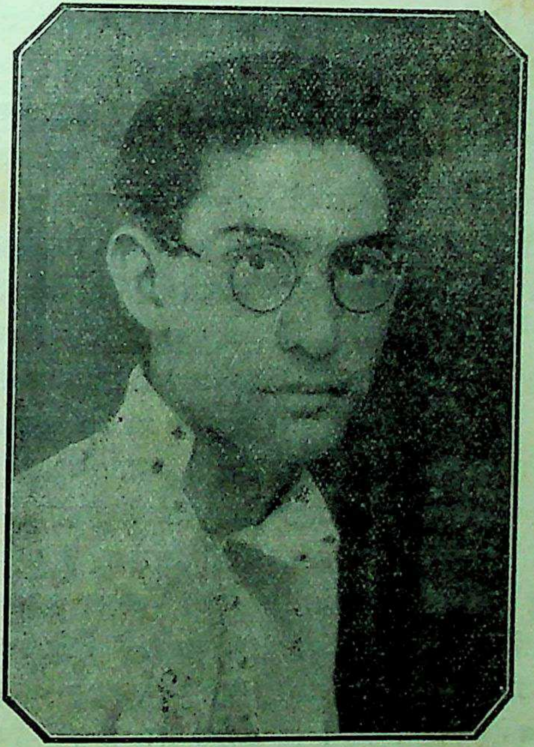

श्रीयुत तेजनारायण काक एम्० ए०

बहुत समझाते-बुझाते रहने पर भी भवानी जब अपने इकलौते बेटे की आदतें ठीक न कर सका, तो एक दिन तंग आकर उसने घूँसों और लातों से उसकी ख़ूब अच्छी तरह मरम्मत कर डाली, और अपनी स्त्री के रोने-कलपने की कुछ भी परवा न कर उसे हमेशा के लिये अपने घर से बाहर निकाल दिया। रामदीन के चले जाने के बाद भवानी जब तक जिया, कभी उसका नाम तक मुँह पर न लाया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी बुढ़ापे में इतना बड़ा भीतरी धक्का वह सँभाल न सका, और सबके देखते-ही-देखते, डेढ़-दो बरस में ही, चटपट हो गया।

उसकी जीवितावस्था में ही उसकी स्त्री लखिया अपने पति से छिपाकर पुत्र को बीस-पचीस रुपया महीना बराबर भिजवाती रही, और उसे वापस बुलाने का प्रयत्न भी सदा करती रही, किंतु भवानी ने अपने जीते-जी उसका मुँह तक देखना स्वीकार न किया। उसकी मृत्यु के बाद माता के भेजे हुए पैसों से जब बरसों परदेश में गुलछर्रे उड़ाकर रामदीन घर लौटा, तो उसके बाप की सब जमा फुँक चुकी थी, दूकान क़रीब-क़रीब चौपट हो गई थी, मकान भी इतने अरसे तक बेमरम्मत पड़ा रहने के कारण जगह-जगह गिरने लगा था, और लखिया में अब बची-खुची दूकान पर बैठने का दम तो दूर रहा, अधिक चलने-फिरने की शक्ति भी न रही थी।

इतने लंबे समय के बाद अपने नालायक़ बेटे को भी वापस पाकर बूढ़ी लखिया को कुछ कम ख़ुशी न हुई थी, किंतु पारो का इस तरह बहू बनकर उसके घर में आना उसे फूटी आँखों भी न सुहाया था। शहर की उस अल्हड़ युवती के रंग-ढंग देखकर उसकी बची-खुची आशाएँ भी हमेशा के लिये धूल में मिल गई थीं।

"बनिए का बेटा होकर यह किसे घर ले आया है रे! इसकी जाति-पाँति का भी कुछ पता है, या कोरा रूप और जवानी देखकर ही लुभा गया? मैं भी देखती हूँ, मेरे जीते-जी यह घर में पाँव तो धर ले। मुँह नोच डालूँ चुड़ैल का। न-जाने कितने घर बिगाड़कर अब तेरे गले पड़ी है! एक भलेमानस के बेटे का परलोक बिगाड़ते भी इसे लाज न आई!" और भी न-जाने क्या-क्या बकती-झकती वह बड़ी देर तक छाती पीट-पीटकर रोती रही, यहाँ तक कि आधे से ज़्यादा गाँव लखिया के दरवाज़े पर इकट्ठा हो गया, किंतु उसका रोना-पीटना कम होने के बजाय उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

रामदीन बड़ी देर तक नीची गरदन किए, पत्थर की तरह चुपचाप खड़ा-खड़ा सुनता रहा, मगर जब उसने विना कुछ कहे-सुने ही अपना सामान बैलगाड़ी पर लादना शुरू कर दिया, तो लखिया जैसे एकदम मोम हो गई, और कुछ मामूली शर्तों पर ही उसने पारो का घर में रहना स्वीकार कर लिया। वे ये थीं कि पारो अपना खाना-पीना बिलकुल अलग रक्खे, और लखिया की कोई भी चीज़ न छुए, न उसके किसी काम में दख़ल दे। फिर भी रामदीन को वह बार-बार यह सुनाए विना न रहती कि चाहे तुम्हें बुरा लगे, चाहे भला; मगर मेरी एक बात भली भाँति गाँठ बाँध लो—जिस छोकरी को अपनी बनाकर अपने साथ लाए हो, वह तुम्हारे पास भी अधिक न टिकेगी। एक-न-एक दिन धता बताकर किसी तीसरे मर्द के साथ अवश्य हो लेगी।

रामदीन उसकी इस बात से कुछ प्रभावित हुआ या नहीं, यह तो नहीं मालूम, किंतु पारो के दिल पर इन सब बातों का शायद कोई बहुत गहरा प्रभाव न पड़ा। दो-चार दिन तक तो वह अवश्य कुछ सहमी हुई, सिमटी-सकुचाई-सी रही, जैसे कोई वन्य वृक्षों की शाखाओं पर फुदकने-वाली चिड़िया नई-नई पिंजड़े में बंद होकर थोड़ी देर के लिये पंख समेटे, कुछ दुबकी हुई-सी, गुमसुम बैठी रह जाती है। किंतु धीरे-धीरे उसके मुख का घूँघट गाँव के बड़े-बूढ़ों के सामने भी मुँह से खिसककर कंधों पर आ जाने लगा, और उसके नूपुरों और बिछुओं की छुम-छुम अपने कोठे के झरोखों और घर के आँगन से निकलकर गाँव के टेढ़े-मेढ़े मार्गों पर फैलती हुई पड़ोसियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घरों को भी मुखरित करने लगी। लखिया उसकी प्रत्येक बात पर तलमलाकर और दाँत पीसकर रह जाती, किंतु पारो उसकी झिड़कियों को जैसे एक कान से सुनती और दूसरे से निकाल देती; यहाँ तक कि कभी-कभी मुँह फेरकर हँस देने की धृष्टता भी कर बैठती। प्रतिदिन लखिया के सामने ही खुले-बंदों रामदीन से बातें करना तो उसके लिये साधारण-सी बात थी, किंतु होली के दूसरे दिन जब रामदीन का कोट, चूड़ीदार पाजामा और टोपी पहनकर वह सब पड़ोसियों के यहाँ घूम आई, तो गाँव के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक उसकी निर्लज्जता का जैसे ढिंढोरा पिट गया, और उस दिन रामदीन के मुँह से भी उसे काफ़ी फटकार सुननी पड़ी।

फिर भी प्रतिदिन सवेरा होते ही गहरे लाल रंग के लहँगे पर झिलमिल-सी पीली ओढ़नी ओढ़े, सिर पर पीतल की चमकती हुई गगरी रक्खे, रुनक-झुनक करती हुई पारो जब गाँव के कुएँ की ओर पानी भरने निकलती, तो ऐसा मालूम होता, मानो ऊषा के संगीतमय बादलों का कोई सुनहला टुकड़ा नीले आकाश से अलग होकर पृथ्वी पर उतर आया हो। दूसरे लोगों की बात तो जाने दीजिए—गाँव का वह अविवाहित जवान मँगरू भी, जिसने आज तक किसी की बहू-बेटी की ओर आँख उठाकर भी न देखा था, कुएँ के गहरे जल में अपना डोल डुबोते-डुबोते सोचने लगता—कैसी अल्हड़ छोकरी है! और उस पर यह ग़ज़ब का भोला-भोला, सलोना मुखड़ा! ऐसी ही कोई मुझे भी मिल जाती, तो ज़िंदगी कितने आराम से कटती! बेचारी की ये गोरी-गोरी, कोमल हथेलियाँ पानी खींचते-खींचते कैसी लाल हो जाती होंगी!

उस दिन भी पारो के विषय में मँगरू ऐसी ही कोई बात सोच रहा था, जब एकाएक रस्सी टूट जाने के कारण पारो की डोलची कुएँ के भीतर जा गिरी, और मँगरू को पहला अवसर मिला कि पारो का ध्यान वह किसी प्रकार अपनी ओर आकृष्ट कर सके। इसके पहले कि पारो की कोई सखी-सहेली लपककर अपने घर से कोई बिलाई या काँटा ले आए, मँगरू, सबके देखते-ही-देखते, अपनी धोती का कछौटा मारकर रस्से के सहारे उस गहरे कुएँ में उतर पड़ा, और बड़ी देर तक दम साध-साधकर डुबकियाँ लगाते रहने के बाद पारो की डोलची लेकर ही बाहर निकला। अपनी खोई हुई डोलची पाकर पारो ने जब कृतज्ञता से उसकी ओर देखते हुए मुस्किरा दिया, तो मँगरू को ऐसा मालूम हुआ, मानो सारे संसार की निधि उसे मिल गई हो, और घर लौटते हुए तो उसके पाँव जैसे ज़मीन पर पड़ते ही न थे। उसी दिन, अपने जीवन में पहली बार, वह मार्ग में से ही चार पैसे का साबुन और खोपड़े का ख़ुशबूदार तेल ख़रीद ले गया, और घर पहुँचते ही कितने उत्साह से उसने मल-मलकर स्नान किया। धुले हुए सफ़ेद कपड़े पहने, और बालों में तेल डाला। यहाँ तक कि अपने कच्चे घर को लीप-पोतकर उसने इतना स्वच्छ और सुसज्जित कर दिया, मानो बहुत शीघ्र ही उसका बरसों का सूनापन मिटाकर उसमें किसी गृहिणी को बसाने ला रहा हो।

किंतु दूसरे ही दिन एक ऐसी बात हुई, जिसने मँगरू की सारी आशाओं पर पानी फेर दिया।

गाँव के कुएँ का मार्ग मँगरू के घर के ठीक सामने से ही था। दूसरे दिन पौ फटते ही मँगरू बन-ठनकर अपने द्वार के बाहर बने हुए कच्चे चबूतरे पर आ बैठा, और बड़ी उत्सुकता से पारो के उधर से निकलने की बाट देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग-वश उस दिन रामदीन की तबियत कुछ ख़राब हो गई थी, इसलिये जब बहुत दिन चढ़े बाद पारो पानी भरने निकली, तो कुएँ का मार्ग कभी का जन-शून्य हो चुका था। पारो को अकेला ही कुएँ की ओर जाते देख मँगरू झटपट उठ खड़ा हुआ। वह अपना कलसा लेकर चुपके से उसके पीछे हो लिया, और कुएँ पर पहुँचने के बाद पारो जब अपना घड़ा भरकर वापस लौटने को तैयार हुई, तो बड़ी हिम्मत करके वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया, और उसका घड़ा उठा देने के लिये झुकता हुआ बोला—"ला, तेरा घड़ा मैं ही उठवा दूँ।" और, इसके पहले कि पारो कुछ कहे, मँगरू ने हाथ बढ़ाकर उसके उठते हुए घड़े को सहारा लगा दिया, और इसी बहाने उसकी नरम-नरम उँगलियों को अपने दोनो हाथों से कुछ दबा भी दिया।

पारो ने कुछ सहमकर एक सशंक दृष्टि मँगरू पर डाली, किंतु फिर, विना कुछ कहे ही, अपने वक्ष पर का अंचल सँभालती हुई वह घर की ओर लौट पड़ी। उसकी इस चुप्पी ने मँगरू का साहस कुछ और उकसा दिया। एक क्षण-भर के लिये उसने इधर-उधर देखा, और फिर तुरंत ही हाथ बढ़ाकर पारो की चोटी का पीछे की ओर झूलता हुआ फुँदना पकड़ लिया।

पारो एकदम घूमकर खड़ी हो गई। भय और क्रोध से काँपती हुई आवाज़ में बोली—"यह क्या कर रहे हो जी? छोड़ो मुझे। छोड़ो, नहीं तो अभी चिल्लाकर सारे गाँव को इकट्ठा कर लूँगी।"

थोड़ी देर के लिये मँगरू बिलकुल घबरा-सा गया, उसके चेहरे पर हवाइयाँ-सी उड़ने लगीं; किंतु पारो की चोटी का फुँदना उसने छोड़ा नहीं—और दृढ़ता से पकड़ लिया। ढीठ की तरह वह कुछ और आगे बढ़ आया, और दबी ज़बान से उसे धमकाता हुआ बोला—"रहने दे ये नख़रे। बड़ी दूध की धोई बनती है। न-जाने कितने ख़सम करने के बाद रामदीन के गले पड़ी है। गाँववालों से तेरी हरकतें छिपी हों, तब न?" यह सुनकर अब पारो के लिये और कुछ सुनना जैसे असह्य हो उठा। मारे क्रोध के वह आग-बबूला हो गई। "छोड़, छोड़ता है कि नहीं?" यह कहते हुए उसने दो-तीन झटके अपनी-चोटी छुड़ाने को दिए, किंतु अपने प्रयत्न में असफल होते ही उसने आव देखा न ताव, अपना घड़ा धड़ से मँगरू की छाती पर दे मारा। कीचड़ और मिट्टी में लथपथ मँगरू जब तक सँभले और उठे, तब तक पारो वहाँ से भागकर अपने घर के बहुत पास पहुँच चुकी थी।

किंतु पारो के घड़े से मँगरू की छाती को उतनी चोट नहीं पहुँची, जितनी उसके पौरुष की। अपने कपड़े झाड़ता हुआ जब वह उठा, तो क्रोध के मारे उसका बुरा हाल था। एक छोकरी से पटख़नी खाकर वह बुरी तरह खिसिया गया, और खिसियाहट में खीझ उठना तो मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलता है ही। फिर मँगरू ने भी यदि घर पहुँचकर अपना सारा क्रोध अपने पालतू कुत्ते पर उतार डाला, तो कौन-सा अस्वाभाविक कार्य किया? घर के द्वार के निकट ही खड़े हुए, दुम हिलाते हुए झब्बर को उसने इस ज़ोर की लात मारी कि बेचारे की एक पिछली टाँग ही तोड़ डाली, और भीतर जाकर विना कुछ खाए-पिए ही खटिया पर जो पड़ा, तो शाम तक उठने का नाम भी न लिया। यह बात न थी कि सारे दिन खाट पर पड़ा-पड़ा वह क्रोध में ही जलता-भुनता रहा हो, किंतु अपने इस पतन और दुर्दशा पर उसे थोड़ी-बहुत ग्लानि भी अवश्य हुई, और उसके हृदय के एक कोने में छिपी हुई असफलता की कसक ने तो उसे बिलकुल ही अवसन्न बना दिया। काफ़ी अँधेरा हो जाने के बाद वह धीरे-धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी खाट से उठा, और घर में दीपक या चूल्हा जलाए बिना ही, लखनपुर से चार मील दूर, छावनी की ओर चल दिया ; और बहुत रात बीत जाने पर जब वापस लौटा, तो उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, और मुँह से ताड़ी की दुर्गंध आ रही थी।

लखनपुर किसानों और मज़दूरों की एक छोटी-सी बस्ती थी। गाँव के कुछ अन्य लोगों की तरह मँगरू भी प्रतिदिन छावनी में मज़दूरी करने जाया करता, और आठ-दस आने कमाकर साँझ को घर लौट आता ; किंतु उस दिन की घटना के बाद मँगरू की कायापलट ही हो गई। दिन-दिन-भर वह घर ही में पड़ा रहने लगा, और ताड़ी पीने की तो उसे लत ही पड़ गई। ताड़ी चढ़ाकर पारो के फ़िराक़ में वह घंटों अपने द्वार पर ही बैठा रहता, किंतु पारो अब उधर से कभी अकेली न निकलती, और मँगरू मन-ही-मन झुँझला-झुँझलाकर रह जाता।

उस दिन पारो की भी अच्छी-ख़ासी मरम्मत हो चुकी थी। मँगरू से पीछा छुड़ाकर जब वह हाँफती हुई घर में घुसी, और रामदीन ने उसकी बदहवासी का कारण पूछा, तो सिवा सुबुक-सुबुककर रोने के वह उसकी बातों का कुछ भी उत्तर न दे सकी। रामदीन ने झुँझलाकर अपनी खाट के पास पड़े हुए बेत से उसे बुरी तरह धुन डाला। अपने पुत्र का क्रोध भड़काने के लिये उपयुक्त अवसर पाकर लखिया ने भी उसकी अस्त-व्यस्त ओढ़नी और कसमसाई हुई चोली को लक्ष्य कर न-जाने क्या-क्या कह डाला, और उसके कितने ही बेत और लगवा दिए। "ले, देख ले अच्छी तरह। आख़िर मैं कहती थी, वही हुआ न? ये क्या भले घर की बहू-बेटियों के लच्छन हैं? न किसी की लाज, न शरम। किस तरह गाँव-भर में भटकती फिरती है? ज़रा इसकी अँगिया तो देख! आगे-पीछे से सब खुला पड़ता है, और ओढ़नी तो कभी मूड़ पर टिकती ही नहीं। एक दिन मैं छत पर बैठी कंघी कर रही थी, तो तेरे बाप ने मेरे बाल नोच डाले थे, और ये कलमुँही इस तरह सारे गाँव में नाचती फिरती है, और तू बैठा-बैठा देखता रहता है! मैं इस तरह करती, तो तेरा बाप मेरी गरदन ही काट डालता।"

फिर भी पारो जब गाँव की स्त्रियों के साथ मँगरू के घर के सामने से निकलती, तो द्वार पर बैठे हुए मँगरू की ओर एकाध बार देखे बिना उससे रहा ही न जाता। वह बहुत चेष्टा करती कि उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखे, और चुपचाप गरदन झुकाए वहाँ से निकल जाय, किंतु उसे देखकर मँगरू जब जान-बूझकर खाँसने लगता या सीटी बजाने लगता, तो अपने आप उसकी आँखें मँगरू की ओर घूम जातीं, और नशे में झूमती हुई उसकी लाल-लाल आँखें देखकर उसे कई बार बड़ा डर-सा लगने लगता। फिर उसे यह भी ख़याल आने लगता कि आख़िर मँगरू इतनी ताड़ी पीने क्यों लगा है, और ऐसी हरकतें करता क्यों है? बड़ी देर तक यह विचार उसके दिमाग़ से हटता ही नहीं, और बहुधा यही सोचते-सोचते वह बहुत अनमनी-सी हो जाती।

इसी प्रकार कई दिन बीत गए। हमेशा की तरह उस महीने की अमावस्या को भी लखनपुर के पासवाली छावनी में हाट लगी। रामदीन दो-तीन दिन के लिये कुछ ख़रीद-फ़रोख़्त करने छावनी चल दिया, तो मँगरू मन-ही-मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि जैसे भी हो, इन दो-तीन दिनों में वह पारो से अवश्य मिलेगा। किंतु हाट के पहले दिन, रामदीन की अनुपस्थिति में, जब पारो सुबह से शाम तक घर से बाहर ही न निकली, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात होते-होते मारे क्रोध और झुँझलाहट के मँगरू आपे से बाहर हो गया। रात को ही छावनी पहुँचकर उसने ताड़ी की कई बोतलें ख़ाली कर डालीं। और, आधी रात बीत जाने के बाद जब वह लखनपुर लौटा, तो उसने एक ऐसी बात कर डाली, जो अपने होश-हवास में कभी न कर सकता।

गरमी के दिन थे। सास-बहुओं में हमेशा लड़ाई रहने के कारण लखिया ऊपर छत पर सो रही थी, और पारो नीचे आँगन में। आधी रात के बाद कुछ कुत्तों के ज़ोर से भूँकने की आवाज़ आई। पारो की नींद उचट गई। उसने सुना, बाहर कोई कुंडी खड़खड़ा रहा है। उसने सोचा, शायद रामदीन ही छावनी से लौट आया हो। वह उठी, और ड्योढ़ी में जाकर किवाड़ खोल दिए। मगर द्वार खोलते ही उसका कलेजा एकदम धक्-से हो गया! किवाड़ भेड़ने का भरसक प्रयत्न करते हुए उसने घबराई हुई आवाज़ में कहा—"अरे, तुम!"

"हाँ, मैं। क्यों, डर गई क्या? आज तुमसे कुछ साफ़-साफ़ बातें करनी हैं। मुझे भीतर आने दे।" और, पारो को दृढ़ता-पूर्वक एक ओर धकेलकर नशे में चूर मँगरू ज़बरदस्ती ड्योढ़ी में घुस आया।

"यह तुम क्या कर रहे हो जी? अभी कोई देख ले, तो? और, माजी तो ऊपर छत पर ही सो रही हैं!"

"बक मत। मैं जो ठीक समझता हूँ, वही कर रहा हूँ। किसी के देखने का तुझे डर होता, तो हर किसी के साथ यों भाग ही क्यों आती? और, उस बुढ़िया का मुझे क्या भय दिखाती है? नीचे आ गई, तो गला घोट दूँगा। जानती है, आज तुझे अपने साथ भगा ले जाने आया हूँ। अभी।"

डर के मारे पहले तो पारो को जैसे काठ-सा मार गया, किंतु धीरे-धीरे अपने बिखरे हुए साहस को बटोरने का प्रयत्न करती हुई वह ज़रा गंभीर आवाज़ में बोली—"मालूम होता है, आज तूने बहुत ज़्यादा पी ली है, तभी ऐसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है। अभी मेरा मर्द छावनी से लौट आए, तो जानता है, तेरी क्या दशा हो?"

किंतु मँगरू का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा था।

"हाँ, आज मैंने बहुत ज़्यादा पी ली है, तभी तो तुझे इसी घड़ी अपने साथ ले जाकर ही रहूँगा। देखूँ, मुझे कौन रोकता है? तेरे रामदीन-जैसे आवारा आदमियों की मैं कब परवा करता हूँ? छावनी में ताड़ी पीकर अपनी किसी चहेती के घर में औंधेमुँह पड़ा होगा। चल, आ मेरे साथ।"

मँगरू ने आगे बढ़कर पारो का एक हाथ पकड़ लिया, और उसे द्वार की ओर खींचने लगा। पारो अब क्रोध के मारे तलमला उठी। एक झटका देकर उसने अपना हाथ छुड़ा लिया, और छाती तानकर उसके सामने खड़ी हो गई—"पागल हो गया है क्या? पराई औरत को इस तरह बेआबरू करते तुझे लाज नहीं आती! क्या रक्खा है मेरे इस शरीर में? ले देख। अच्छी तरह देख।" और, चर्र-चर्र करके उसने काँपते हुए हाथों से अपनी चोली का अगला हिस्सा टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

मँगरू ज्यों-का-त्यों खड़ा ही रह गया, जैसे किसी ने उस पर घड़ों पानी डालकर देखते-ही-देखते उसका सारा नशा उतार दिया हो। पारो जब तक सँभले और अपनी ओढ़नी अच्छी तरह अपने चारो ओर लपेट न ले, मँगरू अपनी आँखें ऊपर उठाकर उसकी ओर देख भी न सका। थोड़ी देर बाद जब उसकी ज़बान खुली, तो उसके स्वर में क्रोध की उत्तेजना के स्थान में याचना की-सी करुण कोमलता थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझसे भूल हो गई, पारो ! तेरा शरीर देखने की इच्छा मुझमें थी अवश्य, किंतु अब न रही। फिर भी जिस हालत को तूने मुझे पहुँचा दिया है, उसे देखकर क्या मुझ पर तुझे तनिक भी दया नहीं आती? इतना नीचे गिराकर मुझे अब ऊपर उठाने की कोशिश न कर। तेरे बिना मैं एक पल-भर भी ज़िंदा नहीं रह सकता। इसीलिये आज तेरी आख़िरी मंशा जानने आया हूँ। बोल, मेरे साथ चलेगी न?"

पारो बिना कुछ बोले-चाले चुपचाप खड़ी रही—बिलकुल निर्वाक्—जैसे उसकी बोलने की शक्ति ही लुप्त हो गई हो। मँगरू फिर कहने लगा—"तुझे यहाँ कितना दुख है, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। उस दिन बिना किसी अपराध के ही तुझ पर जितनी मार पड़ी थी, दूसरे ही दिन तेरी बाहों पर उभरी हुई नीलों को देखकर क्या मैं समझ न सका था? तू मेरे साथ भाग क्यों नहीं चलती? यहाँ से बहुत दूर हम दोनो किसी दूसरे ही गाँव में चल देंगे, और किसी को हमारी छाँह तक का पता न चलेगा। जितना धन मेरे पास है, उससे दोनो की ज़िंदगी बड़े मज़े में कट जायगी। बोल, तैयार है न?"

इस बार पारो की ज़बान खुली, तो इस तरह, जैसे कोई स्वप्न में बोल रहा हो—"बस करो। ईश्वर के लिये ये बातें बंद करो मँगरू! मैं इस वक़्त अपने आपे में नहीं हूँ। अपना भला-बुरा कुछ नहीं समझ सकती। मेरा सिर घूम रहा है। तुम चले जाओ, अभी चले जाओ यहाँ से।"

मँगरू को इच्छा न रहते हुए भी वहाँ से चुपचाप चला ही जाना पड़ा, क्योंकि पारो की बात ख़त्म होते-होते लखिया छत पर से नीचे उतरती हुई ज़ीने में ही गरज पड़ी—"आधी रात गए ये किस मुसटंडे से बातें कर रही है चुड़ैल! अब तो इस छिनाल ने घर पर ही अपने यारों को बुलाना शुरू कर दिया। रामदीन आए, तो इसकी खाल ही खिंचवा लूँ।"

पारो ने लखिया की बातों का कोई उत्तर न दिया। दरवाज़े के खुले हुए किवाड़ उसने धीरे से बंद कर दिए। आँगन में आकर ज़ीने से उतरती हुई लखिया की ओर केवल एक बार अग्निमय नेत्रों से देखा, और तुरत ही जल्दी-जल्दी चलकर वह अपने कोठे में घुस गई, और भीतर से कुंडी बंद कर ली। बाहर लखिया ने कितनी हाय-तौबा मचाई, और कैसी-कैसी गालियाँ दीं, इसकी उसे कुछ ख़बर न हुई।

दूसरे दिन बहुत दिन चढ़े जब वह बाहर निकली, तो लखिया घर में न थी, शायद पड़ोसियों से अपनी बहू के गुणों की चर्चा करने चली गई थी, और रामदीन भी तब तक छावनी से न लौटा था। उस बंद कोठे में पारो इतनी देर तक न-जाने क्या करती रही। हाँ, सोई अलबत्ता वह बिलकुल न थी, यह उसके थके हुए, उदास चेहरे और डबडबाई हुई, लाल-लाल आँखों से भली भाँति प्रकट हो रहा था। बिना हाथ-मुँह धोए ही अपना घड़ा लेकर जब वह कुँए की ओर चल पड़ी, तो उसकी प्रत्येक मुद्रा से यह स्पष्ट झलक रहा था कि रात-ही-रात में उसके नन्हे-से दिल पर कोई बड़ा भारी बोझ लद गया है, जिसे उतारकर वह शीघ्र ही हलकी हो जाना चाहती है।

और, मँगरू भी, न-जाने क्या सोचकर, पानी भरने के बहाने आज सबेरे से ही कुँए पर डटा हुआ था, जैसे वह जानता ही हो कि आज उसी जगह कोई उससे अवश्य मिलने आएगा, और उससे वही बात कहेगा, जो वह सुनना चाहता है।

दिन अब काफ़ी चढ़ आया था, और इस कड़ी धूप में मँगरू के सिवा आज भी कुएँ पर और कोई न था। मँगरू को वहाँ अकेले खड़ा देखकर एक बार तो पारो के जी में आया कि वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से वह उलटे पाँवों लौट पड़े, और पीछे घूमकर देखे तक नहीं; किंतु उसे किसी से कुछ कहना जो था। और, वापस लौट जाने से तो इतनी आवश्यक बात अनकही ही रह जाती। इसीलिये, बिना कुछ सोचे-विचारे, वह आगे बढ़ती चली गई, और मँगरू के बहुत पास पहुँचकर आख़िर उसने कह ही दिया—"आज दो घड़ी रात गए तैयार रहना। इसी जगह।" और, मँगरू ने जब ख़ुशी से पागल होकर थोड़ी देर के लिये उसे अपनी बाँहों में भर लिया, तो वह शायद अपने होश में न थी।

❀ ❀ ❀

दूसरे दिन बड़े सबेरे ही, जब रामदीन छावनी से लौटकर गाँव आया तो, कुएँ पर बड़ी भीड़ लग रही थी। बहुत-सी औरतें, बच्चे और मर्द वहाँ जमा थे, और काफ़ी ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। हरखू कहार अपनी धोती का कछौटा मारे, पानी में भीगा हुआ, कुएँ की जगत पर खड़ा था, और अपने हाथ में एक पीले रंग की, फटी हुई, भीगी ओढ़नी लिए कह रहा था—"बड़ा गहरा कुआँ है, लक्खू दादा! मालूम होता है, बेचारी डूब ही गई। इतनी मेहनत के बाद मुझे तो यह ओढ़नी ही मिल सकी। कुएँ की दीवार में उगे हुए एक झाड़ में उलझी हुई थी, वरना यह भी क्या हाथ आती? इस कुएँ की दीवारों में तो ऐसे-ऐसे गड्ढे हैं कि एक क्या, चार लाशों का भी पता न लगे।"

मगर लक्खू दादा को हरखू की यह बात बिलकुल नहीं जँची, तभी तो अपनी गरदन हिला-हिलाकर वह कह रहे थे—"ऊँहूँ। यह तो साफ़ धोखा है, धोखा! बड़ी चालाक छोकरी थी। किस सफ़ाई से अपने मर्द की आँखों में धूल झोंककर मँगरू अहीर के साथ भाग निकली! कल रात को मैंने आँखों देखा था—मँगरू अपनी गठरी-मुठरी लिए इधर ही आ रहा था। और, आज सबेरे यह हल्ला सुनकर जब मैं मँगरू के घर पहुँचा, तो उसे बिलकुल सूना पाया। वरना यह भी कभी हो सकता है कि कुएँ में उस छोकरी की लाश तक न मिले, और उसी दिन मँगरू भी, बिना किसी से कुछ कहे-सुने, इस तरह गाँव से लापता हो जाय!"

इसी समय औरतों के झुंड से गला फाड़ती हुई लखिया भी बाहर निकल आई, और हाथ नचा-नचाकर कह रही थी—"हाँ-हाँ, बिलकुल ठीक कह रहे हो लक्खू भैया! मैं पहले ही कहा करती थी न कि एक-न-एक दिन यह ज़रूर अपना मुँह काला करेगी। निगोड़ी थी ही ऐसी। परसों रात को मँगरू ही तो घर में घुस आया था। तभी भाग चलने की सलाह हुई होगी। उसकी-जैसी छिनाल औरतें भी कभी डूबकर प्रान देंगी। वह तो मेरा कुल ही डुबो गई।"

और, रामदीन, जो अब तक कुएँ के पास थोड़ी देर के लिये रुक-सा गया था, लखिया की आवाज़ सुनकर, भीड़ को चीरता हुआ, कुएँ की जगत पर चढ़ आया। उसके सामने खड़े हुए हरखू के पैरों के पास पारो की भीगी हुई, फटी ओढ़नी पड़ी थी, और एक ओर उसी का बड़ा भी रक्खा हुआ था, जिसमें से अभी थोड़ी ही देर पहले पारो के चाँदी-सोने के गहने और कपड़े निकालकर किसी ने बाहर रख दिए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में ग्राम-सुधार

[श्री पी० सी० जैन एम्० ए०, एम्० एस्-सी० (लंदन), अर्थशास्त्र-अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है। यहाँ की अधिकतर जनता कृषि-संबंधी कार्यों द्वारा ही अपना निर्वाह करती है। परंतु वर्तमान कृषि की दशा अत्यंत शोचनीय है। एक साधारण किसान की आमदनी इतनी पर्याप्त नहीं कि वह अपने बाल-बच्चों का भले प्रकार भरण-पोषण कर सके। बहुतेरे कृषक तो आधे पेट भोजन और अर्धनग्न रहकर ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। परिणाम-स्वरूप भावी कृषक उतने दृढ़ तथा बलवान् नहीं बन पाते, जितने बल की उन्हें आवश्यकता होती है। दुबले-पतले, अस्वस्थ शरीर किसान खेती-बारी करते हैं, परंतु रोगी बनकर। उनका सारा जीवन ऋण के भार से दबा रहता है। कृषकों को न तो उचित शिक्षा ही प्राप्त होती है, न पेट-भर भोजन; जिससे वे अपना कुछ उद्धार कर सकें। इस जटिल कृषक-समस्या को हल करने के लिये प्रांतीय कांग्रेस-सरकार बहुत प्रयत्न कर रही थी। युक्त प्रांत की सरकार ने दस लाख रुपया सहायतार्थ प्रदान किया। यद्यपि समाज-सुधारक यथाशक्ति विभिन्न रीतियों द्वारा इस समस्या को हल करने का प्रयत्न कर रहे हैं, परंतु वास्तव में इसके उद्घाटन के लिये विचार-विनिमय और संगठन की आवश्यकता है।

आवश्यकीय सिद्धांत

ग्राम-सुधार के अनेक उपाय संभव हैं, परंतु मेरी राय में कुछ सिद्धांतों पर ध्यान रखना परमावश्यक है। सर्वप्रथम तो सुधार की विधि मनुष्य के इच्छानुकूल तथा यथाक्रम होनी चाहिए। इसके लिये स्थानिक निवासियों का सहयोग परमावश्यक है, क्योंकि इस सहयोग से सुधारकों को स्थानिक कठिनाइयों और आवश्यकताओं का भले प्रकार भान हो जायगा। सुधार का कार्य तभी सफल हो सकता है, जब सुधारक वहाँ की परिस्थिति से भले प्रकार जानकारी रखते हों। इसके अतिरिक्त यदि ग्राम-निवासियों का सहयोग भी प्राप्त हो जाय, तो कार्य और भी उत्तम रीति से संचलित होगा; क्योंकि तब कृषक भी इसे अपना कार्य समझकर यथा-साध्य सुधार करने की चेष्टा करेंगे।

प्रायः यह देखा जाता है कि प्रजा अपनी निजी उन्नति की ओर से उदासीन रहती है, क्योंकि वह अपने को भाग्य पर छोड़ देती है कि व्यर्थ परिश्रम से क्या लाभ; जो होना है, होने दो। यही एक कमज़ोरी है, जिसे दूर करना सुधारक का पहला कर्तव्य होगा। यह कार्य तभी सफल हो सकता है, जब ग्राम-निवासी भले प्रकार शिक्षित तथा संगठित हों। दूसरे, सुधार का कार्य कोई सहज कार्य नहीं, इसके लिये धन तथा समय, दोनों की ही आवश्यकता है। आरंभ में थोड़े-थोड़े कार्यों पर ही सुधारक को संतुष्ट होना पड़ेगा, क्योंकि एक ही बार में पूर्णतया सुधार की इच्छा करने का परिणाम यह होगा कि वास्तव में कार्य कुछ भी न हो सकेगा। मेरे विचार से ग्राम-निवासियों की शिक्षा, क्रय-शक्ति (Purchasing Power), खेती की वृद्धि तथा उत्तम पशुओं की देख-भाल की ओर से ही सुधार की पहली सीढ़ी चढ़ना चाहिए। इसमें सफलता होने के पश्चात् आगे के कार्यों में हाथ डालना उचित है। तीसरे, विशेष रूप से आजकल यह देखने में आ रहा है कि कुछ सज्जन केवल नाम पैदा करने के लिये ही सुधारक बनकर ग्राम-सुधार में बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालना चाहते हैं। शोक है, ऐसे सज्जन अपने आपको धोका देने के साथ ही देश का भी बहुत बड़ा अपकार करते हैं। ऐसे मनुष्यों से भोले-भाले ग्राम-निवासियों को सचेत करना सुधारक का सर्वप्रथम उद्देश्य होना चाहिए।

आय-वृद्धि

यह विचारणीय प्रश्न है कि कृषकों की आय में वृद्धि कैसे हो? यह निश्चय है कि जब तक किसानों में क्रय-शक्ति की वृद्धि न होगी, उनका जीवन (Standard of Life) कदापि उच्च नहीं बन सकता। उनकी शिक्षा, उनके बच्चों की शिक्षा, उनका स्वास्थ्य और प्रसन्नता तभी संभव है, जब उन्हें निजी आवश्यकताएँ पूर्ण करने में किसी प्रकार की कठिनाई न उठानी पड़े। इसके अतिरिक्त इस आय-वृद्धि से देश की शिल्पकलादि-संबंधी क्रांति (Industrial Revolution) में सहायता मिलेगी। आय-वृद्धि होने पर ही कृषक अपनी आय का कुछ भाग देश की मिलों के सहायतार्थ व्यय कर सकेंगे। मिल की बनी वस्तुओं को जब कृषक निजी व्यवहार में लाने लगेंगे, तो मिल अधिकाधिक वस्तुएँ तैयार करेंगी, जिससे मज़दूरों को अधिक कार्य मिलेगा। इस प्रकार, कृषकों की संख्या अधिक होने के कारण, बेकारी की समस्या हल होने में भी लाभ होगा।

अब यह देखना चाहिए कि इस आय-वृद्धि के उपाय क्या हो सकते हैं। मेरी राय में किसानों की पैदावार बाज़ार में यदि अच्छे दाम खड़े कर सके, तो यह वृद्धि का अति उत्तम उपाय है। इस संबंध में तीन बातें जानना आवश्यक है—

(१) भारत की पैदावार की अधिकतर क़ीमत अंतरराष्ट्रीय होती है। यदि योरपीय देशों से युद्ध, व्यापार की कमी अथवा अन्य देशों की प्रतियोगिता के कारण भारतीय पैदावार का मूल्य माना कम हो जाय, तो सब जिंस (गेहूँ, चना इत्यादि) का मूल्य गिर जायगा। सब वस्तुओं का मूल्य माँग और पूर्ति (Demand and Supply) पर ही निर्भर होता है। यदि किसी वस्तु की माँग अधिक और पूर्ति कम हो, तो यह स्वाभाविक है कि उसका मूल्य बढ़ जायगा। इसी कारण माँग घट जाने पर पैदावार का मूल्य कम हो जाता है।

(२) यह एक मौलिक सिद्धांत है कि बाज़ार में समतुल्यता (Equilibrium) स्थिर रखने के लिये, मूल्य में न्यूनता होते ही, वस्तु की पूर्ति भी कम कर दी जाय; इस प्रकार मूल्य फिर बढ़ जायगा, क्योंकि माँग की अपेक्षा पूर्ति कम हो गई। यद्यपि यह सिद्धांत औद्योगिक क्षेत्र में पूर्णतया लागू है, परंतु कृषकों के लिये उपयुक्त सिद्ध नहीं हुआ। कारण, किसानों की अपनी अज्ञानता तथा परंपरा का अंध-विश्वास। कृषक समझते हैं, मूल्य की कमी के समय पूर्ति बढ़ा देने से उनकी आमदनी में कोई न्यूनता न होगी।

(३) पैदावार के मूल्य पर सरकारी आर्थिक तथा द्रव्य-नीति का प्रभाव पड़ता है। बहुधा अधिक समय के लिये पैदावार इकट्ठी नहीं रक्खी जा सकती, तब दलाल तथा पूँजीपति इससे अनुचित लाभ उठाते हैं; वे किसानों को धोके में डालकर कम दामों में उनकी पैदावार बिकवा देते हैं; बेचारे किसानों को यह नहीं ज्ञात होने पाता कि दूसरे बाज़ार में उसी पैदावार के दुगुने दाम उठ सकते थे।

उपर्युक्त कमियाँ दूर करने के लिये (१) किसानों को इन परिस्थितियों में दक्ष करना चाहिए, जिससे वे अपना लाभ और हानि स्वयं समझ सकें। (२) गाँवों में ऐसी समितियाँ बनाई जायँ, जिनमें पारस्परिक संगठन से मूल्य कम होने पर कम ज़मीन जोती-बोई जाय, ताकि पूर्ति कम की जा सके। भारत में जूट तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याय के संबंध में इन योजनाओं से अधिक लाभ हुआ है। अतः यदि अमेरिका और इँगलैंड की भाँति भारत में भी अन्य वस्तुओं के लिये ऐसी ही बंधेजक योजनाएँ (Restriction Schemes) बनाई जायँ, तो सफलता की पूर्ण आशा है। और, तभी कृषकों की भी उन्नति की आशा होगी।

घरेलू उद्योग और कार्य

किसानों की आय-वृद्धि के लिये दूसरा प्रयत्न यह है कि कृषि के साथ-साथ उन्हें घरेलू धंधों तथा उद्योगों को सफल करने में सहायता दी जाय। कृषि-संबंधी शिक्षा के अतिरिक्त उन्हें घरेलू कार्यों में भी वृद्धि करने की शिक्षा देनी चाहिए।

कृषक घी-मक्खन बनाना, शहद इकट्ठा करना, रस्सी बटना, टोकरियाँ बुनना, साग-तरकारी बोना तथा कुछ छोटे-मोटे खिलौने बनाना अच्छे प्रकार कर सकते हैं। यही उनका घरेलू उद्योग है। बहुत-से कृषकों का तो इन्हीं के द्वारा जीवन-निर्वाह होता है। इनमें उन्नति होने से व्यक्तिगत आय की भी उन्नति होगी, और रहन-सहन का क्रम भी ऊँचा हो जायगा।

इसके अतिरिक्त किसानों को ऋण के चंगुल से छुड़ाना परमावश्यक है। लगान-संबंधी नियम कृषक की आय के अनुकूल होने चाहिए, और किसानों की सहायता के लिये उत्तम बीज, उत्तम खाद और थोड़ी-सी मशीनें भी होनी चाहिए, क्योंकि इससे अच्छी पैदावार और उनकी आय में वृद्धि होगी।

शिक्षा-प्रणाली

कृषकों की प्रारंभिक शिक्षा को ही पर्याप्त समझना भूल है। जब तक ग्राम-समाज ही शिक्षित न होगा, तब तक सुधार का कार्य पूर्ण नहीं हो सकता; इसलिये प्रत्येक कृषक को, स्त्री-पुरुष दोनो को ही, शिक्षा की आवश्यकता है। क्योंकि शिक्षित समाज में सुधार का प्रचार करना अत्यंत सहज होता है, और कृषक स्वयं अपनी कमज़ोरियाँ और बुराइयाँ समझकर उनका प्रतिकार करने का प्रयत्न करेंगे। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि एक शिक्षित पुरुष अपना जीवन, एक अशिक्षित की अपेक्षा, अधिक उच्च और आनंद-प्रद बना सकता है।

कृषकों की शिक्षा के लिये संयुक्त प्रांत की सरकार ने १६० अध्यापक नियुक्त किए हैं। प्रत्येक अध्यापक पर आठ या दस गाँवों की शिक्षा का भार रहता है। परंतु, हमें शोक है, इस संख्या से हमारा कार्य पूर्ण नहीं हो सकता—यह संख्या हमारे गाँवों के लिये पर्याप्त नहीं। सफलता के लिये शिक्षा की प्रणाली सिद्धांत-युक्त, दूरदर्शिता-युक्त और गंभीर विचारों से परिपूर्ण होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शिक्षा की उन्नति के लिये (१) हर प्रांत में नियमित पाठशालाएँ होनी चाहिए, जिनके द्वारा उस प्रांत की जनता को शिक्षा दी जा सके। इन पाठशालाओं के लिये स्थायी अध्यापकों की ही आवश्यकता नहीं; थोड़े-से स्थायी अध्यापक हों, और शेष कम वेतन पर नियुक्त किए गए हों, उनसे कार्य भले प्रकार संचलित हो सकता है। (२) बहुत-से छात्र तथा अध्यापक बिना वेतन लिए ही अपने अवकाश के समय में इन पाठशालाओं की सहायता करने को तैयार हो सकते हैं। अतः इन सज्जनों से सुधारकों को बहुत सहायता मिल सकती है। (३) कृषकों की उन्नति के लिये यह परमावश्यक है कि युवकों की शिक्षा अनिवार्य हो। वास्तव में युवक-किसान ही उन्नति के मूल-बीज हैं, यदि उन्हीं को भले प्रकार शिक्षित न किया गया, तो फिर सुधार की आशा केवल आशा ही रह जायगी। इससे बढ़कर दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि हमारे कृषक और मज़दूर स्वयं अपनी उन्नति के प्रति निरुत्साहित हैं; वे जैसे हैं, उसी में रहना पसंद करते हैं। उनकी यह धारणा दूर करने के लिये शिक्षा का प्रचार अनिवार्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा का व्यय सरकार पर ही नहीं रखना चाहिए, वरन् ज़मींदार, सेठ तथा अन्य धनी पुरुष दान तथा चंदे के रूप में इस कार्य में सहायता दे सकते हैं। मंदिर और मठों की चिर-संचित जायदाद से भी कुछ लाभ हो सकता है। इस प्रकार किसी एक व्यक्ति पर व्यय का भार न होकर यदि बँटा रहेगा, तो कार्य भले प्रकार चालित हो सकेगा।

ग्राम-सुधार के लिये और भी आवश्यक बातें हैं, जो स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं दी जा सकतीं। ग्राम की सड़कों, गलियों, मकानों का उचित प्रबंध होना चाहिए। कृषकों के मूल-आधार पशुओं का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि पाश्चात्य देशों की अपेक्षा भारत में कृषि पशुओं द्वारा ही होती है, मशीनों द्वारा नहीं, अतः पशुओं के स्वास्थ्य तथा खान-पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। संक्षेप में किसानों को व्यायाम, शिक्षा तथा सफ़ाई पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। अंत में एक बात और कहकर मैं अपना लेख समाप्त करता हूँ। वह यह कि किसान जब तक महाजनों के पंजे से छुटने का प्रयत्न नहीं करेंगे, तब तक उनका उद्धार अत्यंत कठिन है। अपनी आय के अनुसार ही उन्हें व्यय करना चाहिए, न कि ऋण लेकर अपने बच्चों का भी जीवन दुःखमय बना देना चाहिए। अतः इन सब दृष्टिकोणों से देखने से यह ज्ञात होता है कि कृषक जब इन क्षेत्रों में उत्तीर्ण हो जायँगे, तभी उनका पूर्ण सुधार हो सकेगा। उस महत्त्व-पूर्ण दिवस के आगमन के लिये सुधारकों को धैर्य के साथ कार्य में तत्पर रहना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी।

कैंथरडाइन

हेयर आयल

केशचर्या और केशचर्चा के लिये श्रेष्ठ उपकरण

इसके नियमित व्यवहार से बालों का असमय पकना, झड़ना, सूखना, ख़ुश्की, सिर घूमना आदि दूर होते हैं, और नये बाल निकलने में सहायता मिलती है। इसकी सुगन्ध मनोरम है।

बेंगाल केमिकल

कलकत्ता :: बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवती
देवियों के
सच्चे हृदय से
प्रशंसित
और
सुगंधित

झंडु

केन्थार्डीन हेअर ओइल

इसके सेवन से

सिर के गिरते बाल एकदम बंद होते हैं।
मस्तिष्क को शीतलता और ताजगी मिलती है।
आज ही से आजमायश के लिये खास सिफारिश है।

TRADE MARK

झंडु
फर्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
बंबई नं० १४

यू० पी० के सोल एजेंट—कांतिलाल आर० परीख, चाँदनी-चौक, दिल्ली।
लखनऊ ,, ,, ,,—माताबदल पंसारी, अमीनाबाद।
इलाहाबाद-एजेंट—एल्० एम्० छोलकीया ब्रादर्स, जॉनसेनगंज।
लखनऊ के स्टॉकिस्ट—कौशिक आयुर्वेदिक स्टोर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का सच्चा कोहेनूर हीरा

चिकित्सा-चंद्रोदय

*** सात भाग ***

इस ग्रंथ के लिये हिंदी-भाषा-भाषी-मात्र हाथ पसारते हैं। घर में पैसा नहीं होता, तो साहूकार से क़र्ज़ लेकर भी इसे ख़रीदते हैं ; क्योंकि इसके पढ़ने से मनुष्यों की जीवन-रक्षा होती है, उनके रोग दूर भागते हैं। इसी वजह से हरिदास ऐंड कंपनी के मालिक और

ग्रंथ-लेखक

बाबू हरिदासजी

ने अपना जीवन सफल बनाने के लिये, चंद दिनों के लिये

आधी क़ीमत कर दी है !

		पूरी क़ीमत	आधी क़ीमत
चिकित्सा-चंद्रोदय	१ ला भाग	३)	१॥)
,,	२ रा भाग	५)	२॥)
,,	३ रा भाग	४।)	२=)
,,	४ था भाग	४।)	२=)
,,	५ वाँ भाग	५)	२॥)
,,	६ ठा भाग	३॥)	१॥)
,,	७ वाँ भाग	१०॥)	५।)
स्वास्थ्य-रक्षा	१२ वाँ संस्करण	३)	१॥)

दस हज़ार वर्षों में नई बात !

भर्तृहरि महाराज ने तीन शतक लिखे थे। छपी हुई पुस्तक में कोई १०० या १५० सफ़े हैं। हर सफ़ा और हर श्लोक करोड़ों को भी सस्ता है। दो हज़ार बरस में ऐसा अनुवाद, जैसा हरिदास कंपनी बेच रही है, कभी नहीं लिखा गया। इसी से इन तीनो शतकों को मनुष्य-मात्र चाहते हैं। आप भी ख़रीदिए। मँगाते समय ५) पेशगी ज़रूर भेजें, और पास के रेलवे-स्टेशन का नाम लिखें।

		मूल्य पूरा	मूल्य आधा
नीतिशतक	सचित्र	४॥)	२।)
वैराग्यशतक	,,	५)	२॥)
शृंगारशतक	,,	३)	१॥)
		१२॥)	६।)

मँगाने का पता—हरिदास ऐंड कंपनी, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्तकालीन भारतीय समाज

[श्रीयुत सत्यप्रकाश श्रीवास्तव एम्० ए०, एल्० टी०]

हर देश की सामाजिक दशा उस देश की सभ्यता की द्योतिका है। यदि हमें सभ्यता के विकास की ओर दृष्टि डालनी है, तो हमें सभ्यता के उन क्षेत्रों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, जहाँ इसके विकास की संभावना हो सकती है। समाज ही प्रत्येक देश के इतिहास में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि समाज ही सभ्यता की रंगस्थली है।

गुप्तकालीन समाज अधिकतर जाति-पाँति के बंधनों से जकड़ा था। पुरातन हिंदू-धर्म के अनुयायियों की संख्या अधिक थी। ब्राह्मणों का समाज में आदर था। वे अग्रगण्य व्यक्तियों में से थे। धर्म के नाम पर मर मिटनेवाली जाति ब्राह्मण-जाति ही समझी जाती थी। इस समय के राजा भी हिंदू-मतावलंबी थे। ब्राह्मण अग्निहोत्र, महायज्ञ आदि धर्म-कार्यों का करना अपना परम कर्तव्य समझते थे। शिला-लेखों में हमें भिन्न-भिन्न गोत्रों के ब्राह्मणों का वर्णन मिलता है, जिनमें कौत्स, वर्षगण, वसुल, भारद्वाज, भार्गव, औपमन्यु, कण्व और शास्तन आदि गोत्र मुख्य हैं।

समाज में दूसरी जाति, जो आदरणीया समझी जाती थी, क्षत्रियों की थी; क्योंकि उन्हीं में से बहुतों के भाग्य में राज्य-कार्य करना लिखा था। वे शिला-लेखों में कुल-पुत्रक ※ कहे गए हैं।

ग्रामीण समाज ब्राह्मण और क्षत्रियों के अतिरिक्त अन्य दो जातियों को भी स्थान दिए हुए था। ये जातियाँ वैश्य और शूद्र थीं। गाँव के विशेष जन-समुदायों के अंग समझे जाते थे।

गाँवों में भी ब्राह्मण-जाति पवित्रता से जीवन निर्वाह करनेवाली जाति समझी जाती थी। वह धार्मिक ग्रंथों में बताए हुए मार्ग पर चलती थी, और धार्मिक ग्रंथों का मनन एवं यज्ञादि करना अपने जीवन का विशेष उद्देश्य समझा करती थी। कर्मदंड-शिलालेख में ब्राह्मण तप और स्वाध्याय में पारंगत कहे गए हैं।

वे लोग सत्य, धैर्य, आत्मसम्मान आदि की साक्षात् मूर्ति समझे जाते थे—उनकी सादी तथा धर्म-पूर्ण दिनचर्या से ही हमें उनके उच्चादर्शों का पता चल जाता है। उनके उच्चादर्शवादी होने के कारण ही राजाओं ने उन्हें पृथ्वी, धन आदि दान-स्वरूप दे दिया था।

महाराज हस्तिन, जैसा शिला-लेखों में

※ देखो बुधगुप्त का दामोदरपुर-शिला-लेख।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है, अत्यंत देव-ब्राह्मण-भक्त थे। मयूराक्षक, जो बंधुवर्मन का मंत्री था, ब्राह्मणों का बड़ा भक्त था। जैन-मतावलंबी भद्र भी ब्राह्मणों को बहुत आदर की दृष्टि से देखता था। ताम्रपत्रों और लेखों आदि पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि प्रजा तथा राजा, दोनो ब्राह्मण-मतावलंबी थे, ब्राह्मणों को बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे, उन्हें दान-स्वरूप पृथ्वी, गृह आदि देते थे, और राज्य में बहुत-से दान-गृह उन्हीं के हित के लिये स्थापित कर दिया करते थे।

इस समय ब्राह्मण गुरु या आचार्य हुआ करते थे, और हरएक वंश में एक गुरु होता था। चणाल स्वामी-नामक एक ब्राह्मण ही देवी प्रभावती गुप्त का कुलाचार्य था, और उसे प्रभावती गुप्त ने दंगुण-नामक गाँव भी दान-स्वरूप दे दिया था *।

गुप्त-काल में समाज का समृद्धिशाली होना ब्राह्मणों तथा गौओं की सम्मानता पर निर्भर था। एक प्रार्थना में हमें मिलता है—"प्रजा-वर्ग, जो गौओं तथा ब्राह्मणों का आदर करते हैं, समृद्धिशाली हों।"

आजकल की तरह ब्राह्मण हरएक शुभ कार्य में पूछे जाते थे। उनकी अनुमति के विना कोई शुभ काम नहीं होता था। शुभ कर्मों के अवसर पर ब्राह्मणों को पर्याप्त संख्या में धन की प्राप्ति हुआ करती थी। शिला-लेखों से ज्ञात होता है कि चक्रपालित ने बाँध का काम आरंभ करने के पहले ब्राह्मणों को धन आदि से विधि-पूर्वक सम्मानित कर दिया था।

ब्राह्मणों का जीवन बहुत ही पुनीत और उनकी हत्या करना बहुत ही पाप समझा जाता था।

व्यवसायों पर ध्यान देने से पता चलता है कि जाति-बंधन कहीं-कहीं टूट गए थे। शास्त्र-मतानुसार प्रत्येक जाति का व्यवसाय नियत था, और उस व्यवसाय पर बाध्य होना हर-एक जाति का कर्तव्य था। परंतु शिला-लेखों पर दृष्टि डालने से हमें कुछ और ही मालूम होता है—ब्राह्मण केवल पूजा-पाठ के ही अध्यक्ष न थे, वरन् राजनीति-क्षेत्र में भी पर्याप्त भाग लेते थे। वैदिक काल में भी हमें यह बात मिलती है। इसी समय मयूराक्षक-नामक ब्राह्मण बंधुवर्मन का मंत्री और मातृविष्णु-नामक विप्रर्षि ब्राह्मणजातीय राजा था—इसका पता हमें शिला-लेखों से चलता है। इसी प्रकार कुछ क्षत्रिय, जो युद्ध-व्यवसायवाले थे, व्यापार भी करने लगे। अचलवर्मन और भ्रुकुंठसिंह-नामक क्षत्रिय इंद्रपुर के वणिग्गण (वणिग्भ्याम्—शिला-लेख नं० १६) और सूर्य-मंदिर के अधिष्ठाता थे।

जनता का साधारणतया व्यवसाय खेती करना तथा कपड़ा बुनना आदि था। जनता ऋण लेने में अपना अपमान नहीं समझती थी। मुक़दमेबाज़ी भी हुआ करती थी। चक्र-पालित शिला-लेखों में ऋण-शून्य (अनृण्यम्) और मयूराक्षक 'व्यवहार-हीन' लिखा गया है।

* देखो पूना का ताम्रपत्र-लेख।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता में बहुत-से लोग रेशमी वस्त्र पहनते, चंदन का लेप करते और ताल-वृंत के पंखे तथा हारों का प्रयोग करते थे। देवताओं की पूजा में गंध, धूप, माला, दीप आदि का प्रयोग होता था। कहीं-कहीं तो पूरे एक गाँव की आय देवताओं की पूजा-सामग्री एकत्र करने में लगा दी जाती थी। पंचमहायज्ञों का करना भी पूजा का एक आवश्यक अंग समझा जाता था।

विवाह-प्रथा के बारे में इतना कहना पर्याप्त है कि उस समय इस समय की भाँति दहेज का प्रचार था, मगर लड़केवाला लड़की को देता था। शिला-लेखों से पता चलता है कि समुद्रगुप्त ने बतौर दहेज के अपनी पत्नी को अपना मनुष्यत्व और प्रभुत्व दान दिया था। अंतर्विवाह-प्रथा उस समय भी प्रचलित थी। शिला-लेख नं० ३५ में रविकीर्ति-नामक ब्राह्मण तथा भानुगुप्त-नामक क्षत्रिय * के विवाह-संबंध का वर्णन मिलता है। इस प्रकार के विवाह इस समय प्रायः हुआ करते थे। बहु-विवाह-प्रथा भी राजाओं में प्रचलित थी। गुप्तवंशीय नृपों में चंद्रगुप्त द्वितीय के दो पत्नियाँ थीं—ध्रुवदेवी और कुबेरनागा। कुमारगुप्त के भी दो पत्नियाँ थीं—अनंतदेवी और स्वर्णैया। विधवा-विवाह अच्छा नहीं समझा जाता था, और बाल-विवाह की कुरीति अज्ञात थी।

स्त्रियों का समाज में अधिक आदर-सत्कार होता था। अश्वमेध-प्रकार के सिक्के, जो समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त ने प्रचलित किए, इस बात की साक्षी देते हैं कि स्त्रियों का समाज में आदर होता था। यज्ञादि धार्मिक कार्य उनकी अनुपस्थिति में अधूरे समझे जाते थे। हिंदू-शास्त्रों में स्त्रियों के बिना पुरुषों द्वारा किया हुआ काम अधार्मिक और अन्याय-पूर्ण समझा जाता था। स्त्रियाँ अपने माता-पिता की भलाई के लिये धार्मिक दान आदि दिया करती थीं। उपासिका हरिस्वामिनी ने, जो उपासक सनसिद्ध की स्त्री थी, काकनद-बोट-महाविहार के निमित्त बहुत धन व्यय किया। सती की प्रथा प्रचलित थी। जब गोपराज भानुगुप्त से लड़ता हुआ मारा गया, उसकी स्त्री कांता ने अपने को पति के शव पर अर्पण कर आत्मोत्सर्ग कर दिया।

भारतवर्ष बहुत काल से दान-भूमि बना रहा है। उस समय भी भारतवर्ष में कई दान-शालाएँ स्थापित थीं, जहाँ निर्धन व्यक्तियों और धर्मात्माओं को भोजन तथा वस्त्र दान-स्वरूप दिया जाता था।

लोगों का इस समय यह निश्चय था कि इस प्रकार दान-गृह स्थापित करने से स्थापन-कर्ता पुण्य का भागी होकर स्वर्ग-द्वार में प्रवेश करने का अधिकारी हो जाता है। वह स्वयं ही केवल स्वर्ग पहुँचने का अधिकारी नहीं होता, वरन् अपने पूर्वजों तक के जीवन को सदा के लिये पुनीत बना देता है। जो ऐसे धर्म-कार्य में विघ्न डालते थे, वे पंचमहापातकों के भागी समझे जाते थे। इस तरह उस

* डॉक्टर फ़्लीट के मतानुसार।—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय मनुष्य धार्मिक जीवन व्यतीत किया करते थे।

इस प्रकार गुप्त-काल पर ध्यान देने से पता चलता है कि उस समय न केवल इह-लोक की ओर मनुष्यों का ध्यान था, वरन् परलोक-सुख की ओर भी उनका काफ़ी झुकाव था। इसी दृष्टिकोण से दशपुर के 'पट्टवायों' (रेशमी कपड़ा बुननेवालों) ने एक सूर्य-मंदिर की स्थापना की थी।

इन सब बातों पर ध्यान देने से पता चलता है कि गुप्त-काल में हर क्षेत्र में समान उन्नति हुई थी।

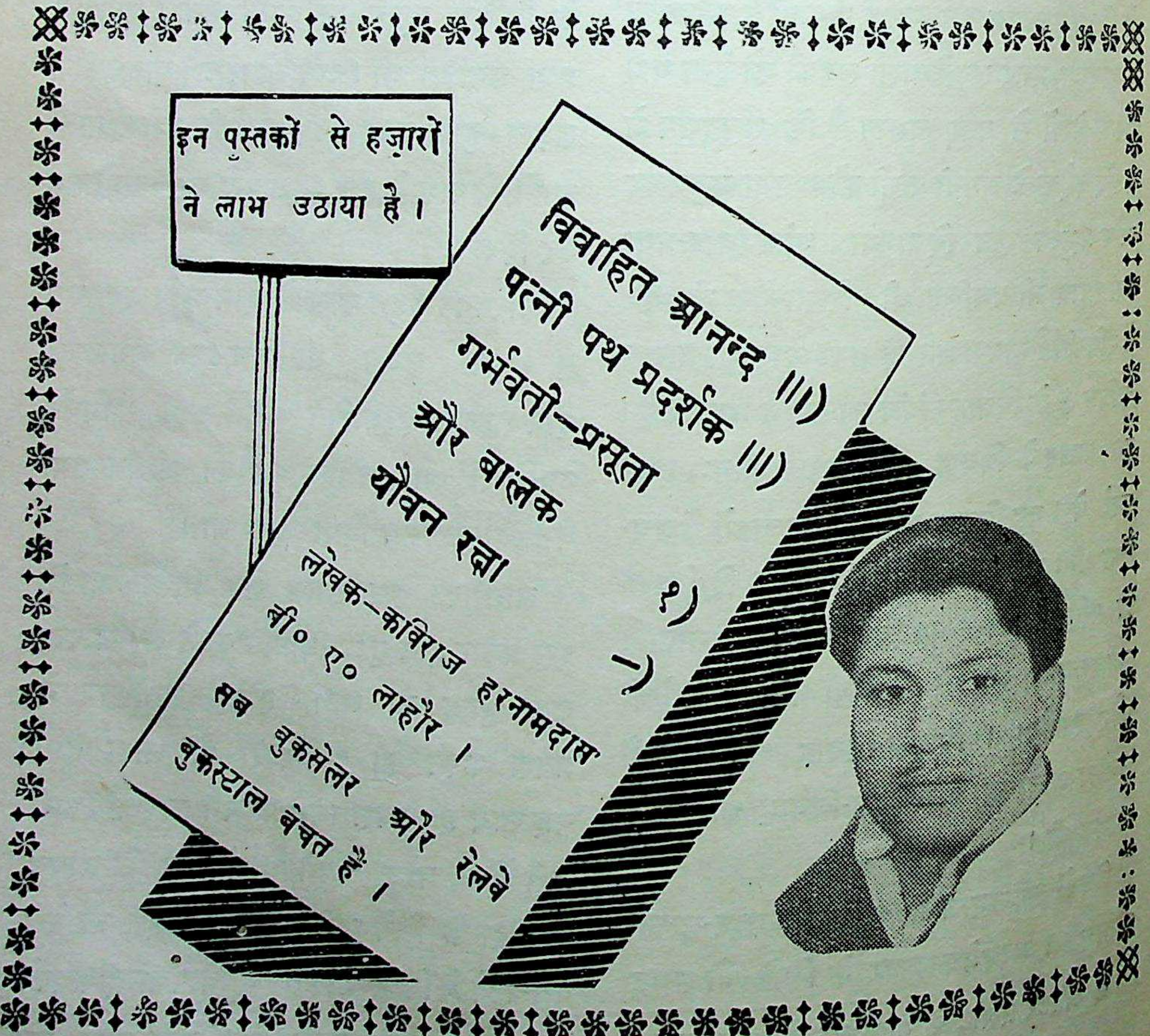

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरते हुए पत्ते से

[श्रीआरसीप्रसादसिंह]

(१)

अभी-अभी तो भूल रहे थे
तुम विटपी की डाली में;
भूल रहे थे सुख में दुख को,
फूल रहे हरियाली में।
सहसा किसने खींचा, जो तुम
निराधार - से छूट गए;
बंधु, बताओ, कैसे पल में
सारे बंधन टूट गए।

(२)

आज उत्तरापथ से निष्ठुर
यह किसका आह्वान हुआ?
जीवन-दीप बुझा, युग-युग का
महापर्व - निर्वाण हुआ!
आई एक लहर-सी, सिहरी
देह, प्राण लड़खड़ा पड़े;
प्रखर पवन कर तुम्हें वृंत-च्युत
कहाँ उड़ा ले चला, अरे!

(३)

क्या त्रिशंकु-से यार, अधर में
रुक न सकोगे देर ज़रा?
यह आकर्षण बड़ा प्रबल है,
इस दुनिया का मोह बड़ा।
सिसक रही पतझाड़ वनों में,
बुला रहा सुकुमार, सखे!
कहाँ छिपा आधार प्यार का?
यह कैसी है हार, सखे?

(४)

मर्मर-वन की प्रणय - रागिनी
पल्लव - दोलन छोड़ चले;
चिर-संबंध तोड़कर तरु से
अकस्मात मुँह मोड़ चले!
रोकर आप, रुला औरों को,
सबका हृदय मरोड़ चले;
टूट रहे तारों-से क्यों तुम
आह, धरा की ओर चले!

(५)

देख सकोगे फिर न कभी क्या
ऋतुपति की क्रीड़ा चंचल?
नीचे सरिता, ऊपर अंबर,
आगे पर्वत का अंचल!
गरम-गरम आँसू बुलबुल के
धो न सकेंगे वक्षःस्थल;
सुना सकेंगी विरह - व्यथा अब
तुम्हें नहीं चातक-कोयल।

(६)

जाओ, जाते हो प्रसन्न, तो
प्रिय, हँसकर प्रस्थान करो;
यह भिक्षुक जग लुब्ध सदा का,
कुछ इसको भी दान करो।
जीवन की अंतिम घड़ियों में
रोने का क्या काम, सखे?
मिलन-विरह का कौतुक कैसा?
लो न भीति का नाम, सखे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-साहित्यिकों की बोल-पट-साधना

[श्रीबालेश्वर गुरु]

आर्थिक दृष्टि से बोल-पट-निर्माण-कार्य इस देश के सात प्रधानतम उद्योगों में से है। लगभग आठ वर्ष पूर्व यह व्यवसाय अत्यंत अपरिपक स्थिति में था, किंतु आजकल इसकी उपयोगिता इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह जनता के केवल मनोरंजन की ही सामग्री न होकर शिक्षा-प्रसार का साधन भी बन गया है। यद्यपि इसके प्रधान केंद्र बंबई और कलकत्ता हैं, जो उन क्षेत्रों में स्थित हैं, जहाँ क्रमशः गुजराती और बंगाली का ही प्रभुत्व है; तथापि इस समय जितने भी चित्र सार्वजनिक प्रदर्शन के उद्देश्य से बनाए जाते हैं, उनमें लगभग ८० प्रतिशत राष्ट्र-भाषा हिंदी में ही होते हैं।

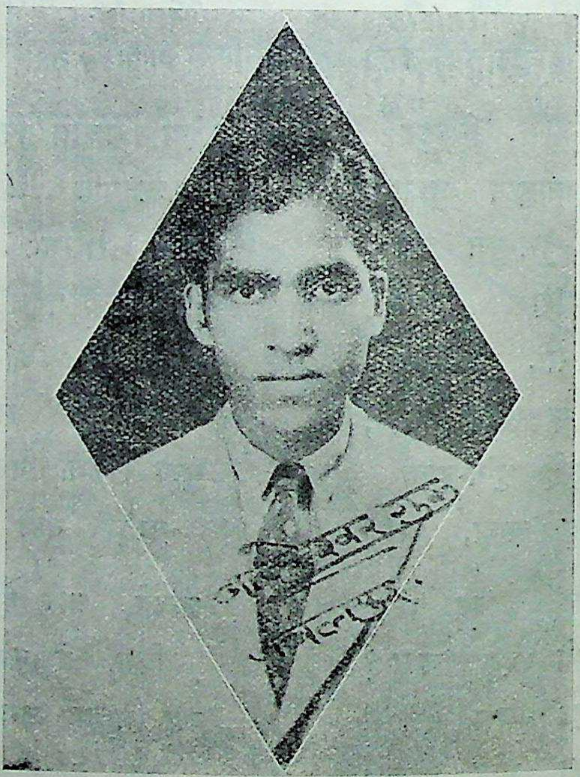

श्रीबालेश्वर गुरु

सवाक् चित्रों के प्रारंभिक युग में जो व्यक्ति कथोपकथन (Dialogues) और गायन (Songs) लिखने के लिये रहते थे, वे प्रायः हिंदी-भाषा और भारतीय संस्कृति से पूर्ण-परिचित न होते थे, फल-स्वरूप उनके द्वारा लिखित गायन और संवादों में साहित्यिक सौंदर्य एवं ऊँची कल्पना का एकांत रूप से अभाव पाया जाता था। चित्र के लिये कथानक का सृजन कोई अर्ध-शिक्षित मुंशी अथवा पंडित करते थे। अधिकांश कथानकों में तारतम्य (Continuity) का दोष रहता था, इसीलिये चित्र भी कला-विहीन और नीरस होते थे। तत्कालीन बोल-पट-निर्माताओं (Film-Producers) का एकमात्र ध्येय 'आर्थिक लाभ' होने के कारण मौलिकता पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। जिस कथानक की आधार-भूमि (Plot) पर निर्मित चित्र आर्थिक दृष्टि से सफल रहता था, वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथानक प्रत्येक निर्माता आंशिक परिवर्तन के साथ अपना लेता था। इसी कारण अधिकांश बोल-पट किसी राज्य की रानी और प्रधान मंत्री के प्रेम से आरंभ होकर मंत्री की हत्या और राज्य के सच्चे अधिकारी की सिंहासन-प्राप्ति के साथ समाप्त हो जाते थे। जन-रुचि मौलिकता और नवीनता के लिये आर्थिक बलिदान कर सकती थी, किंतु जब चित्रों में निर्देशक (Director) दोनो बातों की उपेक्षा करने लगे, तब उनका असफल होना स्वाभाविक ही था। बोल-पट-व्यवसाय इस समय भयंकर गति से अवनति की ओर बहा जा रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में, इस क्षेत्र को प्रगतिशील और सजीव बनाने के लिये, ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी, जो साहित्यिक रुचि रखने के साथ-साथ कला की उन्नति के लिये योग दे सकते थे।

उपर्युक्त आवश्यकता की पूर्ति के लिये हिंदी-साहित्य के विद्वान् गल्प-लेखक डॉक्टर श्रीधनीरामजी 'प्रेम' बोल-पट-क्षेत्र में सर्वप्रथम आए। उनके द्वारा स्थापित इस परिपाटी का अनुसरण श्रीयुत सुदर्शनजी, प्रेमचंदजी और भगवतीचरणजी वर्मा ने कालांतर में किया। सुदर्शनजी अपनी सरल भाषा और सुंदर गीतों के कारण, प्रेमचंदजी प्रभावशाली कथानक के कारण, और वर्माजी कविता-सुलभ सौंदर्य और कल्पना को गायनों में रख सकने के कारण इस क्षेत्र में सफल हो सके। हिंदी की इन अमूल्य निधियों ने बोल-पटों में जिस लगन से प्रेरित होकर कार्य किया, वह स्तुत्य है। नीचे की कुछ पंक्तियों में इन व्यक्तियों की बोल-पट-साधना का तुलनात्मक इतिहास देने का प्रयत्न किया गया है।

डॉक्टर श्रीधनीरामजी 'प्रेम'

आदरणीय डॉक्टर साहब ने बोल-पट-क्षेत्र में १९३२ के लगभग पदार्पण किया था। सर्वप्रथम आपकी प्रतिभा और कला से 'रणजीत' को लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इस संस्था की स्थापना श्रीयुत चंदूलालजी शाह-जैसे योग्य व्यक्ति के हाथों हुई थी, और इसे विख्यात अभिनेत्री श्रीमती गौहर का भी सहयोग प्राप्त था। इसके अन्य प्रमुख अभिनेताओं में राजा सेंडो, घोरी, दीक्षित आदि के होने के कारण डॉक्टर साहब को अपने कथानकों के लिये बहुत ही योग्य कलाकारों का साहाय्य प्राप्त था। प्रायः किसी बोल-पट की सफलता अथवा असफलता उसमें कार्य करनेवाले अभिनेता अभिनेत्रियों पर ही प्रधानतः निर्भर रहती है। किसी सर्वांग-सुंदर बोल-पट का निर्माण करने के लिये सबसे महत्त्व-पूर्ण बात योग्य अभिनेताओं का चयन है। यदि चित्र में अभिनय सजीव नहीं, तो कथानक का स्वतंत्र रूप से कोई मूल्य नहीं रहता। इस दृष्टिकोण से (उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए) विचार करने पर डॉक्टर साहब को निश्चय ही अपने अन्य सहयोगियों से कहीं अधिक सुविधाएँ प्राप्त थीं।

'रणजीत' में रहकर डॉक्टर साहब ने सात-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ बोल-पटों के संवाद, गायन और कथानक लिखे थे। आपके प्रारंभिक प्रयासों में 'चार चक्रम', 'दो बदमाश' और 'भूल-भुलैया' आदि चित्रों की गणना है। ये सब चित्र हास्य-रस-प्रधान थे, और 'टेकनिक' अथवा निर्देशन की विशेषताओं से परिपूर्ण न होने पर भी उपयुक्त संवादों और गायनों के कारण लोकप्रिय बन सके। डॉक्टर साहब के बोल-पट-क्षेत्र-प्रवेश के समय तक किसी भी भारतीय बोल-पट-संस्था ने संपूर्ण हास्य-रस-प्रधान चित्र (Full-length-Comedy) बनाने का प्रयत्न नहीं किया था। उनकी इस उदासीनता के प्रधान कारण ये थे—

(अ) स्वाभाविकता का निर्वाह करते हुए हास्य-रस के अभिनय में निपुण अभिनेताओं की कमी।

(आ) हास्य-रस-पूर्ण कथनाकों की कमी।

(इ) स्वाभाविक रूप से हँसानेवाले संवाद और गायन-लेखकों का भयंकर अभाव।

'रणजीत' के हास्य-रस-पूर्ण चित्रों के निर्माण में द्वितीय और तृतीय कठिनाइयाँ सुलझाने का श्रेय अवश्य ही 'प्रेम'जी को है। जिन्होंने उक्त बोल-पट-संस्था की प्रारंभिक कृतियाँ देखी हैं, वे मेरी इस धारणा से असहमत न होंगे कि उन चित्रों के संवाद और गायन लिखकर डॉक्टर 'प्रेम' ने अपनी हास्य-रसात्मक लेखन-प्रतिभा का असाधारण परिचय दिया है। किंतु यहाँ यह स्मरणीय है कि आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक सफल और जन-रुचि के अनुकूल होने पर भी इन चित्रों का उद्देश जनता के केवल मनोरंजन की सामग्री उपस्थित करना था। उनसे जनता को कोई महान् प्रेरणा अथवा शिक्षा नहीं मिलती। उपर्युक्त चित्रों के सिवा डॉक्टर साहब ने 'परदेशी प्रीतम' प्रभृति बोल-पटों के संवाद और गायन भी लिखे थे, किंतु इनके द्वारा वह कोई विशेष सफलता न पा सके।

डॉक्टर साहब की बोल-पट-सेवाओं पर प्रत्येक दृष्टिकोण से विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वह एक आदर्श लेखक के रूप में उतने सफल न हो सके, जितने एक पथ-प्रदर्शक के रूप में।

बहुत समय पूर्व डॉक्टर 'प्रेम' बोल-पट-क्षेत्र से अवकाश ले चुके हैं। हम उन्हें अपने कर्तव्य के नाते धन्यवाद देते हैं, और यह कहते हुए गौरव अनुभव करते हैं कि बोल-पट-क्षेत्र उनकी सेवाओं के लिये उनका चिरऋणी रहेगा।

श्रीयुत प्रेमचंदजी

स्वर्गीय प्रेमचंदजी हिंदी के सर्व-श्रेष्ठ उपन्यासकार थे। उनकी रंग-भूमि, ग़बन, गोदान आदि कृतियाँ ही उन्हें साहित्यिक जगत् में अमर बनाने के लिये यथेष्ट हैं। ग्राम और ग्राम-निवासियों का जितना सुंदर चित्रण उनकी क़लम से हो सका, वह अन्यत्र अलभ्य है। किंतु कितने लज्जा और क्षोभ का विषय है कि हमारे इतने महान् साहित्यिक का भी जीवन आर्थिक दृष्टि से बहुत दुःखमय था। साहित्य-सेवा में उन्हें भीषण आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; प्रेस बंद होने तक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौबत आ गई, और अंत में जीविका के लिये बोल-पट-क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। इस संबंध में अंतिम निश्चय करते समय उन्होंने जैनेंद्रजी को एक पत्र भेजा था, जिससे उनके इस क्षेत्र में पदार्पण करने के कारणों पर यथेष्ट प्रकाश पड़ता है —

"प्रिय जैनेंद्र, ...बंबई की एक फ़िल्म-कंपनी मुझे बुला रही है। वेतन की बात नहीं, कन्ट्राक्ट की बात है। ८,०००) साल। मैं उस अवस्था को पहुँच गया हूँ, जब मेरे लिये इसके सिवा कोई उपाय नहीं रह गया है कि या तो वहाँ चला जाऊँ या अपने उपन्यास को बाजार में बेचूँ।.........मैं सोचता हूँ कि मैं एक साल के लिये चला जाऊँ। वहाँ साल-भर रहने के बाद कुछ ऐसा कन्ट्राक्ट कर लूँगा कि यहीं बैठे-बैठे तीन-चार कहानियाँ लिख दिया करूँ, और चार-पाँच हज़ार रुपए मिल जाया करें। उससे जागरण-हंस दोनो मज़े में चलेंगे, और पैसों का संकट कट जायगा।"

उपर्युक्त पत्र से यह स्पष्ट रूप से ध्वनित होता है कि स्वर्गीय प्रेमचंदजी के इस दिशा में प्रवेश करने का एकमात्र कारण उनकी आर्थिक विवशता थी।

रजत-पट पर प्रेमचंदजी का 'सेवा-सदन' (उपन्यास) सबसे पहले उपस्थित किया गया। इस चित्र को देखने के पूर्व जनता की यह निश्चित धारणा थी कि जो कथानक शब्दों में गूँथे जाने पर अद्वितीय रूप से सुंदर बन पड़ा है, वह यदि स्वयं लेखक के तत्त्वावधान में बोल-पट-रूप में परिणत किया जा रहा है, तो अवश्य ही असाधारण रूप से सफल होगा। किंतु चित्र देखने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति को भीषण निराशा हुई। प्रायः सर्वत्र यही मत प्रकट किया गया कि मूल-रचना का शतांश भी बोल-पट में नहीं आ सका। लोगों का यह विरोध इतना अधिक बढ़ा कि वे संपूर्ण चित्र की असफलता का दोष लेखक (प्रेमचंदजी) के सिर मढ़ने लगे। किंतु उनका यह कार्य कितना भ्रांति-पूर्ण था, इसका ज्ञान प्रेमचंदजी के नीचे लिखे पत्र से हो जायगा, जो उन्होंने बंबई आने के पश्चात् जैनेंद्रजी को लिखा था—

"..............मैं जिन इरादों से आया था, उनमें एक भी पूरा होता नज़र नहीं आता। ये प्रेड्यूसर जिस ढंग की कहानियाँ बनाते आए हैं, उस लीक से जौ-भर नहीं हट सकते। Vulgarity को ये Entertainment value कहते हैं—अद्भुत ही में इनका विश्वास है। राजा-रानी, उनके षड्यंत्र, नक़ली लड़ाई और बोसेबाज़ी। ये ही उनके मुख्य साधन हैं..............।"

यथार्थ में सेवा-सदन (बोल-पट) की असफलता का उत्तरदायित्व लेश-मात्र भी प्रेमचंदजी पर नहीं डाला जा सकता। जैसा उनके पत्र से सूचित होता है, उस समय निर्देशकों की मनोवृत्ति इतनी दूषित थी कि वे प्रत्यक कथानक राजा-रानी और उनके मंत्रियों के षड्यंत्रों पर केंद्रित देखना चाहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभवतः इसी कारण वे 'सेवा-सदन' को एक उत्कृष्ट चित्र बनाने में असफल रहे।

'सेवा-सदन' के पश्चात् प्रेमचंदजी बंबई की एक प्रसिद्ध बोल-पट-संस्था 'अजंटा-कंपनी' में चले गए। यहाँ उनके द्वारा लिखित कथानक के आधार पर 'मिल और मज़दूर'-नामक बोल-पट तैयार हुआ, जिसमें प्रसिद्ध कलाकार (श्रीनयामपल्ली, पी० जयराज) का प्रमुख अभिनय था। प्रेमचंदजी अपनी रचनाओं में समाज के दो विभिन्न अंगों—पूँजीपति और मज़दूर-समाज—का तुलनात्मक चित्रण बड़ा सुंदर करते हैं; वह स्वयं मजदूर की आत्मा में से होकर बोलते हैं। यही उन्होंने 'मिल और मज़दूर' में किया, जिसके कारण रजतपट पर आने के पूर्व जब इस बोल-पट का 'बोर्ड ऑफ़् सेंसर्ज़' के सम्मुख प्रदर्शन किया गया, तो उसका अधिकतर भाग इस आधार पर निकाल दिया गया कि उससे धनिक और मज़दूर-वर्ग के बीच के वैषम्य को अधिक विस्तृत होने का अवसर मिलता था।

प्रेमचंदजी को अपने बोल-पट-जीवन से संतोष न मिल सका। वहाँ उन्हें प्रत्येक कार्य निर्देशक की इच्छा से करना पड़ता था; इसी कारण वह इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का कोई स्वतंत्र उपयोग न कर सके। अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था—

"......फ़िल्म में डाइरेक्टर सब कुछ है। लेखक क़लम का बादशाह ही क्यों न हो, यहाँ डाइरेक्टर की अमलदारी है। और, उस (डाइरेक्टर) के राज्य में उस (लेखक) की हुकूमत नहीं चल सकती। वह यह कहने का साहस नहीं रखता, 'मैं जन-रुचि को जानता हूँ, आप नहीं जानते।' इसके विरुद्ध डाइरेक्टर ज़ोर से कहता है, 'मैं जानता हूँ, जनता क्या चाहती है? और, हम यहाँ जनता की इसलाह करने नहीं आए हैं।.........जो चीज़ जनता माँगेगी, हम देंगे।' इसका जवाब यही है—'अच्छा साहब, हमारा सलाम लीजिए। हम घर जाते हैं।'"

यद्यपि प्रेमचंदजी बोल-पट-व्यवसाय में व्यक्तिगत कठिनाइयों के कारण आए थे, तथापि अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिये उन्होंने आर्थिक लाभ को ठुकरा देना श्रेयस्कर समझा। वह बोल-पटों में अपने आदर्शों को निभाने के लिये बहुत अधिक चेष्टाशील रहे; जैसा उनके 'मिल और मज़दूर' से स्पष्ट है। किंतु 'बोर्ड ऑफ़् सेंसर्ज़' की घातक नीति और परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण अधिक सफल न हो सके। 'मज़दूर' के पश्चात् उनका एक और चित्र निकला, किंतु वह अधिक लोक-प्रिय न बन सका। अंत में अपनी लेखन-प्रतिभा को बोल-पट-क्षेत्र के लिये अनुपयुक्त समझकर उन्होंने सदा के लिये उससे बिदा ले ली।

श्रीयुत सुदर्शनजी

बोल-पट-क्षेत्र में प्रवेश करनेवाले हिंदी-साहित्यिकों में श्रीसुदर्शनजी सर्वाधिक सफल हुए हैं। साहित्यिक जीवन में यह नाटककार और गल्प-लेखक के रूप में प्रसिद्ध थे। हिंदी में लिखने के पहले सुदर्शन जी उर्दू में लिखा करते थे, और उसमें भी यथेष्ट ख्याति उपलब्ध कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके थे। सिनेमा-क्षेत्र को अपनाने में इनका ध्येय क्या था, यह तो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, पर इतना अवश्य है कि साहित्य-सेवा की अपेक्षा बोल-पट-सेवा प्रत्येक दृष्टिकोण से इन्हें अधिक लाभ-प्रद सिद्ध हुई।

सुदर्शनजी लगभग ६ वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में आए थे। सर्वप्रथम उनका नाम 'श्रीभारतलक्ष्मी पिक्चर्स' के निर्देशक के रूप में विख्यात हुआ। इस बोल-पट-संस्था में इनकी पहली कृति 'रामायण' थी। इस चित्र का आधार, जैसा उसके नाम से प्रकट है, पौराणिक था। यह चित्र सफल तो हुआ, किंतु इस सफलता की मात्रा इतनी अधिक न थी कि सुदर्शनजी की गणना प्रथम श्रेणी के निर्देशकों में की जाती। यथार्थ में सुदर्शनजी पहले एक लेखक हैं, पश्चात् निर्देशक। इनके निर्देशन में निर्मित एक अन्य कृति 'कुँवारी या विधवा' भी अत्यधिक सफल न हुई। निर्देशक के रूप में इन्हें अधिक सफलता न मिली, उसका कारण शायद यही हो कि जिस समय इन्होंने उपर्युक्त दोनो चित्रों का निर्देशन किया था, उस समय सिनेमा-संबंधी क्षेत्र में उनका अनुभव अधिक विस्तृत न था।

सुदर्शनजी का वास्तविक बोल-पट-जीवन 'न्यू थिएटर्स' में प्रवेश करने के पश्चात् से प्रारंभ होता है, जहाँ यह संवाद और गायन-लेखक की हैसियत से गए थे। इनकी लेखन-प्रतिभा से न्यू थिएटर्स बहुत अधिक लाभान्वित हुआ। हिंदी-साहित्य में यह केवल नाटककार और गल्प-लेखक के रूप में प्रसिद्ध थे, किंतु बोल-पट-क्षेत्र में पदार्पण करने पर इन्होंने एक बिलकुल ही नवीन प्रयत्न किया—चित्रों के लिये गीत लिखना प्रारंभ किया। यह कहना तनिक भी अतिशयोक्ति न होगा कि सुदर्शनजी के गीत जितने साहित्यिकता-पूर्ण और मधुर होते हैं, उतने अन्य किसी बोल-पट-लेखक के नहीं।

न्यू थिएटर्स में श्रीयुत सुदर्शन ने सर्व-प्रथम 'धूप-छाँह' या 'भाग्य-चक्र' नाम का कथानक लिखा, जिसके आधार पर इसी नाम का एक बोल-पट बनाया गया, जो वर्ष की सर्वोत्तम कृति था। यद्यपि इस चित्र की महान् सफलता का संपूर्ण श्रेय कथानक और तद्गत गीतों को ही नहीं दिया जा सकता, तथापि यह निश्चित है कि यदि कथानक और गीत किसी अन्य लेखक की क़लम से निकले होते, तो चित्र वही अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर सकता—यह संदेहास्पद विषय है।

सुदर्शनजी को जो सफलता 'धूप-छाँह' चित्र से मिली, उसे कुछ संकुचित विचारवाले बंगाली फूटी आँखों न देख सके। और, केवल यही नहीं, प्रांतीयता के नाम पर उन लोगों ने इनके विरुद्ध एक बहुत बड़ा बवंडर खड़ा कर दिया। इस कार्य से बंगालियों को कोई विशेष लाभ न हो सका। इसके विपरीत उनका नाम सदा के लिये प्रांतीयता के समर्थकों की श्रेणी में आ गया। अपने विरोध में बंगालियों का यह उग्र प्रदर्शन देखकर भी सुदर्शनजी न्यू थिएटर्स में डटे रहे। इस अवसर पर वहाँ के संचालकों ने भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी दूरदर्शिता और न्याय-बुद्धि का अच्छा परिचय दिया।

'धूप-छाँह' के पश्चात् श्रीयुत सुदर्शनजी ने न्यू थिएटर्स में 'धरती-माता'-नामक बोल-पट के, जिसमें प्रसिद्ध कलाकार सहगल, कमलेश और उमा का अभिनय था, गायन, संवाद और कथानक लिखे। यह चित्र भी, कथानक की उत्कृष्टता और दोष-हीन निर्देशन के कारण, संपूर्ण भारत में अद्वितीय सफलता के साथ प्रदर्शित हुआ। 'धरती-माता' देखने के पश्चात् प्रांतीयता के हिमायती बंगालियों को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि सुदर्शन असामान्य प्रतिभाशाली लेखक हैं।

हिंदी-साहित्य में सुदर्शनजी की ख्याति केवल नाटककार और गल्प-लेखक के रूप में थी, किंतु बोल-पट-क्षेत्र में पदार्पण करने पर उन्होंने चित्रों के लिये गीत लिखना भी प्रारंभ किया, और शीघ्र ही इस नवीन दिशा में अत्यधिक सफलता प्राप्त कर ली।

सुदर्शनजी के गीतों में साहित्यिकता और सरलता का सुंदर समन्वय रहता है। उनमें बोल-पटों के गीतों की परंपरा के अनुसार न 'पतली कमरिया' और 'रसीले नैनों' का वर्णन रहता है और न प्रेम का कलुषित चित्रण ही। उनके प्रत्येक गीत में कुछ-न-कुछ नवीनता रहती है, और शब्द-चयन इतनी सुंदरता के साथ किया जाता है कि कुछ समय तक वे गीत जनता के गुनगुनाने की चीज़ हो जाते हैं।

'धरती-माता' और 'धूप-छाँह' के (सुदर्शन-लिखित) कुछ गाने इतने सुंदर हैं कि वे हमारे साहित्य की स्थायी निधि बन सकते हैं। "तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफ़िर ! जाग ज़रा।" और "बाबा ! मन की आँखें खोल" इसी श्रेणी के गीत हैं।

'धरती-माता' का यह गीत—

दुनिया रंग-रंगीली, बाबा ! दुनिया रंग-रंगीली।
यह दुनिया एक सुंदर बगिया, शोभा इसकी न्यारी है;
हर डारी पर जादू छाया, हर डारी मतवारी है।
अद्भुत पंछी, फूल मनोहर, कली-कली चटकीली बाबा!
दुनिया०—

भी बहुत हृदय-ग्राही और आकर्षक है। इसी चित्र के एक अन्य गीत में किसी नवयुवती के हृदय में उठनेवाली भावनाओं का यह चित्रण—

मैं मन की बात बनाऊँ।
फूल बनूँ, फूलन सँग खेलूँ, पंछी बनकर गाऊँ;
परम पुनीत प्रभात बनूँ मैं, जागूँ, जगत जगाऊँ।
मैं मन की बात बनाऊँ।
चाँद बनूँ, आकाश सजाऊँ, तारे रोज गिनाऊँ;
लहर बनूँ, पल-पल लहराऊँ; बादल बन जग छाऊँ।
मैं मन की बात बनाऊँ।

भी बहुत सुंदर बन पड़ा है।

सुदर्शनजी ने बोल-पट-क्षेत्र की जो अमूल्य सेवाएँ की हैं, वे स्तुत्य हैं। हमारे लिये यह महान् गौरव की बात है कि हिंदी का कम-से-कम एक साहित्यिक इस क्षेत्र में पूर्ण लगन के साथ कार्य कर रहा है। हमें आशा है, सुदर्शनजी भविष्य में भी इसी तरह अपने गीतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और संवादों में साहित्यिकता की रक्षा करते रहेंगे।

श्रीभगवतीचरणजी वर्मा

भगवतीचरणजी वर्मा हिंदी के प्रतिष्ठित और सुयोग्य कवि हैं। उपन्यासकार और कहानी-लेखक के रूप में भी उनके परिचय की आवश्यकता नहीं। उनकी 'तीन वर्ष'-नामक कृति ही इस बात की साक्षी है कि वह एक सफल औपन्यासिक हैं। हिंदी के अन्य बोल-पट-सेवी साहित्यिकों (डॉक्टर 'प्रेम', श्रीयुत सुदर्शन और श्रद्धेय प्रेमचंदजी) की अपेक्षा वर्माजी का बोल-पट-जीवन बहुत ही अल्पकालीन रहा है; इसी कारण, इस क्षेत्र में, वह अपने अन्य सहयोगियों के समान प्रसिद्धि प्राप्त न कर सके।

कलकत्ते की 'फ़िल्म-कॉरपोरेशन ऑफ़् इंडिया'-नामक बोल-पट-संस्था में वर्माजी संवाद और गायन-लेखक की हैसियत से सर्वप्रथम प्रविष्ट हुए थे। वहाँ इन्होंने इस संस्था के प्रथम चित्र 'आशा' के संवाद और गायन लिखे, जो काफ़ी सफल रहे। कुछ मास कार्य करने के पश्चात् ही वर्माजी ने फ़िल्म-कारपोरेशन से सदा के लिये विदा ले ली, और साथ ही बोल-पट-क्षेत्र से भी।

वर्माजी द्वारा लिखित 'आशा' चित्र के सुंदर गीतों की सर्वत्र बहुत अधिक प्रशंसा हुई। इसमें संदेह नहीं कि यदि वह इसी दिशा में अपना कार्य-क्षेत्र स्थापित करते, तो भविष्य उनके लिये बहुत आशा-प्रद था।

आजकल न्यू थिएटर्स, बांबे-टाकीज और हंस प्रभृति के प्रगतिशील निर्माता क्रमशः बँगाली और मराठी के प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों को रजतपट पर चित्रित कर रहे हैं। कलकत्ते की 'आदर्श-चित्र'-नामक बोल-पट-संस्था भी वर्माजी के 'रूपलेखा' उपन्यास के आधार पर चित्र बनाकर एक स्तुत्य प्रयास करने जा रही है। इस चित्र का शब्द-नाट्य (Scenario) और संवाद-गायन मध्यप्रांत के तरुण कवि श्रीयुत शाखाल एम्० ए० लिख रहे हैं, अतएव आशा है, ऐसे अधिकारी व्यक्ति के सहयोग से मूल उपन्यास के साथ पूर्ण न्याय होगा।

इस सत्प्रयत्न के लिये हम आदर्श-चित्र को बधाई देते हैं।

मोतियाबिंद

कौन कहता है कि बग़ैर चीर-फाड़ के अच्छा नहीं होता? डिजन्स "आइ-क्योर" Degon's "Eye cure" के कुछ ही दिनों के लगाने से नया या पुराना मोतियाबिंद तथा और भी आँख की बीमारियाँ शर्तिया अच्छी होती हैं। मूल्य ३), डाक-ख़र्च ॥=)

कमला-वर्क्स (S/L) पाँचपोटा, बंगाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तने तार

[श्रीयुत बलराम पगारे]

(१)

सुबह का वक्त था, मैं अपने वाद्यों को सुधारने में लगा हुआ था कि इतने में किसी ने दरवाज़ा थपथपाया ; मैंने कुंडी खोली और देखा, आगंतुक ललित-संगीत-संस्था के मंत्री थे। नमस्ते के उपरांत अपने वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने का आमंत्रण उन्होंने दिया। मैंने 'हाँ' कह-कर सादर बिदा दी। वह तो चले गए, परउन का आमंत्रण मानो बोझ-सा मेरे सिर पर लद गया। कुछ ही दिन हुए, मैं इस शहर में आया हूँ, जीविका किसी भाँति चल जाती है। विद्यार्थियों में सिर्फ़ एक ही छात्रा ऐसी है, जिसे लेकर मैं उत्सव में सम्मिलित होने का साहस-भर कर सकता हूँ। पर क्या मैं ऐसा कर सकूँगा, यही विचार खाए जाता है।

दिन बीते, पर हमारा अभ्यास बराबर बढ़ता गया, और उस दिन जब अपार जनता के सम्मुख लता ने गाया, और मैंने वॉयलीन बजाया, तो हमें यह भान भी न था कि हम कहाँ, क्या कर रहे हैं। हमें भान हुआ तब, जब बड़े-बड़े फूलों के हार हमारी गर्दनों में पड़े, जनता की तालियों की आवाज़ ने हमें चौंकाया, और सभापति ने कहा—"आज का प्रथम पुरस्कार लतादेवी को दिया जाता है।" उस समय लता ने मुझे देखा, मैंने गर्व का अनुभव किया, आँखों में ही हँस दिया, और कहा, नमस्कार कर स्वीकार कर लो।

माना कि इस बात को दिन बीत गए, पर मेरे लिये उत्कर्ष की यही प्रथम सीढ़ी थी, जिसके सहारे उत्तरोत्तर बढ़ता गया। इस नशे ने मुझे ऐसा मदहोश कर दिया कि मैं यह भी न जान पाया कि मैं क्या था, कहाँ हूँ, और भविष्य क्या होगा।

भूल से यदि ये विचार आते भी, तो यही सोचता—लता मेरे उत्कर्ष का वरदान है, ईश्वरी देन है; फिर मैं उसे न मानूँ, तो किसे ? जीवन के ज़ीने की उँगलियों पर गिनी जा सकें, उतनी ही सीढ़ियाँ उसने तय की होंगी, पर जो कंपन, जो मिठास, जो दर्द और जो लोच उसके गले में है, ढूँढ़े भी, अच्छे-से-अच्छे गायक में, नहीं मिल सकता। यह देन उसे ईश्वर से मिली है, मैं उसे पूजता हूँ, मानता हूँ, अपनाता हूँ।

किन्हीं ख़ास कारणों से विशाखा को भी मुझे मान लेना पड़ता है। विशाखा नगर-सेठ की पुत्री है, जिसके नाम से ही कई विद्यार्थी मेरे यहाँ सीखने आते हैं। और, लता की कला अन्य पाठकों को बाध्य करती है कि वे अपने बच्चों को मेरे यहाँ शिक्षा दिलवाएँ। इन्हीं सरस्वती और लक्ष्मी की कृपा से मेरा यह छोटा-सा मंदिर स्वर्ग-सा बन गया है।

यदि किसी कार्य-वश लता एक रोज़ न आती, तो सा, रे, ग, म से ध्वनित, वीणा के तारों से गुंजित, तबले की ताल पर इठलाता, घुँघरू और वॉयलीन की गत पर नाचता यह मेरा छोटा-सा विद्यालय मुझे श्मशान-सा लगने लगता।

(२)

विशाखा का जन्मोत्सव और उसमें हमारा प्रोग्राम जनता की राह की बातचीत बन चली है। मैं सुनता और ईश्वर से प्रार्थना करता—"प्रभो ! मुझे बल दो कि मैं जनता-जनार्दन का आशीर्वाद लेने में समर्थ हो सकूँ। प्रभो ! इन विद्यार्थियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह शक्ति और गुण भर दो, जिससे इनकी कला चंद्र-कला-सी बढ़े।" और, हुआ भी ऐसा ही। चंद्र-कला की तरह बढ़नेवाली लता चंद्र-कला की भाँति बढ़कर, सारी लताओं को घेरकर लता-कुंज बना चुकी।

लता बालकों-जैसी सरल, प्रशांत सागर-जैसी गंभीर, बिजली-जैसी चंचल, वीणा-सी मधुर और तर हवा के झोंके पर नत-मस्तक होनेवाली नव-कलिका-जैसी नम्र है! इन्हीं सारे गुणों के कारण वह सबको अपना बना चुकी है। पर विशाखा का स्वभाव लता से एकदम भिन्न है। ज़िद्दी, घमंडी और अहंभाव होने से वह अपनों को भी पराया बना लेती है।

प्रदर्शन के लिये ख़ास ढंग पर दी गई तालीम पूरी हुई। सारे विद्यार्थी अपने-अपने घर गए, तब मैं उन वाद्यों को ढीला करने लगा, जिनके तार अभी तक सधे थे। तंबूरा, सितार, वीणा और वॉयलीन। वह आख़िरी बचा हुआ वाद्य वॉयलीन अब मेरे हाथ में था, जिसके तार मानो अब भी लता के गले की आवाज़ से भीगे थे। खूँटी पर हाथ रक्खा और चाहा कि तार उतार दूँ कि इसी समय लता ने कमरे में प्रवेश किया, और दरवाज़े से ही चिल्ला उठी—"मास्टर बाबू! वॉयलीन के तारों को न उतारना।" मेरा हाथ रुका, पर मेरी विचार-धारा न रुक सकी—"जिस सजीव स्वर-लहरी ने निष्प्राण तंतुओं में भी अपना एक ऐसा स्वर-कंपन भर दिया, जो उनके कण-कण में अभी तक गूँज रहा है—वहाँ तनाव क्या और उतार क्या? क्या ये तार उतरकर भी उस स्वर-लहरी को भूल सकेंगे। लता, तारों का उतार तो जीवन का उतार नहीं हो सकता, स्वरों के कंपन का उतार नहीं हो सकता। यह कंपन तो शायद उनके अस्तित्व के साथ ही घुल-मिल गया है।" मैं मन-ही-मन सोच रहा था। वह आई, और मेरे पास, बिलकुल पास, बैठ गई। जो गाना उसके भावनृत्य के लिये मैंने उसे सिखाया था, वह गुनगुनाने लगी। कुछ यों ही वॉयलीन पर हाथ फेरते-फेरते मैंने पूछा—"क्या बात है लता! अभी-अभी तुमने अपना अभ्यास ख़त्म किया है, और अभी……"

मानो वह मुझे पूरा बोलने भी नहीं देना चाहती थी, बीच ही में बोल उठी—"कुंज!"

कुंज कहकर लता ने कई बार पुकारा है, पर आज उसकी आवाज़ में एक तरह का कंपन था, जिसे मैं समझ न सका। मैंने पूछा—"क्या कहना चाहती हो लता?"

"वह भावनृत्य…" वह ठिठकी।

मैंने फिर पूछा—"भावनृत्य?"

"हाँ, वह भावनृत्य मैं फिर से सीखना चाहती हूँ कुंज!" उसकी आवाज़ में दृढ़ता थी।

"लो सीखो, हर्ज क्या है। पर हम तो लाखों में कह देंगे कि अब की बाज़ी भी लतादेवी ही लेंगी।"

"नहीं कुंज! तुम नहीं जानते, विशाखा अलग से और दूसरे मास्टर के यहाँ सीख रही है, अब की जीत का सेहरा विशाखा के सिर होगा।" और मानो वह कुछ गुम-सी गई।

"तो हर्ज क्या है?" लापरवाही से मैंने कहा।

"हर्ज! कुंज, तुमने वाद्यों को बजाना और दूसरों को सिखाना ही सीखा है। पर कभी यह भी जानने की कोशिश की है कि उन वाद्यों के कसे हुए तारों को ज़रा छू-भर देने से उनमें इतनी हलचल क्यों हो जाती है? शायद यह सब कुछ तुम समझना भी नहीं चाहते। इन उलझनों को और अधिक उलझाने का प्रयत्न मत करो कुंज! जानते हो, यदि अब की बाज़ी विशाखा को न मिली, तो क्या होगा?"

"तो क्या होगा लता!" आश्चर्य से मैंने पूछा।

"जानना ही चाहते हो, तो सुनो। वह स्कूल, जिस पर तुम्हें गर्व है, डूबेगा! कला, जिसके तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारी हो, कहीं की न रहेगी, और कुंज ! तुम... और हमें कौन सिखाएगा मास्टर बाबू !" लता रो पड़ी।

मैं कुछ भी न समझ सका कि बरसात की पहली बदरी की तरह लता यह सब क्या कह गई। मैं उसे देखता ही रहा। वह फिर बोल उठी—"मेरा मुँह क्या ताकते हो कुंज ! लोगों की बदनामियाँ तुम्हारे सिर होंगी ! तुम होगे और लोगों की आँखें तथा उँगलियाँ होंगी तुम्हारी ओर।"

बात बढ़ चुकी थी, बाँध फूटना ही चाहता था। मैंने वॉयलीन उठाया, और बजा दिया वही भावनृत्यवाला गीत। लता, वह बिखरी हुई लता मानो सब भूल गई। मैं बराबर बजाता ही रहा, और लता मंत्र-मुग्ध-सी उठी, घुँघरू बाँधे, और नाचकर गा उठी—

"जित बैठाए, उत ही बैठूँ; बेचे, तो बिक जाऊँ !"

मैंने कहा—"आत्मसमर्पण के भाव पैदा करो लता, आत्मसमर्पण के।"

वह बोल उठी—"सर्वस्व समर्पण कर चुकी कुंज ! अब मेरे पास कुछ नहीं।"

उसने एक साँस ली और छोड़ दी। यह मैंने देखकर भी नहीं देखा।

"बस लता ! बस। इतना बहुत है।"

मैंने वॉयलीन की गति मध्यम की और फिर धीरे-धीरे शांत। गज और वॉयलीन एक ओर रखते हुए मैंने पूछा—"थक गई लता ?"

उसने जैसे चाहा, वैसे मेरे पास बैठकर कहा—"कुंज बाबू ! सर्वस्व समर्पण के बाद कहीं कोई थका भी है ?"

मैं उसके घुँघरू छोरने लगा।

"आपके घर कौन-कौन हैं मास्टर बाबू ?" एकाएक ही लता ने यह प्रश्न किया।

"मेरे घर...यह कैसा सवाल लता ! मेरा...घर" मैं कुछ न समझ सका।

"हाँ, मास्टर बाबू ! आपके घर कौन-कौन हैं ? बताइए न।"

"मेरे घर ! मेरे घर ! हाँ, मा हैं, बाप हैं, भाई है।" मैंने जल्दी-जल्दी कहा।

"इनके अलावा और कौन है ?"

मैंने देखा, मुस्किराहट ने उसके ओठों पर आकर मुझे बताया—सरलता सत्य लेकर आई है, परंतु उलझी हुई।

"और.........।" मैं कुछ मौन-सा रहा।

लता ने आँखों में आँखें गड़ाते हुए मुझसे पूछा—"हाँ, और...।"

मानो आज वह इन आँखों की डोरी में उत्सुकता का पात्र बाँधकर अंतर की गहराई से भी सब कुछ उलीच लेना चाहती हो ! मैं कुछ न समझ पाया, पर स्वाभाविक उत्सुकता से किए हुए इस प्रश्न ने हृदय के किसी अज्ञात स्थान को छेड़ दिया। मैंने कहा—"पर यह सब क्या कुरेद रही हो लता !"

यह सुनकर वह हँस दी बालकों-जैसी ! और फिर बाल्य-चंचल स्वभाव से एकदम पूछ बैठी—"अच्छा, तो मास्टर बाबू ! आप हमें अपना क्या समझते हैं ?"

तब तक मैं उसके घुँघरू छोर चुका था। लता ने पूछा उत्सुकता से, पर उसके शब्द पत्थर के समान बोझीले थे। उनमें दृढ़ता थी।

इस बेसमझे, लड़कपन के खेल के समान किए हुए सरल प्रश्न में कुछ ऐसी सत्यता और अपनापन था कि मैं उसे भुलावा न दे सका। मैंने कहा—"तुम्हें लता, मैं......मैं......क्या कुछ नहीं समझता ! हम परदेशियों का क्या ? कभी रमते योगी और बहते पानी को भी देखा है लता ?"

"नहीं।"

लता की आवाज़ में गीलापन था। आँखें भारी होने लगी थीं। स्वेद-कण साफ़ दिखाई देने लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। सीपियों पर मोती बनने का काम शुरू हो चुका था। और लता गुँथ चुकी थी। यह सब मेरे लिये असह्य था। मैंने कहा—"लता, सुनो लता, तुम मेरी आराध्या हो, कला हो। देवी हो। साधना हो।"

लता मानो गाँठ खोल चुकी हो, पहेली सुलझा चुकी हो, इस प्रकार एकदम बोल उठी—"और कुंज, यही मैं भी कह दूँ कि तुम मेरे आराध्य हो, प्राण हो, देवता हो।"

पहेली विषय से गंभीर हो चुकी थी। मैंने देखा, चिनगारी ज्वाला बन चुकी, और लता-कुंज भस्मीभूत-सा होने लगा! बाहर फूली थी संध्या लाल रंग से रँगी हुई। मैं उलझ गया—तारों पर मिजराफ़ की रगड़ से वाद्य जीवित होते हैं, उनके प्राण बोल उठते हैं, पर मैं यह न समझ पाया कि यही रगड़ आगे जाकर उन तारों में चिनगारी भी पैदा कर सकती है क्या? तो क्या यह संघर्ष ग़लत है। फिर जीवन में प्राण ही कैसे आवेंगे, और उनमें स्वर-कंपन कैसे उठ सकेंगे? मैं कुछ समझ न पाया, और विना उसे सुलझाए ही मैंने कहा—"छी! छी! लता, यह सब और तुम्हें... ।"

मैं कुछ आगे बोलूँ कि इतने में लता की मा ने पुकारा—"लता!"

लता सँभली, मानो किसी स्वप्न-लोक को भंग कर आई हो, या उसके बचपन के बनाए हुए खिलौने को किसी ने तोड़ डाला हो। उसी आवेश में वह बोल दी—"कुंज बाबू! कीर्ति-स्तंभ किन्हीं प्राचीन प्रशस्तियों के सँभालने का बोझा ही ढोता हुआ खड़ा रहता है। वह जग का और कुछ उपकार नहीं कर सकता।"

मैं क्या बोलता, स्तब्ध था। मैं जितना न समझ पाया था, लता उससे आगे थी। मैं असमर्थ था उसे पीछे लाने में, और वह असमर्थ थी अपने आपको भुलाने में। वह दृढ़ थी, सत्य थी, सरल थी।

फिर उसकी मा की आवाज़ आई—"अरी लता, कम-से-कम पीने का पानी तो भर लिया होता।"

लता बह रही थी अपने विचारों में, अपनी उत्सुकता से किए हुए प्रश्न की असफलता में, अपने टूटे हुए स्वप्न के आवेश में, और उसी में उसने कह दिया—"हाँ, मा, आशा के जिस जलाशय के किनारे बैठी थी, वह सूख चुका। शायद दूसरा स्थान न ढूँढ़ना पड़े।"

वेग में कह तो गई, पर एकदम चौंकी, और फिर बोली—"क्या कहा मा, पानी? पानी हो, तब तो भरा जाय।"

मैं कुछ न समझ सका कि यह जवाब किसे दिया गया।

"अरी, किसी का डर भी है, दिन-रात गाना, बजाना, नाचना।"

शायद लता अब अपनी जगह पर आ चुकी थी। 'डर'-शब्द में न-मालूम क्या था, जिसे सुनकर वह एकदम हँस पड़ी खुलकर।

मैंने पास पड़े वॉयलीन को एकदम उठा लिया। तारों में फिर प्राण आए। वे गा उठे—

तंत्रियों के तार का स्वर
एक है, तब और क्या डर।
जगत तो संघर्ष है;
संघर्ष में फिर और क्या डर।

वॉयलीन के स्वर लता के हृदय को छूने लगे। वह गुनगुनाई, और एकदम इस प्रकार गाने लगी, मानो कुछ हुआ ही न हो। वॉयलीन के तार, मेरे हाथों का कंपन, लता के गले की मिठास और घुँघरू के शब्दों ने मिलकर एक ऐसा आसव तैयार कर दिया, जिसे पीकर हम दोनों सब कुछ भूल गए। समा बंद हुआ। लता हँसी, मैं हँसा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद्य हँसे और हँसा उस कमरे का कण-कण। मैं कुछ समझूँ, इसके पहले ही देखा, लता कमरे से बाहर थी, परंतु उसकी हँसी अब भी कमरे में गूँज रही थी।

(३)

विशाखा के जन्म-तिथि का उत्सव ही मेरा और न-जाने...कौन कह सकता है, किस-किसका मरण-पर्व बना। बात बतंगड़ बन चुकी। विशाखा—लक्ष्मी-पुत्री विशाखा जनता की नज़र से कुछ उतरी, लता बढ़ी, और इतनी कि उसके बाद उतार ही था। लाखों नज़रों ने हमें खींचा, मैं उतरा, लता उतरी, और उतरे हम पर सैकड़ों अभिशाप आशीर्वाद बनकर।

पाठशाला है लोगों की स्मृति पर अतीत की रेखा-सी। वाद्य हैं पतझड़ के बाद तनी हुई डालियों-से। और, मैं......मैं हूँ बरसात के बाद लौटते हुए मेघों-सा! हवा के हलके-से झोंकों में उड़ता हुआ—ख़ाली! ख़ाली!!

इन्हीं झोंकों में उड़ता हुआ मैं अपने बसाए हुए उजाड़ कला-भवन में गया। वाद्य थे, वॉयलीन था, मैं था, पर इसके बाद भी एक वस्तु थी—सूनापन। यदि न था, तो वाद्यों का प्राण-प्रेरक, और मेरी साधना का माप!

तंबूरा, सितार, वीणा, एक के बाद एक वाद्य मैंने उठाया। उसके तारों को चढ़ाया, और इतना चढ़ाया कि एक उमेठ ही उसकी अंतिम साँस थी। वॉयलीन उठाया, खूँटियों पर हाथ रक्खा। वह कराह उठा, हाथ दबाया, वह चीख़ उठा। मेरा हाथ हट गया। तार अब भी गूँज रहे थे, मानो वे पूछ रहे थे—"किसी के प्राण का कंपन पाए हुए इन साधना के तारों को क्या और भी तानोगे कुंज?" मैं न तो उन तारों को चढ़ा ही पाया और न उतार ही। कंपन पर जीनेवाले इन तने तारों ने आज मुझे बता दिया कि लता के प्रश्नों का जवाब क्या था।

"कहीं का बाँध टूटे, और कहीं बाढ़ आए, ऐसा क्यों होता है, बता सकोगे कुंज!" न-जाने कब से मेरी सब लीला देखती हुई खड़ी रहनेवाली लता ने दरवाज़े के बीच खड़े होकर मुझसे पूछा।

पहले पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों को ढूँढ़ने का ही मैं असफल प्रयत्न कर रहा था, एकाएक इस नए प्रश्न का क्या जवाब देता। मैं मौन था, और वह भी अर्धरात्रि-सी नीरव। यह मौत-सी शांति भंग करने की शक्ति शायद अब हममें न थी। मैंने वॉयलीन रक्खा, तने तारों से एक झंकार हुई, मानो वे फिर एक बार चीख़ उठे—"किसी के प्राण का कंपन पाए हुए इन साधना के तारों को क्या और भी तानोगे?" मैं सँभला, लता अचल थी। मैंने देखा, उसकी पलकें सूजी हुई थीं और आँखें सुर्ख़! पुतलियाँ कुछ खोज-खोजकर थकी हुई-सी और लता खोई हुई-सी! मैं कुछ पूछूँ, पर पूछ न सका। और, लता ने जो न पूछना चाहिए, वह पूछ लिया—"क्या भावनृत्य का यही अंत होता है कुंज?"

आज उसकी आवाज़ में उत्तर और प्रश्न एक साथ गुँथे हुए थे। आज वह उत्तर पूछने नहीं, निर्णय पूछने आई थी। मैंने अपने को सँभाला, और जीवन के भाव पर अपने को रखकर थर्राए स्वर में कहा—"हाँ।"

लता की सूखी पलकों से कब के संचित किए हुए दो बूँद भी गिर पड़े! कठिनाई से उसने पलकें ऊपर उठाईं, मेरी ओर देखा, प्रणाम किया, और चल दी। मैं अतीत के खँडहर-सा स्तब्ध था।

(४)

इसके बाद कोई नहीं जानता कि कुंज का क्या हुआ और लता कहाँ गई।

दिन चले, रातें चलीं बनिए के ब्याज-जैसी। बढ़ गए बालक, हो गए किशोर, और बना लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यमराज के यहाँ बूढ़ों से अपना घर ! तब कहीं कोई किसी एक को देखते हैं—एक हाथ से दूसरे हाथ में सूत लपेटने और न-जाने कब से सँभालकर रक्खे हुए टूटे तारोंवाले बाँयलीन पर आँसुओं का अर्घ्य देते। लोग हँसते और यह कहकर चल देते—"पागल हैं।"

और, यह भी आज तक न तो किसी ने सुना, न देखा कि उन्हीं सफ़ेद दिन और काली रातों के संघर्ष में न-जाने कब लता नियमित रूप से अपने नन्हे से चुपके एक बार पूछ लेती है—"नन्हे, बता सकते हो, तुम्हारे मामा कहाँ हैं...हाँ, तुम्हारे मामा।" नन्हा हँस पड़ता, लता रो पड़ती न-जाने क्यों, और फिर नन्हे का मुँह चूमकर सारे दुख भुला देती।

हिमालय के बहुमूल्य पदार्थ

शुद्ध सत शिलाजीत

ताक़त और मर्दानगी देती है। प्रमेह और प्रदर की एकमात्र क़ुदरती दवा है। गठिया, चोट तथा कफ के रोगों को आराम करती है। बवासीर को फ़ायदा पहुँचाती है। जो लोग वैद्य-डॉक्टरों की दवाओं से परेशान हो चुके हों, वे इस क़ुदरती महौषध को भी आज़मा देखें। चालीस वर्ष के लगभग पहुँचने पर प्रत्येक व्यक्ति को साल में कम-से-कम छटाँक-भर ज़रूर सेवन कर लेनी चाहिए। बच्चों के लिये ख़ास 'टानिक' है। मूल्य ४) रु० छटाँक

च्यवनप्राश महारसायन—हिमालय की ताज़ी औषधियों द्वारा प्रस्तुत। ताक़त और नवजीवन देती है। क्षय तथा पुरानी खाँसी को भी लाभ पहुँचाती है। मूल्य ४) रु० सेर।

ब्राह्मी घृत—हिमालय की ब्राह्मी बूटी दिमाग़ को तर तथा तेज़ करती है। ब्राह्मी की पत्तियाँ घोट-छानकर भाँग की तरह पी जाती हैं, परंतु वर्षा और जाड़े में इस तरह न पीना चाहिए। इन दिनों के लिये हमने ताज़ी ब्राह्मी के स्वरस से ब्राह्मी घृत तैयार कराया है। मृगी तथा हिस्टीरिया में लाभप्रद। स्मृति-वर्द्धक। मूल्य—ब्राह्मी घृत ५) रु० सेर, ब्राह्मीबूटी ४) रु० पाँच सेर।

असली कस्तूरी ३०) रु० तोला
असली अंबर २५) रु० तोला
केशर कश्मीरी ६) रु० छटाँक

दूध बढ़ने की दवा—'दुग्धदा' जिन माताओं के दूध कम उतरता हो, उन्हें दुग्धदा का सेवन करना चाहिए। दूध और दूध की पौष्टिकता बढ़ती है। मा को भी ताक़त मिलती है। तीसरे ही दिन दूध उमड़ पड़ेगा। मूल्य २॥) रु० डिब्बा (बीस दिन सेवन योग्य)

नोट—सबकी सेवन-विधि साथ भेजी जाती है। मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (हरिद्वार)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे ग्राम का पुस्तकालय

[श्रीयुत प्रेमनारायण अग्रवाल एम्० ए०]

शिक्षा-प्रचार के काम को स्थायी रखने के लिये पुस्तकालयों और वाचनालयों की सख्त ज़रूरत होती है। परिश्रम के साथ प्राप्त की हुई शिक्षा भुलाई न जा सके, और उसके द्वारा जनता को पूरा-पूरा लाभ हो। सामयिक परिस्थिति से परिचित रहने और आत्मविकास के लिये पढ़ने-लिखने का सिलसिला जारी रखना ज़रूरी है।

प्रांतीय सरकारों ने जहाँ शिक्षा-प्रचार का आंदोलन शुरू किया है, वहाँ पुस्तकालयों तथा वाचनालयों की भी स्थापना देश के कोने-कोने में करने का प्रबंध किया है। वास्तव में दोनो—शिक्षा तथा पुस्तकालयों—का गहरा संबंध है। एक के विना दूसरे का काम नहीं चल सकता।

भारत की अधिकांश जनता गाँवों में रहती है। और, ये गाँववाले हैं, जिनमें निरक्षरता का प्रचार अधिक है। शहरों की संख्या गाँवों की अपेक्षा बहुत कम है, और गाँववाले शहरवालों के मुक़ाबले बिलकुल नहीं या कम शिक्षित हैं। यहाँ निरक्षरता का भयंकर साम्राज्य फैल रहा है। शहरों में शिक्षा प्राप्त करने और प्राप्त शिक्षा को क़ायम रखने के लिये काफ़ी सुविधाएँ हैं, और गाँवों में इनका नितांत अभाव है।

हम इस लेख में अपने गाँव के पुस्तकालय तथा वाचनालय के संबंध की कुछ बातें पाठकों के सामने प्रस्तुत करेंगे, और यह दिखलावेंगे कि गाँव में होनेवाले प्रयत्नों को सफलता-पूर्वक आगे बढ़ाने के लिये कितनी कठिनाइयाँ सामने आती हैं। न तो सरकार ही सहयोग देती है, और न जनता ही। बेचारे कार्यकर्ताओं को अनेक प्रकार की दिक़्क़तें उठाते हुए काम चालू रखना पड़ता है। इस पर भी जनता उन पर अनेक प्रकार के आक्षेप करने से नहीं चूकती।

पुस्तकालय के संबंध में लिखने से पहले हम अपने गाँव के संबंध में कुछ लिखना आवश्यक समझते हैं, जिसमें पाठक हमारी बात भली भाँति समझ सकें।

हमारा गाँव बहुत प्राचीन और ऐतिहासिक है। इसकी आबादी इस समय १,५०० है। शाहजहाँ बादशाह के समय में यह गाँव उन्नति के शिखर पर पहुँचाया गया था। यह गाँव प्रांतीय मुग़ल-रोड पर है। इसके चारो तरफ़ पक्की चहारदीवारी खिंची हुई थी, और बस्ती में आने-जाने के लिये कई फाटक थे। अब दो शेष रह गए हैं। गाँव बहुत सुंदरता से बसाया गया है। सफ़ाई आदि का सुंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबंध है। गाँव के बाहर थोड़ी दूर पर एक पक्का तालाब (लोगों की राय में उत्तर-भारत में इतना बड़ा पक्का तालाब दूसरा नहीं), पक्की धर्मशाला और मंदिर बना हुआ है, जिससे यात्रियों और गाँववालों को ठहरने तथा स्नान-पूजादि का आराम मिले। उसे देखने से मालूम होता है कि पुराने ज़माने के आदमी कितने होशियार, दूरदर्शी और सफ़ाई-पसंद थे। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने गाँव की अच्छी परिस्थिति देखकर उसमें थाना, डाकख़ाना, अफ़सरों के ठहरने के लिये डाक-बँगला और फ़ौजों आदि के लिये पड़ाव आदि की व्यवस्था की।

डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की तरफ़ से गाँव में लड़कों के लिये अनिवार्य शिक्षा जारी है। जनता अधिकतर पढ़ी-लिखी है। कितने ही दर्जन अँगरेज़ी पढ़े-लिखे आदमी हैं। यहाँ के आदमियों ने विदेशों की ख़ूब यात्राएँ की हैं। यहाँ राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सभी प्रकार की संस्थाएँ हैं, और उनमें लोग उत्साह से भाग लेते हैं।

इसके आस-पास के कितने ही गाँवों में, जो इसके मुक़ाबले छोटे हैं, शिक्षा का प्रचार अभी कम है। कार्य-वश उन गाँवों के आदमियों का आना-जाना इस गाँव में लगा ही रहता है।

हमारे इस गाँव में एक बहुत सुंदर पुस्तकालय तथा वाचनालय भी है, जिसमें हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी आदि कितनी ही भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें हैं। पुस्तकों की संख्या क़रीब १,५०० है। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, सभी प्रकार के, सभी भाषाओं के ५० पत्र आते हैं। पुस्तकालय में पढ़नेवालों की संख्या प्रतिदिन १५-२० रहती है। आस-पास के २५ गाँवों में भी, जो क़रीब १० मील के एरिया के अंदर हैं, पुस्तकालय का कर्मचारी अख़बार, पुस्तकें वग़ैरा लोगों में बाँटकर उनमें पढ़ने की रुचि को प्रोत्साहन देता है। इस ज़िले में इस प्रकार से ग्रामीण जनता की सेवा करनेवाला, इतनी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं से सुसज्जित पुस्तकालय तथा वाचनालय दूसरा कोई नहीं।

समय-समय पर बाहर से आनेवाले कितने ही व्यक्तियों ने इसका निरीक्षण किया और इसके कार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। जिन लोगों ने पुस्तकालय को देखकर हर्ष प्रकट किया, उनमें माननीय मिस्टर कैलासनाथजी काटजू, पं० विजयकृष्ण (पैदल भारत-यात्री), पं० अमीचंदजी विद्यालंकार (फ़िजी-प्रवासी), पं० ईश्वरदत्तजी मेधार्थी विद्यालंकार और बाबू श्रीप्रकाशजी एम्० एल्० ए० (सेंट्रल) आदि हैं।

(१) श्रीकैलासनाथजी काटजू साहब ने अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किए—

"I am glad to be able to add my tribute to the efficiency of this Library and Reading Room. It is a rare thing to come across such a well-Stocked Library and

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

such a well-equipped Reading Room in a rural area.

I hope R. D. Association will do its utmost to support this Institution."

(२) पं० विजयकृष्णजी, जो कई वर्ष पहले समस्त भारत की यात्रा करने निकले थे, ६,००० मील चलने के बाद यहाँ पधारे, और आपने लिखा—

"मुझे स्वप्न में भी ख़याल न था कि इस छोटे-से गाँव में इस बृहत् परिमाण में पत्र तथा पुस्तकें देखने को मिलेंगी। सारे भारतवर्ष में ब्रिटिश शासन के अधीन यह दूसरा या तीसरा स्थान है, जहाँ इस छोटे क़स्बे में इस प्रकार वाचनालय तथा पुस्तकालय स्थित हो।"

(३) फ़िजी-प्रवासी पं० अमीचंदजी विद्यालंकार ने पुस्तकालय की निरीक्षण-पुस्तक पर अपनी राय इस प्रकार लिखी—

"इस पुस्तकालय में सर्व-साधारणोपयोगी पुस्तकों तथा समाचार-पत्रों का बहुत ही सुंदर संग्रह किया गया है। पुस्तकों का चुनाव, समाचार-पत्रों का संग्रह तथा प्रबंध-सुव्यवस्था प्रशंसनीय है। जन-सेवक युवकों को इस पुस्तकालय को देखकर, इसके संचालन से अनुभव प्राप्त कर इसी आदर्श पर ग्राम-ग्राम में शिक्षा-प्रचार के लिये प्रयत्न करना चाहिए।"

(४) प्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान् पं० ईश्वरदत्तजी मेधार्थी विद्यालंकार की धारणा इस प्रकार है—

"मैंने किसी ग्राम में इतना समाचार-समृद्ध वाचनालय नहीं देखा, कानपुर-जैसे नगर में भी इतनी शोभा देखने को न मिली।"

(५) बाबू श्रीप्रकाशजी एम्० एल्० ए० (सेंट्रल) लिखते हैं—

"मुझे इस ग्राम के इस पुस्तकालय तथा वाचनालय को देखकर बहुत आनंद हुआ। आशा है, इसकी दिन-प्रति-दिन उन्नति होगी।"

उपर्युक्त उद्धरण पुस्तकालय तथा वाचनालय की निरीक्षण-पुस्तक से लिखे गए हैं। इससे पाठकों को पता चलेगा कि पुस्तकालय तथा वाचनालय कैसा है।

यह पुस्तकालय वर्तमान रूप में ६ वर्ष से कार्य कर रहा है। इससे पहले भी कई बार पुस्तकालय खोलने के प्रयत्न किए गए, परंतु सफलता न मिली। पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित करने का श्रेय हमारे ग्राम के उत्साही कार्यकर्ता श्रीयुत व्रजेंद्रजी मित्र को है। उनके कार्य में प्रारंभ से ही सहयोग देने में श्रीयुत सुधेशकुमारजी का प्रमुख हाथ रहा है। इन दोनो महानुभावों ने अपनी निजी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं से 'मित्र-साहित्य-सदन-पुस्तकालय' की स्थापना की। पश्चात एक सार्वजनिक वाचनालय खोला गया। तब से ये दोनो संस्थाएँ बराबर कार्य कर रही हैं। श्रीयुत व्रजेंद्रजी मित्र इसके उत्साही कार्यकर्ता और प्राण हैं। उन्हीं के उत्साह, लगन तथा परिश्रम का परिणाम है कि ये दोनो संस्थाएँ अर्थाभाव में भी इस ख़ूबी से काम कर रही हैं। इन्होंने कितने ही अन्य लोगों की सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त की है। समय-समय पर सरकारी तथा अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं ने भी इनकी कुछ-न-कुछ आर्थिक सहायता की है।

इनका प्रबंध एक कार्य-कारिणी समिति के सुपुर्द है। एक वैतनिक कर्मचारी है, जो वाचनालय खोलता, पुस्तकें सँभालता और आस-पास के गाँवों में जाकर पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ लोगों को पढ़ने को देता है।

पुस्तकालय का आय-व्यय तथा आर्थिक हालत बहुत शोचनीय है। जैसा पुस्तकालय तथा वाचनालय है, और जैसा यह काम कर रहा है, उस हिसाब से न तो इसकी आय ही है, और न व्यय ही। अर्थाभाव के कारण यह कितने ही आवश्यक कार्य नहीं कर पाता, और न इसका कार्य-क्षेत्र ही बढ़ पाता, न व्यवस्थित रूप ही धारण कर पाता है। नए विषयों की सामयिक पुस्तकें और प्रत्येक ढंग के पाठकों के लिये पत्र-पत्रिकाएँ यह नहीं मँगवा पाता। अगर श्रीयुत व्रजेंद्रजी मित्र मंत्री, पुस्तकाध्यक्ष, चपरासी आदि सबका कार्य खुद न करें, तो इसका कार्य बंद-सा हो जाय। जितना खर्च इसका इस समय है, उस हिसाब से इसका काम सैकड़ोंगुना अधिक हो रहा है। इसका एक-मात्र कारण श्रीयुत व्रजेंद्रजी मित्र का परिश्रम और सहयोग ही है। यह संस्था अभी तक अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकी। यदि श्रीयुत व्रजेंद्रजी मित्र अपना हाथ खींच लें, तो सारा कार्य ढेर हो जाय। और, इतनी उपयोगिनी संस्था किसी एक व्यक्ति पर निर्भर रहकर स्थायी रूप धारण भी नहीं कर सकती।

आपके संबंध में लिखते हुए हमें कुछ ऐसी बातें बतानी हैं, जिनके कारण पुस्तकालय-आंदोलन अभी तक आगे नहीं बढ़ सका। रुपया प्राप्त करने में जो इस पुस्तकालय की कठिनाइयाँ हैं, अधिकांश में भारत के अन्य ग्रामीण पुस्तकालयों को भी ये ही दिक्कतें हैं। पाठकों को हमारे गाँव के पुस्तकालय के हाल-चाल से देश के अन्य ग्रामीण पुस्तकालयों की दयनीय दशा के संबंध में अंदाज लगाने का मैटर मिल सकता है।

हमारी धारणा यह है कि गाँव में सफलता-पूर्वक पुस्तकालय चलने के लिये उसका सारा खर्च गाँव की जनता से कभी पूरा नहीं किया जा सकता। गाँव के पुस्तकालय के लिये बाहरी सहायता की हमेशा आवश्यकता रहती है। गाँव के लोग प्रायः गरीब होते हैं, न उनमें रुपया देने की शक्ति होती और न पढ़ने के लिये उत्साह होता है। उनमें पढ़ने की वास्तविक रुचि नहीं होती, लेकिन यदि उन्हें पढ़ने को मिल जाय, तो पढ़ अवश्य लेते हैं। हमारे गाँव के पुस्तकालय में आकर पढ़नेवालों की संख्या उतनी नहीं, जितनी उन लोगों की है, जो घर पर बैठकर पढ़ना पसंद करते हैं। संक्षेप में हमारे कहने का मतलब यह कि आवश्यकता इस बात की है कि कोई और उनमें पढ़ने की प्रवृत्ति स्थायी बनी रहने के लिये प्रयत्न करता रहे। थोड़ा-बहुत धन चंदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि के रूप में यदि वे पढ़ने की प्रवृत्ति शांत करने के लिये दे सकते हैं, तो वह इतना नहीं हो सकता कि पुस्तकालय का ख़र्च निकल सके। यह हमारे गाँव की हालत है, जो अच्छा और संपन्न गाँव है; इससे छोटे-छोटे गाँवों में इतना भी मुश्किल से हो सकता है।

पुस्तकालय का वार्षिक आय-व्यय

जनता से मिलनेवाली सहायता इतनी थोड़ी है कि उससे एक वैतनिक कर्मचारी का साल-भर का वेतन भी नाकाफ़ी होता है। समाचार-पत्रों आदि का ख़र्च अलग, वह कहाँ से आवे। हमारे पुस्तकालय का वार्षिक ख़र्च १५०) साल से कम नहीं। इसके लिये पुस्तकालय के अधिकारियों को विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं। इस १५०) साल में तब काम चल पाता है, जब कितनी ही पत्र-पत्रिकाएँ हमारे पुस्तकालय को अन्य सज्जनों से मिल जाती हैं। इतना बड़ा कोई भी केंद्रीय पुस्तकालय ४००) साल से कम में नहीं चलाया जा सकता। १००) वार्षिक की पूर्ति स्थानीय जनता द्वारा हो सकती है, शेष ३००) गवर्नमेंट या डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड दे।

हमारा ख़याल है, छोटे-छोटे गाँवों में भी पुस्तकालय १२५) साल से कम में नहीं चल सकता। ख़र्च इस प्रकार है—५०) कर्मचारियों का वेतन, १२॥) मकान का किराया, १२॥) फुटकल तेल वग़ैरा का ख़र्च, ३०) के समाचार-पत्र (१ दैनिक, २ साप्ताहिक, २ मासिक), २०) की पुस्तकें। जनता से अधिक-से-अधिक २०)-२५) मिल सकते हैं, शेष १००) की पूर्ति सरकारी या अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं से होनी चाहिए।

गाँव में पुस्तकालय-आंदोलन जारी रखने के लिये इस बात की आवश्यकता है कि पुस्तकालयों को सरकार की ओर से काफ़ी मदद बराबर मिलती रहे, और १०-१५ छोटे-छोटे पुस्तकालयों के बीच में एक बड़ा केंद्रीय पुस्तकालय हो, जिसमें अधिक समाचार-पत्र तथा पुस्तकें हों। पढ़ने में अधिक रुचि रखनेवाले व्यक्ति इस केंद्रीय पुस्तकालय से पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएँ लेकर लाभ उठा सकते हैं।

हमारे गाँव के इस वाचनालय को डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड, इटावा ने दो बार १५०) साल की सहायता दी। उसके बंद हो जाने से कार्य चलाने में बड़ी असुबिधा हो रही है। जिले के ग्राम-सुधार ने पिछले साल ५०) की पुस्तकें दी थीं।

पुस्तकालय को नियमित रूप से खोलने-बंद करने के लिये एक कर्मचारी की आवश्यकता पड़ती है। इसकी तनख़्वाह का प्रबंध सरकार या डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की तरफ़ से अवश्य होना चाहिए। जनता अधिक-से-अधिक अपने प्रयत्न से पत्र-पत्रिकाओं का मूल्य चुकता कर सकती है। गाँवों में ऐसी अर्द्ध-सरकारी संस्थाएँ भी नहीं होतीं, जो इन पुस्तकालयों की सहायता कर सकें। शहरों के पुस्तकालयों को भी यदि डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड या म्युनिसिपल-बोर्ड की तरफ़ से नियमित सहायता न मिले, तो वे बंद ही हो जायँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहरों की जनता अधिकतर मालदार और पढ़ी-लिखी होने से ऐसे पुस्तकालयों की आवश्यकता का स्वयं अनुभव करके उन्हें स्थापित कर लेती और चला ले जाती है। ये लोग चंदा वग़ैरा भी दे देते हैं, या कोई धनी-मानी व्यक्ति इन्हें खुलवा देता है, और इनके ख़र्च के लिये विशाल इमारत बनाकर किराए के ज़रिए या अन्य किसी उपाय से इनकी उन्नति कर देता है। गाँव में ऐसा नहीं हो सकता। वहाँ धनी-मानी नहीं होते, और होते भी हैं, तो इतने उच्च विचार के उदार नहीं होते, जो ऐसी संस्थाओं को क़ायम करें, और चलावें। यही नहीं, बल्कि थोड़ी सहायता भी नहीं करते। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड वग़ैरा को चाहिए कि हरएक पोलिंग में एक केंद्रीय पुस्तकालय स्थापित करे, और उसकी शाखाएँ (छोटे-छोटे पुस्तकालय) ख़ास-ख़ास गाँवों में भी हों, और इन सबको नियमित रूप से सहायता दी जाया करे। उन पुस्तकालयों को भी, जो गाँववाले स्वयं चलाते हैं, सहायता देनी चाहिए। हमारी यह निश्चित धारणा है कि बिना सरकारी या डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की या अन्य किसी बाहरी सहायता के गाँव के पुस्तकालय नहीं चलाए जा सकते।

हमारे पुस्तकालय के इस विवरण से पाठक गाँवों में पुस्तकालय या वाचनालय चलाने-वालों की कठिनाइयाँ समझ सकते हैं। यह पुस्तकालय इटावा-ज़िले के अंदर अजीतमल-नामक ग्राम में स्थापित है।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय लोकामयहर कस्तूर-गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से—जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से—बनाई गई हैं। इनको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है, रक्त साफ़ होता है, तथा उसकी चाल अबाध्य होती है, खाँसी, सर्दी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी-बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ दीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।), डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १।।)

मिलने का पता—

१२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २।।-)
२५ ,, ,, ४≡)
} श्रीसीताराघव वैद्यशाला—मैसूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्थिव कामधेनु

[श्रीपं० कृष्णदेव शर्मा एम्० ए०, विशारद]

ओ३म् आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आराष्ट्रे राजन्यः शूरइषव्याऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषी जिष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्। (यजुर्वेद)

पुराणों में कामधेनु और कल्पवृक्ष की बड़ी प्रसिद्धि है। स्थान-स्थान पर इनकी गुणावली का गान किया गया है, और इन्हें स्वर्गलोक का भोग्य पदार्थ बतलाया गया है। कल्पवृक्ष इंद्र के नंदनवन में विराजमान है, और कामधेनु भी उसी देवराज की संपत्ति है। उसकी आज्ञा से यह भूलोक में भी आ जाती है। कामधेनु सागर-मंथन से प्राप्त नवरत्नों में से एक है—चंद्रमा, गजराज आदि के साथ कामधेनु भी देवताओं को मिली थी।

कामधेनु और कल्पवृक्ष में यथेच्छ वर-प्रदान की सामर्थ्य मानी गई है। इनकी महिमा की अनेक गाथाएँ प्रचलित हैं। प्रसिद्ध है, एक बार ऋषि जमदग्नि के आश्रम में राजा सहस्रबाहु आया। ऋषि ने आर्यों के अतिथि-सेवा-नियमानुसार राजा और उसकी अगणित सेना का नाना प्रकार के व्यंजन आदि से सत्कार किया। सहस्रबाहु इस चमत्कार-पूर्ण घटना से आश्चर्य में पड़ गया कि ऋषि के पास यहाँ जंगल में ऐसे-ऐसे खाद्य पदार्थ कैसे प्राप्त हुए! पूछने पर मुनिवर ने कहा—"राजन्, मेरे पास इंद्र की दी हुई कामधेनु है, उसकी कृपा से यह सब संभव हुआ है।"

इसी प्रकार महाराज दिलीप ने कामधेनु की पुत्री नंदिनी की एक वर्ष तक अनन्य भाव-पूर्वक सेवा करके रघु-जैसा प्रतापी पुत्र पाया, जिसके नाम पर इक्ष्वाकु-वंश रघुवंश कहलाया। गुरु वशिष्ठ के आज्ञानुसार राजा दिलीप अपनी महारानी के साथ एक वर्ष तक स्वच्छंद विचरण करनेवाली नंदिनी के पीछे-पीछे क्रीत दास की भाँति सदैव सेवा-निरत फिरते रहे; यहाँ तक कि जब सिंह ने नंदिनी को अपना ग्रास बनाना चाहा, तब राजा दिलीप नंदिनी के स्थान पर स्वयं उस सिंह का आहार बनने को प्रस्तुत हो गए। तनिक सोचिए, कहाँ चक्रवर्ती, प्रतापी सम्राट् दिलीप और कहाँ इस प्रकार की गोसेवा! इस प्रकार की सेवा ही से तो उनकी मनोकामना पूरी हुई थी।

इन कहानियों की सत्यता का निर्णय करना इतिहासकारों का काम है; परंतु इसमें संदेह नहीं कि पृथ्वी पर गोमाता केवल धेनु ही नहीं, कामधेनु भी है। इसी से तो समस्त भूमंडल के आर्यों में गौ की इतनी मान्यता है, और उसे गोमाता की पदवी दी गई है। जैनियों, बौद्धों आदि में ब्राह्मण की वैसी प्रतिष्ठा नहीं, पर गोरक्षा को वे भी परम कर्तव्य मानते हैं। पारसी लोग तो अपना सिर देकर भी गोरक्षा करेंगे। हज़रत मोहम्मद ने कभी गोमांस नहीं खाया, बल्कि उसे रोगों का घर बताया। हज़रत ईसा तो बाएँ गाल पर चाँटा मारनेवाले के सामने दाहना गाल करने को कहते थे—वह भला गोमांस-भक्षण कैसे सहन कर सकते थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक काल में महर्षि दयानंद ने गोरक्षा की आवाज़ उठाई। तत्पश्चात् महामना मालवीय और महात्मा गांधी ने गोरक्षा की ओर ध्यान दिया, और क्रियात्मक रूप में अपनी शक्ति इधर लगा भी रहे हैं।

इससे स्पष्ट है कि गौ का गौरव महान् है। पर प्रश्न यह उठता है कि क्या सचमुच वह कामधेनु भी है?

कामधेनु का नाम कामधेनु इसलिये है कि वह हमें पूर्ण-काम बनाने की सामर्थ्य रखती है। यदि ऐसा है, तो अवश्यमेव धेनु ही कामधेनु है। वह हमारी समस्त कामनाओं, आवश्यकताओं और उचित इच्छाओं को पूरा करने की सामर्थ्य रखती है।

मुझे आप किसी पशु का नाम बताइए, जो इतना उपयोगी हो, ऐसा मातृवत्सल एवं सरल हो, और फिर भी जिस पर इतना कम व्यय पड़ता हो। उसकी सरल, सौम्य मूर्ति पर दृष्टि डालिए, उसकी प्रेम-भरी चितवन को निहारिए, तथा उसकी सहिष्णुता और भोले स्वभाव को देखिए। आपका हृदय गद्गद हो जायगा। वह प्रेम की प्रतिमा है, सहनशीलता का अवतार है, परोपकारिता का पवित्र नमूना है, और फिर क्षमाशीलता में है अद्वितीय।

सहनशीलता की परा काष्ठा इसी से प्रकट होती है कि आप जो घास-भूसा आदि उसे देंगे, वही खाकर संतुष्ट हो जायगी। वह भी यदि न मिलेगा, तो चुप खड़ी हो जायगी, चाहे भूखी मर जाय। गौ बहुत कम अपनी कष्ट-कहानी सुनाती है। ठंड में रहे, गरमी में रहे, वर्षा में रहे, सब कुछ वह प्रायः चुपचाप सहती रहती हैं।

और, वह देती क्या है? जो आप माँगते है, सो; और इसीलिये प्रत्येक अच्छी गौ कामधेनु नाम की अधिकारिणी है। केवल गोवंश के उपयोग द्वारा आप जीवन की हरएक आवश्यक सामग्री पा सकते हैं। गौ दूध देती है। कुछ लोग इसे पूर्ण भोजन बतलाते हैं, परंतु सर्वोत्तम भोजन इसे सभी मानते हैं। इसमें भोजनांश इस प्रकार है—

जल	८४·०%	से	८१·०%	तक
प्रोटीन	३·०%	से	५·०%	तक
वसा	३·५%	से	५·५%	तक
कर्बोज	३·०%	से	६·०%	तक
लवण	·६%	से	·८%	तक

विटामिन ए., बी, सी, डी, ई और जी।

(लीडर ता० १५।६।३७, मि० ए० राठौर डेरी डिपार्टमेंट एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद)

बहुत-से मनुष्य केवल दुग्ध पर ही निर्वाह करते देखे गए हैं। दुग्ध हड्डी को पुष्ट करता, मस्तिष्क को सत्त्व-प्रधान बनाता और मुख-कांति बढ़ाकर शरीर को सुंदर बनाता है। वाजीकरण ओषधियों में दुग्ध सर्वोपरि है। वेद कहता है—

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित कृणुता सुप्रतीकम्। भद्रं गृहं कृणुथ भद्र वाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु।

कोका पंडित कहते हैं—

धातु-करन अरु बल-धरन मोहि पूछे जो कोय;
पय-समान या जगत में है नहिं दूसर कोय।

लोलिंबराज कहते हैं—

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानि
किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानि;
कन्दर्पवर्द्धिनि! परन्तु सिताज्य युक्ताद्
दुग्धादृते न मम कोऽपि मतः प्रयोगः।

बच्चों के लिये यह मातृदुग्ध-सम होता है। डूमांड की मेडिकल डिक्शनरी में लिखा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Milk as an article of food is remarkable for the fact, that it contains representatives of all classes of all food constituents, *viz*, proteins, carbohydrates, fats, salts and water. ……………………. The abundant protein is an advantage to the calf because it provides much building material for the rapid growth of the animal. In disease………… the value of milk as an article of diet is quite unique. (Page 366.)

प्रयाग-विश्वविद्यालय के डॉक्टर नीलरत्नधर ने, जो हेग के अंतरराष्ट्रीय विज्ञान-परिषद् से सितंबर, १९३७ में लौटे थे, अपने एक भाषण में बतलाया था कि पाश्चात्य वैज्ञानिक दुग्ध के अमृत-रूपी गुणों को किस प्रकार अनुभव करते जा:रहे हैं। मनुष्यों के व्यवहार में आनेवाले भिन्न-भिन्न प्रकार के दुग्धों के तत्त्वों का विश्लेषण इस प्रकार है—

दुग्ध-भेद	प्रोटीन	वसा	कर्बोज	लवण	जल
मानुष	२·९७	२·९०	५·८७	·२६	८८·०
गव्य	४·९	३·७	४·८	·७	८६·८
माहिष	४·४	९·०	४·८	·८	७८·०
गार्दभ	१·७९	१·०२	५·५०	·४२	९२·३७
आज्य	३·६२	४·२०	४·०	·५६	८२·५४

(पं० ऋषिराम बी० ए०-कृत 'स्वास्थ्य-विद्या' पृष्ठ ७६)

इस चक्र से स्पष्ट पता चलता है कि साधारण अवस्थाओं में मनुष्य के शरीर और मस्तिष्क की समतोल उन्नति और पुष्टि के लिये अन्य पशुओं की अपेक्षा गोदुग्ध उत्तम है।

अभी हाल ही में पाश्चात्य डॉक्टरों ने पता लगाया है कि शुद्ध गोदुग्ध के इंजेक्शन शरीर की ऐसी व्याधियों के लिये, जो पीव (Puss) के कारण उत्पन्न होती हैं, अचूक ओषधि सिद्ध होते हैं। भारत में भी ऐसे परीक्षण सफलता-पूर्वक किए गए हैं।

दूध से खोया, खुर्चन, रबड़ी, मलाई, पनीर आदि कितने ही पदार्थ बनते हैं। फिर इनका अन्य पदार्थों के साथ संयोग होने से अनेक प्रकार की मिठाइयाँ बनती हैं, और इनसे लाभ उठाया जाता है। बहुत-से डॉक्टर अंडे को बहुत बलप्रद समझते हैं। परंतु पुष्टि-वर्धन में पनीर के सामने यह कुछ भी नहीं। पुनः पनीर में यह विशेषता है कि वह पौष्टिक पदार्थ होता हुआ भी यूरिकाम्ल, जो हानि-कारक है, उत्पन्न नहीं करता। दूध से दही बनता है, उससे मक्खन बनता है, उससे घी बनता है। डॉक्टर और वैद्य लोग इन सबके विशेष लाभ भली भाँति समझा सकते हैं, तो भी मस्तिष्क के लिये घी और मक्खन की अतीवोपयोगिता सर्व-विदित है। घी से जितनी मिठाइयाँ और नमकीन पदार्थ आदि बनते हैं, उनकी यदि आप गिनती करने लगें, तो सच-मुच हैरान हो जायँ। वास्तव में घृत भोजन को सुस्वादु बनाने के लिये शक्कर और नमक से भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह महाराज तो सर्व-व्यापक-से हैं। सच पूछो, तो 'जहाँ न जाय आपका जी, वहाँ जाय घी' तथा 'जो करे घ्यो, वह माँ करे न प्यो' (पंजाबी कहावत) अस्तु। घृतामृत निका-लने के पश्चात् भी मट्ठे से रायता आदि अनेक स्वादिष्ठ पदार्थ बनाए जाते हैं। इतना ही नहीं, मट्ठा तो संग्रहणी, मंदाग्नि, अजीर्ण और अन्यान्य रोगों को नष्ट करने के लिये रामबाण की तरह अमोघ है। दही की भी बड़ी महत्ता है।

इन अमृतों के अतिरिक्त हम गोमय का भी बड़ा उपयोग पाते हैं। एक नीरोग गाय का गोमय लेपन करने से भूमि बड़ी सुंदर और रमणीक हो जाती है। इसके लेपन से अनेक भंयकर रोगों के कीटाणु मर जाते हैं। गोमय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथोचित अनुपान और अन्य ओषधियों के साथ मिश्रण से उपदंश के व्रण, खुजली, छलोरी आदि को आराम होता है। गोमय के उपले बनाकर ईंधन आदि का काम लेते हैं। गोमय, गोमूत्र, गाय का उच्छिष्ट भोजन आदि को एक गड्ढे में जमा होने दीजिए। गड्ढा भर जाने पर कुछ महीनों तक उसे बंद रखिए। यह मिश्रण सब खादों में आम खाद का काम देगा, ऐसी खाद, जिससे उपज बढ़ेगी, और भूमि कमज़ोर न होगी। गोमूत्र कान के दर्द, खुजली आदि को दूर करता है। फ़िनायल की जगह इसका प्रयोग किया जा सकता है। यह एक अच्छा कीटाणु-नाशक है।

जब बच्चों के जिगर का रोग असाध्य प्रतीत होने लगता है, कोई ओषधि काम नहीं करती, तब भारतीय वैद्य उस रोगी को गोमूत्र-पान पर छोड़ देते हैं, और आश्चर्य-जनक लाभ होते देखा गया है। गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र, गोमय के मिश्रण पंचगव्य को इसीलिये आर्यों ने इतना महत्त्व दिया है कि इसमें पाप-नाशिनी शक्ति भी मानी गई है। एक दृष्टि से देखा जाय, तो है भी ऐसा ही। मध्यकाल में पंडित लोग यही पिलाकर म्लेच्छादि द्वारा भ्रष्ट होने पर लोगों को शुद्ध किया करते थे। अब भी पौराणिक लोग यत्र-तत्र समय-समय पर इस प्रथा का अवलंबन करते हैं।

इसके थनों का चेप चेचक के नश्तर लगाने के काम आता है, यह बात भी किसी से छिपी नहीं।

गाय जो कुछ घास-पात खाती है, उसे ऐसा आश्चर्य-जनक रूप प्रदान करती है कि हमें दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ती है। क्या बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक का मस्तिष्क एक बढ़िया-से-बढ़िया मशीन द्वारा भी हज़ारों मन घास में से भी एक बिंदु-मात्र दूध निकालने में समर्थ हुआ है? अथवा हो सकेगा? अमेरिका में, कुछ वर्ष हुए, एक प्रकार का बनावटी घी तैयार किया गया था, परंतु क्या वह वास्तविकता के सामने ठहर सकता है? सुनिए—

> तृणानि खादन्ति चरन्त्यरण्ये,
> पिबन्ति तोयान्यपरिग्रहाणि ;
> दुह्यन्ति वाह्यन्ति व्रजन्ति पापं,
> गवां रसैर्जीवति जीवलोकः।

फिर तनिक सोचिए, आप क्या खाते हैं, और उसे किस रूप में निकालते हैं?

जीवितावस्था की बात छोड़िए, मरणोपरांत भी गोमाता की उपयोगिता कुछ कम नहीं हो जाती। उसका चर्म मज़बूती और नरमाई के विचार से बड़ा उत्तम होता है। हड्डी से भी बहुत-से काम लिए जाते हैं—खाँड़ निखारना, ओषधियों में प्रयोग इत्यादि। मांस को मनुष्य और पशु-पक्षी खा जाते हैं। पूँछ के बाल और सींग आदि ब्रश और बटन आदि बनाने के काम आते हैं। मस्तिष्क से निकलनेवाला गोरोचन तांत्रिकों और चिकित्सकों के बड़े काम का है। गोमाता का अंग-अंग काम में लाया जाता है।

यह हुई एक गाय की बात। स्वामी दयानंदजी ने अपनी गोकरुणानिधि में हिसाब लगाकर बताया है कि एक अच्छी गाय के जीवन-भर के दूध की खीर से पचीस हज़ार सात सौ चालीस मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। अब गाय की संतानों के उपयोग पर भी विचार कीजिए। बछिया हुई, तो अपनी माता की भाँति हमारा पालन-पोषण हमारी मा की तरह करेगी। और, यदि बछड़ा हुआ, तो उससे भी अधिक हमारा काम निकलेगा। खेती के काम के लिये बैल से अधिक उपयुक्त पशु कौन-सा है? पानी देना हो, तो बैल चाहिए, खेत जोतना हो, तो बैल चाहिए, और बीज बोना हो, तो बैल चाहिए—कम-से-कम भारत में तो कृषि के लिये बैल से अधिक उपयोगी कोई दूसरा पशु है ही नहीं। अन्य देशों में घोड़ों की तरह बैल भी काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकता है । इसका हिसाब भी स्वामीजी महाराज ने लगाया है । वह कहते हैं, एक जोड़ी बैल एक जन्म में सोलह सौ मन अन्न उत्पन्न कर सकते हैं, अर्थात् इस अन्न से पचास हज़ार तीन सौ तेंतीस मनुष्यों का एक बार के भोजन से पालन होता है ।

सोचिए, वह आपके लिये अन्न, फल, फूल, औषधादि उत्पन्न करता है, जिससे आपका शरीर बनता है ; वह आपके लिये कपास आदि पैदा करता है, जिससे आपका तन ढकता है ; तथा वह अन्य यंत्र आदि चलाने का काम भी करता है । गाड़ियाँ तथा रथ खींचने और बोझा ढोने के लिये बैल अद्वितीय हैं । अच्छा बैल घोड़ों की तरह द्रुतगामी और भैंसे की तरह भारी बोझ ले जानेवाला होता है । परंतु घोड़ों में बिदकने और अड़ने का कठिन दोष होता है, और भैंसे की मूढ़ता तो कभी-कभी मनुष्यों का प्राणांत भी कर देती है । गाय का बेटा बैल इन दोषों से सर्वथा मुक्त है । तभी तो आर्यों में प्रचलित है कि "बेटे और बछड़े की खिलाई कभी बेकार नहीं जाती ।" गढ़मुक्तेश्वर के गंगा-स्नान के मेले में बैल-गाड़ियों और रथों की पंक्तियों का चित्र आँखों के सामने लाइए, और सोचिए कि लाखों की इस भीड़ में क्या कोई और पशु काम दे सकता है । गाड़ी खींचनेवाले बैलों की सुंदर जोड़ियाँ कैसी शोभावती लगती हैं । भैंसे का तो नाम सुनते ही आप मुँह फेर लेंगे, उस पर सवारी करना दूर की बात है । घोड़े पर व्यय अधिक होता है । वह इतना सुशील भी नहीं होता ।

इस प्रकार आपने देखा कि गोवंश से आप गोरस पाते हैं, आपकी कृषि चलती है, आपको भोजन-वस्त्र मिलता है । इसके सहारे आप जीवन-यात्रा चलाते हैं । गोवंश द्वारा आप भाँति-भाँति के यान-यंत्र चलाते हैं । इससे आपके व्यापार और उद्योग-धंधे चलते हैं, और आपके जीवन की उपयोगिता और कार्यक्षमता बढ़ जाती है । सारांश यह कि गोवंश से आपका जीवन है, और है उस जीवन की सार्थकता । क्या कोई अन्य पशु इसकी समता कर सकता है ? बकरी, घोड़ा, ऊँट, हाथी, भैंसे, कुत्ता, रेंडियर, मृग इत्यादि चाहे किसी को ले लें । एक-एक गुण में यह शायद गाय से आगे बढ़ जायँ, पर इन सब-के-सब गुण समुचित मात्रा में एक गाय में ही दृष्टिगत होते हैं । यह पशु पृथ्वी के एक बहुत बड़े भाग में रह सकता है, कदाचित् सारे भूमंडल में । बकरी का दूध हलका है, घोड़ा परिश्रमी है, ऊँट रेगिस्तान के काम का है, हाथी सवार की श्री-वृद्धि करता है, भैंस का दूध चिकना और अधिक होता है, कुत्ता स्वामिभक्त है, रेंडियर एस्किमो का सहारा है, इत्यादि । सावधानी से विचारिए, तो गाय सर्वोपरि सिद्ध होगी ।

मेरे एक मित्र के पास एक गाय थी । वह बड़े प्रेम से उसकी शुश्रूषा किया करते थे । परिस्थिति-वश उन्होंने गाय किसी अन्य को दे दी । नई जगह जाकर वह हुड़कने लगी । उसने खाना-पीना छोड़ दिया । दो-तीन दिन इसी भाँति बीत जाने पर गाय के नए स्वामी ने उन महाशय को सारा वृत्तांत सुनाया । सुनकर जब वह गाय के पास गए, और उसे प्रेम-पूर्वक पुचकारा, उस पर हाथ फेरा, तो वह प्रसन्न होकर चारा खाने लगी । कई दिन वह इसी प्रकार जाते रहे, और गाय स्वस्थ हो गई ।

इसी से तो कहा जाता है कि प्रत्येक अच्छी गाय कामधेनु है, और हर गाय कुछ पुश्तों में अच्छी बनाई जा सकती है । इसी से आर्य लोग प्रातःकाल गोमाता का दर्शन परम शुभ मानते हैं । गोघातक को एक वर्ष तक गाँव-गाँव में द्वार-द्वार पर सदा देते हुए भिक्षाटन करना पड़ता है, तब कहीं प्रायश्चित्त पूरा होता है । इसी से पारसी लोग इसे प्राणों से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार करते हैं। इसीलिये लार्ड लिनलिथगो गोवंश की उन्नति पर इतना ध्यान दे रहे हैं। इसीलिये गोपाल कृष्ण ने गोवर्धन-पूजा के लिये इंद्र से लड़ाई स्वीकार की थी। इसीलिये पुराण में महादेवजी का वाहन वृषभ प्रसिद्ध है। और, इसीलिये ईश्वर ने वेद में गृहस्थ के लिये यह प्रार्थना निर्धारित की है—

मया गावो गोपतिना सचध्वमयम वो गोष्ठव इहि पोषयिष्णुः। रायस्पोषेण बहुला भवन्ति- र्जीवा जीवन्ति रूपवम सदेय। (अथर्व०)

प्रिय पाठको, संक्षेपतया कामधेनु की गुणावली का कीर्तन मैंने किया है। आइए, हम-आप मिलकर प्रार्थना करें—"हे परम कृपालु प्रभो! वह दिन शीघ्र दिखाइए, जब अन्य देशवासियों से शिक्षा ग्रहण करके, अपने पुरुषाओं का इतिहास याद करके, गोमाता की उचित शुश्रूषा करके हम उसे कामधेनु के रूप में पा सकें। अपनी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकें। भगवान् गोपालनंदन के इस भारत में गोदुग्ध की वैसी ही नदियाँ बहें, जैसी पहले बहती थीं। पिता, ऐसी कृपा कीजिए कि हम गोरसामृत और वेदामृत पीते हुए मोक्षामृत पान करने में समर्थ हों।"

माता का कर्तव्य

यही है कि वह बच्चे के स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान रक्खे।

उसे जानना चाहिये

बच्चों को स्वस्थ रखने के क्या साधन हैं!

एक सर्वश्रेष्ठ साधन

उन्हें बचपन से पिलाना चाहिये—

लाल-शर (Regd.)

(लाल शरबत)

बच्चों के ख़ून, मांस और हड्डी के बढ़ाने की तथा रोगों के आक्रमण से बचाने की प्रसिद्ध मीठी दवा। इसे बच्चे बड़े चाव से पीते हैं।

स्थानीय हमारे एजेंट से ख़रीदिए।

डाबर (डा० एस्स० के० बर्म्मन) लि०

विभाग नं० १३१ पोस्ट-बक्स ५५४, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिमा

[श्रीयुत अखिलेशनारायण वाजपेयी 'अखिलेश']

(१)

"मा............!"

"मेरी रानी बिटिया।"

"मा......,क्या मैं सचमुच ही विधवा हूँ?"

"मेरी नादान बिटिया, तू...वि...ध...वा! नहीं-नहीं, मैं कुछ नहीं जानती, अपने बाबू से पूछ।" वृद्धा का हृदय फटा जा रहा था। जिस घाव को उसने दस वर्षों से छिपा रक्खा था, वह आज पुनः अपने प्रबल प्रचंड रौद्र रूप में नग्न नृत्य करने लगा!

प्रबल झंझावात अभी जारी था। घन-मंडल के पट में दामिनी क्रीड़ा कर रही थी। आँधी का क्रम उत्तेजित होता जाता था।

मीना ने कमरे में प्रवेश किया। किताबें मानो कुछ रहस्य को जान उत्सुकता से मुस्किरा पड़ीं। कमरे की ईंट-ईंट उसकी दशा पर खिलखिला रही थी, जिसका तांडव-नाद उसके कानों में गूँज रहा था। मीना की आँखों के आगे घोर तिमिर छाने लगा। पैर काँप रहे थे। हृदय के हलाहल-सागर में प्रलयी लहरें नग्न नृत्य कर रही थीं। उससे देखा न गया। वह कटे वृक्ष की भाँति पलँग पर गिर सिसकने लगी।

(२)

"बेटी......,मैंने जो कुछ किया, सब तेरे सुख के लिये किया। मीना, मेरी प्यारी बेटी!" वृद्ध की आँखों में आँसू छलछला पड़े।

"बाबू, मुझे क्या मालूम था कि मेरी दुनिया उजड़ चुकी है। झूठे, पाखंडी समाज के आगे मैं...मैं...वि...ध...वा! बाबूजी, क्या मैं विधवा हूँ? कब...कैसे?"

"बेटी, जाने दे; तू दुनिया की आँखों में दस वर्ष पहले विधवा हो गई! तेरा सोहाग दस......पुछ......!" वृद्ध का गला भर आया।

"क्या दस वर्ष पहले! दस वर्ष! बाबूजी, आप पागल तो नहीं हो गए! क्या दस वर्ष पहले विधवा और मैं!"

"बेटी, यह समाज है, यहाँ जो न हो, थोड़ा है। आह! मेरी अबोध बिटिया! हा विधना! तेरी माया अपरमपार है।"

मीना से न रहा गया। वह आँधी की भाँति ड्रॉइंग रूम में घुसी। मुझे विधवा कौन कहता है? समाज! हा-हा......!आँखों में वही मादकता, लाली के डोरे, कपोलों में वही अरुण कंपन, यौवन की वही बसंती बहार। दुनिया पागल है। मैं विधवा! पागल! मैं न विधवा, न सधवा; बल्कि सदा मीना कुमारी रहूँगी।

(३)

समय अपने कर्म में अति दक्ष है। न आँधी की भीषण गर्जना से भयभीत होता; न निखरी चाँदनी में लिप्त होता। मीना को अपनी संपत्ति की मालकिन हुए पाँच वर्ष गुज़र चुके। अब वह एम्० ए० की छात्रा थी। दुनिया की आँखों में...... नहीं, कठोर समाज की आँखों में चाहे वह विधवा हो, पर उस यौवन की बसंत-बहार में वह अब भी कुँवारी थी। उधर यौवन की अतुल आकर्षक बहार और इधर मानवी-उपवन!

"चित्रकार!"

वह मानो अभी निद्रा से जगा हो। उसने तूलिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाते हुए पीछे, उस मधुर बालिका की ओर, देखा।

"ओह, आप आ गईं! मैं तो समझता था, शायद आप न आवें।"

"आपके यह सोचने का कारण ?"

"का...र...ण, कारण तो कोई विशेष नहीं; पर......"

युवती खिलखिला पड़ी उस कलाधर की मधुर कल्पना पर। चित्रकार उस अबोध, नव-कुसुमित बाला के बाल्य स्वभाव पर चकित हो तूलिका सँभालने लगा।

"आप आज से शुरू कर दें, तो अच्छा होगा, जल्द फ़ुरसत मिल जायगी।"

"जल्द फ़ुरसत ! जैसी आपकी इच्छा।"

"हाँ, मुझे किस दिन और किस समय आना होगा ?"

"सायंकाल, सूर्यास्त के पहले, और उधर अरुण-लालिमा की प्रखर किरणें खिलने के समय। मैं जल्द ही बनाने की कोशिश करूँगा।"

वाटिका की कुंजों में, मालती, गुलाब, चमेली के बीच में, सोफ़ा पड़ा था। भौंरे मद से झूम रहे थे। कभी उस कमल-सी युवती को प्रेमिका समझ प्रेम-रस के लिये बढ़ते। सूर्य की सुनहली किरणें पत्तियों से छनकर चरणों में लोट रही थीं। चित्रकार लीन था अपने कार्य में। कुछ कला का माधुर्य, कुछ मानस-हृदय की मादकता। तूलिका हाथ में झूमती जाती थी।

"ओह, आपकी आँखें सदा इसी ओर रहें।" चित्रकार ने मुस्किराते हुए कहा।

युवती मुस्किरा पड़ी। कितनी करुण मादकता थी उस मुस्कान में। चित्रकार पागल हो उठा। तूलिका हाथ से खिसक हरी-हरी दूब में लोटने लगी। उसने शरमाते हुए उसे उठाकर एक दीर्घ साँस खींची।

"क्या ख़त्म हो गया ?"

"हाँ, आज यहीं तक। सूर्य भी डूब रहा है। ज़रा जल्द आया कीजिए, तो अति उत्तम होगा।"

युवती उठी। कार कुछ ही क्षण में आँखों से ओझल हो गई।

(४)

कला की झलक कला तक ही रहना उत्तम है। पर चित्रकार का हृदय न-जाने किस धारा में बह रहा था। आज दस रोज़ हो गए, पर एक मॉडल न बन पाया! दिन-भर और अर्ध रात्रि तक मानो अपने को खोया-सा रहता रंगों को बनाने में। कभी अपने पर झुँझलाता, तो कभी अपनी कला पर रोता! चित्रकार का हृदय भारी था। शायद आज चित्र ख़त्म हो जायगा।

कार वाटिका में घुसी। युवती अपनी अरुण साड़ी को हवा के झोंके से सँभालते हुए सोफ़े पर जा बैठी। चित्रकार ने तूलिका उठाई। हाथों में कुछ शिथिलता थी, आँखों में लाली।

"चित्र तो आज समाप्त हो जायगा।" युवती ने मुस्किराते हुए कहा।

"शायद......नहीं, आज ख़त्म हो जायगा।"

चित्रकार दुनिया को भूला था। उसकी आँखें या तो तूलिका के साथ घूमतीं, या कला की आड़ में उस सौंदर्य-मूर्ति का मधु-पान करतीं।

चित्र तैयार हो गया। युवती ने एक बार उस कला को देखा और फिर सहमी आँखों से उस कलाधर को देख, एक हास्य-रेखा दोनों के बीच में लहरा दी। चित्रकार उदास था।

"कहिए, इसका पुरस्कार क्या देना होगा ?"

"क्या आप दे सकेंगी ? देवीजी, इसका मूल्य नहीं, यह अमूल्य है।"

"पर आपकी मेहनत......?"

"मुझे उसका मूल्य......आप न दे सकेंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, जितना भी आप माँगिएगा, उतना मूल्य मैं आपकी कला का दूँगी।"

"अच्छा, तो कल बता दूँगा।" चित्रकार का हृदय नाच उठा।

युवती गंभीरता से परेशान थी। उसने मोटर पर बैठते ही एक बार उस माधुर्य, चित्रकार की मूर्ति, को देखा।

(५)

सूर्य की किरणें वाटिका से बिदा ले रही थीं। चिंता में मग्न चित्रकार ने अरुण प्याली में तूलिका डुबा, उसे चित्र के केशों के बीच में लुटा उस विधवा के मूक-चित्र को मानो सौभाग्यवती बना समाज के कठोर व्रत को तोड़ दिया। उस पर परदा डाल पुनः वाटिका में उस हृदय-देवी की बाट देखने लगा।

"ओह! आप आ गईं, यह लीजिए अपना चित्र।" चित्रकार ने चित्र बढ़ा दिया।

"और इसका मूल्य?"

"सो मुझे मिल गया।"

"कैसे?"

"यह आप चित्र से ही पूछ लीजिएगा।"

"क्या आप पागल तो नहीं हो गए? चित्र क्या बता सकता है!"

"आप भूलती हैं। मानव की मूक वेदना कला ही बता सकती है।"

युवती ने चित्र का परदा हटाया। सहसा चित्र हाथ से खिसक हरी-हरी दूब में लोटने लगा। उसके मुख से आह निकल पड़ी!

"चित्रकार! तुमने यह क्या किया?"

"अपनी मेहनत का मूल्य ही तो लिया।"

"पर तुम्हें नहीं मालूम कि मैं बाल-विधवा हूँ।"

"मीना, दुनिया को बकने भी दो।"

डाल पर कोयल कूक उठी। साथ ही दूब पर लोटती उस सौभाग्यवती रेखा पर सूर्य की अरुण लालिमा पड़ मानो उस सोहाग की माँग को अपनी कूची से गाढ़ा बना रही थी।

कुँआरे और विवाहितों के लिये समान उपयोगी

अगर आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, तो आज ही पत्र लिखें। बिना दाम और डाक-महसूल भेज दी जायगी।

आतंक-निग्रह-औषधालय, जामनगर, काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या

[श्रीयुत राजकिशोर कक्कड़]

गृह-सरसी की पद्मा विहँसित,
ऊर्मि-माल है तुमसे विलसित;
इंदु रूप की झिलमिल जगमग
करती हो तुम गृह-नभ शोभित ॥ १ ॥

तुम वीणा की ध्वनि, तारों पर
उठ-गिर करतीं अविरत नर्तन;
तुम सरिता की लहर, थिरककर
भरती हो प्रवाह में जीवन ॥ २ ॥

अभी तुम्हारे उर-शतदल को
छू न सका मधु प्रात-समीरण;
अभी न उसके सपनों तक में
मुखरित अस्फुट मधुपी-गुंजन ॥ ३ ॥

अभी न भावों की जगती में
कसक स्पृहाओं ने भर दी है;
अभी न रजत-राशि प्राणों की
उर ने कनकमयी कर दी है ॥ ४ ॥

तुम मधु की बदली पग-पग पर
फिरती हो मधुरस छलकाती;
गृह के कोने-कोने में तुम
फिरती हो लावण्य लुटाती ॥ ५ ॥

तुम हो ज्योत्स्ना-स्नात बेलि शुचि,
अविकच मुकुल-युक्त, अति चंचल;
किसी अपरिचित प्रणयी की तुम
स्वप्न-मूर्ति हो धूमिल, कोमल ॥ ६ ॥

रजत-स्नात जागृति पलकों पर
उलझी स्वर्णिम मधुर स्वप्न-सी;
आशा की तुम प्रभा-रश्मि-सी
अभिलाषा के उर-स्पंदन-सी ॥ ७ ॥

तरल-तुहिन-कण - धवल पल्लवों-
से शुचि, नवल, अमल, मृदु तन-सी;
तुम हो पावस-स्नात, सघन घन-
शून्य, शरत-नभ-से शुचि मन-सी ॥ ८ ॥

रुचिर रूप के शुचि मंदिर में
तुम पवित्रता की प्रतिमा-सी;
तुम वरदानों की प्रतिछाया,
हो तुम पुण्यों की महिमा-सी ॥ ९ ॥

तुम मानव के जीवन-आतप
पर पल-भर हँसतीं राका-सी;
तुम नैराश्य-दृगों पर तिरने-
वाली दूरागत आशा-सी ॥ १० ॥

सरले ! व्रीड़ा, साध, राग, मद-
शून्य तुम्हारी भोली चितवन;
सुर-सरिता-जल-सी, उच्छृंखल
करती दृष्टि-कूल अभिनंदन ॥ ११ ॥

तुम सजीव सुरधनु, धरिणी की
प्राचीरों में सदा बंद हो;
तुम विद्युत-आभा की रेखा
मधु-सिंचित, अक्षय, अमंद हो ॥ १२ ॥

तुम मधु-मज्जित साध हृदय की,
तुम सहचरी कल्पना की हो;
चलती-फिरती दीप-शिखा तुम,
ज्योति-किरण सौंदर्य-पगी हो ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम दसवीं की चंद्र-कला-सी
गृह-प्रांगण में इठलाती हो ;
मंथर गति से राका-वेला
के ढिग मदमाती जाती हो ॥ १४ ॥
तुम नित प्रातः से संध्या तक
गृह-कार्यों में रहती हो रत ;
सखि, करते होंगे उर-चलदल
पर कूजन विचार-खग शत-शत ॥ १५ ॥
तुम निज-दीप-शिखा-सी छवि से
किस गृह को पावन कर दोगी ;
शुभे ! न-जाने किस उर-आँचल
को सुख-सुषमा से भर दोगी ॥ १६ ॥

श्रीमान् तारासिंहजी रूरल नालिज टीचर मिडिल स्कूल, पो० मुरादनगर, ज़ि० मेरठ लिखते हैं—

आपकी ओषधि ने एक प्रकार से कायाकल्प-सा कर दिया है !
पीले चेहरे पर रक्त की झलक मारने लगी है !!

श्रीमती पूजनीया वैद्याजी, सादर नमस्ते !
आपकी "स्त्रीसुखकर चूर्ण" नाम की ओषधि प्रदर-रोग के लिये मँगाई थी, उसने पूर्ण लाभ पहुँचाया । अब रोगिणी बिलकुल स्वस्थ है, पहले मन मलीन रहता था, आलस्य था तथा किसी कार्य में चित्त नहीं लगता था । उपरोक्त ओषधि (स्त्रीसुखकर) से सब विकार दूर हो गये । पीले चेहरे पर रक्त की झलक मारने लगी, और वह आपके बड़े गुण गाती है । कमर तथा टाँगों में जो दर्द रहता था, वह भी नहीं रहा । तात्पर्य यह कि आपकी ओषधि ने एक प्रकार से कायाकल्प-सा कर दिया है । अतः आपकी कृपा के आभारी हैं ।

स्त्रीसुखकर चूर्ण

केवल २१ दिन सेवन करने से स्त्री के गुप्त स्थान से लाल, पीला, सफ़ेद, बदबूदार पानी-सा जाना शर्तिया आराम हो जाता है । मूल्य लागत-मात्र १॥), डा०-महसूल ।॥),

पता—चपलादेवी वैद्या, चपला-भवन, गली रावलिया, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसतरंगिणी और भावविलास

[प्रोफेसर विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम्० ए०, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी]

संस्कृत में भानुदत्त ने रीति-शास्त्र की दो पुस्तकें लिखी हैं। उन दोनो की प्रसिद्धि साहित्य-दर्पण के कारण कुछ दबी हुई है। उनकी रसमंजरी का प्रचलन तो संस्कृत में कुछ है भी, पर रसतरंगिणी का उतना नहीं। रसमंजरी नायिका-भेद की पुस्तक है, और रसतरंगिणी भाव एवं रस-निरूपण की। हिंदी के रीति-शास्त्र की ठीक परंपरा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये ये दोनो ही पुस्तकें अत्यंत महत्त्व-पूर्ण हैं। नायिका-भेद का जो मोटा खाका हिंदी में सर्व-सामान्य रूप में गृहीत हुआ, वह रसमंजरी के ही आधार पर। केशवदासजी ने साहित्यदर्पण के अनुगमन पर रसिकप्रिया में जो नायिका-भेद का रूप ग्रहण किया, उसका अनुवर्तन बहुत कम लोगों ने किया। हिंदीवालों के लिये जिस प्रकार अलंकारों का मुख्य आधार चंद्रालोक और उसके अलंकार-प्रकरण की कुवलयानंद नाम की टीका रही, उसी प्रकार नायिका-भेद का मुख्य आधार रसमंजरी।

जिस प्रकार नायिका-भेद के ग्रंथों का आधार रसमंजरी थी, उसी प्रकार हिंदी के कुछ कवियों या रीतिकारों के भाव-स्वरूप-कथन में रसतरंगिणी का आधार लिया गया। यद्यपि संस्कृत के काव्यप्रकाश, साहित्य-दर्पण आदि ग्रंथ अत्यंत प्रौढ़ माने जाते हैं, पर रसतरंगिणी में जिस तर्क-पूर्ण और विवेचनात्मक पद्धति से स्वरूप-निर्णय किया गया है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि भानुदत्त की दृष्टि बहुत साफ़ और उनकी बुद्धि अत्यंत सारग्राहिणी थी। यद्यपि भेद-प्रभेद की विशेष रुचि और नवीन कथन की 'पंडिताई' के कारण इन्होंने भी कहीं-कहीं अद्भुत बातें कह डाली हैं, पर यह मानना ही पड़ता है कि अपने यहाँ की रस-पद्धति का निरूपण जैसे ढंग और जैसे व्यवस्थित रूप में इन्होंने किया, वैसा पहले के लोगों ने नहीं। असल बात यह थी कि पुराने आचार्य रस-पद्धति की स्थापना करने में लगे थे, पर भानुदत्त के समय तक रस-स्थापना हो चुकी थी, और अलंकारवालों का ज़ोर कम हो गया था। भाव एवं रस के स्वरूप-कथन के लिये हिंदीवालों ने काव्य-प्रकाश, साहित्यदर्पण, चंद्रालोक और रसतरंगिणी को ही ग्रहण किया है। काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण और चंद्रालोक के रस-स्वरूप-निर्णय में तो कोई विशेष अंतर नहीं, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसतरंगिणी के स्वरूप-निर्णय में शैली बदली हुई है। इन्होंने नैयायिकों की पद्धति का कुछ विशेष अनुकरण कर स्वरूप-लक्षण लिखे हैं, और नई बातों के संकेत भी दिए हैं। नई बातों का विवेचन तो फिर कभी करेंगे, यहाँ हम यह दिखलाना चाहते हैं कि रसतरंगिणी के सामने न होने से हिंदी के आलोचक कभी-कभी व्यर्थ ही किस प्रकार चौंकते रहे हैं।

देवजी ने अपने भावविलास में कुछ बातें ऐसी लिखी हैं, जो हिंदी के अन्य ग्रंथों में नहीं मिलतीं। देव का पक्ष लेनेवालों ने विना आगा-पीछा देखे घोषणा कर दी कि इन्होंने नई खोज की है। पर हिंदी में देव ही क्या, जितने भी रीतिकार हुए, वे सभी संस्कृत-ग्रंथों की पूर्व-कथित सामग्री ही ठीक-ठीक हिंदी में रख सके हों, यही बहुत बड़ी बात है, नई खोज तो दूर रही। देव का भावविलास रसतरंगिणी के आधार पर लिखा गया है, इसलिये हिंदी के आलोचकों को इस बात का पता नहीं चल सका कि देवजी ने ये नई बातें किस ग्रंथ के आधार पर रक्खीं। रसतरंगिणी और भावविलास, दोनो से उदाहरण देकर यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक जान पड़ता है। रसतरंगिणी में भावों के दो भेद किए गए हैं। उन्होंने भाव की परिभाषा इस प्रकार की है—

"रसानुकूलो विकारो भावः।"

फिर विकार की परिभाषा यों की है—

"विकारोऽन्यथाभावः।"

इस विकार के दो भेद किए हैं—

"विकारश्च द्विविधः—आन्तरश्शारीरश्च।"

आंतर विकार के भी दो भेद हैं—

"आन्तरोऽपि द्विविधः—स्थायीभावो व्यभिचारीभावश्च।"

शारीर विकारा के भेद नहीं किए—

"शारीरास्तु सात्त्विकभावादयः।"

देवजी ने इस व्यवस्थित क्रम से भावों का वर्णन नहीं किया, क्योंकि रीतिकाल के कवियों की भाँति उनकी भी दृष्टि शृंगार-रस पर ही अटकी रही, पर सात्त्विक भाव का वर्णन करते समय भानुदत्त के इस भेद का उल्लेख किया है—

थिति विभाव अनुभाव तें न्यारे अति अभिराम;
सकल रसनि मैं संचरैं, सँचरीकऊ नाम।
ते सारीरऽरु आंतरहु द्विबिध कहत भरतादि;
स्तंभादिक सारीर अरु आंतर निरबेदादि।

देवजी की कथन-शैली से साफ़ जान पड़ता है कि वह सात्त्विक भावों को भी संचारी भाव नाम देना चाहते हैं; क्योंकि वह सभी रसों में व्यभिचारियों की ही तरह संचार करते हैं। पर सात्त्विक भावों को संचारी के भीतर ले जाना या उनके लिये संचारी नाम रखना कहाँ तक युक्ति-संगत होगा, इसे रसाभ्यासी ही बता सकते हैं। दोहे में जो 'भरतादि' शब्द पड़ा है, उसमें आदि से तात्पर्य भानुदत्त से ही समझना चाहिए। भरत मुनि का नाम तो श्रद्धा के कारण ही ले लिया गया है; क्योंकि उन्होंने भाव-परिगणन में इस प्रकार भेद नहीं किए। ये भेद भानु भट्ट ने ही किए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब देवजी के उस 'छल' को देखिए, जो उन्हें नवीन कल्पना करनेवाला आचार्य सिद्ध करता है, और जिसके संबंध में श्रद्धेय पं० रामचंद्रजी शुक्ल को भी अपने इतिहास में यह लिखना पड़ा—

"कुछ लोगों ने भक्ति-वश अवश्य और बहुत-सी बातों के साथ इन्हें (देवजी को) कुछ शास्त्रीय उद्भावना का श्रेय भी देना चाहा है। वे ऐसे ही लोग हैं.........जो संचारियों में एक 'छल' और बढ़ा हुआ देखकर चौंकते हैं।.........रहा 'छल संचारी', वह अवहित्था के अंतर्भूत है। दूसरी बात यह है कि साहित्य के सिद्धांत - ग्रंथों से परिचित - मात्र जानते हैं कि गिनाए हुए ३३ संचारी उपलक्षण-मात्र हैं, संचारी और भी कितने हो सकते हैं।"

यदि रसतरंगिणी सामने होती, तो इतना लिखने की भी आवश्यकता न पड़ती। क्योंकि देवजी ने 'छल' नाम का संचारी भाव रसतरंगिणी से ही उठाकर रख दिया है। रसतरंगिणी में कितने ही संचारी गिनाए गए हैं। देवजी को शृंगार के लिये सिर्फ़ 'छल' संचारी अच्छा लगा, और उन्होंने उसकी गणना चौंतीसवें के नाम से कर दी, तथा उदाहरण भी रख दिया। पर यह अवश्य मानना पड़ेगा कि भावविलास में जहाँ-जहाँ देवजी ने इस प्रकार की नवीन उद्भावना करने का प्रयत्न किया है, वहाँ कह दिया है कि दूसरे आचार्य इसे मानते हैं। 'छल' के संबंध में भी उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया है, अपनी स्वच्छंद उद्भावना का दावा उन्होंने भी नहीं किया—

भरतादिक सतकवि कहैं बिभिचारी तेतीस ;
बरनत छल चौंतीस यों एक कबिन के ईस।

अब रसतरंगिणी में भी इसी प्रसंग को देखिए—

"अत्र प्रतिभाति। छलमधिको व्यभिचारिभाव इति। ताम्बूलाहरणच्छलेन रभसा श्लेषोऽपि संविच्छिन्न इति शृंगारे दर्शनात्।.........वीथीभेदे गणनाच्च। संगुप्तक्रियासम्पादनं छलम्।"

देवजी का लक्षण लीजिए—

अपमानादिक करन कौं कीजै क्रिया बिपाव ;
बक्र उक्ति अंतर कपट सो बरनै छलभाव।

रसतरंगिणीकार छल के विभावादि का उल्लेख इस प्रकार करते हैं—

"विभावा अवमाननप्रतिपक्षकुचेष्टादयः। अनुभावा वक्रोक्तिनिभृतवीक्षणप्रकृतिप्रच्छादनादयः।"

'छल' का पृथकत्व स्थापित करने के लिये उन्होंने शृंगार-संग्राम दोनो में उदाहरण दिए हैं। निष्प्रयोजन विस्तार-भय के कारण उन्हें उद्धृत करने से विरत होना पड़ता है। यहाँ विचार करने की बात यह भी है कि क्या छल का अंतर्भाव अवहित्था में हो जाता है। इस संबंध में रसतरंगिणी पर नौका टीका लिखनेवाले जडी (उपनाम श्रीगंगाराम) लिखते हैं—

"अवहित्थं तु निर्वेदाद्यनुभवगोपनफलकं छलं च तदतिरिक्तक्रियागोपनफलकमिति ।"

यह भेद-निरूपण ही पुकारकर कह रहा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि छल असल में अवहित्था की एक शाखा-मात्र है। सूक्ष्म भेद की प्रवृत्ति से ही वह अवहित्था से अलग किया जा रहा है, अन्यथा मोटे रूप में वह अवहित्था ही है। इस प्रकार यदि भेद-प्रभेद किए जायँ, तो एक-एक संचारी के ही न-जाने कितने कच्चे-बच्चे निकल पड़ें। स्थूल रूप में रस-चक्र का ज्ञान करानेवालों का तो उसे अलग गिनना शुद्ध प्रदर्शन-मात्र है।

तीसरी नई बात, जो भावविलास में दिखाई पड़ी, रस के दो भेदों की है, जिनमें से एक के तीन प्रभेद भी बताए गए हैं। रस-निरूपण करते हुए देवजी लिखते हैं—

जो बिभाव अनुभाव अरु बिभिचारिन करि होइ ;
थिति की पूरन बासना सुकबि कहत रस सोइ।
जोहि प्रथम अनुराग मैं नहिं पूरब अनुभाव ;
तौ कहिए दंपतिन के जन्मांतर के भाव।
ताहि बिभावादिकन तें थिति संपूरन जानि ;
लौकिक और अलौकिकहि द्वै बिध कहत बखानि।
नयनादिक इंद्रियन के जोगहि लौकिक जानु ;
आतम मन संजोग तें होइ अलौकिक ज्ञानु।
कहत अलौकिक तीनि बिधि प्रथम स्वापनिक भानु ;
मानोरथ कबि देव अरु ओपनायकहु बखानु।

रसों का यह भेद-प्रभेद भी रसतरंगिणी-कार की ही सूझ है, देवजी की नहीं; जैसा कुछ लोग समझे बैठे हैं—

"न च यूनोः प्रथमानुरागे व्याप्तिः पूर्वानुभवाभावादिति वाच्यम्। तत्रापि जन्मान्तरीयानुभवसत्वादिति।"

"स च रसो द्विविधो—लौकिकोऽलौकिकश्चेति।"

"लौकिकसन्निकर्षजन्मा लौकिकोऽलौकिकसन्निकर्षजन्मा त्वलौकिकः। लौकिकः सन्निकर्षषोढाविषयगतः। अलौकिकः सन्निकर्षो ज्ञानम्। तेषु चानुभूतेषु साक्षादेतज्जन्माननुभूतेषु प्राक्तनसंस्कारद्वाराज्ञानमेव प्रत्यासत्तिः।"

"अलौकिको रसस्त्रिधा—स्वाप्निको मानोरथिक औपनायकश्चेति। औपनायकश्च काव्यपदपदार्थचमत्कारे।"

भावों के लक्षण और उनके प्रभेद भी देवजी ने रसतरंगिणी के अनुसार ही रक्खे हैं। केवल केशव की रसिकप्रिया की नक़ल पर शृंगार के प्रकाश और प्रच्छन्न भेद भी माने हैं, जो रसतरंगिणी में नहीं हैं। वियोग-शृंगार के भेद भी हिंदी की सर्व-स्वीकृत परंपरा के अनुसार ही रक्खे हैं। इस प्रकार भावविलास के आरंभिक तीन प्रकरण, जिनमें लोगों को नई-नई सूझें और खोजें दिखाई पड़ा करती थीं, रसतरंगिणी के आधार पर लिखे गए हैं। उदाहरण देवजी ने अपने रक्खे हैं। हिंदी में 'छल' का जो हौआ बहुत दिनों तक कुछ लोगों को डराने-धमकाने का कारण होता रहा है, अब भविष्य में न होना चाहिए। कभी अवसर मिलने पर भावविलास के लक्षणों एवं उदाहरणों पर फिर विचार किया जायगा, इस लेख का विषय वह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा-चित्रावली

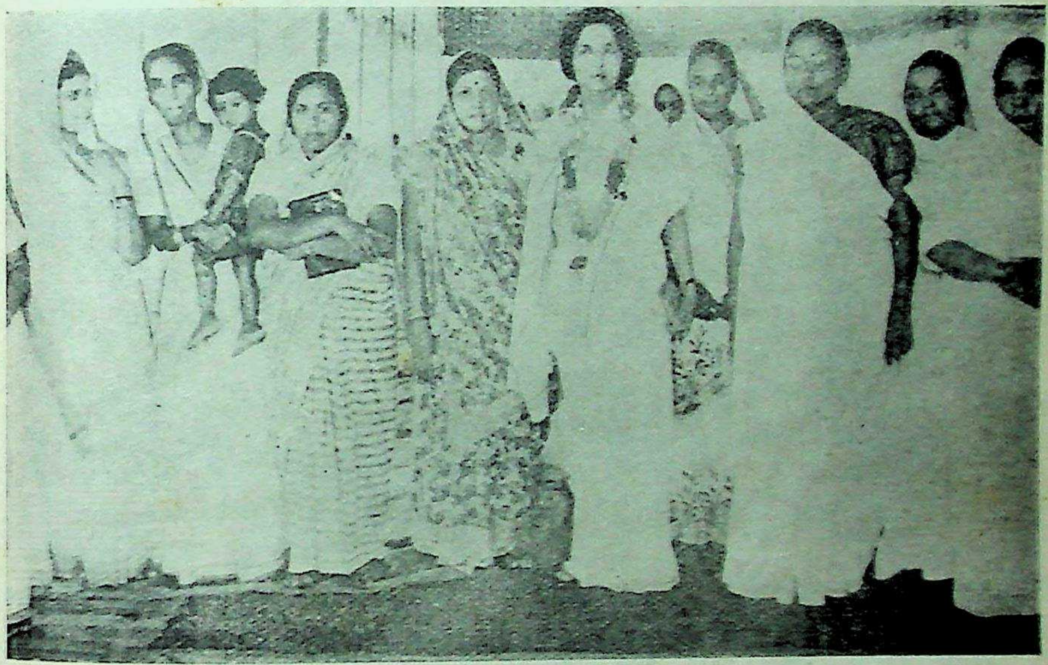

स्वागत

[मेरठ में होनेवाली महिलाओं की राजनीतिक सभा की सभानेत्री श्रीमती अरुणा आसफ़अली का मेरठ-रेलवे-स्टेशन पर, अभी हाल में, अभूतपूर्व स्वागत हुआ । चित्र में बाईं ओर श्रीमती सत्यवती स्नातिका एम्० एल्० ए० और श्रीमती प्रकाशदेवी सूद हैं । उनके साथ यू० पी० की और भी कार्यकर्त्रियाँ हैं ।—प्रतिच्छविकार, श्रीललितगोपालजी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदरास-विश्वविद्यालय का वार्षिक पदवी-दान-समारोह

[मदरास-विश्वविद्यालय के पदवी-दान-समारोह के उत्सव पर मदरास के गवर्नर महोदय ने, जो विश्वविद्यालय के चांसलर भी हैं, अध्यक्ष-पद को सुशोभित किया। इस वर्ष डिगरी प्राप्त करनेवालों में महिलाओं की अधिकता थी। चित्र में विदुषी महिलाएँ डिगरी प्राप्त करने के लिये सीनेट-हाउस में जाने के लिये एकत्र हो रही हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

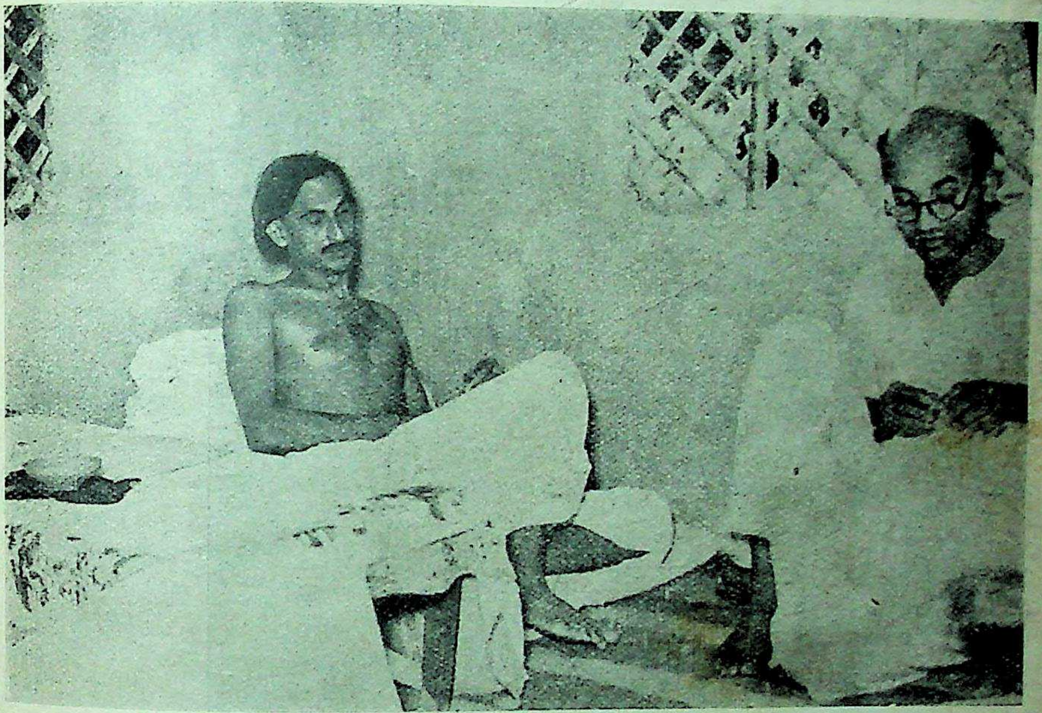

आचार्य कृपलानी

[आप बेसिक-शिक्षा-संबंधी योजना के विषय में, अपनी कुटी में, गांधी-आश्रम, मेरठ के एक कार्यकर्ता से बातचीत कर रहे हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

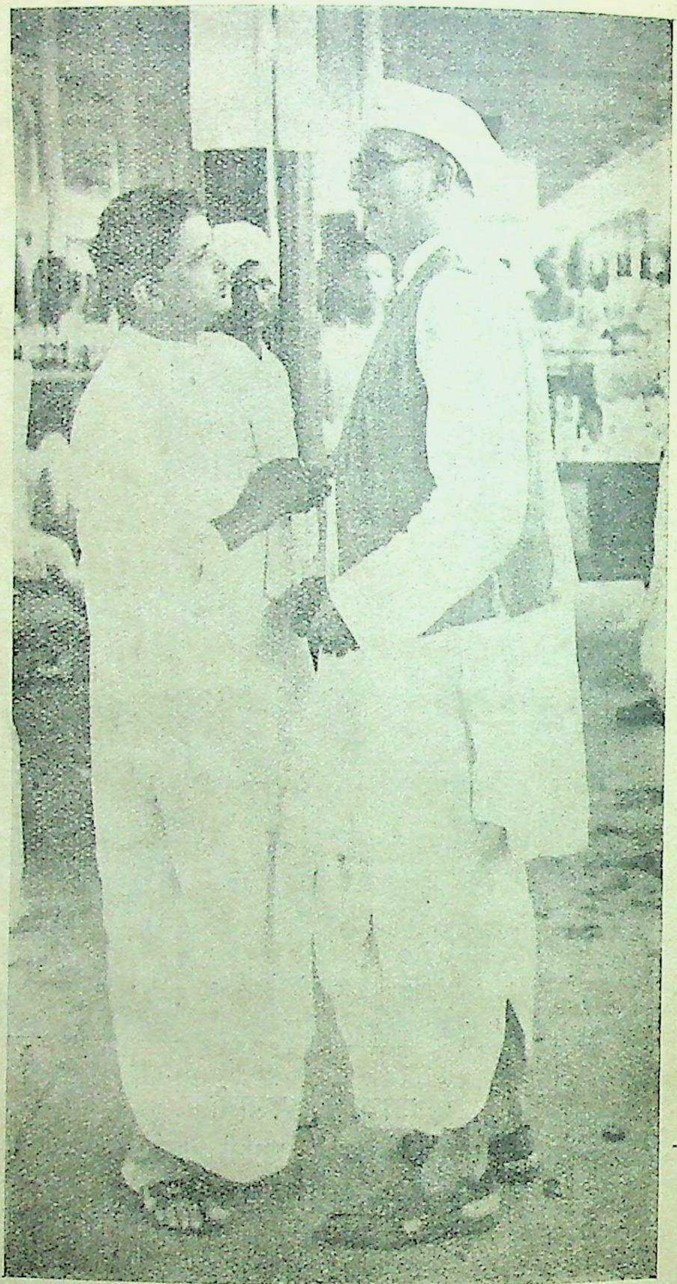

श्रीमहादेव देसाई

[श्रीमहादेव देसाई (दाहिनी ओर) शिमला से लौटते समय दिल्ली-स्टेशन पर श्रीयुत देवदासजी गांधी (बाईं ओर) से बातचीत कर रहे हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप गया ! छप गया !!

कुल्ली भाट

कवर-डिज़ाइन उलटा पेड़

लेखक—श्री निराला

मूल्य सादी १)
सजिल्द १।।)

१. हास्यरस की अभूतपूर्व छटा ।
२. जीवनी, कथा, स्केच एक साथ ।
३. आदर्श गद्य अलंकृत और सरल ।
४. साधारण जीवन का असाधारण रूप ।
५. कल तक जो नहीं था ।
६. बीसवीं सदी की मेख ।
७. उलटी गंगा ।
८. आठवाँ चमत्कार ।

मिलने का पता

अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

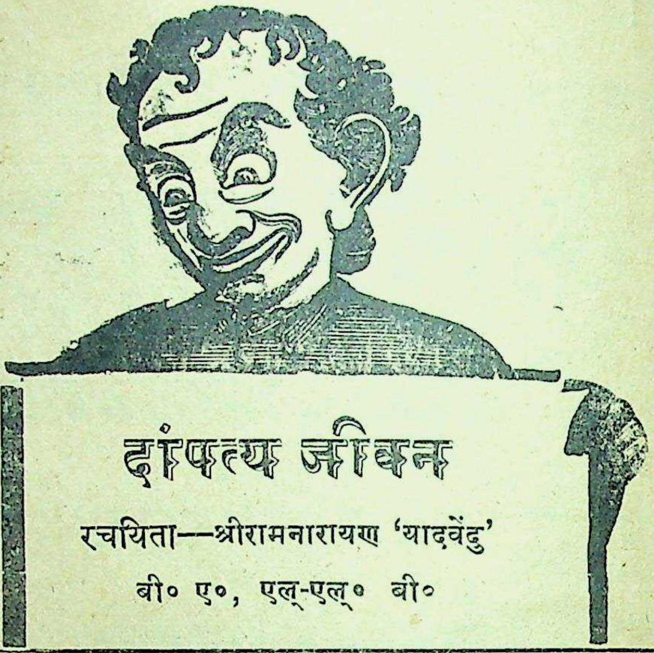

यह नव-विवाहित और शीघ्र विवाहित होनेवाले नवयुवकों और नवयुवतियों को आनंद देनेवाली अद्वितीय पुस्तक है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों की समस्याओं को बहुत ही सरल एवं सरस भाषा में, वैज्ञानिक ढंग से, समझाया गया है। इस ग्रंथ की विशेषता यही है कि इसमें विवाह के उपरांत के गहन प्रश्न—आलिंगन, चुंबन तथा सहवास आदि—पर बहुत ही मार्मिक एवं वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। वैवाहिक जीवन को संसार में स्वर्ग बनानेवाली यह राष्ट्र-भाषा में केवल एक ही पुस्तक है। इस विषय पर बिकनेवाली पचासों पुस्तकों में व्यर्थ पैसा वरबाद न कर, केवल एक बार इस पुस्तक को ख़रीदकर देखिए। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति रहनी चाहिए। मूल्य सादी १), जिल्ददार १।)

मिलने का पता—**गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गया ! निकल गया !! निकल गया !!!

जाति-पाँति के पचड़े में पड़ी,

घूँघटों की ओट में मुख-चंद्र छिपाए, हृदय में निर्धूम
ज्वालामुखी दबाए और अरमानों की उजड़ी
बस्ती बसाए आज की हमारी
शिक्षित कन्याओं के सामने
क्या-क्या समस्याएँ
हैं ?

इन सबका उत्तर देगा—क्रांतिकारी उपन्यास

'प्रश्न'

।

कर्ता

श्रीसर्वदानंद वर्मा

——:o:——

घटनाएँ बिलकुल वास्तविक हैं, और धर्म, समाज तथा भ्रामक नियम-बंधन के आवरण में 'व्यक्ति' का गला घोंट देनेवाले ढोंगी 'मर्यादा-पुरुषोत्तम' लोगों की रीति-नीति पर पूरा प्रकाश डालती हैं। हरएक बहन, बेटी, पत्नी, माता और विमाता को इसे पढ़ना चाहिए। मूल्य १।), सजिल्द २)

दुलारेलाल भार्गव

मालिक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासों की श्रेणी में
निस्संकोच रक्खा जानेवाला

हिंदी का महान् गौरव

'विकास'

[सामाजिक उपन्यास दो भागों में]

लेखक

हिंदी के युगांतकारी उपन्यासकार

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

('बिदा' और 'विजय' के यशस्वी रचयिता)

'विकास' की विशेषताएँ—

(१) साम्य तथा समाजवाद का स्पष्टीकरण।

(२) हिंदू-समाज के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन।

(३) क़ुली-प्रथा की आह और कराह।

(४) पूर्व-जन्म के प्रेम की पीड़ा।

(५) चारु चरित्रों का विचित्र विश्लेषण। इत्यादि-इत्यादि।

उच्च कोटि के चरित्र-चित्रण, भाव-व्यंजन और घटना-वैचित्र्य के लिये लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

यह अप-टु-डेट उपन्यास आपको सामाजिक और राजनीतिक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता तथा सहयोग प्रदान करेगा।

इसकी एक कापी रामायण की भाँति घर में रखना आवश्यक है। मूल्य प्रत्येक भाग सादी २), सजिल्द २॥)

श्रीवास्तवजी के समस्त उपन्यासों के एकमात्र

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला की पाँच नई पुस्तकें

[संपादक, सुधा-संपादक पं० दुलारेलाल भार्गव]

१. नवयुग-काव्य-विमर्श

(आलोचना)

आलोचना-साहित्य का अपूर्व ग्रंथ, हिंदी के वर्तमान रहस्यवादी कवियों के काव्य का विवेचनात्मक ग्रंथ। रचयिता, हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक, लेखक और संपादक पं० ज्योतिःप्रसाद मिश्र 'निर्मल', भूतपूर्व संपादक 'मनोरमा', 'भारत' आदि। मूल्य २।), सजिल्द ३)

२. विजय

(उपन्यास—दो भाग)

लेखक, श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। विदा-उपन्यास लिखकर श्रीवास्तवजी ने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अवर्णनीय है। जिसने उसे पढ़ा, वही मुग्ध हो गया। सभी के हृदय से वाह-वाह की आवाज़ निकली। यह नवीन उपन्यास बिलकुल अप-टु-डेट, शिक्षाप्रद, मौलिक और सामाजिक है। कथा-प्रसंग इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने से फिर बिना समाप्त किए जी नहीं मानता, और पढ़कर भी पुनः पढ़ने की लालसा बनी रहती है। मनोभावों की व्यंजना में लेखक कितना सफल हुआ है, यह पुस्तक पढ़ने पर ही ज्ञात होगा। मूल्य प्रत्येक भाग का २), सजिल्द २।); दोनो भाग ४), सजिल्द ५)

३. शिवाजी

(मौलिक, ऐतिहासिक नाटक)

इसके लेखक हैं हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक श्रीरावराजा डॉक्टर श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०, डी० लिट्० और रायबहादुर श्रीपं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०। यह एक ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें ३ अंक एवं २८ दृश्य हैं। कई भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर योग्य कलाकार ने अपनी नाटकीय कला का प्रदर्शन किया है। कथानक पूरा-का-पूरा महाराष्ट्र-इतिहास पर अवलंबित है। यह पुस्तक कवित्व से कमनीय, नाटकत्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है। इस नाटक को विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के स्टेज पर खेल सकते हैं। मूल्य १।), सजिल्द १॥)

४. निरंकुशता-निदर्शन

(आलोचना)

लेखक, हास्य-रसावतार श्रीपं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (लाहौर के अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति)। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'कालिदास की निरंकुशता'-शीर्षक जो निबंध 'सरस्वती' में लिखा था, उसका मुँहतोड़ जवाब लेखक ने मनसाराम के नाम से 'भारत-मित्र' में दिया था। यह उन्हीं दोनो लेखों का संग्रह है। यदि दो साहित्यिक महारथियों की पैंतरेबाज़ी देखनी हो, तो इसे अवश्य पढ़िए। सारांश यह कि पुस्तक पढ़ने से ज्ञानोपार्जन के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है। मूल्य ॥।), सजिल्द १।)

५. विचित्र जीव-जंतु

(बालकोपयोगी)

लेखक, श्रीकन्हैयालाल दीक्षित। इस पुस्तक में उन अजीब जानवरों का परिचय सचित्र और ऐसी मनोरंजक भाषा में दिया गया है कि बच्चे एक बार हाथ में लेने पर बिना खत्म किए न छोड़ेंगे। मूल्य ॥=), सजिल्द ॥)

मिलने का पता—गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ का नया प्रकाशन

१—चारु चित्रावली

[भारतीय चित्रकला का इतिहास-सहित]

भारतीय चित्रकला के जो उत्कृष्ट नमूने अब तक 'सुधा' में प्रकाशित होते रहे हैं, उन सभी चित्रों में से छाँटकर केवल सर्वोत्कृष्ट १६ चित्रों का—जो सभी आधुनिक और प्राचीन चित्रकारों द्वारा बनाए गए हैं—यह संग्रह प्रकाशित किया गया है।

चित्रों के साथ, प्रारंभ में, लखनऊ-विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध कलाविद् श्रीसुधींद्र वर्मा एम्० ए०, एल्-एल्० बी० का लिखा हुआ भारतीय चित्रकला का एक सुंदर और विद्वत्ता-पूर्ण इतिहास भी दिया गया है। अब तक हिंदी में तो क्या, भारत की किसी भी भाषा में भारत के आदिम युग से आज तक की चित्रकला का इतना सुंदर इतिहास नहीं प्रकाशित हुआ। मूल्य १॥), सजिल्द २)

२—आदर्श पत्नी [स्त्रियोपयोगी]

लेखक, श्रीरामनारायण 'यादवेंदु' बी० ए०, एल्-एल्० बी०। यह दांपत्य जीवन पर विद्वान् लेखक की नवीन रचना है। प्रस्तुत पुस्तक में इंदिरा ने अपनी अभिन्न-हृदया सहेली शांता को, पत्रों के रूप में, विवाहित जीवन सफल एवं सुखी बनाने के लिये बड़ी अमूल्य सीख दी है। इस पुस्तक में नारी-हृदय और पुरुष-हृदय की ऐसी रहस्यमयी बातें बतलाई गई हैं, जिनके समझे बिना दांपत्य विवाहित जीवन सुखी नहीं बन सकता। मूल्य १), सजिल्द १॥)

३—स्वास्थ्य-विज्ञान [स्वास्थ्योपयोगी]

लेखक, वैद्यराज श्रीअत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार। प्रस्तुत पुस्तक में स्वास्थ्य-संबंधी सभी बातों का विशद विवेचन किया गया है। जो ज्ञान आपको इस पुस्तक के पढ़ने पर होगा, वह बहुत-सी पुस्तकों के अवलोकन से न होगा। आयुर्वेदिक ग्रंथों के मंथन से यह पुस्तक तैयार की गई है, और इसकी उपादेयता आप पढ़कर ही जान सकेंगे। मूल्य १), सजिल्द १॥)

४—सिंहगढ़-विजय [ऐतिहासिक कहानियाँ]

लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री। प्रस्तुत पुस्तक की कहानियाँ एक-से-एक बढ़कर हैं, जिन्हें पढ़कर आपके हृदय में वीर-रस का अनुभव होगा, और अतीत भारत का एक अस्पष्ट, किंतु वेदना-विह्वल छाया-चित्र आपको कदाचित् कुछ आर्द्र करेगा। इन कहानियों में ऐतिहासिक सत्य कम है, फिर भी भावना और कल्पना से तत्कालीन ओज-पूर्ण जीवन की रेखाएँ खींची गई हैं। ये रेखाएँ आपके हृदय पर प्रतिबिंबित होकर उसके रक्त में एक जीवन और उमंग की लहर पैदा कर देंगी। मूल्य १), सजिल्द १॥)

५—धीरे-धीरे [राजनीतिक नाटक]

लेखक, श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०। इस नाटक में वर्माजी ने मौजूदा राजनीतिक हलचल का ख़ाका जितनी ख़ूबसूरती से खींचा है, उस पर आश्चर्य होता है। इस मीठी चुटकी से आपको एकबारगी आनंद की गुदगुदी का अनुभव होगा। क्या लिबरल, क्या ज़मींदार, क्या कांग्रेसी—गांधी ऑईट अथवा सोशलिस्ट और क्या कम्युनिस्ट—सभी इसे पढ़कर आनंदित हो उठेंगे। मूल्य सादी ॥), सजिल्द १)

६—भवभद [बालोपयोगी कविता-संग्रह]

संपादक, श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०। छोटे-छोटे बालकों के लिये सरल, मनोरंजक, विनोद-पूर्ण सचित्र कविताओं का यह अपूर्व संग्रह है।

चित्रों की भरमार इतनी है कि देखते ही बनता है। पुस्तक इतनी सरल और सरस भाषा में है कि समझने में ज़रा भी कठिनाई नहीं होती। मूल्य ॥=), सजिल्द ॥।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-सागर

(नया रीति-ग्रंथ)

लेखक, श्रीमन्महाराजाधिराज काशीश्वर ग्रहनिवार पंचम विंध्येलवंशावतंस श्रीमत्सवाई महाराजा साहब भारत-धर्मेंदु सर सावंतसिंहजू देव बहादुर के० सी० आई० ई० बिजावर-नरेश के राजकवि ब्रह्मभट्टवंशोद्भव कविभूषण, कविराज पं० बिहारीलालजी।

कविराजजी ने कई नरेशों के दरबारों में अपनी काव्य-प्रतिभा का चमत्कार दिखलाकर सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किया है। अनेक कवि-सम्मेलनों और कवि-समाजों ने पुरस्कार तथा पदक देकर आपका आदर किया है। लोग आपको कवि मानते हैं, कविता ही आपका धंधा है। कहने का मतलब यह कि दिन-रात, तीस दिन, बारहो महीने काव्य के ही रंग में रहा करते हैं। लगातार अनेक वर्षों तक इनकी योग्यता का प्रमाण प्राप्त करने के अनंतर काव्य-मर्मज्ञ श्रीमान् बिजावर-नरेश ने इन्हें, 'साहित्य-सागर'-नामक यह रीति-ग्रंथ लिखने की आज्ञा दी, और साधन जुटा दिए। लेखक ने तीन वर्ष के लगातार अथक परिश्रम से इस ग्रंथ को लिखा है। यह लगभग २,००० छंदों में पूर्ण और लगभग ३०० पृष्ठों का विशालकाय रीति-ग्रंथ है, जो अनेक तरंगों में पूर्ण है, जिनमें षट् प्रत्यय, मात्रिक और गण-छंद, नायिका-भेद, रस एवं अलंकार आदि काव्य के विविध अंगों के लक्षणों का विवेचन उदाहरणों-सहित किया गया है। कवि और कविता-प्रेमियों के काम की चीज़ है। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

रेलदूत

(राष्ट्रीयता से भरा काव्य)

लेखक, पींजरे कौ पंछी। प्रस्तुत पुस्तिका लेखक ने पटना-जेल में लिखी थी। रचना व्रजभाषा में की गई है। कालिदासजी ने मेघ को संबोधन कर अपना काव्य लिखा था, यह रेलगाड़ी को संबोधित कर लिखा गया है। बा० राजेंद्रप्रसादजी ने, इसे पटना-जेल में सुनकर, लिखा है—

"एक नवयुवक-हृदय के उद्गार इसमें देखने में आते हैं, और उस देश-प्रेम की झलक भी मिलती है, जो दूत भेजने का कारण हुआ है। पटना-कैंप-जेल रेलवे-लाइन के पास ही था, और…जी वहाँ बैठे-बैठे अपनी भावुकता को पदों में नियंत्रित कर रहे थे।"

काव्य-प्रेमियों को इस पुस्तिका को अवश्य पढ़ना चाहिए। १६ पृष्ठ की पुस्तिका का मूल्य केवल –)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगूर की बेटी

(नाटक)

लेखक, पं० गोविंदवल्लभजी पंत। पंतजी केवल उपन्यासकार और कहानीकार ही नहीं, वरन् कुशल और सफल नाट्यकार भी हैं। वरमाला और राजमुकुट लिखकर काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। राजमुकुट को जनता और शिक्षा-संस्थाओं ने इतना अपनाया कि दो वर्ष में ही पुस्तक के चार संस्करण हो गए। यह उनकी शुभ लेखनी का ज्वलंत प्रमाण है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की चमत्कार-पूर्ण लेखनी से लिखा हुआ रोचक और सामाजिक नाटक है। कई भिन्न प्रकार के चरित्र लेकर योग्य कलाकार ने अपनी नाटकीय सामाजिक कला का प्रदर्शन किया है। पात्रों के चित्रण, बोलचाल, गीत और परिणाम को पढ़कर, समझकर निःसंदेह आप यथार्थ नाटकीय रस का आनंद और स्वाद पाएँगे। सफलता-पूर्वक रंगमंच पर अभिनय भी किया जा सकता है। मूल्य ।।।=), सजिल्द १।=)

दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थ-स्थान

(भ्रमण)

लेखक, श्रीकेसरीमल अग्रवाल। भारत में तीर्थ-यात्रा की प्रथा बड़ी प्राचीन है। जब यहाँ रेल, मोटर आदि का आविष्कार नहीं हुआ था, तब लोग प्रायः पैदल यात्रा करते थे, या बैलगाड़ी आदि पर। यही सब तब प्रधान थे, पर इनमें समय और धन दोनो का व्यय अधिक था। कष्ट भी अनेक होते थे, फिर भी जनता इसकी लेश-मात्र भी चिंता नहीं करती थी।

यद्यपि रेल और मोटरों की सुविधा के कारण यात्रियों की संख्या तो बढ़ गई है, परंतु वे तीर्थ-यात्रा से पूरा लाभ नहीं उठा पाते। कारण है यात्रियों को तीर्थ-स्थानों का यथेष्ट ज्ञान न होना। यह पुस्तक इसी उद्देश की पूर्ति करती है। तीर्थ-संबंधी सभी ज्ञातव्य बातों का समावेश है। तीर्थ-यात्रियों के लिये पुस्तक पथ-प्रदर्शक का काम करेगी। एक रंगीन तथा ३६ सादे चित्रों से अलंकृत पुस्तक का मूल्य ।।।), सजिल्द १)

चंद्र-किरण

(काव्य)

लेखक, देव-पुरस्कार के द्वितीय विजेता, हिंदी के चिर-परिचित कवि प्रोफ़ेसर राजकुमार वर्मा एम्० ए०। चंद्र-किरण में कवि की चित्र-रेखा के बाद की स्फुट कविताओं का संग्रह है। इनमें भावना की जितनी स्वतंत्रता है, उतनी उनके अन्य गीतों में संभवतः न हो। उल्लास और करुणा इनमें अपनी चरम सीमा पर पहुँचने का उपक्रम कर रही हैं; क्योंकि वहाँ प्रयास और अध्ययन-शीलता की उपेक्षा है। वन-प्रांत के किसी एकांत स्थान में एक पक्षी जैसे चहक उठा है, यही कवि के हृदय की भावना है। मूल्य ।=), सजिल्द ।।।=)

मैनेजर गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चयन

१. लजीला प्यार

(चतुर्दशपदी)

प्राण-चितेरे ने पीड़ा के रँग से चित्र बनाया तेरा ;
उसको तुझे दिखाने को आकुल है यह पागल मन मेरा।
पर जिसने यह ढक रक्खा है, वह परदा कैसे उठ पाए !
उर को अपने ओठों में कैसे भर दूँ, यह कौन बताए !
कौन बताए, कैसे बाँधूँ रेखाओं से अपना जीवन !
कैसे पलकों से बिखरा दूँ युग-युग का संचित अपना धन !
कैसे मीठे-से विषाद ने मेरा छोटा-सा जी घेरा !
किस डाली पर चाह रहा है प्राण-परेवा आज बसेरा !
आज लालसा उर में ही जल भस्म कर रही है प्राणों को,
जिसकी ज्वाला नभ से टकरा राख बनाती अरमानों को।
किंतु लौह की दीवारों में बंदी है यह दुनिया मेरी ;
इसको कैसे देख सकोगी रानी ! भोली चितवन तेरी !
मेरा प्यार लजीला, रानी ! इसको तुम कैसे जानोगी !
अविकल पुतली के पीछे कैसी हलचल, क्या पहचानोगी !

भारतभूषण अग्रवाल

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. असमर्थता

(१)

पल-पल नहीं रूप ही केवल, अंग-अंग जब विकसित होते,
उन्नत होते कुछ तो प्रतिपल, प्रतिपल कुछ तो अवनत होते।
धीर और गंभीर हो रहे, अब तो पद द्रुत होते-होते;
बनी रही यह चाह अहर्निश, कुछ पल भी तो सम मत होते।
प्रतिदिन ही जब धोका होता, प्रति रजनी होती नादानी;
कैसे कहूँ, आप ही कहिए, वह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!

(२)

प्रथम भेंट में मंद पवन-सी सिकुड़-सिमिटकर चल पाती थी;
शत-शत बार बुलाहट देने पर रुकती-सी आ पाती थी।
घंटों रख कपाट पर कर को कभी झाँक जब फिर जाती थी;
हल्की-सी आहट होती थी, आँख तड़पकर रह जाती थी।
कभी हवा ही छू किवाड़ फिरती, पुकार उठता था—"रानी!"
इस नादानी पर भी कह दूँ, वह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!

(३)

पलक झपकते बीता वह युग, अब तो और दिवस-रातें थीं;
और नाज़-अंदाज़ और गति, कुटिल कटाक्ष और बातें थीं।
शैल-शिखर के पीछे घिर घन बरसाना पीयूष अधर में;
फूली-फली स्वर्ण-लतिका-सी आती थी कुछ बाहर घर में।
धक्के से किवाड़ खुलते जब, कहता झंझा की शैतानी;
फिर क्यों शर्म न होगी कहते, वह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!

(४)

मंद पवन या अंधड़-सी अब चाल कहाँ दौहृद-अवसर में?
अब न कोकिला गाती वन में, अब न हंसिनी तिरती सर में!
मैं था छिपा किसी के उर में, वक्ष, कक्ष या अंतस्तर में;
पीत पत्र-सी मुरझाई, अलसाई-सी फिरती थी घर में।
कभी तो न आहट होती थी, होती कभी धमक मनमानी;
तरसा ही करता कहने को, वह पग-ध्वनि मेरी पहचानी!

(महंत) धनराजपुरी (व्याकरण-वाचस्पति, साहित्यसरोज)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

३. साहित्य-विशारद

(प्रहसन)

[१]

कोई ८ बजे का समय था। सूर्य भगवान् का रथ आँखों से ओझल होने को था। संध्यादेवी मुस्किला रही थी। उसके अधरों की लाली प्राची दिशा में सर्वत्र फैल गई थी। झूमते-झूमते 'साहित्य-विशारद' जी* शशिशेखर की कुटिया पर पहुँच जाते हैं।

शशिशेखर—"आइए पंडितजी! कई दिनों बाद दर्शन दिए। कहिए, आपको 'शारदा' तो आ गई होगी?"

त्रिवेदीजी—(बैठते हुए) "नहीं भई, इस मास की 'शारदा' तो अभी नहीं मिली। हाँ, वह......आपके 'विशारद' का क्या हुआ?"

शशिशेखर—(मन्द-मन्द हँसते हुए) "और, '[illegible]' भी तो आता है न?"

त्रिवेदीजी—(सिर हिलाते हुए) "हाँ, वह तो बराबर आ रहा है। आपके 'विशारद' के क्या समाचार हैं?"

शशिशेखर ने कहा—"परीक्षा-फल कदाचित् इस मास के अंत तक आ जायगा। देखें, ईश्वर की कृपा हो जाय, तो!"

"वह तो अब ठीक हो जायगा!" त्रिवेदीजी ने हँसते हुए कहा—"हमने भी अब की साहित्य की परीक्षा दे ही दी, और सफल भी हो गए। हमारा तो सार्टिफिकेट भी आ गया।"

"अच्छा!" शशिशेखर ने हँसी रोकते हुए कहा—"आप कब गए थे परीक्षा के लिये? क्या आपने भी सम्मेलन की परीक्षा दी है?"

"नहीं, मैं प्रयाग-विद्यापीठ की परीक्षा में बैठा था।" त्रिवेदीजी सस्मित एवं गर्दन हिलाते हुए कहने लगे—"बड़ा कष्ट किया था, और परीक्षा को दशहरे पर गया था।"

शशिशेखर—"तब तो मिठाई खिलाइए अब।"

त्रिवेदीजी—"मिठाई की क्या कमी—फिर समझा जाइएगा।"

"इन बातों से नहीं चलेगा।" शशिशेखर ने हँसते हुए कहा—"मिठाई बिना अब की बार नहीं छूटोगे। जब भी—'साहित्य-वाचस्पति' के नाम—यों ही आपने बातों में टाल दिया। लेकिन त्रिवेदीजी, दशहरे की तो आपको केवल एक ही रोज की छुट्टी रहती है?"

"दो दिन की छुट्टी थी।" आपने बड़ा अकड़कर—"और दो दिन की और ले ली थी। साथ ही 'दस्तखत' भी तो मैंने लिखा लिया था न?"

"ओहो, यह बात है! कितने प्रश्न-पत्र थे?"

"दो पर्चे थे; क्योंकि केवल साहित्य की ही परीक्षा दी है।"

"तुम तो बड़े गुरु निकले यार!" शशिशेखर ने कहा—"हमें न तो आमंत्रण ही बताया, और न प्रश्न-पत्र ही। अब तक जिक्र भी तो न किया आपने।"

त्रिवेदीजी—"मैं दो-तीन बार आया था, पर आप मिले ही नहीं।" (फिर कुछ सोचते हुए) "मेरे एक मित्र आए थे—[illegible] से—मुझे [illegible] बैठे थे। प्रश्न-पत्र भी और [illegible] भी [illegible] समय में आए। उनका भी विचार है कभी परीक्षा देने का।"

---

* अभी हाल ही में 'प्रयाग-विद्यापीठ' द्वारा मिस्टर त्रिवेदीजी को 'साहित्य-विशारद' की उपाधि प्राप्त हुई है। उक्त उपाधि परिषद् के उपाधि-वितरणोत्सव पर दी गई है। आप आदर से मिस्टर त्रिवेदीजी कहते फिर रहे हैं कि मैंने 'विशारद' की परीक्षा दी है, और उसी के फलस्वरूप मुझे यह सार्टिफिकेट मिला है। त्रिवेदीजी ग्राम्य-स्कूल में अध्यापक हैं।—लेखक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ख़ैर, परीक्षा-फल आए कितने दिन हुए ?" शशिशेखर ने पूछा।

"कोई २०-२२ रोज़ हुए होंगे।"

"और प्रमाण-पत्र ?"

"४-५ दिन हो गए।" बत्तीसी दिखाते हुए तिवारीजी ने कहा।

शशिशेखर—(मन-ही-मन) बलिहारी है ! पंद्रह दिन में प्रमाण-पत्र आ गया, और दशहरे पर रविवार भी टपक पड़ा। (प्रकट) "कम-से-कम अपना सार्टिफ़िकेट तो दिखलाया होता। या उसे हवा नहीं लगने देना चाहते ?"

"वाहजी-वाह ! अभी चलिए।"

[दोनो तिवारी-आश्रम जाते हैं। तिवारीजी प्रमाण-पत्र या प्रतिष्ठा-पत्र ले आते हैं। प्रमाण-पत्र २२ ऑक्टोबर का है। (यह ध्यान रहे कि ६ ऑक्टोबर दशहरे को परीक्षा थी।) शशिशेखर की हँसी नहीं रुकती। वह हँस देता है। साथ ही बात बनाने के लिये कहता है—"बधाई है, हमें बहुत ख़ुशी हुई !" तिवारीजी अभिमान से "धन्यवाद" कहकर अभिवादन करते हैं।]

शशिशेखर—"आपके केंद्र से कितने परीक्षार्थी बैठे थे पंडितजी ?"

"नौ या दस थे।" पंडितजी ने सोचते हुए कहा।

"कितने उत्तीर्ण हुए उनमें से ?"

"छ या सात हो गए हैं।"

शशिशेखर—"मैंने सुना है, 'चाँद' में कोई लेख छपा है आपका ?"

तिवारीजी—(सोचते हुए) "नहीं, 'चाँद' में तो नहीं, पर एक लेख 'कल्याण' को भेजा था मैंने।"

शशिशेखर—"प्रकाशित हो गया होगा ?"

तिवारीजी—"उनका पत्र आया है कि आपका लेख बहुत देर से मिला।"

शशिशेखर—"क्या शीर्षक है उस लेख का ?"

तिवारीजी—"यही 'भक्ति'-विषय पर।"

"ठीक। अब आज्ञा हो पंडितजी !"

"क्यों, चलोगे, अच्छा।"

"नमस्ते।"

"नमस्ते।"

[शशिशेखर का हँसते हुए प्रस्थान।]

[२]

मकर-संक्रांति के बाद दूसरा दिवस निकल आया था। महाराष्ट्र-स्त्रियाँ कुंकुमा लिए एक घर से दूसरे घर जा रही थीं। सूर्यनारायण अस्त हो चुके थे। निशा-सुंदरी इठलाती चली आ रही थी—काली साड़ी पहने, कुंकुमा लिए, मानो सज-धजकर, तारिकाओं को संग ले संक्रांति का पर्व मना रही हो। पक्षीगण भी, इस अवसर पर, बालक-बालिकाओं की भाँति शोर मचा रहे थे—उल्लसित थे। ऐसे सुहावने समय मित्र कपीशदत्त शशिशेखर के पास तिल लेकर पहुँचे। दीपकों का हँसना, निशा का अकड़ना, तारिकाओं का इठलाना और पक्षियों का चहकना इनके हृदयों में चुलबुली पैदा करने लगा। इन्हें भी चुहल सूझी। बस, दोनो तिल लेकर 'साहित्य-विशारद'जी के यहाँ जा धमके—मिठाई उड़ाने। नमस्कार-चमत्कार हुआ। कुछ गप-शप भी हुई। इतने में आ गए मि० राव। उर्दू पर चर्चा छिड़ गई। मिस्टर राव ने कहा—"हमारे पंडितजी इन दिनों उर्दू को ख़ूब चाट रहे हैं।" उसी समय शशिशेखर ने कहा—"अजी, उन्हें समय ही न था, वरना उर्दू को अब तक तो संपूर्ण निगल गए होते। बेचारे क्या-क्या करेंगे ! इधर स्कूल का काम, उस पर 'ट्यूशन्स' और बचा-खुचा समय 'साहित्य-विशारद' के अध्ययन में लग जाता था। अरे भाई कपीश ! हमें इनसे मिठाई लेनी है न। तुम्हें नहीं मालूम ? अरे वाह ! ......में रहते क्यों हो तुम ? श्रीमान् तिवारीजी 'साहित्य-विशारद' हो गए हैं—'साहित्य-विशारद' !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"अच्छा ! बधाई है फिर तो भई ! हमें तो पता ही नहीं अब तक ! चलो, बड़ी ख़ुशी की बात है। हमें अभिमान होता है आप पर कि हमारे नज़दीक भी एक 'साहित्य-विशारद' है।" एक ही साँस में कर्णीसहाय ने कह दिया।

उस समय मि० तिवारी को देखते ही बनता था—फूलकर कुप्पा हुए जा रहे थे। गर्व से कहने लगे—"हाँ भई, अभी गया था मैं परीक्षा को। सोलह सेर लिया था। बड़ा अध्ययन करना पड़ा।"

मि० राय—"और, कोई सुंदर लेख भी तो आपका 'माधुरी' में छपा है ! और, उसी कारण उपाधि भी मिली है।"

तिवारीजी के वृद्ध पिताजी—जो वहीं खाट पर बैठे थे—"हाँ-हाँ, ठीक कहते हो। प्रथम लेख लिखना पड़ता है, तब कहीं परीक्षा में बैठ सको। यह उनका नियम है।"

"किन-किन विषयों में परीक्षा देनी पड़ी पंडितजी ?" कर्णीसहाय ने मिस्टर तिवारी से प्रश्न किया।

तिवारीजी—"मैंने केवल साहित्य-विषय ही लिया था। वो काफ़ी थे।"

शशिशेखर—"कुल कितनी पुस्तकें कोर्स में निश्चित थीं पंडितजी ?"

तिवारीजी—"हो तो बहुत थे। [illegible] कितनी पुस्तकें हो सकती हैं भला !"

"आख़िर ?"

"... [illegible] ..."

[illegible]

शशिशेखर—[illegible]

तिवारीजी—[illegible]

[illegible]

शशिशेखर—"क्यों नहीं। आपका तो गहराई तक पैठना हुआ होगा !"

कर्णीसहाय—"कोर्स में अधिक पुस्तकें रहने से अध्ययन-वध्ययन कुछ नहीं होता। सरसरी तौर पर पढ़ लिया जाता है। तभी न ये लोग कच्चे रह जाते हैं !"

"हाँ-हाँ, ठीक तो है।" तिवारीजी ने अकड़ते हुए कहा।

शशिशेखर—"पद्य में आपको प्राचीन कवियों का अध्ययन करना पड़ा या नवीन ?"

तिवारीजी—"प्राचीन। एक विराट् संग्रह था।"

शशिशेखर—"और आधुनिक कवियों की कोई रचना नहीं ?"

तिवारीजी—"नहीं...... हाँ, एक पुस्तक थी न।"

शशिशेखर—(मन-ही-मन हँसते हुए) "कौन कवि की ? अनेक कवियों की चुनी हुई कविताओं का संग्रह होगा शायद।"

तिवारीजी—"नहीं-नहीं, एक ही कवि की कविताओं का संग्रह था।"

शशिशेखर—"क्या हरिऔधजी की ?"

"नहीं जी !"

"महाकवि गुप्तजी ?"

"न-न ! (सोचते हुए) वह...... [illegible] ...... हाँ...... [illegible] !"

"[illegible] !" शशिशेखर ने आश्चर्य प्रकट किया। "[illegible]"

तिवारीजी—[illegible]

शशिशेखर—[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

["नहीं जी, यह तो सी० पी० के हैं, और एक अच्छे कवि हैं।" कहते हुए तिवारीजी भीतर जाते हैं। यहाँ शशिशेखर और कपीशदत्त ठहाका मारकर हँसते हैं। मि० राव हँसते हुए प्रस्थान करते हैं। थोड़ी देर में तिवारीजी लौट पड़ते हैं, और ये दोनो ख़ामोश हो जाते हैं—गंभीर मुद्रा बना लेते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे बगुला मछली को निगलते समय।]

शशिशेखर—"हाँ तो, पंडितजी! एक-आध कविता भी तो सुनाओ उनको, जिससे कुछ स्मरण हो आए। कदाचित् कहीं पढ़ने में आ गई हो।"

तिवारीजी—(सोचते हुए) "देखिए...... नल-दमयंती पर लिखा है उन्होंने।...और...... और देखिए......इस पर..... कँवल...कँवल... कमल पर भी तो लिखा है न।" हाव-भाव-सहित सिर हिलाते हुए 'साहित्य-विशारद'जी ने कहा।

[शशिशेखर और कपीशदत्त पुनः हँस देते हैं।]

कपीशदत्त—"कुछ सुनाओ पंडितजी! हमें भी तो रसास्वादन कराओ न।"

तिवारीजी—"इस समय तो स्मरण नहीं हो रहा है भई!"

कपीशदत्त—"पुस्तक होगी न?"

तिवारीजी—"नहीं जी, एक मित्र आए थे। वह सारी पुस्तकें, प्रश्न-पत्र आदि सभी कुछ ले गए।"

शशिशेखर—"ठीक है। गद्य में कितनी पुस्तकें पाठ्य-क्रम में थीं भला?"

तिवारीजी—"दो।"

शशिशेखर—"कोई कहानी-संग्रह भी होगा?"

कपीशदत्त—"कहानी-संग्रह किसलिये? बच्चों के लिये कहानियाँ होती हैं। तुम भी बस 'ढ' ही रहे! 'साहित्य-विशारद' के लिये भी कहीं कहानियाँ रक्खी गई हैं?"

"हाँ-हाँ, कहानियों की कोई आवश्यकता नहीं।" तिवारीजी ने मुस्किराते हुए फ़र्माया।

"नाटक भी था कोई तिवारीजी?" शशिशेखर ने भोलेपन से पूछा।

"हाँ, एक नाटक था न।"

"कौन-सा?"

"हर्ष का......राजा हर्ष का वर्णन है जी।"

"लेखक कौन हैं उसके?" शशिशेखर ने फिर प्रश्न किया।

तिवारीजी—(गर्व से) "एक कान्यकुब्ज हैं।"

शशिशेखर—(हँसी रोकते हुए) "वह कान्यकुब्ज हों, चाहे गौड़ या हरिजन! 'कौन से' मेरा तात्पर्य उनके नाम से है, जाति से नहीं।"

तिवारीजी—(सोचते हुए) "...अयोध्या... अयोध्याप्रसादजी।"

शशिशेखर—(मन-ही-मन) आज बहुत-सी बातें मालूम हुईं। भारतीयलाल सी० पी० के रहनेवाले एक प्रसिद्ध कवि हैं, और एक कान्यकुब्ज अयोध्याप्रसाद नाटककार हैं, जिन्होंने राजा हर्ष का नाटक लिखा है। (प्रकट) "और, आलोचना का भी कोई ग्रंथ था?"

तिवारीजी—"एक था तो।"

"क्या 'गोस्वामी तुलसीदास'?"

"इस समय तो याद नहीं।" तिवारीजी ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"ख़ैर, साहित्य का इतिहास भी तो होगा ही?"

"हाँ तो।"

"इतिहास के लिये कौन-सी पुस्तक नियत थी पंडितजी?"

"तुम कैसा प्रश्न करते हो शशि!" कपीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मुस्किराते हुए कहा—"इतिहास के लिये कोई पुस्तक नियत नहीं रहती। किसी भी पुस्तक से अध्ययन किया जा सकता है।"

"ऐसा ही तो है।" तिवारीजी ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा।

शशिशेखर—"फिर भी विद्यालय की ओर से अध्ययन के लिये किसी पुस्तक-विशेष का उल्लेख तो होना ही चाहिए न ?"

तिवारीजी—"एक छोटी-सी पुस्तक थी—'संक्षिप्त इतिहास'।"

शशिशेखर—"अरे, इन बातों में तो हम मुख्य बात भूल ही गए! तो अब मिठाई कब खिलाते हो, यह कहिए।"

कपीशदत्त—"बस, इसी रविवार को कर दीजिए न पंडितजी! पर हमें ख़ाली मिठाई नहीं चाहिए भई! एक अच्छी-सी 'पार्टी' हो जाय, जिसमें 'साहित्य'-विषय पर आपका एक छोटा-सा व्याख्यान भी हो।"

"और जिससे हमारे 'राष्ट्र-भाषा-प्रचार-परीक्षाओं' के विद्यार्थी भी उत्साहित हों।" शशिशेखर ने गंभीरता से कहा—"क्यों ठीक है न कपीशजी ?"

कपीशदत्त—"ठीक, बावन तोले, पाव रत्ती ठीक है।"

तिवारीजी—(सकुचाते हुए) "भाषण-वाषण में क्या रक्खा है! ये कविजी हैं ही; कविता कह दें, बस।"

शशिशेखर—"अच्छी बात है। मैं कविता लिखने का अवश्य प्रयत्न करूँगा। परंतु तुम्हें भी कुछ कहना ज़रूर होगा।"

तिवारीजी—"ऐसा, अच्छा भई।"

[शशिशेखर और कपीशदत्त जाने के लिये उठते हैं।]

कपीशदत्त—"हाँ तो, इस रविवार को है न फिर निश्चित ?"

तिवारीजी—"अभी नहीं—अभी नहीं। वसंत पर होगी उसकी व्यवस्था।"

कपीशदत्त—"देखो भई, जैसी आपकी इच्छा।"

शशिशेखर और कपीशदत्त—"अच्छा, नमस्ते।"

"नमस्ते।"

[कपीशदत्त और शशिशेखर का हँसते हुए प्रस्थान।]

[रास्ते में]

कपीशदत्त—"आखिर मिठाई तो मिलेगी या नहीं ?"

"यह तुम जानो।" शशिशेखर ने कहा—"लेकिन ऐसों से मिठाई अवश्य खानी चाहिए।"

कपीशदत्त—"कोर्स में पुस्तकें तो पाँच ही थीं और नाम गिना दिए सात के।"

शशिशेखर—"यही तो विशेषता है! पाँच पुस्तकों के पाँच नाम कोई कह देगा। फिर 'साहित्य-विशारद' और साधारण व्यक्ति में अंतर ही क्या रह गया!" (दोनों हँसते हैं) "कलदारम् की सहायता से और मित्र श्री......की सिफ़ारिश से 'साहित्य-मनीषी' की पदवी प्राप्त की थी जब; और कहते हैं अब तक यही कि रामायण पर मैंने एक बहुत ही सुंदर लेख लिखा था। प्रकाशित वह 'संस्कृतम्' में हुआ है। उस सुंदर लेख के उपलक्ष्य में—आप फ़र्माते हैं—यह उपाधि (साहित्य-मनीषी) मुझे मिली थी। क्यों, कैसी बेपर की उड़ाई है!"

कपीशदत्त—"लेख लिखा गया हिंदी में कहते हैं, और छपा 'संस्कृतम्' में! 'संस्कृतम्' का कोई अंक भी उन्होंने देखा है, इसमें भी संदेह है।"

शशिशेखर—"और मज़ा यह कि एक दिन उनके पिताजी से मैंने इसकी चर्चा चलाई थी। बस फिर उन्होंने कहा था—'वह लेख तो हमने लिखवाया था। हम कहते गए, और वह लिखते रहे। लेख लिखने को क्या दिमाग चाहिए।'" —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पुनः दोनो का हँसना ।)

कपीशदत्त—"मन में क्या कहता होगा बेचारा ?"

शशिशेखर—"यही न कि हम निंदा करना चाहते हैं ! पर हमारा उद्देश्य तो यह नहीं । हम तो यही चाहते हैं कि इस प्रकार झूठा अभिमान न हो—अध्ययन करें, और उसके योग्य बनें । अपने आपको धोखा देने से कौन लाभ हो सकता है ।"

कपीशदत्त—"वाह ! सारे शहर में ढिंढोरा पीट दिया गया । लोग वही समझेंगे, जैसा वे चाहते हैं। कीर्ति होगी । लाभ कैसे नहीं !"

शशिशेखर—"ठीक तो है ।"

[दोनो हँसते हैं ।]*

चाँदमल अग्रवाल 'चंद्र'
(विशारद, काव्यमनीषी)

* यह एक सच्ची घटना है । केवल पात्रों के नाम बदल दिए गए हैं । संभाषण ज्यों-का-त्यों अंकित करने का प्रयत्न किया गया है ।—लेखक

× × ×

४. गीत

भावना का मैं भिखारी ।
त्याग चंचलता सदा की ; मौन बन; अति विनत होकर ,
युग दृगों के अश्रु-कण में कुछ करुण संदेश लेकर
आज वह सम्मुख खड़ी थी आफ़तों की हाय मारी !
मौन ही उर थामकर मैं भी खड़ा हत-चेत-सा था ;
मूक थी जिह्वा, हृदय में हो रहा संकेत-सा था ।
एक ही उर, हाय रे ! क्यों हो गए दो देह-धारी !
शिथिल थे अवयव हमारे , बंद थे युग नयन-तारे ;
वेदना आकर खड़ी थी हृदय के मेरे सहारे ।
कह रही थी विगत की उससे कथाएँ आज सारी ।
कुछ न देखा और भाला , दूर कर सारा कसाला ,
विश्व के उस पार मैं था जा खड़ा करके उजाला ।
प्रणय-मंदिर का न बनता आज कैसे मैं पुजारी ?
भावना का मैं भिखारी ।

लालधर त्रिपाठी (साहित्यरत्न)

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

५. बंदी की भावनाएँ—

(एक)

आज मेरी पीर रोती।
रोकना बहु बार मचली,
धड़कनों में प्यार मिचली,
पर न साथी आज रुकते, जिनसे मन सजल मोती।
आज मेरी पीर रोती।
कुहुर श्वान पुकार मेरी,
सिसकती मनुहार मेरी,
अपरिचित-सी बाल-कोंपल— माँ का आँचल भिगोती।
आज मेरी पीर रोती।
तरल पलकों से ढुलकती,
हृदय की छलछल उछलती,
सरककर गीले दृगों से क्यों जननि स्वप्न खोती ?
आज मेरी पीर रोती।
मात, तुम भी रो रही हो,
दीन आँचल धो रही हो,
बिखरकर सब बाल उलझे, कौन कसकन तुम चुभोती।
आज मेरी पीर रोती।
हथकड़ी पर अश्रु गिरते,
मूक सिहरन में उलझते,
विकल पीड़न, साध कुचली, नींद के उच्छ्वास बोती।
आज मेरी पीर रोती।
मा ! न रोओ हिचकियाँ भर,
मत बहाओ नयन-निर्झर,
धमनियों में रक्त खौला, जग गई अब क्रांति सोती।
आज मेरी पीर रोती।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दो)

आज नभ में क्रांति बोली ।
उमड़ते प्रतिकार पिछले,
जल उठे अरमान कुचले,
आज प्राणों में प्रलय की धधकती अतिक्रांत होली ।
आज नभ में क्रांति बोली ।
हम सदा ही अश्रु पीते,
बेड़ियों में साल बीते,
हम ग़रीबों की सदा इस क्रूर जग में रिक्त झोली ।
आज नभ में क्रांति बोली ।
जालिमों के ज़ुल्म सहकर,
चिर क्षुधा की आह भर कर,
आज नर-कंकाल की देखो, उमड़ती मत्त टोली !
आज नभ में क्रांति बोली ।
बाँध सर पर कफ़न ओछे,
कुछ गिरे-से, कुछ फटे -से,
चल पड़े नव क्रांतिकारी, भाल पर दे रक्त-रोली ।
आज, नभ में क्रांति बोली ।
"कौन रोकेगा तुझे फिर ?
कौन बाँधेगा तुझे फिर ?
जब शहीदों की गरजती बढ़ चुकी उन्मत्त टोली ।
आज नभ में क्रांति बोली ।
उठ अभागे, बन न बंदी,
फूँक दे विद्रोह - वंशी,
तोड़ दे जंजीर उलझी, ख़ून की मच जाय होली ।"
आज नभ में क्रांति बोली ।

चिरंजीलाल 'एकाकी'

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. उपेक्षा !

नाविक ! मेरे हृदय-सिंधु में उमड़ रही हैं लहरें ;
तू ले जाता कूल-निकट है, मैं जाता हूँ गहरे !
पथ में अगणित भँवर पड़े हैं, आँधी है, तूफ़ान ;
और निराशा की रजनी है, काली ! कहना मान ।
बहने दे जीवन-नौका को, अब मत लगा सहारा ;
इस जगती में आश्रय है जीवन सलिल, हमारा ।

सूर्यनारायण व्यास

× × ×

७. तुम्हें मेरे प्रेम का ध्यान क्यों नहीं ?

ओह प्रिय ! तुम्हें मेरे प्रेम का ध्यान क्यों नहीं ?

माघ की इस अँधेरी रात में आज पानी भी मूसलधार बरस रहा है, और हिम-सी हवा के झोंके तुम्हारे शरीर को झकझोर रहे हैं। शीत के मारे तुम थर-थर काँप रहे हो। पथरीली पगडंडियों पर तुम्हारे लड़खड़ाते हुए पैर आगे बढ़ रहे हैं, और उनमें बहुतेरे पत्थरों के नुकीले कोने चुभ-चुभ जाते हैं। ऐसे कुसमय में मैं तुम्हारे साथ-साथ चल रहा हूँ। फिर भी ओह प्रिय ! तुम्हें मेरे प्रेम का ध्यान क्यों नहीं ?

वहाँ पहुँचने पर तुम्हें पड़ोसियों द्वारा उपेक्षा और तिरस्कार की पूरी आशंका है, क्योंकि उनके लिये कोई भेंट ले जाना तो दूर, तुम अपने निर्वाह की पूँजी भी [illegible] कर लौट रहे हो। इसीलिये वे सब तुम्हारे [illegible] समझेंगे। ऐसी विषम परिस्थिति में मैं तुम्हारा साथ देने के लिये चल रहा हूँ। फिर भी ओ प्रिय ! तुम्हें मेरे प्रेम का ध्यान क्यों नहीं ?

प्रेम की राह में, भाई ! तुमने [illegible] बीहड़ किया है। बस, ज़रा-सी मुसीबत [illegible] आपत्ति पर तुम इतने अधीर हो गये। प्रेम की [illegible] ... प्रेम का ध्यान नहीं।

फिर भी कोई चिन्ता नहीं। [illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जो गृहस्थी तुमने प्रेम की हाट में बेंच दी थी, उसे ज्यों-का-त्यों अपने घर के भीतर सँभाल लो। वह देखो, जिस महाजन के हाथों तुमने उसे बेचा था, वह तुम्हारे द्वार पर खड़ा उसकी रखवाली कर रहा है, और तुम्हारे दरवाज़े के सामने तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारी समृद्धि पर तुम्हें बधाई देने के लिये इकट्ठे हो रहे हैं।

देखना प्रिय ! इस धूमधाम में पड़कर तुम मेरे प्रेम का ध्यान फिर न भूल जाना !

रामप्रसाद विद्यार्थी

पेशाब के भयंकर दर्दों के लिये

एक नई और आश्चर्यजनक ईजाद ! याने—

सूज़ाक (गनोरिया) की हुक्मी दवा

डॉ० जसानी का जगत्-विख्यात **'गोनोकिलर'** रजिस्टर्ड

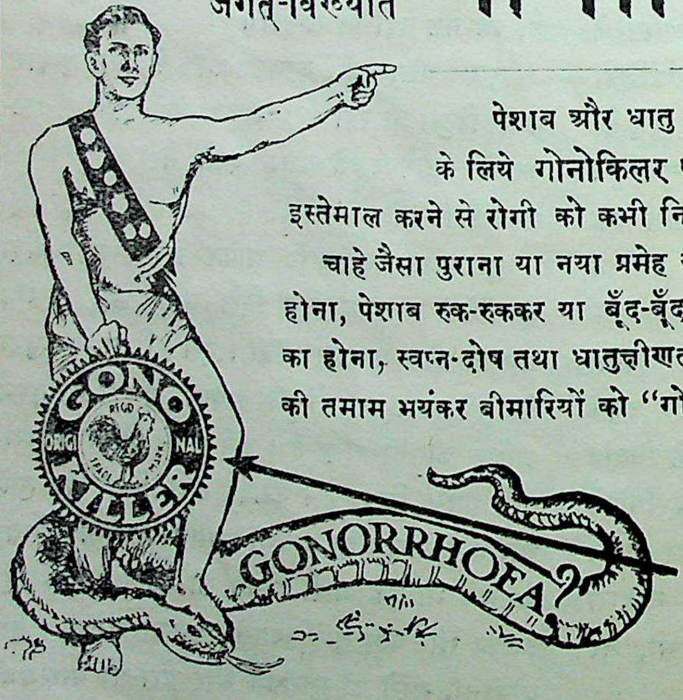

पेशाब और धातु के दर्दों को मार हटाने व निर्मूल करने के लिये गोनोकिलर एक ऐसी ही आश्चर्यजनक दवा है, जिसका इस्तेमाल करने से रोगी को कभी निराश होना ही नहीं पड़ता।

चाहे जैसा पुराना या नया प्रमेह या सूज़ाक, पेशाब में मवाद आना, जलन होना, पेशाब रुक-रुककर या बूँद-बूँद आना, मूत्राशय के अंदर घाव या सूजन का होना, स्वप्न-दोष तथा धातुक्षीणता और औरतों तथा मर्दों की इस क़िस्म की तमाम भयंकर बीमारियों को "गोनोकिलर" जड़ से नष्ट कर देता है।

नक़ली से सावधान !
ख़रीदने से पहले
दवा का नाम गोनोकिलर
और मुर्ग़ा छाप सीलबंद
पैकेट देख लीजिए

मूल्य ५० गोलियों की शीशी का ३) रु०, वी० पी० डाक-व्यय आठ आना अलग।

एकमात्र बनानेवाले—डॉ० डी० एन्० जसानी S.L. गिरगाँव, बैंक रोड, बंबई नं० ४

लखनऊ स्टाकिस्ट—किंग मेडिकल हाल, अमीनाबाद-पार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

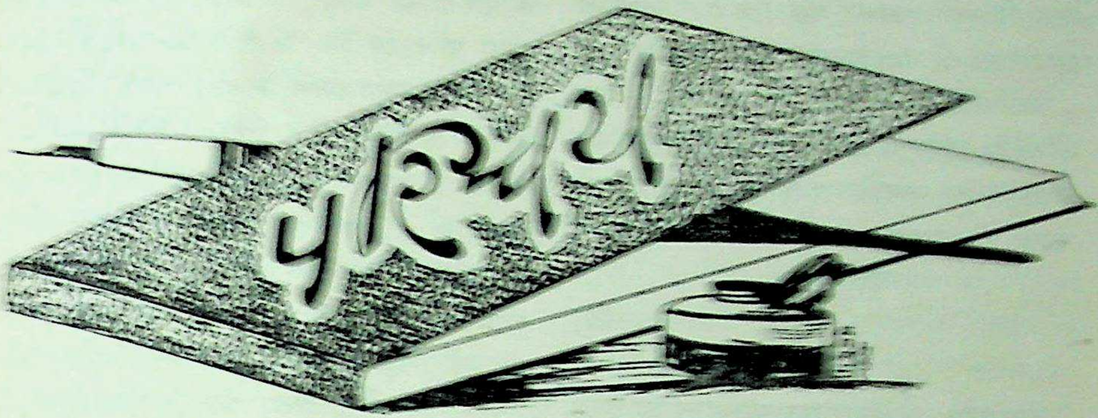

[illegible]

हम यह मानते हैं कि प्रत्येक कलाकार का उद्देश्य सामाजिक उन्नति होना चाहिए, परन्तु साथ ही यह भी आवश्यक है कि इस उद्देश्य की पूर्ति इस विधि से की जाय कि पाठकों को यह प्रतीत न हो कि कलाकार एक प्रोपेगैंडिस्ट है, जो

[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। भाषा भी मुहावरेदार, परिमार्जित, सरल तथा सरस है।

यद्यपि कला की दृष्टि से इस उपन्यास में कुछ त्रुटियाँ हैं, परंतु वह लेखक के मद्य-निषेध के उच्च आदर्श के आगे तुच्छ हैं। और, इस उच्च आदर्श को समाज के सामने उपन्यास-रूप में धरने के लिये हम 'उग्र'जी के कृतज्ञ हैं।

जैमिनि

× × ×

विनीता (जगदीश-उपन्यास-माला का प्रथम पुष्प)—लेखक, श्रीजगदीशशरण मिश्र ; प्रकाशक, जगदीश-उपन्यास-माला गड़रियामुहाल, कानपुर ; मूल्य ।।।)

नवीन उपन्यास-लेखकों में श्रीयुत जगदीशशरण-जी भी एक स्थान रखते हैं। अभी तक आप कहानियाँ तथा धारावाहिक उपन्यास लिखते थे। अब आपने स्वयं अपनी कृतियों का प्रकाशन प्रारंभ किया है। प्रस्तुत उपन्यास इस प्रकाशन का प्रथम पुष्प है। उपन्यास बड़ा ही रोचक है। छोटा-सा ही, लेकिन आदि से अंत तक घटना-पूर्ण होने के कारण काफ़ी मनोरंजक है। सामाजिक होने के कारण उसका विषय भी आकर्षक है। संग्रह करने योग्य है।

× × ×

मंदाकिनी—लेखक और प्रकाशक, उपर्युक्त ; मूल्य १)

यह भी मिश्रजी की ही कृति है। 'विधवा' उपन्यास-जगत् के प्रेम-प्रवाह को पी जानेवाली नाली-सी बनती जा रही है। भारतीय विधवा का जो सात्त्विक रूप अभी तक हमारे साहित्य में था, वह आधुनिक वातावरण में दिन-दिन बदलता जा रहा है। जहाँ श्वेत वस्त्रधारिणी अमंगल-वेश विधवा उदार सामाजिक विचार-धारा में पड़कर अब सुंदर वेश तथा मनोहर आलाप की अधिकारिणी बनी है, वहाँ, साथ-ही-साथ, उसके तपोमय जीवन ने वासना की चादर भी ओढ़ी है, और उसकी पवित्र आँखें अब प्रेम के तीखे तीर छोड़ने लगी हैं। हमारे उपन्यासकारों ने इस प्रवृत्ति को दुगुनी करने में काफ़ी सहयोग दिया है। ऐसी दशा में समाज के सामने 'विधवा'-विवाह का प्रचार ही इस रोग का एकमात्र उपाय रह जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम-प्रयास का तो ख़ूब विकास हुआ है; किंतु अंत में भाँवर की रस्म नहीं अदा की गई, यही अफ़सोस है। अच्छा होता, यदि विवाह करा दिया जाता, और वैवाहिक जीवन के भी कुछ दृश्य दिखाकर विधवाओं का पथ-प्रदर्शन किया जाता। उपन्यास तो बज़ात-ख़ुद मनोरंजक है, लेकिन छपाई और अशुद्धियाँ मज़ा किरकिरा कर देती हैं। मूल्य भी ज़्यादा है।

× × ×

ग्राम-सुधार-प्रवेशिका—लेखक, श्रीयुत ई० बी० एस्० मनीअम ; अनुवादक, श्रीयुत रामचंद्रजी श्रीवास्तव 'चंद्र' ; प्रकाशक, पैट ऐंड को०, पब्लिशर्स ऐंड बुकसेलर्स, आगरा ; मूल्य ।)

ग्राम-सुधार आजकल सरकारों का लाड़ला बेटा है। जो गाँव कभी बैलगाड़ियों और साँझ को चरकर आनेवाले ढोरों की पद-धूलि से धूसरित तथा गायों के गलघंट की मधुर ध्वनियों से मुखरित रहा करते थे, आजकल सरकारी अधिकारियों के मोटर की धूलि से पवित्र तथा भोंपुओं के आलाप से प्रतिध्वनित हो रहे हैं। हर दूसरे दिन आर० डी० ए० के सेक्रेटरी का दौरा गाँव में होता है, आर्गनाइज़रों, इंस्पेक्टरों और सुपरिंटेंडेंटों की भी भरमार दिखाई देती है। इतनी दौड़-धूप और रुपए की मार के बाद भी आज गाँवों में सुधार की कोई सूरत नज़र नहीं आती। सरकारी रिपोर्टें के आँकड़े काग़ज़ी करतब-मात्र हैं। वास्तव में गाँववाले जहाँ थे, वहीं हैं। ऐसी दशा में गाँव की आर्थिक समृद्धि की ओर ही सरकार को ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देकर उनकी सहानुभूति प्राप्त करनी चाहिए। इसके सिवा कोई अन्य मार्ग है ही नहीं।

प्रस्तुत पुस्तक इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर लिखी गई है। गाँववालों की रोटी का सवाल हल करने के लिये लेखक ने बहुत-से उपायों और उद्योग-धंधों का ज़िक्र इस किताब में किया है। इसलिये यह एक विचार करने योग्य पुस्तक हो गई है। इस विषय पर प्रकाशित अन्य पुस्तकों से इसमें यही एक विशेषता है। अनुवाद बहुत अच्छा और बामुहावरा है।

× × ×

देहात-सुधार-ग्रंथमाला की पहली पोथी—लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री; मूल्य ≡)

प्रस्तुत पुस्तक भारत के प्रसिद्ध वैद्य, आचार्य श्रीचतुरसेनजी शास्त्री ने गाँव के बच्चों की शिक्षा के लिये वैयक्तिक तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य-विषय पर लिखी है। लेखक अपने विषय के प्रकांड विद्वान् हैं ही, और फिर उनकी लेखन-शैली भी आदर्श है। अतएव यह छोटी-सी पुस्तक अपने उद्देश्य के लिये नितांत उपयुक्त हुई है। उपर्युक्त दोनो पुस्तकें ग्राम-सुधार-कार्यालयों के संग्रह योग्य हैं।

× × ×

विज्ञान-प्रवेशिका (पहला भाग)—लेखक, श्रीयज्ञदत्त विद्यालंकार; प्रकाशक, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी; मूल्य १)

बच्चों को हिंदी में विज्ञान की शिक्षा देने का दुरूह कार्य आज से तीस वर्ष पहले से गुरुकुलों में हो रहा है। प्रांतीय शिक्षा-विभागों ने उसकी उपयोगिता को तो अब समझ पाया है। प्रस्तुत पुस्तक गुरुकुल की पाठ-विधि के अनुसार छठी कक्षा के लिये लिखी गई है। बड़ी ही सरल तथा विशद भाषा में विज्ञान के सिद्धांत इसमें सिखाए गए हैं। १२० चित्रों से सभी बातें समझ में आ जाती हैं। ऐसी पुस्तकें और जितनी लिखी जायँ, थोड़ी हैं। हरएक मा-बाप को इस पुस्तक का संग्रह करके बच्चों को पढ़ाना चाहिए।

सुधींद्र वर्मा
(एम० ए०, एल-एल० बी०)

वीरज्योति

लेखक, साहित्याचार्य श्रीपं० लोकनाथजी द्विवेदी सिलाकारी साहित्यरत्न। प्रस्तुत पुस्तक एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महेवा (बुंदेलखंड) के राजा 'वीर-शिरोमणि' महाराज चंपतराय और उनकी वीरात्मा रानी सारंधा का चरित्र चित्रण किया गया है। कथा-प्रसंग से इसमें अन्य बुंदेला-सामंतों तथा अनेक मुग़ल-सरदारों के भी चरित्र चित्रित किए गए हैं। कई एक बुंदेला स्त्रियों ने भी इस नाटक में भाग लिया है। मुग़लों की ओर से केवल जहानारा (शाहजहाँ की लड़की) रंगमंच पर आती है। इस नाटक में इतिहास की बहुत कुछ रक्षा की गई है, और कल्पना से केवल आवश्यक काम लिया गया है। पुस्तक की रचना सामयिक है, क्योंकि आज कल हिंदू लोग अपने प्राचीन गौरवों और पूर्वजों की सुकृतियों से प्रभावित हो रहे हैं। बुंदेलखंड-वासियों के लिये तो यह नाटक एक प्रकार का पुराण है। मूल्य सादी १), सजिल्द १।)

मिलने पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसुम

इस स्तंभ में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में निम्न-लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

(१) 'रेली मेला - प्रदीपिका' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीराम वाजपेयी ; मूल्य १)

(२) 'काव्य-कला तथा अन्य निबंध' (साहित्य)—लेखक, श्रीजयशंकरप्रसाद ; मूल्य १॥)

(३) 'प्रवासी के गीत' (कविता)—लेखक, श्रीनरेंद्र ; मूल्य १॥)

(४) 'अपराजिता' (कविता) - लेखक, श्रीअंचलजी ; मूल्य २)

(५) 'राजस्थानी साहित्य की रूप-रेखा' (समालोचनात्मक इतिहास)—लेखक, पं० मोतीलाल मेनारिया एम्० ए० ; मूल्य २॥)

(६) 'झाँसी की रानी' (जीवनी)—लेखक, श्रीराम शर्मा ; मूल्य ॥)

(७) 'बोलती प्रतिमा' (उपन्यास)—लेखक, श्रीराम शर्मा ; मूल्य १॥।)

(८) 'प्राणों का सौदा' (गल्पों के रूप में शिकार के विषय की सच्ची घटनाएँ) - लेखक, श्रीराम शर्मा ; मूल्य ३)

(९) 'सती पार्वती' (नाटक)—लेखक, पं० राधेश्याम कविरत्न ; मूल्य १)

(१०) 'घंटापथ' (प्रहसन)—लेखक, पं० राधेश्याम कविरत्न ; मूल्य ।)

(११) 'बुद्ध-चरित्र' (काव्य) - लेखक, पं० खुशीराम शर्मा ; मूल्य ।)

(१२) 'सावनी समा' (उपन्यास)—लेखक, राजा राधिकारमणप्रसादसिंह ; मूल्य २)

(१३) 'गांधी टोपी' (कहानियाँ) - लेखक, राजा राधिकारमणप्रसादसिंह ; मूल्य १।)

(१४) 'कम्युनिज़्म क्या है ?' (राजनीतिक)—लेखक, राधामोहन-गोकुलजी ; मूल्य ॥=)

(१५) 'कालिया नाग' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत बैजनाथ केडिया ; मूल्य ।)

(१६) 'बाल-हठ' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत बैजनाथ केडिया ; मूल्य ।)

(१७) 'पुजारी की पूजा' (बालोपयोगी)—लेखक, श्रीयुत बैजनाथ केडिया ; मूल्य ।)

(१८) 'नेताओं का बचपन' (जीवन-चरित्र)—लेखक, श्रीव्यथित हृदय ; मूल्य ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१. कूटनीति और प्रोपेगैंडा

आजकल युद्ध में काम लेने के लिये अनेकों भयानक अस्त्रों का निर्माण हो चुका है। वायुयानों की बम-वर्षा, पनडुब्बियों के विस्फोट तथा इनसे भी भयानक [illegible] गैस ने पुराने शस्त्रास्त्रों की निरर्थकता सिद्ध कर दी है। पर इन अस्त्रों से भी कहीं भयानक अस्त्र और है। वह है राजनीतिक कूटनीति (Diplomacy) और प्रोपेगैंडा। जहाँ सब हथियार शिथिल हो जाते हैं, वहाँ भी ये दो अस्त्र सदैव काम करते रहते हैं। कृपाण से कलम को तुलना कीजिये तो अधिक बलवान् बतलाया गया है कि केवल बातों की करामातें चाल और अखबार तथा रेडियो की [illegible] में आज इतनी शक्ति है, जिससे हार को जीत और जीत को हार के रूप में परिणत किया जा सकता है। कूटनीति में अब तक ब्रिटेन सारे देशों का गुरु रहा है, और उसके साम्राज्य-विस्तार का मुख्य साधन भी यही चीज रही है। वर्तमान युद्ध में पहले ब्रिटेन की इस शक्ति का [illegible] [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मँझधार में डाल दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध में जहाँ हिटलर की बढ़ती हुई शक्ति दिखलाई दे रही थी, इस संधि के बाद ही उसकी प्रतिक्रिया दिखाई देने लगी। टर्की की संधि का असर अन्य मुसलिम राष्ट्रों पर भी पड़ा है, इसलिये मित्र-राष्ट्र समस्त मुसलिम राष्ट्रों को अपने पक्ष में शुमार कर रहे हैं। भारत के मुसलमानों पर भी यह असर डाला जा रहा है। अमेरिका ने यद्यपि सभी देशों को नक़द मूल्य पर हथियार देना स्वीकार किया है, पर मित्र-राष्ट्र इसे अपने पक्ष में अमेरिका का फ़ैसला बतलाकर अपनी मज़बूत स्थिति का प्रोपेगैंडा कर रहे हैं।

पश्चिमी युद्ध-क्षेत्र में जैसी शांति और निष्क्रियता नज़र आ रही है, उससे लोगों में तरह-तरह की शंकाएँ पैदा हो रही हैं। पहले अनुभव के आधार पर लोग अनुमान लगा रहे थे कि ब्रिटेन और जर्मनी में एक बार लड़ाई छिड़ने पर फिर कुछ दिनों में ही ख़ून की नदियाँ बहती नज़र आएँगी, वहाँ अब लड़ाई केवल वायुयानों से पर्चे बरसाने या समुद्र में जहाज़ डुबा देने तक ही नज़र आ रही है। बात असल में यह है कि हमारी भौतिक आँखें लड़ाई के भौतिक स्वरूप को ही देख सकती हैं, इसलिये हमें इस बात का बहुत कम पता है कि वर्तमान युद्ध अपने प्रबल वेग से चल रहा है, और उसमें 'डिप्लोमेसी' और 'प्रोपेगैंडा' की लड़ाई हो रही है। इस लड़ाई का रूप महात्मा गांधी की अहिंसात्मक लड़ाई के ही समान है, पर उसके साथ सत्य शामिल नहीं। अपने शत्रु को संसार के लोगों की निगाह में गिरा देना तथा दुनिया की राय और दुनिया के अधिकांश राज्यों की सहानुभूति और सहयोग अपने पक्ष में प्राप्त कर लेने से विजय का बहुत बड़ा मूल्य मिल जाता है। यही आज जर्मनी और उसके प्रतिद्वंद्वी फ़्रांस तथा इँगलैंड कर रहे हैं। मि० चैंबरलेन ने जर्मनी में यह प्रचार कराया कि हम केवल हिटलर के विरोधी हैं, और हिटलर-शाही संसार की शांति के लिये बड़ा ख़तरा है, जिससे जर्मनी में आंतरिक शांति नहीं रह सकती। जर्मनी, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया और दूसरे नाज़ी-शासन के प्रांतों से विद्रोह की ख़बरें आ रही हैं। यह सब शत्रु को कमज़ोर बनाने के लिये किया जा रहा है। साथ ही हिटलर इँगलैंड को सबसे बड़ा साम्राज्यवादी और शोषक राष्ट्र कहकर प्रचार करा रहा है। फ़्रांस में नाज़ी-पार्टी की तरफ़ से यह प्रचार हो रहा है कि जर्मनी और फ़्रांस की कोई दुश्मनी नहीं, और फ़्रांस इँगलैंड का साथ छोड़ दे। हिटलर ने अपने भाषण में यह भी कहा है कि प्रजातंत्रवाद का आदर्श रखनेवाला इँगलैंड भारत-जैसे देशों को स्वतंत्र क्यों नहीं कर देता। भारत में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के इस्तीफ़ा देने की ख़बरें जर्मनी के रेडियो से ब्राडकास्ट होती हैं, तो कहा जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्य के सबसे बड़े भाग भारत में ब्रिटेन के ख़िलाफ़ विद्रोह की आग धधक उठी, और इस पर जर्मनी में ख़ुशियाँ मनाई जाती हैं। ब्रिटिश समाचार-एजेंसी भी अपने प्रचार में पीछे नहीं। अभी हिटलर के भाषण करने के स्थान पर जो बम-विस्फोट हुआ, उसका न केवल हिटलर की जान लेने का षड्यंत्र

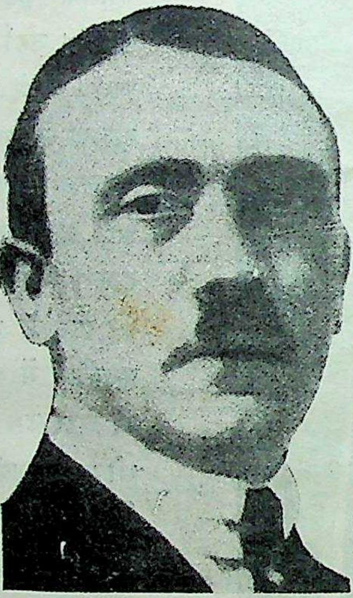

हर हिटलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहकर ही प्रचार किया गया, बल्कि नाज़ी-पार्टी के एक स्तंभ हर रूडोल्फ़ हेस के मारे जाने की भी ख़बर ब्राडकास्ट हो गई, और हमारे यहाँ के समाचार-पत्रों में हर रूडोल्फ़ को स्वर्गीय कहकर उसके फ़ोटो छप गए। यह ख़बर ग़लत निकली। इससे पहले डॉ० गोवल्स के ग़ायब हो जाने की ख़बर प्रकाशित हुई थी, और यह भी उड़ाया गया था कि हिटलर ने मतभेद के कारण डॉ० गोवल्स की हत्या करा दी। रूस के संबंध में यह ख़बर छपी कि वहाँ फिर लोगों को वैयक्तिक संपत्ति का अधिकारी बनाया जा रहा है, जब कि रूस यूक्रेन और ह्वाइट रशिया में ज़मींदारों तथा पूँजीपतियों की संपत्ति छीनकर किसान और ग़रीबों में बाँट रहा था। इसलिये यह ख़बर सफ़ेद झूठ साबित हुई। इसी प्रकार थर्ड इंटरनेशनल की नीति में परिवर्तन होने की ख़बर भी बिलकुल झूठ निकली। ये कुछ ज़िंदा मिसालें हैं। वैसे रोज़ ही इस तरह की ख़बरें छपती हैं, जिनमें प्रोपेगैंडा का अंश ही अधिक रहता है, और सचाई बहुत थोड़ी पाई जाती है। इसी कारण लोगों का विश्वास युद्ध-संबंधी ख़बरों पर से उठ गया है, और वास्तविक घटनाओं को भी वे संदेह की दृष्टि से ही देखते हैं। इस तरह का प्रचार और 'पॉलिसी' उन भयानक अस्त्रों और ज़हरीली गैसों से भी अधिक दुःखदायी है, जिनसे मनुष्य के भौतिक रूप का विध्वंस किया जाता है। यदि इसे लड़ाई का सबसे नया और सभ्य ढंग कहा जाय, तो हम कहेंगे, नैतिक जीवन और चरित्रता को नष्ट कर प्राप्त होनेवाली विजय भी पराजय है। योरप के लड़ाकू राष्ट्र मानव-जीवन के इन गुणों को खोकर क्षणिक लाभ प्राप्त कर लें, तो आगे उनके लिये एक ऐसी खाईं तैयार हो रही है, जिसमें गिरकर उनका पतन होना अवश्यंभावी है।

× × ×

२. मुसलिम लीग की देशद्रोही नीति

मुसलिम लीग के प्रेसिडेंट श्रीमुहम्मदअली जिन्ना ने जब से अपना राष्ट्रीय चोला बदलकर कट्टर सांप्रदायिकता का बाना पहना है, तब से अपनी लीलाओं का ख़ूब परिचय दे रहे हैं। पहले उन्होंने कांग्रेस के इस दावे का विरोध किया कि वह भारत की सभी जातियों की प्रतिनिधि संस्था है, और देश में दो ही शक्ति हैं—एक विदेशी शासक-शक्ति और दूसरी कांग्रेस। मि० जिन्ना का कहना है कि इसके अतिरिक्त मुसलमान-जाति एक अलग तीसरी शक्ति भी मौजूद है। पर कांग्रेस के सामने अपने दावे पेश करते हुए वह यह भी कहते हैं कि हम समस्त अल्पमत-वाली क़ौमों के लिये उचित संरक्षण चाहते हैं। फिर भारत में तीन ही शक्ति क्यों रहीं, सिक्ख, ईसाई, पारसी, ऐंग्लो-इंडियन, अछूत और न-जाने कितनी जातियाँ अल्पमत के नाम पर अपनी अलग-अलग शक्ति का दावा पेश कर सकती हैं। अच्छा होता, मि० जिन्ना भारत की सभी अल्पमतवाली जातियों की एक संस्था बनाते और उसे एक तीसरी शक्ति का नाम देकर अपने दावे को सार्थक करते। इसके स्थान में अकेली मुसलमानों की एक संस्था के डिक्टेटर बनकर भारत को प्रजातंत्रवाद के लिये अयोग्य कह देने का उनका फ़तवा पागल का प्रलाप-जैसी बात है। मि० जिन्ना ने इसके लिये एक युक्ति निर्माण की है, इसलिये मुसलिम लीग के सांप्रदायिक सिक्के पर उन्होंने राजनीति का मुलम्मा चढ़ा दिया है। वह राष्ट्रीयता का दावा रखते हैं, इसलिये बहुत-से मुसलमानों को अपनी तरफ़ आकर्षित करने का गुण उनमें है। मुसलिम लीग को कांग्रेस के मुक़ाबिले में मुसलमानों की एक प्रति-द्वंद्वी संस्था बनाने में मि० जिन्ना ने अपने बुढ़ापे के इन दिनों के आराम को हराम कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस ने अपना ध्येय देश में पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना रक्खा, तो मि० जिन्ना की लीग ने भी इससे मिलता-जुलता ही प्रस्ताव पास कर डाला। इससे कहने को यह हो गया कि हम और हमारी लीग कांग्रेस से पीछे नहीं। लेकिन प्रांतीय धारा-सभाओं के चुनाव में मुसलिम लीग की लुटिया डूबती देखकर उनके होश हवा हो गए। अगर सर सिकंदर और मियाँ फ़ज़्लुलहक़ अपने-अपने प्रांतीय संगठनों के बल पर प्रांतीय प्रधान मंत्री की गद्दियों के मालिक बनकर, कांग्रेसी प्रांतों के प्रधान मंत्रियों की लोक-प्रियता से भय खाकर मि० जिन्ना के साथ गठबंधन न करते, तो आज मि० जिन्ना कहाँ होते, और उनकी लीग का क्या हाल होता? वास्तव में अब वह न पहले जिन्ना रहे, और पहले जिन्ना की न अब यह मुसलिम लीग रही। सर सिकंदर के मि० जिन्ना के ऊपर काफ़ी एहसान हैं, क्योंकि उन्होंने जिन्ना की मृत लीग में नई जान डाल दी, वरना पंजाब में तो उसकी अंत्येष्टि ही हो गई थी। अगर सर सिकंदर हयात युद्ध में सरकार की तन-मन-धन से सहायता करने की घोषणा कर देते हैं, और इसमें मुसलिम लीग की बात पूछने की आवश्यकता महसूस नहीं करते, तो उन्हें इस बात का विश्वास रहता है कि विना उनके मुसलिम लीग रहेगी कहाँ? आख़िर मि० जिन्ना को उनका साथ देना लाज़िमी है। हुआ भी यही। मुसलिम लीग के राष्ट्रीय दल ने सर सिकंदर के ऊपर जो हमले किए, मि० जिन्ना ने उन हमलों से अपने सहयोगी सिकंदर की रक्षा की। और, अंत में मुसलिम लीग ने ही सर सिकंदर हयातख़ाँ की भावना के अनुकूल ही युद्ध में सरकार की सहायता करने का प्रस्ताव पास कर दिया। मि० जिन्ना ने यह सौदा बहुत ही महँगा किया। उन-जैसा होशियार वकील एक मामूली दूकानदार की भी बुद्धि नहीं रखता, यह खेद की बात है! राष्ट्रीयता को तिलांजलि देकर, अपना पूर्व आदर्श भूलकर, मुसलिम लीग के पूर्ण उत्तरदायी शासन प्राप्त करने के ध्येय को नष्ट कर मि० जिन्ना ने केवल इस झूठे ख़याल से कि सरकार उनकी मुसलिम लीग को मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि-संस्था स्वीकार करती है, सरकार को सांप्रदायिक शर्तों के आधार पर लड़ाई में सहयोग देने का प्रस्ताव पास किया। हम नहीं समझते, इस वातावरण में कांग्रेस का मुसलिम लीग के सभापति के साथ समझौते की बातचीत करने का कोई अच्छा फल निकलेगा। पर मनुष्य आशाओं से ही जीता है। संस्थाएँ भी मानवीय भावनाओं का ही स्पष्टीकरण करती हैं। इसलिये मुसलिम लीग के साथ कोई समझौते की चर्चा छिड़ती है, तो उसका हम विरोध नहीं करते। पर विना मुसलिम लीग या मुसलमानों की बहुसंख्या को साथ लिए हम राष्ट्रीय प्रगति में आगे नहीं बढ़ सकते, इस बात में हमारा विश्वास नहीं। हम मुसलिम लीग को कट्टर सांप्रदायिक संस्था कहते हैं, जो राष्ट्रीय प्रगति के लिये ज़बरदस्त रोड़ा है। यह दशा सदैव नहीं बनी रहेगी। स्वयं मुसलिम लीग में अब राष्ट्रीय विचारों के मुसलमानों का अच्छा प्रतिनिधित्व है, जो या तो मुसलिम लीग को ठीक रास्ते पर लाकर रहेगा या उसे कुछ सड़ियल बूढ़े दिमाग़ों की जमात कहकर उसका साथ छोड़ देगा।

× × ×

३. भारतीय महिलाओं के संबंध में

भारतीय महिलाओं की जागृति हमारे देश के उन विभिन्न आंदोलनों का फल है, जो धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में हुए हैं। इन दोनो ही आंदोलनों में सामाजिक सुधार का भी अंश मिला हुआ है। धार्मिक आंदोलन को तो सामाजिक सुधार का ही एक भाग कह सकते हैं, पर हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय आंदोलन के कार्य-क्रम में भी सामाजिक सुधार का काफ़ी अंश मौजूद है। आर्य-समाज ने भारतीय महिलाओं में अच्छी जागृति पैदा की, और आर्य-समाज के मंच से स्त्रियों की सामाजिक स्थिति और उनके अधिकारों के संबंध में काफ़ी चर्चा हुई। इसके बाद राष्ट्रीय क्षेत्र में कुछ दैवी प्रेरणा से ही महिलाओं की शक्ति का बड़ा महत्त्व हो गया, यद्यपि इसके साथ ही हमारे देश में महिलाओं के स्वतंत्र संगठन का भी कुछ काम हुआ, पर अधिकांश में यहाँ के नारी-जागरण का श्रेय बाहरी आंदोलनों को ही प्राप्त है। यद्यपि अखिल भारतीय महिला-कॉन्फ्रें.स नाम से महिलाओं ने अपने स्वतंत्र संगठन की बुनियाद डाल दी है, पर अभी यह संगठन न इतना व्यापक है, और न उसका स्थानीय प्रभाव है। आज जब अलग-अलग वर्ग के लोगों में अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये नई जागृति दिखलाई दे रही है, और समय ऐसा आ गया है कि अब कोई शक्ति उन अधिकारों को थोड़े और अधिक रूप में स्वीकार किए बिना नहीं रह सकती, तब महिलाओं का भाग्य अब भी दूसरों के हाथ में ही है। प्रत्येक प्रांत में वहाँ की प्रांतीय सरकारों ने दायित्व और अधिकारों के संबंध में नए-नए क़ानून बनाए हैं, उनमें महिला-समाज के अधिकारों में भी वृद्धि हुई है, पर यह वृद्धि केवल समय की माँग और क़ानून-निर्माताओं की उदार वृत्ति का परिणाम है। महिलाओं की तरफ़ से, एक वर्ग या समाज के प्रतिनिधि के रूप में, इसके लिये कोई आवाज़ बुलंद नहीं की गई। यह कमी अखरनेवाली है कि महिलाओं का कोई ऐसा सार्वदेशीय संगठन नहीं, जिसमें उन अधिकारों के संबंध में पहले चर्चा की जाय, और अनुकूल तथा प्रतिकूल बातों के संबंध में आवाज़ उठाई जाय। यह हर्ष की बात है कि धारा-सभाओं में महिला-सदस्यों का भी प्रतिनिधित्व है, उनमें कुछ अच्छी क़ाबिलियत रखनेवाली महिलाएँ भी हैं। पर जहाँ महिला-मताधिकार या महिलाओं के अन्य अधिकारों के संबंध में वे बोलती हैं, वहाँ उनकी आवाज़ का वैयक्तिक महत्त्व ही समझा जाता है। असल बात तो यह कि महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति क्या होनी चाहिए, इसकी कोई रूप-रेखा भी तैयार नहीं हुई। हमें यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि आसाम-प्रांतीय महिला-कॉन्फ्रें.स ने इस ओर अपना क़दम बढ़ाया, और उसने सर्व-प्रथम यह प्रयास किया है कि भारतीय महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की एक रूप-रेखा तैयार की जाय। इसके लिये एक महिला-उपसमिति बनाई है, जिसने एक प्रश्नावली तैयार की है। यह प्रश्नावली बड़ी महत्त्व-पूर्ण है, और उसके उत्तरों पर भारतीय महिलाओं की भावी उन्नति निर्भर है। इसलिये हम अपने देशवासियों से अपील करेंगे कि वह उक्त विषयों का अध्ययन करें, और इन प्रश्नों पर अपनी राय दें। प्रश्नावली इस प्रकार है—

(१) आपके प्रदेश में (अथवा आपकी जाति में) स्त्रियों को संपत्ति-संबंधी उत्तराधिकार और स्वेच्छा तथा अपने अधिकार से उस संपत्ति के बेचने तथा दूसरे के नाम कर देने के संबंध में कहाँ तक अधिकार दिए गए हैं?

(२) आपकी राय में ऐसे कौन-से व्यवसाय, पेशे तथा कार्य हैं, जिनकी स्त्रियों के लिये अलग से व्यवस्था की जा सकती है?

(३) आपके प्रांत या समाज में निम्न-लिखित बातों के संबंध में पत्नी, माता आदि के रूप में विधवा, तलाक़ न दी गई अथवा परित्यक्ता स्त्रियों की क्या स्थिति है—(अ) कौटुंबिक संपत्ति के संबंध में अथवा परिवार द्वारा किए जानेवाले व्यवसाय के संबंध में (ब) कौटुंबिक जीवन का संचालन, कौटुंबिक व्यय पर नियंत्रण तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिवारिक बजट के विषय में (स) परिवार के बच्चों की शिक्षा, अनुशासन, पालन-पोषण तथा उन्हें जीवन-कार्य में स्थायी रूप से लगाने के संबंध में ?

(४) आपके यहाँ किस हद तक वैवाहिक संबंध निम्न-लिखित बातों का स्वरूप ग्रहण करता है—(अ) एक धार्मिक संस्कार (ब) क़ानूनी बंधन (सिविल कंट्रैक्ट) अथवा (स) आर्थिक साझेदारी, पारस्परिक सहायता तथा संरक्षण के लिये पारस्परिक सहयोग ?

(५) आपके यहाँ बहुविवाह, बहुपतित्व, विना विवाह के ही सहवास आदि की प्रथाएँ विवाह-संस्कार को किस हद तक जटिल बनाए हुए हैं ?

(६) यह बात कहाँ तक ठीक अथवा औचित्य-पूर्ण है कि वैवाहिक संबंध-विच्छेद के विषय में स्त्रियों के भी पुरुषों के ही समान अधिकार हैं ?

(७) आपके यहाँ आजीवन वैधव्य व्यतीत करने की प्रथा कहाँ तक प्रचलित है ? एक विधवा को क्या अधिकार अथवा उसकी अयोग्यताएँ हैं ?

(८) विधवाओं को पुनर्विवाह - संबंधी सुविधाएँ देने अथवा आवश्यकतानुसार ऐसे क़ानून बनाने को, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारणों को ध्यान में रखते हुए, क्या आप वांछनीय और आवश्यक समझते हैं ?

(९) आपकी राय में भारत में विवाह-संस्कार के पुनःसंगठन के लिये कौन-कौन उपाय किए जाने आवश्यक हैं ?

× × ×

४. कांग्रेस-मंत्रिमंडलों की धरोहर

कांग्रेस-मंत्रिमंडलों को परिस्थिति-वश अपने पदों से इस्तीफ़ा देना पड़ा, इसे हम दुर्भाग्य ही कहेंगे। अपने दो वर्ष से अधिक समय के शासन में कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने विभिन्न विभागों में कितने ही सुधार किए थे, उनमें बहुत-से कार्य तो ऐसे हैं, जो शुरू कर दिए गए, पर विना किसी एक हद तक पहुँचे हुए अब वे जहाँ-के-तहाँ रह गए। कितने ही उपयोगी क़ानून धारा-सभाओं में पास हो गए, और जब तक गवर्नर साहब की उन पर स्वीकृति नहीं मिली, उससे पहले ही कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने इस्तीफ़ा दे दिया। ऐसे क़ानूनों में यू० पी० का एक आराज़ी क़ानून तथा और भी कई क़ानून हैं। अब सवाल पैदा होता है कि इन क़ानूनों का क्या हाल होगा ? यू० पी० के आराज़ी क़ानून को ही ले लीजिए। दो साल से इस क़ानून के बनाने में कितना श्रम करना पड़ा ? वाद-विवाद, दौड़-धूप, कमेटियों की बैठकें, आंदोलन, अनेकों कठिनाइयाँ, असाधारण परेशानी और अटूट अध्यवसाय के साथ दोनो धारा-सभाओं से उक्त नाम का बिल क़ानून की शक्ल में परिणत हुआ। इसकी तरफ़ प्रांत के साढ़े चार करोड़ किसानों की टकटकी लगी हुई है। क्या यह सब यों ही व्यर्थ जायगा ? क्या ब्रिटिश राजनीतिज्ञता इस हद तक दिवालिएपन की सूरत धारण करेगी ? हमारा यह संदेह यू० पी० के नए अनुत्तरदायी शासन की उस विज्ञप्ति को पढ़कर दूर हो जाता है, जिसमें कहा गया है कि नया शासन इससे पूर्व के कांग्रेसी मंत्रिमंडल की निर्धारित नीति से ही होगा, और गवर्नर अपने सलाहकारों की मदद से शासन को कांग्रेसी मंत्रिमंडल की धरोहर समझकर उसी रूप में चलाएँगे। एक लोकप्रिय मंत्रिमंडल के त्याग-पत्र के पश्चात् जनता के क्षोभ को कम करने के लिये उक्त प्रकार की घोषणा निरर्थक नहीं। हमें उम्मेद है, जब तक कोई असाधारण स्थिति पैदा नहीं होती, तब तक सभी प्रांतों के गवर्नर अपने हाथ में शासन-सूत्र लेकर उसे इस ढंग से चलाएँगे, जिससे लोगों को व्यावहारिक दृष्टि से कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों का उठ जाना अधिक न अखरे। केवल आसाम-प्रांत को छोड़कर शेष सात प्रांतों का शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं सूबों के गवर्नरों ने अपने हाथों में ले लिया है, और अपनी सहायता के लिये सलाहकार नियुक्त कर लिए हैं। इस तरह की नई व्यवस्था के असली रूप-रंग का पता, उसकी बातों से नहीं, बल्कि कार्यों से, लोगों को लग पाएगा। वैसे यह तो देखने में आ रहा है कि इस नए ढंग के शासन के प्रारंभ होते ही नागरिक स्वाधीनता के लिये संकट पैदा हो गया है। आजकल जगह-जगह तलाशियों का ताँता लग गया है, और गिरफ़्तारियाँ होने लग गई हैं। हर विभाग के छोटे बड़े सरकारी कर्मचारियों के रुख़ और रवैया भी बदले नज़र आ रहे हैं। क्या कांग्रेसी मंत्रिमंडलों की धरोहर का ऐसे भी दुरुप-योग किया जा सकता है ?

× × ×

५. भूमि के वर्गीकरण की समस्या

यद्यपि देश के रचनात्मक कार्य में आज की स्थिति में गति-अवरोध पैदा हो गया है, पर यह अवस्था अधिक समय तक नहीं रहेगी। हमारे देश में जितनी श्रेणी के लोग हैं, उन सबका एक बड़ा भाग अपनी वर्तमान अवस्था से संतोष प्रकट नहीं करता। आजकल चतुर्दिक् सुधार की ज़रूरत है, केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में भी। आर्थिक सुधार तो युग-निर्माण की नींव है। इस दिशा में कुछ उद्योग हुआ भी है। विशेषकर देश के उद्योगीकरण और राष्ट्रीय संपत्ति के उचित विभाजन के लिये योजनाएँ बन रही हैं। इस विषय के विद्वानों का ध्यान इन गंभीर प्रश्नों की ओर गया है, और अब निरंतर इस विषय पर लोगों के मत प्रकाशित हो रहे हैं। पर देश के उद्योगीकरण के संबंध में जहाँ लोगों को इतनी चिंता है, वहाँ एक आवश्यक प्रश्न की ओर उनका बहुत ही कम ध्यान गया है। वह प्रश्न है भारत की भूमि-समस्या का हल। लोग इसे प्रांतीय प्रश्न कहकर छोड़ देते हैं, और यह मामला मुख्यकर प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं के हाथ में दे दिया है। है भी ठीक। भारत के भूमि-संबंधी नियम सब स्थानों पर एक-से नहीं। वे भिन्न-भिन्न प्रांतों में, भिन्न-भिन्न समय पर, भिन्न परि-स्थितियों में, भिन्न प्रकार से बने हैं। वे कारण हैं कि भूमि की पैदावार को भोगनेवाले व्यक्तियों की अवस्थाओं में इतना बड़ा अंतर है। जब हम सारे देश के लिये राष्ट्रीय उद्योगीकरण की एक व्यवस्था बना सकते हैं, तो यहाँ की भू-संपत्ति का राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं हो सकता। भारत उद्योग-व्यवसाय में अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। उसकी सबसे बड़ी संपत्ति कृषि है। कृषि की व्यवस्था, भूमि-संबंधी क़ानून, पैदावार और उसमें राज्य तथा अन्य व्यक्तियों के भाग का अनुपात, कृषि से संबंधित अन्य अनेक मामलों के संबंध में अलग-अलग प्रांतीय नियम हैं। क्या कोई ऐसी एक सार्वदेशीय योजना तैयार नहीं हो सकती, जिसके सूत्र में सभी प्रांतीय व्यवस्थाओं के मनके पिरोए जा सकें ? वर्तमान भूमि-संबंधी नियमों ने देश में एक अराजकता-पूर्ण स्थिति पैदा कर रक्खी है। भूमि की पैदावार का उपयोग करने-वाले लोगों में इतनी भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ और उनमें परस्पर इतना हित-विरोध है कि यही बात एक दिन भयंकर श्रेणी-संघर्ष का रूप धारण कर सकती है। बड़े-बड़े ज़मींदार, छोटे ज़मींदार, इन दोनों के मौरूसी काश्तकार, बड़े काश्तकारों की भूमि जोतनेवाले छोटे-छोटे काश्तकार, उनके शिकमी और फिर सबसे नीचे कृषि-मज़दूर तथा पैदावार ख़रीदनेवाले लोग—इनमें भी फिर और उपश्रेणियाँ हैं। फिर ये श्रेणियाँ एक प्रांत की भूमि-व्यवस्था को दृष्टि में रखते हुए बतलाई गई हैं। अलग-अलग प्रांतों में इनके भी भिन्न-भिन्न रूप हैं। पंजाब में जिसे किसान और ज़मींदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं, यू० पी० में उसी स्थिति के व्यक्ति की दशा भिन्न है, और बंगाल में और भिन्न । इन सबमें सामान्य अवस्था कैसे पैदा की जा सकती है, जिससे उत्पादन, उत्पादक और उपभोगकर्ताओं (Consumers) में एक स्थायी संबंध पैदा किया जा सके ? इस संबंध में निम्न-लिखित प्रश्न विचारणीय हैं—

(१) एक परिवार के लिये इतनी भूमि दी जाय, जिसमें उस परिवार के लोग अपनी मेहनत से इतनी पैदावार कर सकें, जिससे उनका निर्वाह हो सके ।

(२) दूसरे को अधिक लगान पर भूमि उठाने की प्रथा तोड़ दी जाय, अर्थात् प्रत्येक कारतकार के पास इतनी ही भूमि हो, जिसे वह स्वयं जोतकर पैदावार कर सके—उससे न अधिक हो, न कम ।

(३) इस तरह की भूमि एक ही जगह हो, और उसके फिर टुकड़े न किए जा सकें ।

(४) पैदावार के लिये नियम बनाए जायँ, और जितनी पैदावार का ख़याल करके भूमि का वर्गीकरण किया है, उत्पादकों को उस भूमि में उतनी पैदावार करके दिखानी पड़ेगी ।

(५) उत्पादन में से उत्पादक को कितना भाग महसूल या स्टेट के व्यय के लिये देना चाहिए, यह एक बार स्थायी रूप से निश्चय हो जाय ।

(६) इसके बाद यह देखा जाय कि कितने लोग ऐसे बच रहते हैं, जिन्हें भूमि की आवश्यकता है । इस आवश्यकता की पूर्ति भूमि की पैदावार बढ़ाकर, उत्पादन के लिये अधिक भूमि तैयार करके तथा उद्योग-व्यवसायों की उन्नति करके ही की जा सकती है । इससे हमें यह भी पता चल जायगा कि राष्ट्र के अंदर सभी लोगों के भरण-पोषण की आवश्यकता के लिये भी हमें उद्योग-व्यवसायों की कहाँ तक उन्नति करनी है । इस संबंध में विद्वानों के अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता है ।

× × ×

६. भारतीय व्यापार की दशा

भारत-सरकार ने सन् १९३८-३९ की व्यापार-संबंधी रिपोर्ट प्रकाशित की है । इस रिपोर्ट से पता चलता है कि इस वर्ष भारत के व्यवसाय में काफ़ी कमी हो गई है । इससे पूर्व के साल में भारत का आयात और निर्यात क्रमशः २१० और १८१ करोड़ रुपए का था, जब कि इस वर्ष घटकर क्रमशः १५२ और १६३ करोड़ का रह गया । इस प्रकार भारत की क्रय-शक्ति जहाँ कम हुई, वहाँ भारत में तैयार हुए माल की खपत भी घट गई । इसका कारण रिपोर्ट में विश्वव्यापी व्यापारिक अवरोध बतलाया गया है। पर यह अवरोध सन् १९३८-३९ में इतना अधिक नहीं रहा, जितना इससे पहले के वर्षों में। गत वर्ष से चीज़ों के मूल्य और व्यापार में कुछ-न-कुछ प्रगति होती रही है । इसलिये सन् १९३८-३९ में भारतीय व्यापार के गिर जाने का कारण केवल व्यापारिक अवरोध ही नहीं । इसका बड़ा कारण सरकार की विनिमय और विदेशी व्यापार को संरक्षण देने की नीति है । इसका एक उदाहरण भारत के शक्कर के व्यवसाय का है । सरकारी रिपोर्ट में बतलाया गया है कि इस वर्ष (१९३८-३९) इस व्यवसाय में कुछ उन्नति नहीं हुई । यह हम जानते हैं कि भारत का शक्कर का व्यवसाय पिछले वर्षों से लगातार उन्नत अवस्था में है । इस व्यवसाय की उन्नति के लिये अभी काफ़ी बड़ा क्षेत्र है, और इसमें भी शक नहीं कि भारत का यह व्यवसाय संसार-भर में ख्याति प्राप्त कर ले, और कोई भी देश उसके मुक़ाबिले में न ठहर सके । पर हम देखते यह हैं कि भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्कर के जो दाम यहाँ के बाज़ार में लगते हैं, उससे तिहाई मूल्य पर जावा की खाँड़ यहाँ आकर बिक जाती है। और, भारतीय सरकार ऐसा व्यापारिक समझौता कर लेती है, जिससे विदेशी माल से भारत का भांडार भरा रहे। जब भारत स्वयं अपने यहाँ के बाज़ार में विदेशी माल के मुक़ाबिले में अपना माल सस्ता नहीं बेच सकता, तो अन्य देशों में ले जाकर वह अपने व्यवसाय को किस प्रकार उन्नत दशा में दिखला सकता है। रिपोर्ट में बतलाया गया है कि कृषि-जन्य पदार्थों का मूल्य घट जाने के कारण किसानों की आमदनी भी घट गई, पर किसानों की आमदनी तो उनके पैदा किए गए माल की खपत पर निर्भर है। यदि भारत अपने यहाँ के पैदा किए हुए माल को देशी और विदेशी बाज़ारों में अधिक कामयाबी के साथ खपा सके, तो इससे चीज़ों की माँग और मूल्य में भी वृद्धि होगी। उदाहरण के लिये यू० पी० और बिहार-प्रांत की कांग्रेसी सरकारों ने अपने यहाँ के शक्कर के व्यवसाय के लिये ऐसे नए क़ानून बना दिए, जिनसे इस व्यवसाय पर सरकार का ऐसा नियंत्रण हो गया, जिसमें व्यवसाय की उन्नति के साथ-साथ गन्ने के उत्पादकों को अपनी पैदावार का अच्छा मूल्य मिलने लगा। प्रश्न केवल यह है कि सरकार अपना कार्य जनता के हित को ध्यान में रखकर करे। पर भारत-सरकार को यहाँ के आम लोगों की जितनी चिंता है, उससे अधिक विदेशी व्यापारियों को लाभ पहुँचाने की फ़िक्र है। यही कारण है कि इस देश का व्यवसाय आशातीत उन्नति नहीं कर सकता। सन् १९३८-३९ में भारत की वाणिज्य वस्तुओं के समस्त विदेशी व्यापार का मूल्य ३२२ करोड़ रुपया है, जब कि इससे पहले वर्ष में वह ३६३ करोड़ रुपए था, अर्थात् जहाँ हमें अपने देश के व्यवसाय में प्रतिवर्ष उन्नति होती हुई दिखलाई देनी चाहिए, वहाँ हम उसके स्थान पर ह्रास होता देख रहे हैं।

× × ×

७. खाद्य पदार्थों में मिलावट

भारत-सरकार के सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभाग की जो रिपोर्ट प्रकाशित होती है, उसमें अब की बार एक जगह कहा गया है—"यह खेद की बात है कि खाने की चीज़ों और विशेषकर दूध और घी का विशुद्ध अवस्था में मिलना अब कितना कठिन हो गया है। एक प्रांत में जब दूध और मक्खन के नमूनों की परीक्षा की गई, तो ज्ञात हुआ कि दूध के नमूने में से ५० प्रतिशत और मक्खन के नमूने में से ४० प्रतिशत में मिलावट है।"

ये तो सरकारी रिपोर्ट के शब्द हैं। वैसे हम रोज़ शहरों में देख रहे हैं कि जगह-जगह शुद्ध घी-दूध के लगे हुए साइनबोर्ड ही यह प्रकट कर रहे हैं कि इन चीज़ों में सर्वत्र मिलावट पाई जाती है। बल्कि शुद्ध घी-दूध के साइनबोर्ड की दूकानों पर भी उतनी ही मिलावट होगी, जैसी अन्य जगहों पर होती है। इसी से बाज़ार की इन चीज़ों से लोगों का विश्वास उठ गया है। जिस दूकान पर 'गाँव का ताज़ा घी'वाला साइनबोर्ड टँगा होगा, उसकी तरफ़ लोगों का ध्यान आकर्षित होगा, पर आजकल यह विश्वास भी जाता रहा है। गाँवों में भी अब घी, दूध आदि में मिलावट की चीज़ें पहुँच गई हैं, और जो लोग गाँव का दूध या गाँव का घी कहकर अपना माल बेचते हैं, उनमें मिलावट का काफ़ी अंश रहता है। लोगों के स्वास्थ्य पर इस मिलावट का बहुत बुरा असर पड़ता है। आजकल बाज़ारू घी-दूध खानेवाला व्यक्ति आत्मसंतोष भले ही कर ले, पर उसके स्वास्थ्य पर इन चीज़ों का अच्छा असर नहीं पड़ता, जिस देश में कभी घी-दूध की नदियाँ बहती थीं, वहाँ की आज की यह दशा कितनी खेद-जनक है! व्यापारिक लाभ के लिये लोग दूसरों को धोखा देने, उनके स्वास्थ्य और जीवनी-शक्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट करने का पाप कमाने में कुछ भी नहीं हिचकिचाते। दुनिया में ख़राब चीज़ें भी बिकती हैं, पर ख़राब चीज़ों को अच्छी चीज़ के आवरण में ढककर उसे अच्छी चीज़ के भाव में बेच देना घोर नैतिक पतन है। सरकार ने अब तक यह कुव्यवस्था रोकने के लिये कुछ प्रयत्न अवश्य किया है, पर इसमें सफलता नहीं मिली। शहरों की म्युनिसिपल कमेटियाँ अपने यहाँ मिलावटी घी और दूध रोकने के लिये प्रयत्न कर रही हैं, फिर भी इन चीज़ों की बिक्री पहले से और बढ़ती जाती है। मिलावट के वैज्ञानिक आविष्कार होने लगे हैं, जिससे साधारणतः कोई मिलावट की परीक्षा न कर सके। भारत-सरकार की इस विषय की अनुसंधान-कमेटी जब तक सिंध में घी के गुण की समीक्षा, कानपुर की रसायनशाला में घी की वैज्ञानिक जाँच, बिहार-उड़ीसा, हैदराबाद और ग्वालियर में घी के भाव-निर्ख़ के पचड़ों में पड़ी रहेगी, तब तक हज़ारों-लाखों मन मिलावटी पदार्थ लोगों की आँतों और नस-तंतुओं में प्रवेश कर उनके स्वास्थ्य को नष्ट कर देंगे। आवश्यकता इस बात की है कि मिलावटी पदार्थों का भारत में आयात और उनके तैयार किए जाने पर कठोर प्रतिबंध लगाए जायँ। ऐसे यंत्रों का आविष्कार हो, जो पदार्थों की परीक्षा के लिये उन स्थानों पर टँगे रहें, जहाँ इस प्रकार के खाद्य पदार्थ बेचे जाते हैं। मिलावटी वस्तु और विना मिलावटी वस्तु में फ़र्क़ दिखाने के लिये कुछ प्रत्यक्ष प्रयोग और स्थायी चिह्न रक्खे जायँ। शहरों में घी और दूध की व्यवस्था का सारा कार्य सरकार अपने हाथ में ले ले, तब भी इस समस्या का हल निकल आवेगा। पर इससे बहुत-से लोगों का व्यक्तिगत रोज़गार मारा जायगा, और बेकारी की समस्या और भी जटिल रूप धारण करेगी। भारत-सरकार के अलावा प्रांतीय सरकार और स्थानीय बोर्ड भी इस संबंध में बहुत कुछ कर सकते हैं।

× × ×

८. शिक्षा का आदर्श

आगरा-विश्वविद्यालय के उपाधि-वितरण-उत्सव पर भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने विद्यार्थियों के सामने अपना दीक्षांत भाषण दिया, जो आजकल की अवस्था में विद्यार्थी-समाज और शिक्षा-प्रेमी जनों के लिये बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण है। उसमें शिक्षा का आदर्श और आजकल की अवस्था में पठित समाज के कर्तव्यों का सुंदर तरीक़े से विवेचन किया गया। भाषण के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

देश की मुख्य समस्या के संबंध में छात्रों का ध्यान दिलाते हुए आपने कहा—"भारत की एकता और स्वतंत्रता का ही वह संदेश है, जो मैं आपको देना चाहती हूँ। जिस दिन आप नवयुवक लोग, युवक और युवतियाँ, हिंदुओं और मुसलमानों के दिलों में और हिंदू-मुसलमानों की संस्कृतियों में एकता स्थापित कर लेंगे, उस दिन अकबर की आत्मा सिकंदरा की उनकी क़ब्र से और फ़तेहपुर-सीकरी के राजसिंहासन पर से आपकी प्रशंसा के गीत गाने लगेगी।"

ग्राम-सेवा के महत्त्व को आपने इन शब्दों में प्रकट किया—"इस समय भारत की वास्तविक सेवा उन गाँवों में है, जहाँ करोड़ों की संख्या में भूखी और प्यासी ग्रामीण जनता रहती है। भारत की सभ्यता उसके खेतों में है। जो लोग अपने ज्ञान, चातुर्य तथा अनुभव का उपयोग इन खेतों और ग्रामीण जनता के लिये करेंगे, उनकी यह बहुत बड़ी सेवा होगी। और, वह ऐसी सेवा होगी, जो राजनीतिक भाषणों से नहीं प्राप्त हो सकती, जिससे केवल अस्थायी ख्याति प्राप्त होती है। अतः जिन विद्यार्थियों ने कृषि-विषय में डिगरी प्राप्त की है, उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये एक बड़ा क्षेत्र कार्य करने के लिये पड़ा हुआ है। विज्ञान और अर्थशास्त्र में उपाधि प्राप्त करने-वाले विद्यार्थी अपने ज्ञान से देश को लाभ पहुँचावें। विज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है। योरप के लोगों की भाँति इसका उपयोग हत्या के साधन बनाकर न करना चाहिए। जो 'कॉमर्स' के विद्यार्थी रहे हैं, वे देश के उद्योग-धंधों की वृद्धि में अपनी शक्ति लगावें। क़ानून के विद्यार्थियों से यह डर है कि वे देश में और भी झगड़े-बखेड़े पैदा करेंगे। नए वकीलों को अपने क़ानूनी ज्ञान का उपयोग ग़रीब और दलितों की रक्षा करने में करना चाहिए। ऐसा क़ानून बनवाना चाहिए, जिसमें सब लोगों को समान अधिकार मिलें।"

अंत में आपने मार्मिक शब्दों में कहा—"आजकल 'इनक़िलाब ज़िंदाबाद' की धूम है। ये नारे लगाना बड़ा आसान है, पर इनक़िलाब के लिये बलिदान करना बड़ा मुशकिल। इनक़िलाब लाइए, और वह इनक़िलाब होगा अत्याचार का न्याय में, संघर्ष का शांति में और विरोध का प्रेम में परिणत होना। आप लोग ताजमहल पर फ़ख़्

भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। यह ताजमहल शाहजहाँ की भावना का संदेश है। शाहजहाँ ने ताजमहल इसलिये नहीं बनवाया कि वह एक अधेड़ उम्रवाली मुमताजमहल को प्यार करता था, बल्कि इसलिये कि वह स्त्रीत्व का आदर करता था। आप लोग भी स्त्रीत्व का आदर करना सीखें।"

× × ×

६. सक्खर का हिंदू-मुसलिम-दंगा

आजकल एक तरफ़ जहाँ हिंदू-मुसलिम-एकता की कोशिश की जा रही है, वहाँ सक्खर में हिंदू-मुसलमानों का भयंकर दंगा एक बड़ी ही दुःखजनक घटना है। यद्यपि पिछले दिनों से और जब से कई प्रांतों में कांग्रेस की हुकूमत क़ायम हुई, तभी से इस तरह के झगड़े अधिक होने लगे। इसका कारण उन कट्टर मुसलमानों की सांप्रदायिक नीति है, जो कांग्रेस की बढ़ती हुई शक्ति से चिढ़कर ऐसा वातावरण उत्पन्न करने लगे, जिससे सांप्रदायिक झगड़े हों, और कांग्रेस तथा कांग्रेस-मंत्रि-मंडलों की बदनामी हो। यू० पी० में तो इन हरकतों ने बड़ा ही उग्र रूप धारण किया। यहाँ मदहे-शहाबा, तबर्रा और ख़ाकसार-आंदोलन चले। मुसलिम लीगी नेताओं की उत्तेजनात्मक वक्तृताओं ने बनारस, इलाहाबाद और कानपुर आदि शहरों में दंगे कराए। ख़ाकसारों ने इस प्रांत पर उसी तरह चढ़ाई की, जिस तरह मुसोलिनी ने रोम पर की थी। इस ख़ाकसार-आंदोलन का अब क्या हुआ ? हम देखते हैं, कांग्रेसी मंत्रिमंडल के इस्तीफ़ा देने के बाद ही इस आंदोलन का नाम सुनाई नहीं देता। इससे ज़ाहिर है कि इस तरह के आंदोलन सांप्रदायिक थे, और उनके पीछे दूषित मनोवृत्तियाँ काम कर रही थीं। इस समय सक्खर का दंगा सचमुच एक असाधारण घटना है, क्योंकि जो दंगे ऐसे प्रांतों में होते थे, जहाँ हिंदुओं का बहुमत है, वहाँ भले ही हिंदुओं की जान और माल का अधिक नुक़सान होता हो—और यह ठीक भी है, फिर भी मुसलमानों को अपने अल्पसंख्यक सवाल को लेकर हिंदुओं के ख़िलाफ़ प्रचार करने का मौक़ा मिल जाता था। सक्खर का दंगा ऐसे प्रांत में हुआ है, जहाँ मुसलमान बहुमत में हैं, इसलिये मुसलमान-नेताओं को उक्त प्रकार की शिकायत करने का तो मौक़ा रहा नहीं। इस दंगे में हिंदुओं की काफ़ी बरबादी हुई। मारे गए लोगों में हिंदुओं की तादाद मुसलमानों से बहुत अधिक है। मृत्यु-संख्या देखकर और अस्पताल में घायल व्यक्ति तथा लाशों की संख्या से पता लगता है कि दंगा बड़े ही भयानक रूप में हुआ। वहाँ अल्पमत हिंदुओं पर जो बीती होगी, उसका अनुमान यहाँ बैठे हुए हम नहीं लगा सकते। दंगे का कारण वही मसजिद-वाला पुराना क़िस्सा है। मंज़िलगाह नाम के एक स्थान को मुसलमान अपनी मसजिद बताकर उस पर अधिकार करना चाहते थे, और सरकार की आज्ञा उल्लंघन कर उन्होंने ऐसा करके दिखा दिया। इस पर गिरफ़्तारियाँ हुईं, और उसका अंत हिंदू-मुसलिम-दंगे के रूप में हुआ। हिंदुओं का इस स्थान से कोई प्रत्यक्ष संबंध न था। जो झगड़ा था, वह मुसलमान और सिंध-सरकार के बीच था। दुर्भाग्य से सिंध में अल्लाबख़्श की सरकार ऐसी है, जिसका दृष्टिकोण सांप्रदायिक न होकर राष्ट्रीय है। यह वह प्रांत है, जहाँ कट्टर मुसलमानों की ज़मज़मा तोप मि० जिन्ना भी 'टायँ-टायँ फिस' कर वापस लौट आए। तब से मुसलिम लीगी नेता अल्लाबख़्श-मंत्रिमंडल को उलटने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। आसाम में कांग्रेस-संयुक्त मंत्रिमंडल के इस्तीफ़ा दे देने पर वहाँ मुसलिम लीगी सादुल्लाख़ाँ-मंत्रिमंडल बन गया। इसलिये मुसलिम लीग के नेताओं ने सोचा कि क्यों न सिंध पर भी अपना अधिकार जमाया जाय, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार कांग्रेस के अभाव में चार प्रांतों को मुसलिम लीग की हुकूमत बतलाकर अपनी ताक़त का ढोल पीटा जाय। पर सिंध में उनके अब तक के सब प्रयत्न विफल हो चुके थे। केवल यही एक मार्ग था कि वहाँ हिंदू-मुसलिम-दंगा हो, जिससे अल्लाबख़्श-मंत्रिमंडल बदनाम हो, और उसका मुसलमानों में प्रचार करके मुसलिम लीग को अपनी सत्ता क़ायम करने का मौक़ा हाथ लगे। दंगे के साथ इस षड्यंत्र का एक अध्याय पूरा हो जाता है, पर दूसरे अध्याय के पूरे होने में हमें संदेह है। सिंध में मुसलिम लीग की हुकूमत क़ायम होना असंभव है। अल्लाबख़्श-मंत्रिमंडल ने जिस दृढ़ता से अब तक काम लिया है, हमें उम्मेद है, दंगा करानेवाले और दंगे में भाग लेनेवाले व्यक्तियों को दंड देने में भी वह ऐसी ही तत्परता दिखलावेगा, जिससे सिंध-प्रांत में वह वबा न फैलने पावे, जो राष्ट्रीय प्रगति के लिये अभिशाप है।

× × ×

१०. हमारे सागर-प्रवासी

प्रवासी भारतवासियों के संबंध में हम लोग काफ़ी चर्चा और आंदोलन करते रहते हैं। पर हमारे कुछ भाई हैं, जो हर समय सागर की लहरों पर वास करते हैं। ये लोग भारतीय मल्लाह या माँझी के नाम से बोले जाते हैं। ये लोग अब तक हमारी निगाहों से ओझल हो रहे हैं, इसलिये वे चर्चा के विषय भी नहीं बने। अब इन लोगों ने न केवल भारतीयों का, बल्कि संसार-भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। केपटाउन, डरबन, लंदन, लिवरपुल, ग्लासगो आदि बंदरगाहों में भारतीय मल्लाहों के गिरफ़्तार किए जाने की ख़बरें आई हैं। ये गिरफ़्तारियाँ इसलिये की गई हैं कि भारतीय मल्लाहों ने, जो हज़ारों की तादाद में हैं, अपने काम से हड़ताल कर दी है। ऐसे वक्त में, जब ब्रिटिश साम्राज्य के ऊपर एक बड़ा ख़तरा है, और समुद्री जहाज़ों का महत्त्व इस ख़तरे के समय सबसे अधिक है, भारतीय मल्लाहों का जहाज़रानी के काम से हाथ खींच लेना एक ऐसा अपराध है, जो किसी सेना के सैनिक का लड़ाई के वक्त हथियार डाल देने पर होता है। सैनिक के लिये ऐसी हालत में कोर्ट-मार्शल और गोली से उड़ा देने तक की सज़ा दी जाती है। भारतीय मल्लाहों ने ऐसे समय में इतने साहस का काम क्यों किया? ज़ाहिर है कि इस तरह के ख़तरे की संभावना होते हुए वे निहायत मजबूरी की हालत में ही ऐसा कार्य करने के लिये उद्यत हुए होंगे। इसका पता अब लग गया है। भारतीय मल्लाहों का अपना एक संगठन है। ये लोग समुद्र की सतह पर, दुनिया के भिन्न-भिन्न भागों में बिखरे हुए हैं, तब भी उनका एक संगठन है, और मौजूदा हड़ताल से इसका पक्का प्रमाण मिलता है। भारतीय मल्लाहों की ब्रिटिश जहाज़ी कंपनियों के मालिकों से शिकायतें हैं, और ये शिकायतें मुद्दत से चली आ रही हैं। इस वक्त माँझी-संघ दो शिकायतों पर ही अधिक ज़ोर दे रहा है। उनमें से एक शिकायत है उनके वेतन में वृद्धि न किए जाने की, दूसरी भरती के नियमों में अनुचित प्रतिबंधों की। भारतीय माँझियों के वेतन में सन् १९१८ से तरक़्क़ी नहीं हुई, जब कि इस बीच में जहाज़ी कंपनियाँ काफ़ी मुनाफ़ा कमा चुकी हैं। सन् १९१८ में जो तरक़्क़ी हुई थी, वह भी कलकत्ता, बंबई आदि बंदरगाहों में हड़ताल करने के बाद हुई थी। इस प्रकार यह माँग सर्वथा उचित ही है कि मल्लाहों का वेतन बढ़ा दिया जाय। आजकल के समय में इस माँग का औचित्य और भी बढ़ जाता है, जब समुद्र का सफ़र निरापद नहीं। और, हर वक्त माँझी लोग मौत के साथ खेल खेलते हैं, तब यह आवश्यक ही है कि उन्हें उनकी ज़रूरतों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा करने के लिये वेतन दिया जाना चाहिए। दूसरे, भरती के समय एक निश्चित रक़म जमा करने का जो रिवाज है, वह भी तोड़ दिया जाना चाहिए। इस प्रकार भारतीय माँझियों की माँगें ऐसी नहीं, जिन्हें जहाज़ी कंपनियों के मालिक फ़ौरन् ही पूरा न कर सकें। ब्रिटेन एक प्रबल शत्रु से लड़ रहा है। इस वक़्त माँझियों की हड़ताल का बुरा प्रोपेगैंडा उसके ख़िलाफ़ शत्रु-पक्ष की ओर से किया जा सकता है। इसलिये ऐसे वक़्त में सरकार को इस मामले को शांत कर देने की दूरदर्शिता दिखलानी चाहिए।

× × ×

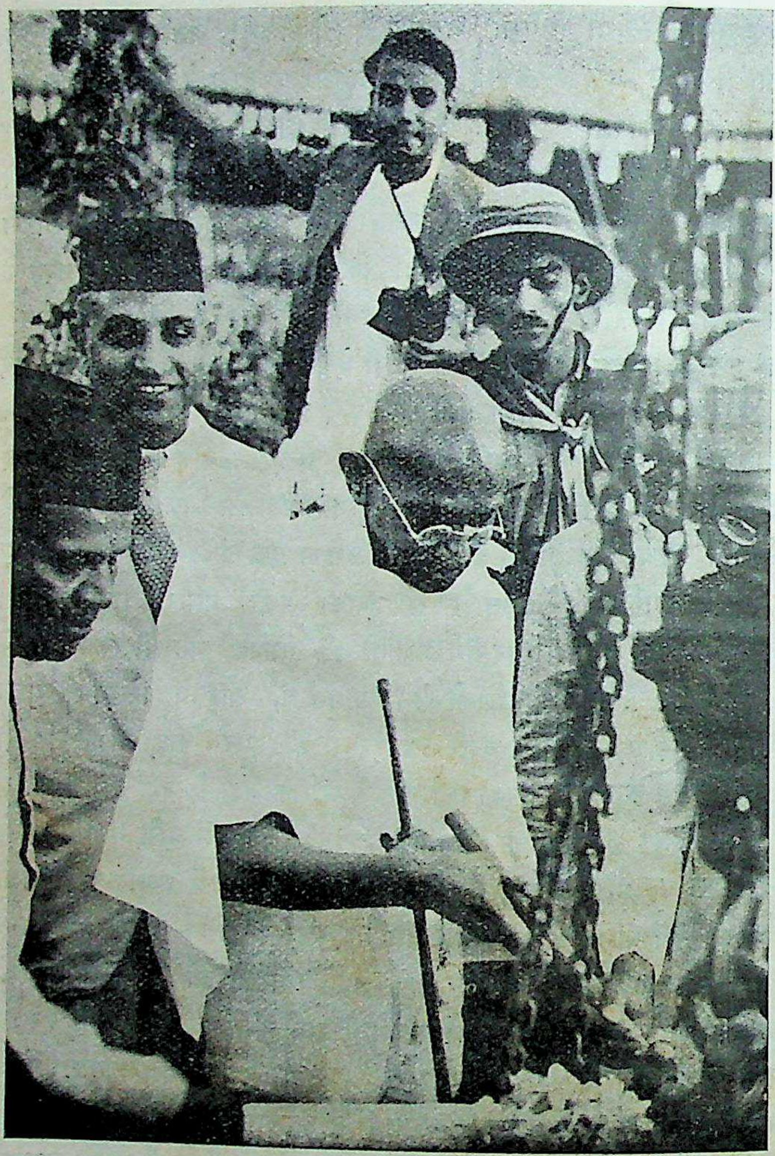

कमलाजी का स्मारक

[विश्ववंद्य महात्मा गांधी कमला नेहरू-अस्पताल का, अपने कर-कमलों से, शिला-न्यास कर रहे हैं।]

११. कमलाजी का स्मारक

स्वर्गीय त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू की पुत्र-वधू, भारत-सपूत पं० जवाहरलाल नेहरू की स्वर्गीया धर्मपत्नी सती कमलाजी के स्मारक का शिलारोपण, प्रयाग में, विश्ववंद्य महात्मा गांधी के कर-कमलों द्वारा, हो गया। नेहरू-परिवार की राष्ट्रीय सेवाओं की तौल तराज़ू से नहीं हो सकती। कवि के शब्दों में इस परिवार का एक-एक बच्चा आज़ादी की दीप-शिखा का परवाना है। उनमें स्व० कमलाजी का त्याग और बलिदान भी अनुपम है। राष्ट्र-सेविकाओं में कमलाजी अपने उज्ज्वल चरित्र, दृढ़ साहस, उत्कट देश-प्रेम के लिये सदैव चिरस्मरणीय रहेंगी। उनका स्मारक भी उनके जीवन के अनुरूप ही बना है। कमलाजी के जीवन का लक्ष्य देश को परा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीनता से मुक्ति दिलाता रहा। उनका स्मारक देश की बहनों और बच्चों को शारीरिक यातनाओं से मुक्ति दिलावेगा। कमला नेहरू-अस्पताल की एक-एक ईंट और उसके कण-कण में "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्" की आवाज़ गूँजती है। भगवान् इस पुण्य स्मारक को चिरस्थायी बनावें, यही हमारी शुभ कामना है।

× × ×

१२. सार का जर्मनी के लिये महत्त्व

पश्चिमी मोर्चे पर, सार-प्रांत की राजधानी सार ब्रुकन के आस-पास, इस समय भीषण लड़ाई हो रही है। जर्मनी के लिये यह प्रदेश कितना महत्त्व-पूर्ण है, यह जर्मन-सेना द्वारा किए जा रहे प्रतिरोध से ही स्पष्ट है। यह प्रदेश वरसाई की संधि के बाद फ्रांस को क्षति-पूर्ति के लिये दिया गया था, और १९३५ में लोकमत लेने के बाद जर्मनी को वापस मिला। सार के संबंध में महत्त्व-पूर्ण अंक प्रकाशित हुए हैं, जिनसे मालूम होता है कि यदि सार जर्मनी के हाथ से छिन जायगा, तो उसे कितना अधिक नुक़-सान पहुँचेगा। मगर इन आँकड़ों को सावधानी से पढ़ना चाहिए, और इन दो बातों का ध्यान रखना चाहिए—ये आँकड़े १९३६ के हैं, और उसके बाद जर्मनी ने आस्ट्रिया और चेकोस्लोवेकिया ले लिया। अब पोलैंड का आधा भाग उसके पास है। दूसरे, जर्मनी ने अपने औद्योगिक केंद्रों को सीमा से हटा-कर देश के आंतरिक भाग में स्थापित करने की नीति अपना ली है। जैसे हवाई जहाज़ बनाने का कार-ख़ाना डेसाऊ में, सिंथेटिक रबड़ (बूना) - उद्योग प्रशियन सेक्सनी में, 'गोरिंग' आयरन वर्क्स ब्रुनस्विक में, 'पीपल्स कार-फ़ैक्टरी' फ़ालेरस्लेबन (हैनोवर-प्रांत) में खोले हैं। जर्मनी की नवीन नीति के ये उदाहरण हैं। इसके बावजूद नीचे के अंक हिटलर की आर्थिक शक्ति का एक अच्छा परिचय देते हैं।

औद्योगिक मूल्य

सार-प्रदेश के उद्योगों में लगभग १,२०,००० पौंड लगे हुए हैं, और इनके काम की विशुद्ध क़ीमत ३,००,००,००० पौंड वार्षिक होती है। जर्मनी के लिये सार-प्रदेश पूर्वीय प्रशिया और जर्मन-अपर साइलेशिया के औद्योगिक प्रदेश से भी ज़्यादा क़ीमती है। मगर यह जर्मनी की कुल पैदावार का १'३ प्रतिशत है। इससे ज़िले का असली महत्त्व पूरी तरह प्रकट नहीं होता। हिटलर की युद्ध-मशीनरी का आधार कोयला और लोहा है। पिछले सालों में किसी भी दाम में इसे पाने के लिये जर्मनी ने जो प्रयत्न किया है, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। अतः यदि जर्मनी तेल की समस्या रशिया और रुमानिया की सहायता से हल कर भी सका, तो उसके सामने कोयले और लोहे की समस्या आएगी। सार-प्रदेश में जर्मनी के कुल कोयले का ८ प्रतिशत, कुल कोक का ६ प्रतिशत और कुल लोहे का ११ प्रतिशत पैदा होता है। इससे सार के निकल जाने से जर्मनी काफ़ी कमज़ोर हो जायगा। यही नहीं, समीपवर्ती दक्षिण-जर्मनी के कारख़ानों को सार से ही लोहा मिलता है। फ्रांस का सार पर अधिकार हो जाने से उसका काम भी बंद हो जायगा।

इतना ही नहीं। सार-प्रदेश की फ़ाउंडरियों में जर्मनी का ३ प्रतिशत लोहा और अन्य धातुएँ ८ प्रतिशत से कम नहीं पिघलाई और ढाली जातीं। २ प्रतिशत सीमेंट और ३ प्रतिशत से अधिक सब प्रकार का शीशा भी पिघलाया जाता है। इसके अतिरिक्त कोयले को छोड़कर सार के उद्योग-धंधों की उत्पत्ति जर्मनी में प्रथम श्रेणी की होती है। यह कारख़ाने पैदा करने में भी जर्मनी में प्रथम श्रेणी का है। इस प्रदेश की लोहे की पैदावार में लगे प्रति व्यक्ति की क़ीमत शेष जर्मनी की अपेक्षा ४ प्रतिशत और धातु की फ़ाउंडरी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112577

लगे हरएक व्यक्ति की क़ीमत ११ प्रतिशत ज़्यादा है। फ्रेंच लोरेन से कच्चा लोहा न मिलने के कारण भी इन्हें भारी नुक़सान पहुँच रहा होगा।

निर्यात व्यापार को हानि

सार-प्रदेश जर्मनी की सीमा पर है, और अपने परिमाण के अनुसार शेष जर्मनी के कल-कारख़ानों की अपेक्षा ३० प्रतिशत अधिक माल निर्यात करता है। यह सारा माल फ्रांस नहीं जाता, बल्कि अधिकांश माल लक्समबर्ग, बेल्जियम, हॉलैंड और स्वीटज़रलैंड-सरीखे तटस्थ देशों को जाता है। इसलिये सार छिन जाने का अर्थ है मूल्यवान् स्वतंत्र विनिमय-उत्पादक निर्यात-संबंधों का छिन जाना। मूल्य की दृष्टि से जर्मनी के कोयले के कुल निर्यात का ११ प्रतिशत सार से होता है (मगर यह सब फ्रांस को जाता है)। इसकी कुल क़ीमत २०,००,००० पौंड वार्षिक होती है। संपूर्ण जर्मन कोलतार का ५ प्रतिशत, लोहे के माल का ११ प्रतिशत निर्यात सार-प्रदेश से होता है। जर्मनी के निर्यात में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने के अतिरिक्त यह प्रदेश जर्मनी के अन्य भागों, विशेषकर दक्षिण-जर्मनी, से निर्यातवाले माल बनाने में मदद देता है। संपूर्ण दक्षिण-जर्मनी की पूर्ति का स्वाभाविक स्रोत सार-प्रदेश है।

सार-प्रदेश का कोयला संपूर्ण जर्मनी की कोयले की खानों का ८ प्रतिशत और सार में अभी और विद्यमान कोयला जर्मनी के कुल कोयले का १२ प्रतिशत है। इसलिये भविष्य में इस देश की महत्ता और अधिक बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त शेष जर्मनी की अपेक्षा सार-प्रदेश की जन्म-संख्या ज़्यादा रहती है। यहाँ के दो तिहाई निवासी रोमन-कैथोलिक धर्म माननेवाले हैं।

उपर्युक्त विवरण पढ़ने से मालूम हो जायगा कि जर्मनी के लिये आर्थिक दृष्टि से सार का क्या महत्त्व है, और मित्र-राष्ट्र हर समय सार ब्रुकन के पतन की प्रतीक्षा क्यों करते हैं।

× × ×

१३. कांग्रेस का बलाबल

गत १ अगस्त को कांग्रेसी कहे जानेवाले आठ प्रांतों की व्यवस्थापिका सभाओं में कांग्रेसी और ग़ैर-कांग्रेसी मेंबरों की संख्या इस प्रकार थी—

प्रांत	कांग्रेसी	ग़ैर-कांग्रेसी
युक्तप्रांत	१४७	८१
मदरास	१६२	५३
बंबई	८६	८६
बिहार	९८	५४
उड़ीसा	३५	२५
मध्यप्रांत	७१	४१
सीमाप्रांत	२१	२६
	(संयुक्त दल २१)	
आसाम	३२	७६
	(संयुक्त दल ४८)	

महाभारत

लेखक, श्रीसूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। महाभारत के संबंध में काफ़ी पुस्तकें निकल चुकी हैं। यह संक्षिप्त महाभारत साधारणजनों, गृहदेवियों और बालकों के लिये लिखी गई है। इससे उन्हें महाभारत की अठारहो पर्वों की कथाओं का सारांश वर्णन मालूम हो जायगा। भाषा सरल, सरस और मुहाविरेदार है। जो लोग विस्तृत महाभारत को नहीं ख़रीद सकते, वे लोग इसे मँगाकर पढ़ें। इस पुस्तक को पढ़कर काफ़ी लाभ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इसमें कोई भी मुख्य बात छूटने नहीं पाई है। मूल्य सादी ३), सजिल्द २।)

मिलने का पता—गंगा-ग्रंथागार, ३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ श्री धन्वन्तरये नमः ❀

विद्वानों वैद्यराजों हकीमों और [illegible]

सर्वांग सुन्दर सचित्र आयुर्वेद का मासिक पत्र

राकेश

[illegible]

[illegible] आयुर्वेद [illegible] [illegible]

अवश्य ही देखिए, वार्षिक मूल्य केवल ३) मात्र

जिसमें १।) रु० का विशेषांक मुफ्त

इसके सिवाय प्रत्येक मासिक अंक में भी —

१—शास्त्र परीक्षा प्रणाम २—[illegible] ३—[illegible] ४-उत्तमोत्तम मौलिक लेख ५—[illegible] चिकित्सा ६-विपुल वनौषधी के [illegible] सचित्र वर्णन ७-[illegible] ८-माननीय विद्वानों के प्रयोग विषयक परीक्षाफल ९-आयुर्वेद जगत के [illegible] समाचार और १०-मनोरंजन उपयोगी समालोचन इत्यादि [illegible]

सहस्त्र से भी अधिक पृष्ठों में पढ़िये

हम और [illegible] प्रार्थना करते हैं कि [illegible] उत्थान होने का अवसर प्रदान किया तो [illegible] सेवा से [illegible] होकर इसका [illegible] [illegible] के विषय में—

माननीय प्रसिद्ध विद्वानों के विचार आगे देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ारों में से.

बिद्वानों की कुछ सम्मतियाँ

[१]

'विज्ञान' के प्रसिद्ध और प्रधान सम्पादक पं० रामदत्त जी गौड़ M.A. विज्ञानाचार्य महोदय लिखते हैं—

"हमारे देश में बच्चों की मृत्यु और देशों की अपेक्षा अत्यधिक होती हैं, इसके कारण और चाहे कितने ही हों परन्तु धातु विद्या का अज्ञान उसका एक प्रधान कारण है, इस में दो मत नहीं है।

इस दृष्टि से हमारे सहयोगी, बरालोकपुर, (इटावा) के 'राकेश' आयुर्वेदिक पाक्षिक पत्र ने 'धातृ विज्ञानाङ्क' प्रकाशित कर देश की भारी और अनमोल सेवा की है, यह लग भग २०० पृष्ठों का एक उपादेय ग्रन्थ है, जो प्रत्येक वैद्य ही नहीं बरन हर एक गृहस्थ के पास होना चाहिये, लेख चयन ऐसी उत्तमता और वैज्ञानिक क्रम से हुआ है, कि गर्भाधान से आरम्भ करके बालग्रह चिकित्सा तक सभी बिषयों का समावेश हो जाता है, इस तरह धातृविद्या पर यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ बन गया है, राकेश का वार्षिक मूल्य ३) रु० है, किन्तु यह अङ्क ग्राहकों को इसी मूल्य में मिलता हैं, हमारी राय में यह धातृ विज्ञानाङ्क ही अकेला ३) रुपया का महगा नहीं है"।

[२]

ऋषीकेश आयुर्वेद विद्यालय के स्वनाम धन्य प्रोफेसर पं० बालकराम जी शुक्ल शास्त्री शास्त्राचार्य महोदय लिखते हैं—

'राकेश' का रसेश्वरदर्शनाङ्क बहुत ही अच्छा रहा इसमें पाचक रसायनागार के प्रमुख उपकरण पारद का वैज्ञानिक विस्तृत बर्णन है, कुशल सम्पादक ने रसेन्द्र (पारद) का शोधन मारण की सभी प्राचीन और अर्वाचीन बिधियों का समावेश कर वर्तमान काल के वैद्यों के लिये इस विशेषाङ्क को बहुत ही उत्तम रूप दिया है; वास्तव में यह अङ्क हर तरह से पठनीय और संग्रहणीय है"

[३]

आयुर्विज्ञानाचार्य प्रिंसिपल पं० विश्वनाथ जी शास्त्री महोदय ललितहरि संस्कृत आयुर्वेदिक कालेज पालीभीत से लिखते हैं—

"राकेश" का 'नेत्ररोगविज्ञानाङ्क' देखा, नेत्र रोगों पर अन्वेषण पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन और अनुभवी चिकित्सा देख कर चित्त प्रसन्न हुआ इसके खास विषय तो बड़े ही मौलिक और पठनीय है, जैसे बिना ऐनक के पूर्ण दृष्टि ऐनकों की उपयोगिता की सीमा आंखों में प्रकाश त्रोटन के फेरफार, सूर्य किरणों से चिकित्सा, अद्भुत दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ठीक होना, वृद्धावस्था की निगाह को बढ़ाना, अपूर्ण दृष्टि का ठीक होना, इत्यादि विषयों पर मौलिक संक्षेप से विचार किया गया है, इसके अतिरिक्त बड़े विस्तार से आंखों का व्यवच्छेद विज्ञान के अनुसार पूरा और सचित्र वर्णन है, दृष्टि का अपनी परिस्थित के अनुकूल बना लेने की विचित्र क्रियाओं का बड़ा ही विचित्र वर्णन किया गया है। आगे कहां तक लिखें आंखों के स्वाभाविक तथा औषधोपचार का भारतीय भाषा में लिखा ऐसा ग्रन्थ मेरे देखने में अभी तक नहीं आया। इस विशेषाङ्क को किसी भी दृष्टि कोण से देखिये उपयोगिता और विशेषता से खाली एक शब्द नहीं है, राकेश के प्रधान सम्पादक ने ऐसे वृहत्कार्य और नेत्र रोग के विशेषांक को प्रकाशित कर वर्तमान आयुर्वेद जगत का अपनी सच्ची आयुर्वेद सेवा त्याग और तप का परिचय करा दिया है"।

निखिल भारत वर्षीय २७ वें वैद्य सम्मेलन के सभापति महोदय आयुर्वेद पञ्चानन श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल भिषग्मणि, प्रयाग से लिखते है।

"आपने राकेश का "सिद्धप्रयोगांक" प्रकाशित कर आयुर्वेद संसार पर महान उपकार किया है, इस विशाल काम और सर्वोपयोगी विशेषांक को देख कर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं वास्तव में अनुभूत सर्व प्रयोगों को देखने और लाभ उठाने को जिसकी इच्छा हो वह इस अनूठे विशेषांक को अवश्य ही देखें"।

इसी प्रकार की सहस्रों सम्मतियां आई है। हमें विश्वास है कि आप भी स्वयं देख कर यही कहेंगे, इसलिये ३) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर कर वार्षिक ग्राहक बनकर, ।।) रु० मूल्य का विशाल विशेषांक "शूलरोगांक" मुफ्त भेंट स्वरूप उपहार में लीलिये।

राकेश के सुविख्यात विशेषाङ्क

प्लीहा तिल्ली रोगांक

हमारा विश्वास हैं, कि प्लीहा रोग का वैज्ञानिक विशद विवेचन और शतशोनुभूत चिकित्सा का ऐसा अनुपम ग्रन्थ अब तक छपा ही नहीं, इस विशेषांक के सर्वोत्तम लेखक को स्वर्ण पदक भेंट दिया गया था, अधिक क्या कहें बड़ी से बड़ी प्लीहा को २९ या ३९ घण्टे में निर्मूल करने का परम अनुभूत चिकित्सा देखना, और लाभ उठाना हो तो अवश्य मगाइये मूल्य केवल ।।) मात्र डाक खर्च अलग।

क्लीवतांक

आजकल की बढ़ी हुई विलासता एवं बचपन की कुटेवों से उत्पन्न नपुंसकता, ध्वजभंग (शिश्नशैथिल्य) धातु क्षीणता आदि दुःसाध्य रोगों की अन्वेषण पूर्ण सहस्रानुभूत चिकित्सा का आप भंडार ही समझें, अनेकों शिक्षाप्रद व्यङ्ग चित्र एवं प्रहसन इस अंक की और भी उपयोगिता की हद को आगे भागन दे रहे है। मूल्य अत्यल्प ।।) आने मात्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कु. जौकरणांक

'संदेश' का यह विशेषाङ्क बड़ा ही अनूठा और उपयोगी है, निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन ग्वालियर के सम्भाषा परिषद में इस अङ्क की उपस्थित विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी, वास्तव में अङ्क पठनीय है, मूल्य १) रु०

नेत्र रोग विज्ञानांक

नेत्र रोगों का प्राच्य पाश्चात्य मतानुसार खोजपूर्ण विशद २ विवेचन होने के साथ २ बड़ा उत्तम चिकित्सा प्रदर्शन कराया गया है अपूर्ण दृष्टि का ठीक करना वृद्धावस्था की गिरती दृष्टि का स्थिर करना नेत्र ज्योति बढ़ाना, नेत्रों को आरोग्य रखने के व्यायाम, उम्र भर दृष्टि कम न होने के उपाय आदि २ बहुत से विषय बड़े ही उत्तम हैं, मूल्य न्योछावर मात्र १) रु०।

रसेश्वर दर्शनांक

आयुर्वेद शास्त्र में पारद को बहुत ही महत्व दिया गया है। वास्तव में केवल पारद की विशेषता को जान लेना और शोधन; मारण, गुटिका बद्ध कर लेना मानों ऋद्धि सिद्धि को अपना सेवक बना लेना है। इन समस्त विषयों का बड़े ही खोज और बहुत बड़ा व्यय करके इस विशेषांक में प्रकाशित किया गया है, हम अनुरोध करते हैं, कि आप अवश्य ही इस विशेषांक को देखें।

मूल्य न्योछावर १) रु० मात्र।

गर्भरोग विज्ञानांक

स्त्रियों की गर्भावस्था के विकारों की चिकित्सा करने में बड़े २ वैद्य "किंकर्तव्यविमूढ़" से हो जाते हैं, कारण ऐसी नाजुक दशा में गर्भिणी और गर्भस्थ शिशु को उत्पन्न हुई व्याधि से रक्षा कर हृष्ट पुष्ट रखना बड़े ही अनुभव की बात है, इस विशेषांक में गर्भ स्थापित होने से लेकर प्रसव पर्यन्त समस्त व्याधियों का सरलता और विशेषता से वैज्ञानिक चिकित्सा प्रदर्शन क१या, गया है; विषय को सुस्पष्ट समझाने के लिये, अनेक चित्र भी दिये गये हैं। मू० केवल १) रु०।

सिद्ध प्रयोगांक

इस रत्न रूप विशेषांक में इधर उधर के प्रयोग नहीं, किन्तु माननीय आचार्य यादव जी, श्री कविराज प्रताप सिंह जी सुपरिण्टेण्डेण्ट काशी विश्व विद्यालय, जैसे प्रमुख अनेकों वैद्यराजों के अनेकों बार के सुपरीक्षित सहस्रों प्रयोग प्रकाशित हैं। साथ ही साथ अनुभूत प्रयोग प्रकाशित करने वाले धुरन्धर विद्वानों के उनके चित्र सहित पूरा वर्णन है। यदि आपने अब तक न देखा हो, तो इस अनेकशः अनमोल प्रयोगों के भंडार को अवश्य ही मँगाकर देखिये। इस वृहत् विशेषाङ्क में ऐसे वैसे प्रयोग स्थान न पा सकें, इसलिये बड़े बड़े २ विख्यात ५ विद्वान् वैद्यों की एक सम्पादक समिति द्वा। इसका सुसम्पादन किया गया है।

मूल्य १॥) रु० मात्र।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मांक

राजयक्ष्मा जैसे रोगराज पर यह इतना उपयोगी और आवश्यक सफल विशेषाङ्क प्रकाशित हुआ कि जिसका द्वितीय संस्करण बहुत ही जल्द प्रकाशित करने पड़ा। बस इसकी आवश्यकता आप इतने से ही मान लेंगे। क्षय रोग पर इससे उत्तम ग्रन्थ शायद ही आप आयुर्वेद जगत में पायेंगे। उपयोगी सुन्दर चित्रों ने विशेषाङ्क को और भी विशेष आकर्षक बना दिया है, आप अवश्य ही देखें मूल्य १) रु० मात्र।

रक्तरोग विज्ञानांक

रक्त और उसका निर्माण तथा उसके विकृत होने पर अनेक भयंकर सांघातिक रोग उत्पन्न होकर शरीर का नाश कर देते हैं यह वर्णन धुरन्धर विद्वानों के लेखनी से प्राच्य, पाश्चात्य मतानुसार बड़ा ही उत्तमता से सभझाया हैं। प्रसिद्ध रक्त रोग १८ प्रकार के कुष्ठ प्रभृति को शीघ्र प्रभाव सूचक सफल चिकित्सा का वर्णन किया गया है। कई बहुरंगे शारीरिक चित्र भी दिये गये हैं। इस विशेषाङ्क की उपयोगिता में जितना लिखा जाय थोड़ा है। इसलिये मंगाकर देखिये। मूल्य १) रु० मात्र

धातु विज्ञानांक

हमारे देश में बच्चों की मृत्यु और देशों की अपेक्षा अत्यधिक होती है। इसका प्रधान कारण धातु विद्या का अज्ञान ही है, इसी दृष्टि से काशी विश्वविद्यालय के सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री कविराज प्रतापसिंह जी रसायनाचार्य महोदय के शुभ परामर्श एवं आयुर्विज्ञानाचार्य प्रिंसीपल पं० विश्वनाथ जी शास्त्री सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री L. H. A. C. पीलीभीत के सुसम्पादन में इस महान उपयोगी और प्रामाणिक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है इस विशेषांक ने देश की यह अनमोल सेवा की है, जिसके फलस्वरूप बहुत से प्रमाण पत्र 'राकेश' को प्राप्त हुये हैं, इसकी उत्तमता का इतने से ही अन्दाज लगा लीजिये स्टोक में थोड़े ही शेष हैं, मंगाइये वरना दूसरे एडीसन की बाट जोहने पड़ेगी।

मूल्य १) रु० जो अत्यन्त कम है।

सिद्धोपचार पद्धति अंक

पुरुष स्त्री और बालकों के कठिन से कठिन रोगों पर, भारतवर्ष के प्रसिद्ध २ वैद्यराजों द्वारा बहुशोऽनुभूत प्रत्येक रोगकी आद्योपान्त चिकित्सा का वर्णन किया है। केवल इस विशेषाङ्क के सहारे ही आप कठिन से कठिन रोग का शर्तिया बाजी मार कर इलाज कर सकते हैं किसी भी रोग की कठिन से कठिन अवस्था मेंआप अपना चिकित्सा कौशल दिखा, विपक्षियों को आश्चर्य चकित कर सकेंगे। यह अङ्क ५००० छपा था, जिसको सभी कॉपी हाथों हाथ बिक गई, थोड़ी प्रतियां शेष हैं। शीघ्र ही मँगाइये वरना फिर पछताना पड़ेगा।

मू० केवल १) रु०

बालरोग विज्ञानांक

बालरोगनिदान और चिकित्सा कितनी कठिन है, यह प्रत्येक वैद्य अपने चिकित्सा काल में नित्य प्रति अनुभव करते हैं, ऐसा विचित्र कठिनाई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारत के होनहार शिशुओं का अकाल में ही काल कवलित होने की महान् क्षति को दूर करने के लिये इस अनूठे और वृहत विशेषाङ्क का बड़े ही परिश्रम और प्रचुर धन खर्च करके प्रकाशित किया है, प्रसव से लेकर पांच बरस तक की आयु के बालकों का सभी व्याधियों का निदान और सद्यः फल दायक चिकित्सा एवं अनेक तद्विषयक वैज्ञानिक खोज पूर्ण लेख और चित्र दिये गये हैं, २५० पृष्ट के बड़े विशेषाङ्क का मूल्य १।।) रु० है। अवश्य मँगाइये।

गिनोरिया विज्ञान

सुजाक और उसकी उत्पत्ति एवं उसके सभी भेद यथारी पथरी (पथरी) रोग पर प्राच्य पाश्चात्य मतानुसार विशेषज्ञ लेखक ने इस विषय का विस्तृत निदान खूब ही समझाया हैं, इतना ही नहीं हर प्रकार की सुजाक और पथरी पर ऐसे ऐसे चमत्कारी प्रयोग दिये गये है, जिन से आप उक्त रोग की भीषण अवस्था में भी तीन दिन में ही पूरा लाभ दिखा सकेंगे। हम दावे के साथ कह सकते है। कि ऐसी उत्तम पुस्तक को आप अवश्य ही मंगाकर देखें। मूल्य १) रु०।

कामेश्वरचूर्ण से यह रोग नष्ट होते हैं

कामेश्वर चूर्ण के बिधि पूर्वक सेवन करने से बीसों प्रकार के प्रमेह, स्वप्नदोष वीर्य का पानी के समान पतला होना लाल पीला गाढ़ा सा फेद तथा गर्म मूत्र आना मल वा मूत्र के परिश्रम के समय किसी भी रूप में वीर्य का निकलना, मूत्र में तार बंधना या सफेद शर्करा जमना पेशाब पर चींटें लगना नपुंसकता शरीर की शिथिलता नसों की कमजोरी आदि, रोग दूर होते है। जो लोग चढ़ती जवानी में कुबुद्धि से अपने हाथों किये कुकर्मों से या अति स्त्री प्रसंग में रोजाना वीर्य क्षय करने से अपना सर्वनाश कर बैठे हैं उनके लिये—

१० कामेश्वर तिला

हस्तमैथुन, बहुमैथुन, गुदामैथुन, आदि चाहे जिस दोष से नपुंसकता हुई हो, इसके ११ दिन लगाने से अवश्य दूर होती है इन्द्रिय बलवान और दृढ़ हो जाती है। अनेक नपुंसक इसके व्यवहार से आरोग्य हो पुत्रवान हुए हैं, मू० २१दिन सेवन योग्य शीशी १।।) रु० मात्र पोष्टव्यय।=)

काम जाग्रत पोटली

इन पोटलियों के १२ दिन व्यवहार करने से हस्तमैथुन, गुदामैथुन, बहुमैथुन, आदि के द्वारा उत्पन्न इन्द्रिय शिथिलता व नपुंसकता दूर हो जाती है, रग पट्ठे ऐसे मजबूत हो जाते हैं, कि इन्द्री शिथिल ही नहीं होती, एक बार परीक्षा कीजिये। मूल्य ५ पोटली का २) रु० पो० व्यय।≈) आना।

औषधिसंस्काराङ्क—पं० विश्वनाथ जी शास्त्री पीलीभीत व बालक राम शुक्ल ऋषिकेश द्वारा सम्पादित औषधियों का विवेचन विधि विधान बड़ी उत्तम ढंग से किया गया है। मूल्य १) रु०

बढ़िया रोगी रजिष्टर, मूल्य २) रु० रोगी। फार्म मूल्य ।।) आना, सैकड़ा हमसे मंगाइये। बड़ा सूची पत्र मुफ्त मगाकर देखिये।
राकेश कार्यालय बरालोकपुर इटावा यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राकेश की विक्रयार्थ फायलें।

प्रथम वर्ष की फायलें समाप्त हैं. एक ग्राहक महोदय इस फायल को ५१) रु० में देते हैं।

द्वितीय वर्ष की फायल—इसमें अभूत पूर्व उपयोगी विषय तो है, हाँ; इसके अतिरिक्त 'मोहाङ्क, और 'क्लीवताङ्क, विशेषाङ्क भी सम्मिलित हैं, मूल्य सिर्फ २) रु०

तृतीय वर्ष की फायल—इस फायल में "बाजीकरणाङ्क" "नेत्ररोगांक" "रसेन्द्रांक" ये तीन दलदार सुपाठ्य विशेषांक भी सम्मिलित हैं, इस फायल की पृष्ठ संख्या लग भग १००० एक हजार है। मूल्य २) रु०।

चतुर्थ वर्ष की फायल—इस फायल में "गर्भाङ्क,, "सिद्धयोगांक,, यह दलदार बहुत बड़े २ विशेषाङ्क सम्मिलित है, जिनमें दर्जनों चित्र दिये गये हैं, इस फायल की पृष्ठ संख्या १००० एक हजार से बहुत ऊपर है, मूल्य ३) रु०।

पञ्चम वर्ष की फायल—इसमें "यक्ष्माङ्क,, "रक्तरोगाङ्क,, ये दो अनुभूत वृ० विशेषाङ्क सम्मिलित है। जिन्होंने आयुर्वेद जगत में अपनी विशेषता की कान्ति पैदा कर दी है। पृष्ठ संख्या इस फायल की १ हजार से बहुत ऊपर हैं, मू० ३) रु०।

षष्टम वर्ष की फायल—आयुर्वेद जगत में अभूत पूर्व और अनूठा अन्वेषण पूर्ण विशेषांक धात्रीविज्ञांक भी सम्मिलित है पृष्ठ संख्या १०००से ऊपर है मू०३) रु० मात्र।

सप्तम वर्ष की फायल—इसमें "सिद्धोपचार पद्धतिअङ्क,, अद्वितीय विषयों से भर पूर सम्मिलित हैं पृष्ठ संख्या १००० से ऊपर है, मू० ३) रु०।

अष्टम वर्ष की फायल—इसमें "बालरोग विज्ञानाङ्क,, सुपाठ्य अनोखा अद्वितीय विषयों से भरपूर, सम्मिलित हैं पृष्ठसंख्या १००० से ऊपरहै मू० ३)रु०।

नवें वर्ष की फायल—इसमें शूलरोगाङ्क विषय से पूर्ण अनुभवी विद्वानों द्वारा सम्पादित है। मूल्य ३) रु० पृष्ठ संख्या करीब १५०० है।

दसवें वर्ष की फायल—ग्यारवें वर्ष की फायल यह भी अद्वितीय हैं। मू० प्रति फायल ३) रु० है।

नोटः—सभी फायलें एक साथ लेने पर मार्ग व्यय कार्यालय से मुक्त रहेगा।

पता—श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी हरालोकपुर इटावा यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यों के मुकाबिले में डाक्टर किस बात में नहीं हार
केवल सर्जरी अर्थात् शल्यशालाक्य विषयमें

क्यों क वैद्य अपनी इस विद्या को बिसारे बैठे है। यह भूल ही गये, कि यह शास्त्र भी हम यहां कितनी उन्नति कर चुका है, उसी प्राचीन शल्य शास्त्र का अति सरल वर्णन और नवीन प्रणा से भी परिचय दिलाने वाला ग्रन्थ रत्न—

छप गया ? **प्राच्य, पाश्चात्यशल्यतन्त्र** छप

इस ग्रन्थ रत्न में राग के भेद, लक्षण, उपाय व्रणों के भेद रक्षा और उत्तमोत्तम उपचार शोथ निवारण, स्वदेशी टिंचर, आइडोफार्म स्वदेशी लार्ड फार्म आदि शल्य विषयक अनुभूत कड़ों दवाओं के मुकाबिले की औषधियाँ शास्त्र में, पट्टी बाँधने के तरीके व्रण के ६० उपक्रमोपच शोधन, प्रत्येक प्रकार के व्रण, आघातज विषज आदि, किंचित और २ सभी घा रक्तस्राव, अस्थि भंग, कोष्ठ आन्तरिक अङ्गों के व्रण, अर्बुद, विद्रधि, काण्डभग्न, मोच छेदन, भेद विम्लापन पाचन, रक्तमोक्षण, स्नेहन, लेखन, एषण, आहारण, सीवन पीडन निर्वाचन शोधन, अवसादन, क्षारकर्म लेपन पोषण, बन्धनादि कहां तक कहें, सब प्रकार के व्रणोपचार की प्राच्यपाश्चा मतानुसार विशद व्याख्या सहित समस्त सफल क्रियायें दी है। व्रण बन्धनों के अनेकों भेद, उप विशेषताय, और शल्य कर्म में आने वाले अनेक शास्त्र शलाकायें, कर्तरिका, कुशपत्र कूर्चक यन्त्र कतनक सदेश स्वस्तिक आदि यन्त्रों का मनोमोहक सचित्र वर्णन और उपयोग एवं शस्त्र ज लौकाओं का प्रयोग और भेद सभी भला प्रकार समझाये गये हैं, हम दावे के साथ कहते है, कि ग्रन्थ आपकी आयुर्वेद विषयक अन्य आवश्यकताओं में सब से अधिक आवश्यक है। यह ग्रंथ आ के पास पहुंचते २ आपके कार्य को कई गुना अधिक शीघ्र बढ़ा देगा। छप कर तैयार होते ही विद्यालयों में छात्रों तथा वैद्यों ने मंगा लिया; शीघ्रता करिये, अन्यथा दूसरी बार छपने की बाट जोह पड़ेगी।

मूल्य प्राच्य शल्य तंत्र २॥) रुपया पाश्चात्य शल्य तन्त्र १॥) रु० दोनों भाग एक साथ म गाने पर ३॥) रुपया में देंगे। डाक खर्च ॥।) आने अलग।

मिलने का पता—मैनेजर 'राकेश'

बराले कपुर, इटावा यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े,
पोस्टकार्ड, विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मेमो,
रसीद-बुक, कैलेंडर, नोटिस, निमंत्रण-पत्र,
अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि — — — —

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर,

साथ ही

ठीक वक़्त पर, किया जाता है।

संतोषप्रद काम देने की गैरंटी

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

मैनेजर
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
२३, लाटूश रोड
— लखनऊ —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11257

Registered No. A. 1712.

ग्यारह बज रहा है

आराममे बैठिये और पुनः ताजगी देनेवाला चायका प्याला पीजिये। सबेरेसे काम करते करते आप थक गये होंगे — अब एक प्याला चाय पीकर नव-चैतन्य लाभ कीजिये। अभी काम करनेको सारा दिन पड़ा है। इस पूर्ण आरामके समय इस रोचक पेयको पीते पीते दिनका शेष कार्यक्रम निश्चित कीजिये।

चाय तैयार करनेका तरीका

ताजा पानी खौलाइये। साफ बर्तन जरा गर्म कर लीजिये। उसमें प्रत्येकके लिये एक और एक चम्मच अधिक, बढ़िया भारतीय चाय रखिये। पानी खौल जाते ही चाय पर डाल दीजिये। पांच मिनिटों तक चायको सीझने दीजिये। इसके बाद प्यालोंमें डाल कर दूध और चीनी मिलाइये।

अन्य अवसर

चाय पीनेके कुछ मौके ये हैं :

१. प्रातःकाल
२. दोपहरके भोजनके साथ
३. जलपानके साथ
४. ब्यालूके साथ

भारतीय चाय हर वक्त हर जगह

IK 119

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैंशन बोर्ड द्वारा प्रचारित

गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ में श्रीदुलारेलाल भार्गव (सोल प्रोप्राइटर) द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri